

वार्षिक मूल्य ८) }
एक प्रति का २० नए पैसे }

लखनऊ, रविवार, पौष १४ शक १८८०, पौष कृ० १०, वि० २०१५
४ जनवरी १९५९ ई०

विदेश में
१५शिलिंग

आत्म बल ही जन-जीवन हो !

असत् से सत् पथ पर आएँ
तमस तज ज्योतिः अपनाएँ;
मृत्यु से अमृत पद पाएँ;
ज्ञान से मुक्ति-धाम जाएँ;
प्रकृति से प्रेम न बन्धन हो;
आत्म बल ही जन-जीवन हो !

इन्द्रियाँ विषयों से हों मुक्त;
न हो आसक्ति, रहें सब मुक्त;
दुःख-सुख में न विषमता जान;
पराजय जय हो सदा समान;
सुखी सम्पुष्ट, स्वस्थ तन हो
आत्म-बल ही जन-जीवन हो !

× × × × × × ×

मनों में सत्य समाया हो;
भाव सत् सबको भाया हो;
स्नेह-सौरभ सरसाया हो;
का गौरव गाया हो;
शुद्ध संकल्पयुक्त मन हो;
आत्म बल ही जन-जीवन हो !

संकटों संघर्षों से स्नेह;
समझ क्षण भंगुर नश्वर देह;
कर्म्म-पथ पर दौड़ें दिन-रात;
सहें आघात, कष्ट, व्याघात;
तपस्या और त्याग धन हो;
आत्म बल ही जन-जीवन हो !

× × × × × ×

फलाशा लिप्सा का हो अन्त;
धर्म्म से हो अनुराग अनन्त;
शुद्ध शुभ हों आचार-विचार;
सत्य का सार आत्म उद्धार;
ईश का क्षण-क्षण चिन्तन हो;
आत्म बल ही जन-जीवन हो !

—हरिशङ्कर शर्म्मा

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

अङ्क
१

सच्ची घटनाओं पर आधारित एक व्यंग्य चित्र—

स्वर्ग की संसद में भारत पर विचार

(ले०—विश्वबन्धु वेदालंकार एम० ए० आर्य समाज हींग की मण्डी आगरा)

[प्रस्तुत व्यङ्ग लेख में लेखक ने धर्म प्रधान भारत की वर्तमान अनैतिक जीवन दशा का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत किया है। राज्यों और केन्द्र के आये दिन जिन घोटालों की चर्चा हम सुनते हैं उनको देखते हुए उपर्युक्त चित्रण प्रारम्भिक है। क्या हम भारत के विषय में स्वर्ग में होने वाली इस हलचल से भी अपने को शुद्ध और आदर्श बनाने की ओर सतर्क हो सकेंगे ?—सम्पादक]

इस बार स्वर्ग की संसद में भारत पर विचार करते समय बड़ा हंगामा मचा। विरोधी पक्ष ने जब भारत पर भ्रष्टाचार और अनैतिकता के गम्भीर आरोप लगाये तो सरकारी बेंचे भी हिल उठीं। अध्यक्ष पद पर आसीन धर्मराज युधिष्ठिर ने बहस की उग्रता को कम करने का प्रयास किया पर जब विरोधी पक्ष भारत पर लगातार भ्रष्टाचार के आरोपों की बौछार करता रहा तब अध्यक्ष महोदय को कहना पड़ा कि जिस भारत पर आप भ्रष्टाचार के आरोप लगा रहे हैं वहां तो "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्" का पालन किया जाता है। उन्होंने इसकी पुष्टि में अपने समय की महाभारत काल की घटना इस प्रकार सुनाई कि एक समय दो व्यक्तियों का झगड़ा मेरे पास आया। झगड़ा यह था कि एक किसान ने अपना खेत किसी दूसरे किसान को बेंच दिया। खेत के बीचो बीच एक कुटिया बनी हुई थी। जिस किसान ने खेत खरीदा था उसने कुटिया की उपयोगिता को न देखते हुए उसे गिरा कर उस स्थान पर भी हल चलवा दिया। कहते हैं हल चलाते समय वहां सोने के सिक्कों से भरा एक कलश मिल गया। अब वह किसान उन सिक्कों से भरे कलश को लेकर उस स्थान पर गया जिससे खेत खरीदा था और कहने लगा कि आप की कुटिया के नीचे से यह सोने के सिक्कों से भरा कलश मिला है कृपया इसे ले लीजिए। पहले किसान ने उत्तर दिया कि मैंने तो कुटिया समेत खेत बेचा है अतः इन पर मेरा अधिकार नहीं है। दूसरा किसान बोला—भाई मैंने तो केवल खेत खरीदा है न कि ये सोने के सिक्के, इन्हें मैं कदापि न लूंगा। दोनों में कलह को बढ़ता देख किसी समझदार ने सलाह दी कि यदि आप दोनों इन्हें नहीं लेना चाहते तो महाराज युधिष्ठिर के कोष में जमा करवा दो। यह बात दोनों की समझ में आ गई और वे उस कलश को लेकर मेरे पास पहुँचे। पूरी कहानी सुनाकर कहा कि हम दोनों की इच्छा है कि इसे आपके राजकोष में जमा कर लिया जाय। मैंने उत्तर दिया कि जिस पाप से तुम बचना चाहते हो उसमें युधिष्ठिर को डालना चाहते हो, यह नहीं होगा। समस्या बेढ़ंगी बन गई थी तब कुछ राजमन्त्रियों ने सुझाव दिया कि दोनों किसानों में से जिसकी लड़की का विवाह प्रथम हो उसके कन्यादान में यह धन भेंट कर दिया जाय। यह बात सबको पसन्द आ गई और उस धन का प्रयोग इसी प्रकार हुआ। यह कथा सुनकर अध्यक्ष महोदय ने जोरदार शब्दों में इसका विरोध किया कि भारत जैसे देश में जहां पर द्रव्येषु लोष्ठवत् माना जाता है वहां विरोधियों के अनुसार इतना भ्रष्टाचार कैसे हो सकता है। सरकारी बैंचों की ओर से भी महर्षि दयानन्द ने भी इसका समर्थन करते हुए कहा कि जिस भारत को मैं दोनों समय संध्या अग्निहोत्र का संदेश देकर आया हूं भला वे इतने पतित कैसे हो सकते हैं। महात्मा गांधी ने भी इसकी पुष्टि की, कि जिस देश में स्थान स्थान पर राम-नाम का कीर्तन होता हो वहां इतना भ्रष्टाचार नहीं हो सकता। पर विरोधी दल इससे और भी भड़क उठा और यह प्रस्ताव रखा कि भारत के भ्रष्टाचार की जांच के लिये एक कमीशन नियुक्त किया जाय। उस भयंकर हंगामे को देखकर अध्यक्ष महोदय ने भी इसे उचित समझा और सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हो गया कि नारद जी की अध्यक्षता में एक कमीशन भारत मे हो रहे भ्रष्टाचार की जांच के लिये अविलम्ब भेजा जाय जो अगले ही अधिवेशन में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करे। यह प्रस्ताव पास करके संसद का अधिवेशन अनिश्चित काल के लिये उठ गया।

इधर नारद जी अपने दल के पांच सदस्यों ने साथ पुष्पक विमान में बैठकर गुप्त मार्ग से भारत की राजधानी दिल्ली में उतर पड़े। दिल्ली नगर के कोलाहल से परेशान होकर नारद जी घूमते हुए पास के किसी गाव के एक हरे भरे खेत में जा पहुँचे। खेत तम्बाकू का था जो लगभग १५ बीघा होगा। खेत के मालिक ने परदेसी समझ बड़ा सत्कार किया। नारद जी ने प्रसंगवश पूछ लिया कि तुम्हारे घर में कुल कितने आदमी होंगे। किसान ने उत्तर दिया कि यही सब मिलकर बीस पच्चीस आदमी होंगे। तब नारद जी ने बड़ी सहानुभूति पूर्ण स्वर में कहा कि इतनी थोड़ी जमीन, घर में इतने आदमी, फिर तम्बाकू पर भारी लगान, इस पर तुम्हारा रहने का रईसाना ढंग, यह सब कैसे होता होगा। किसान ने नारद जी को सीधा साधा समझते हुए अपना सारा राज खोल ही तो दिया और कहा कि महाराज हमारे खेत में कोई पांच सौ मन तम्बाकू होती है। पर हम खेती के निरीक्षण करने वाले इन्सपेक्टर को पांच सौ रुपये दे देते हैं वह पांच सौ मन की जगह पचास मन ही लिख देता है। यों हम भारी लगान से बच जाते हैं। ईश्वर की दया से दिन खूब खुशहाली में कट रहे हैं नारद जी यह दास्तान सुनकर भौचक्के से रह गये और भ्रष्टाचार का यह प्रथम उदाहरण अपनी रिपोर्ट में अंकित कर लिया।

दिल्ली की पूरी छानबीन करके नारद जी ने अपनी पार्टी के साथ ताजमहल देखने के लिए आगरा को प्रस्थान कर दिया। भीड़ अधिक होने से टिकट नहीं लिये जा सके और बगैर टिकट ही गाड़ी में बैठ गये। अगले स्टेशन पर टी० टी० आई० को कह दिया कि हमारे टिकट बना दिये जांय। उसने बड़ो इत्मीनान से कहा कि मैं साथ ही चल रहा हूं आगे बना दूंगा। आगरा आने में जब केवल एक ही स्टेशन रह गया तब टी० टी० आई नारद जी के डिब्बे में आया और कहने लगा कि आप सबका दिल्ली से आगरा का किराया पचास रुपये होता है। पर यदि आप उचित समझें तो इससे कम में भी काम चल सकता है। नारद जी ने कुछ अनजाने भाव में पूछा कि श्रीमन् हम आपका आशय न समझ सके। तब टी० टी० आई ने धीरे से कहा आप केवल तीस रुपये दे दें। अब आगरा आ ही गया है। मैं स्वयं आपको गेट से बाहर करवा दूंगा कोई दिक्कत नहीं होगी। इस प्रकार आपके भी बीस रुपये बच जायंगे और हमारा भी। नारद जी ने तीस रुपये देकर काम निकाल लिया और यह भ्रष्टाचार का दूसरा उदाहरण भी अपनी रिपोर्ट में दर्ज कर लिया।

आगरा फोर्ट स्टेशन से ताजमहल को पास ही जानकर नारद जी अपने दल सहित पैदल ही चल दिये। रास्ते में क्या देखते हैं कि एक चुंगी चौकी पर तरबूजों से भरा एक ट्रक खड़ा है। ये भी वहाँ पहुंच गये। चुंगी वाला तरबूज वाले को समझा रहा था कि देखो तरबूज पर भारी ड्यूटी है लगभग पचास रुपये होते हैं। यहाँ चमड़े पर ड्यूटी नहीं है। मैं तुम्हारे ट्रक को चमड़े का ट्रक लिख दूंगा केवल बीस रुपये में तुम्हारा काम हो जायगा तुम्हारे भी तीस रुपये बच जायेंगे। दोनों में समझौता हो गया और चुंगी वाले ने चार आने की सरकारी रसीद काट कर देदी। नारद जी ने यह भ्रष्टाचार का उदाहरण भी नोट कर लिया।

आगरे से नारद जी का दल कानपुर पहुंचा। कानपुर में जूतों की प्रसिद्धि सुनकर सदस्यों ने सोचा कि क्यों न एक एक जोड़ा जूता यहाँ से खरीद लें। एक नामी दूकान पर पहुंचे। दूकानदार ने इनको विदेशी समझ कर खूब जी खोलकर बातें की, नारद जी कब चूकने वाले थे पूछ बैठे आप वर्ष मे कितनी सेल कर लेते हैं। दूकानदार ने सहज भाव से उत्तर दिया यही सत्तर अस्सी हजार की। नारद जी ने बड़ी सहानुभूति पूर्ण स्वर में कहा तो फिर सरकार को बड़ा टैक्स देना पड़ता होगा। दूकानदार ने इनको सीधा जानकर कह ही तो दिया, साहब आपसे क्या छिपाऊं सेल टैक्स तो केवल बीस ही हजार का देता हूं। हां टैक्स आफीसर की जेब गरम करनी पड़ती है। इसलिए वे हमारी बीस ही हजार की सेल लिख लेते है। सभी जगह यही हो रहा है। यदि सरकार को पूरा टैक्स मिल जाय तो क्यों अमरीका से भीख मांगनी पड़े। नारद जी यह सुन कर चकित रह गये और यह घटना भी डायरी में नोट करली।

कानपुर से नारद जी का दल कलकत्ता पहुंचा। वहां इनको विदेशी समझ सन्देह में गिरफ्तार कर लिया गया पर अदालत में कुछ ले देकर छूट गये। उस समय अदालत में बड़ा ही दिलचस्प केस सुना जा रहा था। केस यह था कि सी० ओ० डी० के एक सबसे बड़े आफीसर ने सरकारी सामान जिसकी कीमत लगभग तीन लाख रुपया थी, पचास हजार रिश्वत लेकर एक ठेकेदार को केवल तीस हजार में बेच दिया। दूसरे ठेकेदार जो उसी माल का एक लाख रुपया देने को तैयार थे नगर के एक एम० पी० से शिकायत की। एम० पी० महोदय ने केन्द्रीय रक्षा मन्त्री को

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेदोपदेश

ओम् कुक्कुटोऽसि मधुजिह्वऽइषमूर्जमावद त्वया वय ॐ संघात ॐ संघातं जेष्म वर्षवृद्धमसि प्रतित्वा वर्षवृद्धं वेत्तु परापूत ॐ रक्षो वायुर्वो विविनक्तु देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना। यजु० १।१६

हे यज्ञ ! तुम अन्न के मालिन्य आदि दोष और उसके अभाव के नाशक हो। मधुर जिह्वा वाले हो। अन्न तथा रस को हमारे लिए सिद्ध करो। हम लोग तुम्हारे द्वारा संग्राम में विजयी हों। तुम वृष्टि के वर्धक हो। तुम्हें लोग वृष्टि का वर्धक जाने। तुम्हारे द्वारा बाधा विघ्न नष्ट हों तथा अदानशीलता दूर हो। वायु ! तुम हुत-पदार्थों को विश्लिष्ट करो। किरणरूप-कर वाला प्रकाशमान सूर्य तुम को निरन्तर व्याप्त करों से स्वीकार करे।

पूर्वी पाकिस्तान में 'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध

संयुक्त राष्ट्र संघ घोषणा पत्र के विरुद्ध विचार स्वातंत्र्य की पाकिस्तान में हत्या

सम्पूर्ण आर्य जगत् में रोष और क्षोभ की लहर

आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग में प्रस्ताव

उर्दू पत्र रियासत में प्रकाशित इस समाचार से समस्त आर्य जगत् में चिन्ता और रोष की भावना व्याप्त हो उठी है कि—"पूर्वी पाकिस्तान मे महर्षि दयानन्द रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।"

इस समाचार की सत्यता का पता चलाने और तत्सम्बन्धी आवश्यक कार्यवाही करने के लिये उ० प्र० आ० प्र० नि० सभा की अन्तरङ्ग सभा ने २५ दिसम्बर की बैठक में प्रस्ताव पास करते हुए इस प्रतिबन्ध की निन्दा की है और सार्वदेशिक सभा व भारत सरकार से इस सम्बन्ध मे आवश्यक कार्यवाही करने को मांग की है।

प्रस्ताव मे यह भी कहा गया है कि इस प्रकार का प्रतिबन्ध सयुक्त राष्ट्र संघ घोषणा पत्र मे वर्णित मानव अधिकारो की हत्या है।

हम मित्र परिवार को ओर से पाकिस्तान के इस असहिष्णु और धर्मान्ध व्यवहार की निन्दा करते हैं और भारत सरकार से इस मामले की जांच कराने और आवश्यक विरोध प्रस्तुत करने की मांग करते हैं।

दिल्ली, आगरा आदि मे सार्वजनिक सभाएं करके पाकिस्तान की इस कार्यवाही की निन्दा के प्रस्ताव पास किये गये है।

आर्यमित्र

लखनऊ—४ जनवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

नव वर्ष की नवीन प्रेरणा

अनन्तकाल चक्र की गति मे एक परिवर्तन प्राचीन की समाप्ति और नूतन के आगमन की सूचना लेकर आया है। १९५८ का वर्ष समाप्त हुआ और आज हम नव वर्ष के उषा काल में श्वास ले रहे हैं। यह परिवर्तन केवल प्राकृतिक घटना मात्र ही तो कोई महत्व नहीं परन्तु जब हमारे मन इस घटना को प्राचीन की समाप्ति और नवीनता के शुभागमन' का प्रतीक मानते है तब स्वाभाविक रूप से हमें सोचना पड़ता है कि यह परिवर्तन क्या नवीन सन्देश लेकर आया है।

प्रत्येक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की अपनी परिस्थितियां होती हैं उनम शुभ का अभ्युदय और अशुभ का तिरोभव यही सन्देश वर्ष की समाप्ति और नवागमन के साथ सम्बद्ध है।

हम अपने व्यक्तिगत, समाज गत एवं राष्ट्रगत सभी कर्तव्यों का पालन करें और उनके मार्ग मे आने वाली अशुभ भावनाओं का अन्त कर सके आज का नव वर्ष हमें यही प्रेरणा दे रहा है।

हमारा व्यक्तिगत जीवन वर्ष भर में कितना आदर्श बन सका और मार्ग में क्या बाधाएं आ रही हैं उनका निराकरण कैसे हो उसके लिए दृढ़ सकल्प करें यही नव वर्ष का सन्देश है।

राष्ट्र रथ के मार्ग में कितनी बाधाएं हैं और उन्हे दूर कर हमे राष्ट्र रथ को प्रगति के किस लक्ष्य तक पहुंचाना है आदि का गम्भीर चिन्तन आज हमे करना होगा।

समाज के कार्यक्रमों और योजनाओ की पूर्ति मे हम क्या दायित्व पूर्ण कर रहे हैं और हमारे प्रयत्नो से समाज का कितना प्रगति मिली है आदि के सम्बन्ध मे आज हमें गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिए।

इस प्रकार नया वर्ष हमारे मनों मे एक क्रान्ति और गम्भीर चिन्तन की भावना जागृत करने आया है और हम सबको उसका स्वागत करते हुए अपने कर्तव्यों का स्मरण और उनके पालन का प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

हे नव वर्ष, तुम्हारा स्वागत है तुम मानव समुदाय को नवीन प्रेरणाओ और शुभादर्शों से ओतप्रोत कर दो और आज का मानव विज्ञान के संहारकारी अभिशाप से बच कर आत्मिक सुख के वास्तविक लक्ष्य की ओर बढ़ सके यही तुम्हारी मानव जाति के लिए स्मरणीय देन होगी। आज मानव सन्त्रस्त और भयभीत है और विनाश के कगार पर खड़ा है। हे महाकाल ! तुम अपनी राष्ट्र में मानवता विरोधी शक्तियों का संहार कर मानवता की रक्षा कर सको इन शब्दों के साथ हम नव वर्ष की मंगल कामना करते हैं।

जयन्ती का महान् कार्य और अल्प समय

आर्य बन्धु भली भांति जानते हैं कि उन्होने इस वर्ष आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोह मनाने का निश्चय किया है। समय जैसे जैसे बीतता जाता है वैसे ही वैसे कार्य की गुरुता बढ़ती जा रही है। अब केवल दो मास का समय शेष है परन्तु हममें अपने कर्तव्य पालन की उतनी चेतना और प्रेरणा जागृत नहीं हो पायी है जितनी इस अवसर पर अपेक्षित होनी चाहिये।

सासनी अन्तरङ्ग सभा की बैठक मे उपस्थित आर्य बन्धुओ ने नवीन उत्साह के साथ जयन्ती नोटों की मांग कर यह सूचना दी है कि वे अपने कर्तव्य की ओर सचेत हैं परन्तु अन्तरङ्ग सदस्य तो आपके प्रतीक और प्रतिनिधि है। आपके उत्साह वर्धक सहयोग और प्रेरणा से ही वे अपने दायित्व को पूर्णकर सकेंगे। अतः आर्य बन्धुओ से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के अन्तरङ्ग सदस्य बन्धुओं को सहयोग देकर उनके कार्य म हाथ बटावें। साधारणतया यह मनोवैज्ञानिक धारणा काम किया करती है कि इतने सारे लोग काम कर रहे हैं हम कुछ न भी करें तो भी काम तो हो ही जायगा परन्तु यह मनोवृत्ति पलायनवादी और समाज की प्रगति मे बाधक है। अपने कर्तव्य को भूल पर मुखापेक्षित्व एक बहुत बड़ी गलती है आशा है आर्य बन्धु विशेष कर उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धु अपने दायित्व को अनुभव करेंगे और अपने गौरव के अनुरूप कार्य में जुट जायगे। एक दिन का समय और एक दिन की आय जैसी छोटी मांग को पूर्ण करना प्रत्येक समाज हितैषी के लिए सम्भव है। यदि हम अपने विचारो और कार्यों को व्यावहारिक रूप देने के लिए इतना भी नहीं कर सकते तो हमारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा दिवा स्वप्न ही समझा जाना चाहिए।

जयन्ती की सफलता हमारी परीक्षा की कसौटी है। प्रत्येक आर्य इसकी सफलता मे जुट जाय यही आज का कर्तव्य सन्देश है।

आर्यमित्र के पांच हजार ग्राहक

प्रचार के एकमात्र साधन पत्र की उन्नति ही उस समाज को योजनाओ व कार्यक्रमो की सफलता का कारण बनती है परन्तु यदि हमारे पास तलवार हो और उसमे जंग लगी रहे तो तलवार होते हुए भी वह किस काम की। इसी प्रकार आपके पास प्रचार का साधन पत्र हो पर वह स्वावलम्बी और व्यापक न हो, तो सारी शक्ति उसके बनाये रखने मे ही लगानी पड़ती है। आर्यमित्र आर्य जगत् के विचारो के प्रचार प्रसार का एकमात्र साधन है परन्तु इतने दीर्घ जीवन के पश्चात् भी पर्याप्त ग्राहक संख्या का न होना अपने कर्तव्य के प्रति आर्य बन्धुओं की उदासीनता का ही प्रतीक है।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के सुवर्ण

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

अवसर पर हम आर्यजगत् से सादर अनुरोध करना चाहते हैं मित्र आपका है और उसे अपना कर आप अपने विचारों के प्रसार में सहायक बनिये। आर्य समाज के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के लिए मित्र के प्रयत्न आपके सम्मुख हैं। आप गम्भीरता पूर्वक विचार कीजिये कि मित्र के प्रति आप क्या कर्तव्य पालन कर सकते हैं। अधिकतम ग्राहक संख्या और विज्ञापन से आय, ये दो ही साधन पत्र को स्वावलम्बी बनाते हैं। आर्यमित्र एक विशेष प्रकार के विज्ञापन ही स्वीकार कर सकता है। (बाजारू अश्लील) विज्ञापन मित्र में स्थान नहीं पा सकते। अतः विज्ञापन की आय अत्यन्त सीमित रहने के कारण ग्राहक संख्या का विकास ही पत्र की उन्नति का साधन है। मित्र की ओर से हम विश्वास दिलाना चाहेंगे कि ग्राहकों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ मित्र को अधिकाधिक आकर्षक और उपयोगी बनाने में हम कोई कसर न रहने देंगे। मित्र इस अंक के साथ ६१ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस सुदीर्घ जीवन के कारण अपनी उपयोगिता के महत्व को अनुभव करता है परन्तु भावी जीवन में अपने प्रेमियों के स्नेह सहयोग की आकांक्षा के साथ आगे बढ़ना चाहता है। आशा है आर्य समाज के प्रचार व प्रसार के महत्व को दृष्टि में रखते हुए मित्र की उपयोगिता को स्वीकार किया जायगा और उसकी ग्राहक संख्या बढ़ाकर आप उसे स्वावलम्बी बनाने में अवश्य सहयोग प्रदान करेंगे।

क्रांतिकारी सम्मेलन

पिछले दिनों भारत की राजधानी में भारत के स्वाधीनता संघर्ष में रक्त क्रान्ति के आदर्श को सामने रखकर अंग्रेजों के साथ संघर्ष करने वाले जीवित क्रान्तिकारियों का एक सम्मेलन हुआ। इस प्रकार के सम्मेलन का स्वागत करते हुए हम कहना चाहेंगे कि राष्ट्र ने बहुत समय पीछे अपने कर्तव्य का पालन किया है। जीवित क्रान्तिकारी भी हमारे लिए उसी श्रद्धा के भाजन हैं जितने हुतात्मा क्रान्तिकारी।

सम्मेलन ने क्रान्तिकारी संघर्ष का वृहत् इतिहास लिखने के लिए समिति नियुक्त की है। भारत सरकार इस कार्य को अब तक नहीं कर सकी यह महान् खेद का विषय है। साथ ही शहीदों की स्मृति में एक दिवस मनाये जाने की मांग भी अपना महत्व रखती है। आशा है सरकार उस पर विचार करेगी। हम जीवित क्रान्तिकारियों को उनके तप-त्याग और निष्ठा के लिए बधाई देते हैं और शहीद क्रान्तिकारियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बिस्मिल, भगतसिंह आदि के जीवन का अनुकरण करने की देश के नवयुवकों को प्रेरणा देते हैं।

गो-रक्षा सम्मेलन

दिल्ली में दिलीप नगर में गोरक्षा सम्मेलन भारतीय जनता की भावनाओं के प्रतीक में सफल और प्रेरणा प्रद सम्मेलन रहा।

गौ का भारतीय जीवन के साथ जो अभिन्न सम्बन्ध है उसके पीछे किसी अदृश्य या काल्पनिक महत्ता का प्रश्न नहीं है। गौ व्यावहारिक रूप में मानव के लिए मां है। मातृत्व के महान् पद पर बिठाकर भी हम उसका बाजारू मोल करना चाहते हैं इससे अधिक हमारे भौतिक दृष्टिकोण की क्या व्याख्या हो सकती है।

सम्मेलन के भाषणों और प्रस्तावों मे गौ की असाम्प्रदायिकता और मानवी उपयोगिताओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए सरकार से माँग की गयी है कि वह भारतीय बहुमत की भावनाओं का आदर करते हुए भारत में गोवध बन्द करने के आदर्श का पालन करे और अविलम्ब सारे राज्यों में गोवध निषेध कानून लागू किया जाय।

जनता से भी अनुरोध किया गया है कि वह गो संरक्षण की ओर विशेष ध्यान दे। वास्तव में गोपाल भारत अपने गौरव और उत्तरदायित्व को भूल बैठा है। ऋषि दयानन्द ने "गो करुणानिधि" के रूप में जो प्रेरणा भारत ही नहीं मानव जाति को दी थी वह आज भी हमारे कर्तव्यों का स्मरण कराती है। सरकार, जनता के साथ साथ समाज का भी इस दिशा में बहुत बड़ा दायित्व है। हमें भी इस प्रश्न की गम्भीरता और राष्ट्रीय एवं मानवीय उपयोगिता को समझना चाहिए और उसके लिए व्यापक एवं संघटित प्रयत्न करना चाहिए। आशा है आर्यजन इस प्रश्न पर विचार कर कर्तव्य निर्धारण करेंगे।

झंडा दिवस और नौकरशाही

इस वर्ष झण्डा दिवस ५ दिसम्बर को मनाया गया। झण्डा दिवस जिस पवित्र आदर्श भावना से मनाया जाता है ब्रिटिश समय में उससे मतभेद हो सकता था पर आज सभी उसके महत्व को स्वीकार करते हैं। अतः उसके महत्व के विषय में हमें इस समय कुछ नहीं कहना। हां इस अवसर पर मिली एक सूचना की टिप्पणी करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

प्रतिवर्ष झण्डा दिवस ७ दिसम्बर को मनाया जाता था पर चूंकि इस वर्ष ७ दिसम्बर को इतवार था और ६ दिसम्बर को शनिवार के कारण कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश हो जाता और कार्य न हो पाता अतः ७ और ६ के स्थान पर ५ दिसम्बर निश्चित किया गया।

हम इस सूचना को क्या समझें क्या आराम हराम है का नारा लगाने वाले प्रधान मन्त्री की शासकीय मशीन के नौकर शाही पुर्जों की आराम तलबी मनोवृत्ति का यह नग्न चित्र नहीं है?

क्या इसी प्रकार यदि १५ अगस्त, २६ जनवरी, २ अक्टूबर को इतवार पड़ेगा तो उन तारीखों के कार्यक्रम भी परिवर्तित न कर दिये जाया करेंगे? दुख तो तब और भी अधिक बढ़ जाता है कि जब हम इस मनोवृत्ति का आरम्भ सुरक्षा विभाग की ओर से हुआ देखते हैं।

क्या हमारी सरकार नौकरशाही की मनोवृत्ति पर कार्य कुशलता और कर्तव्य भावना को विजयी बनाने में कभी सफल न हो सकेगी, आज इस प्रश्न पर राष्ट्र को गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए।

वरान्निकोव का क्षोभ

भारत में रूस के सांस्कृतिक सम्पर्क अधिकारी श्री वरान्निकोव के शब्द सुनकर ऐसा कौन होगा जो अपने नेताओं की भूल के कारण लज्जित न होगा। श्री वरान्निकोव संस्कृत हिन्दी के विद्वान् हैं और भारत की प्रत्येक सांस्कृतिक गतिविधि में उत्साह भाग लेते हैं। उज्जयिनी के कालिदास जयन्ती समारोह पर आयोजित कार्यक्रमों में आप भी निमन्त्रित थे। आपने वहां पर कार्यवाही और भाषाओं में प्रयुक्त होने वाली भाषा को देखकर दुख प्रकट किया और कहा है—

'मुझे ऐसा लगा मानो मैं उज्जयिनी नहीं लन्दन में बैठा हूं। यदि मुझे ज्ञात होता कि जयन्ती में सारा कार्य और भाषण अंग्रेजी मे ही होंगे तो मैं कभी सम्मिलित न होता।'

भारत के स्वाभिमान की दुहाई देने वाले हमारे नेता दूसरों के शब्दों में अपनी मानसिक गुलामी की तस्वीर को देखें।

हमारे राष्ट्रपति इण्डोनेशिया की संसद् में सारा कार्य इण्डोनेशियाई भाषा में होता देखकर दंग रह गये। वहां भारत से बाद स्वतन्त्रता ने पर रक्खे पर उन्होंने अपने स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने वाली उस भाषा को हमसे कई वर्ष पहले निकाल फेंका।

भारत के स्वाभिमान को अगर वरान्निकोव की चपत लगा सकी तो हम समझेंगे हम जल्दी सम्हल गये नहीं फिर शीघ्र ही कोई इसी प्रकार ताड़ना कर अपमानित कर बैठेगा।

★

सूचना उपदेश विभाग

सभा से सम्बन्धित समस्त उपदेशकों व प्रचारकों को सूचित किया जाता है कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती व श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एवं श्री गङ्गाप्रसाद जी रि० चीफ जज अभिनन्दन समारोह और गुरु विरजानन्द दण्डी धाम उद्घाटन महोत्सव सम्बन्धी वृहत् कार्य निकट आ गया है। इसके प्रचार करने तथा योजनाओं को घर-घर पहुंचाने का भार जहां प्रत्येक आर्यसमाजी पर है वहां आपके विशेष सहयोग की आवश्यकता है। अतः आप जहां भी हों या जहां के लिए प्रचार करने का आदेश दिया जाय वहां आप तुरन्त पहुंचकर इस स्तुत्य कार्य में प्राणपण से जुट जाएं जिससे इस परम पुनीत महोत्सव को सफल बनाया जा सके।

नोट—आर्यमित्र में तत्सम्बन्धी लेखों और योजनाओं को ध्यान से पढ़ने की कृपा करें जिससे कि अपने व्याख्यान में उन पर भलीभांति प्रकाश डाल सकें।

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

गढ़वाल की आर्यसमाजों से

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा आयोजित आर्यमित्र हीरक जयन्ती, विद्वदभिनन्दन और गुरुधाम स्मारक समारोह के लिए आर्यसमाज जावली आदि पंचपुरी गढ़वाल ने ५१) रुपये दिये। पंचपुरी समाज का यह सहयोग गढ़वाल की अन्य समाजों के लिए अनुकरणीय है। आशा है कि गढ़वाल की समस्त जागृत समाजें और आर्य जनता इस विशेष अवसर पर अपने कर्तव्य का पालन करेंगी और इस विशाल समारोह में अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करके यश के भागी बनेंगी। इन पर्वतीय दुर्गम कन्दराओं में जहां यातायात की असुविधाओं के कारण आर्य उपदेशकों और प्रचारकों का आना जाना कठिन होता है वहां 'आर्यमित्र' पहुंच कर वेद और ऋषि के सन्देश को पहुंचाकर एक सच्चे मित्र का काम करता है। ऐसे सच्चे मित्र की हीरक जयन्ती मनाने में किसे हर्ष नहीं होगा। जयन्ती समिति की ओर से छपे हुए आकर्षक नोट पहुंच गये हैं कृपया उनके द्वारा धन-संग्रह में पूर्ण योग दीजिए। अब तक गढ़वाल ऐसे किसी भी आयोजन में पीछे नहीं रहा और अब न रहेगा। इन अवसरों से प्रेरणा लेकर गढ़वाल के आर्यजगत् में आई हुई शिथिलता दूर करके जागृति शंख फूंकना चाहिये। —शान्तिप्रकाश 'प्रेम'

अन्तरङ्ग सदस्य व निरीक्षक गढ़वाल आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

सिद्धान्त-विमर्श

कर्मफल मीमांसा

श्री बाबू कालीचरण जी के अनोखे विचारों की समीक्षा

[श्री विश्वनाथ, आर्योपदेशक धर्म शिक्षक डी०ए०वी०नारंग इण्टर कालेज घुघली]

शास्त्र और तर्क सम्मत कर्मफल व्यवस्था सर्वथा सरल है, परन्तु कल्पना के संसार में रहने वाले महानुभावों ने इसे बहुत जटिल बना दिया है।

१—आर्यमित्र २१.८.५८ में बाबू जी लिखते हैं—कर्मफल के साथ समवाय सम्बन्ध है परन्तु फल का साधन के साथ समवाय सम्बन्ध नहीं। समीक्षा—इस विषय में आपने शास्त्र प्रमाण तो दिया ही नहीं, तर्क भी कोई उपस्थित नहीं किया, केवल प्रतिज्ञामात्र लिख दी। तर्क से ऐसा कभी सिद्ध नहीं किया जा सकता। उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन कर्म का स्वरूप है। इनसे जब किसी इष्ट पदार्थ का योग और अनिष्ट पदार्थ का वियोग होता है तो सुख प्राप्त होता है। इसके विरुद्ध अनिष्ट वस्तु की प्राप्ति और इष्ट के वियोग से दुःख होता है। जब हम अपने इस कर्म से किसी अन्य जीव को सुख पहुँचाते हैं तो वह पुण्य कर्म होता और हानि पहुँचाते हैं तो पाप कर्म बन जाता है। यदि हमारे कर्म से किसी पदार्थ का संयोग वियोग न हो तो उससे अपने वा दूसरे को कोई सुख दुःख नहीं होता। यदि ऐसा दैव योग से हो जावे अथवा किसी अन्य जीव की चेष्टा से हो तो भी पाप पुण्य की व्यवस्था नहीं होती।

हमने हाथ की गति देकर विषाक्त खाद्य मुँह में डाल लिया तो रुग्ण हो गये या मृत्यु हो गई। इसी प्रकार हाथ को गति देकर औषधि को मुँह में डाला तो रोग मुक्त होकर सुख अनुभव करने लगे तथा इसी प्रकार हाथ को गति देकर केवल मुँह का स्पर्श ही किया तो कुछ भी न हुआ। यहाँ पर एक ही कर्म है पर साधनों की भिन्नता से वह सुख दुःख का कारण और भी व्यर्थ सिद्ध हुआ। अतः सुख दुःख रूपी फल के साथ साधन का समवाय सम्बन्ध सिद्ध हुआ न कि कर्म का।

२—बाबू जी मानते हैं कि मनुष्य बिना कर्म के दुःख या सुख प्राप्त नहीं कर सकता। प्रत्येक सुख अथवा दुःख के लिए कर्म आवश्यक है। परन्तु कर्मफल भोगने में साधन कोई भी हो सकता है। किसी निश्चित साधन का उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं, इसलिए कर्ता का कर्म के साथ और कर्ता के कर्म का सुख दुःख से समवाय सम्बन्ध है।

समीक्षा—ऊपर हमने दिखाया है कि कर्म का दुःख सुख के साथ समवाय सम्बन्ध नहीं। परन्तु जैसा कि आपने आगे लिखा है आपका आशय पिछले जन्म के कर्मों के फल का है। पिछले जन्म के कर्मों का फल प्रारब्ध रूप में ईश्वर की तरफ से दिया जाता है, यह आपने भी माना है। इस अवस्था में पाप और पुण्य की व्यवस्था ही नहीं रहती। कोई व्यक्ति जब किसी को सुख दुःख पहुँचाता है तो जब यह व्यवस्था ईश्वर की तरफ से है, तो उस व्यक्ति की इस कर्म में स्वतन्त्रता न रहेगी। तब उस पर इसका उत्तरदायित्व कैसे हो सकता है? इस अनोखी कल्पना के करने वाले कहा करते हैं कि ईश्वर की ओर से दुःख सुख की व्यवस्था होने वाली थी कि उस व्यक्ति ने अपनी स्वतन्त्रता से यह कर्म कर दिया। परन्तु इस ईश्वरीय व्यवस्था का क्या प्रमाण? जबकि किसी व्यक्ति को अपने वा दूसरे के स्वतन्त्र कर्म अथवा दैव योग के बिना दुःख सुख होता ही नहीं और इनमें ईश्वरीय प्रेरणा की व्यवस्था दिखाई नहीं देती। और इनसे यह भी नहीं हो सकता कि ईश्वरीय व्यवस्था में उस व्यक्ति को जितना सुख दुःख मिलना है उतना ही मिले। अतः सुख दुःख बिना प्रारब्ध कर्म के भी होता है। पाप पुण्य इसी अवस्था में हो सकता है।

३—कुछ विचारकों ने कर्म फल और कर्म प्रभाव एक ही मानकर कर्म सिद्धान्त के साथ न्याय नहीं किया है।

समीक्षा—सुख दुःख भी तो कर्म के प्रभाव का नाम ही है इसलिये दोनों एक ही हैं। हाँ! डाक्टर के आपरेशन की भाँति कोई कर्म पहले दुःख और पीछे सुख उत्पन्न करता है तो वह पुण्य कर्म ही होता है और एक वञ्चक पहले आशा दिलाकर सुख उत्पन्न करता है पीछे धनादि के अपहरण से दुःख देता है तो यह उसका पाप कर्म ही गिना जावेगा।

४—इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म में अथवा जन्मों में मिलेगा इस ही जन्म में कदापि नहीं।

समीक्षा—प्रारब्ध कर्मों के लिए तो बात ठीक है परन्तु प्रारब्ध के बिना भी जो कर्मफल होता है। वह तो इसी जन्म में मिलता है। महर्षि दयानन्द ने पुण्य कर्म का फल कीर्ति तो इसी लोक में लिखा। वास्तव में देखा जावे तो कोई भी फल केवल प्रारब्ध ही का नहीं होता उसमें इस लोक का पुरुषार्थ भी सम्मिलित रहता है।

क्लेश मूल कर्माशयो दृष्टादृष्ट जन्मवेदनीय। योग २।१२

क्लेश का मूल कर्मफल में दृष्ट यह जन्म और अदृष्ट पिछला जन्म जानना चाहिए। सुमन्त्रिते सुविक्रान्ते सुकृते सुविचारिते सिद्धान्त्यर्था महाबाहो दैव चात्र प्रदक्षिणम्। परस्पर ऊहापोह पराक्रम सुविचार और विधि पूर्वक कर्म से हे लक्ष्मण अर्थ सिद्ध होते हैं। प्रारब्ध तो सहायक मात्र होती है। वा० रा० राम वाक्य

एवं हठाच्च दैवाच्च स्वभावात्कर्मणा फलम्। महाभारत वन ३२।४०

यदृच्छा, प्रारब्ध स्वभाव और कर्म (पुरुषार्थ) मिलकर फल उत्पन्न करते हैं। यथाह्येकेन चक्रेण न रथस्य गति र्भवेत्। एवं पुरुष कारेण बिना दैव न सिध्यति। जैसे एक चक्र से रथ नहीं चलता ऐसे ही पुरुषार्थ बिना प्रारब्ध की सिद्धि नहीं होती।

इन प्रमाणों से सिद्ध है कि फल की प्राप्ति दैव और पुरुषार्थ मिलकर उत्पन्न करते हैं। इनमें पुरुषार्थ मुख्य और प्रारब्ध गौण होता है। कर्म सिद्धान्त का वास्तविक रूप इस प्रकार मानना उचित होगा—

(१) फल—का अभिप्राय यद्यपि सुख दुःख ही होता है, परन्तु वह साधन बिना सम्भव नहीं। अतः फल का अर्थ सुख दुःख की सामग्री जुटाना ही है।

(२) यह फल दो प्रकार का होता है। संयोग जन्य और न्याय जन्य। संयोग जन्य फल इष्टानिष्ट पदार्थ के किसी प्रकार से संयोग वियोग से सुख दुःख प्राप्त होना ऊपर वर्णित हो चुका है। संयोग वियोग ही इसका कारण होता है, इसमें किसी अन्य शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। द्वितीय न्याय जन्य फल यह बिना किसी न्यायाधीश के सम्भव नहीं। यह भी लौकिक राजा आदि के द्वारा दिया गया और पारलौकिक ईश्वर द्वारा दिया गया दो प्रकार का है। इनमें ईश्वर प्रदत्त ही प्रारब्ध कहलाता है। दोनों की दृष्टि में संयोग जन्य कर्मफल की गणना नहीं होती। ये दूसरे जीवों को सुख दुःख पहुँचाने वाले पुण्य पाप कर्म के फल ही होते हैं। लौकिक न्याय जन्य फल नियमित न होने से प्रारब्ध की दृष्टि में इसकी भी गणना नहीं होती।

(३) ईश्वर की ओर से मानव के पाप पुण्य कर्म और जीवन भर के कर्म संस्कारों की दृष्टि से जीव के सुधार के लिए दूसरी योनी दी जाती है। इससे भिन्न कोई अन्य ईश्वरीय विशिष्ट प्रेरणा सिद्ध नहीं होती योनिमन्ये प्रपद्यन्ते यथा कर्म यथा श्रुतम्। कठोपनिषद्।

(४) जन्म से कर्मों का फल—सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगः। योगदर्शन जाति मानव अथवा पशु आदि जाति। मानव शरीर में स्वास्थ्य, बल, सौन्दर्य, मस्तिष्क आदि। भोग, धन, धान्य, ऐश्वर्य आदि। आयु जब तक जीना है। इस आयु तक यदि कर्म फल का भोग पूरा न हो तो वे कर्म संचित होकर प्रारब्ध के साथ अगले जन्म में फल देते हैं। आयु सांसों पर नियत नहीं न ही घड़ी की गारंटी की भाँति केवल इसका कारण ईश्वर की सर्वज्ञता है। अर्थात् ईश्वर पहले ही जानता है कि इसने कब मरना है। इसके बिना तो भोग का निश्चय भी नहीं हो सकता ईश्वर ने एक जीव को धनी के घर में उत्पन्न किया, वह एक वर्ष पश्चात् निर्धन हो गया। यदि ईश्वर को इसका पहले ज्ञान नहीं तो जीव सुख के स्थान दुःख भोगेगा।

(५) प्रत्येक सुख दुःख के भोग में महाभारत निर्दिष्ट प्रायः कारण होते हैं। कल्पना करो कि एक उच्च शिक्षा के विद्यार्थी ने भारत सरकार के उच्च पद की परीक्षा दी और उसमें निर्वाचित होकर उस पद पर आरूढ़ होकर तत्सम्बन्धी सुख भोगने लगा। इसका सबसे बड़ा कारण तो उसके पढ़ने का कर्म पुरुषार्थ ही है। पढ़ते पढ़ते जो परीक्षा लिखने का स्वभाव है वह पुरुषार्थ को बल देने वाला होता है अतः स्वभाव के पुरुषार्थ अधिक

(शेष पृष्ठ ६ पर)

[गतांक से आगे]

गीता और आर्यसमाज

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद एम० ए० रि० चीफ जज]

श्री जज साहब ने गीता की आर्यसमाज के दृष्टिकोण से समीक्षा करते हुए उसकी महत्ता प्रतिपादन किया है। आपने यह भी सुझाव दिया है कि सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के विद्वन्मण्डल को चाहिए कि गीता के सम्बन्ध में तथ्य निर्णय करें और विचार विमर्श के पश्चात् जो निर्णीत विचार हों उन्हें आर्यसमाज में मान्यता दी जाय। आर्यसमाज में गीता के सम्बन्ध में जो दो प्रकार की विचारधारायें हैं उनका निर्णय अवश्य हो जाना चाहिए। आशा है इस लेख के आधार पर धर्मार्य सभा इस विषय को अपने विचारणीय विषयों में सम्मिलित कर लेगी और आर्य जनों का पथ-प्रदर्शन करेगी। —सम्पादक

यह स्पष्ट ही है कि इन श्लोकों में वैदिक कर्म काण्ड के क्रिया कलाप की लघुता बतलाई गई है। वेदों की निन्दा से कदापि अभिप्राय नहीं हो सकता। गीता के अन्य स्थानों में वेदों के लिए सदा पूर्ण श्रद्धा प्रकट की गई है। श्री महादेव देसाई जी ने महात्मा गांधी की गीता पुस्तक में ४६ श्लोक पर यह नोट लिखा है—जिस दशा में 'वेद' शब्द का अर्थ वैदिक कर्म काण्ड स्वीकार किया जाय तो विवाद के लिए कोई स्थान नहीं रहता।'

१०—श्लोक ४५ पर कुछ और लिखने की आवश्यकता है। 'त्रैगुण्य विषया वेदाः' का अर्थ यही है कि वेदों में त्रिगुणात्मक पदार्थों का वर्णन है। सो होना ही चाहिए, क्योंकि वेद मनुष्य मात्र के लिए हैं। वे केवल ब्राह्मणों या सन्यासियों के धर्म ग्रन्थ नहीं। वेद सब वर्णों और आश्रमों के हैं। सनातन धर्मी लोगों ने वेदों पर यह घोर अन्याय किया था कि स्त्री व शूद्रों को उनसे वर्जित कर दिया था। आर्य समाज के लिए बड़े गौरव की बात है कि नीच से नीच पुरुष या स्त्री को वेद पढ़ने का समान अधिकार उसके प्रयत्न से सुरक्षित हो गया है।

मैंने 'सविता' के अगस्त १९५६ के अंक को पढ़ा उसमें श्री विदेह जी ने यह लिखा है—

'त्रैगुण्य विषया वेदाः का सीधा अर्थ यह है कि वेदों में केवल प्रकृति का अथवा त्रिगुणात्मक विषयों का ही उल्लेख है, 'न अन्यत् अस्ति।' उनमें अन्य अर्थात् त्रिगुणातीत (आध्यात्मिक अथवा ब्रह्म परक) कुछ भी नहीं है।' ऊपर का उद्धरण भ्रमोत्पादक है। वेदों में अधिक त्रिगुणात्मक विषय ही होंगे क्योंकि संसार में भी अधिक प्राकृत पदार्थ हैं। परन्तु वेदों में त्रिगुणातीत और आध्यात्मिक विषयों की कमी नहीं। श्री विदेह जी के शब्दों का गीता के किसी श्लोक में कोई आधार नहीं। उपर्युक्त विचार लिखकर वेद के प्रति उन्होंने भूल की है। प्रतीत होता है श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को जो यह उपदेश दिया 'निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन', उसका तात्पर्य स्पष्ट है। अर्जुन कृष्ण जी का साधारण शिष्य नहीं था। श्री कृष्ण का अभिप्राय उसको गुणातीत बनाना था, जो सात्विक से भी ऊंचा होता है, और जिसकी व्याख्या गीता के अ० १४ के २१-२६ श्लोकों में की गई है। अर्जुन के लिए वैदिक कर्म काण्ड का क्रिया कलाप कदापि उपयुक्त नहीं था। परन्तु वेदों के ज्ञान काण्ड में वह आध्यात्मिक ज्ञान भरा पड़ा है। उसी से सब उपनिषद् बने हैं। इसी-लिए उनका नाम 'वेदान्त' भी है।

११—गीता में 'सिद्धान्त' का तीसरा प्रश्न आर्य समाज का त्रैतवाद है जिसके अनुसार ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन पदार्थ अनादि हैं। पर इसके विषय में कोई आपत्ति का स्थान नहीं। अध्याय १३ के ये श्लोक हैं—

'प्रकृति पुरुषं चैव विद्धानादी उभोवपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवान्॥ २०

कार्य कारण कर्तृत्वे हेतु प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुख दुःखानां भोक्तृत्वे हेतु रुच्यते॥ २१ पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृति जानगुणान। कारणं गुण सगोऽस्य सदसद्योनि जन्मसु ४

अर्थ—प्रकृति व पुरुष इन दोनो को अनादि जानो। विकार व गुणों को प्रकृति से बना समझो। (यहाँ पुरुष से तात्पर्य जीवात्मा व परमात्मा दोनों ही से हैं)। कार्य कारण के कर्तृत्व में प्रकृति ही हेतु है। पुरुष सुख दुखों के भोगने में हेतु कहा जाता है।

पुरुष प्रकृति में ही स्थित प्रकृति के गुणों का भोग करता है। इसी कारण से उसके अच्छे व बुरे जन्म होते हैं।

गीता पर आर्यसमाज का मत—

१२—गीता मे आर्य समाज की ओर से सिद्धान्त की दृष्टि से मुख्य तीन ही प्रश्न होते हैं जिनका ऊपर समाधान किया गया। छोटे मोटे प्रश्न सिद्धान्त के और बहुत हो सकते हैं। उनका विचार करना असम्भव है। सन् १९५६ के जून मास के सार्वदेशिक अङ्क में मेरा एक लेख 'गीता और आर्य समाज' शीर्षक से छपा था। मैंने उसमे यह सुझाव रक्खा था कि सार्वदेशिक धर्मार्य सभा को चाहिए कि वह गीता के विषय पर अपना निश्चित मत प्रकट करे। मैं उस सुझाव को पुनः दोहराता हूं। यदि सार्वदेशिक सभा के आदेश से धर्मार्य सभा ने गीता पर विचार करने का कार्य आरम्भ किया तो एक साधारण सदस्य के नाते मैं भी उसमें भाग लेने का यत्न करूंगा।

१३—श्री अरविन्द घोष का गीता पर मत। श्री अरविन्द ने Essay on Gita पुस्तक में गीता पर उत्तम भाष्य लिखा है। उसमें उसने ब्रह्म के कई स्वरूप माने हैं जिनमें सगुण व निर्गुण भी हैं। पुरुषोत्तम को उसने सबसे उच्च स्वरूप माना है।

गीता की शिक्षा के विषय में उनका मत है कि गीता की शिक्षा शुद्ध अद्वैतवाद नहीं है, न मायावाद है, न विशिष्टाद्वैत है, न सांख्य है, न वैष्णव ईश्वरवाद है। वह इन सब का एक आश्चर्य जनक समन्वय है। एक समन्वय वेदान्त समन्वय से आरम्भ होता है, वह उपनिषदों से आरम्भ हुआ था, और वे वेदों से निकले। अन्त में एक नवीन मूल्यवान और विशाल समन्वय होना भविष्य के लिए परमावश्यक है, और उसमें गीता का सबसे अधिक महत्व पूर्ण भाग होगा (एसेज ऑन गीता पृष्ठ १२-१३)।

श्री अरविन्द के अन्तिम वाक्य बड़े महत्व के हैं। उनमें एक विश्व धर्म के बनने की भविष्यवाणी है और उसके निर्माण में गीता का मुख्य भाग होगा। श्री अरविन्द ने अपने ग्रन्थ में गीता पर एक प्रसिद्ध जर्मन तत्वज्ञ वान हम्बोल्ड का मत लिखा है जिस का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है—

'वह शायद सबसे अधिक गम्भीर और पवित्र कृति है जो संसार में कभी हुई हो।' जब उसने पहली बार गीता को पढ़ा तो यह कहा—'मैं अपने भाग्य को धन्य समझता हूं कि मुझको ऐसा ग्रन्थ पढ़ने को मिला।'

१४—गीता उपनिषदों का सार है नीचे लिखा श्लोक देखिये—

सर्वोपनिषदो गावः दोग्धा गोपाल नन्दनः पार्थो वत्सः सुधी भोक्ता दुग्धं गीतामृत महत्।

अर्थ—सब उपनिषद् गौएं हैं। श्री कृष्ण दूहने वाले हैं। अर्जुन बछड़ा है गीता अमृत रूपी दुग्ध है।

इस श्लोक का भाव अक्षरशः सत्य है। गीता उपनिषदों का सार है, जैसे कि उपनिषद् वेदों के सार हैं।

★

कर्मफल मीमांसा

(पृष्ठ ५ का शेष)

सफलता उत्पन्न करता है। दृढ़ इच्छा या परिस्थिति भी कारण होती हैं। अनुकूल परिस्थिति में थोड़े पुरुषार्थ से ही कार्य सिद्धि हो जाती है। प्रतिकूल परिस्थिति में अधिक पुरुषार्थ करना पड़ता है व बहुत पुरुषार्थ से भी सफलता नहीं मिलती। अंगरेजी राज में कोई भारतीय उच्च पद प्राप्त ही नहीं कर सकता था। अब स्वराज्य होने पर अनुकूल परिस्थिति में यह सम्भव हो गया। इसी प्रकार प्रारब्ध अर्थात् ईश्वर प्रदत्त जन्म से मस्तिष्क का उन्नत होना आदि भी कारण हैं जो केवल सहायक मात्र हैं। प्रारब्ध सीमा यहीं तक है, वस्तुतः सब कार्य पुरुषार्थ से ही सिद्ध होते हैं। अतः सब महापुरुषों ने पुरुषार्थ को ही मुख्य रखा है माता कौशल्या ने स्वस्त्ययन् के पीछे श्रीराम को यही कहा 'सिध्यन्तु वः पराक्रमाः' वन में तुम्हारे पराक्रम सफल हों। संसार में सब लोग लक्ष्य को लक्ष्य बनाकर तदनुरूप साधनों पर विचार करके तदनुसार ही परिश्रम पूर्वक पुरुषार्थ करके सफल होता है। परन्तु भोगवादी की सफलता या असफलता प्रारब्ध से होता है। इस जन्म का पुरुषार्थ तो अगले जन्म में फलप्रद होगा अतः उसे लक्ष्य और तदनुरूप साधनों पर विचार और पुरुषार्थ की कुछ भी आवश्यकता न होगी। 'अब जो आग में हाथ पड़ा और जल गया यह तो पिछले जन्म में जो आग में हाथ डाला उसका फल है और जो अब आग में हाथ डाला उसका फल अगले जन्म में मिलेगा। ऐसा मानने से काम नहीं चल सकता। जन्मान्तर भोगवाद का सिद्धान्त मिथ्या कल्पनाओं को जन्म देकर भ्रान्ति का कारण बनता है और जीवन में पुरुषार्थ की महत्ता को ही समाप्त कर देता है। फलदार वृक्षों की भांति ही कर्म के फल की जो बात कही गयी है वह मिथ्या है। कर्म का संयोग जन्य फल तो तत्काल मिल जाता है। न्याय जन्य फल न्यायी के आधीन होता है। कर्म तो तत्काल नष्ट हो जाता है, यह प्रत्यक्ष सिद्ध है।

★

ईसाई प्रचार निरोध-आन्दोलन—

ईसाई पादरियों से सावधान !

[श्री ललिता प्रसाद जी डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

भारत के सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने का जो षड्यन्त्र ईसाई मिश्नरियों द्वारा चल रहा है, उसका उत्तर उन्हीं की मान्यताओं के मिथ्यात्व को प्रकट करके ही दिया जा सकता है। प्रस्तुत लेख में वार्तालाप द्वारा ईसाई धर्म की तथाकथित महत्ता का भण्डाफोड़ किया गया है और साधारण जनता को उससे सावधान किया गया है। —सम्पादक

२६ नवम्बर सन् १९५८ ई० को कार्तिक पूर्णिमा को गंगा स्नान के मेले पर कुछ अमरीकन पादरी कानपुर में 'सरसैया घाट' पर ईसाई मत का प्रचार कर रहे थे, ईसाई मत की पुस्तकें तथा इंजीले वेच रहे थे। और बड़े जोरों के साथ कह रहे थे कि भाइयों इन धार्मिक पुस्तकों को लो। अधिकांश लोग जो ईसाइयों की चालाकियों को नहीं जानते एक एक आने में ऐसी सस्ती पुस्तकें लेकर खुश हो रहे थे, कि इतने में लखनऊ निवासी श्रीयुत रामू भाई आ पहुंचे जो कि मुझे भली भांति जानते हैं। श्री रामू ने आर्य समाज की पुस्तकों का भली भांति स्वाध्याय किया है, उसने ईसाई पादरियों से कुछ प्रश्नोत्तर किये जो कि मैं 'आर्यमित्र' के पाठकों के सम्मुख रखता हूं, जो निम्न लिखित हैं—

रामू—'बाइबिल' की पुस्तक में क्या है ?

पादरी—देखो यह बाइबिल की किताब है। इससे तुमको मुक्ति मिलेगी।

रामू—हम तो सुनते थे कि गंगा नहाने तथा वेदों और शास्त्रों के स्वाध्याय से मुक्ति मिलती है; विद्वान् पण्डितों के उपदेश सुनने और उन पर चलने से मुक्ति मिलती है।

पादरी—नहीं ! नहीं ! गंगा नहाने से मुक्ति नहीं मिल सकती, तुम्हारा पंडित झूठा है, तुमको बहकाता है। तुम बाइबिल का पढ़ेगा तो तुमको सुख मिलेगा। यदि तुम मसीह को भेड़ों में सम्मिलित होकर 'योशु मसीह पर ईमान लावोगे तो तुम्हारे पाप क्षमा कर दिये जांयगें। तुम्हारी शिफारिस 'यीशु मसीह' स्वयं करेगा, और तुम मुक्ति के अधिकारी बन जाओगे।

रामू—मैं भारतीय, अमरीकन तथा योरुपियन पादरियों को आर्य समाज की ओर से शास्त्रार्थ के लिए खुला चेलेंज देता हूं कि वह 'यीशु मसीह' को मुक्ति दाता सिद्ध करें। जबकि स्वयं बाइबिल इससे इनकार करती है। 'बाइबिल' में मुक्ति सत्कर्मों से होनी लिखी है, देखो प्रमाण—

१—'वह हर एक को उसके कर्मों के अनुसार बदला देगा जो सुकर्म मे स्थिर रह कर महिमा और आदर और अमरता का खोज मे है उन्हें वह अनन्त जीवन देगा।' (रामिया, पर्व २ आयत ६ ७ पृष्ठ २८३)।

२—'क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता ··· "क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जायेंगे।' (रोमियों, पर्व २, आयत १२ १३ पृष्ठ २८३)

३—'सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल विश्वास से नहीं वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।' (याकूब, पर्व २, आयत २४ पृष्ठ ४३६)।

४—'मैं शीघ्र ही आने वाला हूं और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।' (प्रकाशित वाक्य, पर्व २२ आ० १२ पृष्ठ ४९६)

५—'धोखा न खाओ परमेश्वर ठट्ठों मे नहीं उड़ाया जाता क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।' (गलतियों, पर्व ६ आ० ७ पृष्ठ ३६०)।

नोट—देखो पादरियों ! बाइबिल से ५ प्रमाण उपस्थित किये है कि मुक्ति विश्वास से नहीं, शुभ कर्मों से ही प्राप्त होती है। यही वैदिक सिद्धांत है, ईश्वर की न्याय व्यवस्था दोष रहित है। जिसमें सिफारिश नहीं चल सकती और न ही कोई मनुष्य अपने किसी मित्र, बन्धु, पीर, पैगम्बर की सहायता से अपने किये पापों के फल लेने से चूक सकता है। ईश्वर ने हर एक जीव के साथ मन रूपी पात्र लगाया है। जो उसमें हर अच्छे बुरे शुभाशुभ कर्मों का सस्कार सुरक्षित रखता है उसके अनुसार फल देना ईश्वरीय नियम है। जैसा बीज कोई बोता है वैसा फल काटता है। ईश्वर की इस न्याय व्यवस्था मे रत्ती भर भी भेद नहीं आता।

पादरी—बिना प्रभु 'यीशु मसीह' पर ईमान लाये आप लोगों की मुक्ति नहीं हो सकता उस पवित्र आत्मा को आसमानी बाप ने 'कुंवारी मरियम' से उत्पन्न किया, वह पवित्र था उसको मनुष्य का हाथ नहीं लगा था, वह हमारा मुक्ति दाता है।

रामू—पादरी साहब ! हम यीशु मसीह की इज्जत करते है किन्तु समझ में नहीं आता है कि वह बिना बाप के कुंवारी से कैसे पैदा हो गये ?

पादरी—वह परमात्मा सर्व शक्तिमान है, सब कुछ कर सकता है।

रामू—बहुत अच्छा तो ऐसे मुक्ति दाता हमारे यहाँ बहुत हैं, देखो कर्ण कान से हो गया, द्रोणाचार्य जी दोने म से निकल पड़े, व्यास जी तथा कुम्भज मुनि घड़े से उत्पन्न हो गए, और गौतम तो खरगोश की दुम से निकल पड़े। आप एक मसीह को लिए फिरते हैं हमारे यहाँ तो यीशु मसीह से बढ़कर पड़े हैं जिनके नाम नहीं सब मुक्ति दाता हैं।

पादरी—देखो जी तुम्हारो बात असत्य है, कहीं कान, घड़े, दोना तथा खरगोश की दुम से आदमी पैदा होता है ?

रामू—हाँ ईश्वर सब शक्तिमान है वह ऐसा कर सकता है, जैसे आपके मसीह कुंवारी से हो सकते हैं, तो हमारे कान से, दोने से, घड़े से और खरगोश की दुम से हो सकते हैं।

पादरी—देखो हमारे यीशु मसीह ने मुर्दों को जिन्दा किया।

रामू—कितने मुर्दों को जिन्दा किया ?

पादरी—कुल दो, एक लड़की और एक आदमी।

रामू—लड़की के बारे में यीशु मसीह ने स्वयं कहा है कि लड़की मरी नहीं सोती है, इस तरह मर्द का हाल है। ऐसा क्यों न जाने कि वह बेहोश थे और जगली लोगो ने मुर्दा जान लिया।

पादरी—नहीं वह तो मुर्दा ही थे, और दोनों को जिलाया।

रामू—अच्छा तो रामायण मे लिखा है कि—'सुधा वृष्टि भई दोऊ दल मांही। जिये भालु कपि निश्चर नाहीं॥' अर्थात् भगवान राम ने लंका विजय के बाद अमृत वर्षा की, जितने बन्दर व रीछ मारे गये थे, वे लाखों की तादाद मे सब जिन्दा कर दिये, अब बताओ पादरी साहब तुम्हारे यीशु मसीह ने केवल दो जिन्दा किये और इनमें भी शक है किन्तु हमारे राम ने तो सब लोगो को अमृत वर्षा कर जिन्दा कर दिये, हमारे राम तो यीशु मसीह से कहीं बड़े हैं फिर तुमको हमारी बात पर इतमिनान लाना चाहिए और आपको शुद्ध हो जाना चाहिए।

पादरी—देखो हमारे यीशु मसीह ने कुछ रोटो व मछलियों से एक बड़ी भीड़ को खिला दिया, क्या यह अनोखा बात या चमत्कार नहीं ?

रामू—नहीं यह भी गप्प है, देखो 'दुर्वासा मुनि' जिनके ८० हजार शिष्य थे। बन में पाण्डवों के पास आये और भोजन माँगा तो भगवान कृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि हे सती तू ही इस काम को पूरा कर द्रौपदी ने एक चावल निकाल कर और उसने आधा कृष्ण को दिया और आधा जरूरत के लिये धोती के पल्ले मे बांध लिया, कृष्ण ने वह आधा चावल भीम को दिया जब भीम ने पतीला मे डालकर चावल बनाया तब एकदम भात का दरिया बहने लगा ८० हजार शिष्य तथा पाण्डवादि सब लोगों ने खाली और जूठन खेत मे डाल दी गई। कहिये पादरी साहब तुम्हारी ठीक जो कुछ रोटियों स भीड़ को खिलाया या हमारी ठीक जो आधे चावल से अस्सी हजार को खिलाया।

पादरी—तुम झगड़ालू आदमी है, हम तुमसे बात करना नहीं चाहता।

रामू—नहीं ! नहीं ! तुम्हारा यीशु मसीह झगड़ालू है। देखो तुम्हारी किताब में लिखा है कि—यह मत समझो कि मैं जमीन पर सुलह करवाने आया हूं सुलह करवाने को नहीं बल्कि तलवार चलवाने का आया हूं। क्योंकि मैं आया हूं कि मर्द को उसके बाप, और बेटी को उसकी माँ, और बहू को उसकी सास से जुदा करूं।' (मत्ती इंजील, पर्व १० आ० ३४ ३५। लूका, पर्व १२ आ० ४९ ५६)

नोट—अमरीकन ईसाई पादरी रामू की बातें सुनकर मेले से दुम दबाकर शास्त्रार्थ के मैदान से रफूचक्कर हो गये और रामू ने वहाँ इकट्ठे हुए लोगों को ईसाई पादरियों से सावधान रहने के विषय पर व्याख्यान दिया जिससे आर्य समाज की बातों का विशेष प्रभाव पड़ा। आर्य समाज के सिद्धान्तों की सर्वाङ्ग विजय हुई। ऐ प्यारे हिन्दुओ, ईसाइयों तथा मुसलमानों से सदैव होशियार रहो। ★

संस्था-परिचय

महान् तार्किक मुनिवर दर्शनानन्द जी का
चेतन स्मारक, महाविद्यालय ज्वालापुर

(ले० श्री पं० बिहारीलाल शास्त्री)

आर्य समाज के अनेक कालेज और गुरुकुल खुले, कालेज तो नाममात्र के वैदिक रह गये। काम में अन्य कालेजों के समान ही बन गये। गुरुकुल या तो अपने पथ से विचलित हो गये या सिसक रहे हैं। पर मुनिवर दर्शनानन्द जी का जीवित स्मारक महाविद्यालय बड़े बड़े आँधी और तूफानों को झेलकर भी आज गौरव के साथ सिर उठाये खड़ा है। यह है मुनिवर स्वामी के तप त्याग का प्रभाव, और महामान्य पंडित महकी की लगन निष्ठा और संस्कृतभक्ति का परिणाम तथा श्रीमान् दानियों के सात्विक दान का फल।

इस अन्ताभाव के समय भी म० विद्यालय मे इतने छात्र हैं कि अब अन्य छात्रो के रहने को स्थान शेष नहीं है कितना आकर्षण है विद्यार्थियों के लिए महाविद्यालय का !

पुराने पंडित यद्यपि अब स्वर्गस्थ हो चुके हैं, उस रम्य वाटिका के हवद्रुमों में तो केवल वेदतीर्थ आचार्य नरदेव शास्त्री ही रह गये हैं ईश्वर इन्हे चिरायु करे पर इन पडितों के संस्कारों से सुसंस्कृत अनेक पडित आज भी महाविद्यालय की सेवा करते हुए पुरातन समय के ब्राह्मणों की याद को ताजा कर रहे हैं। "धन्या इमे पंडिताः" महाविद्यालय के पास न तो कोई बड़ी जादाद है न बैंकों मे प्रचुर धनराशि। केवल भिक्षावृत्ति और विश्वम्भर विश्वास पर ही यह शान के साथ चल रहा है।

महाविद्यालय की शिक्षा कैसी होती है, उसके उदाहरण उसके प्रशसनीय स्नातक हैं। डा० सूर्यकान्त जी, डा० हरिदत्त जी, वागमिवर वाचस्पति जी, जादू की व्याख्यान शक्ति रखने वाले प० प्रकाशवीर जी जैसे स्नातकों पर कि ससंस्था को गर्व न होगा।

महाविद्यालय के स्नातक उपदेशको से ही आज आर्य समाज के उत्सव प्राणवान् हो रहे हैं। व्याख्यान कला विशारद प० रुद्रदत्त जी शास्त्री शास्त्रार्थ कानन केसरी पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री ओजस्वी भाषण के धनी तथा स्वधर्म प्रेम के जोश से सदा प्रदीप्त प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री हमारे उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सभा के गौरव को अपने भाषणों से बढ़ा रहे हैं। ये महाविद्यालय की ही देन हैं।

महाविद्यालय के अन्य भी अनेक स्नातक आर्य समाज की उत्तम सेवा कर रहे हैं विशेषता यह है कि महाविद्यालय के स्नातकों पर आजकल के इज्म और वादो का कोई प्रभाव नहीं देखा जाता वे प्रायः ऋषि दयानन्द के वेदवाद मे ही निरत पाये जाते हैं। स्वदेश, स्वभाषा, स्वसस्कृति स्वसभ्यता पर महाविद्यालय के स्नातक गर्व करने वाले होते हैं। आज सन् ५९ अप्रैल में उसी उपयोगी संस्था की हीरक जयन्ती होने जा रही है। श्रद्धालु आर्य जनता का कर्तव्य है कि इस पुण्य पर्व पर वहाँ पहुंचें और जी खोलकर महाविद्यालय को दान दें।

वैदिक संस्कृति और आर्य राष्ट्रीयता के पोषण चाहने वाले प्रत्येक हिन्दू नर नारी का कर्तव्य है कि यथा शक्ति महाविद्यालय की सहायता में कुछ न कुछ भाग अवश्य ले।

इस समय उत्तरी भारत मे यह वैदिक सस्था पुरातन सस्कृत, साहित्य दर्शन और अध्यात्मका पोषण कर रही है।

बिना जातिवाद और मतवाद के राष्ट्र के बालकों मे पुरातन शिक्षा और संस्कृति का आधान करने में यह विद्यालय प्रसिद्ध रहा है। सहस्रों निर्धन और पिछड़ी जाति के बालकों को इस विद्यालय ने पडित बना दिया अतः यह विद्यालय जनता के दान और सहयोग का यथार्थ पात्र है।

इस स्वर्णावसर पर इसी महा विद्यालय के संस्थापक श्री स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का एक विस्तृत जीवन चरित्र भी प्रकाशित होना चाहिए। इस चरित्र के लिए पं० श्री राम जी शर्मा हींग मण्डी आगरा के पास बहुत अधिक सामग्री है। प्रशसित पण्डित जी पूज्य स्वामी जी के साथ बहुत दिन तक रहे हैं। उन्होंने जो कुछ लिखा है सप्रमाण है और पाठकों के विशेषकर आर्य सिद्धांत प्रेमी पाठकों के बड़े काम की चीज है। श्री स्वामी जी लिखित सब ही पुस्तकों का एक संग्रह भी प्रकाशित होना आवश्यक है। ★

सौ ईसाई आदिवासी हिन्दू बने
'शुद्धि' के लिए और भी आवेदन

११ दिसम्बर को सायंकाल आर्य समाज के प्रधान कार्यालय हजारी बाग डांटा, डांटोकलां और रैबर गांवों के लगभग एक सौ ईसाई आदिवासियों ने हिन्दू धर्म की दीक्षा ली। इस समारोह में भूतपूर्व कांग्रेसी संसत्सदस्य श्री ज्ञानीराम और आर्य समाज के जिला प्रचारक श्री भूपनारायण सिंह भी उपस्थित थे। दर्शक भी लगभग एक हजार की सख्या में उपस्थित थे।

ये आदिवासी कुछ वर्ष पूर्व ईसाई बने थे और उन्होंने बाद में स्थानीय आर्य समाज में आवेदन करके हिन्दू धर्म की पुनः दीक्षा लेने का अपना मन्तव्य प्रकट किया था। पता चला है कि और भी लगभग एक सौ ईसाई आदिवासी परिवारों ने अपनी 'शुद्धि' के लिए आवेदन कर रखा है, जिनका दीक्षा ग्रहण समारोह भी शीघ्र ही सम्पन्न होने वाला है।

समारोह मे श्री ज्ञानीराम ने कहा कि सरकार को ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की जांच निष्पक्ष तौर पर करानी चाहिए। श्री भूपनारायण सिंह ने यह आरोप किया कि मिशनरी आदिवासियों मे हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति के विरुद्ध घृणा का प्रचार कर रहे हैं; उन्होने यह मांग की कि ईसाई पादरियों की गतिविधियां नगरी क्षेत्र तक ही सीमित कर दी जानी चाहिए। उन्होने यह भी कहा कि ये लोग राष्ट्र विरोधी बातो का भी जहां तहां प्रचार करने से बाज नही आते। यह आवश्यक है कि कैथोलिक मिशनों को बड़े बड़े भूमि खंडो का खरीदने और जिले के भावरी पहाड़ी क्षेत्रो मे भवन निर्माण करने से रोका जाय।

हजारीबाग जिले के आदिवासी जनसमुदाय के मुखिया श्री चारा उरांव ने कहा कि ईसाई धर्म की दीक्षा के लिए ईसाई मिशनरियो द्वारा धमकी देने तथा लोगो को लाचार करने की प्रवृत्ति बहुत ही निन्दनीय है। स्मरण रहे, श्री उरांव एक वर्ष पूर्व ईसाई धर्म से हिन्दू धर्म मे शुद्धीकरण द्वारा प्रविष्ट हुए थे।

स्वर्ण जयन्ती के सुअवसर पर श्री स्वामी दर्शनानन्द जीवन चरित्र प्रकाशित होगा
आर्य जन घटनाएं और संस्मरण भेजें

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की ५० वर्षीय स्वर्ण जयन्ती ९ अप्रैल १९५९ से १५ अप्रैल १९५९ तक, १ सप्ताह तक होने जा रही है। इस अवसर पर श्री स्व० स्वा० दर्शनानन्द जी महाराज का एक सचित्र जीवन चरित्र भी प्रकाशित किया जा रहा है।

समस्त आर्य समाजों तथा आर्य जगत् के सम्मानित महानुभावों से निवेदन है कि श्री स्व० स्वामी जी के सम्बन्ध में जो घटनाएं उन्हें प्रतीत हो अविलम्ब श्री प० नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ के नाम भेजने की कृपा करें।

उक्त जीवन चरित्र का सम्पादन हमारे सौभाग्य से शास्त्री जी के द्वारा ही हो रहा है। ऐसा न हो कि कोई घटना प्राप्त न होने से छूट जाय। अतः विशेष ध्यान देकर इस कार्य में हमारा सहयोग करें।

भवदीय

नन्दकिशोर, मुख्याधिष्ठाता

आवश्यकता

कार्यालय से पत्र व्यवहार के समय

अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखें

साहित्य-समीक्षण

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें । –सम्पादक)

डा० वर्नियर की भारत यात्रा

मूल लेखक–डा० फ्रैंक्विस वर्नियर फ्रान्स, संशोधक एवं सम्पादक—पं० रामेश्वराचार्य शास्त्री, प्रकाशक—राष्ट्र-निधि प्रकाशन, ४४२१ नई सड़क दिल्ली ६ । प्रथम संस्करण । पुस्तकाकार । पृष्ठ सं० ३२४ । मूल्य ४।।) रु० कागज सफेद, छपाई साफ । रङ्गीन व कलात्मक आवरण पृष्ठ ।

प्रस्तुत पुस्तक के सम्बन्ध में आम तौर से यह विचार प्रसिद्ध है कि डा० वर्नियर ने इसमें भारतीय वीरों तथा मुगल बादशाहों की गतिविधियों का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है । घटनाओं के वर्णन को लेखक ने वास्तविक ही रखा है और इसमें अपनी ओर से कोई मिलावट नहीं की है । पं० रामेश्वराचार्य शास्त्री ने इसका संशोधन करके इसे और भी अधिक वास्तविक बना दिया है ।

वीरभूमि राजस्थान के राजघरानों में उत्पन्न उदयपुर, जयपुर, जोधपुर आदि के राजपूत वीरों की वीरता का बड़ा ही सजीव वर्णन डा० वर्नियर ने इस पुस्तक में किया है और बड़े खुले शब्दों में यह प्रमाणित करके दिखाया है कि हिन्दू राजाओं के पास जो सेना, सम्पत्ति, विद्या, बुद्धि, वीरता, आदि थी वह मुगल बादशाहों से कहीं अधिक थी, दुर्भाग्य यह था कि ये १५-१६ शक्तिशाली हिन्दू राजे महाराजे आपस में संगठित कभी नहीं हुए । यदि उनमे एकता हो जाती तो मुगलों के पैर भारत में टिकते ही नहीं ।

भारत के भिन्न भिन्न ऐतिहासिक नगरियों में घूमकर व बैठकर डा० वर्नियर ने अनेकों प्रकार की कठिनाइयां उठाकर इस पुस्तक को तैयार किया । हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि हिन्दू जाति की दृढ़ता, राजपूतों की वीरता व भारतीय रमणियों की बलिदान गाथा सहित हिन्दू राजाओं का जितना वास्तविक चित्रण इस पुस्तक में किया गया है उतना शायद ही अन्यत्र मिल सके । यहां सप्रमाण यह सिद्ध किया गया है कि क्रूरतम मुगल बादशाह औरङ्गजेब का राज्य वास्तव में धर्मान्धता, कुचक्र, लूटपाट अत्याचार खूरेजी, बेईमानी, रिश्वतखोरी, बर्बरता आदि से परिपूर्ण था । इन बातों का बड़ा ही विस्तृत व मनोरंजक वर्णन इस पुस्तक में मिलता है । अधिक से अधिक भारतीय नागरिक इस पुस्तक को पढ़कर लाभ उठायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है, पर यदि हमारे देश के कर्णधार आज इस पुस्तक को पढ़कर कुछ विचार करते तो देश का बड़ा लाभ होता । प्रकाशक ने इस पुस्तक को हिन्दी भाषा में इस रूप में प्रकाशित करके सबका उपकार किया है ।

चुने हुए फूल

लेखक–श्री पं. विहारीलाल शास्त्री प्रकाशक—श्री दर्शनानन्द ग्रन्थागार २० कृष्ण गंगा मथुरा । मूल्य आठ आना, पृष्ठ सं० १००, रगीन व कलात्मक आवरण पृष्ठ ।

आर्य जगत् के माने हुए विद्वान पं० विहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ के के मौलिक निबन्धों के संग्रह रूप में प्रकाशित "चुने हुए फूल" के विचार ऐसे हैं जिन पर विचार करना आज की बदलती हुई सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक परिस्थिति मे आवश्यक है । प्रस्तुत पुस्तक में १६ निबन्ध है जिनका सार यह है कि सुख व शांति के लिए वेदों के सिद्धांत और दयानंद के बताये मार्ग पर चलना नितान्त आवश्यक है । राम, कृष्ण, व दयानंद के गुणों की चर्चा भी इन लेखों में मिलती है । सभी लेख राष्ट्रीय व सामाजिक उन्नति मे योग देनेवाले हैं, अतः इनका प्रचार सबके लिए हितकर होगा । इस पुस्तक के लेखक व प्रकाशक दोनों धन्यवाद के पात्र है ।

भोज प्रबन्ध

(मूल संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित)

मूल लेखक–महाकवि श्री बल्लाल पंडित, भाष्यकार—प० रामेश्वराचार्य शास्त्री, प्रस्तावना लेखक–श्री एन०वी० गाडगिल, राज्यपाल पजाब । प्रकाशक राष्ट्रनिधि प्रकाशन, ४४२१ नई सड़क, दिल्ली । प्रथम सस्करण । पुस्तकाकार पृष्ठ सं० २४०, मूल्य २।) रु० कागज सफेद, छपाई सुन्दर, रंगीन आवरण पृष्ठ सहित ।

अक्षय संस्कृत साहित्य के महान् ग्रन्थागार में जो अनेकों उपयोगी ग्रन्थ रत्न भरे पड़े हैं, उन्हीं मे से एक हैं महाकवि बल्लाल का 'भोज प्रबन्ध' जिसे उन्होंने संस्कृत में लिखा था । काका गाडगिल के अनुसार इस ग्रन्थ की गणना पंचतन्त्र या हितोपदेश की श्रेणी मे की जा सकती है । अतः यह निश्चय है कि प्रत्येक क्षेत्र के व्यक्ति इस ग्रन्थ से लाभ उठा सकते है ।

यह एक शिक्षापूर्ण और प्रामाणिक ग्रन्थ है जो यह सिद्ध करता है कि राजा भोज का राज प्रबन्ध अत्यंत प्रशंसनीय था । विद्या, विज्ञान, व कला की उन्नति और प्रजा की रक्षा के लिए राजा भोज ने कोई उपाय उठा नहीं रखा । पुस्तक में दिये गये उदाहरणों से यह विचार सत्य सिद्ध होता है कि उनके राज प्रबन्ध में कहीं कोई त्रुटि नहीं थी । गुण के पुजारी तो वे इतने थे कि उनका यह आदेश था कि ब्राह्मण भी यदि मूर्ख है तो वह मेरी नगरी से बाहर निकल जाय और कुम्हार भी विद्वान है तो वह मेरी नगरी में निवास करे । उन्होंने स्वयं चिकित्सा, ज्योतिष, अलंकार, शिल्प, योग, राजनीति, काव्य, नाटक, धर्म आदि पर लगभग ३४ प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे ।

उनके राज्य मे शिक्षा व सुरक्षा की अनिवार्य योजना थी । धर्म और न्याय के आधार पर ही सारे कानून बने थे । आवश्यकता इस बात की है कि हमारे वर्तमान नेता जो आज भारत के कर्णधार हैं, इन बातों पर कुछ विचार करें । प्रत्येक भारतीय नागरिक को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए ।

सनातन शुद्धि शास्त्र और आर्यों का चक्रवर्ती राज्य

लेखक–श्री गोविन्द प्रसाद शास्त्री, प्रकाशक—श्री रघुनाथचन्द्र आर्य, स्टूडेन्ट बुक डिपो, रोशनपुरा, नयी सड़क, दिल्ली । पुस्तकाकार, पृष्ठ स० २१४, मूल्य २) छपाई साफ, कागज सफेद, रगीन आवरण पृष्ठ ।

इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर ही यह लिखा है कि—"रामराज्य की स्थापना और भारतीय राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिये इस ग्रन्थ का एक एक अक्षर मनन करने योग्य है" । केवल इसी एक पंक्ति से पाठक इस पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान कर सकते हैं ।

देश की उन्नति के लिए वेदों का आश्रय लेना ही पड़ेगा और अपने प्राचीन धर्म ग्रन्थों तथा इतिहासों पर विचार करना ही पड़ेगा, इसके बिना राष्ट्र मे सच्चा सुख नहीं हो सकता यही इस पुस्तक का सार है । यह सिद्धान्त सवथा सत्य है कि भूत के अनुभव के बिना न तो कोई वर्तमान बना सकता है और न भविष्य ।

इस ग्रन्थ में १८ अध्याय है और उनके अन्दर ११७ उपशीर्षक हैं जो लघु लेखों के समान है । इनमे से काफी लेख तो ऐसे है जिनमे केवल शुद्धि की ऐतिहासिकता, उपयोगिता व आवश्यकता पर बल दिया गया है ।

इस प्रकार राष्ट्र की एक वर्तमान अत्यन्त आवश्यक समस्या की ओर लेखक ने ध्यान दिलाया है । आर्यों के चक्रवर्ती राज्य के सम्बन्ध मे लेखक ने बहुतेरे पृष्ठ रगे हैं । अपने देश की उन्नति व अवनति के कारणों पर भली प्रकार विचार करके ऐतिहासिक ढग से प्रकाश डाला है । सम्प्रदाय, धर्म, राष्ट्रीयता आदि प्रश्न पर भी उपयोगी चर्चा इस पुस्तक मे मिलती है । पुस्तक के कुछ विचार ऐसे है जिन पर प्रत्येक नागरिक को गम्भीरता पूर्वक सोचकर कुछ सक्रिय कार्य करना चाहिए ।

"वैदिक एज" पर एक समीक्षात्मक दृष्टि

लेखक—वैदिक गवेषक श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा पथिक बी.ए. साहित्यालंकार, विद्यावाचस्पति विशारद, आचार्य । प्रकाशक—जयदेव आदर्श बड़ौदा । प्रथम सस्करण, पुस्तकाकार, पृष्ठ सं० ८०, मूल्य ।।।)

प्रस्तुत पुस्तक एक खोजपूर्ण ढंग से लिखी गयी पुस्तक है और निःसंदेह लेखक को इसे लिखने में पर्याप्त श्रम करना पड़ा होगा । इस पुस्तक में वैदिक काल पर अनेकों दृष्टिकोण से बड़े वैज्ञानिक व समीक्षात्मक ढग से विचार किया गया है तथा वैदिककाल के आदर्श व गौरव को झुठलाने वाले वेदों पर लगाये गये आरोपों का युक्तियुक्त उत्तर दिया गया है । हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि लेखक ने जो भी लिखा है उसके पक्ष मे काफी प्रमाण दिया है । पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों के साथ जो अनर्थ किया है उसका भी निराकरण किया गया है । वैदिक युग की महत्ता को समझने के लिए यह पुस्तक उपयोगी है ।

गायत्री गौरव

प्रणेता—श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम एम० ए०, सम्पादक, तपोभूमि मासिक मथुरा, प्रकाशक–श्री दर्शनानंद ग्रन्थागार, मथुरा । पुस्तकाकार प्रथम संस्करण पृष्ठ स० २८, मूल्य तीन आने, कागज सफेद, छपाई साफ, रगीन आवरण पृष्ठ ।

महामन्त्र गायत्री पर एक मौलिक रचना के रूप मे हम इस "गायत्री गौरव" को पाते है । गायत्री मन्त्र का महत्व, इसकी संक्षिप्त व्याख्या, गायत्री का चिन्तन और जप, गायत्री अनुष्ठान की प्रक्रिया, गायत्री साधना का फल, मानव मात्र को गायत्री साधना का अधिकार गायत्री का मिथ्या माहात्म्य पाप को बढ़ाता है, गायत्री साधन है साध्य नहीं, गायत्री का एक अलग देवता मत बनाइए, गायत्री की मूर्ति सम्भव नहीं, आदि विषयों पर बड़ा ही स्पष्ट, सुन्दर, प्रभावशाली व सप्रमाण वर्णन पाठक बन्धु इस पुस्तक मे पायेंगे । महामन्त्र की वास्तविकता को समझने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए । ★

आर्यमित्र हीरक जयन्ती तथा सभा की अन्यान्य योजनाओं व समारोह के उपलक्ष में ३ माह के लिए

घासीराम प्रकाशन विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रकाशनों में भारी रियायत शीघ्र ही अधिकाधिक संख्या में आर्डर भेजिए

नाम पुस्तक	नाम लेखक	मूल्य
निम्न पुस्तकों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—		
यजुर्वेद संहिता १ भाग	वैदिक संस्थान	२)
,, २ भाग	,,	२॥)
गायत्री उपनिषद्	श्री प०रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	॥)
ओंकार दर्शन	,, स्वामी अमृतानन्द जी	॥)
विरजानन्द चरित	, स्वर्गीय देवेन्द्रनाथ जी	॥-)
मन की लहर	,, प० रामप्रसाद जी बिस्मिल	॥।)
वैदिक निघन्टु	,, प० रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	।=)
वेद सुधा	,, प० घासीराम जी	।)
Ishopanishad	Shri Mahatma Narain Swami	0-4 0
ब्रह्मवेद का रहस्य	,, प० प्रियरत्न जी	≶)
पचकोष सूक्ष्म जगत	,, प० गङ्गाप्रसाद जी जज	=)
आत्म शारीरिकोपनिषद	,, प० रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	=)
ईसा मसीह	,, प० शिवदयालु जी	-)
गोरे पादरी	,, मदन गोपाल जी	-)
निम्न पुस्तकों पर ३३ प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—		
ऋग्वेद रहस्य	,, प० अलगूराय शास्त्री जी	५)
भक्ति सोपान	,, प० घासीराम जी	१॥)
सत्यनारायण व्रत कथा	,, वासुदेव शरण अग्रवाल	॥)
निम्न पुस्तकों पर ५० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा—		
इंगलेन्ड का इतिहास	,, प० ब्रजमोहन शर्मा जी	१)
स्त्री ज्ञान दर्पण	,, देवपालसिंह कटियार	॥)
जीवनोद्देश्य	, ,,	॥)
सुखमय जीवन	, ,,	॥)
मद्यपान महापाप	,, प० शिवशर्मा जी	॥)
कलावती उपन्यास	,, प० दामोदर प्रसाद जी	।≶)
आर्यों का प्राचीन गौरव	,, प० कार्न्त चरण शर्मा	।=)
Papers read at the First Arya Education Conference,Kanpur	,, Parmatma Saran M A	0 6 0
भौतिक विज्ञान	, प० ब्रह्मानन्द जी	।=)
जन्म शताब्दी उपहार	श्रीमती सुनीतिदेवी जी	।-)
ज्योतिष चन्द्रिका	श्री प०गंगाप्रसाद जी रि० जज	।)
पिण्डारी हिम प्रवाह	, प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी	।)
पिप्लाद संहिता हिन्दी	, प रामदत्त जी शुक्ल एम०ए०	≶)
आर्य पर्व परिचय	,, प० शिवदयालु जी	-)
कैथालिक ईसाइयों का नग्न चित्र	,	=)
मनुष्य समाज	,, प० गंगाप्रसाद जी रि० जज	-)
सूर्य सप्ताश्व	,,	-)
अविद्या के तीन अंग	,, प० कृपाशंकर जी	-)
नवसस्येष्ठि यज्ञ	,, प० शिवदयालु जी	
Indian Influence on Early Western thought	,, Shishir Kumar Mittra	0 1-3
Problems of Life	,, Pt Ganga Prasad M A	0-1-0
Problems of Universe	,,	0-1-0
Sanskrit A living language	,, Pt Shyam ji Krishna Varma	0-1-0
Piplad Sanhita	,, Pt Ram Dutta Shukla M.A.	0 3-0
Christ Versus Chrishtianity	,, Pt Shiva Dayalu	0 1-0
Agnihotra	,, Prof Tarachand M A	0-1-6
A Few hints in favour of A Vegetarian diet	,, Madan Mohan M A.	0-1-0

विश्वेश्वरनाथ वर्मा

अधिष्ठाता, घासीराम प्रकाशन विभाग

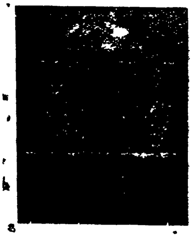
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, लखनऊ

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०

के

सिद्धान्त सम्बन्धी, विद्वत्तापूर्ण दार्शनिक अमर ग्रन्थ

अद्वैतवाद ५), शांकरभाष्यालोचन ५), आस्तिकवाद ५), जीवात्मा ४), मनुस्मृति भाष्य भूमिका सहित ५), जीवनचक्र ५), कम्यूनिज्म २), आर्योदय काव्य (दो भाग) ३), भगवतकथा १।), राममोहनराय,केशव चन्द्रसेन दयानन्द ।॥), शंकररामानुज दयानन्द ।=), सर्वदर्शन सिद्धांत संग्रह १), हम क्या खावे घास या मास १॥) आर्यस्मृति१।॥) वैदिक मणिमाला ॥=), सायण और दयानन्द ३), Light of truth ६), Landmarks of Swami Dayanands teachings १), Philosophy of Dayanand १०), Social Reconstructiong by Budha & Dayanand २),



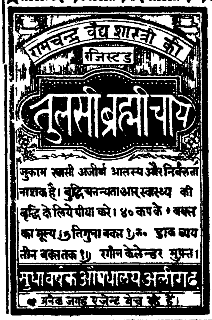
पता—कला प्रेस इलाहाबाद

'दमा' पुरानी खांसी' रोजगार नहीं-केवल परोपकार है

के रोगियो ! यह दुष्ट रोग आपके लिए सदा ही दुखदाई है आखिर कब तक तड़फते रहोगे ? क्यो नहीं आने वाली किसी भी पूर्णमासी' को यहाँ आश्रम मे आकर सैकड़ों रोगियो के साथ हमारी भारत विख्यात महौषधि (चित्रकूट बूटी) धर्मार्थ (मुफ्त) सेवन करके एक ही मात्रा म सदा के लिए इस दुष्ट रोग से पीछा छुड़ाते हैं ? यदि किसी कारणवश यहाँ न आ सके तो केवल २।॥) मात्र विज्ञापन रजिस्ट्री आदि खर्च तुरन्त मनीआर्डर से भेजकर मगा ले और आराम से अपने घर पर ही सेवन करके पूरा लाभ उठावे। इस दवा की वी० पी० नहीं भेजी जाती है, नोट कर ले जल्दी करे, जिससे आनेवाली 'पूर्णमासी' से पहले दवा आपको मिल जावे, अन्यथा पछतावेंगे,।

नोट—यदि रोग अधिक पुराना हो तो ३ खुराक (पूरा कोर्स) लगातार सेवन करे। जिसमे जड़ कट जावे, ३ खुराक (पूरा कोर्स) एक बार मगावे तो ७) भेजे। गरीबो को मुफ्त बाटने के लिए एक दर्जन का रियायती मूल्य ५)रु० है। अमीरो को सर्वदा यह दवा अपनी तरफ से धर्मार्थ बाटना चाहिए।

पता—रायसाहब के.एल.शर्मा रईस आश्रम(६०)'जगाधरी'(ई.पी.)



भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग का शत्रु

इस परीक्षित दवा से स्त्री, पुरुष या बालकों के शरीर पर के सफेद दाग ऐसे निकल जाते हैं कि वह कहा थे इसका पता भी नहीं लगता, हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं। मूल्य ५), अधिक विवरण मुफ्त मगाकर देखिये।

वैद्य के० आर० बोरकर (आर्य)

मु० पो० मंगरूलपीर, जिला—अकोला

[विदर्भ]

वनिता विवेक

माता जीजाबाई

—'लल्लन'

छत्रपति शिवाजी को इतना बहादुर किसने बनाया ? इसका उत्तर है उनकी माता जीजा बाई ने। दूसरा प्रश्न यह है कि शिवा के हृदय में राष्ट्रीयता और देश भक्ति की इतनी प्रबल आग किसने फूंक दी ? इस प्रश्न का उत्तर है उनके गुरु समर्थ रामदास ने। तो इन प्रश्नों से क्या पता चला ? इनसे यह पता चला कि माता और गुरु अपने सन्तान को जैसा चाहे बना सकते है, वे मनुष्य को जिस रूप मे ढालना चाहे ढाल सकते है, वे समाज और राष्ट्र का जैसा निर्माण करना चाहे कर सकते हैं। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि देश की उन्नति की जिम्मेदारी माता और गुरु पर अन्यों की अपेक्षा अधिक है। पर स्थिति यह है कि आज न तो माताए इतनी योग्य हैं और न गुरु इतने कर्तव्य परायण हैं जो अपनी जिम्मेदारी निभा सके। अत ऐसी दशा में सरकार का ही यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इस जिम्मेदारी को निभाये और माताओ तथा गुरुओ को योग्य बनाने का यत्न करें।

जीजा बाई ने शिवा को वीरता की शिक्षा किस प्रकार दी, इसका एक उदाहरण देखिए—एक बार जीजा बाई कहीं बाहर गई थीं, साथ में शिवा भी थे। जीजा बाई शिवा को बचपन से ही तीर, कमान, भाले, बरछे, तलवार, ढाल आदि से खेलाया करती थीं। इन्हीं चीजो से उन्हे खेलने मे आनन्द आता था।

शिवा उस समय बहुत छोटे थे। जहाँ वे रहते थे, वहाँ एक झाड़ी थी। एक दिन अकस्मात एक खूखार बन बिलार वहाँ आ पहुचा। शिवा की निगाह उस पर पड़ गयी। इससे पूर्व शिवा ने कभी बनबिलार नहीं देखा था। अत. उन्होंने मा से पूछा, मा यह क्या है ? मा ने देखा तो वह खूखार बनबिलार था। वह सोचने लगी यदि मैं बच्चे से यह कह देती हु कि यह खूखार बनबिलार है तो यह डर जायेगा, इसकी हिम्मत पस्त हो जायेगी, उत्साह ठंडा पड़ जायेगा, फिर सोचती है कि आज प्रथम बार बालक ने दुश्मन के रूप में एक जंगली जानवर को देखा है। बालक को वीर बनाने के लिए इसीके हाथ से इसका मारा जाना आवश्यक है। यह सोचकर जीजा बाई ने बच्चे को

[illegible]

देकर कहा—बेटा, देखते क्या हो यह तो बिल्ली है, चिमटा फेक कर मार दो, चोट खाकर मर जायेगी। इतना कहकर जीजाबाई ने बालक के जरा पीछे खड़ी होकर तीर उठाकर बन बिलार पर बार कर दिया, साथ ही शिवा ने भी चिमटा फेंक कर मारा बनबिलार घायल हो गया और वहीं ढेर हो गया देखते देखते। माता जीजा बाई ने बच्चे को उछाल कर कुछ ऊपर फेंक दिया और प्यार से गोद में लेकर तथा चूमकर कहा—शाबाश, मेरे बेटे, बहुत वीर हो, आज तो तुमने एक खूखार बन बलार को मार दिया यह बिल्ली नहीं थी। शिवा का रोम रोम विरोल्लास से पुलकित हो उठा। ★

निराश्रित महिला आश्रम

केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल की महिलाओ के लिए आश्रम खोलने की योजना के अन्तर्गत अभी तक २४ राज्य आश्रम और ४६ जिला आश्रम खोले गये हैं। इनमे निराश्रित महिलाओ की देखभाल की जाती है। राज्यो के आश्रमो मे वेश्यालयों आदि से उबारी स्त्रियों के रहने का प्रबन्ध किया जाता है और उनको काम देने के लिये कारखाने चलाये जाते है तथा उन्हे अपनी जीविका कमाने और समाज में स्थान पाने में सहायता दी जाती है। स्त्रियो के अनैतिक व्यापार निरोधक कानून, १९५६ के अनुसार, राज्यों के आश्रमों में स्त्रियो को शरण दी जाती है।

इन शरण घरो मे एक नयी शाखा बनाने का विचार है, जिसमें वे स्त्रिया और लड़किया रखी जाएगी, जिन्हे उपयुक्त कानून के अनुसार यहा लाया जाएगा। यह सब केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की सलाहकार समिति की सिफारिशों के अनुसार किया जा रहा है।

योजना के अनुसार हर राज्य में ५ शरणालय बनाये जाएगे, जिनमे १०० स्त्रियों के रहने की व्यवस्था होगी, सुधार घरों से लौटने वाली महिलाओ को जिला आश्रमो मे स्थान दिया जाएगा।

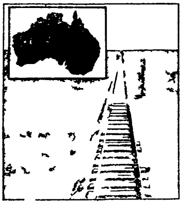
राज्य शरणगृहों के साथ सहकारी कामघर भी चलाये जाएगे। इनका खर्च वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्रालय देगा। इनमें शरणालयों की तथा बाहर की महिलाओं को काम दिया जाएगा।

दूसरी पचवर्षीय योजना की अवधि में इस योजना पर १० लाख ४० हजार ६० खर्च होगा। ★

बाल-विनोद



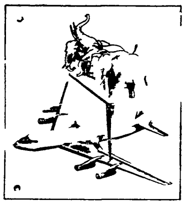
सभी देशो को मिलाकर वर्तमान समय में सबसे अधिक खेती मक्के की होती है। अमेरिका ब्राजिल, अर्जेन्टाइन, मेक्सिको चीन, भारत, इटली, दक्षिण अफ्रीका आदि इसके उदाहरण हैं।



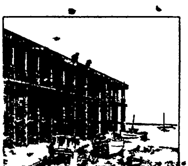
आस्ट्रेलियायी रेगिस्तान नलार बोर से होकर यह विश्व की सबसे लम्बी सीधी रेलवे लाइन गुजरती है जो ३२८ मील तक बिलकुल सीधी है और मार्ग मे न तो कोई नदी पड़ती है और न पेड़।



यह चार आखो वाली 'एनाब्लेप्स" नाम की मछलियो की एक जाति है जो मध्य अमेरिका की नदियो में पाई जाती है। यह पानी के सतह पर तैरती है और भोजन के लिए नीचे डुबकी लगाती है। दो आखों से शत्रुओं को देखती रहती है और दो आखो से भोजन खोजती है।



एक यात्री वाहक शीघ्र गामी आधुनिक विमान का एक पख इतना मजबूत होना चाहिये कि उसमें प्रति वर्ग इंच १८ टन बोझ सहन करने की शक्ति हो जो चार हाथियो के बोझ के बराबर होता है।



विश्व मे सबसे ऊचा ज्वार भाटा फन्डी की खाड़ी (पूर्वी कनाडा) म उठता है जो प्रति ६ घण्टे पर औसतन ९० फीट ऊचा उठता है और विशेष दशा मे ५३ फीट तक भी ऊचा उठ जाता है।



१९५७-५८ मे अमेरिका ने ६५ विभिन्न देशो के साथ अन्तर्राष्ट्रीय भूगर्भ भौगालिक-अन्तरिक्ष—प्राकृतिक शिविर म १८ महाने भाग लिया। उसके परचात् यह अमेरिकन उपग्रह रेडियो ट्रान्समाटर द्वारा अन्तरिक्ष [illegible]

पाकिस्तान में सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती से सारे भारत में भारी असन्तोष

लाला रामगोपाल जी का वक्तव्य

पाकिस्तान से प्रकाशित होने वाले पत्रों में प्रकाशित सूचना के आधार पर दिल्ली के साप्ताहिक 'रियासत' में इस समाचार को पढ़कर कि जनरल अयूब की एकतन्त्र सरकार ने पूर्वी पाकिस्तान ढाका में स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित आर्य समाज के धार्मिक ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को जब्त करने की आज्ञा प्रसारित की है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने आर्य समाज दीवान हाल के साप्ताहिक सत्संग मे एक प्रस्ताव रखा जिसमें पाकिस्तान के डिक्टेटर जनरल अयूब की इस तानाशाही को आर्य समाज के माध्यम से भारत को खुली चुनौती कहा गया है। प्रस्ताव पर भाषण करते हुए उन्होने कहा कि पाकिस्तान सरकार ने इस प्रकार का गलत कदम उठाकर अपनी और इस्लामी हुकूमत की असहिष्णुता का स्पष्ट प्रमाण दिया है। संसार के इतिहास में जितने भी धार्मिक ग्रन्थ हैं उनमें किसी न किसी अंश मे बुराइयों का स्पष्ट विरोध किया गया है। इस सम्बन्ध में कुरान के अनेकानेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। इसी आधार पर क्या पाकिस्तान सरकार किसी अन्य राज्य को मुसलमानों के धार्मिक ग्रन्थ को जब्त करने का अधिकार देने को तैयार है ?

प्रस्ताव में भारत सरकार से अनुरोध किया गया है कि वह अविलम्ब ही पाकिस्तान सरकार को आवश्यक नोटिस देकर इस धर्मान्धता का निवारण कर महर्षि दयानन्द के पवित्र ग्रन्थ पर से पाबन्दी हटाने का प्रयत्न करे।

श्री रामगोपाल ने समस्त आर्य जगत् से, जनमत संगठित कर इस अत्याचार का सामूहिक विरोध करने की अपील की है। गणतन्त्र स्थापित हो जाने के कारण भारत सरकार का यह परम कर्तव्य है कि अपने प्रभाव से पाकिस्तान के इस अत्याचार का शमन करे।

सिन्ध मे प्रथम बार जब मुस्लिम लीगी मन्त्रि मण्डल स्थापित होने पर सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगाया था तो आर्य समाज ने श्री म० नारायण स्वामी जी के नेतृत्व मे सिन्ध मे सत्याग्रह करने का श्रीगणेश कर दिया था। जिससे लीगी सरकार को प्रतिबन्ध वापिस लेना पड़ा। इसी प्रकार अब पाकिस्तान क्योंकि भारत के आधीन नहीं अत. वहाँ होने वाले इस प्रकार के अत्याचारो के शमन करने की जिम्मेदारी भारत सरकार पर है। हमे आशा करनी चाहिए कि सरकार अपने कर्तव्य का पालन करेगी। समय रहते यदि भारत सरकार ने अपने कर्तव्य का पालन न किया तो आर्य समाज के शुभचिन्तकों को इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। ★

(पृष्ठ २ का शेष)

लिखा। घटना की जांच हुई। बात सच थी। पर आफीसर किसी मन्त्री का पास का सम्बन्धी था अतः अदालत ने उसको केवल तबादले का हुक्म सुना दिया। नारद जी यह सब देखकर आश्चर्य में डूब गये कि यहां तो कदम कदम पर भ्रष्टाचार हो रहा है और यह घटना भी अंकित कर ली।

इस प्रकार समस्त भारत की जांच पूरी करके नारद का शिष्ट मंडल जब भारत से स्वर्ग को जाने लगा तो हमें पी० टी० आई का एक संवाददाता होने के नाते कुछ उपरोक्त घटनाएं वे बता गये थे। अब यह भारत की भ्रष्टाचार सम्बन्धी पूरी रिपोर्ट नारद जी स्वर्ग की संसद के आगामी अधिवेशन मे पेश करेंगे। ★

'वानप्रस्थियों से प्रार्थना'

पर्वतीय जातीय एवं दलित वर्गों की सेवा कर उनकी विदेशी ईसाई मिशनरियों से रक्षा करें

आज पर्वतीय जातियों एव दलित वर्गों की निर्धनता निरक्षरता तथा भोलेपन का लाभ उठाकर हजारो विदेशी मिशनरी विदेशों से प्राप्त प्रति-वर्ष करोड़ों रुपये के बल पर सेवा व शिक्षा की आड़ में उनका धर्म परि-वर्तन कर रहे हैं। इस प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे लाखो भाई ईसाई बन चुके हैं। स्वय भारत के रेलवे मन्त्री माननीय श्री जगजीवनराम जी ने सार्वजनिक रूप से इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कुछ दिन पूर्व चिन्ता व्यक्त की थी।

इस विदेशी ईसाई षडयन्त्र से अपने भाइयों की रक्षा करन का प्रश्न बड़ा ही महत्वपूर्ण एव जटिल बन गया है। यदि इसकी ओर तुरन्त ध्यान न दिया गया तो नागा प्रदेश, छोटा नागपुर तथा केरल की भांति देश के अन्य भागों मे भी विदेशी मिशनरियों से प्रोत्साहन प्राप्त ईसाई वर्ग अशान्ति उत्पन्न कर देगा और देश द्रोह के कीटाणुओं को जन्म देगा।

अत. आर्य जाति के उन बुद्धिमान एव दूरदर्शी सज्जनों से प्रार्थना करना है कि जिन्होंने अपने जीवन धन्धों से अवकाश प्राप्त कर लिया और जिनके परिवारों का उत्तरदायित्व उनके पुत्र पौत्रों ने सम्भाल लिया है, जिनमें मिशनरी स्पिरट है वह अब अपना शेष समय देश जाति की सेवा म अर्पित करें। उनके भोजन तथा रहने आदि की उचित व्यवस्था कर दी जायगी। जो वानप्रस्थी महानुभाव अपनी सेवायें देना चाहे वे श्री मन्त्री सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दया नन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली तथा अपनी प्रान्तीय सभाओं के पतों पर तुरन्त अपना नाम, पता तथा योग्यता आदि की सूचना भेज दें। जो व्यक्ति वैद्यक भी जानते हो वह इस कार्य में अधिक सफल सिद्ध होंगे।

आशा है वानप्रस्थी वर्ग देश जाति की पुकार का समय रहते उचित उत्तर देगा और अपने शेष जीवन को देश सेवा में लगाकर सफल बनायेगा।

—ओम्प्रकाश त्यागी मन्त्री
सार्वदेशिक ईसाई प्रचार निरोध समिति

ऐतिहासिक कागज-पत्रों की रक्षा

देश में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जिनके पास दुर्लभ तथा प्राचीन कागज पत्र पड़े पड़े खराब हो रहे है। देश का सांस्कृतिक परम्परा की दृष्टि से ये कागज पत्र बहुत महत्वपूर्ण हैं और यदि समय पर इनकी रक्षा न की जाएगी तो ये नष्ट हो जाएं गे।

राष्ट्रीय अभिलेख संग्रहालय ने उन कागज पत्रो को एकत्र करने की योजना बनाई है। जो लोग इन्हें दान में देंगे, वे चाहे तो, उनका नाम इन कागज पत्रो पर लिख दिया जाएगा। यदि वे बेचना चाहते हों तो संग्रहालय उन्हे खरीदने को भी तैयार है।

ये कागज पत्र संग्रहालय मे पूरी देखभाल के साथ रखे जाए गे और विभिन्न विषयों पर खोज करने वाले विद्वानो को अध्ययन के लिए दिये जा सकेंगे। यदि कोई व्यक्ति डाक मे खो जाने के डर से कागज पत्र न भेजना चाहे तो वहीं जाकर उनकी फोटो लेने का प्रबन्ध किया जाएगा।

जो लोग उक्त किसी भी बात के लिए तैयार हो, वे कृपया, डाइ रेक्टर आफ आरकाइव्स, नेशनल आरकाइव्स आफ इण्डिया, जनपथ, नयी दिल्ली को कागज पत्रो की सूची भेज दें।

आर्यमित्र की हीरक जयन्ती और विश्व की आर्य जनता का कर्तव्य

विश्व में वैदिक सिद्धान्तों के व्यापक प्रचार की आज अत्यन्त आवश्यकता है।

आर्यमित्र अपने जन्म काल से अब तक वैदिक सिद्धान्तों का ठोस प्रचार करता आया है और भविष्य मे वह विश्वव्यापी प्रचार करने के लिए अग्रसर हो रहा है।

राष्ट्र भाषा, वैदिक जीवन का निर्माण, चरित्र निर्माण, धर्म और कर्मकाण्ड, वैदिक धर्म और विज्ञान, योगवाद और अध्यात्मवाद, भारतीय सभ्यता और विश्व के मानव समाज का पथ प्रदर्शन, युवको का कर्तव्य आशावाद और जीवन का अन्तिम लक्ष्य, आदि सैकड़ो खोजपूर्ण परिमार्जित लेख आर्यमित्र के द्वारा आर्य जनता को आत्मप्रसाद के रूप मे मिलते रहते हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आर्यमित्र दिन दूना उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर महर्षि दयानन्द के सन्देश को विश्व के घर घर में पहुचाने मे समर्थ हो।

यह आशायें कब पूर्ण होगी उसका साधन यह है कि हम आर्यमित्र के ग्राहक संख्या बढ़ाने का प्रबल प्रयास करें।

दूसरा साधन यह है कि आर्य मित्र प्रकाशन निधि के लिए लाखों रुपयों का कोष एकत्र करने में हम अपनी पूरी शक्ति लगाकर आर्य प्रति निधि सभा उत्तरप्रदेश के अधिकारियो का प्रोत्साहित करें।

यदि प्रत्येक आर्य अपनी पवित्र कमाई में से १) भी इस शुभ कार्य के लिए प्रदान करें तो एक दिन में ही लाखो रुपये एकत्र हो सकते हैं। विश्व के समस्त आर्य भाई बहनों से प्रार्थना है कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग प्रदान कर अपने परम कर्तव्य का पालन करें।

—वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी उपदेशक सराय रुहेला, देहली

छात्र व नागरिक खादी अपनावें

कुमायू की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था एम० बी० इन्टर कालेज हल्द्वानी में ७ दिसम्बर को लाला किशोरीलाल श्री मुरारीलाल जी के सात्विक दान से निर्मित श्री रामशरण दास पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह उत्तर प्रदेश के स्वायत्त शासन मन्त्री प्रसिद्ध गांधीवादी श्री विचित्र नारायण शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विद्यालय की ओर से विद्यालय के मैनेजर श्री नन्दकिशोर खन्डेलवाल ने मन्त्री महोदय को मान पत्र भी भेंट किया, और विद्यार्थियों ने विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये। श्री शर्मा जी ने अभिनन्दन के उत्तर मे गांधी जी के खादी दर्शन की ओर छात्रों व नागरिको से राष्ट्र की सच्ची तरक्की के लिए खादी को अपनाने की अपील की। मन्त्री जी के सम्मान में जलपान का आयोजन किया गया जिसमे नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों ने भी भाग लिया।

—उमेशचन्द्र स्नातक

वेद सम्मेलन गोरखपुर

आ० स० हीरक जयन्ती महोत्सव

१९५१ में सार्वदेशिक आर्य प्रति निधि सभा के मेरठ अधिवेशन पर स्थापित वेद सम्मेलन का अगला अधिवेशन १४, १५, १६, फरवरी ५९ को आ० स० गोरखपुर द्वारा हीरक जयन्ती महोत्सव के अवसर पर बुलाया जायेगा जिसका सभापतित्व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु करेंगे। सम्मेलन का प्रतिनिधि शुल्क ५) है।

वेदसम्मेलन समस्त वैदिक विद्वानों विशेषत आर्य समाज के वैदिक पण्डितों को वेद सम्मेलन में आने और उसके विचारविमर्श में भाग लेने के लिये निमन्त्रित करता है। आप शीघ्र ही प्रतिनिधि शुल्क ५) भेजने का कष्ट करें। साथ ही अपना पूरा नाम, पता, और योग्यता का विवरण भी भेजें।

कृपया अपना सारगर्भित खोज पूर्ण वेदविषयक लेख उसके संक्षिप्त सार के साथ सम्मेलन में विचारार्थ ५ १ ५९ तक भेज दें जिससे उसका सार छप सके और आपके यहा पधारने पर लेख संक्षेप पुस्तिका आपको दी जा सके। ५ जनवरी के पश्चात् आने वाले लेखों के सार नहीं छपवाये जा सकेंगे। स्वीकृत लेखों का वेदवाणी मे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

प्रतिनिधियों के निवास और भोजन का प्रबन्ध आर्यसमाज गोरख पुर ने किया है। मार्ग व्यय प्रतिनिधि स्वय वहन करेंगे।

अधिवेशन विषयक समस्त पत्र व्यव हार सयोजक के नाम ४ हारापुर गोरख पुर के पते पर करने का कृपा करें।

—सुधीर कुमार गुप्त एम ए, पीएच डी
आचार्य, गोरखपुर विश्वविद्यालय
सयोजक

विदेशों में हवन सामग्री की धूम

ब्रिटिश गायना सौथ अमेरिका का पत्र

श्रीमान् प० रामजी लाल जी शर्मा त्रैयम्क विलिज ईस्ट कोस्ट डेम रारा ब्रिटिश गायना सौथ अमेरिका से लिखते हैं—श्रीमान् वैदिक धर्म दिवाकर वेदपथिक धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी उपदेशक जी, अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला सरायरुहेला देहली ५।

सादर नमस्ते,

आपका पत्र समाचार मिला, कोटिश धन्यवाद है। आपकी भेजी हुई आर्य हवन सामग्री और अगर बत्ती दानो बहुत करके उत्तम थी। आपकी सेवा में १२ शिलिंग भेज रहा हूं। आपको बारम्बार धन्यवाद है ।।ॾ) पौंड वाली सामग्री भेजने की कृपा करें।

आर्य हवन सामग्री

आर्य जाति के गौरव पुंज तर्क शिरोमणि शास्त्रार्थ महारथी श्री पूज्य प० रामचन्द्र जी देहलवी लिखते हैं—

मैंने वेद पथिक श्री धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी की प्रदान की हुई हवन सामग्री का प्रयोग किया। उसमे काई वस्तु भी पुरानी और सड़ी हुई नहीं है और सुगन्ध भी बड़ी रुचिकर और आनन्ददायक है। इस कार्य में उनका प्रयत्न सराहनीय है। आशा है कि उनका अवश्य मनवांछित सफलता प्राप्त होगी।

पता—आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला अहाता ठाकुरदास सरायरुहेला दिल्ली ५

आर्य हवन सामग्री पर शुभ सम्मति

प्रसिद्ध यज्ञ चिकित्सक व यज्ञ चिकित्सा के लेखक श्रीमान् डा० फुन्द लाल जी एम० डी० एक्स मेडिकल आफीसर आर्य समाज चौक लखनऊ से लिखते हैं—

मैंने श्री वेदपथिक जी धर्मवीर आर्य झण्डाधारी उपदेशक देहली की निर्माणशाला की सामग्री का पैकिट जो उन्होंने मुझे भेंट किया था प्रयोग किया। यह बड़े हर्ष की बात है कि एक ऐसे सज्जन जो केवल व्यापार की दृष्टि से नहीं किन्तु यज्ञ के प्रचार को लक्ष्य करके कार्य करना चाहते है—का ध्यान इस ओर गया है। अत मुझे प्रथम बार इस सामग्री में कुछ ऐसी औषधियें मिलीं जिसको बाजार सामग्री में लोग डालते ही न थे क्योंकि वह अधिक महगी होती हैं। सामग्री का कार्य अधिक मात्रा में एक स्थान पर होने से ही उत्तम सामग्री सस्ती पड सकती है। हमारे धर्मवीर जी ने इसका उद्योग किया है, यदि जनता ने खुले हृदय से इस काम मे सहयोग दिया तो पूर्ण आशा है कि आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला पूर्ण वैज्ञानिक ढङ्ग पर ऋतु अनुकूल और रोगों की चिकित्सा में औषधियुक्त सामग्री बना कर हवन यज्ञ की उपयोगिता का प्रत्यक्ष प्रमाण उपस्थित कर सकेगी।

हर्ष सूचना

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के उपलक्ष में विश्व के मानव समाज को एक अनुपम भेंट

अमृतवाणी

विश्व का मानव समाज यह जानकर हर्ष विभोर हो उठेगा कि विश्व वन्दनीय वैदिक समाज के स्वनाम धन्य नेता योग राज महर्षि दयानन्द जी की ७६ वीं पावन स्मृति में हम आर्यमित्र के हीरक जयन्ती के उपलक्ष में अमृतवाणी के ७६ उपदेशों का प्रकाशन महर्षि दयानन्द जी के बडे तिरंगे चित्र के साथ करा रहे है।

गायत्री मन्त्र अर्थ सहित आर्ट पेपर पर अमृतवाणी के साथ ही प्रकाशित हो रहा है।

अखिल विश्व में वेद प्रचार और वैदिक भव्य भावनाओं के व्यापक प्रचार की योजना को सफल बनाने की एक अमिट आशा की स्वर्ण रश्मि को लेकर हम इस अनुपम अमृतवाणी का प्रकाशन करा रहे हैं।

यदि आप चाहते हैं कि विश्व का मानव समाज वेद पथ का अनुगामी बने।

यदि आप चाहते हैं कि विश्व में वैदिक युग का निर्माण हो।

यदि आप चाहते है कि वेद की रिचाओं का घर घर में गान हो।

यदि आप चाहते है कि वैदिक सभ्यता और संस्कृति का विश्व में प्रसार हो।

यदि आप विश्व के मानव समाज को भारतीय भव्य भावनाओं का उपहार देना चाहते हैं।

यदि आप वैदिक स्वराज्य स्थापित करके इस जीवन यात्रा को सफल बनाना चाहते हैं तो अमृतवाणी का घर घर में प्रचार करने का संकल्प आज धारण करें। यदि आप विश्व की काया पलटना चाहते हैं। यदि आप विश्व को आर्य बनाना चाहते हैं। तो वेद का पठन पाठन आज से ही प्रारम्भ करें।

यदि विश्व की आर्य समाजो ने तथा अन्य धर्म प्रेमी भाई, बहिनों ने इस अमृतवाणी को अपनाया तो इसकी लाखों और करोड़ो प्रतियो का अत्यन्त आकर्षक प्रकाशन हम करायेंगे।

शीघ्रता करें, आज ही अपनी प्रतियों को सुरक्षित कराइये। महर्षि दयानन्द का अत्यन्त आकर्षक चित्र अमृतवाणी के ७६ उपदेश और गायत्री मन्त्र अर्थ सहित आर्ट पेपर पर यह शीशे में जड़वाकर घर में रखने की एक अलभ्य वस्तु है। साइज २०×३० आर्ट पेपर पर छप रहा है।

मूल्य केवलमात्र ।।-) प्रति है।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी उपदेशक, अध्यक्ष, धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग

सराय रुहेला देहली—५

मित्र

...शीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संगठन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप में समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

★ आर्यसमाज के प्रचार	★ वैदिक संस्कृति प्रसार
★ सिद्धान्त समर्थन	★ नैतिक उत्थान
★ निर्भीक आलोचना	★ आदर्श पत्रकारिता
★ समाज सुधार	★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
★ राष्ट्र नव निर्माण	★ विश्व बन्धुत्व
★ विश्व शान्ति	★ मानव संस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। एक लाख रु० की जयन्ती निधि मे अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रो से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र की उन्नति के इस यज्ञ में पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता के नव निर्माण में सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।



वार्षिक मूल्य ८)
एक प्रति का २० नए पैसे

लखनऊ, रविवार, पौष २१ शक १८८०, पौष शु० २, वि० २०१५
११ जनवरी १९५९ ई०

विदेश में
१५शिलिंग

गुरुधाम (गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास) की धूम

आर्य जनता मथुरा में होने वाले पुण्य समारोह में सम्मिलित होने के लिए आतुर

आर्यमित्र हीरक जयन्ती व अभिनन्दन समारोह भी गुरुधाम के साथ मथुरा में ही मनाने का निश्चय

जैसे-जैसे सभा की जयन्ती योजना का समय समीप आता आ रहा है, जनता में उत्साह और कर्त्तव्य की भावना जागृत हो रही है। सभा के जयन्ती सम्बन्धी निश्चय की सूचना पाकर मथुरा निवासी आर्यजन उल्लसित हो उठे और उन्होंने अनुभव किया कि आर्य जगत् के साथ मथुरा निवासियों का विशेष सम्बन्ध है। एकबार वे मथुरा में महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनाकर आर्य जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर चुके हैं। आज एक स्वर्ण अवसर पुनः आया है, जब कि आर्य जगत् ने मथुरा को स्मरण किया है, अत मथुरा के आर्य बन्धुओं ने जब सभा के अधिकारियों व अन्तरंग सभा के सम्मुख अपना प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि हम इस सौभाग्य का आंशिक नहीं पूर्ण लाभ उठाने के इच्छुक हैं। तब सभा ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर मथुरा को ही जयन्ती समारोह-स्थली बनाना निश्चित कर लिया है। इस निश्चय के फलस्वरूप यातायात की बहुत-सी कठिनाइयाँ भी कम हो जायगी, तथा जन सम्पर्क भी अधिक हो सकेगा। इन सभी दृष्टियों से इस निश्चय का स्वागत किया जाना चाहिये।

सौभाग्यशाली मथुरा नगरी आर्य जनता को सादर निमन्त्रित करती है

सभा द्वारा मथुरा में समारोह का अन्तिम निश्चय होते ही, मथुरा के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने दौड़ धूप आरम्भ कर दी है।

आर्यमित्र नगर और पण्डाल के लिये स्थान निश्चित किया जा रहा है। धन-संग्रह और स्वयंसेवकों की भर्ती का कार्यक्रम आरम्भ कर दिया गया है।

कार्य आरम्भ करने के लिये श्री कर्णसिंह (उपमन्त्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश) संयोजक और श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम एम० ए० स० संयोजक तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं की एक समिति बना दी गयी है और शीघ्र ही व्यापक स्तर पर स्वागत समिति का संघटन किया जायगा।

एक वक्तव्य में मथुरा के आर्य बन्धुओं ने इस महान् दायित्व को सौंपे जाने के लिए आर्य जनता का धन्यवाद करते हुए आर्य जनता को जयन्ती में सम्मिलित होने का सादर निमन्त्रण दिया है। मथुरा में निवास तथा अन्य सभी प्रकार की व्यवस्था कर अपनी आर्य जनता का स्वागत करने मे वे अपने को धन्य अनुभव करेंगे।

आर्यजन जयन्ती सफल बनावें, गुरुधाम पूर्ण हो, आर्य समाज की गूँज हो
यही आज का सन्देश है

सम्पादक-
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

अङ्क
२

भूदान और जैन विचार-धारा

[प० विहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ]

मनुष्य के जीवन के लिए भूमि एक उत्कृष्ट आधार है। इस पर ही उसका रहन सहन और इसके द्वारा ही उसका प्राण पोषण होता है। इसी के अन्न जल उसके जीवन को बनाये रखते हैं। पचभूतो से बने मनुष्यादि सब ही प्राणियों का जीवन इन पच भूतों के आधार पर ही है। इनमें भी भौतिक जीवों का जीवन भूमि के विना कहा ? इसीलिए वेद ने पृथ्वी को माता कहा है–'नमो माजे पृथिव्यै' यजु० ९।२२ ससार में राजनैतिक सघर्ष तो भूमि के ही लिए होते रहे हैं और हो रहे हैं। मनुष्य के लिए सर्व रत्न दात्री और धात्री यह भूमि ही तो है। इसीलिए इसे वसुन्धरा (वसु धन रत्न, धरा धारण करने वाली) कहा गया है।

इसकी महिमा मे धार्मिक, राज नतिक, साहित्यिक सब ही साथी हैं।

ऐसी भूमि का यदि कोई भाग कोई किसी का दान करके देता है तो उसकी विशाल हृदयता का क्या कहना है। वह भूमि के रूप में उसे जीवन दे रहा है। और जो कोई किसी से भूमि छीनता है वह कठोर हृदय है और पराये जीवन को छीन रहा है। और जो आवश्यकता से अधिक भूमि को रक्खे हुये है वह दूसरों के जीवन साधन का परिग्रह करके हिंसा कर रहा है। आवश्यकता से अधिक का परिग्रहिता हिंसा है। वैदिक धर्म कहता है कि यदि आवश्य कता से अधिक आर्थिक वस्तु इकट्ठी करा ता इरादा इतना ऊचा रक्खा, भावना इतनी उदात्त बनाओ कि स्वार्थ क लिये वह न हो किन्तु भूतेभ्यस्त्वाप्रतिग्रहणामि" प्राणीमात्र के लिए वह वस्तुए इकट्ठी करो। सरक्षक रूप मे अधिकारी रहो, स्वामी रूप मे नहीं।

जिनको उचित आवश्यकता हो और जिन पर अपन गुजारे से अधिक आर्थिक साधन (भूम्यादि) हो तो उन्ह दान कर देना चाहिये। इससे दाता में उदात्त भावना उत्पन्न होगी और प्रतिग्रहिता म कृतज्ञता का भाव उदय होगा इसलिए आर्य धर्म शास्त्रो में भूम्यादि दान का बड़ा माहात्म्य वर्णन किया गया है। महाभारत में ता यथाशक्ति भूमिदान करना बहुत ही आवश्यक बताया गया है। आर्य नरेश और भूमिपति सदा भूमिदान करके योग्य दान पात्रों का देते रहे हैं। भारतीय विचारधारा के इस उदात्त दृष्टिकोण को ध्यान म रखते हुए हमें विविध विचार धाराओं का समीक्षा करनी चाहिय। इसी आधार पर प्रस्तुत लेख के हम सर्वप्रथम जैन धर्म के भूमिदान सम्बन्धी विचारों की समीक्षा करेंगे।

जैन मत यद्यपि अहिंसा का पोषक कहाता है पर उसकी लीला निराली ही है। इस मत में भूमि का दान वर्जित किया गया है। भूदान को "महा घोर पाप का बध" बताया गया है। पढ़िये—"अब देने योग्य नाहीं ऐसे खोटे दान कुदान ही हैं। तिनकू देना योग्य नहीं। जाते हल, फावड़ा खुरपादि का निकर भूमि विदारण करिये और महान् हिंसा प्रवर्तें। महा आरम्भ पचेन्द्रियादिक सर्प, मूष, सूकर, हिरणादिक बड़े बड़े जीवन हू धान्यादिक फल के बाधक जान मारिये हैं। भूमि की ममता करि भाई भाई परस्पर मरि मरि जावे तीव्रराग को कारण ऐसा भूमिदान तैं महाघोर पाप का बध जाना।"
रत्न करड श्रावकाचार पृ० २६६ २६७ प०सदासुखलाल कासलीवाल की टीका

[आज देश मे भूमि क्रांति हो रही है। प्राचीन शास्त्र भूमि परिग्रह के उतने ही विरुद्ध थे जितने आज विनोबा जी के विचार हैं। भूदान आदोलन की समीक्षा करते हुए यदि हम जैन विचारधारा को उसके विरुद्ध पायें तो यह बड़े आश्चर्य का बात होगी पर लेखक ने प्रमाण सहित उनके विचार उद्धृत किये हैं अत उनके (जैनियों के) इस मिथ्या विश्वास की समीक्षा आवश्यक है क्योंकि भूमिदान की भावना जागृत करना आज राष्ट्रीय एव मानवीय कर्तव्य बन चुका है।]
—सम्पादक

हम जैनी बन्धु से पूछना चाहते हैं कि यदि उपर्युक्त दोषो के कारण भूमि का दान न किया जाय तो अपने पास भूमि रखने में क्या उक्त दोष न रहेंगे ?

भूमि जिस पर भो रहेगी वह खेती करेगा और खेती की रक्षा भी जीवो से अवश्य करेगा और विवाद भी होंगे ही तो क्या इन कारणो से खेती बन्दकरके भूमि को यू ही "परती" पड़ी रहने दिया जाय ?

यदि सस्य वृक्षादि विहीन भूमि पड़ी रहे ता हमारे जैनी भाई क्या खाकर जियेगे या जी रहे हैं।

आहार तो जैन तीर्थंकरो तक को चाहिये। और ऐसे हिंसादि दोष मिलो में, सब उद्योग धन्धों में, व्या पार में भी विद्यमान हैं। तो इन सब से जैन सेठों को अलग हो जाना चाहिये। फिर देखे कैसे मन्दिर बनते हैं, और कैसे मंले लगते हैं, और कहा से ऐसे गपाड़ ग्रन्थों का प्रकाशन हाता है। दोषों की जड़ तो भूमि धन आदि सब प्रकार की पूंजी ही है तो फिर क्यों वे पूंजीपति बने हुए हैं ? अधिकांश पूंजीपति जैन हैं। फिर इस सर्वे मिथ्यात्" को छोड़ते और नङ्ग धड़ङ्ग घूमते, पर केवल हवा खाकर।

भूमिदान तो घोर पाप, पर भूमि अपने पास रखना पाप नहीं क्या अनोखा सिद्धान्त है ?

ऐसे मत को मानने वाले आज "पच अणुव्रत" का प्रोपेगेन्डा" करके जनता के गुरु बनना चाहते हैं ?

इसी पुस्तक के इसी प्रकरण में लोहदान, स्वर्ण दान और कन्यादान का भी निषेध किया गया है। किसी गरीब को एक तवा भी दान न दिया जाय, स्वर्ण मुद्रा का दान भी नहीं और मालती बसन्त आदि औषध जिनमें स्वर्ण मिला हो किसी रोगी को दान न दिये जायें। इन उपकार के कामो को भी बन्द ही करना पड़ेगा क्योंकि लोहदान और स्वर्णदान जैन मत में पाप है।

कन्यादान को भी जैनी जी बुरा बता रहे हैं तो फिर क्या कन्या को यू ही रहने दिया जाय ? या जैन मत की "अर्जिका" बना दिया जाय ?

जैनी जी के मत में अपनी कन्या न होने पर दूसरों की कन्याओं का दान करना भी बुरा है अब विचारिये कि किसी गरीब की लड़की का विवाह इस रूप मे हो जाता है किसी गरीब का घर बस जाता है तो यह भी उन्हे पाप समझ पड़ता है। हैं न, देख जलने की बाते ? खाना आबादी इन्हे पसन्द नहीं खाना बरबादी पसन्द है। अच्छा जैनी जी ! उजाड़ दो ससार को। पर अपने ही घर से इस धर्म का प्रवर्तन करो।

प्राचीन राजा महाराजा ब्राह्मणों को भूमिदान दिया करते थे। निर्धन ब्राह्मणों की कन्याओं का दान भी करके धनी दानो अपने को पुण्यात्मा बनाते थे। जैनी जी को ब्राह्मणों का यह लाभ चुभा होगा। बस इसी ईर्षा वृत्ति का यहा इजहार किया है।

आज कल श्री विनोबा जी का भूदान यज्ञ चल रहा है। जैनो के पास भी आवश्यकता से बहुत अधिक भूमि है। इस ग्रन्थ के होते हुए वे दान दे सकेंगे या नहीं ? श्री विनोबा जी विचारें। जैन मत उनके पूज्य गुरु का प्यारा मत है और उनके अन्य चेलों को भी। पर इस ग्रन्थ के बताये दोषों से पूर्ण भूमि को तो पास भी रखने से पाप लगेगा। अत जैन लोगों को अपनी सब भूमि यू ही छोड़ देनी चाहिये। सर्वोदय वाले अधिकार न करेंगे तो कम्युनिस्ट कब्जा जमा हा लेगे। जैनी जी हिंसा से बच जायेंगे।

जैनो के इस अति "अहिंसावाद" ने देश के उत्कष मे कितने कितने रोड़े अटकाये हैं यह जानने के लिए उप युक्त उदाहरण पर्याप्त है।

इन्हीं बातो को जानकर ऋषि दयानन्द ने बारहवा समुल्लास लिख कर जैनमत की आलोचना की। इन मत मतान्तरों के मिथ्या विश्वासों ने देश हित का, मानव कल्याण का कितना विघात किया है यह जान कर ऋषि दयानन्द ने खण्डन के द्वारा इन मतो का निर्विष करने का प्रयत्न किया। बुद्धिवाद को चिमटा से श्री स्वामी जी ने इनके विष के दात तोड़ दिये हैं। पर अब अन्य रूप में ये विषैले मत फिर प्रकट हो रहे हैं। आर्यों को चाहिये कि इनके विष स जनता को सावधान करते रहे और तर्क की चिमटी से इनकी विष दाढ़ भी उखाड़ फेके।

अन्धविश्वासों के गढ़,
ढाने हैं तुमको आर्यों।
वेद के सिद्धान्त,
फैलाने है तुमको आर्यों
यू रही सुस्ती ता क्या,
उद्देश्य पूरा हा सके ?
लग पड़ो सेवा म जग की,
त्याग आलस आर्यों॥

वेदोपदेश

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥

(सत्यं) सचाई, (बृहत्) बड़प्पन, (ऋत) औचित्य, (उग्र) उग्रता, (दीक्षा) ध्येय की साधना मे जुटना, (तप) सृजन की उत्साह भरी उमग, (ब्रह्म) ज्ञान, (यज्ञ) सामूहिक कार्य की सिद्धि के लिए अपने स्वार्थों का बलिदान (पृथिवीं) भूमि या राष्ट्र को (धारयन्ति) धारण करते हैं। (सा) वह (नः) हमारे (भूतस्य भव्यस्य) जो हो चुका है और जो होने वाला है उसकी (पत्नी) मालकिन (नः) हमारे लिए (उरु लोक) विस्तृत स्थान (कृणोतु) करे।

आर्य मित्र

लखनऊ—११ जनवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५८

जयन्ती स्थली मथुरा में रखने का निश्चय

३१ दिसम्बर को मथुरा के आर्य बन्धुओं के निमन्त्रण पर सभा प्रधान श्री प० हरिशङ्कर शर्मा, सभा उपप्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट, सभा मन्त्री श्री फूलसिंह, सभा उपमन्त्री श्री कर्णसिंह, श्री आचार्य बृहस्पति, श्री उमेशचन्द्र स्नातक सम्पादक आर्यमित्र, श्री रामप्रसाद आर्य (मेरठ) की उपस्थिति में मथुरा निवासी श्री माताप्रसाद, श्री जगदीश शरण, श्री शिवचरण लाल, श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम, श्री सत्यदेव, श्री डा० गोकुलप्रसाद, श्री श्यामलाल श्री नत्थीलाल आदि ने जयन्ती समारोह मथुरा मे ही किये जाने की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और पूर्ण उत्साह के साथ गुरुधाम तथा अन्य समारोहों के उत्सव का सफल आयोजन करने का विश्वास दिलाया।

सभी परिस्थितियों पर विचार करते हुए समारोह स्थल मथुरा में रखना निश्चित हुआ और इस कार्य को आरम्भ करने के लिए श्री कर्णसिंह सयोजक श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम स० सयोजक तथा श्री शिवचरण लाल पत्रकार, श्री गोपालसहाय, श्री रमेशचन्द्र, श्री नरदेव स्नातक, श्री उमेशचन्द्र स्नातक श्री सत्यदेव, श्री मोतीलाल, श्री ओम्प्रकाश, श्री श्यामलाल श्री हरप्रसाद श्री कृष्ण गोपाल आदि सज्जनों की उपसमिति बना दी गयी जो इस कार्य का स्थानीय दृष्टि से सयोजन आरम्भ करेगी। कार्य आरम्भ हो गया है।

कर्तव्य की पुकार

जब कभी कोई महान् कार्य आरम्भ किया जाता है, तब उसके लिए शक्ति सचय का कार्य जितनी कुशलता और तत्परता से होता है, वह कार्य उतनी ही सुगमता और सफलता के साथ सम्पन्न हो जाता है। आज आपकी प्रतिनिधि सभा ने एक यज्ञ का आयोजन किया है। यज्ञ की सफलता के लिये बौद्धिक शारीरिक और आर्थिक सभी प्रकार की शक्तियों का सचयन आरम्भ हो चुका है। कुछ लोग स्वय अपनी सेवाए अर्पित कर रहे हैं, और कुछ लोगों से अर्पित करने के लिये आग्रह किया जा रहा है। ऐसे भी बहुत से आर्य बन्धु होंगे जिन तक सभा अधिकारियों अथवा जयन्ती सयोजकों की पहुँच नहीं हो सकी है, और वे जयन्ती के लिये अपनी सद्भावनाए लिये बैठे है कि कोई आये और हमसे कुछ कहे तो हम कुछ करे करायें। हमारा उन भाइयों से विनम्र निवेदन है कि आर्य परिवार के अभिन्न सदस्य के नाते आज प्रत्येक आर्य बन्धु का कर्त्तव्य है कि आपके परिवार के मुखियाओं ने जिस यज्ञ की रचना की है उसे शान के साथ सफल बनाने में जुट जाय। हम सदैव जयघोष करते हैं "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आज हमारी परीक्षा का अवसर आया है कि हम एक परिवार के रूप में अपने उत्साह का प्रदर्शन करें और ससार को दिखादें कि आर्य कैसे होते हैं उनमें कितनी लगन और अपने कार्य के प्रति दृढ निष्ठा होती है। हमारे प्रदर्शित उत्साह और सगठन के गर्भ में आर्य समाज का उज्ज्वल भविष्य छिपा है। हम आज ऋषि की पुण्य शिक्षा दीक्षा स्थली मे एकत्र हो भावी भारत के निर्माण का शखनाद करेगे और राष्ट्र को मार्ग दिखायेंगे। इस महान् कार्य के लिये सभा के अधिकारी और जयन्ती के कार्यकर्त्ता प्रत्येक आर्य बन्धु से यथा शक्ति सहयोग की अपील करते हैं आशा है आर्य जन विशेष कर उत्तर प्रदेश के आर्य जन अपने कर्त्तव्य की पुकार को सुनेंगे और ससार के सम्मुख आर्य समाज की और आर्य जगत के सम्मुख उत्तर प्रदेश की शान को ऊ चा बनाये रख सकेंगे।

आज के युग म सघेशक्ति का पाठ हम पढ़ते हैं, हमारे सघटन की आज परीक्षा है। हम आज ही जयन्ती के लिये अपने कर्त्तव्य का निश्चय करें और उसम जुट जाय तभी यह महान् यज्ञ पूर्ण हो सकेगा और आप देखेंगे और सुनेंगे सारी जनता एक स्वर से ऋषिराज की जय पुकार रही होगी और हम हृदय मे आनन्द का अनुभव करते हुए गा सकेंगे "ऋषिराज तेज तेरा चहु ओर छा रहा है।"

संघटन और अनुशासन

आर्य समाज को इस बात का गर्व है और इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत मे प्रजातन्त्र के सार्वदेशिक स्वरूप का विकास उसके द्वारा ही आरम्भ हुआ। सभा की रचना, निर्वाचन प्रणाली के सिद्धान्त पुराने हैं परन्तु भारत में उनका प्रचलन आर्य समाज सघटन द्वारा ही आरम्भ हुआ।

प्रजातन्त्र के साथ जहाँ बहुमत है वहा बुद्धि विवेक का भी महत्त्व है आर्य समाज बहुमत के मुकाबले बुद्धि विवेक के पक्ष पर अधिक जोर देता रहा है और यही कारण है कि अनेक सकटों और सघर्षों म भी विवेक ने आर्य समाज की सघटना को अक्षत बनाये रक्खा है। इस सबके पीछे वैधानिक अनुशासन की मान्यता का भाव कार्य करता रहा है। किसी विषय या प्रश्न पर मतभेद होना स्वाभाविक है, परन्तु मतभेद प्रकट करने का अवसर और स्थान निश्चित है। यदि कोई किसी सघटन का अङ्ग रहते हुए स्वय उसके कार्यों या प्रोग्रामों का विरोध करता है, तो लोग उससे पहला प्रश्न यही करेंगे कि तुम अभी तक उस सघटन के अङ्ग क्यों बने हुए हो। यदि नैतिक दृष्टि से विरोध की महत्ता को देखा जाय तो उसके उपयोगी अंश को सबको स्वीकार कर लेने म कभी किसी बुद्धिमान को हिचकिचाहट न होती है और न होना चाहिये। परन्तु किसी मतभेद के प्रस्तुत कर्त्ता रचनात्मक के स्थान पर विध्वसात्मक कार्य करने लगे तो उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि वे अपने महान् सघटन को ही अधिक क्षति पहुचा रहे हैं, और उसका तात्कालिक प्रभाव चाहे जो कुछ भी हो समाज की प्रगति में अन्ततोगत्वा बाधा ही पहुचेगी। इसलिए हम आर्य बन्धुओं के सम्मुख प्रजातन्त्र, सघटन और आर्य समाज तीनों की महत्ता प्रकट करते हुए निवेदन करना चाहेंगे कि सघटन को व्यक्तिगत महत्त्वाकाक्षाओं पर बलिदान न कीजिए। सवैधानिक नियमों का पालन करते हुए रचनात्मक परिवर्त्तन और सुधार के लिए अपने सुझाव दीजिए आप विश्वास रखिये अभी आर्य समाज म ऐसी महान् आत्मायें जीवित हैं (जो हमारी पीढी का बड़ा भारी सौभाग्य है) जो आपकी बातों पर सदैव विचार करेंगी और आपके सुझावों के रचनात्मक पक्ष को क्रियान्वित करने म आपको सहयोग देंगी। आप उन्हें बिना अवसर दिये जोश मे आकर अपने होश को भी न सम्हाले रह सके। यह आर्य समाज के लिए बड़े दुर्भाग्य की बात होगी।

आर्य समाजों के प्रतिनिधि सभा मे, सभा के प्रतिनिधि अन्तरङ्ग व अधिकारी वर्ग म है, आप उनके सामने अपने विचार भेजें, अपनी राय के लिए सयमित ढग से प्रचार विचार करें और फिर भी यदि सघटन का विवेक आपकी राय से सहमत नहीं तो आप आदर पूर्वक उसके निर्णय को स्वीकार करें, यही मर्यादा और यही गौरव परम्परा है। हम आशा करते हैं कि सभा की जयन्ती योजना से मतभेद रखने वाले भाइयों ने जो मार्ग अपनाया है उस पर पुनर्विचार करेंगे और खेद प्रकट करते हुए आर्य परिवार के अभिन्न अङ्ग के नाते सघटन के निर्णय का अनुशासन पूर्वक स्वीकार करेंगे और जयन्ती योजना की सफलता म योग देकर सघटन के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

सभा का नवीन वर्ष

१ जनवरी ५९ से सभा का आर्थिक वर्ष आरम्भ हो गया है। गत वर्ष की सम्पूर्ण गतिविधियों का लेखा जोखा करते हुए आर्य समाजों को नये वर्ष के लिए उत्साह पूर्वक आवश्यक कार्य आरम्भ कर देने चाहिए।

आर्य समाज के सघटन को सुदृढ़ बनाये रखने और व्यापक बनाने के लिए आवश्यक है कि समाजों में नवजीवन आवे, समाज अपने योग्य अधिकारी और कार्यकर्त्ता चुने तथा प्रतिनिधि सभा के लिए योग्य प्रति

[शेष अगले पृष्ठ पर]

सभा की सूचनाएं

आर्यमित्र-सूचना

सर्व आर्य जनता को सूचित किया जाता है, कि आर्यमित्र के सहायक सम्पादक पद से श्री भगवतशरण जी को मुक्त कर दिया गया है। अतः आर्यमित्र सम्बन्धी पत्र व्यवहार एवं लेखादि उनके नाम से न भेजा जाय।

सभा का वर्ष

सर्व आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर १९५८ को समाप्त हो गया। अतः आर्य समाजों को चाहिए कि अपना-अपना वर्ष सभा के साथ समाप्त करने की कृपा करें।

२—आर्य सभासदों की सूची अन्तरङ्ग सभा द्वारा बनाने के पश्चात् सभा के नियमानुसार २८ फरवरी १९५९ तक निर्वाचन हो जाना चाहिए। निर्वाचन के साथ-साथ उत्तर प्रदेशीय प्रति० सभा के लिए योग्यतम प्रतिनिधि महानुभावों को चुनना चाहिए।

३—आर्य समाजों के निर्वाचन के पश्चात् १५ मार्च तक उपप्रतिनिधि सभाओं का निर्वाचन हो जाना चाहिए।

४—वार्षिक प्रतिनिधि सभा फार्म प्रकाशित कराने की व्यवस्था की जा रही है अतः सभा प्राप्तव्य धन दशांश चार आना फण्ड, सूदकोटि आदि का सभा के श्री कोषाध्यक्ष जी के नाम नारायण स्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

स्मारक बनाने के सम्बन्ध में अच्छा सुअवसर

अन्तरङ्ग सभा दि० २५।१२।५८ का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) की बैठक में दान दाताओं के लिए एक अच्छा सुअवसर जो व्यक्ति, संस्था, अथवा गुरुधाम आदि होने वाले महोत्सवों के लिए २५०) रु० अथवा आर्यमित्र प्रकाशन लि० क० के ४० शेयर्स सभा को दान देंगे वे अपने या निकटतम सम्बन्धी की यादगार में नाम सभा भवन में अथवा गुरुधाम में जहाँ चाहेंगे अंकित करा सकेंगे। आशा है कि इस शुभावसर से लाभ उठाकर सभा की सहायता करेंगे। तथा यश और कीर्ति के भागी बनेंगे।

सम्पादक नियुक्ति की सूचना

सब साधारण को सूचित किया जाता है कि आर्यमित्र का सम्पादन २७ जून १९५८ से अवैतनिक रूप से गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक श्री पण्डित उमेशचन्द्र जी आयुर्वेदशिरोमणि, एम०ए० हल्द्वानी निवासी कर रहे हैं। अतः अन्तरङ्ग सभा दि० २४।१२।५८ के नि० स० १६ के अनुसार उक्त श्री उक्त श्री स्नातक जी महोदय की सेवाएं आर्यमित्र सम्पादक पद पर यह सभा नियुक्ति स्वीकार करती है। अतः सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी लेख, सूचना, कविता, समाचार आदि श्री सम्पादक जी के नाम से नारायण स्वामी भवन, लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

सभा की सूचना

विदित हो कि अन्तरङ्ग सभा दि० २५।१२।५८ के नि० सं० ३० के अनुसार भगवान दीन आर्य भास्कर प्रेस एवं आर्यमित्र के अधिष्ठाता श्रीयुत अनन्त बिहारी निगम जी बी० ए० एल० एल० बी० एडवोकेट लखनऊ निवासी निर्वाचित हुए हैं। तत्सम्बन्धी पत्र व्यवहार एवं धन उपर्युक्त श्री अधिष्ठाता जी के नाम से सभा कार्यालय नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

उत्तर-प्रदेशीय आर्यवीर दल के संबंध में सभा की सूचना

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाज उप प्रतिनिधि सभाएं तथा आर्यवीर दल के समस्त नगर नायक एवं संचालकों, आर्यवीरों को सूचित किया जाता है कि श्री रामजी प्रसाद जी गुप्त मुगल सराय के स्थान पर अन्तरङ्ग सभा दिनांक २४।१२।५८ के निश्चय स० १२ (अ) के निश्चयानुसार उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री ईश्वर दयालु जी आर्य सभा मुख्य उप मन्त्री बिजनौर निवासी निर्वाचित हुए हैं। अतः सर्व प्रकार का आर्य वीर दल सम्बन्धी पत्र व्यवहार श्री ईश्वर दयालु आर्य अधिष्ठाता के नाम से सभा कार्यालय नारायण स्वामी भवन लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें। और दल सम्बन्धी धन भी सभा कार्यालय में भेजें।

—फूलनसिंह
मन्त्री आ० प्र० सभा उ० प्र०

(पिछले पृष्ठ का शेष)

निधि भेजकर अपने क्षेत्र का उचित प्रतिनिधित्व करें। प्रायः समाजें अपने निर्वाचन या अपने स्थानीय प्रचार तक अपना लक्ष्य रखती हैं, परन्तु एक विश्व व्यापी संघटन होने के नाते हमें अपना स्थान और क्षेत्र भी देखना चाहिए और साथ ही अपने दायरे को व्यापक बनाये रखना चाहिए। सभा के उत्तर वर्षीय जीवन में एक निश्चित संख्या में ही प्रतिनिधि आते रहे हैं परन्तु अब हमें अपने उत्साह का परिचय देना होगा, और इस वर्ष प्रत्येक समाज के प्रतिनिधि को वृहदधिवेशन में पहुँचना होगा। आप कल्पना कीजिये जब उत्तर प्रदेश की एक हजार समाजों के प्रतिनिधि एकत्र होंगे, तब उनमें एक नये जोश की अनुभूति होगी, कार्य कर्त्ताओं को उत्साह और बल मिलेगा। अतः हम अभी से प्रार्थना करते है कि प्रत्येक समाज प्रान्त के कार्य में अपना हिस्सा अवश्य प्रदान करें। आशा है समाजे इस दिशा में सक्रिय होंगी।

हीरक जयन्ती के लिए पूर्वी क्षेत्र में भ्रमण

पूर्वी क्षेत्र के आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि आर्योपदेशक श्री प० विश्वनाथ जी त्यागी बी० ए० एल०एल०बी० एवं श्री प० राजबहादुर जी विद्यारत्न प्रचार मन्त्री ११ जनवरी १९५९ को भ्रमणार्थ पहुंच रहे हैं। उनके पहुंचने पर हीरक जयन्ती संबंधी धन प्रदान किया जावे।

राज्यपाल गाडगिल का उचित कदम

पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन के प्रसंग में फीरोजपुर जेल में जो लाठी कांड हुआ और जिसमें श्री सुमेरसिंह शहीद हुए उसके सम्बन्ध जस्टिस कपूर की रिपोर्ट से अधिक हमें कुछ नहीं कहना। अब ज्ञात हुआ है कि उस घृणित एवं अमानवीय हत्याकांड के कर्त्ताधर्त्ता श्री अजायबसिंह की पंजाब सरकार ने पदोन्नति का निर्णय किया है। इस निर्णय को जानते ही पंजाब के राज्यपाल श्री एन० वी० गाडगिल ने इस पदोन्नति को रोकने का निर्णय देकर अपने विवेक और साहस का परिचय दिया है। इस उचित कार्य के लिये हम राज्यपाल महोदय को धन्यवाद देते हैं।

स्वास्थ्य-सुधा

एलोपैथी के दोष

[श्री पं० कृष्णदत्त आयुर्वेदालंकार, फैजाबाद]

नवीनता के प्रवाह में आज देश बहा चला जा रहा है परन्तु इस भूल के लिए भावी राष्ट्र वर्तमान पथ प्रदर्शकों को कभी क्षमा न करेगा। शरीर के साथ नवीन प्राचीन का भेदभाव न होकर सत्यता का आग्रह होना चाहिए। एलोपैथी के स्थान पर भारतीय चिकित्सा शास्त्र सही प्रमाणित हो चुका है आवश्यकता है उसे समझने और अपनाने की आशा है पाठक लेखक के विचारों के आधार पर अपने स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा पद्धति पर विचार करेंगे। —स०

अब से कुछ दिन पूर्व बहुत समय से हमारे देश में विदेशी राज्य था। विदेशी अंग्रेजी सरकार ने जहां अनेकों साधन हमें सर्वदा गुलाम बनाए रखने के लिए बर्ते वहां एक साधन एलोपैथी का प्रचार और आयुर्वेद की निन्दा करना भी था। एलोपैथी का प्रचार इस जोर-शोर से किया गया है कि आज स्वतन्त्र होने पर भी बहुत से लोगों का विचार है कि चिकित्सा जगत् में एलोपैथी के सिद्धान्त सर्व मान्य हैं और अन्य चिकित्सा पद्धतियां आयुर्वेद आदि उसकी समानता की योग्यता नहीं रखतीं। यह बात बिलकुल अशुद्ध है। एलोपैथी भारत में तभी आई जब अंग्रेजी राज्य आया इससे पूर्व यहां पर आयुर्वेदिक तथा हकीमी चिकित्सा से ही रोगियों का इलाज होता था। हकीमी की बहुत सी दवायें तथा सिद्धान्त आयुर्वेद से मिलते हैं। वस्तुतः आयुर्वेद ही उसकी माता है। मुसलमाना राज्य-काल में आयुर्वेद के साथ साथ हकीमी का भी प्रचार हुआ। एलोपैथी में बहुत से दोष हैं, उसका सबसे बड़ा दोष तो यह है कि इसमें रोग का इलाज नहीं होता बल्कि रोग को दबा दिया जाता है, शरीर के दोषों को निकालने का कोई प्रबन्ध नहीं है, जैसा कि प्राकृतिक तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा में होता है, जिससे रोग ऊपर से अच्छा हो जाता है लेकिन उसकी जड़ नहीं जाती और रोग एक जगह से हटकर रूपान्तर में फिर प्रकट होता है। जब से इन्जेक्शन निकले हैं तब से लोग समझते हैं कि यह चिकित्सा की बड़ी अच्छी विधि है, परन्तु वास्तव में इससे बहुत से धन जन का नाश हुआ है और रोगों की वृद्धि हुई है। ज्यों-ज्यों डाक्टर बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों रोग भी बढ़ते जाते हैं, अजब तमाशा है। कांग्रेस सरकार को इधर ध्यान देना चाहिये और आयुर्वेद की रक्षा में तथा उसके विकास में समुचित प्रयत्न करना चाहिये। स्वराज्य में भी भारत में भारतीय चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेद की रक्षा न हो और करोड़ों रुपये की विदेशी दवायें विदेशों से मंगवाई जावें, यह बड़े अन्धेर की बात है। अंग्रेज चले गए परन्तु हम इतनी गुलामी मनोवृत्ति के हैं कि अभी तक (जबकि स्वराज्य प्राप्त हुए ११ वर्ष से अधिक हो गये हैं) अंग्रेजों की ही हर बात हमें पसन्द आती है। क्या हमारी सरकार चिकित्सा के भारतीय स्वरूप को समझ उसकी उपयोगिता से लाभ उठायेगी।

एलोपैथी के दोषों के सम्बन्ध में प्रसिद्ध डाक्टरों की सम्मतियां देखिए—

१—जर्मनी के प्रसिद्ध डाक्टर हैनीमन लिखते हैं—"एलोपैथिक चिकित्सा के अनुसार किसी पुराने और कठिन रोग की चिकित्सा करना असम्भव है। डाक्टर विषैली औषधियां मनुष्य के शरीर में भर देते हैं।

२—इंगलैण्ड के प्रसिद्ध डाक्टर सर विलियम चांसलर का कहना है कि हम लोग औषधि जिसके बारे में हम कम ज्ञान रखते हैं उसे जिसके बारे में हम और भी कम ज्ञान रखते हैं ऐसे शरीर में घुसेड़ते हैं।

३—अमेरिका के डाक्टर होमस का कहना है कि यदि सब एलोपैथिक औषधियां समुद्र में फेंक दी जातीं तो मनुष्य का बड़ा उपकार होता।

४—डाक्टर क्लाक का कहना है कि एलोपैथिक चिकित्सकों ने लाभ पहुंचाने के प्रयत्न में लाभ के स्थान पर हानि अधिक पहुंचाई है। उन्होंने हजारों ऐसे रोगियों के प्राण लिए जो यदि प्रकृति के भरोसे छोड़ दिए जाते तो अवश्य स्वस्थ हो जाते।

५—डाक्टर अबरानकी का कहना है कि चिकित्सकों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ रोगों की संख्या भी बढ़ती जाती है।

६—अमेरिका के डाक्टर हेनरी लिण्डहार एम० डी० कहते हैं—"यदि नवीन रोग को औषधि अथवा इन्जेक्शन आदि से शरीर में दबा दिया गया तो विकार शरीर से नहीं निकलता और कहीं जीर्ण रोग यक्ष्मा आदि के रूप में प्रकट होता है।

७—जर्मनी के प्रिंस बिस्मार्क के चिकित्सक स्वेनर ने बहुत कड़े शब्दों में विषैली और प्राणघातक एलोपैथिक औषधियों की आलोचना की है।

(८) डा० लक्ष्मीनारायण जी चौधरी रिटायर्ड सिविल सर्जन जबलपुर लिखते हैं—"मैं मामूली एलोपैथिक दवाओं से लेकर कीमती दवाओं तक को अपने जीवन में आजमा चुका हूं और मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि वह बेकार ही नहीं बल्कि हानिकारक भी हैं. वह यह भी लिखते हैं कि स्वास्थ्य का प्रश्न बहुत सरल है किन्तु शोक है कि इन दिनों लोगों ने उसे बहुत कठिन बना दिया है। स्वस्थ रहना ही शरीर की साधारण प्राकृतिक अवस्था है, किन्तु मनुष्य ने प्रकृति के मार्ग में बहुत-सा अड़चनें डाल रक्खी हैं, इससे रोगों की भरमार है, एलोपैथिक डाक्टरों ने इस उलझन को बढ़ाकर तन्दुरुस्ती के मामले को और भी पेचीदा कर दिया है।

(९) कर्नल शार्ट ने कहा है कि रोगों की वृद्धि इंजेक्शन और टीके से नहीं रोकी जा सकती बल्कि व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्य के प्राकृतिक नियमों का अक्षरशः अभ्यास करने से ही ऐसा होना सम्भव है। जीवन शक्ति भी इंजेक्शन से नहीं स्वास्थ्य के नियमों पर चलने से बढ़ाई जा सकती है।

यदि एलोपैथी का वर्तमान रूप उसकी प्रधानता के साथ चालू रक्खा गया तो न केवल हमारे देश को करोड़ों रुपये की हानि ही उठानी पड़ेगी बल्कि जनता का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जावेगा और क्षय (तपेदिक) इत्यादि रोगों की भयानक वृद्धि होती रहेगी। चिकित्सा कार्य के दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर हम कह सकते हैं कि स्वास्थ्य की समस्या बहुत सरल है, जो प्राचीन आयुर्वेद के ग्रन्थों में दिन चर्या, ऋतुचर्या, पंच कर्म आदि के नियम लिखे हैं। यदि हम तदनुसार आचरण करें तो या तो रोग होगा ही नहीं और यदि होगा तो प्राकृतिक उपायों उपवास, वमन, विरेचन, वस्ति आदि क्रियाओं तथा दूध, फल, हरे साग आदि भोजनों द्वारा अच्छा हो जायगा यदि कुछ कसर बाकी रहे तो आयुर्वेदिक औषधि से ठीक हो जायगा।

इस प्रकार हमने देखा कि जिस एलोपैथी का इतना शोर है वह वास्तव में एक मायाजाल है। अतः उससे आप बचें और कृत्रिम तथा आडम्बर प्रधान चिकित्सा को छोड़ कर प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक चिकित्सा करें। एलोपैथी के आडम्बर में बड़े बड़े सयाने फंस जाते हैं यह आसुरी चिकित्सा है। आयुर्वेद और एलोपैथी में पूर्व और पश्चिम का भेद है। एक क्षणिक और दूसरी स्थायी है। आप ही निर्णय करें दीर्घ स्वास्थ्य चाहते हैं या क्षणिक आराम। स्थायी लाभ के लिए आयुर्वेद ही उत्तम चिकित्सा पद्धति है।

जीवन-ज्योति

ऐतिहासिक टिम टिमाते दीपक—
सन्त श्री स्वामी कालूराम जी रामगढ़िये

ले०—विद्याभूषण श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा गौर काव्यतीर्थ शाहदरा देहली

★ आर्यसमाज की नींव में जिन तपस्वी त्यागियों का जीवन समर्पित हुआ है उनका स्मरण हमारा कर्तव्य है और उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए हमे अपने अन्दर उत्साह लाना चाहिए। —सम्पादक ★

दिनांक ५ १० ५८ रविवार के आर्यमित्र के पृ० ६ पर उक्त स्वामी जी के जीवन विषय मे श्री पं० विश्वबन्धु वेदालङ्कार एम० ए० का लेख छपा है। लेख के प्रारम्भ में "जिनका ध्यान उन नींव के पत्थरों पर जाता है जो अपने अस्तित्व को मिटाकर इन शानदार भव्य भवनों की शालीनता को अपने सीने के ऊपर खड़ा कर देते हैं, आज इतने समझदार व्यक्ति कितने हैं जो इस ध्रुव सत्य को समझते हों ? आदि। श्री स्नातक जी का लेख हृदय तल की मार्मिक उत्थान है।

लेख की अन्तिम पंक्तियों में उन्होने जो परामर्श दिया है, है तो वह भी उचित ही है, परन्तु है सर्वदा ही अरण्य रोदन।

भला ? इस युग में आ० स० मे भी ऐसी किस सभा में सुप्रबन्ध है जो आ० स० के सैद्धान्तिक प्रचार कार्यारम्भ काल मे निज जीवन का सर्वस्व न्यौछावर करके नींव बने, जो निस्पृह अनन्त अतीत महानिशा में चिर निद्रा निमग्न हो गये और निज जीवन में केवल वैदिक सिद्धांतों का मन्तव्य एकमात्र अपना पक्ष समझते रहे, तथाच जो निज स्वार्थ साधक किसी भी पार्टी (दल) विशेष के न तो अगुवा ही थे और न पिछलगवा। ऐसे नींद में निमग्न सोतों को भला कौन जगावे ?

सन्त श्री कालूराम जी की कुटिया रामगढ़ शहर (राजस्थान) के बाहर ईशान मे कोई आधा मील की दूरी पर सुनहरी रेत के टीबों पर बनी हुई है। सन् १९२० ई० में रूइया संस्कृत कालेज में मैं शास्त्री की तैयारी कर रहा था। उन दिनों (मुझे ता० तो याद नहीं रही) रामगढ़ शहर के भीतर किसी स्थान में कोई उत्सव हो रहा था जिसमें जयपुर निवासी श्री पं० नरसिंह देव भी उपस्थित थे। वहां मुझे किसी ने श्री स्वामी कालूराम जी के जीवन महत्व पर सुनाया कि—

"स्वामी जी आर्य समाज के सिद्धान्तों के मानने वाले थे और बड़े ही सरल प्रकृति के निस्पृह महात्मा थे। एकदा वे अपनी कुटिया में बैठे थे। नगर के अनेकशः लोग उनके दर्शनार्थ आते थे। उनकी महानता इधर उधर फैल रही थी। रामगढ़ के एक श्री सेठ जयनारायण जी (शिव नारायण जो उनके भाई थे) अपनी आर्थिक स्थिति से चिन्तित होकर स्वामी जी के पास पहुंचे और अतीव विनम्र भाव से प्रार्थना की कि—

"महाराज ! मैं कारोबार के लिए कलकत्ता जाना चाहता हूं आप मेरे लिए कोई शुभ मुहूर्त निकाल दीजिए।"

"तुम इसी समय कलकत्ता चले जाओ तुम्हारे लिए यही शुभ मुहूर्त है—पुरुषार्थ करो और उत्तम फल पाओ।

सेठ जी ने कहा कि महाराज ! इसी समय तो मैं कहां जा सकता हूं जाने के लिए कुछ तैयारी भी करूंगा अतः आप कोई दूसरा ही मुहूर्त निकालने की कृपा कीजिए। स्वामी जी ने उनकी बात को फिर भी शान्त मस्तिष्क से सुना और पुनरपि अपना पूर्व प्रदर्शित ही मुहूर्त बता दिया—कि यदि जाना ही चाहते हो तो इसी समय चले जाओ तुम्हारा इसी में कल्याण है।

सेठ जी बड़े असमंजस में पड़ गये। उन्होने एक ओर तो अपने पारीवारिक जनों से मिलना जुलना परामर्श आदि करना था। कुछ आर्थिक कठिनाई की भी बड़ी उलझन थी, उसे भी हल करना था और वह एक कठिन समस्या थी अतः उसी समय तत्क्षण ही रामगढ़ से प्रस्थान करना कठिनतर था।

दूसरी तरफ एक निस्पृह चरित्रनिष्ठ सन्त महात्मा के प्रदर्शित स शुभाशीर्वाद शुभ मुहूर्त पर अपनी भावी सफलतार्थ पूर्ण श्रद्धा भी थी। क्या करें ? और क्या न करें। बड़े द्विविधा मे पड़ गये। सुनहरी रेतीले टीबों पर स्थित महात्मा कालूराम जी का प्रदर्शित मुहूर्त सोचते हुए सेठ जी घर को लौटे और अन्त म यही निश्चय करके कि चाहे कुछ भी हो, मुझे इसी समय कलकत्ते के लिए प्रस्थान कर देना चाहिए—रामगढ़ से प्रस्थान कर दिया।

सेठ जी कल कलकत्ते चले गये और वहां सुनते हैं कि कुछ दिन तक तो किसी सेठ के मुनीमी करते रहे किन्तु थोड़े ही समय के बाद श्री स्वामी कालूराम जी का प्रदर्शित मुहूर्त सफल होने लगा। निर्धन सेठ जी पर लक्ष्मी रीझ गई। गल बहियाँ लेकर उनके घर में आ जमी। सेठ जी का व्यापार चमका और खूब चमका। थोड़े ही दिनों में सेठ जी धन लक्ष्मी पति बन गये। जयनारायण रामचन्द्र, नाम से उनकी फर्म चली और सम्भवतः अब भी वह फर्म (मुझे ठीक याद नहीं) चल ही रही है। उन्हीं के सुपुत्र सेठ दीपचन्द जी पौद्दार है। जो अपने सर्वथा ही सात्विक पवित्र धार्मिक सरलतम जीवन से प्रदीपवत् ही प्रकाशमान है। दुबला पतला शरीर है। ९६।। ९७ तक उनकी रक्त उष्मा सदैव रहती है।

सम्पन्न होते हुए भी पत्नी वियोग पर दूसरा विवाह नहीं किया। चिरकाल तक आ० स० १९ कार्नवालिस स्ट्रीट कलकत्ता के वे प्रधान रहते रहे हैं। और इस समय सम्भवतः वैद्यनाथ धाम में निज विशाल भवन में एकान्त शान्त आत्मा चिन्तन में ही निमग्न रहते हैं। कलकत्ते में बड़े बाजार के पास दक्षिणी सेण्टर एवेन्यू में उनकी सुविशाल कोठी है। इनके परिवार से लाखों रुपये आ० स० को दान में प्राप्त होते रहे हैं। सेठ दीपचन्द्र के सुपुत्र श्रीकृष्णलाल जी पोद्दार हैं जो आर्य समाज के साथ अपने पूर्वजों के गौरव मान-मर्यादा की रक्षार्थ सम्बन्धित है। इस परिवार का आर्य समाज के साथ जो कुछ भी प्रेमभाव बना हुआ है उसका एकमात्र कारण यही है कि उनका आर्थिक विकास-श्री स्वामी कालूराम जी के शुभाशीर्वाद के द्वारा ही हुआ है।

योगादि दर्शन ग्रन्थों में लेख है कि—शुद्धान्तःकरण उच्चयोगी महात्मा जन जो कुछ कह देते हैं वह वैसे ही सिद्ध हो जाता है, और वह कहते भी वही हैं जो उन्हें दिव्य दृष्टि से प्रतीत हो जाता है। अन्यथा ऐसे सन्त जन किसी के प्रति कुछ कहते ही नहीं हैं।

वास्तव में स्वामी कालूराम जी महाराज, रामगढ़ के मरुस्थल सुविशाल रेतीले टीबों में अब भी सुमधुर शीतल जल के झरने के समान ही चमक रहे हैं। किन्तु बहुत सम्भव है कि यदि समाज को इन ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रति ऐसी ही उपेक्षा बनी रही तो कुछ काल पश्चात् काल प्रवाहित वाताहत बालुकामय आवरण में वे जन सदैव के लिए भावी सन्तति के लिए आंखों से ओझल अवश्य हो जाएंगे।

क्या इन लेखों पत्रों के द्वारा भी प्रान्तीय अथवा केन्द्रीय प्र० नि० सभायें काल कवलित इन ऐतिहासिक जाज्वल्यमान हीरों को देखने का प्रयास कर सकेंगी ? अथवा—"पदं न शोचामि, कृतं न मन्ये" का ही पालन होगा ?

कवि का कथन सर्वथा ही सत्य है कि—

परीक्षकः यत्र न सन्ति देशे,
नार्घन्ति रत्नानि समुद्र जानि।
आभार देशे किल चन्द्रकान्तं,
त्रिभिर्वराटैः विपणन्ति गोपाः॥

अज्ञानान्ध व्यक्ति जब प्रत्यक्ष चमकते हुए सूर्य को ही ठीक २ नहीं देख सकता, तो फिर भला वह इन टिमटिमाते दीपकों को तो देख ही कैसे सकता है सचिन्त्य-सुचिन्त्य सत्य हैं।

★

जैन धर्म प्राचीन है या नवीन

(ले०—जगन्मोहनलाल शास्त्री मन्त्री भारतवर्षीय जैन सघ चौरासी, मथुरा)

प्रस्तुत लेख के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है ! आर्य समाज के पक्ष के उत्तर में लेखक ने जैन धर्म का पक्ष प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। विचार विमर्श की दृष्टि से हम इसका स्वागत करते हैं और इस लेख में जो आपत्तियाँ उठाई गई हैं उसका उत्तर शीघ्र ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे। जो सज्जन इसके उत्तर कुछ लिखना चाहें अविलम्ब भेज दें। —सम्पादक

यद्यपि किसी वस्तु की महत्ता अपनी प्राचीनता या नवीनता पर अवलम्बित नहीं है, तथापि प्राचीन के सम्बन्ध में नवीनता की भ्रांति होने से एक सत्य का अपलाप होता है।

हिन्दी के इस सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र के ता० २६-१०-५८ के अंक में पृष्ठ ११ और १२ पर 'वैदिक उपासना ही सर्व श्रेष्ठ है' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ है। यह लेख आचार्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी का है। इस लेख का विषय है 'वैदिक धर्म में निराकार ईश्वर की उपासना प्रतिपादित है, और वही सनातन उपासना का मार्ग है।'

जहां तक निराकार ईश्वर की उपासना का सम्बन्ध है वह कोई विवादग्रस्त विषय नहीं है। ईश्वर का तो स्वरूप ही निराकार है। अतः इसके सम्बन्ध मे तो कोई भी असहमत नहीं हो सकता, परन्तु संसारी जन जब निराकार को अपनी मानसिक कल्पना में जो साकार को ही ग्रहण करती है, नहीं उतार पाता तो उसे साकार उपासना के द्वारा निराकार की उपासना के योग्य बनाया जाता है। अग्नि की दाहक शक्ति निराकार है पर वह साकार अग्नि के अवलम्ब से ही प्राप्त की जा सकती है।

यह ठीक है कि गुरुनानक, मुस्लिम पैगम्बर, जैन तीर्थंकर ईसा, राम, कृष्ण, और शिव की उपासना जो विभिन्न मतानुयाइयों द्वारा की जाती है, वह उनके उदय काल के बाद ही की गई होगी। उनके प्रादुर्भाव के पूर्व नहीं, पर जहां तक मैं समझता हूं कि हिन्दू धर्म शास्त्र इन अवतारो को ही ईश्वर नहीं मानते किन्तु इसे ईश्वर का अवतार मानते है और इनकी सगुण उपासना से ही निर्गुण ईश्वर की उपसाना की ओर बढ़ने का मार्ग बताते हैं। गुरु नानक और पैगम्बर के उपासक लोग भी इनको मार्ग दर्शक गुरु के रूप मे मानते हैं, यह बात भी सर्वविदित है। ये मत भी उन्हें स्वयं ईश्वर नहीं मानते हैं।

इसी प्रसंग में स्वामी जी ने जैनोपासना को लक्ष्य में रखकर यह लिखा है कि—

'३००० वर्ष पूर्व जनों के तीर्थंकर भी न थे तो मन्दिर और मूर्ति भी कैसे बनते, उस समय तीर्थंकरों के पूर्वज ईश्वर की पूजा कहाँ और कैसे करते थे।'

यहाँ लेख के इस अंश पर विचार करना आवश्यक है। स्वामी जी ने जैन तीर्थंकरों की प्राचीनता के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, वह संभवतः अपने स्वयं के अनुमान पर लिखा है। इसलिए यह आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में भी स्पष्टीकरण किया जाय।

यद्यपि जैन धर्म भी अनादिकाल से संसार में प्रचलित है ऐसी जैन शास्त्रों की मान्यता है। जैन शास्त्र यह बताते हैं कि कालचक्र के दो भेद हैं एक उत्सर्पिणी (उन्नति का युग) और दूसरा अवसर्पिणी (हीनता का युग) उत्सर्पिणी में मनुष्य के शरीर धर्म कर्म अनुभव विचार शक्ति आदि में वृद्धि काल क्रम से होती जाती है और अवसर्पिणी में इन सभी बातो में हीनता आती जाती है। दोनों कालों का प्रमाण असंख्य वर्षों का है। अर्थात् हमारी सख्यामान की गणना की कल्पना की उड़ान के ऊपर वह काल गणना है।

प्रत्येक काल भेद में तीर्थंकर अथवा सामान्य केवल ज्ञानी (सर्वज्ञ) होते हैं, और वे सनातन जैन धर्म का उपदेश जनता को देते हैं। दोनों कालो का परिवर्तन एक ही बार नहीं होता किन्तु उत्सर्पिणी के बाद अवसर्पिणी और अवसर्पिणी के बाद उत्सर्पिणी हमेशा आते है और ऐसा अनन्त काल तक होता रहेगा तथा इन कालों में तीर्थंकर भी इसी प्रकार होते आये है, और होते रहेगे, जिस समय जिस तीर्थंकर का धर्म प्रवर्तन काल चलता है, उस समय जनता उन्हें ही अपना मार्ग दर्शक गुरु मान कर उनकी पूजा उपासना उनके नाम से करती है, साथ ही अन्य तीर्थंकरों की भी करती है। आज जिन २४ तीर्थंकरों की मूर्तियां जैन मन्दिरों में हैं, वे वर्तमान में चालू अवसर्पिणी काल के तीर्थंकर की है। इनकी उपासना करते हुए भी जैन लोग पूर्व उत्सर्पिणी और भावी उत्सर्पिणी काल के तीर्थंकरों की मूर्तियां न बनाते हुए भी उनकी सांकाल्पिक रूप से वैसी ही उपासना करती है, तथा उनके भी पूर्व और आगामी तीर्थंकरो की भी उपासना करती है।

ये सभी तीर्थंकर या सामान्य केवली सिद्धि (निर्वाण) को प्राप्त होने पर स्वय निराकार सिद्ध परमात्मा बन जाते हैं ऐसे निराकार सिद्ध परमात्मा को भी आज जैन जनता पूजती है। तथा किसी भी काल के स्वयं तीर्थंकर तथा उनके पूर्वज अपनी सांसारिक दशा मे उन निराकार 'सिद्ध' परमात्मा की पूजा उपासना करते थे। यह जैन शास्त्रों की मान्यता है।

अब ऐतिहासिक और पौराणिक युग के प्रमाण हमें इस दिशा में कहाँ तक ले जाते हैं यह भी विचारणीय है—

१—वैदिक धर्म का मूलाधार वेद ग्रन्थ है जो आज ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीनतम है। वेद में विभिन्न मन्त्रों का उल्लेख है। इनमे से कुछ मन्त्रों मे जैन तीर्थंकरो का उल्लेख किया गया है। देखिये—

अर्हन् बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम्। अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्रत्वदस्ति। ऋग्वेद अ० २ सू० ३३ वर्ग १७

अर्हन् जो जैन देवता का वाचक है इस मन्त्र मे उनकी प्रशंसा की गई है।

ऋग्वेद मण्डल १ सूक्त ९४ तथा मण्डल ५ सूक्त ५२ ५ मे भी 'अर्हन' का आदर के साथ उल्लेख किया गया है।

'अर्हन' यह सामान्य जैन देवता का वाचक है जो किसी भी तीर्थंकर पर सामान्य केवली के लिए जो निर्वाण के पश्चात् निराकार परमात्मा बन जाते हैं, आता है तथापि वर्तमान २४ तीर्थंकरों मे प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव का तथा ७ वे तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जी का, २२ वे नेमिनाथ जी का नाम भी वेद मन्त्रो मे है। देखिये—

ऋषभ मा समानानां सपत्नानां विषा सहितम्। हन्तारं शत्रूणाम् कृधि विराज गोपित गवाम्॥—ऋग्वेद

ओम् सुपार्श्वमिन्द्रहवे। —यजुर्वेद

स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। —यजुर्वेद

भागवत पुराण में भगवान ऋषभ देव को आठवां अवतार करके उल्लिखित किया है।

बाल्मीकि ऋषि द्वारा प्रणीत प्रसिद्ध धार्मिक ... में बाल काण्ड सर्ग १४ श्लोक २२ में—

तापसा भुञ्जते चापि श्रमणा भुञ्जते तथा।

इस श्लोक द्वारा बताया गया है कि श्री महाराज दशरथ 'श्रमण' जैन तपस्वियों को भी भोजनादि दान देते थे, इससे उनके समय में जैन श्रमणों का अस्तित्व सिद्ध होता है।

श्री जगत् गुरु शंकराचार्य जी भी बादरायण, व्यास के वेदान्त सूत्र के भाष्य में जैनधर्म की प्राचीनता को स्वीकार करते हैं।

मार्कण्डेय पुराण, आग्नेय पुराण अ० १०७ ब्रह्माण्ड पुराण, विष्णु पुराण कूर्म पुराण, शिव पुराण, नारद पुराण इन हिन्दू धर्मशास्त्रों के प्राचीनतम ग्रन्थों में जैन तीर्थंकरो के उल्लेख आते हैं जो इस बात के प्रमाण है कि इन वेद तथा पुराण आदि धर्मग्रन्थों की रचना काल मे माननीय ग्रन्थ लेखकों के सामने जैन तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित जैन धर्म माना जाता था। फलतः जैन धर्म का अस्तित्व स्वामी जी के लेखानुसार ३००० वर्ष का नहीं किन्तु वैदिक पौराणिक दृष्टि से अत्यन्त प्राचीनतम है।

वर्तमान युग के इतिहास के विद्वानों ने भी इन तथा ताम्रपत्र शिलालेख आदि आधारो पर जैनधर्म को अत्यन्त प्राचीनतम माना है। सर राधाकृष्णन्, डा० जैकोबी, श्री वरदकान्त मुख्योपाध्याय, डा० फुहरर, प० रामिश्र शास्त्री, श्री कन्नोमल जी एम० ए०, श्री हरिसत्य भट्टाचार्य, श्री ... डा० ए० गिरनाट, मैक्समूलर, महात्मा गांधी, वर्तमान राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी आदि विद्वानों ने समय समय जैन धर्म की प्राचीनता के सम्बन्ध मे बहुत कुछ सप्रमाण लिखा है। मोहन जोदड़ो के ५००० वर्ष प्राचीन सिक्कों मे मे जिनेश्वर और जिनेश नामो का पाया जाना तो स्पष्ट प्रत्यक्ष प्रमाण है, जो जैनधर्म के अस्तित्व को अपने से प्राचीन सिद्ध करता है।

हम आशा करते है कि इस स्पष्टीकरण से माननीय स्वामी जी का लक्ष्य इस ओर जायगा तथा 'आर्यमित्र' के पाठक भी इस सम्बन्ध मे उक्त प्रमाणो की उपस्थिति मे यदि कोई भ्रम धारणा हो गई हो तो दूर कर लेंगे। जैन मन्दिरो में मूर्तियां की स्थापना वीतराग अवस्था की होती है यह अवस्था

(शेष अगले पृष्ठ पर)

विश्व में वेद प्रचार और आर्य समाज

[वेदपथिक श्री धर्मवीर आर्य झंडाधारी उपदेशक सागरुहेला, देहली ५]

हम बड़े उत्साह और जोश के साथ गाते जाते हैं वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने; पर उस गूंज को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए हम आर्य जन कहां तक अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हैं यह प्रश्न है, जो हमारी परीक्षा ले रहा है, क्या हम इसका उत्तर देने में समर्थ हैं।

—सम्पादक

आज विश्व में अज्ञान अन्धकार रूढ़िवाद और नास्तिकता का व्यापक प्रचार हो रहा है। आज विश्व का मानव समाज वेदों की शिक्षाओं को भुलाकर भोगवाद और भौतिकवाद की ओर अन्धाधुन्ध द्रुतगति से बढ़ता जा रहा है।

आज विश्व-युद्ध के काले बादल चहुँओर छाये हुए हैं।

विश्व-विनाश के पथ पर अग्रसर हो रहा है। विश्व का मानव वेद पथ को भूलकर दानव बन चुका है।

मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य क्या है?

मानव कहां से आया है, कहां जाना है?

आत्मा और परमात्मा का संबंध क्या है?

जीवन का ह्रास और विकास क्या है?

धर्म और कर्म का जीवन के साथ क्या सम्बन्ध है?

वेद और जीवन का सम्बन्ध क्या है?

अमृत और गरल क्या है?

भाग्य और कर्म क्या है?

वैदिक जीवन अलौकिक दिव्य ज्योति का एक अनुपम प्रकाश कब और कहाँ और कैसे प्राप्त होता है?

जीवन को अमर और सफल बनाने का सुगम और सुलभ मार्ग क्या है?

धर्म, अर्थ काम और मोक्ष कहते किसे हैं?

जीवन और मरण क्या?

जीवन का सौंदर्य क्या है?

उपरोक्त प्रश्नों पर हम ध्यान पूर्वक विचार करें। क्षणभंगुर जीवन की अनमोल घड़ियों को क्या हम दिन-रात विषय और भोगों में ही लुटा कर सुख और शांन्ति को प्राप्त करने की मृग तृष्णा में ही भटक रहे हैं।

आज का मानव यदि वेद की आज्ञाओं का पालन करने लग जावे तो आज का मानव देव बन कर इस जीवन को सार्थक बनाकर अमर बन सकता है।

आर्य समाज की स्थापना विश्व के वंदनीय महर्षि दयानन्द जी ने वैदिक युग के नव-निर्माण और वेद प्रचार तथा विश्व के कल्याण के लिये ही की थी। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

विश्व में वैदिक स्वराज्य स्थापित होगा। चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित होगा। वेद मन्त्रों की पवित्र ध्वनि से दशों दिशायें गूंज उठेंगी। वेद के सन्देश को प्राप्त कर आज विश्व का मानव हर्ष विभोर हो उठेगा।

वैदिक सभ्यता का सूर्य उदित हो रहा है।

इस जीवन के संग्राम में हम आगे बढ़ रहे हैं।

आर्य समाज विश्व के मानव समाज का पथ प्रदर्शक बन रहा है।

विश्व के नर-तन धारियों! आओ वैदिक धर्म की शरण में! आर्य बनो, शुभ कार्य करो, आसुरी सभ्यता को त्याग कर वेद पढ़ो, नित्य संध्या और हवन करो। इसी में जीवन का कल्याण निहित है। विश्व में वेद प्रचार के बिना विश्व का कल्याण होना सर्वथा असम्भव है। आओ! हम सब महर्षियों के ऋण से उऋण होने के लिये वेद प्रचार में जुट जायें। पुनः आर्यावर्त देश हमारा विश्व का गुरू बनें। घर-घर में वेद का प्रचार हो। एक ईश्वर की उपासना हो तो आज ही वैदिक स्वराज्य की स्थापना हो सकती है।

ओ३म् की परम पवित्र पताका को लेकर हम विश्व में वेद का प्रचार और वैदिक सभ्यता व संस्कृति का प्रसार करने का ध्रुव धारण कर लें।

विश्व के आर्यों उठो! विश्व को जगा दो। बनो आर्य और जगत् को वेद भक्त बना दो। भूतल में आज रहें न अनार्य एक भी आज यह व्रत पूरा करके दिखा दो।

बुद्ध और अशोक के अनुचरों की भांति हम त्याग और तप का जीवन बनाकर महर्षि दयानन्द के सच्चे सैनिक बनकर आज हम ऋषि दयानंद के स्वप्नों का एक नया संसार बनाकर वैदिक युग का निर्माण करेंगे। विश्व के घर-घर में वेद का प्रचार करके विश्व को विनाश से बचाकर सच्चे आर्य बन कर धर्मवीर और कर्मवीर कहलायें।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

निर्वाण प्राप्ति की है मूल भूत अवस्था है, जिससे 'सिद्धि' होती है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति विशेष रूप किसी तीर्थंकर से नहीं है, किन्तु एक सिद्धान्त पर आधारित है। चूंकि तीर्थंकर भी उसी सिद्धान्त पर आरूढ़ थे। अतः उनकी मूर्तियां भी वैसी-ही हो सकती हैं अन्यथा नहीं। इस प्रकार इन वीतराग मूर्तियों के द्वारा निराकार अनन्त आत्म गुण सम्पन्न सिद्धि प्राप्त सिद्ध परमात्मा के स्वरूप का भान करना तथा उसकी उपासना करना ही जैन धर्म का लक्ष्य है।

"महर्षि दयानन्द एक आदर्श विद्यार्थी के रूप में"

(ले०—श्री यशपाल आर्य एम० ए०, एल० एल० बी०)

इस शीर्षक को पढ़कर हो सकता है आपको कुछ आश्चर्य हो क्योंकि स्वामी जी के विद्यार्थी जीवन पर अभी तक बहुत ही कम प्रभाव डाला गया है। अधिक तर लेखकों ने उनके जीवन के अन्य पहलुओं पर ही विस्तारपूर्वक अध्ययन किया है। मेरा उनसे सम्बन्ध कई प्रकार से है। वह एक महान् समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज में प्रचलित अनेकों बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया और अपने प्रयास में सफल भी रहे। धार्मिक क्षेत्र में तो उन्होंने एक प्रकार से हलचल ही मचा दी। राजनैतिक क्षेत्र में 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग करने वाले सबसे पहले पुरुष स्वनाम धन्य स्वामी दयानन्द ही थे। हम द्वेष-भाव या पक्षपात के कारण ऐसा मानने से आनाकानी करें तो करें परन्तु है यह ध्रुव सत्य। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी देन कम नहीं है।

उनकी धारणा थी कि विद्यालय शहर से कम से कम तीन मील दूर होने चाहिये तथा बालक और बालिकाओं की पाठशालायें अलग-अलग हों। इनकी सत्यता आज हमे स्वयं अनुभव हो रही है।

पाठक सोचते होंगे कि लिखना क्या था और लिख क्या रहा है। यह मैं स्वयं भी सोच रहा हूं। मगर यह सब मैं आवश्यक समझता था इसीलिए लिख दिया। अब मैं उनके विद्यार्थी जीवन के विषय में कुछ लिखने का प्रयास करूंगा।

स्वामी दयानन्द की शिक्षा किसी कालेज या विश्वविद्यालय मे नहीं हुई थी। वह व्यवहारिक शिक्षा को अधिक महत्व देते थे। वह तो शिक्षा द्वारा सत्य की खोज करना चाहते थे। इसी सत्य की खोज मे वह स्थान २ पर घूमते हुए अन्त में सम्वत् १९१७ में दण्डी विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त करने मथुरा जी में आये। जब दण्डी जी को यह मालूम हुआ कि दयानन्द जी ने अभी तक अनार्ष ही पढ़े हैं तो एक दिन उनसे कहा—"दयानन्द जी! अब तक जो कुछ तुमने अध्ययन किया है उसका अधिक भाग अनार्ष ग्रन्थ हैं। ऋषि शैली बड़ी सरल और सुन्दर है परन्तु लोग उसका अवलम्बन नहीं करते। जब तक तुम अनार्ष ग्रन्थों का परित्याग न करोगे तब तक आर्ष ग्रन्थों का महत्व और मर्म समझ न सकोगे अनार्ष ग्रन्थों में परमात्मा और ऋषि मुनियों की निन्दा भरी पड़ी है परन्तु आर्ष ग्रन्थों में इस दोष का लेश नहीं है। ऋषि और अनार्ष ग्रन्थों की यही बड़ी परख है।"

स्वामी जी की दण्डी जी पर इतनी अधिक श्रद्धा थी कि उन्होने उनके इस प्रथम आदेश को सहर्ष स्वीकार कर लिया और समस्त अनार्ष ग्रन्थ यमुना जी में फेंक दिये।

इसके पश्चात् वह विरजानन्द जी के समीप रह कर अध्ययन करने लगे। स्वामी दयानन्द की गुरु सेवा में बहुत आस्था थी। वह चाहते थे कि गुरु महाराज को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट न हो। दण्डी जी प्रातः काल ही यमुना जी के जल से स्नान किया करते थे। अतः स्वामी दयानन्द ब्राह्म मुहूर्त मे ही उठकर तथा दैनिक कार्यो से निवृत्त होकर अंधेरा रहते हुए ही गुरु जी के लिए पन्द्रह बीस घड़े जल ले आया करते थे। यह कर्म उनका बारह महीने चलता था। सर्दी, वर्षा आंधी तूफान उनके कार्य में कोई बाधा नहीं डाल सकते थे।

सेवा में जो लीन हो,
करे एक दिन रात,
हिचके न पानी पवन से,
महातम वा उत्पात।
शीत, उष्ण प्रतिकूलता,
तथा अनुकूल समान,
मानामान जो न गिने,
सो सेवक गुणवान॥

हमें भी चाहिए कि हम अपने गुरुजनों की सेवा करें। उनकी आज्ञाओं का पालन करें। गुरू सेवा से ही हम कुछ सीख सकते हैं। दोषो की अपेक्षा उनके गुणों को अपनावे। संसार में कोई भी ऐसा पूर्ण मनुष्य नहीं है जिसमें कुछ न कुछ दोष न हों फिर गुरू जन कैसे इस नियम के अपवाद हो सकते हैं।

स्वामी जी ब्रह्मचर्य का पूर्ण रूप से पालन करते थे। ब्रह्मचर्य पालन मे नियमित जीवन, सात्विक भोजन, व्यायाम तथा ईश्वर भक्ति सहायता करते हैं। अतः हमें इनका प्राणपन से पालन करना चाहिये। स्वामी जी का जीवन नियमित था। वह ब्राह्ममहूर्त में उठते थे। स्नान, ध्यान प्राणायाम इत्यादि से निवृत्त होकर अध्ययन किया करते थे। भोजन तो उनका अति सूक्ष्म तथा सात्विक होता था। वह सादा जीवन और ऊंचे विचार में विश्वास रखते थे। इन्हीं सब कारणों से ब्रह्मचर्य का तेज उनके अङ्ग अङ्ग से दृष्टिगोचर होता था।

दयानन्द जी की स्मरण शक्ति बड़ी प्रबल थी। एक बार ही के सुनने पर पाठ स्मरण कर लेते थे। एक बार वह अपना पाठ भूल गये। उन्होंने गुरू जी से दोबारा पूछना चाहा मगर उन्होंने नहीं बतलाया और अन्त में खीजकर स्वामी जी को कहा—"हमने एक बार तुम्हे कह दिया है कि जब तक पहले का पाठ न सुना लोगे तुम्हारा पाठ आगे नहीं चलेगा। अब तुम्हे कहा जाता है कि यदि वह पाठ तुम्हे स्मरण न हो आवे तो यमुना जी मे भले ही डूब मरना, परन्तु मेरे पास ...

महार
उन्हों
शाम
तो
आ
जी
देश
पा
चेर

... अपूर्व थी। वह तो संन्यासी थे उनके पास था ही क्या। गुरू जी के पास खाली हाथ भी जाना उन्होने उचित नहीं समझा। अतः एक तश्तरी मे थोड़ी-सी लौंग लेकर गुरू महाराज को प्रस्तुत की। स्वामी विरजानन्द ने कहा, "वत्स! ईश्वर आपकी विद्या को सफलता प्रदान करे। परन्तु गुरु-दक्षिणा मे इन लौंगो से भिन्न वस्तु मांगता हूं। वह वस्तु तुम्हारे पास है भी। आज भारत देश मे अनेकों कुरीतियाँ प्रचलित हैं। आर्य जनता की बिगड़ी हुई दशा को सुधारो लोक हित कामना से क्रियात्मक जीवन बिताओ। आर्ष ग्रन्थो का प्रचार करो गुरु-दक्षिणा मे यही वस्तु मुझे दान करो, अन्य किसी सांसारिक पदार्थ की मुझे चाह नहीं है।"

पढ़ो और हँसो

मालिक (नौकर से) क्या तुमने कल बाग में पानी दिया था ? नौकर कल तो वारिश हो रही थी।

मालिक—तो छाता लगाकर दे आता।

—हरीमोहन दलाऊ

आदमी—मुन्ना ! क्या तुम्हारे पिता जी घर पर हैं ?

मुन्ना—क्या आप घर का किराया वसूल करने आये हैं ?

आदमी—हाँ।

मुन्ना—तो वे घर पर नहीं हैं ?

× × ×

एक अध्यापक ने छात्रों को एक प्रश्न दिया, प्रश्न पढकर छात्र घबड़ा गये। अध्यापक ने पूछा क्यों क्या यह सवाल नहीं आता ?

— — — ओमा जी

बाल-विनोद

बाल जगत् के पुष्प कभी भी अपनी मौलिक उत्तम रचना मित्र कार्यालय में भेजकर विकसित हो सकते हैं। अत मित्र के आगामी अङ्क उनकी रचना की प्रतिक्षा करेंगे उत्तम रचना को प्राथमिकता दी जायगी।

—सम्पादक

बूझो तो जाने

(१)

१—तीन अक्षरों का नाम हमारा,
आदि कटे तो प्रेम है प्यारा।
मध्य कटे तो खाना प्यारा,
अन्त कटे तो बोझ ने मारा
भाइयो बताओ नाम हमारा ॥

बिखरे मोती

संग्रहकर्त्ता—मुरलीमोहन बेरीवाल
कलकत्ता

—गूंगा वही है जो मधुर भाषण नहीं जानता है।

—बहरा वही है जो हित की बातें नहीं सुनता।

—किसी की मेहरबानी मागना आजादी खोना है।

—शुभ कार्य परिणाम में भी शुभदायक होता है।

—झूठ जहर की एक बूंद है।

—जीवन सुख दुख की धूप छाह है।

—सच्चा मित्र मा से भी अधिक ममता रखता है।



एक अमेरिकन ने अभी हाल में सूर्य द्वारा अनुप्राणित सुनने के एक अनोखे यन्त्र का आविष्कार किया है।



गर्म खून वाले जीव जन्तु जैसे चिड़िया कुत्ते घोड़े, कुछ मनुष्य आदि शर्द या गर्म दोनों प्रकार की हवा में अपनी तापमान बराबर हो रखते हैं।

पाकिस्तान में सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध क्यों ?
देश के सभी बड़े नगरों में विरोध सभाएं आयोजित और प्रस्ताव पारित

भारत सरकार से हस्तक्षेप की जोरदार मांग

हैदराबाद

२८ दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, हैदराबाद के तत्वावधान में नगर आर्य समाजों की ओर से पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तान सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती के विरोध प्रदर्शनार्थ एक सार्वजनिक सभा श्री एस० वेंकट स्वामी जी उप-प्रधान सभा की अध्यक्षता में हुई।

पं० कृष्णदत्त जी एम० ए० ने निम्न प्रकार का प्रस्ताव रखाः—

"आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण के तत्वावधान में आयोजित हैदराबाद और सिकन्दराबाद के आर्य समाजों की यह सभा घोषित करती है कि पूर्वी पाकिस्तान सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ-प्रकाश पर लगाये गये प्रतिबन्ध से स्पष्ट है कि पूर्वी पाकिस्तान की वर्तमान सरकार मध्य कालीन धार्मिक असहिष्णुता से ओतप्रोत है। पूर्वी पाकिस्तान की सैनिक सरकार आर्य समाजियों के धार्मिक, मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात करके उनके प्रचार की स्वतन्त्रता को ही समाप्त कर देना चाहती है जो अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी तथा नैतिक दृष्टि से भी उचित नहीं है। आज की यह सभा जहां पूर्वी पाकिस्तान सरकार के इस कृत्य को निन्दनीय समझ कर उसके प्रति क्षोभ प्रकट करती है वहां पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार से मांग करती है कि पूर्वी पाकिस्तान की सरकार को बाधित करे कि वह प्रतिबन्ध उठा ले। और साथ ही भारत सरकार से भी सानुरोध माँग करता है कि वह उचित हस्तक्षेप कर पाकिस्तान सरकार की अपनी प्रसारित इस आज्ञा को समाप्त करावें।"

प्रस्ताव के समर्थन में प० नरेन्द्र जी, प० मनोहरलाल जी, प०गङ्गाराम जी एडवोकेट, श्री रामरखा जी और श्री वी० वेंकट स्वामी जी के भाषण हुए।

प्रस्तावक पं०कृष्णदत्त जी ने कहा कि प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति में पाकिस्तान निर्माण के बारह वर्ष उपरान्त इस प्रकार का प्रतिबन्ध अन्यायात्मक ही नहीं अपितु न्यायोचित भी नहीं है।

पं० मनोहर लाल जी ने कहा कि यदि स्वामी दयानन्द की आलोचना को कटु कहा जा सकता है तो क्या कुरान और तत्सम्बन्धी साहित्य में ऐसी अन्य मतावलम्बियों के लिए कटु आलोचना नहीं है ? तब सत्य तो यह है कि प्रतिबन्ध का कारण राजनीतिक वातावरण निर्माण करना है।

पं० नरेन्द्र जी ने कहा हमें अपनी सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराना चाहिए कि वह अन्तर्राष्ट्रीय अधिकारों के अनुसार पाकिस्तान सरकार से प्रोटेस्ट करे।

पं० गङ्गाराम जी ने कहा कि यह एक कूटनीतिक चाल हो सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय विधानानुसार जहाँ विचारों के प्रचार की स्वतन्त्रता प्राप्त होती है वहाँ धार्मिक विचारों के प्रचार व प्रसार की स्वतन्त्रता प्राप्त है। इसी आधार पर भारत सरकार को हमारी मांग के रक्षा के लिये अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का द्वार खटखटाना चाहिए।

कानपुर

आर्य समाज गोविन्द नगर कानपुर के तत्वावधान में हुई एक आम सभा में दिनांक २८-१२-५८ एक प्रस्ताव पारित कर पाकिस्तान (पूर्वी बंगाल) सरकार के उस अनुचित आज्ञा की निन्दा की गई जिसके अन्तर्गत आर्य समाज के धार्मिक ग्रन्थ, (महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित) को जब्त किया गया है। भारत सरकार से प्रस्ताव में मांग की गई है कि वह पाकिस्तान सरकार को विवश करे कि वह इस आज्ञा को वापस ले। प्रस्ताव पर कानपुर के प्रमुख आर्य समाजी श्री देवीदास आर्य ने विस्तारपूर्वक भाषण देते हुए कहा कि अयूबशाही ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा कर करोड़ों आर्य समाजियों व हिन्दुओं के धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाई है। यह आज्ञा फौजी अफसरों के दिमाग की सनक है और घोर साम्प्रदायकता, तंगदिली व मजहबी जनून का प्रमाण है। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि अगर इस्लाम के किसी धार्मिक पुस्तक के साथ दूसरे देश में यह सलूक हो तो उनके धार्मिक भावना को कितनी ठेस पहुंचेगी। प्रस्ताव को श्री तिलकराज कुमार उपमन्त्री समाज ने प्रस्तुत किया।

लखनऊ

आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ में २७-१२-५८को सायं श्री देवीप्रसाद जी उप संचालक प्रान्तीय आर्यवीर दल उ० प्र० की अध्यक्षता में दल की एक सभा हुई जिसमें आ० स० तथा बाहर के भी कुछ व्यक्ति उपस्थित थे।

बैठक में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें पाकिस्तान की सैनिक सरकार द्वारा आर्य समाज के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाये जाने का घोर विरोध किया गया। प्रस्तावक श्री भगवत शरण स० सम्पादक आर्यमित्र ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय करार तथा मौलिक धार्मिक अधिकार का हनन बताया और भारत सरकार से बलपूर्वक यह मांग किया कि वह इस कार्य में शीघ्र ही हस्तक्षेप कर अविलम्ब इस प्रतिबन्ध को दूर कराये अन्यथा अपने अमर धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिए आर्य समाज को भावी पग पर विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

आ० स० के वक्ताओं के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं के व्यक्तियों ने भी पाकिस्तान के इस रवैये का अपने भाषण में घोर विरोध किया। प्रस्ताव की प्रतिलिपि भारत सरकार को भेजा गया।

बालिकाओं की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाय

कन्या गुरुकुल सासनी में शिक्षा मन्त्री श्री त्रिपाठी जी का दीक्षान्त भाषण



"हमारे राष्ट्रीय शिक्षालयों ने शिक्षा की जो नई परिपाटी चलाई है उसकी सफलता सिद्ध हो चुकी है क्योंकि उसके फलस्वरूप ऐसे नर-नारियों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने विदेशी सत्ता एवं अपनी राजनीतिक सांस्कृतिक पराधीनता के विरुद्ध सफल संघर्ष किया। अतः स्वतन्त्र भारत में इस तरह की संस्थाओं को अपनी शैक्षणिक व्यवस्था के विकास और प्रसार को और अधिक अवसर प्रदान किये जाने चाहिये, जिससे कि वे भारत को समृद्ध एवं शक्तिपूर्ण बनाने में अपना योग प्रदान कर सकें।" ये शब्द सासनी स्थित कन्या गुरुकुल में दीक्षान्त भाषण करते हुए प्रदेश के गृह एवं शिक्षा मन्त्री ने कहे।

शिक्षा मन्त्री ने स्वामी दयानन्द द्वारा देश में सांस्कृतिक नव जागरण के लिये किये गये प्रयासों के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि स्वामी दयानन्द देश की उन महान् विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने समय समय पर सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संकट के समय देश को नये मूल्यों एवं आदर्शों की ओर अग्रसर किया।

शिक्षा मन्त्री ने आगे कहा कि राजनैतिक पराधीनता को सांस्कृतिक पराधीनता ही जन्म देती है और राजनैतिक रूप में स्वतन्त्र होने के लिए यह आवश्यक है कि कोई देश पहले सांस्कृतिक रूप से स्वतन्त्र हो। स्वामी स्वामी दयानन्द ने भारतवासियों को अपनी महान् सांस्कृतिक सम्पत्ति पर गौरवान्वित होना सिखलाया और इसी उद्देश्य से उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। इस दृष्टि से विचार करने पर स्वामीजी महान् क्रान्तिकारी थे। उनके अधूरे कार्यक्रम को गांधी जी ने पूरा किया और इस प्रकार देश स्वतन्त्र हुआ। आर्यसमाज की महत्ता इसी में है कि उसके माध्यम से देश में ऐसे समय पर जागृति फैली जबकि वह अन्धकार में पड़ा सो रहा था।

देश की ऐतिहासिक महत्ता का उल्लेख करते हुए प० कमलापति ने कहा "जब पश्चिमी राष्ट्रों के निवासी जंगली जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस समय हमारा राष्ट्र अपने सांस्कृतिक गौरव की पराकाष्ठा पर था और उस समय इस देश से जो संदेश निस्सृत हुआ वह एक शाश्वत सत्य है, जिसकी आज निराश भयाक्रान्त एवं गुमराह संसार को नितान्त आवश्यकता है। यह इस देश की संस्कृति-निधि का ही गौरव है, कि भारत सैकड़ों वर्षों तक विदेशी आक्रमणों का सामना कर सका। अनेक बड़े राष्ट्रों, संस्कृतियों एवं साम्राज्यों का उद्भव बहुत बाद में हुआ और फिर भी आज वे ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक खोजों के विषय बन चुके हैं। विदेशी नेताओं एवं विचारकों ने भी भारतीय संस्कृति की महत्ता एवं उपयोगिता स्वीकार की है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि भारत में तो सदैव से महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त रहा है। हमारी संस्कृति में तो मां शक्ति एवं उन्नति की प्रतीक रही है। बालक सच्ची शिक्षा तो मां की गोद में ही पाता है। जब से देश में विदेशी शासकों का आधिपत्य बढ़ने लगा तभी से महिलाओं को बन्धनों

(शेष पृष्ठ ३ पर)

सामयिक समस्याएँ

हमें विश्व की प्रगति के साथ चलना है

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रधान मन्त्री श्री पं० नेहरू का भाषण

वैज्ञानिक और औद्योगिक उन्नति के क्षेत्रों में पूंजीवादी या समाजवादी कोई भेद नहीं रह गया। सभी उन्नति की दिशा मे विज्ञान का समान आदर करते हैं, हमें भी राष्ट्र के विकास के लिए उसे अपनाना होगा। जब तक संसार की एक भी इकाई पिछड़ी रहेगी विश्व मे वास्तविक बन्धुत्व और सह अस्तित्व पनप नहीं सकते क्योंकि एकता के लिए समता की सदैव आवश्यकता होती है।

—सम्पादक

हम चाहें या नहीं, मशीनी और औद्योगिकी सभ्यता भारत में आ ही गयी है। गरीबी से छुटकारा पाने और लोगों के रहन सहन को ऊचा करने का केवल एक यही उपाय है। आत्मिक उन्नति के लिए भी किसी हद तक मौलिक सुविधाजनक जीवन की आवश्यकता होती है। कुछ भी हो हम परिवर्तन को उस लहर के प्रवाह को बदल नहीं सकते, जो विज्ञान और प्रोद्योगिकी के कारण संसार मे चल निकला है।

आज संसार मे विभिन्न बड़े राष्ट्रो और विभिन्न आदर्शों से संघर्ष चल रहा है। पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद में संघर्ष है परन्तु फिर भी अमेरिका जैसे प्रमुख पूंजीवादी राष्ट्र और सोवियत रूस, जहाँ एक नया प्रकार की सभ्यता का विकास हो रहा है, दोनो का ही आधार एक ही है। दोनो ही बहुत अधिक औद्योगीकरण और मशीनो के प्रयोग पर बल दे रहे है। उनके तरीके भिन्न हो सकते है, परन्तु उनमे भी इतना भेद नहीं है, जितना कि हम समझते है। दोनो ही देश बड़ी बड़ी मशीनो के पुजारी है।

कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसे कि पूंजीवादी भौतिकी या साम्यवादी रसायन शास्त्र या पूंजीवादी अणु बम और साम्यवादी उद्जन बम के नाम से कहा जा सके। एक ही विज्ञान और प्रोद्योगिकी अमेरिका और रूस दोनो देशों के विकास का आधार है। इन दोनो देशो मे कई बातो मे भेद अवश्य है, परन्तु संसार मे आज एक मौलिक भेद है, वह है औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक विकसित देशो और अभी तक कम विकसित देशो की भिन्नता अमेरिका और रूस मे भेद होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि दोनो देशो में भेद की अपेक्षा समानता अधिक है और विकास की दृष्टि से वे दोनो एक दूसरे के निकट पहुंच रहे हैं।

सह-अस्तित्व

भारत प्राचीन काल से सह अस्तित्व और सहिष्णुता के सिद्धान्तो मे विश्वास करता रहा है। हमारी विदेश नीति स्वतन्त्रता के बाद तैयार की हुई कोई नयी चीज नहीं है। इसकी जड़े हमारी परम्पराओं और इतिहास में जमी हुई हैं। वस्तुतः सह अस्तित्व के बिना भारत स्वयं छिन्न भिन्न हो जाएगा।

खेद है कि एक आज विभिन्न देश एक दूसरे से निरन्तर संघर्ष कर रहे है यदि हम आत्म रक्षा और विनाशकारी युद्धो से बचने के संकुचित दृष्टिकोण से भी देखें तो भी विभिन्न देशो और विभिन्न आदर्शों मे सह अस्तित्व अत्यन्त आवश्यक हो गया।

समाजवादी समाज

आज भारत ने समाजवादी ढांचे के समाज की स्थापना का लक्ष्य स्थिर किया है। इसका अर्थ केवल किसी विशेष प्रकार का आर्थिक संगठन स्थापित करना ही नहीं है, बल्कि यह तो एक प्रकार के जीवन और एक प्रकार के सोचने की प्रणाली है। आज के समाज मे जिसमे मुख्य ध्येय लाभ उठाना होता है, बहुत से संघर्ष स्वयं पैदा हो जाते है और कभी कभी उनसे ही बड़े संघर्ष उठ खड़े होते है। आज का समाज मनुष्य की उस मूल भूत मांग का भी विरोध करता है, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक न्याय चाहता है उस मनोवृत्ति को हम समाप्त करना होगा। जबकि हम संसार मे एक दूसरे के निरन्तर निकट सम्पर्क मे रहते है, सहयोग के बिना नहीं चल सकता। यदि हम समाजवाद की स्थापना करने के लिए प्रयत्न करते है तो यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी पिछड़े हुए और अर्ध विकसित देश मे, क्षेत्र मे, समाज मे वास्तविक समाजवाद की स्थापना नहीं हो सकती है। समाजवाद और साम्यवाद दोनों ही उस औद्योगिक सभ्यता की सन्तान है, जिसके द्वारा मनुष्य ने भौतिक उन्नति की है। इसलिए समाजवाद भौतिक साधनों की उन्नति तथा सामाजिक न्याय और सहयोग से काम करने की प्रणाली पर ही निर्भर है। देश के प्रत्येक युवक को और प्रत्येक नर नारी को राष्ट्र की उन्नति के लिए बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। केवल इसी प्रकार हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

★

भाव चित्र

धूल के कण

सन्ध्या की नीरव वेला थी। परिन्दे अपने बसेरों में पहुँचकर विश्राम कर रहे थे। प्रकृति का सौन्दर्य निशा के आँचल मे सिमिटता जा रहा था, और तभी न जाने किधर से वायु का एक धूल भरा झोंका आया। मैंने घृणा से मुह बिचकाकर उस गुबार की ओर अपनी पीठकर ली लेकिन तभी मेरे मानस चक्षुओं ने देखा—'धूल के अनगिन कणों से भरा वह वायु का झोंका मेरी ओर धीमे २ मुस्करा रहा था। मुझे उसकी इस मुस्कान मे व्यंग के भयङ्कर अट्टहास का आभास हुआ और मैंने जिज्ञासा की दृष्टि से उसकी ओर देखा। मेरे मुख पर प्रश्न वाचक चिह्न देखकर धूल कण सिक्त वह वायु का झोंका बोला—'आखिर मुझसे इतनी घृणा क्यो? मिट्टी के प्रति इतनी उपेक्षा क्यो?" मैं अपनी सफाई देने का विचार कर रहा था, कि उसने मेरे मन की भावनाओं को पढ लिया "लेकिन तुम्हारा यह नया सूट तो एक दिन मिटना ही है, फिर इससे इतना मोह क्यो? तुम तो कपड़ो के लिए' इतनी ममता कर रहे हो, किन्तु क्या तुम्हे यह ज्ञात नहीं कि एक दिन तुम्हारा यह स्वस्थ सुन्दर शरीर भी समय-सरिता की धार मे बहकर डूब जायेगा ये ऊंचे ऊंचे महल मीनारे सभी कुछ वक्त की विशाल बाँहों मे समा जायेगा फिर इन कपड़ों से इतना मोह क्यो? मेरी इतनी उपेक्षा क्यो? और क्या तुम्हे यह नहीं मालूम कि एक दिन तुम्हे मेरी ही शरण में आना पड़ेगा सांस की गिनती समाप्त हो जाने पर आत्मा रूपी पक्षी के उड़ जाने पर! फिर भी इतनी उपेक्षा इतनी कृतघ्नता! लेकिन इतने पर भी मैं तुम्हे अपनी गोद मे जगह दूंगी नासमझ इन्सान, मिथ्या से इतना मोह मत कर! निःस्वार्थ सेवा द्वारा, त्याग और कर्तव्य पालन द्वारा समय की छाती पर इतिहास के वक्ष पर अपने निशान बना दे बस यही सार है यही सत्य है। तेरे साथ यही जायेगा और तेरे पीछे भी केवल यही रह जायेगा "और धूल का वह गुबार दूर, बहुत दूर क्षितिज मे जाकर खो गया। मेरे मानस मे केवल उसकी मौन गम्भीर वाणी की स्मृति ही अवशेष रह गई, और रह गई मेरे पाँवों के नीचे धरती की धूल, जो जीवन का सबसे कठोर यथार्थ है, और जिसमे न जाने कितने सपने तथा कितनी ही सांसे सिसक सिसक कर रह गई हैं कितनी ही स्मृतियाँ खो गई हैं मिट गई हैं।

—श्यामलाल वशिष्ठ 'अकिंचन' एम ए,
सेवा सदन ५, छत्ता स्ट्रीट खुरजा (उ.प्र.)

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—आ०स० सलकिया,हावड़ा का ३७ वां वार्षिकोत्सव २०, २१, २२ दिसम्बर को मनाया गया। आर्य जगत् के अनेकों प्रमुख विद्वानों के भाषण हुए।

—आ०स० डोमनपुर, मीरजापुर का वार्षिकोत्सव ३१ दिसम्बर ५८ व १ जनवरी ५९ को हुआ। पं० सत्यमित्र शास्त्री व श्री रामजीप्रसाद गुप्त संचालक प्रान्तीय आर्य वीर दल के विशेष रूप से भाषण हुए।

—आ०स० फैजाबाद का ६७ वां वार्षिकोत्सव ३१ दिसम्बर ५८ तथा १, २, ३ जनवरी ५९ को मनाया गया। अनेकों भाषण हुए।

—आ०स० गणेशगंज, लखनऊ वार्षिकोत्सव २३,२४,२५ दिसम्बर ५८ को सोत्साह मनाया गया। स्वा० अभेदानन्द श्री पं० बिहारीलाल शास्त्री पं० वाचस्पति शास्त्री, पं० रुद्रदत्त शास्त्री, पं० ओम्प्रकाश शास्त्री, पं० बुद्धदेव विद्यालङ्कार, श्री धर्मराज भजनोपदेशक आदि के भाषण हुए। तीनों दिन ५ बजे सायं से १० बजे रात तक विद्वानों के भाषणों से आर्य जन लाभ उठाते रहे।

—आ०स० मदुराई का उत्सव श्री एन० वी० कपु स्वामी को अध्यक्षता में १४ दिसम्बर ५८ को हुआ जिसमें तीन प्रस्ताव पास किये गये। सरकार अविलम्ब सारे देश में पूर्ण गोरक्षा का प्रबन्ध करे,सभी प्रारम्भिक व माध्यमिक स्कूलों में राष्ट्रभाषा हिंदी की शिक्षा अनिवार्य करे और खाद्य पदार्थों का निश्चित मूल्य तय करके इसके वितरण की उचित व्यवस्था करे।

—आ०स०अरमापुर स्टेट मानपुर का ८ वां वार्षिकोत्सव २५, २६, २७, २८ दिसम्बर ५८ को सोत्साह हुआ। अनेकों योग्य विद्वानों के भाषण हुए।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा फतेहपुर की ओर से २४ से २६ जनवरी ५९ तक जहानाबाद मे जिला आर्य सम्मेलन करना निश्चित हुआ है, जिसमें आर्यजगत् के विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है।

—आ०स० कोंदू जिला बुलन्दशहर का वार्षिकोत्सव १७, १८, १९ मार्च ५९ को होगा। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पधारेंगे।

—आ०स० हाकियान, फिरोजाबाद आगरा का वार्षिकोत्सव १५ से २१ दिसम्बर ५८ तक मनाया गया। स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी की कथा नित्य होती रही।

—आर्यसमाज शहजादी मण्डी, आगरा का प्रथम वार्षिकोत्सव तथा दयानन्द आदर्श विद्या मन्दिर का तृतीय वार्षिक उत्सव दिनांक २७ १२ ५८ से ३० १२-५८ तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर हवन, भजन, वेद कथा के अतिरिक्त श्रीभूदेव शास्त्री, श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट, श्री मोहनलाल जी आर्य, श्री रामानन्द जी शास्त्री, श्री श्रीराम शर्मा जी, श्री श्री ओम्प्रकाश जी आर्य, श्री सुखदेव जी शास्त्री के सारगर्भित और मनोहर भाषण तथा व्याख्यान हुए। इसके अतिरिक्त श्री भोजदत्त शर्मा और श्री यशवन्त सिंह के भजन हुए। ड्रामा, संगीत सम्मेलन, कला प्रदर्शनी का उद्घाटन, महिला सम्मेलन, अन्तर विद्यालय प्रतियोग्यता और कवि सम्मेलन तथा अन्त में पारितोषिक वितरण श्री मोहनलाल जी आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ तथा उत्सव प्रत्येक अवस्था में सफल रहा।

—मोहनलाल आर्य

—आ०स० भेजनगढ़ का उत्सव दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में सानन्द सम्पन्न हुआ। प्रमुख विद्वानों के भाषण हुए।

आ०स० रेवां का उत्सव २, ३ जनवरी ५८ का हुआ। बम्बई के आर्य विद्वानों ने पधार कर भाषण किया।

प्रचार समाचार—

—श्री मन्त्राणी स्त्री आर्यसमाज मर्थना ने बिधूना में एक सप्ताह रहकर प्रचार किया। यहां स्त्री समाज की स्थापना हो गई। सोत्साह कार्य चल रहा है। श्री कुसुमादेवी मन्त्राणी हैं।

—आ० स० भभुआ बिहार के मन्त्री, प्रधान तथा कोषाध्यक्ष ने मोहनी बाजार मे वैदिक धर्म का प्रचार किया।

जिला सभा वाराणसी की ओर से ७ १२-५८ को भारत माता के मदिर में आ० स० लल्लापुरा के उत्सव ,पर श्री रामजी प्रसाद, गुप्त संचालक प्रान्तीय आर्य वीर दल की अध्यक्षता में जिला आर्य सम्मेलन हुआ जिसमें प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, प० विद्यानन्द शर्मा, प्रि० कृष्णानन्द आदि के भाषण हुए।

—माता जगधात्री देवी उपदेशिका ने सभा की ओर से आ० स० खैर जिला अलीगढ़ में वेद प्रचार का सराहनीय कार्य किया। महिला सुधार की सभी पहलुओं पर आपने भाषण किया।

—श्री घनानन्द प्रचारक ने ग्राम चरचा जिला बुलन्दशहर में वैदिक धर्म का प्रचार किया। गोरक्षा और राष्ट्र हिन्दी पर आपने विशेष रूप से भाषण दिया। नये आर्य समाज की स्थापना हुई, १७ सदस्य बनाये गये श्री खिचूमल जी प्रधान, श्री मुसद्दी लाल जी मन्त्री और श्री डिप्टीशरण जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—श्री रामनिवास जी उपदेशक सभा के प्रयास से आ० स० रनियां कानपुर का जीर्णोद्धार हो गया और और नियमित रूप से अधिवेशनादि होने लगा। डा० विश्वनाथ त्रिवेदी प्रधान, श्री मन्त्रीलाल जी मन्त्री और श्री कुंजबिहारी लाल जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—२१ १२ ५८ को आर्य समाज मुजफ्फरपुर मे श्री भृगुनन्दन गुप्त की अध्यक्षता में जिला भर के आर्य अधिकारियों की एक बैठक हुई जिस मे समाज को प्रगति देने पर विचार किया गया। श्री द्वारका प्रसाद गुप्त व श्री वैजनाथ पल्लव, के बाद श्री महादेव नारायण मन्त्री आ० स० सीतामढ़ी का भी भाषण हुआ। कई उपयोगी प्रस्ताव स्वीकार किये गये। जिला सभा की सुदृढ़ संगठन पर विचार किया गया। प्रचार का ठोस कार्यक्रम तैयार किया गया।

—श्री वेदव्रत जी वेदोपदेशक शेरकोट वाले का आ० स० कायमगंज में २८, २९ दिसम्बर का प्रभावशाली उपदेश हुआ।

—श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने पिछले दिनों पंजाब के अनेकों स्थानों तथा आर्यसमाजों मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। आप पंजाब सरकार के निमन्त्रण पर हिन्दी आन्दोलन के सिलसिले मे चण्डीगढ़ गये थे।

—आ०स० आदर्श नगर लखनऊ में वानप्रस्थी श्री रघुबीर चन्द्र मेहता ने प्रशंसनीय प्रचार व संगठन किया।

गुरुकुल समाचार—

—श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह के अवसर पर गुरुकुल संग्रहालय के वेद मन्दिर में आयोजित श्रद्धानन्द प्रदर्शनी का उद्घाटन आज श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति ने किया। इस प्रदर्शनी में स्वामी जी के बलिदान के समय के वस्त्र, पादुकाएं कमण्डल हैं तथा स्वामी जी द्वारा सपादित पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह है। स्वामी जी ने सर्वप्रथम उर्दू में और इसके बाद हिन्दी मे सत् धर्म प्रचारक का प्रकाशन किया था और सन्यास लेने के बाद श्रद्धा पत्रिका तथा लिबरेटर निकाले थे। इस प्रदर्शनी मे इन सब का संग्रह है तथा स्वामी की लिखी हुई धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक कृतियों का प्रदर्शन किया गया है और स्वामी जी के बलिदान पर लिखे गये महात्मा गांधी जी के लेखों का भी संग्रह है।

—गुरुकुल वृन्दावन के उपदेशक श्री रामानन्द शास्त्री ने नवम्बर ५७ से दिसम्बर ५८ तक निम्न स्थानों का भ्रमण कर गुरुकुल के लिए ६००) रु० प्राप्त किया। दानदाताओं को धन्यवाद है—पुखरायां, उरई, मांठ, चिरगांव, प्रतापगढ़, अकबरपुर, एटा, सानगर, भथना, बिधूना, छिबरामऊ, बेवर, भोगांव, फतहगढ़, शिकोहाबाद,

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पृष्ठ ११ का शेष]

और अज्ञान में रखा जाने लगा। परन्तु आज हम स्वतन्त्र हैं, अतः इनकी शिक्षा पर सर्वाधिक ध्यान जाना स्वाभाविक है। यह शिक्षा वस्तुतः इस प्रकार की होनी चाहिए, जिससे सर्व प्रथम ये भारतीय बनें, बाद में विद्वान्।

बालिकाओं की शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए श्री त्रिपाठी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि हम भारत को शक्तिशाली एवं उन्नत देश देखना चाहते हैं तो निश्चय ही उनकी शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में पर्याप्त ध्यान देना ही होगा। आपने कहा कि अन्यथा देश का भविष्य अंधकारमय होगा।

शिक्षा मन्त्री ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कतिपय खामियां है जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। आपने कहा कि इस क्षेत्र में प्रयोग किये जा रहे हैं और उनके परिणामों की प्रतीक्षा है। राष्ट्रीय संस्थाएं वास्तव मे बधाई की पात्र हैं क्योंकि वे एक नये प्रयोग को सफल सिद्ध करने में समर्थ हुई।

अन्त में श्री त्रिपाठी ने नव स्नातिकाओं को देश की प्रगति एवं उन्नति के लिए एवं कठोर परिश्रम करने का उपदेश दिया। आपने कहा कि उन्हें आज के नए विचारों को ग्रहण करना चाहिए, किन्तु उन्हें अपनी संस्कृति के दृढ़ आधार से कभी विचलित नहीं होना चाहिये।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

फिरोजाबाद, बरहन, जसवन्तनगर, मैनपुरी, अलीगढ़, अतरौली, मुरादाबाद, धामपुर, नगीना, अमरोहा, हापुड़, शिवहारा, खैर आदि।

—गुरुकुल ज्वालापुर में उत्सव की तैयारियां हो रही हैं। सम्बन्धित अधिकारी अपने २ कार्यों में व्यस्त हैं।

चुनाव समाचार—

—आ० स० पुरानी मंडी सहारनपुर प्रधान श्री कृष्णलाल, मन्त्री श्री गुरु दत्तराम, कोषाध्यक्ष श्री मदनलाल।

—आ० स० अड्डा होशियारपुर जालन्धर—प्रधान श्री शिवचन्द जी खेठ, मन्त्री श्री मुल्कराज आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामलाल गुप्त।

—आर्यसमाज शृङ्गारनगर (लखनऊ)
प्रधान—श्री मेलाराम जी
उप प्रधान—श्री कृष्ण बल्देव जी
मन्त्री—श्री अर्जुनदेव जी
उपमन्त्री—श्री वेदप्रकाश जी
प्रचार मन्त्री—श्री हरवंशलाल जी
कोषाध्यक्ष—श्री सर्व प्रकाश जी
उ० कोषाध्यक्ष—श्री किशारीलाल जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री मथुराप्रसाद जी

—अर्जुनदेव मन्त्री

संस्कार समाचार—

—आ० स० कायमगंज के श्री शिवशंकर जी आर्य के पुत्र का नाम करण संस्कार ३ दिसम्बर को हुआ।

—प० द्विजराज शर्मा गोरखपुर द्वारा पिछले दिनों चार यज्ञोपवीत संस्कार कराये गये।

—आ० स० कस्तला के ठाकुर नरपतिसिंह के पुत्र का नामकरण संस्कार १-१० को श्री वीरेन्द्र शास्त्री द्वारा कराया गया। इस उपलक्ष में श्री नरपतसिंह ने श्री अनूपसिंह प्रचारक द्वारा २ रोज प्रचार भी कराया।

—आ०स० आदर्श नगर लखनऊ के श्री विजयपालसिंह एम० एस० सी० के पुत्र का नामकरण संस्कार ७।१० को हुआ। नाम राजवर्द्धन रखा गया प० देव शर्मा ने संस्कार कराया। इससे पूर्व ३०।११ को पंडित जी ने श्री ब्रजलाल जी का यज्ञोपवीत संस्कार कराया।

शुद्धि समाचार—

—१६ नवम्बर को आ०स० ठूठी बारी गोरखपुर की ओर से सम्पाला देवी व रामदुलारी देवी, (ग्राम दव गांव रमपुरवा, थानापरासी, जिला बुटवल नेपाल) की शुद्धि की गयी जो मुसलमान हो गयी थी।

—१३।१२।५८ को आ० स० गढ़वा पलामू में प० गंगाधर शास्त्री द्वारा एक ईसाई महिला की शुद्धि की गई और उसी समय एक आर्य युवक के साथ उसका शादी भी कर दी गयी। विवाहोपरान्त सहभोज भी हुआ।

—२१।१२।५८ को ग्राम अम्ब मेरठ में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, दिल्ली द्वारा एक विराट शुद्धि सम्मेलन हुआ जिसमें ४० हरिजन ईसाइयों की शुद्धि की गयी। श्री नारायण दास कपूर, प० दीपचन्द आदि के भाषण हुए। श्री मोग जी भाई एम० पी० की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा भी हुई।

पर्व समाचार—

२३।१२।५८ को निम्न स्थानों पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सोत्साह मनाया गया—

आ० स० नारायण स्वामी भवन लखनऊ आ०स० मेस्टनरोड कानपुर, आ० स० आरा बिहार, आ० स० बैर, गनिया मुजफ्फरपुर, आ०स० सीतापुर, आ० स० नारायणपुर, आ० स० मदनजीतपुर, आ० स० हरदोई आर्य वीर दल हरदोई, आ० स० चन्द्रनगर लखनऊ, आ० स० मानकी आ०स० गूला म० प्र०, गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी पुण्य भूमि श्रद्धापुरी, शान्ति आश्रम लाहरदग्गा, रांची, बिहार।

आर्य वीर दल समाचार—

—आर्य वीर दल गाजीपुर की ओर से १४, १५ १६ दिसम्बर५८ को सुहवल मेले में वेदप्रचार व सेवा कार्य किया गया। १६ दिसम्बर को सुहवल में आर्यवीर दल की स्थापना हुई। इससे पूर्व ४ दिसम्बर को यहां स्त्री आ० स० की स्थापना हुई थी। साप्ताहिक सत्संग नियमित होता है।

—मंडल आर्यवीर दल गाजीपुर—श्री नन्दलाल जी आर्य मंडलपति श्री छोटेलाल आर्य नगर नायक श्री छ गुर प्रसाद शिक्षा नायक, श्री रामजी प्रसाद मन्त्री, श्री वंशीधर कार्यालय मन्त्री, श्री चमनलाल कोषाध्यक्ष।

आर्य वीरदल उन्नाव—श्री राव शंकर शर्मा बी० ए० एल० टी० नगर नायक श्री आशाशंकर जी शास्त्री नायक श्री चन्द्रभूषण जी शिक्षा नायक, श्री अम्बिकाप्रसाद बौद्धिक नायक, श्री छत्रपाल जी मन्त्री, श्री चन्द्रदत्त जी कोषाध्यक्ष।

—आ०स० सलकिया हावड़ा के ३४ वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्य विद्यालय के छात्रों ने "मानव और कलाकार" नामक अभिनय प्रस्तुत किया जिसका बड़ा अच्छा प्रभाव रहा और सभी लोग आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए।

शोक समाचार—

—गुरुकुल शि० विद्यालय वृन्दावन के मुख्याध्यापक श्री रामेश्वर दयालु जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री नित्यानन्द जी स्नातक शिरोमणि एम० ए० की ३० दिसम्बर को आगरे में आकस्मिक निधन हो जाने पर, एक विशेष अधिवेशन में यह सभा प्रभु से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करते हुए उनके सम्पूर्ण पारिवारिक जनों को निधन जन्य कष्ट सहन का बल प्रदान करें।

—श्रीमती कलावती देवी मन्त्राणी स्त्री आ० स० बाड़ौन अलीगढ़ का स्वर्गवास हो गया। वैदिक रीत्यनुसार उनका अन्त्येष्टि की गयी।

—आ०स० कटरा प्रयाग ने श्री अशालाप्रसाद जी के पिताजी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—श्री सर्वदानन्द साधुआश्रम अलीगढ़ ने औरिहा निवासी श्री रघुनन्दसिंह के निधन पर हार्दिक दुख प्रकट किया।

—आ०स० चन्दौली ने श्री नेत राम जी के पिता के निधन पर शोक प्रकट किया। शीघ्र ही वैदिक रीत्यनुसार उनकी अन्त्येष्टि की गई।

—आ० स० सीतापुर ने अपने कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल साहू की धर्मपत्नी के असामयिक एवं दुखद निधन पर शोक प्रकट किया।

—आ०स० हसनपुर गाजीपुर ने सभा के प्रचारक ठाकुर भोपालसिंह की धर्मपत्नी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किया।

अन्यान्य समाचार—

—आ० स० विनय नगर नयी दिल्ली का समाज मन्दिर बन रहा है। शीघ्र ही १२०००) की आवश्यकता है। दानी महानुभाव कृपया इस ओर ध्यान दें।

—२५ दिसम्बर को आ० स० रामनगर नैनीताल में श्री रघुनन्दन स्वरूप जी स० आयुक्त भू सम्पत्ति विभाग सभा ने आर्य वाचनालय का उद्घाटन किया। रामनगर समाज के मन्त्री श्री इन्द्र वर्मा एम० ए० ने आपका स्वागत किया। श्री रघुनन्दन स्वरूप जी ने अपने भाषण में समाचार पत्र की आवश्यकता व उपयोगिता पर आधुनिक ढंग से प्रकाश डाला।

—१६ दिसम्बर को श्री रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट स० अधिष्ठाता भू सम्पत्ति विभाग सभा व श्री इन्द्र वर्मा एम०ए० निरीक्षक सभा ने कन्या पाठशाला आ० स० काशीपुर का निरीक्षण किया। मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार जी वकील ने दोनों महानुभावों का स्वागत किया। अपने भाषण में श्री रघुनन्दन स्वरूप जी ने कन्याओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया। काशीपुर समाज के कोषाध्यक्ष श्री गोपाल साहब ने हीरक जयन्ती के लिए ५१) भेंट किये। श्री इन्द्र वर्मा के विशेष आग्रह से यह धन मिला।

—जिला उपसभा हरदोई के मन्त्री श्री रामस्वरूप शुक्ल ने जिले में आर्य समाजों में जीवन लाने के लिए आ० स० आड़ी, सिमरिया, किरविलपुर, टिकार, पाली, बिलग्राम, हिलन, उपरनपुर आदि स्थानों का दौरा किया।

—उपसभा हरदोई का वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष १५ मार्च ५६ तक हो जायेगा। अतः जिलान्तर्गत समाजें १५ फरवरी ५६ तक अपने समाजों का निर्वाचन करलें और जिला सभा के प्रतिनिधियों के नाम भी भेजदें। इस वर्ष उपसभा की ओर से जिले की सभी समाजों के उत्सव कराने की योजना तयार की जा रही है।

—भैरमपुर (कानपुर) में २५,२६ दिसम्बर ५८ को श्री शिव स्वामी के प्रयास से गायत्री महायज्ञ हुआ। स्वामी वेदानन्द तीर्थ का प्रवचन हुआ।

—सीढ़ी इटारा (कानपुर) में श्री शिव स्वामी की अध्यक्षता में १८, १६, २० जनवरी ५६ को गायत्री महायज्ञ होगा। प० हरिदत्त शास्त्री स्वामी वेदानन्द वेदतीर्थ आदि के प्रवचन होंगे।

—रातानाडा, जोधपुर से जनवरी ५६ से 'आर्यपथ' नामक एक आर्य सैद्धान्तिक मासिक पत्र प्रकाशित होने जा रहा है जिसमें हर प्रकार की सामग्री होगी। आ० स० रातानाडा जोधपुर से पत्र व्यवहार करें।

—आ० स० चौन्दकोट गढ़वाल के भूतपूर्व प्रधान डा० सदानन्द ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर आ० स० के लिए त्याग का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अतः इस आ० स० ने उनके प्रति बधाई का एक प्रस्ताव पास किया।

—आ० स० फराहेड़ी जिला सहारनपुर ने शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की विधवा बहन श्रीमती शास्त्री देवी को मनिआर्डर द्वारा १७।१२।५८ को १०) सहायतार्थ भेजा है। अन्य आर्य बन्धुओं को भी इस कार्य में सहयोग करना चाहिए।

—मन्त्री आ० स० फराहेड़ी

—आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध के भूतपूर्व महोपदेशक प० मदन मोहन जी ने आ० स० मीरजापुर को १४ भागों में चारों वेद दान दिये। अतः अन्तरङ्ग सभा ने उन्हें नि शुल्क सदस्य मनोनीत किया और उनके लिए धन्यवाद का प्रस्ताव पास किया।

—जनता पुस्तकालय एवं वाचनालय सराय पुख्ता हरचन्दपुर इटावा की रजिस्ट्री उत्तर प्रदेश सरकार के यहाँ हो चुकी है।

—बक्सर में स्वामी देवानन्द जी द्वारा १ जनवरी से ४ जनवरी ५६ तक वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

साहित्य-समीक्षा

(समालोचनार्थ पुस्तकों की कृपया दो प्रतियां भेजें। —सम्पादक)

वेदों का यथार्थ स्वरूप

वैदिक ऋषि, देवता, यज्ञ सिद्धांत आदि विषयक भ्रान्ति निवारक

लेखक—श्री प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति, विद्यामार्तण्ड पृष्ठ स० ५०८ मूल्य ६रु० ५० नये पैसे।

मैंने इस पुस्तक को पूरा बहुत ध्यान से पढ़ा। पुस्तक बड़ी उपयोगी है। बहुत खोज के पश्चात लिखी गई है। वेदों के सम्बन्ध मे जितनी बातें जानने योग्य हैं, सब पर इसमे प्रकाश डाला गया है : जिन बातों के प्रचार से वेदों के सम्बन्ध मे भ्रम फैला हुआ है उनका बलपूर्वक युक्ति प्रमाण सहित खंडन व निराकरण किया गया है। वैदिक पक्ष नाम की पुस्तक का बड़ा सुन्दर उत्तर दिया गया है सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि उसका अंग्रेजी व अन्य विदेशी भाषाओं में अनुवाद होना चाहिये। अंग्रेजी पढ़े लिखे लोगों मे ही वेदों के सम्बन्ध में भ्रममूलक विचार फैले हुये हैं और वह भी विदेशियो की लिखी हुई पुस्तकों को पढ़कर। मैं पंडित धर्मदेव जी को ऐसी उत्तम पुस्तक लिखने पर बधाई देता हूं।

—पूर्ण चन्द एडवोकेट
उप प्रधान सभा

मुक्ति सोपान

लेखक—शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, भूमिका लेखक—डा० गोकुल चन्द नारंग, प्रकाशक—आर्य कुमार सभा किंग्सवे दिल्ली। प्रथम सस्करण पुस्तकाकार, पृष्ठ स० ४८, मूल्य तीस नए पैसे, कागज सफेद, छपाई सुन्दर आर्ट पेपर का आवरण पृष्ठ।

पुस्तक और लेखक के नाम से ही यह प्रमाणित है कि यह पुस्तक वास्तव में मुक्ति सोपान है। एकबार पढ़ लेने के बाद यह विश्वास और भी दृढ़ हो जाता है। उपदेशो से परिपूर्ण इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है—सर्व साधारण को सुख शान्ति दिलाना। इसी लिए यहा यह उपदेश किया गया है कि—हे मानव, अपने हृदय को चारो ओर से पवित्र करो, अपने चेतन स्वरूप को मत भूलो, श्रद्धा ही तरन तारन है, गुरु शिष्य के वास्तविक मेल से ससार शान्त होता है, मित्र के एकबार दर्शन करके उसे न भूलो, विशुद्ध उत्तम सन्तान उत्पन्न करो, पवित्र ब्रह्म शक्ति का दुरुपयोग न करो, चौथे पन मे परम शान्ति है, प्रभु को न मानने वाले भी प्रभु को मानते हैं आदि। आवश्यकता है उस अमर सन्यासी के उपदेशों को ग्रहण करने की।

लोकमान्य तिलक

लेखक—श्री जयप्रकाश भारती, प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन, नयी दिल्ली।

साइज १७×२७ एक चार, पृष्ठ स० २४, मूल्य पचास नए पैसे, सुन्दर आवरण सहित। कागज सफेद, छपाई सुन्दर।

लेख, छपाई, कागज, स्याही, कला प्रत्येक दृष्टि से यह पुस्तिका अच्छी कही जा सकती है। लेखक ने छोटे बच्चो के लिए यह पुस्तक लिखी है। भाषा अत्यन्त सरल है व शब्द साधारण हैं। सारी पुस्तिका १६ प्वाइंट की टाइप मे छापी गई है। तिलक के जीवन सम्बन्धी ब्लाक भी दिये गये हैं। उनका जन्म, बचपन, अध्ययन, लोकसेवा, पत्रकारिता, जेलयात्रा, नेतृत्व, कांग्रेस सेवा, गीता रहस्य की रचना, स्वराज्य पार्टी की स्थापना, अमृतसर अधिवेशन आदि का बड़ा रोचक व सरल चित्रण किया गया है। इसे पढ़ कर प्रत्येक बालक बड़ा होकर तिलक का वृहद्जीवन चरित्र पढ़ना अवश्य चाहेगा। पुस्तिका का सुन्दर बनाने का भरपूर यत्न किया गया है।

आदि कवि वाल्मीकि

लेखक—ठाकुरदत्त शर्मा पथिक। सम्पादक—जयप्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली। साइज १७×२७ एक चार पृष्ठ स० २४, मूल्य ५० नए पैसे, कागज सफेद, छपाई साफ व सुन्दर। कलात्मक आवरण पृष्ठ।

नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली ने बच्चों के लिए अब तक जितनी भी पुस्तके प्रकाशित की है सभी हर दृष्टि से सुन्दर हैं, देखने योग्य भी है, और पढ़ने योग्य भी हैं। इस पुस्तक म आदि कवि वाल्मीकि की जीवन गाथा लिखी गयी है अत्यन्त सरल भाषा मे व बच्चो के समझने योग्य शैली में। वाल्मीकि की तपस्या, उनका कवि होना, ईश्वर को प्राप्त करना, रामायण लिखना आदि घटनाओं का बड़ा रोचक चित्रण किया गया है। सभी बच्चे इस पुस्तक का पसन्द करेंगे, ऐसा निश्चय है।

हाकी और बैडमिन्टन के खेल

लेखक—विजय कुमार। सम्पादक—जयप्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली। साइज १७×२७ एक चार, पृष्ठ स० ३४, मूल्य एक रुपया, कागज सफेद, छपाई सुन्दर, आकर्षक आवरण पृष्ठ।

हाकी और बैडमिन्टन के खेल की जानकारी के लिए हिन्दी मे किसी पुस्तक का मिलना बड़ा कठिन है। अत इस दिशा मे इस प्रकाशन ने एक प्रशसनीय पग बढ़ाया है। हाकी और बैडमिन्टन खेलने के नियम, तरीके, सामान, साधन, स्थान आदि की पूरी जानकारी इस पुस्तक के पढने से हो जाती है। बच्चो के अतिरिक्त सयाने भी इस पुस्तक से लाभ उठा सकते है। खिलाड़ी व निरीक्षक के साथ ही दर्शकों का भी इन बातो की जानकारी यदि हावे तो देखने म विशेष आनन्द आएगा।

फुटबाल और वालीबाल के खेल

लेखक—श्री पी० शकर एम० ए० एल० टी०। सम्पादक—श्री जयप्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली। साइज १७×२७ एक चार, कागज सफेद, छपाई सुन्दर पृष्ठ स० ३६, मूल्य एक रुपया, आकर्षक व रगीन आवरण पृष्ठ।

फुटबाल और वालीबाल दोनो ही खेल आज विश्व के कोने कोने म प्रचलित है अत इनका समुचित जानकारी आवश्यक है। यह पुस्तक भी "हाकी और बैडमिन्टन के खेल" वाली पुस्तक के समान ही उपयोगी है और इसी विचार से सरल हिन्दी मे बड़े स्पष्ट ढग से लिखी गयी है कि इन दोनो खेलो के नियम, तरीके, समय साधन, स्थान, व्यवस्थादि की पूरी जानकारी बालकों के साथ साथ अन्यो को भी हो सके। इन पुस्तको से बालक खेल की ओर विशेष रुचि लेंगे और अपना समय व्यर्थ नहीं गवायेंगे।

पथ तथा क्षेत्रीय खेलकूद प्रणाली

लेखक—श्री विद्यारत्न, स० उप विद्यालय निरीक्षक सहारनपुर। सम्पादक—श्री जयप्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन, नयी दिल्ली। साइज १७×२७ एक चार, पृष्ठ स० ४४, मूल्य एक रुपया, कागज सफेद, छपाई साफ व सुन्दर। आकर्षक आवरण पृष्ठ सहित।

आज के विद्यार्थी पढ़ने मे तो कम समय व्यतीत करते ही हैं पर खेलने मे भी कुछ समय नहीं लगाते बल्कि अपने समय को व्यर्थ नष्ट करते है। अत बालकों और विद्यार्थियो के विचार को एक नये मोड़ की ओर मोड़कर उनके समय का सदुपयोग कराना इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है, साथ ही यह कि विद्यालयो के छात्रों व अध्यापकों मे भी खेलो की स्वस्थ व उपयोगी परम्परा का निर्माण हो, उनकी दिनचर्या नियमित हो, उनके हृदय विशाल हो उनमें भ्रातृत्व और राष्ट्रीयता की भावना हो, आदि। इन्हीं बातो की चर्चा इस पुस्तक में बड़े सुन्दर ढग से की गई है।

पौराणिक कहानियाँ

लेखक—श्री सन्तोष कुमार जैन। सम्पादक—श्री जय प्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली। साइज १७×२७ एक चार, पृष्ठ स० ३६, मूल्य एक रुपया, छपाई साफ व सुन्दर, कागज सफेद, रगीन आवरण पृष्ठ।

इस पुस्तक में भिन्न भिन्न पुराणों की सात कहानियाँ हैं। कहानियो के शीर्षक हैं—धरती पर गगा उतरी, शकर का विषपान, राजा शिवि का त्याग, कच और देवयानी, जनमेजय का नागयज्ञ, बालक अष्टावक्र, दधीचि का बलिदान।

आज के वैज्ञानिक युग में ऐसे व्यक्ति कम मिलेंगे जो इन कहानियों की सभी बातो पर विश्वास करे। अत कहानियाँ चाहे भले असत्य हों पर इनके माध्यम से जो बोधप्रद उपदेश दिये गये हैं, वे अवश्य ध्यान देने योग्य हैं। इन कहानियों की तह में अपने देश की प्राचीन कला, सस्कृति व साहित्य की भी एक छाया दिखती है।

माप तौल की दशमिक प्रणाली

लेखक—श्री सन्तोष कुमार जैन। सम्पादक—श्री जयप्रकाश भारती। प्रकाशक—नव साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली। पुस्तकाकार, पृष्ठ स० ३४, मूल्य ५० नए पैसे, कागज सफेद, छपाई सुन्दर। रगीन व आकर्षक आवरण पृष्ठ।

इस पुस्तक मे माप तौल का दशमिक प्रणाली की उपयोगिता व एकरूपता पर प्रकाश डाला गया है जो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दोनो दृष्टिकोण से आवश्यक है कि इसे अपनाया जाय। भारत ने भी इस प्रणाली का अब अपना लिया है। इसकी जानकारी जन साधारण का पूरा पूरा हो सके—इसी विचार से यह पुस्तक लिखी गयी है। भारत मे भी यही प्रणाली आज क्यों आवश्यक है, इसका कारण भी पुस्तक मे प्रस्तुत किया गया है।

१ आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
पौष २१ शक १८८८ (११ जनवरी ५६)

आर्य्यमित्र
उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५६६३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

बाबूराम भारता द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

को

सफल बनाइए

आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार और संघटन की सुदृढ़ता

के लिए

एकमात्र साधन 'आर्यमित्र' है

जो साठ वर्षों से निरन्तर मौन साधक के रूप मे समाज, राष्ट्रभाषा हिन्दी, साहित्य, धर्म, राष्ट्र और मानव सस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में संलग्न रहा है। सभी क्षेत्रों में आदर्शों की स्थापना ही उसका एक मात्र उद्देश्य रहा है।

यदि आप चाहते हैं कि भविष्य में भी

'आर्यमित्र'

- ★ आर्यसमाज के प्रचार
- ★ सिद्धान्त समर्थन
- ★ निर्भीक आलोचना
- ★ समाज-सुधार
- ★ राष्ट्र नव निर्माण
- ★ विश्व शान्ति
- ★ वैदिक स स्कृति समुद्धार
- ★ नैतिक उत्थान
- ★ आदर्श पत्रकारिता
- ★ राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवा
- ★ विश्व बन्धुत्व
- ★ मानव सस्कृति

आदि सभी क्षेत्रों में सामाजिक चेतना जागृत करता रहे तो आर्यमित्र को समर्थ बनाने में अपना सहयोग प्रदान कीजिए

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता आपके सहयोग पर ही निर्भर है। एक लाख रु० की जयन्ती निधि मे अपनी सामर्थ्यानुसार सहायता कीजिए और इष्टमित्रों से सहायता दिलवाकर पुण्य के भागी बनिए।

आर्यमित्र का उन्नति के इस यज्ञ म पड़ी हुई प्रत्येक आहुति मानवता नव निर्माण म सहायक होगी।

संयोजक—'आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति' लखनऊ



वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे | लखनऊ, रविवार, पौष २८ शक १८८०, पौष शु० ६, वि० २०१५ १८ जनवरी १९५९ ई० | विदेश में १२शिलिंग

आज का आपका कर्त्तव्य

गुरुधाम (गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास) आर्यों की कर्त्तव्य परायणता का द्योतक होगा

★ मथुरा जन्म-शताब्दी पर आर्य जनता ने ऋषि दयानन्द-ज्ञान-भूमि प्राप्त करने का संकल्प किया था।

★ आज उस भूमि की प्राप्ति का संघर्ष आप जीत चुके हैं। आज वह भूमि ऋषि के शिष्यों की (आपकी) सम्पत्ति है।

★ यदि आप चाहते हैं कि उस भूमि को आदर्श बनाया जाय और वहाँ से आदर्श ज्ञान-गंगा सदैव प्रवाहित होती रहे तो, अपने कर्त्तव्य का निर्णय कीजिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० ने आपकी भावनाओं के अनुरूप स्मारक निर्माण का संकल्प किया है हमें पूर्ण विश्वास है कि आप इस संकल्प में हमारा हाथ बटायेंगे

इस महान् यज्ञ में अपना भाग निश्चित कीजिए—कर्त्तव्य पालन में विलम्ब करके आप एक सुअवसर खो देंगे। यदि आपने अभी तक कुछ नहीं किया है, तो शीघ्र ही स्वयं धन दें और अन्यों से संग्रह करके भिजवाइए, यही आज आपका सामयिक कर्त्तव्य है।

★ आज पाकिस्तान में सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध की गूंज है।

★ ऋषि का गो-रक्षा आन्दोलन अभी अधूरा है।

★ विदेशी ईसाई मिशनरी भारत की भोली भाली जनता को भ्रम में डाल रहे हैं।

★ भारत और विश्व में अनैतिकता और हिंसा का बोलबाला है।

★ भारत की सरकार और जनता नवीनता की आँधी में प्राचीन आदर्शों को नष्ट कर रही है।

क्या आप इन और इसी प्रकार के अन्यायों अभावों और त्रुटियों के विरुद्ध आर्य समाज की आवाज और भारतीय दृष्टिकोण को जन-मानस तक पहुँचाना चाहते हैं?

क्या आर्य सामाजिक विचारों के प्रचार के लिये पत्र के महत्त्व को आप स्वीकार करते हैं?

यदि हाँ तो आइए

अपने साठ वर्षीय पत्र आर्यमित्र-हीरक जयन्ती मनाकर उसे शक्तिशाली बनाइये।

मित्र को सबल बनाकर ही आप अपनी प्रचार-शक्ति को सुदृढ़ बना सकते हैं।

आर्य जन विद्वानों का सदैव अभिनन्दन करते हैं

आर्यजगत को गर्व है कि उसके दो उच्चकोटि के विद्वानों श्री प० गङ्गाप्रसाद रि० चीफ जज व श्री प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय का अभिनन्दन सम्पन्न होने जा रहा है। इस प्रकार का विद्वदभिनन्दन नवीन पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत होगा। इस अभिनन्दन योजना में प्रत्येक आर्य बन्धु का सहयोग प्रार्थनीय है।

सभा की इन योजनाओं की सफलता के लिए आपकी शुभ-कामनाएं, आपका आर्थिक सहयोग और समारोह अवसर पर उपस्थिति प्रार्थनीय है।

विरजानन्द स्मारक आदर्श हो, आर्यमित्र सबल हो, विद्वानों का अभिनन्दन हो। यही आज आपका लक्ष्य हो।

उद्भुभ हैं। रूसी स्पूत नेटलाइट और यह 'स्वप्न" की मानव प्रगति के है।
या मानव पृथ्वी
मानव

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.
अङ्क ३

आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं विद्वानों का अभिनन्दन
क्या आर्य समाज के सिद्धान्तों की हत्या है?

(ले०—श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, प्रचार मन्त्री जयन्ती)

जयन्ती योजना और विद्वदभिनन्दन आदि कार्यों के सम्बन्ध में कुछ आर्य बन्धुओं ने एक गलत धारणा बनाकर अप्रजातान्त्रिक पद्धति से विरोध आरम्भ किया था। उसके सम्बन्ध में आ० प्र० नि० सभा की अन्तरंग ने २४।१२ का निश्चय प्रकाशित कर दूषित एवं घृणित मनोवृत्ति की भर्त्सना की है। प्रस्तुत लेख में जयन्ती के प्रचार मन्त्री श्री प्रेमी जी ने बड़ी स्पष्टता के साथ योजना की महत्ता और उपयोगिता सिद्ध करते हुए विरोध का उत्तर दिया है। आशा है, आर्य जनता प्रचारित भ्रान्तियों को दूर कर जयन्ती सम्बन्धी अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी। —सम्पादक

मुझे ६ आर्य भाइयों के नामों से प्रकाशित विज्ञप्ति प्राप्त हुई। इसमें आर्य समाज के दो विद्वानों अर्थात् प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एवं बाबू गंगाप्रसाद रिटायर्ड चीफ जज की सेवा में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किये जाने को मूर्तिपूजा कहा गया है। आर्यमित्र की हीरक जयन्ती तथा अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये धन संग्रह की भी आलोचना की गई है।

विज्ञप्ति में गत चार कांडों का भी उल्लेख किया गया है। इन चारों में आर्य प्रकाशन लि०, बाढ़ भूकम्प व नोआखाली पीड़ित निधि, दैनिक आर्यमित्र का घाटा तथा हिन्दी आन्दोलन सम्बन्धी धन का हिसाब सम्मिलित किये गये हैं। ये सभी बातें ऐसी हैं, जिन पर आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग एवं साधारण अधिवेशनों में समय समय पर विचार हो चुका है। आर्यमित्र के घाटे एवं अव्यवस्था के विषय में जांच भी की जा चुकी है। मैं ही उस जांच समिति का संयोजक था। इन सब कार्यों में जो अनियमितता हुई, उनका आशय यही नहीं होना चाहिये, कि भविष्य में कोई भी कार्य सम्पन्न न हो। ऐसा कभी हुआ भी नहीं। भूल होने पर भी सावधानी के साथ आवश्यकता पड़ने पर सार्वजनिक कार्यों के लिये धन संग्रह करना अपराध नहीं।

मैं यहां सब से पहिले आर्यमित्र की हीरक जयन्ती के प्रश्न को ले रहा हूं। आर्यमित्र ने गत ६० वर्षों में आर्य समाज सम्बन्धी सिद्धान्तों को फैलाने में बड़ा योग दिया है। हीरक सम... उसका एक अच्छा ... काशित होना आर्य समाज ... श्रेष्ठ कार्य होगा। इस ... विद्वानों के लेखों का एक ... भी हो जायगा। हो ... कि आर्यमित्र अपनी ६० हीरक जयन्ती के पश्चात् एक उत्तम रूप ग्रहण कर सके और उसका मासिक संस्करण भी निकलने लगे। विशेषांक निकालने से आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं विचारों का व्यापक प्रचार ही होगा। कोई हानि कैसे हो सकती है।

जहाँ तक विद्वानों की सेवा में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का प्रश्न है, मेरे विचार से यह व्यक्ति पूजा नहीं। इस प्रश्न पर पहिले भी सार्वदेशिक सभा में विचार हो चुका है। जिस समय सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री नारायण स्वामी जी को जून १९४५ में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था, उस समय उसके सम्पादकीय विभाग में मुझे भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ था। उस समय यह स्पष्ट कर दिया गया था, कि स्वामी जी महाराज के जीवन पर संक्षिप्त सामग्री दी जायगी और आर्य सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के कार्यों पर मुख्य रूप से लेख प्रकाशित किये जायेंगे। यदि अभिनन्दन ग्रन्थ का दिया जाना व्यक्ति पूजा होता तो सम्भवतः ही नहीं किन्तु निश्चय से श्री नारायण स्वामी जी ग्रन्थ को कदापि स्वीकार न करते।

अब प्रश्न यह आता है कि किन विद्वानों को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जाय। दूसरा प्रश्न यह आता है, कि स्वामी दर्शनानन्द, ला० लाजपतराय, प० रामदेव जी आदि विद्वानों को अभिनन्दन ग्रन्थ क्यों नहीं भेंट किये गये। पहिले प्रश्न का उत्तर यह है कि प० गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा श्री गंगाप्रसाद रिटायर्ड चीफ जज इस समय तक सार्वदेशिक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की गतिविधियों के साथ सीधा सम्पर्क रखते हैं। दोनों ही विद्वानों ने आर्य समाज की श्रीवृद्धि की और वैदिक साहित्य की रचना करके आर्य समाज के

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अभिनन्दन और व्यक्ति-पूजा

(ले०—श्री श्यामसुन्दर ठाकुर)

कुछ महानुभावों ने एक छपा पर्चा कुछ स्थानों में भेजकर, उत्तरप्रदेश की प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विरोध किया है। वैसा एक पर्चा मेरी दृष्टि में भी आया है। एक कार्यक्रम का जिसका विशेष विरोध उस पर्चे के वितरकों ने किया है, वह है अभिनन्दन समारोह। इस आयोजन को वे व्यक्ति-पूजा कहते हैं, और इसे वे आर्यसमाज के सिद्धान्त के विरुद्ध बताते हैं।

मेरी समझ से यह कार्य सर्वथा आर्य सिद्धान्त के अनुकूल है। इस कार्य को आर्य सिद्धान्त के विरुद्ध बतलाना, बतलाने वाले की स्वयं आर्य सिद्धान्तों की अनभिज्ञता प्रकट करना है।

आर्यसमाज में पंच महायज्ञ की बड़ी महिमा है। एक यज्ञ है—देव यज्ञ उसमें विद्वान् मनुष्य (देव) ही क्यों जड़ अग्नि वायु जल आदि (देवों) की पूजा का विधान है। यज्ञ का एक अर्थ देव पूजा है ही, और देव चेतन मनुष्य और जड़ अग्नि वायु आदि तेंतीस देव प्रसिद्ध ही हैं। पितृ यज्ञ एक दूसरा महायज्ञ है, उसमें जीवित माता, पिता, पितामह आदि बुजुर्गों की श्रद्धा से पूजा करना और उनको तृप्त करने (तर्पण करने) का विधान है। एक है नृ यज्ञ जिसका अर्थ मनु महाराज ने किया "अतिथि पूजन"। तो महोदय (जैसा पर्चा बाटने वालों) का यह कहना कि व्यक्ति पूजा आर्य सिद्धान्त के विरुद्ध है ठीक नहीं जँचता। व्यक्ति पूजा या जड़ अग्नि आदि की पूजा भी बुरी तब हो जायगी, जब उनको हम परमात्मा के स्थान में परमाराध्य या परमोपास्य मानें। नहीं तो पूजा तो सबकी हो सकती है, जैसा देवता वैसी पूजा।

पूजा का अर्थ है 'सत्कार' 'अनुकूल व्यवहार' 'अनुकूल आचरण' किसी की पूजा उसका सत्कार या अनुकूल आचरण इसलिए किया जाता है, कि उससे हम उचित उपयोग ले सकें। वह हमारे लिए अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सके। अग्निहोत्र द्वारा जल, वायु पृथिवी आदि देवों की पूजा हम इसलिए करते हैं, कि वे हमारे अनुकूल होकर वृष्टि जल अन्न, शुद्ध वायु आदि द्वारा हम अधिक स्वस्थ सबल निरोग सुखी बनावें।

माता पिता, गुरुजन, विद्वान्, वयोवृद्ध आदि व्यक्तियों की पूजा का भी वही रहस्य है। इनको हम सुखी रक्खें, प्रसन्न रखें तो ये उपदेश आदि द्वारा हमारा अधिकाधिक कल्याण कर सकेंगे। व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्ति विशेष के लाभकारी होने की दशा में व्यक्ति विशेष की व्यक्तिगत स्तर पर पूजा होगी। राष्ट्रीय या सामाजिक स्तर पर या सार्वजनिक स्तर पर लाभदायक होने पर वैसे महान पुरुषों की राष्ट्रीय स्तर पर पूजा होती है। हमारे पिता हमारे लिए पूज्य हैं अभिनन्दन को व्यक्ति पूजा कहने वालों के पिता उनके लिए पूज्य हैं। अतीत के राम, कृष्ण, बुद्ध, दयानन्द और वर्तमान के राजेन्द्र, जवाहर आदि आदि राष्ट्र की विभूति होने के नाते राष्ट्रमात्र के वन्दनीय हैं। उसी प्रकार हमारे वर्तमान के गङ्गाप्रसाद उपाध्याय, गंगाप्रसाद रि० चीफ जज आदि आर्यजगत् के पूजनीय और अभिनन्दनीय हैं। उनकी पूजा में बाधा डालने वाले महानुभाव अपनी गिनती शिशुपालों में करायेंगे, इसमें मुझे लेशमात्र भी सन्देह नहीं है। हमारे पर्वों यथा रामनवमी, जन्माष्टमी आदि का भी यही रहस्य है।

आर्यसमाज में भी अतीत के महानुभावों में दयानन्द, श्रद्धानन्द, लेखराम, हंसराज, नारायण स्वामी आदि की स्मृति में पर्व मनाए जाते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम के तत्त्वावधान में रचाए जाने वाले आर्य महासम्मेलनों बंगाल के आर्यों में सर्वाधिक वृद्ध पुरुषों की यथा सर्व श्री दीपचन्द जी पोद्दार, वनमाली जी पारेख, भगीरथ राम जी, गाग जी भाई का अभिनन्दन हो चुका है, और भी महानुभाव आर्यसमाज में पूज्य हैं। उनकी पूजा रचाइये, आपको कौन मना करता है। आर्य जनता आपकी शक्ति और श्रद्धा के अनुरूप सहयोग करेगी। कुछ महानुभावों की पूजा—सूची प्रस्तुत कर्त्ताओं द्वारा ही आयोजित होवे तो क्या क्षति है? मनु महाराज के इस आदेश का पालन करना हम सबका कर्तव्य है—

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

वेदोपदेश

असंबाधं मध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्त्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः ॥

(मानवानां) मनुष्यों के (मध्यतः) मध्य में (यस्याः) जिसका (उद्वतः) ऊँचा (प्रवतः) नीचा [और] (समं) सम प्रदेश (असंबाधं) बाधा से हीन (बहु) बहुत सा [है]। (या) जो (नानावीर्या) विविध शक्तियों वाली (ओषधीः) जड़ी बूटियों को (बिभर्ति) धरती है, [वह] (पृथिवी) पृथिवी (नः प्रथतां) हमारे लिए फैले, (नः राध्यतां) हमारे लिए परिपक्व हो।

लखनऊ—१८ जनवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

धर्मान्धता का जनून

पाकिस्तान में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध

संसार के स्वतन्त्रता प्रिय वातावरण में किसी धार्मिक और पवित्र एवं विचार-पूर्ण पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाना कहाँ तक उचित और न्याय संगत है, इस प्रश्न पर तनिक भी विचार किये बिना, पूर्वी पाकिस्तान के मजहबी जोश मे, अन्धे अधिकारियों ने ससार के महानतम विचारक ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रतिबन्धित कर दिया है। इस समाचार ने आर्यसमाजियों को ही नहीं प्रत्येक विचार शील के मस्तिष्क को कठिनाई मे डाल दिया है इस घटना की स्थिति मे स्वस्थ मस्तिष्क सोचने लगता है कि, कहाँ तो एक ओर मानव चन्द्र लोक की दौड़ में संलग्न है, और कहाँ मानव के अन्दर इतनी असहिष्णुता कि वह किसी विचारक के विचारों को सुनना तो दूर पढ़ने से भी वंचित कर दे। राष्ट्रसघ के उच्चतम आदर्शों और मानवीय अधिकारों की घोषणाओं से अपने को लाभान्वित करने वाले पाकिस्तान जैसे राष्ट्र का यह कार्य अत्यन्त निन्दनीय अमानवीय एवं असहिष्णुता पूर्ण है। इसलिए इस कार्य की जितनी निन्दा की जाय थोड़ी होगी।

पाकिस्तान के साथ हमारे सम्पर्क का आधार सरकार है। अतः भारत सरकार को इस सम्बन्ध में भारतीय जनता के रोष को पाकिस्तान की सरकार तक पहुँचा कर कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

पाकिस्तान के इस कार्य का कोई बुद्धिमान समर्थन नहीं कर सकता परन्तु संसार मे मौका परस्त सदैव मौके की ताक मे रहते है। हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब हमने पढ़ा कि हैदराबाद के अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन ने भारत सरकार से अपील की है कि वह सत्यार्थ-प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाये—

भारत मे सांस्कृतिक धार्मिक कार्य करने वाली बहुत सी संस्थाये है पर अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन संस्था का नाम कभी सुनने में नहीं आया। हो सकता है। कुछ लोगों ने इस नाम से कोई संस्था आरम्भ की हो, पर क्या उसका सबसे पहला वार सत्यार्थ-प्रकाश पर ही होना था ? हम इस समाचार को असत्य मानते है परन्तु इस समाचार का लाभ उठाते हुए जमैयत उलेमा हिन्द के मुख पत्र ने अपने नग्न स्वरूप का प्रदर्शन किया है। सहयोगी के शब्द हैं—

'पूर्वी पाकिस्तान में स्वामी दयानन्द संस्थापक आर्य समाज की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। इस पर हैदराबाद की (सारे भारत की) आर्य समाज ने प्रबल विरोध किया है। हमने लिखा था कि आर्य समाज की प्रकृति को प्रकट करने के लिए पुस्तक का स्वतन्त्र रहना आवश्यक है। अब हैदराबाद से समाचार आया है कि वहाँ के अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन ने भारत सरकार से अपील की है कि वह सत्यार्थ प्रकाश पर पूरे भारत में प्रतिबन्ध लगाये क्योंकि यह ग्रन्थ मुसलमानों के लिए हानिप्रद और दिल को ठेस पहुँचाने वाला है। हम इसमें केवल इतना संशोधन करेंगे कि यह ग्रन्थ न केवल मुसलमानों के लिए अपितु हिन्दुओं, जैनियों, ईसाइयों और सिक्खों के लिए भी दिल को ठेस पहुँचाने वाला है। चूंकि इस पुस्तक पर सरकार की ओर से प्रतिबन्ध लगना कठिन है इसलिए हम इसका अनुमोदन नहीं कर सकते। प्रतिबन्ध लगाने की मांग हो तो इसके लिए उन धर्मों का सहयोग भी प्राप्त करना चाहिए जिनका नाम लेकर इस पुस्तक में दिल को ठेस पहुंचाई गयी है। अकेले मुसलमानों के दिल को ठेस पहुँचाना सम्भवतः सरकार कानून और विवेक को अपील न करे।'

इसको कहते हैं दूसरे के कन्धे पर रखकर बन्दूक चलाना। ऊपर के वक्तव्य से जमैयत की नीयत बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रतिबन्ध आवश्यक है सब लोग मिलकर मांग करें तब लग सकेगा। सत्यार्थ-प्रकाश का कसूर यही है कि उसने चोर को चोर, ठग को ठग और झूठे को झूठा कहा है। हाँ यदि सब चोर मिलकर यह चिल्लाने लगें कि किसी ने हम को चोर कह दिया है, तो क्या कोई उनका साथ देगा यही प्रश्न यहां भी है। तथाकथित अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन तो अपनी मौत आप मरेगा, हां जमैयत का नग्न स्वरूप भी स्पष्ट हो गया। धार्मिक सहिष्णुता के नाम पर आर्य समाज कदापि असत्य को सत्य और सत्य को असत्य कहने और मानने को तैयार नहीं होगा यही सत्यार्थ-प्रकाश का प्रकाश है, इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश सदैव अमर रहेगा।

सभा की प्रतिष्ठा

जयन्ती योजना आपके विचारों का प्रचार एव प्रसार करने का साधन बनकर आपके सामने आई है। घोषणा के पश्चात् वह आपकी कर्त्तव्य परायणता की परीक्षा बन चुकी है, अतः अब प्रत्येक आर्य को आज ही अभी ही अपने कर्त्तव्य का पालन आरम्भ कर देना चाहिये। सोचिये आपने क्या निश्चय किया है। आपने यदि अभी तक कुछ नहीं किया तो, आपकी कमी रही है। आज ही अपनी कमी दूर कर, अपना कर्त्तव्य पालन आरम्भ कर दीजिए। प्रत्येक ग्राम, नगर और क्षेत्र में जयन्ती का सन्देश आप पहुंचा दें इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने कर्त्तव्य पर डट जांय। आज प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य होना चाहिए 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' हमने एक निश्चय किया है, उसकी सफलता ही हमारी शान है, और हमारी शान ही सभा की प्रतिष्ठा है। और सभा की प्रतिष्ठा ही आर्यसमाज का गौरव है। सोचिये और निश्चय कीजिए आपको क्या करना है। काम महान् है, समय कम है और आपकी परीक्षा है। परीक्षा में सफलता मिले यही लक्ष्य होना चाहिये।

शिक्षा-शिक्षक और सरकार

आज की हमारे देश की शिक्षा-व्यवस्था उद्देश्य हीन, आदर्शहीन तथा यान्त्रिक व्यवस्था के रूप में प्रचलित व्यवस्था है। अध्यापकों को यन्त्रवत प्रयुक्त कर छात्र रूपी माल विद्यालय रूपी कारखानो से प्राप्त किया जा रहा है; और माल इतना तय्यार हो रहा है, कि उसे खपाने के लिए बाजार नहीं और इस प्रकार राष्ट्र की भावी पीढ़ी के साथ एक अजीब प्रकार का विनाशात्मक खेल खेला जा रहा है।

दूसरे प्रश्न पर विचार करें तो शिक्षा कारखाने की मशीन अध्यापक की दशा इतनी दयनीय है कि उसका ढाँचा भी ठीक से खड़ा नहीं हो पाता तब वह छात्र रूपी माल की सम्पत्ति का निर्माण क्या करे। और इस पर भी सरकार ने अध्यापकों के साथ असमानता का जो द्वैध स्वरूप अपनाया है, वह असन्तोष को और बढ़ा देता है। उत्तरप्रदेश मा० शि०स० की ओर से राज्य सरकार से समानता की जो मांग की गई है, वह प्रत्येक दृष्टि से उचित और न्यायानुकूल है। सघ ने मांगे मजूर करने के लिए सरकार को समय दिया है आशा है सरकार राष्ट्र-निर्माताओं की मागो को स्वीकार कर समानता के भारतीय और समाजवादी आदर्श का पालन करेगी। यदि सरकार ने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया तो सघर्ष की भी सम्भावना है। आशा है सरकार शिक्षकों के प्रश्न को राजनीति मे सम्मिलित होने से बचाकर उनके प्रति और राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेगी।

अन्तरिक्ष की ओर मानव

विज्ञान के चमत्कार मानवीय मस्तिष्क की प्रतिभा की दुन्दुभि दिग्दिगन्त मे बजा रहे हैं। रूसी स्पूतनीक, अमेरिकन सेटलाइट और नवीनतम रूसी उपग्रह "स्वप्न" की अन्तरिक्ष उड़ाने मानव प्रगति के चरमोत्कर्ष की सूचक है।

प्रश्न यह है कि क्या मानव पृथ्वी, पर पूर्ण उन्नति कर चुका क्या ? मानव समुदाय का सामूहिक विकास हो

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

चुका या हो रहा है इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर यही है कि मानव की मूलभूत समस्यायें आज भी वही हैं जो कभी आरम्भ हुई थीं। मानव के मन की आसुरी प्रवृत्तियाँ आज भी उतनी ही उग्र हैं जितनी कभी आरम्भ मे रही होगी, हाँ व्यक्ति के साथ साथ आज उन्होने सामूहिक रूप धारण कर लिया है। हिंसा, विद्वेष, स्वार्थ की भावनाए आज राष्ट्र समूहो मे बटी हुई हैं और एक राष्ट्र समूह दूसरे राष्ट्र समूह के विरुद्ध उग्रतम विनाश के लिए सन्नद्ध है। इस दृष्टि से मानव की अन्तरिक्ष यात्रा आदर्श हीन है। हम आर्य तो प्रतिदिन अन्तरिक्ष मे भी शान्ति की स्थापना की प्रार्थना करते हैं। आज उस प्रार्थना की वास्तविक आवश्यककता है क्योकि यदि अन्तरिक्ष दूषित हो गया तो मानवता का विनाश स्वाभाविक है। प्रभु मानव मस्तिष्क को सद्बुद्धि दे कि वह अपने इस चरमोत्कर्ष का उचित उपयोग करे इसी म मानवता की भलाई है और विज्ञान का गौरव।

सद्भावना का एक वर्ष

२७ दिसम्बर ५७ को आर्य समाज ने राष्ट्रहित के नाम पर राष्ट्रिय सरकार के आश्वासन पर जिस सद्भावना का परिचय देते हुए पजाब म हिन्दी रक्षा आन्दोलन को स्थगित किया था उसे एक वर्ष हो चुका है। आर्यसमाज ने सघठित रूप स और उसके सदस्यों ने व्यक्तिगत रूप से अपनी सद्भावना को कायम रक्खा तथा उसका पालन किया है, इसका प्रमाण पजाब में किसी प्रकार की गढ़बड़ न होना ही है।

आर्य समाज के पक्ष का सम्मुख रखकर सरकार ने क्या प्रयत्न किये हैं यह अभी निर्णयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता, परन्तु इतना हम अवश्य कहना चाहेगे कि हमारी सरकार सद्भावना की अपेक्षा ताकत से अधिक प्रभावित होती है। हमारी सरकार म० गांधी जी को नैतिकता की पुकार करती है, परन्तु सरकार के पास स्वय वह नैतिक बल नहीं है कि वह समस्याओं का साहसपूर्वक और सिद्धान्तो के आधार पर निर्णय कर सके। आशा है आर्य समाज की एक वर्षीय सद्भावना को राष्ट्राधिकारी ध्यान मे रक्खेगे और प्रश्न को अधिक समय तक न टालेंगे।

आर्य समाज अमेठी का वार्षिकोत्सव

१ से ४ जनवरी तक आर्यसमाज अमेठी जिला सुल्तानपुर का वार्षिक उत्सव धूम धाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव का उद्घाटन राजकुमार श्री रणजयसिंह एम० एल० सी० भू० पू० प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने किया। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् प० बुद्धदेव विद्यालङ्कार, प० शान्तिस्वरूप हरदोई, भू० पू० एम० एल० ए० श्री दिगम्बर देव जी, श्री विद्याभूषण एम० एस० सी०, ठा० पन्नासिंह प्रभृति के भाषण उपदेश विशेष प्रशसनीय थे।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव महामना प० मदनमोहन मालवीय की जयन्ती श्री राजकुमार महोदय की अध्यक्षता में रामनगर तथा अमेठी मे मनाई गई। स्वर्गीय स्वा० श्रद्धानन्द तथा पूज्यपाद मालवीय जी के अनुपम चरित्र एव कार्यों की प्रशसा अनेक व्याख्याताओ ने की जिन में राजकुमार श्री रणजयसिंह जी, श्री इन्द्रजित गुप्त एम०ए० एल०एल०बी० श्री रामकिशोर शास्त्री बी० ए०, श्री यशपालसिंह शास्त्री, श्री धर्मेन्द्रदेव मिश्र प्रभृति के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आर्यमित्र और विश्व की आर्य समाजें

आर्यमित्र विश्व की आर्य समाजों का अग्रदूत है।

आर्यमित्र वदिक विचारों का प्रबल प्रचारक है।

आर्यमित्र विश्व बन्धुत्व और वैदिक सस्कृति का प्रबल प्रसारक है।

आर्यमित्र विश्व के मानव समाज का पथ प्रदर्शक है।

आर्यमित्र आर्य जीवन का गौरव प्रकाश है।

आर्यमित्र विश्व के आर्यों की आवाज है।

आर्यमित्र महर्षि दयानन्द का सदेश वाहक है।

आयमित्र वेद सुधा दायक है।

आर्यमित्र सोई हुई असख्यो आत्माओं को जगाने वाला आर्य जीवन ज्योति सार है।

विश्व के प्रत्येक आर्य भाई बहिनों का तथा भूमण्डल की समस्त समाजों का कर्त्तव्य है कि वह स्वयमेव आर्यमित्र के ग्राहक बने तथा अपने इष्ट मित्रो को ग्राहक व सहायक बनाकर आर्यमित्र के द्वारा वैदिक भव्य भावनाओ का विश्व व्यापी प्रचार करके विश्व मे वैदिक स्वराज्य स्थापित करे। आर्यमित्र की हीरक जयन्ती में पूर्ण योग प्रदान कर चार चाँद लगायें।

—वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी उपदेशक अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सरायरुहेला देहली ५

सामयिक समस्याएँ

नेपाल पर ईसाइयों की गृध्र दृष्टि

(ले०—श्री आचार्य रामानन्द शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा पटना)

★ आर्य समाज का उद्भव संसार से अज्ञान अन्याय और अभाव को नष्ट करने के लिये हुआ है। हमारा नारा है "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"। नेपाल भारत के निकट और हमारा सांस्कृतिक अंग है, पर आज मौका पाकर वहाँ विदेशी-ईसाई मिशनरियों ने अपनी दुरभि सन्धियां आरम्भ कर दी हैं नेपाल की सांस्कृतिक रक्षा का दायित्व भारतीयों और आर्य समाजियों पर है। नेपाल की निरीय दलित और त्रसित जनता अपने अधिकारों और सांस्कृतिक थातियों की सुरक्षा के लिये आर्य बन्धुओं के सम्मख की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रही है। क्या हम आशा करें कि नेपाल के प्रति अपने दायित्व को आर्य समाज के कर्णधार और आर्य जनता द्वारा पूर्ण किया जायगा। 'फिर पछताये क्या होवत है, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत' अब देर करने का समय नहीं रहा, अपनी प्रचार सेना झोंक दो। ★

—सम्पादक

भारत के समान नेपाल भी राजा पृथ्वी नारायण शाह के पूर्व अनेक छोटे राज्यों में विभक्त था। काठमण्डू (ललितपुर) पाटन (अशोक पत्तन) भाद गाऊं (भक्तपुर में अलग-अलग राजा राज्य करते थे। ये राजा नेवार थे इनकी उपाधि मल्ल थी। ये वैशाली के लिच्छवि वंश के थे, ये बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। किन्तु काल-क्रम के प्रभाव से बौद्धों के महायान शाखा के प्रचारकों ने तन्त्र-सिद्धि का यहाँ अधिक प्रचार किया, इन मल्ल नेवार राजाओं के पहले नेपाल में पूर्वी भाग में किरातों का राज्य था। आज भी नेपाल में गुरुंग, तमाङ, लिम्बू आदि जातियां हैं, ये सब किरात वंश के हैं। ये किरात वंशीय बड़े ही वीर होते हैं। अपनी कमर में खुखुरी रखते हैं। फौज में भर्त्ती होते हैं। सेना में अनुशासन प्रियता इनकी प्रसिद्ध है। जान को हथेली पर रखकर ये शत्रु के ऊपर हमला करते हैं। भारत ब्रिटिश तथा अमेरिका की सेना में इन्हीं की संख्या अधिक है। ये किरात वंशीय गुरुंग, तमाङ, शेरपा, लेपचा वीर तो हैं, लेकिन अशिक्षा तथा गरीबी इनमें चरमसीमा तक पहुँच गयी है। ईसाई मिशनरी अधिक संख्या में इन्हीं जातियों में प्रचार करते हैं। इन विदेशी ईसाइयों को अपनी सरकारों से काफी सहायता मिलती है, उनकी योजना है कि इन वीर जातियों को बिना ईसाई बनाये, हम भारत के हिन्दुओं के द्रोही इन्हें नहीं बना सकते हैं। द्वितीय श्रेणी में "नेवार" आते हैं। इनमें बौद्ध और हिन्दू दोनों हैं, दोनों में बहुत सामञ्जस्य भी है। दूसरी जगह इतना समन्वय दो धर्मों में न दिखाई पड़ता है जैसा काठमांडू में हिन्दुओं तथा बौद्धों मे दृष्टिगत होता है। मुकुर अष्टमी (मुखर अष्टमी) को भगवान् गौतम बुद्ध की प्रतिमा का मुकुर पशुपतिनाथ को मूर्ति को पहनाया जाता है।

कहना नहीं होगा कि बौद्धों में वर्णाश्रम व्यवस्था नहीं है। इसलिए नेवारों मे जाति-पांति ऐसी कोई चीज नहीं थी। इसका कारण बौद्ध धर्म था। लेकिन प्रशस्तियों के देखने से विदित होता है कि ये सूर्य वंशी क्षत्रिय थे। नेवारों के ४२ वें राजा प्रतापमल्ल जी के सम्बन्ध में लिखा है "आसीत् श्री सूर्य वंशो रघुनृप कुल जो" इत्यादि ये सूर्य वंशीय क्षत्रीय भारत से जाकर किरातों को हराकर अपना शासन नेपाल में स्थापित किये। इन्हीं नेवारों में जयस्थिति मल्ल नामक राजा विक्रम सम्वत् १४८५ विक्रम में हुए इन्होंने ही नेवारों में पुनः वर्णाश्रम व्यवस्था कायम की।

ब्राह्मण - गुभाजु
क्षत्रिय — थांवा
वैश्य —उदास
शूद्र—मातंग आदि

हिन्दू नेवार में भी ब्राह्मण क्षत्रिय आदि भेद किये गये। जय स्थिति मल्ल ने ३६ जातियाँ भी बनायीं।

जैसे—देवोपाध्याय, जोशी, मल्ल, महाजु, राजभण्डारी, मास्के, प्रधान, धन्वन्तरी, रावट डंगुल, ताम्रकार स्थापित इत्यादि।

ऊपर लिख आया हूं कि इन लोगों में तन्त्र का प्रचार अधिक है, अतः वाममार्ग के कारण इनकी स्थिति दयनीय हो गयी। तब १८२४ विक्रम सम्वत् में गोर्खा निवासी (नेपाल का एक जिला) श्री पृथ्वी नारायण शाह ने काठमण्डू पर आक्रमण कर नेवार राजाओं को हराकर राजा बन बैठे। पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल की एकता का बड़ा भारी काम किया। छोटे मोटे जितने राज्य थे, सबों को मिलाकर पृथ्वी नारायण शाह ने 'नेपाल' की सीमायें विस्तृत की, तथा अपनी नीति से नेपाल देश को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाया। यद्यपि पृथ्वी नारायण शाह ने आक्रमणों द्वारा सबों को अपने वश में किया। लेकिन नेपाल की एकता ही यही उनका लक्ष्य था। इतिहासकार उस महान् पुरुष को नहीं भूल सकते हैं, जिसने अपने बाहुबल से हिन्दू राज्य की नींव डाली।

पृथ्वी नारायण शाह के पश्चात् पाँचवें राजा श्री राजेन्द्र शाह विक्रम सम्वत् १८७३ में हुए। उन्हीं के समय भारत में सिपाही विद्रोह हुआ। जंगबहादुर राणा प्रधान मन्त्री थे, वे बहुत वीर थे। इन्होंने ही अंग्रेजों को सहायता दी थी तथा लखनऊ शहर को विद्रोही सिपाहियों से जीत कर अङ्गरेजों के अधिकार में दिया था। इसका कारण यह था कि जंगबहादुर के पास अङ्गरेज एव बादशाह दोनों के आदमी मदद मांगने गये थे लेकिन जंगबहादुर राना ने इसलिए अगरेजों की मदद की क्योंकि नेपाल के भारदारों ने समझा दिया कि मुसलिम राज्य से अगरेजों का राज्य अच्छा है। मुसलमानों ने ही हिन्दू मन्दिरों को तोड़ा है। जंगबहादुर राणा के समय सारा अधिकार मन्त्रियों के हाथ में चला गया। तभी से रानाशाही नेपाल में चली। इन राणाओं ने नेवारों के विरुद्ध बहुत कठिन कानून बनाये। ये सेना में भर्त्ती नहीं होते थे, इनको संस्कृत पढ़ने का अधिकार नहीं था। इनको बिल्कुल हीनदृष्टि से देखा जाता था। इनकी भाषा नेवारी तथा लिपि भी भिन्न है। सम्पूर्ण नेपाल का प्राचीन इतिहास इन्हीं की लिपि में सुरक्षित है, किन्तु दो सौ वर्षों की राणाशाही ने इन्हें तबाह कर दिया। इन्हें सरकारी उच्च नौकरी भी नहीं है, ये बेचारे भूख से मरते हैं। इस जाति के पुरुष और स्त्रियां बहुत खूबसूरत होती हैं। इन्होंने अपने प्रयास से ही कठिन विपत्ति के समय में विद्याअर्जन किया था। प० शुक्रराज शास्त्री नेवार ही थे जिन्हें आर्य समाज के कारण फांसी पर लटका दिया गया था।

इसलिये नेवारों की गरीबी से विदेशी ईसाई प्रचारक बहुत लाभ उठाते हैं। इन्हें विविध प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का प्रयास करते हैं। यद्यपि अभी नेपाल में सरकारी नियम है "नेपाल राज्य में कोई हिन्दू मुसलमान अथवा ईसाई नहीं हो सकता है किन्तु ईसाई मुसलमानों की शुद्धि बैन्ड है।" इससे बहुत कुछ रुकावट है। वे निरीह नेपालियों को नेपाल की सीमा से बाहर लाते हैं तथा बपतिस्मा देते हैं। सेक्युलरिज्म का भूत वहां भी फैल रहा है, विचार चर्चा चल रही है कि नेपाल को भी सेक्युलर राज्य घोषित कर सब धर्म वालों को अधिकार दिया जाय कि वे नेपाल में सर्वत्र अपना धर्म प्रचार कर लोगों को अपने धर्म में दीक्षित करें, इसका परिणाम बहुत ही भयानक होगा। राणाशाही के कारण वहाँ की प्रजा बहुत ही गरीब और अशिक्षित है, अतः ईसाइयों के चंगुल में बहुत जल्दी आ जायेगी।

नेपाल के शासन में भी ईसाइयों की चालबाजी चल रही है। नेपाल के शिक्षा मन्त्री ईसाई धर्म का प्रोत्साहन देते है। कुछ लोगों का तो कहना है कि उन्होंने नियम पूर्वक दार्जिलिङ्ग में ईसाई धर्म की दीक्षा ली है, नेपाल के शिक्षा आयोग ने नेपाल की प्रजा के लिये दो ही भाषा स्वीकृत की है (१) अंगरेजी (२) गोर्खाली सम्पूर्ण क्षेत्रीय भाषाओं का आयोग ने बहिष्कार किया है। तराई क्षेत्र के शत प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं उसकी उपेक्षा की गयी है। नेवारी भाषा का पूर्ण बहिष्कार किया गया है। यदि आयोग का प्रतिवेदन मान लिया गया तो नेपाल से आर्य संस्कृति पूर्णरीत्या विदा हो जायेगी। क्योंकि आयोग ने 'संस्कृत' के लिए लिखा है कि यह स्वर्ग नरक की भाषा है। अतः इसकी कोई आवश्यकता नहीं।

मुझे विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि नेपाल में पेनल कोड का नव निर्माण हुआ है। यह पुस्तक अमेरिका मे छप रही है, इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि आर्य लोग गोमांस खाते थे। सीताराम की बहिन थीं। (२) सीता, राम और लक्ष्मण दोनों की पत्नी थीं। वशिष्ट की पत्नी अरुन्धती के सात पति थे इत्यादि इससे हिंदू धर्म पर बहुत बड़ा आघात आने वाला है। यदि नया 'संविधान में धर्म निरपेक्षता स्वीकार कर ली गयी एक दिन सम्पूर्ण यह सुन्दर देश ईसाइयों के क्रुश पर चढ़ जायेगा तब काठमण्डू में केवल गिर्जाघर ही दिखाई पड़ेगा। ऐसी स्थिति मे आर्य समाज को इधर ध्यान देना चाहिये विशेषतः आर्यसमाज के त्यागी, साधु सन्यासियों को वहाँ की भाषा सी[illegible]

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अध्यात्म धारा—

आत्म तत्व (आत्म-शक्ति) को प्राप्त करने का उपाय

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी. डी. बी. कालेज, गोरखपुर)

आत्म तत्व की खोज ही मानव जीवन की साधना है और इसीलिए किसी कवि ने लिखा है—'जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ' भारतीय वाङ्मय में उपनिषद् साहित्य ऋषियों की इसी प्रकार की देन है। प्रस्तुत लेख में उपनिषद् के आधार पर आत्म तत्व की खोज के कुछ उपाय विद्वान् लेखक ने प्रस्तुत किये हैं। लेखक ने गम्भीर विषय को जिस सरलता के साथ स्पष्ट किया है वह उनकी एक विशेषता है। —सम्पादक

आत्मिक शक्तियों का स्रोत प्रभु हैं। प्रभु के शासन की विशेषता यह है कि वह सब आनन्द की वस्तुओं का खजाना है और सम्पूर्ण शक्तियों का निधान। जो व्यक्ति आत्म-शक्ति को प्राप्त करना चाहता है उसे सागर की ओर, प्रभु की ओर जाना पड़ेगा। यह जीव मानव शरीर धारी जीव जब आत्मा के ज्ञान के लिए प्रयत्न करेगा तभी आत्मतत्व उसे मिलेगा। आत्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को विवेक प्राप्त करना होगा। विवेक का तात्पर्य है कि हमें यह ज्ञान हो कि यह शरीर जड़ है, इस शरीर में जो गति का अधिष्ठाता है, वह जीवात्मा है। शरीर का नाश होने पर भी जीवात्मा का नाश नहीं होता। यदि जीवात्मा का नाश नहीं होता तो अन्याय, असत्य, अत्याचार और हिंसा का मुकाबला क्यों न किया जाय ? सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी महाराज ने योग सूत्र का उद्धरण देते हुए लिखा है—

'अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्य शुचि सुखात्मख्यातिर विद्या' अर्थात् अनित्य संसार और देहादि में नित्य की बुद्धि करना, अशुचि अर्थात् मल रक्त आदि के शरीर और मिथ्या भाषणादि अपवित्र कार्यों में पवित्र बुद्धि दुःख में सुख की बुद्धि, अनात्मा में आत्मा की बुद्धि करना अविवेक या अविद्या है। इस अविवेक का दूर करना आत्मिक शक्ति प्राप्त करने वाले के लिए पहला और आवश्यक कदम है। मनुष्य जब अनित्य में नित्य की बुद्धि करता है तभी वह असत्य की ओर प्रवृत्त होता है। वह सोचता है कि यह देह सदा रहने वाली वस्तु है अतः मृत्यु भय से भयभीत हो उचित एवं अनुचित उपायों द्वारा इसकी रक्षा में लग जाता है। वह संसार के अनित्य पदार्थों को नित्य समझकर बटोरना शुरू कर देता है और इस प्रकार संसार के अन्दर फंसकर अपनी आत्मा को खो देता है। वास्तव में तो यह शरीर अनित्य है पर हम इसे ऐसा मानते नहीं और नहीं मानने का फल है कि हम इसी में लगे रहते हैं और सांसारिक वासनाएं हमें अपनी ओर आकर्षित करती रहती हैं। संसार में यदि हमें यह ज्ञान हो जाय कि हमें एक दिन मरना है—अर्थात् मृत्यु का स्मरण रहे तो कोई शक्ति या कोई विषय हमें अपनी ओर नहीं खींच सकता। इस संसार में भोग के पदार्थ रहेंगे। इस संसार में सुख की दूसरी वस्तुएं रहेंगी। परन्तु वे हमें आकर्षित न कर सकेंगी इसीलिए तो कहा है कि अनित्य देह की चिन्ता मत करो। हम मरण को भूल जाते हैं अपनी अनित्यता का ध्यान नहीं रहता, अतः प्रभु की प्राप्ति हम नहीं कर पाते। मरण के स्मरण रखने की जरूरत इसलिए भी है कि मृत्यु की भयानकता का मुकाबला किया जा सके। एक नाथ महाराज की एक बात सुनिए। एक सज्जन ने उनसे पूछा 'महाराज, आपका जीवन कितना सीधा-सादा, कितना निष्पाप। हमारा जीवन ऐसा क्यों नहीं ? आप कभी किसी पर गुस्सा नहीं होते ? किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं, टटा बखेड़ा नहीं। कितना शांत कितना प्रेम पूर्ण, कितना पवित्र है आपका स्वभाव ? एकनाथ ने कहा—'फिलहाल मेरी बात रहने दो। तुम्हारे विषय में एक बात मालूम हुई है कि आज से सातवें दिन तुम्हारी मौत आ जायगी। अब एकनाथ की कही बात को कौन झूठ मानता ? सात दिन में मृत्यु। सिर्फ १६८ घंटे बाकी ? हे भगवान्, यह क्या अनर्थ ! वह मनुष्य जल्दी-जल्दी घर दौड़ गया। कुछ सूझ नहीं पड़ता था। अब बीमार हो गया। बिस्तर पर पड़ गया। छः दिन बीत गए सातवें दिन एकनाथ उससे मिलने आए। उसने अन्तिम भाव से नमस्कार किया। एकनाथ ने पूछा 'क्या हाल है' उसने कहा 'बस अब चला।' नाथ जी ने पूछा—इन छः दिनों में कितना पाप किया ? पाप के कितने विचार मन में आए ? वह आसन्न मरण व्यक्ति बोला 'नाथ जी, पाप का विचार करने का तो मौका ही नहीं मिला।' 'मेरा जीवन इतना निष्पाप क्यों है।' इसका उत्तर अब मिल गया न ? मरण रूपी शेर सदैव सामने खड़ा रहे तो फिर पाप किसे सूझेगा ? इसलिए देह को नश्वरता और आत्मा की अमरता का ध्यान रखना आवश्यक है। यह देह आत्मा का साधन है और जीवात्मा साधन है परमात्मा की प्राप्ति का। गीता में कहा है—

'यह आत्मा कटता नहीं, जलता नहीं, सूखता, डूबता नहीं।' 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

स्वामी रामतीर्थ ने कहा है—

खंजर की क्या मजाल है कि
इक जख्म कर सके।
तेरा ही है ख्याल कि
घायल हुआ है तू॥

इस आत्मा की अमरता को जानने वाले हकीकत ने कहा—

काट सकते हो तो
बाहर का हकीकत काटो।
काटती असल हकीकत को
यह तलवार नहीं॥

इसी आत्मा की अमरता को समझा था, गोरखपुर की जेल में फांसी के तख्ते पर चढ़ने वाले रामप्रसाद 'बिस्मिल' ने और अंतिम समय भी गायत्री मन्त्र तथा 'विश्वानि देव' के मन्त्रों का पाठ करते हुए उसने अपने को राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। यह विवेक, यह है यथार्थ ज्ञान।

इसके बाद दूसरा अविवेक है अशुचि में शुचि अर्थात् पवित्रता की भावना। हमारा यह शरीर चमड़ी से ढका है। जरा चमड़ा उतार कर देखिए, पेट चीर कर देखिए आपको पता लगेगा कि हम मल मूत्र, रक्त, मज्जा जिनसे मनुष्य घृणा करता है उसके ही समूह हैं और उसके सिवाय कुछ नहीं। इस तथ्य को समझने वाले बुद्ध भगवान् के पास अपने समय की मिस इण्डिया मागन्धी ने पहुंच कर जब प्रेम की याचना की तो बुद्ध ने कहा अरे यह शरीर का सौंदर्य क्षण भंगुर है। हम और तुम मिट्टी के पुतले हैं फिर क्यों इस पर इतना गर्व ? आओ इस शरीर से बढ़कर जो आत्मा है उसको जानो। सुना होगा आपने उस राजकुमार का हाल जिसने एक राजकुमारी से प्रेम कर अपनी सुध बुध खो दी थी और राजकुमारी ने शरीर का वास्तविक रूप दिखाकर उसका मार्ग प्रदर्शन किया था। जब राजकुमार निश्चित दिन उससे मिलने गया उससे दो दिन पूर्व से ही रेचक औषधियां लेकर और उससे होने वाले मल को सुन्दर प्यालियों में सुन्दर कपड़ों से ढककर उसने सजाकर रख दिया। और कहा, यही मैं हूं जिससे तुम्हें प्रेम है। इसे छोड़ कर यदि तुम पवित्र वस्तु परमात्मा से प्रेम करो तो तुम्हारा शोक, चिन्ता और भय दूर होंगे इसलिए अशुचि में अशुचि और शुचि में शुचि की भावना करना यह है द्वितीय यथार्थ ज्ञान।

इसी प्रकार हम दुःख में सुख की भावना कर लेते हैं और अन्त में दुःख दुःख ही हो जाता है। हमें कष्टों का सामना करना पड़ता है। संसार के जितने भोग विलास हैं यदि इनका अनुभव कीजिए और विश्लेषण कीजिए तो आपको पता लगेगा कि 'आपात् रम्याः विषयाः' अर्थात् विषय जब तक भोगे जाते हैं तब तक अच्छे लगते हैं। 'पर्यन्त परितापिनः' परन्तु अन्त में मन में ग्लानि और घृणा उत्पन्न करते हैं। है न यही हमारा अनुभव फिर क्यों इन दुःखदायक विषयों का सेवन किया जाय।

अन्त में आत्म शक्ति प्राप्त करने वाले को इस शरीर को ही आत्मा नहीं समझ लेना चाहिए। हम इसे आत्मा मान जब चलेंगे तो इसी की सजावट में रह जायगे। इसलिए आत्मा और अनात्मा का भेद करना चाहिए और इस प्रकार यथार्थ ज्ञान की ओर बढ़ना चाहिए। यही आत्म 'शक्ति प्राप्त करने का रहस्य है। नचिकेता ने आत्मा के तत्व को जानने के लिए ही यम से मृत्यु के बाद हमारा (आत्मा) क्या होता है—प्रश्न पूछा और यम ने उसे आत्मा की अमरता और देह की नश्वरता समझाई।

विज्ञान-वार्ता

खेती की उन्नति में अणु-शक्ति का प्रयोग

भारतीय कृषि अनुसंधान शाला का प्रयत्न

नयी दिल्ली की कृषि अनुसंधानशाला में किरण फेंकने वाले कणों (रेडियो आइसोटोप) की सहायता से पौधों की जाति बदलने के प्रयोग किये गए हैं। प्रस्तुत लेख में खेती की उन्नति में अणु शक्ति की उपयोगिता की चर्चा की गयी है। अणु शक्ति का मानवीय आवश्यकताओं के लिए उपयोग करके ही वैज्ञानिक विज्ञान को अणु-युग की विभीषिका को समाप्त कर अणु को मानवता के लिए वरदान सिद्ध कर सकते हैं। —सम्पादक

नयी दिल्ली की भारतीय कृषि अनुसंधानशाला के एक कोने मे ८०० फुट व्यास की गोलाकार जमीन के चारों ओर ३ फुट चौड़ी और १८ फुट ऊंची दीवाल बनायी जा रही है। इस जमीन में गामा किरणें फेंकने वाले कोबाल्ट ६० के टुकड़े लगाए जायेंगे, जो ऐसे पौधे तैयार करेंगे, जिन की उपज अधिक होगी और जिनमें कीड़े तथा बिमारियां भी न लगेंगी।

अनुसंधानशाला में पिछले तीन वर्षो से रेडियो आइसोटोपों (कणों) द्वारा पौधों की नसल सुधारने पर खोज हो रही है। पहले यह धारणा थी कि रेडियो आइसोटोपों से पौधे जल्दी बढ़ते हैं, परन्तु विदेशों मे और इस अनुसधानशाला में खोज करने से पता चला है कि ऐसा नहीं है। अब पौधों पर किरण-कणों का प्रयोग करके यह देखा जाता है कि उनका पौधे की रचना पर और मिट्टी पर क्या असर पड़ता है। उर्वरकों और खादों में किरण युक्त कणों को सम्मिलित कर पौधों के पोषण और बाढ़ की क्रिया का अध्ययन किया जाता है।

रेडियोविकिरण से पौधों की नस्ल बदलती है। इस प्रकार अनाज आदि की किस्म सुधारी जा सकता है।

रेडियो विकिरण से फसल के कीड़े भी नष्ट किए जा सकते है। नर कीड़ों पर गामा किरणों के पड़ने से उनका सन्तानोत्पादन शक्ति मारी जाती है।

पौधों की नस्ल में सुधार

अच्छे किस्म के पौधे उगाने के लिए उपयुक्त किस्म का पौध छांटनी होती है। मान लीजिए कि हम गेहूं की ऐसी किस्म पैदा करना चाहते हैं, जिसमें रतुआ न लगे, तो हमें इसके लिए गेहूं की उस नस्ल का पौधा लेना होगा, जिसमें रतुआ रोकने की शक्ति हो। वह शक्ति पैदा करने के लिए हमें पौधे के 'सैलों' या वंशानुगत तत्वों में परिवर्तन करना होगा। ऐसे जाति परिवर्तन अपने आप भी होते हैं, परन्तु रेडियो विकिरण से तेजी से परिवर्तन किया जा सकता है।

इस प्रकार पौधों की जातियां बदलने में रेडियोविकिरण से काफी सहायता मिलती है। गेहूं की किस्म उन्नत करने में यह विशेषकर लाभदायक होगा, क्योंकि पिछले ५० वर्षों से गेहूं की किस्म सुधारने के लिए निरन्तर प्रयत्न हो रहा है और अब पुराने तरीके से अधिक परिणाम निकलने की आशा नहीं है।

भारतीय कृषि अनुसंधानशाला ने रेडियोविकिरण से गेहूं, कपास तथा अन्य पौधों की किस्में सुधारने में काफी काम किया है। इसकी मदद से एन० पी० ८०६ किस्म के गेहूं में जल्दी अंकुर फूटते हैं और उसके पोधों में काला, पीला या भूरा रतुआ भी नहीं लगता। इसी तरह संकर (मिश्रित जाति के) बिनौले तैयार किये गए हैं, जिनसे अधिक कपास पैदा होती है। टमाटर और फूलों के पौधे भी रेडियो-विकिरण से अधिक सुंकर व फल-फूल देने लगते है।

गामा खेत

कृषि अनुसंधानशाला ने अपने यहाँ जो 'गामा खेत' बनाया है, उससे रेडियोविकिरण द्वारा पौधों की नस्ल बदलने के बारे में अध्ययन करने में बहुत सहायता मिलेगी। रेडियो-विकिरण के लिए अन्य पदार्थ भी इस्तेमाल किये गए, परन्तु कोबाल्ट ६० सबसे कम खर्च का और अच्छा साबित हुआ। यह अधिक समय तक चलता है और इससे काफी शक्तिशाली और अन्तरवेधक गामा किरणें निकलती हैं। इसके लिए कोलम्बो योजना के अन्तर्गत कनाडा से २०० क्यूरी का कोबाल्ट ६० खरीदा गया है। इससे बहुत से पौधों पर एक साथ किरणें डाली जा सकेंगी।

यह खेत अणु शक्ति आयोग के सहयोग से बनाया जा रहा है। यहाँ संस्था के कर्मचारियों के अलावा देश के अन्य ऐसे कार्यकर्ताओं को भी अध्ययन और प्रयोग करने की सुविधा दी जायगी।

देश में अणु-शक्ति पैदा करने के लिए वृहत् कार्यक्रम बनाया गया है और इसके लिए अगस्त १९५६ में ट्राम्बे में पहली अणु भट्टी भी बिठाई गयी। परन्तु वहाँ अणु शक्ति पैदा करने में अभी समय लगेगा। तब तक अणुरिएक्टर से रेडियो आइसाटोप तैयार करके प्रयोग में लाए जा रहे है। इनसे वैज्ञानिकों के काम में बड़ी सुविधा हुई है। भारतीय कृषि अनुसंधानशाला कृषि की उन्नति के लिए खोज करती है और कोबाल्ट ६० गामा खेत बनाकर उसने मनुष्य की भलाई के लिए अणु शक्ति के उपयोग में एक कदम उठाया है।

(पृष्ठ ७ का शेष)

कर इन पर्वतीय जातियों में वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहिए। इसके लिये बौद्ध भिक्षुओं का उदाहरण लेना चाहिए। जिन्होंने नेपाल, तिब्बत तथा चीन में जाकर व्रत लिया था कि अब तक सम्पूर्ण देश को बौद्ध नहीं बना देंगे अपने देश को नहीं लौटेंगे। ये बौद्ध भिक्षु विद्वान् थे, इन्होंने वहाँ की भाषायें पढ़ीं तथा उन देशों की भाषा में भगवान् बुद्ध के विचारों को अनूदित कर बुद्ध धर्म का प्रचार किया। उसी प्रकार हमारे विद्वान साधु-संन्यासियों को इस ओर कदम बढ़ाना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भी इस ओर ध्यान देना चाहिये। उसे ऐसा करना चाहिए कि काठमण्डू में आर्यसमाज का निर्माण हो जाय। काठमण्डू नेपाल की राजधानी है। वहाँ आर्य समाज मन्दिर होना नितान्त आवश्यक है। हिन्दुओं के विभिन्न शाखाओं के मन्दिर वहाँ हैं, किन्तु आर्यसमाज का मन्दिर न होना, यह बहुत खलने वाली बात है। सार्वदेशिक सभा को चाहिए कि वह जो विद्यालय गौर में चलाती है उसे काठमण्डू में चलावे। गौर बिहार की सीमा से १ मील पर है, वहां की भाषा तो हिन्दी है ही। यह विद्यालय काठमण्डू में ही चलाना चाहिए। दर्जनो नेवारी युवक जो डी० ए० वी० कालेज सिवान (बिहार) से पढ़कर गये हैं, वे आर्य समाज की सेवा करने को तैयार हैं, किन्तु उन्हें भरण पोषण के लिए कुछ चाहिए। कुछ नवयुवकों ने तो इतना निश्चय कर लिया है कि हम अविवाहित रह कर आर्य समाज की सेवा करेंगे। काठमण्डू आर्यसमाज के मन्त्री श्री हरिहर जी हैं। ये इस समय भारतवर्ष में आये हैं। इनका उद्देश्य है, आर्यसमाज के प्रचार संबंधी अनुभव प्राप्त करना, तथा उससे नेपाल में प्रचार करना। इस समय ये बिहार सभा के अतिथि रूप में हैं।

अन्त में आर्य जगत् से अनुरोध है कि वह इस परिस्थिति की विषमता को समझकर नेपाल प्रचार के लिए कोई ठोस कदम बढ़ावे।

बाल-विनोद

निर्माण कार्य में बच्चे भी पीछे नहीं

[श्री नलिनी रंजन]

अल्प बचत योजना का महत्त्व समझाने की आवश्यकता नहीं। देश मे एवं उत्तरप्रदेश मे जनता का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए पंचवर्षीय योजनाएं चलाई जा रही हैं और इन योजनाओं के कार्यान्वय मे बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यकता होती है। धन एकत्र करने के विभिन्न साधनो मे अल्प बचत का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। सच तो यह है कि नये बचाने वाले के बल पर ही देश का निर्माण आगे बढ़ सकता है। यही कारण है कि उत्तरप्रदेश में प्रारम्भ से ही अल्प बचत की मदों में रुपया लगाने पर जोर दिया जाता रहा है। और लक्ष्य यह रक्खा गया है कि नये बचाने वालों की सख्या में १० लाख की वृद्धि कर दी जाय।

यह हर्ष की बात है कि इस सबध मे जो प्रगति हो रही है। यह सन्तोषप्रद ही नहीं, उत्साह वर्द्धक भी है। ज्ञातव्य है कि मार्च सन १९५४ तक प्रदेश में अल्प बचत योजना का सचालन भारत सरकार के हाथो मे था। इस अवधि म अथवा अधिक स्पष्ट शब्दो मे सन् १९५१ से लेकर मार्च सन् १९५४ तक इस योजना के अन्तर्गत कुल १५ करोड़ ३५ लाख रुपयों की धनराशि जमा हुई थी। १९५४ के उपरान्त प्रादेशिक सरकार भी याजना के कार्यान्वय मे हाथ बटाने लगी। इसका असर अच्छा पड़ा। यह इसी से पता चलता है कि मार्च १९५४ से लेकर मार्च १९५८ तक प्रदेश मे अल्प बचत की विभिन्न मदा मे ४१ कराड १६ लाख ६३ हजार १३३ रुपयो का धन राशि लगायी गयी।

बचत करन की दिशा म इधर एक और महत्त्वपूर्ण तथा उचित मोड़ दृष्टिगत हुआ है, जिसकी सम्पूर्ण देश मे प्रशसा हुई है। यह है प्रदेश के ग्रामीण बच्चो के लिए भी बचत की सुविधा का सुलभ हाना। सम्पूर्ण देश मे सहकारी बाल बचत याजना अपन ढग का अनूठी है। प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नहरू के ६९ वे जन्म दिवस के अवसर पर बुन्देलखण्ड के क्षेत्र म इस योजना का सूत्रपात्र कर उत्तरप्रदेश सरकार न एक बार फिर अन्य राज्यों का पथ प्रदर्शन किया है। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्य मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द ने जो सन्देश भेजा था उसका उद्धरण अनुपयुक्त न होगा मुख्य मन्त्री जी ने कहा था कि यह योजना न केवल इस प्रदेश की प्रत्युत सम्पूर्ण देश की द्वितीय पंचवर्षीय योजना की सफलता के लिए उठाया गया एक अनूठा कदम है।

कहना न होगा कि प्रदेश के करोड़ो नर-नारियो का भविष्य पंचवर्षीय योजनाओ की कार्यान्विति से सम्बद्ध है। किन्तु उनकी सफलता के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप मे अपनी सहायता और अपना सहयोग प्रदान करे। बच्चे राष्ट्र की निधि हैं और भविष्य के नागरिक भी। अत यह उपयुक्त ही है कि उनमे अभी से समूचे राष्ट्र के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति को जगाया जाय तथा प्रोत्साहन प्रदान किया जाय। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से भी उनके सहयोग का बड़ा महत्त्व है। केवल बुन्देलखण्ड के क्षेत्र मे ५०,००० बच्चो द्वारा सहकारी बाल बचत योजना मे ४३३००० रुपयों का लगाया जाना इस सम्बन्ध मे ठोस प्रमाण है। जो सूचनायें मिली हैं उनसे पता चलता है कि सबसे अधिक रकम बांदा जिले से प्राप्त हुई है। क्रमानुसार बांदा से १,८०,००० जालौन से १०६०००, झांसी से ९३००० और हमीरपुर से ३३००० रुपयों की धनराशि एकत्र की जा सकी है।

इस योजना के अन्तर्गत बच्चो ने २ रुपया से लेकर २५ रुपये तक जमा किया है। वैसे लक्ष्य यह रक्खा गया है कि प्रत्येक बालक एक वर्ष मे कम से कम २) अथवा दो मन खाद्यान्न बचावे। अत यह स्पष्ट है कि लक्ष्य की तुलना मे बच्चो ने कहीं अधिक उत्साह से भाग लिया है।

बचाई हुई धन राशि का लगभग आधा जिला सहकारी बैंक अथवा पोस्ट आफिस मे जमा कर दिया जायगा। इसका एक अच्छा असर यह भी पड़ेगा कि इस तरह के बैंकों की गिरती हुई माली हालत मे सुधार किया जा सकेगा। इसी प्रकार सम्बन्धित क्षेत्रो मे फैली सहकारी समितियों की आर्थिक दशा भी अच्छी बनाई जा सकेगी।

इस योजना का असर पोस्ट आफिस की अल्प बचत याजना पर भी अच्छा असर पड़ेगा। नियोजन एव राजस्व विभाग के कर्मचारी अभी से यह प्रयत्न कर रहे है कि बुन्देलखण्ड क क्षेत्र म अल्प बचत याजना सम्बन्धी निर्धारित लक्ष्य पूरे कर लिए जाये। आशा यह की जाती है कि प्रति वर्ष इस याजना क अन्तर्गत ७,००,००० रुपया आसानी से एकत्र किया जा सकेगा।

जैसा कि प्रदेश के सहकारिता मन्त्री न कहा है, सहकारी बाल बचत याजना बच्चों तथा उनके परिवार के अन्य सदस्यों को सुख समृद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होगा। किंतु बात इतनी ही नहीं है, इस योजना के द्वारा प्रकारान्तर से प्रदेश के बच्चो को राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में आगे बढ़ कर भाग लेने का भी सुअवसर प्राप्त होगा।

वनिता विवेक

कपड़े धोते समय धब्बे एवं दाग छुड़ाने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दीजिए या परीक्षा कर देखिए

१—तेल का दाग लग जाने पर पहिले कपड़े को पेट्रोल से धोइए, फिर साबुन लगाकर साफ कीजिए इसके पश्चात् अमोनिया के पानी मे भिगोकर उसके ऊपर मुलायम कागज रखने से दाग साफ हो जायगा।

२—चिकनाई का दाग छुड़ाने के लिए अल्कोहल चार भाग, अमोनिया एक भाग तथा ईथर आधे भाग को मिला लीजिए फिर दाग मे लगा पानी से साफ कर दीजिए।

३—यदि आपके वस्त्रो पर आयल पेंट के दाग लग गये हो तो लाइकर अमोनिया तथा तरपैन्टाइन बराबर लेकर मिला ले एव दाग के हिस्से को उसमे भिगो दें कुछ देर बाद साबुन से धोने पर दाग साफ हो जायगा।

४—आयल पेंट के सूखे हुए दाग पर जैतून का तेल अथवा मक्खन लगाने से दाग गीला हो जाता है इसके बाद क्लोरोफार्म लगाने से वह छूट भी जाता है।

५—फ्लेनेल' के कपड़े का दाग ग्लसरीन के लगाने से तत्काल दूर हो जाता है।

६—यदि कपड़ो पर लोहे का जंग लग गया हो तो आक्समैलिक एसिड लगाने से दाग छूट जाता है।

७—लोहे के जंग का दाग हाइपो क्लोराइड के पानी से धोने पर भी छूट जाता है।

८—नमक तथा नीबू के रस की सहायता से जंग के दाग दूर किये जा सकते है।

९—जिस कपड़े पर काजल का दाग लग गया हो प्रथम उस दाग पर मिट्टी का तेल लगाइये फिर कपड़े को साफ कर दीजिए कपड़ा आपको साफ मिलेगा।

१०—जिस कपड़े पर शहद का दाग लग गया हो पहिले उसे गर्म दूध मे थोड़ी देर तक डुबाकर रखने के बाद में नमक मल देने से दाग दूर हो जाता है।

११—खून का ताजा दाग ठण्डे पानी से तथा सूख जाने पर ठण्डे पानी मे वाशिंग सोडा मिलाकर धोने पर दाग छूट जाता है।

१२—हल्दी के धब्बो को पहिले गर्म पानी व साबुन से साफ कर लीजिए, फिर अमोनिया सल्फेड से धो डालिए दाग साफ हो जायेगे।

१३—रक्त के धब्बे अमोनिया के घोल या नमक के पानी से धोने पर साफ हो जाते हैं।

—कु० वीणा, मेरठ

रोग निवारण के कुछ सस्ते उपाय

गृहस्थ मे हो जाने पर अनेक रोगो का निवारण निम्न औषधियो से किया जा सकता है।

१—बिच्छू के काटने पर स्योधा नमक घोलकर, जिस ओर बिच्छू ने काटा हो उसके उल्टे भाग यदि दाहिनी ओर काटा हो तो बायी आँख में डालने से दर्द शीघ्र शान्त हो जाता है।

२—जिस स्थान पर बिच्छू ने काटा हो वहा पर जरा सा नस्तर लगा पोटेशियम और परमैंगनेट (लाल दवा) पीसकर मलने से शीघ्र दर्द दूर हो जाता है।

३—दाढ़ के दर्द मे लाल दवा गर्म पानी से कुल्ला करने पर शान्ति अनुभव होगी।

४—यदि मसूड़े मे कीड़ा न हो तो मदार का फूल अजवाइन का सत एव सोंठ बराबर मात्रा में लेकर पीस चने के बराबर गोली बनाकर खाने से दर्द शांत होता है।

५—दाढ़ मे तेजाब या तेल की फुरेरी लगाने से भी दर्द कम हो जाता है।

६—दाढ़ का भयकर दर्द अफीम और मकोइ का रस कान में डालने से दूर हो जाता है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्य-जगत

उत्सव समाचार—

—समस्ती पुरी आर्य समाज का उत्सव १५ १८ जनवरी ५९ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। अनेक मान्य आर्य विद्वान पधारे।

—शाहजहाँपुर की आर्यसमाज का उत्सव १२ १३, १४ फर्वरी ५९ को मनाना निश्चय हुआ है। श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल तथा श्रीमती शकुन्तला देवी सदर मेरठ की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निरीक्षण—

—गगीरी महिला आर्यसमाज का निरीक्षण माता जगधात्रिदेवी जी ने ३१ १२ को किया तथा भाषण दिया।

—बरौठा महिला आर्य समाज का निरीक्षण २९ १२ को माता जगधात्रि देवी जी ने किया तथा भाषण द्वारा प्रचार किया।

निर्वाचन समाचार—

—गगीरी महिला आर्य समाज प्रधाना श्री अनारकलि देवी, मन्त्राणी श्री सोमवती जी निर्वाचित हुई।

प्रचार समाचार—

—दिल्ली मे श्री महाशय वीर सिंह जी वेदश्रमी ने गतमास श्री मनोहर वेदालकार के परिवार मे यज्ञ सम्पन्न कराया। तथा सस्वर वेदपाठ का कार्यक्रम सम्पन्न किया। एवं आर्य समाज राजेन्द्रनगर मे वेद शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें वेदश्रमी जी द्वारा आर्य बन्धुओ को सस्वर वेद पाठ की क्रियात्मक शिक्षा दी गई।

—आर्य समाज केराकत जौनपुर के उपदेशक श्री बजनाथ जी 'भ्रमर' जिले मे बड़ी तत्परता से प्रचार कार्य कर रहे हैं।

—जगतपुर (बरेली) आर्यसमाज की ओर से, सिविल लाइन्स बरेली हरि निवास मे रहने वाले साधुवेशधारी ईसाई पादरी के कारनामों का भण्डाफोड़ किया। भोली भाली हिंदू जनता को कीर्तन का लालच देकर उसने इस प्रकार कीर्तन कराया—

रघुपति राघव राजा राम
पतित के पावन सीताराम
क्राइष्ट ईशा तेरा नाम
सबको सम्मति दे भगवान्।

जब नगर के आर्य बन्धुओ को इस पाखण्ड प्रचार का पता लगा तब श्री प० भूपनारायण जी, श्री प० देवदत्त जी, श्री प्रेमबहादुर जी तथा श्री मदन लाल जी आदि सज्जनो ने उस साधु के स्थान पर जाकर उस शास्त्रार्थ के लिए ललकारा परन्तु पादरी साहब से कोई उत्तर देते नहीं बना। और वे पुलिस का संरक्षण लेते हुए भी विस्तरा बांधकर भाग गए। क्यों कि जनता उनके धोके को समझ गई थी।

आर्य वीर दल समाचार—

—मिर्जापुर आर्य वीर दल के मण्डलपति श्री बेचनराम सिंह जी द्वारा डोमनपुर ग्राम मे दल की शाखा स्थापित की गई। श्री अमरनाथ शाखा नायक नियुक्त किए गये। श्री भगेलु रामसिंह ने काफी सहयोग दिया, तथा २५ सदस्य बने।

—बगहा (मिर्जापुर) आर्य वीर दल का रैली प्रदर्शन एक जनवरी को सम्पन्न हुआ। ५० सैनिको ने इस कार्य मे भाग लिया।

—आर्य वीर दल हरदोई—मडलपति श्री अवध विहारी, मन्त्री श्री आदित्य किशोर नगरनायक श्रीमाधो राम, बौद्धिक नायक श्री ईश्वरचन्द्र, कोषाध्यक्ष श्री रामभरोसे।

—बगाल व आसाम प्रान्तीय आर्य वीर दल के शीत कालीन शिक्षण शिविर का दीक्षान्त समारोह श्री अमर सिंह जी तथा प्रमाण पत्र वितरण प० रामशकर त्रिपाठी जी द्वारा ४ जनवरी ५९ को सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल समाचार—

—चित्तौड़ गढ़ गुरुकुल का रजत जयन्ति महोत्सव १७जनवरी से २०जनवरी तक धूम धाम के साथ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर विश्व शान्ति महायज्ञ वेद सम्मेलन, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन, राजस्थान गो सेवा सम्मेलन, राजस्थान प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन तथा अन्य विविध आकर्षक एवं सांस्कृतिक समारोह सम्पन्न होने जा रहे हैं।

अन्यान्य समाचार—

—कानपुर बुद्धपुरी महा विद्यालय मे ३ जनवरी को गुरुकुल कांगड़ी के व्यायाम विशेषज्ञ श्री दयानन्द जी ने अपने साथियो सहित शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन किये।

—मोंठ (झांसी) आर्य समाज ने श्री स्नातक नित्यानन्द जी गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया और सन्तप्त परिवार के प्रति शोक समवेदना प्रकट की।

—आगरा नगर की समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा आगरा द्वारा दिनांक२३ १२ ५८ को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। नगर मे एक विराट जुलूस मुख्य मुख्य बाजार में होकर निकाला गया जो आर्य समाज हींग की मण्डी मे एक बड़ी सभा मे परिवर्तित हो गया। श्री ठाकुर यशवन्त सिंह जी प्रचारक के भजन और कवियो की कविताएं हुई। अनेक विद्वानो ने श्री स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलियां दी। उपस्थिति लगभग एक हजार के थी।

—मोहनलाल आर्य, मन्त्री

—४ जनवरी को आर्य समाज आगरा नगर मे श्री पं० श्याम बिहारी जी अवस्थी का वेद विषय पर अत्यन्त प्रभावशाली भाषण हुआ।

—भगवत स्वरूप आर्य, स०मन्त्री

नगर आर्यसमाज की डायरी

—नगर आर्यसमाज भोंगरे में १४ दिसम्बर को श्री म० चक्कनलाल जी आर्य का प्रभावशाली भाषण हुआ।

२६ दिसम्बर को श्री हरिगोपाल सिंह जी वकील पथवारी के गृह पर पूर्णमासी का पाक्षिक मण्डल समारोह पूर्वक हुआ। हवन, भजन के पश्चात् श्री प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री व स्वा० करुणानन्द जी का प्रभावशाली भाषण हुआ।

२८ दिसम्बर को श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण के विषय पर प्रभावशाली भाषण हुआ।

२१ दिसम्बर ५८ को म० अब्दुल रहीम सक्सेना मोलवी फाजिल का कुरान के विषय मे भाषण हुआ।

सभा की सूचनाएं

आर्यमित्र-सूचना

सर्व आर्य जनता को सूचित किया जाता है, कि आर्यमित्र के सहायक सम्पादक पद से श्री भगवतशरण जी को मुक्त कर दिया गया है। अतः आर्यमित्र सम्बन्धी पत्र व्यवहार एवं लेखादि उनके नाम से न भेजे जांय।

सभा का वर्ष

सर्व आर्य समाजों को सूचित किया जाता है, कि सभा का वर्ष ३१ दिसम्बर १९५८ को समाप्त हो गया है। अतः आर्य समाजों को चाहिए कि वे अपना-अपना वर्ष सभा के साथ समाप्त करने की कृपा करें।

२—आर्य सभासदों की सूची अन्तरङ्ग सभा द्वारा बनाने के पश्चात् सभा के नियमानुसार २८ फरवरी १९५९ तक निर्वाचन हो जाना चाहिए। निर्वाचन के साथ-साथ उत्तर प्रदेशीय प्रति० सभा के लिए योग्यतम प्रतिनिधि महानुभावों को चुनना चाहिए।

३—आर्य समाजों के निर्वाचन के पश्चात् १५ मार्च तक उपप्रतिनिधि सभाओं का निर्वाचन हो जाना चाहिए।

४—वार्षिक प्रतिनिधि सभा फार्म प्रकाशित कराने की व्यवस्था की जा रही है, अतः सभा प्राप्तव्य धन दशांश चार आना फण्ड, सूदकोटि आदि का सभा के श्री कोषाध्यक्ष जी के नाम नारायण स्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

स्मारक बनाने के सम्बन्ध में अच्छा सुअवसर

अन्तरङ्ग सभा दि० २५।१२।५८ का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़) की बैठक मे, दान दाताओं के लिए एक अच्छा सुअवसर जो व्यक्ति, संस्था, अथवा गुरुधाम आदि होने वाले महोत्सवों के लिए २५०) रु० अथवा आर्यमित्र प्रकाशन लि० कं० के ४० शेयर्स सभा को दान देंगे वे अपने या निकटतम सम्बन्धी की यादगार मे नाम सभा भवन में अथवा गुरुधाम में जहाँ चाहेंगे अंकित करा सकेंगे। आशा है कि इस शुभावसर से लाभ उठाकर सभा की सहायता करेंगे, तथा यश और कीर्ति के भागी बनेंगे।

सम्पादक-नियुक्ति की सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, आर्यमित्र का सम्पादन २२ जून १९५८ से अवैतनिक रूप से गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक श्री पण्डित उमेश चन्द्र जी आयुर्वेदशिरोमणि, एम०ए० हल्द्वानी निवासी कर रहे हैं, इत. अन्तरङ्ग सभा दि० २४।१२।५८ के नि० सं० १६ के अनुसार उक्त श्री स्नातक जी महोदय की सेवाएं आर्यमित्र सम्पादक पद पर यह सभा नियुक्ति स्वीकार करती है। अतः सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी लेख, सूचना, कविता, समाचार आदि श्री सम्पादक जी के नाम से नारायण स्वामी भवन, लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

सभा की सूचना

विदित हो कि अन्तरङ्ग सभा दि० २५।१२।५८ के नि० सं० ३० के अनुसार भगवान दीन आर्य भास्कर प्रेस एवं आर्यमित्र के अधिष्ठाता श्रीयुत अनन्त बिहारी निगम जी बी० ए० एल०-एल० बी० एडवोकेट लखनऊ निवासी निर्वाचित हुए है। तत्सम्बन्धी पत्र व्यवहार एवं धन उपर्युक्त श्री अधिष्ठाता जी के नाम से सभा कार्यालय नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें।

उत्तर-प्रदेशीय आर्यवीर दल के संबंध में सभा की सूचना

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाज उप प्रतिनिधि सभाएं तथा आर्यवीर दल के समस्त नगर नायक एवं संचालकों, आर्यवीरों को सूचित किया जाता है कि श्री रामजी प्रसाद जी गुप्त मुगल सराय के स्थान पर अन्तरङ्ग सभा दिनांक २४।१२।५८ के निश्चय सं० १२ (अ) के निश्चयानुसार उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री ईश्वर दयालु जी आर्य सभा मुख्य उप मन्त्री बिजनौर निवासी निर्वाचित हुए हैं। अतः सर्व प्रकार का आर्य वीर दल सम्बन्धी पत्र व्यवहार श्री ईश्वर दयालु आर्य अधिष्ठाता के नाम से सभा कार्यालय नारायण स्वामी भवन लखनऊ के पते पर भेजने की कृपा करें। और दल सम्बन्धी धन भी सभा कार्यालय मे भेजें।

—फूलनसिंह
मंत्री आ० प्र० सभा उ० प्र०

(पृष्ठ २ का शेष)

गौरव को बढ़ाया है। यह नहीं कहा कि ऐसे कार्यों मे अन्य विद्वानों का कोई हाथ नहीं, परन्तु कहना यह है कि और भी विद्वान् सम्मानित किये जा सकते हैं। परन्तु किन्हीं दो विद्वानों का सम्मान करते समय एक लम्बी सूची अन्य विद्वानों की प्रस्तुत कर देना केवल एक विरोध प्रगट करने का बहाना है। अच्छा होता कि विरोध करने वाले महानुभाव आर्य प्रतिनिधि सभा की उस अतरंग में विरोध प्रगट करते या अपने क्षेत्र के प्रतिनिधियो या समर्थक सदस्यों से विरोध प्रकट कराते, जिसमे सर्व सम्मति से आर्यमित्र की हीरक जयन्ती और दो विद्वानों को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया गया था।

जहाँ तक एक लाख रुपये की अपील का प्रश्न है, वहाँ तक इस बात की पूरी सावधानी बरती जानी ही चाहिये कि धन का ठीक प्रकार से प्रयोग किया जाय। समय के अनुसार आवश्यक कार्यों पर ही व्यय हो। बची हुई धनराशि को आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों मे व्यय किया जाय। अभी कौन दावा कर सकता है, कि एक लाख रुपया एकत्रित हो जायगा और यदि हो जायगा तो उसमें गड़बड़ घुटाला मच जायगा।

मैं तो विज्ञप्ति को कार्यकर्ताओं के लिये एक चेतावनी समझता हूँ। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा प्रधान मन्त्री तथा जयन्ती के अन्य सभी संचालकों को यह ध्यान रखना है कि उनके द्वारा एक पैसे का भी दुरुपयोग न होने पाये। साथ ही आर्यमित्र के विशेषाङ्क एवं अभिनन्दन ग्रन्थ मे ऐसी सामग्री दी जाय जो आज के युग मे जन साधारण को प्रेरणा दे सके, और साथ ही मानवों मे धार्मिक भावना उत्पन्न कर सके। आशा है आर्य बन्धु उपर्युक्त दृष्टिकोण से हमारे कार्य की महत्ता को स्वीकार करेंगे और पूर्ण सहयोग देंगे।

सूचना उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा सम्बन्धी दशांश तथा सूदकोटि सन् ५८ के वर्ष का किसी उपदेशक या प्रचारक को न देकर सीधे सभा कार्यालय को मनीआर्डर द्वारा अथवा जिसको सभा अधिकार दे देवे, उसके द्वारा भेजने की कृपा करें। उपदेशकों तथा प्रचारकों को चाहिये कि वह सभा सम्बन्धी गत वर्षों का समस्त धन सन् ५८ को छोड़कर प्राप्त करने की कृपा करें।

—अधिष्ठाता अमरनरेश

आर्य जगत् के समाचार

—लखनऊ आर्य वीर दल की साप्ताहिक गोष्ठी श्री देवीप्रसाद जी मन्त्री प्रान्तीय आर्य वीर दल की अध्यक्षता मे प्रत्येक शनिवार को सायं ५॥ से ६॥ तक आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में होती है; आर्य नवयुवक कृपया पधारें। प्रत्येक रविवार को सायं डालीगंज महल्ले मे दल की ओर से पारिवारिक सत्सग भी नियमित रूप से होता है।

बम्बई नगर आर्य वीर दल की ओर से २५।१२।५८ से १।१।५९ तक एक साप्ताहिक शिक्षण शिविर लगाया गया, जिसमे ५० आर्य वीरो ने भाग लिया और उन पर लगभग २०००)रु० व्यय हुए। ये सभी वीर नगर तथा प्रान्त मे आर्य वीर दल की शाखाएं खोलेंगे।

—श्री विश्वनाथ आर्य वीर ने १७ १२ ५८ को आ०स०अलीपुर मेरठ का दौरा किया। समाज को उन्नत करने तथा आर्य वीर दल की शाखा स्थापित करने पर आपने विचार विमर्श किया।

—मण्डल आर्य वीर दल वाराणसी—श्री बुद्धदेव आर्य मण्डलपति, श्री जगतनारायण मौर्य मन्त्री, श्री प्रेमचन्द्र आर्य शिक्षानायक,श्री श्याम लाल वर्मा बौद्धिकाध्यक्ष, श्री शिव शरण जी कोषाध्यक्ष।

—आ०स० हांसीपुर (मीरजापुर) का २१ वां वार्षिकोत्सव दि० १७, १८ जनवरी ५९ को मनाया जावेगा। जिसमें श्री ओ३म्प्रकाश शास्त्री, श्री पं० विद्यानन्द जी, श्री नन्दलाल जी तथा श्री ठा० महानन्दसिंह आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

—आर्य समाज पुरानी मण्डी सहारनपुर का निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ .—

प्रधान—श्री कृष्णलाल जी आढ़ती
उप प्रधान—श्री मगलसेन जी
मन्त्री—श्री गुरुदत्तराय
उप मन्त्री श्री निरञ्जन प्रसाद जी
कोषाध्यक्ष—श्री मदनलाल जी आढ़ती

—आ०स० ऐशबाग लखनऊ का निर्वाचन निम्नप्रकार हुआ .—

श्री रमाशंकर जी एडवोकेट—प्रधान
श्री वीरभानु जी उपप्रधान
श्री तेजभानु जी मन्त्री
श्री विक्रमादित्य जी उप मन्त्री
श्री यशपाल जी कोषाध्यक्ष
श्री गिरधारीलाल जी पुस्तकाध्यक्ष
श्री ओ३म्प्रकाश जी लेखानिरीक्षक
श्री सोहनलाल जी, श्री कुन्दनलाल जी
श्री नरेन्द्रनाथ जी श्रीमती जानकीदेवी
अन्तरङ्ग सदस्य
श्री विक्रमादित्य जी बसन्त प्रतिनिधि
सभा तथा—उप सभा

[illegible]
पंजीकरण सं. ए. ६०
पौष २८ शक १८८०(१८ जनवरी ५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

नवीनतम आकर्षण

आर्यमित्र हीरक जयन्ती अंक

प्रकाशन तिथि—आगामी बोध रात्रि ८ मार्च १९५९

हिन्दी के प्राचीनतम सांस्कृतिक सामाजिक राष्ट्रीय एवं साहित्यिक साप्ताहिक पत्र आर्यमित्र की

साठ वर्षीय सेवाओं का उज्ज्वल इतिहास

हिन्दी पत्रकारिता की अमूल्य धरोहर होगा

वैदिक सिद्धांतों की व्याख्या, सामाजिक, सांस्कृतिक रूढ़ियों पर कुठाराघात, राष्ट्र-नवनिर्माण, विश्व-शान्ति नैतिक उत्थान, आदर्श पत्रकारिता, राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति, विश्व बन्धुत्व, मानव-संस्कृति, मानव और आदर्श शासन व्यवस्था, भौतिकवाद का अभिशाप, विज्ञान और मानवता का समन्वय, आदि उच्चकोटि के लेखों रचनाओं समीक्षाओं से परिपूर्ण विशेषाङ्क—

संग्रहणीय और स्मरणीय होगा

सैकड़ों पृष्ठों के इस सचित्र विशेषांक का मूल्य बहुत ही कम पर विशेषांक अमूल्य होगा

३१ जनवरी५९से पूर्व आगामी वर्ष के ग्राहक बनने वालों को विशेषाङ्क हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में बिना मूल्य भेंट किया जायगा

विज्ञापनदाता अभी से अपना स्थान सुरक्षित करालें अन्यथा पछताना पड़ेगा

देश-विदेश में विज्ञापन के लिए एकमात्र साधन "आर्यमित्र"

हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में आपकी विशेष सेवाओं के लिए प्रस्तुत है

आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

आर्यमित्र

(वार्षिक मूल्य ८) } एक प्रति का २० नए पैसे }

लखनऊ, रविवार, माघ ५, शक १८८०, माघ कृ० १, वि० २०१५
२५ जनवरी, १९५९ ई०

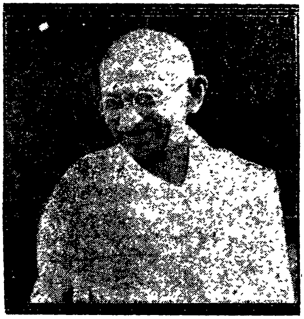
{ विदेश में १५शिलिंग

भारतीय गणतन्त्र अमर हो!

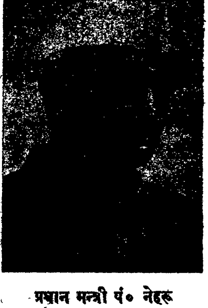


महर्षि दयानन्द सरस्वती

भारतीय स्वाधीनता के जनक

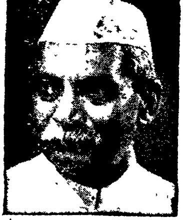


राष्ट्रपिता महात्मा गांधी



प्रधान मन्त्री पं० नेहरू

भारतीय गणतन्त्र के सबल संरक्षक



राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

{ अङ्क }

आर्यमित्र हीरक जयन्ती तथा अभिनन्दन

हम सफलता के लिये प्रयत्नशील हैं

हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में हम लोगों ने सभा को पूर्ण रूप से तन-मन-धन द्वारा सहयोग देने को तै कर लिया है।

हीरक जयन्ती में सभा ने हमारी समाज से ५००) लेने को कहा है। हम लोग धन देने में, प्रयत्नशील रहेंगे।

आर्य समाजों में साहित्य द्वारा जीवन दान देने वाले पुरुषों को अभिनन्दन देने में हम लोग पूर्ण सहमत हैं।

गुरु विरजानन्द जी के स्मारक में जो भी कदम सभा उठायेगी, उसमें हर तरह से हमारी समाज सहयोग देगी।

—आर्य समाज सदर
लखनऊ

परोपकारिणी सभा द्वारा अभिनन्दन का स्वागत

वार्षिक अधिवेशन सं०६२ दिनांक ११ नवम्बर सन् ५८ के प्रस्ताव सं०६ की प्रतिलिपि।

श्रीमान् डा० मङ्गलदेव जी शास्त्री ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने श्री पं० गंगाप्रसाद जी (रिटायर्ड चीफ जज, जो कि इस सभा के सबसे पुराने कर्मठ सदस्य हैं) के लिए अभिनन्दन का जो निश्चय किया है, उसके लिए यह सभा पंडित जी को हार्दिक बधाई देती है, और उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के विचार की प्रशंसा करती है।

—मानकरण
मंत्री परोपकारिणी सभा

आर्य समाज मेरठ को गर्व है

आर्यमित्र की हीरक जयन्ती के शुभावसर पर सभा की तरफ से इस समाज के पुराने सदस्य श्री बाबू गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जस्टिस के अभिनन्दन पर इस आर्य समाज की अन्तरंग सभा दिनांक ३० ११ ५८ ने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया है।

प्रस्ताव

"आर्य समाज मेरठ शहर की अन्तरंग सभा को यह जानकर प्रसन्नता हुई, कि इस समाज के पुराने सदस्य श्री बाबू गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज की विद्वत्ता एवं समाज के महत्वपूर्ण सेवाओं के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर सम्मानित कर रही है। इस समाज की दृष्टि में आर्य प्रतिनिधि सभा का यह कार्य अत्यन्त सराहनीय है, तथा यह आर्य समाज इस कार्य में पूर्ण सहयोग देगी। प्रतिनिधि सभा को यह समाज बधाई देती है।"

मन्त्री, आर्य समाज
मेरठ शहर

आर्यमित्र हीरक जयन्ती पर विद्वत्समाज का कर्त्तव्य

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की योजना प्रगति कर रही है, उस समारोह की सफलता के लिये प्रत्येक आर्य में उत्साह है और सभी प्रयत्न कर रहे हैं। मेरा निवेदन यह है कि इस विशाल समारोह के अवसर पर आर्य विद्वानों की एक परिषद् बुलाई जाय जिसमें ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों में उपलब्ध प्रेस की भूलों अथवा प्रक्षेपों आदि का अनुसन्धान कर निर्णय किया जाय और एक व्यापक सूची बनाकर संशोधन एवं परिष्कार की घोषणा की जाय। आशा है ऋषि साहित्य की महत्ता को दृष्टि में रखते हुए मेरे इस सुझाव पर विचार किया जायगा।

—वैद्य राजबहादुर आर्य सरस
रामपुर

मित्र परिवार का सम्मान

श्रीमान् सम्पादक जी,

हीरक जयन्ती के अवसर पर आर्यमित्र परिवार की सेवाओं को पुरस्कृत करना आवश्यक है। इस अवसर पर उपाधि अथवा प्रमाणपत्र देने चाहिए।

(१) सभी सम्पादकों को, स्वर्गवासी सम्पादकों के (व) उत्तराधिकारियों को भी।

(२) पुराने लेखकों को, वर्त्तमान लेखकों को।

(३) आर्यमित्र की सहायता अथवा सेवा जिन्होंने आगरा अथवा लखनऊ में की हो।

(४) सबसे पुराने कर्मचारी को जो रिटायर भी हो चुका हो।

(५) यदि कोई अवैतनिक अथवा वैतनिक कर्मचारी जो प्रेस में हो।

(६) आर्थिक सहायता देने वालों को।

(७) आर्यमित्र का पिछले साठ वर्ष का इतिहास उसके व्यवस्थापक आदि।

—राममोहन बी० काम०
चन्दौसी

मित्र से प्रेरणा

श्री सम्पादक जी आर्यमित्र,

मेरा सम्बन्ध 'आर्यमित्र' से गत २५ वर्ष से चला आ रहा है, अब उसकी हीरक जयन्ती मनाई जा रही है, यह जानकर हृदय गद्गद् हो जाता है, और उसकी सफलता के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता रहता हूं। मेरा प्रेम इससे अगाढ़ रहा है और उसके लेखों से प्रेरित व प्रभावित हुआ हूँ।

आर्य समाज की समस्याएं असीमित हैं—मित्र सभी विषयों पर (धार्मिक, राष्ट्रिय, शिक्षा, सामाजिक नैतिकोत्थान, शुद्धि एवं सांस्कृतिक) अपनी अमिट छाप छोड़ता है।

बाबूलाल, एस. पी. बी. ए., टी. टी. सी. ई.
प्रधानाध्यापक महू [म० प्र०]

ऋषि की जयकार गुंजाते रहो

[रचयिता—श्री प्रकाशचन्द्र कविरत्न, अजमेर]

प्रिय बन्धु जो मानव मण्डल में, धन धर्म सुकर्म कमाते रहो,
कर्त्तव्य परायण आर्य बनो, पुनि और को आर्य बनाते रहो।
अघ पातक पुञ्ज जलाते रहो, भय विघ्न विपत्ति मिटाते रहो,
शुचि ओ३म् ध्वजा फहराते रहो, प्रिय वैदिक नाद बजाते रहो॥

× × ×

तज दम्भ दुराग्रह स्वार्थ सदा, परमार्थ में चित्त लगाते रहो,
असहाय दुखी जन आदिक पै, नित स्नेह सुधा बरसाते रहो।
सुख में न कभी इतराते रहो, दुख में न कभी घबराते रहो,
ममता न तजो प्रभु नाम भजो, हर हालत में मुस्काते रहो॥

× × ×

निज सौम्य स्वभाव सुशीलता से, सबके उर पुण्य खिलाते रहो,
खटको बन शूल न व्यर्थ कभी नयनों में सभी के समाते रहो।
प्रिय पाठ "प्रकाश" सभी को सदा, शुचि मानवता का पढ़ाते रहो,
तुम देश रहो कि विदेश रहो, ऋषि की जयकार गुंजाते रहो॥

× × ×

विशेषांक सम्बन्धी कुछ सुझाव

१—इस विशेषांक में "आर्यसमाज का विस्तार" व्यापक पैमाने पर

२—इस विशेषांक में आर्यसमाज का "भविष्य का सुव्यवस्थित कार्यक्रम" व्यापक पैमाने पर।

३—आर्य समाज की "विशेष घटनायें" सन् १७९७ स्वामी विरजानन्द जी के जन्म से लगाकर १९५९ तक जयन्ती समारोह तक।
(१६२ वर्ष की विशेष २ घटनायें)

४—आर्यसमाज के "शहीदों की नामावली" ग्राम, जिला व प्रान्त सहित प्रकाशित किया जावे।

उपरोक्त सामग्री अगर विशेषांक में प्रकाशित हो जावे तो ग्रन्थ की महत्ता विशेष बढ़ेगी।

लक्ष्मी नारायण शर्मा
आर्यसेवक पत्रकार सावेर

विधि का शासन

'विधि का शासन' के पीछे जो सच्ची भावना है, वह जाति, धर्म, मन्तव्य, और देशों की सब भावनाओं को लाँघ जाती है। इसमें व्यक्तित्व राज्य दोनों के लिए एक ही प्रकार की आचार संहिता है। और यह न केवल एक दूसरे व्यक्ति के प्रतिकूल अपितु राज्य के विरुद्ध भी व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करती है। 'विधि के शासन' का अर्थ दुनिया के एक हिस्से के लिए कुछ और तथा दूसरे हिस्से के लिए कुछ और नहीं हो सकता है। यही सार्वभौम विधि के शासन की अपनी विशेषता है।

अन्तर्विधि परिषद्
नई दिल्ली
५ जनवरी ५९

श्री शीतलप्रसाद
महाप्रधानमन्त्री
भारत

वेदोपदेश

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ॥

(यस्यां) जिस पर (समुद्रः) समुद्र, (सिन्धुः) नदियां (उत) और (आपः) जल [हैं], (यस्यां) जिस पर (अन्न) अन्न [और] (कृष्टयः) खेतिहर लोग (संबभूवुः) हुए थे। (यस्यां) जिस पर (इदं) यह (प्राणत्) सांस लेता हुआ [और] (एजत्) स्पन्दमान (जिन्वति) जीता है। (सा भूमिः नः) वह भूमि हमें (पूर्वपेये) प्रथम [श्रेणी के] पान [पीने योग्य पदार्थों] में (दधातु) धरे।

जयन्ती धन-संग्रह सम्बन्धी आवश्यक सूचना

जो सज्जन या आर्यसमाजें जयन्ती निधि के लिये धन संग्रह कार्य में संलग्न हैं उनके प्रयत्नों की सराहना करते हुए निवेदन है कि वे प्रति सप्ताह अपने कार्य की प्रगति कितना धन संग्रह हो चुका और क्या आशा है कार्यालय को सूचित करते रहें। यदि धन-संग्रह के लिये सभा के कार्यकर्ताओं की आवश्यकता हो तो उस सम्बन्ध में भी शीघ्र लिखें।

जयन्ती के नोट भेजे जा चुके हैं अधिक आवश्यकता के लिये सूचित करते रहें।

सहयोगाभिलाषी—
—उमेशचन्द्र स्नातक
मंत्री (संयोजक) आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति

आर्यमित्र

लखनऊ—२५ जनवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

नैपाल में आर्यसमाज का कर्त्तव्य

भारतीय सीमान्त के साथी देश नैपाल का राजनैतिक स्वरूप कुछ भी हो परन्तु वहाँ की धार्मिक विचार धारा भारतीय है और इस अर्थ में नैपाल और भारत अभिन्न हैं।

मध्यकालीन सामन्तशाही और राणाशाही के युग मे नैपाल की गरीब जनता को चाहे किसी प्रकार दबाया गया हो और यह मानकर कि धार्मिक भावनाएं भी आगे जाकर नैपाल में क्रान्ति का कारण बन सकती हैं, वहाँ शहीद शुक्रराज शास्त्री को फांसी दी गयी हो पर आज वहाँ की जनता में यह भावना घर कर चुकी है कि आज उनके ऊपर एक विदेशी विचार धारा का आक्रमण हो रहा है और आक्रमण को रोकने में आर्य समाज की सबल शक्ति ही उनकी सहायता कर सकती है। नैपाल में विदेशी ईसाई मिशनरियों की कारगुजारियाँ धार्मिक भावनाओं तक सीमित रहता तो भी उन्हें विचार स्वातन्त्र्य के नाम पर सहा जा सकता था, परन्तु अब उनकी प्रगतियाँ राजनैतिक उद्देश्यों से सम्बद्ध हों तब उन्हें खुली छूट देना और स्वयं उदासीन बने रहना उदारता नहीं कायरता ही मानी जायगी और इसे जानते हुए भी यदि नैपाल में आर्य समाज अपनी प्रचार शक्ति से इस प्रपंच का भण्डाफोड़ करने का प्रयत्न नहीं करता तो फिर आर्य समाज, समाज मन्दिरों को चार दिवारियों में ही समाप्त समझना चाहिये। अतः हम आर्य नेताओं और आर्य जनता से समय रहते चेतने और अपना कर्त्तव्य पालन करने की मांग करते हैं। आर्यमित्र के गत कई अंकों में हम नैपाल की स्थिति का चित्रण करते आ रहे हैं और वहाँ की जनता इससे क्या आशा करती है इसका भी उल्लेख उन लेखों में हुआ है। अभी १८ जनवरी के मित्र में बिहार के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामानन्द शास्त्री ने भी अपनी नैपाल यात्रा के संस्मरण लिखकर स्थिति का दिग्दर्शन कराया है। हम शास्त्री जी के विचारों को आर्य समाज के लिए सन्देश समझते हैं। आशा है इस दिशा मे सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा, दयानन्द साल्वेशन मिशन तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं सामयिक सतर्कता का परिचय देते हुए अपने प्रचारकों को नैपाल भेज नैपाली जनता की सहायता करेंगी और सांस्कृतिक एकता की रक्षा हो सकेगी।

गणतन्त्र अभिनन्दन

२६ जनवरी भारतीय स्वाधीनता इतिहास का स्मरणीय दिवस है। इस दिन हम भारत को स्वाधीन कराने की प्रतिज्ञा लेते रहे, भारत स्वाधीन हो चुका और आज हम एक गणतन्त्र के रूप में विश्व मे सम्मानित हैं। प्रजातन्त्र गणतन्त्र की आत्मा है विश्व में आज प्रजातन्त्र सकट में है उसकी रक्षा का दायित्व भी भारतीय गणतन्त्र पर है। प्रभु हमे अपना गणतन्त्र उन्नत बनाने और विश्व का नेतृत्व करने की शक्ति दें यही आज हमारी कामना है। भारतीय गणतन्त्र अमर हो मित्र परिवार इस अवसर पर हर्ष प्रकट करता है।

आर्य समाजों का बजट

यद्यपि आर्य समाज की शाखाएं बहुत बढ़ गयी है तदपि व्यवस्था संघटन और कुशलता में आज की पीढ़ी पूर्वजों से पर्याप्त शिथिल हो चुकी है। आज हम एक सांकेतिक उदाहरण के रूप में आर्यसमाजो के धनोपयोग के प्रश्न को प्रस्तुत करना चाहते हैं।

जिन समाजों में केवल चन्दे और थोड़े दान की ही आय हैं उन्हें तो निश्चित कार्यों मे ही धन व्यय करना पड़ता है परन्तु जिन समाजों के कुशल और उद्योगी बन्धुओं ने श्रेष्ठ सम्पतियाँ बना दी हैं उनके लिए हमारे प्रश्न का महत्त्व है। अनेक स्थानों पर शिक्षा संस्थाएं सम्बद्ध हैं और सम्पत्तियों की आय उनमें ही चली जाती है इसकी भी उपादेयता है परन्तु अन्य बातों के औचित्य की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

हमारा आशय यह है कि हमारी आय का उचित विभाजन होना चाहिए। आर्य समाज एक विश्वव्यापी संघटन है और जिसका क्षेत्र जितना बड़ा होता है उसका दायित्व भी महान् होता है इस दृष्टि से उन आर्य समाजों के बन्धुओं को अपना दृष्टिकोण सदैव व्यापक बनाये रखना चाहिये। हम उदाहरण के रूप में मान लेते हैं कि क आर्यसमाज की आय २५००) रुपया है वहीं के आर्य समाज के भवन, विद्यालय, उत्सव आदि के लिये इस धन को व्यय कर दिया जाना है और यह समझ लिया जायगा कि आर्य समाज का प्रचार पूर्ण हो गया। क्या ऐसी समाजों के अधिकारी अपने स्थानीय दृष्टिकोण से ऊपर उठकर अपने बगल के ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार के लिये कुछ धन देने के लिये कभी सोचते है? क्या अपने जिले, प्रान्त और देश व विदेश प्रचार के लिए तथा जिले, प्रान्त और देश की आर्य शिक्षा-संस्थाओं के लिये उनके धन का उपयोग हो पाता है? हमारी जानकारी मे बहुत कम आर्य समाजें इस व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान मे लाती हैं। यही कारण है कि आर्य समाज की प्रगतियाँ स्थानीय महत्त्व से बहुत कम ऊपर उठ पाती हैं।

हमारा सुझाव यह है कि कुछ अनुभवी आर्य विद्वान् और नेता बजट की रूपरेखा पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें और आर्यसमाज को आय का विभाजन निश्चित कर दिया जाय स्थानीय दृष्टि से परिवर्तन का अधिकार अवश्य स्वीकार किया जाय परंतु सम्पूर्ण व्यय का आधार निर्धारित फार्मूला हो और उसका पालन करना प्रत्येक इकाई का नैतिक और वैधानिक कर्त्तव्य हो।

अधिक विस्तार से जब इस विषय पर विचार किया जायगा तब बहुत से सुझाव सामने आ सकेंगे आशा है आर्य जन इस प्रश्न पर विचार आरम्भ करेंगे। हम सक्षेप में संकेत रूप से इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि हमारी आय के विभाजन की मदें हर हालत में निश्चित होनी चाहिये जैसे—

- स्थानीय प्रबन्ध—
- सत्सङ्ग व्यवस्था—
- साहित्य प्रसार—
- शिक्षा प्रसार—
- वैदिक धर्म प्रचार—
- जिले में—
- प्रान्त में—
- देश में, विदेश में—

यदि केवल बिल्डिगों के निर्माण में ही आर्य समाज का धन लगता चला गया तो बिल्डिगें तो आलीशान बनती चली जायगी पर जिस उद्देश्य के लिये बिल्डिंग बनेगी उसकी सफलता सदिग्ध होती चली जायगी। हम भौतिकता की उपासना का विरोध करते हैं पर एक समाज के रूप में हम भौतिक भवनों को ही अधिक महत्व दें यह कहाँ तक संगत होगा; मानव निर्माण का प्रश्न मुख्य है और उसके लिये व्यापक दृष्टिकोण और प्रबल प्रचार की आवश्यकता है। आशा है उपर्युक्त संकेत पर गम्भीरता-पूर्वक विचार किया जायगा।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

लेखकों से निवेदन

आर्यमित्र के लेखकों के हार्दिक सहयोग की प्रशंसा करते हुए निवेदन करना चाहते हैं कि अंक का प्रकाशन नियत समय पर सुव्यवस्थित ढंग से हो इसलिये अंक सामग्री का चयन काफी समय पहले करना पड़ता है परन्तु पर्वों अथवा सम्मेलनों आदि के विषय में लेख पर्वादि की तिथि से २, ३ दिन पूर्व ही पहुँचते हैं तब उनका दिया जाना सम्भव नहीं होता, बाद के अंक में देना सामयिक नहीं रहता अतः प्रत्येक दशा में १५ दिन पूर्व रचना प्राप्त होने पर ही उसका सामयिक उपयोग हो सकेगा। आशा है लेखक और कवि गण इस बात का ध्यान रखने की कृपा करेंगे।

सम्पादक
आर्यमित्र

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के लिये छात्राओं में उत्साह

२५०) आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ की ओर से भेंट

आर्यमित्र जयन्ती योजना के प्रति छात्राओं में भी उत्साह बढ़ रहा है और वे अपनी सभा के इस आदर्श योजना को सफल बनाना चाहती है इस उद्देश्य से आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठ की ओर से २५०) रु० जयन्ती निधि में श्री रघुनन्दन स्वरूप जी द्वारा प्राप्त हुए हैं। छात्राओं और कार्यकर्ताओं को इस उत्साह के लिये हार्दिक धन्यवाद। आशा है अन्य आर्य शिक्षा संस्थाएं भी पीछे न रहेंगी।

—उमेशचन्द्र स्नातक
संयोजक आर्यमित्र हीरक जयन्ती

(पिछले पृष्ठ का शेष)

जयन्ती के लिये आप क्या कर रहे हैं?

आर्य जन अपने कर्त्तव्य को भली-भांति जानते हैं फिर भी हम उनसे दो बातें करना उचित समझते हैं। जयन्ती योजना का मुख्य आधार आपकी भावनाएं हैं और इस दृष्टि से हम यह अनुभव करते हैं कि वे आपकी भावनाओं को साकार रूप देने के लिये बनाई गयी है।

आर्यमित्र का गौरव, विद्वानों का स्वागत और गुरुधाम का शिलान्यास इन तीनों कार्यों से आर्य समाज के कार्य को आपकी भावनाओं के अनुरूप ही प्रगति प्राप्त होगी। परन्तु क्या कल्पना हाथ पर हाथ धरे बैठे पूर्ण हो सकती है।

यही प्रश्न है जिसका उत्तर आज हमें आपसे मांगना है। एक महान् आयोजन के लिये आप अपना जितना उत्तरदायित्व समझते हैं क्या उसे आप पूरा कर चुके या कर रहे हैं क्या आपने जयन्ती का सन्देश पहुँचाने के लिये अपने समय का उपयोग किया है क्या आपने अपनी एक दिन की आय जयन्ती कोष मे समहीत करा दी है? क्या आप अपने साथियों से इस कार्य के लिये धन-संग्रह के लिये निकल पड़े हैं? क्या आपने जयन्ती पर आर्य समाज को नया मोड़ देने और कार्य कर्ताओं को प्रगतिशील बनाने के लिये विचारना आरम्भ कर दिया है आदि बातें हैं जिन पर आप गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे तो प्रश्न का उत्तर आप स्वयं पालेंगे और यदि अभी तक सजग नहीं हैं तो आइये अभी ही अपने कर्त्तव्य का निर्णय कीजिये और कदम से कदम मिलाकर साथ चलिये और जयन्ती योजना को सफल बनाने में जुट जाइये यह योजना आपके गौरव को चुनौती है और उसकी रक्षा आपको हर कीमत पर करनी है।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती का श्रेष्ठ उपहार

तपोभूमि (मथुरा) का

"दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह विशेषाङ्क"

"तपोभूमि" का नवाँ वृहद् विशेषाँक दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह विशेषाङ्क के रूप में १००० पृष्ठों का ऋषि बोधोत्सव शिवरात्रि पर प्रकाशित हो रहा है जिसमें ६० ट्रैक्ट होंगे। मूल्य ४) होगा। तपोभूमि के ग्राहकों को केवल २॥) अतिरिक्त अर्थात् रजिस्ट्री व्यय सहित ४॥) अगाऊ भेजने पर मिलेगा। ग्लेज कागज पर ६) में तथा सजिल्द का मूल्य ७) होगा। ३१ जनवरी तक धन भेजने वालों को सुविधा प्राप्त होगी।

—व्यवस्थापक 'तपोभूमि' २० कृष्णगञ्ज, मथुरा

हमारा प्रचार तन्त्र

आर्यसमाज का उद्भव संसार का उपकार करने की उच्चतम भावना के साथ हुआ था और हमने अपना लक्ष्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" घोषित किया।

अपने इस महान् लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए हम प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण बनाने का प्रयत्न करते हैं और हमारा विश्वास है कि यदि एक एक इकाई ठीक हो तो समष्टि अपने आप आदर्श बन सकेगी। हमने अपनों का निर्माण करने लिए आर्यसमाजों में पुरोहितों की नियुक्तियों की और; अन्यों तक अपना सन्देश पहुँचा उन्हें प्रभावित करने के लिए प्रचार तन्त्र की स्थापना की जिसमें उपदेशक-प्रचारक आते हैं।

आर्यसमाज के आरम्भिक युग और आज की प्रचार आवश्यकताओं में महान् अन्तर है उस समय थोड़े लोगों ने जो और जिस प्रकार किया वह आज संख्या मे अधिक होने पर भी नहीं हो पा रहा अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रचार तन्त्र का सुव्यवस्थित निर्माण किया जाय। हमारा प्रचार तन्त्र विशृङ्खलित है और आज तो हमसे बहुत से दूसरों के गीत गाने को ही आर्यसमाज का प्रचार समझने लगे हैं इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिये। आज की राजनैतिक शक्तियाँ हमारे प्रवक्ताओं का अपने लिए उपयोग करने लगी हैं और इस विविधता के कारण आर्यसमाज के गौरव को क्षति पहुँच रही है। हमें अपनी वेदी की पवित्रता के साथ-साथ अपनी वाणी की पवित्रता को भी कायम रखना है। हमारे प्रचारक और उपदेशक विद्वान् यदि दूसरों के घर जाकर उनकी और अपने मच से अपनी (पूर्व से विरुद्ध) बातें करें तो कौन हमें आदर्श मानेगा। साथ ही यह भी निर्विवाद है कि शक्ति को संघटित और नियन्त्रित रखकर प्रयुक्त करना ही बुद्धिमानी है। हम चाहेंगे कि आर्यसमाज की वर्तमान प्रचार-शैली और व्यवस्था की मीमाँसा की जाय और उसे युगानुरूप और सुदृढ़ बना कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य का सन्धान जारी रक्खा जाय। आशा है आर्य जन इस सम्बन्ध में विचार करेंगे।

नेक चलनी के मुकदमे बन्द अदालतों में

भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने दिल्ली में नेक चलनी के मुकदमों की सुनवाई बन्द कमरों में करने का निर्णय जारी किया है। यह एक अच्छा और सामयिक कदम है। आजकल सारे आम रास्तों पर युवतियों से छेड़छाड़ की जो घटनाएं घटित होती रहती हैं उनके प्रति सरकार ने ध्यान दिया है और इस सम्बन्ध में व्यावहारिक कठिनाई को अनुभव किया है। साधारणतः जिन लड़कियों के साथ गुण्डे तत्त्व छेड़खानी का प्रयत्न करते पाये जाते हैं वे ही अपनी इज्जत की रक्षा के लिए सार्वजनिक रूप से चलनेवाले मुकदमों में गवाही या बयान देने नहीं आतीं आयें भी कैसे समाज बिना जाँच किये ही तिल का ताड़ बना देता है उस अपवाद से बचने के लिये वे न्यायालय तक आना पसन्द नहीं करते और परिणाम यह होता है कि गुण्डे तत्त्व निर्दोष छूट जाते हैं। अब इस सरकारी निर्णय से आशा है इस प्रकार के गुण्डे तत्त्व हतोत्साह होंगे और नारी साहसपूर्वक न्याय प्राप्त कर सकेगी।

कृतज्ञता प्रकाशन

प्रभु की कृपा से अब मैं स्वस्थ हूं और सामाजिक कार्यों में भाग लेने योग्य हो गया हूं। बीमारी की अवस्था में जिन आर्य बन्धुओं ने मुझे पत्र भेजकर और कईयों ने स्वयं पधार कर भी मुझे जो साहस और धैर्य प्रदान किया उस सबके लिये मैं उन सभी आर्य बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद करता हुआ उनकी शुभ सद्भावनाओं के लिये कृतज्ञता प्रकट करता हूं। उनका स्नेह मुझे नवस्फूर्ति प्रदान करता रहेगा।

कर्णसिंह
मथुरा १-१ ५९ उपमन्त्री आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश

सिद्धान्त-विमर्श

क्या इस जन्म के कर्मों के फल केवल अगले जन्म में या इस जन्म में भी

[ले०—श्री जियालाल वर्मा]

१—इस संसार में हम जो अनेक योनियां विद्यमान देखते हैं, उनसे दो बातें निर्विवाद सिद्ध हो जाती हैं। एक उनकी आयु का भेद और दूसरा उनकी जाति का। घोड़ा अधिक से अधिक यदि २० वर्ष जीवित रह सकता है, तो कुत्ता और गधा केवल १२ वर्ष। मक्खी केवल ३ सप्ताह, मनुष्य १०० वर्ष, मगर और कछुवा मछली में व्हेल मछली ये सब ४०० से ७०० वर्ष तक जीवित रहते माने गये हैं। वृक्ष तो १००० वर्ष से अधिक आयु के हैं।

२—उपरोक्त भेद से यह निश्चित हो जाता है कि कुछ कर्म ऐसे हैं जो केवल आयु के उपरोक्त पैमाने को निश्चित करते हैं। अन्य ऐसे हैं जो जाति को निश्चय करते हैं, यथा हाथी, घोड़ा, गधा, बकरा, मेंढ़ा, मनुष्य, वट, पीपल इत्यादि।

३—उपरोक्त निर्णय से यह भी निश्चित हो जाता है कि कुछ कर्म ऐसे हैं, जो निश्चित रूप से किसी निश्चित योनि में कर्मों के भोगे जा सकते हैं। अन्यथा अनेक योनियों का प्रकार व्यर्थ हो जाता है। इस योनि में कर्मों के भोग की भी अवधि निश्चित है। जिसके समाप्त होने पर, तत्क्षण उन सब साधनों में से जिन्हें हमने अपनी जीवन यात्रा की गाड़ी चलाने के लिए बनाये थे यथा—रेल, पानी के जहाज, हवाई जहाज, मोटर कार इत्यादि कोई एक में उलट कर हमें हमारे देह से वियुक्त करने का साधन बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त हमारे शरीर में ही अनेक रोगों को उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कीटाणु विद्यमान रहते हैं, जो इस अवसर की प्रतीक्षा में ही रहते कि कब संयोग मिले कि हम हमारा काम कर जायं। ये संयोग भोग के समाप्त होने पर तत्काल उपस्थित हो जाते हैं, क्योंकि यह व्यवस्था ईश्वराधीन है।

४—योग दर्शन का सूत्र—२।१३—सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः। से प्रकट होता है कि यदि जीव के अन्तःकरण में 'मूल' विद्यमान है इस के फल आयु, जाति और भोग भी निश्चित हैं। यहां 'मूल' का क्या अर्थ है इसका भेद इस सूत्र से पूर्व के सूत्र में खोल दिया गया है। वे हैं ५ क्लेश—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश। किन्तु अविद्या के चार अङ्ग हैं। निदान ये सब मिल कर मूल में ८ कारण हैं जो आयु, जाति हैं जो आयु जाति और भोग की रचना कराते हैं, और जीव को अनेक योनियों में खींच ले जाते हैं।

५—उपरोक्त लेख से यह भी निश्चित हो गया कि—संस्कारात् प्रबला जातिः। अर्थात् वर्त्तमान शरीर योनि या जाति में किसी कोशिश, प्रयत्न या संस्कार द्वारा परिवर्त्तन नहीं कर सकते हैं अर्थात् घोड़े को गधा या गधे को बकरा नहीं बना सकते हैं। यह कार्य ईश्वर की व्यवस्था में है कि वह जिस जीव के जैसे कर्म हैं, उन की समाप्ति पर एक शरीर से निकाल कर अन्य योनि में प्रविष्ट करे।

६—जीव के कर्म तीन प्रकार के हैं—क्रियमाण, सचित और प्रारब्ध। ये कर्म केवल उभय योनि अर्थात् मनुष्य योनि में ही बनते हैं। दूसरी है भोग योनि। यह केवल प्रारब्ध कर्मों के फल भोग का स्थान है। इसमें क्रियमाण कर्म नहीं बनते, अतः इस योनि में पिछले जन्म के सचित कर्मों की मात्रा में वृद्धि भी नहीं होती है। इस सम्बन्ध में श्री स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में यह व्यवस्था देते हैं कि उभय योनि में जब जीव के पाप कर्म पुण्य कर्मों से अधिक हो जाते हैं और उनके भोग का स्थान उभय योनि में होता नहीं। तब ईश्वर उनके पाप के अधिक कर्मों को भुगतवाने के लिए उक्त जीव को भोग योनि अर्थात् पशु, पक्षी, कीट, पतंग, वृक्ष इत्यादि में भेज देता है। वहाँ जब पाप पुण्य की मात्रा बराबर हो जाती है, तब पुनः मनुष्य योनि अर्थात् उभय योनि में पुण्य के क्रियमाण कर्म करने, पहुँचा देता है, जिससे अगला जन्म वर्त्तमान जन्म से भी अच्छा मिले। यदि जीव इस विचार के विपरीत काम करता है, तो वह फिर नीचे योनि को प्राप्त होता है।

७—उपरोक्त लेख का यह तात्पर्य निकला कि नया शरीर वह है, जिसके सचित कर्म प्रारब्ध रूप होकर भोगोन्मुख हो गये हैं। परिणाम इसका यह होता है कि इसमें ईश्वर की न्याय व्यवस्था की झलक दीख जाती है। एक शरीर लगड़ा है तो दूसरा लूला, तीसरा सुन्दर सुदृढ़। इस प्रकार के भेद वाले शरीरों का जन्म ईश्वर देता है। इस सम्बन्ध में श्री स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में यों लिखते हैं—'इसलिए पाप पुण्य के अनुसार वर्त्तमान जन्म और वर्त्तमान तथा पूर्व जन्म के कर्मानुसार भविष्यत् जन्म होते हैं।' श्री स्वामी जी के किसी भी लेख से यह प्रकट नहीं होता है कि वर्त्तमान् जन्म के क्रियमाण कर्मों का फल वर्त्तमान जन्म में ही मिल जाता है। यह असम्भव दोष ग्रस्त भी है।

८—अन्तःकरण चार वृत्तियों का घर है। वे हैं मन, बुद्धि, चित्त और अहकार। मनः सकल्प, विकल्पात्मक अर्थात् मनन वृत्ति सकल्प विकल्पात्मक है और ये सकल्प विकल्प ही क्रियमाण कर्म हैं, जो चित्त रूपी पुस्तक में छपते चले जाते हैं। दूसरी है बुद्धि—यह भोग के अनुकूल काम करती है 'बुद्धि भोगानुकूलानि' यह बुद्धि सदैव प्रारब्ध कर्मों के भुगतान में जीव के साथ लगी रहती है। अहकार वृत्ति इन सबको अपनाये रहती है। चित्त एक प्रकार का सचय कोष है।

९—उपरोक्त स्पष्टिकरण से यह निश्चित हो जाता है कि वर्त्तमान शरीर पिछले और पूर्व जन्म के सचित कर्मों के प्रारब्ध रूप हो जाने पर सुख दुःख भोगार्थ मिला है। यदि यह योनि उभय योनि है, तो इसमें जो क्रियमाण कर्म होंगे वे सचित ही होते रहेंगे, वे अभी भोगे नहीं जा सकेंगे। क्योंकि वर्त्तमान समय और स्थान प्रारब्ध कर्मों के भुगतान में अभी रुका हुआ है। 'क्यू' की लाइन की व्यवस्था इस समय ध्यान में लाना आवश्यक है। यह माना जा सकता है कि कोई कर्म अपना फल शीघ्र दे और अन्य देर से। किन्तु यह होगा तब ही जब इसका नम्बर आयगा अर्थात् पहले के प्रारब्ध कर्मों का फल पहले और पीछे वालों का पीछे। यही व्यवस्था न्याय सगत है।

१०—श्री स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखा है—'भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान् के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतन्त्र है और जीव किंचित वर्त्तमान और कर्म करने में स्वतन्त्र है' और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वेद मन्त्र—अग्ने व्रतपते (पृष्ठ १०७) पर इस मन्त्र के हिन्दी भाष्य में लिखते हैं कि—'सब जीव कर्म करने में स्वाधीन और पापों के फल भोगने में कुछ पराधीन भी हैं।' इस लेख से प्रकट होता है कि जीव क्रियमाण कर्म करने में स्वाधीन किन्तु वर्त्तमान के अर्थात् प्रारब्ध कर्मों के फल भोग में किंचित स्वाधीन और किंचित पराधीन है। वस्तुतः है भी ऐसा ही। यदि एक आदमी १ पैर से लगड़ा है, तो वह इसकी पूर्ति कृत्रिम पैर से या रेल, तांगे या मोटर की सवारी से पूरी कर सकता है। यदि दांत टूट गये हैं तो कृत्रिम दांतों के चोखटे से पूरी कर सकता है। दृष्टि मन्दी पड़ गई है तो इस कमी को चश्मे से पूरी कर सकता है। यदि हम बीमार हो गये हैं, तो ईश्वर ने हमारी किंचित स्वाधीनता में औषधे उगाकर उनसे लाभ उठाकर स्वस्थ रहने का अथवा दुःख को सहज में भुगत लेने की कृपा दृष्टि कर रखी है। किन्तु यह सब कुछ होता है, प्रारब्ध भोग के अनुकूल।

११—हम भी ऐसा ही करते हैं। जब कारागार में दण्डित मनुष्य कभी बीमार हो जाता है, तो हम उसके उपचार के लिए अपने खर्च से डाक्टर लाते हैं। यदि सर्दी के दिन हैं तो हम उसे कम्बल देते हैं। फिर वह उसे ओढे या न ओढ़े इसमें वह स्वाधीन है। आत्म हत्या भी हमारी किंचित स्वाधीनता के अन्दर है।

१२—हम इस ससार में जीव को दो जगह से दण्ड मिलता देखते हैं। एक ईश्वर द्वारा, दूसरा मनुष्य समाज या राज्य द्वारा। अब यह जानना आवश्यक है कि किन कर्मों का दण्ड तो ईश्वर देता है और किन का मनुष्य समाज। योग दर्शन के सूत्र—क्लेश मूलः ... वेदनीयः २।१२। में जो दृष्ट और अदृष्ट का जिकर है, यह दोनों से लगता है। अर्थात् जन्म से और कर्मों से भी। अतः अदृष्ट कर्म वे हैं, जो संस्कार रूप होकर अन्तःकरण में सचित होते रहते हैं और इनके ही आधार पर ईश्वर सुख दुःख भुगवाता है और नई-नई योनियां देता है। जो जीव की समाज के वश का कार्य नहीं है। दूसरे हैं दृष्ट के कर्म, इनका ज्ञान होना या प्राप्त करना मनुष्य समाज के जिम्मे है। यथा डाका, चोरी, लूट मार, रिश्वत, बलात्कार, भ्रष्टाचार ये दृष्ट कर्म हैं। इनके दोषियों को दण्ड देना मनुष्य समाज या राज्य के जिम्मे है। जो शासन इन दोषों की रोकथाम के हेतु दोषियों को दण्ड नहीं देता है, वह शासन ईश्वर के ज्ञान में निबल और प्रमादी माना जा कर हटा दिया जाता है, और वह शासन किसी अन्य योग्य को सौंप दिया जाता है। जिस प्रकार ईश्वर ने यहाँ से

(शेष पृष्ठ १९ पर)

साहित्य-समीक्षण

पूर्व मीमांसा

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

श्री उपाध्याय जी आर्य-साहित्य के नव-निर्माण और उसे गति-दिशा देने का जो सराहनीय कार्य कर रहे हैं, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी होगी। पूर्व मीमांसा जैसे गम्भीर ग्रन्थ का आलोचन आरम्भ कर उन्होंने एक नवीन क्षेत्र में अनुसन्धान की प्रेरणा दी है। इस कार्य के महत्त्व को उनके शब्दों में पढ़िये और इसी प्रकार वैदिक वाङ्मय की ओर रुचि जागृत कीजिये। —सम्पादक

श्री फूलसिंह जी मंत्री, सभा के आग्रह से मैं पिछले पाँच वर्षों के अपने लेखन कार्य्य का कुछ संक्षिप्त वृत्त सार्वजनिक सूचनार्थ आर्य्यमित्र में छपने के लिये भेज रहा हूँ।

सन् १९५३ के आरम्भ में १४ सप्ताह हस्पताल में रोग-शय्या पर पड़े रहने के उपरान्त जब मैं घर वापिस आया तो, मुझे उर्दू का एक पद्य सूझा—

ताज़ा पैग़ामे ज़ीस्त लाया हूं।
मौत के मुंह से बच के आया हूं।
(ताज़ा=नवीन पग़ाम=संदेश, ज़ीस्त=जीवन)

इस पद्य को गुनगुनाने के पश्चात् यह विचार हुआ कि समाज साहित्य की सेवा का कुछ कार्य्य करना चाहिये। तुरन्त हो एक स्कीम बनाई। जिसके फलस्वरूप सार्वजनिक उपयोग की पहली छोटी सी-पुस्तिका धर्म सुधासार उसी वर्ष की श्रावणी पर प्रकाशित की गई। अगले वर्ष अर्थात् १९५४ में 'जीवन चक्र' लिखा जिसमें गत साठ वर्ष के अपने अनुभव आर्य्य समाज और भारतवर्ष की प्रगतियों के सम्बन्ध में समालोचनात्मक रूप में लेखबद्ध किये। इस पुस्तक में जो लगभग ५०० पृष्ठ को और ५३ चित्रों से युक्त है, विदेश और देश की आर्य्य समाज को चाल-ढाल और नीति की मीमांसा को गई है। सन् १९५५ में अंगरेजी में एक बड़ी किताब प्रकाशित की जिसका नाम है फिलासफी आफ दयानन्द। सन् १८५६ की बौद्ध जयन्ती के अवसर पर अंग्रेजी में एक और किताब लिखी सोशल रिकास्ट्रक्शन बाई बुद्ध एण्ड दयानन्द। इसमे समाज सुधार के विषय मे महात्मा बुद्ध और ऋषि दयानन्द के विचारों का तुलनात्मक वर्णन है।

इसके अतिरिक्त मैंने १९५३ के मध्य से ही दो और काम हाथ में लिये थे, जिनके सम्पादन के लिये बहुत बड़े परिश्रम, धैर्य तथा दीर्घकाल की आवश्यकता थी। प्रथम तो सायणाचार्य और ऋषि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। आर्य्य समाज में और इसके बाहर इस विषय में बहुत सी निराधार कल्पनायें हैं। इनका निराकरण वेद प्रचार के लिये आवश्यक है। इसके लिये मैंने ऋग्वेद के आदि से अन्त तक मुख्य-मुख्य शब्दों का संग्रह किया, जिनके सायण कथित तथा दयानन्द कथित अर्थ की सूची तैयार की गई। लगभग १२ सहस्र शब्द छांटे गये। इनकी अलग-अलग १२ हजार पर्चियाँ तैय्यार की गईं। इस काम में कई वर्ष लगातार उलझना पड़ा। १२ सहस्र शब्दों का यह एक बड़ा कोष बन सकता है। परन्तु प्रकाशन के साधन न देखकर मैंने १९५७ ई० के साल एक छोटी पुस्तक "सायण और दयानन्द" नाम से प्रकाशित की है। इसमें नमूने के रूप में इन दोनों भाष्यकारों की समानता और भिन्नता तथा दृष्टिकोणों की आलोचना की गई है। अभी यह निश्चय नहीं कर सका कि कोष की सामग्री का क्या उपयोग किया जाय। अभी वर्गीकरण भी नहीं कर पाया। यह बहुत समय की तथा अन्य साधनों की अपेक्षा रखता है।

इसी के साथ-साथ एक और काम भी आरम्भ किया था। छः दर्शनों में से पूर्व मीमांसा एक है। यह शेष पांचों को मिलाने से लगभग दूना होगा। इस पर प्रसिद्ध भाष्य शबर स्वामी का है। जो स्वयं एक दीर्घकाय ग्रन्थ है। मैंने समझा कि न केवल इसका अध्ययन ही करना चाहिये अपितु जन साधारण के लाभार्थ हिन्दी में अनुवाद भी कर देना चाहिये। इसके लिये सब से अधिक परिश्रम की अपेक्षा हुई। गत सितम्बर मास में लगभग ५ वर्ष के निरन्तर कार्य्य के पश्चात् मैंने अनुवाद समाप्त किया। यह फुलस्केप के बड़े आकार के १८७७ पृष्ठों पर आया है। छपने से लगभग ४००० पृष्ठ बनेंगे। इसको कौन प्रकाशित करेगा और कौन लेगा इतना धन कहाँ से आयेगा यह एक समस्या है। परन्तु मुझे सन्तोष है कि मैं साधारणतया यह जान सका कि पुस्तक में है क्या? इस पुस्तक को पढ़ने का रिवाज बहुत कम है। पुराने काल मे कुमारिल भट्ट, गुरु प्रभाकर आदि ने कई विशाल टीकायें लिखी थीं। लगभग ४५ वर्ष हुए श्री नारायण स्वामी जी की प्रेरणा से श्री स्वामी हरिप्रसाद वैदिक मुनि ने वेदान्त, योग आदि पाँच दर्शनों के संस्कृत में भाष्य लिखे थे, उस समय पूर्व मीमाँसा का भी प्रसङ्ग छिड़ा था, परन्तु श्री वैदिक मुनि जी ने यह कहकर टाल दिया था कि, इसके भाष्य से आर्यसमाज का कुछ काम न बनेगा। श्री आर्य मुनि जी ने केवल छः अध्यायों पर अपने स्वतन्त्र भाष्य हिन्दी में किये, जिनको किसी ने अपनाया नहीं। इधर कुछ वर्षों से कुछ अन्य विद्वानों ने इस ओर ध्यान दिया। परन्तु मेरा कौतूहल बढ़ता गया। वस्तुतः शंकरभाष्य में यज्ञों में पशु-वध के दृष्टान्त बहुत हैं, इसीलिये इस समस्त दर्शन की उपेक्षा की जाती रही है। फिर भी जब ऋषि दयानन्द ने इस दर्शन को छः दर्शनों का अङ्ग माना है तो हम इसको बिना विचार के छोड़ नहीं सकते। आर्य विद्वानों में इस दर्शन के विषय में बड़ा मत-भेद है। कुछ का तो मत है कि केवल १५० सूत्र अर्थात् १२ अध्यायों में से केवल एक ही अध्याय काम की चीज है। शेष यदि त्याज्य नहीं तो उपेक्षा के योग्य अवश्य है। इतना कहने से आर्य समाज का कुछ बनता नहीं। पिछले पांच छः मास में मैंने इस दर्शन सम्बन्धी सामग्री इकट्ठी की और ऊहापोह करनी आरम्भ की। अभी एक 'सार' तैयार कर पाया हूँ, जो लगभग ५०० पृष्ठों का मेटर है। परन्तु बहुत कुछ परिश्रम करना शेष है। पहली बात तो मुझे यह ज्ञात हुई है कि पूर्व मीमांसा का विषय 'यज्ञ' नहीं है 'यज्ञों' के केवल दृष्टान्त दिये गए हैं। वे दृष्टान्त ब्राह्मण ग्रन्थों से लिए हैं, जिनमें पशु भाग भरा पड़ा है। केवल वैयाकरण-व्युत्पत्तियों से यह उलझने सुलझ नहीं सकता। दृष्टान्तों के आधार पर किसी ग्रन्थ का मूल विषय निर्धारित नहीं किया जा सकता। जैसे गणित की पुस्तक में यदि हानि-लाभ के प्रश्नों में शराब में पानी की मिलावट के दृष्टान्त हों तो उस पुस्तक को मद्यपान की पुस्तक नहीं कह सकते। मीमांसा का 'धर्म' शब्द वही अर्थ नहीं देता जो वैशेषिक का 'धर्म' शब्द देता है। इसी प्रकार कर्म शब्द है, जो लोग व्याकरण के कर्म, धर्मशास्त्र के कर्म, मीमांसा के कर्म और वेदान्त के कर्म को समानार्थक समझ लेते हैं, वह किसी के साथ न्याय नहीं करते। इसी प्रकार मीमांसा का मुख्य विषय तो यह है कि श्रुतियों में दिए हुए विधि-वाक्यों का अर्थ कैसे लगाया जाय। हिन्दू धर्म शास्त्र अर्थात् हिन्दू-ला का न्यायालयों में सदा ही काम पड़ता है। हाईकोर्टों के दाय भाग सम्बन्धी अभियोगों के निर्णय पूर्व मीमांसा के आधार पर ही होते हैं। स्मृतियों की उलझनों को मीमांसा के सूत्र ही सुलझाते हैं। जहाँ विधियों मे विरोध या विरोधाभास हो। वहाँ क्या ठीक है, क्या वे ठीक, और उसके निर्णय का आधार क्या है। यह सब पूर्व मीमांसा का विषय है, और आर्य्य समाज के वर्त्तमान सदस्य जो हिन्दू कानून की मान्यता से कानून के क्षेत्र के भीतर अपने को अलग नहीं कर सकते, इसको दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते। अतः मैं इसी उधेड़ बुन में लगा हूँ। मीमांसा का विषय यह नहीं है कि कौन कार्य धर्म है कौन अधर्म। इसका विषय है वह कसौटियाँ जिसके आधार पर हम वैदिक वाक्यों से यह निर्णय कर सकें कि उनमें क्या मुख्य है क्या गौण। इसीलिए शायद जैमिनि महर्षि ने पहला सूत्र रक्खा है 'अथातो धर्म जिज्ञासा,' न कि 'अथातो धर्म व्याख्यास्यामः' जिज्ञासा और व्याख्या में सूक्ष्म भेद है। इस ओर हमारे आर्य सामाजिक विद्वानों का ध्यान अभी गया नहीं।

यह कहना कठिन है कि मुझे इस कठिन कार्य में कुछ सफलता मिलेगी या नहीं। हमको यह भी देखना है कि यज्ञों की जो दूषित प्रणाली ब्राह्मण ग्रन्थों मे दी हुई है, उसमे यह दोष कैसे आ गया। केवल इतना मात्र कह देने से काम नहीं चलता कि अमुक प्रणाली असाधु है। साधुत्व से असाधुत्व तक पहुँचने मे जो मानवी निबलतायें काम करती हैं उनका विवेचन न करने से हम विद्वानों मे अपने वैदिक दृष्टिकोण को मनवा नहीं सकते। यज्ञ में पशु-वध को अवैदिक और त्याज्य मानते हुए भी हम मीमांसा को उस समय तक छोड़ न सकेंगे जब तक कानून का कोई आधार न ढूंढ निकालें।

मैंने यहाँ जिस उलझन में, मैं उलझा हुआ हूं, उसका कुछ दिग्दर्शन करा दिया है, सम्भव है कुछ वर्षों के परिश्रम के पश्चात् जनता के समक्ष कोई उपयोगी वस्तु रख सकूं।

सत्यार्थ प्रकाश मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में

(ललिताप्रसाद, आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर)

पूर्वी पाकिस्तान में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध के समाचार ने लेखक को प्रेरणा दी है कि सत्यार्थप्रकाश प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में मुसलिम विद्वानों के विचार संकलित कर सत्यता को सामने लाया जाय। सिन्ध में जब्ती का आदेश निकला, तब ये सम्मतियाँ लिखी गयी थीं पुरानी होने पर भी इनका सामयिक महत्त्व स्पष्ट है। —सम्पादक

देहली से प्रकाशित होने वाले मुसलिम पत्र 'रियासत' का १५-१२-४८ के अङ्क से ज्ञात हुआ कि "पूर्वी पाकिस्तान" राज्य ने सत्यार्थप्रकाश जब्त कर लिया है। पता नहीं सत्यार्थप्रकाश क्यों जब्त कर लिया? देखें समस्त पाकिस्तान के मुसलिम विद्वान् इसका क्या उत्तर देते हैं। इससे पहिले भी "सिन्ध" की मुसलिम लीगी सरकार ने भी सत्यार्थप्रकाश जब्त किया था, उस समय समस्त भारत के उच्चकोटि के मुसलिम विद्वानों ने इसे अनुचित ही कहा था, और सत्यार्थप्रकाश से प्रतिबन्ध उठवा लिया था। पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार को चाहिये कि वह जल्दी से जल्दी "सत्यार्थप्रकाश" से प्रतिबन्ध उठवा दे, और इस्लाम की न्यायप्रियता का प्रमाण दे। अब मैं "आर्यमित्र" के पाठकों के सम्मुख उच्चकोटि के मुसलिम विद्वानों की कुछ सम्मतियाँ सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में रक्खूंगा जिनसे यह ज्ञात हो जावे कि मुसलमानों के "उल्मा" (विद्वान्) सत्यार्थप्रकाश को क्या समझते हैं। सम्मतियाँ निम्नलिखित हैं :—

१—मौ० अब्दुलकलाम आजाद (जब जेल से मुक्त हुये तो उनका ध्यान सिन्ध सरकार की ओर से लगाये गये सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध की ओर दिलाया गया आपने कहा) "असूलन किसी धार्मिक पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाना तो गलत है है, फिर इसके लिए डिफेंस आफ इण्डिया रूल्स का आश्रय लेना तो और भी भयंकर है।"

२—मौ० सैयद हबीब (सम्पादक 'सियासत' लाहौर) "सिन्ध के मुसलिम लीगी मन्त्री न गड़े हुए मुरदे उखाड़ते हैं। और केवल स्वार्थ सिद्धि के लिए इसका मुसलिम लीग ने समर्थन किया है। लीग की अवस्था दूध पीने वाले मजनूँ की सी है। सत्यार्थ प्रकाश पर आक्रमण करके यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दुओं का मुसलिम राज्य से चमकना वे बुनियाद नहीं। अगर यह कहा जावे कि सत्यार्थप्रकाश में "कुरान" और "रसूल" की तन्कीद की गई है, तो मेरा निवेदन है कि ऐसी किताबों की तादाद बेशुमार हैं।"

३—मौ० मुहम्मद अली (मरहूम) "सत्यार्थप्रकाश" स्वामी दयानन्द की मारकतुल आरा तसनीफ है और स्वामी दयानन्द आर्यों के गुरु हैं। आर्य जमाअत उनको अवतार या पैगम्बर तो मानती नहीं मगर उनकी इस कदर इज्जत करती है कि उनसे बढ़ कर किसी इन्सान की इज्जत उनके दिल में नहीं; इसी प्रकार उनकी तसनीफ सत्यार्थप्रकाश को मजहबी किताब का दरजा देती है। एक मजहब और फिरके के बानी की किसी तसनीफ पर तलख ख्यालात का इजहार न खुशगवार नतायज पैदा कर सकता है। हकूमत इस किताब को जब्त नहीं कर सकती और जब्त करके ख्वाहमख्वाह अपने सिर मुसीबत मोल नहीं लेगी। हकूमत को क्या पड़ी है कि वह ऐसी ताकतवर जमाअत को जैसी की आर्यों की है, बिला वजह अपना दुश्मन बना ले।" (देखो हमदर्द ६ फरवरी सन् १९४५ ई०)

४—मौ० इब्न खलील (देवबन्दी) "जब हम दुनियाँ के सामने एक रूहानी पैगाम पेशकर रहे हैं तो कोई व्यक्ति आँखें मूंदकर उसे मान नहीं सकता। मालूम होता है कि लोगों ने इस्लाम काल के आरम्भ में "कुरान" को मजाक और हंसी का मजमून बना लिया था, मगर हजरत "रसूल" ने आलोचकों को उत्तर देते हुए शान्ति से काम लिया। जब हम मजहब के बाजार में अपना चीज लाये हैं तो यह ग्राहक का कर्तव्य है कि ठोंक बजाकर परख ले। यदि हम अपने सोने को परखने वाले की परख पर नाक भौं चढ़ायेंगे तो ग्राहक को इसकी सच्चाई पर सन्देह होने लगेगा। हजरत मौलाना कासिम संस्थापक दार-उल अलूम देवबन्द, जो इस्लाम के चोटी के "उल्मा" में से एक है, उन्होंने कई बार स्वामी दयानन्द के साथ शास्त्रार्थ किया। उन्हें इस्लाम और कुरान पर स्वामी जी के विचारों का व्यक्तिगत ज्ञान था और यह पुस्तक मौलाना के जीवन काल ही में छप चुकी थी। मुझे ज्ञात नहीं कि उन्होंने इस पुस्तक का कोई उत्तर दिया हो। सत्यार्थ प्रकाश आरम्भ से मुसलमानों की दिलचस्पी का केन्द्र रहा है। यह विचार कभी जमाअत उल्मा के मन में नहीं आया कि दलील का उत्तर नाराजगी या क्रोध के रूप में दिया जाय, अर्थात् इस पुस्तक को ही जब्त कर लिया जाय। क्या आप दुनियाँ की अकल पर ताला लगाना चाहते हैं? यह मजहब है इसे मिस्टर जिन्ना के हाथों का खिलौना न बनाइये। खुदा के लिये ये न कहलाइये कि दलील का जवाब न बन पड़ा तो मुसलमान रोने पर उतर आये। "सत्यार्थप्रकाश" की जब्ती की माँग बुद्धिमत्ता पूर्ण नहीं।"

नोट—इस उपरोक्त कथन पर किसी विद्वान् ने एक "शेर" कहा है जो प्रत्येक को कण्ठस्थ कर लेना चाहिये, शेर निम्नलिखित है:—

"हम उन अशखास को,
कम अक्ल और खब्ती समझते हैं।
जो तसनीफ को जो,
काबिले जब्ती समझते हैं।"

५—डा० सैयद महमूद (मेम्बर आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी) "मुझे आशा है कि सिन्ध सरकार इस आज्ञा को शीघ्र ही लौटा लेगी। सिन्ध सरकार ने भारत के इतिहास में इस संकट के समय में हिन्दू मुसलिम एकता के मार्ग में बड़ी बाधा उपस्थित कर दी है। महात्मा गाँधी जी से सत्यार्थप्रकाश लेकर १४ वां समुल्लास पढ़ रहा हूँ। महात्मा जी की भी इस विषय में पर्याप्त बातचीत हुई। उन्हें सिन्ध सरकार के इस काम से बड़ा दुःख हुआ है। हम अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहे हैं कि सिन्ध सरकार इस आज्ञा को शीघ्र ही वापस ले ले।"

ये सम्मतियाँ सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाये जाने के अनौचित्य की घोषणा कर रही हैं।

बोध कथा—

वैराग्य

—श्याम लाल वशिष्ठ 'अकिंचन' एम० ए०

उस दिन पड़ोस में एक युवक की अनायास ही मृत्यु हो गई। सुन्दर-स्वस्थ वह हँसमुख नवयुवक दिन कुछ बीमार रहे हार्ट फेल हो जाने के कारण इस दुनियाँ से कूच हो सदा को कूच कर गया। जिज्ञासावश मैं भी उसकी अर्थी के साथ हो लिया। और 'राम नाम सत्य' के साथ हमारा काफिला अपनी मंजिल की ओर चला। समशान में चिता बनाकर उस निर्जीव शरीर को अग्नि के अर्पित कर दिया गया, और सभी व्यक्ति थोड़ी दूर पर हटकर खड़े हुए परस्पर वार्तालाप करने में संलग्न हो गये—"बड़ा ही अच्छा आदमी था।................वेचारा दूसरों के काम के लिए तो हमेशा ही तैयार रहता था।..........कल तो इस समय हँसकर बातें कर रहा था, और आज उसकी हँसी मौत के आँचल में डूब कर खो गई—जिन्दगी का भरोसा ही क्या? दुनियाँ तो एक सराय है—आदमी मुसाफिर की तरह ही आता है, और फिर दो चार दिन रहकर चल देता है............धन दौलत सब कुछ यहीं पड़ा रह जाता है—पैसा तो एक प्रकार से झूठी माया है—दुनियाँ में आकर कभी भी, किसी का मन नहीं दुखाना चाहिए..........सदैव ही सब की मदद करनी चाहिए..............." और इसी तरह की अनेक बातें, जो पड़ोस में अर्थी बनाते समय लाश के उठने से पूर्व तथा राह में लाश को मरघट लाते समय मैंने सुनी थीं, वे सब यहाँ आकर और भी शोर शोर से हो रही थीं। लाश जल गई, और मैं भीड़ के साथ नगर की ओर लौट चला। बातें अब भी चल रही थीं—"अनाज पर तो अब बेहद तेजी आ रही है........ अरे तुमने तो कई हजार मन भर लिया है—चाँदी काटोगे इस साल......लेकिन मैंने सट्टे में चालीस परचे बेच जो रखे हैं......अब तुम्हारे बच्चे के निमोनिया का क्या हाल है........ ये म्यूनिस्पलेटी के मेम्बर और ओवरसीयर तो अब बहुत ही अधिक रिश्वत खाने लगे हैं—देखते नहीं, इन नई सड़कों का दो ही महीने में क्या हाल हो गया........कहीं बैठी लड़की की शादी की मीजान...... भई, कितना दहेज मिल रहा है रमेश को जो कानपुर से—एम० ए० पास है, और इस पर भी सरकारी नौकरी—काफी लम्बा हाथ मारा होगा तुमने......और जितना ही हम नगर के निकट आते गये, इस तरह की बातें और भी गहरी और भी अधिक होती चली गईं—ऐसा प्रतीत होता था, जैसे मरघट से दूर नगर के निकट आ जाने के कारण मृत्यु का भय सभी के हृदय से दूर हो गया हो। वैराग्य लजाकर मुंह छिपा रहा था, और खुदगर्जी मन्द-मन्द मुस्करा रही थी।

जीवन-ज्योति

नेताजी सुभाषचन्द्रबोस

(२३ जनवरी को उनकी जन्म जयन्ती सारे देश में मनायी गयी)

[ले०—श्री भरतसिंह]

> नेता जी सुभाष चन्द्र बोस भारत माता के उन अमर पुत्रों में हैं जो अपने दिव्य प्रकाश से भारत के करोड़ों मानवों को राष्ट्र भक्ति का प्रकाश देते रहेंगे। उनकी जन्म जयन्ती के अवसर पर मित्र परिवार प्रसन्नता प्रकट करता है। —सम्पादक

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के अग्रदूत एवं स्वतन्त्रता देवी की बलिवेदी पर आत्मोत्सर्ग करने वाले वीरवर सुभाषचन्द्र को कौन ऐसा भारतीय होगा जो न जानता हो। इनकी, उदारता, लोक प्रियता, कष्ट सहिष्णुता एवं मातृ भूमि के प्रति अगाध स्नेह की भावना से भारत का ही नहीं अपितु विश्व का बच्चा बच्चा उन्हें महान् पुरुष के रूप मे स्वीकार करता है।

ऐसे महान् व्यक्तित्वशाली सुभाष ने अपने वरद् जन्म से, १८९७ ई० २३ जनवरी को कटक निवासी श्री जानकीनाथ जी के घर को पवित्र किया था।

बालक सुभाष को छोटी सी अवस्था मे, कटक के एक यूरोपियन स्कूल मे प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रविष्ट कराया गया। १९०९ ई० में इनका नाम कटक के 'कालेजियट' स्कूल मे लिखवाया गया वहाँ से १९३१ मे प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर कलकत्ते चले गए और वहाँ प्रेसीडेन्सी कालेज मे अध्ययन करने लगे।

इन्हीं दिनों डा० सुरेश मिर्जापुर स्ट्रीट मेडीकल मेटन में एक देशभक्त नवयुवकों के दल का संगठन कर रहे थे, जिसका ध्येय आजीवन अविवाहित रहकर देश सेवा का व्रत लेना था। सुभाष ने भी दल की सदस्यता स्वीकार कर अविवाहित रह, देश सेवा का व्रत अंगीकार किया। एक बार वैराग्य भावना के कारण आपने गृह-त्याग भी किया पर फिर घर आकर पढ़ने लगे और आई० सी० एस० के लिये लन्दन भेजे गए, और बाद मे उन्हें बी० ए० कराके आई० सी०एस० के लिए लन्दन भेज दिया गया।

आई० सी० एस० का परीक्षाफल जहाँ घर वालों को हर्षित करने वाला था वहाँ सुभाष को अपनी यह सफलता दुर्भाग्य सी प्रतीत हुई। उन्होंने अपनी इस भावना को मूर्तरूप प्रदान किया। भारत लौटने से पूर्व ही उस गुलामी की नौकरी का त्याग पत्र भारत मन्त्री के हाथों मे समर्पित कर वे एक क्षण में उससे दूर हो गये। जबकि उस समय अन्य लोग इसके लिए तरसते थे।

इस समय भारत में रोलट बिल, पंजाब हत्या काण्ड, मार्शल ला आदि आदि भीतिजनक एवं रोमांचकारी काण्डों से भारतीय जनता में स्वतन्त्रता प्राप्ति की एक सजीव लहर जग पड़ी, महात्मा गांधी जी के सफल नेतृत्व में एक एक बड़ा का आन्दोलन मे विदेशी सत्ता के प्रतिकूल सक्रिय कदम उठाने प्रारम्भ कर दिये थे।

विदेश से लौटते ही प्रथम सुभाष ने असहयोग आन्दोलन के विषय में गांधी जी से परामर्श किया परन्तु गांधी जी से उन्हें उचित सन्तोष न मिल सका और वे तत्काल कलकत्ता जाकर देश के दूसरे नेता देशबन्धु चितरंजनदास से मिले, जो कि सुभाष को अपने विचारों का पर्याप्त निकटस्थ एवं व्यवहारिक दूरदर्शी राजनीतिक दिखाई दिया।

चितरंजन दास ने अपने कालेज एवं क्रांति प्रसारक पत्र का भार सुभाष के कन्धों पर डाल दिया। थोड़े ही मे सुभाष ने बंगाल को नव चेतना की लहर से सजीव बना दिया। 'प्रिन्स आफ वेल्स' का देश व्यापी स्वागत बहिष्कार आन्दोलन में सुभाष ने अपने भाषणों से घृताहुति का कार्य किया और वे बंग प्रान्तीय स्वयं सेवक दल के प्रधान सेनानी चुने गये। ओजस्वी वाणी से जन जागरण के अपराध मे प्रथमबार १९२१ ई० में उन्हें छः माह की कारावास की सजा हुई।

कारावास से मुक्त होते ही सुभाष ने बंग बाढ़ पीड़ितों की कमर कसकर सहायता की। तथा कौंसिल चुनाव के लिए निर्मित मोतीलाल नेहरू के स्वराज्यदल में अपने गुरु चितरंजन दास जी सहित सम्मिलित हो गये। इसी समय सुभाष ने भी कांग्रेस नीति के अनुरूप स्वराज्य प्राप्ति के निमित्त एक 'युवक दल' की स्थापना की। इस दल ने किसान एवं गरीबों का बड़ा हित किया।

सुभाष अपनी सादगी, लोक प्रियता, उदारता एवं कार्य दक्षता के कारण १९३३ के कलकत्ता कारपोरेशन के चुनाव में निर्विरोध चुन लिए गए। कारपोरेशन में इन्हें एक्जिक्यूटिव आफिसर बनाया गया जिसका वेतन तीन हजार रुपये मासिक होता था। परन्तु सुभाष ने यहाँ भी उच्चादर्श का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, अपनी आवश्यकता के अनुकूल डेढ़ हजार रुपये ही लेना स्वीकार किया।

इसी बीच मे एक क्रान्तिकारी बंगाली युवक ने डे नामक अंग्रेज की हत्या कर दी जिसके अपराध में 'बंगाल-आर्डिनेन्स' के अन्तर्गत बिना मुकदमा चलाए ही सुभाष सहित ८० युवकों को ब्रिटिश कारागार का अतिथि बना लिया गया। प्रथम इन्हें अलीपुर सेण्ट्रल जेल में रखा गया और बाद मे माण्डले के कारागार मे नजरबन्द कर दिया।

इस जेल में सुभाष का स्वास्थ्य प्रतिदिन बिगड़ता चला गया और यहाँ तक बिगड़ा कि उनका ४० पौण्ड वजन घट गया तथा तपेदिक के लक्षण प्रकट होने लगे। अतः सरकार ने उन्हें बिना शर्त मुक्त कर दिया।

जेल से मुक्त होते ही सुभाष ने प्रान्त की कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता का भार ग्रहण कर १९२७ ई० का कौंसिल चुनाव लड़ा तथा प्रान्तीय सभा में सफल होने के अतिरिक्त प्रसिद्ध 'इन-डिपेन्डेन्स ओफ इण्डिया लक्र्वेज' के संगठन एवं सायमन कमीशन के बहिष्कार में भी अच्छा भाग लिया मद्रास कांग्रेस में संयुक्त प्रधान मन्त्रित्व का भार भी अंगीकार किया। सन् १९२८ में कलकत्ते में कांग्रेस अधिवेशन भी आपके तप एवं त्याग से सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वर्गीय देश भक्त यतीन्द्र की देश सेवा पर सुभाष में जो ओजपूर्ण सारगर्भित भाषण दिया उसे सरकार सहन न कर सकी और उसने इसी अपराध मे सुभाष को छः मास की सजा दी अपनी कारावास की अवधि



श्री नेता जी

पूरी करके थोड़े ही समय बाद २६ जनवरी १९३१ ई० के स्वातन्त्र्य दिवस के उपलक्ष्य में उनकी अध्यक्षता मे आयोजित एक वृहत् जुलूस पर घुड़सवार पुलिस ने लाठी द्वारा आक्रमण कर न केवल उन्हें आहत किया अपितु ६ मास का कारावास भी दे डाला। किन्तु इस बार 'गांधी इर्विन समझौता' के अन्तर्गत उन्हें अवधि से पूर्व ही मुक्त कर दिया गया। परन्तु शीघ्र ही वे फिर पकड़ लिए गये और स्वास्थ्य खराब होने के कारण विदेश भेज दिये गये। सरकार सुभाष को भारत आने की अनुमति नहीं देना चाहती थी। फिर भी सुभाष विदेश से ही राष्ट्र सेवा में रत रहे।

दुर्भाग्यवश इसी समय सुभाष के पिता जानकीनाथ अत्यधिक बीमार हो गये और उन्होंने सुभाष से मिलने की अन्तिम इच्छा व्यक्त की। इस पर नेताओं ने सुभाष के छुटकारे के लिए सरकार को विवश किया, सरकार ने भी पुनः विदेश लौट जाने की शर्त पर सुभाष को मुक्त कर दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश सुभाष अपने पिता जी के अन्तिम दर्शन न कर सके और शीघ्र ही सरकार की पाबन्दियों के कारण योरोप लौट गए।

सुभाष विदेश मे रहना पसन्द नहीं करते थे। भारत लौट आने के लिए अत्यन्त उत्सुक हो उठे और

(शेष अगले पृष्ठ पर)

सुझाव-सम्मतियाँ

एक पतनोन्मुख आर्य समाजी

५० वर्ष की आयु के बाद भी जीवन-साथिनी महिला की खोज एक आदर्श व्यक्तित्व की मर्यादा के विरुद्ध है। एक साठवर्षीय आर्य समाजी भाई ने जिन स्पष्ट शब्दों में विज्ञापनदाता बन्धु से मांग की है आशा है वे उस पर विचार करेंगे और अपने निश्चय को समाप्त घोषित कर देंगे। इस प्रकार का विज्ञापन प्रकाशित हो जाने का हमें खेद है भविष्य में अधिक सावधानी से काम लिया जायगा। —सम्पादक

गत ४ जनवरी सन् १९५९ वाले 'आर्यमित्र के अङ्क में पृष्ठ १४ पर प्रकाशित एक 'आवश्यकता' नामक विज्ञप्ति पर दृष्टि पड़ी। उक्त विज्ञापन एक पचास वर्ष से अधिक आयु वाले और ५००) पाँच सौ रुपये से अधिक मासिक आय प्राप्त करने वाले शासकीय अधिकारी की ओर से दिया गया है जिन्हें विधुर होने के कारण एक जीवन साथिनी (सन्तान रहित) की चाह है।

सामान्यतया उपर्युक्त विज्ञापन में कोई असाधारण बात प्रतीत नहीं होती ईसा की बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में जब दुनियाँ तथा कथित वैदिक 'बर्बरता' के युग से कहीं आगे 'तरक्की' कर चुकी है किसी को क्या अधिकार कि वह किसी से यह पूछ सके कि 'हजरत' आप क्या रहे हैं अथवा क्या करने की 'फिराक' में हैं परन्तु जब यह विज्ञापन एक आर्य समाजी की ओर से दिया गया दिखाई पड़ा तो सहसा धैर्य का बाँध टूट गया और प्रबल इच्छा हुई कि इन पतनोन्मुख आर्य समाजी भाई को इनके कर्त्तव्य का स्मरण कराया जावे।

वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत मनुष्य की आयु चार मुख्य भागों में विभक्त मानी गई है। उक्त व्यवस्था के अनुसार ५० वर्ष आयु पार कर चुकने पर मनुष्य तृतीय आश्रम में प्रवेश करने अर्थात वानप्रस्थ बनने के योग्य हो जाता है जहाँ पहुँच कर वह निज आत्मिक उन्नति हेतु तप और स्वाध्याय का जीवन व्यतीत करे और अपने ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर दूसरों को लाभ पहुँचावे।

गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होते समय अधिकाँश आर्य समाजी भाई भी अपने जीवन का कार्यक्रम ठीक न बनाने के कारण तृतीय आश्रम में प्रविष्ट होने की अवस्था प्राप्त करने पर अपने को अनेक ऐसे बन्धनों में जकड़ा हुआ पाते है कि गृहस्थाश्रम का परित्याग नहीं कर पाते। परन्तु इस विज्ञापन के दाता आर्य समाजी बन्धु को तो ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि वह पूर्व से ही गृहस्थ के बन्धन से मुक्त हो चुके हैं, उनकी अवस्था अब जिस आश्रम के योग्य हो चुकी है उसके अनुरूप अपना भावी जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करें। जब तक शासकीय सेवा से मुक्त नहीं किये जाते तब तक आयोचित सचाई और निष्पक्षता से अपने पद का कार्य भार

(शेष पृष्ठ १३ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

सरकारी आज्ञा के बिना ८ अप्रैल १९२६ ई० को स्वदेश आ गये। यहाँ उन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में पुनः उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और सरकार को उन्हें बिना शर्त छोड़ना पड़ा। वीरवर सुभाष अपनी लोक प्रियता के कारण कांग्रेस के दो बार सभापति चुने गये परन्तु दूसरी बार उग्र विचारों के कारण महात्मा गांधी जी से मतभेद हो गया और नेताओं का सहयोग न मिलने के कारण उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। इस प्रकार उत्तरदायित्व से मुक्त हो कर उन्होंने अग्रगामी दल की स्थापना की देश में सर्वत्र भ्रमण कर स्थान स्थान पर उसकी शाखाएं स्थापित की दल को उग्र बनाने निमित्त उन्होंने 'एडवांस' नामक पत्र निकाला जिससे देशवासी सुभाष से अत्यधिक प्रभावित हुए।

रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन के बाद ही नेताजी ने नेहालवेल स्मारक विरोधी आन्दोलन आरम्भ किया फलतः १९४० ई० में उन्हें पुनः गिरफ्तार कर लिया गया।

सुभाष ने जेल जीवन से ऊबकर आमरण अनशन प्रारम्भ किया जिसके कारण उन्हें जेल से मुक्त कर कलकत्ता में उन्हीं के घर पर पुलिस निगरानी में रखा गया। सुभाष यहाँ से अवसर पाकर छद्मवेश धारण कर पेशावर, अफगानिस्तान होते हुए जर्मन की राजधानी बर्लिन पहुँचे और वहाँ जाकर हिटलर से मिले। हिटलर ने नेताजी की योग्यता एवं व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें 'डिप्टी फ्युहार' की उपाधि दी तथा जर्मन सरकार ने एक जहाज तथा रेडियो ट्रांसमीटर भी नेताजी दिया।

जर्मन से सुभाष पनडुब्बी द्वारा जापान पहुँचे और वहाँ जाकर पूर्व निर्वासित नेता रासबिहारी से मिल कर उस चिरस्मरणीय 'इण्डियन इण्डिपेण्डेन्स लीग' की बागडोर अपने हाथों में ली जो आगे चलकर 'आजाद हिन्द सरकार एवं फौज' की जनक हुई। नेताजी की इस फौज में ५० हजार सशस्त्र सैनिकों की सुगठित पल्टनें थीं, स्त्री एवं बालकों की फौजें भी इनमें शामिल थी। फौज के सचालन के लिए सुभाष के पास २० करोड़ का खजाना, अदालत, स्कूल, अस्पताल तथा प्रेस थे। फौज के निजी सिक्के और स्टाम्प आदि भी चलाये थे।

आखिर वह दिन भी आ गया जिसके लिए नेताजी ने इतना बड़ा खेल खेला था। १९४४ ई० के आरम्भ में भारत की पूर्वीय सीमान्त पर विधिवत् लड़ाई की मशालें जगमगाने लगीं। 'कदम-कदम बढ़ाए जा' के नारे से आकाश गूंजने लगा। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' नेताजी के इस नारे ने असंख्य भारतीयों को रणोन्मुख कर दिया। सत्ताधारी ब्रिटिश सरकार बीच भंवर में पड़ी नौका के तुल्य डगमगाने लगी। जैसे-जैसे देश भक्तों के कदम मातृभूमि की पराधीनता के बंधन काटने को आगे बढ़ते वैसे ही ब्रिटिश सत्तायुक्तों का हृदय दहलने लगता था। परन्तु दुर्भाग्य था कि जापान ने आत्म समर्पण कर दिया और सिंगापुर से वायुयान द्वारा जापान जाते समय १९४५ में मार्ग में ही उनका असामयिक अवसान हो गया जिसके कारण स्वातन्त्र्य संग्राम को भारी धक्का लगा।

नेता जी का जीवन एक आदर्श राष्ट्र-भक्ति और ध्येय निष्ठ मानव की कहानी है। उनका जीवन भारतवासियों को युग युगान्तर तक देशभक्ति की प्रेरणा और राष्ट्र-गौरव का सन्देश देता रहेगा। २३ जनवरी के पवित्र दिन उनके प्रति हार्दिक श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते हुए हम कवि के शब्दों में गाना चाहते हैं:—

शहीदों की चिताओं पर,
जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का,
यही बाकी निशाँ होगा॥

कर्मवीर

[शिवानन्द 'शिवम्'–ग्राम सवन बलिया]

धर्म औ' स्वदेश निज जाति के उद्धार हेतु,
कर्मवीर हँस हँस कर स्वयं मिट जाते हैं।
गहन तिमिर मय निशय में दिवाकर बन,
तमसी वसुधा पर ज्योति पुंज बिखराते हैं।
संस्कृति, मानव मनुजता में रत सदा,
बोझिल दनुजता को दूर जो भगाते हैं।
यशोगान उनका करते हैं मधुप वृन्द,
स्वागत में विहग-बाल लोरियाँ सुनाते हैं।
पैर वे बढ़ाते अकेले प्रशस्त मार्ग,
झुक जाते चरणों पर कोटिक सुमन हैं।
राष्ट्र के उद्धारक हैं–नौका के कर्णधार,
चातक के स्नेह हित स्वाती के घन हैं।
वर्त्तमान चेता बन भावी की सृष्टि करें,
जिनका नित बाट जोहें अपलक नयन है।
लहराती उर में है जिनके आशा-लता,
उनकी पताका फहराते देवगन हैं।
दीपक सा दीप्यमान घर घर उजाला कर,
सत्य-शिव-सुन्दर जन मानस बनाते हैं।
पावन हिमालय सा जिनके विचार दृढ़,
मरुभूमि में सुरसरि की धारा बहाते हैं।
'वसुधा कुटुम्ब औ' सुख औ' निरापद की,
रात दिन शब्द घोष नारे लगाते हैं।
मरते तो वे भी, पर वे ही अमर बन,
उषा के संग प्राची में मुस्काते हैं।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती गुरु श्री विरजानन्द स्मारक तथा समारोहा के निमित्त धन-संग्रहार्थ रसीद नोट भेजने की सूचना

आर्य जनता का अपूर्व उत्साह

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य जनता को विदित हो कि मथुरा नगरी में आर्यमित्र हीरक जयन्ती, तथा अन्य समारोहों, विशेषकर गुरु श्री विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक मथुरा नगरी में होने वाले महा महोत्सव के निमित्त धन-संग्रहार्थ रसीदें नोट सूची आर्यमित्र दिनांक २१ दिसम्बर १९५८ के पृष्ठ सं० १३ पर प्रकाशित हो चुकी है। उसके पश्चात् १६ जनवरी १९५९ तक रसीद नोट जो और भेजे गये हैं वह निम्न प्रकार प्रकाशित किये जाते है।

अतः समाजों को चाहिए कि इस महायज्ञ को सफल बनाने के लिए इस सूचना के पढ़ते ही शीघ्र नोट सभा कार्यालय से मंगाने की कृपा करें—

१—श्री शान्तिप्रकाश जी प्रेम अन्तरङ्ग सदस्य सभा पंचपुर (गढ़वाल) ६२५)
२—" रामबहादुर जी मुख्तार " " पूरनपुर (पीलीभीत) ९००)
३—" रामस्वरूप जी शुक्ल मंत्री उप सभा हरदोई २००)
४—" शान्तोदेवी जी प्र० म० स्त्री आर्य समाज कटरा प्रयाग १५०)
५—" शीतलराम रामअजोधा पो० कमतौल [दरभंगा] २५०)
६—" मोहनलाल जी आर्य अन्तरङ्ग सभासद् आगरा
१५००) पूर्व में-१२५०)=२७५०)
७—" कर्णसिंह ठोकर जी उपमंत्री सभा मथुरा १५००)
८—" विद्यारत्न जी वकील प्रधान आ० स० हल्द्वानी [नैनीताल] ५००)
९—" महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी अन्तरङ्ग सभासद् बड़ौत [मेरठ]
४००) पूर्व मे १०००)=१४००)
१०—" मनवीरसिंह जी प्रधान आ० स० बेरी [ऐटा] ७५)
११—" बलवन्तसिंह जी प्रधान आ० स० भेसा [मेरठ] ७५)
१२—" मन्त्री जी आर्यसमाज दिल्दारनगर [गाजीपुर] ७५)
१३—" " " " मिर्जापुर ७००)
१४—" हरिश्चन्द्र जी उपमन्त्री आर्य समाज रामपुर ५०)
१५—" मन्त्री जी आर्य समाज पाली पो० कालिन्दी [मेरठ] ५०)
१६—" रामकुमार जी आर्य घिरोर [मैंनपुरी] ५०) पूर्व में २५०)=३००)
१७—" केशवसिंह जी आ० स० रुद्रमुली [आगरा] ३७॥)
१८—" मंत्री जी आर्य समाज अलीगढ़ २५०)
१९—" रामलाल जी आ० स० टांडा [फैजाबाद] १५०)
२०—" प्रहलाद सेठ घनश्याम सेठ वाराणसी २५)
२१—" मुरलीधर जी पांडेय देवरामपुर [गढ़वाल] ५०)
२२—" रामलखन जी सि० शास्त्री उपदेशक बिस्कोहर बाजार [बस्ती]
५०) पूर्व मे ३७॥)=८७॥)
२३—" श्यामलाल जी आर्य रामनगर मेरठ अन्तरङ्ग सभासद् १०००)
२४—" आचार्य बृहस्पति शास्त्री जी वेदाशरार्माण देहरादून १०००)
२५—" F. C. मदनसिंह वर्मेरा पो० अकाता जि० भरतपुर २५)
२६—" विजयपाल सिंह जी मन्त्री आ० स० बांकनेर [अलीगढ़] ५०)
२७—" रामनारायण जी मंत्री आर्य समाज जौनपुर ५००)
२८—" धर्मपाल विद्यालंकार जी गुरुकुल कांगड़ी [सहारनपुर] ५००)
२९—" पुरुषोत्तम शरण जी मन्त्री आ० स० मुरादाबाद १५०)
३०—" बाबूराम जी भारती ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ ८७॥)
३१—" बनवारी लाल जी ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ ३७॥)
३२—" मथुरा प्रसाद जी अन्तरङ्ग सभासद् मंत्री आ० स० ऐटा ४००)
३३—" भगवत दयालु जी मुख्तार अन्तरङ्ग सभासद् भरथना [इटावा]
५००) पूर्व मे १७५)=६७५)
३४—" शेरसिंह जी काश्यप आयुर्वेदाचार्य अ० सदस्य मुजफ्फरनगर १०००)
३५—" ईश्वरदयालु जी आर्य मुख्य उपमन्त्री सभा उ० प्र० बिजनौर
१०००) पूर्व में १०००)=२०००)
३६—" चन्द्रनारायण जी एडवोकेट सभा उपमंत्री बिहारीपुर बरेली १०००)

नोटः—आर्यमित्र दिनांक २१।१२।५८ में श्री जगदीश प्रसाद जी मंत्री आ० स० फैजाबाद का ७२५) के स्थान में २७५) छप गया है।

कालीचरण आर्य
सभा उपप्रधान तथा अर्थ संयोजक समिति

वनिता  विवेक

काम की बातें

परिवार में अधिक टूटने-फूटने वाली चीजों में जिनकी गणना की जा सकती है, वे हैं, चीनी मिट्टी और कांच के बर्तन, इतने पर भी अधिकांश परिवारों में इन बर्तनों को अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग में लाया जाता है, किसी-किसी परिवार में तो इन बर्तनों के अतिरिक्त अन्य बर्तनों में रख कर भोजन खाना भी पसन्द नहीं किया जाता। नारी गृह देवी होती है। पति का कार्य धन कमाकर पत्नी की सेवा में ला उपस्थित कर देना मात्र है। अतः यदि घर के कार्यों में यदि कोई विघ्न उपस्थित हो जाय तो वह गृहदेवी की ही कमजोरी मानी जायगी। अधिकांश यह देखा जाता है कि पति की इच्छा के प्रतिकूल लाई गई चीजों की टूट-फूट हो जाने पर घर ही गृमा का अखाड़ा बन जाता है। ऐसी अवस्था प्रायः टूटने-फूटने वाली चीजों के नष्ट जाने पर ही हुआ करती है, आज गृहणी ने अनेक प्रयासों से एक टी-सेट मंगवाया और कल ही एक-एक के दो कर दिये। फिर तो यह निश्चित ही है, कि पतिदेव अवश्य असन्तुष्ट हुए बिना न रहेंगे। पति-पत्नी के मध्य असन्तोष का होना ही घर में विनाश को आमंत्रण देना मात्र है। अतः यदि बहिनें अपने घरों को ऐसे कलहों से बचाना चाहती हैं तो उन्हें टूटने-फूटने सम्बन्धी कुछ भिन्न बातों पर ध्यान देना होगा तब देखें क्यों न उनके घर ही नन्दन कानन बन जांयगे।

१—अपने बच्चों से भूलकर भी आप कांच चीनी मिट्टी के बर्तन लाने ले जाने को न कहें।

२—इन बर्तनों को सदैव घर के अन्य बर्तनों (ताम्बे, पीतल) आदि से सदैव अलग ही रखिये, क्योंकि इनका साथ सांप-नेवले के समान है।

३—इनको सदैव ऐसे स्थानों पर रखिये जहाँ बच्चों के हाथ तथा बिल्ली की छलांग न पहुँच सके।

४—इनको प्रयोग में लाने के पश्चात् ही धोकर यथा-योग्य सुरक्षित स्थान पर रख दीजिए। जिससे ये इधर-उधर पड़े पैरों की ठोकरों के शिकार न हो जांय।

५—जहां तक हो सके चीनी मिट्टी और कांच के बर्तनों को बैठकर ही साफ कीजिए, जिससे यदि बर्तन हाथ से छूट भी जांय तो टूटने की सम्भावना कम रहे।

६—इन बर्तनों को इधर-उधर लाने ले जाने में कभी भी शीघ्रता न कीजिए धैर्य से काम लीजिए।

७—इनको सदैव सोडे और साबुन के गरम पानी से साफ कीजिए मिट्टी से नहीं।

८—याद रखिए जल्दी का काम शैतान का होता है, यदि आपने इनके साथ थोड़ी भी जल्दी की तो ये आप के साथ रियायत नहीं करेंगे।

बनाकर देखिए—

साबूदाने की खिचड़ी

सामान

साबूदाना आधा सेर, आलू एक पाव, घी एक छटांक, भुनी हुई मूंगफली के दाने एक छटांक, जीरा, नमक मिर्च, हल्दी, धनियां, हरीमिर्च, हरा धनियाँ अन्दाज से।

विधिः—

साबूदाने को आधा घण्टा पूर्व भिगो दें, आलू उबाल कर छील लें। कढ़ाई में घी डालकर चूल्हे पर चढ़ा दें। जब घी गुलाबी हो जाए तब उसमें जीरा डाल दें। जीरा लाल हो जाने पर उपरोक्त मशाले डालकर भून लें। आलू काट कर तथा साबूदाना निचोड़ कर डाल दें और उसे ढक दें। कुछ छींटे पानी के भी डाल दें। आंच धीमी ही रहनी चाहिए। कुछ देर पश्चात् जब वह गल जाय तब उसमें भुनी हुई मूंगफली पीसकर डाल दें और ढक दें। जब गल जाय तब हरा धनियां तथा हरी मिर्च कतर कर डाल कर उतार लें। बस फिर साबूदाने की स्वादिष्ट खिचड़ी बनकर तैयार है। गर्म-गर्म खाइए और खिलाइये।

केले की चटनी

सामान

एक दर्जन पक्के केले। एक पाव इमली, एक-एक गड्डी धनिए एवं पुनीदे की, नमक, भुजा हुआ जारा, हींग, लाल मिर्च, सूखा धनिया अन्दाज से एक पाव चीनी।

विधिः—

प्रथम इमली को धोकर पत्थर या कांच के बर्तन में भिगों दें। धनियां पुदीना आदि साफ करके चीनी के अतिरिक्त बाकी मसाले सिल पर बारीक पीस लें। इमली के भीग जाने पर खूब मलकर किसी पतले कपड़े से गाढ़-गाढ़ा छान लें तथा केले छील कर चाकू से काट कर इस चटनी में मिला दें, चटनी तैयार हो गई। केले के स्थान पर आम तथा लौकाट का भी प्रयोग हो सकता है।

—वीणा भारती

बाल-विनोद

पहेलियाँ

(१)

एक साल में आती हूँ।
आँधी पानी लाती हूँ॥

(२)

चलने से यदि नाता तोड़ूँ।
आगे बढ़ने से मुंह मोड़ूँ॥
पड़ पड़ पड़ने लगता कोड़ा।
समझ गये तुम थोड़-थोड़ा॥

(३)

काला मटका भूरा पानी।
जिसमें नांचे झरमर रानी॥

उत्तर—१ गर्मी, २ घोड़ा, ३ रई।

प्यारे बच्चो!
उठो सुबह, और करो नमस्ते।
नहाओ, खाओ बिस्कुट सस्ते॥
कपड़े, पहन सम्हालो बस्ते।
जल्दी चलो स्कूल के रस्ते॥
स्कूल में रक्खो सबसे प्यार।
रहो पढ़ने में हर दम तैयार॥
मत डोलो इधर-उधर बेकार।
कभी न खाओ चाट उधार॥

—मनोज

चुटकुले

एक व्यक्ति बिना ड्राइवर की एक लौरी को पहाड़ी रस्ते से धीरे-धीरे नीचे लुढ़कता देखकर उसके भयंकर परिणाम की आशंका से कांप उठा एवं ड्राइवर की जगह पर बैठकर उसने उसका ब्रेक लगा दिया। इतने में एक व्यक्ति आकर पहिले पर बिगड़ने लगा। जब पहिले व्यक्ति ने उसे उस खतरनाक परिस्थिति का बोध कराया तब वह खीज कर बोला "पर जनाब" मैं ही इस लौरी का ड्राइवर हूं, एवं इंजन की खराबी के कारण मैं ही इसे ढकेलता हुआ ले जा रहा था।

मोहन (अपने मित्र रमेश से) "आज हमने विद्यालय की संगीत प्रतियोगिता में इतना गाया कि सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और कहा कि हमने अब तक के सब गानों का रिकाड तोड़ दिया है।"

रमेश का सात वर्षीय छोटा भाई (आश्चर्य से) अरे सभी गानों के रिकार्ड तोड़ दिये इससे अच्छा तो हमें ही दे देते। हम उन्हें अपने ग्रामोंफान पर बजाते।

× × ×

अध्यापक (एक विद्यार्थी से) "बताओ इस ऐतिहासिक नाटक को लिखने का लेखक का क्या उद्देश्य है और उसे अपने उद्देश्य में कहाँ तक सफलता मिली है"?

विद्यार्थी—"जी, वैसे तो लेखक ने कई उद्देश्य से इस नाटक की रचना की है, किन्तु उसके लिखने का वास्तविक उद्देश्य है पैसा कमाना, क्योंकि लेखक बहुत निर्धन है, और उसे अपने इस उद्देश्य में आशा से भी अधिक सफलता मिली है।" —शीलाराज

सवारी किस पर?

बच्चो! सुनो एक अध्यापक प्रतिदिन एक गधे पर चढ़कर पाठशाला जाया करता था। एक दिन वह रोज की तरह गधे पर चढ़ा जा रहा था, कि सहसा गधे ने उससे प्रश्न किया "क्यों जी आप प्रतिदिन पाठशाला में क्या करने जाते हैं?"

अध्यापक बोला—"मैं बच्चों को विद्या पढ़ाने जाता हूं।"

गधे ने प्रश्न किया विद्या पढ़ने से क्या है?"

अध्यापक ने कहा विद्या पढ़ने से अकल आती है। गधा कहने लगा "मास्टर जी! तो फिर मुझे भी कुछ विद्या पढ़ा दीजिए न।

अध्यापक ने हंसते हुए शीश हिलाकर कहा यह नहीं हो सकता है। यदि मैंने तुम्हें विद्या पढ़ा दी तो फिर मैं सवारी किस पर करूंगा?"

—मंजु

नोट—मित्र वाटिका के सदस्य गण शिष्ट हास्य एवं विनोद पूर्ण चुटकुले, पहेलियाँ अथवा कविता कहानी आदि मौलिक रचनाएं 'मित्र वाटिका' में प्रकाशनार्थ भेजना चाहें भेज सकते है। सहर्ष स्वीकार की जायेंगी। —दादा

स्वास्थ्य-सुधा

शीत ऋतु में टमाटर

(श्री डा० प्रेमदत्त शर्मा शास्त्री, आर्य नगर, फीरोजाबाद)

शरद हेमन्त और शिशिर में बहुतायत से प्राप्त होने वाला फल और शब्जी दोनों के गुणों को छिपाये हुए टमाटर लाभकारी है। इसमें फलों की भाँति ए० बी० सी० भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। ये खाने में खट्टे शक्ति वर्धक अग्नि दीपक पाचक, रुचिवर्धक और क्षुधा को बढ़ाने वाले होते है।

इनका सेवन शरीर की स्थूलता, उदररोग, अतिसार अन्त्रपुच्छदाह, अंकुशरोग, बेरी बेरी, एक्जिमा, बच्चों के सूखा रोग के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है।

टमाटर में प्राप्त होने वाले पोषक तत्वों में १२ भाग चिकनाई २ भाग कार्बोज, ५ भाग खनिज पदार्थ और ६१ भाग जल होता है, इसकी आधा पाव की मात्रा मे प्रोटीन ४, वसा ४, भाग कार्वोहाईटेक्ट १८ कैलारी होती है। २६८ मे न चूना ·००७२ लोह होता है। इसमे ४, ६ प्रतिशत पलकली की प्रधानता होती है, साइट्रिक और सैलिक एसिड लगभग ०.५ प्रतिशत तथा आक्जेलिक एसिड केवल ०.५ भाग १०,००० मे उपस्थित हैं।

टमाटर सदा बड़ा रसदार, और पका हुआ खाना चाहिए, छोटे टमाटर उतने लाभकारी नहीं हैं। खाने मे टमाटर का प्रयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है। कुछ लोग कच्चे टमाटरों को तेल और सिरके के साथ खाना पसन्द करते हैं, कुछ लोग नमक मिर्च के साथ, कुछ लोग शकर के साथ खाने मे पसन्द करते हे। कुछ सलाद चटनी बनाकर प्रयाग करते हैं। इन विधियों मे से टमाटर किसी भी विधि से खाया जाय सदा इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इन मसालों की मात्रा इतनी न हो कि टमाटर का स्वाद तथा वास्तविक गुण नष्ट हो जाय। सब्जी बनाने मे टमाटर को विशेष उबालने पर भी गुणों मे न्यूनता आती है।

टमाटर सुगमता से उत्पन्न किये जा सकते हे। इनकी देखभाल की विशेष आवश्यकता नहीं होता। छोटी-छोटी क्यारियों म तथा गमलो मे भी उगाकर यह फल ताजा प्रयाग किया जा सकता है।

टमाटर और अंकुश रोग

अंकुश रोग विटामिन सी, के अभाव से होता है। बालकों में इस रोग के लक्षण, पीलापन, शरीर की वृद्धि का रुकना, भूख का अभाव, वजन की कमी मसूड़ों का लाल होना गले में सूजन और कूजन की आवाज होना चेहरे पर घबराहट तथा कालिमा छा जाना आदि लक्षण उत्पन्न होते हैं। बड़े लोगों में जब यह रोग होता है, तो स्फूर्ति का अभाव, सूखा उदास चेहरा, रक्त बहाने वाले मसूड़े अल्पश्वास, पैरों में पीड़ा, त्वचा पर धब्बे प्रतीत होते हैं टमाटर इस रोग का सबसे सस्ता और अच्छा इलाज है, बड़ी आयु के व्यक्ति ४ से ६ औंस तक नित्य टमाटर का प्रयोग कच्चा या उबाल कर करें, इसमें प्राप्त विटामिन सी० किसी भी हालत में नष्ट नहीं होता। बच्चों को दिन में ३ औंस रस ४ बार देना चाहिए। ३ सप्ताह नित्य प्रयोग करने से स्कर्वी (अंकुश रोग) रोग नहीं रहता, प्रथम ३ दिनों मे बच्चों को इसका रस पिलाने से कुछ ज्वर हो जाता है, जिसकी बिना चिन्ता किये ही इसे पिलाना चाहिए।

उदर रोग और अतिसार

टमाटर के बीज और छिलकों मे इस प्रकार का गुण है कि वह फुजले का काम देते ह। क्षारीय तत्वों के कारण उदर मे होने वाली आम, जलन दर्द ऐंठन होने पर उसके रस को गुनगुना बिना छना पीने पर लाभ होता है। अकुश कृमि या पेट में अन्य प्रकार के जीवाणु होने पर इसके प्रयोग से नष्ट हो जाते हैं।

प्रात:काल बिना कुछ खाये टमाटर खाने से क्षुधा वृद्धि और भोजन में रुचि बढ़ती है।

अन्त्र पुच्छ दाह

इस रोग में रोगी बेचैन हो जाता है। उदर शूल से घबड़ाता है, और रोता है। यह रोग बड़ी छोटी आंतों के बीच में सीधी और निकले हुए आँत के टुकड़े मे शाक सब्जियो के बीज चले जाने पर होता है। इस रोग की बेचैनी में टमाटर का रस छान कर देना चाहिए, विशेष लाभकारी है। स्फूर्ति और ताकत के साथ एट्रिक एसिड के गुण के कारण अन्त्र पुच्छ मे गये हुए दाने को गला देता है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

विदेशियों को हटाकर यहाँ के योग्य आदमियों को राज्य सौंप दिया है। यदि ये भी अयोग्य सिद्ध होंगे तो पुनः ईश्वर किसी अन्य योग्य को सौंप देगा। यह उसका निश्चित विधान है।

१३—रहा आयु का प्रश्न। आयु जीव का अपने शरीर और भोग की सामग्री के साथ जितने काल तक सम्बन्ध बना रहता है, उसको बताने वाली एक उदासीन वस्तु है। यह पाप पुण्य या सुख दुःख में न निमित्त कारण है और न उपादान कारण। यह केवल साधारण कारण है। मुख्य तो हैं क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध-कर्म और ये तीनों ही अपने-अपने स्थान पर क्रमबद्ध फल की मात्रा के पैमाने हैं। इन्हीं मात्राओं के आधार पर सुख दुःख मिलता है न कम न ज्यादा ऐसा ही वेद में लिखा है:—

न किल्विषमत्र नाधारोऽस्ति न यन्मित्रैः सममान एति। अनूनं पात्र निहित न एतत् पक्तारं पक्वः पुनरा-विशाति॥ अथर्व—१२ ३·४८॥

अर्थ—परमात्मा के राज्य में कोई अन्यान नहीं, न वहाँ किसी की सिफारिश चलती है, न मित्र कोई सहायता कर सकते हैं। वहाँ तो पूर्ण न्याय है, जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा।

टमाटर और पाण्डु रोग

इस रोग मे जिगर अपना कार्य करना छोड़ देता है, जिससे रक्त बनना बन्द हो जाता है। भूख की रुचि नहीं होती, इसमे टमाटर का रस नमक और सिरके के साथ प्रयोग करने से जिगर अपना कार्य करना प्रारम्भ कर देता है बच्चों मे सूखा रोग भी जिगर के कार्य न करने से ही होता है। बच्चों को इसका स्वास देना चाहिये।

शराब पीने से शरीर में उत्पन्न होने वाला टाक्सिन टमाटर के ठण्डे रस के अधिक मात्रा में प्रयोग करने से नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार इसके प्रयोग से नेत्र रोग त्वचा के रोग मधुमेह, प्रमेह, प्रदर रोग नष्ट होते हैं

विभिन्न चिकित्सकों का मत है कि समस्त भोजनों से अधिक विटामिन टमाटरों में होते हैं, समस्त तरकारियों से अधिक खटाई (स्वास्थ्यप्रद) टमाटरों में होती है। जो प्रदर के अवयवों को ठीक प्रकार से बनाये रखती है, अब टमाटर का प्रयोग अवश्य कीजिए।

प्रजातन्त्र के राजकर्मचारी

प्रजातन्त्र प्रणाली के अन्तर्गत सरकारी कर्मचारियों को निष्पक्ष हो राजनीति से अलग रह कर काम करना चाहिये। लोगों की उन तक पहुँच होनी चाहिये और उन्हें भी उनकी बातों पर ध्यान देना चाहिए। ताकि जनता यह अनुभव कर सके कि सरकारी अधिकारी यह अनुभव करते हैं, कि अन्त में जनता ही वास्तव में मालिक है।

सार्वजनिक प्रशासन गोष्ठी नई दिल्ली ४ जनवरी ५६ — पं० पन्त गृह मन्त्री भारत

जन-सेवा तथा देश-भक्ति के भाव बढ़ावें

यह आवश्यक है कि लोगों को स्वार्थ का त्याग कर देश के हित में काम तथा राष्ट्र कल्याण के निमित्त त्याग करना चाहिए। देश-निर्माण के लिए लोगों मे उत्साह क्यों नहीं है? यदि जर्मनी या जापान जाओ, आप को वहाँ के लोगों में यह उत्साह मिलेगा, उन्होंने अपने देश को समृद्ध बना दिया है, फिर हम में किस बात की न्यूनता है?

वास्तव मे जन-सेवा तथा देश-भक्ति की भावना की कमी है। हम अपने स्वार्थों की पूर्ति में लग जाते हैं। उसकी पूर्ति के बाद, हम दूसरों की चिन्ता नहीं करते हैं। सेवा की भावना हम मे होनी चाहिए।

विपिनचन्द्र पाल जन्मशताब्दी समारोह कलकत्ता २६ दि०५८ — डा०राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति भारत

सभ्यता का अस्तित्व और कानून

यह स्पष्ट है कि जब तक कोई समाज कानून के शासन में नहीं रहेगा, तब तक उसकी प्रवृत्ति कानून विरोधी कार्यों की ओर अग्रसर होती रहेंगी। देश में किसी भी कानून का न होना अराजकता को निमन्त्रण देना है। कानून का शासन रखने का ध्येय भी सभ्यता के अस्तित्व को बनाये रखने का समानार्थक है। यह भी स्पष्ट है कि यदि कानून का शासन स्थापित करना है तो उस कानून को पालन करने वाले न्यायाधीश स्वतन्त्र होने चाहिये। अन्यथा कानून का प्रयोग कानून को पालन के लिए न होकर अन्य प्रयोजनों के लिए होगा।

आ०रा०विधि परिषद नई दिल्ली — प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू

सभा की सूचनाएँ

उपदेश विभाग की सूचना

सभी उपदेशकों की सेवा में पत्र भेजे जा चुके हैं जिनके पास न पहुँचे हों वे कृपया निम्न बातों का ध्यान रक्खें।

१—मार्च में हीरक जयन्ती "आर्य मित्र" गुरु विरजानन्द धाम उद्घाटन तथा अभिनन्दन समारोह के बारे में स्थान स्थान पर प्रचार करें, आर्य भाइयों को महा पर्व पर मथुरा पहुँच कर उत्सव को सफल बनाने की प्रेरणा दें।

२—समारोह को सफल बनाने के लिये सभा से छपे हुए नोटों की कापियां मंगवा कर उनकी बिक्री करें, इस समाचार को पढ़ते ही लिखें कि कितने नोट आपको भेजे जावें। नोट आठ आने से लेकर १०) दस रुपिया तक के हैं।

३—प्रति मास समाजों में जावें उन्हें सुसंगठित करें, उनका चुनाव करावें दशांश एवं अन्य सभा प्राप्तव्य धन सभा को भिजवायें, आर्यमित्र के ग्राहक बनावें उनका रुपया भिजवावें इस प्रकार यदि आप लाग प्रयत्न करें और प्रत्येक प्रचारक यत्न करके यदि एक मास में ५ ग्राहक भी बनावें तो एक वर्ष मे ६० ग्राहक बना सकेंगे और समस्त उपदेशकों व प्रचारकों द्वारा इसी वर्ष एक हजार ग्राहक बन सकते हैं। अतः इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

४—सभा के पास विश्वविद्यालय गुरुकुल वृन्दावन जैसा संस्था है और अपने प्रान्त मे संस्कृत विद्या मे आस्था रखने वाले महानुभाव भी है आपका कर्त्तव्य है कि वहाँ के लिये प्रयत्न करके कम से कम इस वर्ष २ विद्यार्थी अवश्य भिजवाये। अब भविष्य में हिंदी एवं संस्कृत का महत्त्व बढ़ने वाला है और संस्कृत की परीक्षाओं को सरकार ने अङ्गरेजी की परीक्षाओं के बराबर मान लिया है।

५—घासीराम प्रकाशन विभाग की पुस्तकें भी बेचने का प्रयत्न करें उसमें नियमानुसार आपको कमीशन दिया जायगा। यदि आप चाहें तो आपको आपके प्राप्तव्य धन मे किताबें भी दी जा सकेंगी।

६—सभा का वर्ष समाप्त हो गया है अपना मार्ग व्यय एवं डायरी आदि २० जनवरी तक अवश्य भेज दें ताकि सभा खर्च किया जा सके।

७—कृपया ऐसा प्रयत्न इन ४ माहों मे हो कि आपका प्राप्तव्य धन शीघ्र ही पूरा हो जाय।

शोक प्रस्ताव

अन्तरङ्ग सभा दि० २४।१२।५८ द्वारा स्वीकृत।

१—सभा श्री प्रधान जी की आज्ञा से विशेष रूप से निम्नलिखित शोक प्रस्ताव प्रस्तुत होकर जिसे सब सदस्यों ने खड़े होकर स्वीकार किया।

अन्तरङ्ग सभा का यह साधारण अधिवेशन आर्य समाज बम्बई एव आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान श्रीयुत पं० विजयशंकर जी, धर्मपत्नी श्री खोबरन सिंह जी प्रधान आर्य समाज सौंधरा (मैनपुरी), श्री पं० ताराचन्द जी मथुरा, आर्य विद्या सभा काशी के मन्त्री एवं सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री विश्वनाथ प्रसाद जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गणेशप्रसाद जी वाराणसी के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करता हुआ परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति और शोकातुर परिवारों को धैर्य प्रदान करे।

—फूलनसिंह
सभा मंत्री

सूचना

नगर आर्य समाज आगरा का वार्षिकोत्सव दि० ६, ७, ८, ९ अप्रैल सन् १९५९ में होगा।

श्री श्यामसुन्दर आर्य्य राजामंडी आगरा के पुत्र चि० बलवीरसिंह एम० कॉम का विवाह दि० १३।१२।५८ शनिवार को बदायूं निवासी श्री रामस्वरूप जी सराफ की पुत्री कुमारी पुष्पा के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ संस्कार श्री पं० सत्येन्द्रनाथ जी आयुर्वेदाचार्य ने कराया १०१) दान विविध संस्थाओं को दिया गया।

—मोहनलाल आर्य,प्रधान

आर्य समाज बैंकाक

बैंकाक [थाईलैन्ड] आर्य समाज का वृहदधिवेशन २१ दिसम्बर १९५८ ई० रविवार को ३ बजे से ५ बजे तक स्थानीय आर्य्य समाज में सम्पन्न हुआ। सन् १९५९ ई० के लिये निम्नलिखित नवीन पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित कर लिये गये।

प्रधान—श्री बाबूलाल सिंह आर्य
उ० प्रधान—श्री सुन्दरचन्द जी
मंत्री—श्री सहदेव सिंह जी
उपमंत्री—श्री सीताराम आर्य जी
कोषा०—श्री ब्रजनाथ राय जी
पुस्तका०—श्री राम विलाश शाह
निरीक्षक—श्री लक्ष्मीनारायण द्विवेदी बी० ए०

प्रचार

एक नवीन समाज गहलुइया की की स्थापना की गई तथा दो प्रचारक श्री कृपाराम धनुर्धर व श्री बल्देवसिंह जी उप सभा रामपुर की ओर से प्रचार कर रहे हैं जो समाजें बुलावें निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

—कन्हैयालाल मुमुक्षु सि० शास्त्री
मन्त्री उप सभा रामपुर
ग्राम खलीमपुर बिरन्
पो० मिलक [रामपुर]

(पृष्ठ ९ का शेष)

संभाले रहें और सेवा कार्य करने से जो अवकाश मिले उसे स्वाध्याय और सत्संग में लगावें। शासकीय सेवा से निवृत्त होने पर अपना अनुभवी जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में लगाने हेतु अभी से उसकी तैयारी आरम्भ कर दें।

वैदिक वाङ्मय इतना विस्तृत है कि एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों मे भी उसका यथेष्ट अनुशीलन अशक्य है। इहलोकिक और पारलोकिक समृद्धि प्राप्त कराने वाले उपायों से वह इतना भरपूर है कि जिज्ञासु को अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त इस समय संसार की और विशेष रूप से हमारे इस अभागे देश भारत की अवस्था इतनी शोचनीय है कि इसके सुधारने म जितने अधिक योग्य अनुभवी और निःस्वार्थी पुरुष अपना सहयोग दे सके थोड़ा है।

शासकीय सेवा से निवृत्त,
आठवें वर्ष मे प्रविष्ट
एक आर्य समाजी

श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी का स्वर्गवास

[मित्र परिवार श्रद्धेय स्वामी जी के वियोग में दु खी है और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है। स्वामी जी का अभाव आर्य समाज की क्षति है। —सम्पादक

वैदिक साधन आश्रम तथा दयानन्दोपदेशक विद्यालय यमुनानगर की ओर से एक शोक सभा हुई जिसमें श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज के ११ जनवरी को आकस्मिक निधन पर शोक प्रकाशित किया गया, जगन्नियन्ता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करे, उनके अभाव में आर्यसमाज के कार्य को बहुत क्षति पहुँची है। यहाँ आश्रम में आपका मुख्य स्थान था तथा उपदेशक विद्यालय के अधिष्ठाता भी रह चुके थे। अपनी अधिष्ठातृत्त्व पद को उन्होने अति दृढ़ता से निभाया था, जो चिर स्मरणीय रहेगा।

आचार्य
वेद वागीश वेदानन्द शास्त्री

सार्वदेशिक सभा की परीक्षाओं का परिणाम

भाद्रपद २०१५ विक्रमी को सम्पन्न हुई आर्य सिद्धान्त विशारद, भूषण, रत्न परीक्षाओं का परिणाम नीचे दिया जा रहा है। परिणाम प्रकाशन में यथासम्भव सावधानी बरती गयी है, परन्तु किसी भूल का दायित्व हम पर नहीं है। आवश्यक जानकारी के लिये परीक्षा कार्यालय से ही पत्र व्यवहार करना चाहिये।

—सम्पादक

"आर्य सिद्धान्त विशारद"

प्रथम श्रेणी—४०

क्रमांक—२, २४, ३०, ३४, १३२, ३६, ३७, ३९, ४०, ४१, ४३, ४४,४६, ७७, ८६, ९४, ९७, २०६, ११, १२, १३, १४, १५, ३९, ४३, ४४, ५४, ५८, ५९, ६२, ६३, ६५, ६६, ७०, ७८, ७९, ८८, ९०, ३०३, ४

द्वितीय श्रेणी—८४

क्रमांक—१२, २६, २७, २८, ३१, ३३, ३७, ३९, ८१, १०६, ३३, ४५, ४७, ५२, ५८, ५९, ६२, ६३,६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८५, ८७, ८८, ९१, ९२, ९३, ९५, ९६, ९८, २००, १, २, ३, ५, ८, २२, २४, २७, २८, ३४, ३५, ३६, ३८, ४१, ४५, ४६, ४८, ५०, ५३, ५५, ५६, ६०, ६१, ६४, ६८, ७०, ७२, ७३, ७४, ८०, ८१, ८३, ८४, ८५, ८९, ९६, ९७, ९८, ९९,

तृतीय श्रेणी—६२

क्रमांक—१, ३, ४, ६, ९, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १९, २०, १०८, ११, १२, १५, १६, २०, २१, २६, २८, ३१, ४२, ४८, ४९, ५०, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ७१, ८४, ९०, ९९, २०४, ६, १८, १९, २१, २३, २५, २६, २९, ३१, ३२ ३३, ३७, ४०, ४२, ४७ ४९, ५७, ६७, ६९, ८२, ९२, ९३, ९४, ९५, ३००

इस परीक्षा मे अमृतलाल फीरोजपुर रो० न० १४१ तथा मजु देहली रो० न० २९० ने ८८/१०० अङ्क प्राप्त करके प्रथम स्थान ग्रहण किया।

"आर्य सिद्धान्त भूषण"

प्रथम श्रेणी—१

क्रमांक—१

द्वितीय श्रेणी—५

क्रमांक—४, ५, ७, १८, २०

तृतीय श्रेणी—८

क्रमांक—१, २, ३, ८, १०, ११, १२, १६

इस परीक्षा मे सर्वप्रथम स्थान आनन्दस्वरूप भिक्षुक ने प्राप्त किया।

कुल नम्बर १३५/२००

"आर्य सिद्धान्त रत्न"

प्रथम श्रेणी—१

क्रमांक—६

सार्वदेशिक सभा की परीक्षाएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा सचालित आर्य सिद्धान्त विशारद, आर्य सिद्धान्त भूषण और आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षायें बसन्त पचमी स० २०१५ वि० (१२ फरवरी १९५९ ई०) से होंगी। नियमावली तथा पाठ विधि पहले भेजी जा चुकी है, वही रहेगी। परीक्षा शुल्क कम कर दिया गया है—अब विशारद का ५० नये पैसे, भूषण का १) रु० तथा रत्न का २)रु० शुल्क रखा है, जिससे अधिक जन लाभ उठा सकें।

समस्त आर्य समाजों और आर्य विद्यालयो से प्रार्थना है कि वे केन्द्र स्थापित कर अधिक से अधिक परीक्षार्थियो के फार्म शुल्क सहित १५जनवरी १९५९ई० से पहले ही नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करे।

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०,
मन्त्री, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा,
रायबरेली उ० प्र०

द्वितीय श्रेणी—१०

क्रमांक—१, ३, ७ ८, ९, १०, ११, १२, १४, १६

तृतीय श्रेणी—२

क्रमांक—४, १५

इस परीक्षा में सर्वप्रथम खुशीराम आर्य जीन्द रहे। उन्होने १८४/३०० अङ्क प्राप्त किये।

समस्त परीक्षाओं में अमृतलाल फीरोजपुर तथा मजु देहली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इनके अङ्क ८८ प्रतिशत हैं।

वीरेन्द्र शास्त्री, मन्त्री
सार्वदेशिक, विद्यार्य सभा, देहली

आर्य नेताओं की टंकारा की स्मरणीय यात्रा

श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री, उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का बम्बई प्रान्त का सफल भ्रमण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान श्री प० अलगूराय जी शास्त्री दि० २४ १२ ५८ को बम्बई प्रान्त के भ्रमण पर, दिल्ली से रवाना हुए थे। उनके साथ श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०, उप मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल भी थे। मार्ग में बयाना, सवाई माधोपुर गगापुर सिटी, कोटा, रतलाम, बडौदा, आनन्द, राजकोट आदि रेलवे स्टेशनों पर आर्य जनों ने बहु सख्या मे एकत्र होकर श्री शास्त्री जी का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। श्री शास्त्रीजी २६ १२ ५८ को टकारा पहुचे। उसी दिन सायकाल को श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री प० अलगूराय जी शास्त्री के वृहत् सार्वजनिक सभा में भाषण हुए। इसी अवसर पर टकारा मे बम्बई प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य सम्मेलन की योजना की गई थी जिसमें गुजरात महाराष्ट्र आन्ध्र, आदि प्रान्तो के आर्य भाई सम्मिलित हुए थे। दिनाक २७ दि० को टकारा में नगर कीर्त्तन निकला और आर्य जन महर्षि दयानन्द के जन्म गृह को देखने गये। श्री शास्त्री जी उनके साथ थे। उसी दिन आर्यों की एक विराट सभा मे इस आशय का निश्चय हुआ कि महर्षि दयानन्द को जिस शिव मन्दिर मे बोध हुआ था, उसे राष्ट्रिय स्मारक का रूप दिलाया जाय और इसके लिए राज्य को प्रेरणा की जाय। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की ओर से स्थापित होने वाला महर्षि दयानन्द का स्मारक सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में ही स्थापित होना चाहिये। तथा एक उपदेशक महा विद्यालय और वैदिक अनुसन्धानशाला इस स्मारक के प्रमुख अग होने चाहिये।

टकारा में उपस्थित बम्बई प्रान्त के प्रमुख प्रमुख आर्य कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी मे प्रान्त में आर्यसमाज की प्रगति के सम्बन्ध में परस्पर विचार विमर्श हुआ। टकारा में श्री शास्त्री जी के कई व्याख्यान हुए, जिन्हे सुनकर जनता बड़ी प्रभावित हुई। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री तथा श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी के भी व्याख्यान व प्रवचन हुए। २८ दिसम्बर को मोरवी मे श्री शास्त्री जी तथा श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री के एक विराट सार्वजनिक सभा मे बड़े प्रभावशाली भाषण हुये।

मोरवी से २९ दिसम्बर को चलकर श्री शास्त्री जी ३० को बम्बई पहुँचे। वहाँ के आर्य जनो ने जो स्वागत किया वह एक चिरस्मरणीय घटना है। श्री शास्त्री जी आर्यसमाज काकड़वाडी में ठहरे थे। बहुत समय से आर्यसमाज माटुंगा तथा आर्यसमाज काकड़वाडी के सदस्यो का पारस्परिक वैमनस्य चला आ रहा था। बम्बई के आर्य जनो ने श्री शास्त्री जी की उपस्थिति से लाभ उठाकर इस वैमनस्य को शमन करने का यत्न किया,जिसमें सफलता की पूरी आशा है और इसी सम्बन्ध मे श्री शास्त्री जी पुन १२ जनवरी को बम्बई जा रहे हैं। इस अवसर पर भी श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी श्री शास्त्री जी के साथ जायेगे।

इस प्रकार श्री शास्त्री जी का यह प्रथम भ्रमण प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। श्री शास्त्री जी ने आर्यसमाज और अभी हाल मे हिन्दी आन्दोलन के प्रति जो सेवाए की हैं, उनके प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करने के लिए आर्य जनता बड़ी उत्सुक एव आतुर रहती है। इस भ्रमण मे जनता को भी शास्त्री जी का सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान के रूप मे स्वागत करने और उनका मार्ग प्रदर्शन प्राप्त करने का अवसर मिला, यह बडे सौभाग्य की बात है। श्री शास्त्री जी का शीघ्र ही अन्य प्रान्तों के भ्रमण का भी प्रोग्राम बनाया जायगा।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
माघ ५ शक १८८०(२५ जनवरी ५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य . ४६६१ तार : 'आर्यमित्र'
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

नवीनतम आकर्षण

आर्यमित्र हीरक जयन्ती अंक

प्रकाशन तिथि—आगामी बोध रात्रि ८ मार्च १९५९

हिन्दी के प्राचीनतम सांस्कृतिक सामाजिक राष्ट्रीय एवं साहित्यिक साप्ताहिक पत्र आर्यमित्र की

साठ वर्षीय सेवाओं का उज्ज्वल इतिहास

हिन्दी पत्रकारिता की अमूल्य धरोहर होगा

वैदिक सिद्धांतों की व्याख्या, सामाजिक, सांस्कृतिक रूढ़ियों पर कुठाराघात, राष्ट्र-नवनिर्माण, विश्व-शान्ति नैतिक उत्थान, आदर्श पत्रकारिता, राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति, विश्व बन्धुत्व, मानव-संस्कृति, मानव और आदर्श शासन व्यवस्था, भौतिकवाद का अभिशाप, विज्ञान और मानवता का समन्वय, आदि उच्चकोटि के लेखों रचनाओं समीक्षाओं से परिपूर्ण विशेषाङ्क—

संग्रहणीय और स्मरणीय होगा

सैकड़ों पृष्ठों के इस सचित्र विशेषांक का मूल्य बहुत ही कम पर विशेषांक अमूल्य होगा

३१ जनवरी५९से पूर्व आगामी वर्ष के एक वर्ष के लिए ग्राहक बनने वालों को विशेषाङ्क हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में बिना मूल्य भेंट किया जायगा।

विज्ञापनदाता अभी से अपना स्थान सुरक्षित करालें अन्यथा पछताना पड़ेगा

देश-विदेश में विज्ञापन के लिए एकमात्र साधन "आर्यमित्र"

हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में आपकी विशेष सेवाओं के लिए प्रस्तुत है

आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति, ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

१८९८

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे

लखनऊ, रविवार, माघ १२, शक १८८०, माघ कृ० ८, वि० २०१५
१ फरवरी, १९५९ ई०

विदेश में १५शिलिंग

सार्वदेशिक सभा द्वारा जयन्ती योजना का समर्थन

आर्य जनता से श्री लाला रामगोपाल जी प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक सभा की अपील

प्रत्येक आर्य समाज और प्रदेशीय सभा समारोह की सफलता में योग दे

सार्वदेशिक सभा समारोह सफल बनाने में पूरा योग देगी

सभा ने जयन्ती योजना का समर्थन करते हुए आर्य जनता के नाम निम्न अपील प्रसारित की है

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इस वर्ष मथुरा में 'आर्य्य मित्र' की हीरक जयन्ती मनाने का निश्चय किया है। इस अवसर पर श्रीयुत प० गंगाप्रसाद उपाध्याय और श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज का भी अभिनन्दन किया जायगा और मथुरा की पुण्य नगरी में गुरुवर 'विरजानन्द स्मारक' की आधार शिला रखी जायगी। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इन आयोजनों की सफलता के लिए समस्त भारत की आर्य जनता से प्रत्येक प्रकार के सहयोग की अपील की है। हम इस अपील का हार्दिक समर्थन करते हैं और आशा करते हैं कि आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश को जनता का यथेष्ट सहयोग प्राप्त होगा।

'आर्यमित्र' समूचे आर्य जगत् का बहुत पुराना और लोक-प्रिय पत्र है। सौभाग्य से वह अपने जीवन के ६० वर्ष पूरे कर रहा है। आर्य-जगत् में उसकी सेवाओं को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। हमारी कामना है कि वह पत्र दीर्घ जीवन प्राप्त करे, और उसकी लोक-प्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़े। 'आर्यमित्र' के व्यवस्थापकों की [illegible] है कि अब-भी तक उसके कम [illegible] ५००० ग्राहक बन जायें।

इस अवसर पर 'आर्यमित्र' का हीरक जयन्ती विशेषांक भी प्रकाशित होगा। उसे सामग्री आदि की दृष्टि से श्रेष्ठ बनाए जाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

श्रीयुत प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० और श्री प० गंगा प्रसाद जी रि० चीफ जज दोनों ही उस अभिनन्दन के अधिकारी हैं। जिसकी योजना आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश कर रही है। दोनों महानुभाव वर्षों पर्यन्त आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा के उच्चाधिकारी रहे हैं। दोनों ने ही "फाउन्टेनहेड आव रिलीजन" और 'फिलासफी आव् दयानन्द" आदि अपनी अमर कृतियों से आर्य समाज के साहित्य को समृद्ध बनाया है। उपाध्याय जी ने आर्य समाज को इतना अधिक उत्तम साहित्य प्रदान किया है कि जिसकी प्रशंसा में जितना अधिक लिखा जाय उतना ही थोड़ा है।

यह उचित ही है समस्त आर्य जगत अपनी आदर भावना को सार्वजनिक रूप से व्यक्त करके कृतज्ञता के इस भार को कुछ हल्का करने में समर्थ बने। प्रत्येक प्रदेशीय सभा के अधिकारियों और विशिष्ट प्रतिनिधियों को अभिनन्दन समारोह में भाग लेकर अपने अपने प्रदेश की ओर से श्रद्धांजलि प्रस्तुत करनी चाहिए। अभिनन्दन समारोह को सफल बनाने में सार्वदेशिक सभा पूरा योग देगी। इस अवसर पर दोनों महानुभावों की सेवा में अभिनन्दन ग्रन्थ और अभिनन्दन पत्र भी भेंट किये जायगे।

गुरुवर विरजानन्द की पाठशाला की भूमि प्राप्त करने का यत्न मथुरा शताब्दि के समय से ही हो रहा था परन्तु अनेक अपरिहार्य्य कारणों से यह यत्न विफल होता रहा। अन्त मे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा के संयुक्त प्रयत्न के फलस्वरूप वह भूमि प्राप्त हो गई। भूमि की प्राप्ति में भूमि के स्वामियों के द्वारा जो बाधाएं उपस्थित की गईं और जो कानूनी दाव पेंच खेले गए उनका इतिहास बड़ा लम्बा है। प्रसन्नता है कि इस भूमि के प्राप्त हो जाने से आर्य-जगत् का शिर ऊंचा उठ गया है। मथुरा शताब्दि के पुनीत अवसर पर श्रीयुत टी० एल० वास्वानी ने महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए अपनी पुस्तक 'टार्च बीअरर' में ये उद्गार प्रकट किये थे —

"आर्य समाज कब उस भूमि को प्राप्त करेगा, जहां कि पूर्व के दो ऋषियों ने तपस्या और ईश्वराधना को और संसार को वैदिक ज्ञान के सूर्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई थी।"

अब आर्य समाज ने साधु टी० एल० वास्वानी जैसे ऋषि के प्रशंसकों के इस स्वप्न को पूरा कर दिखाया है।

आर्य जगत् को उपयुक्त स्मारक स्थापित करके उस महान् ऋण से भी उऋण होना है, जो उस पर पूर्व के इन दो ऋषियों का है। वृहद् यज्ञ शाला, सार्वजनिक वाचनालय एवं पुस्तकालय, वैदिक अनुसंधान शाला और स्वाध्याय सदन आदि विभागों की स्थापना इस स्मारक की आयोजना निर्दिष्ट की गई है। इन सब के लिए लाखों रुपयों की आवश्यकता होगी। विश्वास है कि जनता इस कार्य के लिए भी दिल खोलकर धन देगी। महर्षि विरजानन्द के जीवित स्मारक तो उपकृत प्रजा के हृदयों में बने हुए हैं। उनके इन स्थूल स्मारकों की श्रेष्ठता और भव्यता ही हृदय में बने हुए स्मारकों की सच्ची भव्यता की कसौटी होगी। यह बात प्रत्येक आर्य नर-नारी पर अंकित रहनी चाहिए। आशा है आर्य जनता इस कार्य में सहयोग देकर अपने कर्तव्य का पालन करेगी।

सम्पादक—
स्नातक उमेशचन्द्र एम. ए.

अङ्क ५

आर्य-जगत् के सन्त

स्वर्गीय स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज एक श्रद्धांजलि

[श्री नरदेव स्नातक एम० पी० मुख्याधिष्ठाता गु० कु० वि० वि० वृन्दावन]

आर्य जगत् के तपस्वी साधकों का वियोग महान् क्षति के रूप में बढ़ता जा रहा है। ११ जनवरी को आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी का ८९ वर्ष की आयु में अबोहर आर्य समाज में स्वर्गवास हो गया। इस समाचार से सारा आर्य-जगत् दुखी है। जिन क्षेत्रों और संस्थाओं में उन्होंने कार्य किया, उसका संक्षिप्त परिचय इस लेख में स्नातक जी ने दिया है। मित्र परिवार की ओर से स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम उनके सुपुत्र श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक एवं उनके परिवारिकों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। —सम्पादक

आर्य जगत् में यह समाचार अत्यन्त खेद के साथ पढ़ा जायगा कि इस ११ ता० को आर्यसमाज अबोहर जिला फिरोजपुर (पंजाब) में आर्य समाज के वीतराग संन्यासी स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी सरस्वती-पूर्व नाम पं० गंगादत्त शर्मा का देहावसान ८९ वर्ष की अवस्था में हो गया। मृत्यु से कुछ मास पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रार्थना पर वे वैदिक साधना आश्रम जमना नगर से चलकर विभिन्न स्थानों पर धर्म प्रचार करते हुए लुधियाना आर्य समाज में ठहरे हुए थे, जहाँ कि ३० नवम्बर को बिजली की तार के लपेट में आ जाने के कारण वे मृत्यु के मुख से बाल बाल बचे थे। और जैसे तैसे अबोहर पहुँचकर धर्म प्रचार का कार्यक्रम चलाने लगे। पर विधता को कुछ अन्यथा ही करना था। तब से ही उनकी निर्बलता शनैः शनैः बढ़ने लगी और अन्त में इस नश्वर शरीर को आर्य समाज की सेवा करते हुए उन्होंने त्याग दिया। मृत्यु के समय उनके आस-पास कोई पारिवारिक जन नहीं था। तार द्वारा उनकी एकमात्र सन्तान श्री ब्रह्मदत्त स्नातक शिरोमणि, एम० ए० को उनकी मृत्यु की सूचना दे दी गयी। उनके पुत्र भारत सरकार के सूचना मंत्रालय में फील्ड पब्लिसिटी अफसर हैं और गोरखपुर में नियुक्त हैं। उनकी अन्तिम क्रिया और सेवा वहाँ के आर्य सज्जनों ने ही की।

श्री पं० गंगादत्त जी शर्मा का जन्म साहनपुर जिला बिजनौर के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। जन्म कट्टर सनातनी परिवार में होने पर भी पंडित जी व उनके ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय पं० जयदेव शर्मा एवं अनुज स्व० श्री हरिदेव शास्त्री तीनों पर आर्य समाज की ऐसी छाप बैठी कि सबने अपना जीवन समाज के लिये ही उत्सर्ग कर दिया।

अब से ५० वर्ष पूर्व स्व० पं० जयदेव शर्मा ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कराने और जिला बिजनौर और अजमेर में समाज का काम करते हुए अपना जीवन दान दिया था। अनुज हरिदेव शास्त्री गुरुकुल वृन्दावन के जन्म काल से ही वहाँ अध्ययन और अध्यापन में आजीवन रत रहे।

प्रारम्भ में पं० गंगादत्त जी की शिक्षा कानपुर निवासी व्याकरण के प्रकांड पंडित एवं ऋषि दयानन्द के समकालीन स्व० पं० देवदत्त जी के पास हुई। उसके बाद कुछ दिन शेरकोट जिला बिजनौर में अध्यापन का काम करके स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी के साथ कुछ दिन रहे और अध्यापन और प्रचार कार्य में लगे रहे।

उन्हीं दिनों गुरुकुल सूर्यकुण्ड बदायूं में डा० मंगलदेव शास्त्री तथा स्व० पं० शंकरदेव पाठक आदि भी निवास करते थे। आचार्य नरदेव शास्त्री जी से भी इन्हीं दिनों उनका सहवास रहा।

इसके पश्चात् राजस्थान को कार्य क्षेत्र बनाकर अजमेर, ब्यावर, झालावाड़, जयपुर और भरतपुर आदि स्थानों पर वे अनेक वर्षों तक प्रचार कार्य करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा लगातार कार्यरत रहे। संक्षेप में सेवा के प्रत्येक क्षेत्र को आर्य समाज का अंग बनाकर उन्होंने अबोहर, मलोट, गीदड़बाहा आदि क्षेत्रों में दीर्घावधि कार्य किया।

पंजाब में काम करने के बाद राजस्थान के लोगों ने उनको पुनः वहाँ खींच लिया। यह १९२१ की बात है। अजमेर में रहकर उन्होंने न केवल श्रीमद्दयानन्द अनाथालय की प्रबन्ध और आर्थिक व्यवस्था को

जीवन-ज्योति

राजस्थान के प्रचार कार्य के उन दिनों वे स्तम्भ थे। उनके समकालीन हरबिलास शारदा, घीसूलाल एडवोकेट, गौरीशंकर बैरिस्टर, मास्टर कन्हैयालाल अब सब दिवंगत हो गये। अजमेर के प० प्रियालाल जी उनके गहरे प्रशंसकों में से एक है।

राजस्थान से आकर पंजाब को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया और पेशावर लाहौर आदि-आदि स्थानों पर लगातार प्रचार करते रहे। उन्हीं दिनों पं० ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा वालों से उनका सम्पर्क हुआ। बाद में अबोहर को ही कार्यक्षेत्र बनाकर लगभग १४ वर्ष तक वे सपत्नीक आर्य समाज की सेवा करते रहे। उनकी पत्नी आर्य बाला सभा, स्त्री समाज के अलावा कन्या पाठशाला की मुख्याध्यापिका का कार्य चलाती रहीं और वे स्वयं आर्य मिडिल स्कूल, आर्य दातव्य औषधालय, आर्य कुमार सभा, सार्वजनिक पुस्तकालय आदि का संचालन और प्रचार करते रहे। इस शताब्दी के द्वितीय दशक में होने वाली प्लेग महामारी में कुछ साथियों को लेकर वे मानवीय सेवा कार्य में सुदृढ़ किया अपितु युवकों के लिए सैनिकोचित शिक्षा में प्रोत्साह भाग लेने लगे। अकेले एक मौके पर अनाथालय के लिए कलकत्ते से वे १८००० रु० संग्रह करके लाये थे।

इसी बीच कलकत्ता के स्वर्गीय सेठ सर छाजूराम के० सी० आई० ई० प्रधान आर्य समाज कलकत्ता एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं की निगाह उन पर पड़ गयी और लगातार आग्रह और विवश करके वहाँ के १९ कार्नवालिस स्ट्रीट स्थित आर्य कन्या विद्यालय का मुख्याध्यापक नियुक्त करके उन्हें बुला लिया। उस समय वहाँ ३०० छात्राएं थीं, वहाँ अब बढ़कर लगभग १००० छात्राएं विद्यालय में पढ़ती हैं और कलकत्ते की मान्य शिक्षा संस्थाओं में से एक है। इसके पश्चात् वे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज कलकत्ता के पुरोहित आदि अनेक रूपों में आर्य समाज की सेवा करते रहे। कलकत्ता और गोहाटी कांग्रेस अधिवेशनों में आर्य समाज के प्रचार कैम्प लगाकर उन्होंने आर्य समाज का पक्ष सर्वसाधारण के समक्ष रखा। १९२६ में पत्नी की मृत्यु के पश्चात् वे कलकत्ता छोड़कर घर आ गये और अवैतनिक उपदेशक तथा जिला उपसभा बिजनौर के प्रधान के रूप में वे कार्य करते रहे। आर्य समाज नजीबाबाद तथा वहाँ की आर्य कन्या पाठशाला के वे वर्षों प्रधान रहे और 'प्रधान जी' के नाम से ही प्रसिद्ध थे।

उसके पश्चात् वे गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में आकर सेवा करने लगे। राजा साहब अवागढ़ द्वारा गुरुकुल में स्थापित उपदेशक विद्यालय के आचार्य के रूप में काम करके कार्यकर्त्ताओं की एक बड़ी सेना का उन्होंने निर्माण किया। उनके दर्जनों शिष्य सारे भारत में विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर रहकर भी उन्होंने कई वर्ष सेवा की।

१९३९ ई० के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में अपने एकमात्र पुत्र को भेजने के पश्चात् वे स्वयं भी देवेन्द्र स्पेशल के साथ सत्याग्रह करने मनमाड पहुँच गये। परन्तु सन्धि हो जाने के बाद वे वापस चले आये थे। और विभिन्न स्थानों पर प्रचार कार्य करते रहे। इससे पूर्व अमरोहा जि० मुरादाबाद में रहकर भी आसपास के क्षेत्रों में कई वर्षों तक उन्होंने प्रचार कार्य किया। कर्मकाण्ड के वे कर्मठ विद्वान् थे और अजमेर की निर्वाण अर्धशताब्दी तथा अन्य अवसरों पर यज्ञों के वे ही व्यवस्थापक एवं ब्रह्मा बनाये गये थे। भाषण एवं कथा की अपनी उनकी विशिष्ट मधुर शैली थी, जिसका प्रभाव उनके क्रियाशील एवं संयत जीवन से और भी अधिक पड़ता था।

दिल्ली में सन् १९४८ में उन्होंने विधिवत् वानप्रस्थ की दीक्षा पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती से ले ली और तब से बराबर देश के भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रचार कार्य करते रहे और साधना में निरत रहते थे। उनका शान्त सरल और प्रचार से सर्वथा दूर रहने वाला स्वभाव और कार्यशैली सहज ही सबको आकर्षित कर लेती थी।

पं० गंगादत्त जी ने १९५५ ई० में वैशाखी पर्व पर वैदिक साधना आश्रम जमुना नगर में ही स्वा० आत्मानन्द जी महाराज से संन्यास की दीक्षा ले ली और वहीं रहकर भिन्न भिन्न स्थानों पर प्रचार के लिए जाते रहे। अभी इसी वर्ष छोटा नागपुर जिला रांची में आदिवासियों के बीच रहकर सेवा कार्य करके वे लौटे ही थे और इस अवसर पर वहाँ के नागरिकों ने इनको बैरिस्टर श्यामकृष्ण सहाय के नेतृत्व में सार्वजनिक

(शेष पृष्ठ १९ पर)

वेदोपदेश

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम् ॥

ऋ० १।१।१।३

हे महादानः, ईश्वराग्ने ! आपकी कृपा से स्तुति करने वाला मनुष्य "रयिम्" उस विद्यादि धन तथा सुवर्णादि धन को अवश्य प्राप्त होता है कि जो धन प्रतिदिन "पोषमेव" महापुष्टि करने और सत्कीर्ति को बढ़ाने वाला तथा जिससे विद्या, शौर्य, धैर्य्य, चातुर्य, बल, पराक्रम और दृढ़ांग, धर्मात्मा, न्याययुक्त अत्यन्त वीर पुरुष प्राप्त हों, वैसे सुवर्ण रत्नादि तथा चक्रवर्त्ती राज्य और विज्ञान रूप धन को प्राप्त होऊं तथा आपकी कृपा से सदैव धर्मात्मा होके अत्यन्त सुखी रहूँ॥ (आर्याभिविनय)

आर्यमित्र

लखनऊ—१ फरवरी १६५६, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १६७२६४६०५८

आर्यसमाज और विदेश प्रचार

आर्य समाज के नियमों में जोरदार शब्दों में घोषणा की गयी है, कि इस समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। एक स्थान, नगर, प्रान्त-देश, विदेश आर्य समाज की सीमा नहीं हो सकते। आर्य समाज का कार्य सम्पूर्ण संसार और प्राणिमात्र तक व्याप्त है, तब हमें इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सदैव उद्यत रहना चाहिये कि क्या हमारे दृष्टिकोण की सीमायें आदर्शों के अनुकूल है, यदि नहीं हैं, तो इसका मूल कारण क्या है।

वास्तव में बात यह है कि ऋषि दयानन्द महामानव थे। उनके विश्व बन्धुत्व सम्बन्धी दृष्टिकोण को पा सकना तो साधारण मनुष्यों के लिये सम्भव नहीं, परन्तु एक संस्था के रूप में और महर्षि के उत्तराधिकारी के रूप में आर्य समाज का दायित्व बहुत अधिक है। ऋषि ने जिस उत्साह की भावना आर्य जाति में भरने का प्रयत्न किया था, उसका हममें आज ह्रास हो चुका है और यदि यह कहा जाय कि हममें से अधिकांश विश्व बन्धुत्व मानवता के उन आदर्शों को भूल संकुचित स्थानीय अधिक से अधिक प्रान्तीय दृष्टिकोण तक अपने को सीमित कर चुके हैं, तब समस्या का समाधान कैसे हो।

यह ठीक है जिस समुदाय या जिस क्षेत्र में हम रहते हैं, उनके प्रति हमारे विशेषदायित्व हैं परन्तु यदि हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न लेते हैं तो हमें स्थानीय और प्रान्तीय भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र और अन्तर राष्ट्र की सेवा को अपना लक्ष्य बनाना होगा।

प्रायः हम विदेशों में आर्य समाज के कामों की चर्चा किया करते हैं, पर जो स्थिति है, उससे सन्तुष्ट रहना आत्मवंचना ही कहा जायगा।

ईसाई मिश्नरी दूसरे देशों से प्रचार यात्रा पर भारत और दूसरे देशों में जाते हैं, और अपने मिशन के अनुसार वे जन-साधारण तक पहुँचने का प्रयत्न करते हैं; फलतः उनका धर्म प्रचार बढ़ रहा है। क्या उनकी क्रियाशीलता हमें कुछ प्रेरणा नहीं देती ?

आज स्थिति यह हो गयी है कि हम तो प्रचार नहीं कर पा रहे और दूसरे हमारे घर में ही घुसते चले जा रहे है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने क्षेत्र की रक्षा करें और अन्यों तक अपना सन्देश पहुँचाने का प्रयत्न करें।

विदेशों में अच्छे प्रचारक भेजने और उत्तम साहित्य प्रदान करने के लिये आर्य नेताओं को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये। यदि परोपकारिणी सभाओं, सार्वदेशिक सभा इस दिशा में योजना बद्ध कार्य आरम्भ करें तो शनैः शनैः बहुत कुछ हो सकता है। आज तक जो भी प्रयत्न हुए हैं, वे इतने स्वल्प हैं कि उनका आधुनिक विश्व में कोई महत्त्व नहीं। अतः ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिये कि आर्य जनता और आर्य समाजें क्षेत्रीय राष्ट्रिय भावनाओं से ऊपर उठकर विश्व की ओर भी उन्मुख हो सकें।

यदि हम अपनी आवश्यकताओं के लिए ही सब कुछ करने के बाद दूसरों की सोचने का निश्चय किये बैठे रहेंगे तो हम ऐसा कभी न कर सकेंगे। हमें अपने साथ-साथ विश्व मानवता की चिन्ता भी सदैव करते रहना चाहिए। अगर हम विश्व सुख के लिए कृत संकल्प होंगे तभी दूसरे भी वैसे बन सकेंगे और इस प्रकार विश्व मानवता, शान्ति की ओर बढ़ सकेगी; उसकी अशान्ति नष्ट हो सकेगी और प्रभु के राज्य का सुख अनुभव करेगा', यह सदैव स्मरण रखिये। उस स्थिति को उत्पन्न करने का दायित्व आर्य समाज पर सबसे अधिक है।

स्व० स्वामी विश्वेश्वरानंद जी

आर्य जगत् के साधक सन्त वयो वृद्ध सन्यासी श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज (पूर्वनाम श्री पं० गंगादत्त जी) का पिछले दिनों अबोहर आर्य समाज में ११ जनवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। ८२ वर्ष तक अपने जीवन का प्रत्येक क्षण आर्य समाज की सेवा में समर्पित करने वाले स्वामी जी को खोकर आज आर्य समाज का प्रत्येक नर-नारी दुखी है। उत्तर प्रदेश के निवासी होने के कारण उनकी उत्तर प्रदेश की, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन की सेवाएं कभी भूली नहीं जा सकती। यही नहीं उन्होंने पंजाब, अजमेर, कलकत्ता आदि में आर्य संस्थाओं का सफल संचालन कर उत्तर प्रदेश की ख्याति को सदैव उन्नत बनाये रक्खा और इस प्रकार वे न केवल हमारे अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् के सम्मान भाजन बन रहे। आर्य समाज के प्रत्येक कार्यक्रम में वे सदैव सम्मिलित पाये जाते थे। मथुरा शताब्दी हो या अजमेर अर्द्ध शताब्दी हैदराबाद सत्याग्रह हो या हिन्दी सत्याग्रह स्वामी जी की सेवाएं सर्वत्र उपलब्ध रहीं। गत हिंदी आन्दोलन के प्रारम्भ में सद्भावना यात्रा के सदस्यों में आपका प्रमुख स्थान था। श्रद्धेय स्वामी आत्मानन्द जी के आश्रम में निवास करते हुए आपने अपने दीर्घ कालीन अनुभवों का सन्देश उपदेशक बन्धुओं को दिया। आज वही शिक्षा दीक्षा हमारे लिए उनकी भेंट है वे जब तक जिये आर्य समाज के लिये जिये, उनके वियोग से आर्य समाज को जो महान् क्षति हुई उसकी पूर्ति निकट भविष्य में हो सकना असम्भव है। स्वामी जी के सुयोग्य पुत्र श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के प्रति मित्र परिवार और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से हम हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि, दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें और हमें शक्ति दें कि हम सब पूज्य स्वामी जी के आदर्श जीवन का अनुसरण कर अपने को आदर्श बना सकें।

स्व० स्नातक नित्यानन्द जी

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री पं० रामेश्वर दयालु जी शिरोमणि एम. ए. के ज्येष्ठ पुत्र श्री नित्यानन्द जी शिरोमणि एम० ए० के ३१ दिसम्बर को सरोजनी नायडू अस्पताल आगरा में आकस्मिक निधन का समाचार पाकर हार्दिक दुख हुआ। श्री नित्यानन्द जी का अभी उदय काल था उनसे आर्यसमाज को बहुत आशायें थीं उनके पिता जी को सभा और गुरुकुल की दीर्घकालीन सेवाओं के कारण वे आर्य परिवार के अभिन्न अंग बन चुके थे, और आशा थी कि वे अपनी योग्यता से आर्यसमाज की उन्नति प्रगति में महत्त्वपूर्ण योग दे सकेंगे। परन्तु वे उस कली के समान हो गये जो, खिलने भी न पायी और समाप्त हो गयी। इस दुखावसर पर शोक-संतप्त पारिवारिकों के साथ विशेष रूप से श्री रामेश्वर जी के साथ सभा और मित्र की ओर से हम हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। प्रभु दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें।

कार्यकर्त्ताओं का निर्माण

किसी भी संस्था की उन्नति प्रगति उसके कर्मठ कार्य कर्त्ताओं के ऊपर ही अवलम्बित हुआ करती है। आर्य समाज के आरम्भिक युग के कार्य कर्त्ताओं में जो तप-त्याग और निष्ठा थी उसी के फलस्वरूप आर्य समाज की प्रगति हो सकी। परन्तु आज हममें शिथिल जीवन व्याप्त है, इसके कारणों पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

हमारा विचार है कि आज की शिथिलता या उदासीनता का एक मात्र कारण परिवारों के अन्दर धार्मिक संस्कारों का अभाव है आज की पीढ़ी के आर्य बालकों को न घरों में धार्मिक शिक्षा मिल पाती है। और न विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का कोई प्रबन्ध है। नवीनता की आंधी और धर्मनिरपेक्षता के नारे ने भौतिकता को इतना बढ़ावा दिया है, कि धार्मिक मान्यताएं तथा सदाचार की परम्परायें हिल उठी हैं। यदि हम चाहते है कि नई पीढ़ी पुराने आदर्शों को माने और उनके महत्त्व को समझ कर उनके प्रचार के लिये जीवन

(शेष अगले पृष्ठ पर)

उत्सर्ग करने की भावना से ओत-प्रोत हो सके तो हमें परिवारों को धार्मिक जीवन से युक्त बनाना होगा। साथ ही शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक भावनाओं को विकसित करने के लिये धर्म शिक्षा की व्यवस्था पर जोर देना होगा। खेद है कि आर्य समाज की शिक्षा-संस्थाओं में भी धार्मिक प्रशिक्षण की गति शिथिल है। केवल संस्था को बनाये रखने के लिये सारी शक्ति लगा दी जाती है। आदर्शों-सिद्धान्तों का ख्याल नहीं रक्खा जाता जब स्वयं हमारी स्थिति इतनी कमजोर हो, तब हम दूसरों से क्या कह सकते है। इस प्रकार जब हम अपनी सन्तानों में अच्छे संस्कार डालने का पूर्ण प्रयत्न नहीं करते, तब अच्छे कार्यकर्त्ताओं का निर्माण कैसे हो। और जब तक यह अभाव चलता रहेगा आर्य समाज का भविष्य स्वर्णिम कैसे बन सकेगा। इस मूल प्रश्न पर प्रत्येक आर्य को विचार करना चाहिए।

ईसाई प्रचार निरोध की आवश्यकता

भारत में ऋषि दयानन्द के समय इस्लाम और ईसाइयत के जो दो हमले चल रहे थे उनका प्रवाह आज भी जारी है। उनकी गति कभी कम और कभी ज्यादा होती रहती है। आर्य समाज की शक्ति समय-समय पर प्रवाह को अवरुद्ध करने में समर्थ हुई है, परन्तु प्रवाह इतना तीव्र है कि अभी तक जारी है।

भारत की गरीब भोली-भाली जनता को भ्रम मे डालते हुए ईसाई मिशनरी भारत के भूभाग को ईसाई स्थान के रूप में परिवर्तित करने के लिए योजना बद्ध कार्य कर रहे है। छोटा नागपुर आदि के अन्दर उनकी दुरभिसन्धियाँ निरन्तर प्रगति कर रही है। आर्य समाज की सम्पूर्ण शक्ति इस प्रगति को रोकने मे लगनी चाहिए, अन्यथा दुर्भाग्य की घड़ी समीप आरही है। भारतवासी जनता और सरकार अपना कर्त्तव्य पालन करे इस प्रकार की चेतना उत्पन्न करना आर्यसमाज का दायित्व है।

जयन्ती के लिये सहयोग

सभा की जयन्ती गुरुधाम, अभिनन्दन योजनाओं की पूर्ति का समय जैसे जैसे निकट आता जाता है, आर्य जनता में उत्कण्ठा बढ़ती जा रही है उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं ने सम्पूर्ण जगत् को गुरुधाम के पवित्र आकर्षण में बांध अपने घर निमन्त्रण दे जो दायित्व लिया है उसकी सफलता पारस्परिक सहयोग और लगन के साथ काम मे जुट जाने में ही है। आर्य-जगत् का सम्मान करने में उत्तर प्रदेश अपने गौरव को बाजी लगा देगा। हमारा यह समारोह ऐसा भव्य और आदर्श होना चाहिए कि उसकी स्मृतियाँ अन्य शताब्दी की भांति आगामी पीढ़ियों तक कायम रहे, तथा नई पीढ़ियाँ उससे प्रेरणा ग्रहण करती रहें। आशा है प्रान्त के प्रत्येक आर्य बन्धु ने अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर लिया होगा और जयन्ती की सफलता के लिये प्रयत्न आरम्भ कर दिया होगा। जो बन्धु जयन्ती कार्यक्रम के लिये सुझाव भेजना चाहें शीघ्र भेज दें, जिससे उनके विचारों का सहयोग भी प्राप्त हो सके। आशा है आर्य समाज के हितैषी अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे। ★

हर्ष समाचार—मित्र की ओर से बधाई

श्री उदयवीर शास्त्री को मंगलाप्रसाद पारितोषिक

प्रयाग (डाक से) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सहायक मन्त्री के अनुसार सम्वत् २०१२ का दर्शन विषयक (१२००) रुपयों का मंगलाप्रसाद पारितोषिक श्री उदयवीर शास्त्री को उनकी रचना 'सांख्य दर्शन का इतिहास' पर दिया गया है।

निरीक्षण-सूचना

समस्त निरीक्षक महानुभावों को सूचित किया जाता है कि सभा का वर्ष समाप्त हो गया है। रिपोर्ट आदि के लिए कार्यक्रम की आवश्यकता होगी। अतः १५ फरवरी तक अपना-अपना कार्यक्रम शीघ्र बनाकर सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें और निरीक्षण कार्य जारी रखते हुए ऐसा प्रयत्न करें कि अपने-अपने क्षेत्र के समाजों का निरीक्षण समाप्त हो जाय। सभा प्राप्तव्य धन भी भेजा जावे।

दयानन्द-सप्ताह

(१ से ७ मार्च ५९ तक)

आर्य जनता विशेष कर उत्तर-प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि 'दयानन्द सप्ताह ऋषि बोध पर्व' फाल्गुन कृष्ण ७ से फाल्गुन कृष्ण १३ सं० २०१५ वि० तदनुसार १ मार्च से ७ मार्च १९५९ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। प्रत्येक आर्यसमाज को चाहिये कि इस सप्ताह को विशेषरूप से मनाने का अभी से आयोजन करने का कार्यक्रम बनावें और वेद सन्देश घर-घर पहुँचाने के लिए पूरा पूरा प्रयत्न करें।

वैदिक साहित्य के वितरण का भी आयोजन किया जावे। कार्यक्रम शीघ्र भेजा जायगा।

अवैतनिक उपदेशक महानुभावों की सेवा में निवेदन

उत्तरप्रदेश के समस्त 'दयानन्द प्रचारक संघ' के आर्योपदेशक महानुभावों की सेवा में विनम्र निवेदन है कि सभा का वर्ष समाप्त हो गया है। सभा की वार्षिक रिपोर्ट के बनने का कार्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। आपके द्वारा गत वर्ष मे जो भी कार्य हुआ है, उसका संक्षिप्त विवरण सभा की रिपोर्ट के लिए भेजने की कृपा करें।

आपका शुभ नाम आगामी वर्ष १९५९ के लिए उपर्युक्त संघ में घोषित किया जाता है। जो महानुभाव सभा से प्रमाण पत्र चाहते हैं, वे कृपा कर सभा को सूचित करें।

सभा के नियमों के परिवर्त्तन करने की सूचना

विदित हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के वर्त्तमान संगठन सम्बन्धी नियम-उपनियमों के संशोधनार्थ अन्तरङ्ग सभा ने एक उप समिति सभा में आये हुये कतिपय संशोधनों पर सभा के नियमों के साथ आवश्यक संशोधन करने का विचार कर रही है। सभा के नियमों में क्या क्या परिवर्त्तन किये जावें? इस विषय पर विचार किया जा रहा है? अतः समस्त अन्तरङ्ग सदस्यों एवं समाजों तथा सभा के शुभचिन्तकों से निवेदन है कि नियमों में परिवर्त्तन करने के लिए अपने-अपने सुझाव शीघ्र भेजने की कृपा करें।

—सभा मन्त्री

—आर्यसमाज नामनेर (आगरा) छावनी का वार्षिकोत्सव बसन्त पंचमी के शुभावसर पर ११ फरवरी से १४ फरवरी तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। ११ फरवरी को नगर कीर्त्तन निकलेगा। —मन्त्री

संस्था-परिचय

उपेक्षित विदुर कुटी की सुधि लो

[श्री फतहचन्द शर्मा 'आराधक' दिल्ली]

> महात्मा विदुर का भारतीय इतिहास और वाङ्मय में जो महत्त्वपूर्ण स्थान है, उसका तकाजा है कि स्वतन्त्र भारत में उनके व्यक्तित्व और उनकी कुटी को महत्ता प्राप्त हो। कुटी स्थान पर राष्ट्रिय स्मारक बनाया जाय जो भारतीयों को उनके महान् गौरव की स्मृति दिलाती रहेगी। एक निस्पृह सन्त और विद्वान् की स्मृति की सुरक्षा का दायित्त्व, उनकी परम्परा में पलने वाले साहित्यकारों और नीतिज्ञों पर सर्वाधिक है। विद्वान् लेखक ने इस ओझल प्रश्न की ओर ध्यान आकृष्ट करा कर, हमारे दायित्त्व को जगाया है। आशा है, इस दिशा में प्रयत्न कर सरकार भी राष्ट्रयिता के दायित्त्व को पूर्ण करेगी।
>
> —सम्पादक

दुर्योधन की हाँ में हाँ न मिलाने के कारण परम नीतिज्ञ राजर्षि विदुर धृतराष्ट्र की आंखों में शूल के समान चुभने लगे थे। धृतराष्ट्र ने कई बार स्वार्थ प्रेरित हो राजर्षि विदुर को मंत्रणा के लिये राज भवन में बुलाया। पर नीतिज्ञ विदुर हस्तिनापुर आकर भी वहां के महलों में नहीं ठहरे। मंत्रणा के उपरान्त वे हस्तिनापुर से उस स्थान पर लौट आये जो गंगा के दूसरे पार एक गंगा द्वारम्यतर था। उस समय वहां बिल्कुल बन था। एकान्त साधकों को छोड़कर केवल पुण्य तोया गंगा का कलरव था। विभिन्न चहकते कुछ पक्षियों का सहगान ही सुनाई दिया करता था। ऐसे एकान्त स्थल पर राजर्षि विदुर अपना तापस पूर्ण जीवन बिताते थे। उन्हें न धृतराष्ट्र के अन्न की चिन्ता थी और न अन्य लोगों से यह चाह थी कि वे उनका विभिन्न प्रकार के रस व्यंजनों से परिपूर्ण भोजन से सम्मान करें। राजर्षि विदुर तो गंगा के तट पर एक पर्ण कुटी बनाकर राष्ट्र का हित चिन्तन करते हुये काल यापन कर रहे थे। जो बन से कन्द, फल, फूल मिल जाता उसे सबसे उत्तम भोजन मानकर प्रसन्नता पूर्वक खाकर आत्म चिन्तन, परमार्थ चिन्तन, राष्ट्र चिन्तन करते।

इस प्रसंग को पढ़ कर पाठक अवश्य यह जानना चाहेंगे कि राजर्षि विदुर का वह साधना क्षेत्र कहां था, जहां बैठ कर उन्होंने देश देशान्तरों के राजाओं, राजपुरुषों को राजनीति, धर्मनीति का उपदेश दिया था। राजर्षि विदुर का साधना स्थल पश्चिमोत्तर प्रदेश में बिजनौर जिले के एक प्राचीन काल मे समृद्ध नगर दारानगर गंज मे गंगा के तट पर था। आजकल उनके स्मारक स्वरूप यहां एक कुटी विदुर कुटी के नाम से बनी हुई है। इसे देख कर प्रतिवर्ष हजारों गङ्गा यात्री, किसान, देश के बहुत से क्षेत्र मे रहने वाले नागरिक दर्शन करके अपना जीवन सफल बनाते हैं। राजर्षि विदुर के सम्बन्ध में यह सुना जाता है कि, देश में धर्म की मर्यादा स्थिर करने के लिये और आसुरी प्रवृत्तियों का उन्मूलन करने के लिये लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व भगवान कृष्णचन्द्र ने अपने जीवन काल में जो काम किया था। भगवान श्रीकृष्ण महाभारत युद्ध के पूर्व देश के अपार जन बल की हानि और संहार को दृष्टि में रख कर एक्य स्थापना की दृष्टि से हस्तिनापुर आये थे, और उन्होंने देश की भविष्य चिन्ता से शून्य महाराज धृतराष्ट्र से अनुरोध किया था कि वे, अपने उद्दण्ड पुत्र कौरवों को पाण्डवों का अहित चिन्तन न करने दें। नहीं तो इस परस्पर संघर्ष से कौरव पाण्डव कुलों को अपार हानि होने के साथ-साथ देश का भी महा अनिष्ट होगा। युद्ध के कारणों से उत्पन्न परिस्थिति का पूरा चित्र कर्मयोगी श्री कृष्ण जी ने धृतराष्ट्र के सामने खींचा।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण केवल देश के साधारण शुभचिन्तक ही नहीं थे, वे महान भारत राष्ट्र के विश्वभर में सर्वतो मुख्य शान्ति नायक थे। पर धृतराष्ट्र ने श्रीकृष्ण का हित युक्त उपदेश नहीं सुना। महाकवि भारवी ने इस सम्बन्ध में सत्य ही कहा है—हितं मनोहारी चदुर्लभं वच यही बात कौरव कुल पर पूरी तरह लक्षित होती है। कौरवों ने भी श्रीकृष्ण का सत्परामर्श न सुना, न उस पर चलने को चेष्टा की, उल्टे शान्ति दूत श्रीकृष्ण को कौरवों ने बन्दी बनाना चाहा। पर श्रीकृष्ण जैसे वीर पुरुष को बन्दी बनाना, पकड़ लेना, अपमानित करना सहज और सुकर काम नहीं था। वे शान्ति स्वभाव से वा देश के भविष्य का चिन्तन करते हुये धृतराष्ट्र के महलों से उस अरण्य मे गगा के तट पर बनी पर्णकुटी की ओर चल पड़े जहां स्वयं प्रकृति ने शान्ति स्थापित कर रखी थी। जिस भूमि पर जीव जन्तु में साहचारण और समभाव था। और जहां से भागीरथी गंगा का कलरव कर्मयोगी श्रीकृष्ण के समान अपना संदेश देकर वनवासी जीवों में चेतन्यता प्रदान कर रहा था। इसी तट से राजर्षि विदुर की पवित्र वानी गूंज रही थी। आसपास हजारों देश देशान्तर के आगन्तुक अतिथि अपनी-अपनी बात कह कर उचित परामर्श कर रहे थे। इस अवसर पर अचानक वासुदेव श्रीकृष्ण के आगमन ने राजर्षि विदुर सहित सभी को आश्चर्य में डाल दिया। राजर्षि विदुर भगवान श्रीकृष्ण के अचानक यहां आ जाने से इतने भाव-भक्ति से विह्वल हो गये कि वे अपनी सुध-बुध खोकर एकटक श्रीकृष्ण को देखने लगे। यही दशा राजर्षि की जीवन सहचरी की थी। वह भी अपनी सुध-बुध खो बैठी।

विदुर दम्पति की यह स्थिति देखकर श्रीकृष्ण बोले—राजर्षि विदुर मुझे जोर की भूख लगी है, कुछ खिलाओगे भी या मेरा मुंह ही देखते रहोगे।

राजर्षि विदुर और उनकी जीवन सहचरी बड़े धर्म सकट में पड़ गये कि किन भौज्य पदार्थों से भगवान श्रीकृष्ण का सम्मान किया जाये। कुटी मे आज कन्द, मूल, फल भी नहीं थे। प्रातःकाल जिन कन्द मूल फलों का वनान्तर प्रदेश से संग्रह किया था वे खाये जा चुके थे। श्रीकृष्ण से यह बात छिपी रह नहीं गई और उन्होंने एक अबोध बालक के समान मचल कर कहा कि मुझे कुछ खिलाओ, मुझे कुछ खाने को दो बहुत देर से भूख लगी है। घर में जो भी जैसा चना चबैना हो ले आओ देर मत करो मुझे खाने को दो। श्रीकृष्ण की इस हठ के सामने राजर्षि विदुर क्या करते घर में इस समय बथुआ ही उपलब्ध था, बन में कहीं भी सुविधा से प्राप्त था। उसे ही श्रीकृष्ण ने बड़े स्नेह और चाव से खाकर अपनी भूख मिटाई। उस बथुए में न नमक था और न अन्य प्रकार के कोई व्यंजन जिससे वह स्वादिष्ट बन जाता। श्रीकृष्ण ने उस बथुए को बड़े चाव से खाया तब बथुआ भी धन्य हो गया।

श्रीकृष्ण जी विदुर से मंत्रणा करके पाण्डवों के पास वापस चले गये और कालान्तर में राजर्षि विदुर भी परम धाम को चले गये।

लगभग पांच हजार वर्ष से अधिक समय बीता जब दारानगर गंज जहां आज बसा है, जहां वीतराग स्वामी केवलानन्द सरस्वती निगमाश्रम संस्कृत विद्यालय है और जहां कभी गोकुलपुरा आदि नाम के समृद्ध ग्राम थे, जिस स्थान को नौका व्यापार के दिनों में विशेष महत्व प्राप्त था, उस स्थान पर गंगा के किनारे एक सूनी सी विदुर कुटी खड़ी हुई है, जिसके अंक में पिछले पांच हजार वर्ष का पुराना इतिहास समाया हुआ है।

समय का रथ जितनी तेजी से चलता है, उसका कौन सामना कर सकता है। समय ने बड़े-बड़े महाबलियों को पछाड़ दिया, वे समय की प्रबल धार के सामने नहीं टिक सके। इसलिये विदुर कुटी इस गंगा के तट पर एक समय का इतिहास देखती चली आ रही है। इतने बड़े इतिहास को देखना साधारण काम नहीं है, इसलिये वह धीरे धीरे गिर रही है। बहुत पहले हस्तिनापुर की राजधानी गगा में बह गई और भी बहुत वस्तुयें स्मृति के गर्त मे डूब गईं। केवल उनकी कहानी बन कर सुनने का रह गई है। यह विदुर कुटी जिसे १९२८ में सात समुद्र पार रहने वाले एक अंग्रेज ने मरम्मत कराई। वह न तो बिजनौर का था और न उसका धर्म वह था जिस धर्म के उपासक विदुर थे। न वह विदुर के समान क्षत्रिय जाति का था और न वह आर्य वंशीय था। केवल एक विदेशी था, जिसे विदुर के नाम ने, ज्ञान ने, और महिमा ने उनका भक्त बना दिया था। यदि वह चाहता तो विदुर कुटी एक चर्च बन गई होती। पर उसने कभी भी इस दुष्ट विचार को मन में आने नहीं दिया और उसने विदुर कुटी का जीर्णोद्धार करा कर पांच हजार वर्ष की पुरानी भारतीय संस्कृति मे अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर दी। आज वही कुटी फिर निहार रही है। उसका अतीत वैभव जागे। विदुर कुटी से यह भी आवाज आ रही है कि स्वाधीन भारत में उसके वंशधरों की बसाई रोम के समान विश्व की श्रेष्ठ नगरी इन्द्रप्रस्थ आज फिर राजधानी बन गई। पर जिस कृष्ण की बदौलत पाण्डवों ने इन्द्रप्रस्थ राजधानी बनाई थी वह बिल्कुल वीरान पड़ी है और एक दिन ऐसा आयेगा जब विदुर कुटी की जीर्णावस्था से दुःखी होकर गंगा सदैव के लिये उसे अपने अंक में समेट लेगी। (शेष पृष्ठ १२ पर)

छोटा नागपुर क्षेत्र के ईसाईस्थान बनने का भय

[श्री बाबूराम धीमान, मन्त्री आर्य समाज, हजारीबाग]

●

भारत में विदेशी ईसाई मिशनरियों के दूषित प्रचार का भण्डाफोड़ हो चुका है और प्रत्येक भारत हितैषी का कर्त्तव्य है कि वह स्थिति का दृढ़ता से मुकाबला करे। प्रस्तुत विवरण एक परिपत्र के रूप में भारत के राष्ट्रपति तथा अन्य सभी सम्बन्धित अधिकारियों के पास भेजा गया है और उन्हें स्थिति से परिचित कराया गया है। प्रत्येक आर्य और आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि प्रस्तुत पत्र के आधार पर ईसाई मिशनरियों के कारनामों का विरोध करे और जनता को सावधान करें। आज भारत और भारतीय धर्म के सम्मुख सबसे मुख्य समस्या यही है।

—सम्पादक

आज छोटा नागपुर की स्थिति पर विचार करने से पता चलता है कि बहुत ही जल्द इसका रूप बदलने वाला है। यदि विदेशी पादरियों और कैथोलिक आश्रम के लोगों के कार्यों का ठीक से निरीक्षण किया जाय तो पता चलेगा कि सारे छोटा नागपुर में इनका एक जाल बिछा हुआ है, जिसमें ये लोग मूर्ख तथा अनपढ़ लोगो को अवसर पाते ही उन्हें या तो लालच देकर या विवश कर अपने चंगुल मे फसा कर विधर्मी धर्म का बना देते हैं, अर्थात् उनके पूर्वजों के बदल कर उन्हे अपने धर्म में ले आते हैं। इससे पता चलता है कि यदि सरकार इनके कामो की इसी तरह उपेक्षा करती रही, तो कुछ ही दिनो के अन्दर सारा छोटा नागपुर इनके हाथों में चला जायगा और हो सकता है कि आसाम के नागा लोगो के जैसा यहाँ भी अलग राज्य की माँग होने लगे। इस पत्र का मतलब यह है कि इसे देखकर जनता एव सरकार अभी से ही कुछ ऐसी कार्यवाही करे जिससे इनके नाजायज़ कामो को रोका जाय और भविष्य मे होने वाली घटनाओ की सभावना कम हो जाय। उनके गति विधियो के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

१—रामगढ़ के नजदीक भुरकुण्डा से विदित हुआ है (जाकर भी देखा जा सकता है) कि ये चन्द दिनो के अन्दर वहाँ के करीब २०० घर उराव मुंडा जाति लोगो के गरीबी का नाजायज फायदा उठाकर उन्हे ईसाई बना लिया गया।

२—महेश मुण्डा क्षेत्र के जगली इलाकों में अशिक्षित लोगो के बीच राशन को ईशा मशीह का प्रसाद बताकर करीब १३०० लोगो को विधर्मी बनाया गया अर्थात् ईसाई बनाया गया।

३—हजारीबाग थाना के अन्तर्गत डांटो ग्राम के आस पास करीब ४०० लोग ठगकर ईसाई बनाये गये हैं। इसी तरह से सारे छोटा नागपुर मे चारो तरफ कार्य चल रहा है।

वे निम्न रीतियों से अपने धर्म का प्रचार करते है—

१—वे किसी गरीब को खाना दे देते हैं और फिर उसे पीछे उसके जाति से यह कहकर निकलवा देते हैं कि वह ईसाई के हाथ का खाना खाया है। लाचार होकर उसे ईसाई धर्म कबूल करना पड़ता है। (अर्थात् पैसे खर्च करके)

२—स्थान स्थान पर वे स्कूल खोलते हैं। इन स्कूलों में वास्तविक शिक्षा क्या रहती है भगवान ही जाने इन स्कूलों म ईसाई मास्टर रहता है। जब कुछ लोग स्कूल जाने लगते हैं तब ये लड़कों को चोटी कटवा कर स्कूल आने के लिए बाध्य करते हैं। लड़के का आगे चलकर स्कूल मे ईसाई नाम रख देते हैं और कहते हैं कि अगर पढ़ना है तो इसी नाम से पढ़ना होगा। पढ़ने के ख्याल से वह यह नाम भी मान लेता है। आगे चलकर उसे ईसाई घोषित कर देते हैं। नतीजा यह होता है कि चोटी कटवा लेने, ईसाई नाम रख लेने के बाद और पादरियों के द्वारा ईसाई घोषित कर देने के बाद उसके स्वजातीय लोग उसे अपने जाति मे रखने के लिए तैयार नहीं होते। लाचार होकर उसे ईसाई धर्म मजूर नहीं रहने पर भी कबूल करना पड़ता है।

३—दवा वितरण करके, जिस दवा से भगवान ही भरोसे बीमार अच्छे होते हैं।

४—जगह-जगह पर गिरजाघर बनवा करके।

५—अत्याचार से। अर्थात् जिस गाव मे इनकी सख्या कुछ अधिक हो जाती है वहाँ दूसरे धम के अशिक्षित तथा असमर्थ लोगो को तग करके।

६—ये जब कभी अनपढ़ और अशिक्षित लोगो के देहात म गाड़ी पर बैठाकर घूमने के लिए ले जाते हैं। रास्ते में ईसाई ड्राइवर गाड़ी रोक देता है और अनपढ़ लोगों से कह देता है कि अपने भगवान का नाम लो ता यह गाड़ी चल जाय। अनपढ़ लोग ईसाई ड्राइवर के कहने पर 'श्री राम चन्द्र जी की जै तथा श्री कृष्ण भगवान की जय' इस प्रकार से अपने भगवान को याद करता है परन्तु इस समय ईसाई ड्राइवर गाड़ी स्टार्ट नहीं करता है। उसके बाद उनसे कहता है कि अब हमारे भगवान का नाम लेकर देखो अगर ताकत होगी तो गाड़ी चलने लगेगी। और लोगों से कहता है कि बोलो 'ईशा मशीह भगवान की जय' यह नारा होते ही गाड़ी स्टार्ट कर देता है। इस प्रकार से अशिक्षित लोगों की भावना को ठग करके ये लोग काम करते हैं।

७—कभी कभी ये लोग राम कृष्ण की मूर्ति (जो काठ की बनी हुई होती है) और ईशा मशीह की मूर्ति (जो लोहे की बनी होती है) को ले जाकर जगली लोगो के बीच मे जलाते हैं और काठ की मूर्ति जल जाने पर उन्हे समझाते हैं कि तुम्हारे भगवान में कुछ भी ताकत नहीं है जरा सी आग में भी जल जाते हैं। देखो ईशा मशीह को जो आग में भी नहीं जला। इस प्रकार उनकी भावना को बदलते हैं।

८—अशिक्षित लोगों को यह समझाते हैं कि देखो ईसाई धर्म के मानने ही से आज अमेरिका इतना धनी देश है और अगर तुम लोग भी ईसाई धर्म मानलो तो तुम लोग भी धनी हो जाओगे और अमेरिका मदद करेगा। हिन्दुस्तान आज हिन्दू धर्म मानने ही के कारण गरीब है।

९—आम जनता में ये प्रचार करते हैं कि देखो प्यारे उराव मुंडा के लोगों तुम हिन्दू धम में इसीलिये तुम लोगों का भूत प्रत अधिक सताता है (उरांव लोग भूत प्रेत अधिक मानते हैं) ईसाई धर्म मे भूत प्रेत नहीं होता है, यदि तुम इस धर्म को कबूल कर लागे तो कभी भूत प्रेत नहीं पकड़ेगा।

इस प्रकार इनके अनेकों साधन है जिसके द्वारा ये जंगली तथा अशिक्षित जातियों को दिन रात धम परिवर्तन करने मे लगे हुए हैं।

यहां इनके कारनामों का कुछ उदाहरण दिया जाता है—

१—हिरामन राना की जमीन पादरियों ने गत वर्ष जबरदस्ती जोत लिया। इसके लिए मुकदमा हुआ। अन्त में पादरी लोगों की हार हुई। (ये उदाहरण अधिकतर डांटो के आस पास के हैं)

२—दिलेजान मियाँ को वे जमीन जोत लेने और मारने के लिए धमकाये जिसका केस ग्राम पचायत में दायर किया गया था और जीत दिलेजान मियां की हुई।

३—ईशाक (ईसाई) ने जबरदस्ती ग्रामीण जनता के राह को जोत लिया तथा रास्ता बंद कर दिया। अन्त में ग्राम पचायत मूं एक मोकदमा हुआ जिसमें जीत ग्र म जनता की हुई।

४—हुसैनी उरांव को जमीन कैथालिक आश्रम के ईसाइयो ने डांटे के ईसाइयों को मदद देकर जातवाया

५—कोल्हा के लड़के महादेव उरांव का हिन्दू नाम बदल कर जबरदस्ती मसीहा टोपो स्कूल मे रख दिया जिसका मोकदमा पचायत में दायर है।

६—हुसैनी उरांव की लड़की शाती का एक ईसाई के साथ शादी करके उसे ईसाइ के घर जाने के लिये मजबूर किया। जब वह जाना नहीं चाहता तो उसके हाजीरी के लिये डी० सी० हजारीबाग के यहाँ पिटीसन दिया जिसमें लड़की ने साफ इनकार कर दिया कि हमें ईसाई पति पसन्द नहीं है।

७—डांटो के स्कूल से वहाँ के मास्टर वासुदेव नारायण के द्वारा रजिस्टर गुम कराकर सिकरा उरांव और देवी प्रकाश उरांव को (जो क्रिश्चियन से फिर हिन्दू हो गये हैं) चोरी का दोषारोपन कर फसाया।

८—हुसैनी उरांव (जो ईसाई से पुनः हिन्दू हो गया है) के यहाँ जब एक पंडित कथा कह रहे थे तो यह बात ईसाई पादरियों से देखी नहीं गई और हुसैनी उरांव के दामाद (जो ईसाई था) को अपनी मां को लाने के बहाने छुरा देकर पण्डित जी को मारने के लिये भेजा। भाग्यवश पण्डित जी को कुछ नहीं हुआ और बदमाश पकड़ा गया, जिसका मोकदमा एस० डी० ओ० साहब के यहाँ चल रहा है।

इस तरह से इनके अनेकों कार्य हैं जो पैसे के बल पर गैरकानूनी होता है और देश की गरीबी और अशिक्षा के कारण ये नाजायज फायदा उठा रहे हैं।

इन बातों से साफ जाहिर होता है कि ये विदेशी लोग सारे भारतवर्ष में काफी धन खर्च करके ईसाई धर्म प्रचार के नाम पर एक जाल बिछा

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सामयिक समस्याएँ

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

'आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति' —महर्षि अरविन्द

[श्री राजेश्वरप्रसाद वर्मा, एम०ए० प्राध्यापक, दर्शनविभाग, आगरा कालिज, आगरा]

★

ऋषि दयानन्द भारत ही नहीं मानवता की विभूति थे। उनके महान् व्यक्तित्व की चर्चा जितनी की जाय थोड़ी ही होगी। संसार का प्रत्येक मानव जो आदर्श बनाना चाहे उनके जीवन से अपने लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। उनका जीवन एक खुली पुस्तक के समान है जिसका प्रत्येक पन्ना स्वर्गीय संगीत का सन्देश दे रहा है। विद्वान् लेखक ने प्रमाण सहित अपने कथन की पुष्टि की है।

—सम्पादक

प्रत्येक युग-पुरुष न केवल समाज और संस्कृति की देन है, वरन् वह युग-प्रवर्तक और युग-द्रष्टा भी होता है। ऋषियों, मुनियों, विचारकों सुधारकों और दार्शनिकों की पवित्र भूमि-भारत में, विशुद्ध भारतीय संस्कृति की परम्परा में, महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ! जहाँ एक ओर उनके समाज और उनकी तत्कालीन परिस्थितियों ने दयानन्द के चरित्र को प्रभावित किया, वहाँ स्वयं दयानन्द ने भी एक नवीन युग को जन्म दिया।

१९ वीं शताब्दी में, पुनर्जागरण की वेला में, दयानन्द ने जो अमर सन्देश भारत को दिया, उसने भारत की सोई हुयी आत्मा को जगा दिया, उन्होंने भारत के कोने-कोने में धार्मिक सामाजिक तथा राजनैतिक क्रान्ति उत्पन्न करके "वेदों की ओर लौटो" का घोष किया तथा भारत में आत्म-सम्मान जागृत किया और इस साँस्कृतिक जागरण से अंगरेजों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनता को प्रबुद्ध किया।

दयानन्द का व्यक्तित्व उनके विचारों और कार्यों में परिलक्षित होता है। आध्यात्मिकता, ब्रह्मचर्य, राष्ट्र-प्रेम-यही व्यक्तित्व है उनका। दयानन्द ने जो कुछ किया और कहा, वह उनकी निरन्तर व सतत साधना का परिणाम था। कई वर्षों के वेदाध्ययन, शास्त्राध्ययन तथा ज्ञानानुशीलन के पश्चात् दयानन्द ने अपने ध्येय तथा अपना विचार को निश्चित किया, निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किया जा सकता है:—

अपने गुरु विरजानन्द के चरणों में ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् जब दयानन्द ने उनसे जाने की आज्ञा माँगी तो गुरु ने कहा,

"सौम्य! मैं तुमसे किसी प्रकार के धन की दक्षिणा नहीं चाहता हूं। मैं तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम प्रतिज्ञा करो कि जितने दिनों जीवित रहोगे उतने दिन आर्यावर्त में आर्षग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे, अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करोगे और भारत में वैदिक स्थापना में अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे।" (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ ६०)

गुरु की आज्ञा दयानन्द के जीवन का लक्ष्य बन गई और उन्होंने वेदों की पुनर्स्थापना तथा आर्य संस्कृति पुनर्जीवित करने में वास्तव में प्राण तक निछावर कर दिये। यही थी उनकी गुरु-भक्ति, वह था उनका दृढ़-संकल्प।

दयानन्द की आध्यात्मिकता एक, सर्वशक्तिमान, सर्व व्यापक, सर्वज्ञ और अनन्त ईश्वर की आराधना पर टिकी है। जिन धार्मिक परिस्थितियों में दयानन्द ने जन्म लिया, उनमें कर्मकाण्ड, वाह्याडम्बर, प्रतिमापूजन, अन्धविश्वास और असंख्य देवतावाद प्रमुख थे। धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो चुका था और वह एक ढकोसला मात्र रह गया था। वेदों पर भारतवासियों की आस्था उठ चुकी थी। दयानंद ने वेदों का गहन अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि तत्कालीन धर्म वैदिक नहीं था। विश्वास वेदों में उत्तरोत्तर बढ़ता गया और उनके मत में वेद ही सम्पूर्ण ज्ञान और धर्म का भंडार हैं। स्वयं दयानन्द के शब्दों में, "वेद अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा है उसका हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। इसलिये वेद हम को मान्य है इसलिये हमारा मत वेद है।" (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र, भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ ३३०) आगे वह पुनः कहते हैं, "जो वेद की निन्दा करता है, वही नास्तिक कहलाता है।" (सत्यार्थ-प्रकाश, पृष्ठ ४२) दयानन्द वैदिक सत्य से कभी नहीं डिगे। वेदों को ही उन्होंने भारत की उन्नति का मूल माना।

वेदों पर श्रद्धा रखने के परिणाम-वश वह एकेश्वरवादी बन गये। उन्होंने प्रतिमा पूजन, देवतावाद तथा अवतारवाद का खण्डन किया, क्योंकि वेदों में उनका कोई विधान नहीं है।

ईश्वर पर उनका अटूट विश्वास था। वे जीवन में ईश्वर के अतिरिक्त किसी से भयभीत नहीं हुए। उन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना की और इस बात का खण्डन किया कि ईश्वर शरीर धारण कर सकता है, या अवतार ले सकता है। उसके विभिन्न गुणों के कारण उसे अग्नि, मनु, प्रजापति, ब्रह्मा, रुद्र आदि नाम दिये गये। अवतारवाद का खण्डन करते हुए उन्होंने लिखा है। "उसका अवतार कहना जानो बन्ध्या के पुत्र का विवाह करके उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है।" (सत्यार्थ-प्रकाश, पृष्ठ १६२) उनके ईश्वर में दृढ़ विश्वास होने की झलक निम्न उद्धरण से मिलती है:—

"हे दयामय! हे सब शक्तिमान ईश्वर!!! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा!!! तैने कैसी इच्छा लीला की।" (सत्यार्थ-प्रकाश, पृष्ठ १९५)

सत्य की पिपासा, सत्य के प्रति प्रेम और सत्य में आस्था दयानन्द की आध्यात्मिकता का अंग थी! दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन सत्य की एक अमर गाथा है। उन्हें सत्य की अटल चट्टान कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। उन्होंने सत्य को किसी मूल्य पर नहीं त्यागा सत्य कहने में वे सदा निर्भीक, स्पष्ट, तथा दृढ़ रहे। सत्य कहने के लिए उन पर ईंटें और पत्थर फेंके गये, उन्हें अपमानित किया गया, यहाँ तक की उनके प्राण लेने का षड्यन्त्र रचा गया पर दयानन्द सत्य की दुर्दमनीय दीवार बने रहे। बम्बई मे उन्होंने राजकृष्ण महाराज से कहा था कि, "मैं आर्य समाज को असत्य पर कदापि स्थापित नहीं करूँगा।" (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ ३५३) सत्य को अपने जीवन की आधारशीला मानते हुए उन्होंने लिखा कि, मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य, सत्य अर्थ का प्रकाश करना है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।" (सत्यार्थ प्रकाश, भूमिका, पृष्ठ २)

दयानन्द के व्यक्तित्व का दूसरा गुण ब्रह्मचर्य था। वे ब्रह्मचर्य के प्रबल समर्थक थे। वे आजीवन अखंड ब्रह्मचारी रहे। यही कारण था कि उनका शरीर इतना विशाल दृढ़ और भव्य था, उनके मुख पर आभा थी, उनके नेत्रों में एक अलौकिक तेज था, ब्रह्मचर्य पर उन्होंने सबसे अधिक बल दिया। उनके विचारानुसार ब्रह्मचर्य बहिर्मुखी उन्नति का मूल है। ब्रह्मचर्य का अभिप्राय जितेन्द्रियता तथा मन और कर्म की पवित्रता है। वर्णाश्रम धर्म की वैदिक परम्परा के अनुसार दयानन्द ने पुरुष व स्त्री—दोनों के लिये ब्रह्मचर्य का विधान किया। अपने लेखों, भाषणों, तथा पत्रों इत्यादि में दयानन्द ने सदा ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया और उसे भारत के प्राचीन गौरव का कारण बताया उनके जीवन चरित्र में न जाने कितनी ऐसी लघु कथाओं का उल्लेख है जो उनके अपूर्व शारीरिक और आत्मिक बल का परिचय देती है। एक बार जहाँगीराबाद (बुलन्दशहर) में जब ओंकारदास नामक एक व्यायामशील व्यक्ति ने उनके चरण दबाने की चेष्टा की तो उसकी उंगलियाँ तक उनके लौह-चरणों मे न धंस सकी और वह पसीने-पसीने हो गया। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ १०७) एक दिन भयंकर शीत में उन्होंने अपने हाथ के अंगूठे से घुटनों को दबाकर पसीना निकाल दिया। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ ११४) एक अन्य प्रसंग में एक बड़ी रोचक घटना घटी। दयानन्द ने अपने सम्मुख बैठे पहलवानों से अपनी निचोड़ी हुयी कोपीन मे से केवल एक बूंद जल निकालने के लिये कहा, किन्तु समस्त बल लगा देने पर भी वे ऐसा न कर सके। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग१ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ १४२) एक दिन जब शौच को जाते समय दयानन्द ने दो उन्मत सांडों को लड़ते देखा तो उनके पास जाकर उन्होंने हरएक का सींग पकड़ कर इस जोर से धक्का दिया कि दोनों अलग हो गये। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग १ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ १४२) जालन्धर में जब उन्होंने सरदार विक्रमसिंह की घोड़ागाड़ी का पिछला पहिया पकड़ लिया जिसके फलस्वरूप गाड़ी टस से मस न हो सकी। (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग २ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ ६७) यह था उनका ब्रह्मचर्य। साधारण व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता यह सब उनके योगाभ्यास और ब्रह्मचर्य का ही प्रताप था कि वह विप-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

साहित्य-समीक्षण

भागवत पुराण एक अवलोकन

[श्री पं० भवानीलाल भारतीय, एम० ए०]

भारतीय आध्यात्मिक भावनाओं को साहित्य के शृंगारिक रूप ने आविर्भूत कर धार्मिक भावना को जो हानि पहुँचाई है, पुराण-साहित्य उसके लिए बहुत सीमा तक उत्तरदायी है। विद्वान् लेखक ने भागवत पुराण का अवलोकन प्रस्तुत कर पाठकों के सम्मुख पौराणिक मिथ्या धारणाओं के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द की मान्यताओं को स्पष्ट किया है। आशा है इस समीक्षा के आधार पर भागवत की मीमांसा की जा सकेगी।—सम्पादक

तथाकथित अष्टादश पुराणों में श्रीमद्भागवत पुराण सर्वाधिक प्रसिद्ध और ख्याति प्राप्त पुराण है। इसकी गणना सात्विक वैष्णव पुराणों में होती है। प्रचार और लोकप्रियता की दृष्टि से भी भागवत का स्थान अन्य पुराणों की अपेक्षा उच्च है। साम्प्रदायिक दृष्टि से इस समय भागवत नामधारी दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं—एक है वैष्णव भागवत और दूसरा देवी भागवत। शाक्त सम्प्रदायानुयायी देवी भागवत की गणना महापुराणों में करते हैं और वैष्णव भागवत को उप पुराण मानते हैं। इसी प्रकार वैष्णव लोग श्रीमद्भागवत को महापुराण मानते हैं और देवी भागवत को उप पुराण। साम्प्रदायिक लोगों का यह गृह कलह अभी तक चल रहा है। हमारी दृष्टि से तो दोनों ही भागवत नामधारी रचनायें अनार्ष और अप्रामाणिक हैं।

भागवत पुराण का कलेवर पर्याप्त बड़ा है। यह १२ स्कन्धों में बटा हुआ है। दशम स्कन्ध सबसे बड़ा है, जिसमें श्रीकृष्ण चरित्र का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। कई विद्वानों की सम्मति में इस ग्रन्थ का निर्माता बोपदेव नामक पण्डित था। यद्यपि पौराणिक लोग इस कथन से सहमत नहीं होते, परन्तु वे भागवत का वेदव्यास कृत होना भी यद्यपि सिद्ध नहीं कर पाये हैं। परन्तु यह निश्चित है कि भागवत अधिक पुराना नहीं है, उसकी रचना गुप्त काल के आस पास हुई होगी। इससे पुराने तो मत्स्य और वायुपुराण आदि हैं।

भागवत के प्रारम्भ में ही इसकी बड़ी प्रशंसा की है, और इसे वेद रूपी कल्प वृक्ष का सुपक्व अमृत फल कहा है—'निगम कल्पतरोर्गलितं फलं।' कहते हैं कि जिस समय महर्षि दयानन्द कुम्भ मेले में सर्वमेध यज्ञ करने के पश्चात् मौन धारण कर निवास करते थे, उस समय उन्हें चिढ़ाने के लिए कोई व्यक्ति आया और उसने ऋषि के डेरे के बाहर खड़े होकर उक्त श्लोक पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। महर्षि के जीवनी लेखकों का यह कथन है कि भागवत की अनुचित प्रशंसा को सुनकर ऋषि दयानन्द अधिक देर तक मौन व्रती नहीं रह सके। वे तुरन्त बाहर निकल आये और उन्होंने धारावाही संस्कृत में भागवत का खण्डन करना प्रारम्भ कर दिया। ऋषि के गुरु स्वामी विरजानन्द जी भी भागवत पुराण के अत्यन्त विरुद्ध थे। ऋषि दयानन्द ने तो अपने आगरा प्रवास में एक 'भागवत खण्डन' नामक ट्रैक्ट छपा कर हजारों की संख्या में वितरित किया था। आज यह ट्रैक्ट अप्राप्य है।

यद्यपि शिवपुराण आदि तामस ग्रन्थों की अपेक्षा भागवत एक उत्तम रचना मानी जा सकती है, और साहित्य तथा काव्य की दृष्टि से वह एक उच्चकोटि की कृति अवश्य है, परन्तु पुराणों में पाये जाने वाले लगभग सभी दोषों से युक्त होने के कारण धर्म जिज्ञासुओं के लिये वह विष सम्पृक्तान्न तुल्य त्याज्य ही है।

सृष्टि, प्रलय, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित के पाँच लक्षण भागवत में पाये तो जाते हैं, परन्तु इसका मुख्य उद्देश्य विष्णु के विभिन्न अवतारों एवं उनमें भी विशेष रूप से कृष्णावतार के गौरव और महत्त्व का वर्णन करना है। विष्णु के दस प्रमुख और २४ गौण अवतारों का विस्तृत चरित्र भागवत में उपलब्ध होता है। सांख्य दर्शन के प्रवर्त्तक महर्षि कपिल और उनके दार्शनिक सिद्धान्तों का विवेचन भी इसी प्रसंग में हुआ है। जैन मत के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का वर्णन भागवत में ईश्वरावतार के रूप में मिलता है, इससे यह सिद्ध होता है कि इस ग्रन्थ का काल इतना प्राचीन नहीं है, जितना पुराणों में विश्वास रखने वाले मानते हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में बोपदेव नामक विद्वान् को भागवत का रचयिता स्वीकार किया है। यह उनकी कोई स्वयं प्रसूत कल्पना नहीं थी, अपितु अनेक विद्वानों को इस धारणा को उन्होंने व्यक्त अवश्य किया था। गीता प्रेस गोरखपुर, जैसे पौराणिक संस्थान के एक लेखक पं० शान्तनु विहारी द्विवेदी ने कल्याण के भागवतांक में इस स्थापना के खण्डन करने का प्रयास किया है! परन्तु वे अपने इस प्रयत्न में बुरी तरह असफल हुए हैं!

मोहिनी अवतार के प्रसंग में भागवतकार ने एक अत्यन्त अश्लील कथा लिख कर अपनी लेखनी को कलंकित किया है। समुद्र मथन और मोहिनी द्वारा देवताओं को अमृतपान कराने के पश्चात् एक दिन शिवजी ने विष्णु से मोहिनी रूप के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। विष्णु ने उन्हें समझाया कि कामियों को ही मोहिनी रूप प्रिय है, अतः वे हठ न करें। परन्तु शिवजी के अत्यन्त आग्रह करने पर उन्होंने मोहिनी रूप की पुनरावृत्ति की जिसे देखकर शिवजी अपने मन को वश में न रख सके। उन्होंने कामी पुरुष की तरह आचरण किया।

भागवत में कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म के स्थान पर प्रतिष्ठित करने की पूर्ण चेष्टा की गई है। 'एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं' की घोषणा करता हुआ भागवतकार अन्य अवतारों को भगवत् विभूति का अंश मात्र मानता है और कृष्ण को साक्षात् भगवान्। इसी भगवच्चरित्र को विस्तार रूप से लिखने के लिए भागवत के निर्माण की आवश्यकता प्रतीत हुई होगी। दशम स्कन्ध के पूर्वार्द्ध में श्री कृष्ण की बाल्य और युवावस्था की क्रीड़ाओं का जो वर्णन हुआ है वह पूर्ण रूप से कपोल कल्पित है, क्योंकि कृष्ण के प्रामाणिक इतिवृत्त को उपस्थित करने वाले महाभारत में उसका संकेत भी नहीं मिलता। पुराणों ने कृष्ण चरित्र की पवित्रता, उदात्तता और महनीयता को कलंकित करने का जो क्षुद्र प्रयास किया है, उसमें भागवतकार का भी पर्याप्त हाथ है। लीला के नाम पर जिन मर्यादाहीन शिष्टाचार और सभ्यता की विरोधिनी करतूतों का उल्लेख किया गया है, उनकी आलोचना करते हुए लेखनी को भी लज्जा आती है।

भारत के महा पुरुष योगीराज श्री कृष्ण चरित का वास्तविक गौरव महाभारत में ही अंकित है न कि भागवत में। भागवत के द्वादश स्कन्ध में जो भविष्य वर्णन के नाम पर जो इतिहास वर्णित है, उसमें कोई अधिक यथार्थता नहीं है। मौर्य वंश आदि के वर्णन तक तो इतिहास की कुछ शृंखला दिखाई पड़ती है, परन्तु आगे के राजवंश और राजाओं के उल्लेख सब काल्पनिक हैं। भाषा और साहित्य की दृष्टि से भागवत का कुछ भी महत्त्व क्यों न हो यह निश्चित बात है कि वह हमारे धर्म के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत नहीं कर सका। ★

ग्राम जीवन

गोबर और हरी खाद के लाभ

[श्री एम० एस० शिवरमण, आई० सी० एस० सलाहकार, आयोजन आयोग]

भारत के साधारण किसान के लिए रासायनिक खाद खरीदना कठिन हो जाता है, पर मामूली खाद जैसे, गोबर और हरी खाद वह खुद तैयार कर सकता है। प्रस्तुत लेख में लेखक ने बताया है कि भारत की मिट्टी के लिए रासायनिक खाद की अपेक्षा गोबर और हरी खाद अधिक उपयुक्त भी है। आशा है कृषि को अधिक वैज्ञानिक बनाने के समर्थक खाद के सम्बन्ध में इस दृष्टिकोण पर विचार करेंगे। —सम्पादक

देश में गल्ले की पैदावार कहीं भी समान नहीं। एक ही गांव के कुछ खेतों में अधिक गल्ला होता है और कुछ में बहुत कम। देखा गया है कि जिन खेतों में बहुत अधिक पैदा होता है, वहां वहीं की तैयार खाद का प्रयोग होता है।

इधर रासायनिक खाद की बहुत चर्चा होने से लोगों में यह धारणा बनती आ रही है कि इससे अधिक प्रयोग से ही पैदावार बढ़ सकती है। भारत मे भी कुछ लोगों का विचार है कि रासायनिक खाद के बिना पैदावार नहीं बढ़ सकती। परन्तु यह ठीक नहीं है। किसानों ने बिना रासायनिक खाद इस्तेमाल किये, गोबर कूड़े की खाद के प्रयोग से ही जिसे वे खुद तैयार कर लेते हैं, गेहूं और धान की उपज तिगुनी तक की है।

वस्तुतः दोनों प्रकार की खादें एक ही काम करती हैं। कारबनिक अथवा रासायनिक खाद पौधों को बना-बनाया पौष्टिक तत्व देती हैं। उधर प्रकृति भी अकारबनिक पदार्थों से ऐसे ही पौष्टिक तत्त्व बनाती है। अकारबनिक यानी गोबर, कूड़ा करकट के सड़ने से उनमें करोड़ों सूक्ष्म जीव पैदा हो जाते हैं, जो पौधों को पुष्टई देते हैं। कारबनिक और अकारबनिक खादों में वही अन्तर है जो पक्के और कच्चे भोजन में। दोनों ही उपयोगी हैं, परन्तु यदि उनका ठीक से प्रयोग न किया जाए तो वे हानि भी कर सकते हैं।

सस्ती और आसानी से मिलने वाली खाद

खाद के बारे में हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि पौष्टिक तत्व की दृष्टि से कौन सी खाद अधिक अच्छी है, बल्कि प्रश्न यह है कि किसान को कौन सी खाद आसानी से मिल सकती है और किसे वह कम खर्च में और अधिक मात्रा में प्रयोग कर सकता है। साधारण किसान कीमती रासायनिक खाद अधिक नहीं खरीद सकता। उसे ऋण भी आसानी से नहीं मिलता। दूसरी ओर गांव में ही अकारबनिक या मामूली खाद काफी मात्रा में तैयार की जा सकती है। ऐसी खाद तैयार करने के लिए जो नया तरीका निकाला गया है, उससे दक्षिण में किसानों को काफी लाभ पहुँचा है।

एक बात और है। ठंडे देशों में हरी खाद पैदा करने के लिए पूरी एक फसल चाहिए। इसलिए वहां के किसान एक फसल को रोक कर ही हरी खाद पैदा कर सकते हैं। इस प्रकार उन्हें हरी खाद काफी मंहगी पड़ती है। इसीलिए रासायनिक खाद उन्हें अधिक सुभीते की पड़ती है। परन्तु भारत जैसे गर्म देश में दो फसलों के बीच की अवधि मे ही आसानी से हरी खाद उगाई जा सकती है। यहां की जमीन में पोटाश भी काफी मात्रा में पाया जाता है, जो पौधों के लिए बहुत पुष्टई तत्व है, और जो अलग से लेने में मंहगा पड़ता है। अन्य देशों की अपेक्षा यहां की मिट्टी में फास्फेट भी अधिक होता है। केवल यहां नत्रजन की कमी है। यदि हम खाद के लिए ऐसे पौधे उगाएं, जिनसे नत्रजन मिल सके तो हमारी खाद की समस्या काफी हद तक हल हो जाती है, और ऐसे पौधे दो फसलों के बीच की अवधि में आसानी से उगाये जा सकते हैं।

रासायनिक खाद के बारे में भ्रम

जो लोग खेती के बारे में अधिक नहीं जानते, वे समझते हैं कि खेतों में ढेर सी नत्रजनी रासायनिक खाद डालने से वहां की मिट्टी मे नत्रजन की जो कमी है, वह दूर हो जाएगी। परन्तु इसका दूसरा पहलू भी है। रासायनिक खाद जमीन की नमी को काफी सोखती है, इसलिए सिंचित जमीन में तो उसका उपयोग ठीक होता है, परन्तु वर्षा पर निर्भर रहने वाली जमीन मे नहीं। यदि जमीन में काफी नमी या तरी नहीं है और उसमें अधिक रासायनिक खाद डाली जाए, तो हो सकता है कि कल्ले फूटते या दाना पड़ते समय जमीन सूख जाए और दानो को यथेष्ठ पानी न मिल सके।

दूसरी ओर अकारबनिक या मामूली हरी और कूड़ा-करकट की खाद को नमी की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए वर्षा न होने पर भी वह फसल को हानि नहीं करती। भारत में ७५ प्रतिशत खेती वर्षा पर निर्भर है, अतः उसमें नत्रजनी रासायनिक खाद के बजाय अकारबनिक खाद डालना अधिक अच्छा है।

फास्फेट की भी आवश्यकता

नेत्रजनी रसायनिक खाद डालने से एक कठिनाई पैदा हो सकती है। नत्रजनी खाद यानी अमोनियम सल्फेट देने से पौधे तेजी से बढ़ेंगे, पर यह बाढ़ तभी तक रहेगी, जब तक जमीन में उसी अनुपात से फास्फेट आदि अन्य पदार्थ रहेंगे। बाद में हमें ऊपर से फास्फेट आदि भी डालना पड़ेगा और यह स्थिति कुछ ही वर्षों मे आ सकती है। परन्तु यदि हम अकारबनिक खाद ही डालें अथवा उसमें थोड़ा सा नत्रजनी रासायनिक खाद मिलाकर दें तो जमीन में जो फास्फेट है, वह अकारबनिक अम्लों में घुलकर पौधों को मिलता रहेगा और इस प्रकार हमें सैकड़ों वर्ष तक बाहर से फास्फेट मंगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

५ पैसा बनाम उनतीस रुपया

एक बात और रासायनिक खाद का एक कारखाना खड़ा करने में वर्षों लग जाते हैं और १८ करोड़ रुपये के लगभग खर्च होता है, जो प्रति एकड़ २३ रुपया बैठता है। इसके अलावा हर साल एक एकड़ में जो रासायनिक खाद डाली जाती है, उसका मूल्य लगभग १६ रु० होता है। भारत का किसान बहुत गरीब है। वह इतना खर्च नहीं उठा सकता। दूसरी ओर यदि वह ५ नये पैसे का एक पैकट हरी खाद का बीज खरीदे और एक एकड़ खेत में फसल के चारों ओर बो दे तो ४-६ सप्ताह में ही इससे अगली फसल के लिए हरी खाद पैदा हो जायगी।

इन सब बातों को देखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि हमारे देश के लिए कारबनिक या रासायनिक खाद के बजाय अकारबनिक यानी मामूली हरी और गोबर, करकट की खाद ही अधिक सुलभ, सस्ती और उपयोगी है।

यदि हमारा किसान आसानी से उपलब्ध गोबर, कूड़ा, हरे पौधों आदि से खाद तैयार करके खेतों में डाले तो निश्चय ही उसकी पैदावार दूनी-तिगुनी हो सकती है।

जैनमत नवीन है

श्री जगन्मोहन जी मन्त्री जैनसंघ के विचारों की समीक्षा

[विद्यावारिधि श्री पं०सत्यमित्र शास्त्री, वेदतीर्थ महो० आ०प्र० सभा, उ०प्र०]

★

वैदिक दृष्टिकोण ईश्वर निराकार है इस बात की सत्यता निर्विवाद सिद्धि और स्पष्ट है परन्तु जैनादि मत मूर्तिपूजा के समर्थन में अपने दृष्टिकोण को सत्य मानने का आग्रह करते हैं। इस सम्बन्ध में प्रकाशित लेख का उत्तर श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी द्वारा दिया जा चुका है। विद्वान् लेखक ने इस लेख में जैन पक्ष को अयुक्ति युक्तता का प्रामाणिक खण्डन किया है और वैदिक दृष्टिकोण की स्थापना की है। —सम्पादक

सिद्धान्त-विमर्श

११ जनवरी १९५९ के आर्यमित्र में जैन धर्म नवीन है अथवा प्राचीन है। इस शीर्षक का लेख श्री जगन्मोहन जी जैन मन्त्री जैन संघ का प्रकाशित हुआ है। इसमें जो आपने जैन मत को प्राचीन सिद्ध करने के लिए प्रमाण दिया है, उसी के द्वारा सिद्ध होता है कि जैनमत नवीन है।

प्रथम हेतु आपने दिया है कि किसी वस्तु की सत्यता उसके नवीन अथवा प्राचीन होने पर निर्भर नहीं है। यह संदिग्ध हेतु ही सिद्ध करता है कि जैनमत नवीन है; जिसे आप अपने सत्य हृदय से स्वीकार करते हैं, किन्तु करें क्या अब आपने अपने नेत्रों में उपनेत्र (चश्मा) जैनमत का लगा लिया है।

सिद्धान्ततः जैनमत ईश्वर को नहीं मानता है, किन्तु आपने स्वामी रामेश्वरानन्द जी के उपासना लेख को देखकर मूर्तिपूजक होने के कारण जैन मूर्तियों का भी ईश्वर सिद्ध कर दिया। इतना आपने मान ही लिया कि ईश्वर जगत् कर्त्ता है। किन्तु उपासना के लिए साकार मूर्ति द्वारा उसकी प्राप्ति साधन सरल है। आपने अपनी मूर्तियों को न रखकर पौराणिक मूर्तियों का अपना आधार बनाया है और बीच में इस्लामी एवं ईसाइयों के पैगम्बरों को भी अवतार रूप में मान्यता दी है। इस पर आश्चर्य होता है कि आप सिद्धान्ततः क्या हैं। सम्भव है अब जैनियों के कहीं पैगम्बर रसूल खुदा के बेटे ईसा को भी तीर्थंकर मानकर पूजना आरम्भ कर दिया हो। सत्यतः आपने जैनमत को नवीन मान लिया। जब आप लिखते हैं कि वैसे ईश्वर निराकार है किन्तु संसारी जन जब निराकार को अपना मानसिक कल्पना में नहीं उतार पाता तो उसे साकार द्वारा निराकार उपासना के योग्य बनाया जाता है। आपने हेतु कुछ न देकर केवल दृष्टान्त दिया है कि अग्नि की दाहक शक्ति निराकार है। किन्तु वह साकार अग्नि से ही प्राप्त की जा सकती है। यह भी मिथ्या दृष्टान्त है। अग्नि साकार है क्योंकि उसका गुण तैजस रूप है और रूप से ही हम प्रत्येक वस्तु को साकार कहते हैं। वह प्राकृतिक है। उसकी दो अवस्था हैं एक परमाणु दूसरा स्थूल। सम्भव है, आपने परमाणु को ही निराकार जाना हो। ईश्वर प्राकृतिक नहीं है। जो उसके दो रूप हों और वह प्राकृतिक उपासना द्वारा कभी प्राप्त नहीं हो सकता है। इसीलिए वेद ने कहा है अन्धं तमः प्रविशन्ति यजुर्वेद अ० ४० आगे आप लिखते हैं कि गुरुनानक, हजरत मुहम्मद साहब, ईसा जैसे तीर्थंकर राम, कृष्ण और शिव की उपासना भी विभिन्न मतानुयायियों द्वारा की जाती है। वह उनके उदयकाल के बाद ही की गई होगी। यह उदयकाल शुरू ही सिद्ध करता है जैसे समय-समय पर नानक मत इस्लाम मत आया वैसे जैन तीर्थंकरों के बाद जैन मत आया। इस मत का उदय काल ही बतलाता है। प्रथम ये मत न थे। अब यदि आर्यसमाज मानता है कि जैन मत पीछे आया तो ईसा को नवीन कहा जाता है। अब आप जो लिखते हैं कि जैन मत तथा उसके तीर्थंकर अनादि काल से हैं यही वह तो व्याघात दोष है। अब आपने जितना प्रमाण दिया है। आपके वचन से ही कट जाता है। जनमत के उदयकाल के प्रमाण देना वैसे है जैसे पुत्र शब्द को अनादि कहना। पुत्र तब हुआ जब किसी से जन्मा तो पुत्र शब्द कैसे अनादि हुआ। अब आप वेद, रामायण से जैन मत को प्राचीन सिद्ध करते हैं। वह आपका पुत्रवत अनर्गल प्रलाप है। रही जैन शास्त्रों की मान्यता वह अहेतुक है। आप लिखते है कि जैन शास्त्र में दो काल माने गये हैं। दो काल शब्द ही सिद्ध करता है। जब एक काल समाप्त होता है तो दूसरा काल होता है। उसकी जो भी अवधि हो। अवधि वाचक शब्द शान्त होता है। अनन्त और अनादि वही हो सकता है। यदि दोनों उत्सर्पणी और अवसर्पणी काल अनादि और असंख्य होंगे तो शब्द बनेगा ही नहीं क्योंकि दोनों एक के पश्चात आयेंगे तो अनादि कैसे हुए। अतः जैन शास्त्र का यह सिद्धान्त मिथ्या है। पुनः आप लिखते हैं कि जैन मन्दिरों में जो प्रतिमायें हैं, वे अवसर्पणी काल के हैं। उत्सर्पणी काल के देवों की पूजा सांकल्पिक रूप से करते हैं। यह सांकल्पिक शब्द ही बतलाता है उत्सर्पणी काल हुआ ही नहीं यह केवल मन की मिथ्या कल्पना है। ऐसे ही जैन मत को सांकल्पिक मानना भी मिथ्या मानसिक कल्पना है। आगे आपने वेदों को प्राचीन माना है यह आपके सत्य विचार हैं किन्तु आपने जो वेदों से जैन धर्म का होना प्राचीन माना है। यह आपका असत्य विचार है। मेरी समस्त जैन समाज को खुली चुनौती है कि कहीं वेदों से जैन शब्द दिखलावें। आपने ऋग्वेद के अर्हन विमर्षि शब्द से एवं ऋग्वेद अ०,२ सू० ३३ वर्ग १७ से यह सिद्ध किया है अर्हन माने जैन धर्म याद रखिये अर्हन शब्द के साथ विशेषण लगा है। कौन अर्हन पूज्य है। जो विश्व रूपम् सकल सृष्टिकर्त्ता हैं और विश्वमय सकल सृष्टि की माता है। वह प्रभु पूज्य है। यहाँ अर्ह का अर्थ जैन नहीं है। यहाँ ईश्वर को पूज्य कहा है। जिसकी उपासना से मानव कैवल्य पद प्राप्त करता है। वह भी कौन जो निसके अर्थात् दुख रहित है आपके सारे तीर्थंकर भी मिलकर सृष्टि रचना नहीं कर सकते। वे अपने को मौत के गाल से क्यों न बचालिये क्योंकि उनसे भिन्न कोई परमात्मा है। जिसकी व्यवस्था सत्य है। आगे आप लिखते हैं कि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ७ वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ २२ नेमिनाथ नाम भी वेदों में है। याद रखिये वेदों में सब शब्द यौगिक होते हैं। आप निरुक्त पढ़कर देख लें। निगमनात् निघंटवः इत्यादि यौगिक शब्द रूढ़ि नहीं होता है। नहीं तो बहुत से मत प्राचीन हो जायेंगे। जैसे ईशा वास्यमिदं सर्वम्। ईसाई कहें कि हमारा धर्म प्राचीन है। यहाँ ईश्वर ईशा वाचक हैं। आगे आप कहेंगे वेद में जगत्यां जगत् है अतः मैं भी जैनियों का तीर्थंकर हूं। तो बड़ा दोष आ जावेगा। ऋषभं समानानां मंत्र में ऋषभ सांड को कहते हैं। क्योंकि उसका विशेषण गोपितम् गवाम् लगा है जो मन्दिरों का रक्षक और वर्धक है यहाँ गौवों के संवर्धन का वर्णन है। ओ३म् सुपार्श्वमिदं हवे इस मन्त्र में हवे कहा जाता है रण को, और रण विजेता का नाम इन्द्र है जो सेना के अत्यन्त सन्निकट रहता है। रणभूमि में आपके दिगम्बर बाबा की क्या आवश्यकता है। आपने यजुर्वेद के अरिष्टनेमि शब्द से जो नेमिनाथ को सिद्ध किया है। वह भी अनर्गल है इस मंत्र का दूसरा शब्द बृहस्पतिर्दधातु बतलाता है। अरिष्ट कल्याण करने वा बृहस्पति विद्वान् हमारा कल्याण करे। यहां नेमिनाथ किस शब्द का अर्थ है। इनके माता-पिता का क्या जीवन था, मन्त्र के किसी भाग से सिद्ध नहीं होता है।

रामायण का जहाँ तक प्रश्न है उस काल में आपका पता ही नहीं था श्री रामचन्द्र वैदिक धर्मी थे। जैसा रामायण में लिखा है, वेद वेदांगतत्त्वज्ञः रामायण का श्रमण शब्द जैन साधु का वाचक नहीं है। अपितु वानप्रस्थ का वाचक है। दूसरा शब्द तापता अर्थात् परिश्रम करने वाले ब्रह्मचारी गण न कि देश के भूभार २६ लाख नंगे घूमने वाले साधु गण इनका तो बहिष्कार होता था। आप अयोध्याकाण्ड में पढ़ें अनास्तिकः शब्द बतलाता है सब ईश्वर और वेद के मानने वाले थे। आप लिखते हैं पुराणों से जैन मत प्राचीन है, किन्तु भागवत मारकण्डेय आदि सब आप को नास्तिक ७ वाँ कहते हैं, और यह भी लिखते हैं कि हस्तिनाताड्यमानोपि न गच्छेत् जैन मन्दिर। हाथी के पैर के नीचे कुचल कर मर जाना ठीक है किन्तु जैन मन्दिर में जाना ठीक नहीं है। वाम मार्ग का ही साथी जैन मत है। जो वेद से उल्टा सबको चलाना चाहता है। नङ्गी मूर्तियों के पूजन से व्यभिचार और पशुता बढ़ती है न कि परमात्म सिद्धि होती है। श्री राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू एव श्री राधाकृष्णन् एवं प्राचीन इतिहासज्ञ डा०जैकोबी मैक्समूलर आदि सब जैन मत को नवीन मानते हैं। अतः जैन एक नास्तिक नवीन मत है, जिसे ३००० वर्ष के लगभग होते हैं।

★

वनिता विवेक

घर की अनुपयोगी चीजों का उपयोग

[सु० कु० रञ्जनाकुमारी, जालन्धर]

हमारे घरों में लापरवाही और अज्ञानता के कारण पुरानी, थोड़ी खराब या टूटी हुई चीजों को फेंक दिया जाता है। नई चीजें खरीदना आज के मंहगाई के युग में कितना कठिन होता जा रहा है, इसे प्रत्येक अनुभव करता है। इसलिए घरेलू वस्तुओं के अधिकाधिक उपयोग की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिये। यहाँ कुछ ऐसे ही उपाय संग्रहीत कर प्रस्तुत किये जा रहे हैं आशा है बहनें उनका परीक्षण करेंगी।

१—टूटी हुई चूड़ियाँ - यदि आपकी चूड़ियाँ टूट जाती हैं, तो उन्हें फेंके नहीं, पोली चूड़ियों में तार डालकर उनका पिंजड़ा और थैला तैयार कर लें। ठोस हों तो उन्हें दीपक गर्मी दिखाकर गोल छल्ला बना अपने कमरे को सजा लें।

२—खाली थैले, बाजार से लाये सामान को टीन के डिब्बे में रखकर उन्हें इकट्ठे करती रहें और खूब सारे होने पर उन्हें पुनः बाजार भिजवा दें इससे पैसे मिलेंगे।

३—खार हुए सन्तरे के छिलकों को छांह में सुखाकर कपड़ छन कर लें और रात को सोने से पहिले अथवा सुबह नहाने से पूर्व गाय के कच्चे दूध के साथ उबटन करने से शरीर चिकना रहेगा, मुहाँसे झाँई, नष्ट हो जायेगी तथा कुछ ही दिनों में शरीर गौर मालूम होने लगेगा।

४—गन्ने के चाकू से लम्बे छिलके उतार कर उनकी रंगीन टोकरी बनालें यह आपके साग भाजी रखने के काम आ सकती हैं।

५—गेहूं छानने के बाद जब काली सरसों काफी इकट्ठी हो जाय तो उसके बदले में तेल मंगा लें और यदि पीली सरसों हो तो उसे बारीक पीस उबटन की जगह काम में लाएं इससे चर्म रोगों से मुक्ति मिलेगी तथा साबुन का खर्चा बचेगा, रंग साफ होगा।

६—आटा छानने के बाद बची गेहूं की भूसी को जब वह पर्याप्त इकट्ठी हो जाय, दूने पानी में भिगोलें, बाद में हाथ से मल-मल कर रस अलग तथा भूसी अलग कर लें। इस दूध जसे पदार्थ में खोवा, मेवा डाल कर उत्तम विटामिन तैय्यार कर लें।

७—सब्जी के छिलके, लौकी तोरई, काशीफल, तरबूज, खरबूजा के मोटे छिलके उतार बारीक काट सुन्दर तरकारी तैयार हो सकती है।

८—नन्हीं दाल या चावल को इकट्ठा करके रखें और पर्याप्त हो जाने पर, भिगोकर मुगौड़ी, बड़ी, पापड़, पकौड़ी बनाने के काम में ले आएं।

९—जली हुई दियासलाई के खाली डिब्बों को अनेक छोटी छोटी चीजें रखने के काम में लाइये।

१०—रद्दी कागजों के चित्र काट कर एक एलबम बना लीजिए उससे आप के तथा आपके बच्चों का खाली समय में मन बहलाव होगा। तथा रद्दी कागजों को गलाकर टोकरी आदि उपयोगी चीजें बनाई जा सकेंगी।

११—फटी साड़ी को फेंकें नहीं उनकी किनारियों से सुन्दर थैले, गद्दे का खोल आदि-आदि बना लें। दैनिक काम में आने वाले रूमाल भी इनसे तैयार किये जा सकते हैं।

१२—इसी प्रकार फटे कोट, पैंट, कमीज से भी छोटे बच्चों के लिए कोट पैंट तैयार हो सकते हैं। कमीज के पिछले पल्ले से रुमाल बनाया जा सकता है।

१३—फटे पाजामे के पायचों से तकिए के खोल बनाए तथा बचे टुकड़ों से खिलौना बना ले, जिसके साथ छोटे बच्चे प्रसन्नता से खेल सकते हैं।

१४—यदि कपड़े सीने का काम भी करती हों तो कतरन को कुर्सी आदि की गद्दी बनाने के उपयोग में लावें।

१५—बादाम के छिलके इकट्ठा करती रहें और खूब सारे इकट्ठा हो जाने पर उन्हें जलाकर कोयला बना लें। इसमें इलायची के छिलके, हलका कपूर, चूल्हे की मिट्टी, माँजूफल, नागरमोथा, नीलाथोथा, और नमक डालकर उपयोगी मंजन तैयार कर लीजिए। फिर देखिए आपको अपने घर ही में सस्ता सुख मिलता है या नहीं।

बाल-विनोद

प्यारे भाई, बहनों, नमस्ते।

अभी पिछले महीने तुम सबने २६तारीख को गणतन्त्र दिवस मनाया होगा, स्कूलों में भी कार्यक्रम सम्पन्न हुए होंगे। स्कूल में जो सब हुआ उसके ऊपर हमें निबन्ध लिखना। हम सबसे अच्छा निबन्ध आर्यमित्र में छापेंगे।

तुम लोगों को यह जानकर खुशी होगी कि आगामी सप्ताह से हम सदस्यता कूपन भी छापेंगे। तुम में से जो बाल जगत का सदस्य बनना चाहें अपना नाम व पता कूपन में भर कर भेज दें।

छोटे और बड़े वर्गों के लिए हमें चाहिये। जो अच्छे नाम भेजेगा उसका नाम आर्यमित्र में प्रकाशित होगा।

तुमको अब अच्छी कहानियाँ और चुटकुले आदि पढ़ने को मिला करेंगे। उनके बारे में अपनी राय हमें जरूर लिखना।

अगले सप्ताह मिलने के लिये नमस्ते। —ममता दीदी

अंकों की करामात

१ दिन ६तरसिंह विचार कर रहा था कि यदि ६बीलदास से भी बदला ले लिया जाय तो अच्छा हो। वह छबीलदास के घर गया। उस समय वह चारपाई पर बैठा था। ६तरसिंह ने आते ही कहा, मैंने तुम्हारे दोस्त को मार डाला है अब तुम्हें भी मार डालूंगा। छबीलदास तत्काल सम्भाल गया। हाथापाई की ५वत आ गई। १०० भाग्य से मेरा ६कर वहाँ पहुँच गया। अपराध २नों का था अतः २नों शांत हो गये।

—अशोक, साहगंज

बूझो तो जानें

(१)

बिजली लिए हुए गोदी में,
आसमान में फिरता।
ठंड जहाँ लग जाती है,
वह मोती बन बन गिरता।

(२)

दुबली पतली गुण भरी,
चले शीश निठुराय।
हाथ चढ़े वह नार जब,
बिछुड़े देत मिलाय।

(३)

पाँव नहीं और मुंह नहीं।
और न उसके हाथ॥
दूर-दूर पर जाय के।
कहता मन की बात॥

—अद्भुत प्रकाश

(४)

जल का वासी फूलों का राजा।
देवों के सिर पर हूं चढ़ जाता॥
मध्य कटे तो कल बन जाता।
सांझ पहर हूँ मुरझा जाता॥

—राजीव, फगवाड़ा

उत्तर—१ बादल २ सुई ३ चिट्ठी ४ कमल

चुटकुले

चित्र का असर

एक बार की बात है बीरबल एक नादिरशाह के दरबार में, मेहमान के तौर पर हाजिर हुआ। अपने महल की तारीफ करते हुए नादिरशाह ने कहा "क्यों ना आप मेरे महल को एक बार देख लें।" दिखाने के दौरान मे वह शौच खाने के करीब से निकले नादिरशाह ने दरवाजा खोलते हुए कहा 'यह मेरे महल का एक विशेष आकर्षण है।" बीरबल ने इधर-उधर झाँक कर कहा कि ये कमोड के सामने आपने फोटो तो बड़ी अच्छी लगा रखी है? नादिरशाह ने कहा 'क्या पहचाने नहीं, किसकी है?" बीरबल ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया हाँ हाँ यह उन्हीं की फोटो है जिनको देखकर आपको टट्टी आती है।

—सीमा, हनखप

एक ग्राहक (कोयले वाले से) अजी, कोयला ही कोयला दीजिए। धूल मत भरिए बोरे में कोयले वाला साहब, हमारी दूकान में तो कोयला बनता ही नहीं। खरीदने में कोयला धूल सभी कुछ आता है। वही बेचते हैं।

ग्राहक ने पैसे देते समय जब अठन्नी खोटी दी तो दूकानदार उसे वापिस करने लगा, यह देख ग्राहक बोला देखिए सेठ जी हमारे घर पर पैसे ढलते नहीं है जैसे आ जाते हैं वैसे मैं आपको भी दिये देता हूं।

—प्रवीण, लखनऊ

× × ×

बेटा—पिता जी! आपने यह कहानी किससे सुनी?

पिता—बेटा, अपने चाचा जी से।

बेटा—और आपके चाचा जी ने?

पिता—उन्होंने अपनी चाची से सुनी होगी।

बेटा—और पिता जी उन चाची जी ने।

पिता—(गुस्से से), तेरे बाप से।

— मृदुल कुमार कोटा

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्थिर्यों कठिनाइयों तथा विरोधों के बीच लौह चट्टान की भाँति खड़े रहें।

राष्ट्र प्रेम दयानन्द के व्यक्तित्व को तीसरी महान् विशेषता थी। उनकी रग-रग में देश प्रेम व्याप्त था। उन्हें भारत की दीन दशा पर अत्यन्त शोक था और उन्होंने जीवन पर्यन्त देश मे एकता, राष्ट्रियता और प्राचीन आर्य गौरव को पुनर्जीवित करने का अथक प्रयत्न किया। उन्होंने भारत-वासियों को उनकी गौरवमयी संस्कृति का स्मरण कराते हुए उनमें राष्ट्रिय चेतना फूंक दी। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये एक धर्म, एक जाति, एक भाषा, एक शासन, एक संस्कृति का समर्थन किया। भारत की दासता का एकमात्र कारण वैदिक साहित्य, धर्म, संस्कृति और गौरव का विस्मरण था। न तो वैदिक ऋषियों ने, न बुद्ध, चैतन्य या शंकर ने भारत को एकता के सूत्र मे आबद्ध करने का प्रयत्न किया। केवल दयानन्द ही ऐसे विचारक थे जिन्होंने भारत की एकता को अपने जीवन का लक्ष्य चुना। उनकी दृष्टि सदैव देश सुधार पर लगी रही। एकबार जब एक निर्धन बुढ़िया ने कानपुर में अपने युवा पुत्र के शव को ईंधन के अभाव में गंगा में बहा दिया तो दयानन्द ने गद्‌गद् होकर करुण स्वर मे कहा, "हाय हमारा देश इतना निर्धन हो गया है, कि मृतक शरीरों को काष्ठ तक नहीं मिलता।" (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र भाग २ देवेंद्र मुखोपाध्याय पृष्ठ २०८) उनका यह कथन देश प्रेम का एक ज्वलन्त उदाहरण है। उनके शब्दों में, "मेरा उद्देश्य सबको आपस मे ऐसे मिलाना है जैसे जुड़े हुये हाथ। मैं कोल से ब्राह्मण तक मे जातीयता की ज्योति जगाना चाहता हू।" (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र, भाग २ देवेन्द्र मुखोपाध्याय पृष्ठ २३५) देश-प्रेम द्योतक ऐसा प्रमाण अन्यत्र नहीं मिलता। वे सदैव यह उद्‌घोष करते रहे कि "मेरा देश जो ससार भर का शिक्षक रहा, ससार भर मे धनी मानी रहा, संसार भर मे सत्य और सदाचार में अनुकरणीय रहा, किसी प्रकार पुनः अपना वही पहला उच्च स्थान प्राप्त करले।" (महर्षि दयानन्द सरस्वती-हरिश्चन्द्र विद्यालंकार-भूमिका पृष्ठ ८)।

दयानन्द सर्व प्रथम राजनैतिक विचारक थे, जिन्होंने स्वराज्य की व्याख्या की तथा उसका महत्त्व बताया। वे लिखते हैं, "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि सर्वोत्तम होता है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १४१) स्वशासन की कैसी अच्छी व्याख्या है। उन्हें आर्य जाति के गौरव का अभिमान था। भारत को ससार का गुरू बताते हुए उन्होंने घोषणा की कि "जितनी विद्या भूगोल में फैली है, वह सब आर्य्यावर्त्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रूम और उनसे योरप देश में, उनसे अमेरिका आदि देश में फैली है।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ१७४) दयानन्द ने देश की दशा को सुधारने तथा उसकी उन्नति करने में प्राण-पण से चेष्टा की। उन्होंने देशवासियों से पुकार कर कहा कि "आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करे।" (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २४५) राष्ट्रियता से ओत प्रोत दयानन्द के विचारों का दिग्दर्शन उनके पत्रों से होता है। अपने एक पत्र में जो उन्होंने मैडम ब्लेवस्टकी को लिखा था, उन्होंने लिखा कि, "जिनका एक देश, एक भाषा, एकत्र जन्म सहवास, और विवाहादि व्यवहार सम्बन्ध आपस में होते हैं उनसे उनको जितना लाभ और उनमें जितनी प्रीति होती है उतना अन्य देश वासियों से अन्य देशवासियों को लाभ और उन्नति नहीं हो सकती।" (महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन—भगवद्दत्त पृष्ठ २५५)।

देश प्रेम, देशोन्नति, राष्ट्रियता और देश सुधार को अपना ध्येय बनाते हुये दयानन्द ने जीवन भर सामाजिक कुरीतियों, तथा बाल विवाह, सती-प्रथा, जाति-प्रथा आदि का खंडन किया। वे विधवा-विवाह, स्त्री-शिक्षा, दलितोद्धार आदि के समर्थक थे।

दयानन्द के कार्य आध्यात्मिक, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहे। उन्होने साहित्य को भी अमूल्य देन प्रदान की। उन्होंने संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के गौरव को पुनः स्थापित किया। उनके विश्व-विख्यात ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य, ऋग्वेद-भाष्य भूमिका, संस्कार-विधि आदि उल्लेखनीय हैं। उन्होंने स्थान स्थान पर कहा है कि संस्कृत भाषा से ही आर्य जाति का उत्थान हो सकता है। उनके भाषण और लेखन ने भारतेन्दु युग के साहित्यकों को प्रेरणा दी, जिनकी रचनायें समाज सुधार और राष्ट्रीयता की भावनाओं से ओतप्रोत है।

१६ शताब्दी के विचारकों में दयानन्द का नाम सर्व प्रथम है। राष्ट्रियता के जनक के रूप में वे अग्रणी है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में "महान् गुरु दयानन्द के मन ने जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया।" वर्त्तमान 'जनतंत्र' 'अस्पृश्यता विरोधी कानून', 'शारदा ऐक्ट', 'स्वराज्य' आदि के दृष्टिकोण से उन्हें युग द्रष्टा कहा जावे तो अनुपयुक्त न होगा। उन्होंने भारत को जो सन्देश दिया है वह आज भी गूंज रहा है।

धन्य है दयानन्द, और धन्य है भारत जिसने दयानन्द जैसे युग-प्रवर्त्तक उत्पन्न किये। ★

(पृष्ठ ६ का शेष)

रहे हैं। यह जनता और सरकार के लिए सोचने की बात है।

एक दिन भारत में ये विदेशी व्यापार करने आये और अपनी धूर्तता से यहाँ की जनता को धोखा देकर यहाँ के शासक बन गये। ऐसा न हो कि ये अबर धर्म प्रचार के नाम पर भारत आकर देश को फिर किसी मुसीबत में डाल दें।

यह सर्व विदित है कि शिकारी उसी तालाब में चारा डालता है जिस में कुछ मिलने की आशा हो। भगवान हो जाने हिन्दुस्तान रूपी तालाब में ये अमेरिकन और ब्रिटिश धन का चारा किस नियत से डाल रहे हैं। आज तक ऐसा नहीं देखा गया कि जिस तालाब में मछली की कोई आशा नहीं उस तालाब में कोई भी शिकारी चारा डाले।

केन्द्रीय सरकार तथा बिहार सरकार से हमारा अनुरोध है कि अविलम्ब मध्य प्रदेश नियोगी कमीशन जैसा बिहार राज्य में भी एक जाँच कमीशन की नियुक्त हो और अवैध, छल, धोखा, धन का प्रलोभन, और झूठी शिक्षा का प्रलोभन देकर जिन लोगों को ईसाई बनाया जा रहा है उसे रोका जाय। तथा इनके कामों का निरीक्षण इन्हें उचित आदेश दिय जाय। इस प्रतिनिधि में सरकार के अलावे आर्यसमाज के प्रतिनिधि का भी होना आवश्यक है।

२—हजारीबाग के निकट डांटो ग्राम मे इनके द्वारा चलाये जाने वाले धांधली की पूर्ण रूप से जांच हो। यहाँ जो ईसाई पुनः हिन्दू हो गया है उन्हे मोकदमा करके, धमकी देकर के नाना प्रकार से तंग किया जा रहा है, इसे रोकने की पूर्ण व्यवस्था की जाय।

३—जहाँ जहाँ भी आर्य समाज हो उसे इनके अवैधानिक कार्यों को रोकने के लिये सरकार की ओर से सहायता दी जाय। क्योंकि किसी का धर्म उसकी अपनी कमाई नहीं बल्कि वह उसकी पैतृक सम्पत्ति होती है। धर्म उसके संस्कृति का सूचक होता है। धर्म परिवर्तन कराने का अर्थ है उसकी संस्कृति को मिटाना। आशा है समाज के और राष्ट्र के शुभचिन्तक इस सम्पूर्ण परिस्थिति पर विचार करेंगे। ★

(पृष्ठ ५ का शेष)

हमारा बस ही क्या है हम विदुर कुटी के इतिहास को सुरक्षित कर सकें, वहां एक पाश्चात्य तथा भारतीय राजनीति शिक्षा का केन्द्र स्थापित कर सकें। हमारे पास इस काम के लिये रुपया नहीं। बिजनौर की जनता के पास वे साधन नहीं, जिनसे राजर्षि विदुर की कीर्ति चिरस्थायी रख कर उनके प्रभाव से बिजनौर बल पा सके। बिजनौर के लोग कुम्भकरणी निद्रा में सोते हैं। उन्हें अपने इस भूभाग की संस्कृति की चिन्ता कब रही है। वे इस बात मे ही फूले नहीं समाते—कहते नहीं थकते—हमारे जिले के मन्त्री हैं, राज्य सरकार और नेहरू जी की सरकार मे भी रहे हैं, उन्हें यह और जोड़ कर कहना चाहिये कि मुगलों की सरकार में भी नजीमुद्दौला प्राइम मिनिस्टर थे। कहने से क्या होता है। पर देखा यह गया है कि अवध के शासकों ने जब से भूभाग ईस्ट इण्डिया कम्पनी को रेहन रखा था तब से यह जिला बराबर अवनति की ओर अग्रसर रहा है। केवल यह कहने से काम नहीं चलता कि जिले ने यह पैदा किया वह पैदा किया। और अब पिछले बीस वर्ष से मन्त्रियो को पैदा करता चला आ रहा है। मैं मानता हूं कि जिले में स्व० सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा पैदा हुए। उन्होंने ४० वर्ष तक देश के बड़े से बड़े समाचार-पत्रों का सम्पादन किया। पर जब वे आगरा में मरे तब वे दाने दाने के मुहताज रहे। स्व० पंडित पद्मसिंह शर्मा साहित्य संसार के महारथी रहे हैं। उन्हें अ०भा०हिंदी साहित्य सम्मेलन के मुजफ्फरनगर (बिहार) के १८ वें सम्मेलन का सभापति बनाया गया था। सबसे पहले हिन्दी का नोबुल पुरस्कार मंगलाप्रसाद पारितोषिक उन्हें बिहारी सतसई पर मिला था। ला०ठाकुरदास, ला० भवानीप्रसाद, स्व०राजा ज्वालाप्रसाद, पं० जयनारायण जी मिश्र आदि अनेक प्रतिभा के धनी महापुरुष इस जिले में पैदा हुये। पर हम उनसे कब प्रेरणा ले पाते हैं। बिजनौर में जितनी बेकारी, बेरोजगारी, छोटे बड़े उद्योगों की कमी है, उसको आँख मूंद कर उपेक्षा नहीं की जा सकता। आशा है इस राष्ट्रिय स्मारक का उद्धार हो सकेगा। ★

उपदेशकों-प्रचारकों का मास फरवरी १९५९ का पुरोगम

श्री ओ३म्प्रकाशजी शास्त्री महो०	११ से १३ तक	उत्सव	आ०स०	नामनेर आगरा
	१५ से १९ तक	"	"	गोरखपुर
	२१ से २४ तक	"	"	बलिया
श्री पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री महो०	१२ से १४ तक	"	"	उन्नाव
	१५ से १९ तक	"	"	गोरखपुर
	२० से २२ तक	"	"	बिसौली(बदायूं)
	२४ से २७ तक	"	"	पाली (हरदोई)
	२८ से ३ मार्च	"	"	अकबरपुर(कानपुर)
श्री सत्यमित्रजी शास्त्री महो०	२० से २३ फरवरी	"	"	बस्ती
	२६ से १ मार्च तक	"	"	फतेहपुर
श्री सच्चिदानन्दजी शास्त्री महो०	१ से ३ तक	"	"	दौलताबाद खीरी
	२० से २३ तक	"	"	पडरौना(गोरखपुर)
श्री राजाराम जी शास्त्री	२४ से २६ तक	"	"	पाली (हरदोई)
श्री विश्वनाथ जी त्यागी	२६ से १ मार्च	"	"	फतेहपुर
अवैतनिक उपदेशक				
श्री भद्रपाल जी प्रचारक	८ से ११ फरवरी	"	"	मेरठ शहर
	१२ से १४ "	"	"	उन्नाव
श्री रामचन्द्र शर्मा	११ से १४	"	"	नामनेर आगरा
	२४ से २७	"	"	पाली (हरदोई)
श्री धर्मदत्त जी आनन्द	७ से १२	"	"	चौक इलाहाबाद
	१४ से १५	"	"	गोरखपुर
	२० से २३	"	"	बहराइच
श्री गजराजसिंह प्रचारक	१९ से २२	"	"	सीतापुर
श्री धर्मराजसिंह	१ से ३	"	"	बहरिया
	७ से ११	"	"	चौक इलाहाबाद
	१४ से १९	"	"	गोरखपुर
	२० से २२	"	"	बिसौली(बदायूं)
श्री सर्वसुखप्रसाद	२६ से १ मार्च	"	"	फतेहपुर
	२० से २३ फरवरी	"	"	बस्ती
श्री रघुवर दत्त शर्मा	१ से २ "	"	"	बिचारान(खीरी)
	२ से १५	"	"	परसरा परसरी
श्री बालकृष्ण शर्मा	२० से २३	"	"	पडरौना गोरखपुर

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग



समस्त समाजों मे निवेदन

(श्री प्रो० इन्द्र एम० ए०, आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल)

आर्य मित्र हीरक जयन्ती, गुरु विरजानन्द स्मारक तथा विद्वानो के अभिनन्दन आदि योजनाओ से आज प्रत्येक आर्य भली-भाति अवगत हो चुका है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने अपनी दि० २५ व २६ अक्तूबर का बैठक मे इस योजना का पूर्ण कार्यक्रम निश्चित कर लिया है और उस कार्यक्रम के अनुसार यह उत्सव मथुरा मे मनाया जाना निश्चित हुआ है। श्री बाबू कालीचरण जी आर्य इस योजना के हेतु धन एकत्रित करने मे व्यस्त हैं और वह आपके प्रान्त का तूफानी दौरा कर रहे है। श्री स्नातक उमेशचन्द्र एम० ए० सम्पादक 'आर्यमित्र' इसके सयोजक हैं और वह भी इस योजना के प्रति बड़े ही प्रयत्नशील प्रतीत हो रहे है। इसके अतिरिक्त समिति के अन्य सदस्य गण भी इस योजना का सफलता मे निस्वार्थ भाव से किन्तु वैदिक धर्म के प्रसार एव अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करने हेतु तन, मन से सलग्न हैं। अत हमारा सबका भी यह कर्त्तव्य हो जाता है, कि हम भी जयन्ती की सफलता के हेतु अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने में जुट जाय। इस यज्ञ मे हमारा और हमारी समाजो का जो सक्रिय योग हो सकता है यह वह सबके लिये गौरव और अभिमान की बात होगी। इस सम्पूर्ण कार्य को हमें अपना ही कार्य समझना चाहिये और अपने दायित्त्व को सुन्दरता एव सफलता के साथ निभाना चाहिये। सभा हमारी हैं, सभा के पदाधिकारी हमारे हैं और सभा की योजनाए हमारी ही योजनाए हैं। अत हमे अपनी सभा की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर कार्य करना है। हमें अपने पदाधिकारियो के हाथ मजबूत बनाने हैं, हमे अपना योजनाओ को सफल बनाना है। समय हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। देखे हम सब कहाँ तक उत्साहपूर्वक अपने उत्तरदायित्त्व को निभाने के लिए तत्पर हैं।

आर्य-जगत

प्रचार समाचार—

—आर्य समाज समस्तीपुर (दरभंगा बिहार) का चतुर्थ उत्सव १५ से १८ जनवरी तक बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प्रचार से वहाँ की जनता में आर्य समाज के प्रति श्रद्धा बढ़ रही है।

—आर्य समाज औरया(इटावा) के स्थानीय समाज मन्दिर में पूज्य स्वा० नारायणानन्द जी ने २२ दिसम्बर से २६ दिसम्बर ५८ तक धार्मिक उपदेश दिये। स्वा० श्रद्धानन्द जी के जीवन चरित्र पर विशेष प्रकाश डालते हुए अनेक आर्य परिवारों में हवन का कार्य भी सम्पन्न किया।

—आर्य-समाज केराकत (जौनपुर) में दि० २३-१२-५८ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रभातफेरी एवं प्रीति भोज में आर्यवीर दल के सदस्यों का कार्य प्रशंसनीय था।

—आर्य-समाज रसौली (बाराबंकी) का उत्सव दि० २० सेदि० २८ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। दि० २० से २६ तक ग्रामों में प्रचार तथा दि० २७ से २८ तक समाज का उत्सव सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर "गो रक्षा आन्दोलन के अध्यक्ष श्री विद्याभिक्षु जी ने गो-हत्या निरोध सम्बन्धी प्रस्ताव एवं सर्वसम्मति से पास कराया।

—ग्राम त्यौंदा (विदिशा म०प्र०) जो कि पर्वत शृंखलाओं से आवेष्ठित है। इस ग्राम में श्री पं० रामचन्द्र जी ने जाकर २८ दि० से ४ जनवरी ५६ तक "वैदिक धर्म का प्रचार किया, दैनिक यज्ञ तथा संस्कार कराये, इस गाँव में यह प्रचार प्रथम बार हुआ। आशा है कि उपदेशकगण इस प्रकार के प्रचार कार्य को भविष्य में भी जीवित बनाए रक्खेंगे।

—दिनाङ्क १-१ ५६ को माता जगधात्री देवी जी आर्य समाज छर्रा (अलीगढ़) में पधारी, वहाँ उनका महिलाओं की स्थिति पर दो घण्टे व्याख्यान हुआ। जिसका महिलाओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। वहाँ से माता जी २-१ ५६ को कोड़ियागंज चली गई।

—आर्य-समाज सौरिख (फर्रुखाबाद) में ता० २७ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक स्वामी देवानन्द जी के व्याख्यान हुए। तथा दिसम्बर २६ १२-५८ को स्थानीय सेकेण्डरी स्कूल में भी स्वामी जी का प्रवचन हुआ। ३० एवं ३१ दिसम्बर को स्वामी जी के व्याख्यान दौलताबाद आर्य समाज में हुए।

—गुलकनी (राजपुरा) में ३१ दि० व १ जनवरी १६५६ को "मुहरी रेल दुर्घटना में बलिदान हुए वीरों का स्मारक दिवस बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। स्मारक का शिलान्यास श्री सर्वदानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीना नगर ने किया, तथा बलिदान के महत्त्व पर भी उपयुक्त प्रकाश डाला। इस अवसर पर आर्य जगत् के बड़े बड़े नेता पधारे हुए थे, सभी ने अमर शहीदों के प्रति अपनी-अपनी श्रद्धांजलियाँ व्यक्त की। पार्श्ववर्ति आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं ने भी इस अवसर पर अच्छा उत्साह दिखाया।

—आर्य समाज विनय नगर को केन्द्रीय बोर्ड आफ हायर एजूकेशन तिलक नगर देहली की कार्य कारिणी ने ५१) रु० आर्य समाज विनय नगर को भूमिदान (कथार्थ) देना स्वीकार किया और १०००) रु० की सहायता से वेदानुसन्धान कक्ष बनाने की इच्छा व्यक्त की है। इस सहयोग भावना के लिये बोर्ड का आर्य समाज की ओर से धन्यवाद दिया जाता है।

—श्री स्वामी नारायणानन्द जी सरस्वती इन्दौर ने अनवरत एक मास से पकेवर, अजीतमल, औरया, विधूना एवं भरथना की आर्य समाजो में कथा द्वारा प्रचार किया। और अब वे प्रचारार्थ ही शिकोहाबाद चले गये हैं। आशा है जन समूह स्वामी जी की कथाओं से लाभान्वित हो सकेगा।

—हल्द्वानी (जि० नैनीताल) आर्य समाज मे दि० ६ १-५६ से श्री स्वामी अमृतानन्द जी की कठोपनिषद् विषयक कथा हो रही है, तथा धर्मदत्त जी आनन्द अपने भजनों द्वारा जनता की नवचेतना में संलग्न हैं। स्वामी जी की कथा सुनने योग्य होती है।

—सुरसा (हरदोई) में दि० ११ १ ५६ को श्री पं० राम सेवक जी की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें प० शिवकुमार शास्त्री तथा अमियकिशोर जी के भाषण विशेष प्रभावोत्पादक रहे। अनेक व्यक्तियों ने सभा में भाग लिया।

उत्सव समाचार—

—आर्यसमाज बिसौली (बदायूं) का वार्षिक समारोह दि० २०, २१, २२, २३ फरवरी ५६ को होना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रतिष्ठित वक्ताओं की आगमन स्वीकृति आ चुकी है। सभी प्रेमी बन्धु सादर आमन्त्रित हैं।

—आर्यसमाज नासिरापुर (उन्नाव) का वार्षिक उत्सव २४ से २६ फरवरी ५६ तक होना निश्चित हुआ है। श्री शिव स्वामी जी जहाँ कहीं भी हों, इस अवसर पर पधारने का कष्ट करें।

—समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) का वार्षिक उत्सव विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी दि० १३, १४, १५ व १६ मार्च को कुल भूमि मे मनाया जायगा। उत्सव में बड़े-बड़े नेता संन्यासी एव आर्य उपदेशकों की आने को आशा है।

—गुरुकुल घासीपुरा (मुजफ्फरनगर) का वार्षिकोत्सव दि० २१,२२, २३ फरवरी को मनाया जाना निश्चित हुआ है। जिसके अन्तर्गत आर्य वीर दल सम्मेलन, सस्कृति सम्मेलन तथा गो सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है।

—मगरहाँ (मिर्जापुर) आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ३०-३१ जनवरी तथा १ फरवरी को होगा।

—पटना सिटी आर्य समाज का वार्षिक उत्सव २६ जनवरी से १ फरवरी तक मनाया जायगा। जिसमें अनेक विद्वानों की पहुँचने की सम्भावना है। सर्व साधारण सूचित किये जाते हैं।

— रक्सौल (चम्पारण) आ० स० का चौत्तीसवाँ वार्षिक उत्सव १२,१३,१४ को समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

आर्य वीर दल समाचार—

—दि० ४ जनवरी १६५६ को आर्यसमाज नई मण्डी (मुजफ्फरनगर) मे आर्य वीर दल के कार्य को प्रगतिशील बनाने के निमित्त, आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में दल के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की एक बैठक हुई। जिसमे गुरुकुल घासीपुरा को जिले के आर्य वीर दल का शिक्षण केन्द्र चुना गया। तथा शिक्षकों के निमित्त शिविर के आयोजन पर भी विचार किया गया। गुरुकुल घासीपुरा को उत्तरप्रदेश का प्रमुख केन्द्र बनाकर आर्य वीर दल का प्रसार कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इस क्षेत्र में घासीपुरा गुरुकुल की आर्य वीर दल शाखा अच्छा कार्य कर रही है।

—आर्यसमाज लल्लापुरा (बाराबंकी) तथा बुलन्दशहर नगर की सार्वजनिक सभाओं में पूर्व पाकिस्तान में सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध का खुले शब्दों में विरोध किया गया।

शोक समाचार—

—शोक के साथ लिखना पड़ रहा है कि नानपारा के उदार हृदय, दानी महानुभाव, जिन्होंने अपनी निजी १००००) का एक भवन स्थानीय समाज को दान दिया तथा समय-समय पर दान देने में अग्रगण्य बने रहे। ऐसे स्मरणीय श्री नानकक की फालिस द्वारा ३ जनवरी को मृत्यु हो गई। प्रभु से प्रार्थना है कि मृत व्यक्ति को सद्गति तथा पारिवारिक जनों को शोक समवहन की क्षमता प्रदान करें।

कृतज्ञता प्रकाशन

मेरे नवयुवक ज्येष्ठ पुत्र नित्यानन्द स्नातक आयुर्वेद शिरोमणि एम० ए० की मृत्यु पर जिन महानुभावों एवं संस्थाओं ने मेरे शोक विह्वल परिवार के साथ समवेदना प्रकट करते हुए शोक सहानुभूति के पत्र भेजे है, मै उनका अत्यन्त आभारी हूं, और उनके प्रति आर्यमित्र द्वारा कृतज्ञता प्रकट करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं,कि वह मेरे दिवंगत पुत्र की आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे, और हम सब दुखी जनों को धैर्य प्रदान कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होने की शक्ति प्रदान करे।

आपका अपना ही दुःखी साथी
रामेश्वर
गुरुकुल वृन्दावन

संस्कार समाचार—

—आर्यसमाज भोगपुर (बुलन्दशहर) में श्री रामचरणसिंह आर्य ने ७ जनवरी ५६ को श्री चोखेलाल जी के पौत्र का नामकरण सस्कार किया। बच्चे का नाम सुन्दरपाल रखा गया। इस अवसर पर आर्यसमाज को भी दान दिया गया।

—आदर्श नगर (लखनऊ) मे दि० ८ से ११ १ ५६ तक प० रामचन्द्र जी भजनोपदेशक ने वेद प्रचार किया परिणामतः अनेक यज्ञोपवीत सस्कार भी सम्पन्न हुए।

—बीना मे दि० ५ १ ५६ को श्री वेदप्रकाश जी के नवजात शिशु का नामकरण सस्कार श्री स्वा० सर्वदानन्द जी ने सम्पन्न कराया। बच्चे का नाम केवल कुमार रक्खा गया।

—बीना मे दि० ६ १ २६ को स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने श्री आर० डो० सर्राफ जी की नवजात कन्या का नामकरण संस्कार किया बच्ची का नाम कुमारी चन्द्रावली रखा गया।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
माघ १२ सक १८८०(१ फरवरी ५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य . ५३३३ तार 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पिछले पृष्ठ का शेष)

निर्वाचन समाचार—

—मिर्जापुर आर्य समाज
प्रधान—श्री विश्वनाथ प्रसाद द्विवेदी
मन्त्री—श्री घनश्यामदास शास्त्री

आर्यसमाज सहतवार (बलिया)
प्रधान—श्री अवधेश प्रसाद जी
मन्त्री—श्री रामेश्वर प्रसाद जी
आर्यप्रति० सदस्य—श्री सुदर्शनसिंह जी

—आर्यसमाज मंडी(हिमाचल प्रदेश)
प्रधान—श्री इन्द्रसिंह जी
मन्त्री—श्री लेखराज जी
आर्य प्रादेशिक सभा सदस्य—केवलराम जी आयुर्वेदाचार्य तथा इन्द्रसिंह जी

—वाराणसी (बुलानाला) श्री बुद्धदेव आर्य मण्डल पति ने ५९ में आर्य वीर दल के काय सचालनार्थ श्री मेवालाल का नगरनायक घोषित किया। तथा निम्न रूप कार्यकर्त्ताओं का निर्वाचन हुआ —
श्री बद्रलराम आर्य—सरक्षक
श्री मेवालाल आर्य—नगरनायक
श्री आराम आर्य—मन्त्री

—अधिकारियों के अतिरिक्त नगर के आर्य समाज—काशी, लल्लापुरा, खोजवा, तौवपुरा और भाजूवीर से एक २ प्रतिनिधि कार्य समिति के सदस्य होंगे।

—अलियापुर (फतहपुर) में आर्य समाज की स्थापना १ जनवरी ५९ को श्री प० रामगोपाल जी के प्रयत्न से हुई और निर्वाचन हुआ।
श्री गगाचरण जी—प्रधान
श्री नन्दलाल जी—मन्त्री

—बीना आर्यसमाज का चुनाव २८ १२ ५८ का सम्पन्न हुआ जिसमें श्री जगनन्दन सिंह जी को प्रधान पद से तथा भवानीप्रसाद जी को मन्त्री पद से सम्मानित किया गया।

—देवनगर (फिरोजाबाद) में दि० ११ १ ५९ को श्री बहोरीलाल जी के सद्प्रयत्नों से एक आर्यसमाज की स्थापना हुई। जिसके प्रधान पद को श्री सुखस्वरूप जी ने तथा मन्त्री पद को दिनेशचन्द्र पकज जी ने अलकृत किया।

—गुरुकुल घासीपुर आर्यसमाज के निर्वाचन मे श्री आचार्य देवव्रत जी को प्रधान तथा श्री रामेश्वरदयालु जी को मन्त्री निर्वाचित किया गया।

—आर्य कुमार सभा गुरुकुल घासीपुर के निर्वाचन मे ब्र० छत्रपाल जी प्रधान एव ब्र० धर्मदेव जी मन्त्री चुने गये।

—गज डुडवारा (एटा) आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन दिनाक ४ १ ५९ का सम्पन्न हुआ। जिसम बाबू महतावराम जी प्रधान तथा मु शीलाल जी मन्त्री निर्वाचित हुए।

—समसपुर आ० स० (अलीगढ़) का जीर्णोद्धार किया गया है जो कि प्रसन्नता की बात है, आशा है सम्बन्धित सदस्य भविष्य में समाज को सतत गतिशील बनाये रक्खेंगे। समाज के निर्वाचन में श्री तुलाराम जी को प्रधान तथा श्री सोहनलाल जी को मन्त्री चुना गया।

प्रस्ताव—

—आर्य समाज के पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर, पूर्वी पाकिस्तान में लगे प्रतिबन्ध के फलस्वरूप, आर्य समाज बहजोई तथा मुरादाबाद ने रोष प्रकट किया और भारत सरकार से प्रार्थना की कि वह अविलम्ब इस विषय में अपना उचित कदम उठाए। जिससे उत्तेजित जनता का रोष शमन हो सके।

अन्यान्य समाचार—

—मुजफ्फर नगर नई मण्डी आर्यवीर दल के सदस्यों ने निश्चय किया है कि वे अन्य वर्षों की भांति इस वर्ष भी नेता सुभाषचन्द्र जी की जयन्ती को उत्साह पूर्वक मनाएगे। तथा दि० २५ १२ ५८ को धन सग्रहार्थ आये हुए श्री विश्वनाथ जी को ११) देते हुए आगे और धन देने का वचन दिया है।

—विश्व व्यापी वेद प्रचार योजना को कार्य रूप में परिणत करने के लिए आर्यव्रत आर्य विद्वान् मण्डल की एक आवश्यक बैठक दि० १ २ ५९ को ४ बजे सायकाल करोलबाग आर्यसमाज में होगी। देहली का सभी समाजें निमन्त्रित की जाती हैं।

—पुनपुन (पटना) आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री श्रद्धानन्दसिंह जी का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक मृत्यु हो गई है, इसलिए समाज की १० १ ५८ की सार्वजनिक सभा मृत व्यक्ति को आत्मिक शान्ति तथा दु खी पारिवारिक जनों के दुख सम वहन के लिए प्रभु से कामना करती है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

अभिनन्दन किया था। वहा से आकर वे पुन पजाब में आकर प्रचार कार्य में लग गये। इससे पूर्व पजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह के सद्भावना मिशन में जाने वाला सन्यासियों में से ये एक थे।

यह किसको पता था कि अपने स्वजनों से सैकड़ों मील दूर जनता जनार्दन के बीच में ही वह पुण्यात्मा अपनी देह त्याग करेगी और उनकी कर्मभूमि को ही स्मशान भूमि बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

गत ६० वर्षों में अनथक सेवा करने वाले इस सन्यासी की, उत्तर प्रदेश। पजाब राजस्थान और बगाल की आर्य जनता कैसे स्मृति रखेगी, यह एक विचारणीय प्रश्न है। हम स्वामी जी की दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते हैं और उनके पारिवारिक जनों विशेषता उनकी एकमात्र सन्तान श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक से इनके लिये समवेदना प्रकट करते हैं।

आज उनका परिवार नहीं, अपितु आर्य जगत् गुरुकुल वृन्दावन, और वैदिक साधना आश्रम, यमुनानगर आदि उनके बिना सूने हो गये हैं।

बाबूराम भारती द्वारा मग[illegible] आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई [illegible] लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य) । एक प्रति का ०० नए पैसे

लखनऊ मंगलवार माघ ? शक १८८०, माघ शुक्ल १, वि० २०१५ — फरवरी १९५९ ई०

विदेश में १५ शलिंग

देवता वसन्त का स्वागत करते हैं

ऋतुराज वसन्त आ रहा है। प्रकृति उनके स्वागत करने के लिये नव सज्जा से विभूषित होने लगी है। वृक्ष और लताए अपने प्राचीन जीर्ण स्वरूप परिवर्तित कर नव पल्लव पुष्पों से सुशोभित हैं। सरसों के पुष्प प्रकृति की वासन्ती साडी के रूप में शोभायमान है। भ्रमर और मस्त समीर कोलाहल द्वारा ऋतुराज के आगमन की घोषणा कर रहे हैं।

ऋतुराज का स्वागत करते हुए ... में ... सभार है ... के अनुसार वसन्त आयु और बलवृद्धि का ... जाता है

वसन्तेन ऋतुना देव वसव ... स्तुता ... नरराशंसा हविर् ... वय दधु

(यजुर्वेद अ० ... म० ...)

वसन्त ... त्रिवृत् अर्थात् त्रिगुण प्रबल वेग से प्रकट होते हैं ... सूर्य के प्रकाश ... पकर्ता ... प्राणियों में आयु और बल वृद्धि होती है

... और मानसिक दशाओं में भी परिवर्तन ... से पूर्ण ... लगता है यह परिवर्तन नवनिर्माण ... सन्देश होते हैं

वसन्त में मानव समाज का ... और वस्तुओं के रूप में विभक्त हो ... और ... अर्थात् ... बल तेज ... क्रम और ... में शान्ति स्थापना में सफलता प्राप्त कर राष्ट्र के अधिकार ... प्रजा के ... सम्भरण में सफल ... समाज में ... विद्वान और ... का प्रचार और प्रसार करते हुए सुन्दरतम विचारों ... भावना के समान ... के स्वरों में ... है

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत सह । तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेष यत्र देवाः सहाग्निना

राष्ट्र के लिये ब्राह्म और क्षात्र ... संतुलित महत्व को प्रस्तुत करते हुए ... शक्तियों समान विकास ... का बुद्धि ... और सैन्य शक्ति में ... नहीं ... इसी कारण ... के विकास करते हैं।

इस ... स्वरूप गुरुकुलों की पवित्र भूमियों में सरस्वती समा ... हुआ करता था। वसन्त ऋतु में विद्वानों के सामूहिक सम्मेलनों का आयोजन गुरुकुलों में होता था और ... समाधान ... किया जाता था। इसी अवसर पर ... और ... प्रदान ... था त्रिवृत् महायज्ञ ... पर सम्पन्न किया जाता था।

वसन्त ... ज्ञानात्मक सन्देश की परम्परा शनै शनै सरस्वती सम्मेलन के रूप में ... हुई और अब विलुप्त हो चुकी है। क्या वसन्त आगमन की शुभ वेला में इस परम्परा के लिये ... और राष्ट्र में गम्भीर चिन्तन और निर्माण का निनाद ... सकेगी ?

योगेश्वर कृष्ण ने वसन्त का सम्मान करते हुए स्वयं कहा था

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ।। ... ३५

ऋतुओं में ऋतुराज वसन्त का गौरव धारण करने वाले कृष्ण हमें दिव्य सन्देश दे सके। वसन्तागमन पर हम वैदिक सन्देश की रक्षा के योग्य बन सकें हमारे लिये आज का यही सन्देश है आदेश है

सम्पादक—

जैनमत की अर्वाचीनता

(ले०—श्री पं० भवानीलाल भारतीय एम० ए०, सि० वाचस्पति)

[जैन मत की नवीनता और प्राचीनता का प्रश्न प्रस्तुत हुआ था। आर्य समाज का मत बहुत स्पष्ट और प्रामाणिक है। प्रस्तुत लेख में युक्तियों और प्रमाणों से "जैन धर्म नवीन है" यह प्रतिपादित कर जैन बन्धुओं को आर्य समाज के पक्ष को मानने की प्रेरणा विद्वान लेखक ने दी है। —सम्पादक]

सिद्धान्त-विमर्श

११ जनवरी के आर्यमित्र में 'जैन धर्म प्रचीन है या नवीन' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसके लेखक महोदय ने कुछ अपुष्ट प्रमाण जैनमत की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए दिये हैं। उनके द्वारा दिये गये प्रमाणों पर कुछ लिखने से पूर्व उक्त लेख में जो अन्यान्य भ्रान्त बातें लिखी गई हैं,' उनका समाधान कर देना भी उचित होगा। लेखक के मत में परमात्मा निराकार है, परन्तु लोगों ने उसे हृदय गम्य करने के लिए साकार बना दिया है। हमारा निवेदन है कि, संसारी लोगों के बनाने या बिगाड़ने से परमात्मा के नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप पर कोई आँच नहीं आती। निराकार का साकार बनना ही जब सम्भव नहीं है तो, लोग अपनी कल्पना से चाहे कुछ भी कर लें, वह ईश्वर पूजा की कोटि में नहीं आ सकता।

अगले अनुच्छेद में जो अवतारों और पैगम्बरों की बात कही गई है उसमें लेखक का यह कथन असत्य है कि 'हिन्दू धर्म शास्त्र इन अवतारों को ईश्वर नहीं मानते किन्तु इसे ईश्वर का अवतार मानते हैं।' वस्तुतः लेखक महोदय पौराणिक हिन्दू मत से अनभिज्ञ है। पौराणिक मत के अनुसार तो अवतार ही ईश्वर हैं। तुलसी दास ने लिखा है—

'राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी'

अतः अवतारवादियों और पैगम्बरवादियों को सच्चा आस्तिक नहीं माना जा सकता।

अब प्रश्न रह जाता है, जैन मत की प्राचीनता का। स्वामी रामेश्वरानन्द जी का कथन ठीक है कि ३००० वर्ष पूर्व जैन तीर्थंकर ही नहीं थे तो उनकी पूजा का प्रश्न ही नहीं उठता।

राजस्थान विधान सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री नरोत्तमलाल जोशी ने किसी जैन सम्मेलन में जैन मत को वैदिक धर्म से भी प्राचीन बतला दिया था। लेखक ने इसका तीव्र प्रतिवाद किया और नवयुग (जयपुर) में इसका खण्डन किया। मेरे वक्तव्य के उत्तर में दो जैन बन्धुओं ने अपने पत्र प्रकाशित कराये, जिनके प्रामाणिक उत्तर मैं १ जून १९५८ के आर्य मित्र मे प्रकाशित करा चुका हूं। जैन संघ के मन्त्री जी भी उनका अवलोकन कर ले।

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी की कल्पना वैदिक धर्म को मान्य नहीं है। हमारे मत मे तो उन्नति और अवनति के लिये कोई पृथक काल विभाजन की व्यवस्था नहीं है। जिसे हम उन्नति का युग कहते है, उसमे भी अधोगति के प्रमाण ढूंढे जा सकते हैं, और अधोगति के काल मे भी उन्नतिजनक घटनायें होती हैं। अतः ऐसी थोथी कल्पना का हमारे लिये कोई मूल्य नहीं।

हमारी यह मान्यता है कि जैनियों के तथाकथित २४ तीर्थंकरों में केवल दो का ही ऐतिहासिक अस्तित्व स्वीकार किया जा सकता है और वे हैं—पार्श्वनाथ और महावीर। अन्य २२ तीर्थंकरों की सत्ता साध्य कोटि में ही है। इस कथन के लिए हम अवसर आने पर अनेक ऐतिहासिक विद्वानों की साक्षियां भी उपस्थित कर सकते हैं। जैन शास्त्रों में इन २२ तीर्थंकरों के शरीर का परिमाण और उनकी आयु के विषय में जो अतिशयोक्तिपूर्ण बातें लिखी गई हैं, उन्हें दृष्टि में रखते हुए इन तीर्थंकरों के अस्तित्व को स्वीकार करना असम्भव है।

लेखक के इस कथन से भी हम असहमत हैं कि, निर्वाण प्राप्त होने पर ये तीर्थंकर ही निराकार ईश्वर बन जाते हैं, और उन्हें परमात्मा के तुल्य पूजा जाता है। वैदिक धर्म के दृष्टि बिन्दु से परमात्मा में सृष्टि की रचना, पालन और संहार की शक्ति निहित है। इन तीर्थंकरों को जैन बन्धु ईश्वर का दर्जा प्रदान करते हैं, क्या वे सृष्टि के सृजन, पालन और संहार की शक्ति रखते हैं। यदि नहीं तो लेखक का यह कथन असिद्ध ही है। सृष्टिकर्त्ता परमात्मा ने तो इन तथाकथित तीर्थंकरों को भी बनाया है।

अतः प्रश्न रह जाता है, तीर्थंकरों की प्राचीनता का, और वैदिक धर्म के ग्रन्थों में उनका उल्लेख पाये जाने का। शास्त्री जी ने ऋग्वेद मण्डल २ के ३३ वें सूक्त का १० वाँ मन्त्र प्रस्तुत किया है और उसमें प्रयुक्त 'अर्हन्' शब्द से जिन देवता को सिद्ध करना चाहा है। परन्तु केवल 'अर्हन्' शब्द आ जाने से ही वह जैन तीर्थंकर का वाचक नहीं हो सकता। शास्त्री जी की कृपा होती यदि वे मंत्र का कोई प्राचीन या अर्वाचीन भाष्य भी अपने कथन की पुष्टि में प्रस्तुत कर देते। केवल उनके अर्थ को तो मान्यता दी जा सकती नहीं। क्या सायण, भट्ट भास्कर, स्कन्द स्वामी आदि प्राचीन और दयानन्द, जयदेव विद्यालंकार आदि अर्वाचीन भाष्यकारों ने इस मंत्र का वैसा अर्थ किया है, जो शास्त्री जी समझते हैं। वेद मंत्रों में प्रयुक्त शब्दों का वास्तविक अर्थ न समझ कर उनसे मनमाने अर्थ कल्पित करने की प्रवृत्ति तो यहाँ तक बढ़ गई है कि 'ईशावास्यं' से ईसा मसीह और 'अदीनास्याम शरदः शतं' से मुसलमानों के मदीने तीर्थ का अर्थ भी निकालने के यत्न हुये हैं, परन्तु विद्वानों के निकट ये प्रयत्न उपहासास्पद ही हैं।

ऋग्वेद मण्डल १ के ९४ वें सूक्त में तो अग्नि की स्तुति है, वहाँ 'अर्हन देव' कहाँ? शास्त्री जी ने मंत्र संख्या ही नहीं दी। यजुर्वेद में ऋषभदेव, पार्श्वनाथ और नेमिनाथ का उल्लेख ढूंढना वैसा ही है, जैसा उपर्युक्त उदाहरण में बतलाया गया है। ऋषभ बैल के लिये प्रयुक्त होता है, पार्श्व दिशा के लिये और नेमि पहिये की होती है। वेदों में तीर्थंकर कहाँ?

भागवत पुराण में जिन ऋषभदेव का उल्लेख हुआ है, यदि जैन मतानुयायी उन्हें अपना तीर्थंकर मानेंगे तो घाटे में रहेंगे। क्योंकि भागवत में लिखा है कि ऋषभदेव पूर्ण विष्णु भक्त, यज्ञों तथा वेदों में श्रद्धा रखने वाले तथा ब्राह्मण भक्त थे। यदि जैनियों के तीर्थंकर ऐसे ही वेद, ईश्वर और ब्राह्मणों के भक्त थे, तो उनके अनुयायी आज वेद विरोधी नास्तिकों की कोटि में क्यों चले गये? उन्हें भी अपने तीर्थंकर का अनुकरण कर विष्णु का भक्त और यज्ञों एवं वेदों का विश्वासी बनना चाहिये। भागवत वर्णित ऋषभ ऐसे ही थे। उन्हें स्वीकार करें तो हमारी बधाई।

अब वाल्मीकि रामायण के प्रमाण पर विचार करें, जिसमें लिखा है कि महाराज दशरथ श्रमणों को भोजन कराते थे। शास्त्री जी श्रमणों का अर्थ जैन साधुओं से लेते हैं। प्रथम तो श्रमण का अर्थ जैन साधु नहीं होता। संन्यासी मात्र के लिये 'श्रमण' शब्द का प्रयोग होता है चाहे वह वैदिक हो या बौद्ध या जैन। अतः रामायण में श्रमण शब्द देखते ही मुंह पर पट्टी बांधने वाले श्रमणों का अर्थ लगाना लेखक की अनोखी सूझ है। यदि दुर्जनतोष न्याय से इस शब्द को जैन साधु का सूचक ही मान ले, तो भी शास्त्री जी का पक्ष ही निर्बल पड़ेगा। कारण यह कि रामायण बालकाण्ड सर्ग १४ का यह प्रसंग अश्वमेध प्रकरण का है। महाराज दशरथ ने इस यज्ञ के अवसर पर तपस्वियों और साधुओं को भोजन कराया। अब शास्त्री जी विपत्ति में फंसते हैं। 'उभयतो पाश रज्जु' वाला प्रसंग उपस्थित होता है। हमारे जैन बन्धु तो अश्वमेध आदि वैदिक यज्ञों को हिंसापरक मानते हैं। फिर जैन साधु उस यज्ञ में क्यों सम्मिलित हुए होंगे? यद्यपि आर्य समाज अश्वमेधादि यज्ञों को सर्वथा अहिंसापरक ही मानता है, तथापि जैन मत वालों के लिये यह एक (दुविधा) उपस्थित हो जाती है। यदि दशरथ के अश्वमेध मे श्रमणों का अर्थ जैन साधु करते हैं, तो उनका मांसाहारी होना अर्थापत्ति से सिद्ध हो जाता है। यदि उक्त यज्ञ मांस रहित था तो, क्या अब भी जैन साधु वैदिक यज्ञों के अवसर पर भोजन करने के लिये तैयार हैं? यदि ऐसा है तो फिर वैदिक कर्मकाण्ड और यज्ञ प्रथा की निन्दा क्यों की जाती है?

शांकर भाष्य का प्रमाण नहीं दिया गया। जिन पुराणों मे तीर्थंकरों का उल्लेख है वे अधिक प्राचीन नहीं है। अधिकांश पुराणों का निर्माण इधर २ हजार वर्षों के भीतर हुआ है और उनमें भी समय समय पर प्रक्षेप होते रहे हैं। ऐसी स्थिति में पुराणों का प्रमाण नहीं माना जा सकता। इन पुराणों में तो शंकर, रामानुज, कबीर आदि का भी उल्लेख है। इन्हें हिन्दुओं का 'प्राचीनतम' ग्रन्थ कहने की भूल शास्त्री जी ने क्यों की, यह हम समझने में असमर्थ हैं।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

वेदोपदेश

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्योनूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति ॥ –ऋ० १।१।१।२

हे सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ! ईश्वराग्ने ! "पूर्वेभिः" विद्या पढ़े हुए प्राचीन "ऋषिभिः" मन्त्रार्थ देखने वाले विद्वान् और "नूतनैः" वेदार्थ पढ़ने वाले नवीन ब्रह्मचारियों से "ईड्यः" स्तुति के योग्य "उत" और जो हम लोग विद्वान् वा मूर्ख हैं उनसे भी अवश्य आप ही स्तुति के योग्य हो सो स्तुति को प्राप्त हुए आप हमारे और सब संसार के सुख के लिए दिव्य गुण अर्थात् विद्यादि को कृपा से प्राप्त करो, आप ही सब के इष्टदेव हो।

(आर्याभिविनय से)

शुभ समाचार—हार्दिक बधाई

श्री आनन्द स्वामीजी महाराज आगामी वर्ष के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पुनः चुन लिये गये। २०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। प्रधान को ही मन्त्रिमण्डल बनाने का अधिकार दे दिया गया।

मित्र-परिवार की ओर से श्री स्वामीजी को हार्दिक बधाई।

आर्यमित्र

लखनऊ—८ फरवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

ऋतुराज वसन्त-सन्देश

प्रकृति में ऋतुराज वसन्त के स्वागत की तय्यारियाँ हो रही हैं। प्रकृति का कण कण उल्लसित हो वसन्त-स्वागत मे अपने ओज और वैभव का समर्पण कर रहा है। शस्य-श्यामल धरा नवांकुरित पादप और लतायें पशु-पक्षी वसन्तागमन का समाचार सुन जीवन में नवीनता धारण कर सजग चैतन्य हो उठे हैं। कालचक्र के मंगल अवसर स्वरूप वसन्त का स्वागत प्रकृति का धर्म बन गया है। प्रति वर्ष हम प्रकृति में इस नाटक का अभिनय देखते हैं। प्रकृति का अभिन्न अङ्ग होने और साथ ही उसका सूक्ष्म निरीक्षक होने के नाते मानव सदैव वसन्त का स्वागत करता रहा है। आज भी उसी परम्परा के अनुसार हमारे मन प्राकृतिक सुषमा से आह्लादित है और सम्पूर्ण मानव जाति वसन्त का स्वागत कर रही है।

प्रकृति के साथ-साथ वसन्त मानव के हृदयों का भी संस्पर्श कर सके और मानवता की बुराइयाँ समाप्त हों तभी वसन्त का वास्तविक स्वागत करने के हम अधिकारी हो सकते हैं।

आज मानवता, धर्म, संस्कृति और राष्ट्र सभी संकट-ग्रस्त हैं। मानव द्वारा मानव का शोषण धर्म का कल्पित दम्भ और ढोंग, संस्कृति के नाम पर चलने वाली विलासिता, राष्ट्र में विनाशक तत्वों का अस्तित्व तथा इसी प्रकार की अनेक दूषित मनोवृत्तियां मानवता को जर्जरित बनाये हुए हैं।

मानवता वसन्त का वास्तविक अर्थों में तभी स्वागत कर सकेगी जब विश्व का मानसिक सन्तुलन ठीक हो जाय और स्वस्थ चिन्तन और नव-निर्माण की ज्योति जाग उठे।

विश्व युद्ध की विभीषिका, राष्ट्रों के पारस्परिक कलह, सत्ता संघर्ष और अनैतिक जीवन के रहते मानव वसन्त के स्वागत का अधिकार नहीं पा सकता।

यदि मानव वसन्त का स्वागत करते हुए जीवन के लिये सन्देश की कामना करता है तो वैदिक विचार-धारा के अनुसार जीवन का मधुमय विकास ही वसन्त का—मधुमास का सन्देश है। व्यक्ति, जाति, राष्ट्र सभी का मधुमय विकास हो यही विश्व-शांति का एकमात्र सूत्र है। जब मानव मधुमय विकास द्वारा आदर्श जीवन का निर्माण कर लेगा तभी वह वसन्त का सच्चा स्वागत कर सकेगा। प्रभु हमे शक्ति दें कि अपने जीवन को मधुमय बना मानवता के जीवन मे वसन्त ला सकें यही हमारी ओर से वसन्त का स्वागत होगा।

कर्त्तव्य के प्रति सजगता

अनुशासन की मर्यादाओं का उल्लंघन आर्यसमाज को नष्ट कर देगा

कोई भी संघटन चाहे कितने ही उच्चादर्शों से निर्मित हुआ हो, जब तक वह अनुशासन की मर्यादाओं का पालन नहीं करता, उन्नति नहीं कर सकता और अनुशासन के द्वारा उन्नति कर लेने के बाद जब अपनी सफलता का उसे गर्व होने लगता है तब पुनः वहाँ अनुशासन की उपेक्षा आरम्भ हो जाती है। इस अवस्था में उस संघटन का पतन आरम्भ हो जाता है।

आदर्श सदैव अच्छे और उच्च रहते हैं परन्तु व्यवहारकर्त्ताओं के चरित्र ही उनके महत्त्व की घोषणा करते हैं। आर्यसमाज की वर्त्तमान परिस्थिति आदर्शों की उच्चता होते हुए भी भयावह बन चुकी है।

यह पदलोलुपता, ईर्ष्या, द्वेष, आपसी कलह अनुशासनहीनता, सहयोगियों तथा वृद्धों के प्रति अश्रद्धा कृतज्ञता का अभाव आदि बुराइयाँ हमारे जीवन में ओत-प्रोत हो गई हैं।

हमने ऋषि दयानन्द के शिष्य के रूप में संसार का उपकार और सुधार करने की प्रतिज्ञा ली है पर आज वह दुर्भाग्य की घड़ी आ गयी है कि हम दूसरों का सुधार करने का अधिकार खो चुके हैं। हमारे जीवन मे व्यक्तिगत और समष्टिगत व्यवहार मे, हमारे कार्य-कलापों में स्वार्थ महास्वार्थ व्याप्त हो उठा है और महाभारत के इतिहास की दुर्घटना होती नजर आ रही है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लिये तप-त्याग के आदर्शों की सुरस्य धारा पर चलने वालो का जीवन संकुचित एवं गर्हित दुरभिसंधियो का आज अखाड़ा बन चुका है। आज आर्यसमाज के संघटन में जिस यादवी मनोवृत्ति का साम्राज्य व्याप्त है वह आर्यसमाज को जड़ो मे कुशो मे चाणक्य के मट्ठे जैसा कार्य करेगी और फलतः ८० वर्ष मे हम ऋषि दयानन्द और अन्य तपस्वी-त्यागी आर्य बन्धुओ के बलिदानों मे जो यश अर्पित कर सके है वह सदैव के लिये नष्ट हो जायगा। हमारे विशाल मन्दिर, बड़ी-बड़ी संस्थायें और विद्यालय-महाविद्यालय बने रहेंगे पर उनमें से आर्यसमाज की आत्मा सदैव के लिये विलुप्त हो जायगी।

क्या इस भयावह परिस्थिति के सम्बन्ध मे आपने कभी विचार किया है ? हम प्रतिदिन प्रभु से प्रार्थना करते है "धियो यो नः प्रचोदयात्" क्या आज तक हमने अपनी बुद्धियों में जो पवित्रता उत्पन्न की है उसे हम प्रचार प्रपंचों की आंधियो से अपवित्र हो जाने देंगे ? हमारा कर्त्तव्य है कि संघटन की पवित्रता और उन्नति के लिए सदैव सावधान रहें और सतर्कता के साथ कार्य को आगे बढ़ावें। कार्य-संचालन में कभी सहयोग न देनेवाले और बरसाती मेढ़कों की भांति अवसरवादी लोगों के शोर-शराबे में आकर यदि कोई आर्य बन्धु या आर्यसमाज अपनी विचार-शक्ति को कुण्ठित कर लेता है तो यही कहना पड़ेगा कि अभी वहाँ "धियो यो नः प्रचोदयात्" का प्रभाव नहीं हो सका है।

अपनी बुद्धि को सुज्ञ रखते हुए संघटन के कार्यों की समीक्षा कीजिये। नियम और मर्यादा की शृंखलायें सदैव सबके लिये एक सी रहेगी। यदि आज कोई उनका उल्लंघन करता है तो कल उनकी पगड़ी न उछाली जायगी यह कौन कह सकता है ? इस सबका परिणाम संस्था की मृत्यु ही होगा। क्या इस यादवी के रहते आर्यसमाज-आन्दोलन सजीव बना रह सकेगा, इस प्रश्न का उत्तर युग की माग है।

ऋषि दयानन्द प्रजातन्त्र की बुराइयों से भलीभांति परिचित थे। अतः उन्होंने संघटन की पवित्रता और दृढ़ता के लिये जहां अनेक नियम निर्धारित किये वहीं हमें निर्देश दिया कि इस आंधी मे अन्धे न हो जाना और लिख दिया—'सौ मूर्खों के मुकाबले दस विद्वानो की बात स्वीकार करना चाहिये।"

आर्यसमाज की गौरव-रक्षा और उन्नति के लिए जिसके हृदय में लगन और उत्साह है उसे अपना मार्ग चुन लेना चाहिये। आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओ मे मानव सुलभ कमजोरियाँ हो सकती है पर उनका ध्येय निष्ठा और चारित्रिक पवित्रता एवं कार्य-कुशलता के प्रति किसी को सन्देह नहीं है। ऐसी अवस्था मे जिन्हे आपने सर्व सम्मति से प्रान्त मे और सार्वदेशिक मे नेतृत्व सौंपा है उनको बातो का विश्वास करना प्रत्येक आर्य और आर्यसमाज का कर्त्तव्य है।

इसके विपरीत जो आचरण करते हैं, कर रहे है, करेंगे, उनकी तीव्र भर्त्सना और निन्दा की जानी चाहिये। यदि आर्यसमाज में से अदूरदर्शी, असहिष्णु, गुण्डातत्व समाप्त नहीं हुआ तो यह विष हमें कहीं का नहीं छोड़ेगा।

प्रजातन्त्र के नियमों के अनुसार समाजें और उनके प्रतिनिधि सदैव सही जानकारी प्राप्त करने के अधिकारी है और रचनात्मक समालोचना का सदैव स्वागत किया जायगा पर द्वेष, दम्भ और षडयन्त्रों की गुण्डागर्दी से आर्यसमाज की महान् थाती को नष्ट नहीं होने दिया जा सकता। उसकी रक्षा करना प्रत्येक आर्य का पवित्र कर्त्तव्य है। ★

जयन्ती-योजना सफल करना आर्यों का कर्त्तव्य है

प्रान्त में जयन्ती कार्यकर्त्ताओं की गतिविधियाँ—कार्यालय में निरन्तर उत्साहवर्द्धक पत्रों और सूचनाओं की भरमार

श्री मोहनलालजी आर्य

श्री संयोजक जी, नमस्ते !

जयन्ती के सम्बन्ध में मैंने पूर्व से ही अपने जिले में प्रचार कर रक्खा है। आपके पत्र से और उत्साह मिला है। मैं पुनः अपने क्षेत्र का भ्रमण आरम्भ कर रहा हूं। आर्य समाज आगरा नगर से १०००) तथा अन्य स्थानों से १५००) से अधिक शीघ्र ही कार्यालय को भिजवा दूंगा। आप पत्र द्वारा समाजों को प्रोत्साहित करते रहें। हम अवश्य सफल होंगे।

आगरा आपका
२२।१।५९ मोहनलाल आर्य

श्री शिवलालजी व श्री मोहनलाल

श्री मन्त्रीजी हीरक-जयन्ती,

आपके कार्यालय से प्रेरणापूर्ण पत्र मिला। जिले में जयन्ती के प्रति लोगों में पर्याप्त उत्साह है और जयन्ती में पहुँचने के लिये एक लम्बी सूची जिले के आर्य भाइयों की तैयार हो गयी है। हिन्दी-आन्दोलन के सत्याग्रही बन्धुओं में विशेष उत्साह है—आपने हमारे जिले के लिये २०००) का कोटा रक्खा है हम यथाशीघ्र अधिक से अधिक धन संग्रह करने का प्रयत्न करेंगे। हम आशा करते हैं कि हमारा जिला समस्त प्रान्त में अग्रसर रहेगा।

बुलन्दशहर आपके शिवलाल
२२।१।५९ प्रधान आ० स० बुलन्दशहर
मोहनलाल मंत्री, जिला सभा, बुलन्दशहर

श्री चन्द्रनारायणजी एडवोकेट

श्री स्नातक जी,

जयन्ती के लिये हम लोग पूर्ण उत्साह से कार्य आरम्भ कर रहे हैं। पिछले दिनों में अस्वस्थ रहा, अब ठीक हूं और शीघ्र रुहेलखण्ड का दौरा आरम्भ कर रहा हूँ। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि जयन्ती के लिये आप द्वारा निर्धारित कोटे से अधिक बरेली प्रदान करेगा।

२६।१।५९ आपका चन्द्रनारायण

श्री चोखेलाल सत्यपालजी

भाई उमेश,

मैंने अपने जिले में प्रचारार्थ श्री गदाधर वर्मा को प्रचार-कार्य सौंप दिया है और शीघ्र ही मैं भी तूफानी दौरे पर निकल रहा हूँ। जयन्ती को हर हालत में सफल बनाना है। इस कार्य में जरा भी ढील करना प्रत्येक आर्य की अकर्मण्यता और कर्त्तव्य-हीनता ही कहा जाएगा।

शाहजहाँपुर भाई
२४।१।५९ चोखेलाल सत्यपाल

श्री हरप्रसादजी

श्री स्नातक जी,

जयन्ती का कार्य उत्साह-पूर्वक आरम्भ कर दिया है। आज आर्यसमाज की स्थिति काफी संकट में पड़ गयी है। उसका कोई निदान आवश्यक है। समाज की मान मर्यादा को रक्षा के लिये हमारी कर्त्तव्य-परायणता ही सबसे अच्छा उपाय हो सकता है। जिले में जयन्ती के लिये पर्याप्त उत्साह है।

रामपुर आपका
२४।१।५९ हरप्रसाद

श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री

श्री संयोजक जी,

अभिनन्दन-ग्रन्थ के सम्पादन का कार्य सन्तोषजनक प्रगति कर रहा है। आशा है एक अच्छी चीज भेंट हो सकेगी। धन संग्रह के लिये मैं और श्री नरदेव स्नातक दिल्ली गये थे। आशाजनक सफलता मिली। अब मैं और श्री नरदेव जी शीघ्र प्रयत्न से बाहर जाने का प्रोग्राम बना रहे हैं। इस क्षेत्र में जयन्ती के सम्बन्ध में लोगों में पर्याप्त उत्साह है। जिले का कोटा तो अब पूर्ण होने वाला ही है।

बड़ौत आपका
२३।१।५९ महेन्द्रप्रताप शास्त्री

मन्त्री, जिला-सभा, फर्रुखाबाद

श्री संयोजक जी,

हमने जिले में जयन्ती योजना का कार्य अपनी ओर से अपील प्रकाशित कर आरम्भ कर दिया है। आपके पत्र से कार्यकर्ताओं को काफी बल मिला है। हम शीघ्र ही जिले का निर्धारित कोटा प्रधानजी की सेवा में भेंट करने का प्रयत्न करेंगे।

फर्रुखाबाद आपका
२२-१-५९ मन्त्री, जिला-सभा, फर्रुखाबाद

श्री बाबू कालीचरण

श्री स्नातक जी,

आपकी विज्ञप्तियों का जनता पर अच्छा असर हुआ है। प्रान्त में सर्वत्र जयन्ती की ही चर्चा है। धन संग्रह के सम्बन्ध में मेरठ में काफी काम हो चुका है और अन्य स्थानों से भी पर्याप्त आशाजनक समाचार आ रहे हैं। मेरे योग्य कार्य से आप सूचित करते रहें।

मेरठ आपका
२३-१-५९ कालीचरण आर्य

श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी

श्री स्नातक जी,

आपकी योजनाओं के लिये मैं प्रयत्नशील हूं। मथुरा में जयन्ती के अवसर पर प्रदर्शनी को सफल बनाने का पूर्ण प्रयत्न करूंगा। अलवर से श्री स्वामी विरजानन्दजी द्वारा रचित हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में मैं पता करूंगा और यदि वे वास्तविक हुए तो उन्हें उपलब्ध कराऊँगा। हैदराबाद के ओझाजी से समाचार-पत्र-प्रदर्शनी के लिये पर्याप्त सहयोग की आशा है। मैं पत्र भेज रहा हूं। शीघ्र विज्ञप्तियों और पोस्टर आदि से जोरदार प्रचार आरम्भ हो जाना चाहिये। ग्रन्थ के लिये श्री सर सीताराम से लेख प्राप्त कर रहा हूं।

मेरठ भाई विश्वम्भर सहाय प्रेमी
२३-१-५९

श्री कर्णसिंहजी

प्रिय उमेश जी,

आपके उत्साहपूर्ण प्रचार से मथुरा के लोग अपने कर्त्तव्य के लिये सजग हो उठे हैं। श्री विरजानन्दजी के कारण मेरे नगर पर विशेष दायित्व है। मैं अपने साथियों की ओर से आपको और आर्यजगत् को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम आर्यसमाज के गौरव की रक्षार्थ कोई कसर न उठा रक्खेंगे और गुरुधाम-स्मारक व जयन्ती-समारोह आर्यसमाज के इतिहास में स्मरणीय होगा।

डेम्पियर नगर, मथुरा शुभ चिन्तक
१८-१-५९ कर्णसिंह

श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा

भाई स्नातक जी

मथुरा की बैठक के निश्चयानुसार अब कार्य और तीव्र गति से होना चाहिये। मैं अपने जिले से श्रद्धेय पं० रामप्रसादजी के साथ धन-संग्रह-कार्य आरम्भ कर रहा हूं। हाथरस, अलीगढ़ अपने गौरवानुरूप जयन्ती को सफल बनाने में सहयोग देंगे। जयन्ती हमारे कर्त्तव्य की कसौटी है।

हाथरस सहयोगी
१८-१-५९ प्रेमचन्द्र शर्मा

श्री ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम एम० ए०

श्री स्नातक जी, नमस्ते !

आपका स्नेहपूर्ण कृपा-पत्र मिला। आपके आदेशानुसार जिला-सभा की मीटिंग बुलाकर मथुरा-मण्डल में जयन्ती-विषयक वातावरण निर्माण करने का प्रयत्न कर रहे हैं। मथुरा-मण्डल को जयन्ती-क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है और पत्र पुष्प के रूप में यहाँ की जनता भेंटकर आर्यजगत का स्वागत करेगी ही। मथुरा में कार्यकर्ताओं में उत्साह बढ़ रहा है।

कृष्ण-गंगा, मथुरा आपका अपना ही
२६-१-५९ प्रेम

कालगणना और आर्यसमाज

[श्री पं०गङ्गाप्रसाद रि०चीफ जज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्र०नि०सभा]

[कालगणना के सम्बन्ध में भारतीय सिद्धान्त अधिक युक्तियुक्त है और हर्ष है कि भारतसरकार ने भी भारतीय गणना का आदर किया है। आर्यसमाज भारतीय सभ्यता की संरक्षक संस्था है उसके व्यावहारिक कार्य-कलापों में भी भारतीय कालगणना का प्रचलन होना चाहिये। इस भावना से लेखक ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं आशा है सभा के सम्मानित सदस्य गण इस प्रश्न पर विचार कर उचित निर्णय करेंगे। हाँ शकाब्द के स्थान पर विक्रमाब्द स्वीकार करना अधिक भारतीय भावना के अनुकूल होगा। इस भावना को सम्मुख रखते हुए इस प्रश्न पर विचार किया जाना चाहिये। —सम्पादक]

२१ दिसम्बर १९५८ के आर्यमित्र में आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री महोदय के नाम से निम्न सूचना "सभा का वर्ष" शीर्षक से प्रकाशित हुई है "उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य समाज एवं जिला उप सभाओं को विदित हो कि सभा का अपना वर्ष १ जनवरी से प्रारम्भ होकर ३१ दिसम्बर १९५८ को समाप्त होता है। इसी के साथ समाजें, एवं उप सभायें भी अपना-अपना वर्ष ३१ दिसम्बर१९५८ को समाप्त करने की कृपा करें।" अगले पैरा में सभासदों की सूची बनाने के लिये १५ जनवरी तक का समय, और अधिकारी व अन्तरङ्ग सभासदों के निर्वाचन के लिये २८ फरवरी तक का समय नियत किया गया है।

(२) मैं सुयोग्य मन्त्रीजी का ध्यान निम्न बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। सन् १९४७ ई० में (जिसको ११ वर्ष बीते) ईश्वर की कृपा से हमारा देश स्वतन्त्र हो गया, और अंगरेजी शासन समाप्त हो गया। अंगरेजी भाषा के स्थान में हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा मान ली गई, और धीरे धीरे शासन के सब विभागों में हिन्दी का प्रचार होता जाता है। आर्य्यसमाजों में तो पहले से ही हिन्दी का प्रचार था। कालगणना भी भाषा ही का एक अंग या विभाग है फिर अंगरेजी (या ग्रेगोरियन) कलंडर के अनुसार आर्य्यसमाजें क्यों अपने निर्वाचन आदि के कार्य्य करें? सभा १९२३ ई० में ऋषि दयानन्द की निर्वाण अर्धशताब्दी पर मैंने पंचांग शोधन के लिये एक प्रस्ताव सार्वदेशिक सभा में रक्खा था। उस पर धर्मार्य सभा के परामर्श से सार्वदेशिकसभा ने यह आदेश जारी किया कि सब आर्यसमाजें और वे सब संस्थाएं जो आर्य्यसमाज के अधीन चलती हैं अपने सब कार्यों में सौर वर्ष का प्रयोग करें। उत्तरी भारतवर्ष में अधिकतर विक्रम संवत् के साथ चान्द्र वर्ष (Lunar year) का प्रयोग होता है। पर चान्द्र वर्ष में ३५५ दिन होते हैं जिसके कारण उसे हर तीसरे वर्ष एक अधिमास (लौंद का महीना) जोड़ना पड़ता है। फिर उसका अंगरेजी महीने की तारीखों से मेल भी नहीं होता। पर सौर वर्ष में ३६५ १/४ दिन होते हैं। इसलिये उसकी तारीखें अंगरेजी (या ईसवी) सन् की तारीखों से मिल जाती है। सौर वर्ष के हर महीने की संक्रान्ति पहले अंगरेजी महीने की १३ या १४ तारीख को पड़ती थी। उदाहरणार्थ वैशाखी या विषुवत, संक्रान्ति १३ या १४ अप्रैल को होती थी। उस समय हमारे सौर वर्ष में २२ या २३ दिन की भूल थी। विषुवन संक्रान्ति २३ मार्च को आनी चाहिये जब दिन और रात बराबर होते हैं। विषुव शब्द का अर्थ ही यह है Equenoxe मैंने सन् १९३३ में जो आन्दोलन आरम्भ किया था उसका असली अभिप्राय इसी भूल को दूर करना था। मैंने सन् १९३३ में एक विस्तृत लेख भी इस विषय पर आर्यमित्र में प्रकाशित किया था। मेरा आन्दोलन चलता रहा और आर्य्यमित्र में ही लेख छपते थे। सन् १९३५ मे इन्दौर में "अ० भा० ज्योतिर्वित् सम्मेलन" हुआ जिसके अध्यक्ष पूज्य मालवीय जी थे। मैंने इस विषय पर प्रस्ताव भेजा। पर वह बहुमत से गिर गया। कारण यह था कि देश के ज्योतिषी लोग सब पौराणिक है। वे जानते हैं कि इस भूल के दूर हो जाने से उनके फलित ज्योतिष के कार्य्यों में बाधा पड़ती।

(३) ईश्वर की कृपा से और प्रा० मि० श्री डा० जवाहरलाल जी की प्रेरणा से भारत सरकार ने पंचांग शोधन के लिये Council of Scientific and Industial Research के अधीन स्व० श्री मेघनाद साह की अध्यक्षता में सन् १९५३ में एक Calendar Reform Committee कमेटी कायम की। सन् १९५५ में इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सरकार में भेज दी जिसके द्वारा उपरोक्त भूल भी दूर हो गई और एक बहुत उत्तम व वैज्ञानिक पंचांग बन गया। सन् १९५७ में सरकार की आज्ञा से यह पंचांग सारे भारतवर्ष में जारी हो गया। २३ मार्च १९५७ को जो विज्ञान के अनुसार वसन्त का विषुव था चैत्र की प्रतिपदा रूप से वर्ष का पहला दिन हुआ। सरकारी रिपोर्ट में इस शुद्ध पंचांग के अनुसार ५ वर्ष का विस्तृत पंचांग जोड़ दिया गया है। सरकार की आज्ञा से अब सरकारी गजट में इसी शुद्ध पंचाग के अनुसार तारीख लिखी जाती है और रेडियो विभाग में भी ऐसा ही होता है।

आर्य्यमित्र के लिये यह गौरव की बात है कि उसमे उसी समय से विक्रमी संवत की तिथि के साथ इस शुद्ध पंचांग की तारीख (जो शक कहलाती हैं) लिखना आरम्भ कर दिया। इस समय इसका १८८० है। विक्रमी संवत् इससे १३५ वर्ष आगे है, अब २०१५ है। ईसवी सन् शक से ७८ वर्ष पुरानी है, अब १९५८ है।

मेरा सुझाव है कि आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश के सदस्यगण सभा के वर्ष के सम्बन्ध में अपने निर्णय पर पुनर्विचार करें और अपना वर्ष भारतीय तिथियों के आधार पर स्वीकार कर कार्य करें। यह उनके लिये गौरव की बात होगी। भारत सरकार ने शुद्ध सौर पंचांग का प्रचलन किया है उसे भी अपनाया जा सकता है।

१२ मास शक में व संवत् में एक ही है, अर्थात् चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ आदि। पर महीनों के दिवस शुद्ध पंचांग के अनुसार ठीक होने चाहिये। अब सौर वष की हर सक्रान्ति (मास का पहला दिन) अगरेजी मास की २२ या २३ तारीख को आवेगी। नये पंचांग को देखकर ठीक कर लेना चाहिये। आर्य्यमित्र के हर अंक में ठीक दिवस लिखा जाता है। गत २१-१२-५८ के अंक मे शाका १८८० की ३० अग्रहायण लिखी है, विक्रम संवत् की अग्रहायण शुद्धि ११ लिखी है।

लघु गागर सागर नापि रही

चहुँ ओर समाज सुप्रांगन में कसि वंदनवार है राजि रही।
बटुमानस मन्दिर कुंजन में श्रुति वीण मनोरम बाजि रही
अभिमंजित वायु त्रितापन को वसुधा में समूल विनाशि रही
सखि देखु सुबुद्धि दयानन्द की लघु गागर सागर नापि रही

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म', लखनऊ

समाज कल्याण की प्रगति

[श्री एम० के० शास्त्री]

समाज-कल्याण योजनाएं

सामुदायिक मत्रालय और केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल के, मिलकर काम करने के निश्चय के अनुसार, पहले चरण के ६०० सामुदायिक विकास खण्डो मे कल्याण विस्तार योजनाए आरम्भ होगा। यह काम, समाज-कल्याण मण्डल की ओर से दूसरी पचवर्षीय आयाजना के अन्त तक किया जाएगा। हर कल्याण विस्तार योजना से १०० गावों को लाभ पहुचेगा। इस तरह की ६८ योजनाए आरम्भ हो चुकी हैं, जो सामुदायिक विकास खण्डों में चल रही हैं। इनके अलावा ४४५ योजनाए विकास खण्टों के अलावा दूसरे स्थानो पर चल रहा हैं। हाल मे ही ४ योजनाए पहले चरण के विकास-खण्डो म शुरू करने का स्वीकृति दी गया।

अब चूकि विकास खण्ड का बजट तीन साल के बजाय पॉच साल के लिए ४०,००० रु० कर दिया गया है, इसलिए कल्याण विस्तार योजना (सामुदायिक विकास) के पहले चरण के एक खण्ड का बजट भी घटकर पाच साल के लिए २,०८,००० रु० रह गया है, जो कि पहले तीन साल के लिए २ लाख २१ हजार रु० होता था। इस कारण, अब खण्ड म १० की जगह १० केन्द्र खोलने होंगे और एक योजना म ६ ग्राम सेविकाय तथा ४ दाइयाँ ही रखा जा सकेगा। इनके अलावा, ९ ग्राम सेविकायें और होंगी जिनका खर्च सामुदायिक विकास बजट से लिया जाएगा।

स्वतन्त्र कल्याण-विस्तार योजनाओं का भविष्य

आजकल, केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल उन समाज सेवी सस्थाओ और सगठनो का स्थापित करने और जो चल रहे है, उनको और सुदृढ करने के बारे मे विचार कर रहा है, जो भविष्य म गावो की कल्याण विस्तार योजनाओ को चलायेगे। ये योजनायें सामुदायिक विकास कार्य से अलग होगा।

सम्भावत ये काम महिला मण्डल या इसी तरह की अन्य सस्थाए जैसा सामतिया करेंगी। सुदृढ़ स्थानीय सगठन होने से इस तरह के काम धन्धे भी शुरू किये जा सकते है, जिनसे कुछ लाभ हो और कल्याण कार्य के लाभ के साथ साथ ग्रामीणो को कुछ अर्थ लाभ भी हो।

केन्द्रीय समाज-कल्याण मण्डल, स्वतन्त्र रूप से चलने वाली कल्याण विस्तार योजनाओं की स्थापना की रूपरेखा पर भी विचार कर रहा है। ऐसी कुछ योजनायें १९५४ में शुरू हुई थीं और दूसरी आयोजना के अन्त तक उन्हें काम करते हुए करीब ७ साल हो जाएंगे। चूकि वर्तमान योजनाओं का बजट मार्च १९५९तक का है, इसलिए इस बात पर भी विचार किया जायगा कि किन को सहायता जारी रखी जाय और किन को बन्द कर दी जाय। जिन योजनाओं के लिये योग्य कार्यकर्त्ता नहीं मिल पाये हैं और जहाँ के लोगों में भी उत्साह नहीं है, उन्हे बन्द भी किया जा सकता है।

बाकी योजनाओ को शुरू में अधिक और बाद मे धीरे धीरे कम सहायता दी जावेगी, ताकि तीन चार सालो के अन्दर इनको सहायता की आवश्यकता न रहे और ये अपने पैरों पर खड़ा हो जाये। कल्याण योजनाओ का सचालन पचायतो के हाथ मे देना उचित नहीं समझा गया, क्योकि पचायते प्राय. अर्ध सरकारी सस्थाए है और कल्याण कार्य जनता या समाज सेवी सस्थाओं के हाथों ही होना चाहिए।

अम्बर चर्खा कार्यक्रम

गावों की स्त्रियों को स्वावलम्बी बनाने की नीति के अनुसार, केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल गावों के कल्याण विस्तार योजना केन्द्रों में अम्बर चर्खा चलाने और उसके सूत का कपड़ा बुनवाने के केन्द्र खोल रहा है। इन केन्द्रों में सीखे हुए व्यक्ति जायेंगे, जो गावों की स्त्रियो को अम्बर चर्खा चलाना सिखायेंगे। इस तरह का केन्द्र, कल्याण विस्तार योजना कार्यक्रम और उसके बजट म शामिल नहीं होगा।

अम्बर चर्खे का काम सीखने के लिए, विभिन्न राज्यों के १८९ शिक्षको को छः विद्यालयों म भेजा गया है। ये विद्यालय हर छः महीने म २०० से ३०० तक शिक्षक तयार करेंगे। इन शिक्षको को यहाँ से निकल कर तीन महीने तक गावो म काम करना होगा। २२ शिक्षको का पहला दल काम सीखकर अपने केन्द्रो को लौट चुका है। राज्यों के समाज कल्याण सलाहकार मण्डलों से कहा गया है कि वे, यदि सम्भव हो तो, ऐसे ही व्यक्तियों को अम्बर चर्खे का काम सीखने भेजें, जो कम से कम मैट्रिक हों, क्योकि इस काम मे कुछ गणित और दूसरी तरह के हिसाब किताब की भी जरूरत होती है।

करीब दो साल तक, समाज-कल्याण मण्डल, इन शिक्षकों को काम सिखाने वाले केन्द्रों को सहायता देगा और जहाँ वे शिक्षक लौट कर नियुक्त किये जायेंगे, उन केन्द्रों के पास चर्खे से काम लेने और इसके सूत का उपयोग करने के केन्द्र खोलेगा। इसके अलावा, इन केन्द्रों को खादी आयोग से चर्खे भी किश्तो पर दिलायेगा और काम सीखने वालों को वृत्ति आदि देगा। मण्डल कपास खरीदने और कते हुए सूत को इकट्ठा करने और कातने वालो को पारिश्रमिक देने का भी प्रबन्ध करेगा।

प्रत्येक उत्पादन केन्द्र को सहकारी सस्था के रूप मे १ साल के भीतर सोसायटी रजिस्ट्रेशन कानून के अनुसार, अपने को रजिस्टर कराना होगा और दूसरे साल के समाप्त होने तक अपने पैरों पर खड़ा हो जाना होगा। इसके बाद, मण्डल अच्छे केन्द्रो के लिये खादी आयोग से ऋण आदि दिलाने की सिफारिश करेगा। जो केन्द्र अपने पैरों पर खड़े नहीं होंगे, उन्हे बन्द कर दिया जाएगा।

खादी-आयोग, केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल के जरिये १२० रु० प्रति चर्खे के हिसाब से, इन केन्द्रों को अम्बर चर्खे देगा और यह मूल्य मामूली मासिक किश्तों में चुकाया जा सकेगा।

२५ से ५० तक चर्खे रखने वाले केन्द्र को, खादी आयोग से, चर्खों की सम्भाल सुधार के लिए बढ़ई रखने के लिए ५० से ७५ रु० तक की सहायता मिल सकती है। इसके अलावा प्रति चर्खा, आयोग, १०० रु० कर्ज और देगा, जिससे उत्पादन का ... बढ़ाया जा सके। उत्पादन और ... बिक्री के ३५ प्रतिशत के बराबर यह कर्ज और बढ़ सकता है। ... के सूत का कपड़ा बुनने वाले बुन... को, अम्बर चर्खे के सूत से क... बुनना सिखाने के लिए केन्द्र को, ... क तीन महीनों तक तीस रुपये मा... की वृत्ति भी दी जाएगी।

खादी आयोग, अम्बर चर्खे ... सूत का माल बेचने वालो और ... दुकानों में सजाकर रखने वालों ... काम सीखने के लिए भी वृत्ति ... देगा। काम सीखन पर ये लोग अ... आसपास के क्षेत्र में ही अम्बर ... की खादी को बेच सकेंगे। य... इस बात पर जोर देंगे कि पहले स... म कम से कम १,५०० पिंडियाँ तै... की जाए। इसके बाद, वर्ष म ... से कम ९०० दिन, प्रतिदिन ४ पिं... के हिसाब से काती जाए।

वर्ष के अन्त में केन्द्र के पास ... चर्खे और ८० शिक्षार्थी होंगे। स... म १५० दिन के काम का औसत म... कर, दूसरे साल के अन्त तक, प्रत्... केन्द्र म अम्बर चर्खों से औस... ७२,००० पिंडिया काती जानी चाहि... इस सूत से १८,००० वर्ग गज अ... खादी तयार की जा सकती है, जिस... मूल्य ९२,५०० रुपये होगा।

मेजिक लेन्टर्न प्रचार...

श्री प्रोफेसर बी० एन० पाल ... एस सी०, एल-एल० बी० मालिक प... स्टुडिया, सदर बाजार, लखनऊ मेजि... लन्टन से आर्यसमाज का बहुत अच्... प्रचार करते है। आर्यसमाजो ... अपने उत्सवों पर बुलाकर इन... मेजिक लेन्टन से प्रचार करा... चाहिये।

—फूलनसिंह मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश
लखनऊ

आर्यसमाज की प्रगति

नवीन कार्यकर्त्ताओं का निर्माण

[श्री उदयनारायण मन्त्री आर्यकुमार सभा उमरी, कानपुर]

○ ○

प्रस्तुत लेख मे आर्य समाज में नवीन कार्यकर्त्ताओं के अभाव तथा उनकी उत्साहहीनता की चर्चा करते हुए समस्या के मूल कारण आर्य संस्कारों के अभाव पर विचार किया गया है। आर्य संस्कारों के लिये गृह और शिक्षालय के वातावरण में धार्मिकता आवश्यक है। खेद है कि नवीनता के नाम पर हम अपनी (आर्य) संस्थाओं मे भी धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करने में पिछड़ रहे हैं और हिचकिचाते हैं। आर्य परिवारों और विद्यालयों का वातावरण अधिकाधिक धार्मिक बने तभी समाज के वर्त्तमान और भविष्य के लिये योग्य कार्यकर्त्ता मिल सकेंगे। आर्य कुमार परिषदों और आर्य वीर दलों की इस सम्बन्ध में उपयोगिता असन्दिग्ध है। आशा है नवीन कार्यकर्त्ताओं के निर्माण के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायगा।

—सम्पादक

○ ○

वैदिक धर्म और वेदों की शिक्षाओं को जन-जीवन में अवतीर्ण करने के लिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होने अपने उद्देश्य में सफलता भी प्राप्त की और भारत में लुप्त प्राय वैदिक धर्म को आश्रय देकर स्वयं उसका भरण-पोषण करके उसे समर्थ बना, मानव जीवनोन्मुख कर दिया। लोगों ने जिस द्रुतगति से इसे तब अपनाया था उसकी तुलना आज की गति से करने पर आश्चर्य होता है। आज कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि आर्य समाज की प्रगति मन्थर हो चली है। दिन पर दिन आर्य समाज के कार्य-कर्त्ताओं का उत्साह क्षीण होता सा प्रतीत होता है। मैं नहीं कह सकता कि कितने लोग मेरे इस विचार से सहमत होंगे; [illegible] यह सत्य ही है [illegible] में वह उत्साह नहीं है जो स्वामी दयानन्द के समकालीन और कुछ बाद वाले लोगों में था। नवीन कार्य कर्त्ताओं की अपेक्षा अब भी वृद्ध काय-कर्त्ताओं का उत्साह अधिक है, और वर्त्तमान समय में आर्य समाज जो कुछ भी उन्नति कर रहा है, उसका वास्तविक श्रेय भी इन्हीं वृद्ध जनों को मिलना चाहिए। नवीन कार्यकर्त्ता उतनी अधिक रुचि से कार्य नहीं कर पाते हैं—जितनी अधिक रुचि से वृद्ध महानुभाव।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर नवीन कार्य कर्त्ताओं में इस उत्साह हीनता का क्या कारण है? इस प्रश्न का उत्तर तो सामान्य रूप से यही दिया जा सकता है कि उनमे आर्य संस्कारों का उचित ढग से प्रस्फुटन नहीं हुआ है। और वह अब भी आर्य समाज के वास्तविक महत्त्व को नहीं समझ पा रहे हैं। अब हम इन न्यूनताओं के लिए निम्न कारणों को प्रधान समझते हुए इनके बारे में विचार करेंगे।

१—आर्य बालकों में धार्मिक शिक्षा का अभाव। और २—समाज के कार्य संचालन से अनभिज्ञता।

धार्मिक शिक्षा में तो आचार-विचार आदि सभी शामिल हैं। धर्माचरण तो बालक घर से ही सीख सकता है। जैसा आचरण उसके घर में होता है, वैसी ही छाप बालक के कोमल मस्तिष्क में पड़ती है। वास्तव में बालक को सुसभ्य और धार्मिक बनने की प्रारम्भिक शिक्षा तो अपनी माता से ही प्राप्त होती है। अतः बालक के पूर्ण धर्मनिष्ठ और विद्वान बनने की आकांक्षा करने के लिये आवश्यक है कि, माँ को धार्मिक संस्कारों का पूर्ण ज्ञान हो। किन्तु यह सब स्त्री-शिक्षा से सम्बन्धित विषय है। धार्मिक शिक्षा से मेरा मतलब विशेष कर बौद्धिक-शिक्षा से है। जिसको बालक प्रायः समझदार होने पर ही समझ सकता है। किन्तु इतनी अवस्था वाले बालक को प्रायः पढ़ने के लिये स्कूल भेज दिया जाता है और फिर वह घर के वातावरण में प्रायः कम रुचि लेने लगता है। बालक के मस्तिष्क में धार्मिकता का बीजारोपण तो घर में हो जाता है किन्तु अधिक अवस्था होने के कारण उस अंकुर का विकास घर में नहीं किया जा सकता। अतः धर्म सम्बन्धी आगे की शिक्षा का प्रबन्ध जहाँ तक हो सके विद्यालयों में होना ही चाहिए। विदेशी या ईसाई स्कूलों में इस प्रकार की धार्मिक शिक्षा को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है। अन्य विषयों के साथ वहाँ पर धार्मिक शिक्षा के लिए भी समय नियत होता है और उस समय उनको विशेष अध्यापक आकर धर्म शिक्षा देता है। और परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये इस विषय में उत्तीर्ण होना आवश्यक होता है। इस प्रकार ईसाइयों में छात्रावस्था में ही विद्याध्ययन के साथ-साथ अपने धर्म का भी आवश्यक ज्ञान हो जाता है, किन्तु अभी तक हिन्दू धर्म के बालकों में धर्म की आवश्यक जानकारी का अभाव ही है और दिनों दिन बढ़ता ही जाता है। आर्य समाज की संस्थाओं में प्रारम्भ में इस दिशा में बहुत कार्य हुआ और काफी सफलता भी मिली परन्तु आज आर्य समाज के कितने ही स्कूलों में इस प्रकार की शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। छात्रावस्था में ही जिस किसी छात्रा में जिन विचारों का समावेश होता है, उन्हीं के अनुसार वह अपना भावी जीवन निर्धारित किया करता है, और यही वह समय होता है जब छात्रों को धर्म के प्रति आकर्षित किया जा सकता है।

विद्यार्थियों का धर्म से कम ही सम्बन्ध रहता है और वे धार्मिक संस्थाओं से प्रायः अपरिचित ही रहते हैं। ऐसे समय में यदि किसी छात्र के मन में धर्म के प्रति कोई जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो उसे वह शान्त नहीं कर पाता क्योंकि स्कूल में इस प्रकार की समस्याओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं होती। फलतः उसे अपनी उस जिज्ञासा को दबाना पड़ता है और भविष्य मे वह इस विषय मे न सोचने पर बाध्य हो जाता है, तथा धर्म के प्रति उसकी हीन धारणा बन जाती है, जो उसके जीवन मे धर्म को महत्त्व हीन बना देती है।

इससे भिन्न यदि बच्चों में धर्म शिक्षा का पूर्ण प्रबन्ध हो तो वह स्वयं तो उसके अनुकूल आचारण और ज्ञानार्जन कर सकता है, किन्तु वह अपने विचारो का आदान प्रदान नहीं कर पाएगा। फलतः उसका ज्ञान सीमित ही रह जाएगा। बच्चों में प्रायः इतना तो स्वाभाविक संकोच होता ही है कि अपने से बड़ों से वह किसी विशेष विषय मे इतना खुलकर बातें नहीं कर सकते, जितना अपनी अवस्था वाले बच्चो से। अतः बच्चो को वाद-विवाद के लिए भी उचित रूप मे प्रोत्साहित किया जाना चाहिये और इसके लिए सबसे उत्तम साधन हैं आर्य कुमार सभायें। यहीं पर उनको अपने विचारों का परस्पर आदान प्रदान करना सीखना चाहिए। इसके अतिरिक्त आर्य समाज का कार्य संचालन भी इन्हीं आर्य कुमार सभाओं में ही सीखना चाहिये। इनमें सभी पदाधिकारी बालकों को ही बनाकर, आर्य समाज के बड़े कार्यकर्त्ता महोदयों को उनका पथ-प्रदर्शन करना चाहिए। बालक यहीं पर आर्य समाज के कार्य-संचालन का अभ्यास करें, ताकि समय आने पर जब वह आर्य समाज में प्रविष्ट हों तो उनमे अनुभवहीनता की कमी दृष्टिगोचर न हो।

संक्षेप मे, बालकों मे धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है कि ईसाई स्कूलों की तरह डी० ए० वी० और अन्य आर्य विद्यालयों में धर्म शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया जावे और प्रत्येक छात्र को धर्म शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य कर दिया जावे तथा प्रत्येक आर्य समाज के संरक्षण मे आर्य कुमार सभाओं की स्थापना भी अनिवार्य कर दी जावे। इस प्रकार आर्य समाज के भावी कार्य कर्त्ताओं में उत्साहहीनता की कमी नही दिखाई पड़ेगी और वह निरन्तर आर्य समाज की प्रगति मे योग ही देते रहेंगे।

★

सिंहावलोकन

महापुरुषों की दृष्टि में सत्यार्थप्रकाश

[श्री ललिताप्रसाद आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

सत्यार्थ प्रकाश बुद्धिवादियों के लिये सदैव प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करता रहा है। यहाँ सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में निष्पक्ष विद्वानों की सम्मतियाँ संग्रहीत कर यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि सत्यार्थ-प्रकाश का दृष्टिकोण विशाल है, उसे वास्तविक अर्थों में समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

—सम्पादक

१—पादरी सी० एफ० एण्ड्रयूज—'मैंने भारत में आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है, क्योंकि मार्ग से भटकने वालों के लिये यह पथ प्रदर्शक है।'

२—मेजर टी० एफ० ओडनल—'जिन सिद्धान्तों का स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में प्रचार किया है, वे कुछ नये नहीं हैं। वे उतने ही प्राचीन हैं जितना कि हिमालय। यह बड़ा आवश्यक है कि स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का बल पूर्वक प्रचार किया जावे।'

३—काँग्रेस के जन्मदाता मिस्टर ह्यूम—'स्वामी दयानन्द इतना बड़ा आत्मा है कि मैं उसके पैर के बूटों की तस्मे खोलने की योग्यता नहीं रखता। स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने योग्य है, जो कि अन्धकार को दूर भगाता है।'

४—श्रीमती जोसेफाइन रेन्सम—'स्वामी दयानन्द बड़े सुवक्ता, महान् तार्किक और पूर्ण उत्साही पुरुष थे। स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों में 'सत्यार्थ प्रकाश' सर्वोत्तम है। उन्होंने इस पुस्तक में स्पष्ट रूप से बतलाया है कि मैं हिन्दुओं में कोई नया मत स्थापन करना नहीं चाहता, बल्कि वह ईश्वरीय ज्ञान जो वेदों द्वारा मनुष्य के लिये भेजा गया है, मनुष्यों पर पूर्णरूप से प्रकट कर देना ही मेरा लक्ष्य है।

५—पीर मोहम्मद यूनिश—'ईसाइयत और पश्चिमी सभ्यता के मुख्य हमले से भारतीयों को सावधान करने का 'सेहरा' यदि किसी व्यक्ति के सिर पर बाँधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है। उन्नीसवीं सदी में स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिये जो अमूल्य काम किया है उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को भी बहुत लाभ पहुँचा है। सत्यार्थ प्रकाश का लेखक धन्यवाद के योग्य है।'

६—प्रो० जहूर बख्श—'ऋषि दयानन्द महान् आत्मा थे। उनका ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश उनके विचार स्वातन्त्र्य का उज्ज्वल उदाहरण है। उन्होंने किसी पर झूठा लाञ्छन नहीं लगाया है।'

७—मन्त्री जैन सघ—जैन समाज अपना न्यून दर्जा भी सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा करेगा।'

८—मौ० मेहदी महमद खाँ (संस्थापक अलीगढ़ विश्वविद्यालय)—स्वामी दयानन्द महान संस्कृतज्ञ और वेद ज्ञाता थे। वे विद्वान् ही नहीं किन्तु एक अत्यन्त श्रेष्ठ पुरुष भी थे। वे परम हंस के गुणों से विभूषित थे। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश में केवल एक ज्योतिर्मय निराकार परमेश्वर की आराधना करने की शिक्षा दी है। हमारा स्वामी जी से घनिष्ठ सम्बन्ध था, और हम उनका आदर करते थे। वे ऐसे विद्वान् और श्रेष्ठ थे कि अन्य मतावलम्बी उनका मान करते थे। उन पर खुदा की तरफ से इलहाम (ईश्वरीय ज्ञान) हुआ करता था।'

९—स्व० मुनिवर पण्डित गुरुदत्त जी एम० ए०—'मैंने सत्यार्थ प्रकाश को न्यून से न्यून १८ बार पढ़ा है। जितनी बार इसको पढ़ता हूँ, मुझे तन-मन तथा आत्मा के लिये कुछ नया आनन्द प्राप्त होता है। पुस्तक गूढ़ तत्त्वों और सच्चाइयों से भरी हुई है।'

आर्य समाज बैंकोक का पत्र

श्रद्धेय श्री पं० हरिशंकर शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने थाईलैण्ड के प्रवासी आर्य्य बन्धुओं को कविता द्वारा जो आशीर्वाद दिया है, उससे यहाँ की आर्य्य जनता को बहुत बड़ी शक्ति प्राप्त हुई है। मैं यहाँ की आर्य्य जनता की ओर से प्रधान श्री पं० हरिशंकर शर्म्मा जी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। और साथ ही प्रभु से प्रार्थना है कि शर्मा जी की धर्म्म निष्ठा और उत्साह में उत्तरोत्तर वृद्धि और आप सबको स्वास्थ्य एवं चिरायु प्रदान करे।

आपका मंगलाभिलाषी
बाबूलाल सिंह आर्य
प्रधान आर्य्य समाज बैंकोक

श्री पं० हरिशंकर शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा थाईलैण्ड के प्रवासी आर्य्य बन्धुओं को आशीर्वाद—

धन्य प्रवासी बन्धु, आपने वैदिक धर्म्म प्रचार किया,
दयानन्द ऋषि की शिक्षा का, सागर पार प्रसार किया।
दूर विदेशों में जा वीरो, "ओम्-ध्वजा" फहराई है,
भारतीय भावों की भूपर, उज्ज्वल ज्योति जगाई है॥
कर्म्मवीरता धर्म्मवीरता, सदा आपको सफल करे,
शक्ति, भक्ति, अनुरक्ति आपके, जीवन में भगवान् भरे।
जीवन का शुभ लक्ष्य भाइयो, सेवा व्रत, तप त्याग रहे,
जननी जन्म भूमि पर, सबकी श्रद्धा हो-अनुराग रहे॥

—हरिशंकर शर्म्मा

१०—स्व० लाला लाजपतराय—'मैंने सार्वजनिक सेवा के सारे पाठ आर्य समाज से सीखे हैं। ऋषि दयानन्द मेरे गुरु हैं, मैंने संसार में उन्हीं को गुरु माना है। वह मेरे धर्म पिता और आर्य समाज मेरी माता है। गुरुदेव रचित सत्यार्थ प्रकाश मेरे जीवन में प्रकाश देने वाले सूर्य के समान है।'

११—वीर सावरकर—"हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गरम खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे, यही मेरी कामना है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई धर्मावलम्बी अपने मत की शेखी नहीं मार सकता। सब हिन्दू "सत्यार्थ प्रकाश" का पवित्र धार्मिक ग्रन्थ के रूप में मान करते हैं, इसलिये इसकी जब्ती की माँग मूर्खता पूर्ण है। इसे जब्त नहीं किया जा सकता।"

१२—ला० हरदयाल एम० ए०—"इस महान् ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के अध्ययन से मेरी विचारधारा को दिशा बदल दी गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान् को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है। इसका लेखक धन्य है"

१३—श्री सी. एस. रंगा आयर एम. ए.—जेल की दिवारों के पीछे एक वर्ष तक "सत्यार्थ प्रकाश" मेरा मित्र, प्रकाशदाता और जीवन बना रहा। सत्यार्थ प्रकाश में वेदों का तत्त्व है। इसके महत्त्व को कम करने का अर्थ है कि वेदों के तत्त्व और सार की प्रतिष्ठा और मूल्य को कम किया जाय।"

१४—श्री एन० सी० चटर्जी बार-एट-ला-कलकत्ता—'सत्यार्थ प्रकाश" केवल आर्य समाजियों की ही पवित्र पुस्तक नहीं है, वरन् जिसका विश्वास वैदिक संस्कृति में है, उन लाखों लोगों के लिये है।"

१५—प्रो० रमेशचन्द्र बैनर्जी एम० ए०—'ऋषि दयानन्द ने अपने सत्यार्थ प्रकाश में एक ओर तो युक्ति प्रमाणों से वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा की स्थापना की, दूसरी ओर विविध मत मतान्तरों की न्यायपूर्ण युक्तियुक्त समीक्षा भी की। सत्यार्थ प्रकाश ने धार्मिक जगत् में क्रांति उत्पन्न कर दी है। सत्यार्थ प्रकाश संसार का दिग्दर्शक यन्त्र है।"

१६—डा. राधाकुमुद मुकर्जी एम.ए. लखनऊ विश्वविद्यालय—"सत्यार्थ प्रकाश" वेद के तत्त्वों का प्रकाशक है।"

१७—बाबा मिलखासिंह—मैं पहिला व्यक्ति हूंगा जो 'सत्यार्थ प्रकाश' के लिये बलि दूँगा। मैं सिक्ख होते हुए भी स्वामी दयानन्द का सेवक हूँ और यदि कोई संकट उपस्थित हुआ तो "सत्यार्थ-प्रकाश" की पंक्तियाँ मेरे खून से लिखी जावेंगी।

आर्यजगत् के दो उज्ज्वल रत्नों का अभिनन्दन

[श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड सम्पादक गुरुकुल पत्रिका, गु० वि० विद्यालय, कांगड़ी]

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मान्य श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए० कार्य निवृत्त मुख्य न्यायाधीश (टिहरी राज्य) जयपुर और श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग इन दो महानुभावों का (जिनकी आयु क्रमशः लगभग ८७ और ७७ वर्ष है) सार्वजनिक अभिनन्दन उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यमित्र की हीरक जयन्ती के अवसर पर मथुरा में किया जा रहा है। मैं इन दोनों महानुभावों को आर्यजगत् के उज्ज्वल रत्न समझता हूं जिनका अभिनन्दन करना आर्य जगत् का कर्त्तव्य है। मुझे इन दोनों मान्य महानुभावों के निकट सम्पर्क में आने का गत अनेक वर्षों में विविध रूप से सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मई सन् १९४२ से अप्रैल १९५३ तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के स० मन्त्री और 'सार्वदेशिक' पत्र के सम्पादक के रूप में देहली में निवास के समय इन दोनों महानुभावों से जिनका प्रतिष्ठित सभा से प्रधान और मन्त्री के रूप में अनेक वर्ष सम्बन्ध रहा, मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा और इनके उत्तम गुणों, अद्भुत योग्यता तथा स्नेहमय आर्य व्यवहार को देखकर मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री के रूप में देहली में निवास करते हुए मान्य उपाध्याय जी ने 'शाङ्कर भाष्यालोचन' 'Vedic Culture' 'आर्योदय काव्यम्' इत्यादि जो अत्यन्त उच्च-कोटि की पुस्तकें लिखीं उन सब के विषय में वे मुझ से विचार विमर्श तथा परामर्श करते रहे, जिससे उनकी विद्वत्ता सरलता, परिश्रमशीलता, निष्कपटता और निरभिमानिता का मुझ पर सदा अत्युत्तम प्रभाव पड़ता रहा। उनके ग्रन्थ वैदिक धर्म और संस्कृति में निष्ठा और उत्कृष्ट योग्यता के परिचायक है। मान्य श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी कार्य निवृत्त मुख्य न्यायाधीश के निकट सम्पर्क में आने का अवसर सार्वदेशिक सभा के कार्य के अतिरिक्त उन द्वारा स्थापित जाति भेद निवारक आर्य परिवार संघ के (जिसके वे अध्यक्ष थे) उपाध्यक्ष और पीछे से उनकी प्रेरणा से अध्यक्ष बनने पर मिलता रहा। इस विषय में उनके अत्यधिक उत्साह को देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती थी। बहुत वर्ष हुए जब उन्होंने अंग्रेजी में 'Caste system' नामक पुस्तक लिखी थी जिसका भाषानुवाद 'जातिभेद' के नाम से प्रकाशित हुआ, किन्तु केवल इतने आन्दोलन तथा अपने पुत्रों के जाति भेद तोड़ कर विवाह करवाने से ही सन्तुष्ट न होकर उन्होंने इस आन्दोलन को प्रबल और सगठित बनाने के लिये सार्वदेशिक सभा के नैतिक सहयोग से जातिभेद निवारक आर्य परिवार संघ की स्थापना की। इसकी ओर से 'आर्य परिवार' नामक मासिक पत्र निकलता रहा और अनेक विवाह सम्बन्ध जाति बन्धन तोड़ कर करवाये जाते रहे। अब ईश्वर की कृपा से लगभग ८७ वर्ष की आयु होने पर भी, स्वास्थ्य साधारणतया ठीक होने के कारण पुनः अध्यक्ष के रूप में उनका वरद हस्त इस संघ पर विद्यमान है। उनकी Fountain head of Religion' नामक पुस्तक इतनी अधिक विद्वत्तापूर्ण है कि उसने देश विदेश के अनेक विद्वानों को अत्यन्त प्रभावित किया है। गत वर्ष जब मैंने उसकी एक प्रति एक जर्मन विद्वान् श्री एरिशपीर्शल को भेंट की तो उसे पढ़कर उन्होंने मुझे इस आशय का पत्र लिखा कि यह एक अद्भुत ग्रन्थ है जिससे मुझे नवीन विचार प्राप्त हुए हैं। मैं जर्मनी लौटने पर उसका जर्मन अनुवाद करके प्रकाशित करना चाहता हूं, जिस से मेरे देशवासी उससे लाभ उठा सकें। अब स्वामी स्वरूपानन्द बन कर वे जर्मन विद्वान् जर्मनी चले गये है, और उस अद्भुत ग्रन्थ का अनुवाद कर रहे है। जिन जिन अन्य पाश्चात्य विद्वानों को भी मैंने उसकी प्रति भेंट की सब ने उस पर बहुत ही अधिक प्रसन्नता प्रकट की। ऐसे ही मान्य उपाध्याय जी के ग्रन्थ भी निष्पक्ष विद्वानों पर अत्यन्त उत्तम प्रभाव उत्पन्न करने वाले सिद्ध हुए हैं। मैंने उनको I and my God की प्रति एक फ्रेंच देवी को जिन्होने स्वामी शिवानन्द जी से (हृषीकेश में) संन्यास लिया है और उन्हीं के आश्रम मे निवास करती हैं अध्ययनार्थ दी तो उन्होंने इसकी बहुत प्रशंसा की।

इस प्रकार इन दोनों आर्य जगत् के रत्नों ने जो उत्तम साहित्य तथा समाज सेवा की है, उसके लिए ये धन्यवाद के पात्र है इसमें सन्देह नहीं। गुरुकुल तथा 'पत्रिका' परिवार की ओर से हम उनके अभिनन्दन मे सहर्ष सम्मिलित हो कर उनकी दीर्घायु और आरोग्य के लिए मङ्गलमय भगवान् से प्रार्थना करते हैं। ये दोनों महानुभाव 'सादा जीवन और उच्च विचार' के मूर्त्तरूप हैं।'

★

अभिनन्दन क्रियात्मक हो !

[श्री नारायण रावजी प्रधान कर्नाटक आर्यप्रतिनिधि सभा, बंगलौर]

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज के दो महा विद्वान् कमठ सेवकों—श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० तथा श्री गङ्गा प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज टिहरी राज्य को अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का महत्त्व पूर्ण निश्चय करके आर्य जनता को अपने दो निष्ठावान् श्रद्धेय नेताओं के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने का शुभ अवसर प्रदान कर रही है, यह अत्यन्त हर्ष का विषय है। दोनों प्रशंसित विद्वान् अपने विद्वत्ता पूर्ण महान् ग्रन्थो तथा अन्य प्रकार की सेवाओं से आर्य जनता मे जो निरन्तर जाग्रति तथा स्फूर्ति उत्पन्न करते आ रहे है, उसका पूर्ण वर्णन कौन कर सकता है? वास्तव में इन दोनों की सेवायें ऐसी ऊँची कोटि की रही हैं कि क्या आर्य समाजी और क्या गैर आर्य समाजी सबको मुक्त कण्ठ हो कर इनकी प्रशंसा करनी पड़ रही है। हम आर्य समाजी तो इन दोनों के ऋण भार से इतने लदे जा रहे हैं कि हमे केवल मौन से सिर ही झुकाना पड़ता है, कृतज्ञता प्रकाशन के लिये भी हमे पर्याप्त शब्द नहीं मिलते।

परन्तु कर्नाटक की आर्य जनता की ओर से इन दोनों श्रीमानों के पवित्र चरणों मे श्रद्धाकुसुम चढ़ाते हुए मैं आर्य जनता की सेवा में विनम्रता पूर्वक एक निवेदन करना हूं। वह यह है कि आर्य समाज का जो विश्व भर को आर्य बनाने का महोच्च उद्देश्य है, उसका प्रारम्भ हमें अपने घर से ही शुरू करना है। हम स्वयं आर्य बन बिना 'इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः' 'परमैश्वर्यवान् प्रभु के पास पहुँचने वाले प्रशान्त और सर्वाधिकारी उत्तम पुरुष" बने विना, जगत् आर्य बनाने का सपना भी नहीं देख सकते। हम आर्यों को सर्व प्रथम अपने चरित्र गठन की ओर ही ध्यान देना चाहिये। इसके लिए आर्यों के घर मे यज्ञादि शुभ कर्मों को प्रचलित करके अपनी उठती हुई सन्तान को और नास्तिकता तथा अश्रद्धा की बाढ़ मे बहे जाने वाले नवयुवकों को पवित्र आध्यात्मिक वायु मण्डल में साँस लेने का शुभ अवसर देना चाहिए। इस पवित्र तथा प्रारम्भिक कार्य को विचार स्तर से ऊपर उठाकर क्रिया में परिणत करने के लिए, 'गंगाप्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ के साथ ही भारत संविधान में स्वीकृत १४ भारतीय भाषाओं में महर्षि दयानन्द प्रणीत पंच महायज्ञ विधि का सुन्दर अनुवाद कराकर प्रकाशित कराया जाय तथा अधिक से अधिक संख्या में वितरित कराने का समुचित प्रबन्ध सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से किया जाय। इससे आदर्श को कार्यक्षेत्र मे उतरने की प्रेरणा मिलेगी और मेरे विचार में आदरणीय दोनों नेताओं के प्रति कुछ ठोस श्रद्धांजलि समर्पित करने का यह एक उपयोगी साधन भी माना जा सकता है—यही मेरा निवेदन है। क्रियात्मक कृतज्ञता को प्रकट करने की जो छोटी-सी योजना मैंने ऊपर विचारार्थ पेश की है, उस पर आर्य समाज के नेता अवश्य ध्यान दें। इस प्रार्थना के साथ इन शब्दों का समाप्त करता हूं।

नई दिशा, नये चरण (१)

हमारा विधान

[श्री डा० सूर्यदेव प्राणाचार्य, गोरखपुर]

प्रस्तुत लेख मे एक सूक्ष्म अन्वेषक की भाँति विद्वान् लेखक ने आर्य-समाज के रोग का निदान ढूढने का प्रयत्न किया है। आर्यसमाज की व्याधि है व्यक्तियो का अभाव। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन इतना व्यस्त है कि आर्यसमाज के लिए समय देने वाले व्यक्ति नहीं मिलते। पद प्राप्ति और व्याख्यान बाजी दूसरी बात है। समाज सेवा का रचनात्मक कार्य दूसरी बात। लेखक ने पदाधिकारी बनने के लिए वानप्रस्थी और सन्यासियो की चर्चा की है, पर आश्रम व्यवस्था ठीक न होने से उनका भी अभाव है। प्रस्तुत विचारधारा के प्रवाह मे अन्य बन्धु भी प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार आरम्भ करेंगे। —सम्पादक

समय-समय पर आर्य समाज में पारस्परिक कलह सम्बन्धी वातावरण की गूज सुनाई पड़ने लगती है। उत्तर हो या दक्षिण सर्वत्र यह व्याधि अपना प्रभाव दिखाती है। उस क्षेत्र म थोड़े काल बाद पदलिप्सा और स्वार्थ मय विवाद आ पहुँचते हैं क्या इसके मूल कारणो पर हमने कभी विचार किया है। शायद नहीं और किया भी हो तो बहुत कम। आर्य बन्धु कभी कभी मेरे विचारो से जो पत्रो मे प्रकाशित हुए हैं, तथा जो मेरे मित्र, सहयोगी, सहपाठी, गुरु, आचार्य और वयोवृद्ध रह चुके हैं, मुझसे मेरे विचार जानने का आग्रह करते हैं। यह मेरा सौभाग्य है। उनको व्यैयक्तिक पत्र न लिखकर मैंने आर्यमित्र के माध्यम से ही उनको लिखने का विचार किया है आशा है मेरे कृपालु मित्र इस पर विचार कर नीर-क्षीर भाव से इसे ग्रहण करने की कृपा करेगे।

यह सर्वत्र दीख रहा है कि आर्य-समाज मे कलह केवल पदो और सम्पत्ति पर अधिकार के लिये है। यदि हम इन पदो पर पहुँचने की सीढ़ी धनदान, समयदान अच्छी पेशा सम्बन्धी सफलताओ को न बनाकर आर्य समाज की दृष्टि से चरित्र, विद्वत्ता सस्कृति जीवन, आश्रम व्यवस्था पालन को बना ले तो सम्भवत विवाद बहुत कुछ कम हो जाएगे। मेरे एक प्रसिद्ध वयोवृद्ध मित्र ने कहा चलो अमुक डाक्टर या एडवोकेट के पास चलें उसे प्रधान बनाना है। क्यो ? वह आर्यसमाज के केस की पैरवी या रोगियो की सेवा अल्प शुल्क स करेगा।

हम यह नहीं देखते कि वह आर्य समाज के ढाँचे मे फिट हो सकेगा कि नहीं। यह ऋषि के मन्तव्यो पर आस्था रखता है कि नहीं। वह बडे स बड़ा त्याग कर सकता है कि नहीं ! हैदराबाद के सत्याग्रह का बात बहुत पुराना हो चुकी है, नया प्रसग लीजिये अभी पजाब म हिन्दी सत्याग्रह था। कितने दिग्गज सामने आय ! कितने हा शासन के समथक बन गये, कितनो हा ने व्याधि पीड़ित होने का बहाना किया जब कि २५० ब्लडप्रेशर पर स्वामी आत्मानन्द जी महाराज सत्याग्रह के अधिनायक का कार्य कर रहे थे। तात्पर्य यह है कि मनु की उक्ति के अनुसार अपूज्यो की पूजा और पूज्यों के तिरस्कार के परिणाम स्वरूप जो व्यभिचार और अनाचार समाज म फैलता है वह प्रकृति नियमानुसार यहाँ भी व्याप्त हो रहा है। इसका उपाय है ?

सार्वदेशिक सभा के श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द और नारायण स्वामी आजीवन प्रधान रहे। यह कालखण्ड इस संस्था के इतिहास का सर्वगुण है। उस समय भी कलह हुए थे, अच्छाई और बुराई, प्रेम और कलह, विवाद, वैमनस्य जहाँ भी मानव रहेंगे, रहेगा परन्तु सीमा का अतिक्रमण नहीं होना चाहिए आर्य बन्धुओं को आर्य समाज को नई दिशा पर नवीन प्रयत्न करने के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत करने चाहिए मेरे सुझाव निम्न हैं :—

१—आर्य समाज की शिरोमणि सभाओं (सार्वदेशिक और प्रतिनिधि) के प्रधान वानप्रस्थी भी संन्यासी हों। सम्भव हो तो मन्त्री भी। जो अपना पूरा समय देकर समाज के सगठन को प्रेम पूर्वक सुव्यवस्थित करें। आवश्यक हो तो सभाएं उनका भरण पोषक करें।

२—जनपद समाजो के प्रधान और सम्भव हो तो मन्त्री भी वानप्रस्थ और संन्यासी हों और पूर्ण समय देकर कार्य करें।

३—शिक्षा सस्थाओं को बहुत सीमित कर दिया जावे। सारे भारत मे कुछ संस्थाओ को हम रखें और उन्हीं संस्थाओं को अपने आधीन रखें जिनमें हम आर्य विचारधारा को पूर्ण स्वाधीनता से प्रचारित कर सकें।

४—शिक्षा संस्थाओं से अपने श्रम को कम करके आधुनिक युग मे सगठन और प्रचार की दृष्टि से पूर्ण समय देकर मुक्त भोग कार्यकर्त्ता वानप्रस्थी और सन्यासी के रूप मे तैयार करने के लिए वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमो को खोलें।

५—सारे भारत में कुछ गुरुकुल जैसी सस्थाएं ही रखी जावे, जिन पर शासन का प्रभाव न हो। मेरे विचार में आज के भारत मे ऐसी सस्थाओं को शासन के प्रभाव से मुक्त रखना किसी दूसरे समय की अपेक्षा आज अधिक आवश्यक है। उन सब का सचालन एक केन्द्रीय समिति करे।

६—आर्य पुरुषो के समाज सम्बन्धी प्रत्येक विवाद को समाप्त करने के लिए भारत के प्रत्येक राज्य से एक सन्यासी या वानप्रस्थी लेकर एक सर्वोच्च धर्माधिकरण बनाया जावे। इसका निर्णय अन्तिम और सर्व मान्य हो। आधुनिक न्यायालयो मे आर्य सामाजिक विवादो को ले जाने वाले सदस्यों को आर्य समाज से पृथक् कर दिया जावे।

७—इस समय तो कम से कम आर्य सदस्यता की यह योग्यता रखी जावे कि वे प्रतिदिन सन्ध्या करते हो और उनको सन्ध्या पूर्ण कण्ठाग्र हो और अपनी आय का एक सीमा अवश्य समाज को देत हो।

८—आर्यसमाज के कुछ पुराने अधिकारी जो ३ वर्ष तक एक पद पर रह चुके है वे प्रतिज्ञा करे कि अब पद नहीं ग्रहण करगे और अपने समान कुछ नय पुरुष तैयार करेगे जो समाज का सेवा पूर्ण आस्था और निस्वार्थ भाव से कर।

९—साप्ताहिक सत्सगो मे प्रबन्ध सम्बन्धी कोई विषय न प्रस्तुत हो। उसको पूर्व धार्मिक सत्सग रखा जावे।

क्या ऋषि के आदर्शवादी अनुयायी आज के भारत में आर्यसमाज को नई दिशा प्रदान करने के लिए नए चरण बढ़ाएंगे।

विश्राम करो हे शीत तनिक

[श्री राधा वल्लभ बलिहारी एम०ए० (प्र०)सि० वाचस्पति, साहित्यरत्न, जयपुर]

खिमटे तरु-लता पता वन में,
प्राची की लाली धूमिल है।
सर,सरिता, सागर के जल मे,
ऊर्मि की अलकें स्वपनिल हैं ॥

शीतल समीर की सिहरन से,
थर थर कंपित जड़ चेतन है।
साधे, सकुचे या सहमे से,
लगते जन शून्य निकेतन है ॥

द्रुम डालो मे चिर मुंदे नयन,
मानो निद्रा रत हो बैठे।
अभिनन्दन रवि का करने से,
पहले निज कलरव खो बैठे ॥

कोयल की कूक नहीं होती,
पी,प,का राग विलीन हुआ।
दादुर दल चला समाधि को,
खग वृन्द मौन व्रत लीन हुआ॥

हे निशा, दिशा का पता नहीं,
या नभ भी मेघाच्छादित है।
भूतल के शीतल प्रांगण में
नगपति भी ध्यानावस्थित है ॥

खेतों, खलिहानों में कुहरा,
चादर ताने अनुरक्त रहा।
इस धवल धूप आगे मानो,
जग सब वैभव से रिक्त रहा ॥

पौ फटते ही रवि रश्मि माल,
शोभित करती नभ मडल को।
शुचि सुखद सुमगल वेला में,
ज्योतित करती भूमण्डल को ॥

अब निखिल जगत् नत मस्तक है,
सर्वत्र शात शासन आगे।
रवि उदय अस्त भी किंचित दिक्,
परिवर्त्तन से पीछे आगे ॥

प्रात शिशुओ की चहल पहल,
जनना का व्यस्त बना देती।
कजरारे नैन सरस बतिया,
अन्तरतम स्वस्थ बना देती ॥

चन्दा मामा से निंदिया में,
मिलने के कारण नहीं लौटे।
या कभी शीत से बिस्तर में,
सपनों के जग से नहीं लौटे ॥

विश्राम करो हे शीत तनिक,
जगने दो जग की अगड़ाई।
क्यो नहीं नियति के वैभव मे,
खिलने दो कलियाँ अलसाई ॥

फिर से ऋतु राज उमड़ आये,
कण कण तृण तृण पर मुस्काए।
सर्वत्र सुवासित मलयज हो,
सुख धाम धरा तब हो जाए ॥

—वैदिक विद्या सभा, तथा वैदिक पुत्री पाठशाला नई मण्डी मुजफ्फरनगर की अध्यापिकाओं तथा बालिकाओं ने श्री पं० बूटाराम जी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। श्री बूटारामजी पुत्री पाठशाला के संस्थापक थे।

महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश

[श्री सतीशकुमार भारतीय नरहरपुर, अलीगढ़]

मैंने सत्यार्थप्रकाश कम से कम अठारह बार पढ़ा। जितनी बार मैं इसे पढ़ता हूँ मुझे मन और आत्मा के लिये कुछ नवीन भोजन ही मिलता है। पुस्तक गूढ़ सचाइयों से भरी पड़ी है।

—पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

मेरा जन्म एक पौराणिक घराने में हुआ था। अतएव शैशव में पौराणिक गप्पों पर श्रद्धा होना तो स्वाभाविक था। अस्तु मैं नित्य मूर्ति (कृष्ण) पूजा करता और पौराणिक अवतारों पर श्रद्धा रखता। परन्तु प्रभु की कृपा से मुझे नवीं कक्षा में सत्यार्थप्रकाश पढ़ने का अवसर मिला जो, जिसे अकस्मात् लायब्रेरी से प्राप्त कर लिया था। पढ़ने के उपरान्त सत्यार्थप्रकाश का जो मेरे ऊपर प्रभाव पड़ा उसके परिणामस्वरूप मैंने अपनी अलमारी में सजी हुई समस्त मूर्तियों को फेंक मारा और शीघ्र ही बाजार से नया सत्यार्थप्रकाश खरीद कर उसका स्वाध्याय करना प्रारम्भ किया। इस स्वाध्याय ने ही मुझे भ्रम से दूर कर सत्य का दिग्दर्शन कराया। मैं ही नहीं वरन् न जाने मुझसे कितने ही पापात्मा इस ग्रन्थ द्वारा विनष्ट होने से बचे हैं। सत्य तो यह है कि यह "असतो मा ज्योतिर्गमय" का साधन है।

"सत्यार्थ प्रकाश" एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें मानव जीवन के सम्पूर्ण विभागों पर प्रकाश पड़ जाता है। मनुष्य के जीवन का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो उसके प्रकाश से दीप्त और विकसित न हो सके। सत्यार्थ प्रकाश की रचना ही ऋषि की सवतोमुखी प्रतिभा और विद्वत्ता का परिचय देती है।

अब हम इस बात का प्रतिपादन करेंगे कि जीवन में सत्यार्थप्रकाश का कितना महत्त्व है?

देखिये, जब बच्चा पैदा होता है तो प्रथम उस मूक शिशु के मुख से केवल तीन शब्द—अ, उ, म्, ही क्रमशः प्रस्फुटित होते हैं। इन तीनों अक्षरों का समूह ही परमेश्वर का पूर्ण नाम है। अतएव स्वयं सिद्ध है कि नवजात शिशु सर्व प्रथम परमेश्वर का ही नाम लेता है। स्वामी दयानन्द ने प्रथम समुल्लास में उसी परमेश्वर के नाम की स्पष्ट व्याख्या एवं स्वरूप चित्रित किया है।

अंगरेजी में एक कहावत है—Child is father of man अर्थात् बच्चे को शैशव में ही जो शिक्षा दी जायगी वह बच्चे के हृदय पटल पर जीवन भर अङ्कित रहेगी। अतः ऋषि ने भी द्वितीय समुल्लास में शिशु के प्रति माता पिता के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। तृतीय समुल्लास में आचार्य का विद्यार्थी के प्रति क्या कर्त्तव्य हो, इसका वर्णन है। इस समुल्लास के पढ़ने से ऋषि का व्यक्तित्व महान् शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रतिभासित होता है।

इस प्रकार ब्रह्मचर्याश्रम के कर्त्तव्याकर्त्तव्य बताने के बाद गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास के कर्त्तव्याकर्त्तव्यों का उल्लेख क्रमशः चतुर्थ और पंचम समुल्लास में है। इस भाँति प्रथम पांच अध्यायों में सम्पूर्ण जीवन की गतिविधि एवं क्रियाकलाप का चित्रण है। अगले पांच समुल्लासों में जीवन तरतर भागों पर प्रकाश डाला गया है।

अरस्तू ने कहा है Man is a social animal अतएव मनुष्य समाज को सचालित करने के हेतु राज्य की स्थापना आवश्यक है। राज्य को चलाने की जिस सुन्दर नीति का होना आवश्यक है वह राजनीति भी सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित है। सप्तम समुल्लास में वेद और ईश्वर के विषय में विशद व्याख्या की गई है। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और विद्याऽविद्या, बन्ध मोक्ष का वर्णन अष्टम नवम् में किया है और दशम में मनुष्य के आचार विचार का दिग्दर्शन कराया है।

अस्तु यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार अपने जीवन पथ पर चला चलेगा तो यह निश्चित है कि दुर्गुणी व्यक्ति भी अपने जीवन को आदर्श बना सकता है। मेरी आचार सम्बन्धी अनेक बुरी आदतों को सत्यार्थ प्रकाश के कुछ वाक्यों ने ही छुड़ाया था।

सत्यार्थ प्रकाश में प्रत्येक विषय का खण्डन मण्डन तर्क से हुआ है, पक्षपात से नहीं। मनु ने कहा है कि धर्म का निर्णय तर्क से ही होता है। अतः सत्यार्थप्रकाश पर यह आरोप लगाना कि उसमें दुराग्रहता है, अनुचित है। ऋषि ने तो भूमिका में ही लिख दिया है 'इस ग्रन्थ में जो कहीं भूल चूक से या शोधने में तथा छापने में भूल चूक रह जाय उसको जानने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायगा और जो कोई पक्षपात से अन्यथा शंका वा खण्डन-मण्डन करेगा, उस पर ध्यान न दिया जायगा। हाँ, जो मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्यासत्य समझने पर वैसा ही कर दिया जावेगा।

इसके पश्चात् स्वामीजी ने उत्तरार्द्ध के चारों समुल्लासों में बड़े बड़े सम्प्रदायों—जैनी, किरानी, कुरानी का खण्डन पक्षपातरहित और सत्यासत्य का निर्णय करने के ही हेतु किया गया है। यह ही नहीं इन सम्प्रदायों में फैले हुए कुविचारों और कुप्रथाओं की भी कड़ी आलोचना की है। जिसके फलस्वरूप विचारशील मुसलमानों, ईसाइयों, जैनियों, पौराणिकों तथा अन्य मतावलम्बियों ने अपने मन्तव्यों की नई युक्तिसंगत व्याख्या का प्रयत्न शुरू किया है। उदाहरणार्थ सरसैयद अहमदखाँ ने जो महर्षि के घनिष्ट सम्पर्क में आये थे मुसलमानों के बहिश्त का वही चित्र खींचा है जो महर्षि ने खींचा था। ईसाइयों ने Genesis (उत्पत्ति पुस्तक) में आये Sixdays का अर्थ Sixperiods इत्यादि किया। ऐसा अन्यों ने किया वा अब भी कर रहे हैं, पर इसके आधार पर यह कहना जैसे कि प्रायः लोग कहते हैं कि स्वामी दयानन्दजी ने हिन्दू, जैन, ईसाई और इस्लाम को Mis represent किया वा ठीक रूप में नहीं रखा, सर्वथा गलत है।

यह सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व है कि उसने अन्य मतों के बड़े बड़े विद्वानों और विचारकों को अपने मन्तव्यों में सुधार और उनकी युक्तिसंगत नवीन व्याख्या के लिये प्रेरित कर दिया है। भारत तथा अन्य धर्मों के वर्त्तमान सुधार का श्रेय वस्तुतः सत्यार्थप्रकाश को ही है और उसका उपकार मानने के स्थान पर उस पर अयथार्थता का आरोप लगाना अनुचित है।

★

सभा की सूचनाएं

सभा व समाजों का वर्ष ३१ दिसम्बर १९५८ को समाप्त हो गया है। अतएव समस्त निरीक्षकों से प्रार्थना है कि वे अपने निरीक्षण की रिपोर्ट तथा आय-व्यय का लेखा शीघ्र कार्यालय को भेज दे, ताकि रिपोर्ट में प्रकाशित हो सके।

२—समस्त अवैतनिक उपदेशकों से निवेदन है कि वे अपने पूरे वर्ष का प्रचारकार्य विवरण सभा कार्यालय में शीघ्र भेजने की कृपा करें, ताकि वह रिपोर्ट में आ सके।

३—समस्त जिला सभाओं के मंत्रियों से निवेदन है कि वे गत् वर्ष की रिपोर्ट कार्यालय में भेजने की शीघ्र ही कृपा करें, ताकि वह सभा के वार्षिक वृत्तान्त में छपाई जा सके।

४—प्रान्त के सभी संस्थाओं के प्रधान संचालकों से निवेदन है कि वे अपनी संस्थाओं की वार्षिक रिपोर्ट अधिष्ठाता शिक्षा-विभाग एवं सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

उपदेशकों से नम्र निवेदन

पिछले मास के आर्यमित्रों द्वारा तथा निजी पत्रों द्वारा भी प्रार्थना की गई है कि वे अपने साल भर का पूर्ण विवरण कार्यालय में भेज दें। रिपोर्ट तैयार हो रही है। यदि उनकी रिपोर्ट १५ फरवरी तक न आई, तो जो सामग्री सभा कार्यालय में उपलब्ध है उसीके आधार पर रिपोर्ट तैयार हो जायगी और फिर किसी को किसी प्रकार की आपत्ति करने का अधिकार न होगा।

समाजों से एक आवश्यक निवेदन

सभा को प्रभावशाली एवं सुसंगठित करने का एक मात्र साधन समाजों से निर्वाचित प्रतिनिधियों पर होता है। अतः समाजों से नम्र निवेदन है कि वे अपने यहाँ से ऐसे प्रतिनिधियों का निर्वाचन करके भेजें कि जो सभा के बृहदधिवेशन में अवश्य भाग लें। प्रायः यह भी देखा गया है कि इतने बड़े प्रान्त में जहाँ पर ११०० से अधिक समाजें और ३० से अधिक जिला सभायें हों और ५२ जिले व ३०० के लगभग तहसीलें हों, और बड़े-बड़े शहरों में कई एक समाजें हों और बड़ी-बड़ी समाजों से ४, ४ प्रतिनिधि आने के अधिकारी हों, इतने पर भी केवल २०० के लगभग प्रतिनिधियों का आना समाजों का सभा के प्रति उदासीनता का भाव प्रकट करना है। यदि आप चाहते हैं कि सभा समृद्धशाली हो, और आपके प्रान्त में प्रचार तथा संस्थाओं का सुसंगठन भली प्रकार हो, तो आपका परम कर्त्तव्य है कि आप अच्छे से अच्छे ऐसे प्रतिनिधि भेजे, जो हर प्रकार से आर्य हों, और अवश्य सम्मिलित होवें।

—फूलनसिंह, सभा-मन्त्री

आवश्यक निवेदन

जिला सभायें विज्ञप्तियां प्रकाशित कर लें

जयन्ती-योजना के स्वरूप, तथ्य और उपयोगिता का व्यापक प्रचार करने के लिये जिला उप प्रतिनिधि सभाओं और समर्थ समाजों से निवेदन है कि वे योजना-सम्बन्धी सभा की विज्ञप्तियों, सार्वदेशिक सभा की अपील तथा अन्य लेखादि की सहायता से अपने क्षेत्र में प्रचारार्थ विज्ञप्तियाँ प्रकाशित कराकर बटवाना आरम्भ कर दें जिससे जयन्ती का सन्देश भी सब तक पहुँच सकेगा और जयन्ती-निधि में भी सहायता मिलेगी।

विज्ञप्तियों के प्रकाशन का व्यय निधि के संगृहीत धन में से किया जाना चाहिये। प्रकाशित विज्ञप्ति और व्यय बिल प्रस्तुत करने पर व्यय को स्वीकार कर लिया जायगा।

आर्यसमाज की सेवा का जिलेवार विवरण

उत्तरप्रदेश के प्रत्येक जिले द्वारा आर्यसमाज के कार्य में कितना सहयोग प्राप्त हुआ है, विशेष कार्य, विशेष संस्थाएं, विशेष व्यक्ति, विशेष आन्दोलन आदि का संक्षिप्त विवरण शीघ्र अपेक्षित है।

उत्तरप्रदेश की ओर से आर्यसमाज की सेवा स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक जिले का विवरण आर्यमित्र हीरक-जयन्ती-विशेषांक में देने का प्रयत्न किया जा रहा है। आशा है सम्बन्धित व्यक्ति इस सम्बन्ध में अविलम्ब सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत करेंगे।

उमेशचन्द्र स्नातक
मन्त्री आर्यमित्र हीरक-जयन्ती-समिति

संशोधन

—१८ जनवरी ५९ के आर्यमित्र में श्री वीरसेन वेदाश्रमी जी के स्थान पर उनका नाम वीरसिंह छप गया है। पाठक भूल सुधार करलें।

—सम्पादक

काशीपुर आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन इस प्रकार हुआ—
प्रधान—श्री मिठ्ठनलाल जी
उपप्रधान—श्री देवीचन्द जी ठेकेदार
मन्त्री—श्री रामरक्षपाल शर्मा
उप मन्त्री—श्री यमुनाप्रसाद
कोषाध्यक्ष—श्री शान्तिप्रसाद
पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजेन्द्रपाल

—आर्यसमाज बस्ती की हीरक जयन्ती मनाई जा रही है। श्री शिवनारायण जी वेदपाठी उपदेशक सभा देहात में प्रचारार्थ नियत है एक और सज्जन प्रचार के वास्ते नियुक्त हुये हैं। यहां का प्रचार बड़े धूम धाम से हो रहा है। —निरंकारप्रसाद, बस्ती

अध्यापक की आवश्यकता

आर्यसमाज धमौरा (जि०रामपुर) के अन्तर्गत "संस्कृत वैदिक विद्यालय" के लिये एक अध्यापक की आवश्यकता है, जो कि "शास्त्री" योग्यता रखते हों। इच्छुक महोदय का आर्य समाजी होना आवश्यक है। प्रार्थना पत्र तथा वेतनादि के विषय में निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें।

मन्त्री, आर्यसमाज धमौरा
जि० रामपुर

वर चाहिये

कायस्थ (सक्सेना) परिवार की एक २२ वर्षीय, सुन्दर तथा निस्संतान विधवा के लिए एक वैदिक विचारों वाले सुशील, शिक्षित तथा कमाऊ वर की आवश्यकता है। जाति का कोई बन्धन न होगा। दहेज के लोलुप तथा सन्तानयुक्त विधुर कृपया पत्र व्यवहार न करें।" पता—सक्सैना
द्वारा आर्यमित्र, लखनऊ

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद

परीक्षा-सम्बन्धी सूचना

समस्त केन्द्र व्यवस्थापकों तथा परीक्षार्थियों को सूचित किया जाता है कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् द्वारा संचालित परीक्षाएं दिनांक ८ तथा १५ फरवरी ५९ को प्रातः १० बजे से होगी। —सुरेन्द्रनाथ
परीक्षा मन्त्री अमरोहा

आर्य समाज भवन पिम्परी (पूना) का उद्घाटन

८ फरवरी को आर्यसमाज पिम्परी कालोनी (पूना) के नवीन भवन का उद्घाटन सम्पन्न होगा। श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी जी व श्री ताराचन्द गाजरा पधार रहे है। आर्य जन निमन्त्रित हैं।

उत्सव समाचार

आर्यसमाज मिठौरा बाजार (गोरखपुर)—का उत्सव १० से १३ फरवरी तक होगा।

आर्यसमाज देवरिया—का उत्सव ११ से १४ फरवरी तक होगा। तथा नवीन समाज का शिलान्यास भी होगा।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर—का उत्सव १४ से २२ फरवरी तक होगा, तथा श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी की कथा, अनेक सम्मेलन भी होगे।

आ. स. रक्सौल (चम्पारण) का उत्सव १२ से १४ फरवरी तक होगा।

निर्वाचन १९५९

आर्यसमाज गोरखपुर—	प्रधान श्री गोपालदासजी,	मन्त्री श्री जयसिंहजी
" देवगाँव (आज़मगढ़)	" श्री सूर्यप्रसादजी	" श्री धर्मराजजी
" देवास—	" श्री मुरलीधरजी	" श्री मुरलीलालजी
" खुरजा—	" श्री लालचन्दजी	" श्री प्यारेलालजी
" गंगोह—	" श्री अमरसिंहजी	" श्री जनार्धनदासजी
" फिरोजाबाद (नवीन) (देवनगर)	" श्री सुखस्वरूपजी	" श्री दिनेशचन्द्रजी
" कौंदू (बुलन्दशहर)	" श्री कुन्दनलालजी	" श्री जयन्तीलालजी
" भोगांव,	" श्री रामरत्न जी	" श्री सदानन्दजी
उपप्रति. नि. सभा फर्रुखाबाद	" श्री स्वा० परमानन्दजी	" श्री नवीनचन्द्रजी
आर्यसमाज खसौर (बिजनौर)	श्री कन्हैयालालजी	" श्री रामकुमारसिंहजी
" गोविन्दनगर (कानपुर)	श्री द्वारिकाप्रसादजी	" श्री मोहनलालजी

आर्य-जगत

संस्कार-समाचार—

—हलद्वानी (नैनीताल) मे दिनाक २२।१।५९ को श्री स्वामी अमृतानन्द जी न श्री सत्यप्रकाश जी के शिशु का नामकरण सस्कार सम्पन्न कराया स्थानीय समाज को १०) दान दिये गये।

—करतला (मेरठ) आर्यसमाज म दिनाक १२।१।५९ को धर्मबन्धु जी द्वारा श्री नत्थूसिंह जी के पुत्र का नामकरण सस्कार सम्पन्न हुआ।

—मसूद (भेलसा) म दिनाक १२।१।५९ को श्रीमती सुशीलाबाई तथा यशवन्तराव पजाबा का पाणि ग्रहण सस्कार श्री प० रामचन्द्र जी वानप्रस्थी ने कराया। दिनाक१३।१।५९ को ठा० खिलानसिंह जी की धर्मपत्नी का पुसवन सस्कार भी पण्डित जी के ही करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ।' जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

—मोहमर्दी आर्यसमाज से दि० १६ जनवरी का श्री मातादीन एवं रामेश्वरी देवीजी का पाणिग्रहण सस्कार सम्पन्न हुआ। जिस से दर्शक गण अत्यधिक प्रभावित हुए।

—गगापुर (बुलन्द शहर) आर्य समाज म दिनाक ७।१।५९ का श्री चोखेलाल जी के पौत्र का नामकरण सस्कार श्री रामचरन जी ने कराया। आर्य समाज को भी दान दिया गया।

प्रचार-समाचार—

—मिठौरा बाजार (गोरखपुर) आर्यसमाज की ओर से सोनवल, जगदोरा तथा सेभरा ग्राम म श्री दशरथ जी भजनोपदेशक के द्वारा समाज का प्रचार काय सम्पन्न हुआ। भजनो से पर्याप्त मात्रा म ग्रामवासी प्रभावित हुए।

—वसन्तपुर (छपरा) आर्यसमाज म, श्री महानन्दसिंह जी भजनोपदेशक तथा ठाकुर वेदपालसिंह आर्य प्रचारक ने दिनाक ५ से ७ जनवरी ५९ तक बड धूमधाम से आय समाज का प्रचार किया। जिस का जनता पर बहुत सुन्दर प्रभाव पड़ा।

—हरदुआगज आर्यसमाज मे श्री ओम् स्वरूप जी भजनोपदेशक की अध्यक्षता मे एक कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

—सतना (रीवा) आर्य समाज के तत्त्वावधान मे पूसी मेला एव मकर सक्रान्ति के अवसर पर बड़ी धूमधाम के साथ वैदिक धर्म का डका बजा, जिसम हजारो मनुष्यों ने भाग लेकर अपने का कृतकृत्य किया। भजनोपदेशक प० रामदेव शर्मा का कार्य प्रशसनीय रहा।

—फीरोजाबाद आर्यसमाज मे श्रद्धानन्द बलिदान दिवस व सक्रान्ति पर्व उत्साह पूर्वक मनाये गये।

आर्य वीर दल समाचार—

बम्बई

काकड़ वाड़ी आर्यसमाज बम्बई में दिनाक १८।१।५९ को, आर्यवीर दल के प्र० सचालक श्री ओम्प्रकाश जी की अध्यक्षता म बम्बई आर्यवीर दल के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक हुई जिसमें दल को व्यापक बनाने एव ६ हजार रुपये एकत्र करने की योजना बनाई गई।

बंगाल, आसाम

—बग आसाम आर्यवीर दल के सदस्यो का वार्षिक अधिवेशन दिनाक १।१।५९ को श्री ब्रह्मदेव जी प्रान्तीय सचालक की अध्यक्षता म सम्पन्न हुआ। तथा नवीन वर्ष मे कार्य सचालन के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गये—श्री ब्रह्मदेव जी सचालक, श्री हरिश्चन्द्र जी अधिष्ठाता एव सत्य नारायण जी मन्त्री।

—आर्यवीर दल बड़ा बाजार कलकत्ता की अन्तरङ्ग सभा दिनाक १८।१।५९ को प्रान्तीय सचालक श्री ब्रह्मदेव जी के सभापतित्व मे आर्य समाज बडे बाजार म सम्पन्न हुई। एक समिति का निर्माण किया गया जिसके अधिष्ठाता श्री सीताराम जी, तथा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी निर्वाचित किये गये।

बिहार

—आर्यवीर दल मिर्जापुर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमें श्री वेचनराम सिंह जी मण्डल पति (प्रधान) सूर्यप्रताप जी, बगहा के, शिवमन्दिर जी, बगही के, अमरनाथ जी, डोमनपुर के, रामशृगार जी, हासीपुर के नगर नायक चुने गये।

—हासीपुर मे आर्यवीर दल की बैठक १८ जनवरी को हुई जिसमें मई मास मे एक सप्ताह का शिविर लगाने का निश्चय किया गया। इसी अवसर पर ७५ सैनिको के एक मण्डल का प्रदर्शन (रैली) भी हुआ।

—बगहा आर्यवीर दल के निर्वाचन में श्री सूर्यप्रताप जी नगर नायक रामधनी सिंह जी मन्त्री, श्री दयाराम सिंह जी तरुण शाखानायक एव खिरधरलाल जी बाल शाखानायक निर्वाचित हुए।

शोक समाचार—

—श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी पूर्वनाम प० गगाप्रसादजी के आकस्मिक निधन पर, गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन तथा आर्यसमाज वृन्दावन से सम्बन्धित सभी सज्जनो ने शोक प्रकट करते हुए मृत परिवार के दुख वहन के लिए प्रभु से कामना की है।

—सतना (रीवा) आर्यसमाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता की छोटी बहिन माधुरी देवी के आकस्मिक निधन पर समाज के एकत्रित सदस्यो ने प्रभु से कामना की कि वह दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करते हुए शोक सन्तप्त पारिवारिक जनो को निधन जन्य कष्ट सहने की क्षमता प्रदान करे।

अन्यान्य समाचार—

—सतना (रीवा) आर्यसमाज ने पाकिस्तान सरकार की उस अनुचित आज्ञा के प्रति रोष प्रकट किया, जिसके आधार पर आर्यों के पवित्र ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' पर प्रतिबन्ध लगाया है।

—सतना (रीवा) आर्यसमाज के भजनोपदेशक प० रामदेव शर्मा ने दिनाक १३।१।५९ को सुभाष पार्क मे काग्रेस सेवादल के उत्साही बालको के मध्य चरित्र सुधार, सगठन तथा दयानन्द जी के बताये हुए मार्ग पर प्रकाश डाला। श्रोताओ पर पण्डित जी का अच्छा प्रभाव पड़ा।

—भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के अन्तगत सभी आर्य कुमार सभाओ को अपने प्रधान तथा मन्त्री की नामावली अपनी सभा के पूर्ण पते सहित, प्रचार मन्त्री भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् वेद मन्दिर ९९ बाजार मोतीलाल बरेली के नाम शीघ्र भेज देनी चाहिए।

—वेदपथिक प० धर्मवीर जी आर्य प्रतिदिन देहली नगर के परिवारो में पारिवारिक यज्ञ करा रहे हैं। आपकी दक्षिणा यज्ञ से प्रेम करना तथा प्रतिदिन अपने घरों में दैनिक यज्ञ करने की शपथ लेना है। झण्डाधारी जी का लक्ष्य विश्व के घर घर में यज्ञ एव वेद मन्त्रों का प्रचार करके पुरातन वैदिक युग का नव निर्माण करना है।

श्री बा० जगनन्दन लाल जी के पिता का स्वर्गवास

अत्यन्त दुःख के साथ लिखना पड़ता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान श्री बा० जगनन्दनलाल जी एडवोकेट, प्रयाग के पूज्य पिता जी का २६ जनवरी को ८० वर्ष की आयु मे स्वर्गवास हो गया। श्री बाबू जगनन्दनलाल जी उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य से दिल्ली गए हुए थे। आर्य बन्धुओं ने श्री बाबू जी की अनुपस्थिति मे, उनकी धर्मपत्नी के आदेशानुसार उनके पिता जी का अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया। १फरवरी को आर्यसमाज कटरा, प्रयाग ने शोक प्रस्ताव पास किया। —मत्री

आ.स. नारायण स्वामी-भवन, लखनऊ

प्रधान—श्री बाबूराम भारतीय
उपप्रधान—श्री रोशनलाल
मन्त्री—श्री इन्द्रदेव शर्मा
उपमत्री—श्री नारायणगोस्वामी
कोषा०—श्री राजबहादुर
प्रदेशीय सभा के लिए प्रति०—श्री इन्द्रदेव शर्मा

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ की अन्तरङ्ग का महत्वपूर्ण निश्चय

सर्व साधारण जनता को विदित हो कि जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के मन्त्री श्री विक्रमादित्य जी वसन्त का पत्र स० ९७७ दिनाक १५।१।५९ द्वारा जिलोपसभा लखनऊ का निश्चय स० ३ (५) दिनाक ७।१२।५८ को सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकृत हुआ है वह निम्न प्रकार प्रकाशित किया जाता है—

'आर्य गरम दल' लखनऊ द्वारा प्रेषित पत्र का कोई उत्तर न दिया जावे और उसे लाल पर्चे—डके की चोट—१ के साथ फाइल कर दिया जावे। श्री वेदप्रकाश जी आर्य तथा उनके अन्य आठ सहयोगियो द्वारा जो विज्ञप्ति प्रकाशित की गई है, उस पर क्षोभ प्रकट किया जावे तथा इस विषय में जाँच की जावे। यदि श्री वेदप्रकाश जी आर्य वही महानुभाव हों जो कि इस उप प्रतिनिधि सभा के अवैतनिक उपदेशक हैं, तो उनका नाम अवैतनिक उपदेशकों की सूची से तुरन्त काट दिया जावे और उन्हें प्रचार का कोई कार्य न दिया जावे।"

—मन्त्री

देशदर्शन

भारत की विकास यात्रा में उत्तर प्रदेश की प्रगति

(ले०—श्री सच्चिदानन्द)

नौ वर्ष पूर्व भारत पूर्ण प्रभुता सम्पन्न गणतन्त्र घोषित हुआ था। उसी समय से इस देश की विकास यात्रा का प्रारम्भ समझना चाहिए। यह ठीक है कि गणतन्त्रात्मक शासन की स्थापना से लगभग तीन वर्ष पूर्व ही हम राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो चुके थे, किन्तु प्रारम्भ के दो तीन वर्षों में सरकार को देश विभाजन के फलस्वरूप उठ खड़ी हुई अनेक नयी समस्याओं का सामना करना पड़ा और इसीलिए उस वातावरण की सृष्टि नहीं हो सकी जो ठोस एवं सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए अपेक्षित होता है। नौ वर्ष पूर्व गणतन्त्रात्मक संविधान का तयार हो जाना तथा लागू हो जाना, इस बात का सबूत है, कि देश में शान्ति एव व्यवस्था की दृढ़ नींव पड़ चुकी थी और पंचवर्षीय योजनाओं का शुभारम्भ इस तथ्य का द्योतक है, कि देश ने सुनियोजित आर्थिक विकास की दशा में नया कदम उठाया। तब से हम काफी आगे बढ़ आये हैं। गणतन्त्र भारत की नवीं वर्ष गाठ के उपलक्ष में, यह उपयुक्त ही है कि, विभिन्न कार्य क्षेत्रो मे हुई प्रगति का एक संक्षिप्त ब्योरा प्रस्तुत किय जाय।

उत्तर प्रदेश मे पिछला वर्ष कठिन श्रम एवं नवीन आशाओं का वर्ष था किन्तु खाद्यान्नो की कमी का प्रश्न सर्वाधिक जटिल रहा। ज्ञातव्य है कि स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद से देश की जनता के भरण-पोषण मात्र के लिए कुल १४ अरब रुपये का गल्ला विदेशों से मगना पड़ा। यद्यपि सन् १९५०–५१ की तुलना में सन् १९५६-५७ मे उत्तर प्रदेश मे अन्नोत्पादन लगभग १३ लाख टन अधिक था तथापि प्रति व्यक्ति पीछे गल्ले का औसत मुश्किल से १६.७ औंस पड़ता था। अतः द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक प्रदेश मे प्रति वर्ष २४ लाख टन गल्ला और पैदा करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

आशा है, इस अवधि मे छोटी बड़ी सिंचाई योजनाओ का प्रसार करके २५ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में सिंचाई की सुविधाए प्रदान करने और ८०,००० एकड़ जल मग्न भूमि को जोत में लाने का कार्य पूरा कर लिया जायगा। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत २१ लाख ८० हजार एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र सिंचन सुविधाएं प्रदान की गयीं। द्वितीय योजना में अब तक लगभग २० लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि की सिंचाई की गयी है।

पिछले वर्ष खाद्यान्न बढ़ाने के लिये खरीफ और रबी अभियान चलाये गये। इन अभियानों के अन्तर्गत विभिन्न विभागों के कर्मचारियों को राज्य स्तर, जिला स्तर, खण्ड एव गांव स्तरों पर प्रशिक्षित किया गया तथा ग्रामीणो को कृषि के समुन्नत तरीके अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। पूरक खाद्य की फसलें भी उगायी गयीं।

राज्य के औद्योगिक केन्द्रों तथा शहरी क्षेत्रो पूर्वी अचल के कमी वाले जिलों और इलाहाबाद, बादा तथा फतेहपुर के अभावग्रस्त क्षेत्रो की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने जून तथा जुलाई १९५८ के लिए ८०,००० टन गेहू देना स्वीकार किया है। उत्तरप्रदेश सरकार ने अल्प आय वाले लोगो के लिए समूचे राज्य में सस्ते गल्ले की दूकानें खोलीं। इस आशय की घोषणा से कि सरकार ने राज्य के पांच बड़े नगरो तथा अन्य शहरी क्षेत्रो मे सस्ते गल्ले की दूकाने खोलने का निश्चय किया है और साथ ही इस घोषणा से कि भारत सरकार ने ८०,००० टन गेहू दना स्वीकार कर लिया है, बाजार भाव पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

उद्योगो का विकास करने और उन पर नियत्रण रखने के लिए उद्योग सचालन कार्यालय का पुनंसगटन किया गया। राज्य को पॉच क्षेत्रो में विभक्त कर दिया गया और प्रत्येक क्षेत्र में एक क्षेत्रीय अधिकारी उद्योग नियुक्त कर दिया गया है। प्रशिक्षण एव उत्पादन केन्द्रो का पुनर्गठन भी इस अवधि की महत्त्वपूर्ण घटना है। द्वितीय योजना में उद्योगो के लिए १३ करोड़ ९४ लाख ७ हजार रुपया निर्धारित किया गया है। इसम से ९ करोड़ २६ लाख २ हजार रुपया लघु उद्योगो के विकास पर व्यय करने का अनुमान है। अभी तक योजना के प्रथम तीन वर्षों में ७ करोड़ ८६ लाख रुपया व्यय किया जा चुका है। ज्ञातव्य है कि प्राविधिक शिक्षा के लिए अलग से ४ करोड़ ६९ लाख ३० हजार रुपयों की व्यवस्था की गया है। आगरा और कानपुर के दो बड़े औद्योगिक आस्थानों पर कुल मिला कर ९८ लाख रुपया खर्च करने का अनुमान है। अभी तक इन पर ४० लाख ११ हजार रुपया खर्च किया जा चुका है। द्वितीय आयोजनावधि मे तीन और औद्योगिक स्थान स्थापित किये जायगे। निजी क्षेत्र में निम्न उद्योगों का विशेष उल्लेख किया जा सकता हैं सोडा ऐश एन्ड अमोनियम क्लाराइड फैक्ट्री, वाराणसी, रेयन यार्न फिलामेन्ट और कपड़े की मशीनों के पुर्जे बनाने का कारखाना, कानपुर, बिजली के ट्रान्सफार्मर बनाने वाला कारखाना नैनी, नकली रबड़ बनाने वाला, कारखाना, बरेली और रिहन्द क्षेत्र मे अल्यूमुनियम का कारखाना।

चिकित्सा सुविधाओं के प्रसार के लिये कानपुर मे मेडिकल कालेज बन कर तैयार हुआ। कालेज मे प्रतिवर्ष १०० विद्यार्थी भर्ती किये जाते हैं। लखनऊ मेडिकल कालेज की रोग निदान और औषधि निर्माण शाखाओं की अभिवृद्धि की गयी। ग्रामीण जनता का स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए ५० प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। २७ नेत्र चिकित्सा शिविरो की स्थापना भी ग्रामीण क्षेत्रो मे की गयी। द्वितीय योजना के अधीन चिकित्सा की मद पर १०,६२,२८,००० रु० व्यय होना है। पहले दो वर्षों मे लगभग २७५ ५९,१० रु० खर्च भी हो चुका है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी वित्तीय कठिनाइयो के बावजूद उल्लेखनीय प्रगति हुई है। प्रदेश म शिक्षा का जो बजट सन् १९४५, ४६ म केवल २ करोड़ ५७ लाख रुपया था, चालू वित्तीय वर्ष मे १६ करोड १० लाख रुपया हो चुका है। आलोच्य वर्ष म १२५० नय जूनियर बेसिक स्कूल और ५७ सीनियर बेसिक स्कूल खोले गये। ११ बेसिक ट्रेनिंग स्कूल और ३ जूनियर बेसिक ट्रेनिंग कालेज भी खोले गये। पहली से पाचवीं कक्षा तक नि.शुल्क शिक्षा की व्यवस्था के लिये अन्तरिम जिला परिषदो, नगर पालिकाओ तथा प्राथमिक विद्यालयो का सचालन करने वाली अन्य सस्थाओं को नि.शुल्क शिक्षा के कारण होने वाले उनके घाटे की पूर्ति के लिये २०,२४,३१६ रु० दिया गया। सहायता प्राप्त उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के वेतन स्तर सुधार के लिये चालू वित्ताय वर्ष नियोजन बजट में २५ लाख रुपये का प्रबन्ध किया गया है। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय भी इसी वर्ष प्रारम्भ किया गया।

समाज कल्याण के क्षेत्र में जेलों, अनाथालयों, विधवाश्रमो आदि से मुक्त किये गये पुरुषों, तथा महिलाओ के पुनर्वास के लिए लखनऊ, इलाहाबाद, मेरठ, कानपुर और देहरादून में पॉच पुनर्वास गृह खोले गये। १० आश्रय गृहों की स्थापना भी की गयी सभी जिलों के सदर मुकामों मे नगर कल्याण तथा मुहल्ला कल्याण समितियाँ संघटित की गयीं। अनैतिक जीवन व्यतीत करने के लिए भगायी गया लड़कियो के उद्धार के निमित्त इस विभाग द्वारा देहरादून तथा वाराणसी मे दो सघटनो का स्थापना भी की गयी।

यहाँ उत्तर प्रदेश सरकार की आर्थिक और सामाजिक विकास सम्बन्धी कुछ प्रमुख गतिविधियो का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि खाद्योत्पादन के प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी क्षेत्रो प्राप्त सफलताए सन्तोषजनक हैं। खाद्योत्पादन का सवाल अभी भी पूर्ण रूप से हल नहीं हो पाया है किन्तु इस कठिनाई को सुलझाने का जो तरीका है अथवा जिस रास्ते पर चलकर समस्या का अन्त सम्भव है उसके अनुसरण मे प्रादेशिक सरकार ने कोई कोर कसर नहीं रखा है। आशा है इस दिशा मे भी शीघ्र ही हमारे प्रयास सफल होंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

जिन ऐतिहासिक विद्वानों की एक लम्बी सूची अपने पक्ष के समर्थन मे दी गई है, उसमे अधिकांश तो ऐतिहासिक की कोटि मे ही नहीं आते, अत उनके मत पर क्या विचार करें ? अन्य विद्वानो के भी जब तक स्पष्ट मत उद्धृत नहीं किये जाये, तब तक केवल नाम निर्देश से ही अपना वाद का प्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता। और यदि कोई विद्वान जैन मत को वैदिक धर्म से भी प्राचीन बतलाने की भूल कर भी बैठता है तो उसके उत्तर मे हमारे प्रमाण स्पष्ट हैं।

मूर्तिपूजा की निस्सारता के विषय मे यहाँ अधिक लिखना विषयान्तर होगा। परन्तु जैन मत की अर्वाचीनता के विषय मे हम अपने विचारो को दृढ़ता से प्रकट करते हुये पाठको से आशा करते हैं कि वे सत्य विचार के ग्रहण करने मे तत्पर रहेंगे। ★

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
माघ १६ शक १८८७ (८ जनवरी ५६)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्य जनता का कर्त्तव्य, आर्यमित्र के ग्राहक बनाइये

आर्यमित्र हीरक जयन्ती उद्घोष करती हुई हमारी कर्मवीरता और धर्मवीरता की परीक्षा लेने के लिए चली आ रही है।

आर्यमित्र अपने जन्म को ६० वर्ष पूरा करके ६१ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है, ऐसे स्वर्ण सुअवसर पर आर्यमित्र की लोक प्रियता को बढ़ाने में तथा ग्राहक संख्या बढ़ाने में प्रत्येक आर्य बहिन भाईयों को कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की सफलता का श्रेय उस अवस्था में हमें प्राप्त हो सकता है, जब हजारों की संख्या में आर्यमित्र के ग्राहक बनें और आर्यमित्र के द्वारा विश्व के कल्याण हेतु [illegible], वेद-धर्म तथा आर्यसमाज-मिशन का व्यापक प्रचार होकर विश्ववंदनीय महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को हम साकार बनायें।

विश्व के समस्त आर्य भाई बहिनों से पुन सविनय, साग्रह, सानुरोध, विनम्र, निवेदन है कि अपने वे कर्त्तव्य का पालन करके आर्यमित्र को वैदिक सस्कृति का अग्रदूत बना दें।

आर्यमित्र के सहायतार्थ १००) की अल्प राशि इन पंक्तियों का लेखक दे चुका है, पुन परमात्मा की कृपा होगी तो खुले हाथो से आर्यमित्र की सहायता करने का मैं सकल्प कर चुका हू। सभी आर्य भाई बहिने यदि ध्यान दें तो आर्यमित्र की हीरक जयन्ती तक हजारों ग्राहक बना लेना कोई कठिन कार्य नहीं है।

निवेदक—
वेदपथिक धर्मवीर आर्य, देहली ५

बाबूराम भारती द्वारा [illegible] आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।

सुझाव और सम्मतियां

आर्यसमाज सिंगापुर के भू.पू. प्रधान श्री वासुदेव जी की सिंगापुरवासी आर्यों से हीरक-जयन्ती के लिए अपील

सिंगापुर निवासी आर्य बन्धु गण, सादर नमस्ते!

सेवा में निवेदन है कि आपसे विदा होकर हमें स्वदेश आये हुये एक युग से अधिक व्यतीत हो रहा है। इतने लम्बे अरसे में यहां और वहां न मालूम क्या क्या तब्दीलियां हो चुकी हैं। इन तब्दीलियों का भारत में विशेष कर धार्मिक संस्थाओं पर तो बड़ा ही बुरा प्रभाव पड़ा है। जैसा राजा वैसी प्रजा वाली कहावत तो सर्व विदित ही है। जिन गुरुकुलों में भारतीय सभ्यता द्वारा शिक्षा-दीक्षा दी जाती थी वे, भी आज संकट में हैं। अनेक गुरुकुलों के स्कूल बन गये, संस्कृत पाठशालायें तो बन्द ही हो गई। सब जगह स्वराज्य मिलने के बाद अंग्रेजी का बोलबाला है। भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, लूटमार जो भी पारिवारिक दु:खदाई कर्म हैं, सब में बढ़ोतरी ही हो रही है। आर्थिक संकट ने राजा और प्रजा सबको ही बेचैन बना रक्खा है, ऐसी परिस्थिति में धार्मिक समाचार पत्र ही भला कहा तक जीवित रह सकेंगे? किन्तु यह भी तो शास्त्रों के अमिट वाक्य हैं कि, जो धर्म की रक्षा करते हैं धर्म भी तो उनका रक्षक है। इसी सिद्धान्त के अनुसार हमारी सभा के मान्य नेताओं ने धर्म प्रचारक पत्र आर्यमित्र की [illegible] हीरक जयन्ती मनाने का शुभ संकल्प आर्य जनता के सामने रक्खा और आर्यजगत् ने इस योजना का स्वागत किया है। किन्तु कोरे स्वागत से कुछ न बनेगा इसमें तन दो, धन दो।

इस शुभ कार्य में प्रत्येक आर्य भाई बहन कुछ न कुछ कर ही रहे हैं, और करेंगे भी। किन्तु सिंगापुर निवासी आर्य वीरो आप क्या कर रहे हैं, यदि कुछ कर रहे हैं तो ठीक है। यदि नहीं तो इस मेरे प्रार्थना पत्र पर ध्यान देकर यथा शक्ति कार्यारम्भ के लिये जुट जावें, अपने प्रान्त की लाज धर्म की रक्षा हेतु अपने प्यारे मित्र की झोली में अवश्य ही पुष्कल धनराशि देकर यश और कीर्ति के भागी बनें। यह धन सीधा आर्यमित्र कार्यालय हीरक जयन्ती ५ मीरा बाई मार्ग लखनऊ को भेजने को शीघ्रता करें। समय बहुत थोड़ा है। जिस समय आर्यमित्र ने कलेवर बदला था उस समय लेखक पर ही शायद सिंगापुर की आर्यसमाज के प्रधान पद का भार था। आपके सहयोग से सिंगापुर में बहुत से नये ग्राहक बनाये थे और नये कलेवर के स्वागतार्थ कुछ धन भी भेजा था। अछूत उद्धार शुद्धि फण्ड में धन भेजा, क्वेटा भूकम्प में दान भेजा, कहा तक आपके दान की प्रशंसा करू। हाँ अजमेर शताब्दी में दान भी दिया था और मुझ सेवक को प्रतिनिधि रूप में अजमेर भेजा था। उस समय तो आपका आर्यसमाज किराये के मकान में था। वहीं साप्ताहिक अधिवेशन हुआ करते थे। अब तो अपना निज का भवन है, जिससे आमदनी भी होती ही होगी। यह मैं मानता हू कि बहुत से सहयोगी आपसे बिछुड़ गए हैं परन्तु अब आपके साथ नीति निपुण भाई श्री कन्याराम व श्री राम वर्मा, श्री पं० हनुमानराय (जो कि आजकल आपकी समाज के प्रधान हैं) श्री श्यामलाल यादव, श्री प्रियराम सुन्दर शर्मा श्री रामसुमेर जी आदि आदि दिग्गज महानुभावी हैं, अत: मैं आप ही महानुभावों से अनुरोध करता हूं कि, देश-धर्म की सेवा में आप हीरक जयन्ती के लिए कुछ धन की सहायता अवश्य करें। स्वदेश में मुझे आप जैसे सहयोगी नहीं मिले, इसीलिए आपसे नम्र निवेदन है सेवा स्वीकार करें। मैं यहां धर्म-प्रचार कार्य में संलग्न हूं आप भी अपना कर्तव्य पालन करें। —मैं हूं आप सब आर्य बन्धुओं का शुभचिंतक

सहारनपुर
१५—१—५६

वासुदेव
भू०पू० प्रधान आर्यसमाज सिंगापुर



वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का ४० नए पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ रविवार माघ २६ शक १८८०, माघ शुक्ल ७ वि० २०१५ १५ फरवरी १९५९ ई०

विदेश में १५शिलिंग

महर्षि दयानन्द--

आर्यत्व की एक साकार व्याख्या

—स्वर्गीय श्री अरविन्द

महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में क्रान्तदर्शी योगिराज श्री अरविन्द की उपर्युक्त श्रद्धाञ्जलि जहाँ आर्यों के लिए गौरव की वस्तु है वहीं उस आर्यसमाज से जो आशा की गयी है, उसकी पूर्ति का दायित्व प्रत्येक कार्यकर्ता पर है, और उस आशा की पूर्ति हम अपना व्यक्तित्व आदर्श बनाकर ही कर सकते हैं —सम्पादक

★

ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व और उनके कार्यों में हम स्वतःस्फूर्ति, निश्चित प्रयत्न और प्रबल चेतना की उस शक्ति को पाते हैं जो पूर्ण स्पष्टता, सत्य और ईमानदारी के आन्तरिक तत्त्व से आती है

किसी व्यक्ति के अपने मन में सच्चे होना, अपने प्रति और दूसरों के साथ पूर्णतया सच्चा और सरल होना और अपने कार्य के परिस्थितियों तथा साधनों के साथ पूरे तौर से ईमानदार होना यह हमारी उलझी, पचरंगी और लड़खड़ाने वाली मनुष्य जाति में एक दुर्लभ देन है आर्य कार्यकर्ता को यही भी बनना होता है और विजयमय सफलता पाने का यह एक निश्चित रहस्य है क्योंकि प्रकृति अपने दरबार पर हमेशा एक स्पष्ट सच्चे और पहचानने योग्य खटखटाने को पहचान लेती है और परिणाम में वैसा ही पूरी सच्चाई और पूरे यत्न के साथ उत्तर देती है

परिणामतः यह निश्चित हो है कि इस महान आचार्य के कर्म भी अपने अनुयायियों पर अपना स्पष्ट अपने निशान छोड़ सके और भविष्य में उसी संस्था विद्यमान न हो सके उसके बारे में यह कहा जा सके कि जब कोई कार्य एस कर्म दिखाई दे जो आवश्यक हो और उचित हो तो उसे करने के लिए आर्य समाज के मनुष्य आगे आयेंगे साधन मिलेंगे और वह काम अवश्य पूर्ण होगा

सत्य एक सरल सी वस्तु लगती है फिर भी अत्यन्त कठिन है। सत्य ही वैदिक शिक्षा का मूल मन्त्र था आत्मा में सत्य दृष्टि में सत्य, इरादे में सत्य और क्रिया में सत्य। क्रियात्मक सत्य आर्यत्व' एक आन्तर निष्कपटता और दृढ़ सत्य हृदयता स्पष्टता और वाणी तथा कर्म में स्फुट उदात्तता यह आर्य नैतिकता का स्वभाव रहा है। इस प्रकार का स्वभाव शुद्ध और अविकृत शक्ति का रहस्य है और इस बात का चिह्न है कि मनुष्य प्रकृति से बहुत परे नहीं हट गया है। यही ईश्वर के पुत्र दिवस्पुत्र' का औरसत्व है उसके सच्चे पुत्र होने का प्रमाण है। यही वह छाप था जिसे दयानन्द अपने पीछे छोड़ गये और यही उनका अपना चिह्न और प्रतिमा होनी चाहिये जिसके द्वारा कि कोई कार्य 'यह उनसे प्रवर्तित है" इस रूप में पहचाना जा सके।

ईश्वर करे उनकी भावना शुद्ध, अविकृत तथा अपरिवर्तित रूप से भारत में काम करे और उस वस्तु को फिर से हमें देने में सहायक हो जिसकी हमारे जीवन में अत्यन्त आवश्यकता है—अर्थात् शुद्ध शक्ति, स्वच्छ स्पष्टता, सूक्ष्मदर्शी आँख, सिद्धहस्तता तथा श्रेष्ठ और प्रभुत्वपूर्ण सत्यता।

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क ७

कुछ छोटी बातें

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०]

[विद्वान आर्य नेता के रूप में आदरणीय उपाध्याय जी ने प्रस्तुत लेख में सूक्ष्म दृष्टि से आर्यसमाज के साहित्य, कर्मकाण्ड आदि में प्रयुक्त होने वाली अशुद्धियों व त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। साहित्य के शुद्ध मुद्रण पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिये और कर्मकाण्ड की समानता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये। सन्ध्या के प्रासङ्गिक प्रकरण पर बिलकुल स्पष्ट निर्णय भी प्रार्थनीय है। आशा है विद्वद्गण सम्बन्धित विषयों पर अपने विचार स्पष्ट कर जनता का निर्देशन करेंगे।

—सम्पादक]

यहाँ आज मैं कुछ छोटी बातों का उल्लेख कर रहा हूं जिनका प्रभाव आगे चलकर भ्रान्ति-उत्पादक हो सकता है।

(१) आजकल की संस्कार-विधियों में "प्रजापते न त्वदे" इत्यादि प्रार्थना के छठे मंत्र में महर्षि-लिखित अर्थों में छापेखाने की भूल के कारण दो पंक्तियाँ अशुद्ध छप गई हैं। कुछ दिन हुये श्री श्रीदेव जी वानप्रस्थी ने मेरा ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। उस समय मैं कोई संगति न लगा सका। मैंने कई संस्कार-विधियां देखीं, सब में भूल थी। अकस्मात् सम्वत् १९७५ के संस्करण में शुद्ध रूप मिल गया। मुझे याद है कि लड़कपन में मैंने जो इन मंत्रों के अर्थ कण्ठ किये थे वह नहीं थे। आशा है, नये संस्करण निकालने वाले पुराने संस्करणों से मिलान करके छापा करेंगे। इन अशुद्धियों का एक मूल कारण यह भी है कि हम सस्ते ग्रन्थ चाहते हैं। शुद्ध छापने मे पैसे अधिक लगते है। जनता अपनी धोती, जूता, रोटी, पानी सबके लिये कई गुने दाम देती भी है और मांगती भी है। परन्तु किताब खरीदने वाले वही पुराने दाम देना चाहते हैं। प्रेस वाले दे नहीं सकते, क्योंकि कागज, स्याही, वेतन सभी के दाम कई गुने बढ़ गये। जो सोसाइटियाँ सस्ती पुस्तकें प्रचारार्थ बेचती हैं वह प्रेस वालों के कारण नहीं, अपितु धनी-दानियों के कारण जो कि अधिक दाम अपने पास से देकर केवल नाम-मात्र मूल्य में पुस्तकें वितरण करते हैं। प्रेस वाले मजदूरों से इस त्याग की आशा रखना अनुचित और भ्रम-मूलक है। और न जल्दी में छापने वाले अल्प विद्या और अल्प वेतन पाने वाले कम्पोजीटरों से शुद्ध छपाई की आशा की जा सकती है।

(२) मैं कुछ वर्षों से देख रहा हूं कि समाजों मे जहां मूल सध्या मंत्रों का पाठ होता है वहाँ 'नमः शम्भवाय' मत्र के पहले एक प्रार्थना जोड़ दी जाती है "हे ईश्वर दयानिधे" आदि। यह मूल मत्र नहीं है। ऋषि दयानन्द-कृत भाष्य का एक टुकड़ा है। भाव तो उत्कृष्ट है ही, इसमे किसी का क्या आपत्ति हो सकती है। परन्तु जहाँ केवल मूल वेद मन्त्रों का पाठ मात्र होता हो उनके बीच में कोई ऋषि-वाक्य प्रविष्ट कर देना भविष्य मे भ्रमोत्पादक हो सकता है। पहले ऐसा प्रथा नहीं थी। यदि भाष्य सहित मत्र पाठ हो तो उसमें कोई हानि नहीं। परन्तु जहाँ केवल मूलपाठ होता हो वहां मूल के बीच में शाखा को डाल देना अत्यन्त हानि-कारक है। मुझे मीमांसा के शाबर भाष्य में कई ऐसे स्थल मिले जिनमें विद्वान लोगों के लिये यह कहना कठिन होगया कि अमुक वाक्य जैमिनिकृत मूल है या शबर कृत भाष्य। वेद और ब्राह्मण के विषय में भी कई स्थलों पर ऐसी गड़बड़ पाई जाती है। छापे वाले या लिखने वाले एक दो विरामचिह्न स्वभावतः छोड़ सकते हैं या मोटे अक्षरों के स्थान में बारीक और बारीक के स्थान में मोटा कर सकते हैं। वेद मंत्रों में जो कहीं-कहीं पाठ भेद पाये जाते है वह भी प्रमादवश होगये हैं। ऋषि वचन और वेद वचनों में इस प्रकार की गोलमाल ऋषि के प्रति हमारी श्रद्धा को बढ़ाती नहीं और न महर्षिवर ऐसा चाहते ही थे। वैदिक साहित्य में पहले से ही बहुत सी उलझनें विद्यमान हैं। उन उलझनों मे वृद्धि नहीं करनी चाहिये और विशेषकर जान बूझकर। नई प्रथाओं को चलाने में तो कोई हर्ज नहीं। परन्तु ऐसा न हो कि नई प्रथाये पुरानी अच्छी प्रथाओं को भी विकृत कर दें।

(३) आजकल पत्रों में संस्कारों के विषय में बहुत कुछ छपा करता है। एक नई प्रथा यह है कि सस्कार के पहले प्रार्थना, स्वस्ति-वाचन, शान्ति-प्रकरण का पाठ होता है। उसके पश्चात् आचमन या इन्द्रिय-स्पर्श किया जाता है। यह प्रथा न तो संस्कार विधि के अनुकूल है न बुद्धिमत्ता के। आचमन और इन्द्रिय-स्पर्श शारीरिक शुद्धि से सम्बन्धित कर्म हैं। यह तो सीधा सा नियम है कि इस शुद्धि के पश्चात् ही प्रार्थना आदि हो। संस्कारविधि में भी ऐसा ही दिया है कि पहले ऋत्विजों का वरण है उसीके ठीक पीछे आचमन और इन्द्रिय-स्पर्श। इसके पश्चात् संस्कार का काम आरम्भ हो। संस्कार के आरम्भ में प्रार्थना, स्वस्ति-वाचन, शान्ति प्रकरण का पाठ होना चाहिये। क्योंकि अन्यत्र स्वामीजी महाराज ने लिख दिया है कि संस्कार के आरम्भ में प्रार्थना आदि होनी चाहिये। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि ऋत्विजों का वरण भी पीछे से हो। जब तक ऋत्विजों का वरण न होगा उनको वेदी पर बैठने का अधिकार भी न होगा। फिर प्रार्थना कौन करेगा? यह तो सीधी सी बात है। संस्कारों के आदि में प्रार्थना का अर्थ यह नहीं कि संस्कारों से पहले, अपितु संस्कारों के जहाँ विशेष कृत्य आरम्भ हों वहाँ पहला कृत्य प्रार्थना आदि मन्त्रों का पाठ हो।

यज्ञ-सम्बन्धी ग्रन्थों में क्रम का निर्णय करते समय इस बात की विस्तृत विवेचना की गई है कि क्रम से दिये हुये कृत्यों का पालन कैसे करना चाहिये। श्रुति क्रम, पाठक्रम, अर्थक्रम, प्रवृत्तिक्रम यह सब भिन्न-भिन्न हैं। वहां अर्थक्रम और प्रवृत्ति-क्रम का निर्णय करने में बुद्धि से काम लेना होगा। क्रम की उपादेयता क्या है इसकी विस्तृत व्याख्या तो बहुत लम्बी हो जायगी। अतः मैं बुद्धिमान सज्जनों के लिये केवल संकेत से लिख रहा हूं।

यह बातें तो छोटी हैं, परन्तु हमारी मनोवृत्ति की तो सूचक हैं ही। जो बातें मुझे खटकीं उन्हें यहाँ लिख दिया है।

गीत

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि······
बुन ऐसा ताना बाना।

खिल उठे हृदय की क्यारी,
हो आभा इसकी न्यारी ॥
जीवन का स्रोत बहे फिर,
सब मिट जावे अंधियारी ॥
पल-पल में औ दिशि दिशि में,
गूंजे यह सुमधुर गाना ॥ बुन ऐसा०

वसुधा के भोग निरन्तर,
कर देते तन मन जर्जर ॥
मद, मोह, लोभ, माया के,
तूफान चलें प्रलयंकर ॥
उनसे मुंह मोड़ सदा निज,
सच्चे प्रीतम को पाना ॥ बुन ऐसा०

हो ज्योतिर्मय तेरा पथ,
कर कर्म सुबुद्धि सुशासित ॥
सत्कर्म सफल हों तेरे,
हो जन जन से आराधित ॥
बन कर तू सच्चा मानव,
औरों को साथ बनाना ॥ बुन ऐसा०

क्षण क्षण से बनता जीवन,
बूंदों से ही भरता घट ॥
मत कलुषित कर भावों को,
रखना है यदि उज्ज्वल पट ॥
जग कितना ही ठुकराए,
तू दिव्य भाव अपनाना ॥ बुन ऐसा०

—सत्यभूषण वेदालंकार एम० ए०
नई दिल्ली

वेदोपदेश

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि । य० १ । ५ ॥

हे सच्चिदानन्द स्वप्रकाशरूप ईश्वराग्ने ! ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आदि सत्यव्रतों का आचरण मैं करूंगा। सो इस व्रत को आप कृपा से सम्यक् सिद्ध करें। तथा मैं अनृत अनित्य देहादि पदार्थों से पृथक् हो के इस यथार्थ सत्य जिसका कभी व्यभिचार विनाश नहीं होता, उस विद्यादि लक्षण धर्म को प्राप्त होता हूं। इस मेरी इच्छा को आप पूरी करें, जिससे मैं सभ्य विद्वान् सत्याचरणी आपकी भक्तियुक्त धर्मात्मा होऊँ।

आर्यमित्र

लखनऊ—१५ फरवरी १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि-संवत् १९७२९४९०५८

कर्त्तव्य की पुकार
ईसाई-प्रचार-निरोध में सहायक बनिये

देश का दुर्भाग्य है कि हमारी अशिक्षित, असहाय और निर्धन जनता आज विदेशी ईसाई मिशनरियों के आकर्षक प्रलोभनों में दिनोंदिन फंसती चली जा रही है। इस दुष्चक्र को रोकने की क्षमता आर्यसमाज के पास ही है पर हम जितने जोर-शोर से चिल्लाते और गरजते हैं उसका शतांश भी नहीं कर पाते हैं। इसका कारण हमारी कर्त्तव्यहीनता ही है।

नवीनतम प्राप्त सूचनाओं के आधार पर ज्ञात हुआ है कि गत ९॥ वर्ष में विदेशों से ईसाई धर्म-प्रचार के निमित्त २४ करोड़ रुपया भारत में आया है। इतनी बड़ी राशि के मुकाबले हमने मिशनरियों के प्रचार-क्षेत्र में कुछ भी धन व्यय नहीं किया। ईसाई मिशनरी एक संघटित एवं योजनाबद्ध होकर प्रचार और सेवा कार्य करते हैं पर हमारा प्रचार केवल व्याख्यानों या बहुत हुआ तो शुद्धि कर लेने तक ही सीमित है। सामूहिक धर्म परिवर्त्तन की मिशनरी चालों के विरुद्ध हम कोई सफलता नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं।

आज इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर पूरी शक्ति के साथ विरोध और अवरोध का कार्य हमें स्वीकार करना होगा। सम्बन्धित क्षेत्रों की आर्य प्रतिनिधि सभायें सतर्क और सशक्त हों और सार्वदेशिक सभा नेतृत्व हाथ में ले और सभी प्रान्त उस कार्य में अंश दान करें, तभी इस कार्य को बल मिल सकता है।

२४ करोड़ का उत्तर २४ कर्मठ आदमी तय्यार करके २४ क्षेत्रों में नियुक्त करके किया जा सकता है। क्या आर्यजगत् में २४ कर्मठ कार्यकर्त्ता इस प्रकार के मिल सकेंगे? यदि हम इतने मिशनरी कार्यकर्त्ता नहीं दे सकते तो हमारा ईसाई प्रचार-निरोध-आन्दोलन प्लेटफार्म और प्रस्तावों तक ही सीमित रहेगा। दूसरी ओर कर्मठ और कर्त्तव्यनिष्ठ ईसाई मिशनरी खेती काटकर अपना भण्डार भरते रहेंगे। इसी अवसर के लिए कवि ने लिखा है—

तब पछताये क्या होवत है।
चिड़ियां चुग गयीं खेत॥

आशा है, आर्य जनता इस संकट-काल में अपने कर्त्तव्य का पालन करने में न चूकेगी। यही अवसर है जब हम ऋषि दयानन्द के मिशन की पूर्ति में सरफरोशीतमन्ना लेकर आत्म-समर्पण कर सफल हो सकते हैं।

शिक्षा-संस्थाओं में सांस्कृतिक जागरण
अनुकरणीय उदाहरण

आज शिक्षा-संस्थाओं में सांस्कृतिक गतिविधियों के नाम पर कवि-सम्मेलन, नाटक, वैरायटी शो आदि की परम्परा कायम हो चुकी है। किन्हीं दृष्टियों से उपर्युक्त कार्यक्रमों का महत्त्व उपादेय हो सकता है पर इस प्रकार के कार्यक्रम छात्रों में चरित्र और आदर्शों की जागृति में अधिक सफल नहीं हो पाते। इस दिशा में दो नवीन परीक्षण हमारी जानकारी में आये हैं। दोनों संस्थाओं का आर्यसमाज के साथ कोई वैधानिक संबंध नहीं है, फिर भी उनके द्वारा आर्य समाज की शैली का स्वागत किया गया है।

मथुरा में चम्पा अग्रवाल कालेज के प्रिंसिपल श्री जगदीशशरण जी के प्रयत्न से कालेज में एक आदर्श यज्ञशाला का निर्माण कराया गया जिस का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी ने १८ जनवरी को किया। इस यज्ञशाला द्वारा कालेज के छात्रों का झुकाव धार्मिक भावनाओं की ओर करने में कालेज अधिकारियों को सफलता मिल रही है।

दूसरा उदाहरण है जाट वैदिक इण्टरकालेज बड़ौत मे छात्र सांस्कृतिक संघ द्वारा कालेज यूनियन के चन्दे से कालेज में आर्य महोत्सव का आयोजन किया जाना। इस उत्सव, यज्ञ, यज्ञोपवीत संस्कार में श्री रामचन्द्र देहलवी जी, श्री जगदेव सिद्धान्ती जी, श्री कुं० सुखलालजी तथा अन्य अनेक विद्वानों के भजन-भाषण, महिला सम्मेलन आदि सम्पन्न हुए। छात्रों में भारतीय भावना के प्रति श्रद्धा जागृत करने में पर्याप्त सफलता मिली।

इस आयोजन की प्रेरणा के लिए श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप शास्त्री की वहाँ डिग्री कालेज मे उपस्थिति मुख्य कारण बनी है फिर भी श्री प्रि०माधवसिंहजी व छात्र सांस्कृतिक संघ के प्रधान व मन्त्री भी धन्यवाद के पात्र हैं। हम इस योजना के लिए सम्बन्धित व्यक्तियों को बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि अन्य आर्य शिक्षा संस्थायें इस कार्यक्रम को अपना कर अपनी उपयोगिता को सार्थक बनायेंगी।

जयन्ती के सहयोगियों से

जयन्ती-योजना की सफलता के लिए जिन बन्धुओं का सहयोग प्राप्त हुआ और हो रहा है उनका मित्र की ओर से हार्दिक धन्यवाद करते हुए हम उनसे निवेदन करना चाहेंगे कि प्रकाशित विज्ञप्तियों और अपीलों के आधार पर जन सम्पर्क स्थापित कर जयन्ती योजना गुरुधाम और अभिनन्दन आदि के सम्बन्ध में प्रचार करें। प्रायः सभी प्रश्नों और विवरणों का स्पष्टीकरण हो चुका है, फिर भी यदि कोई आवश्यक जानकारी चाहिए तो जयन्ती-कार्यालय को लिखकर प्राप्त करलें।

समय और साधनों की स्वल्पता के होते हुए भी प्रशंसित कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से ही जयन्ती योजना सफल होगी। समयदान देकर जयन्ती का सन्देश जन जन तक पहुँचा दीजिए। जयन्ती आर्यसमाज के नवजागरण का सन्देश लेकर आई है। हमारी सजगता, सावधानी, कार्यकुशलता और कर्मठता का स्थायी प्रभाव होगा। कर्त्तव्य की घड़ी में ही सच्चे आर्यत्व की संघटननिष्ठा की परीक्षा होने जा रही है। यही देखना है कि कौन उत्तीर्ण होता है और कौन विफल।

भाई उदयवीर शास्त्री जी को मंगलाप्रसाद पारितोषिक

आर्य-जगत् के ख्याति प्राप्त विद्वान् श्री पं० उदयवीर शास्त्री को उनके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सांख्य दर्शन का इतिहास' पर हिन्दी का मंगलाप्रसाद पारितोषिक दिये जाने की घोषणा से समस्त आर्य-जगत् प्रसन्नता अनुभव करता है। आदरणीय शास्त्री जी की विद्वत्ता और गम्भीरता से आर्यजगत् गौरवान्वित हुआ है। हिन्दी की सेवा में आर्य विद्वान किस प्रकार ठोस सेवा करते रहे हैं यह मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त करने वाले विद्वानों की सूची से सुस्पष्ट है। उसी परम्परा में शास्त्रीजी का नाम सम्मिलित होने पर हम उनको मित्र-परिवार की ओर से बधाई देते हैं और आशा करते हैं कि शास्त्रीजी भविष्य में साहित्य की अभिवृद्धि में सहयोग देते हुए आर्यजगत् का मस्तक उन्नत करते रहेंगे।

सभा उपप्रधान श्री जगनन्दन लाल जी के प्रति शोक-सहानुभूति

आर्यजगत् का दुर्भाग्य है कि उसके वृद्ध परिवार का वरद हस्त शनैः शनैः उसके ऊपर से उठता जा रहा है। अभी स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी के निधन का दुख आर्यजगत् सह भी नहीं पाया था कि आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान भाई श्री जगनन्दन लाल जी के पूज्य पिता श्री शंकरलाल जी का २६ जनवरी को स्वर्गवास हो गया। उनका वियोग आर्य परिवार के लिए महान् क्षति सिद्ध होगा। इस वियोग-दुख में सभा और मित्र परिवार आदरणीय एडवोकेट जी तथा अन्य पारिवारिकों के प्रति हार्दिक शोक सहानुभूति प्रकट करते हुए प्रभु से दिवंगतात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

आर्य शिक्षा-संस्थाओं की रक्षा

आर्यसमाज की शिक्षा-संस्थायें जिस उत्साह के साथ आरम्भ की गयी थीं, आज उनमें शिथिलता आचुकी है और संस्थायें धीरे धीरे आर्येतरों के हाथों में पहुंचती जा रही हैं। आरम्भ में धन-सहयोग के नाम सदस्यता का द्वार खोलकर संस्था के संचालन में उनका सहयोग प्राप्त किया जाता है परन्तु बाद में वे ही लोग सर्वेसर्वा बन जाते और आर्यसमाज की उपेक्षा ही नहीं, बहिष्कार

[शेष अगले पृष्ठ पर]

आ० प्र० नि० सभा उत्तरप्रदेश की योजनाओं की सफलता में राजस्थान सहयोग देगा

शुभकामना

आर्य-जगत के लिये यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान मे मथुरा में गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द जी महाराज का 'गुरुधाम स्मारक शिलान्यास' तथा आर्य-जगत के प्रसिद्ध एवं सर्वाधिक प्रिय पत्र आर्यमित्र की 'हीरक जयन्ती' मार्च मास में समारोह पूर्वक मनाई जा रही है। यह और भी प्रसन्नता की बात है कि इस शुभावसर पर आर्य जगत् के परम सम्माननीय विद्वान एवं कार्यकर्त्ता श्री पं० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा के सम्मान में अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को इस शुभ आयोजन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं समर्पित करते हुए परमात्मा से प्रार्थना है कि वे इस आयोजन में पूर्ण सफलता प्रदान करें तथा आर्य जनता से भी इस आयोजन की सफलता के लिये पूर्ण सहयोग देने की हार्दिक कामना है।

—भगवती प्रसाद मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कर देते हैं। इसी प्रकार की एक घटना डी० ए० वी० कालेज बुलन्दशहर की पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। आर्यसमाज की सम्पत्ति के साथ इस प्रकार का खिलवाड़ हम कैसे होते रहने दे सकते हैं अतः हमें इस अवसर पर अपना नैतिक समर्थन आर्यसमाज, बुलन्दशहर के अधिकारियों को देना चाहिये और अपनी अपनी संस्थाओं की रक्षा में सतर्क और सावधान रहकर आर्य संस्थाओं के आदर्शों एवं वैधानिक स्वत्वों की रक्षा करनी चाहिए।

श्रद्धांजलि

३० जनवरी १९४८ भारत के इतिहास का दुर्भाग्य-दिवस था। दस वर्ष पूर्व भारत ही नहीं मानवता की विभूति गांधी जी हमारे एक नासमझ साथी के हाथों हमसे जुदा कर दिये गए। इस दुर्भाग्य के लिए हम सदैव आंसू बहाते रहेंगे।

गांधी जी भारत के नव-निर्माता के रूप में हमारे हृदयों के कितने समीप रहे हैं यह हम भारत की प्रगति के प्रत्येक क्षण मे अनुभव करते हैं। देश मे हो रहे विकास के साथ गांधी जी की प्रेरणा संलग्न है। ३० जनवरी को राष्ट्र-पिता के निधन दिवस पर सारे राष्ट्र ने श्रद्धांजलियाँ व्यक्त की हैं, पर दस वर्ष बाद भी हम उनके त्याग, तपस्या, नैतिकता और सादगी के आदर्शों का कहाँ तक पालन कर सके हैं, यह चिन्ता का विषय है। उनके उच्चादर्शों का राष्ट्र मे पालन हो, विकास हो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मित्र-परिवार इन आदर्शों के लिए प्रयत्नशील रहने की प्रतिज्ञा दुहराता हुआ विश्व-विभूति गांधी जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दयानन्द भवन नईदिल्ली में सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य धर्म-प्रेमी का सम्मान

शनिवार २४ जनवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दयानन्द भवन (रामलीला मैदान नई दिल्ली में स्थित) में बम्बई के सुप्रसिद्ध आर्य धर्म-प्रेमी व्यवसाय-विशारद श्री धरमसी खटाऊ के सम्मान में स्वागत गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। श्री धरमसी खटाऊ काठियावाड़ के निवासी और बम्बई के बहुत बड़े मिल मालिक हैं। इस गोष्ठी में दिल्ली के गण्य मान्य आर्यों ने भाग लिया। श्री पंडित प्रकाशवीरजी शास्त्री ने उपस्थित सज्जनों को मान्य अतिथि का परिचय कराया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी ने सर्वप्रथम पुष्पहार पहना कर उनका अभिनन्दन किया। इसी प्रकार श्रीयुत जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से अभिनन्दन किया, श्रीयुत पण्डित अलगूराय जी शास्त्री सभा उपप्रधान ने अपने अत्यन्त सारगर्भित भाषण में आर्यसमाज और सार्वदेशिक सभा का मान्य अतिथि को परिचय कराया। श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी संचालक आर्य वीर दल ने सभा की ओर से चुना हुआ आर्य साहित्य तथा महर्षि दयानन्द का मढ़ा हुआ चित्र भेंट किया।

श्री खटाऊ जी ने अपने संक्षिप्त भाषण में आर्यसमाज और उसके कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्यसमाज हिन्दू समाज का सैनिक अंग है जिसने हिन्दू धर्म की रक्षा और उसकी काया पलटने का प्रशंसनीय कार्य किया है। आर्यसमाज ने समाज और देश को योग्य नेता प्रदान किए हैं। कठिन परिस्थितियों में से गुजरते हुए भी अपना मार्ग प्रशस्त करके अपने को एक बड़ी संस्था और शक्ति के रूप में आर्य समाज ने राष्ट्र का नेतृत्व सम्हाला हुआ है। प्रत्येक भारतीय को आर्य समाज की सेवाओं पर गर्व होना चाहिये।

फूलों का राजकुमार

जाग उठा रंगों का राजकुमार गगन में।
कलियों से फूट पड़ी सौरभ भीनी भीनी;
डुलमुल आँखों में खुली किरन की रंगीनी!
कोमल किसलय कांप बही चली बयार मंद,
कह चले भ्रमर मधुपी प्रभात के पुण्य छन्द॥
किरनों की राजकुमारी आज उतर आई—
विहगों के गाती गीत मधुर फूलों के बन में;
जाग उठा रंगों का राजकुमार गगन में॥
जब पड़े सितारों के घोड़े उज्ज्वल चंचल;
ढीली कर रहा लगाम किरन की चाँद शिथिल।
पूरब के कोने के रथ में सतरंग तुरंग—
जुत गये फड़कते हैं जिनके नभ नील पंख॥
जिनके अनदेखे खुरके चिह्नों की लाली;
खिल-खिल जाती है खिले कमल के कोमल तन में
जाग उठा रंगों का राजकुमार गगन में॥
किस जादू से मेघों की घाटी अंधियारी
बन गई हिमाचल पर फूली केसर क्यारी?
उस जादूगर ने रची स्वरों की किन्नरियाँ;
मिट्टी में सोई जागी अंकुर की परियाँ॥
तुम जागो हे! मेरे राजकुंवर
वह तुम्हें जगाने आया मेरे आँगन में।
जाग उठा फूलों का राजकुमार गगन में॥

—मोहनलाल श्रीवास्तव

तपोभूमि मासिक (मथुरा)

का

दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह विशेषाङ्क

प्रकाशन तिथि १ अप्रैल १९५९

तपोभूमि का नया बृहद् विशेषाङ्क दर्शनानन्द-ग्रन्थ-संग्रह विशेषाङ्क के रूप में १००० पृष्ठों में आगामी १ अप्रैल को प्रकाशित होने जा रहा है जिसमें स्वामी जी के ६० ट्रैक्ट होंगे, मूल्य ४) होगा। तपोभूमि के ग्राहकों को केवल २।।) अतिरिक्त अर्थात् रजिस्ट्री व्यय सहित ३।।) अगाऊ भेजने पर मिलेगा। ग्लेज कागज पर ६) में तथा सजिल्द का मूल्य ७) होगा। विशेष सुविधा जनता की विशेष प्रार्थना पर शिवरात्रि ८ मार्च (ऋषि बोधोत्सव) तक कर दी गयी है।

व्यवस्थापक तपोभूमि

२० कृष्णगली, मथुरा

मिशनरियों को विदेशों से २।। वर्ष में २४ करोड़ रु०

पिछले साल जून में समाप्त हुए २।। वर्षों में, भारत में काम करने वाले मिशनरियों को विदेशों से करीब २४ करोड़ रु० भेजा गया।

अमरीका से १८ करोड़ ४० लाख रु० भेजा गया, स्टर्लिंग क्षेत्र से ३ करोड़ ३० लाख रु० और अन्य देशों से २ करोड़ रु० आया।

जनवरी १९५६ में भारत में रजिस्टर्ड विदेशी मिशनरियों की संख्या ५,६११, जनवरी १९५७ में ५,५२१ और जनवरी १९५८ में ४,८४४ थी।

संस्था-परिचय

डी० ए० वी० कालेज, बुलन्दशहर

बुलन्दशहर-आर्यसमाज का उक्त कालेज से अटूट सम्बन्ध

आर्यसमाज की संस्थायें हमारी कमजोरियों से किस प्रकार दूसरों के अधिकार में चली जाती हैं और हमें दुःख होता है। जरासी असावधानी और प्रयत्न से हम उनकी रक्षा कर सकते हैं। इसी प्रकार का उदाहरण देने की ही भावना से हम यह स्थिति परिचय दे रहे हैं। प्रभु उत्साही आर्य कार्य कर्त्ताओं को सफलता प्रदान करें। —सम्पादक

बुलन्दशहर आर्यसमाज की दो ही सम्मानित संस्थायें हैं जिनमें से एक डी० ए० वी० कालेज और दूसरी आर्यकन्या-पाठशाला हैं, इन दोनों ही की जन्मदात्री आर्यसमाज बुलन्दशहर है।

आर्य कन्या पाठशाला जो कि लगभग ४० वर्ष पूर्व स्थापित की गई थी जो उसी समय से निरन्तर आर्यसमाज बुलन्दशहर के अन्तर्गत सुचारु रूप से कार्य कर रही है और चरित्र, धार्मिक शिक्षा तथा वार्षिक परीक्षा फल की दृष्टि से यह पाठशाला उच्च स्थान रखती है और उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। उक्त पाठशाला में लगभग ४५० कन्यायें बिना किसी भेद भाव के शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इसी पाठशाला में १३ सुयोग्य, सुशील, समाज सेवी अध्यापिकायें काम कर रही हैं जिनमें तीन ग्रेजुएट हैं। शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने समय समय पर पाठशाला के कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की है सुप्रबन्ध एवं कार्य चारुता के कारण ही इस वर्ष से यह पाठशाला हायर सेकेण्डरी की मान्यता प्राप्त करने जा रही है।

डी० ए० वी० कालेज का जन्म जो गत तीन वर्षों से डिग्री कालेज भी हो गया है, ४५ वर्ष पूर्व इसी समाज द्वारा हुआ। प्रारम्भ में इसका नाम डी० ए० वी० पाठशाला था, फिर कुछ समय पश्चात् डी० ए० वी० स्कूल हुआ। उस समय तक यह स्कूल भी आर्य कन्या पाठशाला की भांति आर्यसमाज बुलन्दशहर के अन्तर्गत कार्य करता रहा था। प्रगति के साथ जनता में उसकी प्रियता तथा ख्याति फैलती गई। ऐसी अवस्था में जब उसका कार्य बढ़ा और उसका प्रसार हुआ तो आर्यसमाज के तत्कालीन कर्मठ, कर्मवीर एवं अनुभवी सज्जनों ने इसका विधान निर्मित कर रजिस्ट्री करा दी। डी० ए० वी० हाई स्कूल के उस विधान के अनुसार एक साधारण सभा (General body) बनाई गई जिसका नाम आर्य विद्या सभा रक्खा गया और उसके अन्तर्गत एक प्रबन्धकारिणी समिति का निर्माण हुआ। आर्य समाज के मूलाधिकारों की सुरक्षा के निमित्त यह निश्चित हुआ कि प्रत्येक आर्यसमाज की ओर से छः सदस्य निःशुल्क चुनकर आर्य विद्या सभा में सम्मिलित हों और प्रबन्ध समिति के एक तिहाई सदस्य आर्यसमाज बुलन्दशहर से सीधे पहुँचा कर और एक तिहाई सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित अन्य आर्यसमाजों से [illegible] आर्यसमाजियों का सदैव होना अनिवार्य रूप से निश्चित हुआ और साथ ही २५ वीं धारा के अनुसार विधान में यह भी अंकित हुआ कि यदि किसी समय आर्यसमाज के मूल अधिकारों में कोई कमी आजावे अथवा उन्हें परिवर्तित कर दिया जावे तो आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को सर्वाधिकार प्राप्त होगा कि ऐसी प्रबन्ध समिति को भंग करके अपना अधिकार स्थापित करले। निर्वाचन प्रतिवर्ष करना विधानानुसार निश्चित हुआ था और १९३८ ई० से पूर्व तक ऐसा ही होता भी रहा। आर्थिक सहायता तथा जनता के उद्देश्य से यह भी विधान में व्यवस्था की गई कि कोई भी सज्जन एक रुपया प्रतिमास चन्दा देकर आर्य विद्या सभा का सदस्य बन सकता है। उस समय तो इस धारा से स्कूल को लाभ हुआ परन्तु भविष्य में जितनी हानि इससे कालिज और विशेषकर आर्यसमाज, बुलन्दशहर के अधिकारों को पहुंची वह किसी से छिपी नहीं है। कालान्तर में कुछ ऐसे स्वार्थी तथा गैर आर्यसमाजी एक एक रुपया चन्दा देकर कालिज में घुस गये जिन्होंने कुछ समय के उपरान्त यह परिवर्त्तन कर डाला कि निर्वाचन वार्षिक न होकर तीन वर्ष के उपरान्त हुआ करे और आर्यसमाज के आर्य विद्या सभा में आने वाले छः सदस्यों का एक रुपया मासिक चन्दा देना अनिवार्य कर दिया। यह भी विधान में संशोधन किया कि यदि वर्ष के अन्त में उन छः आर्य सदस्यों का चन्दा प्राप्त न हो तो आर्यसमाज बुलन्दशहर को वह धनराशि देनी पड़ेगी अन्यथा आगामी वर्षों में आर्यसमाज के सदस्य न लिये जावेंगे।

गीत

आई वासन्ती ऋतु आई।
स्वर्ण ताम्र लोहित नव पल्लव,
सुर धनु का लेकर श्री वैभव,
खिले, खिली कोमल किसलय ले
आंगन की अमराई।
आई वासन्ती ऋतु आई।
कानन कानन उपवन उपवन,
उमड़ उठे नव सौरभ के घन,
वह देखो मदभरी पिकी ने
कैसी भीड़ उठाई।
आई वासन्ती ऋतु आई।
कोमल बाहुलता फैलाओ
स्नेहालिंगन कुञ्ज बनाओ,
जीवन के पतझर में सब को
मधु ऋतु पड़े दिखाई।
आई वासन्ती ऋतु आई।

—सोहन लाल द्विवेदी

प्रथम किरण

आज किरण आई
स्वच्छ हुआ मन मलिन
भाग गया भाग्य दीन
पुलक उठा उठा रोम रोम
हुआ आज भार हीन
हर्ष हिलोर उठी नव उमग छाई
आज किरण आई।
उठो आ अमर पुत्र
सफल करो सकल कृत्य
कौन फूंक गया मन्त्र
आज कान में विचित्र
ध्वनि गम्भीर सुनी चौंक दृष्टि झट उठाई
आज किरण आई।
भीग गये नयन युगल
थिरक उठे चरण युगल
हृदय कमल मुकुल खिला
खुले चपल अधर युगल
उठा, निशा पात शिखा दीप की बढ़ाई
आज किरण आई।
हुआ आज नवल प्रात
[illegible] पात्र
स्मित सुधा रही उडेल
सिहर उठा मंगल गात्र
[illegible] हाथ रही छेड़ अंगुली छुआई
आज किरण आई।

—[illegible] विद्यालंकार

धर्मवीर हकीकतराय

(बसन्त पंचमी पर बलिदान की स्मृति में)

★

धन्य धन्य तुम वीर हकीकत,
धन्य तुम्हारा था बलिदान।
प्राण दिये पर धर्म न छोड़ा,
रक्खी तुमने अपनी शान॥
तुम बालक सुकुमार किन्तु था
पाया तुम ने सच्चा ज्ञान।
प्राणों का परवाह नहीं था,
आत्मा का अविनाशी मान॥
नहिं तलवार हकीकत [illegible] जा,
कोई जग में काट सके।
यह कह निर्भय हो मुस्काते,
दे दी तुम ने अपनी जान॥
दिये प्रलोभन यवनों ने पर,
तुमने उनको ठुकराया।
नहीं धर्म सम वस्तु जगत् में,
किया नहीं उसका परित्याग॥
मात पिता ने यत्न किया,
मोही बन तुम्हें गिराने का।
किन्तु धन्य तुम वीर डिगे नहिं,
सर्वोत्तम स्वधर्म को मान॥
मुग्धाङ्गी निज बाल वधू के,
मोहपाश में तुम न फंसे।
धन्य धन्य तुम धर्मवीर वर,
अचल रहे हिम शैल समान॥
इस बसन्त के शुभ उत्सव दिन,
हुआ सुजीवन का वह अन्त।
किन्तु रहेगा सकल लोक में,
अमर तुम्हारा यह बलिदान॥
श्रद्धाञ्जलि अर्पित हम करते,
तु[illegible] के साथ।
नव जीवन सचार करे नित,
दिव्य तुम्हारा यह बलिदान॥

—धर्मदत्त विद्यामार्तण्ड
गुरुकुल कांगड़ी

मधुमास

रचयिता अशोक कुमार निगम 'अशोक'

बौरन ते बौरी बौरी भई अमराई सबै,
डारन पै भूल पिक कूक को सुनावै हैं।
खेतन "अशोक" मञ्जु मञ्जरी कलोलैं करैं
झुकि झुकि झूम झूम नृत्य दिखरावै हैं।
ललित लवान त्यों नवीन परिधान धारैं,
स्वागत के साज साजै मोद बगरावै हैं।
कानन में कुञ्जन निकुञ्जन के पुञ्जन में,
बिहग बसंत बिरुदावली सुनावैं हैं॥

★

आवत सुगंध मंद मंद बन बागन तें,
वसुधा "अशोक" सुधा सिन्धु में नहाई है।
पी पी मधु मधुप मदान्ध ह्वै रहे हैं भूरि,
कुञ्जन में पुष्प पुञ्ज शोभा सरसाई है।
जन जन हीतल आमोद सों तरंगमान,
धाम धाम [illegible] रहा [illegible] है।
प्रकृति प्रिया ने आज साजे हैं नवीन साज,

जीवन-ज्योति

स्व० स्वामी श्री विश्वेश्वरानन्द जी

मेरे पूज्य पिता श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती पूर्व नाम प० गङ्गादत्त शर्मा जी के निधन पर उनके अनेक साथियो व भक्तो ने समवेदना सूचक पत्र मुझे भेजे हैं और उनके निधन का विवरण मांगा है। उनके स्वर्गवास के समय हम उनके पारिवारिक जनो मे से कोई भी उनके निकट या अन्त्येष्टि पर उपस्थित न था।

१० जनवरी तक उन्होने अपनी डायरी भरी थी। ११ को नित्य स्नानादि से निवृत्त हो ५० वर्ष पूर्व अपने द्वारा स्थापित किया गया आर्य पुत्र-पाठशाला मे चल रहे गायत्री महायज्ञ मे ५ वे दिन भाग लिया। यज्ञ भजन के पश्चात् ६॥—१० तक प्रवचन किया जिसमे अनेक बार अपने लगाये इस पौधे को लहलहाता देख वे आत्मविभोर और अश्रु विह्वल हो गये। १० बजे समाप्त कर दुग्ध पान किया और यज्ञ प्रसाद लिया। उठकर वहा से चले और कुछ गज आगे बढते ही नासिका और मुख से रक्त स्राव प्रारम्भ हो गया और देखते देखते दस मिनट के भीतर नश्वर देह का उन्होने त्याग कर दिया। बीच मे केवल १ बार उन्होने "ओम्" व 'अच्छा' कहा था। यह सब मुझे वहाँ जाने पर १४ ता० को पता चला। उनके निधन पर अबोहर के हजारो नर नारी इस साधु को श्रद्धाजलि देने आर्यसमाज मन्दिर एव स्मशान पहुँचे। ४ बजे सायं शव यात्रा प्रारम्भ हुई। स्त्री-पुरुषो के हाथो मे हव्य चन्दन और मेवा आदि थे। घृत आदि भी उन्होने ही सब जुटाया था। अन्तिम चित्र भी लिया गया और यह सच्चा सन्यासी अपनी अन्तिम यात्रा पूरी करने अपनी कर्मस्थली अबोहर मे अपने हजारो पुत्र और पुत्रियो के बीच पहुँच गया। उनकी आयु ८१ वर्ष १ मास और ७ दिन थी और पूर्ण स्वस्थ थे केवल कुछ खांसी थी। नित्य प्रति प्रात स्नान, सध्या और भ्रमण व्यायाम, वे करते थे। उनकी शानदार अन्तिम यात्रा अबोहर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रो मे १५ वर्ष तक की गयी महान् सेवाओ का सबसे बडा पुरस्कार था जिसकी कामना शायद ही उन्होने कभी की हो। मैंने अपने अबोहर-निवास के तीन दिनो मे उनके सैकड़ो शिष्यो शिष्याओ, भक्तो तथा साथियो को मेरे कन्धों से कन्धा लगाकर बच्चो की भाँति सुबुकते देखा। मेरा जन्म स्थान वहीं है और वहाँ के ५० वर्ष से अधिक आयु के स्त्री पुरुषो की गोद मे मैं पला हूँ। पिताजी के विवाह के



स्व० स्वामी जी का शव चित्र

१५ वर्ष बाद और ४० वर्ष की आयु में सर्व प्रथम मेरा जन्म हुआ था। मुझे वे सारे पुराने दृश्य याद आगये। अबोहर के हर क्षेत्र को पिता जी की एक विशिष्ट देन रही है। ३५ वर्षो बाद जाने पर इस बार मुझे अबोहर ऐसा लगा कि मुझ एकाकी सन्तान के अलावा भी उनके अगणित पुत्र और पुत्रिया तथा भाई बहन वहा है। उन सभी ने मेरे दुख को बटा लिया। उन सबने ऐसा निश्चय भी किया है कि प्रति वर्ष उसी स्थल पर गायत्री महायज्ञ और मेला चलाया जाय और कुछ वैदिक साहित्य का वितरण भी किया जाय। उक्त पाठशाला के नये नाम का नाम भी उनके नाम पर रखने का उनका निश्चय है। यह सब देखकर उस्ताद शहीद बिस्मिल का निम्न पक्तिया कुछ बदल कर याद आई कि—

शहीदों की चिता पर,
जुडेगे हर बरस मेले।
धरम पर मरने वालों का,
यही बाकी निशा होगा।

वहा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भी निम्न पक्तिया अन्वर्थ हो घटीं—

मरनौ भलौ विदेस का,
जहा न अपुनो कोय।
माटी खाय जानवरा,
महा महोत्सव होय॥

अलबत्ता इसके कि जानवरों ने माटी नहीं खाई और महोत्सव पूरा हुआ ही। यज्ञ की पूर्णाहुति पर मैं भी सौभाग्य से था, जो शायद पिता जी ही करते। इस अवसर पर उनकी स्मृति मे वैदिक सध्या कवितानुवाद सहित भी विशेषरूप से प्रकाशित करा कर वितरित की गयी।

अबोहर से आकर मेरठ मे पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के दर्शन किए और वस्त्रादि सामग्री वैदिक साधना आश्रम जमनानागर को भेज दी जहा वे अब रहते थे। डाकखाने मे उनके नाम जमा १२१५) को भी सदुपयोग करने के विषय मे वार्तालाप किया। वहा से अपने घर साहनपुर जिला बिजनौर आकर हम सबने पारिवारिक यज्ञ किया।

पूज्य पिताजी को मैंने बिलकुल निकट से देखा है। अपने बीच रहते हुए भी उनको मैंने न केवल एक स्नेहशील कृपालु पिता की शकल में पाया, अपितु वे वस्तुत कर्मण्य व्यवहारेण सन्त, ऋषि और कर्मयोगी थे। मैं उनका माता, पिता और गुरु तीनो ही रूप मे देखता था। इसलिये अपने दुख की बात क्या कहू ?

अन्त में अपने सभी कृपालुओं को उनकी समवेदना के लिये मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वे पूर्व से अधिक अपना स्नेह व आश्रय मुझे देते रहे। अबोहर आ० स० के पुरोहित प० शान्तिस्वरूप जी ने सपत्नीक उनकी बडी सेवा की तथा अबोहर के जिन महानुभावो ने उनकी सेवा की है (उनकी सूची बडी लम्बी है) मैं उन सबका आभारी रहूँगा। —उनका पुत्र

ब्रह्मदत्त स्नातक
३१/१ फील्ड पब्लिसिटी अफसर
भारत सरकार कचिहारोड, गोरखपुर

बुलन्दशहर जिले में जयन्ती के लिये उत्साह

मथुरा पहुँचने की तय्यारियाँ आरम्भ होने लगीं

जन-जन-सहयोग के लिए जिला बुलन्दशहर की समस्त आर्यसमाजों के पदाधिकारी, कार्यकर्ता, अन्तरङ्ग सदस्य, उपसभा तथा जत्थेदारों के नाम जिला-सभा की अपील

आज से लगभग तेंतीस वर्ष पूर्व मथुरा नगरी मे (कृष्ण जन्म भूमि) में जहाँ एक अद्भुत अपार धार्मिक मेला ऋषि जन्म शताब्दी के नाम से हुआ था जिसमें देश विदेश के लाखों नर नारी एकत्रित हुए थे, जिन्होने महापुरुषो के दर्शन कर वैदिक धर्म प्रचार से अनन्त लाभ उठाया था। अब फिर वैसा ही, उसी मथुरा नगरी मे एक धार्मिक मेले के रूप मे आर्यमित्र की हीरक जयन्ती और परम पूज्य गुरु विरजानन्द-धाम के शिलान्यास के उपलक्ष मे हमारी शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की ओर से एक विशेष समारोह होने जा रहा है। जिसका हर प्रकार का प्रबन्ध बडा विशाल और विराट रूप मे होगा, जिसमे आर्य जनता के अतिरिक्त समस्त देश के आर्य सन्यासी, उच्चकोटि के विद्वान तथा आर्य नेता पधारेंगे। यो तो आर्य जगत् के सभी स्त्री पुरुषो पर इसको सफल बनाने का कर्त्तव्य रूप मे भार है परन्तु हमारे उत्तर प्रदेश के तो प्रत्येक जिले पर विशेष रूप से है जिनमें से हमारा एक यह जिला बुलन्दशहर भी है।

हमारा यह जिला देश और धर्म के कामो मे सदैव अग्रसर रहा है यहाँ तक कि किसी भी प्रकार की सेवा, त्याग, बलिदान और कर्त्तव्य पालन मे किसी से पीछे नहीं रहा है। आज उसके जीवन काल मे फिर यह एक कर्त्तव्य पालन की परीक्षा उसके सामने है जो ऋषि ऋण के उतारने के लिए इस समय आह्वान कर रहा है। जीवन मे ऐसे सुनहरे मौके बार बार नहीं आते है, अत यह सब कुछ जानते हुए भी अब हम सबका प्रेम पूर्वक उत्साह से मिलकर यह कर्त्तव्य हो जाता है कि इस मेले को सफल बनाने के लिए यथा शक्ति धन की सहायता करें अधिक से अधिक सख्या मे वहाँ पहुँचकर सम्मिलित हो और महापुरुषो के दर्शन से लाभ उठावे।

जैसे जैसे समय समय पर सभा अथवा मेला प्रबन्ध समिति मथुरा की ओर से जो आवश्यक सूचनाये जिले मे आयेगी उनको भी पहुचाने का उपसभा की ओर से यथा सम्भव प्रयत्न किया जावेगा। साथ ही शीघ्र उपसभा की अन्तरङ्ग की बैठक बुलन्दशहर मे होने पर और उसमे निश्चित योजना के अनुसार कि किस प्रकार जिले का सजधज के साथ सुचारू रूप से वहाँ पहुचाना होगा, समस्त जिले की समाजो को अवगत किया जावेगा। साथ ही इस बात की जानकारी आप सब जिले के साथियो को कराना जरूरी है कि बुलन्दशहर आर्यसमाज ने तो अभी से एक पूरा लारी वहाँ ले जाने का निश्चय किया है जिसमे यहाँ के सभी नर नारी जायेगे जिसकी दौड़ धूप अभी से की जा रही है।

शिवलाल वर्मा
प्रधान
जिला उपसभा, अन्तरङ्ग सदस्य सभा और सार्वदेशिक सभा

मोहनलाल शर्मा
मन्त्री,
जिला उपसभा

सिद्धान्त-विमर्श

क्या इस जन्म के किसी कर्म का फल इस ही जन्म में मिल सकता है?

[श्री बाबू कालीचरण आर्य, उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०]

मेरे पहले लेख का उत्तर २६।१०।५८ के अंक में श्री उपाध्याय जी ने दिया था, उसके बाद मैंने उत्तर देना चाहा पर सम्पादक जी ने दूसरे पक्ष को मौका देने का निश्चय किया; तदनुसार मेरे से भिन्न विचारकों के लेख ७।१२।५८, १४।१२।५८ और ४।१।५८ के मित्र में प्रकाशित हुए हैं। मैंने प्रस्तुत लेख में उन सभी की शंकाओं का समाधान करने का प्रयत्न किया है। आशा करता हूं मेरे दृष्टिकोण से विचारक सहमत हो सकेंगे।

मैं मानता हूँ कि सब कर्मों के लिए फल देने में समय भिन्न हैं, परन्तु इस जन्म में नहीं। कारण यह है कि जिस प्रकार पालक या कठहल का बीज जिस वृक्ष या पौधे में उत्पन्न होता है, उस ही वृक्ष या पौधे में वह बीज कभी फल न देगा, उस बीज के लिए दूसरा शरीर चाहिये। इस प्रकार मनुष्य के किये कर्म जिस जन्म और शरीर मे किये जाते हैं, उस ही शरीर मे वह फलित कदापि न होंगे। उनको फलित होने के लिए दूसरा शरीर, शरीर के लिये गर्भ चाहिये और समय चाहिए, यही चीजें प्रभु की व्यवस्था से प्रारब्ध बनने के पश्चात् प्राप्त होती हैं। जिस जन्म या शरीर मे मनुष्य कर्म करता है, वह जन्म तो प्रभु की व्यवस्था से उन कर्मों को भोगने के लिए बना है, जो वह अपने पूर्व जन्म या जन्मों मे कर चुका था, और जिनका प्रारब्ध बन चुका था। दूसरे लेख में श्री उपाध्याय जी ने लिखा है, 'माता के गर्भ मे कौनसी ऐसी विशेषता है कि कर्म को पकने के लिए माता के गर्भ की भट्टी अत्यन्त आवश्यक ही है।

समाधान—मुझे स्मरण नहीं कि मैंने यह लिखा हो कि माता के गर्भ मे कर्म पकता है; मैंने लिखा था कि माता के गर्भ मे बीज रूपी कर्म अंकुरित होता है। बीज पकता तो उसी वृक्ष पर है, जहाँ पैदा होता है। फलित अगले वृक्ष पर होता है। इसी प्रकार मनुष्य का कर्म संचित अवस्था मे पकता है और उन पके बीजों मे से ही परमात्मा प्रारब्ध बनाकर गर्भ में भेजते हैं, जहाँ पका हुआ बीज जाति के रूप में अंकुरित होता है, और उस ही जाति में कर्म का दूसरा विपाक सुख-दुख रूपी भोग समाप्त नहीं हो जाते, तब तक शरीर भी (जाति) समाप्त नहीं होता। भोग समाप्त होते ही शरीर समाप्त हो जाता है, और इस ही को कर्म का तीसरा विपाक आयु कहते है। शायद अब संगति ठीक समझ में आ जायें। आपने पहले कर्म विपाक में केवल सुख-दुख को ही लेकर भूल की थी, कर्म-विपाक में जाति छोड़ दी थी।

आपने पूछा है कि गर्भ में एक दो कर्म पकते हैं, या सब। मैंने ऊपर लिख दिया है, बीज गर्भ में नहीं पकते गर्भ में पके हुए ही बीज आते हैं, प्रभु अज्ञानी नहीं हैं कि गर्भ में कच्चे बीजों को ले जायें जिस प्रकार बट वृक्ष गर्भ के बाहर आकर ही फलित होता है, इसी प्रकार माता के गर्भ से बाहर आकर ही कर्म का दूसरा विपाक सुख-दुख होता है। विपाक का जाति रूप भाग गर्भ में और सुख-दुख जाति में और तीसरा विपाक सुख-दुख (भोग) समाप्त होते ही शरीर समाप्त हो जाता है और यही आयु है। पं० जी ने एक और आपत्ति की है, माता के गर्भ में आना भी तो किसी पिछले कर्म का फल रूप ही है, यह कर्म कब पका इत्यादि, यह प्रश्न यह मान कर ही उठाया है कि माता के गर्भ में कर्म पकता है जो सत्य नहीं है, अतः उत्तर की आवश्यकता नहीं।

इस जन्म के कर्म का विपाक इस ही जन्म मे इसलिये भी नहीं मिल सकता कि कोई कर्म प्रारब्ध मे आये बिना फल नहीं देता। प्रारब्ध संचित कर्मों से बनता है और मृत्यु के पश्चात् बनता है, एक ही बार बनता है, तीसरी आपत्ति यह है कि जो शरीर पूर्व जन्म के कर्मानुसार पूर्व जन्म या जन्मों के कर्मों का भोगने के लिये प्राप्त होता है वह निश्चित कर्मों के भोगों के लिये मिलता है, भोग समाप्त होते ही शरीर भी समाप्त हो जाता है, तब इस जन्म के कर्मों के भोगने के लिए शरीर में क्षमता नहीं है और न ही समय है क्योंकि निश्चित भोगों के समाप्त होते ही शरीर न रहेगा, यदि ऐसा माना जाये कि पूर्व जन्म के कर्म बिना भोगे रह जायें और नवीन जन्म के नवीन कर्म भोग मे आ जायें जो असम्भव है तो क्या पूर्व जन्म का बना प्रारब्ध जो भोग से शेष रह गया, पुनः संचित मे लौट जायेगा। क्या संसार की कोई शक्ति है जो प्रभु की व्यवस्था के अनुसार बनाये प्रारब्ध को मिटा दे या हटा दे। ऋषि ने मेला चाँदपुर में पादरी साहेबान व मौलवी साहेबान से कहा था कि प्रभु की व्यवस्था को कोई नहीं तोड़ सकता यदि तोड़ डाले तो वह सर्व शक्तिमान नहीं रह सकता'। देखिये पृष्ठ ८४१ अतः इस जन्म के कर्म का फल इस ही जन्म में मानना ईश्वरीय व्यवस्था से लड़ना है।

पंडित जी ने ईसाई और मुसलमानों के हवाले से उलाहना दिया है कि वह रोजे कयामत तक फल मिलना नहीं मानते और मैं भी अगले जन्म तक भी नहीं मानता और उनकी भाँति दौरे सुपुर्द करता हूँ। पण्डित जी ऐसा नहीं है ईसाई और मुसलमान रोजे कयामत तक जीवों को बेकार बन्द रखते हैं और समय होते हुये कर्मफल भोगने को नहीं मिलता, परन्तु मैं तो कहता हूं जीवों के पास भोग के लिये साधन व समय नहीं है, इस जन्म मे पिछला भोगते हैं। भविष्य के लिये कर्म करते हैं। बेकार नहीं रहते जो यहाँ करते हैं उसको अगले जन्म में भोगते हैं, दौरा सुपुर्द कहाँ रहे, यह तो प्रभु की व्यवस्था है।

पण्डित जी कहते हैं, 'जो कारण कर्मों के कई जन्मों मे फलित होने के लिये उपस्थित हैं, वही कारण कुछ कर्मों को जल्दी अर्थात् इसी जन्म मे भुगाने के लिए भी पर्याप्त है।' यह ठीक नहीं अगले जन्म और जन्मों मे तो इस जन्म के कर्मों के भोग के साधन जाति और आयु निश्चित हो कर मिल जायेंगे, परन्तु इस जन्म में इस जन्म के कर्मों के लिए वह साधन अर्थात् जाति और आयु उपलब्ध नहीं है और न होना सम्भव है, इसलिए इस जन्म में कदापि इस जन्म का का कोई भी कर्म भोगा नहीं जा सकता। मैंने जो वेदमन्त्र उपस्थित किया था आप कहते है कि उसमें यह कहाँ है कि इस जन्म के कर्म का फल इस जन्म में नहीं मिलता अर्थात् निषेध नहीं है। मै कहता हूँ कि विधि तो है 'शब्द अग्रे' आगे मिलता है आप भी मानते है। भेद केवल इतना है कि आप मानते हैं कि कर्म करने और मृत्यु तक के बीच के समय को अग्रे में मान लेना चाहिए, परन्तु वेद स्वयं इस को स्पष्ट करता है कि अग्रे का, क्या अर्थ है कि तो ····पितरं न वेद अर्थात् नहीं भोग सकता। जब तक कि पिता को नहीं जानता या प्राप्त होता। जिससे स्पष्ट है कि अगला जन्म पाकर ही पिता को पाता है, और कर्म का फल भोगता है, आपने यहाँ पितर का अर्थ ईश्वर किया यदि पितर का अर्थ ईश्वर मान लिया जाये तो क्या ईश्वर को न जानने मानने या न प्राप्त करने वाला अपने कर्मों के फल को न भोगेगा यह आप भी नहीं मानते, आप भी मानते हैं कि ईश्वर का माने या न माने कर्मफल अवश्य भोगेगा तो पितर के अर्थ सिवाय सांसारिक पिता के और कुछ नहीं हो सकता। ऋषि ने अथर्व वेद का० ५ अनु० १ सू० १ मंत्र २ का भाष्य करते हुये ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे लिखा है देखो पृष्ठ ५१६, "जो मनुष्य पूर्व जन्म में धर्म आचरण करता है उस धर्माचरण के फल से अनेक उत्तम शरीरों को धारण करता है और अधर्मात्मा मनुष्य नीच शरीर को प्राप्त होता है जो पूर्व जन्म मे किये हुये पाप पुन्यों के फलों को भोग करने के स्वभाव युक्त जीवात्मा है, वह पूर्व शरीर को छोड़ के वायु के साथ रहता है······ जो जीव, अनुदित वाणी अर्थात् जैसा ईश्वर ने सत्य भाषण करने की वेदों मे आज्ञा दी वैसा ही यथावत् जानकर बोलता है, और धर्म ही मे यथावत् स्थिर रहता है, वह मनुष्य योनी मे उत्तम शरीर धारण करके अनेक सुखों को भोगता है, और जो अधर्म आचरण करता है, वह अनेक नीच शरीर अर्थात् कीट-पतंग पशु आदि के शरीर को धारण करके अनेक दुःखों को भोगता है, इसमे जो विधि है क्या उससे यह निषेध नहीं है कि इस जन्म मे किसी कर्म का भी (शुभ-अशुभ का) फल नहीं भोगता। आपका कथन है, "जो ईश्वर की व्यवस्था पालक के बीज को दो मास मे और कठहल के बीज को, आठ वर्ष में

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कर्म फल····

(पृष्ठ ७ का शेष)

पकाती है, वही व्यवस्था कुछ शुभ कर्मों को इस जन्म में और कुछ को कई अगले जन्मों में पका सकती है।

उत्तर—जिस प्रकार पालक और कटहल दो भिन्न प्रकार के फल हैं, और दोनों का समय भी फलित होने का भिन्न है, केवल पालक कोई दो मास मे और कोई दो वर्ष में पके अथवा कोई कठहल आठ वर्ष, अथवा दो मास में पके क्या यह होना सम्भव है, कदापि नहीं। इसी तरह समस्त शुभ कर्म समान प्रकार की होने की दृष्टि से समान समय चाहते है, तो क्या आप यह नहीं देखते कि एक ही समय मे एक ही प्रकार के शुभ और अशुभ कर्मों का फल (प्रत्यक्ष मे जिनको आप कर्मों का फल मानते हैं, और मैं उनको कर्म का प्रभाव मानता हूँ) कितना भिन्न प्रकार और समय दोनों दृष्टो से होता है। यहाँ तक कि कभी-कभी एक दूसरे से उलटा भी हो जाता है; अतः यह किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है कि इस जन्म के कर्मों का फल इस जन्म मे ही माना जाय।

श्री उपाध्याय जी ने लिखा है कि मोहन और गोपाल ने २५ वर्ष की आयु मे समान शुभ कर्म किया, मोहन २८ वर्ष का आयु में और गोपाल ६० वर्ष की आयु में मरे तो दोनों के कर्मफल के समय मे बड़ा अन्तर होगा यह बड़ा अनर्थ हो जायेगा। अगले लेख मे आपने इसी विचार को इस प्रकार लिखा है कि "मोहन ने २५ वर्ष की आयु मे एक शुभ कर्म किया वह ३० वर्ष की आयु मे मर गया और उसका उसे ५ वष में फल मिल गया दामोदर ने भी २५ वर्ष की आयु मे ही ठीक वैसा ही शुभ कर्म किया और उसकी मृत्यु ८५ वर्ष की आयु मे हो गई, तो उस के कर्म को फलीभूत होने के लिये ६० वर्ष क्यों लगे। उत्तर—माननीय पंडित जी की युक्ति दोशपूर्ण है, मोहन और दामोदर दोनो का किया हुआ कर्म संचित मे गया और वह दोनों के अन्य संचित कर्मों मे मिल गये। प्रभु ने मोहन के २५ वष का आयु मे किये शुभ कर्म का उसकी मृत्यु के पश्चात् प्रारब्ध कब बनाया, यह किसी को ज्ञात नहीं और न ज्ञात हो सकता है। अतः यह कहना कि मोहन ने अपने २५ वर्ष की आयु मे किये हुये शुभ कर्म का मरते ही ५ वष मे भोग लिया ऐसी कल्पना है, जो किसी दशा मे भी सत्य नहीं हो सकती। इसी प्रकार दामोदर के कर्मफल में ६० वष की कल्पना भी निराधार है और समय के अन्तर का प्रश्न कोई प्रश्न नहीं रहता यद्यपि आप की मान्यता के आधार पर भी समय का अन्तर बहुत बड़ा उपस्थित रहता है।

अब तनिक मेरे विचार से देखिये मोहन ने और दामोदर ने और सोहन ने भी एक ही दिन एक जैसा अशुभ (चोरी) कर्म किया, मोहन और सोहन पकड़े गये, दामोदर नहीं पकड़ा गया, मोहन न्यायालय से एकमास कारागार में रह कर छूट गया, सोहन को ३ वर्ष का दंड मिला। पंडित जी विचारेंगे कि क्यों मोहन सोहन दामोदर को एक से ही कर्म करने पर इतना भिन्न परिणाम है कि मोहन चोरी करने पर भी अपराधी नहीं माना गया और केवल एक मास के लिये कारागार में रहा। सोहन अपराधी माना गया और ३ साल के लिये कारागार में कठिन यातनायें सहन करता रहा और दामोदर चोरी के कर्म से १०,००० रुपया प्राप्त कर आनन्द करता है, अपराधी भी नहीं है क्या इसका समाधान आपकी मान्यता के आधार पर सम्भव है? एक सा ही कर्म एक ही समय मे किया हुआ एक को आनन्द दे रहा है, एक को अत्यन्त कष्ट दे रहा है और एक को कुछ ही कष्ट देकर छोड़ देता है क्या इसका समाधान मेरे सिद्धान्तानुसार मान कर करने मे कोई आपत्ति दृष्टिगोचर होती है। अर्थात् तीनो ने अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल को जो भिन्न-भिन्न थे, चोरी रूपी इस जन्म के कर्म के द्वारा भोग लिये और इस जन्म के कर्मों का फल अगले जन्म या जन्मों में भोगेगे। इस जन्म के कर्म उनके लिये साधन भी हो गये और कर्म भी हैं। यह तो शायद आप भी न मानेंगे कि चोरी रूपी अशुभ कर्म का फल दामोदर को आनन्द दे रहा है, दामोदर के आनन्द को तो उसके किसी शुभ कर्म के साथ ही सम्बधित करना होगा जो उसने पूर्व जन्म मे ही किया हो जब दामोदर के कर्म का पूर्व जन्म से सम्बन्धित करेंगे तो कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि मोहन और सोहन के इतने भिन्न परिणामों को भी पूर्व जन्म के कर्मों से सम्बन्धित न करें और यह भी आप न मानेंगे कि दामोदर को उसके चोरी के कर्म का फल कभी न मिलेगा इसको हां आप अगले जन्म के लिये ले जाने म सहमत होंगे तो क्या आप इसका समाधान भी सोचेंगे कि मोहन, सोहन और दामोदर के कर्मों के फल म समय का अन्तर क्यों और यह भी आप न मानेंगे कि मोहन और सोहन के एक जैसे ही एक ही समय मे किये हुए कर्मों का इतना भिन्न फल होना सम्भव है। इनमे से या तो आप यह मानेंगे कि जिसको तीन वर्ष की सजा हुई वह ज्यादा थी और जो ज्यादा हुई वह बिना कर्म के हो गयी और जिसको कोई सजा नहीं हुई केवल १ मास कारागार में रहना पड़ा, उसको उसके कर्मानुसार कम सजा हुई और दोबारा दी जायेगी इन गुत्थियों को आप की मान्यता सुलझाती नहीं। मेरा ही सिद्धान्त इसका निर्णय ठीक करता है, यदि विचार परिवर्तन में अभी कुछ देर हो तो कृपा कर उन या उन जैसे कर्मों की सूची अवश्य दे दें जिनका फल इसही जन्म में मिलता हो और सूची बन जाने पर स्वयं पड़ताल कर देखें कि उन या उन जैसे कर्मों में से कोई कर्म भी अगले जन्म के लिये स्थगित तो नहीं कर दिया जाता।

श्री उपाध्याय जी ने लिखा है कि जिन कर्मों का फल मुक्ति है, वह तो वे पके ही रह जायेंगे क्योंकि उनको माता का गर्भ नसीब न होगा।

उत्तर—उत्तर ऊपर आ गया कि माता के गर्भ में बीज नहीं पकता दूसरी बात यह है कि जैसा आपने लिखा है कि मृत्यु तो होती है, पुनर्जन्म नहीं। मैं भी मानता हूं और उन कर्मों के लिये माता के गर्भ की आवश्यकता नहीं है, जिन कर्मों का फल मुक्ति है, क्योंकि वे कर्म बिना भौतिक शरीर के ही भोगे जाते हैं। और माता का गर्भ भौतिक शरीर बनाता है। इसलिये अनावश्यक है। [क्रमशः]

देशदर्शन

हैदराबाद में आर्यसमाज

(एक संक्षिप्त परिचय)

(श्री कालीचरण प्रकाश, वेदप्रचार, विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा म०द०हैदराबाद)

प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद का १९५७-५८ में कार्य-विवरण

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के २८ वे वर्ष का कार्य विवरण जनता की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन ६ जून १९५८ को हुआ था। जिसमे लगभग ५६ सदस्यो ने निर्वाचन कार्यवाही में भाग लिया। अधिवेशन के प्रारम्भ में १९५८ ईसवी का कार्य विवरण और हिसाबात (मूर्ति एण्ड कम्पनी की जांच रिपोर्ट के साथ) प्रस्तुत किये जाकर सर्व सम्मति से स्वीकृत हुए।

राजनीतिक साधना-शिविर

इस वर्ष श्री प० गगाराम जी एडवोकेट की योजनानुसार ९ दिन तक राजनीतिक साधना शिविर का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से किशन बाग में किया गया था। इस शिविर मे लगभग ४७ साधक सम्मिलित हुए। ९ दिन तक धार्मिक तथा राजनीतिक विषयो पर विद्वानों के व्याख्यान होते रहे। इस शिविर का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

श्रद्धानन्द जन्म-शताब्दी

शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की शताब्दी तमाम समाजो मे समारोह पूर्वक मनाई। विशेष रूप से सभा की ओर से आर्यसमाज मन्दिर सुलतान बाजार मे जयन्ती मनाने की व्यवस्था की गई थी। इस अवसर पर प० विनायकराव जी विद्यालकार एम.पी., प० बशीधर जी विद्यामार्तण्ड, प० सुशीलादेवी जी विद्यालकृता आदि के भाषण हुए।

वेद-प्रचार

श्रावणी वेद-प्रचार के अवसर पर सभा की ओर से समुचित व्यवस्था की गई थी। लगभग ४० समाजो ने वेद प्रचार सप्ताह मनाया। सभा के और अन्य प्रान्तो के अनेको विद्वान उपदेशकों ने इसमे भाग लिया।

ईसाई गतिविधि-निरोध-प्रचार

प० मगलदेवजी शास्त्री जो इसके विशेषज्ञ माने जाते हैं इन्हे कोसगी भेजा गया जहाँ खादियानी लोगो ने कैम्प डालकर गड़बड़ मचा रखी था। पण्डितजी ने वहां पहुँचकर इनका भडाफोड़ किया। परिणाम स्वरूप यह खादियानी लोग वहां से चलते बने। प० मंगलदेवजी शास्त्री कोसगी के पश्चात् महबूबनगर पहुँचे। यहां ईसाईयो का गिरजाघर आदि है, प्रचार किया। कोलगुडा जिला खम्म जहां कोयले की खाने हैं और यहां के मजदूरों में ईसाईयो का प्रचार होने के कारण श्री प० मगलदेवजी तथा सभा के बुरीकथा दल ने पहुचकर खूब प्रचार किया। सभा को आलीर से सूचना प्राप्त हुई कि यहां कई एक ईसाई पादरी पहुच कर ग्राम की भोली भाली जनता को ईसाई बनाने का यत्न कर रहे हैं, इस पर सभा ने तत्काल प० मगलदेवजी तथा प० वेङ्कटेश्वरराव जी शास्त्री को भेजकर दो दिन तक प्रचार करवाया। जिसका ग्राम की जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। निजामाबाद से सूचना मिलने पर कि गुप्ता नामक ग्राम मे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ पर ईसाईयो द्वारा आक्रमण हुआ है तत्काल सभा से प० मगलदेवजी शास्त्री को भेजा गया जहा एक सप्ताह तक पण्डितजी ने प्रचार कर ग्राम को ईसाईयो के प्रभाव से मुक्त करवाया।

गोरक्षा-आन्दोलन

जहाँ सभा गत दो वर्षो से गो हत्या निरोध बिल को विधान सभा मे पारित करवाने मे प्रयत्नशील रही है वहीं इस वर्ष भी इसके लिए पूरा पूरा यत्न किया गया। इस सम्बन्ध मे सभा से सम्बन्धित सभी समाजो को जिनकी सख्या लगभग २५० के होगी कोई विज्ञप्ति प्रसारित कर प्रेरणा की गई कि वे एक सार्वजनिक सभा का आयोजन करें और इसमे प्रस्ताव पारित कर मुख्य मन्त्री जी आंध्र प्रदेश सरकार तथा अध्यक्ष जी सिलेक्ट कमेटी विधान सभा आन्ध्र प्रदेश को भेजे। परिणाम स्वरूप लगभग सभी समाजो ने प्रस्ताव पारित कर भेजा।

इस कार्यार्थ सभा के द्वारा एक उपसमिति का निर्माण किया गया जिसने एक विस्तृत कार्यक्रम की रचना कर अपना कार्य प्रारम्भ किया। इस कार्यक्रमानुसार प० नरेन्द्र जी ने लेख लिखकर स्थानिक पत्रो मे उन्हे प्रकाशित करवाया जिनका हिन्दू तथा मुसलिम जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। पडित गोपदेव जी शास्त्री द्वारा अनुवादित पुस्तक 'गो हत्या बन्द हो' तेलगु भाषा की विधान सभा के सभी सदस्यों के पास भिजवाया गया।

इस सम्बन्ध मे जबकि हैदराबाद नगरपालिका मे गो हत्या निरोध विषयक बिल प्रस्तुत हुआ था उस समय श्री प० नरेन्द्र जी प्रधान सभा ने खुली चिट्ठी नगरपालिकायी सदस्यो के नाम लिखकर उनसे अनुरोध किया कि वे प्रस्तुत होने वाले प्रस्ताव का समर्थन करें। जिसके अनुसार नगर पालिका ने एक प्रस्ताव को पारित करते हुए विधान सभा को सिफारिश कर दी कि वह शीघ्र बिल स्वीकार कर ले। उपसमिति के निर्णय के अनुसार हैदराबाद की अन्य सस्थाओ की एक बैठक जो इस प्रकरण से अपनी सहानुभूति रखती थी, की एक बैठक बुलाई गई जिसमे सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ, और गौशालाओ के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त इस बैठक में विशेषरूप से श्री हरदेवसहाय जी, मन्त्री गो हत्या निरोध समिति, दिल्ली तथा श्री रघुनाथ मल जी जैन और "खीफो" भी समिलित रहे। इस अवसर पर सर्वदलीय सदस्या के कार्यकर्त्ताओ की एक समिति निर्माण की गई जिसके अध्यक्ष श्री प० नरेन्द्र जी, मन्त्री श्री मगनचन्द जी वेदी तथा श्री एम० शङ्करलाल जी जौहरी कोषाध्यक्ष नियुक्त हुए।

इस समिति की ओर से राज्य को कई बार स्मरण पत्र दिये गये और हस्ताक्षरीय आन्दोलन चलाकर जनता से भी राज्य को माग भिजवाई गई। साथ ही इस सम्बन्ध मे तेलगु, हिंदी तथा अङ्गरेजी मे साहित्य प्रकाशित कर वितरण करवाया गया। समिति ने अपने कार्यक्रमानुसार गणेशोत्सवो तथा गोपाष्टमी के समारोहो के अवसर पर सभाए आदि आयोजित कर इनमे प्रस्ताव स्वीकृत करा, सरकार को भिजवाया। और कई बार शिष्ट मण्डल के रूप मे भी मुख्य मन्त्री महोदय, अध्यक्ष विधान सभा तथा अध्यक्ष जी सिलेक्ट कमेटी तथा सिलेक्ट कमेटी के सदस्यो से भेंट कर उनके विचार बिल के अनुकूल बनाने का यत्न किया।

पंजाब हिंदी-रक्षा आन्दोलन कार्य

पजाब प्रान्त की सरकार ने भाषा योजना का कानून और प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों के विपरीत बहुसख्यक जनता पर बलात् लाद दिया। जिससे असन्तुष्ट होकर वहां की जनता ने पंजाब मे भाषाई आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया और बाद मे आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब तथा प्रादेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब की साधारण सभा ने इस प्रश्न को अपने हाथ मे लेकर हिन्दी रक्षा समिति की स्थापना कर दी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का समर्थन इस आन्दोलन को प्राप्त था। जब हिन्दी रक्षा समिति ने पजाब मे सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया तो सार्वदेशिक सभा ने इस आन्दोलन को विशाल रूप देने तथा भाषा की प्रश्न को ठीक ढग से हल करने के लिये अपने हाथ मे ले लिया। और सार्वदेशिक सभा के १६ जून १९५७ की अन्तरङ्ग सभा मे सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का निर्माण हुआ और इसके अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त निर्वाचित हुए। इस प्रकार यह आन्दोलन सीधे सार्वदेशिक सभा के हाथो मे आ गया और इसने अखिल भारतीय स्तर का रूप धारण कर लिया। तत्पश्चात् सार्वदेशिक सभा ने प्रान्तीय प्रतिनिधि

(क्रमश)

जैसे उत्तर भारत मे उत्तरप्रदेश और पजाब आर्यसमाज के केन्द्र हैं दक्षिण मे हैदराबाद उसी प्रकार आर्यसमाज का सुदृढ़ दुर्ग है। हैदराबाद का आर्यसत्याग्रह और पुलिस एक्शन ऐतिहासिक घटनाएं हैं। उनकी सफलता की पृष्ठभूमि मे आर्यसमाज की कठोर तपस्या ही काम कर रही थी। आज भी दक्षिण मे राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रसार ईसाई, प्रचार निरोध, गोरक्षा आन्दोलन के लिए दक्षिण मे आर्यसमाज की प्रबल शक्ति सजग और सचेत है। अनेक शिक्षा सस्थाओ और प्रचार के रूप मे मध्य दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा जो महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है वह प्रशसनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है। दूसरे प्रान्त भी इस प्रगति से प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। मित्र परिवार की ओर से हम सभा की सफलता चाहते हैं और सहयोग का अभिवचन देते है।

—सम्पादक

रत्न-कण

जो मानव जीवन के उद्देश्य पर ध्यान नहीं रखता, वह घृणा के योग्य है। वह अपना आत्मिक स्वत्त्व अपने ही हाथों खो देता है। —रीज

पांच पाउण्ड की अपेक्षा प्रसन्न चित्त व्यक्ति का मिलना अच्छा है।
—स्टेवे रमन

बदला लेना शत्रु का-सा हो जाता है; परन्तु क्षमा करने से वह शत्रु से ऊँचा हो जाता है। क्षमा उत्तम धर्म है। —बेकन

क्रोध, अपमान, और कुबुद्धि से जो स्वयं अपना वध करता हो और जिसमें दृढ़ बुद्धि न हो, वह मूर्ख है।
—स्वामी रामदास

किसी ने कहा है कि लड़के लड़के ही रहेंगे, लेकिन वह यह जोड़ना भूल गया कि लड़के पुरुष बनेंगे।
—नेपोलियन

ईश्वर ने कौन ऐसी भेंट मनुष्य को दी है, जो उसको बच्चों से ज्यादा प्यारी लगती हो। —सिसरो

अच्छे काम के लिए किसी बड़े मौके की बाट मत देखो, बल्कि छोटे छोटे मौको से ही लाभ उठाओ।
—रिश्न

जिस काम में रुकावटें, तकलीफ, और संकट नहीं आते, उसे मैं मनुष्य के करने लायक काम ही नहीं समझता। —मदनमोहन मालवीय

जागो, उठो, आगे बढ़ो और हितकर कार्यों मे जी जान से लग जाओ, इस विश्वास के साथ कि सफलता होगी और अवश्य होगी।
—बुद्ध

जो कुछ किसी आदमी की जेब में है, उसे उसका पड़ोसी, शत्रु या सरकार छीन सकते हैं। परन्तु जो उसके मस्तिष्क मे है, उसे शैतान भी नहीं छीन सकता। —मौरिस हिरडस

आलस्य, मद, मोह, चचलता, गोष्ठी, उद्दण्डता गंभी, अभिमान और लोभ ये विद्यार्थियों के लिए सदा ही दोष माने गये है। —विदुर

जो सोचता नहीं वह मूर्ख है, जो सोचना नहीं चाहता वह अन्ध-विश्वासी है, और जिसनें सोचने का साहस नहीं वह गुलाम है।
—एण्ड्र कारनेगी

प्रशंसा के भूखे यह साबित करते हैं, कि वे योग्यता के कंगाल हैं।
—प्लटार्क

सबसे उत्तम बदला क्षमा है।
—टैगोर

बड़ी-बड़ी डिग्रियां भी आदमी को आदमी नहीं बना सकती है, अगर वह दायरे से वाहर अलग-अलग विषयों का और भी नहीं ज्ञान प्राप्त करता। —निराला
—संकलन द्वारा ममता(बनलप)

बाल-विनोद

आर्य वीरो जागो

आर्य वीरों जागो,
छुआछूत का भूत भगाकर,
स्नेह-भावना को अपना कर,
वीर वंश-भूषा में सजकर,
जग-मग ज्योति जला दो,
आर्य वीरों जागो॥
आर्य भूमि को स्वर्ग बनाकर,
दयानन्द की महिमा गाकर।
महर्षि के सतपथ पर चलकर,
देश महान बना दो।
आर्य वीरों जागो॥
बन्धु-बान्धव में समता कर,
आर्य नैया पार लगा कर,
जन-गन-मन को फिर हर्षाकर,
आर्य का वेद जगा दो,
आर्य वीरों जागो।

—कीर्त्यानन्द, गुरुकुल महाविद्यालय
वैद्यनाथ धाम

कुछ कहावतें

जो शेर की सवारी करता है, वह उसके नीचे नहीं उतर सकता है।
—एक चीनी कहावत

जो अचानक ही उत्तर देता है वह कुछ नहीं जानता।
—एक फ्रांसीसी कहावत

प्रेम एक उस हीरे की तरह हैं जिसमें कुछ नुक्स है। यह कीमती अवश्य होता है, परन्तु इसमे कुछ कमी है।
—एक फारसी कहावत

रेगिस्तान मे सभी दुश्मन हैं, जब तक कि वे एक दूसरे के मित्र साबित नहीं हो जाते।
—एक अरबियन कहावत

अपने टोप पर शीघ्रता से हाथ रखो लेकिन अपने बटुवे पर धीरे-से।
—एक डेनिस कहावत

अपने पड़ोसी को प्यार कीजिए परन्तु दोनों घरों को अलग रखने वाली दीवार को न गिराओ।
—एक जर्मन कहावत

जो अपनी गरीबी से सन्तुष्ट है वह वास्तव में धनवान है।
—एक कोरियन कहावत

मुसीबत सदैव ही नुक्सान पहुँचाने को नहीं आती।
—एक इटालियन कहावत

यदि कोई व्यक्ति तुम्हारे साथ पहिली बार धोखा करता है तो वह उसका दोष नहीं, यदि वह दूसरी बार तुम्हारे साथ धोखा करता है, तो वह तुम्हारा दोष है।
—एक रुमानियन कहावत

जो स्वास्थ्य चाहता है वह सब कुछ चाहता है। —एक डच कहावत

दुःख की चिड़िया को अपने सिर के ऊपर से गुजरने दो, परन्तु उसे अपने केशों में घोसला न बनाने दो।
—एक भारतीय कहावत

कुत्ता अपरिचित को काटता है किन्तु इन्सान परिचित को काटता है।
—एक राजस्थानी कहावत

—संकलन द्वारा भरत दादा, हल्द्वानी

स्वास्थ्य के चार नियम

१—सिर कोठण्डा रक्खें।
२—पैर को गर्म रक्खें।
३—ईश्वर से डरिये।
४—अपनी आंतों को साफ रक्खें

—शशिकान्त, लखनऊ

चुटकुले

मास्टर—लड़के से जब रेल आती है, तो सड़क का फाटक क्यों बन्द कर दिया जाता है?

लड़का—जिससे रेल शहर में न घुस सके।

मास्टर—लड़के से इंगलिश की गिनती पूछते हुए टेन कितने को कहते है?

लड़का—मास्टर साहब जसे लालटेन, फाउण्टेन इसीप्रकार अनेकों को टेन कहते है।

डाक्टर—मरीज से कहाँ चोट लगी है? क्या जांघ में?

मरीज—जी नहीं स्टेशन पर।

अध्यापक-दुनिया की कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे विद्यार्थी विना परिश्रम किए प्राप्त कर सके।

विद्यार्थी—है सर।

अध्यापक—वह क्या?

विद्यार्थी—परीक्षा में जीरो

राजीव ने अरुण से कहा, कहो कसे आना हुआ?

अरुण ने चट उत्तर दिया दो पैसे मैंने दिये, दो पैसे पिता जी ने दिये बस आना हो गया।

डाक्टर—यह दवा दिन में तीन बार पाँच चम्मच दी जायगी।

मरीज की पत्नी बोली—तब तो आप कोई दूसरी दवा दे दीजिए।

डाक्टर—क्यों?

मरीज की पत्नी—क्योंकि घर में तो न ही चम्मच है।

पुत्र—पिता जी से, पिता जी! मैं भाई साहब के साथ दिल्ली घूमने जाऊंगा।

पिता—नहीं, तुम बहुत रोते हो।

पुत्र—पिता जी! 'मैं' दिल्ली घूमने के लिए ही तो रोता हूँ।

भिक्षुकी, बेटा! भिक्षा में कुछ मिलेगा।

लड़का—अभी जाओ मा घर पर नहीं है।

भिक्षुकी—बेटा! मुझे मा नहीं भिक्षा चाहिए।



युद्ध करने वाले एक भारी टैंक को बनाने में जितने इस्पात की जरूरत होती है, उतने इस्पात से ६००० हल या १०० ट्रक्टर बनाये जा सकते है।

(पृष्ठ ५ का शेष)

ऐसी दशा में फिर क्या था जो भी धनी तथा स्वार्थी विद्या सभा का सदस्य बन गया उसने अपने धन के बल पर अपना बहुमत बना कालेज पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार पार्टीबाजी का अखाड़ा खुल गया, फिर तो जो भी अधिकारी बना उसने समाज के अधिकारों पर कुठाराघात ही किया। इस प्रकार समाज के अधिकार तथा शक्ति क्षीण ही होती चली गई। यहाँ तक कि सन् १९४० मे उसी विधान में हृदय-हीनता तथा कठोरता से द्वितीय परिवर्तन किया गया और कहा गया कि अब कालेज सर्व प्रकारेण समर्थ और सम्पन्न हो गया है अतः उसे आर्यसमाज, बुलन्दशहर की संरक्षता की कोई आवश्यकता नहीं है अर्थात् आर्यसमाज, बुलन्दशहर का डी० ए० वी० कालेज से सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया। यह परिवर्त्तन बुलन्दशहर-आर्यसमाज तथा जिले की समस्त समाजों के लिए घोर संकट तथा अपार दुःख का विषय बन गया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी आर्यसमाज, बुलन्दशहर शान्त न रहा, उसने अपने मूलाधिकारों की रक्षा के हेतु समस्त जिले की समाजों के सहयोग, प्रेम और संगठन से आर्य प्रतिनिधि सभा की छत्र-छाया में बड़ा व्यापक आन्दोलन खड़ा कर दिया। यहाँ तक कि आर्यसमाज, बुलन्दशहर के सच्चे कार्यकर्त्ता तथा अनुभवी नेता महाशय शिवलाल वर्मा को एक लम्बे अनशन व्रत द्वारा अपने प्राणों की बाजी भी लगानी पड़ी। फलतः आर्यसमाज, बुलन्दशहर को कुछ अधिकारों की प्राप्ति तो हुई किन्तु पूर्ववत अधिकार न मिले। अब एक नया प्रतिबन्ध छांट (Panel) का और लगा दिया गया और पिछला वह सब कुछ ज्यों का त्यों कर समान लगा ही रहा। इस पर भी प्रबन्धक समिति के अधिकारियों को सन्तोष न हुआ बल्कि उन्होंने १९५५ में एक और नया तृतीय परिवर्त्तन कर जिले के तीन अधिकारियों को प्रबन्धक समिति का सदस्य बना लिया और इस प्रकार बुलन्दशहर, आर्यसमाज का प्रबन्ध समिति मे एक तिहाई के स्थान पर एक चौथाई प्रतिनिधित्व रह गया। आर्यसमाज, बुलन्दशहर ने प्रबन्धक समिति, जिलाधीश तथा आर्य प्रतिनिधि सभा को उक्त परिवर्तनों से अवगत कर दिया। प्रबन्ध-समिति के प्रधान महोदय (जिलाधीश) से दो वर्ष से निरन्तर यह पूछा जा रहा है कि अन्य १/३ आर्य सदस्य किन किन सभा सम्बन्धित आर्यसमाजों के सदस्य है, बतलाया जाए किन्तु आज तक भी इसका उत्तर समाज को प्राप्त नहीं हुआ है। यह समझकर कि आर्यसमाज केवल प्रार्थना ही करता है प्रबन्ध-समिति के अधिकारियों के हृदय मे सत्य और न्याय की भावना उत्पन्न नहीं हुई बल्कि अपने बल के अभिमान मे सन् १९५७ मे आर्य विद्या सभा के विधान मे एक और चतुर्थ परिवर्त्तन कर डाला और गन्ना मिल का एक सदस्य और बढ़ा लिया। अपने खुले बहुमत से भी सन्तुष्ट न हो कर कई वर्षों से Proxy के ओछे और गन्द हथियारों का खुला प्रयोग सत्यता का गला घोंटने के लिए किया गया है। गन्ना मिल का एक सदस्य लिए जाने से अब आर्यसमाज, बुलन्दशहर का कार्यकारिणी मे एक तिहाई स्थान पर १/५ प्रतिनिधित्व रह गया है, उसमे भी यह आपत्ति है कि पांच महीने हुए, समाज के एक सम्मानित सदस्य के त्यागपत्र देने के कारण रिक्त स्थान की पूर्ति आर्यसमाज के अन्य प्रेषित सदस्य को स्वीकृत करके नहीं की। अन्याय और अत्याचार की भी कोई सीमा होती है परन्तु रिक्त स्थान की पूर्ति न करने से तो अन्याय की पराकाष्ठा ही हो गई।

ऐसे असह्य दुःख तथा समाज के अधिकारों की अवहेलना होती देख-कर आर्यसमाज ने गम्भीर विचार के उपरान्त अपनी शिरोमणि सभा को सूचित किया और समाज के निमन्त्रण पर प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग की बैठक २७, २८ जौलाई ५८ को बुलन्दशहर आर्यसमाज मे हुई। अन्तरङ्ग के समक्ष हमारे समाज के आदरणीय प्रतिनिधि महाशय शिवलाल जी ने डी० ए० वी० कालेज की वर्तमान परिस्थिति तथा समाज के अधिकारो की क्षति पर यथेष्ट प्रकाश डाला जिस पर सभा ने निम्नलिखित महानुभावों का एक समिति का निर्माण किया:—

१—श्री पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट, उपप्रधान सभा, २—श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, प्रिंसिपल बड़ौत कालेज, ३—श्री जगनन्दनलाल जी एडवोकेट, इलाहाबाद, उपप्रधान सभा, ४—श्री शकुन्तलादेवी गोयल, उपप्रधाना सभा, ५—श्री कालीचरनजी उपप्रधान सभा, ६—श्री महाशय शिवलालजी अन्तरङ्ग-सभा सदस्य, प्रधान आर्यसमाज बुलन्दशहर तथा उपसभा बुलन्दशहर ७—श्री दुर्गाप्रसाद जी एडवोकेट (संयोजक)

बुलन्दशहर आर्यसमाज ने अभी तक न तो कोई कार्यवाही (Action) ही की है और न कोई आन्दोलन ही खड़ा किया है। वह तो संघर्ष से सम्मानपूर्वक संधि-वार्ता को ही अच्छा समझता है। यदि समाज की सभी ओर की की हुई प्रार्थनायें तथा सद्भावनायें ठुकरा दी गईं तो यह सर्वथा सत्य ही है कि आर्यसमाज बुलन्दशहर अपने पूर्ववत अधिकारों की प्राप्ति के लिए अपने समस्त जिले की समाजों के सहयोग और समस्त प्रान्त के नेता तथा आर्य बहिन-भाइयों के आशीर्वाद को प्राप्त करके अपना सब कुछ बलिदान करने पर विवश होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती के कथनानुसार अन्याय करने वाला तो पापी है हां परन्तु उसके सहन करने वाला महापापी होता है। कालेज को प्रबन्धक समिति के सदस्यों से आर्यसमाज, बुलन्दशहर का कोई द्वेष नहीं है वे भी हमारे भाई हैं और हम सर्वत्र उनका आदर करते रहे हैं परन्तु उन्होंने यदि समाज के मूल अधिकारों के देने में कोई आनाकानी की अथवा शब्दों के हेर फेर के द्वारा हमारी प्रार्थना को स्वार्थपरता के कारण ठुकराया तो आर्यसमाज को उचित कार्यवाही करने के लिए विवश होना पड़ेगा। केवल नगर से ही नहीं बल्कि समस्त जिले की जनता का सहयोग और सहायता बुलन्दशहर, आर्यसमाज को पूर्ण रूपेण प्राप्त होने की आशा है।

भगवान बल-बुद्धि प्रदान करें जिससे आर्यसमाज, बुलन्दशहर इस अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हो।

शिवलाल वर्मा
प्रधान

मोहनलाल शर्मा
मन्त्री

आर्यसमाज, जिला उपसभा, बुलन्दशहर

अन्तरङ्ग सभा तथा सार्वदेशिक सभा सदस्य

हारनपुर जिले में—

जयन्ती के प्रति विशेष उत्साह

४५००)संग्रह का निश्चय--जिला उप सभा द्वारा समाजों के कर्त्तव्य का निर्धारण

प्रान्त की अन्य जिला सभायें व समाजें इसका अनुकरण कर सहयोग दें

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर के प्रधान श्री तेजासिंह जी व मन्त्री श्री चन्द्रमणि जी ने अपनी संयुक्त विज्ञप्ति द्वारा जिले की समाजों से सभा की जयन्ती योजना गुरुधाम-स्मारक समारोह के लिये अपील करते हुए जिले की समाजों से आवश्यक कोटा शीघ्र ही संग्रहीत करने की अपील की है।

जिले की समाजों के लिये जयन्ती निधि का कोटा निम्न प्रकार निश्चित किया गया है। इन सब बातों पर विचार करते हुए आपके जिले की सभी समाजों के अधिकारियों ने ४ १ ५९ ई० रविवार को आर्यसमाज लालापार, सहारनपुर में एकत्रित होकर नीचे लिखी धनराशि जिले की समाजों तथा आर्य बन्धुओं पर निश्चित की है और सभा समाजों के अधिकारियों ने इसकी पूर्ति की प्रार्थना की है। इसी प्रकार प्रदेश की जिलोप-सभाओं को अनुकरण करना चाहिये।

राशि इस प्रकार है---

नाम आर्य समाज	निश्चित कोटा
लालापार सहारनपुर	१५०)
दैनिक सत्संग	१००)
पुरानी मण्डी	५०)
रामनगर (पठानपुरा)	५०)
वलासीलाइन	५०)
कांकतनगर	२५)
खानालमपुरा	१२॥)
लालापार (स्त्री समाज)	१००)
रामनगर पठानपुरा „	२५)
गाहेड़ी	५०)
मुजफ्फराबाद	५०)
सुन्दरपुर	५०)
पुरंमपुर	५०)
हाहेड़ी, बहेड़ासन्दलसिंह	५०)
रपुर पो० शेरपुर खानाजादपुरा	२५)
औरंगाबाद पो० खानाजादपुरा	२५)
सड पो० बेहट	२५)
पटी पो० सहारनपुर	२५)
पंहेड़ी पो० नल्हेड़ागूजर	१२॥)
टिंवास पो० कलशपुर	१२॥)
सोरापुर पो० मोहड	१२॥)
कन्या स्त्री-समाज, रुड़की	२५०)
ल्हेड़ा अनन्तपुर	५०)
गुडियाला श्री चौधरी बलवन्तसिंह जी द्वारा	५०)
लखनागाज रुहालकी दयालपुर भवेरड़ा आदि श्री ठा० हरिश्चन्द्र जी द्वारा	५०)
भगवानपुर	१२॥)
मुक्खनपुर	१२॥)
मंगलौर भबीरन गदरजुड्डा हरचन्दपुर निजामपुर लव्वरहेड़ा, नसीरपुर, नारसनकलां, हरचन्दपुर आदि श्रीवानप्रस्थी कबूलसिंह जी द्वारा	५००)
इक्सर निरंजनपुर दावकी खेडी महमूदपुर, कुवाखेड़ा आदि श्री डाक्टर आत्माराम जी, श्री चौ० सुखबीर सिंह जी माता सुखदेवी जी आदि द्वारा	५००)
वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर	५००)
सहालकी किशनपुर, बहादराबाद, प्रह्लापुर (आनन्दपुर) खेड़ी महमदपुर आदि श्री कृपाराम जी, श्री वुद्धेश्वर जी महन्त रामसिंह नाथ जी आदि द्वारा	५००)
औरंगाबाद मीरपुर पो० बहादराबाद श्री रघुवीरसिंह जी, श्री बलवन्तसिंह जी, श्री अतरसिंह जी आदि द्वारा	५०)
रांघड़वाला (रामनगर) बेलड़ा मेहवड कलां इमली खेड़ा आदि श्री फूलनसिंह जी द्वारा	१२५)
नकुड़	५०)
तीतरों	५०)
अम्बहटा	५०)
गंगोह	५०)
खारीवाँस	२५)
साढौली	१२॥)
क्याणा	१२॥)
सिरसका कुल्हेड़ी	२५)
चिलकाना	२५)
रणदेवा	२५)
खेड़ा अफगान	१२॥)
गोर्धनपुर (श्री चौ० धर्मसिंह जी द्वारा)	५०)
पिलखनी (श्री वैद्य नरेन्द्र जी द्वारा)	२५)
देवबन्द	५०)
रणखंडी श्री ब्रह्मचारी विजयेन्द्र जी द्वारा	२५)
नगली सढौली	२५)
बसेड़ा	२५)
नानौता	२५)
रामपुर मनिहारान	२५)
सीडकी पो० कोटा (श्री परमानन्द जी द्वारा)	२५)
कुरडी (श्री सोमदत्त जी द्वारा)	५०)
घाटेड़ा	५०)
जडौदा पांडा (श्री रतिराम जी द्वारा)	५०)
सहजी, खेडी, मिर्जापुर, अम्बहटा चांद म्यानकी, चन्दपुर आदि श्री ठाकुर नसीबसिंह जी द्वारा	१२५)

सभा की सूचनाएं

सूचना, उपदेश-विभाग

जिला मनपुरी की समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा की उपदेशिका श्री माता जगधात्री देवी, प्रचारार्थ आपके यहाँ पहुँचेंगी, अत आप उन्हे प्रचार की सभी सुविधाये प्रदान करते हुए, सभा प्राप्तव्य धन स० ५७ तक का देने की कृपा करे और हीरक जयन्ती सम्बन्धी नोटो के खरीदने और बिकवाने मे सब प्रकार की सहायता प्रदान करे।

उपदेश विभाग की सूचना

सभा के दयानन्द प्रचारक सघ में श्रीयुत प० इन्द्र वर्मा जी एम० ए० आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल) निवासी का शुभ नाम सम्मिलित किया गया है। अत प्रदेशीय समाजों विशेष कर पर्वतीय समाजों को चाहिए कि आपके उपदशो से लाभ उठाने की कृपा करे।

दयानन्द-सप्ताह

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजो को विदित हो कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित पर्व सूची सभा कार्यालय को प्राप्त हुई है उसमें दयानन्द बोधोत्सव ८ मार्च १९५९ दिन रविवार को मनाया जाने का आदेश है। अत दयानन्द सप्ताह १ मार्च से ७ मार्च के स्थान में प्रदेशीय समस्त आर्यसमाज २ मार्च १९५९ से ८ मई १९५९ दिन रविवार तक उत्साहपूर्वक सप्ताह मनाने का आयोजन करने की कृपा करें।

८ मार्च को रविवार भी है। उस दिन बोधोत्सव का विशेष रूप से कार्यक्रम निश्चित कर ऋषि की महिमा का गुण ज्ञान करना चाहिए। और जनता म वेद का सन्देश घर घर पहुँचाने के लिए आयोजन करने चाहिये।

इस सप्ताह में वैदिक साहित्य के वितरण का भी आयोजन करना चाहिए और एक दिन प्रात भोज का स्वल्प व्यापक प्रबन्ध एव प्रतिदिन सकीर्तन, यज्ञ, कथा का भी प्रबन्ध किया जावे।

हीरक जयन्ती सूचना

सभा-कार्यालय मे कतिपय आर्य सज्जनों एव आर्यसमाजों के आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोह महोत्सव मथुरा नगरी मे सम्मिलित होने के लिये अमुक अमुक स्थान के पर्याप्त सख्या म पहुँचन के लिए पत्र आरहे हैं। उन सभी महानुभावो को सूचित किया जाता है कि सभा की ओर से एक स्वागत-कारिणी समिति, मथुरा मे बन गई है। जिसके सयोजक श्री कर्णसिंह छोकर जी नियुक्त हुए हैं। निवास स्थान आदि के लिए उपर्युक्त पते पर सूचित करन की कृपा करें।

दान-सूची

आर्यसमाज कोदकोट (गढ़वाल) ने २०) रुपया निम्न योजनाओ के लिए सभा को देने का निर्णय किया है जो सधन्यवाद प्राप्त हो गया।

५) आर्यमित्र हीरक जयन्ती निधि
५) गुरु विरजानन्द स्मारक निधि
५) श्री गगाप्रसाद जी उपाध्याय अभिनन्दन के लिए
५) श्री प० गगाप्रसाद जी रि० चीफ जज अभिनन्दन के लिए

अत्यन्त आवश्यक सूचना

श्री लक्ष्मण देव जी वेद शिरामणि उपदेशक सभा जहाँ, भी हो अपना हिसाब करने के लिये तुरन्त लखनऊ पधारन की कृपा करे। अत्यन्त आवश्यक है।

आवश्यक सूचना

उत्तरप्रदेश के समस्त आर्यसमाजों को विदित हो कि सभा के पुराने कार्यकर्ता श्री विश्वम्भर नाथ तिवारी कानपुर निवासी ने जो पूर्व सभा में कई सहायक पदो पर एव सहा० कोषाध्यक्ष आदि का कार्य कर चुके हैं और बैंक की सेवाओं से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, सभा की प्रार्थना पर उसकी सेवा करना स्वीकार कर लिया है। आप प्रान्त की समस्त आर्यसमाजों व सभा के अन्तर्गत सस्थाओ का निरीक्षण करेगे। और सभा का प्राप्तव्य धन दशांश, सुद कोटि, वेदप्रचार आदि का प्राप्त करगे। और समाजो के साप्ताहिक, सत्सगों में रोचकता लाने का प्रयास करगे। साथ ही परिवारों मे वैदिक धम प्रचार कराने के सुझाव रक्खेगे जिससे समाजो का यथोचित लाभ होगा। आर्यमित्र के ग्राहक बनायेगे एव हीरक जयन्ती के लिए धन भी प्राप्त करेगे। अत समाजो को चाहिए कि उनके पहुँचने पर सभी बातो का समुचित प्रबन्ध करने की कृपा करें। आशा है कि इनके सहयाग से समाजों तथा सभा को लाभ होगा।

—फूलनसिंह
सभा—मन्त्री

आर्यमित्र हीरक जयन्ती की धूम—जयन्ती कोष के लिए धड़ाधड़ नोट रसीद-बिक्री—नोट समाप्ति पर है शीघ्र मंगाइये

आर्य जनता का अपूर्व उत्साह

आर्यमित्र दि० २५ जनवरी १९५९ के पृष्ठ १० पर आर्यमित्र हीरक जयन्ती गुरु विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक एव अन्य समारोह मथुरा नगरी मे मनाये जावे सम्बन्धी आयोजनो के लिए धन सग्रहार्थ नोट रसीद-सूची प्रकाशित हो चुकी है। उसके पश्चात् ७।२।५९ तक भेजे जाने को सूचना निम्न प्रकार प्रकाशित की जाती है। जिन आर्यसमाजो ने अभी तक नोट न मगाये हो, वे कृपाकर शीघ्र भेजने के लिए सभा कार्यालय म पत्र भेजने का कष्ट करे।

१—श्री जगनन्दनलाल जी एडवोकेट उपप्रधान, प्रयाग स्वय दिये ५०) और ५००) रु० आ० स० कटरा के भिजवाये
२—श्री मन्त्री जी आर्यसमाज कटरा प्रयाग ५००)
३—,, ,, ,, , रानी मडी प्रयाग ५००)
४—,, ,, ,, ,, चौक प्रयाग इलाहाबाद १०००)
५—श्री ब्रह्मदेव जी अग्रवाल बी० टी० कालेज [भोपाल] म० प्र० द्वारा श्री बाबूराम भारती जी ८७॥)
६—श्री सत्यमित्र शास्त्री जी महोपदेशक सभा बड़हलगन [गोरखपुर] २००)
७—श्री प० विद्याधर जी स० मन्त्री आ स [मेस्टन रोड] कानपुर ११००)
८—,, सच्चिदानन्द प्रधान आ० स० गंगा [बदायूँ] ५०)
९—,, सवाराम जी ,, ,, बिसौली ,, ५०)
१०—,, मन्त्रीजी आ० स० इस्लामनगर ,, २५)
११—,, रामप्रसाद जी उपप्रधान आ० स० उझियानी [बदायूँ] २५)
१२—,, रामचन्द्र जी मन्त्री उपसभा, निरीक्षक सभा बदायू २५)
१३—,, मन्त्री जी आर्यसमाज कुन्दरखी जि० मुरादाबाद ५०)
१४—,, रामधन अध्यापक मन्त्री आ स मवेशा पो कुन्दरखी मुरादाबाद ५०)
१५—,, भूपनारायण तोषनीवाल आर्य दयानद सेवाआश्रम बदायू २५)
१६—,, सत्यपाल शास्त्री जी उपदेश कालन्द [मेरठ] २००)
१७—,, जयपालसिंह मानव प्र सभा सिकन्दरपुर पो बुढ़ासी अलीगढ़ ८७॥)
१८—,, बालकृष्णजी शर्मा प्रचारक सभा आ स सिरसा इलाहाबाद ८७॥)
१९—,, रामनिवास जी मिश्र उपदेशक सभा कानपुर १००)
२०—,, रामशकर निगम जी मन्त्री आ०स० लखीमपुर खीरी ५०)
२१—,, मन्त्री जी आ० स० डोईवाला [देहरादून] ५०)
२२—,, माता जगधात्री देवी जी आर्योपदेशिका [एटा] १००)
२३—,, रघुवरदत्त शर्मा प्रचारक सभा आटा पो खेरामऊ शाहजहापुर ९८॥)

कालीचरण आर्य
सभा उपप्रधान तथा सयोजक अर्थ समिति जयन्ती

विचार-विमर्श

शुद्धि पर श्री उपाध्यायजी के विचारों की समीक्षा

[विद्याभूषण श्री पं० सुरेन्द्र शर्म्मा गौर काव्य वेदतीर्थ, शाहदरा देहली]

प्रस्तुत लेख में उपाध्यायजी के शुद्धि-सम्बन्धी उदार विचारों की समीक्षा की गयी है और उन्हें वर्त्तमान परिस्थितियों में अव्यावहारिक बताया गया है। प्रश्न गम्भीर और नीति सम्बन्धी है। साथ ही सम्मानित लेखक महोदय का सुझाव भी विचारणीय है कि हिन्दू सदस्यों का भी प्रवेश संस्कार अवश्य किया जाय। इस प्रश्न की उपादेयता या अनुपयोगिता पर अभी कोई सम्मति न देते हुए इस प्रश्न को विचारार्थ आरम्भ करते हैं। आशा है आर्य विद्वान इस प्रश्न पर विचार करेंगे। —सम्पादक

"आर्यमित्र" के पुराने अङ्कों का अवलोकन करते हुए मेरी दृष्टि आर्य समाज के सम्मानित विद्वान श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय जी के २-१ ५० के आर्यमित्र के पृष्ठ ६ पर प्रकाशित "मेरे शुद्धि पर नये विचार" शीर्षक से एक लेख पर गई। क्योंकि आप दार्शनिक भी हैं। वृद्ध भी हैं। और कवि भी हैं।

श्री उपाध्यायजी ने शुद्धि की वर्त्तमान शैली पर जो भी सुझाव प्रकट किये है—दार्शनिक दृष्टि और कल्पना के विस्तृत गगन में तो निस्संदेह बड़ी ऊँची उड़ान हैं, किन्तु शुद्धि के विषय में उन्होंने सनातनी पौराणिक हिन्दुओं के आर्यसमाज में प्रवेश होने के समान ही ईसाई व मुसलमानों के लिये भी उनके निज पारिवारिक जीवन-पंक से पृथक् हुए बिना ही रोटी–बेटी-विवाह-शादी रहन सहन तथा खान पानादि की सब सुविधायें भी भेद रहित ही होनी चाहिए, ऐसा एक सुझाव प्रस्तुत किया है, किन्तु अपने उस सुझाव की कल्पना की सफलतार्थ कोई नवीन विधि प्रदर्शित नहीं की, जो करनी चाहिये थी।

आपने केवल इतना ही प्रकट किया है कि वह शुद्ध होनेवाला ईसाई व मुसलमान धीरे धीरे स्वयं ही सुधर जायेगा और अपने परिवार को भी आर्य बना लेगा।

किन्तु आपका ऐसा सुझाव अव्यवहार्य एवं एक प्रकार से असम्भव ही है, क्योंकि यदि हम उसे आपकी शुभ सम्मति के आधार पर समाज में प्रवेश दे भी दें और यदि कोई यवन ऐसा करने भी लगे तो उसका आर्य बनाना तो दूर रहा, उसको तो अपने जीवन के ही लाले पड़ जायेंगे। क्योंकि उसके परिवार को ज्ञात होते ही उसे काफिर होने का फतवा दे दिया जायेगा। और कुर+आन के आदेशानुसार उसके साथ कठोरतम दुर्व्यवहार होने लगेगा। तथा आपके विचारानुसार आर्य बनने से पूर्व ही मौत के घाट भी उतार दिया जायेगा।

दूसरी बात यह भी है जिसे ओझल नहीं किया जा सकता कि—पौराणिक सनातनी और वर्त्तमान आर्यसमाजियों में रहन-सहन, रोटी-बेटी, रीति नीति, खान पानादि व्यवहार समानता के साथ उनकी वंश परम्परा और धार्मिक आचार-विचार की संस्कृति का एक ही आधार है। एक आर्यसमाजी और वर्त्तमान पौराणिक सनातनी मतावलम्बी में आर्यसमाज के सिद्धान्तों मे केवल एक 'भी' का ही बड़ा भेद है। "ही" का नहीं।

क्योंकि कौन ऐसा सनातनी है जो कि आर्यसमाज के सर्वतन्त्र सिद्धान्तों को नहीं मानता?

सर्वव्यापक निराकार ईश्वर, पुनर्जन्म, वर्णाश्रम–मर्यादा, संस्कार, पंच महायज्ञ, आदि आर्यसमाज के मन्तव्यों को तो सब मानते ही है। किन्तु इन सत्य सिद्धान्तों की मान्यता में पौराणिक कल्पना के अनुसार केवलमात्र "भी" लगा देने पर विचारमात्र से ही एक दूसरे से कुछ दूर हैं जैसे ईश्वर निराकार तो है ही, किन्तु कभी-कभी अवतार लेकर साकार "भी" हो जाता है। एवं जीवित माता पितादि की सेवा तो करनी ही चाहिए, किंतु मृतक–श्राद्ध भी करना चाहिये। गुण कर्मानुसार तो ब्राह्मण आदि वर्ण होते ही हैं। परन्तु जन्म से भी होते हैं। इत्यादि बातों में केवल एक "भी" तथा "ही" का अन्तर अवश्य है। और इस 'भी" विचार की भी यथोचित शुद्धि होनी ही चाहिये। परन्तु ईसाई तथा मुसलमानों में और आर्यसमाजियो म न केवल सिद्धान्तों का ही भेद है अपितु उनके खान-पान, रहन सहनादि व्यवहारों में भी पर्वत तुल्य बड़े भेद है। दूर न जाइये अपने निकटतम पुराने से पुराने आर्य परिवार घरो पर एक दृष्टि घुमा जाइये, कौन वह शिष्ट घर है जिसकी सभ्य महिलायें बिना शुद्ध हुए यवनादि को अपनी रसोई तक मे पौराणिक ब्राह्मणादि के समान ही प्रसन्नतापूर्वक प्रवेश देने को समुद्यत हो?"

अतएव यही समुचित प्रकार "शुद्धि" करने का है और होना

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इस्लाम में गो माता का स्थान

[श्री ललिताप्रसाद आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

हमारा दुर्भाग्य है कि मानव-जाति के लिये अत्यन्त उपयोगी पशु गौ को मुसलमानों की धार्मिक कुर्बानी से सम्बन्धि माना जाता है जब कि उसके धर्म ग्रन्थों और धर्म-नायक एक स्वर से गोकुशी के विरुद्ध अपना निर्णय व्यक्त कर चुके हैं। अङ्ग्रेजों ने हिन्दू-मुसलमानों के मध्य साम्प्रदायिक कलह के लिये इस बीज को बोया था। खेद है कि आज की धर्म-निरपेक्ष सरकार भी साम्प्रदायिक तुष्टीकरण के आधार पर गोरक्षा के प्रश्न पर विचार करती है। सम्पादक

मुसलमानों के बड़े बड़े विद्वानों तथा उच्च मार्ग प्रदर्शकों ने गाय के लाभकारी तथा उसके सम्मान पर दृष्टि रखते हुये उसे आदर तथा प्रतिष्ठा योग्य पशु घोषित किया है। मुसलिम विद्वानों का कहना है कि गोरक्षा केवल हिन्दुओं के लिये ही नहीं वरन् मुसलमानों के लिये भी उतनी ही उपयोगी है जितनी अन्य मतावलम्बियों के लिये। इस्लामधर्म में गाय की महिमा, गाय के दूध व घी की प्रशंसा गाय के विषय मे मुसलिम विद्वानों की सम्मति और हजरत मोहम्मद साहब की आज्ञा निम्नलिखित है।

"कुरान शरीफ सूरे "हज" मे लिखा है कि :—

"हरगिज नहीं पहुँचते अल्लाह के पास कुरबानियों के गोश्त और न उसके खून। अल्लाह के पास पहुँचती है तुम्हारी तरफ से परेहजगारी।"

इसी विषय की पुष्टि में कुरान सूरे "कौसर" में एक जगह और लिखा है कि :—"तहक़ीक अता की तुमको पस नमाज पढ़ो अपने परवरदिगार की और कुरबानी करो।"

नोट—कुरान मजीद का दरअसल मतलब यह है ख्वाहिशात नफ़्सानी और तमाम खुद परस्तियो का कुरबान करके नमाज पढ़ो। इस वास्ते फरमाया कि परवरदिगार आलम की नमाज पढ़ो, और कुरबानी करो। याने ख्वाहिशात नफ्स को कुर्बान करके नमाज पढ़ो। बस मुसलमानो को चाहिये कि कुरबानी करने मे तफ्सानी मुंह को बीच न आने दें। अल्लाह ताला को मन्जूर नहीं है कि कुरबानी का नाम लेकर मुसलमान जमीन पर झगड़ें और फिसाद का बाअस हो। (देखो तर्क कुरबानी गाय, लेखक ख्वाजा हसन निजामी देहली)।

"गौकशी (गोवध) इस्लाम के शुआर (स्वभाव) म नहीं है"। (देखो फतावे हुमायुनी जिल्द अव्वल किताबुल्मुत, पृष्ठ ३०)।

"गौ की कुरबानी न करने से इस्लाम में कोई खराबी नहीं होती।" (देखो फतावे हुमायुनी जि० १, किताबुल्मुत पृष्ठ ३०७, व ३०८)।

"सर आगा खाँ ने ३१ दिसम्बर सन् १६२८ ई० को मुसलमानों की बहुत बड़ी कॉन्फ्रेंस के प्रधान पद से स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया कि गाय की कुरबानी मुसलमानों के लिये धार्मिक दृष्टिकोण से आवश्यक नहीं।"

कुरान के (भाष्य) तफसीर दुर मन्सूर में लिखा है कि :—'गाय की बुजुर्गी व सम्मान किया करो। इसलिये वह समस्त पशुओं में सरदार सैयदुल बहायम है।' इसके अतिरिक्त हजरत मोहम्मद साहब के दमाद तथा चचेरे भाई हजरत अली ने भी "नहजुल बलागत" नामक पुस्तक में जो कि शिया मुसलमानों की परम माननीय है, उसमें स्पष्ट लिखा है कि :—

"पेटों को हैवानात (जानवरों) के कब्रस्तान मत बनाओ।" अल्लामा जलालुद्दीन सियुती ने अपनी पुस्तक "अलरहमत" के बाबतिब यानो वैद्यक मे लिखा है कि :—

"गाय के गोश्त में बीमारी है और उसके दूध में दुआ और घी में सफा (स्वास्थ्य हितकर है।"

हजरत आयशा (हजरत मोहम्मद साहब वानिये इस्लाम की धर्म पत्नी) फरमाती है कि :—"फरमाया रसूल अल्लाह ने कि गाय का दूध शिफा है और घी दवा और उसका मांस नितान्त मज (रोग) है।"

यही उपर्युक्त हदीस शियाओं के प्रसिद्ध विद्वान् मोहम्मद बिन याकूब कुलैनी ने पुस्तक "वसूल काफी" में और मुल्ला मोहम्मद बाकर हुसैनी ने महारूल अनवर" पुस्तक में यही हदीस लिखा है कि :—

"गाय का मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला, और शराब पीने वाला नहीं बख्शा जायगा।"

इब्ने मसऊद सहाबी ने लिखा कि :—फरमाया रसूल अल्लाह ने गाय का दूध शिफा है।"

इमाम जाफर ने इरशाद फरमाया है कि :—गाय का दूध शिफा उसका

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
माघ २६ शक १८८०(१५फरवरी ५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष . ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गोमाता का स्थान

(पिछले पृष्ठ का शेष)

मक्खन दवा और उसके माँस मे बीमारी है।"

'शराफ मक्का मे गोवध बन्द कर दिया" (देखो बरकत वगैर हरकत) लेखक मौलाना फारुकी उस्ताद नवाब साहब रामपुर।

कराबादीन जकाई हजरत मोहम्मद रसूल अल्लाह की एक हदीस अंकित है कि —"लहमाहर दाऊन व लभाह शिफाऊन" अर्थात् "गाय का माँस रोग उत्पादक और उसका दूध आरोग्य दवा शिफा है।" वह गौ माँस नहीं खाते थे। उनका व्यवहार गाय की रक्षा का था उन्होंने गाय का माँस खाना ताक दन वर्जित किया है। रसूल और खुदा का आज्ञा मानना मुसलमानो के लिय आवश्यक है। जो भी मुसलमान मुहम्मद साहब का आज्ञा के विरुद्ध चलगा वह 'जन्नत' (स्वर्ग) का अधिकारी कैसे बन सकता है? मौ० माहम्मद अशरफ अली साहब ने सूरे 'यूसुफ' के भाष्य में लिखा है कि —

यह उस वक्त जिबरइल ने यो कहा,
कि गम का हुई अब तेरे इन्तहा।
तेरे हक म रहमत का दरिया बहा,
और इस तरह इरशाद हक न किया?
किया हमन यूसफ का तुमसे जुदा,
तू समझा नहीं इसका बाइस है क्या
न तुमको हुई इसकी कुछ भी खबर,
कि तुम पर गया इतना गम क्यो गुजर।
कमर किस लिये खम तेरा हमने की,
और आँखा का बिनाई कम हमन की?
किया बाज न य सबब उसका था,
किया एक गाय उसका बेबह नहा?
और एक उसका बच्चा था जो शेर ख्वार,
छुरा ले के याकूब ने एक बार?
किया सामने उसका बच्चा हलाल,
हुआ उसको उस घड़ी रजोमलाल?
न रहम उस पर याकूब ने कुछ किया,
खुदा ने न ... एवज उसको यह दुख दिया?

(देखो तफसीर मश्कूर सफा ११३ सन् १८८१ ई० नवलकिशोर प्रेस लखनऊ)।

नोट—देखिये एक मुसलिम विद्वान के लेखानुसार केवल एक गाय की कुर्बानी के बदले खुदा ने ह० याकूब को कितनी कड़ी सजा दी। बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ता है कि मुतासिब मुसलमान अब भी नहीं सोचते कि गौ का मानवमात्र के लिये क्या महत्व है। हजरत आदम को अल्लामियाँ ने जब बहिश्त से निकाला उसके कुछ समय बाद ह० आदम तथा उनकी स्त्री "हव्वा" को बैलों की जोड़ी दी गई जिससे वह अन्न पैदा करके जीवन निर्वाह कर सके। हजरत आदम ने इन जानवरो को कभी नहीं मारा, न उनका माँस खाया। फिर उनकी सन्तान ऐसा काम क्यों कर सकता है? यह विचारने की बात है कि गाय खुदा की देन है। इसका सुरक्षित रखने से सब ही को अधिक लाभ है। प्यारे मुसलमान भाइयों को चाहिए क कुर्बानी का नाम लेकर न झगड़े और न बद अमनी का बायस बने क्योंकि सारे 'कुरान मजीद' तथा हदीस और समस्त इस्लामी पुस्तको मे कहीं भी "गो माँस" तथा खाने की आज्ञा नहीं दी गई। वास्तव में गो कुशी को अंग्रेजो ने हिंदू मुसलमानों मे फूट डालने का भावना से प्रोत्साहित किया था। इसका कोई धार्मिक महत्व नहीं है। देखे समस्त मुसलिम विद्वान् इस लेख पर क्या सम्मति प्रकट करते हैं।

भूल-सुधार

२५ जनवरी १९५९ के आर्यमित्र के अङ्क में जो मेरा "मीमांसा दर्शन" सम्बन्धी लेख छपा है उसमें दो स्थानों पर "शाबर" भाष्य के स्थान में शाङ्कर भाष्य छप गया है। वस्तुत. शङ्कर स्वामी ने पूर्व मीमांसा पर कोई भाष्य नहीं लिखा। पूर्व मीमांसा का प्रसिद्ध भाष्य 'शबर' स्वामी (Shabar) कृत है। शङ्कर-स्वामी (Shankar) कृत नहीं। शंकर स्वामी अद्वैतवादी हैं और शबर की अपेक्षा नवीन हैं। शबर स्वामी अति प्राचीन हैं। उनके भाष्य की भाषा भी पुरानी ही है। मैंने वेदान्त के शाङ्कर भाष्य का अनुवाद नहीं किया। हाँ! उसकी आलोचना तो 'शाङ्कर-भाष्यालोचन' नामक पुस्तक में की है। प्रकृत अङ्क मे तो जैमिनि सूत्रों पर शबर स्वामी के भाष्य का उल्लेख है। शबर और शङ्कर दो अलग अलग विद्वान हैं और उनके रचे हुए 'शाबर' और 'शांकर' भाष्य भी अलग अलग ही है। पाठक गण भ्रान्ति में न रहे अत यह लिख रहा हू।

—गङ्गाप्रसाद उपाध्याय

विचारों की समीक्षा

(पृष्ठ १५ का शेष)

चाहिये भी कि, शुद्धि का अभिलाषी यवनादि प्रथम अपने पारिवारिक बन्धनों से सर्वथा ही पृथक हो जावे और अपने जीवन को वैदिक सिद्धान्त के अनुसार आर्य बनावे। अन्यथा शुद्धि में शुद्धिपन ही क्या है? कोई ऐसा प्रयोग प्रस्तुत होना चाहिए जो व्यवहार्य भी हो और शुद्धि का वास्तविक उद्देश्य भी जिससे सिद्ध हो सके। हां, यह भी उचित हो सकता है कि आर्यसमाज में प्रविष्ट होने वालों का उपनयन-वेदारम्भवत् हो कोई विशेष प्रवेश संस्कार निश्चित कर लिया जावे, जिसके समारोह से उसके मन पर भी और उसके शेष अन्य पारिवारिक जनों पर भी कोई उत्तम प्रभाव स्थिर हो सके।

आशा है आदरणीय उपाध्यायजी व अन्य विद्वान इस प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने की कृपा करेंगे।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित।



वार्षिक मूल्य ८) }
एक प्रति का २० नए पैसे }

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ, रविवार, फाल्गुन ३, शक १८८०, माघ शुक्ल १४, वि० २०१५, २२ फरवरी, १९५९ ई०

विदेश में
१५शिलिंग

आर्य जीवन का आदर्श पंचशील

व्यक्ति

१—अहिंसा या जीव-रक्षा अथवा समस्त प्राणियों में प्रेम-भाव।

× × ×

२—अस्तेय या केवल प्रदत्त वस्तु का ग्रहण अथवा चोरी और उठाईगिरी या राहजनी का त्याग।

× × ×

३—ब्रह्मचर्य अथवा पवित्रता और संयम की जीवन पद्धति।

× × ×

४—सत्य भाषण किसी भी प्रकार का भूठ न बोलना।

× × ×

५—मादक वस्तुओं का परित्याग या नशीला चीजों का न छूना।

× × ×

वैदिक वाङ्मय के आधार पर भारतीय ऋषि-मुनियों व गौतम-बुद्ध द्वारा प्रचारित।

राष्ट्र

१—जनता में विश्वास अथवा राष्ट्रीयता (क-बैंग्शान) राष्ट्र के सामूहिक प्रयत्न की आधारशिला यही भावना है। इसके बिना राष्ट्र की कोई सरकार प्रगति नहीं कर सकती।

× × ×

२—मानवता में विश्वास (के मनुशिया अन) सार्वभौम मानव वाचाद सभी देशों के प्रति भ्रातृत्व की भावना का राष्ट्र में विकास।

× × ×

३—स्वातन्त्र्य में विश्वास (के मेर्दका अन) सच्चे लोकतन्त्र में तन मन और आत्मा की स्वतन्त्रता अनिवार्य है।

× × ×

४—सामाजिक न्याय मे विश्वास (के अदिल अन) राष्ट्र में ऊँच नीच, लिंग भेद आदि को महत्त्व न देते हुए सबको उन्नति के साधन और अवसर देने की व्यवस्था।

× × ×

५—ईश्वर में विश्वास (के तुहान अन) मानव जीवन से परे एक चरम सत्य या सत्ता में विश्वास।

× × ×

जून १९४५ में स्वाधीनता के पश्चात् इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति डा० सुकर्ण ने राष्ट्र-दर्शन के नाम से उपर्युक्त सिद्धान्त घोषित किये।

विश्व

१—एक दूसरे की स्वतन्त्रता के प्रति सम्मान।

× × ×

२—प्रत्येक राष्ट्र की स्वायत्त भूमि की अखण्डता एव सर्वतन्त्र स्वतन्त्रता।

× × ×

३—एक दूसरे के आन्तरिक एव बाहरी मामलों के प्रति तटस्थता।

× × ×

४—किसी देश पर आक्रमण न करना।

× × ×

५—आपस मे एक दूसरे की सहायता एव शान्तिमय सहजीवन।

× × ×

जून, १९५४ में भारत और चीन के प्रधान मन्त्रियों (श्री पं० नेहरू व श्री चू-एन-लाई) की संयुक्त घोषणा में विश्व-जीवन-दर्शन के रूप में पंचशील स्वीकार किया गया।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

आर्य क्रान्तिकारी

अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल'

[श्री कृष्णकान्त कुसुमाकर साहित्यरत्न, फीरोजाबाद]

बलिदान कैसा भी हो सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहता है और यदि बलिदान देश के लिये हुआ हो तो वह और भी अधिक महान् बन जाता है। शहीद बिस्मिल की मातृ भूमि के लिये शहादत राष्ट्र के लिए एक उत्कृष्ट बलिदान की कहानी है। वे हमारे आर्य परिवार के अभिन्न अंग और ऋषि दयानन्द के आदर्श भक्त थे, इसलिए हम आत्म-गौरव अनुभव करते हैं। इस आत्म गौरव के साथ हमारे कुछ कर्तव्य भी हैं। सम्मानित लेखक महोदय ने वीरात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आर्यजगत् को प्रेरणा दी है कि उनके बलिदान की स्मृति में उनका स्मृति दिवस मनाया जाया करे। वे उत्तर प्रदेश के निवासी थे, अत उत्तर प्रदेश के आर्यजनों और आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश पर इस दिवस के मनाने का विशेष दायित्व है। साथ ही हम आशा करते हैं कि सार्वदेशिक सभा भी इस महान् आत्मा की स्मृति को मनाने की प्रेरणा आर्यजगत् को देगी। साथ उनके पारिवारिकों की आर्थिक सहायता करना भी आर्य बन्धुओं का दायित्व और कर्त्तव्य है। —सम्पादक

भारत मां के आदर्श सपूतों में पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' का नाम गौरव के साथ स्मरण किया जाने योग्य है जिनकी दृढ़ संकल्प-शक्ति एवं अदम्य उत्साह, साहस के समक्ष हिमालय की अचलता भी एक बार लज्जित हुए बिना नहीं रह सकती।

यह अचलता उनके परम गुरु दयानन्द के ही जीवन से धरोहर में मिली थी जो सत्य के निराकरण को तेतीस कोटि के सम्मुख अकेला अडिग खड़ा रहा। संसार के बड़े से बड़े वैभव पर लात मारकर जिसने कभी अन्याय को सहन नहीं किया। भला उनका शिष्य बिस्मिल' कैसे क्रूर, अन्यायी ब्रिटिश शासन की बेड़ियों मे कायरता के साथ जकड़ा रहता?

अन्तोगत्वा 'बिस्मिल' अपनी सशस्त्र क्रान्तिकारी योजना से ब्रिटिश शासन के विषैले विषधर के दांत तोड़ने के लिए कटिबद्ध होगए।

आज हम उसी महान क्रांतिकारी सृष्टि के जीवन पर दृष्टिपात करने चले हैं। हमारे अमर शहीद 'बिस्मिल' का कुटुम्ब ग्वालियर राज्य के तोमर धार में चम्बल नदी के किनारे एक ग्राम में निवास करता था। परन्तु इनके दादा श्री नारायणलाल जी शाहजहाँपुर में आकर बस गये थे। यहीं इनके पिता श्री मुरलीधर जी का जन्म हुआ। विवाह के समय बिस्मिल की माता की आयु केवल ग्यारह वर्ष की थी। वे अधिक शिक्षित भी नहीं थीं। साधारण देवनागरी की पुस्तकों का पठन-पाठन कर लेती थीं। श्री 'बिस्मिल जी को बचपन से ही देवनागरी तथा उर्दू की शिक्षा दी गई। पश्चात् आपने हाईस्कूल तक अंग्रेजी की भी शिक्षा प्राप्त की थी। इनकी माता आर्यसमाजी थी। अत पुत्र को भी माता के द्वारा धार्मिक तथा सामाजिक जीवन की प्रेरणा मिली। स्वयं 'बिस्मिल' जी ने अपनी आत्म कथा मे लिखा है कि "यदि मुझे ऐसी माता न मिलती तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार चक्र में फंसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन मे भी माता जी ने मेरी वैसी ही सहायता की है जैसी 'मेजिनी' की उसकी माता ने की थी।'

'बिस्मिल'के पिता अत्यन्त निर्धन थे। उनको आशा थी कि मेरा पुत्र बड़ा होकर हमारी निर्धनता को दूर करेगा किंतु उन्हें अपनी निर्धनता दूर करने की चिन्ता नहीं हुई, बल्कि वे उन सैकड़ों, लाखों गरीबों की बात सोचते थे जो ब्रिटिश शासन तथा शोषण के कारण गरीब बने हुए थे। इसी दृष्टिकोण को लेकर उन्होंने विदेशियों के निकालने की प्रतिज्ञा की जिनके कारण समस्त देश दुखी हो रहा था।

जब वे अंग्रेजों के नाचघरों पर नोटिस लगे देखते कि "कुत्तो और

जीवन-ज्योति

भारतवासियों का भीतर आना मना है।" तो उनका खून खौलने लगता था और कहते थे कि जब तक इनको बलपूर्वक क्रांति के द्वारा खदेड़ा नहीं जायगा तब तक ये सीधे, सरल उपायों से हमारी भूमि को मुक्त नहीं कर सकते। अपने देश के अपमान को न सहने वाला यह योद्धा अपने प्राणों को हथेली पर लेकर सशस्त्र क्राति के महासमर में कूद पड़ा और अपना मातृवेदी पर बलिदान होने को कमर कसकर तयार हो गया।

हम देखते हैं कि 'बिस्मिल' सारे जीवन अनेक असह्य यातनाओं को झेलते हुए अपने लक्ष्यपूर्ति मे अग्रसर होते रहे। कितनी ही बार आर्थिक संकटों के कारण वे निराश हुए किंतु देश प्रेम की कभी न बुझने वाली ज्वाला ने उनकी निराशा को टिकने नहीं दिया। उनकी वीर माता ने अपने वीर पुत्र की आकांक्षाओं को दबाने की कभी चेष्टा नहीं की। वरन् प्रोत्साहन के पुष्ट पीयूष से वे उनमें अमरता की भावना प्रदान करती रहीं।

मातृशक्ति की आराधना करते हुए मातृ भक्त 'बिस्मिल' ने लिखा है कि—"जन्मदात्री! वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करूँ।"

निस्सन्देह पूज्य माता के आशीर्वाद से ही बिस्मिल ने अपने प्राणों का निर्भय बलिदान किया। और माता के आदेश पर ही नर-हत्या न करने की प्रतिज्ञा की। साथियों के बार बार विश्वासघात करने पर भी बिस्मिल प्रत्येक आपत्ति को सहर्ष पार करते रहे। उनके जीवन नाटक के प्रमुख सहयोगी पात्र प्यारे 'अशफाक' ही थे, जिनका चरित्र चित्रण करने में बिस्मिल ने अपने हृदय को उडेल कर रख दिया है।

'बिस्मिल' तथा 'अशफाक' की मैत्री 'एक जान दो कालिब की साकार प्रतिमा थी। 'बिस्मिल' स्वयं लिखते हैं कि—"सब को आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्यसमाजी और मुसलमान का मेल कैसा? मैं मुसलमानों की शुद्धि करता था। आर्यसमाज मंदिर में मेरा निवास था, किन्तु तुम इन बातों की किंचित्मात्र चिंता न करते थे। मेरे कुछ साथी तुम्हारे मुसलमान होने के कारण तुम्हें कुछ घृणा की दृष्टि से देखते थे, किन्तु तुम अपने निश्चय में दृढ़ थे। मेरे पास आर्यसमाज मंदिर में आते-जाते थे। हिन्दू मुस्लिम-झगड़ा होने पर तुम्हारे मुहल्ले के सब कोई तुम्हें खुल्लम-खुल्ला गालियाँ देते थे, काफिर के नाम से पुकारते थे, पर तुम कभी भी उनके विचारों से सहमत न हुए। सदैव हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के पक्षपाती रहे। तुम एक सच्चे मुसलमान तथा सच्चे देश भक्त थे।"

'बिस्मिल' अपने साथी सहयोगियों से निष्कपट हृदय खोलकर सत्यनिष्ठा को लिए व्यवहार करते थे। विश्वासघात की बात तो उनके मस्तिष्क में आती ही नहीं थीं। अविश्वास करने वाले मित्रों को वे घृणा की दृष्टि से देखते। ऐसे व्यक्तियों को देख कर उन्हें हार्दिक क्षोभ होता था। भावुकता और सत्यनिष्ठा उनके रोम रोम में समाई हुई थी। महात्मा गांधी की सत्य और अहिंसा के मूर्तरूप थे। उनकी हिंसा आतताइयों के लिये ही थी। यही कारण था कि उनके ऊपर कई बार आक्रमण हुए किन्तु अपनी पूजनीया आदर्श माता के आदेश से प्रति हिंसा की भावना का वे सदैव परित्याग करते रहे, क्योंकि ऋषि दयानन्द का आदर्श उनकी माता के सामने सदा रहा। स्वामी जी ने भी अपने घातक को क्षमा कर दिया था। उनके भक्त 'बिस्मिल' के हृदय मे भी वही भावना समय-समय पर जाग्रत होती रही। यदि यह बात न होती तो क्या वह जेल से छिपकर भाग नहीं सकते थे? समस्त तैयारियाँ होगई, जेल के जंगलों की सलाखें तोड़

[शेष पृष्ठ १६ पर]

प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय

गुरुकुल झंजर द्वारा शहीद बिस्मिल की बहन को आर्थिक सहायता

श्री सम्पादक जी

आर्यमित्र ३० नवम्बर, ५८ के अङ्क में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी का पत्र प्रकाशित किया है। इस पत्र को पढ़कर आँखों में आँसू आगये और रात्रि भर चिन्ता के कारण निद्रा भी न आई। दूसरे ही दिन बहन के सहायतार्थ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों और कार्यकर्त्ताओं की ओर से ५१) मनीआर्डर द्वारा भिजवाये। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि एक वर्ष तक प्रतिमास ५०) बहन के सहायतार्थ भेज सकें।

—भगवानदेव (आचार्य)
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

वेदोपदेश

सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु । दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥ य० ६।२२।३६।।२३

हे सर्वमित्र सम्पादक ! आपकी कृपा से प्राण और जल तथा विद्या और ओषधी "सुमित्रियाँ" सुखदायक हम लोगों के लिए सदा हो । कभी प्रतिकूल न हों । और जो हमसे द्वेष, अप्रीति, शत्रुता करता है, तथा जिस दुष्ट से हम द्वेष करते हैं हे न्यायकारिन् ! उसके लिए "दुर्मित्रिया" पूर्वोक्त प्राणादि प्रतिकूल दुःखकारक ही हों । अर्थात् जो अधर्म करे, उसको आपके रचे जगत् के पदार्थ दुःखदायक ही हों, जिससे वह अधर्म न करे और हमको दुःख न दे सके । हम लोग सदा सुखी ही रहें । (आर्याभिविनय से)

आर्यमित्र

लखनऊ—२२ फरवरी १९५९ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि-सवत् १९७२९४९०५८

आर्यत्व के महान् दायित्व की रक्षा

आर्यत्व का महान् दायित्व विश्व बन्धुत्व है । विश्व के प्रागण में आज जो भय और त्रास, स्वार्थ और दलबन्दी की घनघोर घटाय व्याप्त हैं उनकी आलोचना हमारा प्रत्येक उपदेशक, प्रचारक बड़ी गम्भीरता और कठोरता के साथ करता है और यह कहा जाय कि आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य जब भी कहीं भी उसे अवसर मिलता है आलोचना के अपने अधिकार का प्रयोग करता पाया जाता है । सामाजिक दुरवस्था की पूर्ति के लिये ऐसा करना हमारा कर्त्तव्य है और यह जीवन का चिह्न है परन्तु आलोचना का हमारा अधिकार तभी सुरक्षित रह सकता है जब हम जिन बातों की आलोचना करते हैं वे बुराइयां हमारे व्यक्तियों या हमारे समुदाय में न हों । यद्यपि बहुत कमियाँ होना मानव—स्वभाव में सम्मिलित है पर जब वे घटने के स्थान पर बढ़ती चली जाय तब सबसे पहले हमें अपना सुधार आरम्भ करना चाहिये ।

आज के आर्यसमाज में उच्च चरित्र की कमी सर्वत्र व्याप्त हो उठी है । इन शब्दों को लिखते हुए आर्यसमाज के अनन्य सेवक और शुभ चिन्तक के नाते आंखें अश्रुपूर्ण हो उठती हैं पर अपनी वेदना, सामाजिक पीड़ा, हमें कर्त्तव्य-पालन के लिये विवश करती है कि अपने बन्धुओं से बन्धुत्व की भावना के नाम पर कर्त्तव्य पालन की अपील की जाय । मां भ्राता भ्रातर द्विक्षन् का सांस्कृतिक सन्देश संगच्छध्वं संवदध्वं की पवित्र वेदवाणी शायद हमने दूसरों को सुनाने के लिये ही रख छोड़ी है । इन महान् आदर्शों का आर्यसमाज के सदस्यों के पारस्परिक जीवन व्यवहार से सम्भवतः कोई सम्पर्क नहीं रह गया प्रतीत होता है ।

क्या इस असंघटित, कलह स्वार्थ मतभेद के वातावरण के रहते आर्य समाज का रथ प्रगति कर सकेगा, यह आज का गम्भीर प्रश्न है जिसका उत्तर किसी पुस्तक या सम्मेलन के प्रस्ताव में ढूँढने का प्रयत्न न कीजिये । प्रत्येक आर्य की आत्मा ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकती है । हम प्रतिदिन तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु का पाठ करते हैं परन्तु हमारे संकल्प दुरभिसन्धियों से ओत प्रोत और व्यक्तिवाद की महत्त्वाकांक्षाओं के विष से संलिप्त होते हैं ।

आर्यसमाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना हमने घोषित किया है । क्या आज आपाधापी और स्वार्थ संघर्ष में रत रहने के कारण हम परोपकार के उदात्त मिशन की ओर ध्यान दे पा रहे हैं ? इसका उत्तर नहीं में ही दिया जायगा । तो क्या आर्यसमाज के महान् गौरव और दिव्यादर्शों की स्थापना स्वप्न ही बनी रहेगा ? निराशा का क्षेत्र व्यापक है पर हमारा उद्देश्य निराशा को बढ़ाना नहीं उसके मूल कारणों की खोज के लिये प्रेरणा देना और आत्म निरीक्षण की भावना को जागृत करना है ।

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हम व्यक्तिगत रूप से आत्म निरीक्षण आरम्भ करें और सामूहिक रूप से आर्यसमाज के सदस्यों का पारस्परिक [illegible] बन्द करें और उसके द्वारा बढ़ने वाली महत्त्वाकांक्षा की [illegible] मनोवृत्ति का सफाया करें । आर्यसमाज के अनुशासन का मर्यादा की रक्षा करके ही हम दूसरों को राष्ट्र और नैतिक अनुशासन का पाठ पढ़ा सकते हैं । और तभी आर्यसमाज विश्वबन्धुत्व के महान् पथ का पथिक बन सकेगा ।

गुरुकुल कांगड़ी का जन्म-दिवस

आर्यसमाज के इतिहास में सबसे क्रान्तिकारी कार्य "गुरुकुल आन्दोलन" का जन्म रहा है । ऋषि के मन्तव्यों को साकार रूप देने के लिये प्रथम युग के आर्यों ने गुरुकुल आन्दोलन का नेतृत्व किया और देश में गुरुकुलों का जाल बिछ गया । इस आन्दोलन का सबसे अधिक बल १९०२ में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के उद्घाटन से प्राप्त हुआ ।

अर्द्ध शताब्दी से अधिक समय से यह महान् संस्था आर्यसमाज, भारत, और वैदिक आदर्शों की साकार प्रतिमा बनी हुई राष्ट्र की सेवा कर रही है । संस्था की सेवाओं की समाज और राष्ट्र सभी ने सराहना की है ।

२२ फरवरी संस्था का जन्मदिवस है । इस शुभावसर पर हम आर्य समाज की इस महान् शिक्षा संस्था की उन्नति के लिये हार्दिक शुभ कामनायें करते हैं ।

साथ ही संस्था के शुभचिन्तक होने के नाते हम संस्था के कर्णधारों का ध्यान कुछ आवश्यक बातों की ओर आकृष्ट करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं ।

इस बात का सदैव ध्यान रहना चाहिये कि आर्य जनता ने जिन भावनाओं से प्रेरित हो इस संस्था के निर्माण और विकास में जो सहयोग दिया है उनका प्रत्येक कीमत पर रक्षा की जाय ।

शिक्षानीति के स्वतन्त्र निर्धारण अधिकार की रक्षा की जाय । कहीं ऐसा न हो कि हमारी सम्पूर्ण शक्ति दूसरों की पाठावधियों की पूर्ति में जुट जाय और संस्था का स्वतन्त्र अस्तित्व नाम शेष हो जाय ।

शिक्षा में धार्मिक तत्त्वों का समावेश, गुरुशिष्य-भावना का विकास, आश्रम-नियमों का दृढ़ता पूर्वक पालन, वैदिक वाङ्मय की उन्नति आदि मौलिक प्रश्नों को कदापि उपेक्षा न होने दी जाय ।

समय के प्रवाह अथवा कार्य कर्त्ताओं की शिथिलता आदि कारणों से संस्था के गौरव को क्षति नहीं पहुँचनी चाहिये ।

इन शुभ भावनाओं के साथ हम गुरुकुल जन्मदिवस पर मित्र और आर्य जगत की ओर से बधाई देते और शुभकामना करते हैं कि संस्था दिनोंदिन गौरवशालिनी बने और प्राचीन भारतीय आदर्शों की स्थापना में सफल हो ।

राष्ट्रीय मंच-स्थापना की अपील

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर श्रीमती इन्दिरा गांधी के नव निर्वाचन का हम हार्दिक अभिनन्दन करते हैं । बहुत समय से नारी जाति के सम्मान की सैद्धान्तिक घोषणा करने वाली कांग्रेस के लिए यह आवश्यक था कि वह अपने इस कथन को व्यावहारिक रूप देती । स्वाधीनता से पूर्व जो महिलायें इस उच्च पद पर पहुँच सकी उनके साथ सिद्धान्त की अपेक्षा सामयिक उपयोगिता का प्रश्न अधिक सम्बद्ध था । अस्तु, एक महिला को राष्ट्र के प्रमुख दल का नेतृत्व प्राप्त हो सका इस सफलता के लिए श्री इन्दिरा जी हमारी बधाई की पात्र हैं ।

अध्यक्ष पद पर कार्यारम्भ करते ही उन्होंने अपने आन्तरिक संघटन को मजबूत बनाने के लिए प्रयत्न आरम्भ कर दिये हैं । उनकी विवेचना न करते हुए उनके एक वक्तव्य के सम्बन्ध में हम कुछ कहना चाहते हैं ।

श्री इन्दिरा जी ने राष्ट्र के नाम राष्ट्र-निर्माण-कार्य को दलीय कार्य न मानकर स्वाधीनता संघर्ष की भांति राष्ट्रीय कार्य मानने की अपील की है और इसके लिए वे सब दलों का एक सम्मिलित राष्ट्रीय मंच स्थापित करने के लिए उत्सुक हैं । उनके प्रयत्न सफल हों पर हम उनसे जानना चाहते हैं कि राष्ट्र निर्माण के भौतिक विकास के लिए ही वे राष्ट्रीय मंच बनाना चाहती हैं या सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए भी आप मंच स्थापित करना चाहती हैं ?

हम समझते हैं कि केवल आर्थिक प्रश्नों के हल के लिये एकता तथा सांस्कृतिक सामाजिक कार्यों के प्रति अनेकता को उपेक्षणीय प्रोत्साहन देना भारत के विकास में कभी सहायक नहीं हो सकता । हम कांग्रेस अध्यक्ष की अपील का उत्तर सहयोग के शब्दों में देना चाहते हैं । आर्यसमाज की सामूहिक शक्ति जिसने स्वाधीनता संग्राम को सफल बनाया, आज राष्ट्रीय आत्मा के विकास में सबका सहयोग करने और सहयोग देने को उद्यत तथा समर्थ है । राजनीति के पीछे चरमे को उतार कर आर्यसमाज की विशुद्ध

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

राष्ट्रीयता, समाज सेवा और तपस्या का अवलोकन किया जाय, तो सदैव राष्ट्र निर्माण के लिए तपेतपाये सैनिकों की सेना तैयार मिलेगी क्या राष्ट्र का नेतृत्व सहयोग के हाथ को स्वीकार करेगा ?

गिरगिट ने रङ्ग बदला

नवीनतम सूचनाओं के अनुसार पंजाब में अकाली दल ने पुनः सक्रिय राजनीति में भाग लेने का निर्णय किया है।

हम इस निर्णय से तनिक भी आश्चर्यान्वित नहीं हुए, यह निर्णय अवश्यम्भावी था। राजनीति में सदैव एक दूसरे को धोखे में रख अधिकतम लाभ उठाने की कोशिश की जाती है। कांग्रेस चाहती थी किसी प्रकार पंजाब उसके हाथ मे बना रहे, इस लिए उसने अपने सिद्धान्तों का त्याग कर साम्प्रदायिक अकाली दल से समझौता किया। बदले मे अकाली दल ने राजनीति से पृथक् रहना स्वीकार कर रीजनल फार्मूले द्वारा अपनी पंजाबी सूबे की मांग को अप्रत्यक्ष रूप मे मनवाने मे सफलता प्राप्त की।

आज जब निर्वाचन समाप्त हो चुके, अकाली दल अपने मन्तव्य पूरे नहीं होते देख रहा और पल्ला झाड़ कांग्रेस से अलग खड़ा हो रहा है।

इस राजनीति के खेल से हमे कोई सरोकार नहीं, पर संसार आर्यसमाज के इस पक्ष की सत्यता को सिद्ध होता देख रहा है कि कांग्रेस अकाली गठबन्धन साम्प्रदायिक तुष्टीकरण का प्रयत्न और सत्ता प्राप्ति के लिए सिद्धान्त त्याग का नाटक था।

अकाली दल की इस घोषणा से चाहे कोई भी स्थिति आवे, अब सरकार रीजनल फार्मूले से बंधे होने का बहाना करके आर्यसमाज की मांगो का टालने का बहाना नहीं कर सकता।

आर्यसमाज के नेताओ को भी राज्यपाल गाडगिल को दिये गये समय को अवधि समाप्त हो जाने के कारण अब अपनी स्थिति, रीति नीति के सम्बन्ध म निर्णय करना चाहिए।

: आया स्वर्ण विहान .

★

यह कैसा आया स्वर्ण विहान !
न चूको मेरे आर्य महान !
करो कुछ दान ! करो कुछ दान !!

जयन्ती हीरक आलीशान,
मनाये मेरा 'मित्र' सुजान
बढ़े जग में गौरव सम्मान
करो कुछ दान ! करो कुछ दान !!

करो सेवा तन, मन, धन से
बढ़े संख्या ग्राहक गण से
होय चहुँदिशि ऋषि-सत्ता भान
करो कुछ दान ! करो कुछ दान !!

न घटने पावे प्रियवर मान
जमा दो फिर से दूनी धाक
अगर निज मे आर्यत्व अभिमान
करो कुछ दान ! करो कुछ दान !!

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' लखनऊ

आर्यसमाज का आन्दोलन सफल हुआ

विदेशी मिश्नरियों को अनुमति नही दी जायगी

भारत सरकार के विश्वस्तसूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आर्यसमाज तथा अन्य सामाजिक संस्थाओ के प्रबल आंदोलन से प्रभावित होकर और उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों की गम्भीरता को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने निश्चय किया है कि भविष्य में सीमांत तथा आदिवासी क्षेत्रों मे नवीन विदेशी मिश्नरियों को कार्य करने का अनुमति न दी जाय। इस बात की भी सम्भावना है कि इन क्षेत्रो में पहले से कार्यरत मिश्नरियो की संख्या में भी कमी की जाय।

सरकारी नीति के अनुसार पूर्व आज्ञा लिये बिना अब कोई भी मिश्नरी केन्द्र अथवा संस्था स्थापित न हो सकेगी, क्योंकि यह अनुभव हुआ है कि मिश्नरियो की गति विधियाँ। (चिकित्सा, शिक्षा व प्राविधिक क्षेत्रों की) धर्म प्रचार से शून्य नहीं हैं।

[भारत सरकार के इस निर्णय पर हम उसे हार्दिक धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि वह अपनी नीति के क्रियान्वयन मे स्पष्टता, सतर्कता और दृढ़ता का परिचय देगा। आर्यजगत् अपनी इस सफलता के लिए बधाई का पात्र है जिसके तीव्र आन्दोलन से सरकार को चाहे देर मे ही सही सद्बुद्धि आ सकी। —स०]

जयन्ती तिथि-परिवर्त्तन और हमारा कर्त्तव्य

आर्य जनता को इस अंक में जयन्ती की तिथियों में परिवर्त्तन की सूचना दी जा रही है, जयन्ती प्रबन्धकर्त्ताओ की ओर से कुछ समय बढ़ाये जाने की मांग के कारण ही परिवर्त्तन का निर्णय करना पड़ा है।

इस परिवर्त्तन से उन बन्धुओं की इच्छा पूर्ण हो सकेगी जो अन्य प्रोग्रामों के कारण समय परिवर्त्तन की मांग कर रहे थे।

हम तो इस निर्णय को जयन्ती कार्यकर्त्ताओ के लिये स्वर्णावसर मानते हैं और आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास रखते हैं कि वे इस दो मास के अवसर का पूर्ण सदुपयोग करेंगे और किसी प्रकार की शिथिलता न लाते हुए अपने कर्त्तव्य पालन में अधिक प्रयत्नशील होंगे।

एक महान् आयोजन की सफलता के लिए समय का किस प्रकार लाभ उठाना चाहिए यह प्रत्येक कार्यकर्त्ता भली भांति जानता और समझता है। कार्य की सफलता के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण ही जयन्ती कार्यकर्त्ताओं की सफलता होगी। और एक शान्त तथा सौहार्द्र पूर्ण वातावरण मे जब हम इस महान् आयोजन को सम्पन्न करेंगे, संसार हमारी (आर्यसमाज की) सफलता पर हमे बधाई देगा। कार्य-कुशलता, दृढ़ कर्त्तव्य निष्ठा और ध्येय प्राप्ति के लिए अनथक प्रयत्न हमारे गौरव की वृद्धि में सहायक बनेंगे। जयन्ती की सफलता पर ही आर्यसमाज के भावी स्वरूप का मूल्यांकन सम्भव हो सकेगा। क्या आप परीक्षा मे सफलता के लिए प्रयत्नशील हैं ? समय इस प्रश्न का उत्तर मांग रहा है।

अन्तरङ्ग सभा का आवश्यक निश्चय

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दि० २७-७-५८ के नियम सं० १८ की लिपि—

१८—"किसी समाज का कोई भी किरायेदार या उस समाज से किसी प्रकार का लाभ उठाने वाला व्यक्ति या उसका निजी रिश्तेदार उस समाज का पदाधिकारी अथवा अन्तरंग सभासद् न हो सकेगा।"

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाज उपर्युक्त आदेश का पालन करने की कृपा करें।

—फूलनसिंह सभा-मन्त्री

प्रशासक का दृष्टिकोण

—मानवीय दृष्टिकोण और सेवा की भावना के बिना बहुत अच्छे प्रशिक्षित प्रशासकों का समस्याओं को हल करते हुए दृष्टिकोण सही नहीं होगा। यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रशासन अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं है। यह उद्देश्य पूर्ति का एक साधन है। उद्देश्य है समाज की भलाई। यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब प्रशासक अपना काम जन सेवा की भावना से करें।

लोगों के रहन सहन का स्तर उन्नत करने और सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए इससे अधिक महत्त्व की और कोई बात नहीं कि प्रशासक ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो न केवल अपने काम मे दक्ष हों, बल्कि उसे एक मिशन समझ कर करते हो, लोगों के बीच मे रहते हों, उनकी समस्याओं की अच्छी जानकारी रखते हों और जीवन को अधिक सुखी बनाने में उनकी सहायता के लिए तत्पर रहते हों।

—राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद
सार्वजनिक प्रशासन प्रतिष्ठान
दिल्ली उद्घाटन, ३१।१।५९

दक्षिण भारतीय व हिन्दी

—जब इंग्लैंड के अंगरेज भारत में कुछ वर्ष रहकर हिंदी बोलना, लिखना और पढ़ना सीख लेते थे तो दक्षिण भारत के लोग भी कुछ समय लगाकर हिन्दी क्यों नहीं सीख सकते ? संस्कृत भाषा ही प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं का उद्गम है। संस्कृत का अध्ययन हिन्दी को सरल और सुगम बनाता है।

दीक्षान्त —आदित्यनाथ झा
कुलगुरु, वाराणसी संस्कृत-
हि०सा०स०प्रयाग , विश्वविद्यालय
२५।१।५९

अति आवश्यक सूचना—

हीरक जयन्ती आदि समारोह मई मास में होंगे

★

मथुरा नगर के कतिपय आर्य्य बन्धुओं ने ऐसी इच्छा प्रकट की थी कि विरजानन्द स्मारक शिलान्यास, आर्य्यमित्र हीरक जयन्ती और विद्वदभिनन्दन समारोह यदि मथुरा में किए जाएँ तो वे अधिक सफलता से सम्पन्न होंगे। २५ दिसम्बर ५८ को सासनी कन्या गुरुकुल में आयोजित सभा की अन्तरङ्ग सभा में, इस विषय पर विशेष रूप से विचार किया जाकर निश्चित हुआ कि सभा प्रधान और सभा उपप्रधान श्री पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट, मथुरा के मुख्य मुख्य आर्य्य कार्यकर्त्ताओं से मिलकर स्थान विषयक अपने निर्णय की सूचना अन्तिम स्वीकृति के लिए, इस सभा की अन्तरङ्ग सभा को दें। उपर्युक्त प्रधान उपप्रधान तथा सभा मन्त्री ३१ दिसम्बर ५८ को मथुरा पहुंचे। कार्यकर्त्ताओं की एक सभा बुलाई। विचार विनिमय हुआ। सभा में समुपस्थित समस्त सज्जनों ने, एक स्वर से, बड़े उत्साहपूर्वक उक्त समारोहों का मथुरा में करना निश्चित किया और प्रारम्भिक प्रबन्ध समिति का निर्माण हुआ। इसके संयोजक श्री कर्णसिंहजी छौंकर (सभा उपमन्त्री) नियुक्त हुए। आगे चलकर यही स्थानीय प्रबन्ध समिति विराट स्वागत समिति में परिणत हो जाएगी।

इसके पश्चात् ७ जनवरी को उक्त समिति के संयोजक श्री छौंकर जी ने अपने अन्य साथियों से परामर्श कर एक पत्र सभा प्रधान तथा समारोह समिति के संयोजक श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक को लिखा कि उक्त समारोह आगामी मार्च मास में शिवरात्रि पर न किए जाकर अप्रैल या मई में किये जाएँ क्योंकि (१) समय बहुत थोड़ा रह गया है, काम बहुत करना है। (२) अभी अभिनन्दन ग्रन्थों के लिए सामग्री एकत्र नहीं हो पाई उसे एकत्र करना है, फिर सामग्री का सम्पादन और मुद्रण होगा। (३) परीक्षाओं के कारण उन दिनों अध्यापक तथा विद्यार्थीगण समारोह में भाग न ले सकेंगे। (४) विद्यालयों महाविद्यालयों की छुट्टी न होने के कारण उनके भवनों को बाहर से आई हुई आर्य जनता के ठहराने के निमित्त उपयोग में न ले सकेंगे। ई

श्री छौंकर जी के उपर्युक्त पत्र पर विचार करने के लिए श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक ने 'समारोह समिति' की मीटिंग १८ जनवरी ५९ को मथुरा में बुलाई उसमें विचार विमर्श के बाद निश्चित हुआ कि—

श्री कर्णसिंहजी छौंकर ने शिवरात्रि पर समारोह करने के सम्बन्ध में जो कठिनाइयां बताई हैं, वे वस्तुतः उचित हैं। अतः यह समिति आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा से प्रार्थना करती है कि वह कृपया उक्त समारोहों के लिए मथुरा स्थान को स्वीकृत दे ... तिथियां बदल कर ७, ८, ९ तथा १० मई ५९ को अनुमति प्रदान करे। इस समय मथुरावासियों ने यह भी इच्छा प्रकट की कि आर्य प्रतिनिधि सभा का आगामी वार्षिक वृहदधिवेशन भी इसी अवसर पर, मथुरा में ही किया जाए।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का शीघ्र हो सकना कठिन था। अतएव प्रस्ताव पर विचार कर समारोहों के स्थान तथा तिथियों के सम्बन्ध में एक पत्र द्वारा सभा के अन्तरंग सदस्यों से उनकी सम्मतियां मांगी गयीं और यह भी प्रार्थना की गयी कि वे अपनी सम्मतियां अविलम्ब सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें जिससे आगामी कार्यक्रम में विलम्ब और बाधा न हो। यह भी लिख दिया था कि जिन अन्तरंग सदस्यों की सम्मतियां प्राप्त न होंगी वे मथुरा और मई के पक्ष में ही समझे जाएंगे।

अब तक इस सम्बन्ध में अन्तरंग सदस्यों की जितनी सम्मतियां आई हैं, वे सब ही प्रायः मथुरा और मई के पक्ष में हैं। तारीखों के सम्बन्ध में कुछ मतभेद अवश्य है। यानी ७, ८, ९ मई के बदले वे मई के अन्तिम सप्ताह में कर दी जाएं, जब स्कूलों और कालिजों की छुट्टियां हो जाएंगी, अतः तारीखें बाद में होने वाली आगामी अन्तरंग सभा द्वारा नियत होंगी, परन्तु होंगे सारे आयोजन मई में ही। यह निश्चित है।

निवेदक :—

हरिशङ्कर शर्म्मा — प्रधान

फूलनसिंह — मन्त्री

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

'आर्यमित्र' हीरक जयन्ती को सफल बनाइए

[श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम०ए० एल० टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

आर्यसमाज के वर्त्तमान को गति देने और स्वर्णिम भविष्य निर्माण करने के उद्देश्य से आर्यजगत के सम्मुख आर्यमित्र हीरक जयन्ती नव सन्देश लेकर आयी है। उसे सफल बनाकर आर्यजगत् अपने अतीत के प्रति श्रद्धाञ्जलि, वर्त्तमान के प्रति आत्म निरीक्षण और भविष्य का प्रशस्त पथ निर्धारण कर सकता है। विचारक और आर्यसमाज के हितैषी के रूप में विद्वान् लेखक ने जयन्ती के अवसर पर जिन प्रश्नों पर आर्यजगत् को विचार करने की प्रेरणा दी है उन सभी प्रश्नों पर इस अवसर पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिये। इस स्वर्णावसर का यही सर्वोत्तम लाभ होगा।

—सम्पादक

'आर्यमित्र' हीरक जयन्ती का समय समीप आ रहा है। उसको सफल बनाने का भरपूर प्रयत्न करना आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य का परम कर्त्तव्य है अतः तन, मन और धन द्वारा हमें इसकी सहायता करनी चाहिए। यह एक निर्विवाद सत्य है कि आर्यमित्र' आर्यसमाज का लाउड स्पीकर है अतः यह हमारे आन्दोलन के प्रचार एवं विचारों के प्रसार का साधन है। परन्तु हीरक जयन्ती' मनाने का निश्चय करते हुए आर्य समाज के कर्णधारों की इससे भी ऊंची भावना इसके मनाने के पीछे थी। उनका उद्देश्य केवल 'हीरक जयन्ती' का उत्सव मनाने तक ही सीमित नहीं था। उत्सव तो प्रतिदिन होते हैं, जयन्तियां प्रतिदिन मनाई जाती हैं परन्तु 'आर्यमित्र' की जयन्ती का एक और महत्त्व है। यह आर्य समाज की वाणी है और भविष्य में हम इस वाणी का उपयोग किन विचारों और भावनाओं के प्रचार के लिए करें और इस वाणी द्वारा मार्ग ... यही इस जयन्ती का मुख्य उद्देश्य है। यही नहीं वे यह चाहते हैं कि जिस प्रकार आर्यसमाज ने अपने भूतकाल में विश्व की समाज की एवं राष्ट्र की सेवा एवं उचित मार्ग प्रदर्शन की ओर प्रयास किया है वैसे ही आज के भयंकर युग में जब प्रत्येक व्यक्ति भ्रष्टाचार चोरी घूस हिंसा एवं ठगी की ओर लगा हुआ है जब लोगों ने कम से कम काम और अधिक से अधिक दाम का उद्देश्य बना रखा है उस कर्म का सन्देश देने के लिए ही यह हीरक जयन्ती योजना बनाई गई है। मैं इस योजना के समय आर्यसमाज के नेताओं, एवं जनता से अपील करूंगा कि वह निम्न विषयों पर विचार करें और आर्यमित्र द्वारा भारत को तथा विश्व को वैदिक विचार धारा कैसे दी जा सकती है, सोचें।

(१) वेद, उपनिषदों, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति कैसे रुचि उत्पन्न की जाय? संस्कृत या हिन्दी न जानने वाले या कम जानने वाले कैसे इन विषयों को सरलता-पूर्वक समझ सकें?



लेखक

(२) आर्यसमाज का संगठन शुद्ध एवं दृढ़ कैसे हो सके? शुद्ध और दृढ़ होने का मतलब यह है कि आज आत्म निरीक्षण करने पर हम यह पता चलेगा कि हम आर्यसमाज में सिद्धान्त प्रेम की भावना से कम अपितु या तो किसी पद के प्रलोभन से अथवा वैसे ही सदस्य बने हुए हैं। ... का सदस्य बनने का प्रथम पग तो यह है कि हम पारस्परिक द्वेष कटुता ईर्ष्या आदि को छोड़कर एक दूसरे के सुख दुख में सहायक हों। प्राचीन आर्यसमाजियों का दृष्टिकोण कितना आत्मीयता था? यह नहीं कि विचार विरोध नहीं था, विचार विरोध था परन्तु वह कटुता का कारण नहीं होता था। आज तो हम किसी को बढ़ते देखते हैं तो ईर्ष्या रत हो जाते हैं। क्या हमारी पारस्परिक ईर्ष्या आर्यत्व की मर्यादा भंग नहीं कर रही? हम विश्व को सभ्य बनाने से पहले स्वयं को सभ्य तर को में रखना होगा। यदि विरोध करना है। सिद्धान्त रूप में विरोध कीजिए। छिपकर और अशिष्ट भाषा में विरोध करना जहाँ आरोपों की असत्यता सिद्ध करता है वहाँ वैसा करने वालों के आत्मबल की हीनता का परिचय देता है। अतः ऐसे प्रयत्नों को समाप्त करने के विषय पर विचार करना।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सिंहावलोकन

विद्वान् लेखक ने आर्य विद्वानों को सतर्क करते हुए एक आवश्यक प्रश्न की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया है। ऋषि दयानन्द ने आर्ष साहित्य को आधार मानकर शिक्षा और साहित्य सृजन की प्रेरणा दी थी परन्तु आज वैदिक साहित्य के क्षेत्र में भी हम सूक्ष्म अन्वेषण नहीं कर पा रहे और कभी कभी तो हममें से कई विद्वान् कुछ विचित्र बातें प्रस्तुत कर देते हैं और आर्य जनता आर्य विद्वान् की बात मानकर उसे सिद्धान्तानुकूल मान लेती है। लेखक ने कुछ उदाहरण दिये हैं। सम्बन्धित विद्वान् अपने मत का स्पष्टीकरण कर सकते हैं। हमारा कार्य तो वास्तविकता के निर्णय में सहायता देना है। इसी भावना से इस लेख को प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है आर्य विद्वान् विचार करेंगे।

—सम्पादक

आर्य साहित्य निर्माण में सतर्कता आवश्यक है

(श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, नासिक)

आचार्य दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना वेद प्रचार और उसकी रक्षा एव प्रसार के लिए की थी। अपने जीवन काल से आर्यसमाज इस दिशा में कार्य करता आ रहा है। फिर भी वह नहीं कहा जा सकता कि वेद प्रचार का कार्य पूर्ण हो गया है। वस्तुत· देखा जावे तो वह अभी थोड़ा ही हुआ है और इस दिशा में अभी बड़े बड़े कार्य करने को शेष हैं—जिनके करने के लिए हमें जागरूक रहना चाहिए।

यद्यपि अन्य सम्प्रदायवादियो की भाँति आचार्य दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना कर किसी नये पथ को जन्म नहीं दिया और न वर्तमान आर्यसमाज किसी पथ के रूप मे प्रचलित ही है, फिर भी कुछ ऐतिहासिक तथ्यों का सामना करने से वह भी बच नहीं सक रहा है। भारत देश वह देश है जहाँ पर समय समय पर भिन्न भिन्न आचार्यों ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार किये। जब तक वे जीवित रहे उनके सिद्धान्त उनके बनाये रूप मे चलते रहे। उनके बाद उनकी शिक्षायें उनके ग्रन्थों आदि के आधार पर चलती रहीं। कुछ समय बाद उनके सिद्धान्तो की ऐसी व्याख्या उन्हीके अनुयायियों ने निकाली कि उनसे भिन्न भिन्न भेद खड़े हो गये और उनकी शिक्षाओ के नाम पर हो भिन्न-भिन्न पन्थ खडे हो गये। बौद्ध धर्म का दृष्टान्त अपने सामने है। शकर द्वारा प्रचारित मायावाद और आज के नवीन वेदान्त में भी कुछ न कुछ अन्तर अवश्य है। परमेश्वर के अस्तित्त्व के साथ शैतान के अस्तित्त्व की कल्पना जिन धर्मों मे पायी जाती है वे वस्तुत शकर का इस ब्रह्म और अविद्या के ही रूप हैं। नव न वेदान्त का भी सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में नास्तिक क्यों कहा गया है—इसलिए कि नवीन वेदान्त म भी अविद्या की शक्ति ब्रह्म से भी बढ़ चढ़ गयी है। साथ ही आज यह भलाभाँति प्रकट हो गया है कि मायावाद भी एक प्रच्छन्न बौद्ध विचारधारा है। जिस प्रकार कई आचार्यों की शिक्षाओ को लेकर उनके विभिन्न अनुयायी वर्गों में यह कहते हुए भेद खड़े हो गये कि उनकी अपनी मानी हुई व्याख्या अथवा विचारधारा उनके आचार्यों की शिक्षा है—ऐसा ही आगे चलकर कहीं आर्य समाज मे भी भेद न पैदा हो जावे। आर्यसमाज की शिरोमणि सस्थाओं को और आर्य विद्वानों को उससे सचेत रहना चाहिए। कहीं इतिहास की घटनाये हमारे ऊपर भी अपना प्रभाव न जमा ले।

दो नीतियाँ हमारे सामने रहीं। एक तो है विष्णु की नीति जिसमें बुद्धिमत्ता कुशलता और निपुणता है और दूसरी है भोलेबाबा शकर की नीति। इस नीति में अपने विनाश के लिए ही भस्मासुर पैदा किये जाते हैं। शकर का काम भस्मासुर पैदा करना रहा है। हम पाठ तो यह पढ़ाते और पढ़ते हैं कि—"विष्णो कर्माणि पश्यत-यतो व्रतानि पस्पशे." परन्तु डर है कि कहीं भस्मासुर बनाने के मार्ग पर न चल पड़ें। इससे अपना ही विनाश हो जावेगा। आज तक हम ऋषिवर के सिद्धान्तों का प्रचार करते रहे परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अनेको भस्मासुर भी ऐसे बनाये कि जिन्होंने हमे हो हानियाँ पहुँचायीं। पहले तो फोटो छापकर, तारीफ करके ऐसे व्यक्तियों को आशीर्वाद दिया जाता है। बाद मे जब वे अपना खेल खेलने लगते हैं तब आँख खुलती है और उन्हे निकालने की बात चलती है। परन्तु इतने समय मे वे पर्याप्त प्रभाव जमा लेते हैं। नाम लेने का जरूरत नहीं है परन्तु यह सब पर प्रकट है कि ऐसे अनेक भस्मासुर समाज मे पैदा हुये। तथा उनको पैदा भी हम समाज के लोगों ही ने किया।

हमारी स्थिति यह है कि जो कोई भी महर्षि दयानन्द का नाम लेकर जो कुछ भी उनके नाम पर कह देवे हम सुन लेते हैं और इस लोभ मे कि वह महर्षि का नाम ले रहा है। हम उसकी उन बातो की भी तारीफ करते हैं जो वस्तुत विचारने पर महर्षि की शिक्षाओ के प्रतिकूल पड़ जाती हैं। महर्षि के नाम का कई लोग अनुचित लाभ लेकर अपना कार्य पूरा करते हैं। एक व्यक्ति जो महर्षि के सिद्धान्तों को जानता तक नहीं और उनके ग्रन्थ भी नहीं पढ़े हैं—भाषण और लेख में अपनी धारणा प्रकट करता है और साथ में ऋषि के किसी वाक्य का उल्टा अर्थ लगाकर यह भी कहता जाता है कि यही महर्षि का सिद्धान्त है। लोग सुनते हैं, प्रशसा करते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि इसका परिणाम क्या होने वाला है। यदि इसी प्रकार के लोग अपने छिपे उद्देश्यों से ऋषि के विपरीत विचारधाराओं को ऋषि की विचारधारा बनाकर प्रचारित करते जावेंगे तो आर्यसमाज के प्रवर्त्तक के सिद्धान्तों की भी यही स्थिति भविष्य मे होगी जो बुद्ध आदि के सिद्धान्तों की हुई है। आजकल महर्षि का नाम लिया जाता है, सस्थायें उनके नाम पर बनायी जाती है, मण्डल खोले जाते हैं और उद्देश्य में ऋषि के विचारों को रखा जाता है परन्तु कार्य

क्रमशः

[पृष्ठ ५ का शेष]

वर्तमान आलोचना पद्धति की भर्त्सना और एक आलोचना सहिता के निर्माण का प्रयत्न किया जाना आवश्यक है।

(३) आर्यसमाज का सगठन दक्षिण भारत, उड़ीसा, बगाल और आसाम में बढ़ाने तथा उन प्रान्तों के लिए उपदेशक तैयार करना और उन की प्रादेशिक भाषाओ मे साहित्य निर्माण-योजना पर विचार करना।

(४) विदेशों में आर्य साहित्य एव विचारों का प्रचार एव प्रसार का प्रयत्न करना।

(५) इन सबसे अधिक आवश्यक बात तो यह है कि आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य तथा अधिकारी 'हीरक जयन्ती' के इस पवित्र अवसर पर यह निश्चय करे कि वे अपने चरित्र का निर्माण करने का प्रयत्न करेंगे। यदि वे व्यापारी हैं तो व्यापार मे सत्यता और ईमानदारी, यदि क्लर्क हैं तो वहाँ घूस न लेना अपने कर्त्तव्य का पालन करना, यदि वे अध्यापक हैं तो आर्य विचार धारा का विद्यार्थियों मे प्रवेश कराने का प्रयत्न, जीवन का आदर्श अध्यापक के रूप में, गुरू के रूप में विद्यार्थियो के सामने उपस्थित करने एव इसी प्रकार अपने दैनिक जीवन को सर्वसाधारण आर्यसमाजी भी उन्नत करे। देश में चरित्र निर्माण का वातावरण कैसे बनाया जाय ?

(६) आर्यसमाज के सगठन को बढ़ाने, उसे आदिवासी एव पिछड़ी जातियो म फैलाने के लिए जगह जगह चिकित्सालय खोलने की योजना भी विचारणीय है।

(७) ग्रामो से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न भी होना चाहिए।

(८) आर्यसमाज के पत्रों एव पत्रिकाओ का प्रचार एव ग्राहक-सख्या वृद्धि का क्या उपाय किया जाय ? उत्तरप्रदेश मे ही नहीं, सारे भारत एव विश्व मे 'कल्याण' मासिक गोरखपुर के समान लाखों तक कैसे पहुँचाया जाय यह भी हमें सोचना है। क्योंकि पत्र आज के युग मे समाज एव सगठन के मूल प्रचारक एव प्रसारक हैं। यदि हमने इनकी उपेक्षा की तो हमारा संगठन एव हमारे विचार न तो दृढ़ हो सकेंगे और फैल सकेंगे। यह पत्र तो हमारे उपदेशकों का काम करेंगे। जिस तरह आज 'धर्मयुग' 'नवनीत' इत्यादि पत्र जनता चाव से पढ़ती हैं, 'कल्याण' मासिक के लिए लोग इन्तजार किया करते हैं वैसे ही आर्यों के मुख्य पत्र 'आर्यमित्र' का तथा अन्य आर्य पत्रों का प्रचार हो सके यह प्रयत्न करना है।

हमारा तो विचार है कि आज हमारा समाज नेतृविहीन है, इसे दूसरे शब्दों में कहें तो यहाँ सभी नेता है। यह दोनों स्थितियां नाजुक हैं। अत इस दशा को दूर करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब हम इधर की बातो पर समुचित रूप से विचार करेंगे। और उनके आधार पर कोई योजना तैयार करेंगे। 'आर्यमित्र हीरक जयन्ती' की योजना की सफलता का आधार यही होगा। अत आइए, हम भी अपना यज्ञभाग इसमें आहुति रूप में डालें।

क्या इस जन्म के किसी कर्म का फल इसी जन्म में मिल सकता है?

[श्री बाबू कालीचरण आर्य, उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र०]

(गतांक से आगे)

श्री उपाध्याय जी ने लिखा है—"आप हर कारण को साधन और हर फल को प्रभाव समझ लेते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। मेरा विचार है कि कर्म कारण भी है और साधन भी। जिस भोग में कर्म सम्मिलित नहीं है वह केवल भोग है जो भोग रूपी कर्म द्वारा भोगा जाता है। भोग रूपी कर्म सा प्रतीत होता है, वास्तव में कर्म नहीं होता। जिस भोग में कर्म सम्मिलित है वह कर्म पूर्व जन्म के कर्मों के भोग भुगाने में इस जन्म में साधन है और अगले के जन्मों में भोग भुगाने के लिये वह कारण है। इस जन्म का व्यभिचार और डाका जिन के साथ अत्याचार करता है उन के पिछले जन्म के कर्मों को भुगाने में साधन है और कर्त्ता लिये कर्म है जो अगले जन्म में कर्त्ता को दुःख देगा। मैं कभी नहीं कहता कि व्यभिचार और डाका कार्य है। यह कारण है और साधन भी है। इसी प्रकार यदि मैंने स्वयं रोटी खाई और आनन्दित हुआ, यह सब भोग हैं, परन्तु यदि किसी दूसरे को रोटी खिलाई और आनन्दित हुआ, यह सब भोग हैं, यहाँ रोटी खिलाना इस आनन्द का साधन है, और कर्म भी जो मुझे अगले जन्म में सुख का कारण होगा। भोग-दुख ज्यों का त्यों है, समाप्त नहीं होता और कर्म सिद्धान्त इसी रीति से स्पष्ट होता है। अतः कर्म-सिद्धान्त में यह निर्विवाद सत्य है कि कर्त्ता ही कर्म-फल भोगता है तो जिस कर्म से कर्त्ता के अतिरिक्त दूसरे को कष्ट या सुख होता है, वह कर्म दूसरों के लिये तो साधन ही हो सकता है और कारण दूसरों के अपने कर्म होंगे जो पूर्व जन्म में वह कर आये हैं और इस प्रकार कारण का ही भोग होगा, न कि भोग का भोग।

श्री उपाध्यायजी लिखते हैं—परन्तु आपने उन दृष्टान्तों को सर्वथा भुला दिया जहाँ शुभ कर्म करने वालों को सुख और अशुभ कर्म करने वालों को दुख मिला।" पण्डितजी, मैंने भुलाया नहीं है। आप पुनः देखिये, यदि आपको प्रत्यक्ष में शुभ कर्म का फल सुख इसी जन्म में दृष्टिगोचर होता है और प्रत्यक्ष होने के कारण इसी जन्म के कर्म का फल मानते हैं तो यह भी उतना ही प्रत्यक्ष है कि अशुभ कर्म का फल सुख और शुभ कर्म का फल दुःख होते देखते हैं और इसको भी आप पूर्ववत् इसी जन्म के इसी कर्म का फल अर्थात् अशुभ कर्म का फल सुख और शुभ कर्म का फल दुःख क्यों नहीं मान लेते? परन्तु आपका अन्तःकरण ऐसी बात के मानने पर आपको कदापि आज्ञा नहीं देता। पंडित जी, ऐसे उदाहरण चाहे कितने ही कम क्यों न हों, हैं तो सिद्धान्त के विरुद्ध ही जो किसी दशा में भी मान्य नहीं हो सकता। क्या आप परमात्मा से यह आशा करते हैं कि वह कभी कभी किसी किसी को उसके शुभ कर्म के फल में दुःख दे देता है और अशुभ कर्म के फल में सुख दे देता है? पंडित जी, कम की कौन बात कहे, क्या किसी के जीवन में एक कर्म भी ऐसा हो सकता है जबकि परमात्मा किसी को उसके

सिद्धान्त-विमर्श

शुभ कर्म के बदले में दुःख दे दे? यदि यह असम्भव है तो प्रत्यक्ष की युक्ति मिथ्या है, और भ्रम है। अतएव यही मानिये कि शुभ या अशुभ कर्म यहां पर साधन है और अगले जन्म में कर्त्ता के लिये सुख-दुःख का कारण इसीके मानने से संगति लगती है और ईश्वर निर्दोष रहता है, अन्यथा ईश्वर पर भी दोष आता है और यह भी मानना आपके लिये अनिवार्य हो जायेगा कि मोहन के कर्म का फल सोहन भोगे और सोहन के कर्म का फल दामोदर भोगे जो वैदिक-सिद्धान्त के सर्वथा विरुद्ध है।

पंडित जी ने एक और विचित्र बात कही है—"शुभ कर्म का फल दुःख केवल यही सिद्ध करता है कि पुराने जन्म के कोई ऐसे कर्म बलवान हैं जो इस जन्म के कर्मों को फलीभूत होने में बाधा डालते हैं—जैसे यदि कोई ऋणी है तो उसका परिश्रम से "धन उपार्जन करना उसको उतना सुख नहीं दे पाता जितना उस समय होता जब कि वह ऋणी न होता।"

उत्तर—किसी को परिश्रम से धन उपार्जन के सुख को ऋणी होने ने कम कर दिया परन्तु पंडित जी, कम कर दिया क्या? सुख, तो बहुत सुख को कम सुख करने से बाकी तो सुख ही बचेगा? पंडित जी, परन्तु दुःख कहां से आ गया? आपने अपने ही शब्दों में तो लिखा है कि—"शुभ कर्म का फल दुःख यही सिद्ध करता है," तो पंडितजी शुभ कर्म के फल में दुःख कहां से आ गया? आपने एक प्रकार का उदाहरण दिया और वह भी बिलकुल गलत, परन्तु दूसरे पहलू को छुआ भी नहीं अर्थात् अशुभ कर्म के बदले में सुख कैसे हो जाता है? पंडित जी, यह मान्यता तो छोड़नी ही होगी, अन्यथा ईश्वर को अन्यायी मानना पड़ेगा, या ईश्वर को कर्मों का फलदाता न मानने पर अपवादित होंगे, परन्तु मुझे विश्वास है कि आप ईश्वर को जैसा कि आर्यसमाज मानता है, वैसा ही मानते रहेंगे और अपने विचार में परिवर्तन कर लेंगे।

बहिन शकुन्तलादेवी जी (मेरठ) ने, आर्यमित्र १४।१२।५८ के पृष्ठ १५ पर भी और ही के भेद से कर्म फल पर कुछ लिखा है, यद्यपि उनके लेख में के प्रत्येक भाग का उत्तर दिया जा चुका है, परन्तु फिर भी थोड़ा सा उनके सम्बन्ध में लिख दूं। उन्होंने महाऋषि कणाद का सूत्र उद्धृत कर निष्कर्ष निकाला है कि—"धर्म का फल इस लोक में उन्नति, समृद्धि कीर्ति, सुखादि है और मरने पर मुक्ति है।" श्रीमती जी, यदि कर्म का फल इस जन्म में उन्नति, समृद्धि, कीर्ति और सुखादि मिल गया तो भी क्या कर्म शेष रह गया, और समाप्त न हुआ? और आपके मतानुसार वही कर्म इस जन्म में फल देकर अगले जन्म में मोक्ष देगा? यदि ऐसा नहीं तो स्पष्ट करें।

मेरे सिद्धान्तानुसार मेरा किया हुआ कर्म इस जन्म में दूसरों की उन्नति, समृद्धि, सुखादि का साधन हो सकता है और वही कर्म मेरे लिए अगले जन्म में आकर मेरी मोक्ष का कारण होगा और यही संगति ठीक लगती है।

आपका यह कहना कि असाक्षात्, अदृष्टि विधि के प्रति रुचि उत्पन्न होना असम्भव होगा, यह बिलकुल गलत है। इसको विस्तार से मैंने ऊपर लिखा है, उसे देख लें।

आज तो देश में प्रत्यक्ष देखने वालों के कारण घोर अनाचार, अश्रद्धा और अविश्वास फैला हुआ है जो कहते हैं कि आज बिना बेईमानी किये दुनियाँ में रहना मुशकिल है जो देख रहे हैं कि एक बेईमान बेईमानी करके फल-फूल रहा है। आपके मतानुसार उसका फलना और फूलना उसकी बेईमानी का ही फल है तो दुनियाँ क्यों न बेईमान बने? फलना-फूलना कौन नहीं चाहता? प्लेटफार्म से सत्य व्यवहार के लिये ढोल पीटना ढोंग ही रह जायेगा, इसलिये मेरी बात मानिये और यही उपदेश कीजिये कि बेईमान की बेईमानी उसके फलने-फूलने का कारण नहीं होती, बल्कि फलना और फूलना उसके पूर्व जन्म के शुभ कर्मों का फल है और इस जन्म में जो उसने बेईमानी को साधन बनाकर अपने पूर्व सुख को प्राप्त किया है, इस बेईमानी के कर्म का फल अगले जन्म में अन्धा, लूला, लंगड़ा, अपाहिज या किसी पशु पक्षी का रूप धारण कर भोगना पड़ेगा।

बहनजी, आप जरा सोचिये, ऋषि दयानन्द ने क्या इस जन्म के अशुभ कर्म के बदले में इतने दुःख सहे हैं? क्या उनके वैदिक कर्म न थे? यदि थे तो क्या परमात्मा का यही न्याय था जो उनके साथ किया गया? आपके मतानुसार उसका कोई समाधान है? यदि नहीं, तो मेरी बात मानिये। दर्शन की परिभाषा के अनुसार ऋषि दयानन्द के वैदिक कर्म संसार के अन्य लोगों को साधन बन कर समृद्धि दे गये, सुख दे गये और कर्त्ता को मृत्यु के बाद मोक्ष देगा। जो दुःख उसे हुआ है वह उसके जन्म जन्मान्तरों के बचे हुए कोई दुष्कर्म शेष रह गये थे, उनको यहां भोग कर समाप्त कर गया।

आर्यमित्र ४ जनवरी सन् ५९ ई० पृष्ठ ५ पर कर्म फल मीमान्सा शीर्षक श्री विश्वनाथ जी का लेख छपा है, उसमें लेखक महोदय ने लिखा है कि कर्म का फल के साथ समवाय सम्बन्ध

(शेष अगले पृष्ठ पर)

कर्म फल.......

(पिछले पृष्ठ का शेष)

नहीं। मेरा और वैदिक धर्म का यही सिद्धान्त है कि बिना कर्म के फल असम्भव है इसलिये कर्म और फल का समवाय सम्बन्ध है। ऋषि दयानन्द ने भी लिखा है कि बिना कर्म के फल नहीं। देखो सत्यार्थ प्रकाश, शताब्दी संस्करण पृष्ठ २९०, ३३२, ३६३, ३६८, ३७०, ३७१। लेखक का विचार है कि सुख-दुःख बिना प्रारब्ध के भी होता है परन्तु ऋषि इस सबंध में क्या कहते हैं, देखने का कष्ट करें। आर्योद्देश्य रत्नमाला पृष्ठ २९६ संख्या ५१ में प्रारब्ध की परिभाषा मे लिखा है—जो पूर्व किये कर्मों के सुख दुःख रूप फल का भोग किया जाता है, उसको प्रारब्ध कहते हैं, अर्थात् सुख दुःख भोग प्रारब्ध के बिना नहीं होते क्रियमाण कर्म संचित में जायेगा, वहां से प्रारब्ध बनेगा तब भोगा जायेगा, सुख दुःख का भोग ही प्रारब्ध है।

लेखक महोदय ने लिखा है-सुख दुःख भी तो कर्म के प्रभाव का नाम ही है, इसलिये कर्म फल और कर्म प्रभाव एक ही है।

उत्तर -कर्म प्रभाव और कर्म फल मे बड़ा अन्तर है। कर्म का फल केवल कर्त्ता ही को मिलता है, देखिये सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १७ में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ ५१८ सत्य धर्म विचार ८४१। ऋषि लिखते हैं-जो पाप करता है वही दुःख पाता है, दूसरा कोई नहीं पा सकता।

परन्तु कर्म का प्रभाव कर्त्ता पर भी होता है और अन्यों पर भी हो सकता है, जिस प्रकार ऋषि दयानन्द के भाषणों का प्रभाव एक ही समय में हजारों नर नारियों पर पड़ता रहा, परन्तु कर्म फल केवल ऋषि को ही मिलेगा।

कर्म फल निश्चित है, अर्थात् शुभ कर्म का फल सुख और अशुभ कर्म का फल दुःख। इसके विपरीत कभी नहीं हो सकता। परन्तु कर्म प्रभाव निश्चित नहीं, विपरीत भी हो जाता है। जैसे ऋषि दयानन्द के उपदेशों को सुनकर किसी ने गालियां दीं और किसी ने प्रशंसा की। फल और प्रभाव कभी एक नहीं हो सकते।

लेखक महोदय ने लिखा है कि पुण्य कर्म का फल महर्षि के लेखानुसार कीर्त्ति तो इसी लोक में मिलती है। ठीक है, कीर्त्ति प्रभाव है, फल नहीं। ऋषि ने यहां लिखा है कि इस लोक मे कीर्त्ति और सुख, परलोक में सुख ही भोग। लेखक महोदय ने लिखा है कि "कोई भी फल केवल प्रारब्ध का ही नहीं होता, उसमें इस लोक का पुरुषार्थ भी सम्मिलित है।"

उत्तर —ऋषि ने लिखा है कि बिना पाप के दारिद्रादि और बिना शुभ कर्म के धनाढ्यता आदि सुख नहीं मिलता।

एक बालक राजा के घर पैदा होता है, दूसरा बालक उसी दिन एक दरिद्र के पैदा होता है। आप बता सकेंगे कि इन दोनों के इस लोक के कौन से पुरुषार्थ इसमें सम्मिलित हैं? फल केवल प्रारब्ध का ही होता है। अपना या दूसरे का पुरुषार्थ साधन हो सकता है। वह भी सबमें नहीं। पुरुषार्थ उसी दशा में इस लोक का साधन होता है जबकि मनुष्य पुरुषार्थ करने योग्य हो जाता है। इससे पूर्व या उस अवस्था मे जबकि वह पुरुषार्थ के अयोग्य हो जाता है, उसके सुख दुःख में केवल प्रारब्ध ही काम आता है। कोई भी सुख दुःख बिना प्रारब्ध के प्राप्त नहीं हो सकता, परन्तु अनेक सुख-दुःख बिना पुरुषार्थ के प्राप्त हो जाते हैं, इसलिये प्रारब्ध मुख्य है और पुरुषार्थ गौण है, यह बात भोग के साथ है, परन्तु भोग के बनाने में पुरुषार्थ मुख्य है। और इसीलिये पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है कि वह प्रारब्ध को बनाता है। परन्तु प्रारब्ध बन जाने के बाद भोग के लिये वह मुख्य हो जाता है और पुरुषार्थ की पर्वाह नहीं करता।

लेखक महोदय ने लिखा है—'फल दो प्रकार का होता है—संयोग जन्य और न्याय जन्य। संयोग जन्य फल किसी प्रकार से संयोग वियोग से सुख दुःख प्राप्त होना, इसमे किसी अन्य शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। द्वितीय न्याय जन्य फल बिना किसी न्यायाधीश के सम्भव नहीं। यह भी लौकिक राजा आदि के द्वारा दिया गया और पारलौकिक ईश्वर द्वारा दिया गया, दो प्रकार का है, इनमे ईश्वर प्रदत्त ही प्रारब्ध कहलाता है।"

उत्तर —कर्म फल में से लेखक महोदय ने ईश्वर की समस्या तो बहुत कुछ हल कर दी। वैदिक धर्म का जो मुख्य सिद्धान्त है कि ईश्वर ही जीवों के कर्मों का फल देता है, तीन चौथाई समाप्त हो गया। वह कहते हैं कि संयोग जन्य जो फल होता है उसमें परमात्मा की आवश्यकता नहीं। आधा काम समाप्त, शेष आधे में जो न्याय जन्य है उसमें से भी जो राजा आदि लौकिक के द्वारा दिया गया कर्म फल भी परमात्मा की आवश्यकता नहीं बतलाता, तीन चौथाई समाप्त। पारलौकिक ईश्वर द्वारा दिया गया, ईश्वर से दिया जाता है उसी को प्रारब्ध कहते हैं। ऋषि इसके सम्बन्ध मे लिखते हैं—संस्कार विधि पृष्ठ ३०१ सत्य धर्म विचार मेला चांदपुर पृष्ठ ८३३ सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १७, ३७१, ३०२, ३०३, ३०४, ५७५, ५८६, ७८७, ७९०, ७९२, ७९५ भ्रान्ति निवारण पृष्ठ ८७१, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ ५२२। ऋषि अपने ग्रन्थों मे स्पष्ट लिखते हैं कि जीवों के कर्मों का फलदाता परमात्मा ही है, अन्य कोई नहीं।

१-लेखक महोदय से मैं यह जानना चाहूंगा कि बिना किसी शक्ति के संयोग का होना सम्भव है?

२—संयोग स्वतन्त्रता से रहता है या किसी के अधीन रहता है अर्थात् द्रव्य, गुण, कर्म, में से संयोग क्या है?

३—यदि वैशेषिक दर्शन के कर्त्ता कणाद मुनि की कर्म परिभाषा को आप मानते हैं कि कर्म संयोग और विभाग का कारण होता है और कर्म किसी द्रव्य में रहता है, चैतन्य में रहता है तो क्या फिर भी कर्मफल के देने में किसी चैतन्य सत्ता की आवश्यकता नहीं समझते?

आपके लेख के उत्तर में मैंने ऋषि के उद्धरण उपस्थित कर देना ही पर्याप्त समझा है। यदि मेरा यह पूरा लेख पढ़ेंगे तो सब कुछ उसमें से मिलेगा।

★

गुरुधाम (गुरु-विरजानन्द-स्मारक) एवं आर्यमित्र हीरक-जयन्ती व अभिनन्दन-ग्रन्थ योजनायें

(विश्वम्भर सहाय प्रेमी प्रचार मन्त्री गुरुधाम आर्यमित्र जयन्ती समारोह)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने इस वर्ष गुरु विरजानन्द के स्मारक का शिलान्यास, आर्यमित्र की हीरक जयन्ती एवं पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय व श्री गंगाप्रसाद जी (रि० चीफ जज) अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट की जो योजनायें बनाई थीं, उनको अब शीघ्र ही क्रियान्वित करने की तैयारी पूर्ण करनी है। इस समय तक इन तीनों योजनाओं के सम्बन्ध में विद्वानों ने अपने जो मत व्यक्त किये हैं, उनसे यह बात स्पष्ट हो गई है कि इन योजनाओं को सफल बनाने मे प्रत्येक आर्य को अपना सक्रिय योग देना चाहिए। आर्यमित्र मे तीनों योजनाओं की अलग अलग विवेचना भी होती रही है। अब समय इतना निकट आ गया है कि सभी कार्यकर्त्ता अपने कार्य की पूर्ति में जुट जायं।

गुरु विरजानन्द-स्मारक

गुरु विरजानन्द की कुटी का स्थान प्राप्त कर लिया गया है। इस अवसर पर वहाँ शिलान्यास किया जाना है। गुरु विरजानन्द की स्मृति में भवन निर्माण का कार्य भी होना है। इस पवित्र कार्य में सभा का सहयोग प्राप्त होना चाहिए। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द के गुरु विरजानन्द का स्मारक अपना भारतीय महत्त्व ही नहीं रखता, किन्तु देश विदेश के सभी आर्य भाई इस कार्य को सम्पन्न करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। यह प्रश्न अनेक वर्षों से विचाराधीन रहा है परन्तु अब इसे क्रिया में आना ही चाहिए।

आर्यमित्र हीरक-जयन्ती

गत साठ वर्षों से आर्यमित्र आर्य जनता की सेवा कर रहा है। उसने समय समय जन साधारण का जो मार्ग दर्शन किया, वह विस्मरण नहीं किया जा सकता। आर्य जगत् में आर्यमित्र का एक उच्च स्थान रहा है। इस हीरक जयन्ती के अवसर पर उसका एक विशेषांक प्रकाशित होना है। इसके सम्बन्ध में लेखकों एवं विद्वानों से लेख भेजने की प्रार्थना की गई थी। अभी तक विशेषांक के लिये बहुत कम सामग्री आ पाई है। अतः मेरा उनसे अनुरोध है कि वे शीघ्र ही लेख भेजने की कृपा करें। लेख सामग्री पर ही विशेषांक की सफलता निर्भर करती है।

अभिनन्दन-ग्रन्थ

अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्बन्ध में मैंने पहिले भी निवेदन किया था कि श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एवं श्री पं० गंगाप्रसाद (रि० चीफ जज) की सेवाओं को दृष्टि में रखते हुए, उत्तर प्रदेश की आर्य समाजों की ओर से दोनों विद्वानों का अभिनन्दन किया जाना है। इन दोनों विद्वानों ने सार्वदेशिक सभा एवं आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की जो सेवायें की हैं, उन्हें ध्यान में रखकर इन विद्वानों का सम्मान करना हम सब का कर्त्तव्य हो जाता है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये कुछ विद्वानों ने अपने लेख भेज दिये हैं। परन्तु जिन विद्वानों से लेखों के लिये प्रार्थना की गई थी, उनमें से अधिकांश के लेख प्राप्त नहीं हो पाये हैं। लेखों को क्रम देने में भी कुछ समय चाहिये। अतः मेरा अनुरोध है कि जिन विद्वानों की सेवा में मुख्य सम्पादक श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री की ओर से विज्ञप्ति भेजी गई थी, वे १५ फरवरी तक अवश्य अपना लेख भेजने की कृपा करें। ग्रन्थ के प्रकाशन में काफी समय लग जायेगा। अतः सामग्री शीघ्र एकत्रित की जानी है।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

देशदर्शन

हैदराबाद में आर्यसमाज

(एक संक्षिप्त परिचय)

(श्री कालीचरण प्रकाश, वेदप्रचार, विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा म०द०हैदराबाद

(गताङ्क से आगे)

सभाओं को आदेश दिया कि अपने अपने प्रान्तो में हिन्दी रक्षा समिति का गठन करें और आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने में पूर्ण सहयोग दें।

सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार आर्य प्रतिनिधिसभा मध्य दक्षिण की १६ जुलाई की अन्तरङ्ग ने एक हिन्दी रक्षा समिति की स्थापना कर इसे कार्य का पूर्ण अधिकार दे दिया। इस समिति के अध्यक्ष पं० नरेन्द्र जी तथा संयोजक प० मनोहर लाल जी नियुक्त हुए। दक्षिण की सम्पूर्ण आर्य समाजें तथा सारी जनता इस आन्दोलन से परिचित न थी, तब सर्वप्रथम समिति ने अपने तीनों प्रान्तो में हिंदी आन्दोलन का सभी प्रकार का साहित्य हिन्दी तथा अङ्ग्रेजी भाषा में प्रचारित किया और समाचारपत्रों मे समाचारादि प्रकाशित कराती रही। सभा का मासिक मुख पत्र जो "विवृत्ति" प्रति मास प्रकाशित होता रहा था उसे पाक्षिक कर दिया गया और सभा के उपदेशकों के द्वारा इस आन्दोलन का खूब प्रचार करवाया गया, जिससे जनता इस आन्दोलन से परिचित होती गई और इसका प्रभाव भी उस पर होने लगा।

समिति ने अगस्त मास में प्रथम जत्था २५ सत्याग्रहियों का प० मुक्ता लाल जी मिश्र के नेतृत्व में भेजा। आन्दोलन को और तीव्र तथा दृढ़ बनाने के लिए आन्ध्र, कर्नाटक तथा मराठवाड़ा क्षेत्र के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं का एक कन्वेशन भी बुलाया गया था जिसके सभापतित्व के लिए दिल्ली से श्री प० नरेन्द्र जी को बुलवाया गया। इस कन्वेशन में तीनो प्रान्तो के लगभग तीन सौ कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया और विशेष रूप से श्री प० श्याम जी पराशर भी पधारे थे। इस सम्मेलन में कई एक निश्चय किये गये, जिनके अनुसार निर्णय पाया कि आन्दोलन को उग्र और व्यापक करने के लिए अधिक से अधिक संख्या में सत्याग्रही भेजे जायें। और अक्टूबर मास में दूसरा और एक जत्था श्री शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट के नेतृत्व में भेजा जाए।

निर्णयानुसार अक्टूबर मास में श्री प० शेषराव वाघमारे के नेतृत्व में अट्ठाईस सत्याग्रहियो का जत्था पंजाब रवाना किया गया। विजय दशमी के अवसर पर इस जत्थे का शानदार जुलूस भी निकाला गया। इस दूसरे जत्थे के नेता श्री प० शेष राव जी वाघमारे ने ही विजयदशमी जुलूस में गजारूढ होकर जुलूस का नेतृत्व किया।

समिति की ओर से नवम्बर मास मे तीसरा तथा चौथा जत्था भी भेजा गया। ३४सत्याग्रहियों के तीसरे जत्थे के नेता श्री प० दत्तात्रय प्रसाद जी एडवोकेट रहे और चौथे जत्थे की नेत्री श्रीमती मन्दालसादेवी जी रहीं। यह चौथा जत्था महिलाओं का था।

जैसे जैसे आन्दोलन बढ़ता गया वैसे वैसे समिति के पास सत्याग्रहियों की सूची में सत्याग्रहियो की नामावली में भी वृद्धि होती गई। और उत्साह में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होती गई। इसीसे विवश होकर समिति को सत्याग्रही जत्थो की संख्या बढ़ानी पड़ी।

समिति ने छठवां और अन्तिम जत्था श्री प० नरदेव जी स्नेही के नेतृत्व में एक सौ सत्याग्रहियों का पंजाब को भेजा। आगे और जत्थो को भेजने के लिए स्वीकृति प्राप्त कर ली गई थी किंतु अचानक २७दिसम्बर को श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त का आदेश प्राप्त हुआ कि अभी जत्था भेजना रोका जाय। इस आदेश से लोगों के उत्साह व उमगो को बड़ा आघात लगा और लोगो की इच्छाएं मन की मन में रह गई।

इस आन्दोलन के सम्बन्ध में मध्य दक्षिण की तीनों प्रान्तो की सभी समाजों ने समिति के निर्देशानुसार हिन्दी दिवस मनाया। बड़ी बड़ी सार्वजनिक सभायें की गई। कई आर्यसमाजी नेताओं, कार्यकर्त्ताओं तथा सभा के उपदेशको ने रात दिन एक करके इन तीनों प्रान्तो की समाजो का निरन्तर भ्रमण किया और आन्दोलन सम्बन्धी प्रचार किया।

प० नरेन्द्र जी, श्री ए० बालरेड्डी जी उप मन्त्री सभा, प० मनोहरलाल जी संयोजक समिति तथा सभा के और भी अन्य कार्यकर्त्ताओं ने भ्रमण किया एवं वक्तव्य आदि दिये, और संगठन को दृढ़ बनाने में पूरा पूरा सहयोग दिया। समिति के व्यय के लिए धन इकट्ठा करने में प० नरेन्द्र जी, व समिति के सभी सदस्यों के अतिरिक्त हैदराबाद, सिकन्दराबाद, निजामाबाद, नान्देड़, हिंगोली, जालना, औरंगाबाद, लातूर, गुलबर्गा, रायचूर, नारायणपेट, विषकुन्डा, उदगीर, मार्डी और कोगापेट आदि के भी कार्यकर्त्ताओं ने हिस्सा लिया जो प्रशंसा के योग्य हैं। समिति ने समय समय पर अपनी बैठकों तथा सार्वजनिक सभाओ आदि के द्वारा बहु अकबरपुर, फिरोजपुर जेल लाठीचार्ज, चण्डीगढ़ तथा दयानन्दमठ की दुर्घटनाओं से सम्बन्धी राज्य की दुर्नीति का खुलेआम विरोध किया। और महात्मा आनन्द भिक्षु जी के अनशन के अवसर पर प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया तथा इस आन्दोलन की बलिवेदी पर प्राण न्याछावर करने वाले हुतात्माओ को अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट की गई। इस आन्दोलन में आर्यसमाजो और अन्य दानी महानुभावो से ३११००) के लगभग दान प्राप्त हुआ और व्यय किया गया।

नगर में मजलिस इत्तहादुलमुसलमीन का प्रचार

दिसम्बर मास मे यरवादा जेल से कुख्यात रजाकार नेता कासिम रजवी भूतपूर्व अध्यक्ष मजलिस इत्तहादुल मुसलमीन, छूटकर हैदराबाद पहुँचे और वहाँ दो दिन ठहरकर पाकिस्तान जाने से पूर्व अब्दुलवाहिद ओवेसी को मजलिस का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया।

आपने मजलिस के अध्यक्ष नियुक्त होने के साथ ही अपने कार्य में तेजी पैदा कर दी और हैदराबाद के मुसलमानो को पुन एक बार पिछली साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के सूत्र में संगठित करने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। परिणाम स्वरूप स्थान स्थान पर धार्मिक प्रचार की आड़ में सार्वजनिक सभाओ द्वारा साम्प्रदायिकता भड़कायी जाने लगी। इन सभाओं में कांग्रेस सरकार, कांग्रेस हिन्दू धर्म तथा आर्यसमाज पर आक्षेप किये जाकर विरोधी प्रचार किया जाने लगा। सरकार की ओर से आरंभ में तो थोड़ी सी उपेक्षा वृत्ति बरती गई किन्तु जब मजलिस की ओर से इस प्रकार का कार्यक्रम प्रतिदिन होने लगा तब इसकी ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करने, पग उठाने पर विवश होना ही पड़ा। तथापि नागरिकों की ओर क्रमश तीन दिन तक चारकमान, घासी बाजार और शाली बण्डा में सार्वजनिक सभाएं आयोजित की गई, जिनमें प० नरेन्द्र जी प्रधान सभा, श्री बी० वेंकटस्वामी जी उपमन्त्री सभा तथा श्री अच्यूयुसुफ जी आदि ने अपने भाषणो द्वारा जनता तथा सरकार को सचेत किया। सरकार ने इस सम्बन्ध में तत्काल शान्ति व्यवस्था की दिशा में आवश्यक पग उठाकर अब्दुल वाहिद ओवेसी और इनके तीन साथियो को नजरबन्दी एक्ट के अन्तर्गत पकड़ कर जेल भेज दिया। इस कार्यवाही के बाद से अब नगर में पूर्ण शान्ति है।

अस्पृश्यता-निवारण के लिए प्रचार—

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आन्ध्र प्रदेश के निर्माण के बाद सरकार के पास अस्पृश्यता निवारण से सम्बन्धित एक योजना प्रस्तुत की गई जिसके परिणाम स्वरूप सभा को ८०००) की राशि सन् १९५७ ५८ के बजट से प्रदान की गई। राज्य को भेजी गई योजनानुसार आन्ध्र प्रदेश में अस्पृश्यता निवारण के विषय में उपदेशको द्वारा प्रचार करवाया गया, जिसकी पृथक रिपोर्ट सरकार को प्रेषित की जा चुकी है।

"विवृति" मासिक—

'विवृति' मासिक श्री विनयकुमार जी के सम्पादकत्व में सभा की ओर से प्रकाशित होता रही है। इस वर्ष विवृति मासिक का प्रचार पंजाब हिंदी रक्षा आन्दोलन के अवसर पर विशेष रूप से हुआ। समय समय पर आन्दोलन से सम्बन्धित साहित्य और सत्याग्रहियो आदि के चित्र प्रकाशित किए जाते रहे, जिससे आर्य जनता को इस आन्दोलन के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती रही। सितम्बर मास में फिरोजपुर जेल में निहत्थे सत्याग्रहियो पर लाठीचार्ज हुआ, जिसमें श्री सुमेरसिंह जी बलिदान हो गए। इस अवसर पर विवृति मासिक का बलिदान अङ्क प्रकाशित किया गया जिसमें श्री सुमेरसिंह जी की जीवनी तथा उनके सम्बन्धियों के चित्रों के अतिरिक्त

(क्रमश)

अनुशासन में ही जीवन की सफलता

किसी भी व्यक्ति, जाति, संस्था या राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके अनुशासन में ही निहित होती है। अर्थात् एक व्यक्ति की शक्ति उसके मोटे-ताजे अंगों में न होकर उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गों, और आत्मा के मध्य अनुशासन पर आधारित है।

यदि आत्मा की आवाज की अवहेलना कर मनुष्य की समस्त इन्द्रियां मनमाना आचरण करें तो उसे शक्ति हीन समझना चाहिये। शक्ति तो समस्त इन्द्रियों की शक्तियों के आत्मा के इच्छानुसार केन्द्रियकरण में है। केन्द्रीभूत इस शक्ति का आत्मा आन्तरिक-बाह्य जिस किसी दिशा में प्रयोग करेगा, उसे उसी दिशा में अद्वितीय सफलता मिलना अनिवार्य है। आन्तरिक क्षेत्र में इस शक्ति का प्रयोग करने वाले पूर्ण योगी तथा सत्यद्रष्टा बन जाते हैं, और बाह्यजगत में प्रयोग करने वाले व्यक्ति परम ऐश्वर्य को प्राप्त कर लेते हैं।

अनुशासनहीन मेले की भीड़ में शक्ति नहीं

मनुष्य की भांति संस्था एवं राष्ट्रों के अंग-प्रत्यंगों मे भी अनुशासन का सिद्धान्त लागू होता है। उदाहरणार्थ क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से पूर्व पंजाब के बराबर जर्मन देश की अनुशासित जनता ने सन् १४ और ३८ के दो विश्व युद्धों मे समस्त विश्व को अपनी शक्ति से चकाचौंध कर दिया था। भारत में कुम्भ के मेले पर लाखों नर नारियों को एकत्रित देखकर एक बार एक विदेशी ने कहा था कि बिना बुलाए स्वतः लाखों व्यक्ति जिस देश मे जमा हो जाते हैं, फिर वह मुट्ठी भर अंग्रेजों के पास क्यों है? क्यों नहीं वे क्रान्ति कर देते ? इसका उत्तर एक ज्ञाता ने यही दिया कि लाखों व्यक्तियों की अनुशासन-हीन इस भीड़ मे शक्ति नहीं है।

अनुशासनहीनता ही भारत जैसे विशाल देश की पराधीनता का कारण रही है। दुर्भाग्यवश स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी भारत इस बीमारी से मुक्त होने के बजाय और अधिक अस्वस्थ हो गया। जाति पांति, प्रांतीयता, भाषा भेद, छूत-छात के नाम पर यहां सर्वत्र अनुशासनहीनता का बोलवाला है। नदियों के बांधों, सड़कों, नहरों, कारखानों को देखकर भले ही कोई व्यक्ति भारत की शक्ति के बारे में भ्रान्त हो जाएं, परन्तु जनता की इस अनुशासनहीनता के रहते, इसे शक्तिशाली समझना भारी भूल है।

सामयिक समस्याएँ

अनुशासन में ही शक्ति

(श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्र० संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, देहली)

आर्यसमाज की सम्पत्ति किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं

अनुशासन की दृष्टि से यदि आर्यसमाज के संघटन की जांच की जाए तो अन्य संस्थाओं की अपेक्षा इसमें अधिक अनुशासन की शक्ति है। परन्तु इसके पूर्वकालिक इतिहास को देखते हुए खेद के साथ कहना पड़ता है कि इसमें भी अब अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। बहुत से आर्य समाजी अपने स्वार्थों का आर्यसमाज के हित से अधिक महत्त्व देते हैं; और आर्यसमाज को अपनी स्वार्थ-सिद्धि का साधन बना रहे हैं, बनाना चाहते हैं। आर्यसमाज और दयानन्द के नाम पर बहुतों ने आर्यसमाज की विशाल सम्पत्ति या संस्थाओं को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति बना लिया है, और आर्यसमाज के संगठन व अनुशासन को मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

कारण यह है कि आर्यसमाज का अनुशासन मानते ही उनका निजी स्वार्थ संकट में पड़ जायेगा। प्रत्येक प्रान्त में ऐसे बहुत से आर्यसमाज या संस्थाएं हैं—जिनकी सम्पत्ति की रजिष्ट्री स्वतन्त्र रूप से करा रखी है, और फलतः वे प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा के अनुशासन में रहने को तैयार नहीं होते हैं।

अनुशासनहीन संस्थाओं की अच्छाई का कोई भरोसा नहीं

सार्वदेशिक अनुशासन से पृथक बहुत सी स्वतन्त्र समाजें या संस्थाएं अच्छी भी हैं, और अच्छा कार्य भी करती हैं, आर्यसमाज का प्रचार भी करती हैं। परन्तु उनकी अच्छाई का मूल्य अनुशासन की दृष्टि से कुछ भी नहीं। उनका अच्छापन एक दो व्यक्तियों पर निर्भर करता है। उनके हटने के बाद संस्थाएं किनके हाथ में चली जायंगी, और उनका क्या होगा, कुछ नहीं कहा जा सकता। भविष्य में दुर्भाग्यवश वह संस्था कुछ दुष्ट व्यक्तियो के हाथ में चली जाए तो उनके द्वारा संस्था के विनाश से कैसे रोका जा सकता है ? मैं ऐसे अनेकों ट्रस्टों को जनता हूं, जिन्हें आर्यसमाज के सदस्यों ने लाखों रुपये में बनाया, और अपने कुटुम्बियों या अपने इच्छानुसार लोगों को ट्रस्ट में रखा। नियम बनाते समय इस बात का लेशमात्र भी ध्यान नहीं रखा कि भविष्य में वह ट्रस्ट आर्यसमाज की सम्पत्ति-स्वरूप रह भी सकेगा कि नहीं। परिणामस्वरूप उनके बाद वह ट्रस्ट आर्यसमाज के विरोधियों के हाथ में चले गये, और उन ट्रस्टों के निर्माता आर्यसमाज का उनमें प्रवेश भी नहीं हो सकता।

> किसी समाज या संस्था का महत्त्व उसके अनुशासन में निहित है। संघटन की दृढ़ता और उपादेयता के लिए अनुशासन की मर्यादा का पालन आवश्यक होता है। आर्यसमाज का संघटन आदर्श अनुशासन का प्रतीक होना चाहिये। आज जैसे जैसे आर्यसमाज का प्रसार हो रहा है हम में अनुशासन घट रहा है। विद्वान् एवं संघटन कर्त्ता ने आर्य जनता का ध्यान सामयिक और महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर आकृष्ट किया है। आशा है अनुशासन की गम्भीरता को स्वीकार कर आर्यसमाज को सुदृढ़ बनाने का प्रयत्न किया जायगा। —सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन को मानो

अतः यदि आर्य जन आर्यसमाज को एक क्रांतिकारी संस्था एवं राष्ट्र-निर्मात्री शक्ति के रूप में देखना चाहते हैं तो उन्हें अपने स्वार्थों की तिलांजलि देकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुशासन के आगे सिर झुकाना होगा। महर्षि दयानन्द ने हिन्दू जाति के कल्याणार्थ ही अनुशासन पर आधारित आर्यसमाज की स्थापना की थी।

अतः अपने को स्वतन्त्र समझने वाले आर्य जनों, आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं से मेरी प्रार्थना है कि देश की वर्त्तमान स्थिति को देखते हुए आर्यसमाज के अनुशासन को दृढ़ बनाएं। शक्ति भारत के सांस्कृतिक ढांचे को समाप्त करने के निमित्त चलाये जा रहे देशी-विदेशी षड्यन्त्रों के कुचक्रों का समुचित उत्तर दिया जा सके। हमारी वर्त्तमान स्थिति वस्तुतः बड़ी दयनीय व चिन्तनीय है और विदेशों से प्रति वर्ष करोड़ों रुपयों की सहायता पर विदेशी मिशनरी हमारे घर को उजाड़ रहे हैं, और हम स्वार्थान्ध होकर आर्यसमाज के अनुशासन की जड़ों पर ही कुठाराघात कर रहे हैं।

आशा है आर्य जन मेरी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे और समय रहते आर्यसमाज के अनुशासन की रक्षा कर इसे प्रगतिशील बनाएंगे। अन्यथा पीछे पछताने के सिवा कुछ हाथ न लगेगा।

आर्यवीर दलों को मजबूत बनाओ

यदि विदेशी कुचक्रों से देश को बचाना चाहते हैं तो अनुशासित आर्यवीर दलों का संघटन बनाओ। आर्य वीर दल के संघटन के बिना आर्यसमाज में अनुशासन की भावना दृढ़ नहीं हो सकती।

आर्य-जगत

उत्सव समाचार

—आर्यसमाज बस्ती का अधिवेशन २० से २३ फरवरी ५९ तक सम्पन्न होगा। स्वर्ण जयन्ती आदि अनेक सम्मेलन होंगे।

—आर्यसमाज नया बांस (देहली) का उत्सव २८ फरवरी से १ मार्च तक होगा।

—गुरुकुल मझवार का उत्सव ७, ८ मार्च ५९ को होगा। एक यजुर्वेद यज्ञ ८ मार्च तक राज्यपाल वाकगिल द्वारा उद्घाटन होगा।

—बिसौली (बदायूं) आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव स्थगित हो गया है।

—आर्यसमाज बहादराबाद (सहारनपुर) १२ से १५ फरवरी ५९ तक सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज इगलास (अलीगढ़) का उत्सव १२ से १४ फरवरी ५९ को सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज धनबाद का उत्सव १० से १३ फरवरी ५९ तक सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी अभेदानन्द जी, श्री आनन्दस्वामी जी, श्री रामनारायण शास्त्री के उपदेश भाषण हुए।

—आर्यसमाज पडरौना का उत्सव २० से २३ फरवरी ५९ को सम्पन्न होगा।

—आर्यसमाज, पड़की (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव १३ से १५ दिसम्बर १९५८ ई० तक मनाया गया।

—आर्यसमाज, सुमेरपुर (अलीगढ़) का उत्सव दि० २७ से २९ दिसम्बर, १९५८ ई० तक सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज इगायन (अलीगढ़) का उत्सव २५ २६ जनवरी सन् ५९ को धूमधाम से हुआ।

—आर्यसमाज चौक (प्रयाग) का उत्सव दि० ९ से ११ फरवरी १९५९ ई० तक समारोह से सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व एक सप्ताह तक श्री आनन्द स्वामी जी महाराज की कथा भी हुई।

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर का महर्षि दयानन्द सरस्वती-सप्ताह १ से ८ मार्च, १९५९ तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रातः प्रभात फेरी, वेद कथा आदि का आयोजन ५ मार्च को नगर कीर्तन एवं ६, ७, ८ को वार्षिकोत्सव होगा।

—आर्यसमाज, बलिया का वार्षिकोत्सव दि० २२ फरवरी से २५ फरवरी, सन् १९५९ ई० तक होगा। इस अवसर पर अनेक सम्मेलन होंगे जिनमें विशेष व्याख्याताओं के भाषण होंगे।

—आर्यसमाज, शिवहरा (बिजनौर) का हीरक जयन्ती महोत्सव दि० २३ से २९ नवम्बर सन् ५९ ई० तक होगा इस पुण्य अवसर पर महायज्ञ व विशेष सम्मेलन भी समारोह से सम्पन्न होंगे।

—आर्यसमाज चोरऊ (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव १० ११ जनवरी सन् १९५९ ई० को सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज, गोरखपुर का उत्सव १४ से १९ फरवरी, १९५९ ई० तक हुआ। इस अवसर पर हीरक-जयन्ती-महोत्सव, वेद-सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलन भी समारोह से संपन्न हुए।

—सांछीगढ़ (अलीगढ़) आर्यसमाज का उत्सव १५-१६ फरवी, सन् १९५९ ई० को मनाया गया।

—घासीपुर (गुरुकुल) का वार्षिकोत्सव १८ से २० फरवरी तक अपूर्व समारोह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य वीर दल-शिविर का समारोह विशेष आकर्षक रहा।

—उन्नाव आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव ता० १२ से १४ फरवरी सन् ५९ तक समारोह से सम्पन्न हुआ।

—गुरुकुल घरौण्डा करनाल का उत्सव २१ से २३ मार्च तक होगा। १६ मार्च से वदिक उपासना सप्ताह चल रहा। है

—आर्यसमाज हांसीपुर (मिर्जापुर) का उत्सव १७-१८ जनवरी को सम्पन्न हुआ।

—छात्र सांस्कृतिक संघ, वैदिक इण्टर कालेज बड़ौत का उत्सव २४ से २६ जनवरी को सम्पन्न हुआ। अनेक सम्मेलन व आर्य नेताओं के भाषण हुए और छात्रों मं जागृति पैदा हुई।

—आर्यसमाज बहराइच का उत्सव २० से २३ फरवरी तक होगा।

—आर्यसमाज बिसवां (मेरठ) का उत्सव २३ से २५ फरवरी तक होगा।

—महाविद्यालय किरठल (मेरठ) का उत्सव १३ से १५ फरवरी तक हुआ।

शोक समाचार—

—आर्यसमाज नगीना के सदस्यों श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए कामना की।

—आर्यसमाज नगौला (अलीगढ़) के सदस्य प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता कुं० जयपालसिंह जी के निधन पर समाज की ओर से शोक प्रस्ताव पास किया गया।

प्रचार-समाचार—

—दि० ८ फरवरी ५९ को पिम्परी कालोनी (पूना) के नये आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन कार्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक विद्वानों ने पधार कर व्याख्यानों द्वारा जनता को प्रभावित किया।

—खान आलमपुर आर्यसमाज (सहारनपुर) में दि० २६ १ ५९ से प्रातः ६ बजे से ७ बजे तक सामवेद गायन द्वारा दैनिक सत्संग कार्य सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज नया बांस के तत्वावधान में २१ से २७ फरवरी तक रात्रि ९ से १० बजे, पं० रामचन्द्र जी देहलवी का प्रवचन हो रहा है। इससे पूर्व आध घण्टा अद्यानन्द जी की भजन-मण्डली द्वारा मधुर भजन होते हैं। १३ से २० फरवरी तक क्षेत्र प्रचार का कार्य सम्पन्न हुआ। तथा २१ फरवरी से १ मार्च तक आनन्दभिक्षु जी के द्वारा यज्ञ सम्पन्न होगा।

—बीना मध्य प्रदेश के पार्श्ववर्ती ग्रामों (पिपरिया, किसाय, घटवाइ, धनौधी) आदि स्थानों में पं० रामचन्द्र जी ने भ्रमण करके स्थान स्थान पर प्रचार कार्य किया। अनेक यज्ञ एवं संस्कार इस मध्य मे पण्डित जी ने सम्पन्न किए। प्रचार कार्य से प्रभावित होकर बहुतेरे हिन्दू एवं मुस्लिम बन्धुओं ने मादक द्रव्य तथा मांस न खान का व्रत लिया है। इस क्षेत्र के निवासी वैदिक धर्म प्रचारकों के स्वागतार्थ सर्वदा उद्यत रहत हैं। अतः प्रचारक इस क्षेत्र को भी अपने प्रचार का स्थान बनावें।

—फिरोजाबाद देवनगर आर्य समाज के तत्वावधान मे दि० २९-१-५९ को वेद प्रचार दिवस मनाया गया जिसमे महेशचन्द्र जी के भजन तथा ओंकारदत्त जी के भाषण ने जनता का विशेष प्रभावित किया।

अन्यान्य समाचार—

—आर्यसमाज के पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पर पाकिस्तान सरकार द्वारा लगाए गये प्रतिबन्ध से ठठिया आर्यसमाज के सदस्यों ने दुःख प्रकट किया।

—श्री कृष्णाकुमार वैद्य ठठिया (फर्रुखाबाद) की पौत्री का कर्णवेध संस्कार वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

सूचना

समस्त समाजों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती के उत्सव की तिथियां मार्च से हटाकर मई में कर दी गई हैं अतः आप लोगों से प्रार्थना है कि दयानन्द सप्ताह मनावें तथा उपदेशकों व प्रचारकों को सभा से मंगवाकर प्रचार की व्यवस्था करने की कृपा करें।

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

निर्वाचन—

—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का ६९ वां वार्षिक अधिवेशन दि० १८ व १९ जनवरी ५९ को श्री डा० राजबहादुर जी वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में हुआ।

अधिवेशन में, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, सिरोहीच की आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। गत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट के पश्चात् आगामी वर्ष के लिए श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी प्रधान तथा श्री भगवतीप्रसादजी मंत्री पद पर आसीन हुए। राजस्थान में वेद प्रचार के के निमित्त श्रीमती रूपकुंवर बाई जी धर्मपत्नी स्व० श्री मोतीसिंह जी कोठयारी, अजमेर की ओर से सभा को १५००) रुपये का दान प्राप्त हुआ।

—श्री लक्ष्मी नारायण जी जिलाधीश की माता जी के निधन पर कमालगंज (फर्रुखाबाद) आर्यसमाज के सदस्यों ने दुःख प्रकट किया।

—बुन्देलखण्ड के विकास के निमित्त झांसी जिले के ग्राम ग्राम में श्री जयराम जी, वीरेन्द्र जी, एम०एस० वरदा आर्य तथा डा० सीताराम जी मद्य निषेध-आन्दोलन का प्रचार-कार्य सम्पन्न करवा रहे हैं। इस कार्य से सम्बन्धित क्षेत्रीय जनता आशातीत प्रभावित है।

—बस्ती आर्य समाज के स्वर्ण जयन्ती उत्सव पर पधारने वाले पुस्तक विक्रेता महानुभाव आर्य नेताओं के चित्र अवश्य साथ मे लावें। उत्सव २० से २३ फरवरी तक हो रहा है।

—श्री प०रामचन्द्र जी वानप्रस्थी मैंनपुरी प्रभुदयाल वानप्रस्थी आर्यसमाज बिधूना, कृपया एटा के पते पर अपना पता लिख भेजने का कष्ट करें।

—वैदिक साधनाश्रम, यमुनानगर का साधना शिविर १ से ५ अप्रैल तक लगेगा। यज्ञ में बैठने वाले यजमान सपत्नीक यज्ञ-उपकरणों सहित इस अवसर पर पधारने का कष्ट करें। ५ अप्रैल को श्री दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के नवस्नातक उपदेशकों का उपाधि-वितरण भी होगा।

प्रचार-समाचार—

—शान्ति आश्रम लोहर दग्गा (राँची बिहार) में मकर सक्रान्ति तथा गणतन्त्र उत्सव सोत्साह सम्पन्न हुआ। स्वामी दुख दमनानन्द जी ने १-१२ से २२ जनवरी १९५९ तक अनेक ग्रामों मे वैदिक धर्म प्रचार कर जागृति की।

—दि० १७-१-५९ को आर्य समाज सिकन्दरपुर तथा दि०१८-१-५९ को आर्य समाज मई में खूब धूमधाम से प्रचार किया गया।

—श्री प० नन्दलाल जी वैदिक मिश्नरी ने जिला बहराइच के रुपई डीहा बाजार (नैपालगज रोड) में १८ से २० जनवरी तक तथा २१ से २३ जनवरी तक नैपाल राज्य के प्रसिद्ध नगर नैपालगज में वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा ईसाइयों के कुचक्रों से जनता को सचेत किया।

—गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी में समारोह सम्पन्न हुआ। कुलपति इन्द्र जी ने ध्वजोत्तोलन किया एन० सी० सी० का अभिनन्दन स्वीकार किया तथा विद्यार्थी अध्यापक, एवं अन्य कर्त्ताओं ने सामूहिक श्रमदान द्वारा एक फर्लांङ्ग मार्ग का निर्माण किया।

—अलीगढ़ जिला उप सभा की अन्तरग आर्यसमाज मेन्दू में हुई। सभा के प्रधान श्री रामप्रसाद जी व मन्त्री सुवर्णसिंह जी ने प्रचार सम्बन्धी योजनाओं पर विशेष प्रकाश डाला।

आर्यवीर दल समाचार—

—श्री ठा० अमरसिंह जी के सभापतित्व में आर्यवीर दल बड़ा बाजार (कलकत्ता) ने सोल्लास गणतन्त्र दिवस मनाया। सभा का उद्घाटन श्री ब्रह्मदेवसिंह प्रान्तीय सचालक ने किया। इस अवसर पर आर्यवीरों द्वारा प्रदर्शित व्यायाम बड़ा ही रोचक रहा।

—आर्यवीर विहाररत्न श्री हीरालाल ने अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए पर्याप्त मात्रा में धन सग्रह किया है। दानदाताओं को आर्यवीर दल गाजियाबाद की ओर से धन्यवाद प्रदान किया जाता है।

—पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सभी आर्य वीर दलो के समस्त अधिकारियो व आर्यवीरों को सूचित किया जाता है कि १८ फरवरी १९५९ को गुरुकुल (घाटीपुर मन्सूरपुर) में एक आर्यवीर सम्मेलन हो रहा है। उसमें अवश्य पधारें। मेरठ जिले के सभी आर्यवीर अवश्य अवश्य पधारने का कष्ट करें।

—आर्यसमाज बलिया के तत्वावधान में श्री प्रभुदयाल जी सचालक आर्यवीर दल पजाब की अध्यक्षता में आर्यवीर दल की एक शाखा की स्थापना हुई। इसके सरक्षक केदारप्रसाद जी एव मण्डलपति श्रीचन्द्रिकाप्रसाद जी चुने गये।

शुद्धि समाचार—

मेरठ में ३०३ ईसाइयों की शुद्धि

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्वावधान में तिथि १-२-५९ को ग्राम सावन (मेरठ) के अन्तर्गत प० हरिप्रसाद जी ने ३०३ ईसाइयों का शुद्धि सस्कार सम्पन्न कर उन्हे पुन हिंदू धर्म में दीक्षित किया। इसी प्रसग में श्री हसराज जी की अध्यक्षता मे एक सभा भी हुई जिसमे अनेक विद्वानो के भाषण भी हुए।

आर्य गजट जालन्धर का शिवरात्रि अक

आर्यसमाज के सबसे पुराने पत्र आर्य गजट (उर्दू) जालन्धर का ऋषिबोधाक शीघ्र ही बड़ी सज धज से प्रकाशित होने जा रहा है। यह अङ्क आर्यसमाज के प्रचार का अद्भुत साधन होगा। आर्य सस्थाओं से प्रार्थना है कि वह इस विशेष अङ्क की अधिक से अधिक प्रतियां मगवाकर प्रचारार्थ बांटें।

१ प्रति का मूल्य ।-) और वार्षिक चन्दा ६) है।

आर्यसमाज फीरोजाबाद

आर्यसमाज फीरोजाबाद ने जयन्ती के लिये धन सग्रह का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। २९ जनवरी को देवनगर आर्यसमाज में सभा के प्रचारक श्री महेशचन्द्र जी एव दयानन्द कालेज के प्राध्यापक श्री ... मिश्र प्रणव शास्त्री का ... हुआ, गयासरम ... ।

आ०स० का साहस पूर्ण कदम

आर्यसमाज अनावा (बकाक) ने अपने विगत अधिवेशन में आर्य सिद्धान्तों के प्रसार एव निष्ठावान बनने तथा कर्मठ आर्य बनने के लिए निम्न प्रस्ताव बहुमत से पारित किया है—यह अधिवेशन उन सभी आर्य सभासदो का हार्दिक अभिनन्दन करता है जो समाज के नियमो, मन्तव्यो, सिद्धान्तो के प्रति जागरूक एव निष्ठावान हैं और वैदिक सध्या, हवन, प्रार्थना के मन्त्रो को कण्ठाग्र कर नित्य कार्य रूप में परिणत करते हैं। हम वर्त्तमान में विधर्मियों के वाग्जाल एव उनके प्रलोभनों से जन साधारण को बचाने तथा उनके कपोल कल्पित आचारो का जहाँ तहाँ सामना दें, सम्मान पूर्वक विरोध कर समाज की मर्यादा को कायम रखसकें। (पर यह तभी हो सकेगा जब हम स्वय आर्य सिद्धान्तो मे निष्ठावान हो और उससे पूर्ण रूपेण परिचित हो)।

समाज अपने सभी आर्य सदस्यों से आशा रखता है कि वे अपने कर्मठ जीवन से जन साधारण पर प्रभाव डालें। वस्तुत परिस्थिति को दृष्टिगत रखते हुए यह अधिवेशन आर्य सभासदों से बलपूर्वक अनुरोध करता है कि यदि वे अपने को उपर्युक्त विचारो का न बना सकें तो अनुकूल साल के प्रथम सप्ताह में उनको सहायक सदस्य निर्धारित किया जायगा।

नोट—सभा निकट भविष्य में आर्य सिद्धान्तो की परीक्षाओं पर विचार कर रही है।

सभा उपदेशक श्री सुवर्णसिंह द्वारा प्रचार

महाशय सुवर्णसिंह जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा मन्त्री जिला आर्य उप सभा ने अलीगढ़ जिले की निम्न समाजों में प्रचार दौरा किया। परिणाम में अनेक नवीन समाजों की स्थापना तथा अनेक की पुन जागृति प्रदान की—

आर्यसमाज काजमबाद, सूरजपुर, पड़की, अतरौली, हरदुआगज, कलाई, अवागढ़, पर्वा, छर्रा दा०, धनसारा, जलाली, सासनी, बहाराबाद, रामपुर, लाइगढ़, औरिहा, बढ़ौन, केसवारी, इनायतपुर बजहेड़ा, अमरपुर, कौड़ा, साथा, बगौला, सुमेरपुर, धौरऊ, मई। निम्न समाजो का पुनरुद्धार किया गया—दबथला, पिलौना, अकेसर, तालिबनगर, बहलोलपुर, नवीन स्थापित समाज धौरऊ, अली गढ़ है जिसके प्रधान श्री—सुरेन्द्र नाथ जी तथा मन्त्री महीपालसिंह जी निर्वाचित हुए।

वेदों का यथार्थ स्वरूप

१७ जनवरी के अङ्क में जिस 'वेदों का यथार्थ स्वरूप' नामक पुस्तक की आलोचना प्रकाशित की गई थी उसके मिलने का पता है—कार्यालय पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर शहर अथवा प्रकाशन मन्दिर गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार।

निर्वाचन-समाचार—

—आर्य समाज गहरौली के वैद्य देवकृष्ण जी शर्मा प्रधान, सुन्दरलाल जी सक्सेना मन्त्री निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज चौक लखनऊ के श्री हवेलाराम प्रधान, श्री सुखदत्त जी वैद्य उप प्रधान श्री दीनानाथ शर्मा मन्त्री श्री कुन्दनलाल आर्य उप मन्त्री चुने गये हैं।

शोक-प्रस्ताव

वयोवृद्ध श्री ढल्लूराम जी सत्यदेव पूर्व प्रधान आर्यसमाज बुलन्दशहर का स्वर्गवास

आज ता० ८-२-५९ को आर्य समाज बुलन्दशहर का यह अधिवेशन श्री ढल्लूराम जी सत्यदेव भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज बुलन्दशहर की मृत्यु पर शोक प्रकट करता है। श्री ढल्लूराम जी का जीवन एक आदर्श जीवन था। अपने लगभग ८५ वर्ष के जीवन में उन्होंने निरन्तर ही आर्य समाज और उसके द्वारा वैदिक धर्म की सेवा की। उनका जीवन आने वाली सन्तानों के लिये एक आदर्श और अनुकरणीय जीवन है। यह अधिवेशन ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह दिवगत आत्मा को स्वर्ग में शांति और उनके दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करे। मोहनलाल आर्य मन्त्री

(पृष्ठ ८ का शेष)

आर्थिक सहायता

इन सब योजनाओं के लिए धन सग्रह का कार्य चालू है। अनेक समाजों ने धन सग्रह किया भी है। उनसे अनुरोध है कि वे जयन्ती समारोह के मन्त्री को इस बात की सूचना देने की कृपा करे कि उनके यहाँ अब तक कितना धन एकत्रित हुआ है। उपरोक्त सभी कार्यों की पूर्ति के लिये काफी धन की आवश्यकता है। अब काम में गति लाने की आवश्यकता है। अब समय अधिक नहीं। ऐसे महत्व पूर्ण कार्य सभी आर्य भाई बहिनों की सहायता से ही पूर्ण हो सकते हैं।

धन सग्रह के सम्बन्ध में यह बात भी उल्लेखनीय है कि सभा ने अनेक समाजों के कार्यकर्त्ताओं के पास ॥), १), ५) व १०) के नोट भेजे हैं। उनके द्वारा उपरोक्त कार्यों की पूर्ति के लिये धन सग्रह करना है। अत अब तक जिन समाजो ने इनके द्वारा धन एकत्रित किया है, वे अपना विवरण आर्यमित्र—सम्पादक को भी भेजने का कष्ट करे।

—आर्यसमाज के पवित्र ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर पाकिस्तान सरकार द्वारा लगाये गये नियन्त्रण के विरुद्ध आर्यसमाज सौरिख ने विरोध प्रस्ताव पास किया।

—श्री स्वामी शिवानन्द जी तीर्थ आचार्य शान्ति आश्रम लोहरदगा रांची दि० १९५८ से हृदयशूल से पीड़ित हैं। स्वामी जी हिन्दी सत्याग्रह के निमित्त बिहार से जत्था लेकर गये थे। कारावास के कुप्रबन्धो से ही स्वामी जी को इस रोग ने अपना आवास बना लिया है। स्वामी जी के श्रद्धालु भक्त इस ओर विशेष ध्यान देगें, ऐसी आशा की जाती है।

—प० ओघले जी का सत्कार बम्बई में डा० डि० एम० कैकिणी के सभापतित्व मे सम्पन्न हुआ। अनेक व्यक्तियों ने पुष्पहारों से पण्डित जी का सम्मान किया। तथा इसी अवसर पर पण्डित जी को एक मान पत्र भी भेट किया गया। अन्त में पण्डित जी ने सभी व्यक्तियों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित किया।

—आर्य कुमार सभा, रुड़की के के तत्वावधान म श्री दयानद नि शुल्क रात्रि विद्यालय का उद्घाटन दि० ५ १२ ५८ को डी० ए० वी० इण्टर कालिज के प्रिंसिपल श्री ईश्वर दयालु जी ने बाबू व्रजभूषण शरण की अध्यक्षता मे सम्पन्न किया। विद्यालय में कक्षा ६ से १० तक के छात्रो की नि शुल्क शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है। छात्रों को सभ्य एव सुशील बनाने के निमित्त धर्म शिक्षा का भी यथोचित प्रबन्ध किया गया है।

—आर्यसमाज नगोला दबथला [अलीगढ] के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्री रणवन्तसिंहजी वानप्रस्थी के आकस्मिक निधन से समाज को अत्यधिक क्षति हुई। समाज की ओर से शोक-प्रस्ताव पास किया गया। ऐसे सुयोग्य व्यक्ति का निधन वज्राघातवत् ही है। प्रभु मृतात्मा को सद्गति प्रदान करे।

—आर्यसमाज सौरिख के सदस्यो ने समाज के सम्मानित सदस्य श्री शङ्करनाथ चौरसिया के आकास्मक निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
माघ ३ फाल्गुन शक १८८०
(१२ फरवरी १९५९)

आर्य्य मित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य २११३ तार 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

[पृष्ठ २ का शेष]

ली गई। कूदने की बारी अब आई तो 'बिस्मिल' के हृदय में कृतघ्नता' की विचारधारा ने संकेत किया कि जिस जेलर ने पुत्रवत व्यवहार किया है, जिसकी पेन्शन के एक दो वर्ष रह गये हैं वह जान से मारा जायगा। "क्या उन्हींके साथ विश्वासघात करके निकल भागूं? सोचा जीवन भर किसी के साथ विश्वासघात नहीं किया, अब भी विश्वासघात न करूंगा।'

हम उनकी 'आत्म कथा के पृष्ठों में उनके जीवन में यत्र तत्र सर्वत्र ही एक आदर्श आर्य जीवन की झाँकी देखते हैं। वे सच्चे आदर्श देशभक्त थे। उनके जीवन का एक निश्चित ध्येय था। अपूर्व दृढ़ता, सत्यता, साहस, आत्मबल, निर्भीकता तथा विश्वास उनके रोम रोम में रमे हुए थे। जादू वह जो सर पर चढ़कर बोले' उनके जेल जीवन का ज्वलन्त उदाहरण है। जेल का प्रत्येक अधिकारी उनको देवता के सदृश पूजा करता था। वह भी उनके प्रति असीम श्रद्धा रखते और विश्वासघात न करने के कारण अपने प्राणों का भी चिन्ता न करते हुए प्राणों को न्यौछावर करने की ठान ली।

वह वैदिक धर्म का सच्चा भक्त ऋषि दयानन्द का पावन पुजारी ऐसी भीषण परिस्थितियों में भी अपने नैत्यिक कर्मकाण्ड को भूला नहीं, जबकि आज हम दिनचर्या को विस्मृत कर बैठते हैं। बिस्मिल लखनऊ जेल की दिनचर्या लिखते हुए कहते हैं कि—'मैं सदा नियम जाड़े, गर्मी तथा बरसात में प्रातःकाल तीन बजे से उठकर सन्ध्यादि से निवृत्त हो नित्य हवन भी करता था। प्रत्येक पहरे का सिपाही देवता के समान मेरा पूजन करता था। यदि किसी के बाल बच्चे [illegible] होता था, तो वह हवन की भभूत ले जाता था।'

इस प्रकार 'बिस्मिल' का आत्म चरित एक आदर्श वैदिक धर्मी का जीवन है। जिसकी उपेक्षा करना हमारी भारी कृतघ्नता है उनका जीवन महर्षि दयानन्द के चरित्र का यथाशक्ति अनुकरण है। वैसा ही दृढ़ ब्रह्मचर्य्य जीवन, वैसी ही कार्य क्षमता, वैसा ही आत्म विश्वास एवं अपने शत्रु के साथ दया का व्यवहार उनके उदात्त जीवन के उदाहरण हैं।

उनके आत्म चरित्र को पढ़कर आश्चर्य होगा कि जिस व्यक्ति को दो दिन बाद फाँसी का आलिंगन करना है वह किस दृढ़ता के साथ ता० १६ दिसम्बर '२७ को अपना चरित्र लिखने में दत्तचित्त है। मस्तिष्क का सन्तुलन ज्यों का त्यों बना हुआ है वे लिखते हैं कि—आज १६ दिसम्बर १९२७ को निम्नलिखित पंक्तियों का उल्लेख कर रहा हूं, जबकि १९ दिसम्बर १९२७ ई० सोमवार [पौष कृष्णा ११, १९८४ वि०] को ६।। बजे प्रातःकाल इस शरीर को फाँसी पर लटका देने की तिथि निश्चित हो चुकी है। अतएव नियत समय पर इहलीला संवरण करनी होगी ही।'

और १९ दिसम्बर को वन्देमातरम् और भारतमाता की जय कहते हुए वे फाँसी के तख्ते के निकट गए। चलते समय यह कह रहे थे—

मालिक तेरी रजा रहे,
और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं,
न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान,
रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या,
तेरी ही जुस्तजू रहे।

तत्पश्चात् उन्होंने कहा —

'I wish the downfall of the British Empire'

[मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं] फिर वह तख्ते पर चढ़े और 'ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि ।' मन्त्र का जाप करते हुए फन्दे से झूल गए।

यह शानदार मौत जो 'बिस्मिल' को प्राप्त हुई शायद लाखों में दो चार को ही मिलती है। 'बिस्मिल' का जन्म सन् १८९७ ई० में हुआ था और सन् १९२७ में वह शहीद हुए। कुल तीस वर्ष की उम्र में ११ वर्ष क्रान्तिकारी जीवन में व्यतीत हुए। इतनी अल्पायु के विश्व में थोड़े ही व्यक्ति होंगे, जिन्होंने अपने जीवन से एक विशाल साम्राज्य को कम्पित करते हुए अमरता की गोद में विश्राम लिया हो। यह उस अमर शहीद ऋषि की ही देन है जिसने अपने बलिदान से ही राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक क्रांति को जन्म दिया। इनको 'बिस्मिल' का बलिदान स्वामी दयानन्द की अन्तिम झाँकी का स्मरण कराता है। प्रभु भक्त ऋषि भी प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण' कहते हुए शहीद हुए। और 'बिस्मिल' भी अपने मुंह से यह कहते हुए कि—मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।' शहीद हुए। दुःख है कि हम ऐसे ऋषि के अमर भक्त को भूल बैठे कि आज तक उसके जीवन की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा, जिसके जीवन का एक एक क्षण महर्षि के पद चिह्नों का ज्यों का त्यों अनुकरण है। एक सच्चे आदर्श आर्य्य का चरित्र ही 'बिस्मिल' का चरित्र है। प्रत्येक आर्य्य को उनके चरित्र की गौरव गीता का सदैव चिन्तन करते रहना चाहिए। वह अपनी मृत्यु से दो दिन पूर्व लिखते हैं कि—"यह सब शक्तिमान् प्रभु की लीला है। सब काम उसकी इच्छानुसार ही होते हैं। यह परम पिता परमात्मा के नियमों का परिणाम है कि किस प्रकार किसको शरीर त्यागना होता है। मृत्यु के सकल उपक्रम निमित्तमात्र हैं। जब तक कर्म क्षय नहीं होता, आत्मा को जन्म मरण के बन्धन में पड़ना ही होता है।" आगे चलकर वह एक ईश्वर का परम उपासक जोश कहता है कि—"यह मेरा [illegible] निश्चय है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर [illegible]
[illegible]

सम्बन्धी या इष्टमित्र के गृह में जन्म ग्रहण करूंगा, क्योंकि मेरा जन्म जन्मान्तर यही उद्देश्य रहेगा कि मनुष्य मात्र को सभी प्राकृतिक पदार्थों पर समानाधिकार प्राप्त हो। कोई किसी पर हुकूमत न करे" आदि। अन्त में अपनी इच्छा प्रकट करते हुए वे लिखते हैं कि—"परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना होगी कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे ताकि मैं उसकी पवित्र वाणी—'वेद वाणी' का अनुपम घोष मनुष्य मात्र के कानों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँ।"

'बिस्मिल' के इन शब्दों पर किस आर्य्य पुरुष को गर्व न होगा जिसने अपने जीवन के प्रत्येक पल को वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करने में ही बिताया हो? स्वामी दयानन्द के इस अनन्य भक्त को जिसको आर्य्यसमाजी होने के कारण दयानन्द की भाँति अपने पिता की झिड़कियाँ सहनी पड़ीं, घर से निकलना पड़ा। अनेक कष्टों के झेलने के अनन्तर भी जिसने अपने पवित्र वैदिक धर्म की मर्यादा का पालन करने में ही सर्वस्व न्यौछावर किया हो, उसे भूल जाना हमारा कहाँ तक कर्त्तव्य होगा, इसे आप जनता ही जाने। हमको पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' के जीवन एवं बलिदान-दिवस वैसे ही मनाने चाहिए जैसे अन्य शहीदों के, तभी हम अपने इन शहीदों का सच्चा श्राद्ध कर कर्त्तव्य का पालन कर सकेंगे।

अन्त में हम श्रद्धेय पं० बनारसी दास जी चतुर्वेदी एम० पी० को अनेक बार साधुवाद करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करते हैं, जिन्होंने 'बिस्मिल' की हिन्दी ही की नहीं वरन् विश्व की सर्वश्रेष्ठ आत्मकथा को अपनी वृद्धावस्था में भी अधिक परिश्रम करके प्रकाशित कर हम जैसे अकर्मण्य आर्य-समाजियों को अमर शहीद 'बिस्मिल' के प्रति कर्त्तव्य पालन करने की प्रेरणा दी।

"मैंने जालिम से जो पूछा,
मुझे क्यों दार पर खींचा।
तो बोला क्यों मेरा [illegible],
तूने ईमान [illegible]।"

[illegible] आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग, [illegible]
[illegible]

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

ओ३म्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)
एक प्रति का २० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र
लखनऊ, रविवार, फाल्गुन १० शक १८८०, फाल्गुन कृष्ण ७, वि० २०१५ १ मार्च, १९५९ ई०

विदेश में
१५शिलिंग

देश की मांग

मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।
राष्ट्र के उत्थान को बलिदान की शुचि भावना ॥

वे कदम जो लक्ष्य को पाये बिना रुकते नहीं,
वे पुरुष जो आपदाओं में कभी झुकते नहीं ।
वे तपस्वी जो न करते सौख्य की आराधना,
मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

वे हृदय जग रही जिनमें अरुण की रोचना,
भागता जिनकी प्रभा से शर्वरी का तम घना ।
वे शलभ जिनके हृदय म हो जलन की कामना,
मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

दीप, वे जो स्नेह बिन जलते रहें तूफान में,
प्राण वे, जो सुख समझते त्याग में बलिदान में ।
वे सुभट जिनको न आता हो समर से भागना,
मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

चाहिए शकर, गरल पी जो सुधा रस पान दे,
वह दधीचि स्वदेह भी जा राष्ट्र के हित दान दे ।
वे पवन सुत सिन्धु को जो जानते हों लांघना,
मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

खींच लेते कर्मयोगी भाग्य की निज मेखला
स्वावलम्बी जानते हैं कब खुशामद की कला ।
वे प्रबल बन उलझनों का नित्य करते सामना,
मागता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

जो तपस्या से धरा की ओर गंगा मोड़ दे,
नव हिमालय हो खड़ा यदि कंकड़ों को जोड़ दे ।
हो जिन्हें आता जलधि पर पुल शिला का बांधना,
मांगता है देश नव निर्माण की शुभ साधना ।

—हलनेन्द्र सिंह बिष्ट

वर्ष ६१

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अङ्क ९

मेरे सम्बन्ध में कुछ लेख

[श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०]

[प्रस्तुत लेख मे आदरणीय उपाध्याय जी ने दो विषयो के सम्बन्ध में अपने निजी विचार व्यक्त किये हैं। कर्मफल के सम्बन्ध में उनके विचार बहुत स्पष्ट हो चुके हैं, आगे वह इस विषय का पिष्टपेषण नहीं करना चाहते।

दूसरा विषय शुद्धि सम्बन्धी नीति का है और उनके विचारों की समीक्षा किये जाने पर बड़ी निराशावादी भाषा में आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन की असफलता पर आसू बहाये हैं और उन्होंने चेतावनी दी है कि आज हम शुद्धि का जो अर्थ लगा रहे उसके अनुसार हम ऋषि दयानन्द के स्वप्न पूरे न कर अपने को ही समाप्त करने जा रहे हैं। आर्यसमाज का शुद्धि आन्दोलन मानव मात्र की शुद्धि का आन्दोलन होना चाहिये, केवल साम्प्रदायिक आधार पर शुद्धि का प्रयत्न आर्यसमाज को प्रगति न दे सकेगा। आशा है गतांक के शुद्धि सम्बन्धी लेख को दृष्टि में रखते हुए इस विषय पर गम्भीर विचार किया जायगा। साथ ही हम उपाध्याय जी से भी निराश न होने का आग्रह करेंगे। वे अपने सुझाव, विचार परामर्श देकर ही आर्यसमाज की उन्नति गति प्रगति मे सहायक हो सकते है। आज सम्भव है कि उनकी बात पर गौर न हुआ या हो रहा हो पर भावी पीढ़ी तक आपका सन्देश सही शब्दो मे पहुचना ही चाहिए।

—सम्पादक

आर्यमित्र के १५ फरवरी १९५९ के अङ्क मे मेरे सम्बन्ध मे दो लेख प्रकाशित हुए है।

(१) पहला श्री बा० कालीचरण जी का कर्म विषयक है। उसके ऊपर मैं पर्य्याप्त लिख चुका हू, युक्तिया भी और प्रमाण भी। अब केवल बाल की खाल शेष है। उसके लिये कोई सीमा नहीं है। अत पाठकगण अपने लिये जो चाहे निर्णय करे। केवल दो बाते कहना अभीष्ट हैं, प्रथम तो यह कि जो युक्ति या प्रमाण दोनो पक्षो के अनुकूल हो उनका प्रयोग करना भ्रान्ति उत्पन्न करता है। प्रमाण ठीक वही है जो एक पक्ष की पुष्टि करे और दूसरे पक्ष का खण्डन भी करता हो। जिस प्रमाण में यह दो विशेषताये न हों वह प्रमाण माननीय नहीं होना चाहिये। दूसरी बात यह है कि कुछ विद्वानो ने आलोचना करते हुए 'कर्म' शब्द के प्रयोग मे गोलमाल कर दी है। भिन्न भिन्न दर्शनों के पारिभाषिक शब्द भिन्न भिन्न होते हैं। वैशेषिक की कर्म की परिभाषा भिन्न है। मीमांसा की भिन्न और व्याकरण की भिन्न। यदि हम इन सब को मिला देगे तो गड़बड़ हो जायगी। मेरी ये पंक्तिया अन्तिम वक्तव्य समझना चाहिये।



(२) दूसरा लेख है श्री सुरेन्द्र शर्मा जी गौड़ का शुद्धि विषयक। यह मेरे किसी बहुत पुराने लेख के सम्बन्ध मे है, जिसे मैं सर्वथा भूल हो गया हू। वह सिद्धान्त सम्बन्धी नहीं अपितु केवल नीति का प्रश्न है। शुद्धि विषयक सिद्धान्त तो यही है कि वैदिक प्रचार मनुष्य मात्र मे होना चाहिए और वैदिक धर्म ग्रहण करने का अधिकार मनुष्य मात्र का होना चाहिए। परन्तु प्रश्न केवल यह है कि जो मनुष्य वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिये उद्यत है उसके साथ आर्य्य समाज क्या व्यवहार करे? और किस किस जाति, देश या धर्म वाले के साथ क्या क्या प्रतिबन्ध लगाये जाय जिससे मुख्य सिद्धान्त की पूर्ति मे बाधा न पड़े। मैं इस प्रश्न को इस समय उठाना नहीं चाहता। क्योकि शुद्धि का मुख्य काम तो लगभग बन्द सा ही है। इस समय शुद्धि का केवल इतना अर्थ समझा जाता है कि यदि कोई हिन्दू ईसाई या मुसलमान हो जाय तो उसे समझा बुझाकर फिर हिन्दू (पौराणिक) बना लिया जाय और उसे अपनी पुरानी जाति मे खपाकर उसका हुक्का पानी (अर्थात् जाति के अधिकार) बहाल कर दिया जाय। यदि मुझमे प्रचार की क्षमता होती और असली मुसलमान या ईसाई वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिये तैयार होते तो मैं यह बहस उठाता कि उनके साथ क्या व्यवहार हो और उन पर क्या प्रतिबन्ध लगाये जाय। जब कोई आता ही नहीं तो 'सूत न कपास कोरिया से लट्ठम लट्ठा' क्यो की जाय? नीति के सुझावो की परीक्षा तो तभी हो सकता है जब जनता चाहे। मेरा मत ले का सुझ व उचित हो या अनुचित, जब तक उसे अधिकांश लोग स्वीकृत न करे वह अव्यवहार्य ही रहेगा। मेरे जिस लेख का विद्वान् लेखक ने हवाला दिया है वह कई वर्ष हुए, दिल्ली मे लिखा गया था। और स्वामी स्वतन्त्रानन्द, महाशय कृष्ण, लाला नारायणदत्त ठेकेदार सब मुझ से सहमत थे। मुख्य लेख 'प्रताप' मे छपा था। प्रतिक्रियावादियों की ओर से इसका विरोध भी हुआ था। सुझाव वहीं समाप्त हो गया, क्योकि शुद्धि की न वह भावना रही न रूप। अब तो आर्यसमाज की मनोवृत्ति यह है कि पौराणिक और वैदिक धर्म एक ही है। पचास वर्ष पहले जो बूढे लोग समाज मे थे उनकी सन्तान आज आर्य्य नहीं, पौराणिक हैं। हमारी सन्तान भी जब आगे चलकर समाज की उपेक्षा करेगी तो पौराणिक ही रह जायगी। इस मनोवृत्ति मे शुद्धि की कोई योजना सम्भव नहीं है। और पुरानी बहस उठाना भी निष्प्रयोजन सा ही है। विश्वधर्म की जो पवित्र गंगा ऋषि दयानन्द के मस्तिष्क रूपी गंगोत्तरी से निकली थी उसने अनेक संस्थाओं की धाराओ मे विभक्त होकर जहां मैदान के खेतो का सिंचन किया वहां अनेक प्रकार के भ्रान्तिपूर्ण मलों को ग्रहण करके गदली भी हो गई और अब सुन्दरबन के डेल्टा मे पहुँचकर पौराणिक खारी समुद्र में गिरने की तैयारी कर रही है। सनातन धर्मियों का यह पुराना दावा है कि साकारवादी, निराकारवादी, वैदिक, अवैदिक, नास्तिक, आस्तिक, सुधारवादी, असुधारवादी अन्ततोगत्वा यह सभी सम्प्रदाय सनातन समुद्र में विलीन हो जाते है और ...

(शेष पृष्ठ १६ पर)

टिहरी गढ़वाल में—

सवर्णों द्वारा हरिजनों का डोला ३ सप्ताह तक रोका गया

डोला-पालकी समस्या ने पुनः सिर उठाया

सरकारी कर्मचारी भी हरिजनों को अधिकार दिलाने में सफल नहीं हुए

आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने स्थिति को हाथ में लिया

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपमन्त्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०सी० का कौन्सिल में प्रश्न पेश करने का नोटिस

भारतीय संविधान में यद्यपि प्रत्येक धर्म व जाति को अपनी समृद्धि के लिए हर प्रकार की सुविधा मिली हुई है किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के ग्यारह वर्ष बाद भी टिहरी गढ़वाल के हरिजनो को कितनी बुरी तरह से दबाया जा रहा है, इसका ज्वलन्त प्रमाण नीचे की पंक्तियों में दिया जा रहा है।

ग्राम ढुंग, पट्टी ग्यारहगांव हिन्दाव से एक बरात १३ जनवरी को ग्राम पगरियाणा के लिए रवाना हुई। संविधान की सुविधा को देखते हुए हरिजनो ने बारात का आयोजन डोला पालकी सहित किया किन्तु बारात की रवानगी के समय ही गांव के सवर्णों ने लाठी तथा हथियार लेकर उन्हे घेर लिया। हरिजनों ने इसकी सूचना खण्डमण्डलाधीश, कीर्तिनगर को दी। उन्होने पुलिस के कुछ जवानों को भेजकर बारात को सुरक्षापूर्वक पहुचाने का आदेश दिया किन्तु वे भी असफल ही रहे। अन्त मे हरिजनो को फिर खण्डमण्डलाधीश ने पुलिस के १५ सिपाहियो के सहित तहसीलदार, देवप्रयाग को घटना स्थल पर भेजा। वहा की स्थिति को देखते हुए तहसीलदार देवप्रयाग भी सवर्णों के साथ ही मिल गए व हरिजनों की बारात को गांव के सवर्णों के कहने पर असली मार्ग से न ले जाकर एक जंगली व विकट मार्ग से होकर ले जाया गया, जहा से कि हरिजनो को अपने लिए और भी अधिक खतरा था।

तहसीलदार साहब ने हरिजनो से कुछ कागजो पर जबर्दस्ती इस आशय के हस्ताक्षर भी कराये ताकि वे भविष्य मे इस मामले को न उठा सकें। इस प्रकार २१ दिन के पश्चात् बारात अपने घर पहुची। जब बारात की रवानगी हुई तो उस गांव के लोगो ने निकट के गांव वालों को सीटी बजाकर बुलाया। वधू के परिवारवालों से भविष्य के लिए इस प्रकार से डोला पालकी न ले जाने की प्रतिज्ञा करवाई गई तथा उन्हे यह भी आदेश दिया गया कि वे भविष्य मे असली सड़क से न जाने पावे, बल्कि उसी जंगली विकट मार्ग से आया जाया करे। कुछ लोगो ने तो मार्ग में वधू को डोले पर (जिस पर वधू बैठी रहती है) प्रहार किया व उसका कपड़ा फाड़कर उसे भी तोड़ डाला।

अनेक बाराती भय के कारण पहले ही भाग खड़े हुए, चूंकि हथियार व डन्डो को देखकर उन्हे अपनी जान का खतरा भी था। इस प्रकार से अनेक मुसीबतों को सहन करते हुए चन्द बाराती वर वधू को लेकर अपने घर पहुँचे। ऐसी स्थिति को देखते हुए ऐसा जान पड़ता है कि उन्हे भविष्य मे भी काफी खतरा है।

वेदोपदेश

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि । तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ ऋ० १।१।२।१

हे "अङ्ग" मित्र ! जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको "भद्रम्" व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख अवश्य देते हो, हे "अंगिर." प्राणप्रिय ! यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना, यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है । आप मुझको ऐहिक और पारमार्थिक, इन दोनो सुखो का दान शीघ्र दीजिये जिससे सब दु ख दूर हो । हमको सदा सुख ही रहे । (आर्याभिविनय)

आर्यमित्र

लखनऊ—१ मार्च १९५९ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५८

दयानन्द-सप्ताह

चिन्तन का सुअवसर

भारत ही नहीं, विश्व के इतिहास में ऋषि दयानन्द की बोधरात्रि अपना महत्त्वपूर्ण उच्चतम स्थान रखती है । जहां उन्होंने सोये भारत को जगाया और झकझोर कर खड़ा किया वहीं उन्होने अपने सैनिकों को एक जाति, समुदाय, वर्ग, राष्ट्र की सीमाओं तक सीमित न रखते हुए सन्देश और आदेश दिया कि तुम्हारा उद्देश्य ससार का उपकार करना है । इस विश्व बन्धुत्व के विशाल दृष्टिकोण को चाहे उस समय लोग ठीक ठीक न समझ सके हों पर आज जब विश्व दो दो विनाशकारी युद्धों का ताण्डव नृत्य देख चुका है और उसे शान्ति की खोज है तब यह प्रश्न व्योम मे व्याप्त है कि सच्चा शान्ति का सन्देश कहां से और किसके द्वारा मिल सकता है । उसका एक ही उत्तर हो सकता है शान्ति का सन्देश आर्य समाज के पास है और उसका प्रसार दयानन्द के वीर सैनिक कर सकते हैं !

इस बार ऋषिबोध रात्रि के सुअवसर पर हम अपने अन्तर में झांक कर देखें कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी और वीर सैनिक होने का दम्भ करने वाले हम आर्यों में आर्यत्व कहाँ तक है और यदि कमियाँ हैं तो क्या और क्यों तथा उनको दूर करने का क्या उपाय हो सकता है । हमारी पहली दूसरी पीढ़ियाँ संख्या में कम होती हुई भी दृढ़ और प्रभावशाली आर्य थीं, पर हम अधिक होकर भी संसार की कोई ठोस सेवा नहीं कर पा रहे हैं । इस विषम परिस्थिति का उत्तर हमारे स्वय के पास है और आचार्यवर की ज्ञान रात्रि के पुण्य अवसर पर हमे अपने आसुरी भावनाओ से सश्लिष्ट हृदयो के अन्धकार को आर्यत्व की उदात्त भावनाओ के प्रकाश से शुद्ध विशुद्ध, निर्मल विमल और ज्योतित बनाना होगा । हमारे अन्त करणों का प्रकाश ही राष्ट्र और विश्व की समस्याओं के सघर्ष मे हमे नेतृत्व प्रदान करने मे समर्थ होगा । इस महान् दायित्व को पूर्ति अतीत के सचित पुण्यो और सेवाओं से नहीं हो सकती । हमे आज भी कमर कसकर और हृदय शुद्ध करके सघर्ष क्षेत्र मे बढ़ना होगा । तभी विश्व व भारत मे सव्याप्त भौतिकवादी तमिस्रा, विश्व की युद्ध बिभीषिका, मानवता के सहार की तैयारियाँ तथा अनैतिक वातावरण आदि की समाप्ति हो सकेगी ।

ऋषि दयानन्द की बोधरात्रि के उपलक्ष्य मे मार्च का प्रथम सप्ताह चिन्तन का सप्ताह बनकर आया है और आज हमे विश्व व्यापी अज्ञान, अन्याय, अभाव के विरुद्ध दयानन्द के वीर सैनिक बन मानवता की सेवा का व्रत धारण करना होगा । यही इस सप्ताह का पुण्यावसर का प्रत्येक ऋषि भक्त और आर्य के लिये यही सन्देश है । ★

परिवार-नियोजन और भारत

एक भाई ने पूछा है कि परिवार नियोजन के सरकारी प्रचार और साधनों से आर्यसमाज कहां तक सहमत है ।

भारत की बढ़ती हुई आबादी को देख हमारे राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्री चिन्तित है । चिन्ता स्वाभाविक है क्योंकि बढ़ती हुई आबादी को भोजन देने का दायित्व उन्हें पूर्ण करना पड़ता है ।

इस दायित्व से बचने के लिये हमारी सरकार ने देश व्यापी परिवार-नियोजन आन्दोलन आरम्भ किया है । आर्यसमाज आन्दोलन के उद्देश्य से सहमत है और इस आन्दोलन की सफलता मे पूर्ण सहयोग देने के लिये तैयार है । यदि कहा जाय कि आर्य समाज के कार्यक्रम मे प्रारम्भ से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम सम्मिलित रहा है तो कोई अत्युक्ति न होगी ।

परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आर्यसमाज और सरकार के साधन एक से हैं ? इसके उत्तर मे हमे स्पष्ट शब्दों मे लिखना पड़ता है कि आर्यसमाज सरकार के साधनो को स्वीकार नहीं करता अपितु विरोधी है । और इस प्रकार राष्ट्र के लिये दो भिन्न साधन प्रस्तुत हैं । आर्यसमाज के साधन नैतिकता और सयम हैं और सरकार कृत्रिम निरोधक भौतिक साधनो का प्रचार कर रही है ।

आर्यसमाज के मार्ग को आज के विलासिता के युग मे प्रतिक्रिया वादी रूढ़िवादी दृष्टिकोण से पुकारा जा सकता है पर हमारा विश्वास है कि सयम और नैतिक भावना विकास का मार्ग ही अन्ततोगत्वा मानवता का मार्ग होगा ।

ब्रह्मचर्य का प्रचार और बाल विवाहों का विरोध आर्यसमाज के रचनात्मक कार्य रहे हैं । सयम की उच्च भावना का विकास करने के लिये ही गृहस्थ मे भी ब्रह्मचर्य की उच्च भावनाओं को विकसित करने का आर्यसमाज ने सदैव प्रचार किया है । आर्यसमाज ऐसा इसलिये करता है कि कहीं चारित्रिक मर्यादाओं का बाँध टूट गया तो नैतिक दृष्टि से अभी जो कुछ बचा है वह भी समाप्त हो जायगा । भौतिकवादी विलासिता हमे कहां ले जाकर छोड़ेगी इसका एक छोटे से उदाहरण से अनुमान लगाइये—

जापान मे आज से ६ साल पहले भ्रूण हत्या कानूनन निषिद्ध थी पर जबसे इसे छूट दी गई बढ़ते बढ़ते अब वह लाखो पर पहुँच गयी है । इसी प्रकार इन कृत्रिम निरोधक साधनों का ज्यों ज्यों प्रचार बढ़ेगा, देश के युवक समाज में रोमांस, और विषय भोग बढ़ता जायगा । परिणामत. देश का नैतिक पतन होकर रहेगा । ऋषि दयानन्द ने भारत की पराधीनता पर आसू बहाते हुए ब्रह्मचर्य प्रसार का बारम्बार उल्लेख किया है । हमारी सरकार उस महापुरुष की वाणी सुनने में हिचकिचाहट अनुभव करती है, तो विश्वबन्धु गाधी जी के विचारो का पालन करे । यह नैतिकता का तकाजा है क्योंकि आज का राज्य गांधी जी के पदचिह्नों का राज्य है । गाधी ने कहा था—

'कृत्रिम साधन तो वीर्य के नाश को प्रोत्साहन देते हैं । कोई किसान अगर अपने पास का बढ़िया से बढ़िया बीज पथरीली चट्टानों पर बोये तो उसे क्या कहा जायगा ? अवश्य ही यह पुरुष की मूर्खता है कि वह अपनी सबसे कीमती वस्तु को व्यर्थ जाने दे । इसी तरह वह स्त्री भी अक्षम्य मूर्खता करती है जो अपने जीवोत्पादक क्षेत्र मे नष्ट हो जाने के उद्देश्य से ही वीर्य को ग्रहण करे । काम की प्रेरणा एक सुन्दर वस्तु है । उसमे लज्जित होने की कोई बात नहीं पर-तु वह सन्तानोत्पत्ति के लिये ही बनाई गयी है । उसका और कोई उपयोग ईश्वर और मानवता के प्रति अपराध है ।"

आर्यसमाज इन भावों का समर्थक, पोषक और प्रचारक है और हम मानते हैं कि ये और इस प्रकार के विचार समस्या के स्थायी हल हैं । कृत्रिम साधन तात्कालिक रूप से हैं और पतन का मार्ग साफ करते हैं । ★

दिल्ली में ऋषि-मेला

२ मार्च को राष्ट्रपति के सम्मान में पार्टी दी जायगी ।

गढ़वाल में पुनः डोला-पालकी-समस्या

आर्यसमाज मानवमात्र के समान अधिकार का हामी रहा है और यही कारण है कि अपने आरम्भ काल से हरिजन और नारी जाति के होने वाले अन्याय के विरुद्ध उसकी आवाज सदैव प्रबल रही है । भारत के सविधान मे अस्पृश्यता समाप्ति की घोषणा की गई है पर सविधान की शक्ति होते हुए भी सरकार उस सन्देश को जन जन तक पहुँचाने और मनवाने में असमर्थ रही है ।

गढ़वाल मे सवर्ण असवर्ण लोगो के सामाजिक जीवन में विषमता के विरुद्ध आर्यसमाज ने आन्दोलन किया था और ब्रिटिश टाइम मे असवर्णों को समान अधिकार दिलवाने मे सफलता प्राप्त की थी पर प्रस्तुत अङ्क मे गढ़वाल मे डोला पालकी की जिस घटना का विवरण प्रस्तुत है उसके आधार पर हम यह कहने के लिये बाध्य हैं कि तीन सप्ताह तक बारात को रोका गया और पुलिस के सिपाही और अधिकारी निष्क्रिय बने रहे । शासन की असफलता की इससे अधिक और क्या विडम्बना हो सकती है ?

[शेष अगले पृष्ठ पर]

साहित्य-समीक्षण

वैदिक स्वर-मीमांसा

लेखक श्री प० युधिष्ठिर मीमांसक और प्रकाशक श्री हंसराज कपूर मन्त्री श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, गुरु बाजार, अमृतसर। पृष्ठ संख्या १६७ सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३)।

यह ग्रन्थ विद्वान लेखक के वर्षों के स्वर विषयक अनुशीलन का फल है। इसमें दस अध्याय हैं, जिनमें स्वर शब्द के अर्थ और पर्याय, स्वरों के भेद, उनका उच्चारण प्रकार, वेद का अर्थ, वैदिक वाङ्मय के विविध स्वराङ्कन प्रकार आदि बातों पर बड़े विशद ढंग से प्रकाश डाला गया है। स्वर की उपयोगिता का विवेचन करते हुए कहा गया है—'स्वर ज्ञान के बिना न केवल मन्त्र का वास्तविक अभिप्राय ही अज्ञात रहता है, अपितु स्वर शास्त्र की उपेक्षा से अनेक स्थानों में अर्थ अनर्थ भी हो जाता है। इसलिए वेद के सूक्ष्मतम अभिप्राय तक पहुंचने के लिए उदात्त आदि स्वरों का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।' स्वरित के विविध भेदों पर भी ग्रन्थकार ने योग्यता पूर्वक विचार किया है। चतुर्थ अध्याय में 'प्राचीन भाषाओं में स्वरों का सद्भाव और उनका लोप' का वर्णन तो वेद के विद्यार्थियों, अनुशीलन कर्ताओं और भाषा शास्त्रियों के लिए विचार पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है। पदार्थ में उदात्त आदि स्वरों की उपयोगिता बताकर सप्त सिंधु' की चर्चा में कहा गया है—'पश्चात्य लेखक और उनके अनुयायी भारतीयों ने वेद सम्बन्धी भारतीय परम्पराओं की सर्वदा अवहेलना करके अनेक मिथ्या कल्पनाएं की हैं। उनमें से एक मिथ्या कल्पना सप्त सिंधु सम्बन्धी भी है।

ग्रन्थ के अन्त में तीन अध्याय परिशिष्ट के हैं जिनमें पद पाठ के नियम, साथ—पद पाठ स्वराङ्कन प्रकार, परिवर्धन, परिवर्तन, व संशोधन पर भी प्रकाश डाला गया है। लेखन शैली स्पष्ट और बोध गम्य है। पुस्तक विद्यार्थियों और विद्वानों दोनों ही के लिए समान रूप से उपयोगी तथा ग्रन्थकार के अद्भुत पाण्डित्य का परिचायक है। लेखक ने इस ग्रन्थ द्वारा वैदिक साहित्य के एक विशेष अङ्ग की पूर्ति कर हिन्दी में उसके तत्सम्बन्धी अभाव की पूर्ति की है, इस प्रयत्न के लिए लेखक वैदिक जगत् की बधाई के अधिकारी है।

विवाह और विवाहित जीवन

मूल लेखक श्री प० गंगाप्रसादजी उपाध्याय एम० ए०, अनुवादक श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक उपसंपादक "सार्वदेशिक"। प्रकाशक श्री गोविन्द राम हासानन्द, नई सड़क, देहली। सजिल्द पुस्तक पृष्ठ संख्या २१६, मूल्य २॥)। स्वस्थ्य, पुष्ट और सबल समाज ही किसी जाग्रत और बलशाली राष्ट्र की रीढ़ का काम करता है। स्वस्थ्य समाज निर्माण में 'विवाह और विवाहित जीवन' का अत्यन्त उपयोगी और आवश्यक योग रहता है। इस पुस्तक के मूल लेखक आर्य जगत् तथा हिन्दी संसार के गण्य मान्य एवं वयोवृद्ध विद्वानों में से एक हैं। उन्होंने विवाह और विवाहित जीवन की जटिलतम गुत्थियों पर प्राचीन और अर्वाचीन दोनों ही दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला है और आधुनिक युग की निरी भौतिकवादी प्रवृत्तियों से मानव जीवन के लिए जो खतरा उत्पन्न हो गया है, उसके विरुद्ध चेतावनी दी है, तथा उससे बचने के लिए आवश्यक उपाय बताये हैं।

आज की संस्कारहीन एकाङ्गी शिक्षा के रंग में सराबोर अधिकांश स्त्री पुरुष दोनों ही विवाह और विवाहित जीवन के वास्तविक उद्देश्य से अलग जा पड़े हैं। इससे वे उच्छृंखल भोगवादी प्रवृत्तियों को ही विवाह और विवाहित जीवन का आदर्श समझ बैठे हैं, परन्तु ऐसा समझना किसी भी स्वस्थ्य और बलशाली समाज निर्माण के लिए घातक है। विद्वान लेखक ने ऋषि दयानन्द की जीवनोपयोगी शिक्षा और वैदिक ज्ञान के प्रकाश में विवाह का उद्देश्य, ब्रह्मचर्य, विवाह योग्य आयु, वर वधू के चुनाव का क्षेत्र विवाह विषयक वैदिक संस्कार, सन्तति निग्रह, प्रसव, सामाजिक बन्धन, आध्यात्मिक उन्नति आदि बातों पर अधिकार के साथ विचार किया है। साथ ही मनु, याज्ञवल्क्य, व्यास, गौतम दयानन्द आदि ऋषियों के कल्याण कर आप्त वाक्यों को उद्धृत कर संयत एवं मर्यादित विवाह और विवाहित जीवन की सार्थकता सिद्ध की है। ऐतरेय उपनिषद्, कौषीतकी ब्राह्मणोपनिषद्, ऋग्वेद, अथर्व वेद, संस्कार विधि आदि तथा अनेक पाश्चात्य ग्रन्थों के उद्धरण और भाष्य जो अपने निष्कर्षों के समर्थन में दिये हैं, लेखक के गंभीर अध्ययन, अनुशीलन एवं मनन के परिचायक है। पुस्तक उपादेय और संग्रहणीय है। इसका घर घर में प्रचार होना चाहिए। अनुवादक का परिश्रम भी सराहनीय है। उन्होंने मूल (अंग्रेजी) के भावों को एक सधी और सुबोध भाषा में अनूदित किया है। वैवाहिक जीवन सम्बन्धी हिन्दी के निम्न स्तर के साहित्य के मुकाबले यह अपने विषय की पूर्ण और अधिकार युक्त पुस्तक है। प्रत्येक नव दम्पत्ति और गृहस्थ को इसका अध्ययन करना चाहिए। ★

(पिछले पृष्ठ का शेष)

हरिजनों के लिये दिन रात प्रयत्न करने वाले गांधी जी के नाम पर चलने वाले राज्य में जब अस्पृश्यता और असमानता इस प्रकार नृत्य करती हो तब कहना पड़ेगा कि अभी सामाजिक क्रांति बहुत दूर है।

आशा है सरकार इस घटना की पूर्ण जांच करेगी और उत्तरदायित्व निभाने में अक्षम राज्याधिकारियों और दण्डनीय व्यक्तियों के विरुद्ध आवश्यक और शीघ्र कार्यवाही करेगी। सरकार के एक्शन से अस्पृश्यता निवारण-आन्दोलन को बल मिलेगा और सम्बन्धित वर्ग समानता के वातावरण में श्वास ले सकेगा।

सरकारी अधिकारियों की सम्पत्ति-जांच

भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार और नौकरशाही के पीछे जो कुत्सित वासनायें काम करती हैं उनका मूल धन है। सरकारी नौकरी की ओर आज देश का नवयुवक क्यों लालायित है इसका एक ही उत्तर है कि यह समझा और माना जाता है कि सरकारी नौकरी आराम की जिन्दगी का पर्याय है। क्या नव निर्माण में रत राष्ट्र की सरकारी नौकरी में सुख की भावना होनी चाहिये? नहीं कदापि नहीं, पर आज का सरकारी तन्त्र इसका अपवाद है। क्योंकि यह व्यवस्था हमें विरासत में मिली है और ११ वर्ष में भी इसमें कोई सुधार नहीं हो सका है। अतः सरकारी कर्मचारी निश्चिन्त हो दोनों हाथों से सरकार और जनता से धन बटोरने में लगे हुए हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य है, धन बटोरना उन्हें राष्ट्र निर्माण और नैतिकता का कतई ध्यान नहीं है, परिणामतः देश में भ्रष्टाचार और घूसखोरी का साम्राज्य व्याप्त है।

हम यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि आर्य राजनीतिज्ञ श्री वीरेन्द्र एम० एल० सी० की आलोचना से प्रभावित हो पंजाब की सरकार ने सरकारी कर्मचारियों की सम्पत्ति की जांच का निर्णय किया है। इस जांच से काफी सुधार की आशा हो सकती है। आशा है केन्द्र तथा राज्यों की सरकारें भी इस दिशा में प्रभावकारी कदम उठायेंगी।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सर्व अन्तरंग सभासदों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १५ मार्च ५९ दिन रविवार को आर्य समाज मन्दिर काशी बुलानाला वाराणसी में होना निश्चित हुआ है। सदस्यगणों से प्रार्थना है कि नियत तिथि पर कृपया काशी पहुंचने का कष्ट करें।

अन्तरंग सभा के साथ साथ आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति की बैठक भी काशी आर्यसमाज में होगी।

सभा मन्त्री

कृतज्ञता प्रकाश

मेरे पूज्य पिता जी की मृत्यु का समाचार पढ़कर अनेक आर्यसमाजों व सभा के माननीय सदस्यों व उच्च अधिकारियों ने मेरे पास मित्र होने के नाते सहानुभूति के पत्र लिखे हैं, जिससे मुझे शान्ति मिली है। मैं उन सबको पृथक पृथक उत्तर न दे सका, इसलिए मैं उन सबको इस आर्यमित्र द्वारा हार्दिक धन्यवाद देता हूं। —जगनन्दनलाल एडवोकेट

सभा उपप्रधान

प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य

मित्र का ग्राहक बने

हर्ष का विषय है कि इस वर्ष आर्यमित्र की हीरक जयन्ती मनाई जा रही है। सभी आर्यों विशेष कर उत्तरप्रदेश के आर्यों का कर्त्तव्य है कि हम आर्यमित्र को प्रत्येक परिवार में पहुंचा दें। जब हमारी संख्या लाखों में है, तब मित्र की ग्राहक संख्या भी लाखों में क्यों नहीं होनी चाहिये। एक परिवार के लिए ॥।) मासिक व्यय कर सकना कोई कठिन बात नहीं है। अतः निःसंकोच हो ग्राहक बनने का कर्त्तव्य पालन कीजिए। हम उद्योग करना चाहिये कि प्रत्येक ग्राम कस्बे शहर और रेलवे बुकस्टाल पर मित्र उपलब्ध हो सके। यह सब मित्र को शक्तिशाली सुदृढ़ बनाने से ही हो सकता है। स्वयं ग्राहक बनिये और दूसरों को बनाकर सहयोग दीजिए।

—मित्र का शुभचिंतक ग्राहक
होमाराम आर्य, शाहजहांपुर

कहानी-कुञ्ज

समाज-सेवकों में आत्म-विश्वास की प्रेरणा भरने वाला नाटक

'समाज-सेवक'

(श्री ब्रजकिशोर 'नारायण')

आज राष्ट्रोत्थान में सबसे बड़ी बाधा उच्चकोटि के ग्राम-सेवकों की कमी है। कोई भी ईमान्दारी के साथ गांवों में सेवा कार्य नहीं करना चाहता। देश की सारी योजनायें अभी तक ऊपरी हैं। जन मानस का वे स्पर्श नहीं कर सकी हैं। प्रस्तुत नाटक में इसी समस्या का चित्रण है: आदर्श ग्राम सेवक बने बिना कोई भी भारत हृदय ग्रामों की सेवा नहीं कर सकता।

—सम्पादक

[एक झोपड़ी के अन्दर गेरुआ वस्त्र पहने हुए एक बूढ़े व्यक्ति तीन चार युवकों को कुछ लिखा रहे हैं। युवक स्वयं सेवक हैं। इसी बीच एक आदमी आता है और एक पत्र देकर चला जाता है। उसके जाने के बाद संन्यासी जी पत्र खोल कर पढ़ते हैं।]

संन्यासी—सेवक का पत्र है। बहुत दुखी है बेचारा।

एक युवक—क्या लिखा है ?

संन्यासी—(टेबिल से पत्र उठाकर पढ़ते हैं) श्रद्धेय स्वामीजी, सादर प्रणाम! आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके मैं यहां आ गया हूं। दो तीन महीने से गांव के लोगों की सेवा कर रहा हूँ, मगर अब ज्यादा दिन ठहरना भी नहीं चाहता। इस गांव में जबरदस्त पार्टीबन्दी है। ईर्ष्या और डाह है। अशिक्षा और दुष्टता है। फूट और लापरवाही है। भलेमानसों का नामोनिशां नहीं। लोग लकीर के फकीर और निर्दय हैं।

दूसरा युवक—तब तो बेचारे सच मुच मुसीबत में पड़ गये हैं।

तीसरा युवक—उसे किसी और गांव मे भेज दीजिए स्वामीजी।

चौथा युवक—आप क्या कर रहे हैं उनके लिए ?

संन्यासी—मैं उन्हें लिख रहा हूँ कि अगर शिक्षित, भलेमानस, महान् और बड़े लोगों के बीच मे रहकर सेवा करना चाहते हो, तो तुरन्त यहां आओ, आश्रम को ऐसे सेवको की जरूरत नहीं। गांव में रहकर गांव को खराबियों से घबड़ा जाने पर गांव की सेवा नहीं हो सकती। मैं उसे आ जाने के लिए लिखता हूँ। वही यहाँ रहे, मैं वहां चला जाऊँगा।

चौथा युवक—फिर आश्रम कैसे चलेगा ? समाज-सेवकों की शिक्षा दीक्षा का क्या होगा ?

सन्यासी—यह सेवक जी ही बतावेंगे।

चौथा युवक—(कुछ सोचकर) तब ऐसा कीजिए, मुझे वहाँ भेज दीजिए और वे मेरी जगह आ जाएं।

सन्यासी- (कड़े स्वर से) तुम्हारी कौन सी जगह है, तुम अभी पढ़ रहे हो। वे यहां के शिक्षक रह चुके है। उन्हें रहना होगा तो वहीं, वरना कहीं नहीं, समझे, मेरा यही निश्चय है।

(संन्यासी कमरे के बाहर चले जाते हैं)

पहला युवक—यह तो उचित नहीं है।

दूसरा युवक—यह तो स्वामी जी की ज्यादती है।

तीसरा युवक—सेवक जी के नहीं रहने पर, हम भी नहीं रहेंगे।

चौथा युवक—तुम लोगों में अनुशासन की कमी देखकर आश्रम का भविष्य अंधेरे में घिरा हुआ दीखता है। स्वामी जी की नाराजगी और निश्चय उनके लिए नहीं, देश के लिए है। हमारे तुम्हारे लिए है। जनता के लिए है।

पहला युवक—ठीक है, मगर जान देकर काम नहीं किया जा सकता।

चौथा युवक—भूलते हो मित्र, बड़े काम जान देकर ही किए जाते हैं। कृष्ण, ईसा, मन्सूर, सुकरात दयानंद, गांधी सबने जान की बाजी लगाकर ही जनता जनार्दन की सेवा की थी।

दूसरा युवक—सब लोग दयानद, गांधी, नहीं हो सकते है।

चौथा युवक—सही है, मगर उनके बताये हुए रास्ते पर तो चल सकते हैं। अगर इतना भी करने के लायक वे नहीं तो समाज-सेवक कहलाने की विडम्बना उन्हे नहीं करनी चाहिए।

तीसरा युवक—यह विडम्बना और पाखण्ड की बात नहीं श्री भाई, यह रुचि और संस्कार की बात है।

चौथा युवक—रुचि और संस्कार अपने आप पैदा नहीं हो जाते। शंकर! बचपन में तुम्हे जिन जिन चीजोंके प्रति रुचि थी, क्या वह रुचि अभी तक मौजूद है ? क्या उस समय के संस्कार उसी रूप में तुम्हे अब भी सोचने विचारने के लिए मजबूर करते है ? तुम गलत कह रहे हो शंकर! सेवा की तकलीफो और कमियों से घबड़ाकर निकल जाना चाहते हो ?

तुम भूलते हो कि तुम वह हो, जो दूसरों की रुचि और संस्कारों को बदलने जा रहे हो। तुम वह नहीं, जो गलत रुचि और संस्कारों के गुलाम रहकर जियो और मर जाओ। तुम वह हो जिस पर गांव के करोड़ों इन्सानों की जिन्दगी की अच्छाई बुराई निर्भर करती है तुम लोगो के मुंह से साधारण लोगो जैसी बात सुन कर बहुत दुःख होता है। शर्म आती है।

पहला युवक—तो तुम्हारा विचार है कि सेवक जी को वहीं रहने के लिए मजबूर किया जाय ? वे यदि सेवा के लिए तैयार हों, तभी सेवा का कार्य किया जा सकता है, वर्ना नहीं।

दूसरा युवक—सेवकजी लखपती घर के लड़के हैं। उन्हें उस वातावरण में रखना या निकाल देना दोनों बुरा होगा, बहुत बुरा होगा।

(सन्यासी का आकस्मिक प्रवेश)

सन्यासी—और, उससे भी बुरा होगा कि उसे आश्रम मे रखकर आश्रम और उसके आदर्शों को पांवों तले रौंद दिया जाय। मै सेवकजी जैसे हजारों सेवकों को छोड़ने के लिए तैयार हूँ मगर अपने आदर्श को नहीं छोड़ सकता। इस आश्रम मे शिक्षा पाये हुए व्यक्ति को आश्रम जहां चाहेगा भेजेगा और उससे जो उचित सेवा समझेगा, लेगा। इस शर्त पर जिसे रहना हो रहे, जाना हो, चला जाय।

पहला युवक—तो मुझे सबसे पहले जाने की आज्ञा मिलनी चाहिए।

दूसरा युवक—मुझे भी।

(उसी वक्त सेवक जी प्रवेश करते हैं। खादी की छोटी सी धोती, गंजी, नंगे पैर, हाथ मे एक गठरी सिर नंगा)।

सेवकजी—(संन्यासी के पैर छूकर) मै अपने अपराधो का क्षमा मांगने के लिए आया हूँ स्वामी जी !

सन्यासी—कौन सा अपराध ?

सेवकजी—परसों मैंने जल्दबाजी मे आकर एक पत्र लिख दिया था आपको। मै बहुत शर्मिन्दा हूँ। मैं उसीके लिए क्षमा मांगने को आया हूँ।

संन्यासी—(सेवक जी की पीठ पर हाथ रख देते हैं) सेवक, तुम सचमुच आश्रम के गौरव हो। मैं तुम्हे क्षमा करता हूँ।

सेवकजी—बात यह हुई थी कि गांव के दो दलों मे वहां के आश्रम को लेकर लड़ाई हो गई थी। उसीसे घबड़ा गया था। मगर, दूसरे दिन ही उन लोगो ने अपनी गलती महसूस की और आकर मुझसे माफी मांगी। अब वहां एक दम शांति है। वे लोग अपनी करनी पर शर्मिन्दा है।

संन्यासी—सेवक ! गांव के लोग न दुष्ट है, न निर्दयी, न ईर्ष्यालु न लापरवाह, वे भोले-भाले जनसाधारण है। सफेद कपड़े पर जैसा रंग डाला जाता है, वैसा ही बन जाता है। तुम वहाँ धैर्य और परिश्रम से कार्य करो। भगवान् तुम्हे जरूर सफलता देगा। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

[सन्यासी हाथ ऊपर उठाते हैं। सेवकजी उनके पैर छूते हैं। तीनों युवक भी धीरे धीरे आते है और संन्यासी का चरण स्पर्श करते है चौथा युवक प्रसन्नता और सन्तोष की मुद्रा से यह सारा दृश्य देखता है]।

(धीरे धीरे पर्दा गिर जाता है)

पाकिस्तान में सत्यार्थप्रकाश की जब्ती का समाचार असम्पुष्ट

पिछले दिनों दिल्ली के रियासत समाचार पत्र मे यह समाचार छपा था कि पूर्वी पाकिस्तान में राज्य सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश जब्त कर लिया गया है। दिल्ली के वीर अर्जुन, दैनिक हिन्दुस्तान आदि पत्रों मे भी रियासत पत्र के आधार पर समाचार छपा था। इस समाचार से आर्य जगत् में आश्चर्य और क्षोभ का व्याप्त होना स्वाभाविक था। आर्य समाजों ने इस जब्ती के विरोध मे प्रस्ताव पास करके अपने क्षोभ और रोष को व्यक्त किया। सार्वदेशिक सभा ने रियासत समाचार पत्र से इस समाचार के आधार की प्रामाणिकता ज्ञात की परन्तु कोई समाधान न हो सका। इस पर पाकिस्तान राजदूतावास से सम्पर्क स्थापित किया गया और भारत तथा पाकिस्तान राज्य सरकारों को भी लिखा गया। पाकिस्तान राजदूतावास से ज्ञात हुआ कि उक्त समाचार के विषय में वह अनभिज्ञ है। उसने कराची से ज्ञात किया था परन्तु उसे कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है अतः अभी उक्त समाचार असम्पुष्ट है।

रामगोपाल

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली १

अध्यात्म-चर्चा

अणोरणीयान् महतो महीयान्

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी०, डी० बी० कालेज, गोरखपुर)

★

कठोपनिषद् में ईश्वर की महत्ता निम्न शब्दों मे वर्णित की गई है—
अणोरणीयान् महतो महीयान् आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् । तमक्रतुः पश्यति वीतशोकोधातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः ।

वह ब्रह्म सूक्ष्म से भी सूक्ष्म जीवों से, पदार्थों से वह परमात्मा अधिक सूक्ष्म है। महान् आकाशादि से भी वह बड़ा है। वह इस प्राणी के हृदयाकाश मे स्थित है, उसकी महिमा को मनुष्य (धातुः प्रसादात्) बुद्धि के निर्मल होने से, निष्काम, शोकरहित प्राणी ही देख सकता है।

और उस प्रभु की कुछ विशेषतायें हैं। लिखा है—

आसीनो दूरं व्रजति शयाना याति सर्वतः, कस्तं मदामदं देव मदन्यो ज्ञातुमर्हति। अशरीरं शरीरेषु अनवस्थेष्ववस्थितम्। महान्तं विभुमात्मान मत्वा धीरो न शोचति।

वह परमेश्वर बैठा हुआ ही दूर पहुँचता है, सोता हुआ सब ओर जाता है। उस आनन्दरूप देव को मुझ से भिन्न कौन जानने को समर्थ है।

साकार पदार्थों में निराकार, चलायमान पदार्थों में अचल, अनन्त, व्यापक परमात्मा को जानकर धीर पुरुष शोक नहीं करता।

आइए, प्रभु महिमा पर विचार करें। उसकी महिमा अनन्त और बड़ी विचित्र है। हम अभिमान करते हैं और यह अभिमान वास्तव में हमारे ज्ञान के अभाव का सूचक होता है। यह प्रभु की शक्ति साधारण शक्ति नहीं। वह तो एक जादू है। यदि उसकी शक्ति पर, उसके रूप पर विचार करें तो अभिमान हमारा दूर हो सकता है, हृदय निर्मल हो सकता है। मनुष्य ससार में परमेश्वर को न जानने के कारण ही पापों में प्रवृत्त होता है। पाप का मूल कारण अविद्या है। अविद्या के दो रूप हैं। एक अभिमान और दूसरा अवमान। यह अज्ञान ही वह दीवार है जिसने आत्मा को सीमित और स्वार्थबद्ध बना रखा है। यही वह आवरण है जिसने परिच्छिन्न आत्मा को अनन्त आत्मा के दर्शन से वंचित कर रखा है। इस अज्ञान का ही परिणाम है कि मनुष्य अभिमान मे आकर अपने को सबसे अधिक शक्तिशाली, सबसे अधिक ज्ञानी और बुद्धिमान् मानने लगता है और इस अभिमान का परिणाम यह होता है कि वह ससार को अपने लिए योग्य मान लेता है। ससार का प्रत्येक प्राणी कष्ट में रहे उसे इसकी चिन्ता नहीं रहता। दूसरों के विचार उसके आदेश पर चलने चाहिए और यदि नहीं चलते तो वह उन्हें ऐसा करने को बाध्य करता है। यहीं से पाप का प्रारम्भ होता है। आचार्य चमूपति जी ने बड़े सुन्दर शब्दों में ऐसे व्यक्तियों का वर्णन किया है। वे लिखते है—"कोई तो अपने आपको परमात्मा का बड़ा भाई कहता है और अन्य प्राणियों पर अत्याचार करना उस ज्येष्ठ भ्रातृत्व का स्वाभाविक फल जानता है। वह अपनी वास्तविक स्थिति से ऊँचा उड़ा। यह उस अभिमान का एक रूप है जिसे अभिमान कहते हैं। एक और महाशय अपना इतना भी अस्तित्व नहीं जानते जितना जड़ प्रकृति का वह रींगता है और गिड़गिड़ाता है। आत्म विश्वास उसमे नहीं। काम करने का उत्साह उससे दूर है। यह उस अज्ञान का दूसरा रूप है जिसका लौकिक नाम भय है।"

परन्तु ऐ अभिमान में मस्त मनुष्य ! जरा नजर उठा। इस विराट् विश्व को देख, जिसके एक पत्ते की रचना को समझने मे मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान जिसका कि उसे सबसे अधिक घमंड है—असमर्थ है। इस विश्व की रचना मे उस विराट् प्रभु का हाथ क्या नहीं दिखाई देता जिसका एक-एक नियम अटूट और अविचल है, जिसकी व्यवस्था अचम्भे मे डालती है, जिसका न्याय अक्षुण्ण और अपूर्व है, सम्पूर्ण विषयों के भंडार वेद जिसके विश्वासमात्र हैं, अनन्तकाल से संसार में प्रकाश का प्रसार करने वाले सूर्य और चांद जिसकी लीला के निमेषमात्र हैं, ऊँची लहरों में उमड़ता समुद्र जिसकी आज्ञा से सीमा न छोड़ने को विवश है और जिसके आदेश का पालन करने के लिए हमारी आत्माएं हर समय हाथ जोड़ कर खड़ी हैं।

वह प्रभु 'महतो महीयान्' है। जरा सोचिए तो सही आप जिस पृथ्वी पर खड़े हैं वह आपसे कितनी महान् है ? हम इसके सम्मुख एक चींटी के बराबर भी नहीं परन्तु यह पृथ्वी इस चमकते सूर्य से एक लाख गुना छोटी है और यह चमकता सूर्य अगस्त्य तारे से एक करोड़ गुना छोटा है परन्तु अगस्त से बड़ा ज्येष्ठा और उससे कई करोड़ गुणा बना परम ज्येष्ठा है। आजकल के वैज्ञानिक अपने अल्प साधनों से अभी इतना जान पाए हैं कि आकाश में रात को जो आकाश गगा दिखाई देती है इसी में १॥ अरब सितारे चमक रहे हैं। इस समय तक दो अरब सौर मंडल देखे जा चुके हैं और एक सौर मंडल में वैसे ही सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी तथा अन्य नक्षत्र तथा तारा-मण्डल हैं जैसे हमारे सौर मण्डल में हैं। वेद में तो अनेक सूर्यों का वर्णन है, और इनके विस्तार का क्या कथन ?

आकाशगंगा ही का व्यास कितने मील है, यह जानने के लिए १७६३ के आगे १६ बिन्दु लगाने होंगे, जिसकी गणना ही नहीं हो सकती। हमारा सौर मंडल शेष सारे सौर मंडलों में छोटा है, परन्तु इस सौर मंडल में जो वृहस्पति नक्षत्र है वह सारे नक्षत्रों से बड़ा है। प्रकाश की गति एक क्षण में एक लाख ८६ हजार मील है और कुछ नक्षत्र इतने दूर हैं कि उनका प्रकाश पिछले दो अरब वर्षों का चला हुआ भी अभी तक हमारे पास नहीं पहुँच पाया। अनुमान लगाकर देखिए कितना विस्तार है इस विश्व का। अपने ग्रह, उपग्रहों के साथ यह सारे सौर मंडल एक महासूर्य के चारों ओर चक्कर काट रहे हैं और वह सौर मंडल परमेश्वर की एक नन्हीं सी शक्ति से बंधा सबको नियन्त्रण में रख रहा है और फिर यह अणु और परमाणु भी पूर्ण सौर मण्डल है इसे Miniature Solar system सौर मडल का छोटा सा नमूना कहते हैं। और फिर केवल यही सृष्टि नहीं है न जाने कितनी सृष्टियाँ प्रतिदिन बनती और बिगड़ती हैं। आजकल के वैज्ञानिकों ने हमारी पृथ्वी से

१४७०००,०००,००००,०००००,००००

(१४७ के आगे १९ बिन्दु मील) दूर प्रकृति की वह अवस्था देखी है जो विकृत होकर रूप धारण करने लगती है। इस प्रकार इस महान् विश्व में वह प्रभु व्याप्त और उसके छोटे से छोटे एटम में भी वह प्रभु बसा हुआ है। उस प्रभु की सविता शक्ति यह सारा कार्य कर रही है। इस प्रकार इन सब लोकों से बड़ा है वह हमारा प्रभु। इस प्रकार यह महान् शक्ति 'सुन्दरम् सुन्दराणाम्' है। इस महान् शक्ति की भीषणता का अनुमान करना भी कठिन है। यह ठीक है कि इसकी भीषणता भी कल्याणकारी है। जिस समय इस विशाल ब्रह्मांड का रचयिता अपना प्रलय-तांडव करता है, पृथ्वी कांप उठती है, आसमान में चमकते, सूर्य, चाँद और सितारे टूट पड़ते हैं, ऊँचे खड़े पहाड़ों का कण-कण चकनाचूर हो जाता है, विशाल समुद्र की बूंद बूंद आसमान में विलीन हो जाती है और उस समय हमारे मुंह से अनायास निकल पड़ता है 'अणोरणीयान् महतो महीयान्'। जो इस महतो महीयान् के दर्शन कर लेगा उसका अभिमान् दूर हो जायगा। इसी प्रकार जब उसे प्रभु की इस विशालता, गौरव एवं महत्ता का बोध होगा तो अवमान की स्थिति से भी वह ऊपर उठेगा। जब उसे विश्वास होगा कि परमेश्वर परमाणुओं से सुन्दर संसार का निर्माण करता है तो यह समझ जायगा कि वह नीचे पड़े हुओं को उठा सकता है, डूबतों को बचा सकता है, पतित से पतित का उद्धार कर सकता है। यह विश्वास उसमें आत्म-विश्वास भरेगा और वह संसार की कठिनाइयों का मुकाबला करेगा। यही है कठोपनिषद् की प्रभु को महान् से महान् और सूक्ष्म से सूक्ष्म समझाने की भावना का उद्देश्य। आइए, हम उस शक्ति का गुणगान करें।

चतुर्दिक तुम्हीं नाथ छाये हुए हो।
मधुर रूप अपना बिछाए हुए हो।
तुम्हीं व्रत विधाता नियन्ता जगत् के,
स्वयं भी नियम सब निभाये हुए हो।
प्रभो शक्तियां दिव्य अनुपम तुम्हारी।
तुम्हीं दूर तुम पास आये हुए हो।
तुम्हारी करे बन्दना देव ! निशिदिन,
तुम्हीं इस हृदय में समाये हुए हो।

नगर आर्यसमाज आगरा की डायरी

(१) दिनांक १-२ ५६ दिन रविवार को म० सरदारीलाल जी आर्य्य मंत्री सेकसरिया आर्य कन्या इन्टर कालेज के ज्येष्ठ पुत्र का मुन्डन सस्कार व लघु पुत्र का नामकरण संस्कार हुआ। उनकी ओर से प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया।

(२) दिनांक २-२-५६ को श्री रामनारायण जी आर्य मालिक न्यू पोपूलर साईकिल के सुपुत्र चिरंजीव विष्णुभगवान का यज्ञोपवित्र संस्कार हुआ। प्रीतिभोज का आयोजन भी किया गया।

(३) दिनांक ७।२।५६ को श्री शिवनारायण जी आर्य बेलनगंज के गृह पर पूर्णमासी का पाक्षिक सत्संग सम्पन्न हुआ। हवन, भजन, के पश्चात् श्री पूर्णचन्द जी का भाषण हुआ। और विश्वप्रेमी जी व श्री जसवन्तसिंह के भजन हुए।

(४) दिनांक ८।२।५६ को समाज के साप्ताहिक सत्संग में श्री विश्वप्रेमी जी प्रचारक अलवर-निवासी ने भजनों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया।

(५) दिनांक १०।२।५६ को पीपल मण्डी में श्री ठाकुर यशवन्त सिंह जी व श्री प्रकाशवीर जी प्रचारक, आर्य प्रतिनिधि सभा ने वैदिक धर्म का प्रचार किया।

देशदर्शन

हैदराबाद में आर्यसमाज

(एक संक्षिप्त परिचय)

श्री कालीचरण प्रकाश, वेदप्रचार, विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा म०द० हैदराबाद

(गताङ्क से आगे)

पंजाब की कैरों पुलिस के अत्याचारी घटनाओं के चित्र भी प्रकाशित किए गए थे, जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव रहा।

विद्या आर्य सभा—

विद्यार्य सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण की एक अधीनस्थ संस्था के रूप में कार्य कर रही है। आर्यसमाज की जहां धार्मिक क्षेत्र में सेवाएं हैं वहीं उसकी शैक्षणिक सेवाओं को भी ऐतिहासिक महत्व प्राप्त है। अपनी इस परम्परा को आर्यसमाज ने संगठित हैदराबाद राज्य में बनाए रखा। पिछले ५० वर्षों में आर्यसमाज नारी-शिक्षा, हरिजनों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षण, हाई स्कूल, कालिज और हिन्दी-प्रचार आदि की शिक्षण सम्बन्धी कई छोटी-बड़ी संस्थाओं का संचालन करता आ रहा है। इन शिक्षण संस्थाओं में दो बातों की प्रमुखता रही है। प्रथम तो यह कि इनमें विशेष रूप से हिन्दी तथा धार्मिक शिक्षा पर बल दिया जाता रहा है और दूसरी विशेषता यह रही है कि लगभग सभी संस्थाओं द्वारा निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध रहा है। साथ ही यह भी प्रशंसनीय बात है कि आर्यसामाजिक शिक्षण संस्थाओं में बिना किसी जाति, वर्ण तथा सम्प्रदाय भेद के समानता से शिक्षा दी जाती है, जिसके परिणाम-स्वरूप आज लोगों में से जातीयता की भावना हा प्रायः समाप्त होती जा रही है। प्रत्येक मत का विद्यार्थी इसमें स्वतन्त्रतापूर्वक शिक्षा ग्रहण कर सकता है। हैदराबाद में पुलिस कार्यवाही के पश्चात् इन शैक्षणिक संस्थाओं को एक व्यवस्था के अन्तर्गत लाने की आवश्यकता अनुभव कर आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद ने अपने अन्तर्गत विद्यार्य सभा की स्थापना की। इस वर्तमान साल में विद्यार्य सभा के प्रधान श्री प० विनायकराव जी विद्यालंकार, एम० पी० और मन्त्री श्री एस० वेंकटस्वामी जी एडवोकेट हैं। विद्यार्य सभा के अन्तर्गत इस समय ५ हाई स्कूल, प्राथमिक पाठशाला और एक सायंकालीन कालिज चल रहा है, जिनके कार्य की संक्षिप्त रूप-रेखा निम्न प्रकार है।

केशव-स्मारक आर्य हाई स्कूल

प्रचलित वर्ष में इस विद्यालय के भवन-निर्माण का कार्य बहुत कुछ पूर्ण हो चुका है। विद्यालय की प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष श्री पं० विनायकराव जी विद्यालंकार मन्त्री, श्री एस० वेंकटस्वामी जी, एडवोकेट हैं और मुख्याध्यापक श्री खण्डेराव जी बी० ए०, बी० एड० हैं। विद्यालय-भवन निर्माण के साथ साथ "सरदार पटेल हाल" के निर्माण का कार्य भी प्रचलित हैं। इस हाल पर अब तक लगभग ७० हजार से अधिक रुपया लग चुका है। इस विद्यालय में ४ पृथक विभाग हैं। १ प्राथमिक विभाग, २ हाई स्कूल विभाग, ३ कन्या पाठशाला, ४ बाल मन्दिर-विभाग है।

प्राथमिक विभाग में शिक्षा का माध्यम-हिन्दी है। विद्यार्थियों की संख्या २५० तथा १५ अध्यापक हैं। पुलिस कार्यवाही के बाद इसे राज्यकीय सहायता प्राप्त हो रही है।

माध्यमिक (हाई स्कूल) विभाग में पांचवीं से दसवीं श्रेणी तथा हिन्दी और तेलगु माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रबन्ध है। विद्यालय में २९ श्रेणिएं ५० अध्यापक और एक हजार के लगभग विद्यार्थी हैं। इस वर्ष की मैट्रिक परीक्षा में विद्यालय द्वारा बैठे छात्र ८० प्रतिशत उत्तीर्ण रहे। इसका अपना निजी भवन है।

कन्या पाठशाला विभाग में प्रथम से ९ वीं श्रेणी तक हिन्दी माध्यम है तथा पांचवीं से ७ वीं श्रेणी तक का शिक्षा का माध्यम तेलगु भाषा है। इसका भी अपना निजी भवन है। इस वर्ष का सातवीं की बोर्ड परीक्षा में २२ छात्राओं को बिठाया गया था, परिणाम शत प्रतिशत रहा।

बाल मन्दिर मौन्टेसरी पद्धति पर चलाया जा रहा है। इसमें ६० शिशु और दो शिक्षक तथा एक व्यवस्थापक है। इसका भी अपना निजी भवन है।

शामलाल-स्मारक आर्य विद्यालय, उदगीर

स्वर्गीय शामलाल जी की स्मृति में इस विद्यालय की स्थापना की गई थी। अब इसको स्थापित हुए आठ वर्ष हो चुके हैं। यहां के विद्यालय के शिक्षण का माध्यम मराठी है। इस विद्यालय में जुमला १८ श्रेणिएं हैं। विद्यार्थियों की संख्या ३५० तथा अध्यापकों की संख्या १६ है। स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर-भवन में ही विद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री बापू साहब जी देशमुख तथा मन्त्री जी दिगम्बरराव जी पशेवार हैं।

नूतन विद्यालय, उमरी

इस विद्यालय में दशवीं श्रेणी तक शिक्षण का प्रबन्ध मराठी माध्यम द्वारा है। १३ श्रेणिएं हैं। विद्यार्थियों की संख्या ३५० और अध्यापकों की संख्या १७ है। इसका अपना निजी भवन है। केवल प्राथमिक विभाग का भवन किराये का है। विद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री प० नरेन्द्र जी तथा मन्त्री श्री मनोहररावजी कुलकर्णी है।

माणिक-स्मारक आर्य विद्यालय हिंगोली, जिला परभणी

हिंगोली-निवासी श्री बाबूलाल जी के दान से इस संस्था की स्थापना हुई। शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। अभी यह स्कूल नहीं बन सका है। आगामी वर्ष मैट्रिक श्रेणी खुलेगी। यह विद्यालय भी आर्यसमाज के भवन में ही चल रहा है। विद्यार्थियों की संख्या २५० तथा अध्यापकों की संख्या १२ है।

रामचन्द्र-हिंदी-विद्यालय कोत्तागुड़ा

कोत्तागुड़ा, जिला खम्म में श्री सेठ रामचन्द्र जी ने अपने व्यय से इसको स्थापित किया है और इसका व्यय भी वे स्वयं ही अपनी ओर से करते हैं। शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। यहां बिहार प्रांत के मजदूरों की संख्या अधिक होने से हिन्दी माध्यम द्वारा शिक्षा की मांग है। साथ ही तेलगु माध्यम द्वारा शिक्षण का भी प्रबन्ध है। यह अभी प्राथमिक विभाग के रूप में ही है। प्रयत्न हो रहा है कि इसे भी हाई स्कूल बनाया जाए।

उपदेश-विभाग

सभा के उपदेशक

सभा के अधीन जो उपदेशक कार्य कर रहे हैं उनके नाम इस प्रकार हैं। १ प० मंगलदेव जी शास्त्री, २ श्रीमान् रुद्रदेव जी, ३ श्रीमान् पं० गोपालदेव जी, ४ श्रीमान् पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा, ५ श्रीमान् पं० नरदेव जी, ६ श्रीमान् पं० प्रेमचन्द्र जी, "प्रेम" ७ श्रीमान् प० प्रह्लाद जी, ८ बुर्राकथा मण्डली।

अन्य प्रांतों के उपदेशकों का आगमन

श्रीमान् पं० रामचन्द्र जी देहलवी, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री, प० कृष्ण जी, आचार्य, पं० शिवकुमार जी शास्त्री, प० घनश्यामसिंह जी गुप्त, प० बुद्धदेव जी, विद्यालङ्कार, प० ईश्वरचन्द्र जी दर्शनाचार्य को सभा द्वारा आमन्त्रित कर प्रचार करवाया।

सन ५७ में सभा के उपदेशकों ने जो कार्य किया उसका विवरण निम्न प्रकार है :—

पं. मंगलदेव जी शास्त्री

प० मंगलदेव जी शास्त्री ने १७४ भाषण दिये, और ७५ ग्रामों का भ्रमण किया। १५६८) रुपया वेद-प्रचार-निधि में एकत्रित किए। ४ शुद्धियें, ६१ यज्ञोपवीत, ३ विवाह-संस्कार करवाए।

पं. रुद्रदेव जी

पं० रुद्रदेव जी ने ६४ भाषण दिये और १२५ ग्रामों का भ्रमण किया। १० यज्ञोपवीत संस्कार, ४ विवाह-संस्कार करवाए और हरिजन सम्मेलन की व्यवस्था की तथा ६५ शुद्धि-संस्कार करवाये।

पं. ज्ञानेन्द्र जी शर्मा

पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा ने ८६ भाषण दिये और ९२ ग्रामों का भ्रमण किया। उन्होंने ७ विवाह संस्कार, ६ यज्ञोपवीत संस्कार करवाए और २५५२) रुपये वेद प्रचार निधि में एकत्रित किये तथा हिन्दी रक्षा-आंदोलन सत्याग्रह में भाग लेकर जेल-यात्रा भी की।

श्री पं. गोपालदेव जी

श्री पं० गोपालदेव जी ने ३७ भाषण दिये ८९ ग्रामों का भ्रमण किया, आर्य प्रतिनिधि सभा के ३० वार्षिक सहायक सदस्य बनाये, २ समाजों की स्थापना की, ५ यज्ञोपवीत, २ विवाह संस्कार, ४ नामकरण संस्कार करवाये और हिन्दी रक्षा आन्दोलन सत्याग्रह में भाग लेकर जेल यात्रा भी की।

श्री पं. नरदेव जी स्नेही

श्री प० नरदेव जी स्नेही ने १७५ भाषण दिये, ९० ग्रामों का भ्रमण किया, ४ समाजों की स्थापना की ३२२७) रुपये चन्दा इकठ्ठा किया। एक सौ सत्याग्रहियों के साथ हिन्दी आन्दोलन में भाग लेकर जेल यात्रा की, और दो यात्राओं में प्रचार किया।

श्री प. प्रेमचन्द्र जी 'प्रेम'

श्री प० प्रेमचन्द्र जी "प्रेम" ने ४६ ग्रामों में भ्रमण कर प्रचार किया, और १९३९) रुपये का चन्दा इकठ्ठा किया।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आश्रम धर्म सामाजिक नियम है

[श्री स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती, आर्यसमाज अकोला]

आर्यसमाज का दसवां नियम इस प्रकार है—

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

इस नियम में सर्व हितकारी और हितकारी इन दो वाक्यों के साथ नियम पद का प्रयोग किया गया है। परन्तु प्रथम नियम से पूर्व सामाजिक पद स्पष्ट है। वह दूसरे हितकारी पद के साथ नहीं पढ़ा गया किन्तु उसकी अनुवृत्ति अवश्य ही आती है, केवल 'सर्व' शब्द हितकारी कर्म समष्टिगत और व्यक्तिगत भेद को दर्शाता है। तब जिस भी सामाजिक सर्व हितकारी काम का प्रारम्भ किया जाय उसमें सब नर नारियों को अपने नेता को आज्ञा में रहना योग्य है और जैसे सामाजिक सर्व हितकारी नियम में परतन्त्र रहना चाहिए वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक हितकारी नियम में स्वतन्त्र रहे। उसमें यह कल्पना न की जावे कि हम सब उस काम को मिलके ही करें तभी नियम का पालन होगा। हमारी समाज व्यवस्था मे आश्रम मर्यादा की नीव रक्खी गई है, जिसमे देशकाल का भी समावेश आवश्यक प्रतीत होता है। यहाँ देश शब्द मे गृहाश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम विभिन्न देश में बनने हैं न कि एक गृहाश्रम में ही सब वस्तु पसेरी भर के समान प्रविष्ट रहें। और काल से तात्पर्य है मनुष्य के जन्म से 'जीवेम शरदः शतम्' सौ वर्ष तक जीवित रहने का प्रोग्राम [पुरोगम] ईश्वर ने सुझाया है। हम लोग किस प्रकार के नियमों का पालन वा किस व्यवस्था के आचरण करने से शतायु बन सकते हैं? उस पर मनन करके प्राचीन आर्यों ने जन्म से २५,३८,४८ वर्ष तक काल मे वेद विद्यायोग ब्रह्मचर्य और वैदिक कर्म मनुष्ठान करने हुए प्रथम काल के लिए ब्रह्मचर्याश्रम बताया जिसके लिए ग्राम देश से दूर वन में निवास करना बताया गया था। यथा आधुनिक काल में भी वे ही पाठशाला व विश्वविद्यालय अच्छे माने जाते हैं जो नगर के दूषित वातावरण से दूर हों। प्रथम काल की पूर्णावस्था के पश्चात् दूसरे काल का प्रारम्भ हो जाता है, जो पूर्ण युवावस्थाक कहा जा सकता है। उस काल में विद्यापठन से ऋषि ऋण से मुक्त होके पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए प्रयत्नवान् होवे, तब वह गृहाश्रम में प्रवेश करे नहीं तो ब्रह्मचर्याद्वा, गृहाद्वा, वनाद्वा प्रव्रजेद् द्विजः। ऐसा शास्त्रोपदेश है। क्योंकि, यहाँ पितृ सञ्ज्ञा जन्मदाता पिता और शिल्पी सांम्यासः। अग्निष्वात्ताः आदि सर्व हितकारी जनों की होती है। यदि मनुष्य ऊर्ध्व रेता होके सन्तान उत्पत्ति न करके ही संन्यासाश्रम मे प्रविष्ट हो जावे तो वह शिल्प निपुण पितरों के समान ही प्रजा का पालक सिद्ध हो जाता है अतः वह लका छोड़ बिलका को कूद के जा सकता है, पुनः वह पितृऋण का कायल नहीं रह जाता है। परन्तु यदि वह अपने को उस दूसरे काल के जीवन से पृथक् रहने मे असमर्थ अनुभव करता है, तब उसके लिए गृहाश्रम प्रवेश अनिवार्य हो जाता है। जिसके लिए २५ से आगे ५० तक ही सामाजिक व्यवस्था से और राज्य प्रबन्ध से भी सम्बन्धित नियम है।

आयुर्वेदकालः। इस हिसाब से ५० वर्ष के पश्चात् मनुष्य अपने स्थान, देश के मोह को छोड़ देवे क्योंकि उस देश के कर्त्तव्य से वह शिथिल हो चुका और उधर उसके उत्तराधिकारी जन आ धमके हैं। उनके मन, बुद्धि, आत्मा की स्वतन्त्रता मे यत्किंचित् संकोच भाव न व्यापे, यह तभी हो सकता है जब कि उस स्थान से पूर्वकालीन जन पिता आदि अन्यत्र निवास करें। आर्य सभ्यता जीवन को आदर्श की ओर आह्वान करती है। उधर चलना ही आर्यत्व है न कि मिली जुली खिचड़ी का नाम आर्य संस्कृति-पूर्ण सभ्यता? उसमें यह नियम लागू नहीं हो सकता कि, किसी के सन्तान दयालु प्रेमी, उदार हैं तो पिता यदि वानप्रस्थाश्रम मे न जावे तो उसकी अन्न वस्त्र की व्यवस्था रक्खेंगे। नहीं, नहीं!! परन्तु आज कल जैसे गृह पर रहकर ही विद्या पठन करते हुए ब्रह्मचर्याश्रम और गृही दोनों एक दूसरे मे सने हुए हैं वैसे ही यदि वनी और गृही एक ही देश काल में रहे तो यह द्विजवर्ण वालों के लिए शुभ नहीं हो सकता। इस प्रकार का कार्य शास्त्र, समाज और शासन का उल्लंघनकारी स्वतन्त्र मन माना नियम है जिसके परिणाम स्वरूप देश, जाति और समाज आत्मिक बलहीन बन चुके है।

अतएव जो विद्या के नियम में आस्था रखने वाले सच्चर लोग हैं वे यदि वर्णाश्रम के रहस्य को जानकर भी तथाभूत आचरण करने में असमर्थता अनुभव करते हैं उन्हें अपनी स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

आश्रम-व्यवस्था के अनुसार जो बर्त्ताव है उससे ही सामाजिक सर्व हित हो सकता है। अतः उसका पालन ही सबके लिए उचित है। वनी तब कुछ स्वतन्त्र रहता है क्योंकि वह स्वयं पाकी रहता है और गृहाश्रम के बाहर दूर देश में जो निर्जन एकान्त में ठहर के आत्मचिन्तन कर सकता है जिससे धर्म, अर्थ, काम की पूर्ति के पश्चात् जीवन उद्देश्य मोक्ष की सिद्धि मे सहायता मिलती है। अतः आश्रम व्यवस्था का पालन करने पर ही मानव स्वात्मा का उद्धार कर सकता और समाज का आदर्श पुरुष बनके सर्व हितकारी नियम का पालक माना जा सकता है, अन्यथा शास्त्र विधि उत्सृजक ही रहेगा।

जब मनुष्य एकान्त मे नियमपूर्वक २५ वर्ष निवास करता है तभी मनुष्य वेदान्त में निष्णात हो तपस्वी वन के सच्चिदानन्द घन विज्ञान स्वरूप मे निमग्न हो सकता है। जहाँ प्रमाण विपर्य विकल्प निद्रा और स्मृति मन के इन पांचों क्लिष्टों से मुक्त हो के जीवन मुक्ति का आस्वाद ले सकता है। मर के तो सभी प्राणी मुक्त हुए से प्रतीत होते हैं। जो लोग जीवन मुक्ति पर विश्वास नहीं रखते, मरने पर ही मुक्त होना जानते है वे मोक्ष के अनधिकारी ही हैं ऐसे समझना चाहिए। क्योंकि यद्यपि (न धर्मे लिंग कारणम्) ऐसा धर्माचरण करने मे प्रमाण मिलता है तथापि [न चाऽत्र लिंगात्] मोक्ष पद को आश्रमानुसार आचरण न करने पर भी प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि मोक्ष के लिए विद्या 'ब्रह्मचर्य' योग प्राणायाम इन चारों का प्राप्ति एकान्त देश काल को अपेक्षा अवश्य भावी वा अनिवार्य है। अतः विद्वान् पुरुषों को योग्य है कि, अनन्त जीवन केवल विद्या पठन में ही निरत रह के (भूयतेऽन्धन्तमः प्रविशन्ति ये विद्या मुपासते) घोरतम अविद्या=आत्मज्ञान शून्यत्वरूप अन्धकार में प्रविष्ट न रहें।

खेद है कि आर्यों में अभी आश्रम-मर्यादा की भावना पूर्णतया प्रतिष्ठित नहीं हो सकी है और वे गार्हस्थ्य के दलदल में ही रह के विद्या की उपासना में निरत हो रहे हैं। और उक्त प्रमाणादि मन की पाँचों वृत्तियों से पृथक न होकर म्लान चित्त होके अपने आत्मा के अहित मे ही हितबुद्धि समझते हैं। सारांश जिनसे अपनी आत्मा का स्तर ही ऊंचा नहीं हो सकता है उनसे संसार का उपकार होगा यह कैसे माना जा सकता है? अतः आर्य जगत् के सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे आश्रम-मर्यादा की ओर विशेष ध्यान दें। विधि, विधि ही रहता है। उसका उल्लंघन अश्रेयस्कर हो जाता है।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

श्री पं. प्रह्लाद जी

श्री पं० प्रह्लाद जी ने ७६ भाषण दिये, ६० ग्रामों में भ्रमण कर प्रचार किया, २८७४) रुपये का चन्दा जमा किया। २ विवाह संस्कार और १ नामकरण संस्कार करवाया।

श्री पं. डी. आर. दास. जी

पं० डी० आर० दास० जी ने जिला उसमानाबाद के ग्रामों में घूम-घूम कर प्रचार किया। इसके अतिरिक्त सभा के उपदेशकों ने अछूत-उद्धार, शुद्धि और हिन्दी का प्रचार करके जनता को देश का संगठन बनाये रखने की प्रेरणा की।

शुद्धि-आन्दोलन

पं० रुद्रदेव जी उपदेशक, सभा ने गुण्टकल, जिला अनन्तपुर में एक ईसाई परिवार की शुद्धि की। इब्राहिम पटन, जिला नलगुण्डा के एक पोस्ट-मास्टर की भी सपरिवार शुद्धि की। प० ज्ञानेन्द्र शर्मा औरंगाबाद में एक लेडी डाक्टर की शुद्धि कर महाराष्ट्रियन युवक से विवाह करा दिया और इसी प्रकार एक ईसाई महिला की शुद्धि करके पंजाबी युवक के साथ उसका विवाह सम्पन्न करा दिया। पं० कालीचरण जी ने राजमुन्द्री निवासी कृष्णराव तथा उसमानियां दवाखाना की नर्स पुष्पा सैलरिन, एव श्री के० एम० इलियास क्लर्क सब रजिस्ट्रार आफिस विजयनगर की शुद्धि हैदराबाद में की और उनका नाम सुधार रखा।

हल्द्वानीमें स्वामी अमृतानन्द जी की उपनिषद्-कथा

श्रद्धेय स्वामी अमृतानन्द जी महाराज पिछले तीन मास से हल्द्वानी आर्यसमाज में निवास कर रहे थे। उत्सव के भाषणों और नवम्बर की कथा के पश्चात् जनवरी मास में भी आपकी उपनिषद्-कथा का आयोजन चलता रहा। एक मास तक शीतकाल होने पर भी लोग नियमित रूप से उसमें सम्मिलित होते रहे। ८ फरवरी को कथा सम्पन्न हुई। कथा का प्रभाव अच्छा रहा। स्वामी जी लखनऊ, कानपुर, हरद्वार आदि की यात्रा के लिए चले गये हैं।

सुझाव और सम्मतियां

प्रत्येक आर्य परिवार को बालकल्याण की इकाई बनाइए

ता० १० ११ ५८ के अक में प्रो० श्रीप्रकाश के सुझाव अत्यन्त सुन्दर हैं। आर्यसमाज, सीसामऊ की पहल कदमी भी अत्यन्त प्रशसनीय है। पर प्रत्येक आर्य परिवार को ही इस कार्य की इकाई बनाना उत्तम होगा, क्योंकि भारत में अधिकाश समय बच्चो का माता के साथ ही कटता है अत यहाँ रूस की तरह समाजा को (Cresh) मे परिवर्त्तित करना उत्तम न होगा। समाजो म आर्यसमाज सीसामऊ की तरह ही साप्ताहिक सम्मेलन, खेलकूद, प्रतियोगिता, उपदेश आदि होना उत्तम है। इससे समाजे अतिरिक्त व्यय से नहीं पीडित होगी और प्रत्येक महिला को अपने बच्चे के साथ एक सवथा नवीन दृष्टि से प्रयोग करने का अवसर हागा। इसी के साथ हम चरित्र निर्माण आन्दालन को भा सम्बद्ध कर सकत हैं। यह कार्य जितने अधिक सफल व्यक्तिगत प्रयत्नो से हो सकते हैं उतने सामूहिक प्रयत्नों से नहीं, हम वस प्रत्येक परिवार मे चेतना लाने की जरूरत है।

—सूर्यभानुसिंह, कानपुर

मांस प्रचार का विरोध करिये

शासन द्वारा मास, मछली, मुरगी, अडो के बढ़ते हुए उत्तरोत्तर प्रचार ने निरामिष भोजियो के सामने जटिल समस्या तथा धम सकट उपस्थित कर दिया है। हत्यारे डालरो की प्राप्ति हेतु य मास का राष्ट्रीय उद्योग बनाया जा रहा है, जिसन निरीह पशुओं विशष कर गाय बैलो का अस्तित्व खतर म डाल दिया है। इस नारकीय धधे के लिये कितन निरपराध मूक प्राणी छुरियो के घाट उतारे जायगे। इसका कल्पनामात्र रोगटे खडे कर देती है। ये भीषण हत्याकाण्ड भारत को किस रसातल म ले जाकर पटकेंगे? इसे जगदीश ही जाने।

यदि इस अनाचार का सर्वत्र खुला विरोध न किया गया तो यह राक्षसी प्रवृत्ति बची खुची भोजन की पवित्रता, सात्विकता धार्मिक, भावना को ले डूबे बगैर नहीं रहेगा। मास का व्यवसाय भारतीय परम्परा, संस्कृति, सभ्यता के विरुद्ध तो है ही। साथ ही शासन द्वारा अपनाये गये अहिंसा के उसूल के भी खिलाफ है। अस्तु, इस अनाचार का सर्वत्र खुला विरोध होना चाहिये। आर्यसमाज के प्रसिद्ध प्रचारक इस दिशा में उत्साह से आगे आकर पथ प्रदर्शन करे। समाज के उत्साही धनी सज्जन मास विरोधी साहित्य तैयार करा कर उसका ग्राम ग्राम मे प्रचार करावे। कार्यकर्त्ताओ को प्रोत्साहन दे।

जो सज्जन प्रचार कार्य मे हाथ बटाना चाहते हैं, वे इस विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिये दनये पैसे का पोष्टेज भेजकर प्रचाराथ प्रकाशित साहित्य निम्न पते से मगा लें। —शोभाराम वेनुसेवक कविरत्न

सचालक, गोरक्षा प्रचार विभाग

पो० लखनादान (म० प्र०)

आर्यसमाज के प्रचारक आदर्श हों

यद्यपि आज आर्यसमाज मे प्रचारको एव उपदेशको की सख्या पहिले की अपेक्षा अधिक हो गई है, परन्तु समाज के प्रचार का प्रभाव पहिले की अपेक्षा कम होता जा रहा है। पहिले उपदेशक व प्रचारक अधिक विद्वान् व सिद्धान्तो के ज्ञाता होते थे। और अपनी बात दृढ़तापूवक प्रस्तुत करते थे। परन्तु आज जनरुचि का ध्यान रखते हुए लोगो की मन पसन्द बाते कहने की प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है।

दूसरे मतावलम्बियो के प्रचारक अपने सिद्धान्तो के ज्ञाता कुरान, बाईबिल आदि का अध्ययन करने वाले पाये जाते है। उनके आचरण एव वेशभूषा मे भी उनके विचारो की झलक दीखती है। परन्तु हमारे यहाँ इस प्रवृत्ति का अभाव बढ रहा है। इसलिए आर्यसमाज के प्रचार काय को सफल एव आकर्षक बनाने के लिए आवश्यक है कि पूण परीक्षा और सन्तोष के पश्चात् ही इन महत्त्वपूण पदो पर नियुक्तियाँ की जाया करे आशा है सार्वदेशिक एव प्रान्तीय सभाए इस ओर ध्यान देंगी। मैं सन्यासी के नाते ये बाते लिख रहा हू। आज के वातावरण को देखकर यह लिखना अपना कर्त्तव्य समझता हू। —वेङ्कट स्वामी (हिंसार)

शिक्षा संस्थाओं का राष्ट्रीयकरण
आर्य संस्थाओं की सम्पत्ति बचाओ

पजाब सरकार अपने आर्थिक सकट के कारण अभी तक प्राइवेट स्कूलों को हाथ नहीं लगा सकी परन्तु वह दिन दूर नहीं जब कि प्राईवेट स्कूलो का भी सरकार अपने अधीन कर लेगी और साथ ही उनके भवनो पर भी अपना अधिकार जमा लेगे। सम्भव है कि उसका कोई मुआवजा भी न दे। केवल प्राइवेट स्कूलों के वही भवन सरकार के हाथों मे बच सकेंगे जो आर्यसमाजों या आर्य प्रतिनिधि सभाओ के नाम रजिस्टड होगे।

इसलिए आर्य सामाजिक शिक्षा सस्थाओ की प्रबन्धकर्त्री सभाओ से मैं प्राथना करूगा कि यदि उनके स्कूलो की बिल्डिंगें किसी आर्यसमाज के नाम हैं तो ठीक है वरन् उनको चाहिए कि वह शीघ्र ही उनको अपने आर्यसमाज या आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम रजिस्टरी करा दे नहीं तो बाद म उनको पछताना होगा।

पजाब म खतरा हो, यह बात नहीं दूसरे राज्यों म भी समाजवादी समाज रचना के नाम पर आर्यसमाज की सम्पत्तियाँ खतरे म पड सकती है अत समस्त आर्यजगत् को सावधान रहना चाहिए।

—इन्द्रसेन एम० ए० प्रधान

प्रा० सभा पजाब

चयनिका

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय

मनुष्य की किसी भी सफलता मे उद्देश्य के नष्ट होने का ही खतरा पैदा हो जाए तो मानव समाज को इसे समझना चाहिये और इस प्रकार के विनाश को टालने के लिए हर प्रकार का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

यदि विज्ञान और उसके उपासक अपनी खोज पर काम करते रहे, और विनाशकारी हथियारो म सुधार करने रहे तो मानव समाज का क्या भविष्य होगा? दूसरे शब्दों म क्या विज्ञान को उसके सामाजिक दायित्वों और नैतिक सिद्धान्तो का स्वीकार किये बिना वरदान माना जा सकता है? परिस्थितियो ने समस्त दुनिया को इस आवश्यकता के प्रति जागरूक बना दिया है कि वैज्ञानिक प्रगति का आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो के साथ समन्वय किया जाय।

भारतीय विज्ञान सस्था बगलौर २।२।५९ — डा० राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति

शिक्षा और समाज की प्रगति

शिक्षा प्रणाली के आदर्श और जिस समाज को उस प्रणाली से लाभ होता है, उसके आदर्श समान होते है। इसलिए शिक्षा विकास समाज का केन्द्र बिन्दु है। शिक्षा से विद्यार्थियो को उन विचारो व कार्यों का ज्ञान होना चाहिये, जो समाज के लिए आवश्यक है।

आज हम अणु युग की वास्तविकताओं का सामना करना पड रहा है जब कि हमारे सामाजिक व आर्थिक उपकरण औद्योगिक युग से पहिले के है। राष्ट्रीय प्रयास से हम एक सदी को सिकोडकर १० वर्षों म परिवर्तित करना होगा। और तभी विकास करते करते हम अपनी गरीबी को दूर करने लायक बन सकेंगे।

ग्राम विश्वविद्यालय गोरखपुर ३१—१—५९ — प० गोविन्द बल्लभ पन्त

विज्ञान का दायित्व

आज एक ओर हम चन्द्र मगल, और शुक्र तक पहुचने के लिए अपने हाथ फैला रहे हैं। दूसरी ओर यह नहीं देखते कि इस पृथ्वी पर क्या हो रहा है और हम इसका प्रबन्ध भी नहीं कर पाते। इस पीढी म अनेक महान् घटनाएँ हो गई हैं। जब अणु बम के आविष्कर्त्ता ने पहले पहल उसका विस्फोट देखा, तब वह गीता म वर्णित अर्जुन के समान चिल्ला उठा कि मैं हजारों सूर्य के प्रकाश को देख रहा हू। यह हजार सूर्य का प्रकाश मानव जाति के विनाश के लिए है, इससे मानव जाति या पृथ्वी का वैभव नहीं बढता। यह झगड़ा सदा से रहा है कि महाशक्ति और उसका दुर्व्यवहार। इस झगडे के बीच हम न केवल अपनी विश्व की समस्याये हल कर सकते हैं। परन्तु इन समस्याओं का हल करते समय विज्ञान और उसके बड बडे पुजारियो का एक बात का ध्यान रखना चाहिये कि उनके वैज्ञानिक कार्यों और आविष्कारो का प्रभाव समाज पर भी पड़ता है और इन आविष्कारो के साथ कुछ नैतिक प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं।

यदि विज्ञान ने समस्या खडी की है तो उसे ही यह समस्या हल करनी होगी। विज्ञान को केवल आकाश की ओर देखकर तथा गणित के बडे बडे सिद्धान्तो म लीन नहीं हो जाना चाहिये। और न उसे नकली आदमी या मस्तिष्क बनाकर रह जाना चाहिये जो सही जोड लगाता है, अपितु उसे मनुष्य की आत्मा और मस्तिष्क का एकीकरण करना चाहिए।

४६ वीं भारतीय विज्ञान काग्रेस दिल्ली २१ जनवरी ५९ —प० जवाहरलाल नेहरू

बाल-विनोद

अनमोल बोल

अपनी कमाई में से दशवां नहीं तो १६ वां हिस्सा अवश्य गरीबों मे बाँटने के लिए रख दो। अन्यथा कमाई अशुद्ध होगी और उसमें बरकत नहीं होगी।

× × ×

असुविधा सहन करने पर भी जो भंग न हो वही अटल निश्चय कहा जा सकता है।

× × ×

चार चीजों पर भरोसा मत करो, बिना जीता हुआ मन, शत्रु की प्रीति, स्वार्थी की खुशामद और ज्योतिषियों की भविष्यवाणी।

× × ×

नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यंतिक क्षय। हमारी नम्रता शून्य तक पहुँच जानी चाहिए।

जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य को आराधना करनी है, ब्रह्मचर्य का स्वाभाविक बनाना है, उसके लिए शारीरिक परिश्रम रामबाण के समान है।

× × ×

अस्पृश्यता दूर करने का अर्थ है समस्त संसार के साथ मित्रता करना, उसका सेवक बनना।

स० फ० सुधाकर-आगरा

रत्न-कण

[आर्यकुमार रजनीकान्त, लखनऊ]

१—क्रोध सफलता का सबसे बड़ा शत्रु है और संयम सबसे बड़ा मित्र।

—महाकवि भारवि

२—अगर आप ईश्वर को देखना चाहते हैं, तो आपको ईश्वर बन जाना होगा। —बर्नार्डशा

३—दुष्ट आदमी जब साधु बनने का ढोंग करता है तो वह और भी खतरनाक हो जाता है। —बेकन

४—पाप छिपा नहीं रह सकता वह पापी के मुख पर लिखा होता है।

—महात्मा गांधी

५—अन्याय करने वाला सहन करने वाले की अपेक्षा सदैव अधिक कष्ट में रहता है। —प्लेटो

६—अब तक कोई मनुष्य नकल करके महान नहीं बना।—डा०जानसन

७—कर्जदार की आत्मा मर जाती है। —शेक्सपीयर

८—अधिक बुद्धिमान व्यक्ति वही है, जिसका उदार मस्तिष्क सम्पूर्ण मानवता के हित में आनन्दित होता है। —ओलीवर गोल्डस्मिथ

चन्दा मामा

चन्दा मामा कितने अच्छे।
तुम्हे प्यार करते सब बच्चे।
क्यों रहते हो इतनी दूर ?
हमे बताओ आज जरूर !
बादल में जब-जब छिप जाते,
बार-बार हम तुम्हे बुलाते।
सूरत लगती प्यारी-प्यारी,
याद सताती हमें तुम्हारी।
नील गगन की खिड़की से तुम,
झांक झांक कर देखा करते।
हंसते गाते मोद मनाते,
बच्चो के संग खेला करते।

—तिलकराम वर्मा

चुटकुले

१—एक बार की बात है कि दो मित्र कहीं जा रहे थे। राह मे एक तम्बाकू का खेत पड़ा। एक मित्र तम्बाकू नहीं खाता था। दूसरा तम्बाकू तोड़कर खाने लगा। पास ही एक गधा चर रहा था। तम्बाखू न खाने वाले मित्र ने दूसरे से कहा कि देखो गधा तम्बाकू नहीं खा रहा है, तुम क्यों खा रहे हो ! तब तम्बाखू खाने वाले मित्र ने कहा कि—जी हाँ, गधे तम्बाखू नहीं खाते।

२—एक समय की बात है कि दो आदमी आपस मे झगड़ रहे थे। उनमें से एक ने कहा कि मैं तुम्हें इतना मारूंगा कि तुम्हारी चटनी बना दूंगा। फिर दूसरे ने कहा कि मैं तुम्हें इतना मारूंगा कि तुम्हारी कचौड़ी बना दूँगा। एकायक एक पास खड़ा हुआ आदमी बोला कि जल्दी जल्दी कचौड़ी तथा चटनी बनाओ मेरे मुंह मे पानी भर आया है।

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ....

आयु .... वर्ष ....

पूरा पता ....

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां ....

स्वास्थ्य-सुधा

कुछ उपयोगी बातें

१—हाथ कटने पर गरम पानी में नींबू डाल कर धोने के बाद नारियल का तेल लगाने से लाभ होता है।

२—बहुत दूर तक चलकर आने पर थकावट दूर करने के लिए गर्म पानी में नमक मिलाकर घुटने तक पैर धोने से थकावट दूर होती है।

३—ताजी सब्जियों को कुछ देर तक नमक मिले पानी में रखने से सब्जी के कीड़े मर जाते हैं।

४—आग से जलने पर कड़ुवे परवल का काढ़ा व सरसों का तेल पकाकर लगाने से आराम मिलता है।

५—आग से जल जाने पर तिली का तेल और चूने का पानी एक साथ फेंटकर लगाने से लाभ होता है।

६—कत्था और जीरा मुंह में रख कर लार टपकाने से मुंह के छाले तुरत ठीक हो जाते हैं।

७—पित्त पापड़ा के पत्रों का रस लेप करने से हाथ पैर के तलाओं की जलन शांत हो जाती हैं।

८—मक्खन में जीरा एवं मिश्री मिलाकर खाने से चेचक के दाग मिट जाते है।

—स० फ० श्रीमती सुमित्रादेवी

बहुत दिन जीने के सामान्य नियम

सोवियत रूस के प्रो० श्री एस्किन ने अपने एक भाषण मे कहा कि हमारे विज्ञान की यह आम धारणा है कि मनुष्य १५० वर्ष से १७५ वर्ष तक साधारणतया जी सकता है।

प्रोफेसर का नारा है कि चिन्ता मत करो, चिन्ताओं से ऊपर रहो और मजे से १७५ वर्ष जियो। क्योंकि चिन्ताओं से उमर ढलने लगती है। अपने इस नारे की व्याख्या में उन्होंने सात नियम भी प्रस्तुत किये हैं।

१—दिन भर का काम व्यवस्थापूर्वक और योजना के साथ करो।

२—अपनी शक्ति सामर्थ्य से अधिक काम मत करो।

३—साप्ताहिक छुट्टियों तथा दूसरी छुट्टियों में वास्तविक आराम करो।

४—मध्य आयु में ८ घंटे अवश्य सोओ।

५—प्रतिदिन १०-२० मिनट तक अवश्य व्यायाम करो। इसमें बूढ़े या जवान का कोई भेद नहीं।

६—दिन में चार या पांच बार हलका भोजन करो।

७—तबियत के साथ देह को रगड़ रगड़ कर खूब नहाओ और खुली हवा में काफी टहलो।

नोट :—मरना कोई नहीं चाहता तो इन छोटी छोटी बातों को अपनी आदतों का रूप देकर, अपनी इस बलवती इच्छा को, पूर्ण करने का प्रयत्न क्यों न करें।

स्मरणीय परामर्श

१—स्वास्थ्य संसार के सुखों का मूल है।

२—स्वास्थ्यहीन पुरुष सुख के सम्पूर्ण साधनों के होने पर भी सुखी नहीं।

३—प्रातःकाल सबेरे की ताजी हवा मे जंगल में भ्रमण करने से स्वास्थ्य का जितना उपकार होता है उतना किसी औषधि से नहीं होता।

४—भोजन नियत समय पर करो।

५—जितना पचे उतना ही भोजन करो।

६—भोजन करते समय प्रसन्न रहो।

७—शाक भाजियों का खानेवाला सर्दी तथा कोष्ठबद्धता से मुक्त रहता है।

८—भोजन के पदार्थ खूब चबा कर खाना चाहिए। खूब भूख लगने पर ही भोजन करो क्योंकि पेट के भीतर दांत नहीं हैं।

९—पैदल घूमने के समान कोई औषधि और पथ्य नहीं है।

—जगदीशसिंह सोलंकी, ब्यावर

भारत का शान्तिपूर्ण दृष्टिकोण

हम न तो हिंसा की भाषा बोलेंगे, न शस्त्रीकरण की होड़ में शामिल होंगे, और न घृणा का प्रचार करेंगे। हम कभी भी तब तक बल का प्रयोग नहीं करेंगे जब हमारे विरुद्ध बल का प्रयोग न किया जाय।

गन्टूर • मेनन
७-२-५९ रक्षामन्त्री, भारत सरकार

सभा की सूचनाएं

उपदेशकों प्रचारकों के मार्च १९५९ के पुरोगम

श्री ओ३म्प्रकाशशास्त्री १२ से १५भा. स. बहराइच
श्री रुद्रदत्त शास्त्री १ से ३ तक " अकबरपुर, कानपुर
१२ से १४ तक " लालगंज,आजमगढ़
२७ से ३० तक " मर्थना (इटावा)
श्री सत्यमित्र शास्त्री १ से ३१ तक" जिला बस्ती
श्री सच्चिदानन्द शास्त्री २से४ तक" महगवां, हरदोई
श्री राजारामशास्त्री १३ से १६ तक" लक्सर, सहारनपुर
श्री रामचन्द्र शर्मा ११ से १४ तक"लालगंज आजमगढ़
श्री धर्मदत्त आनन्द २ से ४ तक " महगवां
६ से ९ तक " गुरुकुल लवेदी
२७ से ३० तक " मर्थना इटावा
श्री धर्मराजसिंह ६ से ९ तक"हींग की मंडी आगरा
" १३ से १६ तक " लुक्सर-सहारनपुर
श्री गजराजसिंह ५ से ७ तक " थानाभवन मुजफ्फरनगर
" २८से ३० तक " गंज डुडवारा
श्री भद्रपाल जी ६ से ९ तक गुरुकुल लवेदी इटावा
१३ से १५ तक " बहराइच
२८ से ३० तक " गंज डुडवारा
श्री भवणसिंह ५ से ७ तक "थानाभवन मु०नगर
श्री सर्वगुणप्रसाद १से३१ तक " जि० बस्ती
श्री प्रकाशवीर १ से ३१ तक " आगरा
श्री बालकृष्ण १ से ३१ तक " जि०स० इलाहाबाद
श्री रघुवरदत्तशर्मा१ से ३१ तक " जि० शाहजहांपुर
श्री रामपालसिंह १ से ३१ तक " जि०स०आजमगढ़
श्री उमेशचन्द्र स्नातक १ से २ " खुर्जा बुलन्दशहर
" ३ से ४ " शिकारपुर
" ५ से ६ " गढ़मुक्तेश्वर
" ७ से ८ " बुलन्दशहर
" ९ से १० " सिकन्दराबाद
" ११ " गुलावठी
" १२ " दादरी
" १३ से १६" गुरु०सिकन्दराबाद

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

उत्सव समाचार—

—आर्यसमाज भरथना का उत्सव २७ से ३० मार्च ५९ तक होगा।

—लातूर (हैदराबाद) का उत्सव २६ से २७ मार्च तक होगा। श्री प्रकाशवीर जी पधारेंगे।

—आर्यसमाज बगही का उत्सव २८ फरवरी से १ मार्च तक होगा। आर्यसमाज-भवन का उद्घाटन भी होगा।

—आर्यसमाज हसवा (फतेहपुर) का उत्सव २ से ४ मार्च तक होगा। श्री विहारीलाल जी शास्त्री भी पधारेंगे।

—आर्यसमाज नरेला (दिल्ली) का उत्सव २७ से २९ मार्च तक होगा।

—आर्यसमाज सुभाषनगर (प्रयाग) का उत्सव २७ फरवरी से १ मार्च तक होगा। श्री अभेदानन्द जी व सत्यमित्र जी पधार रहे है।

—श्री दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल (दिल्ली) का उत्सव ११ से १२ अप्रैल ५९ तक होगा। दक्षिण दिल्ली प्रचार-मण्डल की सब समाजों का व्याख्यान माला भेंट की जायगी।

दयानन्द-सप्ताह

मान्यवर महोदय, नमस्ते

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी युग-प्रवर्त्तक ऋषिवर दयानद महाराज की पावन स्मृति में ऋषिबोधोत्स (दयानन्द सप्ताह) सोमवार फाल्गुन कृष्णा अष्टमी से रविवार फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी संवत् २०१५ वि तदनुसार २ मार्च से ८ मार्च सन् १९५९ तक मनाया जायगा। आशा है, आप इस सप्ताह को अत्यधि उत्साह एवम् संलग्नता के साथ मनाने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे, जिससे वैदिक वातावरण उत्पन्न होकर आर संस्कृति का प्रचार हो, आर्यों के जीवन मे पवित्रता आकर श्रद्धा और भक्ति की वृद्धि हो। प्रत्येक आर्य सभा सद् को महर्षि की पावन-स्मृति मे स्वाध्याय का व्रत लेकर आत्म निरीक्षण करना चाहिए।

दयानन्द-सप्ताह का कार्य-क्रम

संकीर्तन—प्रतिदिन प्रातः नगर नगर और ग्राम-ग्राम मे टोलियां बनाकर संकीर्तन किया जावे।

यज्ञ—कीर्तन के पश्चात् आर्य मन्दिर मे सार्वजनिक यज्ञ किया जावे। यथासम्भव इस सप्ताह में सम्पू यजुर्वेद संहिता से वृहत् यज्ञ की योजना की जावे।

प्रचार—प्रतिदिन सायकाल ग्रामों में, नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लों में अथवा आर्य-मन्दिरों में कथा द्वारा तथ अन्य प्रकार से वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार की विशेष योजना की जाय और ऋषि जीवन पर विशेष प्रकाश डाला जावे। नवीन आर्य सभासद् बनाने का प्रयत्न किया जावे। सत्यार्थप्रकाश को बिना मूल्य या लागत मात्र पर देकर उसका अधिक से अधिक प्रचार किया जावे।

आचार व्यवहार—जनता मे से भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता मिटाने के लिए, सिनेमाओं के भ्रष्टाचार करने वाले व अश्लील चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे। मादक द्रव्य निषेध व गोरक्षा पर बल दिया जावे।

दलितोद्धार—इस सप्ताह मे न्यून से न्यून एक दिन अछूत कही जाने वाली जातियों में, विशेषरूप से प्रचा कर उनके उठाने और अस्पृश्यता मिटाने का प्रयत्न किया जावे। दलितों को आर्यसमाज का सदस्य बनाक उनमें संस्कारों का प्रचार कराया जाय।

प्रीतिभोज—यथासम्भव प्रीतिभोज की भी उसी दिन योजना की जावे। प्रीतिभोज अत्यन्त सादा और स्वल व्ययक हों, उनमे जात पाँत छूत-अछूत का भेद-भाव विसार कर, सब आर्य्य भाई-बहन समान रूप से सस्नेह भाग ले।

इस सप्ताह मे एक दिन समस्त आर्य्य भाई-बहनों को एकत्र होकर इस बात पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिये कि जिस शक्तिशाली आर्यसमाज का कभी बहुत बड़ा प्रभाव था, आज वह शिथिल और अकर्मण्य सा क्यो बन गया है। इसमे स्वयं अपनी कहां तक त्रुटि है।

दयानन्द-जन्म-दिवस (ऋषि-बोध-पर्व ८ मार्च ५९)

प्रातः—समस्त आर्य सज्जन तथा देवियां मन्दिर में एकत्र होकर—

१—कुछ काल वेद पाठ करें।
२—साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि विधान किया जाय।
३—आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन गान किये जायँ।
४—प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय, वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करे।

मध्याह्न—विशेष नगर कीर्तन किया जाय। कीर्तन अधिक से अधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिये। आर्य पुरुषों, कुमारों, देवियों को टोलियां बना बनाकर स्वयं भजन गाने चाहिए। भजनों में प्रभु-भक्ति, ऋषि महिमा, जातीय गौरव तथा आत्म सुधार के विशेष भाव हों।

रात्री—दीपमालिका और उसके पश्चात् आर्य मन्दिरों में वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले व्याख्यान होने चाहिये।

विशेष—इस सप्ताह मे टोलियां बनाकर प्रदेशीय वेद प्रचार के लिये धन संग्रह का विशेष प्रबन्ध किया जावे और समहीत धन सभा के कोष में लखनऊ के पते पर भेजना चाहिये।

टिप्पणी :—आर्यमित्र हीरक जयन्ती, गुरु विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक उद्घाटन एवं अन्य अभिनन्दनों के लिए भी जनता मे प्रचार किया जाय और समारोहों को सफल बनाने के लिए धन संग्रह करके सभा में भेजा जावे।

विनीत :—
फूलनसिंह
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दिनाँक ९–२–५९

—गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा का उत्सव १४ से १६ मार्च ५९ तक होगा। अनेक सम्मेलनों का आयोजन है।

—गुरुकुल विद्या विहार (कुरुक्षेत्र) का उत्सव २० से २२ मार्च ५९ तक होगा।

—आर्यसमाज आरा का उत्सव ९ से १२ अप्रैल ५९ तक होगा।

—गुरुकुल सिरसागंज का उत्सव १२ से १५ मार्च ५९ तक होगा। ५ नवयुवक आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर समाज प्रचार करेंगे।

—आर्यसमाज औरैया का उत्सव २८ से ३० मार्च ५९ तक होगा।

— आर्यसमाज विधूना का उत्सव २६ से २८ फरवरी ५९ तक सम्पन्न हो गया।

—आर्यसमाज पडरौना का उत्सव २० से २२ फरवरी ५९ तक सम्पन्न हो गया।

—आर्यसमाज मेरठ का उत्सव ८ से ११ फरवरी ५९ तक सम्पन्न हो गया।

प्रचार-समाचार—

—आर्यसमाज बजबज के सदस्यों ने पाकिस्तान में सत्यार्थप्रकाश पर लगे प्रतिबन्ध का घोर विरोध किया।

—आर्यसमाज जौनपुर में श्री विश्वबन्धु जी वेदालंकार के उद्योग से महिला समाज की स्थापना हुई।

—नानपारा आर्य कुमार सभा की ओर से 'वंसत पचमी' के उपलक्ष्य में बुद्धिलाल जी एम० एल० ए० की अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन हुआ तथा एक कवि गोष्ठी का निर्माण करने का भी निश्चय किया गया।

—मिर्जापुर आर्यसमाज के सम्मानित सदस्य श्रद्धेय प० मदनमोहन जी की बिदाई के उपलक्ष्य में बिदाई समारोह का आयोजन किया गया। और पण्डित जी को मानपत्र भेंट किया गया। पण्डित जी के ही अथक श्रम के परिणाम स्वरूप मिर्जापुर समाज आज जीवित नजर आ रही है। भविष्य में पीलीभीत में रहकर समाज की सेवा करेंगे ऐसा पण्डित जी का निश्चय है।

—बस्ती आर्यसमाज की ओर से वंसत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रभात फेरी निकाली गयी और यज्ञ समारोह सम्पन्न हुआ।

—विविधा जलालपुर (फर्रुखाबाद) आर्यसमाज में वसन्त-उत्सव मनाया गया। श्री स्वामी देवानन्द परिव्राजक जी का प्रवचन हुआ। कार्यक्रम प्रभावोत्पादक रहा।

—जहानाबाद में दि० २४, २५, २६ जनवरी ५९ को जिलार्य सम्मेलन बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

—लखनऊ चौक आर्यसमाज में हसनगंज निवासी श्री प्रेमचन्द्र गुप्त तथा कुमारी प्रेमवती गुप्ता का पाणि ग्रहण संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह की सादगी प्रशंसनीय थी। सम्बन्धित संस्थाओं को दान भी दिया गया।

—आगरा जिले के समस्त आर्य समाजों के मन्त्री महोदयों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य प्रचारक श्री प्रकाशवीर जी को ११।२।५९ से जिले मे प्रचारार्थ भेजा गया है। जहाँ कहीं वह पहुँचे उनसे प्रचार कराया जावे और सन् १९५७ तक का सूदकोटि, दशांश, जो सभा का प्राप्तव्य हो वह धन प्रचारक महाशय को दिया जाय और सभा की प्रकाशित रसीद प्राप्त की जाय। इसके साथ साथ वेद प्रचार निधि में भी दान दिया जाय।

—मोहनलाल आर्य
मण्डलाधीश आगरा क्षेत्र

—'तपोभूमि' मासिक, मथुरा का दर्शनानन्द संग्रहाङ्क लगभग १००० पृष्ठों में अप्रैल के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हो रहा है। इसकी रूपरेखा तथा विशेष विवरण १५ फरवरी '५९ के आर्यमित्र में प्रकाशित हो चुका है।

जिन आर्यसमाजों के पास स्वामी दर्शनानन्द जी के आजकल अप्राप्य ट्रैक्ट हों, वे कृपाकर इस विशेषाङ्क के सम्पादक श्री प० श्रीराम जी शर्मा, शास्त्री, ७४९ हींग मण्डी आगरा के पते पर अथवा सम्पादक 'तपोभूमि' २०, कृष्णगङ्गा, मथुरा के पते पर शीघ्र भेजने की कृपा करें।

-ईश्वरी प्रसाद 'प्रेम', एम० ए०

—आर्यसमाज ऐशनाई (फतहपुर) का जीर्णोद्धार श्री रामनिवास मिश्र जी के उद्योग से हुआ।

—श्री स्वामी नारायणानन्द सर्वदानन्द जी सरस्वती जहाँ कहीं हों औरैया समाज के नाम पर पता दें। तथा उत्सव में २८ से ३० मार्च तक उपस्थित होने का कष्ट करें।

शोक समाचार—

—बरेली में श्री चन्द्रनारायण एडवोकेट उपमन्त्री सभा के ताऊ श्री श्यामनारायण के निधन पर शोक मनाया गया। २६ जनवरी को गृह शुद्धि के पश्चात् अनाथालय को दान दिया गया।

—श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, श्री बा जगनन्दन लाल जी ऐडवोकेट इलाहाबाद के पिता श्री शङ्करलाल जी, तथा श्री भरतसिंह जी प्रिन्सिपल शिकोहाबाद के भतीजे श्री राजेन्द्रसिंह जी सब इन्सपेक्टर पुलिस की आकस्मिक मृत्यु पर यह आर्य उप प्रतिनिधि सभा मैनपुरी हार्दिक दुःख तथा दुखी परिवारों के साथ समवेदना प्रकट करती है, और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्माओं को स्वर्ग में सद्गति एवं शांति प्रदान करे और दुखी परिवारों को धैर्य बधावे।

—आर्यसमाज शाहजहाँपुर के सदस्यों ने डा० शांतिदेव जी उपप्रधान की धर्मपत्नी तथा जयन्ती प्रसाद जी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

—गुरुकुल सिरसागज के कुलवासियों ने श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी के निधन पर दुःख व्यक्त किया।

—गया आर्यसमाज के सदस्यों ने भूतपूर्व प्रधान एवं कार्यकर्त्ता श्री सुखूराम जी की धर्मपत्नी के स्वर्ग सिधार ने पर दुःख प्रकट किया।

—आगरा नगर आर्यसमाज के सगठित सदस्यों ने श्री पं० जीवाराम जी दीक्षित के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

निर्वाचन—

—मीरानपुर कटरा (शाहजहाँपुर) आर्यवीर दल के रामकुमार जी मन्त्री तथा श्री अन्तराम जी नगर नायक निर्वाचित हुए।

—जौनपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री रामावतार जी, मन्त्री श्री विश्वनाथ जी।

—बापू पुरवा आर्यसमाज (कानपुर) प्रधान श्री भीमसेन जी, मन्त्री श्री रामरजन जी।

—शहर झांसी प्रधान जयचन्द्र जी, मन्त्री बूटामल जी।

—रामनगर आर्यसमाज [नैनीताल] प्रधान श्री आनन्द प्रकाश जी, मन्त्री रामावतार जी।

-शाहजहांपुर आ.स. के प्रधान श्री चोखेलाल जी, मन्त्री श्री तिनकूलालजी

—नईमण्डी आर्यसमाज (मुजफ्फर नगर) प्रधान श्री ओम्प्रकाश जी मन्त्री रामशरणदास जी।

—वाराणसी आर्यसमाज प्रधान श्री अवधबिहारी जी, मन्त्री श्री रामचन्द्र जी, श्री सीताराम जी प्रतिनिधि।

पांचली खुर्द आर्यसमाज (मेरठ) प्रधान श्री चेतराम जी, मन्त्री श्री टेकराम सिंह जी।

—कनखल आर्यसमाज (हरिद्वार) प्रधान श्री बच्चन लाल जी, मन्त्री श्री छज्जाराम जी, श्री अमरसिंह जी प्रतिनिधि।

—बगही आर्यसमाज प्रधान श्री वैजनाथसिंह जी, मन्त्री श्री शिवमन्दिर सिंह जी।

—कीपर बिलवरा रोड आर्य समाज (बलिया) प्रधान श्री रामाधार सिंह जी, मन्त्री श्री पन्नालाल जी।

—लातूर आर्यसमाज (हैदराबाद) प्रधान श्री नरसिंह राव जी, मन्त्री श्री मंगलदेव जी।

—अगवानपुर आर्यसमाज प्रधान श्री शेरसिंहजी, मन्त्री श्री पवनकुमारजो

—सिवहारा आ० स० प्रधान श्री ला० हरस्वरूप मल, श्री दिग्विजयसिंह जी मन्त्री, श्री दिग्विजसिंह जी व श्री साधुराम जी प्रतिनिधि

—दरियागंज आ० स० [दिल्ली] प्रधान प० महेन्द्रदेव जी, श्री हरस्वरूप जी मन्त्री।

—आ० स० सीहोर प्रधान श्री विष्णुदत्त जो, श्री प्यारेलाल जो मंत्री।

—आ० स० आलमनगर प्रधान श्री यशपाल जी, श्री सचेर्दसिंह जी मन्त्री।

—जौनपुर आर्यसमाज प्रधान श्री रामावतारजी, मन्त्री श्री विश्वनाथजी।

—भरथना आर्यसमाज [इटावा] प्रधान श्री रामेश्वर दयालु जी, मन्त्री श्री धर्मपाल जी, श्री भगवत्तदयालुजी प्रतिनिधि।

—हरदुआगंज आर्यसमाज प्रधान श्री देवेन्द्र सिंह जी, मन्त्री श्री मदन लाल जी, वीरेन्द्र सिंह प्रतिनिधि।

—ढकिया बराह (शाहजहाँपुर) प्रधान श्री ठा० विलाससिंह जी, मंत्री श्री वासुदेव जी।

—बजबज आर्यसमाज प्रधान श्री रामानन्द जी, मन्त्री श्री महादेव आर्य।

—सिविल लाइन नरही आ०स० प्रधान श्री एस० डो० आनन्द, मन्त्री श्री इन्द्रप्रकाश जी।

आ.स. शास्त्रीनगर कानपुर का चुनाव

प्रधान—श्री जगन्नाथप्रसाद वैद्य कविराज
उपप्रधान—श्री हरिवंशलाल वाधवा
मन्त्री—श्री कृष्णगोपाल जी
उपमन्त्री—श्री कपिलदेव जी
कोषाध्यक्ष—श्री हरिशरणलाल जी

—रोशनाई आर्यसमाज [फतहपुर] प्रधान श्री जगन्नाथ जी, मन्त्री श्री राजेन्द्रसिंह जी।

—बइजौई आर्यसमाज प्रधान श्री द्वारिकाधीश जी, मन्त्री श्री चन्द्रपाल जी।

—कोटद्वार आर्यसमाज (गढ़वाल) प्रधान श्री मक्खनलाल जी, मन्त्री श्री शमशेर सिंह जी, श्री मक्खनलाल जी प्रतिनिधि।

—मेंडू आर्यसमाज [अलीगढ़] प्रधान श्री नेत्रपाल जी शर्मा, मन्त्री श्री सूर्यपाल सिंह जी।

—मीरानपुर आर्यसमाज [शाहजहाँपुर] प्रधान श्री बांकेलाल जी, मन्त्री श्री डा० शालिग्राम जो, श्री माधोराम जी प्रतिनिधि।

—रौराकलाँ आर्यसमाज (रामपुर) प्रधान श्री जगपालसिंह जी, मन्त्री श्री इन्द्रदेव जी।

—अनूपशहर आर्यसमाज प्रधान श्री लल्लामल जी, मन्त्री श्री सुखदयाल जी गुप्त।

—नगर आर्यसमाज आगरा का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री मोहनलाल आर्य, उपप्रधान श्री रामपालसिंह आर्य, उपप्रधान श्री भूदेव जी शास्त्री, एम० ए० एल० टी० मन्त्री श्री विशम्भरनाथ जी आर्य, स० मन्त्री श्री भगवत स्वरूप जी आर्य, उपमन्त्री श्री मदनमोहन जी आर्य, कोषाध्यक्ष श्री द्वारका प्रसाद जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री अमरनाथ जी आर्य, मन्त्री अनाथालय श्री शिवनारायण आर्य, मन्त्री केदारनाथ सेकसरिया आर्यकन्या इण्टर कालेज, श्री सरदारी लाल जी आर्य, मन्त्री विधवा आश्रम श्री रामदयाल जी आर्य।

निर्वाचन—

—औरैया आर्यसमाज (इटावा) प्रधान श्री लालमन जी, मन्त्री श्री रामलखन जी, श्री तेज बहादुर व बंशीलाल जी प्रतिनिधि।

सिंहावलोकन

आर्य साहित्य-निर्माण में सतर्कता आवश्यक है

[श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, नासिक]

(गताङ्क से आगे)

जो किया जाता है वह विपरीत होता है। क्या बीड़ी और सिगरेट, तथा शराब की बोतल पर ऋषि का नाम रख दिया जावे तो वे पवित्र बन जावेंगे? ऐसी भी संस्थायें हैं जो अपने नाम के साथ दयानन्द का नाम रखती हैं, आर्य शब्द भी जोड़ रखती है—फिर भी वहाँ पर मूर्तिपूजा आदि विरोधी बातें भी होती हैं।

यह कहना कि आर्यसमाज में वेदों को समझने वाले विद्वान् नहीं—सुतराम गलत होगा। वेद के वास्तविक स्वरूप और दृष्टिकोण को समझनेवाले विद्वान यदि हैं तो आर्यसमाज में ही हैं। आर्यसामाजिक विद्वानों से अतिरिक्त विद्वानों का वेद क्या है? और क्या नहीं है यह अभी तक निर्णीत नहीं हो सका है। जिन लोगों पर पौराणिक धारणाओं की छाप है उनका वेद विचित्र ही है। श्री विद्यानन्द जी विदेह और श्रीमान् प० सातवलेकर जी के वेद को ही देख लीजिए। इनके वेद के स्वरूप का निर्णय आज तक नहीं हो सका और न आगे हो ही सकेगा। आर्यसमाज के विद्वानों और आर्यसमाजों एवं आर्यों का परम कर्त्तव्य है कि वे इस दिशा में सक्रिय रूप से दृष्टि रखें कि आर्यसमाज के सिद्धान्त और वेद पर कौन किस समय क्या लिखता है—यह तो सदा ही दृष्टि में रखने का विषय है। हम सिद्धान्तों के विषय में बहुत सतर्कता रखने की आवश्यकता है। अन्यथा पछताना पड़ेगा।

एक घटना का मुझे स्मरण है। एक समय किसी व्यक्ति ने गुजरात के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री प० आनन्दप्रिय जी से वेद सम्बन्धी किसी बात की सम्मति लेना चाहा। श्री प० जी ने मुझे लिखा कि इस विषय में क्या सम्मति दी जावे। मैंने लिखा कि इस विषय में आपका सम्मति देना उचित नहीं होगा। क्योंकि वह बात जिस पर सम्मति मांगी गयी थी सर्वथा सिद्धान्त विरुद्ध पड़ती। थोड़े ही दिन का समय हुआ कि बड़ौदा में मैं श्री केशीभाई जी आर्य मन्त्री बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के गृह पर भोजन करने को बुलाया गया। मेरे वहां जाने पर श्री वेणीभाई जी आर्य और श्री चूनीभाई जी आर्य ने पूछा कि एक किसी डाक्टर का थीसिस जो दयानन्द की वेदभाष्य शैली की विशेषता पर है वे यदि वेदमण्डल की ओर से छपवायें तो कैसा होगा? मैंने उनको सम्मति दी कि ऐसे ग्रन्थों का छपवाना तो प्रशस्त काम है परन्तु उसे भली प्रकार देख दिखलाकर छापना चाहिए। यूनिवर्सिटी में डाक्टरेट के थीसिस का मानदण्ड दूसरा है और अपना मानदण्ड दूसरा है। यूनिवर्सिटी जिस चीज का प्रशस्त बता सकती है वह अपने प्रतिकूल बन सकती है और वह जिसे विपरीत बतलावे, हो सकता है वह अपने अनुकूल पड़ जावे। यदि ऐसे लेखों को छपाने पर बाद में कोई सिद्धान्त विपरीतता दिखलायी पड़ी तो भस्मासुर न्याय अपने ऊपर लागू होगा। यह एक प्रासंगिक बात थी। वर्तमान समय में अपने ही पत्रों में कभी कभी ऐसे भी लेख छप जाते हैं जो साधारणतया ठीक होते हैं परन्तु विचारने पर विपरीत ठहरते हैं। कभी-कभी बहुत छोटी सी बातें भी विचार में महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। परन्तु इस की बारीकी पर ध्यान नहीं जा पाता। एक समय एक डाक्टर महोदय ने पूर्वीय दर्शन पर अपना एक लेख प्रकाशित कराया। लेख में योगशास्त्र के योग शब्द पर विचार किया गया था। लेखक महोदय ने प्रोफेसर मैक्समुलर का हवाला देकर "योग" पद का "युजु योगे" धातु से बनाया और लिखा कि इसमें आत्मा का परमात्मा से योग का मेल होता है अतः यह योग है। परन्तु यह योगदर्शन की परिभाषा के विपरीत है—चाहे मैक्समूलर कहे व अन्य कोई कहे। योगदर्शन में तो चित्तवृत्ति के निरोध का नाम योग है। यहाँ पर 'योग' पद युज समाधौ धातु से बना है। 'युज योग" से नहीं, इसीलिए भाष्यकार ने लिखा कि—योग समाधि

(शेष अगले पृष्ठ ५२)

आर्य-जगत

गुरुकुल-पुत्र

स्वर्गीय श्री नित्यानन्द स्नातक शिरोमणि, एम. ए. की स्मृति में

श्री नित्यानन्द स्नातक गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के सुयोग्य एवं प्रभावशाली स्नातक थे। उनका जीवन अपने माता पिता के अनुरूप सादा तथा धार्मिक था। इनके पिता गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री रामेश्वर शास्त्री और माता श्रीमती विद्यावती हैं। पिता जी का सम्पूर्ण जीवन गुरुकुल की सेवा में ही बीता है। यह उनके आज्ञाकारी ज्येष्ठ पुत्र थे। स्नातक जी गुरुकुल में ही जन्मे और उनकी शिक्षा दीक्षा भी गुरुकुल में ही हुई। सन् १९५५ में गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती-महोत्सव पर आयुर्वेद शिरोमणि की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त कर वे गुरुकुल के स्नातक बने तथा डेढ़ वर्ष तक गुरुकुल में ही अवैतनिक रूप में अध्यापन का कार्य करते रहे। शिक्षा में अभिरुचि रखने के कारण जल्दी ही उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर लिया। सन् ५६ में इनकी नियुक्ति एन० सी० वैदिक इन्टर कॉलिज आगरा कैंट में संस्कृताध्यापक के पद पर हो गयी, वहीं पर कार्य करते हुए ३१ दिसम्बर १९५८ को सरोजनी नायडू अस्पताल में उनका आकस्मिक देहावसान हुआ। इस दुर्घटना से पारिवारिकों के साथ साथ कुलवासियों पर भी गहरा आघात पहुंचा है।

उनका जीवन विद्यार्थी काल से ही आदर्श रहा। वह स्वभाव से हंसमुख तथा सर्वप्रिय थे। जब तक वह गुरुकुल में रहे उन्होंने आश्रम एवं विद्यालय के नियमों का भली भांति पालन किया और गुरुजनों को अपने कार्यों से प्रसन्न रक्खा तथा जो काम उन्हें सौंपा गया उसे उन्होंने मनोयोग से पूरा किया। आगरे में पहुँच कर वह अपने व्यवहार, कार्य अनुशासन एवं प्रवचनों द्वारा आर्यसमाज एवं कालिज के आर्य बन्धुओं के कृपापात्र बन गये। ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त होने से वह विद्यार्थी काल से ही ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज पर संस्कृत एवं हिन्दी में लेख लिखते रहे। आर्यसमाज नामनेर के साप्ताहिक सत्संगों में तो आर्य बन्धुओं को प्रेरणा देने वाले उनके प्रभावशाली प्रवचन एवं भाषण होते ही रहते थे। मेरे सामने की बात है कि उन्होंने हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सम्बन्ध में जो भाषण वृन्दावन में दिया उसे जनता ने मन्त्रमुग्ध हो सुना और उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की। वह आर्यसमाज के एक होनहार उत्साही नवयुवक थे और उनसे बड़ी आशायें थीं। उनका पाणिग्रहण संस्कार हुए अभी एक वर्ष भी न हुआ था कि विधाता ने पच्चीस वर्ष की आयु में ही उनकी जीवन ज्योति को सदा के लिए बुझा दिया। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें और उनके शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

शोभाराम सिद्धान्तालङ्कार

पुत्र को पिता की श्रद्धांजलि

—रामेश्वर शास्त्री

तात मात प्यारे पुत्र भय्यन सहारे एक
दयिता दया के तुम प्राणनाथ प्यारे थे।
गुरुजन प्यारे शिष्य शिष्यजन प्यारे गुरु
मीतन के मीत तुम जीवन उजारे थे।
ऋषि के अनन्य भक्त सत्य में सदानुरक्त
कुल के सपूत तुम आर्यजन प्यारे थे।
बिजली चमक सम छिन का चमक तुम
बन्धन विमुक्त हुए नित्यानन्द प्यारे थे॥१॥
वृन्दावन पुण्य धाम यमुना पवित्र तीर
गुरुकुल तपोभूमि तामें जन्म पाये थे।
स्वर्णिम जयन्ती आकी तामें हो स्नातक बन
एमे की उपाधि धार गुरु पद पाये थे।
ढाई वर्ष नामनेर वैदिक कालेज माहि
शिक्षा की जगाय ज्योति जीवन भगाये थे।
तात मात नेह तज आगरे में देह तज
नित्यानन्द प्यारे प्रभु गोद में समाये थे॥२॥

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
१० फाल्गुन शक १८८०
(१ मार्च १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : २११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अर्थात् योग समाधि कहा जाता है। ऐसा न मानने पर अनेकों आपत्तियाँ खड़ी हो जायेंगी परन्तु डाक्टर महोदय को यह परिज्ञात नहीं था।

आचार्य दयानन्द ने वैदिक ऋषियों को मन्त्र द्रष्टा माना है, यास्क और अन्य शास्त्रों का भी अभिप्राय यही है। ऋषि से मन्त्र द्रष्टा, साक्षात्कृतधर्मा, मन्त्र प्रचारक अथवा उपदेष्टा आदि अर्थ लिए जाते हैं। यह बात सार्वजनिक आधारशिला पर दो दो चार की भाँति विदित है। विद्वान आर्य संन्यासी श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी और पं० धर्मोपदेशि जी ने नपार्थिवाद का वर्णन इस दिशा में किया है। परन्तु वह नपार्थि द्रष्टृत्वपक्ष के पोषण में है। ये विद्वान् द्रष्टृत्ववाद के पोषक हैं। परन्तु अभी थोड़े दिन हुए श्री डाक्टर सुधीरकुमार गुप्त ने अपने एक लेख "ऋग्वेद के ऋषि और उनका दर्शन" में ऋषि को मन्त्रों के अर्थ का परिचायक सारयुक्त, गुणवाचक यौगिक-पद कहा है। वे पुनः लिखते हैं कि मन्त्र का ऋषि मन्त्र के अर्थ का सार है, देवता उसका विषय है, छन्द उसका नियामक है। इन तीनों के युगपत् ज्ञान से मन्त्रार्थ का ज्ञान अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। इनकी दृष्टि में देवता की भाँति ही ऋषि और छन्द भी अर्थ के परिचायक हैं। यह एक नया विचार खड़ा किया गया और मध्यकालिक विचारधाराओं से मिलता जुलता है। परन्तु यह विचार धारा आर्यसमाज की नहीं। ऋषि दयानन्द इस विचारधारा को नहीं मानते।

यहां केवल प्रसंगतः कुछ उदाहरण दिये गये। यह भी इसलिए कि हम सिद्धान्तों के विषय में बहुत ही सचेत रहने की आवश्यकता है। ✱

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी के अभिनन्दन का निश्चय

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी अन्तरंग सभा की बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान तथा प्रसिद्ध आर्य नेता श्री स्वामी अभेदानन्द सरस्वती की जयन्ती बड़े उत्साह के साथ मनाने का आयोजन किया है।

इस अवसर पर उन्हें अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित किया जायगा तथा उनके सम्मान में एक थैली अर्पित की जायगी। इसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक उपसमिति बनादी है।

—मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार राज्य

विरक्त अभ्यासी स्वाध्यायशील व्यक्तियों लिए सुअवसर

गंगाजी के किनारे प्राचीन ऐतिहासिक स्थान दारानगर गंज (जिला बिजनौर) में जो महात्मा विदुर की तपोभूमि है, एक विशाल आश्रम बना हुआ है। स्थान सुरम्य है। गंगा का सुन्दर घाट बना हुआ है। आश्रम में पर्याप्त कमरे हैं, बाग, कूप आदि हैं।

जो सज्जन वहाँ विरक्त रूप से साधनादि की दृष्टि से रहना चाहें वह अपनी आवश्यकताओं का भार स्वयं वहन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक रह सकते हैं। उन्हें निम्न पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिये।

—व्याख्यान मार्तण्ड
स्वामी शिवानन्द सरस्वती संरक्षक विरक्त आश्रम दारानगर
द्वारा विदुर आश्रम [illegible]

आ.स. शृंगारनगर लखनऊ

—स्वामी गंगागिरि जी महाराज गुरुकुल रायकोट वाले ३ अप्रैल को आर्यसमाज, शृंगार नगर (लखनऊ) के वार्षिक उत्सव पर पधार रहे हैं। वह उत्सव के सम्बन्ध में १३ अप्रैल तक लखनऊ रहेंगे। इसके पश्चात् किसी आर्यसमाज को उनसे लाभ उठाना हो तो वह उनसे पत्र-व्यवहार द्वारा निश्चित कर लें। अप्रैल मास तक उनकी उत्तरप्रदेश आदि में रहने की इच्छा है। —अर्जुनदेव मन्त्री
आर्यसमाज शृंगारनगर, लखनऊ

१३४५) का शुभ दान

आर्यसमाज बड़ागांव (अ जस-गढ़) के भवन-निर्माण के लिए वेद-पथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी व्याख्यान भूषण, अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय-रुहेला देहली ने १३४५) का धन प्रदान किया है।

इस समाज को स्थापित करके आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाम रजिस्ट्री श्री झण्डाधारी जी ने करा दी है।

निर्वाचन—

—तिलकनगर आ० स० (देहली) प्रधान श्री लज्जाराम जी, डा० वीरेन्द्र सिंह जी मन्त्री।

—खसौरा हरदोई आर्यसमाज प्रधान श्री भारतसिंह जी, श्री रामसेवक जी मन्त्री।

—कोसीकलां आ० स० (मथुरा) प्रधान चिरमोलीराम जी, श्री खेमचन्द्र जी मन्त्री।

—बाष्टा (बिजनौर आर्यसमाज) प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी, श्री चमन लाल जी मन्त्री।

—गढ़मुक्तेश्वर (मेरठ) आ० स० प्रधान श्री दामोदरदास जी, श्री सीताराम जी मन्त्री, श्री भगवत स्वरूप जी, समाज प्रतिनिधि।

—गुलावठी आ० स० प्रधान डा० अमरसिंह जी, जयप्रकाश जी मन्त्री।

—खरखना आ० स० प्रधान श्री रणवीरसिंह जी, शिवदत्त शास्त्री मन्त्री।

—आर्यवीर दल विष्णुनगर (कल्याण बम्बई) प्रधान श्री दुलीचन्द्र जी [नायक], बाबूराम म० चर्चाई मंत्री

(पृष्ठ २ का शेष)

अस्तित्व नाममात्र रह जाता है। आर्यसमाज ने अपने पिछले पचास वर्ष की कार्यवाही से इस सनातनी दावे को संपुष्ट कर दिया है। अगले पचास वर्ष में, जो कुछ विशेषता शेष है वह भी दुष्प्रभाव ही हो जायगी। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का केवल जयघोष शेष है। कोई योजना तो हमारे समक्ष है नहीं। न नेताओं के समक्ष, न जनसाधारण के समक्ष। यदि श्री गौड़ जी प्रचलित प्रणाली से सन्तुष्ट हैं तो उनको बधाई। गड़े मुर्दों को उखाड़ना मैं उचित नहीं समझता। ★

—आ० स० कटरा प्रयाग प्रधान श्री अदनन्दनलाल जी, श्री ज्वालाप्रसाद जी मंत्री, श्री जगनन्दन लाल जी प्रतिनिधि।

—आ० स० लखीमपुर (खीरी) प्रधान श्री शिवनारायण जी, श्री रमाशंकर जी मन्त्री।

—आ० स० देवरी (महराजपुर) प्रधान श्री सोनपाल जी, श्री मिश्रीलाल जी मंत्री।

—आ०स० रामनगर (नैनीताल) प्रधान श्री बनवारीलाल जी, श्री इन्द्र एम० ए० मन्त्री।

—आर्यसमाज उत्तर काशी गढ़वाल) प्रधान श्री भाउरसिंह जी, श्री प्यारेलाल जी मन्त्री।

—आ० स० अमरोहा प्रधान श्री हरिश्चन्द्र जी, श्री रामानन्द जी मंत्री।

—आ० स० हल्दौर (बिजनौर) प्रधान श्री वेदप्रकाश जी, लल्लूमल जी मन्त्री।

—आ० स० बगहा (मिर्जापुर) प्रधान श्री जयनन्दन जी, बेचनराम सिंह जी मन्त्री।

—आ०स० नया बाजार (अजमेर) प्रधान श्री डा० महावीरसिंह जी, श्री ओम्प्रकाश जी मन्त्री।

—आ० स० गर्वां प्रधान श्री सच्चिदानन्द सहायजी, श्री ओम्प्रकाश जी मन्त्री, श्री सच्चिदानन्द [illegible] जी प्रतिनिधि।

—आ० स० मऊ (गया) प्रधान श्री बन्धूनाथ जी, श्री शिवनाथ जी मन्त्री।

—बड़ली आ० स० [illegible] प्रधान श्री भूपसिंह जी, श्री [illegible] पालसिंह जी मन्त्री।

—रामनगर [आर्य कुमार सभा] [नैनीताल] प्रधान श्री [illegible]

बाबूराम भारती द्वारा [illegible] आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग [illegible]

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) एक प्रति का २० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ, रविवार फाल्गुन २४ शक १८८०, फाल्गुन शुक्ल ६, वि० २०१५, १५ मार्च, १९५९ ई०

विदेश में १५शिलिंग

उद्बोधन

कठिन समर के सफल साथियो आठों याम तुम्हे चलना है।
पड़ा हुआ जो अभी अधूरा पूरा काम तुम्हें करना है॥

युगारम्भ के प्रथम चरण में नहीं सांस लेने का अवसर,
हल्का नहीं किन्तु पहले से भारी भार होगया शिर पर॥
अपनी मंजिल पूरी करलो फिर विश्राम तुम्हें करना है॥ कठिन०

अभी जिन्दगी की राहों में अड़े पड़े हैं शूल सपूतो,
इन्हें हटा दो ठोकर देकर खिले मिलेंगे फूल सपूतो॥
निर्भय प्रबल वेग से वीरो अब अविराम तुम्हें बढ़ना है॥ कठिन०

शृंगारों का छोड़ कदम बिछते अंगारों पर धरने हैं,
अभी नये संघर्ष अनेकों इन्हीं भुजाओं से लड़ने हैं॥
स्वतन्त्रता की प्रथम किरण का शुभ परिणाम तुम्हे लिखना है॥ क०

नव निर्माण नहीं बातों से बल्कि कोशिशों से होता है,
जन कल्याण बदलते युग में बड़ी मुश्किलों से होता है॥
अमर शहीदों की समाधि का प्रिय पैगाम तुम्हें सुनना है॥ कठि०

मंजिल दूर पड़ी तो क्या है रुकने का तुम नाम न लेना,
कठिन कण्टकों की घाटी में झुकने का तुम नाम न लेना॥
घोर जागरण की वेला में जीवन जाम तुम्हें बनना है॥ कठिन०

पतझारों से सूने वन में फिर मधुमास नये खिलने हैं,
अपने स्वच्छ करों से सुन्दर कुछ इतिहास नये लिखने हैं॥
विजय ध्वजा से प्रगति शिखर पर प्रात शाम तुम्हें चढ़ना है॥ क०

—हरिनन्दनमिश्र आयुर्वेदाचार्य

नेपाल देश में आर्यसमाजी नेता—

शुक्रराज शास्त्री को फांसी

[श्री नन्दलाल वैदिक मिशनरी महोपदेशक आ० प्र० सभा, पंजाब]

साधारणतः यह एक मिथ्या धारणा है कि आर्यसमाज केवल उपासना मन्दिर मात्र है। वास्तव में आर्यसमाज जीवन के लिए क्रान्तिकारी सन्देश है जो इस सन्देश को सुनेगा और मानेगा उसके जीवन में क्रान्ति आयेगी जो अन्यों को भी क्रान्तिकारी बना देगी। नेपाल के शुक्रराज शास्त्री की शहादत आर्यसमाज के राजनैतिक महत्त्व की स्थापना है। इस घटना के होते हुए आर्य राजनीति से अपने को कैसे विरक्त रख सकते हैं। नेपाल की वर्त्तमान क्रान्ति के पीछे इस क्रान्तिकारी का बलिदान छिपा है। हम गर्व करते रहेंगे पर आज के नेपाल में हमें कर्त्तव्य का पालन भी करना होगा और हमारा कर्त्तव्य पालन ही शहीद शास्त्री जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। —सम्पादक

श्री प० शुक्रराज जी शास्त्री पहले नेपाली थे, जिन्होंने वेद शास्त्रों का पठन पाठन करके ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ने के पश्चात् नेपाल के सम्बन्ध में कुछ लिखना आरम्भ किया था। थोड़े समय में ही उन्होंने अनेक ग्रन्थों का निर्माण कर डाला। बाल कक्षा से लेकर ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य तक एक ही लेखनी से लिख देना उनका ही काम था। आप संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी और नेपाली के प्रसिद्ध पंडित थे। शास्त्री जी की लेखनी में आज गम्भीरता और मौलिकता तीनों एक साथ रहते थे। आपने पंजाब यूनिवर्सिटी से शास्त्री की डिग्री प्राप्त की थी।

आपके पिता श्री माधवराव जी जोशी नेपाल देश के पहले और प्रसिद्ध आर्य समाजी थे। आपको आर्य समाजी होने के कारण कई बार जेल जाना पड़ा। और देश निकाला दिया गया। श्री प० शुक्रराज जी शास्त्री ने वेद शास्त्र, गीता, रामायण आदि की कथाओं द्वारा आर्य समाजी सिद्धान्तों का प्रचार किया। इस प्रचार से लोगों में जागृति आने लगी। राणाओं की हकूमत के अत्याचारों के कारण नेपाल में हा हा कार मचा हुई था। कोई भी इन अत्याचारों के विरुद्ध जबान खोलने का साहस न कर सकता था। मूर्तिपूजा, पशुओं की बली और शराब के विरुद्ध बोलना बड़ा जुर्म था। शास्त्री जी के प्रचार से जनता में बली देने की चर्चा होने लगी। कई लोग तो घृणा करते हुए खुले धन्दों इस रस्म की निन्दा करने लगे।

एक बार शास्त्री जी भारत में भी आए। और महात्मा गांधी जी से मिलकर नेपाल में होने वाले अत्याचारों का वर्णन किया। इस मुलाकात का नेपाल सरकार पर क्या प्रभाव पड़ा। इस लेख के अन्त में आप देखेंगे। इसके साथ ही धर्मरत्न (जो बाद में डिप्टी मिनिस्टर बने) उनकी पार्टी ने भी प० जवाहरलाल से भेंट की। और नेपाल वापस आकर प्रजा परिषद् पार्टी की नींव रखी। जब नेपाल की जनता पर इन सुधारकों का प्रभाव पड़ने लगा तो राणा सरकार आग बबूला हो गई। और लगी इस मार्ग के कांटे को समाप्त करने के लिए योजनाएं बनाने। किसी भी हकूमत के लिए किसी देवता को डाकू और डाकू को देवता बनाना क्या देर लगती है? यह तो सरकारों के लिए दायें हाथ का कर्त्तव्य होता है। राणाओं की हकूमत का नमूना देखना हो, तो निम्नलिखित लाइनों से अनुमान लगाइए—

१—श्री तुलसीमेहर को गांधी भक्त होने और चरखे का प्रचार करने के कारण १२ साल की सजा दी गई।

२—नेपाल के एक महान् कवि ने लायब्रेरी खोलने की आज्ञा मांगी इस जुर्म में दो सौ रुपया जुरमाना किया।

३—कलकत्ते के एक खुले मैदान में एकबार राणा साहब घूम रहे थे, एक नेपाली ने सलाम नहीं किया, इस अपराध में नेपाल लौटते ही १०० कोड़ों का दण्ड दिया गया।

४—सार्वजनिक सिनेमाहाल में दूसरे धर्मों को मानने वाले जा सकते हैं, किन्तु हरिजन नहीं जा सकते।

५—रात के ९ बजे से प्रातः ५ बजे तक एक सौ साल से करफ्यू चला जा रहा है। यह सब कुछ काठमाण्डू के पत्रकार रामराज ने अपनी पुस्तक (क्रान्ति से पहले नेपाल) में लिखा है।

अब विचार करें कि ऐसी हकूमत इन क्रान्तिकारी आर्यों को कैसे सहन कर सकती थी।

राणाओं ने सी० आई० डी० के अफसरों से मिलकर उनके विरुद्ध रिपोर्ट करवाई। और उनकी सारी पार्टी जेल में डाल दी गई। मुकद्दमा की मिसिल मुकम्मिल करके बड़े-बड़े सरकारी कर्मचारियों को और राजगुरु ब्राह्मणों को राजदरबार में बुलाया गया। शास्त्री जी सेण्टर जेल में थे। इनके अतिरिक्त सब क्रान्तिकारियों को भी बुलाया गया। नेपाल के बड़े हाकिम युद्धशमशेर ने एक कागज उठाया और चार्जशीट निम्नलिखित पढ़ कर सुनाया—

इन लोगों की तरफ से नारायण हट्टी में खूनी काण्ड करके सारे राणाओं को मारने की साजिश की थी। अर्थात् कीड़े ने हीरे को फोड़ने का यत्न किया था। शुक्रराज शास्त्री भारत में जाकर गांधी जी से मिले। और ब्रह्मसूत्र में अपने अनुवाद में मालवीय जी की सम्मति लिखी। केदारनाथ धर्मरत्न वगैरा पार्टी ने भी भारत में जाकर हमारे विरुद्ध नेहरू को बहकाया, जो कि भारत का सबसे बड़ा सोशलिस्ट है। शुक्रराज जी शास्त्री की तरफ (जेल की तरफ) इशारा करते हुए युद्धशमशेर ने कहा कि नेपाल के इतिहास में नेपाल की भूमि पर यही एक शास्त्री है, जो क्रान्तिकारी हो सकता है। तूफान मचा सकता है। उथल पुथल कर सकता है। उसको जेल से लाओ, पहले उससे निपटारा किया जाएगा।

शास्त्री जी को जेल से लाकर पेश किया गया। शास्त्री जी ने आते ही हाथ जोड़ कर नमस्ते की। बड़ा हाकिम गुस्सा में लाल-पीला हो गया। और दांत पीसते हुए यों बोला—

"शास्त्री तुम हर बात में शरारत करते हो, जब कि एक हाथ से सलाम करने का रिवाज परम्परा से चला आता है। तुमने दोनों हाथ से नमस्ते करने की गुस्ताखी क्यों की?"

शास्त्री जी हर बात का उत्तर बड़ी योग्यता से देते थे, जिसका हाकिमों के पास कोई जवाब न था, शास्त्री जी की हाजिरजवाबी को सुनकर बड़ा हाकिम गुस्से में आ गया। बिगड़ते हुए पास वाले पुलिस अफसर से बोला, "जाओ फौरन कोर्ट से मेरी बन्दूक लाओ? ताकि मैं इसे गोली से उड़ा दूँ।" यह सब क्रान्तिकारियों का गुरु है। इसका सब कुछ जब्त कर लिया जाएगा और मौत की सजा दी जाएगी। यह सुनते ही दरबार में एकदम सन्नाटा छा गया।

जनता की ओर से राणा युद्धशमशेर को हाथ जोड़ कर प्रार्थना की गई कि शास्त्री जी को माफी दे दी जाए। साथ ही शास्त्री जी की ओर से जनता ने माफी मांगने का इशारा किया। शास्त्री जी एकदम बोल उठे, "मैंने कोई अपराध नहीं किया। किस बात की माफी मांगूं? अगर मैं दोषी हूँ, तो दोषी को सजा मिलनी ही चाहिए?

१—गोली से उड़ाना है, तो उड़ा दो।

२—पेड़ पर लटका कर फांसी देनी है, तो दे दो।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्य सभा मौरीशस का पत्र

५००) पांच सौ रुपया भेज रहे हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने तीन कार्यों का शुभारम्भ किया है। हम मोरिशस निवासी आर्य भाई और बहन इन तीनों ही कार्यों का स्वागत करते हुए सभा को हार्दिक बधाई देते हैं।

"आर्यमित्र" आर्यजगत् का सबसे पुराना समाचार पत्र है। इसने आर्यजगत् की बड़ी सेवा की है। इसलिए इसकी हीरक जयन्ती मनाना आवश्यक था।

माननीय श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय और श्री पं० गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज वयोवृद्ध, अनुभववृद्ध और विद्यावृद्ध हैं। इन्होंने अपने लेखों और पुस्तकों द्वारा आर्यसमाज की जो सेवा की है, उसके लिए उत्तरप्रदेश ही नहीं अपितु सारा आर्यजगत् कृतज्ञ रहेगा।

यह मनुष्य पूजा नहीं बल्कि यही असली पूजा है। देव ऋण चुकाने का शास्त्र सम्मत सिद्धान्त है, क्योंकि विद्वान को ही तो देव कहा जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने देव ऋण चुकाने का बड़ा ही प्रशंसनीय कार्य किया है और उपर्युक्त आदर्श उपस्थित किया है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज ने मथुरा नगरी में बैठकर गुरुवर, दण्डी स्वामी श्रद्धेय पूज्य श्री विरजानन्द जी महाराज से सत्य शिक्षा प्राप्त की थी। उस स्थान का सार्वजनिक कार्यों के लिए सुन्दर रूप में निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक था। इस विरजानन्द भवन के निर्माणार्थ धन देना उत्तरप्रदेश और भारत के आर्यों का ही कर्त्तव्य नहीं है, बल्कि आर्थिक सहायता करना समस्त आर्यजगत का परम कार्य है।

यद्यपि "सार्वदेशिक" समाचार पत्र ने भारत के आर्यों से ही धन भेजने की अपील की है, और न आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने हमसे आर्थिक याचना की है। तो भी इस कार्य को परम आवश्यक समझ कर आर्य सभा मौरिशस की ओर से पांच सौ रुपये की स्वल्प धनराशि विरजानन्द भवन निर्माणार्थ भेजी जा रही है।

भवदीय.—
रामसुन्दर दिलचन्द
मन्त्री, आर्य सभा, मौरिशस

वेदोपदेश

ओ त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम् ॥
ऋ० १।९७।६

हे अग्ने परमात्मन् ! 'त्वं हि' तू ही "विश्वतः परिभूरसि" सब जगत् सब ठिकानों में व्याप्त हो, अतएव आप विश्वतोमुख हो । हे सर्वतोमुख अग्ने ! आप स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हो । वही आपका मुख है । हे कृपालो ! 'अप, नः, शोशुचदघम्' आपकी इच्छा से हमारा पाप सब नष्ट हो जाय, जिससे हम लोग निष्पाप होके आपकी भक्ति और आज्ञा पालन में नित्य तत्पर रहें ।



लखनऊ—१५ मार्च १९५९ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५८

हमारी राष्ट्र-भाषा

हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र है । हम १० वर्ष से अधिक समय से पूर्ण स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे हैं । इस बीच में हमने देश की कल्याण कामना से प्रेरित होकर पंचवर्षीय समुद्धि[?]यक, अल्प बचत आदि अनेक महत्वपूर्ण योजनायें बनाईं और इनके द्वारा अपने राष्ट्र की प्रगति के पुण्य पथ पर अग्रसर करने का भरसक प्रयास किया है । इन रचनात्मक कार्यों में हम बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है । अपने महत्त्वपूर्ण कार्य कलापों और किसी अन्य देश के गुट विशेष के साथ गठबन्धन न करके विश्व बन्धुत्व की भावना से प्रेरित ... स्वतन्त्र और निष्पक्ष ... का अनुसरण करने ... में भारत राष्ट्र की लोकप्रियता बढ़ी है और गौरव से उसका मस्तक ऊँचा हुआ है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है । किन्तु अपने देश की आन्तरिक स्थिति ... आर्थिक ... में किन्हीं मामलों में कृतकार्य होने पर भी, हम बहुत आगे नहीं बढ़ सके हैं । यह कहना भी अप्रासङ्गिक न होगा कि बहुत से ऐसे प्रश्नों का हल करने में भी हम बहुत पिछड़े हुए हैं जिन पर हमारे राष्ट्र के जीवन मरण की समस्या निर्भर है ।

हम एक राष्ट्र के निर्माण की, एक समूचे राष्ट्र की अखण्डता, अविच्छिन्नता और एकता की आवश्यकता हृदयङ्गम करके भी एक राष्ट्र भाषा की समस्या को अविलम्ब हल करने की आवश्यकता और महत्ता को उतना अनुभव ही नहीं करते जितना हमें करना चाहिए । अपने विविध घरेलू मारख-धन्धों में उलझे रहकर हम यह बात प्रायः भूल ही जाते हैं कि हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र के निर्माण में, हमारे राष्ट्र का वर्चस्व तथा सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता, स्वाभिमान, गौरव और आन्तरिक ... में हमारी राष्ट्रभाषा कितना और क्या योगदान करेगी ?

उन अगणित साधकों, देशभक्तों और नेताओं के सतत प्रयत्नों के फलस्वरूप जिनके समय समय में इस देश के सार्वजनिक जीवन का बागडोर रही है, इस देश के संविधान में केवल हिन्दी को राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण आसन पर आसीन होने का अवसर मिला है । संविधान में एक निश्चित अवधि भी ... कर दी गई है । अब समूचे ... और ... आमतौर पर राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग होगा । संविधान के नियत अवधि का प्राय: ... अंश समाप्त कर चुके हैं । किन्तु ... राष्ट्रभाषा की समस्या ... हमारे लिए ... एवं दुरूह बनी हुई है । अन्य प्रान्तों की ... दूर रहे ही, किन्तु हिन्दी के अपने प्रान्त उत्तरप्रदेश ... में एक राष्ट्रभाषा की समस्या उपेक्षित बनी हुई है ।

उत्तरप्रदेश कांग्रेस-शासन की बागडोर आज माननीय डा० सम्पूर्णानन्द, माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी आदि अनेक देशभक्त और हिन्दी साहित्य सेवी मन्त्रियों के हाथ में है । हमारा विश्वास है कि हमारे प्रान्त के मन्त्रिमण्डल में एक भी मन्त्री ऐसा नहीं है जो हिन्दी का विरोधी हो और जो राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में उन मर्यादाओं और आदेशों का पालन किये जाने के विरुद्ध हो जो समूचे भारतीय राष्ट्र की कल्याण कामना से प्रेरित होकर देश के संविधान में निर्धारित किये गये हैं । किन्तु फिर भी हमारे प्रान्त में शासन के कामों में, तथा बाहरी क्षेत्र में हिन्दी की जो प्रगति होनी चाहिए वह आज तक नहीं हो पाई है । यही नहीं किन्तु शासन के कितने ही क्षेत्रों में, तो, हिन्दी की घोर उपेक्षा हो रही है ।

आज भी हमारे प्रान्त में कितने ही उच्च अधिकारियों का अंग्रेजी प्रेम पूर्ववत् बना हुआ है । हाल ही में एक दैनिक समाचार पत्र के पृष्ठ उलटते हुए हमने पढ़ा—

'टांडा तहसील में मुकदमों के फैसले अंग्रेजी में दिये जाते हैं । लोगों को उनकी नकल लेने के लिए फैजाबाद तक दौड़ना पड़ता है । इसका कारण यह है कि तहसील के नकलनवीस अंग्रेजी के फैसलों की नकल नहीं दे सकते । लोगों में बड़ा असन्तोष है ।"

यह समाचार अपनी राम कहानी स्वयं ही कह रहा है और इस बात की सत्यता प्रकट कर रहा है कि जहाँ तक हमारी अदालतों में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार का सम्बन्ध है वहाँ तक हम बिल्कुल आगे नहीं बढ़े हैं । हमारी अधिकांश जनता आज भी निरक्षर है और उच्च अधिकारियों के अंग्रेजी प्रेम के कारण वह अदालतों के निर्णयों को राष्ट्रभाषा हिन्दी में पाने के अपने प्रकृत अधिकार से भी वञ्चित रक्खी जा रही है । संविधान के निर्देश के अनुसार हमारे प्रान्त की राज्य सरकार हिन्दी को राज्यभाषा घोषित कर चुकी है—किन्तु शासन के कामों में उसकी घोषणा के अनुसार व्यवहार कहाँ तक हो रहा है इस ओर ... सचेष्ट नहीं ... प्रतीत हो रहे जितना में रहना चाहिये । फिर भी किन्हीं ... हिन्दी के प्रति उनकी उदासीनता जनता की दृष्टि में बहुत ही आपत्तिजनक और खटकने वाली रही है ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विनम्र समर्थक और सेवक होते हुए भी हम किसी भाषा और साहित्य के विरोधी नहीं हैं । किन्तु हम दुःख होता है यह देखकर कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के मामले में संविधान के निर्माता तथा उनके अनुयायी गण ही राजनैतिक दलबन्दी के अखाड़े में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संविधान के निर्देशों पर कुठाराघात कर रहे हैं । कहते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति की उपेक्षा करके हमारे प्रान्त की सरकार अल्पसंख्यकों के अधिकारों के संरक्षण के नाम पर अदालतों और स्कूलों में उर्दू को महत्त्व देती जा रही है । उसके उत्तर प्रदेश के पश्चिमी ६ जिलों को उर्दू क्षेत्र घोषित करने से राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति को धक्का लग रहा है, इस प्रत्यक्ष सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता । इसके साथ ही इससे प्रशासन का व्यय भार बढ़ रहा है । अत्यन्त आदर के साथ हम अपनी लोकप्रिय कांग्रेस सरकार से यह निवेदन करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि वह इस प्रान्त की अधिकांश हिन्दी भाषी जनता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को अनुभव करे और किसी समुदाय विशेष के हितों के संरक्षण के नाम पर कोई ऐसा कदम न उठाये जिससे भारतीय संविधान में घोषित राष्ट्रभाषा हिन्दी की अवहेलना हो या उसकी प्रगति में किसी प्रकार की बाधा पड़े । प्रान्त के सभी समुदायों के हितों के संरक्षण के लिए सरकार उत्तरदायी है । किन्तु किसी समुदाय विशेष के अधिकारों के संरक्षण के नाम पर वह बहुसंख्यक हिन्दी भाषी जनता के मूल अधिकारों की बलि क्यों चढ़ाये ? राजनीतिक दलबन्दी के दलदल में फँसकर वह भारतीय संविधान की मर्यादा का उल्लंघन और उसके निर्देशों की अवहेलना क्यों करे ?

समूचे भारतीय राष्ट्र के हितों को ध्यान में रखकर ऋषि दयानन्द से लेकर समाज सुधारक केशवचन्द्रसेन, लोकमान्य तिलक और महात्मा गान्धी तक प्रायः सभी राष्ट्र निर्माताओं और लोक सेवियों ने हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने का बीड़ा उठाया था । उनके तथा अगणित हिन्दी-सेवियों की साधना और पुण्य प्रताप से, तथा स्वयं अपने तेज और क्षमता से भी हिन्दी आज अपने गौरवपूर्ण पद को प्राप्त हुई है । इस दशा में यदि हमारा प्रान्तीय शासन केवल हिन्दी की ... के लिए स्पष्ट घोषणा ही न करे ... व्यावहारिक रूप से इस ओर कदम भी उठावे तो उसकी लोकप्रियता अधिक ... ऐसी हमारी धारणा है । यदि अदालतों तथा शासन के सभी क्षेत्रों में केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाय सभी सरकारी कर्मचारी निकट भविष्य की किसी नियत अवधि में हिन्दी सीखने और प्रान्तीय शासन के काम काज में केवल हिन्दी का व्यवहार करने को बाध्य हों स्थानीय निकायों के सब काम हिन्दी में हों, सरकारी दफ्तरों में हिन्दी में आवेदन पत्र लिये जायँ शिक्षा संस्थाओं में हिन्दी की प्रधानता रहे, तो, निश्चय ही हिन्दी दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करेगी ... राष्ट्रभाषा हिन्दी के समुन्नत होने और निरन्तर प्रतिष्ठित बने रहने से समूचे

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

राष्ट्र की एकता को अभूतपूर्व बल ही नहीं प्राप्त होगा, अपितु उसमे निर्माण की आधार-शिला और रीढ़ सुदृढ़ होगी। क्या हमारे प्रान्त की लोकप्रिय कांग्रेस सरकार इस दिशा मे सक्रिय कदम उठायेगी ?

मुख्य मंत्रीजी की सफलता

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी कांग्रेस के विधायक दल की बैठक मे प्रायः दो तिहाई बहुमत से दल का विश्वास प्राप्त करने मे कृतकार्य हुए। कांग्रेस दल के विधायक सदस्यो की कुल सख्या ३६५ है जिनमें ३०४ सदस्य बैठक में उपस्थित थे। इनमे २३४ सदस्यो ने हाथ उठाकर डा० सम्पूर्णानन्द के नेतृत्त्व मे अपना विश्वास प्रकट किया। जो विधायक असन्तुष्ट हैं उन्होने मतदान मे भाग नहीं लिया। उन्होंने मतदान की इस प्रणाली का विरोध किया। वे चाहते थे कि मतदान गुप्त प्रणाली से हो। किन्तु बैठक मे अध्यक्ष ने मतदान को बिलकुल स्वतंत्र और खुले रूप मे हो जाने दिया। परिणाम स्पष्ट है।

डा० सम्पूर्णानन्द अपनी इस सफलता पर प्रत्येक देश हितैषी से बधाई पाने के अधिकारी हैं। यह बात उनके हृदय की विशालता और शालीनता की द्योतक है कि विधायक दल की बैठक समाप्त हो जाने पर उन्होने मतदान मे भाग न लेने वाले विरोधी विधायक सदस्यो से सहयोग की अपील की। जहां तक जनता की और देश की सेवा का सम्बन्ध है वहां तक हम किसी गुटबन्दी की सराहना नहीं करते। यह बात ध्रुव सत्य है कि देश सभी दलों का है और सब दल देश के हैं। हम सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र मे, विशेष कर राजनीतिक क्षेत्र मे, इस बात के कायल हैं कि सभी दल सचाई के साथ अपने अपने सिद्धान्तो का अनुसरण करते रहकर परस्पर अधिक से अधिक सद्भावना और सहयोग से काम ले तथा सबसे बड़ी मनुष्यता को आँखों से ओझल न करे। जहाँ विरोध हो वहाँ भी प्रेम और पारस्परिक सहानुभूति की समन्वयवादी नीति से काम लेने पर हम देश की जनता के विश्वासपात्र रह सकेंगे। हमारी हार्दिक कामना है कि डा० सम्पूर्णानन्द जी कांग्रेस के विधायक दल के बहुमत का विश्वास प्राप्त कर लेने पर प्रान्त की जनता के दुःख दर्द दूर करने मे भी सफल हों।

★

ग्राम जीवन

ग्राम-सेविकाओं को शिक्षण

आशा है दूसरी योजना की अवधि मे केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल की ग्राम योजनाओं के लिए ७,८०० ग्राम-सेविकाओं की जरूरत पड़ेगी। इसमें से ३,००० को शिक्षण दिया जा चुका है और २,६०० को शिक्षण देने की व्यवस्था कर दी गयी है। ये ग्राम-सेविकाएं १,५७० विभिन्न विकास योजनाओं मे काम करेंगी। कुछ ग्राम सेविकाओं ने तो काम शुरू भी कर दिया है।

कस्तूरबा गान्धी नेशनल मैमोरियल ट्रस्ट पिछले चार वर्षों से शिक्षण देने का काम कर रही है। अब इस काम के लिए ३ और संस्थाएं चुन ली गयी है और कुछ अगले साल चुनी जाएंगी।

गांव की बेपढ़ी लिखी औरतों को शिक्षा देने के लिए भी केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने अनुदान देने का निश्चय किया है। इन औरतो को कम से कम इतनी शिक्षा दी जायगी कि वे ग्राम सेविका की ट्रेनिंग लेने योग्य हो जाए। यह योजना इसलिए बनाई गयी है कि कुछ शिकायतें आई थीं कि आजकल जो ग्राम-सेविकाएं काम कर रही है, उनकी आयु और रहन-सहन आदि ठीक नहीं है।

ग्राम सेविकाओं की भर्ती करने से पहले उनकी पढ़ाई, लिखाई, गणित और सामान्य ज्ञान की मामूली सी परीक्षा ली जाती है। इसके बाद उनका इंटरव्यू होता है। तब सफल उम्मेदवारो से एक पखवाड़े तक काम करवाके, उनकी परख की जाती है। जो उम्मेदवार ठीक काम नहीं करते, उन्हें निकाल कर अन्य उम्मेदवारो को मौका दिया जाता है। इसलिए आवश्यकता से कुछ अधिक उम्मीदवारो का चुनाव किया जाता है। जो ग्राम सेविकाएं अपने आपको इस काम मे नहीं ढाल सकतीं उनकी जगह अतिरिक्त उम्मेदवारो की सूची में से नियुक्त कर दी जाती है। प्रत्येक ग्राम सेविका को एक बाँड भरना पड़ता है कि वह अपनी ट्रेनिंग पूरी करेगी। डाक्टरी चिकित्सा के अलावा अगर अन्य किसी कारण से वह काम नहीं कर सकती या निकाल दी जाती है तो उसे ट्रेनिंग के समय दी गयी धन राशि वापस कर देनी पड़ती है।

गांव वालों के पास जमीन

१—नेशनल सेम्पल सर्वे की आठवीं पड़ताल से (जुलाई १९५४, मार्च १९५५) पता चला है कि भारत के गावों में लगभग ६ करोड़ ५० लाख परिवार रहते हैं।

२—इन परिवारों के पास करीब ३१ करोड़ एकड़ जमीन है, जो देश के क्षेत्रफल का ३८ प्रतिशत और काम में आने लायक जमीन का ६१ प्रतिशत है।

३—इनमे से लगभग डेढ़ करोड़ परिवारों के पास कुछ भी जमीन नहीं है। और करीब एक चौथाई परिवारो के पास एक एक एकड़ से भी कम जमीन है। अर्थात् करीब आधे परिवारों के पास जमीन है ही नहीं या है तो एक एकड़ से कम। इनके पास जितनी जमीन है वह कुल ग्रामीण परिवारो की जमीन के एक प्रतिशत से कुछ ही अधिक है।

४—लगभग तीन चौथाई परिवार ऐसे हैं जिनके पास जमीन नहीं है या ५ एकड़ से कम है। इन सबकी जमीन मिलाकर कुल जमीन के छठे भाग से अधिक नहीं है।

५—सब परिवारों के पास जमीन का औसत ४·७ एकड़ होता है। इनमे भूमिहीन परिवार भी शामिल हैं।

६—भारत भर के तमाम ग्रामीण परिवारों मे से ६३·५ प्रतिशत ने, कुछ भी जमीन पट्टे पर नहीं उठाई थी। १२·५ प्रतिशत परिवारों ने कुछ हिस्सा और २ प्रतिशत ने अपनी पूरी जमीन पट्टे पर उठाई थी। बाकी २२ प्रतिशत भूमिहीन हैं।

७—९० प्रतिशत परिवार अलग खेती करते हैं।

८—१० प्रतिशत शामिल खेती करते हैं। ६ प्रतिशत केवल शामिल खेती और ४ प्रतिशत कुछ जमीन पर अलग और कुछ पर शामिल खेती करते हैं। सारे क्षेत्र का लगभग ८ प्रतिशत शामिल खेती में है।

आवश्यक सूचना

८ मार्च के अंक में आर्यमित्र हीरक जयन्ती की बैठक १४ मार्च को सायं ७ बजे होगी, उपरोक्त स्थान पर सम्बन्धित सदस्य मध्याह्न १ बजे से होगी नोट करले और समय पर पधारने की कृपा करे।—उमेशचन्द्र स्नातक संयोजक आ० मि० ही० ज० समिति

हरिजन-सम्मेलन

(विशेष सम्वाददाता द्वारा)

दि० ९ मार्च को कस्बा माल (लखनऊ) मे जिला हरिजन अधिकारी श्री श्रीकृष्ण जी, जिला सूचना अधिकारी, जिला अल्प बचत योजना अधिकारी तथा स्थानीय बी०डी०ओ० की उपस्थिति में वृहद् हरिजन सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें लगभग २००० की सख्या मे ग्रामीण जनता ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रचार मन्त्री श्री राजबहादुर जी विद्यारत्न तथा सभा के प्रचारक श्री बालकृष्ण जी शर्मा भी सम्मिलित हुए।

श्री राज बहादुर जी ने अपने व्याख्यान द्वारा सवर्णों तथा हरिजनों को एक दूसरे से परस्पर मिल जाने तथा छूतछात को समाप्त कर देने से ही देश का कल्याण हो सकता है इस विषय पर प्रकाश डाला।

प्रचारक महोदय ने अपने भजनों तथा बाण विद्या के प्रदर्शन से जनता को मुग्ध कर दिया। श्री सूचना अधिकारी द्वारा जनता के लाभार्थ विशेष जानकारी के लिए सूचनायें प्रसारित की गईं।

अल्प बचत योजना अधिकारी ने अल्प बचत योजना के विधान को समझाते हुए उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला, इसके पश्चात् जिला हरिजन अधिकारी श्री मिश्रा ने हरिजनों के उत्थान और उद्धार के लिए सरकार से दी जाने वाली सुविधाओं का वर्णन किया तथा जनता को उनसे लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। उसी स्थान पर कृषि विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रदर्शन का भी प्रबन्ध किया गया था। उससे जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

आगरा आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता और आ०प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश के पुराने सम्मानित कार्यकर्त्ता

श्री परमेश्वरी सहाय जी वकील का स्वर्गवास

आदरणीय वकील साहब पिछले काफी दिनों से अस्वस्थ थे। लम्बी बीमारी के बाद उनका स्वर्गवास २६ फरवरी को हो गया।

इस शोक समाचार से उनके पारिवारिकों के साथ समस्त प्रान्तीय आर्य बन्धु, सभा और मित्र दुखी हैं। प्रभु दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करे।

अध्यात्म चर्चा--

प्रभु की महिमा समझने के साधन

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० वी० कालेज, गोरखपुर)

★

प्रभु को अणोरणीयान् महतो महीयान् कहा जाता है। प्रभु के इस रूप को समझने का क्या उपाय है, इस पर आज हम विचार करेंगे। उपनिषद् हमें बताते हैं कि उस महान् और सर्वत्र व्यापक प्रभु को मनुष्य ३ साधनों द्वारा प्राप्त कर सकता है—(१) निष्कामता (२) शोक से रहित होना तथा (३) बुद्धि की निर्मलता।

निष्कामता का क्या अभिप्राय है? उपनिषदों की, वेदान्त की, विशुद्ध आर्य संस्कृति के अध्यात्मवाद की विचार धारा यह थी कि ब्रह्म सत्य है, परन्तु इस संसार से भी तो इन्कार नहीं किया जा सकता। हाँ, इस संसार के मुकाबिले में अन्तिम सत्ता, यथार्थ सत्ता शरीर की नहीं, आत्मा की है, प्रकृति की नहीं, परमात्मा की है। गीता ने भी कहा है कि क्योंकि शरीर है इसलिए शरीर से कर्म करो परन्तु क्योंकि अन्तिम सत्ता इसकी नहीं है इसलिए इसमें लिप्त होने से बचे रहो, क्योंकि संसार है इसलिए इसका भी उपभोग करो परन्तु क्योंकि अन्तिम सत्ता यह नहीं इसलिए इस संसार में भी लिप्त होने से बचे रहो। कुछ मनुष्य भूल से इस निष्काम शब्द का अर्थ 'निष्कर्मण्य' कर लेते हैं और गीता ने इसी भावना का विरोध करने के लिए उपनिषदों की निष्काम कर्म की शिक्षा का जोरदार प्रचार किया। कर्म छोड़ कर कौन रह सकता है? कर्म करना तो हमारी प्रकृति में निहित है। हम चाहें, न चाहें, संसार में हम आ पड़े हैं, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। कर्म किए बगैर रहा नहीं जा सकता। जगत् सत्य हो, असत्य हो, यथार्थ हो, मिथ्या हो—जब हम चारों तरफ संसार से घिरे हैं तब कब हो सकता है कि इसे बिल्कुल मिथ्या समझ कर हम काम त्याग कर बैठ जायें? परन्तु अगर काम करेंगे तो दुःख लगा रहेगा, शोक लगा रहेगा, इस दुःख या शोक से छुटकारा कैसे हो?

बताइए कर्म क्यों न करें, संसार से नाता क्यों तोड़ दें? इसलिए न, क्योंकि मनुष्य संसार में लिप्त हो जाता है, कर्म मनुष्य को बांध लेता है। अगर यही बात है तो ऐसा उपाय क्यों न किया जाय कि कर्म भी हो जाय (जिसके बिना छुटकारा नहीं) परन्तु कर्म-बन्धन बन्धन न हो। संसार भी बना रहे और संसार से होने वाला लेप भी न हो, सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। कर्म करो फल की इच्छा मत करो। कर्म के फल की कौन आशा नहीं करता? हरेक करता है। वह आशा करना 'संग' कहाता है, सकाम भाव कहाता है, उस आशा का त्याग देना निस्संग कर्म है। इसलिए हम उपनिषद् का भी यह भाव है कि मनुष्य को निस्संग होकर निष्काम होकर निर्लिप्त होकर कर्म करना चाहिए। यही योग मार्ग है। इस प्रकार निष्काम कर्म करने से कर्म में सिद्धि हो असिद्धि हो, सफलता हो असफलता हो, मनुष्य में समता रहेगी और समता रहेगी तो शान्ति रहेगी, शान्ति रहने पर शोक और दुःख से हम परे हो जाएंगे। यदि चिन्ता और दुःख लगे रहेंगे तो परमेश्वर का चिन्तन, सत्कर्मों में रुचि न हो सकेगी। कार्य भी हम पूरी तन्मयता से न कर सकेंगे।

कर्म को उत्कृष्ट करने के लिए ही कर्मफल त्याग की आवश्यकता होती है। फल का सतत चिन्तन करने की अपेक्षा जो कर्म में ही रम जाता है उसे अधिक बड़ा फल मिलता है, क्योंकि पद पद पर फल का चिन्तन करते रहने वाले का बहुत सा समय चिन्तन में चला जाता है। कमल के फूल के विषय में रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे—'कमल विकास चाहता है। रात दिन कीचड़ में पड़ा हुआ वह इसके लिए प्रयत्न करता है। वह सूर्य की ओर मुंह करके खिलने का प्रयत्न करता है। उस कमल की साधना एक सी अखण्ड चलती रहती है। वह अपना विकसित होना भूल जाता है। मानो फल को ही भूल जाता है। वह ठण्ड, हवा, वर्षा, कीचड़ आदि में रहकर ही प्रयत्न करता है। लेकिन एक दिन आता है जब कि वह कमल अच्छी तरह खिलता है, उसे सूर्य की किरणें चूमती हैं हवा झुलाती है, गीत सुनाती है। कमल को इस बात का ख्याल ही नहीं रहता है कि मैं खिल रहा हूं। उसे मालूम ही नहीं होता कि मैं सुगन्ध से पवित्रता से, पराग से भर रहा हूँ। अन्त में भ्रमर गुंजार करता हुआ आता है और कमल के अन्तरङ्ग में प्रवेश करके कहता है—पवित्र कमल, तू खिल चुका है। तुझ में कितनी सुगन्ध है, तेरा कैसा सुन्दर रंग है, तुझ में कितना मीठा रस है।"

सन्त तुकाराम तो सेवा के लिए सेवा चाहते थे। उनको मोक्ष के फल की भी आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने मोक्ष को भी ठुकरा दिया—

मैंने ठुकराए दम्भ मान,
यश के सुख सुविधा के अवसर।
तुम उन्हें भुलावे में न डालो,
जिनको ये लगते मधुर मधुर।

इस प्रकार उपनिषदें और वैदिक संस्कृति जय या पराजय, सिद्धि या असिद्धि, यश या अपयश की ओर ध्यान नहीं देते। समुद्र की लहरें ऊँची उठती हैं और नीचे आती हैं। ऊपर उठते उठते और नीचे गिरते गिरते समुद्र किनारे के पास पहुँचता है। समुद्र में ज्वार आता है और भाटा भी, लेकिन उसकी धीर गम्भीर गर्जना कभी नहीं रुकती। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि जीवन मरण, सम्पत्ति और विपत्ति, गुलामी और आजादी तथा जय और पराजय की ओर ध्यान न देकर हमेशा लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना चाहिए। सत्कर्म करते चलो और अपने मन में यह विचार रखो कि हम विजय से उन्मत्त न होंगे और विपत्ति में निस्तेज नहीं होंगे। हम विजय पराजय की लहरों से लड़ते हुए आगे बढ़ेंगे। जब महर्षि दयानन्द को विष दे दिया गया उस भयंकर पीड़ा में भी उनके चेहरे पर मन्द मुस्कराहट थी और वे 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण' का शब्द कर रहे थे। स्वामी जी महाराज पर जब पत्थरों की वर्षा की गई उसे उन्होंने फूलों की वर्षा माना, जब सांप फेंके गए वे उन्हें पुष्पमाला प्रतीत हुए। स्वामी श्रद्धानन्द ने गोरों की बन्दूकों के सामने छाती तान दी और कहा कि मारो तुम्हें हिम्मत हो। क्यों? कर्म करने वाले को चाहे फांसी मिले, चाहे सिंहासन चाहे फूल की माला मिले, चाहे दुःख मिले चाहे यश मिले, चाहे अपयश सच्चे कर्मवीर का ध्यान यही रहता है कि हमारी आत्मा मलीन न हो। सुनो, वैदिक संस्कृति और उपनिषद् का पवित्र नाद है विजय के नगाड़े मत बजाओ, पराजय का रोना मत गाओ। तुम दोनों के ऊपर पहुंच कर दोनों के ऊपर सवार होकर निर्द्वन्द्व होकर सदैव स्वकर्म करते रहो। उसमें तन्मय हो जाओ। जीवन को यज्ञ समझ कर चलो। यज्ञ का अभिप्राय है 'त्याग'। स्वार्थ की भावना छोड़ देना ही यज्ञ है। यज्ञ की भावना जीवन में आने से मनुष्य शोक रहित होगा और शोक हीन मनुष्य की बुद्धि निर्मल होगी। निर्मल बुद्धि से परमेश्वर की महिमा जानी जा सकेगी।

आर्यसमाज मेंहदावल में शुद्धि-समारोह

आर्यसमाज मेंहदावल के प्रधान श्री ठाकुर मुरलीसिंह जी, डा० सत्यनारायण जी सहायक मंत्री आर्यसमाज मेंहदावल द्वारा ग्राम पटवरिया निवासी श्री दुर्गाप्रसाद स्वर्णकार का एक मुसलिम महिला के साथ वैदिक शुद्धि संस्कार सोत्साह सम्पन्न हुआ। मुसलिम महिला पूर्व से हिन्दू धर्म से प्रभावित थी। निकटवर्ती हिन्दुओं के अतिरिक्त समीपस्थ सत महात्माओं ने भी भाग लिया। [illegible] दास जी पहाड़िया, श्री [illegible] बहादुर सिंह श्री मृत्युन्जय शर्मा श्री हरिसेवक पाण्डे मेंहदावल ने भी आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् हवन, प्रीतिभोज हुआ। श्री काशीप्रसाद के छोटे भ्राता श्री शम्भूनाथ ने जो विगत कई वर्षों से सत [illegible] कर रहे थे [illegible] को गले से लगाकर वर वधू को आशीर्वाद दिया।

विदेश-वार्त्ता

दक्षिण अफ्रीकी अश्वेत जनता अपने ही देश में बंदी

स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र के सूर्योदय में भी मानवता दासता की अंधेरी कोठरी में बन्द है

संकलनकर्ता—श्रीरयू बिन से हो (केप प्रान्त के अफ्रीकियों के अफ्रीकी सिनेट में प्रतिनिधि लिबरल सदस्य)

आज संसार से उपनिवेशवाद विदा ले रहा है और मानवता स्वाधीनता की वायु में विचरण करने लगी है परन्तु अभी बहुत से स्थान हैं जहाँ साम्राज्यवादी जोकें मानवाधिकारों का रक्त चूसने में संलग्न है। मानवता का सामूहिक जागरण ही अफ्रीका के अपने ही देश में बन्दी भाइयों की मुक्ति करा सकता है। धर्म, जाति, नस्ल, रंग, देश सभी प्रकार के भेदों की समाप्ति ही आज की मानवात्मा का जय घोष है। क्या विश्व का प्रबुद्ध जनमत इस तथ्य के लिए रचनात्मक कदम उठायेगा? —सम्पादक

★

अपने ही देश में अफ्रीकी लोगों की क्या स्थिति है, यह जानने के लिए बहुत परिश्रम की आवश्यकता नहीं। जो कानून व नियम हैं उनकी बानगी देख लीजिए, कानूनों का शब्दशः अनुवाद अधिक व्याख्या नहीं माँगता—

१—एक अफ्रीकी जो किसी नगर में पैदा हुआ हो और वहाँ लगातार पचास वर्षों तक रहा हो किन्तु बाद में वहाँ से दो सप्ताह के लिए भी अन्यत्र चला गया हो तो वह अपने जन्म के नगर को लौटने का अधिकार खो देता है। वह ७२ घन्टों से अधिक वहाँ नहीं रह सकता। यदि उसने वहाँ इससे ज्यादा समय तक निवास करने का अनुमति-पत्र प्राप्त न किया हो तो उस पर १० पौंड जुर्माना हो सकता है या उसके एवज उसे २ माह तक की जेल की सज़ा हो सकती है।

२—यदि कोई अफ्रीकी किसी नगर में पैदा हुआ हो और वहाँ ५० वर्ष से लगातार रह रहा हो, उसके किसी मित्र को यह अधिकार नहीं कि वह ७२ घंटों से अधिक उस व्यक्ति के साथ रहे। यदि गवर्नर जनरल (जो मन्त्रिमंडल की सलाह पर कार्य करता है और मंत्रिमंडल को अफ्रीकी लोगों के मामलों का मंत्री परामर्श देता है) अपने प्रतिबन्ध होने अधिकारों के अन्तर्गत यह घोषणा करदे कि किसी अफ्रीकी को, जिसे अदालत द्वारा कतिपय क्षेत्र से चले जाने की आज्ञा मिली हो, तुरन्त चले जाना चाहिए तो कहीं उसकी प्रार्थना की सुनवाई नहीं हो सकती। किसी न्यायालय में उसके हटाये जाने के विरुद्ध अपील नहीं हो सकती और अदालत कुछ समय तक उसके निष्कासन को स्थगित भी नहीं कर सकती। चाहे स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाय कि अदालत का आदेश किसी अन्य व्यक्ति के लिए था और गलती से वह हुक्म उस शख्स पर तामील किया गया है, उस व्यक्ति को अपने स्थान को छोड़ना होगा।

लेकिन जो व्यक्ति अफ्रीकी नहीं है वह उन्हीं परिस्थितियों में अपील कर सकता है और स्थान त्याग के लिए उसको जो आज्ञा दी गई है उसे स्थगित किया जा सकता है, अथवा वह आज्ञा रुक सकती है।

साथ चाय-पान नहीं

३—दक्षिणी अफ्रीका में किसी चाय-गृह में एक श्वेत तथा अश्वेत व्यक्ति का साथ साथ चाय पीना तब तक गैर-कानूनी है जब तक उन्हें इसके लिए विशेष अनुमति न मिल चुकी हो।

४—यदि कोई अफ्रीकी प्रोफेसर बिना विशेष अनुमति लिए ही किसी गोरे क्लब में वक्तृता देता है तो वह एक दंडनीय अपराध करता है।

५—यदि अठारह वर्षीय कोई अफ्रीकी लड़का बिना आवश्यक अनुमति प्राप्त किये अपने पिता के साथ रहता है तो वह एक दंडनीय अपराध करता है और पुलिस के किसी सिपाही को अधिकार है कि वह "दिन या रात में किसी भी उचित समय पर" नगर के उस घर में जहाँ कि उपर्युक्त लड़के के अपने पिता के साथ निवास का सन्देह हो, बिना वारन्ट के घुस सकता है और तलाशी ले सकता है।

६—१९५७ में अफ्रीकी लोगों के निवास के लिए निर्धारित कस्बे में किसी व्यक्ति के घर का निरीक्षण करने के लिए पुलिस का सिपाही दिन या रात में जब चाहे आ सकता है।

७—यदि नगर में रहने वाला कोई श्वेत व्यक्ति श्रम-मंत्री से बिना विशेष अनुमति लिए ही अपने घर पर किसी अफ्रीकी को बढ़ईगिरी, ईंट लगाने, बिजली की फिटिंग, अथवा अन्य किसी दक्ष कार्य में लगाता है तो वह एक दंडनीय अपराध करता है। यदि कोई अफ्रीकी इस प्रकार का दक्ष कार्य उस क्षेत्र से बाहर करता है जो कि अफ्रीकियों के निवास के लिए निर्धारित किया गया है तो वह भी एक दंडनीय अपराध करता है। इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों पर १०० पौंड तक जुर्माना हो सकता है, या उन्हें १ वर्ष की जेल की सजा हो सकती है अथवा दोनों सजायें दी जा सकती हैं।

८—यदि कोई अफ्रीकी पहले किसी नगर में गैर कानूनी तौर पर रहने के लिए दंडित हो चुका हो तो उसे मजिस्ट्रेट अथवा नेटिव कमिश्नर उसके घर को अथवा उस स्थान को जहाँ कि वह पहले रह रहा था भेज सकते हैं। इस बात से कोई गरज नहीं कि उसे अपने घर या गांव छोड़े हुए कितने ही वर्ष गुजर चुके हैं।

९—जो अफ्रीकी १६ वर्ष का हो चुका है उससे पुलिस का सिपाही किसी भी समय उसकी परिचय-पुस्तिका तलब कर सकता है। यदि वह पुस्तिका उसके लिए जारी कर दी गई है किन्तु उस समय पास में न होने से वह उसे हाजिर करने में असमर्थ है तो वह एक दंडनीय अपराध करता है। उस पर १० पौंड जुर्माना हो सकता है अथवा १ महीने तक की जेल हो सकती है।

१०—कोई ईसाई संस्था तब तक अफ्रीकी बच्चों के लिए स्कूल नहीं चला सकती जब तक कि वह रजिस्टर्ड न हो और अफ्रीकी मामलों के मंत्री को पूर्ण अधिकार है कि ऐसे स्कूल को अफ्रीकी लोगों के हित में न समझ कर वह उसको पंजीकृत करने से मना कर दे।

बैंच पर बैठने पर सजा

११—यदि कोई भारतीय (या अश्वेत अथवा अफ्रीकी) एपरथीड (जातीय पृथक्करण) कानून के विरुद्ध प्रदर्शन करने के लिए किसी सार्वजनिक उद्यान में उस बैंच पर बैठ जाए जो केवल गोरों के लिए रखी गई हैं, तो वह दंडनीय अपराध करता है और उस पर ३०० पौंड जुर्माना हो सकता है अथवा ३ वर्ष के जेल दी जा सकती है या १० कोड़े लगाये जा सकते हैं, अथवा जुर्माने या कारावास दोनों सजायें दी जा सकती हैं। या जुर्माना और कोड़े दोनों का दंड दिया जा सकता है, अथवा कारावास और कोड़े दोनों सजायें दी जा सकती हैं।

१२—यदि कोई वक्ता सभा में भाषण करते हुए कोई ऐसी बात कह दे जिससे कि श्रोताओं में से एक अश्वेत व्यक्ति (या अफ्रीकी अथवा भारतीय) एपरथीड (जातीय पृथक्करण) कानून के प्रति विरोध प्रदर्शनार्थ डाकखाने में किसी काउन्टर को जो सिर्फ गोरों के प्रयोग के लिए निर्धारित है, काम में लाये तो वह वक्ता दंडनीय अपराध करता है। इसके लिए उस पर ५०० पौंड तक जुर्माना हो सकता है, या उसे ५ वर्ष जेल की सजा दी जा सकती है, या १० कोड़े लगाये जा सकते हैं, या जुर्माने तथा कारावास दोनों सजाएं दी जा सकती हैं, या कोड़े मारने और जुर्माने दोनों सजाएं दी जा सकती हैं, अथवा कारावास और कोड़े दोनों दंड दिये जा सकते हैं। दो बार अथवा दो से अधिक बार अपराध करने पर अदालत जुर्माना करने के लिए ही नहीं किन्तु कारावास और कोड़े दोनों सजाएं देने के लिए बाध्य हो सकती है।

१३—किसी अफ्रीकी श्रमजीवी के लिए हड़ताल में भाग लेना गैरकानूनी है। यदि वह हिस्सा लेता है तो उस पर ५०० पौंड तक जुर्माना हो सकता है, तीन वर्ष की जेल हो सकती है अथवा दोनों सजायें दी जा सकती हैं।

बिना मुकदमे के जेल

१४—गवर्नर जनरल (विशेष परिस्थितियों में न्याय-मन्त्री) यदि यह समझे कि जनता की सुरक्षा का बहुत खतरा है और देश का सामान्य कानून अपर्याप्त है तो वह घोषणा द्वारा पुलिस के किसी भी सिपाही को, किसी व्यक्ति को गिरफ्तार करने तथा बिना मुकदमा चलाये ही उसे जेल में डालने का अधिकार दे सकता है।

१५—यदि किसी रेलवे स्टेशन में एक प्रतीक्षालय है तो स्टेशन मास्टर कानूनन उसको केवल गोरों के लिए सुरक्षित कर सकता है और यदि कोई अश्वेत व्यक्ति जान-बूझ कर उसमें

[शेष पृष्ठ ११ पर]

मारीशस के प्रवासी भाई श्री मोहनलाल जी मोहित द्वारा ५०००) रुपया वेद प्रचारार्थ देने का संकल्प

आर्य समाज और वेद प्रचार दोनों अभिन्न बन चुके हैं, पर क्या आर्य-समाज का वेद प्रचार सही दिशा में प्रगति कर रहा है, यह गम्भीरता पूर्वक विचारने की बात है। प्रस्तुत निवेदन में एक प्रवासी आर्य-बन्धु ने अपनी श्रद्धा और उत्साह भावना का परिचय देते हुए वेद प्रचार के रचनात्मक कार्य के लिए ५०००) धन देने का संकल्प घोषित किया है। इस उदाराशयता के लिए आर्यजगत् व मित्र परिवार की ओर से हम श्री मोहित जी को हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

हमें आशा है कि सार्वदेशिक सभा इस धन से निधि की स्थापना कर कार्य के लिये योजना-निर्माण का कार्यारम्भ करेगी। मित्र को गर्व है कि उसके लेखों से प्रवासी भाई के हृदय में इस प्रकार की सदिच्छा जागृत हो सकी।

—सम्पादक

आर्यमित्र १४ दिसम्बर ५८ के पृष्ठ सं० ८ पर श्री पूज्य पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने एक श्रेष्ठतर सामयिक सुझाव उपर्युक्त शीर्षक से दिया है।

आर्यसमाज की वर्तमान गतिविधि को देखते हुए उसके महान् उद्देश्य जो द्वीप द्वीपान्तर और देश देशान्तर में वेद प्रचार करना, पुनश्च आर्यसमाज की स्थापना कर उसे सजीव एवं सफल बनाना, असम्भव सा प्रतीत होता है, क्योंकि विदेश प्रचार के सम्बन्ध में आज तक कोई ठोस कार्य क्रम प्रारम्भ नहीं हो सका है।

हो भी कैसे, जब आर्यों की सार्वभौम सभा (श्री सार्वदेशिक) आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ही आर्थिक दृष्टि कोण से निर्बल स्थिति में है। देश विदेश में निश्चित रूप से प्रौढ़ विद्वानों द्वारा वेद प्रचार कार्य को सतत प्रगतिशील रखने के लिए कम से कम दस लाख रुपये का स्थायी कोष सुरक्षित होना चाहिए। फिर उसके ब्याज से विश्व में वेद प्रचार कार्य कुछ ठोस रूप में हो सकता है। संस्कृत हिन्दी की प्रौढ़ विद्वत्ता के साथ अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषा में धाराबाही सुवक्ता तथा लेखक ही विदेश प्रचार में विशेष सफल हो सकते हैं। आज विश्व संचार साधनों की दृष्टि से बहुत छोटा हो गया है, और विश्व मानवता एक दूसरे के कार्यों से सदैव प्रभावित होती है। उस अवस्था में आर्यसमाज का दायित्व बढ़ जाता है। इसलिए हमारी सार्वदेशिक सभा के कर्णधारों को इस विषय में विशेष ध्यान देना चाहिये।

अब श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के सुन्दर-सुझाव की ओर आता हूँ। वह यह कि 'सर्व विधि ज्ञान का भण्डार वेद है, इस बात को वर्तमान प्रत्यक्षवादी संसार के सामने प्रमाणित करना था। हृदय में बैठा देना कितना महान कार्य है, जो आर्यसमाज के सामने है। इस कार्य में सहस्रों त्यागी आत्माओं की आहुति पड़े विपुल धन साधन जुटें, और सुदीर्घकाल तक व्यवस्था बने तब कहीं आर्यसमाज का यह स्वप्न पूरा हो सकता है।....इसका प्रारम्भ दस वर्ष के लिए दस विद्वानों को एक स्थान में पूरे पुस्तक संग्रह आदि साधनों सहित बैठा कर किया जावे। कार्य की रूप रेखा पहले अति गम्भीरता से सोचनी होगी। विद्वान् भी वही लेने होंगे, जिनकी वेद में पूर्ण निष्ठा, उत्कृष्ट मेधा और तीव्र रुचि वा गति होगी। किन्हीं व्यक्तियों की जीविका का प्रबन्ध कर देना मात्र ही लक्ष्य न हो। योग्यतम व्यक्तियों को लगाया जावे, जो परस्पर एक दूसरे के सहयोगी और एक दूसरे के विद्या ज्ञान को बढ़ाने की भावना और क्षमता वाले हों। यदि ५० विद्वानों का प्रबन्ध हो तब विज्ञानादि सभी आवश्यक विषयों के विशेषज्ञ भी लिये जा सकते हैं।

दस विद्वानों के लिए दस वर्ष तक ५ लाख रुपये से काम चल सकता है। आगे फिर बढ़ाया भी जा सकता है। क्या आर्य जनता ५ लाख का भी प्रबन्ध नहीं कर सकती है? यदि इस दिशा में कार्य आरम्भ हो तो आर्यसमाज का महान् गौरव बढ़ेगा। इत्यादि।

श्री प० जिज्ञासु जी के विमल-विचार से मैं सहमत हूं। और मेरा यह विश्वास है कि जब सत्य निष्ठ, त्यागी, तपस्वी आर्य विद्वान लोग एक साथ वर्षों बैठकर सर्वात्मना श्रद्धा से वैदिक अनुसन्धान के कार्य में लग जायेंगे, तभी वैदिक परम्परा की विशुद्ध रूप से रक्षा होगी। ५ लाख की धन राशि का संग्रह वर्तमान आर्य जगत् से सहज ही हो सकता है। यदि भारत की सब प्रतिनिधि सभाएं श्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के साथ योगदान दें तो ५ लाख रुपये सुगमता से मिल सकते हैं। विदेश से भी सहस्रों रुपये मिलेंगे। मैं स्वयं ५०००) रु० देने का वचन देता हूं और मॉरिशस आर्य जनता से धन संग्रह करके जो भेज सकूंगा वो अलग।

अन्त मे बड़ी नम्रता से भारत के आर्यसमाज के कर्णधार महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त विषय पर अपना अपना विचार प्रकट करें। विशेष कर सर्व श्री पूज्य पाद स्वामी आत्मानन्द जी महाराज, स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, आचार्य प० नरदेव जी शास्त्री, प० हरिशंकर जी शर्मा, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, आचार्य बृहस्पति जी, आचार्य द्विजेन्द्रनाथ जी, वीरसेन जी वेदश्रमी, आचार्य विश्वश्रवा जी, पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज, प्रभृति सभी वन्द्य पूज्य विद्वत् जनों से हार्दिक प्रार्थना है कि अपना अपना विचार कृपया प्रकट करें।

आप सबों का आशीर्वादाभिलाषी
मोहनलाल मोहित

मारीशस में श्रद्धेय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ

रिव्येर जी रोपार मारीशस में दिनांक २३ शुक्रवार, २४ शनिवार और २५।१।५९ ई० रविवार को गायत्री महायज्ञ हुआ, उसमें मुझे भी निमन्त्रण मिला। मैं दि० २३, २४ को नहीं पहुंच सका दि० २५ जनवरी को प्रातः पौने नव बजे रिव्येर जी रोपार यज्ञ स्थल पर पहुँचा, विशाल पण्डाल बना हुआ था, जो नर नारियों से खचाखच भरा था। मुझे भी प्रबन्धकों ने एक स्थान दिया, मैं बैठ गया। वेदी खूब सुन्दर बनी और ऊंची थी चबूतरे पर सबकी दृष्टि उसी पर थी। ब्रह्मा का आसन पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज ने, पुरोहित पुरोहित श्री पण्डित रामलगन जी ने सुशोभित किया। यजमान थे श्री रामचरित्र मोगन। ध्वनिवर्धक श्री स्वामी जी महाराज के सामने रखा था, वेदमन्त्रों का पण्डाल के अतिरिक्त राही भी सुनते थे। पूर्णाहुति से पहले गायत्री यज्ञ परिवार के सदस्य चार-चार, पांच-पांच बारी बारी से वेदी पर आये गुरु मन्त्र से दस दस और 'ओ३म् स्तुता मया' से एक एक आहुति देते गये। इसके पश्चात् नर-नारियों ने भी तीन-तीन आहुतियाँ पूर्णाहुति के समय दीं। श्री स्वामी जी ने सबको सम्बोधन कर कहा कि अब पं० रामलगन जी एक वेदमन्त्र कहेंगे और सब पीछे पीछे बोलें। वह मन्त्र था 'ओ३म् स्तुता मया वरदा' आदि श्री पण्डित जी शब्द शब्द कहते थे और हम सब पीछे से बोलते गये। पूज्य स्वामी जी महाराज ने मन्त्र का अर्थ करके समझाया इसके पश्चात् पं० रामलगन जी द्वारा संकीर्तन हुआ जिसको सब लोगों ने पीछे पीछे गाया वह भजन था 'चला अमृत गया आलसी सो रहा बन अभागा, साथी सारे जगे मैं न जागा। यह भजन सुनते ही पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी का स्मरण हो आया। यह भजन वह यज्ञ में गाया करते थे। भजन के बाद शान्ति-पाठ हुआ फिर भोज शुरू हुआ। मैंने पहली बार में भोजन कर लिया।

यज्ञ की व्यवस्था सराहनीय थी। [illegible] परन्तु यज्ञ परिवार क्या है, समझ में नहीं आया; इसके जानने के लिए पूछ ताछ की, फिर पण्डित रामलगन जी से मिला तब उन्होंने बताया कि श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज ने यहाँ रिव्येर जी रोपार में कई घरों में गायत्री यज्ञ कराया था। उनके मॉरिशस छोड़ने पर सब इकट्ठे हुए और सबने मिलकर यज्ञ परिवार की रचना की, तब से हर एक के घर पक्ष-पक्ष में यज्ञ होने लगा। जो-जो नियम पूर्वक अमावस्या तथा पूर्णिमा को अपनी अपनी बारी में यज्ञ करते हैं वही यज्ञ परिवार कहे जाते हैं और वर्ष में एक बार गायत्री महायज्ञ होता है, जो आज हुआ है।

इस गायत्री यज्ञ परिवार के अध्यक्ष श्री सम्पन्न श्री रामचरित्र मोगन जी ही हैं, जिनकी कृपा से गायत्री महायज्ञ इस रूप में सम्पन्न हो सका। यज्ञ और भोज का सारा खर्च उन्होंने ही दिया। वे बड़े उदार तथा धर्म निष्ठ हैं।

मुझे श्री पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी महाराज के कई यज्ञों में भाग लेने का मौका मिला था, वे यज्ञाचार्य हैं, यज्ञ वेदी पर उनकी तन्मयता अवर्णनीय थी। मैं इस यज्ञ परिवार की वृद्धि, रामचरित्र मोगन जी के साहस तथा धर्म पर यज्ञता व उत्थान और श्री पण्डित रामलगन जी के कल्याण के लिए जगत् पिता से प्रार्थना करता हूं।

—सोमदत्त विवेक

★

सिंहावलोकन

क्या हम अपने दायित्व के प्रति सजग हैं?

[श्री पं० विश्वम्भरसहाय प्रेमी, मेरठ]

★

महर्षि जीवन के महान समर्पण के पीछे जो भावना थी वह हमें सदैव स्मरण रखनी चाहिये वे मानवता का शुद्ध रूप निर्माण करना चाहते थे और वह रूप आर्य धर्म ही है। उसके लिए वे सच्चे आर्य धर्मोपदेशकों का निर्माण करना चाहते थे आर्यसमाज उनकी इसी भावना का परिणाम था। आज हम आर्यसमाजी कहाँ तक ऋषि की भावना के अनुरूप कार्य कर रहे हैं और हमें कहां तक सफलता मिली है। क्या हम आज बढ़ते हुए मूर्ति पूजा-प्रचार, भौतिक विलासिता तथा अन्य सामाजिक न्यूनताओं को समाप्त करने में संलग्न हैं? यदि हम असावधान है तो हमें सावधान हो अपने महान दायित्व की पूर्ति मे जुट जाना चाहिये। —सम्पादक

पूना में भाषण करते हुए एक बार ऋषि ने कहा था :—

"आर्य धर्म की उन्नति हो इसलिये मेरे सदृश बहुत से धर्मोपदेशक अपने इस देश में उत्पन्न होने चाहियें। एक व्यक्ति द्वारा यह कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। फिर भी अपनी बुद्धि और सामर्थ्य के अनुकूल जो दीक्षा मैंने ली है, उसे चलाऊंगा, ऐसा संकल्प किया हुआ है। आर्यसमाज की सर्वत्र स्थापना होकर मूर्ति पूजा आदि दुष्ट आचार कहीं न हों वेद-शास्त्र का सत्यार्थ प्रकाशित हो और उसके अनुकूल आचरण होकर देश की उन्नति हो, ऐसी ही ईश्वर से प्रार्थना है।"

ये पंक्तियां हमने ऋषि दयानन्द के स्वरचित एवं लिखित एवं कथित जीवन-चरित्र से उद्धृत की हैं जो १९१७ में लाहौर से प्रकाशित किया गया था। जिसका सम्पादन आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० भगवद्दत्त जी ने किया था।

इसी में एक स्थान पर स्वामी दयानन्द के वे विचार भी संग्रहीत है जिनमें प्रगट किया गया है कि स्वामी जी का मन्तव्य देश का सुधार और धर्म का प्रचार था।

स्वामीजी के शब्दों पर ध्यान देने से प्रगट होता है कि वे आर्य धर्म की उन्नति चाहते थे। देश की स्थिति को समझते हुये वे इस बात को भी अनुभव करते थे कि केवल उनके द्वारा धर्म प्रचार करने से ही भारत की उन्नति नहीं होगी। उन्होंने कहा था कि मेरे सदृश बहुत से धर्मोपदेशक उत्पन्न होने चाहियें। एक व्यक्ति द्वारा यह कार्य सिद्ध नहीं हो सकता।

ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर आर्यसमाज ने कार्य करने का यत्न किया। आर्यसमाज में अनेकों विद्वान, साधू सन्यासी हुये जिन्होंने वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने का उद्योग किया। ऋषि दयानन्द ने जिन विचारों का प्रचार किया था, उनको अधिक विस्तार देने के लिये यत्न किया गया परन्तु देश में जो अधार्मिकता फैली हुई थी, उसे दूर करना कठिन काम था।

दूरदर्शी दयानन्द इस बात को जानते थे कि देश में फैली अज्ञानता, अधार्मिकता, अनैतिकता एवं अन्ध-परम्पराओं को मिटाना साधारण बात नहीं। इसीलिये उन्होने विचार दिया था "मेरे सदृश बहुत से धर्मोपदेशक अपने इस देश मे उत्पन्न होने चाहिए"। आज हम अपने देश की स्थिति का सिंहावलोकन करें तो हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के जीवन मे भौतिकवाद ने पूर्ण रूप से प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। खान-पान, रहन सहन में पहिले से भी अधिक पश्चिमी प्रभाव आ गया है। जीवन मे विलासिता आ गई और संस्कृति के नाम पर भारतीय सभ्यता के प्रतिकूल प्रदर्शनों का बाहुल्य हो गया। धर्म पर आचरण करने की बात तो अब व्यक्तिगत विचार तक सीमित हो गई।

महर्षि दयानन्द ने मूर्तिपूजा को भारत के पतन का कारण बताया था परन्तु आज वही मूर्तिपूजा पहिले से अधिक होती जा रही है। साधु, महात्माओं, सूफी, औलिया आदि की समाधि और मजारों का पूजन इतना बढ़ता जा रहा है कि जिसकी आज से पचास वर्ष पूर्व कल्पना भी न की जा सकती थी। इस पूजा को अभी कितना और प्रोत्साहन मिलेगा, यह नहीं कहा जा सकता।

जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से दीक्षा प्राप्त करके वेदों के प्रचार का संकल्प किया था, उसी प्रकार आर्यसमाज के अन्तर्गत दीक्षित होने वालों का यह कर्त्तव्य था कि वे आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के मार्ग पर चलकर दूसरों को वैदिक धर्म की प्रेरणा देते। इस समय की स्थिति को गम्भीरतापूर्वक समझा जाय तो मानना पड़ेगा कि आर्यसमाज का प्रचार-कार्य बहुत शिथिल हो गया है। शिक्षा एवं सामाजिक कार्यों को सरकारी एवं असरकारी संस्थाओं ने संभाल लिया, उन्हींके अनुसार आर्यसमाज की संस्थाओं को भी अपना कार्यक्रम बदलना पड़ा। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को वैदिक धर्म-प्रचार के लिये कुछ नये साधन निकालने की आवश्यकता है। नये साधनों से मेरा आशय ऐसे रूप में कार्य करने से है जो जनता के विचारों में धार्मिक भावनायें जागृत कर सके।

इस समय वैदिक साहित्य का सुन्दर रूप में प्रकाशन होना चाहिये जो पठित समाज को अपनी ओर आकर्षित कर सके। आज सभी देशों में भारतीय साहित्य का सम्मान है। दर्शन शास्त्रों की ओर परदेशी विद्वानों का काफी झुकाव है ऐसी स्थिति मे उनके सम्मुख शुद्ध रूप में वैदिक धर्म-ग्रन्थ आयें तो संसार में नये विचारों की सृष्टि होगी।

आवश्यकता इस बात की भी है कि युवकों को नैतिकता की ओर प्रेरित किया जाय। आज उनमें जो उद्दंडता प्रवेश करती जा रही है उससे देश को भारी क्षति पहुँच रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आचार विचारों में पवित्रता लाई जाय। परन्तु ये सब महान् कार्य हैं। आज के युग मे विचारों में परिवर्त्तन लाने के लिये सिद्धि-प्राप्त पुरुषों की आवश्यकता है। ऐसी सिद्धि कि जिसकी आधार, शिला वेदों पर स्थिर हो। भारतीय संस्कृति के पोषक, वेदों के विश्वासी महापुरुष ही इस देश में धार्मिकता ला सकते हैं। अतः आर्यसमाज को इस समय महर्षि दयानंद के विचारों के प्रचार में ही मुख्य रूप से अपनी शक्ति लगानी चाहिये जिस से इस देश की वास्तविक उन्नति हो।

★

आर्य युवकों से आशा

प्रश्न—मैं किस कागज पर अपना सन्देश लिखूं?

उत्तर—आर्य युवक युवतियों के हृदय पटल पर ही मैं अपना सन्देश लिखना चाहता हूं।

प्रश्न—किस स्याही से अपना सन्देश लिखूं?

उत्तर—श्रद्धा की शलाका रूपी स्याही से।

प्रश्न—किस भाषा में लिखूं?

उत्तर—अनेक बलिदानों व कठोर तपस्याओं से पुनीत शहीदों की खून की भाषा मे।

प्रश्न—और वह सन्देश है क्या?

उत्तर—हे भारत के युवति युवकों! अपने प्राचीन आर्यावर्त्त की ज्ञान-निधि से स्फूर्ति प्राप्त करो। और अपनी आन्तरिक शक्ति को उभारो क्योंकि तुम्हारे मेधावी ऋषि अभी मर नहीं गए हैं। उनकी दाय भाग में छोड़ी संस्कृति सभ्यता, जीवंत होने के कारण वे भी अभी तक जीवित हैं। और सारा विश्व हमारी मातृ भूमि के शक्तिशाली सन्देश को सुनने की प्रतीक्षा में बेचैन अपने नयन और श्रोत्र खोले खड़ा है।

—साधु टी० एल० वास्वानी

कवि श्री द्विरेफ पुरस्कृत

राजस्थान राज्य-साहित्य अकादमी द्वारा

पिलानी, राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि श्री परमेश्वर द्विरेफ के महाकाव्य "मीरां" पर राजस्थान राज्य साहित्य अकादमी ने इस वर्ष ५००) रु० का पुरस्कार प्रदान किया है।

श्री द्विरेफ के इस महाकाव्य पर उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा भी ५००) रु० का पुरस्कार मिल चुका है।

साहित्य-समीक्षण

तपोभूमि

(दयानन्द संस्मरणांक) । इस अंक के सम्पादक श्री पं० राजेन्द्र जी प्रकाशक, ईश्वरीप्रसाद प्रेमी, मथुरा । वार्षिक मूल्य २.५० तथा इस अंक का मूल्य ७५ नये पैसे है । यह आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मथुरा के मुखपत्र का नवम्बर, दिसम्बर १९५८ ई० का द्विमासिक अंक है। इस अंक में युग-पुरुष ऋषि दयानन्द के पवित्रतम जीवन के संस्मरण हैं। इन घटनाओं और पुण्य स्मृतियों के पाठ से हमें अपने जीवन में प्रेरणा मिलती है। कठिनाइयों में रह कर, अगणित प्रतिकूल परिस्थितियों और विषमताओं का सामना कर ऋषि दयानन्द ने भारतीय समाज के पुनरुद्धार का पथ प्रशस्त किया था। अगणित सामाजिक धार्मिक आधि-व्याधियों से ग्रस्त हमारा समाज मृतप्रायः अवस्था में पहुँच चुका था। ऋषि दयानन्द ने कर्मक्षेत्र में प्रकट होकर सजग प्रहरी के रूप में वैदिक ज्ञान की विजय दुन्दुभि बजाते हुए घोषणा की—"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।" 'तपोभूमि' में वर्णित घटनाओं का पाठकर ऋषि के पवित्र जीवन की घटनाएँ सजीव रूप में हमारे सम्मुख आ जाती हैं। अंक पठनीय और संग्रहणीय है।

अजमेर और ऋषि दयानन्द

ऋषि मेला समिति, अजमेर द्वारा प्रकाशित । पृष्ठ संख्या ३८। यह पुस्तिका महर्षि दयानन्द के ७५ वें निर्वाण दिवस पर आयोजित ऋषि-मेला के उपलक्ष्य में निकाली गई है। यह मेला ता० ९.११.५८ से ता० १२-११.५८ तक हुआ था। दीवान बहादुर श्री हरविलास जी शारदा ने अँगरेजी में "दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित्र" लिखा है। उसी पुस्तक के आधार पर इस पुस्तक के २५ पृष्ठों में ऋषि के पुण्य चरित्र की उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया गया है, जो अजमेर नगर में घटित हुई हैं। अन्त के पृष्ठों में "अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के स्मारक" का वर्णन किया गया है। हमारी हार्दिक कामना है कि शारदा जी द्वारा लिखित महर्षि के इस जीवन वृत्तान्त का निरन्तर घर घर में पाठ हो।

श्री वेंकटेश्वर समाचार

(गणराज्य दिवस अंक) संपादक विद्यालंकार पं० देवेन्द्र शर्मा शास्त्री। प्रकाशक पं० भगवतीप्रसाद, अवस्थी श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई। पृष्ठ संख्या ४४, मूल्य एक अंक का ७५ नये पैसे, वार्षिक मूल्य ५)। यह हिन्दी का बहुत पुराना पत्र है। मराठी और गुजराती के प्रधान क्षेत्र बम्बई में इसने हिन्दी की सराहनीय सेवा की है। इस विशेषांक में नेता जी की जीवन गाथा, हमारा पर्व, सामुदायिक विकास-योजना में प्रगति आदि लेख उपयोगी हैं। विशेषांक उपादेय है।

जागरण

(गणतन्त्र दिवस-विशेषांक) सम्पादक श्री विश्वनाथ, प्रकाशक जागरण कार्यालय, १७७ कानून गोयान मेरठ। वार्षिक मूल्य ३), एक अंक का मूल्य १६ नये पैसे। पृष्ठ संख्या १६। यह राष्ट्रिय विचार धारा का प्रगतिशील साप्ताहिक पत्र है। इस अंक में धर्म व राजनीति, गणतन्त्र दिवस की प्रतिच्छाया, अर्थचिन्तन, सन् १९५८ में भारत (सचित्र) आदि लेख विचार पूर्ण और उपयोगी हैं। मुख पृष्ठ पर राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ के प्राण श्री गुरु गोलवलकर का सुन्दर चित्र और कविता दी गई हैं। सब मिलाकर विशेषांक सुन्दर और पठनीय है।

सहयोगी

(गणतन्त्र विशेषांक) सम्पादक श्री विष्णुदत्त शुक्ल श्री गोपीनाथ गुप्त एम० ए० तथा श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय। प्रकाशक श्री ब्रजलाल वर्मा, भारतवर्ष प्रेस, महेश्वरी मोहाल, कानपुर। वार्षिक मूल्य ६ इस अंक का २५ नये पैसे। पृष्ठ संख्या ३२। साप्ताहिक सहयोगी प्रायः १२ वर्ष से निकल रहा है। इस अंक में सहकारी बाल बचत योजना, दूसरा मोड़, श्रमदान-सम्बन्धी लेख, पुराने क्रान्तिकारियों का सम्मेलन आदि लेख महत्त्वपूर्ण और सुपाठ्य हैं। चित्रों की छपाई में अधिक सजगता अपेक्षित है। यह रचनात्मक प्रवृत्तियों का उपयोगी पत्र है। आशा है, इसकी उत्तरोत्तर उन्नति होती जायगी।

★

सुझाव और सम्मतियां

डी० ए० वी० कालेज बुलन्दशहर

१५ फरवरी के आर्यमित्र में उक्त शीर्षक लेख पढ़कर मुझे दुःख होना तो एक आर्य के नाते स्वाभाविक ही था, किंतु आश्चर्य बिल्कुल नहीं हुआ, और साथ ही कुछ सम्मृतियां जागृत हो गईं। इस लेख के लिखने से मेरा उद्देश्य किसी पक्ष विशेष का समर्थन या विरोध नहीं है और बुलन्दशहर के स्थानीय विवादों से मेरा कोई सम्बन्ध भी नहीं है। कानून और आर्यसमाज तथा सभा के दृष्टिकोण से ही मैं अपने विचार रख रहा हूं। जो सर्वथा मेरे निजी हैं।

बुलन्दशहर की तरह अन्य अनेक समाजों और आर्यसमाज द्वारा स्थापित संस्थाओं ने अपनी २ संस्थाओं की पृथक रजिष्ट्री करा ली है। पृथक रजिष्ट्री कराने के लाभ और दुष्परिणामों के सम्बन्ध में मैंने आर्यमित्र के कालमों में समय समय पर अपने विचार लिखे हैं। सभा में भी कई बार यह आंदोलन चला, परन्तु सभा ने दृढ़ता से कोई निर्णयात्मक पग नहीं उठाया।

पृथक रजिष्ट्री कराने के प्रायः निम्न प्रयोजन होते हैं।

१—समाजों में कुछ व्यक्ति इन विचारों के होते हैं कि प्रान्तीय सभा तो कुछ करती धरती नहीं। हमने समाज बनाई, धन एकत्र करके संस्था खोली है, तो हम पृथक रजिष्ट्री कराकर सब प्रकार से स्वतन्त्र क्यों न रहें।

२—कुछ संस्थाओं की सुसंगठित और सुव्यवस्थित अवस्था में देख कर कुछ धनिक स्वार्थी पदलोलुप लोगों के मुंह में पानी आने लगता है और जब आर्यसमाज में आन्तरिक विवाद उठते हैं तो पराभूत समुदाय उपर्युक्त प्रकार के व्यक्तियों से मिलकर पृथक रजिष्ट्री का सब्जबाग सामने रखते हैं।

३—प्रायः सरकार की ओर से भी ऐसे आदेश मिल जाते हैं कि पृथक रजिष्ट्री करा लो।

पृथक रजिष्ट्री कोई हौवा नहीं है। सन् १८६० ई० में विद्रोह के बाद अंग्रेजी सरकार ने कानून नं० २१ सन् १८६० ई० में पास किया। इसके आधार पर सरकार ने आदेश दिया कि सन् १८६० के पहले की संस्थापित संस्थायें रजिष्ट्री करा लेवें और भविष्य में कोई ७ व्यक्ति मिलकर किसी संस्था की रजिष्ट्री करा सकते हैं जिसकी फीस ५०) ली जाती है और रजिष्ट्रार इसकी रजिष्ट्री करके सार्टीफिकेट दे देते हैं। हमारे प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा भी इसी कानून के अनुसार रजिस्टर्ड संस्था है।

पृथक रजिस्टर्ड होने के बाद वह संस्था बिल्कुल स्वतन्त्र हो जाती है। और स्वतन्त्र होता हो वह है जिसको "कर्तुं, अकर्तुं, और अन्यथा कर्तुं" तीनों ही अधिकार प्राप्त होते हैं। रजिस्टर्ड होते ही उसको पूरा अधिकार प्राप्त हो जाता है कि वह अपना नाम बदल दे अपना संगठन बदल दे अपने उद्देश्य बदल दे, या एक संस्था तोड़ दे, या तोड़कर दूसरी संस्था में मिला दे। मुझे खेद होता है कि बुलन्दशहर के "तत्कालीन, कर्मठ, कर्मवीर और अनुभवी" सज्जनों ने जिनके दूषित मस्तिष्कों में पृथक रजिष्ट्री के विचार उत्पन्न हुए उन्होंने पृथक रजिष्ट्री के इस भयानक पहलू की ओर दृष्टि नहीं डाली।

मेरे नगर लखीमपुर में भी लगभग २० साल हुए ऐसी परिस्थिति आई कि इस पृथक रजिष्ट्री का भूत आर्यसमाज के कुछ सदस्यों और पदाधिकारियों के दिमाग में घुस गया। मैं इसके विपक्ष में था, और शायद वोटों की दृष्टि से मेरा पक्ष निर्बल था परन्तु मैंने एड़ी चोटी का बल लगाकर उसका विरोध किया। परिणाम यह है कि हमारी आर्य कन्या पाठशाला जो इस समय इण्टर कालिज है, आज ४० वर्ष से चल रही है और उसके भवन की लागत ही लगभग एक लाख रुपया है।

पृथक रजिष्ट्री के दुष्परिणामों की एक नहीं, कई मिसालें मेरी आंखों के सामने हैं। आर्यसमाज सिटी लखनऊ वाला केस, व आर्यसमाज अल्मोड़ा के मामलों में प्रांत की प्रतिनिधि सभा का लगभग ८-१० सहस्र रुपया अदालतों में व्यय हो गया।

मैं बुलन्दशहर के अपने आर्य भाइयों को निरुत्साहित करना नहीं चाहता हूं। वह न्याय के पक्ष में हैं उनको अपने अधिकारों की रक्षा करनी ही चाहिये। एक आर्य के नाते से मेरी शुभ कामनायें उनके साथ हैं और सत्तर साल के घिसे घिसाये आयु से कुछ सेवा हो सकती है तो वह भी हाजिर है।

शिवनारायण शुक्ल एडवोकेट
प्रधान आर्यसमाज लखीमपुर

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कुछ आयोजन—

इस वर्ष उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से मथुरा में कुछ समारोह मनाये जा रहे हैं। ये हैं—आर्यसमाज के शिरोमणि साहित्यकार प० गंगाप्रसाद द्वय (उपाध्याय और रि० जज) का अभिनन्दन, आर्यमित्र हीरक जयन्ती' और विरजानन्द स्मारक की स्थापना। निश्चय ही इन तीनों समारोहों का अपना महत्त्व है। साहित्यकारों की आर्यसमाज ने अब तक उपेक्षा ही की है। वाक्शूरों का सम्मान और लेखकों की उपेक्षा किसी भी संस्था के लिए घातक हो सकता है, और आर्यसमाज तो उस युग प्रवर्त्तक महर्षि द्वारा स्थापित है जो एक महान् विद्वान होने के साथ साथ महान लेखक भी था। पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की साहित्यिक सेवायें किसी से छिपी नहीं हैं। यदि वे आर्य दर्शन और साहित्य की अभिवृद्धि न कर अपनी सृजनात्मक शक्ति का किसी अन्य क्षेत्र में उपयोग करते तो निश्चय ही हिन्दी के अन्यान्य लेखकों की भांति वे भी आज प्रचुर द्रव्योपार्जन करते, सरकारी प्रतिनिधि मण्डलों मे सम्मिलित होकर विदेश भ्रमण करते या किसी विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर बने होते। परन्तु इस लोकैषणा का त्याग कर एकनिष्ठ भाव से उन्होने वेद भारती की आराधना की और दयानन्द के दार्शनिक दृष्टिकोण को पुष्पित और पल्लवित किया। इसी प्रकार प० गंगाप्रसाद जी रि० जज ने भी Fountain Head of Religion जैसी पुस्तकें लिखकर वैदिक धर्म के गौरव की अभिवृद्धि की है, अतः इन महान् साहित्यकारों के सम्मान की योजना अभिनन्दनीय है।

'आर्यमित्र' केवल आर्य जगत् का ही नहीं, अपितु राष्ट्रभाषा का सबसे प्राचीन जीवित पत्र है। वह अपनी आयु के ६० वर्ष पूरे कर चुका है। ऐसी स्थिति मे आर्यमित्र की हीरक जयन्ती के रूप में यदि हम हिन्दी पत्रकारिता को आर्यसमाज की क्या देन रही है, यह जनता को समझा सकें तो एक बड़ा भारी काम हो जायगा। दण्डी विरजानन्द आर्ष ग्रन्थों के महान् प्रचारक और भारतीय जागरण के मन्त्र द्रष्टा महापुरुष थे। उनकी प्रेरणा प्राप्त कर दयानन्द ने सुधार और संस्कार का महत्कार्य प्रारम्भ किया। यदि विरजानन्द नहीं होते तो दयानन्द की डगमगाती जीवन-नौका किस घाट लगा होती, यह नहीं कहा जा सकता। विरजानन्द का अमर स्मारक तो ऋषि-कृत ग्रन्थों का प्रचार और आर्ष प्रणाली को पुनरु

आर्य्यमित्र की जयन्ती और मथुरा

प्रश्न है कि आर्य्यमित्र की जयन्ती से मथुरा का क्या सम्बन्ध है? उत्तर होगा कि आर्य्यमित्र का संचालक जो आर्य्यसमाज है उसके संस्थापक ऋषि दयानन्द का यह गुरुधाम है। गुरुधाम होने के नाते हो १९८१ सम्वत् मे स्वामी जी की जन्म शताब्दी मथुरा में ही मनाई गई थी। इससे आर्य्यमित्र सम्बन्धी चहल पहल यहां ही की जाय तो ठीक है। इस उत्तर पर कहा जा सकता है कि यह ऊपरी बातें है, इस चहल पहल का कारण ऐतिहासिक नहीं। मुरादाबाद, आगरा और लखनऊ आदि ही मित्र के सम्बन्ध में ऐतिहासिक स्थान हैं जहां-जहां आर्य्यमित्र प्रकाशित होता रहा है। यह उक्ति नपी तुली और ठीक ही है, परन्तु गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय तो मथुरा भी इस युक्ति को अपने पर लागू करता है। सुनिये! मथुरा भी आर्य्यमित्र के सम्बन्ध मे उपर्युक्त नगरों के समान ही ऐतिहासिक नगर है।

जब मथुरा मे सं० १९८१ में चार लाख जनता की उपस्थिति में दयानन्द जन्म शताब्दी मनाई गई थी उस अवसर पर मथुरा में भी आर्य्यमित्र दैनिक रूप में यहाँ प्रकाशित हुआ था। अनेक कैम्प और कई प्लेटफार्म थे। एक एक साथ पृथक् पृथक् अनेक स्थानों पर अपने अपने विषयों पर सभायें होती थीं। एक स्थान के श्रोता उस समय के अन्यत्र का समाचार नहीं जान पाते थे। इसलिये सभी प्लेटफार्मों की सभाओं का समाचार आर्य्यमित्र में दैनिक मथुरा में छपने से सभी जनता जान लेती थी।

जहाँ आर्य्यमित्र दैनिक रूप में प्रकाशित हुआ हो तो क्या मथुरा नगर इसका अधिकारी नहीं कि आर्य्यमित्र की जयन्ती धूम धाम से यहां मनाई जाय? अतः उपर्युक्त अनेक नातों से आर्य्यमित्र जयन्ती का समारोह बड़ा ही गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक ढग से भी उचित ही है। मथुरावासी सौभाग्यशाली हैं कि प्रान्त की शिरोमणि सभा ने मथुरा को यह गौरव प्रदान करने का निश्चय किया है। —निवेदक विद्यासागर वैदिक संयोजक १९८१ वि० की दयानन्द जन्म शताब्दी का विशाल वाचनालय मथुरा

सभा के इन सभी आयोजनों का हार्दिक अनुमोदन और अभिनन्दन करते हैं और आशा रखते हैं कि इन समारोहों से आर्य जगत् नवीन प्रेरणा पाकर 'आर्ष पथ' पर निरन्तर बढ़ता चला जायगा।

बाल-विनोद

मूर्खता के बारह लक्षण हैं

(१) भगवान को भूलना (२) समय की कीमत न समझना, (३) अपने को बड़ा मानना (४) एकान्त में बात करते हुए लोगों के बीच जा बैठना, (५) बड़े लोगों की खिल्ली उड़ाना, (६) अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करना, (७) सभा में ऊँची जगह बैठने की कोशिश करना, (८) बहुत बोलना और ऐसा बोलना जो दूसरों को अप्रिय लगे, (९) दूसरों से उधार लेकर उसे चुकाने की चिन्ता न करना, (१०) किसी के भोज में बिना न्यौते पहुँचना, (११) अतिथि होकर घर के मालिक पर हुकूमत करना, (१२) अपने से बड़ों की आज्ञा न मानना, इन बारह दोषों से बचने वाला मनुष्य अनेक विपत्तियों से आत्म रक्षा कर सकता है।

भारती, देहली

पहेलियाँ

(१)

सबसे पहिले हम आये थे,
उनके पीछे भैया।
पीछे पीछे बाबा आये,
सबके पीछे भैया।

(२)

हरी-भरी एक सुन्दर नार,
नर नारी का करे सत्कार।
भोजन पीछे काम में आये,
लहू बहा बैकुण्ठ को जाए।

दूध, दही घी और छाछ, २ पान की गिलौरी

—ज्योति हलद्वानी

—नोटः—बाल जगत में, बालकों की उत्तम मनोरंजक एवं आदर्श हास्यपूर्ण रचनाएं स्थान प्राप्त कर सकता है। —मित्र बन्धु

[१]

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आता हूं खाने के काम,
प्रथम कटे तो सर बन जाता,
अन्त कटे तो बाल कहलाता,

[२]

तीन अक्षर का मेरा नाम।
कहते मुझे तू है सुन्दर फूल॥
मध्य कटे अपना बन जाऊं।
अन्त काटा पानी कहलाऊं॥

[३]

रात में चादर बिछी।
कोई सोने वाला नहीं॥
सो गया तो कोई।
बचाने वाला नहीं॥

उत्तर—(१) केसर (२) नीरज (३) गंगा

—सतीशचन्द्र अग्रवाल, हलद्वानी

(वेद)

वैदिक वेद पढ़ाओ जग में।
जग सुपथ को भूल रहा है॥
माया रंग मे फूल रहा है॥
भूले को मार्ग दिखाओ जग में,
वैदिक वेद पढ़ाओ जग में,
सुन सुन करके बने पुजारी,
ईश्वर को भूले नर-नारी,
ईश्वर-भक्ति सिखाओ जग में,
वैदिक वेद पढ़ाओ जग में,
अन्त हुआ है मूल प्रभाकर,
तम अमूल का छाया घर घर,
उसको फिर चमकाओ जग में,

—ब्रह्मचारी कीर्त्यानन्द गुरुकुल वैद्यनाथ धाम, एम० पी०

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम..............................

आयु..............वर्ष..............

पूरा पता..............................

....

आपकी विशेष प्रवृत्ति..............................

दिल्ली में ऋषि-बोधोत्सव

राष्ट्रपति का सन्देश, लोक-सभाध्यक्ष आयगर और डा० शैफुद्दीन किचलू द्वारा श्रद्धांजलियाँ

दिल्ली की आर्य जनता में अपार उत्साह

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिल्ली की आर्य केंद्रिय सभा द्वारा ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य म 'कन्स्टीट्यूशन क्लब' मे एक विशाल समारोह मनाया गया। इसी प्रकार एक आर्य मेला कोटला फ़ीरोज़ ग्राउण्ड में भी इसी सभा द्वारा मनाया गया। इस मेले में दिल्ली की सभी समाजो व आर्य शिक्षा संस्थाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। राजधानी में इस समारोह की बहुत चर्चा रही है।

'कन्स्टीट्यूशन क्लब' मे भाषण देते हुए लोक-सभाध्यक्ष श्री अनन्त शयनम आयगर ने कहा—

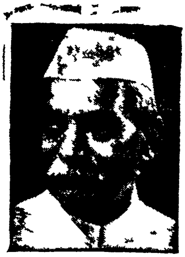
आर्यसमाज वेदरक्षक—

मैंने देखा है वेदाभिमानी सनातनी हिन्दू वेदों का उतना ध्यान नहीं रखते जितना आर्यसमाजी रखते है। यदि ऋषि दयानन्द न आते तो न जाने कितने हिन्दू विधर्मी बन जाते। इस दृष्टि से मैं ऋषि दयानन्द को किसी भी महापुरुष से कम नहीं मानता। आर्य संस्कृति की रक्षा करना हम सबका कर्त्तव्य है।

राष्ट्रपति का सन्देश—

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने इस अवसर के लिए सन्देश भेजते हुए लिखा था—

महर्षि दयानन्द ने सोते हुए भारत को जगाया था। धर्म और समाज में नया जीवन फूंका था, जिसका प्रभाव हम आज भी देख रहे है। और जिससे हम लाभ उठा रहे हैं। ऐसे पुरुष विरले ही हुआ करते हैं। हमारा सौभाग्य था कि हमने उनको पाया और उनके उपदेश एवं तपस्या से अपने को लाभान्वित किया। उनके जीवन और उपदेश से हमको शिक्षा लेनी चाहिए। तथा अपने एवं देश को उन्नत बनाना चाहिए।



राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा—

इस समारोह में भाषण देते हुए डा० शैफुद्दीन किचलू ने कहा—

बहुत से नेता या पैगम्बर किसी जाति विशेष के उत्थान के लिए संकीर्ण दृष्टिकोण का प्रचार करते हैं। किन्तु ऋषि दयानन्द का सन्देश मानव जाति के लिए, और भारत के सभी लोगो के लिए था। ऋषि दयानन्द ने हमें सच्ची राष्ट्रीयता और राष्ट्र निर्माण का सन्देश दिया। आज भी हम सबका एक ही कर्त्तव्य होना चाहिए, वह यह कि राष्ट्र में राष्ट्र-भावना का विकास हो। इससे बढकर देश की और कोई सेवा नहीं हो सकती। आर्यसमाज को इस महान् कार्य में राष्ट्र का नेतृत्व करते रहना चाहिए।

इस अवसर पर आर्य विद्वान् प० इन्द्र विद्या वाचस्पति ने ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण को समझने की जनता से अपील की। स्वागताध्यक्ष गोकुलचन्द नारंग ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन ने समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के अन्त में जलपान का आयोजन किया गया जिसमें आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त दिल्ली के गण्यमान्य नागरिक कई सिख व मुस्लिम नेता भी उपस्थित थे।

[पृष्ठ ६ का शेष]

प्रवेश करता है तो वह एक दण्डनीय — — है और उसे ... पौंड जुर्माना हो सकता है या उसे तीन महीने की सजा हो सकती है, अथवा जेल और जुर्माना दोनों दण्ड दिये जा सकते है।

गिर्जे में भी प्रवेश निषिद्ध

१६—यदि अफ्रीकी मामलों के मन्त्री की राय में किसी नगर के गिर्जे में अफ्रीकी लोगों की प्रार्थना में उतनी बड़ी संख्या में शामिल होना अवांछनीय है जितनी संख्या में वे सामान्यत सम्मिलित होते हैं तो वह स्थानीय नागरिक अधिकारी की सहमति से गजट में एक नोटिस छाप कर अफ्रीकी लोगों के प्रार्थना में सम्मिलित होने से रोक लगा सकता है।

१७—यदि अस्पताल चलानेवाला कोई व्यक्ति अफ्रीकी मामलों के विभाग से अनुमति प्राप्त किये बिना ही, १६३७ के बाद स्थापित नगर के अस्पताल में किसी अफ्रीकी मरीज को भरती कर लेता है तो उसका कार्य एक दण्डनीय अपराध है। वह सिर्फ उसी अफ्रीकी को भरती कर सकता है जिसकी जान संकट में हो।

१८—यदि कोई अफ्रीकी किसी नगर में अनुमति पत्र के अनुसार वैध रूप में रह रहा हो तो इसका यह मतलब नहीं कि वह अपनी पत्नी तथा ... अधिकारी बन गया है।

१६—यदि आबादी के रजिस्टर में कोई व्यक्ति एक गोरा व्यक्ति दर्ज किया गया हो और उस वर्गीकरण का उसे परिचय पत्र मिल चुका हो तो २५ वर्ष बाद कोई शख्स इस आधार पर उसके वर्गीकरण का विरोध कर सकता है कि सामान्यत. उसे अश्वेत ही समझा जाता है। इस आपत्ति की सुनवाई एक बोर्ड के सामने होती है और उसका निर्णय अन्तिम होगा तथा उसे मानना पड़ेगा। लेकिन यदि आपत्ति मान ली गई तो पीड़ित व्यक्ति निर्णय के विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालय मे अपील कर सकता है।

आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य भारत का निर्वाचन १६५६

प्रधान—श्री देवदत्त मुद्गल

उपप्रधान—श्री डा० महावीरसिंह

श्री वीरसेन वेदश्रमी

श्री लाडलीप्रसाद एडवोकेट

श्री शिवशरण गुप्त

मन्त्री—श्री भारतभूषण त्यागी एम ए

आर्य-जगत

प्रचार-समाचार—

—श्री शिवधरप्रसाद आर्य भजनोपदेशक जी ने गया, मुंगेर हजारीबाग, सारण, और शाहबाद जिले के अनेक गांवों में प्रचार किया। तथा वायोचक खोदसापुर (पटना), खार्टी हजारीबाग बेला (मुंगेर) शरघाटी, राशनगंज, औरंगाबाद रफीगंज, मऊ (गया), तथा पचरुखिया, शाहबाद आदि स्थानों में नई समाजें स्थापित कीं।

—सभा प्रचारक श्री निरञ्जन प्रसाद शर्मा ने दिसम्बर ५८ से ७ फरवरी तक मेरठ जिले के अनेक ग्रामों में प्रशंसनीय प्रचार कार्य किया।

—कैवल्य आश्रम वैदिक संस्कृत पाठशाला नवीन शाहदरा देहली की प्रथमा, मध्यमा, प्राज्ञ विशारद व शास्त्री पर क्षाओं में १० छात्र प्रविष्ट किये जायेंगे। इच्छुक छात्र स्थानीय आर्यसमाज के मंत्री के हस्ताक्षर युक्त आवेदन पत्र शीघ्रातिशीघ्र भेज।

—माता जगधात्री देवी जी मैंनपुरी समाजों में प्रचार करती हुई दि० २० २ ५९ को सोगाव आर्यसमाज में पहुँचीं और वहाँ कन्या पाठशाला में आपका ओजस्वी भाषण हुआ।

—आदर्शनगर प्रेजुएट कालोनी (नैनीताल) में आर्यसमाज मन्दिर में निर्माण हेतु जिन सज्जनों ने भूमि दान दी है समाज उन्हें धन्यवाद देती है।

—शान्ति आश्रम लोहारदगा में बसन्त पंचमी पर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। स्वामी शिवानन्द जी का उपदेश प्रभावशाली रहा।

—बेवर मैंनपुरी आर्यसमाज के मन्त्री जी के घर पर माता जगधात्री देवी जी ने प्रचार कार्य किया। साथ ही आर्यमित्र की हीरक जयन्ती के लिए धन की अपील भी की।

—श्री बालराम जी ने १९ २ ५९ को नसीरपुर बिजनौर में एक नवीन समाज का स्थापन की। इसी अवसर पर गायत्री यज्ञ की कार्यवाही भी सम्पन्न हुई। श्री प्रकाशचन्द्र जी के सुपुत्र का चूड़ाकर्म संस्कार भी सविधि सम्पन्न हुआ।

—महजनवा गोरखपुर आर्यसमाज जो कि पूर्व सात वर्षों से पंचायत के अनधिकृत कब्जे में था, उसके भवन में श्री भागवतप्रसादसिंह जी के प्रयत्न से पुनः आर्यसमाज का कार्य प्रारम्भ हो गया है। जिसके वे मन्त्री तथा प्रधान श्री विहारी राम भरकप हैं।

शोक समाचार—

—नैनीताल आर्यसमाज ने श्री भवानीदास शाह के ७। २। ५९ में आकस्मिक निधन पर शोक-प्रस्ताव पास किया।

शुभ विवाह

आर्यसमाज बगदाद के प्रधान श्री अमरनाथ जी मोहेन्द्रा की सुपुत्री सौभाग्यवती वेदकुमारी विद्यालंकृता का शुभ विवाह आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट के सुपुत्र कैप्टेन श्री ज्ञानेश्वरसिंह के साथ २२ फरवरी १९५९ को आगरा में बड़े समारोह के साथ हुआ। पं० ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक ने पुरोहित का कार्य किया। इस अवसर पर आगरा के ढाई सौ सज्जनों तथा देवियों ने उपस्थित होकर सत्कार की शोभा को बढ़ाया और वर वधू को मंगल आशीर्वाद दिया।

मित्र परिवार की ओर से नव दम्पति को हार्दिक बधाई है।

दाहोद (बम्बई) के उपद्रव का दायित्व आर्यसमाज पर नहीं

बम्बई के आ० प्र० नि० सभा के मन्त्री श्री वेणी भाई आर्य ने एक वक्तव्य में स्पष्ट किया है कि दाहोद में साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति उत्पन्न होने का दायित्व आर्यसमाज पर नहीं है।

आरम्भ में ईसाई पादरियों ने ५०० से ६०० सौ हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करना चाहा, पर आ० स० के मन्त्री ने पुलिस में सूचना दी। पुलिस पादरियों को कुछ न कहकर आर्यों को परेशान कर रही है जो अनुचित है। सारे आर्य जगत् में पुलिस के इस व्यवहार पर क्षोभ है।

निर्वाचन—

—लल्लापुर बनारस आर्यसमाज के प्रधान श्री रामकृष्ण जी मन्त्री श्री बुद्धदेव जी तथा श्री शिवनाथ जी, बुद्धदेव जी प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

—इकौना आर्यसमाज के प्रधान पूर्णचन्द्र जी तथा मन्त्री शालिग्राम जी चुने गये।

—दर्शन पुरवा कानपुर आर्य समाज के प्रधान श्री हरि विलास जी, मन्त्री ओंकारनाथ जी तथा कुंवरबहादुर जी, सरदारीलाल जी और श्री राजेसिंह जी सभा के प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

—शहर मुजफ्फरनगर आर्यसमाज के प्रधान श्री शेरसिंह जी तथा मन्त्री श्री चन्द्रगुप्त जी निर्वाचित हुए।

—सीकर (बलिया) आर्यसमाज के प्रधान श्री रामाधारसिंह जी तथा मन्त्री पन्नालाल जी चुने गये।

—बहादराबाद (सहारनपुर) आर्य समाज के प्रधान श्री मूल सिंह जी तथा मन्त्री हृदयराम जी निर्वाचित हुए।

—फैजाबाद आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती विद्यावती जी तथा मन्त्राणी सुमित्रा वर्मा निर्वाचित हुईं।

—किराकत आर्यसमाज के श्री जवाहरलाल जी प्रधान तथा मुन्नीलाल जी मन्त्री निर्वाचित हुए।

—सावला आदि पचपुरी आर्य समाज गढ़वाल के प्रधान श्री धर्मचन्द्र जी, मन्त्री श्री शान्तिप्रकाश जी एवं सभा प्रतिनिधि श्री शान्तिप्रकाश जी धर्मचन्द्र जी तथा कल्याणसिंह जी निर्वाचित हुए।

—देहरादून आर्यसमाज के प्रधान श्री तेजकृष्ण जी, मन्त्री श्री देवदत्त जी एवं सभा प्रतिनिधि श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, बृहस्पति जी, हुलास जी, यशपाल जी धर्मेन्द्रसिंह जी मक्खन लाल जी तथा स्वर्णलता जी।

—सुभाषनगर बरेली आर्यसमाज के प्रधान श्री शिवनन्दन जी तथा मन्त्री श्री विद्याभास्कर जी चुने गये।

—आजमगढ़ आर्यसमाज के प्रधान श्री दशरथराम जी तथा मन्त्री श्री रामप्रसादसिंह जी निर्वाचित हुए।

—हरिहरन व शास्त्री नगर कानपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री जगन्नाथ जी तथा मन्त्री कृष्णगोपाल जी निर्वाचित हुए।

—बेलियाघाटा कलकत्ता आर्य समाज के प्रधान किशोर प्रसाद जी तथा मन्त्री ओंकार जी चुने गये।

चौकिया मिर्जापुर आर्यसमाज के प्रधान श्री सुखरामसिंह जी, मन्त्री श्री रामनरेशसिंह जी चुने गये।

—हरदोई आर्यसमाज के प्रधान श्री डा० सूर्यदेव जी तथा मन्त्री रामेश्वर दयालु जी चुने गये।

—ज्वालापुर हरिद्वार आर्यसमाज के प्रधान श्री डा० क्षेमचन्द्र जी, मन्त्री श्री सत्यपाल जी चुने गये।

—पीलीभीत आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी, मंत्री श्री डोरी सिंह जी तथा सभा प्रतिनिधि श्री रामचन्द्र, बुद्धसेन जी, एवं रामकुमार जी गुप्त निर्वाचित हुए।

—असुरन आर्यसमाज गोरखपुर के श्री कलाराम जी मंत्री, श्री कलानाथ जी क्रमशः प्रधान तथा मन्त्री चुने गये।

—शिकोहाबाद आर्यसमाज के प्रधान श्री श्यामगोपाल जी, मन्त्री श्री वैद्य गुरुदत्त जी निर्वाचित हुए।

—बाजार सीताराम आर्यसमाज दिल्ली के प्रधान श्री रूपलाल जी, मंत्री श्री देशराज जी चुने गये।

—नगीना आर्यसमाज के प्रधान श्री कुन्दनलालजी, मंत्री श्री हजारीलाल तथा सभा प्रतिनिधि श्री कुन्दनलाल जी एवं जयचन्द्र जी चुने गये।

—कचौरा अलीगढ़ आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी तथा मन्त्री पन्नालाल जी चुने गये।

—कर्णपुरदत्त फर्रुखाबाद आर्य-समाज के प्रधान श्री शंकरसिंह जी व मन्त्री श्री उदयपाल जी चुने गये। तथा सभा प्रतिनिधि गयासिंह जी निर्वाचित हुए।

—चौकपुर (देहरादून) आर्य-समाज के प्रधान श्री मायाराम जी तथा मन्त्री रक्खालाल जी निर्वाचित हुए।

—बड़ौत (मेरठ) आर्यसमाज के प्रधान श्री अर्जुनसिंह जी तथा मन्त्री श्री चन्द्रभानु जी निर्वाचित हुए।

—जिला आर्य सम्मेलन रसड़ौल के प्रधान श्री जगन्नाथ प्रसाद जी तथा मन्त्री श्री वी० के० शर्मा चुने गये।

—नसीरपुर बनवारी (बिजनौर) आर्यसमाज के प्रधान श्री जयपाल सिंह जी तथा मन्त्री श्री श्यामसिंह जी चुने गये।

—चौक आर्यसमाज प्रयाग के प्रधान श्री दयास्वरूप जी, मन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी तथा सभा प्रतिनिधि सब श्री मुरलीधर जी, गंगा विष्णु जी दया स्वरूप जी, सत्यदेव जी एवं श्यामाकान्त जी चुने गये।

—कटूमैन आर्यसमाज लखनऊ के प्रधान श्री त्रिलोकीनाथजी, मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी तथा सभा प्रतिनिधि श्री बी० एन० पाल निर्वाचित हुए।

—राजा की ताल आर्यसमाज आगरा के प्रधान श्री महतावसिंह जी तथा मन्त्री श्री शिवराजसिंह जी चुने गये। निर्वाचन श्री कुसुमाकर जी की उपस्थिति में हुआ।

—बादशाह नगर आर्यसमाज लखनऊ के प्रधान श्री रमाशंकरलाल जी, मन्त्री श्रीजगतनारायण जी, सभा प्रतिनिधि श्री रामेश्वर सहाय जी व रमाशंकरलाल जी चुने गये।

—चौदपुर (बिजनौर) आ० स० के प्रधान श्री किशनसिंह व मन्त्री श्री राजाराम आर्य निर्वाचित हुए।

उत्सव समाचार—

चौकिया आर्यसमाज मिर्जापुर का उत्सव २०, २१ फरवरी को धूमधाम के साथ मनाया गया।

—बेलिया घाटा, कलकत्ता आर्य समाज का वार्षिक उत्सव २७ मार्च से ३१ मार्च ५९ को मनाया जायगा।

—रक्सौल, चम्पारण आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव १२ से १४ फरवरी ५९ को उत्साह पूर्वक मनाया गया।

रुदौली मिर्जापुर का वार्षिक उत्सव १५।२।५९ को सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

—जोड़ा बगान कलकत्ता का वार्षिक उत्सव १२ से १५ अप्रैल ५९ को मनाया जाना निश्चय हुआ है।

—बिसौली, बदायूं आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव १४ से १७ मार्च ५९ को मनाया जायगा।

—बिसवा, सीतापुर आर्यसमाज का उत्सव २३ से २५ फरवरी तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर तीन शुद्धियाँ भी हुईं।

—धनबाद आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव १० से १३ फरवरी तक सफलता के साथ मनाया गया।

—ग्वालियर नगर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव ६ से ९ मार्च ५९ को धूमधाम से मनाया गया।

—वैदिक साधन आश्रम यमुना नगर का उपाधि वितरण समारोह १-५ अप्रैल तक श्री आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

—पहासू (बुलन्दशहर) आ० स० का वार्षिकोत्सव १५-१६-१७ मार्च को मनाया जायगा।

—आर्यसमाज मगहर (बस्ती) का उत्सव २८ फरवरी व १ मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया।

लखनऊ में ऋषि बोधोत्सव

लखनऊ की प्रायः सभी समाजों में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। आर्यसमाज गणेशगंज, आर्यसमाज श्रृंगारनगर आर्यसमाज नरही, आर्यसमाज बादशाह नगर आर्यसमाज सदर में विशेष आयोजन के साथ कार्यक्रम थे। सभी स्थानों में कथा भजन और व्याख्यान हुए।

आर्यसमाज लखनऊ सिटी
ऋषि-बोधोत्सव

आर्यसमाज सिटी लखनऊ मे ऋषि बोधोत्सव २ मार्च से ८ मार्च तक समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात प्रभात फेरी निकलती रहीं और शाम को नित्य श्री प० श्यामसुन्दर जी की कथा होती रही। ८ तारीख को हवन भजन के पश्चात् श्री प० प्रेम चन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० उप मन्त्री सभा, श्री प० श्यामसुन्दर जी श्री डा० प्रकाशवती जी, श्री अशोक कुमार निगम, श्री प० पूर्णचन्द्र जी विद्यालंकार आदि के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

आर्यसमाज, चन्द्रनगर

आर्यसमाज चन्द्रनगर मे ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। अनेक विद्वानों के व्याख्यान हुए। ८ तारीख को ऋषि लगर खोला गया। इसमें सैकड़ो मनुष्यो को भोजन कराया गया।

आर्यसमाज ऐशबाग, लखनऊ में
दयानन्द-सप्ताह

बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन साय काल ७ बजे से ८ ३० बजे तक के कार्यक्रम मे महर्षि दयानन्द के जीवन के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की मुख्य विशेषता यह थी कि प्रति दिन एक नये उपदेशक द्वारा महर्षि द्वारा किये गये सामाजिक सुधारों के एक भिन्न स्वरूप की अभिव्यक्ति, जनता के सम्मुख रखा गया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन श्री [illegible] मन्त्री उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ जिला के स्थान पर किया गया था। इसके पूर्व बसन्त पचमी पर भी वैदिक रीति से बसन्त पर्व सार्वजनिक रूप से मनाया गया था जिसमे लाला मनोहरलाल जी ने पर्व का ऐतिहासिक व धार्मिक महत्त्व बताते हुए आर्यसमाज मे अब तक शहीद होने वाले आर्य बन्धुओ के नाम बताते हुए, उन्हे अपनी श्रद्धाजलि भेट की थी। बसन्त पचमी से ऋषि-बोध उत्सव तक आर्यसमाज ऐशबाग ने अपने क्षेत्र में अनेक नामकरण संस्कार कराए व अनेक बालकों के जन्मदिन पर पारिवारिक यज्ञ कराते हुए उन्हें वैदिक रीति से आशीर्वाद दिलाया।

शुद्धि-समाचार—

शास्त्रीनगर कानपुर आर्यसमाज के तत्त्वावधान में १६।२।५९ को फामिला बेगम की शुद्धि हुई। तत्पश्चात् ही उनका पाणिग्रहण संस्कार श्री नारायणदास जी के साथ सम्पन्न हुआ।

—नवनिर्मित रीवा आर्यसमाज की व्यवस्था से २२।२।५९ को एक मुसलमान परिवार का शुद्धि कार्य सम्पन्न हुआ।

—भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने १५।२ को २३० हरिजन ईसाइयो की पाचली में, दि० २२।२।५९ को ग्राम मुल्हेडा मेरठ में २४९ ईसाइयो की दि० २५।२।५९ को ग्राम गट ना मेरठ मे ९४ ईसाइयो की तथा २६।२।५९ को ग्राम औसेका मेरठ में १०६ ईसाइयो की शुद्धि कर हिन्दू समाज का बड़ा उपकार किया।

चयनिका

खादी सरकारी सहयोग से जीवित न रह सकेगी

मनुष्य की पूर्व और उत्तर क्रिया होती है। मरते हुए मनुष्य को भी बार बार आक्सीजन देकर कुछ घण्टों के लिए उसे जिलाने का प्रयत्न किया जाता है। खादी को दी जाने वाली सरकारी सहायता वास्तविक संरक्षण नहीं, वैसा ही राहत का कार्य है इसलिए खादी को संरक्षण देने के लिए जन शक्ति को जागृत करना चाहिए। इसके लिए कार्यकर्त्ताओं को स्वयं अध्ययन और विचार निष्ठा के साथ व्रत संकल्प के साथ आगे बढ़ना चाहिये, तभी वह लोक शक्ति को जगा सकेंगे और इस जागृत लोक शक्ति के आधार पर ही खादी टिक सकेगी अन्यथा केवल सरकारी राहत तो खादी की अन्त्येष्टि कर देगी।

फतह नगर (मेवाड़) —सन्त विनोबा भावे

वज्ञान और वैज्ञानिकों कर्त्तव्य

मानव के हाथ में विज्ञान का जो विशाल काम शास्त्र है उसे विश्व में एकता स्थापित करने का कार्य करना चाहिए। विज्ञान जिस दिशा में बढ़ रहा है, यदि उसका निरीक्षण सावधानी से नहीं किया गया तो वह बड़ा खतरनाक हो सकता है। विज्ञान को समुचित आकार देने का अभिप्राय यह भी है कि वैज्ञानिक यह देखें कि उनके प्रयत्न और साधन व्यर्थ न जाए। वैज्ञानिकों का यह कर्त्तव्य है कि वे विज्ञान का उचित दिशा और स्वरूप प्रदान करें। क्योंकि अन्ततः वैज्ञानिक ही विज्ञान को बतायेंगे, सरकारें नहीं।

भा०विज्ञान संस्थान बंगलोर, प्रधान मन्त्री पं० नेहरू

भारत में कानून एवं प्रजातन्त्र

कानून का आदर किया जाय, इस दृष्टि से वह न्याय संगत तथा प्रगति शील होना चाहिये तथा देश की आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला हो। यदि कानून न्याय संगत नहीं है तो नागरिकों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे उसे तोड़ दें। इसका यह अर्थ नहीं कि मैं कानूनोल्लंघन के पक्ष में दलील पेश कर रहा हूं। दरअसल यह धारणा का मामला अधिक है। तथा इस रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति को अपने कार्यों के कुपरिणामों का सामना करने को तैयार रहना चाहिये। जो दल शासन आरूढ़ हों वह विरोधी पक्षों के सदस्यों को भी अपने ही समान जनता का प्रतिनिधि माने। विरोधी पक्ष के विचारों पर भी विचार किया जाना चाहिए। तथा यदि विचारों का मतैक्य सम्भव नहीं तो कम से कम यह अवश्य हो अधिकाधिक मात्रा में उन्हें स्वीकार्य बनाने का प्रयास किया जाय।

दिल्ली श्री अनन्तशयनम् आयंगर
अध्यक्ष लोक सभा

महिलाओं का सम्मान और स्वाधीनता

वे युवक पथभ्रष्ट और प्रतिक्रिया वादी हैं जो महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार कर उन्हें पर्दा करने के लिये विवश कर रहे हैं, जिसे गांधी जी आदि महान् क्रान्तिकारियों ने अपनी क्रान्तियों द्वारा उतार कर फिकवा दिया है, और वर्षों से बन्दिनी ललनाओं को स्वतन्त्रता के सूर्य के प्रकाश के बीच खड़ा कर दिया है। यदि महिलाओं के साथ आज जैसा बेहूदगियां होता रहीं तो हमारी स्वाधीनता भी समाप्त हो जायगी। स्वाधीनता और संयम अविभाज्य अंग हैं। भारत वह देश है जहां एक महिला को नग्न करने पर महाभारत हो गया था। स्मरण रखिये कि यदि आज भी महिलाओं का अनादर हुआ तो देश की आजादी को हम रोक नहीं सकते। वह हमसे छिन जायगी।

छात्र संघ, विश्वविद्यालय, लखनऊ आचार्य कृपालानी

नैतिकता का अकाल

भारत में अनेक दुष्काल पड़े, किन्तु वे सब इतने दुःखद नहीं थे, जितना कि आज का नैतिक दुर्भिक्ष है। किन्तु भारत की भूमि में नैतिकता अभी मरी नहीं है वह मूर्छित है। यदि उसे चेतना की संजीवनी बूटी मिले तो उसका उज्ज्वल अतीत वर्त्तमान में झलक सकता है।

वैद्यनाथ धाम (देवघर) आचार्य तुलसी

कानून का आधार

कानून के शासन में बुनियादी बात यह होनी चाहिये कि एक व्यक्ति की आवश्यकताओं तथा समाज के व्यापक हितों के मध्य ताल-मेल हो।

दिल्ली श्री एस० के० दास
न्यायाधीश सर्वोच्च न्यायालय

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

४ फाल्गुन शक १८८०
(१५ मार्च १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पृष्ठ २ का शेष)

३—तोप के मुंह पर रखना है, तो रख दो।

४—किसी भी अवस्था में माफी नहीं मागूंगा।

बड़े हाकिम के इशारा पर शास्त्री जी को सेन्टर जेल में भेज दिया गया और हाकिम साहिब दरबार से अपनी कोठी में चले गये।

जनता शास्त्री जी के इस साहस को देखकर अश-अश कर उठी। और मुंह में उंगलियां डालकर शास्त्री जी के आत्मबल पर वाह वाह कर उठी।

अन्तिम भेंट

९ माघ संवत् १९९७ वि० को श्री शास्त्री जी के संबधियों को अन्तिम भेंट के लिए जेल में बुलाया गया। आपके पूज्य पिता श्री माधवराव जी जोशी आपकी माता रत्नाकुमारी जी, आपकी बहिन चन्द्रकान्ता और दो भाई मुलाकात के लिए आये। हुक्म था कि यह अन्तिम मुलाकात है। लेनदेन और घर बार की सब बात-चीत कर ली जाए। शास्त्री जी ने मुस्कराते हुए अपने सम्बन्धियों को उत्तर दिया कि मैंने कोई ऐसा अप-राध नहीं किया, जिसके कारण मुझे फांसी दी जा रही है। यह केवल मुझे डराने के लिए ही किया जा रहा है। आप चिन्ता न करें।

अन्तिम फांसी का दिन

शाम के चार बजे जब शास्त्री जी जेल मे अपना खाना तैयार कर चुकने के पश्चात् हाथ धोकर खाने के लिये आसन पर बैठे ही थे, कि कप्तान साहिब ने आकर कहा कि आपको जेल के बड़ फाटक पर बुलाया जारहा है। श्री शास्त्री जी ने कहा कि ५ मिनट की खाने की आज्ञा दी जाय। कप्तान साहब बोले कि ५ मिनट तो क्या ५ सेकण्ड की भी आज्ञा नहीं दी जा सकती। शास्त्री जी ने खाने पर जल डाला और कप्तान साहब के साथ बड़े फाटक पर आ गये (पानी पीना न मिले मुंह में रहे ग्रास) आते ही शास्त्री जी के पाओं की बेड़ियां काट दी गई और बाजार से एक रुपया की मिठाई खाने के लिए मंगा दी गई। शास्त्री जी समझ गये कि जीवन यात्रा समाप्त हो चुकी है।

रात के बारह बजे एकदम पुलिस कर्मचारियों का ट्रक भरा जेल में आ गया। दूसरी कार पर राणा शमशेर सिंह और दूसरे बड़े कर्मचारी बैठे थे। शास्त्री जी को रस्सी से जकड़ कर ट्रक में रख दिया गया। पीछे पुलिस के बड़े और मिलिटरी के कर्मचारियों की कारें थीं। सिपाहियों का कहना है कि ट्रक में बैठने से लेकर अन्तिम श्वास तक शास्त्री जी मधुर गले से वेदमन्त्रों का स्वस्तिवाचन और शांति प्रकरण के मन्त्रों का तथा गीता के श्लोकों का पाठ करते रहे। अन्त में पेड़ की एक बड़ी डाली के साथ पहले से ही रस्सा लटका रखा था। और उसके नीचे १०-१२ पक्की ईंटों का अड्डा बना रखा था। जिस पर शास्त्री जी को खड़ा करके गले में फन्दा डाल दिया जाना था (यह सड़क भारत, नेपाल रोड पर है) शास्त्री जी ने पुलिस कर्मचारियों से कहा कि आप पीछे हट जाएं मैं स्वयं अपने गले में फन्दा डालूंगा। ऐसे ही हुआ। अमर शहीद ने हसते हसते अपने हाथों से रस्से को गले में डाला और नीचे पड़ी ईंटों को अपने पाओं की ठोकरों से इधर उधर बखेर दिया और पेड़ के साथ लटक गये। ओ३म् ओ३म् का उच्चारण करते हुए। अपना बलि-दान देकर नेपाल में क्रान्ति का बीज बो दिया। २४ घण्टे तक शास्त्री जी के शव को पेड़ के साथ लटकाए रखा, एक बड़े कागज पर मोटे अक्षरों से लिखकर शव को छाती पर लटका दिये गये।

सारे देश को भड़काने वाला, क्रान्तिकारियों का गुरु आर्य समाजी होने पर ऐसा ही दण्ड मिलना था।

यह पेड़ आज भी नेपाल में भारत से आने वाली सड़क पर खड़ा अमर शहीद की याद दिला रहा है।

जनता की ओर से इस पेड़ पर सेंदूर का तिलक लगया जाता है। हर यात्री श्रद्धा से सिर झुकाता है।

इसके बाद प्रसिद्ध आर्यसमाजी गङ्गालाल जी को एक बांस से बांध कर गोली से उड़ाया गया। और धर्मभक्त जी को भी पेड़ से फांसी दी गई। कईयों को देश निकाला और कईयों को जेल में डाला गया। पञ्जाब के मास्टर गुरुदयालसिंह वहां के ट्यूटर थे, उन्होंने पशुपतिनाथ जी की मूर्ति को पत्थर कह दिया। सरकार की ओर से सिपाही पकड़ कर उनको देश की हद से बाहर करने गए उनका अभी तक कोई पता नहीं चल रहा। विचार है कि उनको भी रास्ता में समाप्त कर दिया गया है।

आज नेपाल में जितना भी परि-वर्तन उत्थान या क्रान्ति दिखाई दे रही है, वह सब इन आर्य वीरों की कुरबानी का परिणाम है।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



वार्षिक मूल्य ८)
एक प्रति का १० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र

लखनऊ रविवार चैत्र १ शक १८८० फाल्गुन शुक्ल २ वि० २०१५ मार्च १९५९ ई०

विदेश में
१२शिलिंग

होली हास्याङ्क—

आज की होली

राष्ट्र का पर्व आ गया किन्तु क्रन्दना की बाली क्या
लगाए मन में होली आज उमंगों की होली कैसी।

एक दिन था जब अपने वृद्ध बुद्धि की आग जगाते थे
विषमता द्वेष कलह प्रतिकार होलिका मध्य जलाते थे

भूल कर अपना पिछला बैर कंठ से कंठ मिलते थे।
भर रंगों की पिचकारियाँ परस्पर फाग खेलते थे।

दमक कर अधरों की मुसकान नवल कलियों में होती थी
रंग में सराबोर हो सूर्य कांति गालियों में होती थी॥

धरा भी हो जाती थी लाल कुसुमों की बौछारों से
गूँजा कर झूम उठता था गगन कबीरों की ललकारों से।

आज पर लगी पर्व के भाल लिपट ले विप्लव नारों का।
धधकते हैं रह रह कर ज्वाल, विषमता के अंगारों का॥

होलिका का घातक उद्देश्य सफल हो आज फला जाता।
हंस रहा हिरण्यकशिपु का बंधु प्यार प्रह्लाद जला जाता।

बरसते हैं आँसू का रंग लोचनों की पिचकारी से
मसलते कंठ हजारों बन्धु विवशता से बेकारी से।

जहाँ गुलशन में थे गुल और वहाँ गुल और खिल रहे हैं।
पेट से पीठ, पीठ से पेट खिसक कर गले मिल रहे हैं॥

करो उस ओर भी तनिक ध्यान कि जिनकी खाली मांग है।
आज घर घर की होली बनी उन्हीं के उर की होली है॥

रो रहा अब बात निरुपाय शत्रु निज झंडा गाड़ रहा।
दुःखी माँ की साड़ी की लाल किनारी कोई फाड़ रहा॥

एक की माँग भाल पर लाल गुलालों की धूली कैसी।
लगाए मन में होली आज उमंगों की होली कैसी॥

राष्ट्र का पर्व आ गया किन्तु क्रन्दना की बाली कैसी
लगाए मन में होली आज उमंगों की होली कैसी॥

आज ब्रज का सूना है फाग नन्द घर एक न गया है
मर्यादाहीन हाथ मल रहा कन्हैया तेरी मैया है।

गोप गोपियाँ निर्गुनी बन तरसते माखन पान को
चंचल पद आकुल आज तुम्हारी ब्रजरानी को।

कर मन पर किसका उपहास रंग वह रंग कहाँ
कहाँ वह सुख समृद्धि के रंग हृदय में पूर्व उमंग कहाँ।

दूसरी ओर कंस का वंश हंस कर अकेला वार रहा
दूर से जरासंध का कटक बेखटक हो ललकार रहा।

अनुभवी हिमालय कह रहा शत्रु समझा हो देर रहा।
सुना सतलज की धारा मचल मचल गंगा का तट रही

महाकवि कालिदास की जन्मभूमि का कंठ पुकार उठा
कहाँ है वह मधु ऋतु सहार आज मधुऋतु सहार उठ।

शान्ति की खोखी खाम ताक क्रान्ति का बिगुल फूकना है।
पिथौरा तेरा खास कमान आज क्या लक्ष्य चूकना है।

रंगों की पिचकारी की जगह कटारी हो युग बाहों में
अबीरों की न झलक हो बल्कि झलकता रक्त निगाहों में।

जग के समय रंग के संग जवानों की टोली कैसी।
लगाये मन में होली आज उमंगों की होली कैसी।

—व्रजेन्द्र अवस्थी एम० ए०—

वर्ष ३१.

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए

अङ्क १२

स्वर्ण जयन्ती का स्वर्ण अवसर

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्य-जगत् के निःशुल्क शिक्षा-केन्द्र गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की स्वर्ण जयन्ती का विशाल आयोजन आगामी ९ अप्रैल सन् १९५९ ई० से १६ अप्रैल सन् १९५९ ई० तक बड़ी धूमधाम के साथ होने जा रहा है।

इस अवसर पर अनेक सम्मेलन होंगे

९ अप्रैल से एक बृहद् यज्ञ प्रारम्भ हो रहा है।

१० अप्रैल को एक विशाल नगर-कीर्त्तन, शोभा-यात्रा ज्वालापुर नगर में निकलेगी।

११ अप्रैल से १५ अप्रैल तक विविध सम्मेलन होंगे

आर्य किशोर सम्मेलन, विद्वत् कला सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, गुरुकुल सम्मेलन, कवि सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, वेद सम्मेलन, कवि सम्मेलन, दयानन्द विश्वविद्यालय सम्मेलन, दीक्षान्त समारोह आदि-आदि।

इन सम्मेलनों के अतिरिक्त १६ अप्रैल को श्री ठाकुर सुल्तानसिंह पहलवान प्रधान आर्यसमाज कौड़ियागंज (अलीगढ़) निवासी की अध्यक्षता में एक महान् दंगल का भी आयोजन हो रहा है।

इस अवसर पर आर्य-जगत् के लब्धप्रतिष्ठ गण्य मान्य नेता, तथा श्री प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू, स्वास्थ्य मन्त्री श्री करमरकर तथा सूचना-मन्त्री श्री केसकर जी आदि राजनैतिक सुविख्यात राजपुरुष भी पधार रहे हैं।

जिनके मधुर सुमनोहर धर्मोपदेश, ओजस्वी भाषण और चित्त को प्रसन्न करने वाले मधुर संगीतों के सुनने का अनायास अवसर मिल सकेगा।

स्वर्ण जयन्ती पर पधारने वाले यात्री पूर्व से ही सूचना देने की कृपा करें कहां से कितने महानुभाव पधार रहे हैं, जिससे उनके निवास की समुचित व्यवस्था की जा सके, क्योंकि इस वर्ष आशातीत जनता आने की उत्सुकता में है।

उतरने के स्टेशन—ज्वालापुर, हरिद्वार

इन दोनों स्टेशनों पर महाविद्यालय ज्वालापुर की तरफ से यात्रियों की सुविधा के लिये स्वयंसेवक तथा सामान के लिए गाड़ियां मिलेंगी।

आपका दर्शनाभिलाषी—
नन्दकिशोर
मुख्याधिष्ठाता

वेदोपदेश

ओं सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः । सुमृडीको न आ विश ।

ऋ० १ । ६ । २१ । ११

हे "सोम" सर्वजगदुत्पादकेश्वर ! आपको "वचोविद." शास्त्रवित् हम लोग स्तुति समूह से वर्द्धयाम." सर्वोपरि विराजमान मानते हैं । 'सुमृडीकः, नः, आविश" क्योंकि हम को सुन्दर सुख देने वाले आप ही हो, सो कृपा करके हमको आप आवेश करो, जिससे हम लोग अविद्यान्धकार से छूट और विद्या सूर्य को प्राप्त होके आनन्दित हों ।

जयन्ती-समारोह दीपावली के सुअवसर पर करने का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा दि० १५ मार्च सन् १९५९ के निश्चय स० २२ की लिपि ।

२२ विषय स० २१ आर्यमित्र हीरक जयन्ती, गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास तथा अन्य समारोहो के सम्बन्ध में मथुरा स्वागत समिति की प्रार्थना कि उक्त समारोह शिवरात्रि पर न होकर ७, ८, ९ तथा १० मई १९५९ को हो, विचारार्थ ।

श्री उमेशचन्द्र जी ने जयन्ती समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत की । समिति की रिपोर्ट स्वीकार है ।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति की रिपोर्ट के अनुसार निश्चय हुआ कि आर्यजगत की भावनाओ को ध्यान मे रखते हुए जयन्ती, स्मारक अभिनन्दन, आदि समारोह आगामी दीपावली सम्वत् २०१६ तदनुसार अक्टूबर, १९५९ मे मथुरा में मनाए जायें । यह भी निश्चय हुआ कि समारोह सार्वदेशिक स्तर पर मनाने का पूर्ण प्रयत्न किया जाये । इसके लिए सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना की जाय । क्योंकि विरजानन्द स्मारक का विषय समस्त आर्यजगत से सम्बन्धित है अतः वह अपना पूर्ण सहयोग व पथ-प्रदर्शन प्रदान करे तथा आर्यजगत की समस्त प्रान्तीय व प्रतिनिधि सभाओं व समाजों से भी विरजानन्द स्मारक निर्माण आदि में पूर्ण सहयोग देने की प्रार्थना की जावे ।

जयन्ती का कार्यालय मथुरा में शीघ्र खोला जाये ।

—फूलनसिंह सभा-मन्त्री



लखनऊ—२२ मार्च १९५९ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५८

टंकारा में महर्षि-स्मारक समारोह

भारत के इतिहास मे ऋषि दयानन्द ने जो क्रान्तिकारी कार्य किया उसका आरम्भ जिस स्थान पर एक छोटी सी घटना से हुआ था अभी तक वह स्थान ऋषि के क्रान्ति प्रकाश से बहुत कुछ दूर रहा परन्तु आज हम उस भूल पर विजय प्राप्त कर चुके हैं और ऋषि की जन्म भूमि और बोधस्थली टंकारा में महर्षि दयानन्द स्मारक की स्थापना हो गयी है। गुजरात के ऋषि-भक्त श्री सेठ नानजी भाई कालीदास ने अपने सात्त्विक दान से १॥ लाख रुपये में मोरवी नरेश का महल स्मारक के लिये खरीद कर आर्यजगत् को भेंट किया है । इस सात्त्विक दान और ऋषि भक्ति की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी होगी ।

इस स्मारक की प्राप्ति के उपलक्ष्य मे इस वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर वहां (टंकारा मे) ऋषि-मेला लगा कर स्मारक के संरक्षको ने सम्पूर्ण आर्य जगत् का ध्यान टंकारा की ओर आकृष्ट कर लिया । लोक सभाध्यक्ष श्री अनन्त शयनम आयंगर ने इस अवसर पर स्मारक का उद्घाटन कर ऋषि के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की ।

इस प्रकार इस उद्घाटन समारोह के साथ आज सम्पूर्ण आर्यजगत पर एक दायित्व आ जाता है कि अब इस स्मारक द्वारा महर्षि की क्रान्ति-चिन्गारियाँ दूर दूर तक पहुँचायी जायें और इस भूमि को भी विश्वख्याति की आभा से युक्त किया जाय । क्योंकि यद्यपि गुजरात को दयानन्द और गांधी को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त है तथापि यह बात एक वास्तविक तथ्य है कि दोनों महापुरुषों के प्रचार और सन्देश ने गुजरात से बाहर अधिक जागृति उत्पन्न की है, इसलिये आज इस स्मारक का कार्य निर्धारित करते समय गुजरात के सामाजिक जागरण तथा महर्षि के विश्वव्यापी सन्देश इन दोनों महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को दृष्टि में रक्खा जाना चाहिये । महर्षि ने अपना उत्तराधिकारी आर्यसमाज को बनाया था और संघटित आर्यसमाज ही महर्षि का वास्तविक प्रतिनिधित्व करने का अधिकारी हो सकता है इस दृष्टि से स्मारक का संचालन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पथ प्रदर्शन और अनुशासन मे हो तभी एकता की भावना के साथ कार्य आगे बढ़ सकेगा । हम बड़ी गम्भीरतापूर्वक स्थिति का अध्ययन करते रहे हैं और स्मारक के संस्थापकों की सदाशयता और शुभ भावनाओं का आदर करते हुए हम कहना चाहते हैं कि महर्षि को व्यक्तियो के अधिकार तक सीमित न रख कर सम्पूर्ण आर्य जगत् के प्रतिनिधित्व मे सौंप दीजिये । व्यक्ति और समाज का अपना पृथक् अस्तित्व और महत्त्व होता है । महर्षि के व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व आर्यसमाज का वैधानिक संघटन ही करे इसीमें स्मारक निर्माताओं की शोभा और गौरव है तथा इसीमे महर्षि के यश की अभिवृद्धि और सम्पूर्ण आर्यजगत् का सम्मान है ।

आर्यसमाज के पौन शताब्दी के इतिहास में अनेकों योजनाओं का सूत्रपात हुआ परन्तु व्यक्तिवाद की भावना प्रायः प्रमुख रहो इसी कारण योजनानुसार प्रगति नहीं हो सकी । अतः स्मारक के कार्य का भावी स्वरूप क्या हो, स्मारक मे अनुसन्धान का कार्य किस प्रकार हो, वहां रेजीडेन्शल विश्वविद्यालय बनाया जाय तो उसका आधार क्या हो, कौन सी और कैसी शिक्षा प्रणाली हो इत्यादि प्रश्नों का उत्तर व नीति निर्धारण व्यक्तियों तक सीमित न रहकर समाज के संघटन द्वारा किया जाना युक्तिसंगत, बुद्धिसंगत, दूरदर्शितापूर्ण और व्यावहारिक कदम होगा ।

हम आशा करते हैं कि अब जब कि स्मारक का उद्घाटन समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया है इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायगा ।

इस प्रश्न के उचित और महर्षि के गौरवानुरूप समाधान मे ही स्मारक का स्थायित्व एवं यश निहित है । हम स्मारक की सफलता के लिये उपर्युक्त भावनाओं के साथ शुभ कामना करते हैं ।

जयन्ती-सम्बन्धी निश्चय और समय का सदुपयोग

प्रस्तुत अङ्क में जयन्ती सम्बन्धी निश्चय प्रकाशित किया जा रहा है ; जयन्ती की तिथियों के सम्बन्ध में परिवर्तन सम्बन्धी जिस निर्णय की समस्त आर्य जगत में उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी उसका निर्णय आ० प्र० नि० स० की अन्तरग सभा ने अपनी १५ मार्च की बैठक मे सर्वसम्मति से कर दिया है । अन्तरग सभा के सम्मुख जयन्ती-सम्बन्धी सम्पूर्ण परिस्थिति जयन्ती समिति की रिपोर्ट मे प्रस्तुत की गयी जिसमे आर्य जनता के इस विचार का स्वागत किया गया था कि विरजानन्द स्मारक को अखिल भारतीय ही नहीं, सार्वदेशिक स्वरूप प्रदान करने का विशेष प्रयत्न किया जाय । उपयुक्त समय और तयारी के लिये अधिक अवसर तथा महर्षि दयानन्द शिक्षा शताब्दी को दृष्टि में रखते आगामी दीपावली का समय निश्चित किया गया है । हम आशा करते हैं कि आर्य जगत् मे समय की सुविधा का लाभ उठाया जायगा और जयन्ती और गुरुधाम योजना की पूर्ति में यथा शक्ति सहयोग प्रदान कर जयन्ती को एक आदर्श, भव्य एवं स्मरणीय समारोह बनाया जायगा । समय का सदुपयोग करते हुए आर्य जगत् के इस समारोह को सफल बनाना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य होना चाहिये ।

[शेष अगले पृष्ठ पर]

होली की छुट्टी

सदा की भाँति इस वर्ष भी होली के उपलक्ष्य मे 'आर्यमित्र' कार्यालय ४ दिन बन्द रहेगा । अतः आर्य मित्र' का अगला अङ्क ता० २९ मार्च को न निकल कर ता० ५ अप्रैल, १९५९ ई० को प्रकाशित होगा ।

—अनन्तबिहारी निगम
एडवोकेट
अधिष्ठाता

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव ६ से १५ अप्रैल १९५९ तक

आर्य जनता से सहयोग की अपील



प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू १३ अप्रैल को दीक्षान्त भाषण देंगे



डा० बी० वी० केसकर केन्द्रीय प्रचार मन्त्री राष्ट्रभाषा सम्मेलन का सभापतित्व करेंगे

आज से ५१ वर्ष पूर्व गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) की स्थापना आर्य जगत् के स्वनामधन्य सन्यासी स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने की थी। बिना किसी भेद भाव के इस संस्था ने संस्कृत शिक्षा का द्वार मनुष्यमात्र के लिए उस समय खोला था जब रूढ़िवादियों ने संस्कृत का अध्ययन वर्ग विशेष के लिए ही सुरक्षित छोड़ा था। दूसरी विशेषता इस संस्था की अब तक यह रही कि बिना किसी भी प्रकार का शुल्क (फीस) लिए इस संस्था में पढ़ने वाले छात्रों का भोजन, वस्त्र निवास एवं शिक्षा भी मुफ्त दी गई। धनी निर्धन सब ही के लिये कृष्ण सुदामा की तरह सदा इस संस्था के द्वार खुले रहे हैं। अब जबकि देश विभाजन ने परिस्थितियाँ बदल दीं और महगाई बढ़ती चली गई तब नाम मात्र को छात्रों पर सब मिलाकर पन्द्रह रुपये मासिक अर्थात् आठ आने प्रतिदिन का व्यय लगाया है और वह भी भव पर नहीं जो सुगमता से दे सकें उन पर ही रखा है।

अब तक इस आदर्श शिक्षण संस्था से सहस्रों ही स्नातक निकल कर देश जाति की सेवा में संलग्न हैं। आर्यसमाज के आरम्भिक वर्षों में स्व० इस संस्था के संस्थापक वीतराग स्व० दर्शनानन्द जी महाराज, पं० गणपति शर्मा साहित्याचार्य, पं० पद्मसिंह जी, सत्कार चन्द्रिका के रचयिता, पं० भीमसेन जी आदि विद्वानों ने जो सेवायें की हैं उनसे आर्यसमाज भली भांति परिचित है। आज कल भी यहां के बहुत से स्नातक आर्यसमाज के मंच पर अथक काम कर रहे हैं। आर्यसमाज के इतिहास में इस संस्था की सेवायें सदैव स्तुत्य मानी जायगी।

इस वर्ष इस गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती ६ से १५ अप्रैल तक बड़ी तैयारियों से मनाई जा रही है। आर्यजगत् के चोटी के विद्वान् साधु महात्मा एवं अन्य क्षेत्रों के भी सांस्कृतिक नेता उसमें भाग लेंगे। इस समय गुरुकुल में तीन सौ के लगभग छात्र वेद, दर्शन, साहित्य, व्याकरण और आयुर्वेद आदि विषयों की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। गुरुकुल के अधिकारियों ने इस महायज्ञ को सफल बनाने एवं भावी उन्नति को ध्यान में रखते हुए ढ़ाई लाख रुपये की एक योजना बनाई है। हमारा अनुरोध है कि आर्यजनता मुक्तहस्त होकर इसमें दान दे और स्वर्ण जयन्ती में सम्मिलित होकर अपने इस गुरुकुल की प्रगतियों का परिचय भी प्राप्त करे। जो धन भेजा जाय वह मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जिला सहारनपुर के पते पर भेजने की कृपा करें।

१—स्वा० अभेदानन्द सरस्वती, प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, २—स्वा० आत्मानन्द सरस्वती, ३—स्वा० आनन्द स्वामी सरस्वती, प्रधान—आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब, ४—घनश्याम सिंह गुप्त, प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश, ५—महाशय कृष्ण, मालिक—प्रताप, देहली ६—नरेन्द्र प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद, ७—(डाक्टर) महावीर सिंह, प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, ८—हरिशंकर शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ९—मलूराय शास्त्री, उपप्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, १०—रामगोपाल, प्रधान मन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ११—जगदेव सिंह शास्त्री सिद्धान्ती, महामन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, १२—बेणी भाई आर्य—प्रधान मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, १३—राम नारायण शास्त्री—प्रधान मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, १४—रामचन्द्र देहलवी, आर्य महोपदेशक, हापुड़, १५—डाक्टर मथुरा-लाल शर्मा, भू० पू० डायरेक्टर शिक्षा विभाग राजस्थान।

[पिछले पृष्ठ का शेष]

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का स्वर्णजयन्ती समारोह

आर्यसमाज के शिक्षा आन्दोलन को जिन संस्थाओं ने प्रभावशाली और व्यापक बनाया, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर उनमें से प्रमुख संस्था है। गत ५१ वर्षों से यह शिक्षण संस्था शिक्षा क्षेत्र में जो सराहनीय कार्य करती है उसकी समस्त आर्य जगत् में प्रशंसा है। स्वामी दर्शनानन्द जी ने जिस पौधे को रोपा था। स्वामी शुद्धबोधतीर्थ जी, साहित्याचार्य पं० पद्मसिंह, आचार्य नरदेव जी शास्त्री, आचार्य पं० भीमसेन जी आदि अनेकों उच्चकोटि के आर्य विद्वानों ने उसे सींचा और बड़ा किया, आज वह पौधा फल और छाया प्रदान करता हुआ ज्ञान की उपासना में रत है। संस्था ने निःशुल्क शिक्षा की महत्ता के भारतीय आदर्श के लिए विशेष प्रयत्न किया और उसे आर्य जनता व देश के सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त हुआ। आर्य नेताओं ने महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती की सफलता के लिए आप सब द्वारा सहयोग की प्रार्थना की है। हम स्वर्ण जयन्ती की सफलता की मंगल कामना करते हुए जनता से आर्थिक सहयोग प्रदान कर संस्था को बलशाली बनाने की प्रार्थना करते हैं साथ ही आशा करते हैं कि ६ से १५ अप्रैल तक जयन्ती में सम्मिलित होकर जनता संस्था के कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढ़ायेगी।

मित्र परिवार की ओर से हम स्वर्ण जयन्ती की सफलता के लिए हार्दिक मंगल कामना करते हैं।

★

'आर्यमित्र' के स्वामित्व का विवरण

फार्म ४

(नियम सं० ८)

१—प्रकाशन स्थान—५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
२—प्रकाशन का प्रकार—साप्ताहिक
३—मुद्रक का नाम—श्री बाबूराम भारती
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ,
४—प्रकाशक का नाम—श्री बाबूराम भारती
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—नारायणस्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ
५—सम्पादक-श्री उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम०ए०
राष्ट्रीयता—भारतीय
पता—पन्त भवन, पो० हल्द्वानी (नैनीताल)
६—पत्र के स्वामी तथा उनके पते आदि—श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

मैं बाबूराम भारती घोषित करता हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार ठीक है।

बाबूराम भारती
प्रकाशक

तिथि १६—३—५९

काव्य-कानन

❀ होली ❀

तुम कहते जल रही होलिका,
मैं कहता प्रहलाद जल रहा।
यदि होता प्रहलाद विश्व में,
आज असत्य साम्राज्य न होता,
प्रतिपल धरती के आंगन मे
बर्बर अत्याचार न होता।
बर्बरता की विष-ज्वाला में,
स्वच्छ संस्कृति का इतिहास जल रहा।
रंग जिसे समझे हो पागल,
दलितों के लोहू की धारा,
ये सिन्दूरी शाम नहीं मैं,
रंगी, रंगा है यह जग सारा।
मुस्काने मुखड़े, पर केवल,
उर में विकट विषाद पल रहा।
ये भूखी आँखें हँसती हैं,
जब पर जिसे होली कहते हो,
शेष चिता की राख बच रही
जिसको तुम होली कहते हो।
होली नहीं चिता जलती है
जग भर का आह्लाद जल रहा।
तुम्हीं बताओ ऐसे हँसकर,
कितने दिन होली खेलोगे,
भूखी मानवता है इसकी,
कितने दिन चोली खोलोगे।
तुम कैसे समझोगे बोलो,
तुममें तो उन्माद पल रहा।

—रन्जीतसिंह आकुल, रिसिया बाजार बहराइच

मानवता

मानव की पूजा कभी नहीं होती जग मे,
केवल जग में मानवता पूजी जाती है।
जब अन्तःपतन के अम्बर पर घिरते बादल
काले भुजग सा फैलाता तम अपार,
बिजली के तेवर बदल गरजता आसमान,
क्रान्ति अम्बर का अवनि पर होता उतार,
थर्रा जाते हैं दशों दिशाओं के दिग्गज,
जब महाप्रलय देखता नयन में भर खुमार।
थरराते सागर ढहते हैं भूधर विशाल,
जब त्राहि त्राहि की आती चहुँदिशि से पुकार,
तब कोई मुरली वाला अपनी उंगली पर
रखने का उद्यत होता विघ्नों का पहाड़,
मुरलीवाले की जय जयकार नहीं होती,
उसकी उपकारी वृत्ति विजय यश पाती है।
जब अकर्मण्यता से होता परतन्त्र कर्म,
जब कमर आत्म बल का अपने झुक जाती है।
कुंठित हो जाती शक्ति बिना उपयोगों के,
मानव की सब उत्थान प्रगति रुक जाती है।
जब धर्म उसासें भरता बन्द कितेबों में,
जब पग पग पर वैषम्य लगाता है ठोकर,
पड़ जाता है अपना संस्कृति का मन्द चलन।
तब कोई अपने गुर मे लेकर अमर ज्योति,
अन्धी संसृति के आँख चार लगाता है।
उस दयानन्द का कब होता अर्चन लेकिन,
उसकी प्रतिभा पर भक्ति स्वयं बलि जाती है।

—बद्रीप्रसाद आर्य

स्वर्ग, पाताल और धरती

सुनते हैं स्वर्ग हमेशा रहता है ऊपर,
पाताल हमेशा नीचे कहते आये हैं,
अभिमान मनुज का किन्तु स्वर्गों से भी ऊँचा,
पाताल नहीं नीचा दिल की गहराई से।
धरती समान हर हालत में रहती आर्य,
उसको मानवता समतल सदैव बनाती है
है स्वर्ग और पाताल बहुत नीचे ऊँचे,
स्वर्गों से गिर हड्डियाँ टूट जाने का भय।
पाताल पहुँच कर पाव फिसल जाने का डर
पर धरती पर निश्चिन्त मनुज चल सकता है,
स्वर्ग धरा पाताल न समतल हो सकते हैं,
कुछ इसके लिए चाहिए इन्जीनियर बड़े।
सड़कों के इन्जन फर्गूसन हडसन, ट्रेक्टर,
आ ऊँच नीच को ठोक पीट कर करें ठीक?

—निरकारदेव सेवक

होली-समीक्षा

मिट गयी आर्य वैदिक प्रथा पर्व की,
शास्त्र का ध्यान कुछ तो रहा ही नहीं।
छूट चलती रहीं तीव्र पिचकारियां,
रंग फिर भी हृदय पर चढ़ा ही नहीं॥
आप जलती जला काठ प्रह्लाद को,
मन प्रह्लाद तो था जला ही नहीं।
यह होली नहीं किन्तु उपहास है,
भेद का भूत इससे भगा ही नहीं॥

—धर्मचन्द्र वर्मा 'धर्म' जसतक

अग्नि मीले पुरोहितम्

अंगारों पर राख पड़ी है, नहीं जिन्दगी पर कफन,
ऊपर ऊपर ही ठण्डक है, अन्दर अन्दर है जलन।

ज्वालामुख की रूप शिखा ने हिम का घूंघट ओढ़कर
नहीं किया परदा जीवन से अपना जलना छोड़कर।
घन भूत हिम पिघल जायगा आदन से मजबूर हो,
जिस दिन विचलित हो जायेगा अन्दर का प्राइ तपन!

तब तक राख जमाए बैठा आसन है अंगार पर
जब तक उसे उड़ा ना देता आंधी तेज प्रहार कर
मजबूरी का कफन ओढ़कर जीवन मुर्दा सा बना,
लाशें जिन्दा हो जायेंगी जिस दिन उतरेगा कफन!

तन में क्षुधा, हृदय में नफरत घन में विद्युत के समान
जो उजियाली भी करती है और जलाती भी जहान!
एक आरती की बाती में पूजा की लौ बन जाती,
एक आग करती सोने की लंका का वैभव दहन?

आहुति तन, यज्ञ जीवन है स्वाहा मन्त्राचार है।
आग प्रीति की जलने वाले की बस जय जयकार है।
जो जलता है नहीं राख होता इस आग में,
इसमें सदा पुरातन जलकर करता नूतन का सृजन।

अंगारों पर राख पड़ी है नहीं जिन्दगी पर कफन
ऊपर ऊपर ही ठण्डक है अन्दर अन्दर जलन।

—गोपालकृष्ण कौल

हास्य का आनन्द लीजिये

-विनोदानन्द-

एक व्यक्ति ने समाचार पत्रों में यह विज्ञापन प्रकाशित कराया कि जो हमारे कार्यालय मे दो रुपये जमा करेगा, दो दिन बाद उसे पत्र द्वारा रुपये कमाने की एक बहुत अच्छी विधि बतलायी जायगी।

कई लोगों ने रुपये जमा किए।

दो दिन बाद उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—

"कमाने की यही सबसे अच्छी विधि है जिसे मैंने अपनाया है।"

× × ×

अमेरिका के एक भूतपूर्व उप राष्ट्रपति गार्नर 'पोलबाल' के खेल म एक बार दस डालर की बाजी हार गये। विजेता ने विनम्र भाव से कहा—आप इस नोट पर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं इसे अपने पोते को दूँगा। वह इसे काँच में मढ़ाकर रखेगा।'

"तो आप इसे खर्च नहीं करेंगे? फिर लाइये मैं एक चैक लिखे देता हूँ, उसमें हस्ताक्षर करने की काफी जगह भी है" गार्नर ने सहज स्वाभाविक मुस्कान के साथ कहा।

× × ×

एक व्यक्ति ने एंड्रू कारनेगी से पूछा—"किसी उद्योग को सफल बनाने में आप श्रम, पूँजी तथा बुद्धि में से किसे सबसे अधिक महत्त्व देते हैं?"

कारनेगी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"यह प्रश्न तो ऐसा ही है"—जैसे कोई यह पूछे कि, तीनो पैरों की तिपाई का कौन सा पैर सबसे उपयोगी है।

× × ×

घर में केवल एक केला बचा हुआ था। वह भी मधु की निगाह से न बच सका। उसने माँ से वह केला भी मांग लिया। जब माँ ने मधु को केला दे दिया, तो दादी बोली—

"घर मे इतने केले आए, हमे एक सूँघने को भी न मिला।"

यह सुन थोड़ी दर सोचकर मधु बोली—'दादी! लो सूँघकर मुझे लौटा देना।'

× × ×

परीक्षा हो रही थी। अध्यापक ने छात्रों के किसी फुटबाल मैच का वर्णन लिखने को दिया। सभी छात्र तन्मयता से लेख लिखने में जुट गये, किन्तु एक छोटा चुपचाप बैठा रहा। जब परीक्षा समाप्त होने का समय आ पहुँचा, तब उस बालक में एकदम से चेतना आ गई हो जैसे, और उसने कापी पर एक वाक्य लिख दिया—"पानी बरस गया इसलिए खेल नहीं हुआ।"

× × ×

मित्र—"डाक्टर साहब! आपने कभी गलती भी की है?"

डाक्टर—"हाँ जीवन में एक बार।"

मित्र—"कब?"

डाक्टर—"जब मैंने एक अमीर को सिर्फ दो दिन के इलाज से ठीक कर दिया था।"

× × ×

"तुम्हें मिस्त्री ने तुम्हारा काम बता दिया?" ठेकेदार ने नये मजदूर से पूछा।

"जी हाँ बता दिया।"

"ठीक है।"

"जी! मजदूर ने फिर कहा—"उन्होंने कहा है कि जब मैं आपको आते देखूँ तो उनको जगा दूँ—क्या इसी काम की तनख्वाह मुझे मिलेगी।'

× × ×

ट्रेनिङ्ग—सेण्टर से एक मियाँ ने अपनी बीबी को खत लिखा। बीबी उर्दू के सिवाय अंग्रेजी नहीं जानती थी।

मियाँ ने लिखा—

'तुम्हें मालूम हो कि हमारी ट्रेनिंग एक महीने मे खत्म हो जायगी, इसलिए मैं टूर पर जा रहा हूँ।'

बीबी ने जवाब म लिखा—

"हमे मिहरबानी करके यह बताने की तकलीफ कीजिए कि टूरपुर सेण्टर से कितनी दूर है, वहाँ की आब-हवा कैसी है और आप वहाँ कितने दिन रहेंगे?"

ठेठ देहात का एक आदमी पहली बार बम्बई गया, और उसने एक होटल में पहुँच कर दूध की माँग की। बेटर ने बम्बई के होटलों की भाँति, नौटांक (आध पाव) दूध का प्याला उसके सामने रख दिया। उसे देख कर वह आदमी बोला, नमूना क्यों लें। नमूना क्यों लाया है, पूरा ही दूध ले आ।

× × ×

पत्नी—"अच्छा जी यह तो बताइये कि 'उल्टे बाँस बरेली को' के क्या अर्थ हैं?"

पति—"यह एक कहावत है, और इसका अर्थ है, कोई ऐसा कार्य करना जो बिल्कुल अनावश्यक हो।"

पत्नी—"मैं समझी नहीं कोई उदाहरण देकर समझाओ।"

पति—"अब जैसे यदि मैं तुम्हें "बात कैसे करूं?" पुस्तक पढ़ने को लाऊँ तो, यह 'उल्टे बांस बरेली को' हो जायगा।"

× × ×

"अरे, तुमने तो यह साड़ी खरीद ली! उस दिन तो तुम कह रही थीं कि अभी तुम यह साड़ी नहीं खरीद सकोगी।"

'हाँ, था ऐसा ही विचार, पर यकायक हमारी तकदीर चमकी और छप्पर फाड़कर रुपये मिले।'

'कैसे भला?'

'फैक्टरी में काम करते हुए पति देव की टाँग टूट गई, और कम्पनी ने हर्जाने के रूप में उन्हें २५०) दिये। साड़ी के लिए बस २५०) की ही जरूरत थी।"

× × ×

एक महिला अपनी पड़ोसिन से कह रही थीं, 'हमे जल्दी ही अच्छा पड़ोसी मिल जायगा।'

'हमें भी मिल जायगा।'

'क्या तुम यहाँ से जा रही हो।'

'नहीं, हम यहीं रहेंगे।'

× × ×

'हूँ तो तुम्हारा कहना है कि तुमने उस होटल को इसलिए लूटा कि तुम भूखे थे।'

जी हाँ, मैंने चार दिन से खाना नहीं खाया था, सरकार।'

'तो तुम वहाँ से खाने की चीजें ही ले सकते थे वहाँ के रुपये पैसे ही तुमने क्यों लूटे?"

'सरकार मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जो खाना खावे, उसके पैसे अवश्य दिये जायें। इसलिए मैंने उन पैसों से दूसरे होटल में भोजन किया।'

× × ×

टाइपिस्ट—'मैं यहाँ पिछले तीन साल से तीन आदमियो का काम कर रहा हूँ अब तो कृपा करके मेरे वेतन में वृद्धि कर दीजिए।'

मैनेजर—'मुझे दुख है कि वेतन में कोई वृद्धि तो फिलहाल मैं नहीं कर सकता, पर जिन अतिरिक्त दो आदमियों का काम आप पिछले तीन साल से कर रहे हैं, उनके नाम बताइये, मैं आज ही उन्हें निकाल दूँगा।

× × ×

एक बूढ़े व्यक्ति को अन्धेरे रास्ते में रोककर, दो लुटेरों ने कहा, "रुपया दो या जान दो?"

बूढ़ा—'मेरी जान ले लो, रुपये तो मैं बुढ़ापे के लिए बचा रहा हूँ।'

× × ×

क्लर्क ने एक दिन में जब बीसवीं गलती की तब सुपरिंटेण्डेण्ट ने उसे बुला भेजा, और कहा—'तुम्हें क्या कहना है अपनी सफाई में?'

क्लर्क चुप रहा। सुपरिंटेण्डेण्ट ने फिर कहा, 'अगर मैं एक दिन मे इतनी गलतियाँ करूं, तो मैं अब जहाँ हूं वहाँ न रह पाऊँ।'

'जी हाँ, अगर हम सब आपके जैसे हो जाए, तो भी आप वहाँ न रहें जहाँ अभी हैं।'

× × ×

वह कह रही थी, 'मैं उससे विवाह करना चाहती हूं, जो एक अच्छा गायक हो, रोज कोई न कोई नयी बात सुनाता रहे, घर पर ही रहे, धूम्रपान न करता हो, और जब मैं उससे कहूं तब फौरन चुप हो जाया करे।'

उसने कुछ सोचकर कहा—"तुम्हें कोई युवक नहीं, रेडियो चाहिए।"

× × ×

एक सामाजिक मेले मे एक प्रसिद्ध लेखक का परिचय एक महिला से कराया गया। महिला ने परिचय के पश्चात् कहा—हम दोनों में कितनी समानता है आप किताब लिखते हैं और मैं किताब पढ़ती हूं।

× × +

एक बार बर्नार्ड शा ने किसी चित्रकार से अपना रंगीन चित्र बनवाया जिसका मूल्य सौ पौण्ड तय हुआ।

बिल के भुगतान मे शा ने २०-२० पौण्ड के पाँच चेक लिखकर चित्रकार के पास भेज दिये।

कलाकार ने फोन पर शा को धन्यवाद देते हुए एक चेक की जगह पाँच चेक भेजने का कारण पूछा।

शा ने उत्तर दिया—'मेरे हस्ताक्षर की कीमत ३० पौण्ड है, यदि उन चेकों को आप बेच देंगे तो आप को ५० प्रतिशत लाभ होगा।

× × ×

अध्यापक—'हाथी दुनिया का सबसे बड़ा जानवर है।'

एक विद्यार्थी—'जी नहीं।'

अध्यापक—'क्यों?'

विद्यार्थी—'मेरे पिताजी तो हाथियों का इकट्ठा उठा लेते हैं।'

अध्यापक—'वह कैसे?'

विद्यार्थी—'जी जब वे शतरंज खेलते हैं तो।'

जीवन-ज्योति

राष्ट्र के लिए जीवन की होली खेलने वाले जिन्हें भुलाकर हम कृतघ्न बन रहे हैं

अमरशहीद भगतसिंह

(२३ मार्च को स्मृति-दिवस मनायें)

[श्री आचार्य भगवानदेव जी गुरुकुल झज्जर]

ब्रिटिश शासन के भयंकर कुचक्र से मुक्त हुए भारत के विषय में यह प्रसिद्ध है कि ऐसी अहिंसात्मक स्वतन्त्रता अद्यावधि किसी भी देश ने कभी भी प्राप्त नहीं की। परन्तु क्या यह तथ्य पूर्णतः सत्य की कसौटी पर आधारित है? यह तो मानने की बात है कि इस स्वतन्त्रता संग्राम में उभयपक्षों (शासक एवं शासितों) में से किसी की भी सैनिक शक्ति का ह्रास नहीं हुआ। परन्तु जहाँ तक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का प्रश्न है वहाँ अनेक वीरवरों ने अपने अमूल्य प्राणों की बाजी लगा दी, जिसके फल स्वरूप आज हम कथित स्वतन्त्रता के प्रांगण में अवतीर्ण हैं।

भारत की स्वातन्त्र्य बलिवेदी पर जो जान से हंस हंसकर श्रद्धा के सुमन बिखेरने करने वाले वीरों में श्रद्धास्पद भगतसिंह का भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस अमर बलिदानी का जन्म सम्वत् १९६४ में पंजाब, लायलपुर के बंगा नामक ग्राम में हुआ था। आपके भगतसिंह नाम पड़ने के विषय में कहा जाता है कि जिस दिन इन्होंने अपने जन्म से अर्जुनसिंह जी के परिवार को पवित्र किया था उसी दिन आपके पिता तथा चाचा कारावास से मुक्त होकर घर पर आए थे। इसीलिए इन्हें 'भाग्यवाला' कहने लगे और फिर भाग्यवाला ही वीर भगतसिंह के नाम से विख्यात हो गया।

आपके परिवार के सभी सदस्य आर्यसमाज के सिद्धान्तों से प्रभावित थे। इसीलिए पंजाबी होते हुए भी आपको प्रारम्भिक पढ़ाई के पश्चात् डी० ए०वी० (दयानन्द एंग्लो वैदिक) विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट कराया गया। परन्तु इसी समय १९२१ में गांधीजी के असहयोग आन्दोलन के कारण सभी राजकीय सहायता प्राप्त स्कूलों का बहिष्कार प्रारम्भ हो गया और भगतसिंह को भी स्कूल छोड़ना पड़ा। बाद में भाई परमानन्द जी की सहायता से भारतीय विद्यालय में एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण कर सके।

सम्वत् १९८२ में एफ०ए० उत्तीर्ण होने के साथ साथ आपका परिचय सुखदेव आदि अन्यान्य क्रान्तिकारियों से हुआ। आपके परिवार वाले आपको विवाह-बन्धन में संयत करना चाहते थे परन्तु वीर भगतसिंह को यह सब कुछ अच्छा न लगा और इसी कारण से इस बन्धन से बचने के लिए घरवालों से छिप श्री जयचन्द्र विद्यालंकार जी से पत्र लेकर गणेश शंकर विद्यार्थी जी के पास कानपुर में प्रताप प्रेस में कार्य करने पहुंच गये। पंजाबी होते हुए भी आप राष्ट्र भाषा हिन्दी के अनन्योपासकों में से एक थे। आपने अभ्यास द्वारा हिंदी लिखने में भी पूर्ण दक्षता हासिल करली थी। परिणाम स्वरूप हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आप पुरस्कृत भी हुए।

भगतसिंह उदार व्यक्ति थे। गङ्गा, यमुना की भयंकर बाढ़ से क्षतिग्रस्त व्यक्तियों की सहायता के लिये आपने अपनी ओर से कुछ भी बचाव न रखा। परिणामतः आप जनता के प्राणों के प्यारे हो गये। इसी बीच घर से माताजी की अस्वस्थता का पत्र पाकर आप पंजाब की ओर चले गये। लायलपुर में अंग्रेज चालक गोपीनाथ का पक्षपोषण करने से आप अंग्रेजों की आंखों में खटकने लगे। परन्तु कोई स्पष्ट अभियोग न होने से सरकार आपका कुछ भी न बिगाड़ सकी। आप अमृतसर से एक पत्र का सम्पादन करने लगे। कुछ दिन बाद आप विशेष कार्यवश लाहौर गये तो आप गिरफ्तार कर लिये गए, बाद में उन्हें ६ हजार की जमानत पर मुक्त कर दिया गया।

सन् १९०७ में पिताजी के विशेष अनुरोध से आपने लाहौर में विशुद्ध दूध वितरण करने वाली एक डेरी की व्यवस्था की परन्तु भगतसिंह एक मात्र दूध बेचकर अपने जीवन के अमूल्य समय को यों ही बरबाद नहीं कर देना चाहते थे। इसीलिए आप वहाँ से लापता हो गये इस प्रकार राष्ट्र सेवा के अमरव्रती भगतसिंह ने व्यवसाय की अपेक्षा देश सेवा को ही प्रमुखता प्रदान की।

भगतसिंह निर्भीक प्रकृति के तो थे ही अदालत में भी हंसकर बात किया करते थे। फांसी के तख्ते का भय आप को कभी भी भयभीत नहीं करता था, उसके लिए वे सदैव तत्पर रहा करते थे।

३० अक्टूबर १९२८ में लाहौर में जब साइमन कमीशन के विरोध में जुलूस निकाला गया, उसके परिणाम-स्वरूप लाला लाजपतराय को अपने प्राणों की बाजी लगा देनी पड़ी। लालाजी के इस दुखद अन्त ने अग्नि में घी का कार्य किया, शिथिल भारतीयों की सुप्त नसों में भीषण उष्ण रक्त का संचार होने लगा। १७ दिसम्बर सन् १९२८ को लाला जी के हत्यारे अंग्रेज युवक मि० सांडर्स को ज्यों ही वह अपने दफ्तर से मोटर साइकिल से बाहर निकला गोली से शूट कर दिया गया। इस हत्या के फलस्वरूप अंग्रेजी शासन सत्ता का दिल दहल उठा। उसने सारे शहर में पुलिस तैनात कर दी और अभियोगियों की छान बीन प्रारम्भ कर दी, परन्तु वीरवर भगतसिंह भी एक माने क्रान्तिकारी बन चुके थे। वे बहन सुशीला देवी को साथ में ले और स्वयं एक अफसर का वेश धारण कर स्टेशन पर रेलगाड़ी के प्रथम दर्जे में बैठ लाहौर से बाहर निकल गये। सभी सरकारी कर्मचारी इस बांके अफसर को आंखें फाड़ फाड़कर देखते ही रह गये।

भगतसिंह लाहौर से सीधे कलकत्ता पहुंचे। वहाँ कार्नवालिस स्ट्रीट आर्य-समाज में रहकर आपने कुछ दिनों क्रान्ति की अग्नि को प्रदीप्त किया। इधर केन्द्रीय असेम्बली में 'ट्रेड डिस्प्यूट' का बिल पास करने के लिए ८ अप्रैल १९२९ को मतदान होने वाला था। इधर भगतसिंह एवं बटुकेश्वरदत्त भी अपनी पूर्ण तैयारी के साथ नियत स्थान पर जा पहुंचे। कांग्रेस बिल के विरोध में था। बिल पर विचार आरम्भ हुआ ही था कि धड़ाके की आवाज के साथ दो विस्फोट हो गये। सभा भवन धुएं से परिपूर्ण हो गया। मोतीलाल नेहरू एवं मदनमोहन मालवीय के अतिरिक्त सारे सदस्य अपना-अपना स्थान छोड़ भाग खड़े हुए। जब भवन में कुछ शान्ति हुई तो क्या देखते हैं कि महिला गैलरी में दो युवक यूरोपियन वेशभूषा में सुसज्जित खड़े मुस्करा रहे हैं। और 'बहरों को सुनाने के लिए जोर से बोलना पड़ता है' इस प्रथम पंक्ति वाले लाल पर्चों को वितरित कर रहे हैं। इन दोनों वीरों के पास जाने की किसी की भी हिम्मत न हुई तब स्वयं उन्होंने अपनी अपनी पिस्तौल अलग फेंक दी और मुस्कराते हुए पुलिस के साथ चल दिए। इन पर मुकदमा चलाया गया जो १२ जून १९२९ को सेशन में समाप्त हो गया।

२३ अक्टूबर सन् १९२८ को दशहरे के मेले में जो बम फटा व उसके फलस्वरूप १० व्यक्ति यम-लोक

[शेष पृष्ठ १० पर]

अमर शहीद भगतसिंह की फांसी पर जवाहरलाल जी ने अपनी आत्म-कथा में लिखा था:—

"मैं भगतसिंह तथा उनके साथियों के अन्तिम दिनों में मौन धारण किये रहा क्योंकि मैं डरता था कि कहीं मेरे किसी शब्द से फांसी की सजा रद्द होने की सम्भावना जाती न रहे। मैं चुप रहा, यद्यपि मेरी इच्छा होती थी कि 'मैं स्वतः कहूँ।" हम सब मिलकर उन्हें बचा न सके। वे हमारे बहुत प्रिय थे महान् त्याग और साहस भारत के नौ जवानों के लिये प्रेरणा की चीज थी और है। हमारी इस असमर्थता पर देश में दुःख प्रकट किया जायगा किन्तु साथ ही हमारे देश को स्वर्गीय आत्मा पर गर्व है और जब इंग्लैंड हमसे समझौते की बात करे तो हम भगतसिंह की लाश को भूल न जायेंगे।

क्या पण्डित जी इस अमर शहीद के प्रति व्यक्त अपनी इस शुभभावना को चरितार्थ कर सके, क्या आज राष्ट्र के कर्णधार होते हुए भी उन्होंने शहीद भगतसिंह को उनका सम्मानित स्थान प्रदान किया है? कोई स्मारक बनाना तो दूर, असेम्बली भवन में उनका चित्र तक भी विद्यमान नहीं है। शहीद अमर होते हैं—

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा ॥

क्या राष्ट्र अपने वीर शहीद को भूल चुका है? आर्यसमाज का दायित्व है इस राष्ट्र शहीद की स्मृति को पर्व रूप में मनाने की घोषणा करे। —स०

राष्ट्र के नागरिक जीवन का चिन्तन—

बुरा न मानो होली है

[श्री हरिदयाल चतुर्वेदी एम० ए०, प्रयाग]

बुरा न मान होली है। यह लेख नहीं रङ्ग के छींटें हैं। जिन पर पड़े, वे भी बुरा न माने, यही अनुरोध है।

होली आगई, हुल्लड़ भी मच गया। लड़कों को तो शरारतें करने की आजादी मिल गयी जैसे। आप टोकिए तो कह देंगे—अजी! बुरा न मानिए होली है।

बाहरी होली! होली न हुई, एक बहाना हो गया कि जो कुछ साल भर न किया जा सका, वह आज कर लिया जाए। त्यौहार का मतलब क्या यह है कि अपने मन का साल भर का गुब्बार आप आज ही निकाल डाले राह चलते लोगों को गोबर और कीचड़ से लथ पथ कर डालें, और फिर सब मिलकर नारा लगाए "बुरा न मानो होली है।"

उधर देखिए—सड़क पर से की पुरुष अभी निकल रहे हैं। शाम का वक्त है। और वह जो खुला इक्का आ रहा है, उस पर विराजमान मण्डली गन्दे गन्दे गीत और अश्लील गालियां अलापे जा रही है। यह भी होली मनायी जा रही है।

विद्यार्थियों को देखिए। होली के पहिले स्कूल कालेज बन्द हो रहे हैं। और हाँ शिक्षक पढ़ा रहे हैं। परीक्षा नजदीक आरही है। और ये पिछली सीट पर बैठे जनाब क्या कर रहे हैं? कुछ नहीं, होली मना रहे हैं।

फाउण्टेन की स्याही अपने सामने बैठे लड़के के कोट पर छिड़क रहे हैं।' जिसका ध्यान पढ़ाई की तरफ है। यह भी अच्छा तरीका है होली मनाने का।

और एक दृश्य देखिए—एक भद्र व्यक्ति अपना पत्नी सहित एक रिक्शे पर जा रहे हैं। उनकी पत्नी एक छोटे से बच्चे को गोद में लिए हुए है। इधर से होली के ठेकेदारों का दल आ रहा है। लीजिए ये हो गई पिचकारियों से मूसलाधार रङ्ग की वर्षा. और लग गया एक सामूहिक नारा "होली है"। भद्र पुरुष के कुछ कहने पर होली के हुड़दंगे अब तो लड़ने को भी होली ही समझ बैठे। ऐसे में पीछे वाले भी क्यों चुप रहें, आखिर बोल ही तो बैठे—"मारो इस इज्जतदार को। होली के दिन बाहर निकल कर चलते हैं इज्जत बचाने को।" जरा सा रङ्ग पड़ गया तो बाबू क्या हैं लाल पीले होने लगे।

मगर किसी ने उसकी मजबूरी का ख्याल नहीं किया। किसी ने यह भी नहीं देखा कि उसका नन्हा सा बच्चा तेज ज्वर से विकल हो रहा था और यही कारण था जो कि आज उसे घर से बाहर निकलना पड़ा, बेचारा डाक्टर के घर जा रहा था। बीमारी तो होली दिवाली देखकर किसी के घर नहीं आती। परन्तु उस की मजबूरी का ख्याल कोई करे भी तो क्यों? होली का मनाना तो तभी सफल होगा जब आँखों पर पट्टी बाँध विवेक को एक कोने में रख दिया जाय।

इस घर के अन्दर झांकिए एक युवक ने बाल्टी भर रङ्ग एक युवती पर उलट दिया है और अब उसके कपोलों पर अबीर मल रहा है। क्या ये पति पत्नी हैं? नहीं जी, यह युवती इस युवक की भाभी की छोटी बहिन है। आज के दिन इसे भी छोटी भाभी कहकर मनचाही शरारत की जा सकती है। न भाभी कुछ बोल सकती है न भैया।

क्योंकि होली जो है न। फिर कब मौका मिलेगा अरमान निकालने का? या यह भी मुमकिन है कि यह युवती उस युवक की पत्नी की छोटी बहिन यानी साली हो साली के साथ ही होली न मनाई तो फिर होली कैसी?

और देखिए—ये तीन चार लोग नगर की मुख्य सड़कों पर लड़खड़ाते और गाली बकते चले आ रहे हैं। होली में नशे के सेवन की पूरी आजादी मिलनी ही चाहिए। आज भी अगर होश बाकी रह गया तो होली की मस्ती कहाँ?

एक बार मुझे होली के मौके पर यात्रा करनी पड़ी थी। ठीक होली के दिन मैं अपना छोटा काम जरूरी था इसलिए लौटना ही पड़ा। दूसरे दर्जे के कम्पार्टमेंट में आ रहा था। मैं तो अपने बगल की खिड़की बन्द किये बैठा था। सामने की तरफ एक महाशय बैठे हुए थे। शायद चलती ट्रेन से बाहर देखने का बहुत शौक था उन्हें। मैंने दो चार बार कहा भी कि भाई साहब, दूसरी खिड़की भी गिरा लीजिए। वे न माने। थोड़ी देर बाद एकाएक एक बड़ा सा पत्थर खिड़की पर आ लगा, कांच टूटकर चूर चूर हो गया और कुछ टुकड़े जा घुसे इन महाशय जी के चेहरे में। उनका चेहरा और माथा लहू लुहान होगया। जंजीर खींचकर हमने गाड़ी रोकी और उनको फर्स्टएड दी गयी। तब गार्ड ने बताया कि आज के दिन तो ऐसा ही होता है। यात्रियों को खुद सावधानी रखनी चाहिए।

यह भी शायद एक तरीका है होली मनाने का कि कच्चे रङ्गों की अपेक्षा मानव-रक्त से होली खेली जाय।

ये हैं होली के चन्द नजारे जो कि अपने आस पास हमें दिखाई देते हैं। आप भी पढ़े लिखे आदमी हैं। क्या आपका मन क्षुब्ध नहीं होता इनको देखकर? जरूर होता होगा।

हाँ आप में से कुछ लोग शायद यह सोचते होंगे कि अच्छे हजरत हैं ये—खामख्वाह होली का मूड खराब कर दिया! होली का मौका हंसी खुशी का होता है और यह सब्जीस बैठ गया फिलासफी झाड़ने।

लेकिन मेरे दोस्त, मैं कब कह रहा हूं कि आप होली न मनाइये? आप होली मनाइये—पूरी हंसी-खुशी से मनाइये! मगर इन बुराइयों को छोड़कर।

होली मिलन का पर्व है। राग-द्वेष छोड़कर पवित्र हृदय से सबसे मिलिए, अपने रिश्तेदारों से और अपने पड़ोसियों से। परिवार के लोग भी आपस मे मिलिए, लेकिन शिष्टता से, मर्यादा का ध्यान रखते हुए, और साल भर के असन्तोष को सदा के लिए दफना कर।

आप रंग भी खेलिए लेकिन आपस मे ही कीचड़ और गोबर से दूर ही रहिये। त्यौहार के दिन भी गन्दगी को अपनाना क्या उचित है?

आप सड़क पर होली खेलना चाहते तो भी उन्हीं लोगों पर रंग डालिए जो होली खेलने निकले हों या होली मनाने के मूड में हों। बीमार या रंजीदा व्यक्ति पर रंग छोड़कर कटे में नमक न छिड़किए—किसी की पीड़ा को न बढ़ाइये।

अच्छी-अच्छी चीजें खाइये, पीजिए। मगर नशे से दूर रहिये। धुत्त होकर नाली में लोटने में क्या मजा है मेरे भाई, अगर गालियां न बकें तो भी मेरे ख्याल से आपके मुंह का मजा नहीं बिगड़ेगा।

किसी के अच्छे कपड़े खराब न कीजिए।

होली का नाजायज फायदा न उठाइये—अपने सम्बन्धी स्त्री पुरुषों से गन्दा मजाक न कीजिए, युवतियों से अमर्यादित व्यवहार न कीजिए।

रंग से भीगे कपड़े अधिक देर तक पहिने न रहिये। दूसरों को भी अधिक न भिगाइये। ऐसा न हो कि उसी दिन शाम को या दूसरे दिन सबेरे उसे डाक्टर की शरण लेनी पड़ जाय। क्योंकि कभी कभी होली तक कुछ ठण्ड बाकी रह जाया करती है। रेलों पर या किसी के घर पर पत्थर इत्यादि फेंक कर किसी का सिर न तोड़िये।

होली के दिन अक्सर लोग अपने सम्बन्धियों या इष्ट मित्रों के घर होली मिलने जाया करते हैं। और हर आदमी मिलने आने वाले को नाश्ता कराता है। अब अगर आप दस बारह जगह भी गये तो समझ लीजिए कि

—(शेष पृष्ठ १९ पर)—

❁ होली--गीत ❁

होली का प्राञ्जल त्यौहार, आया लेकर हर्ष अपार।
बीती शिशिर शारदी ठिठुरन, थिरक उठी मृदु मलय पवन,
हुए हरित सब वन उपवन, डाली पर खिल उठे सुमन,
कुहुक उठी कोयलिया काली, मस्त मधुप करते गुन्जार ॥१॥

धारण कर नूतन परिधान, प्रकृति गा रही मधुर गान,
झूम उठा सुनकर पवमान, जग को मिला सुरभि का दान,
मुक्त हस्त हो प्राची दिशि से, करता रवि स्वर्णिम बौछार ॥२॥

जौ गेहूं औ अलसी अरहर, सरसों, चना, मसूर, मटर,
लहराते खेतों में गहर, हर्षित देख धरा, दिशि, अम्बर,
सफल साधना निरख कृषक की, नाच उठा सारा संसार ॥३॥

वृद्ध, युवक, नर, नारी, बाल, रोली, रंग, अबीर, गुलाल,
सब ही सब पर रहे उछाल, क्षण में सबके आनन लाल,
घर में उमड़ी प्रेम सरित की, धार हुई सत्वर साकार ॥४॥

तरु तरु पर नूतन उल्लास, कली कली पर मादक हास,
दिग्दिगन्त में पूर्ण विकास, रूढ़िवाद का हुआ विनाश,
दग्ध हुए सब दुरित वह्नि में, मिला भद्र भाव भण्डार ॥५॥

—धर्मदत्त आनन्द

सामाजिक व्यंग्य कथा—

मैंने दहेज मांगा

[मूल उड़िया से, अनुवादक—श्री गोपालचन्द्र मिश्र]

अचानक एक कन्या निश्चित करके मुझसे जबर्दस्त तकाजा किया गया कि मैं उसे स्वीकार कर लूं। मैंने साफ साफ बता दिया कि शादी नहीं करूंगा। मेरी लाइन् अलग, मैं स्वतन्त्र ही रहूंगा और शादी नहीं करूंगा। चार हाथ की जरूरत मुझे नहीं है।

नाना से मैं बहुत चिढ़ता हूं। मेरे नाना एकदम पुराने जमाने के आदमी और इस आधुनिक युग से जैसे बिलकुल अनजान हैं। वे सिर्फ उपदेश देते रहेंगे और मैं 'हां जी' हांजी करता रहूंगा। बस इतने से ही नाना खुश यह बात एक दिन बढ़ गई। जिस दिन मुझे मालूम हो गया कि नाना को प्रेम प्रेम के बारे में कुछ भी मालूम नहीं, मैं समझ गया कि वह बिलकुल थर्ड क्लास के हैं। उनकी इच्छा तो सिर्फ यही है कि सगाई हो जाए, गांठ-बन्धन हो जाए और घड़ी, साइकिल, रेडियो, मिठाई, बिस्तर, सोने की अंगूठी आदि मिल जाएं। घर में खीर और मिठाई भर जाएगी, घर में एक नई बहू आएगी, विवाह का वह इतना ही मतलब समझते हैं। मैं उनसे माथा-पच्ची नहीं करता। मैंने कहा, अभी मेरा इरादा शादी करने का नहीं है, परन्तु नाना ने हठ किया। वे सभी से कहने लगे कि यदि हमारा जयी राजी हो जाए तो मैं सारी बारात को पैसेंजर गाड़ी से न ले जाकर मेल गाड़ी से ले जाऊंगा।

अमुक गांव का अमुक आदमी आकर नाना से कहता है और सब मुझे समझाने लगते हैं, परन्तु मैं सभी की बात टाल देता हूं। उस दिन वह बना नाई बहुत दिन के बाद गांव आया था। नाई ने नमस्कार करते ही नाना से मेरी शादी की बात छेड़ दी; नाना कहता था कि वह रेल कम्पनी के सिगनल विभाग में काम करता है। वहाँ मेम बीबी और साहब लोगों को साथ-साथ उसने सिगरेट पीते देखा है। मेम साहिबा मशीन चलाती हैं। नाना यह सुनकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं और मेरी शादी की बात छेड़ देते हैं। शादी के लिये मेरे इन्कार कर देने के कारण उन्होंने इस बार मेरे वर्षों का बिल बहुत मुश्किल से मंजूर किया।

कितने ही दिन बीत गये। अन्त में एक दिन नाना ने इसी बात पर भयंकर रूप धारण कर लिया। मुझे उन्होंने घर में बैठने भी नहीं दिया। नाना ने कहा—"रे जयी तुझे जैसा दहेज चाहिये, तेरा ससुर तुझे देगा, तू शादी कर ले।"

"मैं सहमत हो गया। पर साथ ही मैंने कहा—शादी के समय वेदी पर बैठकर जो कुछ मागूंगा उस वक्त ससुर देने मे न हिचकिचाए।"

नाना यह सुनकर बहुत खुश हुए, मैंने साफ-साफ कह दिया कि मुझे मोटर, कपड़ा सोने की अगूठी, साइकिल वगैरह कुछ नहीं चाहिये। यह नियन्त्रण का जमाना है और हमारी मांग भी नियन्त्रित है।

शादी का दिन आया। ससुर ने कहा—मेरा दामाद जो कुछ मांगेगा दूंगा। ऐसी स्वीकृति देने का कारण यह है कि वह एक सम्पन्न आदमी है। घड़ी, साइकिल न कहकर यदि दामाद घोड़ा, हाथी भी मागे तो वह देने के लिए तैयार हैं। मेरे इन्कार करते रहने पर भी नाना ने मेरे भाल पर चन्दन लेप दिया। आंखों मे काजल लगा दिया और मैं दूल्हा बन गया। नाना सभी से कहने लगे कि—"जयी ने मेरी बात मान ली, वह एक अच्छी बहू लेकर घर लौटेगा।"

ठीक समय पर मैं विवाह वेदी पर बैठ गया। मेरे चारों ओर सिर्फ जैसे कपड़ा ही कपड़ा था। मेरी होने वाली पत्नी भी बड़े घूंघट पट के भीतर थी। पुरोहित मन्त्र पढ़ने लगा, मेरी होने वाली बहू मेरी पैनी नजर में खोली हुई सी अवस्था में दो एक बार पकड़ी गई। मेरे नाना का मन प्रसन्न नजर नहीं आता था क्योंकि इतने बड़े घर में शादी हुई, परन्तु कुछ भी सम्पत्ति मिलती दिखाई नहीं दी। ठीक उसी वक्त नाना ने मेरे कान में कुछ कह दिया।

पुरोहित ने जब ससुर से लेन-देन की बात कही तो उन्होंने कहा-दामाद जो चाहेगा उसे मिलेगा।

बहुत दिनों से मैंने सोच रक्खा था कि इस जमाने में पहले जीवन की निश्चिन्तता चाहिये और उसके बाद सुख के समय शादी। इसीलिए एक बार, पंखा वाले के कान में धीरे से मैंने कह दिया—"वैज्ञानिक परम बाहुल्य"

परन्तु वह था एक ही बुद्धू, कुछ भी न समझ सका। इसलिए मैंने साफ साफ कह दिया—"ससुर महाशय मुझे एक परमाणु बम का निराकरण ला दीजिए।"

सभी के मुँह काले पड़ गये। नाना ने कहा—"छोकरे तूने इतनी बड़ी चीज माँग ली।"

आखिर ससुर महाशय बम नहीं दे पाए और मेरी शादी में झंझट खड़ा हो गया। नाना ने कहा—"अरे बम का तू क्या करेगा?"

मैंने कहा—यह ध्वंस-युग है। अबसे पृथ्वी का नया युवक और युवतियाँ शादी के पहले परमाणु बम का निराकरण चाहेंगे। नहीं तो न मालूम उनके जीवन मे कब कोई परमाणु बम उनके और उनके छोटे-छोटे बाल बच्चों के जीवन की समाप्ति कर दे।

होने वाले ससुर महाशय बारी-बारी से जमीन और आसमान की ओर ताकने लगे और मेरे नाना ने कहा—"यह एक अच्छा युग है जिसमें विज्ञान भी एक बीमारी बन गया है।

अपनी जीत होने के कारण मैं मुस्कराने लगा। ★

आकाशवाणी केन्द्र में

परिहास

—प्रभाकर माचवे

प्रयाग—रेडियो स्टेशन की शुरूआत में दो वर्ष वहाँ मैं रहा। शुरू शुरू मे रेडियो पर नाटकों मे काम करने के लिए स्त्री स्वर खोजने पर भी नहीं मिलते थे। ऐसे समय 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के एक लब्धप्रतिष्ठित लेखक कार्यकर्त्ता बोले—"लड़कों से ही आप स्त्रियों का अभिनय करा लीजिए। रंग-मंच पर तो ऐसा ही होता है।"

मैंने कहा—"यहां स्वर का प्रश्न है और स्त्री पात्र के बजाय श्रोता उसे कुछ और समझेंगे।"

एक बार एक उद्घोषक को कहना था—"अभी फलां फलां केदारे का ख्याल गा रहे थे, अब उनसे कजरी सुनिए। बेचारे बोलने में गड़बड़ा गये और कह गये—अभी फलां फलां केदार का ख्याल खा रहे थे, अब उनसे खजरी सुनिए।

भारतेन्दु जयन्ती के दिनों की बात है। एक सज्जन जो अपने को हिन्दीदाँ समझते थे। भागे-भागे आए और बोले—"पाटनर ये भारतेन्दु का नाम बहुत हो रहा है उनका एड्रेस वगैरह बता दो—मैं उनसे कान्टैक्ट करना चाहता हूं।"

मेरा मन हुआ कि मैं उन्हें मणिकर्णिका घाट, बनारस का पता बता दूं।

एक बार एक नयी नयी गायिका पहली बार गाने के लिए आई। वे इतनी नर्वस हो गईं कि उधर गाना शुरू होना था और इधर वे मूर्छित हो गईं। अनाउन्सर बेचारे कहते ही रह गये—"अब आप कुमारी ···· से बचपन का गीत सुनिए—आओ सो जाए, मर जाए······ ·।

एक बार आदेश आया कि वेद पाठ रेडियो पर कराया जाय। हम दारागंज में वेद-पाठियों के पास पहुँचे। एक साहब बोले हम तो उस मलेच्छ जगह मे जाकर वेद पाठ नहीं कर सकते। वहाँ तो जूतों सहित लोग चले आते हैं।

मैंने कहा—"हम स्टूडियो मे जूतों को रोक देंगे।" वे बोले—"मगर हम तो सदैव स्नान के बाद ही पाठ करते हैं उसका क्या होगा?"

मैंने कहा—"यह कठिन है।" आखिर वे वेद पाठ नहीं आये।

एक बार एक लम्ब-केशा कलाकार कुछ रंगीन सी शाल ओढ़े स्टूडियो में 'रहर्सल या कुछ नाटक पाठ कर रहे थे। स्टूडियो के शीशे से देखने वाले एक दर्शक बच्चे ने पूछा—"मां ये मेम कौन है?"

उसे चुप कराना कठिन हो गया।

एक साहब संस्कृत नहीं जानते थे, पर संस्कृत का प्रोग्राम कराना पड़ता था। अंग्रेजी मे 'भाषाज प्लेज' की घोषणा आयी। टाइपिस्ट ने 'भाषा प्लेज' कर दिया था। बहुत गड़बड़ी में पड़ गये थे। मुझसे आकर पूछने लगे—

"भाई संस्कृत कार्यक्रमों में (भाषा नाटक क्या बला हुई?")

मैं भी मजाक करने के मूड में था। मैंने कहा—"जैसे हिन्दी मे ब्रज भाषा होती है, वैसे यह संस्कृत में नाटक की भाषा होती है। यह भाषा कालिदास मे भी है।"

वह कुछ थोड़ी बहुत भाषा की बात जानते थे, बोले—"वो तो की प्राकृत होती है न?"

मैंने कहा—"बहुत खूब। उसी को तो भाषा कहते हैं।"

एक बड़ी कवियत्री मर गयी थीं। उनकी स्मृति मे कवियों की श्रद्धांजलि का कार्यक्रम था। मैंने सोचा था कि इस समय कम से कम कविजन कुछ राष्ट्रीय वृत्ति दिखायेंगे, पर हर-एक ने डबल फीस मांगी। ★

कुछ व्याख्यायें

अद्भुत—

संसार में तीन बातें आश्चर्य जनक हैं। एक पक्षी का आकाश में मार्ग, कीड़ियों का चट्टान पर और जहाजों का समुद्र में मार्ग।

समाचार—

यदि कुत्ता किसी व्यक्ति को काटता है तो यह कोई समाचार नहीं, परन्तु यदि कोई व्यक्ति कुत्ते को काट खाय तो वह अवश्य समाचार है।

तलवार—

समस्त तलवार के धनी तलवार से ही समाप्त हो गये।

पुरातनता—

पुरानी लकड़ी जलने में श्रेष्ठ होती है, पुराना घोड़ा अच्छा होता है, पुरानी पुस्तकें पढ़ने में अच्छी होती हैं। इसी प्रकार पुराना मित्र बहुत अधिक विश्वासपात्र होता है।

मृत्यु—

यह एक आवरण है जिसे मृत्यु का नाम दिया गया है।

जीवन—

जीवन पानी का एक बुलबुला है परन्तु इसकी अनुभूतियाँ बहुत अधिक कठोर होती हैं।

मानवता—

हम सर्व मानव हैं और हमें मानव मानव में भेद नहीं करना चाहिए।

नम्रता—

नम्रता मानव के लिए वरदान है।

पत्थर—

जिससे प्रेम किए जाने पर भी वह पसीजे नहीं, जिसका हृदय में भावुकता नहीं जिसमें हृदय नहीं, और जो किसी के स्नेह का उत्तर न दे सके।

आग—

आग दो प्रकार की होती है, एक वह जो चूल्हे में जलती है, दूसरी वह जो हृदय में जलती है।

दया—

दया का सबसे अधिक अधिकारी वह है जिसे हमने स्वयं ठुकराया है।

क्या—

क्या का उत्तर कुछ नहीं, क्या स्वयं प्रश्न भी है और उत्तर भी है।

आँसू—

हृदय को निर्मल करने का साधन। दुर्जनों के आँसू और जो कभी भेद खाई नहीं करते।

दीपक—

…जो जलता है जिस पर पतंगे आ- आकर झुलसते हैं और जो तेल के साथ खुद भी समाप्त हो जाते हैं।

चन्द्रमा—

रात का मुस्कराता फूल। ठण्डी किरणों में आग छिपाने वाला। विरहियों का देवता, कवियों की प्रेरणा का आधार।

प्रभात—

उत्साह और प्रेरणा की पूरी राशि।

कवि—

पैदा होता है, बनाया नहीं जाता।

प्रेरणा—

वह शक्ति जो लेखक के मस्तिष्क में समाई रहती है।

—चिन्तक

अपटुडेट पहेलियाँ

१—वह तीर बरसाती है, परन्तु धनुष नहीं।

उत्तर—आँख।

२—वह आँसू बहाती है, यद्यपि वास्तव में उसे कोई दुख नहीं, कोई कमी नहीं

उत्तर—अभिनेत्री।

३—उपद्रव की आशंका के दिनों में किस गिनती का बहुत अधिक प्रचार हो जाता है?

उत्तर—१४४।

४—गोरी गोरी है वह चलती है, जो साँवली है वह नहीं चलती।

उत्तर—चाँदी और राँगे की अठन्नी।

५—आँखें चार होने का अपटुडेट अर्थ बताइए।

उत्तर—चश्मा लगाना।

६—सबसे अच्छा बाजा क्या है?

उत्तर—मुँह।

७—वह चूड़ी नहीं है पर उसे औरतें भी पहनती हैं, और मर्द भी।

उत्तर—कलाई घड़ी।

८—क्या संसार में पाँचवाँ वेद भी है? यदि हाँ तो उसका नाम भी बतलाइये।

उत्तर—सन्तति निग्रह वेद।

९—सबसे बड़ी नदी का उद्गम स्थान क्या है?

उत्तर—कवि की आँख।

१०—वह आटा नहीं है परन्तु स्त्रियाँ उसे आटे से भी जरूरी समझती हैं।

उत्तर—पाउडर।

११—आज सौंदर्य का माप दण्ड क्या है?

उत्तर—लिपस्टिक।

१२—वह प्रेमी नहीं परन्तु दिल की बात पहुँचाता है।

उत्तर—पोस्टमैन।

—मर्मज्ञ

कन्वोकेशन

(एक दृश्य)

बी० ए०, एम० ए० का पट देखा,
बेकारों का जमघट देखा,
डिग्री के पंखे लड़कों का,
सारा जीवन चौपट देखा।
सब पूछ रहे ये कौन चले,
कुछ हँसते से कुछ मौन चले,
ये डिग्री लेने वाले हैं।
पहिने साफा हुड गौन चले।
किस मिट्टी के ये ढेले हैं?
किन गुरुओं के ये चेले हैं?
जीवन में इन लोगों ने क्या,
पापड़ ही पापड़ बेले हैं?
मालूम हमें ये ऐसे हों,
सूखड़ खाने के भैंसे हों,
डिप्लोमा यों बाँटे जाते,
सिनेमा की नोटिस जैसे हों।
इस जीवन में बेमेल हुए,
सस्ते रेंडी के तेल हुए,
हैं समझ रहे सब पास हुए,
लेकिन सचमुच सब फेल हुए।
जब कालेज के बन्धन टूटे,
तब किस्मत के हण्डे फूटे,
डिग्री की दुम बस हिला रहे,
घर और घाट दोनों छूटे।
अभिलाषाओं का था टूटा,
पर नहीं मजा आयी आखिर,
खोदा पहाड़ निकला चूहा।
बी० ए० वाले बेकार हुए,
बी० टी० वाले बटमार हुए,
एम० ए० वाले हड़ताल हुए,
एल० एल० बी० लाचार हुए,
एम० एस० सी० मिस्त्री बेच रहे,
एम० डी० हैं मिट्टी सेंक रहे,
कुछ असफल होकर दंग होकर,
बरबस बेकारी से तङ्ग तङ्ग,
शायर बनकर हैं रैंक रहे।
घर का क्या सुख-दुख काटेंगे।
बेकारी में दिन काटेंगे,
जब भूख लगेगी, डिग्री में,
कुछ शहद लगाकर चाटेंगे।
भावों में मधुर निगूढ़ रहे,
कुछ दे दें कर दस रुपये की,
आफिस में क्लर्की ढूंढ़ रहे।
यूनिवर्सिटी के भाग जागे,
शिक्षा के पावन कक्ष जागे,
भारत-माता के प्रश्न जागे,
इन पढ़े लिखों के प्रश्न जागे।
जिस कालेज का अभिमान लोक,
अपनेपन का अरमान लाल,
कुछ कपड़ों की, कुछ जूतों की,
बैठे हैं अब दूकान खोल।
कुछ तो लीडर अभिराम बने,
कुछ कम्युनिस्ट बेकाम बने,
कुछ कामरेड शौकीन लोग,
कुछ अपटुडेट इंजीनियर बने।
जीवन केंचुए सा जकड़ पकड़,
होगई कल्पना यों सुन्दर,
ईंटों का जैसा हो कूकड़।
नीरस स्वर में मेरे भइया,
चिल्लायेंगे बप्पा दइया।
बाण्टेड रूपी परवाने पर,
झपकेंगे यों क्यों बिरतुइया।
यह जलसा जिसके लख सा है,
छायावादी टक्कर सा है,
जीवन सरिता पर कालेज के,
गढ़े में यह खटमल सा है।
हमने देखा कन्वोकेशन,
हमने यह पाया अभिनन्दन,
इन ग्रेजुएटों से है अच्छा,
इन सिनेमा स्टारों का जीवन।

—बेधड़क बनारसी

(पृष्ठ ७ का शेष)

सिपाहि और ३० आदमी घायल हो गये थे। इसी असेम्बली की घटना की छान बीन में यह भी सिद्ध हो गया कि साण्डर्स हत्यारों में भगतसिंह भी थे। इस सम्बन्ध में १६ व्यक्तियों पर केस चला, केस तीन जजों के एक ट्रिब्यूनल के सामने आया और उन्होंने ७ अक्टूबर १९३० को वीरवर भगतसिंह, शिवराम, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा सुना दी। इससे सारे देशवासी कुपित हो उठे। स्थान स्थान पर हड़तालें हुईं। प्रीवी कौंसिल में इस मुकदमें की अपील की गई परन्तु वह भी रद्द कर दी गई।

अन्ततोगत्वा २३ मार्च को इन वीरों ने प्रसन्न वदन हो फांसी के फन्दे का आलिंगन किया।

इस प्रकार अनेकों माता के लालों ने अपने अपने प्राणों की बाजी लगाकर भारत मां के पैरों में पड़ी बेड़ी को विश्रृंखलित किया। आज उन रणव्रती सपूतों के बलिदानों के परिणाम स्वरूप ही हम स्वतन्त्रता के स्वच्छन्द वातावरण में इठला रहे हैं। अतः आज हम सभी भारतवासियों का यह पावन कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उन्हीं अमर बलिदानियों से भविष्य के लिए प्रेरणा प्राप्त करते हुए समय-समय पर उन शहीदों की पुनीत स्मृति में श्रद्धा के सुमन अर्पित करते रहें। साथ ही भारत सरकार से भी निवेदन है कि वह अब तक उपेक्षित शहीदों के परिवार की ओर भी अपना ध्यान आकृष्ट करे, जिससे शहीदों के ऋण से उऋण होने में देशवासी समर्थ हो सकें।

★

बड़ों का हास्य

१—गांधी जी सदा पानी में नींबू मिलाकर पीते थे। एक बार वे जेल में थे। नींबू जब मंहगे मिलने लगे तो उन्होंने कहा—'नींबू के स्थान पर अब इमली इस्तेमाल की जाए।'

सरदार पटेल भी जेल में उनके साथ थे। उनको गांधी जी का यह निश्चय पसन्द न आया। उन्होंने विरोध किया—'इमली नुकसान करती है।'

'क्या नुकसान करती है?' बापू ने पूछा।

'उससे हड्डियाँ गलती हैं।'

'जमुनालाल जी तो बराबर इस्तेमाल करते हैं।'

सरदार ने उत्तर दिया—'उनकी हड्डियों तक वह पहुँच ही कहाँ पाती है।'

× × ×

२—एक बार पं० मोतीलाल नेहरू को बड़े जोरों का जुकाम हो गया। खद्दर के रूमाल से पोंछते पोंछते नाक लाल हो गई।

एक मित्र तबीयत का हाल जानने आये और नाक का यह हाल देख कर पूछा—क्या जुकाम हो गया है?

रूमाल से नाक पोंछते हुए पण्डित जी ने उत्तर दिया—हाँ पर अब वह थोड़े दिनों का ही मेहमान है।

मित्र ने प्रश्न सूचक दृष्टि उठाई। पण्डित जी मन्द मन्द मुस्कराते हुए बोले—गांधी जी के राज में किसी को जुकाम कैसे हो सकता है? खादी के रूमाल से पोंछते पोंछते जब नाक ही गायब हो जायगी तब जुकाम कहाँ होगा?

× × ×

३—स्वर्गीय बर्नार्ड शा से एक बार अमेरिका के एक सुप्रसिद्ध लेखक मिलने पहुंचे। बातों ही बातों में लेखक महोदय ने कमरे का गौर से निरीक्षण कर आश्चर्य से कहा—मेरा ख्याल था कि आप फूलों के बहुत प्रेमी हैं, पर यहां तो एक छोटा सा गुलदस्ता भी नहीं है।'

'आप का ख्याल गलत नहीं है' शा ने स्वाभाविक व्यंग्य से कहा—'मुझे फूल सचमुच ही बहुत प्यारे हैं। साथ ही मुझे बच्चों से भी बहुत प्यार है। बच्चे आपको भी प्यारे होंगे ही।...तो क्या आप बच्चों का सिर काट अपने कमरे में गुलदस्ते सजाकर शोभा करना चाहते हैं?'

× × ×

४—पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी बराबर यह मानते रहे कि 'प्रसाद' जी को भाषा लिखनी नहीं आती थी। इसी लपेट में उन्होंने पूरब के सभी साहित्यिकों को घसीट लिया था। एक बार परिहास में ही उन्होंने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से कहा—बनारस वालों को तो भाषा लिखनी नहीं आती।'

इस विनोद के प्रथम लक्ष्य 'प्रसाद' जी थे और दूसरे द्विवेदी जी स्वयं। आचार्य द्विवेदी जी ने कहा—पण्डित जी! आज बनारस की चाहे जो भी अवस्था हो गई हो किन्तु ५० वर्ष पूर्व लोगों की बनारस पर ऐसी श्रद्धा थी कि पिता अपने पुत्र का नाम बनारसीदास रखने में गौरव का अनुभव करता था।

× ×

५—एक बार आचार्य क्षितिमोहन सेन गुरुदेव रवीन्द्रनाथ जी के साथ ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। आचार्य सेन को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि गुरुदेव को किसी काव्य के प्रणयन की प्रेरणा उठ रही है। वे चुपचाप शौचालय में खिसक गये। जब सेन जी बाहर आये तब तक काव्य मग्न हो गया था।

गुरुदेव ने कहा—कहाँ थे आप? अभी अभी इस काव्य का प्रसव (जन्म) हुआ है।

सेन ने कहा—गुरुदेव—शास्त्र में कहा गया है कि—प्रसव के समय किसी पुरुष को प्रसूता के सामने उपस्थित नहीं रहना चाहिए। फिर मैं कैसे रह सकता था?

—भानु

पब्लिक-मीटिंग

भाइयो बहनो!
जूतियाँ चप्पल पहनो।
मंच पर न फेंको इन्हें
रहने दो,
जो कुछ भी कहता है
कहने दो,
यहाँ वह
झुकेगा नहीं,
अरे आम
जूतियों के आगे झुकेगा नहीं।
अपनी ही धुन में वह
माइक पर झूलेगा।
बाहर
अकेले में
जूते खुद छू लेगा।

—रामावतार चेतन

जवानी वह है!

युग की धार के साथ जमाना बहता
जो न उसकी गति मोड़ जवानी वह है।

सागर से उठकर बूँद गगन पर छाई,
अपने वैभव के गौरव पर इतराई
आंधी टकराकर चूर करूँ हिमगिरि को
पर छिन्न भिन्न हो स्वयं धरा पर आई,

चट्टानों के आगे दुनिया झुकती है,
जो उन्हें वहां ले जाय हिमानी वह है।

जाने वाले पद चिह्न छोड़ जाते हैं,
गाने वाले भी गीत नये गाते हैं,
मिट जाते हैं पद चिह्न बालुका राशि से,
गीतों के स्वर कब जीवित रह जाते हैं?

है क्रूर समय की रेगिस्तानी आन्धी
जो उससे आगे बने रवानी वह है।

कहने वाले ने अपनी बात सुनाई
सुनने वाले ने सुनी और बिसराई
कहने सुनने का यह क्रम बहुत पुराना,
है अधर श्रवण के साथ भयंकर खाई

पर युग युग तक रवि,शशि,तारे भू, अम्बर
जिसको दुहराते रहें कहानी वह है।

—विनोद रस्तोगी, कानपुर

बूढ़े तपस्वी

पा चुके वरदान ये बूढ़े तपस्वी
ले चुके इनकी परीक्षा भी सराय-
कार इनकी हो चुके हर बार लेकिन
ये तपोवन में हिमालय में उतर कर,
तरने आनन्द से उस पार पहुंचे।
डूबने के भी न भय से शंका इन्हें कुछ
भूल से पड़ते भँवर में भी अगर वे
तो वही पाते तपोबल से किनारा।
हो चुकी पूरी मगर इनकी तपस्या
मन गया वरदान मांगा जो इन्होंने
पर न जाने क्या तपस्या रुक न जाती।
कर न पाते और कुछ बूढ़े तपस्वी?
ये हमारे शब्द कोषों में अभी तक
नाम इनके काम का है तपस्या?

—बालकृष्ण राव

कौन क्या देते हैं?

[illegible]रना—झूठा वचन
आकाश—तारागण
स्त्री—प्रेम
पुरुष—वचन
अनुयायी—श्रद्धा
नेता—भाषण
वोटर—वोट
सरकार—आश्वासन
लोग—रास्ता
पुलिस—अर्धचन्द्र

—अज्ञात

पुस्तक और परमात्मा

मेरे परम प्रिय मित्र मेरी नहीं किन्तु वे पढ़ने को ले जाते हैं और फिर (वे वापस आई तो)

परमेश्वर—स्वरूप धारण कर आती है।

यानी—

वे परमेश्वर की तरह अनदिखने हो जाते हैं

—श्री आ० बु०

एक परिभाषा कमेटी

कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का गिरोह जो अकेले कुछ नहीं कर सकता मगर सबके सब मिलकर जो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि कुछ नहीं किया जा सकता।

सूचना

सभा के उपदेशक श्री रामनिवास जी मिश्र कानपुर में प्रचार-कार्य कर रहे हैं। आपके सतत् प्रयत्न से आर्य समाज टूलभूल, रसीदपुर, कनवापुर, पुखराया, भगवतपुर, [illegible] कानपुर पुनर्जीवित हुए और अनेक समाजों का निर्वाचन कराया। आर्यमित्र के ग्राहक बनाए।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती का प्रचार कार्य कर रहे हैं और धन संग्रह हाथ नोट बुक में संलग्न हैं।

—सभा-मन्त्री

—सफ़ाई—

परसों सुबह कुछ काम न था। सोचा मेज पर की सफाई ही कर डाली जाय। परिणाम स्वरूप मेज से ये चीजें प्राप्त हुई —

कागजों के टुकड़े वजन के हिसाब से पाव भर, पांच टूटी निब, फटे पुराने समाचारपत्र, लगभग दो दर्जन कविताओं के रफ कागज, मित्रों के पचास पत्र, होटल के पांच पुराने बिल, धोबी की तीन पुरानी बेकार रसीदें और फाइलों के अन्दर एक टूटा चप्पल जो शायद सुपुत्र जी रख गये होंगे।

रद्दी की टोकरी इतनी चीजें लेने को तैयार न थी सो उसे भी खाली करना पड़ा। रद्दी की टोकरी से कुछ चीजें मिलीं उनकी सूची इस प्रकार है:

मेरा नया फाउन्टेन पेन, रेडियो स्टेशन से आया हुआ वार्ता के लिए कंट्रैक्ट फार्म, पांच रुपये का एक नोट, एक के दो रुपये के टिकट, एक मित्र का जवाबी पत्र जिसका जवाब अभी देना था, बिजली का बिल चुकाया बिल और वे पांच रचनाएं जिन्हें मैं पिछले एक महीने से ढूंढ़ता ढूंढ़ता थक गया था। —अज्ञात

वनिता-विवेक

सौन्दर्य और सब्जियां

सुन्दरता प्रकृति [illegible] है। इसके [illegible] और [illegible] मौन्दर्य [illegible] परन्तु [illegible] और अलौकिक [illegible] सन्तुलित [illegible] में शाक सब्जियां बड़ा महत्त्व रखती हैं। इन [illegible] शरीर सुन्दर [illegible] रोगों [illegible] स्वस्थ [illegible] सब्जियां द्वारा शरीर को [illegible] तत्व [illegible] तथा [illegible] होते हैं यहाँ सौन्दर्य [illegible] सब्जियों के प्रभाव की संक्षेप चर्चा की जाय।

बालों का सौन्दर्य [illegible] बहुत [illegible] और सफेद [illegible] इसके [illegible] हैं पर [illegible] बालों [illegible] कारण आयोडीन नामक तत्त्व की कमी है। [illegible], [illegible] और [illegible] बालों का [illegible] है। आयोडीन ककड़ी में [illegible] मूली, ककड़ी [illegible], पालक में शलजम [illegible] और मूली में पर्याप्त मात्रा में वर्तमान है इनके [illegible] से बालों का सौन्दर्य [illegible] नहीं [illegible] होगा।

दांत—सुन्दर और चमकीले दांत [illegible]

[illegible]

और [illegible] रस [illegible] सूखे [illegible] द्वारा [illegible] है

नाखून—स्वस्थ [illegible] नाखून [illegible] समान सुडौल चमकदार और [illegible] होता है। [illegible] नाखून का [illegible] नहीं है। [illegible] नाखून [illegible] कारण भी कैल्शियम और विटामिन [illegible] की [illegible] रसभरी और चुकन्दर में पाये जाते हैं।

[illegible] नहीं प्रसलित [illegible] और चटपटे पदार्थ [illegible] है। [illegible] सब्जियों [illegible] से दूर होता है।

[illegible] में [illegible] है [illegible] शक्तियों को नष्ट करने वाले [illegible] शाक भाजियां [illegible] युक्त कर। वह [illegible] में [illegible] प्रयत्न इस प्रयत्न के मुकाबले सर्वत्र [illegible] अपूर्ण और [illegible] रहा।

—सुषमा [illegible]

कुछ काम की बातें

—[illegible] गया [illegible] नल का [illegible] आप बाहर निकल आता है।

२—आग से जले हुए स्थान पर तुरन्त ही चूने के पानी में नारियल का तेल मिलाकर लगा देने से शीघ्र ही आराम मिलता है।

३—बच्चों के दांत निकलते समय शहद में चूना मिला कर मसूढ़ों पर लेप करने से दांत सरलता से निकल आते हैं।

४—[illegible] के [illegible] मुंह में डालकर [illegible] से [illegible] जाते हैं।

[illegible]

दिन तक [illegible]

[illegible] शहद में मिलाकर लेप करने से मुंह के छाले शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

६—तुलसी के पत्तों के रस में नमक मिलाकर नाक में टपकाने से मूर्छा दूर हो जाती है।

—मजिता दीक्षित, अम्बिकापुर सी॰पी॰

फलों का सलाद

सामग्री—[illegible] एक सेब, एक नाशपाती, कुछ अंगूर, कुछ फालसे थोड़े सेब तथा पिस्ता वगैरह।

सेब और नाशपाती को थोड़ी देर [illegible] पका लीजिए। फिर [illegible] बिल्कुल [illegible] रहें [illegible] जाय। फिर [illegible] महीन [illegible] अंदर की तरफ से [illegible] दीजिए। [illegible] तथा [illegible] अंगूर [illegible] थोड़ी [illegible] मिला, [illegible] तथा [illegible]

सलाद की डोलचियाँ

इसके लिये कई [illegible] मेल के गोल गोल टमाटर [illegible] चाहिये टमाटरों को ऊपर से काट कर [illegible] खाली कर [illegible] इसके बाद [illegible] सलाद [illegible] सलाद की डोलचियों को [illegible] हमारे सलाद के डोल [illegible] तैयार हैं।

—विष्णुप्रभा, नरसिंहपुर

बुरा न मानो होली है

(पृष्ठ ८ का शेष)

[illegible]

एक बात और काम की [illegible] [illegible] और [illegible] वेसलीन [illegible] लीजिए [illegible] होगा चाहे जिस रंग में [illegible] भित हो जाय पर एक बार साबुन रगड़ते ही रंगों का नाम निशान आपकी देह पर बाकी नहीं रह जायगा। और बार बार रंग रगड़कर रंग छुड़ाने के झंझट से आप बच जायेंगे।

अच्छा, यह होलिकोत्सव इष्ट मित्रों सहित आपको मंगलकारी हो यही प्रभु से मंगल कामना है।

★

ऋषि-बोध-सप्ताह

निम्न स्थानों पर आर्यसमाजों द्वारा ऋषि बोध सप्ताह सोत्साह मनाया गया।

हल्द्वानी, नैनीताल, रामनगर, सहतवार, मुरादाबाद (म॰ प्र॰) बेवर [illegible] मदुरा [illegible] कासगंज, [illegible] भागलपुर [illegible] आलमपुरा [illegible], [illegible] (एटा)।

आर्यवीर-दलसमाचार—

—[illegible]० फरवरी को पन्नालाल पार्क उन्नाव में श्री जयपाल [illegible] ने दयानन्द शाखा का उद्घाटन किया। तथा [illegible] मुख्य नायक चुने गये।

—मिर्जापुर आर्य वीर दल का [illegible] शिविर २९।२।५६ को सम्पन्न हुआ। ७६ आर्यवीरों ने [illegible] भी ली। इस अवसर पर आर्य वीर दल [illegible] की बैठक हुई जिसमें शिविर [illegible] किया गया।

संस्कार समाचार—

[illegible] में एक [illegible] नयन तथा [illegible] स्वामी शिवानन्द जी ने सम्पन्न कराया।

[illegible] शास्त्री [illegible] आर्य समाज में श्री रामकृष्ण एम॰ए॰ एल॰ एल॰ बी॰ का अन्तर्जातीय विवाह [illegible] मालती भटनागर के [illegible] हुआ।

[illegible] का अंग्रेजी

[illegible]

[illegible] है। [illegible] सूत्र (०) [illegible] उपादेय होगा।

—अयोध्या निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव १५ से १८ अप्रैल तक सम्पन्न होगा।

—गज हुंडवारा आर्यसमाज का उत्सव २८ से ३१ मार्च ५८ तक मनाया जायगा।

—बिधूना (इटावा) आर्यसमाज का उत्सव २६ से २८ फरवरी तक मनाया गया।

—मगरहौं आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव ३० जनवरी से १ फरवरी ५८ तक सम्पन्न हुआ।

—सीतापुर आर्यसमाज का उत्सव १९ से २२ फरवरी तक मनाया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजों एवं जिला उप प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का आगामी वृहद् अधिवेशन दिनांक १६ व १७ मई १९५८ को हाथरस जिला अलीगढ़ में होना निश्चित हुआ है।

उत्सव-समाचार—

—जौनपुर आर्यसमाज का उत्सव १६ से १९ अप्रैल तक मनाया जायगा।

—सहनवार आर्यसमाज का उत्सव ३१ मार्च से २ अप्रैल तक होगा।

—हस्तिनापुर में महायज्ञोत्सव २३ से २५ मार्च ५८ तक मनाया जायगा।

आप सदा अजमेर की सुप्रसिद्ध सुगन्ध की लपटें देने वाली

महर्षि सुगन्धित सामग्री

का ही प्रयोग करें

रेट—न० २ १-), न० १ १८), स्पेशल मेवे वाली १॥) प्रति सेर

नोट—हमारे यहां धूप, धूपबत्ती, हवन कुण्ड तथा सब प्रकार की सत्यार्थ प्रकाश आदि धार्मिक पुस्तकें भी मिलती हैं।

पता—महर्षि सुगन्धित सामग्री कार्यालय, केसरगंज, अजमेर

लक्ष्मणधारा



इसकी चन्द बूंदें लेने से हैजा, कै, दस्त, पेटदर्द, जी-मिचलाना, पचिस, खट्टी-डकारें, बदहजमी, पेट फूलना, कफ, खांसी, जुकाम आदि दूर होते हैं और लगाने से चोट, मोच, सूजन, फोड़ा-फुन्सी, बातदर्द, सिरदर्द, कानदर्द, दाँतदर्द, भिड़ मक्खी आदि के काटे के दर्द दूर करने में संसार की अनुपम महौषधि। हर जगह मिलता है।

कीमत बड़ी शीशी २॥), छोटी शीशी ॥।)

रूप विलास कम्पनी, कानपुर

रोजगार नहीं केवल परोपकार

दमा पुरानी खांसी के रोगियों! यह दुष्ट रोग आपके लिये बड़ा ही दुखदाई है। आखिर कबतक तड़फते रहोगे? क्यों नहीं आने वाली किसी भी 'पूर्णमासी' को यहाँ आश्रम में आकर सैकड़ों रोगियों के साथ हमारी भारत विख्यात महौषधि (चित्र कूट बूटी) धर्मार्थ (मुफ्त) सेवन करके एक ही मात्रा में सदा के लिए इस दुष्ट रोग से पीछा छुड़ाते हैं? यदि किसी कारणवश यहाँ न आ सकें तो केवल ३) मात्र विज्ञापन रजिस्ट्री आदि खर्च तुरन्त मनीआर्डर से भेजकर मंगा लें और आराम से अपने घर पर ही सेवन करके पूरा लाभ उठावें। इस दवा की वी० पी० नहीं भेजी जाती है, नोट कर लें, जल्दी करें जिसमें "पूर्णमासी" से पहिले दवा आपको मिल जावे, अन्यथा पछतावेंगे।

नोट—यदि रोग अधिक पुराना हो तो ३ खुराक (पूरा कोर्स) लगातार सेवन करें। जिसमें जड़ कट जावे, ३ खुराक [पूरा कार्स] एक बार मंगावें तो ८) भेजें। गरीबों को मुफ्त बांटने के लिये एक दर्जन का रियायती मूल्य ३०) रु० है। अमीरों को सदा यह दवा अपनी तरफ से धर्मार्थ बांटना चाहिये।

पता—रायसाहब के. एल. शर्मा रईस आश्रम (६१) "जगाधरी" (E.P

(T. B) (टी०बी०) 'तपेदिक' रोग

का सहल इलाज केवल ।=) के स्टाम्प विज्ञापन खर्च भेजकर हिन्दी मासिक "रंगीला मुसाफिर" (१) 'जगाधरी' (पी०) मुफ्त मंगा कर पढ़ें और प्रचार करके पुण्य के भागी बनें।

प्रचार-समाचार—

—बाननपुरा (एटा) आर्यसमाज ने तहसील के वर्तमान अधिकारी श्री गोपाल शरण जी को सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति भेंटकर समाज प्रचार में योग दिया।

फिर न कहना कि हमें खबर नहीं हुई थी?

(केवल 'आर्यमित्र' हीरक जयन्ती फण्ड में ५०० पुस्तकों पर विशेष रियायत)

दुनिया में हलचल मचा देने वाली वही अद्भुत पुस्तक

आसाम	**आसामी बंगाली तिलस्मी राज या**	नेपाल
बंगाल	**खजाना—करामात**	भूटान

जिस रहस्यमय पुस्तक की हजारों प्रतियां (पहिले २ संस्करण) ६) रु० मूल्य होते हुए भी हाथों हाथ खतम हो गयी थी, अन्त में १०)-१०) रु० को भी नहीं मिल सकी थी, जिन बुकसेलरों ने कुछ स्टाक कर लिया था, खूब हाथ रंगे और लाभ उठाया था, अब यह तीसरी बार का छपा एडीशन भी रु० ६) सजिल्द ६॥।) में दिया जा रहा है, इस एडीशन की पृष्ठ संख्या भी पहले से अधिक लगभग ६५० पृष्ठ हो गयी है, हजारों आदमियों का कहना है कि यह पुस्तक नहीं है, बल्कि जंगलों पहाड़ों में रहने वाले भारत के पूज्य महात्माओं के आत्मिक बल का एक विलक्षण रहस्य है, जिसके अद्भुत प्रयोगों से संसार में यश और मान प्राप्त कर सकोगे। हमारी गारण्टी है कि ऐसी अद्भुत पुस्तक आपने किसी भी भाषा में न देखी होगी, इतने पर भी हमारी गारण्टी है कि यदि आपको पुस्तक नापसन्द हो तो ३ दिन देखकर लौटा सकते हैं, हम तुरन्त मूल्य लौटा देंगे, प्रत्येक पुस्तक के साथ छपा हुआ गारण्टी फार्म रहता है। इससे बढ़कर और क्या सचाई हो सकती है। अभी तक ऊपर लिखा मूल्य ही लिया जा रहा है।

परन्तु, अब "आर्यमित्र" के प्रेमियों को चौथाई मूल्य की ५०० पुस्तकों पर इस प्रकार रियायत होगी कि प्रत्येक ग्राहक १) रु० प्रति पुस्तक के हिसाब से मनीआर्डर द्वारा "हीरक जयन्ती फण्ड' में सहायतार्थ "आर्यमित्र" को भेजकर रसीद मनीआर्डर या कार्यालय की रसीद अपने आर्डर के साथ हमें भेज दें बाकी ३॥) रु० सजिल्द के लिए ४।) रु० तथा पार्सल खर्च १॥) रु० जोड़कर अर्थात् कुल ५) रु० सजिल्द के लिये ५॥।) रु० मनीआर्डर द्वारा हमें भेज दें, मनीआर्डर प्राप्त होते ही पुस्तक रजिस्टर्ड पैकट से आपको तुरन्त भेज देंगे, साथ में उपन्यास "डिप्टी का लड़का" मूल्य ।) तथा मासिक पत्र "रंगीला मुसाफिर" की एक प्रति मू० ।=) यह भी मुफ्त में देंगे, यह सब रियायत 'हीरक जयन्ती" अङ्क तक ही होगी, उसके बाद फिर असली मूल्य ६) रु० सजिल्द ६॥।) ही लिया जावेगा, कोई रियायत न होगी। नोट कर लें कि वी० पी० से पुस्तक नहीं भेजी जावेगा, जल्दी करें फिर ऐसा मौका हाथ न आवेगा, इस धर्म 'जयन्ती' यज्ञ में आपको सहायता का पुण्य भी प्राप्त होगा, हमारे 'जगाधरी' आफिस को आज ही आर्डर दें। अन्यथा पछतावेंगे।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा रईस एण्ड बैंकर्स "शिलांग" (आसाम) या पंजाब आफिस (६०) "जगाधरी" (ई. पी.)

❀ आर्य हवन सामग्री ❀

हर्ष-सूचना

विश्व के समस्त डाक्टर, वैद्य, हकीमों को, तथा यज्ञ प्रेमी भाई बहिनों को और आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि, हमारी आर्य हवन सामग्री निर्माण शाला में वैदिक विज्ञान के आधार पर पूर्ण वैज्ञानिक रूप से सर्व रोग नाशक सुगन्धित हवन सामग्री का निर्माण किया जाता है।

विश्व के समस्त नगरों में आर्य हवन सामग्री के स्थाई ग्राहक एजेन्टों और विक्रेताओं की अविलम्ब आवश्यकता है।

आर्य महात्माओं और नेताओं द्वारा प्रबल प्रामाणित हमारी आर्य हवन सामग्री से ही नित्य यज्ञ करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करें।

न० १ सेवा युक्त हवन सामग्री का भाव ८०) मन

न० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव ५०) मन है।

एजेन्सी के लिए आज ही लिखें। देश व विदेशों में हमारी एजेन्सियां स्थापित हो रही हैं।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य
झंडाधारी उपदेशक
अध्यक्ष—आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला, महात्मा ठाकुरदास
सर व अदेला, देहली ५

विज्ञान-वार्ता

प्राचीन भारत में रसायन-विज्ञान

(प्रो० जयकुमार शिरोमणि एम० ए०, आजमगढ़)

प्राचीन रासायनिक ज्ञान का ध्येय मनुष्य को नीरोग करके दीर्घायु और धनी बनाना था। नीरोग करने के लिए ओषधियों की, दीर्घायु बनाने के लिए अमृत सदृश रस की, धनी होने के लिए पारस पत्थर की खोज की जाती थी। वेदों में ओषधियों के वर्णन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीयों का ओषधि ज्ञान वैदिक काल से ही आरम्भ होता है।

चरक और सुश्रुत

चरक और सुश्रुत, आयुर्वेद के प्रधान ग्रन्थ हैं। चरक में आयुर्वेदिक ओषधियों के ज्ञान का अमूल्य संग्रह है। अथर्व वेद और चरक के काल में कई हजार वर्षों का अन्तर है। इसको पढ़ने से ऐसा मालूम होता है कि हिमालय की तराई मे ओषधि वेत्ताओं की एक बड़ी गोष्ठी हुई और उसमें निर्णीत ओषधियों को ही इसमें स्थान दिया गया। फलतः चरक में शताब्दियों का ज्ञान भरा है। इसमें अस्थियों और शल्य विज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

भस्म-ज्ञान

प्राचीन ओषधि विज्ञान की आरम्भिक अवस्था में, उपयोगी पौधों, फलों, और उनके रसों के प्रयोगवादी ज्ञान का विकास हुआ। दूसरी अवस्था में धातुओं और उनके भस्मों के उपयोग की चेष्टा की गयी। वाग्भट्ट-कृत अष्टांग हृदय में इसी द्वितीय अवस्था का विकसित वर्णन है। स्वर्ण, प्रवाल आदि भस्मों का आज भी उपयोग होता है।

तांत्रिक-ज्ञान

रसायन के दृष्टिकोण से तांत्रिक ज्ञान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें पारद-रसायन के विकास का वर्णन है। यही एक ऐसी धातु है जो द्रव अवस्था में पाई जाती है। इसमें चमक होती है, यह भारी होती है और इसकी बूंद टूटती नहीं है। इन विशेष गुणों के कारण शैव लोग इसकी ओर आकृष्ट हुए। उन्होंने मानव शरीर को पारे जैसा चमकीला, और पारे की बूंद के समान न टूटने वाला बनाना चाहा। फलतः पारे के अनेक योगिकों का निर्माण किया गया। ये योगिक अमरत्व तो न प्रदान कर सके किन्तु नीरोगत्व के लिए अवश्य लाभदायक सिद्ध हुए। स्वर्ण और पारे में गन्धक मिलाकर मकरध्वज बनाई गई। इसका आज भी प्रचार है।

धातु-ज्ञान

प्राचीन भारतीय रासायनिक ग्रन्थों में ९ धातुओं का वर्णन मिलता है। कहीं कहीं पर इनको 'लोह' की संज्ञा भी दी गई है। वर्णित धातुएं ये हैं—हेम (सोना), रजत (चाँदी), ताम्र (तामा), वंग (टिन), सीसक (सीसा), लोह (लोहा), पारद (पारा) और रसक(जस्ता)। इन ८ धातुओं के अतिरिक्त ऐण्टीमनी के खनिजों का भी वर्णन है। ऐण्टीमनी का खनिज सीसे से मिलता जुलता होता है। इन दोनो को "सौवीर अंजन" और "नील अंजन" की संज्ञा दी गई है। भिन्न-भिन्न प्रदेश से निकाले गये सौवीर अंजन के गुणों में अन्तर करने का प्रयत्न किया गया है। रस के सम्बन्ध में लिखा है कि ताम्र को स्वर्ण में परिवर्तित करने की क्षमता होती है। 'पारद' का तांत्रिक प्रयोगों से ही सम्बन्ध रहा।

लोहा और इस्पात

भारत का यह ज्ञान सबसे अधिक विकसित था। अनेक प्रकार के लोहे और इस्पात का वर्णन मिलता है। विभिन्न विधियों और रासायनिक पदार्थों से लोहे में विभिन्न गुणों की उत्पत्ति का ज्ञान भारतीयों को था।

दिल्ली का लोह-स्तम्भ

अधिक मात्रा में लोह-उत्पादन मे भी भारत उस समय सर्वश्रेष्ठ था। दिल्ली का लोह स्तम्भ उस समय की भारतीय रासायनिक दक्षता का प्रतीक है। इसको ४१८ सन् में कुमार गुप्त प्रथम ने अपने पिता की स्मृति में बनवाया था। यह १६ इंच मोटा है और २३—८ इंच ऊँचा। इसका भार १६५ मन के लगभग है। इतने बड़े स्तम्भ को बनाने में कितनी दक्षता की आवश्यकता हुई होगी इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। १५०० वर्ष प्राचीन यह जंग-रहित स्तम्भ, इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि भारत के प्राचीन रसायनज्ञों ने एक ऐसी विधि ज्ञात कर ली थी, जिससे जंग न लगने वाली इस्पात को इतनी अधिक मात्रा में बनाया जा सकता था।

मणि-ज्ञान

धातुओं के अतिरिक्त विविध मणियों का भी विस्तृत उल्लेख है। हीरे को भस्म में परिवर्तित करने की दृष्टि से और कठोरता के अनुसार उसके द्वारा आलेखन की दृष्टि से, उसका विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

यंत्र-ज्ञान

विशिष्ट क्षेत्रों में प्राचीन भारत ने उच्च व्यावहारिक रसायन का ज्ञान प्राप्त किया था, यह उस युग में प्रयुक्त यंत्रों से ज्ञात होता है। सोमदेव कृत 'रस रत्न सम्मुच्चय' में रासायनिक यंत्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। जैसे—दोला यन्त्र, स्वेदनी यंत्र, पातन-यंत्र, टेकी यंत्र, बालुका यन्त्र, लवण यंत्र, धूप यन्त्र तथा कोष्ठी-यंत्र।

प्राचीन भारतीयों को सीमेंट का ज्ञान भी था, जैसे कि बौद्धकाल के भवनों से स्पष्ट है। मुंजिष्ठ और नील जैसे रंग ज्ञात थे। बकुल, उत्पल, चम्पक, अतिमुक्तक आदि सुगन्धित द्रव्यों का व्यापारिक मात्रा में उत्पादन भी होता था। नील, मुंजिष्ठ और इस्पातों को बड़ी मात्रा में उत्पादन के कारण भारत ने प्राचीन काल के व्यापार में सर्वप्रथम स्थान रखा था।

कुछ छोटी बातें—

[श्री प० भवानीलाल भारतीय एम० ए० सिद्धान्तवाचस्पति]

प्रत्येक समाज में कर्मकाण्ड की एकता का अपना महत्त्व होता है। श्री उपाध्याय जी ने इस प्रसंग मे कुछ बातें लिखी थीं। श्री भारतीय जी ने उन पर अपने विचार प्रकट किये हैं। हम अन्य विद्वानों के विचार और इसी प्रकार की शंकाओं को प्रकाशित करना चाहते हैं जिससे पर्याप्त ऊहापोह के पश्चात् मन्थन सम्भव हो सके। आशा है विद्वज्जन शंकायें भेजेंगे। —सम्पादक

आर्यमित्र दिनांक १५ फरवरी के अंक में आर्य जगत् के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने 'कुछ छोटी बातें' शीर्षक लेख के अन्तर्गत कर्मकाण्ड विषयक कुछ बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। प्रथम बात के विषय में मुझे कुछ भी नहीं कहना है। ग्रन्थों के प्रकाशन के समय उनका प्राचीन संस्करणों से मिलान कर लेना अत्यावश्यक है।

द्वितीय बात है, संध्या मन्त्रों मे अन्तिम नमस्कार मन्त्र से पूर्व 'हे ईश्वर दयानिधि' वाले गद्य वाक्य के बोलने के सम्बन्ध में। यह तो ठीक है कि यह मूल मन्त्र नहीं है, परन्तु इसके बोलने का विधान महर्षि ने पंच महायज्ञ विधि में किया है। ऋषि का आदेश इस प्रकार है—'इस प्रकार से सब मन्त्रों के अर्थों से परमेश्वर की सम्यक् उपासना करके आगे समर्पण करे।' और इस गद्य वाक्य के बोलने के पश्चात् 'तत् ईश्वर नमस्कुर्यान्' इस वचन से नमस्कार मन्त्र बोलने का आदेश है। सत्य तो यह है कि इधर पिछले कई वर्षों से संध्या की जिन बाजारू पुस्तकों का प्रचार हुआ उसमें प्रकाशकों की मनमानी से यह वाक्य निकाल दिया जाता था अब धर्मार्य सभा के आदेश से उसका पुनः यत्किंचित प्रचार हुआ है। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित और धर्मार्य सभा द्वारा प्रमाणित संध्या पद्धति मे यह वाक्य दे दिया गया है।

अब प्रश्न रह जाता है मूल वेद-मन्त्रों के बीच ऋषि-वाक्य के प्रविष्ट कर देने का। इसमे निवेदन इतना ही है कि महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित सध्या-पद्धति म मूल वेद मन्त्रो के अतिरिक्त वेद मन्त्रों के भावों पर आधारित महर्षि-निर्मित वाक्यों का भी समावेश हुआ है। उदाहरणार्थ 'ओं वाक् वाक्, ओं भू पुनातु शिरसि' आदि इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन के मन्त्र मूलतः वैदिक मन्त्र नहीं, अपितु वेद मन्त्रों के भाव पर आधारित ऋषि निर्मित वाक्य हैं। उनके समाविष्ट रहते हुए भी यह संध्या वैदिक सध्या ही कहलाती है।

सम्भवतः उपाध्याय जी को ज्ञात होगा कि सनातन धर्मी विद्वानों से शास्त्रार्थ के समय आर्य विद्वानों से संध्या के इन 'ओं वाक् वाक्' आदि मन्त्रों को वेद मूलकता पर प्रश्न किये जाते हैं। लेखक को डीडवाना (राजस्थान) के उस प्रसिद्ध शास्त्रार्थ को देखने का अवसर मिला था, जिसमें माधवाचार्य ने वैदिक सध्या पर आक्षेप करते हुए 'कस्मिन वेदे ?' द्वारा उपर्युक्त अंगस्पर्शादि मन्त्रों की वैदिकता जाननी चाही थी। आर्य पण्डित लोकनाथ जी ने इसके उत्तर में उन वेद मन्त्रों को उद्धृत भी किया था जिनके भाव को लेकर ऋषि ने इन वाक्यों का निर्माण किया है। अतः संध्या के अन्तर्गत इन ऋषि-निर्मित वचनों का प्रयोग मेरी दृष्टि

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक लखनऊ
पंजीकरण सं ७ ०
१ चैत्र शक १८८७
(२२ मार्च १९६६)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष २२१३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वास्थ्य-सुधा

चोकर का उपयोग

(डा० श्री सुखदेव अलमोड़ा)

देहात में गेहूं को प्राय चोकर अच्छी तरह साफ करने के बाद पीसा जाता है और मोटी चलनी से छाना जाता है जिससे चोकर भी आटे के साथ छन जाता है। अतएव चोकर के नष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता अछ न छ टा छाने के शौकीन घरों में चोकर गाय भैंस को खिला दिया जाता है।

शहरों में चोकर का कोई उपयोग घर में नहीं होता। चोकर के खरीददार फेरीवाले गली गली में चक्कर लगाकर मिट्टी के मोल चोकर खरीद ले जाते हैं और गृहणियां नमक मिर्च के साथ चोकर से निकालकर अपने अर्थ-व्यवस्था के चातुर्य्य पर सन्तुष्ट हो जाती हैं।

चोकर में पोषक तत्व

चोकर में गेहूं के अधिकांश स्वास्थ्यप्रद पोषक तत्व रहता है एक सेर चोकर में जितना पोषक तत्व हमारा शहर बहुत पानी के भाव बेच देते हैं वह एक सेर आटे में भी नहीं होता चोकर में गेहूं के अधिक महत्वपूर्ण खाद्य पदार्थ तत्व मिलते हैं ... जिससे ... हृदय रोग ... और ... का पकना ... शरीर के ... रहते हैं चोकर का भोजन में ... उपर्युक्त ... से ... कर सकते हैं

चोकर का हलवा

मई न ... खाने वाले चोकर मिश्रित आटे की रोटी नहीं खा सकते अत वे चोकर का हलवा या पापड़ बनाकर खा सकते हैं।

साफ चोकर को रात में पानी में भिगोकर रख दीजिये। पर ध्यान रखिये कि चोकर अच्छी तरह भीग जाये। सवेरे उसे अच्छी तरह मसल कर ... साफ मलमल पतले कपड़े में बांधकर नारियल के दूध की तरह चोकर का दूध निचोड़ लें। इस दूध को किसी गहरे बर्तन में कुछ देर रख दें और ऊपर निथरा हुआ पानी धीरे से फेंक देने के बाद गाढ़ा चोकर के दूध को अपनी सुविधा और सामर्थ्य के अनुकूल मात्रा में घी, लौंग और सफेद इलाइची का तड़का देकर उसमें छौंक दें। फिर आवश्यकतानुसार चीनी मेवा आदि डालकर खूब गाढ़ा हो जाने तक पकायें और थाली में फैला कर ... के कतरे ऊपर से डाल दें ठंडा होकर जम जाने पर चाकू से काटकर रकाबियों में सजा दें। चोकर का पौष्टिक एवं स्वादिष्ट हलवा तैयार है। घी और मेवा न खा सकने की स्थिति में केवल चोकर के दूध में ... डालकर लप्सी की तरह गाढ़ा पका लिया जाता है। यह बच्चे और रोगी के लिये विशेषरूप से अच्छा और सुपाच्य होता है।

चोकर का पापड़ भी इसी तरह चोकर के दूध में ... जीरा, नमक और ... डालकर गाढ़ा पका लेने के बाद बनता है ... ध्यान रहे कि यह बहुत गाढ़ा न होने पाये। इसे कटहल या बरगद के पत्तों पर घी लगा कर फैला दिया जाता है और सूख जाने पर तल लिया जाता है।

चोकर का उबटन

चोकर में सरसों का तेल ... और थोड़ा पानी डालकर सान लीजिये और स्नान से पहले हाथ पैर और मुंह में या सुविधानुसार सारे शरीर में लगाकर मलिये। उबटन जब चिपक कर सूखने लगे तब रगड़कर छुड़ा डालिये। थोड़ी देर बाद सर्दी में गुनगुने पानी से और गर्मी में शीतल जल से नहाकर स्नान करिये साबुन की आवश्यकता नहीं। यह उबटन आपके शरीर का मैल साफ करने के साथ ही साथ आपकी त्वचा को गोरा चमकीला और कोमल बनायेगा। यह उबटन बच्चों को भी लगाया जाता है।

(पृष्ठ १५ का शेष)

म त अनुचित नहीं ही है। यदि 'ईश्वर स्तुतिप्रार्थना' इस वाक्य पर आपत्ति की जाती है तो यही आपत्ति औं वाक् आदि ऋषि निर्मित मन्त्रों पर भी होगी।

एक विचारणीय प्रश्न है—आचमन और इन्द्रिय स्पर्श यज्ञ में प्रार्थना के पूर्व हो या पश्चात्। जहाँ तक पंच महायज्ञ विधि का सम्बन्ध है उसमें आचमन और अंग स्पर्श के ... क कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। संस्कारविधि में अग्निहोत्र की इन विधियों का उल्लेख जिस क्रम से हुआ है उसे देखकर दोनों पक्षों का समर्थन किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में यही कहा जा सकता है कि सन्ध्या अग्निहोत्र आदि की विधियों के पूर्ण व्यवस्थित क्रम निश्चित होना चाहिए। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा निश्चित आदेश प्रसारित करे ताकि आर्य जगत् में कर्मकाण्ड विषयक जो अव्यवस्था, असंगति और वैषम्य फैला हुआ है वह दूर हो सके और 'संगच्छध्वं संवदध्वं' का स्वप्न साकार हो सके। आशा है विद्वज्जन इन छोटी-छोटी बातों पर विचार करेंगे और ऊहापोह के पश्चात् उचित निष्कर्ष पर पहुँचने में सफल हो सकेंगे।

बाबूराम वर्मा द्वारा न्यू कुन्दनलाल आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ, रविवार चैत्र १५, शक १८८१, चैत्र कृष्ण १३, वि० २०१५, ५ अप्रैल, १९५९ ई०

विदेश में १५शिलिंग

महापुरुषों की दृष्टि में आर्यसमाज

★ ★ ★ ★

१—जहाँ जहाँ आर्यसमाज है वहाँ वहाँ जीवन-ज्योति है। —महात्मा गांधी

★ ★ ★ ★

२—आर्यसमाज मेरी माता है। —लाजपतराय

★ ★ ★ ★

३—आर्यसमाज-आन्दोलन के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है। —मैक्समूलर

★ ★ ★ ★

४—संगठित कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्य-समाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता। —सुभाषचन्द्र बोस

★ ★ ★ ★

५—आर्यसमाज ने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊँचा उठाने की दिशा में बड़ा अच्छा कार्य किया है। —जवाहरलाल नेहरू

★ ★ ★ ★

—आर्यसमाज धार्मिक शक्ति के रूप में समाज-सुधार के लिए कार्य कर रहा है। भारत के राष्ट्र-जीवन में यह बात अत्यन्त महत्व की है जिसे भविष्य में भुलाया न जा सकेगा। —रामानन्द चटर्जी

★ ★ ★ ★

—आर्यसमाज एक वास्तविकता है, जिससे जन-साधारण का आश्चर्य-जनक उत्थान हुआ है। —यदुनाथ सरकार

अवैतनिक सम्पादक—
ओमचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

जीवन-ज्योति

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के त्यागी कुलपति

श्रद्धेय पं० नरदेव शास्त्री



हरिद्वार के पास ज्वालापुर में नहर के पुल के पास यह विद्यालय है। इसमें प्राचीन प्रणाली से संस्कृत साहित्य पढ़ाया जाता है। यद्यपि भारत में अनेक संस्कृत विद्यालय हैं पर इसकी अपनी अनेक विशेषतायें हैं जिनसे यह विद्यालय जनता के लिये आकर्षक बना हुआ है।

पहली विशेषता है कि इस तपस्वी विद्यालय ने विदेशी सरकार से कभी सहायता नहीं मांगी। यहाँ के छात्र और अध्यापक राष्ट्रिय विचार के सक्रिय पोषक रहे हैं। यहाँ के वेष में खद्दर की प्रधानता रही है।

दूसरी विशेषता यह कि यहाँ जाति बिरादरियों, ऊँच नीच के बधनों से मुक्त रहकर मनुष्यमात्र के लिये वेदादि शास्त्र पढ़ाने का द्वार खोल दिया गया है। तीसरी विशेषता है कि नि:शुल्क शिक्षा और दूसरे महायुद्ध से पहले तक मुफ्त भोजन और वस्त्र भी दिये जाते थे। गरीब परिवारों के सैकड़ों लड़के इस विद्यालय की बदौलत बड़े बड़े विद्वान् बनकर आज यश और धन के भागी बने हुए हैं।

सबसे बड़ी विशेषता है इसके त्यागी, तपस्वी संस्थापक और गुरुजन। इसके संस्थापक स्वामी दर्शनानन्द जी तो महान् त्यागी तपस्वी थे ही पर विद्यालय के आचार्य गुरुवर स्वामी शुद्ध बोधतीर्थ (पूर्व श्री प० गंगादत्त जी) क्या कम त्यागी, तपस्वी थे? स्वामी आनन्द प्रकाश जी ने तो अपना सर्वस्व इसमें होम दिया। श्री प० भीमसेन जी, श्री प० सुन्दरलाल जी (महाप्रभु) सम्पादक-शिरोभूषण श्री प० पद्मसिंह जी, श्री गुरुवर काशीनाथ जी, आदि अनेक विद्वानों ने अपने जीवन-जल से इसे सींचा है। और उसी युग के श्री प० नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ आज इस विद्यालय के कुलपति हैं। पंडित जी दक्षिणात्य ब्राह्मण हैं। एक राजमान्य पिता के पुत्र हैं। उन्होंने अपना प्रान्त छोड़ा, घर परिवार त्यागा, धन, पद, मान के प्रलोभन ठुकराये और इस विद्यालय के दीवाने बने बैठे हैं। पंडितजी की राष्ट्रिय सेवायें इतनी बढ़ी चढ़ी हैं कि किसी भी प्रान्तीय नेता से कम नहीं, अधिक ही हैं। आज अपना राज्य है। पंडित जी के लिये अच्छा पद पाना सुगम है। एक बार वह बहुत अधिक मतों से एम० एल० ए० चुने भी जा चुके हैं। पर एक ही बार में उनका मन भर गया। फिर चुनाव का विचार त्याग दिया। मराठी-भाषी होते हुए भी हिन्दी भाषा की जो सतत सेवा श्री पंडित जी ने की है वह उनकी महती राष्ट्रिय सेवा है। राष्ट्र-भाषा, आर्य समाज, संस्कृत प्रचार, स्वराज्य, इन्हीं कार्यों में पंडितजी ने अपने बहुमूल्य जीवन की आहुतियाँ लगा दीं। सादा खद्दर के वस्त्र, सादा सरल भोजन, सादा कुटी में निवास, यह सब देखकर मुद्राराक्षस के चाणक्य की कुटी का स्मरण हो उठता है। इस महाराष्ट्रिय ब्राह्मण ने उत्तर प्रदेश की जो सेवा की है उससे यहाँ के निवासी कैसे उऋण हो सकते हैं। केवल एक ही उपाय है कुछ उऋण होने का।

महाविद्यालय जो इनकी प्यारी संस्था है उसकी भरपूर सेवा कर उसे इनके जीवन में ही पूर्ण पुष्ट कर दें। महाविद्यालय उत्तरीय भारत का सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राष्ट्रिय प्रतीक है। यदि बड़े बड़े दानियों की आर्थिक सहायता महाविद्यालय को मिले और आर्यजन उत्साह दिखावें तो महाविद्यालय कुछ ही वर्षों में भारत भर का एक अपूर्व प्राच्य महाविद्यालय बन सकता है। ९ से १५ अप्रैल तक महाविद्यालय की जयन्ती मनायी जा रही है। आर्य जनता ने यदि अपनी उदारता से इसकी जड़ मजबूत करदी तो महाविद्यालय आर्य संस्कृति का अजस्र स्रोत बनकर लोक कल्याण करता रहेगा।

मारीशस का गायत्री यज्ञ-परिवार

(लेखक—दर्शियल कुन्जल कोषाध्यक्ष, यज्ञ परिवार रिव्येर दी संपार मोरिशस)

★

[यद्यपि इस समाचार का एक संक्षिप्त विवरण १५ मार्च के अंक में प्रकाशित हो चुका है तदपि मित्र के अत्यन्त प्रेमी मारीशस के प्रवासी आर्यबन्धु के प्रेषित पत्र को प्रकाशित करने का लोभ संवरण नहीं कर सके हैं। प्रवासी बन्धुओं का मित्र के साथ विशेष स्नेह ही इसका मुख्य कारण है। —सम्पादक]

आरम्भ में रिव्येर दी संपार मारिशस में गायत्री यज्ञ-परिवार की स्थापना सन् १९५४में हुई थी। इसके प्रधान १९५४ से १९५६ तक कप्तान श्री शुकदेवजी भोगन रहे। उनके स्वर्गवास के बाद से उनके छोटे भाई कप्तान श्री रामचरित्र जी भोगन हैं। श्री रामचरित्र जी अपने स्वर्गीय धर्म निष्ठ ज्येष्ठ भ्राता के पदचिह्नों पर चल रहे हैं।

यज्ञ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने अपने गृह पर तो यज्ञ करता ही है किन्तु प्रत्येक पूर्णिमा को किसी एक सदस्य के गृह पर यज्ञ होता है। उसमें गायत्री यज्ञ परिवार का प्रत्येक सदस्य सम्मिलित होता है वर्ष के अन्त में विशेष समारोह से गायत्री महायज्ञ किया जाता है।

गत वर्ष २६ जनवरी १९५८ को गायत्री महायज्ञ श्री रामचरित्र भोगन जी के आँगन में विशाल पण्डाल में बड़े उत्साह से हुआ जिसमें यज्ञ और भोज का सारा खर्च श्री रामचरित्र भोगनजी ने अपने ऊपर ले लिया, यज्ञ परिवार को यह उम्मीद नहीं रही कि हर साल यज्ञ और भोज प्रधान जी ही सम्भालेंगे। इस बार २३ २४ जनवरी और २५ जनवरी १९५९ को गायत्री महायज्ञ स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज के आचार्यत्व में श्री प०राम लगन जी उपदेशक आर्यसमाज मारिशस ने कराया। गायत्री महायज्ञ के प्रमुख यजमान श्री रामचरित्र जी भोगन थे। यज्ञ और प्रीति भोज का समस्त व्यय इस बार भी श्रीरामचरित्र जी का ही था। कार्यक्रम इस प्रकार था।

दिनांक २३ १ १९५९ शुक्रवार सायकाल ५ से, साढ़े ६ बजे तक यज्ञ सामान्य प्रकरण इसके बाद यजुर्वेद के पुरुष सूक्त के मन्त्रों तथा गायत्री मंत्र से हुआ। रात्रि में आठ से भजन और साढ़े आठ बजे से दस बजे तक धर्मोपदेश होता रहा रविवार दि० २५ जनवरी १९५९ ई० के प्रातः साढ़े आठ बजे यज्ञारम्भ से पूर्व यज्ञोपवीत परिवर्तन हुआ तथा यज्ञोपवीत क्या है क्यों लिया जाता है इसकी व्याख्या हुई। ठीक ९ बजे यज्ञारम्भ उपर्युक्त प्रकार से हुआ कि यज्ञ परिवार के सदस्य जो वेदी के बाहर थे उन सबने आकर गायत्री मन्त्र से दस दस और ओ३म् स्तुता मया वरदा माता: आदि मन्त्र से एक एक आहुति दी। इसके बाद उपस्थित नर नारियों ने वेदी की परिक्रमा कर गुरुमन्त्र से आहुति दी। तत्पश्चात् पूर्णाहुति हुई। यह सब कार्यक्रम साढ़े दस बजे समाप्त हुआ। यज्ञ से निवृत कर भोज प्रारम्भ हुआ। श्री रामचरित्र भोगन जी, का प्रबन्ध सराहनीय था। सहस्त्रों की संख्या मे नर नारी एक बजे तक सब भोजन कर चुके कि सब लोग पण्डाल में आगये। नये भारतीय कमिश्नर श्रीमान जगन्नाथ धमीजाजी का स्वागत श्री रामचरित्र भागन जी ने पुष्पमाला से और उनकी धर्मपत्नी जी ने कुमारी चन्द्रन्ती जी का स्वागत पुष्प भरी डलिया से किया इस सम्मान को भारतीय कमिश्नरजी धन्यवाद देते हुए कहा कि यज्ञ संसार के कल्याण की चीज है और अपने को अहो भाग्य माना कि गायत्री महायज्ञ में भाग लेने का मौका मिला। श्रीमती धमीजाजी ने यज्ञ प्रेमियों की सराहना की और प्रभु भक्ति सफल साधन बताया।

श्री प० शिवदत्त जी विद्यावाचस्पति ने गायत्री की महिमा पर सुन्दर भाषण दिया। अन्त मे पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज का गायत्री से लेकर अध्यात्म तथा चरित्र निर्माण विषय पर सार पूर्ण हृदय-ग्राह्य भाषण हुआ। श्रीमान् भारतीय कमिश्नर से लेकर उपस्थित सभी नर और नारियां बड़े प्रभावित हुए। उसी क्षण प्रधान श्री रामचरित्र भागन जी ने साढ़े तीन सौ रुपये विविध संस्थाओं का दान दिया जिसकी स्वामी जी ने धन्यवाद पूर्वक घोषणा की यज्ञ का कार्य शांतिपाठ में समाप्त हुआ, यज्ञ परिवार की ओर से प्रधान श्री रामचरित्र भोगन जी को हार्दिक धन्यवाद देता हुआ जगत्-पिता से प्रार्थना करता हूं कि इनकी आयु, सम्पत्ति, शक्ति, श्रद्धा, तथा उदारता की सदा वृद्धि हो और पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज आयुष्मान होकर हमारे बीच में रहें। इन दोनों से संसार का बड़ा कल्याण होने की आशा है।

वेदोपदेश

तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः । सनो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णोऽअघायतः समस्मात् ॥ यजु०

हे स्वयं आप्रकाश्यमान तथा दूसरों को प्रदीप्त करने वाले ईश्वर ! पूर्वोक्त गुणयुक्त तुमको हम अपने सुख के लिए तथा मित्रों के हित के लिए निरन्तर प्राप्त होते हैं । ऐसे आप हमको ज्ञान दें । हमारी प्रार्थना को सुनें एवं समस्त अपकारी जनों से हमारी रक्षा करें ।



लखनऊ—५, अप्रैल १९५९ दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि-संवत् १९७२९४९०५८

आर्यसमाज की अमरता के लिए

विश्व की संत्रस्त मानवता जिस भौतिकवादी मृगतृष्णा के मिथ्यात्त्व में भ्रमित है उसका समाधान मानवात्मा की एक रूपता और आध्यात्मिक मूल्याङ्कन में ही निहित है । विज्ञान के चरमोत्कर्ष ने आज मानव को भौतिकवाद और अध्यात्म सागर के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है । यद्यपि भौतिक चकाचौंध मे मानव पथ से भटक गया है पर वह आणुविक विनाश की सम्भावनाओं का मुकाबला करने के लिये अध्यात्म के अरुणोदय के महत्त्व को हृदयङ्गम कर रहा है ।

पश्चिम के विज्ञान ने यदि मानवता को भौतिक सुखों का वरदान अवश्य दिया पर बिना अध्यात्म के आज वह वरदान अभिशाप बन रहा है । मानव-एकता के समर्थक भारत के ही पास इस संकट का समाधान है और आर्यसमाज भारत के उस वैदिक अध्यात्म-सन्देश का दूत है । इस दृष्टिकोण से आज आर्यसमाज के महत्त्व और उसकी उपयोगिता पर आर्यसमाज के अनुयायियों को विचार करना चाहिए ।

महर्षि दयानन्द ने जब आर्यसमाज की स्थापना की थी भारत की स्थिति बहुत विषम थी । धार्मिक अंधविश्वास, सामाजिक रूढ़िवाद, अज्ञानता और स्वार्थान्धता की धुन्ध सम्पूर्ण राष्ट्र पर छायी हुई थी, तब ऋषि ने विदेशी दासता के विरुद्ध स्वदेशी राज्य के महत्त्व की घोषणा की और स्वराज्य का शंखनाद सुप्त कर्ण कुहरों में फूक कर राष्ट्र-शूरों को जगाने का प्रयत्न किया । अन्धविश्वासों, मिथ्या रूढ़ियों के पाखण्ड पर्वतों को नष्टकर समता की सीख देकर भारतीय बन्धुत्त्व-भावना का विकास किया और नष्ट होती चली आ रही आर्य जाति की रक्षा के लिये कर्मणा वर्ण-व्यवस्था, शुद्धि शिक्षा और नारी जाति को समानाधिकार की घोषणा कर अभेद्य दुर्ग प्राचीरों का निर्माण किया । अपनी स्पष्टवादिता, राष्ट्रीयता एवं न्याय-प्रियता, आदर्शवादिता एवं उच्चतम आस्तिक भावना के लिये संस्थापक ने पत्थर खाये, साँप गले मे पहने, अनेक बार विष खाया और अन्त में शहीद हो गये !

इस महान् बलिदान की सच्ची ज्योति आर्यसमाज है जिसका उद्देश्य, उसके संस्थापक ने संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, घोषित कर अपना विश्व-बन्धुत्त्व का भावना का परिचय दिया । आज ८४ वर्ष से आर्यसमाज के सदस्यों पर इस महान् आदर्श की पूर्त्ति का दायित्त्व है । आर्यसमाज स्थापना दिवस के सुअवसर पर प्रत्येक आर्य को अपने हृदय से इस प्रश्न का उत्तर मांगना चाहिए कि हम इस आदर्श की पूर्त्ति मे कितने सफल हो रहे हैं । यदि कोई कमी या कठिनाई है तो क्या है । हमारी दृढ़ धारणा है कि आत्म निरीक्षण के इस कार्य द्वारा आर्य बन्धु अपने में एक नवीन उत्साह और प्रेरणा की भावना अनुभव करेंगे । संसार का उपकार करने वाली सेना के सदस्यों का जीवन भोगी-विलासी, क्रोधी, ईर्ष्यालु, झगड़ालू कभी नहीं रह सकता । उनका जीवन तो आदर्श, तपस्वी, त्यागी, कर्मण्यता, आस्तिकता, स्नेह, दया, अहिंसा के उदात्त आदर्शों से ओतप्रोत ही होना चाहिए ।

आज हमारे जागरण की सिंहावलोकन की वेला आई है । ऋषिवर अपने शिष्यों, उत्तराधिकारियों से देश के, समाज के, मानव जाति के अज्ञान-अन्याय अभाव की पूर्ति के लिये तप त्याग की भिक्षा मांग रहे हैं । हम अपने जीवन में आर्यत्त्व का विकास करके ही गुरु दक्षिणा देने के अधिकारी बन सकेंगे और अपने जीवन से निकलने वाली आर्यत्त्व की (चरित्र की) सुगन्ध से विश्व-वाटिका को सुवासित कर सकेंगे । आर्यसमाज की अमरता का नारा तभी सफल हो सकेगा ।

सभा का वृहदधिवेशन और प्रतिनिधि

गत अन्तरङ्ग सभा ने आगामी वृहदधिवेशन की तिथियों और स्थान की घोषणा कर दी है । इस सूचना के पश्चात् समाजों पर एक विशेष दायित्त्व आ जाता है कि वे अपनी सजगता एवं उत्साह भावना का परिचय दें और वृहदधिवेशन के लिये प्रतिनिधियों को अधिक अधिक संख्या मे भेजें जिससे प्रान्त के अधिकतम प्रतिनिधि उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज संघटन की समस्याओं एवं प्रचार आदि की भावी योजनाओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर सकें ।

सम्प्रति सभा की शाखा समाजों की संख्या १००० से अधिक है । यदि प्रत्येक समाज का एक प्रतिनिधि भी अधिवेशन में सम्मिलित हो तो १००० प्रतिनिधि पहुँचने चाहिये परन्तु ज्यों ज्यों समाजों की संख्या बढ़ती जाती हैं त्यों-त्यों प्रतिनिधियो की संख्या नहीं बढ़ रही है । इस प्रश्न पर समाजों को विचार करना चाहिये और अपने प्रतिनिधियों को भेजकर संघटन की भावना का परिचय देना चाहिये । प्रतिनिधियों की अधिकतम संख्या से प्रांतीय केंद्रीय संघटन पर भी उसका प्रभाव होता है और प्रान्त की प्रतिष्ठा राष्ट्र-व्यापी ही नहीं सार्वदेशिक महत्त्व प्राप्त करती है ।

आशा है प्रान्त को आर्यसमाजें और उनके प्रतिनिधि संघटन की सुदृढ़ता एवं वृद्धि के लिये अपने दायित्त्व को अनुभव करेंगे और कर्त्तव्य-पालन करने के लिये अभी से सचेष्ट रहेंगे । प्रतिनिधियों की संख्या ही हमारे इस निवेदन का सही उत्तर होगी और तभी प्रतिनिधियों की कर्त्तव्य भावना का वास्तविक परिचय प्राप्त हो सकेगा ।

आर्यसमाज और विदेश-प्रचार

आर्यसमाज और विदेश-प्रचार समस्या विषयक लेख में उपाध्याय जी ने जिन वास्तविक तथ्यों का निरूपण किया है और आर्यसमाज का कर्त्तव्य निर्धारण किया है उस पर आर्यजगत में गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए । हम बहुत समय से इस आवश्यक विषय की ओर पाठकों का ध्यान टिप्पणियों, लेखों आदि द्वारा आकृष्ट करते रहे हैं । अब वह समय आगया है कि जब विदेश-प्रचार को केवल हमारे मंच की शोभा का विषय न मानकर एक वास्तविक तथ्य के रूप मे स्वीकार किया जाना चाहिये । कृण्वन्तो विश्वमार्यम को केवल नारे के रूप में ही नहीं, व्यावहारिक रूप में ही लाना होगा । हम उपाध्यायजी के इस सुझाव का प्रबल समर्थन करते हैं कि सार्वदेशिक सभा विदेश प्रचार-उपसमिति का निर्माण करे । समिति की रूप रेखा और कार्य-प्रणाली क्या हो इस प्रश्न पर अभी से विचार विमर्श आरम्भ हो जाना चाहिये जिससे सार्वदेशिक सभा के आगामी अधिवेशन में इस महत्त्वपूर्ण कार्य का आरम्भ हो सके । मित्र इस सम्बन्ध में आर्य जगत् के विचारों का सहर्ष स्वागत करेगा और अपनी ओर से भी सुझाव और परामर्श द्वारा सहयोग प्रदान करता रहेगा । आशा है आर्य जगत् के कर्णधार इस समस्या को वास्तविक एवं व्यावहारिक रूप देने का कर्त्तव्य पालन करेंगे ।

जयन्ती-योजना और कर्त्तव्य पालन

अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार जयन्ती-समारोह, गुरुधाम-शिलान्यास अभिनन्दन कार्यों के लिए दीपावली का समय घोषित किये जाने के पश्चात् हमारे पास प्रान्त के और विदेश के प्रवासी भाइयों के पत्र मिले है जिसमें उन्होंने अपने चिर प्रतीक्षित स्वप्न की पूर्त्ति को कुछ समय के लिए बढ़ाये जाने पर अपनी प्रतिक्रियायें लिखा है । हम उन तथा उनके समान भावना रखने वाले सभी आर्य बन्धुओं का हार्दिक धन्यवाद करते है और उन्हें बधाई देते हैं कि उनकी भावनात्मक प्रेरणा हमारे लिए सदैव बलदायिनी सिद्ध होगी । तिथियों मे परिवर्त्तन प्रत्येक दृष्टि से व्यावहारिक और उपयोगी सिद्ध होगा । जयन्ती की सफलता के सभी शुभचिन्तकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे अपने-अपने क्षेत्र मे गुरु विरजानन्द-स्मारक, अभिनन्दन, आर्यमित्र आदि कार्यों की उपयोगिता प्रसार का प्रयत्न करें । जयन्ती के सफलता के लिए समय का जो अमूल्य सुअवसर प्राप्त हुआ है उससे लाभ उठाकर हमें जयन्ती को अविस्मरणीय एवं अभूतपूर्व ऐतिहासिक सीमान्त का रूप देने में कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिये । आशा है जयन्ती के कार्यकर्त्ता इस सुअवसर को अपने दायित्त्व की पूर्ति में प्रयुक्त करेंगे ।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

पंजाब की भाषा-समस्या और आर्यसमाज की सद्भावना

२७ दिसम्बर ५७ के पश्चात् कितना लम्बा समय बीत चुका है पर अभी तक पंजाब की भाषा समस्या के समाधान में सरकार को सफलता नहीं मिली। उधर अधीर आर्यजनता अपने नेताओं से बारम्बार पूछती है, क्या हो रहा है, क्या हमें संघर्ष करना ही पड़ेगा?

आर्यसमाज के नेताओं ने जिस गम्भीरता और सद्भावना का परिचय दिया है उसका उदाहरण सत्याग्रह के इतिहास में अन्यत्र ढूंढे न मिलेगा। अब शनै. शनै. स्थिति में परिवर्त्तन और अनुकूलता का आभास मिलने लगा है। पिछले नवम्बर में राज्यपाल गाडगिल की अपील पर सा० भाषा-स्वातन्त्र्य समिति ने इस प्रश्न पर तीन मास पश्चात् विचार करने का निर्णय किया था। तीन मास समाप्त होते होते प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने चण्डीगढ के भाषण में भाषा समस्या को राजनतिक रूप में न सुलझाकर शिक्षा शास्त्रियों द्वारा सुलझाये जाने का सुझाव प्रस्तुत किया है। यही विचार आर्यसमाज के आन्दोलन का केन्द्र-बिन्दु रहा है। इसी प्रकार पंजाब के शिक्षामन्त्री श्री पं० अमरनाथ जी ने भी भाषा समस्या के समाधान के प्रति राज्य की उत्सुकता और तत्परता का विश्वास दिलाया है और पंजाब के राज्यपाल श्री गाडगिल ने सरकार की सद्भावना समिति की रिपोर्ट २० अप्रैल तक आ जाने का आश्वासन दिया है तथा स्वयं भी समस्या के समाधान के लिए हल सोच चुके हैं ऐसा वक्तव्य दिया है। इस वातावरण की स्थिति में सात मार्च को सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने गम्भीरतापूर्वक विचार विमर्श कर जो प्रस्ताव पास किया है उससे आर्य समाज की सहनशीलता और संयम भावना पुनः प्रकट होती है।

वास्तव में आर्यसमाज संघर्ष के लिए संघर्ष का कभी समर्थक नहीं रहा वह सद्भावना, स्नेह और सौख्य का हामी रहा है। सत्याग्रह से पूर्व उसने सद्भावना का प्रदर्शन किया, सत्याग्रह में भी सद्भावना में किसी प्रकार कमी नहीं आने दी और सरकार को समस्या सुलझाने को पूर्ण अवसर दिया। सद्भावना के नाम पर ही सत्याग्रह स्थगित किया और सद्भावना के नाम पर ही आज भी विचार विमर्श कर रहा है। सरकार की सद्भावना का हम अन्तिम सीमा तक अपनी सद्भावना प्रदर्शन कर स्वागत करेंगे। आर्यसमाज संघर्ष नहीं, समस्या का हल चाहता है। आज सरकार इस स्थिति को स्वीकार कर कार्य कर रहा है कि भाषा-समस्या है अवश्य और जब समस्या है तो समाधान भी निकल ही आयेगा। आर्यसमाज सद्भावना द्वारा समाधान में सहयोग देना चाहता है। इस दृष्टि से मई तक के लिए इस प्रश्न के पुनर्विचार को स्थगित करने के सा०भा० स्वा० समिति के निश्चय का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आशा है सरकार समय और अवसर का लाभ उठा सकेगी।

स्व० बाबू परमेश्वरीसहायजी

आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्त्ताओं का विछोह निरन्तर असह्य बनता चला जा रहा है। गत २६ जनवरी को आगरा निवासी बाबू परमेश्वरी सहायजी के आकस्मिक निधन से हमारे बीच से एक कर्मठ आर्य उठ गया। उनका वियोग आगरा ही नहीं, अपितु प्रान्तीय सभा और मित्र परिवार के लिए भी एक दुखद घटना है। आगरा की सभी सामाजिक गतिविधियों, संस्थाओं आदि में वे सक्रिय सहयोग देते रहे। उनका वैधानिक परामर्श सम्बन्धी सहायता से आर्यसमाज सदैव लाभ उठाता रहा है। इस शोकावसर पर हम मित्र परिवार और सभा की ओर से उनके पारिवारिकों के प्रति हार्दिक शोक समवेदना प्रकट करते हैं और प्रभु से उनकी सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

नैपाल में आर्यसमाज-आन्दोलन की कठिनाइयाँ

(लेखक—श्री धर्मरत्न यमि, नैपाल)

नैपाल आज भी १३ वीं सदी का एक कट्टर सनातनी पौराणिक देश है। यहाँ आज भी विजयदशमी रामनवमी, चैत्र चतुर्दशी आदि पर्वों पर राजा प्रजा की ओर से देव देवी के नाम पर लाखों भैंसा, बकरा, भेड़ा, सूकर बलिदान के रूप में काटे जाते हैं, जिसको राजा एवं प्रजा मोक्षदायक पवित्र आर्य संस्कृति का ही कर्म कांड मानते आये हैं। कहीं कहीं तो प्रच्छन्न रूप से नर बलि भी चलती है, कहीं-कहीं देव-देवी के नाम पर सांप, बिच्छू, कबूतर, बकरा, भैंसा भी धधकती हुई यज्ञ कुण्ड की आग में जिन्दा जलाया जाता है। वर्तमान नवयुवक राजा जब हाल ही में देश भ्रमण के लिए गए तो जगह जगह की देवियों को पंचबलि अर्थात् भैंसा, बकरा, भेड़ा, मुर्गा, हंस की बलियां चढ़ाते गए।

एक मात्र स्वतन्त्र हिन्दू देश में जो हिन्दू धर्म और आर्य संस्कृति के नाम पर प्राणी हिंसा होती है उतनी शायद ही कहीं दूसरे देश में होगा। अब रही जातियों की छुआ छूत की बात। करीब ६ सौ वर्ष पहले ब्राह्मणों ने यहाँ 'थिति बन्देज' के नाम से वर्ण, जाति एवं छुआ छूत की प्रथा को राजकीय आज्ञा एवं कानून से जनता के ऊपर लादा था। इससे आगे यहाँ महायानी बौद्धों का प्रभाव था। आज इसका रूप इतना भयावह हो गया है कि एक दूसरे नैपालियों की रोटी बेटी का सम्बन्ध तो है ही नहीं, एक के हाथ का सिगरेट दूसरे नहीं पीते हैं। भूत प्रेत, पिशाच, डांकिनी, जोगिनी, देवी देवों की तो बात क्या लिखूं पेड़ पेड़ में देवता, नदी नाला, नोकदार पत्थर पूजा जाने लगा है। उनके ऊपर भैंसा, बकरा को काट कर खून का तर्पण देते हुए दूसरे देश के लोग देख लेते हैं तो दाँतों तले अंगुली दबाकर चले जाते हैं। यहाँ इसी का नाम हिन्दू धर्म एवं आर्य संस्कृति है।

प्रबल प्रख्यात आर्य क्रान्तिकारी स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का सत्यार्थप्रकाश में वर्णित वाममार्गियों की करतूत का साक्षात् रूप जो देखना है तो हमारे हिन्दू देश नैपाल आइएगा। मन्दिरों के चौरासी दूना एक सौ अड़सठ आसन वाले चित्र खुले बाजार में आपको देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

सत्यार्थप्रकाश जैसा सच्चा आर्य ग्रन्थ यहाँ १९५१ ई० तक कानूनी ढङ्ग से देखना, रखना और प्रचार करना निषिद्ध था। आर्य समाजी होने के नाते माधवराज शास्त्री को नारकीय सजायें पानी पड़ी थीं और उनके पुत्र प्रसिद्ध आर्य-समाजी शुक्रराज शास्त्री को फाँसी मिली! किन्तु आर्यसमाज का जो गौरवमय वरदान भारत को मिला है वह हमारे इस पिछड़े सामंत द्वारा उत्पीड़ित देश नैपाल को भी प्राप्त है। वह है देश को विदेशी एवं देशी गुलामी से मुक्त करने का प्रोत्साहन।

विगत नवम्बर १९५१ ई० की क्रान्ति तक जितने भी शहीद हुए उनमें बहुसंख्यक आर्यसमाजी ही थे। आज भी जितने भी देश की दुर्दशा का खातमा करने के लिए तुले हुए हैं उनमें भी ज्यादा आर्यसमाजी हैं, अथवा आर्य-समाज से प्रभावित हैं। राणा तानाशाही के बाद जो विदेशी प्रभावित पार्टियाँ हैं वे भी माथा ही

(शेष पृष्ठ १४ पर)

डा. वृजेन्द्रस्वरूप का देहांत

दुःख है कि कानपुर के प्रसिद्ध वकील, विधान परिषद् के भूतपूर्व सदस्य और आर्यसमाज के गण्य मान्य नेता डा० वृजेन्द्रस्वरूप का ८४ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। आप बहुत दिनों से अस्वस्थ थे। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति और शोक सन्तप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करे।

जीवन का आदर्श

अपकार करो न किसी का कभी, सबसे सुसनेह निभाया करो।
छल द्रोह प्रपंच से दूर रहो सुख शान्ति समृद्धि बढ़ाया करो॥
गुण गाया करो गुणवानों के नित्य नया नया भाव जगाया करो।
कवि 'देवप्रकाश' प्रकाश के हेतु उदार हिये को बनाया करो॥

वीरव्रती बन के जग में निशिवासर जीवन ज्योति जगाओ।
दीन दुखी निबलों के सहायक हो जग के सब दुःख मिटाओ॥
'देवप्रकाश' करो पथ में, गतिवान बनो सुख शान्ति बढ़ाओ।
देकर योग विकास के कार्य में सुख वैभव के सुख साज सजाओ॥

—श्री देव प्रकाश शास्त्री इटावा

भावना

जागेगा जवानियों की शक्ति का विशाल काम
जागेगी सकल्प की कठोरतम चाहना।
जागेगा ही आर्य संस्कृति का महानरूप,
जागेगी ही शासकों की सर्वश्रेष्ठ कामना
जागेगा ही साथियों में भइयों का भ्रातृ भाव,
जागेगी ही भारती में सर्व भक्ति भावना।
जागेगा कमाल किन्तु जागेगा न हीन भाव,
जागेगी न धर्म की विचारहीन यातना।

—कोमलसिंह वर्मा 'नवेला'

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

९ से १५ अप्रैल तक मनाया जायगा

आर्यजगत् में भारी उत्साह और तैयारियां हो रही हैं

विशेष—कार्यक्रम

१—*दीक्षान्त भाषण* (१३ अप्रैल प्रातःकाल)
प्रधान मन्त्री श्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू देंगे।

२—*शिक्षा-सम्मेलन* (१३ अप्रैल दोपहर बाद)
सभापति—केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री श्री के० एल० श्रीमाली।

३—*राष्ट्रभाषा-सम्मेलन* (१२ अप्रैल दोपहर बाद)
सभापति—श्री बी० बी० केसकर, सूचना एवं प्रसार-मन्त्री भारत-सरकार।

४—*गुरुकुल-सम्मेलन* (१४ अप्रैल दोपहर बाद)
सभापति—माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त

५—*संस्कृति-सम्मेलन* (१५ अप्रैल दोपहर बाद)

जयन्ती समारोह में १—श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज (प्रधान सार्वदेशिक सभा), २—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी, ३—श्री अनगूराय जी शास्त्री, ४—श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी, ५—श्री पं० नरेन्द्र जी (हैदराबाद), ६—श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले, ७—श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती, ८—श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा, ९—श्री बनारसीदास जी चतुर्वेदी, १०—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, ११—डा० मङ्गलदेव शास्त्री आदि अनेकों विद्वान् भाग ले रहे है।

यह जयन्ती अपने ढंग की अद्वितीय होगी

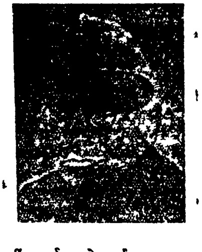
आर्यजगत् के १५ माननीय नेताओं ने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए एक सम्मिलित अपील की है। जिसमें आर्यसमाजों से मुक्तहस्त होकर दान देने का अनुरोध किया गया है। इस गुरुकुल ने आर्यसमाज की जो सेवा की है उसे ध्यान में रखते हुए बडी आर्यसमाजों को सामर्थ्यानुसार पांच सौ एवं ढाई सौ और छोटियों को एक सौ एक रुपया जरूर भेजना चाहिए।

जयन्ती-महोत्सव में भाग लेने वाले महानुभाव अभी से अपने स्थान की व्यवस्था के लिये भी सूचना दें अन्यथा समय पर प्रबन्ध करना कठिन हो जायगा।

नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ
कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

आर्यसमाज और विदेश-प्रचार की समस्या

(श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए.)



गत मासों में मैं कई लेख इस विषय पर दिल्ली के प्रसिद्ध उर्दू साप्ताहिक रिफार्मर म लिख चुका हू। आजकल आर्यमित्र में भी तद्विषयक आलोचना देखकर मुझे यह प्रेरणा हुई कि मैं भी अपने विचार प्रकट करू। मुझे बहुत दिनों से यह लग रहा है कि आर्यसमाज की केन्द्रीय सस्थाओं ने इस विषय पर कभी गम्भीर विचार नहीं किया और न कुछ प्रगति की। यही नहीं, जब जब यह प्रश्न उठाया गया तो सदैव उपेक्षा की गई

मेरा यह तात्पर्य नहीं कि विदेशों में आर्यसमाज नहीं हैं। सार्वदेशिक सभा के वार्षिक विवरण के पढ़ने से ही ज्ञात हो जायगा कि भूमण्डल के अनेक भागों में आर्यसमाज हैं। कहीं कहीं विशाल मन्दिर और उच्चकोटि की पाठशालायें हैं। उत्सव होते हैं और सबसे बढ़िया बात यह है कि जब भारत में आर्यसमाज कोई आन्दोलन खड़ा करता है तो हजारो रुपये विदेश के समाजों से प्राप्त हो जाते हैं।

परन्तु आप क्या इसको विदेश प्रचार कहेंगे? उन देशो में जाकर तो देखिये। क्या उन समाजों में कोई विदेशी (उन देशो का रहने वाला) भी सदस्य है? क्या उन विशाल सस्थाओं में उन देशो के रहने वाले लड़के लड़कियां भी पढते हैं? क्या वहा की भाषाओं म सत्यार्थप्रकाश या अन्य कोई धार्मिक पुस्तक है? क्या उन देशों के लोग आर्यसमाज या स्वामी दयानन्द के विषय मे कुछ भी जानते हैं? क्या उन देशों के आर्यसमाज कोई ऐसा उत्सव मनाते हैं जिसमे वहा वालो का वैदिक धर्म की ओर आकर्षित किया जा सके? यदि नहीं तो विदेश प्रचार कैसा? और उस पर अभिमान करने का क्या अर्थ? मुझे याद है कि लगभग ४० वर्ष हुए एक भारतीय सज्जन का एक लड़का जो बैंकाक म उत्पन्न हुआ था, गुरुकुल वृन्दावन म पढ़ता था और हम लोग अभिमान पूर्वक कहा करते थे कि गुरुकुल वृन्दावन म बैंकाक तक के विद्यार्थी पढ़ने हैं, यह 'तक' शब्द का अयथार्थ प्रयोग हो था। देवबन्द (सहारनपुर) के अरबी विद्यालय में मिस्र तक के लोग पढ़ने आते हैं। यह यथार्थ बात है क्योंकि यह लड़के उन्हीं देशों के निवासी हैं। भारतीय नहीं, बर्मा की मस्जिदो म बर्मी मुसलमान मिलेंगे। गिरजों में बर्मी ईसाई मिलेंगे। बर्मी भाषा म इस्लाम और

आर्यसमाज का "उद्देश्य ससार का उपकार करना" सुविदित है और इसी आधार पर हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा लगाते रहे हैं परन्तु क्या आर्यसमाज के विचार, सिद्धान्त और उद्देश्य विदेशी जनता के मानस का स्पर्श कर सके हैं। आज ससार हिंसा और द्वेष की भट्टी में सतप्त है, शान्ति और सुख की खोज में सतृष्ण नेत्रों से निहार रहा है। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे का आदर्श सम्मुख रखने वाले आर्य जन ही मानवता की प्यास बुझा सकते हैं।

श्रद्धेय उपाध्याय जी ने इस सामयिक एव महत्त्वपूर्ण कर्तव्य की ओर आर्यजगत का ध्यान आकृष्ट किया है। उपाध्याय जी के इस प्रस्ताव का हम हार्दिक समर्थन करते हैं कि शीघ्रातिशीघ्र सार्वदेशिक सभान्तर्गत विदेश प्रचार समिति की स्थापना की जाय और विदेश प्रचार का कार्य सुनियोजित एव सुव्यवस्थित ढग से आरम्भ किया जाय। विदेशी भाषाओं में साहित्य निर्माण और उपदेशकों को तय्यार कर प्रचारार्थ भेजने आदि का दायित्व इस समिति के सुपुर्द रहना चाहिये। आशा है सार्वदेशिक सभा इस प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेगी। हम आदरणीय उपाध्याय जी से इस दिशा में पथ प्रदर्शन करते रहने का विनम्र निवेदन करते हैं। —सम्पादक

सामयिक समस्याएँ

ईसाइयत पर पुस्तके मिलगी। परन्तु गत छ सात दशाब्दियों से उन देशो में आर्यसमाज हैं। बर्मी भाषा में एक पुस्तक नहीं। बर्मी एक सदस्य नहीं। बर्मियों में जानकारी उत्पन्न करने का एक भी साधन नहीं और न किसी को चिंता। एक घटना सुनादू। माडले समाज के एक वार्षिकोत्सव में मैं भी उपस्थित था। एक भजन गाया गया — यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।' मैंने व्याख्यान में कहा कि जो लोग माडले की सामग्री और माडले के घी से जालधर या होशियार पुर को सुगन्धित करना चाहते हैं वे विदेशों म वैदिक धर्म का क्या प्रचार करेंगे? उनके समाज अपने निज के लिए हैं, उनकी पाठशालाये अपने बच्चो के लिए हैं। उन देशो के लिये नहीं। इसका परिणाम देखो। जब अंगरेज ईसाई बर्मा से चले गये तो बर्मी ईसाइयों ने गिरजे सम्भाल लिए। जब भारतीय आर्य वहाँ से भागे तो उनके समाज नष्ट हो गये। इसका कारण यही है कि विदेश के आर्यसमाजों का 'विदेशियों' से कोई सम्बन्ध नहीं।

यह अवस्था क्यों हुई? इसलिए—

(१) कि विदेश प्रचार को कोई योजना हमारी केन्द्रीय सभाओं ने नहीं बनाई। जो आर्य व्यापार या नौकरी के लिए विदेश गये उन्होंने अपनी धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समाज खोले।

(२) उनको केन्द्र से विदेश प्रचार के लिए कोई उचित आदेश या निर्देश नहीं दिये गये।

(३) हमने अपने व्यय से कभी कोई उपदेशक नहीं भेजे। जो विद्वान् यात्री बनकर उन देशों में गये उन्होंने अपने लाभार्थ कुछ काम किया और हमने कभी कभी उनके द्वारा किये काम का झूठा श्रेय अपने ऊपर ले लिया।

(४) भारतीय सस्थाओं के कुछ धन इकट्ठा करने वाले वहाँ गये और अपने विशेष साधनों द्वारा लाखों रुपये ले आये। परन्तु 'विदेशियों' से उनका कोई सम्बन्ध नहीं।

(५) हमारी सभाओं की जानकारी उन विदेशस्थ देशी समाजों के विषय म बहुत कम है, केवल कार्यालयों में डाक के पते हैं। उन पर विचार करने के लिए कोई विशेष मन्त्री या विशेष उपसमिति नहीं है। जब कोई आन्दोलन होता है या वार्षिक रिपोर्ट छापनी होती है तो हमारे कार्यालय क क्लर्क अपनी योग्यतानुसार पत्र व्यवहार कर देते हैं और ससार म डुगडुगी पिट जाती है कि आर्यसमाज भूमण्डल पर छाया हुआ है। यश भी मिल गया और धन भी और कार्य कुछ न हुआ। हर्रा लगा न फिटकरी, रंग आ गया चोखा।

(६) कहीं, कहीं 'देश विदेश प्रचार फण्ड' भी हैं। परन्तु इनको भी हमारे नीति निपुणता का चमत्कार ही समझिये। देश' और 'विदेश' दोनों शब्द जुड़े हुए हैं। यदि ५०००) धन आया तो ४९९९) देश पर व्यय हो गया। १) विदेश पर। क्योंकि दान तो घर से ही आरम्भ होता

[शेष पृष्ठ ११ पर]

संन्यासी—वानप्रस्थी ध्यान दें

मानवता का प्रतिदिन ह्रास होते देखकर इस बात की आवश्यकता अनुभव की जा रही है कि वेदानुसार मानव को मानवता की ओर लाने के लिये एक विशेष प्रयत्न किया जाये और वह यह कि कुछ सन्यासी तथा वानप्रस्थी महानुभावो को एक दो वर्ष एक शिक्षा केन्द्र में रखकर उन्हे योग साधना की शिक्षा दी जाये, जहाँ वेद तथा महर्षि दयानन्द सम्बन्धी साहित्य से भी अवगत किया जाये, और फिर उन्हे कार्य क्षेत्र में भेज दिया जाये और जब कार्य करते हुए महानुभाव कुछ थकावट अनुभव कर तो उन्हे फिर केन्द्र में रखकर उनकी सेवा की जाये, प्रारम्भ पाच महानुभावों के निवास, उचित खान पान तथा शिक्षा का प्रबन्ध किया गया है, जो मीठे सुन्दर स्वभाव वाले स्वस्थ, पठित सन्यासी, वानप्रस्थी, इस पवित्र कार्य में भाग लेने के इच्छुक हों वह मुझसे पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

—आनन्द स्वामी सरस्वती तपोवन देहरादून

सिंहावलोकन

आर्यसमाज अमर है

[श्री प० रघुनाथप्रसाद पाठक, सम्पादक सार्वदेशिक, देहली]

[साधारणत यह धारणा बढ़ती जा रही है कि अब आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं रही परन्तु यह तथ्य नहीं भ्रम है। आर्यसमाज का आरम्भ संसार से अन्याय अज्ञान और अभाव को नष्ट करने के महान् लक्ष्य को लेकर हुआ था और वह अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगा। आर्यसमाज की आवश्यकता एक तथ्य है और उसकी सफलता के लिए प्रयत्न करना प्रत्येक आर्य का कर्तव्य। आर्यसमाज स्थापना दिवस का यही पवित्र सन्देश है। —सम्पादक]

आर्यसमाज स्थापना दिवस आर्यसमाज की सफलताओं और विफलताओं की जाँच पड़ताल करने, अपनी त्रुटियों पर मनन करके उनको दूर करने और अपने को सर्वात्मना आर्यसमाज की सेवा पर अर्पण करने का संकल्प लेने का दिवस है।

आर्यसमाज ने देश और मानव समाज की धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनैतिक काया पलटने का सफल और स्तुत्य कार्य किया है। लोग धर्म के अधिकाधिक निकट आयें, इसके लिए हमे और अधिक परिश्रम करना होगा। क्योंकि लोग भौतिकवाद की चमक से प्रभावित और पराभूत होकर धर्म से बहुत दूर जा पड़े हैं और दूर होते जा रहे हैं।

आर्यसमाज ने धर्म के क्षेत्र में बुद्धिवाद को प्रतिष्ठित करने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष बहुत योग दिया है। धर्म को दार्शनिक महत्ता से अलंकृत किया है। विज्ञान ने भी अपना चमत्कार दिखाया। परन्तु उसने मानव हृदय के रस को सुखा दिया है। आर्यसमाज का यह महान् दायित्व है कि वह मानव के इस रस को पुन प्रवाहित करने अर्थात मानव में अध्यात्म तत्त्व को प्रतिष्ठित करने के गुरुतर कार्य को पर्याप्त प्रगति दे। दार्शनिक धर्म और अध्यात्म तत्त्व के प्रतिष्ठित होने में ही मानव का सुख और महाविनाश से उसकी रक्षा संभव है। आज मानव का हृदय भौतिकवाद की चमक और उसके प्रसादो से तंग आ गया, और मानसिक शान्ति के लिए छटपटा रहा है।

समाज को सुखी और उन्नत बनाने में आर्यसमाज का योग नगण्य नहीं है। आर्यसमाज ने व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता पर और उसकी पवित्रता पर बल दिया और दोनो का क्षेत्र चिह्नित कर दिया है। समाज की अग्नि में उसकी पवित्रता और स्वतन्त्रता को भस्मसात होने से रोका, और व्यक्ति को समाज पर छा जाने के विरुद्ध आवाज बुलन्द की। आज एक ओर समाज पर व्यक्ति की बलि चढ़ाई जा रही है और दूसरी ओर मुट्ठी भर व्यक्ति समाज को मन चाहा नाच नचा रहे हैं। इसी कारण व्यक्ति और समाज एक दूसरे के विनाश के भयकर व्यापार में रत हैं। आर्यसमाज को इस व्यक्ति और समाज के विनाशकारी द्वन्द्व को रोकने में अपना बड़ा से बड़ा योग देने के लिए सन्नद्ध हो जाना चाहिये और संसार को बताना चाहिये कि भौतिक दृष्टिकोण से ही समाज को न देखकर धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी देखना चाहिए।

सामाजिक दुरवस्था का एकमात्र उपाय वर्णाश्रम व्यवस्था की पुन प्रतिष्ठा ही है। हमारा समाज अर्थ और जड़वाद के अभिशाप से मुक्त हो इसके लिए कोई यत्न उठा न रखा जाना चाहिये। इस विषय पर ऐसे बढ़िया साहित्य के सृजन की आवश्यकता है जो बुद्धिजीवी वर्ग पर प्रभाव स्थापित कर सके। प्रत्येक आर्य सदस्य को अपने और अपने घर का अच्छा बनाकर समाज को अच्छा बनाने पर विशेष ध्यान रखना चाहिये।

मनुष्य में त्रुटियों का होना आश्चर्यजनक नहीं है। यह देखना चाहिये कि हमारा नेतृत्व समाज को गलत दिशा में तो नहीं ले जा रहा है? और हमारी सामाजिक और वैयक्तिक त्रुटियाँ हमारे और समाज के विकास में बाधक तो नहीं हो रही है? सुधार का अर्थ है अपनी त्रुटियों का अनुभव करना और अपने भीतर मन और आत्मा की इतनी शक्ति धारण करना कि हम उनसे मुक्त हो जाय। इसके लिए स्वाध्याय और मनन बढ़ाए जाने की परमावश्यकता है।

आर्यसमाज ने सेवा के क्षेत्र को परिष्कृत और अलंकृत करने का रिकार्ड कायम किया है। आर्यसमाज के सेवकों ने अपनी सेवा से लोगों को अमित प्रेरणा दी और वे प्रकाश स्तम्भ बनकर चमकते रहे हैं। इसका रहस्य था अपने व्यक्तित्व को, अपने स्वार्थों को, पीछे रखकर समाज को आगे रखना और उसके लिए बड़े से बड़े त्याग को भी तुच्छ समझना। यही भावना हम सब में जाग्रत रहनी चाहिये। हमने अपने पूज्य बुजुर्गों की इस विरासत का पूरा पूरा लाभ उठाया है। हमें इस विरासत में वृद्धि करनी होगी और इसे चमक देनी होगी। इसी मे हमारा और समाज का कल्याण है।

★

आजमगढ़ जिले में ईसाई लूटमार को प्रोत्साहन दे रहे हैं पुलिस रिपोर्ट तक दर्ज नहीं करती है।

पीड़ित व्यक्ति के प्रार्थनापत्र की अधिकारियों द्वारा अभी तक कोई सुनवाई नहीं। जिला-सभा के मन्त्री श्री अक्षयवरनाथ तथा उनके साथियों ने घटनास्थल पर पहुँचकर जांच की, घटना सत्य है। सरकार को अविलम्ब अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये। पीड़ित भाई का राज्याधिकारियों की सेवा में पत्र इस प्रकार है—

सेवा में, राज्याधिकारी महोदय! आजमगढ़

सविनय निवेदन यह है कि प्रार्थी ग्राम गोबड़ी डीह अन्तर्गत थाना मधुबन का रहने वाला है। ग्राम परसिया केशवपुर मेरे ग्राम के १ मील के फासला पर पूरब तरफ है। वहाँ पर ईसाई धर्म वालों ने अपने धर्म को फैलाने की गरज से १ स्कूल खोल रखा है, जिसमे हरिजन लोगो के लड़के जिन्होने अपने धर्म को परिवर्तन कर दिया है, पढ़ते हैं।

प्रार्थी पहले जमींदारी उन्मूलन के ग्राम परिशाम केशवपुर का जमींदार था और खेती करने वाला अब भी खेती करता है। एक खेत जो करीब १० बिस्वा का है जिसमें मैंने धान अगहनी बोया था, और इस वक्त मटर बोये हुए था जो फलकर तैयार थे। कल ता० २८ १ ५९ ई० को सवेरे पादरी लोग हाथी पर चढ़े थे। जिनका नाम मैं नहीं जानता, सैकड़ों आदमियों के साथ जो बन्दूक भाला, लाठी इत्यादि हथियारों से लैस थे, पादरियों के हाथों मे भी बन्दूक थी, आये और मेरी मटर डाकुओं की तरह डाका डाल कर उखाड़ ले गये। कुछ चमारों से मुझ से दुश्मनी है जिन्होंने अपने धर्म का अब परिवर्तन कर दिया है। मेरा नुकसान करीब ५ मन गल्ला का हुआ है।

अत श्रीमान जी से प्रार्थना है कि मेरी दरखास्त को उचित जाँच करके, सत्य की विवेचना करके मुलजिमान को उचित दण्ड देने की व्यवस्था की जावे। पादरी लोग आगाकार हैं। उनके साथ बहुत से लोग थे जिनका नाम तहकीकात करने से मालूम हो जायगा।

श्रीमान् जी से करबद्ध प्रार्थना है कि अगर कोई कार्यवाई जाँच की न होगी तो प्रार्थी का जीवन संकट मे है। और बदअमनी फलने का अन्देशा है, जिससे शान्ति भंग होगी।

केदारनाथ राय

ग्राम-गोबड़ी डीह, थाना मधुबन, जिला आजमगढ़

कहानी

आदर्श पुलिसमैन

श्री तु चिउ-शेंग

★

[पुलिसमैन का आदर्श कितना महान् होना चाहिये यह इस चीनी कहानी में समझाया गया है। भारत की पुलिस का सिपाही जिस दिन इस प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करने लगेगा तब भारत में आदर्श राज्य स्वयमेव बन जायगा। —सम्पादक

रात को तूफान चल रहा था। निर्गयो नगर का डाकिया लोकस्ट मार्ग पर स्थित पुलिस चौकी पहुँचा। उसने चुंग पिंग शेंग नामक पुलिसमैन को जो ड्यूटी पर था, एक तार दिया और कहा कि इस तार के पाने वाले का पता नहीं लग पाया है, इसलिए वह उसका पता लगाने में मदद दे। तार पर नम्बर १७ ताव तु सड़क में रहने वाले माओ चिन सु के परिवार का पता लिखा हुआ था। तार मे ये शब्द थे, "माओ चि सु का देहान्त हो गया है। आशा है, उसका सगा सम्बन्धी तुरन्त यहाँ आकर अन्त्येष्टि का प्रबन्ध करेगा।" पुलिसमैन ने अनुभव किया कि यह तो जरूरी चीज है। इसलिए वह डाकिये की बात मान गया।

बाहर बारिश हो रही थी, हवा के प्रचण्ड झोंके चल रहे थे और चुंग पिंग शेंग ऐसी बारिश में उपयुक्त स्थान ढूंढ निकालने के लिए रवाना हुआ।

जब वह न० १७ ताव तु सड़क पर पहुंचा तो सब लोग मजे की नींद ले रहे थे। मामला गम्भीर था, इस कारण उसने दरवाजा खटखटाया। एक बूढ़ा बाहर निकला।

"बूढ़े दादा, इतनी रात गये आप की नींद खराब कर रहा हूं, इसके लिए माफी चाहता हू, पर यह जरूरी मामला है, कृपया यह बतायें कि क्या यहाँ माओ चिन सु नामक कोई किरायेदार रहता है?" चुंग ने विनीत स्वर मे पूछा।

बूढ़े न सिर हिलाते हुए कहा, "कामरड, यहाँ तो इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं रहता।"

"क्या कभी यहां रहता था?"

"हू, हू ठीक है, ठीक है। कुछ साल पहले माओ नाम का एक आदमी यहाँ रहता था, लेकिन वह यहाँ से चला गया था।" कुछ देर तक सोचने के बाद बूढ़ा फिर बोला, "उसका ससुर नाई है और न० ३८ ताओ तु सड़क पर रहता है।"

चुंग पिंग शेंग न बूढ़े का शुक्रिया अदा किया और चला गया। उसने नाई की दुकान ढूंढ तो ली पर वहां अन्दर कोई भी नहीं था। आस पड़ोस के लोगों को बस इतना ही पता था कि बूढ़ा नाई खिनयी सड़क पर किराये के मकान में रहता है पर घर का नम्बर किसी को मालूम नहीं था।

"आधी रात तो गुजर चुकी है। अब क्या मैं, हर घर का दरवाजा खटखटाऊँ? नहीं, यह बेकार है। सब लोग दिन भर के काम के बाद थके मांदे सो रहे होंगे। मुझे उनकी नींद मे खलल नहीं डालना चाहिए।" यह सोचते हुए पुलिसमैन चौकी वापस गया और रजिस्टर टटोलने लगा जिन पर वहां के निवासियों के नाम थे।

रात्रि की घोर नीरवता मे वर्षा की बूंदों के टपकने की आवाज तक स्पष्ट सुनायी दे रही थी। चुंग पिंग शेंग ने रोशनी मे ध्यानपूर्वक रजिस्टर देखा। पन्ने उलटता चला गया। उसकी कर्त्तव्यपरायणता इस बात का तकाजा कर रही थी कि नाई का पता अवश्य ही मालूम किया जाय। अचानक उसकी निगाहें एक पंक्ति पर टिक गयीं। उसमे ये शब्द लिखे हुए थे, लो मिंग शुई नम्बर १० खिनयी रोड, पेशा हज्जाम, उम्र ७३ वर्ष।

चुंग पिंग शेंग ने चैन की सांस ली और मुस्कराया। उसने झट से रजिस्टर बन्द किया और तेजी से बाहर चला गया।

आखिर उसने बूढ़े नाई लोउ मिंग शुई के घर का पता लगा ही लिया और उसे तार पढ़कर सुनाया। जब कुटुम्बजनों को इस दुखद समाचार का पता लगा तो सबके सब शोकाकुल हो गये।

चुंग पिंग शेंग ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा—"आपका दामाद अब इस दुनिया मे नहीं है। जो होना था सो हो गया, इसलिए दिल छोटा करना बेकार है। अब आप उसकी अन्त्येष्टि के लिए हुपाव जाने का इन्तजाम कर रहे हैं या नहीं?"

इसका कोई जवाब नहीं मिला। चुंग पिंग-शेंग ने देखा कि सब मौन हैं, वह ताड़ गया कि इसकी वजह शायद धनाभाव है। इसलिए वह बोला "कोई कठिनाई है क्या?"

काफी हिचकिचाहट के बाद लोउ ने स्वीकार किया कि उसके पास धन नहीं है। चुंग पिंग शेंग ने अपनी जेब टटोली। उसके पास बीस युवान थे, उन्हें बूढ़े के हवाले करते हुए चुंग पिंग-शेंग बोला—"ये लो. इससे काम चलाओ।" फिर उसने हज्जाम को बताया कि वह हुपाव कैसे पहुँच सकता है।

लोउ मिंग शुई ने धन पकड़ते हुए अहोभाव से चुंग पिंग-शेंग को देखा। उसका मन अपने दामाद की मृत्यु के कारण दुःखी था परन्तु उसका मस्तिष्क वास्तविक मानवीय स्नेह से गद्गद् हो गया। ★

राष्ट्रभाषा का व्यवहार—

संसद सदस्य राष्ट्रभाषा हिंदी का व्यवहार करें

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की अपील

★

भारतीय संसद और शासन सत्ता के व्यवहार में अङ्गरेजी आज पहले से भी अधिक बढ़ गई है। जनता के प्रतिनिधि जब जनता की भाषा में बोलने में हीनत्त्व की भावना अनुभव करते हों तब भारत की स्वाधीनता पूर्ण नहीं कही जा सकती। अभी भारत को अङ्गरेजी की दिमागी गुलामी से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न जोर शोर से जारी रखना होगा। आर्यसमाज अपने इस प्रयत्न में यथाशक्ति प्रयत्नशील है और रहेगा। —सम्पादक

"सबसे पहली बात जो मैं अनुभव करता हूं यह है कि जब संसद्-भवन के विशाल कमरे में लोगो को बोलते, बातें करते, सुनता हूँ तो ऐसा जान पड़ता है कि हम लोग स्वतन्त्रता का अभिप्राय, स्वतन्त्रता के साथ जो आवश्यक बातें हैं, उनको भूले से हैं। चारों ओर अंगरेजी भाषा का व्यवहार मुझे न अपने, और न स्वतन्त्रता के अभिमान के अनुकूल दिखाई देता है। हमारे भाइयों को, हमारे सहयोगियों को इसका बिल्कुल अनुभव नहीं हो रहा है कि वे क्या कर रहे हैं। उनको इसका भास नहीं होता कि वे संसद् में अङ्गरेजी बोल बोल कर चाहे वह अङ्गरेजी कैसी भी क्यों न हो सही अथवा गलत, यह प्रश्न नहीं उत्पन्न होता—क्या करेंगे। किसी भाई ने एक दिन कहा था कि हम यहाँ एशियाई इंग्लिश बहुत बहुत सुनते हैं। बहुत विशुद्ध इंग्लिश हो तो भी मेरा निवेदन है कि हमारे लिए यह कुछ अभिमान का प्रश्न नहीं है। मैं क्षमा चाहता हूँ मुझे तो लज्जा की बात लगती है। मेरा सिर नीचे हो जाता है इसको देखकर कि यह क्या है? यहाँ भारतवर्ष में जहाँ ऐसी प्रौढ़ भाषाएँ हैं, जहाँ की प्रौढ़ संस्कृति है, यहाँ बैठकर हम गुलामी का टीका हर समय प्रदर्शित करें, मुझे लज्जा की बात लगती है। मेरे विचार से इस समय संसद् में सम्भवत. चार या पाँच भाई हैं जो हिन्दी न समझ सकें, किसी भी रूप मे छः सात से अधिक नहीं हो सकते, यदि थोड़ा सा प्रयत्न किया जाय तो वह भी इसे समझने लगेंगे। हो सकता है, बोलने में कठिनाई होगी। परन्तु यह अच्छा हो वे कुछ थोड़ा सा हिन्दी में बोलें यह आवश्यक बात है, बिल्कुल मजबूर होकर अङ्गरेजी में बोलें तो और बात है—

परन्तु हमारे सब तरफ जो भाई अच्छी तरह से विशुद्ध हिन्दी में बोल सकते हैं, सर्व साधारण की भाषा में बोल सकते हैं, उनकी जबान भी अङ्गरेजी के लहजे, अङ्गरेजी के मुहावरे निकालती है। इसमें सम्भवतः वे समझते हैं कि वे बड़ा प्रभाव डाल रहे हैं, और अपने सम्बन्ध मे भी सुनने वालों के हृदयों में विद्वत्ता की छाप जमा रहे हैं। निवेदन है कि वे बहुत गहरी भूल कर रहे हैं। मैं यही चाहूंगा, मेरा निवेदन है, बिनती है कि संसद् का वायुमण्डल बदलिए। कोई आदमी डरे नहीं कि दूसरा आदमी क्या कहेगा। पहिले कई लोग हिन्दी बोलते थे। अब कुछ देखा देखी उन्हों ने भी समझा दूसरे समझेंगे कि अरे यह अङ्गरेजी नहीं बोल सकता क्या तो उन्होने भी अङ्गरेजी बोलना आरम्भ कर दिया। यह क्या शक्ल है? इसे बदलने की आवश्यकता है। जो बोल सकते हैं उनसे मैं कहूँगा कि अब आवश्यकता है इतने वर्ष हो गये हैं, अब वे हिन्दी में बोलें। आगे यह स्थिति अधिक दिन नहीं चलनी चाहिए।" ★

अंग्रेज आर्यसमाज को क्या समझते थे

राजनैतिक दमन की कुछ अप्रकट घटनायें

आर्यसमाज के महान् नेता लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा शहीद रामप्रसाद बिस्मिल आदि के राजनैतिक जीवन की घटनाओं से हम लोग प्रायः परिचित हैं पर नींव के पत्थर रूप में जिन व्यक्तियों और घटनाओं ने आर्यसमाज के गौरव की वृद्धि की उनका स्मरण हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है और हम उनसे निर्भीकता, सत्यता और साहस की शिक्षायें ग्रहण कर सकते हैं। सम्पादक

१—"गुलाबचन्द एक सिक्ख रेजीमेण्ट में लेखक था। वह कर्त्तव्यपरायण, सत्यप्रिय तथा परिश्रमी था। परन्तु साथ ही अधिकारियों को उत्तर देने में निर्भीक भी था। पहिले तो उसकी इस बात की प्रशंसा होती थी। परन्तु बाद में उसका यही गुण कांटे की तरह खटकने लगा, और उसे इसलिए पृथक् कर दिया गया कि वह आर्यसमाजी है। इस प्रकार आर्यसमाजी का अर्थ समझा गया निर्भीक अर्थात् उद्दण्ड।"

२—"जिला करनाल के तीन जेलदारों में एक आर्यसमाजी था। उसकी डायरी मे लिख दिया गया कि वह जेलदार तो अच्छा है, परन्तु उसका निरीक्षण किया जाना चाहिए क्योंकि वह आर्यसमाजी है।'

३—एक डिप्टी कमिश्नर ने एक स्थान के प्रमुख पुरुषों को बुलाकर कहा कि यदि तुम्हारे यहाँ कोई आर्यसमाजी रहता हो तो उसे निकाल दो। स्वयं उन प्रमुख पुरुषों मे ही दो आर्यसमाजी थे। उन्होने पूछा-आर्यसमाजियों के विरुद्ध क्या किया जाय? डिप्टी कमिश्नर ने कहा-कुछ करो, तुम्हारे विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जायगी। वे बोले—आप स्पष्ट निर्देश करें तो उसका पालन किया जा सकता है। और यदि आप ही स्पष्ट कार्यवाही से डरते हैं, तो फिर हममें यह साहस कहाँ?

४—एक रेजीमेण्ट के सिपाही आर्यसमाजी थे। उन्हे यज्ञोपवीत उतार देने की आज्ञा दी गई। उन्होने निवेदन पत्र भिजवाया। उसे आपत्तिजनक समझा गया।

५—एक मुसलमान जमादार ने एक यूरोपियन लेफ्टनेन्ट का विवाद में हरा दिया। इसकी शिकायत हुई और मुसलमान को डांटकर कहा गया—तुम आर्यसमाजी हो। उसने उत्तर दिया—मैं तो मुसलमान हूं। अधिकारी ने उसे और डांटा और कहा—तुम मुसलमान आर्यसमाजी हो।

६—आर्यसमाज के प्रचारक प० दौलतराम झाँसी गए। वहाँ उन्होंने सिपाहियों को भी उपदेश दिया, और उनसे अनाथालय के लिए चन्दा लाये। उस पर अभियोग चलाया गया और दण्ड यह दिया गया कि—या तो झाँसी अथवा उसके पाँच मील के अन्दर रहने वाले दो सज्जनों की जमानत दिलाओ या एक वर्ष कठोर कारावास का दण्ड भुगतो। यों तो दौलतरामजी आगरा के खाते पीते घर के थे। परन्तु झांसी में वह अजनबी थे। इसलिए कारावास भुगतना पड़ा।

७—"जोधपुर में वाइसराय महोदय पधारे थे। उनके मार्ग मे समाज मन्दिर पड़ता था। पुलिस ने समाज वालों से कहा—अपना पट्टा तथा झण्डा उतार लो। उनके इन्कार करने पर, पुलिस ने स्वयं दोनों चिह्न उतार लिए।"

८—"पंजाब की एक ब्रिगेड मे आज्ञा दी गई कि सिपाही आर्यसमाज अथवा किसी अन्य राजनीतिक सभा में न जाया करें।"

९—"भारतीय रेजीमेण्ट के एक डाक्टर को उसके अफसर ने त्यागपत्र का मसविदा लिखकर दिया कि इसके द्वारा समाज से सम्बन्ध विच्छेद कर लो। यह आज्ञा न मानने के कारण आखिर उसे सेना छोड़नी पड़ी।"

१०—"रोहतक में किसी ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि आर्यसमाज का मन्दिर सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया है। समाज के प्रधान के पूछने पर डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय ने लिखा कि ऐसा ढिंढोरा सरकार की आज्ञा से नहीं पीटा गया। परन्तु तो भी इसके विरुद्ध सरकार ने अपनी ओर से घोषणा करना स्वीकार नहीं किया।"

११—"इन्द्रजीत शाहजहाँपुर जिला कचहरी में काम करते थे। उन्होंने रोगी होने के कारण अवकाश लिया। वे आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ता थे। उन्हे आज्ञा दी गई कि या तो समाज का प्रचार ही करें या सरकार की सेवा।"

१२—"इन्दौर—आर्यसमाज के प्रधान लक्ष्मणराव शर्मा पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल के कार्यालय में हेड एकौन्टैन्ट थे। उन्होने समाज के जलूस की आज्ञा मांगी। इस पर उन्हे समाज छोड़ देने को कहा गया। ऐसा न करने पर उन्हें सरकार की सेवा से निवृत्त होना पड़ा।"

१३—इस प्रसग में आ० प्रति० सभा उत्तर प्रदेश के पू० प्रधान व प्रसिद्ध आर्य नेता पं० भगवानदीन जी का मामला भी स्मरणीय है। पण्डित भगवानदीन जी सरकारी नौकरी में थे। उनका सब कार्य अत्यन्त सन्तोषजनक था। सभी सम्बद्ध अधिकारियों ने उनकी प्रशंसा की है। परन्तु जब सरकार घबरा गई, तब आफीसर ने प० जी से यह आश्वासन लेना चाहा कि वे आर्य समाज का कोई कार्य नहीं करेंगे। पण्डित जी के ऐसे आश्वासन न देने पर उन पर तरह तरह के प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे। यहां तक कि उन्हे छुट्टी से भी इन्कार कर दिया गया। इस पर असन्तुष्ट होकर पण्डित जी ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया, और स्वतंत्ररूप से पूर्णतया आर्य समाज की सेवा करने लगे। ★

यजुर्वेद-पारायण-यज्ञ

वेदव्यास वैदिक आश्रम, पानपोश जिला सुन्दरगढ़, में उक्त यज्ञ दि० ७-३ से १० ३ पर्यन्त श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के तत्त्वावधान मे बड़े समारोहपूर्वक निर्विघ्न समाप्त हुवा। इस यज्ञ मे बाहर से बड़े बड़े विद्वान् पण्डित, भजनीक पधारे थे जिन्होने वेद व्यास मेला मे धार्मिक प्रचार भाषणों और भजनोपदेश द्वारा जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला विशेषत. श्री रामरिछन शर्मा भजनोपदेशक और स्वामी शिवानन्द जी वेदतीर्थ मद्रास तथा श्री रघुनाथ पात्र ने उत्तम भाषा मे बहुत ही सारगर्भित धार्मिक भाषण दिया।

इस यज्ञ मे प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या मे आर्य परिवार तथा अतिथि गण और दीन दुखी भोजन करते थे। पूर्णाहुति के दिन महिलाओ और पुरुषो ने भारी संख्या मे शामिल होकर पूर्णाहुति देकर प्रसाद पाया।

—स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
वैदिक आश्रम पानपोश

बरेली के शिव मन्दिर में

"महर्षि दयानन्द देश के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने प्रथम बार भारत में स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया और लोगों में स्वदेश की भावनायें जाग्रत कीं। यदि महर्षि दयानन्द न होते तो महात्मा गांधी भी न होते।"

उक्त शब्द आर्य कुमार सभा बरेली के तत्वावधान मे आयोजित ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष मे की गई सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुये उत्तर प्रदेशीय विधान-परिषद् में कांग्रेस दल के मुख्य सचेतक श्री प्रतापचन्द्र आजाद ने कहे। उत्सव की अध्यक्षता लाला श्रीराम अग्रवाल ने की।

आर्य विधान सभा बरेली के प्रधान श्री सत्यस्वरूप जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के मिशन की सफलता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि शिवालय के मूर्ति पूजक लोग भी महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये आर्यसमाज को अपने यहां निमन्त्रित करते हैं। स्मरण रहे कि उक्त सार्वजनिक सभा बरेली मे स्थित गुदड़बाग के एक शिवालय मे हुई थी। गुदड़बाग का यह शिवालय एक ऐतहासिक महत्व का मंदिर है और इस मंदिर पर हिन्दू और मुसलमानों के बीच अभी तक विवाद चल रहा है। यह विवाद उस समय खड़ा हुआ जबकि अब से कुछ वर्ष पूर्व एक महन्त ने इस मंदिर तथा इसकी सारी सम्पत्ति का एक मुसलमान के हाथ बेच दिया और स्वयं भाग गया।

अन्य वक्ताओं में श्री अश्वनी कुमार जी, श्रीललनपाल, श्री सत्य प्रकाश स्वरूप, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष श्री त्रिवेनीदत्त मिश्र, प० देवदत्त शास्त्री तथा महाशय विश्वराज जी, श्री भारतदेव पटेल सम्पादक स्वराज्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अन्त मे श्री शिवकुमार स्वरूप ने धन्यवाद देते हुए कहा कि यदि जनता का यथावत सहयोग मिलता रहा तो आर्य कुमार सभा बरेली ऋषि के उद्देश्यों का युवकों तथा बालकों मे अधिकाधिक प्रचार तथा प्रसार करती रहेगी। ★

—वैदिक साधना आश्रम, यमुना नगर मे साधना शिविर १-५ अप्रैल ५९ तक सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर श्री आनन्द स्वामी जी महाराज ने नवीन स्नातकों का उपाधियों द्वारा सत्कृत किया। शिविर मे समागत आर्य बन्धुओं ने शिविर की दिनचर्या का पालन कर अपनी कर्त्तव्य एवं अनुशासन-भावना का परिचय दिया।

ईसाई प्रचार निरोध-समस्याः—

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय सीमान्त में

मिशनारियों की गतिविधि

[श्री धर्मदर्शी एम०ए०, कुमायूं क्षेत्र]

प्रायः आसाम सीमान्त और छोटा नागपुर क्षेत्र आदि में ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों की समालोचना की जाती है। उत्तरप्रदेश का उत्तरी सीमान्त भी इनकी प्रचारात्मक एवं राजनैतिक दुरभिसन्धियों से मुक्त नहीं है। हम उत्तरप्रदेश की सरकार तथा कुमायू क्षेत्र की आर्यसमाजों का ध्यान इस ओर सावधान रहने तथा विषम परिस्थिति का निराकरण करने की ओर आकृष्ट करते हैं।

—सम्पादक

इतिहास में यद्यपि यह कहा गया है कि जिस ओर विदेशी प्रभु का क्रास ले गये उसी ओर उनके देशों की विजय पताका का भी प्रवेश हुआ। पर यह भी मानना पड़ेगा कि इन विदेशी ईसाई प्रचारकों द्वारा उन देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य-रक्षा आदि की भी प्रगति हुई। पर इधर यह एक महत्वपूर्ण समस्या हो गई है कि क्यों वे बहुधा अपना केन्द्र ऐसे स्थानों में बनाते जा रहे हैं जो अन्य राज्यों के सन्निकट हों। भारतीय राजनीतिज्ञ डा० लंकासुन्दरम् ने एक बार उचित ही कहा था कि किसी विदेशी संस्था को ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय स्थानों के निकट आश्रय नहीं दिया जाना चाहिए। पिछले दिनों न्यायाध्यक्ष श्री नियोगी की मध्य भारतीय ईसाई संस्थाओं के निरूपण द्वारा इस प्रश्न ने काफी हलचल मचा दी थी। भारत ने यद्यपि इस देश में धर्माचरण की स्वतन्त्रता प्रदान की है तथापि उसका सतर्क रहना कि इन विदेशी प्रचारकों के द्वारा किसी प्रचलित धर्म की अवहेलना न की जाय और अन्य समीपवर्ती राज्यों से उनके सम्बन्ध में कोई अन्तर न आने पावे, स्वाभाविक ही है।

कुमाऊ का उत्तरी पूर्वी भाग नेपाल व चीन की तिब्बती सीमाओं से अनेक स्थलों मे दूर-दूर तक सलग्न है। इन दोनो स्वतन्त्र राज्यों के साथ भारत का ऐतिहासिक बन्धुत्व रहता आ रहा है। कुमाऊ का उत्तरी क्षेत्र विस्तृत आवागमन के साधनों से हीन है। यह क्षेत्र अल्मोड़ा से प्रायः १५० मील की दूरी तक फैला हुआ है। पशुपालन यहाँ की जनता का मुख्य व्यवसाय होने के कारण यहाँ प्रचुर चराउ भूमि है। ऐसे दुर्गम स्थल मे पिछले अनेक वर्षों से ईसाई प्रचारकों न अपने प्रचार का अड्डा बना रखा है। और दिन प्रति दिन उनका आवागमन उधर बढ़ता जा रहा है। उनकी सस्था का मुख्य केन्द्र धरचूला है जो अल्मोड़ा से प्रायः ६१ मील पर है। यहाँ इनके द्वारा न तो कोई बड़ा चिकित्सालय ही है और न कोई पाठशाला ही। केवल एक साधारण कम्पाउण्डर द्वारा नाम मात्र को औषधि वितरित की जाती है। और एक प्रारम्भिक पाठशाला द्वारा शिक्षा प्रचार का ढोंग दिखाया जाता है। अतः इनका यहाँ इतनी दूर रहना यदि किन्हीं और कारणों से समझा जाय तो कोई अनुचित न होगा। कुमाऊ स्थित इस अमेरिकन संस्था के बारे में कुछ विस्तृत वर्णन सम्भवतः कोई अरुचिकर न होगा।

विदेशी प्रचारकों का बसना

सन् १८९४ में कुमारी अलीवड्म ने अस्कोट रजवार से जो इस जिले में केवल मात्र तालुकेदार कहे जा सकते हैं, ३ नाली ७२० वर्गगज भूमि मिशन के लिए प्राप्त की। यह स्थान तरकोट, धरचूला में था। पर उनके बाद ही मैथोडिस्ट मिशन की डाक्टर कुमारी शैल्डन ने १२ नाली भूमि पर कब्जा करके उस पर मकान व उद्यान बना डाले। किसी की आज्ञा प्राप्त करने की उसने आवश्यकता न समझी। सन् १९३० में मैथोडिस्ट मिशन अमेरिका ने एक कार्यकर्त्ता श्री स्टाइनर को इधर भेजा। उन्होंने कुमारी वडन व डा० शैल्डन की कुल सम्पत्ति का अस्कोट के रजवार से पट्टा प्राप्त कर लिया। और प्रति १२ वर्ष में पट्टा बदलने की शर्त के साथ यह भी शर्त थी कि जब यह मैथोडिस्ट मिशन अपना कार्य स्थगित करे, पट्टे वाली कुल सम्पत्ति रजवार की हो जायगी। अब न तो यह मैथोडिस्ट मिशन ही है और न श्री स्टाइनर की सम्पत्ति पर दूसरे मिशन का आधिपत्य है। श्री स्टाइनर स्वय डाक्टर न थे पर उनकी पत्नी दाई का काम जानती थी। इसी बिना पर तत्कालीन कमिश्नर ने जिला परिषद् द्वारा उनको १२००) वार्षिक का अनुदान औषधालय के लिए प्रदान कर दिया। जब जिला परिषद् ने नियमानुसार १२००) व्यय का हिसाब मांगा तो श्री स्टाइनर पहुँचे कमिश्नर के पास और उसने यह अनुदान सीधे स्टाइनर को दिये जाने की व्यवस्था कर दी। उस समय जिला-परिषद् ने यही समझा कि यह अनुदान सम्भवतः केवल औषधालय के ही लिए न था और तत्कालीन सरकार का श्री स्टाइनर द्वारा कुछ और कार्य निकालने का उद्देश्य भी था।

स्टाइनर की तिब्बत-यात्राएँ

इस प्रकार उत्तरी क्षेत्र में स्थापित होकर स्टाइनर ने इधर लाइन घूमने की मुस्तकिल आज्ञा प्राप्त कर ली और कहा जाता है कि वे दो बार सन् १९३० व १९४१ में तिब्बत गए और बहुत दिन रहे। श्री स्टाइनर ने कुछ नैपाली व कुछ तिब्बती लोगों को जो जुमला नैपाल मे बस गये हैं, ईसाई बनाया और इस जिले में कोई भी ईसाई बनाने का प्रयत्न नहीं किया। जनता में ऐसा विश्वास है कि इन लोगों को ही ईसाई बनाने का अभिप्राय यह था कि उनके द्वारा नैपाल व तिब्बत के समाचार सुगमता से मिलते रहें। और इन्हीं लोगों को अब अधिकांश में उन स्थानों में बसाया गया है जो विदेशियों के लिए वर्जित हैं। उनका नैपाल व तिब्बत आना जाना लगा रहता है। इसके पश्चात् श्री स्टाइनर एक ऐसा अड्डा चाहते थे, जहाँ वे न केवल नैपालियों व तिब्बतियों से ही सुगमता से मिल जुल सकें वरन् तिब्बत से आने जाने वाले व्यापारियों से भी मिल जुल सकें। अतः उन्होंने १९४६ में ११० नाली भूमि सरकार से लिए जाने की प्रार्थना की ताकि वहाँ कुष्ट रोग का एक अस्पताल बनावें। यह स्थान छालुम में था जो बलुवा कोट से १०२ मील नीचे है और जहाँ भोटिए व्यापारी तिब्बत से हिम से गले अङ्गों को स्वस्थ करने के लिए प्रायः चार मास रहते हैं। चंपावत, पिथोरागढ़ तथा अल्मोड़ा में दो बड़े बड़े कुष्ट के अस्पताल होने के कारण और बाहर से कुष्ट रोगियों के आने से भोटियों में रोग फैलने की सदा आशंका से इसका विरोध किया गया और यह विदित नहीं है कि उस पर आखिरी सरकारी आज्ञा क्या हुई। पर वहाँ कोई मिशन का अड्डा बनने दिया जाना स्वास्थ्य और राष्ट्रनीति दोनों के हित में नहीं होगा।

इस बीच बिना पासपोर्ट के धारचूला मिशन के एक आस्ट्रेलियन स्वकथित भूगर्भ विद्या-विशारद तथा निकटस्थ अन्यत्र स्थित मिशनों के दो सदस्य, ये चार विदेशी बन्दूकों सहित तिब्बती वर्जित स्थल पर पंचचूली पार करते पकड़े गये थे, और उनके विरुद्ध मुकदमा भी चलाया गया। तभी तो हमारे प्रधान मन्त्री ने एक बार संसद में उचित ही कहा कि—सीमा प्रान्त में हम प्रत्येक विदेशी को अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं, जब तक ऐसे अविश्वास के विरुद्ध कोई स्पष्ट कारण न होवे।

भारत सरकार ने वर्जित सीमा का क्षेत्र बढ़ा दिया है। अतः उन क्षेत्रों में जो सीमा के अन्तर्गत हैं, विदेशी तो जा नहीं सकते पर इन स्थानों म नैपाली व नेपालवासी तिब्बती ईसाई बसाए गए हैं जिनका सम्पर्क न केवल धारचूला मिशन से बना रहता है वरन् जो नैपाल व तिब्बत सदा आया जाया करते हैं, उनसे भी रहता है। इधर नए मिशन ने बहुत साहित्य तिब्बती भाषा में वहाँ के अनपढ़ तिब्बतियों व जनता में वितरित किया है। यह साहित्य चीनी तिब्बत में जा पहुंचा है, जिसके द्वारा कहा जाता है कि वहाँ के चीनी अधिकारी सशंकित हुए हैं और इसे विदेशी हस्तक्षेप समझते हैं। इस प्रकार भारत व चीन के पारस्परिक सम्बन्ध में कितना अन्तर आने की आशंका हो सकती है। पाठक अनुमान करलें। नैपाल की आन्तरिक स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं है। वहाँ भी विदेशी एजेण्टों का हाथ कार्य करता रहता है। पिछले दिनों कहा गया था कि वेल्स मिशन के दो सदस्य जो कुछ काल शायद धारचूला भी रहे, झूलाघाट पार करके नैपाल गए। और तिब्बती ग्राम लोकचू में भी देखे गए। वे कैसे किस मार्ग से वापस आए, विदित नहीं। पर पिछले वर्षों में विदेशियों का आवागमन इस ओर बढ़ गया है, इसमें सन्देह नहीं।

प्रचार-समाचार—

—सिरोर-(मैनपुरी) में माता अग्न्याभ्री देवी जी ने ता० २३ से २६ फरवरी तक श्री रामकुमार जी आर्य के घर रहकर महिलाओं में प्रचार-कार्य किया।

संस्था-परिचय

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

[आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, कुलपति]

आर्य जगत् में महाविद्यालय ज्वालापुर, गत पचास वर्षों में, जिस कष्ट परम्परा में से निकला है उसको यहाँ के कार्यकर्ता ही जानते हैं। महाविद्यालय की स्थापना ही प्राचीन संस्कृत प्रणाली की रक्षा के लिए हुई थी। उद्देश्य बहुत ऊँचा था, कार्यकर्ता बहुत कम थे, साधन सामग्री नहीं के तुल्य थी, विघ्नों का हाल ही नहीं पूछिए। गुरुकुल कांगड़ी से उठकर अथवा रूठकर पण्डित मण्डली यहाँ आसन जमाकर न बैठती तो संभव था यह संस्था बाल्यकाल मे ही मुरझा जाती। पर इसका संस्थापक था औलिया, ईश्वर-विश्वासी, खोल ही तो दिया महाविद्यालय, और आश्चर्य से लोगों ने देखा कि बराबर चल ही रहा है मन्थर गति से, बढ़ ही रहा है धर्म गति से। आज इसमें २०० ब्रह्मचारी छात्र हैं। यदि पर्याप्त स्थान और शिक्षा का प्रबन्ध हो तो महाविद्यालय ५०० छात्र भी ले सकता है। इस महाविद्यालय ने अब तक आर्य जगत् में ३०० विद्याभास्कर, ४००-५०० आयुर्वेद भास्कर, सैकड़ों तीर्थ, आचार्य, शास्त्री, विद्यारत्न, विद्यानिधि, विद्याभूषण दिये। समस्त बुद्धि का बल और तर्क शास्त्र का जोर लगाकर भी कोई भी यह सिद्ध नहीं कर सकता कि महाविद्यालय जैसी निर्धनोद्धारक संस्था की आवश्यकता नहीं थी या नहीं है। इसका गत पचास वर्ष का काल बतला रहा है कि यह सर्वथा उपयोगी संस्था रही है। गत पचास वर्षों में इसके द्वारा सहस्रों छात्रों का उपकार हुआ, संस्कृत विद्या का प्रचार हुआ, संस्कृति की रक्षा हुई।

इसकी मुख्य त्रुटि

यही रही कि इसके पास ईश्वर-विश्वास के अतिरिक्त कोई स्थिर निधि नहीं रही।

इसका मुख्य गुण भी यही—

रहा कि इसके पास प्रारम्भ से अब तक कभी स्थिर निधि नहीं रही—

लोकाश्रय अवश्य रहा पर स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् लोकाश्रय भी ढीला हो गया।

सरकारी सहायता की परवाह भी नहीं की संचालकों ने—

हम निर्धनता को विशेष गुण इसलिए मानते हैं कि बिना धन के ही यहाँ अधिकार-लिप्सा से इतने गृह कलह हुए कि पूछिए नहीं। यदि कहीं इसकी कोई स्थिर निधि रहती तो न जाने क्या होता—क्या पण्डित मण्डली कार्य कर सकती? राम का नाम लो। संस्था का यह रूप भी नहीं रहता—बीच में ही ऐसे बड़े जोर के कई धक्के लगे कि संस्था जीवित ही कैसे रही हमें यही अचम्भा है। अस्तु—

अब सुवर्ण जयन्ती आ ही गई और उसको मनाना ही है

समय विपरीत है तो भी मनायेंगे ही। उसका कार्यक्रम भी जहाँ तक संभव है रोचक ही रहेगा। ता० १० अप्रैल को बृहत् नगर-कीर्तन। ता० १० से १६ तक बृहद्यज्ञ जिसका भार चौ० रघुराजसिंह जी भूतपूर्व प्रधान म० वि० सभा ने ले लिया है। उन्हींके चिरंजीव ने स्व० दर्शनानन्द जी सरस्वती के जीवनचरित्र को अपनी लागत से छपवा दिया है। महाविद्यालय का ५० वर्ष का इतिहास भी तैयार हो गया। जयन्ती के लिए आर्यजगत् के गण्य-मान्य प्रायः सभी विद्वानों, व्याख्याताओं को निमन्त्रण दिया गया है। इसके अतिरिक्त विशिष्ट राज्य-शासक भी पधार रहे हैं। वैसे इस अवसर पर ८-१० सम्मेलन होंगे जिनके सभापति विशिष्ट चोटि के विद्वान् होंगे। यह सब जयन्ती के कार्यक्रम से विदित होगा। ता० १६ को पहलवानों का दंगल भी होगा। अनेक संगीताचार्य भी पधार रहे हैं। आइये, पधारिये, इस महाविद्यालय की रक्षा कीजिए।

हम जयन्ती की सफलता रुपये पैसे पर नहीं समझते। हम सफलता समझते हैं महाविद्यालय के प्रेमी, हितैषियों की अधिक से अधिक संख्या में एकत्रित होकर कार्यकर्ता संचालकों के उत्साह बढ़ाने पर—महाविद्यालय की सफलता महाविद्यालय के स्नातकों और उसके सहस्रों छात्रों पर निर्भर है क्योंकि गुरुओं का अमर्त्य धन उनका शिष्य मण्डल ही है। जिन जिनको निमन्त्रण भेजा है प्रायः स्वीकृत हो कर रहे हैं। ग्रामों की जनता विशेषकर बड़ी भारी संख्या में आयेगी। आशा है उत्साह और समारोह देखने योग्य होगा। यत्र तत्र सर्वत्र धन संग्रह भी हो रहा है—मैं भी जयन्ती समारोह की सफलता के लिये कार्यकर्त्ताओं को परामर्श देकर कर्त्तव्य पालन कर रहा हूं। इस वृद्धावस्था में मुझसे और हो भी क्या सकता है, हमारी दशा तो भर्तृहरि के शब्दों में यह हो रही है—

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ति।
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम्॥
आयुः स्रवति भिन्न घटादिवाम्भो।
लोकस्तथाप्य हित माचरतीति चित्रम्॥

बुढ़ापा शेरनी की तरह डरा रहा है। रोग शत्रुओं की तरह क्रूरतापूर्वक प्रहार करते रहते हैं। आयुः प्रतिदिन घट रही है और विवश होकर संसार का दुदृश्य देखते रहते हैं। सब कुछ कर चुके, देख चुके, सुन चुके, अब करना, देखना, सुनना ही क्या शेष है।

आप सबके सहयोग से जयन्ती सफल हो, यही मेरी कामना और प्रार्थना है।

विदेश-प्रचार की समस्या...

[पृष्ठ ६ का शेष]

चाहिए। इस प्रकार की गोलमाल वर्षों से चली आ रही है।

बाहर के यह समाज तद् देशीय आवश्यकताओं या परिस्थितियों पर कुछ विचार नहीं करते। यदि भारत की समाजों में दो या तीन दल हैं तो इनके सम्बन्धी विदेशों में भी उस दलबन्दी के मन मुटावों को जीवित रखते हैं। उनकी यह समझ में नहीं आता कि कालेज पार्टी और गुरुकुल पार्टी का कुछ अर्थ भारत में तो हो सकता है, विदेशों में क्या अर्थ है? परन्तु वे भी क्या करें? उन्होंने नेताओं से यही सीखा है। इसलिए मेरा प्रस्ताव यह है:—

(१) सार्वदेशिक सभा में एक विदेश-प्रचार उप समिति अलग हो। उसका केवल यही काम हो कि देश की धड़ेबन्दियों, व्यक्तिगत मन-मुटावों, राजनीतिक दलदलों से सर्वथा अलग रहकर केवल उन विदेशों के तद्देशीय लोगों में प्रचार करने की समस्याओं पर विचार करें।

(२) उसका फण्ड अलग हो और कौड़ी-कौड़ी विदेश-प्रचार पर ही व्यय हो। जो धन विदेश-प्रचार के लिये दान में मिले उसका एक पैसा भी अन्यत्र व्यय न किया जाय। और न उसको अन्य मदों में ट्रांस्फर किया जाय, न उन मदों को ऋण दिया जाय।

(३) उन देशों में रहने वाले भारतीय आर्यों के लिये निर्देश होना चाहिये कि वह राजनीतिक उलझनों से अपने को बचाते हुए प्रयत्न करें कि वैदिक धर्म के विचार वहां के असली रहने वालों में फैलें और उन के साथ मेल-जोल स्थापित हो।

(४) यथाशक्ति प्रचारक उन्हीं देशों में तैयार किये जायं और वहाँ की भाषाओं में पर्याप्त साहित्य बनाया जाय।

(५) सार्वदेशिक सभा की यह समिति वर्ष में तीन चार बार बैठा करे और उन देशों की परिस्थिति पर गम्भीरता से विचार करे। यत्न किया जाय कि हम भारतीयों के परस्पर मन-मुटाव की चिंगारियां वहां तक न फैलने पावें।

यदि एक बार ऐसी कोई योजना आरम्भ कर दी गई तो पीछे से आने वाली कठिनाइयों का प्रतिकार पीछे से सोचा जा सकेगा।

इस विषय में हमको सबसे अच्छी शिक्षा ईसाई और मुसलमानों से मिल सकती है, यदि समाज ने मेरी बातों को सुनने की इच्छा प्रकट की तो मैं इस विषय पर अधिक भी लिखूंगा।

उपनिषद् की एक कथा

'द द द' का उपदेश

[श्री कृष्णदत्त जी, एम० ए०, बी०एड० हैदराबाद]

उपनिषद् की कथा के इस सरल एवं रोचक वर्णन द्वारा मनुष्यों के लिए इन्द्रिय दमन, दान और दया का जो पाठ प्रस्तुत किया गया है उस पर आचरण करके ही हम आदर्श व्यक्ति बन सकते हैं। —सम्पादक

बृहदारण्यक उपनिषद् में देव, मनुष्य और असुर के सम्बन्ध में बड़ी ही मनोरंजक कथा है। कहते हैं कि एक बार ये तीनों अपने पिता प्रजापति के पास गये। देव, मनुष्य और असुर ने प्रजापति से प्रार्थना की "हे पिता! हमें कुछ उपदेश दीजिए।" प्रजापति ने कहा "उपदेश लेने से पहले तुम तीनों अपने शरीर और मन को पवित्र कर लो। क्योंकि बिना पवित्रता के उपदेश ग्रहण करने से कोई लाभ नहीं।" तब उन्होंने स्नान किया, कपड़े बदले और अपने मस्तिष्क से हर प्रकार के अपवित्र विचारों को निकाल बाहर किया। जब तीनों को यह अनुभव हुआ कि उनका शरीर और मन पवित्र हो गये हैं तो उन्होंने पुनः प्रजापति के पास आकर उपदेश देने की प्रार्थना की। प्रजापति ने तीनों से कहा कि वे पास के कमरे में बैठ जाएं और देव, मनुष्य और असुर इस क्रम से एक एक प्रजापति के पास आकर उपदेश ग्रहण करें। तीनों वहाँ से उठकर पास के कमरे में चले गये।

सर्वप्रथम देव प्रजापति के पास पहुँचा और प्रणाम करके सामने बैठ गया। प्रजापति ने उसे उपदेश में 'द' कहा। देव ने "द" शब्द को सुना और बड़ी श्रद्धा के साथ सिर झुकाकर प्रणाम किया। और वह वहां से उठ कर जाने लगा। प्रजापति ने देव को रोककर पूछा, "बेटा! क्या तुमने मेरे इस उपदेश का अर्थ समझ लिया?" देव ने बड़ी नम्रता के साथ कहा, "जी हाँ, मैं समझ गया। आपने मुझसे कहा कि "मैं अपनी इन्द्रियों का 'दमन करूं। मैं देव हूं और किसी मनुष्य को देवता का दर्जा उसी समय मिलता है जब वह अपनी इच्छाओं को बेलगाम होने नहीं देता। ऐसे ही आदमी सद्गुणी होते हैं। यही सद्गुण किसी मनुष्य को उठा कर देव व देवता बना देते हैं। इसी लिए देवों को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपनी इच्छाओं को बेलगाम न होने दें।

व न आंख से बुरा देखें, न कानों से बुरा सुनें और न मुंह से बुरा कहें। यही बात सभी इन्द्रियों के लिए है। इन्द्रियों की शिथिलता या उनका दुरुपयोग ही देवताओं की बड़ी कमजोरी है। इससे बचने के लिए आपने मुझे इन्द्रिय-दमन का उपदेश दिया है। "द" का यही अर्थ है।" प्रजापति ने देव की इस बात को सुनकर प्रसन्नता से आशीर्वाद दिया और कहा, "हां बेटा! तुमने मेरे उपदेश को पूरी तरह से समझ लिया है। अब तुम जा सकते हो।"

देव के जाने के बाद मनुष्य ने प्रजापति के कमरे में प्रवेश किया। इसने भी सिर झुकाकर प्रणाम किया और इशारा पाकर प्रजापति के सामने बैठ गया। प्रजापति ने उपदेश देते हुए उसी शब्द 'द" को दुहराया जिसका उपदेश इन्होंने देवता को दिया था। एक क्षण ठहर कर मनुष्य ने कहा, "पिता मैं आपकी बात को समझ गया। अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।"

प्रजापति ने कहा—"हे वत्स, तुम जो कुछ समझे हो उसको मेरे सामने स्पष्ट करो ताकि मैं जान सकूं कि तुम मेरी बात को पूरी तरह से समझ सके हो या नहीं।"

मनुष्य ने विनय के साथ कहना शुरू किया, "हे भगवन्! मैं मनुष्य हूं। इस संसार में रहकर धन धान्य और दूसरी अनेक चीजों का मैं संग्रह किया करता हूं। जब संसार का धन धान्य कुछ ही लोगों के पास इकट्ठा हो जाता है तो ऐसे लोग जिसके पास धन दौलत नहीं होती, दुःखी होते हैं। उन्हें न खाने के लिए अनाज मिलता है, और न ही पहनने के लिए कपड़ा। एक तरफ तो कुछ लोगों के पास इनके अम्बार लगे रहते हैं और दूसरी तरफ बहुत से लोग इनके लिए तरसते रहते हैं। इसलिए आपने मनुष्य की इस कमजोरी को दूर करने के लिए "द" का मुझे उपदेश दिया है, जिसका अर्थ है कि मैं दान करता रहूं। दान न देने से मनुष्य समाज दुःखी होता और जिसके पास न देने के लिए धन धान्य हो और वह दान न दे तो वह दयाहीन और कठोर बनकर मनुष्यत्व से गिर जाता है।

मनुष्य को मनुष्य बने रहने के लिए दान देना चाहिए। जो चीज उसके पास आवश्यकता से अधिक है उसको अपने पास रखने से वह चीज खराबी पैदा करती है; जिस प्रकार पानी एक ही जगह रुका रहे तो उसमें सड़ान्ध पैदा हो जाती है।

प्रजापति ने मनुष्य को आशीर्वाद दिया और कहा, "तुमने मेरे उपदेश को समझ लिया है मैं तुम्हारा कल्याण चाहता हूं। अब तुम जा सकते हो।"

मनुष्य के जाने के बाद असुर आया और बड़ी श्रद्धा के साथ हाथ जोड़कर प्रजापति के चरणों के पास बैठ गया। प्रजापति ने असुर की ओर देखते हुए उपदेश दिया और उपदेश में उसी शब्द "द" को फिर से दुहराया, जिसको उन्होंने देव और मनुष्य से कहा था। असुर ने भी इस उपदेश को सिर झुकाकर सुन लिया और बड़ी खुशी के साथ जाने की आज्ञा मांगी। प्रजापति ने बैठने का इशारा करते हुए पूछा, "मैं जानना चाहता हूं कि तुमने मेरे इस उपदेश का क्या अर्थ ग्रहण किया है?"

असुर ने कहा. "महाराज! असुरों का सबसे बड़ा दुर्गुण है निर्दयता। इसी निर्दयता के कारण हमने दूसरों पर अत्याचार किया, उन्हें सताया और उनके साथ कठोरता की। इसका परिणाम यह हुआ कि, हम मनुष्यत्व से गिरकर असुर बन गये। आपने मुझे "द" का उपदेश देकर यह बतलाया है कि मैं दूसरों पर दया करूं। दया न करना असुरों की सबसे बड़ी कमजोरी है।"

प्रजापति ने —"कहा तुमने मेरे उपदेश को पूरी तरह से समझ लिया है और तुम्हें असुरों की कमजोरी भी मालूम हो चुकी है। अब तुम जा सकते हो।"

प्रजापति का आशीर्वाद पाकर असुर वहां से चला गया। कुछ क्षणों के बाद देव, मनुष्य और असुर तीनों प्रजापति के सामने हाथ जोड़े खड़े होगये और जाने की आज्ञा मांगी। प्रजापति ने कहा, "मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम तीनों ने अपनी-अपनी कमजोरी को पहचान लिया और मेरे "द द द" उपदेश को ठीक ठीक समझा है। देवो! तुम दमन को अपनाओ, मनुष्यो! दान करो और असुरो! तुम दया करो। मेरा तुम्हें आशीर्वाद है। अब तुम जा सकते हो।" तीनों वहाँ से चले गये।

उपनिषद् की इस कथा का सारांश यह है कि इस संसार में बसने वाले लोगों में जो देव हैं वह कभी अपनी इन्द्रियों को बेलगाम न होने दें, उन पर काबू रक्खें; मनुष्य संसार की हर वस्तु का अपने पास संग्रह न होने दें, दान करके आवश्यक चीजों को समाज में फैलायें और असुर वृत्ति के अत्याचारी लोग दूसरों पर दया करना सीखें। इसके कारण देव, देव बना रहता है, मनुष्य-समाज सुखी होता है और असुर अर्थात् दुर्गुणी लोग बुराई से बचकर मनुष्य बन सकते हैं। ✱

विजयीपुर ग्राम (चनहट) लखनऊ में हरिजन मेले की धूम

दिनांक १७-३-५९ को ग्राम विजयीपुर जो लखनऊ से लगभग ७, ८ मील फैजाबादरोड पर स्थित है, आनन्दी हरिजन मेला कमेटी की ओर से एक मेला तथा हरिजन सम्मेलन का आयोजन किया गया था। जिसमें अड़ोस, पड़ोस के नर-नारियों ने अधिक संख्या में भाग लिया। उपस्थिति लगभग १० हजार थी।

उपस्थित महानुभावों में श्री सी० बी० गुप्ता भूतपूर्व खाद्य मन्त्री, श्री चौ० भगवन्तसिंह जी आई० ए० एस०, संचालक पंचायत राज्य विभाग व श्री ब्रह्मदत्त जी स्नातक सूचना प्रसार अधिकारी भारत सरकार गोरखपुर क्षेत्र व हरिजन कल्याण अधिकारी लखनऊ श्री कृष्ण जी मिश्रा तथा स्थानीय एम० एल० ए० श्री श्याम मनोहर लाल जी व श्री बसन्तलाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस मेले में कई भजन मण्डलियों के भजन, स्थानीय पहलवानों के दंगल तथा भारत सरकार द्वारा प्रसारित 'भगवान देखता रहा' ड्रामा खेला गया। तत्पश्चात् जिला हरिजन अधिकारी श्री कृष्ण मिश्र ने अपने विभाग द्वारा हरिजनों को मिलने वाली सुविधाओं का वर्णन किया। श्री सी० बी० गुप्ता ने अपने भाषण द्वारा आपस में मेल मिलाप करने, जाति पांति के भेद भाव को भुलाकर और जातियों में फैली हुई कुरीतियों को नष्ट करके देश निर्माण की ओर प्रगति करने की सलाह दी। श्री गुप्ता जी ने सरकारी अनुदानों से हरिजनों को लाभ उठाने तथा खेतों में पैदावार बढ़ाकर अधिक अन्न उपजाने के लिए जनता को उत्साहित किया। श्री भगवन्तसिंह जी संचालक पंचायतराज ने कृषि तथा पंचायतों को सुसंगठितरूप से चलाने के लिए लोगों को प्रेरित किया। तथा दंगल आदि में भाग लेने वालों को पारितोषिक वितरण किया।

श्री मेला मन्त्रीजी ने अपनी रिपोर्ट पढ़ी और उस रिपोर्ट द्वारा जनता को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि यहां के मन्दिर का पुजारी एक हरिजन है और स्थानीय जनता उसका बड़ा आदर करती है। और वहां की समस्त सवर्ण जनता का इस पुजारी को सहयोग प्राप्त है। ✱

देश-विदेश में ऋषि-बोधोत्सव की धूम

आर्य जनता में अपार उत्साह, महर्षि को श्रद्धांजलियां

टंकारा, आगरा, लखनऊ, दिल्ली, पटना, कलकत्ता, जालन्धर, बम्बई, अजमेर आदि राष्ट्रीय नगरों तथा मारीशस, अफ्रीका, बगदाद, बैंकोक, सिंगापुर, फीजी और लन्दन आदि में श्री ऋषि-भक्तों द्वारा भव्य समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के बोध पर्व के रूप में सम्पूर्ण आर्यजगत् ने शिव रात्रि के अवसर पर ऋषिबोधोत्सव का व्यापक आयोजन किया और महर्षि के पवित्र सन्देश को जन जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया।

इस वर्ष दिल्ली की आर्य केन्द्रीय सभा ने २ मार्च को ऋषि वर्ष का आरम्भ किया जो ७ मार्च को कोटला ग्राउण्ड में मेले के रूप मे समाप्त हुआ। श्री रामचन्द्र देहलवी जी ने अध्यक्षता की। इसी प्रकार आगरा की आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से भी नगर मे सफल आयोजन किया गया।

ऋषि जन्म भूमि और बोध स्थली टंकारा में इस वर्ष एक विशाल मेले का आयोजन किया गया। एक सप्ताह तक श्री प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की अध्यक्षता म वृहद् यज्ञ हुआ और ८ मार्च को लोक सभाध्यक्ष श्री अनन्तशयनम आयगर ने महर्षि दयानन्द स्मारक महालय का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण मे बड़ी श्रद्धा के साथ उन्होंने ऋषि को भारत निर्माता और मानव जाति के आदर्श पथ प्रदर्शक की गौरव पूर्ण उपाधियों से स्मरण किया और महर्षि के अनुयायियो का उनके पद चिह्नों पर चलते हुए राष्ट्र और विश्व का नेतृत्व सम्हालने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा—आज के अशान्त और विक्षुब्ध विश्व वातावरण म आर्यसमाज का विश्व व्यापी दृष्टिकोण शान्ति के सन्देश की क्षीण रेखा है इस क्षीण प्रकाश को विश्व व्यापी बनाने का दायित्व आप पर है, आप विश्व की आशा हैं।

मारीशस में श्रद्धेय स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में बोध पर्व मनाया गया। उन्होंने प्रवासी भाइयों को भारतवासियों की ओर से बन्धुत्त्व का सन्देश देते हुए कहा कि भारत के लोग आपको सदैव स्मरण रखते हैं और आपके हितचिन्तक हैं। इस अवसर पर मारीशस के अनेक स्थानों पर विशेष यज्ञ समारोह सम्पन्न हुए।

लन्दन में श्री उषर्बुध जी के प्रयत्न से ऋषि सप्ताह का आयोजन किया गया। अफ्रीका मे श्री मदन मोहन विद्यासागर जी के प्रचार आयोजन से ऋषि-सप्ताह सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार फीजी, बैंकोक, सिंगापुर सभी सुप्रसिद्ध विदेशी नगरों की आर्यसमाजों ने भी भव्य समारोह के साथ सप्ताह सम्पन्न किया। विश्व के कोने कोने म इस आयोजन से एक नये वातावरण की भावना गूंज उठी है और वह यह कि सारी मानवता एक है और मानवता का नेतृत्व आर्यों के हाथ म है अत कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आदर्श हम सदा अपने सम्मुख रखना चाहिये। यही ऋषिबोध पव की प्रतिध्वनि है।

आवश्यकता

आवश्यकता

निर्वाचन—

—बाँदा आर्यसमाज के प्रधान श्री सुखवासीलाल जी तथा मन्त्री श्री देवदत्त जी चुने गये।

—रायबरेली आर्यसमाज के प्रधान श्री रणवीरसिंह जी एव मन्त्री श्री गुलाम वर्मा जी निर्वाचित हुए।

—ककोड़ (बुलन्दशहर) आर्य समाज के प्रधान श्री ज्वालाप्रसाद जी तथा मन्त्री मुरारीलाल जी चुने गए।

—मनियर (बलिया) आर्यसमाज के प्रधान श्री नन्दनलाल जी एव रामेश्वर प्रसाद जी मन्त्री निर्वाचित हुए।

—उमराला (बुलन्दशहर) नई आर्यसमाज के प्रधान श्री शिवध्यान सिंह जी तथा मन्त्री बाबूसिंह जी निर्वाचित हुए।

—खपुरा (बुलन्दशहर) के प्रधान श्री नवलसिंह जी तथा मन्त्री श्री डा० भारी निर्वाचित हुए।

—आर्यसमाज गाजीपुर का वार्षिक निर्वाचन श्री बच्चनराम जी प्रधान की अध्यक्षता में ८ मार्च १९५१ ई० को सम्पन्न हुआ। उसमें श्री प्रभुदयाल आर्य प्रधान, श्री नन्दलाल उपप्रधान, श्री रामजीप्रसाद आर्य मन्त्री, श्री राधेश्याम उपमन्त्री, श्री राजाराम कोषाध्यक्ष, श्री बसन्तकुमार पुस्तकाध्यक्ष और श्री परमेश्वरदास लेखा परीक्षक चुने गये।

आर्य वीर दल—

—उन्नाव आर्य वीर दल की ओर से डीहा में ७ मार्च को एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें मण्डलपति श्री पाल द्विवेदी जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। डीहा ग्राम में दल की नई शाखा खोली गई, जिसके शाखा नायक श्री सूबेदारसिंह जी निर्वाचित हुए।

ऋषि-बोध

—मनियर (बलिया) मिर्जापुर टंकारा, आगरा, लखनऊ, दिल्ली पटना, कलकत्ता, जालन्धर, बम्बई, अजमेर आदि समाजों में ऋषिबोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

उत्सव-समाचार—

—देहली नयाबास आर्यसमाज का उत्सव २८ फर्वरी से १ मार्च ५१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—ग्वालियर नगर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव दि० ६ से ९ मार्च ५१ तक उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

(पृष्ठ ४ का शेष)

की तरह धर्म-निरपेक्ष देश बनाना चाहती हैं। उनकी शक्ति पाकर विदेशी धर्मप्रचारकों की सरगर्मी बढ़ी थी, उसको रोकने के लिए महाराजधिराज को धर्म सापेक्ष देश घोषित करने को प्रोत्साहन देने का पुण्य कार्य भी "आर्यसमाज, नैपाल" ने ही किया।

हमने विदेशी धर्म-प्रचारकों को रोकने का तो काम कर लिया। किन्तु हमारे समाज में फैले हुए भूत प्रेत, देव देवी के अंध विश्वास की कूप मंडूकता से उठने का उपाय करना भी हमारे लिए परमावश्यक है। यदि इस कूप-मंडूकता से हम नहीं उठ पाए तो हमे विदेशी षड्यन्त्रकारियो के कुचक्रों का शिकार बनना पड़ेगा। इसका परिणाम भारतीय और नेपालियों के लिए खोज करने की आवश्यकता नहीं। पाकिस्तान, गोवा एवं आसाम के नागा क्षेत्र का उदाहरण ही काफी है।

अन्धविश्वास से मुक्त होने के लिए वैज्ञानिक धर्म, सुधारवादी धर्म ही जरूरी है। हमारी नजर आती है बौद्ध धर्म और आर्यसमाज पर। बौद्धधर्म आज नैपाल से दूर दूर देशों मे ही फैला है। पड़ोस वाला बौद्ध देश एकमात्र चीन ही है। वह भी आज कम्युनिष्ट हो गया है। भारत मे उसका काफी प्रभाव नहीं है। इसलिए दूसरे नम्बर पर 'आर्यसमाज, भारत" की ओर "आर्यसमाज नैपाल" की दृष्टि जाना स्वाभाविक है। आर्यसमाज हमारी सामाजिक बुराइयो को दूर करने के लिए कटिबद्ध हो तो यहां के बौद्ध भी साथ देंगे, क्योंकि बौद्ध धर्म अनार्य धर्म तो है नहीं। सच बात तो यह है कि आर्यत्व का प्रचार बुद्ध एव बौद्धों ने विदेशों मे फैलाया है। इसका प्रमाण बौद्ध वाङ्मय मे आर्य शब्द का प्रचुर मात्रा मे प्रयोग हुआ है, जैसे कि आर्य सत्य, आर्य मार्ग, आर्य तारा, आर्य अवलोकितेश्वर, आर्य मौन, आर्य गण इत्यादि। इस आर्य शब्द को मंगोल एवं मंगोल संतती भाषा में "फ" "फाग" "फो" "फाया" कहता है। तिब्बती एवं मंगोल के लोग भारतवर्ष को "फागपाइ युल" अर्थात् आर्य देश कहते है; बुद्ध का भी फाग्पा कहते है। चीन बुद्ध को "फो" कहता है जिसका अर्थ आर्य हैं। बर्मा वाले बुद्ध को "फाया" कहते हैं जिसका भी अर्थ आर्य है।

हमारे लिए अब रहा आर्यसमाज को नैपाली समाज बनाने का सवाल। हमारे सामत एवं कट्टर पन्थी लोग आर्यसमाज का अर्थ नास्तिक कहकर काफी वर्षों से प्रचार करते आये हैं। इसको अब मिटाने के लिए काफी परिश्रम एवं साधन की जरूरत है! साधन जो चाहिए वह यहां के धनी देने को तैयार नहीं हैं, वे सब कट्टर पन्थों से प्रभावित हैं। नैपाली समाज में फैली हुई रूढ़ियों, अन्ध विश्वास और निरीह प्राणी हिंसापूर्ण कर्मकांडों को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने का कार्यक्रम शुरू नहीं करने का अर्थ होगा नैपाली जनता का पिछड़ा रहना, जिसका अर्थ, अर्थ न होकर, अनर्थ ही होगा। अथवा विदेशी षड्यन्त्रकारियों का शिकार होकर आर्य-जीवन का द्रोही बन जाना होगा। इसलिए हमारे लिए आर्यसमाज का आंदोलन तत्काल ही जरूरी है। साथ ही बड़ी कठिनाइयाँ भी है जिनको दूर करने की प्रथम जिम्मेदारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की है।

दुःख की बात है कि आर्यसमाज के कितने ही प्रचारक एव पंडित नैपाल की इन कठिनाइयों से अवगत होते हुए भी आज तक सक्रिय रूप से इन को दूर करने की चेष्टा नहीं कर रहे हैं।

आशा के केन्द्र बिन्दु के रूप में बिहार के आर्य नेता श्री आचार्य रामनन्द जी शास्त्री हैं जो हमारी सभी कठिनाइयों से अवगत हैं। नैपाल पर ध्यान रखने वाले आर्यजन आयें, यहाँ की हालत देखें, हमसे मिलें जो कुछ साधन सम्भव हैं, हमें जुटा दें। हमारी दुर्दशा, हमारा रोग, असाध्य हैं।

★

सभा की सूचनाएं

(१) विदित हो कि अन्तरङ्ग सभा दि० १५।३।५९ के नि० सं०२१ के अनुसार आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के 'अध्यक्ष' श्री पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार जी बदायूं (स०मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी) एवं श्रीमती सावित्रीदेवी जी प्रधाना स्त्री आर्यसमाज मुजफ्फरनगर अन्तरङ्ग सदस्यता पद पर निर्वाचित हुए हैं।

(२) सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रेस में प्रकाशनार्थ दी जा रही है। सभा के जिस किसी विभाग या जिला उप-प्रतिनिधि सभा आदि ने रिपोर्ट, भेजी हो, या भेजने से रह गई हो तो उन्हे चाहिये कृपया इस सूचना के पढ़ते ही वापिसी डाक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

प्रतिनिधि चित्र फार्म

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आज ३१ मार्च १९५९ वार्षिक प्रतिनिधि चित्रों के सभा में आने की अन्तिम तिथि है। किन्तु सभा कार्यालय में केवल ३०, ३५ समाजों के ही फार्म प्राप्त हुए हैं। अतः कृपाकर प्रतिनिधि फार्मों की खानापुरी नियमानुसार कर-कराकर भेजने का शीघ्र कष्ट कीजिये। साथ ही सभा प्राप्तव्य धन भी भेजकर कृतार्थ करें।

सभा का आगामी बृहदधिवेशन १६ व १७ मई १९५९ को हाथरस में होना निश्चत हुआ है। कृपया तिथियाँ नोट करने का कष्ट करें।

शोक-प्रकाश

अन्तरंग सभा दि० १५ ३-५९ में निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव सर्व समति से पारित हुआ।

प्रस्ताव

अन्तरंग सभा का यह असाधारण अधिवेशन गुरुकुल विश्व-विद्यालय वृन्दावन के सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री रामेश्वरदयालु जी स्नातक एम० ए० के सुपुत्र श्री नित्यानन्द जी स्नातक, सभा के अवैतनिक उपदेशक वयोवृद्ध संन्यासी श्री विश्वेश्वरानन्द सरस्वती जी जमुनानगर अम्बाला भूतपूर्व सहायक अधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन पूर्वनाम श्री पं० गंगादत्त जी शर्मा उपदेशक गुरुकुल वृन्दावन, सभा के उप प्रधान श्री जगनन्दन लाल जी एडवोकेट प्रयाग के वृद्धपिता श्री शंकरलाल जी एवं उनकी पुत्रवधू श्रीमती रानीकुमार जी प्रयाग, सभा के प्रतिष्ठित पूर्व अधिकारी एवं आगरा नगर आर्यसमाज के प्रधान श्री परमेश्वरी सहाय जी एडवोकेट कचहरी घाट आगरा, सभा उप मंत्री श्रीचन्द्र-नारायण जी एडवोकेट के ताऊ श्री श्यामनारायणजी बरेली और श्रीद्वारिकाप्रसाद जी एडवोकेट के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक समवेदना प्रकट करती हुई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति और शोकातुर परिवारों को धैर्य प्रदान करे।

—फूलनसिंह
सभा-मन्त्री

आर्य-जगत

[illegible]—

—आगरा नामनेर आर्यसमाज के प्रधान श्री रामनारायण जी तथा मन्त्री आत्मानन्द जी निर्वाचित हुए।

—[illegible] आर्यसमाज के प्रधान श्री मोहनलाल जी तथा मन्त्री सूबेदार जी चुने गये।

—[illegible]पुर बनवारी में नई स्थापित आर्यसमाज के प्रधान श्री जयपाल सिंह जी तथा मन्त्री श्यामसिंह जी चुने गए।

—हाजीपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री जयनन्दन सिंह जी तथा मन्त्री रामकिशोर सिंह जी निर्वाचित हुए।

—सिकन्दराबाद आर्यसमाज के प्रधान श्री सुन्दरलाल जी तथा मन्त्री [illegible] जी चुने गये।

—उरई आर्यसमाज के प्रधान श्री श्यामसुन्दर लाल जी तथा मन्त्री श्री [illegible] जी निर्वाचित हुये।

—फतेहपुर बिश्नोई (मुरादाबाद) आर्यसमाज के प्रधान श्री बाबूराम जी एवं मन्त्री श्री [illegible]सिंह जी चुने गये।

—कानपुर रेल बाजार आर्यसमाज के प्रधान श्री होशियारसिंह जी तथा मन्त्री श्री चन्द्रपालसिंह जी चुने गए।

—[illegible]राहेड़ी सहारनपुर आर्य समाज के प्रधान श्री [illegible] जी तथा मन्त्री श्री परमानन्द जी निर्वाचित हुए।

—सरायतरीन हयातनगर आर्य कुमार सभा के प्रधान श्री डा० बुद्धि प्रकाश जी एवं मन्त्री सुधाकर जी चुने गये।

—[illegible]रेली पुराना शहर आर्यसमाज के प्रधान श्री अश्विनीकुमार जी एवं मन्त्री [illegible]पाल जी चुने गये।

—[illegible] आर्यसमाज के प्रधान श्री [illegible]सिंह जी तथा मन्त्री लक्ष्मी नारा[illegible] जी चुने गये।

—गाजियाबाद भारतनगर आर्य[illegible] के प्रधान श्री ऊधोदास जी [illegible] मन्त्री गिरिधारी लाल जी चुने [illegible]।

—[illegible] (अलीगढ़) आर्यसमाज के प्र[illegible] श्री वैद्य नन्दपाल जी तथा मन्त्री [illegible]

—मुरादाबाद महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती [illegible] जी एवं [illegible] जी चुनी गईं।

—कांठ (मुरादाबाद) आर्य समाज प्रधाना श्री रामेश्वरी जी तथा मन्त्री सुरेशचन्द्र जी निर्वाचित हुए।

—सरायतरीन, हयातनगर के प्रधान श्री बाबू मित्रानन्द जी तथा मन्त्री हरिश्चन्द्र आर्य चुने गये।

—सीतापुर आर्यसमाज के प्रधान श्री बिहारीलाल जी, मन्त्री श्री मथुराप्रसाद जी निर्वाचित हुए।

—बूढ़ली (मुजफ्फर नगर) आर्यसमाज के प्रधान श्री सरदार सिंह जी एवं मन्त्री सुखवीरसिंह जी चुने गये।

सूचना

आर्यसमाज अम्बाला नगर गुरुकुल भवन निर्माण के हेतु स्थानीय तथा प्रान्तीय अधिकारियों ने जनता से अपील की है कि सभी आर्यबन्धु एवं विशेषतया पंजाब निवासी आर्य सज्जन इस शुभ कार्य में आर्थिक योग दान द्वारा इस नये भवन निर्माण में समाज की सहायता करने की कृपा करें।

संस्कार-समाचार—

—बनारस निवासी श्री नानराम जी की सुपुत्री कुमारी शक्ति का पाणिग्रहण संस्कार श्री सुन्दरराम जी रेवाड़ी के साथ ४ मार्च को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

—आसनसोल निवासी श्री धर्म देव जी के सुपुत्र चि० पंकजकुमार का मुण्डन संस्कार ६ मार्च को श्री पूज्य आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

उत्सव-समाचार—

—सुल्तानकी किशनपुर (सहारनपुर) आर्यसमाज का उत्सव १८ से २० मार्च तक मनाया गया।

शोक-समाचार—

[illegible] (अलीगढ़) आर्य समाज के सदस्यों ने श्री राम[illegible] जी ग्राम प्रधान तथा [illegible] जी के निधन पर दुःख प्रकट किया।

—[illegible] आर्यसमाज के सदस्यों ने पूर्व प्रधान श्री [illegible] जी के आकस्मिक निधन पर शोक [illegible]

—बिजनौर आर्यसमाज के सदस्यों ने श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी तथा [illegible] बाबू राजाराम जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास किये।

[illegible] की भाषा समस्या—

आर्यसमाज सद्भावना जारी रक्खेगा

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति दिल्ली की दिनांक ७.३.५९ की बैठक में, जो श्रीयुत माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त की प्रधानता में महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली में हुई, पारित प्रस्ताव—

इस समिति को इस बात का खेद है कि दि० २३.११.५८ के प्रस्ताव के अनुसार जो तीन मास का समय प्रस्तावित हुआ था उसके बीत जाने पर भी कोई दृश्यमान परिणाम नहीं हुआ। इसके कई कारण बताए जाते हैं, परन्तु इससे जनता की बेचैनी और आवेश का सर्वथा रुकना सम्भव नहीं है। यह स्पष्ट है। तथापि इस बीच में पंजाब के राज्यपाल श्री गाडगिल ने जो वक्तव्य दिया और पंजाब के शिक्षा मन्त्री ने शासन की ओर से २१ फरवरी १९५९ का जो वक्तव्य दिया और उन वक्तव्यों में जो अपील की गई है उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

राज्यपाल ने अपने प्रेस वक्तव्य में यह भी कहा है कि सरकार ने भाषा समस्या के समाधान के लिए जो सद्भावना समिति नियुक्त की हुई है उसकी रिपोर्ट अप्रैल मास के अन्त तक आ जायगी।

इन सब बातों का ध्यान में रखते हुए यह समिति निश्चय करती है कि दि० २३.११.५८ के प्रस्ताव के अनुसार आगामी पग उठाने से पूर्व मई में सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक बुलाई जाय।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ल. ६०
१५ चैत्र शक १८८१
(५ अप्रैल १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग लखनऊ

बाबूराम शास्त्री द्वारा ... आर्य भास्कर प्रेस, ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्



आर्यमित्र

(वार्षिक मूल्य ८)]23-4-59
एक प्रति का १० नये पैसे]

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र
लखनऊ, रविवार चैत्र २२, शक १८८१, चैत्र शुक्ला ४, वि० २०१६, १२ अप्रैल, १९५९ ई०

[विदेश में
[१२ शिलिंग

आर्यसमाज की आवश्यकता

कहता है कौन कि दुनिया मे आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?
क्या ऋषि का ध्येय हुआ पूरा, अवशेष रहा कुछ काज नहीं ?

अज्ञान अंधेरे में गुम्फित गह्वर से क्या ये देश कढ़ा ?
पाकर स्वतन्त्रता भी भारत क्या गौरव-गिरि के शिखर चढ़ा ?
वैदिक विधान के वर्तन का क्या कुछ भी पावन पाठ पढ़ा ?
क्या नैतिकता, नय, न्याय-नीति के लिए नया खोदा न गढ़ा ?
क्या धर्म ध्येय-निरपेक्ष, निपट निरुपाय हमारा राज नहीं ?
कहता है कौन कि दुनिया में आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?

इतिहास-परक पाश्चात्य-प्रणाली से क्या श्रुति-उद्धार हुआ ?
संस्कृत-साहित्य-सभीरक्ष में क्या सौम्य-मरुन सचार हुआ ?
पृथ्वीतल पर पावन वैदिकवादों का क्या विस्तार हुआ ?
विज्ञान विमण्डित विधियों पर, निधियों पर विविध विचार हुआ ?
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का अब तलक सजा कुछ साज कहीं ?
कहता है कौन कि दुनिया में आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?

पाखण्ड हुआ खण्ड-खण्ड क्या दम्भ दुर्ग चकनाचूर हुआ ?
मिथ्या विश्वास बढ़ा न कहीं क्या, कुम्भ काण्ड कम क्रूर हुआ ?
क्या राजनीति में भी प्रवेश पाखण्ड का जहँ भरपूर हुआ ?
क्या राजघाट पर ढोंग-ढग, कीर्तन-अर्चन का दूर हुआ ?
क्या अनाचार अंग्रेजपना भारत भूमि में आज नहीं ?
कहता है कौन कि दुनिया में आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?

क्या ईसाई मिशनों का अब, यवनों का काम नहीं होता ?
हिन्दू समाज क्या अपने लाखों लाल ललाम नहीं खोता ?
क्या राष्ट्र-विरोधी बीज द्रविड़-कजगम दिन रात नहीं बोता ?
क्या आज हमारा वह समाज आलस की नींद नहीं सोता ?
दिन रात हमारे गौरव के गढ़ पर क्या गिरती गाज नहीं ?
कहता है कौन कि दुनिया में आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?

इसलिए आज फिर एक बार ऐ सोते सिंहों जाग उठो ।
गर्जना करो भीषण जिससे सब अरिदल, आये भाग, उठो ॥
हे आर्यवीर ! वैदिक प्रचार की लेकर उर में आग उठो ।
भारत जननी श्रुति माता का लेकर अनुपम अनुराग उठो ॥
क्या ऋषि मुनियों के गौरव की कुछ पुण्य प्रतिष्ठा लाज नहीं ?
कहता है कौन कि दुनिया में आवश्यक आर्यसमाज नहीं ?

—सूर्यदेव शर्म्मा, एम ए डी लिट अजमेर

वर्ष ६१

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अङ्क १४

भारतीय उद्बोधन की परम्परा में महर्षि दयानन्द

[श्री जयचन्द्र विद्यालङ्कार]

(भारतीय पुनर्जागरण की परम्परा में महर्षि दयानन्द का योग दान कितना महत्वपूर्ण है एक ऐतिहासिक अन्वेषक के शब्दों में ही उसका सही मूल्यांकन सम्भव है। आज के भारतीय जागरण की नींव में महर्षि की तपस्या छिपी है। योरोपीय प्रभाव और भौतिक विज्ञान के आकर्षण में राष्ट्र उनके महत्व को ओझल कर रहा है पर भारतीयता के प्रत्येक उपासक को महर्षि के महत्व को स्वीकार करना और उसकी रक्षा के लिये प्रयत्न करना होगा। विद्वान् लेखक ने ऐतिहासिक विवेचन के आधार पर भारतीय उद्बोधन में महर्षि के महत्व पर प्रकाश डाला है। इस दिशा में नवभारत का आदर्श इतिहास-निर्माण करते समय महर्षि की महत्ता और उनके महत्वपूर्ण स्थान की रक्षा का दायित्व इतिहास निर्माताओं और महर्षि के अनुयायियों पर है। —सम्पादक)

आज से १२२ बरस पहले भारत के लाखों नर-नारी जब शिव-लिंग के सामने आंखें मलते जागते रहने के जतन में लगे थे, तब सौराष्ट्र के एक गांव में १२ वर्ष के एक किशोर का मन भी जाग उठा था। वह जागा और फिर वह अपने साथी पुजारियों की मानसिक दशा के बारे में सोचने लगा। उसने देखा कि वे अपनी चर्मचक्षुओं से जागने का जतन कर रहे हैं। मूलशंकर का वह उद्बोधन उद्बोधनों की परम्परा का आरम्भ था। वह अपने समाज में फैले अन्धविश्वास और अन्याय से ऊब कर रोशनी की तलाश में घर से निकल पडा। उस भटकने में कुछ महाराष्ट्र साधुओं की संगत में उसे प्रकाश मिलता दिखाई दिया। उनमें से एक स्वामी पूर्णानन्द ने उसे सन्यास की दीक्षा दी। उस प्रकाश के साथ वह देश में विचरने लगा तो उसकी निराशा और भी जाग उठी। उसने देखा कि अपने समाज में जो चारों तरफ अन्याय फैले हैं उनमें सबसे बडा अन्याय यह है कि वह सारा समाज मुट्ठी भर विदेशियों के हाथो भेडों बकरियों की तरह हाका जा रहा है। भारत के लोगों की मोहनिद्रा कितनी गहरी है, यह अब उसे स्पष्ट दिखाई देने लगा। उस मोहनिद्रा के कारणो और उसे तोडने के उपायो की खोज में वह फिर स्वामी पूर्णानन्द के पास हरद्वार पहुचा। उनके सामने दयानन्द ने जो प्रश्न रक्खे, पूर्णानन्द ने कहा कि उन पर उनके शिष्य विरजानन्द ने विशेष विचार किया है। युवक दयानन्द ने गढवाल की यात्रा से लौट विरजानन्द के पास मथुरा जाने की ठानी। किन्तु गढवाल से लौट कर वह गगा क घाट गढमुक्तेश्वर से मथुरा जाने क बजाय कानपुर चले गये। भारत राष्ट्र तब अंगडाई लकर अपनी सदियो की नींद से उठने और उस नींद में विदेशी दस्युओं द्वारा डाले गये बन्धनो को तोडने की चेष्टा कर रहा था। दयानन्द जैसा व्यक्ति जो उसे उठाने क लिए तडपता फिरता था, उस चेष्टा से अलग कैसे रह सकता ?

सन् १८५७-५९ की वह चेष्टा सफल नही हुई। किन्तु उस सिलसिले मे दयानन्द ने जो सारे भारत की यात्रा की और भारत के उठने के प्रयत्नो को भीतर पैठ कर देखा, उससे उस विफलता का स्वरूप उसके सामने स्पष्ट होकर आया। वह उसके कारणों और उन्हें दूर करने के उपायों पर विचार करने को अपने पाँच वर्ष दुराने सकल्प के अनुसार विरजानन्द के पास पहुँचा। जहाँ चार वर्ष के चिन्तन और विचार-विनिमय के बाद उसे अन्त को अपने राष्ट्र के लिए स्पष्ट रास्ता दिखाई दिया। सन् १८३७ की शिवरात्रि को जो उद्बोध शुरू हुआ था वह यो १८६४ में आकर पूरा हुआ। अब उस उद्बुद्ध सन्यासी के सामने देश की जनता को जगाकर उसे वह रास्ता दिखाने का काम था।

प्राचीन वाङ्मय के अपने मनन की बदौलत दयानन्द ने यह पहचाना कि आज के भारत की जैसी पराजित मनोवृत्ति, प्रगतिहीनता और किंकर्तव्य-विमूढता है वह प्राचीन भारत में नहीं थी। वैदिक साहित्य और मनुस्मृति आदि में उससे ठीक उल्टा चित्र है। दयानन्द के काल तक हमारे इतिहास की यथेष्ट खोज नहीं हुई थी, पर आज जो हो चुकी है उससे यह तथ्य पूरी तरह प्रमाणित हुआ है। भारत का प्राचीन इतिहास एक सजीव राष्ट्र के जीवन का वृत्तान्त है। जीत-हार, उतार चढाव प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में आते हैं। पर उन सब के बीच प्राचीन भारत आगे बढता चलता है, कोई हार होने पर भी फिर उठ खडा होता है। लगभग छठी शताब्दी के मध्य में आकर उसकी वह प्रगति मन्द होती दीखती है—उसका राज्य क्षेत्र जितना फैल चुका था उससे घटने लगता, जनता अपने राजनैतिक कर्त्तव्यों और अधिकारों के प्रति उदासीन होने लगती, समाज की धारा में प्रवाह रुककर खडे जोहड बनने लगते, विज्ञान और दर्शन में नया विचार नहीं उठता, साहित्य और कला में रुचि गिरने लगती है। प्राय चार शताब्दियों तक भारत अपने पुराने जीवन के बल पर अन्धडों के सामने भी खडा रहता है, पर दसवीं शताब्दी के मध्य से उसका ह्रास बढ जाता है। तेरहवीं सदी तक पहुचते पहुचते भारतीय राज्यों की यह दशा हो जाती है कि वे एक-एक ठोकर खाकर गिर पडते हैं। उस दशा के कारण भी स्पष्ट हैं। उन शताब्दियों के जो धर्म-ग्रन्थ प्राप्य हैं उनमें नैष्ठिक हिन्दू के लिए वर्ष भर में दो हजार व्रतों पूजाओं का विधान है। जिन राष्ट्रों के नेता वैसे खेलों में लगे हों वे टिके कैसे रहते ?

चौदहवीं शताब्दी से सन्त सुधारक उस अवस्था से देश को उबारने लगते हैं। उनकी चलाई लहर की बदौलत सत्रहवीं-अठारहवीं सदियों में शिवाजी छत्रसाल, गोविन्दसिंह और पृथ्वी-नारायण जैसे नेता उठकर नये राज्य खडे करते हैं। किन्तु शिवाजी, गोविन्द-सिंह और पृथ्वीनारायण के उत्तराधिकारी भी यूरोपियो के सामने पछाड खाते हैं। उनकी वह पछाड हमारे इतिहास की सबसे जटिल गुत्थी रही है। आज के खोजी उसे सुलझाते हुए इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि सन्त सुधारकों के लिये धार्मिक संशोधन और उससे पैदा हुए राजनीतिक पुनरुत्थान के साथ भारत का बौद्धिक पुनर्जागरण नहीं हुआ, यूरोपीय लोग ज्ञान में आगे बढते गये और इधर हमारे ज्ञानचक्षु मुंदे रहे, इसीसे हम उनके मुकाबले में ठहर न सके। दयानन्द ने प्रत्यक्ष अनुभव से सन्त-मार्ग की इस कमजोरी को पहचाना और स्पष्ट शब्दों में कहा।

किन्तु शिवाजी के साथ पुनरुत्थान की जो लहर उठी थी, उसमें अभी दम बाकी था। उसीके प्रभाव से कुछ लोगों ने अपनी हार के कारणों पर विचार किया था। अठारहवीं सदी के मध्य में रघुनाथ हरि नवलकर ने पहले पहल यह पहचाना कि यूरोपी लोग जो ज्ञान की दौड में हमसे आगे निकलते जा रहे हैं उसमें उन्हें पकडे बिना हम अपने को बचा नहीं सकते। युद्ध-विज्ञान में यूरोपी आगे बढ गये थे, साथ ही भारत की जनता में से ही भाडे़ त सेना भरती कर उसीसे उन्होंने भारत को बाँध लिया था। स्वतन्त्र भारत के नेता उस सेना को देख-देख काँपते रहे, पर उन्होंने यह नहीं देखा कि उसे अपनी तरफ मिलाकर हम पासा पलट सकते हैं। रघुनाथ हरि के सम्प्रदाय ने यह तथ्य पहचाना और इसी पहचान के आधार पर १८५७ का स्वतन्त्रता-युद्ध लडा गया।

उन्नीसवीं सदी के मध्य में गोपाल हरि देशमुख ने फिर भारत के पराभव के कारणों पर गहरा विचार कर धार्मिक, सामाजिक संशोधन का और नये ज्ञान को अपनाने का मार्ग देश के सामने रक्खा। गोपाल हरि दयानन्द से एक बरस बडे थे। स्वयं दयानन्द का उद्बोधन भी मराठा पुनरुत्थान की उस परम्परा में ही था और अपने महाराष्ट्र गुरुओं द्वारा दयानन्द का उस नई चिन्तनधारा में भी प्रवेश हुआ था।

इसीलिए १८५७-५९ की हार क बाद उसने उसके कारणों पर फिर गहरा विचार किया। उसनें देखा कि भारत की सेना देश की स्वतन्त्रता के लिए लडी, पर उस सेना का सचालन नये युद्धविज्ञान की शैली से नहीं हुआ, आगे फिर वैसा प्रयत्न करने के लिए भारत के युवको को उस विज्ञान की शिक्षा पानी होगी, जिसके लिए क्रांति सघटन करना होगा। यह कार्य उसने अपने शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को सौंपा। दूसरे उसने देखा कि भारत की जनता तक जनता की अपनी भाषाओं में विश्व का नया ज्ञान पहुँचाये बिना भारत का उद्धार नहीं है। रघुनाथ हरि के काल से इस तथ्य को पहचाना जा चुका था, दयानन्द ने अब देखा कि इसे चरितार्थ करने को राष्ट्रीय शिक्षा का सघटन करना होगा। यह कार्य उसने अपने दूसर शिष्य मुंशीराम को सौंपा। तीसरे, उसने धार्मिक, सामाजिक संशोधन के कार्य को पक्की नींव पर रखने के लिए गोपाल हरि देशमुख को साथ ले आर्यसमाज की स्थापना की।

उस दिन से आज तक उद्बोधन की यह परम्परा कैसे चली इसकी भी अपनी कहानी है, जो इतिहास के सच्चे खोजियों को पुकार रही है। और इस इतिहास पर हम ध्यान देते तो देखते हैं कि भारत की जनता के उद्बोधन की अभी पहली ही मंजिल तय हुई है। आगे की मंजिलें भारत के युवकों को ललकार रही हैं।*

---

*(आकाशवाणी जालंधर के शिवरात्रि पर प्रसारित ऋषिबोध-कार्यक्रम में दिया गया भाषण। आकाशवाणी के सौजन्य से)।

वेदोपदेश

ओं यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ ऋ० १।१।२।१

हे "अङ्ग" मित्र ! जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको 'भद्रम्' व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख अवश्य देते हो, हे "अङ्गिरः" प्राणप्रिय ! यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना, यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है आप मुझको ऐहिक और पारमार्थिक इन दोनो सुखों का दान शीघ्र दीजिये जिससे सब दुःख दूर हो। हमको सदा सुख ही रहे।



लखनऊ—१२ अप्रैल १९५९ दयानन्दाब्द १३४ सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

आर्यसमाज के शिक्षा-आन्दोलन की सफलता के लिये

आर्य-शिक्षा संस्थाओं का एकीकरण

आर्यसमाज के वास्तविक उद्देश्य की सिद्धि के लिये महर्षि दयानन्द ने हमें शिक्षा का अमोघ साधन प्रदान किया था आर्यसमाज के ८४ वर्षीय इतिहास का वर्गीकरण किया जाय तो शिक्षा तत्व को ही उसमें प्रमुख स्थान प्राप्त होगा। इस महत्वपूर्ण भूमिका पर विकसित आर्यसमाज के शिक्षा आन्दोलन का तो हमें गम्भीरता पूर्वक सिंहावलोकन करना चाहिए।

आर्यसमाज का शिक्षा आन्दोलन भारतीय स्वाधीन भावना की प्रतिक्रिया थी, मैकाले की शरारत और दुरभिसन्धि का मुह तोड एव व्यावहारिक उत्तर था जिससे एकबार ब्रिटिश शासको के हृदय भी सशंकित हो उठे। शिक्षा विचार स्वातन्त्र्य की आधार भूमि है और आर्यसमाज ने विदेशी शासको और भावनाओ के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन द्वारा एक नवीन वातावरण सृजन करने में सफलता प्राप्त की। देश में डी० ए० वी० संस्थाओं गुरुकुलो तथा अन्य अनेक संस्थाओं का जाल बिछ गया, राष्ट्र ने मुक्त कंठ से आर्यसमाज के इस नेतृत्व को स्वीकार किया और समर्थन व सहयोग दिया।

आज राष्ट्र स्वाधीन है, राष्ट्र की परम्परा और सामयिक परिस्थितियो का तकाजा है कि आर्यसमाज राष्ट्र को पथ-प्रदर्शन दे। आर्यसमाज की वर्तमान शिक्षा-संस्थाएं इस दायित्व को वहन करने में समर्थ हैं या नहीं, राष्ट्र इस प्रश्न का उत्तर चाहता है। हम अनुभव करते है कि आज परिस्थिति यह है कि दूसरो की अपेक्षा आज भी हमारी सस्थाए व्यक्ति निर्माण और राष्ट्र को पथ प्रदर्शन देने मे समर्थ हैं, पर उनसे जितनी और जो आशा थी वे उसे पूर्ण नहीं कर पाती इस शैथिल्य और असफलता के कारणो का अनुसन्धान करने पर हम अनुभव करते हैं कि हमारी शक्तियो का विकेन्द्रीकरण और लक्ष्य की अस्पष्टता ही इसका मुख्य कारण है। आज हमारे डी० ए० वी० डी० ए० वी० नहीं रहे और न गुरुकुल ही गुरुकुल हम एक लकीर पीटने और दूसरो के लिये अपनी शक्तियो को समर्पित करने के अजीब चक्र में घूम रहे हैं। आर्यसमाज के शिक्षा विशारदों को इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक अविलम्ब विचार करना चाहिए।

यहा इस समस्या पर कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहे है, जिनके आधार पर इस प्रश्न पर विचार विमर्श किया जा सकता है।

१—आर्यसमाज शिक्षा की स्वाधीनता के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करे। राज्य के साथ आर्यसमाज किन अवस्थाओ में सहयोग कर सकता है, किन में नहीं। यह सूत्र रूप से निश्चित एव घोषित होना चाहिये।

२—डी० ए० वी० एव गुरुकुल विचार धाराओ के मौलिक मतभेद को समाप्त घोषित किया जाकर आर्यसमाज के शिक्षा आन्दोलन का आर्य विश्व विद्यालय या दयानन्द विश्वविद्यालय के रूप में एकीकरण किया जाना चाहिये सभी स्नातकीय गुरुकुल और स्नातकीय डी० ए० वी० कालेज इस विश्वविद्यालय के प्रमुख अङ्ग हों, शेष संस्थायें शाखा हों। गुरुकुल विभाग में संस्कृत की प्रमुखता रहे और कालेज विभाग मे नवीन विज्ञान आदि की। राष्ट्रभाषा सम्मान, धार्मिक शिक्षा और सांस्कृतिक दृष्टिकोण सर्वत्र समान हो।

मित्र के इन स्तम्भों में एकीकरण की इस विचार धारा का हम बहुत समय से प्रचार करते आ रहे हैं पर सार्वदेशिक सभा द्वारा उपसमिति निर्माण से आगे गाडी नहीं सरक सकी है। हम आर्य जगत् के शिक्षा प्रेमियो से अनुरोध करेंगे कि वे इस गम्भीर प्रश्न की उपेक्षा न करें और राष्ट्र को उचित पथ प्रदर्शन देने के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

आगामी सप्ताह आर्य जगत् की प्रसिद्ध शिक्षा-संस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर शिक्षा सम्मेलन और गुरुकुल सम्मेलन होने जा रहे हैं। हम आशा करते हैं कि केवल भाषण बाजी और प्रस्तावो तक ही ये सम्मेलन समाप्त न हो जायगे। आर्य जगत् के शीर्षस्थ शिक्षा विद् वहां एकत्र होगे वे सघटन और सस्थाओ के उद्देश्य की दिशा मे अवश्य विचार करें। सभाओ की बैठकों में तो निर्वाचनो की आधी में सब विचार हवा हो जाते है परन्तु गुरुकुल की पवित्र भूमि में इस समस्या पर गम्भीर विचार होना चाहिए।

अच्छा तो यही हो कि डी०ए०वी० और गुरुकुल सस्थाओ का एकीकरण हो जाय। पिछले दिनो टंकारा में न्यायमूर्ति महाजन साहब ने भी आर्य शिक्षा सस्थाओ के स्वरूप और भविष्य के विषय मे चिन्ता व्यक्त की थी, डी० ए० वी० सस्थाओ के महत्व की रक्षा का दायित्व उन पर है। इनसे बडी आशायें है। परन्तु यदि कानूनी या अन्य वैधानिक कठिनाइया बाधक हो तो गुरुकुल वर्ग की सस्थाओं की एकता का प्रयत्न घोषित कर दिया जाना चाहिये। गुरुकुल कांगडी गुरुकुल वृन्दावन और गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर अर्द्ध शताब्दी का जीवन पूर्णकर गुरुकुल आन्दोलन की सफलता सिद्धकर चुके हैं परन्तु त्रिवेणी का सगम अभी नहीं है उसकी ओर बढकर ही हम अधिक सफलता और स्थायित्व प्राप्त कर सकते हैं। आर्य जगत् मे एक गुरुकुल शिक्षा परिषद् हो, एक पाठविधि हो, एक ही उपाधि हो सस्थाओ का स्थानीय महत्व बना रहे पर मौलिक सघटनात्मक एकता हो। इस सबके लिये सहयोग दूरदर्शिता एव अहं के स्थान पर आर्यसमाज के भविष्य की चिन्ता आदि की आवश्यकता होगी। युग ने आज हमे जहा ला पटका है उसमें दीर्घजीवन एव उद्देश्य की सफलता के लिए एक यही अवलम्ब है। आशा है, इन पंक्तियो पर आर्य-जगत् के शिक्षा शास्त्री व सस्था सचालक विचार एव मनन कर समस्या के समाधान का प्रयत्न आरम्भ करेंगे।

स्व० डा० ब्रजेन्द्र स्वरूप जी

आर्यसमाज के शिक्षा आन्दोलन को प्रगति देने मे अपनी सम्पूर्ण शक्तियां से संलग्न रहकर कार्य करने वाले हमारे वयोवृद्ध कर्मठ नेता डा० ब्रजेन्द्र स्वरूप जी आज हमारे मध्य से उठ गये हैं। ८४ वर्षीय वृद्धावस्था में वे काफी समय से अस्वस्थ थे परन्तु किसी को भी यह विश्वास न था कि वे अचानक हमें छोड़कर चल जायेंगे।

आदरणीय डाक्टर साहब एक उच्चकोटि के वकील होने के साथ साथ उत्तर प्रदेश मे डी० ए० वी० शिक्षा आन्दोलन के आजीवन कर्णधार बने रहे। उन्होने आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाओ को आधुनिक श्रेष्ठतम शिक्षणालयो के मुकाबले की संस्थाएं बनाकर आर्यसमाज के शिक्षा प्रेम का परिचय दिया। कानपुर डी० ए० वी० कालेज और देहरादून डी० ए० वी० कालेज उनके जीवन की साधना के फल हैं और यह बात कहते हुए हम गर्व अनुभव करते है कि दोनो, महाविद्यालय अपने अपने क्षेत्र मे यूनीवर्सिटियो का स्वरूप धारण करने में समर्थ है। कानपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना का केन्द्र बिन्दु डी० ए० वी० कालेज ही रहा और मेरठ देहरादून क्षेत्र मे देहरादून डी० ए० वी० का अपना विश्व विद्यालय महत्व सुविदित है।

आदरणीय डा० साहब के वियोग से आर्यसमाज के शिक्षा क्षेत्र का अनुभवी कर्णधार छिन गया उनके अभाव की पूर्ति निकट भविष्य मे असम्भव है। उनके परिवार के सदस्यो की सेवाओ को ध्यान में रखते हुए हम आशा करते हैं कि उनके सुपुत्र श्री बाबू वीरेन्द्र स्वरूप जी परम्परा को कायम रखेंगे। इस शोकावसर पर हम भाई वीरेन्द्र स्वरूप जी तथा अन्य पारिवारिको के साथ मित्र परिवार एव सभा की ओर से हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। प्रभु दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें, और हम शक्ति दें कि डा० साहब ने शिक्षा का जो महान् यज्ञ आरम्भ किया था उसे पूर्ण कर सकें।

स्व० जयकर

भारत की प्राचीन पीढी के उदार राजनीतिज्ञो मे पूना विश्व विद्यालय के कुलपति श्री जयकर के स्वर्गवास का समाचार पढकर प्रत्येक भारतवासी दुख

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अनुभव कर रहा है। उनके निधन से भारत का एक विद्वान्, प्रतिभाशाली, चरित्रवान् उदारचेता राजनीतिज्ञ उठ गया। स्व० जयकर की सेवायें भारतीय संघर्ष के समय मध्यस्थता के रूप में स्मरणीय रहेंगी। उनके प्रयत्न सदाशयता पूर्ण थे और वे अंग्रेज शासकों को दमन का मार्ग छोड़ने के लिये प्रेरणा देते रहे। मित्र परिवार की ओर से हम स्व० जयकर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

काश्मीर में प्रवेश की स्वतन्त्रता

१ अप्रैल से काश्मीर में परमिट प्रणाली से प्रवेश का प्रतिबन्ध समाप्त कर दिया गया है। इस घोषणा के लिये हम सरकार को हार्दिक बधाई देते है। काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और वहां प्रत्येक भारतीय को विचरण करने की स्वाधीनता रहनी चाहिये। जिस शंकाओं के आधार पर अब तक यह प्रतिबन्ध था वे व्यर्थ सिद्ध हो चुकी हैं हम आशा करते है चुनाव और न्याय सम्बन्धी पृथकतायें भी शीघ्र समाप्त हो सकेंगी।

तिब्बत का संघर्ष

१९ मार्च से तिब्बत की जनता ने चीनी शासन के विरुद्ध संघर्ष आरम्भ कर स्वाधीनता के इतिहास में एक नवीन अध्याय आरंभ किया है। यद्यपि कूटनीतिक पद्धति से तिब्बत का संघर्ष चीन का आन्तरिक संघर्ष है तदपि भारत के साथ तिब्बत के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों का तकाजा है कि हम तिब्बत की समस्या पर गम्भीरता एवं सहानुभूति प्रकट करें। चीनी सरकार ने कालिम्पोंग (भारत क्षेत्र) को संघर्ष का प्रेरणा स्थल बताया पर प्रधान मन्त्री नेहरू ने उसका खण्डन कर दिया। इतने पर भी भारत के साम्यवादी दल ने चीन सरकार के कथन का समर्थन किया। यह भयावह स्थिति है जो राष्ट्रवाद से ऊपर विचारधारा की गुलामी को प्रकट करती है। अन्ध समर्थन के नाम पर साम्यवादी भारत के साथ द्रोह कर रहे हैं। उनके इस अभिनय से उनका वास्तविक स्वरूप द्वितीय युद्ध के बाद पुनः स्पष्ट हो गया है। चीन को राष्ट्र संघ का सदस्य न बनने के अमेरिकन हठ का दुष्परिणाम भी सामने है राष्ट्र संघ का कोई दबाव चीन पर नहीं पड़ सकता। हम तिब्बतवासियों की स्वाधीनता के लिए प्रार्थना करते हैं।

आर्यसमाज और श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह

सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र सहयोगी सार्वदेशिक के अप्रैल अंक में सम्पादकीय में आर्यसमाज का पक्ष निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया है--

प्रस्तुत लेख मे सार्वदेशिक सभा की ओर से उन तथ्यो और परिस्थितियों का स्पष्टीकरण करते हुए श्री विदेह जी द्वारा प्रचारित "अपनों से अपनी बातें" पुस्तक के सम्भावित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है।

सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज की शिरोमणि सभा है और उसने धर्मार्य सभा की सम्मति के आधार पर श्री विदेह जी के सम्बन्ध में जो निर्णय किया है, उसे सैद्धान्तिक दृष्टि से स्वीकार किया जाना और समझा जाना चाहिये। आर्यसमाज के द्वार हरेक उस व्यक्ति के लिये सदैव उन्मुक्त रहे हैं और रहने चाहिये जो वैदिक मान्यताओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करना चाहता और प्रचार करना चाहता है, परन्तु जो सिद्धान्त की कसौटी पर जरा भी कमजोर पाये गये उनके सम्बन्ध में आर्यसमाज को सतर्कता और अनुशासन की नीति अपनानी पड़ी है। आर्यसमाज के इतिहास में श्री अखिलानन्द, श्री भीमसेन, श्री स्वामी आदि के विषय में वेदी बन्द करने के निर्णय सैद्धान्तिक संघर्ष के ही परिणाम है। खेद है कि श्री विदेह जी के सम्बन्ध में सभा को प्रतिबन्ध का निर्णय करना पड़ा। चार वर्ष के समय में उनसे आर्यसमाज को आशा थी कि वे सैद्धान्तिक मतभेद समाप्त करने का प्रयत्न करेंगे परन्तु उनके वक्तव्य से ऐसा प्रतीत होता है कि वे अभी सैद्धान्तिक मतभेद को स्वीकार करने के लिये भी उद्यत नहीं है। जहां तक उनकी महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा और निष्ठा का प्रश्न है उनके इस कथन का व्यावहारिक उत्तर आर्यसमाज के अनुशासन को मानना और ऋषि के विचारों को स्वीकार करना ही है। आर्यसमाज का द्वार उनके लिए सदैव खुला है, आर्यसमाज के लिये वे बहुत उपयोगी भी हो सकते है, परन्तु आर्यसमाज उनका स्वागत सिद्धान्त त्यागकर कभी न कर सकेगा, आशा है विदेह जी इन पंक्तियों को सद्भावना के रूप में ग्रहण करेंगे और अपने विषय को व्यक्तिगत न मान कर सैद्धान्तिक समझेंगे और आवश्यक सुधार के लिए उद्यत होंगे।

—सम्पादक

श्रीयुत स्वामी विद्यानन्द जी विदेह के लिए सार्वदेशिक सभा ने आर्यसमाज की वेदी बन्द की हुई है, क्योंकि उनके वैयक्तिक वार्तालाप, प्रवचनों और लेखों से महर्षि दयानन्द की स्थापना और आर्यसमाज के मन्तव्यों के विरुद्ध व्यवहार की अनेक शिकायतें आर्य जनता और आर्यसमाजों की ओर से सभा में प्राप्त हुई थीं। इस प्रतिबन्ध को लगे हुए लगभग चार वर्ष हो चुके हैं। सार्वदेशिक सभा की यह इच्छा थी कि श्री विदेह जी के प्रति इतना कठोर पग न उठाया जाय। सभा ने उन्हें अपनी गतिविधि में सुधार करने का आवश्यकता से अधिक समय दिया, क्योंकि सभा उन्हे आर्यसमाज का उपयोगी अंग बनाये रखना चाहती थी। किन्तु खेद है कि सभा की इस इच्छा की पूर्ति में श्री विदेह जी की ओर से अपेक्षित सहयोग न मिला और अन्त में उसे विवश हो कर यह पग उठाना पड़ा। श्री विदेह जी की इच्छा है कि उन पर से यह प्रतिबन्ध हटाया जाय। बहुत से नर-नारियों और स्वयं सभा की भी यही इच्छा हो सकती है। अभी हाल में श्री विदेह जी की ओर से "अपनों से अपनी बात" शीर्षक से एक पुस्तिका प्रचारित की गई है। उसको पढ़ने पर हमें यह आशंका हो गई है कि प्रतिबन्ध के हटाये जाने के लिए अभिप्रेत वातावरण की सृष्टि की सम्भावनाएं दूर खिसक जायेंगी।

श्री विदेह जी आरम्भ से ही जैसा कि उनकी पुस्तिका के पढ़ने से स्पष्ट होता है इस भ्रम के शिकार रहे हैं कि उनके लिए वेदी का बन्द किया जाना उन प्रभावशाली व्यक्तियों और संस्थाओं के षडयन्त्र का परिणाम है जिन्हें उनकी बढ़ती हुई लोकप्रियता सह्य न थी और जो उनके प्रति द्वेष बुद्धि से प्रेरित थे।

श्री विदेह जी की मान्यता यह है कि वे सर्वथा निर्दोष थे और सार्वदेशिक सभा ने उनके लिए वेदी बन्द करके पक्षपात का दोष अपने ऊपर लिया। उनकी यह मान्यता उपर्युक्त भ्रम का परिणाम कहा जा सकता है। यदि सैद्धान्तिक मतभेद व विरोध को वैयक्तिक विरोध कह कर उसे छिपाने और लोगों को बदनाम करने की परम्परा पड़ जाय तो यह बड़ी खतरनाक वस्तु होगी।

श्री विदेह जी साधना-पथ के पथिक है। इस पर भी उनके मन पर भ्रम इतना गहरा छाया हुआ देख पड़ता है कि उसमें औचित्य और अनौचित्य, सत्य और असत्य को सही रूप में देखने की क्षमता नहीं रह गई है। एक ओर वे चाहते हैं कि वे लोग भरत बन कर उनका प्रेमाश्रु पूर्ण नेत्रों से आलिंगन करके उन्हें अपनायें जिन्होंने उन्हें बनवास दिलाया है और दूसरी ओर वे उन्हीं जनों को केकई का हृदय रखने वाला बताते और इस प्रकार के कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं।

श्री विदेह जी अपने को राम और सार्वदेशिक सभा और धर्मार्य सभा के अधिकारियों को केकई और भरत की स्थिति में रखकर कामना करते हैं कि द्वेष भाव मिटा कर उन्हें अपना लिया जाय। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने तो केकई और भरत को अपने बनवास का कारण कभी न माना था, फिर उपर्युक्त महानुभावों और संस्थाओं को अपने बनवास का कारण बताकर वे महात्मा राम के प्रति अन्याय क्यो करते हैं?

श्री स्वामी विदेह जी की मनः अवस्था उपर्युक्त भ्रम से कितनी आक्रान्त है इसका एक स्थूल उदाहरण देना पर्याप्त होगा। वे लिखते हैं कि:—

"२७ अगस्त १९५५ को सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने अपने एक प्रस्ताव में सिफारिश की और २८ अगस्त १९५५ के सायं सार्वदेशिक आर्य

'२७ अगस्त १९५५ को सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने अपने एक प्रस्ताव में सिफारिश की और २८ अगस्त १९५५ के सायं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग ने मेरे लिए आर्यसमाज की वेदी बन्द किये जाने का प्रस्ताव पास किया। यह विशेषतया अवलोकनीय है कि वेदी बन्द का प्रस्ताव २८ अगस्त की सायं पास किया गया और वेदी बन्दी विषय १० पृष्ठ की मुद्रित विज्ञप्ति दिल्ली की आर्यसमाजों में २९ अगस्त के प्रातः तथा अन्यत्र सर्वत्र ३० या ३१ अगस्त को ही पहुंच गई थी। स्पष्ट है कि सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग बैठक से पूर्व विज्ञप्तियां छपवा कर तैयार रक्खी गई थीं।"

यह विज्ञप्ति २ या ३ सितम्बर को छपी थी और ४ सितम्बर को प्रचारित की गई थी। श्री विदेह जी की यह सूचना कि यह विज्ञप्ति २९ अगस्त को ही दिल्ली की समाजों को भेज दी गई थी, कल्पना और अनुमान पर ही अवलम्बित है। वेदी बन्द किये जाने का प्रस्ताव श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी के सभापतित्व में पारित न हुआ था। जैसा कि विदेह जी ने लिखा है। उस समय सभा के प्रधान श्री पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति थे। श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी तो २८-११-५१ से ही सभा के प्रधान

(शेष पृष्ठ ११ पर)

हमारी आदर्श शिक्षा-प्रणाली

गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली

[श्री आचार्य सर्वे, जयपुर]

अपने देश में शिक्षा-स्वातन्त्र्य की दिशा में जो प्रयोग शिक्षा-प्रेमियों-द्वारा समय-समय पर किये गये हैं उनमें गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली का स्थान बहुत ऊँचा है। आश्रम-पद्धति पर गठित इस प्रणाली का जो परीक्षण, स्वदेश-भक्त स्वा० श्रद्धानन्द ने भागीरथी के सुरम्य तट पर किया, तथा देश में गुरुकुल आन्दोलन की एक लहर व्याप्त हो उठी वहाँ उस प्रणाली के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करेंगे।

गुरुकुल का स्केच

गुरुकुल के प्रसंग में किसी ऐसी शिक्षण-संस्था की कल्पना हम करते हैं, जहां नगर और ग्राम से पृथक् वन-प्रान्त में किसी नदी वा नहर के किनारे अथवा कहीं भी प्रशान्त प्रकृति की गोद में कुछ शिक्षा-प्रेमी चरित्रनिष्ठ विद्वान्, अपने शिष्यों सहित निवसित हों। दूध, फल-सब्जी, वस्त्र, औषध आदि जीवनोपयोगी साधनों के विषय में वह स्थान नगर-पर न्यूनतम आधारित हो। पाठशाला, यज्ञशाला, वाटिका, खेत, विद्यालय, पुस्तकालय, चिकित्सालयादि मानव-जीवन के संस्कार व विकास में सहयोगी साधन जिनके अपने हों। अपनी स्वतन्त्र शिक्षा-सरणि हो। जहाँ के निवासी सद्भावनाशील, सेवाभावी, सरल एव सहकारितायुक्त रहते हुए, आत्म-कल्याण की दिशा में भी जागरूक हों। इस अणुयुग में ऐसी कोई परि-कल्पना विश्वसनीय भले न हो तथापि यह एक उत्तम प्रयास तो है ही।

शिक्षा की व्यावहारिकता

आज के प्रमुख शिक्षा-विशेषज्ञों ने भी उदाहरण-शिक्षा के महत्त्व को एक-मत से स्वीकार किया है। उपदेश की अपेक्षा स्वकीय दैनिक जीवन से उदाहरण पेश करते-हुए दूसरे शब्दों में प्रकृति-द्वारा प्रकृति के संस्कार की व्यावहारिकता अधिक है। अनुकरण-प्रधान मानव-शिशु पर कोरे उपदेश, दण्ड, तानाकशी व क्रोध का समुचित प्रभाव नहीं पड़ता। वाचिक व्यवस्थाओं से यदि मानव-जीवन व्यवस्थित हो पाता तो आज का मनुष्य सबसे अधिक सुधरा हुआ माना जाता। अतएव, शिक्षा का सर्वोत्तम पाठ, कोरे उपदेशों या पुस्तकों-द्वारा न दिया जाकर वस्तुतः आचरण के माध्यम-पर ही दिया जा सकता है। सदाचरण की रचनात्मक शिक्षा के लिये किसी भी आश्रम-व्यवस्था में अवसर रहता है। शिक्षा की व्यावहारिकता के लिये गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली में पर्याप्त स्थान है। चौबीस-घण्टे साथ रहने वाले मनो-विज्ञान-कुशल शिक्षक, सही व्यक्तित्व के विकास की ओर बहुत-कुछ कर सकते हैं। राष्ट्र में पैर पसारती हुई अनैतिकता की बाढ़ की रोक-थाम का उत्तम उपाय भाषणों व लेखों में न होकर उदाहरण-द्वारा आचार-शिक्षा में ही निहित है। राष्ट्र इस दिशा में गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली से लाभान्वित हो सकेगा, इसमें संशय नहीं।

एक उत्तम स्वास्थ्य-केन्द्र

एक उन्मुक्त शिक्षा-केन्द्र के साथ ही गुरुकुल, स्वास्थ्य-रक्षा के लिये भी सबल आधार प्रस्तुत करते हैं। स्वास्थ्य-रक्षा में सहयोगी सादगी, नियमित आहार-विहार, स्वच्छ जल-वायु, व्यायाम, मिट्टी, वनौषधि, फल-सब्जी-दूध और प्रकृति की सुरम्य-क्रोड़ के अतिरिक्त विविध चिकित्सा पद्धतियों से भी लाभान्वित होने का वहां अवसर है।

सद्गुणों का विकास

आश्रम-प्रणाली पर गठित शिक्षा-संस्थाओं से संरक्षक महानुभाव, जहां यह अपेक्षा रखते है कि उनकी सन्तानों का वर्तमान सुरक्षित हो, वे स्वस्थ, सुगठित, प्रफुल्ल व सन्तुष्ट रहें वहां वे यह भी चाहते हों तो कोई आश्चर्य नहीं कि उनके बच्चों का भविष्य भी उज्ज्वल हो अर्थात् स्वावलम्बी जीवन, जीने के लिए पुरुषार्थ-प्रियता, धैर्य, संयम, विनय, सादगी और विवेक आदि जिन सद्गुणों की उपयोगिता है, उनका भली प्रकार विकास हो-पावे। इस शिक्षा-प्रणाली में गुण-संचय पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ईश-प्रणिधान-व्रत आस्तिकता की साधना-हेतु इस वेदानुयायिनी संस्था का मुख्य आदर्श है। भारत की इस अति प्राचीन शिक्षा-प्रणाली में परमपिता परमेश्वर एवं गुरुजनों के प्रति श्रद्धा-पूर्वक ब्रह्मचर्य के पालन की सहज व्यवस्था रहती है। उक्त दिशा में चैक्अथवा मोहान्ध-रोक को सुपरिणाम-प्रद नहीं कहा जा सकेगा। शिक्षार्थियों की प्रकृति को समझ उनकी प्रवृत्तियों पर निगरानी रखते हुए अपने व्यक्तित्व से उदाहरण देकर उनमें सद्-गुणों के प्रति श्रद्धा, अनुराग व लगन अंकुरित होने की स्थिति बना देना ही इस प्रणाली की प्रमुख विशेषता है।

इस पवित्र शिक्षा-प्रणाली के प्रवर्तक, सूत्रधार, संयोजक, आचार्य, उत्तराधिकारियों के ऊपर आज महान् दायित्व है और उनसे भारत और आर्य जनता आशा रखती है कि वे मानवीय कमजोरियों से दूर रहते हुए यथाशक्ति ऐसा प्रयास करते रहें कि जिससे इस उत्तम शिक्षा-प्रणाली के श्रेष्ठ दृष्टान्त, सुयोग्य स्नातकों के स्वरूप में स्वदेश व स्वधर्म की सेवा-साधना में प्रस्तुत होते रहें। एतदर्थ ऐसी व्यवस्था जुटे कि ग्राम जनता इससे लाभ उठा सके, केवल पैसे वाले सम्पन्न व्यक्ति ही नहीं। निहित स्वार्थ-सम्पन्नों का दान हमारी इस पुनीत शिक्षा-व्यवस्था को दूषित न कर पावे। यथा-संभव, दान-पर निर्भर रहने के बजाय संस्था की अर्थ-व्यवस्था को कुटीर-उद्योगों और सहकारी कृषि-द्वारा सन्तुलित रखा जा सकेगा। क्योंकि, गुरुकुल स्वावलम्बी बनेंगे तो शिक्षा-स्वातंत्र्य की रक्षा होगी-जिसके अभाव में राष्ट्र में विभिन्न नीति व पक्षपात-पूर्ण आचार-भ्रष्टता का उदय कभी भी हो सकता है। ★

विज्ञान-वार्ता

नवीन आविष्कार

सूर्य-ताप-परिचालित रेडियो फोनोग्राफ

सूर्य-ताप परिचालित संसार के पहिले रेडियो फोनोग्राफ का न्यूयार्क के (एडमिरल कारपोरेशन ने) प्रथम प्रदर्शन किया था। "ट्रांजिस्टर" से युक्त इस यन्त्र में ४८ सैलों की एक सौर बैटरी लगी रहती है। जब धूप नहीं होती, तब इसमें कृत्रिम प्रकाश का प्रयोग किया जाता है। रिकार्ड-टेबल, जिस पर रिकार्ड घूमते हैं, की चाल की शक्ति को घटाने-बढ़ाने के लिए, ग्रामोफोन में यांत्रिक व्यवस्था की गई है। इस प्रकार ग्रामोफोन के परिचालन के लिए न तो भविष्य में इस्पात के स्प्रिंगों की आवश्यकता होगी और न विद्युत-शक्ति की। सूर्य-ताप का शीघ्र ही इस क्षेत्र में विस्तृत प्रयोग होने लगेगा।

विद्युत-हाथी का निर्माण

विद्युत-शक्ति से परिचालित विशालकाय "हाथी" वह नवीनतम यन्त्र है, जिसके द्वारा भारी शहतीरों से भरे हुए सम्पूर्ण ट्रक को तीन मंजिला ऊँचे भवन के स्तर तक उठाया जा सकता है। यह हाथी बड़ी आसानी से ट्रक से टनों वजनी शहतीरों को उठाकर ऊँचाई पर पहुंचा देता है। वाशिंगटन स्थित 'वेअरहाउसरकम्पनीज ग्रेज हारबर' में इस विद्युत हाथी को प्रयोग में लाया जा रहा है। यही नहीं हाथी खाली हो जाने पर ट्रक को भी उठाकर शक्ति संयत्र के पीछे पहुंचा देता है। ट्रक से शहतीरों को ऊँचाई पर पहुचाने तथा ट्रक को शक्ति संयत्र के पीछे छोड़ने में केवल ५ मिनट लगते है। यंत्र चालक के बटन दबाने मात्र से हाथी चलता है, और नियंत्रित होता है।

परमाणु-धूलि नकाब

परमाणु बम और हाइड्रोजन बम के परीक्षणों से और उनके सम्भावित प्रयोग से मानव जाति के लिए 'रेडियो एक्टिव धूलि' का खतरा बढ़ता जा रहा है। यह नया नकाब, न केवल रेडियो एक्टिव धूलि को, सांस द्वारा अन्दर जाने से रोकेगा, बल्कि रोगाणु बमों से हवा में फैल जाने वाले रोग-कीटाणुओं को तथा विषैली गैसों को भी अन्दर जाने से रोकेगा।

टेलीफोन के लिए वाल्यूम कण्ट्रोल

जिस तरह रेडियो सेट में लगे बटन को दाँयें, बाँयें घुमाकर आवाज बढ़ाई व घटाई जा सकती है, ठीक उसी तरह नये टेलीफोन पर लगी वाल्यूम कण्ट्रोल की चाबी को आगे-पीछे घुमाकर आने वाली आवाज को तेज व मन्द किया जा सकता है। यह आविष्कार जर्मनी का है।

कनाई-रेडियो

घड़ी के समान सूक्ष्म रेडियो का आविष्कार अब बहुत प्रचलित हो गया है। बल्वों के स्थान पर ट्रांन्सिसटर नामक यंत्र लगाकर ४०-५० मील दूर तक के रेडियो स्टेशन का प्रोग्राम यह रेडियो सुना सकता है। एक छोटा एरियल फाउण्टेनपेन के क्लिप की भाँति आस्तीन पर खोंसकर रेडियो द्वारा चलते-फिरते कार्यक्रम सुनना सम्भव है। यह रेडियो प्लास्टिक के डब्बे में रखा जाता है जो २ इंच लम्बा, लगभग एक इंच चौड़ा और पौन इंच मोटा होता है। तार के स्थान पर एक धातुमयी स्याही द्वारा किसी पतले प्लास्टिक या कागज पर रेखाएँ बनी होती हैं, जिन पर होकर विद्युत् तरंगे चलती हैं। इस सूक्ष्म रेडियो की उत्पादित ध्वनि धीमी होने के कारण कानों के समीप ही सुनी जा सकती है। बैटरी के स्थान पर पेन्सिल के नोक के बराबर पारा होता है। यह विचित्र रेडियो अत्यन्त जन-प्रिय हो रहा है।

सागर-तल के लिए कैमरा

एक ऐसे अन्तर्जलीय कैमरे का आविष्कार हो गया है, जो सागर की सतह से ६००० फुट नीचे तक जाकर फोटो खींच सकता है, ऊपर नाँव में बैठकर कैमरे को लटकाकर जल-तल के एक मील नीचे का फोटो लेकर उन सभी वस्तुओं का अध्ययन किया जा सकता है, जो पहिले नीचे अथक परि-श्रम के बाद ही मिल पाती थीं। प्रकाश की कमी को दूर करने के लिए एक विद्युत् संचालित बल्ब द्वारा कैमरा अपना प्रकाश साथ ही ले जाता है। ★

सिंहावलोकन

आर्यसमाज को जन-मानस तक पहुँचाना होगा

[श्री पं० भवानीलाल 'भारतीय' एम० ए०, जोधपुर]

आज से ८४ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला प्रतिपदा सं० १९३२ वि० को बम्बई महानगर के गिरगांव मुहल्ले में डा० मानिकचन्द की वाटिका में सर्व प्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज से पूर्व भारतीय धर्म और संस्कृति के पुनरुत्थान को अपना ध्येय और लक्ष्य बनाकर जिन ब्राह्मसमाज और प्रार्थना-समाज आदि संस्थाओं की स्थापना हुई थी, उन्हें अपनी उद्देश्य-पूर्ति में अक्षम जान कर ही इस नवीन आन्दोलन का सूत्रपात किया गया और यह तो निश्चित रूप से स्वीकार करना ही पड़ेगा कि धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जागरण का जितना महत्कार्य आर्यसमाज के द्वारा सम्पन्न हुआ है, वह अन्यतम है।

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध संक्रमण-कालीन युग था, जिसमें धर्म समाज और संस्कृति के निश्चित मूल्यों की स्थापना नहीं हो सकी थी। एक ओर यूरोपीय सम्पर्क से प्रभावित होकर भारतवासी नवीन ज्ञान, विज्ञान से परिचित हो रहे थे, जिसके फल स्वरूप उनकी पुरानी आस्थायें और मान्यतायें डांवांडोल हो रही थीं। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार ने हमारी युगों से बद्धमूल धारणाओं पर निर्दय आघात किया। फल-स्वरूप युगो से रूढ़िग्रस्त समाज का जर्जर ढांचा लड़खड़ा उठा। पाश्चात्य सम्पर्क ने नवीन शिक्षित वर्ग को प्राचीन मान्यताओं के प्रति संदेहवादी बनाया और पुराणपंथी वर्ग अपनी जराजीर्ण, ध्वन्सोन्मुख व्यवस्थाओं की रक्षा के लिए चिन्तित होने लगे। इस दुविधाजनक स्थिति में सामान्य जनता किंकर्त्तव्य विमूढ़ सी हो गई थी।

आर्यसमाज के पूर्ववर्ती सुधार आन्दोलनों ने पश्चिम के ज्ञान-विज्ञान का तो हार्दिक स्वागत किया ही, वह दर्शन, धर्म, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्रों में भी अपनी प्राचीन गौरवपूर्ण परम्पराओं को विस्मृत कर यूरोप की ओर संभ्रम से देखने लगे। उनकी दृष्टि में जो कुछ स्वदेशी था वह हेय, तिरस्करणीय और अनादर के योग्य था और जो कुछ पाश्चात्य था वह श्लाघनीय और स्वीकरणीय। एक विचित्र सी हीन भावना (Inferiority Complex) देशवासी अनुभव कर रहे थे। आर्यसमाज का दृष्टिकोण भिन्न प्रकार का था। उसने 'पुराण मित्येव न साधु सर्वं' तो कहा ही साथ ही 'नवीन' का केवल नवीन होने के कारण ही तिरस्कार नहीं किया। उसने शास्त्र और तर्क, बुद्धि और विश्वास का समन्वय करते हुए धर्म और विज्ञान को अविरुद्ध सिद्ध करने की चेष्टा की।

अपने जीवन के शैशव और यौवन में आर्यसमाज ने अपनी-अपनी प्रचण्ड पौरुष-शक्ति और कर्मठता का परिचय दिया। विभिन्न विचारकों और विद्वानों ने इस महान् आन्दोलन को विभिन्न दृष्टि-बिन्दुओं से देखा। सहस्रों मील दूर अमेरिका निवासी अध्यात्मवेत्ता और योगी एण्ड्रो जैक्सन डेविस को यह आर्यसमाज यदि एक प्रचण्ड ज्वाला की तरह दिखाई दिया जो अज्ञान, अन्धविश्वास और गतानुगतिकता को जलाता हुआ भूमण्डल पर विस्तृत हो रहा है तो सर वेलेन्टाइन शिरोल ने उसके सिद्धांतों और शिक्षाओं में विद्रोह की चिनगारियाँ देखीं जिनका यदि शमन नहीं किया गया तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि यह समस्त भारत में व्यापक ब्रिटिश सत्ता का मूलोच्छेद कर देगा।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी 'हिन्दुस्तान की कहानी' में आर्यसमाज को ईसाइयत और इस्लाम की प्रतिक्रिया बताया और कवि दिनकर के शब्दों में 'हिन्दुत्व की वीरता स्वामी दयानन्द में प्रकट हुई जिन्हें समझौते से तनिक भी प्रेम नहीं था और जो हिन्दुत्व की सिद्धि के लिए केवल ईसाइयों और मुसलमानों से ही नहीं बल्कि सनातनी हिन्दुओं से भी उस प्रकार झगड़ रहे थे जैसा झगड़ा केवल वही कर सकता है जिसे अपने पक्ष की सत्यता पर अटूट विश्वास हो।' कुछ लोगों की दृष्टि में आर्यसमाज एक विशुद्ध समाज-सुधार-आन्दोलन था और अनेकों ने उसे एक पृथक् धार्मिक सम्प्रदाय से अधिक महत्त्व नहीं दिया।

इन परस्पर विरुद्ध सम्मतियों में सत्य कितना है इसकी विस्तृत मीमांसा न करते हुए इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि आर्यसमाज का मूल्यांकन अभी तक एकांगी दृष्टिकोण से ही हुआ है और आज तो उसकी आवश्यकता और उपयोगिता में भी सन्देह किया जाने लगा है। ऐसी स्थिति में आवश्यकता इस बात की है कि आज जन सामान्य के समक्ष आर्यसमाज का जीवन-दर्शन सही रूप में प्रस्तुत किया जाय। आर्यसमाज ने पुरातन वैदिक धर्म के आदर्शों की तात्त्विक सरलता का उद्घोष किया, उसने सामाजिक जागृति का शंखनाद किया, राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य का बीज वपन किया और शिक्षा एवं सेवा के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। यह सब कुछ तो हुआ, परन्तु आज यह कितनों को ज्ञात है कि आर्यसमाज ने जीवन को चिर उन्नति और प्रगति की ओर ले जाने वाला एक स्वस्थ दृष्टिकोण भी दिया है। उसने आदर्श और यथार्थ, श्रेय और प्रेय, परमार्थ और व्यवहार, विज्ञान और धर्म के महान् समन्वय का जो महत्त्व पूर्ण कार्य किया है उसे आज हम लोगों को कहाँ तक बता और समझा सके हैं?

आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज-स्थापना-दिवस के दिन गम्भीर आत्मचिन्तन और अन्तर्निरीक्षण करें और आर्यसमाज के सार्वभौम सन्देश को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए अपने आपको कटिबद्ध करें। ★

भारत में मादक द्रव्य-निषेध

तीसरे अ० भा० मादक द्रव्य-निषेध-सम्मेलन में

श्री डा० गोपाल रेड्डी मन्त्री भारत सरकार का भाषण

भारत में मादक द्रव्यों के सेवन के निषेध का महत्त्व, केवल देश के लिए ही है, इसका अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव भी व्यापक है। हमारे कट्टर से कट्टर आलोचक भी यह नहीं कह सकते कि भारतीय शासन नशीली चीजों के प्रयोग को रोकने के लक्ष्य को प्राप्त करने में पीछे रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भी, भारत के इस प्रयास की सफलता की प्रशंसा की है।

नशीली चीजों का प्रयोग बन्द करने में चाहे जितनी कठिनाइयाँ आयें, किन्तु इस काम को भारत में अपनी नीति के अनुसार और निश्चित समय पर दृढ़ता से किया जाएगा। मादक द्रव्यों की सबसे खतरनाक बुराई यह है कि इनका व्यसन छूत के रोग की तरह फैलता है। अनुमान है कि एक नशेबाज कम से कम अपने चार मित्रों या अपने सम्पर्क में आने वालों को नशे का व्यसनी बना देता है। नशीली चीजों के व्यापार में बेहद नफा होता है। गाजीपुर में जो अफीम ६०-७० रु० सेर के भाव मिलती है, वही आस-पास के राज्यों में जाकर १०० से ४०० रु० सेर तक बिकती है और समुद्र-तटवर्ती राज्यों में इसका भाव १,००० रु० से १,५०० रु० तक हो जाता है। यही बात दूसरी नशीली चीजों जैसे भांग, गांजे आदि के बारे में है।

विदेशों में अफीम की अधिक मांग

यद्यपि राज्य सरकारों को मिलने वाला अफीम का कोटा बराबर घटाया जा रहा है, किन्तु विदेशों में दवाओं आदि के लिए भारतीय अफीम की मांग काफी बढ़ गयी है। इसका कारण यह है कि वहां हमारे नशाबंदी के उपायों की सफलता की धाक जम गयी है। श्री रेड्डी ने आगे कहा कि १९५६ के सम्मेलन में मुख्य रूप से ३१ मार्च, १९५९ के बाद केवल डाक्टरी प्रमाण-पत्र देने पर ही अफीम के प्रयोग की अनुमति देने, अफीम की दुकानें बन्द करने, अफीमचियों को अस्पताल में भेजकर अफीम खाना छुड़ाने की कोशिश करने आदि की सिफारिशें की थीं। इन सिफारिशों पर काफी हद तक अमल किया गया है, किन्तु अफीम खाने वालों को कितनी अफीम दी जाए, और किस तरह उनकी आदत बिल्कुल छुड़ायी जाए, इस बारे में इस सम्मेलन को विचार करना होगा।

पहले तो इस बुराई को सब देश अपना घरेलू मामला मानते थे, किन्तु आधुनिक युग में जिस प्रकार बहुत-सी राष्ट्रीय समस्याएं अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण करती जा रही हैं, उसी प्रकार नशाबन्दी के लिए भी अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर कारवाई करना आवश्यक समझा गया है और इस समस्या पर विचार करने के लिए अब तक नौ अन्तर्राष्ट्रीय करार हो चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी नशाबन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों पर अमल कराने के लिए एक आयोग बनाया है। भारत की अंग्रेजी सरकार, १९१२ में पहले अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में शामिल हुई। १९२० में कांग्रेस ने पूर्ण मादक द्रव्य निषेध को अपने स्वाधीनता के कार्यक्रम में स्थान दिया। इसके बाद १९३७ में, जब प्रान्तों में कांग्रेस के मन्त्रिमण्डल बने, तो मद्रास, मध्य प्रान्त तथा बरार, बिहार, उड़ीसा और उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त में मद्यनिषेध कानून बनाये गये और कुछ क्षेत्रों में इसका प्रयोग किया गया। भारत के संविधान के ४७ वें अनुच्छेद में शासन की नीति के जो निर्देशक सिद्धान्त बताये गये हैं, उनमें भी नशाबन्दी का उल्लेख है। बहुत पहले १८५७, १८७८ और १९३० में भी अफीम और दूसरी नशीली चीजों के इस्तेमाल को कम करने के कानून बनाये गये थे। कानून के साथ-साथ यह प्रश्न सामाजिक परिस्थितियों से भी सम्बन्धित है और केवल कानून ही समस्या का समाधान नहीं कर सकता, जनता का जागरण भी इस दिशा में मुख्य महत्त्व रखता है। ★

सिद्धान्त विमर्श

सस्वर मन्त्रोच्चारण

(श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद-सदन, महारानी रोड, इन्दौर नगर)

★

१—शंका:—महर्षि पाणिनि ने—यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु-इस सूत्र के द्वारा एक श्रुति उच्चारण मन्त्रों का करने को लिखा है अतः यज्ञों में सस्वर मन्त्र पाठ करने की आवश्यकता नहीं।

उत्तर:—(१) इस सूत्र द्वारा महर्षि पाणिनि ने सर्वथा त्रैस्वर्य युक्तः मंत्रोच्चारण का निषेध नहीं किया है। साम मंत्रों का सर्वत्र ही यज्ञादि में भी सस्वर पाठ हो, जप में भी सर्वत्र त्रैस्वर्युक्त मंत्रजाप हो और न्यूङ्ख मन्त्र विशेष भी यज्ञों में सस्वर त्रैस्वर्य युक्त उच्चारित किये जावें, यह भी उक्त सूत्र प्रतिपादित करता है। अतः उक्त सूत्र द्वारा यह समझना कि सस्वर मन्त्रपाठ का यह निषेधक सूत्र है-वह सर्वथा भ्रान्त एवं असत्य है।

(२) उक्त सूत्र कतिपय स्थलों के लिये त्रैस्वर्ययुक्त मन्त्रपाठ की अनिवार्यता प्रकट करता है और जहाँ त्रैस्वर्य-युक्त मन्त्रपाठ नहीं उस स्थल के लिये एकश्रुति पाठ का प्रतिपादन करता है। एक श्रुतिपाठ का तात्पर्य यह नहीं है कि यथेच्छरूप से पाठ करना या गडबडरूप में पाठ करना या उच्चारण करना। एक श्रुति स्वर को भी समझना होगा और उसका भी अभ्यास करना होगा। तभी एकश्रुति स्वर से मन्त्र बोलना आयगा, अन्यथा नहीं।

(३) जो महानुभाव उक्त सूत्र से त्रैस्वर्य युक्त शुद्ध पाठ करने का निषेध समझते हैं उन्हे यह भी ठीक रीति से समझ लेना चाहिए कि वे जिस रीति या प्रकार से मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, वह एकश्रुति पाठ नहीं है तथा उनके उस पाठ में भी उदात्त, अनुदात्तादि स्वर उनके बिना समझे या प्रयत्न किये भी लगते ही हैं। अतः उनका उच्चारण व्यवहार इस सूत्र के विपरीत तो है ही और मन्त्रगत स्वरो के भी विपरीत होने से दोनों प्रकार से ही अशुद्ध है। उनका वह पाठ न तो एकश्रुति पाठ है और न वह यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु के अनुसार है। अतः उनका वर्तमान पाठ तो सर्वथा त्याज्य ही है।

(४) इस सूत्र का आश्रय लेने वाले व्यक्ति क्या साम मन्त्रों का सस्वर पाठ करते हैं? क्या वे जप कर्म में सस्वर ही मन्त्रजाप करते हैं? क्या वे यज्ञों में एकश्रुतिपाठ करते हैं? जब वे स्वर जानते ही नहीं तो सस्वर पाठ और सस्वर जप तथा एकश्रुति स्वर से मन्त्र पाठ भी कैसे करेंगे? ऐसी दशा में इस सूत्र का आश्रय वे किस निमित्त लेते हैं? केवलमात्र अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिये और सस्वर वेदपाठ के प्रचलन को न होने देने के लिये ही।

(५) जपादौनाधिकारोस्ति सम्यक्पाठमजानतः—अर्थात् जप यज्ञादि कर्म में उनको अधिकार नहीं है जिनको ठीक रीति से पाठ करने का ज्ञान नहीं है। परन्तु आज अनधिकारी ही अपने को अधिकारी ही नहीं अपितु सर्वाधिकारी समझकर कर्म करा रहे हैं तथा वे जो कुछ भी कर्म करा रहे हैं उसको पुंछ दुराग्रहवश् शुद्ध ही है—यह भी मनवाना चाहते हैं। यही दुराग्रह अनार्षवृत्ति है। इसको छोड़ना चाहिये।

(६) सस्वर उच्चारण के लिए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है:—

(अ) "स्वर और वर्णों का नियमपूर्वक ही उच्चारण करना चाहिये।"

(आ)—उदात्तादि स्वर बोध के बिना वेदमन्त्रों का गान और उच्चारण भी यथार्थ नहीं हो सकता" (सौवर)

अतः सस्वर मन्त्रपाठ का प्रयत्न करना चाहिये। अन्यथा वेद स्वतः प्रकट नहीं होगा। गुरु शिष्य परम्परा द्वारा इसका अभ्यास आज तक विद्यमान है, और इसी प्रकार से अभ्यास करने से वेद विद्या विद्यमान रह सकेगी, अन्यथा कदापि सम्भव नहीं।

(७) देवनागरी लिपि का बोध होने मात्र से ही कोई वेदमन्त्रों का शुद्ध उच्चारण कर लेगा, यह भारी अज्ञान है। इसी प्रकार संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण होने से या व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ या शास्त्री होने से कोई व्यक्ति वेद मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण वर्णों की दृष्टि से ही कर लेगा यह भी बड़ा भारी अज्ञान है।

(८) वेदमन्त्रों का वर्णों की दृष्टि से भी वही शुद्ध उच्चारण कर सकेगा जिसने प्रति वेदानुसार गुरुओ से वेद का शिक्षण शिक्षादि ग्रन्थों के आधार पर किया हो, अन्य कोई भी वेद का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता—यह सुनिश्चित समझिये। किसी एक वेद का अभ्यास कर लेने से अन्य वेद के मन्त्रों का भी शुद्ध उच्चारण का अभ्यास स्वतः हो जायगा ऐसा भी नहीं है।

(९) वेद—मन्त्रों के उच्चारण की शिक्षा ग्रन्थ बताते हैं। उनमें कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है कि यज्ञों में उदात्त, अनुदात्तादि त्रैस्वर्य रहित पाठ करना चाहिये। न यज्ञ विधायक कल्प सूत्र ग्रन्थों में ही ऐसा लिखा है।—"यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु"—व्याकरण का सूत्र है। इसका प्रयोजन व्याकरण से ही है, कर्मकाण्ड से नहीं है। अतः कर्मकांड विषय में उसकी प्रामाणिकता भी नहीं। एकश्रुति कैसे और कहां-कहां होती है इसका महर्षि पाणिनि प्रतिपादन करते हुए यह सूत्र लिखते हैं। इसका इतना अभिप्राय समझना चाहिये कि यज्ञों में भी एकश्रुति होती है। परन्तु यज्ञों में कहां-कहां होगी यह तो कर्मकांड के ग्रन्थ बतावेंगे। उदाहरणार्थ-यज्ञ में अयन्तइध्मआत्मा—मन्त्र त्रैस्वर्य रहित है, अतः इसको एकश्रुति स्वतः प्राप्त है। इसी प्रकार यजमान के अपठित होने की दशा में या अन्य विशेष अवस्थाओं में जिस मन्त्र को यज्ञ में एकश्रुति का विधान किया गया हो, वहां उसे एकश्रुति प्राप्त होगी, यह समझना चाहिये। ऐसा न समझने से इस सूत्र का महर्षि दयानन्द जी तथा शिक्षा-ग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित स्वर सहित पाठ करने के आदेश से विरोध होगा।

(१०) वेद मन्त्रों के उच्चारण के बारे में शिक्षा ग्रन्थो का ही प्रमाण मान्य है। किसी भी शिक्षा-ग्रन्थ में स्वर रहित पाठ या केवलमात्र एकश्रुति पाठ करने का आदेश नहीं है। अपितु शिक्षा ग्रन्थ यज्ञो में भी सर्वत्र सस्वर पाठ करने का प्रतिपादन करते हैं। यथा:—

ऋक्सामयजुरगानि ये यज्ञेषु प्रयुजते। अविज्ञानाद्धि शास्त्राणां तेषां भवति विस्वरः ॥१॥

मन्त्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वाभिध्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।

स वाग्वज्रो यजमान हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधात ॥२॥

प्रहीणःस्वरवर्णाभ्या यो विमन्त्रप्रयुज्यते। यज्ञेषु यजमानस्यरुषस्यायुः-प्रजापशून् ॥३॥

(सामवेदीय नारदी शिक्षा)

इसके प्रथम श्लोक से स्पष्ट है कि सभी वेदों का स्वर सहित पाठ यज्ञों में करना चाहिये। दूसरे श्लोक से स्पष्ट है कि स्वर रहित मन्त्रों के प्रयोग से-इन्द्रशत्रु के समान यजमान का नाश होता है, और तीसरे श्लोक से स्पष्ट है कि यज्ञों में जो स्वर रहित मन्त्र उच्चारित किया जाता है वह मन्त्र नहीं रहता अपितु विमन्त्र हो जाता है। और उससे यजमान का नाश किस-किस प्रकार से होता है यह स्पष्ट प्रतिपादित किया है। इसी प्रकार वर्णरत्न प्रदीपिका शिक्षा में:—

मन्त्रो यः स्वरतो हीनो वर्णतो वाऽपि कुत्रचित्।

निष्फलं तं विजानीयात्तथैवाशुभ सूचकम् ॥१॥

स्वरोवर्णोक्षरमात्रा तत्प्रयोगार्थएवच।

मन्त्र जिज्ञासमानेन वेदितव्यं पदे-पदे ॥२॥

स्थानंच करणं मात्रा सम्यगुच्चारणं तथा।

योनवेद स निर्लज्जः पठामीति कथंवदेत् ॥३॥

यहाँ पर भी प्रथम श्लोक में सर्वत्र ही सस्वर पाठ करने का तथा स्वर रहित पाठ करने की निष्फलता और उससे अशुभ होना लिखा है। दूसरे श्लोक में स्वर, वर्ण, अक्षर, मात्रादि सहित उच्चारण करने का ज्ञान प्राप्त करने के लिये लिखा है तथा इनको जो न जानकर अपने वेदपठन का अहंकार करता है उसकी निर्लज्ज कहकर निन्दा की गई है।

इससे ज्ञान होता है कि सभी वेदमन्त्रों का सर्वत्र ही यज्ञादि में भी सस्वर पाठ प्राचीन परिपाटी है। महर्षि दयानन्द जी ने भी इसी को अपनाने के लिये संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण के अन्त में लिखा है कि:—

"सब संस्कारो में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे, न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे, किन्तु मध्य भाग जैसा जिस वेद का उच्चारण है करे।"

यहां पर यज्ञ प्रकरण में ही—"जैसा जिस वेद का उच्चारण है करे".—इन शब्दों का तात्पर्य प्रत्येक वेद के पृथक्-पृथक् रूप से जो पाठ होते हैं उनसे है। यदि कोई यह तात्पर्य ग्रहण न करना चाहे तो उसे दूसरा तात्पर्य यह ग्रहण करना अनिवार्य होगा कि जिस वेद के जैसे शब्द, आनुपूर्वी एवं स्वर हैं उनको उसी प्रकार अविकृतरूप से यथार्थरूप से ही उच्चारण करना चाहिये।

इसी प्रकार सौवर ग्रन्थ की भूमिका में:—"दुष्टः शब्दः स्वरतोवर्णतो वामिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह"—का प्रमाण महाभाष्य का उद्धृत करते हुए मन्त्रपाठ की विधि को अङ्गीकार करने के लिये लिखा है कि:—

"उच्चारण आदि के यथार्थ होने के बिना लौकिक वैदिक शब्दों से यथार्थ सुख लाभ किसी को नहीं होता।"

इससे स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द यज्ञों में भी तथा अन्यत्र भी शुद्ध और सस्वरपाठ की विधि को ही मानते हैं और उसीको प्रचलित करना चाहते हैं।

जीवन-ज्योति

स्वामी दर्शनानन्द जी के आठ व्यसन

[विश्वबन्धु वेदालङ्कार एम० ए०, आर्यसमाज हींग मण्डी, आगरा]

स्वनाम धन्य प्रातः स्मरणीय स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के साथ व्यसन शब्द देखकर सम्भवतः पाठक कहेंगे कि जिस महापुरुष ने लाखों के जीवन को निर्व्यसनी बनाया, क्या वह स्वयं इतना व्यसनी था? पर बात वस्तुतः सच है। मरते समय भी जो महापुरुष यह घोषणा करके गया कि जिस किसी को आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति शंका हो, वह अभी निवारण करले, पीछे न कहना कि आर्यसमाज की ओर से उत्तर नहीं दिया गया। ऐसा था वह महाव्यसनी आर्यसमाज का दीवाना।

यो तो उनका समस्त जीवन ही आर्यसमाज की उन्नति रूपी व्यसन में पूर्ण सराबोर था—पर उनको हम आठ व्यसनों में बांट सकते हैं—प्रेस, समाचार-पत्र, ट्रैक्ट, शास्त्रार्थ, गुरुकुल, उपदेशक-निर्माण, व्याख्यान और समाज-स्थापना।

[१] प्रेस—आज के युग में प्रकाशन का कितना महत्व है इसको उस महापुरुष ने गम्भीरता से समझा था और इसीलिए अनेक स्थानों पर प्रेसों की स्थापना करके संस्कृत व आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी साहित्य को समस्त भारत में बखेरा था।

[२] समाचार पत्र—प्रेस खोलने का मुख्य आशय पत्र-प्रकाशन तथा मुद्रण ही था—आर्यसमाज के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार समाचार-पत्रों द्वारा ही हो सकता है यह समझकर स्वामी जी ने अनेकों समाचार-पत्रों का प्रकाशन किया था—जिनमें गुरुकुल समाचार, ब्राह्मण तथा आर्य सिद्धान्त आदि प्रमुख थे।

[३] ट्रैक्ट—ट्रैक्टो द्वारा प्रचार की सफलता को देखकर एक बार तो स्वामी जी महाराज ने यह निश्चय ही कर डाला कि प्रतिदिन एक ट्रैक्ट लिख कर ही भोजन करूंगा, अन्यथा नहीं। यह व्यवस्था स्वामी जी की रुग्णावस्था के कारण अधिक समय तक न चल सकी, फिर भी इस दौरान में सैकड़ों ट्रैक्ट लिखे गये। इस क्षेत्र में वह महापुरुष इतना काम करके गया है कि हम सब मिलकर भी उतना नहीं कर सके है।

[४] शास्त्रार्थ—शास्त्रार्थ तो स्वामी जी के जीवन का मुख्य अङ्ग बन गया था। आर्यसमाज के उस प्रारम्भिक युग में जबकि आर्यसमाज पर चारों ओर से प्रश्नो की बौछार होती रहती थी, यह अकेला शेर बहुत समय तक सबको परास्त करता रहा और इस क्षेत्र में दूसरे लोगों का दिग्दर्शन भी किया। उसी के प्रभाव से आज आर्यसमाज में ऐसे शास्त्रार्थ महारथी विद्यमान हैं जिनका मुकाबला करना दूसरों के लिये सरल नहीं है। इन शास्त्रार्थों के द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार हुआ था और इनसे आकृष्ट होकर लाखों व्यक्ति आर्यसमाजी बने थे।

[५] गुरुकुल—गुरुकुलों की सबसे अधिक स्थापना करने का श्रेय भी स्वामीजी महाराज को ही है। यह हमारी अकर्मण्यता समझिए कि उनमें से अनेक काल-कवलित हो गये। भारतीय शिक्षा के इतिहास में आर्यसमाज की देन विशेष रूप से गुरुकुलों की स्थापना ही समझी जायगी। इस दृष्टि से इस महापुरुष ने आर्यसमाज को अमरता प्रदान की है।

[६] उपदेशक-निर्माण—इस दिशा में भी स्वामीजी महाराज ने बहुत आगे बढ़कर काम किया था। आर्यसमाज को जो प्रभावशाली उपदेशक मिले हैं उसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से स्वामी जी का बहुत बड़ा हाथ है।

[७] आर्यसमाज-स्थापना—यह तो उनका प्रमुख व्यवसाय सा बन गया था। जहां भी जाते थे वहाँ समाज स्थापना करना उनका पहला काम होता था। स्वामीजी ने अनेकों प्रभावशाली समाजो की स्थापना की है।

[८] भाषण—यद्यपि समाज के कार्य में वाणी का प्रयोग वे करते ही थे तदपि व्याख्यान कला में उनका नैपुण्य प्रशंसनीय था। लोग आज भी उनके भाषणों की चर्चा करते हैं।

सामान्यतः किसी भी प्रचार में तीन बातों की विशेष रूप से आवश्यकता होती है—वाणी, लेखन, प्रकाशन पर स्वामीजी महाराज ने तीनों पर ही अवलम्बित न रहकर आर्यसमाज के व्यापक प्रचार के लिए उपर्युक्त अष्टाङ्ग मार्ग का अवलम्बन किया था। अकेले इस महात्मा ने आर्यसमाज का इतना काम किया है जितना दूसरे सैकड़ों मिलकर भी न कर सकेंगे। आज तो स्वामीजी प्रदर्शित अष्टाङ्ग मार्ग की परम्परा कुछ टूटती सी प्रतीत हो रही है। आर्यसमाज में नवीन प्रेसों का खुलना प्रायः बन्द सा है। जो हैं उनमें भी अधिकांश व्यावसायिक से बन रहे हैं। आर्य साहित्य के प्रकाशन की प्रमुखता नहीं है। इसी प्रकार समाचार-पत्रों के नवीन प्रकाशन की बात तो अलग रही जो हैं वे भी सिसकियाँ भर रहे हैं। क्योंकि आर्यसमाजी अपने पत्रों का खरीदना अपना कर्तव्य ही नहीं समझते। पत्र और पुस्तकें केवल समाजों की लाइब्रेरी में ही देखने को मिलती हैं और वे भी सभी समाजों में नहीं। आर्यसमाजों के पुस्तकालयों में अब पुस्तकों का खरीदना प्रायः बन्द सा है। शास्त्रार्थों का तो अब बहिष्कार सा हो गया है। यद्यपि आज भी इसकी नितान्त आवश्यकता है। इसके अभाव में दूसरे लोग आर्यसमाज की ओर आकृष्ट ही नहीं हो रहे हैं। गुरुकुलों के प्रसार की बात अलग है जो हैं उनको भी जीवित रखने में हम असमर्थ से हो रहे हैं। क्योंकि आर्यसमाजी तो अपने बच्चों को भेजते नहीं फिर दूसरों को क्या गरज। उपदेशक-निर्माण की आज कितनी आवश्यकता है—पर आर्यसमाज का इस ओर विशेष ध्यान ही नहीं है। आर्यसमाज में आज ऐसे उपदेशकों की नितान्त आवश्यकता है जो दक्षिण भारत, नैपाल तथा पश्चिमी देशों में अधिकार-पूर्वक प्रचार कर सकें। यह तभी हो सकता है जब ऐसे लोगों को विशेष रूप से तैयार किया जाय। इसी प्रकार नवीन आर्यसमाजों की स्थापना भी बहुत कम हो रही है। हमारी शक्ति तो जो हैं उन्हींके संरक्षण में लगी हुई है।

आर्यसमाज के प्रसार और प्रचार की ये आठों बातें ऐसी हैं जिनकी आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है। उस महापुरुष ने इन आठों का अकेले ही अवलम्बन किया था और हम सब मिलकर भी असमर्थ हो रहे हैं क्योंकि हमने इनको व्यसन के रूप में अङ्गीकार नही किया है। स्वामीजी महाराज के जीवन में ये व्यसन रूप में थीं जिनमें वे रातदिन डूबे रहते थे। काश! परम पिता परमात्मा हम आर्यों के अन्दर भी इनको व्यसन रूप में पैदा कर दे।

आर्य-विद्या-परिषद्-परीक्षा-सार

भारतवर्षीय आर्य विद्या-परिषद् अजमेर की ओर से विद्या-विशारद आदि जो ४ परीक्षायें समस्त भारत, फिजी, मोरीशस, अफ्रीका आदि में गत जनवरी मास में हुई थीं उनका परीक्षा-फल-सार निम्न है—

विद्या-वाचस्पति परीक्षा

इस वर्ष इस परीक्षा में कुल १७४ छात्र सम्मिलित हुए। परीक्षा-फल लगभग ६६ प्रतिशत रहा। सर्व प्रथम—कुमारी कस्तूरी शर्मा (त्रिवेदी आश्रम मुरादाबाद), सर्व द्वितीय—श्री सत्यपाल शास्त्री (मेरठ), सर्व तृतीय—रामेश्वर लाल (दयानन्द कालेज, अजमेर)।

विद्या-विशारद परीक्षा

इस वर्ष इस परीक्षा में कुल ११६ छात्र सम्मिलित हुए। परीक्षा-फल १०० प्रतिशत रहा। सर्व प्रथम—राजकुमार (डी० ए० वी० हायर सैकेण्डरी स्कूल अजमेर), सर्व द्वितीय—नन्दकिशोर खन्ना (कानपुर), सर्व तृतीय—चन्द्रराज गुप्त (मुंगेर, बिहार), कन्या प्रथम—कमलादेवी भटनागर (त्रिवेदी आश्रम, मुरादाबाद), मुस्लिम छात्रों में प्रथम—मुहम्मद अकलम सिद्दीकी (कदौरा बावनी स्टेट)।

विद्या-रत्न परीक्षा

इस वर्ष इस परीक्षा में कुल ४१६ छात्र सम्मिलित हुए। परीक्षा-फल लगभग ६६ प्रतिशत रहा। सर्व प्रथम—रघुनन्दन शरण शर्मा (मुरादाबाद) सर्व द्वितीय—जनार्दन सिंह (रामनगर), सर्व तृतीय—मनोरमा जोशी (दयानन्द कन्या महाविद्यालय, इन्दौर), मुस्लिम छात्रों में प्रथम—मुहम्मद अरशाद (मुरादाबाद)।

विद्या-विनोद परीक्षा

इस वर्ष इस परीक्षा में ७२६ छात्र सम्मिलित हुए। परीक्षा-फल ६८.५ प्रतिशत रहा। सर्व प्रथम—विक्रम प्रसाद उपाध्याय (बदेपुर), सर्व द्वितीय—शिवरामसिंह (पिलखना), सर्व तृतीय—बाबूराम आर्य (कुटार), कन्या प्रथम—कमला आर्य (इन्दौर-दयानन्द कन्या महाविद्यालय), मुस्लिम छात्रों में प्रथम—गुलाम मोस अन्सारी (अकरोली)।

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०, डी० लिट्०
परीक्षा-मन्त्री
भारतवर्षीय आर्य विद्या-परिषद्, अजमेर

आर्यसमाज के समुज्ज्वल भविष्य की रक्षा के लिए आत्मशुद्धि का सन्देश

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज

आर्य जनता के नाम सन्देश

संश्रुतेन गमेमहि, मा श्रुतेन विराधिषि

आर्य बन्धुओ, सप्रेम नमस्ते।

आर्यजगत् ने हम लोगों को एक महान् उत्तरदायित्व सुपुर्द किया है। आर्य सामाजिक संघटन की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभाओं के हम लोग अन्तरङ्ग सदस्य और अधिकारी हैं। सभा के उत्थान और उद्देश्य की पूर्ति का भार हमारे और आप सब लोगों के कन्धों पर ही अवलम्बित है। इस सम्बन्ध में कोई दूसरा मत हो ही नहीं सकता है।

आज मैं आप लोगों का ध्यान आर्यसमाजों, और व्यक्तियों तथा सभाओं के मध्य जो भिन्न-भिन्न प्रकार की पर्चेबाजी हो रही है की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। यद्यपि उक्त प्रकार की वर्त्तमान गतिविधि से आप सभी महानुभाव परिचित हैं। परन्तु फिर भी उस प्रकार की घृणित भाव भावना आर्यसमाज को विपथगामी बनाने में कहीं सफल न हो जावे ऐसा सन्देह होने लगा है।

जिस भांति राजनीतिक दल के हथकण्डे उचित अनुचित विचार किये बिना ही दूसरों की पगड़ी उछालने में कृतकृत्य होना मानते हैं, कहीं वही बीमारी हमारे आर्य सामाजिक शरीर और संगठन में घुसकर घर तो नहीं बना रही है? इसका हमें बड़ी सावधानी और तत्परता से अध्ययन करना चाहिये। इस प्रकार के असंतोष और कटुता के बीज कहां हैं? हमें उसे खोजना और जानना चाहिये। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से यही समाचार आ रहे हैं। स्थान-स्थान पर लोगों ने इसी बात को दुहराया है। भाई, अनेक दुराव चराव देखते हुए भी आर्यसमाज का भविष्य मुझे समुज्ज्वल ही दिखलाई पड़ता है। केवल मात्र आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज का संचालक-समुदाय इधर अधिक ध्यान देवे। मुझे आश्चर्य होता है कि अनुभवी, विचारक, विद्वान् और नेतृत्व-शक्ति-सम्पन्न व्यक्ति क्यों शैथिल्य और निराशा की अनुभूति करने लगते हैं? उत्थान और पतन के हिंडोले में तो सारा संसार झूलता आ रहा है। यदि नाव के मांझी, जहाजों के कप्तान, नदियों और समुद्रों की उत्ताल तरङ्गों के थपेड़ों से साहस छोड़ देंगे तो अन्य यात्रियों की क्या दशा होगी? वर्त्तमान नवयुवक मण्डल अधीर होकर घबराहट से चिल्ला उठता है, और कह भी बैठता है कि वृद्धजनों से क्या लेना देना है? हमें बड़ी तत्परता से नाव चलानी है। नवयुवकों और युवतियों की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें ही काल अश्वारोही बनाकर समाज और समुदाय का प्रामुख्य देता है। आप सब लोग अपने साधन, सुविधा और शक्ति के अनुसार वर्त्तमान वातावरण को शुद्ध बनाकर झूठे पद पदार्थ (फाल्स प्रेस्टेज) की बीमारी से बचाने के लिए आन्तरिक धार्मिक भावना उत्पन्न करने में अधिक यत्नवान हो जाइये जिससे आर्यजगत् का वाह्याभ्यान्तर अधिक पवित्र हो जावे। महर्षि बोधोत्सव से तो हम सभी लोगों को (आर्य जनता और नेताओं को) कुछ न कुछ उद्बोधन अवश्य ही मिलता है। आइये, आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कल्मष, मनोमालिन्य, अविश्वास और अश्रद्धा को समाप्त करके नूतनोत्साह और नवजीवन के साथ कार्यक्षेत्र में उतरने का संकल्प दृढ़ करें।

होली तक जो हुआ सो होलिया। वसन्त आने के साथ, बस अन्त हो जावे दुराव-दुराव का, तिक्त और कसाय का।

"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत" की विशुद्ध भद्र-भावना से हम लोगों का हृदय ओत-प्रोत हो जावे।

आपका अभिन्न

अभेदानन्द सरस्वती

प्रधान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, देहली

उत्तरप्रदेश में श्रम-कल्याण

[श्री पीताम्बरजी, लखनऊ]

उत्तरप्रदेश सरकार ने प्रारम्भ से ही श्रम कल्याण योजनाओं के प्रति उत्साह दिखाया है। प्रथम पंचवर्षीय आयोजन में इस कार्य पर लगभग १ करोड़ १ लाख रुपया व्यय किया गया। इस अवधि में सरकार की नीति के दो उद्देश्य रहे। प्रथम श्रम कानूनों के सम्यग प्रशासन द्वारा श्रमिकों की काम करने की परिस्थितियों में सुधार करना और दूसरे, श्रम-कल्याण केन्द्रों की अधिकाधिक स्थापना द्वारा श्रमिकों को मनोरंजन, शिक्षा तथा स्वास्थ्य की नित्य नई सुविधाएं प्रदान करना।

द्वितीय पंचवर्षीय आयोजन की अवधि में भी इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये प्रयास हो रहे हैं। इन पांच वर्षों में १ करोड़ १० लाख रुपये व्यय करने का सम्प्रति निश्चय हुआ है और विषय के महत्व को देखते हुए राज्य-सरकार ने एक श्रम कल्याण परामर्शदात्री समिति संघटित कर दी है।

अद्यतन सूचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रदेश में श्रम कल्याण केन्द्रों की संख्या ५४ हो चुकी है। आशा है कि आयोजन की अवधि के अन्त तक यह संख्या बढ़कर लगभग ७० हो जायगी। अगस्त में श्रम कल्याण परामर्शदात्री समिति की बैठक में यह निश्चय किया गया कि अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त श्रम कल्याण केन्द्रों में वयस्क शिक्षा तथा गृह-शिल्प की कक्षाओं की व्यवस्था की जाय और योजना का विस्तृत कार्यक्रम तैयार करने का काम एक उपसमिति को सौंपा जाय जो उक्त कार्यक्रम तैयार करके समिति के समक्ष विचारार्थ प्रस्तुत करेगी। गृह-शिल्प की कक्षाएं केवल श्रमिक परिवारों की महिलाओं के लिए होंगी। इस प्रकार श्रमिक महिलाएं इस उपयोगी कार्यक्रम के द्वारा अपने बेकार समय का सदुपयोग कर सकेंगी तथा अपने और अपने परिवार के लिए अतिरिक्त आमदनी का प्रबन्ध कर सकेंगी।

श्रम-कल्याण केन्द्रों के माध्यम से श्रमिकों को चिकित्सा आदि की विस्तृत सुविधाएं सुलभ हुई हैं। प्राप्त सूचनाओं से पता चलता है कि इन केन्द्रों में अब तक ४४ औषधालय स्थापित किये जा चुके हैं। इन औषधालयों से लगभग तीन लाख श्रमिकों को चिकित्सा की सुविधाएं प्राप्त हुईं। सरकार ने इस कार्य पर १,५०,००० रु० व्यय किया। कानपुर में श्रमिकों के लिए १४५ शय्याओं वाले अस्पताल के निर्माण का पहले ही निश्चय किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त श्रमिकों के आश्रितों के लिए चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार की भी एक योजना है। इन दोनों योजनाओं के लिए "राज्य कर्मचारी बीमा निगम" की स्वीकृति मिल चुकी है।

मजदूरों के लिए चलायी जा रही गृह-निर्माण-योजना के चतुर्थ चरण में विगत मार्च के अन्त तक राज्य में ६१७२ मकानों का निर्माण-कार्य पूरा हुआ। इस प्रकार अभी तक इस योजना के अन्तर्गत राज्य में २०,०७२ मकान बनाये जा चुके हैं। द्वितीय आयोजन की अवधि समाप्त होने तक लगभग ३८,००० मकान बनवाने का निश्चय किया गया है। ज्ञातव्य है कि प्रथम आयोजन में औद्योगिक गृह-निर्माण तथा चीनी मिल के श्रमिकों के लिए गृह-निर्माण की योजनाओं पर क्रमशः ४ करोड़ ३१ लाख और २३ लाख रुपया व्यय किया गया। औद्योगिक गृह-निर्माण योजना के अन्तर्गत प्रथम आयोजन की अवधि में १३७८२ मकान बन कर तैयार हुए। इसी प्रकार चीनी मिल के श्रमिकों के लिए ११०९ क्वार्टर बन कर तैयार हुए।

इधर राज्य सरकार ने अपनी श्रम-कल्याण योजना के सम्बन्ध में एक और महत्वपूर्ण निश्चय किया है। यह है श्रमिकों के लिए आराम-गृहों की स्थापना करना। सम्प्रति इस प्रकार के दो आराम-गृह बनाये जाएंगे। एक चीनी उद्योग में लगे श्रमिकों के लिए और दूसरा सामान्य श्रमिकों के लिए। प्रस्तावित आराम-गृहों में अस्वस्थ और काम से थके श्रमिकों को मनोरंजन तथा आराम करने का पर्याप्त अवसर मिलेगा। प्रत्येक आराम-गृह में एक समय में २०० व्यक्तियों को ठहरने का प्रबन्ध रहेगा तथा इसका निर्माण प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण शान्त स्थानों पर होगा।

आशा है सरकार के उपर्युक्त प्रयत्नों के फलस्वरूप श्रमिक वर्ग का स्तर उन्नत हो सकेगा और वे राष्ट्र-निर्माण में अपने श्रम का तत्परता एवं श्रद्धा के साथ समर्पण कर सकेंगे। ★

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

पर

९ अप्रैल सन् १९५९ से १५ अप्रैल १९५९ तक आर्य जनता को सादर निमन्त्रण

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का विस्तृत कार्य-क्रम

९ अप्रैल सन् १९५९ गुरुवार

चैत्र शुक्ला १ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८॥ तक

—ब्रह्मपरायण महायज्ञ, (वैश्वानर-याग) अध्यक्ष एवं आचार्य श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री एम० ए० नवतीर्थ, व्याकरण वेदान्ताचार्य, प्रधान-संयोजक स्वर्ण जयन्ती महोत्सव।

—यज्ञ संयोजक-श्री पं० लक्ष्मी-नारायण जी शास्त्री एम० ए०।

—यजमान-श्री चौ० रघुवीरसिंह जी रईस पृथ्वीपुर, बिजनौर।

१० अप्रैल सन् १९५९ शुक्रवार

चैत्र शुक्ला २ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८॥ तक

—बृहद्यज्ञ (वरुण-याग)

मध्याह्न ३ से ६ तक

—शोभा यात्रा (विशाल नगर कीर्तन)

व्यवस्थापक श्री चन्द्रमोहन जी मेहता, उप-प्रधान-स्वर्ण जयन्ती सभा

—श्री महाशय देवीप्रसाद जी जिज्ञासु, संयुक्त मंत्री स्वागत-समिति।

११ अप्रैल सन् १९५९ शनिवार

चैत्र शुक्ला ३ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८॥ तक

—बृहद् यज्ञ (इन्द्र-याग)

प्रातः ८॥ से ९ बजे तक

—ओ३म् ध्वजा रोहण आचार्य पं० नरदेव जी शास्त्री, वेदतीर्थ कुलपति के कर कमलों से।

९॥ से १० बजे तक

—धर्मोपदेश-श्री स्वामी विवेकानन्दजी

प्रातः १०। से ११ तक

—व्याख्यान-श्री स्वामी व्रतानन्दजी

मध्याह्न १॥ से २ तक

—संगीत, भजन

मध्याह्न २ से ४॥ तक

—आर्य किशोर सभा अधिवेशन, सभापति-श्री प० नरेन्द्र जी, प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद

सायं ४॥ से ५॥ तक

—व्याख्यान-श्री पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री।

रात्रि ७॥ से ८ तक

—भजन, संगीत

रात्रि ८ से ९ तक

—व्याख्यान-श्री पं०ओमप्रकाश जी शास्त्री।

रात्रि १० से ११ तक

—व्याख्यान-श्री पं० वीर यज्ञदत्तजी शर्मा, पंजाब।

१२ अप्रैल सन् १९५९ रविवार

चैत्र शुक्ला ४ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८॥ तक

—बृहद् यज्ञ (सोम-याग)

प्रातः ८॥ से ९ तक

—भजन, संगीत

प्रातः ९ से ९॥ तक

—कथा श्री स्वामी सुखानन्द जी

प्रातः ९॥ से ११ तक

—विद्वत् कला परिषद् अधिवेशन, सभापति-श्री मान्य पं० भगवद्दत जी शास्त्री, उप-प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

मध्याह्न १ से १॥ तक

—संगीत, भजन

मध्याह्न १॥ से २॥ तक

—भाषण-श्री पं०रामानन्दजी शास्त्री

मध्याह्न २॥ से ५॥ तक

—राष्ट्रभाषा-सम्मेलन, सभापति-श्री मान्य डॉ० बी० केसकर, सूचना एवं प्रसार मंत्री भारतीय प्रशासन

प्रमुख वक्ता

१—श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी संसद-सदस्य

२—श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा, कविरत्न, प्रधान आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश

३—श्री डा०मथुरालाल जी एम०ए० पी० एच० डी०,

४—श्री मक्सूदन रावजी एम०पी० संगीत

५—प्रो० विश्वेश्वर कुमार जी तथा सुमतिदेवी एम० ए०

रात्रि ७॥ से ८ तक

भजन

रात्रि ८ से ९ तक

—व्याख्यान-श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

रात्रि ९ से १० तक

—व्याख्यान-श्री पं० बिहारी लाल जी शास्त्री

रात्रि १० से ११ तक

—व्याख्यान-श्री आचार्य वाचस्पति जी शास्त्री

१३ अप्रैल सन् १९५९ सोमवार

चैत्र शुक्ला ५ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८ तक

—बृहद् यज्ञ (रुद्र-याग)

प्रातः ८ से ८॥ तक

—भजन-संगीत

प्रातः ८॥ से ९ तक

—धर्मोपदेश-श्री स्वा० अभेदानन्द जी महाराज प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

प्रातः ९ से ११॥ तक

—समावर्तन संस्कार,

—दीक्षान्त समारोह (पण्डाल में)

—सभापति-श्री धरमसी मूलराज खटाऊ बम्बई।

—दीक्षान्त भाषण-माननीय पं० जवाहर लाल नेहरू, प्रधान मन्त्री

मध्याह्न १॥ से २ तक

—भजन व संगीत

मध्याह्न २ से ४॥ तक

—शिक्षा सम्मेलन सभापति—श्री डा० के० एल०श्री माली जी शिक्षा-मंत्री भारत सरकार

प्रमुख वक्ता

१—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

२—आचार्य श्री पं० गौरीशंकर जी शास्त्री

३—श्री डा० सूर्यकान्त जी शास्त्री एम० ए०

४—श्री डा० नरेन्द्रदेव जी शास्त्री एम० ए०

५—श्री पं० मिहिरचन्द्र जी धीमान् (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल)

मध्याह्न ४॥ से ५॥ तक

—अभ्यर्थना (अपील) श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोक-सभा

मध्याह्न ५॥ से ६ तक

—स्व० श्री पं० पद्मसिंह जी शर्मा-अनुसन्धान-भवन का शिलान्यास

रात्रि ८ से ८॥ तक

—भजन संगीत

रात्रि ८॥ से ११ तक

—आर्य सम्मेलन, सभापति—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी

संयोजक-श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी

प्रमुख व्याख्याता

१—श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

२—श्री आचार्य वाचस्पतिजी शास्त्री

३—श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

४—श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले प्रधान मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

५—श्री बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट (आगरा)

१४ अप्रैल सन् १९५९ मंगलवार

चैत्र शुक्ला ६ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८ तक

—बृहद् यज्ञ (विष्णु-याग)

प्रातः ८ से ८॥ तक

—संगीत-भजन

प्रातः ८॥ से ९॥ तक

—कथा-श्री आनन्द स्वामी जी महाराज

प्रातः ९॥ से ११॥ तक

—वेद सम्मेलन, सभापति-श्री डा० मंगलदेव जी शास्त्री, एम. ए., पी.एच.डी.

प्रमुख वक्ता

१—श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री

२—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल (काशीविश्वविद्यालय)

३—श्री पं० हरिदत्त जी शास्त्री, एम० ए०

४—श्री पं० भगवद्दत्त जी शास्त्री

५—श्री पं. रमेशचन्द्र जी शास्त्री

मध्याह्न १॥ से २ तक

—भजन संगीत

मध्याह्न २ से ४ तक

—गुरुकुल-सम्मेलन

सभापति-श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त प्रधान-भाषा-स्वातन्त्र्य समिति

प्रमुख व्याख्याता—

१—श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी

२—आचार्य रामदेव जी प्रधान-आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब

३—श्री जगदेव जी सिद्धांती शास्त्री महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

४—श्री नरदेव जी स्नातक सदस्य-लोक सभा

५—श्री आचार्य भगवानदेव जी

४ से ५॥ तक

—अभ्यर्थना (अपील)

श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज

रात्रि ७॥ से ८ तक

भजन संगीत

रात्रि ८ से ९ तक

व्याख्यान श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी प्रधान सेनापति-सार्वदेशिक आर्य-वीर दल

रात्रि ९ से १० तक

—व्याख्यान-श्री प्रो० महावीर जी एम०ए० डी०लिट० (देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी के पुत्र)

रात्रि १० से ११ तक

—भाषण-श्री कु० सुखलाल जी मुसाफिर

१५ अप्रैल सन् १९५९ शनिवार

चैत्र शुक्ला ७ सं० २०१६ वि०

प्रातः ६॥ से ८॥ तक

—बृहद यज्ञ (प्राजापत्येष्टि:) तथा पूर्णाहुति

प्रातः ८॥ से ९ तक

—संगीत भजन

प्रातः ९ से ९॥ तक

—धर्मोपदेश-श्री म० आनन्द भिक्षु जी वानप्रस्थ

प्रातः ९॥ से ११॥ तक

—आयुर्वेद सम्मेलन

सभापति-श्रीमान्य श्री [illegible] जी स्वास्थ्य मंत्री-भारतीय [illegible]

(शेष पृष्ठ १३ पर)

बाल-विनोद

पहेलियाँ

(१)

चार अंगुल का पेड़
सवा मन का पत्ता
फल लागे अलग-अलग
पक जाए इकट्ठा।

(२)

श्रीनगर में चोर घुसा
हाथरस में पकड़ा गया
मालूनपुर में खून हुआ
कानपुर में सुना गया।

(३)

फारसी बोली आई ना
तुर्की ढूंढ़ पाई ना
हिन्दी बोली आरसी आए
खुसरो कहे कोई बताए ना।

(४)

आगे-आगे बहिना आई
पीछे-पीछे भइया
दाँत निकाले बाबा आए
बुरका ओढ़े मय्या।

(५)

सब लोगों की बड़ी दुलारी
उसमें लगता मेला भारी
एक आँख से दौड़ी चलती
कभी नहीं चलने से थकती
उस पर बैठो या सो जाओ
चाहो जहाँ वहीं तुम जाओ
नहीं चाहिए उसको सानी
खाती कोयला, पीती पानी

उत्तर—१—कुम्हार का चाक, २—सुर्मा ३—आरसी, ४—भुट्टा, ५—रेलगाड़ी।

—ममता दीदी डनलप शाहगंज

(१)

आदि कटे 'हाथी' कहलाऊँ
अन्त कटे तो 'कौआ'
मध्य कटे तो काम में आऊँ
बताओ मेरे भैया।

(२)

अगर पसीने से घबराओ
पैर पकड़कर मुझे घुमाओ।

(३)

सिर काटो तो नर कहलाता
कटे पैर तो बान?
पैर कटे तो वार करूँ मैं
बोलो नाम सुजान

(४)

मोती सा ही रङ्ग रूप है,
सदा रात में आऊँ
घास, फूल, पत्तों में सोती
धूप लगे मर जाऊँ।

(५)

सफेद मुर्गी हरे पर,
जो न बूझे सो जाए घर।

(६)

लाल डण्डी सफेद पर,
बूझो तो बूझो नहीं सिधारो घर।

(७)

छोटी सी है एक नार
डुबकी मारे जाए पार।

(८)

एक पेड़ के दो तने
दो शाखें दश कलियाँ।
ऐसा पेड़ कहीं ना देखा
छान मारी सारी गलियाँ।

(९)

मुझ बिन जग में कुछ नहीं भाता,
मैं हूँ जग का असली दाता।
मेरे बिन सब भूखे मरते,
मुझ से लोग विश्व के डरते॥

उत्तर—१—कागज, २—पङ्खा, ३—वानर, ४—ओस, ५—मूली, ६—हारसिंगार का फूल, ७—सुई, ८—आदमी ९—धन।

—विद्युत नरसिंहपुर

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम..

आयु.......................वर्ष.......................

पूरा पता..

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां..

वनिता विवेक

नारी जागरण और नेतृत्व की समस्या

समस्या शब्द की विषम परिस्थितियों से, न केवल भारत ही अपितु निखिल विश्व प्रभावित है। भारत में जहाँ बेकारी समस्या, अनुशासन समस्या, शिक्षा-समस्या, खाद्य-समस्या आदि आदि अनेक समस्याएं हैं उनके साथ-साथ सबसे मुख्य समस्या है वर्तमान युग की नारी-समस्या। इस युग में नारी जितनी प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर होने की चेष्टाएँ कर रही है उतनी ही विकट परिस्थितियों में से उसे गुजरना पड़ रहा है। आज की नारी के सम्मुख जीवन की अनेकरूपता, पदे पदे उसकी अबाध गति में गत्यवरोध उत्पन्न कर उसके सामने एक भयावह वातावरण उत्पन्न कर रही है।

आज की भारतीय नारी घर की सीमित परिधि से बाहर निकलकर, देश और विदेश की सीमा को भी लांघने की जो चेष्टाएँ कर रही है उसकी सामाजिक जीवन में प्रतिक्रिया आरम्भ हो चुकी है। आज उसने अपनी पुरातन गृहस्वामिनी की थाती, पुत्र-वत्सला माँ की संज्ञा तथा स्नेहमयी भगिनी के प्रति सुलभ अनुराग से भी अपने को वंचित कर दिया है। चारों हाथ फैलाने से वह आज "इतोभ्रष्टाततोभ्रष्टा" बन चुकी है। उसके कथित अधिकारों की माग ने ही उसे पुरुषों के अमित प्यार से दूर, कहीं दूर लेजाकर पटक दिया है, जिसके कारण उसके जीवन में सूनेपन ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है।

यद्यपि आज नारी शिक्षा-क्षेत्र में पर्याप्त उन्नत हो गई है, तथापि इन अनेक रूप समस्याओं से उसका पीछा नहीं छूट पाया, बल्कि, "आग में शोले उठे ज्यों-ज्यों हवा की, मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।" के अनुरूप स्त्री समाज भी अनुदिन विषमता से अनुप्राणित होता नजर आ रहा है।

कृत्रिमता प्रधान इस युग की-शिक्षा से शिक्षित नारी भूल गयी कि वह गृहदेवी है, अर्धांङ्गिनी है, ममतामयी माँ है एवं दया की प्रतिमूर्ति भगिनी है। नारी के लिए उचित शिक्षा के अभाव के कारण ही, स्त्री समाज में एकाकी जीवन यापन की प्रवृति आज विकसित होती जा रही है। साज शृंगार विषयक अपव्यय एवं उपार्जन की न्यूनता ने भी स्त्री समाज में यथाशक्य पर्याप्त प्रसार पा लिया है और उसीके दुष्परिणाम स्वरूप इस नवयुग की कतिपय स्त्रियां, स्नेह के ललकते लाल के मुख की ममता को त्यागकर नौकरी के विषबपाशों में अपने आपको आबद्ध कर देना चाहती हैं। इसी मनोवृत्ति के कारण आज सारा समाज दुखी है। जब संसार रथ के स्त्री-पुरुष रूपी दो पहियों में एक भी गतिहीन होजाता है तो उस दुःख से सारा समाज उद्वेलित हो उठता है, यह सत्य है और स्थिर सत्य है।

आज नारी, यदि अपना आत्मोद्धार करना चाहती है तो उसे, सीता का आदर्श-सावित्री की पति-भक्ति, विदुषी गार्गी को अपना आदर्श बनाना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यदि वह आज की भाँति आगे भी पाश्चात्य नारियों से अपने आपको प्रेरित करती रहेगी तो यह निश्चित है कि वह दिन भी दूर न होगा जब भारतीय नारी सर्वनाश के गहरे कगारे पर खड़ी खड़ी एक अन्तिम धक्के की राह जोहती नजर आवेगी। भारत के नारी-जागरण को सही मोड़ देने का दायित्व आज आर्य महिलाओं पर सबसे अधिक है। क्या वे नारी-समाज को नेतृत्व प्रदान कर रही है?

यदि मैं दयानन्द बन जाऊँ

यदि मैं दयानन्द बन जाऊँ
घोर अविद्या अन्धकार को
जड़ से दूर भगाऊँ।
छुआछूत का भूत भगा कर,
प्रेम का पाठ पढ़ाऊँ॥ यदि०
नदी पेड़ पाषाण छुड़ाकर,
ईश्वर भक्ति सिखाऊँ।
राष्ट्रियता के भाव जगा कर,
देश प्रेम सिखलाऊँ॥ यदि०
ओ३म् पताका ले कर में,
घूम-घूम कर घर-घर में।
कर प्रचार दुनियाँ भर में,
फिर सब को आर्य बनाऊँ॥
यदि मैं दयानन्द बन जाऊँ॥

—गिरीशचन्द्र आर्य सिढ़पुरा, (एटा)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश एक प्रशस्त उदाहरण उपस्थित करने जा रहा है

[आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री, पंचवटी, नासिक]

गुरुधाम—

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की ओर से मथुरा में जिन योजनाओं को सफल करने का प्रयत्न किया जा रहा है वे बहुत ही प्रशस्त हैं और भविष्य के लिए एक प्रशस्त उदाहरण बनेंगी। किसी भी समाज के लिए उसके साहित्य-कार, साहित्य और आर्ष मर्यादा की स्थापना बहुत ही उपयोगी अङ्ग हैं। बिना इनके कोई संघटन चल नहीं सकता। आर्यसमाज के मूल में ऋषि दयानन्द ने जिस आर्ष मर्यादा का प्रस्थापन किया उसका उद्गम गुरु विरजानन्द से हुआ। वह वह गुरुवर था जिसने दयानन्द जैसे ऋषि का निर्माण किया। ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त जो आर्ष परम्परा चलकर मध्य में लुप्त हो गई थी, ऋषि दयानन्द ने उसकी स्थापना की। ऋषि दयानन्द को ऋषि बनाने का सारा श्रेय गुरुवर विरजानन्द को है। अत. अपने गुरु के भी गुरु यति-वर विरजानन्द की उस कुटिया का स्थायी स्मरणीय रूप बनाया जाना परमावश्यक है। सभा ने इस कुटिया को प्राप्त करके उत्तम कार्य किया है और उसे स्मारक रूप देने में एक गौरव का कार्य होगा।

आर्यमित्र—

आर्यसमाज की अविकल एवं अविचल सेवा का कार्य "आर्यमित्र" पत्र ने किया है। आर्यसमाजके प्रचार में आर्यमित्र का महान् हाथ रहा है। आर्यमित्र ने वेद के संदेश को देश-विदेशों में पहुचाया है। आर्यजगत् का यह बहुत पुराना पत्र है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ही की नहीं अपितु भारत भर की आर्य समाजों की गतिविधियो का आर्यमित्र अपने जीवनकाल में केन्द्र रहा है। इन गतिविधियो का परिचय वह सदा देता रहा है। उसकी सेवाओं के ६० वर्ष पूरे हुए और अब इसकी जयन्ती मनायी जायेगी—यह एक सुन्दर कार्य है। इस कार्य की उपयोगिता के सभी हामी हैं। चाहिये कि आर्य जनता पूर्ण उत्साह के साथ इस जयन्ती को मनावे तथा आर्य-मित्र की उन्नति में अपना सहयोग दे।

विद्वदभिनन्दन—

आर्यसमाज के दो साहित्यकारों के सत्कार की योजना को मूर्तरूप देकर सभा ने एक प्रशस्त दिशा में पग ही नहीं उठाया है अपितु आर्यसमाज के इतिहास में एक स्वस्थ एवं अनुकरणीय परम्परा की स्थापना करने जा रही है। श्रीमान् प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय की साहित्य सेवा समस्त आर्यजगत् पर भली प्रकार विदित है। उन्होंने आर्य जगत् को अमूल्य साहित्य प्रदान किया है। आर्य सिद्धान्तों पर उच्चकोटि के ग्रन्थो को लिखकर प्रचार के लिए एक सुन्दर दिशा प्रदान की है। आर्य सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण करने में इन्होने अपनी उत्तम प्रतिभा का पदे पदे परिचय दिया है। हिन्दी, अंग्रेजी, और संस्कृत भाषाओं में इन्होने अच्छे ग्रन्थ दिये हैं। उपाध्याय जी का स्थान एक आर्य दार्श-निक का स्थान है। उनके ग्रन्थों से यह धारणा सर्वथा परिपुष्ट होती है। उनका जितना भी सम्मान किया जावे, थोड़ा ही है।

श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी (रिटायर्ड चीफ जज) एक विवेचक और वक्ता के रूप में सदा प्रसिद्ध रहे। वे जहां धर्म के विवेचक हैं और उत्तम वक्ता हैं वहां लेखक भी हैं। विविध धर्मों के अध्ययन में उन्होने पर्याप्त परिश्रम किया है और धर्म का आदिस्रोत लिखकर एक अच्छा योगदान हमारे साहित्य को दिया है। आपकी अपनी शैली है। बहुत ही उत्त-मता से किसी विषय पर आप विवेचन करते हैं। आपके ग्रन्थो और लेखो में बड़ी ही दक्षता से विषयों के साथ न्याय किया गया मिलता है। इस वृद्ध एवं मनीषी विद्वान् ने आर्यसमाज के साहित्य में जो योगदान दिया है, वह बहुत ही उपयोगी है। इनका आदर करना सब का परम कर्तव्य ही है। ये वस्तुत. एक आर्य विवेचक हैं।

इन सब कार्यों को करने की योजना बनाकर वस्तुतः सभा एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। सभी आर्यों और आर्यसमाजो को ऐसे कार्यों में सहयोग देना चाहिए।

निर्वाचन—

दिनाङ्क २२-३-७१ को आर्यसमाज गणेशगज में उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ जिला का चुनाव हुआ जिसमें निम्न-लिखित अधिकारी निर्वाचित हुए :—

प्रधान—श्री विश्वेश्वरनाथ वर्मा
उपप्रधान—श्री नाथूराम
,, ,, जगन्नाथ प्रसाद केसरवानी
मन्त्री—श्री विक्रमादित्य 'वसन्त'
उपमंत्री—श्री पृथ्वीराज वरमानी
,, ,, विष्णुकुमार अवस्थी
प्रचार मंत्री—श्री बी० एन० पाल
कोषाध्यक्ष—श्री भगवत शरण

प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा—(१) श्री विश्वेश्वरनाथ वर्मा (२) श्री भगवत शरण (३) श्री पृथ्वीराज वरमानी

आर्यसमाज नवाबगंज के नवीन वर्ष १९७१ के लिए अधिकारियों का निर्वा-चन साधारण सभा दिनाङ्क २२-३-७१ द्वारा हुआ है। सो निम्न भांति है,

प्रधान—श्री रोशनलाल जी चीफकेमिस्ट
कार्यकर्ता प्रधान—श्री हरिश्चन्द्रजी अग्रवाल
उपप्रधान—श्री कुबेरनाथ जी द्विवेदी
मंत्री—श्री हरिशरण लाल जी
उपमंत्री—श्री बज्रांगशरण जी गांधी
कोषाध्यक्ष—श्री रामकुमार जी गुप्त
पुस्तकाध्यक्ष—पं० वेदव्रत जी
निरीक्षक—श्री हरिशरण जी श्रीवास्तव

होली मिलन सम्मेलन

रविवार दि० २१-३-७१ को नारा-यण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग में आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ जिला की ओर से एक विशाल होली सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें लगभग सभी समाजों के सदस्यो ने सपरिवार भाग लिया। कार्यक्रम मध्याह्न २ बजे प्रारम्भ हुआ और सायंकाल साढ़े सात बजे शान्ति पाठ और प्रसाद वितरण के साथ समाप्त हुआ। बालक-बालिकाओ, पुरुषो व महिलाओ के अनेक शारीरिक खेलों की प्रतियोगिताएं भी हुईं जिनमे प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेताओ को ३० पुरस्कार बांटे गये। भजनो के अति-रिक्त श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री वाइस प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज व श्री हरिवंश लाल जी मेहता के ओजस्वी व्याख्यान भी हुए तथा श्री अनन्तविहारी निगम अधिष्ठाता आर्यमित्र द्वारा होली की ५५ उपाधियां भी वितरित की गईं। लाउड स्पीकर पर आर्यसमाज के भजनो के रेकार्ड बजाये गये। सारा कार्यक्रम एकदम सादगी लिये हुए था पर उसमें पूर्ण उत्साह झलकता था।

विक्रमादित्य 'वसन्त' मन्त्री
जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

आवश्यकता

वैश्य कुलोत्पन्न १४ वर्षीय शिक्षित सुन्दर एवम् स्वस्थ कन्या के लिये शिक्षित, सुन्दर, स्वस्थ तथा सव्यवसाय अधिकाधिक २५ वर्षीय वैश्य वर की आवश्यकता है। कृपया शिक्षित परिवा-रीय दहेज की विशेष रुचि न रखने वाले सज्जन ही पत्र-व्यवहार करें। विवाहो-चित समस्त दान दक्षिणा परिपाटियों का यथोचित निर्वाह किया जावेगा। दहेज का प्रतिबन्ध न होगा।

कृपया इस पते से पत्र-व्यवहार करें।
सत्येन्द्रनाथ शास्त्री प्रधान
ग्राम भावलखेड़ा, डा० सदर
(शाहजहांपुर)

(पृष्ठ १० का शेष)

प्रमुख वक्ता—
१—श्री स्वा० आयुर्वेदाचार्य
२—श्री वैद्य रामनाथ जी गुरुकुल काँगड़ी
३—श्री वैद्य पं० प्रकाशचन्द्र जी कविराज
४—श्री वैद्य प० हरिशङ्कर जी शास्त्री, काव्यतीर्थ
५—श्री वैद्य पं० अमरनाथ जी शास्त्री औदीच्य

मध्याह्न १॥ से २ तक
भजन

मध्याह्न २ से ४॥ तक
संस्कृति-सम्मेलन

प्रमुख वक्ता
१—श्री गोस्वामी गणेशदत्त जी
२—श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री, एम० ए०
३—श्री डा० सूर्यकान्त जी शास्त्री एम० ए०
४—श्री रघुवीर जी शास्त्री

मध्याह्न ४॥ से ५॥ तक
—भाषण-श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य-लोक सभा

रात्रि ७॥ से ८ तक
—भजन

रात्रि ८ से ९ तक
—भाषण श्री पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री

रात्रि ९ से १० तक
—भाषण-श्री आचार्य वाचस्पति जी शास्त्री

रात्रि १० से ११ तक
—भाषण-श्री कुवर सुखलाल जी आर्य पथिक धन्यवाद-आरती, शान्ति-पाठ आदि

आपके दर्शनाभिलाषी

आचार्य श्री नरदेवशास्त्री,
कुलपति

डा० सूर्यकान्त शास्त्री,
एम० ए०, सभा प्रधान

डा० हरिदत्त शास्त्री,
एम० ए० संयोजक स्वागत-समिति

वैद्य विष्णुदत्त शर्मा,
सभा मन्त्री

वैद्य हरिशङ्कर शर्मा
स्वागताध्यक्ष

देवदत्त शर्मा मौद्गल्य
स्वागत मन्त्री

प्रकाशवीर शास्त्री, एम० ए०
सदस्य-लोकसभा, प्रचार मन्त्री

नन्दकिशोर शास्त्री, एम.ए.
मुख्याधिष्ठाता

सभा के नियमों में आवश्यक संशोधन

अन्तरङ्ग सभा दिनांक १९-३-६१ के नि० सं० १० द्वारा नियम संशोधन समिति की रिपोर्ट निम्न प्रकार आर्य-मित्र में प्रकाशित की जाती है। कृपया अपनी-अपनी आर्यसमाज की सम्मति शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। सभा के असाधारण अधिवेशन में यह संशोधन नियम स्वीकारार्थ प्रस्तुत किये जायंगे।

नियम संशोधन

विविध महानुभावों तथा उपप्रतिनिधि सभाओं के प्रस्तावित संशोधनों पर विचार होकर निश्चय हुआ कि:—

१—आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं व आर्यप्रतिनिधिसभाके पारस्परिक सम्बन्ध व प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय प्रस्तुत किया जाकर निश्चय हुआ कि:—

(१) सम्प्रति यही उचित है कि आर्यसमाजों का सीधा प्रतिनिधित्व सभा के पूर्व नियमों के अनुसार ही सभा में रहे।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा में उप-प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधित्व के संबंध में इस समिति का मत है कि(५) के 'ग' में निम्न संशोधन स्वीकार किया जाय।

(अ) 'प्रति ७ से १० संख्या' के स्थान पर "प्रति ५ से ७ संख्या" स्वीकार किया जाय तदुपरान्त "प्रत्येक १० अथवा उसके खण्ड पर" के स्थान पर "प्रत्येक ७ अथवा उसके खण्ड पर" स्वीकार किया जाय।

(ब) पिप्पणी में निम्न प्रकार से परिवर्तन किया जाय, केवल वही उप-प्रतिनिधि सभा अपना प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा में भेज सकेगी कि जिस में न्यून से न्यून ६ आर्यसमाजें प्रविष्ट हों।

आर्य प्रतिनिधि सभा में उपसभाओं से केवल उन्हीं समाजों से प्रतिनिधि निर्वाचित किये जायंगे, जो आर्य प्रतिनिधि सभा से उसके नियमानुसार सम्बन्धित है और जिन्होने सभा के वर्ष का प्राप्तव्य दशांश आदि धन सभा के नियत चित्रों के साथ भेज दिया है।

बृहदधिवेशन के अवसर पर केवल उन जिलों को ही अन्तरङ्ग सभा के लिये अन्तरङ्ग सदस्य चुनने का अधिकार होगा जिस जिले से कम से कम ६ प्रतिनिधि उपस्थित होगे, अन्यथा साधारण सभा अन्तरङ्ग के लिये किसी प्रतिनिधि का चुनाव कर लेगी।

सूचना

प्रान्त की समस्त समाजों व जिलोप-सभाओं को सूचित किया जाता है कि अपना दशांश व सूदकोटि तथा अन्य समस्त सभा-सम्बन्धी प्राप्तव्य धन सं० २०१८ का किसी भी व्यक्ति (उपदेशक व प्रचारक) को न देकर सीधा सभा कार्यालय को भेजें, अन्यथा चुनाव के समय प्रतिनिधि स्वीकार करने में बाधा पड़ेगी।

—फूलनसिंह सभा मंत्री

विदेशी मिशनरियों की गति-विधि से भारत को खतरा है

सरकार सजगता से काम ले—आर्य नेताओं की चेतावनी

नई दिल्ली का समाचार है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री लाला रामगोपालजी शाल-वाले तथा आर्यवीर दल के प्रधान श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने पत्र प्रतिनिधियों के समक्ष ईसाई मिशनरियों की उन गति-विधियों पर प्रकाश डाला है जो वे छोटा नागपुर तथा उड़ीसा के क्षेत्र में राजनीतिक षडयन्त्र रच रहे हैं। उनका कहना है कि यदि ईसाई मिशनरियों की गति-विधि पर सरकारी तौर पर रोक न लगाई गई तो भारत की सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति को भारी धक्का लगेगा और देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जायगी।

आगे चलकर इन आर्य नेताओं ने स्पष्ट कहा कि इस तरह के अनेकों प्रमाण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि विदेशी मिशनरी सेवा की आड़ में विदेशों से प्राप्त अपार धन-राशि के बल पर यहां राजनीतिक षडयन्त्र रचने में लग रहे हैं। नागा प्रदेश, केरल, झारखण्ड प्रांत की मांग तथा उड़ीसा प्रान्तीय सरकार में झारखण्ड पार्टी की नीति से हमारे इस विश्वास का समर्थन होता है।

धर्मप्रसार और सेवा के नाम पर विदेशी मिशनरी अपने स्कूल, कालेज और अस्पतालों द्वारा अपढ़-कुपढ़ निर्धन भोले भाले पहाड़ी लोगों को अपना धर्म परिवर्तन करने के लिये विवश करते हैं।

अन्त में उन्होंने सरकार से अनुरोध किया है कि हरिजन आदि जिन जातियों को उसने राजनैतिक संरक्षण दे रखे हैं उन्हें धार्मिक संरक्षण भी प्रदान करे और इनके धर्म-परिवर्तन की कार्यवाइयों पर अविलम्ब रोक लगा दे।

(पृष्ठ ४ का शेष)

विभाग से त्यागपत्र देकर पृथक् हो गए थे क्योंकि उन्होंने उसी समय संन्यास ले लिया था। १-५-५५ के वार्षिक निर्वाचन में श्री पं० इन्द्र जी विद्या-वाचस्पति प्रधान निर्वाचित हुए थे। वे संशोधन जिनका धर्मार्य सभा ने श्री विदेह जी की पुस्तकों में किए जाने का सुझाव दिया था, सार्वदेशिक सभा ने श्री विदेह जी को प्रेरणा के साथ सन् १९५४ में भेज दिए थे कि जब तक संशोधनों सहित नये संस्करण छपें तब तक उन पुस्तकों का प्रचार बन्द रखा जाय अथवा संशोधनों सहित ही पुस्तके प्रयुक्त की जावें। परन्तु चिरकाल तक न केवल इस प्रेरणा को क्रियान्वित ही नहीं किया गया अपितु बिना संशोधनों के ही पुस्तकें प्रचारित होती रहीं। क्या सभा के आदेश निर्देश की अवहेलना श्री स्वा० विद्यानन्द जी के लिए आर्यसमाज की वेदी बन्द किए जाने की पृष्टभूमि नहीं बन सकती थी?

धर्मार्य सभा की जिस बैठक में श्री स्वामी विद्यानन्द जो विदेह के ग्रन्थों पर विचार हुआ था उसमें श्री स्वामी आत्मानन्द जो महाराज, स्वर्गीय स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति, श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, आचार्य विश्वश्रवा जी आदि आर्य विद्वान् उपस्थित थे। श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह को भी उस बैठक में आमन्त्रित किया गया था, जिससे उनकी उपस्थित में ही विचार हो जाय। आर्य विद्वानों को उनके ग्रन्थों के जिन जिन स्थलों पर आपत्ति थी उन सब पर उनके साथ विचार हुआ। श्री विदेह जी अपना समाधान प्रस्तुत करते गये और भूलें स्वीकार करते गये। ऐसी अवस्था में धर्मार्य सभा व सार्वदेशिक सभा के निश्चयों को एक पक्षीय और श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी द्वारा प्रभावित बताना अत्यन्त अनुचित और आर्य विद्वानों के लिए अपमान जनक है।

श्री विदेह जी ने अपनी पत्रिका में उन आरोपों को निर्मूल सिद्ध करने की प्रायः चेष्टा की है जो सार्वदेशिक सभा ने उनके विरुद्ध लगाये थे। उनकी जो स्थिति उन आरोपों के विषय में वेदी बन्द किये जाने के समय थी वही आज भी है। ऐसी अवस्था में उनके विरुद्ध लगाये गये आरोपों के विषय में स्थिति सुस्पष्ट नहीं है।

उनके विरुद्ध एक आरोप यह था कि वे मुर्दों को आज कल लकड़ी के अभाव में बिजली द्वारा जला दिया जाना उचित समझते और ऐसा ही प्रकट करते हैं। इसका वे समाधान प्रस्तुत करते हैं।

'मेरे इस कथन में कोई अनौचित्य नहीं है। वैदिक सिद्धान्त यह है कि मुर्दे को जलाया जाय। अग्नि का काम जलाना है। बिजली भी अग्नि ही है। लकड़ी के अभाव में बिजली से जलाया जाना सर्वथा आपत्ति रहित है।'

वैदिक सिद्धान्त के अनुसार यह कर्म एक संस्कार है। बिजली से जलाने से संस्कार की पवित्रता नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त दाह संस्कार के साथ वायु-शुद्धि का भी विशेष सम्बन्ध है जिसके लिए घृत, सामग्री और चन्दन आदि पदार्थों की व्यवस्था निर्धारित है जिसका वर्णन संस्कार विधि में है। यदि लकड़ी के अभाव में कोई बिजली का आश्रय लेता है तो लिया करे परन्तु आर्यसमाज की वेदी से इसका औचित्य प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त अन्य संस्कारों के समान यह संस्कार वेदमन्त्रों द्वारा सम्पन्न होता है जिससे इसकी गम्भीरता और पवित्रता बढ़ती एवं स्थिर रहती है। क्या बिजली द्वारा शव-दाह से इस संस्कार का अनुष्ठान विषयक महत्त्व भी स्थिर रह सकता है?

एक दूसरा आरोप परमात्मा को निराकार और साकार मानना और प्रचार करना था। इस आरोप का उन्होंने बल पूर्वक खण्डन किया है परन्तु उनकी पुस्तक सत्यनारायण की कथा के पृष्ठ २६ पर ये पंक्तियां अंकित थीं:—

"सत्यनारायण ब्रह्म को ज्ञानियों ने जो साकार वर्णन किया है वह सत्य है।" अतः वे क्यों कर उपयुक्त आरोप से मुक्त हो सकते है। उन्हें यह लिखना चाहिये था कि मेरी अमुक पुस्तक में ऐसा अवश्य था।

आर्यजनों को यह आपत्ति रही है कि वह अपने को ऋषि मानते और मनवाते थे। यह भी उनके विरुद्ध एक आरोप था। इसका उत्तर अपनी पुस्तिका में लिखते हैं कि ......"अपने जीवन में मैंने एक बार भी अपने को न ऋषि लिखा है और न कहा है और न कभी किसी को यह प्रेरणा की है कि वह मुझे ऋषि माने। ऐसे अवसर प्रायः आते रहे थे और आते रहते हैं कि वेद-कथा की अन्तिम रात में मेरे प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आर्यसमाज का कोई अधिकारी या जनता का कोई प्रतिनिधि मेरे लिये ऋषि शब्द का प्रयोग कर देता था या कर देता है।"

यह तो ठीक हो सकता है कि कोई सज्जन विदेह जी को ऋषि कह दें परन्तु प्रश्न यह है कि क्या विदेह जी उन्हें रोकने की विनम्रता दिखाई या दिखाते है? और यदि विदेह जी को अपने को ऋषि कहलवाना इष्ट नही था तो विदेह जी ने अपने पत्र सविता में अपने को ऋषि क्यों छपवाया। जिन निष्पक्ष लोगों को उनके पत्र 'सविता' आदि को पढ़ने का अवसर मिला होगा उन पर यह अङ्कित हुए बिना न रहा होगा कि श्री विदेह जी द्वारा व उनके नाम पर उसी गुरुडम की परम्परा पुनर्जीवित और प्रतिष्ठित हुई या होती रही जिसका महर्षि दयानन्द ने प्रबल खण्डन किया है। आर्यसमाज के नाम और आश्रय में ऐसा होना एकदम अनुचित है।

हमारी कामना है कि श्री विदेह जी आर्यसमाज के उपयोगी अङ्ग बनें। उन पर से प्रतिबन्ध हटाया जाय। वे आर्य-समाज में खूब चमकें परन्तु वे महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को छिपाने का कारण न बनें। जहाँ वे अपने प्रति न्याय के इच्छुक हैं वहाँ दूसरे के प्रति भी न्याय होना चाहिए। आर्यसमाज व्यक्तियों से ऊपर है। यदि यह मामला वैयक्तिक विरोध तक ही सीमित होता तो कभी का समाप्त हो गया होता। सभा के लिए यह वैयक्तिक विषय नहीं है। इससे आर्यसमाज का हिताहित सम्बद्ध है। श्री विदेह जी तथा उनके प्रशंसकों को इसे इसी प्रकाश में लेना चाहिये और उन्हें आश्वस्त रहना चाहिये कि सार्वदेशिक सभा, धर्मार्य सभा तथा उनके [illegible] अधिकारियों ने इसे इसी प्रकाश में लिया है द्वेषादि के किसी भाव में नहीं।

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा हिन्दी के १५६ लेखकों को ६० हजार रुपया पुरस्कार

उत्तरप्रदेश सरकार ने हिन्दी के १५६ लेखको को उनकी महत्वपूर्ण कृतियों के लिए ६०३०० रुपये के पुरस्कार प्रदान किये है। ये पुरस्कार सरकार द्वारा नियुक्त हिन्दी समिति की सिफारिशो पर दिये गये है।

१००० रुपये के अधिकतम पुरस्कार श्री किशोरीदास बाजपेयी को उनकी पुस्तक 'हिन्दी शब्दानुशासन" पर और डा० मुन्शीराम शर्मा को 'भक्ति का विकास' नामक पुस्तक पर दिये गये। इसके बाद ८०० रुपये के पुरस्कार डा० मुकुन्द स्वरूप वर्मा को "शल्य प्रदीपिका' पर श्री गिरजादत्त शुक्ल गिरीश का 'तारक वध" पर और आचार्य चतुरसेन शास्त्री को "भारतीय संस्कृति का इतिहास पर दिये गये।

डेरी यूनिटो के लिए अहेतुक सहायता

शिक्षण संस्थाओं को १००,००) का अनुदान

उत्तरप्रदेश की पाच और शिक्षण संस्थाओ म स प्रत्येक को शुद्ध नस्ल के पशुओ की डेरी यूनिटें खोलने के लिये २०,००० रु की अहेतुक सहायता दी गई है। इस प्रकार राज्य में ऐसी शिक्षण संस्थाओं की कुल संख्या १७ हो गई है।

उत्तरप्रदेश मे कर्मचारी राज्य बीमा योजना

मजदूरों को लगभग एक लाख रुपया दिया गया

गत जनवरी के महीने मे कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा मजदूरो को ९९,००० रुपये की धनराशि दी गया। यह धन उनके बीमारी और काम करते समय घायल होने के कारण मुआवजे के रूप मे तथा प्रसूतिकाओ के लाभ के लिए दिया गया।

इस [illegible] के अन्तर्गत बीमा योजना के अन्तर्गत लाभान्वित होने वाले बीमा कराये गए मजदूरों की [illegible] या १,७२,७३ थी। इस समय यह योजना राज्य के [illegible] औद्योगिक नगरों मे चालू है।

आर्यनगर शाहपुरा (राज०)

इन दिनों स्वामी शंकरानन्द जी सरस्वती मथुरा वाले राजस्थान मे वैदिक धर्म प्रचार कर रहे हैं। आपका शुभागमन शाहपुरा में दि० १९ मार्च को हुआ। तभी से आपका मधुर, सरल एवं हृदयग्राही व्याख्यान मुख्य रूप से समाज भवन मे हो रहा है। आप २ महीने तक यहा रहकर अपने भाषणों द्वारा वैदिक-धर्म का प्रचार करेंगे। स्वामी जी वैदिक धर्म के श्रेष्ठ नायकों में से हैं।

शोक—

दिनाक २६ ३ ५९ ई० को रात्रि के ८ बजे आर्य समाज भवन में एक आम सभा श्रीमान् राजाधिराज श्री सुदर्शन देव जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमे माननीय श्री जगजीवनराम जी केन्द्रिय रेलवे मन्त्री की माता जी के देहावसान पर संवेदना प्रकट की गई। सभी उपस्थित महानुभावो ने मौनावस्था में रह कर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि वह मृतात्मा को शान्ति और शोक-संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

रुद्रपुर (नैनीताल) में आर्यसमाज के लिये भूमि खरीद ली गई

रुद्रपुर (नैनीताल) मे आर्यसमाज के कार्य को प्रगति देने के लिये ६०×३० के तीन प्लाट सरकार से खरीद लिये गये है और ४ अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के नाम श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० ने भूमि की रजिस्ट्री करा दी है। निकट भविष्य मे ही रुद्रपुर में विश्वविद्यालय बनने जा रहा है।

उत्सव-समाचार—

—जौनपुर समाज का उत्सव दि० ११ से १४ अप्रैल तक मनाया जा रहा है।

—कन्या गुरुकुल (हरद्वार) कनखल का उत्सव दि० १२ से १५ अप्रैल ५९ तक मनाया जायगा। अनेक सम्मेलनो का इस अवसर पर आयोजन किया गया है।

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक सन्यासाश्रम गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव जो कि ५ से १३ अप्रैल तक था। वह स्थगित कर दिया गया है।

आवश्यकता

आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय रक्सौल के लिये एक प्रधानाध्यापिका की आवश्यकता है। योग्यता आई० ए० चाहिये। ट्रेंड को विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार मिलेगा। इच्छुक निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें। आर्य सिद्धान्त से परिचित हो।

मन्त्री आर्यसमाज रक्सौल
(चम्पारण) बिहार

ईसाई प्रचार विरोध—

ओ३म् की पताका को मिश्नरी, पुलिस या संसार की कोई ताकत नहीं हटा सकती

धर्मप्रचार करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

[illegible] धर्मसभा० के मेले को बन्द करने का प्रयत्न

पुलिस को जनता के धार्मिक उत्साह के सामने मेले की स्वीकृति देनी पड़ी

सम्बेगा (उड़ीसा) में आर्यसमाज द्वारा आयोजित भारी मेले को रोकने का ईसाई मिशनरियो ने यत्न ठीक उस समय किया जबकि हजारों आदिवासी उस मेले मे एकत्रित हो रहे थे।

मिशन के फादर और उनके सहयोगियो ने डी०एम० तथा पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट पर दबाव डाला कि आर्यसमाज इस मेले के द्वारा हमारे मिशन को भारी हानि पहुँचाने का यत्न कर रहा है, अत यह बन्द किया जाय। पुलिस घटना स्थल पर पहुच गई और मेले के संयोजको को कार्यक्रम बन्द करने के लिए कहा गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रचारक श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी तथा श्री शुक्रगुरुदत्त जी ने ओ३म् पताका को धरती में गाडकर कहा कि संसार की कोई शक्ति इस पताका को हटा नही सकती। यदि विदेशी मिशनरियो का अपना प्रचार करने का अधिकार है तो हमें भी अपनी मातृभूमि में अपना मेला करने का पूर्ण अधिकार है। इस पर जन जातियो के झुण्ड के झुण्ड वैदिक धर्म के नारे लगाने लगे। जन साधारण के जोश तथा स्थिति की गम्भीरता को देखकर अधिकारियों ने रात के १० बजे आज्ञा दे दी और मैजिक लालटेन द्वारा फिल्में दिखाई गई एव मेले का कार्यक्रम सुचारुरूपेण चलने लगा।

आर्य-जगत

निर्वाचन—

—चन्दौसी आर्यसमाज के प्रधान श्री विश्वम्भरदयाल जी तथा मन्त्री श्री विष्णुकुमार जी चुने गये।

—हसनपुर आर्यसमाज के प्रधान शिवनारायण जी एवं मन्त्री रामकुमार जी निर्वाचित हुए।

—चौढेरा (बुलन्दशहर) आर्यसमाज के प्रधान श्री दुर्गादास जी तथा मन्त्री बाबूलाल जी चुने गये।

—कोतमा (मध्यप्रदेश)नई स्थापित आर्यसमाज के प्रधान महावीरप्रसादजी एवं मन्त्री बुद्धदेव जी चुने गये।

—मढ़िया (एटा)नई स्थापित आर्य समाज के प्रधान बंगाली बाबू जी तथा मन्त्री हंसराज जी निर्वाचित हुए।

—बडहलगज (गोरखपुर) आर्य प्रधान श्री विद्याधर जी तथा मन्त्री रामनारायण जी चुने गये।

—चौन्दकोट गढ़वाल आर्यसमाज के प्रधान श्री पद्मसिंह जी, मन्त्री श्री मानसिंह जी तथा श्री रघुवरदयाल जी प्रतिनिधि निर्वाचित हुए।

—अफजलगढ़ आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तमशरण जी तथा मन्त्री राजनारायसिंह जी चुने गये।

—हरदोई आर्यसमाज के प्रधान श्री रामस्वरूप जी एव मन्त्री श्री शिवकुमार जी निर्वाचित हुए।

—बरेली दि० ८ ३ ८१ को श्री रामबहादुर जी के मकान में श्रद्धानन्द साल्वेशन (मुक्ति मार्ग) की स्थापना हुई। जिसके प्रधान श्री धर्मेन्द्रसिंह जी तथा मन्त्री श्री रामबहादुर जी चुने गये।

—सहारनपुर सिविल लाइन आर्य समाज के प्रधान श्री केदारसिंह जी एवं मन्त्री श्री गुरुदत्त जी निर्वाचित हुए।

—अलीगढ़ महावीरगंज आर्यसमाज के प्रधान श्री सरदार सिंह जी लोधे निवासी, मन्त्री श्री सरदारसिंह जी मई चुने गये।

—आजमगढ़ महिला आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती जगदम्बादेवी जी तथा मन्त्री श्रीमती पुष्पावती जी चुनी गईं।

—मेरठ शहर आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती धर्मदेवीजी तथा मन्त्री श्रीमती प्रकाशवती जी चुनी गईं।

—गेसू (मेरठ) नई स्थापित आर्य समाज के प्रधान श्री काशीराम जी तथा मन्त्री मनोहरलाल जी चुने गये।

—पाटन आर्यसमाज के प्रधान श्री श्यामप्यारे जी एवं मन्त्री शिवसहायजी निर्वाचित हुए।

—मऊनाथ भंजन (आजमगढ़) आर्य समाज के प्रधान धर्मदत्त जी तथा मन्त्री शिविकाप्रसाद जी चुने गये।

उत्सव—

—लखनऊ सदर बाजार आर्यसमाज का उत्सव दि० १२, १३ मार्च ८१ को उत्साहपूर्वक मनाया गया।

—उरका बाजार (बस्ती) का वार्षिक उत्सव १३ से १५ मार्च ८१ तक सोत्साह सम्पन्न हुआ।

—खातूर आर्यसमाज का वार्षिक समारोह २६-२८ मार्च ८१ तक मनाया गया।

—गढ़मुक्तेश्वर आर्यसमाज का उत्सव २-५ अप्रैल तक बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

—कानपुर हरिहरनाथ शास्त्री नगर का उत्सव ६ से १२ अप्रैल तक मनाया गया।

—नई देहली गुरुकुल श्री दयानन्द वेद विद्यालय युसुफनगर का उत्सव १० १२ अप्रैल ८१ तक सम्पन्न हुआ।

—शिवधरा रोड (बलिया) समाज का उत्सव २०-२२ मार्च ८१ तक मनाया गया।

—गुरुकुल महाविद्यालय मैंहिया तथा आर्यसमाज छपरा (सारण) का उत्सव ८-१२ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ।

—बगही आर्यसमाज का उत्सव २८ फरवरी से १ मार्च ८१ तक मनाया गया।

—बक्सर आर्यसमाज का उत्सव १३-१५ मार्च ८१ तक मनाया गया।

—सिरसागंज गुरुकुल वेद विद्यालय का उत्सव दि० १२-१५ मार्च ८१ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—सहारनपुर सिविल लाइन आर्यसमाज का वार्षिक समारोह दि० १६-२४ मई ८१ तक मनाया जाना निश्चय हुआ है।

—शाहगंज आर्यसमाज का उत्सव दि० २१-२४ अप्रैल ८१ तक मनाना निश्चय हुआ है।

—अरसपुर (अहमदाबाद) आर्यसमाज का उत्सव दि० [illegible] अप्रैल ८१ तक मनाया जायगा।

—रायबरेली आर्यसमाज लालगंज का उत्सव १५-१७ अप्रैल ८१ तक मनाया जाना निश्चय किया गया है।

—नई देहली आर्यकुमार सभा का रजत-जयन्ती महोत्सव दि० ७-६ मई तक मनाया जायगा।

—बिसौली (बदायूं) समाज का उत्सव १७-१६ अप्रैल ८१ तक मनाया जायगा।

—बडहलगंज (गोरखपुर) समाज का उत्सव ११-१३ अप्रैल ८१ तक मनाया जायगा।

प्रचार —

—अखिल भारतीय दयानन्द साल्वेशन मिशन के प्रचारक श्री नन्द लाल जी ईसाई धर्म से प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करते हुए रीवा पहुंचे। वहा उन्होने ८ १० तक ईसाइयत क कुचक्रों से जनता को सचेत करते हुए वैदिक धर्म का प्रचार किया।

—श्री हसराज जी के सत्प्रयत्नो से ऋषि बोध पर्व के अवसर पर ग्राम नगला मढ़िया (एटा) में एक नई समाज की स्थापना हुई।

—रामदेव शर्मा भजनोपदेशक एव स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती ने १० २१ फरवरी तक बुलन्दशहर जिले के लौंगडी चन्दली तथा टहनगा आदि स्थानो मे वैदिक धर्म का प्रचार धूमधाम के साथ किया।

—गाजीपुर आर्यसमाज की ओर से दि० १२-३ ८१ को 'लेखराम बलिदान' दिवस सोत्साह मनाया गया।

—चौन्दकोट आर्यसमाज ने ऋषिबोध पर्व के अवसर पर अनेक विद्यालयो में प्रचार-कार्य किया, जिससे प्रभावित छात्रो ने बीडी आदि मदकारी द्रव्यो को त्यागने की प्रतिज्ञाएं कीं।

—निम्न समाजो में ऋषिबोध, सीताष्टमी तथा होलिका के अवसर पर बडे उत्साह के साथ प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ —

—स्त्री-समाज शहर मेरठ, एटा, कायमगंज, बिसौली (बदायू) वाराणसी आर्यवीर दल।

—मेरठ आर्य उप प्रतिनिधि सभा के संचालन में श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी की अध्यक्षता में दि० १६ १८ मार्च तक गेसू ग्राम में प्रचार किया गया। एक नई समाज स्थापित हुई।

—श्री रामचन्द्र जी वानप्रस्थी ने होलिका पर्व के शुभावसर पर दि० २४ से २५ मार्च तक रूपपुर कटरा, उमरैन, ऐसा कटरा, विधूना आदि स्थानो में प्रचार-कार्य किया। इसी अवसर पर दो उपनयन संस्कार भी सम्पन्न हुए। कई व्यक्तियो ने जिनमें एक मुस्लिम भी था, मादक द्रव्य न सेवन करने की प्रतिज्ञा की।

—श्री विश्वनाथ जी ने निम्न नगरो के दलो में उत्साहपूर्वक प्रचार कार्य सम्पन्न किया।

—गीतमनगर मैंसा, गुरुकुल मुरलीपुर, मेरठ, पथौली, खिसा जलालपुर, गाजियाबाद, अलीपुर, मुजफ्फरनगर, तथा साहीबाबाद।

संस्कार—

—कायमगंज में श्री गंगादीन जी क सुपुत्र श्री सतीशचन्द्रजी व श्री जगन्नाथ जी के पुत्र श्री धर्मवीर जी का विवाह संस्कार वैदिक पद्धति से सम्पन्न हुआ।

ऋषि-बोध-पर्व

निम्न समाजों में ऋषि-बोध एव होलिका पर्व सोत्साह सम्पन्न हुआ—

—सौरिख, हावडा, सतना (रीवाँ) बिबिया-जलालपुर, औरैया, मुरसान (अलीगढ़), अमरोहा, सूरजपुर, नगीना कायमगंज, वीनपुरा (एटा), चौक कोटा (गढ़वाल) फतेहपुर, आर्यवीर दल कार्नवालिस स्ट्रीट (कलकत्ता) पिपंरी (पूना), आदर्शनगर (नैनीताल), शिवधरा रोड बलिया,

इन्दौर में ऋषि-बोध-पर्व

—दयानन्द नगर इन्दौर में ऋषि बोध-पर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसी उपलक्ष्य में दि० ८ मार्च को "रुद्र एव विष्णु यज्ञ" जगदीश जी के घर पर श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

अन्यान्य समाचार—

—अमरोहा आर्यसमाज ने १६८१ क लिए जो आर्यसमाज क निधिपत्र छपवाये थे वे माग की अधिकता क कारण समाप्त हो गये हैं। अत अब तत्सम्बन्धी पत्र-व्यवहार उक्त समाज से न किया जाय।

—आर्यजगत् से सूचनार्थं निवेदन है कि जो समाजें मुझे व्याख्यान, कथा, एव शास्त्रार्थ क लिए बुलाना चाह वे निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें —

पता—वेदानन्द परिव्राजक
द्वारा राजेन्द्रसिंह सेगर एम० ए० एल एल० बी० ३४१ ए० कोशलपुरी
कानपुर

—निशुल्क वेद, दर्शनादि वैदिक वाङ्मय की शिक्षा अल्पकाल में ही प्राप्त करने क निमित्त गुरुकुल श्री दयानन्द वेदविद्यालय यूसुफ सराय, नई देहली से सम्बन्ध स्थापित करें।

गुरुकुल सिकन्दराबाद क स्नातकों क प्रति

गुरुकुल सिकन्दराबाद जिला (बुलन्दशहर) के समस्त स्नातकों की सेवा में निवेदन है कि वे जहा कहीं भी हो अपने अपने पते से निम्न पते पर सूचित करने की कृपा करें।

विद्याभूषण उमेशचन्द्र स्नातक
सयोजक स्नातक मण्डल ग्राम रामपुर
द्वारा सब पोस्ट मास्टर रेलवे
स्टेशन जलेसर रो (मथुरा)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण नं ए. ६०
२२ चैत्र शक १८८१
(१२अप्रैल १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य २११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

श्री रामगोपाल जी व श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी द्वारा बिहार और उड़ीसा का दौरा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत डा० रामगोपालजी तथा सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्रीयुत ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी १२ दिन का बिहार और उड़ीसा का सफल तूफानी दौरा करके दिल्ली लौट आये हैं। वे आरा, पटना, हजारीबाग, गया, रांची, खूंटी, धनबाद, राउरकेला, सुन्दरगढ़, पानपोष आदि आदि स्थानों पर गये जहाँ उनके व्याख्यान हुए तथा सार्वजनिक अभिनन्दन हुआ तथा वेद प्रचारार्थ थैलियां भेंट की गई।

अपने भ्रमण में आप छोटा नागपुर तथा उड़ीसा के उन घने जंगलों में गये कि जहाँ विदेशी ईसाइयों ने अपने अड्डे बना रखे हैं और जहाँ आने जाने के आधुनिक साधनों का अभाव है। जंगलों में आपने वहाँ के निवासियों तथा पादरियों विदेशी मिशनरियों से वहाँ की परिस्थिति पर विचार-विनिमय किया।

उनके इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विदेशी ईसाई मिशनरियों के कार्य का निरीक्षण करना तथा सर्वसाधारण हिन्दू जनता को उनके हथकंडों से सावधान करना था। श्री मन्त्री जी को यह देख कर बड़ा दुख हुआ कि वहां ईसाई मिशन हिन्दुओं को ईसाई बनाने के कार्य में बड़ी तत्परता से संलग्न हैं। सभा द्वारा संचालित वेद व्यास आश्रम (उड़ीसा) का भी मन्त्री जी ने निरीक्षण किया जो श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी की अध्यक्षता मे ईसाइयों की गतिविधि के निराकरण का बड़ा उपयोगी कार्य कर रहा है। ईसाई प्रचार निरोध के लिये स्थान-स्थान पर दयानन्द आश्रमों की स्थापना पर विशेष ध्यान दिये जाने की योजना मन्त्री जी ने अपनी यात्रा रिपोर्ट में दी है।

शोक-समाचार—

—प्रयाग सुभाषनगर आर्यसमाज ने श्री मृत्युञ्जय जी पुस्तकाध्यक्ष की धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन पर दि० २२ ३ ५९ को शोक प्रकट किया।

—गया आर्यसमाज ने श्री भगवत राम जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

—सतना आर्यसमाज के सदस्यों ने समाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री रामलाल जी की मृत्यु पर हार्दिक वेदना प्रकट की।

—श्री जयराम रस्तोगी जी के आकस्मिक निधन पर दि० ८ मार्च ५९ को फतहपुर आर्यसमाज के सदस्यों ने दुख व्यक्त किया।

सिकन्दराबाद गुरुकुलोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) का ६१ वां वार्षिकोत्सव दि० १३ १४ १५ तथा १६ मार्च को बड़ी धूम धाम से मनाया गया।

नवरत्न ? कों का दीक्षान्त आर्य-जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री एम० ए० काव्यतीर्थ अध्यक्ष संस्कृत विभाग डी ए वी कालेज कानपुर की अध्यक्षता में हुआ, जिनका दीक्षान्त भाषण उच्चकोटि का हुआ। हरिजन सम्मेलन, किसान सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, आर्यभाषा सम्मेलन, कवि सम्मेलन आदि सम्मेलन भी इसी अवसर पर हुए।

श्री प० विहारीलाल जी शास्त्रार्थ केसरी, श्री प० रामदयालु जी शास्त्री श्री स्वा० आनन्द भिक्षु श्री विद्याभूषण प० उमेशचन्द्र जी स्नातक (सिकन्दराबाद) श्री सुखदेव जी प्रज्ञाचक्षु व सभा सचिव श्री चौधरी धर्मसिंह जी व सार्वजनिक निर्माण-मन्त्री श्री चौधरी गिरधारीलाल जी व श्री प० रामचन्द्र जी विकल एम० एल०ए० व अन्य महानुभाव पधारे थे। उत्सव प्रभाव के साथ सम्पन्न हुआ।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार चैत्र २१, शक १८८१ चैत्र शुक्ला ११ वि० २०१६ १९ अप्रैल १९५९ ई० [१२ शिलिंग

23-4-59

मानवता के मूल सिद्धान्त ही धर्म हैं

धर्म और विज्ञान का समन्वय ही विनाश से मानवता की रक्षा कर सकता है



विशाल जनसमूह के मध्य स्वर्ण जयन्ती महोत्सव गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के दीक्षान्त अवसर पर १३ अप्रैल को नए स्नातकों को उपदेश देते हुए भारत के प्रधान मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू ने प्राचीन और नवीन विचार धाराओं में समन्वय की प्रेरणा दी।

धर्म क्या है और जीवन की दैनिक समस्याओं के समाधान में उसका कैसे व्यावहारिक उपयोग किया जाना चाहिए, यह शाश्वत प्रश्न है, और युग के अनुसार हम इस प्रश्न का समाधान ढूंढना चाहिए। प्रत्येक युग का एक धर्म होता है धर्म के मूल सिद्धान्तों पर दृढ़ रहते हुए भी देशों और जातियों को युग धर्म की खोज करते रहना चाहिए।

भारत के पास अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर थी और है पर हम गति हीन हो गये हैं तब हमारे पतन की कहानी आरम्भ हुई हमारी कमजोरियों के कारण विदेशी आक्रान्ता हम पर हावी हो सके। आज हमने अंगड़ाई ली है हमसे युग को महान् आशायें हैं, यदि हम युग धर्म के प्रश्नों का उत्तर न दे सके तो हम कभी प्रगति न कर सकेंगे। जो देश युग से सम्बद्ध न रहेंगे वे विनष्ट हो जायगे।

भारत की विदेश नीति भारतीयता के मूल आदर्शों से प्रेरणा प्राप्त करती है। मैत्री, विश्वबन्धुत्व भारत का सांस्कृतिक दृष्टिकोण है। प्रेम और अहिंसा के पवित्र सन्देश का ही भारत ने सदैव प्रसार किया है। आज भी हम इस महान् आदर्श पर दृढ़ हैं। विश्व ने हमारी इस नीति का आदर किया है इस प्रकार हमने विश्व राजनीति को धर्म के मूल एवं पवित्र सिद्धान्तों से प्रेरित करने में सफलता प्राप्त की है।

स्वाधीन भारत का निर्माण केवल आदर्शों और नारों से चिपटे रहने से नहीं हो सकता शारीरिक और बौद्धिक परिश्रम द्वारा हमें राष्ट्र को आगे बढ़ाने की प्रतिज्ञा लेनी होगी। हम अपनी विचारधारा के प्रवाह को अवरुद्ध न होने दें, जैसे नदी का पानी बहता है तभी तक नदी है पानी रुकने पर वह अपवित्र हो जाता है। उसी प्रकार भारतीय राष्ट्र को इतिहास की शृंखलाओं में जकड़ने का आग्रह न कर हम नव निर्माण का मार्ग अपनाना होगा।

आज के युग में एक संघर्ष चल रहा है, कुछ प्राचीनता में ही सर्व सुख समझते हैं वहाँ एक सामाजिक सांसारिक संघर्ष से दूर भागने की भावना है। साथ ही दूसरी ओर विज्ञान के उपासक विज्ञान के ऐश्वर्य से पराभूत हैं, और चन्द्रलोक की चिन्ता में हैं पर मानवता और पृथ्वी को नष्ट करने में संलग्न हैं, क्योंकि कोई मूल सिद्धान्त उन्हें रोक नहीं पाता। आज मानवता को बचाने के लिये धर्म और विज्ञान प्राचीन और नवीन के समन्वय की अत्यधिक आवश्यकता है। आशा है, महाविद्यालय के स्नातक इस भारतीय दृष्टिकोण का प्रसार अपने व्यावहारिक जीवन से करने में सफल हो सकेंगे। मैं उनके सफल जीवन की और महाविद्यालय की उन्नति की कामना करता हूं।

प्रधान मन्त्री नेहरू ने दीक्षान्त भाषण से पूर्व यज्ञ में वेद मन्त्रों से आहुतियाँ दीं। इस प्रकार एक महान् कार्य एक महान् व्यक्ति द्वारा नवीन ढंग से आरम्भ हुआ। इसी अवसर पर नेहरूजी ने प्रसिद्ध साहित्य महारथी प० पद्मसिंह शर्मा-अनुसन्धान-विभाग का शिलान्यास भी किया।

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क १५

सिद्धान्त-विमर्श

मेरी 'मनुस्मृति'

(श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, एम० ए०)

[आज प्राचीन संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत, वैदिक मौलिक सिद्धान्तों के विरुद्ध जो भी बातें पायी जाती हैं उनका विरोधी विरोध करने में भारतीयता को लाञ्छित करने मे और स्वार्थीशास्त्र का निर्देश बताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में प्रयोग करते हैं। महर्षि दयानन्द की सब देनों में यह सबसे उत्कृष्ट देन कही जा सकती है कि उन्होंने शास्त्र सम्मत होने की कसौटी वेद को बताकर संस्कृत वाङ्मय में शास्त्र के नाम पर सञ्चित कूड़े कचरे को साफ करने में हमें निर्देश किया। हमने शास्त्र में प्रक्षेपवाद का अभी तक उचित पर्यालोचन नहीं किया है। आदरणीय उपाध्याय जी ने अपनी मनुस्मृति टीका को प्रक्षेप निष्कासन कसौटी पर कसते हुए एक मार्ग-दर्शन किया है। आशा है विद्वज्जन इस दृष्टिकोण के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करेंगे। —सम्पादक]

लगभग २५ वर्ष हुये होंगे कि मैंने 'मनुस्मृति' का एक सानुवाद संशोधित संस्करण निकाला था। उस समय एक प्रश्न उठा था कि 'प्रक्षिप्त' स्थलों के साथ क्या व्यवहार किया जाय? क्या उनका सर्वथा त्याग किया जाय या छोटे अक्षरों में छाप दिया जाय? उस समय एक प्रसिद्ध प्रकाशक-संस्था ने यह प्रस्ताव किया था कि यदि मैं 'क्षेपकों' को निकालूँ न तो वह प्रकाशन का भार सहन कर सकेंगे। परन्तु मकान में झाड़ू लगाकर कूड़े को वहीं एक कोने में जमा करने को मैं 'झाड़ू देना' नहीं कहता। दूध को छानकर उसमें पड़ी मक्खी को फिर गिलास के एक कोने मे चिपका देने को मैं 'छानना' नहीं कहता, फोड़े को चीर कर 'मवाद' को शरीर से चिपटा रहने देने को मैं आपरेशन नहीं कहता, क्योंकि जो अनिष्ट है उसकी अनिष्टता तो अपने हानिकर प्रभाव को सदैव डालती रहती है अतः अच्छी पुस्तक का न पढ़ना अच्छा है बुरी पुस्तक को पढ़ने की अपेक्षा। क्योंकि पिछली बात में हानि की अधिक आशंका है। इसलिये मौलिक सिद्धान्त में भेद होने के कारण मैंने कुछ कठिनाइयों को सहना अधिक उचित समझा और प्रकाशक महोदय की सापेक्षिक सहायता अस्वीकार कर दी। अब तक पुस्तक के दो संस्करण निकल चुके हैं।

वैदिक साहित्य की पुस्तकें जितनी पुरानी हैं, उतनी ही 'क्षेपकों' से भरी पड़ी हैं, और सामाजिक सुधार करने वालों के मार्ग में रोड़ा अटकाती रही हैं। स्वार्थी और प्रमादी लोगों ने न जाने कब क्या मिला दिया। और पीछे किसी को साहस न हुआ कि मक्खियाँ पकड़ता। विद्वानों ने भाष्य लिखे और अपनी सूक्ष्म बुद्धि से बाल की खाल निकाल कर बहुत सी अनर्गल बातों की पुष्टि की। ऋषि दयानन्द पहले सुधारक थे जिन्होंने कहा कि पुस्तकें निर्मल नहीं हैं। पानी में विषैले कीटाणु घुले मिले हैं अतः जल को तपाकर और छान कर पीना चाहिये। इसका दूसरा अर्थ यह था कि विषैले कीटाणुओं को निकाल कर फेंक दो। वैदिक साहित्य के ग्रन्थों का क्षेत्र इतना विशाल है कि ऋषि दयानन्द के पास समस्त घर को झाड़ने का न समय था न साधन। इतना ही क्या कम था कि उन्होंने पिपासुओं का ध्यान इस ओर आकर्षित कर दिया। यह जनता का काम था कि पीने से पहले जल को तपा लेते। परन्तु इसके लिये परिश्रम और साहस चाहिये। खेद है कि आर्य समाज को जो काम सबसे पहले करना चाहिये था वह पिछले ७५ वर्षों में भी न हो सका। मैंने यथा-ज्ञान और यथाशक्ति इस आवश्यक कार्य को आरम्भ कर दिया।

कुछ लोगों की ओर से प्रायः कभी कभी अनिश्चित रूप में यह आक्षेप किया जाता है कि मैंने बहुत से उन श्लोकों को भी निकाल दिया है जिनको श्री स्वामी जी महाराज ने अपने ग्रन्थों में प्रमाणस्वरूप उद्धृत किया है। मुझे इस लेख में इसी विषय की मौलिक सिद्धान्तों के दृष्टि में रखकर मीमांसा करनी है।

मनुस्मृति में 'क्षेपक' हैं और बहुत से क्षेपक हैं। इस बात को बताने का श्रेय तो श्री स्वामी जी महाराज को ही है। यदि वह हमारी आँखें न खोलते तो हम में शुद्ध और अशुद्ध स्थलों में विवेचना करने की बुद्धि भी न होती और यदि कभी शंकायें भी होतीं तो साहस के अभाव में उनको दबा लिया जाता। इस प्रकार का अनर्थ सैकड़ों वर्षों से होता चला आया है। ऋषि ने न केवल यही कहा कि क्षेपक हैं अपितु यह भी बताया कि क्षेपकों को पहचानने के साधन क्या हैं। ऋषि ने सिद्धान्तों की कसौटी आर्यसमाज के दस नियमों तथा स्वमन्तव्यामन्तव्यों में दे दी है। मैंने मनुस्मृति के क्षेपकों को छांटने में इसी तराजू से काम लिया है। कहीं बढ़ाया तो कुछ है ही नहीं। यह संभव है कि कहीं कुछ ऐसी चीज भी छूट गई हो जो विस्पष्टतया सिद्धान्तों के विरुद्ध नहीं है। मकान झाड़ने में कूड़े के साथ कभी पक्का र की पपड़ी भी छूट जाती है। जल छानने में शुद्ध जल के कण भी छूट सकते हैं और चतुर से चतुर डाक्टर भी सावधानी से आपरेशन करने पर भी शुद्ध रक्त की एक दो बूँदें निकाल ही देता है। परन्तु यह चीजें कूड़े से इतनी मिलती-जुलती होती हैं कि इनके त्याग से इतनी हानि नहीं होती जितनी इनके न त्यागने से होती है।

परन्तु कुछ लोगों को सिद्धान्त सम्बन्धी आपत्ति नहीं, आपत्ति भावुकता की है, जब ऋषि ने अपने ग्रन्थों में मनु के श्लोकों को उद्धृत किया तो मुझे उनके क्षेपक मानने की धृष्टता नहीं करनी चाहिये थी। इसकी सफाई कुछ विस्तार से देनी है संकेत से, लोगों की समझ में यह बारीक बात नहीं आने की।

यदि स्वामी जी महाराज शुद्धीकरण का कुल्ला स्वयं अपने हाथ से लगाकर मनुस्मृति को सुसंस्कृत करते तो संदेह का स्थल न रहता। परन्तु स्वामी जी महाराज ने कहीं यह नहीं कहा कि अमुक श्लोक क्षेपक है और अमुक मनु का मौलिक। मनुस्मृति मनु के वचन हैं भी नहीं, इसको भृगुसंहिता कहते हैं जो मनु के सूत्रों के आधार पर बनाई गई थी। यह बात तो आरंभिक श्लोकों से ही विदित हो जाती है। स्वामी जी महाराज ने इसको इसलिये प्रमाण माना कि इससे प्राचीन कोई स्मृति प्राप्य नहीं है। याज्ञवल्क्यादि स्मृतियां बौद्ध या पौराणिक काल की हैं। और मनुस्मृति ही वैदिक धर्म से निकटतम है।

अब एक सूक्ष्म बात पर विचार करना है। स्वामी जी महाराज की लेखनशैली उनकी अपनी है। उसी के आधार पर यह निश्चय करना है कि अपने ग्रन्थों में उद्धृत किये प्रमाणों का कितना अंश उनको मान्य है और कितना केवल गुणवाद या अर्थवाद है। यदि मैले कपड़े में बंधा हुआ आटा भी आपको मिल जाय तो आटा ही ग्राह्य होगा। यह कहना गलत होगा कि मैला कपड़ा भी आपको प्यारा है। इसी प्रकार यदि स्वामी जी महाराज ने किसी एक विशेष बात को सिद्ध करने के लिये मनुस्मृति का कोई श्लोक या किसी साधारण ग्रन्थ का कोई श्लोक दे दिया और उसका पूरा-पूरा अर्थ भी कर दिया जैसी कि ऋषि की शैली है तो उससे यह नहीं समझना चाहिये कि शेष समस्त श्लोक जो प्रकरण से सम्बन्ध नहीं रखता उतना ही मान्य है। किसी वचन, किसी कथानक, किसी उपमा, किसी अलङ्कार का उतना अङ्ग माननीय होता है जो उसी प्रकरण, से सम्बद्ध रखता हो, प्रकरण से बाहर की चीज उस स्थल के लिये गौण, और असम्बद्ध समझनी चाहिये, वह उस मैले कपड़े के समान है जिससे आटा बंधा है। प्रयोजन आटे से है मैले कपड़े से नहीं, यदि उजाला होता तो अच्छा होता, परन्तु किया क्या जाय। आटा मिला ही मैले कपड़े में बंधा। अतः आटा ले लिया मैला कपड़ा छोड़ दिया। इस काम के लिये ऋषि ने उद्धरण तो ऐसे ग्रन्थों के भी दिये हैं जो सर्वथा प्रमाण कोटि के बाहर के हैं जैसे चाणक्य नीति, अमरकोष आदि। उन स्थानों में केवल वही एक अंश माननीय है जो प्रकरण का विषय है शेष नहीं। जिन्होंने पूर्वमीमांसा की श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान या क्रम, समाख्या या नाम रूपी छः कसौटियों पर महर्षि जैमिनि के विस्तृत विचारों का मनन किया है वह समझ सकते हैं कि किसी ग्रन्थ के सभी स्थलों का प्रामाण्य तुल्य नहीं नहीं होता। कुछ मुख्य होते हैं और कुछ गौण। और जब गौण और मुख्य में भेद पड़ता हो तो गौण को त्यागना और मुख्य को ग्रहण करना ही तत्त्वज्ञों का काम है। कुछ का अर्थ स्पष्ट होता है। कुछ का उत्कर्ष, अपकर्ष से लगाना पड़ता है, कुछ शब्द केवल अलङ्कार समझकर उपेक्षित करने पड़ते हैं, और कुछ को बिल्कुल छोड़ देना पड़ता है। कहानियों का कहीं मूल्य नहीं है जो छोटे-छोटे विधि वाक्यों का है। इसी भ्रान्ति से बचाने के लिये ऋषि ने स्वमन्तव्यामन्तव्य दे दिये जिससे लोग हरशब्द को तुल्य मूल्य न दे बैठें। और विशेषकर वे उद्धरण जो ऋषि के स्वयं वचन नहीं अपितु दूसरे ग्रन्थों से केवल किसी एक बात की सिद्धि के लिये ले लिये गये हैं।

पहले समुल्लास में ऋषि ने मनु १-१० उद्धृत किया है:—

(शेष पृष्ठ १९ पर)

वेदोपदेश

ओं अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः । देवो देवेभिरा गमत् ॥

हे सर्वज्ञ ! सबको देखने वाले, "क्रतु" सब जगत् के जनक, "सत्य" अविनाशी अर्थात् कभी जिनका नाश नहीं होता, "चित्रश्रवस्तम" आश्चर्य श्रवणादि आश्चर्य गुण आश्चर्य शक्ति आश्चर्यरूपवान् और अत्यन्त उत्तम आप हो जिन आपके तुल्य वा आपसे बड़ा कोई नहीं है, हे जगदीश ! "देवेभि" दिव्य गुणों के सह वर्तमान हमारे हृदय में आप प्रकट हों सब जगत् में भी प्रकाशित हों जिसमें हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो वह राज्य आपका ही है हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत् हैं ।



लखनऊ—१२ अप्रैल १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

आर्यसमाज का प्रचार और साधना-शिविर

वह सेना कभी सफल नहीं हो सकती जिसके सैनिक यह सोचते हो कि हमें सब कुछ आता है, हमें कुछ नहीं सीखना । मौका आने पर ऐसे लोग मैदान मे दिखाई नहीं देते । सेना या मिशन की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि सैनिक और मिशनरी अपनी तैयारी को सदैव ताजा रक्खें । आर्यसमाज के वर्तमान शैथिल्य के मूल कारणों में मुख्य कारण यह है कि आर्य मिशनरियों, साधकों, उपदेशकों के पुनर्नवीकरण का कार्य सर्वथा बन्द है । मिशन कार्य मे अत्यधिक बाधायें आ रहीं हैं । आज ईसाई मिशन गोरक्षा, राष्ट्र-रक्षा, संस्कृति रक्षा आदि अनेक मोर्चों पर आर्य सैनिकों की खोज है पर हम में सच्चे सैनिकों का अभाव है । आरामतलब लीडरी से संघर्ष नहीं जीते जाते । अगर आराम से सब काम हो सकता तो ऋषि दयानन्द लंगोटा बांध दर दर अलख जगाते न फिरते । वे भी किसी मठ में आराम को छानते फिरते परन्तु उनके हृदय में तड़प थी और उसके लिये उन्होंने साधना की । क्या आज हम साधना के लिये कभी सोचते भी हैं ? पिछले दिनों १ से ५ अप्रैल तक आर्य जगत् के आदर्श तपोमूर्ति स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के साधना-आश्रम यमुना नगर में आदरणीय आर्य नेता आनन्द स्वामी जी की अध्यक्षता में साधना-शिविर का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । यद्यपि उसमें सम्मिलित होने का लाभ सीमित लोगों ने ही उठाया पर वीचरूप से योजना उपादेय और आवश्यक है । केवल स्कूलों के छात्रों या गुरुकुलों के ब्रह्मचारियो के शिविर लगाने से ही काम नहीं चल सकता, समाज के कार्यकर्ताओं को भी शिविरों मे लाकर तरो ताजा बनाने का प्रयत्न गम्भीरतापूर्वक आरम्भ किया जाना चाहिये ।

उत्तर प्रदेश का सौभाग्य है कि इसके समीप ज्वालापुर और रामगढ़ (नैनीताल) स्थानों मे दो आश्रम हैं गुरुकुल वृन्दावन का अपना आदर्श तपोवन है । इन स्थानो पर वर्ष में दो तीन कार्यकर्ता शिविर अवश्य लगाये जाने चाहिये । कार्यकर्ता अपनी कमियो को अनुभव कर सकें, स्फूर्ति ग्रहण कर सकें और अपने में शक्ति सचय कर कार्यक्षेत्र में पहुँचने का साहस ला सकें तो आर्य समाज के प्रचार को बहुत बड़ा सहारा मिल सकता है ।

अब शीघ्र ही ग्रीष्मावकाश आरम्भ होनेवाले है । अदालतों में भी अवकाश होगा । इन वर्गों के उत्साही और उपयोगी कार्यकर्ताओं को एकत्र कर सप्ताह, पन्द्रह दिन आर्यसमाज के सम्बन्ध में प्रशिक्षित किया जाय तो वर्ष भर के लिये उनका उत्साह कायम रहेगा और वे अपने क्षेत्र में कार्य कर सकेंगे ।

आशा है प्रान्त के अधिकारी अथवा स्थानीय समुदाय इस प्रकार की साधना-शिविर-योजना को क्रियान्वित करेंगे । यह एक बहुत उचित एवं व्यावहारिक कदम होगा । ★

शिलांग के आर्य बन्धुओं का साहस

सरकार आर्यसमाज के कार्य में सहायक हो बाधक नहीं

आसाम भारत का पूर्वी सीमान्त द्वार है और नागा क्षेत्र के कारण वहां ईसाई मिशनरियो ने जो षड्यन्त्र कर रक्खा है उसका भारतीय जनता की ओर से एक ही रचनात्मक उत्तर हो सकता है कि उस प्रदेश में आर्यसमाज को अवसर दिया जाय । धार्मिक अन्ध विश्वासो की दासता मे जकड़े उस सुदूर प्रदेश में भी आर्य सन्देश की ज्योति लेकर जो आर्य बन्धु पहुंचे हैं वे धन्य हैं उनकी लगन और उत्साह को धन्य है । आसाम की राजधानी शिलांग में आर्यसमाज का अभाव उन्हें खटका इसके लिये उन्होने उद्योग किया और स्वर्गीय दानी की वसीयत के रूप मे उन्हें जगह प्राप्त है और वहां २० २५ हजार का ऋण लेकर समाज मन्दिर बन चुका है । कुछ काम अधूरा है पर इस बीच योजना के नाम पर सरकार जिस बाजार में समाज बना उस सड़क को चौड़ा करना चाहती है फलत समाज की इतने परिश्रम तथा आर्थिक भावना से निर्मित बिल्डिंग को तोड़ने का प्रश्न विचाराधीन है । क्या हम सरकार से आशा करें कि जो सरकार कब्र के स्थान को सुरक्षित रख कर अपनी धर्म निरपेक्षता का ढोल पीटती है वह आर्य समाज के पवित्र मन्दिर की भावना का आदर कर उसे न टूटने देगी ? हम बता देना चाहते हैं कि सरकार ने यदि प्रश्न को गम्भीरतापूर्वक न लिया तो उसे अखिल भारतीय रूप में संकट का सामना करना पड़ेगा । शिलांग के आर्य भाई साहस से काम लें सारा आर्य जगत् उनके साथ है । सत्य की हमेशा जय होती है । ★

साम्प्रदायिक उपद्रवों का दायित्व

इस वर्ष होली के पवित्र अवसर पर भोपाल तथा कई अन्य स्थानो पर साम्प्रदायिक संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न हो गयीं । आज के युग में इन स्थितियों को शान्तिपूर्ण उपायों से सुलझा जनता के भय को दूर कर स्वस्थ नागरिक वातावरण को उत्पन्न करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य होना चाहिये । सद्भावना का यह क्रम एक पक्षीय नहीं हो सकता । सद्भावना उभय पक्षी होनी चाहिये परन्तु जब किसी की सद्भावना और उदारता को निर्बलता मान लिया जाय तो वातावरण पुन क्षुब्ध हो उठता है । भोपाल काण्ड के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों को सरकार द्वारा जांच और दण्ड दिये जाने की घोषणा के बाद भी भारत के मुस्लिम समाचारपत्रों ने अपने उत्तेजक और गुमराह करने वाले रुख में परिवर्तन नहीं किया । एक पत्र ने लिखा कि भोपाल में मुसलमानों की एक करोड़ की सम्पत्ति नष्ट हो गयी, और फिर उसने लिखा भोपाल में हिन्दुओं ने दंगा कराने के लिये पुलिस अधिकारियो को ८३ हजार रुपये दिये । इस प्रकार की बे सिर पैर की बातों से जनता को गुमराह और उत्तेजित किया जाता है । हम मध्य प्रदेश सरकार से स्थिति पर सतर्कतापूर्वक नियन्त्रण रखने और जांच मे इस प्रकार के आरोपों को भी सम्मिलित करने का निवेदन करेंगे । यदि इस प्रकार के आरोप प्रमाणित न हो सकें तो हम ऐसे अखबारों का प्रकाशन अधिकार समाप्त किये जाने की मांग करते हैं ।

भारत में साम्प्रदायिक तत्त्व कहां है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उपर्युक्त प्रकार की कपोल कल्पनाओं के प्रणयन मे मिल सकता है । इस प्रकार के पञ्चमांगी विषैले सर्पों का दमन ही भारत का राष्ट्र धर्म होना चाहिये । भारत मे उसीका रहने और जीने का अधिकार होना चाहिये जिसकी राष्ट्र निष्ठा भारत में हो । भारत मे और निष्ठा हो अरब मे अथवा साम्प्रदायिक रूप में रहने वालों का क्रियात्मक बहिष्कार ही भारत की सुरक्षा का उपाय है । ★

पद्मसिंह शर्मा-स्मारक अनुसन्धान-विभाग

हिन्दी के महारथी स्वर्गीय प० पद्मसिंह शर्मा जी की साहित्यिक सेवाओं का जो स्मारक हिन्दी जगत में अभी तक नहीं हो सका वह हमारे लिये दुःख और लज्जा का विषय है । प्रसन्नता का विषय है कि मित्र परिवार ने अपनी भूल को समय रहते दूर करने का प्रयत्न किया है । दिनांक १३ अप्रैल को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर भारत के प्रधान मन्त्री प० नेहरू जी द्वारा श्री पद्मसिंह स्मारक अनुसन्धान विभाग की स्थापनार्थ शिलान्यास किया गया । भारत सरकार ने पर्याप्त आर्थिक सहायता देने का भी वचन दिया है । महाविद्यालय प० जी का अपना रचनात्मक स्मारक है । इस अनुसन्धान विभाग द्वारा प०जी के साहित्यिक कार्यों को प्रगति मिलेगी और हिन्दी मे उत्तम और उपयोगी साहित्य प्राप्त हो सकेगा । स्मारक की स्थापना के प्रति हर्ष प्रकट करते हुए मित्र परिवार की ओर से हम हिन्दी के महारथी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते है और आशा करते है कि उनका स्मारक युग युग तक हिन्दी के वैभव की वृद्धि कर भारतेन्दु का स्वप्न पूर्ण करता रहे । ★

धन-संग्रह-योजना के लिये समय-दान

आर्य भाइयों से निवेदन है कि अब शीघ्र ही ग्रीष्मावकाश आरम्भ होने वाले हैं अतः सब भाई अपने अवकाश में से कम से कम दस दिन सभा के लिये देने की कृपा करें। सभा को आर्थिक सहयोग तभी प्राप्त हो सकता है जब कार्यकर्ता समय दें।

सभा ने १२ मार्च की बैठक में धन-संग्रह डेपूटेशन कार्य का भार मुझे सौंपकर एक महान् दायित्व मेरे कन्धों पर डाल दिया है आशा है भाई-बहन सहयोग प्रदान करेंगे।

डेपूटेशन में क्षेत्रीय अन्तरङ्ग सदस्य जिला सभा के प्रधान-मन्त्री और नगर की प्रमुख समाज के प्रधान मन्त्री का समन्वय रहेगा। आशा है इस आधार पर प्रत्येक जिले के कार्यकर्ता अपने-अपने समयों की सुविधा से सूचित करने की कृपा करेंगे।

जयन्ती की सफलता के लिये उत्तरप्रदेश के आर्यों पर महान् दायित्व है। आशा है हम उसमें सफल होंगे।

—शकुन्तला गोयल संयोजिका
धन-संग्रह डेपूटेशन आर्य प्रतिनिधि, उत्तरप्रदेश

चिर-पालित अनुराग सजाये !

युग बर्बरता की सीमा में, हम अपना अस्तित्व बचायें !
बिलख रहा वैभव का स्वामी
पशुता में जकड़ा अभिमानी
मानवता की एक झलक पर
क्या सम्भव हो पायी-पानी
कर चरित्र-निर्माण धरा को, शांति-पूर्ण संदेश सुनायें !
भावुक गति सबल बन जाती
दुर्बलताओं को ठुकराती
झंकार अन्तर्यामी बन
युग-पथ पर ऊषा मुस्काती।
मधु मुस्कान हँसी भर-भर कर, मानस के पंकज खिल जायें !
सुरभि भावना भाव सजेगी
सुख मधुरता पुनः जगेगी
सत्य-अहिंसा के सरगम पर
अमर लोक की बीन बजेगी।
सरस रागिनी में सर्वोदय, चिर पालित अनुराग सजायें।

—शिवानन्द 'शिवम्'

विदेशी ईसाई मिशनरियों का तुरन्त निष्कासन हो

सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति का निर्णय

दिनांक २६ मार्च को दयानन्द भवन नई दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति की बैठक प्रधान संचालक श्री ओ३म्प्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में हुई जिसमें प्रधान संचालक महोदय ने छोटा नागपुर तथा उड़ीसा प्रान्त के पर्वतीय क्षेत्रों में विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा की जा रही अराष्ट्रीय गतिविधियों का गत दौरे में अपनी आँखों देखा अनुभव प्रस्तुत किया जिस पर भिन्न प्रान्तों से आये प्रतिनिधियों ने बड़ी चिंता व्यक्त की और सर्वसम्मति से अपनी सरकार तथा जनता से निम्न अपील की :—

१—सेवा और शिक्षा की आड़ में भारत के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक ढांचे को समाप्त करने वाले विदेशी मिशनरियों का सरकार तुरन्त निष्कासन करे अन्यथा देश की सुरक्षा व शांति खतरे में पड़ जाएगी।

२—सरकार हरिजन, आदिवासी (पर्वतीय जातियों) आदि उन जातियों को धार्मिक संरक्षण प्रदान करते हुए इनके धर्म परिवर्तन पर प्रतिबन्ध लगाये कि जिन्हें उसने राजनीतिक संरक्षण प्रदान किया है। अपने पूर्व धर्म में वापिस आने वालों को पूरी छूट हो।

३—आदिवासियों में जो लोग ईसाई बन गये हैं या बन रहे हैं सरकार उन्हें यह सुविधायें प्रदान न करे जो वह आदिवासियों को दे रही है। इस सम्बन्ध में जो नियम वह हरिजनों पर लागू कर रही है वही आदिवासियों पर भी लागू करना चाहिए। वर्तमान समय धर्म परिवर्तन करने वाले आदिवासियों को भी सहायता देकर सरकार आदिवासियों के धर्म-परिवर्तन में सहायता कर रही है क्योंकि इस प्रकार धर्म परिवर्तन करने वाले आदिवासियों को सरकार और विदेशी मिशन दोनों से सहायता मिलती है। यह प्रलोभन ही आज आदवासियों के लिए घातक सिद्ध हो रहा है।

४—सरकार तुरन्त इस प्रकार की व्यवस्था करे कि आदिवासियों और हरिजनों के बच्चों की सरकार की ओर से शिक्षा एवं दवादारू की निःशुल्क व्यवस्था हो ताकि उन्हें विवश होकर मिशन की शरण न लेनी पड़े।

५—जनता को चाहिये कि वह सरकार पर निर्भर न रहकर स्वयं सामूहिक एवं संगठित रूप से इन विदेशी मिशनरियों की घातक कार्यवाहियों का सामना करे और धन-अन्न से इस कार्य को करने वाली आर्यसमाज, आर्यवीर दल आदि संस्थाओं की सहायता करे।

६—समिति देश के समस्त आर्य वीर दलों को आदेश देती है कि वह विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों पर दृष्टि रखें और उनका डट कर विरोध करें और प्रत्येक प्रान्त में इस प्रकार के शिविर ग्रीष्मकालीन अवकाश में लगाये जांय जिनमें नवयुवकों को इस दिशा में विशेष शिक्षण प्रदान किया जाय। पर्वतीय क्षेत्रों में कार्य करने के लिये नवयुवक अपना समय दें।

आर्यसमाज आगरा नगर

आर्यसमाज आगरा नगर का २१ वां वार्षिकोत्सव ६ से ६ अप्रैल तक समारोह-पूर्वक मनाया गया। एक सप्ताह शहर के विभिन्न मुहल्लों में प्रभात-संकीर्तन हुआ। ६ अप्रैल को शहर में नगर-कीर्तन निकला। अनेक आर्य विद्वानों के प्रभावशाली भाषण हुए। लखनऊ की आर्योपदेशिका श्रीमती डा० प्रकाशवती जी का सारगर्भित व्याख्यान लोगों को बहुत पसन्द आया। उत्सव का उद्घाटन आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा 'कविरत्न' ने किया।

साधना

(१)

साधना जितनी की उतना फल मिलेगा।
आज मिल पाया नहीं, तो कल मिलेगा॥
पाँव यदि भ्रम-गाँव में, भटके नहीं तो—
साधना से साध्य को सम्बल मिलेगा॥

(२)

साधना ही शक्ति की; विश्वास की जननी रही है।
सृष्टि के उत्कर्ष के इतिहास की सरणी रही है॥
व्यक्ति के कृतित्व का परिणाम ही, प्रारब्ध जब है—
भाग्य को रोना वृथा है, साधना तरणी रही है॥

—आत्मसिंह भदौरिया

आर्यसमाज पानीपत में पंजाब के गवर्नर

१२ अप्रैल को प्रातः ८॥ बजे पंजाब के गवर्नर माननीय श्री नरहरि विष्णु गाडगिल महोदय आर्यसमाज-मन्दिर पानीपत के समस्त अधिकारियों तथा प्रतिष्ठित आर्य समाजियों ने उनका पुष्प मालाओं से स्वागत किया और सत्यार्थ-प्रकाश, वैदिक कलचर, राष्ट्र का गीत वेद आदि ५ पुस्तकें भेंट कीं। इस अवसर पर उनका चित्र भी लिया गया। आर्यसमाज-मन्दिर देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की।

आर्यसमाज स्थापना-दिवस

६ अप्रैल बृहस्पतिवार को सायंकाल मोती पार्क में बरेली नगर के सभी आर्यसमाजों की ओर से आर्यसमाज स्थापना-दिवस धूम-धाम के साथ मनाया गया। यह उत्सव श्री अश्विनीकुमार जी एडवोकेट प्रधान आर्यसमाज अनूपुर द्वारा आयोजित किया गया था। उत्सव की अध्यक्षता श्री जयदेव जी वैद्य वानस्पति महोदय ने की। इस अवसर पर श्री अध्यक्ष महोदय ने आर्यसमाज की आवश्यकता एवं अब तक के कार्य पर प्रकाश डाला। वैद्य जी के अतिरिक्त वक्ताओं में श्री राजाराम शास्त्री, श्री सत्यस्वरूप जी, श्री प्रेमशरण जी आदि महानुभावों के नाम उल्लेखनीय हैं।

निर्वाचन—

गत ६ अप्रैल, १९६९ को आर्य-समाज मन्दिर मीरजापुर में स्थानीय महिलाओं द्वारा आर्यसमाज-स्थापना-दिवस मनाया गया। इस पुनीत पर्व पर आवश्यक यज्ञादि कार्य के पश्चात् महिलाओं द्वारा महिला आर्यसमाज की स्थापना कर दी गयी जिसमें निम्न-लिखित पदाधिकारिणी चुनी गयीं—

प्रधाना—श्रीमती रमा त्रिपाठी
उप प्रधाना—श्रीमती संतोषकुमारी कपूर
„ —श्रीमती सावित्री देवी शर्मा
मंत्राणी—कुमारी सरला गुप्ता
उप मंत्राणी—श्रीमती उर्मिला देवी
„ —श्रीमती चन्द्रदेवी
कोषाध्यक्षा—डा० चन्द्रकान्ता मेहरोत्रा

सुझाव और सम्मतियां

बिखरी शक्तियों का केन्द्रीकरण हो !

सभास्थ सब विभाग एक स्थान पर हों !!

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को उन्नत बनाइए।

(श्री पण्डित हरिशङ्कर जी शर्मा, आगरा)

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की सारी शक्तियां बिखरी हुई-सी हैं। उन्हें एक स्थान पर केन्द्रित करने की आवश्यकता है, और वह स्थान गुरुकुल विश्वविद्यालय से बढ़कर और अन्य कोई नहीं हो सकता। 'केन्द्रीकरण' का अर्थ यह है कि आर्य प्रतिनिधि सभा का केन्द्रीय कार्यालय गुरुकुल-भूमि में लाया जाय, 'आर्यमित्र' एवं आर्य-भास्कर प्रेस भी वहीं हों। सभा के सभी विभाग एवं उप-विभागों को गुरुकुल में ही रखा जाय और वहीं से सारा कार्य संचालन हो। जो अधिकारी, उप-अधिकारी और अधिष्ठातादि निर्वाचित हो वे अपना नियत-निश्चित समय-जितना भी सम्भव हो सके—गुरुकुल में रहकर ही बितावें अर्थात्—वहीं से अपने पद का कार्य करें। आजकल होता यह आरहा है कि जो अधिकारी निर्वाचित होते हैं, वे अपना बहुत ही कम समय सभा संबंधी कर्त्तव्य-पालन के लिए दे पाते हैं। आर्य-भास्कर और आर्यमित्र के साथ-साथ एक साहित्यिक अनुसन्धान-सदन भी स्थापित किया जाए, जिससे उच्चकोटि का साहित्य प्रकाशित किया जा सके। आज जिन स्वर्गीय आर्य संन्यासियो, विद्वानों, नेताओ एवं प्रचारकों के नाम भी नहीं सुनाई पड़ते, उनके जीवन-चरित्र और ग्रन्थों को प्रकाशित करना उक्त सदन का मुख्य कार्य हो। एक उच्चकोटि का मासिक पत्र भी प्रकाशित किया जाए, तथा साप्ताहिक आर्यमित्र को उच्चकोटि का साप्ताहिक बनाया जाए, जो भारत के विशिष्ट साप्ताहिकों में परि-गणित हो सके।

वृन्दावन-गुरुकुल को प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी और उन्नत बनाया जाय। उसे ऐसा प्रभावपूर्ण रूप दिया जाए कि दूर-दूर के विद्यार्थी उसमें प्रविष्ट होने के लिए उत्सुक हो सकें, और देश का सह-योग-सहाय्य उसे पुन प्राप्त हो जाए। गुरुकुल के औषधालय को लोकोपयोगी एवं लाभदायक बनाया जाए। गुरुकुल के अन्तर्गत वक्तृत्वकला और पत्रकार-कला के विकास के लिए भी विद्यालय स्थापित किये जाएँ, जिनकी कि इस समय देश के लिए अत्यधिक आवश्य-कता है। आज हमारे देश में स्वराज्य शासन है अतः स्वराज्य सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त करना उचित एवं आवश्यक है।

परन्तु ये सब कार्य तभी सम्भवतः हो सकते हैं, जब हम लोग अपनी सारी शक्तियाँ एक स्थान पर केन्द्रित करें, और वे केन्द्रित शक्तियाँ ही आर्यसमाज के प्रकाश और विकास, प्रचार और विस्तार में सहायक हों। यदि वृन्दावन-गुरुकुल को हमने अपनी शक्तियों का केन्द्र बनाया तो अनेक अवकाश प्राप्त विद्वान् एवं अनुभवी व्यक्ति गुरुकुल में आजायँगे। साधु-संन्यासियो की भी कमी न रहेगी।

आर्य जनता का केन्द्र-बिन्दु भी वही संस्था बन जाएगी। आर्यसमाज समष्टि अधिक से अधिक इस केन्द्र की ओर आकृष्ट हो लाभान्वित हो सकेगी। मथुरा-वृन्दावन का सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आकर्षण प्रतिवर्ष लाखों यात्रियों को खींचता है, उनका इस गुरुकुलीय केन्द्र से सम्पृक्त होना भी स्वाभाविक है। इस प्रकार वृन्दावन गुरुकुल एक शक्ति-केन्द्र में परिणत हो जायगा। काँगड़ी गुरुकुल को देखिए वहाँ कितनी शक्तियाँ केन्द्रित हैं और कैसा सुन्दर कार्य हो रहा है। प्रायः सब ही संचालक और कार्यकर्त्ता एक ही स्थान पर रहकर, अपने-अपने कार्य करते हैं। आजकल राजनैतिक शक्तियों का केन्द्र तो है, और हो सकता है, लेकिन धार्मिक शक्तियों के केन्द्रीकरण के लिए वह स्थान उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। गत पन्द्रह-बीस वर्षों में, उत्तरप्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के कार्यों में काफी शिथि-लता आगई है। ढाई तीन सौ समाजों की प्रतिनिधि सभा, जितनी बलिष्ठ और प्रभावशालिनी थी, उतनी अब एक सहस्र से अधिक आर्यसमाजों की प्रति-निधि सभा नहीं रही, सभा की शिथि-लता के कारण समाजों की शिथिलता स्वाभाविक है। इस शिथिलता का मुख्य कारण शक्तियों को छिन्न-भिन्न होना या पूरा अथवा अधूरा समय देने वाले सुयोग्य अथवा अनुभवी कार्यकर्त्ताओ की कमी है। इस अभाव, कमी या शिथिलता को दूर करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय सभा की शक्तियों को केन्द्रित करना है। गुरुकुल में शक्ति केन्द्रीकरण होते ही, अवकाश प्राप्त कार्यकर्त्ताओं की कमी न रहेगी और सबके सहयोग से आर्यसमाज की ज्योति जगमगा उठेगी।



—लेखक—

मै ऐसे कितने ही अवकाश प्राप्त कार्य-कर्त्ताओ को जानता हूँ, जो सभा पर अपना एक पाई का भी भार डाले बिना सेवा करने को तय्यार हैं। एक ऐसे सज्जन हैं जो कृषि-विभाग में बहुत बड़े अधिकारी रहे है, कृषि-विद्या में पारंगत है गुरुकुल-भूमि को चमन बना सकते हैं। वे गुरुकुल की सेवा सर्वथा निस्वार्थ भाव से करने को तत्पर हैं, बशर्ते कि सभा की शक्तियो को केन्द्रित किया जाए। कितने ही शिक्षा-शास्त्री आयुर्वेद-विज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, मुद्रणकला-पटु आदि भी अपना समय देने को समुद्यत हैं। फिर वृन्दावन गुरुकुल ऐसे स्थान पर हे, जहाँ अधिक से अधिक आर्यसमाजों और आर्य नर नारियो का सम्पर्क एव सहयोग प्राप्त हो सकता है। ह। लखनऊ का श्री नारायणस्वामी-भवन भा.े पर उठाया जा सकता है। और उससे प्राप्त हजार, आठ सौ रुपये प्रति मास वेद प्रचार मे व्यय किये जा सकते है। जिस प्रकार कांगड़ी गुरुकुल एक धार्मिक उपनिवेश बन गया है, उसी प्रकार वृन्दावन गुरुकुल भी बनना चाहिए।

मे ये पंक्तियाँ आर्यसमाज के एक सेवक या सदस्य के रूप मे लिख रहा हूँ, आशा ह, उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाएगा। यदि इस 'चिन्तन' में कुछ भी सार पाया गया तो मैं अपने को कृतार्थ समझूगा। ★

[आर्यसमाज के कार्य में शैथिल्य या अवरोध के जो कारण अब तक ज्ञात हो सके हैं, उनमे कार्य का विशृंखलित होना, उपयोगी वानप्रस्थी कार्यकर्त्ताओ का उचित योजनानुसार प्रयोग न हो सकना, फलत. वानप्रस्थ जीवन के प्रति व्यक्तियों की उदासीनता आदि मुख्य हैं। समाज के कार्य को विशृंखलित न रखकर एक शिक्षा तपोवन के वातावरण मे केन्द्रित करने का सुझाव अत्यन्त उपयोगी और सामयिक है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन उत्तरप्रदेश का ही नहीं आर्य जगत् का गौरव है यदि वहाँ सभा की सारी शक्तियाँ केन्द्रित हो कार्य करने लगें तो प्रांत में पुन स्वर्गीय नारायण स्वामी जी व स्व० पं० भगवानदीन जी के युग की पुनरावृत्ति हो सकती है। गुरुकुल को सामयिक एव उपयोगी बनाने के साथ-साथ आर्यसमाज के प्रचार कार्य के लिये पत्रकार विद्यालय और वक्तृत्व कला विद्यालय का विचार अत्यधिक उपयोगी होगा। आर्यसमाज के प्रचार में आज उच्चकोटि के वक्ताओ उपदेशको और लेखको की जो कमी अनुभव की जा रही है। उसे दूर किया जा सकेगा।

वानप्रस्थाश्रम की अवस्था के अनेको अवकाश प्राप्त आर्य बन्धुओ के सहयोग की कल्पना मात्र से हम हर्ष विभोर हैं आशा ही नहीं हमे पूर्ण विश्वास है, अनेक उच्च आर्य नेता भी इस प्रस्ताव के व्यवहृत होते ही अपने स्थानो से इस तपोवन में पहुंचने के लिए उद्यत हो जायेंगे।

सभा की सारी शक्तियो के केन्द्रीकरण के इस प्रस्ताव द्वारा आदरणीय सभा प्रधान श्री पंडित जी ने नेतृत्व का मार्ग-दर्शन किया है आशा है, इस प्रस्ताव की उप-योगिता पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जायगा। —सपादक]

आर्यसमाज आगरा नगर

—नगर आर्यसमाज आगरा में २२ मार्च को समाज के साप्ताहिक अधि-वेशन में श्री प० यशपाल जी अधिष्ठाता गुरुकुल गंगीरी, व श्रीधर आर्य, उप-देशक केरल और २१ मार्च को श्री रघुवरदयाल जी शास्त्री एम० ए० एल० टी० प्रधान आर्यसमाज सोरों का भाषण हुआ।

सम्पादकाचार्य स्व०पद्मसिंह शर्मा

साहित्याचार्य श्री पं०पद्मसिंह शर्मा का निधन हुए इस साल अप्रैल को सत्ताइस वर्ष पूरे हो जाएंगे। इस अवधि में उनकी स्मृति में विशेष कार्य नहीं हो सका। स्वयं भी जो शर्मा जी करना चाहते थे, वह अभी कुछ अधूरा पड़ा है और कुछ अभी आरम्भ नहीं हुआ। स्वर्गीय शर्माजी अपने सहृदय साहित्यिक मित्र स्वर्गीय श्री पं०नाथूरामशंकर शर्मा का जीवन चरित्र लिखना चाहते थे, वह काम भी मेरी जानकारी में अभी तक आरम्भ ही नहीं हुआ। इसी प्रकार स्वर्गीय सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा का जीवन चरित्र भी लिखने के लिये स्वर्गीय पद्मसिंह शर्मा कृत सकल्प थे, किन्तु उनके निधन के कारण यह काम भी अधूरा रह गया। पिछले दिनों स्वर्गीय रुद्रदत्त जी की जन्मभूमि धामपुर में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य उपमन्त्री श्री ईश्वर दयालु आर्य के सहयोग से स्वर्गीय रुद्रदत्त जी की स्मृति रक्षा का कुछ प्रयत्न किया गया था, किन्तु अभी वह अधूरा है। स्वर्गीय पद्मसिंह जी का उनकी जन्मभूमि नायक नगला में उनका निजी पुस्तकालय की भी उचित देखभाल न होने के कारण उसे भी उनके पारिवारिक जनों को बेच देना पड़ा। नायक नगला में प्रतिवर्ष उनकी स्मृति में जो एक मेला लगाने की योजना थी, वह पूर्ण नहीं हो सकी। अर्थाभाव के कारण और भी उनकी कीर्ति रक्षा के जो प्रयत्न श्री महावीर अधिकारी सम्पादक समाज कल्याण श्री हरिदत्त शर्मा सदस्य नगर निगम तथा प्रसिद्ध साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र सुमन के प्रयत्न से जो काम हो सका वह धीमा-धीमा चल रहा है। शर्मा जी के सम्बन्ध में दिल्ली में स्थित पद्मसिंह शर्मा स्मारक समिति जिसके संयोजक श्री फतेहचन्द्र शर्मा आराधक हैं और जिन्होंने स्व० सं० ४३ से अब तक स्वर्गीय पद्मसिंह जी की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिये अखिल भारतीय स्तर पर बहुत काम किये हैं उनका कहना है कि इस सम्बन्ध में यदि अर्थ संकट बाधक न हो तब शर्मा जी का सारा साहित्य जो मुद्रण होने से शेष रह गया है भली प्रकार मुद्रित कराया जा सकता है और मुद्रित साहित्य पुनर्मुद्रित किया जा सकता है। स्वर्गीय शर्मा जी की कीर्ति रक्षा के लिये दिल्ली की सुप्रसिद्ध संस्था आत्मा राम एण्ड सन्स के संस्थापक श्री रामलाल पुरी ने कृपा करके सन् १९५१-५२ में कई हजार पुस्तकें निःशुल्क वितरित करने के लिये स्वर्गीय शर्मा जी के सम्बन्ध में प्रकाशित करके प्रदान की थीं, उससे जो लोग शर्मा जी की साहित्य सेवा को भूल-से गए थे, उनकी स्मरण शक्ति में शर्मा जी की याद तरो ताजा हो गई। अब यह पुस्तिका भी समाप्त हो गई है यदि कोई उदारमना व्यक्ति इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण का भार लेकर इस साहित्यिक यज्ञ में योग देना चाहें तो दे सकते हैं। शर्मा जी की स्मृति को चिरस्थाई रखने के लिये उनके जीवित समय से लेकर अब तक स्थिर रखने में सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी संसद सदस्य की विशेष कृपा रही है, और उनके तथा प्रसिद्ध साहित्यकार श्री हरिशंकर शर्मा के प्रयास से स्वर्गीय शर्मा जी के पत्रों का प्रकाशन हो गया है। यह पत्र हिन्दी संसार में अपने ढंग के अनूठे हैं। इसी प्रकार उनके निधन के बाद से लेकर आज तक उनकी स्मृति में श्री चतुर्वेदी जी ने विशाल भारत का विशेषांक प्रकाशित कराया और हरिशंकर जी शर्मा ने आर्यमित्र, दैनिक एवं कुछ अन्य व्यक्तियों ने त्यागी मेरठ का विशेषांक प्रकाशित करके उनके प्रति अपनी श्रद्धा भावना व्यक्त की। बिजनौर से प्रकाशित होने वाले चिंगारी साप्ताहिक ने रजतपथ विशेषांक प्रकाशित करके स्वर्गीय पद्मसिंह शर्मा के प्रति अपनी अभूतपूर्व श्रद्धा प्रकट की है।

आज २७ वर्ष बीत जाने के बाद ७ अप्रैल को हम स्व० पद्मसिंह शर्मा का स्मृति दिवस मना रहे हैं और हमारे सामने उनके विस्तृत कार्यों की एक झाँकी अपना सन्देश देती दिखाई दे रही है। स्वर्गीय शर्मा जी न केवल साहित्य निर्माता थे अपितु साहित्यकारों के निर्माता थे। उनका सहयोग पाकर बहुत से लेखक आगे बढ़ने में समर्थ हुये उनका यह स्वभाव था कि जिस लेखक को उन्होंने साहित्य क्षेत्र में उतरता देखा उसे बढ़ावा दिया। बढ़ावा देने में उन्होंने कंजूसी नहीं की। इस सम्बन्ध में शर्मा जी के निधन पर अपना श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुये उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द्र ने लिखा था। शर्मा जी जितने बड़े साहित्यसेवी थे, उससे कहीं बड़े मनुष्य थे। आपसे मिलकर कभी जी नहीं भरता था। नये लेखकों को आप वह प्रोत्साहन देते थे, जो माता अपने लटपटे बालक को देती है। मेरे ऊपर तो उनकी असीम कृपा थी। "सेवा सदन" उपन्यास क्षेत्र में मेरा पहला प्रयास था। शर्माजी ने जिस तरह दिल खोलकर दाद दी, वह मैं भूल नहीं सकता। उस समय उनकी कठोर आलोचना ने मेरा अन्त कर दिया होता। उसके बाद जब-जब मुझे उनसे मिलने का सुअवसर मिला। इस तरह टूट कर गले लगाते थे किंचित उनके सौजन्य पर पुलकित हो उठता था। सरल जीवन और ऊँचे विचार की ऐसी मिसाल मुश्किल से मिलेगी। आप में नवीन और प्राचीन का अभूतपूर्व मेल हो गया था। क्या संस्कृत, क्या हिन्दी, क्या उर्दू क्या फारसी—आप इन सभी साहित्यों के ज्ञाता थे। अकबर मरहूम के तो आप आशिक ही कहे जा सकते हैं। मैंने आप की जबान से अकबर की सैकड़ों सूक्तियां सुनी हैं। आप उन पर मस्त हो जाते थे। हिन्दी में आप एक खास शैली के जन्मदाता हैं—जिसमें चुलबुलापन है, शोखी है, प्रवाह है और उसके साथ ही गर्मी भी। उनका पाण्डित्य उनके काबू में है। वह उस पर शहसवार की भांति सवार होते हैं। उसकी लगाम ढीली नहीं करते, उसे बहकने नहीं देते। कौन जानता था कि हिन्दी साहित्य का वह सूर्य अपने साहित्य जीवन के मध्याह्न में यों अस्त हो जायगा।"

इस तरह से एक ही नहीं अनेक विभिन्न भाषाओं के विद्वान् जिनमें उर्दू के महाकवि अकबर तथा संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री ऋषिकेश भट्टाचार्य आदि शर्मा जी के परम प्रशंसक थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जिन दिनों भारत-भारती लिख रहे थे, उन दिनों इस लेखन कार्य में पद्मसिंह जी का उन्हें विशेष सहयोग मिला था। स्वर्गीय शर्मा जी के निधन हुए सत्ताइस वर्ष बीत जाने के बाद भी उनकी कीर्ति रक्षा के लिये कोई स्थाई प्रबन्ध न हो यह बड़ खेद की बात है। आशा है हिन्दी साहित्य के उपासक इस दिशा में उचित ध्यान देंगे। महा विद्यालय ज्वालापुर जिसकी स्थापना में उन्होंने योग दिया था, उसके स्वर्णजयन्ती आजकल मनाई जा रही है। उस अवसर पर महा विद्यालय के संचालक उनकी कीर्ति चिरस्थाई करने के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य करेंगे। महाविद्यालय ज्वालापुर में रह कर उन्होंने भारतोदय पत्र का सम्पादन किया था। इस पत्र में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी भी अपने लेख लिखा करते थे उनको लिखने की दिशा में प्रोत्साहन स्वर्गीय पद्मसिंह जी से ही मिला था। महा विद्यालय में इस अवसर पर उनकी स्मृति में एक अनुसन्धान भवन खोला जा रहा है। आशा है कि इस भवन में शर्मा जी के उन कार्यों का विस्तार से कार्य आगे बढ़ाया जायगा। यह बड़े खेद की बात है कि गुरुकुल कांगड़ी जिसके अध्यापन में उनका पूर्ण सहयोग रहा वह भी उनकी स्मृति में कोई कार्य नहीं कर पाया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन जिसके वे अठारवें अधिवेशन के अध्यक्ष रहे वह भी उनकी स्मृति को चिरस्थायी करने के लिये कोई काम नहीं कर सका। जबकि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हरिद्वार अधिवेशन में स्वर्गीय पद्मसिंह शर्मा की स्मृति के लिये श्री माखनलाल चतुर्वेदी के तुलादान से जो धन इस अधिवेशन में सम्मेलन को मिला था उस धन से यह काम किया गया था। किन्तु उस दिशा में अभी तक कुछ नहीं हो पाया। इस प्रकार अनेक सम्बन्धित अन्य संस्थाएँ जिन्हें स्वर्गीय शर्मा जी का किसी न किसी प्रकार का विशेष सहयोग रहा है उनकी कीर्ति बनाये रखने में कुछ यत्न करेंगे। यह भावभरा अनुरोध उन सबसे है।

★

सभ्य होली के प्रस्ताव के कारण आर्यसमाजी का पुतला निकाला गया

ता० २२-३-६१ को आर्यसमाज सौरिख ने प्रयत्न किया कि कस्बा सौरिख के भले आदमियों की एक सभा बुलाकर निश्चय किया जावे कि होली सभ्यतापूर्वक मनाई जावे, लेकिन रूढ़िवादियों ने वे बैठक सफल न होने दी।

ता० २३-३-६१ को श्री अटलबिहारी जी पुराने आर्य हैं, उनके मकान के अन्दर रात के १२ बजे कीचड़ से भरा हुआ घड़ा आगन में फेंका गया जबकि सब लोग सो रहे थे। अत. अटल जी ने थाने में शिकायत की तब दरोगा जी ने लोगों को डांटा-डपटा। सदर होली प्रेमियों ने लाउडस्पीकर द्वारा ऐलान किया कि अटलबिहारी आर्यसमाजी यह कुछ नहीं मानते इनके यहां कोई होली न मिलने जावे और एक अरथी बनाकर उस पर एक पुतला बनाकर रक्खा। जिसे सारे कस्बे में घुमाया तथा रामनाम सत्य है अटलबिहारी मृत्यु हैं के नारे लगाये। लेकिन सब लोग उक्त महाशय के यहां होली मिलने गये और बाद को एलान करने वाले भी गये।

स्वामी अनुभवानन्द आर्यसमाज सौरिख
जि० फर्रुखाबाद

होलिकोत्सव

इब्राहीमी, भिक्खा (सहारनपुर), बरेली, हुक्रिया (बरेली), मथुरा, ग्वालियर, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की ओर से हाथी पर विशाल जलूस निकाला गया।

आचार्योपदेश

प्राचीन ऋषियों की प्रार्थना

आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

कुलपति महाविद्यालय ज्वालापुर का नव स्नातकों तथा उपाधिधारियों को स्वर्णजयन्ती के दीक्षान्त अवसर पर उपदेश

★

[आज विश्व में सबसे बड़ी समस्या मानव-निर्माण की है। संसार का वैभव और विज्ञान उन्नति कर रहा है, पर मानव का स्तर उन्नति के स्थान पर पतन की ओर ही अधिक बढ़ा है। आज के भौतिकतावादी दृष्टिकोण के सम्पर्क प्रसार के मुकाबले भारतीय ऋषियों की अध्यात्मवादी विचारधारा ही मानवता को सुख शान्ति का संदेश पहुँचा सकती है। शिक्षा की सफलता मानव का आदर्श निर्माण करने में भारतीय गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली चिरन्तन समय से उसी निर्माण में संलग्न है। आज की भारत की समस्याओं का समाधान भी इसी प्रणाली के पास है। आचार्यवर शास्त्री जी ने भारतीय ऋषियों के विचारों का प्रतिपादन कर स्नातकों को जो उपदेश दिया है वह संसार की सबसे उत्तम धरोहर है। सम्पादक—

हमारे प्राचीन पूर्वज ऋषि सदैव आध्यात्मिक चिन्तन में मग्न रहते थे। उनको सबसे बड़ी चिन्ता यही लगी रहती थी कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे कुल में ऐसा कोई न रह जाय जो अब्रह्मवित् हो अर्थात् वेदों को न जानने वाला हो, वेदों को न मानने वाला हो, क्योंकि वेद ही उत्कृष्ट धर्म है।

भला यह क्या चिन्ता हुई। ऐसी क्या प्रार्थना हुई। ऐसी प्रार्थना इसलिए कि वेद आर्यों के पूर्वजों के प्राण रूप थे। कैसी विचित्र चिन्ता थी ऋषियों की। वेदों में धर्मतत्त्व का पूर्णरूप से प्रतिपादन किया गया है, इसीलिए संसार से निराली यह प्रार्थना थी। वेद हैं तो धर्म है, धर्म है तो आर्य जीवन है ऐसा वे मानते थे। इसीलिए ऐसी प्रार्थना करते थे। उनके वाक्यों में प्रार्थना इस प्रकार थी—

१—'मा नः कुलेऽब्रह्मविद् भूत्'।

२—दूसरी प्रार्थना यह रहती रही कि—'न नास्तिकः'।

हमारे कुल में कोई नास्तिक न हो।

नास्तिक कौन ?

मनु कहते हैं—'नास्तिको वेदनिन्दक.'

अर्थात् वेद की निन्दा करने वाला पुरुष नास्तिक है क्योंकि—'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' वेद समस्त धर्म के मूल हैं।

३—तीसरी प्रार्थना यह रहती थी कि—'न चाश्रद्धानः।

हमारे कुल में वेदों में, धर्म में, गुरु अर्थात् आप्त पुरुषों के वाक्यों में श्रद्धा न रखने वाला कोई न हो—संसार में कोई कार्य श्रद्धा के बिना पार नहीं हो सकता।

४—चौथी प्रार्थना यह है कि—'न चानूचानमानी'।

अर्थात् विद्या पढ़कर अभिमानी अथवा दुरभिमानी न हो, क्योंकि मनुष्य कितना भी गुणी हो, विद्यावान् हो, अभिमान उसके सब गुणों पर पानी फेर देता है। महात्मा विदुर ने कहा भी है कि—सर्वमेवभिमानः। अभिमान सब गुणों को हर लेता है।

५—पांचवी प्रार्थना यह है कि—'न परोपतापी'।

हमारे कुल में पर पीड़क कोई न हो। ऐसा कोई कलंकी पैदा न हो जो दूसरों को दुःख पहुंचाता हो।

६—छठी प्रार्थना यह है—'न च कृतघ्नः। हमारे कुल में कोई कृतघ्न न पैदा हो। क्यों,

'कृतघ्नस्य नास्तिक निष्कृतिः

कृतघ्न की कहीं भी निष्कृति नहीं होती, उसकी कृतघ्नता का प्रायश्चित्त ही नहीं। लोग उससे घृणा करने लगते हैं। उसके कारण उसके कुल का भी दुर्नाम हो जाता है। इसीलिए प्राचीन गुरु अपने शिष्यों को वेद की शिक्षा-दीक्षा देने के पश्चात् अनुशासन के रूप में अपने शिष्यों को सीख देते थे कि—

सत्यंवद

सत्य बोलो, 'न हि सत्यात्परोधर्मः', सत्य से बढ़कर और कोई उत्कृष्ट धर्म नहीं है।

धर्मंचर

धर्म करो। धर्म करते रहोगे तो जीवन बन जायगा।

आचार्यदेवोभव:

आचार्य को देव तुल्य मानो।

मातृदेवोभव

माता को दैवत समझो।

पितृदेवोभव

पिता को भी देव तुल्य जानो।

क्योंकि—

'मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद।

इन्हीं तीनों की कृपा से पुरुष यथार्थ पुरुष बनता है। इनके उपकारो से कोई उऋण नहीं हो सकता—

यं मातापितरौ क्लेशं
सहेते संभवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या
कर्तु जन्मशः तैरपि। (मनु)

इसी प्रकार विद्यादाता गुरु तथा आचार्य के ऋण से उऋण होना भी असंभव-सा है—

सत्यान्न प्रमदितव्यम्।
धर्मान्न प्रमदितव्यम्।
कुशलान्न प्रमदितव्यम्।

सत्य में प्रमाद नहीं करना चाहिए, धर्म में प्रमाद नहीं करना चाहिए, कुशल पुरुषों की सेवा में प्रमाद नहीं करना चाहिए।

स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् स्वाध्याय अर्थात् वेदवेदांगों के अध्ययन-अध्यापन में प्रमाद नहीं करना चाहिए। मन में कोई सन्देह उठे तो विद्वानों के पास जाकर उसको निवृत्त करना चाहिए अतिथि सेवा का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। कर्तव्य-अकर्तव्य के विषय में प्रज्ञावृद्ध, विद्यावृद्ध, वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध पुरुषों से परामर्श करके उसको करना चाहिए, इनको प्रसन्न करके, पूछकर कर्तव्य में प्रवृत्त होना चाहिए जिससे फिर पछताना न पड़े—

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य जैसे पुरुषों के साथ बैठता है, जैसों की सेवा करता है और जैसा बनना चाहता है, वैसा ही बन जाता है। इसलिए सत्पुरुषों की संगति करो, उनकी सेवा शुश्रूषा करो।

यादृशैः संनि विशते।
यादृशांश्चोपसेवते ॥
यादगिच्छेच्च भवितुम्।
तादृग् भवति पूरुषः ॥
(नीतिवचन)

जब तुम सज्जन पुरुषों के संग से छूट जाओगे तब अवश्य गिरोगे, अवश्य गिरोगे—

यदा सज्जन संग रहितो,
भविष्यसि भविष्यसि।
तदाऽवश्यं पतिष्यसि पतिष्यसि ॥
(हितोपदेश)

किसी कर्म के करने से पूर्व यह अच्छी तरह देख लो कि यह तुम्हारा कर्म धर्म से विरुद्ध तो नहीं बैठता। यदि धर्म से विरोधी हो तो उस कर्म को मत करो।

तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर अच्छी तरह जान लो कि कौन-कौन से कर्म करने योग्य हैं, कौन-कौन से छोड़ने योग्य हैं और कौन-कौन से विशेषरूप से करने योग्य हैं—

इस प्रकार बरतोगे तो तुम्हें संसार में किसी प्रकार का दुःख नहीं उठाना पड़ेगा। कर्म करते तो रहो पर उसके फल की चिन्ता मत करो। उसका फल तो भगवान् के हाथ में है। उसकी क्या चिन्ता। कोई कर्म निष्फल नहीं जाता। अवश्य भोगना पड़ता है।

संसार में दो ही तो मुख्य काम हैं। एक धर्म का, दूसरे देश का। देश कार्य भी धर्म में आ जाता है पर आजकल के युग में देशकार्य और धर्मकार्य पृथक्-पृथक् हो चले हैं। राजकार्य भी धर्म में आ जाता है पर वर्तमान युग में वह भी धर्म निरपेक्ष हो चला है, इसलिए संभल कर चलो, ऐसा बरतो कि देश और धर्म दोनों सधें—इसलिए मेरा आदेश है, निर्देश है, परम्परा का अनुशासन है कि बहुत संभल कर चलो—



संसार में बरतते हुए इस बात का ध्यान रखो कि तुम्हारे कारण किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो यदि कष्ट पहुँचना अनिवार्य ही हो तो कम से कम कष्ट पहुंचे।

महाभारत, शान्तिपर्व में आनृशंस्यधर्म के विषय में कहा है कि—

आत्मन प्रतिकूलानि,
परेषां न समाचरेत्।

धर्म तत्व यह है कि जो कार्य हमको प्रतिकूल जंचता है, वैसा व्यवहार हम दूसरो के साथ कभी न करें।

मुख्य तत्त्व यह है कि—

यदन्येषां हितं न स्यात्।
आत्मन कर्मपौरुषम् ॥
अपत्रपेत वा येन।
न तत्कुर्यात्कथञ्चन ॥

अपना कोई कर्म अथवा पुरुषार्थ जिससे दूसरे का हित न बनता हो, अथवा जिन कर्मों के करने से लज्जा आती हो ऐसे कर्मों को कभी नहीं करना चाहिए। किसी के साथ द्रोह-बुद्धि रख कर नहीं चलना चाहिए। सत्य बोलो, प्रिय बोलो, थोड़ा बोलो, हित की बात बोलो, शुष्क वैर विवाद से बचे रहो। भगवान् तुम पर दया करते रहें। तुम्हारी बुद्धि को ठीक रखते रहे। नित्य प्रति यह प्रार्थना किया करो।

पुनन्तु मा देवजना।
पुनन्तु मनसा धिया ॥
पुनन्तु सर्वा भूतानि।
जातवेदा पुनीहि माम् ॥

हे जातवेदस्, मुझे शुद्ध करते रहो, विद्वान् लोग भी अपने मन, वचन, कर्मों से मुझे शुद्ध करते रहें जिससे मैं पवित्राचरण वाला बन सकूं, रह सकूं।

[शेष पृष्ठ १३ पर]

आचारः परमोधर्मः

(श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, आगरा)

सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिए सबको सदाचारी बनना चाहिए। हमारा देश लगभग १२साल से स्वतन्त्र हो चुका है। और स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से देश की दशा उन्नत बनाने के लिए कई प्रकार की योजनायें विचाराधीन है, और उनके अनुसार कार्य भी किया जा रहा है। खाने पीने की चीजो में वृद्धि हो और अच्छी-अच्छी सड़के बनें, नदियों पर बांध बाधे जाय, ये सब योजनायें बहुत शुभ और हितकारी हैं, परन्तु चरित्र बल के बिना धन बल, बाहु बल और बुद्धि बल सफलता के प्रतीक नहीं हो सकते। स्वास्थ्य अच्छा हो, आर्थिक परिस्थिति भी अच्छी हो, और ज्ञान बल भी प्राप्त हो, परन्तु चरित्र बल के बिना शारीरिक उन्नति, मानसिक उन्नति और आर्थिक उन्नति सब निष्फल हो जाते हैं।

यदि स्वास्थ्य अच्छा हो, शरीर बलवान हो, जवानी के दिन हो और हृदय में पवित्रता न हो तो हृदय में बुरी कामनायें स्थान पा जाती है, और स्वास्थ्य ही एक रूप में नाश का कारण बन जाता है। यदि व्यक्ति बुद्धिमान है, पढ़ा लिखा और शिक्षित है, परन्तु उसमें चरित्र बल नहीं है, तो वह अपनी बुद्धि और शिक्षा के सहारे पाप करने के लिए नये नये बहाने निकाल लेता है। यदि बिना पढ़ा लिखा आदमी शराब पीता है या जुआ खेलता है तो वह कभी-कभी अपनी भूल भी स्वीकार कर लेता है। परन्तु पढ़ा लिखा मनुष्य अपनी बुराइयो को छिपाने के लिये अपनी बुद्धि के अनुचित प्रयोग से बुराइयो को भलाई के रूप में प्रगट करने और सिद्ध करने का यत्न करता है, और यह सिद्ध करना चाहता है कि यदि वह शराब पीता है, तो केवल मनोरंजके के लिए थोड़ा मुह का मजा बदलने के लिए पीता है। मित्रो के आग्रह से पीता है, ऋतुओ के परिवर्त्तन के कारण पीता है। ऐसी दशा में हृदय की पवित्रता सबसे अधिक आवश्यक है।

हृदय की पवित्रता के लिए धर्म की भावना सबसे अधिक आवश्यक और अनिवार्य है। मनुष्य रूपी मशीन का केन्द्र हृदय है। वहीं से विचार चलते हैं। जो आगे चलकर आचार के रूप में प्रगट होते हैं और व्यवहार का रूप धारण करते हैं।

हृदय जगत् की व्यवस्था के लिए धार्मिक भावना सबसे अधिक आवश्यक है। धर्म को सार्वजनिक रूप में अपने सन्मुख रखने के लिए उसको सम्प्रदायवाद और अन्धविश्वास से पृथक करके नैतिक उत्थान का आधार मानना होगा।

ईश्वर न्यायकारी है। उसका न्याय अटल है और वह कभी चूक नहीं सकता। ईश्वर रचैता है, और संसार के सब पदार्थ उसी की व्यवस्था में बनते हैं और प्राणियो को प्राप्त होते हैं, ये दोनों भावनायें धर्म के मौलिक रूप हैं और नैतिक उत्थान के आधार है। इनका ही प्रचार और विस्तार होना चाहिए। इनका विस्तार और प्रचार चरित्र निर्माण का मुख्य ध्येय है। इन दोनो मौलिक सिद्धान्तो को आधार मानकर चरित्र-निर्माण की समस्या पर भिन्न भिन्न दृष्टिकोण से विचार किया जाता है। और यह यत्न किया जाता है कि जीवन के हर विभाग और क्षेत्र में चरित्र पवित्रता की भावना ओत-प्रोत रहे और चरितार्थ होती रहे।

देश में अनेक प्रकार के रोग और विवाद प्रचलित हैं। प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल के शब्दों में ये भाषावाद, प्रान्तवाचक, जातिवाचक, और सम्प्रदाय वाद के नाम से प्रगट कर सकते हैं। ये चारो दूषित भावनायें प्रबल रूप से प्रचलित हैं और चरित्र ह्रास के कारण बने हुए हैं।

भाषा के नाम पर कितना मत-भेद प्रचलित है। लड़ाई और झगड़े हो रहे हैं और सिर फोड़े जा रहे हैं। इसी प्रकार जन्म-सूचक जातियों को आधार मानकर सारी प्रजा भिन्न भिन्न टोलियो और समुदायो में बटी हुई है, योग्य और अयोग्य का ध्यान न करके केवल जन्म सूचक जातियो को आधार मान कर प्रजातन्त्र की आड़ में निर्वाचन लड़े जा रहे हैं, और प्रजातन्त्र का गला घोटा जा रहा है।

जब धार्मिक भावना संकुचित सम्प्रदायवाद का रूप धारण कर लेती है धर्म का सीधा सम्बन्ध ईश्वर से न मानकर किसी व्यक्ति विशेष या आचार्य विशेष से जुड जाता है तो सम्प्रदायवाद से भी बड़ी हानि होती है और जब साधारण जनता धर्म और सम्प्रदायवाद में भेद नहीं समझती तो धर्म की भावना से भी एक प्रकार की ग्लानि और उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। साधारण जनता ही नहीं कभी-कभी तो बड़े-बड़े नेता भी इस भूल के कारण धर्म की अवहेलना करने

(शेष पृष्ठ १० पर)

मानवता के प्रकाश-स्तम्भ

राम का आदर्श

(श्री भरतसिंह)

राम न केवल जगज्जननी भारत के ही अपितु निखिल विश्व-वाटिका की प्रत्येक गली-गली को अपनी गौरवमयी गुणगरिमा से सुवासित करने वाले कर्त्तव्यनिष्ठ पुरुष हुए हैं। उनके द्वारा संस्थापित आदर्शों से आज भी विश्व अपने आपको अनुप्राणित करने की अमिट अभिलाषा अन्तस्थल में छिपाए बैठा है।

यह ध्रुव सत्य है कि आदर्शों के द्वारा मानव समाज का नेतृत्व करने वाला देवपुरुष ही अपने शुभ गुणों के आधार पर, दूर भविष्य में स्वभावत पूजा का आस्पद बन जाता है। यही कारण है कि आज सहस्राब्दियों के बाद भी राम हमारे मन-मानस में आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हैं, और आगे भी ज्यों-ज्यों काल-चक्र आगे-आगे प्रयाण करता चला आयगा त्यो-त्यो राम का आदर्श चरित्र अधिक आकर्षण का केन्द्र बनता जायगा।

राम का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ था, जबकि पढ़े लिखे व्यक्तियो ने ही राक्षस रूप धारण कर सतयुग की अन्वर्थ संज्ञा पर प्रश्नवाचक चिह्न लगाने का कार्य पूर्ण कर दिया था। इसका जीता जागता उदाहरण चारों वेद और छहों शास्त्रों के ज्ञाता रावण है। जिसके भीषण आतंक से, निस्पृह मुनि जनो का अन्तस्तल भी भय से प्रकम्पित हो उठता था।

ऐसे समय में राम जैसे शील सदाचार समन्वित प्रबल पुरुष का होना स्वाभाविक ही था।

रामायण के अनेक प्रसंग, राम के अतुल्य बल-वैभव के प्रत्यक्ष प्रतीक हैं। राम परम विचारक थे, यही कारण था कि महान् से महान् आपत्ति में भी उन्होंने धैर्य का सहारा नहीं छोड़ा 'सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेक रूपता' राम चरित्र का आदर्श था। राज्याभिषेक की सूचना से वे परम प्रफुल्लित दृष्टिगोचर नहीं होते, और न वनगमन की कठोर आज्ञा से खिन्न ही दिखाई देते है। वन के दुःसह कष्टों को उन्होंने अपने पावन चरित्र से सर[illegible] बना दिया था। उनकी कोमल प्रकृ[illegible] का ही यह परिणाम था, कि वे जी[illegible] मात्र की सहानुभूति के पात्र बन गये थे।

भीलिनी के द्वारा प्रदत्त उच्छि[illegible] बेरों का सेवन, छुआ-छूत के पोष[illegible] कलिकाल के राम-भक्तों को एक[illegible] भावना से अनुप्राणित होने की सी[illegible] देता है। एक रजक के कथन पर सी[illegible] को बन भेज देना भी इसी मनोवृत्ति [illegible] प्रसारक है कि उनके राज्य में बड़े-छो[illegible] का कोई भेद नहीं था।

राम आदर्श पितृभक्त, स्नेही ब[illegible] एव न्याय प्रिय शासक के गुणो से पू[illegible] थे। यही कारण था कि प्रजा [illegible] सहायता को प्राप्त करते हुए भी वे पि[illegible] की एक आज्ञापूर्ण वाणी पर १४ व[illegible] पर्यन्त बनवास के लिये प्रस्तुत हो गए। अपने से बड़ो का वे सर्वदा सम्मा[illegible] किया करते थे। परशुराम की आक्रो[illegible] भरी वाणी को सुनकर भी वे सहस[illegible] भावावेश युक्त नहा हुए परन्तु अ[illegible] तक मुनि का सरल, मृदु वचनों [illegible] आदर ही करते रहे। और अन्ततोगत्वा उनकी सरलता ने मुनि के हृदय [illegible] अपना स्थान बना ही लिया।

राम के आदर्श जीवन की इतनी महत्ता है कि आज भी वैदेशिकों [illegible] कथन है कि रामायण की कथा के नाय[illegible] राम का जीवन एक कल्पना मात्र [illegible] पृथ्वीतल में ऐसे दैवी गुणों से समन्वि[illegible] व्यक्ति का जन्म लेना कल्पनातीत है।

राम ही वह पारस थे, जिसके स[illegible] कार से रामायण के सभी पात्र सुन्द[illegible] मणि बनकर एक मनोज्ञ पुष्पाहार ब[illegible] में समर्थ हो सके हैं।

आदर्श रामराज्य की अमर भावन[illegible] को साकार प्रदान करने वाले भारती[illegible] भाग्य विधाताओं का यह एक मह[illegible] कर्त्तव्य है कि वे रामनवमी के पाव[illegible] अवसर पर राम के चरित्र से सच्चरित्र[illegible] स्नेहशीलता, न्याय प्रियता एवं कर्त्त[illegible] निष्ठा की प्रेरणा प्राप्त करते हुए स्वराज्य में सुराज्य की पावन भावना की ओर अग्रसर हों।

*

राम-राज्य

राम राज्य आया, गगन पर नव-विहान छाया।
मानव की ममता सब पर अमृत बरसाएगी,
मानवता की ध्वजा विश्व में अब फहरायेगी।
प्राची के आंगन में अब नूतन सूरज मुसकाया।
राम राज्य आया गगन पर नव-विहान छाया।
राम राज्य मे प्रीत-भरी गगा-यमुना बहतीं,
हम सब मानव एक, तरंगे उछल-उछल कर कहती।
मानवता का गीत सभी ने हिल मिल कर गाया।
राम राज्य आया, गगन पर नव विहान छाया।

—श्री देवराज 'दिनेश'

यज्ञोपवीत संस्कार और उसकी उपादेयता

[ले०—विद्यावारिधि श्री प० सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ महो० आ० प्र० सभा]

[आज के भारतीय युवक भारतीयता क प्रतीक यज्ञोपवीत के आदर्श भाव को भूल रहे हैं। इस लेख द्वारा विद्वान् लेखक ने यज्ञोपवीत की आवश्यकता उपयोगिता तथा उसके सन्देश का निरूपण सरल और सुबोध भाषा में किया है। आशा है जिज्ञासु पाठक अपनी शंकाओं का समाधान इस लेख में पा सकेंगे। —सम्पादक]

★

प्राचीन आर्य्य जाति ने मानव समाज को सुसंस्कृत मानव बनाने के लिये वेदों द्वारा षोडश संस्कारों का निर्माण किया था। संस्कार का संस्कृति के साथ अटूट सम्बन्ध है। "सत्क्रियते अथवा सासंस्कृति संस्करणमेव संस्कार" किसी का संस्कृति से सुसंस्कृत होना ही संस्कार है। वस्त्रो का संस्कार कर सूचिकक (दर्जी) नाना प्रकार के वस्त्रों का निर्माण करता है। जैसे कुर्ता, कमीज कोट आदि आदि। इसी प्रकार बढ़ई आदि शिल्पकार सब वस्तुओं का संस्कार द्वारा ही निर्माण करते हैं। अत सिद्ध हुआ बिना संस्कार के जब किसी वस्तु का निर्माण होना कठिन है तो मानव समाज का निर्माण बिना संस्कारों के कैसे हो सकता है।

यज्ञोपवीत संस्कार का सम्बन्ध आचार्य्य कुल से है। जब इस मनुष्य को ज्ञान शिक्षणार्थ आचार्य्य कुल में आना होता है, तब उसका यज्ञोपवीत अर्थात् उपनयन संस्कार होता है। विद्यार्थी नहीं जानता है कि मैं गुरु के पास किस शिक्षा को प्राप्त करूँगा। उसका उद्देश्य क्या होगा। आज हम गुरुओं के पास पढ़ते हैं, किन्तु यही दशा है जीवन पर्य्यन्त पढ़ने के पश्चात् भी यह ज्ञान नहीं हो सका कि इस शिक्षा से होना क्या। इसीलिये आज समाज में अत्याचार, अनाचार भ्रष्टाचार का बोल बाला है। प्राचीन काल मे प्रत्येक मानव अपने जीवन मे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार संस्कृति के अंगो को धारण करता था। जब वह आचार्य के पास गया तो उसने एक शब्द कहा, कि ब्रह्मचर्य्यं मागाम ब्रह्मचारी असानि। मैं ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करूँ। और ब्रह्मचारी बनूं। उस समय गुरु उसे शिक्षा का सांकेतिक ज्ञान देता था। तीन सूत्रों का उपवीत" यज्ञ करते हैं श्रेष्ठतम कर्म को अर्थात् पवित्र कर्म द्वारा आपके पास रहकर विद्याध्ययन करना चाहते हैं, उसे गुरु पवित्र वस्तु यज्ञोपवीत परम पवित्र मन्त्र के साथ तीन सूत्र का यज्ञोपवीत देता था। जैसे सैनिकों को वैजयन्ती दी जाती है। उसके द्वारा राष्ट्राभिमान जागृत होता है। वैसे ही ३ धागो से आचार्य्य सम्पूर्ण शिक्षा के रहस्य को बतला देता था। तीन सूत्रों का अर्थ हुआ। विश्व में ३ चीजें अनादि हैं। तुझे जीवन में ३ चीजों का ज्ञान प्राप्त करना है। ईश्वर, जीव, प्रकृति ३ पदार्थों में अखिल विश्व का मानचित्र आ गया। शेष कोई बात नहीं रही। तीनों का ज्ञान बिना संयमित जीवन के होना कठिन है। अखिल विद्याओं का विकास ही तीन पर हुआ। आचार्य्य की दूसरी शिक्षा होती थी कि तुम्हें जीवन को सफल बनाने के लिये ३ महाव्रत लने हैं। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव आचार्य्य देवो भव—तुम्हें मातृऋण को पूर्णकर मातृदेव बनना ह और पितृ तथा आचार्य्य ऋण को पूर्णकर पितृदेव और आचार्य्य देव बनना है। विद्यार्थी अपने जीवन में ३ व्रतो के भार को अपने पवित्र कन्धे पर यज्ञोपवीत रूप में रखता था। देखने मे तीन सूत्रों का भार कोई भार नहीं है। किन्तु उनके व्रतों का भार अत्यन्त कठिन है। श्री लक्ष्मण के जीवन से शिक्षा मिलती है कि जब वे अपने भ्राता राम के साथ वन-गमनको उद्यत हुए तो श्रीराम ने कहा कि अपनी माता से आज्ञा माग कर आओ। क्योंकि वन हुआ था राम को लक्ष्मण को किस आधार पर राम वन-गमन की आज्ञा देते। लक्ष्मण अपनी माता सुमित्रा के पास गये। माता ने उपदेश दिया कि तुम वन जाओ। किन्तु अपने व्रत पालन में माया आकर कहीं कर्त्तव्य च्युत न कर दे। अत—राम दशरथ विद्धि मां विद्धि जनकात्मजा अयोध्या मटवीं विद्धि गच्छ तात यथा सुखम्॥ अर्थात् श्री राम को पिता दशरथ जानना और श्री जानकी को माता और वन को अयोध्या जानना ऐसा समझ कर ही वन में रहना। प्रभु तुम्हारी रक्षा करें। लक्ष्मण ने जीवन पर्य्यन्त सीता का माता और राम को दशरथ माना। इसीलिये आज भी लोग कहते हैं। यती लक्ष्मण की जय। राम तो सपत्नीक गये थे किन्तु लक्ष्मण अपने ब्रह्मचर्य व्रत के साथ वन में रह। इसी प्रकार राम और भीष्म श्रवणकुमार को पितृभक्ति प्रसिद्ध है। आचार्य्य देवोभव देखना हो तो शिवा जी और महर्षि दयानन्द को देख जीवन पर्य्यन्त गुरु के ऋण पूर्ण करने में लगे रहे। साधारण पुरुषो के लिये यज्ञोपवीत तीन तार मात्र है किन्तु ३ सूत्रो का भार उठाना कठिन है। मातृ शब्द से मातृभाषा मातृ संस्कृति सबका ग्रहण होता है। इसी प्रकार पितृ शब्द से जितने भी पालक हैं। सबका ग्रहण होता है। अर्थात् प्रत्येक मानव ने जहाँ जन्म धारण किया है उस मातृभूमि से भी उसका सम्बन्ध है। अत यज्ञोपवीत संस्कार में बहुत से गूढ़ तत्व छिपे हुये हैं। ९६ का अर्थ होता है कर्मकांड के ९६ प्रकार के कर्म मानव को अपने जीवन में करना परमावश्यक है। इसका वर्णन यजुर्वेद के "आचार्य्य उपनयमान कृणुते गर्भमन्त त बिभर्ति रात्री उदरे बिभर्ति" इस मन्त्र पर कात्यायन श्रौत सूत्र में मिलता है। अर्थात् आचार्य्य अपने शिष्य को तीन प्रकार के ब्रह्मचर्य्य महाव्रतों द्वारा स्वस्थ नागरिक बना देता है। लोग कहेंगे कि यदि ये सूत्र न हों तो क्या अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं हो सकता है—ठीक है किन्तु बिना झंडे के सेना का ज्ञान नहीं और सैनिक की क्या पहिचान है, इसी प्रकार द्विज की पहचान ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत है। इसी के आधार पर वर्ण की व्यवस्था होती थी। और उसे उपाधि सम्प्राप्त होती थी। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र न कि वर्तमान उपाधि शास्त्री बी० ए० एम० ए०। ब्रह्मचर्य्याश्रम में संयमित सदाचारी जीवन व्यतीत कर मानव वेदाध्ययन के पश्चात् सद्गृहस्थ बनकर अपनी सन्तान को सुशिक्षित बनाकर मातृ और पितृ ऋण से उऋण हो जाता था। और माता पिता की सेवा करना एव सब प्राणियों का अपने पुरुषार्थ द्वारा उपकार करना उसका परम कर्तव्य था। वानप्रस्थ में स्वाध्याय और अध्यापन के द्वारा आचार्य्य ऋण से उऋण हो जाता था। पुन सन्यास में यज्ञोपवीत उतार कर केवल ज्ञान कांड द्वारा जनता जनार्दन की सेवा करता था। अर्थात् यज्ञोपवीत द्वारा हमारे जीवन में निष्काम कर्म की प्रवृत्ति पैदा होती है। स्त्रियों के भी यज्ञोपवीत होते थे। जैसे स्मृतियों में—ब्राह्मणस्योपनीता—दुर्गोपवीतका—अर्थात् दुर्गा, पार्वती, गार्गी आदि नारियों ने यज्ञोपवीत धारण कर निज कर्त्तव्य को निभाया था। आज दुःख के साथ लिखना पड़ता है जिस यज्ञोपवीत की रक्षा में हमने सर कटा दिया था। आज का युवक नास्तिकता के जीवन में केवल भोगवाद जो पाश्चात्य संस्कृति की देन है—उसमें जीवन व्यतीत कर पाशविक प्रवृत्ति का अनुगाता बन रहा है। आज हमें चाहिये कि हम पुनः यज्ञोपवीत की उपादेयता समझ कर उसके प्रचार एव प्रसार में कृत संकल्प हो जावें।

★

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के विद्वान् उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित

आर्य विद्वानों द्वारा संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि

इस वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से संस्कृत के जिन १२ विद्वानों को पुरस्कार दिये हैं उनमे तीन आर्य विद्वानो का नाम उल्लेखनीय है—

(१) आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री सि० शिरोमणि पूर्व कुलपति गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन।
ग्रन्थ—संस्कृत साहित्य विमर्श पुरस्कार १५००)

(२) आचार्य विश्वेश्वर सि० शिरोमणि, एम० ए०, आचार्य गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन।
ग्रन्थ—[१] खगोल प्रकाश [२] मनोविज्ञान प्रवेशिका पुरस्कार १०००)

(३) श्री डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए० पूर्व प्रिन्सिपल क्वीन्स कालेज बनारस।
ग्रन्थ—वेद की सृष्टि प्रक्रिया पुरस्कार ४०० रु०

फ़ादर माइकिल बीड़ी औरंगजेब के पथ पर

(ले०—श्री काशीनाथ जी, प्रधान आर्यसमाज चतरा, हजारीबाग

हजारी बाग जिले के रामगढ़ थाना के अन्तर्गत भुरकुण्डा नाम का एक पर्वतीय औद्योगिक केन्द्र है। जिसके भूगर्भ से लाखों टन कोयला निर्यात होता रहता है। इसके आस-पास पहाड़ों से घिरी हुई बहुत-सी बस्तियां हैं। जिनमें उरावं, मुण्डा प्रभृति के लोग रहते हैं, और ये बेचारे भोले-भाले अपने फटेहाली के दिन काट रहे हैं। इनकी गरीबी और अज्ञानता का स्थानीय पादरी फादर माइकिल बीड़ी अनुचित लाभ उठा रहे हैं।

वे भुरकुण्डा ख्वास फैक्ट्री के पास एक बहुत बड़ा जमीन का भाग रोमन कैथोलिक के नाम से ले रखा है। जहां एक बहुत बड़ा गिरजाघर, स्कूल और अस्पताल खोलकर इनके माध्यम से नि शुल्क शिक्षा, मुफ्त दवा, पैसे, दूध, अन्न, वस्त्र घी आदि बाटने का माया जाल फैला कर इन भोले-भाले आदिवासियों का ओरो से धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। अभी हाल ही पादरी साहब ने भुरकुण्डा से चार मील अन्तर्गत मौजा हुसियारा, जेगदा, किम्नी, चेतमा, बैराद, अवडरा, बलकुम्द्रा, कुटेस,रसदा, चारा साहा, लेम, सलगू, नेतुआ, चिपड़ा, पतरातु, ताकाटाद आकर अनेक हिंदुओं को ईसाई बना लिया है। इनकी काली करतूतें सीमा तक पहुंच गयी।

हिन्दुओं के प्रति घृणा, द्वेष तथा अलगाव की नीति का खुलकर प्रचार करने में ये पादरी अपनी एडीचोटी का पसीना एक कर रहे हैं। इन्होंने ५१ शिक्षकों को स्थानीय क्षेत्रो मे शिक्षा के बहाने ईसाई धर्म के प्रचारार्थ नियुक्त कर रखा है। ये शिक्षक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर दिन को ईसाई बने बच्चों को पढ़ाते हैं तथा रात में घूम-घूम कर लोगों को बहकाते हैं।

वे कहते हैं कि देखो जब अंग्रेज का राज्य था तो ये जंगल पहाड़ सब तुम्हारे थे और उस वक्त ईशू का राज्य था। इसलिए रुपये का सोलह सेर चावल मिलता था। आज जवाहरलाल नेहरू के राज्य में हिन्दू राज्य हो गया है। ईशू भगवान बिगड़ गये हैं। इसलिये वर्षा नहीं होती, तुम लोग शीघ्र ईसाई हो जाओ तो तुम्हारा गया हुआ राज्य फिर लौट आयेगा। देखो ईशू मसीह कितने दयालु हैं जो जो तुम लोगो का दुःख देखा नहीं गया तो हम लोगों को गेहूं, घी, चीनी, दूध, वस्त्र आदि देकर तुम लोगों में मुफ्त बांटने के लिए भेजा है।

तुम्हारे राम और कृष्ण एवं ईशू मसीह के तीनो मूर्तियों को आग में डाल दो, जो जल जाय वह छोटा और जो नहीं जले उसे श्रेष्ठ समझो। इस तरह से लोहे के ईशू की मूर्ति और काष्ठ की बनी राम-कृष्ण की मूर्ति जो एक रंग में रंगी हुई रहती है। तीनों को आग में डाल दिया जाता है। राम कृष्ण की मूर्ति काठ की बनी हुई रहने के कारण तुरन्त जल जाती है, और ईशू की मूर्ति बाहर निकाल आती हैं। उसके बाद ये पादरी कहते हैं अगर तुम लोग ईसाई नहीं बनोगे तो ईशु-मसीह का हुकुम है कि तुम लोगो को मैं मुकदमे में फँसा दूँगा। पादरो के ये जाल भोले-भाले आदिवासी क्या समझें वह इनमें चगुल मे फँस कर ईसाई बन रहे हैं। जब मैं इन बस्तियो मे पहुँचा तो इनको बहुत भयभीत पाया। और यह कहते हुए सुना कि हम हिन्दू रहने के लिये तैयार हैं परन्तु अगर कोई मुकदमे से बचाये इसलिये मैं सार्वदेशिक सभा को सरकार को तथा प्रत्येक आर्यसमाज को सूचित करता हूँ कि शीघ्र इस पर ध्यान दें। और नहीं तो ये आदिवासी ईसाई बनकर छोटा नागपुर को ईसाई स्थान बना ही डालेंगे। ★

आचारः परमोधर्मः

[पृष्ठ ६ का शेष]

लगते हैं और धार्मिक भावना की उपेक्षा करके उपरोक्त रोगों का निराकार करना चाहते हैं या निराकरण की आशा रखते हैं, ये सब भयंकर भूल है। धर्म के बिना किसी रोग का निराकरण नहीं हो सकता।

देश प्रेम के सकुचित रूप का नाम प्रान्तवाद है और इस सकुचित भावना से भी पक्षपात बढ़ रहा है और द्वेष में वृद्धि हो रही है। पजाब महाराष्ट्र और गुजरात् के उदाहरण हमारे सामने हैं।

बहुत से विचारको की दृष्टि मे तो संकुचित देश प्रेम भी चरित्र ह्रास का कारण है। इस विज्ञान के युग में सारा ससार एक सूत्र मे बंध गया। देश और काल की सीमाओ का उलंघन-सा हो गया है और विज्ञान के आविष्कारों से जड़-जड़ की सीमायें भी अब सम्पर्क और संघर्ष में बाधक नहीं रही हैं। अब तो देश-प्रेम को विशुद्ध विश्व प्रेम को विशुद्ध विश्व-प्रम का रूप धारण करना होगा। जो केवल सार्वजनिक धर्म की आधार पर ही हो सकता है। ये सब रोग जो वास्तविक हैं इनका उपचार चरित्र बल से ही हो सकता है। ★

छोटा नागपुर के ईसाईकरण का प्रतिरोध

[श्री इन्द्रदेव जी रांची]

छोटा नागपुर में हिन्दुओं के बढ़ते हुये धर्मपरिवर्तन एवं मिशनरियों के कार्यकलापों की रोकथाम के लिये शीघ्र ही ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

(अ) इस कार्य के लिये आर्यसमाज में दो वर्ग हों। एक दल तो सरकार से सम्पर्क रखे, दूसरा जनता से।

सरकार से सम्पर्क रखने वाले दल के मुख्य तीन काम होंगे।

(१) मिशनरियों को विदेशों से आने वाली सहायता बन्द कराना।

(२) तमाम मिशनरियों द्वारा संचालित स्कूल, अस्पताल, आश्रम तथा संस्थाओं पर सरकार का नियन्त्रण कराना।

(३) हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कानूनन वैध कराना।

जनता से सम्पर्क रखने वाले दल काम—हिन्दू जनता तथा सरकार से सहयोग लेकर शुद्धि-संगठन तथा विधर्मियों के प्रचार का मुकाबला करना होना चाहिये।

[आ] (१) छोटा नागपुर में स्थायी प्रचार का प्रबन्ध किया जावे जिसके लिये प्रचारक और धन इस क्षेत्र को दिये जावें तथा रांची में प्रचार का मुख्य कार्यालय हो जहां से अन्य क्षेत्रों में प्रचार का संचालन और देखरेख हो।

(२) अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट की जायदादें जो इस क्षेत्र में हैं उनका जीर्णोद्धार तथा देखरेख हो।

(३) गुरी, सिलरली, खूंटी आदि स्थानों में जहां समाज स्थापित हुए हैं वहां भवन निर्माण के लिये अतिशीघ्र धन प्रदान किया जावे ताकि कार्य को स्थायी रूप दिया जा सके।

(४) छोटा नागपुर में ईसाइयों की गतिविधियों की जाच के लिये एक सरकारी जांच कमीशन बैठाया जाय।

(५) हटिया में जो वृहद् कारखाना खुलने जा रहा है उससे रांची का विशेष महत्त्व भविष्य में बढ़ जाने वाला है, अस्तु यहा आर्यसमाज का अपना हाई-स्कूल और कालेज का होना नितान्त आवश्यक है ताकि हमारे बच्चे परमुखापेक्षी न रहें और दाखिला के लिए उन्हें भटकना न पड़े।

स्वास्थ्य-सुधा

मानसिक रोगों में शल्य चिकित्सा

(श्री डा एस. पी. वर्मा, मेडीकल सुपरिंटेंडेंट, मानसिक आरोग्यशाला, कांके रांची)

[सात अप्रैल को समस्त विश्व में विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया गया। इस वर्ष इस दिवस विश्व के मानसिक स्वास्थ्य की दशा पर गम्भीर विचार किया गया। विद्वान् अनुभवी चिकित्सक के रूप में लेखक ने मानसिक व्याधियों में शल्य क्रिया के महत्त्व पर प्रकाश डाला है। —सम्पादक]

यह लगभग पहले की बात है। एक दिन एक व्यक्ति मेरे पास आया और उसने मुझ से यह प्रमाणित करने को कहा कि उसकी पत्नी असाध्य पागल है। वह इस कारण यह प्रमाणित कराना चाहता था जिससे वह दूसरा विवाह कर सके। मैं उसकी पत्नी को जानता था, क्योंकि पिछले पांच वर्ष से वह इस अस्पताल में चिकित्सा करा रही थी। वह नियमित रूप से चिकित्सा के लिए आती थी। वह ३० वर्ष की सुन्दर युवती थी, फिर भी उसमें कोई आकर्षण नहीं था। वह निरन्तर अपने ही सपनों में डूबी रहती और घण्टों चुपचाप बैठी रहती थी। उसका कई डाक्टरों ने इलाज किया था, पर उसे कुछ लाभ नहीं हुआ। जब उस व्यक्ति ने यह देखा कि मैं प्रमाण पत्र देने में संकोच कर रहा हूं, तो उसने मुझसे पूछा कि क्या शल्य क्रिया या आपरेशन से कुछ लाभ हो सकता है। यदि इस आपरेशन से वह मर गई, तो उसे संतोष होता कि उसने अपनी पत्नी के लिए सब कुछ किया और फिर वह दूसरा विवाह भी आसानी से कर सकता था। यदि वह ठीक हो जाती तो फिर उसका जीवन ही पूरी तरह बदल जाता।

उस स्त्री का आपरेशन किया गया और आपरेशन के बाद उसके पति ने उसकी काफी सेवा-सुश्रूषा की। १० दिन बाद स्त्री की दशा सुधरती दिखाई दी और एक महीने में वह बिल्कुल सामान्य हो गयी। तब से पति-पत्नी दोनों का जीवन बड़ा सुखी है।

प्राचीन क्रिया—मानसिक रोगों में शल्य चिकित्सा कोई नयी चीज नहीं, बल्कि ८-१० हजार वर्ष पुरानी है। फ्रांस और यूरोप के कई देशों, उत्तरी अफ्रीका, एशिया, न्यूगिनी, ताहिटी और न्यूजीलैंड में ८-१० हजार वर्ष पुरानी ऐसी खोपड़ियां मिली हैं, जिनमें एक गोल छेद पाया गया है। यह कहना कठिन है कि सिर में छेद करके मानसिक रोग की चिकित्सा विभिन्न भूभागों में अलग-अलग शुरू हुई या किसी एक स्थान से सब तरफ फैली। उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में भी यह विद्या काफी प्रचलित थी और अलास्का के कोडियक द्वीपों और दोनों अमेरिकाओं के पश्चिमी तट के प्राचीन निवासियों में इस क्रिया के काफी प्रमाण मिले हैं। चीन में पहली शताब्दी का एक ऐसा चित्र मिला है, जिसमें एक चिकित्सक एक रोगी की खोपड़ी में तेज चाकू, सुम्न करने वाली दवा, रूई और पट्टियों आदि की सहायता से छेद करता दिखाया गया है।

भारत में भी—भारत में हड़प्पा और मोहिन-जो-दड़ों के उपलब्ध अवशेषों में भी जो ५ हजार वर्ष पुराने माने जाते हैं, छेददार खोपड़ियां मिली हैं। ईसा पूर्व की ५वीं शताब्दी में जीवक नामक एक वैद्य द्वारा राजगिर (बिहार) में कपाल की शल्य क्रिया का वर्णन मिलता है। जीवक बिम्बसार का राजवैद्य था और उसने तक्षशिला में चिकित्सा की शिक्षा पाई थी। उसने यह आपरेशन राजगिर के एक श्रेष्ठी का किया था। श्रेष्ठी को उसने उसके पलंग से कसकर बांध दिया और नश्तर से सिर की खाल और मांस को चीरकर दोनों तरफ को हटाकर दो कीड़े निकाल कर उपस्थित व्यक्तियों को दिखाये। तीन सप्ताह के पूर्ण विश्राम से श्रेष्ठी बिल्कुल ठीक हो गया।

आधुनिक युग में—मध्य युग में रोम में लोगों ने यह देखा कि सिर पर तलवार का ऐसा घाव लगने से जिससे खोपड़ी की हड्डी टूट जाए, पागल अच्छे हो जाते हैं। डाक्टरों ने इस पर परीक्षण किये। १८९० में बर्कहार्ड ने भी दिमाग का आपरेशन किया, किन्तु इसका भी दार्शनिक आधार पर विरोध किया गया और इसका प्रचार न हो सका। मस्तिष्क की शल्य चिकित्सा को पुनर्जीवित करने का श्रेय इगास मौनिज को है। इगास मौनिज ने यह बात प्रस्थापित की कि पागलपन दिमाग में कुछ चेतना संबंधी रेखाओं या मार्गों के बन जाने से होता है। यदि इन रेखाओं या मार्गों को मिटा दिया जाए तो रोगी ठीक हो सकता है। इस विचार से उसने दिमाग के इन तंतुओं को काटना शुरू कर दिया, किन्तु बाद में मौनिज की यह धारणा गलत निकली, किन्तु इससे कुछ अच्छे नतीजे सामने आये और उन्हीं पर आगे अनुसंधान से मस्तिष्क के आपरेशन सफल होने लगे।

चिकित्सा की विधि—अब शल्य क्रिया, मानसिक रोगों की विशेष चिकित्सा बन गयी है। इससे पागल की मनस्थिति पर तीन प्रभाव मुख्य रूप से पड़ते हैं। एक तो मरीज के दिमाग पर बोझ और परेशानी कम हो जाती है और वह अपने रोग के बारे में कम चिन्ता करने लगता है। किसी एक ही बात के बारे में वह अधिक देर तक नहीं सोच सकता। इसकी वजह से उसे गलत धारणाएं और डर अधिक नहीं सताते।

ऐसा ख्याल किया जाता है कि दिमाग के आपरेशन के बाद बुद्धि मंद पड़ जाती है, किन्तु आपरेशन के कारण नहीं, दिमागी रोग होने के कारण ऐसा होने के कारण ऐसा होता है। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अन्य सब इलाज कर चुकने के बाद ही आपरेशन कराना चाहिए। दुनिया भर में इस तरह के अब बहुत-से आपरेशन किये जा चुके हैं और अधिकांश आपरेशन ऐसे व्यक्तियों के ही किये गये, जो पांच वर्ष से भी अधिक पुराने रोगी थे और जिनकी हर प्रकार की चिकित्सा हो चुकी थी। जिनकी शल्य क्रिया की गयी, उनमें अधिकांश को लाभ हुआ है। इनमें से ४० प्रतिशत अस्पतालों से बाहर हैं और उनमें से २० प्रतिशत सामान्य व्यक्तियों की तरह समाज में रह रहे हैं और अपना काम धन्धा कर रहे हैं। बाकी ६० प्रतिशत पागलखानों में हैं, क्योंकि उनके सम्बन्धी उन्हें घर ले जाने को तैयार नहीं। किन्तु पागलखानों में उनका जीवन शांत और संतुष्ट है।

अब मस्तिष्क के आपरेशन की बहुत सी विधियां निकल आई हैं और मानसिक चिकित्सक अब हर रोगी के लिए उसकी स्थिति के अनुकूल अलग आपरेशन निकालने की कोशिश में हैं। इन आपरेशनों की सफलता रोगी की स्थिति उपयुक्त आपरेशन और बाद की देखभाल वास्तव में बहुत जरूरी चीज है। पागलखानों का वातावरण बाद में रोगी के लिए अच्छा नहीं। आपरेशन के १० दिन बाद ही मरीज को घर भेज देना चाहिए। घर में रहकर उसे अधिक लाभ होगा। घर के लोगों को उसके बर्ताव या ऊलजलूल बातों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जहाँ इस तरह का प्रबन्ध हो सका है, वहाँ रोगी को आपरेशन से बहुत लाभ होता देखा गया है। ★

सभा की सूचनाएं

समस्त समाजों को सूचित किया जाता है कि सभा कार्यालय से प्रतिनिधि फार्म फरवरी ५१ में भेजे गये थे। सभा के नियमानुसार फार्म ३१ मार्च ५१ तक भर कर आ जाने चाहियें। लगभग सौ आर्य समाज व उपप्रतिनिधि सभाएं हैं। उनसे केवल १०० समाजों के फार्म प्राप्त हुए हैं। जिस समाज में चित्र न पहुँचे हो, वे सभा कार्यालय से मंगा लें और नियमानुकूल खाना पूर्ति करके फार्मों को भर कर अन्य दशांश, सूदकोटि तथा चार आना फंड के भेजने की कृपा करें।

सभा का वार्षिक बृहदधिवेशन १६ व १७ मई ५१ को हाथरस में होना निश्चित हुआ है। हाथरस आर्यसमाज के कार्यकर्ता आर्य प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की सुचारुरूप से प्रबन्ध व्यवस्था करने में जुट गये हैं।

सभा के अधिवेशन के साथ-साथ उत्तरप्रदेशीय आर्य सम्मेलन एवं अस्पृश्यता निवारक सम्मेलन करने का आयोजन किया जा रहा है। समाजों से प्रार्थना है कि अपने-अपने प्रतिनिधि महानुभावों को अधिक से अधिक संख्या में भेजने की प्रेरणा करें।

—फूलनसिंह

सिक्ख भाई आर्यसमाज की सेवा में

श्री गोविन्दसिंह जी, जो कि हल्द्वानी सिक्ख गुरुद्वारे में बारह वर्षों से सेवादार का कार्य कर रहे थे। एक दिन अचानक घर में आग लग जाने के कारण, अपने सिक्ख भाईयों से सहायता की याचना की परन्तु किसी ने भी उनकी इस प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। तब उन्होंने अपनी करुण गाथा, आर्यसमाज के उप प्रधान श्री शंकरलाल जी के सामने रखी, जिससे दयार्द्र होकर श्री शंकरलाल जी व अन्य आर्य भाइयों ने उनकी सहायता की। आर्यसमाज से भी सहायता दी गई।

अब गोविन्द सिंह जी आर्यसमाज के सदस्य बन गये हैं। समाज के इस कार्य की नगर में सर्वत्र चर्चा एवं प्रशंसा है।

अधिष्ठाता चाहिये

बालक बालिकाओं की देखभाल, शिक्षा, आदि के लिए एक विद्वान् अनुभवी सहायक अधिष्ठाता व एक अधिष्ठात्री की आवश्यकता है। प्रधान आर्य अनाथालय, पाटौदी हाउस दरियागंज दिल्ली।

निर्वाचन—

—आर्यसमाज गोवर्धन [मथुरा] प्रधान श्री बलजीतसिंह और मन्त्री श्री चोखसिंह जी।

—रुड़की आर्यसमाज के प्रधान श्री कृपाशंकर जी तथा मन्त्री काशीनाथ जी चुने गये।

—सिंगापुर आर्यसमाज के प्रधान श्री दुर्गादास जी एवं मन्त्री श्रीधर जी निर्वाचित हुए।

—देवचर [बरेली] आर्यसमाज के प्रधान श्री भूपराम जी तथा मन्त्री रामस्वरूप जी चुने गये।

—बरबीघा [मुंगेर] आर्यसमाज के प्रधान श्री विष्णुराम जी एवं मंत्री रामधनीराम जी निर्वाचित हुए।

—अनूपशहर आर्यसमाज के प्रधान श्री छज्जामल जी तथा मंत्री सत्यप्रकाश जी चुने गये।

—भिनगा [बहराइच] आर्यसमाज के प्रधान श्री रामदयालु जी एवं मन्त्री श्यामसुन्दर जी निर्वाचित हुए।

—बस्ती आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचरित्र जी एवं मन्त्री रामदास जी निर्वाचित हुए।

—पीलीभीत जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामबहादुर जी तथा मंत्री प्रेमचन्द जी चुने गये।

—सिरखिण्डी [बिहार] आर्यसमाज के प्रधान श्री बनारसी प्रसाद एवं श्री बनारसी प्रसाद जी एवं महादेव जी निर्वाचित हुए।

उत्सव-समाचार—

—जगदीशपुर आर्यसमाज का उत्सव २४ से २६ अप्रैल तक मनाया जायगा।

—कानपुर रेल बाजार आर्यसमाज का उत्सव दि० ८ से १० मई ८१ तक मनाना निश्चित हुआ है।

—तिलहर [शाहजहाँपुर] आर्यसमाज का उत्सव दि० २१ से २४ मई ८१ तक मनाया जायगा।

—गुरुकुल विद्यालय काउरचण्डी [कोला घाट मेदिनीपुर का वार्षिकोत्सव २७ से २९ मार्च तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर अखिल बंग-आसाम आर्य महासम्मेलन भी श्री मेहरचन्द धीमान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। वंग आसाम प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन भी हुआ।

—गंजडुंडवारा आर्यसमाज का उत्सव ३०-३१ मार्च तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

—बम्बई आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव ९ से १२ अप्रैल ८१ तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

—औरैया आर्यसमाज का उत्सव दि० २८ से ३१ मार्च ८१ तक मनाया गया।

—पहासू [बुलन्दशहर] आर्यसमाज का उत्सव १२ से १७ मार्च ८१ तक सम्पन्न हुआ।

—गुरुकुल अयोध्या नगर [मेहियाँ] तथा आर्यसमाज छपरा का उत्सव दि० ८-१२ अप्रैल ८१ तक समारोहपूर्वक सुसम्पन्न हुआ।

प्रचार-समाचार—

—बस्ती आर्यसमाज ने, समाज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में जिले के अनेक स्थानों में दि० २० फरवरी से ३१ मार्च तक प्रचार कार्य का आयोजन किया। प्रचार की दृष्टि से समाज की योजना सफल रही। शेष स्थानों में मई मास में सफलता के साथ प्रचार कार्य की योजना बनाई गई है।

—सभा के उपदेशक श्री विद्याभूषण उमेशचन्द्र जी स्नातक ने खुर्जा, शिकारपुर गढ़मुक्तेश्वर, बुलन्दशहर, सिकंदराबाद, गुलावठी एवं गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रचार कार्य किया।

—हापुड़ आर्यसमाज में, दि० ३-४-८१ को माता जगधात्री देवी जी ने प्रचार किया, माता जी के भाषण से महिलाओं में नवचेतना का संचार हुआ। माता जी का अगला पुरोगम, मुजफ्फरनगर, हरद्वार एवं सहारनपुर आदि जिलों में प्रचार कार्य करने का है।

—बठिया आर्यसमाज के नवीन भवन निर्माण के हेतु, श्री चिरंजीवलाल प्रस्थी प्रधान आर्यसमाज ने अपनी स्वर्गीया माता एवं पितृव्या की पुण्य स्मृति में २०००) दान दिये। समाज उनके इस अनुकरणीय दान के लिए सदैव आभारी रहेगा।

—समेरा (चम्पारन) में श्री यमुना लाल जी ने दि० २४-३-८१ को प्रचार किया। फलत. एक नवीन समाज की स्थापना का पावन कार्य सुसम्पन्न हुआ। इस क्षेत्र में श्री यमुनालाल जी का प्रचार कार्य स्तुत्य है।

—कायमगंज आर्यसमाज में श्रीमती माता प्रभावती देवी जी ने १-४-८१ को प्रचार किया। माता जी के व्याख्यान से श्रोतागण अत्यधिक प्रभावित हुए। श्री यशपाल जी ब्रह्मचारी के भी अहिंसा ओजस्वी भाषण हुए।

—हुरला आर्यसमाज में दि० १-४-८१ को माता जगधात्री देवी जी ने प्रचार किया।

—गोरखपुर (जबलपुर) आर्यसमाज तत्वावधान में चल रहे यजुर्वेद-पारायण यज्ञ ७-३-८१ को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

—दौराई (मेरठ) में ईसाई बड़े जोर शोर से अपना अनैतिक प्रचार कर रहे हैं। निर्धन जनता धन के लोभ में इनके धर्म में सम्मिलित होती जा रही है। इसकी सूचना अनेक बार सम्बन्धित सरकारी विभागों में की गई। परन्तु सरकारी कर्मचारियों की इस ओर उपेक्षा ही नजर आ रही है। आशा है अपनी सरकार समय रहते इस ओर ध्यान देगी।

संस्कार—

—नौनेर जिला मैनपुरी में एक विधवा ब्राह्मणी का विवाह संस्कार दि० २७-३-८१ को, श्री आत्मस्वरूप मिश्र जी के साथ सम्पन्न हुआ।

—लखीमपुर आर्यसमाज ने दि० १९-३-८१ को एक महिला (जयदेवी) जो कि विधर्मी बन चुकी थी, का शुद्धि संस्कार कर, एक पुलिसमैन नवयुवक के साथ सहर्ष विवाह संस्कार करा दिया। कार्य प्रभावोत्पादक रहा।

—सिन्दरी (मानभूमि) आर्यसमाज के तत्वावधान में श्री देशराज जी के पुत्र का नामकरण संस्कार श्री ब्र० अखिलानन्द जी ने सम्पन्न कराया।

—नैनीताल निवासी श्री श्याम सुन्दर जी की पुत्री कुमारी किरण शास्त्री, स्नातिका कन्या गुरुकुल हाथरस का अन्तर्जातीय पाणिग्रहण संस्कार दि० १ मार्च १९८१ को श्री सहदेव प्रसाद द्विवेदी के साथ सम्पन्न हुआ।

शोक—

—पंचकुएं रोड देहली महावल आर्यसमाज के सदस्यों ने श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री के आकस्मिक निधन पर दु:ख प्रकट किया।

सूचना

चम्पारण जिला आर्यसमाज की कार्यसमिति की बैठक, मोतीहारी आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर १९ अप्रैल २ बजे दिन में होगी। कार्य समिति के सदस्यों की उपस्थिति अपेक्षित है। बैठक में जिले की समाजों की समस्याओं पर विचार होगा।

अपूर्व शक्ति प्रदर्शन

बलरामपुर-गैसीगंज आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव १७ से १८ मार्च को सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर स्व० राममूर्ति जी के प्रधान शिष्य प्रो० सुरेन्द्र कुमार आधुनिक अर्जुन शक्ति निवास सीतापुर के आश्चर्यजनक धनुर्विद्या राइफल शूटिंग तथा व्यायाम सम्बन्धी कार्यों का विराट प्रदर्शन हुआ, जिसमें पूरी ताकत से चलाई गई जीप कार को रोककर, हाथी बाँधने की जंजीर तोड़ना, भारी पत्थर को छाती पर रखकर तुड़वाना, आवाज पर गोली का निशाना मारना तथा शब्द भेदी बाण मारना आदि अनेकों प्रकार के सफल प्रदर्शन किये जिससे जनता के हृदय पर आर्यसमाज की गुरुकुल शिक्षा तथा भारतीय व्यायाम के प्रति अटूट श्रद्धा पैदा हुई। उत्सव में पं० विहारीलाल जी काव्यतीर्थ के भी प्रभावशाली भाषणों का भी अच्छा असर पड़ा यहाँ आर्यसमाज का यह प्रथम उत्सव था जो हर प्रकार से सफल रहा।

वार्षिकोत्सव आ०स०भरवारा

का उत्सव

आर्यसमाज भरवारी जि० प्रयाग का वार्षिकोत्सव १८, १९, २० मार्च को बड़ी धूम-धाम से हुआ। माता प्रियम्वदादेवी लखनऊ, श्रीरुद्रदत्त शास्त्री महोपदेशक, श्री बृजमित्र स्नातक, श्री ज्ञानेश्वरानन्द दिल्ली से पधारे थे। इस अवसर पर मुण्डन संस्कार, नामसंस्कार श्री द्वारकाप्रसाद आर्य के घर में सम्पन्न हुये। विशेष उल्लेखनीय कुमारी स्वराज्य, निरुपमा, प्रम्लवती, शुभा, वेदकनि का यज्ञोपवीत संस्कार था जिसमें माता प्रियम्वदादेवी जी ने पुरोहित के आसन को ग्रहण किया।

—मन्त्री

अन्तरङ्ग सदस्य और साप्ताहिक सत्संग

आर्यसमाज बादशाहनगर लखनऊ ने साप्ताहिक अधिवेशन में उपस्थिति अधिक बढ़ाने के लिये अपनी वार्षिक साधारण बैठक दिनांक २२-२-८१ को यह निश्चय किया कि जो अन्तरङ्ग निरन्तर तीन साप्ताहिक अधिवेशनों में बिना कारण अनुपस्थित रहेंगे, अन्तरङ्ग सभा उनके बारे में विचार करके उनके स्थान पर आर्य समासदों में से दूसरे व्यक्तियों को निर्वाचित कर सकेगी। अन्तरङ्ग सदस्यों में इस प्रस्ताव से अधिक जागृति तथा सावधानी देखने में आई।

रामेश्वरसहाय आर्यसमाज बादशाहनगर लखनऊ

गत १५ मार्च से १८ मार्च तक गढ़वा आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती एवं छोटा नागपुर आर्य सम्मेलन बड़े धूम-धाम से मनाये गये। सार्वदेशिक सभा देहली के महामन्त्री श्री लाला रामगोपाल जी, प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान माननीय डा० दुखनराम जी, मन्त्री पं० रामनारायण जी शास्त्री आचार्य पं० रामानन्द जी शास्त्री आदि विद्वानों के बड़े ही ओजस्वी एवं सामयिक प्रवचन हुए।

श्री रामनारायण शास्त्री ने धर्म राष्ट्र समाजवाद, संस्कृति और सभ्यता की व्याख्या की। श्री ओमप्रकाश त्यागी जी ने संस्कृति के नाम पर होने वाले अनैतिक प्रदर्शनों की निन्दा की तथा विदेशों द्वारा भारत में चलाये जा रहे षडयन्त्रों की चर्चा करते हुए उनके विरुद्ध एक ठोस कदम उठाने को आह्वान किया।

श्री रामगोपाल जी ने आर्यसमाज को सहयोग देने की अपील की। ईसाई पादरियों द्वारा किये जा रहे अत्याचार तथा षडयन्त्रों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि आर्यसमाज ने इसके विरोध में आवाज बुलन्द करने का बीड़ा उठाया है। यदि देश ने साथ दिया तो आर्यसमाज गोरे पादरियों के अत्याचार तथा षडयन्त्रों से देश की रक्षा करेगा। इन्हें आर्यसमाज गढ़वा की ओर से ३५१) रु० की भेंट की गई जिसे इन्होंने बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय डा० दुखनराम जी को देते हुये कहा कि इस थैली को बिहार में ही खर्च किया जायगा। माननीय डाक्टर साहब ने दो सौ रुपया अपने तरफ से मिलाकर ५५१) रुपया सभा को प्रदान किया।

आचार्य पं० रामनन्द शास्त्री ने आर्यसमाज की सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन-समूह से आर्य समाज को छोटा नागपुर प्रचार के लिए आर्थिक सहायता देने के लिए अपील की जिसमें १४५६॥।)। नगद प्राप्त हुए। जनता का सहयोग एवं उपस्थिति सराहनीय थी।

डा० राम ने अपने भाषण में अपने विद्यार्थी जीवन के अनुकरणीय घटनाओं को बताते हुए विद्यार्थियों को आचारवान बनने पर अधिक बल दिया।

इस अवसर पर आचार्य पं० रामानन्द जी शास्त्री ने रूस भारत भाई-भाई चीन भारत भाई-भाई के साथ गुजरात महाराष्ट्र भाई-भाई की नारा पर जोर देते हुए सारे भारत को एकता के एक सूत्र में बंधे रहने की आवश्यकता पर [illegible]।

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन

गढ़वा (पलामू) में छोटा नागपुर आर्य सम्मेलन

महामन्त्री श्री रामगोपाल जी, महासेनापति श्री ओमप्रकाश जी त्यागी एवं डा० दुखनराम जी प्रधान बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा को अभिनन्दन पत्र अर्पित किये गये।

सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार किये गये

१—छोटा नागपुर के आर्यों का यह सम्मेलन बिहार सरकार से अनुरोध करता है कि बिहार राज्य के विभिन्न अंचलों तथा विशेषतः छोटानागपुर प्रमण्डल में विदेशी ईसाइयों द्वारा सामुहिक धर्म परिवर्तन तथा अराष्ट्रीय तत्त्वों की जांच के लिए एक आयोग स्थापित करे तथा उनके अवैध कार्यों पर रोक लगावे अन्यथा भारत राष्ट्र के बहुत बड़ा अहित होने की संभावना है।

२—विदेशी मिशनरी भारत में सेवा व धर्म की आड़ में हमारी सरकार के विरुद्ध विदेशी सहायता पर राजनैतिक षडयन्त्र चला रहे हैं। अतः यह सम्मेलन अपनी सरकार से अनुरोध करता है कि वह भारत में विदेशी पादरियों के आने पर प्रतिबन्ध लगावे और भारत में पधारे विदेशी पादरियों को तुरन्त देश से बाहर निकाल दें, अन्यथा इनकी उपस्थिति से देश को सांस्कृतिक ढांचे को भयंकर खतरा है।

३—छोटा नागपर का यह आर्य सम्मेलन अपनी बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध करता है कि वह आर्य शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना करे कि वह छोटा नागपुर क्षेत्र को धार्मिक दृष्टि से संकटापन्न समझ कर यहाँ विशेष प्रचार की व्यवस्था करे।

४—छोटा नागपुर के आर्यों का यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि ईसाइयों को विदेश से जो बड़ी रकम धर्म प्रचारार्थ आता है सरकार उन रुपयों के हिसाब की जाँच करे क्योंकि सम्मेलन को यह विश्वास है कि उपरोक्त रकम अराष्ट्रिय तत्त्वों को बढ़ावा देने के लिए व्यय होता है। अतः सरकार इसकी जाँच कर इस पर नियंत्रण करे।

५—छोटा नागपुर में अवैध ईसाई प्रचार को देखकर छोटा नागपुर का यह आर्य सम्मेलन इसकी रोकथाम के लिए आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार की आवश्यकता को अनुभव करता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छोटा नागपुर की समस्त आर्यसमाजों का संगठित होना परम आवश्यक है। इस छोटा नागपुर आर्य सभा का मुख्य कार्यालय रांची में हो और प्रत्येक जिले में इसकी शाखा सभाओं की स्थापना की जाए।

—गोपाल प्रसाद गुप्त
मन्त्री, आर्यसमाज, गढ़वा (पलामू)

अङ्ग्रेजी दुल्हन

सज धज कर अंग्रेजी दुल्हन, भारत में जब वह आई थी।
सास् नन्दी देवरानी ने, मिल बेहद खुशी मनाई थी॥
सबने अपना अधिकार छोड़, मेडम को सब कुछ सौंप दिया।
याने अपने निज हाथों से, खुद छुरा पेट में घोंप लिया॥
भारत की सारी भाषायें, इस रूप की रानी से हारी।
धीरे-धीरे घर में घुस कर, बन बैठी सबकी महारानी॥
पन्द्रह वर्ष की लम्बी अवधि भी, इसे निकाल नहीं सकती।
क्योंकि सब सन्त-महंत यहाँ, करते हैं अब इसकी भक्ती॥
संस्कृत है खूसट बेहूदी, हिन्दी गन्दी कहलाती है।
हर क्षेत्रिय तितली इनसे बढ़कर, अपने को श्रेष्ठ बतलाती है॥
पर अङ्ग्रेजी का चरनामृत, पाकर ये सारी ललनायें।
कहती है धन्य महारानी-हम बलहारी तुझ पर जायें॥
दोहा —आज गवर्नर और मिनिस्टर हैं इस पर मुग्ध।
पीते हैं प्रसन्न हो, इस कामधेनु का दुग्ध॥

—अर्जुनलाल आचार्य रिटायर्ड गार्ड (नीमच)

[पृष्ठ ७ का शेष]

ध्यान रखो—

भगवान् ग्वालिया की भाँति डंडे से मनुष्य की रक्षा नहीं करते हैं। जिसकी रक्षा करनी होती है उसको सुबुद्धि दे देते हैं। जिसका नाश करना होता है उसकी बुद्धि हर लेते हैं। विदुर जी ने यही बात कही है—

न देवा दण्डमादाय।
रक्षन्ति पशुपालवत्॥
यं रक्षितुमिच्छन्ति।
बुद्ध्या संविभजन्ति तम्॥
न देवा दण्डमादाय।
रक्षन्ति पशुपालवत्॥
यं नाशयितुमिच्छन्ति।
बुद्धिं तस्यापकर्षन्ति॥
इत्यादि।

प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का सार्थक जप किया करो जिससे बुद्धि शुद्ध बनी रहे यदि भूल से कोई ऐसा कर्म हो गया है जिससे बुद्धि अशुद्ध हो रही है तो उसका प्रायश्चित करो। और अभी मन में प्रतिज्ञा करो कि जिन कर्मों से पतन होता है उन कर्मों को नहीं करेंगे।

थोड़े से समय में मैंने मुख्य-मुख्य बातों को कहा है आशा है अब आप लोग महाविद्यालय से बाहर जाकर ऐसे बरतेंगे, ऐसे रहेंगे जिससे तुम्हारे और तुम्हारे इस कुल का यश बढ़े और फैले। आप लोग आयुष्मान, विद्यावान्, बलवान्, वर्चस्वी, तेजस्वी, यशस्वी बनें—यही मेरी प्रार्थना।

पुरस्कार के लिए

आगामी वर्ष सन् १९६० से डी० ए० वी० कालज प्रबन्धकारिणी सभा ने अपने विद्यालयों के लिए नवीन पाठ्य-क्रम के अनुसार धर्म शिक्षा का पुस्तकें प्रकाशन करने का निश्चय किया है। जो भी लेखक महोदय इस प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें भेजना चाहें, वे पाण्डु लिपि की ३ प्रतियाँ ३१ ७ ५९ तक भेज सकते हैं। सभा द्वारा स्वीकृत पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार प्रदान किया जावेगा। प्रतियोगिता सम्बन्धी नियम तथा पाठ्य-क्रम, प्रिं० सूर्यभानु, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर से प्राप्त करें।

कृषि विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी
नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं सम्बन्धित विषयों में दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यून-तम योग्यता—हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण आयु १६ से २१ वर्ष तक। प्रार्थना पत्र के फार्म तथा नियमावली के लिये एक रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रिन्सिपल, कृषि विद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आ.स. बलिया का उत्सव

आर्यसमाज बलिया का वार्षिकोत्सव दि० १८ से २१ अप्रैल सन् १९५९ ई० को होगा। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य विश्व-श्रवा जी, श्री विद्यानन्द जी, श्री प्रकाश-वीर जी, कुंवर यशपाल तथा श्री सत्य-मित्र शास्त्री पधार रहे हैं। स्वामी प्रणवानन्द जी भी आ रहे हैं।

मेरी 'मनुस्मृति'

(पृष्ठ २ का शेष)

आपोनारा इति प्रोक्ता
आपो वै नर सूनव ।
ता यदस्यायनं पूर्वं
तेन नारायण स्मृत ॥

हमने इसको क्षेपक मानकर छोड़ दिया है। ऋषि केवल यह दिखाना चाहते थे कि 'नारायण' शब्द जो आजकल पौराणिक लोगो में देवता विशेष के लिए आता है पुराने ग्रन्थों मे भी ईश्वर का ही नाम है। और इस श्लोक में इसकी व्युत्पत्ति भी दी हुई है। 'नारायण' शब्द वेदों में नहीं आया पीछे से बन गया है। परन्तु जब पहले पहल प्रयुक्त हुआ होगा तब भी पौराणिक देवता का सूचक नहीं था। ऋषि को पहले समुल्लास में केवल यही दिखाना था कि पौराणिक लोग जिन शब्दो को देवताओं के नाम समझते हैं वे मूलत ईश्वर-परक ही हैं। किसी विपक्षी के ग्रन्थो में अपने मत को पुष्ट करने वाले स्थल बता देना अपने मत को अधिक पुष्ट करता है परन्तु विपक्षी के उस समस्त स्थल को प्रामाण्य नहीं ठहराता। इस मूल बात को याद रखने की आवश्यकता है। समस्त प्रकरण को पढ़ जाइये। प्रथम तो मनु का यह प्रकरण शब्दो की व्युत्पत्तियों के लिये नहीं था। अत स्पष्ट है कि पीछे से मिलाया गया होगा। फिर हम यह भी नहीं कर सकते कि आगे पीछे के और श्लोकों को क्षेपक मान लें और केवल यही श्लोक रहने दें। क्योंकि पूर्वा पर सम्बन्ध आवश्यक है। इन सब श्लोको में बीसयों ऊट-पटाग बातें लिखी हैं। यदि कीचड़ में एक दो चांदी के टुकड़े मिल जावें तो समस्त कीचड़ को चांदी नहीं माना जा सकता। और न उन टुकड़ो का कीचड़ के प्रसंग में कोई स्थान है। इन्हीं श्लोकों में एक श्लोक और है। मनु १-२३ जिसको ७ वें समुल्लास में उद्धृत किया है।

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रय ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजु सामलक्षणम् ॥

यहां भी स्वामी जी का इतना ही अभीष्ट था कि पौराणिकों ने जो ब्रह्मा (चतुरानन) द्वारा वेद का प्रकाश बताया है वह बात उस समय भी प्रचलित न थी जब मनुस्मृति ने वर्तमान रूप धारण किया होगा। मनु के मुख्य प्रकरण में इसकी संगति नहीं लगती। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा है। क्षेपक के लिये यह आवश्यक नहीं कि क्षेपक सिद्धान्त विरुद्ध ही हो। सिद्धान्तानुकूल भी क्षेपक हो सकता है यदि प्रकरण में उसकी संगत न हो सके। गर्भ के कपड़े में मखमल का पैबन्द पैबन्द ही है और मखमल के कपड़े में गर्भ का भी। पैबन्द छिपते नहीं, स्वामी जी ने दूसरे समुल्लास में मनु ५ ६५ को उद्धृत किया है —

"गुरो प्रेतस्य दश रात्रेण शुद्ध्यति"

यह केवल यह दिखाने के लिये है कि 'प्रेत' का वह अर्थ नहीं जो आजकल माना जाता है अर्थात् प्रेतयोनि"। 'प्रेत' का अर्थ है मरा हुआ। इसमे दस रातों में शुद्ध होने का वर्णन है। स्वामी जी महाराज इसको नहीं मानते क्योंकि आजकल इसका सम्बन्ध पिण्डदान और मृतक-श्राद्ध से हो गया है। परन्तु यदि पिण्डदान को हटा दिया जाय तो केवल यह रस्मोरिवाज का प्रश्न रह जाता है कि कौन कितने दिनो शोक मनावे। देशकाल के अनुसार यह विधान भिन्न भी हो सकते हैं। क्योंकि यह सामाजिक नियम हैं। मनुष्यकृत हैं। इनमें किसी दार्शनिक सिद्धान्त का खण्डन भी नहीं होता।

स्वामी जी महाराज ने ९ वें समुल्लास मे आवागमन के प्रकरण में मनु के १२वें अध्याय के कुछ श्लोक उद्धृत किये है। इन श्लोको को दो श्रेणियां है। एक में तो मौलिक नियम का प्रतिपादन है अर्थात् मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसी योनि को प्राप्त होता है। यही केवल वैदिक सिद्धान्त है। परन्तु मनु मे जो योनियां नाम लेकर गिनाए गई हैं उन के ऊपर सरसरी निगाह डालने से भी ज्ञात हो जाता है कि किसी लेखक ने अटकल से जिस कर्म का जिस योनि से गौण सम्बन्ध भी दीख पड़ा उससे तुक मिला दी गई। क्योंकि मनुष्य के कर्मों की कोटियां इतनी जटिल हैं कि यह कहना कठिन है कि अमुक कर्म से अमुक योनि मिलती ही है। यह व्यवस्था तो ईश्वर ही जानता है। तमोगुण, रजोगुण सतोगुण के जघन्य, मध्यम और उत्तम भेद करके ९ प्रकार के कर्म और ९ प्रकार की योनियों का जो विवरण अध्याय १२ के ४० से ५२ श्लोको तक दिया है वह केवल अटकल पच्चू है। किसी सिद्धान्त का अनुकरण नहीं किया गया। मल्ला-मल्ला नटा यह कोई विशेष योनियां नहीं हैं। यह ऐसा ही है जैसे कोई कहे कि अमुक काम करने वाले कायस्थ होते हैं। अमुक काम करने वाले अहीर, अमुक जाट, अमुक अग्रवाल और अमुक गौड़ ब्राह्मण। पुरोहितों को मध्यमराजसी गति में रखने का एकमात्र कारण यह प्रतीत होता है कि लेखक का ध्यान आधुनिक राजाओं के खुशामदी पुरोहितो की ओर गया होगा। गन्धर्व गुह्यक, यक्ष, विबुध, अप्सरायें आदि सब पौराणिक मनोवृत्ति को प्रकट करते हैं। स्वामी जी महाराज ने इन श्लोकों का उद्धरण केवल एक बात की पुष्टि में किया है अर्थात पुनर्जीवन रूपान्तर होता है। स्वामी जी को यह अभिप्रेत नहीं है कि अमुक कर्म का अमुक जाति से जो प्राय पौराणिक है सम्बन्ध स्थापित किया जाय। और न स्वामी जी उनके उत्तरदाता हैं। यदि मनुस्मृति को शुद्ध वैदिक धर्म के अनुकूल माना जाय तो यह श्लोक क्षेपक ही माना है। और कोई उपाय ही नहीं था। जो छन्ना लगायेगा उसे कूड़ा दूर करना पड़ेगा। परन्तु जो छानने नहीं बैठता उसका ध्यान इतना कूड़े को ओर नहीं जाता जितना अपने प्रकरण के ऊपर जाता है। अत स्वामी जी महाराज उन गौण बातो के लिये उत्तरदाता नहीं हैं जो उद्धृत प्रमाणों मे अन्यथा आ गये हैं। यह बात केवल मनुस्मृति के उद्धरणों पर ही लागू नहीं होती। यह विषय तो सर्वव्यापक है। बहुत सी ऐसी बातें हैं जैसे ११ वें समुल्लास में राजों की वंशावलि तथा शासनकाल की इयत्ता। सम्भव है वह सब ठीक हो, सम्भव है गलत हो। मौलिक बात ठीक है कि राजे हुये। परन्तु वर्ष, दिन मास आदि की इयत्ता पर स्वामी जी महाराज ने स्वयं कोई अनुसन्धान नहीं किया। केवल एक पत्रका का हवाला दे दिया है।

स्वामी जी महाराज जानते होंगे कि प्राय पाठकगण मूल और गौण में भेद न कर सकेंगे। इसीलिये उन्होंने स्वमन्तव्य अमन्तव्य अलग दे दिया। वही आर्यसमाज का माननीय सिद्धान्त है। और वही कसौटी है जिस पर ग्रन्थ वचन कसे जा सकते हैं। और कसे जाने चाहिये जहां विरोध प्रतीत हो वहां स्वमन्तव्य अमन्तव्य ही माननीय होंगे।

आर्यसमाज को ब्राह्मण ग्रन्थ गृह्य सूत्र आदि सभी ग्रंथो का संशोधन करना चाहिये था जिससे पौराणिककाल का कूड़ा करकट अलग हो जाता और हम कालान्तर में कह सकते कि हमको केवल इतना मान्य है। आर्य समाज के विद्वानो ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसका यह परिणाम हो रहा है हम शने शने बहुत सी बातो मे पौराणिक होते जा रहे हैं। जो साहस प्रारम्भिक काल मे सुगम होता है वह पीछे से नहीं रहता। यदि आर्यसमाज के विद्वानो ने इस ओर ध्यान न दिया तो आर्यसमाज की सैद्धान्तिक रूपरेखा अवश्य ही आपत्तिपूर्ण होगी।

★

हीरक जयन्ती महोत्सव आर्यसमाज शाहपुरा

(दि० २८ २९ ३० व ३१ मई ६९ ई०)

उद्घाटन —माननीय श्री जगजीवनराम जी रेलवे मन्त्री,
भारत सरकार के कर कमलो द्वारा।

इस शुभावसर पर आर्य जनता के प्रसिद्ध विद्वान्, सन्यासी, स्वामी आनन्द सरस्वती, प्रधान प्रादेशिक सभा पजाब, स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती प्रधान हिन्दी रक्षा समिति पजाब, प० प्रकाशवीर जी शास्त्री ससद सदस्य देहली, कु० जोरावरसिंह जी, प्रभावती देवी जी दबोहा, प० पन्नालाल जी पीयूष संगीत रत्न अजमेर, श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री, प० चन्द्रसेन जी आर्योपदेशक, राजपाल जी मदन जी चिमना देहली प्रादेशिक सभा पजाब एव स्वामी श्री शङ्करानन्द जी सरस्वती मथुरा आदि अनेकानेक विद्वान् एव भजनोपदेशक पधार रहे है।

(१) इस अवसर पर वेदपारायण महायज्ञ का आयोजन भी रखा गया है। जो एक सप्ताह तक चलेगा।

"यह शाहपुरा वह स्थल है जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती करीब ३ महीने विराजकर कृण्वन्तो 'विश्वमार्यम्' की उद्देश्य पूर्ति के लिये राजाओं व महाराजाओ को आर्य बनाना परम आवश्यक समझकर राजाधिराज श्रीमान नाहरसिंह जी बहादुर के० सी० आई० ई० को वेद प्रतिपादित राजधर्म में प्रवेश कराया। उन्हीं के आदेशानुसार वैदिक धर्म प्रचार हेतु आर्यसमाज की स्थापना कर प्रारंभिक शालाओ से लेकर उच्चशाला तक क्रमश वैदिक शिक्षा को अनिवार्य रूप प्रदान किया एव राजकीय शालाओ मे शिक्षा को नि शुल्क घोषित कर महर्षि के उद्देश्यों की पूर्ति की।

आगमन के साधन —मुख्य स्टेशन भीलवाड़ा है। यहाँ से सीधी कई बसें शाहपुरा रोजाना आती है। जयपुर, विजयनगर, आदि स्थानो से भी बसें शाहपुरा चलती है।

दर्शनाभिलाषी

राजाधिराज सुदर्शनदेव सा० प्रधान, रामस्वरूप बेजी समाज मन्त्री,
कस्तूरचन्द तोरनीवाल सा० मन्त्री

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण नं ए. ६०

२२ चैत्र शक १८८१
(१२ अप्रैल १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

जीवन-ज्योति

स्व० ठा० जंगबहादुरसिंह

फीजी आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान का दुखद अवसान

फीजी आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान ठा० जंगबहादुरसिंह जी का ता० २६-१-५९ को फीजी में ही देहावसान हो गया। जिससे सारा फीजी द्वीप समूह शोक-संतप्त हो उठा। समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता होने के नाते आपके अभाव में समाज का क्षति-ग्रस्त होना स्वाभाविक ही है। आकस्मिक निधन की प्रथम सूचना विश्वास का कारण न बन सकी, परन्तु अन्य अनुमोदन प्राप्त समाचारों से हृदय में एक मर्मान्तक वेदना अनुभव करते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोक-सन्तप्त पारिवारिकजनों एवं फीजी के आर्यबन्धुओं के शोक जन्य वेदना के सम-वहन के निमित्त प्रभु से प्रार्थना की।

ठाकुर जंगबहादुरसिंह जी को अभी थोड़े ही दिनों पूर्व कोमन वेल्थ की महारानी एलिजा वेल्थ ने उनकी सार्वजनिक सेवाओ को लक्ष्य में रखकर "जस्टिस ऑफ पीस' की उपाधि प्रदान की थी। वे फीजी स्थिति भारतीयों में एक स्थिति सम्पन्न कृषक थे। भारतीय शौर्य-वीर्य के प्रतीक लम्बी मूछ से मंडित उनका मुख, सदैव खिलता हुआ चेहरा, सुडौल एव सुदृढ़ शरीर अतीव प्रभावशाली था। समाज पर बड़ा कठिन से कठिन मुसीबत में भी धैर्य न खोना आपके विचारशील जीवन का प्रतीक था। स्वय को विपत्ति में डालकर भी आपने फीजी में आर्यसमाज को सुदृढ़ बनाने में अपना अमूल्य योग दान दिया। 'वा म स्थित आर्यसमाज को शिक्षा-सस्थाएँ आज भी आपके श्रम शील जीवन पर प्रकाश डाल रही हैं। श्री परमानन्दसिंह जी, हरिशङ्करसिंह जी, बी० आर० प्रताप जी, रामचरण सिंह जी, जसवन्तसिंह जी तथा श्री जयराम जी आदि फीजी के आर्यबन्धु ठाकुर साहब के वियोग को आर्यसमाज के लिए एक आपत्ति समझ रहे हैं, क्यों कि वह सभी ठाकुर साहब के सेवा रूपी शरीर में हाथ पैर का काम करते थे।

ठाकुर साहब ने अपने पीछे एक बड़ा परिवार छोड़ा है। आपके पुत्र शीतलसिंह जी तथा शङ्करसिंह जी होनहार नवयुवक हैं। आशा है आप अपने पिता श्री की गौरववृद्धि में अपने सुन्दर क्रियात्मक जीवन से सहयोग देते रहेंगे।

महारानी एलिजाबेथ के राज्यारोहण से वापिस लौटते हुए आप फीजी के भारतीयों के हृदय सम्राट श्री प० जे० पी० महाराज के साथ जब भारत पधारे थे, तब वे भारत के राष्ट्रपति, सार्वदेशिक सभा तथा बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के नेताओ आदि सभी व्यक्तियों से मिले थे। और उनको विश्वास दिलाया था कि फीजी के भारतीय स्वतन्त्र भारत की प्रगति पर, और फीजी के आर्यसमाजी, इण्टर नेशनल आर्य प्रतिनिधि सभा तथा विशेष कर बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा की उन्नति पर सदैव गौरव अनुभव करते हैं।

उन्होंने पिछली भारतयात्रा के समय वचन दिया था कि फीजी में दयानन्द डिग्री कालज के बन जाने के बाद, हम भारत से सहायता देंगे, जो प्रगतिशील भारतीयों को हम फीजी के आर्यसमाजियो की सदैव याद दिलाता रहेगा। आशा है उनके सुयोग्य पुत्र और परिवार के लोग उनकी इस अमर-भावना को मूर्त्तस्वरूप देने में पीछे नहीं हटेंगे।

फीजी के किसान नेता श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी तथा आर्य नेता श्री प० रावबानन्द जी अनुभव कर रहे हैं कि आर्यसमाज ने अपना एक बहुत बड़ा सहयोगी गवा दिया है।

मित्र परिवार की ओर से दिवंगत प्रवासी आर्यबन्धु के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम उनके परिवार और साथियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते है और आशा करते हैं कि वे सब स्वर्गीय ठाकुर साहब के मिशन को प्रगति देते रहेंगे।

बाबूराम भारती द्वारा ... प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग ... में मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमा[र्यम्]

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार वैशाख १ शक १८८१ वैशाख कृ० ४ वि० २०१६ २६ अप्रैल १९५९ ई० [१२ शिलिंग

आर्यसमाज को विश्व के पथ-प्रदर्शन का दायित्व पूर्ण करना है

गुरुकुल महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का सदेश

आर्य जगत् क साधु सन्यासियों नेताओं स्नातकों उपदेशकों प्रचारकों शिक्षको दर्शको ने सम्मिलित हो श्रद्धेय स्वामी दर्शनानन्द क विद्यातपोवन की उन्नति पर हर्ष प्रकट किया और शुभ कामनाए कीं।

आर्य जगत् की प्रसिद्ध शिक्षा-सस्था गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर क जिस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की चिर काल से प्रतीक्षा थी वह गत ९ से १२ अप्रैल तक समारोह पूर्वक सानन्द सम्पन्न हो गया। सार आर्य जगत् में इस जयन्ती की सफलता क लिए एक अपूर्व उत्साह व्याप्त था। गुरुकुल की पचास वर्षीय सेवाओं क कारण आर्य जनता महाविद्यालय की उन्नति में सदैव सहयोग देती रही है और इस बार भी जयन्ती क सयोजको की अपील पर आशा से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान कर जनता ने सस्था क प्रति अपने अनुराग का परिचय दिया है।

आर्यसमाज क स्वनामधन्य सन्यासी स्वामी दर्शनानन्दजो ने जिस महान् आदर्श को लक्ष्य में रखकर इस पवित्र शिक्षा-सस्था की स्थापना की थी वह सस्था उस महान् आदर्श की पूर्ति में अहर्निश प्रयत्नशील रही है। केवल शिक्षा ही नहीं नेतृत्व प्रदान करने में भी इस सस्था का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आचार्यवर्य श्री स्वामी शुद्ध बोधतीर्थ जी महाराज श्री प० भीमसेन जी श्री प० पद्मसिंह जी श्री काशीदत्त जी आदि विद्वानों के साथ-साथ पूज्यवर आचार्य नरदेव शास्त्री डा० हरिदत्त शास्त्री डा० सूर्यकान्त जी डा० नरेन्द्र देव श्री प० प्रकाशवीर शास्त्री श्री प० वाचस्पति शास्त्री श्री उदयवीर शास्त्री आदि अनेकों प्रथम श्रेणी के नेताओं वक्ताओं और नीतिमर्मज्ञों को प्रदान कर महाविद्यालय ने अपनी आवश्यकता और उपयोगिता सिद्ध की है।

ऐसी आदर्श शिक्षा सस्था क समुज्ज्वल भविष्य की मगलवेला में सम्पूर्ण आर्य जगत् बधाई देने वहाँ पहुँचा। अपने सिंचित उद्यान को पुष्पित पल्लवित देखकर किसे प्रसन्नता न होगी सारे आर्यजन आनन्द विभोर हो उठे। ऐसा अनुभव हो रहा था आर्य जनता में बहुत समय से प्रसुप्त गुरुकुलो के प्रति श्रद्धा भावना पुन जागृत हो उठी हो। देश के कोने कोने से आसाम से काश्मीर तक तथा पजाब से हैदराबाद तक सारे भारत के आर्यजन वहाँ एकत्र हुए और एक अपूर्व समारोह सम्पन्न हुआ।

जयन्ती के सम्मेलन प्रधान मन्त्री नेहरू जी द्वारा दीक्षान्त भाषण तथा अन्य सभी रोचक एव उपयोगी कार्यक्रमो की सफलता क लिए महाविद्यालय क अधिकारी बधाई और धन्यवाद क पात्र हैं। इस आयोजन द्वारा देश का एक सन्देश मिला है कि भारत की जनता आज की शिक्षा-समस्या का समाधान गुरुकुल प्रणाली म पाती है मानवता के सही पथ-प्रदर्शन क लिए एक ही सन्देश है वेदो का सन्देश विश्व और देश की समस्याओ का सुलझाने की दिव्यशक्ति यदि किसी क पास है तो वह एकमात्र आर्यसमाज क पास है।

भारत की जनता आशा भरी दृष्टि से आर्य नेताओ युवको और प्रचारको की ओर पथ प्रदर्शन क लिए निहार रही है। जयन्ती का आर्यजगत क लिए एक ही सन्देश है मार्ग पर आगे बढ़ने की तैयारी करते रहो मार्ग पर आगे बढ़ते आओ सफलता तुम्हारा वरण करेगी।

★

हम इस सन्देश को कहाँ तक सफल बना सकेंगे, यही हमारी परीक्षा होगी।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

जीवन-ज्योति

आर्य गगन के चमकते सितारे—

महात्मा हंसराज जी

[श्री ललिताप्रसाद जी आर्योपदेशक, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर]

आर्यसमाज की नींव के पत्थरों में महात्मा हंसराज जी का तप त्यागपूर्ण जीवन सन्यास है। १९ अप्रैल को उनकी जन्म जयन्ती सारे आर्य जगत् में मनाई गयी। उनके आदर्शों का पालन ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। —सम्पादक

आर्य नेता हंसराज जी वास्तव में महात्मा थे। महात्मा तो वह होता है जिसके विचार उच्चकोटि के हों, जिसकी सहानुभूति का क्षेत्र फैला हुआ हो, जो हृदय से संकुचित न हो। मनुष्य मात्र से प्रेम, उच्च विचार, सत्य के साथ प्रेम, अनथक परिश्रम, निडरता, स्पष्टवादिता प्रभु-भक्ति, दीर्घ-दृष्टता, न्याय-प्रियता, आचार की महानता, कमजोर और दुखियों की सहायता, देशभक्ति, दृढ़ निश्चय, सादगी, प्रतिज्ञा पालन, त्याग, तपस्या, बुद्धिमत्ता, बौद्धिक व आध्यात्मिक शक्ति, स्वास्थ्य, निष्काम सेवा, लालच व धन की उपेक्षा आदि जिसके गुण हो। यदि इन गुणों को "महात्मा हंसराज" जी पर घटाया जाय तो वास्तव मे महात्मा सिद्ध होते है।

महात्मा हंसराज जी जीवन भर परोपकार के कार्य करते रहे। उनका जीवन आदर्श एवं प्रेरणात्मक था।

संक्षिप्त जीवन वृत्त

(१) १९ अप्रैल सन् १८६४—जन्म-दिन, बैजवाड़ा में।

(२) १४ फरवरी सन् १८७४—पिता श्री ला० चुन्नीलाल जी का स्वर्गवास।

(३) सन् १८७६ ई०—हदियाबाद के लाला ठाकुरदास चड्ढा की सुपुत्री श्रीमती ठाकुर देवी जी से विवाह।

(४) दिसम्बर सन् १८८०—मिशन हाई स्कूल, लाहौर से एन्ट्रेंस की परीक्षा पास की।

(५) १८८५ ई० में बी० ए० पास किया। बी० ए० की परीक्षा में आप पंजाब भर में सर्व द्वितीय उत्तीर्ण हुए थे। श्री पं० गुरुदत्त जी, ला० लाजपत राय, राजा नरेन्द्रनाथ, आपके सहपाठी थे।

(६) १ जून सन् १८८६—डी ए वी हाई स्कूल लाहौर की स्थापना। महात्मा जी का त्याग-व्रत और अवैतनिक हेड-मास्टर बनने की स्वीकृति। कितना त्यागमय जीवन था, आजकल के डी० ए० वी० कालेज के प्रोफेसरों को "महात्मा जी" के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिये।

(७) १८ मई सन् १८८९ ई०—में डी० ए० वी० कालेज, लाहौर की स्थापना, महात्मा जी उसके प्रथम अवैतनिक प्रिंसिपल बने। श्रीयुत महात्मा हंसराज जी को "धर्म प्रचार की लगन" थी। प्रिन्सीपल होते हुये भी एक अच्छे प्रचारक थे। आर्य मिश्नरी बनकर वार्षिकोत्सवों पर घूमते थे, रोड प्रीच किया करते थे। नित्य, धार्मिक साहित्य का स्वाध्याय करते रहते थे। "सत्यार्थ-प्रकाश" तो सदैव संग रखते थे। स्त्रियों की शिक्षा के लिये महिला विद्यालय की स्थापना की। सन् १८९८ ई० में आयुर्वैदिक कालेज खोला, जिस समय यह खुला, नितान्त एक नूतन वस्तु था।

(८) सन् १८९४ से सन् १९३८ ई० तक "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा" के प्रधान पद पर सुशोभित रहे।

(९) सन् १८९३ ई०—सितम्बर मास में आर्यसमाज लाहौर का कालिज और गुरुकुल पार्टियों से विभाजन।

(१०) सन् १८९६—में महात्मा हंसराज द्वारा युवक समाज लाहौर की स्थापना।

(११) १२ मार्च सन् १९१२—कालेज के प्रिंसिपल पद का त्याग।

(१२) १९१२ ई० में दयानन्द कालेज की प्रबन्धकर्त्री सभा के प्रधान सन् १९१९ ई० तक बराबर प्रधान बने रहे।

(१३) १९०७ से १९०९ तक कालेज भवन-निर्माण के लिए धन-संग्रह और भवन का आरम्भ।

(१४) ७ जुलाई सन् १९१४ ई० में धर्मपत्नी का देहान्त।

(१५) ५ अक्टूबर सन् १९१५ ई० में आपके पुत्र "बलराज" जी को काले-पानी की सजा।

(१६) १९२२ ई०—मालाबार में मोंपला उपद्रव और बलात् मुसलमान बनाये हुये हिन्दुओं का हिन्दू धर्म में पुनः प्रवेश कराना।

(१७) सन् १९२३ ई० में मलकानों की शुद्धि करना।

(१८) ४ नवम्बर सन् १९२७ ई०—आर्य कांग्रेस देहली के प्रधान।

(१९) १५ नवम्बर सन् १९३८ ई० को रात के ११ बजे स्वर्गवास।

उनके जीवन की शिक्षायें

१—पश्चिमी सभ्यता की बुराइयों से बचना।

२—क्रोध में आत्म-संयम।

३—त्योहार हार्दिक प्रेम उल्लास से मनाओ।

४—संघ-शक्ति में बल है।

५—धर्म जगत् की प्रतिष्ठा है।

६—शिक्षा-प्रसार मानवता की सेवा है।

७—ब्रह्म-बल ही बल है।

८—प्रेमी जन बनो।

९—जीवन-लक्ष्य बनाओ।

१०—निर्भयता

संस्कृत कवि ने ठीक ही लिखा है—
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः,
परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः,
परोपकारार्थ मिदं शरीरम्॥

सिखों का शत्रु कौन ?

अकाली नेता मास्टर तारासिंह जी ने ६ मार्च की अपनी एक प्रेस कान्फ्रेंस में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था कि आर्यसमाजी सिखों को समाप्त करना चाहते हैं। इसलिए पंथ खतरे में है। पंथ खतरे में है, मास्टर जी की इस बात से तो हम सोलह आने सहमत हैं परन्तु प्रश्न यह है कि पंथ को खतरा किससे है? मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ कि पंथ को खतरा आर्यसमाज से नहीं स्वयं मास्टर तारासिंह जी से है। आपकी संकीर्ण मनोवृत्ति और साम्प्रदायिक विचारधारा गुरुओं की वाणी के सर्वथा विपरीत है। आप गुरुओं का नहीं अपितु मिस्टर जिन्ना का अनुसरण कर रहे हैं। आपकी अकाली पार्टी मुस्लिम लीग की प्रतिमूर्ति है। मास्टर जी की संकीर्ण मनोवृत्ति का ही यह कुपरिणाम हुआ है कि जो हिन्दू सिख आपस में भाई भाई के समान सदियों से रहते आ रहे थे और रोटी-बेटी का जिनमे सम्बन्ध था, आज वह एक दूसरे के शत्रु बन गये हैं। जो हिन्दू नित्य गुरुद्वारो में जाकर गुरुओ की वाणियों को सुनते थे और लाखो रुपया प्रतिवर्ष गुरुद्वारों की भेंट चढ़ाते थे वह अब मास्टर जी के शिष्यो (अकालियों) की गन्दी मनोवृत्ति के कारण गुरुद्वारों में नहीं जाते हैं।

मास्टर जी की इस संकीर्ण भावना ने सिखो को भारत की अन्य देशभक्त जातियों की दृष्टि मे गिरा दिया है, उस भावना का इतिहास बहुत लम्बा है। आपने जिन्ना के साथ मिलकर अलग सिखिस्थान बनाने का किस प्रकार षड्यन्त्र रचा उस परिचित अपवित्र गठबन्धन को बारम्बार दुहराने की आवश्यकता नहीं है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भी आपने अपनी उस नीति को नहीं छोड़ा इसका हार्दिक खेद है। आपने २१ जनवरी ५५ को पंजाब के मुख्य मन्त्री के सम्मुख अपनी मांग का स्पष्टीकरण करते हुए स्वतन्त्र सिखिस्थान की मांग की थी और अपनी पंजाबी सूबे की मांग का यही भाव आपने बतलाया था। क्या इससे अधिक और कोई देशद्रोह की बात हो सकती है? फिर मास्टर जी किस प्रकार आशा करते हैं कि देशभक्त जनता उनसे या उनके साथियों के साथ प्रेम करती रहे।

आर्यसमाज अपनी देश-भक्ति, सत्य प्रियता एवं निर्भीकता के लिए प्रसिद्ध है। सत्य के प्रचार, असत्य के खण्डन तथा अन्याय का विरोध करते समय इसने अपने पराये का कभी ध्यान नहीं किया। अपने सत्याचरण के लिए ही इसके संस्थापक तथा अनुयायियों ने विरोधियों के ईंट पत्थर, विष, छुरे तथा गोलियाँ खाई हैं परन्तु यह सब कुछ भी आर्यसमाज को अपने मार्ग से हटाने में असमर्थ रहा। इसी आधार पर आर्यसमाज ने पंजाब के ७० प्रतिशतक हिन्दुओं की मातृभाषा हिन्दी की रक्षार्थ आन्दोलन छेड़ा था। यह संघर्ष सरकार की पक्षपातपूर्ण एवं साम्प्रदायिक नीति के विरुद्ध था न कि सिख वर्ग के। आर्यसमाज सिखों के गुरुओ का सदैव आदर करता रहा है और सिख और सिखों की भाषा का भी सम्मान करता है। परंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि वह श्री मास्टर जी तथा उनके अकाली पार्टी की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति तथा उनके द्वारा हिन्दुओं के वैधानिक अधिकारों पर किए आघात को भी सहन कर ले। यदि मास्टर जी 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर आचरण करें तो आर्यसमाज ही नहीं अपितु समूचा भारतीय राष्ट्र उनका समर्थक होगा। दुर्भाग्यवश मास्टर जी की बुद्धि में यह सिद्धांत ठीक नहीं बैठता और इसके कुपरिणामों को सहन करने से वे घबराते हैं।

इस प्रकार स्वयं मास्टर तारासिंह जी ही सिख पंथ और सिख जाति के लिए खतरा बने हुए हैं। सौभाग्यवश समझदार सिखों ने इस खतरे को पहिचान लिया है और अब मास्टर जी का सर्वत्र विरोध ही हो रहा है। इसी से खिसिया कर मास्टर जी अब आर्यसमाज को कोसते रहते हैं।

—ओम्प्रकाश त्यागी
मुख्य संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीरदल, दयानन्द भवन,
नई दिल्ली

वेदोपदेश

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥ ऋ० १।३।१०।१५

हे सर्व शत्रुदाहकाग्ने परमेश्वर ! राक्षस हिंसाशीलदुष्ट स्वभाव देहधारियों से न हमारी पाहि पालना करो अधर्मरराव्णः कृपण जो धूर्त उस मनुष्य से भी हमारी रक्षा करो जो हमको मारने लगे तथा जो मारने की इच्छा करता है हे महातेज बलवर्धक ! उन सबसे हमारी रक्षा करो।



लखनऊ—२६ अप्रैल १९५९ दयानन्दाब्द १३४ सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

धर्म और विज्ञान का समन्वय

भारत धर्म प्रधान देश के रूप में विश्व विख्यात है। यहां के निवासियों ने सदैव धार्मिक वृत्तियों के विकास द्वारा जीवन को सफल बनाने का प्रयत्न किया है। धर्म के उदात्त आदर्शों का विकास पृथ्वी पर रहकर ही पुरुष कर सकता है। भारतीय सदैव इस मान्यता में विश्वास कर आगे बढ़ते रहे और उन्होंने धर्म को व्यावहारिकरूप देने के लिये घोषणा की कि यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धि स धर्मः। भारतीयों ने धर्म को अभ्युदय और निःश्रेयस के रथ पर बैठा कर मानवता का पथ प्रदर्शन किया। जब तक भारत और उसके अनुयायी धर्म के इस स्वरूप को मानते समझते और बरतते रहे तब तक विश्व में शांति सभ्यता संस्कृति का विकास हुआ पर जब धर्म के नाम पर केवल उपासना पर ही जोर दिया जाने लगा और लोक के प्रति कर्त्तव्य भावना को धर्म से पृथक कर दिया गया धर्म के सम्बन्ध में विभ्रान्ति उत्पन्न हो गई। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप लौकिक जीवन को ही सब कुछ समझने वाले लोगों ने लोक को ही [भौतिक सुख सुविधाओं को ही] सब कुछ मानना आरम्भ कर दिया, इस प्रकार मानवता पथ भ्रष्ट हो गई। भारत की अवनति के मूल कारणों की खोज करते समय ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम इस बात का अनुभव किया कि भारत की वर्तमान दुर्दशा अति वैराग्य वाद और अति भोगवाद की धारणाओं के कारण है। अति वैराग्यवाद का आरम्भ पूज्यवर शंकराचार्य ने किन्हीं कारणों से किया हो पर उसके परिणाम लौकिक दृष्टि से हानिकर सिद्ध हुए देश में गृह-त्याग और सन्यास का वातावरण बन उठा, भारत-मां की एकता के लिये कन्याकुमारी से कश्मीर तक दर दर अलख जगाने वाले शंकर के अनुयायी भारत मां के ममत्व को भूल वैराग्य का ही राग अलापने लगे। इसके विपरीत भोगवाद की प्रचण्ड लहरें वाम मार्ग के विष कुम्भ पयोमुख के रूप में देश के विनाश का कारण बनीं।

इस अवनति की अवस्था में देश के और साथ ही मानव जाति के आदर्श चिकित्सक के रूप में महर्षि दयानन्द ने हमें बताया धर्म का मार्ग केवल उपासना ही नहीं मानवता की सेवा भी है और उसके लिये हमें सतर्क रहने और कठोर परिश्रम करने की भी आवश्यकता है। महर्षि के इस सन्देश का प्रचार आर्यसमाज के प्रत्येक सैनिक ने अपने कार्यों से किया है और आज भी आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य इस संसार की उन्नति और निःश्रेयस के समन्वय का अपने जीवन में प्रयत्न करता है। आर्य समाज के उद्देश्यों में ऋषि ने लिखा था संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्यसमाज इसी पर आगे बढ़ा है।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर नव स्नातकों को दीक्षान्त उपदेश देते हुए भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू जी ने भी धर्म के व्यावहारिकरूप का उल्लेख किया और कहा कि धर्म के मूलसिद्धान्त ही मानवता की रक्षा कर सकते हैं। विज्ञान के बिना आज किसी का काम नहीं चल सकता परन्तु विज्ञान का नियन्त्रण धर्म के मूल सिद्धान्तों के समन्वय द्वारा ही हो सकता है। इस प्रकार भारत के प्रधानमन्त्री की गौरवपूर्णवाणी में आज हम वही निर्घोष और चिन्तन पाते हैं जो भारत के महर्षि मानवता के लिये सूत्र रूप में दे गये और जिस पर इस युग में महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले बल दिया। राष्ट्र के नव निर्माण की बेला में कठोर परिश्रम और विवेक शील पथ प्रदर्शन की जो महान् आवश्यकता है उसे धर्म और विज्ञान के समन्वय की भावना से ही सफल बनाया जा सकता है। आर्यसमाज का इतिहास तो इसी लक्ष्य की पूर्ति का इतिहास है। आशा है राष्ट्रवासी भी अब इस रहस्य को हृदयङ्गम करेंगे तथा विश्व भी सुख शान्ति के वायु में सांस ले सकेगा।

धर्म की उस वैदिक भावना के प्रसार प्रचार में जो भी सहयोग देंगे मानवता उनका सदा उपकार मानेगी। ❁

उपदेशक-विद्यालय की स्थापना का शुभ निश्चय

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत ५ अप्रैल को गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन की विद्या सभा ने गुरुकुल में उपदेशक विद्यालय स्थापना का निश्चय किया है।

आर्यसमाज के आरम्भिक और वर्तमान जीवन में जो विरोधाभास दिखाई पड़ रहा है उसके मूल कारणों में एक यह भी है कि अब हमारे पास उच्चकोटि के आदर्श सिद्धान्त-मर्मज्ञ उपदेशकों प्रचारकों की कमी होती जा रही है। प्रत्येक संघर्ष के सैनिक दो शिविरों में रहते हैं एक शिविर योद्धाओं को युद्धक्षेत्र में भेजता और युद्ध की गति विधियों और परिणामों की जांच करता है पर दूसरा शिविर मोर्चे के लिये सैनिकों को तैयार करने का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करता है। यदि तैयारी वाले शिविर में सैनिक तैयार न हों तो सेना कभी विजय प्राप्त न कर सकेगी। आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य अपने को दयानन्द का सैनिक मानता है पर सैनिकों की जिस ढंग की आवश्यकता होती है उसका हमारे जीवन और समाज में अभाव व्याप्त है। हमने साधना शिविरों के प्रस्ताव का स्वागत किया था और अब उस ओर रचनात्मक रूप में उठाये जा रहे उपदेशक विद्यालय के इस कदम का हम स्वागत करते हैं। उत्तर प्रदेश के आर्य भाइयों पर सारे आर्यजगत् का पथ प्रदर्शन करने का विशेष दायित्व है। आपके गुरुकुल ने ही वाणी प्रचार के इस महान् कार्य को अपने हाथ में लेने का निश्चय किया है। गुरुकुल के अधिकारी आपके सहयोग से ही सफल हो सकेंगे। आपका सहयोग ही इस बात का उत्तर होगा कि किसी भी रचनात्मक कार्य का हम कितना और किस प्रकार स्वागत करना जानते हैं। गुरुकुल की उपदेशक विद्यालय-योजना-सफल हो, मित्र परिवार की ओर से हम शुभ कामना करते हैं। ❁

सीतामढी (विहार) मे गो-वध का प्रश्न

अभी होली पर होने वाले साम्प्रदायिक संघर्षों के घाव भर भी न पाये थे रामनवमी के अवसर पर सीतामढी मे गो वध के प्रश्न पर साम्प्रदायिक संघर्ष का समाचार मिला है। ६ व्यक्तियों की मृत्यु का भी दुःखद समाचार है। इस संघर्ष के पीछे जो दुर्भावना कार्य कर रहा है राष्ट्र को इसे समय रहते अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिये। धर्म निरपेक्ष राज्य होते हुए भी राज्य की उपेक्षा और तुष्टीकरण नीति से ही उपद्रवी तत्वों का दुस्साहस बढ़ता है। हम संघर्ष की निन्दा करते हैं पर विहार सरकार से स्थिति के मूल कारणों तक पहुंचने की मांग करते हैं। जो लोग राज्य के गो वध कानून का उल्लंघन करने का साहस कर सकते हैं और वह भी हिन्दुओं के राम जन्मोत्सव के सुअवसर पर उन लोगों के प्रति किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं दिखायी जानी चाहिये। अपराधी को उचित दण्ड देना और निर्दोष की रक्षा करना ही आदर्श राज्य की नीति होना चाहिये। इस नीति के व्यवहार में दोषी के मुस्लिम या हिन्दू होने का कोई विचार नहीं किया जाना चाहिये। हम आशा है सरकार अपने व्यवहार से निष्पक्षता का परिचय देगी और स्थिति को नियन्त्रण में रखने में सफल होगी। ❁

तुष्टीकरण के भावी दुष्परिणाम

भारत सरकार के सामने जितनी विशाल और अगणित समस्यायें हैं उनमें से सिक्ख राजनीति ने उसे काफी परेशान किया है। प्रधान मन्त्री नेहरू अपनी तुष्टीकरण नीति के आग्रह में सिक्ख राजनीति के अगुओं को कभी अपने से मिलाने में भलाई मानने और कभी उनकी उपेक्षा करने में भलाई मानते है। बारह वर्षीय स्वाधीनता के इतिहास में मा० तारासिंह के साथ सरकार इसी प्रकार की आंख मिचौनी खेलती रही है। इस बार फिर मा० तारासिंह की धमकी के आगे नेहरू जी ने घुटने टेक दिये हैं। जिस भूख हड़ताल के लिये वे औरों को मना करते हैं उसकी धमकी में आकर उन्होंने मा० तारासिंह को मुंह लगाना मंजूर किया। पं० नेहरू और मा० तारासिंह की वार्ता क्या हुई यह सुविदित है। उसपर फिर प्रकाश डाला जायगा पर वह जिस प्रकार की धमकी के वातावरण में हुई यह चिन्तनीय है। पं० नेहरू की इस तुष्टीकरण नीति का ही यह परिणाम है

[शेष अगले पृष्ठ पर]

मानवता के मूल सिद्धान्त ही धर्म हैं

धर्म और विज्ञान का समन्वय ही मानवता को विनाश से बचा सकता है

राष्ट्र के नवयुवक युग धर्म के प्रति सचेत हों और अपना कर्त्तव्य पालन करें

१३ अप्रैल को गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर स्वर्णजयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू का दीक्षान्त-भाषण

उपस्थित कुलवासियों और देशवासियों! आज बहुत समय के पश्चात् मैं अपने चिरन्तन सखा महाविद्यालय के कुलपति, स्वातन्त्र्य संघर्ष के साथी श्री नरदेव जी के निमन्त्रण पर यहाँ महाविद्यालय आया हूँ। [illegible] आना बहुत बार चाहता था पर [illegible]और कामो मे लगे रहने के कारण सम्भव न [illegible] सका। पहले सम्भवत २५ वर्ष [illegible] तपोवन की भूमि मे [illegible] से [illegible] समय काफी [illegible] मुझे यह [illegible] कर प्रसन्नता [illegible] तबसे [illegible] महाविद्यालय [illegible] उन्नति [illegible] प्रार्थना है।

आज आपने मुझे अपने बीच बुलाया है। यह स्थान विद्या का घर है, बड़े बड़े विद्वान् यहाँ रहते है और सिद्धान्तो की शिक्षा देते है। आपके सामने किस विषय पर बातचीत करूं क्योंकि बातें हमेशा एक ही प्रकार की होती हैं और हम लोग उन्हें दोहराते रहते हैं। जीवन के कुछ सिद्धान्त होते हैं मानव समाज मे सदैव उनकी चर्चा होती रहती है। उन्हीं सिद्धान्तो का हम प्रतिज्ञा रूप मे दोहराते हैं। अभी आपके सामने नव स्नातको ने प्रतिज्ञाएं ली हैं 'सत्य वद', 'धर्मंचर प्रतिज्ञाए कोई नई नही हैं प्रश्न है उनको अमल मे लाने का, यदि हम प्रतिज्ञाओं को सही रूप मे अमल में लाने लग जाय तो हमारी बहुत सी समस्याए स्वयमेव सुलझ जायेंगी।

प्रश्न होता है धर्म क्या है? कर्त्तव्य क्या है? धर्म को आजकल जिस मायने मे लिया जाता है केवल वही धर्म का अर्थ नहीं होना चाहिये। पूजन ही धर्म नही है जो केवल पूजन को धर्म मानने का आग्रह करते है वे धर्म का वास्तविक अर्थ समझने मे भूल करते है।

धर्म क्या है? धर्म तो [illegible] संसार [illegible] [illegible] चलना है युग के अनुसार प्रश्न [illegible] बदलते हैं पर मूल भूत बात वही रहती [illegible] कोई किसी भी जमाने मे [illegible] विरोध नही कर सकता परन्तु युग की समस्याए भी हमारे धर्म का, कर्त्तव्य का, निर्धारण करती हैं। धर्म का रोज के जीवन मे क्या व्यवहार हो इस प्रश्न पर सदैव विचार किया जाना चाहिये। जो केवल रटे सबक की भांति धर्म का रूढ़ व्यवहार बिना सोचे समझे करने का आग्रह करते है उन्हें कोई सफलता नही मिलती। जो व्यक्ति, जाति, देश युग के प्रश्नो के साथ धर्म की व्याख्या नहीं कर पाते वे युग से पिछड़ जाते हैं।

भारत धर्म का देश है। यहा के इतिहास मे बहुत से चमकते और अन्धेरे पन्ने बिखरे हुए हैं, यहाँ बहुत ऊँच नीच होती रहती है। जब हमने युगधर्म को भुलाया हम सकट में पड़ गये और जब हमने इतिहास से शिक्षा ली हमें सफलता मिली। हम सभ्यताओ के विकास की आलोचना और तुलना करते समय उनके दोषो की चर्चा करते है पर इतिहास की कहानी के आधार पर हमे अपनी भी हर समय जाच करनी चाहिए।

भारत के पास धर्म सस्कृति, दर्शन का अक्षय भण्डार था पर फिर भी हम गिरे, भटके और पराधीन हुए, हमें कमजोर पाकर अङ्गरेज यहा के शासक बन बैठे। हम युग से अलग जा पड़े थे। हमारे पास युग धर्म के प्रश्नो का उत्तर नहीं था, ससार के दूसरे देश खड़े-खड़े और आगे बढ़कर जमाने के साथ कदम मिलाते रहे।

आज की तिब्बत की परिस्थिति आपके सामने है। वहाँ जो प्रश्न आज उपस्थित हुआ है उसकी और बातों को छोड़ भी दिया जाय तो भी एक तथ्य जो सुस्पष्ट है वह यह है कि तिब्बत अपनी भौगोलिक, धार्मिक, सामाजिक परिस्थितियों के कारण संसार की प्रगति से बिछुड़ गया है। तिब्बत का चीन की अपेक्षा भारत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है और है। भारत के बौद्ध धर्म को वहा के लोग मानते हैं। भारत के लोग तिब्बत के मानसरोवर और कैलाश की यात्रा के लिए प्रति वर्ष आते हैं और भारत आते हैं। चीन के लोग भी कल तक भारत होकर ही तिब्बत की यात्रा करते थ। अब पेकिंग से ल्हासा तक की सड़क बनने से मार्ग मे परिवर्त्तन हुआ है। वैसे तिब्बत कभी चीन का अङ्ग नहीं रहा तिब्बती लोग मूल से तिब्बती हैं और चीनी लोग हान वंश के, इसीसे उनकी पृथकता प्रमाणित रही है।

तिब्बत की इस विशेष परिस्थिति पर युग का सदैव दबाव पड़ता रहा है। अङ्गरेजो ने भी अपनी साम्राज्यवादी प्रभुता के लिये तिब्बत पर अधिकार रखने का प्रयत्न किया। अङ्गरेजो के पास बन्दूक की गोलियां थीं, तिब्बतियो के पास पुराने तीर कमान ही थे, अङ्गरेज अपनी इच्छा में सफल रहे क्योंकि तिब्बती लोग जमाने की प्रगति से दूर थे। यह ५० वर्ष पूर्व की घटना है। अङ्गरेजो के भारत से जाने पर तिब्बत में अङ्गरेजो का अधिकार भारत को मिला। हम अपनी फौजे तिब्बत में किस अधिकार और धर्म से रखते, हमने तो स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी क्या वह भारत के लिये ही थी? हमने ऐसा नहीं माना। हमने तिब्बत को भी आजादी में सास लेने का अवसर दिया और अपनी सेना तिब्बत से वापस बुलाली। उधर चीन में एक क्रान्ति ने जन्म लिया और चीन की सेनाओ ने तिब्बत की स्थिति का लाभ उठाया। हमने तिब्बत की स्वायत्तता पर जोर दिया और चीन ने उसे स्वीकार किया। आज तिब्बत मे युग के अनुसार परिवर्त्तन आरम्भ हुए तो वहाँ हलचल मच गई है। वहाँ के शासक दलाईलामा जी भारत आगये हैं और वे भारत के अतिथि हैं। इस समस्या की विस्तार से चर्चा यहाँ इसलिये की है कि हम तिब्बत की इस परिस्थिति के मूलकारण युग-धर्म से दूर जा पड़ने के प्रत्यक्ष उदाहरण को समझ लें।

भारत ने अभी एक नई करवट ली है और उसके विकास में [illegible]

बहुत सी समस्याए उठ खड़ी हुई हैं। उन सबका समाधान हमें जमाने की रोशनी में करना होगा। हर युग के सवाल नये होते हैं और उनके उत्तर भी नये होने चाहिये। शिक्षा और शालाओं में पुराने प्रश्नों की चर्चा होनी चाहिये और हमें पुराने ज्ञान की विरासत को समझना चाहिये पर जीवन के प्रश्नों का उत्तर भी सही रूप में ढूँढने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि हमारे मनों में प्रगति का उल्लास न हो तो हमारा देश, जमीन में चाहे कितना बड़ा हो कमजोर हो जायगा। हमे अपनी उन्नति को नदी के बहते जल की भांति गति-शील रखना होगा। नदी बही रहती है इसी प्रकार जीवन के मूल सिद्धान्त वही रहतेहैं दिया वही रहता है, नदी का पानी और दिये की लौ बदलती रहती है। इसी प्रकार हमे सोचना और आगे बढ़ना होगा। रुकी हुई दिये की लौ बुझ जाती है, रुका हुआ नदी का पानी अपवित्र हो जाता है, तब न दिये से हमे ज्योति मिलती है न नदी का पवित्र जल। इसी प्रकार यदि हमने आगे बढ़ने की भावना छोड़ दी तो हम फिर युग से अलग थलग जा पड़ेंगे।

नये विचार आते है और पुराने विचार ताजे किये जाते हैं। उन पर सही अमल करना ही वास्तविक समस्या है, बुनियादी विचारो का नई दुनिया के साथ समन्वय करना ही हमारा कर्त्तव्य और सकल्प होना चाहिए। यदि नवीन और प्राचीन का समन्वय न किया जाय तो जमाने की गाड़ी, प्रगति का रथ लड़खड़ा जायगा।

यदि हम पुरानी बातों पर आग्रह करते रहें तो कैसे काम चलेगा? क्या सारे देशवासियो के सन्यासी बन जाने से समस्या हल हो जायगी? इसी प्रकार हमारे बुजुर्गों ने जीवन के समाधान के लिए जो सन्देश दिया है अपने अनुभव मानवता को दिये हैं, उनकी उपेक्षा करदें तो जीवन की गहराई को हम नहीं पा सकेंगे। ऊपर ही ऊपर तैरते रह जायगे। यह ठीक है पुरानी दुनिया लौट नही सकती। इतिहास आगे बढ़ता है पीछे नही, पर साथ ही पुराने अनुभवों को साथ लेकर चलना ही बुद्धिमानी होगी।

आज विश्व में दो विचारधाराओं का प्रबल सघर्ष है। विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को बहुत आगे बढ़ा दिया है रेलगाड़ी, वायुयान, बन्दूक, तोपखाना के युग में बैलगाड़ी और तीरकमान के साधनों का आग्रह या इसी प्रकार की अन्य बातो के लिए आग्रह देश को, विश्व को, आगे नहीं बढ़ा सकता। हमें विज्ञान की उपयोगिता और व्यावहारिकता को स्वीकार कर [illegible]

[illegible]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कि अपनी बात के लिये कमेटी बनवाने की घोषणा होते हुए मा० तारासिंह ने 'पंजाबी सूबे [illegible]' नारा पुनः जोर शोर से [illegible] कर दिया है। इस मांग के पीछे जो पृथकता अराष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता की भावनायें कार्य कर रही है उनका गुबार भारत मे जिस विस्फोट को जन्म देगा उसकी कल्पना मात्र से प्रत्येक देश वासी दुखी होगा। इस दुर्भाग्य से राष्ट्र को बचाने के लिये आवश्यक है कि राष्ट्र के कर्णधार सत्ता दल और पक्षपात की भावनाओ से ऊपर उठकर जनता की भलाई निष्पक्षता और राष्ट्रहित की भावना से काम लें। पंजाब की जनता के लिये खतरे की घण्टी बज रही है समय रहते हमें सावधान हो जाना चाहिये।

प्रचार-कार्य की गति तीव्र करने के लिए महात्मा आनन्द स्वामी जी का सन्देश

आर्यसमाज के प्रचार-कार्य को वास्तविक प्रगति देने के लिये उपदेशक-प्रचारक निर्माण-कार्य जोरों से आरम्भ किया जाना चाहिये। वैतनिक प्रचारकों के सम्बन्ध में जनता की भावनायें हमें बदलनी होंगी और अवैतनिक प्रचारकों का निर्माण करना होगा।

वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम पर विशेष बल देना होगा और साधना-शिविरों में उनकी दीक्षा की व्यवस्था करनी होगी। तपोवन आश्रम देहरादून में स्वामी जी महाराज की अध्यक्षता में १६ से २६ अप्रैल तक शिविर की आयोजना की गई है और वे इस प्रकार कार्यकर्ता निर्माण के कार्य में जुट गये हैं। उनके प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिये। —सम्पादक

किसी भी विचार के प्रचार या प्रसार के मुख्य साधन आज की दुनिया प्रयोग में ला रही है (१) समाचार पत्र तथा साहित्य (२) प्रचारक और उपदेशक द्वारा (३) सिनेमा (४) रेडियो इन में से आर्यसमाज के पास कवल दो ही साधन हैं और वे भी सर्वथा अधूरे। समाचार-पत्र आर्यसमाज ने चलाये, परन्तु उनमें से बहुत थोडे सफल हो पाये। फिर भी कुछ साप्ताहिक समाचार पत्रों ने जनता के हृदय परिवर्त्तन मे पर्याप्त सफलता प्राप्त की। "आर्यमित्र" उनमें से एक पत्र है जिसकी हीरक जयन्ती का आयोजन होने जा रहा है पत्र और साहित्य की इस स्थिति के साथ-साथ आज हमारी प्रचार- नीति एक संकट में से गुजर रही है। उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है। आज एक बडी गम्भीर समस्या आर्यसमाज के सामने उपस्थित हो गई है और वह यह कि मौखिक प्रचार करने वालों की संख्या प्रतिदिन कम होती चली जा रही है, वैतनिक तथा अवैतनिक दोनों प्रकार के प्रचारक और उपदेशक कम होते चले जा रहे हैं।

अच्छे विद्वान् साधु-संन्यासी बाहर से नहीं आ रहे और अन्दर से भी साधु-संन्यासी बहुत कम संख्या में क्षेत्र में आ रहे हैं, वैतनिक उपदेशकों ने वेद-विचार फैलाने और आर्यसमाजें स्थापित करने में बड़ा भारी सहयोग दिया है, परन्तु अब वैतनिक प्रचारक बनने में विद्वान् आत्महानि समझने लगे हैं, तब वेद-प्रचार का कार्य कैसे हो पायेगा? या तो आश्रम-मर्यादा पर पूरी कड़ाई से अमल किया जावे और स्वाध्याय-शील आर्य विद्वान् गृहस्थियों को वानप्रस्थी तथा संन्यासी बन कर वेद-प्रचार के पवित्र कार्य में कटिबद्ध होने की प्रबल प्रेरणा की जावे, या फिर बने हुए संन्यासियों को एक दो वर्ष की ट्रेनिंग देकर उनके द्वारा वेद-प्रचार का पवित्र कार्य कराया जावे। वैतनिक उपदेशकों का जीवन-स्तर इतना ऊँचा कर दिया जावे कि जनता उन्हें अपना गुरु समझे। मुझे संन्यास लिये नौ वर्ष से ऊपर हो गये, इस समय में मुझे हर प्रकार के साधु-संतों, संन्यासियो के अंदर रहने का अवसर मिला है, कितने ही बडे सुन्दर स्वभाव के विद्वान साधु संन्यासियो के सम्पर्क में भी आने का मुझे अवसर मिला है, ऐसे साधु भी मिले हैं जिनके विचार आर्यसमाज से मिलते हैं, परन्तु खान-पान तथा निवास आदि की सुविधा होने के कारण वे ऐसे क्षेत्रो में पडे है जहां वे स्वतन्त्रता से अपने विचार प्रकट नहीं कर सकते और आर्य समाज के पास ऐसा कोई क्षेत्र नही, जहां वे निश्चिन्त होकर स्वाध्याय कर सकें, योग-साधना कर सकें और फिर वेद-प्रचार के लिये भी समय दे सकें। यदि इस प्रकार का एक भी क्षेत्र आर्य समाज की किसी संस्था में हो तो वैदिक विचार रखने वाले थोडे बहुत संन्यासी अवश्य मिल जायेंगे। तब उन्हें महर्षि के ग्रन्थ पढाये जा सकते हैं, योग-साधना से उन्हें तपस्वी तथा त्यागी बनाया जा सकता है और फिर उन्हें प्रचार-कार्य में जुटाया जा सकता है। मै चाहता हूँ कि यह कार्य बिना विलम्ब प्रारम्भ कर दिया जावे तभी प्रचार-कार्य में जो निर्बलता आ रही है वह दूर हो सकेगी। यदि ऐसे पांच ही संन्यासी या वानप्रस्थी मिल जायें तो इन्हीं से यह यज्ञ शुरू कर दिया जावे! पांच संन्यासियों को हर प्रकार का उचित सुभीता देना और साथ ही उन्हें प्रचार योग्य बनाना यह मेरा कर्त्तव्य होगा। इस प्रकार के एक हजार साधु-संन्यासियों तथा विद्वान् वानप्रस्थियों को तैयार करने की योजना है। इस सम्बन्ध में मुझ से जो भी सेवा आर्यसमाज की बन सकेगी करने में मैं सदैव संलग्न रहूँगा। आशा है आर्यजन कठिन समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

—आनन्दस्वामी सरस्वती
तपोवन, देहरादून

प्रधान जी का सुझाव उपयोगी है

(श्री बाबू कालीचरण जी उप प्रधान सभा, मेरठ)

'आर्यमित्र' दिनांक ११-४-६१ के पृष्ठ ५ पर श्रद्धेय श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश का जनता के लिए सुझाव छपा है। यदि इस सुझाव को कार्यरूप में परिणत किया जाय तो सभा का और उससे सम्बन्धित गुरुकुल वृन्दावन का जो हित होगा, आज उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता।

सभा के हितार्थ इसीसे मिलता हुआ एक विचार मैंने रखा था, परन्तु श्री प्रधानजी का सुझाव उससे कहीं उत्तम और उपयोगी है।

इस समय तक सभा की दृष्टि से गुरुकुल प्रायः ओझल ही है और इसी कारण सभा के अधिकारियों का तथा अन्तरङ्ग सभा के सदस्यों का ध्यान गुरुकुल की ओर बहुत कम या नहीं के बराबर है। ऐसी दशा में आप स्वयं सोच लें कि गुरुकुल को क्या अवस्था होनी चाहिए। यह बात प्रत्येक आर्य के मस्तिष्क में है कि गुरुकुल को अधिक उन्नत करने की आवश्यकता है और श्री प्रधान जी ने जो सुझाव उपस्थित किया है वह उसकी अचूक औषधि है। इस उपाय को कार्य रूप में परिणत करने में विलम्ब करना जान-बूझ कर हानिकर मार्ग का अनुसरण करना होगा।

सभा की परिस्थिति दो कारणों से विचारणीय है। प्रथम आर्थिक संकट से इसका गला घुट रहा है। दूसरे कार्यकर्त्ताओं की कमी से इसकी गिरी अवस्था को सुधारने में कोई सहायता नहीं मिलती। अतः इस सुझाव से सभा को चौदह हजार रुपये का लाभ होगा। इसकी आर्थिक अवस्था में सदा के लिए ऐसा परिवर्त्तन होगा जिससे कार्यकर्त्ताओं और अधिकारियो को प्रान्त की अन्य समस्याओ पर विचार करने का अवसर मिल सकेगा। वेद-प्रचार का रूप ही बदल जायगा जो प्रान्त के वायुमण्डल में वैदिक धर्म की आवाज को कोने-कोने में पहुँचा सकेगा। इस सुझाव पर अमल करने से आर्यसमाजों और उपदेशकों का असन्तोष मिटाने में सफलता मिलेगी और दोनों में सद्भावना उत्पन्न होगी।

सभा-कार्यालय का व्यय निश्चित रुपैया दशांश से पूरा होगा और सभा-भवन की आय १४ हजार वार्षिक से किसी प्रकार भी कम न होगी। इससे प्रान्त मे वेद-प्रचार को सहायता मिलेगी। आर्यमित्र और प्रेस यदि कोई आय न भी दे सकेंगे तो हानि होने की सम्भावना न रहेगी इसलिए कि २४ घन्टे के अवैतनिक कार्यकर्त्ता वहाँ मिल सकते हैं। ऐसी दशा में हमें श्री प्रधान जी के सुझाव को अपना कर लाभ उठाना चाहिए।

करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये!

स्वदेश के स्वधर्म के, सुधार के लिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

न आज देश में नवीन चेतना रही।
न साधना रही न उच्च भावना रही।
न जल रहे अमर, पवित्र, "प्यार के दिये"।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये।

चरित्र उच्च हों, असत्य छोड कर चलें।
उदार हो हृदय, न दुख में कभी हिलें॥
किसी का कष्ट देख, तिलमिला उठें हिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

पदों का लोभ छोड दें, विवाद छोड दें।
विसार राग द्वेष, सब फसाद छोड दें॥
रहे सतत प्रयत्न सद्विचार के लिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

न मृत्यु से डरें, न इन्द्रियों के दास हों।
विशाल आत्म बल सदैव सबके पास हो॥
"शिवं सत्यम सुन्दरम" की भावना लिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

बनायें विश्व आर्य, "आर्यमित्र" को पढें।
समाज, राष्ट्र, व्यक्ति, सब प्रगति करें, बढें।
महान क्रान्ति हो नवीन शक्तियां लिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

विचार एक हो किसी के काम आ सकें।
सभी से स्नेह कर सकें, सभी को पा सकें॥
अखण्ड वेद ज्ञान के प्रसार के लिये।
करें प्रयास सत्य के प्रचार के लिये॥

—सावित्री रस्तोगी, जवाहरनगर, मेरठ

पंचवर्षीय आयोजन

उत्तर प्रदेश में औद्योगिक प्रगति

[श्री सच्चिदानन्द लखनऊ]

आज सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि उद्योगों का विकास किया जाय और इस प्रकार उत्पादन में अधिकाधिक वृद्धि कर जनसाधारण का जीवन-स्तर ऊँचा उठाया जाय। वस्तुतः हमारे समाजवादी समाज का सम्पूर्ण ढांचा देश के पूर्ण औद्योगीकरण पर निर्भर है।

द्वितीय आयोजन के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश में उद्योगो के विकास पर १६ करोड़ ६४ लाख ७ हजार रुपया खर्च किये जाने का अनुमान है। इसमें से ६ करोड़ २६ लाख २२ हजार रुपया लघु उद्योगों के विकास पर व्यय करने का प्रस्ताव है। द्वितीय आयोजन अवधि के प्रथम तीन वर्षों में ७ करोड़ ८६ लाख रुपया खर्च किया जा चुका है।

पाठकों को यह तो स्मरण ही होगा कि राज्य सरकार ने अपने खर्च से प्रदेश मे दो महत्त्वपूर्ण उद्योगो की स्थापना की है। इनमें से एक चुर्क स्थित सीमेन्ट उद्योग है तथा दूसरा है लखनऊ स्थित सूक्ष्म यन्त्र कारखाना। इधर जो सूचनाएं मिली हैं उनसे पता चलता है कि इन दोनो उद्योगो मे निरन्तर प्रगति हो रही है। विगत वर्ष के प्रथम ११ महीनो में सीमेन्ट कारखाने में २०५४३३ टन सीमेन्ट पैदा किया गया। कारखाने के और अधिक विकास के लिए चेकोस्लोवाकिया से आवश्यक मशीनें आदि खरीदी जा रही हैं। उनके आ जाने के बाद सीमेंट का दैनिक उत्पादन दूना किया जा सकेगा। इसी प्रकार सूक्ष्म यन्त्र कारखाने में फरवरी से नवम्बर १९५८ तक २१४३२ जलमापक यन्त्र तैयार किये गये। इसके अतिरिक्त इस कारखाने मे अनुवीक्षण यन्त्र तथा स्टेथास्काप भी तैयार होने लगे हैं। उल्लिखित अवधि में कुल २०१ अनुवीक्षण यन्त्र तथा १६ स्टेथास्कोप तैयार किये गये।

निजी क्षेत्रो में भी औद्योगिक प्रगति के लिए प्रयास हो रहे हैं। वाराणसी स्थित सोडा ऐश एण्ड एमोनिया क्लोराइड कारखाना कपड़े के कारखानो की मशीनो के पुर्जे आदि तैयार करने का कानपुर स्थित कारखाना, नैनी स्थित बिजली के ट्रान्सफारमर बनाने वाला कारखाना, बरेली का नकली रबड़ बनाने का कारखाना तथा रिहन्द क्षेत्र में स्थित अलमानियम कारखाना उन कारखानों में प्रमुख है जिनका विकास स्वतन्त्र उद्योगपतियों की सहायता से हो रहा है।

लघु उद्योगों के विकास के लिये राज्य सरकार द्वारा आगरा और कानपुर के दो औद्योगिक स्थानों पर कुल मिलाकर ४८ लाख रुपया व्यय करने का प्रस्ताव है। अभी तक इन पर ४० लाख १६ हजार रुपया खर्च किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त तीन नये स्थानों की स्थापना के लिए वित्तीय व्यवस्था की जा चुकी है।

सन् १९५७-५८ में राज्य सरकार ने कुटीर एवं भारी उद्योगो पर २६ लाख ६३ हजार रुपया व्यय किया। इसी अवधि में इन मदों पर खर्च करने के लिए भारत सरकार से भी क्रमशः ४१ लाख ३१ हजार, तथा २२ लाख १२ हजार रुपया मिला। इस प्रकार राज्य सरकार की देख रेख में सन् १९५७-५८ में उक्त मदो पर क्रमशः ६० लाख ६७ हजार और ६२ लाख १७ हजार रुपया खर्च किया गया।

इसके अतिरिक्त औद्योगिक प्रगति के लिये इस बात की भी अपेक्षा है कि औद्योगिक क्षेत्र में एक स्वस्थ वातावरण तैयार किया जाय जिसमें मालिक और मजदूर दोनों मिल कर काम कर सकें। इस सम्बन्ध में यह ज्ञातव्य है कि औद्योगिक विवाद अधिनियम में संशोधन के परिणामस्वरूप कारखाने के स्तर पर समझौतों द्वारा तथा श्रम-न्यायालयों द्वारा औद्योगिक विवादों को निबटाने में विशेष सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त स्थायी त्रिदलीय समितियों तथा कार्य परिषदों ने भी स्वस्थ औद्योगिक वातावरण बनाने में बड़ी सहायता की है। इस सम्बन्ध में प्रदेश के वर्तमान राज्यपाल (जो स्वयं भी श्रमिक समस्याओं के विशिष्ट अध्येता हैं) के निम्नलिखित शब्द उल्लेखनीय हैं "औद्योगिक सम्बन्ध मानवीय सम्बन्धों से किसी भी अर्थ में भिन्न नहीं हैं।" वस्तुतः औद्योगिक क्षेत्र में संयुक्त परिवार के जैसे तथा उससे भी अधिक सुदृढ़ सम्बन्धों की अपेक्षा है क्योंकि यदि किसी संयुक्त परिवार के सदस्य एक दूसरे से अलग हो जाएं तो भी वे जीवित रह सकते हैं किन्तु औद्योगिक क्षेत्र में यदि अलग होने की बात उठे तो समूचे औद्योगिक ढांचे के ढह जाने का खतरा उत्पन्न हो जायगा। यह सन्तोष की बात है कि उत्तर प्रदेश में औद्योगिक शांति बनाये रखने में विशेष सफलता मिली है।

स्वामी भुवानन्दजी महाराज का स्वदेश आगमन

'आर्यमित्र' के विशेष संवाददाता ने पोर्टलुइस, मौरीशस से लिखा है कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता पूज्य श्री स्वामी भुवानन्द जी सरस्वती महाराज दक्षिण अफ्रिका मौरीशस आदि स्थानो में वैदिक धर्म का प्रचार कर जून के अन्त में अथवा जुलाई के प्रारम्भ में भारत के लिये प्रस्थान करेंगे। आपने प्रवासी भारतवासियो में वैदिक ज्ञान के प्रकाश में जो धार्मिक जागृति और नव चेतना उत्पन्न की है वह वास्तव में अभूतपूर्व है। उससे प्रवासी भारतीयों के हृदयो में इस देश के प्रति अनुपम अनुराग और ऋषियो की प्राचीन सभ्यता संस्कृति एवं वैदिक धर्म के लिये अपूर्व निष्ठा दृढ़ हो उठी है। स्वामीजी के अथक उद्योग से इन स्थानों में घर घर में वैदिक धर्म की विजय-दुन्दुभी बज रही है। अगणित नर नारियो के हृदय विशेषरूप से आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा भावना से ओतप्रोत हो उठे हैं। भारत ही की भाँति स्वामी भुवानन्द जी महाराज प्रवासी भारतीयों में भी अधिकाधिक लोकप्रिय हो रहे हैं।

विज्ञान-वार्त्ता

टेलीविजन द्वारा मरीजों की देखभाल

अस्पताल का डाक्टर, अब अपने कमरे में बैठे ही अलग-अलग कमरों में रखे गये मरीजों का निरीक्षण कर सकता है। यह कार्य एक विशेष प्रकार के टेलीविजन द्वारा सम्पन्न होता है। प्रत्येक रोगी के कमरे में टेलीविजन कैमरा लगा रहता है। डाक्टर जिस कमरे का दृश्य देखना चाहे, उस कमरे के लिए निर्धारित एक स्विच को दबाकर मरीज को देख सकता है। एक विशेष व्यवस्था के द्वारा वह प्रत्येक मरीज से अलग-अलग बात भी कर सकता है इस प्रकार अनेक मरीजों की देखभाल वह अपने कमरे में बैठे ही कर लेता है।

'यान्त्रिक सिपाही' द्वारा ट्रैफिक नियंत्रण

मैक्सिको के एक भीड़ वाले चौराहे पर हाल ही में, जिस सिपाही' ने ट्रैफिक का नियन्त्रण किया, वह कोई आदमी नहीं था, बल्कि वह एक रॉबट मनुष्य द्वारा निर्मित लोहे का यान्त्रिक सिपाही। साढे आठ फुट ऊँचा यह 'सिपाही' अपने लोहे के हाथों को दायें बांये घुमाकर, भीड़ को संचालित करता था। यही नहीं, अपने लोहे के ही मुंह से वह सीटी भी बजाता था। इस रॉबट का निर्माण इंजीनियरिंग के दो विद्यार्थियों ने किया था।

डेढ़ मिनट में खाई

केवल डेढ़ मिनट के अल्प समय में ही सैनिक अपनी सुरक्षा के लिए खाइयाँ तय्यार कर सकते हैं। यह एक नये विस्फोटक पदार्थ के कारण सम्भव हो सका है। जब 'रॉकेट मोटर' के द्वारा इस पदार्थ का गोला पृथ्वी पर 'मारा' जाता है, तो विस्फोट के कारण लगभग ४ फीट गहरी और ४ फीट चौड़ी खाई तत्काल खुद जाती है। रॉकेट मोटर बहुत हल्की होती है, और एक कोंडे से स्टैंड पर फिट की जाती है। विस्फोटक पदार्थ का निर्माण अमेरिकन वैज्ञानिकों ने किया है।

जल-थल पर चलने वाली नाव

रूस ने एक ऐसी छोटी-सी नाव बनायी है जिसे जल और स्थल दोनों पर चलाया जा सकता है जमीन पर चलाते समय इसे किसी भी 'मोटर' के साथ ट्रेलर की तरह जोड़ दिया जाता है।

नकली तितलियां

हॉलीवुड में एक बार अभिनेत्री तितली की आवश्यकता पड़ी। प्राकृतिक तितली को अभिनय शिक्षा नहीं दी जा सकी। तब कुशल कारीगरों ने एक नकली तितली का निर्माण किया। इसके पंखों पर दूर से कन्ट्रोल किया जा सकता था। दो पतले तार इसके प्लास्टिक पंखे में लगा दिये गये और चार इंच नीचे इन्हें एक पियानों के तार से जोड़ दिया जो एक खोखली तांबे की नली से गुजरता था। तार खींचने पर पंख हिलते और पंखों के हिलने की आवाज भी नहीं होती।

मधु-निर्माण में अधिकता

वैज्ञानिकों ने काम-काज करने वाली मक्खियों को कार्बन डायॉक्साइड और नाइट्रोजन के धुंओं में रखकर बेहोश किया। इस प्रकार उनके होश में आने पर देखा यह गया कि—ऐसा करने के बाद इन मक्खियों के व्यक्तित्व में ऐसा परिवर्तन हो जाता है कि वे सिवाय मधु-संग्रह के और कोई काम नहीं करतीं। इस प्रकार यह सम्भव हो सकता है कि जहाँ मक्खियाँ सन्तति पालन ज्यादा करती हों और मधु संचय कम वहां उनके छत्तों को कार्बन डायॉक्साइड से प्रभावित कर दिया जाय और इस विधि द्वारा मक्खियों को मकरन्द संग्रह में अधिक प्रवृत्त करके शहद के उत्पादन को बढ़ा दिया जाय।

—जोशी

गुरुकुल महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती

आर्यसमाज के इतिहास में एक अपूर्व समारोह

महाविद्यालय, ज्वालापुर की स्वर्णजयन्ती इस ठाठ-बाट से हुई कि लोग यही पूछते रहे कि क्यों जी क्या यह महाविद्यालय की हीरक जयन्ती हो रही है। बहुत समय पश्चात् गुरुकुल प्रेमियों का ऐसा समूह और समारोह सम्पन्न हो सका, जो चिरकाल तक स्मरणीय रहेगा।



—श्री प्रकाशवीर शास्त्री, एम० पी०

आर्य किशोर सम्मेलन—डा० नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता मे।

आर्य विद्वत्सम्मेलन—श्री अलगूराय शास्त्री की अध्यक्षता में।

राष्ट्रभाषा-सम्मेलन—डाक्टर केसकर सूचना मन्त्री भारत सरकार की अध्यक्षता मे।

शिक्षा सम्मेलन—श्री श्रीमाली शिक्षामन्त्री भारत सरकार की अध्यक्षता में।

गुरुकुल सम्मेलन—विद्यावाचस्पति श्री अलगूराय शास्त्री जी की अध्यक्षता मे।

वेद-सम्मेलन—डा० मङ्गलदेव शास्त्री की अध्यक्षता में।

आयुर्वेद सम्मेलन—श्री आयुर्वेदाचार्य स्वामी दयानिधि की अध्यक्षता मे।

आर्य-सम्मेलन—श्री महात्मा आनन्द स्वामी की अध्यक्षता मे, सम्पन्न हुआ। संस्कृति सम्मेलन भी हुआ।

दीक्षान्त भाषण

गुरुकुलों के इतिहास में यह प्रथम अवसर था जबकि भारत-मन्त्री श्री प० जवाहरलाल नेहरू जी ने किसी गुरुकुल में दीक्षान्त भाषण देना स्वीकार किया हो, अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकाल कर वे अपने चिरन्तन सखा गुरुकुल के कुलपति श्री नरदेव शास्त्री और युवक सहयोगी श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० के निमन्त्रण पर कुछ घड़ियों के लिए पधारे। श्री डा० हरिदत्त शास्त्री ने उनका संस्कृत में अभिनन्दन किया।

नेहरूजी ने स्नातकों सहित यज्ञ में आहुतियाँ डालकर दीक्षान्त संस्कार आरम्भ किया। २१ स्नातक तथा उपाधिधारी हुए जो विद्याभास्कर, आयुर्वेद भास्कर, विद्यानिधि आदि हैं। श्री अलगूराय शास्त्री तथा श्री उदयवीर शास्त्री विद्यावाचस्पति बने।

श्री प० जवाहरलाल नेहरू के दीक्षान्त भाषण मे धर्म और युगधर्म की चर्चा रही। धर्म और विज्ञान के समन्वय पर विशेष बल रहा। उपस्थिति लगभग ३५ सहस्र की होगी। जनता ने प० नेहरू के भाषण को शान्ति पूर्वक सुना। प० जी ने आज तक जहाँ कहीं जितने भाषण दिये उनसे यह अपूर्व था।

स्वामियों के धर्मोपदेश

श्री स्वा० अभेदानन्द जी, श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी, स्वा० आनन्द भिक्षु श्री स्वा० सुखानन्द, श्री स्वा० विवेकानन्द, श्री स्वा० ध्रुवानन्द जी आदि के मार्मिक धर्मोपदेश हुए।

अन्य भाषणों में

श्री बिहारीलाल शास्त्री, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री रुद्रदत्त शास्त्री, श्री वाचस्पति शास्त्री श्री हरिदत्त शास्त्री श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, श्री जगदेव सिद्धान्ती, श्री प्रा० सूर्यकान्त एम० ए०, श्री ओम्प्रकाश शास्त्री आदि ने जनता में प्राण-संचार करने वाले भाषण दिए।

अभ्यर्थना

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री की अभ्यर्थना पर लगभग साठ सहस्र दान आया सुनाया गया। महात्मा आनन्द स्वामी की अभ्यर्थना भी सफल रही।

स्नातकों का जमघट

महाविद्यालय के १००, १२५ स्नातकों का जमघट भी दर्शनीय था। यह एक अपूर्व संगम था।

> श्री अलगूराय जी शास्त्री तथा श्री उदयवीर जी शास्त्री को महाविद्यालय की ओर से श्री नेहरू जी ने विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की।
>
> श्री नरदेव शास्त्री, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री वाचस्पति शास्त्री तथा श्री हरिदत्त शास्त्री के अथक परिश्रम से स्वर्ण जयन्ती महोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।



श्री अलगूराय जी शास्त्री, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

यात्रियों का समागम

इस अवसर पर आशा से अधिक यात्री पधारे थे, जिनमें बंगाल, बिहार, दक्षिण, बम्बई, गुजरात, राजस्थान, कलकत्ता आदि के थे। कुम्भ मेले का सा दृश्य था। जिस दिन पण्डित नेहरू पधारे थे उस दिन का दृश्य तो एकदम ऐतिहासिक दृश्य था।



—श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ

अभिनन्दन

महाविद्यालय के संस्थापकों, आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, श्री स्वामी आनन्द प्रकाशतीर्थ, श्री प० काशीदत्त शर्मा का उनकी सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया। यह भी दृश्य अपूर्व था। इन तीनों महानुभावों की ८० वर्षीय सेवाओं का स्वर्ण जयन्ती एक साकार अभिनन्दन थी। दर्शनानन्द साहित्य के प्रकाशक श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम (मथुरा) और जयन्ती के सफल चित्रकार श्री प्रकाश आर्य (हैदराबाद) का भी उनकी सेवाओं के लिए सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

भजनोपदेशकों में

श्री मरोन कुमारी श्री संगीताचार्य विश्वेश्वर, श्री संगीताचार्य पन्नालाल पीयूष कु० नरेन्द्रसिंह कु० वीरेन्द्र सिंह श्री जयदेव शर्मा, श्री मुकुन्दराम, श्री शोभाराम जी आदि ने जनता को सुन्दर भावपूर्ण गीतों से रिझाया। श्री सुखलाल आर्य मुसाफिर के गायन भाषण ने भी जनता को मुग्ध किया।

नूतन ब्रह्मचारियों का प्रवेश

३० नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश तथा वेदारम्भ हुआ।

महायज्ञ

ता० ६ से १५ तक विविध यज्ञ हुए, जिनमे आचार्य बृहस्पति, आचार्य विश्वश्रवा, आचार्य लक्ष्मी नारायण शास्त्री, श्री सुरेन्द्र शर्मा गौड, श्री

[शेष पृष्ठ १० पर]

सुझाव और सम्मतियां

कर्मफल समय विवाद

पिछले दिनों श्री बाबू कालीचरण जी ने कर्मफल पर लिखा है उस संबन्ध में मेरी सम्मति इस प्रकार है :—

१—मोक्ष के पश्चात् सृष्टि के आरम्भ में जन्म लेने वाला व्यक्ति कौन से कर्मों का फल यहां आकर भोगता है ? क्या मोक्ष में निराकार जीव भी कोई ऐसे कर्म करता है जो साकार रूप में (पतन की ओर) आवे ? यदि मोक्ष के पूर्व के कोई कर्म शेष हैं तो फिर वे मुक्ति में बाधक क्यों नहीं बने थे ? यही बात थी तो सृष्टि का अंत सतयुग से आरम्भ होकर कलियुग पर होने के बजाय कलियुग से आरम्भ होकर सतयुग पर होना चाहिये था। क्योंकि पहले (सतयुग के) मनुष्य के जीवन (कलहयुग से) अधिक धार्मिक होते थे ?

२—श्री बाबू जी के सिद्धान्त से यह स्वतः सिद्ध होता है कि संसार में जितने प्रकार के प्राणी हैं उन सब जातियों के भिन्न भिन्न प्रकार के जीवात्मा होते हैं क्योंकि और लोगो के सिद्धान्त के अनुसार एक ही प्रकार के जीव को सब योनियों में जाने वाला मानने पर यह बाधा उपस्थित होती है कि गर्दभ बोझ करने के अभ्यासी गधे का जीवात्मा मनुष्य शरीर में आकर संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी कैसे बोल सकता है और बिना पांव सरकने व बिल में रहने का अभ्यासी जीव हाथ पैरों के द्वारा पक्के मकान आदि साधन कैसे जुटा सकता है जबकि केवल पहले कर्म ही भोग रहा है ? यदि कहें कि पशु-पक्षी आदि भोग योनि हैं तो भी सम्बन्ध ठीक नहीं लगता क्योंकि मनुष्य शरीर का अभ्यासी जीव भी (इनके सिद्धान्तानुसार) दूसरी योनियों में जाकर मनुष्य की भांति व्यवहार करता दिखाई नहीं देता। अतः या तो इसकी संगति लगाई जाय या यह स्वीकार किया जाये कि बहुत-सी बातों का करने और भोगने का सम्बन्ध केवल एक ही जन्म में समाप्त हो जाता है।

३—२२ फरवरी के अङ्क में बहन शकुन्तला देवी के लेख पर आक्षेप करते हुए श्री बाबू जी ने सिद्ध किया है कि सब कर्मों का फल एक बार भोगकर फिर उस कर्म का कुछ भी अंश शेष नहीं रहता। तो क्या भोग योनि में एक बार जन्म लेने पर सब कर्मफल एक बार में समाप्त हो जाते है ? यदि हाँ, तो सब मनुष्यो का जीवन-स्तर एक सा ही होना चाहिये क्योंकि कर्मफल निश्शेष होने पर एक सी दशा में सबका जन्म हुआ है और चूंकि ईश्वर न्यायी है ? कुंआ या वृक्ष आप लगाते हैं और सैकड़ों वर्ष तक बार-बार भाँति भाँति से अनेक जीव उनका फल क्यों भोगते हैं ?

(४) श्री बाबू जी को इस सिद्धान्त के मानने में क्या आपत्ति है कि 'जीवन के उद्देश्य कर्म और भोग दोनों ही हैं जब जिसका प्राबल्य होता है तब इस जन्म या अन्य जन्मों में एक दूसरे को उचित अवधि तक के लिए दबा देता है। पहले चोरों का एक उदाहरण आपने दिया था कि 'चोरी करने में एक चोर को माल मिलता है, एक को सजा, एक बच जाता है और थेक झूठा फंस जाता है ये सब चोरी के ही कर्म का फल नहीं है, ठीक है मैं भी मानता हूं लेकिन बाबू जी के समझाये अनुसार केवल पहले जन्मों का फल समझने से भी संगति ठीक नहीं लगती क्योंकि पहले भी कभी एक चोरी या एक काम एक साथ चार आदमियो ने इस प्रकार नहीं किया होगा जिसका इस तरह भिन्न-भिन्न फल मिलना उचित हो।

अतः इसकी संगति इसी प्रकार ठीक लगती है कि पिछले जन्म के या इस जन्म के किन्हीं कर्मों या उत्तम भोगों की न्यूनाधिकता से किसी ने बुरा भला फल तुरन्त भोग लिया, कोई फिर भोगेगा। किसी के प्रबल भोग ने इस समय कर्म को दबा दिया और किसी के कर्म ने उत्तम भोग को।

(५) गाड़ी के सफर के लिये टिकट स्वास्थ्य व कीर्ति के लिए व्यायाम और सदाचार फसल काटने के लिये, बीज बोना और ज्ञान के लिये शिक्षा आदि-आदि ऐसे कार्य जिनका आरम्भ निश्चित समय पर फल की इच्छा से ही किया जाता है और प्रायः सबको उनका फल मिलता भी है उनकी श्री बाबू जी पिछले जन्म के कर्मों से किस प्रकार संगति लगाते हैं कृपया समझावें और यह भी बतावें कि अधिकांश पर सफल होने वाली बात ठीक मानी जाये या अत्यल्प-संख्यकों पर। —रामस्वरूप वैद्य,

आर्यसमाज कचौरा, जि० अलीगढ़

श्रीमद्भगवद्गीता का वास्तविक स्वरूप ३-३५ तक

श्रीमद्भगवद्गीता का अनुशीलन करने वाले योरोपियन विद्वान तथा तद्-नुयायी भारतीय व्याख्याकार श्री कृष्ण और अर्जुन के अस्तित्व को ही संदिग्ध समझते हैं। उनके विचार में अन्य पौराणिक आख्यानों की भांति किसी भारतीय विद्वान् ने कृष्णार्जुन-संवाद रूप में यह ग्रन्थ रत्न रचकर महाभारत का अङ्ग बना दिया। अतः उन्हें इसके स्वरूप चिन्तन की आवश्यकता ही नहीं।

आर्यसमाज श्री कृष्णार्जुन अस्तित्व के साथ महाभारत के युद्ध में गीतारूप संवाद को भी वास्तविक मानता है। इस दृष्टिकोण से गीता का स्वरूप तीसरे अध्याय के ३५ श्लोक से आगे सम्भव नहीं। कैसे ? तो सुनिये .—

१—गीता का संवाद गद्य में हुआ। श्री वेदव्यास जी ने इसे श्लोकबद्ध किया यदि कुछ इसमें बढाया नहीं गया तो संवाद श्लोक रूप में कुछ संक्षिप्त ही हो जाता है। यदि उतना ही हो अथवा कुछ बढ़ा हुआ भी मान लिया जावे, तो भी—प्रवृत्ति शस्त्र संपाते गीता १-२० शस्त्र चलने की तैयारी के समय ७०० श्लोकों की गीता का संवाद सम्भव नहीं हो सकता।

२—इस युद्ध में अपनों का ही सर्वथा संहार हो जाने का ध्यान आने पर अर्जुन को मोह हो जाता है। युद्ध में विजय के लिये श्रीकृष्ण ने उसके मोह को दूर करने और उसे पुनः युद्धार्थ उद्यत करने के लिये प्रेरणात्मक आठ प्रबल युक्तियां दी हैं। जो गीता ३-३५ तक समाप्त हो जाती हैं। आगे कोई नई युक्ति नहीं और अगले विषय यज्ञदान कितने प्रकार का होता है, इत्यादि के विचार की उस समय आवश्यकता नहीं थी। यद्यपि वह बड़े महत्त्व के विषय ही क्यों न हों। वे युक्तियां निम्न लिखित हैं।

१—गीता अध्याय २ श्लोक ११ से २५ तक आत्मा की अमरता २—२६ से ३० तक मृत्यु अपरिहार्य है अतः शोक न करना चाहिये ३—२-३१-३२ अपने क्षात्र धर्म का विचार करके युद्ध कर (४) युद्ध न करेगा तो तेरा अपयश होगा ३३ से ३६ ५—युद्ध में विजय से राज्य का भोग और मरने से स्वर्ग की प्राप्ति ३७। ६—२-३८ से ३-१६ तक गीता का विख्यात विषय अनासक्ति योग। ७—३-२० से २६ तक लोक-संग्रह। ८—३० से ३४ तक इस उपदेश का माहात्म्य कहकर ३५ में स्वधर्म की श्रेष्ठता का विचार करके क्षात्र-धर्म से युद्ध में प्रवृत्त करना। इससे अगला विषय मनुष्य पाप क्यों करता है, वैदिक और उत्तम है। परन्तु युद्ध के लिये युक्तिरूप नहीं अतः गीता का भाग नहीं माना जा सकता।

३—श्रीकृष्ण वैदिक धर्मी थे उनके उपदेश में अवैदिक बातें न होनी चाहिये। श्रीकृष्ण का स्वयं को ईश्वर के रूप में कहना, विराट रूप दर्शन आदि पौराणिक विचार ही हैं जो ३-३५ तक नहीं आता।

गीता में १-२७ तक तो भूमिका है। १-२८ से ३-३५ तक २०+७२+३५=१२७ श्लोकों का संवाद ही उस समय सम्भव हो सकता है। मुझे तो इसमें भी वेद निन्दा के श्लोक प्रक्षिप्त प्रतीत होते हैं। अन्य सब वैदिक हैं। पौराणिक कुछ नहीं। —विश्वनाथ आर्योपदेशक धर्म शिक्षक डी०ए०वी नारंग इंटर कालेज

घुघली (गोरखपुर)

ईसाइयों के अनुचित हथकंडे

दोहद में रेलवे कालोनी फ्रीलैण्डगंज से सटा हुआ ही 'रोमन कैथोलिक चर्च' है जहां १४, १५ फरवरी को अनुचित रूप से, बांसवाड़ा 'कुशलगढ़, झाबुआ, धादला एवं रम्मापुर आदि ग्रामों से छः सात सौ निर्धन भीलों को एक ईसाई पादरी के नेतृत्व में लाया गया। और उन्हें धनादि का प्रलोभन देकर ईसाई बनाने का दुष्प्रयत्न किया गया, जिसकी सूचना पुलिस में दे दी गई है परन्तु स्थिति की गम्भीरता के अनुरूप पुलिस का, इस ओर पूर्ण ध्यान नहीं है, आशा है तत्सम्बन्धी सरकारी व्यक्ति इस ओर उचित और आवश्यक कदम लेकर स्थिति को शान्त करने में योगदान देते हुये उचित कर्त्तव्य का पालन करेंगे। स्थिति गम्भीर होने का दायित्व आर्य-समाज पर नहीं, राज्याधिकारियों और उनकी पक्षपातपूर्ण नीति पर होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरङ्ग सभा के आवश्यक निश्चय

(११ मार्च १९५९, स्थान लखनऊ)

१—नि० सं० २ शोक-प्रस्ताव निम्न प्रकार स्वीकृत हुआ।

"अन्तरङ्ग सभा का यह असाधारण अधिवेशन गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री रामेश्वरदयालु जी स्नातक एम०ए०के सुपुत्र श्री नित्यानन्द जी स्नातक एम० ए०, वयोवृद्ध विद्वान्-संन्यासी श्री विश्वेश्वरानन्द सरस्वती जी अमुनानगर अम्बाला, भूतपूर्व सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन, पूर्व नाम श्री पं० गङ्गादत्त जी शर्मा उपदेशक गुरुकुल वृन्दावन, सभा के उपप्रधान श्री जगन्नन्दन लाल जी एडवोकेट प्रयाग के वृद्धपिता श्री शङ्कर लाल जी एवं उनकी पुत्र वधू श्रीमती रानीकुमार जी प्रयाग, सभा के प्रतिष्ठित पूर्व अधिकारी एवं आगरानगर आर्यसमाज के भूतपूर्व प्रधान श्री परमेश्वरीसहाय जी एडवोकेट कचहरी घाट आगरा, सभा के उप मन्त्री श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट के ताऊ श्री श्यामनारायण जी बरेली, तथा श्री द्वारिका प्रसाद जी एडवोकेट बरेली के असामयिक देहावसान पर हार्दिक शोक संवेदना प्रकट करती हुई परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्माओ को सद्गति और शोकातुर परिवारो को धैर्य प्रदान करे।"

२—नि० सं० ४ के अनुसार निम्न समाज सभा में प्रविष्ट हुए।

(१) नगलाबिहारी	पो० सहपऊ	जि० मथुरा	कोटिधन १००)
(२) ऐशबाग	लखनऊ	लखनऊ	"
(३) जमेलीपट्टी लंगूरपल्ला	डाडा मंडी	गढवाल	"

३—नि० सं० ५ सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन १६ व १७ मई १९५९ को हाथरस मे बुलाया जाय। और आ० स० हाथरस का निमंत्रण स्वीकार किया।

४—नि० सं० २२ आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं गुरु विरजानन्द स्मारकधाम जाय। तथा अन्य समारोह दीपावली १९५९ में सार्वदेशिक स्तर पर मनाया जावे और जयन्ती आदि समारोहो का कार्यालय मथुरा में शीघ्र खोला जावे।

५—नि० सं० २९ के अनुसार श्री पं० शिवदयालु जी के स्थान पर आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष पद पर श्री पं० धर्मपाल विद्यालङ्कार जी एवं अन्तरङ्ग सदस्यपद पर श्रीमती सावित्री देवी जी मुजफ्फरनगर निर्वाचित की जावें।

६—नि० सं० ३५ के अनुसार सार्वदेशिक विद्यार्य सभा देहली के लिए नियमानुसार तीन वर्षों के लिए श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी व श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी पुनर्नियुक्त किये जावें।

७—नि० सं० ३७ भाग (१) के अनुसार दयानन्द आर्य वैदिक माध्यमिक विद्यालय बाराबंकी तथा डी० ए० वी० जू० हा० से० स्कूल धिमिश्री (आगरा) को सम्बद्ध किया जावे।

८—नि० सं० ३७ भाग (४) के अनुसार आर्यमित्र हीरक जयन्ती आदि समारोहों के सुअवसर पर 'वेद सम्मेलन' बुलाया जावे। इस सम्मेलन का आयोजन श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी करें।

९—नि० सं० ३७ भाग ५ (अ) के अनुसार समस्त आर्यसमाजे अपने-अपने उत्सवों की तिथि पूर्व से ही उपदेश विभाग समाजो से पत्र-व्यवहार करके निश्चित करें।

१०—नि० सं० ३७ भाग ५ (आ) सभा द्वारा निर्दिष्ट उपदेशको को ही उत्सवो आदि समारोहो पर आमंत्रित करें।

११—नि० सं० ३७ भाग ५ (इ) निश्चित धन राशि अग्रिम सीधे सभा के कार्यालय में मंगाई जावे।

१२—नि० सं० ३८ (३) सभा के अन्तर्गत एक (सोशलवेलफेयर) समाज कल्याण-विभाग खोला जाना स्वीकार हुआ।

१३—नि० सं० ४७ सभा का वर्ष संक्रान्ति व विक्रमी एवं सरकार द्वारा निश्चित शक संवत् से चालू हो इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा से व्यवस्था की जारही है।

१४—नि० सं० ५२ के अनुसार प्रत्येक आर्यसमाज को 'आर्यमित्र' का ग्राहक बनना अनिवार्य किया जावे।

१५—नि० सं० ६० के अनुसार श्री मित्रानन्द जी मुख्तार व श्री भूमित्र जी नियुक्त किये जावें।

—फूलनसिंह
सभा-मन्त्री

हिन्दी परीक्षाओं को मान्यता

विभी संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली हिन्दी परीक्षाओं को मान्यता देने के प्रश्न पर सलाह देने के लिये जो विचार-समिति नियुक्त की गई थी, उसने सरकार को अपनी रिपोर्ट दे दी है। समिति ने सरकार से निम्नलिखित सिफारिशें की हैं:—

परीक्षा का नाम	समिति द्वारा निर्धारित परीक्षा का स्तर
हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	
प्रथमा	मैट्रिक
विशारद	बी०ए०
साहित्यरत्न	बी०ए० से बड़ा एम०ए० से कम
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई	
काबिल	मैट्रिक
विद्वान	इण्टर
बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई	
उत्तमा	मैट्रिक
भाषारत्न	इण्टर
साहित्य सुधाकर	बी०ए०
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	
प्रबोध	मैट्रिक
प्रवीण	इण्टर
पंडित	बी०ए०
राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, वर्धा	
परिचय	मैट्रिक
कोविद	इण्टर
रत्न	बी०ए०
अखिल भारतीय हिन्दी परिषद, आगरा	
पारगत	बी०ए०
हिन्दी विद्यापीठ, देवघर	
प्रवेशिका	मैट्रिक
साहित्य-भूषण	इण्टर
साहित्यालङ्कार	बी०ए०
आसाम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गोहाटी	
प्रबोध	मैट्रिक
विशारद	इण्टर
मणिपुर हिन्दी परिषद, इम्फाल	
प्रबोध	मैट्रिक
विशारद	इण्टर
मैसूर हिन्दी प्रचार-परिषद, बंगलौर	
प्रवेश	मैट्रिक
उत्तमा	इण्टर
रत्न	बी०ए०
त्रावनकोर हिन्दी प्रचार-सभा, त्रिवेन्द्रम	
प्रवेशिका	मैट्रिक
भूषण	इण्टर
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	
विशारद	मैट्रिक
भूषण	इण्टर
विद्वान	बी०ए०
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास	
प्रवेशिका	मैट्रिक
विशारद	इण्टर
प्रवीण	बी०ए०
प्रयाग महिला विद्यापीठ, प्रयाग	
विद्याविनोदिनी	मैट्रिकसे कम
विदुषी	इण्टर
सरस्वती	बी०ए०

नोट न० १—बम्बई हिन्दी सभा बम्बई—प्रबोध, विशारद, साहित्यभूषण

नोट न० २—गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद—तीसरी, विनीत, सेवक

इन सस्थाओं की परीक्षाओ के स्तर और मान्यता का विषय विचाराधीन है।

आर्यसमाज की शरण में आये बिना विश्वशांति असम्भव

गाजियाबाद की सार्वजनिक सभा में पं० अलगूराय शास्त्री की घोषणा

आर्यसमाज गाजियाबाद की ओर से आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष में आयोजित ९ अप्रैल के विशाल समारोह में आर्य नेता पं० अलगूराय जी शास्त्री ने घोषणा की कि संसार को सुख और शान्ति के लिये आर्यसमाज की शरण में आना ही होगा।

विशाल जन-समूह में श्री शास्त्री जी ने घोषणा की कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना मानवमात्र के कल्याण के लिये की थी न कि नया मत चलाने के लिये।

इसी समारोह मे भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मन्त्री श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री, व श्री शिवचन्द जी गुप्ता, प्रो० रत्नसिंह एम०ए०, पं० उदयवीर जी दर्शनाचार्य आदि विद्वानों ने आर्यसमाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। समारोह प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा।

अमेठी-समाचार

स्थापना-दिवस

रामनगर (अमेठी) में १२-४-५९ को साप्ताहिक अधिवेशन के उपरान्त आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया, जिसमें सर्व श्री राजकुमार रणंजय सिंह एम० एल० सी०, इन्द्रजीत गुप्त एम० ए० एल०-एल० बी०, रामकिशोर ,बी ए. विद्यावाचस्पति, ओंकारनारायण साहित्य शास्त्री, धर्मेन्द्रनाथ बी० ए०, वीरेन्द्रनाथ बी० ए०, शिवप्रसाद विद्यावाचस्पति, रवीन्द्रनाथसिंह प्रभृति, गायत्री प्रसाद मिश्र, कालीप्रसाद मिश्र प्रभृति ने आर्यसमाज के स्थापना दिवस १० अप्रैल १८७५ ई० पर प्रकाश डालते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुपम जीवन और कार्यों पर भाषण दिये।

शोक-संवेदना

भारत के सुविख्यात विद्वान् एव विधानवेत्ता श्री डा० एम०आर० जयकर तथा प्रख्यात समाजसुधारक एवं शिक्षाविद् श्री डा० ज्ञानेन्द्रस्वरूप (कानपुर) के निधन पर आर्यसमाज रामनगर की ओर से शोक प्रस्ताव पारित हुआ और स्वर्गीय आत्माओ की चिर शान्ति तथा परिवार सदस्यो के धैर्य के लिये प्रभु से प्रार्थना की गयी।

महाकवि शंकर की शताब्दी

महाकवि श्री नाथूरामशङ्कर शर्मा की जन्म-शताब्दी १३-४-५९ को प्रात राजभवन रामनगर मे राजकुमार श्री रणंजयसिंह एम० एल० सी० की अध्यक्षता में तथा सायं सुलतापुर मे श्री विद्याप्रसाद शुक्ल आई० ए० एस० उपायुक्त की अध्यक्षता मे मनायी गयी। भाषणकर्त्ताओ ने स्वर्गीय महाकवि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी कार्यावशक्ति तथा साहित्य सेवा का वर्णन किया और उनकी रचनाओं का पाठ किया। सर्व श्री विद्याप्रसाद शुक्ल, राजकुमार रणंजयसिंह, प्रिन्सिपल रामचरण विद्यार्थी, रामचन्द्र चतुर्वेदी, इन्द्रजीत गुप्त, रामकिशोर शास्त्री, यशपाल सिंह शास्त्री, ओंकारनारायण मिश्र, रामप्रताप त्रिपाठी, योगेन्द्रदेव मिश्र तथा राजेन्द्रनाथ प्रभृति के भाषण हुए।

(पृष्ठ ७ का शेष)

आचार्य हरिदत्त शास्त्री आदि ने यज्ञ का संचालन किया। इस महायज्ञ का समस्त व्यय-भार चौधरी रघुराजसिंह पृथ्वीपुर (दारानगर गंज बिजनौर) ने उठाया। पूर्णाहुति ता० १५-को पड़ी।

नगर-कीर्तन

ता० १० को सायंकाल ३ से ७ तक ज्वालापुर में अपूर्व नगर-कीर्तन निकला, जलूस एक मील लम्बा था। लोग कहते हैं ऐसा अपूर्व दर्शन था कि गत ५० वर्षों में कभी नहीं देखा गया। स्थानिक सभी शिक्षणालयों ने इस नगर-कीर्तन मे योग दिया।

छत्रारोपण

कुलपति श्री आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ ने किया।

अनुसन्धानशाला की आधारशिला

श्री पं० नेहरू जी ने साहित्य महारथी श्री पद्मसिंह अनुसंधान शाला तथा पुस्तकालय की आधारशिला रखी।

इसके अतिरिक्त

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, श्री रामदेवजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री जगदेव सिद्धान्ती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री नरदेव स्नातक एम०पी० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन, श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम०ए० (सम्पादक आर्यमित्र), श्री आचार्य भगवानदेव गुरुकुल झज्झर(रोहतक), श्री वेणीभाई प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई, श्री अमरनाथ, श्री ईश्वर दयालु आर्य, श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी पत्रकार, स्वा० श्री हौलसमस्करी आदि ने शोभा बढ़ाई। भारत के सभी प्रसिद्ध समाचार-पत्रो के प्रतिनिधियो ने भी पधार कर जयन्ती को सफल बनाया।

इस प्रकार महाविद्यालय की स्वर्ण जयन्ती महाविद्यालय के भविष्य के लिए स्वर्ण रेखाएं डाल गईं जिससे भविष्य-मार्ग उज्ज्वल हो सके।

रामनगर से २० मील सुलतापुर जाते तथा आते समय राजकुमार रणंजयसिंह की कार में बैठे हुए छात्रों ने मार्ग में स्थित ग्रामों में महाकवि शङ्कर की रचनाओं का गान किया।

उत्सव—

—आर्यसमाज ग्राम आलमपुर (सहारनपुर) की ओर से होली पर्व बड़े समारोह के साथ मनाया गया। विशेष यज्ञ भजन आदि के साथ-साथ इसी अवसर पर मुहल्ले का नाम परिवर्तन संस्कार भी सम्पन्न हुआ और भारतीय संस्कृति के आदर्श प्रतीक महाराजा जनक के नाम पर जनक नगर रक्खा गया। सरकार से भी इस नाम को स्वीकार करने की प्रार्थना की गई है।

—सिरौली (फर्रुखाबाद) आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव २५, २६ अप्रैल को समारोहपूर्वक मनाया गया।

—जोड़ाबगान कलकत्ता आर्यसमाज का १६ वां वार्षिकोत्सव १२ से १५ अप्रैल तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

—सलकिया हावड़ा आर्यविद्यालय का वार्षिकोत्सव १२ अप्रैल को श्री बाबूलाल काजी शायर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

वनिता विवेक

बच्चे के विकास-पथ का सम्बल

मां की प्रेरणामयी वाणी

[माता श्री धर्मदेवी जी बम्बई]

अधिकतः देखा यह जाता है कि एक ही माता-पिता के दो बच्चे भिन्न-भिन्न स्वभाव के होते हैं। दोनों समान वातावरण में पलते हैं, तथा जन्मजात गुणों का केन्द्र भी इन दोनों में एक ही होता है। सब कुछ समान होने पर भी दो बच्चों का जीवन दो भिन्न राहों पर चला जाता है। इन सबका जिम्मेदार माता-पिता का प्यार तथा कभी कभी परिस्थितियाँ भी होती हैं।

ऐसा भी पाया जाता है कि माता अपने ही दो बच्चों के साथ भिन्न व्यवहार करती है। बहुधा उसका झुकाव एक सुन्दर बच्चे की ओर अधिक तथा दूसरे की ओर कम होता है। इस भेद का आधार लड़का व लड़की होना भी पाया जाता है। बहुत-सी माताएं लड़की के साथ दुर्व्यवहार तथा लड़के के साथ स्नेह का बर्ताव करती हैं। ऐसी स्थिति में कटु व्यवहार का शिकार बनने वाले बच्चे के मन में हीनता का भाव पैदा हो जाता है। सौतेली माँ तथा निर्धनता भी इसका एक कारण होता है। यदि कोई बच्चा शरीर से दुबला होता है और खेल-कूद में अपने दूसरे साथियों से कमजोर होता है, तो उसे अपने मन में हीनता का भाव अनुभव होने लगता है। निर्धन बच्चे स्कूल में जब धनी बच्चों को सुन्दर कपड़ों में देखते हैं तब उनके मन में भी अच्छे वस्त्र पहिनने की स्वाभाविक इच्छा जाग उठती है। जब वे इसकी मांग अपने माँ-बाप से करते हैं, तथा उसकी पूर्ति कराने में सफल नहीं होते, तब यही हीनता का भाव उनके भोले मन में उदित हो जाता है। घण्टे दो घण्टे रो लेने से बच्चा चुप भले ही हो जाता है फिर भी यह हीनता की भावना एक भयंकर बिमारी के रूप में अनजाना रूप धारण किये उनके मन में सुलगती रहती है जिससे उनके भावी जीवन में बड़े भयंकर परिणाम निकलते हैं।

माता यदि चाहे तो इससे बच्चों के भावी जीवन की रक्षा कर सकती है। माता की इच्छा इस बात पर निर्भर है कि वह इस भाव के कारण और परिणाम को कहाँ तक समझती है तथा वास्तविक जीवन में इन्हें दूर करने के संघर्ष में कहाँ तक सफल हो सकी है।

आरम्भ के कुछ वर्षों में जब बालक घर से बाहर खेलने नहीं जाता और बाहरी जीवन से उसका कोई विशेष परिचय नहीं होता, तब तक माँ को चाहिए कि सब बच्चों को बराबर प्यार करे, और बाहरी व्यवहार में बच्चे को तनिक भी पक्षपात का आभास न होने दे। माँ का प्यार और इससे मिली प्रेरणा बच्चों के भावी जीवन में सबसे बड़ी शक्ति एवं सहारा प्रमाणित हो सकती है। इसी प्यार से वह हीनता का भाव उनके भीतर स्थायी रूप से नहीं ठहर सकता है। लेकिन यदि बच्चे को घर और बाहर दोनों स्थानों में उपेक्षा का आघात सहना पड़ता है, तो यह उसके मानसिक जीवन का एक अङ्ग बन जाता है। और बालक हर स्थान पर अपने को हीन समझता रहता है। ऐसी भावना जब बच्चे के मन में पनप जाती है तब उसका मन खेलकूद, पढ़ाई-लिखाई आदि किसी भी काम में नहीं लगता, और न उसके मन में कोई किसी प्रकार का उल्लास या महत्त्वाकांक्षा ही उत्पन्न होती है। इस प्रकार से उपेक्षित बच्चे जीवन की दौड़ में बहुत पीछे रह जाते हैं।

ऐसी मानसिक स्थिति में बच्चे की एकमात्र सहायक केवल माँ ही हो सकती है। यदि एक निर्धन माँ विवशतावश बच्चे की अन्य माँगों की पूर्ति नहीं कर पाती तो कम से कम अपने प्यार से उसकी एक बहुत बड़ी कमी को पूरा कर बच्चे के मन में उन वस्तुओं के प्रति उपेक्षा अवश्य पैदा कर सकती है। एक विद्वान माँ ऐतिहासिक कहानियों व महापुरुषों की जीवन गाथाएं सुनाकर बच्चे के अन्दर महत्त्वाकांक्षा पैदाकर उन्हें सदा प्रयत्नशील बने रहने की प्रेरणा दे सकती है।

पुत्र-वत्सला माँ की स्नेहपूर्ण वाणी में मानव विकास की वह अमूल्य शक्ति अन्तर्निहित है जिसकी तुलना विश्व का कोई भी रत्न न तो भूत में कर पाया और न भविष्य में ही कर सकेगा। फिर क्यों न भारतीय माँ सन्मार्ग की ओर सन्तति का संचालन कर राष्ट्र विकास में अपना असाधारण योगदान करे।

★

बाल-विनोद

गणित पहेली

१—एक मदारी के पास एक बन्दर है जो कि प्रथम एक मिनट में १२ फुट खम्भे पर चढ़ता है तथा दूसरे मिनट में पाँच फुट नीचे फिसल जाता है। यदि उसे ६१ फीट ऊँचे खम्भे पर चढ़ना पड़े तो कितना समय लगेगा?

—शम्भूदयाल आर्य

२—एक विद्यार्थी २५ रुपये अपने घर से लाया। उतने ही उसने अपने मित्र से भी ले लिए। और २० रुपये मुझे भी देने पड़े। यदि वह विद्यार्थी कुल योग का आधा रुपया दान दे। और मित्र से लिए हुए पूरे उसे वापिस कर दे तो बताओ अब उसके पास कितने रुपये शेष रहे?

—ओंकारनाथ आर्य

उत्तर—१—१५ मिनट कुल लगेंगे क्योंकि (१४+१=१५ मिनट) चोटी पर पहुँच जाने पर बन्दर फिसलेगा नहीं।

२—उस विद्यार्थी के पास १०) शेष रहे।

पहेलियां

१ दुनिया कहती मुझको काली।
हूँ फिर भी मैं मन हरने वाली॥
नाम का पहिला अक्षर कोटि में
है करोड़ में नहीं, है
दूसरा किसु में पर कुछ में नहीं
तीसरा अक्षर पल में है पर
क्षण में नहीं।

२ दो अक्षर का मेरा नाम।
घर के आगे आता काम॥
चोरों को भटकाने वाला।
यंत्र बना लटकाने वाला॥

३ प्रथम कटे होती बेकार
फिर भी सबके आती काम
मध्य काटते करती माऊँ-माऊँ
बताओ मेरा नाम ओ गाँव॥

४ दो अक्षर का मेरा नाम,
दिन भर चलना मेरा काम,
अगर कभी मैं रुक भी जाऊँ,
कान ऐंठ दो तो चल जाऊँ॥

५ तीन अक्षर का मेरा नाम
मैं आती बिछाने के काम
मध्य कटे पर चार कहाऊँ
प्रथम कटे तो दूर बन जाऊँ॥

—ज्योतिप्रभा, हल्द्वानी

उत्तर—१—कोकिल, २—ताला, ३—बिजली, ४—घड़ी, ५—चादर।

हे अमर ज्योति! हो मधुर जाग॥

ऊषा की सस्मित किरणों का,
बढ़ चला सुनहला रंग अरे,
हट चला आवरण काला वे,
मिट चला 'शशि' का रंग अरे,
यह लुटा चला अम्बर भी तो,
दिनकर के कर से मधु पराग।
हे अमर ज्योति! हो मधुर जाग॥

बढ़ चली सरित जीवन-पथ पर,
वह सजल-हृदय फूला तत्पर,
ये गूंज रहे पल-पल मधुकर,
इन छुटे परागों में रसभर,
वे विहंग चले करने अर्चन,
कल कण्ठों में ले मधुर राग।
हे अमर ज्योति! हो मधुर जाग॥

मारुत के मीठे अधरों पर,
सुन मन्त्रों के उच्चार मधुर,
इस भाव प्रवीण ले लोल लहर,
एकान्त सरोवर के तट पर,
संसृति ले कर में स्वर्ण चमस,
कर चली सत्य फिर अमर याग।
हे अमर ज्योति! हो मधुर जाग॥

—शशिकान्त 'शशि', लखनऊ

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ....

आयु .... वर्ष ....

पूरा पता ....

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां ....

स्वास्थ्य-सुधा

मर्प विषों की अचूक महोषधि

(श्री स्वामी एस० एन० सरस्वती, योगाश्रम रायपुर (म०प्र०)

सर्प दंश की अचूक ओषधियो में गरुड़ वृक्ष' नाम की एक ओषधि अपना विशिष्ट स्थान रखती है। यह पहाड़ी इलाके के घने जगल में कहीं-कहीं पायी जाती है। इसका वृक्ष बहुत बड़ा होता है, इसकी फली डेढ़ दो हाथ लम्बी, चपटी, चाकलेट, रग की बिलकुल सर्पाकार की ही होती है। २ ४ अगुल चौड़ी आप इसको चीरेंगे तो भीतर गूदा मखनदार सफेद हड्डी की शक्ल का होता है, उस पर बीज चिपके रहते हैं और बीजों पर एक परत पारदर्शक झिल्लीनुमा चढ़ी रहती है जैसे कि साप के शरीर पर केंचुली होती है, वही नमूना रहता है। इसकी लकड़ी को यदि आप रेती से रेतेंगे, तो इसका बुरादा स्वर्ण पाउडर जैसा चमकदार निकलता है। इसकी लकड़ी के बेंत बनाने में विशेषता यह रहती ह कि यदि आप सर्प के मुह क पास इसको छुवा देंगे तो सर्प अपने मुँह को पृथ्वी पर रखकर ऐसा शिथिल हो जाता है कि जैस बिलकुल निर्जीव हो गया हो। जब तक लकड़ी को अलग नहीं करेंगे, सर्प बिना हिलडुल वहीं पड़ा रहेगा। जहा यह वृक्ष होता है वहा सौ-सौ दो-दो सौ गज तक सर्प नहीं ठहरते। यदि किसी प्रकार गलती से साप इसके नीचे चला भी जाता है तो थोड़ी ही दर में ठिठुर कर मर जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण "यथा नाम तथा गुण है। इस गरुड़ वृक्ष का हर भाग पचाङ्ग का कोई हिस्सा छाल, गुदा, लकड़ी, जड़पत्ता आदि आदि अनुमान से १ तोला ३० ४० तुलसी पत्र क साथ घाटकर पिला देने से तत्काल असर करता है। यदि समय पर तुलसी पत्र न मिले तो कोई बात नहीं, सिर्फ इसीको पिला दे, यदि मनुष्य होश में है तो उससे कहें चबाते हुए रस पीता रहे। इसका स्वाद सुपारी जैसा ही लगता है, इसमें हानि की कोई सम्भावना नहीं है, अच्छे भल आदमी भी इसे खा सकते है। इसमें किसी प्रकार की मादकता भी नहीं है। इसक सेवन से और भी कई रोग अच्छे होते हैं।

दूसर देश—वासी ऐसी तुरन्त चमत्कारिक जड़ी बूटियो की खोज में लाखों करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं और वर्षों पहाड़ो एव जगलों की खाक छानते फिरते हैं। लकिन कोटिश धन्य वाद है हमारी भारत वसुन्धरा को जहा ऐसी-ऐसी प्रत्यक्ष चमत्कारिक जड़ी-बूटियो थोड़े से परिश्रम उठाने मे सरलतापूर्वक प्राप्त हो जाती हैं।

अन्त में मेरी तो अपनी सरकार से सानुरोध प्रार्थना है कि इसको विशेषरूप से प्राप्त कर जगह जगह इसके वृक्ष लगवा दिये जाए जिससे समय-समय पर जनसाधारण इससे लाभ उठा सके। इसके दो पेड़ (म०प्र०) के बस्तर जिले में हैं जहा खोजने पर और भी पेड़ मिल सकते हैं। इसके बीज बोने पर पेड़ १॥ या २ फुट का होकर मर जाता है इसके लिए पहाड़ी कड़क जमीन चाहिये इसकी फली माघ-फागुन में पक जाती है। यदि कोई सज्जन चाहे तो थोड़ बीज मैं भेज सकता हूं। प्रयत्न करने पर यदि आपक इलाके मे जम आए तो अच्छा हो।

पुरस्कार के लिए

आगामी वर्ष सन् १९६० से डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकारिणी सभा ने अपने विद्यालयो के लिए नवीन पाठ्य-क्रम के अनुसार धर्म शिक्षा की पुस्तकें प्रकाशन करने का निश्चय किया है। जो भी लेखक महोदय इस प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें भेजना चाहें, वे पाण्डु लिपि की ३ प्रतियाँ ३१ ७ ५९ तक भेज सकते हैं। सभा द्वारा स्वीकृत पुस्तको के लखको को पुरस्कार प्रदान किया जावेगा। प्रतियोगिता सम्बन्धी नियम तथा पाठ्य क्रम, प्रिं० सूर्यभानु डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर से प्राप्त करें।

हर ग्राम में मुफ्ती दवाखाना

स्त्री पुरुष एव बालकों के प्राय सभी रोगों की सहस्रोनुभूत सफल १७५) रु० की बहुमूल्य १४० दवाइयों से परिपूर्ण २४ सेर वजन के "बहुबलि चिकित्सा बाक्स" सेवन विधि की सरल पुस्तक सहित मात्र शीशी बोतल पैकिंग पेटी आदि ऊपरी खर्च ३५) रु० में पूरा दवाखाना मुफ्त मगावें। ५) रु० पेशगी शेष ३०) रु० की वी० पी० मजूरी तथा पास की स्टेशन सहित पूरा पता भेजें।

व्यवस्थापक

अखिल हिन्द बाहुबलि औषधालय

ललितपुर (झांसी) उ० प्र०

स्वर्गीय सेठ गुरुप्रतापजी पोद्दार

श्री प्रियव्रत जी पोद्दार के पत्र से जिस दिन मुझे यह ज्ञात हुआ कि श्री सेठ गुरुप्रताप जी पोद्दार का देहावसान हो गया है, मैं स्तब्ध हो गया क्योंकि उनके द्वारा आर्यसमाज का ऐसा कार्य होता था जिसकी चर्चा समाचार पत्रों अथवा प्लेटफार्म पर नहीं होती थी।

मारवाड़ी समाज में सर्वप्रथम इनके पिता जी ही स्वर्गीय श्री जयनारायणजी पोद्दार आर्यसमाज की दीक्षा से दीक्षित हुए थे।

स्वर्गीय सेठ श्री गुरुप्रताप जी की आयु ७८ वर्ष की थी। परन्तु स्वास्थ्य को देखते हुए कोई यह अनुमान नहीं कर सकता था कि उनकी इतनी बड़ी आयु हो चुकी है।

दानवीर श्री रघुमलजी के निधन होने पर एक ट्रस्ट(रघुमल चैरिटी ट्रस्ट) बना था। इस ट्रस्ट के आरम्भ से ही वह ट्रस्टी रहे और उनके ही पुरुषार्थ से आर्यसामाजिक सस्थाओं को ट्रस्ट से प्रचुर आर्थिक सहायता मिलती रहती थी।

गुरुकुल वैद्यनाथधाम (सचालित आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार और बगाल) के तथा कलकत्ता की अनेक सार्वजनिक सस्थाओं के सदस्य थे।

व्यापार में बड़े ही दक्ष थे। भारत से बाहर पूर्वी पाकिस्तान ढाका में भी आपका व्यापार चलता था।

आप बड़े ही विनोदप्रिय पुरुष थे। आबाल वृद्ध सबके ही विनोद पात्र थे। उनके निधन से आर्यसमाज के कार्य को बाधा तो पहुँचेगी ही परन्तु यह प्रारब्ध कर्म-जन्य भोग है, इसके समक्ष किसी का कुछ वश नहीं चलता ह, राजा रक धनी-निर्धन, बली निर्बल, बाल युवा और वृद्ध सब समान ही हैं। इस न्याय-तुला में सब को ही समानरूप से तुलना पड़ता है।

वियोग जनित सन्ताप सतप्त परिवार के साथ हार्दिक सवेदना व्यक्त करता हुआ प्रभु से प्रभूत प्रार्थना करता हूं कि दु खित परिवार को दु ख सहन की शक्ति एव धैर्य प्रदान करें।

—स्वामी ध्रुवानन्द, मौरीशस

दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ ९ का शेष)

इसी प्रकार जब दूसरी ओर से एक आवाज़ यह सुनाई देती है कि धर्म की बातें करना समय गँवाना है तब उसमें भी बहुत बड़ी गलती मालूम पड़ती है। यह ठीक है कि विज्ञान एक शक्ति है। वैज्ञानिक कहते हैं कि चाँद तक जायेंगे, मुझे विश्वास है अवश्य सफलता मिलेगी। विज्ञान कोई जादू नहीं है प्रकृति की सेवा कर उससे लाभ उठाना ही विज्ञान का कार्य है। योरप ने इस युग में प्रकृति की शक्तियों को पहचाना, देश बदल गये, गरीबी अमीरी में बदल गयी, सैनिकों के शस्त्रास्त्र बदल गये और युद्ध-विद्या जमीन से आकाश पहुँच गयी। पहले जमाने की किस्से कहानियों में जो अजनबी बातें हम पढ़ते थे, आज उनसे भी अजनबी बातें हमारे सामने सही हो रही हैं। विज्ञान का काम तो शक्ति को पैदा कर देना है उसका अमल तो हमको और आपको ही करना है। चाकू हमारे हाथ में है तो यह हमारे ऊपर है कि हम उससे खरबूजा काटें या किसी की गर्दन।

आज विज्ञान ने विश्व में एक ईर्ष्या द्वेष, भय का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। सारा दारोमदार अणुशक्ति भण्डार के संग्रह पर नहीं उसके प्रयोग पर है। इस प्रयोग के लिए मानवता के मूल सिद्धान्त जिन्हें धर्म के नाम पर मनुष्य जाति ने माना, काम आने चाहिए। धर्म के मूल सिद्धान्त ही मानवता को विज्ञान के विनाश की विभीषिका से बचा सकते हैं। धर्म के मूल सिद्धान्त विज्ञान के दुरुपयोग को रोक सकते हैं। इसलिए विज्ञान के उपयोग का नियन्त्रण बुनियादी मूल सिद्धान्तों के नियंत्रण में होना चाहिये। तभी मानवता की रक्षा हो सकेगी।

भारत के सामने युग की प्रगति ने बहुत-सी समस्याएं ला खड़ी की हैं। देश जम गया था पर हमने संघर्ष किया और स्वराज्य आया, देश के कण कण में, हम अपनी पुरानी बातों की ओर मुड़ नयी बातें भी हमारे समाने हैं। अपनी पुरानी थाती और नये विचारों का समन्वय करके ही हमें देश को आगे बढ़ाना होगा।

आज देश के सामने अनेकों प्रश्न हैं, प्रश्न जीवन की निशानी हैं जिस समाज में प्रश्न उठते हैं वह जीवित होता है। इस प्रकार हमें अपने को जीवित समझने का अधिकार है। हमारी प्रगति का संघर्ष कठिन है, रास्ता दुर्गम है। राष्ट्र की सम्पूर्ण मानसिक (बौद्धिक वैज्ञानिक) शारीरिक बल द्वारा गुटबन्दियों की तीलना होगा। नारों और गुटबन्दियों और हुल्लड़बाजी से देश की समस्याएं हल नहीं हो सकतीं इनमें राष्ट्र की शक्ति नष्ट नहीं होनी चाहिए।

संसार आज साम्यवादी और पूंजीवादी शक्तियों में बटा हुआ है पर दोनों का विकास कठोर परिश्रम और सहयोग की भावना से ही हुआ और हो रहा है। हमें भी सर्वत्र समन्वय का मार्ग चुनना होगा प्राचीन संस्कृति और विज्ञान के समन्वय को लेकर हममें काम करने की शक्ति बढ़नी चाहिए। हमारी सफलता इसी काम करने की शक्ति में निहित है।

हमारे देश का सौभाग्य है कि यहाँ महापुरुष सदैव आते रहे हैं। इस भूमि पर उनका कभी अभाव नहीं रहा, पर हमारा दुर्भाग्य है कि इस देश का फूट ने कभी साथ नहीं छोड़ा। हमारा भूगोल, सभ्यता, विज्ञान सभी प्रकार से एक है पर अभी हम लोगों में दिलों की एकता नहीं आ सका। सभी धर्म नाम के नाम पर एक हो न सका। हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान आदि सभी की साम्प्रदायिक भावनाएं राष्ट्र की पवित्र गांठ को ढीला करने लगती है। इस देश में सभी धर्मों सम्प्रदायों को जो सैकड़ों वर्षों से भारत में रहते चले आ रहे हैं, समान अधिकार दान चाहिए और हमने स्वीकार किये हैं। हमें सब बातों से पहले राष्ट्रीयता की भावना को अक्षुण्ण रखना होगा। हजारों वर्ष पूर्व अशोक ने सहिष्णुता की भावना का इस देश में विकास किया था आज उसकी हमें सबसे अधिक आवश्यकता है। हमें चाहिए परस्पर के मतभेदों को समझने और बर्दाश्त करने की शक्ति बढ़ावें।

आज विश्व में अशान्ति है पर शान्ति तभी होगी जब मूल सिद्धान्त स्वीकार कर लिए जावें, उसके बिना काम नहीं चल सकता। विश्व की शान्ति समस्या कोई शतरंज का खेल नहीं जैसे चाहे खेलते रहे। विश्व-शान्ति के मूल सिद्धान्त हमें स्वीकार करने होंगे। भारत ने पंचशील के नाम से विश्व के सामने आदर्श प्रस्तुत किया है। हमारी तटस्थता की नीति का विश्व में आदर हुआ है। कोरिया, इण्डोचीन, मध्यपूर्व में हमें हमारी शांति प्रियता के कारण जिम्मेवारी सौंपी गयी, यह सब होते हुए भी हमें अपने घर को भी देखना होगा। हम महान् हैं यह कहने से ही काम नहीं चलने का। परस्पर एक दूसरे को समझते हुए चलना औरों की निन्दा नहीं, बर्दाश्त करना हमारी नीति होनी चाहिए। मार्ग कठिन है पर सफलता का सुनहरा प्रभात आरम्भ हो गया है।

नव स्नातकों, आपसे मैंने कुछ बातें की हैं। आपने अभी उपाधियां ली हैं हमारे यहाँ उपाधियों का बहुत रिवाज है ये उपाधियाँ तो बिल्लों के समान हैं इन बिल्लों से नहीं आपके अन्दर वास्तविक शक्ति कितनी है उसीसे आपको जीवन में सफलता मिलेगी और देश आगे बढ़ेगा। आज के युवक हुल्लड़बाजी की संस्कृति से भारत के गौरव को कम कर रहे हैं। आप देश के नवयुवकों का सही नेतृत्व कर गौरव की रक्षा कर सकेंगे ऐसी आशा है। आप जीवन में सफल हो, आगे बढ़े और राष्ट्र को मानवता को आगे बढ़ायें यही आपको आशीर्वाद है। आपका महाविद्यालय सदैव उन्नति करे इस शुभ कामना और यहाँ निमन्त्रित कर बातें करने का अवसर देने के लिये महाविद्यालय के अधिकारियों को धन्यवाद के साथ जयहिन्द।

आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड के भागीदारों को सूचना

आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड की असाधारण सभा दि० १८-४-५१ शनिवार को २ बजे दिन में ५, मीराबाई मार्ग लखनऊ में हुई। जिसमें सर्वसम्मति से मैं उस सभा के लिये प्रधान निर्वाचित हुआ। मैंने आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड का हिसाब ध्यानपूर्वक देखा जिससे प्रकट हुआ कि श्री कालीचरण जी आर्य आनरेरी लिक्वीडेटर के विशेष प्रयत्न से आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड का अब तक लगभग बीस हजार रुपया वसूल होकर बैंक में जमा हो चुका है, और लगभग तीन हजार रुपया अभी वसूल करने को है, जो ६ मास में प्राप्त हो जायगा। तब कुल रुपया भागीदारों में बांटा जायगा। लगभग ५ आना २ नये पैसे अर्थात् प्रत्येक हिस्से का एक तिहाई भागीदारों को मिलने की पूर्ण आशा है।

—हरप्रसाद प्रधान
असाधारण सभा तथा भू०पू० मुख्य आडीटर आ०प्र० सभा उत्तरप्रदेश

सभा की सूचना

उत्तरप्रदेशीय सभा को जो सूचनाएं मुबारिकपुर काण्ड सम्बन्धी मिली हैं उससे सभा को बड़ा खेद हुआ है। अतः सभा ने अपने प्रचार मन्त्री श्री गजबहादुर जी विद्यारत्न को मुबारकपुर भेजकर वहां की सारी स्थिति का अध्ययन कराया है। विस्तृत विवरण आगे प्रकाशित होगा।

—सभा मन्त्री

—पीपरी [मीरजापुर] १२ अप्रैल, मीरजापुर आर्यसमाज के मंत्री व प्रधान द्वारा यहाँ [पीपरी] पर आर्य समाज की स्थापना कर दी गयी। तथा आवश्यक पदाधिकारी भी चुने गये।

शोक—

—नवाबगंज (गोंडा) आर्यसमाज के सदस्यों ने दि० ५-४-५१ को, डा० व्रजेन्द्रस्वरूप जी संस्थापक डी० ए० वी० कालेज कानपुर के निधन पर शोक प्रकट किया।

आर्य-जगत

निर्वाचन—

—कानपुर प्रान्तीय आर्य उप प्रतिनिधि सभा का साधारण वार्षिक अधिवेशन शनिवार दि० ७-३-८१ को सम्पन्न हुआ जिसमे सन् ८८ की वार्षिक रिपोर्ट एव आय-व्यय क लेखा और सन् ८१ का आय-व्यय प्रस्तुत होकर स्वीकृत हुआ। निर्वाचन निम्नप्रकार है —

प्रधान—श्री महेशप्रसाद जी तथा मन्त्री—श्री रघुवशराय जी एम०ए० कोषाध्यक्ष—श्री विश्वम्भर नाथ जी तिवारी आ०प्र०म० निरीक्षक चुने गये।

—आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर क प्रधान श्री डा० शिवदत्त जी,उपप्रधान श्री श्रीकृष्ण जी कपूर, श्री प्रेमकुमार जी कोहली तथा मन्त्री श्री महादेव जी, उपमन्त्री—श्री रघुवंशराय,सहायक मंत्री श्री राजाराम जी, कोषाध्यक्ष—श्री शिव नाथ जी, उपकोषाध्यक्ष—श्री विश्वम्भर नाथ जी तिवारी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री फतहसिंह जी भार्गव, उपपुस्तकाध्यक्ष—श्री विद्याव्रत जी चुने गये।

—आर्यसमाज अरमापुर स्टेट कानपुर क प्रधान—श्री वेदपाल कौशा, उप प्रधान—श्री अम्बिकाप्रसादजी उपाध्याय मन्त्री—श्री आशादीन जी वर्मा उप मन्त्री—श्री जीतेन्द्रपाल कोहली कोषाध्यक्ष—श्री रामपालसिंह जी, आ०प्र० सभा क लिये प्रतिनिधि श्री मन्नालाल आर्य, श्री आशादीन वर्मा चुने गये।

—धूलपेट (हैदराबाद) आर्यसमाज क प्रधान श्री रघुनाथ जी तथा मन्त्री सरदारसिंह जी चुने गये।

—प्रतापनगर [वरगल] आर्यसमाज क प्रधान श्री विन्दम कनकैया जी तथा मन्त्री नल्ला नागभूषणम् जी चुने गये।

—नगरखेडा [बीदर] आर्यसमाज क प्रधान श्री अम्बादास राव जी एवं मन्त्री गणपतिराव जी निर्वाचित हुए।

—नादड आर्यसमाज क प्रधान श्री वेंकटराव जी एव मन्त्री इन्द्रसिंह जी चुने गये।

—अवरादशाह जहानी [उसमानाबाद] क प्रधान श्री दादाराव जी तथा मन्त्री वसन्तराव जी निर्वाचित हुए।

—किल्लारी [उसमानाबाद] आर्य समाज के प्रधान श्री गुरुअप्पा जी एव मन्त्री भगवानराव जो चुने गये।

—लातूर [उसमानाबाद] आर्य समाज क प्रधान श्री नरसिंह ज्योतिवानी तथा मन्त्री मङ्गलदेव जी चुने गये।

—मऊनाथ भजन आर्यसमाज क प्रधान श्री गयाप्रसाद जी व मन्त्री श्री ब्रजभूषणप्रसादजी निर्वाचित हुए।

—संचडीह (बस्ती) आर्यसमाज के प्रधान श्री पशुपतिनारायण जी तथा मन्त्री रामदास जी चुने गये।

—सिमरिया [हरदोई] आर्यसमाज के प्रधान श्री माधवप्रसाद जी आर्य व श्री अनन्तराम शर्मा जी मंत्री एव सभा प्रतिनिधि चुने गये।

—हालागोर्टा [बीदर] आर्यसमाज के प्रधान श्री यादवराव श्री पतराव जी एव मन्त्री देवेन्द्रप्पा काशीनाथ जी निर्वाचित हुए।

—सुल्तानपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री रामअभिलाष जी तथा मन्त्री केदारनाथ जी निर्वाचित हुये।

—छिबरामऊ [फर्रुखाबाद] आर्य समाज के प्रधान श्री शान्तिदेव जो एव मन्त्री बाबूराम जी,प्रतिनिधि श्री द्वारेशचन्द्रजी व श्री लक्ष्मीरतनजी चुने गये।

—गाजीपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री प्रभुदयालजी एव मन्त्री रामजीप्रसाद जी निर्वाचित हुए।

—बेरी [एटा] आर्यसमाज क प्रधान श्री भुजवीरसिंह जी तथा मन्त्री श्री मनवीरसिंह जी चुने गये।

—फोगर मिल [खतौली] आर्य समाज क प्रधान श्री फकीरचन्द्र जी एव मन्त्री सेवकरामजी निर्वाचित हुए।

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा मनपुरी क प्रधान श्री श्यामसुन्दर जी तथा मन्त्री ज्ञानप्रकाश जो चुने गये।

—झज्जर गुरुकुल आर्यकुमार सभा के प्रधान श्री राजवीर जी तथा मन्त्री महादेव जी निर्वाचित हुए।

—बस्ती आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचरित्र जी एव मन्त्री रामदास जी चुने गये।

प्रचार-समाचार—

—नानपारा [बहराइच] मे प्रचार सभा के प्रचारक श्री डा० श्रीपालसिंहजी ने रामपुर, खोखवा, सोहवनिया,वरहद्दा कला, वरहद्दीकमार, इनामगज नकही, अलीनगर आदि ग्रामों में २० दिन प्रभावशाली प्रचार किया। सभा को वेदप्रचारार्थ ११०) प्राप्त हुये।

—सिमरिया [हरदोई] में सभा के अवैतनिक उपदेशक श्री अनन्तराम शर्मा जी के उद्योग से सिमरिया नैरुद्दीनपुर, कीरतिपुर आर्यसमाजों में तथा वेदीजोर नैरीवा, मल्लिकापुर, पूरा, अत्ता आदि ग्रामों में होलिका के अवसर पर नैदिक विधि से यज्ञ सम्पन्न हुए।

—ग्वालियर नगर आर्यसमाज में दि० १ अप्रैल ८१ को आर्यसमाज स्थापना दिवस बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया श्री चन्द्रसेनजी का व्याख्यान प्रभावपूर्ण रहा।

—फिरोजपुर आर्यसमाज ने, दैनिक सत्सग पारिवारिक सत्संग तथा नगर-मे एक बार पुन नवजीवन का संचार किया है, समाज क सभी आयोजन सफल, एव अत्यधिक प्रभाव पूर्ण हो रहे हैं।

—कादनचकी (मेदनीपुर) में एक गुरुकुल की स्थापना पिछले वर्ष हुई थी उसका वार्षिकोत्सव मार्च में सम्पन्न हुआ। अभी गुरुकुल के भवन निर्माण आदि कार्यो के लिए दान दाताओं का सहयोग अपेक्षित है।

—अफजलगढ आर्यसमाज मे होलिकापर्व सोत्साह सम्पन्न हुआ।

—श्री प०नरदेव जी के सत्प्रयत्नों से बीदर जिले के ग्राम गौंडा, हाला गोटी तथा नगर खेड में आर्यसमाज की स्थापना हुई।

—कायमगज में १ अप्रैल को एक नई समाज की स्थापना हुई।

—केराकत आर्यसमाज मे ४ से १० अप्रैल तक स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज की प्रभावशाली कथा होती रही। १ अप्रैल को समाज की ओर से आर्य-समाज स्थापना-दिवस भी मनाया गया।

उत्सव—

—डोईवाला (देहरादून) आर्य समाज का वार्षिकोत्सव २७ से २९अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

—सचडीह (बस्ती) आर्यसमाज का उत्सव दि० ६ से ६ मार्च ८१ तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—भरथना आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव दि० २७ से ३० मार्च तक सफलता पूर्वक मनाया गया।

—अलीगढ उप प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद् का अधिवेशन दि० १६ अप्रैल को स्थानीय समाज में सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज मवा का ३७ वां वार्षिकोत्सव दि० २७, २८, २६, ३० अप्रैल को होगा। इसमें पं० प्रकाशवीर शास्त्री, प० अयोध्याप्रसाद जी, स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, पं० रामनारायण जी शास्त्री आदि पधारेंगे।

सूचना

पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल की कार्यकारिणी सभा के सभासदों का सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि कार्य-समिति की आवश्यक बैठक गाजीपुर में २६-४-८१ को आर्यसमाज मन्दिर में होगी जिसमें प्रत्येक दलपति तथा संचालपति को लिखित रूप में अब तक का लेखा तथा भावी कार्यक्रम प्रस्तुत करना है। इसी बैठक में बगहा, गाजीपुर तथा रानीसराय में शिविरो के आयोजनों का अन्तिम निर्णय करना है। आशा है आप सबका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

—अवध बिहारी खन्ना
उपसचालक
पूर्वी उत्तर प्रदेशीय आर्य वीर दल
वाराणसी

संस्कार—

कानपुर [रामबाग] निवासी श्री प० रामशकर जी शुक्ल एकाउन्टेन्ट) टेक्सटाइल क० के पुत्र चि० सतोषकुमार का उपनयन सस्कार वैदिक रीत्यानुसार बडे समारोह से सम्पन्न हुआ।

अजमेर में स्थापना दिवस

आर्य नेताओं के भाषण

आर्यसमाज दयानन्दाश्रम केसरगज तथा आर्यसमाज कसरगज मे आर्य-समाज स्थापना दिवस पर श्रीमान् महाशय कृष्ण जी मालिक प्रताप तथा प्रधान परोपकारणी सभा, श्रीमान् प आनन्द प्रिय जी बड़ोदा और प० धर्मवीर जी आर्य ब्रह्मचारी, श्री कविराज हरनाम दास व श्री प० जियालाल जी के ओजस्वी भाषण हुए। जनता मे उत्साह का समुद्र लहरे मार रहा था।

सूचना

समस्त आर्यसमाजो को चाहिये कि श्री शिवस्वामी जी परिव्राजक सभा के अवैतनिक उपदेशक जिन समाजों में पधारें उनके भाषणो एव सस्कारों से लाभ उठावें।

—विश्वम्भरनाथ तिवारी

सिंहावलोकन

लोकतन्त्र के आधार

लोकतन्त्र में समता आवश्यक

[श्री गगनविहारी लाल महता पूर्व भारतीय दूत अमेरिका]

> आज भारत में प्रजातन्त्र का परीक्षण चल रहा है। प्रजातन्त्र की सफलता के लिये जिस आधार-भूमि और विशाल दृष्टिकोण की आवश्यकता है उसके सम्बन्ध में विद्वान विवेचक ने अपने अनुभवों के आधार पर प्रकाश डाला है। एक अनुभवी राजनीतिज्ञ के रूप में उनके शब्द पर्याप्त महत्त्व रखते हैं। —सम्पादक

आज दुनिया के कुछ ही देशों में लोकतन्त्र अर्थात् उत्तरदायी या प्रतिनिधि सरकार ठीक से चल रही है। स्वेज से लेकर दक्षिणी प्रशान्त सागर तक सर्वत्र लोकतन्त्र खतरे में है। लोकतन्त्र से असंतोष के कई कारण हैं। किन्तु इतना तो निश्चित है कि आज की दुनिया में, विशेष रूप से एशिया और अफ्रीका के देशों में, लोकतन्त्र की सफलता के लिए केवल प्रतिनिधि सरकार बना देना पर्याप्त नहीं। उसके लिए बहुत कुछ करना पड़ेगा।

जीवन-स्तर उठाने की आवश्यकता

प्रजातन्त्र को तभी लोग स्वीकार करेंगे जब इसके द्वारा जनता की आर्थिक और सामाजिक हालत सुधारी जा सके। बर्ट्रेंड रसल ने इस प्रसंग में बड़ा ठीक प्रश्न किया है कि "यदि कोई आप से कहे कि या लोकतन्त्र ले लो या रोटी तो आप, क्यों भूखे मरना चाहेंगे। वास्तव में गरीबी, अशिक्षा, जनसंख्या की अधिकता, बेकारी और अप्रगतिशील अर्थ-व्यवस्था, स्वस्थ राजनैतिक विकास में बड़े बाधक हैं।

एशियाई देशों में औद्योगिक विकास होने के पहिले ही लोकतन्त्री पद्धति की सरकारें बन गयीं। जनता को सरकार चुनने का अधिकार मिला। जनता स्वभावतः अपनी सरकार से यह आशा करती है कि वह उसे रोजी और रोटी दे और यदि सरकार इसमें असमर्थ रहती है तो जनता उसे अगले चुनाव में हरा सकती है। इन देशों में महगाई फैली है, अनाज, कपड़ा आदि जीवन की आवश्यक वस्तुओं की अत्यधिक कमी है, बेरोजगारी है और गहरी गरीबी है। इस स्थिति का देश की राजनैतिक स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसे सुधारने के लिए बड़ी सूझबूझ, दृढ़ता और दूरदर्शिता की जरूरत है। इन देशों की आर्थिक दशा सुधारने की जरूरत है। इसका मतलब यह है कि लोगों को अच्छा काम दिलाया जाय।

समान अवसर

सबको समान अवसर देने का अर्थ है कि सबके लिए एक कानून, शिक्षा दीक्षा की पूरी सुविधाएं हों, रोजी का प्रबन्ध हो, तथा विभिन्न वर्ग के लोगों आमदनी तथा धन में अधिक अन्तर न हो। लोकतन्त्र में हर एक नागरिक को शिक्षा और नौकरी मिलनी चाहिए। उस पर किसी वर्ण या जाति का अधिकार न होना चाहिए। यह नैतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि समाज के फायदे की दृष्टि से भी आवश्यक है, क्योंकि इसीसे सर्वसाधारण की प्रतिभा का सर्वोत्तम रूप से उपयोग किया जा सकता है। अवसर न मिलने से न जाने कितनी प्रतिभाएं कुंठित रह जाती हैं। कौन जानता है कि देश में कितने ही रामानुजम् छिपे हैं।

समानता और प्रोत्साहन

पुराने ढर्रे के अर्थशास्त्री भी, जो समाजवादी सिद्धान्तों को नहीं स्वीकार करते, यह मानते हैं कि आर्थिक विषमता के कारण समाज के वर्गों में द्वेष और क्षोभ पैदा होता है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल का कहना है कि इसका कोई नैतिक औचित्य नहीं है कि एक ओर लोग भूखों मरें और दूसरी ओर लोग मजे उड़ावें। ऐसी विषमता हमारी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा दोष है। अमेरिकन अर्थशास्त्री टासिग ने कहा है कि भले ही यह तर्क दिया जाय कि आर्थिक समानता स्थापित कर दी गयी तो योग्य-अयोग्य सब एक ही लाठी से हांके जाएंगे, काम करने का उत्साह मारा जायगा, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समाज में यदि गहरी विषमता स्थायी रूप से बनी रही तो उससे जनता को सुख नहीं मिल सकता। हाँ, यह ठीक है कि आर्थिक विषमता एक दिन में नहीं मिटायी जा सकती। कर आदि लगाकर इसे धीमे-धीमे कम किया जा सकता है। साथ ही इसका ध्यान रखना होगा कि इससे लोगों में काम करने का उत्साह न नष्ट हो। यह भी सच है कि केवल धन के लोभ से ही काम नहीं किये जाते। काम करने में और साहित्य या कला की रचना में भी एक आनन्द होता है। बड़े बड़े वैज्ञानिकों, कलाकारों, समाज-सुधारकों, यहाँ तक कि उद्योगपतियों ने भी हमेशा पैसे के लिए ही नहीं, बल्कि रचना के आनन्द के लिए भी काम किए हैं।

फिर भी यह मानना पड़ेगा कि ज्यादातर लोग पैसे के लिए काम करते हैं। सबको बराबर पैसा न तो दिया जा सकता है और न देना उचित है वह तो उन्हें काम के अनुसार दिया जाएगा। सोवियत रूस में भी सबको बराबर पैसा नहीं मिलता। गांधीजी का भी यही कहना था कि धन का वितरण बराबर नहीं, न्यायोचित होना चाहिए। न्यायोचित वितरण मे आमदनी का बहुत अधिक अन्तर नहीं रह सकता।

गरीबों को अमीर बनाइये

समानता के कई रूप है। जहाँ सब दास हैं, वहा भी समानता है और जहा सब स्वतन्त्र है, वहा भी, अगर सब निर्धन हो जाए तो भी समानता आ जाए और सब धनी हो जाए तो भी। किन्तु अमीरो को गरीब बनाकर समानता लाने के बजाय गरीबो को अमीर बनाकर समानता लाना ज्यादा अच्छा है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कहानी याद आती है। एक बार दो बच्चे झगड़ रहे थे। एक कहता था मैं तुमसे लम्बा हूँ, दूसरा कहता था नहीं मैं लम्बा हूँ। इस पर एक ने दूसरे को एक गड्ढे में खड़ा कर दिया और खुद ऊपर खड़ा होकर कहने लगा कि देख मैं तुमसे लम्बा हूँ। वह लड़का बजाय, दूसरे को गड्ढे में खड़ा करने के, खुद किसी बेंच पर भी खड़ा होकर ऊँचा हो सकता था लेकिन उसने दूसरे को नीचे ढकेलना ही पसन्द किया। बहुत से लोगों की मनोवृत्ति ठीक इसी लड़के की तरह है। आर्थिक विषमता कम करने के अनेक तरीके हैं। सम्पत्ति के वितरण से, छोटे छोटे उद्योगो की स्थापना से, राजनैतिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण आदि से भी समाज की आर्थिक दशा सुधारी जा सकती है।

आर्थिक विषमता दूर करने के लिये यह उपाय तो करना ही चाहिये कि सारा धन थोड़े से लोगों की ही मुट्ठी में न रहें और अधिक से अधिक लोगों की आमदनी बढ़े। साथ ही राष्ट्र का सम्पत्ति भी बढ़ानी चाहिये, जिससे लोगों की समृद्धि बढ़े। इधर अमेरिका में जन-साधारण की जो आर्थिक उन्नति हुई है, उसका कारण केवल धन का उचित बटवारा नहीं है, बल्कि वहा की राष्ट्रीय सम्पदा भी काफी बढ़ी है, जिससे सबको लाभ हुआ है। हमारे देश में आज इतनी धन-सम्पदा नहीं है कि उसे बाट देने से जनता की हालत सुधर, इसलिए पहले हमें राष्ट्र का धन बढ़ाना चाहिए, फिर उसके ठीक बटवारे का प्रबन्ध करना चाहिए

लोकतन्त्र से असन्तोष के कारण

आर्थिक कठिनाई और सामाजिक असतोष के अतिरिक्त और भी कई कारण हैं जिनसे लोकतन्त्र में जनता की आस्था उठ रही है। नेताओ में पद के लिए होड़, पक्षपात, भ्रष्टाचार तथा जनता की शिकायतो के प्रति अधिकारियो की उदासीनता के कारण भी नेताओ पर जनता का विश्वास उठ जाता है और लोग लोकतन्त्र से भी निराश हो जाते है। ऐसी स्थिति में जनता को भड़काना और बरगलाना आसान होता है। महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति या दल ऐसे मौके का लाभ उठाकर सरकार पर कब्जा कर बैठते हैं।

तानाशाही की खराबियाँ

लोकतन्त्र सरकारो की, असफलताओं से असन्तुष्ट होकर कुछ लोग एक उदार नेता या शासक की चाह करते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों को बलपूर्वक मिटा दे। किन्तु हम जानते हैं कि तानाशाह कभी उदार नहीं हुआ करते। एक बार निरंकुश सत्ता का भोग कर लेने पर वे उसे छोड़ना नहीं चाहते और अपने लाभ के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं और इसीको वे जनता का लाभ बताते हैं। जिस देश में किसी दल या वर्ग की तानाशाही रहती है, वहाँ वह दल जनता को शासन की आलोचना का अधिकार नहीं देता। सशस्त्र क्रान्ति से ही ऐसे शासन को बदला जा सकता है।

लार्ड एक्टन ने कहा है कि सत्ता पाकर आदमी बिगड़ जाता है और

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

२२ चैत्र शक १८८१
(२६ अप्रैल १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तार—"आर्यमित्र"
दूरभाष : २२९३ तार : "आर्यमित्र"
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

लोकतन्त्र के आधार

[पिछले पृष्ठ का शेष]

पूरी सत्ता पाकर तो वह बिल्कुल ही बिगड़ जाता है। फिर तानाशाही या एक तंत्र का आधार दृढ़ नहीं होता। तानाशाही में ऊँचे अधिकारी ताकत हथियाने के लिए बराबर कुचक्र करते रहते हैं, और वहाँ की जनता का भी नैतिक पतन हो जाता है। सम्भव है, तानाशाही कुछ कठिनाइयों को दूर कर दे। किसी समय भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी आदि को खत्म करने के लिए फौजी अदालत या सैनिक शासन भी जरूरी हो सकता है, किन्तु इससे देश की आर्थिक समस्याओं का हल नहीं होता।

तानाशाही में विवेकशून्यता

फौजी शासन से कठिनाइयों का ऊपरी उपचार होता है, वे जड़ से नहीं मिटायी जा सकतीं। आदर्श समाज की स्थापना जादू की छड़ी घुमा देने से नहीं हो सकती। स्पूतनिक पर सतयुग में यात्रा नहीं की जा सकती। विकास का मार्ग आसान नहीं है, इसमें निराशाओं और असफलताओं का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि तानाशाही नैतिक दृष्टि से दीवालिया होती है। ऐसी व्यवस्था में जनता मतान्ध और पतित हो जाती है। फिर लोकतंत्र शासन की महज एक पद्धति ही नहीं है, वह जीवन की एक पद्धति भी है। इसका उद्देश्य जनता को सुख ही नहीं सन्तोष भी देना है। लोकतन्त्र में जनता को स्वावलम्बन की शिक्षा मिलती है, यही इसका असली महत्त्व है। लोकतन्त्र के आदर्शों पर चलने से जनता का चरित्र उन्नत होता है।

ऐसा समझा जाता है कि लोकतन्त्र में काम धीमे होता है, लेकिन ऐसी बात नहीं। पिछले दो महायुद्धों में लोकतन्त्री देशों ने जर्मनी को हराकर यह सिद्ध कर दिया कि अगर लोकतन्त्र सचेत हो कर उठ बैठता है तो वह लोकतन्त्र एकतन्त्र और तानाशाही से कहीं शक्तिशाली और कुशल सिद्ध है। लोकतन्त्र युद्ध में सफलता पा सकते हैं तो रचनात्मक कार्यों में क्यों नहीं पा सकते?

व्यक्ति का महत्त्व

तानाशाही राज्य दावा करते हैं कि उन्होंने बहुत बड़े-बड़े काम बड़ी जल्दी कर डाले। किन्तु जाँचने से मालूम होगा कि उनकी सफलताएं बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बतायी जाती हैं और कभी-कभी तो कह दिया जाता है कि इतना काम हुआ, जबकि उतना हुआ नहीं रहता। यह सच है कि साम्यवादी देशों ने कुछ बड़े काम किये हैं, किन्तु उनका मूल्यांकन करते समय यही नहीं देखना चाहिए कि उनमें कितना कम समय लगा, बल्कि यह भी देखना चाहिए कि इसके लिए मनुष्यता का हनन तो नहीं किया गया। हमें काम की विधि पर ही नहीं उसके उद्देश्य, भाव और ढंग को भी देखना चाहिए।

अर्थात् यह देखना चाहिए कि जिन देशों में ये काम हुए वहां के समाज में व्यक्ति की क्या स्थिति है? उसने ये काम अपनी इच्छा से किये या जोर जबर्दस्ती से? उन्नति का यह अर्थ नहीं कि व्यक्ति को एक विशाल मशीन का पुर्जा बना दिया जावे जो एक दो आदमियों के इशारे पर चले। यदि हम आर्थिक उन्नति के साथ व्यक्ति की भी उन्नति करना चाहते हैं तो हमें दूसरा मार्ग अपनाना होगा। आखिर विकास की योजनाएं व्यक्ति के लिए हैं, योजना के लिए व्यक्ति नहीं है।

सबसे बड़ा प्रश्न

आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न है कि किस प्रकार एक ऐसी व्यवस्था स्थापित की जाए, जिसमें न तो व्यक्ति को इतना स्वतन्त्र छोड़ दिया जाए कि वह दूसरों को दबाने लगे, जैसा पूँजीवादी देशों में है, और न व्यक्ति की स्वतन्त्रता का पूरा अपहरण हो जाए, जैसा साम्यवादी देशों में है। आज की सबसे बड़ी राजनीतिक और आर्थिक समस्या यही है कि व्यक्ति और समाज के हितों में किस तरह सामञ्जस्य किया जाए, जिससे शासन भी कमजोर न हो और व्यक्ति की स्वतन्त्रता और कार्य-शक्ति का हनन न हो। हम शुद्ध शासन के साथ विकास भी करना चाहते हैं। वैसे तो कोई भी शुद्ध शासन देश में न्याय, अमन चैन कायम रख सकता है, शत्रु से रक्षा की व्यवस्था कर सकता है, तथा सामाजिक और आर्थिक उन्नति भी कर सकता है। किन्तु समाज का विकास तो तभी होगा, जब प्रतिभावान व्यक्तियों को देश के विकास की योजना के अन्तर्गत, उद्योग का, सम्पत्ति के उपभोग का तथा अपनी आर्थिक उन्नति के लिए अर्जित करने और संचय करने का अधिकार हो।

परीक्षा-परिणाम

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा द्वारा वसन्त पंचमी २०१५ वि० को आयोजित परीक्षाओं का परिणाम प्रकाशित किया जा रहा है —

आर्य सिद्धान्त विशारद

प्रथम श्रेणी —

३, ६, ११, १८, ३७, ४२, ४५, १०५, ६, ७, ११, ४३, ४४, ४२, ४६, ४८, ५०, ५१, ५३, ५४, ५७, ६७, ६८, २०३, ७, ६, १७, १७, १७, ३८, ४४, ४६, २७, २८, ३०, ६८, ८७, ८८, ८६, ६०, ६३, ६४, ६६, ६८, ४६०, ८२, ८४, ८२, ८६, ६०, ६२, २०२, ११, १२, १३, १४, १८, ४६, ६४।

द्वितीय श्रेणी —

८, १७, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ५१, ७६, ८१, ८५, १००, २, ८, ६, १०, १२, १३, १६, २३, ३५, ३६, ४२, ४७, ५६, ५१, ५६, ५७, ६१, ६८, ६०, ६६, ६२, ६५, २००, १, ५, १२, १३, १५, १६, २०, २२, २३, २६, ३४, ६६, ६६, ८०, ६१, ६२, ६५, ३०१, ४, ७, ८, ११, १२, १४, ३८, ४२, ४८, ४६, ५७, ६४, ६५, ७०, ८२, ६०, ४४३, ४८, ८३, ८७, ८८, ८६, ६१, ६८, ५०१, ३५, १६, २०, २२, ३३, ३२, ५३, ५६, ६४।

तृतीय श्रेणी —

७, १३, २३, २४, २७, २८, २६, ३०, ३३, ३५, ३६, ४४, ४६, ४६, ५०, ५२, ५६, ५८, ६१, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७२, ७३, ७४, ७५, ८०, ८२, ६१, ६६, १०३, ४, १७, २४, २६, २७, २८, २६, ३०, ३४, ३६, ४०, ६२, ६३, ६४, ६६, ६६, ७२, ७६, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ८२, ८५, ८६, ६३, ६३, २१६, २१, २४, ३१, ३६, ४१, ४२, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५५, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ७१, ७३, ७५, ७६, ८१, ८३, ८४, ८५, ३७, ६६, ३०२, ३, ५, ६, ६, १०, १५, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २५, २६, २७, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ३७, ३६, ४०, ५७, ५६, ६१, ६३, ६६, ६७, ७२, ७३, ७४, ८१, ८६, ८७, ८८, ८६, ६५, ६६, ६८, ६६, ४००, ६, ६, १२, १५, १६, १७, १८, २०, २२, २३, २४, २५, २७, २६, ३२, ३५, ३६, ३८, ४१, ४२, ४५, ४६, ५०, ५१, ५५, ५६, ६१, ६२, ६३, ६६, ६६, ७०, ७२, ७३, ७६, ७८, ७६, ८१, ६३, ६४, ६६, ६७, ६६, ५१७, २१, २४, २५, २६, २७, २८, २६, ३०, ३१, ३६, ४७, ४८, ४६, ५१, ५२, ५४, ५७, ५८, ६३, ६७, ६६।

आर्य सिद्धान्त-भूषण परीक्षा

प्रथम श्रेणी—१०, २६, ४३, ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४।
द्वितीयश्रेणी—३, ८, २१, २२, २४, २८, ३२, ३४, ३६, ३७, ७३।
तृतीयश्रेणी—१, ५, ७, ११, १६, २३, ३३, ३८, ३६, ४१, ४४, ७४।

आर्य सिद्धान्त रत्न परीक्षा

प्रथमश्रेणी—५, १३, १४, १६, १७, १८, १६, २०।
द्वितीयश्रेणी—८, १२, ५५।
तृतीयश्रेणी—६, ७, २६, २८।

विवरण

परीक्षा—	सम्मिलित—	उत्तीर्ण—	प्रतिशत
रत्न—२०—	१६—	१२—	७५ प्रतिशत
भूषण—७३—	५६—	३०—	५३ प्रतिशत
विशारद—५६४—	४१३—	३२३—	७६ प्रतिशत
योग— ६५७—	५३५—	३०२—	७५ २ प्रतिशत

विशेष—सम्पूर्ण परीक्षाओं में सम्मिलित छात्रों में सर्वप्रथम स्थान आर्य सिद्धान्त भूषण परीक्षा के छात्र श्री सुरेन्द्रकुमार गुरुकुल वैदिक ने प्राप्त किया। प्राप्तांक १६१/१०० है।

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए०
मन्त्री सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, देहली
कार्यालय सत्यार्थी प्रकाशक

कालूराम शास्त्री द्वारा सम्राट्प्रेस आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
में मुद्रित तथा प्रकाशित



वार्षिक मूल्य ८) | आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र | विदेश में
एक प्रति का २ नये पैसे | लखनऊ, रविवार वैशाख २३ शक १८८१ वैशाख कृ० ११, वि० २०१६, ३ मई, १९५९ ई० | १२शि ज्य

उत्तरप्रदेश के आर्यबन्धु हाथरस पहुँचें

आर्यसमाज की प्रचार, प्रबन्ध और प्रसार की समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना हम सबका प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिये

उत्तर प्रदेश की १२०० आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि भेजकर आर्यसमाज और सभा की शक्ति को सुदृढ़ बनायें। सभी समाजों, जिला सभाओं, अन्तरंग सदस्यों, उपदेशकों आदि को सभा के हाथरस अधिवेशन की सफलता के लिए पूर्ण प्रयत्न आरम्भ कर देना चाहिये। उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज की भावी प्रगति के लिये हाथरस-अधिवेशन अपना विशेष महत्त्व रक्खेगा। यहां पर प्रान्तीय आर्य सम्मेलन और अस्पृश्यता निवारक-सम्मेलन श्री चौधरी गिरधारीलाल जी मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में होगा।

आज देश में जो सांस्कृतिक और सामाजिक संकट सव्याप्त है, आर्यसमाज की शक्ति ही देश को उस संकट से उबार सकती है। हमने कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का जयघोष किया है और ऋषि दयानन्द के सैनिक बनने की शपथ ली है। क्या हमारे स्वप्नों और शपथों का हाथ पर हाथ धर बैठे रहने से पूरा हो सकना सम्भव है? यदि हम ही थक कर आराम करने लग गये तो ... का वेदानुद्धरिष्यति की भांति ... का मनुष्यानुद्धरिष्यति का प्रश्न गूंजता रहेगा। ऋषि दयानन्द ने अपने अनुयायियों को संसार का उपकार करने का व्यापक और महान् दायित्व सौंपा है। क्या हम ऋषि की इच्छानुसार कार्य कर रहे हैं, युग हमसे इस प्रश्न का उत्तर मांग रहा है। आर्यसमाज के सदस्य, स्थानीय समाजें, जिला सभाएं, प्रान्तीय सभाएं और शिरोमणि सार्वदेशिक सभा यह है आर्यसमाज के संघटन की महिमा। यदि सभी इकाइयां अपने अपने क्षेत्र में वेद प्रचार और पाखण्ड-खण्डन का कार्य करें तो सारे देश का वातावरण शीघ्र ही परिवर्तित हो सकता है। इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और सार्वदेशिक सभा की ओर से नैतिक उत्थान आन्दोलन का कार्यक्रम आर्य जगत् के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। किसने कहां तक कार्य किया यह हमसे अधिक अच्छी प्रकार कोई नहीं जानता और हमें आगे क्या करना है यह भी हम अच्छी प्रकार जानते हैं। अतः अपनी योजना की सफलता के लिये हम सबको सबसे पहले व्यक्तिगत आत्म-शुद्धि और संघटन निष्ठा का परिचय देना होगा।

उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओ, आपने एक महान् योजना (गुरुधाम विद्वदभिनन्दन, आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह) का दायित्व स्वीकार किया है। उसे सफल बनाने के लिये हाथरस अधिवेशन के सुनहरे अवसर का सदुपयोग कीजिये और सम्मिलित रूप से संघटन के हित और गौरव की भावना से परिस्थिति एवं भावी कार्यक्रम पर विचार कीजिये। निर्वाचन तो हुआ ही करते हैं उनको मुख्यता न देते हुए हम सबको इस सुअवसर पर विचारना होगा कि प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार की वायु कैसे प्रवहमान हो उठे, आर्यसमाज के उपदेशक कैसे अपने कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें, गुरुकुल का रथ कैसे गतिशील हो, आर्यमित्र और प्रेस कैसे सुस्थिर व्यापक और प्रभावशाली बनें तथा आर्यसमाज के संघटन में एक नव जीवन का संचार हो सके।

उपर्युक्त सभी बातों के लिये सबको एक दूसरे के निकट आना होगा, विघटित शक्तियों को मिलाना होगा और एकता की भावना को सव्याप्त करना होगा।

प्रान्त की सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि हाथरस पहुँचें यहीं उनका भावी कार्यक्रम होना चाहिये। हाथरस-आर्यसमाज की ओर से आर्य प्रतिनिधियों तथा अन्य अतिथि गण के ठहरने के लिए हर प्रकार की सुविधा की व्यवस्था की जा रही है।

वर्ष | अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क १७

देश विदेश में प्रचार की समस्या

(श्री प० विश्वनाथ त्यागी, बी० ए० एल०-एल० बी०)

आज आर्यसमाज के सम्मुख जो समस्याएं हैं उनमें सबसे मुख्य समस्या है प्रचार व्यवस्था के 'आदर्श नियोजन की'। प्रस्तुत लेख में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान और अनुभवी उपदेशक बन्धु त्यागी जी ने समस्या के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए अपने सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं। आशा है आर्यजगत के शुभचिंतक समस्या की गम्भीरता को समझेंगे और सुझावों से लाभ उठायेंगे।

—सम्पादक

आर्यसमाज को स्थापित हुए ८४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। ऋषि के जीवन काल में अपने ही देश में धर्मों की इतनी उलझनें थी कि वे पूर्णरूप से न सुलझ सकी। केवल २१, २२ वर्ष ही ऋषि को कार्य करने को मिले, परन्तु इस अल्पकाल में जो कार्य ऋषि ने किया वह अचम्भे में डालने वाला है। उनकी मृत्यु के पश्चात् आर्यसमाज के नेताओं और साधारण सभासदों में उत्साह की भव्य और ऊँची तरगें विद्यमान थीं और इसी कारण प्रचार की भी धूम रही और स्थान स्थान पर आर्यसमाज स्थापित हो गये। इसके पश्चात् जो ख्याति आर्य नेताओं को प्राप्त हुई उसको Cash करना भी उसी समय प्रारम्भ हो गया और अब संस्था युग का प्रारम्भ हुआ। शिक्षा संस्थाओं, विधवाश्रमों और अनाथालयों का देश में जाल बिछ गया। समस्त उत्साह और शक्ति को हमने इन संस्थाओं में लगा दिया। हमें सफलता भी मिली। परन्तु प्रचार उतना ही कम होता चला गया।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो आर्यसमाज के विविध क्रिया कलाप में क ऊँचे आदर्शों से प्रेरित न होकर राष्ट्रीय और सामाजिक उत्थान की भावना से ही चलते रहे हैं। अब जबकि हमारी केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों ने समस्त राष्ट्रीय और सामाजिक कार्यों को अपने हाथ में ले लिया है, हमें कोई कार्य करने को नहीं रहा है। हमारे पांवों तले की जमीन खिच गई है, हम आकाश की ओर देख रहे हैं। हमारे नेता किंकर्तव्य विमूढ़ हो गये है। इन ८४ वर्षों में कभी भी ऐसा समय नहीं आया जबकि सार्वदेशिक सभा अथवा प्रान्तीय सभाओं ने कोई प्रचार योजना बनाई हो। जो कुछ थोड़ा बहुत कार्य हुआ है वह बिना होश के जोश से ही सम्पादित हुआ। ऋषि ने जिन भव्य स्वप्नों को देखा था और जिन वैदिक आदर्शों को हमारे सम्मुख रखा था, उन्हीको सुन सुनाकर बिना किसी तैयारी के हम अपने दुरूह मार्ग पर चल दिये। परिणामत. नितान्त घोर असफलता हमें मिल रही है।

हमारा प्रचार केवल आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों तक ही सीमित रह गया है। जहां आर्यसमाजों की स्थापना नहीं हुई है, वहाँ उत्सवों का क्या काम और इसलिए प्रचार का सर्वथा अभाव है। फिर आर्यसमाजें भी शहरों तक ही सीमित हैं। हमारे गावों में बसने वाली जनता ऋषि के नाम और वैदिक धर्म से नितान्त अनभिज्ञ हैं। इसके अतिरिक्त सबसे जटिल समस्या इस समय हमारे सम्मुख यह और उपस्थित है कि इस बीसवीं शती क वैज्ञानिक युग में हम अपने सिद्धान्तो की मान्यता किस प्रकार करायें, साथ ही हमारे प्रचारक किस कोटि और विद्वत्ता के होने चाहिए? हमारे प्रचार के प्रकार में किन किन परिवर्तनों की आवश्यकता है? इस समय तो अवस्था इतनी

सामयिक समस्याएँ

शोचनीय है कि कुछ कहते नहीं बनता। जिसने हारमोनियम पर हाथ रखना सीख लिया वह भजनीक और कवि हो गया, और जिसने थोड़ा बहुत बोल करके जनता को अपनी ओर आकर्षित कर लिया वही अपने को महोपदेशक समझने लगा। बहुत थोड़ी संख्या अच्छे और स्वाध्यायशील भजनीकों और उपदेशकों की है।

आर्यसमाज का विधान प्रजातन्त्रात्मक है। इसलिए दो आने, चार आने और आठ आने प्रति मास देकर कोई व्यक्ति भी आर्यसमाज के प्रवेश-पत्र पर हस्ताक्षर करके समाज का सदस्य बन सकता है। अधिकाश में साधारण शिक्षा और स्थिति के व्यक्ति ही आर्यसमाज में प्रवेश करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों से हमारी प्रान्तीय सभाओं और सार्वदेशिक सभा का सघटन होता है। कभी-कभी डाक्टर वकील और स्कूल, कालेजों के शिक्षक भी भूले भटके प्रतिनिधि सभाओं के सदस्य और अधिकारी बन जाते हैं। परन्तु यह व्यक्ति भी ऐसे ही होते हैं जिन्होंने शायद ही कभी प्रचार स्वयं किया हो और इससे सम्बन्धित समस्याओं पर विचार किया हो। वे तो लोकेषणा की तृप्ति के लिए आर्यसमाज और प्रतिनिधि सभाओं के घोड़ों पर सवारी 'करने के लिये ही आते हैं।

अत सब प्रश्नों का एक प्रश्न यह है कि प्रचार की समस्याओं को कौन सुलझाये और प्रचार योजना को कौन बनाये? इस दुष्कर कार्य के लिए ऐसे विद्वान और ठण्डे मस्तिष्क वालों की आवश्यकता है जो आर्यसमाज को वर्त्तमान युग के झञ्झटों से मुक्त करके अपनी सुदृढ़, गम्भीर योजना को रख सकें।

मैंने अभी अभी 'विदेशों में प्रचार समस्या' विषय पर आदरणीय एवं आर्यसमाज के विद्वान श्री प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय का लेख 'आर्यमित्र' में पढ़ा है। उन्होंने अपने लेख में वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डाला है। श्री पंडित जी को विदेश प्रचार का भी ज्ञान है और इस समस्या को सुलझाने और प्रचार योजना को बनाने की पूरी क्षमता भी रखते हैं। मुझे यह पूर्ण आशा है कि हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक तथा प्रतिनिधि सभायें उनकी विद्वत्ता और अनुभवों से लाभ उठायेंगी। परन्तु मैं भी अपनी अल्प बुद्धि और कुछ अनुभवों के आधार पर कुछ सुझाव आर्य जनता के सम्मुख रखने का साहस करता हूँ। मेरा अब तक का सारा जीवन एक प्रचारक का जीवन रहा है। मैं निम्न विचार विचारार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

१—विदेशों में प्रचार की योजना बनाने से पूर्व अपने ही देश में इस समय प्रचलित दूषित और बेढगी प्रचार योजना को ठीक करना चाहिए।

२—आर्यसमाज का प्रचार आज नहीं वरन् आरम्भिक काल से ही एक अच्छा व्यवसाय बन गया है। सौ सौ और दो दो सौ रुपया प्रतिदिन लेकर प्रचार करना कुछ अच्छे विद्वानों ने भी अपना नियम बना लिया है। किसी किसी उपदेशक को तो ५००), ६००) रुपये प्रतिमास प्रचार करने से मिल जाते हैं, और कहीं मिलना और मिलते के प्रचारक को १००) प्रतिमास मिलना कठिन हो रहा है। इसका परिणाम यह निकला है कि उपदेशकों में ऐसे व्याख्यान देने की होड़ उत्पन्न हो गई है जो जनता और आर्यसमाज के अशिक्षित अधिकारियों को अधिक पसन्द आयें, चाहें उनके व्याख्यानों का आर्यसमाज के सिद्धान्तों से कोई सम्बन्ध हो या न हो।

इस स्थिति का दायित्व इन बिचारे निर्धन, उपेक्षित वरन् विद्वान् उपदेशकों पर नहीं है। हमारे उपदेशक गृहस्थी हैं और गृहस्थ की उनकी भी वही आवश्यकतायें हैं जो एक वकील बैरिस्टर और व्यवसायी व्यक्ति की हैं। निरे तप और त्याग से इन गृहस्थियों का काम नहीं चल सकता। उनको अच्छे से अच्छा वेतन और सुविधा प्राप्त करने के विरोध में मैं नहीं हूँ। परन्तु मेरा केवल इतना ही तात्पर्य है कि समस्त उपदेशक एक सघटन के अधीन हों। उनकी योग्यता के अनुसार उनका वेतन निश्चित हो और वह समय पर मिलना चाहिये और यातायात, ठहरने, भोजन और स्वाध्याय इत्यादि की समस्त सुविधायें समाओं को करना चाहिये।

३—मच और वेदी द्वारा प्रचार के अतिरिक्त भी हमारी कोई योजना होनी चाहिये। हमें ऐसे प्रचारकों और उपदेशकों की अब अधिक आवश्यकता होगी जो केन्द्रीय स्थानों पर बैठकर बड़े-बड़े नगरों की शिक्षित जनता से सम्पर्क स्थापित कर सकें। और अपनी मधुरवाणी, व्यवहार और उच्च जीवन से इन गुमराह वरन शिक्षित जनता को वैदिक धर्म की ओर आकर्षित कर सकें।

४—आर्यसमाजों और प्रतिनिधि सभाओं का मुख्य उद्देश्य और प्रतिदिन का कार्य प्रचार होना चाहिये। मकानों के ईंट पत्थरों का प्रबन्ध और संस्थाओं के सचालन-कार्य साधारण व्यक्ति भी कर सकते है। इसलिये ऐसे व्यक्तियों को इस प्रकार के विभागों का मन्त्री और प्रधान बनाया जा सकता है। वकीलों और डाक्टरों को भी प्रचार समितियों में नहीं लेना चाहिये। उनके पास न समय है न क्षमता और नहीं उनका अधिकार ही है।

सार्वदेशिक रूप से उच्चकोटि के सदाचारी और विद्वान व्यक्ति ही प्रचार योजना को अपने हाथ में लें और वह व्यक्ति ऐसे हों जिन्हे स्वयं भी प्रचार कार्य में रुचि हो और उसका अनुभव भी हो।

५—प्रत्येक समाज में एक व कोष प्रचार और पुस्तकालयों के लि होना चाहिये।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वेदोपदेश

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥
ऋ० १।३।१०

हे वाक्पते ! सर्व विद्यामय ! हमको आपकी कृपा से "सरस्वती" सर्व शास्त्र विज्ञानयुक्त वाणी प्राप्त हो "वाजेभिः" तथा उत्कृष्ट अन्नादि के साथ वर्तमान "वाजिनीवती" सर्वोत्तम क्रिया विज्ञानयुक्त "पावका" पवित्र स्वरूप और पवित्र करने वाली सत्यभाषणमय मंगलकारक वाणी आपकी प्रेरणा से प्राप्त होके आपके अनुग्रह से परमोत्तम बुद्धि के साथ वर्तमान् "वसु." निधिस्वरूप यह वाणी "यज्ञं वष्टु" सर्वशास्त्रबोध और पूजनीयतम आपके विज्ञान की कामनायुक्त सदैव हो, जिससे हमारी सब मूर्खता नष्ट हो और महापाण्डित्य-युक्त हों।



सम्पादकीय

लखनऊ—२ मई १९६१, दयानन्दाब्द १३७, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६१

संसदीय राजभाषासमिति का प्रतिवेदन

१९६५ से केन्द्र में हिन्दी के प्रयोग का समर्थन

चिरकाल से प्रतीक्षित संसद की राजभाषा-समिति की रिपोर्ट पिछले सप्ताह संसद में प्रस्तुत की गई। यह समिति राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर राष्ट्रपति को रिपोर्ट देने के लिए नियुक्त की गई थी। इसमे लोक-सभा के २० तथा राज्य सभा के १० सदस्य थे। समिति की कुल २६ बैठकें हुईं। समिति ने संविधान सभा के १९६५ से केन्द्र मे अंग्रेजी की जगह हिन्दी के प्रयोग के निश्चय को पूर्ण माना है और लिखा है कि भाषा-परिवर्तन के विषय में संविधान की व्यवस्था ही अपने आपमें परिपूर्ण है, जिसे संविधान सभा ने सर्व सम्मति से स्वीकार किया था, उस व्यवस्था में देश के विभिन्न भाषा-भाषी ग्रुपों की यथा-सम्भव अधिक से अधिक सहमति प्रकट होती है।

समिति ने अपनी निश्चित राय दी है कि सन् १९६५ से केन्द्र में अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ले ले, यही एकमात्र व्यावहारिक और निरापद मार्ग है। यद्यपि अंग्रेजी से हिन्दी में अन्तिम परिवर्तन क्रमिक और व्यावहारिक ढंग से होना चाहिए। इस सिद्धान्त का समिति के बहुमत ने समर्थन किया है। परन्तु समिति के ६ सदस्यों डा० रघुवीर, श्री हरिश्चन्द्र शर्मा, स्व० प्रफुल्लचन्द्र भंजदेव, श्री पं० ठाकुरदास भार्गव, श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन और सेठ गोविन्ददास ने अपने नोट में हिन्दी को सेवी के साथ अंग्रेजी का स्थान दिये जाने की प्रबल मांग की है। इन सदस्यो की सम्मति है कि कमेटी की यह राय उचित प्रतीत नहीं होती कि फिलहाल अंग्रेजी के प्रयोग पर किसी प्रकार की पाबन्दी नहीं होनी चाहिए। इन सदस्यों ने आग्रह किया है कि अभी से चौथे वर्ग के सरकारी कर्मचारियो तथा जनता के पास भेजी जाने वाली सरकारी चिट्ठियाँ हिन्दी में ही भेजी जानी चाहिए। हाँ जो अंग्रेजी ही लिखते होंगे वे इस चीज के अपवाद रह सकते है। इन सदस्यों ने हिन्दी के पृथक् सचिवालय अथवा एक स्वायत्त बोर्ड बनाये जाने की भी मांग की है। जिससे १९६५ और उसके एक या दो वर्ष बाद हिन्दी का प्रयोग सफलतापूर्वक हो सके। समिति का प्रतिवेदन राष्ट्रीय भावनाओ के अनुरूप है। समिति के एक सदस्य श्री फ्रैंक एनथोनी ने समिति के निर्णयों से अपनी असहमति प्रकट की है। सदस्यता के नाते वे अपना विरुद्ध मत प्रकट करने में स्वतंत्र हैं परन्तु उनकी असहमति इस कारण अधिक है कि वे अपने को भारतीय राष्ट्रीयता के साथ अभी तक नैतिक रूप से आत्मसात् नहीं कर सके। हमारी इस मान्यता में कोई द्वेष भावना नहीं है अपितु उनके अत्यधिक अंग्रेजी मोह के कारण हमें उपर्युक्त शब्द लिखने पड़े हैं। भारत को न समझ सकने का एक प्रमाण २७ अप्रैल को संसद में अंग्रेजी को १५वीं भारतीय भाषा मानने के स्वयं के प्रस्ताव पर दिये गये उनके वक्तव्य से मिलता है, जिसमें उन्होंने कहा कि कानूनी दृष्टि से अंग्रेजी भारतीय भाषा है, क्योंकि संविधान अंग्रेजी में बनाया गया है, परन्तु संस्कृत भारत की भाषा नहीं है, संस्कृत को आर्य भारत में लाए। (इस ऐतिहासिक विवाद की आलोचना यहाँ अप्रासंगिक होगी) इस प्रकार राज-भाषा समिति ने जो निर्णय किए हैं आशा है सरकार उन पर नैतिक एवं व्यावहारिक आचरण करना प्रारम्भ करेगी। सरकार की उपेक्षा से ही इस ओर अब तक सन्तोषजनक प्रगति नहीं हो सकी है आशा हैं इस समिति के निर्णयों का सम्बल पाकर सरकार अपनी असमर्थताओं को दूर कर राज-नैतिक दासता के पश्चात् मानसिक दासता से मुक्त होने के राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन कर सकेगी।

पंजाबी सूबा नहीं बनेगा

पंडित नेहरू ने लोक-सभा में एक वक्तव्य द्वारा पंजाबी सूबा आन्दोलन के विरुद्ध अपना निर्णय घोषित किया और यह भी कहा कि मास्टर तारासिंह कुछ भी कहें मैं या भारत-सरकार उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे।

हमने गत सप्ताह नेहरू-तारासिंह समझौते के भावी-परिणामों की चर्चा की थी। यह ठीक है कि, इस घोषणा द्वारा पंजाबी सूबे के पक्षपातियों के प्रफुल्लित हृदय कुछ समय के लिए मुरझा जाएंगे। परन्तु क्या इस आन्दोलन के मूल कारणो को समाप्त करने का भी प्रधान मंत्री ने कभी प्रयत्न किया है? वास्तव मे पंजाबी सूबे की माग स्वतंत्र भारत की राजनीति मे कैंसर के विषाक्त फोड़े के समान भयंकर बनी हुई है? इस समस्या को कांग्रेस की साम्प्रदायिक तुष्टीकरण नीति से प्रोत्साहन मिलता रहा है। आज मास्टर तारासिंह और उनके अनुयायी, मिस्टर जिन्ना के पद-चिह्नों पर चल रहे हैं। गाधी जी के उत्तराधिकारी पंडित नेहरू उन्हें सन्तुष्ट करने का ज्यों ज्यो प्रयत्न करते हैं त्यों-त्यो उनकी मागें बढ़ती चली जाती हैं।

प्रजातन्त्र का मूल सिद्धान्त सह अस्तित्व की भूमिका मे पनपता है, सहविरोध की भूमि मे नहीं। पंजाब में सिक्ख सम्प्रदाय और पंजाबी बोली के लिए सुरक्षा और विकास के समान अवसर कौन नहीं देना चाहता? परन्तु यदि विकास के अवसर के लिए राष्ट्र-भाषा हिन्दी एवं हिन्दी मातृ-भाषियों के अधिकारो का बलिदान कोई मांगता हो तो इसे कैसे स्वीकार और सहन किया जा सकता है। कांग्रेस की तुष्टि-करण नीति ने सच्चर-फार्मूला और क्षेत्रीय फार्मूला स्वीकार कर पंजाब के विघटन-वादियों को जो प्रोत्साहन दिया उसकी अन्तिम परिणति पंजाबी सूबा ही हो सकती है। इसलिए जब पंडित नेहरू पंजाबी सूबे के विरोध में घोषणा करते हैं, तो उन्हें आर्यसमाज के पक्ष की सही स्थिति पर विचार करना चाहिये। आर्यसमाज पंजाब के बहुमत और हिन्दी मातृभाषियों एवं राष्ट्र-भाषा हिन्दी के पक्ष का समर्थन कर राष्ट्रीयता के पक्ष को प्रस्तुत कर रहा है उसके पक्ष को साम्प्रदायिक या किसी का विरोधी समझना राष्ट्रीय विचारधारा का अपमान है।

यह ठीक है कि पं० नेहरू सार्वजनिक जीवन में विनम्रता एवं सद्भावना का विकास चाहते हैं और अनेक बार उनको बुरा कहने वाले मास्टर साहब को वे निमंत्रित करते हैं। यह उनकी व्यक्तिगत महानता है। परन्तु व्यक्ति से सिद्धान्त सदैव ऊंचे होते हैं। हमें आशा है प्रधान मन्त्री ने जो घोषणा की है वे उसका दृढ़ता से पालन करेंगे और अभी तक थोड़ा बहुत जो प्रोत्साहन पंजाबी सूबा समर्थकों को प्राप्त हो सका है उसे समाप्त कर आदर्श पंजाब, राष्ट्रीय पंजाब, असाम्प्रदायिक पंजाब के नव निर्माण का स्वप्न साकार करेंगे। आर्यसमाज की शक्ति इस कार्य में पं० नेहरू के हाथ मजबूत करने के लिए सदैव उद्यत है और रहेगी।

बाबू उमाशंकर जी की धर्मपत्नी का स्वर्गवास

यह समाचार जानकर हार्दिक दुःख है कि सभा के भूतपूर्व उपप्रधान व पूर्व मन्त्री श्री बाबू उमाशङ्कर जी की धर्मपत्नी का १४-४-६१ को स्वर्गवास हो गया। श्री बाबू जी जैसे उत्साही योग्य और लगनशील आर्य कार्यकर्त्ता के इस वियोग-दुख मे हम उनके प्रति शोक-समवेदना प्रकट करते हैं। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। मित्र-परिवार इस दुख मे बाबू जी के साथ है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ को इस प्रकार के पारिवारिक दुःखो से जो आघात पहुंचता है, उसे हम भलीभाँति समझते है। मनुष्य जीवन में इस प्रकार के वियोग दुःख आया ही करते हैं। आर्यजन उन्हें साहस और धैर्यपूर्वक सहन करें यही उनकी विशेषता होनी चाहिए। बाबू जी के सामाजिक जीवन में उनकी पत्नी का सहयोग पर्याप्त महत्त्व-पूर्ण रहा है, ऐसी अवस्था में जीवन साथी के अभाव में उनकी मानसिक शांति एवं सामाजिक लगन को गहरा आघात पहुंचना स्वाभाविक है। हम एक बार पुनः सभा और मित्र की ओर से बाबू जी के प्रति शोक-समवेदना प्रकट करते हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अंग्रेजी को भारतीय भाषा मानने का आग्रह और संसद-सदस्यों का कर्त्तव्य

संसद में नामजद सदस्य फ्रैंक एन-थोनी (एग्लोइंडियन) ने एक प्रस्ताव द्वारा अंग्रेजी को भारत की १५ वीं भाषा स्वीकार करने की माग की है। संसद के कुछ सदस्यों की यह सम्मति थी कि इस प्रस्ताव पर तब तक के लिए विचार स्थगित रखा जाए, जब तक कि संसदीय भाषा समिति के प्रतिवेदन पर संसद विचार न कर ले। परन्तु अध्यक्ष महोदय ने प्रस्ताव पर विचार की स्वीकृति दे दी है। प्रस्तावक ने एक लम्बा भाषण भी दिया, जिसमें उन्होने अंग्रेजी की बहुत वकालत की परन्तु जब सदस्यों ने उनसे पूछा कि अंग्रेजी किसकी मातृ-भाषा है? तो वे समुचित उत्तर न दे सके और उन्होंने ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण दिये जो कि भारतीय भाषाएं हैं। पर उनके बच्चे अंग्रेजी बोलते हैं। कहा कि ऐसे लोगो की भाषा अंग्रेजी है। उदाहरणार्थ उन्होने कहा श्री एम० आर० मसानी (स्वतन्त्र सदस्य) की मातृ भाषा गुजराती है और उनकी पत्नी की भाषा हिन्दी है, लेकिन उनके बच्चों की मातृ भाषा अंग्रेजी है क्योकि वे बचपन से घर में अंग्रेजी बोलते हैं। दूसरे ससद सदस्य डा० पी० सुब्बारायन (कांग्रेस) का उदाहरण दिया कि उनकी मातृ-भाषा तामिल है, और उनकी पत्नी की मातृ-भाषा कोकणी है, लेकिन उनके बच्चों की मातृ भाषा अंग्रेजी है क्योंकि वे घर में अंग्रेजी बोलते हैं।

हमने इन उदाहरणों की विस्तृत चर्चा इसलिए की है जिससे अंग्रेजी के पक्ष की कमजोर स्थिति स्पष्ट हो जाय। इस प्रस्ताव पर मतदान के लिए ८ मई का दिवस नियत किया गया है। हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं है जो कांग्रेस पार्टी गोवध-निषेध जैसे भावनात्मक प्रश्न पर सदस्यो को मत अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता देने में संकोच करती रही, और जिसकी अनुशासन की कठोर चाबुक इस विचार के समर्थकों के लिए सदैव उठी रहती है उस कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं गौरव की रक्षा से सम्बन्धित इस प्रश्न पर सदस्यों को निर्देशन न करते हुए स्वतन्त्र मत देने का अधिकार दे दिया गया है।

अंग्रेजी दासता की जड़ों को उखाड़ने में अंग्रेजी के उपयोग की बहुत बार चर्चा की जाती है परन्तु इस तथ्य से इन्कार करना कि भारत में डेढ़ सौ वर्षों तक अंग्रेजों के शासन का मूल-आधार अंग्रेजी ही रही, राष्ट्रीय भावना के विरुद्ध होगा, देश की स्वाधीनता के १२ वर्ष पश्चात् भी अंग्रेजी के प्रति व्यामोह हमारी मानसिक दासता की कहानी है। एक प्रतिशत से भी कम अंग्रेजी बोलने वाले भारत की आत्मा को नहीं समझ सकते। इस अवसर पर हम जनसंघ और साम्यवादी दल के इस निश्चय का स्वागत करते हैं कि वह इस प्रस्ताव के विरुद्ध मत देंगे। हम संसद के सभी सदस्यों से आग्रह करते हैं कि वे अंग्रेजी को भारतीय भाषा के रूप मे स्वीकृत किये जाने के विरुद्ध अपना मत दें, उनका यह मतदान भारत को सांस्कृतिक दृष्टि से एक बड़े संकट से बचाने का कारण होगा।

अंग्रेजी का विश्व-भाषा के रूप में अपना जो महत्त्व है भारत उसका आदर करता है और करेगा। परन्तु अपने राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक हितों का बलिदान कर अंग्रेजी का सम्मान करना राष्ट्रीय आत्मघात सिद्ध होगा। प्रभु संसद सदस्यों को सद्बुद्धि प्रदान करें कि वे अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का पालन कर सकें।

*

'गुरुकुल के विद्वानों का सम्मान'

आर्य जनता को यह समाचार जान कर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि इस वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से संस्कृत के जिन बारह विद्वानो को पुरस्कृत किया गया है, उनमें से प्रथम दोनों विद्वान आपके गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक भूतपूर्व उपकुलपति एवं वर्त्तमान आचार्य हैं।

प्रथम पुरस्कार विजेता श्री पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री आर्यसमाज के उच्चकोटि के विद्वान् हैं। वैदिक वाङ्मय एवं शास्त्र के ज्ञाता होने के साथ-साथ पंडित जी साहित्य संगीत एवं कला में भी पर्याप्त रुचि रखते हैं। संगीत और कला के विषय में उनकी हृत-वीणा प्रत्येक रस सिद्ध की हृतंत्री को झंकृत किए बिना नहीं रहती। साहित्य के क्षेत्र में "संस्कृत काव्य विमर्श" संस्कृत ग्रंथ लिखकर अपनी काव्य रुचि एवं संस्कृतप्रियता का परिचय दिया है। आपकी इसी रचना पर राज्य सरकार ने १५००) का प्रथम पुरस्कार प्रदान कर आपको सम्मानित किया है।

आचार्य विश्वेश्वर जी आर्यसमाज के लिए गुरुकुल की एक अमूल्य देन हैं उनका गम्भीर एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व आर्यसमाज का गौरव है। लोक प्रसिद्धि से दूर एकान्त साधक तपस्वी की भांति वे अपने जीवन-क्षण एवं समाज सेवा के ठोस कार्य में संलग्न हैं। प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा के साकार स्वरूप आचार्य जी गुरुकुल की दैनन्दिन की समस्याओं में उलझे रहकर भी साहित्य और दर्शन की जो मूक सेवा करते रहे हैं, वह उनकी अमित प्रतिभा का प्रमाण है, महात्मा ईशा, प्रपंच परिचय, तर्कभाषा (व्याख्या) वक्रोक्ति (व्याख्या), काव्य प्रकाश (व्याख्या) भरत नाट्य शास्त्र (व्याख्या) आदि उच्चकोटि की शास्त्रीय रचनाएं संस्कृत से हिन्दी में प्रस्तुत कर हिन्दी के अभावों की पूर्ति में योग देते रहे हैं। साथ ही संस्कृत प्रधान विश्वविद्यालय के आचार्य के रूप में, संस्कृत साहित्य के भण्डार की वृद्धि करना भी आपने अपना कर्त्तव्य समझा है। संस्कृत में कुछ समय पूर्व अपने जीवन के लिए 'शिष्टाचार संहिता' लिखी थी। आधुनिक विज्ञान के विषयों से संस्कृत वाङ्मय को समृद्ध करने की दृष्टि से आपने इस वर्ष 'खगोल विज्ञान' और 'मनोविज्ञान' नामक पुस्तकें संस्कृत में लिखी हैं इन्हीं दोनों पुस्तकों पर राज्य सरकार ने १०००) का द्वितीय पुरस्कार आपको प्रदान किया है।

इन पुरस्कारों के लिए हम दोनों विद्वानों को आर्य जगत् व मित्र परिवार की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं। हमें आशा है, दोनों विद्वान् अपनी प्रतिभा से इसी भांति साहित्य की सेवा करते हुए अपनी गुरुकुल की और आर्यसमाज की यश श्री वृद्धि में सफल होंगे।

अत्यावश्यक सूचना

प्रत्येक आर्यसमाज को सूचित किया जाता है कि वह अपनी समाज के फार्म तथा दशांश व आलस्य धन सीधा सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें। यह रुपया किसी भी उपदेशक या प्रचारक को न दिया जाय।

—फूलनसिंह सभा मन्त्री

हीरक जयन्ती व गुरुधामादि समारोहों के निमित्त धन संग्रहार्थ दौरा, शाहजहांपुर के आर्यों का उत्साह

आप सबको मालूम ही है कि अक्टूबर १९५९ में महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरुदेव पूज्य विरजानन्द जी महाराज के निवास-स्थान पर गुरुधाम की स्थापना हो रही है। इस हेतु आर्य प्र० नि० सभा उ० प्र० को काफी धन की आवश्यकता है। हम लोग आपके यहाँ धन-संग्रह के लिए नीचे दिये गये प्रोग्राम के अनुसार आ रहे हैं। आप निश्चित तिथियों के अनुसार अपने-अपने स्थानों में सायंकाल एक सार्वजनिक सभा का आयोजन कर अपने यहाँ के धनवान, प्रतिष्ठावान महानुभावों से धन एकत्रित कराने में सहायता प्रदान करें।

३,४,५ मई खुटार, इटैया, गजापुर, सुलतानपुर, ६, ७ मई पुवाया, गोलाराबपुर, मिलकपुर, गढ़ीपुर, ८, ९ मई तिलहर, गुरुकुल जलपुर, समधाना, १० मई खुदागंज, ११ मई कटरा, १२, १३ मई जलालाबाद, बहरिया, १४ मई बरेली, १५ मई बदायूं, १६, १७, हाथरस। —डा० सालिकराम गंगवार

मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा शाहजहाँपुर

आर्यसमाज हाथरस का निर्वाचन

प० शिवदेव जी शर्मा वकील प्रधान, पं० सुरेशचन्द्र जी वैद्य स्नातक उपप्रधान, श्री ज्योतीप्रसाद जी उपप्रधान, श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम एस सी मन्त्री, श्री रघुनंदन शर्मा उपमन्त्री, श्री चम्पाराम जी आर्य उपमन्त्री, श्री रमेशचन्द्र जी विद्यावाचस्पति कोषाध्यक्ष, श्री दुर्गाचरन दत्त जी पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्री स्वामी अमृतानन्द जी के स्वास्थ्य में सुधार

श्री स्वामी अमृतानन्द जी महाराज अपने दो मास के लखनऊ, कानपुर, देहरादून, ऋषीकेश आदि के भ्रमण के पश्चात् सम्प्रति हल्द्वानी आर्यसमाज में आये हुए हैं। उनका स्वास्थ्य पिछले दिनों कुछ अस्वस्थ था। अब काफी सुधार है और वे शीघ्र ही प्रचार कार्यक्रम पर आने वाले हैं।

हल्द्वानी में आर्य माता का निधन

कुमायूं क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता जिला उपसभा नैनीताल के प्रधान व आर्यसमाज हल्द्वानी के उपप्रधान श्री प०शङ्करलालजी की ८७ वर्षीय वृद्धा माता का १६ अप्रैल को स्वर्गवास हो गया। सभी आर्य बन्धुओं ने नगर में सम्मान सहित माता जी के शव का जुलूस निकाला और अन्त्येष्टि संस्कार में भाग लिया। आर्यसमाज हल्द्वानी द्वारा दिवगत आत्मा की सद्गति एवं पारिवारिकों के प्रति शोक-सहानुभूति में प्रस्ताव पारित किया गया।

श्री बाबू उमाशंकर जी (फतहपुर) की धर्मपत्नी का स्वर्गवास

ता० १७-४-५९ को श्रीमान् बा० उमाशंकर जी की धर्मपत्नी जी का स्वर्गवास हो गया। ता० १९-४-५९ को स्थानीय समाज मन्दिर में समस्त उपस्थित जनों ने खड़े होकर स्वर्गीय आत्मा की सद्गति व दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की। —भैरवप्रसाद

मन्त्री

संशय-शमन और दम्भ-द्योतन

[श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज, मौरीशस]

सिंहावलोकन

श्री स्वामी विद्यानन्द जी विदेह ने अपनी मासिक पत्रिका सविता के साइज में एक विज्ञापन पुस्तिका प्रकाशित की है।

यद्यपि इस पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर 'अपनों से अपनी बात' यह छपा हुआ है (इस पुस्तिका के १६ पृष्ठों में तो अपनों से अपनी बात है किन्तु १२ पृष्ठों में संस्था और संस्थापक का परिचय छपा है एवं पुस्तकों के विज्ञापन और सम्मतियां प्रकाशित की गई हैं।) तथापि इसको विज्ञापन पुस्तिका ही कहना उचित है क्योंकि इस विज्ञापन पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ पर अपनों से अपनी बात का लेबिल ऐसा ही है जैसा कि कोई व्यक्ति (घृत का व्यापारी) किसी घृत के पात्र में नीचे तीन पाव वेजीटेबुल घृत रखकर ऊपर एक पाव शुद्ध घृत रखकर शुद्ध घृत का लेबिल लगा देवे।

अपनों से अपनी बात को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक भाग में श्री विदेह जी को संशय है और दूसरे भाग में उन्होंने अपने दम्भ का द्योतन किया है। इस लेख का एकमात्र प्रयोजन यह है कि उनके संशय का समाधान हो और दम्भ का प्रकाशन हो जावे।

संशय

श्री विदेह जी ने अपनों से अपनी बात के पृष्ठ ३ पर लिखा है कि "पं० सुरेन्द्र जी शास्त्री अकारण ही मेरे घोर विरोधी बन गये"

श्री विदेह जी! आपका ऐसा लिखना संशय सूचक, भ्रम द्योतक एवं असत्य विज्ञापक है क्योंकि अकारण कोई भी किसी का भी कभी भी विरोधी होता ही नहीं है। विरोध सदा सकारण हुआ करता है। इस सत्य को आपने इसी पृष्ठ में आगे स्वीकार भी किया है। 'विरोध का मूल कारण ईर्ष्या द्वेष के अतिरिक्त और कुछ न था। कहिये श्री विदेह जी!' विरोध को अकारण लिखकर अब विरोध का कारण ईर्ष्या और द्वेष लिख रहे हो। हां, एक बात और भी आपको बता देना चाहता हूँ कि ईर्ष्या और द्वेष भी अकारण नहीं होते हैं। उनके होने का भी कुछ न कुछ कारण होना ही चाहिये। आपके साथ न ईर्ष्या है और न द्वेष ही है किन्तु विरोध का कारण है सैद्धान्तिक मतभेद। यह सैद्धान्तिक मतभेद था, है और भविष्य में तब तक रहेगा जी जब तक कि आप दम्भ के कुएं में बैठना नहीं छोड़ेंगे।

दम्भ-द्योतन—

अपनों से अपनी बात के पृष्ठ १४ पर लिखा है कि "मैं अपने आत्मा और सर्वान्तर्यामी परमात्मा को साक्षी में कहता हूँ कि मैंने स्वप्न में भी आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा दयानन्द के मन्तव्यों के विपरीत न कभी सोचा है, न कहा है, न लिखा है, न किया है" आपका यह लिखना नितान्त दम्भ-द्योतक है क्योंकि आपने आर्यसमाज के सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द जी महाराज के मन्तव्यों के विपरीत कहा है और लिखा है।

कहा है और लिखा है—

आपने मेरठ में अपने व्याख्यान में कहा था कि आर्यसमाज का तीसरा नियम अधूरा है वस्तुतः यह नियम इस प्रकार होना चाहिये "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना ही नहीं तदनुसार आचरण करना कराना सब आर्यों का परम धर्म है" कहिये विदेहजी! यह विपरीत कहा है न? केवल कहा ही नहीं अपितु इसके पोषण में लिखा भी है। इसी अपनी बात के पृष्ठ ६ पर "यदि मैंने यह कहा है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना ही नहीं तदनुसार आचरण करना भी परम धर्म है तो क्या अनर्थ हो गया" महर्षि दयानन्द जी महाराज के बनाये हुए नियम को अपूर्ण कहना और लिखना तथा अपने द्वारा उस नियम की पूर्ति करना बताना और लिखना विपरीत हुआ कि नहीं?

अपनी बात के पृष्ठ ६ पर यद्यपि आपने यह स्वीकार किया है कि—"तब से इस विषय की चर्चा मैंने कभी किसी से नहीं की है" तथापि आपने इसके विपरीत लिखा है देखो सविता पृष्ठ ४५ "वेद धर्म नहीं है। वेद तो सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद में धर्म नहीं है, सत्य है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना धर्म नहीं है एक कृत्य है, कहिये श्री विदेह जी! सार्वदेशिक सभा को विश्वास दिलाकर भी आपने सविता में पुनः यह लिखा कि नहीं कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना धर्म नहीं" महर्षि दयानन्द जी महाराज तो लिखते हैं कि वेद का पढ़ना और पढ़ाना परम धर्म है और जनाब फरमाते हैं कि धर्म नहीं है। ऐसा लिखकर अपनी बात के पृष्ठ १४ पर यह लिखतेहुये (दयानन्द के मन्तव्यों के विपरीत न कहा है और न लिखा है) आपको तनिक भी संकोच न हुआ। यह ही दम्भ है।

२—महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने मन्तव्य एक में और आर्य समाज के नियम दो में ईश्वर को सर्व शक्तिमान लिखा है। किन्तु विदेह जी महाराज! आपने तो अपने आपको ही सर्व शक्तिमान् लिखा है" देखो सविता पृष्ठ ८८ पर विदेहोक्ति "उठ खड़ा हो, कमर कस, और संसार के अभिमुख अकेला ही उठ जाग तू सर्व शक्तिमान् है तू सर्व शक्तियों का पुञ्ज है।"

३—पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में पातंजलि योगदर्शन को उपादेय समझ कर पाठ्यपुस्तकों में गिना है किन्तु विदेह जी ने पातंजल योग को सर्वथा अव्यवहार्य लिखा है। देखो विदेह लिखित वैदिक योग-पद्धति पृष्ठ २ पर "सर्वथा अव्यवहार्य है।" सर्वथा अव्यवहार्य का अर्थ है कि कभी भी व्यवहार में आने के योग्य नहीं है।

४—यह ऋषि महर्षि जी महाराज तो वेद मन्त्र को अनेकार्थ का द्योतक मानते हैं किन्तु श्री विदेह जी अनेकार्थ होने से वेद को असंबद्धता के दोष से दूषित करते हैं। देखो अपनों से अपनी बात का विज्ञापन विभागीय पृष्ठ ४ पर 'असंबद्धता का मुख्य कारण था मन्त्रार्थ था मन्त्रार्थ की अनिश्चितता तथा अनेकार्थता"

५—महर्षि जी ने आर्यसमाज के नियम दो में और मन्तव्य प्रथम में ईश्वर को निराकार माना है किन्तु श्री विदेहजी ने ईश्वर को साकार भी माना है। देखो विदेह लिखित सत्यनारायण की कथा पृष्ठ २८ पर "सत्यनारायण ब्रह्म का ज्ञानियों ने जो साकार वर्णन किया है यह भी सत्य है।"

७—श्री विदेह जी! यद्यपि आपने अपनों से अपनी बात के पृष्ठ १ पर लिखा है कि "मुझे मनुष्यमात्र में ही नहीं, प्राणिमात्र में आत्म बन्धुत्व की प्रतीति और आत्म निजता की अनुभूति हो रही है।" मैं किसी के लिये अनिष्ट चिन्तन करना भी महापातक और बड़ा भारी पाप समझता हूँ तथापि यह सब लिखना आपके दम्भ का द्योतक करना है क्योंकि यदि आप ऐसा मान लेते और व्यवहार में लाते होते तो सविता पृष्ठ ८ फरवरी सन् ५७ पर यह न लिखते "भ्रातृव्य के वध के लिये तुम ब्रह्मसेवी, क्षत्रसेवी, सजातसेवी को समीप धारण-स्थापन करता हूँ। वेद में भ्रातृव्य का प्रयोग सर्वत्र शत्रु और शत्रुता के अर्थ में हुआ है।

८—सविता पृष्ठ २२ पर "विदेह उठ कमर कस और धर्मात्माओं को सुसंगठित करके अधर्मोपिशाचों को दुत्कार, फटकार, बतादे, उनके छक्के छुड़ादे, उन्हें मारकर भगादे।"

९—सविता पृष्ठ ३८ पर "दस्युओं को धुन डाल" श्री विदेह जी महाराज! यहां आपका आत्मबन्धुत्व और आत्म-निजत्व कहां गायब हो गया?

कोई व्यक्ति प्यार से ईर्ष्या और द्वेष करता है यह नहीं यह तो अभी साध्य है किन्तु आप तो ईर्ष्या और द्वेष के साक्षात् पुतले हो। देखो सविता का पृष्ठ ५ पर "रोम लीला के मदारी तथाकथित उपदेशक तो उपदेश करने के अधिकारी ही नहीं हैं। भले ही वे वेदशास्त्रों के विद्वान् और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के स्नातक ही क्यों न हों" कहिये विदेह जी महाराज! यहां तो आपकी आत्म बन्धुत्व की भावना द्वेष दावानल में दग्ध हो रही है या नहीं?

सविता पृ० ७ पर 'राष्ट्र सत्ता जिनके हाथ में है उनके द्वारा देश में पौराणिकता और बुद्धिवाद का प्रचार किया जा रहा है। पोस्टल टिकिटों पर पौराणिक और मुस्लिम चित्र हैं। राष्ट्रध्वज पर बौद्ध चक्र है' यह लिखकर अपनी बात के पृष्ठ १५ पर यह लिखना कि मेरे लिये सनातन धर्मियों के मन्दिर मुस्लिमों की दरगाह, ईसाइयों के चर्च,—आदि खुले हुए हैं। यह लिखना दम्भ का द्योतक है।

११—अपनों से अपनी बात के पृष्ठ पर लिखा है कि 'किसी भी सभा, संस्था या व्यक्ति की आलोचना नहीं है परन्तु आलोचना का प्रकार से मैं अपने आपको बचाऊँगा' श्री विदेह जी! सभा, संस्था और व्यक्ति के कुकृत्य की आलोचना करना बुरा नहीं है परन्तु आलोचना का प्रकार प्रशस्त और सत्यानुमोदित होना चाहिए परन्तु आप तो असत्य आलोचना करने में प्रचुर प्रवीण हैं। देखो सविता के पृष्ठ २६ पर गुरुकुलों में राक्षसों का मान हो रहा है सभा-संस्थाओं में राक्षसों का अभिनन्दन हो रहा है, समाजों और मन्दिरों में राक्षसों का अनुमोदन हो रहा

[शेष पृष्ठ ८ पर]

आर्यसमाज की प्रगति के लिये

विदेश प्रचार और साहित्य संस्थान की समस्या

(श्री विश्वबन्धु वेदालङ्कार एम०ए० आर्यसमाज हींग की मण्डी, आगरा)

कुछ समय पूर्व जब हम आर्यसमाज के ख्यातनामा विद्वान पं० अयोध्याप्रसाद जी वैदिक मिश्नरी से कलकत्ते में मिले तो बातचीत के दौरान में उन्होंने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना सुनाई कि कुछ वर्ष पूर्व एक विचारक ने अपने लेखों और पुस्तिकाओं में ये विचार प्रकट किये कि समस्त संसार भर में अभी तक ईश्वर की उपासना का समुचित उपासना गृह न बन सका। वर्त्तमान मठ, मन्दिर, मस्जिदें और गिरजे ईश्वर के उपासना-गृह नहीं हो सकते। ईश्वर की उपासना का तो ऐसा स्थान होना चाहिये जहां पहाड़ भी हों, नदियों भी बहती हों, जंगल भी हों, जंगली पशु-पक्षी भी हों जहां कभी भी रात्रि का अन्धकार न होने पावे। पंडित जी ने बताया कि विचारक के ये विचार खाली नहीं गये। अमरीका का एक धन कुबेर इन विचारों से इतना प्रभावित हुआ कि उसने ईश्वर का उपर्युक्त प्रकार का उपासना-गृह बनाने के लिये अपनी चालीस करोड़ की सम्पत्ति देने की घोषणा कर दी। तात्पर्य यह है कि युग की आवश्यकता के अनुसार शुद्ध भाव से निकले हुए उत्तम विचार खाली नहीं जाते।

प्रसन्नता की बात है कि आर्यसमाज के वातावरण में यह विचार तेजी से फैल रहे हैं कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के ध्येय को पूरा करने के लिये विदेश प्रचार और प्रामाणिक उच्चकोटि के साहित्य निर्माण की समुचित व्यवस्था की जाय। यह तो निश्चित है कि ये विचार अवश्य ही कार्यरूप में परिणत होंगे—पर देखना यह है कि आर्यसमाज के किस भामाशाह के सिर पर इसका सेहरा बंधता है और किस सार्वदेशिक सभा के प्रधान व मन्त्री के गले में विजयमाल पड़ती है।

यह कटु सत्य है कि आर्यसमाज की केन्द्रीय संस्थाओं ने इस विषय पर अभी तक गम्भीर विचार नहीं किया और न ही कोई ठोस कदम इस ओर बढ़ाया। विदेश प्रचार उपसमितियों के निर्माण और कोरी कागजी कार्यवाहियों से होने वाला नहीं है। इसके लिये हमें उन बौद्ध विद्वानों और आचार्यों का उदाहरण सामने रखना होगा जो नालन्दा और विक्रम शिला विश्वविद्यालयों से सैकड़ों की संख्या में प्रचार के लिये भेजे गये थे जिनमें से अनेकों के जीवन विदेशों में ही खप गये। आज योरोप और अमरीका में कोरे विद्वानों की आवश्यकता नहीं है पर रामतीर्थ और विवेकानन्द जैसे त्यागी विद्वानों की आवश्यकता है जो अपने त्यागमय आध्यात्मिक जीवन से वैदिक संस्कृति का पवित्र सन्देश दे सकें। आज का समस्त पश्चिम पुकार रहा है कि वह समय कब आयगा जब भारत से उसी प्रकार के त्यागी, तपस्वी, योगी, यहाँ आकर हमें शान्ति का सन्देश देंगे।

पश्चिम की बात जाने दीजिये, अभी तक पड़ौसी नैपाल और दक्षिण भारत में ही कितने प्रचारक भेजे हैं। दो चार महीने यात्रा करके व्याख्यान दे आने से प्रचार नहीं होगा। इसके लिये तो हमें उन्हीं प्रान्तों के प्रचारक तैयार करने होंगे जो अपना उच्च जीवन बिताते हुये अधिकारपूर्वक स्थानीय भाषाओं में अपने विचार व्यक्त कर सकें।

अब साहित्य-निर्माण की बात लीजिये। आर्यसमाज के उत्तम संगठन और व्यापक प्रचार कार्य को देखते हुए यह कल्पना नहीं की जा सकती कि उसके पास उतना समुन्नत साहित्य नहीं होगा। इसका प्रधान कारण यह है कि अब तक आर्यसमाज की शक्ति मौखिक प्रचार पर ही लगी है। हमारे लिये इससे अधिक लज्जा की बात क्या हो सकती है कि अब तक हम ऋषि दयानन्द के वेद-भाष्य को विश्वविद्यालयों में स्थान न दिला सके। पंजाब विश्वविद्यालय में एक बार रखा भी गया पर इसलिये हटा दिया गया कि उसको समझाने वाले सहयोगी ग्रन्थ नहीं हैं। इसलिए जब तक आर्यसमाज अपने प्रामाणिक लेखों और ग्रन्थों से ऋषि दयानन्द भाष्य की शैली आदि की वैज्ञानिकता और प्रामाणिकता को हृदयङ्गम न करा दे तब तक यह भाष्य विश्वविद्यालयों में स्थान न पा सकेगा।

इसी प्रकार आर्यसमाज का दार्शनिक सिद्धान्त स्पष्ट रूप से अभी तक संसार के सामने नहीं आ सका है जैसे शंकर, रामानुज आदि का। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि आर्यसमाज में दार्शनिक ग्रन्थ बिलकुल नहीं हैं—पर वह अभी प्रारम्भिक अवस्था में ही है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध ... प्रकाश को ही लीजिए, क्या इसका गीता, कुरान, बाइबिल आदि की तरह संसार की सभी भाषाओं में अनुवाद हो गया है। ये ऐसे कार्य हैं जिनको कोई अकेला व्यक्ति या छोटा-मोटा संस्थान नहीं कर सकता। इसके लिये तो एक शक्तिशाली विशाल संस्थान की आवश्यकता है जहाँ से प्रमुख विद्वानों द्वारा प्रामाणिक साहित्य तैयार कराया जाय। आर्यसमाज में विद्वानों की कमी नहीं है पर उनके कहीं बैठने की जगह भी तो हो। अभी पीछे जब हम बीकानेर गये तो हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पं० उदयवीर जी शास्त्री एक पौराणिक पाठशाला में पढ़ाकर अपना जीवन निर्वाह कर रहे हैं। इस प्रकार न जाने कितने विद्वान् हैं जो दूसरों के द्वार पर भटक रहे हैं। क्या करें आर्यसमाज में तो ऐसा एक भी संस्थान नहीं है जहाँ दस पन्द्रह विद्वान् एक साथ बैठकर निश्चिन्ततापूर्वक कार्य कर सकें। यह कार्य परोपकारिणी सभा के करने का था पर वह तो हथियार डाल चुकी है। ऐसी स्थिति में सार्वदेशिक सभा को यह अति महत्त्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लेना चाहिये।

साहित्य-संस्थान के लिये प्रारम्भ में कम से कम दस आर्य विद्वानों को उदरपूर्ति की चिन्ता से पूर्णतया मुक्त कर दिया जाय। प्रामाणिक साहित्य निर्माण के साथ साथ इन्हीं की देखरेख में हिन्दी और अङ्गरेजी में दो उच्चकोटि के मासिक या साप्ताहिक पत्र निकाले जायं जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हों। इनके द्वारा आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर अवैदिक विचारधारा का उच्च स्तर पर निराकरण किया जाय। इसी साहित्य संस्थान के साथ-साथ एक मिश्नरी ट्रेनिंग कालिज भी हो जहाँ देश-विदेश में प्रचार करने के लिये उच्चकोटि के प्रचारक तैयार किये जांय जिनमें अधिकतर संख्या उन्हीं देशों या प्रान्तों के निवासियों की हो जहाँ उनको कार्य करना है।

कम से कम पन्द्रह लाख रुपये की आवश्यकता होगी। अब प्रश्न यह है कि इतना रुपया कहाँ से आवे? हमारी दृष्टि में यह इतना भयावह प्रश्न नहीं है। इसके लिये सार्वदेशिक सभा को व्यापक आधार पर, द्विवार्षिकी या त्रिवार्षिकी सुनिश्चित योजना बनाकर इस कार्य को पूरा किया जाय। इन दो तीन वर्षों में इन दोनों कार्यों की ही प्रमुखता रहे, शेष कार्य गौण रूप में चलते रहें। आर्यसमाज के समस्त पत्रों, व्याख्यानों और अपीलों द्वारा इसको एक आन्दोलन का रूप दिया जाय। यह निश्चय किया जाय कि जब तक पन्द्रह लाख रुपया एकत्र न कर लिया जायगा आर्यसमाज चैन से न बैठेगा। ऐसी एक निश्चित योजना बनने पर रुपया देने वालों की कमी नहीं है, अभी पिछले आर्यमित्र के एक अङ्क में हमने देखा था कि मारिशस के सज्जन इस कार्य के लिए पाँच हजार रुपया अकेले देंगे। एक हमारे परिचित सज्जन हैं जो दस हजार रुपया इसमें देंगे। इस प्रकार न जाने कितने रुपये देने वाले निकल आयेंगे। प्रत्येक आर्यसमाजी इस महत्त्वपूर्ण योजना की पूर्ति में एक-एक रुपया भी देगा तो लाखों रुपया इकट्ठा हो जायगा फिर अधिक रुपया देने वालों की भी कमी नहीं। हो सकता है कोई भामाशाह निकल आये। किन्तु यह नितान्त आवश्यक है कि सार्वदेशिक सभा अपनी व्यापक स्तर पर एक निश्चित योजना बनाकर जनता के सामने आये।

यह निश्चित है कि यह कार्य आर्यसमाज के अब तक के किये कार्यों में अधिक महान और प्रभावशाली होगा। संस्था के साहित्य-निर्माण से आर्यसमाज में स्थिरता आवेगी और वैदिक मिश्नरियों के निर्माण और प्रचार से व्यापकता होगी। ईश्वर करे यह विचार शीघ्र साकार हो।

> आर्यसमाज के प्रचार को स्थायी और व्यापक बनाने के लिये आदर्श प्रचारकों और उत्कृष्ट साहित्य-निर्माण की समस्या सर्वाधिक गम्भीर और विचारणीय है। शीर्षस्थ नेताओं और सभाओं को इस दिशा में योजनानुसार शीघ्र कार्य आरम्भ कर देना चाहिये तभी हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य को और साधनों की सहायता से आगे बढ़ सकेंगे।
>
> —सम्पादक

प्रवासी भाइयों का गुरुधाम व आर्यमित्र-जयन्ती के प्रति उत्साह

ओ३म्

(१) आर्यसमाज सिंगापुर

२१-३-५९

श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा,

उत्तरप्रदेश लखनऊ

मान्यवर ! नमस्ते।

हम लोगों को जयन्ती-योजना के समाचार जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। सम्प्रति १००) रुपये कोषाध्यक्ष जी के पास भेज रहे हैं, जो स्वामी विरजानन्द जी स्मारक, आर्यमित्र जयन्ती तथा दोनों विद्वानों के अभिनन्दन कोष के लिए हैं। हमें खेद है कि हम रुपया शीघ्र न भेज सके, लेकिन अब सन्तोष है कि सिंगापुर आर्यसमाज ने भी इस यज्ञ में अंश दान देकर हिस्सा बटा लिया है, भविष्य में भी जो सेवा बन सकेगी यहाँ के आर्य बन्धु उसके लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

भवदीय

रामसुन्दर शर्मा

कोषाध्यक्ष आर्यसमाज,सिंगापुर

× × ×

ओ३म्

(२) आर्यसभा मौरीशस पोर्ट लुइस

२-३-५९

श्री मन्त्री जी आर्यप्रतिनिधि सभा,

उत्तरप्रदेश लखनऊ

श्री मन्नमस्ते।

आर्य सभा मोरीशस की अन्तरङ्ग सभा ने २१-२-५९ में निम्न प्रस्ताव पास किया कि""आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने आर्यमित्र की हीरक जयन्ती मनाने और श्री गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय व श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज के अभिनन्दन करने और मथुरा नगरी में गुरुवर विरजानन्द का स्मारक बनाने का जो निश्चय किया है, आर्य सभा मौरीशस की अन्तरङ्ग उसका हार्दिक स्वागत करती है। और यह सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश को बधाई देते हुए गुरुवर विरजानन्द स्मारक के लिए २००) रुपये भेजा जाना निश्चय करती है। यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

भवदीय

डा० दीक्षचन्द्र

मन्त्री आर्य सभा मौरीशस

× × ×

ओ३म्

(३) केरोमिखिया पो० नौसारी फीजी

१६-३-५९

श्री मंत्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा,

उत्तरप्रदेश लखनऊ

मान्यवर ! नमस्ते।

मुझे यह जानकर बहुत आनन्द हुआ कि मथुरा में आपकी सभा स्वामी विरजानन्द स्मारक बनाने जा रही है मैंने इस उपलक्ष्य में कुछ धन फरवरी में यहाँ से भेजा है और इसी वर्ष जून तक ४०) रुपया अपनी ओर से भेजूंगा। यहां मित्रों से भी चर्चा की है उनसे भी इस शुभ कार्य के लिए धन भिजवा सकूंगा। मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा कि फीजी निवासी आर्य बन्धु इस पवित्र यज्ञ में किसी से पीछे न रहें।

भवदीय

बालेश्वर प्रसाद आर्य

नोट :—

सिंगापुर, मौरीशस एवं फीजी के प्रवासी भाइयों के इस उत्साह के लिए हम उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं। हमें आशा है आगामी अक्टूबर तक उन उन देशों से हमें और भी अधिक सहायता प्राप्त हो सकेगी।

उपर्युक्त तीनों पत्रों का धन जयन्ती कार्यालय में आ चुका है। मौरीशस से ५००)रुपया उपर्युक्त धन के अतिरिक्त, श्री स्वा० भुवानन्द जी की कृपा से भी प्राप्त हुआ है, जिसके लिए सभा विशेष रूप से उनकी आभारी है।

उमेशचन्द्र स्नातक

मंत्री आर्यमित्र हीरक जयन्ती,

गुरुधाम, स्मारक विद्वदभिनन्दन योजना

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

(लखनऊ)

सभा की सूचनाएँ

हाथरस में सभा का वृहदधिवेशन और आर्य प्रतिनिधियों को निवास की सुविधा

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं उप प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ७३ वां वृहदधिवेशन दिनांक १६ व १७ मई १९५९ को आर्य समाज हाथरस के तत्वावधान में हो रहा है। आर्य प्रतिनिधि महानुभावों के निवास स्थान, विश्राम इत्यादि की सुव्यवस्था श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० स्वागत मन्त्री बड़ी तत्परता के साथ कर रहे हैं। प्रतिनिधियों के निवास का प्रबन्ध स्थानीय बागला डिग्री कालेज हाथरस में जो आर्यसमाज मन्दिर के निकट व सुरक्षित स्थान है, किया गया है। प्रतिनिधि महानुभावों को हाथरस सिटी जो छोटी लाइन का स्टेशन है, उतरना चाहिये। स्टेशन के पास ही आर्यसमाज मंदिर तथा बागला डिग्री कालेज है।

२—जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्रतिनिधि चित्र न भेजे हों वे कृपया सभा कार्यालय में भरकर तुरन्त भेजने का कष्ट करें। अधिवेशन के अवसर पर जो समाज फार्म लाते है उनकी जांच-पड़ताल करने में असुविधा होती है और कार्यालय को उस समय बहुत कार्य रहने के कारण जांच पड़ताल नहीं हो पाती है। अतः समाजों के मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि दशांश इत्यादि के साथ फार्म प्रतिनिधि भरकर भेजने का कष्ट करें। फार्म भेजते समय इस बात का भी ध्यान रखें कि फार्मों में त्रुटि तो नहीं रह गई है।

३—सभा के अधिवेशन के साथ-साथ स्थानीय आर्यसमाज अपनी स्वर्णजयन्ती भी मना रहा है। प्रतिनिधि महानुभावों को आर्य विद्वानों के उपदेश सुनने का भी अवसर प्राप्त होगा। और १६मई की रात्रि में अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन भी बड़ी धूम से मनाया जायगा। सभापति पद के लिए माननीय श्री चौ० गिरधारी लाल जी को आमंत्रित किया गया है। और आर्य सम्मेलन भी रखने का आयोजन हो रहा है।

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

सर्व अन्तरङ्ग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन मिति वैशाख सुदी ७ दिनांक १५ मई १९५९ सं० २०१६ वि० दिन शुक्रवार को अपराह्न २ बजे से आर्यसमाज मन्दिर हाथरस में आरम्भ होगा। आशा है कि आप कृपया नियत समय पर पधार कर कृतार्थ करेंगे।

मास मई के प्रोगाम

श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री—४ से ६ तक इकौना, १४ से १६ दर्शनपुरवा कानपुर, २१ से २४ तक तिलहर।

श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री—८ से १४ तक असुरन, २१ से २७ तक करोरा [बुलन्दशहर]

श्री सत्यमित्र जी शास्त्री—८ से ११ शिकोहाबाद, १५ से १७ ककम्धू।

श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री—२ से ४ तक खखिनी (फर्रुखाबाद)

श्री सत्यपाल जी शास्त्री—८ से१२ तक सुभाषनगर, बरेली।

प्रचारक

श्री भद्रपाल जी—१ से ३ तक तिर्वा, ४ से ६ तक ठठिया, ८ से ', तक शिकोहाबाद, १६ से १८ तक हाथरस, १९ से २२ शमशाबाद।

श्री रामचन्द्र जी—१ से ३ तक गहसो, ४ से ६ तक इकौना, ११ से १३ तक अगरास बरेली,२१ से २४ अटवा।

श्री गजराजसिंह—१ से ३ तक घुघली,८ से १२ तक सुभाषनगरबरेली, १५ से १९ तक सम्भल।

श्री अवधसिंह—१५ से १७ ककम्धू २१ से २४ नानपारा।

श्री जयपालसिंह—८ से १३ तक नौनेर, १५ से १७ ककम्धू, २१ से २४ तिलहर।

श्री बालकृष्ण जी—४ से ६ गली गंज बछरावां।

श्री सर्वगुणप्रसाद जी—१ से ३ तक महसी।

श्री रघुबरदत्त जी—२२ से २४ विवाह-संस्कार महगवां।

श्री महेशचन्द्र जी—१४ से १६ दर्शनपुरवा, कानपुर।

—फुलनसिंह

सभा मन्त्री

श्री उमाशंकरजी को दुःख

अत्यन्त दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि गत १४ अप्रैल सन् ५९ को फतेहपुर के सुप्रसिद्ध वकील और आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व मन्त्री व मुख्य उपप्रधान श्री बा०उमाशंकर जी की धर्मशीला धर्मपत्नी का देहावसान हो गया। श्री बाबू जी ने देवी जी की पर्याप्त चिकित्सा कराई, पर निष्ठुर काल से कुछ वश न चला। आपका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार किया गया। हम सभा, आर्यमित्र और आर्यजगत् की ओर से श्री बाबू जी के साथ शोक-सहानुभूति प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति और बाबू जी के शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

कृषि विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं सम्बन्धित विषयों में दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यूनतम योग्यता—हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण आयु १६ से २१ वर्ष तक। प्रार्थना-पत्र के फार्म तथा नियमावली के लिये एक रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रिंसिपल, कृषि विद्यालय

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

आवश्यकता

एक सुन्दर, स्वस्थ, सरकारी कम्पोण्डर उम्र २४वर्ष गौतमाचार्य मिश्र कान्यकुब्ज ब्राह्मण कश्यप गोत्र वर के विवाह के लिये अनुरूप सुन्दर आर्य कन्या चाहिये। विवाह ब्राह्मण मात्र आर्य परिवार में ही वैदिक रीत्यनुसार बिना दहेज ही होगा।

१५-१७ पता—रघुनन्दन शर्मा

अध्यक्ष जिला कांग्रेस कमेटी, हरदोई

संशय-शमन दम्भ-द्योतन

(पृष्ठ ५ का शेष)

यह पाप है, बड़ा भारी पाप है, सन्तापक पाप है" कहिए श्री विदेह जी ! गुरुकुल सभा, संस्था, समाज-मन्दिरों की आपने अपनी कलुषित कलम से यह आलोचना की है या नहीं ? यदि नहीं तो क्या बता सकते हैं किन गुरुकुल, सभा, संस्था, समाज और मन्दिर में राक्षसों का मान अभिनन्दन और अनुमोदन होरहा है ?

१२—अपनों से अपनी बात के पृष्ठ २ पर अधिकार-लिप्सा और संस्थावाद से सर्वथा दूर रहना अपने आपको श्री विदेह जी ने लिखा है। यह लिखना भी दम्भद्योतक है क्योंकि सन् १९४८ में वेद-संस्थान के संस्थापक बन चुके थे। यदि कहो कि वेद-संस्थान के संस्थापक है किसी संस्था के नहीं तो यह कथन भी सत्य से दूर है क्योंकि संस्था शब्द के स्थान पर वेद-संस्थान शब्द रजिस्टर्ड हुआ है। देखो वेद-संस्थान का रजिस्टर्ड नियम १ "इस संस्था का नाम वेद-संस्थान होगा।"

संस्थावादी तो आप ऐसे हैं कि अब तक न कोई हुआ है, न है और भविष्य मे भी होगा या नहीं यह कहा नहीं जा सकता है। देखो रजिस्टर्ड नियम १५ "इस नियमावली मे परिवर्त्तन करने का अधिकार संस्थान के प्रथम अध्यक्ष आचार्य विद्यानन्द जी विदेह को ही होगा। उनके पश्चात् किसी को भी परिवर्त्तन करने का अधिकार नहीं होगा।"

पाठक, तनिक विचार तो करें कि सार्वजनिक धन से चलनेवाली किसी भी संस्था में ऐसा नियम हो सकता है ? हाँ, वेद के नाम पर पारिवारिक-सम्पत्ति-संग्रह-संघ का ऐसा नियम हो सकता है। संस्थावाद और अधिकार लिप्सा का यह यन्त्रहव नियम नग्न नृत्य कर रहा है। आपके संस्थावाद और अधिकार लिप्सा को देखकर तो लज्जा को भी लज्जित होना पड़ता है।

१३—अपनों से अपनों बात के पृष्ठ ५ और ६ के पढ़ने से प्रतीत होता है कि श्री विदेह जी को आकृति-विज्ञान और मस्तिष्क-विज्ञान का कुछ ज्ञान है" इसीलिये अलीगढ़ में एक व्यक्ति के सिर के उभार को देखकर उसके स्वभाव को बतला दिया था किन्तु श्री विदेह जी ! आपके शिर में भी कोई ऐसा उभार है जिससे यह पता चल सके कि असत्य लिखने में आपको प्रचुर पटुता प्राप्त होगी क्योंकि अपनो से अपनी बात के पृष्ठ ३ पर लिखा कि "२८ अगस्त सन् १९५५ के सायं सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग ने श्री ध्रुवेन्द्र शास्त्री (जो स्वामी ध्रुवानन्द हो चुके थे) के सभापतित्व में मेरे लिये आर्यसमाज की वेदी बन्द किये जाने का प्रस्ताव पास किया" यह लिखकर पुन पृष्ठ १० पर श्री पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति प्रधान सा० आ० प्र० सभा को अजमेर से पहला पत्र २७-१०-५५ को भेजा गया है। उस पत्र लिखा है कि "१५-८-५५ को मेने सन्यासाश्रम में प्रवेश किया और २८-८-५५ से आप ने अपनी ओर से मेरा आर्यसमाज से निष्कासन करके मेरे लिये आर्यसमाज की वेदी बन्द कर दी" श्री विदेह जी ! कहिए तो कि दोनों लेखों में से कौन सा असत्य है ? क्या यह सम्भव है कि सा० एक और प्रधान दो, तथा दोनों ही वेदी बन्द करा रहे हों ?

श्री विदेह जी ! आप वेदभाष्यकार हैं, समाधि अवस्था का अपना फोटो भी सविता में प्रकाशित करा चुके हैं और साधना पथ का पथिक भी आप अपने आपको मानते हो। सम्भव है इसीलिये आपका असत्य आपके ही द्वारा व्यक्त भी हो जाता है।

मैं यह पहले लिख चुका हूँ कि आपने विरोध को अकारण लिखकर पुन ईर्ष्या और द्वेष को विरोध का कारण स्वीकार कर लिया। मैं यह भी लिख चुका हूँ कि आपके साथ न ईर्ष्या है और न द्वेष ही है अपितु सैद्धान्तिक मतभेद है। उस मतभेद को आपने भी रूपान्तर से स्वीकार कर लिया है। देखो अपनों से अपनी का पृष्ठ ५, ६, तथा ११। आठ प्रकार का सैद्धान्तिक मतभेद तो आपको स्वीकृत हो ही गया है।

अपनों से अपनी बात के पृष्ठ ७ पर पूज्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का आपने जिक्र किया है। क्या स्वामी जी महाराज को आपसे ईर्ष्या और द्वेष था ? अथवा सैद्धान्तिक मतभेद था ? वैदिक योग-पद्धति और सत्यनारायण की कथा पर सैद्धान्तिक मतभेद को आपने स्वीकार भी किया था। इसलिये मैंने लिखा है कि आपका (श्री विदेह जी का) संशय नितांत निराधार है कि आपसे ईर्ष्या द्वेष है।

अपने आप अपनी बड़ाई करने में श्री विदेह जी ने कमाल हासिल कर रखा है। अपनों से अपनी बात का पृष्ठ २ पर विदेह जी ने लिखा है—'मेरे एक उपदेश का होना था कि सारे नगर में सुगन्धि सी फैल गई। फिर क्या था। नगर का जन-समूह उत्सव में उमड़ पड़ा। पुराने वृद्ध आर्य-जन प्रेम और श्रद्धा से आर्यसमाज में आपूर उस जन-समूह को देखकर गद्गद् हो रहे थे। विदाई का दृश्य अवलोकनीय था। कोई ही नेत्र ऐसा होगा कि जिसमें आँसू न छलक आये हों। चलते समय स्वामी शिवानन्द जी ने मुझे आगाह किया "उत्सव में आये हुये विद्वानों में से कुछ के हृदयों में आपके प्रति ईर्ष्याग्नि धधक उठी है" इस प्रसंग में आत्मश्लाघा की पराकाष्ठा है। और दूसरे विद्वानों के (जो उस समय उत्सव में आये हो उनके) उपदेश की प्रभाव-हीनता, अनुपादेयता और नीरसता की सूचना है।

मेरा तो निश्चित विचार यह है कि श्रीयुत स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने ऐसा कहा ही नहीं होगा क्योंकि उनके यह शब्द ही नहीं हैं।

आर्यसमाज मवाना कलां के उत्सव मे आये हुए जिन विद्वानो के हृदयों में ईर्ष्याग्नि धधक उठी थी यदि उनके नाम लिख दिये जाते तो कुछ मालूम हो सकता था। वे विद्वान् कैसा बोलने वाले है परन्तु श्री स्वामी शिवानन्दजी महाराज का नाम ले है ही, उनका उपदेश तो बहुत ही अच्छा होता है। क्योंकि उनका उपदेश तो गद्य और पद्य समन्वित होता है। उसमे हास्य, करुणा और वीर रस का प्रचुर पुट रहता है।

संशय शमन और दम्भ-द्योतन कर मैं श्री विदेह जी को नेक सलाह देता हूँ कि—

१—अनावश्यक आत्मश्लाघा छोड़ दें।

२—दम्भ (कृत्रिमता) का परित्याग कर दें।

३—ऋषि बनने की धारणा को दग्ध कर दें।

४—सच्चे हृदय से वेद-भक्त बनो और महर्षि दयानन्द जी महाराज के सच्चे अनुयायी बनो।

५—वेद-संस्थान की सम्पत्ति पर अन्तिम अधिकार परोपकारिणी सभा या सार्वदेशिक सभा अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को दे दें।

घबड़ाइये और डरिये नहीं। यदि ऐसा करोगे तो आपको बहुत धन मिलेगा, लोग भक्त भी बनेंगे। आपकी चिर-संचित अभिलाषा की पूर्ति हो जावेगी।

'परमाणु युग में संस्कृत साहित्य'

डा० सम्पूर्णानन्द मुख्य मन्त्री, उत्तरप्रदेश



संस्कृत भाषा एवं वाङ्मय का संरक्षण, प्रचार-प्रसार और अनुसन्धान-कार्य न केवल अपने देश के ही लिये अपितु समग्र संसार के हित की दृष्टि से नितान्त आवश्यक है।

संस्कृत वाङ्मय में मानव जीवन के कितने ही शाश्वत सत्य निहित हैं, जो आज के इस परमाणु युग में भी कुछ कम उपयोगी सिद्ध नहीं होंगे। उदाहरण के लिए परमाणु सिद्धान्त ही ले लीजिए। इस प्रसंग में कणाद का नाम कोई नहीं लेता जिन्होंने सहस्रों वर्ष पूर्व अणु परमाणु की व्याख्या की थी। इसी प्रकार इस देश में प्राचीन मनीषियों ने दशमलव प्रणाली, बीजगणित, रसायन शास्त्र, आदि की सर्वप्रथम उद्भावना की और सुश्रुत ने सैकड़ों साल पहिले प्लास्टिक सर्जरी जैसी चिकित्सा-प्रणाली का संकेत किया था।

यह सम्पूर्ण ज्ञान-राशि संस्कृत वाङ्मय में प्रकीर्ण है और इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि—संस्कृत के प्रचार से एक ओर यदि भारतीय दर्शन का भौतिक पक्ष प्रकाश में आयेगा तो दूसरी ओर भारतीयों में सदियों से चली आने वाली वह हीनता की भावना दूर होगी जो उनके बौद्धिक विकास में बाधक बनी हुई है। प्राचीन ज्ञान-विज्ञान पर झूठा अभिमान ठीक नहीं। किन्तु जो हमारे यहाँ था और जो सार्वभौम रूप से सर्वमान्य है उसे तो सामने आना ही चाहिये। आशा है कि भारत की संस्कृत परिषदें और संस्थायें इस दिशा में उपयोगी कार्य करेंगी।

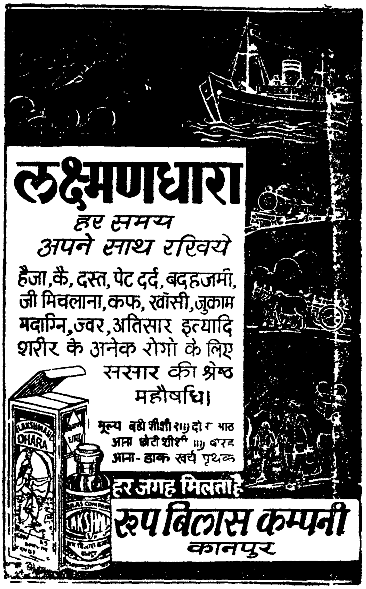
संसार में और भी कितनी ही समृद्ध भाषायें हैं किन्तु संस्कृत के साथ तुलना करने पर ये रुपये में एक आना भी नहीं ठहरतीं। संस्कृत मे जो माधुर्य, ओज और लालित्य है वह दुनियाँ की किसी भी भाषा में नहीं। संस्कृत एक भाषा ही नहीं प्रत्युत प्रतीक है और एकमात्र जीवन प्रतीक है, हमारी संस्कृति का, हमारे विश्वासो, आशाओं, आकांक्षाओ और हमारी धारणाओं का। दूसरी भाषा में वह शक्ति नहीं जो भारत के हृदय को अपने में उतार सके। सरल और बोधगम्य भी यह भाषा इतनी है कि कोई भी व्यक्ति तीन महीने के भीतर काम भर के लिये संस्कृत जान सकता है।

संस्कृत वाङ्मय के एक एक पद में राष्ट्र की आधारभूत एकता, उदारता और सहृदयता के आदर्श प्रतिबिम्बित हैं।

राष्ट्र की एकता के लिये संस्कृत के महत्त्व को हमे भली प्रकार अनुभव करना चाहिये।

पुरस्कार के लिए

आगामी वर्ष सन् १९६० से डी० ए० वी० कालेज-प्रबन्धकारिणी-सभा ने अपने विद्यालयों के लिए नवीन पाठ्य-क्रम के अनुसार धर्म-शिक्षा की पुस्तकें प्रकाशित करने का निश्चय किया है। जो भी लेखक महोदय इस प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें भेजना चाहें, वे पाण्डुलिपि की ३ प्रतियाँ ३१-७-५९ तक भेज सकते हैं। सभा द्वारा स्वीकृत पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार प्रदान किया जावेगा। प्रतियोगिता सम्बन्धी नियम तथा पाठ्य-क्रम, प्रिं० सूर्यभानु, डी० ए० वी० कालेज, जालन्धर से प्राप्त करें।



निर्वाचन—

—ईसी आर्यसमाज के प्रधान श्री मकनलाल जी तथा मन्त्री मथुरादास जी चुने गये।

—ऊखोला मुजफ्फरनगर आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीतसिंह जी एवं मन्त्री रामस्वरूपसिंह जी निर्वाचित हुए।

—पालीपत आर्यकुमार सभा के प्रधान श्री कन्हैयालाल जी तथा मन्त्री जयचन्दकुमार जी चुने गये।

—वृन्दावन आर्यसमाज के प्रधान श्री रामेश्वरदयालु जी तथा मन्त्री पं० बालबिहारी जी निर्वाचित हुए।

—रामपुर आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राजबहादुर जी एवं मन्त्री कन्हैयालाल जी चुने गये।

—अमोरा (रामपुर) आर्यसमाज के प्रधान श्री हसमरेलेलाल जी तथा मन्त्री कन्हैयालाल जी निर्वाचित हुए।

सूचना—

—आर्यकुमार सभा मुरादाबाद जून के आरम्भ में प्रांतीय आर्यकुमार सम्मेलन बुलाने का आयोजन कर रही है, जिसमें वाद-विवाद अन्त्याक्षरी आदि कार्यक्रम भी समारोहपूर्वक मनाये जावेंगे प्रान्तीय आर्यकुमार परिषद् का कोई पता नहीं है। यदि वास्तव में प्रान्तीय परिषद् का कार्यालय कहीं पर भी हो, वह एक सप्ताह के अन्तर्गत सूचित करें। अन्यथा आर्यकुमार सभा मुरादाबाद द्वारा नई परिषद् स्थापित करने का प्रयत्न करेगी। भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् को भी इस सूचना से सूचित किया जाता है।

उत्सव-समाचार—

—अयोध्या गुरुकुल महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री रामनवमी के शुभावसर पर कुलपति श्री स्वामी त्यागानन्द जी ने अस्वस्थ होते हुये भी अध्यक्ष पद का कार्य भार अंगीकार कर नव स्नातकों को प्रमाण पत्र वितरित किये। इसी पावन अवसर पर अमेठी राज्य के युवराज पूर्व प्रधान सभा श्री रणंजयसिंह जी ने दीक्षान्त भाषण दिया।

—कानपुर गोविन्दपुर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव १०-१२ अप्रैल ५९ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—बरेली सुभाष नगर आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव ९-१४ मई ५९ तक मनाना निश्चित हुआ है।

—ठठिया फतेहगढ़ आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव तथा गायत्री महायज्ञ दि० ४-६ मई ५९ तक मनाया जायगा।

स्वास्थ्य-सुधा

चेचक से सुरक्षा

(श्री भरतसिंह)

वसन्त ऋतु के आते ही जहां मनुष्य आप रङ्गों में तन्मय होनें लगते हैं, वहां कभी-कभी चेचक जैसी महाव्याधि के दुष्परिणामों से उत्पन्न होने वाले हाहाकारों के द्वारा प्रकम्पित कर देने वाले भयंकर दृश्य भी उपस्थित हो जाते हैं। यह स्वाभाविक ही है कि ऋतु परिवर्त्तन का प्रभाव, मनुष्य के शरीर पर भी कुछ न कुछ अंशो में अवश्य पड़े, वसन्तागमन के साथ साथ मनुष्य शरीर मे नाना परिवर्त्तन प्रारम्भ हो जाते है। किन्ही को जुकाम से चैन नहीं, तो कोई खा, खा कर बेदम हो जाते है। इन सब का मूल ऋतु मे होने वाला स्वाभाविक परिवर्त्तन ही होता है।

इस ऋतु में पनपने वाली चेचक वह महाव्याधि है, जोकि नन्हें मुन्नो को ही प्रथम अपना ग्रास बनाती है, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि युवा-वृद्धों से उसका कोई सम्बन्ध न हो, समय आने पर वह उन्हें भी पछाड़े बिना चैन नहीं लेती।

मुख-आँख का लाल होना, ठंडक के अनुभव के साथ-साथ सिर, पीठ आदि शरीर में वेदना का प्राबल्य तथा गर्मी की मात्रा, शरीर में १०३-१०४ डिग्री के लगभग हो जाना आदि-आदि इस रोग के पूर्व लक्षण हैं। इस प्रकार के लक्षणो को शरीर में देखकर सब ही का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे सर्वप्रथम, रोग सम्बन्धी प्रथम चिकित्सा का आश्रय लें।

इस रोग को फैलाने वाले छोटे-छोटे संक्रामक कीटाणु होते हैं जो कि बिना "माइक्रोस्कोप" के दृष्टिगोचर नहीं हो पाते, वे अक्सर रोगी के शरीर द्वारो से निर्गत होने वाले प्रत्येक प्रकार के मलो में पाये जाते हैं जैसे आँख, नाक की गन्दगी तथा मुह के कफादि में।

माता, मसूरिका, चेचक, शीतला आदि अनेक नामों से इस रोग को सम्बोधित किया जाता है। इसके दो प्रकार होते हैं। एक बड़ी माता तथा दूसरी छोटी माता। कष्ट की दृष्टि से बड़ी माता अधिक भयंकर एवं दुःखदायिनी अनुभव की जाती है। इसी के दुष्परिणाम से अनेक जन कम, आँख आदि उपयोगी अङ्गों से हीन हो जाते हैं। अतः उन्हें उपेक्षित एवं कष्ट-साध्य जीवन-यापन करना पड़ता है। इसी रोग के कारण किसी किसी की हड्डी तक भी गल जाती है, इस प्रकार के भयंकर रोग से बचने के लिए एकमात्र अपने स्वयं की सावधानी के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं, जिससे चिरमुक्ति मिल सके। सर्व प्रथम रोग मुक्ति के लिए टीका लगवाना प्रत्येक के लिए आवश्यक है। इस पर भी यदि कोई व्यक्ति रोग से प्रभावित हो ही जाय तो उसके आहार को सीमित एवं पथ्यपूर्ण कर देना चाहिए, गर्मी को प्रकुपित कर देने वाले नमक, तेल, मिर्च का सेवन एक मात्र बन्द कर देना चाहिए, यदि रोगी किसी चिकित्सालय के पास ही रहता है तो उसे रुग्णालय मे प्रविष्ट करना आवश्यक है। इस व्यवस्था के अभाव मे घर पर ही पूर्ण सतर्कता के साथ रोगी की परिचर्या होनी चाहिए, सेवा करने वाले व्यक्ति को भी अपनी सुरक्षा के लिये समय-समय पर टीका लगवाते रहना चाहिये, रोगी का कमरा स्वच्छ एवं हवादार होना आवश्यक है। सूर्य का प्रकाश भी कमरे में आना अनिवार्य है। यदा-कदा विसंक्रामक औषधियो से भी कमरे को स्वच्छ रखना चाहिये, प्रत्येक विषमावस्था में चिकित्सको से सम्पर्क बनाये रखना परमावश्यक है। बड़ी माता के पीप पड़े दानो में मधुर खुजली अनुभव होती है। रोगी जिन्हें सर्वदा खुजलाते रहना चाहता है। परन्तु ऐसा कर देने पर हानि के सिवाय लाभ कुछ भी नहीं है। अतः इस सम्बन्ध में सुरक्षा आवश्यकीय समझी जानी चाहिये। फोड़ों पर बलात् मक्खी का बैठना स्वाभाविक है, और वह एक से दूसरे के शरीर पर बैठकर रोग को बढ़ाने में कारण बनती है। रोग बालकों पर अधिक शीघ्र प्रभाव दिखाता है अतः आवश्यक है कि उन्हें बीमार के पास न फटकने दिया जाय। बीमार के शरीर से निकलने वाले मलों को जलाने अथवा कहीं जमीन में गाड़ देने की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि रोग अधिक न बढ़ सके। उसके शरीर के वस्त्र को समय-समय पर बदलना न भूलना चाहिये। पूर्व पहिने वस्त्रों को गर्म पानी में औटाकर धोना चाहिये।

रुग्णावस्था में रोगी की आँखों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्हें समय

(शेष अगले पृष्ठ पर)

टंकारा ट्रस्ट के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा की स्थिति

श्रीयुत महाशय कृष्ण जी निराश न हों

मैने दि० ७-४-६१ के वीर अर्जुन में श्रीयुत महाशय कृष्णजी का "बलिहारी जायें इस हिम्मत पर" शीर्षक एक लेख पढ़ा। इससे पूर्व के लेखो की ओर भी जो वे आर्यसमाज या टंकारा ट्रस्ट के सम्बन्ध में समय-समय पर लिखते रहे हैं उनकी ओर भी मेरा ध्यान आकृष्ट किया गया था।

श्रीयुत महाशय जी आर्यसमाज के तपे-तपाये अग्रणियो में से हैं। यदि आर्य समाज में उन्हें त्रुटियां देख पड़ती हैं तो इनके उत्तरदायित्व से वे भी अपने को पृथक नहीं कर सकते। परन्तु महाशयजी को निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आर्यसमाज जीवित जागृत शक्ति है और उसके सदस्य संगठन के भक्त हैं। आर्यसमाज का नेतृत्व व्यक्तियो के हाथ में नहीं अपितु संगठन के हाथ में रहता है। यही इसके नेतृत्व की विशेषता है।

टंकारा ट्रस्ट का विषय संगठन का विषय है। सार्वदेशिक सभा उसे अखिल भारतीय रूप देकर समस्त आर्यों की संस्था बनाना चाहती है। क्या महाशय जी इसे पसन्द नहीं करते? यदि करते हैं तो वे ट्रस्ट को सभा की शर्तें स्वीकार करने के लिये राजी क्यो नहीं करते? महाशय जी की भावना का आदर करते हुए भी मे यह कहूँगा कि उनकी दृष्टि से इस ट्रस्ट का भविष्य ओझल है। सभा इसका भविष्य स्थिर और उज्ज्वल कराना चाहती है इसलिये वह कुछ शर्तों की पूर्ति कराने पर बल दे रही है। सार्वदेशिक सभा इस स्मारक को व्यक्तियो और संगठन विशेष तक ही सीमित रखने के बिलकुल पक्ष मे नहीं है। व्यक्तिगत रूप मे होने वाले सार शुभ प्रयत्नो की प्रसंशा स्वतन्त्र होती है। सार्वदेशिक सभा के संगठन ने इसका कभी विरोध भी नहीं किया है।

सार्वदेशिक सभा ट्रस्ट को जहाँ सार्वदेशिक रूप देना चाहती है वहाँ ट्रस्ट से इस आश्वासन की इच्छुक है कि यह ट्रस्ट आदि से अन्त तक आर्य सभासदो के ही हाथ मे रहेगा। मे इस बात को स्वीकार करता हूँ कि वर्तमान मे लगभग सभी ट्रस्टीगण अच्छे प्रतिष्ठित आर्य सभासद हैं परन्तु इनमें से किसी अवस्था मे किसी ट्रस्टी का स्थान रिक्त हो जाने पर आर्य सभासद ही ट्रस्टी बन सकेगा इसकी नियमो में कोई गारण्टी नहीं है परिणामस्वरूप यह सम्भव है कि किसी दिन यह ट्रस्ट पूर्णत गैर आर्यसमाजियो के हाथ में चला जाय। और ट्रस्ट के अन्तर्गत आर्यसमाज के सिद्धान्तो के विपरीत कार्यक्रम चलने लगे। सभा के सामने ऐसे अनेकों ट्रस्टो के प्रमाण उपस्थित है जब लाखों करोड़ो की सम्पत्ति के लिये किसी दिन बनाये गये थे और उस समय उनमें लगभग सभी ट्रस्टी आर्यसमाजी थे परन्तु उनमें इस प्रकार की गारण्टी न होने के कारण वे धीरे-धीरे गैर आर्यों के हाथ मे चले गये और आज अवस्था यह है कि उन ट्रस्टो के अन्तर्गत आर्यसमाज के सर्वथा विपरीत कार्य हो रहा है। सभा चाहती है कि स्वामी दयानन्द जी के स्मारक के नाम पर एकत्रित आर्य जनता की अपार धन-राशि का सदुपयोग हो और उसके निर्माण मे आर्यसमाज के सर्वोपरि संगठन का हाथ और नियन्त्रण हो। ऐसी अवस्था में ही ट्रस्ट समूचे आर्यसमाज की श्रद्धा और विश्वास का केन्द्र बन सकता है। आर्यजगत् की शिरोमणि सभा होने के नाते इस सभा का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह आर्यजगत् के अधिकार और स्वत्व की रक्षा करे।

स्मारक का स्वरूप क्या हो इसका निर्णय अखिल भारतीय स्तर पर ही होना चाहिये। यह तभी सम्भव होगा जब इस ट्रस्ट को अखिल भारतीय रूप प्राप्त होगा। मथुरा शताब्दि पर भी ट्रस्ट का स्वरूप निश्चित न हो सका था यद्यपि इस प्रसंग में अनेक प्रस्ताव और सुझाव आये थे। मै इस समस्त विषय का प्रारम्भ से ही अध्ययन कर रहा हूँ और आवश्यकता पड़ने पर पूर्ण इतिहास जनता के समक्ष रख दिया जायगा।

अन्त में मैं महाशय जी से प्रार्थना करूंगा कि वे निराश न हों। आर्य जनता को मैं कहूँगा कि यदि उसे इस प्रकार के लेखो को पढ़ने का अवसर मिले तो उन्हें विचारपूर्वक ही ग्रहण करें अन्यथा समाज के संगठन को लाभ के स्थान पर हानि की ही आशंका है।

स्वामी अभेदानन्द सरस्वती

प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
२२ चैत्र शक १८८१
(३ मई १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ग्राम जीवन

परिश्रमी किसान की कहानी

जहां एक मन गेहूं उगता था वहां ४२ मन पैदा किया

रोहतक जिले के पांची गूजरान गांव में जिस जमीन पर सरदार केसरसिंह खेती करते हैं वह यदि किसी साधारण आदमी के पास होती तो शायद वह हिम्मत हारकर बैठ जाता। केसरसिंह को इस गांव में २७ एकड़ भूमि पश्चिम पाकिस्तान में छोड़ी गयी सम्पत्ति के बदले में मिली थी। वर्षों से किसी ने इस भूमि की देखरेख नहीं की थी और वह बंजर हो गयी थी। १९५० में केसरसिंह ने पहली बार इस पर हल चलाया और उसका नतीजा जितना निराशाजनक हुआ शायद उतनी निराशा केसरसिंह ने कभी अनुभव नहीं की थी। काफी मेहनत के बाद उन्हें प्रतिएकड़ केवल १ मन १० सेर गेहूं और चना प्राप्त हुआ।

लेकिन केसरसिंह ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने निश्चय किया था कि जमीन को उपजाऊ बनाकर छोड़ेंगे। सबसे पहले उन्होंने सरकारी विशेषज्ञ को बुलाकर मिट्टी की जांच करायी। लेकिन विशेषज्ञ क्या करता, मिट्टी तो अन्न उपजाऊ हो ही गयी थी। उसने कहा कि यदि जमीन में नियमित सिंचाई की जाय, जैविक खाद डाली जाय, उर्वरकों का प्रयोग किया जाय और हरी खाद दी जाय तो वह सुधर सकती है। विशेषज्ञ ने बात तो बड़ी लम्बी-चौड़ी कही थी लेकिन केसरसिंह ने उसकी राय के आधार पर अपना लक्ष्य निश्चित किया।

तीन महीने तक केसरसिंह ने खेती बाड़ी के सम्बन्ध में किताबें पढ़ीं और कृषि-विशेषज्ञों से मिलकर जानकारी प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने भूमि को उपजाऊ बनाने और उपज बढ़ाने की योजना बनायी। प्रति एकड़ १ मन के हिसाब से उन्होंने भूमि में सुपर फास-फेट डाला। उसके बाद हरी खाद के के लिये ग्वार बोयी। ग्वार के पौधे जब करीब ३-४ फुट के हो गये तो उन्हें भूमि में दबा दिया। इसके बाद उन्होंने भूमि में रौनी सिंचाई करके तीन-चार बार जोताई की तथा भूमि को समतल करने के लिये सुहागा फेरा। इसके बाद प्रति एकड़ १ मन सुपर फासफेट और १ मन अमोनियम सल्फेट डाला। फिर प्रति एकड़ १ मन के हिसाब से बीज लेकर गेहूं की बोवाई की। फसल को जब जरूरत हुई तो उन्होंने सिंचाई की इस तरह पूरी फसल में लगभग ४ बार सिंचाई की। पहली सिंचाई के बाद उन्होंने गुड़ाई की।

जब किसान इतनी मेहनत करे तो सफलता रुक नहीं सकती। प्रतिवर्ष उपज बढ़ने लगी। यह कार्यक्रम शुरू करने के ७ वर्ष बाद १९५७ में केसरसिंह ने प्रति एकड़ ४२ मन २१ सेर गेहूं पैदा किया।

बाड़ के लिये गुलाब की झाड़ियां

फसल को पशुओं आदि से बचाने के लिये बाड़ तो सभी लगाते हैं लेकिन केसरसिंह ने उसमें भी एक नयी सूझ से काम लिया है खेत के चारों ओर उन्होंने गुलाब के झाड़ लगाये हैं। इससे उनके खेत की हिफाजत तो होती ही है साथ ही गुलाब की झाड़ियों ने उसे सुन्दर भी बना दिया है।

केसरसिंह ने पश्चिम पाकिस्तान के चौहा सैदनशाह से मगाकर बहारी किस्म के गुलाब लगाये हैं। जिनके फूल बहुत सुन्दर और बड़े होते हैं तथा लगभग १५ दिन तक रहते हैं। केसरसिंह इन फूलों से इत्र निकालने का उद्योग शुरू करने का विचार कर रहे हैं।

बाग

केसरसिंह अपने खेत में सिर्फ गेहूं ही नहीं उगाते, उन्होंने १३ एकड़ भूमि में फलों के पेड़ लगाये हैं। उनके बाग में अमरूद के करीब ५०० पेड़ हैं। इस बार करीब २०० पेड़ों में पहली बार फल लगे। केसरसिंह अपने बाग की बड़ी सावधानी से देखरेख करते हैं और जरूरत पड़ने पर पेड़ों की कटाई करते रहते हैं।

(पृष्ठ ११ का शेष)

समय पर विसंक्रामक औषधियों के लाभ-प्रद पानी से धोते रहना चाहिये। रोगी को उस अवस्था में जब माता पूरी न निकल पाई हो या आधी निकलकर दब गई हो, शीतल पानी से स्नान कराना चाहिए, वही अवस्था रोगी को अधिक कष्ट देने वाली तथा परिणाम में दुख-दायी होती है अतः इस परिस्थिति में चिकित्सकों के परामर्श अनुरूप ही कार्य करना चाहिये।

रोगी को सर्वदा कीटाणुनाशक एवं रक्त शोधक औषधियों का सेवन कराते रहना चाहिये जिससे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो सके। इसके लिए नीम अति उपयोगी वृक्ष है। ग्रामों में प्रायः इसके प्रयोग इस रोग में नजर आते हैं जो कि अपनी कीटाणु नाशक शक्ति के कारण अत्यन्त उपयोगी सिद्ध है। पहाड़ी इलाकों में छाछ को इस रोग की रामबाण औषधि माना गया है, डाक्टरी चिकित्सा से उपेक्षित इस इलाके में एकमात्र छाछ ही न जाने कितने ही रोगियों को अविकल जीवन दान दिया करता है।

छाछ की इसी शक्ति के विषय में शास्त्र ने लिखा है—

न तक्र सेवी व्यथते कदाचित्,
न तक्र दग्धा प्रभवन्ति रोगा।
यथोसुराणाममृत हिताय,
तथा नराणां भुवि तक्र माहु॥

आजकल इस रोग की सम्भावना रहती है अत इस संक्रामक व्याधि से पूर्व सुरक्षा के उपाय कर लेने चाहिये।

आर्य विद्वान द्वारा संन्यास ग्रहण

श्री प्रो० मोहनलाल जी वर्मा एम० ए० एफ० टी० एस० दि० २१ अप्रैल को आर्यसमाज दयानन्द नगर इन्दौर में सन्यास ग्रहण करेंगे।

यह संस्कार विशेष समारोह पूर्वक इन्दौर के आर्य जनों तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों की उपस्थिति में होगा।

श्री प्रोफेसर सा० की अवस्था ७२ वर्ष की है। आपने अङ्ग्रेजी साहित्य, गणित अर्थ शास्त्र, इतिहास, दर्शन और राज-नीति में एम० ए० किया। शासकीय सेवा में रहकर आपने हेडमास्टर, स्कूल इन्सपेक्टर, प्रोफेसर एवं प्रिन्सिपल पदपर कार्य किया तथा बावचर कमिश्नर एवं नगरपालिका कमिश्नर पद पर भी कार्य करके जनता की ३० वर्ष तक सेवा की है।

सन्यास ग्रहण के पश्चात आप प्राणिमात्र के हित के लिए प्रचार-यात्रा प्रारम्भ कर देंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

६—भजनीकों और उपदेशकों के लिये न्यूनतम शिक्षा की योग्यताओं का होना आवश्यक है। इसके अलावा उनके जीवन का आदर्श स्तर ऊंचा होना चाहिये, अर्थात उनके जीवन की त्रिविध शुद्धि होनी चाहिये। Chastity, Charity & Tolerance इनके प्रचार के सर्वोत्तम साधन होने चाहिये।

७—प्रत्येक भजनीक और उपदेशक का कार्य केवल व्याख्यान देना ही नहीं होना चाहिये वरन् यह होना चाहिये कि उनके प्रचार से जनता में क्या प्रभाव उत्पन्न हो रहा है और दिन प्रतिदिन उनके क्षेत्रों में समाजों की संख्या बढ़ रही है।

८—कोई भी प्रचारक किसी साम्प्र-दायिक तथा राजनैतिक संस्था से अपना सम्बन्ध नहीं रख सकेगा और उसके सिद्धान्तों का प्रचार आर्यसमाज की वेदी से नहीं कर सकेगा।

९—इस समय अहिन्दी प्रान्तों में आर्यसमाज का प्रचार नहीं के बराबर है, इसलिये सार्वदेशिक सभा को उन प्रान्तों में अनुभवी विद्वान प्रचारकों द्वारा कराना चाहिये। अच्छा तो यह हो कि उन्हीं प्रान्तों के निवासियों को योग्य बनाकर अपना प्रचारक बनाया जाये।

इसी प्रकार की और अनेक बातें प्रचार के सम्बन्ध में मेरे मस्तिष्क में घूम रही हैं। कभी भविष्य में लिखूंगा।

पिंड्रावल (बुलन्दशहर) में गोवध का प्रयत्न

पिंड्रावल जिला बुलन्दशहर के कसाइयों ने पिंड्रावल चौहरे के इरादे पर दो गायों को पैर व मुंह बांध कर जमीन पर गिरा रक्खा था, उनका इरादा काटने का था। पिंड्रावल पुलिस चौकी वालों ने पिंड्रावल की जनता व शेखपुर आर्यसमाज व गोहत्या निरोध समिति शेखपुर व भारतीय जन संघ समिति शेखपुर की सहायता से गौओं को काटने से रोका और दो व्यक्तियों को गिरफ्तार करके चालान पहासू में चालान करके बुलन्दशहर भेज दिया। मैंने स्वयं थाने में जाकर गवाही दी और गायों को सुपुर्दगी में ले लिया है।

—भगवती सिंह [illegible]
मन्त्री आर्यसमाज, [illegible]
अधिष्ठाता गोरक्षा विभाग, [illegible]

रघुराम शास्त्री द्वारा [illegible]
[illegible] प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग [illegible]
[illegible]

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) | एक प्रति का २० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ, रविवार वैशाख २०, शक १८८१, वैशाख शुक्ल ३, वि० २०१६, १० मई, १९५९ ई०

विदेश में १२शिलिंग

सभा के वृहदधिवेशन की सफलता

प्रत्येक आर्यबन्धु के सहयोग पर निर्भर है

हाथरस पहुँच कर आर्य मेले को सफल बनाइए

आर्यसमाज के भविष्य की योजनाओं, वर्तमान परिस्थितियों और राष्ट्र की समस्याओं पर गम्भीर विचार करना हमारा कर्त्तव्य है। हिन्दी राष्ट्रभाषा समस्या, ईसाई प्रचार निरोध, गो रक्षा आन्दोलन, नैतिक उत्थान आन्दोलन आदि प्रश्न हमारे नेतृत्व की बाट जोह रहे हैं। क्या हम अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमें अपनी कर्त्तव्यपरायणता और कर्मठता से देना होगा।

भारत की अवनत दशा के समुद्धार का दायित्व महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज को सौंपा था। आर्यसमाज का प्रारम्भिक इतिहास जितना प्रगतिशील, उत्साहवर्द्धक और गौरव पूर्ण रहा है आज हम उसी उत्साह से कार्य नहीं कर रहे हैं यह हमारे लिए विचारणीय विषय है। सबसे पहले हमें व्यक्तिगत चरित्र विकास की मीमांसा करनी होगी और फिर अपने सामाजिक दायित्व का सिंहावलोकन करना होगा। आज उत्तर प्रदेश में आर्यसमाजों की संख्या १२०० से अधिक हैं पर क्या इन सबके सम्मिलित सदस्य नैतिक दृष्टि से २०० या ३०० आर्यसमाजो वाले उत्तर प्रदेश की नैतिक शक्ति से अधिक सबल हैं? हमारी दशा निराशाजनक है, हम लोग समाज के कार्य को एक मिशन या आवश्यक कार्य न समझ कर सम्मान या सत्ता प्राप्ति का कार्य समझते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि हमारे सम्पूर्ण कार्यों में शिथिलता, उपेक्षा और अक्षमता सन्याप्त है। हम कोई भी कार्य आरम्भ करना चाहते हैं केन्द्र के निर्वाचित अधिकारी योजना बनाते हैं पर हमारी व्यक्तिगत शक्तियाँ और आस्थाएं विभक्त होने के कारण कार्य में बाधा पहुँचती है। इसलिये आज सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यक्तिगत रूप से अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ आर्यसमाज के लिए समर्पित करने का व्रत लें, अपनी आस्था आर्यसमाज के वैधानिक संघटन में घोषित करें। जब तक हम इस क्षुरस्यधारा पर चलने का निश्चय न करेंगे हमारे सारे आदर्श, सारे प्रोग्राम, सारी योजनाएं अपूर्ण रहेंगी। इसलिए आज हम सबको व्रत लेना होगा कि हम समाज के लिए सर्वात्मना समर्पण करेंगे।

उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धु हाथरस के आर्य बन्धुओं के सप्रेम निमन्त्रण पर वहाँ पहुँच कर सारी गम्भीर परिस्थिति पर विचार करें, समस्याओं को समझें और उनके समाधान में सद्भावना के वातावरण में सहयोग प्रदान करें। हम संगच्छध्वम् संवदध्वं का पाठ करते हैं, हमारी सहयात्रा हमें अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचावेगी। विचारों में मतभेद की गुंजाइश होना स्वाभाविक है परन्तु सदाशयता के उदार भावों की शीतल छाया में जीवन की मधुरता सदैव बनी रहनी चाहिए।

आशा है उत्तर प्रदेश की सभी समाजों के प्रतिनिधि अधिक से अधिक संख्या में हाथरस पहुँचेंगे और अपनी शक्ति को संघटित करेंगे। सभा के आदर्श विकास द्वारा ही उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज की शक्ति का विकास अवलम्बित है, आशा है सभा के प्रति हम अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अङ्क १८

आर्यमित्र हीरक जयन्ती, विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ

इस वर्ष बुलन्दशहर की अन्तरङ्ग बैठक में नि० स० द्वारा सभा की ओर से आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय एम०ए० व श्री प० गंगाप्रसाद एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज अभिनन्दन ग्रन्थ तथा गुरु विरजानन्द स्मारक (धाम) शिलान्यास समारोह मनाने के पूर्व निश्चयों पर विचार विमर्श होकर निर्णय हुआ कि इस कार्य के लिए पुन. नवीन समिति का निर्माण किया जाय तथा समिति को अखिल भारतीय आधार पर सदस्य सहयुक्त करने का अधिकार दिया गया।

समिति की प्रथम बैठक १२ अगस्त को लखनऊ में हुई और कार्य विभाजन किया गया। तथा इस कार्य के लिए जनता से अपील करने और धन संग्रहार्थ नोट प्रकाशित करने के निर्णय किये गये। समिति ने समारोह गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में करने का निर्णय किया।

२५, २६ अक्टूबर को हल्द्वानी आर्यसमाज में समिति की दूसरी बैठक हुई और वहाँ प्रधान सभा श्री पण्डित हरिशंकर शर्मा को हल्द्वानी आर्यसमाज के प्रधान और समिति के सदस्य श्री विद्यारत्न जी वकील ने आर्यसमाज हल्द्वानी की ओर से ५०१) की थैली के रूप में जयन्ती के लिए प्रथम भेंट की, नैनीताल की अन्य समाजो ने भी धन दिया और देने के वचन दिये। इसके पश्चात् आर्यजगत् में जयन्ती सम्बन्धी जोरदार चर्चा आरम्भ हो गयी। श्री बाबू कालीचरण जी आर्य उपप्रधान सभा ने प्रान्त का दौरा आरम्भ कर जयन्ती का सन्देश पहुँचाया। विदेश की एक सम्बन्धित समाज ने १५००) प्रधान सभा की अपील पर जयन्ती-निधि के लिये भेजा (समाज ने अपना नाम अभी प्रकाशित न करने का सकेत किया है) समिति ने शिवरात्रि १९५१ पर ७ से १० मार्च तक समारोह मनाना निश्चित किया। गुरुकुल में जयन्ती कार्यालय खोलने की घोषणा की गई। ९ सदस्यों की एक कार्यकारिणी बना दी गई जिसमें श्री पंडित हरिशंकर जी शर्मा, श्री बाबू कालीचरण जी आर्य, श्री आचार्य बृहस्पति जी, श्री नरदेव जी स्नातक, श्री प्रिं०महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी, श्री आचार्य विश्वेश्वर जी, श्री कर्णसिंह जी, श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक सदस्य रहे।

जयन्ती-निधि के लिए ६००००) के नोट प्रथम बार छापे गये और शनै

गुरुधाम स्मारक समारोह समिति

कर कार्य आरम्भ कर दिया। २२ नवम्बर को दिल्ली में सार्वदेशिक सभा द्वारा आयोजित आर्य कन्वेंशन के अवसर पर समिति की कार्यकारिणी की विशेष बैठक हुई और भ० भा० नेताओं से परामर्श कर जयन्ती डैपूटेशन अन्य प्रान्तों में भेजने का निश्चय किया गया। श्री पण्डित नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण (हैदराबाद) और श्री मेहरचन्द्र जी धीमान प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बङ्ग-आसाम व श्री वेणीभाई जी आर्य मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई आदि ने जयन्ती समारोह के लिए पूर्ण सहयोग देने के वचन दिये।

सभी राज्यों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं को पत्र भेजकर इस कार्य में सहयोग देने की अपील की गई। अधि-श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम सहायक संयोजक हुए। स्थानीय दृष्टि से विचार करने पर संयोजक महोदय ने सभा प्रधान का ध्यान विशेष कठिनाइयों की ओर आकृष्ट किया और १८ जनवरी ५१ को जयन्ती कार्यकारिणी गई जिसमें जयन्ती तिथियों को मई में रखने का परामर्श अन्तरङ्ग सभा के पास भेजना निश्चित हुआ। अन्तरङ्ग सभा दिनांक १५ मार्च ५१ ने समारोह आगामी अक्टूबर नवम्बर में दीपावली के शुभावसर पर दयानन्द दीक्षा शताब्दी के रूप में मनाने का निश्चय किया है। इस प्रकार १९५१ के लिए प्रान्तीय आर्यजनों के सम्मुख एक महान् कार्य उपस्थित है।

भारत सेवकों के लिए शपथ

मानव धर्मानुपेक्षित कर्तव्य निष्ठा में दीक्षित होने के नाते मैं भारत महान् के विधान के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हुए प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने धर्म के प्रति सदा जागरूक रहूँगा और मेरा व्यवहार मानव मात्र के प्रति सदा सद्भावना पूर्ण रहेगा। भारत सेवक समाज के अनुशासन, नियंत्रण एवं आदेश में कार्य करते हुए समाज द्वारा अनुमोदित पंचशील १—शील निष्ठा २—स्वदेश भक्ति, ३—नि:स्वार्थ भावना, ४—शांति पूर्ण आचरण ५—मित-व्ययता को अपने जीवन में ढालकर जन-सहयोग के लिए निर्धारित नैतिक स्तर प्राप्त करके तदनुकूल आचरण करने में प्रयत्नशील रहूँगा। सद् प्रेरणाएं मुझे कर्तव्यनिष्ठ बने रहने में मेरी सहायक हों।

राष्ट्रपति-भवन
१९-४-५१

—डा. राजेन्द्रप्रसाद

कांश के उत्तर प्राप्त हुए और सबने यथा शक्ति सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

अन्तरङ्ग सभा के सभी सदस्य जयन्ती समिति के सदस्य बना लिए गये, और २५ दिसम्बर को समिति की बैठक कन्या गुरुकुल सासनी में हुई, जयन्ती की प्रगति पर विचार हुआ। मथुरा के आर्य बन्धुओ के इस सुझाव को कि समारोह का स्थान मथुरा कर दिया जाए तो अति उत्तम और सुविधा-जनक होगा, अन्तरङ्ग सभा में विचारार्थ भेज दिया गया। अन्तरङ्ग सभा ने श्री प्रधान पण्डित हरिशंकर जी व उप प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट को मथुरा जाकर और परामर्श कर निर्णय करने का अधिकार दिया। ३१ दिसम्बर को मथुरा के आर्य बन्धुओं व जयन्ती कार्यकारिणी की बैठक हुई और मथुरा के आर्य बन्धुओं के आग्रह व उत्साह को ध्यान में रखते हुए ११ व्यक्तियों की स्थानीय समिति बना दी

जयन्ती के लिए एक लाख रुपये की अपील प्रसारित की गई है। सार्व-देशिक सभा ने भी हमारी अपील के समर्थन में अपील प्रकाशित कर हमें सहयोग प्रदान किया है।

अपील के इस धन का अधिकांश भाग गुरु विरजानन्द स्मारक में लगेगा। और वहाँ अनुसन्धान विभाग व पुस्तका-लय खोला जायगा।

इसके अतिरिक्त दोनों आर्य विद्वानों के लिये आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी लेखो से युक्त अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जायगा।

आर्यमित्र के साठवर्षीय जीवन के उपलक्ष्य में उसका विशाल हीरक जयन्ती अंक प्रकाशित किया जायगा। आर्यमित्र के मासिक संस्करण की योजना भी इसी प्रसंग में विचाराधीन है। ५००० ग्राहक संख्या का लक्ष्य भी पूर्ण करना है। शेष धन प्रबन्ध, धन संग्रह, समारोह, आतिथ्य आदि कार्यों में व्यय किया जायगा।

इन कार्यों के लिए निम्न प्रकार

श्री पंडित हरिशंकर शर्मा जी अध्यक्ष जयन्ती समिति, श्री बाबू काली-चरण जी आर्य अर्थ संग्रह संयोजक, श्री बाबू मोहनलाल जी आर्य सहायक अर्थ संग्रह संयोजक, श्री कर्णसिंह जी ब्रोकर संयोजक विरजानन्द स्मारक शिलान्यास, श्री प्रिं० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए०, सम्पादक विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ, उमेशचन्द्र स्नातक शिरोमणि एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषांक, श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी प्रचार मन्त्री।

ग्रन्थ और विशेषांक के सम्पादन का कार्य आरम्भ हो चुका है, स्मारक की भूमि के सम्बन्ध में सभी शेष कानूनी कार्यवाहियाँ भी पूर्ण हो चुकी हैं। प्रयत्न हो रहा है कि साथ की कुछ भूमि और प्राप्त की जा सके, आशा है इस प्रयत्न में भी सफलता प्राप्त होगी।

आर्यजगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा का इस योजना को आशीर्वाद प्राप्त है। आशा है उसके सहयोग और पथ-प्रदर्शन में यह समारोह दयानन्द दीक्षा शताब्दी' के महत्त्वपूर्ण कार्य के साथ पूर्ण होगा।

अभी तक ६० हजार के जयन्ती नोट कार्यकर्ताओं ने संग्रहार्थ मंगाये हैं। कार्य में अभी पूर्ण शक्ति से आर्य जन जुट नहीं सके हैं फिर भी आरम्भ आशाप्रद है। ३१ मार्च ५१ तक जयन्ती कोष में धन प्राप्त हुआ जिसमें से व्यय होने के पश्चात् (नोट छपाने, प्रचार मार्ग व्यय पोस्टेज आदि खर्च में)सम्प्रति धन लखनऊ के सेंट्रल बैंक में जमा हैं। जिसमें से धन निकालने का सम्मिलित अधिकार श्री पं० हरिशंकर शर्मा प्रधान सभा व श्री विश्वेश्वरनाथ वर्मा कोषाध्यक्ष सभा को है।

इस शुभ कार्य में जिन सज्जनों ने सहयोग दिया है और देंगे उन सबका जयन्ती समिति हार्दिक धन्यवाद करती है। आशा है सभी आर्य बन्धुओं के अमूल्य सहयोग से यह महान् कार्य सफलता-पूर्वक सम्पन्न हो सकेगा। आशा है हम उत्तर प्रदेश के आर्यबन्धु इस कार्य की सफल सम्पन्नता द्वारा उत्तर प्रदेश की गौरव वृद्धि करेंगे तथा आर्य जगत् की बधाई प्राप्त कर सकेंगे।

—उमेशचन्द्र स्नातक
मन्त्री
आर्यमित्र हीरक जयन्ती, श्री पं० गंगा-प्रसाद उपाध्याय एम० ए० व श्री पं० गंगाप्रसाद रि०चौ० जज (विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ), गुरु विरजानन्द स्मारक शिला-न्यास (गुरुधाम मथुरा) समारोह समिति

वेदोपदेश

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्य्याणाम् । इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ ऋ० १।१।६।२

हे परात्पर परमात्मन् ! आप "पुरूतमम्" अत्यन्तोत्तम और सर्वशत्रु-विनाशक हो तथा बहुविधि जगत् के पदार्थों के "ईशानं" स्वामी और उत्पादक हो "वार्य्याणाम्" वर, वरणीय, परमानन्द मोक्षादि पदार्थों के भी ईशान हो "सोमे" और उत्पत्तिस्थान संसार आपसे उत्पन्न होने से "इन्द्रम्" परमैश्वर्य्य-वान् आपको हृदय में अत्यन्त प्रेम से गावें, यथावत् स्तुति करें जिससे आपकी कृपा से हम लोगों का भी परमैश्वर्य्य बढ़ता जाय और परमानन्द को प्राप्त हो।



अरुण—१० मई १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

हिन्दी आन्दोलन की गूंज निर्णय से पूर्व सोचिये

आज आर्यजगत् मे एक बार पुन हिन्दी आन्दोलन की गूंज सुनाई पडने लगी है। १॥ वर्ष तक सद्भावना के नाम पर सरकार के प्रयत्नों की प्रतीक्षा करते हुए अधीर हो उठना स्वाभाविक बात है और वह भी उस स्थिति में जब कि सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य-समिति पजाब, राज्यभाषा सद्भावना समिति, राज्यपाल गाडगिल और शिक्षामन्त्री अमरनाथ विद्यालंकार आदि ने भाषा समस्या के सुलझाने के प्रयत्नों की बारम्बार चर्चा की और जनता को आश्वासन दिये हों।

उन आश्वासनों का क्या परिणाम हुआ, यह अभी अस्पष्ट है और सब कुछ पजाब की भाषा सद्भावना समिति की रिपोर्ट आने की प्रतीक्षा तक अनिश्चित है। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज का क्या दायित्व और कर्तव्य है इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए। क्योंकि अब जो भी निर्णय किया जायगा वह अन्तिम होगा और आर्यसमाज के जीवन-मरण का निर्णय करने वाला होगा।

इस गम्भीर परिस्थिति में हम स्थिति का विश्लेषण कर देना आवश्यक समझते हैं। सरकार को क्या करना है और वह क्या करेगी यह वह जाने, हमें तो आर्यसमाजके सम्बन्ध मे स्थिति को समझना चाहिए।

हिन्दी सत्याग्रह के स्थगन के दूर-गामी प्रभावों की चिन्ता न करते हुए कुछ भाई जोश के आवेश में आर्यसमाज को एक बार पुनः अग्नि परीक्षा देने के लिए बाध्य करना चाहते हैं। हम उनके जोश का हार्दिक स्वागत करते हैं और उनकी ओजस्विनी वाणी को आर्यसमाज का गौरव समझते है परन्तु उन भाइयो के सम्मुख विनम्रतापूर्वक कुछ प्रश्न रखना आवश्यक समझते है। उन प्रश्नो के उत्तरों में ही आन्दोलन का भविष्य निहित है।

सबसे प्रथम तो हम आन्दोलन के नेतृत्व की चर्चा करेंगे। पहली बार जब आन्दोलन आरम्भ हुआ तब नेतृत्व सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य-समिति के हाथों सौंप दिया गया और सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार सम्पूर्ण आर्यजगत् ने उसके नेतृत्व में अभियान जारी रक्खा। आज भी वही भाषा स्वातन्त्र्य-समिति इस समस्या के सम्बन्ध मे आर्य-समाज का प्रतिनिधित्व करती है और उसी समिति ने अपनी २९-८-५८ की बैठक मे सार्वदेशिक सभा से माग की थी कि भविष्य मे आन्दोलन को आरम्भ करने से पूर्व आर्यजगत् की भावनाओ और हिन्दी समर्थको का सहयोग प्राप्त करने के लिये आर्यमहासम्मेलन बुलाना उचित होगा। सार्वदेशिक सभा महा सम्मेलन बुलाने का निश्चय कर चुकी है साथ ही सभा और समिति सरकार को सद्भावना का वातावरण उत्पन्न करने में पूर्ण सहायक सिद्ध होना चाहती हैं, ऐसी स्थिति में आन्दोलन के लिये सार्वदेशिक सभा से माग तो की जा सकती है परन्तु स्वतन्त्र रूप से आन्दोलन का नेतृत्व अपने हाथ में ले लेना और फिर सम्पूर्ण आर्यजगत् से सहयोग की अपील करना कहा तक वैधानिक, उचित, साम-यिक और बुद्धिमत्तापूर्ण होगा।

यदि यह कहा जाय कि इस प्रश्न को पजाब के लोग अच्छी प्रकार समझ सकते हैं बाकियों को उनका सहयोग ही करना चाहिये तो यह पूछा जा सकता है कि भाषा स्वातन्त्र्य-समिति के १७ सदस्यों में से १२ सदस्य तो पंजाब के आर्यबन्धु ही हैं, बाहर के तो श्री घन-श्यामसिंह गुप्त, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, श्री पं० नरेन्द्र, श्री वाचस्पति शास्त्री ही हैं तब इतना बहुमत होते हुए भी समिति ने आन्दो-लन को पुन आरम्भ करने का निर्णय अभी तक क्यो नहीं किया है।

इसके साथ ही हम जानना चाहते हैं कि क्या नेतृत्व के कई व्यक्ति पंजाब की राजनीति में कांग्रेस के निकट पहुँचने के लिये प्रयत्नशील नहीं हैं। और क्या पंजाब के जिम्मेवार दो आर्य नेताओ ने जिनका हिन्दी आन्दोलन के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा कैरो के समर्थन में मतदान नहीं किया था? साथ ही आन्दोलन के लिये उतावले भाइयो के पास शीर्षस्थ नेताओ की गिरफ्तारी के पश्चात् द्वितीय पंक्ति के ठोस कार्यकर्त्ताओ की संख्या कितनी है जिससे सत्याग्रही निकलने में सफलता मिल सकेगी? अभी तक पंजाब की आर्य शिक्षा सस्थाओ ने भी असहयोग नीति का कोई परिचय नही दिया और न देने का निर्णय किया है। मोर्चा दिल्ली में लगाने से सम्भव है कुछ सुविधा रहे परन्तु जब तक पंजाब के सत्याग्रहियो की सख्या सर्वाधिक और अनवरत न रहेगी तब तक हमारे पक्ष मे न्यूनता बनी रहेगी। पिछली बार जब आन्दोलन पजाब तक ही सीमित था पजाब से बाहर के सत्या-ग्रहियों की सख्या अधिक होने लगी थी तब हम पर आक्षेप लगाया गया था। इसके साथ ही पजाब के खाद्य-आन्दोलन और खुशहाली-कर-विरोधी आन्दोलन के समय की गई सरकारी सख्ती और भारी जुर्मानो का आतक अभी तक पजाब की जनता के हृदयो में व्याप्त है। ऐसी अवस्था मे कार्य को जोश मे आरम्भ कर देना आसान हे पर निभा सकने की क्षमता चिन्तनीय है।

यह तो जनता की स्थिति हे वैधा-निक दृष्टि से यदि आर्यजगत् के सामू-हिक सहयोग की अपेक्षा हे तो उसको पूर्ति आर्य महा सम्मेलन की स्वीकृति से ही मिल सकती है।

यह ठीक है कि हमे परिस्थिति का सामना करना चाहिये, पर हमारा आग्रह यही है कि जोश के साथ होश भी कायम रक्खा जाय। संघर्ष के समय जितने अधिक मित्र और समर्थक बन सकें उतनी सफलता निकट होती है और यदि हम विजय-यात्रा के लिये चलें और घर में ही एका न हो तो शत्रु हमारी कमजोरियो का पूरा फायदा उठायेगा। पिछली बार हम पर अनेकता का जो दोष लगाया गया था इस बार उसका अवसर देना भारी भूल होगी।

हम सद्भावना के लिये प्रतीक्षा करें और पराकाष्ठा तक अपने धैर्य का परिचय दें और फिर भी यदि हमारी बात न मानी जाय तो हमे विश्वास रखना चाहिये कि तब जनता और बुद्धि वादी वर्ग का समर्थन आर्यसमाज को प्राप्त होगा।

हम सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति तथा सार्वदेशिक सभा से भी इस दिशा में अधिक सक्रिय होने व आर्य सम्मेलन द्वारा इस प्रश्न के सम्बन्ध में नीति निर्धारण का आग्रह करते है। हमें स्मरण रखना चाहिये हमारा अगला कदम आर्यसमाज के भविष्य का निर्णायक होगा। आशा है हमारे इन विचारो को आर्यसमाज के हितचिन्तन की दृष्टि से लिया जायगा। सार्वदेशिक सभा द्वारा एक बार युद्ध - घोषणा होने पर 'आर्यमित्र' सम्पूर्ण शक्तियो से संघर्ष में सहयोग का आश्वासन देता है।

चौधरी चरणसिंह का त्याग-पत्र

उत्तरप्रदेश की सत्ता राजनीति में पिछले काफी समय से जो संघर्ष चल रहा था उसके कारण कुछ भी हो परन्तु उसका परिणाम दल और शासन में विघटन तत्वो की वृद्धि करने वाला सिद्ध हुआ है। आचार्य जुगलकिशोर और उनके साथियो ने जिस सैद्धान्तिक आधार पर मन्त्रि मण्डल से त्याग-पत्र दिया था उसने उत्तरप्रदेश की राजनीति को काफी प्रभावित किया था और अब चौधरी चरणसिंह जैसे वरिष्ठ और अनु-भवी मन्त्री का त्याग-पत्र जिन परिस्थि-तियो और जिन कारणों से हुआ है उनकी समीक्षा करने पर हम अनुभव करते है कि उत्तर प्रदेश के स्थिर कांग्रेस शासन की आधार भूमि मे भूकम्प आ चुका हे और उस उथल-पुथल का परिणाम राज्य की जनता को कुशासन के रूप मे भुगतना पडेगा।

चौ० चरणसिंह अपने दल और दायित्व के प्रति सदैव निष्ठावान रहे हैं और वे राज्याधिकारियो के दूषित कार्यों और उनकी नौकरशाही मनोवृत्ति को कभी पसन्द नही करते थे। इसके लिये वे दल मे सदैव आन्तरिक संघर्ष करते रहे। शासन के भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकबार १९५७ ई० में वे पहिले भी त्याग-पत्र दे चुके थे पर आश्वासन देकर उन्हें मना लिया गया। खेद है कि १॥ वर्ष के समय में मुख्य मन्त्री अपने दिये आश्वासनो को पूर्ण न कर सके। इस बीच भ्रष्टाचार की शिकायतें और भी बढीं, शासन की फिजूल-खर्ची के विरोध में भी चौ० साहब ने अपना सक्रिय विरोध प्रदर्शन किया, वे मन्त्रियो के नैनीताल निवास का विरोध करते रहे परन्तु राज्य की शान-शौकत को बदस्तूर जारी रखने के मिथ्याभिमान

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

के नाम पर उनके विरोध की उपेक्षा की जाती रही और इस वर्ष भी मन्त्रि-मण्डल और अफसरों के नैनीताल निवास के भारी भार को जारी रखने का निर्णय किया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि चौ० साहब राज्य की गरीब जनता के हित की भावना से मन्त्रिमंडल में संघर्ष करते रहे।

दल में चौ० साहब की जो स्थिति और सेवाएं रहीं उनको देखते हुए उन की भावना ों का आदर किया जाना चाहिये था पर दुर्भाग्य की कहानी यहाँ तक आगे बढ़ती है कि वे अपने त्याग-पत्र के कारणों पर प्रकाश भी डाल सकें इस का उन्हें अवसर प्राप्त होता, इससे पूर्व ही विधान-सभा का अधिवेशन स्थगित कर दिया गया। इस कार्य को कौन और किस प्रकार प्रजातन्त्र के अनुकूल सिद्ध कर सकता है?

चौधरी साहब एक आर्यसमाजी होने के नाते सार्वजनिक जीवन में आये और आगे बढ़े हमे इस बात का गर्व है। जब तक वे मन्त्रि मण्डल में रहे, आर्य सिद्धान्तो के अनुसार शासन को प्रभावित करने का प्रयत्न करते रहे तथा आर्यसमाज के कार्यो मे बराबर सहयोग देते रहे। हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यमेव जयते के अनुसार एक दिन आयगा जब उनकी विजय होगी और राज्य उनके नेतृत्व से गौरवान्वित होगा।

चौ० साहब का त्याग-पत्र साधारण घटना नहीं है। इससे कांग्रेस की शक्ति को गहरा आघात पहुचेगा, इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। हम आशा करते हैं कि राज्य का प्रमुख शासक-दल परिस्थिति का समाधान करने में व्यावहारिक बुद्धि से काम लेगा अन्यथा इस कोढ का भावी परिणाम उत्तर प्रदेश में कांग्रेस की शक्ति को कमजोर करनेवाला ही सिद्ध होगा। ★

दहेज-प्रतिबन्ध बिल

आर्यसमाज ने जिस सामाजिक क्रान्ति का समारम्भ किया था आज ८४ वर्ष बाद उसके महत्त्व को लोग स्वीकार कर सके हैं। लोक-सभा में दहेज प्रथा की रोक-थाम के लिए पारित बिल इस बात का प्रमाण है। आर्य-जीवन पद्धति में विवाह दो प्राणियों के ऐक्य और दो परिवारो के मध्य घनिष्ठ सम्पर्क का प्रतीक माना जाता है। इस सम्बन्ध-स्थापना में भौतिक पदार्थों को बाधक बनाना अमानवीयता है। विवाह के साथ लेन-देन और दान-दहेज की असामाजिक प्रथा वस्तुओ के क्रय-विक्रय के तुल्य ही है। क्या मानव का कोई मूल्य हो सकता है, कदापि नहीं। परन्तु भारत में सामाजिक कोढ़ ने यह भी कर दिखाया। हमारे समाज में आज खुले आम लड़कों का मूल्य किया जाता है जो लड़की वाला इतना धन दे सकेगा उसीके साथ लड़के का विवाह हो सकेगा इस कुप्रथा ने हजारों असंख्यों भारतीय बालाओं को दुख की अग्नि में सताया झुलसाया है और लाखों घर बरबाद किये हैं। आर्यसमाज प्रचार और शिक्षा द्वारा इस सामाजिक अभिशाप के विरुद्ध जिहाद बोलता रहा है आज हमें सफलता मिली है। इस सफलता को व्यावहारिक रूप देने की जिम्मेवारी भी हम पर सबसे अधिक है। कानून सहायक हो सकता है पर समाज के नैतिक स्तर को उन्नत किये बिना समस्या समाप्त नहीं हो सकती। कानून समस्या का उत्तम समाधान नहीं है, अब हमें समस्या के मनोवैज्ञानिक और स्थायी हल के लिये प्रयत्न करना चाहिये। आशा है आर्य कार्यकर्त्ता अपने मार्ग पर आगे कदम बढ़ाते चलेंगे।

अंग्रेजों के न रहने से देश एक रहा, अंग्रेजी के न रहने से एकता क्यों टूटेगी?

भारत की राष्ट्र भाषा समस्या राष्ट्रीय स्वाभिमान की समस्या है, पर इस समस्या को प्रान्तवाद और भाषावाद की दूषित दुरभिसन्धियो ने आवृत कर लिया है इसे हम देश का दुर्भाग्य ही कह सकते हैं

फ्रैंक एन्थोनी के अंग्रेजी को भारतीय भाषा के रूप में स्वीकार किये जाने वाले प्रस्ताव को लेकर भारत में अंग्रेजी के महत्त्व की चर्चा जोरो पर है। भारत के कूटनीतिज्ञ श्री राजगोपालाचार्य ने कुछ अंग्रेजी समर्थकों के हस्ताक्षरों से (जिनमें मा०तारासिंह भी पाचवें सवार हैं) एक विज्ञापन संसद सदस्यों में वितरित किया है और आग्रह किया है कि भारत की एकता को अक्षुण्ण रखने के लिये अंग्रेजी को भारत में रक्खा जाय और उसे वर्तमान पद से पदच्युत न किया जाय।

हम राजाजी और उनके समर्थकों के इस आग्रह को दुराग्रह और जिस घड़ी में यह किया जा रहा है उसे अशुभ घड़ी समझते हैं।

राजाजी को स्मरण रखना चाहिए कि अङ्गरेजों को तो भगाने में उन्होंने भी सहयोग दिया था और उनके जाने से देश की एकता खंडित न हो सकी तब अंग्रेजी की दासता-पाश से मुक्ति हमें कैसे विखण्डित कर देगी? अंग्रेजी के समर्थक अपने स्वार्थ को छोड़कर, सांस्कृतिक, धार्मिक एकता में आबद्ध भारत को देखें और उसके लिये भारतीय भाषा हिन्दी के गौरव का सम्मान करें। भारत में अङ्गरेजी के रहते न कोई प्रान्तीय भाषा विकसित हो सकती है और न राष्ट्रीय एकता पनप सकती है। अङ्गरेजी हमारी दासता की निशानी है। उस कलंक से राष्ट्र को विमल बनाना आज का राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

अन्तरङ्गाधिवेशन की सूचना

समस्त अन्तरङ्ग सभासदों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अन्तरङ्ग सभा का साधारण अधिवेशन दि० १५ मई ५१ को अपराह्न २ बजे से आर्यसमाज हाथरस में होगा। यदि कार्य समाप्त न हुआ तो १६ मई को प्रातःकाल हो सकेगा। कृपया सदस्यगण नियत समय पर पहुँचने का कष्ट करें।

सभा कार्यालय हाथरस को

उत्तरप्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों एवं उपसभाओं को सूचित किया जाता है कि जिस किसी समाज ने अपने-अपने वार्षिक प्रतिनिधि चित्र सभा कार्यालय में न भेजे हों, वे नियमानुसार भर कर साथ लाने की कृपा करें और सभा प्राप्तव्य धन भी लेते आवें। सभा का वृहदधिवेशन १६ व १७ मई १९५१ को हाथरस में हो रहा है। कृपया अपने-अपने समाज के प्रतिनिधि महोदय को हाथरस पहुँचने के लिए प्रेरित करें।

२—सभा का मुख्य कार्यालय १४ मई ५१ को हाथरस पहुँच जायगा। अतः सभा सम्बन्धित समाजो के फार्म व दशांश तथा आवश्यक डाकादि १७-५-५१ तक आर्यसमाज हाथरस (अलीगढ़) के पते पर भेजने की कृपा करें। तत्पश्चात् लखनऊ के पते पर भेजें।

फूलनसिंह
सभा मन्त्री

गुरुकुल काँगड़ी की डिग्रियाँ

गुरुकुल काँगड़ी गत ५० वर्षों से अधिक समय से अपने स्नातकों को "विद्यालङ्कार" तथा "विद्यावाचस्पति" आदि उपाधियां देता रहा है जिससे गुरुकुल की उपाधियों की प्रतिष्ठा और मान्यता स्थापित हो चुकी है और यह उपाधियां केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारों और विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत हैं। अब ज्ञात हुआ है कि कुछ अन्य संस्थाएं भी इन उपाधियों को देने लगी हैं। प्रतीत होता है कि उन्हें यह ज्ञात नहीं कि गुरुकुल कांगड़ी की यह उपाधियां सन् १९३७ से भारतीय सरकार के कानून के अन्तर्गत रजिस्टर्ड हो चुकी हैं। अतः अन्य संस्थाओं को यह उपाधियां देना उचित नहीं है।

शिक्षकों के प्रति असमानता समाप्त हो

भारत के संविधान, राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री और उत्तर प्रदेश के मुख्य व शिक्षामन्त्री सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि समान कार्य के लिए समान वेतन का सिद्धांत ही भारत का आदर्श होना चाहिये। संविधान के इस समर्थन से प्रोत्साहित होकर उत्तर प्रदेश के मा० शिक्षक संघ ने अध्यापकों के साथ शिक्षा-क्षेत्र में असमानता के विरुद्ध वैधानिक संघर्ष करना आरम्भ किया, निरन्तर १० वर्ष के प्रयत्नो और आश्वासनो के बाद इस वर्ष उत्तर प्रदेश राज्य ने सहायता प्राप्त स्कूलों के अध्यापकों को राजकीय अध्यापकों के समान वेतन देने की एक घोषणा की है। घोषणा का बाह्य रूप आकर्षक होते हुए भी उसकी आत्मा भेद-भाव और उपेक्षा के तत्त्वों से परिपूर्ण है। विशेष कर जब समानता की घोषणा की जा रही हो। राजकीय अध्यापकों के वेतन स्तरों में मंहगाई भत्तों को मिलाने का निर्णय और भी असन्तोष उत्पन्न करने वाला है। क्या सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापक मंहगाई से पीड़ित नहीं? इसी प्रकार दक्षता रोकों की कृत्रिम बाढ़ खड़ी कर वेतन समानता का उपहास किया गया है। सरकार की इस द्वैध नीति के विरोध में अध्यापक संघ ने १ मई को उपवास रखकर विरोध प्रकट किया और ८ मई को सार्वजनिक विरोध प्रकट किया है। आशा है समानता का डिमडिमनाद करने वाले हमारे शासक असमानताओं से पीड़ित अध्यापकों के प्रश्न को सम्मान और संविधान के गौरवानुरूप हल करने का प्रयत्न करेंगे। यह बात सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि अध्यापकों का असन्तोष स्वस्थ नागरिकता के विकास में बहुत बड़ी बाधा सिद्ध होगा।

आर्य वीर दल शिविर उन्नाव

—उन्नाव मण्डल आर्यवीर दल का प्रथम शिक्षण शिविर २४ से २६ मई ५१तक स्थान मन्दिर आर्यसमाज उन्नाव में सम्पन्न होने जा रहा है। शिक्षार्थी सभी आर्य बंधुओं को अवसर से अवश्य लाभ उठाना चाहिये। भोजन एवं निवास की व्यवस्था शिविर की ओर से होगी। शिविर का प्रवेश शुल्क १) है। बिस्तर, लोटा, लाठी, सफेद नेकर, कमीज, जूते, नोटबुक पैन्सिल आदि शिक्षार्थियों को साथ लाने होंगे।

सिंहावलोकन

महर्षि की तीन शिक्षाएं और हमारी उपेक्षा

(श्री बाबूलाल जी गुप्त पूर्व शिक्षा संचालक मध्य भारत)

महर्षि दयानन्द की शिक्षा के तीन मुख्य अङ्ग थे। इस सकल जगत् के रचयिता और पालनकर्त्ता परमात्मा के अस्तित्व, उसकी सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, न्यायकारिता और दयालुता में अटूट श्रद्धा उनकी शिक्षा का प्रथम अङ्ग था। वेद ईश्वरीय ज्ञान का पूर्ण भण्डार है, वेद के समझने और तदनुकूल आचरण करने से ही मनुष्य का कल्याण सम्भव है अन्यथा नहीं। महर्षि दयानन्द की शिक्षा का द्वितीय अङ्ग था। जिस प्रकार हिन्दुओं के सैकड़ों और सहस्रों कल्पित देवी देवता जिनको वे मिट्टी, पाषाण, काष्ठ अथवा धातु की मूर्तियाँ बनाकर पूजते थे, मिथ्या हैं, उसी प्रकार हिन्दुओं की सहस्रों जन्मगत जाति बिरादरियाँ भी नितान्त मिथ्या और पारस्परिक फूट की जननी हैं। इनका आर्य (हिन्दू) जाति जितने शीघ्र परित्याग करदे उतना ही श्रेयस्कर है यह महर्षि की तृतीय मुख्य शिक्षा थी।

मेरे आर्यसमाजी भाइयों और बहिनों के लिए सोचने का विषय है कि क्या वर्त्तमान समय में महर्षि की उपर्युक्त तीन शिक्षाओं में से किसी एक का भी सम्बन्ध क्रियात्मक रूप में उनमें से अधिकांश के दैनिक जीवन से जुड़ा रह गया है? जिस व्यक्ति के हृदय में परमात्मा की सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता और न्यायकारिता पर दृढ़ विश्वास होगा, क्या मजाल कि वह कभी असत्य और अन्याय का आचरण कर सके अथवा अनाचार, भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार का अपराधी पाया जावे। क्या अब सर्व साधारण जनता की दृष्टि में आर्यसमाजी भाई और बहिनों का चरित्र उपर्युक्त कसौटी पर खरा उतरता है? अन्यों की बात तो दूर रही, दशा इतनी शोचनीय हो गई है कि स्वयं आर्यसमाजियों को भी एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास नहीं रहा और इसका पर्याप्त कारण है। हम यदि आर्यसमाज का एक जीवित और जागृत संस्था के रूप में बनी देखना चाहते हैं तो अपने हृदयों के अन्दर से हमें नास्तिकता के बीज को उखाड़ कर बाहर फेंक देना होगा और अपने नित्य के व्यवहार से यह सिद्ध करना होगा कि हमको परमात्मा के अस्तित्व पर

महर्षि दयानन्द की दूसरी शिक्षा जिसका उल्लेख ऊपर किया गया, का प्रसार तो उसी दिन उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य बन गया था जब उन्होंने अपनी शिक्षा की समाप्ति पर अपने गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी से दीक्षा लेकर प्रचार-क्षेत्र में पदार्पण किया था। यद्यपि विविध आर्यसमाजों तथा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के तत्वावधान में एवं स्वतन्त्र रूप से भी सहस्रों आर्य शिक्षालय इस समय देश में विद्यमान हैं तथापि क्या निश्चित रूप से उनमें एक भी शिक्षालय यह दावा कर सकता है कि वेद के रहस्य को समझने और अन्यों को समझाने के हेतु वह श्रद्धापूर्वक कटिबद्ध है?

❀ ❀

ऋषि ने आस्तिकता, मानव-कल्याण के सन्देश वेद की रक्षा, जन्मना, जाति-वाद का निषेध ये तीन मुख्य शिक्षाएं हमें दी थीं और उनका पालन करना और उनके लिए प्रयत्न करना हम सबका नैतिक कर्त्तव्य है। परन्तु आज आर्य जगत् में (आर्यों के परिवारों) भी नास्तिकता बढ़ रही है हमारी नई पीढ़ी के क्या विचार हैं यह सर्व विदित है। वेद के सम्बन्ध में हम अभी कुछ भी नहीं कर पाये और जातिवाद हमारे घरों में एक बार घटकर पुनः जड़ें जमा रहा है, रूढ़िवाद के दम्भ दुर्ग को भी हम ध्वस्त नहीं कर सके, अतः हमें अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत हो साहस से काम करना होगा। युग-निर्माण से पूर्व हमें आत्म-निर्माण की कठोर साधना करनी होगी। —सम्पादक

❀ ❀

अभारतीयों द्वारा जो लांछन वेद पर लगाये जा चुके हैं और जिनका समर्थन अब भारतीय इतिहासकार भी कर रहे हैं और बाल्यकाल से ही देश के भावी नागरिकों के कोमल मस्तिष्कों में यह गन्दगी ठूंस रहे हैं कि वेद अनेक देवी देवताओं का प्रतिपादन करता है तथा वैदिक ऋषि मांस भक्षण करते थे, क्या इसका निराकरण करने हेतु किसी आर्य संस्था ने कोई प्रभावशाली प्रयास आरम्भ किया? आर्यसमाजी बन्धुओं को भली भांति स्मरण रखना चाहिए कि ऋषि भक्त के रूप में उनका यह दायित्व है कि वेद के ऊपर लगाये गये समस्त मिथ्या लांछनों का निराकरण और सच्चे वेदज्ञान का देश-देशान्तरों में प्रचार किया जावे। सारांश यह कि वेद की रक्षा और उसकी शिक्षा का प्रचार करना ही आर्यसमाज के संस्थापन का एक मात्र समाधान है। समस्त संसार में इस समय अन्य कोई संस्था विद्यमान नहीं जिसे वेद की रक्षा की चिन्ता हो। सामान्य हिन्दू तो पुराणों के दलदल में ही फंसा हुआ है, किन्तु

भरते हैं वे कुछ थोड़े से पंख फड़फड़ा कर वर्त्तमान समय में प्रचलित १८ अध्यायी गीता के तालाब में डुबकियां लगाने लगते हैं। वेद-रूपी सागर का न इन्हें ज्ञान है और न उस तक पहुंचने की इनमें जिज्ञासा अथवा उत्कण्ठा। यदि आर्यसमाज भी वेद की रक्षा के प्रति उदासीन होगया जैसा कि इस समय के लक्षणों से प्रतीत होता है, तब मानव मात्र की ऐसी अपार क्षति होगी जिसका अनुमान लगाना भी अति कठिन है।

चारों ओर दृष्टि घुमाकर देख लीजिए, आर्यसमाजों और आर्य संस्थाओं में अब अनार्यों का प्राबल्य है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम प्रायः जबानी जमाखर्च के नामधारी आर्य बने अपने परिवारों को यहाँ तक कि स्वयं के ही बच्चों को भी हमने अपने साथ आर्य बनाने का यत्न नहीं किया और विवाह शादी के लिये उन्हीं जन्मगत हिन्दू जाति बिरादरियों का पल्ला पकड़े रहे। परिणाम यह हुआ कि

प्रचलित न हो सकीं। हमने पाप लीला को तो समाप्त करने का यत्न किया किन्तु उसके स्थान पर पंच महायज्ञ और षोडश संस्कारों के प्रचलन का एवं जन्मगत जाति बिरादरी के स्थान पर गुण कर्म स्वभावानुसार वैदिक वर्ण-व्यवस्था की स्थापना का कोई संगठित प्रयास न होने के कारण हमारे परिवारों में सच्चे आर्यत्व की लोप लीला हो गई। परिणाम यह हुआ कि आज हम न केवल किसी जन्मजात मुसलमान अथवा ईसाई को शुद्ध कर अपने अन्दर खपाने में ही असमर्थ हैं अपितु स्वयं हमारे बाल बच्चे भी धड़ाधड़ अधर्मी नास्तिक होते चले जा रहे हैं। यदि आर्यसमाज को जीवित रहना है तो उसे यथा शीघ्र संगठित रूप से अपने अन्दर से जन्म-मूलक जाति बिरादरी के 'भूत' को भगाना होगा अन्यथा कल नहीं तो परसों अर्थात् निकट भविष्य में ही उसके अस्तित्व को घोर संकट का सामना करना पड़ेगा। क्या ही अच्छा हो कि हम आर्यसमाजी लोग इस अशुभ घड़ी के आने से पूर्व ही अपने कर्त्तव्य को पहिचान कर उसे पूर्ण करने में प्राणपण से जुट जावें जिससे आर्यसमाज के छठे नियम अर्थात् उसके मुख्य उद्देश्य के पालन करने के समर्थ हो सकें अन्यथा लक्षणों से तो यह प्रतीत होता है कि न केवल हमारा अपना, न केवल हिन्दू जाति का, न केवल भारतवर्ष का अपितु समस्त संसार का भविष्य घोर अंधकारमय है। इससे भगवान ही रक्षा करें।

पूना में वाजपेय यज्ञ

सनातनी पंडितों द्वारा पशु-बलि का विधान!

आर्यसमाज शास्त्रार्थ के लिए मैदान में!!

सरकार पशु-बलि को बन्द करावे

पूना शहर में वाजपेय महायज्ञ ता० २१-४-५९ से आरम्भ हुआ है और ता० १३-५-५९ तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न होगा। इस यज्ञ में पचास हजार से अधिक रुपया खर्च होगा। काशी, प्रयाग, महाराष्ट्र और हर जगह के सनातनी पण्डित एक सौ आये हुए हैं और इस यज्ञ के अन्दर पैंतीस बकरों की आहुतियां दी जानी हैं। मध्यप्रदेश के गवर्नर श्री पाटस्कर जी ने यज्ञ का उद्घाटन किया था। पूना के जनसंघ के कार्यकर्त्ता श्री एन० जी अभ्यंकर एडवोकेट इस यज्ञ के अध्यक्ष बने हैं। आर्यसमाज पूना की तरफ से महाराष्ट्र में समस्त पण्डितों को ललकारा गया और सत्याग्रह तक करने के लिए पूना जिला मजिस्ट्रेट को लिखा गया था। महाराष्ट्र व काशी के कोई पंडित शास्त्रार्थ के लिये तैयार नहीं हुए, किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया और जिस वाजपेय यज्ञ को सार्वजनिक रूप से करने की उन्होंने घोषणा की था उसको पंडितों ने प्रा वेट बताया और जवाब दिया कि सर्वसाधारण के सम्मुख कार्य न होगा। पूना के आर्यसमाजी भाइयों ने आचार्य श्री पं० वैद्यनाथ शास्त्री जी को नासिक से बुलाकर आर्यसमाज तथा नगर के अन्य स्थानों में खूब प्रचार करवाया और जनता के सामने सही हालात रक्खे तथा हिंसापरक यज्ञ का विरोध किया। आर्यसमाज के इस विरोध का प्रभाव यह हुआ कि पंडित लोग अब गाय के बदले बकरे का यज्ञ करेंगे और आर्यसमाज की ललकार पर किसी पंडित के सम्मुख न आने से महाराष्ट्र में सबको मालूम हो गया है कि ये पंडित लोग मुसलमानों की तरह अपनी जिद पूरी करने में लगे हुये हैं। वेद व शास्त्रों में इस प्रकार के किसी यज्ञ का विधान नहीं है जिसमें पशुबलि का आदेश व विधान हो।

—आर०एस० श्रीनिवास, पूना

सभा की सूचनाएँ

उत्तर-प्रदेशीय सभान्तगत आर्यसमाजों के मन्त्रीगण तथा आर्यप्रतिनिधि महोदयों की सेवा में–

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का ७२ वां वार्षिक साधारण बृहदधिवेशन मिती वैशाख शुक्ला ८ व ९ संवत् २०१६ वि० तदनुसार दिनांक १६ व १७ मई १९५९ ई० दिन शनिवार व रविवार को स्थान आर्यसमाज मन्दिर हाथरस में होगा।

प्रथम दिवस की बैठक ३ बजे अपराह्न से आरम्भ होगी। आशा है कि आर्य-समाजों एवं उपसभाओं के प्रतिनिधि महोदय नियत समय पर अधिवेशन में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करेंगे।

प्रवेशनीय विषय-सूची

१—उपस्थिति, ईश्वर-प्रार्थना के उपरान्त शोक-प्रस्ताव।

२—वार्षिक वृत्तान्त १ जनवरी ५८ से ३१ दिसम्बर १९५८ तक आय-व्यय लेखा सहित स्वीकृत्यर्थ।

३—आगामी वर्ष सन् १९६० के लिये बजट स्वीकृत्यर्थ।

४—सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सदस्यों का निर्वाचन।

५—आय-व्यय लेखा निरीक्षक (आडीटर) की नियुक्ति।

६—गुरुकुल विद्या सभा के लिये सभा के नियम सं० ४४ (इ) के अनुसार छः प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

७—अन्य आवश्यक विषय जिन्हें सभा श्री प्रधान जी विशेष रूप से प्रस्तुत करने की आज्ञा दें, प्रस्तुत हो सकेंगे।

टिप्पणी—१—आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास, भोजनादि की सुव्यवस्था आर्यसमाज हाथरस जिला अलीगढ़ के द्वारा की गई है।

टिप्पणी—२—दिनांक १६ मई सन् १९५९ को रात्रि में "उत्तरप्रदेशीय आर्य-सम्मेलन" तथा "अस्पृश्यता-निवारण-सम्मेलन" भी होगा।

टिप्पणी—३—नवीन अन्तरङ्ग, अधिवेशन की समाप्ति पर बैठेगी।

कार्य-क्रम

१६ मई ५९ दिन शनिवार

प्रातः ६॥ से ८ तक सम्मिलित संध्या यज्ञ

,, ८ से ९ ,, प्रतिनिधि परिचय

प्रातः ९ से ११ तक प्रवचन

मध्याह्न—भोजन विश्राम

अपराह्न ३ बजे से बृहदधिवेशन की प्रथम बैठक

सायंकाल ६॥ से ८ बजे तक नित्यकर्म, भोजनादि

रात्रि ८ से १०॥ तक उत्तरप्रदेशीय आर्य सम्मेलन, तथा 'अस्पृश्यता निवारण सम्मेलन'

१७ मई १९५९ दिन रविवार

प्रातः ६॥ से ८ तक संध्या यज्ञादि

,, ८ से ११ तक बृहदधिवेशन की द्वितीय बैठक

मध्याह्न १२ बजे भोजन

अपराह्न ३ से ६ तक बृहदधिवेशन की तृतीय बैठक

सायं ६॥ से ८ तक नित्यकर्मादि

असाधारण नैमित्तिक अधिवेशन का विज्ञापन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन (वार्षिक साधारण बृहदधिवेशन के बीच) मिति वैशाख शुक्ल ८ व ९ संवत् २०१६ वि० तदनुसार दिनांक १६ व १७ मई १९५९ ई० दिन शनिवार व रविवार को आर्य-समाज मन्दिर हाथरस में होगा।

यदि प्रथम दिवस कार्य संख्या (कोरम) पर्याप्त नहीं होगा, तो स्थगित बैठक १७ मई को प्रातःकाल होगी। कृपया समय से पूर्व पधार कर कृतार्थ कीजिये।

प्रवेशनीय विषय-सूची

१—उपस्थिति गणना, ईश प्रार्थना।

२—अन्तरङ्ग सभा दि० १५-३-५९ के नि० सं० १० के अनुसार सभा के नियमों में निम्नप्रकार संशोधन किया जावे विचारार्थ।

विविध महानुभावों तथा उप प्रतिनिधि सभाओं के प्रस्तावित संशोधन पर विचार होकर निश्चय हुआ कि —

१—आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं व आर्य प्रतिनिधि सभा के पारस्परिक संबंध व प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय प्रस्तुत किया जाकर निश्चय हुआ कि —

(१) सम्प्रति यही उचित है कि आर्यसमाजों का सीधा प्रतिनिधित्व सभा के पूर्व नियमों के अनुसार ही सभा में रहे।

(२) आर्य प्रतिनिधि सभा में उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधित्व के सम्बन्ध में इस समिति का मत है कि नियम (५) के 'ग' में निम्न संशोधन स्वीकार किया जाए।

(सार्वदेशिक सभा) का वार्षिक अधिवेशन व नैमित्तिकाधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २४ मई १९५९ रविवार को दयानन्द भवन, नई दिल्ली—में होगा। कार्य-वाही वार्षिक अधिवेशन प्रातः ९ बजे से प्रारम्भ होगा। नैमित्तिकाधिवेशन ३॥ बजे से। सभी प्रांतों के संबंधित सदस्यों से प्रार्थना है कि वे कृपया ठीक समय पर सम्मिलित होने का कष्ट करें।

रामगोपाल
सभा मन्त्री

मास मई के प्रोग्राम

(१) श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री—४ से ७ इकौना, २१ से २४ आर्यसमाज तिलहर।

(२) श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री—९ से १२ असुरन, १५ से १७ ककम्पू, २० से २७ करोरा।

(३) श्री सत्यमित्र जी शास्त्री—८ से ११ शिकोहाबाद, २२ से २४ आर्य-समाज सिविल लाइन्स सहारनपुर।

(४) श्री सच्चिदानन्द शास्त्री—१६ से २० विवाह धामपुर, २२ से २४ आर्य-समाज सिविल लाइन्स सहारनपुर।

(५) श्री सत्यपाल जी शास्त्री—९ से १२ आ० स० सुभाषनगर बरेली।

२२ से २४ सिविल लाइन्स सहारनपुर।

(४) श्री अवधसिंह—१५ से १६ ककम्पू, १० से १२ विवाह भंडारीग्राम (देवरिया) २१ से २४ नानपारा।

(५) श्री सर्वगुणप्रसाद—१० से १० आ० स० स्थापना सोहनाग (देवरिया)।

(६) श्री जयपालसिंह—१५ से १० हाथरस, २१ से २४ तिलहर।

(७) बालकृष्ण—४ से ६ विवाह लखनऊ, १०-११ शफीपुर, २२-२३ पुखिया (सीतापुर)।

(८) श्री रघुवरदत्त—२२ से २४ विवाह मंहगवा।

(९) श्री श्रीपालसिंह—१५ से १० ककम्पू।

(१०) श्री महेशचन्द्र—१० से १२ विवाह पूरनपुर।

प्रचारक

(१) श्री मत्रपाल जी—१ से ३ तिर्वा, ४ से ६ ठठिया, ८ से ११ आर्य-समाज शिकोहाबाद, १५ से १७ आर्य समाज हाथरस १६ से २१ आ० स० शमशाबाद (फर्रुखाबाद)।

(२) श्री रामचन्द्र शर्मा—४ से ६ आ० स० इकौना, ११ से १३ आ० स० भगरास (बरेली), १५ से १७ आ० स० कर्वोदा, २१ से २४ अठवारगली मद्रास।

(३) श्री गजराजसिंह—९ से १२ सुभाषनगर बरेली, १७ से १९ सम्भल,

सूचना

आर्यसमाज बाबूपुरवा कालोनी कानपुर का छठा वार्षिकोत्सव दि० २१ से २४ मई ५९ तक अपूर्व समारोह-पूर्वक होने जा रहा है जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य रामानन्द शास्त्री (पटना), श्री श्याम जी शर्मा भजनोपदेशक (आगरा) की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। पं० विद्यानंद जी (काशी), व श्री महिपाल सिंह भजनोपदेशक (बलिया) की स्वीकृति की शीघ्र ही आशा की जा रही है।

(अ) प्रति ७ से १० संख्या के स्थान पर "प्रति ५ से ७ संख्या" स्वीकार किया जाय तदुपरान्त, 'प्रत्येक १० अथवा उसके खण्ड पर" के स्थान पर "प्रत्येक ७ अथवा उसके खण्ड पर" स्वीकार किया जाय।

(ब) टिप्पणी में निम्न प्रकार से परिवर्तन किया जाय, केवल वही उपप्रतिनिधि सभा अपना प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभा से भेज सकेगी कि जिसमें न्यून से न्यून ५ आर्यसमाजें प्रविष्ट हों।

आर्य प्रतिनिधि सभा में उपसभाओं के द्वारा उन्हीं समाजों से प्रतिनिधि निर्वाचित किये जायंगे, जो आर्य प्रतिनिधि सभा के नियमानुसार सम्बन्धित हैं और जिन्होंने सभा के वर्ष का प्राप्तव्य दशांश आदि सभा के नियत नियमों के साथ भेज दिया है।

बृहदधिवेशन के अवसर पर केवल उन जिलों को ही अन्तरङ्ग सभा के लिये अन्तरङ्ग सदस्य चुनने का अधिकार होगा जिस जिले के कम से कम ५ प्रतिनिधि उपस्थित होंगे, अन्यथा साधारण सभा अन्तरङ्ग के लिये किसी प्रतिनिधि का चुनाव कर लेगी।

नारायणस्वामी भवन
लखनऊ दि० ७-४-५९

निवेदक :—
कुलसिंह
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

गुरुकुल सम्मेलन और उनका भविष्य

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का जयन्ती समारोह अपनी ऐतिहासिक स्मृतियों के साथ सम्पन्न हो गया। चार दिन की चहल-पहल और धुआँधार भाषणों का वातावरण नाम शेष रह गया है, परन्तु जयन्ती का स्थायी सन्देश गुरुकुल आन्दोलन की व्यापकता एवं सफलता के लिए, गुरुकुल सम्मेलन का संदेश अपना स्थायी प्रभाव छोड़ गया है। गुरुकुल सम्मेलन का प्रारूप सार्वदेशिक सभा के दयानन्द भवन में आदरणीय पं० हरिशङ्कर जी शर्मा, बन्धुवर नरदेव जी स्नातक, भाई प्रकाशवीर जी आदि के साथ बड़े उत्साह पूर्ण वातावरण में बनाया गया था। भावना और उद्देश्य आर्यजगत् के शिक्षा-आन्दोलन को स्पष्ट करते हुए गुरुकुलों के केन्द्रीकरण के लिये शुभ-प्रयत्न करना था। आर्यमित्र के स्तम्भों में भी इस विषय की चर्चा की गई। सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये गुरुकुल आन्दोलन के प्रबल समर्थक, आर्य नेता श्री पं० भजगूराय जी शास्त्री उप प्रधान सार्वदेशिक सभा का महान् व्यक्तित्व हमें उपलब्ध हो सका। सम्मेलन के प्रस्तावों में गुरुकुल आन्दोलन के लिये जनता ने अब तक सहयोग प्रदान किया, उसके प्रति धन्यवाद प्रदान किया गया, साथ ही जनता और राज्य से अपील की गई कि वे गुरुकुलों का यथाशक्ति आवश्यक सहायता करें। मुख्य प्रस्ताव का आशय यह था कि आर्यसमाज के समस्त गुरुकुलों की पाठ-विधि, परीक्षा-प्रणाली एवं उपाधियां समान हों और शीघ्र ही केन्द्रीय गुरुकुल विश्वविद्यालय के स्वरूप का निर्माण किया जावे। सम्मेलन ने इस आशय की पूर्ति के लिये सार्वदेशिक सभा से अपील की कि वह आर्यजगत् के इस महत्त्वपूर्ण विषय को अपने पथ-प्रदर्शन से आगे बढ़ावे। सम्मेलन में श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री (ज्वालापुर), श्री आचार्य रामदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (कांगड़ी), श्री पं० जगदेव जी सिद्धान्ती महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (कांगड़ी), श्री आचार्य भगवानदेव जी (झज्जर), श्री आचार्य बृहस्पति जी उपकुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय (वृन्दावन), श्री नरदेव जी एम० पी० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय (वृन्दावन), श्री पं० महेन्द्रनाथ जी शास्त्री गुरुकुल सिकन्दराबाद, आदि ने गुरुकुल आन्दोलन की गतिविधियों, परिस्थितियों और प्रगतियों के सम्बन्ध में विविध विचार प्रकट किये और गुरुकुलों का एकता के प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन किया।

अध्यक्ष पद से शास्त्री जी ने गुरुकुल आन्दोलन के प्रति अपनी निष्ठा की चर्चा करते हुए कहा—कि मैं आर्यसमाज के समस्त कार्यों में गुरुकुल आन्दोलन को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझता हूँ। आर्यसमाज की गुरुकुल संस्थाएं महान् रचनात्मक कार्य हैं, देश गुरुकुलों की सेवा से उपकृत हुआ और आगे बढ़ा है। आधी शताब्दी से अधिक गुरुकुल आन्दोलन जिस रूप में जीवित रहा है उसे अब और भी अधिक परिष्कृत एवं युगानुरूप बनाना होगा।

गुरुकुल राष्ट्र के लिये सच्चे आदर्श एवं तपस्वी समाजसेवकों की निर्माण स्थली है। सरकारी नौकरियों के लिये तैयार होने वाले छात्रों की अभिलाषाएँ गुरुकुल पूर्ण नहीं कर सकते क्योंकि गुरुकुलों का लक्ष्य नेतृत्व की शक्ति का विकास है। राष्ट्र को साधारण कार्यकर्ताओं की अपेक्षा आज उच्च चरित्र के आदर्श नेतृत्व की महती आवश्यकता है। गुरुकुलों ने इस दिशा में यथाशक्ति सफलता प्राप्त की है और राष्ट्र को उत्तम समाज सेवक प्रदान किये हैं। भविष्य में भी राष्ट्र गुरुकुलों से ही उत्तम चरित्र के नेतृत्व की आशा रखता है।

गुरुकुलों के स्वरूप में आज जो विशृंखलता, विविधता एवं अनेकता पाई जाती है, उसके अनेक ऐतिहासिक और स्थानीय कारण हैं, परन्तु इससे यह स्पष्ट है कि गुरुकुलों की आवश्यकता अनुभव की जाती रही है। इस दिशा में आज आर्यसमाज के कर्णधारों का यह कर्तव्य और दायित्व हो जाता है कि वे गुरुकुलों की बिखरी शक्ति का केंद्रीकरण करें। प्रस्ताव द्वारा सार्वदेशिक सभा से गुरुकुलों के एकीकरण की जो मांग की गई है उसका मैं हार्दिक समर्थन और स्वागत करता हूँ।

सार्वदेशिक सभा का कार्यकर्ता होने के नाते मैं सम्मेलन के संयोजकों को आश्वासन देता हूँ कि सार्वदेशिक सभा में इस कार्य के लिये यथाशक्ति सहयोग प्रदान करूंगा।

सम्मेलन ने इस कार्य को प्रगति देने के लिये जिस समिति की घोषणा की उसकी प्रथम बैठक सम्मेलन के पश्चात् श्री पं० भजगूराय जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें निम्न सज्जन उपस्थित थे, श्री भजगूराय शास्त्री श्री डा० नरेन्द्रदेव जी, श्री नरदेव जी स्नातक, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्री डा० हरदत्त जी शास्त्री, श्री आचार्य बृहस्पति जी, श्री वाचस्पति जी (संयोजक के नाते मैं भी उपस्थित था) समिति ने निश्चय किया है कि गुरुकुल एकता सम्बन्धी प्रस्ताव, आर्यसमाज के समस्त गुरुकुलों की सचालिका, स्वामिनी सभाओं के पास प्रेषित कर उनके विचार और सम्मतियां प्राप्त की जाएं, साथ ही सार्वदेशिक विद्यार्य सभा एवं सार्वदेशिक सभा से इस एकता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रार्थना की जाए। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की एक महान् संस्था के सुवर्ण जयन्ती महोत्सव पर जो महान् निर्णय आर्य जनता ने सर्वसम्मति से घोषित किया है उसकी पूर्ति करना प्रत्येक गुरुकुल प्रणाली के समर्थक का कर्तव्य है। आशा है जयन्ती का यह मन्त्र हमें एक नई स्फूर्ति प्रदान करेगा और हम युग के साथ आगे बढ़ने के लिये क्षमता प्राप्त कर सकेंगे। विश्वास रखिये गुरुकुल आर्यसमाज के प्राण हैं उनके विकास के साथ ही साथ आर्यसमाज का विकास है और ह्रास के साथ ह्रास। आशा है ह्रास की स्थिति का हम मुकाबला कर सकेंगे। यही हमारी परीक्षा होगी और जयन्ती की सफलता।

—उमेशचन्द्र स्नातक
संयोजक
गुरुकुल सम्मेलन, स्वर्णजयन्ती महोत्सव
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

जयन्ती के अवसर पर गुरुकुल-सम्मेलन के प्रस्ताव

१-गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सुवर्ण जयन्ती महोत्सव पर आयोजित यह सम्मेलन गुरुकुल आन्दोलन के इतिहास और उसकी प्रगतियों पर सन्तोष प्रकट करता हुआ आर्य जनता से अपील करता है कि भारतीय संस्कृति, वैदिक धर्म प्रचार, राष्ट्र निर्माण आदि महान् कार्यों की पूर्ति में संलग्न गुरुकुल आन्दोलन को वह अपना यथापूर्व एवं यथाशक्ति सहयोग प्रदान करती रहे।

यह सम्मेलन स्वतन्त्र भारत की सरकार से भी मांग करता है कि गुरुकुलों द्वारा अर्ध शताब्दी पर्यन्त की गई राष्ट्र सेवाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी उन्नति में पूर्ण सहयोग करती रहे।

२—गुरुकुल आन्दोलन की आवश्यकता एवं व्यापकता के साथ ही राष्ट्र की वर्तमान आर्थिक अवस्था को दृष्टि में रखते हुए शिक्षा आन्दोलन की सफलता के लिये इस सम्मेलन की सम्मति है कि आर्यसमाज के सभी गुरुकुलों की एकरूपता और एकसूत्रता लाने का प्रयत्न किया जावे, एतदर्थ सब गुरुकुलों की एक शिक्षा-परिषद हो, एक ही पाठविधि हो जिससे गुरुकुल संस्थाएं आदर्श एवं सुनियोजित प्रगति कर सकें। सम्मेलन का यह भी विश्वास है कि इस कार्य की दिशा में प्रगति होने से आर्य विश्वविद्यालय की विचारधारा को भी साकार रूप मिल सकेगा। यह सम्मेलन आर्यजगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा से मांग करता है कि वह अपने तत्त्वावधान में शीघ्र ही आर्यजगत् के समस्त गुरुकुलों के संचालकों, सभा अधिकारियों एवं आर्यजगत् के शिक्षा विशारदों का एक सम्मेलन बुलावे जिसमें भविष्य के लिये गुरुकुलों के स्वरूप और विधि-विधान सम्बन्धी नीति निर्धारण हो।

यह सम्मेलन उपर्युक्त कार्य को प्रगति देने के लिये निम्न व्यक्तियों की एक उपसमिति निर्माण करता है। यह समिति गुरुकुल एकता आन्दोलन को प्रगति देने के लिये प्रारम्भिक कार्यवाही करेगी। समिति को योग्य और उपयोगी व्यक्ति सदस्य सहयुक्त करने का अधिकार रहेगा।

समिति के सदस्य निम्न व्यक्ति रहेंगे—

श्री भजगूराय शास्त्री, श्री आचार्य बृहस्पति जी, श्री आचार्य हरिदत्त शास्त्री, आचार्य नरदेव शास्त्री, आचार्य रामदेव जी, श्री डा० नरेन्द्रदेव जी शास्त्री, श्री नरदेव स्नातक एम० पी०, श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी०, श्री वाचस्पति शास्त्री, उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० (संयोजक)।

प्रधानजी का सुझाव हितकर है

'आर्यमित्र' दिनांक १९-४-६१ के पृष्ठ ५ पर श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का एक सुझाव छपा है। मैंने उस लेख को ध्यान से पढ़ा और उस पर विचार करके इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वास्तव में प्रधानजी के सुझाव के अनुसार कार्यक्रम बन जाने पर संगठन और प्रचार की दृष्टि से सभा का विशेष हित होगा। इस कार्य के लिए मैं अपनी सेवाएं समर्पित करता हूँ।

—विश्वम्भरनाथ तिवारी
रिटायर्ड पेंशनर, स्टेटबैंक, कानपुर

जीवन-ज्योति

आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

(श्री धर्मवीर प्रेमी एम० ए० मेरठ)

-आर्य जगत् में गुरुदत्तजी विद्यार्थी जैसा व्यक्तित्व हम सबके लिये प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। शङ्कराचार्य ने अपनी अल्पावस्था में जैसा कार्य किया विज्ञान के युग में गुरुदत्तजी अपनी लेखनी से उनसे भी छोटी आयु में अधिक कार्य कर गये। उनका जन्म-दिवस २६ अप्रैल को हम सबने मनाया, उनके मिशन स्वाध्याय, लेखन और प्रचार की पूर्ति ही उनकी वास्तविक जयन्ती हो सकती है। जन्म दिवस के पुण्य स्मरण से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिये। —सम्पादक

आर्यसमाज की मणिमाला को अपने पावन चरित्र से समुज्ज्वल करने वाले पं० गुरुदत्तजी का जन्म २६ अप्रैल सन् १८६४ ई० को पंजाब प्रान्त के मुलतान नगर में हुआ था। पंजाब के वीर परिवारों में आपके परिवार की गणना सर्व



प्रथम हुआ करती थी। पं० गुरुदत्त जी शरीर से बड़े हृष्ट पुष्ट थे। प्रथम पाँच वर्ष की आयु में आपने अपने घर पर ही पढ़ना लिखना प्रारम्भ किया। आदि से ही आपका मस्तिष्क गणित में काफी तीव्र था।

८ वर्ष की आयु में आपको स्कूल में प्रविष्ट कर दिया गया था, वहाँ आपको अङ्ग्रेजी, गणित एवं फारसी का अध्ययन करना पड़ा। आपकी बुद्धि फारसी में भी काफी तेज थी। छोटी-सी आयु में ही आपने फारसी की प्रसिद्ध पुस्तकें "शम्स तबरेज" और "दीवाने हाफिज" कंठ कर ली थी। आपकी स्मरण-शक्ति इतनी तीव्र थी कि एक बार का पढ़ा हुआ पाठ ध्यानपूर्वक सुन लेने से तत्काल याद हो जाता था।

बताया जाता है कि आप बचपन में किसी गम्भीर विचार में लगते थे तो आकाश की ओर मुँह करके चिन्तन किया करते थे। फारसी में कविता करने का भी आपने अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त आप अन्य पुस्तकें भी पढ़ा करते थे। मैट्रिक पास करने के पहिले आपने मौलाना रूमी "ग्रीस, में हिन्दू' भारत में बाईबिल और "आईन मजहबी-हनूद" (हिन्दुओं में धर्म का स्वरूप) आदि पुस्तकें पढ़ डाली थीं। आपने प्राणायाम करना भी सीख लिया था जिसे आप घंटों किया करते थे। योगियों के दर्शन का प्रेम भी इनके हृदय में उद्दीप्त हो गया था। एक बार एक योगी ने इनको आदेश किया कि वह संस्कृत का अध्ययन प्रारम्भ करें, ऐसा करने से इनकी उन्नति होगी। योगी की बात को स्वीकार कर उन्होंने संस्कृत का अभ्यास किया।

मैट्रिक पास कर पं० गुरुदत्त जी लाहौर के गवर्नमेंट कालेज में प्रविष्ट हो गये। जब आप एफ० ए० में थे तभी से आपने दर्शन की पुस्तकों का अध्ययन भी प्रारम्भ कर दिया, साथ ही साथ फारसी एवं संस्कृत व्याकरण का अभ्यास भी आपने चालू रखा। आप प्रत्येक विषय में बेजोड़ प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे।

स्वर्गीय लाला लाजपतराय आपके सहपाठी थे, उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि—'हमने गुरुदत्त को कभी घर पर कोर्स की किताबें पढ़ते नहीं देखा, साइंस जैसे कठिन विषय को जिसमें उन्होंने एम० ए० पास किया, वे कक्षा में सुनकर याद कर लेते थे।'

गहन अध्ययन के बाद भी आपके विचार नास्तिक हो गये। ईश्वर की सत्ता में आपको विश्वास न रहा। यह होते हुए भी आप अपनी अनोखी विद्वत्ता से समाज में कार्य करते रहे।

जब स्वामी दयानन्द जी महाराज को जोधपुर में विष दिये जाने का समाचार लाहौर आर्यसमाज के पास पहुँचा तो सारे भारत के आर्यों में भारी वेदना अनुभव की जाने लगी। जब ऋषि दयानन्द रोग से अधिक पीड़ित हो गये तो उन्हें अजमेर भेज दिया गया। आर्यसमाज लाहौर ने लाला जीवनदास व पं० गुरुदत्त जी को स्वामी जी समाचार लेने अजमेर भेजा। पं० गुरुदत्त जी स्वामी जी की रोग शय्या के पास पहुँच गये। मृत्यु के कुछ क्षण पूर्व उन्होंने स्वामी जी के मुख की ओर देखा, और बहुत समय तक गम्भीरता-पूर्वक एकटक इसी प्रकार देखते रहे। महर्षि उस समय वेद-मन्त्रों का जाप कर रहे थे। ईश्वर की गोद में जाते समय उनके मुख से निकला "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" महर्षि ने श्वांस रोककर प्राण बाहर निकाल दिये।

इस घटना को पं० गुरुदत्त जी ने देखा और उस पर तत्काल मनन किया, फलत उनकी अन्तरात्मा में विश्वास हो गया कि ईश्वर की भी कोई सत्ता है।

पं० गुरुदत्त जी ने डी० ए० वी० कालिज की स्थापना के लिए दृढ़ निश्चय कर लिया। धन संग्रह का कार्य प्रारम्भ करके डी० ए० वी० कालेज लाहौर की स्थापना की जो संस्था किसी समय में आर्यसमाज के उज्ज्वल गौरव की प्रतीक बन चुकी थी। जिसके द्वारा शिक्षित अनेकों व्यक्तियों ने बहुत बड़े पैमाने पर आर्यसमाज की सेवा की।

आपने संस्कृत पढ़ाने के लिये एक रात्रि पाठशाला खोली थी जिसमें वे स्वयं एक शिक्षक का कार्य करते थे। आपने उपनिषदों का अनुवाद किया और अनेक पुस्तकें भी अङ्ग्रेजी में लिखीं। यह सब कार्य आपने अपनी छोटी-सी अवस्था में ही कर लिया था। २६ वर्ष की आयु में ही आप अस्वस्थ रहने लगे आजीवन आर्यसमाज की सेवा करते हुए आप १९ मार्च १८९० ई० में आप स्वर्ग सिधार गये।

आर्यसमाज आपकी सेवाओं के लिए सदा ऋणी रहेगा और आपका नाम आर्यसमाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। आर्ययुवकों को आपके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिये जिससे आर्यसमाज पुन एक बार अपने यौवन की दशा में आने में समर्थ हो सकेगा।

ईसाई प्रचार-निरोध—

दो बड़े शास्त्रार्थों में ईसाइयों की पराजय तथा आर्यसमाज की अभूतपूर्व विजय

आर्यसमाज खरड़ के वार्षिकोत्सव का सफल परिणाम

चण्डीगढ़ से सात मील दूर आर्यसमाज खरड़ के वार्षिकोत्सव पर १२, १३ अप्रैल को ईसाइयों के साथ आर्यसमाज के दो बड़े शास्त्रार्थ हुए। १२ अप्रैल तथा १३ अप्रैल की रात्रि को ८ बजे से ११ बजे तक "मोक्ष और उसके साधन" विषय पर दोनों दिन ईसाइयों की हार और आर्यसमाज की अपूर्व विजय हुई। आर्यसमाज की ओर से पं० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी बोले और ईसाइयों की ओर से आचार्य जेम्स दयाल क्रीष्टानन्द और पादरी बरनबास के अतिरिक्त एक और महोदय भी बोले। इन दोनों शास्त्रार्थों के प्रधान सरदार गंगासिंह प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता थे। प्रधान जी ने जनता पर पूरा पूरा कन्ट्रोल रखा। आर्यसमाज कच्चा बाजार अम्बाला छावनी के प्रसिद्ध नेता श्री राजारामसिंह जी तथा इसी समाज के श्री मन्त्री जी ने इन शास्त्रार्थों की रिपोर्ट लिखी जो शीघ्र प्रकाशित की जायगी। इन शास्त्रार्थों के प्रबन्ध और खर्च का उत्तरदायित्व आर्यसमाज पर था और शान्ति स्थापना के लिये दोनों पक्ष उत्तरदायी थे। शास्त्रार्थ में अम्बाला, चण्डीगढ़, राजपुरा, सरहंद, मोरिंडा, बस्सी, रूपड़ के अतिरिक्त खरड़ के सहस्रों नरनारी सम्मिलित हुए।

पं० शान्तिप्रकाश आर्यसमाज की ओर से अकेले ही ईसाई पादरियों पर छा गए। जनता उनकी विद्वत्ता पर मुग्ध हो उठी। स्वयं पादरियों ने उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। पादरी बरनबास ने पहिले दिन की पराजय को धोने के लिये दूसरे दिन के शास्त्रार्थ के प्रारम्भ में ही घोषणा की कि यह शास्त्रार्थ मसीही समाज और आर्यसमाज के मध्य नहीं हो रहे हैं। केवल पं० शान्तिप्रकाश और पादरियों के मध्य हो रहे हैं। किन्तु आर्यसमाज की ओर से श्री राजारामसिंह ने सम्मिलित इश्तिहार पढ़ कर सुनाया कि यह शास्त्रार्थ मसीही समाज और आर्यसमाज के मध्य होने निश्चित हुए हैं। और दोनों की ओर से सम्मिलित इश्तहार प्रकाशित हुये हैं अतः मसीही समाज इन शास्त्रार्थों के उत्तरदायित्व से नहीं बच सकता। इस पर ईसाई मित्रों को मौन धारण करना पड़ा।

आजकल पादरी अब्दुलहक चण्डीगढ़ रहते हैं। सुना है कि उनको शास्त्रार्थ में लाने का यत्न किया गया पर वह इन शास्त्रार्थों में दूर दूर रहे।

एक बार शास्त्रार्थ में पादरी अब्दुल हक का नाम आ जाने पर पादरियों ने

(शेष पृष्ठ ३ पर)

साहित्य-समीक्षा

'सुधारक' बलिदान विशेषांक

प्रधान सम्पादक—श्री भगवानदेव आचार्य। प्रकाशक—आचार्य भगवानदेव जी ने सम्राट् प्रेस पहाड़ी धीरज देहली, में मुद्रक श्री जगदेव सिद्धान्तीजी के प्रबन्ध में प्रकाशित करवाया। पृष्ठ-संख्या २८८। मूल्य ८) रुपये।

मानवता के नाते प्रत्येक देशवासी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह समय-समय पर देश के हितों को ध्यान में रखते हुए, आत्मोत्सर्ग द्वारा राष्ट्र को नवचेतना के युग में ला देने वाले अमर शहीदों की पुण्य-स्मृति में अपनी पावन श्रद्धांजलियाँ अर्पित करते रहें, जिससे समाज में सर्वदा जागृति का संचार होता रहेगा। और यही जागृति आवश्यकता पड़ने पर समाज-सुरक्षा में अपना योग-दान दे सकेगी। जो समाज इस प्रकार की पुनीत भावनाओं से अनुप्राणित हुए बिना निष्कर्मण्य हो जाता है, जो अपने और अपनी मातृ-भूमि के प्रति किये गये उपकारों का प्रतिदान नहीं दे सकता वह समाज एकदम कृतघ्नी है यदि यह कहा जाय तो कोई अनुचित न होगी।

उपर्युक्त इन्हीं सब भावनाओं को प्रेरणा का मूल मन्त्र मानकर "सुधारक बलिदान विशेषांक" प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। आकार एवं प्रकार की विशेषता से अङ्क पाठक एवं दर्शक सभी को प्रभावित करने वाला है। शताब्दियों पर्यन्त भारत वैदेशिकों द्वारा शासित होता रहा, १८५८ के बाद भारतीयों में भी जन्म-भूमि के प्रति स्वाभाविक अनुराग उत्पन्न हुआ। ऋषि का मूल मन्त्र अग्नि में घृत का कार्य कर गया। अनेक वीर भारत मुक्ति के लिये सहर्ष रण प्राङ्गण में उतर पड़े, जिनके सत्प्रयत्नों से ही आज हम स्वच्छन्दता के वायुमण्डल में विचरण करते नजर आ रहे हैं। यह अङ्क उन्हीं एक शताब्दी के मध्य बलिदान हुए वीर बलिदानियों की कीर्ति का ग्रन्थ है। अङ्क को प्रथम धार्मिक एवं राजनैतिक दो भागों में विभाजित किया गया है तत्पश्चात् प्रान्त के अनुरूप शहीद हुए वीरों का उल्लेख किया गया है। सभी उपलब्ध सामग्री प्रामाणिक एवं उपयोगी सिद्ध हो इस बात के प्रति आचार्य जी विशेष सतर्क रहे हैं, ऐसा अङ्क के पारायण से अवगत होता है।

विषय की उपादेयता से अङ्क की उपयोगिता एक प्रामाणिक इतिहास ग्रन्थ के रूप में हो गई है। प्रत्येक इतिहास के छात्र को इस अङ्क में इच्छानुसार सामग्री सरलता से उपलब्ध हो सकती है।

विशेषाङ्क प्रणेताओं ने १८५७ के प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य समर के प्रणेताओं में महर्षि दयानन्द के महत्त्व की विशेषरूप से चर्चा की है। अभी तक इतिहासकारों ने निष्पक्ष भावना से न तो अनुसन्धान ही किया है और न कोई धारणा बनाई है। इस प्रश्न का आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं क्योंकि यह घटना उसके जन्म से पूर्व की है। इस विषय में इतिहासज्ञों एवं भारतीयता के पोषकों को अभी पर्याप्त अनुसंधान करना होगा। महर्षि का व्यक्तित्व वास्तव में इतना अधिक प्रभावशाली था कि सम्पादकों की सम्भावना में काफी महत्त्व प्रतीत होता है। इसकी प्रामाणिक खोज आवश्यक है। विशेषाङ्क द्वारा इस ओर जो प्रयत्न किया गया है वह सराहनीय है।

सम्पादकों ने बलिदान की भावना को बहुत बड़े व्यापक अर्थ में स्वीकार किया है। राष्ट्रीय के अतिरिक्त धार्मिक एवं सामाजिक सभी प्रकार के बलिदानों की प्रशंसा की गई है, जो एक स्वस्थ परम्परा है। विशेषांक के संयोजकों का आर्यसमाज के क्षेत्र से घनिष्ट सम्पर्क होने के कारण उन्होंने भारतीय जन-जागृति के लिए किए गये आर्यसमाज के सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय एवं राजनैतिक बलिदानों को व्यापक रूप में प्रकट किया है। इस सामग्री द्वारा इतिहास के बहुत से अज्ञात तथ्यों का परिचय मिलता है और आर्यसमाज के विशुद्ध भारतीय स्वरूप का परिचय मिलता है।

सम्पादकों की सम्मति में बहुत से जीवित व्यक्तियों की गणना भी बलिदानियों में की गई है। सम्पादकों की सम्मति में वह व्यक्ति बलिदानियों की श्रेणी में आता है जो राष्ट्र एवं मानवता के हित के लिए किसी प्रकार का भी कष्ट उठा चुका हो। इस दृष्टि से जीवित व्यक्तियों के तप-त्याग और कष्ट सहन को भी बलिदान मानना एक स्वस्थ परम्परा है। और उपर्युक्त प्रकार के व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता का सच्चा प्रकाशन है। सुधारक इस समग्र विशेषांक के लिए बधाई का पात्र है। विषय की उपयोगिता से प्रत्येक भारतीय ऐतिहासिक को इस अङ्क का एक बार अध्ययन कर लेना आवश्यक है, इस अङ्क की गणना पुस्तकालय की उन किताबों में नहीं की जा सकती जो मात्र पूर्ति कर आलमारी की शोभा बढ़ाती रहती हैं, परन्तु 'सुधारक का यह बलिदान विशेषांक' उन चुने हुये ग्रन्थों में से एक होगा जो समय-समय पर भारतीयों को कर्तव्य-पथ की ओर अग्रसर होने के लिये आवश्यक उपयोगी सम्बल प्रदान करता रहेगा।

मानव-जीवन की गाथा
या
जीवन-गीत

व्याख्याता—श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज।

अनुवादक—श्री जगदीश चन्द्र जी विद्यार्थी। प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द नई सड़क दिल्ली। पृष्ठ सं० १२७ मूल्य ॥।≈)

प्रस्तुत "मानव जीवन गाथा" नामक पुस्तक में श्री विद्यार्थी जी ने महात्मा आनन्द स्वामी जी के सात भिन्न विषयों पर दिये गये उपदेशों को सम्प्रणीत किया है। स्वामी जी ने अपने उद्देश्य को "त्वं हि नः पिता वसो।" वेद मन्त्र से प्रारम्भ कर सर्व प्रथम जगदुत्पादक प्रभु के प्रति अपने कृतज्ञता के भाव व्यक्त किये हैं जिसका आज के युग में सर्वथा अभाव होता जा रहा है। इस पुस्तक में संग्रहीत प्रत्येक उपदेश, आज के उन्मार्गगामी मनुष्यों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने में समर्थ हो सकेंगे ऐसी आशा की जाती है। ईश्वर की सत्ता को व्यापक मानते हुए मनुष्य को किस प्रकार शुद्ध आहार द्वारा अपने शरीर को प्रगति-पथ पर अग्रसर करना चाहिये, किस प्रकार एक मनुष्य सद्-विचारों का धनी बन सकता है, आत्म-दर्शन के उपाय क्या हैं, और कैसे आत्म-दर्शन हो सकता है? इन सभी जटिल समस्याओं का समाधान स्वामी जी ने अनेक मान्य ग्रंथों के प्रमाण एवं लौकिक उदाहरणों के द्वारा उपस्थित कर दिया। आशा है आज की नानामार्गों में भ्रमित जनता, इस पुस्तक के अध्ययन से अपने सद्भावनाओं को स्थान देती हुई उन्नति के विशाल पथ की पथिक बन सकेगी।

पुस्तक की भाषा बड़ी सरल और हृदयग्राही है। पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि मानो आमने-सामने बैठकर जीवन की गहन समस्याओं पर बातचीत की जा रही हो। स्वामीजी ने वेदमन्त्रों और शास्त्र वचनों के अतिरिक्त लोक-भाषा की उक्तियों को भी समाविष्ट किया है। विशेष रूप से फारसी और पंजाबी बोली की उक्तियां हृदय स्पर्शी सिद्ध होती हैं। जो सज्जन धार्मिक तत्त्व ज्ञान को एक रहस्य समझ कर उससे दूर भागते हैं उनके लिये ये रोचक उपदेश धर्म के रहस्य को स्पष्ट करने में बहुत सहायक सिद्ध होंगे।

पुस्तक की छपाई सुन्दर और 'गेट-अप' आकर्षक है। १२७ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥।≈) आने बहुत अधिक नहीं है। पुस्तक के अनुवादक के स्थान पर सम्पादक शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिये था। आशा है भविष्य में इसका सुधार कर दिया जायगा।

(पृष्ठ ८ का शेष)

शास्त्रार्थ से बाक आउट कर जाने का बहाना भी किया। किन्तु जनता के बुरा मानने पर पादरियों को यह साहस न हुआ।

पहले दिन के शास्त्रार्थ में ही ईसाइयों ने किसी एक बात के द्वारा शास्त्रार्थ का निर्णय करने की मांग की। तब पं० शान्तिप्रकाश ने कहा —इंजीलों में ईसा मसीह को मुक्तिदाता मानकर ईसा-मसीह पर ईमान लाने वालों के चिह्नों के सम्बन्ध में लिखा है कि वह पर्वत को आज्ञा देकर समुद्र में फेंक सकते हैं और मुर्दों को जीवित कर सकते हैं इत्यादि। अतः यदि कोई ईमानदार पादरी मुर्दों को जीवित कर दिखावे तो मैं ईसाई बनने और मसीह पर ईमान लाने से मुक्ति के सिद्धान्त को मानने के लिये तैयार हूँ। इस पर पादरी वरनबास ने घोषणा की कि मैं मुर्दों को जीवित कर सकता हूँ। पं० जी ने पुनः सोचकर उत्तर देने के लिये एक दिन की मोहलत दी। किन्तु दूसरे दिन पादरी जी का जोश समाप्त हो गया और मुर्दों को जीवित कर सकने की प्रतिज्ञा को वापस लेकर उन्होंने अपनी हार पर मोहर लगा दी।

इसी प्रकार आचार्य जैम्स दयाल क्रीष्टानन्द को अपने संस्कृत-ज्ञान पर बड़ा गर्व था। किन्तु वह मन्त्र १६ को मन्तर बोल रहे थे। अतः जनता में आचार्य की विद्वत्ता की पोल खुल गई।

पं० शान्तिप्रकाश ने बाइबल के सैकड़ों प्रमाणों से ईसाई दुर्ग पर गोले बरसाये कि ईसाईयों की आत्मा कांप उठी। पादरी लोग वैदिक धर्म पर एक भी प्रश्न न कर सके और न कोई वेद-मन्त्र बोलकर उपस्थित कर सके। अतः ईसाई जगत् पादरियों के इस शास्त्रार्थ से पर्याप्त रुष्ट है। आशा है कि भविष्य में कोई पादरी खरड़ में आसानी से शास्त्रार्थ करने के लिये साहस न करेगा।

गोरक्षा-आन्दोलन

ऋषियों का भूमि पर गो-संहार कब तक सहन करोगे

[श्री राजवीर जी शास्त्री उपाध्याय गुरुकुल झज्जर]

जिस पुण्य-भूमि पर भगवान् कृष्ण गायें चराते थे, जहां पर पानी मांगने पर भी दूध ही पिलाया जाता था, जहाँ चक्रवर्ती राजा गोपालन अपना परम धर्म समझते थे जिस गोवंश की रक्षार्थ वीर शिवाजी ने अपनी दुश्मनी तलवार उठाई और जीवन भर लड़ता रहा, जिसकी रक्षार्थ कीर्तिनीय चरित्र महाराणा प्रताप जैसे योद्धा ने भयङ्कर जंगलों के छान डाला, जिसके दुःख से दुःखित होकर ऋषिवर दयानन्द जी ने सर्व प्रथम गोरक्षा आन्दोलन छेड़ा और अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, आज इस सर्वहितकारी गोमाता का ऋषियों की पवित्र भूमि पर मारा जाना कितना महापाप है और भारत की नैया के कर्णधारों के मस्तक पर महाकलंक है।

मुस्लिमकाल में भी जिसको हानिकर समझा गया था। इसीलिए अकबर, हुमायूं, बहादुरशाह तथा बाबर आदि मुस्लिम सम्राटों ने भी अपने राज्य में गोहत्या-निषेध कानून प्रचलित किया था। किन्तु दुर्भाग्य है भारत देश का, जो यह पाप आज भी यहाँ हो रहा है।

आज भारत को स्वतन्त्रता मिले लगभग १२ वर्ष होने को जा रहे हैं। १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश पांच हजार वर्षों की दासता रूपी शृंखलाओं से मुक्त हुआ था। यही दिन भारतवर्ष के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अङ्कित रहेगा। इस दिन के लाने के लिये न जाने कितने व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बलि दी। कारागार के कठोर कष्ट सहे, न जाने कितनों के अरमान धूल में मिले, न जाने कितने ही हंसते-हंसते फांसी के तख्ते पर झूले, कितने ही गोली के निशाने बने। इसी दिन स्वतन्त्रता की चिनगारी को प्रचण्ड करने वाले देशभक्त दयानंद, सुभाष व गांधी के स्वप्न पूरे हुए थे। हमारा भी बहुत सौभाग्य है कि हमें यह दिन देखने को मिला। हम सोचते थे कि अङ्गरेज मांस भक्षक होने से गोवध कराता था और इन्होंने ही यह दुष्कर्म प्रारम्भ किया है। अतः अङ्गरेज के चले जाने पर गोमाता के प्राणों की रक्षा अवश्य होगी और गो-हत्या बन्द हो जावेगी। किन्तु अभी गोरा अङ्गरेज ही गया है, काला अङ्गरेज शेष है। कांग्रेसी नेता स्वराज्य प्राप्ति से पूर्व अङ्गरेजों का घोर विरोध करते थे तथा जनता को आश्वासन दिलाते थे कि हमारे हाथ में राज्य आते ही गोहत्या बन्द हो जावेगी। जैसे कि लोकमान्यबालतिलक ने कहा था कि—'जब हम स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तो ५ मिनट में एक कलम से गोवध निषेध का कानून पास कर देंगे।' परन्तु आज उनके अनुयायी ही राज्य कर रहे हैं किन्तु गोमाता आज इनके राज्य में भी पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि "हे दूध पीने वालो! मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हें घास खाकर माता की तरह अमृत तुल्य दूध पिलाती हूँ। किन्तु तुम बहुत ही कृतघ्न हो जो मेरी गर्दन पर तुम्हीं छुरी चलाते हो। तुम कुत्ते से भी नीचे गिर चुके हो। इस पाप से बचना चाहते हो तो मुझ दीन को न मारो।"

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने "भारत भारती" में लिखा है—

'दांतों तले तृण दबाकर,
हैं दीन गायें कह रहीं।
हम पशु तथा तुम हो मनुज,
पर योग्य क्या तुमको यही॥
हमने तुम्हें माँ की तरह,
है दूध पीने को दिया।
देकर कसाई को हमें,
तुमने हमारा वध किया॥"

विश्ववंद्य बापू ने वर्धा में गोसेवा परिषद् के उद्घाटन के समय कहा था कि—

"गो सेवा करो सब की सेवा हो जावेगी।" बापू तो गोहत्या के प्रश्न को स्वराज्य से भी बढ़कर मानते थे। गाय की सेवा से ईश्वर की सारी सृष्टि की सेवा करना है। आज बापू जी के आदर्शों को मानने वाले श्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू गोहत्या के प्रश्न को साम्प्रदायिक कह कर टाल देते हैं। यह है गांधीवादियों की दशा जो कि कहते हैं कि हम बापूजी के आदर्शों पर चलते हैं।

जिस देश में घी दूध भक्षण कर भीम, अर्जुन, समान महान् बली योद्धा होते थे आज उनकी सन्तति की यह अवस्था! इतना पतन जो कुछ हुआ है यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो पता लगता है कि इसका मूल कारण गोहत्या ही है।

प्राचीन समय में जो देश अमृतुल्य तथा सोने की चिड़िया कहाता था आज वही दर-दर भटकता फिर रहा है। आज हम दूसरे देशों से भी गिर चुके हैं। हमारे देश में प्रति व्यक्ति दूध की औसत प्रति दिन २॥ छटांक है, जबकि दूसरे देशों की यही औसत आस्ट्रेलिया में २२ छटांक, कनाडा में २८ छटांक, डेनमार्क में २० छ०, तथा अमेरिका में १७ छटांक है। ऐसी अवस्था में हम कैसे स्वस्थ रह सकते हैं। आज शुद्ध घी दूध ढूंढने पर भी नहीं मिलता, हमारे देश में प्रायः वनस्पति ही घी खाते हैं, जो कि स्वास्थ्य के लिये बहुत ही हानिप्रद है।

आज देश में खाद्य संकट व्याप्त है। इस संकट को दूर करने में गो-संरक्षण का अपना महत्व है पर इसे समझने की उपेक्षा की जा रही है। गो-हत्या-निषेध बिना अन्न-समस्या का हल होना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

इसलिए जगजननी अमृत समान दुग्ध-प्रदायी अन्नदात्री पूजनीय गाय का वध वेद में सर्वथा निषेध है। जो वेद अर्थात् ब्रह्म वाणी को नहीं मानता अथवा मानता हुआ भी तदनुकूल आचरण नहीं करता वह महापाप का समभागी है। इसलिए वेद तथा परमेश्वर पर विश्वास रखने वाले आर्यवीरो! एक बार फिर करवट बदलो और जाग जाओ और राम कृष्ण की पुण्यभूमि पर होते हुए महाकलंक को समूल उन्मूलन कर दो। अय ऋषि सन्तानों! तपोधन ऋषि मुनियों का पवित्र भूमि पर गोवध हो रहा है तुम कहाँ पड़े सो रहे हो। तुम में वीर शिवाजी और प्रताप का रक्त है, तुम उन्हीं के वंशज हो, उन्हीं की तरह गोरक्षार्थ आगे बढ़ो। यादवेन्द्र कर्मठ श्रीकृष्ण और आनन्द कन्द दयानन्द की आत्मायें आज तुम्हें पुकार-पुकार कर सन्देश दे रही हैं कि गोरक्षा करो! गोरक्षा करो!! गोरक्षा करो! तभी सारे संसार में सुख शान्ति का रामराज्य होगा। यही भगवती श्रुति का सन्देश व उपदेश है। अन्यथा राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में हमारी दुर्दशा हो जावेगा।

जारी रहा क्रम यदि यहां,
यों ही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य,
भारत भाग्य के आकाश का॥
जो तनिक हरियाली रही,
वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण-भारत भूमि बस,
मरघट मही बन जायेगी॥

(भारतभारती)

प्रादेशिक भाषा से—

कल, आज और कल

कल

व्याप्त है पुराणों में तलवारों की झंकार।
इतिहासों के पृष्ठों में हैं तोपों की आवाजें॥

आज

आज तो सुनाई देती रुपयों की आवाजें
बन्दूको के सहारे ही चलने लगी हैं हुकूमतें
जहां देखो होती रहती हुकूमतों की बातें
कोई यह नहीं सोचते किसान जीता कैसे?

आसक्ति हमें है हरदम गोलेबाजी की
या बम फेंकने वाले हवाई जहाजों की
चर्चा छिड़ती नहीं अमन और चैन की
तो क्या चाहिए नहीं शान्ति के कपोत?

यह सब झूठ है कि कल और आज हैं अलग-अलग
इन्हें किया नहीं जा सकता कभी पृथक-पृथक
स्वर में यह कहते हुए थकते नहीं कि यह झूठ है
आने वाले कल को भी अलग करना सम्भव नहीं।

कल

हर कोई मिलायेगा अपना स्वर कवि के साथ
सब दिशाओं में बहे मेह की धारा
मिट जाए आपस की द्वेष-भावना
निश्चय है कल न सुनाई देगा स्वर चाँदी सोने का।

रचयिता—दाशरथी, मूल तेलगू भाषा
रूपान्तरकार—इयरमचि महीधर

बाल-विनोद

आवाहन !

आर्य सैनिको ! दयानन्द की वाणी तुम्हें बुलाती है।
लेखराम से वीरों की कुर्बानी तुम्हें बुलाती है॥
यह केसरिया ध्वजा उठाओ वैदिक नाद बजा दो तुम,
मन का मन्दिर साफ करो, आलस्य, प्रमाद हटा दो तुम,
वेदों की ध्वनि मंगलमय कल्याणी तुम्हें बुलाती है।
जिस पौधे को सींचा था ऋषि दयानन्द ने खून से,
हरा भरा करके दिखला दो इसको प्रेम प्रसून से,
अमरशहीदों की निर्भीक कहानी तुम्हें बुलाती है।
श्रद्धानन्द तपस्वी के सब काम अधूरे हैं अभी,
काम करो मिलकर जिससे यह सपने पूरे हों सभी,
वैरागी की अमर चाल मस्तानी तुम्हें बुलाती है।
तुम राणा के वंशज हो, तुम वीर शिवा के बेटे हो,
आगे बढ़ो हटो मत पीछे, नहीं किसी से हेटे हो,
वीर विवेकानन्द आदि की वाणी तुम्हें बुलाती है।

—सावित्री रस्तोगी, मेरठ

चुटकुले

मोहन ने राम से कहा—"तुम बेकार अपनी हिम्मत की शान बघारते हो, तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी हत्या करना चाहते हैं।"

राम—"उनकी क्या हिम्मत है मेरी हत्या करने की, अगर उन्होंने मेरी हत्या की तो मैं दस बार उनकी हत्या करूंगा।"

× × ×

एक बादशाह के मर जाने पर उनका जनाजा बड़ी शान के साथ निकाला गया, यह देखकर राजा जी का प्रिय फकीर बोला—"या खुदा !! यदि आज राजा जीवित होते तो, जनाजे को देखकर कितने खुश हुए होते।"

× × ×

अध्यापक—(पढ़ाते समय) "लड़को कानों सुनी बात झूठ होती हैं, और आँखों देखी बात सच।"

एक नटखट लड़का—"मास्टर साहब!" तब तो यह बात भी गलत है।

अध्यापक—कैसे ?

लड़का—"क्योंकि आपकी यह बात कानों से ही सुन रहे हैं आँखों से तो देख नहीं रहे।"

× × ×

चाह

चाह नहीं है बनूं नृपति मैं
स्वर्ण-मुकुट अपनाने को,
चाह नहीं है बनूं वीर मैं,
मानव-रक्त बहाने को।
चाह नहीं है बनूं यती मैं,
अपने में खो जाने को,
चाह नहीं है बनूं सिंह मैं,
बलहीनों को खाने को।
चाह यही है बनूं न कुछ मैं,
जग में मैं न महान् बनूं
समझ सके जो इस दुनिया को,
वह मनुष्य इंसान बनूं।

टी०टी०—(देहाती से) "तुम्हारा टिकट कहाँ है ?"

देहाती—"यह रहा श्रीमान्"

टी०टी०—"अरे, यह तो लिफाफे पर लगाने वाला टिकट है।"

देहाती—"हजूर इससे तो लिफाफा बम्बई तक चला जाता है तो क्या मैं कानपुर तक नहीं जो पाऊँगा ?"

टी०टी०—(उसके साथी से) "और तुम्हारा टिकट ?"

साथी—"जी मैं बैरंग ही आ रहा हूँ, मुझे घर वाले वहीं दर चुका देंगे।"

× × ×

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम..............................

आयु.................. वर्ष..................

पूरा पता..............................

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां..............................

विज्ञान-वार्ता

विमान के मार्ग का निर्धारण करने वाला मस्तिष्क

विमान चालक को प्रायः खराब मौसम का सामना करना पड़ता है, और तब उसके सामने यह समस्या उपस्थित हो जाती है, कि वह किस रास्ते से अपने विमान को सुरक्षा पूर्वक उड़ा ले जाय। इस समस्या के समाधान के लिए, अब उसे एक नया 'इलक्ट्रोनिक यन्त्र' मिल गया है जो वायुमण्डल की सभी दिशाओं में मौसम का हाल जानकर, और अपने 'मस्तिष्क' से स्वयं हिसाब लगाकर विमान-चालक को यह बता देता है कि विमान कौन से रास्ते से सुरक्षा-पूर्वक उड़ाया जा सकता है।

कलाई-रेडियो

न्यूयार्क ने 'ऑलिवर गारफील्ड कम्पनी' ने बाजार में इतना छोटा रेडियो-सेट प्रस्तुत किया है, कि आप उसे घड़ी की तरह, कलाई पर बाँध सकते हैं। इस रेडियो सेट की लम्बाई पौने तीन इंच, चौड़ाई पौने दो इंच, मोटाई पौन इंच है। यह साइज माचिस की डिबिया से थोड़ा बड़ा है। और बैटरी समेत इस सेट का वजन है, कुल अढ़ाई औंस (सवा छटाँक) इसका मूल्य लगभग १२०) है।

स्वयं स्याही भरने वाला पेन

विश्व-प्रसिद्ध 'पारकर पेन कंपनी' ने यह नया पेन तैयार किया है, जिसमें स्याही भरने के लिए, न तो किसी "लीवर" की जरूरत है और न किसी 'पुश' की। बस पेन को स्याही की बोतल में डुबो दीजिये, और सिर्फ १० सेकेण्ड में, स्याही स्वयं पेन में भर जायगी। एक बार भरी हुई स्याही से आप ७०००, शब्द लिख सकते हैं। पेन में स्याही एक बहुत बारीक नली में से जिसे कैपिलरी ट्यूब कहते हैं—चढ़कर भरती है। पेन में अपने आप स्याही चढ़ने का ढंग वही है जो कि तेल और बत्ती का है। इस पेन की एक विशेषता और है। स्याही की बोतल से निकलने के बाद इसका निचला सिरा कपड़े से पोंछना नहीं पड़ता, क्योंकि यह एक ऐसे विशेष पदार्थ से पुता हुआ होता है कि उस पर स्याही टिकती ही नहीं।

डिब्बों में बन्द बिजलीघर

यह बिजली घर देखने में रेडियो वाल्व के समान ही होता है। इसका आकार भी इसी बल्ब के समतुल्य ही होता है। यदि आप इसे साथ रखने की इच्छा करें तो एक छोटे से डिब्बे में बंद कर साथ भी रख सकते हैं। इस बिजली घर की क्षमता एक हजार वाट बिजली, जिससे ४० पावर के २५ बल्ब एक साथ जलाये जा सकते हैं। और इतनी बिजली प्राप्त करने के लिए किसी मेन लाइन की आपको आवश्यकता नहीं। और न आपको (जनरेटर) विद्युत् प्रापक यन्त्र लगाने की ही जरूरत पड़ेगी। बस आवश्यकता इतनी है कि आप इस यन्त्र के साथ जुड़ी प्लेट को गरम रखें, कोयले की आग, गैस की लौ, या स्टोव में मिट्टी के तेल की गर्मी से भी इसे गरम किया जा सकता है। इस 'विद्युत्-उत्पादक ट्यूब' में से निकलने वाली बिजली के तार का प्लग किसी स्विच में डाल दीजिए, और तुरंत ही, साथ जुड़े हुए तारों में बिजली प्रवाहित होने लगेगी।

गर्मी की भी आवश्यकता नहीं

आपकी मांग पर ऐसे विद्युत्-उत्पादक ट्यूब भी उपलब्ध हो सकते हैं जिन्हें गरम करने की आवश्यकता नहीं। उनमें किसी रेडियो एक्टिव पदार्थ का कैप्सूल रखा रहेगा जो कि महीनों तक प्लेट को गर्मी पहुँचाता रहेगा और आपको निरन्तर ट्यूब से बिजली मिलती रहेगी। प्रोफेसर हैटसोपुलास अमरीका की प्रसिद्ध संस्था थर्मा इलेक्ट्रान इंजीनियरिंग कारपोरेशन के अध्यक्ष हैं। उन्होंने ऐसी अनेक ट्यूबें बनाई हैं जो गर्मी को बिजली में बदलती हैं।

धातु स्फटिकों से बिजली

रेडियो सेट में जो वाल्व प्रायः उपयोग किये जाते हैं अब उनकी जगह नये 'ट्रान्सिस्टरों' ने ले ली है। ये ट्रान्सिस्टर कोई गैस इत्यादि की ट्यूबें नहीं होती बल्कि विशेष धातुओं इत्यादि के ठोस स्फटिकों से बने होते हैं। ये धातु स्फटिक वे सभी कार्य करते हैं, जो वैक्यूम ट्यूबें या रेडियो वाल्व कर सकते हैं। इसलिए बिजली उत्पादक ट्यूबों की तरह इन धातु स्फटिकों से भी बिजली पैदा करने के प्रयोग किये जा रहे हैं। जो कि आशातीत सफल रहे हैं।—दो ०

संस्था-परिचय

विरक्त (वानप्रस्थ+संन्यास) आर्य आश्रम ज्वालापुर का रजत जयन्ती एवं वार्षिक महोत्सव

हम मित्र-परिवार की ओर से आश्रम की सफलताओं पर हर्ष प्रकट करते हुए उसके समुज्ज्वल भविष्य की कामनाएं करते हैं। —सम्पादक

इस आश्रम का रजत जयन्ती एवं वार्षिक महोत्सव ता० ६ से ९ अप्रैल सन् १९५९ ई० तदनुसार चैत्र कृष्ण १४ से शुक्ल १ संवत् २०१६ वि० दिन सोमवार से बृहस्पतिवार तक समारोहपूर्वक मनाया गया, इस शुभ अवसर पर यजुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ ४ दिन पूर्व अर्थात् ता० २ अप्रैल १९५९ ई० से ही प्रारम्भ हो गया था, इस यज्ञ के आचार्य आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड तथा श्री पं० सुखदेवजी विद्यावाचस्पति (दर्शनाचार्य गुरुकुल कांगड़ी महाविद्यालय) और यजमान श्रीयुत जगदीश जागोटिया ग्राम केकड़ी जिला अजमेर निवासी थे। इस महायज्ञ की पूर्णाहुति महोत्सव के अंतिम दिवस ता० ९ अप्रैल प्रातःकाल ९ बजे सानन्द तथा निर्विघ्न हुई। महोत्सव की तिथियों में निम्नांकित महानुभावों के विद्वत्तापूर्ण तथा सारगर्भित ओजस्वी भाषण अथवा उपदेश हुए —

१—पूज्य स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज, २—पूज्य स्वामी शिवानन्द जी महाराज, ३—श्रीमान् पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, कुलपति गुरुकुल महा० ज्वालापुर ४—श्री पं० प्रियव्रत जी विद्यावाचस्पति प्रधानाचार्य गुरुकुल कांगड़ी, ५—श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड, ६—श्री पं० सुखदेवजी विद्यावाचस्पति दर्शनाचार्य गुरुकुल कांगड़ी, ७—श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालङ्कार स० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी, व अधिष्ठाता आश्रम तथा, ८—सुप्रसिद्ध पुरोहित श्री पं० रामचन्द्र जी देहली निवासी।

इनके अतिरिक्त श्रीमती विद्यावती देवी जी, श्रीमती प्रभावती देवी जी तथा श्रीमती मायादेवी जी आदि के प्रभावशाली एवं मनोहर भजन हुए। आश्रम के व्यवस्थामन्त्री श्री श्रीदेव वानप्रस्थीजी द्वारा आश्रम सम्बन्धी गत ३२ वर्षों का संक्षिप्त वृत्तान्त सुनाया गया। वृत्तान्तानुसार आश्रम के लिये भूमि ता० २६ मार्च १९२८ ई० को श्री लाला कालूराम जी से २१००) रु० में विधिवत् क्रय की गई थी, किन्तु आश्रम की स्थापना दो वर्ष पूर्व ही अर्थात् १२ मई सन् १९२६ ई० को आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् तपस्वी एवं कर्मठ नेता पूज्य महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज द्वारा भागीरथी के तट पर हो गई थी।

१—पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने रुग्णावस्था के कारण, २—श्री डॉ० गङ्गाप्रसाद जी (जज) ने अपनी वृद्धावस्था के कारण, ३—पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली, तथा (४) श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी ने पूर्व से निश्चित अन्यत्र का प्रोग्राम होने के कारण उपस्थित होने में असमर्थता प्रकट की तथा महोत्सव की सफलता के लिये अपनी-अपनी शुभ कामनायें भेजीं जो श्री मन्त्री जी द्वारा पढ़ी गईं।

ऊपर लिखित महोत्सव के समाप्त होने के पश्चात् ही अथर्ववेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड आचार्य तथा श्रीमती गनेशी माता वानप्रस्थ यजमाना द्वारा प्रारम्भ हो गया जो लगभग ४० दिवस चलता रहेगा।

यह आश्रम आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश द्वारा संचालित एक आदर्श उदाहरण है। वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रचार प्रसार के लिये इस प्रकार के आश्रमों की देश भर में अत्यधिक आवश्यकता है। जो व्यक्ति गृहस्थाश्रम का काल पूर्ण कर वानप्रस्थाश्रम के स्वाध्यायशील जीवन के लिये उत्सुक हों यह आश्रम उनकी अभिलाषाओं की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगा और इस प्रकार उनके विकास द्वारा समाज को लाभ पहुँच सकेगा। राष्ट्र को वानप्रस्थियों और संन्यासियों से जो आशाएं हैं इस प्रकार के आश्रम ही उनको पूर्ण कर सकते हैं। आर्यसमाज की उन्नति के लिए इस प्रकार के आश्रम कितना महत्त्व रखते हैं यह आश्रम के पचीस वर्षीय इतिहास और सफल रजत जयन्ती समारोह से स्वतः सिद्ध है।

★

प्रयाग में आर्यसमाज स्थापना दिवस का आदर्श कार्य-क्रम

आर्यसमाज के जीवन में 'आर्यसमाज स्थापना-दिवस' सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। इस वर्ष प्रयाग जिले तथा नगर की सब आर्यसमाजों ने आर्य प्रतिनिधि सभा इलाहाबाद के तत्त्वावधान में मिलकर आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने का निश्चय किया और विज्ञप्तियों द्वारा जुलूस तथा सभा के कार्यक्रम की घोषणा की गई। नियत दिवस पर विशाल जुलूस आर्यसमाज चौक से आरम्भ होकर जानसेनगंज, हीवेट रोड शिवचरण लाल रोड, बहादुरगंज, मीरगंज, चौक विसातखाना रोड, लाऊडिग्गी रोड, ठठेरी बाजार, घंटाघर आदि होता हुआ जीरोरोड पर स्वरूपरानी पार्क में समाप्त हुआ। श्री दयास्वरूप जी की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा आरम्भ हुई। सभा में श्रद्धेय डा० बाबूराम जी प्रयाग विश्वविद्यालय, आदरणीय पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, श्री एडवर्ड स्केविड्या (पादरी) तथा प्रो० रामगोपाल जी आदि के ओजस्वी भाषण हुए। सभी वक्ताओं ने आर्यसमाज के चौरासी वर्षीय इतिहास एवं उसकी सफलताओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर जुलूस का जो सुव्यवस्थित एवं विशाल प्रबन्ध किया गया था, उसका जनता के ऊपर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। जुलूस में सबसे आगे बारह व्यक्तियों का, यूनानी योद्धाओं की वेश-भूषा में एक सुन्दर बैण्ड था। उसके पीछे दो हाथी थे। हाथियों पर सुन्दर ओ३म् के झण्डे पीछे सजी हुई मोटर थी, जिसमें ४०-५० बच्चे ऋषि दयानन्द के जयघोष से आकाश को गुंजा रहे थे।

—आर्यसमाज स्थापना दिवस सर्वप्रथम स्थापित १८७५ ई० में बम्बई में—

इस प्रकार का एक विशाल पट आर्यबन्धु हाथ में लिये हुए आगे चल रहे थे। जुलूस में सम्मिलित नर-नारियों का समूह दो की पंक्तियों में महर्षि दयानन्द के गुण-गान करता हुआ आगे बढ़ रहा था। नगर की आर्यसमाज चौक प्रयाग, कटरा रानीमण्डी, कृष्णनगर, सुभाषनगर, अल्लापुर, खुल्दाबाद, एम० टी० लाइन्स, रम्मन का पुरा, सोहबतियाबाग, भरवारी, आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज, आदर्श कन्या पाठशाला, डी० ए० वी० कालेज, श्री आर्यसमाज अतरसुइया, श्री आर्यसमाज कटरा आदि पन्द्रह संस्थाओं के सदस्यों ने जुलूस में विशेष भाग लिया।

इस जुलूस का स्थानीय जनता पर अनेकों वार्षिक उत्सवों के नगर कीर्तनों की अपेक्षा बहुत अधिक प्रभाव हुआ। जनता का ध्यान आर्यसमाज की ओर सहसा आकृष्ट हो गया। सभा के अधिकारियों ने इस कार्यक्रम की सफलता के लिए ६-७ दिन तीन-तीन चार-चार बार समाजों में जाकर सहयोग की प्रार्थना की और अन्त में उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

हम यह विस्तृत विवरण इस भावना से आर्य जनता के सम्मुख रख रहे हैं कि हम स्थापना दिवस के महत्त्व को अच्छी प्रकार अनुभव करने लगें। भारत के सभी प्रमुख नगरों में इस दिवस पर विशेष आयोजन होने चाहिए उत्तर प्रदेश की पंच महानगरियों में और मेरठ, गोरखपुर, फैजाबाद आदि शहरों में भी इस कार्यक्रम का अनुसरण बहुत प्रभावशाली सिद्ध होगा।

—राजाराम गुप्त
उपप्रधान-उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग एवं संयोजक आर्यसमाज स्थापना-दिवस

विश्वबन्धुत्व और राष्ट्रवाद

(लेखिका श्री सुषमाकुमारी प्रधानाध्यापिका, इमका, भोपाल)

विश्वबन्धुत्व और राष्ट्रवाद एक मुद्रिका के दोनों पक्ष हैं जिसमें कोई एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। वैदिक परम्परा आदि काल से हमको विश्वबन्धुत्व का अमर सन्देश प्रदान करती रही है। साथ ही हमारे जीवन में राष्ट्रवाद का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जिस मानव में देश के प्रति प्रेम एवं निष्ठा का भाव विद्यमान नहीं है उसका जीवन मर समान नहीं, पशु से भी हीन माना जाता है। यही नहीं प्रान्तीय और क्षेत्रीय भावनाओं को भी राष्ट्रवाद द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। पाश्चात्य देशों में उठने वाली राष्ट्रीय भावना ने जर्मनी का एकीकरण एवं इटली का एकीकरण किया और भारत में भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी मनोवृत्ति से इसीके आधार पर टक्कर ली जा सकी।

आदर्शवादी विचारकों (हीगल, काण्ट, ग्रीक और बोसन्के) ने राष्ट्रवाद को अधिक महत्त्व प्रदान कर व्यक्ति को उसकी वेदी पर बलिदान होने की प्रेरणाएं दीं। राष्ट्रवाद के इस महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी हम देखते हैं राष्ट्रवाद सभ्यता के लिये घातक है। संसार में उग्र राष्ट्रवाद ने मानव को संहारकारी युद्ध प्रदान किये। अतः इन बातों को देखकर राष्ट्रवाद की कठोर दीवार को तोड़कर विश्वबन्धुत्व की ओर उठना चाहिये। वर्तमान काल में इसी प्रेरणा को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ को जन्म दिया गया है। पाश्चात्य देशवासी आज इसकी भावना को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं एवं इसी संघ के द्वारा बन्धुत्व की भावना का विकास करने के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की गई है। एवं बल दिया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन संस्था इसी प्रयत्न का एक अङ्ग है।

मानवमात्र एक परम पिता की संतान है। सभी में, एक ही परमात्मा व्याप्त है फिर वर्तमान काल की व्याप्त विषमता को समाप्त करने के लिए विश्वबन्धुत्व का प्रचार आवश्यक है और इस भावना की प्रचुरता हमारे वैदिक साहित्य में पाई जाती है।

उस समय का उदात्त दृष्टिकोण विश्व के लिये एक नवीन सन्देश प्रदान करता रहता है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर भी यदि हम एक विहंगम दृष्टि डालें तो इस भावना का पूरा-पूरा समावेश मिल जाता है।

हमारी वैदिक संस्कृति इस शिक्षा का पाठ पढ़ाती है कि "जिओ और जीने दो" जबकि विश्व में कहीं भी इतना उच्च आदर्श, जीवन सन्देश सुनने को नहीं मिलता है।

यहां के ऋषि मुनि अपनी तपस्या द्वारा अर्जित ज्ञान विश्व-कल्याण के लिये प्रदान करते थे। आज अणु-युग की विभीषिका हमारे सम्मुख है। वैज्ञानिक युग के एटमबम, उदजन बम, प्रक्षेपास्त्र मानव के संहार के लिये अपनी जीभ को लपलपा रहे हैं। ऐसे समय में हमें राष्ट्रवाद की सीमाओं को तोड़कर विश्व बन्धुत्व की भावना को बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। विश्व नष्ट होने के लिये एक धक्के की ओर देख रहा है।

लेकिन भारत का अमर सन्देश है—अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम् उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

जो अनादिकाल से विश्व के कोने-कोने में घोषित हो रहा है। यदि मानव को चिर शान्ति रखनी है और अपने को युद्ध की विभीषिका से बचाना है तो उसे विश्वबन्धुत्व की भावना को विकसित करना होगा जो कि हमारी वैदिक प्रणाली का एक उच्चतम आदर्श रहा है।

आर्य-जगत

उत्सव-समाचार—

—गनपुर (बदायू) आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव दि० १६ से १८ मई तक सम्पन्न होगा।

—शिकोहाबाद आर्यसमाज का उत्सव ८ मई से आरम्भ होकर ११ मई ५१ तक मनाया जा रहा है। श्री ब्रह्मानन्द जी दण्डी, श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री देशराज जी, श्री सत्यमित्रजी, श्री भद्रपाल जी आदि उपदेशक, प्रचारक भाग ले रहे हैं।

—जहादपुर (एटा) आर्यसमाज का उत्सव १३, १४ अप्रैल को धूमधाम के साथ मनाया गया।

—बिसाली (बदायू) आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव १७ से २० अप्रैल तक सोल्लास सम्पन्न हुआ।

—डोमरी (देहरादून) आर्यसमाज का उत्सव १६ १७ अप्रैल को सानन्द समाप्त हुआ।

—बलिया आर्यसमाज का उत्सव १९ से २१ अप्रैल तक उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

कन्या गुरुकुल, हरिद्वार का वार्षिक उत्सव

कन्या गुरुकुल हरिद्वार (कनखल) का वार्षिक उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। आयुर्वेद, शिक्षा, एवं सांस्कृतिक सम्मेलन हुए। दीक्षान्त समारोह आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान आचार्य रामदेवजी की अध्यक्षता मे हुआ जिसमें दीक्षान्त भाषण गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी के आचार्य पं० प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने दिया और गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति इन्द्र विद्यावाचस्पति ने स्नातिकाओं को आशीर्वाद दिया। तीन स्नातिकाओं को आयुर्वेद विद्या-विशारदा की उपाधि दी गई।

उत्सव के अवसर पर कन्या गुरुकुल की ११७ कन्याओं ने व्यायाम प्रदर्शन भी किया। गुरुकुल के संस्थापक ठाकुर संसारसिंह जी ने अगले वर्ष गुरुकुल की रजत जयन्ती मनाने की घोषणा भी की है।

आर्यसमाज सदर बाजार झांसी की रजत जयन्ती

आर्यसमाज सदर बाजार रजत जयन्ती १२ मई से १३ मई तक हो रही है। सबसदस्य व आर्य वीरों दिन रात बड़े प्रयत्न से उत्सव को सफल बनाने में संलग्न हैं।

१—पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी महाराज प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा देहली, २—प० शिवकुमार जी शास्त्री महोपदेशक दीवानहाल देहली, ३—प० ब्रह्मानन्द जी भजन उपदेशक की भजन मण्डली आदि इस जयन्ती पर पधारने की स्वीकृति प्रदान कर चुके हैं। अन्य नेताओ के पधारने की पूर्ण आशा है।

—गङ्गाराम आर्य

प्रचार-समाचार—

—सहतवार आर्यसमाज पर विपक्षी अपना अधिकार करना चाहते थे। समाज प्रेमी भाइयों ने उसका स्पष्ट विरोध किया। फलत विरोधियों की ओर से २० अप्रैल को मुकदमा दायर कर दिया गया। समाज के सभी सदस्य मुकद्मे का सफल विरोध कर रहे हैं। फिर भी आर्य जनता की सहानुभूति एवं सहायता प्रार्थनीय है। आशा है हम अवश्य सफल होंगे।

सूचना

—उप प्रान्तीय कुमार परिषद् का वार्षिक साधारणाधिवेशन दि० १७-५-५१ रविवार के मध्याह्नोत्तर १२॥ बजे से आर्यसमाज मन्दिर हाथरस में होगा। इस सुअवसर पर अधिक से अधिक प्रतिनिधियों को भाग लेना चाहिए।

—महेशचन्द्र गर्ग
मन्त्री उप प्रान्तीय आर्यकुमार सभा
अलीगढ़ दयानन्द मार्ग, सासनी

हैदराबाद की आर्यसमाजों का होली जुलूस

दि० २५ मार्च १९५१ को प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हैदराबाद शहर की आर्यसमाजो, आर्यवीर दलो तथा आर्य पाठशालाओं का एक भव्य जुलूस आर्यसमाज किशनगंज से प्रस्थान कर हैदराबाद शहर के भिन्न भिन्न मार्गों में होता हुआ केशव स्मारक आर्य विद्या-नारायणगुडा पहुँचा। वहा यह जुलूस सार्वजनिक सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। यहा एक सभा का आयोजन श्री पं० नरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में किया गया। इस सभा में होमावली पर्व के महत्त्व पर विचार प्रकट करते हुए अध्यक्ष महोदय ने गजारूढ किये गये कार्यकर्ता श्री पी० सत्यनारायण जी मुखर्जी ने अपना होमावली सन्देश दिया। इसके पश्चात् श्री छगनलाल जी विजयवर्गीय मन्त्री, आर्य-समाज किशनगज ने जुलूस में अनुशासन पालन तथा प्रभावशाली भजन गाने वाली भजन मण्डलियों को पुरस्कार की घोषणा की एव श्री पं० ऋतुदेव जी शर्मा "वेदरत्न" संयोजक, जुलूस समिति के धन्यवाद समर्पण के पश्चात् सभा की कार्यवाही पूर्ण हुई।

यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि सगठन विरोधी कुछ लोगो ने जुलूस के न निकलने और निकलने पर भी असफल होने के लिए दंगे आदि के झूठे प्रचार और पुलिस में दिये गये १४४ धारा लागू कर जुलूस को रोकने का प्रार्थना पत्र देने के प्रयत्नों के बाद भी इस बार जुलूस में २५—३० हजार से अधिक आर्य तथा हिन्दू जनता ने भाग लिया और सड़क के दोनों ओर तथा छज्जों में दर्शक जनता की अपार भीड़ लाखों की संख्या में ठाठें मार रही थी। इस सफलता के लिए सम्मिलित होने वाले सभी व्यक्ति बधाई के पात्र हैं।

अमरीकी पादरियों का नया ग्रुप भारत आ रहा है

सरकार प्रतिबन्ध लगाये, हम अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत हों

विशेष सूत्र से ज्ञात हुआ है कि अमरीका से अनेकों ईसाई मिश्नरियों ने भारत आने के लिये परमिट मांगा है और भारत सरकार ने उनमें से कुछ को भारत आने की अनुमति दे दी है और अन्यो को भी वीसा मिलने की सम्भावना है। इन मिश्नरियों का एक समूह १५ मई तक भारत पहुँच जायगा और वह बिहार प्रान्त के छोटा नागपुर क्षेत्र में प्रचारार्थ चला जायगा।

जनता की जानकारी के लिये मैं बतला देना चाहता हूँ कि नागाप्रदेश के पश्चात् विदेशी मिशनरी छोटा नागपुर को ईसाई स्थान बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और वहा पानी की भांति करोड़ो रुपया प्रतिमास पर्वतीय क्षेत्रों में बहाया जा रहा है। वहा के रांची, हजारीबाग, पलामऊ आदि जिलो मे वहा की निर्धन, अपढ़ तथा भोली जनता का बलात् धर्म परिवर्त्तन किया जा रहा है। वहाँ ईसाई स्कूलो में हिन्दू बच्चों की चोटियां काटी जा रही हैं और उनके जबरदस्ती ईसाई नाम रख दिये जाते हैं। जो लोग ईसाई नहीं बनते उनके बैल और जमीन ईसाई पादरी छीन लेते हैं। छोटा नागपुर को ईसाई प्रान्त बनाने के लिए वहा के ईसाई नेता जयपालसिंहजी ने झारखण्ड प्रान्त बनाने की घोषणा कर दी है।

यदि विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों को न रोका गया तो छोटा नागपुर क्षेत्र निश्चित रूप से शीघ्र नये प्रान्त के रूप में ईसाई स्थान बन जायगा।

अपनी सरकार की बुद्धि पर तरस आता है कि भूतपूर्व मध्य प्रान्त तथा मध्य भारत सरकारों द्वारा नियुक्त नियोगी एव रेगी कमेटियों की रिपोर्ट सामने आ जाने पर भी उसकी आंखें नहीं खुलीं और धर्म तथा सेवा की आड़ में राजनीतिक षड्यन्त्र खेलने वाले विदेशी मिशनरियो का देश से निष्कासन करने के स्थान पर उल्टा उन्हें वह बुला रही है। सुना है कि जब गीदड़ की मौत आ जाती है तो वह गांव की तरफ भागने लगता है। ठीक यही अवस्था हमारी सरकार की हो रही प्रतीत होती है। यही कारण है कि आज भारत में पाकिस्तान रूस और अमरीका के एजेन्ट खुलकर देशद्रोह की ज्वाला यहां भड़का रहे हैं और भारत सरकार सैक्युलरिज्म के नाम पर अपनी अकर्मण्यता प्रदर्शित कर रही है। वास्तव में यह सैक्यूलरिज्म नहीं, राजनीतिक मूर्खता है।

ओम्प्रकाश त्यागी प्रधान सञ्चालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली

सूचना

पं० महादेवप्रसाद जी शास्त्री जहाँ कहीं भी हों तत्काल निम्नपते पर सूचित करें। जगरूपलाल, लक्ष्मीचन्द्र आर्य
मु०पो० भदरसा, जि० फैजाबाद
स्टेशन-भरतकुण्ड

—नैनीताल जिले मे बाजपुर आर्य-समाज यद्यपि एक नवीन संस्था है तथापि दि० १६ १८ अप्रैल तक उसने जिस सफलता के साथ अपने उत्सव को सम्पन्न किया वह अनुकरणीय कार्य था। दि० २१ अप्रैल के भीषण अग्नि-काण्ड मे जब नगर के अनेक व्यक्ति बेघर-बार हो गये, ऐसी दशा में इस समाज के सदस्यो में श्री लीलाधर जी, बालमुकुन्द जी, श्री गङ्गाप्रसाद जी, गिरिवर सिंह जी, तथा श्रीमती चम्पादेवी जी ने प्रशंसनीय कार्य किया ३५ से अधिक पीड़ित व्यक्तियों को भोजन, वस्त्र तथा ११०) की एकत्रित धनराशि से सहायता की गई, समाज के कार्यकर्ता समाज के लिए स्थान प्राप्ति के प्रयत्न में व्यस्त हैं।

संस्कार—

—नजीबाबाद १ मई को श्री पं० शिवदयालु जी (मेरठ) के सुपुत्र श्री अजयकुमार का शुभ विवाह श्री शिवचरण जी आर्य की सुपुत्री सुश्री ज्ञानदेवी के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

—बम्बई ३ मई ५१ को एम० के० अमीन का विवाह संस्कार अफ्रीका निवासी श्री आत्माराम जी की सुपुत्री के साथ वैदिक विधि से हुआ।

सुझाव और सम्मतियां

धर्म-संकट

१२ अप्रैल १९५९ के 'मित्र' में श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी का एक सुझाव प्रकाशित हुआ है उस सम्बन्ध में मेरे विचार उससे भिन्न हैं अतः धर्म-संकट में पड़ गया हूँ कि अपने वरिष्ठ मित्र के सुझाव का विरोध कैसे करूं। मैं यह बात हृदय से अनुभव करता और मानता हूँ कि उन्होंने यह सुझाव किसी स्वार्थवश नहीं किया है सभा और समाज के हित को दृष्टि में रखकर किया है, पिछले वर्ष सभा की स्थिति में सुधार के जो प्रयत्न उन्होंने किये उनमें इच्छानुसार उन्हें सफलता नहीं मिली, इस कारण भी उनके सुझाव का अपना महत्व है।

प्रस्तावक बन्धु के अनुभव और सदाशयता के होते हुए भी प्रस्ताव के गुणावगुणों की हमें गम्भीरतापूर्वक समीक्षा करनी होगी। प्रत्येक प्रस्ताव के निजू गुणावगुण होते हैं। मैं आर्यसमाज की उत्तर प्रदेश में बिखरी शक्तियों के केन्द्रीकरण की भावना से पूर्ण सहमत हूँ परन्तु जो उपाय शर्मा जी ने लिखा है वह मुझे मान्य नहीं है। सभा और गुरुकुल के विकास में काफी कठिनाइयां हैं उन पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये। पहले भी सभा के साथ गुरुकुल को मिलाने का अभिनय हो चुका है उसकी हानियां अभी तक स्मरण हैं। सभा के निर्वाचनों का गुरुकुल पर पर्याप्त प्रभाव दुष्प्रभाव पड़ता रहा। साथ ही सभा की सारी शक्ति गुरुकुल में ही लग गई थी। वृन्दावन के महत्व की भी चर्चा हुई है। लखनऊ में सभा को अधिक सफलता न मिलने के कारणों में लखनऊ के साथ सभा की नीतियाँ भी उत्तरदायी हैं। गुरुकुल अच्छा चलता है या बुरा इसका निर्णय गुरुकुल के निज गुणों और स्थितियों के आधार पर किया जाना चाहिये। मेरी सम्मति में सभा को गुरुकुल के पीछे न घसीटना चाहिये। कांगड़ी और पंजाब सभा के वर्तमान रूप का भी हमें ध्यान रखना चाहिये। लखनऊ की विफलताओं के कारण हमें निराश नहीं होना चाहिये। यह ठीक है कि लखनऊ राजनीतिक केन्द्र है परन्तु आर्यसमाज की नीति भी तो जटिल है।

जहां तक गुरुकुल की उन्नति का प्रश्न है वह विचारणीय है, चिन्तनीय है और गम्भीर है, उस पर पृथक रूप से विचार अवश्य किया जाना चाहिये जिससे उसके स्वरूप और भविष्य के सम्बन्ध में समाज अपना कर्तव्य निर्धारण कर सके। मैं शर्मा जी से सविनय सद्भावनापूर्वक निवेदन करूंगा--आज़ुर्दा रा आज़ुर्दन-अहद बाशद।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०
प्रयाग

विभागों का विकेन्द्रीकरण

१२ अप्रैल के आर्यमित्र में माननीय श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी ने सभा के सब विभागों को लखनऊ से उठाकर गुरुकुल वृन्दावन में केन्द्रीकरण का सुझाव दिया है। जहां तक मुझे ज्ञात है सभा कार्यालय पहले भी कई वर्ष गुरुकुल में रह चुका है। यह युक्ति समझ में नहीं आती कि सभा और गुरुकुल की वर्तमान असन्तोषजनक अवस्था दोनों के मिलाने से कैसे ठीक हो जायगी।

प्रेस और पत्र भी पहले लखनऊ से बाहर थे वहां भी बराबर घाटा रहा तो अब कौन बड़ी बात है। गुरुकुल में उपदेशक विद्यालय, वक्तृत्व कला, पत्रकार कला, अनुसंधानशाला आदि कार्यों के होने में आज क्या बाधाएं हैं? जो अवकाश-प्राप्त कार्यकर्ता अवैतनिक सेवा के लिये उद्यत हैं उनके मार्ग में आज क्या अड़चनें हैं? जो लोग आना चाहें आयें और यथाशक्ति सेवा करें।

मेरे समय में सभा कार्यालय गुरुकुल में रहा पर उसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं रही। मन्त्रियों के साथ भटकने वाले कार्यालय को सभा बहुत समय बाद एक जगह टिका सकी, बाद में प्रांत ने केन्द्रीय कार्यालय के लिये धन दिया।

मेरी सम्मति में पं० जी ने सभा और गुरुकुल के रोगों के लिये अमृतधारा बतलाई है, मैं इसका विकल्प बताने की स्थिति में तो नहीं हूँ जो दूसरी बूटी बता सकूं। हां यह अनुभव करता हूँ कि उत्तर प्रदेश को ऐसे कर्मठ नेता की आवश्यकता है कि जो स्थान विशेष का आग्रह न करे। धन और जन की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी, यदि जन हो तो धन की कमी कभी नहीं रह सकती। आशा है पं० जी मेरे विचारों को उसी सद्भावना से स्वीकार करेंगे जिससे प्रेरित होकर यह लिखे गये हैं।

—[illegible]नारायण शुक्ल एडवोकेट
खीमपुर

समाज की शक्तियों का केन्द्रीकरण

१२ अप्रैल १९५९ के आर्यमित्र में प्रकाशित श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी के विद्वत्तापूर्ण लेख "बिखरी हुई शक्तियों का केन्द्रीकरण हो" पढ़कर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की उन्नति में बाधाओं की कुछ जानकारी हुई। समाज की वर्तमान अवस्था वास्तव में शोचनीय है और उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये।

मेरी सम्मति में पं० जी के सुझाव सदाशयता पूर्ण हैं पर उनके क्रियान्वय से स्थिति में सुधार की अपेक्षा विकार की सम्भावना अधिक है। प्रदेश के पूर्वी भाग के लिये तो आजकल नारायण स्वामी भवन प्रकाश-स्तम्भ बना हुआ है। मेरे विचार में लखनऊ में कार्यालय लाने का उद्देश्य इस पौराणिक गढ़ में वैदिक धर्म का प्रसार करना ही था वह इस परिवर्तन से कैसे हो सकेगा। पश्चिमी भाग तो पंजाब और दिल्ली से सम्पृक्त है उसे वहां से भी शक्ति मिल सकती, पर पूर्वी प्रदेश की दशा विचारणीय हो जायगी। अवैतनिक कार्यकर्ता अपनी सेवायें गुरुकुल को आज भी प्रदान कर सकते हैं, आर्यजगत उनका स्वागत करेगा। गुरुकुल में विविध शिक्षा संस्थानों की आवश्यकता को सभी अनुभव करते हैं उसके लिये भी सभा को गम्भीरता-पूर्वक सोचना चाहिये।

—राजकिशोर श्रीवास्तव
आर्यसमाज शाहजहांपुर

गुरुकुल की सुधि के लिए धन्यवाद

आर्यमित्र के १९ अप्रैल के अङ्क में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं साहित्य मनीषी श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा का बिखरी शक्तियों का केन्द्रीकरण, तथा गुरुकुल विश्व विद्यालय की उन्नति के सम्बन्ध में उनके सुझाव पढ़कर आश्चर्य और प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। आश्चर्य इस बात का कि अभी भी कोई गुरुकुल के सम्बन्ध में सोचने वाला क्या मौजूद है? उत्तर प्रदेश के आर्यों ने पिछले ७० वर्षों में अनेकों सामयिक और अस्थायी कार्य किए होंगे। वास्तव में गुरुकुल ही उनकी एक स्थायी कृति है। यह ठीक है कि सभा प्रान्त के विविध सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो गई, परन्तु यह भी एक कटु सत्य है कि आज सभा में गुरुकुल, आन्दोलन के प्रति न निष्ठा रही न गुरुकुल के-सम्बन्ध में विचार करने का समय रहा और सब प्रकार से उपेक्षित हो एकमात्र अपनी जीवन शक्ति से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। ऐसी अवस्था में पण्डितजी ने गुरुकुल की हित-चिन्तना और उसके विकास की भावना प्रकट कर एक महान आश्चर्यजनक एवं पुनीत कार्य किया है।

सभा के केन्द्रीकरण का सुझाव बहुत-सी कठिनाइयों से घिरा हुआ है, परन्तु गुरुकुल उन्नति का आकर्षण प्रान्त के लिए एक स्वर्ण अवसर सिद्ध होगा। आज प्रान्त में आर्यसमाज की प्रगति को देखते हुए गुरुकुल हमारी शक्तियों के सन्तुलन, और उन्नयन का आधार बन सकता है। "एके साधे सब सधे" वाली कहावत के अनुसार गुरुकुल को हम अपना एकमात्र लक्ष्य और सम्बल बना लें तो मुझे आशा है कि प्रान्त के सामाजिक जीवन में नवीन लहर व्याप्त हो उठेगी। पण्डित जी ने जिन योजनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है वे आज से बहुत पहिले गुरुकुल में आरम्भ हो जानी चाहिए थीं। समाज के अवैतनिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्रयुक्त न हो सकने का कारण "योजकस्तत्र दुर्लभः" ही रहा है। यद्यपि यह कहना एक धृष्टता होगी कि वे प्रस्तावक हैं इसलिए पहल भी वे ही करें परन्तु उनके समान ही गुरुकुल के हितचिन्तक और पण्डित जी के महान जीवन के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखने वाले होने के नाते मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि वे अपने गुरुकुल-निवास की घोषणा कर सक्रिय कदम उठाने की कृपा करें। मुझे और मुझ जैसे अनेकों भाइयों को आशा है कि उनका यह कदम अनेकों के लिए आदर्श तथा गुरुकुल के लिए स्फूर्ति का स्रोत बनेगा।

—धर्मपाल 'शिरोमणि' एम० ए०
सहायक मंत्री स्नातक-मण्डल
गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

आर्यसमाज की माला का मनका

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब, माला का अङ्ग बने

अभी पिछले दिनों श्रद्धेय महात्मा हंसराज जी का पवित्र जन्म-दिवस मनाया गया, वे आर्यसमाज की अनुपम विभूति थे। हमारा कर्तव्य है कि हम उनके कार्यों और विचारों की पूर्ति में सहायक बनें।

इस अवसर पर एक आवश्यक प्रश्न की ओर इनकी भावनाओं को स्पष्ट करना आवश्यक समझता हूँ। मुझे भली-भांति विदित है कि वे अपने जीवन-काल में आर्य प्रादेशिक सभा को, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संगठन के अन्तर्गत लाने के इच्छुक थे। अनेक बार बातचीत चली। १९३९ में निश्चय भी हो चुका था परन्तु फिर कुछ विघ्न पड़

[शेष अगले पृष्ठ पर]

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
२० वैसाख शाक १८८१
(१० मई १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

[पिछले पृष्ठ का शेष]

सभा। जब आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान श्री आनन्द स्वामी जी महाराज से जो महात्मा जी के सच्चे शिष्य हैं, हमें भारी आशा है वे इस ओर अवश्य ध्यान देंगे और जनता के बिखरे हुए शक्तियों को संगठित कर देंगे। मैं उन्हें इस मामले में पूर्ण सहयोग देने के लिए उद्यत रहूँगा। आर्य जगत् की शुभ कामनाएं भी इस कार्य में उनके साथ होंगी। महात्मा जी का सच्चा सत्कार उनके आदेशों व विचारों के पालन में ही है।

—सूर्यचन्द्र एडवोकेट (आगरा)

आर्यसमाज की शिक्षा-नीति पर गम्भीर विचार हो

आज की आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाएं अपने आदर्शों और उद्देश्यों में कहाँ तक सफल हो रही हैं, यह गम्भीरता पूर्वक सोचने का समय आ चुका है हमें देखना चाहिए कि परिश्रम, शक्ति और धन तथा ध्यान का विनियोग करके हम लौकिक शक्तियों को दूर करके वैदिक शिक्षा का प्रचार किस प्रकार से कर सकते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं हो रहा कि हम बोतें और बीज बोवें पर फसल काटें दूसरे। हमारे बुजुर्ग लकीर बनाने वाले थे, हम लकीर लगाते नहीं अपितु पीटते हैं। मेरी सम्मति में लकीर पीटने और बार बनाने की नीति को छोड़कर दो बातों की ओर ध्यान देने की बड़ी आवश्यकता है। प्रथम तो आर्य समाज में उच्च श्रेणी के शिक्षा-विशेषज्ञ होने चाहिए जो अपनी नई संस्थाएं खोलने में, अपना समय न खोयें अपितु देश की शिक्षा-पद्धति को सुसस्कृत करने में सहायता दें और नाना प्रकार के तथा नाना संस्थाओं द्वारा चलाये हुए स्कूलों कालेजों की नीति-रीति को प्रभावित कर सकें। दूसरी बात यह है कि हमारी शक्ति का मुख्य भाग वैदिक धर्म की विशेषताओं को खोजने और उनको प्रकाशित करने में व्यय होना चाहिए।

—गंगाप्रसाद उपाध्याय एम ए.

नैपाल में प्रचार-योजना बने

आजकल नैपाल राज्य में ईसाई मिशनरियों के प्रचार प्रभाव को रोकने के लिए आर्यसमाज की ओर से आवाज उठाई जा रही है। कुछ प्रचारक भी सार्वदेशिक तथा अन्य समाजों की ओर से इस प्रकार के अवरोध में संलग्न हैं परन्तु हमारा कार्य बहुत कुछ शहरी क्षेत्रों में ही समाप्त हो जाता है। नैपाल की भोली-भाली ग्रामीण जनता तक हम अपना सन्देश पहुँचाने में सफल नहीं हुए हैं, उधर विधर्मियों को हमारी अपेक्षा अधिक सफलता मिली है। इसलिए नैपाल में आर्यसमाज के प्रचार की योजना गम्भीरता-पूर्वक बनाई जानी चाहिए। केवल सम्मेलनों एवं भाषणों से हमें सफलता नहीं मिल सकती।

मैंने फरवरी मार्च मास में नैपाल के ७० ग्रामों में प्रचार-यात्रा की और अनुभव किया कि नैपाल की जनता बड़ी धार्मिक है और आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा रखती है। भारत में हमारे प्रचारकों और उपदेशकों से आशा की जाती है कि वे अपने प्रचार-प्रभाव से अपने लिए वेतन आदि का प्रबन्ध भी कर लेंगे परन्तु नैपाल के क्षेत्र में हमें ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए, वहाँ तो हमें प्रचारकों के लिए जीविका का पूर्ण प्रबन्ध करना होगा, तभी सफलता मिल सकेगी। इस सम्बन्ध में योजना व प्रचार के लिए मैं अपनी सेवाएं समाजों के लिए प्रस्तुत करता हूँ।

—मुन्नीप्रसाद आर्य सैनिक
ग्राम—पनेवा गोरखपुर उ. प्र.

ईसाई प्रचार-निरोध के लिए हमारा कर्त्तव्य

आजकल भारत में ईसाई मिशनरियों के प्रचार की बहुत चर्चा है और इस समस्या को लेकर बहुत कुछ कहा, सुना और लिखा जा रहा है और जब हमारा बस नहीं चलता तब हम सारा दोष सरकार के मत्थे मढ़ने लग जाते हैं। परन्तु हमें यह अनुभव करना चाहिए कि इस सामाजिक एवं धार्मिक समस्या के सम्बन्ध में हमारा भी कुछ कर्तव्य है। हमारे प्रबल आन्दोलन के फलस्वरूप सरकार विदेशी मिशनरियों पर तो रोक लगा रही है और लगा सकती है, परन्तु भारतीय मिशनरियों की गतिविधि पर सरकार कैसे और क्यों रोक लगा सकती है, इसके लिए तो हमारे सामाजिक और धार्मिक संगठन ही दृढ़तापूर्वक कार्य कर सकते हैं। अतः इस समस्या को राष्ट्रीय समस्या मानकर कार्य करना चाहिए। धन की ऐसे शुभ कार्यों के लिये कमी कभी नहीं होती है। योजना की सफलता के लिए सुदृढ़ संगठन एवं व्यक्तियों को आगे आना चाहिए।

—अखिलकुमार
आर्यसमाज रायपुर (देहरादून)

आर्यसमाज की आन्तरिक शुद्धि ही सफलता का मार्ग

ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना निश्चित किया है। इतने महान् ध्येय को लेकर आर्यसमाज विश्व में अवतीर्ण हुआ। आरम्भ में भले कुछ भी हुआ हो पर आज हम एक ऐसी स्थिति में पहुँच गये हैं जबकि हमें गम्भीर आत्म-निरीक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है। समाज को सच्चा एवं दयानन्दी का अखाड़ा बनाने वालों से शुद्ध किया जाना चाहिये। सदस्य संख्या बढ़ाने में समाज का कोई लाभ नहीं, बहुत कुछ तो समाज का रूप अविचारपूर्ण सदस्य संख्या वृद्धि के कारण ही विकृत हुआ है।

योग्य नेतृत्व के अभाव में आज समाज में असंख्य नेता बन गये हैं। अनेक समाजें, प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक के संगठन से सम्बद्ध रहने में अपना अपमान अनुभव करने लगीं जब हम में से ही लोग सब मनुष्यों के सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, इस दसवें नियम का पालन नहीं करते हैं तब मानव समाज के कल्याण की तो कथा ही क्या? अतः हमें देखना होगा कि जो लोग समाज के नियमों का पालन नहीं करते हैं उनके हाथ से ऋषि दयानन्द की पवित्र धरोहर आर्यसमाज की किस प्रकार रक्षा की जाय?

इस समस्या का समाधान यही है कि हम व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का त्याग करें और शपथ लें कि समाज के प्रति कार्य ही हमारे जीवन का एक लक्ष्य हो। इस प्रकार की शुभ भावना बनाकर ओ३म् पताका की छत्रछाया में आर्य प्रतिनिधि एवं सार्वदेशिक सभाओं के नेतृत्व में समाज के कार्य को आगे बढ़ा सकेंगे।

लक्ष्मीकान्त मन्त्री
वेदप्रचार-मण्डल कोटा
(राजस्थान)

रघुकुल शास्त्री द्वारा दयानन्दीय आर्य प्रकाश प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



वार्षिक मूल्य ८)
एक प्रति का २० नए पैसे

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र
लखनऊ, रविवार वैशाख २७, शक १८८१, वैशाख शुक्ल १, वि० २०१६, १० मई, १९५९ ई०

विदेश में
१२शिलिंग

हाथरस अधिवेशन को सफल बना अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दीजिये

समय, सद्भावना और सहयोग से आर्यसमाज की शक्ति बढ़ाइये

आज आर्यसमाज को सेवकों, सैनिकों और साथियों की आवश्यकता है हम अपने सच्चे साथियों को चुनें, यही हमारे विवेक की परीक्षा है

हाथरस अधिवेशन में हम सेवा का व्रत लें। आज तक के इतिहास में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निर्माण, विकास और समुद्धार में जिन भाइयों ने जिस किसी प्रकार जो भी सहायता दी है उन सबके प्रति उत्तर प्रदेश के सभी आर्य बन्धुओं को आदर और सम्मान प्रकट करते हुए भविष्य में उनके द्वारा आरोपित, सिंचित और फल छाया समन्वित वाटिका के महत्व की रक्षा का दायित्व ग्रहण करना होगा।

निर्वाचन और सत्ता-स्वार्थ की आंधियों में हम कहीं मानवीय कमजोरियों के शिकार न बन जायं इसका हमें सदैव ध्यान रखना चाहिये। सभा, समाज और संघटन के हित को सर्वोपरि रखकर हम अपना कर्तव्य पालन करना सीखें यही हमारी सफलता और प्रगति का प्रशस्त मार्ग होगा।

आर्यसमाज में व्याप्त सामयिक शिथिलता उदासीनता के कोहरे को तप-त्याग की प्रखर रवि रश्मियों से समाप्त कर हमें समाज के जीवन में सरसता और सौहार्द के भाव बढ़ाने होंगे। और सेवा, सहयोग व साहचर्य के आदर्श वातावरण का निर्माण करना होगा, कल्पना कीजिये आज से आधी शताब्दी पूर्व के उस युग की जब एक आर्य बन्धु दूसरे आर्य बन्धु से भेंट करता था तो दोनों के हृदयों में कितना मानसिक उल्लास और स्नेह उमड़ पड़ता था मानों दो सगे भाई मिले हों। आज उस सत्यम् शिवं सुन्दरम् के आदर्श जीवन को त्याग हम आलोचना, असहयोग और अकर्मण्यता की भूल भुलैय्या में भटक रहे हैं। हम गाया करते हैं "वही प्रेम गंगा यहां फिर बहेगी, जो संसार की ताप माला हरेगी" हम केवल आदर्शवाद की बात ही करना जानते हैं। अपने वर्ग से बाहर के अज्ञान, अन्याय, अभाव को दूर करने से पहले जिस घर में हम बैठे हैं, उसका हमें सुधार करना होगा उसके प्रत्येक व्यक्ति को बन्धुत्व के विमल स्नेह से स्निग्ध करना होगा, पारस्परिक मानसिक गुत्थियों को सुलझाते हुए उनमें मित्रता, सद्भावना और सहिष्णुता के भाव जागृत करने होंगे तभी हम दयानन्द के वीर सैनिकों की टोली लेकर कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। पहले हमें अपनों के ताप दूर करने होंगे तभी हम दूसरों की सेवा के अधिकारी बन सकेंगे। जब तक हमारी कथनी और करनी में एकता का अभाव रहेगा, हम बातें अधिक करते रहेंगे और काम थोड़ा भी न करेंगे, और न करने देंगे, तब तक हमारी कोरी बातों का, लेक्चरों और भजनों की गूंज का किसी पर व्यापक असर न होगा।

आज आर्यसमाज को दीवानों की आवश्यकता है ऐसे दीवानों की जो समाज को ही अपना घर और बार समझें, समाज के लिये ही जियें और मरें। ऐसे कर्मठ और उत्साही साथियों की कमी नहीं है। पर उनको कौन इकट्ठा करे, जो इस कमी को पूर्ण कर सकेगा, नेतृत्व की जयमाल उसीका वरण करेगी। समाज की वर्तमान असहिष्णु, आलोचक व्यक्तिवादी और दलगत प्रवृत्तियों को शुद्ध और आदर्श बनाने का दायित्व प्रबुद्ध प्रतिनिधि गणों पर ही है। यदि प्रतिनिधि गण सुमधुर वातावरण की सृष्टि कर सकें तो यह समाज की महान् सेवा होगी। हमें महान् कार्य करने हैं, महान् लक्ष्य हमारे सामने हैं उनकी पूर्ति के लिये हमें विवेक, साहस और संयम से कार्य करना होगा, मित्र-परिवार की यही शुभ कामना है कि हाथरस में उपस्थित सभी आर्य बन्धु आर्यसमाज की महत्ता और पवित्रता की रक्षा करते हुए उत्तर प्रदेश तथा समस्त आर्य जगत् को उचित नेतृत्व और आदर्श पथ-प्रदर्शन करने में सफल हों।

अवैतनिक सम्पादक–

वह कौन थे ?

स्वर्गीय डाक्टर ब्रजेन्द्रस्वरूप जी

[डाक्टर श्री हरिदत्त शास्त्री, एम० ए०]

[श्रद्धेय डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप पिछली पीढ़ी के प्रौढ़ उदात्त एवं कर्मठ आर्यसमाजी थे । समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने आर्यसमाज का सन्देश पहुँचाने का निरन्तर व्यावहारिक प्रयत्न किया, हम उनके जीवन से शिक्षा लें, उनके कार्य को आगे बढ़ायें, यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । —सम्पादक]

श्री बाबूजी के सर्व प्रथम दर्शन मुझे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता कर्मवीर श्री प०विद्याधर जी के साथ सन् १९५२ की २२ अक्टूबर को हुए थे, तब वे किसी कार्य मे व्यस्त थे। थोड़ी देर बाद परिचय हुआ तथा बात आगे बढ़ी।

श्री डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप जी के पूर्वज अलीगढ़ के निवासी थे, उनके पिता श्री हनुमानप्रसाद जी पारसी भाषा के अच्छे विद्वान थे। १८७२ई०में वह कानपुर आगये। डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप जी का जन्म १८ सितम्बर सन् १८७७ ई० को कानपुर में ही हुआ था, और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी कानपुर में ही हुई। उनक अध्यापक गण एक होनहार विद्यार्थी के रूप मे उन्हें आशा भरी दृष्टि से देखते थे।

आपन १८९९ ई० मे अच्छी योग्यता क सथ अपनी L L B उत्तीर्ण करने क पश्चात् १९०२ में वकालत प्रारम्भ की। शीघ्र ही वे प्रसिद्ध हो गये और वार एसोसियेशन क मन्त्री और उपाध्यक्ष बनाये जाते रहे और १९४२ से लेकर अब तक डा० स्वरूप कानपुर Bar समिति के अध्यक्ष रहे।

५० वर्ष की क्रियाशील Practice क उपरान्त कानपुर Bar समिति ने बड़ ही उत्साह एव हर्ष क साथ इनका रजत जयन्ती महोत्सव मनाया, जिसमे तात्कालिक गृहमन्त्री श्री कैलाशनाथ काटजू जैसे महान् पुरुषो ने अध्यक्षता ग्रहण की। उस अवसर पर आपके गम्भीर एव साहस-पूर्ण कार्यों तथा योग्यता के लिये नाना सम्मान प्रदान किये गए। इसी अवसर पर इलाहाबाद हाई कोर्ट क Chief Justice मिस्टर जस्टिस मल्लिक ने एक बधाई पत्र भेजा कि 'Lawyers like Mr Swarup have raised the status of the Indian Bar' अर्थात् श्री ब्रजेन्द्र स्वरूप जैसे वकीलो ने Indian Bar के मस्तक को उन्नत कर दिया है।

आदरणीय बाबू जी इलाहाबाद हाई कोर्ट Bar Council के सदस्य भी लगभग उसकी स्थापना काल से ही रहे और दो बार इसक उपाध्यक्ष भी निर्वाचित हुए। राज्य मे एक वकील क रूप मे ख्याति प्राप्त स्थिति के कारण आपको सन् १९५० ई० में U P Lawyers के मेरठ Session की अध्यक्षता का सम्मान प्रदान किया गया।

श्री डा० स्वरूप जी के कार्य केवल कानूनी व्यवसाय तक ही सीमित न थे, अपितु वह जन जीवन क विभिन्न क्षेत्रो में भी अधिकाधिक क्रियात्मक अभिरुचि रखते थे। विशेषतया उन्होंने अपने आपको राज्य मे शिक्षा क लिये सलग्न कर दिया था जिसके लिए वह समय देकर शक्ति के साथ अधिकाधिक प्रयास भी करते रहे। वह D A V College Society U P के प्रमुख थे।

आगरा विश्वविद्यालय की Executive council के सदस्य और Law Fauculty के Dean के पद से शिक्षा के निमित्त सामान्य एवं विशेष रूप से आगरा विश्वविद्यालय के प्रति की गई सेवाओ के परिणाम-स्वरूप आपको Doctor of Law की Degree से विभूषित किया गया। आप लगभग ३० वर्ष तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के Court तथा अनेक वर्षों तक Law Fauculty के भी सदस्य रहे। केन्द्रीय सरकार की ओर

जीवन-ज्योति

से आप अलीगढ़ विश्वविद्यालय के Visiting Board क सदस्य नियुक्त हुए। आप High school and Intermediate Board of U P की Recognition committee के भी वर्षों अध्यक्ष रहे। आपके पथ प्रदर्शन में उस काल में अनेक हाई स्कूलों ने इण्टरमीडिएट कालेजों की स्थिति को प्राप्त किया।

डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप का नाम कानपुरीय समाज सेवियों में भी अग्रगण्य है। १९३२ से ३६ तक कानपुर म्यूनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में, १० वर्ष तक शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष के रूप में और ३७ से ४१ तक Kanpur Improvement Trust के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने नगर की अनेकानेक सेवायें कीं। उनकी समाजिक सेवायें सरकार की ओर से ही नहीं अपितु महात्मा गाधी एव अन्य पुरस्सर नेताओं द्वारा भी प्रशंसित रही हैं। Lucknow Improvement Trust Enquiry Committee के अध्यक्ष रूप में प्रदेश के दूसरे नगरों को भी आपके अनुभवों से लाभ उठाने का अवसर मिल सका था।

डा० स्वरूप ने अपने जीवन का प्रमुख भाग मानवता की सेवा एवं जनता के विभिन्न कार्यों में व्यतीत किया। वह शोषित एवं दबे हुए वर्गों के उठाने में विशेष रुचि रखते थे। आर्यसमाजीय आन्दोलन के मार्ग प्रदर्शकों में आपका नाम स्मरणीय है कानपुर आर्यसमाज के अध्यक्ष के रूप में आपने १९३२ ई० से १९५९ ई० तक समाज की अनथक सेवा की। कानपुर हिन्दू अनाथालय के अध्यक्ष भी आप बहुत समय तक रहे।

१९३७ से अब तक बराबर आप U P Legislative Council के सदस्य रहे। U P Legislative Council के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० सर सीताराम, आधुनिक Council के अध्यक्ष श्री चन्द्रभाल, वित्त मन्त्री तथा Council के Leader श्री हाफिज मुहम्मद इब्राहीम के शब्दों में डक्टर स्वरूप के, Council chamber में निर्माणात्मक और helpful प्रस्तावों को बनाने वाले, प्रभावपूर्ण, विद्वत्तापूर्ण तथा सुसतुलित कथनों के निर्माता होने के कारण उनके प्रस्ताव 'Carried full weight and conviction among all sections of the house'

वृद्धावस्था में भी वह आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों तथा साप्ताहिक सत्सगों में भाग लेते थे। मैंने उन्हें हमेशा आर्यसमाज के कार्यों के लिए उत्साहयुक्त पाया है। आपने अपने पीछे तीन पुत्र और तीन पुत्रियाँ तथा पौत्र पौत्रियाँ छोड़ी हैं, उनके पुत्रों के नाम—श्री सुरेन्द्रस्वरूप जी, श्री देवेन्द्रस्वरूप जी व श्री वीरेन्द्रस्वरूप जी हैं। वे सब ही अपने योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। श्री बाबू वीरेन्द्रस्वरूप जी को देखकर तो कालिदास का यह वाक्य याद आ जाता है कि—

न कारणात् स्वाद् विभिदे कुमार ।
प्रवर्तितो दीप इवं प्रदीपात् ॥

आपके तत्वावधान में आजकल डी० ए० वी० कालेज उन्नति की ओर प्रगति कर रहा है। हमें विश्वास है कि सब ही योग्य पिता के योग्य पुत्र सिद्ध होंगे। ❀

आर्यवीर दल के ग्रीष्मकालीन शिक्षण शिविर

देश के नवयुवकों का शारीरिक, मानसिक एवं चारित्रिक उत्थान करने के निमित्त आर्यवीर दल ने दिल्ली, बम्बई, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छोटा नागपुर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं राजस्थान में विशेष शिक्षण शिविरों का आयोजन किया है, अत जो नवयुवक इन शिविरों से लाभ उठाना चाहते हो वे तुरन्त अपने प्रार्थनापत्र नीचे के पते पर भेज दें। तत्सम्बन्धी जानकारी भी उन्हें कार्यालय से प्राप्त हो सकेगी।

इन शिविरों की सबसे बड़ी विशेषता यह होगी कि नवयुवकों को देश की वर्तमान परिस्थिति और उनके कर्त्तव्य से उन्हें अवगत कराने के लिये शिविरों में देश के अनेक प्रतिष्ठित एव विद्वान् नेताओं के बुलाने की व्यवस्था की गयी है।

—ओम्प्रकाश त्यागी प्र० सचालक,
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली १

संन्यासियों-वानप्रस्थियो मे

भारत मे विदेशी ईसाई मिशनरियो ने विदेशो से प्राप्त अपार धन राशि के बल पर यहा के धार्मिक, सास्कृतिक एव राजनैतिक ढाचे को खतरा उत्पन्न कर दिया है यह किसी से छिपा नहीं है। सरकार द्वारा नियुक्त नियोगी एव रेगी कमेटियो की स्पष्ट रिपोर्ट इस बात की साक्षी हैं। स्थिति यहा तक भयावह बन गई है कि यदि तुरन्त इस समस्या का समाधान न किया गया तो कुछ ही वर्षों में भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में सभी लोग ईसाई बन जायेंगे। मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियो के प्रति सरकार की उपेक्षा तथा मौन को देखकर आर्य शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने निर्धन, अपढ़ तथा भोले पर्वतीय लोगो की धार्मिक रक्षा करने का निश्चय किया है और वह वहा दयानन्द सेवाश्रमो के द्वारा सेवा कार्य करना चाहती है।

इस पुनीत कार्य के लिये हजारों उत्साही तथा लगनशील कार्यकर्त्ताओं व प्रचारकों की आवश्यकता है। देश के लाखों संन्यासी तथा वानप्रस्थी यदि इस कार्य में जुट जांय तो यह समस्या देखते-देखते हल हो सकती है। अन्यथा साधनहीन आर्यसमाज के लिये करोड़ों अरबों में खेलने वाले विदेशी मिशनरियों का सामना करना कठिन हो जायगा।

आशा है देश के सन्यासी व वानप्रस्थी गण देश की पुकार तथा अपने कर्त्तव्य का ध्यान करते हुए अपनी शक्ति इस पवित्र कार्य में लगायेंगे। कार्य करने के इच्छुक संन्यासी व वानप्रस्थी तुरन्त सूचित करने की कृपा करें।

—ओम्प्रकाश त्यागी
मन्त्री अराष्ट्रीय ईसाई प्रचार निरोध समिति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानंद भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली।

वेदोपदेश

ओम् त्वमस्य पारे रजसो व्योमन स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मन । चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽप स्व परिभूरेष्या दिवम् ॥ ऋ० १।४।१४।१२॥

हे परमैश्वर्य्यवन् परात्मन् ! आकाश लोक के पार में तथा भीतर अपने ऐश्वर्य और बल से विराजमान होके दुष्टों के मन को धर्षण तिरस्कार करते हुए सब जगत् तथा विशेष हम लोगों के 'अवसे' सम्यक् रक्षण के लिए 'त्वम्' आप सावधान हो रहे हो, इससे हम निर्भय हो के आनन्द कर रहे हैं किंच 'दिवम्' परमाकाश 'भूमिम्' भूमि तथा 'स्व' सुख विशेष मध्यस्थ लोक इन सर्वों को अपने सामर्थ्य से ही रच के यथावत् धारण कर रहे हो 'परिभू एषि' सब पर वर्त्तमान और सबको प्राप्त हो रहे हो 'आदिवम्' द्योतनात्मक सूर्यादि लोक 'आपः' अन्तरिक्ष लोक और जल इन सब के प्रतिमान [परिमाण] कर्त्ता आप ही हो, तथा आप अपरिमेय हो, कृपा करके हमको अपना तथा सृष्टि का विज्ञान दीजिये ।



लखनऊ—१७ मई १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०५९

सभा के वृहदधिवेशन की सफलता के लिए
हमारा कर्त्तव्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ७२ वर्ष से उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज के कार्य को जिस सफलता के साथ व्यवस्थित, प्रसारित, प्रचारित करती आ रही है यह प्रान्त के प्रत्येक आर्य बन्धु को भली भांति ज्ञात है। कल्पना कीजिये आज से ७२ वर्ष पूर्व उत्तरप्रदेश की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों की, उन विषम परिस्थितियों में जिनमें शिरोमणि आर्य बन्धुओं ने अपने तप त्याग द्वारा सभा की गाड़ी को आगे बढ़ाया और आज तक की स्थिति तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त की।

प्रत्येक जीवित संस्था की प्रगति की समालोचना उसके कार्यों द्वारा की जाती है। इस दृष्टि से हमें सभा के इतिहास का सिंहावलोकन करना चाहिये और देखना चाहिये कि अतीत में हम कहां थे और आज हम कितना आगे बढ़ सके हैं।

समय कठिन है पैर प्रश्न यह है कि समय कठिन कब और किसके सामने नहीं था। आज की मानव जन्य सहज कमजोरियों और देश काल की परिस्थितियाँ कब किसके अनुकूल होती हैं। साहसी और आत्मिक शक्ति के उपासक सभी बाधाओं को पार कर आगे बढ़ते और विजय प्राप्त करते हैं। हमें यह मानकर चलना होगा, मार्ग की भीषणतम बाधाएं हमारी परीक्षा के लिये ही हैं और उनसे सफलता पाते ही कोई हमारे गले में जयमाला डालने के लिये खड़ा है। आर्यसमाज युग की वाणी बने, युग का नेतृत्व सम्हाले, यही आज हमारा दायित्व है। इस दायित्व को साधारण आर्य सदस्य तो पूर्ण करने में सदैव सहयोग देंगे ही परन्तु मुख्य दायित्व प्रतिनिधि सदस्यों का है जिन्हें व्यष्टि और समष्टि को मिलाने का कार्य सम्पन्न करना है। प्रतिनिधित्व के महत्व को सभा के हाथरस अधिवेशन में उपस्थित प्रतिनिधि गण समझ सकें और उचित नेतृत्व एवं पथ प्रदर्शन कर सकें तो यह उनकी आर्यसमाज के प्रति महान् सेवा होगी।

आर्यसमाज में निर्वाचन केवल निर्वाचन के लिए न होकर प्रगति और निर्माण के लिये होना चाहिये। निर्वाचक प्रतिनिधि गण पक्ष-विपक्ष एवं मत-भेद की कमजोरियों से ऊपर उठकर आदर्श प्रस्तुत करें यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सभा की उन्नति में सहयोग प्रदान कर जो उसे सम्मानित और गौरवशाली बनाते रहे हैं उनके प्रति हमारी सच्ची और हार्दिक कृतज्ञता यही होगी कि हम उनके द्वारा निर्धारित गौरवस्तर और सम्मान की रक्षा एवं अभिवृद्धि में सहायक हों।

देश की परिस्थितियाँ पुकार-पुकार कर हमें निमन्त्रित कर रही हैं कि देश का सांस्कृतिक संरक्षण करने के लिए आइये, क्या हम इस निमन्त्रण को व्यावहारिक रूप देने के लिए सक्षम और सक्षम हैं। हमें इसके लिये आन्तरिक एकता एवं सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता होगी परन्तु खेद है कि उसका आज हम में अत्यन्ताभाव है। समय की थपेड़ भी हमें सचेत और प्रेरित कर सके तो बहुत अच्छा हो।

सभा आर्यसमाज के प्रान्तीय संघटन का प्रतीक है। उसकी शक्ति बढ़ाकर ही हम प्रान्त में आर्यसमाज के कार्य को सशक्त और सफल बना सकते हैं। वेद-प्रचार, आर्यमित्र, गुरुकुल, शिक्षा संस्थाएं आदि हमारे कार्यों के केन्द्र एवं आधार हैं उनकी उन्नति में योग प्रदान करने के लिए समय देने वाले व्यक्तियों की आवश्यकता हमें पूर्ण करना होगी। इस प्रकार हमारे सामने विचारणीय प्रश्न यही है कि हम अपना नेतृत्व किन व्यक्तियों को सौपें, उन व्यक्तियों के हाथ में जो आर्यसमाज को केवल अपने वाणी विलास या सत्ता स्वार्थ के लिये प्रयुक्त करना चाहते हैं या उन व्यक्तियों को जो अपना सम्पूर्ण समय आर्यसमाज के लिए समर्पित कर एक महान् साधना में रत है। नवीन नेतृत्व का सदैव आदर किया जाना चाहिए और किया ही जायगा परन्तु सभा की प्रतिष्ठा मर्यादा वैधानिकता एवं गौरव के प्रति अखण्ड विश्वास और समर्पण ही उसे वास्तविकता प्रदान कर सकेंगे। प्रजातन्त्र और उसके भारत में आदि समर्थक आर्यसमाज में आलोचना का सदैव स्वागत किया गया है पर आलोचना के साथ सद्भावना एवं सौहार्द्र शालीनता, सौजन्य के महान आदर्शों की रक्षा भी की जानी चाहिए।

आशा है हाथरस में उपस्थित प्रतिनिधि गण मित्र भी इस भावना को ग्रहण करें। और अपने कर्त्तव्य का गौरवानुरूप पालन करेंगे। हमें तो एक शब्द में यही निवेदन करना है। हमने जो प्रगति के चरण बढ़ाये हैं उन्हें आगे बढ़ाये जाने और लक्ष्य तक पहुँचे बिना विश्राम न करने में ही हमारा गौरव है इसलिए प्रत्येक आर्य को आगे बढ़ाने और गतिमान बनाने की शपथ को चरैवेति चरैवेति के शब्दों में पुनः दोहराना होगा। प्रभु हमें सफलता प्रदान करें।

संसद में संस्कृत

पिछले सप्ताह संसद में संस्कृत आयोग के प्रतिवेदन पर उच्चस्तर का विचार विमर्श हुआ। यह प्रसन्नता का विषय है कि संसद सदस्यों ने संस्कृत के प्रश्न पर पर्याप्त दिलचस्पी ली और संस्कृत के महत्व उपयोग आदि के विषय में विचार व्यक्त किये। संस्कृत की वर्तमान दशा के लिये वर्तमान सरकार की नीति किस सीमा तक उत्तर-दायी है यह इसी बात से सिद्ध है कि अंग्रेजों के जाने के समय जितने विद्यार्थी बनारस आदि की परीक्षाओं में बैठते थे अब उसके आधे भी नहीं बैठते, संस्कृत की शिक्षा देने वाली संस्थाओं के प्रति सरकार की उपेक्षा ही इसके लिये जिम्मेवार हो सकती है।

जबकि विश्व के सभ्य, शिक्षित समुदाय में संस्कृत के प्रति सम्मान बढ़ रहा है हमारे अपने देश में, भारती के घर में उसका असम्मान किस स्वदेशाभिमानी को व्यथित न करेगा ?

संस्कृत की रक्षा, विकास एवं अनुसंधान के कार्य में आर्यसमाज की गुरुकुल संस्थाओं ने जो कार्य किया है उसकी भी संसद में हमारे सम्मानित नेता श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० व श्री नरदेव स्नातक एम० पी० तथा अन्य सदस्यों ने चर्चा की और सरकार का ध्यान उन तथा उन जैसी संस्थाओं के प्रति अब तक रक्खी गई उपेक्षा की ओर आकृष्ट किया। उत्तर में शिक्षा मन्त्री श्रीमाली ने इन संस्थाओं के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण करने का आश्वासन दिया यह सन्तोष और प्रशंसा का विषय है परन्तु संस्कृत रक्षा और प्रचार की समस्या का सबसे उत्तम प्रकार यही है कि संस्कृत शिक्षा अनुदान बोर्ड बनाया जाय और संस्कृत शिक्षा का अनिवार्य विषय बना दिया जाय। भारत के भाषा विवाद का समाधान संस्कृत के सम्मान में है। यदि संस्कृत मां की बेटियां प्रान्तीय भाषाओं के समर्थक संस्कृत के मातृत्व को समझ लें तो भाषायी एकता संस्कृत की गोद में सन्निहित हो जायगा। इस प्रकार एक सुखद सृष्टि का नवीन प्रसार करने और संस्कृत की अमर और मूल्यवान् धरोहर की रक्षा का दायित्व आप के भारत पर है।

मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ की
सन्दिग्ध वफादारी

यह समाचार पढ़कर अत्यन्त दुख और क्षोभ हुआ कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय की गतिविधियों में स्वाधीनता के ११ वर्ष बाद भी साम्प्रदायिकता और राष्ट्र घातक प्रवृत्तियों का प्रावल्य है। अलीगढ़ से प्राप्त समाचारों में कहा गया है कि १८ अप्रैल को सुरक्षामन्त्री मेनन ने अलीगढ़ विश्वविद्यालय में अधिकारियों तथा प्राध्यापकों के समक्ष भाषण दिया और उनकी सन्दिग्ध पाक समर्थक प्रवृत्तियों की निन्दा की। इसके बाद ही गुप्तचर विभाग ने यूनिवर्सिटी को घेर लिया तथा कागज पत्रों की छानबीन आरम्भ कर दी विश्वविद्यालय के वाइसचान्सलर डा० जैदी व उनके साथियों को पुलिस देहली ले गयी। [शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

सरकार को यह कदम इस कारण उठाना पड़ा कि ज्ञात हुआ था कि यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग विभाग की ८ लाख रुपये की मशीनरी का पुनर्निर्यात उपकुलपति की जानकारी में करांची कर दिया गया। मशीनरी बम्बई में विश्वविद्यालय के लिये विदेश से आई पर बम्बई से ही उसे करांची भिजवा दिया गया। यह भी ज्ञात हुआ है कि पाकिस्तान में डा० जैदी का भाई है जो विश्वविद्यालय से चोरी छुपे पहुँचने वाले सामान की व्यवस्था करता है। इन गुप्त रहस्यों को छुपाये रखने के लिये ही अभी कुछ दिन पहले इंजीनियरिंग कालेज के प्रिंसिपल श्री मन्नतराम को निकाल दिया गया है।

उपर्युक्त विवरण इस शिक्षा-संस्था की पंचमांगी प्रवृत्तियों का एक प्रतीक परिचय है। इस प्रकार की न जाने कितनी अनुचित अवैधानिक, अराष्ट्रीय एवं साम्प्रदायिक कार्यवाहियां विश्वविद्यालय में होती रहती हैं उसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है।

इस प्रकार हम अनुभव करते हैं कि सबसे अधिक ५४ लाख का वार्षिक अनुदान देकर जिस विश्वविद्यालय के साथ भारत सरकार उदारता का परिचय दे रही है वहाँ का वातावरण कितना विषाक्त है और उसके बनाये रखने का दायित्व कितना गम्भीर है। हम इस सारे काण्ड की विस्तृत जानकारी की माँग करते हैं और सरकार से मांग करते हैं कि वह अपराधियों के साथ कानून का सख्ती से पालन करे तथा विश्वविद्यालय के साम्प्रदायिक वातावरण को शुद्ध कर वहां राष्ट्रीय पवन को प्रवहमान बनाने का सफल प्रयत्न करे। ११ वर्ष में भी वहाँ से साम्प्रदायिक तत्व नष्ट नहीं किये जा सके यह नेहरु सरकार, कांग्रेस सरकार की घोर असफलता है। इस असफलता को समाप्त करना राष्ट्र की महान् सेवा होगी।

निमन्त्रण

शिव आश्रम हरिद्वार का उद्घाटन

समस्त आर्य बन्धुओं को यह जानकर हर्ष होगा कि ३१ मई, १ व २ जून १९५९ को शिवआश्रम उद्घाटन के उपलक्ष में उत्सव करना निश्चित किया गया है।

आर्यजगत् के साथ मेरा २० वर्ष से अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है अतः मुझे विश्वास है कि आर्य संन्यासी, विद्वान्, उपदेशक तथा आर्यसमाजों के अधिकारी आदि प्रेमभाव से पधार कर कृतकृत करेंगे। मंगलाभिलाषी—

शिवानन्द संन्यासी

शिव आश्रम, जस्साराम रोड, हरिद्वार

आर्यजन आर्यसमाज के प्रति निष्ठा और एकता की शपथ को दोहरायें

(श्री फूलनसिंह जी प्रधान मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश द्वारा हाथरस में आर्य बन्धुओं से अभ्यर्थना)

आज उत्तरप्रदेश के आर्य प्रतिनिधि बन्धु सभा और समाज के निमन्त्रण पर हाथरस पधारे हैं। हमारे सामने क्या क्या लक्ष्य है और हमारी शक्ति क्या है इन प्रश्नों के उत्तर में हमारा आर्यसमाज का भविष्य निहित है। आर्यसमाज के मिशन की सेवा एक कठिन कार्य है। बहुत ही संकरी गली में से गुजरते हुए हमें परीक्षा देनी होती है। मानवता की आधारभूत सचाइयां हमारे जीवन और हमारे समाज में विकसित हों यही हमारा प्रयत्न रहना चाहिये।

जीवन के संघर्ष में आर्यसमाज के नैतिक सिद्धान्तों को सदैव चुनौती मिलती रही है। यह कहना चाहिये आसुरी शक्तियां दैवी भावनाओं पर सदैव हावी होने का प्रयत्न करती रहती हैं पर आर्यसमाज के हम कार्यकर्त्ता अपने जीवन-व्यवहार द्वारा ही आर्य विचारों की सत्यता सिद्ध करते रहे हैं आगे भी करते रहेंगे, आज हमें यह शपथ दुहरानी है।

सभा आर्यसमाज की शक्तियों का समन्वय-प्रतीक है, उसे आदर्श और सक्षम बनाकर हम संघर्ष क्षेत्र के लिये शक्ति का निर्माण कर सकते हैं। हम सभी सभा की उन्नति के महान् कार्य में जुट जायं यही यहां आने का सुफल होना चाहिये। जिन भाइयों ने सभा की उन्नति में यत्किञ्चिदपि सहयोग दिया है वे सभा की ओर से धन्यवाद के अधिकारी हैं। जो कुछ भी त्रुटियां हुई हों उनके लिये हम कार्यकर्त्ता ही उत्तरदायी है। आशा है सभा के प्रति अपनी निष्ठा और भावी कार्य के लिए प्रतिज्ञा को हम यहां से ताजा करके जायेंगे। साथियो, आगे बढ़ने के लिये एकता का हमें वरण करना होगा। सफलता आपके स्वागत के लिये जयमाला लिये प्रस्तुत खड़ी मिलेगी। शुभ कामनाओं के साथ हार्दिक स्वागत स्वीकार करें।

सुझाव और सम्मतियां

सभा का गौरव बढ़ेगा

पिछले दिनों मित्र में प्रकाशित श्रद्धेय श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा जी के सभा की बिखरी शक्तियों को गुरुकुल वृन्दावन में केन्द्रित करने के विचारों को लेकर विचार विमर्श चल रहा है। कुछ भाइयों ने समर्थन किया है और कुछ ने कठिनाइयों बताते हुए विरोध किया है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि इस समस्या के उज्ज्वल पक्ष को समझा जाय। मुझे तो इस सुझाव में एक नवीन जीवन, उत्साह और स्फूर्ति के दर्शन हो रहे हैं। सभा ने अपनी सांस्कृतिक विचारधारा को स्थायित्व प्रदान करने के लिये गुरुकुल के जिस पौदे को आरोपित किया था सभा के महान् कार्यकर्ता काफी समय से उसे भूल चुके हैं केवल एक खानापूरी के लिये कार्यकर्ताओं का नामाङ्कन कर दिया जाता है।

चाहिये तो यह कि हम एकबार खुले दिल से बैठकर सोचें कि गुरुकुल चलाना है या नहीं? यदि नहीं चलाना तो और बात, समय का संघर्ष अपने आप निर्णय दे देगा पर यदि चलाना है तो आज तक की उपेक्षा का हमें प्रायश्चित करना होगा और एकबार फिर सारी शक्तियों को गुरुकुल में एकत्र कर उसका नवनिर्माण करने में जुट जाना होगा। सभा का मुख्य केन्द्र बन जाने से जहाँ सभा को अनेक आर्थिक लाभ होंगे [व्ययों से बचना पड़ेगा] वहां सभाधिकारियों के सम्मुख और उनके द्वारा प्रान्तीय आर्यसमाजों के सम्मुख गुरुकुल का प्रश्न मुख्य प्रश्न बना रहेगा। मैं गुरुकुल के प्रश्न को आर्यसमाज के मुख्य एवं मूल प्रश्नों में मानता हूँ। जहां तक पूर्व और पश्चिम के क्षेत्रों का प्रश्न है, मैं अपने मित्रों से आग्रह करूँगा कि वे इन दूरियों को मन में न लावें तो अच्छा होगा। हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वप्न लेते हैं और थोड़ी सी दूरी या अन्तर पर हमारा और उनका मानने लगते हैं, समाज के कार्यों में यह भावना ही सर्वाधिक बाधक है। मैं श्रद्धेय पं० जी को इस सामयिक सुझाव के लिये हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और पूर्ण सहयोग का अभिवचन देता हूँ।

ओम्प्रकाश स्नातक वैद्य
आ० शि० सदस्य विद्या-सभा
गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन

संसार की सबसे बड़ी नहर 'राजस्थान'

राजस्थान की मरुभूमि को हराभरा करने का प्रयास

राजस्थान की मरुभूमि में स्थित हनुमानगढ़ में राजस्थान नहर की खुदाई शुरू हो गयी है। पूरी बन जाने पर यह नहर संसार की सबसे बड़ी नहर होगी। नहर में लगाने की ईंटें बनाने के लिए भट्टे बनाए जा रहे हैं और कुछ जगह इमारती काम शुरू हो गया है।

भारत के इस रेगिस्तान को हराभरा बनाने के लिए यह पहला कदम है। इस सिंचाई-योजना के पूरे होने पर खेती की उपज १० लाख टन बढ़ जावेगी। यहां विशेषकर गेहूँ, कपास और चने की खेती होगी।

राजस्थान नहर-योजना के अन्तर्गत बड़े-बड़े जलाशय, सड़क और रेल की लाइन भी बनायी जायेंगी। इस पर भी विचार किया जा रहा है कि मुख्य नहर को ऐसा बनाया जाय कि उसमें नाव भी चल सकें।

राजस्थान नहर योजना में ४०५ मील लम्बी मुख्य नहर, ४०० मील शाखा नहरें और २ हजार मील लम्बी सिंचाई की नालियां बनेंगी, जिनसे राजस्थान के १६ लाख ८४ हजार एकड़ रेगिस्तानी और सूखे इलाके की सिंचाई होगी।

केन्द्रीयकरण के संभावित विचारणीय परिणाम

आदरणीय श्री पं० हरिशङ्कर जी के बिखरी शक्तियों के केन्द्रीयकरण सम्बन्धी विचार पढ़ने के पश्चात् मैंने उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और मेरी सम्मति में यह सुझाव काफी विषम है। इससे गुरुकुल को किसी प्रकार लाभ हो जाय यह सम्भव है पर सभा के संघटन को धक्का लगने की आशा है। उत्तरप्रदेश का विस्तार और आर्यसमाज के प्रचार को दृष्टि में रखते हुए केन्द्र मे मुख्य कार्यालय आवश्यक महत्व रखता है। इसके स्थानान्तरण से पूर्व के जिलों में काफी उदासी और शिथिलता आ सकती है। सभा का आर्थिक संकट गम्भीर और विचारणीय है फिर खर्चे की सम्भावना तो वृन्दावन मे भी रहेगी। अवैतनिक सेवा का प्रश्न भी विचारणीय है। इस प्रकार की सेवा स्थान की शर्तों के साथ नहीं होनी चाहिये। समस्या के हल के लिए मेरा सुझाव है कि जिला सभाओं की शक्ति को बढ़ाया जाय और वे धीरे धीरे सभा के भारी भार को हलका करें जिससे सभा नीतिनिर्देश के मुख्य कार्य को करने में सफल हो। आशा है इन विचारों को ध्यान में रक्खा जायगा।

—सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए०
गोरखपुर

'हमारा भावी कार्य-क्रम

(श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने हाथरस अधिवेशन में प्रतिनिधियों को सम्बोन्धित करते हुए निम्न विचार प्रकट किये)

आर्य प्रतिनिधि भाई बहनों !

आर्यसमाज ने लेखनी, वाणी और चरित्र-बल यानी कर्मण्यता के आधार पर आज तक अपना अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। उसने लोकोपकारिणी अनेक सभा-संस्थाओं को जन्म दिया है। इनमें सार्वदेशिक सभा, प्रतिनिधि सभायें, उप प्रतिनिधि सभायें, गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय, अनाथालय, विधवाश्रम, प्रेस, यन्त्र आदि मुख्य हैं। जहां इन सभा संस्थाओं ने लोक-सेवा का सन्मार्ग सुझाया, वहां उनसे पद-लोलुपता और अधिकारलिप्सा के संक्रामक रोग भी पैदा हुए। इन भयंकर रोगों ने आर्य समाज के सबल, सुपुष्ट और सुन्दर शरीर में क्षय-कीटाणु पैदा करने का काम किया जिससे समाज की तीव्र गति कुछ मन्द सी दिखाई देने लगी। उत्तर प्रदेश की परिस्थिति को ही देखिए, जब यहाँ ढाई तीन सौ आर्यसमाज थे तब आर्यजनता में बड़ी प्रगति-शीलता और कर्त्तव्य निष्ठा थी, परन्तु अब एक सहस्र से अधिक आर्यसमाजों के होते हुए, वह उत्साह नहीं दिखाई देता। इस बात को मैं नहीं कहता, तथ्य और आंकड़े कह रहे हैं। अब प्रश्न होता है कि आर्य्य जनता या आर्य्यसमाजों में जीवन-जागृति पैदा करने के लिए क्या किया जाय ?

आर्य्यत्व का दायित्व

उक्त प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है कि पहले हम असली अर्थ में आर्य्य बनें। सभासद्-रजिस्टर में नाम लिखाकर केवल कुछ चन्दा दे देने का नाम 'आर्य्य' बनना नहीं है। आर्य्य बनने के लिए हमें वे सब विशेषताएं अपने जीवन में लानी होंगी, जिनका उल्लेख महर्षि दयानन्दजी ने किया है। स्वाध्याय, सत्संग, चिन्तन, परमात्म-भक्ति, कर्म-निष्ठा आदि आर्य्यत्व के लिए अनिवार्य हैं और पदलोलुपता, दलबन्दी, राग-द्वेष -दम्भ प्रगतिशीलता के प्रबल विरोधी हैं। आत्म-शुद्धि से ही आर्य्यत्व की भावना विकसित या जाग्रत होती है। हम स्वयम् वास्तविक आर्य्य बनकर ही दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं। एक समय था जब न्यायालयों में इस बात की चर्चा होती थी कि अमुक गवाह आर्य्यसमाजी है, अतः वह गलत गवाही नहीं दे सकता। हम गायत्री मन्त्र में परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु हमारी बुद्धियों को प्रेरणा दीजिए। अर्थात् हम जो कुछ सोचें-विचारें उसमें परम प्रभु परमात्मा की प्रेरणा हो। जो कुछ कहें या करें उसमें विमल बुद्धि की विशुद्ध विभूति के प्रत्यक्ष दर्शन हों। परमात्मा तो सदैव ही सत्पथ की ओर प्रेरित करता रहता है, परन्तु मनुष्य अपने स्वार्थ, दुराग्रह और पक्षपातवश जानबूझ कर उस दिव्य संकेत की उपेक्षा कर डालता है। फलतः मानव जीवन और कार्य-कलाप कलुषित हो जाता है।

आर्यसमाज की पहले से अधिक आवश्यकता

हमारे कानों में कभी-कभी आवाज आती है कि अब आर्य्यसमाज की आवश्यकता नहीं रही। हम कहते हैं, आज आर्य्यसमाज की सबसे अधिक आवश्यकता है। स्वतन्त्र भारत में विमल विचार, पवित्राचार और विशुद्ध व्यवहार की बहुत जरूरत है। आज भयंकर भ्रष्टाचार का भयावना भूत बुरी तरह भ य-भॉय करता फिरता है। अनैतिकता नर्तकी नग्न नृत्य कर रही है, धर्म्म धक्का देकर उपेक्षित किया जा रहा है। पद-लोलुपतापूर्ण प्रवृत्ति, स्वार्थ-सिद्धि के मार्ग में, कलह एवम् कालुष्य की जननी बन बैठी है। हम निराशावाद को बुरा तथा विघातक समझते हैं। मनुष्य को सदा आशावादी बने रहने की आवश्यकता है। परन्तु जो लोग अपनी वास्तविक परिस्थिति पर पर्दा डालकर, असफलता को सफलता कहना आशावाद समझते हैं, वे देश या समाज के हितैषी कदापि नहीं कहे जा सकते।

राजनीति में धर्म की स्थापना सामयिक कर्त्तव्य

जिस प्रकार आर्यसमाज ने समाज-सुधार के कार्यों में अपनी अद्भुत कार्य-पटुता एवम् कुशलता का परिचय दिया उसी प्रकार उसे वर्तमान राजनैतिक सुधार में भी अग्रसर होना पड़ेगा। नैतिक और नागरिक उत्थान के लिए आगे बढ़ना होगा। इस दिशा में अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कैसा शुभ संकेत किया है। वे लिखते हैं:—

"जहाँ धार्मिक और सामाजिक उन्नति-क्षेत्र में, भारत प्रजा को दयानन्द के पीछे चल कर ही कल्याण-मार्ग सूझा है वहाँ राजनैतिक क्षेत्र में भी भारत-वासियों को ऋषि दयानन्द के बतलाये मार्ग पर ही चलना होगा।"

सर्व-प्रथम महर्षि दयानन्द ने कहा था—"कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। . . न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

महात्मा गांधी ने धर्म्म के सुदृढ़ आधार सत्य और अहिन्सा पर सबसे अधिक बल दिया और सर्व साधारण में, तप-त्याग की पृष्ठभूमि तैयार कर देश को पराधीनता पाश से मुक्त कर दिया। महर्षि दयानन्द से पूर्ण सहमत होकर महात्मा गांधी जी ने धर्म्म और राजनीति का समन्वय किया फलतः हमारी जननी जन्मभूमि पराधीनता पाश तोड़कर मुक्त होगयी। स्वराज्य तो हो गया परन्तु 'सुराज्य' अभी नहीं हो पाया। 'सुराज्य' उस अवस्था की संज्ञा है जब सारे देश में अनुकूल मंगल मूल वातावरण होगा। कोई आर्थिक संकट न सहेगा। सबको समान सुख साधन प्राप्त होंगे। इसके लिये हमें धर्म्म के मूल सिद्धान्तों के आधार पर सदाचार और नैतिकता का डंका बजाना होगा। नागरिकता की भव्य भावना भरनी होगी। अन्धविश्वास, चाटुकारिता, सत्ता-पूजा, भ्रष्टाचारिता के रूप में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई दुष्प्रवृत्तियों का दमन करना पड़ेगा। यह सब काम आर्यसमाज को करना होगा और करना चाहिए। उसने उस समय सफलतापूर्वक कार्य किया जब सारा मार्ग कंटकाकीर्ण था—पग-पग पर निरोध और विरोध की चट्टानें खड़ी थीं। अब तो अपना राज्य है, प्रचार में कोई कठिनाई नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि आर्य समाज असली अर्थ में आर्यसमाज बनकर कार्य्य-क्षेत्र में तत्पर हो और धर्म्म के आधार पर स्वराज्य को सुराज्य का भी रूप देने में सहायक हो तथा समर्थ बने। यही उसका महान् कार्य्य-क्रम और यही परिस्थिति की सबसे बड़ी पुकार है। ★

आर्यसमाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव

नैनीताल आर्यसमाज का उत्सव २५ से २७ मई तक मनाना निश्चित हुआ है। इस अवसर पर गुरुकुल पोरबन्दर की छात्राएं भी नगरकीर्तन में सम्मिलित होंगी। उ० प्र० के राज्यपाल उत्सव का उद्घाटन करेंगे। श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० तथा अन्य आर्य विद्वानों के भाषण होंगे। इसी अवसर पर जिला हरिजन कल्याण सम्मेलन भी होगा। इस वर्ष अभी से जनता काफी पहुँच रही है। आशा है इस प्रकार का व्यापक प्रभाव रहेगा।

साहित्य-समीक्षा

शिवलिङ्ग-पूजा-रहस्य

लेखक—डा० श्रीराम आर्य। प्रकाशक वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ कासगंज। पृष्ठ-संख्या ७०, मूल्य ॥=)।

हिमंमनोहारि च दुर्लभं वचः के आधार पर आलोच्य पुस्तक के अध्ययन से सम्भव है कि कतिपय अन्धविश्वासी, स्वार्थलुब्धक कथित धर्मपरायणों के हृदयों पर गहरी चोट लगे, क्योंकि प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने स्पष्ट शब्दों में गवेषणीय विषय के मार्मिक रहस्य को सामाजिकों एवं अध्येताओं के समक्ष प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है, परन्तु लेखक ने जैसा कि भूमिका की प्रथम पंक्तियों में अपने आन्तरिक भाव प्रकट किये हैं, तदनुसार उनका अभिमत किसी को कष्ट पहुंचाने या कोई धार्मिक विवाद के द्वारा समाज के शान्त वातावरण को कलह-पूर्ण करने से नहीं है। ग्रंथकार एकमात्र कतिपय स्वार्थ साधकों द्वारा भ्रम में डाली गई भोलीभाली भारतीय जनता के सम्मुख शिवलिङ्ग पूजा-विषयक रहस्य उपस्थित कर समाज में प्रचलित विनाशकारी प्रवृत्तियों को समाप्त कर देना चाहता है।

यह भारत का अपना दुर्भाग्य था जबकि मध्यकाल के कतिपय स्वार्थियों ने अपने ऐशो आराम के निमित्त अश्लील साहित्य का सृजन कर भोली भाली जनता को अपनी कुत्सित भावनाओं का शिकार बनाया था। इन्हीं पुराणों के नाना उदाहरणों से लेखक ने गुप्तेन्द्रियक रहस्य का भण्डाफोड़ किया है। शिव एवं पार्वती के पावन अनुकरणीय चरित्र को पुराणों में किस प्रकार से विलास का विषय बनाया गया है यदि इस बात को जानने की अभिलाषा हो तो 'शिव-लिङ्ग-पूजा रहस्य" का अध्ययन पर्याप्त होगा। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने इस विषय पर पूर्ण आवश्यक प्रकाश द्वारा भारतीय धर्म भीरु जनता का सही अर्थों में पथ प्रशस्त किया है। आशा है आज का भारतीय पुस्तक का पारायण कर शिव-लिङ्ग-पूजा के नाम पर होने वाले अनर्थ को समझ सकेगा और यह अनर्थ क्यों है और कैसे हुआ इसका भी समाधान पा सकेगा। सत्य के अनुसंधान की दृष्टि से लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है। ★

सिंहावलोकन

क्या हिंदू शब्द प्राचीन है?

[श्री प० अवधविहारी लाल, वेद-पुराणतीर्थ, कलकत्ता]

हिन्दू ला के प्रसिद्ध आचार्य प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ वकील श्री गुलाबचन्द्र सरकार ने अपनी 'हिन्दूला' पुस्तक में 'हिन्दू' शब्द पर विचार करते हुए स्पष्ट लिखा है कि 'हिन्दू' शब्द का प्रचलन संस्कृत साहित्य के आधार पर नहीं हुआ। सरकार महोदय का यह अभिमत है कि मेरुतन्त्र ग्रन्थ भारत में अंग्रेजों के आने पर लिखा गया है, क्योंकि उसमें अंग्रेजों और लण्डन नगर का भी जिक्र है।

प्रश्न वाक्य

श्रीमद्भागवत के ११ स्कंध सत्रहवें अध्याय में लिखा है कि सत्ययुग में हंसवर्ण सब कोई कहावते थे और त्रेता में हंसोक्त चार वर्ण चार आश्रम का विभाग होता भया इस कारण वर्णाश्रमी कहाये। अब कोई 'हिन्दू नाम करके ख्याल करते हैं' सो 'हिन्दू' शब्द की चर्चा कोई शास्त्र में नहीं मिलती। इस हेतु यह जानना चाहते हैं कि 'हिन्दू' कहावना उचित किंवा अनुचित है।

भारत की अधिकांश जातिवादी, भाषायी एवं प्रान्तीय अनेक प्रकार की समस्याओं का मूल है हममें अपने को पृथक्-पृथक् समझने की भावना। ऋषि दयानन्द महान् थे जिन्होने अपनी दिव्य दृष्टि से इस अनेकता के भयंकर परिणामो को जान लिया था और हमें बताया था कि हम आर्य हैं, हमारा देश आर्यावर्त्त है और हमारी भाषा आर्यभाषा है। यदि भारत इस सन्देश को हृदयङ्गम कर लेता तो आज की बहुत सी समस्याएं उत्पन्न ही न हुई होतीं। इसी प्रकार की एक बात जो आज हमारे ऐतिहासिक और सामाजिक उत्पीडन का कारण बनी हुई है हिन्दू शब्द की मान्यता है। हिन्दुत्व के नाम पर लोग काफी दूर तक चले गये हैं पर कुछ मौलिक मान्यताएं हैं जिनके आधार पर हमें विचार करना होगा। यदि आर्य शब्द के महत्त्व को ऐतिहासिक साक्षियों, धार्मिक आधारों और राजनैतिक दृष्टि से स्वीकार कर लिया जाय तो सम्भव है भाषावाद, प्रान्तवाद, उत्तर दक्षिणवाद के झगड़े स्वत. समाप्त हो जायं और हम विश्व-एकता कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की ओर सफल अभियान कर सकें परन्तु सबसे पहले हमें प्रयत्न अपने घर से करना होगा। आशा है हम अपनी स्थिति पर भी विचार करेंगे। —सम्पादक

संस्कृत के वाचस्पत्य अभिधान में जो कलकत्ते में छपा था मेरुतन्त्र के उन श्लोकों को उद्धृत कर जिनमें 'हिन्दु' शब्द का उल्लेख है लिखा—"अप्रमाणमिदम्" यह प्रमाण योग्य नहीं है।

काशी के पंडितों की सम्मति

कलकत्ते के दैनिक 'भारतमित्र' के २० मई १९२५ के अंक में एक संपादकीय लेख यों निकला था—

सहयोगी 'अर्जुन' ने एक व्यवस्था-पत्र प्रकाशित किया है, जो स्वामी श्रद्धानन्द के पुराने कागजों में मिला है। सहयोगी ने लिखा है कि यह व्यवस्था पत्र सन् १८७० में प्रकाशित हुआ। इस व्यवस्था पत्र की नकल नीचे दी जाती है। काशी के तत्कालीन सर्वमान्य पंडितों के इस पर हस्ताक्षर हैं।

उत्तर वाक्य

वर्णाश्रमी देशबोधक जो हिन्दू शब्द है सो यवन सांकेतिक है। वर्णाश्रम बोधक जो हिन्दू शब्द है सो भी यवन सांकेतिक है। इस कारण हिन्दू कहावना सर्वथा अनुचित है। यह निर्णय काशी टेढ़ी नीम तले श्री महाराजाधिराज संरक्षित धर्मसभा में लोगों ने किया।

हस्ताक्षर

१—विश्वनाथ शर्मा, २—बाबूनाथ शर्मा, ३—गृहमुनि शर्मा, ४—सवन-मुनि शर्मा, ५—प्यारे शर्मा, ६—हरिहर दत्त शर्मा, ७—रामशरण शर्मा, ८—महताब नारायण शर्मा, ९—हर्षनाथ शर्मा, १०—भानुनारायण शर्मा, ११—आदिनाथ शर्मा, १२—नन्दीपति शर्मा, १३—श्यामलाल शर्मा, १४—प्रभुनाथ शर्मा, १५—हरिहर शर्मा, १६—द्विवेदी लाल शर्मा, १७ ताराचरण शर्मा, १८—राधामोहन शर्मा, १९—नवीन नारायण शर्मा, २०—कैलास शर्मा २१- कालिका-प्रसाद शर्मा, २२—मनमोहन शर्मा, २३—स्वच्छ शर्मा, २४—गूदड़ शर्मा, २५—रघुनन्दन शर्मा, २६—बच्चू शर्मा, २७—कीर्तिनाथ शर्मा, २८—लाल शर्मा, २९—द्वारकानाथ शर्मा, ३०—राजाराम शर्मा, ३१—बालशास्त्री शर्मा, ३२—सखाराम भट्ट, ३३—वासुदेव शास्त्री, ३४—चन्द्रशेखर शर्मा, ३५—देवदत्त शास्त्री, ३६—रामपति शर्मा, ३७—श्यामाचरण शर्मा, ३८—जगेश्वर शर्मा, ३९—अम्बिकादत्त शर्मा, ४०—चरणजीत शर्मा, ४१—दुर्गाप्रसाद शर्मा, ४२—रघुनाथप्रसाद, ४३—बालाशास्त्री।

काफिर को हिन्दू कहत
यवन स्वभाषा मांहि।
ताते हिन्दू नाम यह
उचित कहे सो नाहि॥

४४—श्री दुर्गादत्त शास्त्री—

आर्यों के बराबर भारतवर्ष में आज हिन्दू नाम से अभिहित होने लगे हैं। इस नाम से हमें बड़ा प्रेम हो गया है, इसलिए यदि हमें यह कहा जाता है कि तुम्हारा वास्तविक नाम हिन्दू नहीं है तो हममें से बहुतों को बड़ा क्रोध भी हो जाता है। परन्तु इतना प्रेम इस नाम से हमें उसी प्रकार हो गया है, जिस प्रकार एक पुराने कैदी को जेल-खाने से या उसके लोहे के पात्र आदि से हो जाता है, जिसको वह बड़े प्रेम से चमका कर मांजता है। अमरीका में जब अब्राहम लिंकन के शुभ प्रयास से गुलामी की प्रथा का उच्छेद हुआ तो बहुत से गुलाम बड़े अधीर हो गये थे। वे गुलामी छोड़ने को राजी नहीं होते थे। उसी प्रकार जब महर्षि दयानन्द ने हमें सुनाया कि 'तुम्हारा नाम आर्य है तुम्हारा समाज आर्यसमाज है, तो लोगों ने बड़ा बुरा मनाया।

अब आर्य नाम से हिन्दुओ को चिढ़ तो नहीं रह गयी है परन्तु 'हिन्दू' नाम से प्रेम पूर्ववत् बना है। बना रहे उसमें बहुत हानि तो नहीं है, परन्तु उसके प्रेम में उस नाम को प्राचीन सिद्ध करने का प्रयत्न बहुतों के अन्दर जो अब तक दीख पड़ता है उसमें इतिहास उनका साथ नहीं देगा, इसमें सन्देह नहीं।

यह निश्चित है कि चाहे किसी ने भी हमें हिन्दू कहना प्रारम्भ किया है, हमारे पूर्वजों ने अपने आप अपना नाम हिन्दू नहीं रखा था। इस तथ्य को हिन्दुत्व के अभिमानी कट्टर से कट्टर व्यक्ति भी स्वीकार करते हैं। उनका कहना है कि हिन्दू 'सिन्धु' शब्द का अपभ्रंश है और इसलिए चल पड़ा कि स्वदेशी लोग (पारस्य देश निवासी आदि) 'स' का उच्चारण 'ह' करते हैं।

कुछ हिन्दू शब्द के पक्षपाती आज के पंडितम्मन्य 'हिन्दू' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत से हीन दोष या हीनं दूषयति इत्यादि प्रकार से करते हैं। यह क्लिष्ट कल्पना है। इस प्रकार के लोग तो "मिया" "मुलुक" और मौलाना को भी संस्कृत व्याकरण से सिद्ध कर सकते हैं।

उणादिक प्रत्यय किया डिया, मुलुक डोलना। 'मा' धातु से साध लिया 'मिया' 'मुलुक' मोलना॥

व्याकरण की बात छोड़िये। इसका प्रयोग हमारे प्राचीन साहित्य में नहीं हुआ है, यह निर्विवाद है। वेदों में 'ब्राह्मणो' मे वेदांगों और दर्शन शास्त्रों में, उपनिषदो में, स्मृतियों में यहाँ तक कि पुराणो में भी 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग देखने में नहीं आता है। तुलसीदास जी की रामायण में भी 'हिन्दू' नहीं आर्य शब्द तो है।

अन्य विद्वानों की साक्षी

श्रीयुत रायबहादुर पण्डित गौरी शंकर हीराचन्द ओझा ने जो राजपूताने का इतिहास लिखा है उसके खण्ड १ पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी है—

इस पुस्तक में 'आर्य' शब्द का प्रयोग देखकर पाठक यह अनुमान न करें कि यह शब्द आर्यसमाज के अनुयायियों के लिए प्रयोग किया गया है। आज कल 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग होता है, परन्तु उसके स्थान में प्राचीन काल में 'आर्य शब्द का प्रयोग होता था।'

पण्डित गोविन्द नारायण मिश्र द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति, अपने सभापति पद से दिये भाषण में लिखते हैं—

'इसमें कोई सन्देह नहीं, एक फारसी भाषा में गुलाम या काले रंग के अर्थ में प्रयुक्त होने के अतिरिक्त हिन्दू शब्द का गौरव वाचक अर्थ से सम्बन्ध मात्र नहीं है। इधर प्राचीन शास्त्रों में 'वेद' या मनु आदि 'स्मृति' पुराण, उपपुराण आदि ग्रन्थों में उक्त 'हिन्दू' शब्द का कहीं नामोल्लेख नहीं दीखता।'

यवन आये, हमको 'हिन्दू' कहने लगे 'गुलाम', चोर, काला, काफिर यही अर्थ हिन्दू का फारसी भाषा के कोषों में है। पर हम प्रसन्न हुए इस नाम से। अंग्रेज आये हमारी भाषा का नाम दिया 'वर्नाक्यूलर' वर्ना कहते हैं लाटिन भाषा में गुलाम के बच्चे को! वर्नाकुलर का अर्थ हुआ गुलाम के बच्चों की भाषा।

हमको इस नाम से भी बड़ी प्रसन्नता थी। हमने यह विचारने की कोशिश नहीं की थी कि 'अंग्रेज अपनी भाषा को

[शेष पृष्ठ १२ पर]

सांख्य में ईश्वरवाद

[श्री प्रो० वेदप्रकाश एम०ए० रिसर्चस्कालर]

दर्शन के सम्बन्ध में अपूर्ण ज्ञान रखने के कारण प्राय भारतीय दर्शनो में एक विरोधाभास मान लिया जाता है पर ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम उनके पारस्परिक समन्वय की भावना का विकास किया। सांख्य दर्शन के सम्बन्ध में अनीश्वरवादी होने का आरोप भी दर्शनों के स्वतन्त्र अस्तित्व को मानकर ही किया जाने लगा परन्तु समन्वय और गवेषणा की भावना से सांख्य के महत्त्व की रक्षा की और उसे ईश्वरवादी सिद्ध कर दर्शनों की एकता को स्थापित किया। विद्वान् लेखक ने प्रस्तुत विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार प्रकट किये हैं। —सम्पादक

भारतीय दर्शन-साहित्य में सांख्य दर्शन का अपना विशिष्ट स्थान है, इसमें सन्निहित ज्ञान के कारण दार्शनिक साहित्य में स्थल स्थल पर यह देखने में आता है कि सांख्य के समान दूसरा कोई दर्शन नहीं। महर्षि कपिल द्वारा रचा गया यह शास्त्र वैदिक दर्शनों में गिना जाता है। अन्य वैदिक दर्शनों की ही तरह यह भी वेद को स्वत प्रमाण मानता है। यह ठीक है कि वेद में ईश्वर का ज्ञान भरा पड़ा है उसका प्रत्येक मन्त्र ईश्वर का या उसकी शक्तियों का जो कि सृष्टि में क्रियाशील हैं वर्णन करता है। इस पर भी यह माना जाता है कि सांख्य दर्शन वेद को स्वत प्रमाण मानते हुए भी ईश्वर की सत्ता को नहीं मानता। या हम यों कहें कि वैदिक दर्शनों में सांख्य नास्तिक दर्शन है। सांख्य को नास्तिक मानने पर इस दर्शन की सारी बातें निस्सार सी प्रतीत होने लगती हैं और इसे आसानी से तर्क के प्रबल शिकजे में जकड़ा जा सकता है जैसा कि शंकराचार्य जी ने किया भी। जगद्गुरु शंकराचार्य जी का इस दर्शन के विरुद्ध प्रबल आरोप यही है कि जड़ प्रधान व क्रिया रहित पुरुष सृष्टि उत्पत्ति का कारण नही हो सकते। इन सब बातों को देखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि इस बात की खोज की जाय कि इस दर्शन में ऐसा कौन सा तत्त्व है जिसके कारण यह वैदिक दर्शन है? क्या इसमें कहीं ईश्वर ही का प्रतिपादन गुप्तरूप में तो नहीं मिलता?

समस्या की गम्भीरता को देखते हुए आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द जी ने इस प्रश्न को फिर से उठाया। उनका मत है कि सांख्य दर्शन नास्तिक नहीं बल्कि सांख्य सूत्रों में अनेक स्थलो पर ऐसे सूत्र पाये जाते हैं जिनमें इस दर्शन का ईश्वरवादी होना पाया जाता है। स्वामी दयानन्द जी का यह मत तथ्यहीन नहीं मालूम पड़ता। वैदिक दर्शन साहित्य में अनेक स्थलों पर यह मिलता है कि सांख्य महान् दार्शनिक थे, ज्ञानी थे। महाभारत के शान्ति पर्व में एक स्थान पर आता है कि इस सृष्टि का सारा ज्ञान सांख्यों से प्राप्त हुआ है, [ज्ञानं च लोके यदिहास्ति किंचित सांख्य गतं तच्च महन्महात्मन्। म० शा० ३०१।१०९]। महाभारत ही नहीं बल्कि भगवद्गीता में योगीराज श्री कृष्ण भी सांख्य के रचयिता महर्षि कपिल को महानतम् योगियों में मानते थे। 'सिद्धाना कपिलो मुनि' गी० १०।२६ अर्थात् योगियों में मैं कपिल के समान हूँ, गीता के इस पद में महर्षि कपिल की योग्यता का परिचय मिलता है। जो व्यक्ति योग को जानते हैं, वह जानते हैं कि योग मे अन्तिम स्थिति असम्प्रज्ञात समाधि की होती है जिसमें योगी परम प्रभु का दर्शन लाभ करता है। श्रीकृष्ण योग की इस महानतम् अवस्था को प्राप्त थे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं किया जा सकता। अब जबकि ब्रह्म का ज्ञाता योग में कपिल को अपने समान बताता है, तब हमे यह मानने मे कोई हिचकिचाहट नहीं रह जाती कि महर्षि कपिल भी ब्रह्म ज्ञानी थे। इसके अतिरिक्त यह भी विचारणीय है कि यदि कपिल ब्रह्मज्ञानी नहीं थे तब कृष्णचन्द्रजी को क्या आवश्यकता थी कि वह अपनी योग विभूति के समानता मे कपिल को ही लाते? क्या उपनिषदो का कोई भी ऋषि योग के अन्तिम लक्ष्य तक नहीं पहुँचा था? इससे यही प्रतीत होता है कि महर्षि कपिल किसी प्राचीन ऋषि या सिद्ध से कम नहीं थे बल्कि योग मे सर्वाङ्ग पम्पूर्ण थे और श्रीकृष्ण ने उन्हें ही अपने समकक्ष चुना। इससे यह प्रतीत होता है कि कपिल वैदिक ऋषियों में महानतम् थे। महाभारत के शान्ति पर्व में एक स्थल पर प्रश्न उठाया जाता है कि यह कपिल कौन थे? तो वर्णन पाया जाता है कि ये ब्रह्मदेव के सात मानसपुत्र सनत्कुमार व सनन्दन आदि में एक थे। इन्हें जन्म से ही ज्ञान प्राप्त था। उपनिषदों में भी अनेक स्थलों पर कपिल को महान् ऋषि के रूप में याद किया गया है। उपर्युक्त स्थलों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सारे वैदिक ऋषि, महर्षि व विद्वान् महर्षि कपिल की महानतम् स्थिति के बारे में निश्चिन्त थे जो कि ब्राह्मी स्थिति होती है। इससे यही प्रतीत होता है कि प्राचीन ऋषि कपिल को नास्तिक नहीं बल्कि आस्तिक मानते थे। पाश्चात्य विद्वान् फ्रेन्कलिन् राडगस्टन कहते हैं कि महाकाव्यों व संस्कृत की अन्य प्राचीन पुस्तको से मुझे अब विश्वास हो गया है कि उन शास्त्रो में एक भी स्थल ऐसा नहीं जो सांख्य का ईश्वर या ब्रह्म में अविश्वास प्रतिपादित करता हो। (American Journal of Phil XIVIP 8)

आधुनिक भारतीय दार्शनिक डा० एस० राधाकृष्णन् ने यही बात अपने भारतीय दर्शन' में कही है कि 'यह सम्भव प्रतीत होता है कि सांख्य प्रारम्भ में यथार्थ ईश्वरवादी रहा हो जो कि विशिष्टाद्वैत के समीप है' (I P \2 P 2)2)

सिद्धांत विमर्श

वैदिक साहित्य का निष्पक्ष अवलोकन करने से भी यही प्रतीत होता है कि सांख्य दर्शन नास्तिक नहीं बल्कि आस्तिक है। यह ईश्वरवाद किस प्रकार का है अर्थात् यह विशिष्टाद्वैत के समान है या द्वैत के या अन्य किसी और वाद के यह प्रश्न इतना मुख्य नहीं जितना कि यह देखना कि इसमें ईश्वर का प्रतिपादन है या नहीं है। ईश्वर के स्वरूप का प्रश्न किसी अन्य लेख मे उठायेंगे। सांख्य मे नास्तिकता का अध्यारोप करने की प्रवृत्ति मध्यकाल से चली है जैसा कि संस्कृत का दार्शनिक साहित्य बताता है। इस क्रिया में देखने पर पता चलता है कि दो कारण मुख्य हैं। एक तो सांख्यकारिका, जिसके रचयिता ईश्वर कृष्ण थे, दूसरे जगद्गुरु शंकराचार्य जी। सांख्यकारिका में ईश्वर कृष्ण ने सांख्य दर्शन का व्याख्यान कुछ इस प्रकार से किया है जिससे सांख्य का नास्तिक होना प्रतीत होता है, इस पर भी यह भी तथ्य है कि सांख्यकारिका की किसी भी कारिका में नास्तिकता का पक्ष पोषण नहीं किया गया है। आधुनिक विद्वान् सांख्य-कारिका को सांख्यसूत्रों से अधिक प्राचीन मानकर सूत्रों को दृष्टि से ओझल कर देते हैं। सांख्यकारिका का नाम ही इस बात का द्योतक है कि यह सूत्रों पर लिखी गयी कारिकाए हैं इसलिए हमें यदि सांख्य का मत जानना है तो सूत्रो पर चलना चाहिए। वर्तमान सांख्य सूत्र कपिल के रचे हैं या नही इस बात पर भी बड़ा विवाद है, परन्तु यह निर्विवाद है कि कपिल ने सूत्र रचे थे और हम यह मानते हैं कि वह सारे के सारे सूत्र आज उपलब्ध नहीं। भागवत मे एक स्थल पर आता है कि सांख्य शास्त्र का एक बड़ा भाग काल के गाल मे नष्ट हो गया है। स्वयं विज्ञान भिक्षु इसको स्वीकार करते है कि कपिल द्वारा रचे गये अनेको सूत्र समय के प्रवाह मे नष्ट हो गये हैं। अब जो कुछ भी सूत्र हमारे पास उपलब्ध हैं हम उन्ही के आधार पर इस शास्त्र की परीक्षा कर सकते हैं और प्राचीन ग्रन्थो में आये यत्र तत्र स्थलो की सहायता से इसकी रूपरेखा बना सकते है।

सांख्य को अनीश्वरवादी मानने में दूसरा बड़ा कारण जगद्गुरु शंकराचार्य जी है। आचार्य के अद्वैतवाद का विरोध प्राय सभी वैदिक दर्शन करते हैं। न्याय वैशेषिक, सांख्य योग व पूर्व मीमांसा और कुछ विद्वानों के अनुसार तो ब्रह्मसूत्र भी शंकराचार्य के विवर्तवाद की पुष्टि नहीं करते। इन वैदिक दर्शनो में न्याय, वैशेषिक व योग तो स्पष्ट द्वैतवादी हैं तथा पूर्व मीमांसा भी अद्वैत के विरुद्ध है। इसलिए शंकराचार्य जी के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह इस दर्शन का खण्डन करें। उन्होने अन्यो के साथ साथ सांख्य दर्शन का इस आधार पर खण्डन किया कि सांख्य ईश्वर को नहीं मानता, इसलिए वेद विरुद्ध है तथा केवल जड़ प्रधान व क्रियाहीन पुरुष से सृष्टि का उपक्रम नहीं रचा जा सकता। अगर सांख्य शास्त्र मे ईश्वर को मान लिया जाता है तब अद्वैताचार्य द्वारा इसके विरुद्ध लगाये आरोपों का कोई अर्थ नहीं रह जाता, और फिर अद्वैत-वाद में कोई तथ्य नहीं रहता, अत शंकराचार्य जी ने अपनी आलोचनाओ का मुख्य निशाना सांख्य को बनाया।

इसके अतिरिक्त एक प्रश्न सहज ही मस्तिष्क में उठता है कि यदि सांख्य मे कही भी अनीश्वरवाद का प्रतिपादन नहीं तब क्योंकर दार्शनिको के मस्तिष्क में यह बात पैदा हुई कि सांख्य अनीश्वरवादी है। खोज करने पर पता चलता है कि 'ईश्वरासिद्धे' (सा०सू०

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आत्मिक उन्नति के लक्ष्य की पूर्ति के लिए

दयानन्द योगाश्रम

(श्री कन्हैयालाल जी मुमुक्षु, रामपुर)

[आर्यसमाज भारतीय धरोहर का संरक्षक है। योग-विद्या भारतीय ऋषियों की मानवता को अनुपम भेंट है। इस विद्या के प्रचार और प्रसार के लिये महर्षि ने अपने क्रियात्मक योगी जीवन द्वारा प्रेरणा की है। प्रत्येक व्यक्ति योग की साधना करे यह हमारा सामाजिक वातावरण होना चाहिए। योग के भारतीय स्वरूप के प्रचार के लिये योगाश्रम स्थापित करना आर्यसमाज का दायित्व है। दयानन्द योगाश्रम की योजना प्रेरणाप्रद, सामयिक और विचारणीय है। —सम्पादक

ईश्वर के अस्तित्व पर सार्वभौमिक सिद्धान्त

१६ वीं शताब्दी में सभ्य संसार ने जब आत्मसत्ता का बहिष्कार किया तो बड़े-बड़े विद्वान भी मानने लगे कि ज्ञान का स्रोत केवल इन्द्रियां ही है अर्थात् सब ज्ञान इन्द्रिय-जन्य ही हैं। परन्तु २० वीं शताब्दी में एकदम आत्मक्रांति उत्पन्न हुई। अमरिका के प्रसिद्ध Philosopher दार्शनिक जेन्स ने लिखा कि कोई नहीं कह सकता कि इन्द्रियों के अतिरिक्त हमें ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता। मार्कोनी से पूछा गया कि तुमने किन परीक्षाओं से बेतार के तार का पता लगाया। उसने कहा कि मैंने कोई परीक्षा नहीं किया, यह विचार स्वभावतः मेरे मन में उठे, मैं नहीं जानता कि इन विचारों का स्रोत अथवा केन्द्र क्या है। इसी प्रकार भारतवर्ष की विमल विभूति महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती को एक चूहे से ही नहीं वरन् उनकी बहिन और उनके चाचा की मृत्यु से एक विचित्र ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ कि इस विचित्र और अनन्त सृष्टि की निर्मात्री कोई पृथक् ज्ञान-सत्ता है। इस सत्ता के अन्वेषण और साक्षात्कार के लिए सारे संसार के वैज्ञानिकों और आत्मज्ञानियों ने योग के नाना रूपों से बड़े-बड़े प्रयत्न किए हैं। परन्तु इस अमूल्य अध्यात्म योगविद्या को प्रसारित करने वाले महर्षि पातञ्जलि तथा विश्व वन्दनीय गीताकार महात्मा कृष्ण इसी भारत में उत्पन्न हुए। अतः हम कह सकते हैं कि भारतवर्ष से ही संसार को अध्यात्म और योगविद्या के महत्त्व का प्रकाश मिला। श्री L. C. Beekett की इङ्गलैंड में प्रकाशित हुई पुस्तक The World Breath में जो भौतिक विज्ञान के सर्वमान्य पण्डित Arthur Eddiughtyas को समर्पित की गई है, लिखा है कि योग में हिन्दू लोग सहस्रों वर्ष पूर्व योरोपियन लोगों से बाजी मार चुके हैं, और अब तक भी जितनी निर्मल बुद्धि हिन्दुओं की है उतनी किसी की नहीं, फिर भी वे मैत्रेयी उपनिषद् का प्रमाण देकर लिखते हैं कि प्राण विद्या ही सब सिद्धान्तों का मूल है। और प्राणायाम द्वारा इन्द्रियों को वशीभूत करना ही बुद्धि को निर्मल बनाने और परिमार्जित करने का एक मात्र सर्वोत्तम साधन है। यह बुद्धि के विकाश के अनुपम साधन पातञ्जलि मुनि ने ही बताये हैं।

पातञ्जलि योगसूत्र के अनुसार यम नियमोपासन प्राणायाम-प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि। यो० पाद २ सू० ३१ यम १, नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८। इन आठ प्रकार के साधनों द्वारा योगी महात्मा मानव जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर बढते रहे हैं। १ यम ५ प्रकार के हैं। अहिन्सा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहा यमाः। १ अहिन्सा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह।

इन में से यम-नियम तो समाज के आचार नियमों में भी सम्मिलित हो चुके है। शेष भी प्रयत्न साध्य हैं। यदि हम चरम लक्ष्य मोक्ष की ओर मानवता की विचार-धारा मोड़ना चाहते हैं तो भारतीय योग विद्या के प्रचार, प्रसार और अनुसन्धान की दिशा में हमें अपनी उदासीनता त्यागनी होगी। हमारा यह आग्रह इसलिए भी अधिक है कि संसार की बुद्धि दूषित हो रही है उसको पवित्र करने के लिये योग ही एक आदर्श साधन है। क्योंकि एक योगी जब समाधि अवस्था को प्राप्त होता है तब उसकी बुद्धि विमल होती है। यदि समुदाय की बुद्धि विमल हो जाय तो समाज आदर्श बन जायगा। योग दर्शन के अनुसार.—

८ समाधि का अर्थ है:—तदेवार्थमात्र निर्भासं स्वरूप शून्य मिव समाधिः उसी [ध्यान] में जब अर्थ [ध्येय] मात्र का प्रकाश रह जावे और [ध्याता] अपने रूप से शून्य सा हो जावे तो उसे समाधि [कहेंगे]।

समाधि का आनन्द

समाधि निर्धूतमलस्य चेतसो, निवेशि तस्यात्मनि यत्सुखं भवेत।
न शक्यते वर्णयितु गिरातदा, स्वयन्तदन्तः करणेन गृह्यते॥

जिस पुरुष के समाधि योग से अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं। आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिसने लगाया है। उस सुख को जो परमात्मा के योग का सुख है वाणी से कहा नहीं जा सकता। उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। इस परमानन्द को जीव मोक्ष की अवधि [३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष] तक भोगता है। जिसके सामने सांसारिक सुख क्षणिक और मृग मरीचिका के तुल्य ही हैं। इस अमूल्य और अत्यावश्यक विषय का संकेत महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन स्वर्णिम शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश में बन्ध मोक्ष विषय में किया है वह निम्नलिखित है।

चाहे निन्दा स्तुति हानि लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष शोक को छोड़ मुक्ति के साधनों में सदा लगे रहना। जैसे क्षुधा तृषातुर को सिवाय अन्न जल के कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे बिना मुक्ति के साधन और मुक्ति के दूसरे में प्रीति न होना।

सत्यार्थ प्रकाश बन्ध मोक्ष विषय: —यही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। इसको मनसा, वाचा, कर्मणा, क्रियात्मक रूप में लाकर ही मानव महा घृणित असंख्य नीच भ्रमो योनियों से बचकर परान्त काल तक अपने प्यारे प्रभु की गोद में रहकर परमानन्द का भोग कर सकता है।

इतना ही नहीं, महर्षि ने अपने बनाये आर्यसमाज के छठे नियम में लिखा कि "संसार का उपकार करना ही इस समाज का मुख्योद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, इसमें शारीरिक और सामाजिक उन्नति करने में आर्यसमाज ने ऋषि की आज्ञा और अपने कर्त्तव्य का पालन किया। फलस्वरूप आज संसार आर्यसमाज और [आर्य समाजी न बन कर भी] आर्यसमाज के सिद्धान्तों की ओर श्रद्धा के साथ आकर्षित हो रहा है। परन्तु आत्मिक उन्नति रूप अध्यात्म और योगवाद की आज के भौतिकवाद की चकाचौंध से भूले हुए संसार को परम आवश्यकता है। इसलिये महर्षि की अन्तरात्मा की ध्वनि उपर्युक्त शब्दों में हमें यह प्रबल आदेश कर रही है कि जिज्ञासु मुमुक्षु, मोक्ष के पथिकों के लिये एक निःशुल्क शिक्षणालय योगाश्रम अवश्य खोला जाय। यही ऋषि का सच्चा स्मारक होगा। आस्तिकता का आदर्श योग दर्शन के विभूतिपाद और समाधि द्वारा परमानन्द की प्राप्ति का सौभाग्य इसी आश्रम को प्राप्त होगा।

अतः धनी विद्वान योगी महात्माओं से विनम्र निवेदन है कि योगविद्या के प्रसार के लिए योगाश्रम खोला जाय। इस आश्रम को चलानेके लिए जो भाई जिस प्रकार का सहयोग दे सकें देकर ऋषि ऋण से मुक्त हो पुण्य और यश के भागी बनें। इससे आत्मशक्ति का विकास होगा। संसार का कल्याण होगा। इसकी आशाओं का संकेत इस पद्य में है।

वह अध्यात्म गङ्गा यहाँ फिर बहेगी,
जो संसार की ताप माला हरेगी
कहेगा फिर एक स्वर में संसार सारा,
है गुरु देव भारत ने फिर से उबारा॥

सांख्य में ईश्वरवाद

(पृष्ठ ७ का शेष)

६२ अ० १) ही इस भ्रम की जड़ है। इस सूत्र मे स्पष्ट कहा है कि ईश्वर असिद्ध है। परन्तु यदि इस सूत्र को प्रसंग में पढ़ा जाय तब अर्थ कुछ और ही निकलते हैं। प्रसंग प्रत्यक्ष प्रमाण का चल रहा है महर्षि कपिल सांख्य सूत्र अ० १ सू० ८९ में प्रत्यक्ष का लक्षण बताते हैं 'यत्सम्बद्धम् सत् तदाकारोल्लेखि विज्ञानं तत्प्रत्यक्षम्' अर्थात् विषय का इन्द्रिय के साथ सम्बन्ध होने पर विषय के आकार को प्रतीत कराने वाला जो ज्ञान होता है वह प्रत्यक्ष है। यहाँ पर शंका हो सकती है कि योगियों को तो विषय का इन्द्रिय के साथ बिना सम्बन्ध के ही ज्ञान हो जाता है इसलिए इनका ज्ञान विषय का इन्द्रिय के साथ सम्बन्ध न होने से प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता। इसका उत्तर अगले सूत्र में देते हैं कि योगिनामबाह्य प्रत्यक्षत्वात् न दोषः। [अ० १ सू० ९०] अर्थात् योगियों का प्रत्यक्ष बाह्य प्रत्यक्ष नहीं होता इसलिए यह दोष इनमें नहीं घटता। योगियों का प्रत्यक्ष तो उनकी अपनी अन्दर की उत्पन्न की गई शक्ति से होता है। [क्रमशः]

आत्म निरीक्षण का प्रश्न—

आर्यसमाज की उन्नति के लिए योग्य व्यक्ति आगे बढ़ें

[श्री शिवचन्द्र भूतपूर्व उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा]

वेद की "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आदेश के आधार पर महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य समस्त संसार का उपकार करना बताया था। महर्षि दयानन्द के निर्वाण के पश्चात् आर्यसमाज ने उस समय अपने परिमित साधनों तथा देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक विशेष ढंग से देश के धार्मिक, सामाजिक तथा शिक्षा-क्षेत्रों में कार्य करना प्रारम्भ किया और उन क्षेत्रों में उसे कुछ सीमा तक सफलता भी प्राप्त हुई और उस सीमा तक आर्यसमाज की उन्नति हुई। परन्तु कुछ समय पश्चात् ही यह उन्नति रुक गई, जिसे समय-समय पर भाषणों तथा लेखों द्वारा उसके स्वयं जिम्मेवार लोग ही प्रकट करने लगे हैं।

जो आर्यसमाज समस्त विश्व को आर्य बनाने के गीत गाया करता था, वह अपने देशवासियों तथा स्वयं अपने सदस्यों को भी आर्य न बना सका! आर्यसमाज के सदस्यों, उसके प्रेमियों तथा उससे हित रखने वालों की जिह्वा पर यह शब्द आ गये कि "आर्यसमाज शिथिल हो गया"। गैर लोग कहने लगे हैं कि 'अब आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं।"

आर्यसमाज ने प्रचार कार्य का जो ढंग आरम्भ में धारण किया, उसके परिवर्तन की आवश्यकता है या नहीं—इस बात पर कभी भी गम्भीरतापूर्वक विचार कर उस निर्णय को कार्य रूप में परिणत नहीं किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज न तो उच्चकोटि के शिक्षित वर्ग, न युवक वर्ग और न धनाढ्य वर्ग को अपनी ओर आकर्षित कर सका। आर्यसमाज जनसाधारण का देश व्यापी आंदोलन भी नहीं बन सका। आर्यसमाज के बाहर बहुत से शिक्षित तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति "आर्यसमाज" तथा "आर्यसमाजी" शब्दों को सुनकर नाक-भौं सिकोड़ लेते हैं। विदेशों का तो कहना ही क्या, आज अपने देश में ही बहुत ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने न महर्षि दयानन्द का नाम सुना है और न आर्यसमाज का! राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति तथा अन्य समस्याओं में आर्यसमाज का कोई स्थान नहीं! महर्षि दयानन्द के पश्चात् वेद के प्रामाणिक भाष्य का कार्य हुआ ही नहीं।

यदि देश में सच्चे अर्थों में चालीस लाख आर्यों—ईश्वर पुत्रों, श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा और प्रगतिशील व्यक्तियों का संगठन होता तो आज इस स्वतन्त्र कहे जाने वाले देश का इतना भयंकर मानसिक और नैतिक अधःपतन इस तीव्र गति से निरन्तर होता हुआ न चला जाता। इस अधःपतन का जितना उत्तरदायित्व आर्यसमाज पर है, उतना अन्य किसी संस्था पर नहीं, चूंकि आर्यसमाज की तरह अन्य किसी भी संस्था की नींव में आस्तिकता और सदाचार का व्यवहार अनिवार्य नहीं है! परन्तु आर्यसमाज ने इस ओर भी अपना कोई कर्त्तव्य पालन नहीं किया!

आर्यसमाज की गतिविधि से उसके संन्यासी निराश, उसके विद्वान् निराश, उसके उपदेशक और प्रचारक निराश, उसके अधिकारी, कार्यकर्त्ता तथा शुभचिंतक निराश! ज्यों-ज्यों समय बीतता जाता है, यह निराशा बढ़ती जा रही है और लोगों की आर्यसमाज में रुचि कम होती जा रही है।

यदि आज हम अपनी इस शोचनीय और दयनीय अवस्था पर विचार करें तो इस परिणाम पर पहुँचेंगे कि इस सबका मुख्य कारण है कि उच्च चारित्र्य का ह्रास। इसमें पार्टीबाजी, दलबन्दी, पदलोलुपता, स्वार्थ, अन्य योग्य व्यक्तियों को आगे न आने देना आदि की प्रवृत्तियां संव्याप्त हैं। वार्षिक निर्वाचनों के अवसर पर लोग अपनी पार्टियों की सत्ता सुरक्षित रखने में ही गौरव समझते हैं। आर्यसमाज की गतिविधि और उसकी उन्नति की किसी को तनिक भी चिन्ता नहीं होती।

जो आर्यसमाज दूसरों की शुद्धि करता है उसे अब स्वयं अपनी भी शुद्धि की आवश्यकता है। आर्यसमाज की शुद्धि वे ही आर्य कर सकते हैं जो चरित्र, योग्यता, निःस्वार्थता, हृदय-विशालता, दूरदर्शिता, सेवाभाव, मौलिकता, नई कल्पना, नया जीवन, नई उमंगें, नई आशाओं और नई प्रेरणाओं से पूर्ण हों। परन्तु ऐसे लोग हमसे दूर रहना चाहते हैं। उन्हें आर्यसमाज की ओर आकृष्ट कर आर्यसमाज में नवजीवन लाना होगा। महर्षि दयानन्द के तो समस्त जीवन से संघर्ष का पाठ पढ़ने को मिलता है।

जब स्वार्थी, पदलोलुप और अन्य शिक्षित लोग अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये संघर्ष कर आर्यसमाज में संकुचित भावनाओं को पनपाते हैं, तो फिर वहां सार्वभौमिकता, सर्वतन्त्रता और विशालता पनपाने के लिये निःस्वार्थी तथा योग्य व्यक्तियों को उनके साथ संघर्ष करना ही होगा।

आर्यसमाज की उन्नति के लिये हमें सदाचारी, अच्छे शिक्षित, आर्ष सिद्धान्तों को दूसरों को समझाने तथा उन्हें प्रभावित करने की योग्यता रखने वाले, निर्भीक साहसी, निष्पक्ष, उत्साही, लगन वाले, स्कूल कालेजों, विश्वविद्यालयों, उच्चकोटि के शिक्षित वर्ग, राजदूतों, विदेशी यात्रियों, शासकों, उच्च अधिकारियों के सम्मुख वेद के आधार पर महर्षि दयानन्द का दार्शनिक दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने सम्बन्धी विचार योग्यता के साथ रख सके ऐसी योग्यता वाले व्यक्तियों का विकास करना होगा। पार्टीबाजी, दलबन्दी, पद-लोलुपता, संकुचित मनोवृत्ति, स्वार्थ आदि दूषित भावनायें समाज से दूर भगानी होंगी। आर्यसमाज के उद्देश्यों की सिद्धि के लिये पर्याप्त समय दे सकें और यात्रा कर सकें। रचनात्मक कार्य करने की योग्यता तथा अपार धुन हो, प्रेस कान्फ्रेंस के सम्मुख बड़ी योग्यता के ढंग से अपने विचार रख सकें, ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहन देना होगा।

यदि इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाता रहे तो आर्यसमाज में उच्च व्यक्तित्व, चारित्र्य और नेतृत्व का वह मानदण्ड कायम रक्खा जा सकता है जिससे देश हमारे पथ-प्रदर्शन का इच्छुक बना रहे। मार्ग कठिन है पर उद्देश्य महान् है। महर्षि का तपस्वी जीवन हमें प्रेरणा दे रहा है—पहले आत्म-सुधार करो फिर समाज-सुधार।

आवश्यक सूचना—गणेश स्मृति-ग्रन्थ

अमर शहीद गणेशशङ्कर जी विद्यार्थी के विषय में लिखे गये संस्मरणों का संग्रह कालपी (झांसी) के हिन्दी भवन द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। तदर्थ उत्तर प्रदेश की सरकार ने कृपा कर दो हजार रुपये की सहायता भवन को प्रदान की थी।

उक्त स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है और शीघ्र ही मैटर प्रेस को दे दिया जायेगा। यदि किसी महानुभाव के पास श्रद्धेय गणेशजी के कुछ संस्मरण पत्र अथवा महत्त्वपूर्ण सामग्री हो तो वे उसकी नकल हमें रजिस्ट्री से भेजकर अनुग्रहीत करें।

गणेशजी द्वारा सम्पादित प्रताप के पुराने अङ्क भी हमारे लिये सहायक होंगे। कार्य समाप्त होने पर भेजने वालों को उनकी सामग्री ज्यों की त्यों सधन्यवाद वापस कर दी जायगी। संस्मरण भेजने वाले सज्जन अपना लेख भेजने की कृपा करें।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

१९, नौर्थ ऐवेन्यू, नई दिल्ली। (झावरमल्ल शर्मा)

मानवता विज्ञान पर विजय प्राप्त करेगी

आश्रम-मर्यादा का दृढ़ता से पालन होना चाहिये

(श्री स्वामी सेवानन्द जी सरस्वती (भूतपूर्व श्री प्रो० मोहनलाल जी वर्मा एम०ए०, एफ० टी० एस०) दि० २६-४-५१ को आर्यसमाज दयानन्द नगर इंदौर में संन्यास ग्रहण करने के अवसर पर शुभ उद्गार

[आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् ने संन्यास ग्रहण के अवसर पर अपने जो विचार प्रकट किये हैं उनकी वास्तविकता को हमें स्वीकार करना चाहिये। भारतीय आश्रम मर्यादा मानव निर्माण का एक सांचा है। मानव बनने के लिए प्रत्येक को उसमें ढलना चाहिए। आज विश्व विज्ञान की विभीषिका से पीड़ित है। उसका सामना मानवता की सेवा के लिए तपस्या करनेवाले संन्यासी ही कर सकते हैं और वे ही आत्मज्ञान के आनन्द की ओर मानवता को मोड़ सकते हैं। विज्ञान पर विजय के लिये मानव की साधना ही सफलता का मार्ग है। —सं०]

आधुनिक संसार विज्ञान की कठपुतली बना हुआ है। वैज्ञानिक आविष्कारों ने संसार में नास्तिक वातावरण पैदा कर दिया है। आज कल हर व्यक्ति स्वार्थ, लोभ, वासना, अनेक प्रकार की कामनाओं का दास बन गया है। अणु और परमाणुओं की खोज से हर देश में विध्वंसक आविष्कारों की होड़ लगी हुई है। कोई किसी की न सुनता है और न मानता है। वही देश संसार का नेता है जिसके पास अधिक मात्रा में विध्वंसक शस्त्रास्त्र हैं। ऐसे ही देश उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए माने जाते हैं। ये ही देश विश्व को अपनी करतूतों से काल के मुंह में ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आधुनिक सभ्यता ने सारे संसार को एक सूखे घास का संग्रहालय मात्र बना रखा है। केवल एक दियासलाई की काड़ी की आवश्यकता है जो किसी भी समय अग्नि पैदा करके सारी सभ्यता का नाश कर देगी और इस संसार को पूरा नरक बना देगी। अणु, स्पूतनीक और कृत्रिम उपग्रहों की प्रगति के साथसाथ हमें विचार करके समझना चाहिये कि विज्ञान का अन्तिम परिणाम क्या होगा?

सोचने से मालूम होगा कि विज्ञान की शक्ति एक जड़, अचेतन, निर्बुद्धि चीज है। शक्ति न अच्छी चीज है और न बुरी। न यह वरदान है और न यह अभिशाप। इसका सदुपयोग करने से यह लाभकारी यानी वरदान हो सकती है। इसीका दुरुपयोग किया जावे तो यह अभिशाप होकर हानिकारक होगी और संसार को अशान्ति और दुःख का घर बना देगी। सदुपयोग करने वाले केवल आस्तिक, योगी, तपस्वी, ज्ञानी, निस्वार्थी, संयमी, सदाचारी, वेदज्ञ, संन्यासी ही हो सकते हैं कि जिनका ध्येय प्राणी मात्र और मनुष्यमात्र का कल्याण करना है। वे किसी सम्प्रदाय, मतमतान्तर गुट, राजनैतिक, आर्थिक आदि किसी भी संकुचित दलों में नहीं हैं। प्राचीन काल में आप्त पुरुष, ऋषि, संन्यासी, मनीषी, संयमी, ज्ञानवान्, अनुभवी पुरुष ही मार्गदर्शन किया करते थे। अब उल्टा पाशा पड़ा हुआ है यही कारण है कि संसार मौत की प्रज्ज्वलित दाढ़ों में प्रवेश करने का अज्ञ नवश प्रयत्न कर रहा है।

आज का विज्ञान चाहे बुध, मंगल, चांद आदि उपग्रहों व ग्रहों में प्रवेश कर सके, चाहे कितने ही विध्वंसक शस्त्रास्त्र निर्माण कर ले परन्तु वह मनुष्य को सदाचारी, संयमी, चरित्रवान, निस्वार्थी, योगी, तपस्वी, आस्तिक कल्याणकारी रास्ता आज दिन तक न बना सका, और न कभी बना सकेगा।

ऐसे निर्माण-कार्य के लिये तो वेद, शास्त्र, अध्यात्म-विद्या, योग, ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, परमात्मज्ञान ही हो सकते हैं और कोई नहीं हो सकते। सारा संसार विज्ञान की चकाचौंध से भ्रान्त होकर पथभ्रष्ट हो रहा है। जब तक इस मार्ग से हटाया न जाय, संसार में अशान्ति, कलह, लड़ाई झगड़े और विध्वंसक होड़ चलती ही रहेगी। कानून, कायदे निर्माण कर लेने से मनुष्य सदाचारी न हुआ है और न हो सकेगा। छल-छिद्र, धोखेबाजी, कुटिलता, लोभ, लालच, पाखण्ड, स्वार्थ, असत्यता, दुराचार, अनुशासनहीनता, व्यसन, कामुकता आदि शत्रुओं के दास सब मनुष्य बनते जा रहे हैं। अच्छे नागरिकों का निर्माण, सदाचार और चरित्र निर्माण, निस्वार्थभाव आदि मनुष्य निर्माण करनेवाले तत्त्व अगिया बैताल की तरह आगे ही आगे बढ़ते जा रहे हैं और जितना भी प्रयत्न किया जाता है उतना ही निष्फल होता है। बिना संयमी, ज्ञानी, वेदज्ञ, संन्यासी के अज्ञान के सागर में डूबने के सिवाय कुछ भी मार्ग नहीं दीखता।

गिबन, मेकाले आदि बड़े-बड़े इतिहासज्ञों ने विश्व की जातियों के उत्थान और पतन पर पूरी गवेषणा की है। वे ही देश आगे बढ़ेंगे जिनमें सच्चे संन्यासी पैदा होंगे। वर्ना अन्धाधुन्ध काल के मुंह में प्रवेश करेंगे और इस सुन्दर संसार को स्वार्थ, भय, लोभ, लालच की आग में भस्म कर देंगे। यही कारण है कि हमारे आप्त मनीषियों ने पूर्ण ब्रह्मचारी बनाने का प्रयत्न किया। इसके पश्चात् सदाचार से गृहस्थ बनने का आदेश दिया। फिर पूर्ण ज्ञान और अनुभव को प्राप्त करने के लिये वानप्रस्थ आश्रम का आदेश दिया। जब तीनों आश्रमों को पार कर लिया तब अपना ज्ञान, अपना अनुभव, संयम, तप, योग, निस्वार्थ-भाव आदि से इस विश्व के प्राणिमात्र और मनुष्य मात्र का कल्याण करना। अज्ञानी अपढ़ वेदशास्त्र के ज्ञान से अनभिज्ञ, योग, तप, संयम, यम, नियम, प्राणायाम, ध्यान, धारणा आदि से रहित, साम्प्रदायिक, संकुचित दृष्टि वाले मनुष्य संन्यासी नहीं बन सकते हैं। संन्यास बड़ी टेढ़ी चीज है। भगवान की सच्ची प्रेरणा हो और दृढ़ संकल्प हो तथा सब प्रकार के साधनों से युक्त हो तभी निष्काम संन्यासी बनकर संसार का कल्याण कर सकता है। उसका ध्येय सत्य पथ-प्रदर्शन और असत्य का सदा खंडन, खुशामदी, चापलूस, हां में हां मिलाने वाला संन्यासी बनने के योग्य नहीं। संन्यासी के नाम के पहिले "स्वामी" इस बात का द्योतक है कि वह संयमी है दास नहीं। अपनी इंद्रियों और मन पर पूरा नियन्त्रण है। नाम के आगे "सरस्वती" इस बात का द्योतक है कि पूर्णज्ञानवान और अनुभवी है। नाम भी दूसरा ही रखा जाता है। जैसी प्रेरणा हो, वैसा ध्येय हो, वैसा ही नाम रखना उचित है। "सेवानन्द" एक साधारण नाम जिसमें "सेवा" ही कार्यक्षेत्र का द्योतक है। इस प्रकार वेदों का अध्ययन, संसार की विद्याओं का ज्ञान, योग, आसन, ध्यान, संयम आदि का पूर्ण अभ्यास करके संसार के मनुष्यमात्र और प्राणिमात्र के मित्र की तरह कल्याण करना ही इस आश्रम में प्रवेश करने वाले का पूर्ण ध्येय है। प्रभु और आर्यजगत् के सम्मुख आपका नवीन संन्यासी प्रतिज्ञा करता है कि सब उसके मित्र हैं सबको उससे "अभय" रहना चाहिये।

विज्ञान-वार्ता

'२-३ अरब वर्ष पूर्व मंगल में बुद्धिमान व्यक्ति रहते थे'

एक रूसी वैज्ञानिक का दावा

आर्यों की सृष्टि विज्ञान सम्बन्धी मान्यताओं को आज विज्ञान जिस महत्व के साथ स्वीकार कर रहा है वह हमारे लिए गौरव की बात है।

आर्य सृष्टि सम्वत् १ अरब ९७ करोड़ वर्ष का माना जाता है अभी तक हमारी इस लम्बी उड़ान का मजाक उड़ाया जाता रहा है पर आज विज्ञान इस सत्य तथ्य को स्वीकार करने के लिए उद्यत और अग्रसर दीख रहा है।

रूसी वैज्ञानिक की यह मान्यता कि आज से २, ३ अरब वर्ष पूर्व मङ्गल में बुद्धिमान व्यक्ति रहते थे, वैदिक सृष्टि सिद्धान्त का समर्थन है। केवल पूर्वाग्रह या प्राचीन होने के कारण प्राचीन विचारों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, भारत के वैज्ञानिकों को अपने वैज्ञानिक सिद्धान्तों के विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जब कोई विदेशी किसी बात को मान लेता है तब हम भी उनकी हाँ में हाँ मिला देते हैं यह भारत के गौरव के अनुरूप नहीं। हमारे वैज्ञानिकों को अपने पूर्वजों की धरोहर को सदैव उज्ज्वल बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। आशा है यह नई खोज इस दिशा में भारतीय वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन प्रदान करेगी। आशा है डार्विन के विकासवाद के नाम पर जो मिथ्या मान्यताओं का महल खड़ा किया हुआ है वैज्ञानिक इस अनुसन्धान की छाया में उसके मिथ्यात्व पर भी गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे। —सम्पादक

एक रूसी वैज्ञानिक सखोखोवस्की ने क.म्सोमोलस्काया प्रवदा पत्रिका में लिखे लेख में दावा किया है कि मङ्गल ग्रह के दो चन्द्रमा सम्भवतः कृत्रिम उपग्रह हैं जिन्हें २ या ३ अरब वर्ष पूर्व मङ्गल ग्रह में रहने वाले बुद्धिमान व्यक्तियों ने अयनवृत्त में भेजा होगा।

वैज्ञानिक का विचार है कि इन चन्द्रमाओं फोबोस और डीमोस के उद्‌गम की व्याख्या प्रकृति में पाये जाने वाले किसी तरीके से नहीं की जा सकती।

'यद्यपि इनका वजन सम्भवतः १० करोड़ टन या इससे भी ज्यादा होगा लेकिन बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए यह कोई अलङ्घ्य समस्या नहीं रही होगी।' फिलहाल मंगल के वायुमण्डल में कोई आक्सिजन नहीं है, फलतः वहाँ किसी प्रकार के विकसित जीवन की आशा नहीं की जा सकती।

लेकिन २—३ अरब वर्ष पहले स्थिति भिन्न थी।

बहुत से ज्योतिषियों का ख्याल है कि तब मङ्गल के वायुमण्डल में आक्सिजन थी। उस समय सम्भवतः मङ्गल ग्रह पर ऐसे जीव थे जो अत्यन्त बुद्धिमान होंगे और जिनकी संस्कृति बहुत उन्नत रही होगी। ऐसे ही किसी समय में वे अन्तरिक्ष पर विजय पाने के लिए अपने ग्रह में से निकले होंगे।

अध्ययन से ऐसा पता चला है कि मङ्गल के ये उपग्रह अन्य ग्रहों के उपग्रहों से इन बातों में भिन्न हैं कि उनका आकार बहुत छोटा है और ये अपने ग्रह के बहुत पास हैं।

फोबोस ने अन्य सब ग्रहों से एक और भिन्नता दिखाई है वह यह कि पिछली कुछ दशाब्दियों में वह अपने निश्चित भ्रमण पथ से २॥ डिग्री हट गया है और इसकी रफ्तार तेज हो गई है। इसका मतलब है कि वह मङ्गल के अधिक निकट आ गया है।

यही बात पृथ्वी से छोड़े गए उपग्रहों के बारे में होती है। पृथ्वी के वायुमण्डल से रगड़ खाने के कारण उनकी रफ्तार धीमी हो जाती है और वे पृथ्वी के निकट आ जाते हैं। पृथ्वी के निकट आने से उनको घूमने की गति बढ़ जाती है।

अनुसन्धान से पता चलता है कि फोबोस अन्दर से खोखला है और चूंकि कोई प्राकृतिक वस्तु अन्दर से खोखली नहीं हो सकती इसलिए यह अवश्य ही मङ्गल का कृत्रिम उपग्रह है।

अनुमान है कि डीमोस उपग्रह का व्यास ५ मील और फोबोस का १० मील है। इस खोज के पश्चात् वैज्ञानिक इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि पृथ्वी की अपेक्षा मङ्गल से उपग्रह और राकेट छोड़ना अधिक आसान है क्योंकि मङ्गल में गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम है।

बाल-विनोद

गर्मी आई

गर्मी आई, खुशियां लाई !
छुट्टी हमें दिलाई !!

अब ठण्डाई पीते भाई !
रक्खी दूर रजाई ॥

धरती जलती सबको खलती।
पानी के बल सब जीते ॥

प्यास लगी है भूख भगी है।
बरफ मिला जल पीते ॥

खा खरबूजे या तरबूजे।
तबियत खुश हो जाती ॥

खलकर आम औ लीची।
बच्चे करते खींचा-खींची ॥

आओ हिलमिल हंसते खिलखिल।
चलो नहावें गङ्गा ॥

उछलें कूदें मन में फूलें।
हो जाते मन चङ्गा ॥

—रेवतीदेवी कानपुर

चुटकुले

बाबू—(हजाम से) 'क्यों भाई उस्तरा तेज है ?

हजाम – बाबू जी ! उस्तरा क्या है कि फ्राण्टियर मेल हो रहा है।

बाबू—"अरे यह कहीं-कहीं बाल क्यों रह गये हैं ?"

हजाम—जी, "फ्राण्टियर मेल छोटे-स्टेशन छोड़ जाता है, इसीलिये यह उस्तरा भी मेल की तरह छोटे-छोटे स्टेशनों को छोड़ आगे बढ़ गया है।"

× × ×

मास्टर—श्याम ! बताओ देश में बड़े-बड़े आदमी कौन-कौन हुए हैं ?

श्याम—"श्रीमान् जी, हमारे देश में बड़ा कोई पैदा नहीं होता, यहां तो सब बच्चे ही पैदा होते हैं।"

× × ×

रामू की मौसी—"बहन ! रामू ने हिस्ट्री का पर्चा कैसे किया ?"

रामू की मां—बहन ! हिस्ट्री का पर्चा तो बिल्कुल अच्छा नहीं हुआ। इसमें बेचारे लड़के का कसूर ही क्या ? सब के प्रश्न पूछे गये जब वह पैदा भी नहीं हुआ था।

× × ×

माँ—वाह बेटा ! "तू तो अंग्रेजी में १०० में से १० ही नम्बर लाया।"

बेटा—वाह मां ! "बहन जी पर कुल १०० ही नम्बर तो थे। यदि सब मुझे दे देती तो और लड़कों को क्या मिलता ?

मित्र—"आप किस पार्टी में हैं ?'

दूसरा मित्र—"टी पार्टी में जनाब !"

× × ×

—अवनीन्द्र, करेली म०प्र०

पहेलियाँ

१—दो अक्षर का मेरा नाम,
सिर पर रहना मेरा काम।
जिसके सिर से मैं हटजाती,
पीटो—पीटी कहलाती।

२—चूस-चूस जब मुझको खाओ,
भरा कटोरा दूध उड़ाओ।
सभी फलों का मैं सरदार,
कोयल का मैं प्यारा यार ॥

३—घी में गरम स्वाद में मीठा।
बिन बेलन के बेला है ॥
चलो चखें खाने को, अब
यह भी एक पहेला है ॥

४—हाथ में लीजे देखा कीजे।
शीश कटे तो कपड़ा नापूं,
पैर कटे तो काग कहाऊं ॥
पेट कटे तो बटन लगाता,
पुस्तक और अखबार छपाता ॥

—अशोक, डनलप, कलकत्ता

उत्तर—१ टोपी, २ आम, ३ मालपुआ
४ शीशा, ५ कागज।

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ……………………………………

आयु ………………… वर्ष ………………

पूरा पता ……………………………………

……………………………………

आपकी विशेष प्रवृत्तियां ……………………

भारत में अनाज का राजकीय व्यापार
सरकार द्वारा घोषणा

राष्ट्रीय विकास परिषद् ने खाद्य तथा कृषि मन्त्री की अनाज के राजकीय व्यापार योजना पर अपनी सहमति प्रकट की। भारत सरकार की इस योजना के दो भाग हैं। एक, अत कालीन और दूसरी, पक्की योजना। अत कालीन योजना के अन्तर्गत थोक व्यापारियो को लाइसेंस प्राप्त अभिकारियों की तरह काम करने की अनुमति होगी, जो सरकार की तरफ से किसानों से 'निर्धारित' भाव पर अनाज खरीद सकेंगे। इसके अलावा उन्हें खुदरा व्यापारियों को नियन्त्रित भाव पर बेचने की छूट होगी। राज्य व्यापार का अन्तिम रूप यह होगा कि गावों की सेवा सहकारों के जरिये किसानों का फालतू अनाज जमा किया जायगा और सहकारी सस्थाओ के द्वारा उसे बाजार में भेजा जायगा। फिर खुदरा व्यापारियो तथा उपभोक्ताओ की सहकारी संस्थाओ द्वारा उसका वितरण किया जायगा।

परिषद् इस बात से सहमत थी कि यह योजना हर राज्य में चालू की जाय।

[पृष्ठ ६ का शेष]

तो 'वर्नाक्युलर' नहीं कहते हैं। हमारी भाषायें हिन्दी, बगला, उर्दू, मराठी, गुजराती आदि ही क्यों 'वर्नाक्युलर' कहलायीं यद्यपि इनमें अंग्रेजी भाषा के पारदर्शी विद्वान् भी मौजूद थे। यह तो पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने सर्व प्रथम अपनी आत्मकथा में दिखलाया कि वर्नाक्यूलर का अर्थ गाली है। तब हमें ध्यान आया। हम वर्नाक्युलर शब्द का प्रयोग तो छोड़ चुके हैं, परमात्मा करे 'हिन्दू' नाम से भी हमारी आसक्ति छूट जावे। हम ऋषियों के वंशधर परमात्मा के अमृत पुत्र अपने आर्य नाम को ही अपना लवें। आर्य ईश्वर पुत्रः निरुक्त।

पशुता बनाम शादी

पिछले मंगलवार को गाजियाबाद में [शहनाइयों के साथ पशुता का नग्न नृत्य] देखने को मिला। एक ७२वर्षीय बूढ़ा तीसरी बार एक १४ वर्षीय कन्या से विवाह रचाने जा रहा था। इस अनमेल विवाह की सूचना नगर की आर्यसमाज को प्राप्त हुई तो उसका एक शिष्ट मण्डल जिसमें ७, ८ नगर की संभ्रान्त बहनें थीं, कन्या के घर उसके परिवार वालों को समझाने पहुँचा। किन्तु समझ कहां से आती, ज्ञात हुआ कि कन्या को साढ़े चार हजार रुपये में बेचा जा रहा है और जो महिलाएं समझाने गईं उनको बुरी तरह पीटा गया। दो बहनों को सख्त चोटें आईं और उनके जेवर भी उतार लिये। पुलिस और अधिकारी मौन हैं। जनता पशुता बनाम शादी के इस काण्ड पर क्षुब्ध हो रही है। क्या जाग्रत भारत में ऐसे काण्ड समस्त सुधारवादियों को चुनौती नहीं हैं? क्या माताओं पर यह प्रहार बेकार जायगा? इन प्रश्नों का उत्तर क्या हो यह विचारणीय है। आर्यसमाज गाजियाबाद भारत नगर गाजियाबाद तथा आर्यवीर दल गाजियाबाद की ओर से इस काण्ड के विरोध में सभाएं की गईं और प्रस्ताव पास किये गये।

अखिल भारतीय पत्रकार प्रतिष्ठान

भारत के समस्त पत्रकारों का एक संगठन बनाने के उद्देश्य से श्री प्रेम शरण प्रणत वेद वाचस्पति जी ने उत्तम नगर नई दिल्ली १८में अखिल भारतीय पत्रकार प्रतिष्ठान की स्थापना की है। आपने एक अपील में सभी पत्रकारों से प्रतिष्ठान की सफलता के लिए सहयोग की मांग की है। 'आर्यमित्र' प्रतिष्ठान की सफलता के लिए शुभ कामनायें व्यक्त करता है।

सफेद दाग से दुखी क्यों?

शरीर के किसी भी स्थान में दाग नया या पुराना क्यों न हो आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी लगाने से दाग का रंग शीघ्र बदल कर प्राकृतिक आकार में आ जाता है। विवरण साफ लिखें। मूल्य १०)

गिरजाप्रसाद जी वैद्य १० A
पो० कतरा सराय (गया)

कृषि विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी

नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं सम्बन्धित विषयों में दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिये न्यूनतम योग्यता—हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण आयु १६ से २१ वर्ष तक। प्रार्थना पत्र के फार्म तथा नियमावली के लिये एक रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रिन्सिपल, कृषि विद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगंधित 'केश कल्याण' तैल के लगाने से सफेद बाल सदा के लिये काले हो जाते हैं। यह तैल आँखों की रोशनी को बढ़ाकर दिमाग को ताकतवर बनाता है। एकाध बाल पका हो तो २॥) का तैल मगावें, अधिक हो तो ३॥) कुल पका हो तो ६) का तैल मगावें। गुण हीन होने पर मूल्य वापस।

पता एस० के० प्रसाद
पो० हबीबपुर (पटना)

आवश्यकता

आर्यकन्या हायर सैकण्डरी स्कूल कालपी में दो ट्रेंड ग्रेजुएट सहायक अध्यापिकायें चाहिये। बी० ए० में अंग्रेजी साहित्य लिये रही हों। और दो इण्टर सी०टी० जो कि गणित तथा होम साइन्स पढ़ाने की योग्यता रखती हों। आर्यसमाजियों का विशेष ध्यान रखा जावेगा। तजुर्बा तथा योग्यता का उल्लेख करते हुए आवेदन करें।

११—२१ एम० पी० जैतली
प्रबन्धक
आर्य कन्या हायर सेकेन्डरी स्कूल
कालपी (जि० जालौन)

सफेद दाग

इस परीक्षित दवा से की पुरा या बालकों के शरीर पर के सफेद लाल दाग शरीर के त्वचा के समान पूर्ववत् सुन्दर होते हैं। हजारों ने अनुभव करके प्रशंसा पत्र भेजे हैं। मूल्य ५), अधिक विवरण मुफ्त मगाकर देखिये।

वैद्य के० आर० बोरकर (आर्य)
मु० पो० मगरूलपीर, जिला—अकोला

आर्य-जगत

प्रचार-समाचार—

—कायमगंज आर्यसमाज के तत्वावधान में २० अप्रैल को श्री आशानन्द जी ने मैजिक लालटेन द्वारा प्रचार-कार्य किया।

—पुनपुन (पटना) वैदिक वाचनालय के निरीक्षण-कर्ता श्री रामेश्वर प्रसाद जी ने पुस्तकालय के द्वारा होने वाली प्रशंसनीय जनसेवा से प्रभावित होकर २०) दान दिये। पुस्तकालय इस सात्विक दान के प्रति अपना आभार प्रकट करता है।

—दादरी (बुलन्दशहर) आर्यवीर दल ने कालका देवी के मेले पर १५ से १८ अप्रैल तक १९ स्वयंसेवकों का एक शिविर लगाकर मेले में जनता की स्तुत्य सेवा की।

—एकेश्वर, चौन्दकोट [गढ़वाल] आर्यसमाज की ओर से एकेश्वर के त्रिदिवसीय मेले में श्री रघुवरदयाल जी की अध्यक्षता में प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। प्रचार प्रभावात्मक रहा।

—अजीतमल [इटावा] निवासी श्री महाशय गोविन्दराम जी गायत्री पारायण महायज्ञ दि० १२ अप्रैल से १७ अप्रैल तक निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में पैंतीस हजार गायत्री का पाठ एवं पांच मन सामग्री एवं घृत की आहुतियाँ प्रदान की गईं।

—अफजलगढ़ एवं ग्वालियर नगर आर्यसमाज में १७ अप्रैल को रामनवमी पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया।

—चोहड़ आर्यसमाज की ओर से डौंकी मेले के अवसर पर १३ १४ अप्रैल को धर्म-प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। श्री सुगमचन्द्र जी तथा देवदत्त जी के भजनों से जनता विशेष प्रभावित हुई।

—पानीपत आर्यसमाज के तत्वावधान में १ मई से ७ मई तक किला मैदान में आनन्द स्वामी जी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। स्वामीजी के विचारों से जनता विशेष प्रभावित हुई।

—चमरी [भोपाल] आर्य सम्मेलन के अवसर पर १ से ३ मई ८१ तक श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी के आचार्यत्व में परम पावन महायज्ञ' सम्पन्न हुआ। श्री वेदश्रमी जी ने सर्वतोभद्र यज्ञ, सर्व सौमनस्य यज्ञ, राष्ट्र सम्भूति यज्ञ, आदि-आदि अनेकानेक यज्ञों की विधियाँ एवं कामनानुसार यज्ञों की सामग्रियाँ, समिधा तथा कुण्डों का भी अनुसन्धान किया है।

—चोपड़ा कोट गढ़वाल आर्यसमाज की सार्वजनिक सभा दि० ४ अप्रैल ८१ को श्री चमनलाल जी की अध्यक्षता में हुई। आपने समाज के लिए भूमि-दान व मन्दिर-निर्माण का पूर्ण वचन दे रखा है। आपकी इस सात्विक दानशीलता के प्रति समाज सर्वदा आभारी रहेगा।

—कटरा सागर आर्यसमाज के तत्वावधान में दि० ६ ४ ८१ को आर्यसमाज स्थापना दिवस सोल्लास संपन्न हुआ।

—साहिबगंज दि० २७-१०-७९ को परमदानी, उदार हृदय श्री शिवलालजी की सक्रिय दानशीलता के कारण "आर्य दातव्य होमियो चिकित्सालय" की स्थापना हुई थी। यह चिकित्सालय तभी से बिना किसी भेद-भाव के मानवता की सेवा में कार्यरत है। अभी तक इस चिकित्सालय के सौजन्य से १०१८२९ रोगियों ने आरोग्य प्राप्त किया है। समय-समय पर दानदाताओं ने भी चिकित्सालय की सहायता की है जो कि भविष्य मे भी इसी प्रकार विधिवत अपेक्षित है।

—श्री कृपाराम जी रामपुर जिला में, अपने सुन्दर प्रभावशाली भजनो तथा धनुर्विद्या प्रदर्शन द्वारा प्रचार कार्य कर रहे हैं।

—औरैया [इटावा] आर्यसमाज के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापनादिवस राम नवमी तथा गायत्रीयज्ञ उत्साह के साथ सम्पन्न हुए।

—बांकनेर के हरिजन मुहल्ले में एक दिन एक ईसाई पादरी आया जो कि अपने को हिन्दू संन्यासी बताता था। जब आर्यसमाज के सदस्यों ने इस रहस्य की जानकारी के लिये उस आगन्तुक से बात करनी चाही तो वह वहां से भाग खड़ा हुआ। आर्यसमाज की सतर्कता का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

निर्वाचन-समाचार—

—नौनेर [मैनपुरी] आर्यसमाज के प्रधान श्री कृष्णपालसिंह तथा मंत्री श्री अतिराजसिंह जी निर्वाचित हुए।

—जहाँगीरपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री शालिग्राम जी एवं मन्त्री शंकरलाल जी निर्वाचित हुए।

—अजीतमल आर्यसमाज के प्रधान श्री रामकृष्ण जी तथा मन्त्री रामऋषि जी चुने गये।

—अलीगंज आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी मन्त्री नवरत्नसिंह जी तथा प्रतिनिधि श्री रामचन्द्र जी निर्वाचित हुए।

—सौरिख आर्यसमाज के प्रधान श्री ज्ञानचन्द्र जी एवं मन्त्री रघुवीरसिंह जी चुने गये।

—सौरिख आर्य पुस्तकालय के प्रधान श्री गौरीशंकर जी तथा मन्त्री श्री रामसिंह जी निर्वाचित हुए।

—झज्जर गुरुकुल की वाग्वर्धिनी सभा के प्रधान श्री जयदेव जी तथा मन्त्री राजवीर जी निर्वाचित हुए।

—बंग आसाम [कलकत्ता] आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिहिरचन्द्र जी धीमान एवं मंत्री बटुकृष्ण जी चुने गए।

—पूना आर्यसमाज के प्रधान श्री दुर्गादास जी तथा मन्त्री श्री बी० पी० सिंह जी निर्वाचित किए गये।

उत्सव—

—शाहपुरा आर्यसमाज का हीरक जयन्ती समारोह २८ से ३१ मई तक बड़ी धूम-धाम से मनाया जायगा। आर्यजगत् के सभी उच्चकोटि के नेता पधार रहे हैं।

—नानपारा आर्यसमाज का उत्सव २१ से २४ मई तक समारोहपूर्वक सम्पन्न होगा।

—फर्रुखाबाद आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव २२ से २४ मई तक धूम-धाम से मनाया जायगा। श्री बुद्धदेवजी, श्री बिहारीलाल जी शास्त्री, श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा जी, श्री पं० रामचन्द्र देहलवी जी आदि पधार रहे हैं।

—भोजपुरखेड़ी आर्यसमाज का उत्सव २४ से २६ मई तक समारोहपूर्वक मनाया जायगा।

—सिकन्दराबाद आर्यसमाज का उत्सव ।१ से १३ मई तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। १४०००) के दान से निर्मित भवन का उद्घाटन श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी द्वारा सम्पन्न हुआ।

—शाहदरा देहली आर्यसमाज का उत्सव ८ से ११ मई तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

—शिकगंज आर्यसमाज का उत्सव ८ से १४ मई तक एक सप्ताह तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

—कसौर आर्यसमाज का उत्सव १३से१५ मई तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शोक—

—बिसवां (सीतापुर) आर्यसमाज के सदस्यों ने १०-४-८१ को श्री गुलजीतलाल जी की धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन पर दु:ख प्रकट किया।

—अफजलगढ़ आर्यसमाज के सदस्यों ने ४-४-८१ को समाज के भूतपूर्व मन्त्री श्री राजाराम जी के निधन पर शोक समवेदना व्यक्त की।

—राजेपुर (फर्रुखाबाद) आर्य समाज के सदस्यों ने समाज की प्रधाना श्रीमती रुकमणीदेवी जी के आकस्मिक निधन पर दु:ख प्रकट किया।

—तिलहर आर्यसमाज के सदस्यों ने श्री मन्त्री वीरपालसिंह जी के छोटे भाई के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया।

एक संस्कृत भक्त आर्य का स्वर्गवास

बदायूं मण्डलान्तर्गत पुठी ग्रामवासी श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी वैद्य का अचानक हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। इस इलाके में यह बड़े धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। ऋषि दयानन्द के एकमना भक्त और देववाणी के बड़े भारी श्रद्धालु थे। अपने दोनो पुत्रों को संस्कृत का विद्वान् बनाया। बड़े पं० विशुद्धानन्द जी व्या० आ० और एम० ए० हैं। छोटे महेन्द्रजी ने अभी गुरुकुल बदायूं से शास्त्री परीक्षा दी है। पुत्रवधू भी बनारस में आचार्य हैं और एम० ए० एल०टी० भी। इनके पौत्र पौत्रियां बिना हिचक संस्कृत बोलते हैं। सब परिवार आर्यसमाज में अनुरक्त है। मित्र परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करता हुआ परिवारिको के प्रति हार्दिक शोक सहानुभूति प्रकट करता है।

दुखद समाचार

आर्य जनता को यह समाचार देते हुये दुःख है कि श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती जो कि सहृतायों द्वारा भजन गा-गा कर प्रचार करते है और मुरादाबाद, बदायूं बिजनौर, सहारनपुर जिले जिनके प्रचार क्षेत्र हैं जिनका मुख्य निवास स्थान भोजपुर जिला बिजनौर हैं, उन श्री स्वामी जी को १७-४-८१ को सायंकाल वाणी तथा शरीर के दाहिने अंगों पर फालिज हो गया है। स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारी तत्परता से चिकित्सा करा रहे हैं अभी तक कोई लाभ नहीं है। अतः आर्यसमाजों व अन्य महानुभावों से निवेदन है कि वह उत्सवों पर न बुलाएँ उनको तथा स्वास्थ्य लाभ होने तक अपने यहाँ उत्सव आदि के निमन्त्रण न भेजे जायें।

सामयिक समस्याएँ

आदिवासी और आर्यसमाज

[श्री पण्डित गङ्गाप्रसाद जी रिटायर्ड जज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा]



—लेखक—

स्वतन्त्रता के पश्चात कांग्रेस ने आदिमवासी जनता के सुप्रबन्ध और सुधार के लिये सब प्रकार के उत्तम साधन किये हैं। शरीर की रक्षा के लिये भोजन व वस्त्रादि का सुप्रबन्ध है। बुद्धि की शिक्षा के लिए स्कूल व पाठशाला स्थापित हो रहे हैं। स्कूलों में प्रकाशित भूगोल, इतिहास व साधारण विज्ञान आदि से बुद्धि की शिक्षा हो ही जाती है। परन्तु आत्मा की शिक्षा का सरकार कोई प्रबन्ध नहीं कर सकती। वह उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर है क्योंकि कांग्रेस सरकार की निश्चित नीति Secular अर्थात् धर्म निरपेक्ष है। इस कारण वह साधारण स्कूलों में भी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध नहीं करती गो इसमें उसकी बड़ी भारी भूल है। फिर आदिम वासियों को धार्मिक शिक्षा कैसे दी जाय? मेरा दृढ़ मत है कि हर मनुष्य को जैसे शारीरिक व मानसिक शिक्षा की जरूरत है उसी प्रकार आत्मिक शिक्षा भी जरूरी है। हर मनुष्य को आत्मिक भूख है। यदि उसको कुछ उचित आत्मिक भोजन मिले तो उसकी तृप्ति हो सकती है।

मैं इसका एक ऐतिहासिक दृष्टान्त दूंगा। लगभग ५० वर्ष हुए राजस्थान में डूंगरपुर व बांसवाड़ा रियासतों की सरहद के पास एक गुजराती वैष्णव साधु जंगल में एक झोपड़ी बना कर रहने लगा। वहां भीलों की अधिक बस्ती है। बहुत से भील उसके चेले हो गये। कुछ ने भजन सीख लिये और बड़ी बात यह है कि बहुतों ने मद्य व मांस खाना छोड़ दिया। यह एक बड़ी बात थी। राज्य की पुलिस को यह पसन्द न हुआ। क्योंकि उनकी जो मान्यता व प्रभुत्व भीलों पर था वह इससे कम हो गया। उन्होंने भीलों को समझाया कि पहले की तरह मद्य मांस खाते रहें। उनका जवाब था कि हमारे गुरु ने इनको वर्जित कर दिया है। पुलिस वालों ने राजा साहब से यह शिकायत कर दी कि भील लोग राज्य से विद्रोह करना चाहते हैं। राजपूताने में और विशेषकर इस बांगड़ क्षेत्र में भीलों के विद्रोह हो जाया करते थे और फिर मारकाट जरूर होती थी। राजा साहब का छोटा सा राज्य था। उनके पास फौज न थी। पर उन्होंने पुलिस का कहना सत्य मानकर पोलिटिकल एजेण्ट को रिपोर्ट कर दी कि राज्य के भीलों में विद्रोह करने की आशंका है। एक अफसर के साथ कुछ फौज भिजवाई गई, मामला वाइसराय तक पहुँचा। वाइसराय के आदेश से नीमच छावनी से फौज आई। उसका अफसर एक अंग्रेज कर्नल था। कर्नल बड़ा तेज और समझदार अफसर था। उसने राजा साहब की आज्ञा से भीलों पर हमला कर दिया। बहुत से निर्दोष भील मार गये। पर कर्नल को यह निश्चय हो गया कि विद्रोह कोई न था। केवल उस गुजराती साधु का उपदेश राजा साहब को असह्य हो गया। साधु हवालात में डाल दिया गया और शायद पीछे वह जेल ही में मर गया। कर्नल साहब ने वाइसराय साहब को यह रिपोर्ट कर दी कि रियासत में कोई विद्रोह न था। केवल एक हिन्दू साधु का उपदेश राजासाहब को पसन्द न आया। रिपोर्ट में यह सुझाव भी दिया गया कि यहां की रियाया में कुछ धार्मिक उपदेश की जरूरत है। वाइसराय महोदय ने अमरीकन मिशन के पादरियों को लिखा। कुछ समय पीछे कैनाडा के पादरियों का एक दल रियासत में आया। राजा साहब ने उनकी खूब आवभगत की रहने को स्थान तो देना ही था। वह मिशन वहां स्थापित हो गया। और अपना कार्य करने लगा। जैसा कि अमरीकन मिशन बहुत से स्थानों में करते हैं।

यह एक मिसाल है। कितने शोक की बात है कि एक हिन्दू साधु के उपदेश को न सहा गया। और विदेशी ईसाइयों के प्रचार के लिये मार्ग खुल गया। जैसा मैंने ऊपर कहा कि आदिमवासी लोगों में भी आत्मिक भूख होती है। उस को कौन तृप्त करे। भारत सरकार एक Secular धर्म निरपेक्ष गणतन्त्र होने से यह काम नहीं कर सकती। फिर या तो ईसाई मिशनरी कर सकते हैं, और भारत के बहुत से स्थानों से बड़ी लगन के साथ बहुत परिश्रम करके और करोड़ों रुपया खर्च करके कर रहे हैं। पर वे विधर्मी हैं उनकी संस्कृति भी विदेशी है। आर्यसमाज उनके कार्य को सहन नहीं कर सकता। अन्य हिन्दू भी पसन्द नहीं करते। पर सनातनियों में इसकी योग्यता व शक्ति नहीं। फिर आर्यसमाज के सिवाय कौन कर सकता है। परन्तु इसमें साधारण प्रचारकों का काम नहीं।

राष्ट्रपति महोदय के शब्दों में इस कार्य के लिये निस्वार्थ साहसी ईमानदार कार्यकर्ताओं की जरूरत है सार्वदेशिक सभा को चाहिये इसके लिए विशेष प्रचारक तय्यार करावें। भारत सरकार ने हरिजन व शूद्रों के लिये Scheduled Casts अनुसूचित जाति विधान बनाया। पर आदिमवासियों के लिये दूसरा अनुसूचित आदिमवासी जाति विधान तैयार किया। इनमें प्रचार करने के लिये त्यागी व तपस्वी उपदेशक चाहियें। एक छोटी-सी स्कीम का सुझाव रखता हूं। पूरी स्कीम पीछे बन सकती है। कुछ वर्ष हुए वृन्दावन गुरुकुल में एक पुरोहित कक्षा खोली गई थी जिसकी समाजों को जरूरत थी। मेरा सुझाव है किसी बड़े गुरुकुल में वृन्दावन या कांगड़ी कहीं भी आदिमवासी जाति प्रचारकों की एक कक्षा खोली जाय। आदिमवासी शब्द को बहुत से आर्यसमाजी पसन्द नहीं करेंगे। उनकी मान्यता है कि केवल ये जातियां आदिवासी Aborigenese नहीं हैं सभी आर्यावर्त वासी इसी देश में जन्मे बाहर से नहीं आये। कोई नाम रख दिया जाय।

वन पर्वत स्थानी जातियों के विशेष प्रचारक उस कक्षा में कोई विद्यार्थी न लिया जाय जो साधारणतया स्नातक न हो। छोटे बड़े बहुत से गुरुकुल बन गये हैं स्नातक विद्यार्थी मिल सकता है। वह कम से कम ७ वर्ष तक सेवा करने का वचन देवें। शिक्षा का समय दो वर्ष हो। निर्वाह के लिये १००) मासिक हो। यदि विवाह करें तो १५०) दम्पति के लिये। जो विवाह न करने का वचन देवें और नैष्ठिक ब्रह्मचारी होकर रहें उनको प्राथमिकता दी जाय। निवास स्थान संस्था ही देगी। मेरा सुझाव है कि सार्वदेशिक सभा एक उपसमिति बनावे जिसमें सभा के मन्त्री व दो अन्य सभासद् हों और हर बड़ी प्रान्तीय सभा का एक प्रतिनिधि हो। क्योंकि आदिमवासी जातियें लगभग हर प्रान्त में हैं Draft Constitution of India में एक Eighth Schedule आदिवासी सूची लगी हुई थी जिसमें हर प्रान्त में रहने वाली आदिवासी जातियों के नाम थे। मालूम नहीं विधान छपते समय वह सूची क्यों छोड़ दी गई? छपे हुए विधान में वह नहीं है मेरे पास Draft Constitution of India की एक प्रति है। उसमें यह सब जातियां दर्ज हैं। यह बहुत लम्बी है। मद्रास प्रान्त में ४६ बम्बई में २४ पश्चिमी बंगाल में १ उत्तरप्रदेश में ८ बिहार में ३६ आसाम में १६ उड़ीसा में ४० दर्ज हैं। वह उपसमिति सब की सलाह से एक योजना तैयार करे जिसकी रूपरेखा का कुछ संकेत मैंने ऊपर दिया है। कार्य बहुत कठिन है पर असम्भव नहीं है। यदि कोई आर्यसमाजी उसको असम्भव कहें तो विदेशी मिशनरियों का देश से निकालने का नाम भी न लेना चाहिये। राष्ट्रपति महोदय के शब्द हमें स्मरण रखने चाहियें— यदि आदिवासी जातियों के उत्थान का काम हमको अपने हाथ में लेना है तो आदिवासी क्षेत्रों में त्याग व सेवा भाव के साथ कार्य करने के लिये अच्छी तरह अनुशासित निःस्वार्थ साहसी और ईमानदार कार्यकर्ताओं के सामने आने की आवश्यकता है।

[भारत में ईसाई मिशनरियों के अहर्निश व्यापक प्रचार से आज प्रत्येक भारतीयताभिमानी चिन्तित है। मिशनरियों ने अपने प्रचार के लिये भारत की उन जातियों को चुना है क्योंकि हमने उनकी सदैव उपेक्षा की। आज हम सजग हुए हैं और अपने कर्त्तव्य पालन के लिये आतुर हैं। ऐसी अवस्था में वयोवृद्ध अनुभवी आर्य नेता के रूप में आदरणीय जज साहब ने आर्यसमाज को उन जातियों में प्रचार के लिये सक्रिय योजना निर्माण का सुझाव दिया है। हम आशा करते हैं कि इस क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को विशेष प्रकार से शिक्षित प्रशिक्षित करने का कार्य अविलम्ब सार्वदेशिक सभा अपने हाथ में लेगी। कभी कभी दौरे करके या सम्मेलन आदि करके हम समस्या को हल नहीं कर सकते। हमें इस दिशा में रचनात्मक कार्य करके उन समुदायों के हृदय जीतने का प्रयत्न करना चाहिये। —सम्पादक]

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

२० वैशाख शक १८८१
(१० मई १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ईसाई प्रचार निरोध

पिलखुवा में ईसाई पादरियों के काले कारनामों का रहस्योद्घाटन किया गया और उनसे टक्कर लेने का निश्चय किया गया हिन्दुओं की विराट सभा में आर्य नेताओं की सिंह गर्जना

पिलखुवा में तथा आसपास के ग्रामों में आजकल ईसाई पादरी लोग घूमते दिखाई पड़ रहे हैं जो कि रुपये पैसों के लोभ-लालच से चमार भंगी आदियों को ईसाई बनाकर धर्म भ्रष्ट करने में संलग्न हैं जिससे इधर बड़ी सनसनी फैली हुई है। इस कारण मेरठ के कई आर्यसमाजी नेताओं ने पिलखुवा पधार कर भक्तरामशरणदास जी से भेंट की जिनमें सुप्रसिद्ध आर्योपदेशक श्री बलवीरसिंह बेधड़क जी, मेरठ आर्यसमाज के प्रमुख नेता डा० भगवद्दत्त जी, हापुड़ आर्यसमाज के मन्दिर के पुरोहित श्री वीरेन्द्रशास्त्री जी, महाशय प्यारेलाल जी हापुड़, पिलखुवा आर्यसमाज के मन्त्री सुरेशचन्द्र जी आदि-आदि थे। सबने भक्तरामशरणदास जी को ईसाई लोगों के काले कारनामों से अवगत कराकर आपसे भी इनके विरोध में साथ देने को कहा। भक्तरामशरण दास जी ने विश्वास दिलाया कि हिन्दुत्व की रक्षा के कार्यों मे हम आपके साथ हैं। रात्रि को महाशय रघुबरदयाल की दुकान पर हिन्दुओ की एक विराट सभा हुई जिसमें सनातन धर्म की ओर से भक्तरामशरण दास जी भी पधारे हुये थे। आर्य नेताओ के ईसाई लोगों के विरोध में बड़े ही सिंह गर्जनामय ओजस्वी भाषण हुये जिन्हें सुनकर जनता बड़ी प्रभावित हुई। सर्वप्रथम आर्यभजनोपदेशक निरंजनदेव जी के भजन हुये। उसके पश्चात् श्री बलवीर सिंह बेधड़क जी ने सिंहगर्जना करते हुए कहा कि आर्य सन्तानों, हिन्दुओ आज आप पड़े हुये सो रहे हैं और उधर यह ईसाई पादरी तुम्हारे हिन्दूभाई चमार भंगी। भील, नागा आदि हिन्दू लालो को दो आने की एक बड़ी मक्का और अमेरिकन घी दे देकर दो दो आने में खरीद रहे हैं। आज तुम्हारे राम कृष्ण का नाम लेने वाले हिन्दू तुमसे छीने जा रहे हैं और तुम्हारे भाई तुमसे छुड़ा कर तुम्हारे शत्रु बनाये जा रहे हैं क्या फिर भी बैठे बठे देखते रहना तुम्हारे लिये उचित है ? अङ्गरेजी राज्य में इतने ईसाई नहीं बनाये गये थे जितने आज इस कांग्रेसी राज्य में धड़ाधड़ ईसाई बनाये जा रहे हैं और गॉव-गॉव में ईसाई पादरी घूम रहे हैं। हिन्दुओ आँखें खोलो और इन जालिम ईसाई लोगों से अपने बन्धुओं को बचाने के लिये निकल पड़ो और इन्हें भारत से बाहर खदेड़ कर दम लो।

आर्यसमाज मन्दिर हापुड़ के श्री प० वीरेन्द्रशास्त्री जी पुरोहित ने सिंहगर्जना करते हुये कहा कि यह जो अमेरिका, इंगलैंड के अङ्गरेजो पादरी भारत में आकर चमार भंगियो आदि के हितैषी बनने का ढोंग रचते हैं और हिन्दुओं को, आर्यों को यह कहते हैं कि हिन्दू लोग चमार भंगियों से घृणा करते हैं क्या यह अङ्गरेज पादरी बता सकते हैं कि स्वयं अमेरिका आदि अपने देशो में अपने ही देश के लोगों पर कैसे कैसे जुल्म ढाते हैं जिनहें सुनकर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मेरठ आर्यसमाज के प्रमुख नेता डा० श्री भगवद्दत्तजी ने सिंहगर्जना करते हुये कहा कि आज ईसाई लोग किस प्रकार हमारे बन्धुओं को रुपये पैसे के प्रलोभन में फासकर वैदिक धर्म से च्युत कर उन्हें ईसाई बनाकर भ्रष्ट करते हैं और बाद में नहीं फिर उन्हें काला मैन कह कर घृणा करने लगते हैं, यह किसी से छुपा नहीं है। हमें इन जालिमो से सावधान रहना चाहिये और जैसे भी बने अपने आर्य लालों को इनसे बचाना चाहिए नहीं तो हिन्दू नाम को भी नहीं रहेंगे।

बाद में महाशय प्यारेलाल जी ने कहा कि इससे बढ़कर घोर दुःख की बात और क्या होगी कि कभी सारे विश्व में एकमात्र हिन्दू ही हिन्दू थे। आज सभी देश के मुसलमान, ईसाई, बौद्ध बन चुके हैं और बाकी भारतवर्ष ही ऐसा बचा था कि जिसमें हिन्दू शेष थे पर इसमें भी आज ईसाई मुसलमानों की भरमार है। हमें अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहना चाहिए।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

वनिता विवेक

महिलाओं को घर बैठे काम

[श्री स्वदेशलता जी द्वारा]

आजकल के मंहगाई के समय में क्लर्कों, अध्यापकों, पुलिस कान्सटेबलों और कारखानों तथा दूकानों के कर्मचारियो आदि के लिए गृहस्थी का खर्च चलाना बहुत कठिन है अतः ऐसे परिवारों की स्त्रियों को यदि कुछ काम दिया जाय तो, निःसन्देह उनको बहुत सुभीता हो सकता है। फिर उन्हें घर बैठे ही काम मिल जाय, तो और भी अच्छा।

इस विचार को ध्यान में रखते हुए शहरों के परिवारों की भलाई की एक योजना बनाई गई है जिससे ऐसी औरतो को काम करने का अवसर मिल सके। औद्योगिक सहकारी समितियाँ यह योजना चलाती हैं। जरूरतमन्द औरतें थोड़ा सा प्रवेश शुल्क देकर और कुछ हिस्से खरीद कर सहकारी समिति की सदस्या बनती हैं, फिर उस क्षेत्र में जो उद्योग अथवा दस्तकारी का काम चलाना होता है, उसकी शिक्षा सदस्यों को दी जाती है। इसके बाद उन्हें काम दिया जाता है।

औरतों को घर बैठे काम

इस योजना के अन्तर्गत अभी तक तो केवल दियासलाई बनाने के कारखाने खोले गये हैं, क्योंकि यह काम ऐसा है कि औरतें घर बैठे भी कर सकती हैं। दिल्ली, विजयवाड़ा, पूना, और हैदराबाद में ७५० औरतें काम कर रहीं हैं।

इसके अतिरिक्त और भी कुछ सामान घर पर आसानी से बनाया जा सकता है, जैसे शिक्षा सम्बन्धी खिलौने मान्टेसरी शिक्षा का सामान, मिट्टी के बर्तन, सिले कपड़े आदि। इसका उद्योग नागपुर में खोला जा रहा है। इसके अलावा बंगलौर और केरलकाई तथा राजस्थान और आसाम में भी उपयुक्त स्थानों की तलाश हो रही है, और अन्य तैयारियां की जा रही हैं। पटियाला में फल-संरक्षण केन्द्र खोलने का निश्चय हो चुका है।

सरकार से सहायता

यह योजना वाणिज्य और उद्योग मन्त्रालय के सहयोग और आर्थिक सहायता से चालू की जारही है। यह मंत्रालय काम सिखाने और कारखाने खोलने में सहायता दे रहा है और चीजों की बिक्री की भी व्यवस्था करवाता है। काम सिखाने का पूरा और कुछ पूंजी व्यय का आधा, यह मंत्रालय अनुदान के रूप में और शेष ऋण के रूप में देता है।

राज्य सरकार विस्तृत योजना बनाती है और वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय उस पर स्वीकृति देता है। इस के बाद वह सरकारी संस्था की प्रबन्ध समिति बनाता है, जिसमें समाज सेविकाएं और राज्य तथा केन्द्रीय सरकार के प्रतिनिधि होते हैं। तब, अनुदान और ऋण राज्य सरकारो की मार्फत दिये जाते हैं।

इस प्रकार की समाज-कल्याण योजनाएं केवल तभी सफल हो सकती हैं, जबकि लोगो को वहाँ अच्छी आमदनी का जरिया दिखाई दे। अत. केन्द्रीय समाज-कल्याण मण्डल उत्पादन की ओर अधिक ध्यान दे रहा है। यह भी जरूरी है कि समाज सेवक लोग काम करने वाली औरतों के बच्चों को सिखाने तथा बूढ़ों और बच्चों को पढ़ाने लिखाने के केन्द्र आदि भी खोलें। केन्द्रीय मण्डल इन संस्थाओं को सहायता भी देता है। इस प्रकार इन कामों से उस क्षेत्र में रहने वालों का जीवन सुखी होता है, और उन्हें आर्थिक चिन्ताओं से भी मुक्ति मिलती है।

(पृष्ठ १२ का शेष)

इससे स्पष्ट है कि यदि सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा इस प्रकार की स्कीम तैयार करके चालू करे, जिसको कोई दूसरी संस्था कर ही नहीं सकती। सभा को भी सहानुभूति सहयोग का और उसके द्वारा उसकी सरकार का सहयोग प्राप्त हो सकता है। ईश्वर सभा को सुमति देवे।



आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र [विदेश में

एक प्रति का १० नए पैसे — लखनऊ रविवार १२ ज्येष्ठ ४ … ज्येष्ठ कृष्ण २ वि० २०१६ २४ मई १९५९ ई० [१२शिलिंग

25 MAY 1959

आर्यसमाज राष्ट्र, विश्व और मानवता की शक्ति है !

आर्यबन्धु स्नेह, सहयोग और सद्भावना से कार्यक्षेत्र में आगे बढ़े

राष्ट्र के चारित्रिक, नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अभ्युत्थान का दायित्व आर्यसमाज को पूर्ण करना है



श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा
नव निर्वाचित प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के १७ मई को सम्पन्न हुए वार्षिक वृहदधिवेशन में सर्व सम्मति से नवनिर्वाचित प्रधान श्री प० हरिशङ्कर शर्म्मा जी ने प्रतिनिधियों के समक्ष सन्देश देते हुए कहा कि "आर्यसमाज राष्ट्र, विश्व और मानवता की शक्ति का प्रतीक है उसके महत्व की रक्षा करना प्रत्येक आर्य और महर्षि दयानन्द के अनुयायी का कर्त्तव्य है। आज राष्ट्र में स्वाधीनता के इतने समय पश्चात् जो चारित्रिक नैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक कमजोरियाँ आ रही हैं उन सबको समाप्त करने एवं आदर्श राष्ट्र निर्माण के दायित्व को आर्यजन समझें कार्य करें स्वयं आगे बढ़ें और राष्ट्र का नेतृत्व करें। इस प्रगति के लिये हमें अनुशासन, त्याग, और सहनशीलता के महान् चारित्रिक गुणों का विकास करना होगा, प्रजातन्त्र की सभी बुराइयों से राष्ट्र को बचाने से पहले स्वयं अनुशासन भावना का विकास करना होगा।"

"आज आर्यसमाज की पहले से अधिक आवश्यकता है। हम इस भावना को अच्छी प्रकार अनुभव करें और अपने मार्ग पर चलना जारी रक्खें, प्रभु हमें सफलता प्रदान करेंगे।

प्रधान सम्पादक-
उमेशचन्द्र स्नातक शिरोमणि एम. ए

अङ्क २०

सुझाव और सम्मतियां

आर्य संस्थाओं की रजिस्ट्री

उत्तरप्रदेश में कुछ आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं (अधिकतर शिक्षा संस्थाओं) ने अपनी रजिष्ट्री पृथक करा ली हैं। जहां तक आर्यसमाजों का मामला है इस विषय में पर्याप्त आंदोलन पहिले हो चुका है और ऐसी पृथक रजिस्टर्ड आर्यसमाजें आर्य प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित हैं और मेरा विश्वास है कि वह भी प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा के अनुशासन के अन्तर्गत हैं। शिक्षा संस्थाओं में प्रायः विवाद उठ खड़े होते हैं और पृथक रजिष्ट्री का एक भयानक दुष्परिणाम यह होता है कि यह विवाद शीघ्र ही न्यायालयों में पहुँच जाते हैं।

यह भ्रम अनेक आर्यसामाजिक पुरुषों में फैला हुआ है कि रजिष्ट्री करा लेने से कोई विशेष महत्व या स्वत्व प्राप्त हो जाते हैं। जब आर्य प्रतिनिधि सभा एक रजिस्टर्ड बाडी है तो जिस प्रकार उसकी १००० शाखाओं को पृथक पृथक रजिस्टर्ड कराने की आवश्यकता नहीं है उसी प्रकार शिक्षा संस्थाओं को भी अलहदा रजिष्ट्री कराना व्यर्थ है। इस समय भी जहां तक मैं जानता हूँ आर्य कन्या पाठशाला प्रयाग, मुजफ्फरनगर, सदर मेरठ, लखीमपुर तथा अन्य अनेक विद्यालय और इन्टर कालेज ऐसे हैं जो पृथक् रजिस्टर्ड नहीं है परन्तु वे सब सुचारुरूप से चल रहे हैं और बराबर सरकार से सहायता पा रहे हैं। वार्षिक चित्र जो सरकार को भेजे जाते हैं उनमें लिख दिया जाता है कि "यह संस्था उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित है जिसकी रजिष्ट्री कानून २१ सन् १८६० के अनुसार है—"

मेरी सम्मति में आर्य प्रतिनिधि सभा को चाहिये कि आर्य संस्थाओं के लिये कुछ मौलिक नियम बना दें जिनके अन्तर्गत स्थानीय उपनियम बना लिये जायें। नियमों का परिवर्त्तन बिना प्रान्तीय सभा की स्वीकृति प्राप्त किये न किया जाय, परन्तु उपनियमों को स्थानीय प्रबन्धक सभायें बदल सकती हैं। मौलिक नियमों में विशेष रूप से निम्न बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है :—

१—जिस प्रकार सभा से सम्बन्धित समस्त आर्यसमाजों की समस्त चल व अचल सम्पत्ति की स्वामिनी प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा है उसी प्रकार समाजों से स्थापित आर्य संस्थाओं की भी समस्त सम्पत्ति की स्वामिनी सभा ही रहेगी।

२—आर्य संस्थाओं की प्रबन्धकारिणी सभाओं में दो तिहाई सदस्य आर्यसमाज की वार्षिक साधारण सभा द्वारा निर्वाचित आर्य सभासद् रहेंगे जिनमें प्रधान व मन्त्री पदेन रहेंगे। शेष एक तिहाई में आर्यसमाज से बाहर के लोग लिये जा सकते हैं।

३—संस्था का प्रधान आर्यसमाज का निर्वाचित प्रधान रहेगा। संस्था का प्रबन्धक स्वयं प्रबन्धकारिणी समिति चुनेगी परन्तु वह उन आर्य सभासदों में से चुना जायेगा जिनको आर्यसमाज की साधारण सभा ने चुनकर भेजा है।

४—आर्यसमाज द्वारा स्थापित आर्य संस्थाओं की अचल सम्पत्ति को हस्तान्तरित करने का अधिकार प्रबन्धकारिणी समाज को प्राप्त न होगा जब तक प्रान्तीय सभा की स्वीकृति न हो।

५—यदि किसी आर्य संस्था में ऐसी अव्यवस्था उत्पन्न हो जावे जिससे संस्था की सम्पत्ति को हानि पहुचने का अन्देशा हो, या किसी कार्य से आर्यसमाज के नियम भंग होने की सम्भावना हो तो प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का निर्णय अन्तिम होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा के शिक्षा-विभाग का कर्त्तव्य है कि समस्त आर्य संस्थाओं की नियमावलियों को मंगवाकर इस बात की जांच करे कि उन संस्थाओं के संचालन में कोई नियम ऐसे तो नहीं हैं जिन पर आर्यसमाज या सभा का कोई कन्ट्रोल नहीं है। जिन संस्थाओं ने अपनी पृथक् रजिष्ट्री करा ली है और सारे अधिकार अपने हाथ में ले रखे हैं उन्हें या तो अपने नियमों में उचित परिवर्त्तन कर लेना चाहिये और यदि वह ऐसा न करें तो सभा को स्पष्ट घोषणा कर देना चाहिये कि अमुक संस्था या सभा, या सभा से सम्बन्धित आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है।

सच बात तो यह है कि आर्यसमाजें संस्थायें खोल लेती हैं उन संस्थाओं के नियम भी बना लेती हैं और कहीं-कहीं पृथक् रजिष्ट्री भी करा लेती हैं परन्तु सभा का परामर्श लिये बिना सब कुछ कर लेती हैं। जब विवाद उपस्थित हो जाता है और मुकदमें न्यायालय में पहुँचते हैं तो आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वार पर आते हैं। सभा सदस्य के नाते मुझे दो ऐसे मुकदमों में काम करना पड़ा और दोनों मुकदमों पर सभा का लगभग पन्द्रह बीस हजार रुपया हाईकोर्ट तक लड़ने में व्यय हो गया।

मैं समझता हूँ कि सभा और समाजों को इस विषय में अपनी नीति स्पष्टरूप से निर्धारित कर देनी चाहिये। यदि ऐसा न किया गया तो समाजों और प्रान्तीय सभा को घोर आपत्ति में पड़ जाने का भय है।

—शिवनारायण शुक्ल एडवोकेट
प्रधान
आर्यसमाज लखीमपुर।

आर्यसमाज की अवरुद्ध गति को प्रगति दीजिये

१—स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व हिंदुओं में एक प्रकार का अरक्षा का भाव जम गया था। वह समझते थे कि विधर्मी लोग हमारी संख्या कम करने में सभी प्रयत्न कर रहे है और राज्य भी विधर्मी है इसलिये वह रक्षा के सभी उपाय काम में लाना चाहते थे। सामाजिक तथा धार्मिक सुरक्षा आर्यसमाज से प्राप्त हो रही थी अतः आर्यसमाज का प्रचार उन पर प्रभाव करता था। समाजों के सदस्य बढ़ते थे और संस्थाओं को खूब दान मिलता था। अब परिस्थिति और है। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही हिन्दुओं के मत में साधारणतः यह गलत धारणा घर कर गई है कि हम अब सुरक्षित हैं क्योंकि हमारा बहुमत है। इसी बीच में नवीन वेदान्त तथा पौराणिक मतों ने जन धन के बल पर शिक्षा-क्षेत्र में से, तथा नये नये आकर्षक प्रकारों से प्रचार करके नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। पौराणिक फिल्मों, रेडियो के वार्तालाप और गायनों के प्रचार "परमार्थ" "कल्याण" प्रभृति सुसम्पादित तथा आकर्षक पत्र, सभी पुस्तकों में पौराणिक कहानियों की भरमार इत्यादि सब वस्तुएं बच्चों और युवकों को पौराणिक परम्परा की ओर बढ़ाने में ही लगी हैं। और तो और आर्य भाषा के साहित्य-क्षेत्र में भी आर्यसमाज नेता से पदानुगामी की स्थिति पर पहुँच गया है। यह हुई बदली परिस्थिति और उसका प्रभाव।

२—आर्यसमाज में जन, धन, तथा विद्या आदि बल से युक्त लोगों की दिन प्रतिदिन कमी कुछ तो उपर्युक्त कारणों से हो रही है कुछ अपनी आन्तरिक कमियों से। शिक्षा के बड़े-बड़े कालिज, गुरुकुल इत्यादि आर्यसमाज के पास होते हुए भी जवानों का पर्याप्त संख्या में न आना आर्यसमाजी माता-पिता की सन्तान का आर्यसमाजी न होना, इत्यादि आन्तरिक असंगठन और प्रमाद के कारण हैं।

३—अवकाश प्राप्त, वानप्रस्थी तथा संन्यासी लोगों का जो प्रचार के सबसे सस्ते और बहुमूल्य साधन हैं, आर्य संस्थाओं में पर्याप्त मान न होना, उनकी ओर से लापरवाही और उनकी सहज सुविधाओं का विचार न होने से जितनी संख्या में आर्य विद्वान् संन्यासी होने चाहिये उतनी संख्या में नहीं होते हैं जिससे और अधिक काम हो सके।

४—संस्थाओं से जहां आर्यसमाज के प्रचार में पहले कुछ तेजी हुई वहां वह अब बोझ बन गई हैं। उनके कारण बहु स्थानों पर झगड़े हुये और अवांछित लोगो के कुछ कार्यों से आर्यसमाज के प्रभाव और प्रचार को बड़ा धक्का लगा। उन पर समुचित दबाव होना चाहिये।

५—शास्त्रार्थों के बन्द हो जाने के कारण लोगों को सत्यासत्य निर्णय का विचार करने तथा सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करने की रुचि नहीं रही है जिससे लोग पहले समाज की ओर आकर्षित होते थे।

—राजकिशोर श्रीवास्तव
आर्यसमाज, शाहजहांपुर

आर्य उपदेशकों और प्रचारकों तथा संन्यासियों का सम्मान

अनेकों विद्वान् उपदेशकों को इन पंक्तियों का लेखक जानता है जिन्होंने अपने सर्वस्व का दान वैदिक धर्म के प्रचार के लिये दे रक्खा है। परन्तु आज उनकी आजीविका का साधन कोई नहीं है। उनके ऊपर उनके बाल-बच्चों का भार है जिसके कारण वे रात-दिन चिन्ताओं के बोझ से घुटते रहते हैं।

यदि कोई स्वाभिमानी उपदेशक या प्रचारक किसी प्रतिनिधि सभा से अथवा समाज से अपनी निर्वाह-वृत्ति लेकर समाज की सेवा का कार्य रात-दिन एक करके करता है तो उसे हीन समझ कर लोग उसकी आत्मा को चोट पहुँचाते हैं।

हम श्रद्धा को त्यागकर तर्क के तीर बरसाकर लोगों को वैदिक धर्म का अनुयायी बनाना चाहते हैं। परन्तु आर्य समाज श्रद्धा और भक्ति-भावना के बिना सूना पड़ा है। आज एक उपदेशक या संन्यासी जिसने वेद प्रचार के लिये अपना जीवन सर्वस्व ही निछावर कर चुका है, यदि वह बीमार पड़ जा—

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वेदोपदेश

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ य० ३२।१४॥

हे सर्वज्ञाग्ने परमात्मन् ! जिस विज्ञानवती यथार्थ धारणा वाली बुद्धि को देव [विद्वानों] के वृन्द उपासते [धारण करते] हैं । तथा यथार्थ पदार्थ विज्ञान वाले पितर जिस बुद्धि के उपाश्रित होते हैं । उस बुद्धि के साथ इसी समय कृपा से मुझको मेधावी कर "स्वाहा" इसको आप अनुग्रह और प्रीति से स्वीकार कीजिये, जिससे मेरी जड़ता सब दूर हो ।



लखनऊ—२४ मई १९६९, दयानन्दाब्द १२४, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६९

महान् दायित्व की स्मृति

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का प्रतीष्ठित वार्षिक बृहदधिवेशन १६-१७ मई को हाथरस में सम्पन्न हो गया । नव निर्वाचित प्रधान आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा ने प्रतिनिधियों के समक्ष प्रेरणात्मक सन्देश देते हुए कहा कि हमें सदैव आर्यसमाज के गौरव को समझना और उसकी रक्षा का प्रयत्न करना चाहिये । आर्यसमाज मानवता का प्रतीक है, राष्ट्र और विश्व के आदर्श निर्माण का प्रकाश-स्तम्भ आर्यसमाज है । इस महान् थाती की रक्षा का दायित्व वर्तमान पीढ़ी के हम आर्यसमाजियों पर है । हमें उस दायित्व की गम्भीरता को सदैव ध्यान में रखना चाहिये और स्नेह, सहयोग और सद्भावना के पवित्र आदर्शों का पालन करते हुए आर्यसमाज की सेवा में जुट जाना चाहिये । साधारणतः लोग आर्यसमाज की आवश्यकता पर सन्देह प्रकट करने लगते हैं पर यह पलायनवादी मनोवृत्ति है । उसकी ओर संकेत करते हुए प्रधानजी ने प्रतिनिधियों से अपील की कि वे अपने जीवन को आदर्श एवं पवित्र बना आर्यसमाज की आवश्यकता सिद्ध कर सकते हैं । हमारे देश में आज जा चारित्रिक, नैतिक धार्मिक, सांस्कृतिक सभी दिशाओं में ह्रास दृष्टिगोचर हो रहा है उसे कौन दूर करेगा, कैसे करेगा इसका एक ही उत्तर है आर्यसमाज । जब आर्यसमाज की इतनी उपयोगिता है तो उसे पूरा करने का दायित्व भी हम आर्यसमाजियों पर है । यह चिन्तनीय है कि हम उतने दृढ़ और आदर्श नहीं रहे जितने आदि और मध्य युग में थे पर फिर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए । उच्चता एवं हीनता की ग्रन्थियों से संगठन को मुक्त कर हमें आगे बढ़ना होगा । संगठन के गौरव का एक ही सूत्र है हमारा चरित्र । हम अपने चरित्र की सुगन्धि से भारतवाटिका को सुगन्धित कर दें यही हमारा आज का युगधर्म होना चाहिये । आत्मिक शुद्धि का व्यक्ति और समाज के जीवन में गम्भीर महत्त्व है उसे हमें सदैव अपने समक्ष रखना होगा ।

आशा है आर्यजन प्रधानजी के इस प्रेरणात्मक सन्देश से महान् दायित्व को अनुभव करेंगे और आर्यसमाज की प्रगति में अपने व्यक्तिगत दायित्व और सामाजिक कर्तव्य का पालन करेंगे ।

आदिवासियों के नाम पर ईसाइयों को सुविधायें

दुर्भाग्य से भारत में अभी हमारी सरकार आदिवासी और बाह्यागत जातियों के भेद को मान रही है इस मान्यता के पीछे सांस्कृतिक दुरभिसन्धि है । आर्यसमाज भारत में आदिवासी समस्या को सैद्धान्तिक रूप में स्वीकार नहीं करता है फिर भी व्यावहारिक रूप में सरकार ने आज आदिवासियों को जो सुविधायें प्रदान की हैं या प्रदान कर रही हैं उसका आधार आदिवासियों की विशेष सांस्कृतिक स्थिति मानी जाती है पर चूंकि आदिवासी अत्यन्त गरीब और अशिक्षित हैं उनके लिये प्रदत्त संरक्षणों का दुरुपयोग विदेशी ईसाई मिशनरी कर रहे हैं ।

हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि जब ईसाई बन जाने से धर्म, वेश-भूषा, रहन-सहन सभी में विदेशीपन आ जाता है तब उन्हें संरक्षण प्राप्त करने का क्या अधिकार रहता है । संसद में प्रसिद्ध आर्य नेता श्री पंडित प्रकाशवीर शास्त्री जी ने आदि वासी ईसाइयों के सम्बन्ध में सरकार की नीति की आलोचना की है । आर्यसमाज का दृष्टिकोण भी यही है । सरकार को अपनी नीति पर विचार करना चाहिये ।

बेकारी का अभिशाप

सचेंडी (कानपुर) थाने के कटरा गाँव का छोटा नामक एक व्यक्ति हाल ही में गाँव के बाहर नीम के पेड़ से लटका हुआ पाया गया । कहते हैं कि बेकारी और आर्थिक कठिनाइयों से तङ्ग आकर उसने आत्महत्या कर ली । वह आदमी तपैदिक से बीमार था और कई वर्ष से वह किसी तरह अपनी दवा दारू चला रहा था । किन्तु इसी बीच में उसकी हालत बहुत खराब हो गई—दवा तो दूर उसके खाने तक का ठिकाना न रहा ! अन्त में उसे इस दयनीय दशा से छुटकारे का एक ही उपाय सूझा—आत्महत्या ! हम अपने घर में, प्रान्त और देश में, प्रायः १२ वर्ष से शासन कर रहे हैं ! किन्तु आज भी बेकारी, भुखमरी, क्षय आदि भीषण रोगों से त्राण पाने के लिए हमारी देहाती गरीब जनता छटपटा रही है । हमारे प्रान्त के देहाती क्षेत्रों में कहाँ-कहाँ और कितने सरकारी चिकित्सालय काम कर रहे हैं, उनके द्वारा वर्ष में कितने असहाय रोगियों की चिकित्सा की जाती है इसकी हमें कोई जानकारी नहीं है । जो लोग रोगी, बूढ़े, पंगु, असमर्थ और बेरोजगार हैं उनकी तथा उनके परिवारों की रक्षा और सहायता के लिए हमने क्या कोई सुसंगठित और नियमित प्रयास किया है ? यदि नहीं, तो, इस प्रकार की भुखमरी और आत्महत्या की दुर्घटनाएं, जो हमारे स्वतंत्र देश के नाम पर कलंक हैं, रोकी नहीं जा सकेंगी । क्या हमने अपने १२ वर्ष के शासन में इसके लिए पर्याप्त प्रयास किया है ?

श्री स्वामी अमृतानन्द जी महाराज नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ में ग्रीष्म निवास कर रहे हैं

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वामी अमृतानन्द जी महाराज विश्राम एवं स्वास्थ्य-सुधार के लिये आजकल नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ (नैनीताल) पहुँच गये हैं । उनके आश्रम निवास से रामगढ़ में आर्यसमाज की हलचल बढ़ने लगी है ।

संस्कृत बोर्ड की स्थापना

वह दिन देश के दुर्भाग्य का था जब दासता की दूषित मनोवृत्ति से लोग संस्कृत को मृतक भाषा के नाम से पुकारते थे । देश के स्वाधीन होने पर बढ़ती हुई राष्ट्रीय चेतना के कारण हम अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति की महत्ता को भली-भाँति हृदयङ्गम करने लगे हैं । भारत-सरकार ने संस्कृत भाषा के पुनरुद्धार के लिए, आज से ७ वर्ष पूर्व एक आयोग बना दिया था । अब सरकार ने आयोग की सिफारिश के अनुसार देश में संस्कृत की रक्षा और विस्तार की दृष्टि से एक केन्द्रीय संस्कृत-बोर्ड की स्थापना की घोषणा की है । हम इस घोषणा का स्वागत करते हैं । संस्कृत भाषा देश की अधिकांश भाषाओं की जननी है । उसका भाण्डार साहित्य के अमूल्य ग्रन्थ-रत्नों से सम्पन्न है । उसका अधिकाधिक प्रचार और प्रसार हमारे देश की प्राचीन संस्कृति, आत्म-चेतना और गौरव-गरिमा की सुरक्षा का एक प्रबल कारण बनेगा । इस घोषणा के अनुसार स्थापित संस्कृत बोर्ड वास्तव में यदि कुछ ठोस काम कर सका तो हमारे देश के अभ्युदय की दिशा में निश्चय ही एक शुभ प्रयास होगा ।

साहित्यिक शोध में निष्ठा

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का भाषण

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग ने अनुसन्धान-गोष्ठी की व्याख्यान-माला का आयोजन किया है । उसमें वाराणसी विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने "सामग्री-संकलन" पर बड़ा सार-गर्भित भाषण दिया ।

उन्होंने कहा कि हिन्दी के स्वीकृत विषयों का वर्गीकरण इन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है—[१]मध्यकालीन साहित्य, [२] आधुनिक साहित्य, [३] लोक साहित्य, [४] भाषा-विज्ञान और व्याकरण तथा [५] ग्रन्थ-संपादन । उन्होंने कहा कि उपलब्ध और अनुपलब्ध सामग्री का कोई अभाव नहीं है,

[शेष अगले पृष्ठ पर]

नव निर्वाचित पदाधिकारियों एवं अन्तरङ्ग सभासदों की सूची १९५९

१—श्री हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न, लोहामण्डी, आगरा प्रधान
२—,, शकुन्तलादेवी जी गोयल, सैरनगर बाजार मेरठ उपप्रधान
३—,, महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री, एम० ए० बड़ौत (मेरठ) ,,
४—,, जगनन्दनलाल जी, एडवोकेट एडमास्टन रोड, प्रयाग ,,
५—,, प्रकाशवीर शास्त्री, एम० पी०, चन्दौसी (मुरादाबाद) ,,
६—,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा, एम० एल० सी०, हाथरस (अलीगढ़) मन्त्री
७—,, ईश्वरदयालु जी आर्य, भाटान बिजनौर उपमन्त्री
८—,, उमेशचन्द्र जी, स्नातक एम० ए०, हल्द्वानी (नैनीताल) ,,
९—,, चन्द्रनारायण जी एडवोकेट, बरेली ,,
१०—,, कर्णसिंह जी डोंकर, गवर्नमेंट कन्ट्रैक्टर डेम्पीयरनगर, मथुरा ,,
११—, विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा, बी० ए०, पानदरीबा लखनऊ कोषाध्यक्ष
१२—,, फूलनसिंह जी आर्य, शिकोहाबाद (मैनपुरी) सहा० ,,
१३—,, नरदेव जी, स्नातक एम पी, गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) पुस्तकाध्यक्ष
१४—, कृष्णलाल जी कुसुमाकर, आ०स०फिरोजाबाद (आगरा) सहा० ,,

अन्तरङ्ग सभासद

१५—श्री भगवतशरण जी बी० ए०, बाजार झाऊलाल, लखनऊ
१६—,, मुन्नालाल जी, आर्यसमाज, उन्नाव
१७—,, रामस्वरूप जी, आर्यसमाज, हरदोई
१८—,, शिवनारायण जी शुक्ल, एडवोकेट, लखीमपुर खीरी
१९—,, मदनमोहन जी वर्मा, एडवोकेट एम० एल० ए०, फैजाबाद
२०—,, देवीप्रसाद जी, आर्यसमाज, बहराइच
२१—,, सुन्दरलाल जी, आर्यसमाज, बलरामपुर (गोंडा)
२२—,, आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री, एम० ए०, आर्यसमाज, रायबरेली
२३—,, होतीलाल जी, इंजीनियर, गोरखपुर
२४—,, अभयकुमार जी, स्नातक एम० ए० दयानन्द कालेज आजमगढ़
२५—,, निरंकार प्रसाद जी, आर्यसमाज बस्ती
२६—,, प्रिं० कृष्णानन्द जी, एम० ए०, दयानन्द कालेज काशी वाराणसी
२७—,, सुरेन्द्रदेव जी, शास्त्री आर्यसमाज, बलिया
२८—,, आशाराम जी, आर्यसमाज, मिरजापुर
२९—,, ऋषिपालसिंह जी, एम० ए०, एल०-एल० बी० एडवोकेट आर्यसमाज सीपरी बाजार, झांसी
३०—,, इन्द्र वर्मा जी, एम० ए०, रामनगर नैनीताल
३१—श्रीमती सरलादेवी जी, शास्त्री आर्य स्त्री समाज, अलीगढ़
३२—श्री पं० रामप्रसाद जी आर्य, आर्य भवन, मैंडू (अलीगढ़)
३३—,, बनवारीलाल जी; आर्यसमाज मुरादनगर (मेरठ)
३४—,, रघुनन्दन स्वरूप जी, एडवोकेट, देहली रोड सदर मेरठ
३५—,, तेजसिंह जी, आर्यसमाज लालापार, सहारनपुर
३६—,, फूलचन्द्र जी, एम० ए० आर्यसमाज लालापार, सहारनपुर
३७—श्रीमती रमावती जी, स्त्री आर्यसमाज, बदायूं
३८—श्री चोखेलाल सत्यपाल जी, मुख्तार, शाहजहांपुर
३९—,, रामबहादुर जी, आर्यसमाज पूरनपुर (पीलीभीत)
४०—,, कुन्दनलाल जी आर्य, आर्यसमाज नगीना (बिजनौर)
४१—,, विश्वनाथ जी त्यागी, बी ए, एल-एल बी रुस्तमपुर न्यायवली मुरादाबाद
४२—,, आचार्य विश्वश्रवा. जी, वेद मन्दिर ११ बाजार मोतीलाल, बरेली
४३—,, शेरसिंह जी काश्यप, आयुर्वेद शिरोमणि, शामली रोड मुजफ्फरनगर
४४—,, शिवलाल जी वर्मा, प्रधान आर्यसमाज बुलन्दशहर
४५—,, हरप्रसाद जी आर्य, आर्यसमाज धमोरा (रामपुर)
४६—,, मोहनलाल जी आर्य, मण्डी सैय्यदों आर्य नगर आगरा
४७—,, गोपाल सहाय जी, डेम्पीयर नगर मथुरा
४८—,, दयाराम जी गौड़, आर्यसमाज शिकोहाबाद (मैनपुरी)
४९—,, मथुराप्रसाद जी आर्य, आर्यसमाज एटा
५०—,, प्रेमनारायण जी वार्ष्णेय, आर्यसमाज रानीमण्डी इलाहाबाद
५१—,, उमाशंकर जी, एडवोकेट फतेहपुर
५२—,, डा० शिवदत्त जी, आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर
५३—,, नवीनचन्द्र जी आर्य, मन्त्री आर्य जिलोप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद
५४—,, प्रेमनाथ जी, आर्य उप प्रतिनिधि सभा अजीतमल (इटावा)
५५—,, शान्तिप्रकाश जी प्रेम, आर्यसमाज लावली पंचपुरी (गढ़वाल)
५६—,, मुरलीधर जी पाण्डेय, आर्यसमाज देवरामपुर (गढ़वाल)
५७—,, धर्मपाल जी विद्यालंकार, स० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)
५८—,, आचार्य बृहस्पति जी, शास्त्री वेदशिरोमणि एम० ए०, देहरादून
५९—,, पूर्णचन्द्र जी, एडवोकेट माईथान आगरा
६०—,, सावित्रीदेवी जी, साहित्यरत्न आर्य स्त्री समाज लालकुर्ती मेरठ
६१—,, ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम एम० ए० आर्यसमाज कृष्ण गंगा चौक मथुरा

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. सी.

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अभाव है उसे खोज निकालने और उसका समुचित उपयोग करने की निष्ठा और लगन का।

द्विवेदीजी ने सामग्री-संकलन और उसके सम्यक उपयोग की प्रणालियों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी के शोध-कार्य की प्रगति यद्यपि असन्तोषजनक नहीं है, किन्तु इधर उसमें अनेक अनुचित प्रवृत्तियां उभरती आ रही हैं। अनुसंधान कार्य को पदोन्नति, जीविका-उपार्जन तथा जीवन-साफल्य का उपकरण बनाया जा रहा है। उन्होंने आग्रह-पूर्वक कहा कि हमें प्रयास करना चाहिए कि ज्ञान की साधना में कलुष न घुसने पाये।

भाषण बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक रहा। इस गोष्ठी के सभापति वाराणसी विश्व विद्यालय के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष डा० सूर्यकान्त थे।

उ० प्र० के किसान भूमि-सुधार चाहते हैं

केवल ७ फीसदी सहकारी खेती के पक्ष में

लखनऊ विश्वविद्यालय के अर्थ-विभाग ने इस विषय पर शोध और अध्ययन का फल प्रस्तुत किया है कि ग्रामीण भारत में अगला कदम क्या हो। उससे प्रकट है कि उत्तर प्रदेश के ४१ प्रतिशत किसानों ने भूमि के पुनर्वितरण, २५ प्रतिशत किसानों ने जोतों की अधिकतम सीमा-निर्धारण और १९ प्रतिशत ने जोतों की चकबन्दी, और केवल ७ प्रतिशत ग्रामीणों ने सहकारी खेती करने के पक्ष में अपनी राय दी है।

विश्वविद्यालय अर्थ-विभाग के कार्यकर्ताओं ने पश्चिमी और पूर्वी उत्तर-प्रदेश के ग्रामों के लगभग ३५०० परिवारों के मुखियों से संपर्क स्थापित किया जिनमें प्रायः ८५० मुखियों ने विस्तार से प्रश्नोत्तर किये। इससे यह बात तो स्पष्ट हुई कि गांवों में अधिकांश किसान यह अनुभव करते हैं कि कुछ न कुछ भूमि-सुधार तो किया ही जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में लगभग तीन चौथाई किसानों की राय थी कि जोतों की अधिकतम सीमा निर्धारण हो और भूमि का पुनर्वितरण किया जाय।

इस जांच-पड़ताल से यह सिद्ध होता है कि राज्य-सरकार द्वारा प्रस्तावित ४० एकड़ की उच्चतम जोत सीमा से व्यावहारिक लाभ नहीं होगा। अर्थ-विभाग के इन विद्यार्थियों ने जोतों की उच्चतम सीमा १५ एकड़ रखी जाने को उपादेय माना है जिससे वर्त्तमान सम्पूर्ण खेती की भूमि का लगभग १० प्रतिशत अंश पुनर्वितरण और सहकारी खेती के लिए उपलब्ध हो सकेगा। इस विषय पर प्रस्तुत रिपोर्ट में भूमि का पुनर्वितरण कर उसे सहकारी खेती के अन्तर्गत लिये बिना चकबन्दी से उत्पन्न खतरों की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया गया है।

विकास योजनाओं की प्रगति

अर्थ और संख्या-विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति के अनुसार वर्ष १९५८-५९ की विभिन्न विकास योजनाओं के लिए ५२ करोड़ ४६ लाख रुपये की धनराशि निश्चित की गयी थी जिसमें से सितम्बर १९५८ को समाप्त होने वाली तिमाही तक केवल १२ करोड़ १७ लाख रुपया अर्थात् २३ २ प्रतिशत खर्च किया जा सका। विज्ञप्ति में आगे कहा गया है कि वर्ष की पहली छमाही में योजनाओं पर होने वाले व्यय की प्रगति सन्तोषजनक नहीं थी।

विज्ञप्ति के अनुसार द्वितीय आयोजन में कृषि के लिए ५१ करोड़ ९४ लाख ३ हजार रुपये का प्रविधान है और वर्ष १९५८-५९ के लिए इस मद में ११ करोड़ ५३ लाख ३३ हजार रुपया निर्धारित था। किन्तु उक्त तिमाही के अन्त तक दो करोड़ ३८ लाख छः हजार रुपया व्यय किया गया अर्थात् कुल धनराशि का केवल २० ६ प्रतिशत व्यय हुआ। उक्त अवधि में भूमि-विकास की मद में सबसे अधिक अर्थात् ३४ ७ प्रतिशत खर्च हुआ और सबसे कम अर्थात् ० १ प्रतिशत डेरी फार्म और दुग्ध-वितरण की मद में व्यय हुआ।

सांख्य में ईश्वरवाद

[श्री प्रो० वेदप्रकाश, एम० ए० रिसर्चस्कालर]

गताङ्क से आगे

फिर अगले सूत्र में प्रश्न उठा कि योगी तो अतीत व अनागत का भी प्रत्यक्ष कर लेते हैं जबकि उनका इन्द्रिय सम्बन्ध नहीं होता। कपिल उत्तर देते हैं कि यहां भी योगियों को आन्तरिक प्रत्यक्ष ही होता है अतः कोई दोष नहीं। अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर का प्रत्यक्ष योगी करते हैं परन्तु ईश्वर का इन्द्रिय सम्पर्क नहीं हो सकता फिर प्रत्यक्ष का लक्षण इसमें कैसे घटेगा? महर्षि कपिल इसका उत्तर देते हैं 'ईश्वरासिद्धेः' १।९२। अर्थात् इस प्रत्यक्ष के लक्षण से ईश्वर नहीं जाना जा सकता यानि प्रत्यक्ष प्रमाण से ईश्वर असिद्ध है। इन सूत्रों में कहीं भी इस बात की गन्ध नहीं मिलती कि कपिल ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते।

यहीं पर नहीं सूत्रों में एक सूत्र आता है "व्यावृत्तोभयरूपः।" १।१६० प्रकृति पुरुष के द्वारा संसारचक्र को निरन्तरता (सृष्टि प्रलय क्रम से) का व्याख्यान करते हुए विषय का उपसंहार करते उपर्युक्त सूत्र में कहते हैं 'प्रकृति व पुरुष के स्वरूप से जो पृथक है" (१-१६०)। प्रकृति पुरुष से पृथक तत्त्व क्या है इसको खोजने के लिए अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि उससे अगले सूत्रों में उस तत्त्व का वर्णन मिलता है कि वह साक्षी, नित्य मुक्त स्वभाव वाला तथा उदासीन वृत्ति वाला है यह लक्षण पुरुष व प्रकृति के अतिरिक्त परमात्मा का ही हो सकता है। ईश्वर का महाभारत में २५ तत्त्वों के अतिरिक्त २६ वां तत्त्व माना है।

और भी एक प्रसंग में ईश्वर का वर्णन आता है। सांख्यकार कहता है कि प्रकृति किसी का कार्य न होने पर भी पराधीन होने से उसका योग पुरुष के साथ हो जाता है। सांख्य दर्शन को नास्तिक मानने वाले इस प्रश्न को मुख्य रूप से उठाया करते हैं कि पुरुष निष्क्रिय तथा प्रकृति जड़ है तो इनका संयोग कैसे हुआ? इसका उत्तर तो स्वयं सांख्य सूत्र दे रहे हैं कि प्रकृति पराधीन है और प्रकृति को पराधीन रखने वाली शक्ति इसका संयोग पुरुष से करा देती है। यह प्रकृति को पराधीन रखने वाली शक्ति क्या है? इसका उत्तर इससे अगले सूत्र में ही मिल जाता है 'सहि सर्ववित् सर्वकर्ता" । ३-५६। अर्थात् वह प्रकृति को अधीन रखने वाला सर्वज्ञ और सबकी रचना करने वाला है। कुछ विद्वान् कहते हैं कि यह मुक्त पुरुष का लक्षण है। लेकिन वे भूल जाते हैं कि सूत्र में 'स' शब्द एक वचन है क्या मुक्त पुरुष एक ही है और जब तक सांख्य शास्त्र की रचना हुई कोई और मुक्त ही नहीं हुआ था? दूसरे सूत्र में सर्वकर्त्ता शब्द है अर्थात् वह रचने वाला भी है। एक तरफ तो आलोचक यह कहते हैं कि सांख्य का पुरुष निष्क्रिय है फिर सृष्टि रचना का कार्य निष्क्रिय पुरुष के अधीन करते हैं। यह कैसे सम्भव हो सकता है कि निष्क्रिय सृष्टि रचने वाला हो जाय? मालूम यही पड़ता है कि यहां सर्वज्ञ और रचना करने वाला केवल परमात्मा ही हो सकता है। कपिल का सर्वज्ञ और सर्वकर्त्ता कहने से क्या अभिप्राय है यह इससे अगले सूत्र में बिलकुल स्पष्ट है 'ईदृशेश्वरसिद्धिः सिद्धा' ।३।५७ अर्थात् इस प्रकार के (रचने वाले व सर्वज्ञ) ईश्वर का होना सिद्ध है।

सांख्य दर्शन कर्मफल के सिद्धान्त को मानता है, कर्मफल का सिद्धान्त मानने पर सर्वशक्तिमान् परमात्मा का मानना आवश्यक हो जाता क्योंकि कर्म जड़ है वे अपना फल स्वयं नहीं दे सकते और जीव अल्पज्ञ है तथा स्वयं को कष्ट नहीं देना चाहता, अतः कर्म का फल नहीं पैदा कर सकता। महर्षि कपिल इन कठिनाइयों से परिचित थे और उन्होंने कर्मफल को ईश्वर के अधीन माना है। 'न ईश्वराधिष्ठिते फलनिष्पत्तिः कर्मणा तत्सिद्धेः।' अ० ५ सू० २ अर्थात् ईश्वर के अधिष्ठाता होने पर ही फल की सिद्धि होती है केवल कर्मों द्वारा फल की सिद्धि न होने से। इससे तो स्पष्ट हो जाता है कि सांख्यकार ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखता था।

इसके अतिरिक्त एक स्थल पर और ईश्वर का प्रसंग उठता है। प्रसंग इस प्रकार चलाया गया है कि बुद्धितत्त्व के साथ तादात्म्य हो जाने से जीव अपने को शरीर का अधिष्ठाता समझने लगता है यदि यह तादात्म्य न रहे तो उसका अधिष्ठातापन भी समाप्त हो जाता है। प्रश्न उठता है कि बुद्धितत्त्व के साथ तादात्म्य तो सुषुप्ति, समाधि व मोक्ष में भी रहेगा, उस समय वह अपने आपको शरीर का अधिष्ठाता क्यों नहीं समझता? इसके उत्तर में कहा है "समाधि सुषुप्ति मोक्षेषु ब्रह्मरूपता।" [अ० ५।११६] अर्थात् सुषुप्ति समाधि व मोक्ष में आत्मा ब्रह्म के आनन्दादि गुणों को अपने में धारण कर लेता है। सुषुप्ति में तमोगुण का प्रभाव होने से जीव परमात्मा की सत्ता में सम्पन्न होने पर भी मूर्छित सा रहता है। समाधि व मोक्ष में वह उस आनन्द का भोग करता है। उस समय सम्बन्ध की घनिष्ठता के कारण जीव बुद्धितत्त्व से उत्पन्न अधिष्ठातृत्व को भूल जाता है। यदि सांख्यकार नास्तिक होता तो कभी भी ब्रह्म का वर्णन सम्बन्ध में भी न करता। इससे भी यही पता चलता है कि कपिल नास्तिक नहीं थे।

सांख्यदर्शन और वैदिक दर्शनों की तरह शब्द प्रमाण (वेद प्रमाण) को मानता है। वेद को स्वतः प्रमाण मानने का अर्थ ऐसी सत्ता का मानना है जो निर्भ्रान्त तथा सर्वज्ञ हो अन्यथा शब्द प्रमाण स्वतः प्रमाण नहीं माना जा सकता। ऐसी निर्भ्रान्त सत्ता सिवाय सर्वज्ञ परमात्मा के और नहीं हो सकती इसी को मानकर, 'निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्।' ५।५१ अर्थात् उसकी अपनी शक्ति से अभिव्यक्त प्रकट होने से वेद स्वतः प्रमाण हैं, के रूप में कहता है। सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान स्वाभाविक शक्ति है तथा निर्भ्रान्त है अतः प्रमाण है। इसी को वैशेषिक 'तद् वचनात् आम्नायस्य प्रामाण्यम्' कह कर स्वीकार करते हैं तथा ब्रह्म सूत्रों में वेदव्यास जी "शास्त्रयोनित्वात्" कहकर वेद को ईश्वर प्रणीत मानते हैं। स्वतः परमेश्वर की शक्ति से उत्पन्न होने से वेद को स्वतः प्रमाण मानकर सांख्य ईश्वर की सत्ता में विश्वास प्रतिपादित कर रहा है।

विविध ग्रन्थों व विद्वानों के अनुसार तथा सांख्य में निहित सूत्रों के कथनानुसार यह उचित ही प्रतीत होता है कि सांख्य को ईश्वरवादी शास्त्र माना जाय। यह तो हमें भी स्वीकार करना पड़ता ही है कि ईश्वर का विशद रूप से वर्णन करना इस शास्त्र का विषय ही नहीं था इसीलिए कहीं ईश्वर का क्रमबद्ध विशद वर्णन नहीं। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि शास्त्र में ईश्वर का जिक्र कहीं आया नहीं है। जहाँ कहीं भी कपिलाचार्यजी को ईश्वर तत्त्व की जरूरत पड़ी उन्होंने उसका वर्णन किया। यदि कपिल ईश्वर को बिल्कुल ही न मानते तब क्यों स्थल स्थल पर ईश्वर के सहारे गुत्थियों को सुलझाते? आधुनिक युग के दार्शनिक जगत् को महर्षि दयानन्द की यह एक महान् देन है कि उन्होंने एक महान वैदिक दर्शन को फिर से मध्यकालीन तर्कों व भ्रान्त धारणाओं से उद्धार किया। सांख्य को ईश्वरवादी सिद्ध करने पर दर्शन में क्या क्रान्ति आती है यह विषय गम्भीर है जिसको महर्षि दयानन्द भली भांति जानते थे। ★

चयनिका

संस्कृति और युगधर्म

आज हमारे देश और संस्कृति पर एक महान् संकट आ गया है जो कभी हजारों वर्षों में भी नहीं आया था। वह संकट है भारत की मर्यादाओं, परम्पराओं के प्रति अश्रद्धा एवं अविश्वास। रतिदेव की आतिथ्य भावना, हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता, सावित्री की पतिव्रता इन सबको आज हम सन्दिग्ध दृष्टि से देखने लगे हैं। संस्कृति युग के अनुकूल बदला नहीं करती। युगधर्म को समझने वाले इस तथ्य पर विचार करें। आतिथ्य-सत्कार हमारी संस्कृति की विशेषता है, क्या सर्दी गर्मी के कारण आतिथ्य की भावना में अन्तर आ जायगा? हां युग के अनुसार बाह्य परिवर्तन होते हैं। हमारे देश में ऐसे परिवर्तन हुए हैं। स्वामी रामानन्द और स्वामी दयानन्द इसके प्रतीक हैं, लेकिन युगधर्म के प्रवाह में बहकर उन्होंने अपनी संस्कृति नहीं छोड़ी बल्कि युगधर्म के विकार छुआछूत को हटाकर उन्होंने संस्कृति की धारा को निर्मल बनाया। एक मात्र संस्कृति ही हमें सूत्रबद्ध किये हुए है, इसी संस्कृति की रक्षा करनी है, यह राष्ट्र की आत्मा है।

कन्या गुरुकुल हरिद्वार

—दीनदयालु उपाध्याय
महामन्त्री भारतीय जनसंघ

प्रजातन्त्र मे सत्ता और जनता

प्रजातन्त्र में सत्ता का स्वामित्व प्रजा में निहित रहता है और शासन संचालन करने वाले जनसेवक होते हैं, किन्तु आज परिस्थिति बिल्कुल भिन्न है। मन्त्री स्वयं को स्वामी और प्रजा को दास समझते हैं। सिद्धान्त और क्रिया के मध्य विद्यमान यह अन्तर मिटाना होगा। इसका एक मात्र उपाय है जनता की जागरूकता। एक जागरूक नागरिक प्रधान मन्त्री से अधिक शक्तिशाली हो सकता है। हम अपने अधिकार को पहिचान कर उसके प्रति सजग रहें, तो निश्चय ही सरकार को हमारी सेविका बनकर रहना पड़ेगा।

रतलाम

—समाजवादी नेता श्री गोरा

सांस्कृतिक दासता से मुक्ति-चिन्तन

अंग्रेज, अंग्रेजी, अंग्रेजियत

(श्री अर्जुनदेव 'शिरोमणि' एम० ए०, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन)

[भारत के वास्तविक स्वरूप का दर्शन विदेशी सांस्कृतिक चक्षुओं से नहीं हो सकता, जब तक देश इस सच्चाई को न समझ लेगा बाह्य प्रगति भले ही दिखाई दे, आन्तरिक (राष्ट्रीय आत्मा का) विकास सम्भव न होगा। विदेशी दासता से मुक्ति के लिये स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसंस्कृति के महत्त्व को समझना और मानना होगा। अंग्रेजों के गुण, उनकी भाषा हमारे लिए तभी तक ग्राह्य हैं जब तक वे हमें आत्मसात न कर लें। आज देश इसी सांस्कृतिक दासता के संकट से ग्रस्त है। विद्वान् लेखक ने सरल भाषा में स्वच्छन्द एवं गंभीर प्रश्न पर विचार किया है। आशा है पाठक इस भावना का आदर करेंगे। —सम्पादक]

सुना है कि महात्मा गांधी से एक बार किसी ने पूछा कि महाराज ! आप में और नेहरू जी में क्या अन्तर है ? तो गांधी जी ने अत्यन्त संक्षिप्त उत्तर देते हुए कहा कि—'वैसे तो हम दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु फिर भी मैं चाहता हूँ अंग्रेजियत चली जाय अंग्रेज भले ही रह जायं, और नेहरू जी चाहते हैं अंग्रेजियत रह जाय, अंग्रेज भले ही चले जायं।"

गांधी जी और नेहरू जी के इस अन्तर को हम प्रत्यक्ष ही देख रहे हैं कि आज अंग्रेज तो चले गए किन्तु अंग्रेजियत के जाने का नाम भी मत लीजिए।

वास्तव में अभी हमारे देश से न तो अंग्रेज गए हैं और न अंग्रेजी और न अंग्रेजियत। भगवान जाने कभी जाएंगे भी या नहीं ?

अंग्रेज—बहुत से लोगों का यह विचार होगा कि अंग्रेज तो इस देश को छोड़कर न जाने कब के चले गए ? लेकिन सच मानिये कि अंग्रेज अभी इस देश से गए नहीं। हाँ इतना अवश्य है कि उनका शासन हमारे ऊपर से चला गया है और वह भी ऊपरी शासन, हमारे मनों पर तो अभी तक वही राज्य कर रहे हैं। ईसाइयत के नाम पर नवीन अंग्रेज बनाने का काम देश में जोरों से व्याप्त है, फलस्वरूप आज इनकी संख्या देश में बहुत हो गई है। ये नवीन अंग्रेज देखने में भारतीय हैं किन्तु इनका दिल दिमाग विदेशी है, अंग्रेजी है। इनके दर्शन करने हैं तो चले आइए नागा प्रदेशों में, पहाड़ी स्थानों में, और दक्षिण भारत में। और सरकार की अलमारी में बन्द दीमक भोज्य नियोगी-समिति की रिपोर्ट में। पहले तो हमारी सरकार यही मानने को तैयार न थी कि गौराङ्ग-महाप्रभु अपनी गोरी चमड़ियों के अन्दर दूषित मनोवृत्ति भी रखते हैं ? बाद में आर्यसमाज के बहुत कहने पर सरकार ने नियोगी-समिति की स्थापना की। नियोगी-समिति ने ईसाइयत के अनुचित प्रसार का खुला दृश्य सरकार के सामने रखा, किन्तु धन्य है हमारी सरकार को जिन्होंने इस पर कोई भी ध्यान नहीं दिया। यदि इस बाढ़ के प्रवाह को न रोका गया तो निश्चय ही पुनः हमारी स्वतन्त्रता उस प्रवाह में बह जायगी, क्या इस खतरे पर कभी हमारे कर्णधारों ने विचार किया है ?

अंग्रेजी—जिस प्रकार अंग्रेज अभी तक हमारा पीछा नहीं छोड़ रहे हैं उसी प्रकार अंग्रेजी भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है बड़े-बड़े शहरों में जाइए वहां के भोजनालयों में, औषधालयों में, कार्यालयों में सभी जगह आपको अंग्रेजी की चकाचौंध मिलेगी। किसी विश्वविद्यालय से हिन्दी में भी एम०ए० परीक्षा देनी हो तो सम्पूर्ण कार्य, फार्म और प्रवेश-पत्र अंग्रेजी में भरने पड़ते हैं यह हालत खास हिन्दी क्षेत्र आगरा विश्वविद्यालय में भी बदस्तूर जारी है। जब कोई छात्र विश्वविद्यालय से हिन्दी की परीक्षा भी दे रहा हो तो उसे ऐसा लगता है कि मानो हिन्दी की परीक्षा नहीं दे रहा है बल्कि विलायत की कोई परीक्षा दे रहा है। परीक्षा प्रवेश-पत्र, प्रवेश, नियमावली आदि कागज सभी तो अंग्रेजी के रंग में सराबोर मिलेंगे। इसके बाद जब परीक्षा-भवन में वह आता है तो देखता है कि उत्तर-पुस्तिका पर भी विषय के स्थान पर सब्जेक्ट लिखा हुआ है आदि-आदि। इसी प्रकार जो विद्यार्थी संस्कृत एम० ए० की परीक्षा देते हैं उनके प्रश्न पत्र आते हैं वही बाबा आदम के (गौराङ्ग महाप्रभु के) समय की अंग्रेजी में। परीक्षा है संस्कृत की और प्रश्न-पत्र आता है अंग्रेजी में। यह है स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी का प्रभाव। बहुत से अंग्रेजी-कामिनी के कमनीय स्वरूप पर रीझे हुए भक्त कहेंगे कि बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनकी हिन्दी नहीं है। उनसे हमारा यही आग्रह है कि वे जिन शब्दों का अभाव समझते हैं उन्हें सीधे हिन्दी में ले आवें, मानें, उन्हें कौन रोकता है, परन्तु वे उनको भारतीय वर्णों से, देवनागरी लिपि से तो विभूषित करें। आज हम प्रत्येक बात अंग्रेजी में ही करना अपना गर्व समझते हैं। यह हमारी मानसिक गुलामी है। विदेशी भाषा सीखना पाप नहीं, किन्तु विदेशी भाषा का गुलाम होना पाप है। देश के प्रति सच्चा अनुराग उत्पन्न करने के लिए हमें अपने ही देश की भाषा के ऊपर अभिमान होना चाहिए।

अंग्रेजियत—जब अंग्रेज, अंग्रेजी दोनों ही हमारे देश में उपस्थित हैं तो फिर भला अंग्रेजियत न हो, यह कैसे हो सकता है ? अब तो बाहर के कपड़ों में भी अंग्रेजियत घुस गई है। यह अंग्रेजियत हमारे अन्दर इतनी प्रविष्ट हो गई है कि हमें अब अपनी भारतीयता अपनाने में अपमान मालूम पड़ता है। हमें अपनी भारतीय वस्तुओं से प्रेम नहीं है। प्रेम है तो विदेशी वस्तुओं से। सुना जाता है जापान में एक बालक की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न होकर एक सज्जन उसको पारितोषिक देने लगे। पारितोषिक में दो वस्तुएं थीं। एक अत्यन्त मूल्यवान् और दूसरी कम मूल्यवान्। लेकिन दाता को तब महान् आश्चर्य हुआ जब कि बालक ने सहर्ष कम मूल्यवाली वस्तु को ही उठाया। दाता ने जब इसका कारण पूछा तो बालक ने उत्तर दिया यह बहुमूल्य वस्तु मेरे देश की नहीं है अतः मैंने इसको नहीं लिया। यह है देश-प्रेम की भावना, देश के प्रति, देश की प्रत्येक वस्तु के प्रति सच्चे अनुराग की भावना। किन्तु हमारे देश में इसका सर्वथा अभाव है। और अभाव का कारण है मानसिक गुलामी।

अब प्रश्न यह है कि इस मानसिक गुलामी से छुटकारा कैसे हो ? इसके लिये सर्व प्रथम देश में सर्वत्र अपने देश के अनुरूप शिक्षा-प्रणाली का निर्माण होना चाहिए। वर्तमान समय की शिक्षा-प्रणाली गौराङ्ग महाप्रभुओं के आदर्शों के अनुसार चल रही है, परिणाम-स्वरूप स्वावलम्बन, अनुशासन, देशप्रेम, पारस्परिक सहयोग, आदि-आदि उदात्त गुणों का अभाव आज विद्यार्थी समाज में व्याप्त है। इस अभाव के लिए विद्यार्थी दोषी नहीं हैं अर्थात् विद्यार्थियों में दोष नहीं है। दोष है तो वर्तमान समय की शिक्षा-प्रणाली में। अतः इस शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार होना आवश्यकीय है। तभी हम मानसिक गुलामी से दूर रहेंगे। तभी हमारे यहाँ से अंग्रेज, अंग्रेजी और अंग्रेजियत का भूत भागेगा, और इसके स्थान पर भारतीय, भारती, और भारतीयता की स्थापना होगी, देश का उद्धार होगा। ★

गीत

युग बर्बरता की सीमा में—
हम अपना अस्तित्व बचावें !
विहंस रहा वैभव का स्वामी,
पशुता में जकड़ा अभिमानी।
मानवता की एक झलक पर,
क्या सम्भव हो पानी-पानी।
कर चरित्र-निर्माण धरा को,
शान्तिपूर्ण सन्देश सुनावें।
भावुक गति सबल बन जाती,
दुर्बलताओं को ठुकराती।
अन्धकार अन्तर्यामी बन--
युग-पथ पर ऊषा मुस्काती।
मृदु मुस्कान हँसी भर भर कर,
मानस के पंकज खिल जावें।
सुरभि भावना आज सजेगी,
सुप्त मनुजता पुनः जगेगी।
सत्य-अहिंसा के सरगम पर--
अमर लोक की बीन बजेगी।
सरस रागिनी में सर्वोदय,
फिर पावित अनुराग सजावे।

—शिवानन्द 'शिवम्' (बलिया)

आर्य देवी की रचना पर पुरस्कार

उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा श्री राजमित्र राजरत्न आत्माराम जी (अमृतसरी) की सुपुत्री कुमारी सुशीलादेवी भू० पू० आचार्या आर्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदा की लिखी पुस्तक को पुरस्कृत किया गया है। साथ ही रेफरन्स बुक तथा पुस्तकालयों के खरीद के लिए भी मान्य किया गया है। इसी प्रकार पंजाब के डायरेक्टर आफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन ने अपने मेमो नं० ५२-३/१५२, ५६ । c २६७५ से इस पुस्तक को कालेज पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत किया है और शारीरिक स्वास्थ्य एवं आरोग्य के लिए हिन्दी भाषा में इस प्रकार की सुगम, सरल सब समझ सकें ऐसी यह प्रथम पुस्तक है जो सचित्र है, ऐसा घोषित किया है।

अध्यात्म चिन्तन—

प्रभु हमारी बुद्धि को पवित्र करें

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० वी० कालेज, गोरखपुर)

भारतीय संस्कृति या वैदिक विचार-धारा में बुद्धि की महिमा बहुत अधिक गाई गई है। गायत्री मन्त्र में परमात्मा के ध्यान का या उसकी उपासना का लक्ष्य क्या ही उत्तम दर्शाया है। वहाँ परमात्मा से धन दौलत या ऐश्वर्य की मांग नहीं की, पुत्र और पशुओं की मांग नहीं की, अन्न, अनाज की मांग नहीं की और किसी प्रकार की सांसारिक वस्तु की मांग नहीं की, मांग की तो इस बात की कि वह कृपालु हमारी बुद्धियों में सत्प्रेरणा दे ताकि हमारी धियां सन्मार्ग गामिनी रहें। बुद्धि ही मनुष्य को कर्म में प्रेरित करती है। सद्बुद्धि की प्रेरणा सत्कर्म के लिए होती है और असद्बुद्धि की प्रेरणा असत्कर्म के लिए। वास्तव में कर्म की गति गहन है। कर्त्तव्य क्या है, अकर्त्तव्य क्या है यह पहचानपाना सहज नहीं। धर्म और अधर्म की उलझन में धर्म का निर्भ्रान्त रूप से निश्चय कर पाना नितान्त कठिन है। बुद्धि के प्रदीप का मन्द प्रकाश तिमिर के निवारण में शक्तिहीन है। बुद्धि के प्रकाश की मन्दता और तिमिर की गहनता के कारण उपासक सविता देव के प्रदीप्त प्रकाश का आह्वान करता है। अपने प्रत्येक प्रणिधान, चिन्तन, मनन और जपन के साथ आत्मा को प्रकाश से आप्लावित करना चाहता है। धारण किया गया यह प्रकाश पथ-प्रदर्शन में तथा निर्भ्रान्त रूप से प्रेरणा प्रदान करने में समर्थ है। जब स्वयं प्रभु की प्रेरणा से प्रवृत्ति है तो फिर पाप कैसे? भय कैसे? धर्म और अधर्म की उलझन कैसे? वास्तव में प्रभु की प्रेरणा का प्रवाह शाश्वत काल से चल रहा है। प्रकाश-पूर्ण आत्मा कृतार्थ हो रहा है। प्रभु की प्रेरणा यद्यपि सर्वत्र है पर उसे प्राप्त करने के कुछ नियम हैं। गंगा की धारा अनन्तकाल से अनवरत रूप से बह रही है परन्तु वहाँ पहुँच कर पवित्र होने के लिए पुरुषार्थ चाहिए। आकाश में शब्द की धारायें चल रही हैं परन्तु उनके लिए ग्राहक यन्त्र चाहिए। उसी प्रकार प्रभु की प्रेरणा को आत्मा तक पहुँचाने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है। यदि यह यन्त्र मलिन होगा, गंदा होगा तो वह उस प्रेरणा को ग्रहण न कर सकेगा। अतः प्रार्थना की गई कि हे प्रभो! हमारी बुद्धियों को प्रकाश से परिपूर्ण कीजिए। कठोपनिषद् में भी धातुः प्रसादात्—सत् असत् को धारण करने वाली बुद्धि की महिमा से ही हृदय स्थित भगवान के दर्शन हो सकते हैं इस बात का उल्लेख किया गया है।

बुद्धि आत्मा नहीं, आत्मा का एक साधन बुद्धि है। बुद्धि के आठ रूप और तीन वृत्तियाँ हैं –

धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य ये बुद्धि के आठ रूप हैं और शान्त, घोर और मूढ़ ये बुद्धि की वृत्तियाँ हैं। बुद्धि के यह रूप और वृत्तियाँ सत्व, रज और तम के आधार पर कार्य करती हैं। सत्व की वृद्धि करना मनुष्य का प्रयत्न होना चाहिए। जब बुद्धि में सत्व गुण की प्रवृत्ति बढ़ेगी तब रजः और तमोगुण गिर जायेंगे, दब जायेंगे और उस समय मनुष्य में दान, दया, यम-नियमों का पालन करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। ज्ञान बढ़ेगा। वैराग्य के द्वारा हम इन्द्रियों को विषयों से परावृत्त कर सकेंगे। ऐश्वर्य की वृद्धि से मन की प्रसन्नता, सत्य संकल्प और अद्भुत मस्ती प्राप्त होगी। इसके विपरीत रज और तम गुणों की यदि बुद्धि में वृद्धि होगी तो हम अधर्म, अवैराग्य, अनैश्वर्य, असंतोष, क्रूरता आदि की ओर बढ़ेंगे और परमेश्वर को प्राप्त करने का मतलब यह है कि हम परमेश्वर के गुणों को देखें और परमेश्वर को देखने का मतलब है उसके गुणों को अपने में स्थापित करना। अतः वेदों में, गायत्री मन्त्र में बुद्धि की महिमा गाई गई है, परमेश्वर से उसीकी निर्मलता की प्रार्थना की गई है।

ज्ञान की प्राप्ति या बुद्धि की निर्मलता कोई साधारण बात नहीं। एक एक बात समझने के लिए तपस्यायें की जाती हैं। उपनिषदों में उठाकर देखिए कि ज्ञान के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करके किस प्रकार तपश्चर्या की गई है। किस प्रकार चिन्तन में मग्न हो जाया जाता था। ज्ञान प्राप्ति के लिए प्राचीन लोग किसी के भी पास चले जाते थे। ब्राह्मण क्षत्रिय के पास जाता था, क्षत्रिय ब्राह्मण के पास। ज्ञान कहीं हो वह पवित्र है। सूर्य का प्रकाश कहीं से आए वह ग्राह्य है। नचिकेता ने प्रत्यक्ष मृत्यु से भी ज्ञान की ही भिक्षा मांगी। इससे अधिक ज्ञान का महत्व क्या हो सकता है? समाज को नव विचार देना मानो एक साधना ही है। समाज को विचार रूपी आंखें देने से बढ़कर और क्या हो सकता है? चिन्तन के बाद जो विचार सूझे उसे पूज्य मानकर हमेशा प्रकट करना चाहिए। यह ध्यान रखिए ज्ञान का बाह्य स्वरूप कोई भी हो पर यदि वह प्रभु की प्रेरणा से प्राप्त ज्ञान होगा तो उसके धारण करने वाले ऐश्वर्यवान् और भगवान समझा जाएगा। शंकराचार्य ने पाणिनी को भगवान् पाणिनी कहकर याद किया है। क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि को ज्ञान के एक स्वरूप में रमा दिया था। व्याकरण का ज्ञान वे फैलाते थे। एक दिन जब वे अपने तपोवन में विद्यार्थियों को व्याकरण पढ़ा रहे थे कि एकाएक एक बाघ आया। बाघ को देखकर पाणिनी भागे नहीं। बाघ सूंघता-सूंघता आ रहा था। पाणिनी बोले—"इस सूंघते सूंघते आने वाले बाघ को देखो। व्याजिघ्रति स व्याघ्रः।" पाणिनी व्युत्पत्ति समझने के आनन्द में मग्न थे। लेकिन शिष्य भाग गए थे और बाघ ने पाणिनी को खा लिया। इस प्रकार ज्ञान में समाधि लग जाती है। भय दूर हो जाता है, यही तो बुद्धि की निर्मलता है।

मानव-जाति ने जो जो उद्योग प्रारम्भ किए हैं, जो जो विचार उत्पन्न किए हैं वह सब बुद्धि की बदौलत। गायत्री मन्त्र के उपासकों में मन्त्र शास्त्र, वस्तु शास्त्र, शिल्प शास्त्र, शिक्षा शास्त्र, अर्थ शास्त्र, मानस शास्त्र आदि सब के साक्षात्कार के सहारे जीवन में बिना थके आगे बढ़ने वाले लोगों का निर्माण होना चाहिए। बस यही परमेश्वर की पूजा है। पूजा इस रूप में कि यदि हम इस कार्य को बुद्धि-पूर्वक परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त कर करेंगे तो हमें ज्ञान का वास्तविक दर्शन होगा और उस समय हम 'अणोरणीयान् महतो महीयान्' प्रभु के दर्शन करेंगे। कठोपनिषद् ने इसलिए प्रभु को प्राप्त करने के लिए निष्काम शोक-रहित और बुद्धि की महिमा से प्राप्त करने को कहा है।

उस प्रेरक सबके उत्पादक,
श्रेष्ठ देव के वरने लायक;
शुद्ध तेज का मन से चिन्तन।
करें भरें फिर नस-नस निज तन॥
दिव्य तेज यह विमल करे जब,
कार्य शक्ति मेधा को उज्ज्वल;
सत्पथ पर प्रेरित हम होवें।
बुद्धि मलिनता सारी धोवें॥

सिंहावलोकन

प्राचीन शिक्षा-प्रणाली

(ले०—श्री किशनलाल वर्मा एम० एड०, प्रधानाध्यापक, सूमका)

एक शिक्षा-शास्त्री के रूप में विद्वान् लेखक ने गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की उपयोगिता के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये हैं। आज देश में जो शिक्षा-समस्या है उसका उचित समाधान गुरुकुल-प्रणाली में ही छिपा हुआ है। —सम्पादक

हम वैदिक काल की शिक्षा-प्रणाली का एक विहंगम दृष्टि से अवलोकन करें तो यह विदित हो जाता है कि वर्त्तमान शिक्षा की अपेक्षा उसका स्तर उच्चकोटि का था, हम ही नहीं अपितु उस प्रणाली का यशोगान पाश्चात्य विद्या-विशारद गाते हैं। उस प्रणाली को भलीभाँति हृदयंगम करने के लिए हम उसे गुरुकुल प्रणाली से सम्बोधित कर सकेंगे।

गुरुकुल-प्रणाली का ध्येय शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास था। वर्त्तमान शिक्षा का जो सामान्य दोष है कि यह एक पक्ष पर अधिक प्रभाव छोड़ती है जबकि विकास के लिए अन्य पक्ष भी उतना ही समय एवं गुण चाहते हैं।

गुरुकुल प्रणाली का आदर्श महान् था। वह हमारी प्राच्य संस्कृति की आधारशिला थी। शिक्षार्थी जन-कोलाहल से दूर प्रकृति के रम्य अंक में तपस्या द्वारा ज्ञानार्जन करते थे और उनका अर्जित ज्ञान बहुमुखी प्रतिभा लिए हुए होता था। आध्यात्मिकता का विकास करना उसका एक पवित्र आदर्श था। वर्त्तमान शिक्षा प्राप्त नवयुवकों की भावनायें नास्तिकता की ओर बढ़ती जा रही हैं। भौतिकवादी जीवन का प्रभाव उन पर अमिट छाप छोड़ता जा रहा है।

गुरु के चरणों में बैठकर विद्यार्जन करना व्यक्तिगत शिक्षण का सर्वोत्तम उदाहरण था। चरित्र का निर्माण करना पुनीत कर्त्तव्य था, व्यक्ति का नैतिक चरित्र उच्च था। छात्र की नैतिकता समाज में माननीय थी।

हृदय शोधन का आदर्श हमें वैदिक कालीन गुरु-प्रणाली में प्राप्त होता है। जिसमें आध्यात्मिकता एवं दार्शनिक पक्ष पर विशद विवेचन रहता था, इस प्रणाली द्वारा व्यक्तित्व का विकास जो

[शेष पृष्ठ १२ पर]

सामयिक समस्याएँ

अंग्रेजी का प्रश्न अवास्तविक है

(श्री सेठ गोविन्ददास एम० पी०)

संसद् में फ्रेंक एन्थनी के प्रस्ताव पर बहस और निर्णय आगामी सत्र के लिए स्थगित हैं। हिन्दी-समर्थकों को अपना पक्ष प्रस्तुत करने और सिद्ध करने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। श्री सेठजी हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं उन्होंने हिन्दी के प्रश्न को जिस ढङ्ग से व्यक्त किया है आशा है हिन्दी-प्रेमी उसका लाभ उठायेंगे। हम अन्य बन्धुओं के विचारों को भी स्थान देने की घोषणा करते हैं। —सम्पादक

भाषा के साथ राष्ट्रीयता का सम्बन्ध सभी स्वीकार करते हैं। कोई भी भाषा उच्च होने, व्यापक होने, अच्छी होने, आदर की दृष्टि से देखी जाने आदि कारणो मात्र से किसी देश की भाषा होने की योग्यता नहीं प्राप्त कर लेती, अंग्रेजी को भी भारत मे आज यही स्थिति है। हम उसकी उपयोगिता अन्तर्राष्ट्रीयता एवं अन्य क्षमताओं के लिए उसका आदर करते हैं परन्तु इस आदर-भावना के पीछे, उपयोगिता के पीछे, अन्तर्राष्ट्रीयता के पीछे हम अपनी भाषाओ के वास्तविक सम्मान की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हम अंग्रेजी के सम्बन्ध में और सब स्वीकार कर सकते हैं पर उसे भारतीय भाषा मानकर आत्मघात की स्वीकृति नहीं दे सकते।

संसार का कोई भी सभ्य देश किसी भी विदेशी भाषा को अपनी भाषा नहीं मानता है और न मानना चाहिए। अफ्रीका के कुछ देशों द्वारा अंग्रेजी को अपनी भाषा मानने का उदाहरण असंगत है। वहाँ की यह स्थिति स्वाभाविक नहीं, साम्राज्यवादी अभिशाप का परिणाम है। इस प्रकार यह समझ में आने वाली बात नहीं है कि क्यों अंग्रेजी को भारतीय संविधान की आठवीं सूची में स्थान देने का आग्रह किया जा रहा है। संविधान-निर्माण के समय किसीको इस बात का साहस नहीं हुआ कि उस सूची में अंग्रेजी को स्थान दिये जाने का आग्रह करता। तब संविधान बनने के आठ वर्ष बाद आज यह प्रश्न किस प्रकार उठता है, यह समझ में आने वाली बात नहीं।

अंग्रेजी के समर्थक श्री एन्थोनी भारतीय भाषाओ के बड़े भारी द्वेषी सिद्ध हो रहे हैं, उन्होंने संसदीय भाषा समिति की रिपोर्ट में और संसद के भाषणों में जो कुछ लिखा और कहा उससे स्पष्ट हो जाता है कि उनके हृदय में कितना अधिक द्वेष हिन्दी के लिए है। अपनी इसी द्वेष-भावना और अंग्रेजी के प्रति अपने अत्यधिक आग्रह के कारण वे अपने नोट में कई असंगत बातें भी लिख गये, जो एक भारतीय होने के नाते उन्हें शोभा नहीं देतीं।

हिन्दी के रूप के सम्बन्ध में आलोचना करते हुए वे कहते हैं कि हिन्दी तो इस देश में केवल आधा प्रतिशत लोगों की भाषा है। हिन्दी से तो अंग्रेजी भारत में कहीं अधिक संख्या में लोग बोलते हैं। उनकी यह भी मान्यता है कि हिन्दी, तामिल और बंगला से १००० वर्ष कम उम्र की है। समझ में नहीं आता कि उन्होने यह ऐतिहासिक ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया है। वे अपनी ईर्ष्या और अज्ञानता में यह कहने में भी संकोच नहीं कर सके कि हिन्दी का एम० ए० पास व्यक्ति अंग्रेजी के मैट्रिक पास व्यक्ति की योग्यता भी नहीं रखता।

अंग्रेजी-समर्थन के मोह में उन्होंने इस देश के लोगों को आपस में लड़ाने का प्रयत्न किया है। हिन्दी के समर्थक शान्तिप्रिय हैं और वे शान्ति-सद्भावना और सहयोग द्वारा हिन्दी के विकास और सम्मान के लिए प्रयत्न जारी रक्खेंगे। देखना यह चाहिए कि हिन्दी भाषा भाषी या भारतीय भाषाओं से प्रेम रखने वाले लोग आपस में लोगों का झगड़ा कराते हैं या श्री एन्थोनी और अंग्रेजी के समर्थक ऐसा कर रहे हैं।

अंग्रेजी के समर्थन के प्रयत्न में हिंदी और अहिन्दी भाषा-भाषी लोगों को लड़ाने की कोशिश की गई है। आदिवासियों और इस देश के दूसरे लोगों को लड़ाने का प्रयत्न किया गया है, हरिजनों और सवर्णों को लड़ाने का प्रयत्न किया गया है, उर्दू का प्रश्न उठा कर हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ाने का प्रयत्न किया गया है। हिन्दुस्तानी भाषा की चर्चा करके उन्होने इस विवाद में महात्मा गांधी का उल्लेख किया है। श्री एन्थनो द्वारा गांधी जी का उल्लेख जानकर ऐसा मालूम पड़ता है कि 'पैराडाइज लास्ट" में वर्णित उक्ति ठीक है—"सैटन (शैतान) भी कभी-कभी स्क्रिप्चर्स (धर्म-ग्रन्थ) कोट (उद्धृत) करने लगता है।" श्री एन्थनी को एक भारतीय होने के नाते अपने कथन पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करना चाहिए।

एक दलील यह दी जाती है कि अंग्रेजी को इसलिए संविधान में स्थान पाने का अधिकार है चूंकि वह भारतीय भाषा है, और अगर कोई अंग्रेजी को भारतीय भाषा नहीं मानता तो उसे संस्कृत को भी भारत से बाहर से आई भाषा मानना चाहिए। यह दलील आश्चर्यजनक और भ्रमात्मक है। अभी तो संसार के विद्वानों में इसी बात पर मतभेद है कि आर्य भारत के ही रहने वाले थे या बाहर से आए और फिर संस्कृत को विदेशी भाषा मान लेना, केवल इसलिए कि अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है, एक बड़ी अजीब दलील है।

एक और दलील इस प्रसंग में यह दी गई कि एंग्लो इण्डियन भारतीय हैं और उनकी भाषा अंग्रेजी है अतः उसे संविधान में स्थान दिया जाय। एंग्लो-इण्डियनों की संख्या से भी अधिक संख्या में जो लोग भारत में रहते हैं उन सबकी भाषाओं को हम अपने संविधान में स्वीकार नहीं कर सके। अगर उन सब भाषाओं को भारतीय संविधान में लिया जाय जो सभी इस देश के लोगों की मातृभाषायें हैं तो फिर उन भाषाओं की संख्या ६०० के लगभग होगी।

अंग्रेजी के इस देश की भाषा न होने और विजेताओं की भाषा होने के कारण, उसके साथ अंग्रेजी राज्य और अंग्रेजो के आधिपत्य के इतिहास के लगे होने के कारण उसे इस देश के संविधान में स्वीकार नहीं किया जा सकता। फिर यह प्रश्न हिंदी के विरोध में ही नहीं आता, समस्त भारतीय भाषाओं के विरोध में आता है। अंग्रेजी को सूची में लेने से हिन्दी को हानि होती है यह बात नहीं है।

आज जब हमारे देश में अंग्रेजी का इतना दौर-दौरा है कि अंग्रेजो के हटाने के विरुद्ध राजाजी के सदृश नेता याचिका प्रसारित करते हैं चाहे वह याचिका भारतीय संविधान के विरुद्ध ही क्यों न हों। तब अगर कहीं हमने अंग्रेजी को संविधान में स्वीकार कर लिया तो फिर अंग्रेजी में जिसे "थिन एण्ड आफ दि वेज" कहते हैं वह होने वाला है और अंग्रेजी का जो दौर-दौरा आज है वह बढ़ने वाला समाप्त होने वाला नहीं है। हमें इस समस्या के दूरगामी और व्यापक प्रभावों के प्रति, सावधान रहने की आवश्यकता है। ★

ईसाई पादरियों के बढ़ते हुए राष्ट्र-विरोधी कार्यों की निंदा

श्री प्रकाशवीर शास्त्री की सरकार को चेतावनी

आदिवासियों को ईसाई बनने पर भी सुविधाएं देना अनुचित

श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री ने संसद में एक वक्तव्य में कहा है कि कुछ समय से बिहार के रांची और छोटा नागपुर आदि क्षेत्रों में ईसाइयों की अराष्ट्रीय गतिविधियाँ बढ़ गई हैं। यों तो लगभग सारे भारत में ही विदेशी ईसाई मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियाँ स्वाधीन भारत के लिये एक समस्या बनी हुई हैं परन्तु उसमें भी बिहार और उड़ीसा में उधर के निवासियों को निर्धनता और अशिक्षा का लाभ उठाकर धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं वह बहुत ही निन्दनीय है। १८९० में इस क्षेत्र में केवल १२२७ आदिवासी ईसाई हुए थे परन्तु ८ साल बाद इनकी संख्या बढ़कर ११,१०८ हुई और १८८१ में यह संख्या ३३३६२ तक पहुँची और बढ़ते-बढ़ते १९३१ में २ लाख ४३ हजार हो गयी।

सुविधाएं कायम

श्री प्रकाशवीर ने कहा कि सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि जब सरकार ने बौद्ध मत ग्रहण कर लेने पर हरिजनों को पहले मिलने वाली सुविधाओं को समाप्त कर दिया तो अभी तक इस क्षेत्र में ईसाई मत ग्रहण कर लेने पर आदिवासियों को वही सुविधायें फिर क्यों प्राप्त हैं? ईसाई मिशनरी इस सुविधा का गलत उपयोग कर रहे हैं। यदि सरकार ने इन राष्ट्र-विरोधी तत्वो को अपनी उदार नीति से इसी प्रकार प्रोत्साहन दिया तो आगे चलकर फिर एक नये पाकिस्तान की सृष्टि होगी और यह देश छोटे-छोटे खण्डों में विभक्त हो जायेगा।

साहित्य-समीक्षण

बृहद् विमान शास्त्र

(मूल संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद)

सम्पादक एवं अनुवादक श्री स्वामी ब्रह्ममुनिजी विद्यामार्तण्ड, गुरुकुल कांगड़ी । प्रकाशक—सार्वदेशिक सभा दयानन्द भवन नई देहली, पृष्ठ संख्या ३४४ मूल्य सजिल्द पन्द्रह रुपये ।

भारतीय वाङ्मय जीवन की सभी शाखाओं से पूर्ण था और एक समय भारत आज के विश्व से भी अधिक वैज्ञानिक प्रगति कर चुका था। ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायियों की इस मान्यता को शिक्षित समाज में काफी समय तक सन्देह और उपहास की दृष्टि से देखा जाता रहा, ऋषि के वैज्ञानिक अर्थों वाले वेद-भाष्य को बौद्धिक विलास माना गया परन्तु हम अपनी भावनाओं को सिद्ध और पुष्ट करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहे। भारतीय धनुर्वेद शास्त्र-सम्बन्धी साहित्य खोजकर हमने 'समराङ्गण-सूत्रधार तथा रामायण महाभारत के अस्त्र-शस्त्रों की व्याख्या कर हमने भारतीय वैज्ञानिकता की महत्ता स्वीकार कराने में प्राथमिक सफलता प्राप्त की। पुष्पक विमान के रामायण कालीन उल्लेख के आधार पर हम नवीन विमान-विज्ञान को पिछड़ा हुआ कहते और मानते रहे परन्तु अभी तक हमारे पास इस विज्ञान के सिद्धान्त और स्वरूप-निर्देशन के लिये कोई प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ न था, हमारी खोज जारी रही और कुछ समय पूर्व लेखक ने बड़ौदा में विमान विज्ञान सम्बन्धी एक पुस्तक का पता लगाया। एक लघु पुस्तिका के रूप में उन्होंने उसका प्रारूप भी प्रकाशित कराया और अब इस बृहद् ग्रन्थ के रूप में उन्होंने हमारे सम्मुख प्राचीन भारतीय विज्ञान के विकास को साकार रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

प्रस्तुत पुस्तक में महर्षि भारद्वाज प्रणीत "यन्त्र सर्वस्वान्तर्गत" यति बोधानन्द कृत श्लोक बद्ध वृत्ति सहित वैमानिक प्रकरण का भाषानुवाद आवश्यक टिप्पणियों सहित दिया गया है।

भारतीय शिल्प-कला के विकास, प्रतिरक्षा विधान, आकाश में उड़ने वाले शत्रु के विमानों के आक्रमण से रक्षा आदि का आवश्यक वर्णन करते हुए भारतीय विमान-निर्माण-कला की विस्तृत चर्चा की गयी है।

आज अन्तरिक्ष विज्ञान में जिन विकरण शक्तियों के प्रभाव की खोज की जा रही है शास्त्रकर्ता उससे भी परिचित थे और उन्होंने इस शास्त्र में आकाशीय पदार्थों की वर्षा, वात, विद्युत, शब्द, उल्का, पुच्छलतारों और ग्रहतारों की कक्षा सन्धियों से सम्भावित आघातों प्रत्याघातों का सविस्तार वर्णन किया है और उनसे बचने के उपायों का उल्लेख किया है।

जैसे आज यात्री, बमवर्षक, माल-वाहक अनेक प्रकार के उपयोगी और एक इंजन, दो इंजन, अधिक इंजन वाले वायुयान प्रयुक्त हो रहे हैं उसी प्रकार इस शास्त्र में २४ प्रकार के शकुन, रुक्म, सुन्दर, त्रिपुर आदि नामों से वायुयानों का उल्लेख किया गया है, सबकी अपनी विविधता और विशेषता बताई गई है।

विमान शास्त्र में विमान चन्द्रिका, व्योम यानतन्त्रम, व्योमयानार्क प्रकाशः, यन्त्रप्रकरणम्, लोह सर्वस्वम्, यन्त्र कल्पतरु, शाकटायन कृत लौहशास्त्रम् इत्यादि १७ ग्रन्थों और उनके लेखक ३६ आचार्यों की भी चर्चा की गई है जिससे ज्ञात होता है कि इस दिशा में भारतीय वैज्ञानिक कितने समर्थ, समृद्ध और सतर्क थे।

यह वैमानिक प्रकरण मूल रूप में आठ अध्यायों, १०० अधिकरणों और ५०० सूत्रों में यन्त्र सर्वस्व के एक भाग के रूप में लिखा गया था, परन्तु उपर्युक्त सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध नहीं है जो कुछ उपलब्ध हो सका उसे ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आज हम स्वतन्त्र हैं। भारतीय गौरव की स्थापना के लिये हमें प्राचीन अनुसन्धान का महान् कार्य करना चाहिये। आर्यसमाज भारतीय सभ्यता का संरक्षक और समर्थक रहा है अतः उसका दायित्व अनुसंधान की दिशा में और भी अधिक बढ़ जाता है। सार्वदेशिक सभा ने इस अमूल्य ग्रन्थ को प्रकाशित कर भारतीय स्वाभिमान-और विज्ञान-गौरव की स्थापना में एक महत्त्वपूर्ण योग दिया है। हमारी सम्मति में इस पुस्तक का अंग्रेजी में भी अनुवाद कराया जाय और भारत-सरकार को पुस्तक भेजकर उल्लिखित प्रयोगों और निर्माण विधियों का क्रियात्मक परीक्षण करने का आग्रह किया जाय। महंगाई के इस युग में भी इस प्रकार की पुस्तक प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। प्रयत्न होना चाहिये कि पुस्तक प्रत्येक देशी-विदेशी संस्कृतज्ञ विद्वान् के पास पहुँचे, हिन्दी अनुवाद के कारण प्रत्येक सार्वजनिक पुस्तकालय में विशेष कर आर्यसमाजों और शिक्षा-संस्थाओं के पुस्तकालयों में इस ग्रन्थ का रहना आवश्यक एवं सांस्कृतिक गौरव-ज्ञान की दृष्टि से उपादेय होगा।

श्रद्धेय ब्रह्ममुनिजी आर्यसमाज की विभूति हैं। उन्होंने अपनी लगन और विद्वत्ता से वैदिक वाङ्मय की सदैव अभिवृद्धि की है। इस ग्रन्थ द्वारा उन्होंने बहुमुखी प्रतिभा का दिग्दर्शन कराया है। उनके अथक परिश्रम से सभी संस्कृतज्ञ, हिन्दी-प्रेमी और भारतीयताभिमानी गौरवान्वित हैं और वे सभी की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है वे अपने अनुसंधान-कार्य द्वारा भविष्य में हमें और भी गौरवपूर्ण रचनाएं प्रदान करते रहेंगे।

जटिल रोगों की सफल चिकित्सा

लेखक—वैद्य एम० वासुदेव। प्रकाशक—वासुदेव आरोग्य वाटिका जम्मू (काश्मीर)।

विकासवाद के इस युग में प्रत्येक चीज बाजी ले जाना चाहती है। जब मनुष्य दिन दूने और रात चौगुने बढ़ते जा रहे हैं फिर उनसे सम्बन्धित भयंकर व्याधियाँ ही क्यों पीछे रह जायं। 'शरीरं व्याधि मन्दिरं' के अनुरूप रोग भी आशातीत फलते-फूलते दिखाई दे रहे हैं। नित नए नाम इन रोगों के लिए बनाए जा रहे हैं, अनेक औषधियों की गवेषणा, इनके भयंकर परिणामों से बचने के लिए की जा रही हैं।

आज देश में एलोपैथी, होम्योपैथी, नेचरोपैथी, वाटर क्योर, यूनानी, एवं आयुर्वेदी जैसी-जैसी अनेक चिकित्सा-पद्धतियाँ रोगों से मुक्ति प्रदान करने के लिए कार्यरत दृष्टिगोचर हो रही है। परन्तु भारतीयों के हित साधन में कौन सी पद्धति उपादेय है, इस विषय में अभी लोगों में मतैक्य नहीं है। परन्तु 'यस्य देशस्य वो जन्तुः तज्जं तस्यौषधम् हितम्' के आधार पर यदि भारत में कोई पद्धति फल और फूल सकती है तो वह है आयुर्वेदिक, इसी धारणा को सृजन का मूल मानकर पूज्य वैद्यजी ने 'जटिल रोगों की सफल चिकित्सा' नामक पुस्तक रच कर यह सिद्ध कर दिया है कि भारत में चलने वाली अनेक चिकित्सा पद्धतियों में आयुर्वेद ही वह उत्तम, वरदानी पद्धति है जिसके द्वारा जटिल से जटिल रोगों से भी सदा सर्वदा के लिए छुटकारा मिल जाता है, यह ठीक है कि प्रदर्शनवादी लोगों का झुकाव एलोपैथी पर हो, परन्तु वास्तविक रोग मुक्ति तो आयुर्वेद से ही सम्भव है। प्रस्तुत पुस्तक में वैद्य जी ने अनेक विषम व्याधियों की चिकित्सा आयुर्वेद के द्वारा की है जिन्हें डाक्टरों की ओर से मृत्यु का करार मिल चुका था। पुस्तक के अध्ययन से सिद्ध होता है कि वैद्यजी आयुर्वेद के परम भक्त हैं। वैद्य जी की यह पुस्तक जिसमें उन्होंने अनेक जटिल रोगों के सरल नुस्खे उपस्थित कर मानवता की बहुत बड़ी सेवा की है प्रत्येक वैद्य डाक्टर के लिए अवलोकनीय है। साधारण परिवारों में रखी पुस्तक की एक प्रति समय आने पर बहुत बड़े डाक्टर वैद्य की स्थान पूर्ति कर सकने में समर्थ है। आशा है कि विषम व्याधियों से छुटकारा दिलाने में यह पुस्तक सफल सहायक सिद्ध होगी।

वैदिक सूक्ति सुधा

लेखक—प्र० जगदीशचन्द्र विद्यार्थी विद्यावाचस्पति। प्रकाशक—भगवती प्रकाशन ८ ई, कमला नगर देहली ६, पृष्ठ-संख्या ६६, मूल्य २० नये पैसे।

संसृति की अबाध गति में वेद ही वह पावन ज्ञान-स्रोत है जिससे भौतिकवादी इस युग का कल्याण सम्भव है। आज के युग का मानव सही, सुगम वेद-मार्ग को छोड़ बैठा है फलतः उसे अनेक मर्मभेदी कष्टों का सामना करना पड़ रहा है।

इस युग के मनुष्यों के जीवन से अनाचार, अत्याचार, ईर्ष्या, द्वेष, कटुता, एवं असत्य भाषण आदि-आदि अनेक दुर्भावनाओं ने घर बना लिया है। इन दुर्व्यसनों से लिप्त मनुष्यों के जीवन में ईश्वर-विश्वास, धर्म के प्रति श्रद्धा, सत्य एवं मधुर भाषण, सदाचार सत्संग, ब्रह्मचर्य, निर्भयता, स्वावलम्बन आदि-आदि उदात्त दैवी-भावनाओं का आघात हो सके, इसी विषय को प्रेरणा का आधार मानकर विद्यार्थीजी ने "वैदिक सूक्ति सुधा" नामक पुस्तक की रचना की है। पुस्तक एक गुटका के रूप में है जो कि सर्वदा पाकिट में साथ रखी जा सकती है और आवश्यकता पड़ने पर उससे आवश्यक उपयोग लिया जा सकता है। पुस्तकें ही मनुष्य की सच्ची साथी होती हैं, उनका सर्वदा पास में रखना आवश्यक ही नहीं अपितु परमावश्यक भी है। विद्वान् लेखक ने शील, सदाचार, मैत्री, ब्रह्मचर्य और आदि भिन्न शीर्षकों के आधार पर चारों वेदों की श्रुतियों का मन्थन कर नवनीत को वैदिक सूक्ति-सुधा के पावन सम्पुट में प्रस्तुत किया है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जीवन-ज्योति

आचार्यदेव श्री विश्वेश्वर जी

(गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के आचार्य)

[श्री भरतसिंह, 'शिरोमणि']

संस्कृत साहित्य वाटिका को नवीनतम रचनाओं से परिपुष्ट करने वाले, ६ फीट ऊँचे, स्थूल गात्र अति गौरवर्ण, उन्नत ललाट, शिर काले-श्वेत बालों से सुशोभित शरीर पर सफेद खादी का कुर्ता, धोती एवं पैरों में गौरधक जूते यह हैं, यशस्वी मूर्ति आचार्यपाद श्री विश्वेश्वर जी। जिनके मुख की स्मित हास, क्षणिक परिचय से ही व्यक्ति में स्वतः श्रद्धा के भाव प्रस्फुटित कर देता है। आपके साथ एक बार का परिचय यावद् जीवन का बन्धन बन जाता है, यही है आपका सहज व्यक्तित्व जो केवल दर्शनों से ही दर्शकों का मन मुग्ध किये बिना नहीं रहता।

बाल्यकाल में आपने, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को अपनी शिक्षास्थली बनाकर, गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया। आप अपने जीवन में आदि से ही विद्या-व्यसनी रहे हैं। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" के अनुरूप प्रारम्भ से ही आपकी रुचि लेखन द्वारा भारतीय वाङ्मय की सेवा करने की रही है। विद्यार्थी जीवन में लिखे गये विभिन्न विषयों पर अनेक पुष्ट प्रबन्ध, आपके वर्तमान जीवन की ओर सफलता की आशा संचारित करने वाले थे। "महात्मा ईसा" आपके विद्यार्थी जीवन की खोजपूर्ण रचना है, जिसके प्रकाशन से वैदेशिकों को भी दांतों तले उंगली दबानी पड़ी थी। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने न जाने कहां-कहां से सामग्री एकत्रित कर सुन्दर बोध-गम्य उदाहरणों द्वारा ईसा के व्यक्तित्व को सहज प्रकाश में ला दिया है।

आपकी कार्य-क्षमता, विचारशीलता एवं सहज भ्रातृत्व प्रेम से ही प्रभावित होकर, कुल के गुरुजनों एवं बन्धुओं ने अनेक वर्ष आपको विद्या सभा के मन्त्री पद पर सुशोभित बनाये रखा। यहां तक कि एक दिन ऐसा आया कि आपकी ख्याति मन्त्री जी के नाम से ही हो गई। आज भी पुराने लोग आपको इसी नाम से पुकारते हैं। कुल से सिद्धान्त शिरोमणि की डिग्री प्राप्त करके भी जब आपके मन का विद्याध्ययन विषयक सहज कुतूहल शान्त न हो सका तब आप अधिक काल तक सरस्वती की उपासना के निमित्त विद्या के केन्द्र-स्थल काशी चले गये। वहां आपने अल्पकाल में ही पौर्वात्य तथा पाश्चात्य दर्शन पर पूर्ण पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। इस प्रकार शिक्षोपार्जन का कार्य पूर्ण करके भी जब आप कुल मां के सहज स्नेह को भुलाने में असमर्थ रहे तो पुनः गुरुकुल चले आये, वहां आपने अध्यापन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। और साथ ही साथ साहित्य प्रणयन का कार्य भी करते रहे।

आचार्य श्री की लेखनशैली सहज, सरल बोधगम्य एवं अध्यापकीय है, अनेक उपयुक्त दृष्टान्तों से प्रतिपाद्य विषय को सुलभ ग्राह्य बना देना आपकी शैली के सहज गुण है। यही कारण आपको जीवन में एक सफल लेखक एवं आदरणीय अध्यापक बनाने में सफल बना सके है।

संस्कृत साहित्य के अनेक काव्य, नाटक, रस ग्रन्थ आदि आपकी जिह्वाग्रवर्ती हैं, इसी एक कारण से शिष्य मण्डली अध्ययन के समय, आपकी विद्वत्ता एवं धारणा शक्ति से स्वभावतः मन्त्र-मुग्ध हो जाती है और यही शक्ति शिष्यों को भी भविष्य जीवन में कुछ करने की प्रेरणा प्रदान करती रहती है। आचार्य पाद का यही आकर्षण विद्यार्थियों के भावी जीवन के लिये प्रेरणा के स्रोत का दिव्य प्रतीक बन जाता है, जो कि समय समय पर उनको करणीय कर्तव्य की ओर प्रेरित करता रहता है।

आपके कण्ठ में सरस्वती का वास है। यदि यह कहा जाय तो मैं समझता हूं तब भी, अतिशय एवं अत्युक्ति न होगी। आजकल आपका आवास पुस्तकें ही बनी हुई है, सर्वदा किसी न किसी पुस्तक का हाथ में होना, आप जैसे वरेण्य विद्वान् के लिये अनुकूल ही हैं। रुग्णावस्था में भी आपकी साहित्य-प्रणयन शक्ति अपना कार्य करती रहती है यहां तक कि जब कभी आप अस्वस्थ हो जाते हैं और असह्य वेदना में आपको प्रलाप होता है तो वह प्रलाप भी साहित्य-सृजन में ही योगदान करने वाला सिद्ध होता है। एक बार तो आपने इसी दशा में सैकड़ों श्लोक बना डाले थे। ऐसी घटनायें ही आपकी महान् सृजन-शक्ति को प्रकाशित करती हैं।

अपने अब तक के जीवन में आपने अनेक मौलिक ग्रंथ रच डाले, अनेकों की सरल, उपयोगी टीका प्रस्तुत कर, सर्व सुलभ बना डाला है। जिन ग्रन्थों का स्वच्छन्द रसपान करना एक संस्कृतज्ञ को भी सुलभ न था वे ही ग्रंथ आज आपकी सरल लेखनी से प्रस्तुत हो, थोड़ा भी संस्कृत का ज्ञान रखने वाले को ग्राह्य बन गये हैं। दर्शन जैसा विषय भी आपने इतना सरल बना दिया है कि जिस विद्यार्थी के हाथ में आपका भाष्य होगा उसे दर-दर पर भटक कर समय नष्ट करने की अब आवश्यकता नहीं।

आपकी इसी विद्वत्ता से प्रभावित होकर राजकीय संस्कृत परिषद् आदि आदि मण्डलियों ने तर्क भाषा, ध्वन्यालोक, वक्रोक्ति एवं नाट्यशास्त्र जैसे ग्रंथों पर पुष्कल धनराशि पुरस्कार रूप में प्रदान कर आपको उत्साहित किया। इस वर्ष भी उत्तर-प्रदेशीय सरकार द्वारा सम्मानित संस्कृत के बारह विद्वानों में दूसरे आप ही हैं जिन्हें खगोल विज्ञान एवं मनोविज्ञान, संस्कृत ग्रंथों पर १०००) के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस प्रकार पूज्य आचार्य जी अब तक अनेक बार विभिन्न संस्थाओं से पुरस्कृत हो चुके हैं।

देहली, अलीगढ़ आदि आदि अनेक विश्वविद्यालयों की ओर से आपको कार्य करने के निमन्त्रण आते रहते हैं परन्तु गुरुकुल विषयक अनुराग आपको इस विषय में कुछ भी विचार का अवसर नहीं देता। आप अपने को एकमात्र कुल की सेवा के लिए समर्पित कर चुके हैं, महान् से महान् अर्थ आकर्षण भी आपको अपने इस ध्येय से नहीं डिगा सकता है। कुल माँ की ख्याति भी आप जैसे ही विद्वान् विचारवान एवं समवेदनशील सुपुत्रों पर आधारित है। प्रभु आपको आरोग्य रखे जिससे समय-समय पर आप इसी प्रकार संस्कृत वाङ्मय के गहन अनुशीलन द्वारा सर्वसाधारण के हित साधन में समर्थ हो सकें। ❀

बाल-विनोद

आदर्श बालक

(श्री प्यारसीलाल अग्रवाल, पौड़ी)

जीवन आज अपने कमरे में उदास बैठा था, क्योंकि वह रोजाना कोई अच्छा कार्य करता और उसको उसी रोज अपनी डायरी में लिख लिया करता था, पर आज उसने अपनी डायरी में कुछ न लिखा था क्योंकि आज अभी तक उसने कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया था जो डायरी में लिख सके।

अतः आज के दिन के पेज को डायरी में कोरा देखकर वह दुःखी हो रहा था।

इतने में बाहर खड़े कुछ बालकों ने आवाज़ लगाई—जीवन! जीवन!! क्या आज क्रिकेट मैच खेलने नहीं चलोगे?

जीवन दोस्तों की आवाज सुनकर दुःखी मन से डायरी को बन्द करके और क्रिकेट का बल्ला उठाकर दोस्तों के पास आ गया।

लड़के गपशप लगाते मैदान में पहुँचे और क्रिकेट खेलने लगे। दो पार्टियाँ बन गई, पहली पार्टी बैटिंग करती थी और दूसरी बौलिंग। जीवन बौलिंग वाली टोली में था, वह पहली टोली के बालकों की गेंद कैच कर रहा था। अचानक राम ने जोर से बॉल पर बैट लगाई गेंद हवा में उछली, जीवन उसको लपक कर पकड़ने का प्रयत्न करने लगा पर उसका पाँव फिसल गया और गिरने पर उसने देखा कि वहाँ एक बटुआ पड़ा है। बटुआ देखकर वह पल भर के लिए कांप गया। उसने इधर-उधर देखा, उसको कोई भी नहीं देख रहा था, जीवन ने बटुआ उठा लिया और टोली के बालकों में आकर बोला—यह बटुआ मुझे मिला है।

लड़कों ने पूछा कि इसमें क्या है?

जीवन ने कहा—भारी है, शायद रुपये होंगे।

राम बोला—जीवन का भाग्य चमक गया।

मित्रों ने कहा—वाह! वाह चलो लक्ष्मीनारायण के यहाँ मिठाई खायेंगे।

कुछ लड़कों ने यह प्रस्ताव रखा कि बटुवे में कितने रुपये हैं, पहले यह देखा जाय फिर प्रोग्राम बने।

जीवन ने बटुआ खोला और रुपये गिने तो उसमें तीन सौ रुपये पचास नये पैसे थे।

यह देख जीवन सोचने लगा जिसकी इतनी रकम खो गई है वह बेचारा कितना दुख में होगा।

बड़ी रकम देखकर टोली के बालकों की मांग भी बढ़ गयी। तरह-तरह के प्रोग्राम बनने लगे।

पर जीवन हाथ में बटुआ लिए उदास था। वह लड़कों की मांगों को देखकर बोला—तुम्हें तो खाने की लगी है पर बटुए वाले का क्या हाल होगा?

मित्र बोला—जिसे रुपये रखने का ढंग नहीं उसकी चिन्ता मत करो।

राम ने कहा—चलो चलो मिठाई खिलाने।

किन्तु जीवन सोच रहा था कि जिसका बटुआ खोया है, वह जरूर इसको खोजते-खोजते यहाँ आवेगा। और उसने निश्चय किया वह बटुआ लिए बटुवे वाले की राह देखेगा। उसने यह निश्चय अपने दोस्तों को सुनाया। दोस्तों ने यह जानकर कि यह सारे रुपये हड़प लेने का बहाना बना रहा है तो वे जीवन को बैठा छोड़कर चले गये। जीवन बटुआ लिए बटुवे वाले की राह देखने लगा। रात हो गई पर वह बैठा रहा। आधा घण्टा बीता, समय बढ़ता गया तो उसने देखा कि सड़क पर एक आदमी, धरती पर कुछ खोजता चला आ रहा है।

जीवन दौड़कर उसके पास गया और पूछा—आप क्या खोज रहे हैं?

आदमी जीवन को देखकर बोला—भैया मेरा बटुआ खो गया, मैं परदेशी हूँ अब कैसे करूंगा?

'कैसा था?' जीवन ने पूछा।

'काला जंजीर वाला।'

उसमें कितने रुपये थे?

'पूछकर क्या करोगे भैया'—वह आदमी बोला।

फिर भी।

तीन सौ रुपये और कुछ पैसे।

जीवन ने यह जानकर कि वह बटुआ इसीका है- जेब से बटुआ निकाल कर आदमी को दे दिया।

आदमी अपना बटुआ देखकर उसमें से दस रुपये निकाल कर जीवन को देने लगा और कहने लगा—मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगा।

पर जीवन ने इनाम लेने से इंकार कर दिया और घर को चल पड़ा। घर में उसकी माँ उसका इन्तजार कर रही थी जब जीवन घर में आया तो उसकी माँ ने कहा—क्यों रे कहाँ था अब तक?

जीवन ने सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर माँ जीवन को प्यार करने आगे बढ़ी ही थी कि जीवन भागकर अपने कमरे में चला गया और उसने डायरी निकाल कर आज के पृष्ठ पर लिख दिया—'आज मैंने एक का खोया बटुआ पाया और उसको उसके मालिक को दे दिया।'

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ....

आयु .... वर्ष ....

पूरा पता ....

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां ....

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण (हैदराबाद) का वार्षिक अधिवेशन

पं० विनायकराव विद्यालंकार प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, हैदराबाद का वार्षिक अधिवेशन १ मई ५९ ई० को पं० नरेन्द्रजी प्रधान सभा की अध्यक्षता में केशव स्मारक आर्य विद्यालय में सम्पन्न हुआ। तीनों प्रान्त तेलंगाना, महाराष्ट्र और कर्नाटक से पचास प्रतिनिधियों ने अधिवेशन में भाग लिया। अधिवेशन में सम्वत् २०१५ का कार्य विवरण आय-व्यय और अगले वर्ष सम्वत् २०१६ के लिए अनुमानित बजट स्वीकृत किया गया। उसके पश्चात् अगले वर्ष के लिए चुनाव सम्पन्न हुआ। प्रतिनिधियों में चुनाव के प्रति काफी उत्साह पाया गया।

श्री पं० विनायकराव जी विद्यालंकार सर्वसम्मति से प्रधान और श्रीमती पं० सुशीलादेवी जी विद्यालंकृता, मन्त्री निर्वाचित हुई हैं।

प्रधान—श्री पं० विनायकराव जी विद्यालंकार एम० पी०

तीन उपप्रधान एवं श्री १— एस० वेंकटस्वामी जी, एडवोकेट, २—रामचन्द्र जी, बी० ए०, ३—शेषराव जी वाघमारे एडवोकेट।

मन्त्री—श्रीमती सुशीलादेवी जी विद्यालंकृता।

चार उपमन्त्री—सर्वश्री लक्ष्मणराव जी, गोजे, दिगम्बरराव जी, लाठकर, व्यंकटराव जी त्रिमल, वी० सत्यनारायण जी।

कोषाध्यक्ष—श्री पं० मुन्नालाल जी मिश्र।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री कृष्णाचार्य जी।

चौदह अन्तरङ्ग सदस्य—सर्वश्री नरेन्द्र जी, मनोहरलाल जी, गंगाराम जी, एडवोकेट, ए० बालरेड्डी जी, डा० ओ३म्प्रकाश जी आयुर्वेदालंकार, ठाकुर बलराज सिंह जी, वाई० बालरावैया जी, पं० ज्ञानेन्द्र जी शर्मा, नरदेव जी स्नेही, पं० गोपालदेव जी, रामचन्द्रराव जी कल्याणी, मुकुन्ददास जी विद्यार्थी, पं० भद्रदेव जी, उदयभानु जी वकील।

प्राचीन शिक्षा-प्रणाली

[पृष्ठ ८ का शेष]

शिक्षा का उद्देश्य सर्वमान्य है तब भी होता था, और बालक की सर्वतोमुखी प्रतिभा का विकास किया जाता था।

ऋषि मुनियों द्वारा घोषित तीनों ऋणों (ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण) को पूरा करने का पाठ पढ़ाया जाता था। गुरुकुल प्रणाली का मुख्य आदर्श था कि उसके द्वारा राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा हो सके। वर्तमान शिक्षा में इस बात का पूर्णतया अभाव दृष्टिगोचर होता है। गुरुकुल प्रणाली में सदाचार एवं जीवनोपयोगी शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता था। आज पढ़ लिख कर भी व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाता अर्थात् स्वावलम्बन का पाठ नहीं पढ़ पाता है। परन्तु गुरुकुल प्रणाली में क्रिया द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी जिससे कि छात्र श्रम का महत्त्व समझते थे जिसका कि वर्तमान प्रणाली में सर्वथा अभाव है। छात्रों को केवल पारितोषिक दिलाने वाला ज्ञान ही नहीं प्रदान किया जाता था। अपितु लौकिक बातों द्वारा उनकी सामाजिक क्षमताओं का भी विकास किया जाता था। साथ ही गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा अधिक व्यय-साध्य नहीं अत उसकी सर्वोपयोगिता भी स्वत सिद्ध है।

इस प्रणाली में छात्रों में अनुशासनहीनता का कोई लक्षण नहीं पाया जाता था क्योंकि इसमें छात्र गुरु के निकट सम्पर्क में रहते थे, जिससे उनको कोई ऐसा कार्य करने का समय ही नहीं मिल पाता था। वर्तमान शिक्षा-पद्धति में व्याप्त अनुशासन-हीनता राष्ट्र के लिए भी एक चुनौती बनी हुई है। छात्रों में उत्तरोत्तर बढ़ती हुई यह अनुशासनहीनता देश के लिये घातक होगी।

गुरुकुल प्रणाली आश्रमों का पूर्ण पालन कराती है। वहां ब्रह्मचर्य का पालन कर स्वास्थ्य को ठीक रखा जाता था। हमारी महान् संस्कृति की पोषक यही गुरुकुल प्रणाली रही है। निःशुल्क शिक्षा एवं मौखिक विधि को अपनाकर उसने एक नवीन आदर्श रखा है। शिक्षाध्यापक प्रणाली इसमें अपनाई जाती थी। छात्रों को गुरु के साथ प्रत्यक्ष रूप से निष्कर्ष निकालने की अनुमति थी। यद्यपि मोक्ष प्राप्त करना भी एक उद्देश्य, आदर्श था। लेकिन फिर भी सांसारिक जीवन सफल बनाने का पूर्ण शिक्षा थी। वैदिक कालीन सभ्यता की छाप गुरुकुल प्रणाली में पूर्णतः विद्यमान है। धार्मिकता का पुट होते हुए भी यह प्रणाली नागरिकता का विकास करती थी। उस प्रणाली के कारण वर्तमान के समान गुरु एवं शिष्य सम्बन्ध कटु नहीं थे। गुरु के प्रति आदर भाव, सरस्वती आराधन, आश्रम नियम का पालन, आदि गुण थे।

उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गुरुकुल प्रणाली का चलन किया जा रहा है, जिन पर कि आर्यसमाज की पूर्ण सहानुभूति है। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, वृन्दावन, देहरादून, कन्या गुरुकुल सासनी, बड़ौदा आदि इसके व्यावहारिक उदाहरण हैं। उस परिपाटी को अपना कर हम अपने देश, समाज एवं वैदिक संस्कृति की महान् सेवा कर सकते हैं। यदि हमारी राष्ट्रीय सरकार इस पवित्र प्रणाली को अपनाकर अपनी महान् संस्कृति की रक्षा करना चाहती है तो सुगमता से कर सकती है। देश भर में आर्य संस्कृति की गूंज व्याप्त हो उठेगी।

भारत का उद्धार करने के हेतु इस प्रणाली को प्रोत्साहन देना आवश्यक है क्योंकि पाश्चात्य शिक्षा-प्रणाली कभी भी हमारी राष्ट्र की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बन सकती। ★

साहित्य-समीक्षण

[पृष्ठ ३ का शेष]

आबाल वृद्ध, सभी की दृष्टि से पुस्तक उपादेय सिद्ध है। लेखकों एवं वक्ताओं के लिए तो पुस्तक की महत्ता स्वतः सिद्ध है ही। सिनेमा के इस युग में प्रत्येक का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने बालकों को इस पुस्तक में से अच्छे अच्छे वैदिक वाक्यों को कण्ठस्थ करवा दे जिससे प्रभावित हो भविष्य में बालकों की प्रवृत्ति सदैव सन्मार्गगामी बनी रहे। और वे फिल्मी संगीत के मुकाबले श्रुति-संगीत में रुचि ले सकें, आशा है सभी जन इस पुस्तक से आवश्यक लाभ उठा सकेंगे। ★

शुद्धि-समाचार

लखनऊ नवाब के दुबारी स्टेट के मैनेजर (आजमगढ़) की सुपुत्री की शुद्धि और शुभ विवाह

दुबारी स्टेट के मैनेजर इस्माइलखाँ अपनी सुपुत्री का निकाह श्री तेजबहादुर लाल जी स्टेट के मुख्तार आम के साथ करके श्री तेजबहादुरलाल जी को मुसलमान बनाना चाहते थे।

यह समाचार वेदपथिक प० धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी जी को प्राप्त हुआ। श्री झण्डाधारी जी के विशेष प्रयास से श्री तेजबहादुरलाल जी को मुसलमान बनाये जाने से बचाया गया और दुबारी स्टेट के मैनेजर की सुपुत्री की शुद्धि करके हजारों नर-नारियों की उपस्थिति में वेदपथिक जी ने उन दोनों का शुभ विवाह-संस्कार सम्पन्न कराया।

श्री झण्डाधारी जी के घोर परिश्रम से इसी अवसर पर दुबारी, गजियापुर [मधुवन] में आर्यसमाज स्थापित हो गई। श्री तेजबहादुरलाल जी को उसका सदस्य बनाया गया है।

विदेश-वार्त्ता

अरब देश में वैदिक धर्म-प्रचार के संस्मरण

(श्री पण्डित रुचिराम जी, आर्योपदेशक, देहली)

आर्यसमाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है, कृण्वन्तोविश्वमार्यम् तभी सफल हो सकता है जब हम विश्व तक अपने सन्देश-दूत भेज सकें। आजकल विदेश-प्रचार की समस्या आर्यसमाज की मुख्य समस्या है। आशा है लेखक की संघर्षमयी प्रचार-यात्रा हम सबको प्रेरणा दे सकेगी। —सम्पादक

जिस समय मैंने दयानन्द उपदेशक विद्यालय, गुरुदत्त भवन, लाहौर में अपनी शिक्षा समाप्त की, मेरे आचार्य परमहंस परिव्राजक, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने मुझे अरब देश में वैदिक धर्म प्रचार करने की आज्ञा प्रदान की। उस जमाने में अंग्रेज की हुकूमत थी। पासपोर्ट नहीं मिल सकता था। मैंने अरब देश में बगैर पासपोर्ट तथा बगैर वेतन के और पैदल चलकर सात साल तक वैदिक धर्म प्रचार किया है।

मैं सन् १९२९ में लाहौर से चला, क्वेटा से होता हुआ कराची पहुंचा, तब दरवेश मुझे कराची मिला, वह मक्का से कराची तक पैदल आया था, उसने मुझे मक्का, मदीना तक का रास्ता बता दिया। मैं कराची से मघापीर होते हुए हब नदी थाना पहुंचा। वहां से अंग्रेज की सत्रह चौकियों पर कड़ा पहरा था। मैंने बगैर पासपोर्ट के इन सत्रह चौकियों, हब नदी थाना, सोन मियानी लियारी, उरमाड़ा आदि को चौदह दिन में पार किया। वहाँ से मैं पस्नी बन्दरगाह पहुंचा। ग्वादी फारस पर बसरा जाते हुए यह पहला बन्दरगाह है, मैंने वहां वैदिक धर्म का प्रचार किया। फिर गवादर बन्दरगाह पहुंचा वहाँ मैं प्रचार करके किश्ती के जरिये अरब के मशहूर बन्दरगाह मसकत पहुँचा। वहाँ बड़ी-बड़ी किश्तियां होती हैं, जो बादबान से चलती हैं, मैं यहाँ के बादशाह सुलतान फैसल इबनतुर्की को मिला था, जो कि खारजी फिरके का बादशाह है। उन्होंने मेरे प्रचार में बहुत सहायता की थी। मेरे प्रयत्न से वहाँ गोशाला भी बनी थी, वहाँ पर दो तीन सौ गुजराती तथा सिंधी हिन्दू रहते हैं, जो कि लगभग दो हजार साल के बसे हुए हैं। वहां से मैं दबई बन्दरगाह गया। रास्ते में बद्दुओं में भी प्रचार करने का अवसर मिला, वहां से मैं कतर (नजद) गया। आजकल इस नजद के इलाके में मिट्टी का तेल, पैट्रोल आदि निकला है। वहां पर प्रचार करते हुए मैं बहरीन टापू पहुँचा। इस टापू से मोती निकाला जाता है। मनामा बाजार में लगभग एक सौ हिन्दू रहते हैं, जो कि पुराने जमाने के बसे हुए हैं। बहरीन के बादशाह शेख ईसा मेरा व्याख्यान सुनकर कहने लगे, कि हमने तो सुन रखा था कि हिन्दुओं के बहुत खुदा हैं, परन्तु एक परमात्मा की भक्ति का उपदेश तुमने वेदों से सिद्ध किया है। वहां से प्रचार करके मैं किश्ती से कतीफ बन्दरगाह (नजद) पहुँचा। वहाँ से अलहसा गया। वहाँ से अरब का मरुस्थल शुरू होता है। वहाँ से मैं रियाज (नजद) पहुँचा। रास्ते के शहरों में प्रचार करता हुआ मैं अलअरीश मिस्र के इलाका जा पहुँचा वहां से कन्तरा (स्वेज नहर का पुल) पार करके अल काहिरा मिस्र की राजधानी गया। मैंने वहाँ वैदिक धर्म का प्रचार किया। सारे अरब देश में लोग मुझसे महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू आदि के बारे में पूछते थे। मैंने उनके काम के बारे में तथा इंडियन नैशनल कांग्रेस के उद्देश्य लोगों को बताये, तथा सारे अरब देश के अखबारों को कई लेख भी लिखे थे। फलस्वरूप वहां मिली कपड़ा पहनो, स्वदेशी पहनो, का आंदोलन चल पड़ा। मिस्र की लाइब्रेरी में संस्कृत की २२ पुस्तकें हैं जिनमें जर्मन भाषा टीका सहित छः शास्त्र भी हैं मेरे प्रचार का सारे मिस्र में बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

इसके बाद मैं फिलस्तीन के इलाका Jarusalam बैत-अल मुकद्दस पहुंचा। सन् १९३२ में गोलमेज कान्फ्रैन्स लन्दन से वापसी पर मुस्लिम लीग के लीडर मौलाना शौकतअली, सर इकबाल आदि बैत अल मुकद्दस आये थे। यहाँ दुनिया के मुसलमानों की कान्फ्रैन्स थी, उन्होंने भारत के बटवारे की मांग की। उस जमाने में मिस्टर जिन्नाह इनके बड़े लीडर थे, परिणाम यह निकला कि वहां के यहूदियों ने फिलिस्तीन के बटवारा की मांग की, और फिलिस्तीन का बटवारा करके इस्राईल (यहूदियों) की हकूमत बन गई। मुस्लिम लीग के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

काव्य-कानन

बढ़े चलो मैदानों में

(श्री विक्रमादित्य 'वसन्त', लखनऊ)

तुम संभल उठो हे आर्य वीरो !
जगती के तूफानों में,
मानवता का गौरव रखने,
बढ़े चलो मैदानों में ॥
देखो जग में गरज रहे हैं,
दानवता के दल मतवाले।
धरती अम्बर खेल रहे हैं,
आज प्रलय के खेल निराले ॥
अमर शान्ति का मन्त्र गुंजाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
व्यापक है, भय की विभीषिका,
अन्धकार की बेला है।
विगलित होता धर्म आज,
अन्याय का रेला है ॥
ज्ञान-ज्योति के दीप जलाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
मानवता अभिभूत हुई है,
शोषण के पदघातों से।
पीड़ित होकर दावानल से,
दलित दैन्य आघातों से ॥
दुखियों के सन्ताप हटाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
लुटती क्रीड़ा द्रुपदाओं की,
सीताएं अश्रु बहाती हैं।
पावन स्मृतियां श्रुत शूरों की,
वीरो तुम्हें जगाती हैं ॥
अबलाओं की लाज बचाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
त्रास-पूर्ण स्वर में गौ माता,
दीन पुकार मचाती है।
'कब आएंगे रक्षक मेरे ?'
पथ में नयन बिछाती है ॥
गौ माता की रक्षा करने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
चिन्ता क्या है दूर खड़े जो,
तूफानों से डरने वाले।
शत--शत बार मरा करते हैं,
डर--डर कर मर जाने वाले ॥
गीता का सन्देश सुनाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
चिन्ता क्या है साथ नहीं जो,
कन्टक पथ के सच्चे साथी।
देखो सूरज औ चन्दा को,
नित आते हैं जो एकाकी ॥
बलिदानों का पाठ पढ़ाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
उठो ! आज तुम क्रान्ति मचा दो,
जागरूक करदो जग सारा।
चिर-संचित निधियाँ ऋषियों की,
पुनः बहाएं अमृत-धारा ॥
इस जगती को आर्य बनाने, बढ़े चलो मैदानों में ॥
निश्चित होगी विजय तुम्हारी,
हर पथ-पथ में, हर कण-कण में।
प्रबल प्रवाह नहीं रुकने है,
भूमण्डल के बृहत् प्रांगण में ॥
ओ३म् पताका फहराने को, बढ़े चलो मैदानों में।

★

[पृष्ठ १३ का शेष]

उपर्युक्त लीडर फिलिस्तीन के बटवारा कराने के जिम्मेदार थे। सारे अरब देश में मुस्लिम लीग तथा पाकिस्तान की इज्जत नहीं है। पाकिस्तान तो अमरीका का गुलाम बन गया है, और अब वह सारे अरब देशों को भी अमरीका आदि का गुलाम बनाना चाहता है।

इसके बाद मैंने जबल लिबनान, शाम (Syria) अल-इराक, अदन, यमन आदि में वैदिक धर्म का प्रचार किया, और सन् १९३६ में भारत लौट कर आया था।

जब से अब तक बहुत समस्यायें आईं, उन समस्याओं को सुलझाते हुए देश, धर्म तथा जाति की रक्षा-कार्य करता रहा हूं।

परम पिता परमात्मा का धन्यवाद है कि आज हमारा भारत देश आजाद है। अरब लोगों ने भारत में आकर देख लिया है कि भारत सरकार न्यायपूर्वक राज्य कर रही है। राज्य वही फलता-फूलता है, जो न्यायपूर्वक, जितेन्द्रिय तथा चरित्रवान होकर धर्माचरण पूर्वक किया जावे।

परमात्मा की कृपा से आज वह समय आ गया है कि अरब देश में वैदिक धर्म का प्रचार सुगमता से हो सकता है।

आयेंगे वह अरब से,
जिनमें लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी,
हलचल मचा रहा है॥

एक जमाना था, जब आर्य लोग यह गीत गाते थे, और उनमें धर्म प्रचार का जोश था, अब आर्यों को अरबी भाषा तथा अन्य देशों की भाषायें सीखनी चाहियें, और सारे संसार में वैदिक धर्म का प्रचार किया जाये तथा देश, धर्म तथा जाति की रक्षा का कार्य भी करना चाहिये।

मेरी प्रबल इच्छा है कि आर्य बन्धु अरब देशों में प्रचारार्थ जायें। इस दिशा में जो व्यक्ति या सभाएं मेरे परामर्श से लाभ उठाना चाहें उनके लिये मेरी सेवाएं प्रस्तुत हैं। वैसे मैंने "अरब में सात साल" पुस्तक में सब विस्तार से लिखा है। अरब प्रचार के शुभ कार्य में सहयोग देकर वैदिक धर्म के विस्तार में मैं यदि कुछ भी सहायक बन सकूं, यह मेरा परम सौभाग्य होगा।

नगर आर्यसमाज, आगरा की डायरी

[१] दि० १२-४-६१ को साप्ताहिक अधिवेशन में पं० धर्मपालजी आर्य का भाषण हुआ।

[२] दि० १७-४-६१ को रामनवमी उत्सव समारोह-पूर्वक मनाया गया। म० यशवन्तसिंह जी प्रचारक के भजन म० पोखपालसिहजी आर्य, म० विश्वम्भरनाथ जी आर्य मंत्री समाज के ओजस्वी भाषण हुए।

[३] दि० २३-४-६१ को श्री चोखेलाल जी वानप्रस्थी लेन गऊशाला के गृह पर पूर्णमासी का उत्सव हुआ। हवन, संध्या, भजन के पश्चात् उपस्थित जनता का मिष्ठान्न से स्वागत किया गया। उपस्थिति लगभग ३० के थी।

[४] दि० २६-४-६१ को साप्ताहिक अधिवेशन में श्री पं० श्रीरामजी शर्म्मा का ओजस्वी प्रभावशाली भाषण हुआ। उपस्थित जनता पर अति उत्तम प्रभाव पड़ा।

—मोहनलाल आर्य
प्रधान

प्रचार-समाचार—

—ग्राम हिम्मतपुर, जिला एटा में श्री गौरीशंकर जी के सुपुत्र श्रीरघुनन्दनलाल जी के शुभ विवाह उत्सव में श्री कुं०जैपालसिंह मानव ने वैदिक धर्म का प्रचार बड़ी लगन के साथ किया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

अत्यावश्यक

आर्यसमाज तिलहर का वार्षिकोत्सव जो २१ से २४ मई तक होना निश्चित हुआ था स्थगित कर दिया गया है।

लड़के गायब, सहायता कीजिये

मेरे दो पुत्र रविप्रकाश आयु लगभग १६ वर्ष, गेहुआ रंग, ५ फीट ४॥ इंच का इकहरा बदन दोनों कानों के नाचे के भाग जरा ऊपर मुड़े हुए, बाएं पैर की कानी उङ्गली के बगल की उङ्गली उसके ऊपर चढ़ी हुई है, २८-४-६१ से नवें दर्जे की परीक्षा देने के बाद से गायब हैं। इसके साथ श्री प्रकाश नाम का इससे छोटा दूसरा लड़का भी है।

२८-४-६१ को वे मुरादाबाद में थे। आर्यसमाज के अधिकारियों तथा आर्य भाइयों से निवेदन है कि सूचना मिलने पर तुरन्त खबर दें और सुरक्षित पहुँचाने का प्रबन्ध कर दें। आभारी हूँगा।

मानक प्रसाद
पूर्व प्रधान आर्यसमाज, गोंडा
२७७, मो० बनकटवा, गोंडा

निर्वाचन-समाचार—

आर्यसमाज जहांगीराबाद [बुलन्दशहर] का वार्षिक चुनाव इस प्रकार हुआ—

श्री कैप्टिन रामसरन शर्मा प्रधान, श्री रामगोपाल जी, श्री सचेतसिंह जी उप प्रधान, श्री गंगाप्रसाद जी मंत्री, श्री देवीसहाय गुप्ता श्री परशोत्तम जी उप मंत्री, श्री श्यामप्रसाद जी कोषाध्यक्ष।

टिड्डियों के आक्रमण की आशंका

राज्य सरकार के कीटाणु-विशेषज्ञ एवं पौधा सुरक्षा-सेवा अधिकारी ने समस्त जिलाधीशों को एक परिपत्र भेजकर कहा है कि राज्य में टिड्डी-दल के आशंकित हमले से मुकाबला करने के लिए वे अपने जिले में टिड्डी-नाशक दलों को तैयार रखें।

कीटाणु विशेषज्ञ ने अपने परिपत्र में कहा है कि भारत सरकार के पौध-सुरक्षा सलाहकार से हाल में प्राप्त एक सूचना के अनुसार पश्चिम की ओर से टिड्डियों के लगभग आधे दर्जन दल पाकिस्तान में घुस आये हैं और इन दलों के राजस्थान तथा पूर्व के अन्य इलाकों में पहुंचने की आशंका है।

विज्ञान-वार्ता

रेडियो बज पेज मास्टर

आप चाहे कोई भी धन्धा क्यों न करते हों यदि आप के जेब में आफिस की डिब्बी के बराबर आकृति वाला रिसीवर' पेज मास्टर बज' रखा हुआ है और यदि आप अपने दफ्तर से चार मील की दूरी पर हैं तो आवश्यकता पड़ने पर, आपके आफिस का टेलीफोन आपरेटर वहीं आपसे सम्पर्क स्थापित कर सकता है। वह 'पेजमास्टर' के (सिगनल बटनो) से आपके जेब में रखे 'बज' को बजा देगा। और आपको मालूम हो जायगा कि आपका आफिस आपसे बातचीत करना चाहता है। बस फिर आप किसी भी पार्श्ववर्ती टेलीफोन द्वारा बातचीत कर सकते हैं।

तापमापक परमाणु भट्टी

टाइप राइटर

यह अमरीका क एक ऐसे "परमाणु भट्टी कारखाने" में लगाया गया है, जा एटम-बमो के लिए प्लोटोनियम धातु तैयार करता है। परमाणु भट्टी के भीतर कितना टेम्परेचर है, इसकी सूचना वह टाइपराइटर, चार्ट पेपर पर स्वयं लिखता जाता है। इसको देखते रहकर 'भट्टी' के टेम्परेचर को नियन्त्रण में रखा जाता है। ताकि प्लुटोनियम का अधिकतर उत्पादन हो।

नया कृत्रिम रेशा मॉप्लॅन जो ऊन जैसा मालूम होता है

आजकल रेयॉन, नाइलॉन, इत्यादि अनेक तरह के कपड़े बहुत लोकप्रिय हो गये हैं। इन कृत्रिम रेशो की सूची में, अब एक नया बहुत ही महत्वपूर्ण नाम जुड़ गया है—और वह है, 'म प्लॅन'।

मॉप्लॅन की विशेषता यह है कि वह देखने और छूने में बिल्कुल ऊन जैसा लगता है। वजन में वह बहुत ही हल्का होता है। इसलिए इसकी पोशाक शरीर को भारी नहीं मालूम होती। इस पर बिना अधिक भय क लोहा किया जा सकता है। इसका सस्तापन, इसकी सबसे बड़ी खूबी है। जहाँ 'नाइ-लॉन' बनाने में प्रति पौंड लगभग ५ रुपये खर्च बैठता है वहाँ "माप्लन" को बनाने में १२ आने प्रति पौण्ड खर्च आने की आशा है। 'मॉप्लॅन' के आविष्कार का श्रेय इटली के पोलीटेक-नीक स्कूल' के प्रोफेसर जुलियो नाटा को है।

वैज्ञानिक अपनी इच्छानुसार मॉप्लॅन को जितना चाहें, उतना सख्त या नर्म, और जितना चाहें, उतना लचकीला या कड़कीला बना सकते हैं।

औषध सामग्रियों की कीटाणु-नाशन जगत् विख्यात कम्पनी

'जॉनसन एण्ड जॉनसन' ने उस डोरे (ताँत, अंग्रेजी में 'कैग्गट') को जिससे डाक्टर लोग जख्मो में टाँके लगाते हैं। परमाणु किरणों से स्टर लाइजेशन कीटाणु रहित करना, शुरू कर दिया है। इस तरह का विकास करने में दस वर्ष का समय लगा है।

परमाणुओ में 'इलक्ट्रोन' नामक कण पाये जाते हैं, जो अत्यन्त शक्ति-शाली बिजली की मशीनो द्वारा, ये इलक्ट्रोन परमाणुओं से अलग कर दिये जाते हैं। और फिर उन्हें विशेष उप-करणों के प्रयोग से, नल के द्वारा, उस कमरे मे पहुचाते है, जहाँ कि डोरा कीटाणु रहित किया जाता है।

कीटाणु रहित करने से पहिले, डोरे को, पैकटो मे बन्द करके, भील तथा लेबल लगा दिये जाते हैं। फिर उन पैकिटो को 'कृमिनाशन कमरे' में पहुँचाया जाता है। वहाँ अब ये आगे बढ़ते हुए, इलक्ट्रानो की बौछार के सामने पहुँचते है, तो ये अत्यन्त शक्ति शाली तथा मर्मभेदी इलक्ट्रान पैकटो के भीतर घुस जाते हैं, और वहाँ पर पेकटो तथा उनमें रखे हुए डोरो में उपस्थित रोग कीटाणुओं तथा दूसरे सभी कीटा-णुओ का नाश कर डालते हैं।

हलका-फुलका गिटार

पेरिस में एक संगीतज्ञ ने गिटार के बोझ को हल्का करने के लिए, उसके नीचे का भाग तूने की प्लास्टिक शीट का ऐसा बनाया कि उसे चाहे जब मुह से फुला लीजिए और फिर पटका दीजिए। उस सगीतज्ञ का यह दावा है कि इससे गिटार की स्वर सज्जा में कोई अन्तर नहीं आता।

छोटा-सा करघा

न्यूयार्क में टाइपराइटर जैसा, यह छोटा सा करघा रेयान कपड़े के नये डिजाइनो का नमूना तैयार करता है। नये नमूनो को मिल की मशीनो पर तय्यार करने मे ज्यादा सामान लगता, हफ्तो बीतते, परन्तु इस मशीन पर थोड़ा सा सामान घण्टो का काम। नये डिजाइनो के नमूनों को इस पर बनाकर बाजार में पसन्द करा लिया जाता है, फिर उन पर प्राप्त आर्डरों के अनुसार बड़े पैमाने पर उनका उत्पादन किया जाता है।

★

ईसाइयत के प्रचार में हिंसा और भेदभाव की पराकाष्ठा

विदेशी मिशनरियों के काले कारनामे

हिंसात्मक आक्रमण

बिहार उड़ीसा से यह समाचार प्राप्त हुए हैं कि हजारीबाग जिले का विदेशी ईसाई मिशनरी आर्यसमाज द्वारा शुद्ध किए गए हिन्दुओं को जा मारने के लिए अन्य २४ सशस्त्र व्यक्तियों के साथ डाटो नामक ग्राम में परन्तु पुलिस और सेना के आजाने के कारण उन हिन्दुओं की जान बच स इस सम्बन्ध में १३ पादरियो पर दफा १०७ के अन्तर्गत हजारीबाग में मुक चल रहा है।

ईसाइयत में एकता का ढोंग, कब्रिस्तान तक में काले गोरे का :

रांची से ३२ मील दूर गोविन्दपुर बाजार में एक जर्मन मिशन काम क है। इस मिशन के अधीन कई हाईस्कूल चलते हैं। उसका एक आक्ष्य मा ईसाई बन गया। अचानक उस मास्टर का लड़का मर गया और उस ईसाई हुए पिता ने उसे ईसाइयो के कब्रिस्तान में गाड़ दिया। जब विदेशी पादरी पता लगा तो उसने उसकी लाश को कब्र में से निकलवाया जबकि वह सड़ थी और उसमें कीड़े चल रहे थे। इसका कारण यह बताया गया कि क ईसाई गोरे ईसाइयो क कब्रिस्तान मे नहीं गाड़ा जा सकता। उस ईसाई बने पिता को बड़ा धक्का लगा। फिर हिन्दुओ की सहायता से लाश जला दी गई

इन दोनो ईसाई पादरियों की मनमानी और धमकी-पूर्ण हिंसात्मक क वाहियो क कारण उनक विरुद्ध हजारीबाग जिले में १२ मुकद्दमे चल रहे हैं।

ग्राम पंचायत कछारी (हजारीबाग) द्वारा ६ ईसाई पादरियों को स

जबरन ईसाई बनाने का परिणाम

थाना हजारीबाग (बिहार) से प्राप्त समाचार क अनुसार ६ ईसाई पादरि लुक्कस कमेल, जस्टीन, माईकेल, महादेव क्रस्तान, म॰॰, समेल, बुद॰ क्र कटका बीरसा नामक ईसाई पादरियों को ग्राम पचायत कछारी की अदाल २०, २० दिन की कड़ी कैद और १०), १०) जुर्माना की सजा दी है। यह डाटो ग्राम के दिलजान मियां की शिकायत पर कि पादरियों ने उसे गिरज बुलाया और ईसाई धर्म स्वीकार करने को बाध्य किया और ईसाई न बनने अवस्था में जान से मार देने की धमकी दी। इस पर उच्च अधिकारियो ने की जाच की और क्स ग्राम पचायत क सुपुर्द कर दिया जहा से उन्हें उपर्यु सजाए दी गई हैं।

सार्वदेशिक सभा क कार्यकर्ताओ की सक्रियता क कारण अब उस प्रदेश जनता साहस क साथ परिस्थितियों का सामना करने लगी है।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
२७ वैशाख शक १८८१
(२४ मई १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५६६३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सिद्धान्त विमर्श

शंका-समाधान

स्वाध्याय-प्रेमी विद्वान आर्य बन्धु ने बड़ी उत्तम शैली में शंका समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। हम उनके इस प्रयत्न की प्रशंसा करते हैं और संक्षेप में इसी प्रकार और भी विचार व्यक्त करने का आग्रह करते हैं। अन्य आर्य बन्धु भी इस शंका समाधान में सम्मिलित हो अपनी स्वाध्यायशीलता का परिचय दे सकते हैं। संक्षिप्तता का सदा ध्यान [illegible] चाहिए यही प्रार्थना है।—सम्पादक

आर्यसमाज काशीपुर जिला नैनीताल के वार्षिकोत्सव पर शंका समाधान का विशेष कार्यक्रम था, उसमें अनेक लिखित शंकाएं उपस्थित हुईं जिनका अति सुन्दर समाधान शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, काव्यतीर्थ आदि विद्वानों द्वारा किया गया, उनमें से एक शंका आर्यमित्र के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ। जिज्ञासु की शंका लिखित इस प्रकार है।

मेरी मान्यता—वेदों (चारों संहिताओं) को निर्भ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूँ।

शंका—मुक्ति से पुनरावृत्ति सम्भव प्रतीत नहीं होती।

हेतु—चूंकि अशुभ कर्मों के नितान्त अभाव में मुक्ति प्राप्त होती है और मुक्ति में (सूक्ष्म तथा स्थूल शरीर के अभाव के कारण) जीवात्मा क्रियमाण कर्मों से वंचित रहता है। क्रियमाण के अभाव में क्रमशः संचित तथा प्रारब्ध का अभाव ही होता है, फिर बिना प्रारब्ध के शरीर का धारण करना सम्भव नहीं जबकि शरीर शब्द का अर्थ 'भोगायतनं शरीरम्' है। कारण के अभाव में कार्य का सर्वत्र अभाव रहता है, कारणाऽभावात्कार्याऽभाव.।

प्रतिज्ञा मुक्ति से पुनरावृत्ति नहीं होती।

समाधान

इस शंका की पुष्टि में जो हेतु दिये हैं उनमें केवल अशुभ कर्मों का नितान्ताभाव ही व्यक्त किया गया है। उपर्युक्त द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि शुभ कर्मों की विद्यमानता में मुक्ति मिलती है। मुक्ति का कारण शुभ कर्म, बिना सद्ज्ञान के असम्भव है और सद्ज्ञान वेदों के स्वाध्याय से प्राप्त होता है। फिर दूसरा हेतु "मुक्ति में (सूक्ष्म तथा स्थूल शरीर के अभाव के कारण) जीवात्मा क्रियमाण कर्मों से वंचित रहता है।" स्वत. यह सिद्ध करता है कि मुक्ति में वेदों का स्वाध्याय (जो मुक्ति का मूल कारण है) भी नहीं होता, नष्टे मूले फलं न पुष्पम्। अर्थात् स्वाध्याय के न रहने तथा जीव के अल्प शक्तिमान होने के कारण सद्ज्ञान का विसर्जन होता है और जब सद्ज्ञान का अभाव होगा तो कारण के भाव में कार्य (मुक्ति) का भी अभाव हो जायगा, जैसाकि हेतु के अन्तिम वाक्य में शंका करने वाले स्वयं लिखते हैं, कारणाभावत्कार्याभाव.।

पुनर्विवेचन

उपर्युक्त समाधान का सारांश इस प्रकार है कि मानव शरीर पाकर वेदों के स्वाध्याय द्वारा सद्बुद्धि प्राप्त कर शुभ कर्म करके जो मुक्ति प्राप्त होती है वह मुक्ति के उपरान्त वेदों के स्वाध्याय के अभाव में सद्ज्ञान के अभाव के कारण स्थिर नहीं रहती अर्थात् मुक्ति से पुनरावृत्ति हो जाती है।

विशेष व्याख्या—जीव अल्प शक्तिमान है, उसकी सभी शक्तियाँ सीमित हैं वह अनन्त सुख अथवा दुःख का भोग कदापि नहीं कर सकता है। कल्पना कीजिये कि एक मनुष्य जिसे अत्यधिक श्रम करके भी मोटा-झोटा भोजन प्राप्त हो पाता है, रहने को एक टूटा झोपड़ा तथा रात्रि में केवल ४, ५ घण्टे पृथ्वी पर सोना मिल जाता है यदि उसे दो दिन कुछ भी काम न करना पड़े और पूरी, मिठाई, खीर इत्यादि सुन्दर भोजन मिल जाय, रहने को अच्छे भवन तथा रात्रि विश्राम के लिए निवाड़ का पलंग तथा तोषक-तकिया आदि मिलें तो उसको बड़ा भारी सुख का अनुभव होगा किन्तु उसे यह प्रतिबन्ध लगा दिया जावे कि जीवन भर कुछ कार्य नहीं करने दिया जावेगा, उस भवन से बाहर भी नहीं जा सकेगा तथा उसी पलंग पर दिन रैन सोते रहना पड़ेगा तो उसको वही वस्तुएं दुखदायी बन जायंगी, क्योंकि सुखभोग की सामर्थ्य भी जीव में सीमित है। भला सोचिये कि जब एक जीव अपने एक जीवन के अंश काल में भी सुख भोग से घबरा उठता है तो मुक्ति में अन्तकाल तक के सुखभोग को कैसे भोग सकेगा। दूसरे यह कि जिस मुक्ति से कभी छुटकारा न मिले तो वह भी एक प्रकार का बन्धन ही ठहरा, फिर ऐसी मुक्ति को मुक्ति कहना असत्य ठहरेगा।

तीसरी युक्ति इस प्रकार है कि एक किनारे की कोई नदी नहीं हो सकती है, भला जिस मुक्ति का आरम्भ हो उसका अन्त क्यों नहीं होगा। संसार में कोई ऐसा उदाहरण नहीं कि सादि वस्तु अनन्त हो। कहा भी है कि—यद्यज्जन्यं तत्तदनित्यं यत्र यत्र जन्यत्वाभावस्तत्र तत्र नित्यत्वाभावः। अस्तु यह निर्विवाद सिद्ध है कि मुक्ति से पुनरावृत्ति होती है।

समाधान कर्ता—
गंगाप्रसाद वानप्रस्थी
काशीपुर, जिला नैनीताल

(पृष्ठ २ का शेष)

है और अस्पताल मे दाखिल हो जाता है तो उसकी सुधि लेने भी हम नहीं पहुँच पाते।

आर्यसमाज के प्रचार को व्यापक एवं व्यवस्थित रूप देने के लिये आवश्यक है कि शीघ्र ही भारत की राजधानी देहली नगर में एक सार्वदेशिक उपदेशक वेद-विश्वविद्यालय चालू करना चाहिये। जो उपदेशक वेद विश्वविद्यालय नालन्दा विश्वविद्यालय के समान हो जिसमें विश्व की विविध भाषाओं के उपदेशक तैयार करके विश्व के समस्त राष्ट्रों में वैदिक धर्म के प्रचार के लिये भेजे जायें।

विश्व के समस्त नगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो, सार्वभौम वैदिक धर्म का प्रचार-केन्द्र भारत की पुण्य भूमि में हो। वर्त्तमान समय में जितने भी आर्यसमाज के उपदेशक और संन्यासी तथा प्रचारक आर्यसमाज में हैं उनका एक संगठन बनाया जावे।

उपदेशकों तथा प्रचारकों के लिये आर्य उपदेशक सहायता निधि स्थापित की जावे और उस निधि में लाखों रुपयों का कोष एकत्र किया जावे। उस कोष से निराश्रित प्रचारकों की सहायता की व्यवस्था की जावे। इन योजनाओं की सिद्धि और सफलता के बिना लाख यत्न करने पर भी हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं।

—वेदपथिक धर्मवीर आर्य
झंडाधारी, व्याख्यान-भूषण, देहली

नैनीताल आर्यसमाज में यात्रियों को सुविधा

ग्रीष्मकाल मे यात्रियों की सुविधा के लिये नैनीताल आर्यसमाज की ओर से प्रबन्ध किया जाता है परन्तु उन्हीं यात्रियों को प्राथमिकता दी जाती है जो आद्योपान्त पूर्णतया आर्य विचारों के होंगे और किसी आर्यसमाज द्वारा उन्हें प्रमाणित किया गया होगा।

मंत्री
आर्यसमाज नैनीताल

कृषि विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी
नवीन छात्रों का प्रवेश

यह विद्यालय कृषि एवं सम्बन्धित विषयों में दो वर्ष का डिप्लोमा कोर्स प्रदान करता है। प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता—हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण आयु १६ से २१ वर्ष तक। प्रार्थना-पत्र के फार्म तथा नियमावली के लिये एक रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रिन्सिपल, कृषि विद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार ज्येष्ठ १०, शक १८८१, ज्येष्ठ कृष्ण १०, वि० २०१६, ३१ मई १९५९ ई० [१२शिलिंग

आर्यसमाज मानवता का प्रकाश-स्तम्भ है

विश्व हमसे नेतृत्व की अपेक्षा रखता है

त्याग, निष्ठा, निष्पक्षता, पारस्परिक स्नेह, सद्भावना आदि दिव्य चारित्रिक गुण ही हमारी सफलता के साधक हैं।

—स्वामी अभेदानन्द



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के निवर्तमान प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज ने सभा के वार्षिक अधिवेशन में समागत आर्य प्रतिनिधि बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के महान गौरव का स्मरण कराया और उस गौरव की रक्षा के लिए दायित्व पूर्ण करने में दृढ़ता और प्रेम के साथ जुट रहने की अपील की।

आर्यसमाज के संगठन की सुरक्षा और भावी प्रगति के लिये आपने आर्य बन्धुओं से निवेदन किया कि विश्व और राष्ट्र की धार्मिक सामाजिक राजनैतिक सभी प्रकार की समस्याओं को प्रभावित करने की अपनी शक्ति बनाये रखने के लिये यह अत्यधिक आवश्यक है कि हममें आन्तरिक एकता अक्षुण्ण एवं समृद्ध हो। आर्यसमाज के महान् गौरव की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने व्यक्तिगत मतभेदों को कभी भी मुख्यता न दें। हम अपनी एकता से ही दूसरों पर विजयी रहे हैं और भविष्य में भी एकता से ही विजयी हो सकेंगे।

एक सुझाव देते हुए स्वामीजी ने यह भी कहा कि जो आर्य भाई निर्वाचन में रुचि नहीं रखते उनके विचारों का लाभ उठाने और उनसे उच्चस्तरीय नीति परामर्श करने के लिये एक स्वतन्त्र कन्वेंशन की प्रथा कायम करने पर विचार करना चाहिये। क्योंकि आर्यसमाज की बहुत बड़ी एवं गम्भीर शक्ति निर्वाचन प्रणाली के कारण उपेक्षित है। उसके विचारों का भी हमें लाभ उठाना चाहिये।

★

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का स्वर्णिम स्वप्न

व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की इकाइयों को आदर्श बनाकर ही पूर्ण किया जा सकता है।

मानवता आज चारित्रिक संकट में से गुजर रही है। संकट से रक्षा के लिये हमें चरित्र निर्माण आन्दोलन को सफल बनाना होगा। सभी आर्य बन्धु इस कार्य में यथा शक्ति सहयोग करें तो आर्यसमाज का गौरव बढ़ेगा। —पूर्णचन्द्र एडवोकेट

सार्वदेशिक सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट ने अपने एक सन्देश में आर्य बन्धुओं से निवेदन किया है कि आज के विश्व-संकट का मूल कारण चरित्र का ह्रास है। भौतिकवाद के आकर्षणों ने मानवता के नैतिक मूल्यों को जड़ मूल से हिला दिया है और मानव समाज नैतिक मान्यताओं के अभाव में पतन के गहन गह्वर में गिर रहा है। इस संकट से बचने, स्वस्थ नागरिकता एवं आदर्श मानवता का विकास करने और आर्य मर्यादाओं की पुनः स्थापना के लिये हमें कठोर यत्न करना होगा।

स्वाधीन भारत में सर्वव्याप्त भ्रष्टाचार अनैतिक जीवन आदि का समाधान आर्यों के नैतिक आन्दोलन से ही हो सकेगा। इसके लिये प्रत्येक आर्य को कठोर साधना की अग्नि में तपना होगा। तप कर कुन्दन बनकर ही हम दूसरों को अपने जीवन से प्रभावित कर सकते हैं।

आर्यसमाज का सामूहिक दायित्व हम आर्यों के व्यक्तिगत प्रयत्नों, चरित्र और उत्साह से ही पूर्ण हो सकता है। हम सब इस नैतिक उत्थान के कार्य में संलग्न हो जायें, सफलता स्वयमेव हमारा वरण करेगी।

★

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए | अङ्क २१

सामयिक समस्याएँ

स्वाध्यायान्मा प्रमदितव्यम्

(श्री विश्वबन्धु वेदालंकार एम० ए० आर्यसमाज हींगमण्डी, आगरा)

(विचारों का स्रोत जीवन की गति-दिशा का नियन्त्रक होता है, जब किसी व्यक्ति या समुदाय के जीवन में विचार-प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है तो जीवन में शैथिल्य और विकार उत्पन्न हो जाता है। आज हमारी यही दशा है क्योंकि हमने विचारों को जन्म देने वाली स्वाध्याय-साधना को समाप्त कर दिया है। स्वाध्याय की वर्तमान अवस्थाओं में कितनी आवश्यकता है इस संक्षिप्त लेख में विद्वान् लेखक ने प्रतिपादन किया है —सम्पादक)

कोई दस वर्ष पूर्व की बात होगी जब हम गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में अध्ययन कर रहे थे, एक दिन घूमते हुए हरिद्वार में हर की पैड़ी पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि भारी भीड़ में एक स्थानीय वेदान्ताचार्य कथावाचक महामण्डलेश्वर से एक साधारण सा व्यक्ति जो पंजाबी दिखाई देता था, दर्शन सम्बन्धी युक्तियों में उलझा हुआ है। उस व्यक्ति ने वेदान्त दर्शन पर कुछ ऐसी शंकाएं कर दीं जिनका समुचित उत्तर वह वेदान्ताचार्य न दे सका और जनता ने ताली पीटकर उस महामण्डलेश्वर की पराजय घोषित कर दी। इस उपर्युक्त कांड की समाप्ति पर हमने उस व्यक्ति से पूछा—आप कौन हैं, कहाँ रहते हैं और कहाँ अध्ययन किया है। उसने उत्तर दिया भाई साहब न मैं विद्वान् हूँ न मैंने दर्शनों का अध्ययन किया है। मैं तो हिकमत करता हूँ, पर स्वामी दयानन्द का छोटा सा सिपाही जरूर हूँ। हां इतना अवश्य है कि मैंने स्वामी दयानन्दजी के सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि को कोई दस पन्द्रह बार पढा होगा। इसलिये मुझे अनेक प्रकरण के प्रकरण याद हो गये हैं और इसीके बल पर मैंने इन जैसे कितने ही पौराणिकों का मान मर्दन किया है।

आर्यसमाज का प्रारम्भिक युग इसी प्रकार के लोगो का था। ऋषि दयानन्द के असामयिक देहावसान से उस युग के लोगो में निराशा के बदले एक महान् आशा उत्पन्न हो गई थी। प्रत्येक आर्यसमाजी अपने आपको एक सामान्य आर्य सभासद न समझ कर ऋषि दयानन्द का एक मिश्नरी समझता था। परिणाम स्वरूप आर्यसमाज में प्रविष्ट होने वाले प्रत्येक व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा रहती थी कि वह आर्यसमाज के सिद्धान्तों को अच्छी तरह से समझे। उसका प्रयत्न होता था कि संध्या, हवन के मन्त्रों का भी शुद्ध उच्चारण करना सीख जाय। साथ में ईश्वर और धर्म सम्बन्धी पर्याप्त बातें भी उसे आती हों। इस प्रकार उस समय के लोगों में स्वाध्याय की उत्कट भावना उत्पन्न हो गई थी। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को तो लोग अपनी छाती से लगाये फिरते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि स्वामीजी के ग्रन्थ वैदिक संस्कृति के महाकोश हैं जिनमें हजारों ग्रन्थों के साररूप में स्वामी जी महाराज के समस्त जीवन का कार्य कलाप और उनकी मेधा बुद्धि समाई हुई है। पर आज हममें से कितने हैं जिन्होने सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को एकबार भी आद्योपान्त पढा हो। आज स्थिति यह है कि हममें से अधिकांश को तो संध्या-हवन के मन्त्र तक याद नहीं हैं। जिन्हें याद हैं वे शुद्ध उच्चारण करने में असमर्थ है। स्वाध्याय की इसी उपेक्षा के कारण हमारे व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन तथा सामाजिक जीवन पर भी बड़ा दुष्प्रभाव पड रहा है।

छोटे-मोटे विद्वानों और प्रकाशकों की तो बात ही जाने दीजिए, सभाओं और आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वानों का यह कथन सत्य ही है कि उनके रचित साहित्य का स्वाध्याय के लिये लोग उपयोग नहीं करते है। अतः उनके प्रकाशनों की बिक्री निरन्तर कम होती जा रही है। ठीक है बिक्री हो कैसे जब पढने वाले ही न हों। आर्यसमाज के पुस्तकालयों तक में अब नये ग्रन्थों का खरीदना प्रायः बन्द सा है। जो हैं वे भी दीमक की भेंट हो रहे हैं। जब आर्यसमाज के पुस्तकालय तक आर्य साहित्य को न खरीदेंगे तो दूसरों को क्या गरज पडी है। एक आर्यसमाज में तो हमने यहाँ तक देखा कि उनके विशाल वाचनालय में जिनमें हिन्दी और अंग्रेजी के अनेकों साप्ताहिक व दैनिक समाचार-पत्र थे, पर आर्य सामाजिक कोई पत्र पत्रिका नहीं। यहां तक कि आर्यमित्र तथा सार्वदेशिक तक के दर्शन न थे। हमारे पूछने पर मन्त्री महोदय ने बताया कि हमने आर्यमित्र और सार्वदेशिक को कई बार लिखा कि वे हमसे आधा मूल्य लेकर पत्र जारी करदें पर वे स्वीकार ही नहीं करते। तब हमने पूछा कि ये जो अंग्रेजी के लीडर, स्टेट्समैन, हिन्दुस्तान टाइम्स आदि हैं ये तो सभी आपको आधे मूल्य पर ही मिलते होंगे। तब मन्त्री ने उत्तर दिया कि भला ये क्यों आधा मूल्य लेने लगे। क्या हम लोगों की मूर्खता का कोई ठिकाना है। आर्य सामाजिक पत्र-पत्रिकायें तो आधे मूल्य में चाहते हैं और जिनकी आर्यसमाज के वाचनालयों में कोई आवश्यकता नहीं है उनको पूरे पैसे भेज रहे हैं। यह एक स्थान की घटना हो ऐसी बात नहीं, हमने अनेकों स्थान पर ऐसा ही देखा है। वास्तव में आर्यसमाज के वाचनालय चलाने का केवल यही अभिप्राय था कि एक दो दूसरे समाचारपत्रों के सहारे लोगों में हमारी पत्र पत्रिकाओं को पढने की रुचि पैदा हो। पर आज सर्वथा उल्टा है। आर्य सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं के दर्शन तक नहीं, दूसरे पत्रों से वाचनालय भरा है। ऐसा क्यों है? इसलिए कि हममें आर्यसमाज के पत्र-पत्रिकाओं तक के पढने की रुचि नहीं रह गई है। परिणामस्वरूप आर्यमित्र जैसे शानदार पत्र तक की ग्राहक-संख्या हम केवल पांच हजार तक नहीं पहुँचा पाये हैं। इससे अधिक शर्म की बात हमरे लिये क्या हो सकती है?

स्वाध्याय की इसी उपेक्षा का प्रभाव हमारे पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन पर भी दृष्टिगोचर होने लगा है। स्वाध्याय के अभाव में हमारा लक्ष्य ओझल होता आता है। अतः आर्य समाज तथा आर्य सामाजिक संस्थाओं में जब अनार्यों का प्राबल्य है, हम खाली जबानी जमाखर्च के नामधारी आर्य बने, अपने परिवारों को यहां तक कि अपने स्त्री-बच्चों को भी आर्य बनाने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। ऐसा कोई ही परिवार हो जिसके सारे सदस्य आर्य हों। नहीं तो दशा यह है—हम आर्य हैं, स्त्री पौराणिक है, लड़के नास्तिक है। हम आर्यसमाज में आते हैं, स्त्रियां मन्दिरों में, लड़के सिनेमाघरों में। तब आर्य कैसे बनें। परिणामतः हमारे घरों मे आर्य परम्पराएं प्रचलित नहीं हो सकी हैं। शादी-विवाह के लिये अब तक जन्मगत जाति बिरादरी का पल्ला पकडे हुए हैं। यह केवल इसलिये है कि स्वाध्याय की उपेक्षा से हमारा लक्ष्य धुंधला पड गया है।

अब समय आ गया है जब हमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति को पुनः जागृत करना चाहिये। इसके लिये कुछ प्रयत्न इस रूप में किया जा सकता है कि आर्यसमाज में ऐसे व्यक्तियों को विशेष महत्व दिया जाय जो अधिक से अधिक आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हों और

(शेष पृष्ठ १५ पर)

स्वर्गीय श्री प्रोफेसर रामचन्द्रजी श्रीवास्तव, एम. ए.

डी० ए० वी० कालेज कानपुर के उक्त प्रोफेसर महोदय से मेरा परिचय यहाँ आने पर ही हुआ था। आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में वे आने से कभी न चूकते थे। हिन्दी के प्रशस्त विद्वान् होने के साथ-साथ आपकी वैदिक साहित्य के प्रति बड़ी रुचि थी। प्रायः उन्हें आर्याभिविनय के मन्त्रों की व्याख्या करने का बड़ा शौक था, वे व्याख्या करते समय उसका एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते थे। जिससे सत्सङ्ग में उपस्थित जनता आनन्द से विभोर हो उठती थी, ता० ११ मई की शाम को सुना कि श्रीवास्तव महोदय ज्वराक्रान्त हैं। मैंने तथा श्री पं० विद्याधर जी ने उनके घर जाने का प्रोग्राम बनाया था। आज अचानक १३ ता० को कालेज जाने पर विदित हुआ कि श्रीवास्तव महोदय का हृदयगति के रुक जाने से देहावसान हो गया। हृदय को एक धक्का सा लगा तथा बड़ा कष्ट हुआ। वस्तुतः वैसे सौजन्य पूर्ण व्यक्तियों का आज के जमाने में होना कठिन है। उनके शोक में डी० ए० वी० कालेज बन्द कर दिया गया, तथा आर्यसमाज मैस्टनरोड की एक विशेष सभा द्वारा दिवंगत आत्मा के लिए सद्गति की प्रार्थना की गई। सचमुच ऐसे मिलनसार व्यक्तियों का वियोग यह कहला कर छोड़ता है कि—

सृजति तावदशेष गुणाकरम्, पुरुष रत्नमलंकरणंभुवः।
तदपि तत् क्षणभङ्गि करोति चेत्, अहह! कष्टमपण्डितता विधेः॥

शोकसन्तप्त
हरिदत्त शास्त्री
डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

वेदोपदेश

ओम् तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभि सदा न ॥

—ऋ० ९ । ३ । २७ । २५

हे भगवन् ! "तन्न इन्द्र" सूर्य "वरुण" चन्द्रमा, "मित्र" वायु "अग्नि" अग्नि "आप" जल "ओषधी" वृक्षादि वनस्थ सब पदार्थ आपकी आज्ञा से सुख रूप होकर हमारा सेवन करें । हे रक्षक "मरुतामुपस्थे" प्राणादि पवनों के गोद में बैठे हुए हम आपकी कृपा से 'शर्मन्त्स्याम" सुखयुक्त सदा रहें "स्वस्तिभि" सब प्रकार के रक्षणों से "यूय, पात" (आदरार्थ बहुवचनम्) आप हमारी रक्षा करो किसी प्रकार से हमारी हानि न हो ।

सम्पादकीय

लखनऊ—२१ मई १९५९, दयानन्दाब्द १३४, सृष्टि सवत् १९७२९४९०५९

पंजाब की भाषा-समस्या

इस सप्ताह का ज्वलन्त प्रश्न था पजाब में हिन्दी के उचित स्थान और गौरव की रक्षा के लिये आर्यसमाज का नवीन पग क्या हो । पजाब के भाइयो की जोरदार माग पर सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की २२ मई की बैठक बुलाई गई और उसमें सम्पूर्ण परिस्थिति पर गम्भीर वातावरण में विचार-विमर्श हुआ । प्राप्त जानकारी क अनुसार यदि यह कहा जाय कि हिन्दी आन्दोलन के इतिहास में इतनी लम्बी और गम्भीर बैठक पहले कभी नही हुई तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । हमारे इस कथन का अभिप्राय यह है कि इस बार प्रश्न पर बडे गम्भीर वातावरण मे विचार हुआ क्योंकि पंजाब हिन्दी रक्षा-समिति क अध्यक्ष श्री रामेश्वरानन्द जी २६ मई के कार्य-क्रम की घोषणा कर चुके थे और इधर समिति के अध्यक्ष श्री गुप्त जी पंजाब के राज्यपाल से पत्र-व्यवहार कर रहे थे तथा श्री चौ० रामनारायण जी व श्री पं० जयचन्द्र विद्यालंकार जी ने समिति में कांग्रेस नेताओं और पंजाब सरकार की हार्दिक इच्छाओं द्वारा परि-स्थितियों के अनुकूल बनाने में सहयोग देने की अपील की थी और समिति ने इस समस्या की गम्भीरता को अनुभव किया कि हो सकता है कि हमने यदि संघर्ष का कदम उठा दिया तो परिस्थि-तियाँ और अधिक उग्र बन सकती हैं । पंजाब की स्थिति को मा० तारासिंह की कुत्सित मनोवृत्ति ने जिस प्रकार विकृत किया है उसके विस्फोट में आर्यसमाज को अप्रत्यक्ष रूप में सहायक बनने की बदनामी से बचना चाहिये । साथ ही हम सद्भावना की रस्सी को अन्तिम क्षणों तक ढीला रखने में आर्यसमाज का गौरव अनुभव करते हैं । इस दृष्टि से समिति का प्रस्ताव बहुत ही उचित, नेतृत्वपूर्ण एव बुद्धिमत्ता से युक्त प्रस्ताव है । अब सारा दायित्व सरकार के कन्धो पर गिरा है और हमें आशा है इस बार सरकार आर्यसमाज पर जल्द-बाजी का दोष लगाने की भूल न कर सकेगी । सद्भावना समिति की रिपोर्ट के पश्चात् २४ अगस्त को आर्य प्रति निधि सम्मेलन बुलाने का निर्णय भी आर्य जनता के उत्साह की परीक्षा का एक अवसर होगा । सम्पूर्ण आर्य जगत् के प्रतिनिधि इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक निर्णय क लिये सम्मिलित हो बैठेंगे और निर्णय करेंगे उससे भावी आन्दोलन की सफलता को बल मिलेगा । इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्य जगत् ने उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग के प्रस्ताव का आदर करते हुए आन्दोलन का दायित्व व्यापक बनाने का निश्चय किया है ।

इस अवसर पर हम श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज के प्रयत्न और उन्होंने संघटन के हित की दृष्टि से श्री जगदेव सिद्धान्ती जी आदि के परा-मर्श से जिस उदारता का परिचय दिया व अपने घोषित कदम को संघटन के नाम पर वापस ले लिया उसकी प्रशंसा करेंगे । यदि वे अपना कदम वापस लेने के लिये सहमत न होते तो स्थिति विषम हो सकती थी और सम्भव था कि आर्यसमाज घोषित रूप से इस प्रश्न पर दो पक्षों में विभक्त हो जाता । आर्य संन्यासी के रूप में उन्होंने जिस उदारता का परिचय दिया वह अनु-करणीय उदाहरण है ।

आशा है सरकार आर्यसमाज द्वारा प्रदत्त इस अवसर का लाभ उठायेगी और आर्यजन तथा सम्बन्धित सभाधि-कारी सचेष्ट और सतर्क रहकर समस्या के समाधान में सफल होगे । अधिक शिथिलता, उदासीनता और उपेक्षा आर्यसमाज के गौरव को कम करने व हानि पहुँचाने वाली होगी ।

प्रभु हमें शक्ति दें कि हम न्याय के पथ पर विजय प्राप्त कर सकें ।

★

दो नवीन निर्वाचन

पिछले दो सप्ताहों में आर्यजगत् की दो सभाओ क निर्वाचन सम्पन्न हुए हैं । सामान्यत निर्वाचन एक परिवर्तन और प्रगति के सूचक हुआ करते हैं परन्तु समय और कारणों को ध्यान में रखते हुए इन निर्वाचनो का अपना विशेष महत्त्व आंका जा सकता है ।

१७ मई को हाथरस मे उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वाचन मे श्री प० हरिशङ्कर शर्मा को प्रधान और श्री प० प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी० को प्रधान मन्त्री निर्वाचित किया गया है । उत्तर प्रदेश की महत्ता एव व्याप-कता की दृष्टि से नव निर्वाचित प्रधान का पथ-प्रदर्शन हमारे सौभाग्य और गौरव की वस्तु है । गत वर्ष भी वे हमारे प्रधान थे और उन्होने प्रान्त को नवीन नीति दी और योजना देकर सबको उत्साहित किया । इस वर्ष उस योजना को पूर्ण करने कराने में उनका अमूल्य नेतृत्व हमें सफलता की ओर ले जाने में सहायक होगा । युवक मन्त्री के रूप मे नवीन प्रधान मन्त्री से प्रान्त को बड़ी आशायें हैं । आशा ही नहीं हमें पूर्ण विश्वास है कि वे अपने कठोर एव सतत प्रयत्नो से प्रान्त क शिथिल वातावरण में एक नवीन जीवन लाने में सफल होंगे ।

इसी प्रकार २२ मई को सार्वदेशिक सभा देहली का निर्वाचन सम्पन्न हो गया और उसमें आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट प्रधान व श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री प्रधान मन्त्री निर्वाचित हुए हैं ।

बाबू जी का जीवन यद्यपि सम्पूर्ण आर्यजगत् का जीवन है फिर भी उत्तर प्रदेश परिवार के अंग होने के नाते हमें उन पर विशेष गर्व है । एक आर्य नेता के रूप में उनकी सेवायें सदैव मूल्यवान रही हैं और आज क समय में जब कि देश मे अनैतिकता, भ्रष्टाचार और घूस-खोरी का बोलबाला हो, देश मे आर्य जगत् का नैतिक उत्थान आन्दोलन का व्यापक नेतृत्त्व दिलाने क लिये उनके लगनशील व्यक्तित्व का अपना विशेष महत्त्व है । बाबू जी का आजकल का सारा समय और शक्ति इसी आन्दोलन मे लगे हुए थे । अब उस दिशा मे वे और भी अधिक सफल प्रयास हो सकेंगे ऐसी आशा है ।

आर्यसमाज क शिक्षा प्रचार, विदेश प्रचार, गोरक्षा, ईसाई-प्रचार निरोध, साहित्य-निर्माण, पजाब भाषा-समस्या तथा आन्तरिक सघटन सम्बन्धी प्रश्नों पर भी नव निर्वाचित प्रधान सफलता-पूर्वक नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे ऐसी आशा है ।

नव निर्वाचित प्रधान मन्त्री श्री शास्त्रीजी उत्साही और विवेकशील व्यक्ति है । भाषा-आन्दोलन के बौद्धिक पक्ष का आप सफल सचालन करते रहे है । इस समय भाषा-समस्या जिस स्टेज पर है उसे आर्यसमाज क पक्ष मे लाने मे शास्त्रीजी के प्रयत्न और नेतृत्व से सहायता मिलेगा ऐसी आशा है । देश की अन्य समस्याओ तथा युवको में आर्यसमाज आन्दोलन को प्रगति प्रदान करने क उपाय सोचने निकालने में भी वे सफल होगे ऐसी आशा है ।

आर्यसमाज क आन्तरिक सघटन को सुदृढ बनाने, आर्य सिद्धान्तो के प्रचार मे सहायक बनाने मे नव निर्वाचित अधिकारी सफल होंगे इस आशा के साथ मित्र-परिवार की ओर से हम भी नवीन नेतृत्व की सफलता की शुभ-कामना करते और सहयोग का आश्वा-सन देते हैं ।

★



श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा
एम० एल० सी०
आप इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश क प्रधानमत्री निर्वाचित हुए हैं ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का नवीन निर्वाचन

१९५९–६०

२४ मई को दयानन्द-भवन देहली में सभा के नवीन पदाधिकारियों और अन्तरङ्ग सदस्यों का चिर प्रतीक्षित निर्वाचन समस्त आर्यजगत् की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में निम्नप्रकार सम्पन्न हुआ।

१—श्रीयुत बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट [आगरा] प्रधान
२—श्रीयुत बाबू कालीचरण जी आर्य [मेरठ] उपप्रधान
३—श्रीयुत प्रो० रामसिंह जी एम०ए० देहली उपप्रधान
४—श्रीयुत मिहिरचन्द जी धीमान [कलकत्ता] उपप्रधान
५—श्रीयुत प० रघुवीर सिंह जी शास्त्री [देहली] मन्त्री
६—श्रीयुत पं० नरदेव जी स्नातक [देहली] उपमन्त्री
७—श्रीयुत भगवतीप्रसाद जी [जयपुर] उपमन्त्री
८—श्रीयुत ओम्प्रकाश जी कपड़े वाले [देहली] कोषाध्यक्ष
९—श्रीयुत आचार्य विश्वश्रवाः जी [बरेली] पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरङ्ग सदस्य

१—श्रीयुत जगनन्दनलाल जी एडवोकेट [प्रयाग] उत्तरप्रदेश से
२—श्रीयुत प्रो० रत्नसिंह जी एम०ए० [मेरठ] ”
३—श्रीयुत रामनाथ जी भल्ला [देहली] पंजाब से
४—श्रीयुत प्रिन्सिपल लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित [पानीपत] पंजाब से
५—श्रीयुत पं० भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण [अजमेर] राजस्थान से
६—श्रीयुत बटुकृष्ण जी बर्म्मन कलकत्ता बंगाल से
७—श्रीयुत विनायकराव जी विद्यालङ्कार एम०पी० [हैदराबाद] आन्ध्र से
८—श्रीयुत रामनारायण जी शास्त्री [पटना] बिहार से
९—श्रीयुत डा० महावीरसिंह जी [ग्वालियर] मध्यभारत से
१०—श्रीयुत विश्वम्भरप्रसाद जी [नागपुर] मध्यप्रदेश से
११—श्रीयुत एस० के० नन्दलाल जी [बम्बई]
१२—श्रीयुत डी०डी० पुरी जी [देहली] ईस्ट अफ्रीका से
१३—श्रीयुत ला० हसराज जी गुप्त [देहली] आजीवन सदस्यों से
१४—श्रीयुत स्वामी ध्रुवेदानन्द जी महाराज [पटना] जनरल चुनाव से
१५—श्रीयुत स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज [अफ्रीका] जनरल चुनाव से
१६—श्रीयुत प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री [बड़ौत] ”
१७—श्री नरोत्तमदास जी चावला [देहली] आडीटर

रघुवीरसिंह शास्त्री
सभा-मन्त्री

आर्यसमाज सद्भावना का सदैव आदर करेगा परन्तु चिरकाल तक प्रतीक्षा करना अब सम्भव नहीं

सरकार पंजाब की भाषा-समस्या को शीघ्र और न्यायपूर्ण ढंग से हल करें। आर्यसमाज एक और अवसर प्रदान करता है

२० मास की शान्ति और सद्भावना के पश्चात् प्रत्येक परिस्थिति का दायित्व कांग्रेस सरकार पर होगा।

श्री गुप्त जी, श्री रामगोपाल जी, श्री धीमान जी, श्री पूर्णचन्द्र जी, श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी, श्री उमेशचन्द्र स्नातक, श्री जगदेव सिद्धान्ती जी, श्री जगनन्दनलाल, श्री केशवचन्द्र जी कैप्टेन, श्री प्रो० रामसिंह जी, श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी, श्री पं० नरेन्द्र जी, श्री आचार्य रामदेव जी, श्री पं० बुद्धदेव जी आदि आर्यजगत् के शीर्षस्थ नेताओं ने २२ मई का ९-१० घण्टे के गम्भीर विचार-विमर्श के पश्चात् सरकार के प्रयत्नों की कुछ समय और प्रतीक्षा करने का निर्णय किया।

भावी नीति-निर्धारण के लिये २४ अगस्त को आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन बुलाने का भी निर्णय किया गया।

दिनांक २२-५-५९ को श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त की प्रधानता में दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली में सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक में पारित प्रस्ताव :—

“सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक में पंजाब की भाषा-समस्या के उचित रूप से समाधान के विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ। समिति के प्रधान और पंजाब के राज्यपाल के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ वह भी पढ़ा गया। पंजाब भाषा सद्भावना समिति के सदस्य श्री जयचन्द्र जी विद्यालङ्कार एवं श्री चौधरी रामनारायण जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए जिनमें उन दोनों ने अपने द्वारा इस समस्या के समाधान के लिये किये जा रहे प्रयत्नों एवं शासन के उच्चाधिकारियों के साथ किये गये वार्तालाप पर भी प्रकाश डाला।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा दिनांक १७ मई ५९ में सभास्थ विभागों का निम्न प्रकार विभाजन किया गया।

१—महिला प्रचार मंडल की मन्त्रिणी—श्रीमती सावित्रीदेवीजी साहित्यरत्न मेरठ
२—सभा कार्यालय के अधीन निम्न विभाग रखना निश्चित हुआ।
[अ] उपदेश विभाग [आ] आर्यसमाज रक्षानिधि
[इ] अनाथ रक्षा विभाग [ई] शुद्धि-दलितोद्धार विभाग
३—घासीराम प्रकाशन विभाग के अधिष्ठाता—श्री आचार्य विश्वश्रवाः जी बरेली
४—नायकजाति सुधार विभाग ” श्री उमेशचन्द्रजी स्नातक हल्द्वानी
५—मादकद्रव्य निषेध समाजोत्थान विभाग ” श्री चोखेलालसत्यपालजी शाहजहांपुर
६—भूसम्पत्ति विभाग के अधिष्ठाता—श्री चन्द्रनारायण जी बरेली
” ” स० अधिष्ठाता—श्री रघुनन्दनस्वरूप जी मेरठ
७—शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता—श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी रायबरेली
” ” स० अधिष्ठाता—श्री रामबहादुर जी पूरनपुर
” ” ” ” —श्री जयकुमार जी स्नातक आजमगढ़
८—गौकृष्यादि रक्षिणी विभाग के अधिष्ठाता—श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा
९—जातिभेद निवारक आर्य परिवार संघ के अधिष्ठाता— ”
” ” ” स०अधिष्ठाता—श्री शिवलालजी वर्मा बुलन्दशहर
१०—नैतिक उत्थान चरित्र निर्माण विभाग के अधिष्ठाता—श्री पूर्णचन्द्रजी आगरा
१०—आर्यवीर दल विभाग के अधिष्ठाता—श्री ईश्वरदयालु जी आर्य बिजनौर
१२—आर्यमित्र व भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस के अधिष्ठाता—श्री प्रेमचन्द्र जी
(कार्यालय के अधीन) शर्मा सभा मन्त्री
१३—शम्भूनाथ रामेश्वरीदेवी सार्वजनिक पुस्तकालय भवाली के अधिष्ठाता—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक, हल्द्वानी
१४—विरक्त वानप्रस्थ संन्यस्थ आर्य आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष—श्री धर्मपाल जी विद्यालंकार बदायूं
१५—दयानन्द गुरुकुल जूनियर हायर सेकण्डरी स्कूल विरालसी के प्रधान—श्री शेरसिंह जी काश्यप, मुजफ्फरनगर
१६—श्री नारायणाश्रम रामगढ़ के अधिष्ठाता—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक, हल्द्वानी
१७—श्रीविरजानन्द-दण्डीधाम-स्मारक मथुरा के मन्त्री—श्री कर्णसिंहजी कौंकर मथुरा
१८—आर्यमित्र हीरक जयन्ती, गुरु विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक, अन्य अभिनन्दन समारोह एवं दीक्षा शताब्दि महोत्सव—संयोजक मन्त्री—श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक, हल्द्वानी
१९—समाज-कल्याण विभाग अधिष्ठात्री—श्रीमती शकुन्तलादेवी जी मेरठ
” ” स०अधिष्ठाता—श्री ईश्वरदयालु बिजनौर
२०—स्थानीय विभागों के आय-व्यय लेखा निरीक्षक निम्न सज्जन नियत किए गये—
[अ] आर्यमित्र व भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, उपदेश विभाग तथा सभा कार्यालय—श्री शिवप्रसाद, लखनऊ
[आ] गुरुकुल वृन्दावन—श्री प्रो० जगदीश शरण जी
२१—निम्न संस्थाओं के लिए निम्न प्रतिनिधि नियत किये गए—
[१] कन्या गुरुकुल हाथरस—श्री रामप्रसाद जी आर्य मैनपुरी
[२] गाजियाबाद व्यायामशाला—श्री बनवारीलाल जी गाजियाबाद
[३] वैदिक पुत्री पाठशाला नई मण्डी मुजफ्फरनगर—श्री शेरसिंह जी काश्यप, मुजफ्फरनगर
[४] पार्वती आर्य कन्या पाठशाला बदायूं—श्रीमती सरस्वतीदेवी जी पमार
श्री रामबहादुर जी, पूरनपुर
[५] ब्रजरत्न सुन्दर आर्य कन्या पाठशाला सम्भल—श्री विश्वनाथजी त्यागी मुरादाबाद, श्री इन्द्र वर्मा रामनगर
[६] आर्य विद्या सभा काशी—१ श्री जगनन्दनलाल जी एडवोकेट, प्रयाग
२ श्री मदनमोहनजी वर्मा एम० एल० ए०, फैजाबाद,
३ श्री फूलनसिंह जी, शिकोहाबाद
[७] उ०प्र०विद्यार्यसभा [शिक्षा-विभाग]—श्री जयकुमार जी स्नातक आजमगढ़
[८] आर्य कन्या पाठशाला बिलसी—श्री रामचन्द्र जी रि पो मा, बदायूं
[९] आर्य कन्या पाठशाला अल्मोड़ा—श्री विद्यारत्न जी, हल्द्वानी
,, शंकरलाल जी, हल्द्वानी
[१०] वैदिक आश्रम अलीगढ़ के मन्त्री—श्री रामप्रसाद जी आर्य, मैनपुरी
[११] आर्य कन्या पाठशाला रामनगर—श्री इन्द्र जी वर्मा, रामनगर
२२—न्याय समिति के सदस्यों की सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायगी।
२३—वार्षिक साधारण सभा वृहदधिवेशन दि० १६।२।५९ में आय-व्यय लेखा मुख्य निरीक्षक [आडीटर] पद पर श्रीयुत रामकिशोरसिंह जी रिटायर्ड आफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट एकाउन्ट्स जनरल उत्तर प्रदेश सरकार, १४ अतरसूया प्रयाग निवासी नियुक्त हुए।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम. एल. ए.
सभा-मंत्री

सिद्धांत-विमर्श

ऋग्वेद का एक इन्द्र सूक्त

(श्री पं० भवानीलाल भारतीय एम. ए., सिद्धान्तवाचस्पति)

> आज विज्ञान का युग है। महर्षि दयानन्द ने इस युग में सबसे प्रथम बुद्धि विज्ञान का सम्बन्ध स्थापित किया और वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप को प्रकट किया। भारत के स्वार्थवादी सायण और योरप की उन्नत संस्कृति का मिथ्याभिमान करने वाले विद्वानों ने वेद के साथ जो अन्याय किया है उसे अभी भी संसार समझने में असमर्थ रहा है। आर्य विद्वानों का दायित्व है कि वे इस महान् कार्य को सम्पन्न करें। लेखक ने उसी दिशा में सांकेतिक स्तुत्य प्रयत्न किया है।
>
> —सम्पादक

ऋग्वेद के दूसरे मण्डल का बारहवाँ सूक्त इन्द्र देवता विषयक है। इस सूक्त के द्रष्टा ऋषि गृत्समद हैं। पन्द्रह ऋचाओं वाले इस सूक्त के मन्त्रान्त में अन्तिम मंत्र को छोड़कर 'स जनास इन्द्रः' यह सूक्ति आती है। सायण ने इस सूक्त का भाष्य लिखने से पूर्व बृहद्देवता के आधार पर एक विचित्र कथा लिखी है जिससे यह सिद्ध होता है कि सायण आदि पौराणिक भाष्यकार मिथ्या कथाओं की सत्यता में विश्वास कर वेद मन्त्रों की उदात्तता और उनकी महनीय विचारधारा का किस प्रकार विनाश कर देते थे। यदि सायणोक्त इस कथा को सत्य मान लिया जाय तो इस महत्वपूर्ण सूक्त में परम पिता की अद्भुत महिमा का जो अपूर्व गायन किया गया है वह सब लुप्त होकर एक भद्दी सी कथा के सिवाय शेष ही क्या रहता है? इस प्रकार वेद के गौरव को कम करने के लिए सायणादि मध्यकालीन भाष्यकार भी कम उत्तरदायी नहीं हैं।

सायण ने इस इन्द्र सूक्त विषयक जो प्रास्ताविक कथा लिखी है वह इस प्रकार है—"पुरा किलेन्द्रदयो वैन्य यज्ञं समाजग्मुः। गृत्समदोपि तत्रागत्य सदस्यासीत। दैत्यारचेन्द्र जिघांसया तत्र समागमन्। तान्दृष्ट्वा निर्जगामेन्द्रो यज्ञाद्गृत्समदाकृतिः। स च गृत्समदो वैन्येन पूजितो यज्ञवारान्निरगच्छात्। निर्गच्छान्तं तमृषिं दृष्ट्वा अयमेवेन्द्र इति मन्यमानास्तमसुरापरिवव्रुः। नाहमिन्द्र स्तुच्छाः किं त्वेवं गुणोपेतः स इत्यनेन सूक्तेन ताम्प्रत्युवाच।" अर्थात् किसी समय इन्द्र वैन्य यज्ञ में सम्मिलित हुए। गृत्समद ऋषि भी उस यज्ञ में सदस्य थे। दैत्यगण इन्द्र को मारने वहाँ एकत्रित हो गये। दैत्यों को देखकर इन्द्र गृत्समद का रूप धारण कर वहाँ से बाहर निकल गया।

तत्पश्चात् वैन्य से पूजित वह ऋषि गृत्समद जब पुनः बाहर निकला तो उसे निकलता हुआ देखकर 'यही इन्द्र है' ऐसा जानने वाले वे असुर उसे पकड़ने लगे। मैं इन्द्र नहीं हूँ परन्तु वह इन्द्र इन सूक्तोक्त ऋचाओं में वर्णित गुणों का है, यह कहकर उस ऋषि ने यह सूक्त पढ़ा।

यह है सायण वर्णित भौंडी कहानी, जिसे यदि हम सत्य मानें तो वेद का उच्च गौरव, उसका उदात्त और महनीय स्वरूप, सभी कुछ लुप्त हो जाता है। देवराज कहे जाने वाले इन्द्र की कायरता और उसका ह्रास इस कथा से स्पष्ट प्रतीत होता है। इन कहानियों की सत्यता को यदि हम स्वीकार कर लें तो वेद ऐसी ऊट-पटांग गाथाओं के संग्रह के अतिरिक्त और रह ही क्या जाते हैं? वेद का इन्द्र असुरों से अपने प्राण बचाने के लिये ऋषि का रूप धारण करता है और पुराणों का इन्द्र अहिल्या का सतीत्व नष्ट करने के लिये गौतम का रूप धारण करता है—यही तो वे लांछन-युक्त कथायें हैं जो हमारे शास्त्रों को विकृत करती हैं। अस्तु—

प्रकृत सूक्त का यदि अध्ययन किया जाय तो उसमें परमात्मा की अपार महिमा का उदात्त वर्णन दृष्टिगोचर होता है। ऋषि दयानन्द ने इस सूक्त का जो भाष्य किया है वह यह बताने के लिये पर्याप्त है कि नैरुक्त पद्धति को अपना कर ही वेदों का वास्तविक रूप लोगों के समक्ष रक्खा जाता है। अन्यथा सायण आदि भाष्यकारों ने तो विचित्र कथाओं, तर्क-विरुद्ध किंवदन्तियों और इतिहासों का वेद मंत्रों पर आरोप कर उन्हें इतना भ्रष्ट कर दिया है, जिसे देखकर एक सामान्य पाठक की वेद के प्रति रही-सही श्रद्धा भी समाप्त हो जाती है।

यहाँ हम उक्त सूक्त के कुछ मंत्रों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने की चेष्टा करेंगे। सूक्त का प्रथम मंत्र है—

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुनापर्यभूषत्। यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

सर्व प्रथम सायण के गाथा-युक्त अर्थ की बानगी देखिये। सायण लिखते हैं—"गृत्समदो ब्रूते। जनासः जनाः हे असुरा यो जात एव जायमान एव सन प्रथमः देवानां प्रधान भूतः मनस्वान् मनस्विनामग्रगण्यः देवः द्योतमानः सन् क्रतुना वृत्रवधादिलक्षणेन स्वकीयेन कर्मणा देवान् सर्वान्यागदेवान् पर्यभूषत् रक्षकत्वेन पर्यग्रहीत्।... नृम्णस्य सेनालक्षणस्य बलस्य मह्ना महत्वेन युक्तः स इन्द्रो नाहमिति। अर्थात् गृत्समद कहते हैं—हे असुरो, जो उत्पन्न होते ही देवताओं में प्रधानभूत और मनस्विजनों में अग्रगण्य हुआ और जो अपने वृत्रवधादि लक्षणों के कारण देवताओं का रक्षक बना। जो अपने सेनादि बलों के महत्त्व से युक्त है वह इन्द्र है, मैं नहीं।

सायण के इस अर्थ में जो प्रथम आपत्ति उठती है वह है उसकी अद्भुत प्रसंग कल्पना। 'स जनास इन्द्रः' कहने से यह कैसे सिद्ध हो गया कि गृत्समद असुरों से अपने आपको बचाने के लिए यह सफाई दे रहे हैं। फिर जनासः का अर्थ असुराः करना भी सायण की मनमानी कल्पना ही है। 'क्रतुना' से पुराणोपलक्षित इन्द्रवधादि कृत्यों का अर्थ लेना यह स्पष्ट कर देता है कि सायण के वेदार्थ का अर्थ ही ग़लत है। पौराणिक गाथाओं (Mythology) को वेद का आधारभूत मानकर सायण ने वेद के तत्वार्थ की महती हानि की है। सायण द्वारा उल्लिखित इन्हीं किंवदन्तियों का सहारा लेकर ही यूरोपीय विद्वानों को वेद और वैदिक युग के इतिहास के विषय में वह सब लिखने का साहस हुआ जिससे वेद का वास्तविक स्वरूप और अर्थ सर्वथा लुप्त हो गया।

अब इसी मंत्र का ऋषि दयानन्द कृत अर्थ देखें। पाठकों को सायण और दयानन्द का अन्तर स्पष्ट ज्ञात हो जायगा। ऋषि दयानन्द ने इस मंत्र का द्विविध अर्थ किया है—ईश्वर परक और सूर्यपरक। मंत्र का संस्कृत पदार्थ इस प्रकार है—(यः जातः) उत्पन्न (एव प्रथमः) आदिमो विस्तीर्णो वा (मनस्वान्) मनो विज्ञानं विद्यते यस्य सः (देवः) द्योतमानः (देवान्) प्रकाशित व्यान् दिव्य गुणान् पृथिव्यादीन (क्रतुना) प्रकाश कर्मणा (पर्यभूषत) सर्वतो भूत्यलङ्करोति। (यस्य) (शुष्मात्) बलात् (रोदसी) द्यावापृथिव्यौ (अभ्यसेताम्) प्रक्षिप्ते भवतः (नृम्णस्य) धनस्य (मह्ना) महत्वेन (स जनासः) विद्वांसः (इन्द्रः) दारयिता सूर्यः। ऋषि दयानन्द 'जनासः' का अर्थ विद्वासः करते हैं। विद्वान् लोग ही ईश्वर और सूर्य का स्वरूप समझने की क्षमता रखते हैं। ऋषिकृत मन्त्र के संस्कृत भावार्थ में मन्त्र का ईश्वर परक अर्थ द्रष्टव्य है-"येनेश्वरेण सर्वं प्रकाशकः सर्वस्यधर्ता स्वप्रकाशकर्षणाद् व्यवस्थापकः सूर्यलोको निर्मितः स सूर्यस्य सूर्योऽस्तीति वेद्यम्।" अर्थात् जिस ईश्वर ने सबका प्रकाशक और सबका धारक अपने प्रकाश से युक्त लोकों की व्यवस्था करने वाला सूर्यलोक बनाया है वह ईश्वर सूर्य का भी सूर्य है यह जानना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते है कि ऋषि दयानन्द किसी पौराणिक कल्पना में न फंसकर मन्त्र का वास्तविक, भौतिक और आध्यात्मिक अर्थ प्रस्तुत करते है जो विज्ञान और युक्ति से सर्वथा अविरुद्ध होने के कारण सहज ही ग्राह्य है।

इसी सूक्त का तीसरा मन्त्र भी तुलना की दृष्टि से द्रष्टव्य है—

यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा बलस्य यो अश्मनोरंतरग्नि जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः इस मन्त्र के सायण कृत सम्पूर्ण अर्थ को न लिखकर सायण ने इस मन्त्र में विद्यमान जिस कपोलकल्पित इतिहास को लिखा है, हम उसी ओर संकेत कर देना पर्याप्त समझते हैं। "बलस्य गा" इन शब्दों को देखकर सायण की लेखनी किसी इतिहास की कल्पना करने के लिए मचल पड़ी। उसने लिखा—"बलस्य बलनामकस्यासुरस्य अपधातस्कर्तृकान्निरुद्धा गा उदाजत् निरगमयत्।" अर्थात् उस इन्द्र ने बल नामक असुर की गुफा से गायों को छुड़ाया वह इन्द्र है, मैं नहीं। सायण का अंधानुकरण करने वाले यूरोपीय पण्डित पिटरसन ने इस सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया—

"Who slew the serpent and let loose the seven streams, who dsove out the kine from the cave of vala, who begat fire with in the two stones, a spoiter in battles, He, O men, is Indra."

(Hyms from the Rigveda)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

महर्षि जीवन यात्रा के स्थान

रामपुर या रामनगर

[श्री प्रो० इन्द्र वर्मा, एम० ए०, मन्त्री आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल) अन्तरङ्ग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश]

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपने जीवन-चरित्र में अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा है, 'कई वनों और पर्वतों से होता हुआ चिलकाघाटी उतर कर मैं अन्तत रामपुर पहुंच गया, वहाँ पहुँच कर मैंने प्रसिद्ध रामगिरी के स्थान पर निवास किया।'' आपने आगे लिखा है, 'उससे चलकर मैं काशीपुर गया, वहाँ से द्रोणासागर जा पहुँचा वहीं मैंने शरद् ऋतु काटी। हिमालय पर्वत पर पहुँच कर देह त्याग करना चाहिए, ऐसी इच्छा हुई परन्तु मन में यह विचार आ गया कि ज्ञान प्राप्ति और ससार का उपकार करके देह छोड़ना चाहिए। अत वहाँ से मे मुरादाबाद होता हुआ सम्भल आ पहुँचा। वहाँ से गढ़मुक्तेश्वर होता हुआ पुन मैं गगातट पर आ निकला।''

स्वामीजी के उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट है कि वह चिलकाघाटी उतर कर रामपुर आये, तब काशीपुर गये और वहाँ से मुरादाबाद, सम्भल, गढ़मुक्तेश्वर होते हुए गगातट पर जा निकले। किन्तु विचारणीय बात यह है कि उनके द्वारा वर्णित रामपुर कहाँ है। क्या यह रामपुर वही रामपुर स्टेट है जो मुरादाबाद और बरेली के मध्य में पड़ता है? अथवा कोई अन्य रामपुर है? बहुधा मनुष्य मौजूदा रामपुर स्टेट की कल्पना करते हैं, किन्तु मेरी राय में यह असत्य है। मेरी अपनी राय में उनके द्वारा वर्णित रामपुर—मौजूदा रामपुर स्टेट कभी नहीं हो सकता। मैंने इन सम्पूर्ण स्थानों का भ्रमण किया है, स्थिति का सही रूप से अध्ययन किया है और आज इस निष्कर्ष पर पहुचा हूँ कि यह रामपुर मौजूदा रामनगर (नैनीताल) है। इस सम्बन्ध में मेने इस क्षेत्र क अनेक वृद्धजनों से भी जानकारी की, किन्तु सभी ने इस बात की पुष्टि की कि स्वामीजी इसी रामनगर से होते हुए काशीपुर गये थे। इतना ही नहीं उन्होंने स्वामीजी क सम्बन्ध में अनेक विचित्र बातें भी बतलाई जिनको मैं आजकल सग्रहीत कर रहा हूँ।

वास्तव मे चिलकाघाटी उतर कर कोई 'रामपुर' नहीं आता, रामनगर' अवश्य आता हे। इसी रामनगर में एक रामगिरी महात्मा रहते थे जिनके विषय में स्वामी जी ने लिखा भी है, 'वहाँ पहुँच कर मैंने प्रसिद्ध रामगिरी के स्थान पर निवास किया। यह पुरुष पवित्राचार और आध्यात्मिक जीवन क कारण अत्यन्त प्रसिद्ध था।' आज भी इस स्थान क वृद्धजन उस योगी महात्मा रामगिरी की भूरि भूरि प्रशसा करते हैं। उन्हीं रामगिरी महात्मा की स्मृति में रामनगर में एक मन्दिर की स्थापना भी (उन्हीं की कुटिया क स्थान पर) की गई था जो आज भी एक विशाल ''राममन्दिर'' के नाम से प्रसिद्ध है। यह मन्दिर कोसी नदी क किनारे एक टीले पर स्थानीय आर्य कन्या पाठशाला के ठीक सम्मुख तथा उससे मिला हुआ स्थित हे। सैकड़ो मनुष्य वहाँ प्रतिदिन पूजा-पाठ करते हैं। अत इस बात से स्पष्ट है कि स्वामीजी के द्वारा वर्णित रामपुर आधुनिक रामनगर ह। इसी रामनगर को उन्होंने अपनी जीवनी में रामपुर लिखा है। सम्भवतया जब स्वामीजी रामनगर आये हो तो लोगो ने उन्हें इसका नाम रामपुर बतला दिया हो। उस समय रामनगर एक ग्राम ही तो था, जो कुछ भी हो इतना अवश्य स्पष्ट हे कि यह ''रामपुर' मौजूदा रामनगर ही है।

जहाँ तक रामनगर के इतिहास का प्रश्न है यह एक अग्रेज रामजे जो उस समय जिलाधीश थे, ने बसाया था, इससे पहले रामनगर के सभी लोग चिल-किया रहते थे। स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान श्री ला० बनवारी लाल जी कुन्डीवाल स्वय इस बात की पुष्टि करते हैं कि उनके पिता श्री बाकेलाल जी पहले चिलकिया रहते थ किन्तु उन्हें रामजे साहब ने स्वय बुलाकर रामनगर मे जमीन देकर बसाया (चिलकिया और रामनगर का अन्तर लगभग २॥ मील का है। दोनो पहाड़ की तलहटी में हैं)।

इस सम्बन्ध में दूसरी बात जानने की यह है कि रामगिरी महात्मा जिनका वर्णन स्वामी जी ने अपनी जीवनी में किया है, रामपुर स्टेट मे कभी नहीं रहे। रामगिरी महात्मा का निवास-स्थान या तो रामनगर था अथवा (काशीपुर) द्रोणासागर से आध मील दूर जहाँ कि प्रतिवर्ष चैत के मास मे चैती का प्रसिद्ध मेला लगता है, था। (चैती के मेले में प्रतिवर्ष सैकड़ो बकरियों तथा एक भैंसे का बलिदान होता है)। तब फिर यह कैसे मान लिया जाय कि स्वामी जी ने अपनी जीवनी में जिस रामपुर का वर्णन किया है वह रामपुर स्टेट है? यहाँ एक शका और भी हो सकती है। और वह यह कि यह रामपुर मौजूदा रामनगर न होकर अन्य कोई ग्राम आज है और न पहले कभी रहा। अत ऐसा विचार करना भी सर्वदा अनुचित है।

यदि यह भी मान लिया जाय कि स्वामीजी चिलकाघाटी उतर कर रामपुर स्टेट गये तो हमें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि चिलकिया से रामपुर आने के लिये मार्ग में काशीपुर अवश्य पड़ा होगा। क्योंकि काशीपुर दोनों के ठीक मध्य में पड़ता है। किन्तु स्वामीजी ने लिखा है कि वह रामपुर के बाद काशीपुर (द्रोणा सागर) गये और तत्पश्चात् मुरादाबाद, यह तभी सम्भव है कि जब स्वामीजी रामनगर से काशीपुर और वहाँ से मुरादाबाद गये हो। चिलकाघाटी उतर क रामपुर जावे और काशीपुर न पड़े यह आश्चर्य की बात है तथा रामपुर पहुँचकर पुन काशीपुर आवे और तब मुरादाबाद जाय यह भी समझ में नहीं आता। (यह नैनाताल का नक्शा देखने से स्पष्ट हो सकेगा)।

काशीपुर के सम्बन्ध में पिछले वर्ष जौलाई मास में अपने एक लेख 'महर्षि दयानन्द आश्रम काशीपुर' के द्वारा यह स्पष्ट कर चुका हूँ कि काशीपुर से लगभग दो फर्लांग की दूरी पर द्रोणासागर के तट पर स्वामीजी सम्वत् १९१२ में कार्तिक, अगहन, पूस, माघ ठहरे थे। उस समय स्वामीजी की आयु ३२ वर्ष की थी। नगर के विद्वान् पडित श्री सदानन्द जी तथा गोवरधन जी भट्ट के पिता आदि का स्वामीजी से शास्त्रार्थ रहा और अन्त में उनकी विद्वत्ता का उन पर भारी प्रभाव पड़ा। श्री भट्टजी स्वामीजी के भक्त बन गये और उन्होंने स्वामीजी के लिये द्रोणासागर तट पर एक पक्की बारहदरी बनवायी थी। यह स्मरण रहे कि श्री गोवरधन जी भट्ट के पिता रामनगर के निवासी थे। रामनगर में भी उनका स्वामीजी से शास्त्रार्थ रहा था और वहीं से खिचकर वे उनके साथ काशीपुर आ पहुँचे थे। यदि रामनगर में उनका परिचय स्वामीजी से न हुआ होता, तो सम्भवतया वह काशीपुर न आ पाते।

अत इन सब तथ्यों के आधार पर तो निश्चय ही यह कहा जा सकता है कि स्वामीजी द्वारा वर्णित रामपुर आधुनिक रामनगर है। इस क्षेत्र के आर्य बन्धुओं के लिये यह तथ्य जहाँ गर्व का विषय है वहाँ उन पर महान् दायित्व भी छोड़ता है। ★

साहित्य-समीक्षण

बुलगारिया में भारतीय साहित्य

[श्री मंजिला विशारद]

आज से तैंतीस वर्ष पूर्व नवम्बर महीने का एक दिन। आसमान स्वच्छ और निरभ्र है तथा रुपहली धूप छायी हुई है। सोफिया स्टेशन के प्लेटफार्म पर और उसके सामने के चौक में लोगों की भीड़ उमड़ रही है।

जब ट्रेन आई तो लोगों का उत्साह और उल्लास चरमबिन्दु को छू गया। ट्रेन के डब्बे का दरवाजा खुला और उसके भीतर से लम्बी श्वेत दाढ़ी तथा श्वेत केशराशि से अलकृत सौम्य मुख-मण्डल और लम्बे कद का व्यक्ति सम-वेत जनसमूह के समक्ष प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया। लोगों ने जिस उत्साह से उनका स्वागत किया वह अनिर्वचनीय है। स्टेशन से लेकर होटल तक का मार्ग बुल्गारिया के सम्मानित अतिथि रवीन्द्र नाथ ठाकुर के सम्मान मे फूलो से ढक गया, मार्ग के दोनो ओर उनके अनगि नत प्रशसको की कतारें लग गई।

लोगो की इस भीड़ का कारण भारत के महान् कवि और विचारक को देखने का कुतूहल मात्र नहीं था। यह सच है कि टैगोर सबसे पहले १९२६ में बुल्गारिया पधारे थे लेकिन उनके गीत उनसे बहुत पहले पहुँच चुके थे। ''गार्डनर'' का बुल्गारिया में अनुवाद १९१८ में हुआ और उसके दो वर्षों के बाद ''गीताजलि'' का अनुवाद हुआ। १९२२ में ''चित्रा'' का और उसके दो वर्ष बाद ''चार स्वरों में'' और 'बचपन' की कविताओं का बुल्गारियन में अनुवाद हुआ। १९२६ में जिस साल टैगोर बुल्गारिया आये थे ''साधना'' और ''कबीर की कविताए'' नाम की उनकी दो और रचनाओं का अनुवाद बुल्गा-रियन भाषा में हो चुका था।

टैगोर के बुल्गारिया आने से उनकी रचनाओं में लोगो की दिलचस्पी और भी बढ़ गई। समाचारपत्रो और पत्रि काओ ने उनके कुछ गीतिकाव्य, उनके काव्यो और लघुकथाओ से लिये गये अश प्रकाशित किये। वस्तुत ऐसा शायद ही कोई वर्ष रहा हो जब इस भारतीय लेखक की किसी न किसी रचना का बुल्गारियन में अनुवाद न प्रकाशित हुआ हो। चूकि ये पुस्तकें हाथोहाथ बिक जाती थ इसलिये उनके चार चार पाच-पाच सस्करण छपते थ

[शेष पृष्ठ ११ पर]

पूना में पौराणिकों द्वारा आयोजित सपशु याग

--और मेरे ११ दिन

सनातनी पण्डित शास्त्रार्थ के लिए सम्मुख न आ सके, जनता में आर्यसमाज के विचारों की धाक

(श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, नासिक)

महाराष्ट्र की प्रसिद्ध नगरी पूना में एक पशुबलि युक्त वाजपेय याग चल रहा है। इसकी योजना एक महाराष्ट्रीय राजा के पचीस सहस्र रुपये के दान से की गयी है। महाराष्ट्र तथा बाहर के बहुत से पौराणिक विद्वान् इसमें भाग ले रहे हैं। वैसे बम्बई में मैंने इस यज्ञ की चर्चा सुनी थी, परन्तु यह विश्वास नहीं था कि इसमें पशुबलि दी जायगी। क्योंकि कुछ वर्ष पहले भी पूना में ऐसा ही वाजपेय यज्ञ हुआ था, किन्तु जनता और आर्यों क अनुरोध से उसमें पशुबलि नहीं दी गयी थी। कहते हैं कि उपलक्षण के रूप मे आटे का पशु उसमे भी प्रयुक्त किया गया था। यज्ञ का बडे धूमधाम से प्रचार हो रहा था और साथ ही स्थानीय पूना आर्य-समाज और जनता की ओर से भी इस पशुबलि का घोर विरोध किया जा रहा था। यह बात गत अप्रैल मास की २०, २१ तारीख तक की हे।

मै बम्बई से वापस अपने स्थान पर नासिक आ गया। वैदिक रिसर्च का एक बडा भारी कार्य उठा रखा ह, उसमें ही तल्लीन था कि २३ अप्रैल को पूना आर्यसमाज के मन्त्री का एक्सप्रेस तार मिला। तार मे लिखा था—"पशु सहित यज्ञ हो रहा हे और शास्त्रार्थ होने वाला ह अत आप शीघ्र ही पहुँचें।" अनेक कार्यों के होन हुए भी इस परिस्थिति मे पहुँचना आवश्यक थे मैंने सब छोडकर पूना क लिए कूच किया। मन्त्री को तार दे दिया मैं आ रहा हूँ। २४ अप्रैल को सायंकाल मैं पूना पहुँचा। यज्ञ का प्रारम्भ सायं २५ से होने वाला था। पूना पहुँचने पर आर्यसमाज के प्रधान बख्शी दुर्गादास जी ने सारी परिस्थिति से अवगत कराया। आर्यसमाज ने पर्याप्त विरोध किया था। जनता भी इस यज्ञ के कर्त्ताओं के अनुकूल नहीं मालूम पडती थी। पत्रों में भी इस कार्य के प्रतिकूल विचार व्यक्त किये जा रहे थे। प्रधान आर्यसमाज ने बताया कि जनमत को प्रभावित करने के अतिरिक्त उन्होंने वैधानिक रूप से भी जनता में खुले रूप में किये जाने वाले इस कार्य के रोकने की कार्यवाही की थी। परन्तु इस कार्यवाही को देखकर यज्ञ के कर्त्ताओं ने इसे व्यक्ति गत धार्मिक कृत्य घोषित कर दिया। इस घोषणा के हो जाने के बाद कृत्य का रूप व्यक्तिगत और सीमित हो गया। अत वैधानिक रूप से यह नहीं रोका जा सकता था। प्रधान समाज ने मुझे यह सब ब्योरा सुना दिया और यज्ञ कर्त्ताओं को एक शास्त्रार्थ का आह्वान छपाकर भेज दिया। इसके पूर्व भी उन्होने एक आह्वान भेजा था। एक पत्र उन्होने श्री श्रीधर शास्त्री वारे को भेजा कि आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री पधारे हैं, वे आपके मित्र हैं। आपसे वार्तालाप करना चाहते हैं। समय नियत कर लिखें। ज्ञात रहे कि यह श्रीधर शास्त्री वारे ही इस यज्ञ को कराने वाले विद्वान् है। महाराष्ट्र के कर्मकांडी पौराणिक विद्वानो मे इनकी ख्याति है।

रात्रि मे यज्ञ की वेदी जहाँ पर बन रही थी, प्रधान क साथ मे उक्त शास्त्री जी से मिलने गया शास्त्रीजी बड प्रेम और आदर से सदा की भान्ति मिले। वार्ता क दौरान मे मेने उनसे कहा कि मित्र क रूप मे मेरी यही सलाह है कि आप यज्ञ तो करें परन्तु पशुबलि कार्य को छोड दें। इससे जनता मे आपके कार्य की प्रशसा होगी। साथ ही सभी की सहानुभूति भी बढेगी। उन्होने कहा कि 'ऐसा नही हो सकेगा, विवशता है। भले ही इसे हमारा अन्धविश्वास समझें अथवा परम्परा से आयी हुई श्रद्धा समझें—यह कृत्य तो अब किया ही जावेगा।' मैंने कहा 'यह कर्म अवैदिक है, शास्त्रार्थ करके निश्चय करलें।' उन्होने कहा 'मैं शास्त्रार्थ आप से नहीं कर सकता आप इसे हमारा अन्धविश्वास समझें, परन्तु यह करना है।' शास्त्रार्थ का इनकार होने पर मैं प्रधान जी के साथ वापस आर्यसमाज मन्दिर चला आया। श्री वारे शास्त्री ने बडे आदर के भाव व्यक्त किये। मैंने देखा कि मैत्री वहाँ पर कारगर नही होती दीखती और शास्त्रार्थ भी करने को इनमे से कोई तैयार नहीं। अत अब दूसरा ही मार्ग अपनाना चाहिए। प्रधान आर्यसमाज ने कहा कि अब यही ठीक है कि नोटिसो और समाचार-पत्रो में शास्त्रार्थ का चैलेंज प्रकाशित कर दिया जावे और दो चार रोज उसकी प्रतीक्षा करते हुए समाज मन्दिर एव शहर मे एक अन्य स्थान पर भाषण तथा शका समाधान रखा जावे, जिसमें यह बतलाया जावे कि यह कार्य अवैदिक ह। समाज की ओर से ऐसा ही किया गया। दिन समाप्त हो गये परन्तु शास्त्रार्थ करने को कोई नही आया। अत अब वहाँ बैठा रहना उचित न समझकर गृह वापस आने की तेयारी करने लगा। पिम्परी आर्यसमाज के लोगों ने कहा कि दो दिन उनक यहाँ और दो दिन किरकी में भी भाषण हो जावे। मेने स्वीकार कर लिया। पिम्परी गया और वहाँ का पुरोगम समाप्त कर पूना आने वाला था, पर पता चला कि मेर पूना से चले जाने का समाचार पाकर कुछ नवयुवक पण्डितो ने एक समाचार-पत्र में यह आह्वान दिया हे कि यदि सोमवार को शकराचार्य मठ में पण्डितो की सभा में वे नहीं आये तो आर्यसमाज की हार समझी जावेगी, यह शनिवार का दिन था। उनका ख्याल था कि मैं नासिक चला गया हूँ और सोमवार प्रात तक वहाँ पहुँच सकूगा नहीं और उनकी बात बन जावेगी। परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम था कि मैं वहीं पर था। यह सभा भी उनकी थोडे से पण्डितों की थी और चाहते थे कि आर्यसमाज के भी दस पाच आदमी आवें, उन्होने शास्त्रार्थ तो देखा नहीं था, समझते थे कि डिबेटिंग क्लब की तरह होगा।

रात्रि मे पूना समाज के उपप्रधान श्री दानसहाय आर्य कुछ और कार्य कर्त्ताओ के साथ समय और नियम आदि का निर्णय करने क लिए उन पण्डितो क पास गये। पहले वे यज्ञ समिति के मन्त्री के पास गये और पूछा कि क्या शास्त्रार्थ का आह्वान आपकी ओर से है? उन्होने जवाब दिया कि उनकी ओर से कोई आह्वान नहीं दिया गया ह। पुन ये लोग स्थानीय शकराचार्य मठ मे गये और पूछा कि क्या वहाँ से आह्वान किया गया है। श्री शकराचार्य जी ने उत्तर दिया कि उनकी ओर से शास्त्रार्थ का कोई आह्वान नहीं ह। पुन ये उन युवको क पास गए, उन्होने उत्तर दिया कि उन्होने तो उनको पण्डित सभा मे बुलाया ह और बन्द कमर मे कवल वार्तालाप होगा। दस स ज्यादा व्यक्ति वहाँ नही आ सकते और वार्तालाप भी सस्कृत मे ही होगा। आर्य-समाज के कार्यकर्त्ताओ ने कहा कि शास्त्रार्थ का आह्वान स्वीकार ह, आप चलकर आर्यसमाज मन्दिर मे नियम आदि का निर्णय कर ले। अत वे लोग समाज मे मेरे पास आये। सस्कृत में वार्तालाप करने लगे। मेरी तरफ से आधे घण्टे तक परिमाजित सस्कृत में उन्हे उत्तर दिया गया। सस्कृत का भाषण सुनकर उनके चहरे पर अन्तर पडने लगा, वे चाहते थे कि शास्त्रार्थ का एक ही निर्णायक हो। समाज चाहता था कि दोनो तरफ से दो निर्णायक अथवा मध्यस्थ हो। वे कहते थे कि शास्त्रार्थ बन्द होगा और सस्कृत में ही होगा। आर्यसमाज चाहता था कि शास्त्रार्थ जनता मे होगा और सस्कृत का अनुवाद जनता को हिन्दी मे सुनाया जावेगा। स्थान खुला और पब्लिक का होगा, वे किसी बात पर तेयार नहीं हो रहे थे। अत यह मानलिया गया कि हम एक निर्णायक को भी मान लेंगे, बहुत ननु नच क बाद निश्चय हुआ कि शास्त्रार्थ जनता मे होगा। आर्यसमाज का एक ही पण्डित सबसे क्रम से शास्त्रार्थ करेगा। विरोधी पक्ष के चार पण्ठित अथवा दस पण्डित होंगे। शास्त्रार्थ सस्कृत में होगा परन्तु हिन्दी में उसका अनुवाद जनता को सुना दिया जावेगा। सोमवार को ६ बजे रात्रि में शास्त्रार्थ होगा। शास्त्रार्थ

(शेष पृष्ठ१२ पर)

इस यज्ञ विषयक आर्यसमाज की स्थिति का स्पष्टीकरण १० मई के मित्र में पूना के श्री आर०एस० श्रीनिवास द्वारा दिया जा चुका ह। फिर भी शास्त्रीजी का वर्णन स्थिति को और स्पष्ट करता हे। सम्भवत जब तक यह लेख प्रकाश में आयेगा, पूना का यज्ञ समाप्त हो चुका होगा। फिर भी इस अनुचित कार्य के विरोध मे हमने, हमारे साथियो ने जो प्रयत्न किये उनके ऐतिहासिक महत्त्व की सुरक्षा की दृष्टि से इस विवरण को प्रकाशित किया जा रहा है। साथ ही लेखक ने हमारा ध्यान यज्ञ विधियो के सशोधन की ओर आकर्षित करके व्यापक प्रचार के महान् उत्तर दायित्व का हमें स्मरण कराया है। हम आशा करते हैं आर्य विद्वन् मण्डल इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करेगा। श्री शास्त्रीजी और पूना के सभी आर्य भाइयो का मित्र-परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद ह कि उन्होने अपने कर्त्तव्य का पालन किया।

—सम्पादक

जीवन-ज्योति

आर्यसमाज के आदर्श सेवक

श्री स्वर्गीय पण्डित वंशीलाल व्यास

(श्री पं० भीष्मदेव शास्त्री, साहित्यरत्न, गुरुकुल घटकेश्वर आन्ध्र-प्रदेश)

[आर्य-समाज का दक्षिण भारत में रचनात्मक प्रचार करने में जिन महानुभावो ने कार्य किया है स्व० श्री भाई वंशीलाल व्यास का नाम उनमें सर्वाग्रणी रहेगा। उनके जीवन से हमें प्रेरणा मिलनी है कि हम धर्म और राष्ट्र की सेवा में समर्पण करें। सम्पादक]

'परिवर्तिनी संसारे मृत को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम्॥

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में कौन जन्म नहीं लेता और कौन नहीं मरता? आये दिन असंख्य पैदा होते हैं और असंख्य ही काल कवलित हो जाते हैं। उनका नाम अल्प कालान्तर में ही भूतकाल के अथाह सागर में डूब जाता है। उनका अजा-गल-स्तन की भांति जन्म निरर्थक होता है। वे जैसे आते हैं इस संसार से कूच कर जाते हैं किन्तु संसार में उसी व्यक्ति का जन्म लेना सार्थक है जिसके जन्म लेने से वंश समुन्नति को प्राप्त हो। नहीं-नहीं वंश ही नहीं, जाति ही नहीं, देश भी समुन्नति के मार्ग पर पूर्णतया अग्रसर होता हो। ऐसे व्यक्ति संसार में बहुत थोड़े होते हैं जो मर कर अमर हो जाते हैं ठीक है—

"सिंहों के लेहंडे नहीं, हंसों की नहीं पांत।
लालों की नहीं बोरियाँ, साधु न चले जमात॥"

उपरोक्त महान् व्यक्तियों ही के पावन पंक्ति में निज नाम लिखाकर इस भवसागर से पार उतर जाने वालो मे प्रातः स्मरणीय कुल गुरु एवं कुल पिता श्रद्धेय वंशीलाल जी व्यास भी एक थे।

आपका जन्म राजस्थान के अन्तर्गत नागोर से तीन चार मील के अन्तर पर स्थित 'नराधना' नामक एक लघु ग्राम में संवत् १९५४ विक्रमाब्द कार्तिक अमावस्या [दीपावली] के दिन द्विज-कुल मे हुआ था। आपके पूज्य पिताजी का नाम चतुर्भुज व्यास और जननी का नाम जानकी बाई था। कुछ दिनों के पश्चात् आपके माता-पिता नराधना को छोड़ हैदराबाद आ बसे। आपके पिताजी ने यहाँ व्यापार कार्य शुरू किया। यह बात विदित रहे कि पाँच वर्ष की अवस्था में आप गोद गये हुए थे जिन माता-पिता का नाम रामप्यारी बाई तथा श्री राधा-लाल था। चार कमान के एक छोटी सी पाठशाला में आपकी पढ़ाई का प्रबन्ध किया गया।

आपके माता-पिता कट्टर कृष्ण भक्त थे। अतः बालक 'वंशी' पर इन कृष्ण भक्त जनक-जननी का प्रभाव बिना पड़े कैसे रह सकता था। आयु के सातवें वर्ष से ही आप कृष्ण के उपासक बन गये। कौन जानता था कि यही बालक 'वंशी' आगे चलकर चोटी का सन्त बनेगा और कोटि-कोटि जनता का महान् सेवक बनेगा। किन्तु यह कथन भी नितान्त सत्य है—'Coming events cast their shadows before" अर्थात् "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" उनका बाल्यकाल कृष्ण-भक्ति सभा सोसाइटियो में जाने से कथा एवं संगीत आदि से सम्पृक्त था। अपने साथियों में बैठकर महाभारत आदि की कथाएं रुचि के साथ सुनाना, ये सब बाल्यकाल के कार्य उनके उज्ज्वल जीवन भविष्य के निर्देशक ही कहे जा सकते हैं।

आपका विवाह संवत् १९६७ वि० में १३ वर्ष की अवस्था मे श्री पं० बद्रीनारायण जी की सुपुत्री श्री 'जानकी देवी जी' से नागोर में सम्पन्न हुआ। विवाह के पश्चात हैदराबाद लौट आये। यहाँ आपका बाल-जीवन अपने बाल सखाओं के साथ आनन्द से कटता रहा। उन दिनों हैदराबाद में आर्यसमाज के प्रचारकों की धूम मची हुई थी। आपके अन्तःकरण में साकार भगवान की भक्ति का अंकुर बाल्यकाल में ही अंकुरित हो चुका था जो आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर निराकार भगवान की भक्ति में परिवर्तित होकर पल्लवित, पुष्पित एवं फलित हुआ।

महर्षि दयानन्द के शिष्यों का आपके जीवन पर बहुत ही प्रभाव पड़ा जिससे आपके जीवन में एक महान् परिवर्तन हुआ। अब आपने अनेक पौराणिक कथाओं द्वारा हरिजनों, चर्मकारों और मेहतरों की बस्ती में जाकर अहिंसा-धर्म आदि का प्रचार करना आरम्भ किया। समाज के लिए अभिशाप स्वरूपा विधवाओं की ओर भी आपका ध्यान गया। आपने पुनर्विवाह का पुरजोर प्रचार करना शुरू किया। 'व्यास' की यह गतिविधि समाज के ठेकेदारों को फूटी आँखों भी नहीं भाई। उस समय व्यास के महान् व्यक्तित्व को वे लोग कुछ भी न समझ पाये फलतः आप जाति बहिष्कृत कर दिये गये। आप रंचमात्र भी न घबराये। आर्य मर्यादा की प्रतिनिधि स्वरूपा पतिव्रता पूज्या जानकी देवी जी ने भी प्राणसम अपने पतिदेव का सदैव साथ दिया जिससे व्यास का दिव्य व्यक्तित्व चमक उठा। जाति वालों ने अपनी त्रुटि को पहचाना। पुनः आपको स्व-समाज में आमन्त्रित कर दुशाला ओढ़ा दिया और अपनी भारी भूल के लिए क्षमा मांगी। सच है—"साँच को आँच नहीं।"

इधर आये दिन निजाम की नादिरशाही बढ़ती जा रही थी। ८९ प्रतिशत हिन्दू प्रजा के सिर पर विपत्ति के भयंकर बादल मण्डरा रहे थे। आर्य प्रचारकों का प्रवेश स्टेट में निषिद्ध था। ऐसी दशा देखकर हमारे चरित्र-नायक 'व्यास देव' के मस्तिष्क में यह धुन सवार हुई कि महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रदर्शित प्राचीन गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली को चालू कर स्टेट के भीतर ही वैदिक विद्वान् क्यों न तैयार करें? एतदर्थ नगर नांदेड़ में दक्षिण की पावन गंगा [गोदावरी के तट] पर इस बात की प्रतिज्ञा कर ली कि मैं अवश्यमेव अपने जीवनकाल में गुरुकुल की स्थापना करूंगा। धुन का धनी प्रयत्न में जुट पड़ा। सत्य है—"कोऽति भारः समर्थानाम्" सम्पूर्ण साधन जुट गये। भाग्यनगर के पश्चिम में दो मील के अन्तर पर स्थित अनन्तगिरि के एक मन्दिर में मि० चैत शुक्ल १ संवत् १९९५ वि० में पं० धारेश्वर जी बी० ए० के कर कमलों द्वारा गुरुकुल स्थापना का शुभ कार्य सम्पन्न हुआ। इस प्रकार उस सच्चे कर्मयोगी का गुरुकुल स्थापना का स्वप्न साकार हो उठा। धर्म का मार्ग कण्टकाकीर्ण होता है। गुरुकुल-स्थापना के १५ दिन पश्चात् ही एक मतान्ध यवन द्वारा आप पर बम फैंका गया किन्तु स्वयं हत्यारा ही बुरी तरह से घायल हुआ और आप बाल-बाल बच गये। कहा है—"अरक्षितम् तिष्ठति दैव रक्षितम्" इसी प्रकार हिन्दी में भी ठीक ही लिखा है—

जाको राखैं साइयाँ मार न सकिहै कोय।
बाल न बांका करि सकै जो जग बैरी होय॥

अगले वर्ष ही सन् १९३९ मे निजाम के विरुद्ध आर्य सत्याग्रह का बिगुल बजाया गया। व्यासदेव कैसे पीछे रहते। गुरुकुल का प्रबन्ध कुछ व्यक्तियो के हाथों में सौंप, सत्याग्रह-संग्राम में कूद पड़े। छः सात मास जेल की सजा भोगकर संग्राम की समाप्ति पर लौट आये। अनन्तगिरि का जलवायु ठीक न होने के कारण सन् १९४१ में घटकेश्वर ग्राम के समीप श्री सेठ रामगोपाल जी राठी द्वारा दिये गये एक उद्यान में गुरुकुल आ बसा, जिसका सम्प्रति विशाल रूप बन गया है।

इन्हीं दिनों आपने घरौंडे के पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्दजी द्वारा वानप्रस्थाश्रम ग्रहण किया। आपके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे। अनेक बार आपको जेल यात्राएं करनी पड़ीं। कभी आपने अपने जीवन में उदास होकर बैठने का नाम तक नहीं लिया। नौआखाली में जब भयंकर हत्याकाण्ड चल रहा था, अग्नि की प्रचण्ड ज्वालायें चतुर्दिक उठ रहीं थीं, ऐसी विषमावस्था में भी आप जैसे साहसी वृद्ध केसरी का ही काम था कि प्राणों का मोह त्याग बहनो-भाइयों की सेवा के लिए वहाँ जा डटे। मृत्यु-मुख से लौट आने पर इधर रजाकारी आन्दोलन से जूझना पड़ा। इस संघर्ष में भी आपने सरगर्मी से भाग लिया।

गुरुकुल का कार्य चलाते हुए आप आर्यसमाज सुलतान बाजार हैदराबाद के मन्त्री पद पर नियुक्त होकर वहाँ का कार्य भी चलाते रहे। कुछ ही दिनों पश्चात् अपनी कार्य-कुशलता से आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के महामन्त्री पद पर नियुक्त होकर छः वर्ष तक उत्साहपूर्वक कार्य किया। वर्षों से देहातों के आर्य मन्दिरों के दरवाजो पर ताले आपके अथक परिश्रम से पुनः खुल रहे थे। आपकी अलख से जब कि स्टेट का कोना-कोना प्रतिध्वनित हो रहा था, नई चेतना पुनः आ रही थी और हो रही थी गुरुकुल और आर्यसमाज की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति। परन्तु शोक! महाशोक!! अलख जगाते और अपने कर्तव्य पथ [वैदिक धर्म का घर-घर प्रचार करने के लिए] पर बढ़ते हुए वे परम योगी 'व्यास' आर्यसमाज के आधार-स्तम्भ और गुरुकुल के सर्वस्व परम सन्त 'व्यास' अकपको की भयंकर रेल दुर्घटना के शिकार हो, सदैव के लिए चल बसे! किं अधिकम्? वे चलते-चलते भी धर्मनिष्ठा का अपूर्व सन्देश दे गये। जो आर्यसमाज के लिए अनन्त काल तक प्रकाश-स्तम्भ (Light of house) की भांति पथ-प्रदर्शन करता रहेगा। यद्यपि आज परम पूज्य पं० वंशीलाल जी व्यास हमारे मध्य नहीं हैं, तदपि उनकी पावन वाणी गुरुकुल के कण-कण में ही नहीं, स्टेट के कण-कण में, नहीं, नहीं वरन् भारतवर्ष के कोने-कोने में भी प्रतिध्वनित हो रही है, और युग-युग तक होती रहेगी।

★

वनिता विवेक

लखनऊ के साक्षरता केन्द्र में महिलाओं की शिक्षा

केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल देश भर में १२० ऐसी संस्थाओं को अनुदान दे रहा है, जहाँ औरतों को शिक्षा देने के बहुमुखी पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। लखनऊ का साक्षरता केन्द्र भी इनमें से एक है।

आजकल ग्रामीण औरतो और बच्चों का रहन-सहन सुधारने के लिए देश में जो समाज कल्याण कार्यक्रम चलाया जा रहा है, उसमें ग्राम-सेविकाओ और कारीगरी की शिक्षा देने वाली औरतो का विशेष महत्त्व है। इस काम के लिए ग्रामीण औरतें भर्ती करने मे केन्द्रीय मण्डल को काफी दिक्कतें होती हैं। ऐसी अधिकांश औरते इतनी पढ़ी लिखी नहीं होती कि उन्हे आसानी से प्रशिक्षण दिया जा सके।

संस्थाओं को अनुदान

इस कठिनाई को हल करने के लिए केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने पुरानी संस्थाओ को अनुदान देने की योजना बनाई। इन संस्थाओं में २० से ३५ साल तक की स्त्रियो को २ वर्ष में कम से कम ८वीं क्लास तक की शिक्षा दी जाती है।

लखनऊ के साक्षरता केन्द्र में भी इस तरह का विशेष कार्यक्रम चालू है। इसकी कक्षात्मक इमारत लखनऊ-कानपुर रोड पर स्थित है। यहाँ २२ औरतो को शिक्षा दी जा रही है। २ साल बाद ये औरतें ८वीं क्लास की परीक्षा दे सकेंगी। इसके बाद उन्हें ग्राम-सेविका या प्रारम्भिक स्कूलो में अध्यापिका के पद पर भर्ती किया जा सकेगा। इसके लिए केन्द्रीय मण्डल ने २८,००० रु० दिये हैं, जिनमें से प्रति मास ३५रु० प्रत्येक स्त्री पर खर्च किये जाते है। औरतों को ५-५ रु० प्रतिमास जेब खर्च भी दिया जाता है।

इस केन्द्र की औरतो के मुख पर सदा प्रसन्नता और कुछ सीखने की तीव्र इच्छा दिखाई पड़ती है। इससे पता चलता है कि उनमें योग्यता की कमी नहीं बल्कि उन्हें शिक्षा लेने का कभी अवसर ही नहीं मिला।

यह खुशी की बात है कि इन शिक्षार्थियों ने काफी प्रगति की है। उनके बुने हुए, कटे हुए और सिले हुए कपड़े देखकर यह विश्वास ही नहीं होता कि ४ महीने पहले इन औरतों ने कभी हाथ से सुई ही नहीं चलाई होगी।

सुबह-सुबह ये स्त्रियाँ उठ कर अपने कमरे साफ करती हैं। झाड़-पोंछ के अलावा रसोई में सब्जी काटना और बर्तन माजना भी उनका नित्य कर्म है।

दिन भर का कार्यक्रम

प्रात काल इमारत के बीच के अहाते में प्रार्थना होती है। इसके बाद, गणित, सामाजिक ज्ञान, सिलाई, गृह विज्ञान, साधारण-विज्ञान और कृषि आदि विषयो की क्लासें लगती है। खाली समय में ये औरतें खेल-कूद और सास्कृतिक कार्यक्रमो में व्यस्त रहती हैं।

इनमें कुछ ऐसी लड़कियाँ हैं, जो चौथी पाचवीं तक पढ़ी हुई हैं, फिर भी सबको एक साथ शिक्षा दी जाती है और बेपढ़ी और कम पढ़ी औरतो पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यह पाठ्यक्रम जनवरी १९५८ मे शुरू हुआ था। मार्च में ५वीं कक्षा के स्तर तक की पढाई की परीक्षा ली गयी जिसमें १३ महिलाये पास हुई। १ महीने बाद बाकी को दुबारा परीक्षा का नियम है।

आगामी दिसम्बर मे छठी क्लास की परीक्षा होगी। कार्यकर्त्ताओ का कहना है कि अगले मार्च मास मे कुछ लड़कियाँ तो आठवी क्लास की परीक्षा देने को भी तैयार हैं।

इस योजना का एक विशेष लाभ यह है कि महिलाओ को सामूहिक जीवन बिताने का अनुभव हो रहा है। केन्द्र की निरीक्षिका बड़ी मातृ हृदया है और उसका कहना है कि उस केन्द्र की स्त्रियो में मेल जोल की भावना देख कर ईर्ष्या सी होने लगती है।

यह साक्षरता केन्द्र कई वर्षो से एक गैर-सरकारी संस्था चला रही है। यहाँ, गावो में साक्षरता का प्रचार करने को इच्छुक महिलाओ को प्रशिक्षण दिया जाता रहा है। पिछले पाच वर्षों में यहाँ ३००० महिलाओ को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। यह संस्था नव साक्षरों के लिए कई पुस्तकें और चार्ट आदि प्रकाशित करती है। एक साप्ताहिक 'उजाला' भी प्रकाशित हो रहा है। यहा पर श्रव्य दृश्य साधनों की भी शिक्षा दी जाती है। इस संस्था में प्रशिक्षित कई महिलाओ को टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल वर्क और कस्तूरबा निकेतन जैसे स्थानों पर उत्तरदायित्व के पद दिये गये हैं, जहाँ वे प्रौढ़ शिक्षा का प्रचार करने में संलग्न हैं। ★

सम्पादक के पत्र

हिंदी को सूली चढ़ाकर क्षेत्रिय भाषाओं का सम्मान कैसा

श्री सम्पादक जी अपने लोकप्रिय पत्र द्वारा श्री लक्ष्मणराव जी पाटिल के कानों तक पजाब की करुण कहानी पहुँचाए अर्थात् पटियाला और जालन्धर डिवीजन में १ श्रेणी से ४ तक बलात गुरुमुखी ही पढ़ाई जाती है। निर्धन बालक ४ श्रेणी तक ही पढ़ते हैं और जब तक वे गुरुमुखी ही पढ़े गे तब तक क्या वे यह समझ सकेंगे कि हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है? यदि आरम्भ से हिन्दी होती तो सहस्रो अध्यापक हिन्दी पढ़ाने के लिए लगाए जा सकते थे, और जो बालक आगे पढ़ना चाहते वे पांचवीं से सस्कृत ले सकते थे। हजारो सस्कृत के विद्वान नौकरियो पर लग सकते थे। परन्तु आज सब घर बैठे हैं। ४ श्रेणी तक बालक हिन्दी से और दसवीं श्रेणी तक पढ़ने वाले बालक सस्कृत से शून्य रहते है। इनसे आगे पढ़ने वाले विद्यार्थी और दसवीं तक पढ़ने वाले विद्यार्थी तो किसी प्रकार भी अन्य प्रान्तों या केन्द्रो में नौकरी नहीं कर सकेंगे, क्योकि वे हिन्दी और सस्कृत में अन्य प्रान्तो की अपेक्षा पीछे रह जायेंगे। और अम्बाला डिवीजन जिसको कि हरियाणा कहते हैं के छात्र तो पजाब मे भी नौकरी न कर सकेंगे, क्योकि इनकी मातृ भाषा हिन्दी है। इन पर भी ४ श्रेणी से ही गुरुमुखी लिपि मे पजाबी भाषा अनिवार्य है। ये उन सिक्ख लड़को का मुकाबला कैसे करेंगे जिनकी पजाबी मातृ भाषा और गुरुमुखी लिपि है। पजाब का ७० प्रतिशत हिन्दू अपनी भाषा एव लिपि हिन्दी मानता है। किन्तु ३० प्रतिशत अकालियों की मजहबी लिपि ७० प्रतिशत को बलात् पढ़ाई जा रही है। गुरुमुखी को क्षेत्रिय लिपि कहना आखों मे धूल झोकना है। हमारी यह माग है कि जो सुविधा हिन्दी को राज्यस्थान, उत्तर प्रदेश एव दिल्ली आदि मे है। वह पजाब में भी होना चाहिए। काग्रेस सरकार से मिलकर अकालियो ने पजाब के हिन्दू क्षेत्र को व सिक्ख प्रभावित क्षेत्र बनाने का यह सरलतम उपाय बना लिया है जैसे आज कल भाषा के आधार पर अकाली पजाबी सूबा बनाना चाहते हैं। इसी प्रकार सारे पजाब को १० व २० वर्ष में जब यहो बलात् गुरुमुखी लिपि मे पंजाबी पढ़ा दी जायेगी तब सारे पजाब को खालिस्तान बनाने की माग की जायगी अत हम किसी क्षेत्रिय भाषा व उसके साहित्य के विरोधी नहीं हम तो जबरदस्ती के विरोधी हैं। क्या हमको अपनी मातृ भाषा के निर्णय करने का भी अधिकार नहीं है? यदि यह पजाबी भाषा गुरुमुखी लिपि में पजाब के ७० प्रतिशत हिन्दुओ को बलात् पढ़ाया जाना उनके कल्याण का कारण है तो अन्य प्रान्तो को भी इस लाभ से वंचित न रखना चाहिए। क्योकि कल्याण तो सब ही का होना चाहिए। हम बलात् गुरुमुखी न पढ़ेंगे, क्या हम गुलाम हैं?

—स्वा० रामेश्वरानन्द सरस्वती
आचार्य गुरुकुल घरौंडा, करनाल (पजाब)

छुआछूत का भूत

(श्री बाबूराम जी गुप्त, लुधियाना)

अस्पृश्यता आत्माभिमान के भेद रे निर्मूल विचार भारतवर्ष के लिये एक कालिमा हैं, पतित पावन दयानन्द ने छुआछूत के भूत को भगाया। यह सब ऋषि के पुण्य प्रताप और प्रचार का ही परिणाम है कि आज भारत में न्याय की दृष्टि से कोई भी अछूत नहीं, किन्तु इसे देश के दुर्भाग्य के सिवाय और क्या कहा जावे कि आज भी यहा कुछ मानव देहधारी अज्ञानवश अपने आपको अछूत समझ रहे हैं, या कुछ लोग उन्हें ऐसा मान रहे हैं, क्या किसी व्यक्ति को अछूत कहना या गाली देना अपनी जिह्वा को अपवित्र करना नहीं? आज ऐसे अछूत पुत्रों में वेद प्रचार, उनके उद्धार और सुधार, कार्य से आर्यसमाज उदासीन सा दीख रहा है, जैसे हमने "यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्य" के वेदोपदेश को अपने लिये ही समझ लिया है, "कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' की तो कथा ही क्या कहनी, किन्हीं कारणों से, हम इस सम्बन्ध में पथ विचलित अवश्य हो रहे हैं। हमारी इस उदासीनता का ही परिणाम है कि आज भगवान गौतम बुद्ध के अनुयायी भिक्षु (जिनकी विदेशो में बढ़ रही हिंसा भावनाओ को निर्मूल करने के लिये कहीं अधिक आवश्यकता थी) अपने निर्वाण पद प्राप्ति के मुख्य लक्ष्य को छोड़कर अछूतोद्धार सम्बन्धी हमारी शिथिलता और असावधानता के कारण हमारे इस कार्यभार को सभाल रहे हैं कैसे? इन तथ्यो के आधार पर निर्णय कीजिये—

[१] २० मई १९५८ को नासिक जिला अन्तर्गत 'देवला' नामक स्थान में ३०,००० व्यक्तियों ने बौद्ध दीक्षा ली।

[२] ४ जून को भण्डारा जिला अन्तर्गत "पेरसी" नामक स्थान में भिक्षु श्री महेन्द्र द्वारा ३८,००० अछूतों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

[३] पंजाब की बौद्ध महासभा द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह में तीन हजार से अधिक व्यक्तियों ने चक करीम (फमम्परा) मे बौद्धधर्म स्वीकार किया, इत्यादि इत्यादि (महाबोधि सभा सारनाथ के मासिक मुख्य पत्र के आधार पर)।

यह ठीक है कि हम सबकी उन्नति में अपनी उन्नति के नियम को मानने वाले हैं, तब क्या हमें अपनी उन्नति और अधोगति के कारणों और साधनों पर विचार ही नहीं करना चाहिये? और क्या सबकी उन्नति में वर्णित शब्द "सब" में हम भी नहीं आ जाते? हां! यह प्रश्न किया जा सकता है कि जब बौद्ध धर्म और आर्य धर्म में कोई विशेष भिन्नता नहीं और बौद्धों के कर्म, अहिंसादि मुख्य सिद्धान्त सब आर्य शास्त्रों के आधार पर हैं और हिन्दू भगवान गौतम बुद्ध को अपना नवम अवतार मानते हैं वे क्या विदेशी हैं जो हम चिन्ता करें?

हमारी उदारता ने तो हमे उन विदेशियों तक से चिन्तित नहीं होने दिया जिन्होने हमारी सभ्यता, संस्कृति और परम्परा तक पर कुठाराघात किया जिसके परिणाम-स्वरूप हमारे देखते देखते हमारा प्यारा अखण्ड भारत खंडित हो गया, और हम बैठे जाप करते रहे—"अभय मित्रा दभयम मित्रा।

इसी प्रकार आज बौद्ध सम्प्रदाय की प्रवृत्तियों सिर उठा रहीं हैं। हरिजन वर्ग में हमे उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है। हम 'कृण्वन्तो विश्व मार्यम्' पथ के दावेदारो के लिए यह गम्भीर और विचारणीय विषय है। साधारण नहो एक चेतावनी है। आशा है कि इस चेतावनी का हम सामना कर सकेंगे और अपने भाइयो को भ्रमित होने से बचा सकेंगे।

आम की जोरदार फसल होने की आशा

चिर प्रतीक्षा के बाद इस वर्ष आम की फसल बहुत अच्छी मालूम पड़ रही है। आम्र फल के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिये इस वर्ष भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् जून के दूसरे सप्ताह में, कलकत्ता और उत्तरी क्षेत्र में, जुलाई के मध्य में आमों की प्रदर्शनी कर रही है। इसमें देश में पैदा होने वाले सभी किस्मों के आम रखे जायेंगे।

प्रदर्शनी में १३ उपहार (ट्राफी) और कई कप तथा करीब ३,००० रु० के नक़द पुरस्कार दिये जायेंगे। आधी नक़दी की भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की पुस्तकें और दूसरे उपयोगी प्रकाशन पुरस्कार विजेताओं को दिये जायेंगे।

★

भ्रम निवारण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान मन्त्री श्रीयुत लाला रामगोपाल जी ने प्रेस को निम्नलिखित वक्तव्य दिया है—

१५-५-५९ के वीर अर्जुन में प० धर्मवीर द्वारा आमरण व्रत की घोषणा शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ है। इस व्रत का कारण यह बताया गया है कि सार्वदेशिक सभा ने बलिदान भवन को किराए पर लगा दिया है। परन्तु यह समाचार नितान्त अशुद्ध है।

स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज से सम्बन्धित बलिदान-भवन का वह भाग कि जिससे श्री स्वामी जी महाराज के बलिदान का सम्बन्ध है, किसी भी अवस्था में सार्वदेशिक सभा उठा ही नहीं सकती है। सभा ने उसे और भी आकर्षक बनाने के लिए स्मृति भवन पर हजारो रुपया अभी निकट भविष्य में व्यय किया है और आर्यसमाज के हुतात्माओं का स्मृति भवन बनाने के लिए सभा योजना बना रही है। उस योजनानुसार यहा एक विशेष प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना हो रही है कि जहा मद्रास आसाम, उड़ीसा आदि प्रान्तो पर्वतीय क्षेत्रो के प्रचारको को शिक्षण दिया जायगा।

बलिदान भवन का कुछ भाग किराये पर श्री स्वामी जी महाराज के समय से ही दिया हुआ है और कुछ भाग बाद मे दिया गया है, जिसकी पूरी आय इसी प्रशिक्षण केन्द्र पर व्यय होगी ताकि यह केन्द्र स्वावलम्बी बन जाय। आवश्यकतानुसार बलिदान भवन के अन्य भागों को भी खाली कराया जा सकता है और आशा है कि कुछ भाग शीघ्र खाली भी हो जायगा। इसके लिये किरायेदार से प्रार्थना भी की जा चुकी है।

अत आर्य जनता गैर जिम्मेदार व्यक्तियो के वक्तव्यों तथा विज्ञप्तियो से विचलित न हो। आश्चर्य इस बात का है कि श्री धर्मवीर जी को कार्यालय ने मौखिक रूप से सब कुछ समझा भी दिया था परन्तु फिर भी उन्होंने ऐसा किया। मैं पुन उन्हें चेतावनी स्वरूप कह देना चाहता हूँ कि वह अपने निश्चय का तुरन्त परित्याग कर दें और इस प्रकार का कदम बिना जानकारी प्राप्त किये नहीं उठाना चाहिये। क्योंकि प्राप्त करने का यह गति ही दूषित ढंग है जिसको आर्य जनता कदापि सहन नहीं करेगी। जनता को ऐसे नामधारी प्रचारकों से सावधान भी रहना चाहिये।

★

ग्राम पलड़ी (मुजफ्फरनगर) में १४१ हरिजन ईसाई भाइयों की शुद्धि

आर्य जनता को यह जानकर अति हर्ष होगा कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से श्री प० लालचन्द जी आर्य ने ग्राम पलड़ी तहसील बुढाना, जिला मुजफ्फरनगर में एक शुद्धि सम्मेलन की योजना बनाई जिसमें दिल्ली से श्री हरिदत्त शर्मा सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री प० हरिप्रसाद जी आर्योपदेशक गाजियाबाद आदि ने आकर भाग लिया। ग्राम में भजनो और व्याख्यानों द्वारा कई दिन तक प्रचार हुआ।

सम्मेलन मे मुजफ्फरनगर आर्यसमाज की ओर से श्री बा० पूरनचन्दजी व देहात सेवक समाचारपत्र मुजफ्फरनगर के प्रतिनिधि व सोम से श्री म० सग्रामसिंह जी व श्री मक्खू भगत आदि पधारे। ग्राम पलड़ी के श्री सौराजसिंह व श्री फूलसिंह व श्री शीशराम जी व श्री सुखवीरसिंह जी व श्री तिरखाराम जी व श्रीचन्द जी ने सम्मेलन को सफल बनाने मे हर प्रकार का सहयोग दिया।

१०-५-५९ को प्रात १० बजे संस्कार हुआ। श्री प० हरिप्रसाद जी आर्योपदेशक ने शुद्धि संस्कार कराया जिसमे १४१ हरिजन ईसाई भाइयों ने हिन्दू धर्म की दीक्षा लेकर अपनी पुरातन हिन्दू चमार जाति में प्रविष्ट हुए। श्री हरिदत्त शर्मा ने सभा की ओर से शुद्ध होने वाले भाइयों का स्वागत किया और बताया कि हमारी हिन्दू जाति के जो रत्न किसी समय दुर्भाग्य से बिखर गये थे वे आज एकत्र कर लिये गये हैं। इससे हमारी हिन्दू जाति की शक्ति सघटित होगी और यह सघटित शक्ति देश धर्म और जाति की सेवा में काम आयेगी। बाहर से आये हुए सभी महानुभावों और ग्राम निवासियों का धन्यवाद किया। इसके बाद सहभोज हुआ।

★

उत्तर प्रदेश में गेहूँ का मूल्य निर्धारित

भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश के ३४ जिलों में सफेद, लाल और फार्म (बढ़िया) किस्म के गेहूँ के अधिकतम थोक भाव निर्धारित कर दिये हैं। सफेद गेहूँ १३ रु० प्रतिमन, लाल गेहूँ १३ रु० प्रतिमन और फार्म (बढ़िया) गेहूँ १५ रु० प्रतिमन कर दिया गया है।

★

बाल-विनोद

मेरी कलम

मेरी कलम प्यारकर सुन्दर,
खबर भेजती पार समुन्दर।
बिछुड़ों को सन्देश सुनाती,
मिलने का सा जी बहलाती।
बच्चों को लिखना सिखलाती,
बूढ़ों को वैराग्य सिखाती।
जन-मन को कर्तव्य सुनाती,
धर्म देश और राष्ट्र-हितैषी,
करती काम ठान ले जैसी।
कोरे कागज काले करती,
भाग्य-विधाता ही बनजाती।
सच्चे जन को राज दिलाती,
झूठों को कारा भिजवाती।

—सुभाष, फगवाड़ा

अपने गाँव

कितने मनहर अपने गाँव।
कितने अनुपम अपने गाँव॥
कैसे सुघड़ सलोने घर।
लिपे पुते हैं लगते सुन्दर,
और बनी रहती वृक्षों की;
सम्मुख इनके शीतल छाँव।
कितने अनुपम अपने गाँव॥
यहाँ सभी हैं भाई-भाई,
कभी न कोई करे लड़ाई,
भेद-भाव या छुआछूत का,
तनिक न चलने पाता दाँव।
कितने मनहर अपने गाँव॥
खेतों में यदि है हरियाली,
जन-जन में भी है खुशियाली,
कृषक खेत को जोते-गाते,
मिला मिलाकर अपने पाँव।
कितने अनुपम अपने गाँव॥

—राजीव कुमार, कलकत्ता

पहेलियाँ

चार अचक चार बचक
चार सुरमेदानी
रंगीन चिड़िया उड़ गयी
रह गई कहानी

× × ×

चार कोन का चौतरा
चौंसठ घर ठहराय
चतुर चतुर सोया करे
मूरख फिरि-फिरि जाय

× × ×

दो बहनों का एक नाम
एक बड़ी एक छोटी
एक मसाले में बसती है
एक पान में होती

× × ×

दिन को सोये रात को जागे
देख उसको चोर भागे

—मंजुला, डलाप, साहगंज

उत्तर—१ पान, सुपारी, चूना, कत्था, २ शतरंज, ३ इलायची, ४ बिजली की बत्ती।

चुटकुले

मास्टर [लड़के से]—बताओ रामायण किसने बनाई?

लड़का—जी, मैंने।

मास्टर [क्रोध में]—क्या कहते हो तुमने लिखी है?

लड़का—जी हाँ, मेरा नाम भी तुलसीदास है।

× × ×

एक आदमी [दूसरे से]—भाई तुम तो कहते थे कि पत्रिका के चलते ही मैं तुम्हारे रुपये दे दूंगा परन्तु आपने अभी तक रुपये नहीं दिये।

दूसरा आदमी—हाँ भाई, कहा तो ठीक था, परन्तु यह पत्रिका तो ऐसी है जो चलने का नाम तक नहीं लेती।

× × ×

एक आदमी—भाई क्या बजा है?

दूसरा [घड़ी देखकर]—१२ बजे हैं।

पहला—मैं यह कुछ नहीं जानता घड़ी तो इस समय केवल १२ बजा रही है।

× × ×

माता—बेटा! स्कूल में जाकर क्या करते हो?

बेटा—हम तो स्कूल में जाकर चीज खाते हैं।

माता—कौन सी?

बेटा—मार।

× × ×

एक सज्जन दूसरे से—"मैंने सुना है आप का विवाह हाल में हुआ है।"

दूसरा—"जी नहीं हाल में तो नहीं पर मण्डप में जरूर हुआ है।"

× × ×

(पृष्ठ ६ का शेष)

जैसा कि "गीतांजलि", घर और संसार तथा "गार्डनर" का हुआ। "चन्द्रकला", फलसंचय", "मेरा स्कूल" "मेरी शिक्षा", "संन्यासी", "प्रकाश और छाया", तथा अन्य रचनाओं का भी बुल्गारियन में अनुवाद हुआ।

इस महान् भारतीय कवि की रचनाओं में इस असाधारण अभिरुचि का क्या कारण है? इसका कारण सर्वोपरि स्वयं टैगोर के व्यक्तित्व का—उच्च नैतिक गुणों तथा उदात्त आकांक्षाओं से युक्त व्यक्तित्व का—आकर्षण था। स्वाधीनता एवं स्वतन्त्रता के लिये तथा नये जीवन के लिये भारतीय जनता के संघर्ष में उनके सक्रिय रूप में भाग लेने से यह आकर्षण और भी बढ़ गया था। उनके महान् व्यक्तित्व की छाप उनकी कलात्मक रचनाओं पर पड़ी है क्योंकि टैगोर के उच्च नैतिक गुण उनकी रचनाओं के प्रत्येक पृष्ठ में प्रतिबिम्बित हैं।

टैगोर की रचनाओं के प्रति इतनी अधिक अभिरुचि का एक कारण यह भी है कि वह महान् भारतीय जनता के सपूत थे। उस देश के प्रति बुल्गारियनों ने सदा ही गहरी दिलचस्पी दिखाई है। बुल्गारिया की जनता ने भारतीय जनता के प्रति, औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध उसके संघर्ष के प्रति, उसकी महत् संस्कृति और कला के प्रति अपने प्रेम और सहानुभूति का परिचय दिया है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण "गीतांजलि" की महती लोकप्रियता है जो उत्पीड़न और साम्राज्यवाद के खिलाफ स्पष्टवादितापूर्ण विरोध है।

भारतीय जनता के उच्च नैतिक गुण उसकी मानवीयता एवं संवेदनशीलता अधिकाधिक संख्या में बुल्गारियन पाठकों को आकृष्ट करती है जो भारत के साहित्य द्वारा उसके बारे में गहरी जानकारी प्राप्त करना चाहते है। भारतीय कविताओं, काव्य संग्रहों और कथाओं का भी अनुवाद हुआ है। "महाभारत" से लिये गये "नलदमयन्ती" उपाख्यान का तथा धानमुकर्जी रचित "हैरी और कैरी" का भी बुल्गारियन में अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

महात्मा गांधी की "स्वास्थ्य रक्षा के उपाय तथा आत्मचरित" नाम की दो रचनाओं का बुल्गारियन में अनुवाद प्रकाशित हुआ है।

जवाहरलाल नेहरू की 'भारत की खोज' नाम की पुस्तक का बुल्गारियन अनुवाद जब १९५५ में प्रकाशित हुआ तो बुल्गारियन पाठकों ने उसका प्रेमपूर्ण स्वागत किया। पुस्तक की ७०००प्रतियां जो बुल्गारिया जैसे छोटे देश की दृष्टि से पर्याप्त से अधिक हैं—हाथोंहाथ बिक गईं, सार्वजनिक पुस्तकालयों में जिनकी संख्या हमारे देश में अनगिनत है, 'भारत की खोज' नाम की पुस्तक की निरन्तर मांग रहती है।

बुल्गारिया में भारत के प्रति, भारतीय साहित्य के प्रति, भारतीय फिल्म के प्रति, तथा सामान्यतया भारतीय संस्कृति के प्रति दिनानुदिन अभिरुचि बढ़ रही है। इस अभिरुचि में महान् भारतीय जनता के प्रति जिसने औपनिवेशिक उत्पीड़न का अन्त कर सर्वांगीण विकास के पथ पर कदम रखा है और उत्तरोत्तर अधिकाधिक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर रही है बुल्गारियन जनता की गहरी सहानुभूति प्रतिबिम्बित है।

पूना में सपशु याग

(पृष्ठ ७ का शेष)

चैलेंज देने वाले जिज्ञासु भाव से ह कर रहे हैं, उनका यज्ञ करने वालो यवा किसी संस्था से सम्बन्ध नहीं । स्थान और मध्यस्थ का नाम कल घोषित किया जावेगा । दूसरे दिन ता चला कि वे एक मध्यस्थ नहीं दो मध्यस्थ चाहते हैं । सायंकाल पता चला कि वे जनता में शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते । केवल व्यक्तिगत वार्तालाप से उनका मतलब है । वे तो कुछ पिडतों में वार्ता करना चाहते हैं जो व्यक्तिगत है, शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते । उन्होंने समाचार-पत्र में इस आशय का समाचार भी निकलवाया । आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को बड़ा क्षोभ हुआ । श्री दानसहाय आर्य उपप्रधान समाज और विजयकुमार चोकसे उनके पास गये । उन्होंने इनसे कहा कि जनता में शान्ति भग हो जावेगी, वे शास्त्रार्थ करने के लिए तैयार नहीं हैं । वे तो अपना व्यक्तिगत विचार विमर्श ही करना चाहते थे । श्री दानसहाय जी ने कहा कि आप डरें नहीं, जनता की शान्ति भग न होने पावेगी । इसकी जिम्मेदारी समाज लेने को तैयार है । परन्तु इस पर भी विपक्षी लोग शास्त्रार्थ करने को तैयार नहीं हुए । इस पर उसी पत्र में जिसमें उन लोगों का समाचार छपा था श्री दानसहाय आर्य ने वक्तव्य दिया कि शास्त्रार्थ का आह्वान करने वाले शास्त्रार्थ करने को तैयार नहीं । वे एक प्रकार से अपना आह्वान वापस ले चुके हैं अत हम किसी व्यक्तिगत विचार-सभा में जाने को तैयार नहीं । हमारी शास्त्रार्थ की स्वीकृति जनता में खुला शास्त्रार्थ करने की थी जिसे करने को विपक्षी दल तैयार नहीं । अब शास्त्रार्थ की कोई सभावना न रही तो मैं वापस नासिक आ गया । यज्ञ अभी हो रहा है । उसमें पशुबलि भी, सुना है, की जा रही है । जनता की ओर से विरोध भी जोरों का चल रहा है ।

यहाँ पर विचारणीय प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या इन यज्ञो में ऐसा ही होता रहेगा ? कब तक यह पाखण्ड चलता रहेगा । आर्यसमाज को चाहिए कि वह यज्ञों की विधियो को दुरुस्त कर उनका विशुद्ध रूप लोगो के समक्ष रखे । थोड़े से विद्वान् हैं जो इन कार्यों को कर सकते हैं । नये विद्वान् ऐसे पैदा नहीं हो रहे हैं । यदि इनसे कार्य न लिया गया तो बाद में पछताना पड़ेगा । सभी श्रौतसूत्रों और ब्राह्मणों का ऊहापोह कर यज्ञों की विधियों को स्पष्ट कर देना एक आवश्यक कार्य है ।

[पृष्ठ ९ का शेष]

अर्थात् जिसने सांप को मारकर सप्त सिंधुओं को प्रवाहित किया, बल की गुफा से जिसने गायो को मुक्त कराया, जो दो पत्थरों के बीच अग्नि को उत्पन्न करता है, युद्ध में शत्रुओं का नाशक वह इन्द्र है ।

सायण और पिटरसन का मनमाना अर्थ देखने के पश्चात् जब हम ऋषि दयानन्द कृत अर्थ पर विचार करते हैं तो बल द्वारा गायों के निरोध करने की सायण रचित कहानी और साप को मारने की पिटरसन वाली कथा साफ उड़ जाती है और जो शेष रह जाता है वह है एक वैज्ञानिक तथ्य जिसे सभी लोग मुक्त कण्ठ से स्वीकार करेंगे ।

ऋषि दयानन्द ने इस मन्त्र का सूर्यपरक अर्थ इस प्रकार किया—"हे मनुष्या य सूर्य लोको मेघ वर्षयित्वा समुद्रान् भरति, सर्वान् भूगोलान् स्व प्रत्याकर्षति स्वकिरणैर्मेघस्य सन्निहितस्य पाषाणस्य मध्ये उष्णताजनयति सो अग्निरस्तीतिवेद्यम् ।" अर्थात् जो सूर्य लोक मेघ को वर्षा कर समुद्रों को भरता है, सब भूगोलों को अपनी ओर खींचता है, अपनी किरणों से मेघ और समीपस्थ पाषाण के बीच ऊष्मा को उत्पन्न करता है वह सूर्य अग्नि रूप है, यह जानना चाहिए ।

ऋषि दयानन्द ने 'अहि' का अर्थ निरुक्त प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए 'मेघ' किया, परन्तु पिटरसन उस प्रक्रिया से अनभिज्ञ होने के कारण उसे लौकिक सस्कृत का शब्द समझकर उसका अर्थ (Serpent) साप कर बैठे । जिस 'गा' शब्द को देखकर सायण ने असुर द्वारा गायो के निरोध करने की कल्पना की, वहाँ ऋषि ने निरुक्तानुसार 'गा' का अर्थ पृथ्वी और किरणें किया । अब हम निर्णय पाठको पर ही छोड़ते हैं । उन्हे वैज्ञानिक तथ्यों का उद्घाटन करने वाला दयानन्द कृत अर्थ अधिक अपील करता है या असम्भव गाथा युक्त सायणकृत अर्थ ।

★

सभा की सूचनाएँ

मास जून के पुरोगम

श्री ओम्प्रकाश जी शास्त्री—१ जून तक आ०स० ओखेपुर, ६ से ८ सरधना ९ व १० आर्यसमाज नौनेर, १८ से २१ आ०स० तिलहर, २३ से ३० जून आ०स० करौरा (बुलन्दशहर)।

श्री रुद्रदत्त जी शास्त्री—१ जून तक ओखेपुर।

श्री सत्यमित्र शास्त्री—१२ व १३ विवाह-संस्कार प्रतापगढ़।

श्री सत्यपाल जी शास्त्री—६ से ८ आ०स० सरधना

श्री तोतारामजी—५ से ७ उत्सव आ०स० बढ़ापुर।

प्रचारक

श्री भद्रपाल जी—५ से ७ जून विवाह-संस्कार बरेली।

श्री रामचन्द्र जी—१ जून तक सुहेलनगर।

श्री धर्मराजसिंह—३ से ५ आ०स० टांडा अफजल, ७ से १० आ०स० नौनेर, १८ से २१ आ०स० तिलहर।

श्री जयपालसिंह- ३ से ५ आ०स० कौन्दकोट।

श्री बालकृष्ण—३१ मई १ जून मेला दरगाह, २२, २३ जून विवाह-संस्कार सिंगरामऊ (सुल्तानपुर)

श्री गजराजसिंह—५ से ७ जून आ०स० बढ़ापुर (बिजनौर)

उत्तरप्रदेशीय आर्य जनता एवं समाजों से नम्र निवेदन

सभा के उपदेशक श्री पं० रामनिवास जी मिश्र की रसीदबुक नं० १२४ सपड़ा मुहाल कानपुर से गुम हो गई है। जिसमें से ६६ रसीदें कट चुकी हैं। अतः उपरोक्त नम्बर की रसीद पर कोई सज्जन धन देने की कृपा न करें।

—अधिष्ठाता, उपदेश-विभाग

थाइलैण्ड (बैंकोक) के आर्यबन्धु का प्रशंसनीय दान

श्री रघुनाथसिंह जी ग्राम निवासी मझुवान (जगदीशपुर) जो आजकल बैंकोक में रह रहे हैं उन्होंने गगहा स्थित किसान हाई स्कूल में एक कमरा निर्माणार्थ धन दान देने की घोषणा की की है। विद्यालय कमेटी की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया गया है। मित्र की ओर से भी हम आदर्श विद्यानुरागी आर्य बन्धु की हार्दिक प्रशंसा करते हैं।

धर्म बिना मानवता का विकास सम्भव नहीं

शान्ति के लिये वेदों की शरण में आना आवश्यक

गाजियाबाद में आर्य नेताओं का जनता को आह्वान

शान्ति और आनन्द के इच्छुक सहस्रों नरनारियों को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध आर्य नेता पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती ने कहा कि यदि धरती से भेदभाव मिटा सच्चे अर्थों में मानवता का विकास करना है तो वेदों की शरण में आना ही होगा।

आपने जनता को आह्वान करते हुए कहा कि आर्यसमाज वह महान संस्था है जिसका उद्देश्य धरती के हर मनुष्य को सुखी बनाना है अत. ऐसी महान् संस्था का बल बढ़ाना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है।

प्रसिद्ध आर्य विद्वान पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री ने अपने मार्मिक भाषण में सभी को अध्यात्मवाद के पावन पथ पर चलने का निमन्त्रण दिया। पं० बिहारी लाल जी शास्त्री, शास्त्रार्थ-महारथी ने आर्यसमाज की विशेषताएं बताते हुए सभी को सहयोग का निमन्त्रण दिया।

उत्सव में पं० रामचन्द्र जी देहलवी का अन्तिम भाषण भी जनता की ज्ञान-वृद्धि का सहायक बना। उत्सव में जनता ने १८००) रुपये के लगभग दान दिया। समारोह प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा।

स्वामी अमृतानन्द जी के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं

श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती जो कि आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी जिला बिजनौर में मुख्य निवास-स्थान बनाकर प्रचार करते थे उनको कहीं बाहर प्रचार करते अर्धांग [फालिज] दाहिनी ओर हो गया है। स्थानीय आर्यसमाज के अधिकारी उनकी चिकित्सा बंगाली अस्पताल कनखल [हरिद्वार] करा रहे हैं अभी तक स्वामीजी का दशा चिन्ताजनक है, अस्पताल के कर्मचारी बड़ी सहानुभूति से चिकित्सा कर रहे हैं।

—आनन्द प्रकाश आर्य
मन्त्री

आर्य-जगत

उत्सव—

—गया आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव ३० मई से १ जून तक मनाया जा रहा है।

—दिल्दारनगर आर्यसमाज का उत्सव ३ से ६जून तक मनाया जायगा।

—अमेठी में १ से २१ जून तक व्यस्क युवक शिविर तथा अमरा ग्राम में तहसील बालक शिविर लगेगा।

—चौंदकोट [गढ़वाल] आर्यसमाज का उत्सव ३ से ५ जून तक मनाना निश्चित हुआ है।

—सरधना आर्यसमाज का उत्सव ६ से ८ जून तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा।

—अम्बाला मु० अड्डा आर्यसमाज गुरुकुल विभाग का उत्सव२० से २६ अप्रैल तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। वेद कथा, महिला सम्मेलन हिन्दी रक्षा सम्मेलन मुख्य और सफल कार्यक्रम रहे।

—रामनगर [अमेठी] का वार्षिकोत्सव १२ से १४ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

—एलाकटरा [इटावा] आर्यसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव २६ से २८ अप्रैल तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री प्रभुदयाल वानप्रस्थी जी ने श्री स्वामी परमानन्द दण्डी जी से सन्यास की दीक्षा ली। उनका नाम प्रेमानन्द रक्खा गया।

—झासी सीपरी बाजार आर्य समाज का रजत जयन्ती महोत्सव १२ से १६ मई तक समारोह पूवक मनाया गया। प्रसिद्ध आर्य विद्वानो व सन्यासियों ने भाग लिया।

—देवास [म० प्र०] आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव ११ से १३ मई तक समारोहपूवक सम्पन्न हुआ नव सन्यासी श्री स्वामी सेवानन्द जी व प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री प० वीरसेन जी वेदश्रमी ने उत्सव म सम्मिलित हाकर विद्वत्तापूर्ण उपदेश दिये। वेदश्रमा जी ने विष्णु रुद्र एव सव मागल्य यज्ञ तीन दिन सम्पन्न कराये।

—मिरजापुर आर्य वीर दल का शिक्षण शिविर २५ स ३१ मइ तक हासीपुर हाई स्कूल के प्रागण में सम्पन्न हुआ।

—ठठिया [फर्रुखाबाद] आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव एव गायत्री महायज्ञ समारोह ४ से ६मई तक सम्पन्न हुआ। श्री शान्तिदेवी के उद्योग से महिला समाज भी स्थापित हुआ।

निर्वाचन समाचार —

—ज्वालापुर आर्य विरक्त वानप्रस्थाश्रम के प्रधान श्री महात्मा हर प्रकाश जो उपप्रधान श्री स्वामी अथर्वानन्द जी व श्री भीदेव वानप्रस्थी जी तथा मन्त्री श्री ज्योतिप्रसाद जी स० मन्त्री डा० हरदयाल जी श्री रेवती प्रसाद जी कोषाध्यक्ष श्री देवदत्त शर्मा जी पुस्तकाध्यक्ष श्री करोड़मल जी निरीक्षक श्री रामनाथ बाली जी निर्वाचित हुए।

—गया आर्यसमाज के प्रधान श्री सच्चिदानन्द सहाय जी और मन्त्री श्री डा० ओम्प्रकाश जी निर्वाचित हुए।

—ठठिया (फर्रुखाबाद) की आर्य समाज की प्रधाना श्री माता जी [कृष्ण चन्द्र जी] मन्त्रिणी श्री कुसुमलता जी।

—बलिया आर्यसमाज के प्रधान श्री सुरेन्द्रदेव स्नातक एम० ए० मन्त्री श्री कैलाश प्रसाद मुख्तार निर्वाचित हुए।

—सुरसान (मथुरा) आर्यसमाज के प्रधान श्री ठाकुरदास जी व मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त मिश्र जी निर्वाचित हुए।

—बुलन्दशहर आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महाशय शिवलाल जी व मन्त्री श्री मोहनलाल जी शर्मा उप मन्त्री श्री सत्येन्द्र बन्धु जी निर्वाचित हुए।

—याकूतगंज (फतहगढ़) आर्य समाज के प्रधान श्री रामदास जी व मन्त्री श्री रामचन्द्र जी निर्वाचित हुए।

—बुलन्दशहर आर्यसमाज तथा आर्य कन्या पाठशाला क प्रधान श्री महाशय शिवलाल जी व मन्त्री श्री महाशय मोहनलाल शर्मा जी निर्वाचित हुए।

—गाजियाबाद आर्य वीर दल क लिए श्री विश्वनाथ जी आर्यवीर द्वारा श्री वेदप्रकाश जी आर्य नगर सचालक तथा शाखानायक प्रात श्री राधेश्याम आर्य साय श्री राजेन्द्र आर्य नियुक्त किये गये।

—अगोता (हापुड़) में नव स्थापित आर्यसमाज के प्रधान श्री चौ० नत्थू सिंह जी व मन्त्री श्री करणसिंह जी चुने गए।

—अफजलगढ़ आर्यसमाज के प्रधान श्री पुरुषोत्तमशरण मन्त्री श्री रामनाथसिंह जी निर्वाचित हुए।

प्रचार-समाचार—

—लोहरदगा (बिहार) शान्ति आश्रम में आर्यसमाज स्थापना दिवस रामनवमी पर्व शान्ति पर्व मनाकर आर्य विचारों का प्रचार किया गया।

—चन्दौली (वाराणसी) आर्य समाज की ओर से १ मई को वेद प्रचार का कार्यक्रम समारोह मनाया गया।

—रामनगर [वाराणसी] में श्री लक्ष्मणसिंह जी क मकान पर आर्य-समाज की स्थापना की गई। श्री कामता प्रसाद सिंह जी सयोजक बनाये गये। श्री रामजीप्रसाद जी गुप्त व श्री ठा० महानन्दसिंह जी के ओजस्वी भाषण हुए।

—घटोखा ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना का प्रयत्न सफल हुआ और २३ सदस्यो ने सदस्यता स्वीकार की।

—हाथरस आर्यसमाज की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आर्य वीर दल के कार्यकर्ता श्री मित्रसेन शास्त्री पधारे और उनके प्रयत्न से वहाँ दल की शाखा स्थापित हो गई है।

—अफजलगढ़ आर्यसमाज की ओर से लखराम वीर तृतीया दिवस बड़ी श्रद्धा और लगन के साथ मनाया गया।

अमेठी मे दीक्षा-समारोह

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्री रणवीर विद्यालय रामनगर केन्द्र में आये हुए जूनियर हाई स्कूलों के लगभग २५० परीक्षार्थियो तथा उनके अध्यापकों की एक सम्मिलित सभा राजभवन में श्री प० देवबक्सदीन शर्मा उपाध्यक्ष अन्तरिम जिला परिषद् की अध्यक्षता म हुई। जिसमें राजकुमार श्री रणञ्जयसिंह एम० एल० सी० ने स्वागत भाषण करते हुए अमेठी राज्य के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त श्री रामचन्द्र चतुर्वेदी उप जिला विद्यालय निरीक्षक ने दीक्षा भाषण दिया। श्री रामकिशोर शास्त्री ने समस्त अभ्यागतों को धन्यवाद दिया। श्री रणञ्जयसिंह जी की ओर से समस्त लोगो को जलपान कराया गया।

अमेठी मे डिग्री कालेज

आगरा विश्वविद्यालय की कार्य कारिणी कौंसिल ने अमेठी में आगामी जुलाइ मास से डिग्री कालेज खोलने की स्वीकृति दे दी है। तदर्थ उचित कार्रवाई हो रही है। डिग्री कालेज में अंग्रेजी संस्कृत, हिन्दी, इतिहास, भूगोल अर्थशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र की शिक्षा दी जायगी।

श्रीमान् अमेठी नरेश महोदय ने इस पुण्य कार्य के लिए ढाई लाख रुपये का दान दिया है।

शोक—

—हरदुआगंज आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री ठा० नवनिधि सिंह जी के १० मई को आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज हरदुआगंज की ओर से शोक प्रस्ताव पास किया गया और शोक सतप्त परिवार से सहानुभूति व दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। महिला आर्यसमाज बरौठा ने भी स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

—फतहपुर आर्यसमाज की ओर से महाशय बलवीर जी सेवार्थी टेलर मास्टर की धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया गया और परिवार से सहानुभूति प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्राथना की गई।

विवाह संस्कार—

—मगहर आर्यसमाज द्वारा श्री रामदुलारे जी का विवाह हरिजन परिवार में सार्वजनिक रूप से सम्पन्न हुआ।

—अलीगढ़ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सरदारसिंह जी की कन्या श्री कुमारी धन्वन्तीदेवी का शुभ विवाह १० मई को सम्पन्न हुआ। वर पक्ष की ओर से १०१) रु० आर्यसमाज मढ़ को मन्दिर निर्माणार्थ प्रदान किये गए।

—देहली में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश क भूतपूर्व मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह जी क सुपुत्र श्री मतपाल जी का शुभ विवाह मेजर कैप्टन आई० पी० सिंह की आयुष्मती कन्या कु० शशि के साथ २२ मई को सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् के प्राय सभी उच्चकोटि के विद्वानों, नेताओं ने पधार कर वर वधू को आशीर्वाद दिये।

[पृष्ठ ४ का शेष]

इन सब बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् समिति इस परिणाम पर पहुँची है कि श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज से सविनय आग्रह किया जाय कि वे अपने सत्याग्रह करने के विचार को स्थगित रखें। समिति आर्य समाज की प्रतिष्ठा के लिये उनकी बलिदान एव त्याग की अदम्य भावना की सराहना करती है। आर्यसमाज जो कि एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है उसकी शांतिप्रियता और समझौते के अनेक मार्ग को अपनाने की पुरानी परम्परा को ध्यान में रखते हुए तथा आर्यसमाज की संगठन भावना का आदर करते हुये श्री स्वामी जी महाराज ने समिति के आग्रह को स्वीकार किया इसके लिये समिति उनको हार्दिक बधाई देती है।

यह भी निश्चय किया गया कि आगामी २१ जनवरी को सारी परिस्थिति पर विचार करने तथा सत्याग्रह के भावी कार्यक्रम की घोषणा करने के हेतु आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन आमन्त्रित किया जाय।

आर्यकुमार सभा देहली का रजत जयन्ती समारोह

आर्यकुमार सभा नई दिल्ली की ओर से आयोजित त्रिदिवसीय रजत जयन्ती समारोह ७, ८, ९ मई को डी० ए० वी० हायर सेकेण्डरी स्कूल चित्रगुप्त रोड के प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

आयोजन में राजधानी के अनेकानेक किशोरों ने उत्साह-पूर्वक हिस्सा लिया। वाद-विवाद, मोनो एक्टिंग, फैंसीड्रेस शो, गीत एवं कविताओं आदि की प्रतियोगिता में बालकों ने खुलकर भाग लिया और पुरस्कार जीते। विजेताओं को पुरस्कार लाला शामलमल जी गोरोवाल ने प्रदान किये। इसके अतिरिक्त कवि सम्मेलन, नाटक आदि दिखाकर बच्चों ने उपस्थित समुदाय का मनोरंजन भी किया।

वाद विवाद प्रतियोगिता में 'धर्म-निरपेक्ष नीति राष्ट्र के लिए अहितकर है ?' और 'भारत कैसे उन्नत हो सकता है ?' में विद्यार्थियों ने पक्ष-विपक्ष में काफी प्रभाव पूर्ण ढङ्ग से अपना मत रखा।

सम्पूर्ण आयोजन को सफल बनाने में सर्व श्री—लाला हरिश्चन्द्र, लाला तिलकराज, प्रिंसिपल जी० एल० दत्त, दयाराम, ईश्वरदास एम० ए० जैमिनी शास्त्री, लक्ष्मीनारायण शास्त्री, देवीदयाल आर्य, चौधरी तीर्थराम, पण्डित रूपलाल, लाला रोशनलाल, मदनलाल निरूला तथा पण्डित देवव्रत जी धर्मेन्दु आदि ने पूर्णतया तन, मन से सहयोग दिया।

विद्वान वक्ताओं ने इस अवसर पर व्याख्यान देकर तथा मुद्रित उपयोगी साहित्य के वितरण द्वारा कुमारों को सदाचारी, ब्रह्मचारी, संयमी, विनम्र एवं स्वावलम्बी बन राष्ट्र और समाज की सेवा करने की प्रेरणा दी। श्री जगदीशचन्द्रजी विद्यार्थी विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित 'कुछ करो कुछ बनो' पुस्तिका बालकों का अच्छा मार्ग दर्शन करती है। ऐसी एक पुस्तिका कविराज हरनामदास बी० ए० ने भी वितरित की।

आर्य कुमार सभा विगत पचीस वर्ष से बालकों के चरित्र में साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक गोष्ठियाँ कर सद्वृत्ति, सुसंस्कार, परिष्कृत रुचि, परोपकारी सेवा-भावना जैसे जीवनादर्शों को ऊंचा ले जाने वाले स्फूर्तिदायक कर्मों का निर्माण कर रही है। कुमार सभा निराश्रित एवं निर्धन बालकों के पठन-पाठन की भी व्यवस्था करती है।

आर्य धर्मोपदेशक प० देवव्रत जी, धर्मेन्दु कुमार सभा की सुचारु रूप से देख रेख कर रहे हैं। प्रिंसिपल हरिश्चन्द्र जी एम० ए० का सहयोग एवं सत्परामर्श इस सभा का सम्बल है। कुमार सभा के पास ऐसे स्थान का अभाव है जहाँ पर वह सत्साहित्य तथा अन्य उपयोगी वस्तुओं का संग्रह कर बच्चों को अधिक लाभ पहुँचा सके। कुमार सभा को आशा है कि दानी महानुभावों के निस्वार्थ सहयोग से निकट भविष्य में एक पुस्तकालय तथा भव्य यज्ञशाला का निर्माण हो जायगा और वह अधिक से अधिक कुमारों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

(पृष्ठ २ का शेष)

जो साप्ताहिक सत्सगों में अपने विचार भी कभी-कभी प्रकट करते रहते हो। साप्ताहिक सत्सगों में पुस्तकालयाध्यक्ष का यह विशेष प्रयत्न होना चाहिये कि वह आने वाले सज्जनो को अपने पुस्तकालय के ग्रन्थो की जानकारी कराए तथा नये नये प्रकाशित ग्रन्थों को मगवाकर उन्ह पढने को दे।

जिन आर्यसमाजो के पास अपने वाचनालय हो वहा यह प्रयास हो कि एक दो हिन्दी अग्रेजी के पत्रो को छोड कर शेष सब पत्र पत्रिकाए आर्यसमाज की हो। समस्त भारत की प्रान्तीय आर्य पत्र पत्रिकाओं को खरीद कर मगवाया जाय। वाचनालय क समय (Open shelph) खुली अलमारियो की व्यवस्था की जाय जिनमें मुख्य-मुख्य चुने हुए आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी सरल ग्रन्थ हो। जो लोग वाचनालय में पढ़ने आयें उन्हें पढ़ने को प्रोत्साहित किया जाय। ऐसा करने से आर्यसमाजेतर लोगो मे भी हमारी जानकारी बढेगी तथा पुस्तकालयाध्यक्ष पद का भी उपयोग हो सकेगा जो इस समय निकम्मा पड़ा है।

इस प्रकार यदि हम लोगो मे स्वाध्याय की प्रवृत्ति पैदा हो जाय तो इसका हमारे जीवन तथा आर्यसमाज के सघटन पर भी व्यापक प्रभाव पडगा। ग्रन्थों की माग होने पर पुस्तकालयो में नये-नये ग्रन्थ मगाने पडेंगे। इससे हमारे लेखको और प्रकाशको को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। बिक्री अधिक होने पर नये नये ग्रन्थ लिखे जायगे व प्रकाशित होंगे। इससे हमारा साहित्य बढेगा जिससे आर्यसमाज की जडें मजबूत होंगी। अनवरत स्वाध्याय से मनुष्य में अपने कर्त्तव्य और लक्ष्य क प्रति जागरूकता हो जाती है। उसमें अपने सिद्धान्त के प्रति मरने मिटने की भावना आ जाती है। जहा यह भावना पैदा हुई वहा मनुष्य अपने अपने परिवार के तथा सामाजिक सगठन के निर्माण में लग जाता है। इसीलिये हमारे ऋषि-मुनियो ने स्वाध्यायान्मा-प्रमदितव्यम् का अमर सदेश दिया है। काश ! यदि हम इसे हृदयङ्गम कर सके।

★

जन-हित के लिए सरकार क्या कर रही है?

चमड़ा कमाने की ट्रेनिग

राजकीय प्रशिक्षण केन्द्र, बक्शी का तालाब, लखनऊ में खाल उतारने उसको साफ करने तथा अस्थिपजर के उपयोग की ट्रेनिग १५ जून से आरम्भ होगी। प्रशिक्षण की अवधि तीन महीने की होगी और चुने गये प्रशिक्षार्थियों मे से प्रत्येक को ४० रु० मासिक वृत्ति भी दी जायगी।

उम्मीदवारो को हिन्दी, उर्दू तथा अग्रेजी का सामान्य ज्ञान और चमड़े क व्यापार का कुछ व्यावहारिक अनुभव होना चाहिए। उम्मीदवारो की अवस्था ३१ मई, १९५९ को १८ वर्ष से कम नहीं होना चाहिए।

आयुर्वेद एवं तिब्बी साहित्य के हस्तलिखित ग्रन्थ

आयुर्वेदिक एव तिब्बी अकादमी, उत्तर प्रदेश ने आयुर्वेद तथा तिब्बी साहित्य के उच्चकोटि क हस्तलिखित ग्रन्थों को एकत्र करके उनके प्रकाशन की व्यवस्था करने का निश्चय किया है।

अकादमी क अध्यक्ष द्वारा इस सम्बन्ध में आज एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि जिन व्यक्तियो क पास तत्सम्बन्धी उच्चकोटि क हस्तलिखित ग्रन्थ और किसी कारणवश उन्हें प्रकाशित करवाने मे असमर्थ हों, वे ऐसी पाण्डुलिपियाँ आयुर्वेदिक एव तिब्बी अकादमी, उत्तर प्रदेश, तुलसीमार्ग, लखनऊ के पास भेजकर उनके विक्रय के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करें।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना

कानपुर के कर्मचारी राज्य बीमा कारपोरेशन की हाल की एक रिपोर्ट से पता चला है कि वर्ष १९५८-५९ मे राज्य के बीमाशुदा औद्योगिक कर्मचारियो को १४ लाख २५ हजार रुप का नकद भुगतान किया गया।

राज्य के ११ नगरो के १,७६,४६ औद्योगिक श्रमिक इस योजना में शामिल हैं, जिनके लिए मुफ्त चिकित्सा की व्यवस्था है, और बीमारी, काम करते समय चोट आ जाने तथा प्रसव-काल आदि के भत्ते दिये जाते हैं। एसे कर्मचारियों के आश्रितों को, जिनकी मृत्यु काम करते समय हो जाता है उन्हे पेंशनें भी इस योजना क अन्तर्गत दी जाती हैं।

खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड का पुनर्गठन

उत्तर प्रदेश सरकार ने श्री अर्य कर्ण कुमार, गाधी आश्रम सेवापुरी वाराणसी की अध्यक्षता में राज्य क खादी एव ग्राम उद्योग बोर्ड को पुनर्गठित किया है।

बोर्ड का काम खादी तथा ग्रामोद्योग विकास तथा खादी विकास की योजनाओं क सम्बन्ध में राज्य सरकार को सलाह देना होगा। साथ ही यह खादी तथा ग्रामोद्योग में लगे सगठनो और सस्थाओ को आर्थिक सहायता देने क बारे में भी सरकार को परामर्श देगा।

साधारणत हर तीन महीने में बोर्ड की एक बैठक हुआ करेगी।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
ज्येष्ठ १० शक १८८१
(३१ मई १९५९)

आर्य्यमित्र
उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य . ५९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

योजना और रोजगार

(श्री बी॰ एन॰ दातार, श्रम-नियोजन सलाहकार, श्रम मन्त्रालय, भारत सरकार)

आज जिससे भी बात कीजिए रोजगार की ही चर्चा करता है। संसद, विधान-सभाओं, मजदूर-संघों, मालिकों और विद्यार्थियों की बैठकों में सभी जगह इसी की चर्चा है। वास्तव में यह आज की सबसे जटिल समस्या है और दिन-दिन बढ़ती हुई आबादी ने इसे और भी जटिल बना दिया है। इस समस्या के कई पहलू हैं पर इसे ठीक से समझने के लिए हमें देखना होगा कि दूसरी योजनाओं में इस सम्बन्ध में कहाँ तक सफलता मिली है। इससे हमें तीसरी योजना बनाने में भी सहायता मिलेगी।

रोजगार की समस्या बहुत बड़ी है और इसका एकदम सही अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। एक तरह से देखा जाए तो यह जरूरी भी नहीं है क्योंकि इसे पूरी तरह सुलझाने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन ही नहीं हैं। रोजगार की समस्या को किसी एक योजना में पूरी तरह सुलझाया भी नहीं जा सकता। इसके लिए निरन्तर प्रयास की आवश्यकता होगी।

रोजगार की स्थिति

प्रारम्भ में दूसरी योजना पर निजी क्षेत्र की लागत को छोड़कर ४८०० करोड़ रु॰ लगाये जाने की बात थी। यह आशा थी कि इसमें लगभग १ करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा। इसमें से लगभग २० लाख लोगों को खेती बाड़ी के कामों में और ८० लाख को दूसरे कामों में लगाये जाने की उम्मीद थी। यदि इतने लोगों को दूसरी योजना के दौरान में रोजगार मिल भी जाता है तो भी बेरोजगारों की संख्या में कोई परिवर्तन नहीं होता क्योंकि बढ़ती हुई आबादी के साथ बेरोजगारों की तादाद भी बढ़ती जा रही है। इसके अतिरिक्त आतरिक साधनों का पूरा उपयोग न हो पाना कीमतों में वृद्धि और विदेशी मुद्रा की कमी भी इसके कारण हैं। किसी न किसी रूप में इन सब बातों का रोजगार स्थिति पर प्रभाव पड़ता ही है। कामदिलाऊ दफ्तरों के रजिस्टरों को देखने से पता चलता है कि १९५८ मे २ लाख से भी अधिक बेकारो की वृद्धि हुई है।

अब दूसरी योजना में ३०० करोड़ रु॰ कम लगाया जाएगा। इससे कुछ लोग रोजगार से वंचित रह जाएंगे, जिन्हें पहले काम मिलने की आशा थी। पर चीजो की बढ़ी हुई कीमतो को देखते हुए यह स्पष्ट है कि यदि योजना में पूरा धन लगाया जाता तो भी लगभग १० लाख व्यक्तियो को रोजगार न मिल पाता। इस समय ये दोनो कारण मौजूद हैं। अत खेती बाड़ी के अलावा दूसरे कामों में अब ८० लाख लोगो के स्थान पर ६५लाख लोगों को ही रोजगार मिलेगा। खेतीबाड़ी के काम की भी इसी प्रकार कमी होगी। दूसरी योजना के पहले ३ सालो में ३० लाख लोगों को ही रोजगार दिया जा सका है। इस प्रकार योजना के शेष दो वर्षों में इससे अधिक लोगो को काम देना बाकी रह जाता है।

आयात नियन्त्रण का प्रभाव

जितने कच्चे माल, रसायनो, मशीनो आदि को देश में जरूरत होती है, उन्हें विदेशी मुद्रा की कमी के कारण बाहर से नहीं मगाया जा सका। इससे कारखानो में काम की कमी हो गयी। आयात में कमी होने के कारण कुछ उद्योगो में जो बेकारी बढ़ी हे उसके सम्बन्ध में सरकार के पास कुछ शिकायतें आई हैं। हालाकि ये शिकायतें सही हैं पर इनकी इतनी अहमियत नहीं कि इनकी बिना पर सरकार अपनी आयात नीति को एकदम बदल दे। थोड़े समय तक व्यापार के लिए माल मिलने में कमी और इसे पूरा करने के लिए देश के उद्योगों की वृद्धि इन बातों का रोजगार की स्थिति पर असर पड़ता है। मालिक अच्छे दिनों की आशा में अपने पुराने कर्मचारियों को नहीं हटाता, हालांकि नये लोगों को भर्ती करने में वह सावधानी बरतता है।

भावी सम्भावनाएं

पहली योजना के आखिरी दो वर्षों में अधिक लोगो को काम मिला था। इस दौरान में योजना पर पहले से निर्धारित राशि से कहीं अधिक रुपया लगाया गया था। दूसरी योजना में चालू होने वाले कल-कारखानों की मशीनें पहले ही मंगाई जा चुकी हैं। इससे रोजगार की स्थिति कुछ सुधरेगी तो पर इस समस्या का हल नहीं होगा। क्योंकि जितने लोगों को काम मिलता है, उससे कहीं अधिक नये लोग काम की माग करने लगते हैं।

शिल्पिकों की कमी

देश में नये नये उद्योग और कारखाने चालू करने के लिए हमें पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित और अनुभवी शिल्पिक नहीं मिलते। कामदिलाऊ दफ्तर हमेशा इंजीनियरों, डाक्टरों और परिचारको, स्टेनोग्राफरो, मिस्त्रियो और मोटर मैकनिकों आदि की कमी की सूचना देते हैं। शिल्पिकों की कमी के कारण बहुत से कारखाने खुलने से रह जाते हैं और इस प्रकार इन कारखानों में जिन और लोगों को काम मिलता, वे भी बेकार पड़े हैं। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि तीसरी योजना बनाते समय शिल्पिकों की कमी को पूरा करने का विशेष ध्यान रखा जाए। इसके लिए शिल्प-शिक्षा का विस्तार और शिक्षा-प्रणाली में परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। खुशी की बात हे कि सरकार इसके लिए काफी काम कर रही है। ★

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्यसमाज दीवानहाल का वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन श्री लाला रामगोपाल जी शालवालों की अध्यक्षता में निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—श्री ला॰ रामगोपाल जी शालवाले, उपप्रधान—श्री लाला बालमुकुन्द जी आहूजा, श्री ला॰ गिरधारी लाल टंडा, श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, श्री चरणदास जी पुरी एडवोकेट, श्रीमती विद्यावती जी। मन्त्री—श्री बाबू राजसिंह जी, बी॰ ए॰, एल॰-एल॰ बी॰।

जोधपुर में आर्य-वीर दल शिक्षण-शिविर

सार्वदेशिक-आर्य-वीर दल, की कार्यकारिणी के निश्चयानुसार प्रान्तीय आर्य-वीर दल राजस्थान का शिक्षण-शिविर दिनांक १४ जून १९५९ से २१ जून १९५९ तक श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान संचालक, के संचालन में जोधपुर में लग रहा है। इस शिविर में शारीरिक, बौद्धिक व राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का प्रशिक्षण दिया जायगा। ईसाइयों के राष्ट्र-विरोधी कार्यों को रोकने के लिये विशेष शिक्षण दिया जायगा। शिविर में आर्य नेताओं के भाषण व उपदेश आदि का आयोजन किया जायगा। शिविर में सम्मिलित होने के लिए प्रवेश पत्र, नियमावली आदि कार्यालय से शीघ्र प्राप्त करलें।

[सुखदेव] [रामस्वरूप आर्यप्रेमी]
संचालक मन्त्री

प्रान्तीय आर्य वीर दल, राजस्थान
का॰ आर्यसमाज सरदारशहर, जोधपुर

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख्य पत्र [विदेश में

एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार आषाढ़ ७ शक १८८१, आषाढ़ कृ० ८, वि० २०१६, २८ जून, १९५९ ई० [१२शिलिंग

बड़ों की बड़ी बातें

प्रार्थना

प्रार्थना धर्म का निचोड़ है। प्रार्थना याचना नहीं है। यह तो आत्मा की आकांक्षा का नाम है। प्रार्थना दैनिक दुर्बलताओं की स्वीकृति है। प्रार्थना हृदय के भीतर चलने वाले अनुसन्धानों का नाम है। यह आत्म-शुद्धि का आह्वान है। यह विनम्रता को निमन्त्रण देना है यह मनुष्यों के दुख में भागीदार बनने की तैयारी है।

—महात्मा गांधी

गति

अपनी ही धुरी पर चक्कर काटना मानवीय आत्मा के लिए एकमात्र गति नहीं है। इसे एक "अक्षय प्रकाश सूर्य के चारों ओर भी प्रदक्षिणा करते जाना है।

अपने निजी स्वरूप की चेतना को पहिले तुम अपने अन्दर प्राप्त करलो, फिर विचार करो और कर्म करो। प्रत्येक जीवित विचार एक तैयार हो रहा संसार है, प्रत्येक वास्तविक कर्म एक व्यक्त रूप में आया हुआ विचार है।

—अरविन्द

पवित्रता की खोज

संसार में फैले पापाचार से विरक्त हो एक व्यक्ति पवित्रता की खोज में किसी जगल में पहुँचा। वहाँ एक पक्षी ने बीट करदी। खिन्न मन स्नान करने जब वह नदी में पहुँचा, तो छोटी मछलियों को बड़ी मछलियाँ निगलती दीख पड़ी। वह काँप उठा—"ऐसी सृष्टि मे जीवित रहकर क्या लाभ ?"

पर जब वह चिता रचाकर उसमे प्रवेश करने हो जा रहा था कि एक अन्य व्यक्ति ने उसे रोका। सारी बातें सुनकर उसने कहा—"तुम्हारा यह गन्दा शरीर जब जलेगा, तो कितनी दुर्गन्ध फैलेगी ? पास पड़ोस वाले उसे कैसे सह सकेंगे ? पवित्रता की खोज में निकला व्यक्ति खीज कर घर वापस आ गया—"इस संसार मे न जीने की सुविधा है न मरने की !

—विनोबा

फूल

देखता हूँ, लोग खिले फूल तोड़कर उन्हें प्रभु के चरणों में समर्पित करते हैं। पर सोचता हूँ कि क्या वह खिला पुष्प वहा डाली पर समर्पित नहीं हो चुका है ? प्रभु के विराट् शरीर पर वह आभूषण बनकर पहिले ही से सुशोभित नहीं है क्या ?

—रामकृष्ण परमहंस

साधनों की शुद्धता

जैसा साधन, वैसा साध्य। साधन बीज है और साध्य वृक्ष। इसलिए जो सम्बन्ध बीज और वृक्ष मे है वही सम्बन्ध साधन और साध्य में है। शैतान की उपासना करके मैं ईश्वर भजन का फल नहीं पा सकता। हम तो जैसा करते हैं वैसे ही फल पाते हैं। यदि कोई साधनों की शुद्धता का ध्यान रखे, तो साध्य अपने आप ही शुद्ध रहेगा। जिस अनुपात में साधन का अनुष्ठान होगा, ठीक उसी अनुपात में ध्येय प्राप्ति होगी।

—महात्मा गांधी

समय की पाबन्दी

रेगिस्तान का सफर है और पानी है आधा मशक। इसलिए इस बात का ख्याल तो रखना ही पड़ेगा कि पानी छलक-छलक कर बालुका राशि में विलीन न हो जाए। यही हाल है हमारे जीवन का। समय की पाबन्दी के पीछे समय बरबाद करना केवल उन्हें ही शोभा देता है जिनके पास उसका प्राचुर्य है। देवताओं के पास अनन्त समय है, तो सूरज भी समय से उगता-डूबता है और चांद भी, लेकिन मनुष्य के पास इतना समय है कहा कि उसकी पाबन्दी के पीछे वह परेशान होता फिरे।

अमरावती का यदि कोई हमसे पूछ बैठेगा कि संसार में आकर तुमने क्या क्या किया, तो क्या हम यह जवाब देंगे कि घड़ी मात्र के कांटे पर नज़र रखने के कारण उस ओर दृष्टि डालने का हमें अवसर ही नहीं मिला ?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क २५

सामयिक समस्याएँ

आर्यसमाज से आशायें

[श्री बाबू गुलाबराय जी एम० ए०, आगरा]

आर्यसमाज से भारत के बौद्धिक वर्ग को जो आशायें हैं आदरणीय बाबूजी ने इस लेख में उनका संकेत किया है। इससे जो आशा की जाती है उसमें सफल होने का हमें प्रयत्न करना चाहिए। अनुसंधान-कार्य, आहार-शुद्धि, शील, शिष्टाचार, नैतिक जीवन, भ्रातृत्व की वृद्धि और साहित्य-निर्माण आदि अधूरे कार्यों को पूर्ण कर हम राष्ट्र को सही नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। इस दिशा में संकेत देकर बाबूजी ने हमें सावधान किया है और कर्त्तव्य-मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। आशा है हम आशाओं को पूर्ण करने वाले बन सकें। —सम्पादक

यह प्रायः सर्वमान्य है कि आर्यसमाज ने जन-जागरण में एक सराहनीय कार्य किया है। यद्यपि आर्यसमाज राजनीति के क्षेत्र में सीधा नहीं उतरा तथापि उसने राजनीतिक जाग्रति की एक भूमिका उपस्थित करदी थी। उसने सामाजिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई, स्त्री-शिक्षा और समान अधिकारों का प्रचार किया। संस्कृत और हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन को प्रोत्साहन दिया। स्वदेशी का प्रचलन बढाया। सरल और त्यागमय जीवन की ओर लोगों को प्रेरित किया। धर्म के बौद्धिक स्तर पर मूल्यांकन करने पर बल दिया और अंग्रेजियत की बाढ़ में बहते हुए भारतीय संस्कृति के गढ को कायम रखने का उद्योग किया। यह सब बाते राष्ट्रीयता के लिए सहायक हुई।

आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज के बढ़ते हुए बुद्धिवाद ने एक मानसिक उथल-पुथल पैदा करदी। भुसी के साथ-साथ अन्न के कण भी फटक दिए गए। एक अविश्वास का वातावरण पैदा हो गया और कुछ कटुता भी उत्पन्न हो गई किन्तु जो जन जाग्रति हुई वह कम मूल्यवान न थी। प्राचीन प्रथाओं के अध्ययन के साथ हृदय मन्थन हुआ। सनातन धर्म ने भी बुद्धिवाद का आश्रय लिया। खण्डन-मण्डन का कार्य कम हुआ। अंग्रेजी शिक्षा का बुद्धिवाद आर्यसमाज से भी चार कदम आगे बढ गया। आर्यसमाज के प्रारम्भिक दिनों का उत्साह यद्यपि पीछे कुछ मन्द पड गया तथापि शिक्षा-प्रसार और सामूहिक संध्या, हवन आदि का कार्य चलता रहा। आर्यसमाज को अब भी बहुत सा कार्य करना बाकी है।

अनुसन्धान और प्रचार-कार्य—प्रचार-कार्य किया जाय किन्तु उसके साथ जनता को इस योग्य बनाया जाय कि वह स्वयं वेद-शास्त्र तक अपनी पहुँच कर सके और सन्मार्ग का स्वयं निर्णय कर सके। 'बाबा वाक्यं प्रमाणं' की जिस प्रवृत्ति का आर्यसमाज ने खण्डन किया है उसका वह स्वयं पोषण न करे। अंग्रेजों की स्थापित कुछ मान्यताओं का, जैसे आर्य लोग बाहर से आए, वैज्ञानिक अध्ययन किया जाय और उसमें यदि कुछ खोखलापन हो तो उसका युक्ति-संगत उद्घाटन किया जाय। वेदों और शास्त्रों का सांगोपांग अध्ययन कराया जाय और अध्यापन में उदार दृष्टि को अपनाया जाय। आर्यसमाज का सन्तों की भांति हंस-वृत्ति अपनाना चाहिए और 'परिहरि बारि विकार' दुग्ध को पी लेना। वांछनीय होगा। थोडे पानी के पीछे उसके साथ के दुग्ध का परित्याग न किया जाय। जिस उदार दृष्टि से वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या की जाती है उसीसे पुराणों की भी व्याख्या की जा सकती है। पुराणों के अलंकारत्व और काव्यत्व के पीछे जो सार हो उसको ग्रहण किया जाय। इस सम्बन्ध में दो मत हो सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि सब लोग हंस-वृत्ति धारण नहीं कर सकते हैं। पानी अपना विकार करेगा ही। किन्तु प्राचीन सामग्री की आर्यसमाज द्वारा और खोज-खखोल की आवश्यकता है। मान्य धारणाओं को पुष्ट करने के लिए अध्ययन न हो वरन् अध्ययन इसलिए हो कि मान्य धारणाओं की परीक्षा हो सके और यदि उनमें [illegible] भी [illegible] वह भी सावधानी के साथ किया जावे। वैदिक [illegible]। उसमें बहुत खोज की आवश्यकता है।

मांस-निषेध और भोजन की शुद्धता—आर्यसमाज अपने प्रचार-कार्य में मांस-निषेध के कार्यक्रम को मुख्यता दे सकता है। आज कल अनुकरणात्मक ढंग पर बिना प्रचार के ही मांस-मछली और अण्डों का प्रचार हो रहा है। पाश्चात्य ढंग के विद्वान मांस को वैदिक भोजन बतलाते हैं, इसका विद्वत्ता-पूर्ण ढंग से खण्डन किया जाय। चिकित्सा-विज्ञान के आधार पर मांस-भक्षण का निषेध किया जावे। भोजन के सम्बन्ध में जाति-पांति के बन्धनों में जो शैथिल्य आया है वह तो स्वागत योग्य है, वर्णाश्रम धर्म का विधिवत पालन हो किन्तु जाति-पांति का आडम्बर और दूसरों में हीनता उत्पन्न करने वाला आतंकवाद सक्रिय रूप से कम किया जावे। छूआ-छूत का भूत भगाना श्रेयस्कर होगा, किन्तु उसके साथ सफाई और शुद्धता में जो शैथिल्य आ गया है वह चिन्त्य है। बिना नहाए या गन्दे कपडे पहने या बिना मुंह हाथ धोये खाने के अभ्यास का विरोध होना चाहिए। खान-पान की भारतीय पद्धति को प्रोत्साहन देना चाहिए। चाय की अपेक्षा दुग्ध का प्रचार बढ़ाना चाहिए। राष्ट्र-निर्माण और जन-स्वास्थ्य निर्माण की सभी बातों पर बल दिया जाना चाहिए। शारीरिक श्रम का गौरव बढ़ाया जाय।

युक्ताहार विहार और संतुलित जीवन—डाक्टरों के बतलाए हुए संतुलित भोजन के अतिरिक्त हमको सारे जीवन में संतुलन लाने की आवश्यकता है। बौद्धिकता और भावुकता में संतुलन लाना हमारी पहली आवश्यकता है। आर्य-समाजी भी भावुकता से प्रेरित हो बुद्धि का संतुलन खो देते हैं। बहुत सी चीजें जिन्हें वे वैज्ञानिक कहते हैं वैज्ञानिक-पद्धति पर सिद्ध नहीं की जाती हैं। उसके सम्बन्ध में अपनी अज्ञता स्वीकार करना कहीं श्रेयस्कर है। विज्ञान कोई छू-मन्तर नहीं जो विज्ञान की दुहाई देते ही या ऋणात्मक और धनात्मक बिजली का नाम लेते ही कोई चीज वैज्ञानिक सिद्ध हो जाय। उसके लिए विधिवत प्रयोग और अनुसन्धान आवश्यक है। धर्म, अर्थ काम का संतुलन जीवन की दूसरी आवश्यकता है। आर्यसमाज को युक्ताहार, विहार, युक्त स्वप्नावबोध के योगमय प्रचार करने की आवश्यकता है। श्रीमद्भग्वद्गीता को आर्यसमाजी दृष्टिकोण से चाहे आर्ष ग्रन्थ न माना जाय, यह अपनी खुशी की बात है किन्तु युक्ताहार-विहार का उपदेश सर्वथा ग्राह्य है। हमको सादा जीवन का प्रचार अवश्य करना चाहिए किन्तु सादगी को शुष्कता की हद तक न पहुँचा देना चाहिए। धर्म के अविरुद्ध अर्थ और काम का अनुशीलन करना चाहिए। जीवन को धार्मिक और नैतिक-ज्ञान के अतिरिक्त साहित्य, संगीत और कला से भी सम्पन्न बनाने का उपदेश देना चाहिए जिससे हम पुंछ-विषाणहीन पशु बनने से बचे रहें।

शील-विनय और शिष्टाचार—दूसरों के साथ सद्व्यवहार, सदाचार का एक आवश्यक अङ्ग है। विद्या बिना विनय के शोभा नहीं देती है। 'विद्या विनये न शोभते।' श्रीमद्भग्वदगीता में भी ब्राह्मण के विशेषणों में 'विद्या विनय सम्पन्नों' कहा गया है। शील को दैवी गुणों में माना गया है। शील के साथ स्वभाव की कोमलता, शालीनता और निरभिमानता लगी हुई है। शील में चित्त की प्रसन्नता और उदारता भी शामिल है। आदमी चाहे जितना कर्मनिष्ठ हो उसे उद्दण्ड न होना चाहिए। समाज के सुचारु रूप से चलाने के लिए व्यवहार में शील और विनय आवश्यक हैं। मधुर भाषण शील का आवश्यक तत्व है। 'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात' का पाठ घर-घर में पढाना चाहिए। मधुर और शिष्टता-पूर्ण बात जीवन की कटुता को बहुत कुछ दूर कर देती है। शिष्टाचार बनावटी न होना चाहिए वरन् आत्मा की कोमलता और चित्त की प्रसन्नता से किया जावे। घरों में ऐसा प्रसन्न वातावरण उत्पन्न करना एक बड़े राष्ट्र-निर्माण का कार्य है।

हिन्दी-प्रचार—हिन्दी-प्रचार का आर्यसमाज ने पर्याप्त कार्य किया है किन्तु अब भी बहुत कुछ जरूरत है। लोग अंग्रेजी ही बोलने में अपनी शान समझते हैं और अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करते हैं। साइन बोर्डों में अभी हिन्दी का चलन दिल्ली जैसे बडे शहरों में कम हुआ है। हिन्दी में उच्चस्तरीय पुस्तकें लिखाने में सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए। हिन्दी को अभी विचारात्मक साहित्य की आवश्यकता है। उसकी पूर्ति में योग देना आर्यसमाज का काम है। भारतीय विचारधारा को अपनाते हुए अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र पर पुस्तकें लिखना वांछनीय होगा। भारतीय विचारधारा का चाहे पोषण न भी हो, उसका परिचय तो अवश्य ही करा देना चाहिए। संस्कृत साहित्य और दर्शनशास्त्र के ग्रन्थों के अनुवाद को प्रोत्साहन देना आवश्यक है।

नैतिक स्तर को ऊंचा करना—सरकार के बहुत से प्रयत्न असफल से है इसका मूल कारण यही है कि जनता में नैतिक गिरावट है। जनता में साधारण

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वैदिक राष्ट्र-गीत

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूवुः ।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत् सा नो भूमि-र्गोष्वप्यन्ने दधातु ॥४॥

(रुचिरा छन्द)

जिस पृथ्वी में शिल्प चातुरी, निपुण कृषक बहुरूप हुए ।
जिसकी चारों दिशि विदिशा में, अतिशय अन्न अनूप हुए ॥
जो धरती सब प्राणि वर्ग को, बहु प्रकार से धरती है ।
करे अन्न उत्पन्न वही भू, जो नित गोहित करती है ॥

Whose, the earth's (are) the four quarters, on whom food ploughings came into being, who bears manifoldly what breathes, what stirs-let that earth set us among kine also in inexhaustileness.

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम. ए



लखनऊ—२८ जून १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

प्रजातन्त्र कसौटी पर

केरल-संकट क्यों और कैसे की मीमांसा न करते हुए हम यहाँ उसकी सैद्धान्तिक समीक्षा करना चाहते हैं

केरल की जनता ने भारतीय संविधान के अनुसार मतदान कर अपने लिये सरकार का निर्माण किया। अब जो सरकार बनी हुई है उसे बदलने का वैधानिक उपाय अविश्वास-प्रस्ताव ही है। क्या किसी प्रकार की सीधी कार्यवाही करके जनता वहाँ की सरकार को बदलने का प्रयत्न करती है तो क्या उसे वैधानिक माना जायगा? ये और इसी प्रकार के अनेक प्रश्न है जो केरल-संकट के मन्थन से उत्पन्न हो रहे हैं।

यदि सीधी कार्यवाही का सिद्धान्त केरल के लिये सही माना जा रहा है तो वह भारत के अन्य प्रान्तों में उसी प्रकार सही क्यों नहीं हो सकता?

साथ ही एक बात साम्यवादी दल के लिए भी स्पष्ट है कि वह प्रजातन्त्र और संविधान की सत्ता को स्वीकार करने लगा है और केरल में अपनी सरकार के औचित्य के लिये संविधान और प्रजातन्त्र की दुहाई दे रहा है। ऐसी अवस्था में साम्यवादी दल भारत के अन्य राज्यों में अपनी हिंसात्मक तोड़-फोड़ नीति को उचित कैसे बतला सकता है? इस प्रकार इस संकट ने भारत के सभी राजनैतिक दलों के सम्मुख प्रजातन्त्र के वास्तविक स्वरूप की रक्षा का दायित्व उपस्थित कर दिया है। जो बात एक दल की सरकार के लिए उचित नहीं वह बात दूसरे दल की सरकार के लिये दूसरे स्थान पर कैसे उचित हो सकती है, इस आधार केरल में गोली काण्डों का कैसे समर्थन किया जा सकता है और जब वहाँ के प्रधान मन्त्री जांच कराने के लिये भी तैयार न हों?

जहाँ तक शिक्षा विधेयक की धाराओं का प्रश्न है उन्हें राष्ट्रपति और केन्द्र का समर्थन प्राप्त है तब समझ में नहीं आता कि शिक्षा-विधेयक की ओट में शिकार क्यों खेला जा रहा है? यह नहीं हो सकता कि जिन धाराओं और सिद्धान्तो को हम बनायें वे तो ठीक दूसरा बनाये वे गलत—

केरल शिक्षा विधेयक की धाराओं के शब्द इस प्रकार है पाठक निर्णय करें—

१—स्कूलों का प्रयोग केवल शिक्षा सम्बन्धी कार्यों के लिये किया जावे। उन्हें सरकार के विरुद्ध आन्दोलन का केन्द्र न बनाया जावे ताकि वे राजनैतिक अखाड़े न बनने पावे।

२—स्कूलों के विद्यार्थी अथवा अध्यापक किसी हड़ताल में न तो सम्मिलित हों और न ही किसी दूसरे को उसमें शामिल होने की प्रेरणा करें।

३—किसी भी स्कूल में किसी भी विद्यार्थी को उसके अपने धर्म से भिन्न दूसरे धर्म की शिक्षा लेने पर बाधित न किया जावे।

४—किसी भी स्कूल में किसी भी विद्यार्थी के धर्म को बदल कर उसे दूसरे धर्म को ग्रहण करने के लिये बाध्य न किया जा सकेगा।

इन धाराओं पर धर्म निरपेक्ष राज्य के राजनैतिक दलों को किस प्रकार आपत्ति हो सकती है यह किसी प्रकार बुद्धि में नहीं आता।

जहां तक वर्तमान संकट का प्रश्न है वह राजनैतिक कम साम्प्रदायिक प्रश्न अधिक है। दुर्भाग्य है भारत का कि जो दल सम्प्रदायवाद के नाश के नारे लगाने में अपने गले फाड़ते नहीं अघाते आज साम्प्रदायिक हितों के लिए राजनीति का दुरुपयोग कर रहे हैं। ईसाई मिश्नरियों के धार्मिक साम्राज्य में इस विधेयक से आघात पहुँचता है और असाम्यवादी दलों में ईसाइयों का बाहुल्य है। इन प्रतिबन्धों से नवीन ईसाई बनाना सम्भव न होगा यह मुख्य बाधा है जो संकट की पृष्ठभूमि में है।

साम्यवादी सरकार और उसकी बहुत सी अनुचित नीतियों का समर्थन नहीं किया जा सकता पर यदि साम्यवादी भी कोई अच्छा काम करे तो उसे अस्वीकार कैसे किया जा सकता है। वास्तव में प्रश्न साम्प्रदायिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी दृष्टियों से उलझा हुआ है फिर भी उसका सही विश्लेषण किया जाना चाहिए और यदि राजनैतिक स्वार्थ-पूर्ति के लिये साम्यवादी दल ने सत्ता का दुरुपयोग किया है तो उसका जन-जागृति द्वारा निराकरण किया जाना चाहिए। सीधी कार्यवाही का समर्थन, उसके प्रति मौन धारण या अप्रत्यक्ष समर्थन साथ ही राजनैतिक उद्देश्यों के लिये साम्प्रदायिक दलो से गठबन्धन समस्या के सही समाधान नहीं हैं। आज केरल में जनता की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए जो नीति अपनायी गयी है वह प्रजातन्त्र के भविष्य के लिये एक संकट है। केरल-संकट के परिणाम भारत में प्रजातन्त्र के भविष्य का निर्णय करेंगे।

शिक्षा में धार्मिक प्रचार-स्वातन्त्र्य सम्बन्धी आर्यसमाज की नीति के आधार पर यहाँ हमने विधेयक की धाराओं की आलोचना नही की है। वह फिर करेंगे। हमारा अभिप्राय इस समय यही है कि पाठक समझलें कि यह संकट दोनों पक्षों के नग्न स्वरूप को प्रकट कर रहा है और उसके भविष्य के लिये स्थायी परिणाम निकलेंगे।

सम्प्रदाय-वृद्धि के लिये ईसाई मिश्नरियों द्वारा दुर्भिक्ष का उपयोग और हमारा कर्त्तव्य

धर्म-प्रचार के लिये मानवता के संकट का उपयोग करने में भारत के ईसाई मिश्नरी कभी अवसर नहीं चूकते। उनके सारे मिश्नरी प्रचार-कार्य का केन्द्र-विन्दु अपनी समुदाय-वृद्धि ही है। मानव-सेवा और दया की भावना गौण, आर्यसमाज ही नहीं, म० गांधी तक ने मिश्नरियों की इस दूषित मनोवृत्ति की आलोचना की थी। आज भारत सरकार की धर्म निरपेक्ष नीति के कारण अंग्रेजी शासन काल से भी अधिक तीव्रता और षड्यन्त्रों द्वारा ईसाई मिशन अपनी योजना-पूर्ति में संलग्न है।

ईसाई मिशन गरीब और अशिक्षित क्षेत्र ही को चुनता है और कहा जाता है कि वहां सेवा और विकास-कार्य ही उसका उद्देश्य है पर आज तक के मिश्नरी इतिहास और कार्यकलाप से उसके मन्तव्य सदैव स्पष्ट होते रहे हैं।

अभी नवीनतम समाचारो से ज्ञात हुआ है कि दुर्भिक्ष पीड़ित क्षेत्रो में सहायता कार्य धर्म परिवर्तन की भावना के साथ व्यापक पैमाने पर किया जा रहा है।

"रांची जिले के दुर्भिक्ष पीड़ित क्षेत्र में ईसाई मिशन जो सहायता पहुँचा रहा है उसके फलस्वरूप बहुत बड़ी संख्या में जन जातियो के लोग ईसाई बन चुके हैं।

"खूंटी-अबर क्षेत्र के कई ग्रामों में परिवार के परिवार गेहूँ आदि के प्रलोभन मे पड़कर ईसाई बन चुके हैं। बनकुली और पिपराटोली में ६ परिवारों ने अपनी भूख की ज्वाला शान्त करने के लिये धर्म त्याग दिया। गत वर्ष भी भुखमरी के कारण एक दिन में ही २०० मुंडा उराव वनगाव में ईसाई बन गये थे।

इस वर्ष भी खूंटी आंचल में ईसाई धर्म प्रचारक भोजन के साथ उन लोगों को अन्य प्रलोभन भी देते हैं। हिन्दू धर्म मानने वाले वनवासियों ने सरकार तथा सार्वजनिक संस्थाओं से सहायता की अपील की है पर अभी उनको किसी की सहायता नहीं मिली है। आगामी फसल के लिये बीज का भी उन लोगों के पास सर्वथा अभाव है।"

ऐसा कौन स्वधर्म स्वजाति प्रेमी न होगा जो भारत में अपने भाइयों की इस दयनीय संकट कालीन अवस्था में दुखी न होगा। केवल दुख से ही तो कुछ नहीं हो सकता हमें दूसरों की सहायता के लिये कर्मठ, सक्रिय और सजग होकर कार्य करना होगा। हम — नें ही बनाते रहें और विधर्मी अपने जाल में सफल मनोरथ हो जायें हमारे लिये इससे अधिक शर्म की दूसरी बात कौन सी हो सकती है? हम स्थिति के निराकरण के लिये बिहार सरकार, भारत सरकार और आर्यजगत् के सम्मुख निम्न सुझाव रखते हैं, आशा है उन पर सम्बन्धित पक्ष आचरण करेंगे।

(१) बिहार सरकार अविलम्ब रांची के खूंटी क्षेत्र को दुर्भिक्ष क्षेत्र

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

घोषित कर उसके निराकरण के लिये उस क्षेत्र के निवासियों को अन्न की सहायता प्रदान करे।

(२) आगामी फसल के लिये बीज की मुफ्त व्यवस्था सरकार द्वारा की जाय।

(३) आर्यजगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा अविलम्ब उस क्षेत्र में अकाल पीड़ित सहायता केन्द्र खोलकर प्रचार कार्य के अतिरिक्त सहायता, सेवा का कार्य आरम्भ कर दे। बिहार के अतिरिक्त अन्य सभायें भी इस कार्य में यथा शक्ति सहायता दें।

(४) आर्यजगत् तथा सभी धर्म प्रेमी भाईयों से अपील की जाय कि वे इस मानवता रक्षक कार्य में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

आशा है भाषणों की जगह इस दिशा में रचनात्मक कार्य अपना कर समस्या का सामना किया जायगा। ★



शाहपुरा-नरेश महाराज श्री सुदर्शन देवजू

(आर्यसमाज, शाहपुरा की हीरक जयन्ती महोत्सव के समाचार पृष्ठ ९-११ पर देखिए)

भारतीय राजनीति के धूमकेतु

मा० तारासिंह हर समय अपना बेसुरा राग अलाप कर शान्त और सौम्य वातावरण को दूषित करते रहते हैं।

पजाब और दिल्ली के गुरुद्वारों के प्रश्न को लेकर सिक्ख भाइयों में आपसी संघर्ष और कटुता उत्पन्न करके सम्प्रति वे उत्तर प्रदेश आदि का दौरा कर रहे हैं और वहा स्थान स्थान पर भाषणों में उन्होने अपने को अल्प सख्यक मोर्चे के नेता क रूप में पेश किया है। नैनीताल की ठण्डी हवा में भी उनक दिमाग की गर्मी शान्त न हो सकी और उन्होने भारत के बहुसख्यको के विरुद्ध विष-वमन और अनर्गल प्रलाप किया, साथ ही मुसलमानों, ईसाइयों से मिलकर मोर्चा लगाने की अपील की।

जहा तक भारतीय सविधान और उसक अनुसार बनी हुई वर्तमान सरकार का सम्बन्ध है उसमें अल्प सख्यको के अधिकार अनुपात से अधिक सुरक्षित हैं। अगर शिकायत है या हो सकती है तो वह बहुसख्यको को क्योंकि उनक अधिकारों मे कमी आती अल्प सख्यक सरक्षण के नाम पर सवैधानिक समता मे विषमता उत्पन्न होती है।

यद्यपि वे मुसलमानो की सहायता क हिमायती बन रहे हैं पर उनकी ये बात बे सिर पैर की हैं और वे येन कन प्रकारेण सरकार को परेशान करने में लगे हुए हैं। सरकार की तुष्टीकरण और भयभीत रहने की नीति से ही उनका दुस्साहस बढ़ रहा है। हम आशा करते हैं कि सवैधानिक अधिकारों के रहते हुए इस प्रकार के आन्दोलन को सरकार सहन न करगी। यदि सरकार ने इस मामले म मास्टर जी को मुह लगाया तो सरकार एम चक्कर में फँस जायगी जिसमें से निकलना उसक लिये कठिन हो जायगा। ★

नया विरोधी दल

प्रजातन्त्र दो समान दलों के शक्ति सतुलन से निखरता और आगे बढ़ता है। एकछत्र राज्य करने वाले दल का बहुमत निरकुशता को जन्म देता है। उसका जनतन्त्रीय प्रतिरोध ही उसे सही रास्ते पर ला सकता है। इस दृष्टि से भारत में बलशाली विरोधी दल की आवश्यकता बनी हुई है। साम्यवादी दल प्रजा समाजवादी दल जनसघ आदि दल अपनी पृथक नीतियों के कारण बहुमत का सही विरोध नहीं कर पाते हैं। अब भारत के कूटनीतिज्ञ श्री राजगोपालाचार्य ने स्वतन्त्र दल की स्थापना की है। नहीं कहा जा सकता कि भारतीय राजनीति पर इस दल के दूरगामी प्रभाव क्या होंगे, फिर भी हम एक सम्मति अवश्य देना चाहते है कि जिस दल के नेता भारत की बहुमत भाषा को भारत की राष्ट्रभाषा स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं हैं और अंग्रेजी की मानसिक दासता से मुक्त नहीं हुए हैं, उत्तर दक्षिण की भाषा में जहा भारत की समस्या पर विचार किया जाता हो उस दल को भारतीय जन-मानस में स्थान मिल सकेगा इसकी बहुत कम सम्भावना है। जिस भाषिक प्रश्न को आधार बनाकर दल का निर्माण किया जा रहा है उससे जनता प्रभावित अवश्य होगी पर भाषा का प्रश्न सफलता में पर्याप्त रूप से बाधक बनेगा।

यह ठीक है कि सरकार की नीतियों की पर्यालोचना समालोचना होनी चाहिये। इस दृष्टि से इस नये दल को हम उत्सुकता की दृष्टि से देखते हैं। दल की नीति अभी अस्पष्ट है इसलिये उसके सिद्धान्तों की समालोचना अभी असामयिक होगी। समय आने पर उस प्रश्न पर विचार करेंगे।

स्वतंत्र भारत में धर्म-प्रचार में पुलिस द्वारा लाठी चार्ज व गोली चार्ज करने की धमकी!

[आशा है सरकार इस अनुचित हस्तक्षेप और धमकी की जाच करावेगी और दोषी व्यक्तियों को दण्ड देकर भूल का परिमार्जन करेगी। हम स्मरण करा देना चाहते हैं कि आर्यसमाज अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा। सम्पादक]

आर्यसमाज देवरी प्रहलादपुर सोरों (एटा) का पाँचवा वार्षिकोत्सव दिनाक ८, ९ जून १९५१ में हो रहा था। ९ जून १९५१ को ब्रह्मचारी जगदीशचन्द्र का प्रदर्शन, दो कारों का रोकना, हाथी छाती पर खड़ा करना, होने वाला था। इतने में ही सोरों थाने के थानेदार ने आकर प्रदर्शन रोक दिया। १४, १५ हजार जनता को तितर बितर करके भगा दिया और आर्य लोगों से कहा कि "यदि आप नहीं मानेंगे तो लाठी चार्ज की जावेगी, गोली चला दी जावेगी।" और प्रचार बन्द करा दिया।

पुलिस ने कहा कि आप लड़न नहीं कर सकते हैं और आर्यसमाज के पडाल में नियम विरुद्ध पुलिस सिगरेट बीड़ी पीने लगी। मना करने पर नहीं माने। पुलिस को प्रबन्ध करने की रिपोर्ट थी फिर भी प्रबन्ध नहीं किया। पुलिस की उदासीनता से गुण्डातत्त्व प्रोत्साहन पाता रहा। समाज की सम्पत्ति का नुकसान करा दिया। इस प्रकार के बर्ताव से स्थानीय जनता में रोष फैला हुआ है।

'शिवलिग पूजा-रहस्य' पुस्तक जब्त

सरकार द्वारा अन्ध विश्वासों का समर्थन सत्य के प्रचार में बाधा सरकार आलोचना ग्रन्थों के स्थान पर मूल ग्रन्थों को जब्त करे

[सरकार ने इस पुस्तक को जब्त करके सत्यासत्य के निर्णय और ज्ञान प्रसार के कार्य में बाधा प्रस्तुत की है। जब मूल ग्रन्थ अश्लील और अज्ञानपूर्ण हैं तो उनके भ्रमजाल से जनता को मुक्त करने का विद्वानों का कर्तव्य है। आशा है सरकार अपने कदम को वापस लेकर बुद्धिमत्ता का परिचय देगी। हम इस जब्ती का तीव्र विरोध करते हैं। सम्पादक]

आर्यजगत् में यह समाचार बड़े आश्चर्य व खेद के साथ सुना जायगा कि उत्तर प्रदेशीय राज्य सरकार ने कासगज उ० प्र० के श्री डा० श्रीराम जी आर्य द्वारा लिखित एव वैदिक साहित्य प्रकाशन संघ कासगज' द्वारा प्रकाशित पौराणिक पाखण्डों का खुला भण्डाफोड़ करने वाले अद्वितीय ग्रन्थ 'शिव लिंग पूजा रहस्य' मू० ॥=) को जब्त घोषित करके अपनी धार्मिक असहिष्णुता एव पौराणिक पाखण्डों को पोषक होने का खुला परिचय दिया है। उ० प्र० सरकार को उचित तो यह था कि इस पूर्णतया शतशः प्रमाणों से युक्त ग्रन्थ को आर्य एव पौराणिक विद्वानो के समक्ष 'शिव लिंग पूजा के औचित्य अनौचित्य पर विचार करने के लिए खुला छोड़ देती। ताकि जनता की चेतना-शक्ति जाग्रत होती और वह धर्म के मामले मे अन्ध विश्वास को त्यागकर सत्य की खोज एव उसे ग्रहण करने का प्रयत्न करती। पर सरकारी अधिकारियों ने अपने हाथ में मौजूद शक्ति का उपयोग 'शिव लिंग पूजा रहस्य' जैसे खोजपूर्ण ग्रन्थ को जब्त करके अपनी दूरदर्शिता का परिचय नहीं दिया। क्या हम आशा करें कि सरकार अपने इस जब्ती के आदेश पर पुनर्विचार करके उक्त ग्रन्थ को प्रचार के लिये मुक्त कर देगी।

निवेदक—

सेवतीलाल आर्य, मत्री, आर्यसमाज—कासगज (उ० प्र०)

भूल-सुधार

सभा श्री मत्री जी का पुरोगम आर्यमित्र दि० २१-६ ५१ के पृष्ठ स० ४ पर प्रकाशित हुआ है उसमें २ जुलाई छपने से रह गया है वह इस प्रकार पढ़ने की कृपा करें कि "२ जुलाई प्रात भवाली साय हल्द्वानी" शेष पुरोगम सही है। ★

—अवध के अन्तिम बादशाह नवाब बिरजिस कादर के प्रपौत्र और नवाब वाजिदअली शाह के वशज साहबजादा नायर कादिर आज कल काठमांडू (नैपाल) आये हुए हैं। उन्होंने अपनी पितामही तथा नवाब वाजिदअली शाह की बेगम हजरत महल की कब्र पर श्रद्धाजलि अर्पित की।

आर्यसमाज की दो महान् सेवायें—
हिन्दी प्रचार और शुद्धि आन्दोलन
(विद्यार्थी जीवन के संस्मरण)

[श्री पं० रघुनाथ शर्मा जी, बैंकोक थाइलैण्ड]

[आर्यसमाज की राष्ट्रीय सेवाओं की अपनी एक विशेष परम्परा और निष्ठा रही है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा के स्वरूप तक पहुँचाने और शुद्धि द्वारा भारतीय भावना का वास्तविक प्रचार करने के आर्यसमाज के प्रयत्न ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। प्रवासी भाई ने अपने विद्यार्थी जीवन की घटनाओं का उल्लेख कर अपने श्रद्धा-सुमन आर्यसमाज के प्रति अर्पित किये हैं। वास्तव में कोई चाहे कितनी दूर चला जाय आर्यसमाज के संपर्क का प्रभाव उसे आर्यसमाज का ही बनाये रखता है। —सं०]

पंजाब में हिन्दी—

आज इस थाइलैण्ड देश में रहते मुझे लगभग ३७ वर्ष हो रहे हैं पर विद्यार्थी जीवन से अब तक मेरी धारणा व एक घटना अभी तक वैसे ही ताजी है, जैसे उन दिनों में थी। उन दिनो वार्तालाप में आर्यसमाज की इस देन की चर्चा प्रायः हुआ करती थी, जो उसने पंजाब में दे रखी थी, और जो कभी नहीं भुलाई जा सकने वाली देन थी, तब जब कि भारत परतन्त्रता की शृंखला से जकड़ा हुआ था। वह थी पंजाब में हिंदी को जीवित रखने की देन। पंजाब के हर बड़े शहरों में कई और छोटे बड़े ग्रामों, कस्बों में ऐसे स्कूलों, कन्या पाठशालाओं के खोल रखने की व्यवस्था। इस संस्था द्वारा स्थापित तथा संचालित सभी छोटे-बड़े शिक्षा केन्द्रों में हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम थी। आर्यसमाज के शिक्षा केन्द्रों से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी तथा स्नातक हिन्दी के साथ-साथ प्रायः संस्कृत का भी कम-अधिक ज्ञान अवश्य रखते ही थे। राष्ट्रीय भावना को गौरवान्वित करने वाली यह देन, इस संस्था की पंजाब में अब हम अब सोचते हैं तो कुछ कम श्लाघनीय ही नहीं प्रत्युत स्तुत्य ही थी। क्योंकि तब समूचे पंजाब प्रान्त में आर्यसमाज के प्रयत्न से सरकारी तथा गैर सरकारी अन्य सभी शिक्षा केन्द्रों में हिन्दी-इतर भाषाओं को ही माध्यम प्राप्त था।

आर्यसमाज और शुद्धि—

मेरी अवस्था इस समय करीब ७२ वर्ष के हो रही है। होश संभालने से लेकर आज तक की मेरी धारणा में आर्यसमाज ने शुद्धि के सम्बन्ध में कभी किसी से जोर जबरदस्ती नहीं की। पर स्वेच्छा से प्रसंग उपस्थित आ पड़ने पर विघ्न बाधाओं का निर्भीकता से डटकर मुकाबला करने में यह संस्था सदा प्रस्तुत रही है, यह निर्विवाद सत्य है। ऐसे अवसर पर इसकी प्रयत्नशीलता जागती रही है।

मेरा ग्राम जि० स्यालकोट से करीब ६ मील पश्चिम की ओर था, बीच में उग्गोकी कस्बा पड़ता था। इसी कस्बा में थोड़ी ही दूरी पर प्रमुख मार्ग के करीब वहाँ की जनता आम तथा चौधरी हाकमराये जी द्वारा विशेष साहाय्य प्राप्त एक आर्य मिडिल स्कूल स्थापित था, जिसके हैडमास्टर लाला बनारसीदास जी थे, जो बड़ी लगन वाले तथा उत्साह सम्पन्न व्यक्ति थे। इसी कस्बे में मेरे सहपाठी तथा अभिन्नात्मा मित्र पं० ज्ञानचन्द्र शास्त्री रहने वाले थे। हम दोनों लाहौर ओरियण्टेल कालिज से शास्त्री परीक्षा देकर आये हुए थे। मैं अपने घर में बैठा था, एक दिन अकस्मात् एक सन्देशवाहक मेरे पास आया और कहा कि हैडमास्टर साहब एक जरूरी काम के लिए आपको अभी बुला रहे हैं। मैं तुरन्त उसके साथ हो लिया, क्योंकि हैडमास्टर साहब जी से खासा प्रेम भी था, मेलमिलाप भी। करीब दो बजे दोपहर को स्कूल में हैडमास्टर साहब के कमरे में प्रवेश किया। शिष्टाचार के बाद उन्होने कहा कि पण्डित जी! एक समस्या सामने आकर उपस्थित हो गई है कि एक हिन्दू कुम्हार [कुम्भकार] परिवार जो वर्षों से मुसलमान हो गया था, अब वह स्वेच्छा से अपनी बिरादरी में मिलना चाहता है, उसके बिरादरी वाले भी स्वेच्छा से उसे अपने में मिलाने को तैयार हैं, क्योंकि उसकी सन्तानें युवा हो चुकी हैं, उभय पक्ष अब यही चाहता है कि इन लड़के-लड़कियों की शादियाँ हमारे अपने परिवार में ही हों, और हम पूर्ववत् ही होकर रहें आदि। पर इस शुद्धि कार्य का दायित्व कौन ले यही समस्या सामने आकर खड़ी हो गई है। यहाँ के प्रतिष्ठित लोग चाहते तो सभी हैं पं० ज्ञानचन्द्र जी भी चाहते तो हैं पर दायित्व लेने को तैयार नहीं। अब सबने एकमत से यही निर्धारित किया है कि यदि रघुनाथ शर्मा [मेरा नाम] इस कार्य की स्वीकृति देवें और दायित्व लेवें तो यह कार्य सम्भव हो सकेगा। मैंने तुरन्त

(शेष पृष्ठ १२ पर)

संस्था-परिचय

आर्यसमाज शाहपुरा (राजस्थान)
हीरक जयन्ती महोत्सव

[श्री रामस्वरूप वेदी सिद्धान्त शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज शाहपुरा]

आर्यसमाज शाहपुरा के सफल हीरक जयन्ती महोत्सव से उसकी ७५ वर्षीय सेवाओं, क्षेत्रीय जन-जागरण में सहयोग आदि का परिचय मिलता है। आशा है यह समाज अपनी परम्परा के अनुसार समाजों का नेतृत्व करती रहेगी। आर्यसमाज शाहपुरा की सफलता और उन्नति की शुभकामनाओं के साथ मित्र परिवार की ओर से हीरक जयन्ती की बधाई देते हैं।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज शाहपुरा ने इस वर्ष अपने जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण किये अतः आर्य-सभासदों ने मिलकर इस वर्ष हीरक जयंती महोत्सव मनाने का निश्चय किया २९—३०—३१ मई व १ जून सन् १९७९ को धूमधाम के साथ जयंती समारोह सम्पन्न हुआ।

दि० २६ मई को प्रातःकाल ७॥ बजे श्रीमान् राजाधिराज साहब श्री सुदर्शन देव जी ने ध्वजा रोहण करते हुए महोत्सव के सफलता की शुभ कामना की एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारंभ किया। रात्रि को भजन व भाषण आदि का कार्यक्रम हुआ इसी प्रकार दि० २७ व २८ मई को हीरक जयंती महोत्सव का संक्षिप्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दि० २८ को कार्यक्रम के अनुसार १ विशाल कक्ष में हरिलाल जी सक्सेना द्वारा निर्मित महर्षि जीवन की चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती महेन्द्र कुमारी जी ने किया पश्चात् राज परिवार ने ध्यान पूर्वक प्रदर्शनी का अवलोकन किया और प्रशंसा की, लगातार ५ दिन तक हजारों की संख्या में नर नारियो ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया, प्रदर्शनी में सामाजिक सुधार संबंधी व विकास संबंधी भी अनेक चित्र थे।

दि० २९ मई को महोत्सव का विशेष कार्यक्रम प्रारंभ करते हुए एक विशाल नगर कीर्तन प्रात. ७॥ बजे से आर्यसमाज भवन से प्रारंभ होकर नगर की परिक्रमा करता हुआ दोपहर को १२बजे यज्ञ मंडप पर समाप्त हुआ। इस नगर कीर्तन में पंजाब से आई हुई राजपाल जी व मदन जी की चिमटा भजन मंडली का जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। शाम को ५ बजे पूज्य आनंद स्वामी जी महाराज का शुभागमन हुआ। आपको बस स्टेन्ड से यज्ञ मंडप तक आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं और प्रमुख नागरिको के द्वारा स्वागत पूर्वक लाया गया। रात्रि को राजमहलों के चौक में पूज्य आनंद स्वामी जी महाराज का प्रभावशाली भाषण हुआ।

दि० ३० मई को महोत्सव का उद्घाटन दिवस था। स्वागत गान के पश्चात् राजाधिराज श्री सुदर्शन देव जी ने अपना स्वागत भाषण देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती का शाहपुरा में पदार्पण, आर्यसमाज शाहपुरा की स्थापना का इतिहास, राजाधिराज सर नाहर सिंह जी बहादुर एवं श्री उम्मेद सिंह जी द्वारा किये गये आर्यसमाज के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होने आर्यसमाज को अखिल विश्व का सुदृढ संघठन बतलाया एवं भविष्य में आर्यसमाज द्वारा किये जाने वाले कार्यों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की और आपने आगन्तुक अतिथिगणों को हार्दिक आभार मानते हुए धन्यवाद दिया। इसके पश्चात् महोत्सव का उद्घाटन करते हुए आर्यजगत् के प्रसिद्ध संन्यासी पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज को मानवता के प्रचार का दिव्य संदेश दिया। इसके बाद श्री पन्नालाल जी पीयूष के मधुर संगीत एवं पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद्-सदस्य का प्रभावशाली भाषण हुआ जिससे जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

दि० ३१ मई को प्रातः काल यज्ञ के पश्चात् पू० आनंद स्वामी जी महाराज व आचार्य विश्वश्रवा जी का वेदोपदेश हुआ। दोपहर को २ बजे महिला सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्रीमती आर्य महारानी जी महोदया हर्षवन्तकुमारी जी शाहपुरा ने की एवं उद्घाटन मसूदारानी जी महोदया ने किया। आपके उद्घाटन भाषण से प्रभावित होकर महिलाओं ने महिला समाज की स्थापना करने का दृढ निश्चय किया। रात्रि को पंजाब से पधारे हुए श्री पं० त्रिलोकचंद जी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सुझाव-सम्मति —

केन्द्रीकरण पर प्रकाश-१

इस सम्बन्ध में कुछ लेख पक्ष और विपक्ष में मित्र में पिछले दिनों निकल चुके हैं। जैसा कि श्रद्धेय उपाध्याय जी ने लिखा है, सभा और गुरुकुल को एकत्र गुरुकुल वृन्दावन में रखकर हम परीक्षण कर चुके हैं और वह असफल हो चुका है। ऐसी दशा में फिर वही करना कुछ बुद्धिमानी की बात नहीं होगी।

कार्यकर्त्ताओं की बहुतायत

इस समय सभा के मन्त्री और प्रधान निर्वाचित रखे जाते हैं जो प्रदेश के भिन्न-भिन्न स्थानों के निवासी होते हैं। जब तक सभा कोई वेतन, उपवेतन या आनरेरियम निश्चित न कर देवे तब तक स्थायी रूप से कोई मन्त्री या प्रधान गुरुकुल में जाकर नहीं रह सकेगा। यह बात दूसरी है कि हम गुरुकुल के आचार्य या मुख्याधिष्ठाता को ही मन्त्री और प्रधान बना देवें। पिछली बार भी श्री बाबू सीताराम जी तथा श्री विश्म्भरदयालु जी प्रधान रहे और वह लखीमपुर व ज्वालापुर से समय-समय पर वृन्दावन जाते रहे। मैं उस समय गुरुकुल में मुख्याधिष्ठाता था। गुरुकुल के रिकार्ड से इस बात की पुष्टि हो सकती है कि उपर्युक्त दोनों महानुभाव शायद वर्ष भर में २, ३ बार से ज्यादा वृन्दावन नहीं गए और २, ४ दिन से ज्यादा कभी नहीं ठहरे। मन्त्री लखनऊ के एक सज्जन थे जिनका शुभ नाम श्री रघुनन्दन प्रसाद जी था। वह तो शायद वर्ष भर में १० दिन भी वृन्दावन नहीं ठहरे। जहां तक मुझे स्मरण है, जब तक कार्यालय वृन्दावन में रहा, एक भी सज्जन सभा व गुरुकुल को अपनी सेवायें समर्पण करने के लिए नहीं पधारे। यह सन् १९२३, २४ की बात है। सम्भव है १९६९, ७० में कुछ महानुभाव वृन्दावन से आकर्षित होकर आ जावें। श्री माननीय पंडित हरिशंकर जी इस विषय में आशावादी हैं परन्तु मुझे ऐसी आशा करने के लिए कोई चिह्न नजर नहीं आते हैं। मेरी समझ में सभा की वर्तमान आर्थिक स्थिति में यदि कोई मन्त्री और प्रधान ऐसे मिल जावें कि जो प्रतिमास १०-१० दिन वृन्दावन में ठहर कर सभा का काम कर दिया करें तो सभा के लिए उनका व्यय-भार भी कठिन होगा।

स्थान की समस्या

वृन्दावन गुरुकुल भूमि में स्थान की समस्या भी कम जटिल नहीं है। फाटक पर एक कमरा कार्यालय का है, उसीमें डाकखाना है। बाईं ओर मुख्याधिष्ठाता का कमरा है। कुलपति, उपकुलपति आदि जब आ जाते हैं तो ऊपर फाटक वाले कमरे में मुख्याधिष्ठाता के निवास स्थान पर ठहरा दिये जाते हैं। लगभग ५० वर्ष में भी हम प्रतिष्ठित अतिथियों के लिए कोई अतिथि-गृह नहीं बना सके। बाहरी फाटक के साथ जो धर्मशालायें बनी हैं उनमें गुरुकुल के कर्मचारी रहते हैं। श्री आचार्य जी के निवास में भी स्थान बड़ा संकुचित है। मैं जानना चाहता हूं कि यदि प्रधान और मन्त्री दो चार सप्ताह अपने परिवार सहित ठहरना चाहें तो कहाँ ठहरें? फिर सभा कार्यालय के चार-पाँच लेखकों के ठहरने के लिए कहाँ स्थान है? यदि प्रेस और मित्र के कार्यालय को भी गुरुकुल भूमि में ही रखा जाय तो यह स्थानाभाव का प्रश्न और भी जटिल हो जायगा। कहा जाता है कि गुरुकुल-भूमि में कार्यालय पहुँच जाने से वानप्रस्थी, संन्यासी और रिसर्च-स्कालरों का जमघट एक स्थान पर हो जायगा। बड़े खेद की बात है कि क्रियात्मक रूप से उसमें क्या अड़चनें पड़ेंगी इसको विचारने का कष्ट नहीं उठाया गया। सभा का पुस्तकालय तो अब भी गुरुकुल-भूमि में है। पिछले २५ वर्षों में कितने रिसर्चस्कालरों ने गुरुकुल भूमि में जाकर इस पुस्तकालय का उपयोग किया इसका पता श्री आचार्य जी से पूछने पर मालूम हो सकता है। श्रद्धेय उपाध्याय जी इस अवस्था में भी आर्यसमाज के लिए साहित्य-सृजन का काम कर रहे हैं। पर यदि उनसे पूछा जाय कि आप गुरुकुल-भूमि में रहकर क्यो नहीं लिखते पढ़ते तो वह इसका उत्तर यही देंगे कि प्रयाग में रह कर उन्हें जो सुविधायें मिलती हैं वह वृन्दावन में नहीं मिल सकतीं।

रही वानप्रस्थी और संन्यासियों की बात इसके सम्बन्ध में मैं बहुत थोड़ा लिखना चाहता हूँ। श्री पूज्यपाद नारायणस्वामी जी का आश्रम रामगढ़ में एक रमणीक स्थान पर बना हुआ है। साथ में एक फलों का बागीचा है। स्वामी जी का एक पुस्तकालय भी है। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। ये सब सुविधायें रहते हुए भी कोई वानप्रस्थी या संन्यासी वहाँ रहने को तैयार नहीं हैं। श्री जीवन मुनिजी जो गुरुकुल वृन्दावन में स्वामीजी के समय में रहे और जिनको स्वामी जी ने ही संन्यास दिया था वह स्वर्गीय स्वामी जी के नारायण आश्रम की रक्षा करके गुरु ऋण उतार रहे हैं। मेरी तुच्छ सम्मति तो यह है कि वानप्रस्थी और संन्यासी न लखनऊ बना सकता है न वृन्दावन।

अब रह गई आर्थिक समस्या। इसका समाधान यह बतलाया गया है कि लखनऊ के नारायण स्वामी भवन को किराये पर दे दिया जाय जिससे दस बारह हजार रुपये वार्षिक की आय हो जायगी जिससे वेद-प्रचार का काम चलता रहेगा। इसका विवेचन अगली बार किया जायगा।

—शिवनारायण शुक्ल, एडवोकेट
लखीमपुर

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' से पहले स्वयं को आर्य बनावें

[श्री इन्द्र वर्मा एम० ए०, मन्त्री आर्यसमाज, रामनगर (नैनीताल)]

"इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥" अर्थात् [इन्द्रं, वर्धन्तः] परमेश्वर का यशगान और [अप्तुरः] श्रेष्ठ कर्म करते हुये [विश्वं, आर्यं, कृण्वन्तः] विश्व को आर्य बनाते और [अराव्णः, अपघ्नन्तः] पापियों को हटाते चलो। ऐसा ऋग्वेद ९।६३।५ में लिखा है। महापुरुष महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने भी सम्वत् १९३२ विक्रमी चैत्र शुक्ला १ म० के दिन भारत के सुप्रसिद्ध नगर बम्बई में सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार एवं संसार के उपकार करने के लिये ही आर्यसमाज की स्थापना की थी। उनका भी उपदेश यही था कि संसार का उपकार तभी हो सकता है जबकि विश्व के सम्पूर्ण मानव आर्य बनें। अतः संसार को 'आर्य' बनाना हमारा कर्त्तव्य है।

किन्तु 'अन्य को 'आर्य' बनाने से पहले यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम स्वयं भी आर्य बनें। क्या हमने कभी यह विचारा है कि 'आर्य' किसे कहते हैं? आर्य के क्या-क्या लक्षण हैं? हम स्वयं आर्यों की श्रेणी में आते हैं अथवा नहीं? आधुनिक दलबन्दियां, पदलोलुपता, स्वार्थपरता, उदासीनता एवं अभिमान आदि लक्षण यह स्पष्ट करते हैं कि हम आर्यत्व को खो चुके हैं। हमारे निर्वाचन संग्राम फिर चाहे वे समाज, प्रान्त या सर्वोच्च संस्था के ही क्यों न हों इस बात को स्पष्ट करते हैं कि हम अपने उद्देश्यों से कितने गिर चुके हैं। आज हममें से कुछ अपने स्वार्थों और पदलोलुपता के चक्कर में पड़कर आर्यसमाज जैसी पवित्र एवं धार्मिक संस्था को बदनाम करने पर उतारू हो चुके हैं। क्या यही हमारे आर्यत्व का प्रमाण हैं? आज हम केवल ।) चार आने मासिक देकर आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था के सदस्य बन बैठे हैं और आर्यसमाजी कहाने का दावा करते हैं। न नित्य संध्या करते हैं, न यज्ञ, न स्वयं वेदों का अध्ययन करते हैं, न अन्य को कराते हैं। अन्य को तो क्या, आज हममें से अधिकतर अपने बच्चों तक को नित्य संध्या, यज्ञ आदि करने की ओर प्रेरित नहीं करते। उन्हें अपनी धार्मिक पुस्तकों का परिचय भी नहीं करवाते।

यदि इन सम्पूर्ण बातों के होते हुये भी हम अपने को बड़े घमण्ड के साथ 'आर्य' कहते और कहलाते हैं, तो इससे अधिक और दुःख एवं लज्जा की बात हमारे लिये क्या हो सकती है।

'आर्य' का अर्थ होता है—"श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा, परोपकारी, सत्यविद्यादि गुणयुक्त, गुणज्ञ अर्थात् धर्मज्ञ, न्यायकारी, विद्वानों में उत्तम आर्यों आर्यावर्त्त और सम्राट् का पक्षपात छोड़नेवाले उत्तम नागरिक।" यदि हम यथार्थ में 'आर्य' बनना चाहते हैं तो हमें उपर्युक्त गुणों को अपने जीवन में ढालने का प्रयत्न करना चाहिये। जब हम ऐसा करने में सफल हो जावेंगे तो हम 'आर्य' कहलाने योग्य हो सकेंगे और अन्य मनुष्यों को भी आर्य बनाने में सफल हो सकेंगे। कोई मनुष्य अपने व्यक्तित्व, ज्ञान एवं दैनिक कार्यों से ही अन्य मनुष्यों को अपनी ओर आकृष्ट करता है। यदि हममें भी आर्यत्व के गुण आजावेंगे तो निश्चय ही हमारा व्यक्तित्व, ज्ञान एवं दिनचर्या ऐसी हो जावेगी कि अन्य व्यक्ति स्वतः हमसे प्रभावित होंगे और हम सरलता पूर्वक उनको 'आर्य' बनाने में सफल हो सकेंगे। अतः स्पष्ट है कि विश्व को आर्य बनाने से पहले हम स्वयं आर्य बनें। श्री मदनमोहन जी विद्यासागर का विचार है कि 'आर्य सिद्धान्त" वेद धर्म के विस्तृत रूप (व्यावहारिक रूप) के अतिरिक्त कुछ नहीं। उनको मानने वाला 'आर्य' है, श्रेष्ठ पुरुष है। ऐसे 'आर्य' जब संगठित होकर उसका प्रचार करने का संगठित प्रयत्न करते हैं, तो उस संगठन का नाम 'आर्यसमाज' होता है। परन्तु जो भी व्यक्ति इन सिद्धान्तों को अपने "जीवन का दर्शन" और वैदिक धर्म को अपने "जीवन का आदर्श" मानता है, वह 'आर्य' है। उसके लिये भी मुक्ति का द्वार खुला हुआ है। परन्तु ज्यों ही वह इनको अपने जीवन में चरितार्थ कर अर्थात् स्वयं आर्य बनकर अन्यों को आर्य बनाने का प्रयत्न करने के लिये 'आर्यसमाज' का सदस्य बन जाता है, उसका नाम 'आर्यसमाजी' हो जाता है। आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिये आर्यसमाज के दस नियमों को स्वीकार करते हुये तदनुसार आचरण आवश्यक है। 'आर्य सिद्धान्त' किसी व्यक्ति की उपज नहीं, वे तो वेद और ऋषि-मुनि की अमूल्य पंक्तियाँ हैं, जिनकी सुगन्ध से पाप और दुःख की दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है। प्रभु हम आर्यसमाजियों को आर्य बनने की सद्बुद्धि दे ताकि हम विश्व को आर्य बना सकें और पूज्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के बताये मार्ग पर मोक्ष की प्राप्ति के लिये अग्रसर होते रहें।

प्राणि भाषा-विज्ञान-२

वैदिक विज्ञान की विश्व को एक अद्भुत देन

[श्री पं० वीरसेन, वेदश्रमी, वेद सदन, महारानी रोड, इन्दौर नगर]

[गत पृष्ठ ११ के आगे का शेष]

वैदिक वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण का अर्थ है। उसके प्रत्येक वर्ण पृथक्-पृथक् प्रभाव एवं शक्ति रखते हैं। कोई इन्द्र धर्म वाले, कोई प्रजापति धर्म वाले और कोई यम धर्म वाले हैं।" उनकी जाति, गोत्रादि में भी भेद है। उनके स्थान व प्रयत्न नियत हैं। ऐसी स्थिति में पशु-पक्षियों की बोलियों का अभ्यास अथवा उनका अध्ययन करते हुए हमें उनकी ध्वनियों को अपने शब्दों या वर्णों की श्रेणियों में विभाजित कर लेना होगा। इससे इस विज्ञान के अनुसंधान में अत्यन्त सहायता प्राप्त होगी।

वैदिक वर्णमाला के अक्षरों के अर्थ नियत हैं और वे अक्षर सनातन हैं। उस सनातन शब्द के अक्षय कोश से ही पशु-पक्षियों को भी वाणी प्राप्त हुई। परन्तु शरीर की रचना की विभिन्नताओं से कई पशु-पक्षियों को कई प्रकार के वर्णों के उच्चारण की स्थान एवं प्रयत्न के अभाव से सुविधा प्राप्त नहीं है। अतः समस्त वैदिक वर्णमाला के शब्दों का उच्चारण पशु-पक्षियों से सम्भव नहीं हो पाता। मानव-जाति की कई देश की भाषाओं में कतिपय वर्ण-वर्ग ही नहीं हैं। तथा कई भाषाओं में कुछ वर्गों के कुछ वर्णों का अभाव है। स्वरों में तो ऋ ॠ ऌ ॡ केवल मात्र वैदिक वर्णमाला में ही हैं। अन्यों में नहीं हैं। इसी प्रकार की न्यूनाधिकतायें मानवीय भाषाओं में हैं। मानवीय भाषाओं की वर्णमालाओं को वैदिक वर्णमाला के अनुरूप श्रेणियों में विभक्त करना भी इस अध्ययन के लिये आवश्यक है।

कतिपय पशु-पक्षियों की समस्त प्रकार की ध्वनियों का अध्ययन एवं उनका वर्गीकरण करके वैदिक वर्णमाला एवं उसके अर्थ ज्ञान से उनके अर्थों तक पहुँचना अति सरल कार्य हो जायगा। वैदिक वर्णमाला के शब्द नियत हैं और उनका अर्थ भी नित्य है। नित्य शब्द और उसका नित्य अर्थ सम्बन्ध इस सिद्धान्त के आधार पर पशु-पक्षियों के शब्द नियत कर उनके अर्थ ज्ञान में प्रगति अवश्य की जा सकती है। वर्णों के नियत करने पर और संयुक्त वर्णों के ज्ञात होने पर उनके धातु और प्रत्ययों का ज्ञान एवं अध्ययन बड़ी सुविधा से हो सकेगा।

[illegible] उपनिषद् के इस वाक्य पर जितना ही अधिक विचार करते हैं और उसके [illegible]—तत्सत्य [illegible] —पर विचार करते हैं और वेद के स्थलों का अवलोकन करते हैं तो हमें इसकी सत्यता में कोई भी सन्देह नहीं रहता। यजुर्वेद के मूल मन्त्र में आता है— ओ ष ध य॰ स म व द न्त सो मे न स ह रा ज्ञा अर्थात् औषधियां सोम राजा के साथ बोलीं। यह औषधियों का सोम राजा के साथ सम्भाषण बताता है कि हम ही नहीं बोलते हैं, ये पशु पक्षिगण ही नहीं बोलते अपितु वृक्ष, वनस्पति, लता, गुल्मादि भी बोलती हैं। ये समस्त भू-संसार हमसे बोलता है परन्तु हम अज्ञानता वश उनकी बोली नहीं समझ पाते। उनकी बोली समझने वाला ही समझता है। कोई तत्त्ववेत्ता ऋषि ही उसे समझता है और उनको उससे विज्ञान की प्राप्ति होती है। जब तक उस भाषा-विज्ञान या शब्द मात्र के क्षेत्र में अर्थज्ञान पूर्वक विचरण करने की विद्या का ज्ञान न होगा तब तक इस कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होगी।

इस संसार में सर्व श्रेष्ठ प्राणी पुरुष ही है। अत. समस्त संसार के प्राणी इस पुरुष की सेवा करने में अपने को धन्य मानते हैं। यह ससार पुरुष से वार्तालाप करता है। वह अपने मनोगत भावों को पुरुष को प्रकट करता है। पुरुष के हिताहित के लिये अनेक प्रकार से वह बोलता है और अपने मनोगत भावों को प्रकट करने के लिये चेष्टा और प्रयत्न भी करता है। परन्तु हम उनकी वाणी को और उनके द्वारा की गई चेष्टा और प्रयत्नों को समझ नहीं पाते। वाणी से हम से वे बोलते हैं और प्रयत्नों द्वारा वे हमें समझाते हैं तथा सब कुछ प्रकट करते हैं। इन्हीं प्रयत्नों का लोक में शकुन मात्र में ज्ञान रह गया है। वेद में इस प्रयत्नात्मक ज्ञान के लिये भी बहुत कुछ उल्लेख है। यजुर्वेद में .—वसन्ताय कपिंजला-नालभते, ग्रीष्माय कलविंकान्, वर्षा-भ्यस्तित्तिरीन्, हेमन्ताय शिशुमारान्० इत्यादि मन्त्र पशु पक्षियों द्वारा ऋतु-विज्ञान के परिज्ञानार्थ उनकी आवश्य-कता को प्रकट करते हैं।

इसी प्रकार आयुर्वेद शास्त्र में भोजन में विष ज्ञान के लिये पशु-पक्षियों से किस प्रकार सहायता प्राप्त होती है इस को अच्छी प्रकार वर्णित किया है। उसमें बताया है कि :—मोर विषयुक्त भोजन को देखकर प्रसन्नता को प्राप्त होता है, बन्दर विषयुक्त भोजन को देखकर विष्ठा त्याग देता है और कौवे का स्वर बैठ जाता है इत्यादि।

व्यवहार में भी देखा जाता है कि जहां कहीं भी सांप होता है अथवा अन्य कोई इसी सदृश घातक प्राणी होता है तो कुछ पक्षि-विशेष एक विशेष प्रकार की ध्वनि करते हैं जिनको इस ध्वनि का ज्ञान होता है वे तत्काल बता देते हैं कि अमुक स्थान पर सर्प है अथवा अन्य कोई घातक प्राणी विद्यमान है। इसी प्रकार कुछ पशु सर्प या अन्य घातक जन्तु को किसी क्षेत्र विशेष में हो तो उसका ज्ञान उन्हें हो जाता है। और वे विशेष प्रकार के दीर्घ श्वास की क्रिया द्वारा अपने भाव को प्रकट करते हैं। तात्पर्य यह है कि चेतन जगत् के प्राणी मनुष्य को सृष्टि की अनेक गुप्त शक्तियों का बोध कराते हैं। किन-किन पशु-पक्षियों से किस-किस का बोध होता है इसका वेद में पर्याप्त वर्णन है। जिस प्रकार चेतन जगत् अपनी ध्वनि एवं प्रयत्न से ज्ञान देता है उसी प्रकार जड़ जगत् के शब्द एव रूप भी पुरुष को ज्ञान देते हैं।

पशु पक्षियों की बोलियो का ज्ञान प्राप्त करने के बारे में बीकानेर क्षेत्र में यह प्रथा प्रचलित है कि गर्भवती स्त्री को सातवें महीने से जिस कमरे में रखते हैं उस कमरे की छत के ऊपर एक मिट्टी के पात्र में पानी भर कर रख देते हैं और जब बच्चा होता है तो उस पात्र का पानी बच्चे की घुट्टी में मिलाकर पिलाते हैं। इस क्रिया से वे यह मानते हैं कि जिस जिस पक्षी ने इस पात्र के जल को पिया है उस-उस पक्षी की बोली का ज्ञान उस बालक को स्वभाव से हो जाता है। इस विधि का परीक्षण करके अनु-भव तो अभी प्राप्त नहीं किया है और न ऐसे व्यक्तियो से ही भेंट हुई है तथापि इतना अवश्य है कि कई मनुष्य पक्षियों की ध्वनियो के आधार पर कुछ निश्चित फलप्रद ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेते हैं। हमारे भारत देश की स्त्रियां प्रायः कौवा पक्षी की बोली के आधार पर कई प्रकार क अनुमान निकाला करती हैं।

कौवे की बोली के बारे में एक ग्रन्थ का अध्ययन करने पर २४ प्रकार की उसकी विभिन्न ध्वनिया विभिन्न घट-नाओं को प्रकट करने वाली प्राप्त हुईं। इसी प्रकार अन्य ग्रन्थ भी पशु पक्षियों की बोलियों के विद्या के सम्बन्ध में प्राचीन समय में हो सकते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राणियो की भाषा का ज्ञान प्राचीन समय में प्रचलित था और इस विज्ञान की ओर हमें अवश्य प्रगति करनी चाहिये। इस विज्ञान से भूगर्भ तथा अन्तरिक्ष के अनेक रहस्य काल-चक्र अर्थात् भूत, भविष्यत् एवं वर्तमान की घटनाओं के अनेक गूढ़ रहस्यों पर प्रकाश पड़ सकता है और रहस्यो का उद्घाटन भी हो सकता है।

वेद की इस विद्या और विज्ञान के अन्वेषण के लिये यदि आज भारत अग्रसर हो तो यह विश्व की जनता को एवं विश्व के वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में अपूर्व भेंट दे सकता है जो मानव जाति के लिये अनुपम होगी और उसके आश्रय से प्रकृति एवं काल के अनेक रहस्यों को जाना जा सकेगा। वैदिक विज्ञान की यह अनुपम भेंट विश्व में हमारी प्राचीन वेद-विद्या और वेद की प्रतिष्ठा को बढ़ा सकेगी तथा समस्त विश्व एकबार वेदों की ओर आश्चर्य, प्रेम तथा श्रद्धा से उसके अध्ययन और उसके अन्य विज्ञानों के अन्वेषण में अग्रसर हो सकेगा।

शोक-प्रस्ताव

(अन्तरङ्ग सभा १२ ५-६१ द्वारा स्वीकृत)

सभा प्रधान जी की विशेष आज्ञा से निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव समस्त अन्तरङ्ग सभासदों ने, खड़े होकर पारित किया। प्रस्ताव

अन्तरङ्ग सभा का यह साधारण अधिवेशन कानपुर आर्यसमाज एवं दयानन्द कालेज कानपुर के प्रधान श्री डा० ब्रजेन्द्रस्वरूप जी एडवोकट कानपुर, स्व० श्री प० रासविहारी तिवारी के ज्येष्ठ पुत्र श्री प० इन्द्रदत्त तिवारी लखनऊ, श्री उमाशकरजी एडवोकेट फतेहपुरकी धर्मपत्नी, श्री शिवप्रतापजी उपमंत्री आर्यसमाज रायबरली के दुःखद देहावसान पर हार्दिक शोक सम्वेदना प्रकट करती हुई परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवगत आत्माओ को सद्गति और शोकातुर परिवारो को धैर्य प्रदान करे।

—सभा मंत्री

अश्लील फिल्मी गानों का वहिष्कार आवश्यक

आज के युग में राष्ट्र के नैतिक उत्थान में सबसे अधिक बाधक सिनेमा संसार के अश्लील गाने हैं। इनकी ध्वनि बिना प्रयत्न के देश के युवक, युवतियो व बालकों के कानो मे पड़ती रहती है। बच्चो के कोमल मस्तिष्क मे चाहे उच्च कोटि की भावना भर दी जाय और चाहे फिल्मी गीतो क आधार पर अश्लील तथा वासनात्मक भावनायें। यह हमारे देश की जनता पर निर्भर हैं। यह अश्लील गीत प्रवृत्ति को दूषित कर देते हैं। जिसमें बौद्धिक तथा नैतिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। अतएव भारत की जनता का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वह इन अश्र गीतो का पूर्ण वहिष्कार क

—आदित्य किशोर १

सिद्धान्त विमर्श

नियोग का प्रश्न

(ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०, प्रयाग)

गताङ्क से आगे

(१) द्विजों में एक स्त्री का एक ही पति से और एक पुरुष का एक ही स्त्री से विवाह हो सकता है। दो बार नहीं। अत. न तो विधवा स्त्री विवाह कर सकती है न विधुर पुरुष। जीवित का तो प्रश्न ही नहीं। यह मुख्य नियम है और बहुत कठोर है।

(२) ऐसे कठोर नियम के पालने के लिये विशेष परिस्थितियों में कुछ छूट भी दी गई। इसीका नाम नियोग है। नियोग को साधारण धर्म न कहकर 'आपद्धर्म' कहा है, देखिये—

प्रश्न [१] हमको नियोग की बात में पाप मालूम होता है ?

उत्तर—जो नियोग की बात में पाप मानते हो तो विवाह में पाप क्यों नहीं मानते ? पाप तो नियोग के रोकने में है, क्योंकि ईश्वर के सृष्टि क्रमानुकूल स्त्री-पुरुष का स्वाभाविक व्यवहार रुक नहीं सकता। सिवाय वैराग्यवान् पूर्ण विद्वान् योगियो के। क्या गर्भपातन रूप भ्रूण हत्या और विधवा स्त्री और मृत स्त्रीक पुरुषो के महासन्ताप को पाप नहीं गिनते हो, क्योंकि जब तक वे युवावस्था में हैं, मन में सन्तानोत्पत्ति और विषय की चाहना होने वालों को किसी राजव्यवहार या जातिव्यवहार से रुकावट होने से गुप्त-गुप्त कुकर्म बुरी चाल से होते रहते हैं। इस व्यभिचार और कुकर्म के रोकने का एक यही श्रेष्ठ उपाय है कि जो जितेन्द्रिय रह सकें, वे विवाह और नियोग भी न करें तो ठीक है। परन्तु जो ऐसे नहीं है उनका विवाह और आपत्काल में नियोग अवश्य होना चाहिये। इससे व्यभिचार का न्यून होना, प्रेम से उत्तम सन्तान होकर मनुष्यो की वृद्धि होना सभव है और गर्भ-हत्या सर्वथा छूट जाती है। नीच पुरुषों से उत्तम स्त्री और वेश्यादि नीच स्त्रियो से उत्तम पुरुषों का व्यभिचार रूप, कुकर्म, उत्तम कुल में कलङ्क, वंश का उच्छेद, स्त्री-पुरुषो को सताप और गर्भहत्यादि कुकर्म, विवाह और नियोग से निवृत्त होते है इसलिये नियोग करना चाहिये। (देखो सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ४)।

[२] अर्थात् कस्याञ्चिदापत्कालाव-स्थाया प्राप्ताया मेकैकस्या भावे सन्तानोत्पत्यर्थं दशम पुरुष पर्यन्त नियोग कुर्यात्। (देखो ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नियोग प्रकरण)।

[३] 'नियोग' विवाह के पश्चात् पति के मर जाने आदि वियोग में अथवा नपुंसक वादि स्थिर रोगों में स्त्री वा आपत्काल में पुरुष स्ववर्ण वा अपने से उत्तम वर्णस्थ स्त्री वा पुरुष के साथ सन्तानोत्पत्ति करना। (सत्यार्थ प्रकाश स्वमंतव्या मन्तव्य सं० ४७)।

[४] अर्थात् कस्याञ्चिद् आपत्काला-वस्थायां प्राप्तायामेकैकस्याभावे संतानोत्पत्यर्थं दशम पुरुष पर्यन्तं नियोगं कुर्य्यात्। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

[५] अत्र स्त्रिया· पुरुषस्यचापत्काले नियोगव्यवस्था प्रतिपादितास्तीति वेदितव्यम्। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)।

यहा पाचों स्थानों में नियोग को आपत्काल का धर्म अर्थात् आपद्धर्म बताया है। आपद्धर्म और मुख्य धर्म में भेद है। मुख्य धर्म सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। उसमें देश और काल की सीमा नहीं। आपद्धर्म वह कर्म हैं जो साधारण अवस्थाओं में धर्म नहीं हैं। परन्तु विशेष परिस्थितियो में उनके करने की कुछ नियन्त्रणों के साथ आज्ञा दे दी गई है जिससे अन्य घोरतर पापो से बच सकें। और कुकर्मों में न्यूनता हो। ऐसा ही ऋषि ने ऊपर के उद्धरण में दर्शाया है। अर्थात् पापों को कम करने के लिये नियोग है। जहां पापों की संभावना न हो वहा यही ठीक है कि नियोग न हो। यहाँ तक कि असाधारण लोकोत्तर गुण सम्पन्न जितेन्द्रिय लोगों के लिये तो विवाह भी न हो तो ठीक है ऐसी अवस्था में कौन कह सकता है कि स्वामीजी की नियोग सम्बन्धी शिक्षा बिगाड़ के लिए है, सुधार के लिए नहीं। स्वामीजी नियोग को कुकर्म से रोकने का उपाय बताते हैं हिन्दू लोग यह नहीं सोचते कि उन्होंने नियोग भी बन्द किया, विधवा-विवाह भी बन्द किया, पुरुषों के अनेक विवाह भी जारी किये, और उनकी सख्या पर सीमा भी न लगाई तो कुकर्म घटे या बढ़े ? क्या ऐसा करने से स्त्रियां अधिक नेकचलन रह पाई ? और क्या पुरुष अधिक नेकचलन रह पाये ? जहाँ स्त्रियां नेकचलन नहीं वहाँ पुरुष भी नेकचलन नहीं। जहाँ पुरुष नेकचलन नहीं, वहाँ स्त्रियाँ भी नेकचलन नहीं। पहले पुरुष बिगड़ते हैं फिर स्त्रियां। कहा भी है "न स्वैरी, स्वैरिणी कुत ।" अर्थात् जहां बदचलन पुरुष नहीं, वहां बदचलन स्त्रियां कहां से आयेंगी ?

स्वामीजी महाराज पर यह आक्षेप है कि उन्होंने ११ पति या ११ पत्नियों की आज्ञा दी है। वह यह नहीं समझते कि उन्होंने ११ पतियों तक या ११ पत्नियों तक की विशेष अवस्थाओं में सीमा बांधी है ? और लोगों ने सीमा बांधी ही नहीं। अर्थात् अन्य प्रथाओं में ११ से भी अधिक विवाह विहित थे और इसके अतिरिक्त अनुचित संबंधों को अवैध समझते हुये भी उनको उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया। अत· वेश्या-वृत्ति की सम्पुष्टि हुई। एक पुरुष को अनेक विवाह करने की आज्ञा दी। दूसरे जो विवाह के बन्धन को तोड़कर कुचेष्टा करना चाहें उनको समाज-च्युत नहीं किया गया। और जिन स्त्रियों को ऐसे उच्छृङ्खल पुरुषों की संतुष्टि के लिये 'वेश्या' बनाया गया उन पर कानून दण्ड नहीं लगाया गया। 'वेश्या वृत्ति' पाप हो परन्तु जुर्म नहीं है। न पुरुष के लिये न स्त्री के लिये। अत जिन प्रथाओं में वेश्यावृत्ति के लिये खुली छूट है वहाँ व्यभिचार बढ़ेगा और बढ़ा है। घटने का कोई प्रश्न नहीं है। यदि 'वेश्यावृत्ति' को सरकार या समाज की ओर से दण्डनीय समझा जावे और बहुविवाह की आज्ञा न हो तो नियोग आवश्यक उपाय हो जायगा। इसके बिना काम न चल सकेगा। आजकल लोग नियोग को तो बुरा समझते हैं परन्तु व्यभिचार को नहीं। अतः पुरुषों को तो खुल्लमखुल्ला छूट है क्योंकि उनके लिये न बहुविवाह करने पर दण्ड, न अनुचित सम्बन्ध पर दण्ड। स्त्रियों के लिये कड़े नियम हैं, और वे कड़े नियम बुराई को घटाते नहीं बढ़ाते हैं क्योंकि वह पुरुषों पर लागू नहीं होते। पुरुषों को छूट होना और स्त्रियों को छूट न होना इसका परिणाम भी अन्ततोगत्वा कुकर्म ही होता है। गुप्त कुकर्म प्रकट कुकर्मों से अधिक भयानक हैं क्योंकि एक व्यभिचार भ्रूण-हत्या आदि अनेक अन्य दोषों का भी उत्पादक होता है, नियोग इसी का बचाव है।

११ की संख्या लोगों को खटकती है। यदि दो या तीन की संख्या होती तो शायद न खटकती। परन्तु जब हम यह नियम पाते हैं कि दस से अधिक सन्तानोत्पत्ति भी न करे और यह नियम उच्च वर्गों में कड़ाई से पालन किया जाय और व्यभिचार को अवैध समझा जाय तो सन्तानों की १० की संख्या की अवधि के साथ नियुक्त पति-पत्नियों की भी अवधि होनी चाहिये। यह संख्या अनिवार्य नहीं है। केवल विशेष परिस्थितियों में विशेष व्यवस्थाओं के अन्तर्गत यह अवधि लगाई गई। अर्थात् अवधि के अभाव में अवधि बांधने को अधिक आवश्यक समझा गया। इस अवधि के लिये दो कड़ी शर्तें रक्खी गई। प्रथम तो असाधारण परिस्थितियों की जाँच। दूसरे उनके अनुसार व्यवस्थापक यंत्र का होना। चाहे वह समाजगत पंचायत हो या राजगत न्यायालय। आजकल भी जहाँ साधारण विवाह के लिये कोई व्यवस्थापक यंत्र नहीं है वहां तलाक के लिये न्यायालय की व्यवस्था है। आप विवाह करना चाहें तो न्यायालय में जाने की आवश्यकता नहीं परन्तु यदि तलाक देना चाहें तो न्यायालय की व्यवस्था प्राप्त करनी पड़ती है, इसी प्रकार नियोग में भी होगा। खुल्लमखुल्ला अवधि और नियंत्रण-शून्य छूट न होगी। अत. नियोग को 'वेश्यावृत्ति' कहना सर्वथा अन्याय है। स्वामीजी महाराज ने यही लिखा है। ११नियोगों के लिये परिस्थितिया भी विशेष ही होंगी और न्यायालय इस औचित्य पर निश्चय करेंगे। नियोग करने वाले स्त्री-पुरुषों को यह सिद्ध करना होगा कि परिस्थिति ऐसी ही थी। आजकल गोद रखने के नियमों का भी यही हाल है। हर स्त्री या पुरुष हर अवस्था में गोद नहीं रख सकता और न्यायालय ऐसे गोद रखने को रद भी कर सकते हैं। जिस देश या जाति में नियोग का प्रचार किया जायगा वहाँ उसके देश या काल के अनुसार कानून बनाने पड़ेंगे। वह कानून हर अवस्था के लिये एक से न होंगे। ऐसी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जब विशेष रोग, प्रकोप के कारण या युद्ध के कारण लगातार दस की मृत्यु हो जावे और नियोग की आवश्यकता पड़ जावे, और ऐसी अवस्था भी आ सकती है जब एक या दो नियोगों से अधिक को दूषित समझकर उसकी इजाजत न दी जाय। अतः ११ की अवधि तो न्यायालयों के लिये है जिससे वे किसी दशा में भी आगे न बढ़ सकें और उच्छृङ्खल लोगों को आगे जाने का साहस ही न हो और इस संख्या के इस पार न्यायालयों को व्यवस्था करने का अधिकार हो। स्त्री-पुरुष के वही सम्बन्ध उचित हैं जिनमें व्यवस्था है। जिनमें व्यवस्था नहीं वही अनुचित हैं।

क्रमशः

वेद-रक्षा का प्रश्न—

को वेदानुद्धरिष्यति ?

[श्री अवधविहारीलाल, एम ए, बी एल, साहित्याचार्य, वेद पुराणतीर्थ]
(सम्पादक— आर्यसमाज', कलकत्ता)

[आर्यसमाज वेद प्रचार के महान् दायित्व को कहा तक पूर्ण कर सका है यह प्रश्न हमें अपने से पूछना चाहिये। लेखक ने हमें प्रेरणा दी है कि हम छोटे-मोटे कामों में अब अपनी अधिक शक्ति व्यय न करें अपितु वेद की रक्षा, अनुसंधान और प्रचार के प्रश्न को अपना लक्ष्य बना लें तभी मानवता के कल्याण का दायित्व पूर्ण कर सकेंगे क्योंकि वेद हमारे लिये प्रकाशस्तम्भ है उसे धूमिल न होने देना हमारा कर्तव्य है। स०]

वेदों के अप्रचार से भारतीय जनता में भीषण चिन्ता व्याप्त हो गई है। साधु पुरुषों पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ेगा। उनका जीवन यापन दूभर हो जायगा। दानवों और दुर्जनों का बोलबाला होगा। जन-जीवन खतरे में पड़ जायगा, ऐसा आतंक जनमन में व्याप्त हो जाता है। वेदों का पुन प्रचार (उद्धार) कैसे किया जाय, जनता बेचैनी से सोचने लग जाती है। भारत के इतिहास में लाखों करोड़ों वर्ष के आर्य इतिहास में अंग्रेजों के बनाये दो अढाई हजार वर्षों के इतिहास में नहीं—इसके प्रबल प्रमाण अन्वेषक को स्थान-स्थान पर स्पष्ट मिलते हैं। वेदों के उद्धार की इस अनिवार्य आवश्यकता को गवारू तरीके पर व्यक्त करने के लिए विष्णु के मत्स्य आदि अवतारों की कल्पना भी की गई। गीत गोविन्द के रचयिता जयदेव ने विष्णु की स्तुति में सर्व प्रथम कहा— "वेदानुद्धरते" और भी एक गीत में कहा —

"प्रलयपयोधि जले धृत वानसि वेदम

बुद्ध के पहले जितने भी आचार्य और ऋषि भारत में हुए सबों ने एक स्वर से(कुछ राक्षस आचार्यों को छोड़कर) वेदों को परमात्मा का ज्ञान अपौरुषेय, परम प्रमाण इत्यादि शब्दों से परम आदरणीय बतलाया। चारों वेद अपने उपवेदो और अगों उपागों के साथ चौदह विद्याएँ कहलाये और पूर्ण विज्ञान का अर्थ हुआ सागोपाग वेदों का । प्रत्येक राज्य का अपना विधान होता है उसी प्रकार परमात्मा के राज्य का विधान है वेद। यह हमार पूर्वजो की प्राचीन मान्यता रही। अतएव जैसे विधान के नष्ट होने से अराजकता होकर राष्ट्र में भयदायक स्थिति की सृष्टि होगी उसी प्रकार वेदों के लोप से विश्व में अधेरा फैलेगा, यह चिन्ता स्वाभाविक ही थी।

बौद्ध धर्म के प्रचार से वेदों का लोप होकर नास्तिकता की जब बाढ़ सी आई हुई थी उस समय की एक घटना का उल्लेख प्राचीन इतिहास में हमें मिलता है। चम्पा की राजकन्या ऊची अट्टालिका पर से उच्चस्वर से विलाप कर रही थी—"किं करोमि क्व गच्छामि

को वेदानुद्धरिष्यति ?"

क्या करू ? कहां जाऊ ? कौन वेदों का उद्धार करेगा ?

कहते हैं कुमारिल भट्टाचार्य ने कन्या को आश्वासन दिया—

मारोदिहि वरारोहे भट्टाचार्योऽस्मि भूतले।

दुखी, मत रोओ, अभी कुमारिल भट्टाचार्य पृथ्वी पर मौजूद है। लम्बी कहानी है। अन्त में शकराचार्य ने भारतवर्ष में बीस करोड़ आर्य जनता की, जो बौद्ध बनाई गई थी, शुद्धि करके फिर से उसे वैदिक धर्मी बनाया।

बौद्ध मत की विभीषिका दो हजार वर्षों के लिए दूर तो हुई परन्तु वेदो के अप्रचार का रोना महर्षि दयानन्द के आविर्भाव काल तक ज्यों का त्यों रहा। दक्षिण भारत के एक राजा के मन्त्री और सेनापति सायण ने वेदो का अर्थ किया प्राचीन ऋषियों के आशय से नितान्त विरुद्ध। महीधर ने यजुर्वेद के कुछ स्थलों का ऐसा अश्लील अर्थ किया कि उसको पढ़कर लज्जा भी लज्जित हुए बिना न रहेगी। इन सारे वेद विदूषको के वेदभाष्यों का कुपरिणाम यह हुआ कि अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में युरोपियनों ने वेदों को 'जगलियों की पुस्तकें' 'गरेड़ियों के गीत' 'बच्चो की बलबलाहट' आदि उपाधियों से विभूषित किया। वेद-ज्ञान से नितान्त विरहित हो हमारे गुरुओ ने अपनी हेकड़ी की रक्षा करने के लिए ऐसे ऐसे कठोर कानून जनता पर लागू किये जिससे जन साधारण का वेद पढ़ना अक्षम्य अपराध घोषित हो गया।

ऋषि दयानन्द आए, वेदों का द्वार सबके लिए खोल दिया। अपने लोकोत्तर ज्ञान से, प्रकाण्ड पाण्डित्य से, ऋषियों की प्रचीन पद्धति पर इतना सुन्दर भाष्य वेदों का करना बता गये (वेद भाष्य करने की कुजी भी बता गये कि मनु के स्वर में स्वर मिलाकर विश्व क विवेकशील विद्वान् कह उठे —

"सर्वज्ञानमयो हि स" वेद सारे ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं।

उदाहरणार्थं —

योगी अरविन्द घोष ने डके की चोट पर कहा—

There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Veda contains the truth of religion as well as of science I should like to add my own conviction that Veda contains the truth of a science tne modern world does not possess at all

अर्थात् स्वामी दयानन्द क इस कथन में कोई अत्युक्ति नहीं है कि वेद में धार्मिक सचाइयो के अतिरिक्त वैज्ञानिक सत्य भी हैं। मेरा तो विश्वास है कि वेद में विज्ञान का वह सत्य भी है जिसका ज्ञान अब तक आधुनिक जगत् को न हो पाया है।

प्रसिद्ध वेदज्ञ स्वर्गीय प० सत्यव्रत सामश्रमी ने अपनी 'त्रयी चतुष्टय" की भूमिका में फोटोग्राफी, फोनोग्राफी, गैस लाइट, टेलीग्राफ, टेलीफोन, धूम्रशकट वायुयान प्रभृति का ज्ञान वेदो में होने का स्पष्ट वर्णन किया।

सारे वेदों के सविस्तार भाष्य करने का समय ऋषि को अपने स्वल्प एव शतधा व्यस्त कार्यकाल में प्राप्त न हो सका। ऋषि अपना उत्तराधिकारी आर्यसमाज को बनाकर चल दिये।

आर्यसमाज को आदेश दे गये — "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

आर्यसमाज ने गुरुभक्ति तो प्रारम्भ में पर्याप्त दिखलाई। सर्व प्रथम सामाजिक सुधार के कार्य को अपने हाथ में लिया। सामाजिक कुरीतियों पर इतना जबर्दस्त प्रहार किया कि समाज का ढाचा ही बदल गया। शुद्धि-अछूतोद्धार, विधवा विवाह, छुआछूत वर्जन, स्त्री शिक्षा प्रचार, बाल विवाह एव अनमेल विवाह का निषेध इत्यादि कार्यों में आर्यसमाज को इतनी अधिक सफलता हुई कि आज पौराणिक जनता उन बातों में हम से कहीं आगे बढ़कर हम से पूछने लग गई कि "तुम क्या करोगे ? तुम्हारी क्या जरूरत है ?"

यदि अभी भी हम यह कहते रहेंगे कि हम विधवा विवाह करावेंगे बाल विवाह को रोकेंगे, छूतछात मिटायेंगे मूर्तिपूजा का खण्डन करेंगे तो यह कार्य हमारा सचमुच अपने आप अपनी अनुपयोगिता सिद्ध करना होगा।

वेदों की रक्षा का महान् भार तो हमारे ऊपर अभी तक ज्यों का त्यों है। धर्म और ईश्वर से नाक सिकोड़नेवाला पाश्चात्यों की विचार धारा के प्रवाह में बहनेवाला कॉंग्रेस का नेतृत्व वेदों की चिन्ता नहीं करेगा। पौराणिक जनता सायण और रावण के भाष्य के बल पर वेदों की रक्षा करने में अपने को असमर्थ पाकर और महर्षि दयानन्द के भाष्य को मानने से पौराणिकता का अस्तित्व खतरे में देखकर बगलें झाक रही है। वह पथ-भ्रष्ट और किंकर्तव्य विमूढ़ दिखाई पड़ रही है। कहीं गीता की सवारी निकलती है तो कहीं तुलसी कृत रामायण का नवाह्न और अष्टयाम और न मालूम क्या क्या हो रहा है। कहीं पर भागवत का सप्ताह होता है तो कहीं पर शतचण्डी पाठ। कोई धर्म प्रेमी उदार सज्जन हनुमान चालीसा की १००० प्रतियों के मुफ्त वितरण की घोषणा सुना रहे हैं। पौराणिक पडितों ने अब यह नारा भी लगाना आरम्भ कर दिया है कि पुराण वेद से भी अधिक प्राचीन हैं। इस प्रकार अब सनातनी जनता को पुराण और हनुमान चालीसा की चिन्ता खाये जा रही है। आर्यसमाज भी यदि वेद प्रचार में आलस्य करे और सत्यार्थ प्रकाश-पाठ और 'जय जगदीश हरे' का आरती गान पर साप्ताहिक अधिवेशनो मे और वार्षिकोत्सवो में भजनोपदेश करके अपने को ऋषि ऋण से उद्धार हुआ समझ ले तो सचमुच आर्यसमाज का अपना और साथ ही समग्र मानवता का (जिसके आर्य बनाने का ठेका इसने अपने ऊपर ल रखा ह) भविष्य सकटापन्न है, इसमें सन्देह नहीं।

क्या आर्यसमाज का नेतृवर्ग गभीरता से विचारेगा—

'को वेदानुद्धरिष्यति ?

कन्या गुरुकुल हरद्वार में

कन्याओं का प्रवेश

प्रथम से दशम श्रेणी तक तथा आयुर्वेद श्रेणियो का प्रवेश प्रारम्भ होने को है—प्रविष्ट वही कन्यायें हो सकेंगी जिनकी सीट प्रवेश फार्म सहित ३० जून तक २५) एडवांस भेजकर सुरक्षित कराली जायेंगी। सम्पूर्ण विवरण नियम तथा प्रवेश फार्म के लिए लिखिये।

आचार्या, चन्द्रावतीदेवी शास्त्री
कन्या गुरुकुल हरद्वार
पोस्ट कनखल, जि० सहारनपुर

नैतिक जीवन-निर्माण-घर

(श्री प० रघुनाथप्रसाद जी पाठक, देहली)

राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई घर का सुखद निर्माण राष्ट्र-निर्माण की प्रथम सीढ़ी है। अगर हमारे परिवारों का जीवन सुखद, सन्तोष, निर्भयता, स्नेहादि गुणों से युक्त बन सके तो राष्ट्र महान् से महान् सकटों को सहर्ष झेल सकता है। आज भौतिक निर्माण की ओर विशेष बल दिया जा रहा है पर समाज के शुभचिन्तकों को राष्ट्र की मानवीय समस्याओ के मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर भी गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए। विद्वान् लेखक ने सरल भाषा में राष्ट्र में घर के महत्त्व और उसके निर्माण की ओर हम सबका ध्यान आकृष्ट किया है। —सम्पादक

स्वनाम धन्य अब्राहम लिंकन बड़े भाग्यशाली व्यक्ति थे। वे सदाचार, योग्यता और मेधा के बल पर यश और वैभव के उच्चतम सोपान पर पहुँच पाये थे। इस पर भी उनका पारिवारिक जीवन बड़ा अशान्त था। कर्कशा पत्नी के दुर्व्यवहार के कारण अपने घर के प्रति उनका प्रेम और आकर्षण जाता रहा था। जब वे वकालत करते थे तो उन्हें कई-कई दिन तक घूमती फिरती अदालतो में पैरवी करने के लिए बाहर रहना पड़ता था। छुट्टियों के कारण जब वे अदालतें बद रहतीं तो वे घर लौट आने की अपेक्षा बाहर रहकर छुट्टियाँ व्यतीत करना पसन्द किया करते थे। वस्तुत घर क प्रति आकर्षण पारिवारिक सुख-शान्ति का द्योतक होता है और सद् नारियाँ श्रेष्ठ घरों का निर्माण करती हैं, जिनका हृदय पतियों के साथ मिला होता है। दूसरे शब्दों में वास्तविक घर का निर्माण ईंट, गारे और चूने से नहीं अपितु हृदयो के द्वारा हुआ करता है।

कहा जाता है कि देवताओ का घर स्वर्ग लोक है। यह कथन सत्य हो या न हो परन्तु यह सत्य है कि भले व्यक्ति के लिए श्रेष्ठ सन्तानो से भरा पूरा घर ही सुखधाम होता है। जिन घरो में शक्ति और वैभव की आभा हो परन्तु जिनमें भले व्यक्ति निवास न करते हो उन्हें घर की सज्ञा नही दी जा सकती। श्रेष्ठ सच्चे, पवित्र और कोमल हृदय रखने वाले व्यक्तियो से ही घर बनता और ये ही उसकी सम्पत्ति होते हैं। घर की शोभा का अर्थ है शोभायुक्त जीवन व्यतीत करते हुए उसमें निवास करना। शोभायुक्त घर वे होते हैं जिनकी नींव सत्य पर खड़ी होती है। जिनका जीना स्वच्छता और व्यवस्था पर आश्रित रहता है। जो प्रेम और सौहार्द से गर्म रखे जाते हैं। जिनमें प्रफुल्लता का दीपक जलता है। परिश्रम जिनकी खिड़कियाँ होती हैं और जिन पर परमात्मा की छत्रछाया होती है। आज के घरो में क्यो अशान्ति और सघर्ष व्याप्त रहता है? इसीलिए कि उनमें परमात्मा और धर्म के स्थान में विज्ञान और धन प्रतिष्ठित हो गए हैं जिसके कारण लोगों के चरित्र का दिवाला निकल गया है। पद्म पुराण की एक आख्यायिका के अनुसार परमात्मा उन घरो में निवास करते हैं जिनमें बड़े बूढ़े लोग बच्चों के लालन पालन के द्वारा उनमें घर के प्रति प्रेम और आकर्षण उत्पन्न करते हैं, जिनमें सन्तान माता पिता की सेवा करते हैं, जिनमे पति-परायणा कुल देवियाँ निवास करती हैं, जिनमे उनका सम्मान होता है, जिनमें लोभ रहित सत्यवादी, परोपकार परायण सद्गृहस्थ रहते और जिनके आसपास जितेन्द्रिय निस्पृह सदाचारी लोग निवास करते हो। जिन देशो में परिवारों का विघटन हो रहा है और क्लब घरों का स्थान ले रहे हैं वहाँ आवारा बच्चों की समस्या बहुत जटिल बन गई है। वहाँ के निवासी सकलित आँकड़ों के आधार पर इस परिणाम पर पहुँचने के लिए विवश हो गए हैं कि घरो में बच्चो का ठीक प्रकार से पालन न होने तथा प्रेम और सहानुभूति से वञ्चित हो जाने के कारण बच्चे अपराधों की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। आवारा बच्चे जन तन्त्र शासनो की स्थिरता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन जाते हैं। उन शासनों की शक्ति का वास्तविक स्रोत घर ही होते हैं। अत जो राष्ट्र इस शक्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने पर विशेष ध्यान देते हैं वे अपने राष्ट्र की सुरक्षा सुरक्षित कर देते हैं। अमेरिका के एक विचारक ने एक बार एक बात बड़े महत्त्व की कही थी और वह यह कि "हमारे देश (अमेरिका) का भविष्य घरों और स्कूलों से निर्धारित होगा। अत हमें घरों के वातावरण और स्कूलों के शिक्षण पर विशेष ध्यान देना होगा। सबसे अधिक इस बात पर कि उनके सामने अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया जाय।" यही बात प्रत्येक राष्ट्र पर चरितार्थ होती है। इसीमें उनका कल्याण है।

घर का निर्माण मनुष्य के अपने विकास के लिए भी आवश्यक है। इससे मनुष्य को अपने जीवन में विनम्रता, उदारता, परिश्रम शीलता और सबसे बढ़कर जीवन में पवित्रता लाने की अमित प्रेरणा मिलती है। घर के निर्माण से मनुष्य घर के भीतर ही अपने गुणों और आनन्द का ठीक ठीक मूल्याकन करने में समर्थ होता है। घर विहीन या घर के आनन्दों और आकर्षणों से वञ्चित अथवा उपराम व्यक्ति बुरी प्रजा, बुरे रिश्तेदार, बुरे मित्र और बुरे व्यक्ति सहज ही बन जाया करते हैं।

वे घर धन्य हैं जो समाज के समक्ष विशिष्ट परम्पराएं प्रस्तुत करके समाज को अच्छे नागरिक प्रदान करते हैं। वे घर धन्य हैं जिनमें दिनभर के परिश्रम से परिश्रान्त और क्लान्त जन प्रविष्ट होकर हृदय और मस्तिष्क की शान्ति अनुभव करते हैं। भले ही वे राजा हों या रक। वे घर धन्य हैं जिनकी मधुर और कोमल स्मृतियाँ घर वालों पर अच्छी छाप छोड़ती जिनको स्मरण कर मनुष्य का हृदय हर्ष एव कृतज्ञता से परिप्लावित रहता है। ✶

पूना में वाजपेय यज्ञ में हिंसा का अनुचित हठ

[श्री श्रीनिवास जी, पूना]

आर्यसमाज के तीव्र आन्दोलन से सनातनी पण्डित गौ की बलि देने का साहस न कर सके जो कुछ भी उन्होंने किया वह भी उचित नहीं है। आर्य विद्वानों को विशेष लेखों द्वारा पशु यज्ञ के सम्बन्ध में जन-भ्रान्ति को भी दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। —सम्पादक

पूना में वाजपेय यज्ञ हुआ, उस के विरोध में महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पण्डित सातवलेकर जी ने एक आवाहन दिया था, कि वेद और शास्त्रों में पशुबलि नहीं है और अगर कोई सनातनी पण्डित सिद्ध करेगा उसको मैं एक लाख रुपया इनाम दूगा और अगर सिद्ध न किया तो वेद प्रचार के लिए हमको उन्हें एक लाख रुपया देना होगा। जब ये बातें पूना के पत्रों में छपीं तब सनातनी पण्डित घबरा गये और आपस में विचार किया। आर्यसमाजियो को हमने जवाब नहीं दिया और अब पण्डित सातवलेकर को क्या जवाब दें और कोई उत्तर न दें उन्होंने चुप रहना ही ठीक समझा।

पूना में वाजपेय यज्ञ १३ मई को समाप्त हुआ। समाप्ति पर एक सह भोज भी हुआ, उसमें लेखक हाजिर था। वहाँ वाजपेय यज्ञ के प्रेसीडेण्ट श्री एन० जी० अभयकर जी ने अपने भाषण में आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी महाराज का अभिनन्दन किया और बताया स्वामी दयानन्द जी महाराज ने हिन्दू जाति का बहुत अच्छा सगठन किया, जो ब्राह्मण वेद नहीं सीखते थे उन सबको वेद का अभ्यास करना सिखाया। हमारा उनसे इतना ही मत-भेद है कि वे सबको वेद पढ़ने और सीखने का अधिकार देते हैं। सनातनी सिर्फ ब्राह्मण को ही वेद का पढ़ने का अधिकार मानते हैं। आर्यसमाजी मूर्ति-पूजा नहीं करते हैं लेकिन राम व कृष्ण आदि तथा अन्य हिन्दू देवताओं की हिस्ट्री का प्रचार करते हैं हमारे और उनके भेद क्या हैं, वेद को वे मानते हैं और हम भी मानते हैं। आर्य विद्वानों व पडितों को चाहिए कि वाजपेय यज्ञ कैसा होना चाहिए इस विषय के ऊपर आर्यमित्र में लेख लिखे जाय और आर्यसमाज के सब पत्रों में उन्हें प्रकाशित किया जाय।

इस वाजपेय यज्ञ और आर्यसमाज के चेलेंज से आज महाराष्ट्र में हलचल मची हुई है। वाजपेय यज्ञ में दारु और गौ को क्यो बध करके डाला गया? पूना के प्रसिद्ध सकाल न्यूज दैनिक में ता ३१ मई को प्रकाशित हुआ है जिसमें सनातनी पण्डितो को कहा गया है कि गौ और दारू की आहुतियाँ नहीं होने से वाजपेय यज्ञ रितसर नहीं हुआ और बेचारे बकरो की क्यों यज्ञ में आहुतियाँ दी गई इसका उत्तर उनसे मागा जा रहा है।

उत्तर प्रदेशीय निरीक्षक सूची १९५९ के लिए

१—देहरादून श्री मक्खनलाल जी देहरादून
२—सहारनपुर श्री चन्द्रमणि जी वैद्य मन्त्री उपसभा, श्री चौ० तेजसिंह जी प्रधान
३—मुजफ्फरनगर श्री सीताराम जी मु०नगर, श्री वेदसिंह जी कश्यप
४—मेरठ श्री श्यामलाल जी आर्य मेरठ, श्री रतनसिंह जी गाजियाबाद
५—बुलन्दशहर श्री मोहनलाल जी शर्मा, श्री सत्येन्द्र बन्धु जी आर्य
६—अलीगढ़ श्री मा० सरदारसिंह जी जलाली, श्री जयपालसिंह जी सुमेरपुर, श्री चम्पाराम जी हाथरस
७—मथुरा श्री मल्लाप्रसाद जी मथुरा, श्री खेमचन्द्र जी कोसीकलां
८—आगरा श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा, श्री कृष्णलाल जी कुसुमाकर
९—एटा श्री रघुवरदयालु जी भारद्वाज सोरों
१०—मैनपुरी श्री सरदारसिंह जी मन्त्री उपसभा, श्री दयाराम जी शिकोहाबाद
११—इटावा श्री प्रेमनाथ जी अजीतमल, श्री भगवतदयालु जी भरथना
१२—कानपुर श्री महेशप्रसाद जी प्रधान उपसभा, श्री रुद्रदत्त जी स०मन्त्री उपसभा कानपुर
१३—फतेहपुर श्री रामनारायण शास्त्री जी बिन्दकी
१४—फर्रुखाबाद श्री स्वा०परमानन्द जी दण्डी प्रधान उपसभा, श्री नवीनचन्द्रजी मन्त्री उपसभा
१५—इलाहाबाद श्री सुखदेवलाल जी प्रयाग
१६—जौनपुर श्री रामावतार जी जौनपुर
१७—वाराणसी-मिर्जापुर श्री सूर्यदेव जी शर्मा मिर्जापुर
१८—बलिया-गाजीपुर श्री सुरेन्द्र देव जी शास्त्री बलिया
१९—गोरखपुर-देवरिया श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, श्री होतीलाल जी गोरखपुर
२०—बस्ती श्री रामदास जी बस्ती
२१—आजमगढ़ श्री अक्षयवरनाथ जी, श्री जयकुमार जी स्नातक
२२—फैजाबाद श्री जगदीश्वरी प्रसाद जी फैजाबाद
२३—बहराइच श्री देवीप्रसाद जी आर्य बहराइच
२४—बाराबंकी श्री रामसजीवनलाल जी बाराबंकी
२५—गोंडा श्री सुन्दरलाल जी बलरामपुर
२६—सुलतानपुर श्री रामकिशोर जी शास्त्री अमेठी
२७—प्रतापगढ़-रायबरेली श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री
२८—लखनऊ श्री गंगाप्रसाद जी वाजपेयी, श्री विष्णुस्वरूप जी विद्यार्थी
२९—उन्नाव श्री मुन्नालाल जी उन्नाव
३०—हरदोई श्री रामस्वरूप जी शुक्ल, अनूपराम जी शर्मा हरपालपुर
३१—सीतापुर-लखीमपुर खेरी श्री शिवनारायण जी शुक्ल, श्री यज्ञदत्त जी शर्मा
३२—बरेली श्री सत्यपाल जी वैद्य श्री स्वा० सत्यानन्द जी अलीगंज
३३—बदायूं श्री आ०विशुद्धानन्द जी शास्त्री, श्री स्वा०स्वरूपानन्द जी मंत्री उपसभा
३४—मुरादाबाद श्री विश्वनाथ जी त्यागी, श्री जगन्नाथ जी सिंहल
३५—रामपुर श्री कन्हैयालाल जी मुमुक्षु, श्री कृष्णशरण जी आर्य रामपुर
३६—बिजनौर श्री कुन्दनलाल जी नगीना, श्री शिवराजसिंह जी
३७—शाहजहाँपुर—श्री गदाधर जी वैद्य शाहजहाँपुर
३८—पीलीभीत श्री प्रेमचन्द्र जी पूरनपुर, श्री रामबहादुर जी
३९—गढ़वाल-टेहरी श्री शान्ति प्रकाश जी प्रेम, श्री मुरलीधर जी देवरामपुर
४०—नैनीताल-अल्मोड़ा श्री इन्द्रवर्मा जी रामनगर
४१—झांसी-जरई श्री ओमप्रकाश जी स्नातक मोठ
४२—बांदा, हमीरपुर, महाराजपुर श्री रत्नसिंह जी आर्यसमाज बांदा
४३—देहली गढ़वाल श्री कालीचरण जी आर्य मेरठ

जनरल मुख्य निरीक्षक

१—श्री रामचन्द्र जी रिटायर्ड पोस्ट मास्टर बदायूं
२—" श्रीदेव वानप्रस्थी जी ज्वालापुर
३—" विश्वम्भरनाथ जी त्रिपाठी कानपुर
४—" मा० मातागुलाम जी प्रयाग
५—" रामकिशोरसिंह जी प्रयाग
६—" मोहनलाल जी आर्य आगरा
७—" राजितसिंह जी वाराणसी
८—" रामप्रसाद जी आर्य मैनपुरी
९—" रघुनन्दन स्वरूप जी मेरठ

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

नवीन समाज प्रवेश

अन्तरंग सभा दि० १५-२-५९ के निश्चयानुसार निम्नलिखित ५ आर्यसमाज सभा में प्रविष्ट हुए—

नाम समाज	पो०	जिला	कोटिधन
१—डोमनपुर	सीकड़	मिर्जापुर	१००)
२—सैरिख	खास	फर्रुखाबाद	१००)
३—लक्ष्मपुर भापर	कराबघाटी	गढ़वाल	१००)
४—जलालाबाद	खास	मुजफ्फरनगर	१००)
५—स्त्री आ०स० शामली	खास	मुजफ्फरनगर	कोटिधन से मुक्त

—सभा-मंत्री

सभा की सूचना

कृपया सम्मति प्रदान करें !

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाज एवं अन्तरंग सभासद गण, सभा की अन्तरंग सभा दि० १६-२-५९ नि० सं० ३५ द्वारा निम्न प्रस्ताव पर अपनी अपनी सम्मति शीघ्र भेजने की कृपा करें ?

प्रस्ताव की लिपि

निश्चय सं० ३५ अर्थात् चुनाव की सुविधा के लिये प्रधान तथा मन्त्री की निर्वाचन पद्धति में यह संशोधन कि एक मास पूर्व नामांकन पत्र उक्त पद के प्रत्याशियों की स्वीकृति सहित सभा कार्यालय में आया करें और केवल उन्हीं प्रस्तावित नामों पर मतदान हुआ करे। विषय विचारार्थ प्रस्तुत होकर निश्चय हुआ कि यह विषय आर्यमित्र द्वारा विज्ञापित किया जाय और इस विषय पर आर्यसमाजों का मत प्राप्त किया जाय।

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

सर्व अन्तरंग सभासदों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक १७ व १८ जौलाई १९५९ दिन शुक्रवार शनिवार स्थान आर्यसमाज मन्दिर मथुरा में आरम्भ होगा—प्रथम दिवस की बैठक एक बजे मध्याह्न से प्रारम्भ होगी।

आशा है आप कृपाकर नियत समय पर पधार कर अनुगृहीत करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभामंत्री

(पृष्ठ २ का शेष)

शास्त्री का प्रभावशाली भाषण हुआ व श्री भगवतीप्रसाद जी 'अभय' के भजन हुए। पश्चात् सम्मानित नेता पं०प्रकाशवीर जी शास्त्री ने सिंह-गर्जना करते हुए विदेशी प्रचारकों की कटु आलोचना की एवं आर्यत्व की रक्षा के लिए उपस्थित जनता को सचेष्ट किया, जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा।

दिनांक १ मई को प्रातःकाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति आचार्य विश्वश्रवा जी के द्वारा राजाधिराज महोदय ने सपरिवार विधिवत् पूर्ण की। इसके बाद श्री पं०रमेशचन्द्र जी शास्त्री ने यज्ञ सम्बन्धी आवश्यक बातों का दिग्दर्शन कराया। पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य ने ईशोपनिषद के पहले मन्त्र की व्याख्या की जिसको सुनकर जनता मन्त्र-मुग्ध हो गई। रात्रि को ८ बजे श्री पन्नालाल जी पीयूष के सुमधुर संगीत हुए, जिसमें मेवाड़ के गौरव का दिग्दर्शन कराया गया। पश्चात् आचार्य विश्वश्रवा जी ने भारतीय संस्कृति की महत्ता का बताते हुए प्रभावशाली भाषण दिया और धार्मिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र और आर्य साहित्य वितरण किया। अन्त में स्वागत मन्त्री श्री किस्तूरचन्द जी तोशनिवाज ने आगन्तुक अतिथियों को व महोत्सव में सहायता देने वाले महानुभावों को व उपस्थित जनता को धन्यवाद देते हुए शान्तिपाठ के बाद महोत्सव की कार्यवाही विसर्जित की।

श्रीमान् राजाधिराज साहब [illegible] सुदर्शन देव जी ने पूज्य महात्मा [illegible]नन्द स्वामी जी महाराज को वेद-प्रचार के लिये एक हजार रुपये की धनराशि भेंट की।

इस महोत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी [illegible]नन्द जी महाराज, गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के [illegible] व आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री [illegible] भगवती प्रसाद जी व अमेरिका वा[illegible] आर्यसमाजी पण्डित जी व पं० भगवान स्वरूप जी न्याय-भूषण व श्रीकरण जी शारदा अजमेर व पंडित चन्द्रसेन जी आर्योपदेशक सोनीपत व पं० रामसहाय जी वानप्रस्थी आदि महानुभावों ने विशेष रूप से भाग लिया। वे सभा धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। ★

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस शुभ कार्य के लिये सहमति तथा दायित्व की स्वीकृति दे दी। श्री बनारसीदास जी (हैडमास्टर साहब) प्रसन्नता से उछल पड़े और यह सूचना गांव में तुरन्त पहुँचा दी गई। सब लोग इकट्ठा होने शुरू हो गये। यह कुम्भकार बस्ती उग्गोकी ग्राम में पश्चिम की ओर स्थित थी। यह घोषित कर दिया गया कि यह शुद्धि-कार्य पं० रघुनाथ शर्मा रायपुर वालों के हाथो सम्पन्न होगा।

निश्चित समय पर हम लोग वहां पहुँचे, वहां पहुँच कर देखा कि बस्ती भर के कुम्भकार स्त्री-पुरुषों का काफी जमघट एकत्र था और वे लोग बहुत उल्लसित हो रहे थे, गांव के प्रतिष्ठित वर्ग के लोग भी काफी संख्या में उपस्थित थे। मैने यथाविधि शुद्धि-कार्य संपन्न किया, और उस परिवार [जो शुद्ध हुए थे] के हाथो बना प्रसाद तथा जल सर्व प्रथम मैंने ही लिया, खाया तथा पिया। बाद में सभी उपस्थित जन समुदाय ने उनके हाथों प्रसाद-जल लिया। शुद्धि-कार्य सम्पन्न हुआ और वे लोग अपनी विरादरी में मिल गये। क्योंकि प्रसंग स्वेच्छा से था अतः किसी को कोई आपत्ति भी नहीं हुई। इसी अवसर पर हुई एक और बात कहे बिना भी नही रहा जा सकता, जिस पर मुझे हँसी भी आई, वह थी कि पं० ज्ञानचन्द्र शास्त्री जी जो मेरे पास ही बैठे थे, जब प्रसाद व जलपान का अवसर हुआ, और हुआ भी सर्वप्रथम मेरे से ही-तब पं० ज्ञानचन्द्र जी ने मुझे अपनी हाथ की कोहनी से संकेत किया और धीरे से कहा कि इसके लेने की अब क्या पड़ी है? मैने कहा कि भाई काम भी करना [जिसे दिल से हम ठीक समझते हैं] फिर मन की चोरी रखना यह न्यायसंगत नहीं। खैर बात खत्म हुई। उपर्युक्त कार्य सबकी प्रसन्नतापूर्वक हो गया। इस घटना को स्मरण कर आज भी कितना उल्लास हो रहा है कि उन लोगों के आनन्द की सीमा नहीं थी। जहाँ तक मेरी स्मृति काम कर रही है पं० ज्ञानचन्द्र शास्त्री जी आजकल औरङ्गाबाद छावनी में अपने भाग्नेय पं० श्री अमरनाथ शर्मा सूबेदार के पास रह रहे हैं। यह पंक्तियें कभी उनकी दृष्टि में पड़ गई तो वे भी इस संस्मरण से आह्लादित अवश्य होंगे। उग्गोकी में तब आर्यसमाज की स्थापना थी, वहां उसके उत्साही कार्यकर्ता तथा हेड मास्टर साहब श्री बनारसीलाल जी उसीकी छत्रछाया में कार्द करने वाले थे। अस्तु—

"आर्यमित्र" के मित्र-परिवार तथा अन्यान्य विचारधारा रखने वालों के सम्मुख किसी सस्था की कर्तव्य-निष्ठता का प्रतिपादन न करना अकर्मण्यता होगी। आर्यसमाज द्वारा की गई तथा की जा रहीं सेवायें हिन्दी संसार तथा शुद्धि द्वारा भारत माँ के लिए प्रशंसनीय तथा सबके लिए गौरवप्रद अवश्य हैं। भले ही कोई पूर्णतया आर्यसमाज विचारधारा का न हो।

देश-दर्शन

—दिल्ली नगर निगम के मेयर पद के लिए पाँच उम्मीदवारों के नाम प्रस्तावित हो गये हैं। कांग्रेस, प्रगतिशील, जनसंघ और स्वतंत्र उम्मीदवार मेयर पद के लिए चुनाव के मैदान में मोर्चा जमाये खड़े हैं।

२४ जून का समाचार है कि विरोधी पक्ष की अखण्ड एकता के बल पर कांग्रेस उम्मीदवार को हराकर प्रगतिशील दल के नेता श्री त्रिलोकचन्द्र मेयर के पद पर निर्वाचित हो गये।

—आजकल तिब्बत के दलाईलामा मसूरी में ठहरे हुए हैं। उन्होंने १९५१ ई० के चीन-तिब्बत के समझौते की निन्दा करते हुए कहा कि वह समझौता चीनियों के बल प्रयोग की धमकी के कारण हुआ था। दलाई लामा की मांग है कि तिब्बत की स्थिति सन् १९५७ के समान स्वतंत्र हो। उन्होंने कहा है कि तिब्बत की समस्या हल करने के लिए मैं प्रधान मंत्री श्री नेहरू तथा चीन के प्रधान मंत्री श्री चाऊ एन-लाई की भेंट का स्वागत करूँगा।

—साम्यवादी दल की अर्नाकुलम जिला-समिति की ओर से कांग्रेस के महामंत्री श्री सादिकअली को एक स्मृतिपत्र देकर कहा गया है कि गत १३ जून को अंकमाली में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा सहकारी समिति की ताड़ी की दुकानों पर धरना देने पर गोली चलाई गई। धरना देने वालों ने उन लोगों पर भी हमला किया जो दुकानों में जाना चाहते थे। सत्याग्रहियों ने शान्तिपूर्ण सत्याग्रह के नाम पर गुण्डागर्दी की।

—अर्नाकुलम जिले में सत्याग्रहियों के चार जत्थे गिरफ्तार किये गये। कुल मिलाकर इस जिले में ६१ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

—जोरहाट [आसाम] के पुलिस थाने पर जब भीड़ ने हमला किया तब पुलिस को गोली चलानी पड़ी। १ व्यक्ति मरा और २ घायल हो गये। पुलिस के एक सिपाही के भी गोली लगी। अस्पताल में उसकी हालत चिन्ताजनक बताई जाती है।

—नये स्वतंत्र राजनैतिक दल के नेता श्री राजगोपालाचार्य जुलाई के दूसरे सप्ताह में दिल्ली आयेंगे। कहते हैं कि दिल्ली में नये स्वतंत्र दल की शाखा खोली जा रही है।

—मिल मालिकों द्वारा ऊषा कपड़ा मिल को बन्द कर देने के कारण देहली में १२०० मजदूर बेकार हो गये हैं। मजदूरों ने विरोध-स्वरूप श्री लालबहादुर शास्त्री की कोठी के आगे धरना देना आरम्भ कर दिया है।

—पश्चिमी बङ्गाल के खाद्य मंत्री श्री पी० सी० सेन ने इस बात को स्वीकार किया है कि सरकार अवैध गल्ला संग्रह को रोकने में असफल रही है। सरकार द्वारा रोकने का प्रयत्न होने पर भी चोरबाजार में चावल का भाव बढ़ता आ रहा है। इसका मूल्य २० से ३० रुपये प्रतिमन तक है। दूसरी ओर कलकत्ता में गेहूँ भारत के अन्य भागों से सस्ता है। गेहूँ का भाव यहां १५) प्रतिमन है।

—सिलचर (आसाम) का समाचार है कि बरक नदी तथा उसकी सहायक नदियों में बाढ़ आ जाने के कारण इस क्षेत्र के लगभग ५०० गांव जलमग्न हैं और जिले के प्रायः ४ लाख आदमी बाढ़ के संकट में ग्रस्त हो गये हैं। जोरहाट से १० मील दूर ब्रह्मपुत्र के बांध में १०० फीट की दरार पड़ जाने के कारण आस-पास का क्षेत्र जल-मग्न हो गया है जिसमें १२०० परिवार पीड़ित हो रहे हैं।

—केरल के विद्यार्थी संघों की संयुक्त संघर्ष-परिषद् के प्रतिनिधि मंडल ने राज्य के गवर्नर को एक-स्मरण पत्र देकर प्रार्थना की है कि वे केरल पुलिस की बेलगाम कार्रवाइयों और शासक कम्युनिस्ट पार्टी के गुण्डे पिट्ठुओं को गैरकानूनी गतिविधियां रोकने के लिए अविलम्ब हस्तक्षेप करें।

—गुरुद्वारों के मामलों में सरकारी हस्तक्षेप के आरोपों की जांच करने वाली समिति के सामने प्रस्तुत करने के लिए अकाली दल ने ५०सूत्री अभियोग पत्र तैयार कर लिया है।

—आगरा का २० जून का समाचार है कि अकाली नेता मास्टर तारासिंह ने एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि गुरुद्वारों पर किये गये हमलों को स्वयं सरकार ने "निर्लज्जता" के साथ करवाया। यह बात इन घटनाओं के प्रति उसकी उदासीनता से प्रकट होती है।

आवश्यकता

श्री दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर के लिए एक ऐसे अध्यापक महानुभाव की आवश्यकता है, जो वेद और वैदिक साहित्य के अध्यापन के साथ-साथ वक्तृत्वकला का प्रशिक्षण भी दे सकें। उन्हें आर्य सिद्धान्तों से पूरा परिचय हो, तथा प्रबन्ध-कार्य का भी अनुभव हो। वेतन निर्देश सहित प्रार्थना पत्र विद्यालय के आचार्य के नाम यमुनानगर जिला अम्बाला के पते पर आने चाहिए।

ग्राम जीवन

धान पिछली खरीफ की है। उड़ीसा के मयूरभंज जिले में कचाई नाम का एक गांव है। यों तो गांव साधारण है, लेकिन पिछले साल खरीफ के दिनों में यहां के किसानों ने जापानी ढंग से धान की खेती शुरू की, जिसके फलस्वरूप धान की उपज ड्योढ़ी से भी ज्यादा हो गयी।

इन किसानों को राज्य और जिले के अधिकारियों ने इस ढंग से खेती करने को तैयार किया। अधिकारियों ने जिम्मा लेकर कहा कि अगर इस तरीके से खेती की गयी तो प्रति एकड़ १५ से २० मन धान के अलावा इतना धान और होगा कि नए तरीके के लिये जो अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा वह भी वसूल हो जाएगा।

खेती के नये ढंग का प्रयोग

मई १९५८ में प्रयोग के तौर पर नये ढंग से खेती की गयी। गांव की जमीन की पड़ताल करके २२५ एकड़ भूमि का टुकड़ा ऐसी जगह चुना गया, जहां हल्दिया योजना से सिंचाई की भी व्यवस्था हो सके। जमीन को ५० एकड़, ५५ एकड़ और १० एकड़ के चक में बांट दिया गया और फिर ४४ किसानों ने मिलकर खेती का काम शुरू किया। मई के अन्त में खेतों में ढेंचा और सन की हरी खाद दी गयी।

बीज के लिये बी० ए० एम० ११ किस्म चुनी गयी, जो इस क्षेत्र के लिए बहुत उपयुक्त है। पौद तैयार करने के लिए १५ एकड़ में २० पौं० प्रति एकड़ के हिसाब से बीज बोया गया, जबकि अभी तक ४० से ५० पौं० बीज प्रति एकड़ बोया जाता था। पौद की क्यारी में काफी मात्रा में सुपर फास्फेट और अमोनिया सल्फेट डाले गये। थोड़े ही दिनों में अंखुए फूट आए। करीब ७ हफ्ते बाद धान रोपना शुरू किया गया और १ महीने की मेहनत के बाद यह काम भी खत्म हो गया। किसान बड़ी उत्सुकता से उस दिन की बाट जोहने लगे जब उसकी मेहनत का कुछ नतीजा निकले।

मुश्किल के दिन

कुछ दिनों बाद धान के पौदों में रोग के लक्षण दिखाई दिये, लेकिन दवा छिड़क कर उनकी जल्दी रोकथाम की गयी। अक्टूबर में किसानों ने देखा कि धान के साथ जंगली धान भी निकल आया है। इस पर उन्होंने अधिकारियों को दोष देना शुरू किया कि उन्होंने धान के बीज में जंगली धान के बीज मिलाकर दिये थे। इधर पड़ताल से मालूम यह हुआ कि इन खेतों में १ से लेकर ५ प्रतिशत जंगली धान के पौधे हैं, जबकि जिन खेतों में पुराने तरीके से खेती होती है, वहां २५ से ६७ प्रतिशत तक जंगली धान निकले हैं। दूसरे, नये तरीके के खेत में एक-एक धान की बालियों में ६२८ दाने निकले, जबकि साधारणतः ५३३ दाने निकले हैं।

नवम्बर के अन्त में कटाई शुरू हुई तो पता चला कि उपज ६५ प्रतिशत अधिक हुई। जापानी तरीके से खेती करने पर ११५ एकड़ जमीन में ३७६० मन धान पैदा हुआ, जबकि पहले पुराने तरीके से खेती करने पर औसन २२३२ मन पैदा होता था। इस खेती में ४४ किसानों ने खाद, उर्वरक, बीज तथा मजदूरी आदि पर ४२२० रु० अधिक खर्च किये, जिसके फलस्वरूप १५२५ मन अधिक धान पैदा हुआ। अगर धान का मूल्य कम से कम ८ रु० मन आंका जाय, और खेत सुखने वगैरह से जो नुक्सान हुआ, उसे घटा दिया जाय, तो भी किसानों को ८,००० रु० का फायदा हुआ।

आर्य-जगत

प्रचार-समाचार—

—मधुवन (आजमगढ़) में श्री धर्मवीर ब्रह्मचारी जी ने प्रचार किया। आपके प्रचार से प्रभावित हो श्री मन्सरू मल जी ने अपना १० हजार रुपये का भवन आर्यसमाज के लिये प्रदान किया है। इस भवन की रजिस्ट्री आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश के नाम की जा रही है। अन्य भी कई स्थानों पर २० दिन तक आर्य जी ने यू० पी० और बिहार में प्रचार किया।

—सागर(मध्य प्रदेश)आर्यसमाज ने सार्वदेशिक सभा की धार्मिक परीक्षाओं को प्रोत्साहन देने के लिये प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम तीन छात्रों को छात्र-वृत्तियाँ देने का निश्चय किया है।

—हरदोई आर्य उप प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों के एक पद यात्री दल ने १५से२० जून तक जिले के मुख्य स्थानों पर आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने के लिये दौरा किया। जिले में पर्याप्त जागृति हुई।

—अलीगढ़ आर्यवीर दल दलपति (प० उ० प्र०) श्री विश्वनाथ जी आर्य-वीर अपने यात्रा क्रम में पधारे और दल की प्रगति व समस्याओं पर विचार किया। इससे पूर्व वे हाथरस, मथुरा, वृन्दावन, नन्दगांव, गोकुल, बरसाना और आगरा भी पधारे।

—अमेठी (सुलतानपुर) श्री राज कुमार रणञ्जयसिंह जी एम० एल० सी० ने छात्र प्रशिक्षण शिविर बड़गांव का १ जून को तथा नवयुवक छात्र प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन २ जून को सपन्न किया। ६ जून को रामनगर में महा राणा प्रताप जयन्ती समारोह में भी राजकुमार जी ने भाषण दिया।

—रुड़की में निर्धन और कमजोर छात्रों को शिक्षा की सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से श्री दयानन्द नि शुल्क रात्रि विद्यालय की स्थापना की गई है। ६ से १२ कक्षा तक १५० छात्र है और १८ से अधिक अध्यापक द्वारा सेवा कर रहे हैं। जिला विद्यालय निरीक्षक तथा अन्य लोगो ने इस शिक्षा-व्यवस्था की प्रशंसा की है और जिलाधीश महोदय ने जूनियर हाई स्कूल रुड़की को स्थान प्रदान किया है।

उत्सव—

—दिलदार नगर (गाजीपुर) आर्य-समाज का ३७ वां उत्सव ३ से ६ जून तक सोत्साह पूर्वक मनाया गया। श्री स्वामी प्रणवानन्दजी, श्री रामानन्द जी शास्त्री, श्री धर्मराज सिंह, श्री क० नन्दलाल जी, श्री रामप्रसाद जी पाण्डे के भजन भाषण हुए। जलूस काफी प्रभावशाली रहा।

—उज्जैन आर्यसमाज का उत्सव ६ से ८ जून तक समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री की कथा भी होती। श्री प्रो० रामचन्द्र जी 'चन्द्र', श्री प० सुरेन्द्र शर्मा जी आदि के भाषण भजन हुए।

आचार्य जी ने आर्यसमाज के आध्यात्मिक पक्ष की रोचक एवं पाण्डित्य-पूर्ण व्याख्या की और प्रो० चन्द्र जी ने महर्षि के दार्शनिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यो की महत्ता पर प्रकाश डाला।

शोक-समाचार

—लखनऊ आर्यसमाज श्रृगारनगर की ओर से श्री डा० ओमप्रकाश जी कक्कर के सुपुत्र श्री किरणजी की आक स्मिक मृत्यु पर १४ जून को साप्ताहिक सत्सग में हार्दिक शोक प्रकट किया गया शोकाकुल परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगतात्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की गई।

निर्वाचन—

—देहली भारतीय शुद्धि सभा के प्रधान श्री चरणदासजी पुरी, मन्त्री श्री नारायण दास जी कपूर, कोषाध्यक्ष श्री सुभानसिंह जी।

गढ़वाल में प्रचार

आर्यसमाज चौंदकोट का वार्षिकोत्सव श्री पण्डित रघुवरदयाल जी की अध्यक्षता में नौगावखाल में मनाया गया, ३ जून को जन्दाखाल मेले में प्रचार किया गया। ४ तथा ५ जून को नौगाव खाल में तथा ६ ७ जून का पाटीसैण में प्रचार किया गया, इस उत्सव में आर्य्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सुयोग्य प्रचारक श्री जगपाल-सिंह श्री धर्मपाल विद्यालंकार एम० ए० जन्दाखाल, श्री रामप्रसाद शास्त्री, श्री भैरवदत्त शास्त्री श्री प० सुरेशानन्द संगीताचार्य, श्री ब्रजमोहन शास्त्री श्री वीरभद्र शास्त्री, श्री ब्रह्मचारी सत्येन्द्र, श्री ब्रह्मचारी दीनदयालु, श्री चन्द्रसिंह स० जि० प्र० परिषद्, श्री गोपालदत्त सहकारी निरीक्षक, श्री रणजीतसिंह पत्रकार आदि महानुभावो ने भाग लिया और अपने शिक्षाप्रद भाषणों से जनता को प्रभावित किया।

सम्मेलन ने सर्व सम्मति से जिले के अन्दर मद्यपान की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को देखते हुये सरकार से जिले को मद्य निषेध क्षेत्र घोषित करने केन्द्रीय व पंजाब सरकार से पंजाब भाषा विवाद सुलझाने सम्बन्धी प्रस्तावों के अतिरिक्त जिला-स्तर पर स्वर्गीय गढ़केशरी श्री केसरसिंह जी की पुण्य स्मृति में एक जिला चलपदक आरम्भ करने व जन्दा-खाल में आर्य्यसमाज मंदिर निर्माण के लिये भी प्रस्ताव पास हुये।

मन्दिर निर्माण के हेतु, श्री धर्म-पाल विद्यालंकार द्वारा जन्दाखाल में भूमि प्रदान की, उसके लिये उन्हें हार्दिक धन्यवाद दिया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश व सार्व-देशिक सभा दिल्ली से प्रार्थना की गई कि वे इस क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार की विशेष व्यवस्था करने की कृपा करें।

—मानसिंह आर्य, मन्त्री

जिला मेरठ में हरिजन-सम्मेलन की धूम

(निज संवाददाता द्वारा)

दि० २५ से २७ मई सं० २६ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आदेशानुसार जि० उप प्रतिनिधि सभा मेरठ में ग्राम भीकनपुर तहसील गाजियाबाद जि० मेरठ में एक बृहद हरिजन सम्मेलन का आयोजन किया। जिसमें वहाँ की जनता ने तनमन और धन से पूर्ण सहयोग देकर तथा सहस्रों की संख्या उपस्थित होकर सम्मेलन को सफल बनाया। इस सफलता में हरिजन अधिकारी मेरठ,सूचना अधिकारी मेरठ, तथा हापुड़ की, श्री निरञ्जनदेव की ओर श्री बलबीर सिंह वेधड़क की भजन मण्डलियों का विशेष हाथ रहा है। वहाँ ऋषि-लंगर द्वारा सहभोज हुआ जिसमें सहस्रों आदमियों ने भोजन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा की उप प्रधाना श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल के सभापतित्व में एक महिला सम्मेलन भी किया गया। माननीय अतिथियों में सार्वजनिक निर्माण-विभाग के मन्त्री श्री गिरिधारीलाल जी किसी विशेष कारण वश उपस्थित न हो सके,फिर भी श्री ओ३मप्रकाश जी पुरुषार्थी, श्री राम गोपाल जी शालवाले भू० यू० मन्त्री सार्वदेशिक सभा, तथा श्री शिवकुमार जी शास्त्री के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

शिक्षा-समस्या—

भारतीय दृष्टि में "योग्य शिक्षक"

(श्री महादेव प्रसाद आई० जी० डी०, एम० आर० डी० एस० सिहोर म० प्र०)

[आज भारत में शिक्षा का प्रश्न बड़ा गम्भीर बना हुआ है। शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी सभी के विषय में हमारी मान्यताएं बदल चुकी हैं। शिक्षक का आज हमारे समाज में पूर्ववत् सम्मान नहीं रहा जो हमारी वास्तविक उन्नति में एक बहुत बड़ी बाधा है। शिक्षक के प्रति सम्मान की भावना जागृत करके ही हम समाज को, आदर्श मार्ग की ओर अग्रसर करने में सफल हो सकते हैं।—सं०]

प्राचीन काल में भारतवर्ष जगत्गुरु का पद प्राप्त कर सका, उसका एकमात्र आधार भारतीय शिक्षक रहा है। भारतीय शिक्षक ने सदैव कुटिया में रहकर त्याग और तपस्या द्वारा अपने तथा देश के सम्मान को ऊँचा उठाया जिसके फलस्वरूप हमारा देश जगत्गुरु का पद प्राप्त कर सका तथा उसके महान् आदर्श चरित्र का सदैव उचित मूल्यांकन भी किया गया। योग्य शिक्षक की परिभाषा करते हुए हमारा आर्य साहित्य गुरु की ज्ञान-गरिमा के अनुकूल कितनी सुन्दर अभिव्यक्ति करता है, जिसमें ईश्वरीय गुणों का पूर्ण विकास स्वीकार किया गया है—

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरु देवो महेश्वराः। गुरु साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

उक्त सम्मान शिक्षक को अपनी विद्वत्ता, ज्ञान, आचरण, नैतिकता आदि के साथ ही साथ उसके महान् त्याग से ही मिला है। संसार के महान् से महान् व्यक्ति का उसने निर्माण किया और सब उसके सामने श्रद्धावनत हुए।

प्राचीन काल में गुरु जंगलों में कुटिया में रहता था। वहीं आश्रम में शिष्य उसके पास रहकर अध्ययन करते थे। उस समय आवश्यकतायें कम थी उनकी पूर्ति के लिए साधन भी कम थे, परन्तु आज का युग ऐसा नहीं है न वैसा समाज ही है। पर समाज आज भी अध्यापक से अपेक्षा करता है कि शिक्षक को त्याग करना चाहिए। उस परिस्थिति में जब शिक्षक को किसी बात का अभाव नहीं था, वह सदैव मनन, चिन्तन, अध्ययन और अध्यापन में ही अपना समस्त समय और शक्ति लगा देता था।

वर्तमान समय को छोड़कर प्रायः सभी युगों में शिक्षक का यही सम्मान रहा है। अतः आज के गुरु को पुनः उस स्थान को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्न करना चाहिए, प्रायः अधिकांश शिक्षक योग्य ही रहते हैं। अयोग्य व्यक्ति किसी दूसरे पद पर फिर भी कुछ दिन कार्य कर सकते हैं, परन्तु इस परम पुनीत पद पर कुछ दिन भी कार्य करना अयोग्य व्यक्ति के लिये संभव नहीं है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब शिक्षक योग्य है तो उसका उचित सम्मान क्यो नहीं होता? इसका मुख्य कारण है, आज के समाज की प्रवृत्ति। आज का समाज विद्वत्ता को सम्मान नहीं देता बल्कि धन तथा पद को महत्त्व देता है। फलस्वरूप शिक्षक सम्मान प्राप्त करने से सदैव वंचित रह जाता है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि समाज अपनी प्रवृत्ति को बदले। शिक्षक को पूर्णरूपेण अभावहीन बना दे ताकि वह अपनी समस्त शक्ति और समय को मनन, चिंतन एवं अध्ययन में लगाकर आने वाली भारत की भावी पीढ़ी को सबल और सशक्त बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान दे सके तथा अपने खोये हुए पद को प्राप्त करने में भी पूर्ण सफल हो सके। महर्षि अरविन्द के शब्दों में—

"अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली हैं, वे संस्कार की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींचकर महाप्राण शक्तियां बनाते हैं।"

उन्नति के पथ पर अग्रसर होने में लड़खड़ाते हुए भारत की स्वतन्त्रता को शैशवावस्था में शिक्षक का स्थान अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। संस्कृति के चतुर माली का परम पुनीत कार्य करने वाले अध्यापकों के प्रति समाज की अपनी जिम्मेदारी एवं कर्त्तव्य-भावना का ध्यान रखना चाहिये और उसके प्रति उपेक्षित भावना को छोड़कर भारत निर्माण के विराट अभियान में उसे पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिए। भारत अपने उस प्राचीन जगत्गुरु के गौरव को तभी पुनः प्राप्त कर सकेगा। जब भारतीय समाज अपने गुरु को यथोचित सम्मान करना सीखेगा।

यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि जिस दिन भारतीय समाज भारतीय शिक्षक का उचित मूल्यांकन करेगा उस दिन सभ्यता एवं संस्कृति की पोषक भारतभूमि में अनेकों महापुरुष अवतरित होंगे। वे युग-निर्माता होंगे। और देश को गौरवान्वित करेंगे और इस तरह भारत अपने यश-मयंक की विमल चन्द्रिका से विश्व को पुनः आह्लादित कर सकेगा। ★

स्वास्थ्य-सुधा

फलों का राजा आम

—आम्र-कुञ्जविहारी—

आम प्रकृति की मनुष्य को अद्भुत देन है। इस फल के रूप में उसने स्वाद, रस और सौंदर्य इतने खुले हाथों बांटा है कि गरीब और अमीर सब इनका उपयोग कर सकते हैं। आम केवल स्वादिष्ट फल ही नहीं, 'ए' और 'सी' विटामिनों से भी भरपूर है।

हमारे देश में हजारों वर्ष से आम उगाया जाता रहा है। सदियों से निरंतर कलमें चढ़ाने और तरह-तरह के प्रयोग करने से इस फल की असंख्य किस्में तैयार की गयी हैं और जो आम किसी युग में अस्वादिष्ट फल रहा होगा, आज पृथ्वी का सर्वाधिक स्वादिष्ट फल ही नहीं, फलों का राजा बन गया है।

भारत में आम की बागवानी बड़ी लाभदायक होती है। देश भर में जितने क्षेत्र में फल उगाये जाते हैं, उनमें से ६० प्रतिशत में आम पैदा होता है। यों तो आम आसाम से लेकर पंजाब तक और हिमालय से कन्याकुमारी तक देश के सभी भागों में होता है, किन्तु हिमालय के नीचे के मैदानों और तटवर्ती क्षेत्रों में यह बहुतायत से होता है। आम सबसे अधिक, ५ लाख ३८ हजार एकड़ में, उत्तर प्रदेश में उगाया जाता है। इसके बाद बिहार और प० बंगाल का स्थान है। पंजाब में चण्डीगढ़ के पास बुरेल गांव में आम का बहुत बड़ा पेड़ है। इस पेड़ का तना ३२ फुट और और इसकी शाखाओं का घेरा ५ से १२ फुट तक का है और इनकी लम्बाई ७०-८० फुट तक है। पेड़ की शाखाएं २७०० वर्ग गज में फैली हुई हैं। इस पर औसतन ४५० मन फल लगता है।

बढ़िया किस्में

देश में जितनी किस्मों का आम उगाया जाता है, उनमें बम्बई का अलफोन्सो और पायरी, गोवा का फेरानदीन और मनकुरद, लंगड़ा, लखनऊ का सफेदा, सफेदा नम्बर एक, दशहरी, खजरी, समर बहिश्त, चौसा, माल्दा और फजली उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से होता है। बिहार के बम्बई जरदालू, सफिया और बम्बई तथा दक्षिण भारत के हिमायुद्दीन और ... बहुत प्रसिद्ध हैं।

दिल्ली भी आम की बड़ी मण्डी है। यहां प्रतिदिन आम के औसतन १०० ट्रक आते हैं और प्रत्येक ट्रक में करीब १५० मन आम आता है। दिल्ली में आमतौर पर प्रतिदिन २,००० मन और फसल के अच्छे दिनों में प्रतिदिन ३,००० मन तक आम खप जाता है।

अन्य उपयोग

हमारे देश में आम कई प्रकार से व्यवहार में लाया जाता है। कच्चे आम के अचार, चटनी, मुरब्बे आदि बनते हैं। पका आम यूं ही खूब खाया जाता है। इसकी गुठली में कारबोहाइड्रेट, चर्बी और खनिज पदार्थ काफी होते हैं। इसकी गुठली में चावल, गेहूँ, मक्का और जौ से भी अधिक चर्बी और चूना होता है। आम केवल कुछ महीने ही मिलता है, इसलिए साल के बाकी दिनों के लिए इसके रस और गूदे को सुखाकर अमावट आदि चीजें तैयार की जाती हैं। आम का शरबत अच्छा होता है और यह आइसक्रीम में भी डाला जाता है।

फल-संरक्षण-उद्योग के लिए दूसरी पंचवर्षीय योजना में १ करोड़ ५ लाख रुपया खर्च करने की व्यवस्था है। इसमें से ५५ लाख रु० फल-संरक्षण के ५ बड़े, २०० छोटे कारखाने खोलने के लिए ऋण आदि देने पर खर्च होगा। १९५५-५६ में फलों की २३ हजार टन दूसरी चीजें तैयार की गयीं। इनका उत्पादन १९६०-६१ तक बढ़ाकर ५० हजार टन करने का लक्ष्य रखा गया है।

भारत में ४०० सालों से आम की कलमें चढ़ाकर नयी-नयी किस्में तैयार करने का प्रयत्न चल रहा है। इसके अलावा आधुनिक युग में भी बागवानी विशेषज्ञों ने आम की बढ़िया किस्में निकालने में सराहनीय काम किया है। इस प्रकार इस फल की हमारे देश में वृद्धि होगी, किन्तु हमें ऐसी ही किस्मों को बोने और बढ़ाने की ओर अधिक ध्यान देना होगा, [illegible] अधिक होती हैं और [illegible] भी [illegible]।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

आषाढ़ ७ शक १८८१
(२८ जून १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ४११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

आर्यकुमार सभा बिहारीपुर, बरेली का द्वितीय वार्षिकोत्सव

आर्यकुमार सभा बिहारीपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव यहाँ २० से २२ मई तक बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक २० मई को आर्यसमाज मन्दिर बिहारीपुर में 'क्या आर्यसमाज को राजनीति में भाग लेना चाहिए ?' विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। २१ मई को श्री प्रतापचन्द्र जी आजाद एम० एस० सी० की अध्यक्षता में एक आर्य कुमार सम्मेलन हुआ जिसमें भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख्य उपमन्त्री तथा 'लोकमत' के संचालक माननीय श्रीयुत डा० ईश्वर दयालु जी आर्य ने वर्तमान समय में आर्यकुमार सभाओं की आवश्यकता तथा अब तक के आर्यकुमार आन्दोलन के विषय पर प्रकाश डाला। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महोपदेशक श्री पण्डित राजाराम जी शास्त्री, स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी श्री प्रेमशंकरजी 'समर' तथा श्री प्रजापालक जी शर्मा आदि अनेक महानुभावों ने भी आर्यकुमार सभाओं के महत्त्व पर प्रकाश डाला। दूसरे दिन आर्य-जगत् के सुप्रसिद्ध नवयुवक नेता श्री शिवकुमारजी त्यागी बी० ए० एल०-एल० बी० की अध्यक्षता में धर्म-सम्मेलन किया गया जिसमें सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के प्रधान मंत्री श्रीयुत आचार्य विश्वश्रवाः जी, श्री पं० विद्यासागर जी एम० ए० आदि आर्य नेताओं ने आर्यसमाज के व्यापक दृष्टिकोण को जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया तथा विदेशी ईसाई मिश्नरियों की हलचलों को राष्ट्र तथा जाति के लिए घातक बताया। उत्सव के अन्तिम दिन आर्य-जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी श्रद्धेय श्री पंडित बिहारीलाल जी शास्त्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्र भाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें माननीय श्री विश्वनाथ जी त्यागी आदि महानुभावों के सारगर्भित और ओजस्वी भाषण हुए। अपने अध्यक्षीय भाषण में माननीय श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास और उसकी तथा देवनागरी लिपि की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रभाषा विरोधी तत्त्वों जैसे—श्री राजगोपालाचार्य तथा श्री मास्टर तारासिंह आदि के राष्ट्र-घातक षड्यन्त्रों की तीव्र निन्दा की।

शिवकुमार स्वरूप जी सभा मन्त्री ने सभा की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा माननीय श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री के करकमलों द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं आदि के पुरस्कार वितरित हुए। आर्यकुमार सभा के प्रधान श्री भारतदेव पटेल बी० ए० ने सभी अभ्यागत आर्य नेताओं को, स्थानीय आर्य जनता को आर्थिक सहायता देने तथा उत्सव में पधार कर उत्सव की शोभा तथा आर्यकुमारों के उत्साह को बढ़ाने के लिए कोटिशः धन्यवाद दिया।

उत्सव के तीनो दिन भजनोपदेशक श्री भूपराम जी के संगीत कार्यक्रम भी होते रहे।

(पृष्ठ २ का शेष)

कर्मचारी से लगाकर उच्च पदाधिकारी भी नैतिक गिरावट के शिकार हैं। लोग राष्ट्रीय हित की अपेक्षा अपने तुच्छ स्वार्थों की ओर अधिक ध्यान देते हैं। कोई भी पार्टी सत्ता में आवे उसको नीति-परायण कार्यकर्त्ताओं की जरूरत है। अभी भारत में स्वस्थ लोकमत नहीं बना है। अखबारों द्वारा स्वस्थ लोकमत निर्माण की आवश्यकता है, तभी सामाजिक कुप्रथाओं, भ्रष्टाचार एवं अन्न-संग्रह से अनुचित लाभ उठाने की बुराइयाँ दूर होंगी।

शान्ति और सौहार्द—आर्यसमाज को धार्मिक प्रचार के साथ राष्ट्र-निर्माण का भी कार्य करना चाहिए। धर्म में निःश्रेयस और लौकिक अभ्युदय दोनों ही शामिल हैं। आर्यसमाज को ऐसे साहित्य के निर्माण में योग देना चाहिए जिससे विश्व-शान्ति ही नहीं, गृह-शान्ति भी बढ़े। भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों में पारस्परिक सौहार्द की आवश्यकता है। घरों के पारस्परिक व्यवहार में भी बहुत कुछ कटुता आ जाती है। वह सद्व्यवहार, जिसमें कटुता का बहिष्कार हो, सत्साहित्य से बढ़ाया जा सकता है। समाज में संघर्ष कम करने के उपाय सोचे जायं और उनका प्रचार किया जावे। घर-घर में शान्ति और सद्व्यवहार का सन्देश पहुँचाया जाय। सामाजिक शोषण दूर किया जावे। आर्यसमाज में सामाजिक बल है। उसको वह समाज सुधार के काम में ले और राष्ट्र को सम्पन्न और समृद्ध बनावे। मैं यह नहीं कहता कि आर्यसमाज इन बातों का यथाशक्ति प्रचार नहीं कर रहा है, वह अवश्य प्रचार करता है किन्तु जिस उत्साह और गति की आवश्यकता है उससे नहीं। उस प्रचार-कार्य में गतिशीलता लाने की आवश्यकता है। दूसरे मत वालों से जितना सहयोग मिले उसका स्वागत किया जावे और जो बातें आत्मा के विरुद्ध न हों उनमें सहर्ष सहयोग देना चाहिए। इस कार्यक्रम के अधिकांश भाग के प्रचार में सनातनधर्मी और जैन भी भाग ले सकते हैं।

गढ़वाल में प्रचार

दिनाक २२ मई १९५९ को आर्य समाज चोंपड़ा कोट गढ़वाल देहरादून का वार्षिक उत्सव श्रीमती कमला देवी पोखरियाल बी० ए० धर्मपत्नी श्री आत्माराम जी पोखरियाल प्रा० कफुल्ड के सभापतित्व में बड़े समारोहपूर्वक मनाया गया।

सभा में श्री आत्माराम जी पोखरियाल ने वचन दिया कि जी-जान से हम दोनों स्त्री पुरुष इस समाज के सदस्य रहेंगे और हर प्रकार से सहयोग देंगे। सभा में श्री टीकाराम जी वैद्य, श्री जीतसिंह जी आर्य, श्री बन्शीलाल जी प्रधान गढ़वाल आर्यसमाज देहरादून, श्री गोविन्दराम जी प्रधान चोपड़ाकोट आर्यसमाज भावन, श्री बी० एल० सत्यार्थी मंत्री गढ़वाल आर्यसमाज देहरादून, श्री बाबू पूरणचन्द जी रावी, श्री प्रेमलाल जी, श्री गंगाराम जी आर्य श्री प्रेमसिंह जी, श्री जगमल प्रकाश जी आदि के भाषण भजन हुए।

वार्षिक उत्सव के सहयोगी श्री पंचमसिंह जी, श्री छोटेलाल जी, श्री बलराम जी, श्री प्रेमलाल जी विद्यार्थियों को धन्यवाद देते हुये उत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

क्या आप जानते हैं ?

भारत का सड़क-परिवहन

१—भारतवर्ष का क्षेत्रफल १० लाख २७ हजार वर्गमील है और जनसंख्या ३८ करोड़ २० लाख है।

२—देश में इस समय यातायात के लिए १ लाख २१ हजार ६१७ मील पक्की और १ लाख ६९ हजार ५१ मील कच्ची सड़कें हैं।

३—इन सड़कों पर असंख्य लोग, १ करोड़ से ज्यादा जानवर गाड़ियां १ लाख ३० हजार ट्रकें, ४५,००० बसें तथा करीब ३ लाख निजी या अन्य मोटर गाड़ियां चलती हैं।

४—बम्बई सड़क यातायात नियम के अनुसार सवारी मोटर गाड़ियां अनुमानतः ३७ अरब ७० करोड़ यात्री मील चलीं।

५—व्यापारिक आर्थिक अनुसंधान की राष्ट्रीय परिषद् की एक पड़ताल के अनुसार सामान ढोने वाली गाड़ियाँ अनुमानत. प्राय. ११ अरब ४४ करोड़ टन मील चलीं।

६—इंगलैण्ड में प्रति वर्गमील के ३.४ हिस्से में सड़क है और प्रति एक लाख लोग पीछे ३८४ मील सड़क है। अमेरिका में प्रति वर्ग मील के १.०० हिस्से में सड़क और एक लाख पीछे १,८३४ मील सड़क है तथा भारतवर्ष में प्रति वर्गमील के ०.२५ हिस्से में सड़क और १ लाख व्यक्ति पीछे ८२ मील सड़क है।

७—ऊपर के आंकड़ों से भारत में सड़कों की अत्यधिक कमी मालूम पड़ जाएगी। इसके अलावा विदेशों में अधिकतर सड़कें पक्की और चुस्त हैं तथा जगह-जगह उन पर पुल बने हैं। इस कारण वे साल भर भारी से भारी गाड़ी के लिए भी यातायात के लिए खुली रहती हैं। इसके विपरीत भारत की सड़कों का ६० प्रतिशत भाग कच्चा है तथा सब मौसम में चालू नहीं रहता। फिर वहां कई नदियों पर पुल नहीं हैं, कहीं कमजोर पुल तथा पुलियां हैं। इन कारणों से सड़कों का पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता।

८—भारत में जनसंख्या की तुलना में मोटरों का जो अनुपात है वह लंका के अनुपात की अपेक्षा १० प्रतिशत और इंग्लैण्ड की अपेक्षा १ प्रतिशत कम है।

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में

एक प्रति का २० नये पैसे] लखनऊ, रविवार आषाढ़ १४, शक १८८१, आषाढ़ कृ० १०, वि० २०१६, २ जुलाई, १९५९ ई० [१२शिलिंग

जन्म-शताब्दी की मधुर स्मृतियाँ नई करने और भविष्य के लिए प्रेरणा प्राप्त करने के लिये

दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने का निश्चय कीजिये

महर्षि दयानन्द जन्म-शताब्दी समारोह की ऐतिहासिक सफलता और उसकी प्रेरणायें अभी तक आर्यजगत् की प्रगति का आधार रही हैं। समय के महान् परिवर्तन ने आज हमें स्वाधीन बना हमारी चिर अभिलाषा को पूर्ण किया है और आज हमें आर्य राष्ट्र के नव निर्माण का संकल्प पूर्ण करना है।

आर्य राष्ट्र के निर्माण का समवेत संकल्प लेने तथा अपनी प्रतिज्ञाओं को दुहराने का आज स्वर्ण अवसर आया है

★विश्व में आज भय और आतंक का साम्राज्य है।

★राष्ट्र की प्रगति रूढ़िवाद, स्वार्थवाद, सम्प्रदायवाद, अनेकतावाद से अवरुद्ध है।

★भारतीयता का आध्यात्मिक चिरन्तन यश भौतिक सम्मोहन से मलिन हो रहा है।

★भारत को अपनी राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सिद्धियों के लिये प्रयुक्त करने की होड़ लगी हुई है।

ऐसी स्थिति में आर्यत्व का अभिमान रखने वाले हम लोगों का क्या कर्त्तव्य और मार्ग होना चाहिये इस पर विचार-विमर्श करने का शुभावसर आया है।

दीपावली पर दीक्षा-शताब्दी समारोह सफल बनाइये

गुरुधाम का यशस्वी और प्रेरणाप्रद स्मारक मानवता का प्रकाश-स्तम्भ बन सके इसके लिये शुभकामना के साथ-साथ हमें अपना व्यावहारिक कर्त्तव्य भी पूर्ण करना होगा। महान् आचार्यों (गुरु विरजानन्द और महर्षि दयानन्द) के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर ही हम उनके गौरव की रक्षा कर सकते हैं।

अतीत का स्मरण हमे प्रेरणा दे रहा है आइये हम अपने कर्त्तव्य पालन में जुट जायें

समारोह की सफलता समस्त आर्यजगत् की प्रगति, अनुशासन और कर्त्तव्य परायणता का प्रतीक बनेगी सभी आर्यबन्धु अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक शक्ति के अनुसार सहयोग देकर समारोह कार्यकर्त्ताओं को प्रोत्साहित करें तो इतना विशाल कार्य बड़ी सरलता से सम्पन्न हो सकता है।

आर्य जगत् की समस्याओं के समाधान के लिये भारत के नव निर्माण का शुभ संकल्प ग्रहण करने के लिये मानवता के दिव्य आदर्शों की रक्षार्थ वेद का सन्देश प्रसारित करने के लिये—

आर्य बन्धुओं को प्रेम, सहयोग, उत्साह, कर्मठता का पाठ-पढ़ाने वाला अपूर्व समारोह सफल बनाइये

वर्ष ६१ | अवैतनिक संपादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क २६

सिद्धान्त-विमर्श

नियोग का प्रश्न

(ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०, प्रयाग)

(गतांक से आगे)

विवाह और नियोग दोनों व्यवस्था-नियंत्रित हैं। 'वेश्यावृत्ति' में कोई व्यवस्था नहीं। यही मौलिक भेद है। भेदक-भित्ति की बुनियाद यही है। शेष शाखा-प्रशाखा हैं जो सामाजिक परिस्थिति के अनुसार कड़ी या नर्म की जा सकती हैं। इसीलिये भिन्न-भिन्न स्मृतियों में नियोग और विवाह दोनों के नियम भिन्न-भिन्न हैं एक नहीं।

सत्यार्थ-प्रकाश में जो स्मृतियों के प्रमाण दिये हैं वे सब स्वामीजी को स्वीकृत हों ऐसा नहीं, यदि स्वामीजी को कहा जाता कि आप अमुक कानून बना दीजिये तो वह समाज की वर्तमान अवस्था को देखकर ही नियम बनाते। सत्यार्थ प्रकाश में कानून नहीं दिये कानूनों के बुनियादी उसूल दिये हैं। और इतनी स्मृतियों का प्रमाण तो केवल यह दिखलाने के लिये है कि पहले भी नियोग की प्रथायें थीं। सन् १८७५ई० के प्रकाशित आदिम सत्यार्थ-प्रकाश में तो कुछ राजाओं के नियोग के उदाहरण भी दिये हैं जो संशोधित संस्करण में अनावश्यक समझकर छोड़ दिये गये हैं। सत्यार्थ प्रकाश के समझने में लोग सबसे बड़ी भूल यह करते हैं कि दूसरे ग्रन्थों के प्रमाणों को भी अक्षरशः स्वामीजी का मत समझ लेते हैं, वहाँ स्वामीजी की सहमति केवल मौलिक नियम से सम्बद्ध होती है शाखाओं या उपनियमों से नहीं। एक उदाहरण लीजिये। एक स्मृति का वचन है कि व्यापार के लिये पुरुष गया हो तो इतने दिनों पश्चात्, विद्या के लिये गया हो तो इतने दिनों पश्चात् नियोग करे। यह वर्षों की संख्या उन देशों और युगों के लिये थी जब यात्राओं की सुविधा न थी और पता नहीं लगता था कि कौन कहां है। आज रेलतार, हवाई जहाज या बिनातार सूचनायें हर घड़ी मिल सकती हैं तो स्मृतियों की वह समय-अवधि न्यायसंगत न होगी। अतः नियम (कानून) बनाने में भेद करना पड़ेगा। नियोग का मौलिक सूत्र स्वामीजी ने स्वमंतव्यामन्तव्य की धारा ४७ में दे दिया। वह बीज रूप है, समाज, या सरकारें उसको आवश्यकतानुसार पल्लवित कर सकती हैं। आजकल भिन्न-भिन्न देशों में विवाह संबंधी नियम अलग-अलग हैं। उनमें परिवर्तन हो सकता है और होता रहता है। यह सब सदाचार का स्तर गिरने न पावे इसी उद्देश्य को दृष्टि में रखकर किया जाता है और किया जाना चाहिये।

अब जरा प्रस्तावित नियोग-प्रथा और अन्य प्रचलित प्रथाओं पर तुलनात्मक दृष्टि डालिये।

प्रश्न यह है कि नियोग-प्रथा का विरोध तर्क के आधार पर है या भावुकता के आधार पर? आप पूछेंगे कि इन दोनों में भेद क्या है? यदि तर्क और प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाय कि नियोग के प्रचलित होने की अपेक्षा नियोग के न प्रचलित होने में मनुष्य का दाम्पत्य जीवन अधिक सुखी है और मनुष्य का व्यक्तिरूप से चालचलन अच्छा रहने की संभावना है तथा समाज तथा कुल का संगठन भी अधिक सुदृढ़ रहता है तो इसको नियोग का तर्काधारित विरोध कहेंगे और यह सभी के लिये सब युगों और देशों में माननीय होना चाहिए। यदि ऐसा प्रमाण नहीं है तो मनुष्य समाज की यह एक निर्बलता रही है कि उचित और अप्रचलित प्रथाओं को बुरा समझा जाता है। साधारण समाज कहता है कि अमुक कार्य्य बुरा है, क्योंकि लोगों में इसका प्रचार नहीं है। इसको भावुकता कहेंगे और भावुकता सभी सुधारों की शत्रु है। भावुक लोगों को कट्टरपंथी, लकीर के फकीर, पक्षपाती और अन्धविश्वासी कहते हैं। आजकल की परिभाषा में इन्हीं का नाम सनातनी है। ऐसे पुरुषों के लिये कोई दलील होती ही नहीं।

नियोग की सिद्धि में एक कठिनाई अवश्य है। वह यह कि संसार के किसी भाग में आजकल कोई ऐसा समाज नहीं है जहाँ ऋषि दयानन्द प्रस्तावित नियोग का प्रचार हो और यह कहा जाय कि तजर्बे से सिद्ध है कि नियोग प्रथा सामाजिक सुधार के लिये आवश्यक है परन्तु इसीके साथ यह भी नहीं कहा जा सकता कि अमुक समाज ने आजकल तजर्बा करके देख लिया है कि नियोग के प्रचार से समाज दूषित हो जाता है अतः यह गर्हित है।

प्रमाणों से यह तो सिद्ध होता है कि नियोग के समान कोई प्रथा पहले आर्यों में भी प्रचलित थी और अन्य देशों और जातियों में भी। उसकी शर्तें क्या थीं और वह प्रथा क्यों लुप्त हो गई इसका बताना कठिन है। रामायण, महाभारत, बाइबिल आदि में ऐसे संकेत मिलते हैं जो काव्य कलाप के प्रभाव से ऐतिहासिक या स्मार्त मूल्य नहीं रखते, परन्तु हैं अवश्य।

विवाह का सर्वश्रेष्ठ नियम यह समझा गया है कि एक पुरुष जीवन भर में एक ही स्त्री से सम्बन्ध रक्खे। इसीलिए संस्कृत का "दम्पती" द्विवचनान्त शब्द केवल एक स्त्री और एक पुरुष के लिये आता है। इसमें संतानोत्पत्ति, स्त्री और पुरुष का मानसिक संतुलन, स्वास्थ्यरक्षा और सामाजिक संगठन तथा कुल-रक्षा सभी सिद्ध होते हैं। पशुओं में बिना विवाह के भी सन्तानोत्पत्ति, तो है परन्तु न कुल है, न समाज, न मानसिक संतुलन। अर्थात् केवल भौतिक रूप से योनि (Species) चलती रहती है परन्तु कोई सांस्कृतिक उन्नति नहीं है। विवाहों में इसका विचार रक्खा गया है। पशुओं में कुत्ते बिल्ली को न नेकचलन कह सकते हैं न बदचलन। चलन या आचार का शब्द उन पर लागू ही नहीं होता। आचार के आधार पर कुत्ते बिल्लियों के मा-बाप, भाई-बहन, फूफा, मामा नहीं होते न पति, पत्नी, मनुष्यों में विवाह की प्रथा के साथ यह सम्बन्ध भी उत्पन्न हो जाते हैं।

हम अभी ऊपर बता चुके कि एक पुरुष और एक स्त्री का जीवन-पर्यन्त सम्बन्ध ठीक बना रहे तो यह सबसे उत्कृष्ट चीज है, इसको आप आदर्श आचार कह सकते हैं परन्तु कोई किला ऐसा नहीं है जिसमें वर्षा और आंधी का प्रकोप या शत्रु का आक्रमण कोई आघात न पहुँचावे। प्रथम तो मृत्यु है, एक युवक या युवती का शरीरान्त हो जाने से उसकी पत्नी या पति के लिये कठिनाई उत्पन्न हो जाती है, मानसिक संतुलन कम्पित हो जाता है। करोड़ों में एक दो ही व्यक्ति ऐसे निकलते हैं जो अपने को ठीक रख सकें। मृत्यु तो आती ही रहती है, अतः प्रश्न होता है कि विधवा या विधुर के लिये क्या नियम हों। हिन्दुओं में विधुर को अधिकार है कि दूसरे ही दिन सपत्नीक हो जाय। परन्तु विधवा सधवा नहीं हो सकती। हिन्दू-समाज का कई शताब्दियों का इतिहास बताता है कि इसने कुकर्मों को भी बढ़ाया, कुलों का भी नाश किया और समाज की भी दुर्दशा की। हिन्दुओं के इतिहास में सती-प्रथा, कन्यावध, भ्रूण हत्या, वेश्यावृत्ति, धर्म परिवर्तन आदि-आदि अनेक अत्याचार इसी एक प्रथा के फल थे। भावुक हिन्दुओं ने इसको अनाचार नहीं समझा। परन्तु कुदरत ने उनको माफ नहीं किया। उनका आचार-पतन, नीति-पतन, धर्म-पतन, राष्ट्र-पतन और समाज-पतन, यह सब इसी भावुकता के कारण हुआ। समय-समय पर स्मृतिकार हुए जिन्होंने विधवा-पुनर्विवाह को विहित बताया परन्तु हिन्दू लकीर का फकीर रहा। उसने कुकर्म तो किये और कुकर्मों को सहन भी किया परन्तु समाजसुधार विरोध ही किया। यदि एक पुरुष कई स्त्रियों से जीवनकाल में या किसी की मृत्यु होने पर सम्बन्ध रखता है तो वह अनाचार नहीं कहलाता। यदि इन स्त्रियों से विवाह संस्कार हो चुका है। ऐसा पुरुष सदाचारी है यदि, विवाह न करके वह कई स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है तो वह दुराचारी तो है परन्तु ऐसा दुराचारी नहीं कि समाज उसको दण्ड दे। केवल उसकी इस अनुचित सन्तान को दाय भाग या समाज के कुछ अधिकारों से वंचित कर सकती है। इसको हिन्दू या सनातनी समाज आजकल सहन करता चला आ रहा है। कुलटा स्त्रियें होती हैं, पुरुष "कुलटा" नहीं। पुरुष तो नित्य-शुद्ध है। वह ब्रह्म का स्वरूप है जो कभी विकृत नहीं होता। स्त्री प्रकृति का स्वरूप है जो परिवर्तनशील, दूषित तथा विकार वाली है। मानो पुरुष के शरीर में प्रकृति का कोई गुण अवगुण नहीं, वह कोरा ब्रह्म है और स्त्री के शरीर में सब कुछ प्राकृतिक ही है, आत्म तत्त्व कुछ भी नहीं। हिन्दू पंडित विधवा-विवाह का भी विरोध करता है और नियोग का भी, एकबार का भी और अनेक बार का भी, यदि कोई पुरुष निस्सन्तान हो तो स्त्री का दोष समझा जाता है पुरुष का नहीं। स्त्री बांझ हो सकती है अतः उसके जीवित उसकी सौतें आ सकती हैं। पुरुष नपुंसक हो ही नहीं सकता, इसको कहते हैं अन्धेर। आंखों में धूल डालना।

मुसलमानों में एक पुरुष एक समय चार पत्नियां रख सकता है, अविवाहित अनेक स्त्रियाँ भी। इसको "नाजायज ताल्लुक़" कहेंगे परन्तु इस अपराध में पुरुष न समाज से च्युत हो सकता है न जायदाद से हटाया जा सकता है। पिता जायज या नाजायज नहीं होता, औलाद जायज या नाजायज होती है। अपराध का सम्बन्ध जायदाद से है। आचार से नहीं। [क्रमशः]

वैदिक राष्ट्र-गीत

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन् ।
गवामश्वाना वयसश्च विष्ठा भग वर्चं पृथ्वी नो दधातु ॥५॥

(रुचिरा छन्द)

पूर्व समय में पितर हमारे, जहँ स्वच्छन्द विचरते थे ।
आर्य वीर जहँ असुर जनों को, सब प्रकार संहरते थे ॥
अश्व, गऊ, पशु, पक्षी को जो, अतिशय सुख देने हारी ।
वही मही दे हमें तेज यश, गुण गरिमा गौरव भारी ॥५॥

On whom the people of old formerly spread themselves, on whom the gods overcome the demons the station of kine, horses and birds, let the earth assign us fortune, and splendour

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए



लखनऊ—९ जुलाई १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि सवत् १९७२९४९०६०

एकता की राह पर

पिछले दिनों आर्यजगत् के सवैधानिक सघटन और उसके फलितार्थ को लेकर होने वाले निर्वाचनो पर काफी टीका-टिप्पणी सहयोगियो ने की है। हम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जहाँ तक विधान की धाराओ का सम्बन्ध है, आर्यस्माज में उनका यथाशक्ति पूर्ण तथा पालन करने का यत्न किया जाता है और हमे पूर्ण आशा हे किया जाता रहेगा। हा मानव-जन्य कमजोरियो का जहा तक प्रश्न हे हमें यह स्वीकार करने में सकोच नही करना चाहिये कि उस दृष्टि से हममे व्यक्तिगत चारित्र्य और नैतिकता का ह्रास हुआ है। हम सविधान और संघटन को अपने मनोनुकूल रखने देखने और मानने क आदी हो गये हैं। जरा भी परिवर्तन हमारे मनोभावों को प्रकम्पित कर देता है। यह शोभनीय स्थिति नही फिर भी जो स्थिति है उसका हमें निरीक्षण-परीक्षण करना ही चाहिए। यदि हम यह अनुभव करलें कि जो मार्ग अपनाया गया है वह किसी भी दशा में उचित नहीं है तो हमारी ईमानदारी और संघटन-प्रियता का तकाजा है कि हम अपना मार्ग बदल दें और सही मार्ग पर आ जायें।

हम यहां तीन सैद्धान्तिक उदाहरणों के आधार पर अपनी बात कहना चाहते हैं—

(१) संघटन के नियमों-निर्णयों के विरोध में पर्चेबाजी का मार्ग अनुचित है।

(२) निर्वाचनादि को प्रभावित करने के लिये व्यक्तिगत गुण दोषो का सार्वजनिक प्रकाशन मर्यादा रहित है।

(३) सघटन के कार्यकलापों, सघटन के साथियों की नीतियों और कार्यों से मतभेद होने पर पुलिस और न्यायालय को शरण लेना समाज के गौरव की हानि ही नही, आत्मघात के तुल्य है।

(४) सघटन व निर्वाचन में सम्मानित पद प्राप्त न होने पर संघटन की मर्यादाओ, सीमाओं और अनुशासन आज्ञाओ की अवहलना करना अनुचित है जबकि अवहेलना करने वाले व्यक्ति यदि अधिकारी होते तो समाज के हित की दृष्टि से वही निर्णय करते जो सामयिक अधिकारी कर रहे हैं।

और भी अनेक बातें प्रस्तुत की जा सकती हैं पर साकेतिक विचार-विमर्श की दृष्टि से हम संक्षेप में उपर्युक्त पर ही विचार-विमर्श करना चाहते हैं।

जहा तक पर्चेबाजी का प्रश्न है यह पराजित और पलायनवादी मनोवृत्ति का परिचायक है। यदि कोई किसी निर्णय से असहमत है तो उसे सर्व प्रथम अपने स्थानीय संघटन द्वारा अपने विरोध मत का समर्थन प्राप्त करना चाहिये और उसे प्रान्तीय संघटन या सार्वदेशिक संघटन तक पहुँचाना चाहिये।

निर्वाचन को प्रभावित करने के लिये व्यक्तिगत, दोषादि के प्रसारण का कार्य अमर्यादित, अभद्र एवं सामाजिक परम्परा के विरुद्ध है। एकबार नीति सम्बन्धी मतभेद तो समझ में आता है पर व्यक्तिगत विरोध का निर्वाचन में प्रयोग स्वयं अनैतिक आचरण है। अत: किसी भी दशा में किसी भी निर्वाचन में व्यक्ति विरोध का सार्वजनिक प्रकाशन भर्त्सनीय एवं अक्षम्य कार्य समझा जाना चाहिये। सार्वदेशिक सभा के बृहदधिवेशन ने इस सम्बन्ध में जो भर्त्संना प्रस्ताव पारित किया है उसका आर्यजगत् में सम्मान होना चाहिये और यह सम्मान तभी हो सकता है कि जब उसके सदस्य स्वयं इस दिशा में कर्त्तव्य परायण हो। आशा है इस नीति का आर्यजगत् में दृढता के साथ पालन किया जायगा। भूत को भूलकर भविष्य क स्वर्णिम निर्माण में एकमना जुगस्व यही हमारी समस्या का हल है।

जहा तक नीतियो और कार्यों से मतभेद होने पर पुलिस और न्यायालय की शरण का प्रश्न हे वह बहुत ही गम्भीर और विचारणीय प्रश्न है। महर्षि दयानन्द की हार्दिक इच्छा थी कि कोई भी विवाद किसी भी दशा में आर्यजन न्यायालय में न ले जॉय, क्योंकि समय, धन-जन शक्ति के अपव्यय के साथ-साथ आत्म-सम्मान की जो अपार क्षति होती ह उसे कभी पूर्ण नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में सवैधानिक मार्ग वही है कि आप अपनी इकाई में नीति का विरोध करें, और सघटन के प्रत्येक द्वार तक अपनी माग ले जायँ। यदि कोई अपने विरोध प्रकाशन का आरम्भ ही पुलिस और न्यायालय से करता हे तो उस व्यक्ति या समुदाय के आर्यसमाजी होने की कोई गुजायश नहीं रह जाती और तब वह आर्यजगत् का विरोधी पक्ष बन जाता है। इस अवसर पर हमे आर्यसमाज के ममत्व की परीक्षा देनी होती ह जो ममत्व की परीक्षा मे सफल होगे वे ही आर्यजगत् क गौरव होगे। पिछल दिनो आर्य जगत् की दो सम्मानित प्रान्तीय सभाओ क साथ इसी प्रकार के व्यवहार का अभिनय किया गया है। हम सघटन के गौरव और अनुशासन की दृष्टि से उसका कभी समर्थन नहीं कर सकते और साथ ही सघटन के सहयोगियो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उनके हार्दिक समर्थन का विश्वास दिलाते हैं।

सत्य का अनुसंधान होना चाहिये। इसके लिये कटुता और द्वेष सही मार्ग नहीं है। आपसी विरोध सत्य के निर्णय में कभी साधक नहीं बदा सकता, जो आर्य सब ससार के निर्णायक और सत्योपदेष्टा होने का गौरव रखते हों वे अपने मध्य सत्य की खोज न कर सकें इससे अधिक दुख की बात और क्या हो सकती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यदि न्याय के लिये आपसी बातचीत से पंचो या निर्णायको की खोज की जाय तो अभी आर्यसमाज में निष्पक्ष व्यक्ति अवश्य मिल जायेंगे। आज के दूषित अदालती जीवन से निष्पक्ष न्याय की आशा और सम्भावना करना आत्म-प्रवंचना के समान ही है।

इसी प्रकार हम उन भाइयो से भी निवेदन करना चाहेंगे जो निराशावाद का प्रसार करते और वर्तमान अधिकारियों को कोसते है साथ ही नेतृत्व के लिये राजनैतिक दलो की भॉति आर्यों को आपस में सघर्षरत रखना चाहते हैं ताकि वे अपने पक्ष के लिये अवसर प्राप्त कर सकें। ऐसे व्यक्तियो मे यदि कोई सामान्य जन हो तो उनकी उपेक्षा की जा सकती है पर जब विरोध का गलत मार्ग ऐसे व्यक्तियो द्वारा अपनाया जा रहा हो जिनकी सेवायें आर्यसमाज क लिये अमूल्य हो, जिनका नेतृत्व ऐतिहासिक रहा हो और जो आज भी नेतृत्व पाने पर आर्यसमाज के लिये मर मिटने की उद्दाम लालसा रखते हो तब स्थिति बडी विषम लगती है। क्या ऐसे व्यक्तियों द्वारा अनुशासन द्वारा प्रतिबन्धित व्यक्तियो को आर्यसमाज की वेदी से प्रोत्साहित करना सघटन-निष्ठा है? कल को उनके नेतृत्व में जो निर्णय होगा उसे कोई कैसे स्वीकार करेगा। और जब निर्णय भी धार्मिक एव सैद्धान्तिक आधार पर किया गया हो तब उसका विरोध कर प्रोत्साहन निराशावादी और पराजित मनोवृत्ति का परिचायक ह।

बडे दु ख क साथ हम उपर्युक्त मीमासा करने के लिये विवश हुए हैं परन्तु जो परिस्थिति ह उसका आलोचन करना कर्त्तव्य मानकर ही हमने विचार व्यक्त किये हैं।

हमें आशा है कि इन विचारो को उसी सहृदयता से स्वीकार किया जायगा जिससे प्रेरित होकर वे लिखे गये है।

आर्यसमाज की शक्ति को आज सबसे अधिक रचनात्मक और विकास की दिशा में प्रयुक्त करने की आवश्यकता है। यह तभी हो सकता है जब हम स्वय मे सघटित हो और दूसरो के लिये आदर्श बन सकें।

हिन्दी निर्देशनालय—एक उचित पग

भारत की राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण पद की अधिकारिणी हिन्दी फल फूले और भारतीय जन-मानस की भावनाओ को विश्वोद्यान मे सुवासित एव प्रसारित करने में सक्षम हो ऐसा कौन भारतीय होगा जो इस प्रगति से प्रसन्न और उल्लसित न होगा। बारह वर्ष की स्वतन्त्रता के बाद आज हमारे सरकारी तन्त्र मे हिन्दी क महत्त्व को स्वीकार करने की भावना जाग्रत हुई है यह

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ट का शेष]

सन्तोप का विषय है। प्रजातन्त्री तरीकों का आश्रय लेकर अभी तक जिस विलम्ब नीति का पालन किया जा रहा था अन्त में वह शुभ घड़ी भी आ गई है दुःख इसी बात का है कि यह शुभ कार्य भी निरन्तर और तीव्र आलोचनाओ के पश्चात् हुआ है। फिर भी हम भारत सरकार के इस निर्णय का स्वागत करते हैं कि केन्द्र में हिन्दी की प्रगति को निरीक्षित, व्यवस्थित और अग्रसारित करने के लिये "हिन्दी निर्देशनालय" की स्थापना की जा रही है। इस उचित पग का प्रत्येक हिन्दी प्रेमी स्वागत करेगा। आशा है सरकार इस निर्देशनालय की स्थापना के पश्चात् अब तक हिन्दी की प्रशासनिक प्रगति में जो शैथिल्प रहा हे उसे समाप्त करने का भरसक प्रयत्न करेगी।

एक बात हिन्दी भाषी राज्यो की सरकारो और जनता से भी हम कहना चाहते है कि केन्द्र के समान उनके सामने तो इतनी कठिनाइयां नहीं थी और न हैं तब वहां शैथिल्य क्यों है ? इसके उत्तर में हम एक ही बात कह सकते है कि नेतृत्त्व ने हिन्दी को हृदय से अभी अपनाया नहीं है। हम तो आशा करते हैं कि जैसे खादी को भारतीय परिधान के रूप में स्वीकार करने मे नेतृत्व को गौरव होता है उसी प्रकार हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना भी भारतीय गौरव समझा जाना चाहिये। जब तक जन-मानस यह अनुभव नही करने लगता कि कोई व्यक्ति अनिवार्य कारण होने ही पर अंग्रेजी या दूसरी भाषा प्रयोग कर रहा है अतः क्षम्य है तब तक राष्ट्र भाषा हिन्दी अपने वास्तविक गौरव को प्राप्त नही हो सकती। इस दृष्टि से आज के नेतृत्त्व पर कथनी से अधिक करनी करके दिखाने का दायित्व है। महाजनो येन गतः सपन्थ. के अनुसार नेतृत्व का अनुसरण जनता करेगी ही।

ओम् मण्डली जैसी संस्थाओं पर प्रतिबंध हो

भारत धार्मिक देश के रूप में स्मरण किया जाता है और विशुद्ध अर्थों मे उसके वातावरण में धार्मिकता संव्याप्त है। परन्तु धार्मिकता के इस गौरव की रक्षा के लिये हमें सदैव सचेष्ट और सावधान रहना चाहिये। दुःख है कि भारत में धर्म के नाम पर सदियो से जो स्वार्थ-साधना चली आ रही है उसकी ओर ध्यान देना या दिलाना आज की भाषा में असहिष्णु और साम्प्रदायिक, प्रतिक्रियावादी मनोवृत्ति के रूप में स्वीकार किया जाता है।

महर्षि दयानन्द ने अपनी दिव्य दृष्टि से धर्म के वास्तविक प्रकाश की खोज में पाखण्ड-खण्डन का कार्य हाथ में लिया और एक सुदृढ़ शल्य चिकित्सक की भांति धर्म शरीर के ऊपर आच्छादित मिथ्या मत मतान्तरों के गर्द गुबार को हटा शुद्धि की और एकेश्वरवाद और निराकार परमेश्वर की उपासना का धार्मिक स्वरूप प्रकट किया। इस खण्डन से स्वार्थवादी, मूर्तिपूजक, अवतारवादी सम्प्रदायों की आधार शिलायें हिल उठी और भगदड़ मच गई। उस समय महर्षि के इस धर्म प्रचार की तीव्र आलोचना हुई पर आज विश्व वास्तविक सत्य को समझने और मानने लगा है। अभी भी हमारे देश में अवतारवाद के घिनौने और असामाजिक कार्यों का निर्बाध प्रचार एवं प्रसार हमारी जागरूकता को चुनौती है।

उदाहरण स्वरूप हम यहां सिन्ध के दादा लेखराज की ओम् मण्डली के कार्यकलाप की आलोचना करना चाहते हैं। यह सर्व विदित है कि विभाजन से पूर्व उनके ऊपर कराची में मुकदमा चला था और उन्हे जेल की सजा काटनी पड़ी थी। वे ही दादा लेखराज आजकल 'आबू' में अपना कार्यालय खोलकर अपना गुरुडम चला रहे हैं।

उनकी शिष्याओ को ब्रह्मकुमारी कहा जाता हे। जगह-जगह उनके सत्संग भवन बन गये है जहां भोली भाली देवियों को ईश्वर प्राप्ति और ब्रह्म साक्षात्कार जैसी दैवी शिक्षा का पाखण्ड करके साकार ब्रह्म दादा लेखराज के दर्शनों के लिये आबू पर्वत पर भेजकर पथभ्रष्ट किया जाता है। कई सज्जन और देवियाँ जो इस पाखण्ड जाल से निकल कर आये हैं उनका कहना है कि आबू पर्वत पर दादा लेखराज स्वयं कृष्ण बनकर और ब्रह्मकुमारियों को गोपियाँ बनाकर ओम् मण्डली वाला कार्यक्रम पुन. चालू कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री लाला रामगोपालजी ने अपने एक वक्तव्य में इस रहस्य का उद्घाटन करते हुए देश की आर्यसमाजों और अन्य धार्मिक संस्थाओं से इस पापाचार को समूल नष्ट करने के लिये प्रयत्न करने की अपील की है और कलकत्ते के गोविन्द भवन और करांची वाली अत्यन्त लज्जास्पद दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति के प्रति सावधान किया है। हम उनकी अपील का पूर्ण समर्थन करते है।

वास्तव में वह ईश्वर के साकार मानने के सिद्धान्त का दोष है जब ईश्वर साकार हो सकता है तब जो अपने को ईश्वर मनवाले भक्त उसे ही मानेंगे और भक्ति के नाम पर समर्पण होगा ही और यह समर्पण ही सामाजिक और नैतिक अपराधों का आधार बन जाता है। आर्यसमाज को चाहे कितना ही असहिष्णु कहा जाय पर मानवता धर्म और ईश्वर के नाम पर इस प्रकार के पाखण्ड का कभी समर्थन नहीं कर सकता आशा है प्रबुद्ध जनता और प्रगतिशील सरकार अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग हो इस प्रकार की प्रवृत्तियों को प्रतिबन्धित करेगी।

भारत सेवक-समाज द्वारा रचनात्मक कार्यों के नाम पर हिंसा को प्रोत्साहन

समाचार है कि पिछले दिनों मई में दिल्ली के केराला ग्राम में विभिन्न कालेजों की ३८ छात्राओं का एक शिविर भारत सेवक समाज के संरक्षण में लगाया गया था। इस शिविर के लिये दिल्ली के मत्स्य पालन विभाग की योजना के अन्तर्गत १८ एकड़ का एक तालाब खोदना रचनात्मक कार्य निश्चित किया गया, विभाग की इच्छा थी कि यह तालाब शीघ्र बन जाय जिससे इसी बरसात में वहां मत्स्योत्पादन हो सके।

इस समाचार का कोई खण्डन नहीं किया गया है अतः हम इसे सत्य मानते हुए समाज के शीर्ष नेतृत्व से दो प्रश्न पूछना चाहते हैं कि क्या समाज अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करता जो उसने सड़क निर्माण ग्राम-विकास या अन्य रचनात्मक कार्यों को छोड़कर इस कार्य को अपने हाथ में लिया ? यह ठीक है कि देश में खाद्य-समस्या भयंकर है और उसका निवारण किया ही जाना चाहिये पर फिर भी प्रत्येक समुदाय का अपना नैतिक आधार होता है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि समाज को भारतीय जन-मानस में स्थान प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के हिंसा समर्थक कार्यों में कभी सहायक नहीं बनना चाहिये और अपनी शक्ति दूसरे उपयोगी रचनात्मक कार्यों में लगाकर सेवा करनी चाहिये।

दूसरा प्रश्न भी इसी प्रकार की नैतिक मान्यता से सम्बन्धित है। और वह यह कि यह कार्य लड़कियों द्वारा कराया गया। तालाब खोदने के ठोस कार्य से हमारा कोई विरोध नहीं परन्तु मत्स्योत्पादन को प्रोत्साहन देने में सुकुमारी बालाओं का सहयोग आपत्तिजनक है। कहा जा सकता है कि समानता के इस युग में बालक-बालिकाओं में भेद नहीं किया जाना चाहिये। पर प्राकृतिक कोमलता और मानसिक भावनाओं का तकाजा है कि भारतीय नारी को मांसादि के वातावरण से दूर रक्खा जाय। साथ ही हमें इस बात पर भी आपत्ति है कि वे लड़कियाँ छात्रायें थीं, यदि छात्र भी होते तो भी हमें आपत्ति होती कि छात्रों को जहाँ एक ओर अहिंसा के आदर्शों की शिक्षा दी जाती है वहां उन्हें मत्स्योत्पादन के जैसे हिंसक कार्यों में क्यों लगाया जाता है आशा है समाज के संचालक हमारी इस आलोचना को सहृदयता एवं सदाशयता के रूप में स्वीकार करेंगे और अपनी नीति में संशोधन कर समाज के गौरव की रक्षा करेंगे। ★

प्रत्येक नागरिक को पुस्तकालय की मुफ्त सुविधा

भारत सरकार द्वारा नियुक्त पुस्तकालय सलाहकार समिति ने अपनी रिपोर्ट में प्रत्येक नागरिक को पुस्तकालय की मुफ्त सुविधा देने तथा प्रत्येक राज्य में सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों के लिए अलग निर्देशालय स्थापित करने की सिफारिश की है। पुस्तकालय की मुफ्त सुविधा के लिए २५ वर्षीय कार्यक्रम बनाने और उसके खर्च के लिए ६ नए पैसे प्रति रुपया अधिक सम्पत्ति-कर लगाने का सुझाव दिया है।

देश में पुस्तकालय व्यवस्था के लिए समिति ने सुझाव दिया है कि केन्द्र में राष्ट्रीय पुस्तकालय और राज्यों में केन्द्रीय पुस्तकालय हो। इसके अलावा, जिलो, विकास खण्डों और पंचायतों के पुस्तकालय हो। समिति ने कहा है कि प्रत्येक पंचायत का एक-एक पुस्तकालय होना आवश्यक है।

भारत सरकार द्वारा आगरा में हिन्दी शिक्षकों की ट्रेनिंग व्यवस्था

हिन्दी शिक्षकों को ट्रेनिंग देने, हिन्दी अध्यापन के बारे में अनुसंधान करने तथा हिन्दी साहित्य की ऊँची शिक्षा और विभिन्न भारतीय भाषाओं के भाषा-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन करने की उचित व्यवस्था के लिए भारत सरकार ने आगरा में एक केन्द्रीय हिंदी शिक्षक महाविद्यालय खोलने का निर्णय किया हे। विद्यालय का प्रशासन आदि का काम केन्द्रीय शिक्षक मण्डल के हाथ में होगा।

महाविद्यालय के निर्देशक की नियुक्ति केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय की ओर से की जाएगी। शासी समिति क विद्यालय के लिए नियम तथा कानून आदि बनाने का पूरा अधिकार होगा।

इधर हिन्दी के प्रचार तथा प्रसार के लिए शिक्षित शिक्षकों की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है। अनुमान है कि महाविद्यालय के खुल जाने से इस काम में काफी मदद मिलेगी।

अध्यात्म चिन्तन---

मनुष्य मरता कैसे है ?

मरने के पश्चात् जीवात्मा कहाँ जाता है ?

[लेखक—श्री आचार्य नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ—ज्वालापुर]

हम प्रार्थना करते हैं "मृत्योर्माऽमृत गमय" पर जीवन में क्या कभी हम मृत्यु को समझने का भी प्रयत्न करते हैं। वास्तव में मृत्यु एक विश्राम है, परिवर्त्तन है। परन्तु संसार में युधिष्ठिर के शब्दों में "अहनि अहनि भूतानि गच्छन्ति यम मन्दिरम् शेषाः स्थिरत्वंमच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम" के अनुसार हम सब लोग इस पार्थिव शरीर के प्रति मोहग्रस्त रहते हैं। मृत्यु का विश्लेषण ही मानव को मृत्यु के भय से हमें मुक्त कर सकता है। विद्वान् लेखक और विचारक के रूप में आदरणीय शास्त्री जी ने इस विवेचन में गम्भीर प्रश्न को सरल और सही रूप में पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है।—सम्पादक]

यह प्रश्न है जिस पर ज्ञानी पुरुष सदैव से विचार करते चले आये हैं और हमारे शास्त्रों में भी इस विषय में बहुत कुछ लिखा मिलता है। इस विषय में भगवान् शंकराचार्य ने अपने ब्रह्मसूत्रों में सुन्दर, सविस्तार ऊहापोह किया है—

प्रत्येक मनुष्य का अपना स्थूल देह है ही। इस स्थूल और सूक्ष्म देह के वियोग का नाम ही मृत्यु है। सूक्ष्म शरीर इस स्थूल शरीर में से बाहर जाता है। वह सूक्ष्म है पर ब्रह्म जैसा सूक्ष्म नहीं, किन्तु उसका कुछ न कुछ परिमाण है। वह अत्यन्त सूक्ष्म है इसलिए जब वह शरीर में से निकल जाता है, दिखलायी नहीं पड़ता। वेदान्त शास्त्र के अनुसार इस सूक्ष्म शरीर का परिमाण अंगुष्ठमात्र है। अंगुष्ठमात्र, अत्यन्त सूक्ष्म और अत्यन्त स्वच्छ हृदय अर्थात् अन्तःकरण है। सर्व व्यापक चैतन्य का आभास (प्रतिबिम्ब) उस अन्तःकरण में पड़ता है। इस अन्तःकरण में उपाधि सहित जो चैतन्य का आभास है, वही जीव है। यही जीव पूर्व देह को छोड़कर दूसरे देह में जाता है—।

इस जीव का मन्त्री है, मुख्य प्राण, अविद्या, कर्म और पूर्व प्रज्ञा अर्थात् जन्म-जन्मान्तर के संस्कार, ये उस जीव के संसार में भोग के साधन हैं। यह इन्द्रिय और मन सहित जीव पूर्व देह को छोड़कर दूसरे देह में जाता है।

इस शरीर का राजा है जीव। वह मुख्य प्राण, दश इन्द्रियें, अन्तःकरण चतुष्टय इन सबको साथ लेकर चल देता है—।

जीवात्मा पुर्यष्टक नाम की उपाधि के कारण बद्ध होता है और उस उपाधि के त्याग से मुक्त हो जाता है—

वह पुर्यष्टक यह है :—

(१) प्राणपञ्चक (२) भूतसूक्ष्म पञ्चक (३) ज्ञानेन्द्रिय पञ्चक (४) कर्मेन्द्रिय पञ्चक (५) अन्तःकरण चतुष्टय (६) अविद्या (७) काम (८) कर्म।

जैसे यह अन्तःकरण सूक्ष्म है इसी प्रकार पञ्चप्राण और दश इन्द्रियें भी सूक्ष्म हैं। मुख्य प्राण सब इन्द्रियों में श्रेष्ठ है।

इस शरीर में एक मुख्य तत्व जीव ही है और उपर्युक्त सब उसके सहायक हैं। मुख्य प्राण स्वतन्त्र तत्व नहीं। वह अपने को पाँच भागों में बाँट लेता है तब कार्य करता है। उसका कोई स्वतन्त्र कार्य नहीं है, तो भी उसके तीन मुख्य कार्य हैं—१—शरीर रक्षण, २—शरीर धारण ३—शरीर पोषण।

मुख्य प्राण यह कोई वायु नहीं, इसकी कोई स्वतन्त्र क्रिया भी नहीं। जैसे घड़ा कोई मिट्टी नहीं और वह मिट्टी से सर्वथा भिन्न भी नहीं ऐसे ही मुख्य प्राण को समझिए। कभी-कभी प्राण शब्द को गौण अर्थ में इन्द्रियों में लगाते हैं, पर प्राण शब्द का मुख्य अर्थ प्राण ही है।

सब विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना इन्द्रियों का कार्य है। और उन इन्द्रियों को उन-उन कार्यों में लगाना, हिलाना-जुलाना प्राण का कार्य है। इस तरह जीव, मुख्य प्राण, पञ्चप्राण, और इन्द्रियों का परस्पर सम्बन्ध है। अब यह विचार करते है कि जीव जब एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर की ओर जाता है तब क्या होता है।

कल्पना करो कि मनुष्य मरने लगा। तब क्या होता है। सबसे पहिले उसका बोलना बन्द हो जाता है। वाणी की वृत्ति का लय मन में होता है। वाणी के पीछे सब इन्द्रिएँ अपनी-अपनी वृत्तियों सहित मन में लीन होती हैं। यद्यपि मरने वाले व्यक्ति का बोलना बन्द हो जाता है और वह बोल नहीं सकता तो भी मन में कुछ ज्ञान रहता ही है। फिर वह मन सब बाह्येन्द्रिय के व्यापारों को अपने में कर लेता है। समेट लेता और अपने व्यापार सहित प्राण में लय हो जाता है। जहाँ मन का प्राण में लय हुआ कि उसका सब व्यापार बन्द पड़ जाता है। केवल साँस चलता रहता है। फिर वह अपनी सब शक्तियों सहित जीवात्मा में लीन हो जाता है अर्थात् अविद्या, कर्म, पूर्व प्रज्ञा (संस्कार) से युक्त हो आत्मा उसमें लीन हो जाता है। क्योंकि प्राणों का व्यापार जीव के आश्रित है इसीलिए प्राण जीव के साथ चला जाता है—। इस प्रकार जीव शरीर के बाहर जाता है और इसके चलते ही पञ्चसूक्ष्म भूत भी इसके साथ बाहर जाते हैं।

पञ्चसूक्ष्म भूत इसलिए चले जाते हैं कि प्राणों से युक्त अध्यक्ष जीव देह के लिए बीजभूत पञ्च सूक्ष्म भूतों सहित जाता है। निराश्रय प्राण न कहीं जाता है और न ठहरता है यह तो हम जीवन अवस्था में स्पष्ट देखते ही हैं। आश्रय रहित प्राणों की किसी प्रकार की गति स्थिति संभव ही नहीं है।

शरीर से बाहर जाने वाले जीव के साथ बाहर जाने वाले पृथ्वी, वायु, अप तेज इन चार भूतों में तेज तत्व अपेक्षाकृत सूक्ष्म है। क्योंकि जीव नाडी के द्वारा ही बाहर जाता है, इससे वह सूक्ष्म ही है। तेज अपेक्षाकृत सूक्ष्म है इसलिए उसका जैसा चाहे संचार होता रहता है, वह तेज स्वच्छ रहता है, इसलिए उसके मार्ग में रुकावट कोई नहीं रहती। इसलिए जीव जब बाहर जाता है, तब देहाश्रय से रहने वाले तेजादि भूत, सूक्ष्म होने के कारण पास वालों को भी दिखलायी नही पड़ते।

इसीलिए स्थूल शरीर का नाश होने पर भी सूक्ष्म शरीर का कभी नाश नहीं होता।

स्थूल शरीर में जो गरमी होती है और जो शरीर को हाथ लगाने से जानी जाती है, वह गरमी सूक्ष्म शरीर की ही समझिए।

मृतावस्था में शरीर भी रहता है उसका रूप भी रहता है किन्तु उसमें कहीं गरमी नही होती। इससे सिद्ध है कि वह गरमी सूक्ष्म शरीर के आश्रय से ही रहती है।

उस मरने वाले मनुष्य की वाणी मन में लीन हो जाती है, मन प्राण में लीन हो जाता है, प्राण तेज में चला जाता है और तेजादि जीव में लीन हो जाते हैं। वाणी मन में गई कि वाक् बन्द हो जाता है। मन प्राण में लीन हो गया कि पहिचानना बन्द हो जाता है, फिर प्राण (साँस) ऊपर चलने लगता है और वह तेजादि पञ्चसूक्ष्म भूतों में मिल जाता है जिससे शरीर का हिलना-जुलना बन्द हो जाता है। खाली थोड़ा-सा साँस अटका-सा मालूम पड़ता है। फिर पञ्चसूक्ष्म भूत जीवात्मा में लीन होते हैं और जीवात्मा सबको समेट कर बाहर चला जाता है—बस यही है मरना और यही मरने का प्रकार। जब मनुष्य रोगादि अथवा जरा आदि के कारण दुर्बल होकर मरणासन्न हो जाता है तब उसके इष्ट-मित्र, बन्धु, बान्धव उसको घेर लेते हैं और मैं तेरा भाई, मै तेरी बहिन, मै तेरा लड़का आदि कहकर पूछते है कि हमको पहिचानते भी हो कि नहीं। जब तक जीव लिंग शरीर सहित बाहर नहीं जाता तब तक वह पहिचान लेता है, फिर नहीं। जब राजा आता है तब सारे नौकर चाकर उसके इर्द-गिर्द खड़े हो जाते हैं, उसकी सब व्यवस्था करते हैं, और जब राजा जाता है तब फिर सारे अधिकारी उसके पास इकट्ठे हो जाते है यही दशा जीवात्मा की है—। जीव जब शरीर में आता है, तब भी मन प्राणादि उसके साथ आते हैं, और जब जाता है तब ये सब उसके साथ निकल जाते हैं।

होता यह है कि

मरने के समय जब सब प्राण आत्मा के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते है तब आत्मा शरीर के सब तेज को समेट कर हृदय में जा बैठता है। जब जीव (पुरुष) आँखों में से निकल जाता है तब दीखना बन्द हो जाता है। दीखना इसलिए बन्द हो जाता है कि जीवात्मा का ध्यान अपने में ही अथवा अपने ओर ही लगा रहता है। वह अपने स्वरूप में ही लीन होता है इसलिए मनुष्य बोल नहीं सकता, सुन नहीं सकता, सोच नहीं सकता।

इसके पश्चात्

हृदय का एक सिरा तेज से प्रदीप्त हो जाता है। उस प्रकाश की मदद से नेत्र, मस्तिष्क या किसी अन्य इन्द्रिय के द्वारा जीव बाहर निकल जाता है—आत्मा चला कि प्राण गया, उसके पीछे इन्द्रियादि सेना भी चली जाती है जीव। का ज्ञान, जीव का कर्म, उसकी पूर्व स्मृति संस्कार सब उसी के साथ चले जाते हैं—यही है मृत्यु जिससे मनुष्य प्राणी इतना भयभीत होता रहता है।

★

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य सत्य धर्म समन्वय

[श्री चक्खनलाल गर्ग एम० ए०, आगरा]

[महर्षि दयानन्द और उनके मानस पुत्र आर्यसमाज पर असहिष्णु और पूर्वाग्रही होने का दोष लगाया जाता है। परन्तु सत्य की खोज करने वाले प्रत्येक व्यक्ति और समाज पर संसार ने यही दोष लगाये हैं। वास्तव में महर्षि की भावना उन्हीं के शब्दों में स्पष्ट है। वे सत्य की खोज में निकले थे और जहाँ भी उन्हें सत्य मिला और दीखा उसका उन्होंने स्वागत किया। हाँ वे समन्वयवाद की इस व्याख्या से सहमत नहीं थे कि सबके विचार ठीक हैं और कोई विचार गलत या बुरा नहीं। वास्तव में वे मानवता को इस पंक से निकालना चाहते थे, जिससे मानवता सत्य साधकों का संरक्षण प्राप्त कर सके। सत्य का अन्वेषण ही हमें मानव एकता और समन्वय की ओर ले जा सकता है। —सम्पादक]

ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत मतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोधजाल में फँसा रक्खा है।" सत्यार्थ प्रकाश, उत्तरार्द्ध अनुभूमिका।

महर्षि के जीवन का उद्देश्य सूत्र रूप में सत्य की प्रतिष्ठा करना था। सत्य की खोज के लिये ही स्वामी जी ने अपना सारा जीवन बलिदान कर दिया। अपने नाम से न कोई मत चलाया, न कंचन, कामिनी अथवा यश के चक्कर में पड़े। उनका स्वार्थ, सबका परमार्थ था।

ऐसे महर्षि ने जो कुछ सत्य के मण्डन में और असत्य के खण्डन में कहा और लिखा है, वह केवल इसलिये कि जिससे मनुष्यमात्र का कल्याण हो, उन्होंने किसी मत का विरोध केवल विरोध के लिये नहीं किया, न अन्य मतावलम्बियों को कष्ट पहुँचाने के लिये ही उन्होंने कोई बात की। न किसी से बल प्रयोग करके अपने मत को मानने के लिये बाध्य किया। उनका काम इतना ही था कि वे किसी भी बात के सत्य और असत्य दोनो पहलू लोगो के सामने रख देते थे। क्योंकि किसी भी बात के दोनो पहलू समझ में आ जाँय, तभी मनुष्य किसी एक को ग्रहण करके त्याग प्राप्त कर सकता है। और किसको मानने से उसके दु:ख का मोचन नहीं हो सकता, यह जान सकता है। इस प्रकार उचित अनुचित सत्यासत्य का निर्णय उसकी आत्मा स्वयं ही कर सकती है।

स्वामी जी सब धर्मों के समन्वय के पक्षपाती थे। परन्तु उनका समन्वय, विद्या, अविद्या, सत्य, असत्य, हिंसा और अहिंसा में समझौता कराने का नहीं था। ईश्वर यदि एक स्थान पर है तो वह सर्व व्यापक नहीं हो सकता, यह सहज बुद्धि की बात है, इसलिये सर्व व्यापक परमेश्वर एक ही स्थान पर नहीं माना जा सकता। जो निराकार है वह साकार कभी नहीं हो सकता, इसी प्रकार इसका विपर्यय भी ठीक नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने सब धर्मों के सत्यांश को असत्य से अलग करने के लिये ही अपना सारा समय लगाया। इसीलिये उन्होने स्थान-स्थान पर सारे देश में व्याख्यान दिये, शास्त्रार्थ किये और लेख लिखे। अन्धविश्वास, अन्ध पक्षपात और दुराग्रह के विरुद्ध सदैव उन्होने लोहा लिया। परन्तु यह कार्य किसी की आत्मा को दुख देने अथवा किसी को हानि पहुंचाने के लिये नहीं किया। उनके जीवन का उद्देश्य सत्य को असत्य से अलग करके लोगों का ध्यान आकर्षित करना था। मानना न मानना उनका कार्य है। मनुष्य की आत्मा अपना भला-बुरा निर्णय करने में स्वयं समर्थ है। इसलिये उनके मतानुसार सारे धर्मों को समन्वय सब मतों के सत्यांश को ग्रहण करने ही से हो सकता है, क्योकि सत्य में कोई विरोध नहीं अर्थात् धर्म में कोई विरोध नहीं हो सकता। मनुष्यों के एकधर्म होने पर ही एकता हो सकती है। इसके विरुद्ध जो समन्वय सत्य और असत्य, उचित, अनुचित, हिंसा अहिंसा इत्यादि पर खड़ा किया जाता है, वह स्थायी नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें स्थायित्व का अभाव है। असत्य मनुष्य को नीचे दुख की ओर ले जाता है और सत्य उन्नति और सुख की ओर। दोनों में संघर्ष होने पर मनुष्य अधिक संकट में पड़ जाता है।

इसलिये महर्षि दयानन्द के बतलाए हुए मार्ग पर चलकर ही वास्तविक धार्मिक समन्वय प्राप्त हो सकता है, अन्यथा नहीं।

★

सभा के नियम संशोधन

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य प्रतिनिधि महोदयों को सूचित किया जाता है कि सभा के नियम-उपनियमों में आवश्यक संशोधन करने के लिए उप समिति की बैठक शीघ्र ही विचार करने के लिए बैठने वाली है। नियमों के सम्बन्ध में किन्हीं सज्जन अथवा समाज को कोई सुझाव रखना हो तो शीघ्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

उप समिति के सदस्य कृपाकर आर्यसमाज मथुरा में १०—७—६१ प्रातः ८ बजे अवश्य पधारने का कष्ट करें।

वेद-प्रचार-सप्ताह

१८ से २६ अगस्त

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्यसमाजों को विदित हो कि वेद-प्रचार-सप्ताह श्रावण शुक्ल पूर्णिमा से भाद्रपद कृष्णाष्टमी सं० २०१६ वि० तदनुसार १८ से २६ अगस्त १९६१ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। सप्ताह को उत्साहपूर्वक मनाने का अभी से आयोजन करने की कृपा करें आर्यमित्र के आगामी अंक में सप्ताह का कार्यक्रम प्रकाशित किया जायगा।

प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मंत्री

साहित्य-समीक्षण

का
(प्रेरक विचारों सहित)

इस पुस्तक को मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा। इस पुस्तक के लिखने में श्रीयुत जियालाल जी वर्मा ने बड़ा परिश्रम किया है। यह उनके बहुत दिनों के स्वाध्याय का परिणाम है। यदि स्वाध्याय करते समय पृथक रूप से आवश्यक विषयों पर नोट लिख लिये जांय तो बड़ा लाभ हो सकता है। मैंने स्वयं इस विधि का परीक्षण किया है। यह पुस्तक भी इसी विधि के सफल प्रयोग का परिणाम है। इस पुस्तक के लिखने पर मैं श्रीयुत जियालाल जी वर्मा को बधाई देता हूँ।

—पूर्णचन्द्र एडवोकेट
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा

वेदोक्त विवाह-संस्कार-पद्धति

लेखक—श्री म० ज्ञानेश्वरानन्द जी वानप्रस्थी।

प्रकाशक—वेदोक्त यज्ञ प्रचारक-मण्डल, ३ दीवानहाल, दिल्ली। मूल्य ॥) । पृष्ठ संख्या ४०। इस पुस्तक में वैदिक आदर्श के अनुसार विवाह-संस्कार पद्धति का विवरण दिया गया है। आवश्यक आर्य जीवन के लिए षोडश संस्कारों में विवाह-संस्कार भी एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक कृत्य है। इस कृत्य को करते हुए वर-वधू दोनों ही विवाह संस्कार से सुसंस्कृत हो दाम्पत्य जीवन में प्रवेश करते और प्रेम के पवित्र सूत्र में सदा के लिए आबद्ध हो जाते हैं। आर्य जीवन के प्रायः सभी संस्कार प्रार्थना और यज्ञ से अभिभूत होते हैं जिसका स्पष्ट अर्थ है जीवन को, भौतिकवाद के पाप-पङ्क से अलग रखकर लीलामय के नैसर्गिक नियमों के अनुसार अहर्निशि उसी के चरणों में समर्पित करते हुए अध्यात्म की आधारशिला पर आधारित करना। ऐसा जीवन, जो लीलामय के चरणों में आत्म समर्पण की पवित्र भावना से ओत-प्रोत है, अपना कर्तव्य-पालन करता हुआ निरंतर उन्नति की ओर अग्रसर होगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। ऋग्वेद के एक मंत्र के अनुसार वर-वधू दोनों ही यज्ञशाला में उपस्थित होकर विद्वानों के समक्ष प्रतिज्ञा करते हुए कहते हैं—"आप सब साक्षी हैं कि हम दोनों स्वेच्छा से गृहस्थाश्रम में एक साथ रहने के लिए एक दूसरे को स्वीकार कर रहे हैं। हम दोनों के हृदय एक दूसरे के साथ शान्त स्वच्छ जल की भाँति मिले हुए रहेंगे। प्राण वायु हम दोनों को अनुप्राणित करता रहे। जगत् पिता, संसार का रक्षक परमात्मा हम दोनों की रक्षा करता रहे।"

वधू कहती है—"स्वामिन् ! मैंने निश्चय किया है कि जो आपका मार्ग है, आज से मेरा वही मार्ग होगा, जिससे हम गृहस्थ आश्रम को सुख से चला सकें।" इस प्रकार वैदिक आदर्श से अनुप्राणित वर-वधू गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं और एक मन, एकप्राण हो, कर्मक्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक दूसरे के सहचर का काम करते हैं। पुस्तक उपादेय और विशेषकर नव दम्पति के लिए उपयोगी है।

अमृत मन्थन विधि-(ब्रह्मयज्ञ)

लेखक श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द जी वानप्रस्थी। प्रकाशक—श्री विश्वनाथ कपूर, मरीन ड्राइव, शिवसदन, नं० १४ चौकमाला, बम्बई—१। पृष्ठ-संख्या ६०, मूल्य ८ आना।

इस पुस्तक की भूमिका में ब्रह्मयज्ञ और संध्या का विवेचन करते हुए कहा गया है—ब्रह्म-यज्ञ मानव-जीवन के लिए एक प्रसाद है, एक पूजा है। एक साधना है। प्रतिदिन सायं-प्रातः आरम्भ में वेद के ४ मन्त्रों द्वारा ईश्वर-प्रार्थना, तत्पश्चात् नियम-पूर्वक संध्या वंदन करना—यह श्रेष्ठ जीवन का परिचायक है।

इस पुस्तक में आरम्भ में पाठ करने के लिए वेद के ४ मंत्र बाद में संध्या का प्रत्येक मंत्र अर्थ सहित दिया गया है। लेखन-शैली सरल और बोध-गम्य है। साधारण पढ़े लिखे भी लोग इस पुस्तक से संध्या के मंत्रों को सीख कर तथा तदनुसार आराधन कर अपने जीवन को ऊँचा और पवित्र बना सकते हैं। नित्य वेद-मंत्रों का पाठ, और नियम-पूर्वक संध्या-वंदन, मानव-जीवन को ब्रह्म-यज्ञ की ओर प्रेरित किये बिना न रहेगा। और एकबार ब्रह्म-यज्ञ की ओर प्रेरित उस जीवन, निरन्तर साधना में रत रहकर, उस परम प्रकाश-पुञ्ज का सान्निध्य प्राप्त करेगा जो जीव की एकमात्र गति है और जिसे शास्त्र ने परम पुरुषार्थ की संज्ञा दी है।

हमारी अभिलाषा है कि घर-घर में नर-नारी 'ब्रह्म-यज्ञ' के परमानन्द में निमग्न होकर अपने जीवन को सार्थक बनावें।

देवयज्ञ मीमांसा

लेखक वही उपर्युक्त श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द जी वानप्रस्थी। प्रकाशक—वेदोक्त यज्ञ प्रचारक मण्डल, ३ दीवानहाल, दिल्ली। पृष्ठ-संख्या ८६, मूल्य ॥) । इस पुस्तक की भूमिका में लेखक ने देवयज्ञ के महान् लाभ बताये हैं। इसके लिये उन्होंने आवश्यकतानुसार गीता, वेद और शास्त्रों के यथेष्ट प्रमाण दिये हैं और कहा है कि यदि हम अपने घरों में नित्य हवन, यज्ञ, करें तो निश्चय ही हम सपरिवार रोग, शोक, सन्ताप रहित सुखी और समृद्ध हो सकते हैं। आवश्यकता है केवल प्राचीन आर्य आदर्शों से अपने जीवन को अनुप्राणित करने की और निरन्तर जागरूक रह कर उस दिशा में कदम बढ़ाने की। लेखक ने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि यज्ञ न करने से क्या हानि होती है। उनका कहना है कि "यज्ञ न करने से अपवित्रता रहती है, मनुष्य के विचार पाप की ओर खिंचे रहते हैं। रोग फैलता है।"

गीता में प्रतिपादित योगेश्वर श्री कृष्ण के द्वारा यज्ञ की महत्ता और उपयोगिता पर भी लेखक ने विचार किया है। कृष्ण ने कहा है—"प्रत्येक प्राणी का जीवनाधार अन्न ही होता है। अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है और वर्षा के लिए यज्ञ का होना आवश्यक है। जब मनुष्य अपने शुभ कर्मों के रूप में देवयज्ञ अथवा अग्निहोत्र करता है तभी उत्तम वर्षा अवश्य होती है।"

इस प्रकार भारतीय ऋषियों की परम्परा के आदर्श पर लेखक 'देवयज्ञ एवं यज्ञ पद्धति' की मीमांसा करने में सफल हुए हैं। पुस्तक उपयोगी है—आज के विद्यार्थियों को इसमें प्राचीन ज्ञान की बहुत सी नई बातें मालूम होंगी जिनके अभाव में हमारे समाज का जीवन प्राणहीन एवं निस्सार हो रहा है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय सासनी (हाथरस) अलीगढ़

भण्डार-निर्माण में सहयोग दीजिये

कन्या गुरुकुल हाथरस के रसोईघर वर्षा में गिर गये हैं, जिसके कारण भोजन बनाने का अत्यन्त कष्ट है। दानी भाई-बहिनों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाता है कि अपने दान से रसोईघर बनवा कर संस्था के इस कष्ट को दूर करें। रसोईघर के दो कमरों के लिए लगभग ४०००) चार हजार रुपये की आवश्यकता है।

—लक्ष्मीदेवी, मुख्याधिष्ठात्री

बात की बात

लेखक—श्री परमानन्द शर्मा एम० ए०। प्रकाशक—विश्वेश्वरानन्द शोध-संस्थान, होशियारपुर। पृष्ठ संख्या ६०, मूल्य १) ।

हिन्दी साहित्य दिनों दिन प्रगति-पथ पर गतिमान् है। किन्तु अभी उत्कृष्ट बाल-साहित्य का अभाव है। इस पुस्तक में बच्चों के लिए कहानियाँ लिखी गई हैं। कहानियाँ मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद हैं। कहीं-कहीं भाषा की दुरूहता खटकती है ! बच्चों की कहानियों की भाषा जितनी सरल हो उतना ही अच्छा। इन कहानियों के साथ उनके भावों को व्यक्त करने वाले चित्र भी दिये गये हैं जो लेखक की सुरुचि के परिचायक हैं।

फतहनामा गुरु खालसा जी का

सम्पादक—प्रो० सीताराम कोहली, रिटायर्ड प्रिंसिपल, गवर्नमेंट कालेज, रोहतक। प्रकाशक—श्री देवदत्त शास्त्री विद्याभास्कर, विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान, होशियारपुर। पृष्ठ-संख्या २४३, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३ ६०।

इस पुस्तक में श्री गणेशदास कृत केवल तीन लड़ाइयों का वर्णन कविता में दिया गया है। ये लड़ाइयाँ महाराज रणजीतसिंह और पठान नवाबों की सेनाओं के बीच हुई थीं। तीनों ही युद्धों में महाराज विजयी हुए थे। एक युद्ध मुल्तान में, दूसरा टिब्बाटीरी में नौशहरा के पास, और तीसरा सैदेवाल (अकोड़ा) में हुआ था। महाराजा रणजीतसिंह की वीरता और युद्ध-कौशल की गाथा से भारतीय इतिहास के अनेक अनुपम अध्याय लिखे गये हैं। उनकी अमर कृतियों से पंजाब ही का नहीं, समूचे भारत का धरा-धाम धन्य हुआ है। आरम्भ में उन्हीं वीर-केशरी महाराज रणजीतसिंह का संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त दिया गया है। फिर कवि गणेशदास और उनकी रचना पर विचार किया गया है। कवि ने स्वयं इन युद्धों को अपनी आँखों से देखा और कवित्त, सवैया, दोहा, चौपाई, सोरठा, छंद आदि के रूप में सजीव वर्णन किया है। समूचा काव्य वीर-रस से ओत-प्रोत है। इतिहास और काव्य दोनों ही की दृष्टि से इस ग्रन्थ का हिन्दी-जगत् में यथेष्ट आदर होगा। महाराज रणजीतसिंह का प्रभावपूर्ण चित्र और युद्ध-स्थलों के नक्शे दिये गये हैं जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। समूचा ग्रन्थ सम्पादक की योग्यता, और कर्तव्य-निष्ठा का परिचायक है।

खेत व खलियान

(१)

'कहे खेत की, सुनें खलियान की"—यह प्रथा ठीक नहीं है।

सब अपना खलियान भरा हुआ देखना चाहते हैं—खलियान भरने के लिए पहले खेत को नियम व कायदे से जोतना व बोना पड़ेगा। बोने के पश्चात् उसकी रक्षा व वृद्धि करनी होगी। जो किसान खेत की बात नहीं सुनता और खलियान भरना चाहता है उसकी आशा पूरी नहीं हो सकती।

खेत के साथ किसान को अपनी तरफ ध्यान देना जरूरी है। किसान को अपने तन, मन, धन की रक्षा और वृद्धि की ओर ध्यान देना है। तन की रक्षा के लिये स्वास्थ्य और शारीरिक उन्नति की आवश्यकता है।

मन की पवित्रता के लिये सदाचार की ओर ध्यान देना है, अपराध निरोध, भ्रष्टाचार निरोध के सम्बन्ध मे प्रयत्न करना है। दुराचार और हर प्रकार के अपराधों से बचे रहना आवश्यक है।

धन की रक्षा के लिये किफायतशारी, ईमानदारी की ओर ध्यान देना है। बेईमानी से बचे रहना है। अर्थ के नाम पर जो अनर्थ हो रहा है उसको समाप्त करना होगा।

सहकारिता और सहयोग के सिद्धान्त को चरितार्थ करने के लिये किसानो के चरित्र निर्माण की ओर ध्यान देना अनिवार्य और आवश्यक है। यदि किसानो में पुरुषार्थ और ईमानदारी की भावना न होगी तो न सहकारिता सफल हो और न सहयोग की प्रथा प्रचलित हो। प्रत्येक किसान को हर प्रकार के अपराधो से बचे रहने को प्रतिज्ञा करनी चाहिये।

कृषि-जगत् मे जो नियम आवश्यक है वही हर व्यवसाय और व्यवहार के क्षेत्र मे अनिवार्य है। प्रत्येक नागरिक को हर प्रकार के अपराध और भ्रष्टाचार से बचे रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। प्रतिज्ञा-पत्र के फार्म कार्यालय आगरा जिला अपराध निरोधक समिति, कलक्ट्री कचहरी, आगरा से प्राप्त हो सकते हैं।

बड़ी गर्मी है

[२]

आजकल बहुत गर्मी है लेकिन यह ध्यान रहे कि अगर तपेगा नहीं तो वर्षा नहीं होगी और अगर होगी तो कम होगी और बिना वर्षा के न अन्न होगा, न कपास, न खाना पर्याप्त मिलेगा, न कपड़ा—

इसलिए

सबको आजकल की बड़ी गर्मी से तप और त्याग की शिक्षा लेनी चाहिए। पूरा पुरुषार्थ करना चाहिए। सब अपराधों से बचे रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। खाने-पीने की चीजो व दवाइयो में मिलावट नहीं करनी चाहिए। न कम तोलना चाहिए, न कम नापना—खोटे सिक्के का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

रिश्वत लेना व देना पाप समझना चाहिए।

दुराचार, नशेबाजी, जुए की कुप्रथा से बचे रहना चाहिए।

यदि सब नागरिक ईमानदारी से पुरुषार्थ करेंगे तो फल अच्छा मिलेगा। सुख व शान्ति प्राप्त होगी। समय पर पर्याप्त वर्षा होगी। नदियो में बाढ़ों का भय नही रहेगा और न भूकम्प की शंका।

सावधान

सब बलाओ से बचना है तो सबको भला बनना चाहिए। भले बन कर बड़े बनने की इच्छा करनी चाहिए और बड़ा बन कर भी भला रहना चाहिए।

सब अपराधों से बचे रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

प्रतिज्ञा-पत्र के फार्म जिला अपराध निरोधक समिति के कार्यालय, कलक्ट्री कचहरी, आगरा से प्राप्त किये जा सकते हैं।

पूर्णचन्द्र एडवोकेट
अवैतनिक मन्त्री
आगरा जिला अपराध निरोधक समिति,
आगरा।

उपदेश-विभाग की सूचना

सभा से सम्बन्धित समस्त उपदेशकों व प्रचारकों की सेवा में निम्नलिखित निर्देश प्रेषित है। उन पर पूर्णतया अमल होना अत्यन्त आवश्यक है।

१—प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह मे गत मास की डायरी तथा मार्ग-व्यय बिल कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए। अन्यथा कोष विभाग में जमा खर्च न हो सकेगा। देर से जमा खर्च होने पर निरीक्षक महोदय को आपत्ति होती है।

२—साधारणतया डायरी के सभी कोष्ठक भरे जाने चाहिये विशेषतया २ से ६ तक तो भरना अत्यन्त आवश्यक है। सभी प्रकार की लिखा-पढ़ी शुद्ध और साफ लिखावट मे होनी चाहिये। मार्ग-व्यय बिल नये पैसो मे होना, और जोड़ शुद्ध होना चाहि

३—सभा से भेजे गये सभी प्रोग्रामों पर पहुंचना अनिवार्य है। यदि किसी विशेष कारणवश पहुंचना सम्भव न हो तो उसकी सूचना एक सप्ताह पूर्व सभा कार्यालय को तार द्वारा भेजनी चाहिये जिससे उस स्थान के लिए नया प्रबन्ध शीघ्रता से किया जा सके।

४—इस वर्ष सभा मन्त्री की प्रबल इच्छा यह है कि जिन उपदेशकों व प्रचारकों का जो धन शेष हो वह उन्हें यथा सम्भव शीघ्र ही देकर उनको हिसाब चुकता किया जाय और वह इसके लिये प्रयत्नशील भी हैं। अतः आपका भी इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग आवश्यक है। भविष्य में आप महानुभाव भी इस प्रकार कार्य करें जिससे सभा पर आपके वेतन तथा मार्ग-व्यय का भार किसी प्रकार भी न पड़ने पावे।

५—आप को यह भी ज्ञात है कि सभा इस वर्ष दीपावली के पुनीत पर्व पर मथुरा में श्रीमद्दयानन्द दीक्षा शताब्दी महोत्सव (श्री स्वामी जी महाराज को इसी दीपावली में दीक्षा पाये हुए १०० वर्ष पूर्ण होते हैं) तथा अपने मुखपत्र आर्यमित्र की हीरक जयन्ती, गुरु विरजानन्द धाम और समाज की निरन्तर सेवा करने वाले दो कर्मठ महानुभावो का अभिनन्दन समारोह मनाने जा रही है। सभा ने यह भी संकल्प किया है कि अवसर पर उपर्युक्त निधियों के लिए सभा के कोष में एक लाख रुपया जमा किया जाय जिससे यह समारोह सफलता पूर्वक मनाये जा सकें। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये जहाँ सारे आर्यजगत् से सहयोग की प्रार्थना की गई है वहां आप का भी नैतिक कर्त्तव्य है कि इस समारोह को सफल बनाने के लिए सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करें और जहाँ जावें वहाँ के सज्जनों को मथुरा आने के लिये प्रेरणा दें। धन एकत्रित कराकर सभा को भिजवायें। जयन्ती का जो पुरोगम इससे पूर्व मित्र में प्रकाशित किया जा चुका है अथवा भविष्य में प्रकाशित किया जाय। उसको व्याख्यानों द्वारा जनता को अवगत कराने की कृपा करें। कार्य की गुरुता को देखते हुए समय बहुत ही कम है। परन्तु आप पर पूरा भरोसा है और फिर ऐसी दशा में जब कि आप अपने कर्त्तव्य को स्वयं समझते हैं अतः कार्य में लग जाइये और इस महोत्सव को सफल बनाइये।

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

जि० उपसभाओं की स्थापना

उत्तर प्रदेश में ५१ जिले हैं। विन्ध्य प्रदेश, गढ़वाल न्यू देहली तथा बेकोक मिलाकर ५४ जिले होते हैं। जिन जिन जिलो मे आर्यसमाज अधिक हैं वहाँ-वहाँ पर उप प्रतिनिधि सभाएं स्थापित हो चुकी हैं और अपना-अपना कार्य जिले प्रचार आदि का नियमानुसार अच्छी प्रकार से कर रही हैं। सभा की अन्तरंग में प्रत्येक जिले से एक-एक सदस्य सभा की अन्तरंग के लिये भी चुना जाता है। सभा के नियमानुसार ७ समाज संख्या या उससे अधिक, ११ ऐसे जिले हैं जिनमें समाजो की संख्या पूर्ण है, किन्तु उप सभायें अभी तक स्थापित नही हुई हैं। यदि किसी-किसी जिले में हैं भी तो उनका सभा से सम्बन्ध नहीं हुआ है। अतः प्रत्येक जिला के प्रमुख समाज एवं अन्तरङ्ग सदस्य से निवेदन है कि इस वर्ष अपने-अपने जिले में उपसभाएं अवश्य स्थापित करने का प्रयत्न करें। सभा से पत्र, नियमावली भेज दिये गये हैं जिस समाज में न पहुंची हो, वे सभा से मंगा लें।

सूची उन जिलो की जहाँ पर उपसभायें नही, निम्न प्रकार है—

जिला देहरादून १० स० आगरा२१ ऐटा २८ गढ़वाल १५* नैनीताल ११ झांसी ६ मिर्जापुर ६ देवरिया-१० गोंडा १६ सुल्तानपुर ७ सीतापुर ८ खेरी २२।

*गढ़वाल में उपसभा स्थापित हो गई है। पूर्वियी का विषय सभा के विचाराधीन है।

नोट—११ जिले ऐसे हैं जिनमें नियमानुसार उपसभाएं स्थापित नहीं हो सकतीं। समाज संख्या बढ़ाने का प्रयत्न हो रहा है।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
मंत्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश

जनता के लिए—

सरकार क्या कर रही है?

१७ नगरों में सस्ते गल्ले की दूकानों पर चीनी की बिक्री की व्यवस्था

उत्तर प्रदेश सरकार को केन्द्रीय सरकार से ५००० टन चीनी का एक अस्थाई कोटा और प्राप्त हुआ है। यह कोटा राज्य के १७ नगरों में बांट दिया गया है, जहां सस्ते गल्ले की दूकानों पर इस चीनी की बिक्री की जायगी।

इन १७ नगरों के नाम और इन्हें दी गयी चीनी की मात्रा इस प्रकार है:—

कानपुर ६०० टन, इलाहाबाद ४५० टन, झांसी १५० टन, लखनऊ ६०० टन, बरेली २५० टन, वाराणसी ४५० टन, गोरखपुर १५० टन, मिर्जापुर १२० टन, आगरा ४५० टन, सहारनपुर २०० टन, मेरठ २६० टन, देहरादून २०० टन, अलीगढ़ २०० टन, मथुरा १५० टन, मुरादाबाद २०० टन, रामपुर १७० टन और शाहजहाँपुर १०० टन।

डी २९ किस्म की चीनी ६० नये पैसे प्रति सेर के हिसाब से परिचय पत्र रखनेवालों को दी जायगी।

अल्प बचत में कानपुर प्रथम

राज्य सरकार के प्रधान कार्यालय में प्राप्त सूचनाओं के अनुसार गत ३१ मई को समाप्त हुए पखवारे में कानपुर जिले में अल्प बचत योजना में सबसे अधिक धन जमा हुआ और इस प्रकार जिले का राज्य में प्रथम स्थान रहा। दूसरा और तीसरा स्थान क्रमशः शाहजहापुर और लखनऊ का रहा।

अण्डर ग्रेजुएट शिक्षकों की नियुक्ति के लिए साक्षात्कार

सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि ट्रेण्ड अण्डर ग्रेजुएट, सी० टी० वेतन-क्रम (७५-२०० रुपये) में सहायक अध्यापकों के पदों पर नियुक्ति के लिए अभ्यार्थियों का साक्षात्कार, शिक्षा विभाग के प्रधान कार्यालय क्वींस रोड, इलाहाबाद में, आगामी २९ जून से प्रारम्भ होगा। ये शिक्षक सामान्य विषय, कला, काष्ठ-कला तथा व्यायाम शिक्षा विषयों के अध्यापन के लिए नियुक्त किये जायंगे।

अलकनन्दा पर बेलाकूची पुल निर्मित

गढ़वाल जिले में गुलाबकोटी और जोशीमठ के बीच अलकनन्दा नदी पर लगभग ४ लाख रुपये की लागत से निर्मित इस्पात के २२५ फुट लम्बे और १४ फुट चौड़े बेलाकूची पुल के यातायात के लिए खोल दिये जाने के फलस्वरूप अब बदरीनाथ पहुँचने के लिए केवल २० मील की पैदल यात्रा करनी है। यह पुल गत ९ जून को मोटर के आने-जाने के लिए खोल दिया गया है।

हरद्वार से बदरीनाथ जाने के लिए अब मोटर-बस सीधे जोशीमठ तक जा सकती हैं। बदरीनाथ, जोशीमठ से केवल २० मील दूर है। इस महत्वपूर्ण पुल के बन जाने से, हाल ही में निर्मित गुलाबकोटी-जोशीमठ सड़क पर यातायात की पूर्ण व्यवस्था हो गयी है।

कानपुर रोजगार बाजार का सर्वेक्षण

उत्तर प्रदेश रोजगार बाजार की सूचना इकाई की हाल में ही प्रकाशित सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार गत जुलाई से सितम्बर तक की तिमाही में कानपुर में निजी क्षेत्र के उद्योगों में रोजगार की स्थिति में २.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

रोजगार बाजार की सूचना इकाई की यह रिपोर्ट १,२३९ निजी उद्योगों के मालिकों से प्राप्त नक्शों के आधार पर तैयार की गयी है। रिपोर्ट में बताया गया है कि आलोच्य तिमाही में कुल ८२,०२५ व्यक्ति रोजगार पर थे जबकि जून १९५८ में समाप्त हुई दूसरी तिमाही में यह संख्या ८०,२.० थी।

रिपोर्ट के अनुसार मुख्यतः जूट तथा सूतीवस्त्र उद्योग, चमड़ा कमाने, कागज तथा प्रिन्टिंग उद्योगों में रोजगार की स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ।

आलोच्य अवधि में रोजगार पाने के इच्छुक व्यक्तियों की संख्या में ३८.५ प्रतिशत की वृद्धि हुई और कानपुर के रोजगार दफ्तर में जून के अन्त में जहां १५,१८५ व्यक्तियों के नाम दर्ज थे वहां सितम्बर के अन्त में यह संख्या बढ़कर २१,१०६ हो गयी।

रिपोर्ट में आगे बताया गया है कि अकुशल श्रमिकों तथा क्लर्कों की जगहों को पाने के इच्छुक शिक्षित व्यक्तियों में बेरोजगारी अधिक बढ़ी।

पुरी में जगन्नाथ जी की रथ-यात्रा

उड़ीसा सरकार ने आगामी ८ जुलाई तथा १६ जुलाई को आयोजित श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा तथा वापसी यात्रा के अवसर पर पुरी तथा कटक जिलों में महामारी अधिनियम की व्यवस्थाओं को लागू कर दिया है। इस अधिनियम के अधीन इन जिलों में प्रवेश करने वाले यात्रियों के लिए हैजे का टीका लगवाना अनिवार्य है।

राज्य सरकार की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि हैजे के टीके नगरपालिका के स्वास्थ्य अधिकारी अथवा जिला चिकित्सा अधिकारी से या सरकार तथा स्थानीय निकायों द्वारा संचालित किसी औषधालय अथवा अस्पताल में काम के घंटों के समय निःशुल्क लगवाये जा सकते हैं।

टेकनिकल शिक्षा के लिए छात्रों को ऋण

उत्तर प्रदेश सरकार ने टेकनिकल शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक राज्य के सभी क्षेत्रों के छात्रों को ऋण संबंधी अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से ऋणों को बाँटने तथा उनकी वसूली करने का कार्य मेरठ, वाराणसी, बरेली, इलाहाबाद और लखनऊ स्थित क्षेत्रीय उद्योग कार्यालयों को सौंप दिया है।

राज्य सरकार ने यह व्यवस्था हाल ही में उद्योग संचालक कार्यालय के पुनर्गठन के फलस्वरूप की है। टेकनिकल शिक्षा के लिए ऋणों की स्वीकृति उद्योग संचालन कार्यालय के कानपुर स्थित मुख्यालय से ही मिलेगी।

प्रदेश में टेकनिकल शिक्षा के समुचित विकास और प्रसार के लिए सरकार द्वारा हर वर्ष छात्रों को ऋण दिये जाते है। गत मई में इस योजना के अधीन एक लाख २७ हजार रुपये के ऋण स्वीकृत किये गये। उद्योग संचालक कार्यालय की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि टेकनिकल अध्ययन के लिए जिन छात्रों को ऋण स्वीकृत हुए हैं वे अपने क्षेत्रीय उद्योग कार्यालय से सम्पर्क स्थापित करके ऋण की धनराशि प्राप्त करलें।

टेकनिकल शिक्षा के लिए ऋण प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को अपने आवेदन-पत्र, उद्योग संचालक, टेकनिकल शिक्षा ऋण शाखा, कानपुर के पते पर भेज देने चाहिए।

अल्प बचत में ९६,७९ लाख रुपया जमा

राज्य के वन-विभाग के कर्मचारियों ने वर्ष १९५८-५९ में अल्प बचत में ९६,७९,१५३ रुपया नकद जमा किया।

उक्त वर्ष में कर्मचारियों की ओर से कुल १,०३,७१,९५७ रुपया जमा किया गया जिसमें से ६,९२,८०४ रुपया उन्होंने बाद में निकाल लिया।

झांसी जिले में सहकारी की प्रगति

गत वित्तीय वर्ष में झांसी जिले मे कुल ११३ छोटी और बड़ी सहकारी समितियां गठित की गयीं। इनमें एक क्रय-विक्रय, एक उपभोक्ता, तीन बीज गोदाम तथा सात कृषि सहकारी समितियाँ सम्मिलित हैं।

आलोच्य वर्ष में सहकारी समितियों की सदस्य संख्या में १०,९०० की वृद्धि हुई और हिस्से की पूंजी के रूप में ३,८५ ८३३ रुपये जमा हुए। जिले के किसानों में २९,५७,६१५ रुपये ऋण के रूप में वितरित किये गये।

कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए रबी और खरीफ आन्दोलनों में समितियों द्वारा १२५ टन रासायनिक उर्वरक ६,५०० मन खरीफ के बीज और ४९,६३७ मन रबी के बीज का वितरण किया गया।

आलोच्य वर्ष में भारत सरकार की ट्रेनिंग स्कीम के अन्तर्गत ४५ आफिस कर्मचारियों २०६ प्रबन्धक समितियों के सदस्यों तथा १,१७७ सहकारी समितियों के साधारण एवं सक्रिय सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया। ★

बाल-विनोद

बाज पक्षी का संदेश

एक राजा के बारे में यह कहानी कही जाती है कि उसके पास एक बाज था, जिसे वह बहुत चाहता था और सदा अपने हाथ पर बिठाये रखता था। एक दिन राजा अपनी कलाई पर बाज को बिठाये हुए शिकार को निकला। और एक हिरन का शिकार किया। राजा के साथी उसके पीछे दौड़े। परन्तु थोड़ी ही देर में राजा उनसे बहुत आगे निकल गया। राजा बहुत प्यासा था और पानी को ढूंढने निकला वह सोते की खोज में चारों ओर घोड़े पर गया अन्त में उसने पानी की पतली धारा एक पहाड़ी के तट में से निकलती देखी। उसने एक चट्टान के ऊपर एक कटोरी रखदी। जिसमें पानी भर जाय, परन्तु जब कटोरा भर गया, और राजा उसको पीने लगा कि बाज ने अपने पंख फड़फड़ाये और पानी गिरा दिया। राजा बहुत बिगड़ा परन्तु उसने कटोरा फिर उसी स्थान पर रख दिया और वह दूसरी बार पानी से भर गया बाज ने फिर कटोरे पर झपट्टा मारा और पानी गिरा दिया। इस बार राजा को ऐसा क्रोध आया कि उसने बाज को पत्थर पर पटक दिया और मार डाला। उसी समय राजा के रक्षक आ गये और बाज को मरा देख अचम्भे में आ कर पूछा क्या बात है। राजा ने सारा विवरण बता दिया और अपने सेवक से बोला कि पहाड़ी तट से पीने को पानी लाओ। सेवक के पास जो पानी की बोतल थी उसमें से एक घूंट देने लगा। परन्तु राजा बोला—"नहीं हम सोते का पानी लेंगे। ज्योंही राजा ने यह पानी पिया उसका सारा शरीर ऐसे भयंकर रूप से सुलगने लगा कि वह दर्द के मारे जमीन पर लोटने लगा। पानी में एक प्राणघातक विष मिला हुआ था, जिसको बाज की प्राकृतिक बुद्धि पहिचान सकी और जिससे उसने राजा को बचाने का यत्न किया था। परन्तु अब क्या हो सकता था और दो चार घण्टे में सारे राज ने बड़े राजा के मरने से भी बढ़कर उस बिचारे बाज के मरने का अन्तःकरण से शोक प्रकट किया। —कु० इन्दुबाला आर्य

पहेली

दो शब्दों से मैं हूं बनता।
प्रथम जाति संगठन में रहता॥
आदि अंत मिल आज कहाऊँ।
बड़े बड़ों को हार मनाऊँ॥
जाति सुरक्षा मेरा काम।
अब बतलाओ मेरा नाम॥

—ओम्प्रकाश, सेमराबाजार, खीरी

उत्तर—बाजार

क्या तुम जानते हो?

कुत्तों का पसीना

कुत्तों को पसीना कहाँ से निकलता है? जीभ से, बालों में से, खाल में से नहीं कुत्तों को पसीना पंजों की गद्दियों में से निकलता है।

बन्दर का खाना

बन्दर अपना खाना उसी वक्त चबाकर कभी नहीं खाते बल्कि जल्दी में अपने गले में बनी ढीली सी खाल की जेब में भर लेते हैं। बाद में कहीं भी चैन से बैठकर थोड़ा-थोड़ा निकालकर चबाते जाते हैं।

दरयाई घोड़े का गुस्सा

दरियाई घोड़े को जब कभी जोश या गुस्सा आता है तो उसके बदन में से लाल रंग का पसीना वह निकलता है।

—ममता, बनखप, साहगंज

चुटकुले

—एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा ब्राह्मण प्यासा क्यों गधा उदास क्यों? बीरबल ने जवाब दिया लोटा न था अर्थात् ब्राह्मण के पास लोटा न था और गधा न लोटने से उदास था। बादशाह दो प्रश्नों का उत्तर एक ही जवाब में सुनकर बहुत खुश हुए।

—सुभाष, फगवाड़ा

× × ×

—एक बार डाक्टरों की सभा हो रही थी। उसमें पशुओं को भी एक डाक्टर आये हुए थे जो ऊँचा सुनने और बोलने के आदि थे। सभापति ने एक बार खीझकर कहा मालूम होता है आप ढोर डाक्टर हैं।

डाक्टर ने तुरन्त उत्तर दिया "जी हां मैं बखूबी आपका इलाज कर सकता हूं।"

× × ×

—एक बार दो लेखक आपस में मिले उनमें एक घमण्डी था और दूसरा सरल, हाजिर जवाब। सरल लेखक ने कहा—अगर हम दोनों मिलकर एक किताब लिखें तो कितना अच्छा रहे।"

घमण्डी लेखक बोला—वाह, यह कैसे हो सकता है? कभी गधा और घोड़ा भी एक साथ काम कर सकते हैं?"

सरल लेखक ने तुरन्त उत्तर दिया क्षमा कीजियेगा मुझे पहली बार मालूम हुआ कि आप अपने को गधा समझते हैं।

—मंजुला, कलकत्ता

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम...

आयु.................................वर्ष.......................

पूरा पता...

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां....................................

तीन महत्वपूर्ण आयोजन

ले० श्री इन्द्र वर्मा एम०ए०, रामनगर (नैनीताल)

गत वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी समिति ने अपनी एक बैठक में आर्य-जगत् के एक मात्र सुप्रसिद्ध एवं हिन्दी के प्राचीनतम पत्र 'आर्यमित्र' की 'हीरक जयन्ती,' आर्य जगत् के चिर अभिलाषा के अनुरूप तथा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के गुरु श्री विरजानन्द कुटी (मथुरा का शिलान्यास और आर्य जगत् के दो आदरणीय विद्वान एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम०ए० तथा श्री पं गंगाप्रसाद जी रि० चीफ जज अभिनन्दन ग्रन्थ आदि समारोह मनाने का निश्चय मार्च मास में शिवरात्री के अवसर पर किया था, किन्तु कुछ महत्वपूर्ण कारणों से ऐसा सम्भव न हो सका और उसे स्थगित करना पड़ा था।

आज यह और भी प्रसन्नता की बात है कि आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण बैठक जो इस वर्ष दिनांक १६ व १७ मई को बागला कालेज हाथरस में हुई, ने इस वर्ष के बजट में एक लाख रुपया स्वीकृत कर इस योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस तरह अब इन तीनों आयोजनों को सम्पूर्ण आर्यजन की सहमति प्राप्त हो गई है। अतः अब प्रत्येक आर्यजन का यह नैतिक एवं पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि इन आयोजनों को सफल बनाने के हेतु तन, मन और जहाँ तक संभव हो सके धन से भी सहयोग देने को तत्पर हो जायं। जैसा कि आपको ज्ञात भी हो गया हो, यह महत्वपूर्ण आयोजन दीपावली के अवसर पर मथुरा में मनाये जाने निश्चित हुये हैं। इस दृष्टिकोण से समय कम है, और कार्य बहुत कुछ करना शेष है। जहाँ तक साधारण कार्यों का प्रश्न है वह तो कार्यकारिणी सभा की बैठक में श्री स्नातक उमेशचन्द्र जी एम० ए०, श्री प्रि० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम० ए०, श्री कर्णसिंह जी ब्रोकर, श्री नरदेव जी स्नातक एम० पी०, श्री विश्म्भर सहाय जी प्रेमी आदि कर्मठ एवं उत्साही कार्यकर्ताओं को सौंप दिये हैं किन्तु जो प्रमुख कार्य हैं वह आज प्रत्येक आर्य के कन्धे पर है। उसका किसी एक व्यक्ति को सौंपा जाना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव भी था। देखें उस कार्य को हमारे आर्यजन किस सुन्दरता एवं सफलता के साथ पूर्ण करते हैं। केवल एक लाख रुपया का तो प्रश्न ही है। यह कोई कठिन कार्य नहीं है। यदि आज हमारे सम्पूर्ण समाजों के उत्साही कार्यकर्त्ता यह निश्चय कर ले कि हमें जयन्ती की सफलता के लिये केवल एक सप्ताह धन एकत्रित करने में देना है तो एक लाख क्या एक करोड़ रुपया भी एकत्रित हो सकता है। जयन्ती की सफलता किसी एक, दो अथवा कुछ व्यक्तियों की सफलता नहीं। यह तो सम्पूर्ण आर्य जगत् की सफलता है। इस सम्पूर्ण कार्य को प्रत्येक भाई को अपना ही कार्य समझना चाहिये एवं अपने दायित्व को सुन्दरता एवं सफलता पूर्वक निभाना चाहिये। इस यज्ञ में आपका और आपकी समाजों का जो सक्रीय योग हो सकता है, वह सबके लिये गौरव और अभिमान की बात होगी। समय हमारी प्रतिक्षा कर रहा है, देखें हम सब कहाँ तक सस्नेह मिलकर उत्साह पूर्वक अपने-अपने उत्तरदायित्व को निभाने के लिये तत्पर हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की सूचनाएं—

प्रतिनिधि फार्म भेजने की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बद्ध समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि ३१-५-५९ को हुई अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया है कि "प्रतिनिधि फार्म ३१-७-५९ तक सभा कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए" उक्त समय तक वेद-प्रचार तथा दशांश की राशि भी भेज देनी चाहिए। अच्छा यह होगा कि वेद-प्रचार तथा दशांश की राशि पहले ही जमा कराके कार्यालय से रसीद प्राप्त कर ली जाए और प्रतिनिधि फार्म पर उस रसीद की संख्या तथा तारीख दे दी जाए। इस सम्बन्ध में पूर्व विज्ञप्तियां असिद्ध समझी जावें। वेद-प्रचार तथा दशांश की राशि सभा उप कार्यालय १५, हनुमान रोड, आर्य समाज मन्दिर नई दिल्ली में भी जमा कराई जा सकती हैं और प्रतिनिधि फार्म भी वहीं दिए जा सकते हैं।

यदि किसी आर्यसमाज को प्रतिनिधि फार्म किसी कारण न मिले हो, तो पुनः कार्यालय से मंगवा लेवें। यदि किसी आर्यसमाज के पास पुराने प्रतिनिधि फार्म हों, तो उन्हें भी भर के भेजा जा सकता है। फार्म पर सभा कार्यालय की चाहे मोहर न लगी हो। फार्म कम पड़ने पर सफेद कागज के एक ओर इसी प्रकार के कोष्ठक बनाकर काम लिया जा सकता है। फार्म भरते समय पूर्ण ध्यान रखें। आवश्यक हस्ताक्षर आदि कार्य छूटने न पावे।

विशेष—जिन आर्यसमाजों ने प्रतिनिधि फार्म भर कर भेज दिये हैं वे भी कार्यालय को सूचित कर देवें। क्योंकि सूची दुबारा तैयार की जा रही है।

डाक सम्बन्धी सूचना

सब आर्यसमाजों तथा महानुभावों को सूचित किया जाता है कि इस सभा के साथ समस्त पत्र-व्यवहार करते समय यह ध्यान रखें कि पते पर केवल प्रधान अथवा महामन्त्री लिखें। किसी व्यक्ति विशेष का नाम न लिखें। व्यक्तिगत नामों पर आने वाले पत्रों के कारण कार्यालय को बहुत असुविधा होती है। अतः कार्यालय उनके लिए उत्तरदायी नहीं माना जा सकता।

विशेष सूचना

आवश्यक कारणों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख पत्र "आर्य" हिन्दी साप्ताहिक का प्रचार तथा प्रसार कुछ काल के लिए स्थगित कर दिया गया है। सम्बद्ध सज्जन और आर्यसमाजें इस सूचना को अंकित कर लेवें।

सभा कार्यालय — विनीत
गुरुदत्त-भवन — जगदेवसिंह सिद्धांती
जालन्धर नगर — सभा महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जालन्धर कार्यालय पुलिस अधिकार से मुक्त

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जालन्धर स्थिति कार्यालय ५-६-५९ को पुलिस के अधिकार से मुक्त हो गया है, और नियमित रूप से कार्य संचालित हो रहा है। सभा के महामन्त्री श्रीयुत जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती वहाँ बैठकर कार्यालय का तथा सभा सम्बन्धी समस्त कार्यों का संचालन करा रहे हैं। सभा सम्बन्धी समस्त पत्र महामन्त्री व सभा प्रधान के नाम भेजे जाने चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यकारिणी ने सर्वसम्मति से श्री वैद्य सत्यव्रत जी सहायक मन्त्री सभा को उन सभी अधिकारो, पदों तथा कार्यों से वंचित कर दिया है जो उन्हे पंजाब सभा अथवा सभाधीन किन्हीं संस्थाओ अथवा समिति या उप समिति में प्राप्त हैं। कार्यकारिणी ने शीघ्र से शीघ्र वैद्य सत्यव्रत जी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के लिए अन्तरङ्ग सभा को प्रेरणा की है।

पिछले दिनों श्री वैद्य सत्यव्रत जी ने पुलिस द्वारा सभा के कार्यालय को बन्द कराने की अवैधानिक, अत्यन्त आपत्तिजनक एवं घृणित कार्यवाही की थी, जिसका उद्देश्य सभा के प्रतिष्ठित अधिकारियो को जनता की दृष्टि मे गिराने तथा सभा के अस्तित्व को खतरा पहुँचाना था। कार्यकारिणी ने श्री वैद्य जी के इस कार्य के प्रति रोष प्रकट करते हुए इसकी घोर निन्दा की।

—रामनाथ भल्ला
सभा मन्त्री

आवश्यकता है
आर्य पुरोहित की

हापुड़ आर्यसमाज के लिये एक योग्य व अनुभवी आर्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो प्राचीन व्याकरण से आचार्य या शास्त्री हो। प्रमाण-पत्र की प्रतिलिपि सहित प्रार्थना-पत्र नीचे लिखे पते पर १० जुलाई तक भेज देने चाहिए। २६-२७

—मन्त्री आर्यसमाज,
हापुड़, जिला मेरठ

जयन्ती की बैठक

आर्यमित्र हीरक जयन्ती, गुरु श्री विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक, श्री दयानन्द दीक्षा शताब्दी महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह समिति की बैठक अन्तरंग सभा के साथ १७ व १८ जुलाई १९५९ को मथुरा आर्यसमाज में होगी। समय की सूचना यथा समय वहीं दे दी जायगी। कृपया जयन्ती समिति के सदस्य गण अवश्य पधारने का कष्ट करें।

उमेशचन्द्र स्नातक, मंत्री
गुरुधाम दीक्षा समारोह जयन्ती समिति
उत्तर प्रदेश

आदर्श दान

गुरुकुल शिक्षा प्रेमी महानुभावों को यह सूचना देते हुये परम हर्ष होता है कि श्री ठा० नारायण सिंह जी रिटायर्ड पुलिस इन्स्पेक्टर डेटा खुर्द जिला अलीगढ़ निवासी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन को ५००० रु० स्थायी छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में सहर्ष दान दिया है। आपकी सदैव ही गुरुकुल पर कृपादृष्टि रही है। समय-समय पर आप गुरुकुल की सहायता करते रहे है। आपने पीछे भी गुरुकुल की सहायतार्थ ४,००० रु० दान दिये थे। इस सात्विक दान के लिये आपको हार्दिक धन्यवाद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह श्री ठा० सा० को दीर्घायु करे।

अन्य गुरुकुल प्रेमी महानुभावो से सविनय निवेदन है कि वह इस आर्थिक संकट-काल में अपनी प्यारी संस्था की सहायता करने एवं कराने की कृपा करेंगे। —नरदेव, स्नातक, एम० पी०
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन

—अप्रैल-मई १९५९ मे वित्त मंत्रालय के परिपालन निदेशालय ने विदेश मुद्रा नियन्त्रण अधिनियम के अन्तर्गत ३७ मामलो मे कुल ९५,२३,७८० रु० का जुर्माना किया।

केन्द्रीकरण की समस्या

सभा की प्रवृत्तियों को केन्द्रित कर एक नवीन प्रगति देने के सुझाव पर पिछले दिनों कई प्रकार के विचार प्रकाशित हुए हैं। बिना किसी पूर्वाग्रह के मेरा विचार है कि सभा की वर्तमान शिथिलता को समाप्त कर उसे प्रगति देने के लिए यह एक सामयिक और उपयोगी कदम सिद्ध होगा।

स्थान विशेष का आग्रह एक प्रकार की मोह-भावना ही है जो मानव की स्वाभाविक कमजोरी है पर आर्यसमाज जैसे बुद्धिवादी सघटन के लिये किसी स्थान का भावात्मक महत्त्व उसकी प्रगति में बाधक नहीं होना चाहिये। इस दृष्टि से हमें लखनऊ या वृन्दावन के प्रश्न पर विचार नहीं करना चाहिये साथ ही आर्यसमाज क सदस्यो मे यदि किसी स्थान का क्षेत्रीय आकर्षण और ममत्व विचार में बाधक बनता हो तो हम आर्यत्व की विशाल हृदयता और विश्व बन्धुत्व की भावना को भुलाने क अपराधी कहलायेंगे।

इस मौलिक बात के आधार पर मेरा निवेदन यही है कि हमें उपयोगितावादी दृष्टिकोण से विचार विमर्श में सहयोग देना चाहिये, भावनात्मक आग्रहो के आधार पर नही।

जहा तक गुरुकुल और सभा के एक स्थान पर होने की अतीत कालीन समस्याओ का प्रश्न है यही कहा और माना जा सकता है कि वह आरम्भिक युग था और तब तक व्यवस्था में टिकाव नहीं आ सका था। जहा तक गुरुकुल की ओर सारा ध्यान केन्द्रित हो जाने का प्रश्न है इसमें किसी को आक्षेप की गुजाइश नहीं रहनी चाहिये। यह बात स्वय गुरुकुल के पक्ष मे जाती है कि सभा का वर्तमान ढाचा गुरुकुल के प्रति उतना सहानुभूति-पूर्ण और सक्रिय सहयोग का नहीं है जितना होना चाहिये था। इसलिये आज सभा यदि अपनी सारी शक्ति भी एकबार गुरुकुल के पुनर्नवीकरण में लगा द तो कुछ अच्छा फल ही निकल आयगा।

जहाँ तक उपाध्याय जी के विचार का सम्बन्ध है कि गुरुकुल की समस्या एक व्यापक समस्या है उसे उसी रूप मे सुलझाना चाहिये। सुलझाये कौन, कब और कैसे सुलझाये जबकि उसके सम्पर्क में भी न आने और रहने की हमारे नेताओं की मनोवृत्ति बढ़ रही है। इसलिये यदि कुछ लोग इस सद प्रयत्न के लिये प्रयत्न करना चाहते हैं और स्वय समय देकर सभा के गुरुकुल आन्दोलन को बलशाली बनाना चाहते हैं तो उनके प्रस्ताव का स्वागत किया जाना चाहिये। आशा है वे अपने साथ सहयोगियों का वैसा ही दल लेकर आगे आ सकेंगे जैसा स्वामी श्रद्धानन्द, भगवानदीन और नारायण स्वामीजा लेकर आगे बढे थे। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि गुरुकुल आकर्षण केन्द्र बन जाय तो वह प्रान्त ही नहीं दूर दूर तक क लिये प्रकाश स्तम्भ का कार्य कर सकेगा। एक साधे सब सधे के अनुसार गुरुकुल की प्रगति सभा की सभी प्रगतियो को प्रभावित करेगी। उपदेश विभाग, वेद-प्रचार, समाज सुधार आदि सभी दिशाओ में एक नवजीवन आ जायगा। आर्थिक समस्यायें प्रगतिशील कार्यकलापो से अवश्य सुलझ जाती हैं आवश्यकता है कुछ करने के लिये आगे बढने और करने की इच्छा की। यथा स्थिति बनाये रखने और किंचित परिवर्तन न सह सकना प्रगति का नहीं अवनति का प्रतीक है।

सभा की प्रगतियो और इतिहास से मैं सदैव निकट सम्पर्क में रही हूँ पिता जी, भाई और पुत्र के द्वारा म सभा की नीतियो का परिचय रखती रही हूँ इस दृष्टि से इस सामयिक प्रश्न पर मुझे अपने विचार व्यक्त करने की प्रेरणा हुई है। आशा है आर्यबन्धु मेरे विचारो को सभा के हित की भावना में ही ग्रहण करेंगे।

–सुखदादवी
पन्त भवन, हल्द्वानी

तीनों गुणों का संक्षिप्त रूप

इस समस्त विश्व के मूल में उपादान कारण स्वरूप प्रकृति की सत्ता सभी शास्त्रो ने स्वीकार की है और यह भी स्वीकार किया है कि सत्त्व, रज तथा तम तीन गुण प्रकृति के ही स्वरूप हैं अर्थात् यह तीन गुण प्रकृति के ही हैं, और इन गुणो से ही प्रकृति में प्रगति उत्पन्न हुई है अत कोई भी प्राणी इन तीनो गुणो से मुक्त नहीं हो सकता। परन्तु वेदो मे यह स्पष्ट आज्ञा दी गई है कि एक श्रेष्ठ मानव को सत्त्व एव रज नामक गुणो क द्वारा ही अपना जीवन चलाना चाहिए। सत्त्व से पर हित, रज से अपना हित क्याकि तमोगुण का स्वरूप अज्ञान अविद्या आसक्ति, प्रमाद आदि हैं। यदि तमोगुण का अश अधिक होगा तो सासारिक भोगों की ओर झुकाव अधिक हा जावेगा। तमोगुण क प्रभाव से मानव दूसरो को हानि पहुचाता है, द्वेष, ईर्ष्या आदि करता है और अत में स्वय पतित हो जाता है, अपनी शक्ति खोकर अन्धा बन जाता है। अत तमोगुण का बढने देना अपना पतन करना है। विपरीत ज्ञान अच्छी बात को बुरा समझना निम्नता को अपनाना यह भा तमोगुण का ही लक्षण है। आज क समाज मे एसे मनुष्य बहुधा पाये जाते हैं जो असत्य को असत्य स्वीकार नहीं करते। हास्य में असत्य कहने पर बुरा नहीं समझते यह तमोगुण ही ह अर्थात् दुष्टता है। उदाहरण के लिए पर्दा प्रथा को ही ले लीजिये। स्वय को आवरण मे रखना असत्य तमोगुण है जो सर्वदा अपना मुख ढके रहती है, उनमें तमोगुण की मात्रा पूरी-पूरी है जो कवल मुख खोले रहती हैं वहाँ तमोगुण में रज अश की उत्पत्ति हुई। कश सहित मुख खुलना रज अश की वृद्धि हुई, गर्दन से नीचे का भाग यदि वस्त्रहीन हो खुला रहे फिर भी जिन्ह इसकी कोई चिन्ता नहीं उनमें सतोगुण का उदय हुआ ह, यह सभी स्वीकार करेंगे। अत पर्दा करने वाली जातियाँ तमोगुण से युक्त ह। उनमें सतोगुण नहीं क्योंकि वेद की घोषणा ह कि तमसा परस्तात् अर्थात् अज्ञान असत्य, विपरीत ज्ञान इन तमोगुणो क प्रभाव से बचने का प्रयत्न करो, सतोगुण क प्रकाश मे आओ जो एसा नहीं करता वह वेद-मर्यादा क विरुद्ध चल रहा ह। दु ख तो यह ह कि वेदादि का अध्ययन करने वाला मानव भा इस तमोगुण क प्रभाव से मुक्त नहीं हैं, उनमे भी अविद्या, असत्य, अज्ञान विपरीत ज्ञान पर्दा लज्जा आदि तमोगुण क सभा लक्षण पूर्ण रूप से दिखाइ दते है। वेद अध्ययन करने वाल वैदिक धर्म प्रामयो का वेद का तमसः परस्तात् की आज्ञा को ध्यान में रखकर तमोगुण से बचन का प्रयत्न करना चाहिए। यदि एसा नहीं करते ता वे वैदिक नहीं अपितु अवैदिक है।

–रामचरण रस्तोगी
मौ० जीलाल, मुरादाबाद

ईसाई प्रचार निरोध के लिए क्रियात्मक पुरोगम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी की आवश्यक बैठकें सभा प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट की अध्यक्षता में सभा के कार्यालय दयानन्द भवन नई दिल्ली में हुईं, जिनमें सभा के अधिकारी तथा अन्य आर्य नेता भाग ले रहे हैं। बैठक २५ जून को २ बजे मध्याह्नोत्तर से प्रारम्भ हुई, जिसमें दो मुख्य विषयों पर विचार होकर आवश्यक निर्णय हुए ईसाई प्रचार निरोध और आर्यवीर दल संगठन। ईसाई प्रचार निरोध के कार्य को बढ़ाने के विषय में अन्यान्य बातों के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यों का तत्काल किया जाना निश्चित हुआ—

१—पर्वतीय स्थानों तथा उन जातियों में जहाँ मुख्यतः विदेशी मिशन अपना जाल बिछाए हुए हैं, यथा छोटा नागपुर, उड़ीसा, राजस्थान आदि-आदि में सेवा-सदनों की स्थान स्थान पर स्थापना और प्रत्येक सदन में एक अत्यन्त अनुभवी, विश्वस्त और प्रबन्ध कुशल कार्यकर्ता को बिठाकर कार्य संचालित कराना।

२—स्थानीय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण श्रेणियों की व्यवस्था करना। विद्यार्थी की योग्यता कम से कम मैट्रिक होगी। इनको सर्विस की व्यवस्था सभा करेगी।

३—छात्रावासों की स्थापना जहाँ स्कूल के छात्रों को रख कर उनके जीवन को धार्मिक एवं पवित्र बनाने की चेष्टा करना।

४—साहित्य का प्रकाशन जिनमें छोटे-छोटे ट्रैक्टों को प्रमुखता प्राप्त होगी।

५—भोली-भाली जनता को ईसाइयों के कपट जाल से परिचित करना और हिन्दू धर्म पर दृढ़ आस्था रखने में समर्थ बनाना।

आर्यसमाजों और प्रान्तीय सभाओं को प्रेरणा की जा रही है कि वे अपने कार्यक्रम में ईसाई प्रचार-निरोध के कार्य को प्रमुखता प्रदान करें और इस कार्य में सफलता प्राप्त करने में कोई प्रयत्न उठा न रखें। उन्हें यह भी प्रेरणा की जा रही है कि बड़े पैमाने पर व्यवस्थित ढंग से अखिल भारतीय रूप में इस कार्य को करने में सभा की सहायता करें।

जिन हिन्दुओं के हृदयों में हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के लिए दर्द है, जो धनी मानी हैं, जिन्हें ईसाई मिशन की आपत्तिजनक प्रगतियों में सही खतरा देख पड़ता है और जिन्हें आर्यसमाज से बड़ी-बड़ी आशाएं हैं उनका धन-जन प्रत्येक प्रकार का सहयोग प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है।

सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री रघुवीरसिंह शास्त्री इस कार्य को पूर्ण सफल बनाने के निमित्त एक विशेष अपील प्रचारित करके सर्व साधारण हिन्दू से धन-जन के सहयोग की मांग कर रहे हैं। —रघुनाथ प्रसाद पाठक
कार्यालयाध्यक्ष

शिक्षण संस्था की स्थापना

आर्यसमाज बैरगनियाँ (मुजफ्फरपुर) के तत्त्वावधान में 'दयानन्द विद्यालय ब्रह्मचर्याश्रम बैरगनियाँ' नाम की एक शिक्षण संस्था की स्थापना की गयी है। इस संस्था में गुरुकुलीय कार्यक्रम के अतिरिक्त छात्रों को मैट्रिक और मध्यमा पास कराया जाता है। इसका संचालन समिति के निम्नलिखित अधिकारी चुने गये हैं—

१—श्री आनन्द चित्तराम आर्य प्रधान, २—श्री रामप्रसाद जायसवाल उप प्रधान, ३—श्री विन्ध्यप्रसाद जी उप प्रधान, ४—श्री गोपालप्रसाद आर्य प्रधान मन्त्री, ५—श्री बालेश्वरसिंह 'आर्यवीर' उप मन्त्री, ६—श्री स्वामी मनीषानन्द सरस्वती मुख्याधिष्ठाता ७—श्री पं० रामावतार शर्मा विद्यावाचस्पति अधिष्ठाता, ८—श्री सीताराम चौधरी लेखा निरीक्षक।

—प्रधान मंत्री

संक्षिप्त समाचार

—अमेरिका के शिल्पिक सहायता मिशन ने नयी दिल्ली की दृश्य श्रव्य शिक्षा की राष्ट्रीय संस्था को अप्रैल, १९५९ में ३,१६,९४० डालर मूल्य के उपकरण दिये हैं।

—राष्ट्रीय छात्र सैनिक दल के निर्देशालय ने छात्र सैनिकों को जोखिम के काम करने की शिक्षा देने के लिए चार विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये हैं।

—भारत सरकार ने अन्धे छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देने की एक योजना बनायी है।

—सितम्बर १९५८ के महीने में जल, थल और हवाई-मार्ग के व्यापार से ११ करोड़ ३१ लाख रु० का सीमा-शुल्क और २४ करोड़ ७ लाख रु० का उत्पादन-शुल्क एकत्र किया गया।

—राष्ट्रपति ने प० बंगाल दूसरी आर्म्ड फोर्स बटालियन के कांस्टेबल श्री कलूब खेपा और तीसरी आर्म्ड पुलिस बटालियन के श्री बैरागी सिंह रथ को डाकुओं के साथ एक मुठभेड़ में अदम्य वीरता के साथ सामना करने के लिए पुलिस पदक प्रदान किया है।

—सैनिक कालेज के सफल जेंटलमैन कैडेटों के ब्रिगेडियर गोविन्दरसिंह ने लगभग ४० पुरस्कार दिए।

गुरु विरजानन्द स्मारक निधि के लिए महत्वपूर्ण दान

विदित हो कि श्री प्रधान जी आर्य सभा मोरिशस एवं श्री प्रधान जी आर्य प्रतिनिधि सभा मोरिशस ने गुरु श्री विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक के लिए ५००)-५००) पांच-पांच सौ रुपया प्रदान किया है। यह सभा उन सभाओं की कृतज्ञ है और हृदय से धन्यवाद देती है।

अभी जून मास में श्री रामचरित्र जी भोगन जमीन्दार, रिवेर्जीशाम पार-मोरिशस ने १००) सौ रु० गुरु विरजानन्द दण्डीधाम स्मारक के लिए प्रदान किया है। इसके लिए सभा धन्यवाद देती है।

प्रेमचन्द शर्मा
सभामंत्री

अखिल भारतीय आर्य संन्यासी—वानप्रस्थ मण्डल का अभूतपूर्व समारोह

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी-वानप्रस्त मण्डल, ज्वालापुर, हरिद्वार जिसकी स्थापना स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के कर कमलों से हुई थी—का साधु-सम्मेलन आषाढ़ शुक्ला १४, १५ सम्वत् २०१६, दिन रविवार व सोमवार, ता० १९-२० जौलाई को वेद विद्यालय, गुरुकुल घरोन्डा, जिला करनाल (पंजाब) मे अति उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है।

अतएव आर्य संन्यासी-वानप्रस्थ महानुभावों को सादर आमन्त्रित किया जाता है। कृपया नियत समय पर पधार कर सम्मेलन की शोभा बढ़ावें।

सम्मेलन की विशेषता :—

(१) आर्य संन्यासियों-वानप्रस्थियों का संगठन

(२) वैदिक धर्म के प्रचार की विशेष योजना।

(३) सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल का निर्वाचन।

(४) मण्डल के नियमों का संशोधन।

(५) आध्यात्मिक व सामाजिक आदि विविध विषयों पर योग्यतम साधु संन्यासी महात्माओं के अनुभूत प्रवचन तथा प्रतिदिन गायत्री यज्ञ ध्यान, अष्टांग योग की विधि का प्रतिपादन होगा।

पंजाब की भाषा समस्या पर विशेष विचार-विनिमय।

सूचना—(१) जो सज्जन संन्यासी व वानप्रस्थ की दीक्षा लेना चाहते हैं, वे स्वामी अभयानन्द सरस्वती आर्य साधु आश्रम, पो० लाडवा (करनाल) से पत्र-व्यवहार करें।

(२) गुरुकुल घरौंडा, स्टेशन घरौंडा के निकट करनाल व पानीपत के मध्य (अम्बाला लाइन पर) तथा दिल्ली और अम्बाला से बसें भी आती जाती है।

निवेदक—

स्वामी अभेदानन्द सरस्वती, प्रधान
कविराज हरनामदास बी० ए०, मन्त्री
स्वामी अभयानन्द सरस्वती, उपमन्त्री
स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल घरौंडा, स्वागताध्यक्ष।

क्या वेद में मूर्ति पूजा है ?

[श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, काव्यतीर्थ]

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज मूर्ति पूजा को कल्पित और वेद विरुद्ध मानते हैं और प्रमाणों, युक्तियो, तर्कों आदि से यह सिद्ध किया जा चुका है कि महाभारत काल तक भारत में मूर्ति पूजा न थी। परन्तु धर्म शास्त्रो में प्रक्षेप और मनमाने अर्थो द्वारा आज के प्रकाश युग में वही अज्ञानान्धकार व्याप्त है। प्रस्तुत लेख द्वारा शास्त्री जी ने वेद में मूर्ति पूजा सिद्ध करने वाले लेखक को उत्तर दिया है और आर्य बन्धुओ को प्रेरणा दी है कि वे वेद-प्रचार के असली कार्य को हाथ में लें हमें वेदार्थ की अनधिकारियो से रक्षा करनी होगी और विद्वानो के सम्मुख वास्तविक रूप प्रस्तुत करना होगा।

—सम्पादक

बम्बई के भारतीय विद्या भवन से एक मासिक पत्रिका 'भारती' नाम की निकलती है। इसमें एक लेख है श्री एम० एस० रेवराव स्वामी का "वेद और मूर्ति पूजा।"

लेखक महोदय ने "त्र्यम्बक यजामहे" नमोऽस्तु नीलग्रीवाय "प्रमुञ्चधन्वन" इन यजुर्मन्त्रो से ईश्वर को साकार सिद्ध करने की चेष्टा की है और फिर कल्पना की है कि "मूर्ति पूजा का दार्शनिक मूल है भगवान की सशरीरता की भावना" प्रथम तो लेखक ने जो मनगढ़न्त अर्थ किये हैं वे ही असगत है। पौराणिक भाष्य कर्त्ताओ के अनुसार भी रुद्र एक देवता विशेष है 'परमात्मा" नहीं। महीधर उवट ने "त्र्यम्बक" मन्त्र से अग्नि की तीन परिक्रमाओ का करना विनियोग ठहराया है न कि पाषाणादि के बने शिवलिंग की पूजा। रुद्राध्याय में रुद्र का अर्थ केवल परमात्मा एक ही नहीं है यदि ऐसा होता तो कहीं ग्यारह रुद्र, कही तेतीस रुद्र, कही असख्य रुद्र वेद मे आते। ग्यारह रुद्रो को शतपथ ब्राह्मण मे भी प्राण और मन माना है जो कि मरते समय शरीर से निकलकर सबको रुलाते है और असख्य रुद्र हैं। अनेक रोगो के जीवाणु जो रोगी बनाकर रुलाते हैं। वेद का एकागी सकीर्ण अर्थ गढकर लेखक ने भ्रम उत्पन्न कर डाला है।

यदि लेखक के अर्थ स्वीकार भी कर लिये जाय तो भी प्रत्येक साकार की मूर्ति बनाकर तो नही पूजी जा सकती। शास्त्रीय विधान जब तक नही तब तक साकार की भी मूर्ति बनाकर पूजा करना अवैध है।

सूत्र ग्रन्थो और ब्राह्मण ग्रन्थो में जैसे अनेक यज्ञों के विधि विधान हैं वैसे कहीं पर भी विष्णु, शिव, देवी, भैरव और हनुमान आदि की मूर्तियाँ स्थापित करना वा उन्हें पूजने का नामोनिशान नहीं। बाल्मीकि रामायण और महाभारत में ऋषि मुनि राजा महाराजाओ के यज्ञो का वर्णन तो मिलता है पर मूर्तिस्थापना वा उनके पूजन की चर्चा तक नहीं।

लेखक ने बुद्धि से काम कहा तक लिया है यह इस मन्त्र के अर्थ में देखिये—

"एषो ह देव प्रदिशोऽनुसर्वा पूर्वोह जातः सउगर्भे अन्त स एव जात स जनिष्यमाण प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः।"

यह यजुर्वेद के ३२वें अध्याय का मन्त्र है। लेखक महोदय इसका अर्थ करते हैं—

'यह (पूर्वोक्त) पुरुष ईश्वर सभी दिशा प्रदिशाओ में नाना रूप धारण कर स्थित है। वही पहले सृष्टि के आरम्भ मे हिरण्यगर्भ के रूप मे उत्पन्न हुआ। वही गर्भ के भीतर आया। वही उत्पन्न हुआ और वही उत्पन्न होगा। जो कि सबके भीतर अन्त करण में स्थित है। और जो नाना रूप धारण करके सर्वतो मुख हुआ।'

पूरे मन्त्र के एक एक शब्द को देख जाइये "नाना रूप धारण कर" इस अर्थ के लिये मन्त्र में कोई शब्द नहीं है। गर्भ के भीतर इस अर्थ ने "आया' शब्द कहाँ से टपक पड़ा? "गर्भे अन्त" वह सबके गर्भ मे है अर्थात् व्यापक है, सब दिशाओ मे है यह वाक्य भी व्यापकता को सिद्ध करता है। वह प्रत्येक जन के सामने मुख किये हैं यह वाक्य भी सर्व व्यापकता का निर्देशक है और जो सर्वव्यापक तत्त्व होगा वह साकार न होकर सदा निराकार होगा क्योकि साकार की व्याप्ति असम्भव है। "जात" का अर्थ यहाँ "आविर्भूत' ही फिर बैठेगा। साम्प्रदायिकता की सनक मे लेखक जी को

यह न सूझा। लेखक जी ने पूर्वोक्त शब्द कोष्ठक मे दिया है अर्थात् यह उसका वर्णन है जिसको प्रथम कह चुके हैं। सो देखिये इस मन्त्र से पहला मन्त्र क्या बता रहा है—

"न तस्य प्रतिमास्ति यस्य नाम महद् यशः"

उसकी प्रतिमा नही है जिसका नाम और यश महान् है। वेद ने यहाँ तो प्रतिमा का निषेध करके मूर्ति पूजा की जड़ ही उखाड़ी।

लेखक महोदय ने "आदित्यं गर्भं पयसा समधि सहस्रस्य प्रतिमा विश्वरूपम्" यह यजु १३.४१ का मन्त्र उद्धृत किया है। यहाँ "प्रतिमा" और पयसा शब्द को देखकर आपने सोने की मूर्ति को दूध से स्नान कराने का स्वप्न देख लिया है। यदि लेखक ने उव्वट वा महीधर का भाष्य भी देख लिया होता तो ऐसी निराधार बात न लिखते।

उव्वट महीधर ने सहस्रस्य प्रतिमा "बहुन प्रतिमाभूत' और "बहुधनस्य प्रतिमाभूत बहुधनप्रदम्' यह अर्थ किये है और इन्द्र आदित्य—चित्याग्नि का विशेषण बताया है। चित्याग्नि मे दूध डाला जाता है कि मूर्ति को दूध से स्नान की विधि है। सूत्र ग्रन्थ, विनियोग विधान और प्राचीन भाष्य सबकी अवहेलना करके मूर्ति पूजा को वेद विहित सिद्ध करने के लिये लेखक ने अपना कल्पित तुक भिड़ा दी है। अर्थ का अनर्थ कर डाला है।

ऐसे ही मन-गढन्त अर्थ अन्य वेद मन्त्रो के किये हैं।

"एहि अपूमानमातिष्ठ अपूमा भवतु ते तनू" इस अथर्व मन्त्र से मूर्ति मे ईश्वर का बुलाना और मूर्ति का ईश्वर का शरीर सिद्ध किया है।

इन साम्प्रदायिक लोगो का तर्क से तो कोई सम्बन्ध होता ही नहीं बुद्धि ने जरा सर उठाया कि इन्होने अन्धश्रद्धा का दण्ड प्रहार कर दिया। क्यो साहब! क्या आवाहन से प्रथम मूर्ति मे ईश्वर नही था? यदि नहीं था तो "सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा" यह श्रुति वचन क्या मिथ्या है?

और मूर्तियों तो पीतल, तांबा, काठ आदि की भी होती हैं फिर केवल पाषाण मे आवाहन क्यो?

मन्त्र मे 'अपूमनि प्रविष्ट' नही है अपूमानमतिष्ठ है। पत्थर मे वा पत्थर की मूर्ति मे रहने का अर्थ नहीं हो सकता। पत्थर पर स्थित हो यह अर्थ है। "पत्थर तेरा शरीर हो" यह क्या तुक हुई? ईश्वर के लिये शाप हुआ वा नहीं? इसका सीधा सादा व्यावहारिक अर्थ है कि गुरु शिष्य को दीक्षा देते समय पत्थर के पटल पर खड़ाकर के बताता है कि इस पत्थर के समान तुम्हारा शरीर दृढ होना चाहिये। "तुम्हारा शरीर पत्थर हो" यह वाक्य इसी प्रकार है जैसे विवाह मे वधू को पत्थर पर पाव रखाकर पढा जाता है "आरोहैममश्मानम् अश्मेव त्व स्थिरा-



—लेखक—

भव' हे वधू! तू इस पत्थर पर चढ और पत्थर के समान ही अचल (अपने वचनो पर) हो।

इसी प्रकार लेखक ने मन्वादि के वचनों मे कल्पना की है। देवता पतन देवागार, देवार्चन ये शब्द यज्ञशाला और यज्ञ विधि के निर्देशक है।

वेद ब्राह्मण ग्रन्थ, सूत्र आदि आर्ष साहित्य मे तो मूर्ति पूजा का चिह्न मिलता नहीं यह तो सब बगाल जैन बौद्ध धर्म के बाद के हैं। लेखक को डर लगा है कि कोई इन प्रमाणो को प्रक्षिप्त कह कर न उड़ादे। हम लेखक को अपूवस्त करते हैं कि प्रक्षिप्त को ही प्रक्षिप्त कहा जायगा सबको नही। आप पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों से पुष्ट कोई भी मन्त्र मूर्ति पूजा के समर्थन मे प्रस्तुत नहीं कर सकते। बाल्मीकि रामायण तक मे मूर्ति पूजा का विधान नही।

मूर्ति पूजा की विधि की पूरी विवेचना जाननी हो तो हमारा लिखित "प्रामाणिक शास्त्रार्थ" पुस्तक देखना चाहिए। जो कि शायद श्री राजाराम जी जिज्ञासु आर्यसमाज बदायू पर मिल जाय। भारती जसे साहित्यिक पत्रो मे ऐसे हलके अप्रामाणिक लेखो का छपना शोभित नहीं मालूम पड़ता। इससे कितने ही पढ़ने वाले भ्रम मे पड़ सकते हैं।

लेखक महोदय का भी वेद से बहुत दूर का सम्बन्ध ज्ञात होता है। सम्भवत उन्होने इस विषय पर साधिकार मनन नहीं किया है। आर्यसमाज का इतने दिनो से प्रचार होने हुए भी वेदो का छुटकारा अनर्थों से न हो सका इसका हमें खेद है। आर्य भाइयो को जागृत होकर अधिक तेजी से वेद प्रचार करने मे लगना चाहिये। ★

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

आषाढ़ १२ शक १८८१
(२ जुलाई १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सुझाव-सम्मति—

केन्द्रीकरण पर प्रकाश-२

पिछले लेख में हमने विचार करके यह परिणाम निकाला था कि सभा और गुरुकुल को वृन्दावन में एकत्र कर देने से कार्यकर्ताओं के मिलने में कोई सुविधा न होगी और वृन्दावन में पर्याप्त मकानात न होने से एक नई समस्या सामने आ खड़ी होगी। इस लेख में हम विचार करेंगे कि क्या सभा और गुरुकुल दोनों की आर्थिक दशा इस तरह से हम सुधार सकेंगे।

गुरुकुल की आर्थिक दशा खराब होने के कई कारण हैं एक या दो नहीं। कुछ मौलिक हैं कुछ सामयिक। इस समय ब्रह्मचारियों की संख्या पर्याप्त कम है मैं १९२२-१९२५ में गुरुकुल में था। उस समय विद्यार्थियों की संख्या लगभग २०० थी। हम भावावेश में आकर भले ही चिल्लालें कि आर्य परिवारों के बालक नहीं आते इसलिये अन्य लोग भी अपने बालक नहीं भेजते हैं। जोश एक सीमा तक काम दे सकता है बिना होश के अधिक दूर तक नहीं जाता। आज प्रत्येक जिले में डिग्री कालिज तक पढ़ाई होती है। घर पर रहकर हमारे सब बच्चे हाई स्कूल, इण्टर व बी० ए० हो जाते हैं। हमारे प्रदेश में गिनती के २ या ३ गुरुकुल हैं जिनमें २० या पचीस रु० मासिक व्यय देना पड़ता है। फिर स्नातक होने मात्र से तो समस्या हल नहीं होती। हजारों विद्यार्थी गुरुकुल में ८-१० साल रह आये हैं और सैकड़ो की सख्या में स्नातक भी हैं जो अधिकतर वैद्य, अध्यापक या उपदेशक हैं। गुरुकुलो को स्थापित हुए ५० साल हो चुके है। जनता ने अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख लिया कि वर्त्तमान अवस्था में हम गुरुकुल से कितनी आशा कर सकते हैं। शायद् अधिकारी भी यह अनुभव करने लग गये हैं कि गुरुकुल यदि हमें चलाना है तो उनकी मौजूदा सूरत बदलनी पड़ेगी। खेद तो यह है कि कोई अधिकारी यह साहस नहीं करना चाहता कि दृढ़ता से पग उठावें। सब यह चाहते है कि हमारे समय में ऐसा कोई कार्य न हो जिससे लोग हमें दोषी ठहरावें। फिर भी हम यह चिल्लाते हैं कि गुरुकुल क साथ सभा को भी मिला दो, कोई कहता है दयानन्द विश्वविद्यालय बना दिया जावे और सब गुरुकुल और डी० ए० वी० मिला दिये जावें आदि-आदि कोई कुछ कहते हैं कोई कुछ। सच बात तो यह है कि हमें पूरा बल लगाकर गुरुकुल की समस्या को हल करना चाहिए।

वेद प्रचार एवं उपदेश के विषय में भी हमारी समस्या काफी गम्भीर है और उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिये। अपनी कार्य-शैली पर गम्भीरता से विचार करना है। दशांश, सूद कोटि का धन, प्रदेशीय सभा के कार्यालय के लिये भी पर्याप्त नहीं होता। उधर उपदेशक व भजनीको द्वारा जो धन प्राप्त होता है वह उनके वेतन के लिए भी पर्याप्त नहीं होता। परिणाम यह होता है कि सभा की सब निधियों का रुपया व्यय होने लगा। यह बात समझ में नहीं आती कि सभा भवन को किराये पर देकर जो १०, १२ हजार रुपया हम वर्ष भर में प्राप्त कर लेंगे उससे वेद-प्रचार की समस्या कैसे हल हो जायगी।

मेरी सम्मति में पहिली बात तो यह है कि हमें भजनीकों को और उपदेशकों को बड़ी बड़ी समाजो और जिला उप सभाओ को दे देना चाहिये। जो महोपदेशक प्रचार-कार्य करना चाहते हों उनकी सूची कार्यालय में रहे और जो समाजें उन्हें बुलाना चाहें सभा द्वारा बुला लिया करें। और उनका निश्चित पारिश्रमिक उन्हें दे दिया करें। उत्सवों पर स्वतन्त्र भजनीक व उपदेशक तो अपना पारिश्रमिक पहिले से निश्चित कर लेते हैं पर सभा क उपदेशको को समाजें धन देने में आना-कानी करते हैं। कह देते हैं आप को तो सभा से वेतन मिल ही जायगा। जिन भजनीको और उपदेशको की समाजो में माग नहीं है उन्हें सभा में रखने से क्या लाभ है? मेरा सुझाव यह है कि अन्तरंग सभा तत्काल एक अर्थ समिति, एक गुरुकुल समिति, एक वेद प्रचार समिति बना देवे जो एक सप्ताह तक सभा भवन में ठहर कर इन विषयों पर विचार करें उसके एक मास बाद अन्तरंग की बैठक हो।

यदि हमें सभा की दशा पर गम्भीरता से विचार करना है तो प्रत्येक अन्तरंग सदस्य को २-३ दिन के लिए सभा-भवन में ठहरने का निश्चय करके आना चाहिये। और अपने भोजनादि का भार स्वयं उठाने को तैयार रहना चाहिये। अन्तरङ्ग सभा की प्रथम बैठक में ३-४ समितियां बना दी जावें। वे पृथक-पृथक परामर्श करें और एक-एक दिन सभा-भवन में ठहर कर एक तात्कालिक रिपोर्ट दें जो तीसरे दिन की अन्तरंग की बैठक में विचारार्थ रखी जावें। यह स्पष्ट है कि इन समितियों को कुछ समय विचार करने और पूरी रिपोर्ट देने में लगेगा। इसके लिये समितियों को आदेश दे दिया जावे कि उन्हें एक अन्तरिम रिपोर्ट देनी चाहिए और दूसरी रिपोर्ट एक या दो मास के बाद देनी होगी। इस प्रकार तीन मास के बाद हमारी पूरी स्कीम चालू हो सकती है।

मैं कुछ पारिवारिक कारणों से हाथरस नहीं पहुँच सका किन्तु मेरे कुछ मित्रों ने मेरा नाम अन्तरंग सदस्यों में रखा दिया है। उपर्युक्त सुझाव के अनुसार मैं एक सप्ताह अपने व्यय से सभा भवन में ठहर कर इस परामर्श में सहयोग देना स्वीकार करता हूँ। सभा और गुरुकुल ही नहीं सब ही विभागों की दशा विचारणीय है। सभा की गाड़ी अवरुद्धः दलदल में है इसे निकालने की जरूरत है। साधारण जुकाम, खांसी व ज्वर गु० की चाय या जोशान्दा से दूर हो जाता है पर जो रोगी दीर्घकाल से चारपाई पर पड़ा है उसे शीघ्रातिशीघ्र रस या इन्जेक्शन देने की तत्काल आवश्यकता है।

—शिवनारायण शुक्ल,
लखीमपुर

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में
एक प्रति का १० नए पैसे] लखनऊ, रविवार आषाढ़ २१, शक १८८१, आषाढ़ शु० ६, वि० २०१६, १२ जुलाई, १९५९ ई० [१२शिलिंग

गुरुधाम-समारोह की सफलता के लिए प्रत्येक आर्य कर्त्तव्य पालन करे

आप अपने कार्यक्रम का अभी से निर्धारण कर दयानन्द-दीक्षा-शताब्दी के पवित्र समारोह को सफल बनाइये।

इस समारोह की आवश्यकता और उपयोगिता के सम्बन्ध में समय-समय पर आर्यजगत् से निवेदन किया जाता रहा है और जब तक समारोह सम्पन्न न हो जाय हम इस सम्बन्ध में निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे कि इस समारोह के स्थायी और व्यापक महत्त्व को आर्य बन्धुओं के सम्मुख प्रस्तुत करते रहें।

ऐसा कौन आर्य है जो आर्यसमाज की प्रगति के लिये चिन्तित न होगा, परन्तु इस चिन्ता का समाधान आपके पास क्या है, क्या आपने कभी इस प्रश्न पर विचार किया है?

यह पवित्र समारोह इसी चिन्तन को साकार रूप देने के लिये स्वर्णावसर बनकर आया है। हम अपनी सारी आवश्यकताओं का चिन्तन करें, अपने सम्पूर्ण गत जीवन के कार्यकलापों का सिंहावलोकन करें और भविष्य के लिये अपने-अपने आदर्शों की पूर्ति के लिये अपनी योग्यता का आत्म-निरीक्षण करें, यही इस दीक्षा-शताब्दी की हमारे लिये अमूल्य प्रेरणा है।

हमें सांस्कृतिक नेतृत्व के लिये आर्यसमाज को सजग, सचेत और सप्राण रखना है।

हमें भारत के अतीत गौरव की रक्षा और स्वर्णिम भविष्य के निर्माण का दायित्व पूर्ण करना है।

हमें अपनी महान् जाति के सपूतों की रक्षा, समुद्धार तथा उनके प्रति बन्धुत्व का कर्त्तव्य निभाना है।

क्या हम अकेले-अकेले यह सब कार्य कर सकते हैं? नहीं, कदापि नहीं। इस कार्य के लिये हम सबको आज सगच्छध्वं सवदध्वं का पालन करना होगा।

हमारी एकता और आर्यसमाज के प्रति हमारी समर्पण-भावना लोगों को प्रभावित करेगी कि वास्तव में आर्य लोग महान् हैं और अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग हैं।

क्या आप इस गौरव की रक्षा करना चाहते हैं? यदि हाँ तो दीक्षा-शताब्दी के पवित्र निमन्त्रण को स्वीकार कीजिए। आशा है आर्यबन्धु गण सघटन और तत्सम्बन्धी समारोह आयोजन के महत्त्व और सामयिक परिस्थितियो पर उसके पड़ने वाले प्रभाव और स्थायी परिणामों के सम्बन्ध में विचार करेंगे और दीक्षा-शताब्दी-समारोह में सम्मिलित होंगे।

आशा है आर्यजन भावी जीवन में कार्य की दीक्षा ग्रहण करेंगे और स्वयं को, भारत को, विश्व को दीक्षित करने का गौरव प्राप्त करेंगे।

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क २७

हैदराबाद में आर्यसमाज के सजग प्रहरी—

श्री पंडित नरेन्द्रजी

[श्री ए० बालरेड्डी जी हैदराबाद]

[आर्यसमाज क व्यापक सघठन की मणि-माला के मनकों के रूप में आन्ध्र प्रदेश (हैदराबाद) में प० नरेन्द्रजी का जो व्यक्तित्व हम प्राप्त कर सके हैं वह आर्यसमाज का गौरव है । दक्षिण में उन जैसा आर्यसमाज का सजग प्रहरी पाकर हम निश्चिन्त हैं। आशा है उनकी जीवन-ज्योति आर्य युवकों के हृदयाकाश को सदैव प्रकाशित करती रहेगी ।" —सम्पादक]

श्री पंडित नरेन्द्रजी की गणना हैदराबाद के प्रथम श्रेणी के नेताओं में होती है जिन्होंने अपने त्याग, तपस्या और बलिदान से हैदराबाद की केद कराब जनता को पराधीनता से मुक्ति दिलायी।

पंडितजी का जन्म १४ अप्रैल सन् १६०७ ई० रामनवमी के पवित्र दिन हुआ। आपके पिता श्री केशवप्रसाद जी का सम्बन्ध हैदराबाद के एक प्राचीन और प्रसिद्ध घराने से था। इसके अतिरिक्त जागीर के बदले मनसब भी मिला करती थी। उक्त घराने के वातावरण में पल कर दक्षिण भारत का यह होनहार सुपुत्र जब पन्द्रह वर्ष की अवस्था को प्राप्त हुआ तो अपनी स्वाभाविक प्रकृति के अनुसार एक छोटा-सा पुस्तकालय जगदीश सभा के नाम से स्थापित करके अपने साथी विद्यार्थियों और जनता को विद्यामृत से लाभान्वित करने का कार्य प्रारम्भ किया। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की योजनाओं द्वारा नवयुवकों में जागृति उत्पन्न की और देश सेवा की भावना को प्रेरित करते रहे। इन्हीं दिनों शिक्षा के साथ साथ धर्म और आध्यात्मिकता के प्रति आपकी रुचि बढ़ती गयी। जब माता पिता ने रोक-टोक करनी चाही तो इस रुकावट को तोड़कर घर से बाहर निकल गये।

उस समय संयोग वश एक दिन आप आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में गये। वहां के भाषणों का आपके मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और आपने महर्षि दयानन्द को अपना गुरु मानकर अपने आपको सत्यमार्ग का पथिक बना दिया। यह वह काल था जबकि सन् १६२१ ई० में सिद्दीक दीनदार चन्न बसवेश्वर ने धर्म परिवर्तन द्वारा हिन्दू मत के विरुद्ध जबरदस्त आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। आर्यसमाज सुलतान बाजार की ओर से श्री पंडित रामचन्द्र जी के उत्तरात्मक भाषणों की व्यवस्था की गयी थी। उस अवसर पर उन भाषणों ने आपके मन पर जादू का सा प्रभाव किया। परिणाम स्वरूप घर आकर आपने निर्णय किया कि प्रचारक बनकर हैदराबाद राज्य मे वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए सम्पूर्ण आयु ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा। उक्त निर्णय के आधार पर आर्यसमाज के सिद्धान्तों का अध्ययन करने के लिए सन् १६३० ई० में आप लाहौर जाकर उपदेशक विद्यालय में प्रविष्ट हो गये। यह विद्यालय आर्यसमाज के महान् नेता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के निरीक्षण में चलाया जाता था और जिसने भारत में बड़े ही योग्य और त्यागी व्यक्तियों का निर्माण किया है और जिन्होंने देश के लिए महानतम बलिदान किये हैं। आप विद्यालय में तीन वर्ष रहे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आपके भाषण पटुत्व से बड़े प्रसन्न थे। पंडितजी स्वामीजी के अत्यन्त प्रिय विद्यार्थियों में से एक थे। उन्हीं दिनों आर्यसमाज के माननीय नेता महात्मा हंसराज जी और महात्मा आनन्द स्वामीजी (भूतपूर्व लाला खुशहालचन्द खुर्सन्द) से आपकी भेंट हुई। आप समय समय पर आर्य पत्रों में लेख भी लिखा करते थे। वहां से लौटने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के उर्दू साप्ताहिक वैदिक आदर्श का सम्पादन

जीवन-ज्योति

कार्य आपको सौंपा गया। उन्हीं दिनों जनता ने आपकी लेखनी की शक्ति को जाना। आपके आर्टिकल जोश भरे और विरोधियों के लिए मुंहतोड़ हुआ करते थे। इन दिनों हैदराबाद के मुस्लिम समाचार पत्रों ने आर्यसमाज के विरोध पर कमर कस ली थी। जिसके लेखों को पंडित जी की लेखनी ने ही रोका था। हुकूमत की ओर से वैदिक आदर्श पर १६३५ ई० मे प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसके बाद पंडित जी प्रचार के मैदान मे उतर आये। इन दिनों नवाब बहादुरयार जंग बहादुर ने नलगोंडा वरंगल निजामाबाद करीमनगर आदि जिलों में हरिजनों को शासन के आतंक से मुसलमान बनाने का प्रयत्न किया। परिणामत दस हजार हरिजन मुसलमान बना दिये गए। उस समय आर्यसमाज सुलतान बाजार की ओर से आर्यसमाज के मन्त्री चन्दूलाल जी ने आपको शुद्धि का काम सौंपा। आप और आपके साथी श्री शंकररेड्डी जी श्री बलदेव जी पतंगे ने आठ हजार से अधिक हरिजनों को पुनः हिन्दू धर्म में लौटाने में सफलता प्राप्त की। सन् १६३६ ई० में आर्यसमाज सुलतान बाजार का मन्त्री बना दिया गया। उस समय से जनता ने आपके साथ अपनी समस्त आशाएं जोड़ लीं। आपने सम्पूर्ण रियासत का समय समय पर दौरा करके घर घर निडरता का सन्देश पहुंचाया। धर्म, दृढ़ता और साहस का ऐसा भाव जगाया कि जिसका प्रदर्शन संसार के सम्मुख आर्य-सत्याग्रह के रूप में हुआ। उन्हीं दिनों बहादुर यारजंग ने जो मुस्लिमलीग के हैदराबाद में सीधे एजेण्ट थे और जिनको शासन का संरक्षण प्राप्त था हर मुसलमान बादशाह है का नारा लगाकर मुसलमानों में यह भावना पैदा करने की चेष्टा की कि वे ही उस समय के शासक हैं। और उस समय के हुक्मरान की स्थिति केवल उनके प्रतिनिधि के रूप में है। अन्य जातियों की स्थिति केवल गुलाम की है। पंडितजी ने इसका तुर्की बतुर्की जवाब दिया। अन्तत हुकूमत को विवश होकर ब्रिटिश-गवर्नमेंट के दबाव पर जब बहादुरयारजंग की एक वर्ष के लिए जबानबन्दी करनी पड़ी तो साथ-साथ प० नरेन्द्रजी की भी जबानबन्दी कर दी गयी। उक्त जबानबन्दी से पहले आपके राष्ट्रीय और सामाजिक कार्यों पर कड़ी नजर रखी जाती थी। हुकूमत हैदराबाद ने निजाम के आदेश से आपको हिदायत दी कि हुकूमत विरोधी कार्यों के कारण आपको मन्नानूर (हैदराबाद का कालापानी) क्यों न भेज दिया जाए? इस हिदायत और जबानबन्दी के होते हुए भी आप यथापूर्व कार्य करते रहे और देश के नौजवानों में जीवन निर्माण करके उन्हें शक्तिशाली बनाने का कार्य जारी रखा। इसके थोड़े ही समय आपको दो वर्ष के लिए निजाम हैदराबाद के विशेष आदेश से मन्नानूर भेज दिया गया। वहां आप एक वर्ष, पांच मास, सात दिन नजरबन्द रहे, इस पर भी अपने पत्रों द्वारा देश के नाम संदेश



—श्री प० नरेन्द्रजी

देने का प्रयत्न करते रहे। मन्नानूर भेजने के कुछ समय पश्चात् धूलपेठ के मुकदमे में जब आपके बयान की आवश्यकता अनुभव हुई तो उस समय की हुकूमत को फौज और पुलिस के होते हुए भी यह साहस नहीं हो सका कि आपका बयान हाईकोर्ट में कराया जाए। जनता में अत्यधिक प्रिय होने के कारण हुकूमत ने यही उचित समझा कि प्रबन्ध विशेष द्वारा आपका बयान सेंट्रल जेल हैदराबाद में लिया जाय अत जस्टिस लतीफुज्जमा सिद्दीकी रुकुन हाईकोर्ट ने फौजी संगीनों की छाया मे हैदराबाद जेल की चारदीवारी के भीतर आपका बयान लिया। और आपको रातों रात फौज की निगरानी में मन्नानूर भेज दिया गया। राज्य मे हुकूमत के विरुद्ध विरोध की भावनाएं बढ़ती ही गयीं। अन्तत विवश होकर आर्य समाजी नेताओं का एक सम्मेलन २६ दिसम्बर १६३८ को शोलापुर में हुआ जिसमें आर्यसमाज को हुकूमत हैदराबाद के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ करने का निर्णय लेना पड़ा। सत्याग्रह के सफल अन्त के पश्चात् पंडित जी को सत्याग्रहियों की रिहाई के हुक्म से पृथक् रखा गया था। महात्मा गांधी तथा श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त और स्वामी अभयदेव जी के विशेष प्रयत्नों के कारण आपको रिहा किया गया। बाहर आते ही आप फिर पूर्ण मनोयोग से अपने काम में तल्लीन हो गये। हुकूमत ने २२ अगस्त १६४३ ई० को गुलबर्गा में एक भाषण के सम्बन्ध में आप पर मुकदमा चलाया जिसमें आपको एक साल सश्रम कारावास का

[शेष पृष्ठ १२ पर]

वैदिक राष्ट्र-गीत

विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी ।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्र ऋषभा द्रविणं नो दधातु ॥६॥

(रुचिरा छन्द)

विश्वविधात्री वसुधा है जो, बहुधन को धरने हारी ।
जंगम जग का आश्रय होकर, पद प्रदान करने हारी ॥
जब समूह परिपूर्ण राष्ट्र का, जो धरती नित भार धरे ।
वह नेता ज्ञानी हमको कर, धन दे, अरि संहार करे ॥

All-bearing, good-holding, firm standing, gold backed reposer of moving things, bearing the universal fire, let the earth whose Lord is Indra, set us property.

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम. ए.

सभाधिकारियों द्वारा प्रचार यात्रायें

सभा मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी० व श्री प्रोफेसर इन्द्रवर्मा एम० ए० रामनगर (अन्तरङ्ग सदस्य) सहित कुमायूं क्षेत्र में सफल दौरा।

सभा उपमन्त्री श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र द्वारा १२ दिन पंजाब में और १० दिन मध्य प्रदेश का व्यापक दौरा।

मध्य प्रदेश, अम्बिकापुर, बिलासपुर (छत्तीसगढ) में ईसाई मिश्नरियों की गतिविधियों का आलोचनात्मक अध्ययन । दौरों के विस्तृत विवरण शीघ्र ही प्रकाशित होंगे । सम्पादक जी दौरे से लौटते हुए ४ और ५ जून को लखनऊ सभा-भवन में ठहरे ।



लखनऊ—१२ जुलाई १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

ईसाई प्रचार निरोध का पंचसूत्री कार्यक्रम

भारत के भौतिक विकास और निर्माण की चिन्ता से दूर भारतीय विचारधारा भारतीय गौरव, भारतीय धर्म और स्वाभिमान आदि की रक्षा और अभ्युत्थान का गम्भीर प्रश्न ऐसा प्रश्न है जिस पर आज किसी को विचार करने की फुरसत नहीं है। साधारणतः इन और इस प्रकार के प्रश्नों को साम्प्रदायिक और अनेकतावादी बताकर उपेक्षा कर दी जाती है। परन्तु आर्य समाज की आत्मा कर्त्तव्य-भावना से प्रेरित हो इस प्रकार के प्रश्नों को महत्त्वपूर्ण अनुभव करती है, और उसका नेतृवर्ग आज भारत इस समस्या के समाधान के लिए सर्वाधिक चिन्तित है। इस समस्या का एक व्यावहारिक स्वरूप विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा भारत की भोली-भाली जनता का धर्म परिवर्तन आन्दोलन है, जिसके लिए विदेशों से धन का अपरिमित प्रवाह बह रहा है; और मिश्नरी कार्यकर्त्ताओं का सामूहिक अभियान जारी है। इस प्रकार वे भारतीय लोगों की बुद्धि को न जीत कर उनकी विवशता से लाभ उठाते हुए सांस्कृतिक संघर्ष में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं।

आर्यसमाज के सामयिक कार्यक्रम में विदेशी ईसाई मिश्नरी प्रचार निरोध को मुख्यता देते हुए गत २५ जून को सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग ने एक पंचसूत्री योजना स्वीकार की है। हम आशा ही नहीं विश्वास करते हैं कि सम्पूर्ण आर्यजगत् उस योजना की पूर्ति में संलग्न हो सफलता प्राप्त करेगा। योजना इस प्रकार है :—

१—पहाड़ी स्थानों तथा जन-जातियों में जहां मुख्यतः विदेशी मिशन अपना जाल बिछाये हुए हैं, मध्यप्रदेश, छोटा नागपुर, उड़ीसा, कुमायूं, राजस्थान आदि वहां के सेवा सदनों की स्थापना स्थान-स्थान पर की जाय और प्रत्येक सदन में एक अत्यन्त अनुभवी विश्वस्त और प्रबन्ध कुशल कार्यकर्त्ता बैठाकर कार्य संचालित किया जाय।

२—स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण श्रेणियों की व्यवस्था की जाय। मैट्रिक योग्यता के विद्यार्थियों को ट्रेनिंग के लिये प्रविष्ट किया जाय, ट्रेनिंग प्राप्त छात्रों की सर्विस का प्रबन्ध सभा करेगी।

३—छात्रावासों की स्थापना की जाय जहां छात्रों को रखकर उनके जीवन को धार्मिक एवं पवित्र बनाने की चेष्टा की जाय।

४—साहित्य का प्रकाशन किया जाय जिसमें छोटी-छोटी पुस्तिकाओं को प्रमुखता हो।

५—भोली-भाली जनता को ईसाइयों के कपट-जाल से परिचित कराया जाय और भारतीय धर्म पर दृढ़ आस्था रखने में उसे समर्थ बनाया जाय।

इस कार्यक्रम की उपयोगिता संदेह से परे है। आवश्यकता इस बात की है कि इस दिशा में प्रत्येक आर्यसमाजी अपना कर्त्तव्य पालन करे और भारतीय धर्मावलम्बियों को सहयोग के लिये प्रेरित किया जाय। आज प्रत्येक इस धर्म परिवर्तन पुकार और उसके दूरगामी प्रभावों से चिन्तित है, पर उनकी सहानुभूति का संयोजन हम नहीं कर सके हैं।

सभा की इस योजना की सफलता के लिये धन-जन दोनों की महती आवश्यकता है। धन तो कार्य करने पर मिलता ही है, और मिलेगा ही सबसे अधिक आवश्यकता इस कार्य क्षेत्र में कार्य करने के लिए समर्पण भावना वाले कार्यकर्त्ताओं की है। आर्यसमाज ने प्रत्येक क्षेत्र में जहां भी कदम उठाया अपने कर्मठ और सुदृढ़ कार्यकर्त्ताओं द्वारा सफलता प्राप्त की है। इस दिशा में भी योजनानुसार प्रयत्न हमें सफलता प्रदान करेगा। मित्र का सम्पूर्ण जीवन इस प्रकार के आन्दोलनों कार्यक्रमों की सफलता में संलग्न रहा है और यदि यह कहा जाय कि मित्र का जीवन है ही इन और इस प्रकार के आन्दोलनों की सफलता के लिये तो कोई अत्युक्ति न होगी। हम मित्र परिवार की सेवायें इस पंचसूत्री कार्यक्रम की सफलता के लिये प्रस्तुत करते है। आशा है सभा, आर्य बन्धु और क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता सभी आर्यमित्र की सहायता से इस योजना को सफल बनाने में समर्थ होंगे।

गुरुधाम स्मारक व दयानन्द दीक्षा शताब्दी के लिए

काल के चरण आगे बढ़ रहे हैं, हमें भी आगे बढ़ना होगा। जो स्थिर बैठे रहना चाहते हैं, उनकी आर्यसमाज निष्ठा, महर्षि दयानन्द और गुरु विरजानन्द के प्रति श्रद्धा भावना चिंतनीय है। दोनों महामानवों ने भारत की अन्ध रात्रि में प्रकाश की जिस ज्योति का दान हमें दिया उस मशाल को ज्योतित रखने का दायित्व हमारे ऊपर है।

अपने ८५ वर्षीय इतिहास में आर्य समाज के साथियों ने महर्षि के सन्देश को प्रचारित प्रसारित करने का जो महान् गौरवपूर्ण कार्य सम्पन्न किया उसे भविष्य में जारी रखने का दायित्व आज की आर्य पीढ़ी को पूर्ण करना है।

क्या हम आज उतने ही कर्मठ और सजग है जितने हमारे पूर्वज थे? यदि हम में शैथिल्य और नैराश्य की भावना घर कर रही है तो इसमें दोष सिद्धान्तों और योजनाओं का नहीं हमारे व्यक्तिगत चरित्र की कमजोरी का है। दयानन्द दीक्षा शताब्दी का स्वर्णावसर हमें एक बार प्रबुद्ध कर दयानन्द की भांति आर्यजगत् रूपी विश्वविद्यालय से दीक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा देने आया है।

सभी आर्य दयानन्द बनने की प्रतिज्ञा लें, तब भी प्रत्येक के लिए बन सकना सम्भव नहीं। पर हमारा व्यापक संघटन सम्मिलित रूप से अरेले महर्षि के किये कार्य को सम्पन्न कर सके यही बहुत बड़ा कार्य होगा।

आज हमने ईसाई प्रचार निरोध कार्य अपने हाथ में लिया है। केवल योजनायें सफल हों काल्पनिक न रहें इसके लिए संघटन निष्ठा, त्याग, सहयोग सहिष्णुता आदि पवित्र गुणों की आवश्यकता है। दीक्षा-शताब्दी आपके जीवन की पुकार है कि आप दीक्षा ग्रहण करें और कर्त्तव्य क्षेत्र में जुट जाय। अभी से अपने मनों में संकल्प कीजिए कि महर्षि के दीक्षा-शताब्दी समारोह में सम्मिलित होने से पूर्व मैं ऋषि के मिशन की पूर्ति में निम्न प्रकार संलग्न रहूँगा। आपकी मानसिक प्रतिज्ञा और उसकी पूर्ति आर्यसमाज की प्रगति का माप होगी। यदि हम कुछ करना चाहते हैं तो निश्चय करें और कार्य आरम्भ कर दें। यदि आप मन से दीक्षा शताब्दी में सम्मिलित होने के लिये सन्नद्ध होंगे तो धन-जन की समस्यायें गौण हैं वे अपने आप सुलझ जायगी। आप दीक्षा शताब्दी के लिये दीक्षा ग्रहण करें यही हमारी प्रेरणा है और हम समझते हैं इस भावनात्मक विचार से भी आर्यसमाज की प्रगति में पर्याप्त सहयोग पहुँचेगा।

जो बन्धु इस समारोह की सफलता के लिये सक्रिय कार्य कर रहे हैं उनकी प्रशंसा करते हुए निवेदन करना चाहते हैं कि समय कम है कार्य अधिक। इसी आधार पर कार्य की प्रगति जारी रक्खें उनके अमूल्य सहयोग से कार्य में अद्वितीय सफलता अवश्यम्भावी है।

★

आर्यसमाज महान है : साम्प्रदायिक संस्था नहीं

प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू का कथन

नेहरू वीरेन्द्र पत्र व्यवहार

जालन्धर २८ जून। प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने 'वीर प्रताप' व 'प्रताप' के सम्पादक श्री वीरेन्द्र एम० एल० सी० के नाम एक पत्र में आर्यसमाज के बारे में अपने वक्तव्य का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है कि वह आर्यसमाज को साम्प्रदायिक संस्था नहीं समझते, चाहे उनका यह मत है कि पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आर्यसमाज ने साम्प्रदायिक ढंग से काम किया।

श्री नेहरू ने अपने जून मास के पत्रकार सम्मेलन में केरल के साम्प्रदायिक तत्वों का उल्लेख करते हुए आर्यसमाज के बारे में कहा था कि वह साम्प्रदायिक संस्था के तौर पर काम कर रहा है। आपके इस वक्तव्य पर श्री वीरेन्द्र ने आपत्ति की और उन्हें लिखा कि वह ये शब्द कहकर और आर्यसमाज को हिन्दू महासभा के, जो राजनीतिक संस्था है, बराबर स्तर पर लाकर आर्यसमाज के साथ अन्याय किया है। इसके उत्तर में श्री नेहरू ने स्पष्ट किया है कि वह आर्यसमाज को साम्प्रदायिक संस्था नहीं समझते। श्री नेहरू और श्री वीरेन्द्र का पत्र-व्यवहार इस प्रकार है—

श्री वीरेन्द्र का पत्र

१२ जून १९५९

माननीय पंडित जी,

आपने अपने १० जून के पत्रकार सम्मेलन में केरल की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते समय आर्यसमाज के बारे में भी कुछ शब्द कहे। जो इस प्रकार हैं—"आर्यसमाज भी हिन्दू महासभा की भाँति साम्प्रदायिक ढंग से काम कर रही है।" मैं नहीं समझ सका कि इससे आपका वस्तुत क्या अभिप्राय है। लेकिन आपके इस वक्तव्य से भ्रांति उत्पन्न होने की पक्की संभावना है। हिन्दू महासभा राजनीतिक संस्था है, जबकि आर्यसमाज एक धार्मिक और सांस्कृतिक संस्था है जिसका राजनीति के साथ जरा-सा भी सम्बन्ध नहीं। इसके अतिरिक्त इन दोनों में कोई भी बात मिलती-जुलती नहीं और आर्यसमाज को हिन्दू महासभा के बराबर और एक स्तर पर रखना आर्यसमाज के साथ अन्याय करने के बराबर है। यदि आर्यसमाज वास्तव में साम्प्रदायिक संस्था है, तो क्या कारण है कि कांग्रेसियों को इसका सदस्य बनने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाता? जहाँ तक मुझे मालूम है कांग्रेस के संविधान के अनुसार कांग्रेसी किसी भी साम्प्रदायिक संस्था के सदस्य नहीं बन सकते। आर्यसमाज ने कभी कोई साम्प्रदायिक राजनीतिक माँग पेश नहीं की, इसलिए इसे साम्प्रदायिक संस्था कहना अन्यायपूर्ण और अनुचित है।

ऐसा मालूम पड़ता है कि उस समय जबकि आपने ये शब्द कहे आपके मस्तिष्क में कोई और बात थी। आप केरल की कुछ धार्मिक संस्थाओं के बारे में अपने विचार प्रकट कर रहे थे, जो आजकल केरल सरकार के विरुद्ध आन्दोलन कर रही हैं। अत शायद आप यह कहना चाहते थे कि आर्यसमाज भी एक धार्मिक संस्था है और आपके शब्दों से उन तमाम लोगों को निराशा होगी जो आपसे सदैव न्यायपूर्ण व्यवहार की आशा रखते हैं। इसलिए यदि आप अपने वक्तव्य का स्पष्टीकरण कर दें, तो मैं आपका अतीव धन्यवादी हूँगा ताकि यदि इस बारे में गलत रिपोर्ट हुई हो या कोई भ्रांति हुई हो, तो वह दूर हो जाए।

आपका
वीरेन्द्र एम० एल० सी०

श्री नेहरू का उत्तर

प्रधान मन्त्री भवन,
नई दिल्ली।

१४ जून १९५९

प्रिय श्री वीरेन्द्र

मुझे आपका पत्र तिथि १२ जून को मिला। मैंने इस पत्रकार-सम्मेलन में कहा था कि पंजाब के एक विशेष मामले में आर्यसमाज मेरे विचार से साम्प्रदायिक ढंग से काम करता रहा है। मैंने इसे साम्प्रदायिक संस्था नहीं कहा था। मैं गत वर्ष के हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सिलसिले में इससे पूर्व भी यह विचार प्रकट कर चुका हूँ। जहाँ तक मुझे स्मरण है, यह आन्दोलन कुछ प्रमुख साम्प्रदायिक संस्थाओं के साथ मिलकर चलाया गया था। मैं आर्यसमाज जैसी महान् संस्था को, जिसके पीछे इतना शानदार समाज कल्याण और शिक्षा सम्बन्धी रिकार्ड है, इस ढंग से काम करने पर कई बार प्रकट कर चुका हूँ।

आपका हितैषी
जवाहरलाल नेहरू

★

सभा के प्रधानमन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम.एल.सी. का कुमायूँ की पहाड़ियों में भव्य स्वागत

हीरक जयन्ती आदि समारोह के लिए धन भेंट

इस वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा के नवनिर्वाचित प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० ने दि० २४ जून से ४ जौलाई तक श्री इन्द्र वर्मा एम०ए०अन्तरङ्ग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ जिले नैनीताल व अल्मोड़ा का दौरा किया। जिले की सम्पूर्ण आर्यसमाजों ने आपका स्वागत किया। आपके इस क्षेत्र में पधारने से सुप्त समाजें पुनः जागृत हो उठीं, उनमें जयन्ती आदि उत्सवों के लिये चेतना उत्पन्न हो गई।

मंत्रीजी नैनीताल में

दिनांक २५ जून से २८ जून तक आपने नैनीताल आर्यसमाज का निरीक्षण किया। दिनांक २८ जून को आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के बीच भाषण करते हुये आपने वर्तमान युग में आर्य समाज की महत्ता पर प्रकाश डाला और आर्य भाई बहनों से अपील की कि यदि वे देश की भलाई चाहते हैं तो महर्षि दयानन्दजी के बताये हुए सिद्धान्तों को अपनाए और अन्य को अपनाने की प्रेरणा दें। इसके अतिरिक्त आपने हीरक जयन्ती आदि के लिये अपील की। आर्यसमाज की ओर से शीघ्र २१) की थैली भेंट की गई

अल्मोड़े में

दिनांक २६ जून को मन्त्रीजी ने अल्मोड़े पहुँच कर आर्यसमाज के अनेक वर्षों से चल रहे विवाद का अध्ययन किया तथा स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्रीजी को अनेक सुझाव दिये। भविष्य में भी पूर्ण सहायता देने का वचन दिया। यद्यपि अल्मोड़े आर्यसमाज में धनाभाव था किन्तु जयन्ती की सफलता के लिये दशांश के अतिरिक्त २१) मन्त्री समाज ने भेंट किये। यह बड़े उत्साह की बात है।

भवाली में

दिनांक ३० जून को सायकाल आप भवाली पहुँचे। वहा पहुँच कर आपने सभा के शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी सार्वजनिक पुस्तकालय का निरीक्षण किया तथा भवाली समाज जो पिछले कुछ वर्षों से शिथिल हो गई थी, को पुन जागृत किया। स्मरण रहे कि भवाली में समाज के मन्दिर को श्री हरगोविन्दजी सरदना ने दान दिया था।

नारायणस्वामी आश्रम में स्वामी अमृतानन्दजी से भेंट

दिनांक १ जौलाई को मन्त्रीजी रामगढ़ पहुँचे। यद्यपि रामगढ़ बस स्टेशन से नारायण स्वामी आश्रम तक अभी बस नहीं जाती किन्तु फिर भी मन्त्रीजी ने साहस के साथ ४ मील की पैदल यात्रा की जो किसी साधारण व्यक्ति के लिये सरल नहीं। वहां पहुँच कर आपने स्वामी अमृतानन्द जी महाराज से भेंट की। आर्यसमाज की गतिविधियों पर विचार विमर्श किया। स्वामीजी ने आपको सभा के कार्य को रुचि से चलाने की प्रेरणा दी।

हल्द्वानी में

दिनांक १ जौलाई की रात्रि को आप हल्द्वानी लौट आये और दो तक रहे। हल्द्वानी आर्यसमाज के सदस्यों में मन्त्रीजी से भेंट करने की पूर्ण उमंग थी। समाज के प्रधान श्री विद्यारत्न जी ने अन्य सदस्यों सहित मन्त्रीजी का पूर्ण स्वागत किया। प्रधानजी ने मन्त्री जी को स्वयं अपनी कार में ले जाकर समाज के मकान व बगीचे आदि दिखाये। समाज की ओर से १०) मन्त्री जी को भेंट किये गये।

काशीपुर में

दिनांक ३ को मन्त्रीजी काशीपुर पधारे। समाज के पदाधिकारियों के द्वारा आपका स्वागत किया गया। सायंकाल ८ बजे समाज के सदस्यों के बीच आपका भाषण हुआ और आपको २१) की थैली हीरक जयन्ती के लिये भेंट की गई। आपने महर्षि दयानन्द आश्रम का भी भ्रमण किया।

विदायी

दि० ४ जौलाई को प्रात काल अन्तरङ्ग सदस्य श्री इन्द्र वर्माजी ने मन्त्री जी को काशीपुर रेलवे स्टेशन पर प्रसन्नतापूर्वक विदायी दी। आर्यसमाज काशीपुर के उत्साही कार्यकर्त्ता एवं पूर्व प्रधान श्री डा० गोविन्ददेव जी तनेजा भी उपस्थित थे।

★

—श्री स्वामी आनन्द भिक्षुजी तथा श्री आनन्द स्वामीजी महाराज के पतों की आवश्यकता है। जिन सज्जनों को विदित हों वे आर्यसमाज, धामपुर के पते पर लिखने की कृपा करें। —कान्तिचन्द्र प्रधान

इतिहास, पुरातत्व, धर्म, राजनीति, विज्ञान आदि विविध विषयों पर निर्बाध लेखनी चलाने वाले महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने ऋग्वेद के आधार पर वेद कालीन आर्यों के जीवन के सम्बन्ध में एक ग्रन्थ लिखा है—ऋग्वेदिक आर्य। अपने जीवन में विविध मतों और आस्थाओं को स्वीकार करने वाले राहुलजी के व्यक्तित्व से परिचित कोई भी व्यक्ति अनुमान लगा सकेगा कि उक्त पुस्तक में क्या हो सकता है? राहुलजी एक समय परसा [बिहार] के वैष्णव मठ के महन्त थे और अयोध्या में सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने उनके वैष्णव जीवन की इतिश्री कर दी। वे एक कट्टर आर्यसमाजी बन गये, परन्तु उन पर शीघ्र ही बौद्ध मत का रंग चढ़ा और वे तुरन्त ही भिक्षु बन कर विभिन्न बौद्ध देशों में भ्रमण के लिये निकल गये। एक भिक्षु के लिये उचित और आवश्यक नियम, संयम और वैराग्य की मात्रा का भी उनमें अभाव ही रहा। फलतः वे पुनः गृहस्थ बने और खान-पान, आचार-व्यवहार और नैतिकता की सभी मर्यादायें उन्हें व्यर्थ ज्ञात हुईं। अब उन पर मार्क्स और लेनिन के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद ने जादू फेर दिया और वे रूसी विचारों के बिना दाम के गुलाम बन गये हैं।

साहित्य-समीक्षण

राहुलजी के ग्रन्थ 'ऋग्वेदिक आर्य' की एक समीक्षा

(श्री पं० भवानीलाल भारतीय एम० ए०, सम्पादक आर्यपथ, जोधपुर
सदस्य सार्वदेशिक सभा)

ऋग्वेद के आधार पर आर्यों के जीवन और उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा विचारधारा का जो विवेचन राहुल जी ने प्रस्तुत किया है, उसका मूलाधार ही गलत है। वे यह तो मानते हैं कि ऋग्वेद कोई इतिहास की पुस्तक नहीं है। उसमें आर्य ऋषियों ने अपने सम्मान्य देवताओं की स्तुतियों का ही संग्रह किया है। फिर भी ऋग्वेद में आने वाले तथाकथित राजाओं, जनपदों, ऋषियों और नदियों आदि के आधार पर वे कल्पना के रंग भरते जाते हैं। हमारा राहुलजी के मत से मौलिक विरोध है। वेद के अर्थ की जो परम्परा अनादि काल से हमारे देश में प्रचलित रही, उसकी यदि वेद के अध्येता उपेक्षा करें तो हमारा यह निश्चित विश्वास है कि वे वेद के तत्त्वार्थ को त्रिकाल में भी नहीं समझ सकते। किसी भाषा को पढ़ने या समझने के लिए उस भाषा के ही व्याकरण आदि की सहायता लेनी पड़ेगी। लेटिन और हिब्रू भाषा के अध्ययन में संस्कृत का व्याकरण क्या काम आ सकता है? उसी प्रकार वेद के व्याकरण, निरुक्त और निघण्टु की उपेक्षा कर यदि राहुलजी वेद पढ़ें तो वे वेद के मौलिक अभिप्राय को कैसे समझ सकेंगे?

वेदों में हमें जो राजाओं और ऋषियों के से नाम दीख पड़ते हैं उनके रहस्य को हृदयंगम करने के लिए हमें मनुस्मृति के इस सिद्धान्त को स्वीकार करना ही पड़ेगा—

सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्
वेद शब्देभ्यो एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे

अर्थात् संसार में लोगों ने वेद के अनुकरण पर ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं का नामकरण किया है। इस दृष्टि से यदि वेद में आने वाले सुदास, दिवोदास, अनु, पुरू, द्रुह्यु, यदु, कुरु, भरत, वसिष्ठ, विश्वामित्र, भरद्वाज, जमदग्नि, कण्व, गङ्गा, यमुना, सरस्वती, असिक्नी, शतद्रु, परुष्णी, दृषद्वती आदि नामों का हम विचार करें तो ये नाम व्यक्तिवाचक न रहकर सामान्य संज्ञायें रह जाती हैं। आचार्य दयानन्द ही नहीं, अपितु सायणादि भाष्यकारों ने भी नहुषाः का अर्थ मनुष्याः और 'कण्व' का अर्थ मेधावी किया है। अतः इस तथ्य को स्वीकार कर लेने के पश्चात् ऋग्वेद के आधार पर इतिहास का जो भवन खड़ा किया जाता है वह ताश के पत्तों की तरह गिर जाता है।

यदि राहुलजी पूर्वाग्रह और पक्षपात-युक्त धारणाओं को छोड़कर ऋग्वेद कालीन आर्यसमाज का सांस्कृतिक मूल्यांकन करते तो हमें कुछ भी आपत्ति नहीं होती। परन्तु हम तो यह जानते हैं कि उनका यह सम्पूर्ण प्रयास ही आर्यों के महान् अतीत को क्षुद्र बतलाने और हमारे अरबों वर्षों के इतिहास की सीमा को कुछ शताब्दियों की परिधि में ही सीमित करने का षड्यंत्र है। अपनी पुस्तक के प्रथम अध्याय में ही वे लिखते हैं—'हमारे इतिहासवेत्ता कलियुग और महाभारत काल की धारणा बनाकर इतिहास को हजारों वर्ष पीछे ले जाने की कोशिश करते हैं। वस्तुतः आर्यों का भारत में प्रवेश ई० पू० १५०० से पहले नहीं मालूम होता।' यह है राहुलजी का अनोखा काल निर्णय। राहुलजी से तो वे पाश्चात्य विद्वान् ही अच्छे हैं जो वेद-काल को ईसा से २५००-३००० वर्ष पूर्व मानते हैं। परन्तु हमारा निवेदन है कि प्रसिद्ध आर्य इतिहासज्ञ पं० भगवद्दत्त जी ने आर्य इतिहास की प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए जो प्रमाण अपने भारतवर्ष का बृहद् इतिहास में प्रस्तुत किये हैं उनकी विद्यमानता में वेद के काल को इतना नवीन बतलाना निश्चय ही सत्य का अपलाप करना है।

राहुलजी की अन्यान्य स्थापनायें भी ऐसी ही हैं। उनके लिये प्रमाण जुटाने का भरसक प्रयत्न करते हुए भी राहुलजी ने अधिकांश स्थानों पर केवल अंधेरे में टटोलने का ही प्रयास किया है। उन्हें अपने कथन पर स्वयं भी पूर्ण विश्वास नहीं है। अतः वे सम्भावनाओं से ही अधिकतर काम लेते हैं। जिस प्रकार भारतीय विद्या-भवन के तत्त्वावधान में प्रकाशित Vedic Age की यथार्थ समीक्षा करते हुए आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने उसे 'Book of probabilities' (सम्भावनाओं की पुस्तक) कहा राहुलजी की यह पुस्तक भी उसी कोटि की है।

राहुलजी ने आर्यों के प्रति अपने सम्पूर्ण पूर्वाग्रहों और पक्षपात पूर्ण धारणाओं को पुस्तक रूप में निबद्ध करने के लिये ही 'ऋग्वेदिक आर्य' लिखी। इसका एक प्रत्यक्ष प्रमाण तो इसी बात से मिल जाता है कि उन्होंने अपनी भूमिका में भारत के विगत इतिहास का जो एक सिंहावलोकन उपस्थित किया है उसमें प्रत्येक युग के लोगों को मांसाहारी बताने में वे नहीं चूके। उदाहरणार्थ उनके निम्न वाक्य देखिये—

सन् १८५० से १९५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। सन् १७५० से १८५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। १६५० से १७५०—मांसाहारी अधिक हैं। सन् १५५० से १६५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। सन् १४५० से १५५०—लोग अधिकांश मांसाहारी हैं। सन् १३५० से १४५०—अधिकांश लोग मांसाहारी हैं। सन् १२५० से १३५०—अधिकांश मांसाहारी हैं।

इस प्रकार के मांसाहार के आरोप वे इतिहास के अतीत युग तक ले जाते हैं। मानो राहुलजी इसी कार्य के लिए नियुक्त किये गये हों कि पुरा-युगीन लोगों के आहार की समीक्षा करें और उन्हें मांसाहारी सिद्ध करें।

राहुलजी ने आर्यों को गडरिये भेड़ बकरी पालने वाले, घुमक्कड़ और नागरिक जीवन से अनभिज्ञ बतलाया है। साथ ही वे सिन्धु घाटी में निवास करने वाले द्राविडों को उनसे कहीं अधिक सभ्य, सुसंस्कृत और नागरिक सभ्यता के अनुयायी मानते हैं। परन्तु जिस आर्य जाति ने नासदीय सूक्त जैसे दार्शनिक सिद्धान्त का प्रचार किया वह सामाजिक दृष्टि से अविकसित थी, यह कथन विडम्बना के अतिरिक्त और क्या हो सकता है?

आर्यों के खाद्य का विचार करते हुए उन्होने आर्यों को मांस-भक्षक ही नहीं, अपितु गोमांस-भक्षक सिद्ध किया है। परन्तु प्रमाण दिये हैं बृहदारण्यक के और बौद्धों के मज्झिम निकाय के। यदि ब्राह्मणों के विरोधी बौद्ध आर्यों को गो मांस भक्षक बतायें तो आश्चर्य ही क्या? परन्तु ऐसे पक्षपातपूर्ण वचनों का क्या प्रमाण हो सकता है? इसी प्रकार आर्यों के 'सोम' इसको राहुलजी ने भंग का नशा बताया है। वैदिक सोम के पीछे जो आध्यात्मिक भावना है उसे न समझ कर यदि कोई इस प्रकार का अनर्थ करे तो वह अबोध ही समझा जायगा।

ऋग्वेद के मंत्रों में जो वैज्ञानिक और आलंकारिक रहस्य भरे पड़े हैं उन्हें न समझ कर शम्बर, वृत्र आदि तथाकथित असुरों के इन्द्र से युद्धों की कल्पना करना और इन्हीं निर्बल आधारों पर ऋग्वेदिक आर्यों के राजनैतिक इतिहास की योजना करना वैसा ही है जैसे कोई बालू की आधार शिला पर सुदृढ़ भवन बनाने का विचार करता है। सम्भावनाओं से तो यहाँ भी राहुल जी का पीछा नहीं छूटा है।

इस ग्रंथ पुस्तक के पीछे लेखक का पूर्वाग्रहयुक्त भाव निहित है। यह तो इसीसे स्पष्ट हो जाता है कि आर्यों के धर्म की चर्चा करते समय लेखक ने वैदिक एकेश्वरवाद के प्रतिपादक उस प्रसिद्ध मंत्र की सर्वथा अवहेलना ही की है जो यह स्पष्ट घोषणा करता है 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' एक परमेश्वर को ही बुद्धिमान लोग विभिन्न नामों से पुकारते हैं। इसी प्रकार विभिन्न मंत्रों के आधार पर देवताओं का जो स्वरूप प्रतिपादित किया गया है वह भी पूर्णतया अवास्तविक और निराधार है। यह कहना कि वैदिक आर्य परलोक और पुनर्जन्म को नहीं मानते थे, वेद के दर्शन से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना है।

इस प्रकार यह ६०० पृष्ठों का बृहद् पोथा ऋग्वेद के समाज का एक भ्रान्त

[शेष पृष्ठ ६ पर]

सिंहावलोकन

प्राचीन भारत में प्रजातंत्र

[श्री डा० प्रेमदत्त शास्त्री, फीरोजाबाद]

आज प्रजातन्त्रीय देशों में मिस्र, ईराक, बर्मा और वियतनाम, पाकिस्तान और सूडान में फौजी शासन हुए हैं। पाकिस्तान तो इसी देश का एक टुकड़ा था जो आज भारत की दोनों सीमाओं से मिला हुआ है। वहाँ के प्रजातन्त्रीय शासन का भंग हो जाना और उसके स्थान पर फौजी शासन हमारे देश क प्रजातन्त्रीय सिद्धान्तो के लिए एक जबरदस्त धक्का है। क्या इस 'क्यू' में भारत भी खड़ा होगा? यह एक प्रश्न हैं जिसे झुठलाया नहीं जा सकता।

आज से बीस वर्ष पूर्व एक अंग्रेजी पत्र ने हमारे स्वतन्त्रता-संग्राम के समय में लिखा था—"प्रजातन्त्र एक ऐसी शासन-प्रणाली हे जो केवल पश्चिमी देशो को ही शोभा देती हे। किसी और दिशा में, सम्भव है भारत हमारा मार्ग-दर्शक हो सके लेकिन प्रजातन्त्र का पाठ सीखने के लिए उसे हमारी ही शरण में आना होगा, भारत की अपनी सरकार हमेशा स्वतंत्र और स्वेच्छाचारी रही है। स्वतन्त्रता और आत्म गौरव की भावनाओ को पलने के लिए भारतीय मस्तिष्क मरूभूमि हैं, भारत की प्रथाएँ और इतिहास इन भावो से सर्वथा शून्य हैं।

भारत-भूमि स्वतन्त्रता के लिए कितनी उर्वरा थो, यह जानने के लिए हमें यहाँ की प्राचीन संस्कृति और साहित्य का गम्भीर अध्ययन करना चाहिए। अन्तर केवल इतना ही है जहाँ यूरोप ने स्वतन्त्रता की खोज वैस्टाईम में, मैदानों में, अथवा लाल मस्जिदों की रक्षा में की है, वहाँ भारत ने इस स्वतन्त्रता को रचनात्मक सांस्कृतिक आदर्शों को पूरा करने में पाया है। आर्यों ने विचार और अन्तरात्मा को सब प्रकार के दोषों से विशुद्ध करने में अपनी स्वतन्त्रता समझी है। इस प्रकार की स्वतन्त्रता का पश्चिमी देश नाम तक भी नहीं लेते।

आर्य राज्य का जीवन उसकी प्रजा के साथ था। राजा अपनी प्रजा का पालन करने वाला उसे सब प्रकार से सुख पहुँचाने वाला [राजाप्रकृति रंजनात्] पिता होता था। प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात्भरणादपि। स पितु. पितरस्तेषां केवलं जन्म हेतवः॥ प्रजा के भरण पोषण का अधिकार राजा पर होता था पिता तो केवल जन्म देने का अधिकारी था।

प्राचीन भारत में एक तन्त्राधिकार का पनपना बहुत कठिन था, राजा राजाज्ञा मनमाने तौर पर नहीं निकाल सकता था परन्तु राज्य परिषद् द्वारा स्वीकृति होने पर ही कोई आज्ञा प्रकाशित हो सकती थी। उस समय प्रत्येक गाव में मत द्वारा प्रथक-प्रथक संघ या पंचायतें होती थीं। यह पंचायते स्वशासन में छोटी-छोटी सरकारें होती थीं। यही राज्य परिषद का निर्माण करती थीं। राज्य परिषद राजा का चुनाव करती थी। राज्य की व्यवस्था का संचालन परिषद करती थी। उसका सभापति प्रधान नाम से सम्बोधित होता था। प्रत्येक विभाग के मन्त्री प्रथक थे। विद्यासभा, धर्मसभा, उद्यान समिति, समाज-सेवा समिति, राज्य परिषद मन्त्रि-परिषद को सहयोग देती थी। इन सभो और समितियों में आत्म शासन का वही उसूल काम करता था यह सभा समितियाँ प्रजातन्त्र के आधार पर अवलम्बित थीं। निर्वाचन के समय शिक्षित सदाचारी २१ वर्ष से ऊपर आयु वाला ही मत देने का और चुनाव में खड़े होने का अधिकारी था।

प्राचीनकाल के जनपदो में तथा मिथिला और लिच्छी के गण राज्यों में भी राजा कोई भी हो जनमत की शक्ति को ही प्रधानता दी जाती थी। पंजाब के गणतन्त्र ही थे जिन्होंने सिकन्दर द्वारा स्थापित राज्य से भारत को मुक्त करने में चन्द्रगुप्त की सहायता की थी। मर्यादा पुरुषोत्तम राम अपने बन्धु या अपनी पत्नी की मार्मिक अवस्थाओ में भी मन्त्रिपरिषद और जनता की इच्छा की अवहेलना नहीं कर पाते थे।

राजा और प्रजा के घनिष्ठ सम्बन्ध के विषय में अथर्व वेद का यह सूक्त बहुत अच्छा प्रकाश डालता था—सभिश्चेतु व्यचलत् तंसभा च—समितिश्च सेनाच सुराचानुव्यचलत्—यह सत्य वचनों को पालन करने वाला राजा प्रजाओं के अनुकूल लोकमत के अनुसार विवेक पूर्ण चला तो सभा समिति सेना और सुरा राज्यलक्ष्मी खजाना भी उसके पीछे-पीछे चले।

आज देश में प्रजातन्त्र है जिसके सम्बन्ध में श्री शैवड़े जी ने लिखा है—यह प्रजातन्त्र हमने पश्चिम से सीखा है कुछ किताबें पढ़ीं उनके शब्दो की माधुरी हमें भा गई उनके शब्द जाल की कल्पनाएँ हमें बड़ी लुभावनी लगीं और उनकी नकल कर ली, कुछ इंगलैण्ड का ढांचा, कुछ फ्रान्स का, कुछ अमेरिका का और सबको मिला मिला कर यहां भी एक ढांचा तैयार कर लिया और लगे उसकी दुहाई देने, अब दस ग्यारह वर्ष के अनुभव के बाद हमें उसकी बुराईयां और कमजोरिया नजर आने लगीं और हम परेशान हो उठे आखिर कैसे इसे सम्भालें ?

आज के प्रजातन्त्र के सम्बन्ध में सत्य यह है कि वह निर्जीव शरीर जैसा है जिसमें प्राण शक्ति और आत्मा का अभाव हे। हमारी सारी योजनाएं दिखावा और ऊपरी सतह को ही छू पाती हैं भारतीय प्रजातन्त्र की नींव इतनी शक्तिशाली है कि उस पर खड़ा किया हुआ महल ईस्पात का मजबूत होगा उससे भारत की आत्मा जागेगी, ऋषि दयानन्द और महात्मा गांधी के स्वप्न पूरे होंगे। दीन दुखियों के दरिद्र भाव दूर होंगे राम का राज्य आवेगा जनता में नयी उमंग और सोयी भावना जागेगी भय और आगत बाधाएँ समाप्त होंगी।

[पृष्ठ २ का शेष]

चित्र ही उपस्थित करता है क्योंकि जब तक पूर्वाग्रह और पक्षपात से मुक्त होकर कोई भी व्यक्ति निष्पक्ष दृष्टि से किसी धर्मग्रन्थ की आलोचना करता है तभी वह उस ग्रन्थ के साथ न्याय कर सकता है। परिशिष्ट रूप में लेखक ने लगभग १॥ हजार ऋचाओं का हिन्दी अर्थ भी दिया है, जिनके प्रमाण उसने अपने ग्रन्थ में स्थान स्थान पर दिये हैं। परन्तु वैदिक ऋचाओं का यह अनुवाद सर्वथा लचर, दोषपूर्ण, मक्षिका स्थाने मक्षिका वाला है। अतः इस अनुवाद को देख कर तो कोई व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि यह ऋग्वेद ही संसार का आदि धर्म ग्रन्थ है जिसका प्रशस्तिपाठ सभी पौर्वात्य और पाश्चात्य मनीषियों ने किया है और जिसके लिये मैक्समूलर का भी लिखना पड़ा—

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले। तावदृग्वेद महिमा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

उसने किया अंगीकार गेह अविभक्त 'काल' का

—योगिराज अरविन्द

[आध्यात्मिक साहित्य की हिन्दी में अभिवृद्धि की दृष्टि से यह अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी दार्शनिक मान्यताओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। —सम्पादक]

जैसे ज्यों वह भया वर्धमान निज बृहत्तर आत्म में,
मानुषता ने कीं आकृत गतियाँ उसकी न्यून और न्यून,
एक महत्तर सत्ता ने देखा एक महत्तर जगत।

× × × ×

ज्ञान हेतु किया साहस एक सकल्प निर्भीक ने
मिटाने को पक्तियाँ सुरक्षा की, खींचती प्रज्ञा जो रोकती
मन की उड़ान, आवगाह१ अन्तरात्मा का 'अनन्त' मे।

× × × ×

दीं तोड़ उसके प्रथम पदों ने ही हमारी भू सीमाएं स्तोक
और रहे विचरण एक विशालतर मुक्ततर व्योम मे।

× × × ×

बाहुओं में वाहित एक रूपान्तरकारी 'शौर्य' द्वारा
उसने लीं लपक अनायास एक दैत्य के शरासन समान
शक्तियाँ जिनका किया न प्रयोग निद्रा ने अन्दर मनुज मे।

× × × ×

बनाया उसने चमत्कार का एक कृत्य यथाक्रम
और, दिव्यकर्मों की सामान्य भूमिका ओर अभिमुख,
सगौरव नेसर्गिक इस उत्कर्ष पर यत्नो ने,
जो करेंगे भग्नित सामर्थ्य मर्त्य उरो का,
किया अनुसरण एक आधिपत्य मे प्रतापी विश्राम के,
उद्देश्यों का, अतिउदात्त 'निसर्ग' के आह्निक२ इष्ट हेतु
उपहार आत्मा के आये उमड़ते उसकी ओर,
वे थे उसके जीवन के सत्कार और साधिकार उसके।

× × × ×

एक उपलब्धि विशुद्ध ने किया प्रदान निज हर्ष उज्ज्वल
तिसके गाढ़ आभास ने की नहीं प्रतीक्षा चिन्तन की,
तिसने ली लपेट निखिल 'विसर्ग'३ एक दृष्टिपात मे,
तिसने निरखा परखा यथार्थ आत्म अन्तरे,
रूप द्वारा नहीं नेक छलित उसने देखा अन्तरात्मा।

× × × ×

सत्ताओं में तिसने जाना क्या छिपा सघात उन प्रति अज्ञात
तिसने लिया लपक मन में भाव, अभिलाष हृदय मे,
तिसने बीन डाला धूसर ऊर्मियो से गुप्तता की
प्रयोजनों को जिन्हें अपनी निज निगाह से छिपाते मनुज।

× × × ×

उसने किया अनुभव स्पन्दशील जीवन अन्य मनुजो में
दबाता, घेरता उसे उनके हर्ष व शोक साथे,
उनका प्रेम, उनका क्रोध, उनकी अकथित आशाए
भये प्रविष्ट धाराओं में या उमड़ती४ तरंगो में
उसकी शान्तता के निश्चल पारावार५ अन्दर।

× × × ×

उसने सुनी अन्तःप्रेरित ध्वनि अपने निज विचारो की
अन्य अन्त करणों की गुफा में पुन गुंजित,
जगत की विचार-सरिताएं चलीं उसके गोचरान्तरे,
उसका आन्तर आत्म भया वर्धमान अन्य आत्मों प्रति
और सहा भार एक बन्धुता का एक समान सश्लेष,
फिर भी रहा वे लाग अधीश स्वय का एकाकी।

× × × ×

एक मायामय तादैक्य ने त्वरित६, तालोपेत★ की
वैहायसी६ सुर सगतियो प्रति जरठा७ पार्थिव तन्त्रिया,
तिसने उठाये सेवक, मृत्य मानस के और जीवन के
होने को धन्य सगी अतरात्मा के प्रतिवाद में,
की गई अभिमुख नस व नाड़ी सचेत तन्त्रियो,
शोभा, ओजस्विता और आह्लाद की स्मृतियो प्रति,
तिसने बनाये शरीर क साधन अनुचर आत्मा के।

× × × ×

एक दिव्यतर अनुष्ठान ने एक विमलतर विधि से
दी दीप निज प्रसाद साथे मनुज की बाह्य पार्थिवता,
अन्तरात्मा का अनुभव निज गहनतर कोशो का
अब न सोया विमूर्छित 'अन्न' की प्रबलता द्वारा।

× × ×

काव्य-कानन

मृत भित्ति ये करक बन्द हमे पृथुतर८ आत्म से,
सुस्पष्ट९ मुदित की एक गुटतता, रहोवास अन्दर,
गुप्त, गूढ़ पथ हमारे प्रबुद्ध विचारो से पार,
पृथक् भया एक द्वार, बन्द, बनकर 'अन्न'१० प्रवेग द्वारा
निस्तार कर वस्तुएं अनाक्रान्त पार्थिव अनुबोध द्वारा
एक जगत, अगोचर, अज्ञात बाह्य मानस द्वारा
भया प्रकट नीर व दिगन्तो११ में अन्तरात्मा के।

× × × ×

प्रच्छन्न चन्द्र शालाओ मे वह बैठा झाकता
अनुत्पन्न क ज्योतिर्मय प्रदेशो मे देखे जाते जहाँ
सकल पदार्थ कल्पित मन द्वारा और हैं सत्य
तथा समस्त, जिसे चाहता जीवन, लाया जाता समीप।

× × × ×

उसने देखा 'पूर्ण, पारगत' तिनके तारकित गेहो में
धारण किये महिमा एक अनश्वर आकार की
'शाश्वत' की शान्ति की भुजाओ में अवस्थित,
हर्षोन्मत्त हृदय स्पन्दनो में 'ब्रह्मानन्द' क।

× × × ×

वह रहा गूढ़ दिगन्त में जहा विचार हुआ उत्पन्न
और योषा जाता सकल्प एक आकाशीय 'शक्ति' द्वारा
एव पालित शुक्ल क्षीर१२ से 'शाश्वत सामर्थ्यों' के
यावत् यह बन्ता समानता मे एक देवता की।

× × × ×

मन रचित भित्तियो वाली 'साक्षी' की गह्य शालाओ मे
अन्तरित१३ अभ्यन्तरो पर निम्न मार्गों ने
दिये खोल वातायन१४ आन्तर दृष्टि के।

× × × ×

उसने किया अंगीकार गेह अविभक्त 'काल' का।

× × × ×

अंग्रेजी सावित्री काव्य से, हिन्दी रूपान्तरकार "श्री वसिष्ठ" पाण्डुचेरी

---

१ थाह, २ दैनिक, ३ प्रकृति, ४ उछलती, ५ सागर, ६ तुरन्त, ★ समस्वर, ६ etthereal, ७ पुरानी, ८ विशालतर, ९ बाह्य, १० Matter,
११ (देश Spaces) १२ दूध १३ छिपे हुए, १४ खिड़किया।

अब जीव शरीर में से चला जाता है तब साधारण जीव, ज्ञानी जीव अथवा उपासक जीव की दशा एक सी नहीं होती। श्रेष्ठ उपासक मूर्धन्य नाड़ी द्वारा अर्थात् सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा बाहर पड़ता है। वेदान्त इस बात की पुष्टि करता है।

आत्मा का स्थान है हृदय, उसका अग्रभाग प्रज्वलित होता रहता है इसलिए आत्मा के बाहर जाने का द्वार प्रकाशित रहता है। उपासना की शक्ति के कारण और विद्या की गति भिन्नता के कारण उपासित ब्रह्म के अनुग्रह से पवित्र हुआ आत्मा सौ से भी अधिक श्रेष्ठ, मूर्धन्य नाड़ी जो सुषुम्ना उसके द्वार से जीव बाहर आता है।

शरीर से बाहर पड़नेवाले ज्ञानी और अज्ञानी दोनों प्रकार के जीवों की देवयान मार्ग तक एक सी ही उत्क्रान्ति (उत्थान) होती है। सगुणोपासक जीव देवयान मार्ग से ही जाकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। अन्य जीव बीच में से ही जन्मबन्ध की ओर आते हैं, जन्म-मरण के चक्र में फँस जाते हैं।

उपासक की क्रम मुक्ति इस प्रकार होती है—

उपासक जब इस लोक को छोड़ जाता है तब सबसे पहले जीव वायुलोक में आता है। वहाँ वायु आकाश में बड़ा छेद डालकर आगे का मार्ग खुला कर देता है। वहाँ से वह जीव आगे सूर्यलोक में आता है। वहाँ सूर्य आकाश में छेद करके जीव के लिए आगे का मार्ग साफ कर देता है। फिर जीव चन्द्रलोक में आता है। वहाँ भी चन्द्र भी आकाश में छेद करके आगे का मार्ग खुला कर देता है। वहाँ से जीव आगे बढ़कर शोक रहित हिमरहित लोक में आकर रहता है (बृहदारण्यक का सार)।

अर्थात् उपासक जीव की गति इस प्रकार रहती है—

यह लोक छोड़ा
फिर वायुलोक में गया
फिर वह सूर्यलोक में गया
वहाँ से चन्द्रलोक में गया
वहाँ से फिर आगे शोकरहित लोक में
फिर वहीं रहा सदैव के लिए
(बृहदारण्यक)

वह पहिले पहिले ज्योति से दिन की ओर, दिन से शुक्लपक्ष की ओर शुक्लपक्ष से उत्तरायण के छह मास, इससे अयन की ओर, अयन से सूर्य की ओर, सूर्य से चन्द्र की ओर, चन्द्र से विद्युत् की ओर। वहाँ से कोई दैवी पुरुष उसको ब्रह्म की ओर ले जाता है। इसीको देवयान अथवा ब्रह्म मार्ग कहते हैं। इस मार्ग से जाने वाले जीव फिर जन्म मरण के चक्र में कभी नहीं फँसते, कभी नहीं फँसते—(छान्दोग्य)

अध्यात्म-चिन्तन—

मनुष्य मरता कैसे है?

मरने के पश्चात् जीवात्मा कहाँ जाता है? (२)

[लेखक—श्री आचार्य नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ—ज्वालापुर]

क्रम मुक्ति का मार्ग

यदि उपासनाओं का मार्ग भिन्न भिन्न है तो भी उपासकों के जीवों का जाने का मार्ग एकमेव है—वह है देवयान।

उपासक जीव अर्चि (किरण), अग्नि, दिवस, पक्ष, मास, अयन, संवत्सर इनकी अभिमानिनी देवताओं की सहायता से देवलोक की ओर जाता है। वहाँ से वायु, आदित्य, चन्द्र, विद्युत् इन मार्गदर्शक देवताओं की सहायता से आगे बढ़ता है— वहाँ कोई अमानव देवता मिलता है वह उपासक के जीव को वरुण, इन्द्र, प्रजापति लोक में से ब्रह्मलोक में ले जाता है। वहीं उपासक जीव हिरण्यगर्भ ब्रह्म सहित ब्रह्मलोक के प्रलय के प्रलय पर्यन्त रहता है, वह फिर लौटता नहीं, जन्म मरण के चक्र में आता नहीं। इस प्रकार की क्रममुक्ति श्रुति-स्मृति सम्मत है। यह वेदान्त का तात्पर्य है—

ब्रह्मलोक का ऐश्वर्य

जो जीव अर्चिरादि मार्ग से देवयान मार्ग द्वारा ब्रह्मलोक में पहुँचते हैं वे जीव वहाँ जाकर, भोग भोगने के पश्चात् सामान्य जीव की तरह, चन्द्र लोक से वापस नहीं आते। वे तो ब्रह्मलोक में ही पहुँचते हैं किस तरह?

इस तरह

यहाँ से तीसरे लोक में अर और ण्य ऐसे दो समुद्र अथवा दो समुद्रतुल्य बड़े-बड़े सरोवर हैं। वहाँ अन्नमय हर्षोत्पादक एक और सरोवर है। वहाँ अमृतस्राव (अमृत को टपकाने वाला) करनेवाला एक अश्वत्थ वृक्ष है। इस लोक में ब्रह्म (हिरण्यगर्भ) की अपराजिता नाम नगरी है। इसी लोक में प्रभु ब्रह्मदेव द्वारा विशेष रूप से बनाया हुआ सुवर्णमय गृह है।

सुषुम्ना नाड़ी से ऊपर जाने वाला मुक्त होता है। उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती। इस देवयान मार्ग से ब्रह्मलोक को जाने वाले जीव इस संसार के भँवर में कभी नहीं पड़ते। ऐसे जीव मरते ही ब्रह्मलोक की ओर जाते हैं। शरीर धारण करने के लिए फिर कभी नहीं लौटते। सगुणोपासकों का ऐश्वर्य यद्यपि विनाशी है तो भी वे शरीर ग्रहण करने के लिए नहीं आते। सम्यग्दर्शन के कारण उनके अज्ञान का पूर्णतया विध्वंस होता जाता है अथवा विध्वंस हुआ करता है और वे नित्यसिद्ध मोक्ष के लिए तत्पर रहते हैं फिर उनको जन्ममरण कहाँ?

स्वामी दयानन्द को यह मुक्तिक्रम पसन्द था कि नहीं हम कह नहीं सकते। पर वे पितृयान देवयान मार्ग को मानते हैं यह स्पष्ट है। वे ब्रह्मलोक को एक विशिष्ट लोक नहीं मानते हैं। मोक्षावस्था में जीव-ब्रह्म के एक होने को ही ब्रह्मलोक-ब्रह्मदर्शन मानते हैं।

पापात्मा तो 'जायस्व म्रियस्व' जन्ममरण के चक्र में फँसा रहता है। पुण्यात्मा अपने शुभ कर्मों के फलों को भुगतने, भोगने के लिए चन्द्रादि लोक में आकर, वहाँ फलों का भुगतान करके फिर पृथ्वीतल को लौटते हैं। जो जीव ब्रह्मलोक में पहुँचते हैं उनके लौटने न लौटने का प्रश्न ही क्या है। ३६००० बार इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय हो तब तक ब्रह्मदर्शन की अवधि मानी गयी है। इसकी कल्पना करना भी कठिन है। जो पुरुष बहुत दूर परदेश जाता है और १०—२०—३० वर्षों के लिए जाता है वह भी यह समझकर जाता है कि देखिए कब लौटना होगा। इसलिए मुक्ति से लौटने, न लौटने के निरर्थक वाद में न पड़ना ही श्रेयस्कर है। स्वामीजी मुक्ति से लौटना मानते हैं। वेदान्ती नहीं मानते। वेदान्तियों के पक्ष उपनिषदों के प्रमाण भी मिलते हैं। स्वामी जी ने भी लौटने के पक्ष में एक वेदमन्त्र दिया है। मुक्ति से न लौटने के पक्ष में।

"इम मानवमावर्तं नावर्तन्ते नावर्तन्ते" यह छान्दोग्य का प्रमाण है—

और यह जो प्रमाण मिलता है "यावदायुष ब्रह्मलोक मभिसम्पद्यते, न च पुनरावर्तते, न च पुनरावर्तते" इसमें यावदायुष जितनी की आयु है, अवधि है तब तक ब्रह्मलोक में रहते हैं, फिर नहीं लौटते, फिर नहीं लौटते। जितनी की आयु है?

कितनी? किसकी?

ब्रह्मलोक की और किसकी। ब्रह्मलोक की अवधि हम पहिले ही लिख चुके हैं कि ३६००० बार इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय हो तब तक की आयु समझो अवधि। इसका अधिक समझने बैठें तो सिर चकराने लगेगा।

इन सब उलझनों को छोड़ दिया जाय तो भी यह सिद्ध है कि मनुष्य जन्म सबसे ऊँची सीढ़ी है, उस पर चढ़कर भी वह यदि ब्रह्मलोक तक न पहुँच सका, जन्ममरण के चक्र में ही फँस रहा तो केवल सांसारिक भोगों में फँसे रहने में क्या अर्थ है? परमार्थ सत्य तो एक ब्रह्म है। यह जगत् तो बदलता रहता है और इसी अर्थ में मिथ्या है, कभी एक रूप में नहीं रहता। इस जगत् का अधिष्ठान वही ब्रह्म है, वही सत्य स्वरूप है—यही वेदान्त का सार है। वेदान्त का अर्थ और वेद जहाँ समाप्त होते हैं उसके सिरे का तात्पर्य है—प्रत्येक समर्थ व्यक्ति को वेदान्त के इस तत्त्व को समझ लेने का प्रयत्न करना चाहिए। "नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय"

सिद्धान्त-विमर्श

नियोग का प्रश्न

(ले०— श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय, एम० ए०, प्रयाग)

(गतांक से आगे)

मुसलमानों के यहाँ स्त्रियों को कुछ अधिक अधिकार हैं। पहले तो विधवायें पुनर्विवाह कर सकती हैं दूसरे विशेष अवस्थाओं में तलाक देने पर कुछ नियंत्रणों के अन्तर्गत वह दूसरा विवाह कर सकती हैं। इसका प्रभाव यह हुआ कि हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान सामाजिक संगठन में अच्छे रहे। और जहां हिन्दू और मुसलमान साथ रहे वहाँ मुसलमानों की संख्या में वृद्धि और हिन्दुओं की संख्या में बराबर ह्रास होता चला आया। यह मशहूर बात थी कि छुरी खर्बूजे पर गिरे तो भी खर्बूजा कटता है और खर्बूजा छुरी पर गिरे तो भी खर्बूजा ही कटेगा। लाखों हिन्दू विधवायें मुसलमान हो गईं। लाखों वेश्याओं ने हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया।

परन्तु मुसलमानों में स्त्रियों को वही अधिकार नहीं मिले जो पुरुषों को। एक पुरुष चार विवाह कर सकता था एक स्त्री नहीं। इसका अर्थ यह है कि एक पुरुष कई स्त्रियों से एक साथ सम्बन्ध रखते हुये व्यभिचारी नहीं। स्त्री व्यभिचारिणी है। 'तलाक' के नियम भी पुरुषों को अधिक अधिकार देते हैं। स्त्री पर नियंत्रण अधिक है। इसका प्रभाव यह है कि मानसिक संतुलन और सांस्कृतिक उत्थान नहीं होने पाता। बहुत सी बुराइयां लगभग वही हैं जो हिन्दुओं में। भेद केवल इतना है कि हिन्दू कर्म खोटे करता है और बनता आदर्शवादी है। मुसलमान ऐसी व्यर्थ की विडंबना नहीं करता।

ईसाई देशों में एक पुरुष और एक स्त्री का ही सम्बन्ध विहित समझा गया है। परन्तु इस मोटे नियम के साथ-साथ कई ऐसे नियंत्रणों का अभाव है जिसके कारण अनेक कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हैं। एक युवती एक ८० वर्ष के बुड्ढे से विवाह कर सकती है और ८० वर्ष की बुढ़िया २० वर्ष के युवक से। विधवा या विधुर को आज्ञा है कि कि कितने ही विवाह क्यों न करे। कोई परिसंख्या या सीमा नहीं, तलाक के नियम सामाजिक संगठन या कुल स्थिति के दृष्टि से नहीं अपितु केवल मानसिक प्रवृत्तियों पर निर्भर हैं। अतः तलाकों के नियम उच्छृङ्खलता की सीमा तक पहुँच चुके हैं। इससे दाम्पत्य जीवन भी संतुलित नहीं रहा और सदाचार की परिखा भी टूट सी गई है, इन देशों के सुधारक इस कठिनता का अनुभव करते हैं। कुलों के नाम तो प्रायः नष्ट हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कुलों की स्थिरता का व्यक्तियों के ऊपर कोई उत्तरदायित्व है ही नहीं।

परन्तु दूसरे देशों की [illegible] बुराइयों को देखकर यह सम[illegible] पूछ है कि हिन्दू समाज की प्रचलित प्रथायें उन देशों की अपेक्षा कम हानिप्रद हैं। दूसरे की आँख का तिनका भी देखिये और अपनी आँख का शहतीर भी। कोइ अधिक अच्छा है कि बेचक। यह प्रश्न है और व्यर्थ प्रश्न है।

कई अवस्थायें ऐसी आ सकती हैं जिनमें नियोग ही केवल एक उपाय होगा अन्य नहीं। पाराशर स्मृति में यह विधान है—

नष्टे मृते परिव्रजते, क्लीवे च पतिते पतौ। पंचत्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

यहां अन्य पति का विधान है। परन्तु यह नहीं बताया कि नियोग करके, या तलाक पश्चात् पुनः संस्कार करके। विधवा विवाह तो केवल एक आपत्ति में ही काम आयेगा अर्थात् 'मृते' (पति के मर जाने पर)। शेष चार में 'विधवा' नहीं होती। 'क्लीव' पति या तो तलाक दे। या सरकारी कानून से वह सम्बन्ध विच्छेद करने के लिये मजबूर किया जाय। मैं कई व्यक्तियों को जानता हूं। वे क्लीव हैं। तलाक देते नहीं, और अपनी पत्नियों के विषय में निरन्तर संदेहात्मक रहते हैं। इससे बिचारी पत्नियों का साधारण जीवन भी दुःखदाई होता है। वे चालचलन को ठीक रखती हुई भी बीसियों आपत्तियों में फंसी रहती हैं। हां एक बात भली है। वे हैं पुरानी चाल की मूर्खा। अतः किसी प्रकार निभाती हैं। और यह भी कोई नहीं जानता कि कैसे निभाती हैं। वैयक्तिक जीवन को कौन जाने? परन्तु हैं तो वह मुसीबत में। कुल का नाम तो मिट ही चुका। इसमें संदेह नहीं, ऐसे आपत्काल में यदि नियोग का कोई विधान होता तो अच्छा होता। उसके नियम कितने ही कड़े होते! यह तो विधान बनाते समय सोचा जा सकता था। ऋषि दयानन्द का यही तात्पर्य है। उन्होंने चतुर्थ समुल्लास के ऊपर दिये हुये उद्धरण में इतनी बातें लिखी हैं—

(१) व्यभिचार की न्यूनता।

(२) प्रेम से उत्तम सन्तान होकर मनुष्यों की वृद्धि।

(३) नीच पुरुषों से उत्तम स्त्रियों का सम्पर्क न होना:

(४) वेश्यादि नीच स्त्रियों से उत्तम पुरुषों का व्यभिचार न होना।

(५) उत्तम कुल में कलंक न होना।

(६) वंश का उच्छेद न होना।

(७) स्त्री पुरुषों को संताप न होना।

(८) गर्भ हत्या न होना।

आप इन आठों बातों पर अलग-अलग विचार करें। आजकल यह सब बुराइयां हैं या नहीं? जब गुप्त कुकर्म होते हैं तो नर और नारी दोनों को मानसिक संताप बहुत होता है, और कुकर्म होंगे ही जब सीमा से अधिक कड़ाई होगी। व्यभिचार होगा तो सन्तान भी होगी ही। परन्तु प्रेम से सन्तान न होगी। नाजायज सन्तान को कौन चाहता है? फिर या तो गर्भपात होगा, या जीवन भर की बदनामी। उत्तम कुलो मे कलक लगेगा। यह सब आज हो रहे हैं, और हिन्दू सोसाइटी में अधिक हैं। कुल की नाक न कटे इसके लिये भीषण से भीषण पातक किये जाते हैं। अतः श्रेष्ठ उत्तम वर्गों में आपत्काल में नियोग के लिये कुछ विधान रखना ही होगा। आजकल इस आवश्यकता का इसलिये अनुभव नहीं होता कि पुरुषों को तो सभी प्रकार के व्यभिचार की छूट है। रहीं स्त्रियां वह या तो गुप्त अनाचार में फँसें या खुल्लम खुल्ला वेश्यायें हो जावें। या मानसिक संताप में घुलती रहें और भीतर ही भीतर अनेक रोगों की शिकार हो जायँ।

अब कुछ नियोग प्रथा की कठिनाइयों पर भी विचार कीजिये। पहली बात तो यह है कि कोई नियोग प्रथा नहीं चल सकती जब तक राज्य-विधान में उसका स्थान न हो। क्योंकि "जायज सन्तान" वही है जो सरकारी कानून के अनुकूल है, अन्य सब "नाजायज" हैं। जायज सन्तान की परिभाषा ही यह है जिसकी उत्पत्ति विधानानुकूल हो। अन्य सब नाजायज। यह सरकारी विधान देश और काल के अनुसार बदलता रहता है। जहाँ विधवा विवाह विहित नहीं वहां उसकी सन्तान नाजायज है। इसी प्रकार अन्य सब स्थानों पर समझ लेना चाहिये। जब नियोग का विधान बनेगा तो उसकी धारायें होंगी। दुराचार पर नियंत्रण होगा प्रत्येक चीज की सीमा होगी। स्वामीजी महाराज ने केवल कुछ स्मृतिकारों के प्रमाण दिये हैं। स्वयं ऐसी धारायें नहीं बनाईं जो हर युग और हर देश के लिये अवश्यम्भावी हों। उनमें परिवर्तन होंगे और हो सकते हैं। फिर भी नियोग सम्बन्धी नियम आपत्कालीन होंगे, सामान्य नहीं। यदि विवाह सम्बन्धी नियम उचित हों तो 'आपत्काल' भी बहुत ही कम होगा। जैसे—

[१] ब्रह्मचर्य आश्रम के पालन करने पर बाल विधवाओं और बाल-विधुरों का तो सर्वथा अभाव होगा।

[२] क्लीवत्व और वंध्यात्व के उदाहरण भी अत्यन्त अल्प होंगे। क्योंकि सृष्टि में ऐसे नरनारी होते ही बहुत कम हैं।

[३] २० और ६० वर्ष के मध्य में मृत्यु भी बहुत कम होती है, और इस मृत्यु का कारण भी विवाह सम्बन्धी अनेक कुरीतियाँ हैं। यदि गुप्त व्यभिचार और वेश्यावृत्ति दूर हो जायं तो इस अवस्था की मृत्यु भी बहुत कम हो।

[४] नष्ट अर्थात् खो जाना, पतित या विधर्मी हो जाना, और छोटी आयु में संन्यास ले लेना यह तो और भी कम होता है, जो ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास लेंगे या जो वृद्धावस्था में संन्यास लेंगे उनके लिये तो नियोग का प्रश्न ही न उठेगा। अतः अचानक मृत्यु तथा क्लीवत्व दो ही मुख्य आपत्काल रहे। इनमें भी जब नियोग होगा तो छिपे-चोरी न होगा, समाज के लोगों की आज्ञा लेनी होगी। वह आज्ञा भी तभी माननीय होगी जब देश के सरकारी कानून के अनुकूल हो।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि स्वामी दयानन्द ने 'वंश' या कुल का उच्छेद न हो यह भी नियोग का एक उद्देश्य बताया है, 'विवाह' का मुख्य उद्देश है सन्तानोत्पत्ति। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये कुदरत ने प्राणियों में कामवासना की सृष्टि की है, "कामस्तदग्रे समवर्तत" (ऋ० १०-१२९-४)।

सुरतिय, नरतिय, नागतिय, कष्ट सहैं सब कोय। गर्भ लिये डुलसी फिरे तुलसी सो सुत होय॥

पति और पत्नी दोनों कुल के रक्षक होते हैं। (गृहं पातीति गृहपतिः गृहपत्नी वा)। वैदिक समाज में कुल या वंश का एक मुख्य स्थान है। व्यक्ति का समाज के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं

[शेष पृष्ठ १० पर]

[पृष्ठ ६ का शेष]

है। कुल या वंश के द्वारा है। अतः कुलीन होना अर्थात् कुल की मर्यादा रखना स्त्री और पुरुष दोनों का नैतिक कर्त्तव्य है। कल्पना कीजिये कि एक पुरुष २५ वर्ष की आयु में निःसन्तान मर जाता है। उसकी विधवा रह जाती है, वह कुल को कैसे स्थिर रक्खे। विधवा पुनर्विवाह में स्त्री की वासना तो तृप्त होती है परन्तु कुल तो विवाह होते ही नष्ट हो जाता है। इस रोग का एकमात्र उपाय नियोग ही है। महाभारत काल में धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर की नियोगोत्पत्ति इसी आपत्काल मे धर्म समझी गई। सायणाचार्य ने ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १२५ के मंत्र १ की व्याख्या करते हुए कलिङ्ग राजा के लिये दीर्घतमा ऋषि के द्वारा नियोग करके सन्तान उत्पत्ति का कथन किया है, देखो—

'यद्यप्यसौ कलिङ्गाख्यस्य राज्ञः पुत्रस्तथापि तेन कलिङ्गेन स्वयं वृद्धत्वात् अपत्योत्पादनाय सामर्थ्यमलभमानेन तदुत्पादनाययाचितो दीर्घतमा ऋषिः उशिग्नामिकाम् अपत्योत्पादनाय प्रेषितया राजमहिष्या अतिजरठेन महर्षिणः सहरन्तु लज्जमानया स्ववस्त्रभरणैरलंकृत्य स्वप्रतिनिधित्वेन प्रेषिताम् उशिग्नामिकां योषितं दासीमित्यवगत्य मंत्रपूतेन जलेनाभिषिच्य ऋषि पुत्रीं कृत्वा तया सह रेमे। तदुत्पन्नः कक्षीवानृषिः।'

यहा सायणाचार्य ने कक्षीवान् की उत्पत्ति दी है। वेद मंत्र का कुछ भी अर्थ क्यो न हो, सायण के भाष्य से स्पष्ट है कि सायण ने नियोग को आपद्धर्म में विहित बताया है। संस्कृत वाक्य का अनुवाद यह है—

"यद्यपि यह कलिङ्ग राजा का पुत्र है। परन्तु कलिङ्ग राजा बहुत बूढ़ा था और सन्तानोत्पत्ति के योग्य न था। उसने दीर्घतमा ऋषि से प्रार्थना की कि उशिक् नाम वाली महाराणी मे मेरे लिये सन्तान उत्पन्न कीजिये, महाराणी को इतने बूढ़े महर्षि के साथ रमण करने मे लज्जा हुई। और उसने एक दासी को उत्तम वस्त्र पहनाकर अपने प्रतिनिधि रूप में ऋषि के पास भेज दिया, जब ऋषि को ज्ञात हुआ कि यह तो दासी है तो उसने मंत्र पढ़कर जल छिड़क कर उसको ऋषि पुत्री बना दिया और उसके साथ रमण किया। उसीसे कक्षीवान् उत्पन्न हुआ।"

रही ११ पतियो या १० सन्तानो की बात। सो हम ऊपर लिख चुके है कि संख्या का सीमित करना असीमित संख्या से कहीं अच्छा है। यहाँ एक सीमा तो बाध दी। आजकल तो कोई सीमा ही नहीं। फिर भी समाज और सरकारी व्यवस्था बनाने वालों को अधिकार होगा कि अनुचित दशाओं में वह इसको अस्वीकार कर दें, प्रायः देखा जाता है कि पत्नियों की लगातार मृत्यु हो जाती है और पुरुष कई विवाह कर लेते हैं। पतियो के विषय में भी ऐसा हो सकता है, 'आपत्काल' का धर्म तो 'आपत्काल' पर ही निर्भर होगा। यदि 'आपत्काल' नहीं तो नियोग होना नहीं और यदि 'आपत्काल' है तो नियोग को छोड़कर उपाय क्या? यदि ज्वर नहीं तो औषध नहीं। यदि ज्वर है तो औषध भी होनी चाहिये। रही औषध की मात्रा, इसको तो सुविज्ञ वैद्य ही बता सकेगा। समाज और राष्ट्र के नेता ही ऐसे वैद्य हो सकते हैं।

एक बात और याद रखनी चाहिये। स्वामी जी महाराज ने मूल सिद्धान्त तो परिमार्जित और परिमित भाषा में 'स्वमन्तव्या मन्तव्य' के अन्तर्गत दिये है। अन्यत्र दिये व्याख्यान, दृष्टान्त उदाहरण तथा प्रमाण तो गौण है, उनकी व्याख्या मौलिक सिद्धान्तो को दृष्टि में रखकर ही करनी होगी।

याद रखना चाहिये कि आपद्धर्म और साधारण धर्म में भेद है, आपद्धर्म आपत्काल को छोड़कर अन्य अवस्थाओ में अधर्म है, मै दो दृष्टान्त दूंगा। चोरी करना अधर्म है, परन्तु ब्राह्मण के लिये छूट है कि यदि तीन दिन भूखा रहा हो तो चुरा कर खाले। यह छूट कुछ स्मृतिकारो ने दी है। दूसरा कानून यह है कि अपराधी को पकड़ने का अगर वारंट हो तो उसको छिपाने वाले को भी जुर्म लगता है। यदि एक पिता अपने अपराधी पुत्र को छिपाले तो पिता भी मुजरिम है, लेकिन यदि पति पत्नी को या पत्नी पति को छिपाले तो छिपाने वाला मुजरिम न होगा। यह भी आपद्धर्म है।

स्वामी जी महाराज ने नियोग की आज्ञा सुव्यवस्थित द्विज वर्ग के लिये ही दी है क्योकि द्विजो के सुव्यवस्थित जीवन में उच्छृङ्खलता न होगी और आपत्काल की स्थितियाँ अत्यन्त न्यून होगी। जैसे यदि किसी स्थान में रोगो की सीमा असाधारण हो जाए तो पता चलता है कि रहन-सहन खराब है उसमे सुधार होना चाहिए। इसी प्रकार यदि आपत्काल अधिक होने लगें तो समझना चाहिये कि सामाजिक व्यवस्था दूषित है उसका सुधार होना चाहिये।

आर्थिक सुधार-योजना

इसमें लेशमात्र भी विवाद नहीं है कि सभा की आर्थिक दशा अत्यन्त हीन है और यह दस पांच साल से नहीं बल्कि पचीस तीस वर्ष से शनैः शनैः गिरती जा रही है। परिणाम यह है कि जो निधियें अमानत के रूप में सभा के पास होना चाहिये थीं वह व्यय हो गईं। फलतः हम अपने सामाजिक विश्वास को कायम नहीं रख सके हैं। इसके सुधार के लिए निम्न सुझाव हैं जिन पर विचार हो सके तो सम्भव है स्थिति सुधर सकेगी—

१—एक अर्थ-समिति बनाई जावे जिसका सभापति एक उपप्रधान हो और २० सदस्य अन्तरङ्ग सभा के हों।

२—कोई व्यय बिना अर्थ-समिति की स्वीकारी न किया जावे। प्रधान ऐसे किसी चैक पर हस्ताक्षर न करें जिसकी इस समिति के सभापति सिफारिश न करें।

३—विभागीय अधिष्ठाता को जब तक व्यय करने का अधिकार नहीं होगा जब तक उसके विभाग में धन न हो।

४—कार्यालय, उपदेश विभाग, दलितोद्धार, रक्षा-निधि आदि सब विभागो के न केवल खाते ही पृथक हो बल्कि बैंक या पोस्ट आफिस में पृथक पृथक पास बुके खोली जावें।

५—जिन महोपदेशको का कार्य सन्तोष जनक है उनको सभा में रखा जावे शेष सब उपदेशक व प्रचारक बड़ी बड़ी समाजो और उपसभाओ को दे दिये जावें—सभा पर उनका भार न रखा जावे।

६—वार्षिक रिपोर्ट के देखने से जान पड़ता है कि अनेक समाजे प्रतिनिधियो की संख्या बढ़ाने के लिए आर्य सदस्य तो बढ़ा लेते है पर दशांश १०) ही देती हैं। अतः १० आर्य सदस्यों के ऊपर प्रति आर्य सदस्य १) दशांश बढ़ाया जावे।

७—समाजों के उत्सवों में ३०० से ५००रुपये व्यय हो जाते हैं मेरी सम्मति में उत्सव के चन्दे में से पंचमांश सभा के वेद-प्रचार को देना चाहिए।

८—प्रत्येक अन्तरङ्ग-सदस्य का यह कर्त्तव्य होना चाहिये कि वह दस समाज का दशांश भिजवावे और दस समाजों के उत्सव में सम्मिलित होकर उत्सव फंड से पञ्चमांश भिजवावे।

अर्थ समिति की भांति एक वेद-प्रचार समिति भी हो जिसका सभापति एक उप प्रधान या अधिष्ठाता उपदेश-विभाग हो और उसमें भी २० या २५ अन्तरंग सदस्य हों। कार्याधिक्य के कारण मंत्री-सभा के अधीन यह विभाग न रखा जाये।

९—अन्तरंग सभा की बैठको के साथ अर्थ समिति, वेद-प्रचार समिति की पृथक्-पृथक् बैठकें हुआ करें।

१०—यदि किसी फंड मे धन नही है तो प्रधान सभा को यह अधिकार न हो कि अन्य फंड का रु० बिना अन्तरंग की स्वीकारी दे देवें।

११—अर्थ समिति, वेद-प्रचार समिति की भांति प्रेस और आर्यमित्र की समितियां होना भी जरूरी है। मेरी समझ मे एक वर्ष यदि हम अपनी आय बढाने और व्यय कम करने पर विशेष ध्यान दे तो हमारी आर्थिक दशा बहुत कुछ सुधर सकती है। नवीन निर्वाचन के बाद जो पहली अन्तरंग हो उसमें एक या दो दिन ठहर कर हमें वर्ष भर का कार्यक्रम निर्धारित कर लेना चाहिये।

—शिवनारायण शुक्ल
लखीमपुर

वनिता विवेक

स्त्रियों के लिए नये काम

(नारी कला-मन्दिर, लखनऊ में प्रयोग)

[श्रीमती रंजना बी०ए०, आगरा]

आज गांवों और शहरों में निर्माण केन्द्र और ट्रेनिंग-उत्पादन केन्द्रों में हजारों स्त्रियां मेहनत करके अपनी रोजी आप कमा रही हैं। इन केन्द्रों में काम सीखने और करने के लिए स्त्रियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। इसलिए केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने ऐसे और केन्द्र खोलने के लिए ५,००० से अधिक कल्याण-संस्थाओं को ३ करोड़ रु० से अधिक का अनुदान दिया है।

लखनऊ का नारी कला मन्दिर भी एक ऐसी ही संस्था है। यह नारी सेवा समिति की एक शाखा है। इसे दूसरी योजना काल में २५ हजार रु० का अनुदान दिया गया है।

नारी कला मन्दिर में २०० स्त्रियों की शिक्षा की व्यवस्था है। मन्दिर के ट्रेनिंग केन्द्र में स्त्रियों को ५ शिक्षक चमड़े के काम, कसीदाकारी, जरी के काम, गुड़िया बनाने, ड्राइंग तथा सिलाई और कटाई की शिक्षा देते हैं।

जो शिक्षार्थी समर्थ हैं, वे ५ रु० मास फीस देती हैं, बाकी को वृत्ति दी जाती है। ट्रेनिंग दो वर्ष की होती है, जिसे पूरा कर लेने पर डिप्लोमा दिया जाता है। डिप्लोमा प्राप्त स्त्रियों को उत्पादन-केन्द्र या अन्य स्थानों पर काम मिल जाता है।

अब लोग स्त्रियों का काम करना बुरा नहीं समझते। आजकल स्त्रियाँ इंजीनियर और वकील बन रही हैं। इसके अलावा बहुत सी स्त्रियां खाली समय में काम करती हैं। वे नई-नई दस्तकारियां सीख रही हैं, जिससे खाली वक्त में घर बैठे काम करें, अधिक पैसा कमाएं और बाल-बच्चों के लिए अच्छी वस्तुओं तथा शिक्षा आदि का प्रबन्ध करें।

स्त्रियां अब काम का महत्त्व समझने लगी हैं। वे जानती हैं कि हम खुद अपनी जीविका कमाकर अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं। इस कारण अब शिक्षा लेने वाली स्त्रियों की संख्या इतनी बढ़ती जा रही है कि वर्तमान केन्द्रों में उनके लिए प्रबन्ध नहीं हो सकता।

उत्पादन-केन्द्र

नारी कला मन्दिर के उत्पादन केन्द्र में बच्चों के कपड़े और घरेलू जरूरत के और सामान बनाए जाते हैं। ये काम १०० महिलाएं और लड़कियां मिलकर करती हैं। इन्हें काम के अनुसार पैसा दिया जाता है। यहां काम करने वाली स्त्रियां और लड़कियां ३० रु० से ६० रु० तक मासिक कमा लेती हैं।

गत मार्च में नयी दिल्ली में राज्य समाज कल्याण सलाहकार मण्डलों के अध्यक्षों के सम्मेलन के अवसर पर आयोजित समाज-कार्य प्रदर्शनी में कला मन्दिर उत्पादन केन्द्र की एक दूकान आयी थी। इसमें सिलाई और कढ़ाई की बड़ी अच्छी और बारीक चीजे थीं, जिन्हें लोगों ने बड़ा पसन्द किया और उनकी काफी बिक्री भी हुई। उत्पादन केन्द्र से 'आर्वीस' (सैनिक अधिकारियो की पत्नियों द्वारा चलायी जाने वाली दूकान) ने हर महीने २,००० रु० के मूल्य का सामान खरीदने का समझौता किया है। इधर उत्पादन केन्द्र खुद करीब २,५०० रु० का माल हर महीने बेच लेता है।

नारी कला मन्दिर के अतिरिक्त नारी सेवासमिति और भी कई संस्थाएं चलाती हैं। इनमें एक शिक्षा संस्था भी है, जिसमें बच्चों की शिक्षा से लेकर कालेज तक की शिक्षा दी जाती है। केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने इस संस्था को खेलकूद, केन्द्र और बाल पुस्तकालय के लिये १,००० रु० का अनुदान स्वीकार किया है। इसके अलावा शिक्षा संस्था ने शौकिया काम सिखाने का केन्द्र चालू करने के लिए ६,००० रु० के अतिरिक्त अनुदान के लिये आवेदन किया है।

केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने इस संस्था को गांवों में सामाजिक कार्य के लिए एक मोटरगाड़ी खरीदने को १५,००० रु० का अनुदान दिया है। मोटर द्वारा संस्था गांवों में दवा बंटवाने और बाढ़ के समय सहायता आदि देने का काम करती है।

बीमारों की देखभाल की शिक्षा

शिक्षा संस्था में स्त्रियों को बीमारों की देखभाल करने की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षार्थी स्त्रियों तथा लड़कियों को शुरू में ८वें दर्जे तक की शिक्षा दी जाती है। इसके बाद उन्हें १ साल तक बीमार व्यक्ति की सेवा-शुश्रूषा के बारे में शिक्षा दी जाती है। इसमें उन्हें आदमी के शरीर की बनावट के बारे में थोड़ी आरम्भिक शिक्षा तथा साधारण बीमारी के इलाज और बीमारों की सेवा करने की शिक्षा दी जाती है। इसके बाद ६ महीने तक अस्पतालों में उन्हें व्यावहारिक ट्रेनिंग दी जाती है। यह समाप्त करने पर शिक्षार्थी स्त्रियां या लड़कियां रोगियों की सेवा का काम करने योग्य समझी जाती हैं। इस काम के लिए उन्हें उचित पारिश्रमिक भी मिलता है। ये स्त्रियां प्रशिक्षित परिचारिकाओं की अपेक्षा कम पारिश्रमिक लेती हैं अतएव आजकल इनकी काफी मांग है। ★

दूसरे देशों की नारियां—

कुशल डच गृहणियां

[श्री कु० सविता प्रभाकर जालन्धर]

नीदरलैंड, आस्ट्रिया, पश्चिमी जर्मनी, इटली और नार्वे की गृहणियां कैसा जीवन बिताती हैं, तथा भोजन पर कितना व्यय करती हैं, इस सवाल का जवाब उस रिपोर्ट से मिल सकता है जिसे यूरोपियन आर्थिक संघ की उत्पादन शाखा ने प्रस्तुत किया है। इस रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख है कि इन पांच देशों की गृहणियां चौदह खाद्य पदार्थों पर किस तरह व्यय करती हैं।

रिपोर्ट के अनुसार डच गृहणी का दर्जा कुछ मायनों मे ऊंचा है। नीदरलैंड में अविवाहित औरतें बाहर काम करती हैं। केवल सौ मे से दस स्त्रियां ऐसी है जो शादी शुदा तथा मां हैं। जबकि दूसरे देशों में मिसाल के तौर पर इटली में चौबीस प्रतिशत तथा आस्ट्रिया में सत्ताइस प्रतिशत है।

जहां तक घरेलू मदद का सवाल है चाहे वह खर्च करके प्राप्त की जाय अथवा ऐसी और किसी गैर सौजन्य से, डच गृहणियां पहला स्थान प्राप्त करती हैं। जर्मन, आस्ट्रिया या नार्वे में अधिक परिवार होते हुए भी वहाँ केवल उन्हीं के अनुपात से अर्थात् बीस पच्चीस प्रतिशत तक गृहणियां सहायता स्वीकार करती हैं।

इटली में तो यह बिल्कुल ही भिन्न है। औसतन इटली का परिवार नीदरलैंड से बड़ा केवल इसलिये होता है क्योंकि वहां बच्चे मां बाप अथवा सम्बन्धियों के साथ रहते हैं। यही कारण है इटली की गृहणियां अक्सर निमूर्ख सहकारिता की खोज में रहती हैं।

डच व्यक्तियों को केवल इतना ही आवश्यक है कि वे गृहणियों को रुपया देते जावें। नीदरलैंड में लगभग ६६ प्रतिशत औरतें घर खर्च प्राप्त करती है जबकि इसके मुकाबले में नार्वे में केवल ३८ प्रतिशत तथा इटली में केवल पचीस प्रतिशत प्राप्त करती हैं। और इस तरह डच गृहणी ज्यादा समझदारी से क्रय-विक्रय योजना बना सकती है।

इन पांचों देशों की पारिवारिक आय की तुलना करना कठिन इसलिये है कि इसके लिये केवल आय के आंकड़े जुटाने होंगे, अपितु मूल्य, सामाजिक स्थिति आदि पर ध्यान देना होगा। किस पर किस तरह व्यय हुआ, यह हमें ज्यादा सिखाता है। हम देखते हैं कि डच गृहणियां आमतौर से कपड़ों पर आय का सबसे कम व्यय करती हैं। इसके केवल दो ही कारण हो सकते हैं। या तो वहां कपड़ों का उपयोग कम है अथवा दाम कम हैं।

रिपोर्ट का दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि घरेलू व्यय इटली में केवल साढे सात प्रतिशत होता है जबकि नीदरलैंड में साढे बीस प्रतिशत तथा पश्चिमी जर्मनी में बाईस प्रतिशत व्यय होता है।

नीदरलैंड और नार्वे में एकाध पदार्थों पर जो व्यय होता है वह आस्ट्रिया, जर्मनी और इटली के मुकाबले बहुत कम हैं। यह एक सिद्धान्त ही है कि नीदरलैंड में गृह-व्यवस्था और मूल आवश्यकताओं पर बाहर से बेहद कम व्यय होता है। अतः डच परिवार विलासिता पर ज्यादा व्यय कर सकते हैं।

यह भी डच गृहणियों का सौभाग्य है कि उनके पास स्वच्छन्दता से काटने के लिए विशाल दुकानें हैं। हर सौ परिवार में नीदरलैंड में तैंतिस दुकानें हैं, जबकि दूसरे देशों में यह अनुपात सत्रह से बाईस तक है। गृह

[शेष पृष्ठ १२ पर]

[पृष्ठ ११ का शेष]

वितरण प्रणाली में भी नीदरलैंड का जबाब नहीं है। इसके देशों के अनुपात से हालैंड में तीन से लेकर चौगुना तक पदार्थ घर पहुंचाये जाते हैं। उदाहरण तथा लगभग पचासी प्रतिशत गृहणियां दूध और डबल रोटी घर पर ही प्राप्त करती हैं, जबकि दूसरे देशों में यह प्रतिशत दो से अठारह तक है।

सच तो यह है कि अत्यधिक दुकानें होने के कारण डच गृहणियों की पसन्द विस्तृत होती जा रही है। उसे पसन्द करने के लिए दूर नहीं जाना पड़ता—इसलिये कि जनसंख्या के घनत्व के अनुसार दुकानें काफी निकट होती हैं—इसके विपरीत नार्वे तथा आस्ट्रियन गृहणियों को ज्यादा दूर जाना पड़ता है।

जो भी हो सत्रह प्रतिशत डच गृहणियां तो कम से कम आत्मनिर्भर तथा अत्यधिक सुख और सुविधा की तरफ उन्मुख हैं। वह खरीदे जाने वाले पदार्थों के विषय में अत्यधिक रूप से उत्सुक रहती हैं तथा उनमें स्वास्थ्य के नियमों को पालन करने का भी प्रयत्न करती हैं। ✱

ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन सम्बन्धी आवश्यक सूचना

भारत की समस्त जनता को यह भली-भांति विदित हो ही चुका है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने २१-६-५१ को ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन रचनात्मक रूप में तीव्रता से अखिल भारतीय रूप में चलाने का निश्चय किया है अत उन सब ही से जो आन्दोलन से सहमत हैं हमारी प्रार्थना है कि वे सहायतार्थ धन सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजने की कृपा करें।

आर्यसमाज के अधिकारियों से भी हमारी प्रार्थना है कि वे अपने क्षेत्र में ईसाई प्रचार निरोध आन्दोलन रचनात्मक रूप में गठित करें और सार्वदेशिक सभा की सूचनाओं के अनुसार समस्त कार्य का सचालन करते हुए सार्वदेशिक सभा के जिस सहयोग की आवश्यकता हो उससे अविलम्ब सभा को सूचित करें। —रघुवीर सिंह
सभा मन्त्री

पंजाब सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा की बैठक २८ जून को आर्यसमाज नयाबास में हुई जिसमें कार्यकारिणी के इस प्रस्ताव की सम्पुष्टि की गई कि श्री सत्यव्रत वैद्य को सभा के सब पदों तथा अधिकारों से पृथक किया जाय। अनुशासन भंग के दोष मे श्री सत्यव्रत वैद्य पर प्रतिबन्ध लगाया गया कि वे तीन वर्ष तक आर्यसमाज के सदस्य न बन सकेंगे। यह भी निश्चय किया गया कि श्री सत्यव्रत वैद्य के कब्जे में सभा के जो कागजात, रजिस्टर, फाइल, पत्र या सम्पत्ति आदि हैं, उनके लेने के लिए आवश्यक हो तो कानूनी कार्यवाही की जाय। सभा के साप्ताहिक पत्र "आर्य" के प्रिंटर तथा पब्लिशर के उनके अधिकार भी समाप्त किये गये।

—रामनाथ भल्ला मन्त्री

टंकारा समाचार—

महर्षि दयानन्द स्मारक उद्घाटन के पश्चात् अनेक कार्यों का आरम्भ टंकारा से हो सका है।

(१) उद्घाटन उत्सव के पश्चात् महर्षि दयानन्द धर्मार्थ होमियो पैथिक औषधालय स्वामी ब्रह्मानन्द जी की अध्यक्षता में सुन्दर काम कर रहा है। प्रतिदिन टंकारा के तथा आस पास के जो रोगी आते हैं, उन्हें प्रेम पूर्वक औषधि स्वामीजी देते हैं। अभी तक ४०० से अधिक रोगी लाभ ले चुके हैं।

(२) पंडित युधिष्ठिर जी मीमांसक वेद अनुसन्धान विभाग के कार्य के लिए निजी २०० पुस्तकों के साथ आ गये हैं। उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है।

(३) महाशय गोविन्दराम जी सपत्नीक महर्षि महालय टंकारा में रहने आ गये हैं। उनकी अध्यक्षता में आर्य साहित्य बेचने के लिये ट्रस्ट की ओर से पुस्तक विक्रय विभाग आरम्भ हो गया है। उनकी ओर से गुजराती भाषा में ट्रैक्ट निकालने की भी व्यवस्था हो गई है।

(४) महालय में चार कमरे पुस्तकालय के लिये निर्धारित कर लिये गये हैं। वैदिक साहित्य की पुस्तकें मंगाई जा रही हैं। पुस्तकों के लिए बम्बई की गोदरेज कम्पनी से स्टील रैक्स मंगवाने का प्रबन्ध हो रहा है।

(५) टंकारा ग्राम ट्रस्ट से स्वतन्त्र रूप में महर्षि दयानन्द हाई स्कूल की स्थापना २६ जून से हो गई। इसके अनुसांगिक महर्षि दयानन्द ब्रह्मचर्याश्रम भी खुल जावेगा। हमारे ट्रस्टी श्री नाना लालवकील इन कार्यों को देख रहे हैं।

(६) ट्रस्ट ही अनुसन्धान विभाग की ओर से त्रैमासिक "आर्यज्योति" नाम की पत्रिका निकाल रहा है। इस का वार्षिक शुल्क ६) रु० रहेगा।

(७) महालय के सायंकाल संध्या हवन के समय प्रतिदिन वेद मन्त्रों पर विद्वानों के प्रवचन होते रहते हैं। आर्य समाज टंकारा में प्रति रविवार साप्ताहिक सत्संग में सब प्रेमपूर्वक भाग लेते हैं।

(८) महालय की ओर से आर्य पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया है। भिन्न-भिन्न स्थलों में ६ पारिवारिक सत्संग हो चुके हैं। इससे टंकारा ग्राम में एक जागृति आ रही है।

(९) महालय स्थिर ट्रस्ट के सब कार्यकर्त्ताओं ने तथा टंकारा आर्यसमाज के सदस्यों ने प्रतिमास प्रीतिभोज का आयोजन किया है। इससे परस्पर सम्बन्ध बढ़ेगा। और प्रचार-कार्य को वेग मिलेगा। प्रीतिभोजन का खर्च सब आपस में बांट लेंगे।

(१०) टंकारा में महर्षि के भक्तों का साधक आश्रम खुल गया है। जो ऋषि भक्त किसी भी रूप में अवैतनिक सेवा दे सकें वे साधक बनकर आ सकते हैं। साधकों से उनकी योग्यतानुसार हर कोई काम लिया जावेगा।

(११) बड़ौदा के श्री लल्लूभाई पटेल वानप्रस्थी साधक बनकर रहने आ गये हैं। वे आफिस हिसाब तथा ब्रह्मचर्याश्रम में योगदान दे रहे हैं।

(१२) हमारे बम्बई के ट्रस्टी श्री भगवानदेव आर्य ने प्रकाशन-कार्य के लिये ट्रस्ट को २०० रुपये मासिक देना स्वीकार किया है। धन्यवाद !

आनन्दप्रिय मन्त्री

निरीक्षक सूची

महिला प्रचार मण्डल निरीक्षक सूची निम्न प्रकार प्रकाशित की जाती है —

१—कमिश्नरी मेरठ—(१) श्रीमती शकुन्तलादेवी जी आर्य सदर मेरठ
(२) " राजरानी देवी जी मुजफ्फरनगर
२— " आगरा—(१) " सरलादेवी जी शास्त्री अलीगढ़
(२) " दुर्गादेवी जी आर्य "
३— " बरेली—(१) कुमारी सत्यभामा जी बरेली
(२) श्रीमती रमावती जी रस्तोगी बदायूं
४— " इलाहाबाद (१) ' विद्यादेवी जी त्रिपाठी साहित्यरत्न कानपुर
५—बनारस गोरखपुर (१) श्री माता प्रेमसुखभायती जी
६—फैजाबाद लखनऊ (१) श्री डा० प्रकाशवती जी लखनऊ
(२) श्रीमाता प्रियम्वदादेवी जी हरदोई

मुख्य निरीक्षिका

१—श्री माता शकुन्तलादेवी जी गोयल सभा उप प्रधान मेरठ
२—श्रीमती सावित्रीदेवी जी रस्तोगी मन्त्रिणी महिला प्रचार मण्डल
३—श्री माता हेमलता देवी जी अलीगढ़।

—सभा मन्त्री

जयन्ती की सूचना

सर्व समास्थ अन्तरङ्ग सदस्यों को विदित हो कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती गुरु विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक, दयानन्द दीक्षा शताब्दी एव अभिनन्दन समारोह समिति की बैठक दिनांक १७ व १८ जुलाई १९६१ को अन्तरङ्ग सभा की बैठक के साथ-साथ आर्यसमाज मन्दिर मथुरा में समयानुसार आरम्भ होगी। कृपया अवश्य पधार कर सभा को कृतार्थ करेंगे।

उमेशचन्द्र स्नातक संयोजक
मन्त्री जयन्ती समिति

अध्यापक की आवश्यकता

आर्य वैदिक पाठशाला धमोरा जिला रामपुर के लिये एक अनुभवी जो प्रोहित का कार्य तथा आर्यसमाज के कार्य से अच्छी प्रकार ज्ञान रखने वाले तथा प्राइमरी वैदिक पाठशाला के विद्यार्थियों को शिक्षा दे सके, आवश्यकता है। वेतन के विषय में पत्र व्यवहार करें। रहने का मकान तथा पानी भी मिलेगा। किसी पाठशाला का अनुभव भी होना आवश्यक है। २७

—हरिप्रसाद आर्य
वैदिक पाठशाला धमोरा, जि० रामपुर

आवश्यकता

डी० ए० वी० इण्टर कालेज वाराणसी के लिए एक प्रिंसिपल की आवश्यकता है। एम०ए० या एम० एस० सी० ट्रेण्ड कम से कम १० वर्ष का शिक्षण व प्रशासन का अनुभव होना चाहिए। आर्यसमाज के सिद्धान्त के जानकार तथा अनुयायी होना आवश्यक है। वेतन २५० से ५०० रुपया तक सरकारी नियमाधीन। योग्यतानुसार अधिक प्रारम्भिक वेतन दिया जा सकता है। प्रार्थना-पत्र २० जुलाई १९६१ तक मैनेजर के पास निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए।

श्री वंशीलाल वकील
६३/३१-ए नखास, वाराणसी १।

वर की आवश्यकता

गृह कार्य में निपुण सुशील २० वर्षीया साहित्य रत्न तथा बी० ए० वर्षीया कन्या के लिए एक बारोजगार दृढ़ आर्यसमाजी वर की आवश्यकता है। जात-पांत का कोई विचार नहीं होगा। गुरुकुल के स्नातक या प्रोफेसर को विशेषता दी जावेगी। विशेष विवरण के लिए लिखें।

नं० १३ द्वारा आर्यमित्र, लखनऊ

जीवन-ज्योति

[पृष्ठ २ का शेष]

वृक्ष दिया गया। इसी प्रकार २० जनवरी १९४१ में आप पर तीन और मुकदमें हुकूमत के विद्रोह के आरोप में चलाए गये, जिनमें ६-६ महीने की सजाएं दी गयीं। इसके पश्चात् भी आपको १४ मास की नजरबन्दी और जबानबन्दी का शिकार होना पड़ा। परन्तु इस प्रकार की सभी घटनाओं की उपेक्षा करके आपने अदम्य साहस और अपार उत्साह के साथ अपने कार्यों को जारी रखा। हुकूमत किसी प्रकार भी आपको मैदान से हटा न सकी तो २४ अप्रैल, १९४४ ई० को चतुर्थ आर्य सम्मेलन-गुलबर्गा के अवसर पर पुलिस ने आर्य नेताओं को आफिस में बुलवाकर लाठियों से हमला करवाया। इसी हमले में आप अत्यधिक घायल हो गये। आपके अन्य घायल साथियों में पं० विनायकराव विद्यालंकार, प० गणपत् काशीनाथ शास्त्री बी० ए०, एल० एल० बी० और हीरालाल आदि थे। इस हमले से आप बड़ी मुश्किल से बच सके। इसी प्रकार सन् १९३६ में ओमाखिक नगर (जिला बीदर) की यात्रा क अवसर पर मुस्लिम गुण्डों ने पंडित जी और स्व० भाई श्यामलालजी पर आक्रमण करके बुरी तरह घायल किया। लगभग चार मास तक चिकित्साधीन रहने के बाद आपने फिर संघर्ष आरम्भ किया। ८मई सन् १९४७ को फिर जबानबन्दी कर दी गयी, और २१ जुलाई १९४७ ई० को बन्दी बना कर अनिश्चित समय के लिए हैदराबाद जेल में नजरबन्द किया। परन्तु आपके भाई के स्वर्गवास पर आपको "पेरोल" पर मुक्त किया गया। यद्यपि इस समय हैदराबाद के चोटी के नेता बाहर चले गये थे, और कुछ लोगों ने आपको भी इस सुअवसर से लाभ उठाकर बाहर चले जाने की सम्मति दी। परन्तु आपने अस्वीकार कर दिया, और क्रांतिकारी नवयुवकों का मार्ग दर्शन करते हुए राजनैतिक आन्दोलन को बल पहुँचाते रहे। हुकूमत ने आपकी स्वतन्त्रता को अपने लिए संकटपूर्ण समझा और १० सितम्बर, १९४८ को दुबारा बन्दी बनाकर जेल में नजरबन्द कर दिया। जेल से भी आपने किसी न किसी प्रकार नवयुवकों के नाम पत्र लिखकर उनके कार्यों को निश्चित योजना का रूप देते हुए उनके उत्साह को बढ़ाते रहे। आपके आदेशों और मार्ग दर्शन से नवयुवकों ने अविस्मरणीय कार्यों द्वारा हैदराबाद की क्रान्ति की भूमिका तैयार की।

पुलिस एक्शन के पश्चात् आप रिहा हुए तो राज्य में शान्ति-स्थापना की समस्या प्रमुख थी। कांग्रेस की ओर से आपको शान्ति स्थापना का कार्य सौंपा गया। अपने शान्ति-सभा के मन्त्री पद से बिना धार्मिक भेदभाव के सभी जाति के लोगों में जिस कुशलता के साथ शांति स्थापना करते हुए परस्पर विश्वास निर्माण किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। आप आरम्भ ही से राष्ट्रीयता के समर्थक रहे। इसी कारण अपने सहयोगियों में आपका विशेष आदरयुक्त स्थान है। आप १९४८ ई० से १९५० तक हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के सदस्य रहे। आप हैदराबाद-आन्ध्र प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी और हैदराबाद जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। हैदराबाद में नगर और ग्राम चुनावों में आपके मार्ग दर्शन में जो सफलता कांग्रेस को प्राप्त हुई, उसे जादू का नाम दिया जाए तो अनुचित नहीं होगा। १९५१ ई० के प्रथम आम चुनाव में आप कांग्रेस टिकिट पर विधान सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए। आप सन् १९४० से १९४५ ई० तक आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के मन्त्री रहे और इस समय १९५० से ५६ के नव निर्वाचन तक प्रधान की हैसियत से शक्तिशाली और सुव्यवस्थित संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा का संचालन करते रहे हैं। आपके प्रधान काल में आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो उन्नति की उसका अनुमान उसके वार्षिक आय-व्यय और विस्तृत रचनात्मक कार्यक्रमों से हो सकता है। सभा की आर्थिक दुर्बलता को दूर करने में पंडितजी ने बहुत बड़ा कार्य किया है। पं० विनायकराव जी के हुकूमत में चले जाने के बाद से पंडितजी पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ गया उसे उन्होंने सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। पंडित जी आर्यसमाज के प्राण हैं जिन्होंने राज्य को पीड़ा और अत्याचार के पंजे से मुक्ति दिलायी।

हैदराबाद की जनता में पंडितजी सर्वप्रिय बने हुए हैं। आपने उर्दू हिन्दी में कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं। आपके मधुर स्वभाव और प्रेमपूर्ण व्यवहार का परिणाम है कि नवयुवक आपकी ओर खिंचे-खिंचे आते हैं। अनेक ऐसे विद्यार्थी हैं जो आपकी आर्थिक सहायता से लाभान्वित होते रहते हैं। आप में प्रशंसापूर्ण व्यवस्था की योग्यता है। सन् १९५२ ई०में आल इण्डिया कांग्रेस का सम्मेलन जो हैदराबाद में हुआ था, आप उसके स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री चुने गये थे। इसी प्रकार सन् १९५४ई०में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान और १९५० ई० में अखिल भारतीय आर्योपदेशक सम्मेलन के स्वागत समिति के प्रधान चुने गये थे। सन् १९५७ में जब पंजाब में वहां की प्रान्तीय भाषा हिन्दी के प्रति हुकूमत की ओर से अन्याय किया जा रहा था तब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संघटित "भाषा स्वातन्त्र्य समिति" के तत्वावधान में संचालित हिन्दी सत्याग्रह का कार्यकर्ता प्रधान के रूप में आपने सफल संचालन किया। सन् १९५८ में आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और कार्यकर्ता प्रधान नियुक्त हुए। जहां आपने सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में कार्य किया वहां शिक्षा क्षेत्र में भी अग्रसर रहे। आपकी प्रेरणा से १९५६ ई० में ओरिएण्टल कालेज (प्राच्य महाविद्यालय) की स्थापना हुई, जिसके आप अध्यक्ष हैं। विद्यार्य सभा के अन्तर्गत चलने वाले नूतन विद्यालय, उमरी के भी आप प्रधान हैं। स्व० व्यास जी की मृत्यु के बाद से गुरुकुल घटकेश्वर के भी आप ही मुख्याधिष्ठाता है। आप जनता में केवल सर्वप्रिय ही नहीं प्रत्युत जनता के हृदय में आपके लिए एक विशेष स्थान है। ✱

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
आषाढ़ २१ शक १८८१
(१२ जुलाई १९५९)

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ५६६३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सामयिक समस्याएँ

भारत में रोजगार की समस्या

(श्री एच० डेवनपोर्ट, कामदिलाऊ दफ्तरों के महानिर्देशक भारत सरकार)

पश्चिम की औद्योगिक और सामाजिक क्रांति से सबसे कम आर्थिक लाभ मध्यम वर्ग के लोगों को ही हुआ है। क्योंकि ये लोग कल-कारखानों में काम करना अपनी इज्जत के खिलाफ समझते हैं।

मध्यम वर्ग का भ्रम

पिछले पचीस वर्षों में भारत में शिक्षा का जो विस्तार हुआ, उससे यहां इस मध्यम वर्ग की संख्या बहुत बढ़ गयी है इसके साथ ही इनको रोजगार देने की समस्या भी विषम हो गयी है। ये लोग शारीरिक श्रम करना पसन्द नहीं करते, कारीगरों को अपने से बहुत नीचा समझते हैं, सरकारी या ऐसी दूसरी नौकरी करने में अपनी शान समझते हैं और शहरी जीवन को देहाती जीवन से कहीं अच्छा मानते हैं। ये लोग यह भूल जाते हैं कि देश की आबादी की तुलना में उनका यह वर्ग बहुत छोटा है और जो कुछ भी ये खाते पीते, पहनते-ओढ़ते हैं, इन्हीं किसानों, कारीगरों और मजदूरों ने अपना पसीना बहाकर तैयार किया है। इससे भी बुरा यह है कि लोग यह नहीं समझते कि देश की अर्थव्यवस्था बदलने के कारण अब आगे वैसी नौक-रियां और ओहदे नहीं मिलेंगे, जैसे अब तक मिलते रहे हैं।

बाबूगीरी

कामदिलाऊ दफ्तरों के रजिस्टरों को देखने से पता चलता है कि नाम दर्ज कराने वालों में से अधिकांश क्लर्की या दफ्तरी नौकरी चाहते हैं। इस समय इन दफ्तरों में ३ लाख ६० हजार शिक्षितों (मैट्रिक या इससे ऊंची परीक्षाएं पास) के नाम दर्ज हैं। इनमें से २ लाख ८० हजार क्लर्की चाहते हैं। नाम लिखाते समय इन नौजवानों को बता दिया जाता है कि दफ्तर की नौकरियों की संख्या बहुत कम है और दूसरे बहुत से काम हैं। फिर भी ये लोग कुर्सी टेबुल पर बैठने वाला काम चाहते हैं। कुछ पढ़े-लिखे नौजवान, जो दूसरी नौकरियाँ करने को तैयार भी होते हैं, वे भी यही चाहते हैं कि इनमें भी मेहनत न करनी पड़े और टेबुल पर बैठकर काम करना पड़े, जैसे नक्शानवीसी, रेडियो मैकेनिकी आदि। पर इनमें आदमियों की जरूरत बहुत थोड़ी है।

शिल्पिकों की कमी

यह देश का दुर्भाग्य है कि नए-नए उद्योग और कारखाने चालू करने के लिए आज जब हमें शिल्पिकों की जरूरत है, तब हमारे नौजवान बाबूगीरी के ही पीछे दौड़ रहे हैं।

कामदिलाऊ दफ्तरों के आकड़ों से पता लगता है कि नौकरियों और उनके लिए आई हुई अर्जियों का क्या अनुपात है। जहां क्लर्क के पद के लिए ४० उम्मीदवार होते हैं, वहां सिविल इंजीनियर और बिजली-फिटर के १ पद के लिए २ और औजार बनाने वाले मिस्त्रियों तथा मेकनिकल फोरमैनों के १ स्थान के लिए ३ ही उम्मीदवार होते हैं। अनुभवी शिल्पिकों की तो प्रायः अर्जियां ही नहीं आतीं। क्योंकि उनके लिए नौकरियों की कोई कमी नहीं है। अगले दस वर्षों में बहुत से नए नए कारखाने खुलेंगे, इनके लिए पढ़े-लिखे शिल्पिकों की आवश्यकता होगी। क्योंकि नई मशीनों और औजारों को काम में लाने के लिए उनके नक्शों को समझना और माप के औजारों को पढ़ने की विधि भी जानना आवश्यक होगा। यह काम अनपढ़ कारीगर नहीं कर सकेंगे।

कल का भारत

अगले कुछ महीनों में स्कूल और कालेजों से पास होकर लगभग ७ लाख ५० हजार लड़के-लड़कियां निकलेंगे। इनमें से लगभग ४ लाख ८० हजार मैट्रिक, १ लाख ५० हजार इंटरमीडिएट और शेष बी० ए० पास होंगे। करीब आधे मैट्रिक पास विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में दाखिल होंगे। प्रश्न यह है कि इतने अधिक लड़के-लड़कियां, उच्च शिक्षा प्राप्त करके क्या करेंगे? पहले ही लगभग ३० हजार बी० ए० पास बेरोजगार पड़े हैं। इनमें से अधिकांश तीसरी श्रेणी में उत्तीर्ण हैं। इंटरमीडिएट पास लड़कों की संख्या भी लगभग इतनी ही है। अब इनसे यह पूछने का समय आ गया है कि इन्हें शान की नौकरियों और बाबूगीरी के चक्कर में बेकार पड़े रहना पसंद है या कारीगरी सीख कर अच्छी तनख्वाह पाने के साथ-साथ देश के औद्योगिक विकास में सहयोग देना?

क्या यह आवश्यक है कि हमारे उद्योग और कृषि-प्रधान समाज में मैट्रिक पास करने के बाद ५०-६० प्रतिशत लड़के-लड़कियां बी० ए० की भी डिग्री लें? यह भी विचारणीय है कि डिग्री प्राप्त करने के बाद जो छोटी-मोटी नौकरियां मिलती हैं, उनके लिए पढ़ाई पर इतना रुपया खर्च करना कहाँ तक उचित है?

हो सकता है कि मेरा कथन अतिशयोक्तिपूर्ण लगे और स्पष्ट कहूं तो कुछ है भी। देश के सभी बच्चों को शिक्षा देना हमारा उद्देश्य है। यह सही भी है। लेकिन अगर हर व्यक्ति पढ़-लिखकर बाबू बनने की ही बात सोचने लगेगा तो हमारे भूखों मरने की नौबत आ जायगी। क्योंकि फिर अन्न, वस्त्र, मकान आदि जरूरत की वस्तुओं को कौन बनावे या उपजावेगा?

पहले अधिकांश पढ़े-लिखे लोग दफ्तरों में ही काम करते थे, लेकिन अब कारीगरों की मांग बढ़ती जा रही है और बाबूगीरी ढूंढने वाले खाली पड़े हैं। भविष्य में भी अधिकांश जरूरत शिल्पिकों की ही होगी। यदि अभी से इस बात को समझकर बच्चों को शिक्षा दी जाए तो भविष्य में उन्हें बेरोजगारी का सामना न करना पड़ेगा। ★

विज्ञान-वार्ता

विज्ञान की सहायता से कलाकृतियों की सुरक्षा

विज्ञान कला के लिए भी बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। नयी दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में प्राचीन दुर्लभ वस्तुओं और कलाकृतियों को सुरक्षित रखने और सुधारने-संवारने का जो काम चल रहा है, इस बात का एक उदाहरण है।

संग्रहालय की प्रयोगशाला में दुर्लभ प्राचीन कलाकृतियों को नष्ट होने से बचाने के लिए निरन्तर काम हो रहा है।

सर आरेल स्टीन द्वारा मध्य एशिया से लाई हुई दुर्लभ प्राचीन कला वस्तुओं को सुरक्षित रखने और सुधारने-संवारने के लिए १९४८ में यह प्रयोगशाला स्थापित की गयी थी। इस समय ये वस्तुएं नयी दिल्ली के मध्य-एशियाई पुरातत्व संग्रहालय में रखी हुई हैं।

इन कलावस्तुओं में दुर्लभ प्राचीन चित्र, पाण्डुलिपियां, वस्त्र, रेशमी कपड़े तथा धातु, लकड़ी, हड्डी और हाथीदांत की वस्तुएं हैं। ये सभी वस्तुएं बड़ी खस्ता हालत में थीं। इनको सुधारने-संवारने का काम बड़ा कठिन था। रासायनिक प्रयोगशाला के युवक वैज्ञानिकों ने पहले यह काम कभी नहीं किया था। वास्तव में इससे उन्होंने एक नया काम सीखा।

मध्य एशियाई प्राचीन कलावस्तुओं को सुरक्षित रखने का काम अभी भी जारी है। इसके अतिरिक्त प्रयोगशाला के पास और भी बहुत काम है। १९४८ में यह प्रयोगशाला राष्ट्रीय संग्रहालय के सम्बद्ध कर दी गयी थी। इस समय राष्ट्रीय संग्रहालय में २० हजार से अधिक कलाकृतियां हैं और इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। इन सबकी देखभाल करना इस प्रयोगशाला का ही काम है। इसके अतिरिक्त यह प्रयोगशाला देश के अन्य सैकड़ों छोटे-बड़े संग्रहालयों को भी कला-वस्तुओं को सुरक्षित रखने के तरीके बताती है।

कलाकृतियों को सुरक्षित रखने और सुधारने-संवारने की विधि बड़ी जटिल है। प्रयोगशाला में वे वस्तुएं बड़ी खस्ता हालत में आती हैं। कागज और वस्त्र तो बड़ी सड़ी गली अवस्था में होते हैं। लकड़ी, धातु और पत्थर की वस्तुएं या तो एकदम चकनाचूर हो जाती हैं या उन पर इतना जंग और मैल जमा रहता है कि उन्हें पहचानना मुश्किल हो जाता है। प्रत्येक वस्तु की बड़ी सावधानी से जांच की जाती है। पहले यह देखा जाता है कि वह किस पदार्थ की बनी है। फिर इसके खराब होने के कारणों का पता लगाया जाता है। इन दो बातों के पता लग जाने पर रासायनिक विधि से इन वस्तुओं को भविष्य में सुरक्षित रखने का काम शुरू होता है। —लोकी

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

ओ३म्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) | आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र | विदेश में
एक प्रति का २० नये पैसे | लखनऊ, रविवार आषाढ़ २८, शक १८८१, आषाढ़ शु० १४, वि० २०१६, १२ जुलाई, १९५९ ई० | १२शिलिंग

शताब्दी समारोह योजना का आर्य जगत् में स्वागत

आर्य नेताओं, सार्वदेशिक सभा, पंजाब, आन्ध्र, बंगाल, आसाम, राजस्थान, मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभाओं, थाईलैण्ड, सिंगापुर, फीजी, मारीशस, अफ्रीका के प्रवासी आर्य बन्धुओं द्वारा सफलता के लिए शुभ कामनाएं व आर्थिक सहायता

उ०प्र० के आर्य बन्धु आर्य जगत् की आशाओं का पूर्ण कर गौरव की रक्षा करे

सभा के अन्तरङ्ग–श्री म० श्यामलालजी मेरठ द्वारा ४००) जयन्ती-निधि के लिए संग्रहीत भेंट
श्री म० शान्तिप्रकाशजी प्रेम गढ़वाल द्वारा ३००) ”
श्रीमती सुशीलादेवी जौहरी लखीमपुर १४२)
(कन्या पाठशाला की छात्राओं की ओर से)
श्रीमती शकुन्तलादेवीजी गोयल मेरठ १२०)
हैदराबाद के आर्यबन्धु श्री मदनमोहन विद्यासागर द्वारा १५०)
अफ्रीका प्रचार यात्रा से

आप भी अपना कर्त्तव्य-पालन कीजिए और समारोह को सफल बनाइये।

श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज पूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री लाला रामगोपाल शालवाले पूर्व मन्त्री सार्वदेशिक सभा श्री प० नरेन्द्र जी हैदराबाद, श्री महाशय कृष्णजी देहली, श्री प० जगदेव जी सिद्धान्ती महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री आचार्य रामदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री भारतभूषणजी त्यागी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यभारत, श्री प० बिहारीलाल जी शास्त्री आर्योपदेशक आदि आर्य नेताओं द्वारा दयानन्द दीक्षा शताब्दी-समारोह की सफलता के लिये शुभ कामनाओं और सहयोग का आश्वासन देकर जयन्ती कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद दिया है।

आप अपने कर्त्तव्य की पुकार, नेताओं के पथ प्रदर्शन तथा समारोह की सफलता के लिये अपने दायित्व को पूर्ण कीजिये।

मथुरा में अन्तरग सभा और जयन्ती समिति की बैठकें जिस उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होने जा रही हैं, समारोह की सफलता पर इसका प्रभाव पड़ेगा।

आर्य जनता इस समारोह को सफल बनाकर अपनी श्रद्धाभावना, एकता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय देगी।

आप अपने कर्त्तव्य का निर्धारण कर सहयोग दीजिये

वर्ष ६१ | अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क २८ जन्म-शताब्दी-सहयोग

आर्यसमाज की आवश्यकता:—

युगप्रवर्त्तक दयानन्द और आज की समस्याएँ

[श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट, प्रधान, सार्वदेशिक आ० प्र० नि० सभा, देहली]

महर्षि दयानन्द ने विश्व के भौतिक दृष्टिकोण और उसकी बुराइयों को अपनी दिव्य दृष्टि से अच्छी प्रकार समझ लिया था और वे लौकिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति का समन्वय चाहते थे। दोनों के संतुलन और समन्वय से ही मानव अपने जीवन को सुखी बना सकता है। व्यक्ति का सुख और सन्तोष ही समष्टि के जीवन में प्रतिबिम्बित होता है। आर्यसमाज महर्षि के सन्देश का प्रसारक है। आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेता आदरणीय बाबूजी ने महर्षि के सन्देश की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आर्यसमाज के महत्त्व तथा उसकी आवश्यकता का प्रतिपादन किया है। हमें आशा है आर्यजन आर्यसमाज की आवश्यकता और उपयोगिता को इस सन्देश की पूर्ति के लिए स्वीकार करेंगे और अपना कर्तव्य पालन करेंगे।

—सम्पादक

हम वर्तमान युग को निम्न लिखित महत्त्वपूर्ण कार्यक्षेत्रों में विभाजित करके उसका विश्लेषण कर सकते हैं। ये प्रगतियाँ विचारशील जनता का अत्यधिक ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही हैं:—

१—विज्ञान-युग—भौतिक विज्ञान की उन्नति।

२—स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र का युग।

३—अर्थ युग।

४—योजना युग।

५—समाज कल्याण का युग।

इन सब क्षेत्रों में ऋषि दयानन्द का योग बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि ऋषि दयानन्द की शिक्षाओं को अपना कर उनका अनुसरण किया जाय तो उपर्युक्त पाँचों विभिन्न क्षेत्रों की दृष्टि से वर्तमान युग स्वर्णिम युग बन सकता है।

१–विज्ञान युग–

निस्सन्देह भौतिक विज्ञान की अभिवृद्धि से बहुत ही बड़ी आर्थिक उन्नति हुई है। विज्ञान की इस उन्नति ने दृश्यमान जगत् को समझने और उसकी ओर अधिकाधिक आकृष्ट होने में हमें समर्थ बनाया है परन्तु विज्ञान की यह उन्नति हमें सृष्टिकर्ता के निकट पहुँचाने में सफल नहीं हुई है। ग्रेटब्रिटेन के प्रसिद्ध दार्शनिक तत्ववेत्ता जीम्स महोदय के शब्दों में "विज्ञानवेत्ता चित्र के अन्तिम छोर तक तो पहुँच गए हैं परन्तु चित्रकार अब भी उनकी दृष्टि से ओझल है।" इसका परिणाम यह हुआ कि प्रतिभा एवं रचना तो प्रत्यक्ष है परन्तु प्रतिभावान रचयिता देख नहीं पड़ता। विज्ञानवेत्ता कह देते हैं "परमात्मा कहीं नहीं है।" उन्हें यह कहना चाहिए "अब परमात्मा यहाँ हैं।" महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस कमी की ओर आर्यसमाज के पहले नियम में ध्यान आकृष्ट किया है.—

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।"

यदि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित इस दृष्टिकोण से विज्ञानवेत्ता परिचित होते अथवा अब परिचित कराए जायें तो विज्ञान का उन्नति वरदान सिद्ध हो जाय। इतना ही नहीं ज्ञान न केवल प्रकृति को वश में करने में ही सक्षम करेगा अपितु इसके सदुपयोग की अवस्थाएं भी उत्पन्न करेगा।

२–स्वतन्त्रता का युग–

(अ) विज्ञान की उन्नति से भौतिक दीवारें हट गई हैं। अब समस्त विश्व में सुगमता से घूमा जा सकता है।

सामयिक समस्याएँ

समय तथा दूरी के भेद पर विजय प्राप्त करली गई है। इतने पर भी समस्त विश्व के एकीकरण का आधार प्रस्तुत नहीं किया जा सका। 'विश्व" शब्द इस बात का सूचक है कि समस्त विश्व में कोई आधारभूत शक्ति विद्यमान है। देश और राष्ट्र का प्रेम विश्व-प्रेम में परिणत होना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के छठे नियम में मानव-समाज के कल्याण और सेवा की इसी उदात्त भावना को लक्ष्य में रखकर आर्यसमाज का मुख्यतम उद्देश्य निर्धारित किया है।

(ब) प्रजातन्त्र का अर्थ है प्रजा का शासन। प्रजातन्त्र का चिह्न मत या वोट का महत्त्व है। मताधिकार प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार है परन्तु इसके लिए निर्दिष्ट योग्यता या तैयारी का होना आवश्यक है। निस्सन्देह यह एक अधिकार की वस्तु है साथ ही यह एक कर्तव्य भी है। इसके लिए प्रशिक्षण और चरित्र होना चाहिए। इसके लिए बुद्धि और शुद्ध हृदय चाहिए जो लिंग, रंग, जाति और धर्म के भेदभाव से सर्वथा शून्य हो। अतः सदाचार ही सर्वोपरि है। महर्षि दयानन्द मताधिकार की प्राप्ति के लिए सदाचार की शर्त की पूर्ति अनिवार्य मानते हैं। आधुनिक प्रजासत्तात्मक प्रणालियों में सदाचार की शर्त की उपेक्षा हो रही है जिसके परिणाम स्वरूप सर्वत्र अशान्ति, संघर्ष और स्वार्थपरता व्याप्त है।

(स) स्वराज्य के लिए अपने ऊपर शासन रखना आवश्यक होता है। अपने ऊपर शासन करने का अभिप्राय है आन्तरिक राज्य को सुव्यवस्थित करना। मानव-शरीर में हृदय राजधानी होती है, परमात्मा परम शासक, आत्मा प्रधान मन्त्री और हृदय गृह मन्त्री होता है। राजधानी में तथा समस्त वैयक्तिक साम्राज्य में व्यवस्था स्थापित करनी होती है और परमात्मा के अस्तित्व तथा उसके आदेशों के ज्ञान पर बल देना होता है। इस भौतिक युग में भी शपथ ग्रहण करने की प्रणाली नैतिक और सांसारिक बातों को जोड़ने वाली कड़ी है। यदि इस प्रणाली की पवित्रता और महत्ता का समुचित आदर किया जाय और यह एक मात्र होठ और कागज तक सीमित न रह कर हृदय तक पहुँच जाय तो मानवीय हृदय की कार्यप्रणाली सुव्यवस्थित हो जाय और सदाचार का निर्माण हो जाय। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास और आर्यसमाज के ९ से १ तक के नियमों में इस बात पर विशेष बल दिया है। इस बात को लक्ष्य में रख कर यह कहा जा सकता है कि रंग, धर्म, जाति या सम्पत्ति की विशेषताओं को मिटाने की आवश्यकता न होगी। ये विशेषताएं भेदभाव की भावना उत्पन्न किये बिना नहीं रहेंगी। इस समय सर्वत्र यह आवाज उठ रही है कि स्वराज्य को रामराज्य का रूप दिया जाय। अयोध्या रामराज्य की राजधानी थी। अयोध्या का अर्थ है जहां झगड़े टंटे, संघर्ष और आक्रमण के लिए स्थान न हो, विश्व की बात तो एक ओर रही यदि कुप्रवृत्तियां आक्रमण नहीं करती हैं तो वह अयोध्या या रामराज्य है। यदि अधिकांश व्यक्तियों के भीतर जीवन में रामराज्य हो तो बाहर भी रामराज्य होगा।

३–अर्थ का युग–

भौतिक विज्ञान की उन्नति का आर्थिक क्षेत्र में भी बहुत प्रभाव पड़ा है। विज्ञान या कला वस्तुओं को अधिक आकर्षक बनाने में सफल हुई है। इससे उत्पादन में वृद्धि हुई है। साथ ही उत्पादन के प्रकार में भी बड़ा सुधार हुआ है। परन्तु यह बात न भुला देनी चाहिए कि साइंस से आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और आवश्यकताओं की पूर्ति होने से अधिकाधिक आवश्यकताओं की सृष्टि भी होती है।

जितनी आवश्यकताएं बढ़ेंगी उतना ही क्षोभ बढ़ेगा।

जितना क्षोभ बढ़ेगा उतना ही संघर्ष बढ़ेगा।

यदि संघर्ष का परिहार न हो और यदि व्यक्तियों का सन्तोष न हो तो आर्थिक समृद्धि का कोई अर्थ नहीं है। यह तो बहुतायत में कमी का ही द्योतक है और कष्ट-दायक भी है। यदि सच्चे अर्थ में आर्थिक समृद्धि प्राप्त करनी हो तो भी मानवीय हृदय की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किये जाने और नैतिक विशेषताओं पर बल दिये जाने की आवश्यकता है। इनकी उपेक्षा करने से काम न चलेगा। महर्षि दयानन्द ने अपने लेखों और भाषणों में निरंतर इस बात पर बल दिया है।

४–योजना युग–

निस्सन्देह विज्ञान की उन्नति और स्वतन्त्रता या स्वराज्य की प्राप्ति योजना कार्यों में बड़ी सहायक एवं प्रेरणाप्रद होती है परन्तु वास्तविक योजना के लिए मानव-संस्कार या मानव-निर्माण की आवश्यकता होती है और वह काम न केवल पंचवर्षीय योजना में ही अपितु व्यक्ति के समस्त जीवन की आजन्मीय...

(शेष पृष्ठ १६ पर)

वैदिक राष्ट्र गीत

[illegible] ।
[illegible] ॥

(अथर्व काण्ड)

[illegible] श्री देव [illegible], जिसकी रक्षा करते हैं ।
सुखी सर्वदर्शी माता का, हित चित में नित धरते हैं ॥
[illegible] मधु [illegible], मातृभूमि अति सुखकारी ।
[illegible] [illegible] देवे, हमें [illegible] भारी ॥

She, the earth whom the Gods sleepless defend all the time without failure let her yield honesty to us what is dear then, let her sprinkle on us splendour

—डॉ० सूर्यदेव शर्मा एम ए

सम्पादकीय

लखनऊ—१६ जुलाई १९५९ दयानन्दाब्द १३५ सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

दयानन्द दीक्षा शताब्दी के लिये

समारोह की योजनाओं की पूर्ति के लिये प्रारम्भिक उद्योग आरम्भ किये जा चुके हैं और आवश्यक प्रगतियां हो रही हैं। इन सब विधि विधानों और कार्य [illegible] की पूर्ति के होते हुए भी सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति जो आर्य बन्धुओं को करनी है समय दान की है। हम समझते हैं पवित्र कार्य के लिये जनता से धन प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं है [illegible] प्रेरणा और समय [illegible] बड़े आर्य बन्धुओं की कठिनाई है। आर्यसमाज का प्रारम्भिक इतिहास [illegible] से इने गिने व्यक्तियों द्वारा गौरवान्वित हो सका आज संख्या शिक्षा साहित्य, प्रचार तन्त्र सभी दृष्टियों से हम अपने पूर्वजों से आगे हैं परन्तु हमारी प्रवृत्तियों में अन्तर है। हम कर्मठता का त्याग कर आरामतलबी नेतृत्व के [illegible] हैं। हम वाणी और लेखनी द्वारा ईसाई प्रचार विरोध, गोरक्षा आन्दोलन तथा अन्य इसी प्रकार के कार्यक्रमों की घोषणा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं पर काम कैसे चलेगा? यदि हम महर्षि के [illegible] विचारों और आर्यसमाज के [illegible] का प्रचार चाहते हैं तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

अवश्य अवसर सिद्ध होगा। अन्य सभी कार्यक्रमों की महत्ता न भी दी जाय तो भी आर्यजगत् के सम्मेलन की दृष्टि से (जो आज की अवस्था में अत्यन्त आवश्यक है आन्तरिक और बाह्य सभी दृष्टियों से) इस समारोह का महत्त्व है। परन्तु फिर वही प्रश्न है कि यह महान् कार्य अपने आप कैसे सम्पन्न हो सकेगा इसके लिये तो प्रत्येक आर्य को अपना अमूल्य सहयोग देना होगा। दीक्षा शताब्दी, स्मारक शिलान्यास आर्यमित्र हीरक जयन्ती, अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट आदि कार्यक्रम तो समारोह के बाह्यरूप होंगे और उनकी सफलता से भी हम गौरवान्वित होंगे ही परन्तु असली और आन्तरिक कार्य तो समस्त आर्यजगत् में स्नेह एकता सौहार्द कर्मठता धार्मिकता और आर्यसमाज के आन्दोलनों के लिये तीव्र उत्साह और उमंग उत्पन्न करना ही होगा। आशा है उत्साही आर्य बन्धु इस दिशा में सक्रिय सहयोग प्रदान कर अपने आर्यसमाज-प्रेम और ऋषि भक्ति का परिचय देंगे।

विश्वास रखिये गुरुधाम जयन्ती दीक्षा-शताब्दी समारोह आर्यसमाज के भविष्य के लिए प्रेरणा और प्रगति का सन्देश लेकर आता है। अपने कर्तव्य और सामाजिक दायित्व की पूर्ति के लिए समय-दान देकर समारोह का सन्देश जन-जन तक पहुँचाकर समारोह की सफलता के लिए सर्वतोमुखी सहयोग प्रदान कीजिए, यही आज आपसे प्रार्थना है, समय की पुकार है।

१७।१८ जुलाई को हो रही अन्तरंग प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग और [illegible] समिति की बैठकों में सम्मिलित [illegible] इस सामयिक कर्तव्य की पूर्ति के लिये समय-दान की योजना कर एक-संकल्प होना चाहिये। समय बहुत दूर नहीं है पर कार्य विशाल है यदि इसी पैमाने पर हम अपनी शक्ति में उसमें जुट जायेंगे तो सफलता अवश्यम्भावी है। आशा है पूर्वोक्त सभी इस निवेदन पर विचार करेंगे। ★

आर्यसमाज अबोहर का प्रशंसनीय निश्चय

आर्यसमाज अबोहर के साप्ताहिक सत्संग में २८ जून को एक प्रस्ताव पास किया गया कि कोई आर्य सभासद और सदस्य किसी ऐसे व्यक्ति के घर पर किसी संस्कार-सहभोज पार्टी आदि में सम्मिलित न हो जिसका निमन्त्रण हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी में ही छपा हुआ हो।

इस प्रस्ताव को व्यावहारिक रूप देने के लिए इस प्रस्ताव को छपाकर सार्वजनिक रूप से बांटने का निश्चय किया गया।

इस प्रस्ताव के लिए आर्यसमाज अबोहर के सदस्य बधाई के पात्र हैं।

किसी भाषा का प्रयोग अपने में स्वयं कोई दोष नहीं है। आवश्यकतानुसार सदैव प्रयोग किया ही जाना चाहिये पर किसी भाषा का सांस्कृतिक दासता के रूप में प्रयोग चिन्तनीय और निन्दनीय है। भारत की स्वाधीनता के बाद भारत की भाषाओं में व्यवहार को जो सम्मान मिलना चाहिये था उसकी उपेक्षा हुई है। हम अंग्रेजी के व्यवहार और सम्मान में अभी भी अपने को गौरवान्वित समझते हैं। इस दृष्टि से सामाजिक बहिष्कार का यह उपाय बहुत ही व्यावहारिक कदम है। हम आशा करते हैं समस्त आर्यजगत् अपने क्षेत्र में इस निश्चय का अनुकरण करेगा।

हमारी सरकार भी हिन्दी और भारतीय भाषाओं के सम्मान का ढोल पीटती है परन्तु उसकी ओर से भी सार्वजनिक सूचनायें और निमन्त्रणों का प्रकाशन अंग्रेजी में ही किया जाता है, जो राष्ट्र-सम्मान के विरुद्ध है अत हमें इस प्रकार का भी निश्चय घोषित करना होगा। जब सरकार अंग्रेजी में निमन्त्रण भेजे उसे सार्वजनिक भारतीय भाषा-प्रेमी स्वीकार न कर विरोध प्रदर्शन करें। आशा है सामाजिक बहिष्कार के इस कदम का स्वागत किया जायगा।

ब्रह्मकुमारी आन्दोलन और आर्यसमाज

आर्यसमाज समाज के अन्दर कुरीतियों के विरोध अन्धश्रद्धा व पोपडम का नाश करने के लिये सदैव सजग और अग्रणी रहा है। पिछले दिनों सार्वदेशिक आ० प्र० सभा देहली के भू० पू० प्रधान मन्त्री श्री रामगोपाल शालवालों के वक्तव्य का समर्थन करते हुए हमने ओम्मण्डली की प्रणाली का विरोध किया था और जनता को उनसे सावधान रहने की अपील की थी। रामगोपाल जी के वक्तव्य और उसकी सामाजिक व प्रेस की प्रतिक्रिया से ओम्मण्डली के अनुयायी काफी परेशान हैं और उन्होंने अपने कारनामों को छिपाने के लिये श्री रामगोपाल जी को धमकी भरे पत्र भेजे हैं और अन्य अनेक प्रकार की धमकियाँ भी दी हैं और मान-हानि का मुकदमा चलाने की धमकी दी है।

ओम मण्डली वालों की धमकियाँ कहाँ तक सफल होंगी या बन्दरघुड़कियां ही सिद्ध होंगी यह तो भविष्य ही बतायेगा परन्तु श्री रामगोपाल जी ने अपने वक्तव्य में उन सबसे न डरने और अपना आन्दोलन जारी रखने का निश्चय प्रकट कर जिस साहस और आर्यत्व की वीर भावना का परिचय दिया है उसके लिये समस्त आर्यजगत् की ओर से वे बधाई के पात्र हैं।

आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि ओममण्डली के इतिहास उसके कारनामों कराची में और कलकत्ता आदि में उसके कार्यकर्ताओं के विरुद्ध चलाये गये अभियोगों आदि के सम्बन्ध में जो भी जानकारी उपलब्ध हो सके समाचार पत्रों की फाइलों और व्यक्तियों की साक्षी आदि द्वारा उसे अविलम्ब आर्य समाज दीवानहाल देहली के पते पर प्रेषित करने की कृपा करें जिससे आन्दोलन को बल मिल सके।

जहाँ तक आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रश्न है वह सिद्धान्त अवतारवाद के कृष्ण-गोपी लीला पक्ष का किसी प्रकार समर्थन नहीं कर सकता है और उसे स्वीकृति-योग्य नहीं समझता है। कृष्ण गोपी लीला का प्रचलन वाम मार्ग का परिष्कृत स्वरूप है जिसे तत्कालीन समाज ने अपना लिया और प्रच्छन्न रूप से धार्मिकता के नाम पर कामुकता की पूर्ति होती रही भक्ति एक खास गुण है मानव के चरमोत्कर्ष में उसका विशेष महत्त्व है परन्तु किसी व्यक्ति को प्रभु मानकर उसमें आसक्ति की भावना और लीला का आचरण ब्रह्म साधना नहीं काम-साधना ही है। जितनी जल्दी आज की धर्म निरपेक्ष सरकार धर्म के नाम पर होने वाले इस कुप्रचार को रोक सके उतना ही देश का मानवता का और धर्म की पवित्रता का कल्याण हो सकता है। ★

कन्या गुरुकुल हाथरस जन्मोत्सव

उत्तर प्रदेश में अखिल भारतीय महत्त्व की आर्य महिला शिक्षा-संस्था के रूप में कन्या गुरुकुल (सासनी) हाथरस का अपना विशेष स्थान और महत्त्व है।

इस संस्था का जन्म २१ वर्ष पूर्व व्यास पूर्णिमा के दिन हुआ था। इस वर्ष २० जुलाई को संस्था का जन्म दिवस मनाया जा रहा है। संस्था नारी शिक्षा के महत्त्वपूर्ण कार्य में जो सहयोग

[शेष पृष्ठ ४ पर]

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रदान करती रही है यह सुविदित है। स्नातकीय स्तर की शिक्षा की व्यवस्था कर संस्था विशेष प्रगति कर रही है। संस्था में शिरोमणि उपाधि परीक्षा प्रचलित है जो बी० ए० के समकक्ष है जिससे स्नातिकायें एम० ए० में बैठ सकती हैं।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी की प्रेरणा से निर्मित विशाल भवन में श्री नारायण स्वामीजी द्वारा उद्घाटित, श्रीमती माता लक्ष्मीदेवी जी द्वारा लालित-पोषित तथा श्री मौलवी महेशप्रसाद जी, डा० कृष्णप्रसादजी, स्व० श्रद्धेय कुंवर हुक्म सिंहजी, श्री डा० मन्मथसिंहजी, श्री प्रि० महेन्द्रप्रतापजी शास्त्री, श्री पं० विद्याभूषणजी वैद्य स्नातक, श्री पं० रामप्रसादजी (वर्तमान प्रधान) आदि ने अध्यक्ष पद से तथा श्री डा० हरदेवीजी, श्री नरदेवजी स्नातक, श्री प्रेमचन्द्रजी (वर्तमान मन्त्री) आदि ने मन्त्री-कार्य संचालन द्वारा तथा सासनी के भार्गव परिवार ने कोषाविभाग की सुरक्षा और सहायता द्वारा और श्रीमती आचार्या सत्यवताजी, श्रीमती आचार्या भगवती देवीजी, श्रीमती अक्षयकुमारीजी, प्रभाकर (वर्तमान आचार्या) आदि बहिनों ने इस संस्था की उन्नति में जो सहयोग किया है उसके लिए समस्त आर्यजगत् की ओर से ये सब धन्यवाद के पात्र हैं। संस्था दिनों दिन प्रगति करे और नारी शिक्षा-क्षेत्र में आर्यसमाज का सही प्रतिनिधित्व करती रहे इन शुभ भावनाओं के साथ गुरुकुल के जन्म-दिवस पर हम मित्र परिवार की ओर से हर्ष प्रकट करते हैं। आशा है आर्यजगत् संस्था के हर्ष में सम्मिलित हो कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करेगा।

आर्यमित्र के लिये उपसमिति या ट्रस्ट का निर्माण

वाणी के प्रचार का विज्ञापन करने और लेखनी द्वारा विचारों का मन्थन करने के उद्देश्य से प्रत्येक समुदाय के पास अपना पत्र होना आवश्यक है। आर्यमित्र आर्यसमाज की ऐसी ही सम्पत्ति है। उसका जन्म आर्यसमाज के विचारों एवं आन्दोलनों के प्रचारार्थ हुआ था और वह उस सेवा में सदैव तत्पर रहा है। अतीत के अनुभवों से मिशनरी पत्र के स्वामित्व और उसके सम्बन्ध में आने वाली कठिनाइयों से हम भली भांति परिचित हो चुके हैं। ऐसी अवस्था में हमें गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए कि कौन से उपाय हो सकते हैं जिनसे मिशनरी पत्र स्थायी और प्रगतिशील बन सके।

पिछले दिनों स्वर्गीय श्री मदनमोहन सेठजी ने एक ऐसी उपसभा या स्वायत्त परिषद् बनाने का प्रस्ताव किया था जिसमें आर्यमित्र सभा की सम्पत्ति रहते हुए भी सभा से बाहर के लोगों का सहयोग प्राप्त कर सके। उसका अभिप्राय था आर्यमित्र की एक परिषद् हो जिसमें सभा के प्रतिनिधियों को उचित प्रतिनिधित्व देते हुए ज्ञान और योग्यता के आधार पर उसमें सदस्य सम्मिलित किये जायें। प्रत्येक दशा में सदस्य का आर्यसमाजी होना आवश्यक होगा। इसी योजना को दूसरे शब्दों में यों रख सकते हैं कि आर्यमित्र का एक ट्रस्ट बनाया जाय और सैद्धान्तिक, सामाजिक, धार्मिक आधार पर उसका विकास किया जाय। आर्थिक प्रश्न के लिए आज हमारे साधन बहुत सीमित हैं। हमें उनके संग्रह का और उनके उचित विनियोग का विचार करना चाहिये।

गत आर्यमित्र में सभा के अनुभवी अन्तरङ्ग सदस्य श्री शिवनारायण शुक्ल जी ने मित्र और भास्कर प्रेस के लिये एक उपसमिति बनाने का प्रस्ताव किया है उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये। यदि अन्तरङ्ग सभा मित्र के लिए परिषद् बनाने के सुझाव से सहमत हो तो उसकी सदस्यता का प्रश्न रह जाता है। हम समझते हैं आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड के शेयर होल्डरों का जो धन लिक्वीडेशन में उन्हें प्राप्त होने वाला है (जो सम्भवतः २५ हजार होगा) उन शेयर होल्डरों को समिति या ट्रस्ट का सदस्य बनाने का निश्चय कर उनसे इस धन के सात्विक विनियोग की अपील की जा सकती है। आशा है अन्तरङ्ग सभा और शेयर होल्डर आर्यमित्र और समाज-सेवा की दृष्टि से इस दृष्टिकोण पर विचार करेंगे।

यदि इस योजना पर विचार किया जाय तो आर्यमित्र हीरक जयन्ती का गौरव बढ़ेगा और स्थायी सफलता प्राप्त हो सकेगी।

पंजाब में मतदाता सूची और हिन्दी की उपेक्षा

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर प्रतिष्ठित करने के संवैधानिक निश्चयों का स्वागत और पालन करने के स्थान पर हमारी कांग्रेसी सरकारें विधान की जो उपेक्षा करती हैं पंजाब सरकार का निर्णय उसका एक ज्वलन्त उदाहरण है—

पंजाब में हिन्दी के अस्तित्व और अधिकार की रक्षा के लिये आन्दोलन होने के पश्चात् भी पंजाब सरकार ने मतदाता सूची केवल पंजाबी में प्रकाशित करने का निश्चय किया है।

इस निश्चय का कोई भी राष्ट्रभाषा प्रेमी समर्थन नहीं कर सकता, मतदाताओं की अधिकांश संख्या निरक्षर है और साक्षरों में बहुमत हिन्दी जानने वालों का है। इस व्यावहारिक तथ्य की भी उपेक्षा करदी गयी है। हम पंजाब सरकार के इस आदेश की निन्दा करते हैं और उसे संशोधित किये जाने की मांग का समर्थन करते हैं। पंजाब के राज्यपाल, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय और निर्वाचन आयोग से हम प्रबल अनुरोध करेंगे कि पंजाब में हिन्दी हितों के विरुद्ध इस कार्य को रोक हिन्दी प्रेमियों की भावनाओं और [illegible] के प्रति सहानुभूति [illegible] करें। अभी समय है, [illegible] ध्यान न दिया गया तो [illegible] अन्य अंचलों का [illegible] होगा।

आर्य बन्धुओं के नाम बगदाद (ईराक) आर्यसमाज के बन्धुओं की ओर से नव वर्ष का बधाई-सन्देश

OM

THE PRESIDENT & COMMITTEE MEMBERS
of
ARYA SAMAJ (VEDIC CHURCH)
Send Fraternal Greetings to Members and
Friends and wish them all a
Very Happy and Prosperous New Year
Bikrami 2016, Dayanandabdi 135
Aryandira 1,972 949,060

Count Your Garden by the flowers
Never by the leaves that fall,
Count Your Joys by golden hours
Never when life's worries call,
Count Your night by Stars, not shadows
Count Your days by smiles not tears,
And on every New Year Day
Count Your age by friends not Years
(With acknowledgments)

J. D. Sharma, Honorary Secretary — Baghdad, Iraq

ओ३म्

श्रीयुत प्रधान जी व सदस्य गण,
आर्यसमाज (वैदिक धर्म)

इस आर्यसमाज के सदस्यगण आपके सम्मानित सदस्यों और सहयोगियों को नववर्ष की बधाई प्रेषित करते हैं और कामना करते हैं कि नववर्ष उनके लिये प्रसन्नता और उन्नति का वर्ष हो।

विक्रमी सम्वत् २०१६, दयानन्दाब्द १३५
आर्य सम्वत् १९७२९४९०६०

अपने उपवन को गिनो, सुमन मालाओं से
आंको न उसे, गिरते पतझर के पातों से
अपने उल्लास गिनो, स्वर्णिम घटिकाओं से
मत गिनो कभी जीवन को, चिन्तित बातों से

× × × × ×

निज निशा गिनो तारागणों से, न सितारों से
निज दिवस आँसुओं से न, गिनो मुसकानों से
नव वर्षागम के दिन यों, अपने जीवन को
वर्षों से गिनो न, मित्रों के आह्वानों से

आर्यसमाज बगदाद ईराक १ अप्रैल १९५९

विनीत—
जे० डी० शर्मा
मन्त्री

इस प्रकार का बधाई कार्ड आर्यसमाज बगदाद की ओर से विश्व की सभी आर्यसमाजों को प्रतिवर्ष भेजा जाता है। इस वर्ष भी प्रेषित किया गया, हम यहां उसको मूल और अनुवादित रूप में प्रकाशित कर बगदाद आर्यसमाज के उत्साही आर्यबन्धुओं को हार्दिक बधाई और धन्यवाद देते हैं। साथ ही हम भारत की आर्यसमाजों का ध्यान उनके उत्साह की ओर आकृष्ट करते हुए नववर्ष, आर्यसमाज स्थापना-दिवस आदि को इसी उत्साह के साथ मनाने का आग्रह करते हैं।

हमने अंग्रेजों के बधाई-पत्रों का अनुकरण किया है उसका भारतीयकरण करके हमें अपनी सांस्कृतिक विशेषता का परिचय देना चाहिये।

बधाई पत्र का हिन्दी अनुवाद करने के लिये हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री ब्रजेन्द्र अवस्थी एम० ए० का हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं। —सम्पादक

सिंहावलोकन

आर्यसमाज की उन्नति का मार्ग: आत्म-निरीक्षण

[श्री लक्ष्मीकान्त गुप्त बी० ए० कोटा]

आज आये दिन हम आर्यसमाज की आलोचना सुनते हैं। आर्यमित्र हो या सार्वदेशिक अथवा अन्य कोई आर्य पत्र—समाज की विवेचना से परिपूर्ण होते हैं।

स्वभावत प्रश्न उठता है, क्या समाज इस स्तर पर आ गया है जो नित्यप्रति आलोचनाओं का शिकार बने? हम पाते हैं, समाज में आर्य विद्वानों की आज भी कमी नहीं। वैदिक साहित्य की आज भी प्रचुर मात्रा है। सत वाणी का आज भी सर्वत्र आदर है। मगर हम यह भूल रहे हैं कि 'बुराई करने से भी बुराई का चिन्तन अधिक बुरा है और भलाई करने से भी भलाई का चिन्तन अधिक भला है।' हम आज सब को भूल रहे है तथा विश्वास को खो बैठे हैं। विचित्र बात यह दीखती है कि ज्ञानदीप जगमगा रहा है मगर प्रकाश नहीं प्रतीत होता है।

संगठन

आर्यसमाज एक विशाल संस्था है। उसके गुण दोषों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक ही है। संगठन के प्रति ढिलाई के नियम बरतना समाज के लिए जोंक पालने के समान है। आखिर समाज के घट में यह दोष क्यों घर कर गया? स्पष्ट है, समाज के कार्यकर्त्ताओं का सेवावृत्ति से हटकर सत्ता हेतु विह्वल हो उठना। इतना ही नहीं सत्ता प्राप्ति, फिर अपनी ही स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए, अवाञ्छित तत्त्वों को प्रविष्टि करा समाज में नाकेबन्दी करना, धार्मिक दृष्टि से तो जघन्य पाप ही है। पर यह सब होता है आर्यसमाज की प्रजातान्त्रिक प्रणाली के नाम पर! क्या सभायें समाज को इस अधोगति से रोक सकती हैं। समयानुकूल एवं आवश्यकतानुसार कुछ ऐसी कड़ी व्यवस्था की आवश्यकता है जो धनार्यों को सदस्य बनने तथा अयोग्यों को पदाधिकारी बनने से सर्वदा वंचित रखे।

उपदेशक

प्रारम्भ से ही समाज में उपदेशकों का प्रमुख स्थान रहा है। उपदेशक ही समाज की पवित्र वाणी हैं। उपदेशक ही करेगा और वह बोलेगी। और यहां भी एक दोष है—धन-लोलुपता। हमारे उपदेशकों में से अनेक स्वाध्याय से परे रहकर बाजारू गीतों का राग अलाप कर या हंसी के गपोड़े छोड़कर पैसा ऐंठ लेना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अपने कथन की निस्सारता को वेद, दयानन्द या आर्यसमाज का नाम लेकर दबा देते हैं। प्राय इन उपदेशों में विरोधाभास भी झलक उठता है। अच्छा हो समाज के वे विद्वान् एक नीति निर्धारित कर समाज के निश्चित ध्येय की पूर्ति में संलग्न हों।

स्थानीय समाजें

स्थानीय समाजें देश के अन्दर आर्यसमाज रूपी विशाल वृक्ष की फैली हुई जड़ें हैं, जब वही खोखली होंगी तो आर्यसमाज का वृक्ष कैसे हरा भरा रह सकता है। अत इनका भारी दायित्व संस्था के प्रति है। शक्ति की उपासना में निन्दित उपायों का सहारा लेना, दलबन्दी बना समाज की प्रतिष्ठा को नीचे गिराना भौतिक सिद्धान्तों के बिल्कुल विपरीत ही है। आवश्यकता है आत्म निरीक्षण कर समाज के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा लेने की। ज्यों ज्यों स्थानीय समाजें आदर्श संस्था के रूप में बदलती जावेंगी त्यों त्यों हम महर्षि के स्वप्नों को साक्षात् बनाने में सफल होंगे।

आर्य पत्र

अन्त में हमारा ध्यान आर्य पत्रों की ओर खिंचता है। अनेक पत्रों ने मासिक या साप्ताहिक रूप में निकल कर समाज की अद्वितीय सेवा की है। आज समाज की सुषुप्त अवस्था में आवश्यकता है उन सभाओं, उपदेशकों एवं स्थानीय समाजों को झकझोर की। वर्तमान में समाज को स्पष्ट विचारधारा, सुदृढ़ नेतृत्व की आवश्यकता है। आर्य पत्र समाज के नैतिक स्तर को उठाकर आर्यजगत् की बहुमूल्य सेवा कर उपादेय बन सकते हैं।

आर्य पत्रों का साधन आर्यसमाजों के लिए बहुत महत्त्व रखता है। उनके द्वारा समाज का दिग्दर्शन और उन्नति विशेषरूप से सम्भव है अत उनकी उन्नति भी अपने आन्तरिक संगठन और बाह्य प्रचार की दृष्टि से अपेक्षित है। ★

आर्य्य महिला मण्डल

महिलायें और आर्यसमाज

[श्रीमती सावित्रीदेवी चौहान, आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल)]

[मानव-परिवार में माता का स्थान पिता से महान है। सन्तान के निर्माण में पिता की अपेक्षा माता अधिक सफलता प्राप्त कर सकती है। आर्यसमाज ने महिलाओं की स्वतन्त्र उन्नति और उनके विकास के समान अवसरों के लिए महिला समाजों का निर्माण किया है। बहनजी ने आर्य महिलाओं से महिला समाजों की उन्नति और बहनों के सन्तान निर्माण सम्बन्धी दायित्व की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। आशा है आर्य परिवार की बहनें इस सम्बन्ध में विचार करेंगी। जो बहनें इस सम्बन्ध में तथा अन्य महिला जगत् सम्बन्धी विषयों समस्याओं आदि पर अपने विचार भेजना चाहें भेजें। हमें उनके विचारों का प्रकाशन करने में प्रसन्नता होगी। —सम्पादक

आज के युग में आर्यसमाज की उन्नति का जितना उत्तरदायित्व महिलाओं पर आ गया है उतना मनुष्यों पर नहीं रहा, किन्तु बड़े दुःख का विषय है कि प्रतिवर्ष सभा के वार्षिक अधिवेशन में बड़ी कठिनता से २० या २५ महिलायें ही एकत्रित होती होंगी। यद्यपि इसका बहुत कुछ उत्तरदायित्व सभा के 'महिला प्रचारक मण्डल' का है तथापि हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि इसके लिए हम भी कम उत्तरदायी नहीं हैं (वास्तव में 'महिला प्रचारक मण्डल' की सफलता तो तभी मानी जावेगी जबकि सभा के वार्षिक अधिवेशन में महिला प्रतिनिधियों की संख्या क्रमशः बढ़ने लगेगी। आशा है उक्त विभाग की अधिष्ठात्री ऐसा प्रयास करेंगी) जैसा मैंने ऊपर स्पष्ट किया कि जहाँ यह उत्तरदायित्व उक्त मण्डल का है, वहां हमारा भी है, हम महिलायें आर्यसमाज की स्थापना तो कर लेती है, किन्तु उसके लक्ष्य को भूल जाती है। मुझे तो कुछ ऐसा आभास होने लगा है कि आज महिला आर्यसमाजें 'महिला क्लब' का रूप धारण करती चली जा रही हैं, जहाँ गप शप लगाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता, जहाँ चर्चायें होती है घर की, मोहल्ले की, तथा शहर की, तथा जहां बुराइयां भलाइयाँ की जाती हैं एक दूसरे के पति भाई, बहिन, जेठ और पुत्र इत्यादि की। कहने का तात्पर्य यह है कि सप्ताह भर की जितनी बातें जिसको याद होती है वे सब जब तक प्रत्येक बहिन अपनी सुना नहीं देती तब तक उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं होती। कभी रोना, कभी हंसना—बस इसी प्रकार के नाटक में सम्पूर्ण समय बीत जाता है। सन्ध्या, यज्ञ, प्रवचन आदि जो वास्तविक कार्य होता है कठिनाई से आधा घंटा हो पाता है और फिर यह सभाएं समाप्त होती हैं एक दूसरे के झगड़ों से। जो छोटे बच्चे-बच्चियां साथ आते हैं उन सब पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता होगा। इन सम्पूर्ण बातों को, क्या आपने कभी विचारा है? जब आज स्त्री आर्यसमाजों की दशा इस प्रकार की होती जा रही है तो आप स्वयं विचारिये कि कहां से आर्य महिला प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन हो और कैसे हो आर्यसमाज की उन्नति?

आज महिलायें यदि अपने कर्त्तव्य, महत्ता व उत्तरदायित्व को समझ लें तो क्या आर्यसमाज की उन्नति होना कठिन है? यह समय की पुकार है महिलाओं को अवश्य ही दृढ़ साहस के साथ आगे बढ़कर कार्य में जुट जाना चाहिए। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि महिलाएं यदि आज कुछ कार्य करने की मन में ठान लें तो निश्चय ही आर्यसमाज की उन्नति हो सकती है। आर्यसमाज उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच सकता है। भले ही आज महिला आर्यसमाजों की संख्या कम है और आर्य महिलायें भी कम हैं किन्तु है तो, यही हमारे लिए गौरव की बात है। मेरी दृष्टि में तो वह कम भी बहुत है। एक चिनगारी क्या बड़े भवनों को भस्मीभूत नहीं कर देती? ये गिनी चुनी आर्य महिलायें ही आज अपने अपने पुत्र व पुत्रियों को आर्य विचारधारा में ढालने का व्रत लें तो कोई सन्देह नहीं कि आर्यसमाज की उन्नति निकट भविष्य में न हो सके। पुत्र व पुत्रियों को आर्य विचारधारा में ढालने का तात्पर्य यह होगा कि वे अपने पुत्र व पुत्रियों को भी उस विचारधारा में ढाल सकेंगी, और उनके बच्चे अपने बच्चों को भी। मनुष्य के बस का यह कार्य नहीं। वह तो इसमें असफलता पा चुका। आप स्वयं ही सोचिये कि आज कितने 'आर्य' ऐसे हैं जो रविवार के दिन अपने बच्चों को आर्यसमाज में ले आते हैं। यदि आप आंकड़े एकत्र करें तो आपको ज्ञात होगा कठिनाई से ५ प्रतिशत ही निकलेंगे तब फिर क्या यह उनकी सफलता कही जा सकती है? लेकिन यदि महिलायें प्रयास करें तो बहुत कुछ कर सकती हैं। किन्तु किसी पेड़ को जड़ लगाते समय उसकी दृढ़ता तथा स्थायीपन का अवश्य ध्यान रखना

[शेष पृष्ठ ६ पर]

साहित्य-समीक्षण

तपोभूमि मथुरा का दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रहाङ्क

विशेषांक सम्पादक—श्री पं० श्रीराजजी शर्मा आगरा।

व्यवस्थापक—श्री हरप्रसाद मुमैषी वानप्रस्थी मथुरा।

समय—मार्च अप्रैल १९५९, वर्ष ६, अङ्क २-३। पृष्ठ संख्या ६३६।

मूल्य—अजिल्द ४ रु० सजिल्द ५)रु०

प्राप्तिस्थान—श्रीमद्दर्शनानन्द ग्रन्थागार, कृष्णगंगा, मथुरा।

आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में जिस लगन, उत्साह और तार्किकता का प्राधान्य था आज उसका सर्वथा अभाव है। आरम्भिक युग में स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का समर्पण कर आर्यसमाज की रचनात्मक सेवा की, साहित्य-निर्माण और प्रकाशन को वे अत्यधिक महत्त्व देते थे। वाणी और लेखनी का जितना सुन्दर समन्वय उनमें प्राप्त था उतना अन्यत्र उपलब्ध होना दुर्लभ ही है। उन्होंने अपने विचारों में सत्य का ही एकमात्र अवलम्बन लेने का आग्रह किया है और सत्य द्वारा उन्हें उचित प्रतीत हुई उसे लेकर वे मित्र की भी आलोचना करने में नहीं झिझके। यहाँ तक कि अपनी एकमात्र संस्था आर्यसमाज के क्रियाकलापों और नीतियों से मतभेद होने पर वे निर्भीकता के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत करते और पुष्ट करते हुए मिलते हैं।

सामाजिक, धार्मिक नेता होने के साथ स्वामीजी दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनकी तर्क-शक्ति का लोहा तत्कालीन शास्त्रार्थों में उनके विरोधियों को भी मानना पड़ता था और यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी कि आर्यसमाज का शास्त्रार्थ-युग दर्शनानन्द युग था, उन जैसे शास्त्रार्थ महारथी की विद्यमानता में किसी विरोधी को शास्त्रार्थ में कभी सफलता नहीं मिल सकी और आर्यसमाज सदैव विजयी घोषित हुआ। आज भी आर्यसमाज के उपदेशक, प्रचारक और विद्वान सभी लोग स्वामीजी की युक्तियों का उपयोग करने में अपना गौरव समझते हैं।

अपने लम्बे सेवा-काल में स्वामीजी ने अपने विचारों को छोटे-छोटे ट्रैक्टों में प्रकाशित कर प्रचार किया था। ट्रैक्टों द्वारा आर्यसमाज का सन्देश जन जन तक पहुँचाने और अन्धविश्वासों व पोपडम का गढ़ ढाने में जो सहायता मिली उसका ऐतिहासिक महत्त्व है। आज वे ट्रैक्ट लुप्तप्राय हो गये हैं और यदि हमारी उपेक्षा जारी रहती तो वे सदा के लिए खो जाते। आज आर्यसमाज में साहित्य प्रकाशन के कार्य के प्रति जो उदासीनता बढ़ रही है उसको देखते हुए स्वामीजी के ट्रैक्टों का संग्रह प्रकाशित करना सहज सम्भव नहीं था फिर भी तपोभूमि के उत्साही कर्ता-धर्ता श्री भाई ईश्वरीप्रसादजी प्रेम एम०ए० ने इस शुभ संकल्प को लेकर उसे पूर्ण करने का सफल प्रयास किया है।

इस ग्रन्थ-संग्रह की अन्तरात्मा का संक्षिप्त परिचय उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट ही है। सम्पादक महोदय ने सारे ट्रैक्टों को (१) शिक्षा (२) अध्यात्म (३) व्यवहार दर्शन (४) समाज-सुधार (५) ऋषि दयानन्द (६) मत समीक्षा १—भारतीय २—अभारतीय (७) अनुसन्धान भागों में विभक्त कर उनकी विषयानुसार उपयोगिता बढ़ा दी है और सामान्य पाठक भी सम्बन्धित विषय पर स्वामीजी के या आर्यसमाज के सैद्धान्तिक विचारों को संग्रहीत कर लाभ उठा सकता है।

स्वामीजी ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को भारत और मानव समाज की उन्नति का एकमात्र मूलमन्त्र बताया है। उनका गुरुकुलों के व्यावहारिक स्वरूप के प्रश्न पर आर्यसमाजी सभा संघटनों से मतभेद भी था जिसकी उन्होंने अपने तद्विषयक ट्रैक्टों में निर्भीकतापूर्वक समीक्षा भी की है। वे निःशुल्क शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। आज यदि वे जीवित होते और भारतीय संविधान के अनुसार भारत में राज्य की ओर से निःशुल्क शिक्षा-व्यवस्था के प्रयत्नों का अवलोकन करते तो उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता होती। बीजरूप में भारतीय शिक्षा-पद्धति निःशुल्क शिक्षा की समर्थक रही है परन्तु इस युग में निःशुल्क शिक्षा का रचनात्मक आन्दोलन करने वालों में स्वामीजी सर्वप्रमुख रहे हैं। उनके ट्रैक्टों में जिस विचारधारा का प्रचार किया गया है आज वह भारतीय संविधान का मूलभूत सिद्धान्त बन चुकी है।

इसी प्रकार स्वामीजी ने दार्शनिक प्रश्नों तथा सामाजिक वर्णाश्रम धर्म आदि के सम्बन्ध में भी जो गम्भीर लेकिन सरल भाषा में विचार व्यक्त किये हैं उन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि एक चिन्तनशील आत्मा समाज-सुधार और राष्ट्रोन्नति की भावना से अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ राष्ट्र की विचारशक्ति को जागृत करने में आधुनिक सरकारों के इन्फार्मेशन विभागों की भांति प्रचार-यन्त्र का कार्य कर रही है। प्रतिपक्ष चिन्तन और चिन्तन का ट्रैक्ट रूप में प्रकाशन नहीं वश रखते पोथी की अलमस्ती थी। उस महान आत्मा के जो विचार [illegible] द्वितार्थ व्यक्त किये उनका अधिकाधिक प्रचार मानवता की सेवा, ऋषि के प्रति कृतज्ञता और आर्यसमाज के गौरव की सुरक्षा का कार्य है।

आज की महार्घता के युग में इतना व्यय साध्य कार्य हाथ में लेकर और उसे सम्पन्न कर तपोभूमि के संचालकों ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस साहित्य-साधना के लिये तपोभूमि के सभी अधिकारी और विशेषरूप से सम्पादक बधाई के पात्र हैं। ट्रैक्टों के साथ-साथ संग्रह में स्थान-स्थान पर श्री पं० नाथूरामशङ्कर शर्मा, श्री विद्यावती मिश्र, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री सिद्धगोपाल जी आदि की स्फूर्तिदायिनी कविताओं का संकलन भी उपयोगी बन पड़ा है।

प्रकाशकों ने ग्राहकों के अतिरिक्त अन्य लोगों के लिये इस संग्रह को सुलभ बनाने की दृष्टि से पुस्तक रूप में इसे पृथक् से प्रस्तुत किया है। न्यूजप्रिंट पर मू० ४ रुपया, ग्लेज पर ५ रुपया और सजिल्द का मूल्य ६ रुपया रक्खा गया है।

हमारी सम्मति में तपोभूमि का यह विशेषाङ्क प्रत्येक सार्वजनिक विशेषकर आर्यसमाज पुस्तकालय के लिये स्थायी एवं संग्रहणीय वस्तु है। हिन्दी में भी यह एक नवीन प्रयास है। व्यक्ति के जीवन और उसकी कथा पर तो ग्रंथ लिखे हैं पर व्यक्ति की कृतियों को लेकर विशेषांक प्रकाशन, पत्रकार-कला के क्षेत्र में भी एक नई सूझ है। आशा है पुस्तकालय, सामाजिक कार्यकर्ता और हिन्दी प्रेमी इस महत्त्वपूर्ण विशेषाङ्क का उचित लाभ उठायेंगे।

[पृष्ठ ५ का शेष]

चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि वे अपने पुत्र व पुत्रियों को ऐसी शिक्षा दें जिस का स्वप्न की भाँति प्रातः उठते भुला दें। इसके लिये उन्हें विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। सम्भवतः इस कुछ कठिनाइयों का भी हमें सामना करना पड़ेगा, क्योंकि यह कोई सरल कार्य नहीं। जो कुछ भी हो मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि महिलायें इस कार्य में कदापि असफल न होंगी। आर्यसमाज की उन्नति, संघटन एवं प्रचार के लिए एक ठोस कदम होगा।

मुझे पूर्ण आशा है कि आर्य महिलायें मेरी इस प्रार्थना पर पूर्ण ध्यान देंगी और इस ओर पूर्ण प्रयास करेंगी। प्रभु इन बहिनों को यह शक्ति प्रदान करें, मेरी यही कामना है।

जीवन-ज्योति

आर्यसमाज बदायूं यात्रा के अवसर पर स्व० श्री पं० श्यामविहारीलालजी वानप्रस्थी के प्रति श्रद्धांजलि

[श्री रामबहादुर जी, मुख्तार, पूरनपुर]

गत २८ जून को आर्यसमाज बदायूं जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां मन्दिर में मुझे १२, १३ घण्टे ठहरने का विशेष आनन्द अनुभव हुआ। इसका एकमात्र कारण विचार करने पर मुझे प्रतीत हुआ कि इस स्थान के निर्माण तथा रक्षण के पीछे बहुत बड़ा त्याग और विशेष तपस्या छिपी हैं। स्थान विशेष का विशेष प्रभाव होता है। श्मशान में जाने से भय या वैराग्य पैदा होने लगता है। बूचड़खाने में जाने से भय व घृणा उत्पन्न होती है। आर्य समाज मन्दिर में पहुँचने से आनन्द की लहर दौड़ने लगी। जिन्होने इस मंदिर को देखा है वे जानते ही हैं कि यह एक विशाल, भव्य तथा सुन्दर दुमंजला भवन है। इसको केवल एक व्यक्ति ने अपनी सारी पूंजी लगाकर उस समय जबकि भवन निर्माण सामग्री सब सस्ती थी पचास हजार की लागत से निर्माण कर दान दे दिया, अब तो इस भवन का मूल्य दो लाख रुपया से कम न होगा। वह व्यक्ति त्यागमूर्ति स्वर्गीय श्री जयनारायण जी थे। उनने इस भवन को निर्माण कर व दान देने के पश्चात् स्वयं संन्यास ले लिया और मृत्यु पर्यन्त आर्यसमाज व जनसाधारण की निःस्वार्थ सेवा करते रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके भाई श्री रामचन्द्र जी रिटायर्ड डिप्टी पोस्ट मास्टर अत्यन्त सरलता व सादगी से वानप्रस्थी जैसा जीवन बिताते हुए आर्य समाज बदायूं को लग्न व निःस्वार्थभाव से सेवा में रत रहते हैं। उनकी सुमधुर वाणी व स्नेहमय व्यवहार से कौन प्रभावित हुये बिना न रहेगा। केवल आर्यसमाज की सेवा ही उन्होंने अपने शेष जीवन का लक्ष्य बनाया हुआ है। ऐसे व्यक्तियों के जीवन अनुकरणीय हैं आर्यसमाज बदायूं दानवीरों की खान ही प्रतीत होता है। एक सज्जन श्री सकटमल तथा उनकी पत्नी श्रीमती पार्वती देवी जी का दान भी प्रशंसनीय रहा। उन्होंने अपनी ही सम्पत्ति व धन से पार्वती आर्य कन्या संस्कृत जूनियर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की और उसका विशाल भवन निर्माण कराया और जब तक वे दोनों पतिपत्नी जीवित रहे किसी प्रकार की सरकारी या बाहरी आर्थिक सहायता नहीं ली। यह विद्यालय बड़े सुन्दर ढंग पर चल रहा है। आर्यसमाज समय समय पर ऐसे नर रत्नों से गौरवान्वित होता रहा है। जिस आर्यसमाज की पृष्ठभूमि में ऐसे-ऐसे दानवीर और त्यागी महात्माओं का हाथ हो, वहाँ पहुँच कर क्यों न हृदय विशेष प्रफुल्लित हो। श्री रामचन्द्र जी दर्शन, सम्भाषण व सत्संग ने तो वही किया जो शीतल जल एक धूप से आक्रान्त व्यक्ति के लिये करता है। इस आर्यसमाज को श्री मक्खनलाल जी प्रधान बहुत ही योग्य और लग्न से कार्य करने वाले व्यक्ति मिले हुये हैं। इनके सौजन्यपूर्ण आतिथ्य और श्री विशुद्धानन्द जी शास्त्री के विद्वत्तापूर्ण उपदेश तथा श्री भद्रपालजी उपदेशक सभा के प्रेमपूर्ण वार्तालाप ने मेरे आनन्द में द्विगुणित वृद्धि कर दी। आर्यसमाज बदायूं ऐसे प्रेमी, योग्य व विद्वान जनों को पाकर बधाई का पात्र हैं।

इसी बीच पं० हरिशङ्कर जी मुख्तार प्रबन्धक आर्य कन्या विद्यालय से भेंट होते ही उनके सहोदर व मेरे चिरमित्र स्वर्गीय श्री श्यामविहारीलाल वानप्रस्थी की स्मृति हो आई। उक्त वानप्रस्थी जी और मेरा १०, १२ वर्ष निरन्तर दैनिक सत्संग रहा उनका जीवन एक अनुकरणीय जीवन रहा है, इस कारण सर्व साधारण के लाभार्थ संक्षेप में कुछ लिखना उचित प्रतीत होता है।

पं० श्यामविहारीलाल जी पूरनपुर तहसील में १५, १६ वर्ष गिरदावर कानूनगो रहे थे, सत्य के ग्रहण करने व असत्य के त्यागने की वह साक्षात मूर्ति थे। आरम्भ में साधारणतयः जैसे सब गिरदावर कानूनगो होते हैं वैसे ही वह थे। आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर संध्या व हवन में ऐसी आस्था हुई कि जीवन पर्यन्त एक समय भी नागा नहीं किया, चाहे कहीं भी किसी अवस्था में रहे हों। थोड़े ही दिनों के संध्या व हवन के श्रद्धापूर्वक अभ्यास से रिश्वत को पापकर्म समझने में उन्हें देर न लगी, फिर उसे ऐसा त्यागा कि दौरे में अपना भोजन अपने साथ ही ले जाते और बिना मूल्य दिये किसी से कोई वस्तु हरगिज न लेते थे। वेदों व अन्य आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय उन्होने बड़े मनोयोग से किया। स्वाध्याय में किसी दिन अनध्याय नहीं किया। जब तक वह पूरनपुर रहे प्रत्येक रात्रि को दो घण्टे उनके साथ मेरी व अन्य कई सज्जनों की स्वाध्याय गोष्ठी होती रही। समय की पाबन्दी भी उनका एक विशेष गुण था। सचाई व सादगी उनका एक आभूषण था। उनके अफसरान भी उनका इस कारण बड़ा मान करते थे। उनका भोजन अत्यन्त सादा और नियमित था। नित्य व्यायाम करते और संयम से रहते थे। नौकरी के ही दिनों में इस प्रकार अभ्यास करते करते उन्हें वैराग्य भी उत्पन्न हो गया और अवधि के पूर्व पेंशन लेकर वे वानप्रस्थी बन गये। कई वर्ष कछला में गंगा तीर रह कर संध्या, स्वाध्याय हवन, प्राणायाम आदि का श्रद्धा पूर्वं अभ्यास करते रहे। फिर कुछ काल आर्ष गुरुकुल ऐटा में स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पास रहे। अन्त में कई वर्षों से वानप्रस्थ संन्यास साधु आश्रम ज्वालापुर में रह रहे थे कि गत वर्ष अपने दैनिक कार्यक्रम के अनुसार प्रातः ४ बजे वह नहर पर स्नान आदि के लिये गये। वहां पैर फिसल जाने से नहर में डूब गये और शरीरान्त हो गया। तीसरे दिन उनका शव मिला, देखने वालों ने बताया कि ऐसा मालूम होता था कि उन्होंने प्राणायाम साधा हुआ था और चोटी के स्थान से उनका शिर फटा-सा था अर्थात् जीवात्मा की गति ब्रह्माण्ड द्वारा हुई। वह बहुत खामोश कार्य करने वाले थे। उनका जीवन अत्यन्त पवित्र, संयमी, सादा तथा अनुकरणीय था, मुझे गर्व है कि मुझे ऐसे व्यक्ति का मित्र होने का सौभाग्य प्राप्त रहा। और इन शब्दों के साथ उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। प्रभु हमें उनका अनुकरण करने की क्षमता प्रदान करें। ★

सार्वदेशिक सभा की धार्मिक परीक्षायें

आर्यसमाज एक जीती जागती संस्था है, कम से कम प्रत्येक आर्य इस बात को अभिमान से कहता है परन्तु समझ में नहीं आता कि आर्य जनता की उन कामों के प्रति उपेक्षा क्यों रहती है जो वैदिक धर्म प्रचार के ठोस साधन हैं और वह साधन सरल भी हैं। सार्वदेशिक सभा ने जो धार्मिक परीक्षायें युवकों के हितार्थ अभी थोड़े दिन हुए आरम्भ की हैं उन पर मैंने पहले भी हर्ष प्रकट किया था और आर्य पत्रों में उन परीक्षाओं का इस वर्ष का फल प्रकाशित हुआ देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। परन्तु परीक्षार्थियों की अल्पसंख्या को देखकर मुझे ऐसा लगा कि न तो जनता में उसका कुछ विशेष स्वागत किया न सभा के अधिकारियों ने ही प्रयत्न किया। यद्यपि यह परीक्षायें यदि योजना बनाकर चलाई जांय तो प्रचार के जितने साधन इस समय प्रचलित हैं उनमें सबसे अधिक उपयोगी यही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आर्यसमाज की एकमात्र शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा ही है। इसके दिये हुए प्रमाण-पत्रों का मान भी अपूर्व महत्ता रखता है और इस परीक्षा पर व्यय भी अधिक नहीं होता। आर्यसमाज के सैकड़ों विद्यालय हैं जिनमें लाखों विद्यार्थी पढ़ते हैं और उनमें से चालीस पचास हजार तो प्रतिवर्ष इन परीक्षाओं में बैठ सकते हैं। इनसे उन विद्यालयों के ऊपर से यह कलंक भी दूर हो सकता है कि यह विद्यायालय प्रचार के नाम में कुछ भी सहायक नहीं हो रहे हैं। मैं प्रयाग की दो संस्थाओं को जानता हूँ। एक महिला विद्यापीठ और दूसरी हिन्दी साहित्य सम्मेलन। यह दोनों संस्थायें बिना किसी भारी रकम के स्वयं ही स्वावलम्बी बन गईं। परीक्षाओं का व्यय तो शुल्क से चल सकता है केवल योजना की आवश्यकता है। आपको केवल परीक्षाओं का ही प्रबन्ध करना है। यह कोई कठिन काम नहीं है। भारी अपीलें करने की भी आवश्यकता नहीं है। यदि सार्वदेशिक सभा के मन्त्री और प्रधान थोड़ा सा भी प्रोत्साहन देंगे तो काम बहुत हो जायगा। समझ में नहीं आता कि इस उपेक्षा का क्या कारण है? जो काम सुगम हों उनको क्यों न किया जाय?

मुझे आशा है कि आगामी श्रावणी २३ तथा ३० अगस्त १९५१ पर होने वाली इन धार्मिक परीक्षाओं में अधिक से अधिक परीक्षार्थियों को सम्मिलित कराने का प्रयत्न आर्य जगत् की ओर से किया जायगा।

परीक्षा फार्म और शुल्क २५ जुलाई १९५१ तक 'आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम०, ए० सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, रायबरेली उत्तर प्रदेश के कार्यालय में प्रेषित कर देने चाहिए।

–गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए., प्रयाग

रचनात्मक चिन्तनः—

जनसम्पर्क बढ़ाना होगा

[श्री केदारलाल जी, मन्त्री आर्यसमाज सिकन्दराबाद]

आर्यसमाज की प्रगति में जो शैथिल्य आ रहा है विद्वान् और उत्साही लेखक महोदय ने उसके लिये जन-सम्पर्क का व्यवहारिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। आशा है आर्य बन्धु इस दिशा में उचित कदम उठाकर उपर्युक्त या ऐसी ही अन्य योजनाओं को मानव-कल्याण की भावना से अपनाने का प्रयत्न करेंगे।—सम्पादक

आज भी आर्यसमाज के स्टेज से बड़े-बड़े धार्मिक उपदेश होते हैं, बड़े विशाल भवन भी आर्यसमाजों के पास हैं। महर्षि दयानन्द के नाम से कालेज तथा पुत्री पाठशालाएं भी खुली हुई हैं, परन्तु हम देखते हैं कि मानव समाज उस रूप में उन्नत नहीं हो रहा। होना तो यह चाहिये था कि हमारी समाज का नाम सर्वश्रेष्ठ संस्था में गिना जाता। हमारे यहाँ आर्य कुमार सभा तथा महिला समाज भी कायम हैं परन्तु हमारे दैनिक सत्संगों साप्ताहिक अधिवेशनों तथा वार्षिक उत्सवों में केवल Old slutt ही अर्थात् वह प्रौढ़ या बूढ़े व्यक्ति ही पहुँच पाते हैं जो या तो Relire हो चुके होते हैं या यह समझते हैं कि धर्म लाभ का समय तो बुढ़ापा ही है, न तो महिलाएं ही उचित मात्रा में भाग लेती है और न ही नया खून अर्थात् बच्चे व ज्वान हम सहयोग प्रदान करते हैं। यदि कोई आते भी हैं तो वह पदों के लालच में पड़कर वास्तविक कमी की ओर ध्यान ही नहीं देते। हमारा प्रभाव जनता पर किस कारण नहीं होता। हमारे सदस्य क्यों नहीं बढ़ते क्या यह कभी आपने सोचा है या हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसका हल निकाला है। क्या प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसमाजों का कार्य केवल वार्षिक चुनाव तक ही सीमित है। मेरे विचार से इसके दो मुख्य कारण हो सकते हैं (१) या तो हम कर्मनिष्ठ नहीं है अतएव हमारा प्रचार इतना प्रबल नहीं है कि हमारी छाप दूसरों पर पड़े। (२) या फिर हमारी दल बन्दियाँ हमको उचित कार्य नहीं करने देती।

२० साल पहिले तो समाज की यह धाक थी कि यदि समाज को कोई भी व्यक्ति अदालत में गवाही के लिए चला जाता था तो मुकद्दमों में उसका बयान सत्य मान लिया जाता था परन्तु आज यह हालत है कि अदालत साफ कहती है कि भक्त जी में और महाशय जी में कोई अन्तर नहीं। यह अवस्था क्यों? शब्द तो वही परन्तु भावना का भेद। पहिले यदि किसी समाज के सदस्य से गवाही देने को कहा जाता था तो यह उत्तर होता था कि भाई 'बाल बच्चेदार' हूँ झूठ नहीं बोलूंगा परन्तु आज उत्तर होता है भाई 'बाल बच्चेदार' हूँ उन्हें भी पालना है ख्याल रखना जो कहलवाओगे कह दूँगा। समाज के नियम वही, कार्यक्रम वही परन्तु इतनी गिरावट क्यों? हमारे बच्चे हमारे साथ कार्यक्रम में तो शरीक न हों परन्तु सिनेमा देखना अधिक पसन्द करें क्यों? इसलिये कि हम स्वयं कर्मनिष्ठ नहीं हमारी हालत उस मास्टर जैसी हो रही है जो क्लास में स्वयं तो सिग्रेट पीता है परन्तु छात्रों को सिग्रेट न पीने का आदेश देता है?

वास्तव में आज हमारे सैद्धान्तिक व्यवहारिक जीवन में अन्तर बढ़ता जा रहा है। कभी-कभी तो हम लोक भय की उपेक्षा कर जाते हैं। यों तो मेरे पास अपने अनुभव इतने है जिससे मैं समझता हूँ कि हमारे अधिकारी केवल साप्ताहिक पर दैनिक कार्यक्रम को करा देना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। परन्तु कोई ठोस कार्य नहीं हो पाता जिससे समाज का हित हो और प्रतिष्ठा बढ़े। हम गीत तो गाते हैं "भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी तूने रोटी खाई क्या पास पड़ा हैं दुखिया कोई तूने मौज उड़ाई क्या?" परन्तु कार्य हम ऐसे करते हैं जिससे उपर्युक्त वाक्य भले नहीं खाते और दोष देते हैं हम या तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली को या फिर सरकार को वही मिसाल है कि 'फेल बद तो खुद करे लानत करे शैतान पर' स्वयं तो आचरणहीन बन बैठे और दोष देते हैं दूसरों को। स्वामी दयानन्द महाराज के आदेशों का पालन न कर निर्वाचन इत्यादि थड़ेबन्दियों में ही अपना अमूल्य समय नष्ट कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठते हैं। यदि हमने अपने प्रोग्राम को ठोस बनाकर जनता का सहयोग प्राप्त न किया तो मैं समझता हूँ कि हमारा नैतिक पतन इतना हो जाएगा कि हम केवल कागज पर ही रह जायेगा। जनता से सहयोग प्राप्त करने का एक उपाय मेरी समझ में आता है कि जन कल्याणार्थ आर्यसमाज के सदस्य नगर-नगर में कार्य करें जिसमें कोई व्यय तो होगा नहीं अपितु समाज की ओर जनता की सहानुभूति ही बढ़ेगी।

उपाय सहज हैं जो नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

१—अन्न पात्र योजना—प्रत्येक समाज का सदस्य अपने घर में एक घड़ा रखे उसमें एक चुटकी आटा प्रतिदिन डाले तथा ऐसा प्रबन्ध किया जावे कि जितने भी घड़े शहर में रखे जावें उनका आटा रोजाना नम्बर वार सदस्यों द्वारा ही एकत्रित किया जावे और एकत्रित होने पर असमर्थ परिवारों में वितरण कर दिया जावे राशनकार्ड द्वारा अथवा जैसी वहाँ की परिस्थिति हो।

२—पैसा योजना—प्रत्येक सदस्य अपने परिवार में गोलक रखें उसमें केवल)। प्रतिदिन डाले और साप्ताहिक अधिवेशन में उस जमा हुये धन को समाज में लाकर दें वह धन निस्सहायों की सहायता में समाज की ओर से वितरण किया जावे। इस धन से बीमारों को दूध आदि की सहायता भी दी जा सकती है।

३—वस्त्र योजना—इसके अर्न्तगत कपड़ा नया या पुराना आर्य परिवारों से एकत्रित कर अन्य व्यक्तियों में वितरण किया जावे।

४—शिष्टाचार योजना—इसके अर्न्तगत स्थानीय समाज की ओर से जगह-जगह छपे बोर्ड लगाकर जनता से प्रार्थना की जावे कि केला इत्यादि खाकर आम रास्ते पर छिलके न डालें इसके साथ-साथ प्रत्येक समाज का सदस्य यह प्रण लें कि यदि वह सड़क पर कोई छिलका पड़ा देखेगा तुरन्त एक ओर सरका देगा तो बड़ा कार्य समाज सेवा का बिना पैसा खर्च किये ही हो जावेगा। ऐसे ही अन्य शिष्टाचारों का व्यवहार हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।

ऐसी ही योजनाओं के अन्तर्गत इस नगर में कार्य प्रारम्भ किया गया। १-११-२० से जो अभी तक चालू है। सभा के अन्तरंग सदस्य श्री शिवलाल जी वर्मा बुलन्दशहर निवासी को इस योजना का पूरा ज्ञान है। इसके बारे में जो Litirature भी समय-समय पर प्रकाशित किया जाता रहा है।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि प्रत्येक समाज ऐसे जनहित कार्य कर जनता का सहयोग प्राप्त करे जो स्वतः ही तथा शीघ्र ही प्राप्त हो जावेगा। यदि योजनाएं निष्कपट तथा निस्वार्थ भाव से चालू की जायं और केवल अपनो को ही लाभ पहुँचाने की नीति न बरती जाय तो सफलता अवश्यम्भावी है।

इस दिशा में मैं अपनी सेवायें आर्यसमाज के लिए प्रस्तुत करता हूँ यदि समाजें या सभायें इस कार्यक्रम में रुचि दिखावें तो मैं यथा शक्ति लेखनी, वाणी और समयदान द्वारा सहयोग कर सकूंगा। आशा है जन सम्पर्क के प्रति उदासीनता को समाप्त कर हमें जौविक और कर्मठ बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

★

दादा लेखराज और ब्रह्मकुमारियाँ

श्री ला० रामगोपाल शालवाले का वक्तव्य

सिन्ध की ओम मण्डली वाले दादा लेखराज और ब्रह्मकुमारियों के सम्बन्ध में प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता रामगोपाल शालवाले ने निम्न वक्तव्य प्रसारित किया है—

दिल्ली के कमलानगर में दादा लेखराज और उनके द्वारा ब्रह्मकुमारी आन्दोलन से सम्बन्धित मेरे भाषणों पर दादा लेखराज के चेले-चेलियों में खलबली मच गई है। मेरे पास धमकी भरे अनेक पत्र, तार और लेख आ रहे हैं, जिनमें मुझसे क्षमा मांगने की मांग और मुझ पर मुकदमा चलाने की धमकी दी गई है।

मैं सम्बन्धित व्यक्तियों को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैंने अपने व्याख्यानों में दादा लेखराज, उनकी मण्डली तथा उनके चेले-चेलियों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था, वह सर्वथा ठीक है। मेरे पास पूरा-पूरा रिकार्ड है। मैं शीघ्र ही इस सम्बन्ध में एक पुस्तिका प्रकाशित कर रहा हूँ, जिसमें इन तथ्यों पर पूरा-पूरा प्रकाश डाला जायेगा। सम्बन्धित महानुभाव धैर्य से मेरे लेख की प्रतीक्षा करें। आर्यसमाज इस पाखण्ड का भण्डा फोड़कर शान्त होगा अब अधिक समय तक यह पोपलीला नहीं चल सकेगी।

[ओम मण्डली के सम्बन्ध में जो भी जानकारी हमारे पाठक रखते हों वे तथा समाजों के कार्यकर्त्ता अपनी सूचनायें मित्र को भेजने की कृपा करें जिससे नग्न सत्य का उद्घाटन करना सम्भव हो सके। —सम्पादक]

संस्कृत शिक्षा-समस्या—

संस्कृत का चिन्तनीय भविष्य

संस्कृत शिक्षा का गिरता हुआ स्तर

(ले०—श्री पं० शिवपूजन जी शास्त्री, मुख्याधिष्ठाता महाविद्यालय, किरठल)

प्रत्येक भाषा की अपनी शिक्षण पद्धति होती है जब तक संस्कृत की पूर्व पठन-पाठन प्रणाली रही उसका विकास और महत्त्व बना रहा। यह स्थिति विदेशी राज्य होने पर भी। पर आज हम स्वतन्त्र हैं, और संस्कृत की उन्नति को लेकर राष्ट्रपति से लेकर साधारण नागरिक तक संस्कृत के सम्बन्ध में चिन्तित है, परन्तु केवल चिन्ता से ही क्या होता है। संस्कृत के प्रति सामाजिक एवं प्रशासनिक उपेक्षा भावना ने संस्कृत की उन्नति में बाधा पहुँचाई है। वाराणसी परीक्षा परिणामों का सिंहावलोकन करते हुए विद्वान लेखक ने जो चिन्ता व्यक्त की है उसे गम्भीरता पूर्वक ग्रहण किया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री और शिक्षा मन्त्री व अन्य शिक्षा शास्त्रियों को इस दिशा में विशेष ध्यान देना चाहिए।

—सम्पादक

वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी का परीक्षा परिणाम अभी प्रकाशित हुआ है। परिणाम प्राय: सम्पूर्ण कक्षाओं का ही सन्तोषजनक नहीं है, किन्तु प्रथमा कक्षा, (जो की जूनियर हाई स्कूल के समकक्ष मानी गई है) का परिणाम इतना गिर गया है कि जिसे देख कर संस्कृत पाठशाला एवं विद्यालयों का भविष्य अन्धकारमय तथा छात्रों में निराशा को वातावरण छाया हुआ है। इतना असफल परिणाम तो तो सम्भवतः किसी भी शिक्षा बोर्ड के जूनियर कक्षाओं का नहीं होगा।

प्रकाशित परिणाम के अनुसार ज्ञात हुआ है कि प्रथमा के कुल प्रविष्ट ५५५८ छात्रों में से केवल १०८८ छात्र उत्तीर्ण हैं। इन छात्रों को ही ६ वर्ष के परचात् सन् १९६८ ई० में उक्त विश्वविद्यालय की अन्तिम उपाधि "आचार्य" लेनी है परिस्थितिवश इनमें से अधिक छात्र संस्कृत पाठशालाओं को छोड़कर अंग्रेजी स्कूलों में जाकर नवीं कक्षा में प्रविष्ट हो जायेंगे। यदि शेष १२०० भी पाठशालाओं है रह गये तो सम्भवतः उत्तर प्रदेश की १४०० पाठशालाओं में १ छात्र भी औसत में एक पाठशाला में नहीं रहेगा। आगे मध्यमादि परीक्षाओं में इनका परिणाम यदि ५ प्रतिशत भी माना जाय, तो क्रमशः आचार्य तक नव वर्षों में दो तीन ही छात्र शेष रह जावेंगे जो कि आचार्य की उपाधि प्राप्त कर सकेंगे इस प्रकार ह्रासोन्मुख भविष्य देखकर संस्कृत के संरक्षक, अध्यापक एवं छात्र बेचैन हो रहे हैं।

न जाने ऐसा प्रगति का अभाव हमारे ही इस विश्वविद्यालय में क्यों विश्वविद्यालय में क्यों है? जबकि अन्य विश्वविद्यालय दिन दूने रात चौगुने प्रगति पथ पर आसीन हैं। सहस्त्रों की संख्या में एक से एक योग्य स्नातक देश को देते हैं। अभी थोड़े ही दिनों का स्थापित गोरखपुर विश्वविद्यालय भी इससे बहुत आगे निकल चुका है। किंतु समस्त विश्व का प्रधान संस्कृत शिक्षण केन्द्र का भी, एवं उसका संस्कृत विश्वविद्यालय, जिनमें करोड़ों लाखों की तो बात ही क्या, कुछ हजार ही छात्र परीक्षा में बैठते है और ३० प्रतिशत परिणाम प्राप्त करते हैं। महान् खेद एवं चिन्ता का विषय है।

इस दुष्परिणाम के कारण का न जाने क्या मूल है? छात्र एवं अध्यापक ही इसके दोषी हैं। अथवा पाठशालाओ में अध्यापनाध्ययन की समुचित व्यवस्था नहीं है?! अथवा इस शिक्षा का बाजार में कोई मूल्य ही नहीं? जिससे इसके प्रति सबकी अरुचि हो रही है।

इस स्थिति में संस्कृत पाठशालाओं का भविष्य डांवाडोल होता जा रहा है। प्रथम तो इधर जनता की रुचि भी विशेष नहीं। हाई स्कूलों एवं कालेजों की मंहगी पढ़ाई से असमर्थ होकर कुछ छात्र इस दिशा में आ जाते थे, किन्तु स्कूलों में छठी से फीस माफ हो जाने के परचात् संस्कृत पाठशालाओं में नये छात्रों का प्रवेश शनै शनैः न्यून होता जा रहा है। इने गिने कुछ छात्र प्रथमा तक रहते थे, वे भी अब प्रथमा के परचात् नाइंथ में प्रविष्ट हो जाते हैं। क्योंकि पाठशालाओं में आगे पढ़ने के लिए उनके लिये कोई आकर्षण की वस्तु नहीं, जिससे वे शास्त्री अथवा आचार्य कक्षा तक डटे रहें। उनके लिये न तो कोई व्यवस्थित राजकीय छात्रवृत्ति है। और नहीं इन संस्कृत के स्नातकों के लिए राज की ओर से किसी विभाग में रिजर्व सीट ही है जिसके कोर्स से अध्ययन करते रहें।

गत कई वर्षों से ही संस्कृत पाठशालाओं में छात्रों की कमी होती जा रही है। कई पाठशालायें तो ऐसी भी हैं जिनमें प्रायः नवीन छात्रों का प्रवेश ही नहीं हो पाया। यदि इन पाठशालाओं की यही दशा रही तो उस विश्वविद्यालय की क्या दशा होगी।

भले ही संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना हो रही है, सरकारी अनुदान बढ़ाये जा रहे है, किन्तु यह तो निःसंदेह कहना पड़ेगा कि वर्तमान समय में संस्कृत का अध्यापनाध्ययन नितान्त असन्तोषजनक है। इने गिने किन्हीं राजकीय विद्यालयों के अध्यापक तथा प्रोफेसर भले ही कुछ लाभ उठा लें, ग्रामीण क्षेत्रों में संस्कृत का अक्षुण्ण प्रचार करने वाली पाठशालायें और विद्यालय मरणासन्न होते जा रहे हैं।

अतः संस्कृत की रक्षा के लिये विश्वविद्यालय के अधिकारियों, संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वानों, निरीक्षक एवं परीक्षागण को न्याय एवं दयालुता की तिलांजलि न देते हुये छात्रों के भविष्य पर पुनः विचार करना चाहिए।

साथ ही सरकार को भी संस्कृत भाषा की रक्षा के लिये अत्यन्त ठोस कदम उठाना चाहिये। केवल संस्कृत आयोग की स्थापना मात्र से ही कार्य नहीं हो सकेगा। संस्कृत के समाप्त हो जाने पर भारतीय संस्कृति की शाखायें सूख जायेंगी एवं बाद में फिर संस्कृत का आयोग क्या, संस्कृत का महाकोष भी इसे हरा-भरा करने में असमर्थ हो जावेगा। तथा देखते देखते ही यह अमूल्य निधि आँखों से ओझल हो जावेगी। ★

सहकारी समितियां आपकी सहायता करेंगी

[श्री पीताम्बर]

सम्भवतः यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि बिना उत्पादन में वृद्धि किए आर्थिक सम्पन्नता की आशा करना व्यर्थ है किन्तु यह भी सच है कि उत्पादन में कमी का एक बहुत बड़ा कारण आर्थिक अभाव रहता है। अपने देश के गांवों में रहने वाली जनता गरीब है, अर्थाभाव की कठिनाइयों में उलझी रहती है। और इसीलिये बड़ी सीमा तक बेबस है। ऐसी स्थिति में यह उम्मीद नहीं की जानी चाहिए कि गांवों में रहने वाले लोग बिना किसी प्रकार की आर्थिक सहायता के अपने काम धन्धे में पूरी सफलता प्राप्त कर लेंगे। अधिकांश ग्रामीण जनता खेती-बाड़ी के सहारे अपनी जीविका चलाती है और यद्यपि खेती करने के लिए उतने पैसों की जरूरत नहीं पड़ती जितनी किसी कल-कारखाने की स्थापना करने अथवा उसका संचालन करने में पड़ती है, फिर भी उन्नत प्रकार के हल बैल खरीदने, कुएं खोदने, हल अच्छे किस्म के बीज प्राप्त करने अपने खेतों में सिंचाई की समुचित सुविधाएं सुलभ करने आदि में पैसा लगता ही है। और यह क्षोभ की बात थी कि कुछ समय पूर्व तक इस देश में विदेशी शासन-यन्त्र के कुप्रभाव के फलस्वरूप तथा सामंतशाही सामाजिक व्यवस्था के अत्याचारों के कारण सामान्य किसान परिवार केवल अपने श्रम और साधनों से इतनी पूंजी भी एकत्र नहीं कर पाता था जिससे उसके खेत की नितान्त आवश्यकताएं पूरी की जा सकें। इसका भयानक परिणाम यह हुआ कि किसानों के परिवार के परिवार अनैतिक अन्यायी महाजनों तथा साहूकारों से ऋण लेकर उनके चंगुल में फँस गये।

स्वतंत्रता मिल जाने के बाद देश में और प्रदेशों में जनता की सरकारों ने कार्यभार ग्रहण किया और उन्होंने अविलम्ब इन कठिनाइयों की तरफ ध्यान दिया। जमींदारी प्रथा का उन्मूलन इस दिशा में बड़ा महत्वपूर्ण काम था किन्तु इतने ही से तो समस्या का पूरा हल सम्भव नहीं था। अतः ऐसी समितियों की स्थापना को बढ़ावा दिया जाने लगा जो किसानों को उनकी जरूरतों के अनुसार रुपया दे सकें। इन समितियों के सदस्य गांव के ही लोग होते हैं जिन्हें अपने गांव की समस्याओं का ज्ञान होता है। यही कारण है कि इन समितियों को सहकारी समितियाँ कहा जाता है। इनका संघठन पूर्णतः जन-तान्त्रिक सिद्धान्तों के आधार पर होता है। इसलिए किसी प्रकार के अनाचार अथवा अन्याय की आशंका कम रहती है। ऐसा इसलिए भी है कि इनकी सभी कार्रवाइयां निश्चित विधि के अनुरूप ही सचालित होती हैं और उनमें किसी प्रकार की स्वेच्छाचारिता की गुंजाइश कम रहती है। सरकार संपूर्ण सहकारी ढांचे में सुधार करने के उद्देश्य से समय-समय पर सुझाव देती रहती है तथा अनेक निश्चय भी करती है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने अभी हाल में समूचे राज्य में सहकारिता को ढांचे में आमूल परिवर्तन करने का निश्चय किया है। नयी सहकारी ऋण योजना का उद्देश्य प्रत्येक गांव के लिए सहकारी समिति की व्यवस्था करना है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों के ८० प्रतिशत परिवारों को सहकारिता की परिधि में लाया जा सकेगा। लोगों को दी जाने वाली ऋण की धनराशि प्रतिवर्ष चार करोड़ से बढ़ाकर ४० करोड़ कर दी जायगी। प्रारम्भिक समितियों के सदस्यों के लिए ब्याज की दर भी घटा दी जायगी। सहायता के रूप में सरकार इन समितियों को डेढ़ करोड़ रुपया देगी। अभी तक राज्य में ४४ हजार गांवों के लिए ग्रामीण प्रारम्भिक ऋण समितियों का प्रबन्ध किया जा चुका है किन्तु अभी ६६ हजार गांवों में इस प्रकार की समितियों की स्थापना का काम शेष है। इनमें से कुछ गांवों के लिए बड़ी सहकारी समितियों और बाकी के लिए छोटी समितियों की व्यवस्था की जायगी। अनुमान है कि बड़ी सहकारी समितियों की संख्या लगभग १२०० होगी।

राज्य सरकार की इस योजना का परिणाम यह होगा कि उत्तर प्रदेश के किसानों को अपने काम धन्धों को सुचारु रूप से चलाने में सहायता मिलेगी। महाजनी ऋण से मुक्ति मिलेगी, आर्थिक कठिनाइयों में कमी होगी और उसी अनुपात में उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। प्रत्येक नयी सहकारी ऋण समिति की स्थापना ग्रामीण समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। भारतीय किसान अधिक पढ़ा-लिखा न होने पर भी चतुर सुजान है। अतः कोई कारण नहीं कि वह उस राह पर चलने में किसी झिझक का अनुभव करे जिस पर चलने से उसे आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त होगा।

भारी रियायत

श्रावणी से जन्माष्टमी वेदप्रचार सप्ताह पर

प्रचारार्थ बांटने के लिए सभा की ओर से निम्नलिखित ग्रन्थ अल्प मूल्य में खरीदिये

१—आर्यों का प्राचीन गौरव—लेखक पं० कालीचरण मौलवी आलम फाजिल मूल्य ।=)

इस पुस्तक में इस विषय का वर्णन है कि समस्त संसार में जितने द्वीप-द्वीपान्तर और देश-देशान्तर बसे हैं उनके वर्तमान नाम कैसे पड़े हैं। प्राचीन असली नाम क्या थे संसार की सब जातियाँ किस प्रकार उत्पन्न हुई हैं अत्यन्त उपादेय ग्रंथ है।

२—दण्डी विरजानन्द चरित्र—स्व० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय कृत मूल्य ॥-)

दण्डी विरजानन्द जी का यह प्रामाणिक जीवन चरित्र महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन चरित्र के समान पूज्य और आदरणीय है। प्रत्येक आर्य समाजी और आर्यसमाज में इसकी एक-एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए।

३—उपनिषद्रहस्य—पं० दामोदर शर्मा कृत मूल्य १)

यह ग्रन्थ आर्यसमाज के एक पुराने विद्वान् का लिखा हुआ है। एक-एक विषय को लेकर सब उपनिषदों पर विचार किया है। उपनिषदो के समझने में यह ग्रन्थ अच्छा उपयोगी है।

४—सूर्यसप्ताश्व दर्शन—लेखक पं० गंगाप्रसाद चीफ जज मूल्य -)

इस पुस्तक में वेद मन्त्रों को लेकर दर्शाया गया है कि सूर्य के रथ के जो सात घोड़े बताये जाते हैं उनका वास्तविक अर्थ क्या है।

५—ज्योतिश्चन्द्रिका—लेखक गंगाप्रसाद चीफ जज मूल्य ।)

इस ग्रन्थ में सूर्य ग्रहण चन्द्र ग्रहण आदि अनेक विषयों पर ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थों और वेद मन्त्रों को लेकर विस्तृत विवेचन है। फलित ज्योतिष के सम्बन्ध उसके विचार दिखाकर चीफ जज साहब ने उस फलित ज्योतिष पर बड़ी सुन्दर मीमांसा लिखी है। यह ग्रन्थ उन शिक्षित व्यक्तियों तक पहुँचाना चाहिये जो शिक्षित होकर भी पौराणिक बातों पर विश्वास रखते हैं।

कुछ ग्रन्थ वेद मन्त्रों के स्वाध्याय के लिए

६—वेदसुधा—लेखक पं० घासीराम जी मूल्य ।)

इसमें चुने हुए वेद मन्त्र और उनका आर्य भाषानुवाद है।

७—अथर्ववेद का रहस्य—लेखक स्वामी ब्रह्ममुनि जी मूल्य ≋)

अथर्व वेद के कुछ सूक्तों की मार्मिक व्याख्या है।

८—पैप्पलाद संहिता मन्त्र संग्रह—लेखक पं० रामदत्त शुक्ल और वासुदेव शरण अग्रवाल मूल्य ≋)

इस ग्रन्थ में अथर्व वेद की पैप्पलाद शाखा के कुछ मन्त्र और उनका आर्य भाषानुवाद है। मन्त्रों का संग्रह अच्छा है।

९—उपर्युक्त ग्रन्थ अंग्रेजी अनुवाद सहित मूल्य ≋)

नोट—ऊपर लिखे चारों ग्रन्थ उन लोगों में बांटिये जिनमें आप वेद की श्रद्धा पैदा करना चाहते जो पूरा वेद पढ़ते नहीं पढ़ेंगे कुछ अच्छे-अच्छे मन्त्रों का आर्य भाषानुवाद और अंग्रेजी अनुवाद उन लोगों के हाथों में पहुँचाइए।

कुछ अंग्रेजी भाषा के ग्रन्थ

१०—ईशोपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद मूल्य ।)

यह महात्मा नारायण स्वामीजी के ईशोपनिषद् के आर्य भाषानुवाद का अंग्रेजी अनुवाद पं० घासीराम जी का किया हुआ है।

११—Sanskrit a living Language मूल्य =)

यह ग्रन्थ श्यामजी कृष्ण वर्मा का लिखा हुआ है। किसी भी व्यक्ति पर संस्कृत भाषा का महत्त्व बैठाने के लिए अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

१२—Agni Hotra—(अग्नि होत्र) लेखक प्रो० ताराचन्द एम० ए०

यज्ञ के विषय को समझने के लिये अंग्रेजी भाषा में यह बड़ा उपयोगी ग्रन्थ लिखा गया है।

१३—Problem of Life—लेखक पं० गंगाप्रसाद चीफ जज मूल्य -)

कठ उपनिषद् के एक प्रकरण का अंग्रेजी अनुवाद है।

१४—Problem of Universe—ले० गंगाप्रसाद जी चीफ जज मू० -)

इस संसार की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है इस विषय पर दूसरे मतों के सिद्धान्तों को दिखाकर वेद मन्त्रों के आधार पर सत्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।

१५—A few hints in favour of A Vegetarian diet—लेखक प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० मेरठ कालिज मूल्य -)

आज मांस का प्रचार शिक्षित समुदाय में भी बढ़ रहा है इस ग्रन्थ का प्रचार [illegible] सकें।

१६—Indian influence on early western thought—लेखक शिशिरकुमार मित्र मूल्य -)

नोट—ऊपर लिखे सात ट्रैक्ट और पैप्पलाद संहिता मन्त्र संग्रह का अंग्रेजी अनुवाद अंग्रेजी पढ़े लोगों में बांटें प्रचार का यह बहुत उत्तम साधन है।

कुछ विशेष ग्रन्थ

१७—वैदिक निघण्टु—यह वेद का प्राचीन कोष यास्क मुनि का रचा है। श्री भास्कर राय दीक्षित ने उस को श्लोक बद्ध कर दिया है। वे श्लोक भी इसमें हैं और वेद के शब्दों का अर्थ देखने के लिये शब्द सूची भी साथ में दी हुई है। मूल्य केवल ।=)

१८—गायत्री उपनिषद्—अनुवादक प० रामदत्त शुक्ल और श्री वासुदेव शरण एम० ए० मूल्य ॥)

गोपथ ब्राह्मण तथा अन्य ब्राह्मण ग्रन्थों में जो गायत्री का वर्णन है, उन रहस्यों को इस अनुवाद में समझाया गया है। गायत्री के उपासकों को यह ग्रन्थ पढ़ने योग्य है।

१९—शारीरिकोपनिषद्—रामदत्त शुक्ल कृत भाषानुवाद मूल्य -)

२०—आत्मोपनिषद्— ,, ,, मूल्य -)

२१—ओङ्कार दर्शन। लेखक—स्वामी अमृतानन्द सरस्वती मूल्य ॥)

यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है। ओ३म् के सम्बन्ध में शास्त्रीय विवेचन इसमें है।

२२—आर्य पर्व परिचय। लेखक प० शिवदयालु जी मूल्य =)

इस छोटे से ग्रन्थ में आर्य पर्वों का पूर्ण वर्णन है। यह ग्रन्थ प्रचारार्थ हिन्दुओं को उनके त्योहारों का परिचय कराने के लिये बांटने योग्य है।

२३—वैदिक साहित्य और भौतिक विज्ञान। लेखक—श्री ब्रह्मानन्द जी आयुर्वेद शिरोमणि आयुर्वेदाचार्य। मूल्य ।-)

आजकल की साइन्स का वैदिक ग्रन्थो में विस्तृत विवेचन इस ग्रन्थ में दिखाया गया है।

(ईसाइयों के सम्बन्ध में ग्रन्थ)

२४—कैथालिक ईसाई पन्थ का नग्न चित्र, मूल्य =)

२५—गोरे पादरियों के काले कारनामे, मूल्य -)

२६—ईसामसीह और कुमारी मरियम, मूल्य -)

२६—Christ Versus Christianity मूल्य -)

नोट—ऊपर लिखे ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलेगा।

नीचे लिखे ग्रन्थ ५०) प्रतिशत कमीशन पर उनको दे दिये जायेंगे जो बांटने के लिये खरीदेंगे।

१—मनुष्य समाज, मूल्य -)

२—जीवनोद्देश्य मूल्य ॥)

३—सत्यनारायण व्रत कथा, मूल्य ।)

४—मानसिक चिकित्सा, मूल्य ॥)

५—हिमालय की मनोरंजक यात्रा, मूल्य ।)

६—महर्षि दयानन्द, मूल्य ।)

७—सिक्खों के प्रथम गुरुनानक जी की जीवनी, मूल्य -)

८—अविद्या के तीन अङ्ग, मूल्य -)

९—मद्यपान महापाप है, मूल्य ॥)

१०—कलावती उपन्यास, [यह शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास है] मूल्य ।=)

११—इञ्जील का इतिहास, मूल्य १)

१२—श्री ज्ञान दर्पण, मूल्य ॥)

१३—नवसस्येष्टियज्ञ (होली के यज्ञ के मन्त्रों का आर्यभाषा और अंग्रेजी अनुवाद) मूल्य =)

१४—मन की लहर (विस्मिल की कविताओं का संग्रह) मूल्य ॥।)

१५—आर्यमत मार्तण्ड नाटक, मूल्य ।-)

पता—आचार्य विश्वश्रवाः
अधिष्ठाता घासीराम प्रकाशन विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

उत्तर-प्रदेश में वेद-प्रचार सप्ताह

(१८ अगस्त से २६ अगस्त ७१ तक)

उत्तर प्रदेश के सर्व आर्यसमाजों एवं उपप्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि "वेद-प्रचार-सप्ताह" इस वर्ष आवण शु० १२ सं० २०१६ वि० से भाद्रपद कृ० २ सं० २०१६ वि० तदनुसार दि० १८ अगस्त से २६ अगस्त १९७१ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है। सप्ताह का कार्यक्रम आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जायगा। आर्य-समाजों से प्रार्थना है कि सप्ताह को उत्साहपूर्वक मनाने का आयोजन करने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा सभा-मंत्री

ग्राम जंगेठी जि० मेरठ में आर्य सम्मेलन एवं महिला सम्मेलन की धूम

दि० २६ से २८ जून तक जि० मेरठ के ग्राम जंगेठी में जो सधना रोड पर स्थित है जिला आर्योपसभा मेरठ की ओर से एक वृहद् आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें वहाँ की ग्रामीण जनता ने सहस्रों की संख्या में में भाग लिया तथा सम्मेलन को सफल बनाया। इस सम्मेलन में विशे-षता यह थी कि वहाँ अभी हाल ही में ईसाइयों ने एक विशाल गिरजाघर बना कर उसके क्षेत्र के हिन्दुओं और विशेष कर हरिजन भाइयों को बहुत प्रभावित किया था और अपने मत के प्रचार का जाल बिछाकर भोले-भाले ग्रामीणों को ठगना चाहते थे। इस सम्मेलन से उनका सारा प्रभाव नष्ट गया। वहाँ के लोगों ने आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिये भूमि तथा पुष्कल मात्रा में धन दान में दिया। दि० २७ जून को एक महिला सम्मेलन श्री शकुन्तला जी गोयल उप-प्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सारे उत्सव में श्री बलवीरसिंह जी वेधड़क का अपने प्रचार द्वारा सह-योग उल्लेखनीय है।

आवश्यकता

आर्यसमाज अमलहा की संस्कृत पाठशाला के लिए एक शास्त्री अध्यापक की आवश्यकता है, जो कम से कम मध्यमा से उत्तीर्ण हो। हाईस्कूल या अंग्रेजी सहित मध्यमोत्तीर्ण सज्जनों को विशेषता दी जावेगी। प्रार्थी निम्न पते पर प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजने की कृपा करें।

पता—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
द्वारा सतीशचन्द्र शास्त्री साहित्यरत्न
मुहल्ला प्रेमनगर, बरेली

विदेश जाने वाले आर्योप-देशक सिंगापुर रुक कर जायं

आर्यसमाज सिंगापुर के मन्त्री जी चाहते हैं कि सिंगापुर नगर से होकर विदेश में प्रचारार्थ आर्य विद्वान् और उपदेशक महानुभाव आर्यसमाज सिंगा-पुर उतर कर अपने उपदेशों से वहाँ की जनता और आर्यसमाज को उपकृत किया करें।

आशा है आर्य विद्वान् और उपदेशक महानुभाव आर्यसमाज सिंगापुर की इस इच्छा का समुचित आदर करके उसकी पूर्ति का यत्न किया करेंगे।

—रघुवीरसिंह शास्त्री मन्त्री
सार्वदेशिक सभा देहली

प्रचार-समाचार—

आर्यसमाज के बिलोनिया (आसाम) सेवा-केन्द्र को भारत सरकार की सहायता

बिलोनिया सेवा केन्द्र, त्रिपुरा (भारतवर्ष) में विद्यालय तथा चिकि-त्सालय भवन निर्माण के लिए भारत सरकार की ओर से साढ़े २७ हजार रुपये की सहायता आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम को प्राप्त हुई। भवन निर्माण कार्य को आरम्भ करने के लिए सभा के मंत्री श्री बटकृष्ण वर्मन ने गत १७-६-७१ को बिलोनिया के लिए हवाई जहाज से प्रस्थान किया। हवाई अड्डे पर उनकी विदाई के लिए सभा के अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी उप-स्थित थे।

—बकेवर (इटावा) में श्री स्वामी ओमानंद जी, देवानंदजी, श्री शिवप्रताप जी की वेद कथा रामरतन आर्य के घर हुई। कथा से प्रभावित होकर श्री अम्बिका प्रसाद जी त्रिपाठी तथा माता राधादेवी जी ने मूर्ति पूजा छोड़ दी।

—सिकन्दराबाद आर्यसमाज में २२ से २८ जून तक श्री स्वामी सुधानंद जी महाराज की वेदोपनिषद् कथा हुई। इस समाज में नियमित रूप से दोनों समय दैनिक सत्संग होता है। श्री चन्द्रसिंह जी पुरोहित १२ वर्ष तक बालकों को शिष्टाचार एवं धार्मिक शिक्षा देते हैं। १८ बच्चे नियमित रूप से आ रहे हैं। रात्रि में कथा का कार्यक्रम चलता है। प्रचार और संस्कृत शिक्षा के लिए समाज को एक सन्यासी की आवश्यकता है।

—मिर्जापुर में २५ से ३१ मई तक आर्यवीर दल शिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। श्री काशीनाथ शास्त्री, श्री अवधबिहारी खन्ना, और श्री केशव सिंह ने सराहनीय कार्य किया। २५वीर आये और १७५) व्यय हुआ।

—सुन्दरपुर आर्यसमाज की ओर से १७ जून को श्री स्वामी विवेकानन्दजी, श्री पंडित शिवदयालु जी मेरठ तथा श्री तेजसिंह जी प्रधान जिलोपसभा आदि महानुभावों के व्याख्यान कराये गये। जनता पर उत्तम प्रभाव पड़ा।

शोक-समाचार

आर्य जगत् में यह समाचार शोक के साथ सुना जायगा कि कानपुर मेस्टन रोड आर्यसमाज के भूतपूर्व प्रधान स्व० पं० पूर्णचन्द्र शर्मा के द्वितीय पुत्र पं० कृष्णचंद्र दीक्षित का स्वर्गवास २ जुलाई को उनके निवास-स्थान गोविन्दनगर में होगया। श्री दीक्षित जी ने कानपुर के डी० ए० वी० कालेज और गुरुकुल कांगड़ी के वर्तमान भवनों को बनवाने में बड़ा भारी सहयोग दिया था। इस अवसर पर हम उनके विशाल परिवार जिसमें पं० चन्द्रकिशोर दीक्षित, पं० ब्रह्मदत्त दीक्षित एम० एस० ए०, पं० सतीशचन्द्र दीक्षित आदि हैं, से हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं और प्रभु से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं। —ब्रह्मदत्त स्नातक
कसिया रोड गोरखपुर

आचार्य विश्वश्रवाः जी का पता

आचार्य विश्वश्रवा जी से पत्र व्यवहार अब वेद मन्दिर बरेली के पते पर न करके (सार्वदेशिक सभा राम लीला मैदान नई देहली १) इस पते पर करना चाहिये।

देहली में ईसाई प्रचार निरोध कार्य को व्यावहारिक रूप दिया जायगा

स्वामी अभेदानन्द जी महाराज द्वारा नेतृत्व

दि० ४-७-५६ को सायंकाल ५ बजे से दयानन्द भवन दिल्ली में दिल्ली प्रदेश के आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों की एक बड़ी सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में श्रीयुत स्वामी अभेदानन्द जी महाराज भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में हुई। प्राय सभी सज्जन इस बात में सहमत थे कि दिल्ली प्रदेश में सभी के सहयोग से सार्वदेशिक सभा की देख रेख और मार्ग प्रदर्शन में ईसाई प्रचार निरोध के रचनात्मक कार्य का खूब विस्तार किया जाय और कार्य का ऐसा नमूना प्रस्तुत किया जाय जो दिल्ली में आर्यसमाज की जीवन-ज्योति के अनुरूप और समस्त भारत के लिए अनुकरणीय हो। सभा में इस कार्य को आयोजन को सफल बनाने के लिए बड़ा उत्साह था। कई आर्यसमाजों और महानुभावों ने बड़ी बड़ी राशि की आर्थिक सहायता प्रदान की तथा वचन दिये। सभा में पारित प्रस्ताव इस प्रकार है —

१—दिल्ली प्रदेश में ईसाई प्रचार निरोध का कार्य रचनात्मक रूप से चलाया जाय।

२—प्रदेश में ईसाई प्रचार निरोध का कार्य सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में ही किया जाय। इसके लिये सभी का सहयोग लेने का यत्न किया जाय।

३—सभी समाजें इस कार्य के लिए अधिकाधिक धन सार्वदेशिक सभा को भेजने का आयोजन करें।

—रघुवीरसिंह शास्त्री
सभा मन्त्री

अछूतों के हेतु धन प्राप्त

२१) नैनीताल आर्यसमाज द्वारा
११) श्रीमती [illegible]देवी जी
५) " नारायणदेवी जी
२) " शान्तादेवी जी कोचर
२) " कौशल्या देवी जी
२) " मायादेवी जी
२) " सुशीला देवी जी
५) श्री मुन्नीलालजी भाटिया
५) " बालेलाल जी कंसल
५) " शंकरलाल जी
५) " शान्तिस्वरूप जी सक्सेना
५) " देवराजपुरी जी
२) " सेवारामजी
२१) आर्यसमाज काशीपुर (नैनीताल)
२१) आर्यसमाज अल्मोड़ा

—सभा मन्त्री

—आर्यसमाज सरधना के प्रधान के परिजन श्रीयुत, समाज के उपदेशक श्री सत्यपाल शास्त्री के माननीय पिता का स्वर्गवास हो गया। इससे समाज में बड़ा शोक मनाया गया।

आवश्यकता

एक २१ वर्षीय, एफ०ए० फेल गौर वर्ण, सुशील ब्राह्मण कुलोत्पन्न गृह कार्यों में दक्ष आर्य कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है।

सोहनलाल आर्य १४१ सुख सदन
रातानाडा, जोधपुर

आवश्यकता है

आर्यसमाज बिजनौर को एक लगनशील विद्वान् की। किसी भी गुरुकुल के शास्त्री अथवा स्नातक को प्राथमिकता दी जायगी।

१—छात्रों को संस्कृत की परीक्षाओं की तैयारी करा सकें।

२—वैदिक सिद्धान्तों पर प्रभावशाली भाषण दे सकें।

३—समीप के ग्रामों में प्रचार करके नवीन समाजों की स्थापना तथा प्राचीन में जागृति कर सकें।

४—संस्कारों को विधिवत् व्याख्या सहित करा सकें।

५—आवश्यकता पड़ने पर अन्य मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ कर सकें।

पता—लक्ष्मीनारायण उपाध्याय
मन्त्री आर्यसमाज बिजनौर

धर्मवीर ग्रन्थमाला

अमृतमय उपदेश

यह पुस्तक भारत के भव्य भाल राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी को भेंट की गई है। इस अत्यन्त शिक्षाप्रद पुस्तक में १५२ उपदेश लिखे गये हैं। पुस्तक मोटे टाइप में उत्तम कागज पर प्रकाशित हुई है। टाइटिल पेज तिरंगा अत्यन्त आकर्षक छपा है। मूल्य ॥) प्रति

आर्यसमाज के आकाश में अत्यन्त प्रकाश की स्वर्ण-रेखा



—श्री वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी

यह पुस्तिका भी आर्यसमाज के विस्तार के लिए अनुपम है। प्रत्येक आर्यसमाजों को चाहिये कि भारी संख्या में मंगवाकर वैदिक सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार करें।

धर्मवीर ग्रन्थमाला के विविध साहित्य सुमनों की उपयोगिता की मुक्त कण्ठ से भूरि भूरि प्रशंसा आर्यजगत् के अनेकों महात्माओं, साहित्यकारों, नेताओं ने की है।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पूज्य ब्रह्म मुनि जी महाराज लिखते हैं—श्री प० धर्मवीर जी वेदपथिक झंडाधारी के लेखन कार्य आर्यसमाज के लिए अत्यन्त ही लाभदायक हैं। इनकी लगन एक नोरी और सच्ची लगन है। आर्यसमाजों को इनके कार्यों का स्वागत करना और सहयोग देना चाहिये।

श्री पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी श्री पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी, श्री पूज्य महात्मा प्रभु आश्रितजी, श्री पूज्य प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्री पूज्य प० मङ्गलदेव जी शास्त्री, श्री पूज्य प० धर्मवीर जी वेदालङ्कार, स्वर्गीय पूज्य महात्मा चन्द्रानन्द जी आदि सुप्रसिद्ध नेताओं ने धर्मवीर ग्रन्थमाला की उपयोगिता और प्रचार पर अपने शुभ आशीर्वाद व शुभ कामनायें तथा भूमिकायें लिखकर लेखक को प्रोत्साहित किया है।

धर्मवीर ग्रन्थ माला की आय से वेद प्रचार, शुद्धि, विधवा अनाथों की रक्षा आदि व्यापक प्रचार लेखक करना चाहता है।

समस्त आर्य भाई बहनों से तथा आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि धर्मवीर ग्रन्थमाला को मंगवाकर प्रकाशन और प्रचार में सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।

निवेदक —
वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी व्याख्यानभूषण
पता—धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला देहली ५

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद सुबोध भाष्य—मधुच्छन्दा मेधातिथी, शुनःशेप कण्व, पराशर गौतम, हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों के सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय १॥)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वशिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मूल्य ७) डाक-व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १॥) अध्याय ३० मू० २) अध्याय ३६, मूल्य ॥) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण १८ काण्ड) मूल्य २६) डाक-व्यय ५)

उपनिषद् भाष्य—ईश २) केन ॥), कठ १॥), प्रश्न १॥), मुण्डक १॥), माण्डूक्य ॥), ऐतरेय ॥।) सबका डाक व्यय २।)

श्रीमद्भगवद्गीता पुरुषार्थ बोधनी टीका—मूल्य १२॥) डाकव्यय २)

वैदिक व्याख्यान—अग्नि में आदर्श पुरुष, [२] वैदिक अर्थ-व्यवस्था [३] स्वराज्य, [४] सौ वर्षों की आयु, [५] व्यक्तिवाद और समाजवाद [६] शान्ति शांति शांति, [७] राष्ट्रीय उन्नति, [८] सप्त व्याहृति, [९] वैदिक राष्ट्रनीति, [१०] वैदिक राष्ट्र शासन [११] वेद का अध्ययन-अध्यापन, [१२] भागवत में वेद दर्शन, [१३] आपत्ति का राज्य शासन, [१४] त्रैत, द्वैत, अद्वैत, [१५] क्या विश्व मिथ्या है?, [१६] वेदों का संरक्षण ऋषियों ने कैसे किया?, [१७] आप वेद रक्षण कैसा कर रहे हैं? [१८] देवत्व प्राप्ति का अनुष्ठान, [१९] जनता का हित करने का कर्तव्य, [२०] मानव की सार्थकता, [२१] राष्ट्र निर्माण, [२२] मानव की श्रेष्ठ शक्ति, [२३] वेदोक्त विविध प्रकार के शासन। प्रत्येक का मूल्य ।=) डाक व्यय पृथक। आगे व्याख्यान छप रहे हैं।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, जिला सूरत

स्वास्थ्य-सुधा

भारत में तपेदिक की रोक-थाम के लिए प्रयत्न

(ले० श्री डा० एच० बी० डिंगले)

[भारत के निम्न स्तरीय रहन-सहन और अपौष्टिक खाद्य एवं गन्दे वातावरण में निवास आदि की कठिनाइयों से यक्ष्मा का रोग वृद्धि पर है। सरकार और दानी व्यक्तियों द्वारा इसके प्रतिरोधार्थ सदैव प्रयत्न किये जाते रहे हैं। इस दिशा में अभी कितनी अधिक आवश्यकता है इस ओर लेख में ध्यान आकृष्ट किया गया है। हम सबको इस रोग से राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न करना चाहिये।

—सम्पादक]

तपेदिक को "राजयक्ष्मा", "क्षयरोग" तथा दिक रोग आदि कई नामों से पुकारा जाता है। पहले समय में तपेदिक, काल का साकार रूप समझा जाता था। जिसे एक बार भी हुई, उसे सिर्फ ब्रह्मा या कोई दैवी शक्ति ही काल के जबड़े से छुड़ा सकती थी। अब ऐसी बात नहीं रही है। तपेदिक का होना मौत का बुलावा ही नहीं समझा जा सकता है। मनुष्य ने उस पर थोड़ी बहुत विजय तो पा ही ली है। किन्तु विज्ञान की असाधारण प्रगति होने और मनुष्य के अधिकार में स्वास्थ्य और बल-बुद्धि के असीम साधन होने पर भी तपेदिक से आज भी हमारे देश में लाखों व्यक्ति काल कवलित होते हैं। ऐसा क्यों है? यह रोग क्यों हमारे देश में उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है? इसका एक ही कारण समझ में आता है, वह है हमारे देश की दरिद्रता, उससे पैदा होने वाली गन्दगी और पौष्टिक आहार की कमी, तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक अभिशाप।

भारत में अधिकांश लोग अंधेरे, सीले तथा दरबे सरीखे छोटे-छोटे मकानों और कोठरियों में रहते हैं। जहां न उन्हें स्वच्छ हवा ही मिल सकती है न सूरज की रोशनी। इसलिए यदि विज्ञान की प्रगति के बावजूद यहां तपेदिक फैलता जा रहा है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

इसका एक कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी शिक्षा की कमी भी है। लोगों को तपेदिक रोग और उससे बचने के तरीकों के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती।

पहले यह रोग शहर में रहने वालों को ही होता था, किन्तु अब यह धीरे-धीरे गाँवों में भी फैलता जा रहा है, क्योंकि शहरों में रहने वाले जब गांव वापस लौटते है, तो वे अपने साथ आधुनिक सभ्यता की चमकदमक के अलावा कभी-कभी इस रोग के कीटाणु भी गांव ले जाते हैं।

तपेदिक से चौतरफा मोर्चा

तपेदिक की रोकथाम के लिए हमें चौतरफा लड़ाई लड़नी पड़ेगी। यह एक छूत की बीमारी है, इसलिये तपेदिक से बचाव और उसके इलाज की उचित योजना के बिना तपेदिक नियन्त्रण का कोई भी कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता है।

तपेदिक की रोकथाम करने के लिये यह सबसे जरूरी है कि उसकी जड़ ही मिटा दी जाय। यह जड़ है गरीबी। सबसे पहले लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा करना होगा उनके लिये खुले तथा स्वस्थ स्थानों में रहने की व्यवस्था की जाय तथा खाने के लिए भरपेट तथा पौष्टिक भोजन दिया जाय और स्वच्छ तथा सीलन-रहित वातावरण से दूर रखकर उन्हें रोग के भय से मुक्त कर दिया जाय।

तपेदिक के कीटाणुओं को एक ही स्थान पर नाश कर देने और उसे फैलने से रोकने के लिए भी उपाय करने पड़ेंगे।

कुछ ऐसे लोग भी होते हैं, जिन्हें तपेदिक हो जाती है, पर उन्हें यह पता नहीं लग पाता है कि उन्हें इतनी छुतही बीमारी हो गयी है। वे स्वच्छन्द रूपसे घरों और मकानों में रहते हैं और अनजाने में ही अपने सम्पर्क में आने वालों को रोग के कीटाणु बांटते रहते हैं। इसलिये यह बहुत जरूरी है कि ऐसे रोगियों का पता लगाया जाय तथा उन्हें अलग रखा जाय, जिससे रोग फैलने न पाये। यह इसलिए भी बहुत जरूरी है कि यह बीमारी शुरू शुरू में उचित इलाज के बाद ठीक हो सकती है।

रोगियों का पता लगाने के लिए औषधालय

समाज में स्वच्छन्द रूप से रहने वाले तपेदिक के गुप्त रोगियों का पता लगाने के लिये दवाखाने होने चाहिये। यही औषधालय तपेदिक निरोधक-आन्दोलन की मुख्य धुरी होंगे। ये औषधालय शहर के बीचोबीच में होने चाहिये, जिससे सभी इससे लाभ उठा सकें।

इस समय देश में ऐसे १८० औषधालय हैं। ये औषधालय शहरों में प्रति ५० हजार आबादी के लिए एक और गांवों में १ लाख पर एक औषधालय के हिसाब से होने चाहियें। इस तरह देश में कम से कम ४ हजार औषधालयों की अभी तत्काल आवश्यकता है।

इन औषधालयों में रोग के निदान के सभी उपकरण होने चाहियें। इसमें एक प्रयोगशाला, एक एक्स-रे यन्त्र तथा रेडियोग्राफी के अन्य यन्त्रादि होंगे। इसमें स्वास्थ्य निरीक्षक भी होने चाहियें। इन औषधालयों में रोग का जल्दी से पता लगा कर उनका ठीक समय पर इलाज शुरू किया जा सकता है। इसमें गम्भीर स्थिति वाले तपेदिक के रोगियों के इलाज में जो खर्च होता है, उसमें बचत भी होगी।

इलाज और शिक्षा

तपेदिक की कीटाणुनाशक कुछ ऐसी दवाएं इजाद की गई है, जिससे मरीजों का घर बैठे भी इलाज किया जा सकता है। उनके लिए अस्पताल में भर्ती होना जरूरी नहीं रह जाता है। किन्तु घर में इलाज करवाने के लिये यह आवश्यक है कि रोग बहुत बढ़ा हुआ न हो। दूसरे घर में ऐसी व्यवस्था की जा सके कि उसे परिवार के अन्य सदस्यों से अलग रखा जा सके तथा मरीज ऐसा समर्थ हो कि इलाज में वह पूरा सहयोग दे सकता हो।

यद्यपि शुरू की स्थिति में ही रोग का निदान होना ही तपेदिक की रोकथाम का सर्वोत्तम उपाय है, किन्तु रोगियों को अलग रखने की आवश्यकता भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह बहुत ही जरूरी है, किन्तु अस्पतालों में पलंगों की कमी है। इसमें सबसे बड़ी बाधा है। इस समय ५ लाख पलंगों की आवश्यकता है, जबकि तपेदिक के रोगियों के लिये सिर्फ इस समय २३,००० ही पलंग है।

जनता का सहयोग

तपेदिक की रोकथाम में जनता के सहयोग की बहुत आवश्यकता है। उसके बिना सरकार को अपने काम में सफलता नहीं मिलती। ५०,००० पलंगों के लिए सालाना लगभग ७ करोड़ रु० की आवश्यकता पड़ेगी। यह काम बहुत ही असम्भव लगता है। क्योंकि तपेदिक के लिए ही नहीं, बल्कि अन्य रोगों के लिए भी पलंग बढ़ाने हैं। किन्तु रुपयों की व्यवस्था करने तक इस रोग को फलने-फूलने के लिए यों ही छोड़ा नहीं जा सकता है। कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। यद्यपि भारत में कई औषधालय हैं, किन्तु यहां तपेदिक के लिए काफी पलंगों की अभी भी आवश्यकता है।

तपेदिक के अस्पताल या सेनेटोरियम खोलने का स्थान

पहले तपेदिक के अस्पताल, संस्था, या सेनेटोरियम शहर से दूर, एकांत स्थल में खोले जाते थे। किन्तु जबसे इसके इलाज को नयी नयी दवाएं ईजाद की गई हैं, ये अस्पताल अधिक शहर में ही खोले जाने लगे हैं।

इससे सबसे बड़ा फायदा यह है कि आवश्यकता पड़ने पर अन्य कुशल चिकित्सकों या सर्जनों की भी सहायता ली जा सकती है। इसके अलावा नर्स तथा अन्य प्रशिक्षित कर्मचारी भी आसानी से मिल सकते हैं। इस तरह तपेदिक के रोगी का और अच्छी तरह से इलाज हो सकता है। मरीज के लिए भी अस्पतालों की आबादी के बीच में होना लाभदायक है, क्योंकि अधिक संख्या में उसके मिलने वाले उससे मिलने आ सकेंगे और इसका मरीज के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ता है।

ऐसा लगता है कि तपेदिक पर मनुष्य की विजय का समय बहुत निकट आ गया है।

अब प्रारम्भिक स्थिति में ही रोग का निदान तथा उसका इलाज किया जा सकता है, मरीज को अस्पताल में भरती करके ही उसका उचित इलाज किया जा सकता है किन्तु अब यह अनुभव किया जाता है कि तपेदिक की रोकथाम में अच्छे औषधालयों का महत्वपूर्ण योग है। इसलिए भारत जैसे देश के लिए यह जरूरी है कि और अधिक संख्या में औषधालय खोले जायें।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
आषाढ़ २८ शक १८८३
(१६ जुलाई १९६१)

आर्य्यमित्र
उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

(पृष्ठ २ का शेष)

योजना में भी सबसे आवश्यक है। आज कृषि एवं वनस्पति के सुधार, हिंसा को प्रोत्साहन देने के लिये मछलियों और मुर्गियों के परिपालन की योजनाएं बन रही हैं परन्तु महर्षि दयानन्द ने मानव सुधार पर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने निम्नलिखित उपाय सुझाए हैं :—

(अ) शिक्षा

(ब) संस्कार

(स) यज्ञ-आत्मत्याग और बलिदान की भावना।

(द) योग-परमात्मा की सत्ता, शक्ति और उसके आदेशों के साथ वास्तव मनोवैज्ञानिक एकता।

(य) जन्मगत-जाति को मिटाकर जातिवाद के अभिशाप का निराकरण।

(र) हम सब एकमात्र परमात्मा की सन्तान हैं। इस शिक्षा के द्वारा संकुचित सम्प्रदायवाद का विनाश।

(ल) राष्ट्र-भाषा हिन्दी पर बल देकर भाषावाद का निवारण।

(व) समस्त विश्व के कल्याण की कामना और यत्न के द्वारा संकुचित राष्ट्रीयता एवं प्रान्तीयता आदि आदि का निराकरण।

भारत के नेतागण अनेकता के नारों और विविध 'वादों' के दुष्प्रभावों से भली-भांति परिचित हैं। वे सदैव उनकी चर्चा करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में इन सब त्रुटियों का अचूक इलाज बताया है। उन्होंने न केवल इन त्रुटियों के सुधार पर ही बल दिया अपितु व्यक्ति और समाज के निर्माण का सही मार्ग भी दर्शाया है। उन्होंने वर्णाश्रम धर्म की महत्ता पर भी विशेष बल दिया है। यह व्यवस्था समाज निर्माण की सर्वोत्तम प्रणाली है। भारत के शीर्षनेतृत्व को मानव-निर्माण की भारतीय पद्धति वर्णाश्रम व्यवस्था के रहस्य को समझना चाहिए।

४—समाज कल्याण का युग—

आज सर्वत्र समाज कल्याण की दुहाई दी जाती है परन्तु व्यक्ति और समाज का हित व्यक्ति के सत्कर्म पर निर्भर करता है। हमारे बाह्य जीवन की अवस्थाएं और परिस्थितियां हमारे अपने कर्मों पर आश्रित होती हैं। जब दो व्यक्ति मिलते हैं तो हाल-चाल पूछते हैं। हाल का चाल से सम्बन्ध है अर्थात् जैसा हमारा चलन होगा वैसी ही गति होगी। "नेता और नीति" की मूल-भूत विचारधारा भी इन आधार भूत सिद्धान्तों के साथ ग्रथित है। आप क्या करते हैं, यह भी आप कैसे हैं? से सम्बद्ध है। ये दोनों ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। "मैं बहुत अच्छी तरह से हूँ" यह उत्तर भी बड़ा महत्व रखता है। यह तो ठीक कर्म की स्वीकारोक्ति और दुष्कर्म की निवृत्ति का सूचक है। यदि यह बात बनावटी न होकर मनोवैज्ञानिक हो तो समाज-कल्याण का उपाय सहज ही स्पष्ट हो जाता है।

इस प्रकार आर्यसमाज का दृष्टिकोण और महर्षि दयानन्द के पथ प्रदर्शन में भारत ही नहीं विश्व की सामयिक और भावी समस्याओं का समाधान निहित है। आवश्यकता इससे लाभ उठाने की है। आर्यसमाज के सदस्यों पर इसकी उपयोगिता सिद्ध करने का महान् दायित्व है। इस मार्ग पर चलकर ही मानव-कल्याण और विश्व कल्याण सम्भव है।●

●सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के प्रधान श्रीयुत बाबू पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट का दिनांक १०-६-६१ को दयानन्द भवन नई दिल्ली में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में दिया हुआ वक्तव्य।

आर्य-जगत

प्रचार-समाचार—

—मैंने अपने सुपुत्र ब्रह्मचारी विचारदेव, पुत्री शान्तिदेवी और गुरुकुल गंगीरी के आचार्य श्री इन्द्रप्रकाश की सहायता से अपने आस-पास के गाँवों में आर्यसमाज के आदर्शों का प्रचार किया। १६ मई से १८ मई १९६१ तक ग्राम जहेरपुरा में, १९ से २० मई तक ग्राम रामशपुर में तथा २१ मई १९६१ को ग्राम दानपुर में उत्सव किया। सैकड़ों नर-नारियों को जनेऊ दिया गया तथा उनसे बुरी आदतों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई गई।

—रामस्वरूप आर्य
दानपुर

—आर्यसमाज बसन्ती खेड़ा के मन्त्री श्री लक्ष्मी नारायण जी आर्य की पुत्री कमलादेवी का विवाह-संस्कार बलिगरा-निवासी श्री बल्देवप्रसाद जी के सुपुत्र श्री देवेन्द्र कुमार के साथ गत १२ जून १९६१ ई० को वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कानपुर के उपदेशक श्री देवीप्रसादजी ने वेद-प्रचार किया।

—बसन्ती खेड़ा निवासी श्री रघुवीर प्रसाद की धर्मपुत्री व श्री भोला प्रसाद जी तथा श्री गयादीन जी के सुपुत्र का मुण्डन संस्कार वैदिक रीति से श्री रामनारायण जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

—सिदरपुर निवासी श्री रामस्वरूप जी के सुपुत्र का मुण्डन संस्कार वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज, सरधना ने अपनी सभा के उपदेशक श्री सत्यपाल शास्त्री, विद्यावाचस्पति का बड़े समारोह के साथ अभिनन्दन किया और अभिनन्दन पत्र स्वर्णाक्षरों में छपाकर सादर भेंट किया।

—संस्कृत-विद्यालय, वेद-मन्दिर (आर्यसमाज) अतरौली, जि० अलीगढ़ में विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ होगया है। इस विद्यालय की स्थापना इसी वर्ष हुई है। भविष्य में इस विद्यालय में कला-कौशल, आयुर्वेद आदि परीक्षाओं का भी प्रबन्ध किया जायगा। विद्यालय का मुख्य उद्देश्य 'आर्य संस्कृति' का प्रचार करना है।

—आचार्य भगवतशरण शास्त्री
व्याकरण वाचस्पति
संस्कृत विद्यालय अतरौली

—दयानन्द-विद्यालय, ब्रह्मचर्याश्रम बैरगनियाँ (मुजफ्फरपुर), वहाँ के आर्यसमाज के तत्वावधान में खुल गया है जिसका संचालन एक कार्य समिति द्वारा किया जा रहा है। प्रवेश के समय विद्यार्थी की अवस्था ७ से १० वर्ष तक होनी चाहिए। —रामेश्वरसिंह
'आर्यवीर' प्रधान मन्त्री

उत्सव—

आर्यसमाज चौन्दकोट का वार्षिकोत्सव दि० ३ से ७ जून ६१ तक पं० रघुवरदयालजी के सभापतित्व में समारोह पूर्वक मनाया गया। दिनांक ३ जून ६१ से प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी हुई। प्रातः ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होते रहे। दिनांक ३ जून को १२ बजे दिन से ४ बजे शाम तक जयदादाखाल के मेले में वैदिक धर्म का प्रचार खूब जोर शोर से हुआ जिसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। दि० ४-६-६१ से ५-६-६१ तक मौगीखाल में उत्सव मनाया गया, प्रतिदिन १२ बजे दिन से ६ बजे सायं व ८॥ बजे रात्रि से १२ बजे रात्रि तक व्याख्यान व भजन होते रहे। दिनांक ६-६-६१ को रात्रि में व ७-६-६१ को दिन में १२ बजे से सायं ५ बजे तक स्थान पबिसैण में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

आर्य जनता से निवेदन

आजकल हमारे देश में अश्लीलता की एक दूषित वायु प्रवाहित हो रही है जो देश के बालकों, युवकों, युवतियों आदि के चरित्र पर अत्यन्त हानिकारक प्रभाव डाल रही है। केवल चरित्र ही नहीं, बुद्धि को भी यह विकसित होने में गतिरोध उत्पन्न कर रही है। इससे लोगों की प्रवृत्ति वासनात्मक अधिक हो रही है तथा जीवन व जगत् के अन्य क्षेत्रों से उदासीनता हो रही है। इस सबका कारण है अश्लील फिल्मी गानों का अधिकाधिक प्रचार। अतएव राष्ट्रीय चरित्र का पतन रोकने तथा बुद्धि के विकास के हेतु वातावरण उन्मुक्त करने के हेतु इन अश्लील फिल्मी गीतों का रोका जाना आवश्यक है।

उत्तरप्रदेश आर्यवीर दल ने इस सम्बन्ध में कुछ उपयोगी कदम उठाने का निश्चय किया है परन्तु इसके लिये आर्य जनता का सहयोग आवश्यक है। अतएव समस्त आर्य सज्जनों से निवेदन है कि अपने यहां विवाह आदि उत्सवों पर फिल्मी रेकार्डिंग न करें तथा दूसरों को भी ऐसी प्रेरणा दें।

—आदित्यकिशोर आर्य मन्त्री

शोक-समाचार

—दुःख की बात है कि सकराल आर्यसमाज के मन्त्री श्री दीनदयालु गुप्त का हृदय की गति रुक जाने से देहान्त हो गया। वैदिक रीति के अनुसार उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—आदित्यप्रकाश शर्मा

बाबूराम भारती द्वारा अभ्यावलिज आर्य भास्कर प्रेस, ९ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्



आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में १२शिलिंग

एक प्रति का १० नये पैसे] लखनऊ रविवार श्रावण ४ शक १८८१, श्रावण शु० ७, वि० २०१६, २६ जुलाई, १९५९ ई०

दयानन्द दीक्षा-शताब्दी समारोह

आर्य जनता द्वारा अपने आचार्यों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति होगा

उत्तरप्रदेश के आर्यों ने १७ जुलाई को समिति की बैठक में ४५ हजार रुपयों के वचन दिये हे

आप भी अपना कर्तव्य निर्धारण कीजिए

आगामी दीपावली (३०,३१ अक्टूबर १-२ नवम्बर) को आर्य जन अधिकाधिक संख्या में मथुरा पहुँचने का निश्चय करें

दीक्षा शताब्दी गुरुधाम स्मारक [illegible] में आर्यमित्र हीरक जयन्ती [illegible] के साथ आर्य सम्मेलन पत्रकार सम्मेलन राष्ट्रभाषा-सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन [illegible]-सम्मेलन संस्कृति सम्मेलन [illegible] सम्मेलन [illegible] का आयोजन करने का निश्चय किया गया है।

विशाल समाचार पत्र प्रदर्शनी आर्य साहित्य प्रदर्शनी, आर्यसमाज चित्र प्रदर्शनी [illegible] का आयोजन भी होगा।

समारोह समिति का कार्यालय मथुरा आर्यसमाज में

गुरु विरजानन्द स्मारक कुटी प्राप्ति के लिये [illegible] तक अनथक प्रयत्न करने वाले [illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा सफल हो रहा है। आवश्यक सूचना और जानकारी के लिये [illegible] तिलक द्वार, मथुरा के पते पर पत्र व्यवहार किया जाना चाहिये।

समारोह-स्थल का निर्माण शीघ्र ही आरम्भ होने जा रहा है। उसकी रूपरेखा तय्यार हो चुकी है प्रत्येक प्रान्त के शिविरों का स्थान निश्चित किया जायेगा। आर्यजन अपने क्षेत्र के पहुँचने वाले आर्यों की संख्या का अनुमान कार्यालय को भेजने की कृपा करें साथ ही जो आर्य परिवार अपने लिये स्वतन्त्र [illegible] चाहते हैं [illegible] अभी से अपने प्रबन्ध के लिये सूचित कर देना चाहिये।

जो सज्जन समारोह समय के लिये अपना समय और सेवायें देना चाहें (कार्यकर्ता व [illegible] सेविका आदि के रूप में) वे अपने नाम शीघ्र ही कार्यालय में भेज दें जिससे उनका नाम कार्यकर्ता सूची में [illegible] कर लिया जाय।

दीक्षा-शताब्दी हम सभी के लिये दीक्षा पर्व बन कर आई है, चलो चलें और मिलकर [illegible] का दीक्षा ग्रहण करें। हमारी प्रगति के लिये दीक्षा शताब्दी अमूल्य अवसर बनकर आ रही है।

अवैतनिक सम्पादक—

उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अध्यात्म-चिन्तन (वेद-प्रचार सप्ताह लेखमाला)

कोऽहं, कस्त्वं, कुत आयातः ? (शंकराचार्य)

हे मानव, तूभी स्वयं एक गूढ पहेली है—१

(आचार्य श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर)

अध्यात्म तत्त्व को सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न करते हुए आदरणीय शास्त्रीजी ने हिमालय के शान्त वातावरण से जो सन्देश दिया है उसके भावों को हृदयंगम कर विश्व की, मानव की पहेली, का रहस्य स्पष्ट होता हुआ पाते हैं। मानव क्या है इसको समझ लेने के बाद भौतिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक सभी समस्याएं हल हो जाती हैं। अत आवश्यकता इस बात की है कि भौतिकता के प्रभाव से मुक्त हो वास्तविक रहस्य को समझा जाय। —सम्पादक

मानव, तेरे सामने जन्म से लेकर मरणपर्यन्त पहेलियाँ ही पहेलियाँ हैं पर तू यह नहीं समझ पाता कि तू स्वयं ही एक अपने लिए पहेली बन गया है। पर पहिले यह देखें कि तू है कौन ? क्या तू केवल खाने-पीने, टहलने फिरने, इधर उधर भटकने अथवा विविध भोग भोगने वाला कोरा प्राणी है ? यदि यही तू है तो तेरे विषय में यह बड़ी भ्रान्ति है। इसलिए मानव तेरे लिए चिन्तन अथवा ध्यान देने की कोई बात है तो वह यही है कि तू स्वयं क्या है ? यदि तू यह समझ पाया तो समझ लो कि तेरा जन्म सफल है। जीवन की अन्य पहेलियाँ फिर अपने आप सुलझ जायगी।

तेरी यह अपनी पहेली सुलझ जायगी तो समस्त व्यक्ति, राष्ट्र और मानव जाति का कल्याण हुआ ही समझिए क्योंकि मानव जाति का भविष्य ही इसी बात पर अवलम्बित है कि तू अपने स्वरूप को समझ जाय। मनुष्य के स्वरूप का अन्तिम लक्ष्य क्या है, इस विषय में राष्ट्र और समाज की जैसी धारणा बन जाती है उसी प्रकार के राष्ट्र और समाज के गुणधर्म बनते रहते हैं अथवा बनते जाते हैं। मानव अथवा मनुष्य को एक जड़ वस्तु समझने वाला, अथवा संसार की जड़ वस्तुओं में से एक जड़ वस्तु समझने वाला समाज स्वयं जड़वादी बन जाता है। इसके विपरीत समाज की धारणा मनुष्य के विषय में जितनी उन्नत होती जायगी उस अनुपात से वह समाज भी समुन्नत, सुसंस्कृत, अधिक समझदार, अधिक सौजन्य और सद्भावयुक्त समाज समझा जायगा। इसीलिए कोई समाज प्रगति की किस सीढ़ी पर खड़ा है यह जानना हो तो यही कसौटी है कि यही देखो कि उस समाज का मानव विषयक दृष्टिकोण किस प्रकार का है।

यह मानव है क्या ?

मानव कोई जड़ वस्तु है और वह संसार की अन्य सामान्य वस्तुओं की भान्ति एक जड घटक है, यदि ऐसी धारणा है तो मनुष्य केवल हड्डी और मांस का पींजरा है और अनेक रासायनिक अनेक भौतिक द्रव्यों का संमिश्रण है ऐसा मानना पड़ेगा। इस दृष्टि से मानव का मूल्यांकन किया जायगा तो किसी जड़वादी चिकित्सक बुद्धि व्यक्ति की तरह हमें कहना अथवा मानना पड़ेगा कि मनुष्य शरीर का भौतिक लाभ केवल इतना ही है कि हम चाहें तो उसकी चरबी से बहुत सा साबुन तैयार कर सकेंगे। उसके कार्बन से हम नौ हजार पेन्सिलें बना सकेंगे, उसके फास्फोरस से बाईस-सौ दियासलाइयाँ बना सकेंगे, और उसके लोहे के अंश से लोहे की एक भली मोटी भारी कील तैयार कर सकेंगे और उसके शरीर स्थित चूने से मुर्गे के सिर को सफेद पोत सकेंगे। इससे अधिक इस जड़ शरीर से हमको क्या लाभ हो सकता है।

हम यह भी देखते हैं कि अपने में से भी किसी विचारशील व्यक्ति के विषय में कुछ कहते हैं तो ऐसा सोचते हैं कि या तो यह कोई सामाजिक (सोशल) प्राणी है, या कोई (पोलिटिकल) राजनैतिक प्राणी है या कोई (एकानामिक) आर्थिक व्यवहार करने वाला कोई प्राणी है। इस प्रकार के विचार प्रसंग अथवा ऊहापोह करने पर भी यह पता नहीं चलता कि मनुष्य है क्या ? उसका असली स्वरूप है क्या ? जितना अधिक सोचेंगे उलझन में ही पड़े रहेंगे—

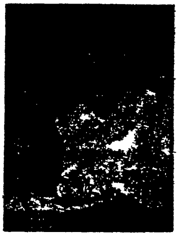
सच देखा जाय तो इमर्सन के कथनानुसार "मनुष्य कोई केवल खाने-पीने, बोलने-बतलाने वाला प्राणी नहीं है।" यदि मनुष्य के विषय में यही मानलिया जाय तो इससे बढ़कर और कौनसा भ्रमजाल हो सकता है। इसलिए जब तक हम मनुष्य को केवल रासायनिक मिश्रित पदार्थ अथवा जड़ संसार का एक जड़ घटक अथवा सामाजिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक व्यवहार में पड़ा हुआ कुछ जन्तु अथवा नैसर्गिक प्रवृत्ति की, विविध वस्तुओं की एक विचित्र गठरी है, ऐसा विचार करते रहेंगे तब तक हम मानव के सत्य स्वरूप को कभी न समझ सकेंगे। आप मनुष्य के मनुष्यत्व का साक्षात् दर्शन नहीं कर सकेंगे। हमारा कर्त्तव्य है कि मनुष्य के विषय में की गई एकाङ्गी अथवा एकदेशी कल्पनाओं से आगे बढ़कर यह जानने का प्रयत्न करें कि वस्तुतः यह मानव है क्या ? इसका असली रूप या स्वरूप है क्या ?

प्रश्न यह है कि हमको उस मानव के सच्चे स्वरूप का ज्ञान कैसे होगा ? हमारे ऋषि, मुनि, महर्षियों ने इस प्रश्न पर बहुत विचार किया और उनका निर्णय यह है कि मानव के सच्चे स्वरूप के ज्ञान के लिए 'अन्तर्मुख' होना यही एक उपाय है। आत्मसाक्षात्कार के बिना, आत्मनिरीक्षण के बिना मानव का मूल्यांकन नहीं हो सकता। अपना विश्लेषण अत्यन्त आवश्यक है। कठोपनिषद् में यमाचार्य ने नचिकेता को उपदेश दिया है कि आत्मसाक्षात्कार के लिए, आत्मज्ञान के लिए बहिर्मुख इन्द्रियों को अन्तर्मुख करना चाहिए। आवृत्तचक्षु होना चाहिए।

कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत् ।
आवृत्तचक्षुः, अमृतत्वमिच्छन् ॥
(कठ० २, १, १)

संसार का यह भीड़-भड़का

आजकल के मानस शास्त्री कहते हैं कि आजकल के युग में मनुष्य प्राणी, दौड़ धूप, भीड़-भड़क्के का इतना आदी हो गया है कि उसीमें संलग्न रहता है, उसीमें रमता रहता है। इसलिए उसको अपने स्वत के परीक्षण अथवा अपने में प्रवेश करके अपने को ढूंढने के लिए न इच्छा होती है और न समय ही मिलता है। इस आत्म-निरीक्षण के लिए जो मानसिक स्वस्थता की अपेक्षा रहती है, वह भी उसमें नहीं रहती। प्रतिदिन के जीवन में बात बात में जल्दी के कारण और भीड़-भड़क्के के स्वाद के कारण यह मानव तो 'स्वत्व' को ही भूल गया है। जीवन कलह की उलझनों, प्रत्येक वस्तु की शीघ्र प्राप्ति के लिए दौड़ धूप वह हल्ला-गुल्ले का जीवन यह भीड़ भड़का इत्यादि से हटकर जब तक मनुष्य अन्तर्मुख होकर अपने को जानने का प्रयत्न नहीं करता तब तक उसको 'मैं कौन' का क्या पता लग सकता है ? बस, राम का नाम लो।



—लेखक—

"मैं" का नाटक

संसार में आकर, संसार के इष्टमित्र बन्धु-बान्धव आदि के सम्पर्क में मनुष्य अनेक नाटक करता रहता है, नाना रूप भरता रहता है। हम समझते हैं नाट्य-कला, अभिनय कला कठिन और कभी-कभी तो दुःसाध्यकला है। किन्तु यदि हम स्वत अपना निरीक्षण करें तो ज्ञात होगा कि हम स्वयं संसार में विचरते हुए कितने प्रकार के नाटक करते रहते हैं, कितने रूप भरते रहते हैं। स्वयं अपने कुटुम्ब में भी पिता, पति आदि के रूप में कितने अभिनय करते रहते हैं। जब हम अपने आफिस में जाते हैं तब भी चपरासी, अधिकारी अथवा अन्य रूप और ही प्रकार के अभिनय करते दिखायी देते हैं। जब क्लबों में जाते हैं तब हमारे अभिनय और ही प्रकार के होते हैं। इस प्रकार से "मैं" कहने और समझने और नाना प्रकार से बर्तने वाला मनुष्य नाना प्रकार के रूप भरता रहता है और 'मैं पिता', 'मैं पति', 'मैं अधिकारी', 'मैं मित्र', 'मैं वक्ता', 'मैं लेखक' ऐसे कितने ही रूप भरता रहता है। मनुष्य का सामान्य व्यक्तित्व और कुछ नहीं, वह उसकी ऊपर-ऊपर से दिखलायी पड़ने वाली मुखाकृति द्वारा व्यक्त होने वाला व्यक्तित्व ही है। मनुष्य इस संसार रूपी रंगभूमि पर नाना रूपवाले मुख, बनाकर मुख पर नये नकली मुखड़े चढ़ाकर नाना रूप में नाना अभिनय करता रहता है यही सत्य तथा तथ्य है। जब यह 'मैं' नाना रूप धर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

वैदिक राष्ट्र-गीत

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः ।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः ।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ॥८॥

(हरिगीतिका छन्द)

जो पृथ्वी पहले पूर्व रूप में, वारिधि बीच विचरती थी ।
सत्यसिद्ध प्रभुसत्ता से जो, हृदय अमृतवत् धरती थी ॥
व्योम बीच में मान्य मनीषी-नीति जिसे सेवित करती ।
वही भूमि इस श्रेष्ठ राष्ट्र में, रहे तेज बल नित भरती ॥

She who in the beginning was upon the ocean whom the skilful moved after with their devices the earth whose immortal heart covered with truth is in the highest firmament let that earth assign to us brilliancy, strength in highest nationality

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए



लखनऊ—२६ जुलाई १९५९ दयानन्दाब्द १३५ सृष्टि सवत् १९७२९४९०६०

दयानन्द दीक्षा शताब्दी नया संदेश लेकर आ रही है

आर्यसमाज के भविष्य का कार्यक्रम निर्धारण करने और वर्तमान गतिविधि को तीव्र और व्यवस्थित रूप देने के लिये आगामी दीपावली एक स्वर्णावसर के रूप में आरही है।

समस्त आर्य जगत् की श्रद्धा और भावनाओं के केन्द्र आचार्य प्रवर गुरु विरजानन्द के स्मारक का शिलान्यास और महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह ऐसे कार्यक्रम हैं जिनके आकर्षण में समस्त आर्य जगत् सम्मोहित हो रहा है। इस कार्यक्रम का आरम्भ चाहे श्रद्धा की भावना से ही किया गया हो परन्तु अब उसका एक व्यावहारिक पहलू भी है और वह यह कि जब आज हम अपने बाहरी शत्रुओं से संघर्ष करने का निश्चय कर रहे हैं तब हमें आन्तरिक शक्ति का भी सजगता और दृढ़ता के साथ संघटन कर लेना चाहिये।

इस दृष्टि से यह समारोह अपना ऐतिहासिक महत्त्व रक्खेगा। आ० प्र० नि० सभा उत्तरप्रदेश ने इस समारोह की योजना बनाकर आर्य जनता की भावनाओं की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लिया है। मथुरा का स्थान आर्य समाज के इतिहास में प्रेरणा का स्रोत रहा है। महर्षि जन्म-शताब्दी की स्मृतियाँ जिन लोगों के मस्तिष्क में ताजी होंगी वे उस दृश्य को दुबारा देखने का स्वप्न ले सकते हैं और साथ ही वैसी प्रेरणाएं उस समय आर्य जगत् ने प्राप्त की थीं वैसी ही प्रेरणाएं आज की समस्याओं के समाधान के लिये हम प्राप्त कर सकते हैं।

क्या इतना बड़ा समारोह मथुरा या उत्तरप्रदेश के आर्यों की शक्ति द्वारा सम्पन्न हो सकेगा हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रत्येक महर्षि भक्त अपना सहयोग इस महान् कार्य के लिए देना स्वीकार करेगा। अपने क्षेत्र में दीक्षा-शताब्दी समारोह का प्रचार कर आप महर्षि का सन्देश घर घर तक पहुंचाना आरम्भ कर दें और अपने क्षेत्र की ओर से आर्थिक सहयोग के लिये प्रयत्न आरम्भ कर दें साथ ही इस बात का प्रयत्न करें कि अधिक से अधिक संख्या में आर्य नर नारी मथुरा समारोह में पहुँचकर नव सन्देश प्राप्त कर सकें।

समारोह समिति की १७ जुलाई की बैठक में उत्साहप्रद निर्णय किये गये हैं और उन्हें पूर्ण करने का यत्न किया जायगा। जनता की शुभ कामना और सहयोग ही इस समारोह की सफलता के आधार हैं। आशा है आर्यजन अपने कर्तव्य का निर्धारण कर अभी से प्रयत्नशील बन जायेंगे।

दूषित खाद्य नीति

गोरक्षा के प्रबल समर्थक अहिंसावादी श्री शोभाराम धेनुसेवक ने अपने एक वक्तव्य में जनता का ध्यान आकृष्ट करते हुए सरकार की दूषित खाद्य नीति की निन्दा की है। आपने बताया है कि सरकार स्वीडन की एक कम्पनी से ऐसा आटा मंगाने का समझौता कर रही है जिसमें मछली का चूर्ण मिला हुआ होगा यह कथन और समाचार दोनों ही बातें हृदय-विदारक हैं। आमिषता निरामिषता विवादास्पद विषय है परन्तु हमारी सरकार जन कल्याण और बुभुक्षा-शान्ति के नाम पर इस प्रकार के करोड़ों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाले कार्य करती रहती है। हम आशा करते हैं कि भारत की अहिंसा वादी सरकार मछली मिले आटे का व्यापार न करेगी और न भारत की मिलों को आटे में प्रोटीन के नाम पर मछली चूर्ण मिलाने की अनुमति देगी। यदि सरकार ने उपेक्षा की तो घोर असन्तोष फैलेगा जिसका उत्तरदायित्व स्वयं सरकार पर होगा।

आर्य शिक्षा संस्थाओं में गैर आर्यसमाजी सदस्य

आर्यसमाज ने शिक्षा प्रचार के दृष्टिकोण को सम्मुख रखते हुए नागरिकों के सहयोग और परामर्श का सदैव आदर किया और अपनी शिक्षा संस्थाओं के प्रबन्ध मण्डलों में सुयोग्य शिक्षित और दानी व शिक्षा प्रेमी व्यक्तियों के लिये सदस्यता का द्वार सदैव उन्मुक्त रक्खा परन्तु आर्यसमाज की इस उदारता का अनेक स्थानों पर स्वार्थवश दुरुपयोग किया गया। अनेक स्थानों पर तो प्रबन्ध समितियों की सदस्यता प्राप्त करने के लिये गैर आर्यसमाजी व्यक्तियों ने आर्यसमाजों की सदस्यता प्राप्त कर प्रतिनिधित्व किया है जबकि वे अपने निश्चित सम्प्रदाय मूर्तिपूजक या जैन धर्म आदि के सदस्य भी बन रहे हैं इस प्रकार की मनोवृत्ति वाले व्यक्तियों का हमें पता लगा कर उनकी आर्य सभासदी को वैधानिक रूप से समाप्त कर देना चाहिये। आर्य समाजों को अपनी सदस्य सूची बनाते समय इस ओर गम्भीरता और सतर्कता का परिचय देना चाहिये। सभा कार्यालय को ऐसी सूचनाएं मिल रही हैं कि अमुक स्थान पर अमुक व्यक्ति जैनी थियोसोफिस्ट या मूर्तिपूजक है। उसने आर्य सभासद् बनकर प्रबन्ध समिति की सदस्यता प्राप्त कर ली है। इस सम्बन्ध में प्राथमिक उत्तरदायित्व सदस्य बनाने वाली आर्यसमाजों का है। आशा है सम्बन्धित समाजें अपनी सदस्य सूचियों का निरीक्षण परीक्षण और निर्धारण कर इस शैथिल्य और अव्यवस्था को समाप्त करेंगी।

राष्ट्रपति और नीतिनिर्धारण

राष्ट्र के प्रथम व्यक्ति होने के नाते राष्ट्रपति का दायित्व महान् है और उनके विचारों का राष्ट्र में सम्मान किया जाना चाहिये।

पिछले दिनों राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू के नाम लिखे गये एक पत्र को लेकर एक विवाद खड़ा हो गया है। राष्ट्रपति ने अपने पत्र में भारत सरकार की सरकारी व्यापार और सहकारी खेती आदि नीतियों पर अपना मतभेद प्रकट किया है। प्रधान मन्त्री नेहरू जी ने अपने एक वक्तव्य में सरकार का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा है कि नीति निर्धारण का दायित्व राष्ट्रपति का नहीं मन्त्रिमण्डल का है।

जहां तक संवैधानिक व्याख्या का प्रश्न है प्रधान मन्त्री सही हो सकते हैं पर प्रश्न यह है कि जब राष्ट्रपति के विचारों का कोई महत्त्व नहीं तो उनका निर्वाचन क्यों किया जाता है? सारे राष्ट्र के प्रतिनिधिगण उनके निर्वाचन के लिये अपना मतदान क्यों करते हैं? अगर राष्ट्रपति बहुमत दल की हां में हां मिलाने वाले व्यक्ति ही होने चाहिये तो यह अधिक अच्छा होगा कि संविधान में ऐसी व्यवस्था कर दी जाय कि बहुमत दल के नेता के साथ भी राष्ट्रपति के चुनाव के लिये भी जिसे चुना जाय वही राष्ट्रपति मान लिया जाया करे, दूसरे दलों के लोगों के मतदान का नाटक न खेला जाया करे।

हमारी दृष्टि में राष्ट्रपति पद और अपने निजी व्यक्तित्व और नेतृत्व की दृष्टि से डा० प्रसाद के विचारों का नीति निर्धारण में सम्मान किया जाना चाहिये। राष्ट्रपति के विचारों में गम्भीरता और राष्ट्रहित की दूरगामी सम्भावनायें निहित हैं।

निर्धन भारत के धन पर विदेश-भ्रमण

भारत की गरीबी और अविकसित अवस्था का हमारी सरकार और उसके द्वारा पुरजोर प्रचार किया जाता है और जनता से पेट पर पट्टी बांध कर स्वर्णिम भविष्य के लिये आशा करने की मांग की जाती है परन्तु जब सरकार अपनी योजनाओं या सरकारी अधिकारियों द्वारा व्यावहारिक रूप दी जाती है तब सरकारी अधिकारी सबसे पहले विदेश यात्रा का सुराग ढूंढने लगते हैं। विदेशों में जाने वाले शिष्ट मण्डल क्या सफलता प्राप्त कर सके हैं यह समालोचना का विषय बना हुआ है। चाहिये तो यह था कि जो विशेषज्ञता प्राप्त करने या अनुसंधान आदि की दृष्टि से विदेश जाना चाहते उन्हें अवसर दिया जाता पर विदेशी मुद्रा की कमी के नाम पर इस स्वतन्त्रता को नियन्त्रित कर दिया गया है और दूसरी ओर हर मन्त्री उपमन्त्री योजनाओं के पहलुओं पर अनुसन्धान और ज्ञान प्राप्त करने का बहाना ढूंढ कर विदेश के लिये चल पड़ते हैं जब मन्त्रियों का यह हाल है तब अन्य

(शेष अगले पृष्ठ पर)

निरामिष भोजियो सावधान ! मछली का आटा आ रहा है !!

(श्री सोमाराम वेनु-सेवक)

केन्द्र के खाद्यान्न व कृषि संगठन के कार्यालय के एक प्रवक्ता ने अधिकृत रूप से बताया है, "देश में बहुत शीघ्र खाने योग्य मछली का आटा उपलब्ध हो सकेगा, यह आटा स्वीडन की एक कम्पनी द्वारा तैयार किया जावेगा", प्रवक्ता के अनुसार इतनी सस्ती प्रोटीन की प्राप्ति की दिशा में यह पहिला मान्य प्रयास है। ताजी मछली के मांस में १५ प्रतिशत प्रोटीन होता है और इस आटे में प्रोटीन का औसत ८२ प्रतिशत होगा। इस मछली के आटे से रोटी, बिस्कुट इत्यादि आसानी से बना सकते हैं।

देखा आपने यह हैं हमारे केन्द्रीय खाद्य विभाग के काले कारनामे, जिसके सुयोग्य मन्त्री एक जैन सज्जन हैं। अहिंसा के पाठकों को स्मरण रह सकता है, इसी केन्द्रीय खाद्य विभाग की ओर से मांस बाजार रिपोर्ट प्रकाशित की गई है। जिससे मांस में प्रोटीन की मात्रा अधिक बतलाकर मांस को राष्ट्रीय उद्योग और भारतीयों के लिए अनिवार्य भोजन बतलाया गया है। रिपोर्ट में मांस का वार्षिक उत्पादन ४ लाख टन बतला कर उसका मूल्य ७६ करोड़ बताया गया है। इस नारकीय धन्धे से सरकार को २२ करोड़ की बचत बताई गई है और जनता को आगाह किया गया है। वह मांस के बढ़ते हुए व्यापार के लिये अच्छे नस्ल के जानवरों का पालन करें। साथ ही सुअरों के मांस का भी बढ़ाने की सिफारिश की गई है।

ये हैं—अहिंसा को अपना ध्येय बताने वाले शासन के काले कारनामे ? अभी तक तो दूध, दही, घी का रोना था कि मुह मागे दाम देने पर भी ये पदार्थ शुद्ध नहीं मिलते। अब मछली के आने वाले आटे ने निरामिष भोजियों के सामने नया धर्म संकट लाकर खड़ा कर दिया है। भोजन की पवित्रता कैसे सुरक्षित रखी जावे ? इसके लिए अहिंसा-वादियों को किसी स्थान पर शीघ्र एकत्रित होकर विचार विमर्श करना बहुत जरूरी हो गया है। इस दिशा में शत प्रतिशत निरामिष भोजी समाज के उत्साही श्रीमानों को अन्य धर्मावलम्बियों का पथ-प्रदर्शन करना चाहिए। यही अवसर है। जबकि मांस विरोधी प्रचार योजना को हाथ में लेकर मांस समर्थकों से सीधा मोर्चा लेना चाहिए। दुःख तो इस बात का है कि इतने लेख लिखे जा रहे हैं। अपीलें प्रकाशित की जा रही हैं। उनका असर कुछ न होकर सब अरण्य रोदन वत् होती जा रही है। न कोई काम करने को तैयार हो रहा है, न क्रियात्मक सहयोग देने को, भगवान् जाने—हमारी धार्मिक तड़पन कहाँ विलीन हो गई ? समाज के श्रीमान दिखावा के कब जलूस कार्यों में हजारों लाखों बात की बात में व्यय कर देते हैं पर ऐसे प्रश्नों पर ध्यान देने का न उनके पास समय है न उनकी तिजोरी में रुपये हैं। इस दिशा में सरकार से कुछ करा सकने की आशा करना तो सर्वथा बेकार है। कारण—वह अपना ध्येय मांस प्रचार बना चुकी है। उसकी इस योजना के विरुद्ध जो बोलकर जनता में क्रान्ति पैदा कर सकते थे, ऐसे विद्वानों और प्रभावशाली साधुओं को वह खरीद चुकी है। उनसे भी विशेष आशा नहीं। जो थोड़े से स्वाभिमानी विद्वान बचे हैं उन पर हमारा ध्यान केन्द्रित हो रहा है।

याद रखिये। यदि इस धर्म संकटकाल में हमने इसी तरह उपेक्षा की दृष्टि रखी, तो वह अभागा दिन दूर न होगा जब शुद्ध आहार की बातें शास्त्रों के पन्नों में लिखी मिलेंगी। व्यवहार में नहीं।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

अफसरों को कौन कुछ कह सकता है। भी मन्त्रियों का अनुकरण करते और खुले दिल बेरहम होकर भारत की गरीब जनता के धन का दुरुपयोग करने में संलग्न रहते हैं।

नवीन आंकड़ों के अनुसार १९५६-५७ में दो सौ सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल विदेश गये थे। उन पर ३८ लाख ६८ हजार रुपया व्यय हुआ था। १९५७-५८ में कुछ नियन्त्रण रहा १७२ प्रतिनिधि मण्डल गये और उन पर ३० लाख ८२ हजार धन व्यय हुआ। १९५८-५९ के वर्ष में किफायत का ध्यान नहीं रक्खा गया और इस वर्ष २०५ प्रतिनिधि मण्डल विदेश गये और उन पर ४० लाख रुपया व्यय हुआ।

ये आंकड़े स्वयं अपनी कहानी कह रहे हैं। विदेश में सरकारी धन पर यात्रा बहुत ही सीमित और प्रतिबन्धित की जानी चाहिये। विदेशी मुद्रा के साथ इस प्रकार का दुरुपयोग भारत की जनता अधिक समय तक बरदाश्त न करेगी। सरकार की फिजूलखर्चियों के रहते जनता से योजनाओं के लिये धन और सहयोग की आशा मृगतृष्णा होगी।

★

ईसाई प्रचार-निरोध-आन्दोलन

श्री नेहरूजी अपने आश्वासन को पूरा करें

वन-जातियाँ जीवन यापन में स्वतंत्र नहीं

२ जून के हिन्दी हिन्दुस्तान में प्रकाशित एक समाचारानुसार भारत के प्रधान मन्त्री माननीय श्री जवाहरलाल जी नेहरू ने दक्षिण की नीलगिरी के कोता, टोडा, इरूलर, कुरुम्बर और पनिया नाम की वन जातियों के लोगों की एक सभा कोटागिरि में भाषण देते हुए कहा कि अपनी जीवन, विधि वे स्वयं ही निर्धारित करें। मैं नहीं चाहा करता कि कोई दूसरे के रहन-सहन या रीति-रिवाजों को बलात् बदलवावे। श्री प्रधान मन्त्री महोदय के ये शब्द बड़े ही मार्मिक, हृदय स्पर्शी तथा उनकी मानवीयता के द्योतक हैं, मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि स्थिति उनकी इच्छा के सर्वथा विपरीत है।

माननीय प्रधान मन्त्री महोदय से मैं सूचनार्थ निवेदन करना चाहता हूँ कि दक्षिण ही नहीं अपितु समूचे भारत में वनवासी जातियों का धर्म, संस्कृति व सभ्यता आज भयंकर संकट में है और इनका बलात् परिवर्तन किया जा रहा है। लगभग सभी वनवासी निर्धन, अपढ़ और भोले हैं। इनकी इस निर्बलता व असहाय अवस्था का विदेशी ईसाई मिशनरी विदेशों से प्राप्त अतुल धनराशि के बल पर अनुचित लाभ उठा रहे हैं। बहुत सी जातियों का तो धर्म, भाषा, वेश आदि सभी कुछ बलात् परिवर्तन कर दिया गया है, ऐसे अनेकों प्रमाण उपस्थित हैं कि जहां वनवासियों की जबरदस्ती चोटियां काटी गई हैं। ईसाई न बनने पर उनकी जमीन छीन ली गई और उन पर छुरे और बन्दूक से आक्रमण किया गया। धन और सहायता की मार से किये गये धर्म-परिवर्तन की संख्या एक दो नहीं अपितु लाखों हैं।

साधारण चलते फिरते आदमी अथवा संस्था ने नहीं अपितु सरकार द्वारा नियुक्त नियोगी कमेटी ने बलात् धर्म-परिवर्तन को स्वीकार करते हुये विदेशी मिशनरियों की गतिविधियों को अराष्ट्रीय एवं राजनीतिक बतलाया है, परन्तु सरकार ने उस रिपोर्ट को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। आज समूचा देश विदेशी मिशनरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों पर चिन्तित है। परन्तु सरकार कान में तेल डाले घर फूंक तमाशा देख रही है।

आश्चर्य इस बात पर है कि सरकार ने दोगली नीति अपनाई हुई है ? इसके नेताओं के सार्वजनिक भाषण और आचरण में अन्तर है ? इनसे देश के अराष्ट्रीय तत्वों को बढ़ावा मिल रहा है और देश की सुरक्षा को खतरा बढ़ता जा रहा है। अतः मैं माननीय प्रधान मन्त्री महोदय से अनुरोध करता हूँ कि वह अपने आश्वासन के अनुसार भारत के वनवासियों के धर्म, संस्कृति व सभ्यता की रक्षा करें।

ओम्प्रकाश त्यागी
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

बनजारों की सिक्खों के षड़यन्त्र से रक्षा

दिनांक २९, ३० अप्रैल ५९ को औरैया में सिक्खों ने धर्म परिवर्तन की एक नयी चाल चली जिसे स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा विफल बना दिया गया, जिससे सिक्खों का षड़यन्त्र सफल न हो सका।

देहली के सिक्ख मिशन द्वारा औरैया में सिक्खों ने गुरुद्वारा के एक सिक्ख बनजारा कान्फ्रेंस का आयोजन किया, जिसमें बनजारों को प्रस्तुत बताकर सिक्ख बनाने का प्रयत्न किया और सिक्खों की संख्या बढ़ाचढ़ा कर बतानी चाही। मगर समय से पूर्व ही स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने उनकी इस चाल को समझ लिया और बनजारों में प्रचार करना शुरू किया जिससे लगभग ४०-५० गांवों में ४००-५०० बनजारों ने गुरुद्वारा में जाने से इन्कार कर दिया और आर्यसमाज मन्दिर में एकत्रित होकर अपनी बिरादरी को इस चालबाजी से अवगत कराते हुए सावधान किया जिससे कोई भी बनजारा सिख न बना और जो सिक्ख बनजारा कान्फ्रेंस गुरुद्वारा में बुलाई गई उसका पूर्ण रूप से, हिन्दू बनजारों ने बहिष्कार किया। और राजपूत बनजारा बिरादरी ने १६-२० मई की सम्मिलित बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय किया कि हमारा सिक्ख मजहब से कोई ताल्लुक नहीं है।

—दिल्ली प्रदेश हरिजन लीग के प्रधान श्री चतरसिंह ने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान किये जाने पर भी देहात में हरिजनों की स्थिति संतोषजनक नहीं है।

देशदर्शन

—कम्युनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद् ने एक प्रस्ताव पास किया है जिसमें कहा गया है कि केरल में नया आम चुनाव कराने की कांग्रेस हाई कमान की माँग जबर्दस्ती है। केरल के वर्तमान संकट का दूर करने का एक ही तरीका है—वह यह कि आपस में बैठकर बातचीत कर ली जाय।

प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि केरल सरकार ने बहुत ही संयम से काम लिया है पर जहाँ कहीं सरकार को बल प्रयोग करना पड़ा वह अच्छी बात नहीं है।

—केरल के विरोधी दलों के नेताओं ने कम्युनिस्ट पार्टी के गोलमेज वार्ता के सुझाव को अस्वीकार करके कहा है कि समस्या का एकमात्र हल नये चुनाव हैं। राज्य विधान सभा में कांग्रेस दल के नेता पी० टी० चयाको ने अपने वक्तव्य में कहा है कि कम्युनिस्ट पार्टी नये चुनावों से इसलिए घबराती है कि उसे मालूम हो चुका है कि चुनाव होने पर उसकी पराजय निश्चित है।

—समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया ने हैदराबाद की एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा है कि प्रधान मन्त्री का यह सुझाव उचित ही है कि केरल में आम चुनाव करवाया जाय। आपने कम्युनिस्टों को सलाह दी कि वे इस्तीफा देकर फिर जनता को अपनी राय प्रकट करने का अवसर दें।

—एर्नाकुलम का समाचार है कि १७ जुलाई को पुलिस ने लगभग १ हजार आदमियों की भीड़ को तितर बितर करने के लिए उन पर बेंतों से प्रहार किया। राज्य यातायात बसों के सामने जो छात्र-गण धरना दे रहे थे उन्हें देखने के लिए यह भीड़ जमा हुई थी।

—केरल के ८२ वर्षीय वृद्ध नेता श्री मन्नत पद्मनाभन नई दिल्ली आये हुए हैं। उन्होंने एक विशेष भेंट में केरल के कम्युनिस्ट सरकार विरोधी आन्दोलन की सफलता में अपना विश्वास प्रकट किया है और कहा है— केन्द्रीय सरकार हस्तक्षेप करे, या न करे केरल की डेढ़ करोड़ जनता ने कम्युनिस्ट शासन से अपने आपको मुक्त करने का संकल्प कर लिया है।

—राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डाक्टर मथुरालाल शर्मा ने बिलाई शिक्षा-विद्यार्थी समाज के प्रति स्थापना दिवस का उद्घाटन करते हुए अपने भाषण में कहा कि भारत के सभी राजनीतिक दल विद्यार्थियों को अपनी ओर खींचना चाहते हैं इसलिए कि उन्हीं पर उन्हें अपना भविष्य दिखाई पड़ता है।" आजकल विद्यार्थी पढ़ाई की अपेक्षा यूनियनों के चुनावों, हड़ताल अध्यापकों से लड़ाई और श्रमदान पर समय बर्बाद करते हैं। विद्यार्थियों को राजनीति में खींचने तथा उन्हें पढ़ाई से अलग करने की जिम्मेदारी सत्ताधारी पार्टी पर अधिक है, क्योंकि उसने विद्यार्थियों के भविष्य के लिए कोई कार्यक्रम निर्धारित नहीं किया है। अन्त में उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे राजनीति से अलग रहकर विद्याध्ययन में मन लगावें।

—देश में अध्यापिकाओं की कमी को ध्यान में रखकर केन्द्रीय सरकार ने कुछ ऐसे प्रस्ताव रखे हैं जिनसे उनकी संख्या बढ़े और सन् १९६२तक ६ और ११ वर्ष की उम्र के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने में सुविधा हो।

कहते हैं कि अब से १९६२ तक प्राय ४ लाख अध्यापिकाओं की जरूरत पड़ेगी।

—वित्त मंत्री श्री मुरारजी देसाई अहमदाबाद पहुंचे हैं। कालूपुर रेलवे स्टेशन पर महा गुजरात जनता परिषद् के प्रदर्शनकारियों ने उनका काले झण्डों से स्वागत किया। प्रदर्शनकारी द्विभाषी बम्बई राज्य विरोधी नारे लगा रहे थे। प्रदर्शनकारी मांग कर रहे थे कि द्विभाषी महा गुजरात का निर्माण हो और १९५६ के पुलिस गोलीकाण्ड की अदालती जांच की जाय।

—पंजाब उच्च न्यायालय की डिवीजन बैंच ने बी० एड० की परीक्षा में अनुत्तीर्ण एक छात्र राजेन्द्र साधी द्वारा दाखिल पंजाब विश्व विद्यालय के विरुद्ध रिटपिटीशन खारिज कर दी। श्री सोंधी सितम्बर १९५७ में बी०एड० की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गये थे।

—बाढ़ के कारण कश्मीर राज्य की फसलों को बड़ी हानि पहुँची है। केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि-मंत्रालय को यह विश्वास है कि वह किसी भी तात्कालिक अभाव को पूरा करने में समर्थ है।

—वाराणसी में शिव के मन्दिर को पुनः प्राप्त करने के लिए हिन्दू महासभा सत्याग्रह आन्दोलन चला रही है। इसी सम्बन्ध में १६ जुलाई को चार सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिये गये।

नियोजित विकास और जन-सहयोग

(श्री श्रीगोपाल)

नियोजन हमारे देश के लिए कोई नया शब्द नहीं है। हम सभी इसके विभिन्न रूपों और लक्ष्यों से पूर्ण परिचित हो चुके हैं। सुनियोजित विकास का मार्ग अपनाने का निर्णय हमारे देश में आज से लगभग २१ वर्ष पूर्व ही कर लिया गया था जब प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय नियोजन समिति संगठित की गयी थी। हमारे देश के लिए जो अपेक्षाकृत अविकसित था और सामन्तवादी वातावरण से निकलकर समाजवादी व्यवस्था की ओर बढ़ना चाहता था सुनियोजित प्रणाली और भी आवश्यक थी।

यद्यपि नियोजित विकास का पथ अपनाने का निश्चय हमने बहुत पहले कर लिया था किन्तु परिस्थितियों वश हम इस दिशा में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही कार्य कर सके जब भारत की पहली पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित की गयी। प्रथम पंचवर्षीय योजना बनाते समय उद्देश्य ... विशेष रूप से ध्यान में रखा गया। पहली तो यह कि हमारी योजनाएं जन योजनाएं हों। उनके निर्माण और कार्यान्वय में जनता का सहयोग प्राप्त हो। दूसरी बात यह थी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देश सामन्तवादी युग में ही था अर्थात् हम बहुत पीछे थे और समय का रथ बहुत आगे बढ़ चुका था। इस दूरी या खाई का निराकरण बिना वास्तविक विकास की ... नहीं किया जा सकता था। इन बातों को ध्यान में रखते हुए ही विकास ... निर्माण में आर्थिक और सांस्कृतिक ... पर समान बल दिया गया। ... इस ... को समझना बहुत आवश्यक है। सांस्कृतिक ... महत्व ... फलतः अन्तत्र के ... उत्पन्न हो जायगा।

हमारी प्रथम पंचवर्षीय आयोजना कृषि प्रधान थी। ... यह था कि अविकसित एवं कृषि प्रधान देश के विकास के लिए कृषि को ही आधार बनाना आवश्यक होता है। कृषि विकास से ही देश की तत्कालीन समस्याएं बहुत कुछ अंशों में हल होती हैं उद्योगीकरण की सम्भावनाएं बढ़ती हैं रोजगार के साधनों में वृद्धि होती है भूमि का दबाव घटता है जीवन स्तर उठता है तथा प्रगति के नये द्वार खुलते हैं।

हमारी द्वितीय आयोजना जो विकास की दूसरी मंजिल है उद्योग प्रधान है। इसमें भारी उद्योगों की स्थापना पर बल दिया गया है। साथ ही छोटे तथा कुटीर उद्योगों की उन्नति का भी ध्यान रखा गया है। आयोजना की निर्धारित धनराशि में से काफी बड़ा भाग ग्रामों के विकास पर खर्च किया जायगा।

अब हमें इस बात पर विचार करना है कि हमारी नियोजन सम्बन्धी योजनाओं में जन सहयोग का क्या स्थान रहा है। जहाँ तक औद्योगिक पक्ष का सम्बन्ध है इसमें प्रत्यक्षतः जन सहयोग की अधिक आवश्यकता नहीं रहती। अप्रत्यक्ष रूप में पूंजी जमा करने में जन सहयोग की आवश्यकता अवश्य रहती है जन सहयोग की आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में है। देश की लगभग ८२ प्रतिशत जनता गांवों में रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों का विकास प्रायः सामुदायिक विकास योजनाओं या राष्ट्रीय प्रसार सेवा योजनाओं के अन्तर्गत हो रहा है। प्रसार सेवा कार्यों में जन सहयोग का क्या स्थान रहा है इस सम्बन्ध में समस्त देश का दौरा करने के बाद बलवन्त राय मेहता कमेटी ने १९५७ में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। हमारे प्रदेश की स्थिति के विषय में अप्रैल सन् १९५९ में गोविन्द सहाय कमेटी ने अपनी रिपोर्ट दी है। दोनों ही रिपोर्टें इस समस्या पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं।

मेहता कमेटी की रिपोर्ट में बताया गया है कि ... ग्रामीणों ने भाग लिया। इसका कारण सम्भवतः यह था कि हमारे ... ग्रामीणों को ... की आशा है। गोविन्द सहाय कमेटी ने भी इस बात की पुष्टि की है। इन रिपोर्टों से स्पष्ट है कि कुएं सड़क जल निकासी की नालियां पाठशाला पंचायत घर आदि के निर्माण में ग्रामीणों ने काफी बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। सामुदायिक केन्द्रों की स्थापना में उनकी अभिरुचि अपेक्षाकृत कम थी। कुछ स्थानों में तो यह भी देखने में आया कि जिस पेशे के व्यक्ति को प्रसार खण्डों के जिन कार्यों से अधिक लाभ की आशा थी उसने उसीको सम्पन्न करने के लिए अधिक योगदान किया।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

'तथा ईश्वर स्तुति गीत अतिचेतन आलोक का'

—योगिराज अरविन्द

[आध्यात्मिक साहित्य की हिन्दी में अभिवृद्धि की दृष्टि से यह अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। सभी दार्शनिक मान्यताओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। —सम्पादक]

काव्य-कानन

उठा कर मन्थर, गुरु जवनिका शरीर की
वह खड़ा हुआ एक देहरी पर भुजंग-रक्षित
और झाँका झिलमिलाते अन्तरहित गूढ़पथों में,
नि:शब्द, नीरव और सुनते हुए नि:शब्द हृदय में
अभिनव, अपूर्व और अज्ञात के आगमन हेतु।

× × ×

उसने निहारा रिक्त नि:शब्दताओं के आर पार
और सुने पादन्यास अकल्पित 'संकल्प' के
सुदूर वीथियों में अज्ञात 'अतिक्रान्त' की।
उसने सुनी प्रच्छन्न 'वाणी' वह 'शब्द' जानता जो,
और देखा अव्यक्त आनन जो है हमारा निजी।

× × ×

अन्तरस्थ स्तरों ने किये अनावृत निज सितोपल द्वार,
विचित्र शक्तियों व प्रभावों ने किया स्पर्श जीवन उसका।

× × ×

हमारे जग अपेक्षया उच्चतर लोकों का आया आभास,
एक चेतना उच्चतर क्षेत्रों तथा गगनों की,
सत्ताओं का जो अल्प-जीवी मनुजों अपेक्षा परिमित न्यून
तथा इन नाशवान ढाँचों अपेक्षा सूक्ष्म शरीरों का,
वस्तुओं का जो अति महीन हमारे पार्थिव सम्भार हेतु
कृत्यों का आन्दोलित एक अति मानवीय आलोक से
तथा गतियों का प्रबोधित एक अतिचेतन प्रवेग द्वारा,
और हर्षों का जो कभी नहीं बहे नश्वर अंगों सु,
तथा अवनी के अपेक्षा व्यापकतर हृदयों व भव्यतर जीवनों का।

× × ×

एक चेतना ने सौंदर्य की व आनन्द की,
एक ज्ञान ने, जो बन गया जो देखा, जाना जिसने,
पुन: किया स्थापित विच्छिन्न अनुबोध व हृदय
और ली खींच सकल 'प्रकृति' निज परिरम्भ में।

× × ×

आगे झुका मन भेंटने को प्रच्छन्न जगतों को।

× × ×

वायु दहका व भर गया चित्र आकारों, छवियों से,
फुरफुराईं नासारन्ध्रों में दिव्य सुगन्धियाँ,
रसना पर गया ठिठक मधु वैकुंठ का।

× × ×

एक स्रोत, एक ऊष्मा विस्मयमय सुरसगति की,
आकर्षण था एक प्रवाह मायिक निशामन का,
एक तथा गुह्य शब्दों हेतु सुन सकती नहीं धरा जिन्हें।

× × ×

एक प्रच्छन्न प्रदेश में से निश्चेष्ट आत्म के
आयी वाणी एक निमज्जित, अज्ञात सत्य की
जो होता प्रवाहित ब्रह्माण्ड-तलों के अधस्तात्,
श्रुत केवल एक सर्वज्ञात्री नि:शब्द नीरवता मध्ये,
सँजोया अन्तरङ्ग हृदय तथा गुप्त अनुबोध द्वारा।

× × ×

जिसने पकड़ा भार गुत्थियों का मुखरवत् और मूक,
जिसने किया अनुमोदन धरती की अतृप्त माँग का
तथा अननुभूत स्वर्गों की प्रतिज्ञा के गीत का,
एवं सर्व का जो छिपता एक सर्व समर्थ 'निद्रा' में।

× × ×

एक अविराम लीला नाटक में वाहित 'काल' द्वारा
अपने आवत१ अकथीयमान२ ओघ३ पर जो करता वहन
जग की अशेष आशंका एक तीर्थयात्रा पर अथक विना,
फेनाये, झुनझाये हास्य वीतनिद्र४ हर्ष मोद के
तथा कलगुञ्जन अभिलाष के भर सकती जो नहीं,
एक आक्रोश आया भुवन के आगामी आह्लाद का,
वैभव व विशालता जिसके संकल्प की जीने हेतु,
प्रत्याह्वान अन्तरात्मा की जोखिम का दिगन्त में,
एक पर्यटक ऐन्द्रिजालिक शताब्दियों सु
तथा सत्ता का श्रम, प्रयास 'अन्न' के विश्व में,
जिसकी खोज निज जन्म के रहस्यमय अभिप्राय हेतु
तथा परम आध्यात्मिक प्रतिवाद के प्रमोद हेतु,
जिसका स्पन्दन तुष्टि परितोष तथा माधुर्य का,
समस्त माधुर्य में जीवन के उपहारों के,
जिसके पृथुप्राणतयानाड़ी एव रोमांच आशा व भीतिका,
जिसका आस्वादन व्यथाओं व आँसुओं और आह्लाद का,
जिसके हर्षावेग का तीव्र स्पन्दन सहसा सुहर्ष का,
गद्गद जिसके अनुराग तथा असमाप्तशील पीड़ा का।

× × × ×

कलरव और उपांशुवाद५ अश्रुत ध्वनियों के
जो उमड़तीं हमारे उरों चहुँ ओर पर पातीं न गवाक्ष६
करने को प्रवेश, भये स्फीत सर्व के उपमान में
जो करता सहन बना रहने हेतु अब भी अज्ञात
तथा सर्व जो करता श्रम व्यर्थ होने को उत्पन्न
एव सर्व माधुर्य जिसे नहीं चखेगा कोई कभी
और सर्व सौन्दर्य के जो होगा कदापि नहीं।

× × × ×

अश्राव्य हमारे बधिर और नश्वर श्रोत्रों को
विस्तीर्ण भुवन-तारकों ने सुना निज प्रति विशाल स्तोत्र
जिस प्रति करता जीवन प्रयास फहराने को हमारे पक्ष-स्पन्द यहाँ,
करके विलयन हमारी सीमाओं का अपरिमेय में,
करके सम स्वर साम्य को अनन्त की ओर।

× × × ×

एक मंद गुनगुनाहट उठी अवचेतन गुहाओं से,
हकलाहट, तुतलाहट आदिम अज्ञता की;
उत्तर उस अव्यक्त अस्पष्ट प्रश्नात्मकी प्रति,
वहाँ झुके चपला कन्धरा तथा गर्जन के शब्दों सामने
एक तेजस्वी, शुभ्र स्तोत्र 'अनिर्वाच्य' प्रति
तथा ईश्वर स्तुति गीत अतिचेतन आलोक का।

× × × अनुवादक—अजित

श्री अरविन्द कृत अंग्रेजी काव्य 'सावित्री' से, अनूदित।

१—लम्बे, २—अकथनीय, ३—प्रवाह, ४—निद्रारहित, ५—कानाफूसी, ६—खिड़की।

विदेश-वार्ता

जर्मनी में भारतीय संस्कृति का प्रभाव

[श्री प्रेमनारायण अग्रवाल]

इस लेख के लेखक श्री अग्रवालजी हाल ही में अपनी यूरोप व जर्मन यात्रा से वापस आये हैं। अपनी इन यात्राओं में उन्होंने जो देखा सुना है इस लेख में लिखा है।

—सम्पादक

जर्मनों की भारत में दिलचस्पी करीब १२० वर्ष प्राचीन है। संस्कृत, भाषा, साहित्य और भारतीय दर्शन ने सबसे पहिले उनका ध्यान आकर्षित किया और चूंकि उनका भारत से इतने निकट का सम्बन्ध न था उनके विद्वानों को इनकी खोज में लन्दन जाना पड़ा। उन्होंने लन्दन में भारतीय ग्रन्थों की कुछ हस्तलिपि से अध्ययन किया। लन्दन से उन मूल्यवान ग्रन्थों को बाहर ले जाना सम्भव न होने के कारण उन्होंने अत्यन्त परिश्रम व श्रद्धा से उनकी नकल स्वयं तैयार की और फिर जर्मनी में जाकर उनका विशद अध्ययन किया और बाद में उन्हें प्रकाशित भी किया।

भारत का नाम उनको अंग्रेजों द्वारा सुनने को मिला और फिर भारत वर्ष से उनका प्रेम बढ़ता गया। जर्मनी के इतिहास का यह वह समय था जब वह विदेशों में अधिकाधिक दिलचस्पी लेना प्रारम्भ कर रहे थे कुछ भारतीय ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवादों को पढ़ने से जर्मनों को भारतीय विचारधारा और साहित्य की उत्कृष्टता का पता चला। ज्यों ज्यों वह अधिक गहराई में गये उनको इसकी वास्तविकता का पता लगा और यह मान गये कि योरोप की सभी भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है जो संसार की समस्त भाषाओं में प्राचीनतम है और भारतीय विचार धारा मानव की मूल विचारधारा का स्रोत है। हमारी अनेक प्रसिद्ध संस्कृत की पुस्तकों का जर्मन भाषा में अनुवाद हुआ और वह प्रकाशित हुईं। कइयों पर भाष्य लिखे गये। हमारे वेदों का भी वहां गहरा अध्ययन किया गया और वह जर्मन अनुवाद के साथ प्रकाशित हुये। उनके गहरे भारत प्रेम का एक नमूना इसीसे प्रकट होता है कि सात भागों में बड़े आकार का १७ हजार पृष्ठों का एक वृहत कोष संस्कृत में जर्मन भाषा के लिये सन् १८५५ में प्रकाशित हुआ। पाणिनि की महाकठिन अष्टाध्यायी का अनुवाद इस से भी पूर्व सन् १८३९ में ही प्रकाशित हो चुका था। अन्य कई महत्वपूर्ण अनुवाद व मूल पुस्तकें जर्मन भाषा में प्रकाशित हुईं।

जब भारत के सम्बन्ध में इतने प्रचुर साहित्य का प्रकाशन वहां हुआ तो कुछ न कुछ वहां की जनता ने भी पढ़ा ही और वह भारत की संस्कृति, भाषा, साहित्य विचारधारा आदि के प्रति अधिकाधिक आकृष्ट होने लगी। इन प्रकाशनों की विविधता इतनी अधिक थी कि सभी प्रकार के जर्मनों को कुछ न कुछ इसमें मिल ही गया। इन पुस्तकों की लोकप्रियता इतनी बढ़ी कि कई ग्रन्थों के ४४ और २२ संस्करण तक प्रकाशित हुये। एक समय वेदों का धर्म नामक पुस्तक जर्मनी में अत्यधिक लोकप्रिय थी प्रोफेसर ग्लेसनेप जो इस समय ७० वर्ष से भी ऊपर के हैं जिनके दर्शन करने का सौभाग्य हमें हाल ही के अपने जर्मनी प्रवास में प्राप्त हुआ था अब भी प्रतिवर्ष एक पुस्तक विभिन्न भारतीय धार्मिक सिद्धान्तों पर प्रकाशित करते हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारण जिसने उनके भारत प्रेम को विकसित होने में अत्यधिक सहयोग दिया था वह था कि उस काल के जर्मनी के प्रमुख विचारक भारतीय विचारधारा से प्रभावित हो चुके थे। उन्होंने जो कुछ लिखा उस पर भारतीयता की छाप किसी न किसी रूप में आ गई। उदाहरणार्थ जर्मनी का सबसे अधिक लोकप्रिय श्रद्धास्पद विचारक राजनीतिज्ञ नेता और कवि गेटे भी इस प्रभाव से नहीं बच सका। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक फोयास्ट पर हमारी शकुन्तला की छाप है और इस को उन्होंने प्रस्तावना में खुल्लम खुल्ला स्वीकार किया है।

इस सबका प्रभाव यह हुआ कि जर्मनों ने अपने विश्वविद्यालयों में इण्डोलोजी विभाग खोलना प्रारम्भ कर दिया जिसमें उनका परिचय इससे अधिक निकटस्थ होता जाय। बर्लिन विश्वविद्यालय में सन् १८२१ ई० में सबसे पहले यह विभाग खोला गया। आज जर्मनी के ग्यारहों विश्वविद्यालयों में यह विभाग विद्यमान है। इनमें से ६ में तो यह विभाग पृथक विभाग के रूप में हैमबर्ग बोन म्यूनिख मारबुर्ग गोटिनगिन और ट्यूबिनगन के विश्व विद्यालय में काम कर रहा है। शेष विद्यालयों में यह उनके भाषा विभागों का एक विभाग है। इण्डोलोजी से उनका अभिप्राय है भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अन्वेषण, सभ्यता के सभी रूप साहित्य इतिहास दर्शन राजनीति कला आदि स्वाभाविक रूप से हमें जर्मनों का भारत से इतना प्रेम देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि भारत से इतनी दूर स्थित होने पर भी उसमें भारत के प्रति इतनी दिलचस्पी है जब कि उनके पड़ौसी पड़ौसी योरोप के अन्य देशों में उनको इतना अनुराग नहीं है यद्यपि उनसे उनका काम धाम रोज ही पड़ता है।

इसका प्रभाव यह है कि साधारण जर्मन नागरिक भी भारत से परिचित ही नहीं अपितु भारत के प्रति सद्भावना और प्रेम से भी ओत प्रोत है। भारत में उनकी दिलचस्पी अपने विश्वविद्यालयों में इण्डोलोजी का विभाग खोलने के बाद समाप्त नहीं हो गई है वरन् बढ़ती ही गई। उनके देश में कई बार उथल पुथल हुई दो बार संसार व्यापी युद्ध हुआ भारत की राजनीतिक परतन्त्रता ने भी उनको भारत की ओर आकर्षक होने से नहीं रोका। दोनों का सम्बन्ध पहले से व्यापक ढंग से होता। पर इधर और बढ़ता ही गया। प्रत्येक भारतीय यात्री का जर्मनी में इससे अनेक प्रमाण मिलते थे।

हमें कम से कम आधे दर्जन ऐसे जर्मन पुरुष मिले जो भारत के सम्बन्ध में पुस्तकें लिख रहे थे वर्तमान भारत के सम्बन्ध में अधिक से अधिक बातें जानने की उनकी आतुरता देखकर हम दंग रह गये जर्मन जनता कितनी प्राचीन भारत से परिचित है उतनी वर्तमान भारत से नहीं। जर्मन लोगों ने स्वयं यह स्वीकार किया और समस्त देश का भ्रमण करने के बाद हमारी भी यही धारणा है और इस बात की आवश्यकता है कि उनको आधुनिक भारत के बारे में अधिक जानकारी कराई जाय। भारत के प्रति उनकी सद्भावनायें अगाध हैं इसलिये उनको यह बात बताना अधिक सरल है। हम ऐसे अनेक जर्मन स्त्री पुरुष मिले जो भारत भ्रमण के लिये उत्सुक थे। जब वह अपनी यह इच्छा पूरी कर सकेंगे तो उनके जीवन का एक महान् स्वप्न साकार हो जायेगा।

सितम्बर ५० की पुस्तक-प्रदर्शनी जो वहां के प्रसिद्ध व्यापारिक शहर फ्रैंकफर्ट में हो रही थी हमने कई प्रकाशकों को भारत सम्बन्धी अपनी प्रकाशित पुस्तकों को महत्वपूर्ण स्थान पर प्रदर्शित करते हुये देखा था। एक प्रकाशक ने तो बड़े बड़े पोस्टरों को बनाकर भारतीय लेखकों की पुस्तकों को सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया था। हम इसे देख कर बड़े प्रभावित हुए और कम रोशनी के होते हुए भी फ्लैश के अभाव में भी फोटो खींचने का लोभ संवरण न कर सके जो सौभाग्य से पर्याप्त अच्छा आ गया। इस प्रदर्शनी में हमने देखा कि कई भारतीय लेखकों की पुस्तकों का जर्मन भाषा में अनुवाद हो चुका है और कई पुस्तकें वर्तमान भारत के सम्बन्ध में भी हैं।

कई प्रमुख जर्मन पत्र भारत में विशेषरूप से दिलचस्पी लेते हैं जो नियमित रूप से भारत के समाचार चित्र आदि प्रकाशित करते रहते हैं। भारत में आने पर हमें मालूम हुआ कि भारत में अनेक विदेशी पत्रकारों में सबसे अधिक संख्या में जर्मन पत्रकार रह रहे हैं। भारतीय सामग्री की वहां खासी मांग रहती है।

एक जर्मन मित्र के साथ जब हम वहां के अन्दरूनी भाग में यों ही मन बहलाव व सैर सपाटे के लिये गये तो हाईडलहाईम नामक छोटे स्थान के अजायबघर में एक भारतीय विभाग देखने को मिला। इसमें करीब १००० भारतीय वस्तुयें थीं जिनमें ५०० हमेशा प्रदर्शित की जाती। इनको देखने ५०० दर्शक प्रतिमास आते। यह एक जर्मन व्यापारी ने अपनी तीन बार की भारत यात्रा में इकट्ठी की थी। यह भारत में ६ साल तक रहे थे और उन्होंने १९०४-१० में भारत पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की थी। बाद में अपनी एकत्रित सामग्री का अनुदान इस अजायबघर को दे दिया था जिससे जनता लाभ उठा सकें। हमें मालूम हुआ कि इस प्रकार के कई अन्य स्थान देश के कई भागों में हैं।

हमें अनेक जर्मन मिले जो भारत आ चुके हैं। अपने निजी तौर पर या सरकार की तरफ से या व्यापारिक फर्मों के सम्बन्ध से जर्मनी में वापिस जाकर वह अपने देशवासियों को भारत के सम्बन्ध में अधिकाधिक बातें बताते रहते हैं। भारत के बारे में बताने में उनको वास्तविक आनन्द आता और वह किसी भी ऐसे अवसर को चूकने नहीं देते हैं जिसमें वह भारत के अपने अनुभव बता सकें। वह भारत के प्रति अच्छी भावना उत्पन्न करने वाली संस्थाओं के समान हैं और वह भारतीय

(शेष पृष्ठ १० पर)

जीवन-ज्योति

बरेली में आर्यसमाज के स्तम्भ—

स्वर्गीय श्री पूज्य बाबू मुकुटबिहारीलाल जी मुख्तार

मुझ जैसे अनेकों आर्यों के जीवननिर्माता के प्रति श्रद्धांजलि

(लेखक—श्री आचार्य [illegible], प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक आर्यवीर सभा, तथा पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-नई दिल्ली)

भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त में रुहेलखण्ड का मुख्य विशाल नगर गङ्गा-यमुना के संगम पर प्रयागराज के समान दो नदियों के संगम पर स्थित है। इस नगर को लोग बांसबरेली कहते हैं पर वास्तव में इसका पुराना पूरा नाम बाबुबरेली है। बाबुदेव बरेलादेव दो क्षत्रिय भाइयों ने इस नगर को बसाया था। कहा जाता है परशुराम जी की माता के साथ लोगों ने कहा कि आप क्षत्रिय होती हैं तब फिर क्षत्रिय राम-कृष्ण की निकाली भागीरथी गङ्गा में क्यों स्नान और जलपान करते हैं, तब परशुराम ने स्वयं एक गङ्गा निकाली जो रामगङ्गा नाम से प्रसिद्ध है। इसी रामगङ्गा के तट पर बरेली नगर स्थित है एक अन्य पवित्र नदी भी इस नगरी के चरण प्रक्षालन करती है। जन संख्या चार लाख है और पाँच रेलवे स्टेशन छोटी-बड़ी रेलवे लाइन के यहाँ हैं।

यह नगर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की चरणधूलि से दो तीन बार पवित्र हुआ था। इस नगरी में बैठकर महर्षि ने वेदभाष्य का कुछ भाग लिखा था। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का लेखन कार्य महर्षि ने इसी बरेली नगर में समाप्त किया। ईसाइयों के साथ ऋषि ने अनेक शास्त्रार्थ और व्याख्यान इस नगर के टाउनहाल में किए। भगवान् कृष्ण की लीलाभूमि मथुरा के समान स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती जी की बाल-क्रीड़ा भूमि यह नगर रहा है। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के जीवन की अन्तिम लीला इसी नगरी में समाप्त हुई है। प० बुद्धदेव विद्यालंकार को पढ़ाया गुरुकुल कांगड़ी ने पर दयानन्दी बनाया इस नगरी ने ही। यह नगर दयानन्दी आर्य समाजियों का गढ़ सदा से है।

इस नगर में दस आर्यसमाजें हैं। आर्यसमाज के लड़के लड़कियों के सात हायर सेकण्डरी स्कूल हैं। संस्कृत विद्यालय, गुरुकुल, विशाल प्राचीन अनाथालय, अनेक आर्य संस्थाओं का जाल सा इस नगर में बिछा है। अनेक आर्यवीर दल, अनेक आर्यकुमार सभाएं यहाँ हैं। अनेक आर्य विद्वान, विदुषी देवियाँ, शास्त्रार्थी पण्डित, प्रसिद्ध भजनोपदेशक, शास्त्राचार्य इस नगरी की शोभा बढ़ा रहे हैं। किसी-किसी आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर सब बरेली के ही उपदेशक और प्रचारक इकट्ठे हो जाते हैं। बरेली स्वयं अपने में एक सभा है।

इस नगर में आर्यजगत् के विधाता दो व्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। एक स्व० डाक्टर श्यामस्वरूप जी सत्यव्रत और दूसरे स्व० बा० मुकुटबिहारीलाल जी मुख्तार। डाक्टर साहब आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली के निर्माता थे, और बा० मुकुट बिहारीलाल जी आर्यसमाज भूड़ बरेली के भाग्य विधाता थे। डाक्टर साहब की कार्यशैली स्वा० श्रद्धानन्द जी के समान थी और बाबू मुकुटबिहारी लाल जी की शैली महात्मा हंसराज जी के समान है। बा० मुकुट बिहारीलाल जी का यह कनिष्ठ पुत्र इतना कर्मशील है कि इसने कभी इस बात की चिन्ता नहीं की कि मैं आर्यसमाज का मन्त्री हूँ या नहीं। जब मंत्री रहता है तब भी उतना काम करता है और जब मन्त्री नहीं तब भी उतनी ही चिन्ता आर्यसमाज के कार्य की इस नवयुवक को रहती है।

बाबू मुकुटबिहारीलाल जी अपने जीवन में सफल होकर गये हैं। मृत्यु के

[बरेली आर्यसमाज की शक्तियों और प्रगतियों का केन्द्र रहा है और आज भी वहां आर्यसमाज की ज्योति मन्द नहीं अपितु जगमगा रही है। बरेली में आर्यसमाज का यह गौरव स्थापित करने वालों में स्वर्गीय श्री बा० मुकुटबिहारी लाल जी मुख्तार का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। श्रद्धेय बाबू जी का स्वर्गवास गत ९ जून को आर्यसमाज भूड़ के उत्सव के समय हुआ। लेखक ने उनके महान् जीवन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। मित्र-परिवार की ओर से हम उस महान् आर्य व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धांजलि, पारिवारिकों के प्रति शोक सहानुभूति और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करते हैं। बाबू जी का आदर्श सदैव हमें प्रेरणा देता रहेगा। —सम्पादक]

थी। आर्यसमाज भूड़ बरेली के संस्थापक तब पांच व्यक्ति थे—बाबू मुरलीधर जी, बाबू भोलानाथ जी, चौधरी मुरारी लाल जी, बाबू लालताप्रसाद जी और बाबू मुकुट बिहारी लाल जी। एक-एक करके सबका स्वर्गवास हो गया। सब के अन्त में बाबू मुकुटबिहारीलाल जी का स्वर्गवास ९ जून १९७१ को सायंकाल बरेली नगर में उस समय हुआ जब आर्यसमाज भूड़ बरेली का वार्षिक उत्सव हो रहा था। भारत के अनेक आर्य विद्वान् जो उत्सव में आये हुए थे उन विद्वानों के हाथों से उनकी अन्तिम क्रिया सम्पन्न हुई, वे ऐसे भाग्यशाली थे। आपके चार पुत्ररत्न, ज्योति स्वरूप, शान्तिस्वरूप, धर्मेन्द्रस्वरूप और सत्येन्द्र स्वरूप हुए। ज्येष्ठ पुत्र का स्वर्गवास युवावस्था में हो गया था। शेष तीन पुत्र इस समय आर्यसमाज के कार्यकर्ता हैं कनिष्ठ पुत्र सत्येन्द्रस्वरूप तो पिता के बिलकुल स्थानापन्न हैं और इस समय आर्यसमाज के मन्त्री सत्येन्द्र स्वरूप ही समय वे सन्तुष्ट थे क्योंकि उनका सारा जीवन आर्यसमाज के काम में सफलता से बीता था। आपने आर्यसमाज में एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की और बनारस की परीक्षाएं उसमें आरम्भ कीं। अपने ज्येष्ठ पुत्र को उसमें प्रविष्ट किया, मेरे परिवार के लोग भी उनसे सम्बन्ध रखते थे। मुझको भी उसी पाठशाला में भर्ती किया गया। यदि बाबू जी ने वह संस्कृत पाठशाला न खोली होती तो मैं भी स्कूल और कालिज का विद्यार्थी हुआ, होता आज संस्कृत का आचार्य नहीं होता। अतः मेरे जीवन के भाग्य-विधाता बाबू जी हैं। वे मुझे धर्मशिक्षा पढ़ाते थे और बालकाल में धर्मशिक्षा की परीक्षा लेते थे और इनाम देते थे। मेरे पिता तीन वर्ष का मुझे छोड़कर स्वर्ग चले गये मैं बाबू जी को ही पिता समझता था और नगरी में केवल बाबूजी ही एक व्यक्ति थे जिनके मैं अन्तिम समय तक चरण छूता रहा। उनकी धर्मपत्नी ने सदा माता के समान प्यार किया और उनके स्वर्गवास पर बाबू जी की प्रतिनिधि श्रद्धांजलि ने जिनको मैं [illegible] कहता हूँ, मातृवत् स्नेह और [illegible] पालन किया, आज भी उनका मातृ-स्नेह मुझे प्राप्त है।

अनेक विद्वान् आर्य जगत् की विभूतियों जो इस बरेली नगरी में काम कर रही हैं उन सबका निर्माण बाबू मुकुटबिहारी लाल जी के द्वारा ही हुआ है। व्याकरण और आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध विद्वान् प० गङ्गाप्रसाद शास्त्री, पं० अयोध्याप्रसाद द्विवेदी, प्रोफेसर श्री. ह. बी. कालिज बरेली, पं० [illegible] साहित्य शास्त्री साहित्यरत्न, प्रो० के बी. एम कालिज बरेली, प० व्रतपाल व्याकरण शास्त्री साहित्यरत्न प्रो० बी ए बी कालिज बरेली इत्यादि अनेकों युवक आर्य विद्वान् बाबूजी की स्थापित संस्कृत पाठशाला के ही छात्र हैं। पीलीभीत जिले के सबसे प्रतिष्ठित आर्यसमाज के कार्यकर्ता जिला प्रतिनिधि सभा के प्रधान व अन्तरङ्ग सदस्य आ० प्र० नि० सभा यू० पी० श्री बा० रामबहादुर मुख्तार पूरनपुर और शाहजहांपुर जिले के वयोवृद्ध कार्यकर्ता पत्र-सम्पादक सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी जिले भर की धार्मिक और राजनीतिक गतिविधियों के विधाता श्री [illegible] आदि अनेक युवक मुकुटबिहारी लाल जी की ही देन हैं। बरेली नगर में अनेक संस्कृत विद्यालय हैं पर बाबू जी की कार्यशैली इतनी गम्भीर थी कि सरकारी सहायता इसी पाठशाला को नगर भर में प्राप्त है। बाबू जी की स्थापित यह संस्कृत पाठशाला अपने जीवन के चालीस वर्षों में सफल संस्कृत विद्यालय रहा है।

श्रद्धेय बा० मुकुटबिहारी जी ने लड़कियों की पाठशाला को भी प्राइमरी से प्रारम्भ करके आज इंटर कालिज तक पहुँचा दिया। अब उसे डिग्री कालिज बनाया जा रहा है। बाबू जी के सभी पुराने कार्यकर्ता भाई-भाई के समान मिलकर कार्य करते रहे हैं। एक दूसरे के कार्य को आगे बढ़ाते थे। बा० लालताप्रसाद जी ने उसको आगे बढ़ाया। आर्यसमाज भूड़ बरेली नगर में बड़ी प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है इस समाज में शिक्षित व्यक्ति अधिक हैं। डाक्टर, वकील, प्रोफेसर प्रायः इस समाज के मेम्बर हैं। कन्यापाठशाला इन्टर कालिज के मैनेजर नगर के एक प्रतिष्ठित एडवोकेट हैं और संस्कृत पाठशाला के मैनेजर एक कालिज के प्रोफेसर हैं। इस समाज में आर्यसमाज के सिद्धान्तों का सम्मान उच्च स्तर पर होता है। इस समाज के अनेक प्रतिष्ठित आर्य-

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्य-समीक्षण

श्री विदेहजी का वेद-भाष्य

[श्री रघुनाथप्रसाद पाठक, स० मन्त्री, सार्वदेशिक धर्मार्य सभा देहली]

[श्री विदेहजी का जीवन आर्यसमाज के सम्पर्क और प्रेरणा से वेद की ओर आकृष्ट हुआ परन्तु उन्होंने जिन मान्यताओं की घोषणा की है वे वेदानुसन्धान में साधक नहीं, बाधक बन रही हैं। वेदाङ्गों का वेदाध्ययन में उपयोग और अनुशासन अस्वीकार करके उन्होंने अहम्मन्यता और स्वेच्छाचारिता का मार्ग अपनाया है। सायण व महीधर आदि जिस मार्ग पर अपनी विद्वत्ता के दम्भ पर बढ़ गये थे, और जिससे वेदों की निन्दा हुई, कुछ उसी प्रकार की प्रवृत्ति श्री विदेहजी में पाई जा रही है पर वहां आधार विद्वत्ता नहीं अहम् अधिक है। विद्वान् लेखक ने श्री विदेहजी के शब्दों द्वारा ही उनका दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है। आशा है जो लोग अब भी श्री विदेहजी को आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द का अनुयायी मानते हैं उनकी भ्रान्ति दूर हो जायगी। हमें आश्चर्य है पिछले दिनों आर्यसमाज के एक नेता ने उनके शिविर का उद्घाटन करते हुए उनको ऋषि-भक्त कैसे कहा। हमें तो उनका यह कार्य अनुशासन-हीनता ही प्रतीत होता है। आशा है अन्य आर्यबन्धु श्री विदेहजी के आर्यसमाज से पृथक् दृष्टि बिन्दु को समझने का प्रयत्न करेंगे। —सम्पादक]

श्री विद्यानन्द विदेह की वेद-भाष्य मान्यताएं एवं धारणायें, ऋषि दयानन्द एवं प्राचीन परम्पराओं का विरोध करती हैं। यही कारण है कि उनका वेद-भाष्य बिना नकेल के ऊंट के समान स्वच्छन्द हो गया है। उनका समस्त भाष्य ऋषि दयानन्द के भाष्य से विपरीत है। श्री विदेहजी ने, "वेद-भाष्य की योजना" शीर्षक पृष्ठ ९ पर प्रकाशित किया है कि—

७—"वेद के अभिप्राय को पाने की चाबी वेदों के अंगभूत शिक्षा-कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष विज्ञानों को मान लिया गया है। वेद के अध्ययन के लिए इन अंगों के ज्ञान की नितान्त आवश्यकता मानी जाने लगी, फल यह हुआ जिन वेदों के मर्मों की खोज ऋषि (साक्षात्दर्शी, तत्त्वज्ञानी) जन किया करते थे वे वेद शुष्क, कुमति वैय्याकरणों और शब्द शास्त्रियों की पाठशाला में उतारे जाने लगे। वेद ने अपना अभिप्राय उन्हें व्यक्त ही नहीं किया वैदिक साहित्य एवं वैदिक विद्वानों का इतिहास यह सिद्ध कर रहा है कि कोरे वैय्याकरण, कोरे बुद्धिवादी, शुष्क, ज्ञानहीन, तार्किक, नास्तिक मीमांसक कभी भी वेद के यथार्थ तक पहुंचने में सफल नहीं हुए हैं। सफल हुए हैं तो ऋषि मनीषी जन ही। वर्तमान युग में वेदों का तात्पर्य क्यों नहीं स्पष्ट हो पा रहा। कारण यह है कि अन्तरसाधक इस क्षेत्र में नहीं आ रहे।"

यह सब बातें ऋषि भाष्य के विषय में ही हैं। यही विदेहजी को स्पष्ट नहीं हो पा रहा, यही अंगों के विज्ञान के आधार पर बनाया गया है। ऋषि ही वैय्याकरण, बुद्धिवादी, शुष्क, तार्किक नास्तिक एवं मीमांसक थे। इसीलिये श्री विदेहजी का भाष्य ऋषि भाष्य से सर्वथा विपरीत है।

[१] समस्त वेद-मन्त्र स्वर रहित छापे गये हैं।

[२] ऋषि देवता, छन्द तक भी वेद-मंत्रों के नहीं दिये गये हैं।

[३] पद-पाठ भी स्वर रहित है, जान पड़ता है कोई संस्कृत का काव्य है।

[४] अपने को सिद्ध-योगी होने का ढोंग पूरा किया है। यथाः—

सिद्धशिला पर ध्यानावस्थित हो गया [पृ० १८ मं० ४] मध्याह्नोत्तर सिद्धशिला से नीचे उतर कर स्वगृह को आते हुए मार्ग में एक चट्टान पर मुझे एक अपरिचित नवागन्तुक संन्यासी दिखाई पड़ा। पवन से इधर उधर उड़ते हुए जिसके लम्बे बालों ने मुझे आकृष्ट किया। परिचय प्राप्ति की मेरी इच्छा पर उसने कहा "मुझ से मेरे अपने विषय में कुछ न पूछिये। यदि आप किसी सेवा के लिये आदेश करेंगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। मैंने निवेदन किया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसने मुझे मेरे नाम से सम्बोधन करके कहाः—

'वेद का सही और सच्चा अर्थ करना है तो योगाभ्यास कीजिये संयम पूर्वक समाधि में उतरिये।" कुछ क्षणों के मौन बाद उसने फिर कहा :—

"वेदेतर समस्त ग्रन्थों (६ अङ्गों, उपाङ्गों, ब्राह्मणों, उपवेदों, समालोचक ग्रन्थों) का आश्रय छोड़िये। वेदों का मर्म जानना है तो वेदों के अन्दर बैठकर वेद मन्त्रों पर मनन कीजिये। अन्तः श्रुति और अन्तर्ज्योतिः के बिना वेदों के वास्तविक अर्थ का प्रकाश नहीं हो सकता।" मैं कुछ कहना ही चाहता था कि वह फिर कहने लगे :—

"आपने सब कुछ तो पढ़ा है, पर पुराण नहीं पढ़े। पुराणों ने आपका क्या बिगाड़ा है। पुराण, कुरान, बाइबिल सब पढ़िये और सबकी वैदिक व्याख्या कीजिये। सब वेदों की धारायें हैं इस प्रकार ही संसार में वेद को फैलाया जा सकता है।"

इतना कहकर वह उठ खड़ा हुआ और चलते-चलते कह गया कि ऋषि, देवता, छन्द और स्वरों में न उलझिये। इन पचड़ों ने ही वेद का विकास रोक रखा है। वेदों के इन बन्धनों को तोड़िये। वेदों को बन्धन मुक्त कीजिए" पृष्ठ २०, सं० १५, १६।

सीतारामकुटी के पास एक अन्य अपरिचित नवागन्तुक संन्यासी के दर्शन हुए। तीनों वृक्ष की छाया में बैठकर बात करने लगे। मुझे सम्बोधन कर संन्यासी बोले:—

आप पिछले जन्म के वेद और योग के अभ्यासी हैं। आप वेदों का अध्ययन और योगाभ्यास कीजिये। आपको शीघ्र दोनों में सिद्धि प्राप्त होगी'

२—ऋषि दयानन्द समस्त एवं आर्य जगत् द्वारा आज तक स्वीकृत निरुक्त शैली के श्री विदेहजी कट्टर विरोधी हैं। देखिये पृ० ११ पर ७, ८ संख्या।

"मन्त्रार्थ की अनिश्चितता और परिणाम स्वरूप वेदों की दिखाई पड़ने वाली असम्बद्धता का कारण मुझे प्रतीत हुआ—"व्याकरणवाद, व्यक्तिवाद, प्रमाणवाद, विनियोगवाद, यज्ञवाद, तन्त्रवाद, इतिहासवाद और गाथावाद।"

व्याकरणवादी और व्युत्पत्तिवादी भाष्यकार यह भूल गये कि वेदों की भाषा वैदिक भाषा है, संस्कृत नहीं, वे यह भी भूल गये कि वेदों का अथवा वैदिक भाषा का व्याकरण स्वयं वेद है, केवल वेद हैं। संस्कृत व्याकरण से वेदों के सम्पूर्ण शब्दों का अर्थ तथा उनकी व्युत्पत्ति सिद्ध करना वेद के वेदत्व को नष्ट करना है।

३—सार्वदेशिक सभा यह पास कर चुकी है कि ॐ का इस प्रकार लिखना वाममार्गी प्रथा है। अतः ओ३म् लिखा जाय। पर पौराणिकों को प्रसन्न करने के लिये श्री विदेहजी ने इसी को ही अपनाया है।

४—विदेहवेद-भाष्य की वेद हमारी धारणा बनी है कि यह सत् परम्पराओं से अमुक्त कामाकाक्षी भाष्य है। जिसमें तथ्य नहीं, सीमा लाभ पर ऐसे शब्दों लगाई हैं, जैसे शब्दों की—जो नवयौवन मनोरंजन-परिपूर्ण हैं—यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के पहले मन्त्र भाष्य देखिये—

तदनुसार यौवनावस्था को एक युवक के हृदय में भी एक कमनीय कामना अंकुरित होती है, किसी सुन्दर नवयौवना सुन्दरी का प्रेमाधार बनकर उसके हृदय में अपना हृदय रखने की, अपने हृदय से लगाने की, उसे अपने हृदयासन पर सुशोभित करके अपने हृदय की रानी बनाने की।

हृदयेश्वरी बर्हि के लिए हृदयासन के लिए अपने हृदय पर सुशोभित करके अपनी हृदयेश्वरी बनाने के लिए, अपने हृदय से लगाकर शान्ति पाने के लिये मैं तुझ प्रिया तुझ सेवनीया को सम्यक् सींचता अपने हृदयासन पर संवारता शीतल जल की तरह अपने हृदय सींचता हूं। हृदय से प्यार करता पृष्ठ ७१।

देखा आपने प्रेयसी के लिए विदेहजी के हृदयोद्गार। कालिदास को मात कर दिया है। इसी प्रकार हृदयेश? सम्बोधन से प्रेमी के प्रति प्रेयसी के उद्गार व्यक्त किये हैं।

यह वेद-भाष्य है जिसकी गन्ध मन्त्र के किसी शब्द में नहीं वहाँ बर्हिः और वेदी का ही उल्लेख है।

आगे पृ० मं० ८ पर लिखा है:—

"समस्त शरीर में व्याप्त रहने वाले वीर्य का नाम विष्णु है। स्नु कहते हैं शिखा, शिखर सर्वोच्चस्थल को, किसी भी स्थल के सबसे ऊंचे स्थान को स्नु कहते हैं।"

अब विष्णु का स्नु क्या हुआ विचार कर लीजिये?

गृहस्थ आश्रम की बड़ी ही महिमा यजुर्वेद २।२ में उन्होंने दिखाई है और यहाँ तक लिख डाला है कि—

अभ्युदय का ही नहीं निश्रेयस का स्पन्दन भी गृह संस्था ही है। गृहस्थाश्रम! तू विष्णु का स्नु है। विष्णु की प्राप्ति का सर्वोच्च स्थल है।"

(शेष पृष्ठ १० पर

(पृष्ठ ७ का शेष)

त्रियों, विद्यार्थियों की सहायता करने कभी नहीं चूकते।

वहां ऐसी संस्थायें भी हैं जो भारत सम्बन्ध में मैत्री भाव व अधिकाधिक नकारी फैलाने में जुटी हैं। कुछ तो फी पुरानी भी हैं। जर्मनी के प्रसिद्ध स्कृतिक केन्द्रस्थान म्यूनिस में एक स्था है जिसकी स्थापना सन् १९२८ हुई थी। यह अच्छा कार्य करती रही और भारतीय विद्यार्थियों की देख ल खासतौर पर करती आ रही है। भी कभी यह उनको छात्रवृत्तियां व न्य आर्थिक सहायतायें भी देती रही। इसमें हिन्दी भी पढ़ाई जाती है।

एक दूसरी महत्त्वपूर्ण संस्था स्टूट- ट की जर्मन भारत सोसाइटी है, सकी देश भर में कई शाखायें हैं र जिसकी सदस्य संख्या १०७० के भग है। भारत के सम्बन्ध में हाल में इसने एक त्रैमासिक पत्रिका निका ा प्रारम्भ किया है। कोई भी भारतीय ा कार्यालय में जा सकता है और यता मांग सकता है। भारतीय त्रियो, विद्यार्थियों आदि की सहायता ने के अतिरिक्त यह भारतीय यता के केन्द्र भी हैं जर्मन नागरिकों वास्ते। इनमें भारतीय समाचार पत्र रके प्राप्त मिल जाती हैं। यह स भारतीयों के लिए व्याख्यानों का प्रबन्ध कर देती है। वह भारतीय कारों को आमन्त्रित कर उनके ता के सामने प्रदर्शन का प्रबन्ध कर ा है। इनकी हिन्दी कक्षाओं में क सी पुरुष जाते हैं जिनकी अवस्था वर्ष से लगाकर ७० वर्ष तक की ी है। अनेक जर्मन लड़कियां भार- त नृत्य सीखने को उत्सुक रहती हैं। रतीयों के व्याख्यान, प्रदर्शनों आदि यह अच्छी खासी तादाद में उपस्थित ते हैं। कभी कभी तो उनको स्थान नहीं मिलता और उनको लौट देस जाना होता है। एक न महिला के साड़ी व जम्पर के प्रेम देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। ाने हमारे प्रश्नों के उत्तर में बताया वह इस पोशाक को अत्यधिक पसन्द ती है और वह बाहर बराबर हमेशा नती है। वहां जो कपड़ा मिलता उसमें वह स्वयं अपनी पसन्द के नुसार साड़ी और ब्लाउज स्वयं सी ी है। वह उसने अन्य भारतीय हलाओं से सीख लिया क्योंकि वह ा उपलब्ध न थी।

अधिक जानकारी के कारण जर्मन ग भारत की आन्तरिक व राष्ट्रनीति भी समझने लगे हैं। इसकी आर्थिक औद्योगिक प्रश्नों को भी समझने की चेष्टा कर रहे हैं। जर्मन पार्लियामेन्ट के एक प्रमुख सदस्य ने हमें बताया कि वह भारत की पंचशील नीति के भारी समर्थक हैं और वह उस दिन के लिये प्रयत्नशील हैं जब जर्मनी भी उसे अप- नाये।

इस समय जब अनेक देश अनेक राजनीतिक व अन्य कारणों से, भारत के प्रशंसक और मित्र बनने का दावा कर रहे हैं, जर्मनी इन सबमें आगे है। भारतीय जनता को भी इससे अपरि चित नहीं रहना चाहिये।

(पृष्ठ ६ का शेष)

आगे यहाँ तक लिख डाला—

"जिन्होंने न परिवार, परिजन से प्यार किया, न दाम्पत्य स्नेह से स्निग्धता की अनुभूति प्राप्त की वे यदि ईश्वर भक्त बने भी तो शुष्क दार्शनिक भक्त ही बने, तल्लीन और तन्मय गहन भक्त नहीं। यों यत्र तत्र कहीं कोई अपवाद हुआ तो क्या।"

यह इशारा किस किस की ओर है। और सुनिये—

दाम्पत्य प्रेम से ही प्रभु प्रेम जागृत होता है। यह कहावत अक्षरशः सत्य है।

इन भावों, अर्थों की गन्ध कहीं भी तो वेद मन्त्र में नहीं है।

श्री विदेहजी का पूरा ही भाष्य इस प्रकार की अनर्गल बातों से भरा है। इस प्रकार का व्यक्ति यदि आर्यसमाज का अंग बना रह सकता है तो सब ढोंगी पाखण्डी, अनर्गल प्रलापी भी समाज के प्रचारक बनाये जा सकते हैं।

आर्यसमाज अपने से बाहर के विद्वानों के वेद सम्बन्धी दृष्टिकोण का सदैव आलोचक रहा है जो लोग अपने को आर्यसमाज से सम्बद्ध कहते हैं यदि वे आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण की उपेक्षा और अवहेलना कर वेद में स्वेच्छाचारिता का व्यवहार करते हैं तो उनके व्यवहार को हमें गम्भीरता पूर्वक सोचना चाहिए। स्वामी पुरुषार्थ न्याय से यहाँ हमने श्री विदेहजी भाष्य का दिग्दर्शन कराया है। सार्वदेशिक सभा को चाहिये कि इस सम्बन्ध में शीघ्र ही पूर्ण और अधिकार युक्त समालोचना कराकर श्री विदेहजी का आर्य समाज का नाम उपयोग करने से प्रतिबन्धित कर दे।

(T B) 'तपेदिक' रोग (टी बी)

का सरल इलाज केवल ।=) डाक विज्ञापन खर्च भेजकर मुफ्त मंगावें और प्रचार करके पुण्य के भागी बनें।

पता—'रंगीला मुसाफिर' (२) 'जगाधरी' (E P)

[पृष्ठ ८ का शेष]

सभासद् वानप्रस्थ ले चुके हैं। अब इस समाज का साप्ताहिक अधिवेशन होता है तब अनेक वानप्रस्थी उसकी शोभा बढ़ाते हैं। इस समाज में अनेक योग्य वक्ता सभासद् हैं। यह आर्यसमाज अपने में स्वयं एक वेद प्रचारक मण्डल है।

बा० मुकुटबिहारीलालजी के जीवन का जागृतमूर्ति आर्यसमाज भूड़ का अपना निजी बड़ा समाज मन्दिर, सुन्दर यज्ञशाला और कन्या पाठशाला इण्टर कालेज की विशाल भव्य इमारत है। इन इमारतों की ईंट से लेकर अन्तिम ईंट तक बाबूजी के परिश्रम का फल है।

(आर्यसमाज भूड़ का भविष्य)

बा०मुकुटबिहारीलालजी के साथी तो अब समाप्त हो गये थे। पांचों महान् आत्मायें जिनका ऊपर वर्णन किया आज इस संसार में नहीं हैं। अब बाबू जी के दो उत्तराधिकारी आर्यसमाज में हैं एक बा० रामबहादुर मुख्तार भूड़ बरेली और एक रायजादा साहब। आर्यसमाज भूड़ का भविष्य इन दोनों के परस्पर सहयोग, सौजन्य, प्रेम, और एकता पर निर्भर है। इसकी परीक्षा संस्कृत पाठशाला के पुनरुत्थान और कन्या पाठशाला इण्टर कालेज के डिग्री कालिज बनने से होगी। इस समाज की सदा से चली आ रही प्रतिष्ठा को इस समाज के सदस्य जो कालिज के प्रोफेसर और वकील हैं वे स्थिर रखेंगे। किसी भी समाज की सदस्य संख्या कम होना दोष नहीं, यदि शिक्षितों के हाथ में समाज है।

बा० मुकुटबिहारीलालजी के कनिष्ठ पुत्र सत्येन्द्रस्वरूप जहां आर्यसमाज के मन्त्री हैं वहां उनकी माता श्री समाज की मन्त्रिणी हैं आर्यसमाज के संस्थापक इस समाज के इस परिवार की प्रतिष्ठा रखना भी सब का कर्तव्य है। इस समाज में अनेक रत्न हैं बा० फतह बहादुर जी वकील जैसे सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति सभा संचालन दक्ष इसमें हैं। इस प्रकार के अनेकानेक योग्य व्यक्तियों को पाकर यह समाज यदि महात्मा रामस्वरूपजी वानप्रस्थ और धर्मराज युधिष्ठिर मास्टर चन्द्रसहाय जी जैसे निस्पृह वीतराग व्यक्तियों की सम्मति पर चलेगी तो इसकी यही प्रतिष्ठा दिन दूना रात चौगुनी बढ़ेगी। श्रद्धेय बाबू जी का अनन्य भक्त होने के नाते उनकी कृतियों की रक्षा और उन्नति में मुझसे जो सहयोग बन सकेगा सदैव देता रहूँगा। स्वर्गीय आत्मा का [illegible] पथ प्रदर्शन समाज की उन्नति में सहायक बना, हम सब उनके कार्य को पूरा करें और इस प्रकार उनका अनुगमन करें यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

बाल-विनोद

अनमोल बचन

सच्चे वीर और श्रद्धावान बनो, सब सच्ची लगन के साथ कोई भी रास्ता पकड़ो, तुम परमात्मा के पास पहुँच जाओगे। —कृष्णचन्द्र

मैं सिर्फ राह सुझाने वाला हूँ—सचाई की राह, दया की राह, तपस्या की राह, बस राह बतलाना ही मेरा काम है, तुम राह पर चलने वाले हो, इसलिए तुम अपनी पसन्द की राह चुन लो। —गौतम बुद्ध

—काम की अधिकता नहीं अनियमितता आदमी को मार डालती है। —गांधी

—कायर मृत्यु से पूर्व कई मौत मरता है। —शेक्सपीयर

प्रसन्नता ही केवल अच्छाई है
प्रसन्न होने का स्थान यही है
प्रसन्न होने का समय यही है
प्रसन्न होने का उपाय—दूसरों को प्रसन्न करना है।

—राबर्ट इंगरसोल

—सतीशकुमारी, इलाहाबाद

बाल-प्रतिज्ञा

करते हैं हम आज प्रतिज्ञा,
झूठ नहीं हम बोलेंगे।
हर दम सीधे राह चलेंगे,
हँसते ही मिल खेलेंगे।
काम बिगड़ चाहे ही जावे,
सत्य कभी न छोड़ेंगे।
ठीक समय पर शाम सवेरे,
पढ़ने को हम जायेंगे।
दिन भर डटकर खूब पढ़ेंगे,
हिम्मत कभी न हारेंगे।
दीन दुखी लोगों के दुख में,
हम भी दुख उठायेंगे।
लालच में पड़कर वस्तु बिरानी,
धोखा दे न चुरायेंगे।
नहीं शरारत कभी करेंगे,
सबको सुख पहुँचायेंगे।
यह सब बातें अपने मन से,
हरगिज नहीं भुलायेंगे।
तन मन से प्रण को पूरा कर,
निश्चय ही सुख पायेंगे।

—मोहनलाल—फाजलका

रेल कहाँ कब आरम्भ हुई

इंग्लैण्ड—	२० सितम्बर १८२५
आस्ट्रेलिया—	१० सितम्बर १८२८
फ्रांस—	१ अक्तूबर १८२९
अमरीका—	२८ दि० १८२९
जर्मनी—	७ दि० १८३५
रूस—	१० सि० १८३९
स्पेन—	२४ अक्टू० १८४८
भारत—	२० अप्रैल १८५३

—अविनाशचन्द्र अमृतसर

चुटकुले

अध्यापक—छात्रों से, पूर्णिमा के दिन आकाश में तारे कम दिखाई क्यों पड़ते हैं?

एक लड़का—वे अपने घर में बैठकर उस दिन कथा सुनते होंगे।

× × ×

सुरेश—भाई किशोर, आज तो तुम्हारी जेब गरम मालूम होती है।

किशोर—हां हां अभी प्रेस करके कमीज पहनी है।

—रामपाल, दिल्ली

सबसे बड़ा

सबसे ऊँची चोटी— एवरेस्ट
सबसे बड़ा महल— वेटिकन (रोम)
सबसे बड़ा मोती— बेरेस्फोर्ड होपपर्ल
सबसे बड़ा आफिस—पेटागोन (अमेरिका)
(३२ हजार व्यक्ति कार्य करते हैं)
सबसे बड़ा बाजार—ब्राडवे (न्यूयार्क)

—बद्रीप्रसाद टीकमगढ़

पहेलियाँ

मन भर का पेट माशे भर की खाल,
हाथ पैर गायब बताओ मेरा हाल।

× × ×

एक नागिन अनगिनत मुख
जमीन चाट वह देती सुख

× × ×

उत्तर—[१] [illegible] [२] [illegible]।

—सुभाष—फगवाड़ा

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम..
आयु.................... वर्ष....................
पूरा पता..
....
आपकी विशेष प्रवृत्तियां..

ईसाई प्रचार-निरोध-आन्दोलन

विदेशी ईसाइयों की अराष्ट्रीय गतिविधि असहनीय

भारतीय संस्कृति प्रेमी सार्वदेशिक सभा के कार्यक्रम में सहयोग दें

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री, मन्त्री सार्वदेशिक सभा की राष्ट्र के नाम अपील

देश में फैलती हुई ईसाई पादरियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों के विषय में गम्भीरतापूर्वक विचार करने के पश्चात् सार्वदेशिक सभा ने अपने नवीन निश्चयों में अपना दृष्टिकोण घोषित किया है कि "भारतीय संस्कृति की गौरवगरिमा नष्ट करने वाले किसी भी वर्ग की राष्ट्रघातक सरगर्मियों को आर्यसमाज किसी भी मूल्य पर सहन नहीं करेगा।

विदेशी सहायता के बल पर भारत की अशिक्षित निर्धन जनता को बहका कर राष्ट्रीयता विरोधी वातावरण तैयार कर षड्यन्त्र करने वालों, धन बल पर धर्म परिवर्तन का, कुचक्र चलाने वालों, असत्य और अज्ञान को सेवा की आड़ में फैलाने वालों के कुचक्रों को रोकना राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्यसमाज परमावश्यक समझता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह निश्चय किया है कि भारत के प्रत्येक उस भाग में जहां ईसाई पादरी अपना भ्रमजाल फैला रहे हैं, वहां आर्य समाज के कार्यकर्ता मिशनरी भावना से पहुँच कर भोली-भाली जनता को अज्ञान के चंगुल में फंसने से बचायेंगे। किन्तु इसके लिए आवश्यकता रचनात्मक कार्य की है, केवल भाषणों से काम न चलेगा।

भारत के समस्त उस वर्ग को जो ईसाई पादरियों की गतिविधि को घातक समझता है, आर्यसमाज की पुरजोर अपील है कि अब वह समय आ गया है कि वे समस्त शक्तियां इकट्ठी होकर अभियान करें जो भारत में ईसाई षड्यन्त्र की समाप्ति चाहती हैं। सार्वदेशिक सभा ने ईसाई प्रचार निरोध-आंदोलन को तीव्रगति से चलाने का निश्चय किया है। अतः मैं भारत की समस्त जनता से पूरी शक्ति के साथ सहयोग देने की प्रार्थना करता हूँ।

इस कार्य के लिये हमें ऐसे कार्यकर्त्ता चाहिए जो रचनात्मक कार्य कर सकें। जहाँ-जहाँ ईसाइयों के केन्द्र हैं वहां-वहां वे स्थायी रूप से ३-३ वर्ष के लिए बैठ जाएं। अपने ज्ञान से, सेवा से, प्रतिभा से, कार्य से ईसाई पादरियों के षड्यन्त्रों का उन्मूलन करें। सार्वदेशिक सभा ऐसे कार्यकर्त्ताओं को पूरा सहयोग एवं निर्देशन देगी।

आर्यसमाज ने देश की जनता का आह्वान कर दिया है। सोने का समय बीत गया, आज राम-कृष्ण की पावन संस्कृति पर संकट आया है, समय की मांग है कि हम सभी संकल्प लें कि सफलता प्राप्त किए बिना हमारा अभियान रुकेगा नहीं। भारत की जनता की सजगता और सक्रियता ही ईसाई मिशनरियों के भारत में भविष्य का निर्णय करेगी। क्या हम उनके दुःस्वप्न पूरे होने देंगे? आज हमें इस प्रश्न का उत्तर अपने कर्त्तव्य-पालन द्वारा देना होगा। ★

(पृष्ठ ६ का शेष)

यह व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण से अलग है। हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि एक का सुख-दुख दूसरे पर निर्भर है। हमारा देश तभी समृद्ध और उन्नत कहलाएगा जब यहां का प्रत्येक नागरिक प्रगतिशील और सुखी हो जाएगा। आज कोई भी योजना किसी एक की नहीं वरन हम सभी की है क्योंकि उससे किसी एक का नहीं हम सभी का कल्याण होगा।

गोविन्दसहाय कमेटी की रिपोर्ट ने एक और विचारणीय प्रश्न की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। और वह यह है कि आज जनता में हर कार्य के लिए सरकार का मुंह देखने की भावना पैदा हो गई है। व्यक्तिगत प्रयत्न और संघर्षों से जूझने की प्रवृत्ति समाप्तप्राय हो गयी है। लोगों के मन में यह बात घर करती जा रही है कि उनकी हर आवश्यकता सरकार पूरी करेगी तथा हर संकट का सामना सरकार करेगी और हर जिम्मेदारी सरकार की है। यह पराश्रय की भावना भी उतनी ही गलत तथा हमारे और राष्ट्र के लिए घातक है जितना कि आज के युग में व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण। हमें इसे अपने मन से निकाल कर फेंकना ही होगा। सरकार के साधन सीमित हैं तथा उसके सामने अनेक महत्त्वपूर्ण समस्यायें हैं। हमारी हर समस्या को हल करने तथा हर आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए न उसके पास समय है न साधन। फिर सरकार भी तो हमारी ही है। सुनागरिक होने के नाते राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में कुछ हमारी भी जिम्मेदारी है। आज जहां देश में विकास की बड़ी-बड़ी योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं यह भी आवश्यक हो गया है कि हम इस सत्य को समझें तथा विकास योजनाओं को किसी एक की नहीं सबकी मानकर अपना अधिकाधिक सहयोग प्रदान करते रहें। ग्रामीण क्षेत्रों में जो कार्य हो रहे हैं वे सन्तोषप्रद हैं तथा जनता का सहयोग भी उन्हें काफी प्राप्त है फिर भी अनेक क्षेत्रों में इस सत्य को समझने तथा एक नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

★

बरसाती बीमारियों में मुफ्त

सभी रोगों की १४० दवाओं के २१ सेर वजन के चिकित्सा बक्स जिनमें रस, भस्में, चूर्ण, बटी, तेल, अरिष्ट, आसव आदि ४००० रोगियों के लायक इलाज की पुस्तकों समेत रहती हैं। हर पंचायतों में ग्राम सेवकों और प्रत्येक गृहस्थों के पास यह बक्स रहना जरूरी है। शीशी, बोतल, पेटी आदि के ३८) रुपया खर्च होते हैं १०) एडवांस भेज दें शेष २८) रुपया की वी० पी० से चिट्ठी भेजदी जाती है। अपना पास का स्टेशन समेत पूरा पता लिखें।

पता—बाहुबल औषधालय
ललितपुर [झांसी] उ० प्र०

आवश्यकता

एक २१ वर्षीय, एफ०ए० फेल गौर वर्णा, सुशील ब्राह्मण कुलोत्पन्न गृह कार्यों में दक्ष आर्य कन्या के लिए योग्य वर की आवश्यकता है।

सोहनलाल आर्य्य १४६ सुख सदन
रातानाडा, जोधपुर

आवश्यकता है
आर्य पुरोहित की

हापुड़ आर्यसमाज के लिए एक अनुभवी और योग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो प्राचीन व्याकरण से आचार्य या शास्त्री (काशी या पंजाब) हों। व्याख्यान, शंका समाधान व संस्कार कराने में निपुण हों। आवेदन प्रमाण-पत्रों सहित मन्त्री आर्यसमाज हापुड़ के पते पर आने चाहिये।

आवश्यकता

आर्यसमाज अमसहा की संस्कृत पाठशाला के लिए एक शास्त्री अध्यापक की आवश्यकता है, जो कम से कम मध्यमा से उत्तीर्ण हो। हाईस्कूल या अंग्रेजी सहित मध्यमोत्तीर्ण सज्जनो को विशेषता दी जावेगी। प्रार्थी निम्न पते पर प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजने की कृपा करें।

पता—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
द्वारा सतीशचन्द्र शास्त्री साहित्यरत्न
मुहल्ला प्रेमनगर, बरेली

वेद-प्रचार सप्ताह के अवसर पर

जन साधारण तक वेदों का संदेश पहुँचाने के लिए

ट्रैक्ट विभाग, आर्यसमाज चौक, इलाहाबाद की अनुपम भेंट

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय की नवीनतम कृति

वेद और मानव-कल्याण

इस पुस्तक में सरल रूप में वेद क्या है, वेदों में ईश्वर का स्वरूप, पारिवारिक जीवन, धन-उपार्जन, राष्ट्रीय भावना आदि-आदि पर वेद मन्त्रों द्वारा चर्चा की गई है। जन साधारण में वेदों के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए यह नवीन आयोजन है। पुस्तक आकर्षक आवरण सहित ६४ पृष्ठ की होगी।

मूल्य लागत मात्र २५) सैकड़ा, फुटकर छः आना प्रति

डाक-व्यय, रेलभाड़ा अलग होगा।

समाजों तथा दानी महानुभावों को चाहिए कि पुस्तक मंगाकर जनता में वितरण करें तथा वेदों के प्रचार में सहायक हों।

ट्रैक्ट विभाग, आर्यसमाज चौक, इलाहाबाद-३

प्रचार-समाचार—

—जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के विशेष प्रयत्न से श्री स्वामी परमानन्द जी दण्डी तपस्वी प्रधान द्वारा दिनांक १-७-५१ को एक नवीन आर्यसमाज की रमपुरा ग्राम (फर्रुखाबाद) टाउन हाल के नीचे रास्ते पर) में स्थापना की गई। ग्यारह महानुभावों ने इस अवसर पर आर्यसमाज के सदस्यता के फार्म भरे और प्रतिज्ञा की कि वे समाज की सेवा तन मन धन से करेंगे। इस अवसर पर खूब प्रचार भी हुआ 'वृहद यज्ञ' हुआ।

मन्त्री जिला सभा

—आर्यसमाज, सिकन्दराबाद, जिला बुलन्दशहर में दैनिक तथा साप्ताहिक सत्संग बड़े उत्साह से होता है। १८ बालक प्रतिदिन पारिवारिक शिक्षा अथवा दै० सन्ध्या हवन विधि की शिक्षा पा रहे हैं।

१०-७-५१ को रात्रि के १० बजे से ११॥ बजे तक उपर्युक्त आर्यसमाज भवन में, आगरा विश्वविद्यालय के उपकुलपति माननीय श्री कालका-प्रसाद भटनागर का ओजस्वी भाषण हुआ। अपने भाषण में पूज्य अतिथि ने बतलाया कि वैदिक शिक्षा ही राष्ट्र का उत्थान कर सकती है अथवा स्वतन्त्रता के पश्चात् देश को आर्यसमाज की अधिक आवश्यकता है। जनता में बड़ा उत्साह था तथा वह बड़ी शान्ति से उनका भाषण सुनती रही।

—छेदालाल मन्त्री

सब प्रकार के धार्मिक सामाजिक तथा अन्य उपयोगी साहित्य प्राप्ति का एकमात्र स्थान—

"आदर्श साहित्य निकेतन"

केसरगंज, अजमेर

सूची-पत्र मुफ्त मगाइये, हमारे यहां अगरजी की प्रसिद्ध महर्षि सुगन्धित सामग्री भी मिलती है।

धर्मवीर ग्रन्थमाला

अमृतमय उपदेश

यह पुस्तक भारत के भव्य भाल राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद जी को भेंट की गई है। इस अत्यन्त शिक्षाप्रद पुस्तक में १०२ उपदेश लिखे गये हैं। पुस्तक मोटे टाइप में उत्तम कागज पर प्रकाशित हुई है। टाइटिल पेज तिरंगा आकर्षक छपा है। मूल्य ॥) प्रति

आर्यसमाज के आकाश में अत्यन्त प्रकाश की स्वर्ण-रेखा



—वेदपथिक धर्मवीर आर्य जटाधारी

यह पुस्तिका भी आर्यसमाज के विस्तार के लिए अनुपम है। प्रत्येक आर्यसमाजों को चाहिये कि भारी संख्या में मंगवाकर वैदिक सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार करें।

धर्मवीर ग्रन्थमाला के विविध साहित्य सुमनों की उपयोगिता की मुक्त कण्ठ से भूरि भूरि प्रशंसा आर्यजगत के अनेकों महात्मा, साहित्यकारों, नेताओं ने की है।

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पूज्य ब्रह्ममुनि जी महाराज लिखते हैं—श्री प० धर्मवीर जी वेदपथिक जटाधारी के लगन कार्य आर्यसमाज के लिए अत्यन्त ही लाभदायक हैं। इनकी लगन एक तपस्वी और सच्ची लगन है। आर्यसमाजों को इनके कार्यों का स्वागत करना और ... करना चाहिये।

श्री पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी, श्री पूज्य महात्मा आनन्द भिक्षु जी, श्री पूज्य महात्मा प्रभु आश्रितजी, श्री पूज्य प्रो० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, श्री पूज्य प० अयोध्याराय जी शास्त्री, श्री पूज्य प० धर्मवीर जी वेदालङ्कार, स्वर्गीय पूज्य महात्मा चन्द्रानन्द जी आदि सुप्रसिद्ध नेताओं ने धर्मवीर ग्रन्थमाला की उपयोगिता और प्रचार पर अपने शुभ आशीर्वाद व शुभ कामनायें तथा भूमिकायें लिखकर लेखक को प्रोत्साहित किया है।

धर्मवीर ग्रन्थ माला की आय से वेद प्रचार, शुद्धि, विधवा अनाथों की रक्षा का व्यापक प्रचार लेखक करना चाहता है।

समस्त आर्य भाई बहनो से तथा आर्यसमाजों से प्रार्थना है कि धर्मवीर ग्रन्थ माला को अपनाकर प्रकाशन और प्रचार में सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।

निवेदक —

वेदपथिक धर्मवीर आर्य जटाधारी व्याख्यानभूषण

अध्यक्ष—धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रुहेला देहली, ५

विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन, महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपतियों से व आर्य विद्वानों, महात्माओं, शास्त्रार्थ महारथियों से, व उदार वेदान्ती व पौराणिकों से प्रशंसित, आर्य सिद्धान्तों का पोषक वेदानुकूल गीता भाष्य

'गीतामर्म'

लेखक—कृष्णस्वरूप विद्यालङ्कार, गीतामर्मज्ञ

कुछ सम्मति-पत्र—

(१) बाल ब्रह्मचारी श्री १०८ श्री आत्मानन्दजी सरस्वती, पंजाबः—

इतने स्वाध्याय तथा मनन पूर्वक, युक्ति प्रमाण विभूषित टीका इस ग्रन्थ की आर्यसमाज के क्षेत्र में अब तक और नहीं लिखी गई है। वास्तविक वेदानुकूल अर्थ करने में आप सर्वथा सफल हुए हैं।

(२) श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति, कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी भू०पू० प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा देहली:—

आपकी गीता की व्याख्या अत्यन्त विद्वत्ता पूर्ण है। समन्वय का प्रयत्न बहुत ही सफल हुआ है। छात्रों और स्वाध्यायशीलों को अत्यन्त उपयोगी होगा।

(३) श्री प० नरदेवजी वेदतीर्थ, कुलपति महाविद्यालय ज्वालापुरः—

गीता का आशय समझने वालों के लिए भाष्य बड़े काम का है। मैं पढ़ते-पढ़ते कहीं कहीं तो सर्वथा गीतामय हो गया, जिससे मुझे बड़ा आनन्द मिला। भाष्य में व्यर्थ की कट्टरता का अभाव है।

(४) श्री प० धर्मपालजी विद्यालङ्कार, भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल वृन्दावनः—

वेदानुकूल सत्य अर्थों को युक्ति प्रमाण पूर्वक प्रकट करने में सराहनीय प्रयत्न किया है। खूब सफलता मिली है।

(५) गुरुकुल वृन्दावन के संस्थापक श्री १०८ नारायण स्वामी जी, रामगढ़—भूतपूर्व प्रधान आर्य सार्वदेशिक सभा देहली। भूमिका लेखक—"गीतामर्म—

"गीतामर्म" गीता साहित्य में मूल्यवान् वृद्धि है। गीता को सुधार करने का भरसक प्रयत्न किया है, और सफलता मिली है।

(६) विद्वद्वर श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु, बनारस—

'गीतामर्म' पढ़ने से गीता सम्बन्धी सभी सन्देह मिट जायेंगे। आपने गीता को विचारने योग्य बना दिया है।

(७) भारत के प्रसिद्ध विद्वान् भारतरत्न डा० भगवानदास जी, बनारस—

मैंने गीता पर अनेक भाषाओं के अनेक भाष्य देखे हैं, आपका भाष्य अन्य बहुतेरे भाष्यों से बहुत उत्कृष्ट है।

(८) श्री १०८ श्री स्वामी भागवतानन्दजी महामण्डलेश्वर, सप्ततीर्थ, वेदान्तरत्न, वेदान्त वागीश, मीमांसाभूषण, दर्शनाचार्य, बनारस—

व्याख्या अतीव सुन्दर, अभिनव गवेषणा पूर्ण, अत्यन्त उदारतापूर्ण समन्वय दृष्टि से लिखी गई है। विचार बड़ी निर्भीकता, स्पष्टता तथा विद्वत्ता से प्रकट किए हैं।

(९) कवि सम्राट श्री पं० हरिशङ्करजी शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश—

गीता के विषयों का बड़ा मार्मिक विवेचन किया है।

(१०) शास्त्रार्थ महारथी मिशनरी श्री पं० रामचन्द्रजी देहलवी:—

शास्त्रार्थों में जिन स्थलों की संगति लगाने में व वैदिक सिद्ध करने में मुझे अड़चन पड़ती थी, वह सब स्थल आपके भाष्य देखने से सरल व स्पष्ट हो गये।

(११) व्याख्यान मार्तण्ड श्री १०८ स्वामी शिवानन्द जी हरिद्वार—

व्याख्या अतीव सार गर्भित सर्वजनोपयोगी सर्वांग पूर्ण, एवं वेदानुकूल है। अकाट्य प्रामाणिक युक्तियों द्वारा अत्यन्त गूढ़ रहस्यों को सर्व सुलभ कर दिया है।

मूल्य ७) अजिल्द। ७॥) सजिल्द।

नोट—द्वितीय एडीशन के लिए प्रकाशक चाहिए।

मिलने का पता—श्री कृष्णस्वरूप विद्यालङ्कार

डाक०—इस्लामनगर (आर्यनगर) जिला बदायूं

(पृष्ठ २ का शेष)

कर संसार के अथवा हमारे सामने आती है तब हमको स्वयं भ्रम पड़ जाता है कि असली "मैं" कौन हूँ और असली मेरा व्यक्तित्व क्या है और हम एक प्रकार की भूलभुलैया में पड़ जाते हैं। इसलिए असली "मैं" को ढूंढ निकालने के लिए विचार और प्रयत्न होने चाहिएँ। उन्हीं विचारों द्वारा अन्त में आत्मज्ञान के ध्येय तक पहुँच सकेंगे। और कोई मार्ग ही नहीं है।

सच्चे 'मैं' का दिग्-दर्शन

इस विषय में केनोपनिषद् ने सुन्दर मार्ग-दर्शन कराया है—केनोपनिषद् के ऋषियों ने इस विषय में अत्यन्त गूढ़ विचार किया है, वे जिस निष्कर्ष अथवा निर्णय पर पहुँचे हैं उन निर्णयों से हम भी लाभ उठा सकते हैं।

जिसको आत्मज्ञान तो है पर विशेष आत्मज्ञान नहीं ऐसा एक शिष्य ऋषि से पूछता है—

केनेषितं पतति प्रेषितं मनः।
केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः॥
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति।
चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति॥
(केन-१, १)

क्यों महाराज! किसकी इच्छामात्र से प्रेरित होकर यह मन विषयों में दौड़ता फिरता है? क्यों महाराज! किसकी प्रेरणा से यह प्राण अपने व्यापार में लगा रहता है? और हे महाराज! किसकी प्रेरणा से प्रेरित होकर लोक अपनी-अपनी बोलियाँ बोलते हैं और हे महाराज! किसकी प्रेरणा से यह आँखें और कान अपने व्यापार में संलग्न रहते हैं?

शिष्य के प्रश्नों का उत्तर ऋषि इस प्रकार देते हैं—

श्रोत्रस्य श्रोत्रं, मनसो मनो।
यद् वाचो ह वाचं, स उ प्राणस्य प्राणः॥
चक्षुषश्चक्षुः, अति मुच्य धीराः।
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥
(केन-१, २)

जो श्रोत्र का भी श्रोत्र, मन का भी मन, वाणी की भी वाणी, प्राण का भी प्राण, और चक्षु का भी चक्षु है उसी सच्चिदानन्द स्वरूप आत्मा का साक्षात्कार करके बुद्धिमान् पुरुष संसार के अज्ञान प्रसूत बन्धनों से मुक्त होकर अमृत हो जाते हैं। केनोपनिषद् के ऋषि मनुष्य की असली-भीतरी प्रेरकशक्ति की बात कहते हैं जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि इन इन्द्रियों का अधिष्ठाता कौन है। जिसकी प्रेरणा अथवा जिसके अधिष्ठान से इन्द्रियाँ कार्य करती हैं, वही आत्मदेव, वही चैतन्य स्वरूप "सच्चा मानव" अर्थात् आत्मा ही मनुष्य का सच्चा व्यक्तित्व है। मनुष्य का असली रूप ही सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनंद) है। ऋषियों ने यह सत्य हमारे संमुख रखा है।

दो पक्षी

इसी प्रकार मनुष्य के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन हो इसलिए और परा-विद्या का अन्तिम लक्ष्य भी जतलाने के लिए ऋषियों ने मुण्डकोपनिषद् में दो पक्षियों का दृष्टान्त दिया है—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया,
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति,
अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥१
समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नः,
अनीशया शोचति मुह्यमानः।
जुष्टं यदा पश्यति अन्यमीशम्,
अस्य महिमानमिति वीतशोकः॥२
(मुण्डक ३, १, १-२)

दो सुन्दर पंछी, सदा मित्र, सदा एकत्र रहने वाले एक ही पेड़ के आश्रय से रहते हैं। उनमें से एक पंछी सदा पेड़ के खट्टे-मीठे फल खाता है पर दूसरा पंछी, खाता-ऊता कुछ नहीं, साक्षी देखता ही रहता है॥१

उस वृक्ष के जब कटु फल खाने पड़ते हैं तब पहिला पंछी शोक दुःख में पड़ जाता है जब वह उस वृक्ष के कटु और मीठे फल खाते-खाते ऊब जाता है, थक जाता है तब शान्तचित्त होकर तब जब वह दूसरे पक्षी की ओर देखता है और दूसरे पक्षी का जब उस पर प्रभाव अथवा प्रकाश पड़ता है तब उसके प्रकाश से प्रकाशित होकर उसके आनन्द से आनन्दित हो जाता है, अपने स्वरूप को भूल जाता है।

इसमें खट्टे-मीठे फल खाने वाला पक्षी जीवात्मा है। स्वमहिमा में विराजमान, स्वयं ज्योति स्वरूप, स्वयं साक्षी स्वरूप, अन्तर्यामी प्रभु परमात्मा दूसरा पक्षी है। ये दोनों पक्षी एक ही वृक्ष अर्थात् शरीर के आश्रय से अर्थात् एक ही शरीर में रहते हैं। इस संसार में जब जीव सुख-दुःखादि के चक्र द्वारा संत्रस्त हो जाता है तब उसको वैराग्य हो जाता है और शमदमादि साधनों द्वारा जब उसकी चित्तशुद्धि होती है तब उसको ज्ञान होता है कि मेरा 'मैं' जो है वह साक्षात् परब्रह्म का प्रतिबिम्ब ही है। "मैं" कोई पृथक् स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। उस परब्रह्म की सत्ता से ही मेरी सत्ता है। मुझे मेरी "मैं" का जो भान होता है वह उसीका आभासमात्र है। जब जीवात्मा को ऐसा अनुभव होने लगता है तब वह जीवात्मा शोक रहित हो जाता है, वह सब अपूर्णताओं तथा अज्ञान के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। ऐसे ही आत्म साक्षात्कारी व्यक्तियों को उपनिषदों में 'आत्म क्रीड', 'आत्मरति' इत्यादि कहा गया है। क्योंकि आत्म स्वरूप को पहिचानने के पश्चात् इन महापुरुषों को अपने में तथा चराचरों में उसी आत्मा का दर्शन होता रहता है और वे उसीमें रमते रहते हैं। उन महापुरुषों के सब कार्य उसी आत्मबोध की उच्च भूमिका से ही होते रहते हैं।★

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की अन्तरङ्ग की बैठक दो अगस्त (रविवार) को दिल्ली में रखी गई है। सम्बद्ध सज्जन अंकित कर लें।

रघुवीरसिंह शास्त्री
सभा मन्त्री

उपदेशक विद्यालय में प्रवेशार्थियों को सूचना

—दयानन्दोपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में नवीन छात्रों का प्रवेश किया जा रहा है। जिनकी शैक्षणिक योग्यता कम से कम मैट्रिक, प्राज्ञ, विशारदादि अथवा इसके समकक्ष और आयु १८ वर्ष से कम न हो तथा जो अविवाहित हों, ऐसे प्रवेशार्थी अपना प्रार्थना-पत्र १ अगस्त १९५९ तक उपदेशक विद्यालय में भेज दें। १० अगस्त को प्रवेशार्थियों की छांट की जायगी। विद्यालय का पत्र प्राप्त होने पर प्रवेशार्थी अपने व्यय पर समय से पूर्व उपदेशक विद्यालय पहुंच जायें।

आचार्य दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
यमुनानगर (अम्बाला)

उत्सव—

—जसवंत (इटावा) आर्यसमाज का उत्सव १० से ११ जून तक समारोहपूर्वक मनाया गया। श्री ओमप्रकाश जी शास्त्री, पंडित श्याम शर्मा जी, स्वामी ओम नन्द जी, शिवप्रताप जी आदि का प्रचार प्रभावशाली रहा।

—शाहजहांपुर आर्यसमाज का उत्सव १६, १७, १८ अक्तूबर को सम्पन्न होगा।

—टकिया बराह (शाहजहांपुर) आर्यसमाज का उत्सव २२, २४ जून तक सम्पन्न हुआ। श्री ब्रह्मचारी सत्यप्रिय जी शास्त्री (पंजाब) के प्रवचनों का अच्छा प्रभाव पड़ा। जनता में समाज के प्रति सहयोग की भावना बढ़ रही है।

—अखिल भारतीय आर्य संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल का अभूतपूर्व उत्सव समारोह सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल, ज्वालापुर हरिद्वार (जिसकी स्थापना स्वर्गीय महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज के करकमलों से हुई थी) का साधु सम्मेलन आषाढ़ शुक्ला १४, १५ सम्वत २०१६, दिन रविवार व सोमवार, ता १९-२० जौलाई को वेद विद्यालय, गुरुकुल घरोन्डा, करनाल (पंजाब) में अति उत्साह-पूर्वक मनाया जा रहा है।

संस्कार—

—आरा आर्यसमाज के प्रधान श्री इन्द्रदेवनारायण जी की सुपुत्री कुमारी उमा एम०ए० का शुभ विवाह छपरा निवासी श्री व्रजेन्द्र बहादुर एम० एस० सी० के सुपुत्र श्री कृष्ण किशोर एम० ए० बी० एल० के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर सर्वश्री विद्यानन्दजी काशी, श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी, पं० रामनारायण जी शास्त्री, पं० बासुदेव शर्मा, पं० कैलाशपति मिश्र आदि ने आचार्यत्व किया और वर-वधु को आशीर्वाद दिया।

—कोटद्वारा आर्यसमाज में श्री धूमसिंह विधुर का श्रीमती शांतिदेवी जी विधवा के साथ पुनर्विवाह २८ जून को सम्पन्न हुआ।

—लौंडी (धारपुर) में ५ जून को सतना आर्यसमाज के उपदेशक श्री राम देव शर्मा द्वारा श्री ब्रह्मानन्द दिवाकर शर्मा का यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। यज्ञोपवीत के महत्व तथा अन्य विषयों पर उनके भाषण हुए।

शोक-समाचार—

मुरसान आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री द्वारिकाप्रसाद जी उपश्रेष्ठ का २० जून को आकस्मिक निधन हो जाने पर समाज के सभी सदस्य अत्यन्त दुखी हैं। उनकी ओर से शोक-संतप्त परिवार के प्रति सहानुभूति और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

—दर्शनपुरवा कानपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री स्वामी हरविलास जी का हृदयगति रुक जाने से १४ जून को स्वर्गवास हो गया। समाज की ओर से परिवार के प्रति शोक-समवेदना तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की गई। श्री स्वामी जी ने ८०००) लागत की ३७५ वर्ग गज जमीन आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए दान की थी। उसी पर यह मन्दिर बना हुआ है। उनका संस्कार वैदिक रीति से कराया गया।

सूचनाएं—

वेद-प्रचार सप्ताह के लिए साहित्य

आर्यसमाज चौक प्रयाग के ट्रैक्ट विभाग की ओर से आर्य नेता श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० लिखित "वेद और मानव कल्याण" पुस्तक प्रकाशित हुई है। आर्यसमाजें ६४ पृष्ठ की इस पुस्तक को २५) सैकड़ा में मंगाकर वेद-प्रचार सप्ताह में वितरण कर प्रचार कर सकती हैं। जनसाधारण तक वेद का सन्देश पहुंचाने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

श्रावण ४, शक १८८१
(२६ जुलाई १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

काम द्वारा मानसिक रोगियों की चिकित्सा

[ले०—श्रीमती कमला वी० निम्बकर]
(सलाहकार बम्बई राज्य, व्यवसाय चिकित्सा स्कूल, नागपुर)

[मानवता के भौतिक विकास के साथ-साथ मानसिक संतुलन का ह्रास हुआ है। मानसिक व्याधियों के उपचार के भी प्रयत्न हो रहे हैं। नवीन खोजों का परिणाम है कि यदि विक्षिप्त व्यक्ति को किसी काम में लगाना सम्भव होजाय तो व्याधि नष्ट होने में सहायता मिलती है। —सम्पादक

काम द्वारा मानसिक रोगियों की चिकित्सा एक प्रकार से औषधियों द्वारा चिकित्सा की सहायक है और यह भी डाक्टर की सलाह से की जाती है। दस्तकारियों और सीने-पिरोने जैसे कामों में लगाये रखने से मानसिक रोगी जल्द अच्छे होते हैं और चिकित्सक उपयुक्त काम के चुनाव में काम द्वारा चिकित्सा करने वाले विशेषज्ञों की सलाह लेते हैं।

मानसिक रोग बड़ा पेचीदा रोग है यह रोग मामूली हो सकता है या ऐसा कि आगे रोगी ठीक भी हो सकता है और असाध्य भी। थोड़े ही विक्षिप्त ऐसे होते हैं, जिन्हें काम द्वारा चिकित्सा से लाभ हो सके। विक्षिप्तावस्था की जांच के लिये नियुक्त चिकित्सक रोगी को अपने चिकित्सालय में ले जाता है और उसे खेल, कूद, लिखने-पढ़ने, चित्रकारी, कशीदे आदि के काम देता है और ध्यान से देखता है कि मरीज की रुचि किस काम में अधिक है। अन्य रोगियों से वह कैसा व्यवहार करता है, इसका भी वह ध्यान रखता है और ये सब बातें उसके डाक्टर को बताता है।

वह रोगी की विशेष रुचि को और बढ़ाने की कोशिश करेगा। यदि रोगी उपद्रवी है और मारतोड़ करता है तो चिकित्सक उसकी शक्ति को अच्छे कामों में लगाने की कोशिश करेगा। उदाहरणार्थ, उसे हथौड़ा चलाने, पेपरपैची बनाने के लिये कागज और कम्बल बनाने के लिये कपड़ा फाड़ने का काम दिया जा सकता है। दूसरी तरफ, यदि रोगी बहुत बुझा हुआ, मायूस और निष्क्रिय है, तो किसी खास तरह का काम दिया जाएगा और वह इसे कैसे करता है, इस बात का ख्याल रखा जाएगा। हो सकता है कि रोगी एकदम इस काम में मन न लगा सके, पर कभी न कभी और थोड़ी बहुत देर के लिए उसका मन इसमें जरूर लगेगा।

व्यक्तिगत काम

काम द्वारा चिकित्सा करने वाले को एक बात यह करनी होती है कि रोगी किसी न किसी रचनात्मक काम में मन लगाये, जिससे उसके आन्तरिक विचार प्रकट हो सकें। उसे मिट्टी देकर उसकी इच्छानुसार कोई भी मूर्ति बनाने को कहा जाए। वह देवी-देवता, बच्चे स्त्री-पुरुष इत्यादि की मूर्ति बनाएगा। ख्याल करने पर वह इस मूर्ति के लिये या तो अत्यधिक प्रेम प्रकट करेगा या उतनी ही घृणा।

चित्र आदि बनवाने पर भी वह अपने भीतरी विचारों को अभिव्यक्त करेगा और बार-बार वही चित्र बनाएगा, जिसके विचार उसके मन में घर कर गये हैं। रोगी को एक बड़ा सा कागज और उसकी पसन्द के चार गीले रंग देकर उससे कागज पर अपनी मर्जी के चित्र या डिजाइन बनाने को कहा जाए। कागज होशियारी से जल्दी ही ले लेना चाहिये, वरना पागल उसे फाड़ देगा। इसके बाद एक और कागज देकर उससे फिर चित्र या डिजाइन बनाने को कहा जाए। इन चित्रों या आकृतियों से डाक्टर रोगी की बीमारी का कारण ढूँढ सकता है। दूसरे ढँग से इस कारण की खोज या तो असम्भव है या इसमें बहुत समय लगेगा।

इनसुलिन और बिजली के इलाज के बाद भी काम द्वारा चिकित्सा से लाभ होता है और इन इलाजों के बाद रोगी के व्यवहार की पूरी जानकारी से रोगी को काम देने में सुविधा होती है। इस जानकारी से रोगी के लिए ऐसा काम चुनने में मदद मिलती है, जो रोगी को यथार्थ और वास्तविकता की ओर प्रवृत्त करे। वे रोगी जो अपने ही विचारों में खोये रहते हैं या दिवा स्वप्न लेते रहते हैं, यथार्थता प्रेरक कामों से अधिक फायदा उठा सकते हैं। एक बार रोगी ने किसी काम में रुचि ली कि उसकी दिलचस्पी को बनाये रखना भी बड़ा जरूरी होता है। यह देखना पड़ता है कि रोगी को कौन सा रंग या डिजाइन पसन्द है और अपनी बनायी हुई चीजों पर रोगी को गर्व होना चाहिए। चिकित्सक रोगी के काम को बदलता भी रहता है। दो प्रकार के कामों के बीच में रोगी का कुछ मनोरंजन भी होना जरूरी है।

सामान्य वातावरण

इसके आगे, काम द्वारा चिकित्सा करने वाले का बड़ा दायित्व है, अपने अस्पताल में सामान्य वातावरण पैदा करना। दूसरे अस्पताल से ठीक होकर निकलने पर उसे अपना अधिक समय काम से चिकित्सा करने वाले अस्पताल में बिताने को कहा जाएगा। यदि बहुत से रोगी चिकित्सक के पास दिन भर रहते हैं और रात को अपने घर जाते हैं, तो उसे बड़ी बारीकी से हर मरीज पर आँख रखकर उसके रोग का कारण ढूंढना चाहिए। उसे रोगी को सांसारिक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाने के लिए उसकी बीमारी का कारण समझकर ही आगे का इलाज तय करना होगा।

रोग का इतिहास

एक बार एक लड़की को मनोभाजन का रोग बताया गया। वह दिनभर एक कोने में गुमसुम या किसी पर दृष्टि गड़ाये बैठी रहती थी। उससे उलझे हुए कपड़े के टुकड़े देकर बताया गया कि उन्हें किस तरह कपड़े की गेंद में भरा जाता है। यह कपड़े की गेंद भी एक अन्य रोगी की बनायी हुई थी। उसने ऐसा ही किया और कुछ दिन बाद देखा गया कि वह हर रंग के कपड़े के टुकड़ों को अलग-अलग कर लेती है। इसके बाद वह इन टुकड़ों को छाटने के लिए अपने कमरे में ले जाने लगी है और अगले दिन उनकी अलग-अलग गड्डियाँ बनाकर ले आती। फिर उसने अपनी पसन्द के टुकड़े मांगने शुरू किये। एक दिन जब उसे भरने के लिए गेंद दी गयी तो उसने गेंद को भरकर उससे खेलना शुरू कर दिया। चिकित्सक और दूसरे रोगी भी उसके साथ खेलने लगे। इसके बाद से लड़की को कभी पागलपन का दौरा नहीं पड़ा। धीरे-धीरे उसकी दशा में और सुधार हुआ और एक दिन उसने अपने पागलपन की कहानी चिकित्सक को सुनाई और भली चंगी होकर अपने घर चली गयी।

इसी प्रकार एक और बड़ी लड़की को किसी युवक से मानसिक चोट पहुँचने के कारण बाएं अंग का लकवा हो गया। दवादारू के अलावा भी उसकी देख-भाल शुरू की गई। उसके लिए ऐसे काम की तलाश की गयी, जो वह दाएं हाथ से कर सके पर दोनों हाथों से और अच्छी तरह कर सके। उसे अपनी बहन से बहुत प्यार था। इस कारण उसे अपनी प्यारी बहन के लिए छोटा कम्बल बुनने को कहा गया। एक-दो दिन में यह देखा गया कि यदि उसे यह मालूम हो कि कोई उसे नहीं देख रहा तो वह दोनों हाथ चलाती है। इसके बाद वह बाद में काम वाले अस्पताल में आने लगी और दोनों पैरों से बुनने की मशीनें चलाने लगी। उसने ऊन भी दोनों हाथों से लपेटी। इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अगले दिन उसने खुद कहा कि मुझे दुर्बलता पहले से कम है। इस बात को मानकर उसे कुछ ऐसे काम देने का निश्चय किया गया, जिससे उसके कमजोर हाथ पैरों को बल मिले। इसी उपचार से वह ठीक हो गयी। इस प्रकार काम द्वारा चिकित्सा अब बहुत उपयोगी वस्तु बन गयी है। ★

निर्वाचन—

—शाहपुरा (राजस्थान)
प्रधान—श्री राजाधिराज सुदर्शनदेव जी
मन्त्री—श्री भवरलाल जी लक

पाटन गुजरात आर्यसमाज के मन्त्री श्री भगवानदेव शर्मा गुरुकुलीय की नगरपालिका निर्वाचन में शानदार विजय हुई। जनता ने हार्दिक स्वागत किया। और एक विशाल भीड़ आर्यसमाज मन्दिर तक उनके साथ गई। वहाँ आपने सबका आभार माना।

—मंसूरी आर्यसमाज
प्रधान—कविराज हरनामदास
मंत्री—श्री परमात्माशरण जी

—मानपारा आर्य कुमार सभा
प्रधान—श्री बाबूलाल जी अग्रवाल
मन्त्री—श्री विश्वनाथ आर्य

—पठिया (हरदोई) आर्यसमाज
प्रधान—श्री चित्रवानप्रस्थी जी
मन्त्री—श्री ठाकुर गयासिंह जी

—छपरा (बिहार) स्त्री आर्यसमाज
प्रधाना—श्रीमती विद्योत्तमादेवी जी
मंत्राणी—श्रीमती विद्यादेवी जी

—आरा (शाहाबाद) आर्यसमाज
प्रधान—श्री इन्द्रदेव नारायण एडवोकेट
मंत्री—श्री रामराजसिंह जी मुख्तार

—सुन्दरपुर (सहारनपुर)
प्रधान—श्री मुरलीलाल जी
मंत्री—श्री दलेलसिंह

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार श्रावण ११, शक १८८१, श्रावण कृ० १२, वि० २०१६, २ अगस्त, १९५९ ई० [१२शिलिंग

दयानन्द दीक्षा-शताब्दी, गुरुधाम स्मारक-समारोह

आर्यसमाज के जीवन में नवीन प्रेरणा का संचार करेगा

आर्य जगत् की चिरकालीन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिये इस समारोह का आयोजन किया जा रहा है। क्या आप इस बात के लिये इच्छुक नहीं हैं कि गुरु विरजानन्द की पाठशाला आज भी दयानन्द जैसे शिष्यों का निर्माण करने में सफल हो। इस शुभ कार्य की पू त के लिये आपकी भावनाओं से प्रेरित हो सभी वैधानिक कठिनाइयों को समाप्त कर लिया गया है।

अब आप उस भव्य स्वप्न की कल्पना कीजिये

अब उसी प्राचीन भूमि पर एक आदर्श ज्ञान केन्द्र स्थापित होगा और दोनों ऋषियों की भेंट से जो प्रकाश उत्पन्न हुआ था वह प्रत्येक मानव के लिए उसी मन्दिर में सुलभ हो सकगा।

विरजानन्द सार्वजनिक वाचनालय और वैदिक अनुसन्धानशाला द्वारा आज की तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान-दान का महान् कार्य सम्पन्न होगा।

दयानन्द की दीक्षा का पुण्य स्मरण

आज हमें प्रेरणा दे रहा है कि राष्ट्र का नव निर्माण आर्थिक क्रान्ति से नहीं शिक्षा क्रान्ति से होगा। राष्ट्र का बड़ से बड़ा व्यक्ति आज की शिक्षा व्यवस्था से असन्तुष्ट है। उसका समाधान पाने के लिये व्याकुल है।

आर्य बन्धुओ आओ राष्ट्र का ध्यान दयानन्द की शिक्षा-दीक्षा-नीति की ओर आकृष्ट कर दो

इस गौरव पूर्ण कार्य की सफलता के लिये प्रत्येक आर्य को अपने कर्तव्य का निर्धारण करने में अब देर नहीं करनी चाहिये। इस समारोह की सफलता आर्यसमाज के गौरव का प्रश्न है। इस समारोह के लिये प्रत्येक आर्यजन को निमन्त्रित करते हुए हमें गर्व अनुभव होता है। आर्य जगत् का स्नेही आर्यमित्र जीवन के साठ वर्षों की सेवा के साथ एक प्रेरणापूर्ण सन्देश देने आया है। आर्यसमाज की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक गतिविधियाँ और विद्वानों का अभिनन्दन इस कार्यक्रम के विशेष अंग होंगे।

आगामी दीपावली (३०, ३१ अक्तूबर १ व २ नवम्बर) आप मथुरा में मनावें, आर्यसमाज के भविष्य निर्माण का यह स्वर्ण अवसर आया ह।

आप इस ऐतिहासिक अवसर पर अपना महत्वपूर्ण योग देकर अनुगृहीत करें

वर्ष | अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि एम ए | अङ्क

महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके महान् कार्य

[श्री आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री सिद्धान्तालंकार, मेरठ]

लेखक वैदिक वाङ्मय और साहित्य के उच्चकोटि के विद्वान् हैं। सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी आपने साहित्य-निर्माण के कार्य में महान् योग दिया है। आपने इस लेख में महर्षि दयानन्द की विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय कराते हुए उनकी उपयोगिता और हमारे कर्त्तव्य का उल्लेख किया है। महर्षि का हम पर महान् उपकार है उससे उऋण होने के लिये प्रत्येक आर्य को कठोर साधना करनी चाहिए। —सम्पादक

वर्तमान युग के युगद्रष्टा एवं युग प्रवर्तकों में महर्षि दयानन्द का स्थान उच्चतम एवं उत्कृष्टतम है। इसमें किसी भी विचारशील व्यक्ति का मतभेद नहीं हो सकता। यों तो सभी महापुरुषों में कुछ न कुछ विशेषता होती है। अपनी असाधारण विशेषता के कारण ही वे महापुरुष कहाते हैं। परन्तु महर्षि दयानन्द में कुछ ऐसे विशिष्ट गुण थे जो उनको स्वयं ही सब महापुरुषों में अत्युच्च आसन पर आसीन करा देते हैं। जिस प्रकार एक चमकते हुए उज्ज्वल रत्न को चाहे जिस तरफ से देखिए चमकता हुआ ही दृष्टिगोचर होता है उसी प्रकार महर्षि को भी चाहे किसी दृष्टिकोण से देखिये—आपको एक चमकती हुई ज्योति ही दीख पड़ेगी। उनकी अलौकिक विद्वत्ता, अप्रतिम-प्रतिभा अद्वितीय अन्तर्दृष्टि, अखण्ड तप, संसारिक प्रलोभनों से कोसों दूर-संसार में रहते हुए भी कमल पत्रवत् गतस्पृह-निर्भय, निरहंकार—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि ....

इत्यादि गुणों से पूर्णतया अलंकृत ऋषि दयानन्द की उपमा ढूंढने पर भी जगत् में मिलना कठिन है। उनके दिव्य गुणों पर दृष्टिपात करने पर महाकवि कालिदास के निम्न वचन स्मरण हो उठते हैं—

नूनं तं विदधे वेध।
····महाभूत समाधिना॥

निश्चय से उन्हें ब्रह्मा ने किसी अद्भुत सामग्री के सम्मिश्रण से बनाया था ऐसा प्रतीत होता है। अस्तु—

इस लेख में, हम संक्षेप से ऋषि के उन महत्त्वपूर्ण कार्यों का निर्देश करेंगे कि जिनके कारण ऋषि उन महर्षियों की श्रेणी में प्रतिष्ठित हुए हैं और विश्व व्योम के अत्युज्ज्वलतम नक्षत्रों की भांति अमर रूप से विराजमान रहेंगे। सर्व प्रथम षड्दर्शन समन्वय को ही लीजिए—

षड्दर्शन समन्वय

महर्षि के प्रादुर्भाव से पूर्व षड्दर्शनों में (न्याय-वैशेषिक, सांख्ययोग, मीमांसा तथा वेदान्त) ये आस्तिक दर्शन, या वैदिक दर्शन कहलाते हैं। तथापि इनमें परस्पर मतभेद हैं यह मान्यता प्रायः बहुत प्राचीन काल से ही चली आ रही है। महर्षि ने इसको अपनी दिव्य दृष्टि से देखा और इसे निर्मूल पाया। तथा स्पष्टरूप से घोषित किया कि दर्शनों में कोई विरोध नहीं है। वे परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं! कारण जब एक ही सृष्टि की समस्या का, इस संसार की गूढ़तम पहेली का विश्लेषण तथा सम्यक् दर्शन कराना ही इनका प्रयोजन है—तो यह सम्भव नहीं—कदापि युक्ति युक्त नहीं हो सकता कि वे परस्पर एक दूसरे के विरोधी हों। दर्शनों का प्रयोजन बताते हुए शास्त्रकार कहते हैं—

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो,
मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।
मत्वा तु सततं ध्येय
एते दर्शन हेतवः॥

अर्थात् दर्शनों का प्रयोजन ही यह है श्रुति वचनों से सुनें शब्द प्रमाण होने से और उपपत्ति दर्शनों में प्रतिपादित युक्ति प्रयुक्तियों के द्वारा मनन करके सत्यासत्य के विवेकपूर्वक ज्ञान से सत्य का ग्रहण करें और असत्य का परित्याग करें यह ही दर्शन शास्त्र का प्रयोजन है जिससे यह सिद्ध हुआ कि दर्शन वैदिक सिद्धांतों की व्याख्या तथा उपपत्ति पथ-प्रदर्शन करने के लिये ही निर्मित किये गये हैं। फिर उनमें परस्पर विरोध का अवकाश कैसे हो सकता है। तथा साथ ही यह भी आचार्यों ने लिखा है—

"एकमेव दर्शनं ख्यातिरेव दर्शनम्।"

अर्थात् वास्तव में तो दर्शन एक ही है और वह ख्याति अर्थात् ज्ञान ही दर्शन है। इससे भी स्पष्ट है कि दर्शनों के एक ही होने से उनमें विरोध नहीं हो सकता।

प्रश्न हो सकता है यदि दर्शनों में विरोध न होता तो वे विरोधी तत्त्वों का प्रतिपादन क्यों करते? दर्शनों में अनेक विरोधीतत्त्व दृष्टिगोचर होते हैं—

उदाहरणार्थ—न्याय दर्शन में जीवात्मा तथा परमात्मा में भेद परन्तु वेदान्त में जीव तथा परमेश्वर की एकता ही का प्रतिपादन किया गया है। न्याय का सिद्धान्त असत्कार्यवाद है किन्तु सांख्य का सत्कार्यवाद है। न्याय तथा परिणामवाद में विश्वास रखते परन्तु वेदान्त का सिद्धान्त विवर्त्तवाद है। अन्य दर्शन ईश्वर-सत्ता में विश्वास रखते हैं परन्तु सांख्य ईश्वर सत्ता को नहीं मानता। इसी प्रकार मोक्ष या मुक्ति विषय में दर्शनों का बहुत बड़ा मतभेद चल रहा है। कोई दुःखात्यन्त निवृत्ति को मोक्ष कहते इसे, जीव के ब्रह्म में लय हो जाने का नाम मुक्ति मानते हैं। इत्यादि अनेक मतभेद हैं जिनको महर्षि ने अपनी दार्शनिक बुद्धि से दूर कर दर्शनों के विषय में एक सत्य सिद्धान्त का बुद्धिसङ्गत प्रतिपादन किया है। जिससे दर्शनों के परस्पर विरोधी होने की मान्यता का सर्वथा उन्मूलन हो जाता है। इसलिये महर्षि एक उच्चकोटि के दार्शनिक विद्वान् थे। यह कहने में यत्किंचित् भी अत्युक्ति न होगी।

वेदाचार्य महर्षि

वेद भारती वाङ्मय मंदिर के स्वर्णमय शेखर कलश हैं। सम्पूर्ण भारतीय दर्शन, साहित्य-कर्म काण्ड, नीति धर्म-शास्त्र आदि सभी का आदि उद्गम शास्त्र-वेद ही समझे जाते हैं। परन्तु भारतीय विद्वान् ऐसी रत्ननिधि से नितरां विमुख हो गये थे। वेदों को नितान्त विस्मृत कर दिया है। उनके लिये वेद एक सील्ड बुक के समान ही बने हुए थे। भाष्यकारों ने केवल एक पक्षीय एक देशीय भाषा करके उनको एक संकुचित धर्म ग्रन्थ बना रक्खा था। और बहुत से स्थलों पर बड़ी ही लज्जाजनक व्याख्या भी की थी। परन्तु ऋषि ही प्रथम वेद-ज्ञाता, तथा प्रवक्ता थे जिन्होंने अपने भाष्य द्वारा वेद के रहस्यों की विशद रूप से व्याख्या कर विद्वानों को उनके महत्त्व तथा संसारोपयोगी [illegible] विषयों का वेद में प्रतिपादन किया [illegible] है यह सिद्ध कर दिखाया है। शिल्प-कला-विज्ञान-विद्युत्शास्त्र, व्योमयान-तारविद्या जलयान, राजनीति, अर्थशास्त्र, संगीतादि सभी ललित कलाओं का मूलरूप से यथावत् विद्यमान है। 'वेद सर्वा विद्या सन्ति मूलोद्देश्यतः' इसकी शंखध्वनि करे भारतीयों को भी यह भ्रम हो गया था कि वेद केवल कर्मकाण्ड की ही पुस्तकें हैं, यज्ञ, याग, होम इष्टियों की विधियों का प्रतिपादन करना ही इनका ध्येय है। फिर विदेशी विद्वानों के विषय में तो क्या कहना। वे तो सर्वथा सायणादि भाष्यकारों पर ही अवलम्बित थे।

जब महर्षि ने देखा कि मन्त्रों के देवताओं में, विद्युत्, अदितः अश्विनौ आदि युग्म-देवताओं का प्रतिपादन देखा तब उनकी ऋषि-बुद्धि ने अवलोकन किया, तो स्पष्ट विद्युत् (निगेटिव पोजेटिव,) या एलक्ट्रोन, प्रोटॉन आदि का ही वर्णन होना चाहिये।

यजुर्वेद के अध्याय ४-११। में बतलाया—

उभयतः शीर्ष्णो सानः सुप्राची सुप्रतीची ऐधि।

जिज्ञासु इन वचनों का पर्यालोचन करें। हमारे 'संस्कृत साहित्य विमर्श, में इस विषय का विशद प्रतिपादन किया है। यहाँ विस्तार भय से उसका पूर्ण उल्लेख नहीं किया जा सकता। हमारा अभिप्राय यहाँ केवल इतना ही है कि ऋषि ने ही इस विषय में सर्वप्रथम उद्बोधन कराया है। विस्मृत दिव्यकोष को फिर हमारे लिये खोज किया है। विद्वानों का कर्त्तव्य है कि इस दिशा में भी पूर्ण रूप से अनुसंधान करें।

स्वराज्य का सन्देश

सर्व प्रथम स्वराज्य का सन्देश भी ऋषि ने दिया—

"यदजो प्रथमः सम्बभूव।
स स्वराज्यमियाय" ॥ अ०

अर्थात् वह ही जन समाज प्रथम श्रेणी का समझा जाता है और स्वराज्य का अधिकारी होता है जो सब प्रकार श्रेष्ठ एवं बलिष्ठ होता है।

इस प्रकार लोक मात्र के कल्याण के लिये—भारतीय संस्कृति को ही सर्व श्रेष्ठ बताया—

'सानः संस्कृति विश्ववारा'

अर्थात् वह वेदादि सत्य शास्त्रों प्रतिपादित संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में प्रसृत होनी चाहिये—वही सर्वश्रेष्ठ है।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सिंहावलोकन

वैदिक राष्ट्र-गीत

यस्यामापः परिचराः समानी रहोरात्रे अप्रमादं क्षरन्ति।
सानो भूमिर्भूरिधारा पयो दुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥९॥
(मदिरा छन्द)
जिसमें संन्यासी परिव्राजक, चारों ओर विचरते हैं।
रात्रिदिवस समदृष्टि सदिच्छावत्, पर प्रमाद परिहरते हैं ॥
बहुनिधि से पयदेय आदि की, जो माता देने हारी।
वही मातृभू बल प्रताप दे, हमें ज्ञान गौरव भारी ॥९॥

On whom the circulating waters flow the same, night & day, without failure—Let that earth of many streams, yield us milk, then let her sprinkle (us) with splendour

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए



लखनऊ—२ अगस्त १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि सम्वत १९७२९४९०६०

महान् लक्ष्य की सिद्धि के लिए

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने हमें बतलाया था संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है और हमने उत्साह के साथ दुनिया के दुख दर्द को अपना समझ उसे दूर करने के लिये कदम बढ़ाये। विघ्न बाधाओं विरोधों गत्यवरोधों को दूर करते हुए हमने विश्व में अपना स्थान बनाने में सफलता प्राप्त करली और हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के सुनहरे स्वप्न से विभोर हो उठे।

हमारे इतने महान् लक्ष्य की सिद्धि के लिये सम्बल सत्य, समाचरण सत्कर्म और स्वाध्याय के आदर्श हो रहे परन्तु पानी नीचे की ओर ही बहता है। ज्यों ज्यों आर्यत्व के समुद्र में ज्वार और उफान बढ़ता गया, मानव सुलभ कमजोरियों का सम्मिश्रण भी [illegible] गया। आज यद्यपि आर्य संसार सागर पूर्व से महान् है, पर उसकी जलराशि में से आर्यत्व की पवित्रता कम हो चुकी है और विषाक्तता बढ़ती जा रही है। इस गम्भीर परिस्थिति के सूक्ष्म निरीक्षण आलोडन विलोडन का दायित्व सजग सक्षम आर्य बन्धुओं पर है।

आज संख्या और सम्पत्ति की दृष्टि से बढ़े होते हुए भी हमारे लक्ष्य की सफलता दूर होती जा रही है। हमारी मानव सुलभ कमजोरियाँ हमें अन्य सम्प्रदायों व राजनैतिक दलबन्दियों की भांति गलत मार्गों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित कर रही हैं। हमें सच्चे हृदय से आर्यत्व की महान् थाती की रक्षा के लिए सन्नद्ध और समर्पित रहना होगा। इस गौरव स्वाभिमान सामाजिक गौरव और सामाजिक अभिमान के मुकाबले सदा गौण रहते हैं और रहने चाहिए। आज हमारे आर्य शरीर में पारस्परिक वर्तन [illegible] की जो प्रवृत्ति घर कर रही है उसकी हमें बड़े दिल से निन्दा करनी चाहिए। कोई अधिकारी हो या न हो समाज के गौरव का जिसे ध्यान है वही सच्चा आर्य है। इन शब्दों को लिखते समय हृदय को अत्यधिक वेदना होती है फिर भी आर्य बन्धुओं की [illegible] हमें बार बार [illegible] करने के लिए प्रेरित कर रही है।

[illegible] समस्त संसार का प्रश्न हो वहां संकुचित क्षेत्रीय [illegible] और [illegible] दिखना पड़ता है कभी कभी कहीं जातिवादी दृष्टिकोण से सोचने [illegible] लगता है तब महान् लक्ष्य हमारी आंखों से ओझल हो जाता है।

क्या हम आशा करें हमारे ऐसे भाई जिन्होंने किसी भी कारण से समाज में अनेकता को प्रोत्साहित होने दिया है एकता की सच्ची भावना को अपने में पुनरुज्जीवित करेंगे। हममें सबमें होने चाहिए विचार [illegible] जहां तक संगठन के हित का प्रश्न हो सभी को एक कदम एक मना होकर चलना चाहिए। आशा है विचारशील आर्य आर्यत्व के महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए स्वर को समझेंगे और अपने साथियों व दूसरों का मार्ग दर्शन कर उपस्थित करेंगे।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती विशेषांक व अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये लेखादि अविलम्ब भेजें

[illegible], लेखकों, कवियों एवं आर्य नेताओं से प्रार्थना है कि विशेषांक के लिये अपनी रचनायें शीघ्र भेजें। विलम्ब से आने वाली रचनायें प्रकाशित कर सकना हमारे लिये कठिन होगा।

गुरुधाम स्मारक दीक्षा-शताब्दी समारोह के लिये धन संग्रह

[illegible] योजना के प्रेमियों के उत्साह के लिये समिति की ओर से हार्दिक [illegible] देते हुए निवेदन है कि धन संग्रह का कार्य अन्य [illegible] में भी [illegible] आरम्भ हो जाना चाहिये। जो धन संग्रह हो उसकी सूचना कार्यालय को भेजते रहें।

धन-संग्रह कार्यार्थ अपेक्षित प्रकाशन और मार्गव्यय आदि की व्यवस्था [illegible] कार्यालय को सूचित कर दें। कार्यकर्ताओं की नामावली और नगर के प्रमुख [illegible] की सूची अविलम्ब कार्यालय को भेजें।

धन संग्रह के लिये जो सज्जन समय देना चाहें वे भी सूचित करें आदरणीय श्री रघुनाथ गोयल जी मेरठ डेपूटेशनों का कार्यक्रम निर्धारित कर रहे हैं।

उमेशचन्द्र स्नातक मन्त्री

गुरुधाम, २४ नम्बर दीक्षा आर्यमित्र हीरक जयन्ती विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ समिति आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश

विदेशों में भारतीय बालाओं को उपराष्ट्रपति डाक्टर राधाकृष्णन द्वारा नृत्य के लिये प्रोत्साहन

न्यूयार्क से १८ जुलाई को एक समाचार प्राप्त हुआ और पत्रों में प्रकाशित हुआ है—

भारत के उपराष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन को न्यूयार्क में मालूम पड़ा कि वहां रहने वाली भारतीय लड़कियाँ [illegible] से [illegible]।

उपराष्ट्रपति ने न्यूयार्क में [illegible] समारोह में उप[illegible] लड़कियों से कहा कि वे [illegible] और गाने पर करें। उन्हें [illegible] ठहें। इस समाचार को [illegible] पढ़कर होता है वह यह कि क्या उप[illegible] भारतीय बालाओं का [illegible] प्रदर्शन [illegible] या उपराष्ट्रपति का [illegible]। [illegible] में [illegible] नेता [illegible] के नाम पर [illegible] सुलभ गुणों की समाप्ति को प्रोत्साहन कर रहे हैं। जिन डाक्टर राधाकृष्णन पर हमें गर्व है कि वे भारतीय [illegible] के प्रतीक हैं यदि वह [illegible] व्यक्ति भारतीय बालाओं की लज्जाशीलता पर इस प्रकार की [illegible] करता है तो [illegible] और अयोग्य [illegible] के बारे में हम कहाँ तक सोच सकते हैं।

हम समझते [illegible] पुरुषों [illegible] पुरुषों में और स्त्रियों द्वारा स्त्रियों में प्रदर्शन यदि आवश्यक हो तो उचित है। इसके विपरीत उचित नहीं। साथ ही यह प्रश्न और भी गम्भीर है कि भारतीय बालायें विदेशों में नृत्य प्रदर्शन करें। इस प्रवृत्ति का विरोध किया जाना चाहिए। आधुनिकता के नाम पर इन विचारों पर ध्यान न देना राष्ट्रहित के विरुद्ध होगा।

दलाईलामा द्वारा मांस त्याग पर विचार

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सार्वदेशिक [illegible] प्रतिनिधि सभा के [illegible] श्री रघुवीर सिंह शास्त्री [illegible] में [illegible] आर्य शिष्ट मण्डल दलाई लामा से मिला था, उसने [illegible] आर्यसमाज के विचार [illegible] रक्खे थे और उनसे [illegible] था कि [illegible] महान आत्मा [illegible] स्याग का समस्त [illegible] पर प्रभाव पड़ेगा।

दलाई लामा ने आर्यसमाज के विचारों को गम्भीरता पूर्वक सुना और [illegible] करने का आश्वासन दिया है।

वास्तव में [illegible] आर्यसमाज का दृष्टिकोण पहुंचाने के लिए इस प्रकार के शिष्ट मण्डल समय-समय पर भेजे जाने रहने चाहिये और इस कार्य के लिए विदेश प्रचार [illegible] की स्थापना के हमारे पुराने प्रस्ताव पर भी सभा को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए।

(शेष आगामी पृष्ठ पर)

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में—

आर्य नेताओं का स्वागत

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्रजी एडवोकेट

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान व गुरुकुल के कुलपति

श्री पं० हरिशङ्कर शर्मा

१८ जुलाई को आर्य प्रतिनिधि सभा की मथुरा में आयोजित धन्वन्तर व जयन्ती दीक्षा शताब्दी समिति की बैठकों के पश्चात् गुरुकुल पधारे। उनके साथ गुरुकुल स्नातक मण्डल के मन्त्री श्री उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि एम०ए० सम्पादक आर्यमित्र व सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री ठा० फूलनसिंह जी भी थे।

गुरुकुल मुख्य द्वार पर कुलवासियों ने आर्य नेताओं का पुष्पमालाओं से हार्दिक स्वागत किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान व कुलपति जी ने सभी कुलवासियों से अनौपचारिक वार्तालाप और परिचय भेंट के पश्चात् गुरुकुल आन्दोलन के उद्देश्य और सफलता के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये।

श्री बाबूजी ने गुरुकुल प्रणाली को मानवता की अमूल्य सम्पत्ति बताया और कहा कि हमारी पीढ़ी का दुर्भाग्य था कि हमारे अभिभावक गुरुकुल जैसी संस्था न जान सके और न बना सके। गुरुकुल का एक भी आदर्श स्नातक राष्ट्र के हजारों लाखों भेडचाल स्नातकों से अधिक राष्ट्र की सेवा कर सकता है।

कुलपति जी ने कठिनाइयों के कारण हार्दिक इच्छा होते हुए भी शीघ्र गुरुकुल न आ सकने पर खेद प्रकट करते हुए गुरुकुल के वृन्दावन आगमन को ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्धित अपने गुरुकुल परिचय की कहानी बताई और कुल के अध्यापकों व ब्रह्मचारियों के प्रति शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए कहा—राष्ट्र की शिक्षा नीति दूषित है और समाज का दृष्टिकोण आर्थिक हो गया है। गुरुकुल शिक्षा क्षेत्र में आर्यसमाज की राष्ट्र को महान् देन है। राष्ट्र जितना शीघ्र गुरुकुल पद्धति को अपना लेगा उतना ही राष्ट्र का भला होगा।

शिक्षा के वास्तविक अर्थों की तात्त्विक विवेचना करते हुए आपने बताया कि गुरुकुल पद्धति मानव के सर्वाङ्गीण विकास को महत्त्व देती है। गुरुकुल में संख्या को महत्त्व न देकर गुणों पर विशेष बल दिया जाता है। यदि अल्प संख्या में भी गुरुकुल राष्ट्र को चरित्रवान नागरिक देता है तो राष्ट्र की सच्ची सेवा है। आशा है कुलवासी महर्षि दयानन्द के विश्वजनीन सर्वोपकारी मानवता के दृष्टिकोण को हृदयङ्गम करते हुए सफलता प्राप्त करेंगे। आर्यसमाज अपनी सफलता के लिये गुरुकुलों की ओर आशापूर्ण दृष्टि से देखता है।

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता श्री नरदेव स्नातक एम०पी० ने समागत आर्यनेताओं अतिथियों को हार्दिक धन्यवाद दिया और नेताओं से समय समय पर गुरुकुल पधारने की प्रार्थना की।

सम्मानित अतिथियों के सम्मान में कुलवासियों की ओर से अल्पाहार दिया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के आचार्य श्री विश्वेश्वर जी सि० शि० एम०ए० के साहित्यिक कार्यों की कुलपति जी ने विशेष प्रशंसा की तथा श्री मा० जोधसिंह जी, श्री पं० जमुनाप्रसाद जी, श्री पं० विनयकुमार जी आदि प्राचीन अध्यापकों से भेंट कर प्राचीन स्मृतियों को ताजा किया।

बाद में सभी कुलवासियों ने अतिथियों को विदाई दी। इस प्रकार इस वर्ष गुरुकुल का शिक्षा-सत्र एक नवीन प्रेरणाप्रद वातावरण में आरम्भ हुआ।

[पृष्ठ ३ का शेष]

सरकारी दुकानों पर गेहूँ के स्थान पर अनिवार्य आटा

भारत की खाद्य समस्या का जो समाधान हमारी सरकार कर रही है उससे जनता कहाँ तक सन्तुष्ट है यह प्रतिदिन के क्षेत्रीय अभावों के समाचारों से पता चल जाता है। सरकार ने दुकानों पर निर्धारित मूल्य पर गेहूँ देने का प्रबन्ध किया और वह चल रहा है परन्तु अब गेहूँ के स्थान पर आटा दिया जाना आरम्भ किया गया है। कई स्थानों पर तो अनिवार्य रूप से आटा ही दिया जा रहा है। जबकि सरकार ने अभी ही रबी की फसल का गेहूँ संग्रह किया है तब गेहूँ के अभाव का तो प्रश्न ही नहीं फिर आटा दिये जाने के पीछे मिल मालिकों के सन्तुष्टिकरण की नीति झलकती है। यह क्यों, स्वतन्त्रता के ११ वर्ष बाद हम इस स्वतन्त्रता के भी अधिकारी नहीं रहे कि हम यह फैसला कर सकें कि हम दुकान से गेहूँ खरीदें या आटा, हमारी स्वतन्त्रता समाप्त कर हमें आटा लेने को बाध्य किया जा रहा है। आटे की स्वच्छता कहाँ तक विश्वसनीय होगी यह आज के भ्रष्टाचारी और अनैतिक वातावरण में स्वतः स्पष्ट है। सरकार को मिल मालिकों का नहीं देश की कोटि-कोटि जनता की भावनाओं की पहले रक्षा करनी चाहिए।

समाज-कल्याण की प्रगति

भारत सरकार ने स्वाधीनता के पश्चात् देश में समाज कल्याण कार्य की समीक्षा के प्रसंग में जो रिपोर्ट प्राप्त की है उसके कतिपय अंशों पर विवाद उठ खड़ा हुआ है।

जहाँ तक व्यय के उचित विनियोग का सम्बन्ध है हमारी सम्मति है कि समाज कल्याण बोर्ड ने यथा सम्भव सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित और प्रोत्साहित किया है और यथा सम्भव कोशिश की है कि धन सामाजिक संस्थाओं के उद्देश्यों की पूर्ति में लगे। हमें यह भी जानकारी है कि अभी देश में बहुत कम लोग सामाजिक अभ्युत्थान में रुचि रखते हैं और इस मानव सेवा को व्यर्थ का कार्य समझते हैं और इस प्रकार बोर्ड के पास व्यय करने के लिये जितना धन है उसको खर्च करने के लिये लेने वाले नहीं मिल सके हैं।

इस सम्बन्ध में हम बोर्ड की योजना में कहीं दोष पाते हैं। आर्यसमाज जैसी विशाल और संघटित समाज-सेवी संस्था के साथ आज तक कोई सम्पर्क नहीं है यदि आर्यसमाज के केन्द्रीय व प्रान्तीय संघटनों का बोर्ड सहयोग प्राप्त कर सके तो कार्य में यथेष्ट कुशलता और प्रगति सम्भव है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने समाज कल्याण के कार्य को व्यापक रूप देने के लिए श्रीमती शकुन्तला जी गोयल की संयोजकता में समाज कल्याण विभाग स्थापित किया हुआ है। आशा है उत्तर प्रदेश में बोर्ड हमारे इस विभाग का सहयोग प्राप्त कर सकेगा। जहाँ तक प्राविधिक आर्थिक विनियोग का प्रश्न है यही कहा जा सकता है कि यह तो सेवा का विभाग है। सरकार के अर्थोत्पादक कार्यक्रमों में जितना अपव्यय हुआ या हो रहा है उसके मुकाबले इस विभाग की त्रुटियां नगण्य हैं आशा है सरकार समाज कल्याण कार्य को प्रोत्साहित करने में संकोच न करेगी।

नवीन समाज सभा में प्रवेश

अन्तरंग सभा द्वारा १७-७-५९ के नि० सं० ४ द्वारा निम्नलिखित आर्यसमाज सभा में सम्बद्ध किये गये—

१—आ० स० फालैन (प्रह्लाद नगर) पो० खास जिला मथुरा २—आ० स० देवकी प्रह्लादपुर पो० सोरों जि० एटा, ३—आ० स० महाराजगंज पो० खास (रायबरेली)।

शोक-प्रस्ताव

अन्तरङ्ग सभा दि० १७-७-५९ के नि० सं० ३ की लिपि

३—सभा प्रधानजी की विशेष आज्ञा से निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव समस्त अन्तरङ्ग सभासदों ने खड़े होकर पारित किया—

"अन्तरङ्ग सभा का यह साधारण अधिवेशन उरई आर्यसमाज के स्तम्भ एवं दानवीर श्रद्धालु श्री श्रीधरदयालुजी उरई निवासी तथा आर्यसमाज भूड़ बरेली के उत्साही, कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री बा० मुकुटबिहारीलाल जी मुन्सरिफ भूड़ बरेली निवासी के दुःखद देहावसान पर हार्दिक-शोक समवेदना प्रकट करती हुई परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति और शोकातुर परिवारों को धैर्य प्रदान करें।"

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा-मंत्री

आर्यमित्र के ग्राहक बनिए तथा बनाइये

१५ मार्च १९५९ ई० को, उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरङ्गाधिवेशन में सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ है कि प्रत्येक आर्यसमाज "आर्यमित्र" का ग्राहक बनना अपना अनिवार्य कर्त्तव्य समझे। अतः उपर्युक्त निश्चय के अनुसार आपसे अनुरोध है कि यदि आपके आर्यसमाज में आर्यमित्र नहीं आता तो कृपया लौटती डाक से उसका वार्षिक मूल्य आठ रुपया मनीआर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें। "आर्यमित्र" आर्यजगत् का मुख पत्र है और आर्यजगत् की गतिविधि की जानकारी रखना प्रत्येक आर्य और आर्यसमाज का मुख्य कर्त्तव्य है। यदि आपका समाज 'आर्यमित्र' का ग्राहक है तो हम आपसे प्रार्थना करेंगे कि अपने नगर या ग्राम में प्रयत्न करके कम से कम एक ग्राहक कृपया बना दीजिए। आर्यमित्र को हम और भी आकर्षक एवं उपयोगी बनाना चाहते हैं। अतएव इस दिशा में आपकी सहायता अपेक्षित है।

आशा है आप मेरी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे। ग्राहक बनाने वालों के नाम धन्यवादपूर्वक आर्यमित्र में प्रकाशित किये जायेंगे।

साठ वर्षीय सेवाओं के उपलक्ष में इस वर्ष आगामी दीपावली पर आर्यमित्र की हीरक जयन्ती मनाई जायगी जिसमें एक बृहद् विशेषांक भेंट किया जायगा। जयन्ती तक ५००० ग्राहक बनाने के यज्ञ में आपका सहयोग विशेष रूप से प्रार्थनीय है।

विनीत—
प्रेमचन्द्र शर्मा एम.एल.सी.
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश

मनोवैज्ञानिक चिन्तन—

जीवन का लक्ष्य

[ले०—श्री नरदेव हैदराबाद]

[जीवन का उद्देश्य सुख [स्थायी सुख] प्राप्ति है। उसके लिए व्यावहारिक मार्ग यही है कि हम जीवन के आदर्शों का पालन करें, नैतिक मर्यादाओं का पालन करें इसी मार्ग पर चलकर हम सुखी बन सकते हैं। —सम्पादक

मनुष्य और अन्य प्राणियों में अन्तर है। मानवेतर प्राणी केवल सुख की कामना करते हैं। जब उन्हें भूख लगती है, तब भोजन की खोज में निकल पड़ते हैं जब परिश्रम के पश्चात् थकावट अनुभव करते हैं तब निद्रादेवी की गोद में चले जाते हैं जब कहीं से संकट आता देखते हैं तो भागकर प्राणों की रक्षा करते हैं। साधारण मनुष्यों का भी जीवनोद्देश्य सुख प्राप्ति ही होता है परन्तु हम उन्हें वास्तविक मनुष्य नहीं समझते। वस्तुतः तो मनुष्य वही है जो सुख की अपेक्षा आनन्द को श्रेष्ठ मानकर उसकी प्राप्ति के लिए उद्योग शील है।

अब यह विचारना है कि सुख और आनन्द में क्या अन्तर है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पर्याप्त मत भेद हो सकता है। स्थूल रूप से यह कह सकते हैं कि सुख और आनन्द दोनों ही आत्मा को प्रसन्न करनेवाले भाव हैं तो भी सुख क्षण भंगुर है और आनन्द चिरस्थायी है। सुखों का सम्बन्ध ऐन्द्रिक और आनन्द का आत्मा से होता है।

सुख और आनन्द कैसे प्राप्त हो सकते हैं। इनकी प्राप्ति का प्रथम साधन स्वास्थ्य है। शास्त्रकारों ने भी कहा है—

"धर्मार्थ काम मोक्षाणामारोग्य मूल कारणम्'।

अर्थात् आरोग्य के बिना धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष किसी की भी उपलब्धि नहीं हो सकती। आरोग्य के साधनों पर बहुत कुछ लिखा जा सकता है, परन्तु यहाँ आरोग्य का मूल मन्त्र देना ही पर्याप्त है।

"पथ्याशी व्यायामी ब्रह्मचारी नरो न रोगीस्यात्'।

अर्थात् जो व्यक्ति खाने-पीने में संयम से काम लेता है, नियम-पूर्वक व्यायाम करता है तथा इन्द्रियों के वश में नहीं होता, वह रोगी कदापि नहीं हो सकता।

जैसे सुख व आनन्द के लिए शरीर की नीरोगता आवश्यक है वैसे ही बुद्धि के विकास की भी। यही कारण था कि भारतवर्ष में गुरु को पितृवत् पूज्य माना जाता था और बुद्धि की ही कुशाग्रता के लिए छात्र को गायत्री मन्त्र का उपदेश अन्य सब विद्याओं के पूर्व दिया जाता था। विद्या वस्तुतः एक कामधेनु है। जो इसे पा लेता है वह एक अनिर्वचनीय आनन्द अनुभव करता है।

यही कारण था कि हमारे प्राचीन काल के विद्वानों ने लिखा था—

अन्न दान परं दानं विद्या दानमतः परम्। अन्नेन क्षणिका तृप्तिः यावज्जीवं तु विद्यया॥

अर्थात् अन्न का दान बड़ा दान है परन्तु विद्या का दान उससे भी महान् है।

पंच तन्त्रकार ने एक स्थान पर लिखा है—

'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।"

विद्वान् का सर्वत्र सम्मान होता है और अनेक मनोहर ग्रन्थों के अध्ययन से वह संगति के अभाव में भी सुखी रह सकता है।

आनन्द प्राप्ति का तीसरा साधन आत्मा की पवित्रता है। जो व्यक्ति सत्य से प्रेम करता है और जिसका दृष्टिकोण उदार रहता है जो किसी को दुखित नहीं करता और दुखियों के दुःख दूर करने के लिए सदा उद्यत रहता है, जो अपने उद्योग धन्धे में धर्म व न्याय का साथ नहीं छोड़ता तथा उससे न्यूनाधिक जो प्राप्त होता है, उसीमें सन्तुष्ट रहता है, जो पराये धन को धूल के समान समझकर न्यायोपार्जित सम्पत्ति में से पीड़ितों व पात्रों के सहायतार्थ तत्पर रहता है, जो ईश्वर को परम पिता मानकर उसीकी पूजा करता हुआ सब प्राणियों को आत्म तुल्य समझता है, उसी आत्मा में आनन्द का सागर ठाठें मारता रहता है जिसका वर्णन करना लेखनी व वाणी की शक्ति के बाहर है।

मनुष्य का शरीर भले ही स्वस्थ, बुद्धि उज्ज्वल और आत्मा निर्मल हो परन्तु वह तब तक सुखी व आनन्दित नहीं हो सकता जब तक उसकी भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण न हों। उसकी पूर्ति के लिए धन अनिवार्य है और धन की प्राप्ति उद्योग धन्धे द्वारा ही हो सकती है। इसलिए मनुष्य को जीवन-संग्राम में कूदते समय भली भाँति सोच विचार कर अपने लिए कोई धन्धा चुनना चाहिए। जिस धन्धे में मनुष्य का मन नहीं लगता जिससे उसे जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त धन नहीं मिलता, जिसे पैसा कमाने के लिए नित्य झूठ बोलना व छल-कपट करना पड़ता है वह धन्धा कभी भी सुख या आनन्द नहीं दे सकता। इसलिए सच्चे आनन्द के इच्छुकों को उसी व्यवसाय में पड़ना चाहिए जिसमें मनुष्य को कुपथ पर जाने की आवश्यकता ही न पड़े।

विचारकों का कथन है कि जिस मनुष्य को दिन में निज व्यवसाय में आनन्द नहीं आता और सायंकाल में घर का वातावरण सुखी नहीं बनाता वह खेल तमाशों तथा भोग विलास में लिप्त रहता हुआ भी सच्चे सुख व आनन्द से शून्य रहेगा। पारिवारिक सुख उसीको मिलता है जिसके परिवार के सदस्य सुशिक्षित, सदाचारी कर्त्तव्य-परायण हों।

जो मनुष्य सुखों के लिए आनन्द की उपेक्षा करते हैं वह निरा पशु हैं, जो जीवन में सुख व आनन्द दोनों पाते हैं वह सौभाग्यशाली मानव हैं और जिन्होंने आनन्द के लिए, सुखों को तुच्छ समझ और उसकी प्राप्ति को जीवन का लक्ष्य बनाया, इसीलिए वे संसार के पूज्य बने हुए हैं। ★

राजनैतिक चिन्तन—

सैनिक गठबन्धनों से—

विश्वशान्ति असम्भव

[श्री प्रो० इन्द्र वर्मा एम०ए०, मन्त्री आर्यसमाज रामनगर [नैनीताल]

[जीवन का अन्तर्मुख दृष्टिकोण ही विश्वशान्ति का आधार है। वेद और समस्त धर्म उसीका मार्ग बताते हैं। आज राजनैतिक गठबन्धनों द्वारा शान्ति के लिये प्रयास करना मृगतृष्णा और आत्म-प्रवंचना है। —सम्पादक

उत्तरी एटलांटिक पैक्ट सीटो, बगदाद पैक्ट एवं वारसा संधि के रूप में विविध सैनिक गठबन्धनों का निर्माण किया जा चुका है। इन सैनिक सन्धियों के द्वारा सदस्य राष्ट्रों ने आक्रमण किये जाने पर साथी राष्ट्रों को सैन्य-सहायता देने का वचन दिया है। उनका कथन है कि उनका संगठन आक्रामक के विरुद्ध निरोध का कार्य करेगा। वे एक संगठित शक्ति के प्रदर्शन द्वारा कुचेष्टाकारी राष्ट्र को चेतावनी दे सकेंगे कि किसी भी सदस्य राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण करना स्वयं उसके लिये भी संकट से रहित नहीं है। वे यह घोषित करना चाहते हैं कि किसी निर्बल राष्ट्र की सुरक्षा पर आघात करने वाला आक्रामक अपनी कुचेष्टाओं की पूर्ति के हेतु खुला द्वार न पा सकेगा। निर्बल राष्ट्रों को वे सबल राष्ट्रों के बर्बर आक्रमण से रक्षित कर सकेंगे एवं विश्व-शान्ति में सहायक हो सकेंगे।

किन्तु विचारणीय प्रश्न यह है कि विश्वशान्ति के तथाकथित रक्षक ये सैन्य गठबन्धन किस मनोवृत्ति के परिणाम हैं? किन मनोविकारों के सूत्रधार हैं एवं अन्ततोगत्वा यह विश्वशान्ति में कहां तक सहायक हो सकते हैं। ये सैन्य सन्धियां शान्ति की अग्रदूत बनी हैं अथवा युद्ध की आवाहक। उन्होंने मानव के उत्क्रमित हृदय में शान्ति के पुनीत उद्देश्यों की स्थापना की है अथवा युद्ध के विनाशकारी भावों का प्रसार। सबल राष्ट्रों की आक्रमणकारी मनोवृत्ति के निरोधक बने हैं अथवा समर्थक। निर्बल राष्ट्रों के हेतु वे सुरक्षा के साधन हैं अथवा अव्यवस्था के जनक। शक्ति-संतुलन का सिद्धान्त विश्वशान्ति का विधायक होगा। किंवा विनाशक!

मेरी सम्मति में सैनिक संगठन विश्व शान्ति में किसी भी भांति सहायक नहीं हो सकते। विशेषकर वर्तमान युग में। आज का विश्व अशान्त युग है। विश्व दो समुदायों में विभक्त है। दोनों समुदाय परस्पर घोर प्रतिद्वन्दी हैं। सहनशक्ति का उनमें अभाव है। दोनों समुदायों के सिद्धान्त भिन्न हैं। परस्पर विश्वास का अभाव है। उनके मस्तिष्क में भिन्नता है, हृदय में अविश्वास। उनके मस्तिष्क में भय है, हृदय में सन्देह। शीतयुद्ध में सन्नद्ध वास्तविक युद्ध के तट पर प्रतिष्ठित राष्ट्र अस्त्र आयुधों से सज्जित हैं। ऐसी दशा में शक्ति-प्रदर्शन का एक भी प्रयास समरोपयोगी भावना का उत्तेजक हो सकता है। समरांगण के हेतु एक भी आवाहन उद्विग्नता का उत्पादक हो सकता है। शस्त्रों की क्षीणतम भी झंकार प्रतिध्वनि बन लौट सकती है। किन्तु आज का युद्ध संत्रस्त मानव शान्ति की स्निग्ध समीर का आकांक्षी है, शस्त्रों की कर्कश टंकार का नहीं। आज का प्रगतिशील मानव सत्यशील की पुकार का अभिलाषी है, युद्ध की ललकार का नहीं। आज का नंगा भूखा कंकाल मस्तिष्क में विराम चाहता है, विशृंखलता नहीं।

सृष्टि के प्रारम्भ काल ही से मानव की जुगुप्सा उसे युद्धों के अभिनयन की ओर आकर्षित करती रही है। शक्ति के प्रदर्शन अनादि काल से ही होते रहे हैं, किन्तु वे मानव को युद्ध से विरत न कर सके। शक्ति का सम्यक संतुलन असम्भव है। होकर भी स्थिर नहीं रह सकता। शक्ति-संतुलन के सिद्धान्त में विश्वास का अर्थ यह होगा कि संतुलन के विनाश का अर्थ शान्ति का विनाश होगा। और शक्ति का संतुलन चिरकाल तक रह ही नहीं सकता। उसका किसी भी समय असंतुलन हो सकता है। संतुलन बिगड़ा कि युद्ध हुआ। अतः यह सिद्धान्त स्वयं घोषणा करता है कि युद्ध होगा। अवश्य होगा। आज नहीं तो कल होगा।

सैन्य गठबन्धन स्वयं भय एवं अविश्वास की मनोवृत्ति के परिणाम हैं। ये भय, अविश्वास के कृष्ण आवरण को सुदृढ़ ही करते हैं, उसका अनावरण नहीं। परिणाम यह होता है कि सत्य ओझल हो जाता है, संदेह का कुहासा वास्तविकता को विकृत कर देता है। आक्रमण की सम्भावना ही उन्हें आक्रामक बना देती है। वह युद्ध प्रारम्भ कर देते हैं। इतिहास साक्षी है। प्रतिद्वन्द्वी की शक्ति की प्रचुरता कभी युद्धोन्मुख राष्ट्र को युद्ध से विरत नहीं कर सकी। प्रत्युत उसने भी अधिक शक्ति संचित की एवं अवसर पाकर आक्रमण कर ही दिया।

सैनिक संगठनों का अवश्यम्भावी परिणाम एक और भी है। उसमें धन का अपव्यय होता है। निर्धन श्रमिकों की आहें लौह की टंकार बनाई जाती हैं। मरणोन्मुख कंकालों का रक्त अग्नि बनकर जलता है। पेट काटे जाते हैं। तन उघाड़े जाते हैं। शस्त्रागार भरे जाते हैं। कुचेष्टायें रुकी जाती हैं।

विश्व में शान्ति तब होगी, जब मानव के मस्तिष्क में शान्ति होगी। विश्व में शान्ति तब होगी, जब मानव के मन में शान्ति होगी। विश्व में शांति तब होगी जब समृद्धि की समीर प्रस्वेद के प्रवाह को शोषित कर देगी। विश्व में शान्ति तब होगी जब कि पेट की रोटी व तन का कपड़ा नहीं छीना जावेगा। विश्व में शान्ति तब होगी जब मानव सहनशीलता, सहिष्णुता एवं सत्य का साक्षात् करेगा। विश्व में शांति तब होगी जब मानव शक्ति-प्रसार की कुचेष्टाओं से विरत होगा। और यह तभी सम्भव है जब मानव महर्षि दयानन्दजी सरस्वती के बताये गये आदर्शों पर चले, पूज्य गांधीजी के मार्ग को अपनायें और पं० नेहरू जी के पंचशील के सिद्धान्तों का प्रसार करे। सैनिक गठबन्धनों से असन्तोष फैलेगा, अशान्ति फैलेगी। अव्यवस्था फैलेगी।

वेद-प्रचार-सप्ताह

श्रावण शु० १५, सं० २०१६ वि० से भाद्रपद कृ० ८ सं० २०१६ वि०
तदनुसार १८ अगस्त १९५९ से २६ अगस्त १९५९ तक

मान्यवर नमस्ते !

इस वर्ष 'वेद-प्रचार सप्ताह' तिथि श्रावण शुक्ला १५ से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी संवत् २०१६ वि० तदनुसार १८ अगस्त से २६ अगस्त १९५९ तक मनाया जायगा। कार्यक्रम निम्न प्रकार है—

आर्यसमाजों को चाहिए कि वे कृपया अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने का अथक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला-समाज, आर्यकुमार सभा, आर्यवीर दल तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये।

श्रावणी पर्व का महत्व—आर्यसमाज के प्रवर्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान्, वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को अज्ञानता एवं अन्धविश्वासों के अन्धकूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा-प्रदाता, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान् सूत्रधार तथा राष्ट्र-धर्म के प्रबल प्रेरक महर्षि दयानन्द के महान् व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा-समन्वित हो उस ऋषि के चरण चिह्नों पर चलने की चेतना देना इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

योगिराज दयानन्द ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण मनुष्य को पशुता से मुक्त कर, मानव बनाने में व्यतीत किया है और संसार के मानवों को आर्यत्व का पावन पाठ पढ़ाया है। ऋषिराज दयानन्द ने मानवों के उत्थान का एकमात्र साधन वेद-ज्ञान ही बतलाया है। अतः इस सप्ताह में हमें यह सोचना है कि क्या हमने आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन का यथार्थ रूप में पालन किया है। यदि अभी तक नहीं किया तो आओ, इस वर्ष इस पर्व पर, श्रावणी के दिन, हम इस निमित्त शुभ संकल्प करें।

कार्य-क्रम

पारिवारिक यज्ञ—श्रावणी (रक्षाबन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परिवार प्रातः पारिवारिक यज्ञ करे।

प्रातः ७॥ बजे से समस्त आर्य नर नारी, युवक तथा बालक-बालिकाएं आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनाएं। वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जाय। तत्पश्चात् "आर्य पर्व-पद्धति" में विहित पर्व विधान किया जाय। यज्ञ की समाप्ति पर समस्त आर्य नर नारी गम्भीरतापूर्वक वेद तथा वेदानुकूल शास्त्रों के स्वाध्याय का पावन व्रत धारण करें। व्रत के पश्चात् सुमधुर आध्यात्मिक गान एवं प्रवचन किये जायं, तत्पश्चात् श्रावणी-पर्व एवं स्वाध्याय के महत्व पर भाषणों की व्यवस्था की जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेद कथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिए।

श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव

२६ अगस्त भाद्रपद कृष्णाष्टमी आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान्, योग विद्या के प्रवीण ज्ञाता, पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा महान् भारत के निर्माता आचार्य अङ्गिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म-दिवस है। आज ही के दिन मथुरा नगरी के कारागार में माता देवकी की कोख से भारत के इस महापुरुष का जन्म हुआ था। हमें आज के दिन आत्मा की अमरता का पावन सन्देश देने वाले भारत के महान् नेता श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व पर विशेष प्रकाश डालने वाले सफल आयोजन नगर नगर और गाँव-गाँव में करने चाहिए और पौराणिकों तथा विदेशियों द्वारा उनके पावन चरित्र पर पोती हुई कालिमा को धोने का भी पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए।

कार्य-क्रम

प्रातः—७॥ बजे से आर्य-मन्दिरों में "आर्य पर्व-पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्य मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता-ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

नोट—सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिर पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

१८ से २६ अगस्त तक का कार्य-क्रम

प्रतिदिन प्रातः—सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय और इस सत्संग को यथा-सम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिए।

मध्याह्न—वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद् बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय। सभासद् बनाते समय जातिवाद, अस्पृश्यता एवं प्रान्तीयता के भावों को सर्वथा भुला देना चाहिए।

नैतिकता-उत्थान पर भी इस सप्ताह में विशेष बल दिया जाए क्योंकि चरित्र निर्माण ही मानवता का मूल मन्त्र है। अतः इस सम्बन्ध में भी विशेष व्याख्यान कराये जाएं।

रात्रि—मन्दिरों में वेद-कथा का विशेष आयोजन हो। वेदों के आधार पर विश्वबन्धुत्व, मानववाद बुद्धिवाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्र धर्म आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय। वेदों की अपौरुषेयता एवं वेदभाष्य की नैरुक्तिक शैली जिसका प्रतिपादन इस युग के महर्षि दयानन्द ने कर मानव जाति का परम कल्याण किया है, आदि की भी विशेष चर्चा होनी चाहिए।

शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन एवं वाक्-संघर्ष—इस सप्ताह में आर्य वीर दल एवं आर्यकुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

वेद-प्रचार-निधि

इतने बड़े उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार-कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिए। प्रान्त में एक सहस्र से अधिक आर्यसमाजें हैं। यदि इनके प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया भी वेद-प्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझ लें तो वेद-प्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेद-प्रचार के लिए जो धन संगृहीत किया जाय, उसे सीधा सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

निवेदक
प्रेमचन्द्र शर्मा, एम० एस० सी०
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

नारायण स्वामी-भवन, लखनऊ]
दि० ११।७।५९

वर्ण-व्यवस्था ग्रन्थ

जाति अन्वेषण प्रथम भाग—संशोधित परिवर्धित संस्करण। डिमाई ५७२ पृष्ठ ५)। ३६१ हिंदू जातियों का विश्वकोष ५)। "ब्राह्मण निर्णय" ६२८ पृष्ठ ३२४ ब्राह्मण जातियों का ग्रन्थ। सजिल्द १५) डाक-व्यय २।)। क्षत्रिय वंश प्रदीप प्रथम भाग ३७१ पृष्ठ। क्षत्रिय जातियों की ११०० वंशों की सूची सहित ५)। क्षत्रिय वंश प्रदीप द्वितीय भाग अथवा नौमुस्लिम जाति निर्णय पृष्ठ १२० डिमाई। अद्वितीय शुद्धि व्यवस्था सहित ५), लूणिया जाति निर्णय (श्री प० ओ३मदत्त शर्मा गौड़ 'विकल') इस पर ११००) प्राप्त हुए हैं। लूणिया जाति का उद्धारक ग्रन्थ ३॥) सजिल्द ४॥) डाक-व्यय १॥) हरेक पर।

व्यवस्थापक-वर्ण व्यवस्था मंडल (आ०) फुलेरा (जयपुर)

[पृष्ठ ८ का शेष]

कुछ घटनास्थलों को उन्होंने आध्यात्मिक दृष्टिकोण से समझाया। युद्ध-भूमि में महाराणा के प्राणों की रक्षा, चेतक का वध और शक्तिसिंह के कार्य एक दैविक शक्ति का खेल था, और यह खेल था हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने का। आगे चलकर आपने कहा कि जयन्तियां मनाना और उपदेश सुनना तो आजकल बुद्धिरंजन की रस्म हो गई है। उपदेश की कोई एक अच्छी बात को लेकर उसे आचरण से अमल में लाने पर ही आप लोगों के लिए जयन्तियां मनाना सार्थक होगा।

दोनों ही स्थलों पर भगवान के प्रवचन अत्यन्त प्रभावशाली रहे। अब लोगों में गायत्री जप-प्रचार की योजनाएं बनने लगी हैं। आशा की जाती है कि स्थानीय जनता भगवान के आगमन से अवश्य लाभान्वित होगी।

आर्य-जगत

निर्वाचन—

—इटावा मा० उप प्रतिनिधि सभा
प्रधान श्री स्वामी पूर्णानन्द जी
मन्त्री श्री रामऋषि जी
प्रतिनिधि—श्री छेदालाल जी
श्री प्रेमचन्द जी

—बहजोई आर्यसमाज
मन्त्री श्री केशवदेव आर्य

—मिरजानहट (भागलपुर) आर्यसमाज
प्रधान श्री बाबू गोपालसहाय जी
मन्त्री श्री सीताराम जी

—गया आर्यसमाज
प्रधान श्री गुलाबचन्द्रराम जी
मन्त्री श्री डा० बालमुकुन्द सहायजी

—नजीबाबाद आर्यसमाज
प्रधान—श्री बनारसी लाल जी आर्य
मन्त्री श्री सुशीलकुमार जी आर्य

—नजीबाबाद आर्य कन्या इन्टर कालेज।
प्रधान—श्री धर्मेन्द्रनाथ आर्य
प्रबंधक—श्री शिवचरण लाल आर्य

प्रचार—

—फतहपुर जिलोपप्रतिनिधि सभा की ओर से जून में शिव श्री स्वामी जी महाराज ने सिरसी, दलीपुर बगल का पुरवा बुधौउदुर (खागा) महबबपुर, बिन्दकी आदि में एक मास प्रचार किया, अलियापुर में ब्रह्मपारायण यज्ञ संपन्न कराया। सभा के प्रधान श्रीरामनारायण जी के सुपुत्र श्री देवशर्मा का उपनयन संस्कार भी कराया। प्रचार का जनता पर व्यापक प्रभाव है।

—मैनपुरी के इलावांस ग्राम आर्य समाज में श्री रामलाल जी की ओर से बृहद्यज्ञ ६, ७, ८ जून को सम्पन्न हुआ श्रीमती माता जगधात्री देवी जी व श्री स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज के उपदेश हुए। महिला सम्मेलन भी हुआ।

—गंगा नगर (राजस्थान) आर्य समाज में दैनिक व साप्ताहिक सत्संग के कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहे हैं। श्री पं० जीवानन्द जी के आध्यात्मिक प्रवचन होते हैं। श्री शिवदयालु जी वानप्रस्थी समाज मन्दिर में ४-५ हजार रुपये की लागत से एक विशाल यज्ञशाला निर्माण करवा रहे हैं। २१ जून को श्री महादेव जी आर्य की पुत्री का विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—लखनऊ में श्री कृष्णबहादुर सिन्हा एडवोकेट की कोठी पर ८ जून से श्री देव वानप्रस्थीजी (वानप्रस्थाश्रम ज्वाला पुर) के चार मनोहर एवं शिक्षाप्रद भाषण हुए। प्रवचनों का स्थायी प्रभाव हुआ।

—औरैया (इटावा) में २१ जून को श्री ब्रह्मदत्तजी पाठक के घर पर यज्ञ श्री श्रीकृष्ण अवस्थी द्वारा सम्पन्न कराया गया। जनता पर विशेष प्रभाव हुआ।

—हरदुआगंज तथा अलीगढ़ के अन्य स्थानों पर जि० उप सभा के उप-मन्त्री श्री महेशचन्द्र शर्मा जी ने वैदिक धर्म का प्रचार किया। श्री प० किशोरीलाल जी के साथ मैजिक लालटेन द्वारा जनता तक आर्यसमाज का सन्देश पहुँचाया, समाजों का निरीक्षण किया

—श्री छेदालाल जी वर्मा, सदस्य के पुत्र का विवाह, उनके ज्येष्ठ पुत्र की विधवा वधू के साथ १४-७-५१ को वैदिक रीतिनुसार सम्पन्न हुआ।

शोक-समाचार—

श्री रामबहादुर की मां का स्वर्गवास

श्री रामबहादुर मुख्तार मन्त्री आर्य समाज पूरनपुर, प्रधान उपप्रतिनिधि सभा जि० पीलीभीत तथा अन्तरङ्ग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की वृद्धा माता का स्वर्गवास २०-७ ५१ को हो गया। आर्य समाज पूरनपुर ने शोक सहानुभूति का प्रस्ताव पास करके दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की। तथा स्थानीय आर्य पाठशाला व पबलिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पूरनपुर उस दिन बन्द रहे। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

हरिश्चन्द्र उपमन्त्री
आर्यसमाज पूरनपुर

—फतेहपुर आर्यसमाज के प्रधान श्री कामताप्रसादजी के १२ जुलाई को आकस्मिक देहावसान पर समाज की ओर से शोक सहानुभूति व दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

सूचना

आर्यसमाज गोरखपुर के पूर्व मंत्री श्री कन्हैयालाल आर्य के त्यागपत्र से रिक्त मंत्री पद पर श्री रामदास जौहर सिवा मुख्तार मंत्री नियुक्त किए गए हैं और उनके स्थान पर श्री नृसिंहसहायजी उपमंत्री बनाये गये हैं।

—प्रधान आ० स० गोरखपुर

आदर्श दान

कन्या गुरुकुल शिक्षा प्रेमी महानुभावों को यह सूचना देते हुए परम हर्ष होता है कि श्री नारायणसिंह जी रिटायर्ड डिप्टी इन्सपैक्टर पुलिस बेटा खुर्द (अलीगढ़) निवासी ने कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस को ५०००) पांच हजार रुपया स्थायी छात्रवृत्ति के निमित्त अपनी स्व० धर्मपत्नी श्रीमती गंगादेवी जी के नाम से सहर्ष दान दिया है। इस सात्विक दान के लिये आपको हार्दिक धन्यवाद है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें समृद्धि प्रदान करे।

—लक्ष्मीदेवी मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस पो० कन्या गुरुकुल (अलीगढ़) उ०प्र०

आदर्श-विवाह

कैजपुर निवाना (मेरठ) में श्री राजबालादेवी जी (सुश्री महाराजसिंह जी) व श्री भीमसिंह जी साकरौद निवासी का शुभ विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। किसी प्रकार का दान दहेज नहीं लिया गया। ५१) और ५ सूती वस्त्र ही वर ने ग्रहण किये। वर के पिता श्री सरदारसिंह जी तूफान ने २१) आर्य कन्या पाठशाला निवाना १५) आर्यमित्र लखनऊ, ५) गुरुकुल घासीपुरा ५) वीर अर्जुन देहली को दान दिये। मित्र परिवार की ओर से वर वधू को हार्दिक बधाई भेजी गई।

भ्रमण-पुरोगम

सभा मंत्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० ने निश्चय किया है कि विधान परिषद् के दो दिन के प्रति सप्ताह लखनऊ के समीपवर्तीय जिलों में भ्रमण करेंगे। अतः भ्रमण पुरोगम निम्न प्रकार है। श्री मंत्री जी के पहुँचने पर समाज, संस्था का निरीक्षण करावें और सभा तथा जयन्ती के लिए धन भेंट करने का कष्ट करें।

१ अगस्त ५१ बाराबंकी प्रातः,
१ अगस्त ५१ रुदौली सायं,
२ अगस्त ५१ फैजाबाद प्रातः,
३ अगस्त ५१ लखनऊ

—सभा कार्यालयाध्यक्ष

आवश्यक सूचना

जिला नैनीताल व अल्मोड़े की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा की बैठक दिनांक २ अगस्त को आर्यसमाज भवन काशीपुर में मध्याह्न १ बजे होगी, जिसमें चुनाव के अतिरिक्त आर्यसमाज सुरक्षा समिति, ईसाई प्रचार निरोधक समिति आदि का संगठन भी होगा। कृपया समस्त समाजों के मंत्रीगण अपनी-अपनी समाज से दो-दो प्रतिनिधि भेजकर अनुगृहीत करें।

—इन्द्रवर्मा एम० ए०
अन्तरङ्ग सदस्य जिला नैनीताल
अल्मोड़ा क्षेत्र

पड़ोसी देशों में [illegible]

मलाया में भारतीय कला-प्रदर्शनी

[श्री रविशंकर एम० काम०, (कलकत्ता)]

मलाया संघ की राजधानी, क्वाला-लामपुर की नेशनल आर्ट गैलरी में भारत की प्राचीन एवं अर्वाचीन कलाकृतियों की प्रदर्शनी हो रही है। द्वितीय शताब्दी के मन्दिरों पर उत्कीर्ण भव्य कृतियों, प्रसिद्ध सम्राटों के चित्रों, अर्वाचीन भारत की राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित एवं विभिन्न आधुनिक शैली के चित्रों का प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शनी भारत की महान कला-परम्परा की झांकी प्रस्तुत करती है।

प्रदर्शनी के मुख्य भाग में जो कृतियाँ हैं, उनका संग्रह ललित कला अकादमी और नेशनल आर्ट गैलरी आफ माडर्न आर्ट ने किया था। इसका मूल्य सत्तर हजार डालर कूता गया है। प्रदर्शनी के मुख्य भाग में एक प्राचीन प्रस्तर मूर्ति रखी गयी है। यह मूर्ति भारत सरकार ने राष्ट्रीय संग्रहालय को १९५४ में उपहार स्वरूप दी थी।

मलाया में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर भारतीय कला-प्रदर्शनी हो रही है। इसमें अजन्ता के भित्ति चित्रों के अलावा भारत की समस्त प्रमुख कला शैलियों का प्रतिनिधित्व हुआ है। मलाया के लिए इस प्रदर्शनी का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसमें भारतीय राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित नवीन कला-शैली का विशेष प्रतिनिधित्व हुआ है।

जैमिनी राय

आधुनिक कला की दृष्टि से जैमिनी राय का "सथाल नृत्य" शायद सबसे महत्त्वपूर्ण है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में जब जैमिनी राय ने चित्र बनाना शुरू किया, तब भारतीय कला पर योरोपीयता की छाप थी। श्री राय ने इसके खिलाफ विद्रोह किया और एक नयी शैली को जन्म दिया, जो भारत की राष्ट्रीय चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। जैमिनी राय को भारत की लोक-कला से प्रेरणा मिली, जिसमें आज भी भारत की प्राचीन कला सशक्त और स्वतन्त्र रूप से विद्यमान है। जैमिनी राय ने जिस कला को जन्म दिया, वह नवीन होते हुए भी मूलतः भारतीय है। उनकी कला में अपने युग के साथ-साथ प्राचीन परम्परा के भी दर्शन होते हैं। जैमिनी राय की शैली का परिष्कृत रूप श्री [illegible] बोस के [illegible] "[illegible]" में मिलता है।

टैगोर

आधुनिक भारतीय चित्रकला की उन्नति में टैगोर-परिवार ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। प्रदर्शनी में इस परिवार के लोगों के बनाए चार चित्र रखे गए हैं। प्रत्येक चित्र अपना अलग महत्त्व रखता है। इन चित्रों में विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया एक चित्र "मुखमुद्रा" है। चित्र की विशेषता यह है कि अत्यन्त साधारण होते हुए भी इसमें एक अद्भुत रहस्यात्मकता झलकती है।

इनके अतिरिक्त आधुनिक चित्रकारों में श्री डी० पी० चौधरी का "नटराज" अमृत शेरगिल का "वाज इन व्हाइट", आर० डी० रावल का "स्टडी इन ब्ल्यू" तथा श्री डी० बद्री का चित्र 'नादेश्वरम्' है।

मध्यकालीन चित्र कला

प्रदर्शनी में ऊपर के कक्ष में १६वीं, १७वीं और १८वीं शताब्दी के चित्र रखे गए हैं। इस संग्रह के कुछ चित्र तो संसार में अद्वितीय हैं। इस युग में दरबारी चित्रकार राजाओं के लिए चित्र बनाते थे। इन चित्रों में उन्हें राजा की रुचि का ध्यान रखना पड़ता था इस कारण इनमें उनका व्यक्तित्व नहीं उभर पाया है। इस युग के अधिकांश चित्र छोटे आकार के हैं, लेकिन उनका ढंग, रंग भरने की कला और काम की बारीकी कमाल की है। यों तो चित्र साधारण लगते हैं, किन्तु उनका यथार्थ सन्देश चित्र के प्रतीकों में निहित है। इन चित्रों में कमल का फूल प्रायः शारीरिक आकर्षण का प्रतीक रहता है, बादल और आंधी उद्दाम लालसा बताते हैं और फूलते हुए वृक्ष प्रेम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस संग्रह में सबसे पुराना एक चित्र है, जिसमें एक स्त्री बकरी को खिला रही है और बकरी का बच्चा दूध पी रहा है। इस चित्र पर फारसी प्रभाव स्पष्ट मालूम पड़ता है। भारतीय चित्रकारों ने १७ वीं शती तक विदेशी प्रभाव को बिल्कुल आत्मसात कर लिया था।

इस काल के अधिकांश चित्रकारों का नाम ज्ञात नहीं है। वे राजा की नौकरी करते थे और राजा की आज्ञा के अनुसार चित्र बनाते थे। बहुधा कई चित्रकार मिलकर एक चित्र बनाते थे। हो सकता है कि कोई चित्रकार शक्लें बनाता हो, कोई दृश्य और कोई रंग भरता रहा हो। एक बड़ा चित्र है, जिसमें राजा महल में गाना सुन रहा है। इसे देखने से पता लगता है कि मूर्तियों में किसी एक व्यक्ति ने रंग भरा है, उनकी वेश-भूषा में दूसरे ने और महल के विभिन्न हिस्सों में किसी तीसरे ने।

मुगल-कालीन अनेक चित्र बड़े यथार्थवादी और सजीव जान पड़ते हैं, किन्तु फिर भी वे कला की तत्कालीन मर्यादाओं से बाहर नहीं हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी चित्र हैं, जिनमें हास्य का पुट मिलता है।

इस काल के सब चित्र सुन्दर हैं। इनमें विविधता और नवीनता मिलती है। कुछ चित्रों में बहुत बारीक काम किया गया है। कहा जाता है कि कभी कभी चित्रकार केवल एक बाल वाले ब्रुश से काम करता था।

बहुत से चित्र तो ऐसे हैं, जो राजाओं के कहने से बनाए गए हैं किन्तु अन्य सब चित्र धार्मिक दृष्टि से बनाए गये हैं।

मलाया में लोगों को यह चित्र प्रदर्शनी देखने पर अवश्य ही दुर्लभ सौन्दर्यानुभूति हुई होगी।

मूर्ति कक्ष

इन मूर्तियों को देखकर दर्शक को भारतीय कला के प्राचीनतम रूप का ज्ञान होगा। इनमें कुछ में रहस्यात्मक ढंग से जीवन और धर्म का समन्वय प्रस्तुत किया गया है। इनमें जहां एक ओर भाव व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया गया है, वहां उद्दाम वासना को भी व्यक्त किया गया है। इन प्रस्तर कृतियों की बारीकियों को देखकर अवाक रह जाना पड़ता है।

यह प्रदर्शनी बड़े ऊंचे स्तर की है। इसमें भारत की सांस्कृतिक कृतियों का प्रदर्शन किया गया है। मलाया के लिए तो इसका और भी महत्त्व है, कारण भारतीय संस्कृति से मलाया काफी प्रभावित हुआ है। ★

[पृष्ठ २ का शेष]

इस वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता को विश्व में फैलाने के उद्देश्य से ही महर्षि ने आर्यसमाज संस्था को प्रतिष्ठापित किया था।

'इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।"

अर्थात् समस्त विश्व को आर्य बनावें। देश जाति के भेदभाव से शून्य विश्व बन्धुत्व की भावना से परिप्लुत एक छत्र राज्य एक विधान, सर्वसमान शासन का सर्वत्र साम्राज्य होगा तभी विश्व शान्ति की समस्या हल होगी।

आर्यसमाज ने इस दिशा में अपनी शक्ति के अनुसार प्रशंसनीय कार्य किया है और कर रहा है परन्तु अभी तो बहुत कुछ करना शेष है। आर्य बन्धुओं! उत्तिष्ठत जाग्रत! ★

भारत में वन महोत्सव

१—अनुमान है कि भारत में २८१ लाख वर्गमील में जंगल हैं। यह देश के क्षेत्रफल का कुल २२ प्रतिशत है।

२—जहाँ सोवियत रूस में प्रति व्यक्ति पीछे जंगलों का क्षेत्रफल १.५ हेक्टर (१ हेक्टर=२.४७१ एकड़) और अमेरिका में १.८ हेक्टर बैठता है, वहाँ भारत में यह केवल ०.२ हेक्टर ही पड़ता है।

३—यही नहीं कि हमारे देश में जंगल कम हैं, बल्कि यह भी कि हमारे देश से वनों से लकड़ी भी कम मिलती है। फ्रांस में प्रतिवर्ष प्रति एकड़ ५६.८ घनफुट लकड़ी मिलती है, जापान में ३७० घनफुट, अमेरिका में १८० घनफुट और भारत में केवल २५ घनफुट। इसके अलावा देश के कुछ भागों में जंगल हैं और कुछ में बहुत ही कम।

४—जंगलों की कमी का खेती और मौसम आदि पर असर पड़ना स्वाभाविक है। इसी कारण भारत में मौसम में परिवर्तन होता रहता है और बाढ़ों के आने तथा जमीन के कटने आदि के कारण पैदावार कम हो गयी है।

५—भूमि के कटने और मरुस्थल बनने की क्रिया का सबसे अच्छा उदाहरण पश्चिमी और शिवालिक पहाड़ियों (पंजाब) का है। राजस्थान के मरुस्थल के बढ़ने के भी प्रायः समाचार आते रहते हैं। भारत में इधर कुछ वर्षों से काफी बाढ़ें आने लगी हैं। कुछ हद तक इसका कारण भी वनों का तेजी से सफाया होना है।

६—भारतवासियों को वृक्षों की उपयोगिता समझाने के लिए ही १९५० में देश भर में वन महोत्सव का श्रीगणेश किया गया।

७—हर साल वर्षा ऋतु के शुरू में, देश भर में बबूल, पीपल, आम, नीम और बांस आदि के वृक्ष लगाये जाते हैं।

८—लोगों में उत्साह पैदा करने और निरन्तर काम करने को प्रोत्साहित करने के लिए भारत सरकार ने अ० भा० पुरस्कार देने शुरू किये हैं। 'राजेन्द्र शील्ड' वन महोत्सव में सबसे अधिक वृक्ष लगाने वाले जिले को दी जाती है, 'जवाहर शील्ड' सबसे अच्छे गांव को और 'पटेल शील्ड' सबसे अधिक पेड़ लगाने वाले विश्वविद्यालय को।

९—प्रतियोगी जिला और गाँवों आदि के आकार और साधनों के अलावा पुरस्कार देने में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि [illegible] पेड़ लगाये [illegible] पेड़ जीवित रहें। ★

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण ११, शक १८८१
(२ अगस्त १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

तार—'आर्यमित्र'
दूरभाष : २३११ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

सरकार की गति-विधि

चकबन्दी परामर्शदात्री समिति की बैठक

प्रदेशीय चकबन्दी परामर्शदात्री समिति की चतुर्थ बैठक १८ जुलाई को माल मन्त्री, ठाकुर हुकुमसिंह की अध्यक्षता में विधान भवन में हुई।

समिति ने चकबन्दी योजना की प्रगति पर सन्तोष प्रकट किया और इस बात पर जोर दिया कि चकबन्दी कार्य इस भांति किये जायें कि जनता सन्तुष्ट रहे। समिति की राय में चकबन्दी के दौरान समाज के कमजोर अंगों जैसे विधवाओं, नाबालिगों आदि की सुविधाओं की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

चालू वित्तीय वर्ष में योजना को नौ नये जिलों में लागू करने की स्कीम को समिति ने उचित बताया। समिति ने १८ तहसीलों में आयताकार चक बनाने की योजना लागू करने पर भी अपनी सहमति प्रकट की।

ज्ञातव्य है कि चकबन्दी योजना आजकल २७ जिलों में चालू है। अनेक तहसीलों में यह योजना पूरी होने को है। कुल १३,२८६ गांवों में यह योजना लागू है, जिनकी कृषि-भूमि का क्षेत्र ९७,२७,७७३ एकड़ है।

अध्यादेश प्रख्यापित

सार्वजनिक भूमि में अनधिकृत अधिवासियों को बेदखल करने तथा अन्य कतिपय प्रासंगिक मामलों के सम्बन्ध में व्यवस्था करने के लिए श्री राज्यपाल ने उत्तर-प्रदेश सार्वजनिक भूमि-बेदखली और लगान तथा हानि पूर्ति की वसूली-अध्यादेश १९५९, उत्तर-प्रदेश अध्यादेश संख्या ४, १९५९ प्रख्यापित किया है। अध्यादेश १२ जुलाई, १९५९ से लागू हो गया है।

लघु उद्योगों के मालकी विक्री की व्यवस्था

अपने बनाये सामान की बिक्री की उचित व्यवस्था न होने के कारण लघु उद्योगों को अभी तक अपने विकास और विस्तार की दिशा में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। किन्तु अब आशा की जाती है कि कानपुर स्थित उत्तर-प्रदेश लघु उद्योग निगम के संचालक मंडल की स्थापना से उसकी यह कठिनाई दूर हो जायगी।

प्रारम्भ में निगम केवल लघु उद्योगों के सामानों की बिक्री की ओर ध्यान देगा किन्तु अन्ततोगत्वा वह राज्य के औद्योगिक आस्थानों में निर्मित वस्तुओं की बिक्री की व्यवस्था करेगा तथा राज्य की अन्य अनेक औद्योगिक योजनाओं से सम्बन्धित व्यावसायिक कार्य भी करेगा।

यह निगम माल की बिक्री के लिए आर्डर प्राप्त करेगा और इन आर्डरों पर माल सप्लाई करने के लिए इन्हें संबंधित लघु उद्योगों को देगा।

राज्य सरकार ने निगम के १२ लाख ५० हजार रु० के हिस्से खरीदे हैं और यही इसकी कार्यवाहक पूंजी है। कर्मचारियों के वेतन आदि पर होने वाले व्यय के लिये चालू वित्तीय वर्ष के लिए ६०,००० रु० की धनराशि और स्वीकृत की गयी है। इस निगम के हिस्से सरकार के अतिरिक्त और कोई न खरीद सकेगा।

औद्योगिक श्रमिकोंके स्वास्थ्य का सर्वेक्षण किया जायगा

राज्य के मुख्य मन्त्री डा० सम्पूर्णानन्द द्वारा नियुक्त की जाने वाली एक समिति उत्तरप्रदेश के औद्योगिक श्रमिकों के सामान्य स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जांच पड़ताल करेगी। मुख्य मन्त्री के सभापतित्व में हुई राज्य कर्मचारी बीमे के क्षेत्रीय मंडल की एक बैठक में यह निर्णय किया गया।

ज्ञात हुआ है कि पिछले सात वर्षों में कानपुर में श्रमिकों का स्वास्थ्य बराबर गिरता जा रहा है। समिति को यह आदेश दिया जायगा कि वह श्रमिकों के स्वास्थ्य की गिरावट को रोकने के उपाय की सिफारिश करे तथा केवल कानपुर के औद्योगिक श्रमिकों के स्वास्थ्य की नमूने के तौर पर जांच करे।

मुख्य मन्त्री ने यह घोषणा भी की कि राज्य सरकार निकट भविष्य में ही एक विज्ञप्ति जारी करेगी जिसके द्वारा मुफ्त इलाज की सुविधा बीमा हुए परिवारों के सदस्यों को भी प्राप्त हो जायगी।

ज्ञातव्य है कि राज्य के १७ औद्योगिक नगरों में चलने वाली इस बीमा योजना के अन्तर्गत ५१५ कारखानों में काम करने वाले १,३१,००० कर्मचारी जाते हैं। राज्य के ६१२ कारखानों में कुल १,९३,००० श्रमिक कार्य करते हैं।

राज्य कर्मचारी बीमा निगम के संचालक ने यह बतलाया कि निगम कानपुर में एक अपना क्षय चिकित्सालय बनवायेगा। यह क्षय चिकित्सालय २१९ लाख रुपये के उस अस्पताल के अतिरिक्त होगा जिसका श्रमिकों के लिए निर्माण राज्य सरकार शीघ्र ही आरम्भ करने वाली है। साथ ही, कानपुर में श्रमिकों के लिए क्षय के विलगित पहले से ही चल रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

—केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल ने विभिन्न राज्यों में २८ रैनबसेरे बनाने के हेतु एक साल के लिए २ लाख ७ हजार रु० अनुदान देना स्वीकार किया है।

—दूसरी योजना में ३१ जनवरी, १९५९ तक ७,३८२ गांवों में बिजली लगायी गयी।

—पिछले साल १९५८ में बिना लाइसेंस के रेडियो रखने वाले कर्मचारियों ने २१ हजार बिना लाइसेंस रेडियो का पता लगाया।

—स्वतन्त्रता-दिवस के बाद नगरों और गांवों के लोगों को योजना कार्यों की जानकारी कराने के लिए चलती-फिरती प्रदर्शनियों का आयोजन किया जायगा।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं का अगला सत्र एक अगस्त से आरम्भ

राज्य के श्रम विभाग द्वारा संचालित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं के व्यावसायिक प्रशिक्षण का अगला सत्र आगामी एक अगस्त से आरम्भ होगा।

सोलह वर्ष से २९ वर्ष तक की आयु के युवकों और युवतियों को सजावट के सुन्दर कपड़ों की हाथ से बुनाई, हाथ और मशीन से कढ़ाई, चमड़े की सुन्दर वस्तुओं के बनाने की कला, कपड़ों की कटाई और सिलाई, हिन्दी और अङ्गरेजी दोनों भाषाओं की स्टेनोग्राफी, हाथ से अक्षर कम्पोज करने और मुद्रण करने के काम, बुनाई के मशीनों को चलाने के काम, सिगरेट के डिब्बे और खेल के सामान बनाने के काम में शिक्षा दी जायगी।

बाबूराम शास्त्री द्वारा अवधवासीय आर्य भास्कर प्रेस, २ मीराबाई मार्ग लखनऊ में मुद्रित तथा प्रकाशित

ग्राम सिलक (मेरठ) में ७६ ईसाइयों की शुद्धि

आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि श्री महाशय रामचन्द्रजी जावेद अध्यक्ष रक्षक ने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली की ओर से ग्राम सिलक, डाकखाना मुरादनगर जिला मेरठ में एक शुद्धि सम्मेलन की योजना बनायी जिसमें देहली से श्री नारायणदास कपूर प्रधान मन्त्री शुद्धि सभा, श्री लाला कवीराम उप प्रधान आर्यसमाज करौलबाग, श्री हरिदत्त शर्मा शुद्धि सभा कार्यालयाध्यक्ष, श्री दीपचन्दजी, गाजियाबाद से श्री हरिप्रसाद भजनोपदेशक, श्री स्वामी सेवकानन्द जी, श्री ज्ञानार्थी वानप्रस्थी जी और श्री जवाहरलाल, श्रीमती आर्यदेवी जी आदि ने आकर भाग लिया। ग्राम में ३ दिन विशेष प्रचार हुआ। दिनांक १२ जुलाई को प्रातः १०॥ बजे शुद्धि संस्कार श्री पं० हरिप्रसाद जी ने कराया। ७६ ईसाई भाइयों को हिन्दू वैदिक धर्म की दीक्षा देकर उन्हें उनकी चमार जाति में प्रविष्ट किया। ११ बजे श्री स्वामी सेवकानन्द जी संन्यास आश्रम गाजियाबाद की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें श्रीनारायणदास कपूर, व श्री ज्ञानार्थी वानप्रस्थी, श्रीमती आर्य देवी मंत्रिणी आर्य स्त्री समाज भारत-नगर गाजियाबाद, श्री जवाहरलालजी आर्योपदेशक गाजियाबाद, श्री स्वामी सेवकानन्द जी आदि ने अपने मधुर व्याख्यान दिये। श्री कपूर जी ने शुद्ध शुदाओं का स्वागत तथा बाहर से आये सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। श्री कवीराम ने शुद्ध होने वाले भाइयों को अपना शुभाशीर्वाद दिया। श्री हरिप्रसाद जी व श्री दीपचन्द जी के मनोहर भजनों से जनता बड़ी प्रभावित हुई। स्थानीय महानुभावों में श्री चौ० वैद्यनाथ जी, श्री ठा० हुक्मसिंह जी, श्री रूपसिंह जी, श्री मेहरसिंह जी, श्री वैद्य ओम्प्रकाश जी तथा ग्राम के आठ चौधरियों ने हर प्रकार का सहयोग दिया। सभा विसर्जन के पश्चात् श्री मती आर्य देवी ने प्रीतिभोज का आयोजन किया जो बहुत ही सफल हुआ। प्रीतिभोज के पश्चात् सहभोज हुआ। श्री रूपसिंह प्रधान तथा चौ० मेहरसिंह जी ने सिलक ग्राम की ओर से शुद्ध होने वाले भाइयों को सब प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

—नारायणदास कपूर
प्रधान मन्त्री



आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [विदेश में

एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ रविवार श्रावण १८, शक १८८१, श्रावण शु० ५ वि० २०१६, ९ अगस्त, १९५९ ई० [१६शिलिंग

आर्य जनता आगामी दीपावली के सुअवसर पर आयोजित

दयानन्द दीक्षा-शताब्दी, गुरु विरजानन्द स्मारक शिलान्यास आदि ममारोह की सफलता के लिये पूर्ण सहयोग प्रदान करे

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की दीक्षा स्मृति में दीक्षा शताब्दि तथा उनके गुरु विरजानन्द जी के स्मारक का शिलान्यास समारोह का आयोजन आगामी दीपावली के शुभावसर पर ३० ३१ अक्टूबर व १, २ नवम्बर ५९ को मथुरा में किया जा रहा है।

इसी अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध पत्र आर्यमित्र की हीरक जयन्ती व आर्य विद्वानो श्री पण्डित गगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० व श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज को अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न होंगे।

उत्तर प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस आयोजन को सफल बनाने के लिए एक समारोह समिति का निर्माण हो चुका है जिसमें उत्तर प्रदश आर्य प्रतिनिधि सभा क अन्तरङ्ग सदस्य सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ क प्रधान व मन्त्री सार्वदशिक सभा के अधिकारी व सभी सदस्य प्रादेशिक सभा पजाब के प्रधान व मन्त्री तथा अन्य अनेक गणमान्य आर्य नेता और विद्वान् उस समिति के सदस्य हैं। मथुरा म समाराह की प्रबन्ध व्यवस्था का कार्य आरम्भ हो गया है।

सभी प्रान्तों की आर्य जनता को इस समारोह की सफलता के लिए सर्वात्मना सहयोग करत हुए अधिकाधिक आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए।

इस समारोह की सफलता से आर्य जगत् को एक नवीन प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी और आर्यजन महर्षि का सन्देश विश्व में प्रचारित करने के महान् स्वप्न की पूर्ति में सफलता सहयोग और उत्साह क साथ अग्रसर हो सकेंगे।

अत प्रत्येक आर्य को उक्त अवसर पर समारोह में सम्मिलित होने का निश्चय करना चाहिए तथा उस सफल बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान करना चाहिए।

पूर्णचन्द्र	हरिशंकर शर्म्मा	उमेशचन्द्र स्नातक	रघुवीरसिंह शास्त्री
प्रधान	प्रधान	मन्त्री	मन्त्री
सार्वदेशिक सभा	समारोह समिति		सार्वदेशिक सभा

वर्ष ६१ | अवैतानक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. | अङ्क ३१

वेद-प्रचार सप्ताह लेखमाला—

कोऽहं, कस्त्वं, कुत आयातः

हे मानव, तूभी स्वयं एक गूढ़ पहेली है (२)

(ले०—आचार्य श्री नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ, ज्वालापुर)

किसी उच्चकोटि के महात्मा ने आत्म स्वरूप को पहिचानने का सुन्दर उपाय बतलाया है, वह यह—

आत्म स्वरूप को जानने के लिए सबसे पूर्व देह-बुद्धि से परे जाना पड़ेगा। अनेक जड़ पदार्थों का बना हुआ यह देह, तदन्तर्गत मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार इनका अर्थ "मैं" नहीं यह बात पक्की समझ लेनी चाहिए। "मैं" जो हूँ—जो वास्तवी 'मैं' हूँ, इन सबसे पृथक् हूँ वही मेरा आत्म स्वरूप है।

मेरी इन्द्रियें, मेरा मन, मेरी बुद्धि, मेरा अहङ्कार ये सब उस आत्मा के ही विभिन्न रूप हैं। यह सब उसका ही विलास हैं। कपास से तैयार किया हुआ डोरा, उसका आकार, रंग, लम्बाई, मोटाई के कारण कपास से भिन्न ज्ञात होता है। जब आकार-प्रकार का ध्यान छोड़ देते हैं तो यही स्पष्ट हो जाता है कि वह डोरा और कुछ नहीं, कपास ही है। जल पर उठे हुए तरंग अनेक प्रकार के और अनेक आकार के होते हैं, दिखलाई पड़ते हैं सही, पर क्या वे तरंगें जल से भिन्न कोई और वस्तु हैं। इसी प्रकार स्व-स्वरूप का ज्ञान होते ही मिथ्या नामरूप के कारण दिखलाई पड़ने वाले भेद ज्ञान नष्ट हो जाते हैं—इस अवस्था में अपने और भूतमात्र में हमको साक्षात्परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं, यह 'आत्मबोध' ही जीवन का अन्तिम उद्देश्य है।

सामान्य मनुष्य को इस प्रकार का आत्मबोध नहीं होता, इसका कारण? कारण यह कि उसके मन पर अज्ञान का आवरण पड़ा रहता है। यह आवरण दूर हुआ कि उसको "आत्मबोध" हुआ ही समझिए। इस प्रकार आवरण दूर होकर आत्मज्ञान में सदा रत रहने का नाम ही 'मोक्ष' है।

जहाँ अब सोने की खान हैं उसी भूमि पर से हजारों व्यक्ति निकल गये होंगे, परन्तु यह ज्ञान उनको कभी नहीं रहा होगा कि हम सोने की खान के ऊपर से चल रहे हैं या जा रहे हैं। ठीक यही दशा आत्मा के विषय में समझिए।

सबमें अमोल आत्मरूपी धरोहर के पास रहते भी, हमको उस धरोहर का ज्ञान या भान नहीं था, या नहीं रहता इसीलिए हम इस जगत् में किसी भिखारी की तरह मारे-मारे फिर रहे हैं।

जब तक हम अज्ञान में रहते हैं तब तक यह अज्ञान का आवरण कहाँ से आया, क्यों आया? इन प्रश्नों के उत्तरों को हम समझ ही नहीं सकते। कोई हमसे पूछे तो हम बतला भी नहीं सकते। आत्मा की दृष्टि में इस अज्ञान और आवरण का कोई अस्तित्व ही नहीं रहता। इसलिए यह आवरण कैसे आया, कहाँ से आया इत्यादि प्रश्नों के बौद्धिक उत्तरों के झमेले में न पड़कर सीधे यह मानकर कि हम अज्ञान में हैं, उस अज्ञान और आवरण को समुचित साधनों द्वारा दूर करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

'यहाँ अन्धकार है, यहाँ अन्धेरा है' केवल इतना रटते रहने से अन्धेरा कभी दूर नहीं होता। दियासलाई लाकर अथवा दिया जलाकर उसको दूर करना पड़ता है। हजार दस हजार वर्ष का अन्धकार हो तो भी दियासलाई के रगड़ते ही क्षण भर में दूर हो जाता है, यह रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे।

साधना के कारण हमारे ज्ञान का अधिकाधिक विकास होता है, और यह ज्ञान जिस-जिस तरह बढ़ता जायगा उस-उस तरह अज्ञान भी नष्ट होता जायगा और अज्ञान के नष्ट होने पर उस सापेक्ष ज्ञान की भी आवश्यकता नहीं रहेगी—फिर शेष शुद्ध चेतन ही तो रह जायगा। वही हमारा सच्चा आत्मस्वरूप है।

सन्त ज्ञानेश्वर ने क्या ही अच्छा कहा है कि "वह जो अज्ञान है वह ज्ञान में डूब जाता है फिर वह ज्ञान भी नहीं रहता जैसे अग्नि लकड़ियों को जलाकर खाक करके स्वयं जलकर खाक हो जाता है। महाभाष्यकार पतञ्जलि ने भी एक स्थान पर कहा है कि 'यथाऽग्निर्दाह्याभावात् स्वयमेव प्रशाम्यति" जैसे जलाने को कुछ शेष न हो तो आग स्वयं बुझ जाती है, शान्त हो जाती है ऐसा ही ज्ञान-अज्ञान की दशा है। बायरन कवि ने क्या ही अच्छा कहा है कि—'हे मानव, तू स्मित और अश्रु (अर्थात् हर्ष और विषाद) इन दो सिरों में लटकते रहने वाले लम्बक को तरह (कभी इधर कभी उधर झुकता रहता है"—पर यह कोई मनुष्य का यथार्थ स्वरूप नहीं। वह सुख-दुःखादि के द्वन्द्वों में भटकते रहने के लिए नहीं। अपितु द्वन्द्वातीत होकर यथार्थ ज्ञान-प्राप्ति द्वारा आत्मस्वरूप जानने के लिए है। मानव का साफल्य इसी में है कि वह चिरन्तन आनन्द को प्राप्त कर लेवे। यह 'आत्मबोध' यद्यपि कष्टसाध्य है तथापि सर्वथा अशक्य नहीं है। इसलिए साधक को चाहिए कि सिद्धि की प्राप्ति के लिए सदा यत्नशील रहे—यही अपना कर्त्तव्य है—फिर सिद्धि असिद्धि तो ईश्वराधीन है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने १८९३ में शिकागो की सर्व धर्म परिषद् में, अपने ओजस्वी भाषण में इस ईश्वरीय स्वरूप को पाश्चात्यों को समझाने के लिए उन पर आत्मस्वरूप की सत्यता प्रकट करने के लिए कहा था—

"अरे, तुम हम सब ईश्वर के पुत्र हैं। शाश्वत आनन्द के वारिस, उत्तराधिकारी हैं, पवित्र हैं, पूर्ण हैं। हे पृथ्वी के देवताओ तुम और पापी यह क्या समझ बैठे हो। मनुष्य को पापी कहना यह भी एक पाप है। मानव के, मनुष्य के सच्चे स्वरूप पर ऐसा कहना यह एक कलङ्क का आरोप है।"

स्वामी विवेकानन्द जी ने यह भी कहा कि "यह बात याद रखने योग्य है कि संसार के सब धर्म यह मानते हैं कि मनुष्य अपने स्वरूप से च्युत अथवा भ्रष्ट हो गया है—पौराणिकों की सुन्दर भाषा में कहो अथवा तत्त्वज्ञान की भाषा में बोलो, या काव्य की सुन्दर परिपाटी में व्यक्त करो बात यह है—कि—अपने से बाहर देव-देवताओं की खोज में भटकते-भटकते मनुष्य फिर उसी बिन्दु पर आता है, जहाँ से कि वह चला हुआ होता है—अर्थात् थककर वहीं अपनी आत्मा की ओर आता है—फिर वह समझने लगता है कि जिस ईश्वर की खोज में उसने पर्वतों नदी-नालों, समुद्रों, बड़े-बड़े मन्दिरों को खोज डाला—जिस ईश्वर के विषय में उसकी कल्पना थी कि वह स्वर्ग में बैठकर संसार का नियन्त्रण कर रहा है—वह ईश्वर और कोई वस्तु नहीं है वह अपना आत्मा ही है। फिर उस मनुष्य को ज्ञान होता है कि "मैं वही हूँ और वह भी मैं ही हूँ। इससे इस क्षुद्र "अहं" का कभी अस्तित्व ही न था।"

स्वा० विवेकानन्द जी के इन शब्दों में वेदान्त इस तरह ठूस-ठूस कर भरा है कि वह वस्तुतः वेदान्त का सार हो गया है।

खिस्ती जनता को उद्देश करके स्वा० विवेकानन्द जब यह कहते हैं कि—

"तुम पापी नहीं हो, मनुष्य को पापी कहना यही बड़ा पाप है।"

उसका मतलब यही है कि मनुष्य का स्वभाव पापी नहीं। खिस्ती समाज जिस प्रकार पाप का स्वतन्त्र अस्तित्व मानते हैं, उस पाप को चिरकाल टिकने वाली वस्तु मानते हैं, वह ठीक नहीं। हमारा वेदान्त पाप के स्वतन्त्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। वेदान्त कहता है कि मनुष्य अपने अज्ञान के कारण पाप करता है और ज्ञान के आश्रय से उसका अज्ञान दूर हो जाता है तो मनुष्य की पापवृत्ति अथवा पाप-प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है। ज्ञान पर अज्ञान का आवरण पड़ जाने से मनुष्य अनेक प्रकार के मोहजाल में फँसता है पर जिस व्यक्ति का अज्ञान ज्ञानयोग से नष्ट हो जाता है उसको आत्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो जाता है यही गीता भी कहती है—

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं। तेन मुह्यन्ति जन्तवः॥ (गीता ५—१५)

यद्यपि खिस्त लोग पाप का स्वतन्त्र अस्तित्व मानते हैं पर कोई-कोई खिस्तानुयायी स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं मानते। सेंट ज्यूलियन आफ नार्विच नामक एक स्त्री सन्त कहती है—

"मुझे तो कभी कोई पाप कहीं दिखलायी नहीं पड़ा। वह पाप कोई स्वतन्त्र वस्तु है ऐसा मैं मानती नहीं" वह यह भी कहती है कि—

"अपना ध्यान कभी भी पाप पर नहीं रहना अथवा नहीं रखना चाहिए। सदा पाप पर ही दृष्टि रखना भी ठीक नहीं, उसका विचार भी ठीक नहीं। अपने मन को जो मङ्गल है, सत्य है उसी पर केन्द्रित करो।"

"अपने अथवा दूसरों के किये हुए पापों का चिन्तन मत किया करो। ऐसा चिन्तन करने से आत्मा के ऊपर एक आवरण-सा पड़ जाता है।"

हमें तो इस स्त्री की वाणी में हमारे वेदान्त का कुछ-कुछ आभास-सा प्रतीत

[शेष पृष्ठ १२ पर]

आर्यजन अनुशासन प्रिय बनें

बौद्ध धर्म व ईसाई प्रचार निरोध के लिए संयुक्त मोर्चा

दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह की सफलता के लिए

आर्य जनता सहयोग प्रदान करे

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक के आवश्यक निश्चय)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अन्तरंग बैठक ३ अगस्त ६९ दिन रविवार को सभा कार्यालय दयानन्द भवन दिल्ली में सभा प्रधान श्री युत बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई। बैठक में देश भर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्रीयुत स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती ने सभा प्रधान के विशेष निमन्त्रण पर सभा में भाग लिया। उन्होंने आरम्भ में सभा को सम्बोधित करते हुए आर्यों को प्रेरणा दी कि वे सत्य और ईमानदारी पर विशेष ध्यान रखते हुए अपने को आर्यसमाज की सेवा में सम्मिलित रखें जिससे कि आर्यसमाज के कार्य में अधिकाधिक सफलता प्राप्त होती रहे। उन्होंने यह भी प्रेरणा की कि आर्यजन आपस में मिलकर पारस्परिक सद्भाव और सहयोग से काम करें।

आर्यजन और अनुशासन

श्री स्वामी जी के इस उपदेश और आशीर्वाद के साथ कार्य आरम्भ हुआ। सभा प्रधान ने श्री स्वामी जी के प्रति आभार प्रदर्शित करने तथा स्वामी जी के दीर्घायु की कामना के पश्चात् सभापति के आसन से बोलते हुए आर्यजनों को निर्देश दिया कि वे झगड़ों को आपस में मिलकर ही तय करें, उन्हें अदालतों में न ले जाएं और अपनी शक्ति एवं पुरुषार्थ को चरित्र निर्माण, वेद प्रचार और ईसाई प्रचार निरोध के कार्य में लगाए रखें।

बौद्ध धर्म प्रचार निरोध

एक प्रस्ताव द्वारा बौद्ध मत की उठती हुई लहर का प्रतिरोध करने के साधनों एवं उपायों के सम्बन्ध में पारित हुआ तथा धर्म निरपेक्ष भारत सरकार को प्रेरणा की गई कि वे अपनी सहायता से बौद्ध मत को प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन न दें। बौद्ध मतावलम्बियों से अनुरोध किया गया कि वे महात्मा बुद्ध का वास्तविक विचारधारा को दृष्टि में रखते हुए अपने वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन करें और आर्य संस्कृति की मूलभूत सुन्दरता पुनः स्थापना के लिए आर्यसमाज के साथ मिलकर कार्य करें।

ईसाई प्रचार निरोध के लिए सम्मिलित मोर्चा

इसी दिन अर्थात् ३-८-६९ को दयानन्द भवन, नई दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्यों, अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट, अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा तथा अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई। जिसमें सार्वदेशिक सभा के तत्वा

(शेष अगले पृष्ठ पर)

वैदिक राष्ट्र-गीत

यामश्विनावमिमातां विष्णुर्यस्यां विचक्रमे ।
इन्द्रो यां चक्र आत्मनेऽनमित्रां शचीपतिः ।
सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः ॥१०॥

(सरिता छन्द)

जिस भू का भर्ता ज्ञानी जन, मान सदा करते आये।
जिसमें विक्रम विविध विष्णु ने, समय-समय पर दिखलाये॥
इन्द्र वेद पति वीर रहे जिसके नित ही आज्ञाकारी।
वही मातृभू हम पुत्रों को पय दे प्रिय प्रमोद भारी॥

Whom the heroes measured, on whom Vishnu (भरण कर्ता) did many brave deeds; whom Indra, lord of might, made free from enemies—let that earth to us, as a mother to a son, release milk

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम ए



लखनऊ—८ अगस्त १९६९, दयानन्दाब्द १४५, सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०७०

आर्यजन और अनुशासन

आज हमारे जीवन में एक संक्रामक व्याधि ने घर कर लिया है और वह अपना क्षेत्र दिनोंदिन व्यापक बनाती जा रही है। वह व्याधि है अनुशासनहीनता।

जो आर्यसमाज विश्व को आर्य मर्यादाओं की शिक्षा देने के लिये स्थापित हुआ हो उसके सदस्यों का नैतिक स्तर कितना उन्नत होना चाहिये यह सुस्पष्ट है। परन्तु क्या आज हम नैतिक स्तर की प्रथम मर्यादा अनुशासन की भावना का आदर करने में शिथिल नहीं हो रहे हैं। वास्तविकता यह है कि ... की मानवीय कमजोरी और सत्ता ... के लिये सदस्यों की बिना परीक्षा ... ये दो ही बातें हैं जिन्होंने ... सरोवर के सलिल को ... कर रक्खा है। इस प्रश्न पर ... गम्भीरतापूर्वक सोच विचार करते हैं हम संगठन की मर्यादा और ... के लिये आवश्यक समझते हैं कि अनुशासनहीनता की मनोवृत्ति को प्रत्येक प्रकार से समाप्त करने का यत्न किया जाना चाहिये।

... की शिरोमणि सभा की ... में ... आर्यजगत् के ... स्वामी आत्मानन्द ... का सन्देश और ... आर्यजनों के अनुशासन और प्रेम ... की ओर ... इस ... की आवश्यकता ने आर्य ... की है कि आपसी भेदों को संगठन के विधान द्वारा समाप्त करने की नीति का अवलम्बन किया जाना चाहिये। जो लोग आर्यजगत् से बाहर आर्यसमाज संगठन सम्बन्धी मनभेदों का निर्णय कराना चाहते हैं उनका आर्यजगत् में अनुशासन की दृष्टि से कोई स्थान नहीं है।

हम सार्वदेशिक सभा के इस निर्देश का हार्दिक समर्थन करते हैं। हमारी धारणा है कि अनुशासन भंग करने वाले किसी भी सदस्य का आर्य समाज में कोई स्थान नहीं रहना चाहिये चाहे उस व्यक्ति का पिछला इतिहास कुछ भी रहा हो क्योंकि भूत में आर्यसमाज के लिये उपयोगी रहने पर भी वर्तमान में उसका व्यवहार यदि समाज की मर्यादाओं को भंग करता है तो उसके प्रति समाज को अनुशासन का प्रयोग करना चाहिये।

हमारे इन शब्दों द्वारा सम्भव है कुछ मित्रों को दुःख हो सकता है पर समाज की पवित्रता और उन्नति के लिये अनुशासन की मर्यादाओं का पालन प्रत्येक दशा में किया जाना चाहिये। आशा है आर्यजन इस मौलिक प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और समाज की उन्नति में सहयोग प्रदान करेंगे।

केरल संकट निष्कासन

३१ जुलाई को भारत में प्रजातन्त्रीय इतिहास में अभिनव घटना घटित हुई कि भारत के राष्ट्रपति महोदय ने केरल की निर्वाचित एवं बहुमत प्राप्त सरकार को पदच्युत कर वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया है। इस बात की सम्भावना पिछले काफी समय से चली आ रही थी पर इस क्रिया के दूरगामी परिणामों का विचार करते हुए निश्चय के क्रियान्वय में विलम्ब हुआ।

हम इस प्रश्न पर सामयिक दृष्टि से न देखते हुए भविष्य की दृष्टि से सोचना चाहते हैं कि क्या केरल की भांति अन्यत्र भी जब विषम परिस्थितियाँ पैदा होंगी तब क्या यही या इस प्रकार का कदम उठाया जायगा। हम इस बात को निःसंकोच कह सकते हैं कि जहाँ तक जनता के अधिकारों का प्रश्न है उनका सम्पूर्ण भारत में उसी प्रकार अपहरण हुआ और हो रहा है जैसा केरल में था तब किस नैतिक मानदण्ड से दूसरे राज्यों को अभयदान दिया हुआ है। पंजाब, बंगाल, बिहार तथा बम्बई आदि अन्य सभी प्रान्तों की समस्याएं जटिल हैं और जनता का बहुमत शासन के विरुद्ध है फिर क्यों नहीं वहां इसी निर्णय को लागू किया जाता।

वास्तव में हम तो विधान की दृष्टि से यह उचित समझते हैं कि केरल में इस प्रकार का प्रयोग करने से पूर्व अन्यत्र भी ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया जाना अधिक ठीक होता।

राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद अभी कुछ काल शान्ति हो जाने पर आग बुझेगी नहीं इसके लिए सुशासन और लोक प्रियता की आवश्यकता होगी। क्या वह वर्तमान सरकार के पास वह है। साथ ही विघटनकारी तत्व दूसरे प्रदेशों में जो षड्यन्त्र आरम्भ करेंगे क्या उनसे हमारी सरकार जनता की और स्वयं की रक्षा कर सकेगी। भविष्य ही इस कदम की उचित समीक्षा कर सकेगा। हमें तो राष्ट्र में अराजकता ... को प्रोत्साहन का भय दिखाई दे रहा है।

*

वनिता विवेक

सेविका और उसका परिवार

[श्रीमती मनोरमा]

मालती आज तीन साल बाद घर लौटी थी। कट्टर पंथी परिवार की विधवा लड़की। उसके बाहर जाकर काम करने के प्रस्ताव पर मां-बाप बहुत बिगड़े थे पर मालती ने काफी विधवाओं की नीरस कुचली जिन्दगी देखी थी और वह अड़ी ही रही। आखिर में नाराज होकर एक तरह से मां-बाप ने उससे मुंह ही मोड़ लिया। लाली कानपुर वाले भाई ने उसका साथ दिया। उनकी कोशिश से ही कानपुर क्षेत्र की जिला संयोजिका से उसका परिचय हुआ। ट्रेनिंग की भी व्यवस्था हो गई और बाद में ललितपुर गांव के महिलामंगल केन्द्र की ग्रामसेविका का कार्य भी मिल गया। यों मैट्रिक पास होने की वजह से और क्षेत्र भी खुले हुये थे पर गांव की लड़की उसे गांव प्रिय थे और उसने गांव का कार्य ही पसन्द किया।

२-३ साल का समय काफी होता है। समय की आवश्यकता देखते हुये मां-बाप ने उसे क्षमा कर दिया था और वह अपनी पहली महीने भर की छुट्टी लेकर घर आई थी। अभी इस क्षेत्र में केन्द्र नहीं खुल पाये थे अतः उसकी भाभियों और बहिनों वगैरह को उसके काम के प्रति बहुत कौतूहल था। दोपहर को खा-पीकर छुट्टी होते ही सब उसे घेर कर बैठ गये और लगे तरह-तरह के प्रश्न पूंछने। हाथ के संकेत से सबको शान्त करते हुये उसने कहा—अभी एक-एक करके सब बताती हूँ, पर अपने ढंग से जिसमें सब की बातों का जवाब मिल जायगा—

"यह तो तुम्हें पता ही है कि मैं ललितपुर के महिला मंगल केन्द्र की ग्राम सेविका हूँ।"

इतने में ही छोटी बहिन फिर बोल पड़ी "यह महिला मंगल" क्या बला होती है?

"होता है मेरा सिर, तू चुप भी रहेगी, हां भाभी फिर एकदम शुरू से ही बताती हूँ? बात यह है कि आजादी के बाद एक तरफ तो उन्नति की कोशिश शुरू हुई जैसा कि तुम खेती-बारी के बारे में तो खुद देख रही हो पर हमारी औरतें जिस गड्ढे में थी वैसी कि वैसी ही रह गईं, शहर तो खैर फिर भी काफी अच्छा है लेकिन गांव की औरतें तो अपने चक्की-चूल्हा, गोबर-पानी के अलावा दुनियां की किसी बात से मतलब ही नहीं रखती। देश-विदेश की तो जाने दो अपने देश में ही कहां क्या हो रहा है इस तक भी उसकी पहुंच नहीं। गरीबी तो फिर है ही पर इतनी नहीं जिस तरह हम लोग रहते हैं। अगर और वे लीना-पिरोना जाने, साधारण पढ़ना लिखना जाने, स्वास्थ्य में थोड़े बहुत नियम जाने तो जिन्दगी जैसी कुछ है इसी में काफी आराम हो जाय। इसी मतलब से सरकार ने महिला-मंगल योजना चलाई जिसमें ज्यादातर औरतें ही काम करती हैं यहां तक कि जो सबसे बड़ी अफसर हैं वे भी एक स्त्री हैं क्योंकि औरत ही औरत की बात और जरूरत ज्यादा समझ सकती है। सबसे बड़े आफिस के अलावा हर जिले में एक जिला संयोजिका और शिल्प शिक्षिका है। हमारे यू० पी० के ५१ जिलों में से ३६ में अब तक यह स्कीम चालू हो चुकी है बाकी जिलों में भी जल्दी ही चालू हो जायेगी। प्रत्येक जिले में १० से लेकर १५ तक केन्द्र खोले गये हैं। एक केन्द्र के नीचे २-३ नजदीक के गांव होते हैं। हर केन्द्र पर एक ग्राम सेविका रहती है जैसे ललितपुर केन्द्र पर मैं हूँ। ग्राम-सेविका की सहायता के लिये हर गाँव में एक उसी गांव की ग्रामलक्ष्मी होती है। इन केन्द्रों में बालवाड़ी मतलब बच्चों को उनका मन लगा के रख कर डंडे के जोर से नहीं पढ़ाना-लिखाना सफाई, वगैरह की बाबत बताना, उनका स्वास्थ्य सुधारने के लिये खेल-कूद और मनोरंजन का भी इसमें एक हिस्सा रहता है प्रौढ़ शिक्षा, मतलब बड़ी उमर के जो लोग बिना पढ़े रह गये हैं उनको इस ढंग से शिक्षा देना कि वे थोड़े से समय में काफी सीख लें, हस्तकला, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई वगैरह, गृह उद्योग, अचार, मुरब्बा, चटनी, साबुन से लेकर दरी, कालीन, निवाड़, बनाना तक सभी कुछ इसमें रहता है, सहकारिता, पशुपालन स्वास्थ्य तथा सफाई के बारे में न सिर्फ बताया जाता है बल्कि करके दिखाया जाता है और उन्हें सलाह भी दी जाती है।

भाभी तुम समझ नहीं सकती हो कि इन केन्द्रों ने देहात की स्त्रियों बच्चों और उनके द्वारा एवं देहाती इलाकों के लिये क्या किया है? वह तो कभी केन्द्रों पर आकर देखो तभी कुछ अंदाज लग सकता है। पर यह काम शुरू में आसान नहीं था। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह थी कि जिनकी मदद के लिये केन्द्र खोले गये थे वे ही इसके सबसे बड़े विरोधी थे। ललितपुर जब शुरू-शुरू में मैं पहुँची तो कुछ पूछो मत। कोई मुझे अपने घर में नहीं घुसने देना चाहता पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। ताऊ काका-दादी भाभी के रिश्ते न सिर्फ जोड़कर बल्कि वैसा ही व्यवहार कर जब मैंने गांव वालों का विश्वास धीरे-धीरे जीत लिया तो न सिर्फ मेरा काम ही आसान हो गया बल्कि बना बनाया इतना लम्बा चौड़ा परिवार भी मुझे मिल गया। गांव में इतने ईर्षा द्वेष लड़ाई-झगड़ों के बावजूद अब भी थोड़ा स्नेहप्रेम और उदारता बाकी है बशर्तें एक बार उनके अपने हो जाओ और वे तुम्हें स्वीकार कर लें।

मेरा दिन काफी तड़के शुरू हो जाता है। सबेरे फारिग होकर मेरे तैयार होते न होते गांव के लोग केन्द्र की पेटी से दवा लेने आ पहुँचते हैं। उनसे निपट कर बालवाड़ी शुरू करने से पहिले बच्चों को देखती हूँ साफ सुथरे हैं या नहीं? वरना केन्द्र पर भी साबुन तौलिया कंघी वगैरह रहती है। सबके ठीक ठाक हो जाने पर बालवाड़ी शुरू हो जाती है। १० बजे तक उससे छुट्टी पाकर कुछ खाने पीने के बाद गांव की स्त्रियों का काम शुरू हो जाता है। दोपहर को ज्यादहतर यह लोग केन्द्र पर इकट्ठी हो जाती है किसी को सवाल लगाने हैं किसी को बुनाई पूछनी है तो किसी को कुरते में से ब्लाउज निकालना है कोई तागा लिये बैठी है कि निवाड़ बनाना बता दूँ गरज यह कि जितने लोग उतनी ही मांगें। एक एक करके निपटाती हूँ। ज्यादहतर तो ऐसा होता है एक दिन पढ़ना लिखना तो एक दिन और सब चीजें या साबुनजैम वगैरह बनाने जैसी कोई चीज छिड़ गई तब तो फिर सब उसी में जुट पड़ती हैं। मैं ज्यादहतर ३ दिन ललितपुर में और २-२ दिन केन्द्र से दूसरे दोनों गांवों में रहती हूँ जहां भी ग्राम लक्ष्मी मेरे पीछे वहां का काम देखती है और मेरे लिये काम तैयार रखती हैं। कहीं तुमने दो साल पहिले इन गांवों को देखा होता तो तुम उनके रहने वालों को आज मुश्किल से पहिचान पाती। महुवे के तेल के साबुन और पुराने कपड़ों से बनाये नये कपड़ों ने एकदम उनका कायापलट कर दिया है। हर घर में पुरानी रुई के सूत के गलीचे नहीं तो आसनियां तो तुम्हें जरूर ही बैठने को मिल जायेंगी। शाम को फिर मैं गांव में निकलती हूँ और बारी-बारी से घरों में जाकर वहां की जरूरतें और मुश्किलें समझने की कोशिश करती हूँ। केन्द्र पर बहुत सी बातें सबके सामने कहने में स्त्रियों को संकोच लगता है। यहां वे खुलकर मेरी सलाह ले सकती हैं। बहुत से प्रोग्राम भी इसी समय तय हो जाते हैं। फिर केन्द्र पर सिर्फ काम ही काम नहीं होता। रात को जब औरतें छुट्टी पाकर वहां जुटती हैं तो वहां का मार्च देखने लायक होता है रामायण भजन कीर्तन से लेकर आल्हा और बिरहा तक सभी का प्रोग्राम रहता है जो उनके दिन भर के हारे थके शरीर और मन को नया कर देता है। कभी हम लोग साथ-साथ मेला और इधर के देखने लायक जगहों पर भी घूमने जाते हैं। कोई नुमाइश वगैरह होती है तो इन केन्द्रों पर बनायी हुई चीजें उनमें भेजी जाती हैं जिन पर कभी-कभी इनाम भी मिलता है। इससे उनका उत्साह और भी बढ़ जाता है।

सभा के प्रधान मन्त्री का भ्रमण वृत्तान्त

सभा के प्रधान मन्त्री श्री पं० प्रेम-चन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० ने यह निश्चय किया है कि वह प्रति सप्ताह दो दिन सभा के कार्य के लिये लखनऊ से बाहर जाकर समाजों का निरीक्षण करेंगे तथा समाजों के अधिकारियों से सीधा सम्पर्क स्थापित करेंगे। इसी आधार पर उन्होंने १ व २ अगस्त को आर्यसमाज रुदौली, जि० बाराबंकी फैजाबाद व बाराबंकी का दौरा किया। सभी स्थानों में आर्य बन्धुओं ने स्टेशनों पर पहुँचकर मन्त्री महोदय का पुष्प-मालाओं से स्वागत किया। मन्त्री जी ने समाजों में पहुँच कर वहाँ के अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया, तथा हीरक-जयन्ती सम्बन्धी होने वाले उत्सव पर प्रकाश डाला। आर्य स्त्री समाज फैजाबाद ने १५), आर्यसमाज फैजाबाद ने २५) हीरक जयन्ती कोष में तथा बख्तावरलाल ट्रस्ट बाराबंकी से वेद-में २०) प्राप्त हुये। इस भ्रमण में श्री राजबहादुर विद्यारत्न प्रचार मन्त्री भी साथ में रहे।

(पिछले पृष्ठ का शेष)

प्रधान में पूर्ण शक्ति और उत्साह के साथ भारत के समस्त क्षेत्रों में काम करने के लिए एक वृहद् ईसाई प्रचार निरोध समिति बनाने का निश्चय हुआ। धन-जन के सहयोग के लिए अपील प्रचारित करने का भी निर्णय हुआ। इस संयुक्त बैठक के निश्चय को सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने स्वीकार किया।

दयानन्द दीक्षा-शताब्दी

सभा ने निश्चय किया है कि सभा की ओर से आगामी दीपावली के अवसर पर मथुरा में होने वाली दयानन्द दीक्षा शताब्दी तथा गुरु विरजानन्द की स्मृति में स्थापित होने वाले स्मारक के शिलान्यास समारोह में पूरा-पूरा सहयोग दिया जाय। आर्य जनता से इस समारोह की सफलता के लिए तन-मन धन सभी प्रकार के प्रयत्न आरम्भ करने देने की अपील की गई।

—रघुवीरसिंह शास्त्री
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

दीक्षा-शताब्दी आर्यमित्र जयन्ती समारोह के लिए

आप क्या कर रहे हैं!

(श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, धन्वन्तरि औषधालय, सहारनपुर)

आर्यमित्र में लगभग एक वर्ष से निरंतर यह पढ़ते पढ़ते कि जयन्ती में सहयोग दीजिए, मन सोच रहा है कि क्या हुआ है आर्य जनता को जो कर्तव्य पर विचार करती नहीं, और कितना साहस है बेचारे सम्पादक में जो निराशा में भी आशा की झलक देख आगे बढ़ने का मनधारे हैं।

किन्तु क्या यह हमारे जीवन का लक्षण है? क्या उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य नामधारियों के लिए यह अत्यन्त लज्जा की बात नहीं कि वे अपने गौरव और आगे बढ़ने की प्रतीक एक योजना को भी पूरी तरह सफल न कर सकें। क्या हम महर्षि दयानन्द के अनुयायी आज इतने निष्प्राण हो चुके हैं कि उनके कान, उनका हृदय, उनका मस्तिष्क किसी भी अच्छे कार्य के लिए तैयार नहीं होता?

मेरा निवेदन है कि यह स्थिति किसी भी स्थिति में आर्यसमाज के गौरव का कारण नहीं। आवश्यकता अविलम्ब केवल यह है कि प्रदेश का प्रत्येक आर्य निश्चय करे कि क्या जो योजना उनके मान्य नेताओं द्वारा प्रस्तुत की जा रही है, हमें उसके सम्बन्ध में क्या करना है। जो इससे मतभेद रखते हों उनसे मुझे कुछ नहीं कहना किन्तु जो इस योजना से सहमत हों उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे निश्चय करें कि योजना को हमने अत्यन्त गौरवपूर्ण प्रभावशाली प्रकार से प्रस्तुत करना और सफल बनाना है।

मेरा निवेदन है कि जनता जानना चाहती है कि करना क्या है? हुआ क्या है? और करना क्या बाकी है? उसे यह बताते रहिए, गाड़ी चलती रहेगी।

जनता से व आर्यसमाज के अधिकारियों से

आर्यसमाज के सदस्यों व अधिकारियों से मुझे एक बात यह कहनी है कि वे क्यों कभी इस बात पर विचार नहीं करते कि आज उन पर दयानन्द की महान् लक्ष्य पूर्ति का जो दायित्व है उसे अधूरा रहने देना सभी आर्यों के लिए कलंक की वह काली रेखा होगी जो कभी किसी के मिटाए न मिटेगी। आर्य सभासद गण! आप की यह घोर निद्रा आज आपकी मृत्यु का प्रतीक बन समस्त अनार्य शक्तियों को प्रोत्साहित कर रही है। क्या भोगवाद और अनाचार की विनाशकारी लीला का ताण्डव, अंधविश्वास मूर्तिपूजा की लहरों का गर्जन, नास्तिकता और ईसाइयत के मेघों का वर्षन आपकी सत्ता को चुनौती नहीं दे रहा? आखिर हुआ क्या है आपको? क्यों निराश, होकर आप मृत्यु की ओर जा रहे हैं।

सभा अधिकारियों से!

अपने मान्य सभा अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि अब समय अवधि का थोड़ा कार्य का है, अत वे सर्व प्रथम, जनता को यह बताएं कि उन्हें दीपमाला तक—

१—निश्चित रूप से कितना धन चाहिए।

२—इस धन का उपयोग किस प्रकार किया जाएगा।

३—समारोह का क्या-क्या कार्यक्रम होगा।

४—अब तक [illegible] में कितना [illegible] होगा। [illegible] का [illegible] व्यय भी बता [illegible] दीजिए।

५—सभा के [illegible] अधिकारी और [illegible] इस योजना में [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] इसकी [illegible] आर्यमित्र में प्रकाशित कीजिए।

उठिए नींद छोड़ मार्ग बढ़िए! समय आपको पुकार रहा है! मथुरा में दीपमाला पर होने वाला दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह इस बात का निर्णायक होगा कि दयानन्द की विजय ध्वजा धरती पर लहराए या पाप अनाचार विजयी हो मुस्कराए? मैं पूछता हूँ क्या चाहते हैं आप उत्तर दीजिए? आर्यसमाज की विजय वैजन्ती फहराने का संकल्प लेने हेतु दयानन्द दीक्षा समारोह सफल बनाइए। ★

साहित्य-समीक्षण

अमृत-वरदान

लेखक—विश्वम्भर सहाय प्रेमी। प्रकाशक—लोक साहित्य प्रकाशन प्रेमी प्रेस मेरठ। पृष्ठ संख्या ४०। मूल्य ।) मात्र।

यह पुस्तक "अमृत वरदान" कठोपनिषद् के आधार पर एकांकी नाटक के रूप में प्रस्तुत की गई है उपनिषद् का वर्ण्य विषय जितना गहन एवं दुर्बोध है, यह पुस्तक उतनी ही सरल भाषा में रची गई है, कथोपकथन से विषय और भी अधिक सुबोध एवं ग्राह्य बन पड़ा है, भौतिकवाद के जंजाल में फंसे इस युग को अध्यात्म की ओर प्रेरित करना इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है। नचिकेता का पिता की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर यम के घर पर तीन दिन तक भूखे रहना, तथा यमाचार्य का भी आए अतिथि की [illegible] पर दुखित होना, आज के [illegible] गृहस्थों के लिए एक प्रेरणा का निदर्शन है।

यमाचार्य द्वारा नचिकेता को दिए गये तीन वरदानों में से तीसरे वरदान के नाम पर पुस्तक का नामकरण अमृत वरदान किया गया है। 'यथा नाम तथा गुण' के आधार पर यह पुस्तक पाठकों के लिये अमृत वरदान ही सिद्ध होगी यदि आज के युग में इसी प्रकार के सत्साहित्य का प्रचार होता रहे तो यह निश्चय है कि वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य वास्तविक अमृत वरदान को प्राप्त करने में सफल हो सकेगा।

सरल उपनिषद् के इस रहस्य का प्रतिपादन सरल और सुबोध नाटकीय ढंग में करने का जो प्रयत्न [illegible] प्रेमी जी ने किया है वह प्रशंसनीय है। वेद प्रचार सप्ताह आदि के अवसर पर भी इस प्रकार की पुस्तकें [illegible] कर अध्यात्म रहस्य को समझने में सहायता प्राप्त कर सकते हैं। आर्यसमाजों व शिक्षालयों के पुस्तकालयों में इस पुस्तक की एक प्रति रहनी चाहिए।

मानव-धर्म

लेखक व प्रकाशक—डाक्टर मक्खन लाल शर्मा, मु० [illegible], पो० [illegible], जिला बुलन्दशहर। पृष्ठ संख्या १८०, मूल्य १॥)।

इस पुस्तक में मानव जीवन का उद्देश्य जीवन में धर्म का स्थान धर्म की परिभाषा, धर्म का निर्णय, [illegible] धर्म, वेदोक्त धर्म आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। [illegible] [illegible] और [illegible] धर्म की व्याख्या में भी उपयोगी विचार व्यक्त किये गये हैं। महाभारत में भीष्म पितामह द्वारा धर्म की व्याख्या [illegible] उल्लेख करते हुए कहा गया है कि "धर्म और नीति हमारे [illegible] व्यवहार की धारा को सीमित रखने के हेतु दो किनारे हैं।" नीति के सम्बन्ध में लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि "देश, काल, स्थिति, अवसर अथवा विपक्षी का विचार करके धर्म [illegible] आदर्शवाद को देश, जाति अथवा व्यक्तिगत रूप देना ही नीति है।" स्थान-स्थान पर उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत आदि धर्म ग्रन्थों के तद्विषयक उद्धरण देकर मानव धर्म का मर्म स्पष्ट कर दिया गया है। पुस्तक जन-साधारण के लिए उपयोगी है। ★

मानव की दुविधा

अविरल अपनी ओर दनुजता
रही मनुज को खींच।

यद्यपि वह अति ज्ञानवान है,
शक्तिमान है, गुण निधान है,
उसे मिल चुका अमित मान है,

पर, मानव मानव के ऊपर
कीचड़ रहा उलीच।

यद्यपि वह मन से उदार है,
विमल हृदय है, सद्विचार है,
मानवता से उसे प्यार है,

पर, अनेक व्यवधान अभी है
मनुज मनुज के बीच।

यद्यपि उसका शुभादर्श है,
जग में उसका समुत्कर्ष है,
मानवता से उसे हर्ष है,

पर, नर के मन में अन्तर्हित
बहु विचार हैं नीच।

यद्यपि उसकी विमल नीति है,
सत्य अहिंसा में प्रतीति है,
भाती उसे न युद्ध रीति है,

पर, संघर्षों में फँसता है
नर निज आँखें मींच।

यद्यपि उसमें है शुभकामना,
अखिल विश्व की प्रेम-भावना
नित है उसको शान्ति-साधना

पर, न सुखी कर सका धरा को
प्रेम सुधा से सींच।

—गोपालशरण सिंह

विज्ञान वार्ता

भारत में विज्ञान

वाईकाउंट विमान में पेट्रोल भरने का यन्त्र

भारत में पहली बार एक ऐसा यंत्र बनाया गया है, जिसके द्वारा वाईकाउंट विमान में नीचे की टंकी में पेट्रोल भरा जा सकता है। पेट्रोल पहुँचाने के पम्प इस ढंग से बनाये गये हैं कि जमीन को पेट्रोल की टंकी से पेट्रोल ट्रक में होकर विमान की टंकी में आसानी से पेट्रोल पहुँचाया जा सकता है। पेट्रोल पहुँचाने के लिए यंत्र एक सा दबाव भी बनाये रखता है। इस यंत्र का मूल्य १० हजार रुपया है, जो विदेशी यंत्र के मूल्य का करीब ३२ प्रतिशत है।

× × ×

हाथ से कागज बनाने की नयी विधि

देश में हाथ के कागज का धन्धा काफी पुराना और व्यापक है। किन्तु इसके तरीके और उपकरण बड़े पुराने ढंग के हैं। इस कारण इनमें सुधार की काफी गुंजाइश है। हैदराबाद की केन्द्रीय अनुसंधानशाला ने इस उद्योग को वैज्ञानिक ढंग से उन्नत करने के प्रयत्न किये। इसने केवल ऐसी किस्मों का बढ़िया कागज बनाने का यत्न किया जो मिलों में नहीं बनता जैसे ड्राइंग का कागज बांड और अन्य दस्तावेजों का कागज, स्याही सोख, सफेद कार्ड इत्यादि। जिन कारीगरों ने यह कागज बनाने के परीक्षण किये हैं, उन्हें पूरा विश्वास है कि उनका कागज बहुत अच्छा है।

हैदराबाद की प्रयोगशाला में कागज की परीक्षा और कागज बनाने के काम आने वाले कच्चे माल के बारे में भी जाँच-पड़ताल की गई है। प्रयोगशाला कागज बनाने वालों को आवश्यक सलाह भी देती है।

× × ×

हमारा भोजन और टेपियोका

मैसूर की केन्द्रीय खाद्य शिल्प अनुसंधानशाला ने, ४१ पृष्ठ की एक पुस्तिका निकाली है, जिसमें केरल में टेपियोका की खेती के विस्तार और भोजन में इस कंद की उपयोगिता के बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है। पुस्तिका में समझाया गया है किस प्रकार यह कंद हमारे भोजन का पौष्टिक तत्व बन सकता है।

पुस्तिका में देशवासियों का ध्यान इस बात की ओर खींचा गया है कि टेपियोका की खेती के बारे में भी काफी तथ्य संग्रहीत किये गये हैं।

× × ×

काले सीसे की बेहतर मूषा

जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातु प्रयोगशाला ने मिट्टी लगे हुए काले सीसे (ग्रेफाइट) की मूषा (क्रूसिबल) बनाने की नयी विधि निकाली है। इस विधि के अनुसार मूषा के मसाले को मिलाने की क्रिया, चमकाने के मसाले की रचना और इसको लगाने का और भट्टी में पकाने का तरीका प्रचलित तरीके से काफी भिन्न है। नये तरीके से मूषा बनाने का जो आजमाइशी यंत्र लगाया गया है, उससे कई प्रकार के और भिन्न-भिन्न ताप सह सकने वाली मूषाएं बनायी गयी हैं।

काले सीसे की मूषाओं में तांबा और अन्य अलौह धातुएं पिघलाई जाती हैं। इस समय भारत में राजामुन्द्री और अन्य कई स्थानों में मूषाएं बनाई जाती हैं, फिर भी विदेशों से काफी मूषाएं मंगानी पड़ती हैं। १९५७ में भारत ने विदेशों से १६,२९,११६० की मूषाएं मंगायी। देशी मूषाएं इतनी बढ़िया भी नहीं होतीं। किन्तु नयी विधि से बढ़िया मूषाएं बनायी जा सकती हैं और उत्पादन भी इतना बढ़ सकता है कि विदेशों से मंगाने की जरूरत ही न रह जाय।

× × ×

—जोशी

आवश्यकता

आर्य परिवार, "मीतल गोत्रीय करीब अग्रवाल इन्टर पास, गौरवर्ण गृह कार्य में दक्ष कन्या के लिये शिक्षित, सुन्दर, बारोजगार वर चाहिये। दहेज चाहने वाले कृपया पत्र-व्यवहार न करें। सूत्र नम्बर २५ द्वारा आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वास्थ्य-सुधा

डा० क्रेडे की खोज—
जिनकी साधारण चिकित्सा ने—लाखों शिशुओं को अन्धत्व से बचाया।

(ले०—श्री ई० पी० सेवक० बम्बई)

एक शताब्दी से कुछ कम समय पहले तक, जन्म-काल में ही, शिशुओं की आँखों पर आक्रमण करने वाले कीटाणु उनके (शिशुओं के) प्रथम-प्रथम संसार-दर्शन के प्रथम ही, उनकी आँखों की ज्योति का अपहरण कर, सर्वदा के लिये उन्हें अन्धेरे जीवन में घुट-घुट कर मरने के लिये छोड़ देते थे। मानव-जीवन को व्यर्थ कर देने वाले इस अति भयानक आक्रमण के विरुद्ध, रोमन सम्राट हैड्रियन के समय से ही लगभग १०० ई० पू० तक जबकि इसके लिये एफिसस के सोरानस ने नव-जात शिशुओं की आँखें तेल से धोने की पद्धति का निर्धारण किया था, चिकित्सकों का अभियान चलता रहा, किन्तु सफलता न मिल सकी थी।

परन्तु परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता; अन्त में, लिपजिग विश्वविद्यालय में गर्भ-मोचन विद्या के अध्यापक-एक जर्मन डाक्टर-क्रेडे ने (१८१९-१८९२) इस समस्या का हल ढूंढ ही निकाला।

अपने समय के अन्य चिकित्सकों के समान ही डा० क्रेडे भी पहले तो शिशुओं की आँखों के फोड़े-सूजन आदि की भयानकता को देखकर भय से हताश हो चले, किन्तु उन्होंने १८७८ई० में लुइस पाश्चर के द्वारा प्रतिपादित एक अति नवीन धारणा रोग-कीटाणु-सिद्धान्त से लाभ उठाया, जिसमें उनके पूर्व-चिकित्सक असफल रहे। पाश्चर की क्रान्तिकारी घोषणा के ठीक ६ वर्ष बाद, डा० क्रेडे ने अपना प्रयोग सिद्ध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया कि "आँखों में एक-मृदुल, रजत-लवण, मद्य एवं शोरे के घोल से बने—रसायनद्रव के डालने के परिणाम स्वरूप कीटाणुओं के विध्वंस द्वारा शिशुओं की नेत्र-ज्योति की पूर्ण रक्षा की जा सकती है।"

किन्तु, यद्यपि प्रभावकर होते हुए भी, डा० क्रेडे के जिस रजत-रसायन से आँखों के अति कोमल झीने परदे में जलन-परपराहट बनी रहने के कारण यह समस्या ५० वर्षों तक और इसी तरह आपत्तिजनक ही बनी रही।

अन्त में, इस समस्या का वास्तविक समाधान, अभी गत १५ वर्षों के भीतर, तब हुआ, जब कि विश्व-विख्यात एन्टीबायोटिक औषधियों के आविष्कार को मानव ने वरदान रूप में पाया, इन औषधियों के सामने डा० क्रेडे की चिकित्सा बहुत पुरानी पड़ गयी। आज, शिशुओं के नेत्र-रोगों के लिये बहुगुण-प्रभावकारी टेरामैसिन जैसे एन्टीबायोटिक का सद्यः सफल उपयोग किया जाता है, जिससे सैकड़ों से अधिक आक्रमक कीटाणु तुरन्त नष्ट हो जाते हैं, और नेत्रों को किंचित भी जलन-चुनचुनाहट पहुँचाये बिना ही, प्रत्येक प्रकार के आक्रमक कीटाणुओं से नेत्र-ज्योति निर्विघ्न रक्षित कर दी जाती है।

यद्यपि आधुनिक औषधीय विज्ञान, आज, अपने अनन्त क्षेत्रों में समुन्नत होकर उच्चतम शिखर पर पहुँच गया है, सन्देह नहीं, किन्तु साथ ही यह भी निर्विवाद है कि इसका मौलिक श्रेय डा० क्रेडे को ही है, जिसने इस सिद्धांत से कि "अन्धत्व-जनक सूक्ष्म कीटाणु रासायनिक द्रव द्वारा विनष्ट किये जा सकते हैं" आज की संक्रामक रोगों के विरुद्ध चलते अभियान में रासायनिक औषधियों की शानदार विजय का यशस्वी मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

★

विज्ञान वार्ता

भारत में विज्ञान

वाईकाउंट विमान में पेट्रोल भरने का यन्त्र

भारत में पहली बार एक ऐसा यंत्र बनाया गया है, जिसके द्वारा वाईकाउंट विमान में नीचे की टंकी में पेट्रोल भरा जा सकता है। पेट्रोल पहुँचाने के पम्प इस ढंग से बनाये गये हैं कि जमीन को पेट्रोल की टंकी से पेट्रोल ट्रक में होकर विमान की टंकी में आसानी से पेट्रोल पहुँचाया जा सकता है। पेट्रोल पहुँचाने के लिए यंत्र एक सा दबाव भी बनाये रखता है। इस यंत्र का मूल्य १० हजार रुपया है, जो विदेशी यंत्र के मूल्य का करीब ६५ प्रतिशत है।

× × ×

हाथ से कागज बनाने की नयी विधि

देश में हाथ के कागज का घरेलू धन्धा काफी पुराना और व्यापक है। किन्तु इसके तरीके और उपकरण बड़े पुराने ढंग के हैं। इस कारण इनमें सुधार की काफी गुंजाइश है। हैदराबाद की केन्द्रीय अनुसंधानशाला ने इस उद्योग को वैज्ञानिक ढंग से उन्नत करने के प्रयत्न किये। इसने केवल ऐसी किस्मों का बढ़िया कागज बनाने का यत्न किया जो मिलों में नहीं बनता जैसे ड्राइंग का कागज बॉंड और अन्य दस्तावेजों का कागज, स्याही सोख, सफेद कार्ड इत्यादि। जिन कारीगरों ने यह कागज बनाने के परीक्षण किये हैं, उन्हें पूरा विश्वास है कि उनका कागज बहुत अच्छा है।

हैदराबाद की प्रयोगशाला में कागज की परीक्षा और कागज बनाने के काम आने वाले कच्चे माल के बारे में भी जाँच-पड़ताल की गई है। प्रयोगशाला कागज बनाने वालों को आवश्यक सलाह भी देती है।

× × ×

हमारा भोजन और टेपियोका

मैसूर की केन्द्रीय खाद्य शिल्प अनुसंधानशाला ने, ७६ पृष्ठ की एक पुस्तिका निकाली है, जिसमें केरल में टेपियोका की खेती के विस्तार और भोजन में इस कंद की उपयोगिता के बारे में अच्छी जानकारी दी गयी है। पुस्तिका में समझाया गया है किस प्रकार यह कंद हमारे भोजन का पौष्टिक तत्व बन सकता है।

पुस्तिका में देशवासियों का ध्यान इस बात की ओर खींचा गया है कि टेपियोका की खेती के बारे में भी काफी तथ्य संग्रहीत किये गये हैं।

× × ×

काले सीसे की बेहतर मूषा

जमशेदपुर की राष्ट्रीय धातु प्रयोगशाला ने मिट्टी लगे हुए काले सीसे (ग्रेफाइट) की मूषा (क्रूसिबल) बनाने की नयी विधि निकाली है। इस विधि के अनुसार मूषा के मसाले को मिलाने की क्रिया, चमकाने के मसाले की रचना और इसको लगाने का और भट्ठी में पकाने का तरीका प्रचलित तरीके से काफी भिन्न है। नये तरीके से मूषा बनाने का जो आजमाइशी यंत्र लगाया गया है, उससे कई प्रकार के और भिन्न-भिन्न ताप सह सकने वाली मूषाएं बनाई गयी हैं।

काले सीसे की मूषाओं में तांबा और अन्य अलोह धातुएं पिघलाई जाती हैं। इस समय भारत में राजामुन्द्री और अन्य कई स्थानों में मूषाएं बनाई जाती हैं, फिर भी विदेशों से काफी मूषाएं मंगानी पड़ती हैं। १९५७ में भारत ने विदेशों से ११,२२,९११६० की मूषाएं मंगायी। देशी मूषाएं इतनी बढ़िया भी नहीं होतीं। किन्तु नयी विधि से बढ़िया मूषाएं बनायी जा सकती हैं और उत्पादन भी इतना बढ़ सकता है कि विदेशों से मंगाने की जरूरत ही न रह जाय।

× × ×

—जोशी

आवश्यकता

आर्य परिवार, "मीतल गोत्रीय कदीम अग्रवाल इन्टर पास, नौकरी युक्त कार्य में दक्ष कन्या के लिये शिक्षित, सुन्दर, कारोबार वर चाहिये। दहेज चाहने वाले कृपया पत्र-व्यवहार न करें। बुक नम्बर २६ द्वारा आर्यमित्र ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

स्वास्थ्य-सुधा

डा० क्रेडे की खोज—

जिनकी साधारण चिकित्सा ने—लाखों शिशुओं को अन्धत्व से बचाया।

(ले०—श्री ई० पी० लेवन० बम्बई)

एक शताब्दी से कुछ कम समय पहले तक, जन्म-काल में ही, शिशुओं की आँखों पर आक्रमण करने वाले कीटाणु उनके (शिशुओं के) प्रथम-प्रथम संसार-दर्शन के प्रथम ही, उनकी आँखों की ज्योति का अपहरण कर, सर्वदा के लिये उन्हें अन्धेरे जीवन में घुट-घुट कर मरने के लिये छोड़ देते थे। मानव-जीवन को व्यर्थ कर देने वाले इस अति भयानक आक्रमण के विरुद्ध, रोमन सम्राट हैड्रियन के समय से ही लगभग १०० ई० पू० तक जबकि इसके लिये एफिसस के सोरानस ने नव-जात शिशुओं की आँखें तेल से धोने की पद्धति का निर्धारण किया था, चिकित्सकों का अभियान चलता रहा, किन्तु सफलता न मिल सकी थी।

परन्तु परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता; अन्त में, लिपजिग विश्वविद्यालय में गर्भ-मोचन विद्या के अध्यापक-एक जर्मन डाक्टर-क्रेडे ने (१८१९-१८९२) इस समस्या का हल ढूँढ ही निकाला।

अपने समय के अन्य चिकित्सकों के समान ही डा० क्रेडे भी पहले तो शिशुओं की आँखों के फोड़े-सूजन आदि की भयानकता को देखकर मन से हताश हो चले, किन्तु उन्होंने १८८०ई० में लावस पास्टर के द्वारा प्रतिपादित एक अति नवीन धारणा रोग-कीटाणु-सिद्धान्त से लाभ उठाया, जिसमें उनके पूर्व-चिकित्सक असफल रहे। पास्टर की क्रान्तिकारी घोषणा के ठीक १ वर्ष बाद, डा० क्रेडे ने अपना प्रयोग सिद्ध प्रतिवेदन प्रस्तुत किया कि "आँखों में एक-बूंद, रजत-लवण, मद एवं थोड़े के घोल से बने—रसायनद्रव्य के डालने के परिणाम स्वरूप कीटाणुओं के विध्वंस द्वारा शिशुओं की नेत्र-ज्योति की पूर्ण रक्षा की जा सकती है।"

किन्तु, अति प्रभावकर होते हुए भी, डा० क्रेडे के मिश्र रजत-रसायन से आँखों के अति कोमल भीने परदे में जलन-चरचराहट बनी रहने के कारण यह समस्या २० वर्षों तक और इसी तरह आपत्तिजनक ही बनी रही।

अन्त में, इस समस्या का वास्तविक समाधान, अभी गत १५ वर्षों के भीतर, तब हुआ, जब कि विश्व-विख्यात एन्टीबायोटिक औषधियों के आविष्कार को मानव ने वरदान रूप में पाया। इन औषधियों के सामने डा० क्रेडे की चिकित्सा बहुत पुरानी पड़ गयी। आज, शिशुओं के नेत्र-रोगों के लिये बहुगुण-प्रभावकारी टेरामैसिन जैसे एन्टीबायोटिक का ही उपयोग किया जाता है, जिससे सैकड़ों से अधिक आक्रमक कीटाणु तुरन्त नष्ट हो जाते हैं, और नेत्रों को किंचित भी जलन-चुनचुनाहट पहुँचाये बिना ही, प्रत्येक प्रकार के आक्रमक कीटाणुओं से नेत्र-ज्योति निर्विघ्न रक्षित कर दी जाती है।

यद्यपि आधुनिक औषधीय विज्ञान, आज, अपने अनन्त क्षेत्रों में समुन्नत होकर उच्चतम शिखर पर पहुँच गया है, सन्देह नहीं, किन्तु साथ ही यह भी निर्विवाद है कि इसका मौलिक श्रेय डा० क्रेडे को ही है, जिसने इस सिद्धांत से कि "अन्धत्व-जनक सूक्ष्म कीटाणु, रासायनिक द्रव द्वारा विनष्ट किये जा सकते हैं" आज की संक्रामक रोगों के विरुद्ध चलते अभियान में रासायनिक औषधियों की शानदार विजय का यशस्वी मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

★

बरसाती बीमारियों में मुफ्त

सभी रोगों की ११० दवाओं के २१ सेर वजन के चिकित्सा बक्स जिसमें रस, भस्में, चूर्ण, वटी, तेल, अरिष्ट, आसव आदि २००० रोगियों के इलाज की पुस्तकें अलग रहती हैं। हर पंचायतों में ग्राम सेवकों और अनेक गृहस्थों के पास यह बक्स रहना जरूरी है। औषधि, बोतल, पेटी आदि के [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

जीवन-ज्योति

कटारपुर के शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि

[श्री लाला हरदेव सहाय जी]

स्वधर्मे निधनं श्रेयः अर्थात् अपने धर्म के लिये मरना सर्वश्रेष्ठ है। भगवान श्री कृष्णचन्द्र जी ने गीता के तीसरे अध्याय के श्लोक ३५ में आदेश दिया है कि अपने धर्म के लिये मरना सर्वश्रेष्ठ है। मनुष्य के लिये धर्म सबसे बड़ा सहारा है। जो लोग धर्म पर चलते हैं वही स्थाई सुख के भागी हैं। मरने के बाद मनुष्य के साथ धन भूमि कुटुम्ब आदि साथ नहीं आते केवल धर्म ही साथ देता है। हिन्दुओं के लिये गोरक्षा सबसे बड़ा धर्म माना गया है।

ऋग्वेद में गौ को देवताओं की माता लिखा है। यजुर्वेद ने गोहत्यारे को मार देने की आज्ञा दी है।

गांधी जी क्या कहते हैं ?

(१) जो गाय को बचाने के लिये प्राण होम देने को तैयार नहीं, वह हिन्दू कैसा ? [२४ अप्रैल १९२१]

(२) हिन्दुस्तान में हिन्दुओं के साथ रहकर गोवध करना, हिन्दू का खून करने के बराबर है। [२५ जनवरी १९२१]

(३) गोरक्षा के साथ हिन्दू-मुसलमान की एकता का निकट का सम्बन्ध है। [२० अप्रैल १९२४]

(४) मेरे नजदीक गोवध और मनुष्य वध दोनों एक ही चीज है [२५ जनवरी १९२५]

जैसा कि प० सुन्दरलाल जी ने "भारत में अंग्रेजी राज्य" पुस्तक में लिखा है कि बाबर से लेकर बहादुरशाह तक के मुगल राज्य में गोहत्यारे के हाथ काट दिये जाते थे या उसे तोप से उड़ा दिया जाता था। इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दुओं की गोरक्षा भावना को दृष्टि में रखते हुये मुसलमानों ने भी गोहत्यारे को कड़ा दंड देने के लिये नियम बनाये।

अंग्रेजों की गोहत्यारी नीति

अंग्रेजों ने गोरक्षा की भावना को कमजोर करने के लिये सैनिकों को गाय की चर्बी लगा कारतूस व्यवहार में लाने का आदेश दिया। सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने यह कारतूस काम में लाने से इन्कार कर दिया और सन् १८५७ के नाम से सैनिक क्रान्ति हुई। सैकड़ों अंग्रेज मारे गये। अंग्रेजों ने गोरक्षा की भावना को स्थाई तौर पर नष्ट करने और हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाने के लिये गाय-बछड़ों की खालों की निकासी बढ़ाकर गोहत्या को प्रोत्साहन दिया। मुसलमानों को भी भड़काया। स्थान स्थान पर गोहत्या होने लगी।

सन् १८७२ में सद्गुरु रामसिंहजी के भक्त नामधारी सिक्खों ने कसाईखाने तोड़े, गोहत्यारों का वध किया। अंग्रेजों ने उन्हें फांसी की सजा दी। कितने ही नामधारी तोपों से उड़ाये गये। स्थान-स्थान पर गोहत्या के प्रश्न पर उपद्रव हुये।

गोहत्या सहन नहीं होती

जैसा कि राष्ट्रपति डा०राजेन्द्रप्रसाद जी ने ९ मार्च १९५९ को हिसार के भाषण में स्पष्ट तौर से कहा है कि "हिन्दुस्तान में गाय के लिये इस तरह की भावना है कि उसको लोग पसन्द नहीं करते और उसे सहन भी नहीं कर सकते। राष्ट्रपति जी का उपर्युक्त वचन देश में जो शान्ति और एकता चाहते हैं उन्हें गोहत्या किसी भी मूल्य पर नहीं होने देनी चाहिये।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश श्री माथुर ने २५ जून १९५९ के निर्णय में गोहत्यारों की दरख्वास्त निगरानी रद्द करते हुये लिखा है "कि गोवध के कारण देश में अनेक बार साम्प्रदायिक दंगे हुये हैं और भविष्य में बड़ा दंगा हो सकता है। जिससे देश में शान्ति भंग करने की सम्भावना हो तो अन्तःकरण को कुछ कठोर रुख ग्रहण करना चाहिये।' इसका मतलब है कि जो लोग गोहत्या करते हैं वे देश की शान्ति भंग करने के अपराधी और जिम्मेवार हैं।

यदि कटारपुर के हिन्दुओं ने गोहत्या का विरोध किया, गोवध न होने दिया तो वह उनकी गोभक्ति नहीं देश भक्ति का भी सबूत है। जिस देश में भिन्न-भिन्न धर्म के लोग बसते हों उस देश की शान्ति और एकता के लिये यह आवश्यक है कि सब धर्म के सिद्धान्तों और मान बिन्दुओं का आदर किया जावे। हिन्दुओं के लिये गोरक्षा करना धार्मिक कृत्य है पर मुसलमानों के लिये गोवध या बकर ईद के दिन गाय की कुरबानी करना अनिवार्य नहीं। अतः मुसलमानों का गोहत्या करना देश की शान्ति के लिये भी भारी खतरा है।

पुण्य भूमि में गोहत्या क्यों ?

मायापुर का ४८ मील का क्षेत्र जिसमें हरिद्वार, कनखल, कटारपुर आदि गांव बसते हैं इसे उत्तम भूमि माना गया है। जैसा कि सहारनपुर के जिला मैजिस्ट्रेट के पत्रों से मालूम होता है कि इस क्षेत्र में कभी गोहत्या नहीं हुई। सितम्बर १९१८ की बकर ईद को सरकारी मुसलिम अधिकारियों ने कटारपुर गांव में गाय की कुरबानी करने का निश्चय किया। जब हिन्दुओं को मालूम हुआ तो उन्होंने १०सितम्बर १९१८ को रुड़की के एस० डी० ओ० को यह झगड़ा रोकने के लिये निवेदन पत्र दिया, उसमें पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध शिकायत की। हिन्दू चाहते थे कि शान्ति रहे कोई झगड़ा न हो, पर रुड़की के एस० डी० ओ० ने यह मामला स्वयं न करके जिन पुलिस अधिकारियों के खिलाफ शिकायत थी उनके ही सुपुर्द कर दिया।

१६ सितम्बर १९१८ को जब हिन्दुओं को यह मालूम हुआ कि १७ सितम्बर को बकर ईद के दिन गाय की कुरबानी अवश्य होगी तो उन्होंने कनखल के हिन्दू नेताओं को सूचना दी तब कनखल के प्रभावशाली हिन्दू नेता महन्त ब्रह्मदास जी, महन्त हरनामसिंह जी, महन्त गुलाबगिरि जी सरदार जगतसिंह जी, सरदार धर्मचन्द जी, चौधरी जानकीदास जी, चौधरी अमरनाथ और डा० पूर्णप्रसाद जी ने भी शान्ति के लिये यत्न किया। सरकारी अधिकारियों के कहने से कटारपुर गये, पर मुसलमानों ने गाय की कुरबानी करने का दुराग्रह किया। पांच गायें कुरबानी के लिये सजा दी गईं, हिन्दू इसे सहन नहीं कर सके। गायें छुड़ा ली गईं। जब हिन्दुओं को यह मालूम हुआ कि दूसरे दिन यानी १८ सितम्बर को मुसलमान गाय की कुरबानी अवश्य करेंगे तो वह फिर इकट्ठे हो गये। रुड़की के एस० डी० ओ० की आज्ञा मिलने पर महन्त ब्रह्मदास जी, महन्त हरनामसिंह, चौधरी जानकीदास आदि भी कटारपुर पहुंचे।

१८ सितम्बर १९१८ को गाय की कुरबानी करने की कोशिश की तब श्री हनुमान मंदिर के महन्त रामपुरी जी ने गाय को बचा लिया, पर मुसलमानों ने उन्हें जख्मी कर दिया, अन्य हिन्दुओं से भी बुरा सलूक किया गया। इस पर झगड़ा आरम्भ हो गया। कुछ लोग मारे गये। कुछ घर भी जला दिये गये। हिन्दुओं ने सहारनपुर के जिला मैजिस्ट्रेट से मिलकर जो अत्याचार किये गये उनकी ओर उसका ध्यान दिलाया गया पर कोई सुनवाई नहीं की गई यदि सरकारी अधिकारी चाहते तो धारा १४४ लगाकर यह झगड़ा ही नहीं होने देते या जिन लोगों के झगड़े करने का सन्देह भी था उन्हें तुरन्त गिरफ्तार कर लिया जाता पर पुलिस ने तुरन्त कोई गिरफ्तारी नहीं की। २४ दिन तक झूठी गवाही तैयार करती रही। गोरक्षकों पर भी भीषण अत्याचार हुए। १२ अक्टूबर १९१८ से गिरफ्तारियाँ आरम्भ हुईं जो १ नवम्बर तक होती रहीं। ऐसे लोगों को भी गिरफ्तार किया गया जो कटारपुर गये नहीं थे एवं जिनका कटारपुर काण्ड से कोई सम्बन्ध नहीं था उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। ठा० शिवदयालसिंह जी थानेदार और श्री कल्याणसिंह जी सेक्रेटरी, म्युनिस्पिल कमेटी हरिद्वार जैसे जिम्मेवार लोगों को भी गिरफ्तार किया गया। १७२ हिन्दुओं पर भारतीय दंड विधान की धारा १४८, १४९, २१८, ३०२ तथा ४२६ के अनुसार मुकदमे चलाये गये। इस मुकदमा का देश की सुरक्षा या सेना से कोई सम्बन्ध नहीं था। साधारण मुकदमा की तरह चलाया जाना पर अंग्रेजी सरकार ने निरपराध गोभक्तों को दंड दिलाने के लिये भारत रक्षा कानून ४ (१९१५) के अनुसार तीन जजों का विशेष न्यायालय स्थापित किया। पुलिस ने जिन गोभक्तों को अपराधी बनाया उनके विरुद्ध [illegible] सरकारी गवाहों को सहारनपुर जेल में सिखाया गया। प्रायः गवाह गोहत्या के समर्थक थे या सरकारी अधिकारी। इस विशेष न्यायालय ने ८ अगस्त १९१९ को ४ गोभक्तों को फांसी, १३५ को कालापानी और २ को सात-सात साल कैद की सजा दी। शेष को छोड़ दिया गया। विशेष न्यायालय का निर्णय होने के कारण इनकी अपील इलाहाबाद हाईकोर्ट में नहीं इंगलैंड की प्रिवी कौंसिल में हुई। वहाँ के प्रायः जज यहां की स्थिति से परिचित नहीं थे उन्होंने अपील को रद्द कर दिया। रहम की दरख्वास्त देने पर महन्त ब्रह्मदास जी, चौधरी जानकीदास जी, डा० पूर्णप्रसाद और मुक्खा चौहान की फांसी की सजा बहाल रखी, शेष की सजा कालेपानी में तबदील हो गई तथा दस गोभक्तों का स्वर्गवास कालापानी या भिन्न भिन्न जेलों में हुआ। अब तक की जानकारी में १७ गोरक्षक जीवित हैं। जिन्हें भिन्न भिन्न प्रकार की सजा दी गई।

[शेष पृष्ठ — पर]

'मेहनत का दाना'

काउंट लियो टालस्टाय के शब्दों में एक लोक-कथा—हिन्दी अनुवाद

[अनु० श्री राघवा, सेवक औषधालय, बाराबंकी]

एक दिन कुछ लड़कों ने एक घाटी में, अन्न के दाने की तरह की एक चीज़ पाई, जो मध्य में धंसी थी, लेकिन इतनी बड़ी थी जितना बड़ा मुर्गी का अण्डा। एक यात्री उधर से जा रहा था, उसने उस चीज़ को देखा और बच्चों से एक पेटी में खरीद लिया और शहर में आकर एक विलक्षण-पदार्थ की तरह राजा के हाथ बेच दिया।

राजा ने बुद्धिमान दरबारियों को बुलाया और उनसे उस वस्तु का पता लगाने को कहा। बुद्धिमान दरबारियों ने बहुत विचार किया किन्तु उसके सम्बन्ध में तनिक भी पता न चला सके। एक दिन जब वह वस्तु खिड़की में रक्खी हुई थी, एक चिड़िया उड़ी और उसने उस वस्तु पर चोंच मारी तथा उसमें एक छेद कर दिया। और तब सबने देखा वह एक अन्न का दाना था। बुद्धिमान दरबारी राजा के पास गये और कहा—

"यह एक अन्न का दाना है।"

इस पर राजा अत्याधिक आश्चर्य चकित हुआ उसने बुद्धिमानों को आज्ञा दी कि पता लगावें कब और कहाँ ऐसा अन्न पैदा हुआ था। बुद्धिमान व्यक्तियों ने दुबारा विचार किया और अपनी किताबों में खोजा लेकिन उसके बारे में कुछ न पा सके। इसलिए राजा के पास वापस गये और कहा—"हम लोग उत्तर नहीं दे सकते। इसके बारे में हमारी पुस्तकों में कुछ भी नहीं है।' आपको किसानों से पूछना पड़ेगा शायद उनमें से कुछ ने अपने पिता से सुना हो, कब और कहाँ इतना बड़ा दाना उगा।

इसलिए राजा ने आज्ञा दी कुछ बहुत बूढ़े किसान उसके सामने लाये जाय, और उसके नौकरों ने ऐसे एक किसान को पाया और राजा के सामने लाये। जो दो बैशाखियों की सहायता से वह राजा के सामने चलकर आ रहा था। वह बहुत बूढ़ा था, कमर झुकी और दाँत नहीं थे।

राजा ने उसको दाना दिखलाया लेकिन वृद्ध मुश्किल से उसे देख सका, किसी तरह उसने उसे ले लिया और अपने हाथों में रखकर टोया। राजा ने उससे प्रश्न किया—

"वृद्ध! क्या आप हमें बता सकते हैं कि इस तरह का दाना कहाँ पैदा हुआ। क्या आपने कभी ऐसा अन्न खरीदा है या अपने खेतों में बोया है।"

वृद्ध इतना कम सुनता था कि मुश्किल से सुन सका कि राजा ने क्या कहा, और बड़ी मुश्किल से सिर्फ हुंकार लगाया।

"नहीं।" अन्त में उसने उत्तर दिया—'मैंने अपने खेतों में इस तरह का न कभी बोया और न पकाया और न इस तरह का कभी खरीदा। जब हमने धान खरीदा, दाने हमेशा इतने ही छोटे थे, जितने आज हैं। लेकिन आप मेरे बाप से पूछ सकते हैं। उन्होंने शायद सुना हो कहाँ इस तरह का धान पैदा हुआ।"

इसलिए राजा ने वृद्ध व्यक्ति के पिता को बुलवाया। वह मिला और राजा के सामने लाया गया। वह एक बैशाखी से टहलता हुआ आया। राजा ने उसको वह दाना दिखलाया, और वृद्ध किसान ने, जिसकी दृष्टि अब भी ठीक थी, उसकी ओर ध्यान से देखा। और राजा ने उससे पूछा—

"वृद्ध, क्या आप हमें नहीं बता सकते कि इस तरह का धान कहाँ पैदा

कहानी-कुञ्ज

होता था? क्या आपने कभी इस तरह का अन्न खरीदा है या अपने खेतों में बोया है?"

यद्यपि वृद्ध को कम सुनाई पड़ता था, फिर भी अपने लड़के की अपेक्षा अच्छी तरह सुना।

"नहीं।" उसने कहा—'मैंने अपने खेतों में इस तरह का धान कभी नहीं उपजाया। जहाँ तक खरीदने की बात है, मैंने कभी कुछ नहीं खरीदा क्योंकि मेरे समय में धन का प्रयोग नहीं होता था। प्रत्येक अपना धान उपजाता था और जब कभी आवश्यकता होती थी, हम एक दूसरे में हिस्सा कर लेते थे। मैं नहीं जानता इस तरह का धान कहाँ पैदा हुआ। हमारे समय का दाना आज की अपेक्षा बड़ा था, लेकिन इस तरह का कभी नहीं देखा। इतना मैंने सुना है, मेरे पिता कहते थे कि उनके समय का दाना बड़ा और अधिक आटे वाला होता था। उचित है कि आप उनसे पूछें।

इसलिये राजा ने इस वृद्ध के पिता को बुलवाया। वह भी मिला और राजा के सामने लाया गया। बिना बैशाखियों के आराम के साथ टहलते हुए उसने प्रवेश किया। उसके नेत्र साफ थे, वह ठीक से सुनता था और शान से बोलता था। राजा ने उसे दाना दिखलाया और वृद्ध ने उसकी ओर देखा और अपने हाथों में ले लिया।

"बहुत समय हुआ तब मैंने इस तरह का सुन्दर धान देखा था।" उसने कहा और एक टुकड़ा तोड़ा तथा चखा।

"यह बिल्कुल उसी तरह का है" उसने बताया।

"पितामह! मुझे बतलाइये" राजा ने कहा—"कब और कहाँ ऐसा धान पैदा होता था? क्या आपने कभी इस का खरीदा था या अपने खेतों में उपजाया था?"

और वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया—

"मेरे समय में इस तरह का धान हर जगह पैदा होता था। मैंने इसी तरह का धान खाकर जीवन गुजारा है और दूसरों को भी खिलाया है। इसी तरह का धान हम लोग बोया, काटा और पीटा करते थे।"

और राजा ने पूछा—

"पितामह! मुझे बताइये क्या आपने इसे कहीं खरीदा था या सब स्वयं पैदा किया?"

और वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया—

"मेरे समय में इस तरह का धान हर जगह पैदा होता था। मैंने इसी तरह का धान खाकर जीवन गुजारा है और दूसरों को भी खिलाया है। इसी तरह का धान हम लोग बोया, काटा और पीटा करते थे।"

और राजा ने पूछा—

"पितामह! मुझे बताइये, क्या आपने इसे कहीं खरीदा था या सब स्वयं पैदा किया?"

वृद्ध मुस्कराया।

"मेरे समय में" उसने उत्तर दिया हमारे जमाने में "रोटी के बेचने या खरीदने जैसा पाप किसी ने कभी नहीं सोचा। हम धन के बारे में कुछ नहीं जानते थे। हर एक के पास अपना स्वयं का धान काफी होता था।"

"तब मुझे बतलाइये, पितामह!" राजा ने पूछा—"आपका खेत कहाँ था? कहाँ पर आपने इस तरह का धान पैदा किया था?"

और वृद्ध ने उत्तर दिया—

"मेरा खेत ईश्वर की धरती थी। जहाँ भी हमने जोता वहीं हमारा खेत था। भूमि निःशुल्क थी। यह एक वस्तु थी जिसे कोई अपनी नहीं कहता था। श्रम ही केवल वस्तु थी जो व्यक्तिगत कही जाती थी।"

"दो और प्रश्नों के उत्तर दीजिए" राजा ने कहा—"पहला है पृथ्वी तब ऐसा अन्न क्यों पैदा करती थी और अब ऐसा करना क्यों छोड़ दिया है? और दूसरा है—आपका पौत्र दो बैशाखियों से चलता है, आपका पुत्र सिर्फ एक से और आप स्वयं यों ही? आपकी आँखें चमकीली हैं, आपके दाँत दृढ़ हैं और आपका स्वर कानों को साफ और भला लगता है। ये चीजें इस तरह क्यों हैं?"

वृद्ध ने उत्तर दिया—"ये वस्तुएं इसलिए ऐसी हैं क्योंकि मनुष्य ने अपने श्रम पर रहना छोड़ दिया है और वह दूसरे की मेहनत पर निर्भर करता है। पुराने समय में मनुष्य ईश्वरीय नियम के अनुसार रहते थे। वे उसे ही अपना कहते थे जो उनका अपना था। दूसरे की मेहनत का फल अपना नहीं बताते थे। ✱

[पृष्ठ ७ का शेष]

कटारपुर की गोहत्या का मुख्य कारण

बतलाया जाता है कि हिन्दुओं ने १९१६ में गंगा की प्राकृतिक धारा को नहर के रूप में बदलना स्वीकार नहीं किया, अंग्रेज अधिकारियों ने इसे अनादर समझा वह हिन्दुओं को नीचा दिखाने के इन्तजार में थे तब उन्होंने कटारपुर का कांड करा दिया और मुकदमा का नाटक रचकर अनुचित दंड दिलाया। कटारपुर के गोभक्त लड़ने को तैयार नहीं थे। उन्होंने शान्ति स्थापित करने की कोशिश की पर सरकारी लोगों ने सहयोग नहीं दिया। जब कोई उपाय नहीं देखा तो मायापुर के पुण्य क्षेत्र में गऊ के रक्त का बहाना सहन न कर सके। इन गोभक्तों ने अपने लिये नहीं अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी धार्मिक भावना की रक्षा के लिये प्राण दिये, कष्ट सहे, हर एक न्यायप्रिय भारतवासी ऐसे कर्तव्य परायण महापुरुषों का पुण्य स्मरण करेगा।

८ अगस्त १९२१ को कटारपुर में बलिदान होने वाले इन गोभक्तों को सारे भारत में श्रद्धांजलि गयी। हम उनकी बलिदान-भावना को ग्रहण कर सकें यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ★

सामयिक समस्याएँ

मनोरंजन नहीं धोखा है

सिनेमा के मीठे जहर से भावी सन्तति और वर्त्तमान पीढ़ी को बचाइये

[ले०—श्री जयमुखलाल आर्य, भिक्षक (रामपुर)]

वर्तमान कलियुग में मनुष्यता चारित्रिक संकट के झोंकों से गुजर रही है आज के विश्व संकट का मूल कारण चरित्र का पतन ही है। क्योंकि सिनेमा के रंग-बिरंगे आकर्षणों ने मानवता के तन्तुओं के जड़ मूल को खोखला कर दिया है। मनुष्य समाज धार्मिक मान्यताओं के अभाव से दारुण विनाश की ओर जा रहा है। इस संकट से बचने, आदर्श मानवता के विकास करने, महर्षि के मिशन को ऊँचा उठाने और आर्य मर्यादाओं की पुनर्स्थापना के लिए, एवं भ्रष्टाचार-निवारण के निमित्त प्राय सभी आर्यों को मानवमात्र का लुटेरा (अश्लील सिनेमा) का बहिष्कार करके चरित्र निर्माण के आन्दोलन को सफल बनाना होगा।

आज का युवक समाज अबोध बालक और बालिकाओं की विचारधारा अपवित्र और अस्वस्थ क्यों है? उसका एक ही कारण है सिनेमा से होने वाले दुष्परिणाम से परिचित होने पर भी इस आस्तीन के सांप का निराकरण नहीं करते, बल्कि अश्लीलता और सिनेमा को मनोरंजन का साधन और फैशन का उद्गाता मानते हैं। मनोरंजन का इस समय देश में इतना जोर है कि धर्म, कर्म, लज्जा, मर्यादा, शील, संकोच तथा प्रार्थना उपासना का त्याग सर्वथा मनोरंजन माना जाता है। मनोरंजन के नाम पर इस अश्लीलताजनक पाप को क्यों बढ़ने दिया जाय। इस प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिये विद्वानों का मत है कि—वर्तमान युग का धर्म शाप "सिनेमा" है। क्योंकि इसने प्रतिदिन फूलों तक के कुमार और कुमारियों को नचकइया, गवैया बना दिया है। किसी किसी सिनेमा में कहीं-कहीं शिक्षा व नीति की झलक भी आ जाती है, यह सिनेमा की वीभत्सता को छिपाने के लिये प्रलोभन मात्र है, अथवा सिनेमा-परित्यागियों के लिए प्रलोभन है। भला सिनेमा कम्पनियों के मालिकों को नैतिक सुधार की क्या पड़ी, उनका लक्ष्य तो धन और एकमात्र धन बटोरना है।

पिछले वर्ष लेखक के नगर में "टूरिंग टाकीज" आई थी, कम्पनी के मालिक किसी कार्यवश मेरे पास आये, मैंने पूछा, कहिये काम कैसा चल रहा है? उत्तर दिया, कि यह ऐसी कंजूस और बुजदिल बस्ती है कि टिकट के दाम तिहाई, चौथाई कर देने पर भी पूरा "सिनेमा हाल" नहीं भरता। कहने का तात्पर्य यह है कि सिनेमा मुखापेक्षी जनता को आजकल हेय दृष्टि से देखा जाता है।

सिनेमा के अधिकांश चित्रों में भौतिक और शारीरिक सौंदर्य का बहुमुखी एकीकरण किया जाता है कि शायद आज का कलाकार इसी दिग्दर्शन में व्यस्त है। सिनेमा के बहुधा चित्रों में इन्द्रियों को गुदगुदाने वाली बारूदी सामग्री पर्याप्त मात्रा में रहती है। आज अनेकों सिनेमा तारिकाएँ अविवाहित हैं। क्या विवाह करना सौंदर्य बाधक है। क्या यह सौन्दर्य स्थायी है। कदाचित इन कलाकारों और तारिकाओं के मत में सामाजिक बन्धनों को तोड़ना ही सुखी जीवन का प्रमाण है। इसीलिए इन सिनेमाओं के मायावी तत्त्वों को मनोरंजन कहना धोखा देना है। क्योंकि प्राचीन काल से चली आई हुई आदर्शवादिता और परम्पराओं को रूढ़िवादिता युक्त दिखाकर अनेक चित्रों में उन पर जमकर प्रहार किया जाता है। और वह होता है मनोरंजन तथा कला के नाम पर।

जो लोग समझते हैं सिनेमा ही संसार में मनोरंजन का साधन है, मन बहलाव की चीज है एवं स्फूर्तिदायक है, वे भूल करते हैं। जिस सिनेमा का नन्हें-नन्हें बालक और बालिकाओं और नवयुवकों पर भी पूर्णरूप से पड़ रहा हो। उसे मन बहलाव का साधन या रिफ्रेशमेण्ट कहना बुद्धिमानी नहीं। क्योंकि जब कोई क्रिया जीवन पर पूरा प्रभाव डालने वाली हो जाती है, तब वह मनोरंजन न रहकर संस्कार का रूप धारण कर लेती है। माता पिता और आचार्य जितनी जल्दी बालक पर शिक्षा का प्रभाव नहीं डाल पाते उससे कहीं जल्दी यह छायादार रंग-बिरंगी चित्रावली कुछ घण्टों की दुनिया उन पर अमिट छाप लगा कर भोले-भालों को अशोभनीय कला में उद्दण्डता व्यभिचार मैथुन की अनेकों स्वास्थ्य एवं अश्लील प्रतिक्रियायें सिखा देती है।

हम इतने समझदार नहीं हैं कि केवल अच्छे अच्छे को ग्रहण कर सकें बल्कि हम चमकीले, भड़कीले, उत्तेजनापूर्ण भावों पर ही लट्टू हो जाते हैं। शिक्षा और अनुभवी साथियों का भी बहुधा यही हाल है, सभ्य समाज इन सिनेमा तारिकाओं की नकलें, फैशन रूप में अपनाने लगा है। अनेकों दर्शक तो सिनेमा स्टूडियो पर एक्टर्स का शृंगार व पहनावा ही देखने जाते हैं। कोई कोई सिनेमा के मतवाले सुरैय्या, मधुबाला इत्यादि को पथ-प्रदर्शिका कहने में नहीं सकुचाते हैं। आधुनिक अफसरों ने सिनेमा और शृंगार के तर्ज पर गोस्वामी तुलसीदास की चौपाइयों को भी बदल डाला है।—

एकहि धर्म एक व्रत नेमा। छोड़ काज घर देखहु सिनेमा।
चोटी, कंघा, ब्लाउज, सारी। अधम सो नारि सेव न ह धारी॥

प्राचीन काल में ऋषि मुनि धर्म प्रचार करते थे, वर्तमान सितारे अश्लीलता फैलाते हैं, फिर भी हम सिनेमा सितारों के नाम उभारने में इतने प्रयत्नशील हैं कि सुरैया, नरगिस, आवारा आदि के नामों के कपड़े, चूड़ियां और शृंगार की वस्तुएँ अधिक मूल्य पर खरीदना पसन्द करते हैं। यह सिनेमा का जाज्वल्यमान प्रभाव है।

कुछ समय पूर्व कन्या और युवतियां अपना स्वरूप व सौंदर्य दिखाना घृणास्पद समझती थी, सौंदर्य प्रकाशन उनका वास्तविक अपमान था। आज भारतीय कुछ कन्याएँ अपनी रमणीयता का चित्रों में विज्ञापन करने की कुत्सित भावनायें जागृत किये हुये हैं। आह! दुर्भाग्य कि इस देश में सौंदर्य प्रतियोगिता भी आरम्भ है। और भारतीय कुछ कन्याएँ पर पुरुषों से सौंदर्य परीक्षा कराकर नम्बर और डिवीजन प्राप्त करने के लिये समुद्यत रहती हैं।

आह! वे ही श्रेष्ठ कुलीन कन्यायें सिनेमा पर्दों पर जा जाकर अपने शील सौंदर्य का उपहास कराने में गौरव मानने लगी हैं। उन माता पिताओं को ठंडे दिल से सोचना चाहिये कि वे उन्हें लाभ आदि के कारण सिनेमा अभिनेत्री बनाते हैं? वे सर्वथा पाप नहीं कमा रहे हैं? जो माता पिता अपने किशोर बालकों को सिनेमा दिखाकर विलास और फैशन कराते हैं, निःसंकोच ही उनको चमकीले भड़कीले चित्रों द्वारा दारुण विनाश की भट्टी की ओर ले जाने वाला कहना अनुचित न होगा।

फिर भी अनेकों मनुष्यों का मत है कि धार्मिक सिनेमा तो देखना ही चाहिये इसमें क्या आपत्ति है? क्या धार्मिक सिनेमाओं में वे एक्टर्स काम करते हैं जो अश्लीलता से विमुक्त हों। क्या उनका विचारधारायें धार्मिक हैं?' "बूढ़ा बाबा मरा तो कोई बात नहीं पर मौत ने घर देख लिया।' ठीक इसी प्रकार पिक्चर देखने का चस्का पड़ने पर धर्म अधर्म की छान बीन कौन करता है? सिनेमा में धार्मिकता और ऐतिहासिकता की झलक सिनेमा की वीभत्सता को छिपाने और सिनेमा परित्यागियों के लिये प्रलोभन मात्र है।

गजब ढा रहा है यह सचमुच सिनेमा, टिकट पर पर दुनिया लुटी जा रही है।
फटी है कमीज और धोती किसी की नुथनिया किसी की फनी जा रही है॥

अन्त में मैं अपने बन्धुओं से प्रार्थना करता हूँ कि वह सस्ते सिनेमा अथवा मनोरंजन के नाम में फँस कर समय बरबाद न करें, न अपने परिवार की सन्तति नौनिहाल बालक और बालिकाओं को ही दिखाकर उनमें कुसंस्कार बढ़ावें।

सिनेमा का आविष्कार जिन महापुरुषों ने किया था, कदाचित भी उनका यह अभिप्राय न होगा कि संसार नैतिक पतन की ओर जावे, वरन आविष्कारक महोदयों ने संसार की वर्तमान परिस्थितियों को देखकर यह आश्चर्यजनक और आकर्षक आविष्कार किया जिससे देश देश की प्रकृति सुषमा, इतिहास और उच्च विचार आदि का प्रचार चित्र पट पर प्रत्यक्ष रूप से हो। परन्तु अब इसके विपरीत क्या क्या वीभत्स काण्ड हो रहे हैं वह सब पर विदित है। आर्यसमाज के कर्णधारों से मेरी प्रार्थना है कि इन सिनेमाओं के द्वारा नैतिकता, धार्मिक इतिहास, चरित्रनिर्माण स्वस्थ्यता, उच्च विचार एवं आदर्श मानवता का विकास कराये जाने का सक्रिय आन्दोलन कराया जावे। ❀

आत्मनिरीक्षण कर आर्यसमाज को समर्थ बनाइये

[ले०—श्री कृष्णदत्त आयुर्वेदालङ्कार फैजाबाद]

हम आर्यसमाजी इस बात के लिये प्रसिद्ध हैं कि वे सबकी आलोचना करते हैं। पौराणिक, बौद्ध, जैनी, ईसाई मुसलमान आदि कोई भी धर्म उनसे बचा नहीं। परन्तु अब समय आ गया है कि आर्यसमाज स्वयं अपनी भी आलोचना करे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द के निर्वाण के बाद आर्यसमाज के नेताओं ने बड़ा उत्साह और जोश के साथ वैदिक धर्म के झण्डे को फहराया बहुत सी संस्थायें खोलीं तथा बहुत से जन जागरण के कार्य किये जिनसे उसका तथा उसके नेता का सम्मान बढ़ा लेकिन आजकल सब जगह शिथिलता है और घोर शिथिलता। हम आर्यसमाजी दूसरों को बहुत उपदेश देते हैं लेकिन हमारे घर का क्या हाल है इसे जरा सुनिए। देहात की समाजों का तो बुरा हाल है शहर की समाजों में भी निम्नलिखित दोष आ गये हैं जिनका निराकरण शीघ्र से शीघ्र होना चाहिये यदि जीवित रहना है।

(१) आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या नहीं बढ़ रही बल्कि घट रही है।

(२) आर्यसमाज के सदस्य स्वयं स्वाध्याय करने वाले बहुत कम हैं। ऋषि कृत ग्रन्थों के स्वयं पढ़े बिना ऋषि का दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आता।

(३) सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने वाले सदस्य भी बहुत कम हैं।

(४) बहुत कम समाजों में योग्य पुरोहित हैं।

(५) आर्यकुमार सभाएँ या तो हैं ही नहीं यदि हैं तो बहुत शिथिल अवस्था में।

(६) आर्य प्रतिनिधि सभा का उपदेश विभाग शिथिल है पहले जो उपदेशक धूम मचा दिया करते थे उनका आज नितान्त अभाव है।

(७) हमारे प्रचार में स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम और पं० गुरुदत्त जी की तरह मिशनरी स्पिट काम नहीं करती। आज उपदेश एक व्यवसाय बन गया है। वकीलों की तरह दिल में कुछ और प्लेटफार्म पर कुछ।

(८) विधवाओं, अनाथों को कोई पूछता नहीं सब जगह स्वार्थ का बोलबाला है। इस तरह ऋषि का मिशन कैसे आगे बढ़ेगा।

(९) स्वार्थ मनुष्य को भ्रष्टाचार की ओर ले जाता है परोपकार उसे देवता बनाता है।

(१०) ऋषि दयानन्द ने परोपकार की भावना से सब कार्य किए और इसी भावना से आर्यसमाज को बनाया। यदि इसमें भी स्वार्थी लोग घुस जायेंगे तो राजनैतिक संस्थाओं की बुरा हाल होगा।

(११) प्रतिनिधि सभा और आर्यविद्यालय गुरुकुल वृन्दावन सभी हमारे संघटन और प्रचार कार्यक्रम के अंग हैं। उनकी प्रगति ही प्रान्तीय आर्यों की कर्मठता का प्रतीक हो सकती है।

(१२) दुर्भाग्य से उच्च आर्य नेताओं का भी स्वर्गवास हो गया है इसमें किन्ही अवसर भ है। बहुत सोच समझकर मार्ग निकालने की जरूरत है। श्रद्धा का नितान्त अभाव है न आर्यसमाजियों में वह श्रद्धा अपने गुरु के लिये है जो सिक्खों व मुसलमानों में होती है। न ईश्वर में विश्वास है। और न अपने सिद्धान्तों में दृढ़ आस्था है जैसी कि होनी चाहिये। यह बात नहीं कि श्रद्धा और विश्वास किसी में है ही नहीं पर जिनमें है उनकी संख्या बहुत कम है और वह पूजा के योग्य हैं। परन्तु जन साधारण की अवस्था ठीक नहीं है। वर्तमान अवस्था में सुधार और प्रगति के लिये निम्न सुझावों पर विचार किया जाना चाहिये।

[अ] आर्य सभासद् उसी को बनाया जावे जिसने कम से कम ऋषि दयानन्द का जीवन पढ़ा हो।

[ब] अन्तरङ्ग सदस्य उसे बनाया जावे जिसने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा हो और सदाचारी हो तथा पदाधिकारी उन्हें बनाया जावे जो सदाचारी तथा भ्रष्टाचार से रहित हों और जिनका अपने मिशन में विश्वास हो। संस्कृत के विद्वानों के हाथ में आर्यसमाज का नेतृत्व रहना चाहिये।

स्वार्थी और दुराचारी लोगों को कोई पद कहीं न दिया जावे। हमें महान् कार्य करने हैं अतः हम सभी सैनिकों को अपने चरित्र की कसौटी पर कसना चाहिये। राष्ट्र को आदर्श व्यक्तियों की आवश्यकता है। आर्यसमाज ही उस आशा को पूर्ण कर सकता है।

चल पड़ी लहर……

चल पड़ी लहर कुछ आज भव्य भारत भू में,
नारी का सर्वांगीण रूप कुछ उन्मन है।
हो गई अजब विकसित होने की परिभाषा,
मिटने में ही हमने समझा परिवर्द्धन है॥

जग कहता है-ऐ मातृ शक्ति बलवान बनो,
युग कहता है—अविरल गति हे गतिवान बनो।
नैतिकता कहती सदाचार की शान बनो,
कहता आदर्श पुकार पुकार महान् बनो॥

पर जाने क्या हो गया आज की नारी को,
सपनों की दुनिया में सोई सी रहती है।
कुछ इधर-उधर की बातों में अनजानी सी,
अपने अपने में ही खोई सी रहती है।

यह नाना मम अधिकार हमें अब लेना है।
गौरवमय सद् व्यवहार हमें पा लेना है।
पर मत समझो केवल वैज्ञानिक दुनिया के—
बल पर अपना विस्तार हमें कर लेना है।

हे अजर अमर संस्कृति भारत की जिस बल पर,
अभिनव अतीत विरदावलि जिसकी है सुन्दर।
जो बनी आज भी स्तम्भ रूप इस जगती में,
हमको केवल चलना है उसके इंगित पर॥

जिनके प्राणों में गीत है, गीत में चेतनता,
जो मिट्टी से भी स्वर्ग बनाया करते हैं।
कर्तव्य भावना जिनके उर में बसी हुई,
अधिकार लोटते रहते उनके चरणों पर।

कुछ चकाचौंध सी भारत भू पर छाई है।
पश्चिम की बहती हवा यहाँ तक आई है।
हम बह न जाय इन प्रबल तरंगों में पड़कर,
खो दें न कहीं वह निधि, जो हमने पाई है॥

—सावित्री रस्तोगी, मेरठ

बाल-विनोद

भारत का गौरव संस्कृत

हमारी पैतृक सम्पत्तियों में सबसे बहुमूल्य रत्न हमारी संस्कृत भाषा है।

—महामना मालवीय जी

× × ×

मैं प्रत्येक बालक बालिका की शिक्षा अधूरी मानता हूँ यदि उसे संस्कृत नहीं आती। —महात्मा गांधी

× × ×

हमारी संस्कृति और सभ्यता का स्रोत संस्कृत से निकला है और अभी जारी है। —डा० राजेन्द्रप्रसाद

× × ×

संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं तथा संस्कृति के अभाव में भारत का आत्मस्वरूप स्थिर न रह सकेगा। अतः मैं संस्कृत का प्रचार हृदय से चाहता हूँ। संस्कृत में ही वह गूढ़ शक्ति निहित है जो कि भारत राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है। —जवाहरलाल नेहरू

—सुदेशकुमारी, कानपुर

मित्र की शिक्षायें

दूसरों का अपमान करना, दूसरों को छोटा समझना एक प्रकार का मानसिक रोग है।

दूसरों की गलतियों पर क्रोध करना छोटापन है और अफसोस करना बड़प्पन है।

संसार में सारे जीवन की भलाई एक बुराई से मिट जाती है।

जो केवल आशाओं के सहारे जीना चाहता है वह थोड़े दिनों में ही मिट जाता है।

अपने शत्रुओं के लिए अपने मन में क्रोध की भट्टी अधिक न जलाओ। कहीं ऐसा न हो कि उस भट्टी में तुम ही जल जाओ।

जो सत्य बोलता है उसमें कोई भी बुराई नहीं आ सकती सत्य ऐसी आग है जिसमें संसार की सारी बुराइयां जल जाती हैं।

—सत्येन्द्र, नरसिंहपुर

प्रतिज्ञा

आंधी या तूफान में,
मरघट या श्मशान में,
सागर या बाढ़ में,
कभी न डरने पाएँ हम।
पत्थर की चट्टान से,
सूरज के अभिमान से,
अग्निमय उल्कापात से,
कभी न डरने पाएँ हम।
चारों ओर अंधेरा हो,
कोसों दूर बसेरा हो,
आशा का बस दीप जलाकर,
आगे बढ़ते जाएँ हम॥

—इन्द्रराज, लखनऊ

पहेलियाँ

चार अलक चार बलक
चार सुरमेदानी
रंगीन चिड़िया उड़ गई
रह गई कहानी

× × ×

दो बहनों का एक नाम
एक बड़ी एक छोटी
एक मसाले में चलती है
एक थाल में होती

× × ×

दिन को सोए रात को जागे
देख उसको चोर भागे

—राजीव, कलकत्ता

चुटकुले

शिक्षक विद्यार्थी से—चावल कहां होता है और अपने यहां कमी होने पर कहां से मंगाया जाता है।

विद्यार्थी—जी, चावल बनिये की दुकान पर मिलता है अपने यहां कमी होने पर मां पड़ोसिन से मांग लाती है।

× × ×

बड़े बूढ़ों का कथन है कि प्रत्येक काम सीखा जाय तो तभी तक जाकर सीखा जाय अन्यथा सीखा ही न जाय बच्चा ने कहा "क्या तैरना भी?" किसी ने पूछा।

—हर्षवर्द्धन

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उद्देश्यों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ....

आयु .... कक्षा ....

पूरा पता ....

....

अपनी विशेष रुचियां ....

हे मानव तू भी······ ····

(पृष्ठ २ का शेष)

होता है अथवा यूं कहिए कि उसके इन वचनों में हमारे वेदान्त की प्रतिध्वनि ही गूंज रही है। तात्पर्य यह हम सदा स्वस्वरूप का, ईश्वरीय स्वरूप का सतत चिन्तन करते रहें—इसी में कल्याण है। इस सतत चिन्तन से, निदिध्यास से अज्ञान के पटल स्वयं हट जाते हैं और आत्मसाक्षात्कार हो जाता है।

इसीलिए उपनिषदें कहती हैं—

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः, श्रोतव्यः, मन्तव्य, निदिध्यासितव्यश्च।"

आत्म साक्षात्कार साधने के लिए निरन्तर श्रवण, मनन और निदिध्यासन करना चाहिए। इस प्रकार जब हम अपने में ही प्रवेश करके आत्मा को अपने तथा बाह्य जगत् में देखने का निष्ठापूर्वक अभ्यास करेंगे तब हमारी "तद्बुद्धि, तन्निष्ठ, तत्परायण' ऐसी अवस्था होगी। तभी आत्मा की कृपा होकर वह हमको यथार्थ स्वरूप प्रकट करेगा, हमको दर्शन देगा। अन्यथा यह कार्य केवल बड़ा कठिन ही नहीं, केवल कष्टसाध्य ही नहीं, अपितु असाध्य भी हो सकता है।

और एक बात

आत्म साक्षात्कार के लिए विशुद्ध सात्त्विक जीवन, निर्मल चरित्र की बड़ी आवश्यकता है। आत्म-साक्षात्कार के लिए व्याकुल भक्ति, सतत आत्मानुसन्धान निःस्वार्थ कर्म आवश्यक हैं। हृदयशुद्धि के बिना कभी भी आत्म दर्शन नहीं होगा। जब तक मनुष्य दुष्ट अथवा शास्त्र निषिद्ध कर्मों से निवृत्त नहीं होता, जब तक उसके इन्द्रियों की चकचौंधे बन्द नहीं होती, जब तक मन की विषय वासनाएं नहीं हटती, जब तक उसका चित्त शान्त और एकाग्र नहीं होता तब तक उसको आत्मदर्शन कहाँ! यह कठोपनिषद् का सार है।

आत्मा के सम्यक् ज्ञान के लिए, यथार्थ ज्ञान होने के लिए, मन के गुह्य अन्तस्तल में जन्मजन्मान्तर का जो वासनामल जमा पड़ा है, उसको साफ धोना पड़ेगा। जिस-जिस प्रकार वे दुष्ट वासनाएँ लुप्त होंगी। अपना अन्तःकरण जिस जिस प्रकार शुद्ध होता जायगा, उस उस प्रकार हम "ज्ञानप्रसाद" के लिए अधिक योग्य होकर हमारी प्रज्ञा तरल और विशुद्ध होगी। इसी निर्मल प्रज्ञा द्वारा ही हमको आत्म साक्षात्कार होगा और तभी "हे मानव तू कौन है" इसका [illegible] सन्तोषजनक उत्तर मिलेगा। 'मैं कौन हूँ' इस प्रश्न से ही धर्मजीवन का प्रारम्भ होता है और मैं "आत्म-स्वरूप हूँ" इस उत्तर में उसकी परिसमाप्ति और [illegible] रहती है। इसलिए आत्मज्ञान ही परम पुरुषार्थ है। आत्म-साक्षात्कार क्या है। यह तो मनुष्य जीवन की सर्वोच्च अवस्था है। यही मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ संपत्ति है। यही उसका अन्तिम ध्येय है। यही उसका सर्वोत्तम आनन्द है।

एषास्य परमागतिः, एषास्य परमा सम्पद्, एषोऽस्य परमो लोकः—

यही उसकी परम अथवा चरम गति है। यही उसकी परमास्पद है, परम चरम कोटि का ऐश्वर्य है। यही उसका परम साध्य चरम साध्य लोक है यह ऋषियों ने इन छोटे-छोटे वाक्यों में आत्मतत्त्व का सार गागर में सागर की भाँति भरा है।

रचनात्मक कार्य—

सार्वदेशिक सभा का आदर्श पुस्तकालय

[ले०—श्री आचार्य विश्वश्रवा पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली]

मेरा कई वर्ष से यह विचार था कि सार्वदेशिक सभा देहली वैदिक यन्त्रालय अज मेर के पुस्तकालयों को आदर्श पुस्तकालय बनाया जावे। इस समय देश भर में एक भी पुस्तकालय ऐसा नहीं है जहां ऋषि के सब ग्रन्थों के सब संस्करण एक स्थान पर विद्यमान हो जहां बैठकर कोई इस दृष्टि से कार्य कर सके इस उपेक्षा का परि णाम यह हुआ कि ऋषि के आरम्भ काल में प्रकाशित ग्रन्थ कुछ ऐसे हैं जो अब कहीं भी नहीं मिलते। इस समय वर्तमान ग्रन्थों के सब संस्करण कहीं न कहीं अवश्य मिल जाते हैं। उनका संग्रह अभी कर लेना चाहिये। इस वर्ष सार्वदे शिक सभा पुस्तकालय विभाग का दायित्व मुझ पर आ पड़ा है। मेरी उत्कट इच्छा है कि वर्ष के अन्तर्गत मैं सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की ठीक व्यवस्था कर दूं और यह पुस्तकालय ऐसा बन जावे जिससे आर्य विद्वान् यहां बैठकर कार्य कर सकें और रिसर्च का कार्य करने वाले स्कालर यहां बैठकर अपना थीसिज तैयार करें। यह पुस्तकालय दोनों प्रकार का पुस्तकालय हो। एक असुविधा सम्मति हो रही है। वह यह कि सार्वदेशिक सभा के तीन विशाल भवन देहली में है पर वे सब पहले से किराये पर उठ हुए हैं। कोई ऐसा स्थान कार्यालय के अतिरिक्त नहीं है जहां विशाल पुस्तकालय भी रहे और आर्य विद्वानों के ठहरने की व्यवस्था भी वहां हो। सभा की ओर से भवनों का किरायेदारों से खाली कराने का यत्न हो रहा है। आशा है यह काम शीघ्र हो जायगा।

आर्यजगत् से साग्रह यह विशेष प्रार्थना है कि ऋषि के ग्रन्थों के पुराने संस्करण विशेष कर ऋषि के सब ग्रन्थों के तथा वेदभाष्य के प्रथम संस्करण जहां कहीं भी विद्यमान हो सार्वदेशिक सभा को भेज दवें। यदि कोई महानुभाव बदले में नवीन संस्करण चाहेंगे तो सभा भेज देगी। इसमें देरी नहीं हो इस सूचना के निकलते ही जहां कहीं पुराने संस्करण ऋषि के ग्रन्थों के विद्यमान हों सार्वदेशिक सभा को सूचित कर दें जिससे वे सब सुरक्षित हो जावें।

जो महानुभाव अपने ग्रन्थों की रक्षा न कर सकते हो और संस्कृत के उच्चकोटि के ग्रंथ उनके घर में विद्यमान हो वे भी सार्वदेशिक सभा को भेज कर अपने ग्रंथ सुरक्षित करलें। और जो महानुभाव अपने नाम से सार्वदेशिक सभा में ग्रंथ भेंट करना चाहें वे अपनी धनराशि सूचित कर दें उनके नाम की मुहर के साथ उस मूल्य के ग्रन्थ उनकी स्मृति रूप में सार्वदेशिक पुस्तकालय में रखे जा सकेंगे।

संस्कार—

—कुटमलपुर (सहारनपुर) में श्री तिलकसिंह जी व श्री सुशीलादेवी जी का शुभ विवाह २८ जून को वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ।

सौंधरा में श्री खेमराजसिंह जी की सुपुत्री श्री ज्ञानदेवी का विवाह वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। २) समाज को दान में प्राप्त हुए।

—एरना (कटरा) इटावा में श्री अमरचन्द्र जी व श्री कु० सरलादेवी जी का शुभ विवाह ६ जुलाई को वैदिक रीति से आचार्य ज्योतिस्वरूप जी आर्य गुरुकुल एटा द्वारा सम्पन्न कराया गया।

—मालवरगंज (आजमगढ़) में श्री विश्वनाथप्रसाद जी श्रीवास्तव व कुमारी मालती श्रीवास्तव का शुभ-विवाह १८ जून को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—औरैया (इटावा) में श्री सुखदेवी जी का पुनर्विवाह श्री रजनलाल जी बी०ए० बी० टी० के साथ १२ जून को वैदिक रीति से श्री स्वामी पूर्णानन्द जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

—सोंधरा में श्री आर्येन्द्रप्रकाश जी बी० ए० व श्री अहिल्यादेवी जी का विवाह वैदिक रीति से १६ जून को सम्पन्न हुआ।

सूचनायें

१— गुरुकुल विद्यालय सिरसागंज में प्राचीन व्याकरण से राजकीय संस्कृत विश्वविद्यालय की मध्यमा शास्त्री आदि परीक्षाओं के दिलाने का प्रबन्ध किया गया है प्राचीन व्याकरण पढ़ने वाले छात्र शीघ्र प्रविष्ट होकर लाभ उठावें।'

मन्त्री
आर्यसमाज सिरसागंज
गुरुकुल सिरसागंज

२—जिला अलीगढ़ की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपने यहां प० किशोरीलाल मैजिक लालटेन प्रचारक मथुरा को प्रचारार्थ बुलावें और वैदिक धर्म का प्रचार करावें तथा निम्न पते पर स्वीकारी लें। और अधिक से अधिक धन वेद प्रचार में दें। —महेशचन्द्र शर्मा आर्य पथिक उप मन्त्री—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा हरदुआगंज (अलीगढ़)

भारत में रेडियो

[लेखक—श्री भारतीय एम० ए० देहली]

१—देश भर में आकाशवाणी के २८ केन्द्र और ४९ ट्रान्समीटर हैं। इनसे भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं और वे देश भर में दो तिहाई भाग में सुने जा सकते हैं।

२—३ अक्तूबर १९५७ से विविध भारती नामक एक मनोरञ्जक कार्यक्रम आकाशवाणी से प्रसारित किया जाने लगा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत रोज सरल संगीत झांकियाँ प्रहसन आदि सुनवाए जाते हैं। यह कार्यक्रम इतवार और छुट्टी के दिनों को छोड़कर बाकी दिनों को छोड़कर बाकी दिनों में ६ घण्टा ४५ मिनट तक प्रसारित किया जाता है। इतवार या छुट्टियों के दिन यह कार्यक्रम ६ घण्टा ६० मिनट तक प्रसारित किया जाता है। इसमें रोज डेढ़ घण्टे का कर्नाटक संगीत का कार्यक्रम भी शामिल है।

३—आकाशवाणी देश के लिए १६ प्रमुख भाषाओं ६८ बोलियों और २९ आदिम जातियों की बोलियों में कार्यक्रम प्रसारित करता है।

४—देश से देश के लिए रोज ६ घन्टे ३६ मिनट तक भारत की १६ प्रमुख भाषाओं में ६७ समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं और विदेशों के लिए १६ भाषाओं में २० समाचार बुलेटिन प्रसारित किये जाते हैं यह कार्यक्रम ४ घन्टे ५४ मिनट का होता है।

५—गांवों में पंचायती रेडियो लगाने में जो खर्च बैठता है उसका ५० प्रतिशत खर्च आकाश वाणी विभाग राज्य सरकारों को देता है। यह सहायता गांवों में रेडियो का प्रचार करने के उद्देश्य से दी जाती है।

६—आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत अब तक ५४ नाटक १५ गीतिनाट्य और २० रूपक प्रसारित किये जा चुके हैं। इसमें हर बुधवार को भाषण का और शनिवार को संगीत का कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। कुछ नाटक या रूपकों का प्रादेशिक भाषाओं में रेडियो रूपान्तर किया जाता है और उन्हें विभिन्न केन्द्रों से एक साथ प्रसारित किया जाता है।

७—आकाशवाणी के पास एक अपना वाद्यवृन्द है और इसमें २७ प्रकार के—जैसे सितार सरोद बांसुरी, तबला, पखावज, बेला आदि—बाजे शामिल हैं। आकाशवाणी वाद्यवृन्द में नये-नये प्रयोग कर रहा है और इसने कालिदास के शाकुन्तलम् और मेघदूत आदि काव्यों के आधार पर वाद्यवृन्द की रचना की है।

८—आकाशवाणी साहित्य संगीत और नाटक आदि के विकास के लिए हर साल संगीत सम्मेलन कवि सम्मेलन साहित्य समारोह सरदार पटेल स्मारक भाषणमाला विश्व विद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता तथा रेडियो सप्ताह आदि आयोजित करता है। देश के विभिन्न भागों में होने वाले संगीत सम्मेलनों का कार्यक्रम भी रेडियो से प्रसारित किया जाता है।

आवश्यकता

गुरुकुल महाविद्यालय मढ़िया छपरा (सारन) के लिये एक सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है जिन्हें एम० ए० एवं संस्कृत में किसी एक विषय में आचार्य होना अनिवार्य है। आर्य विचारकों को प्राथमिकता दी जावेगी। आवेदन पत्र न्यूनतम वेतन जो ग्राह्य हो उल्लिखित करते हुए २५ अगस्त तक भेजें। —मन्त्री

आवश्यकता

आर्यसमाज अमरोहा की संस्कृत पाठशाला के लिए एक शास्त्री अध्यापक की आवश्यकता है जो कम से कम मध्यमा व्याकरण से उत्तीर्ण हो। हाईस्कूल या अंग्रेजी सहित मध्यमा पास को विशेषता दी जावेगी। प्रार्थी निम्न पते पर प्रार्थना पत्र शीघ्र भेजने की कृपा करें।

पता—स्वामी विवेकानन्द सरस्वती द्वारा सतीशचन्द्र शास्त्री संरक्षक मोहल्ला प्रेमनगर बरेली

लक्ष्मणधारा



इसकी चन्द बूँदें लेने से
हैजा, कै, दस्त, पेटदर्द, स्त्री-बिचकाना,
पचिस, खट्टी-डकारें, बदहज़मी, पेट फूलना, कफ़,
खाँसी, जुकाम आदि दूर होते हैं और लगाने से चोट
मोच सूजन, फोड़ा-फुन्सी, बातदर्द, सिरदर्द, कानदर्द
दाँतदर्द, भिड़ मक्खी बा रे के काटे के दर्द दूर करने में संसार
की अनुपम महौषधि। हर जगह मिलता है।

कीमत बड़ी शीशी २।।), छोटी शीशी ।।।)

रूप विलास कम्पनी, कानपुर

हमारे एजेंट—

१—मनिक ब्रदर्स नयागंज कानपुर २—लाला दुर्गाप्रसाद बलदेव प्रसाद, जनरलगंज, कानपुर, ३—मातादयाल पसारी, अमीनाबाद, लखनऊ, ४—शान्तीप्रसाद महावीरप्रसाद, मैनपुरी, ५—लाल फार्मेसी, मुगलसराय, ६—गुप्ता आयुर्वेदिक फार्मेसी गोदौलिया, बनारस, ७—मित्र सरकार, इलाहाबाद, ८—बल्लभदास कन्हैयालाल, खीरी लखीमपुर, ९—लक्ष्मी नारायण अनिलकुमार, हरदोई, १०—मन्नीलाल भगवानदास, बाँदा, ११—बुद्धामीलाल रामशंकर, आयौन १२—जगन्नाथ सिंह पन्सारी, १३—रमलाल पसारी सदर बाजार इटावा १४—गुप्ता जनरल स्टोर्स कायमगंज (फर्रुखाबाद)

दैनिक स्वाध्याय के ग्रन्थ

(१) ऋग्वेद सुबोध भाष्य—मधुच्छन्दा, मेधातिथी, शुनःशेप कण्व, परागौतम, हिरण्यगर्भ, नारायण, बृहस्पति, विश्वकर्मा, सप्त ऋषि व्यास आदि, १८ ऋषियों के मन्त्रों का सुबोध भाष्य मूल्य १६) डाक व्यय ३॥)

ऋग्वेद का सप्तम मण्डल (वसिष्ठ ऋषि)—सुबोध भाष्य। मूल्य ७) डाक-व्यय १)

यजुर्वेद सुबोध भाष्य अध्याय १—मूल्य १॥), अध्याय ३० मू० २) अध्याय ३६ मूल्य ॥) सबका डाक व्यय १)

अथर्ववेद सुबोध भाष्य—(सम्पूर्ण १८ काण्ड) मूल्य २६) डाक-व्यय ४)

उपनिषद् भाष्य—ईश २) केन ॥) कठ १॥), प्रश्न १॥), मुण्डक १॥), माण्डूक्य ॥) ऐतरेय ॥।) सबका डाक व्यय २।)

श्रीमद्भगवद्गीता पुरुषार्थ बोधिनी टीका—मूल्य १२॥) डाकखर्च २)

वैदिक व्याख्यान—[१] वेद में आदर्श पुरुष, [२] वैदिक अर्थ-व्यवस्था [३] स्वराज्य [४] सौ वर्षों की आयु, [५] व्यक्तिवाद और समाजवाद [६] शांति शांति शांति; [७] राष्ट्रीय उन्नति, [८] सप्त व्याहृति, [९] वैदिक राष्ट्रनीति, [१०] वैदिक राष्ट्र शासन [११] वेद का अध्ययन अध्यापन, [१२] भागवत में वेद दर्शन [१३] आपत्ति का राज्य शासन, [१४] त्रैत, द्वैत अद्वैत, [१५] क्या विश्व मिथ्या है?, [१६] वेदों का संरक्षण ऋषियों ने कैसे किया?, [१७] आप वेद रक्षण कैसा कर रहे हैं? [१८] देवत्व प्राप्ति का अनुष्ठान, [१९] जनता का हित करने का कर्तव्य, [२०] मानव की सार्थकता [२१] राष्ट्र निर्माण, [२२] मानव की श्रेष्ठ शक्ति, [२३] वेदोक्त विविध प्रकार के शासन। प्रत्येक का मूल्य ।=) डाक व्यय पृथक्। आगे व्याख्यान छप रहे हैं।

ये ग्रन्थ सब पुस्तक विक्रेताओं के पास मिलते हैं।

पता—स्वाध्याय मण्डल किल्ला पारडी, जिला सूरत

आर्य हवन सामग्री

पर

❀ शुभ सम्मति ❀

श्रीमान् पं० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश लिखते हैं :—

श्री वेदपथिक धर्मवीर आर्य भंडाधारी अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्माणशाला सरस्य खेला देहली ६

सप्रेम नमस्ते,

आपने जो सामग्री का पैकिट दिया था, उसका मैंने अपने पौत्र के अन्नप्राशन के दिन, हवन में प्रयोग किया। बड़ी सुखद और स्वास्थ्यकर सुगन्धि थी। इसमें आपने बड़े सुगन्ध और स्वास्थ्यप्रद पदार्थों को सम्मिलित किया है। आशा है यज्ञ प्रेमी जनता आपकी सामग्री को पसन्द करेगी।

सुखद, सुगन्ध स्वास्थ्यकर, सामग्री का सभी प्रयोग करें।
वातावरण विशुद्ध बनावें, त्रिविध ताप कट जीवन सुधरें।

—हरिशङ्कर शर्मा

वर्षाऋतु और—

आपका स्वास्थ्य!

★

वर्षाऋतु में आप अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमारी निम्नलिखित औषधियाँ सेवन कीजिए।

१—गुरुकुल कांगड़ी चाय—स्फूर्ति प्रदान करती है।

२—लवण भास्कर चूर्ण—जठराग्नि प्रदीप्त करता है।

३—मलेरिया वटी—मलेरिया ज्वर में प्रयोग करें।

४—रक्त शोधक—फोड़े फुन्सी व खुजली दूर करता है।

५—[illegible]—[illegible] विकार में उत्तम है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

ईसाई प्रचार विरोध—

रचनात्मक ढंग से प्रचार करना होगा

[श्री पं० रामचन्द्र शर्मा आर्य भजनोपदेशक आर्य समाज सतना]

जिन जातियों में धार्मिक प्रचार कार्य का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है। केवल लेक्चरों अथवा पुस्तिकाओं द्वारा कार्य सफल नहीं हो सकता। हमें इस समस्या का रचनात्मक ढंग से हल करना होगा और वह ढंग है उन लोगों से निकट सम्पर्क स्थापित करना। लेखक ने उस क्षेत्र के अनुभवों और कठिनाइयों का उल्लेख किया है। आशा है सम्बन्धित अधिकारी और नेता इस दिशा में गम्भीरता पूर्वक विचार कर नीति निर्धारण करेंगे। —सम्पादक

दिनांक १७ मई १९५१ के आर्य मित्र में, श्री पं० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज टेहरी (भूतपूर्व प्रधान सार्वदेशिक सभा) का मैंने एक लेख 'आदिवासी और आर्यसमाज' का पढ़ा था। जिसमें पंडितजी ने यह भी लिखा था कि सरकार की ओर से बौद्धिक विकास सम्बन्धी आश्रम तथा पाठशालाएं बहुत सी खुली हैं। परन्तु आत्म विकास के लिए कोई प्रबन्ध सरकार नहीं कर सकती। बात बिल्कुल सत्य है। आत्म विकास के लिए उनको धार्मिक ज्ञान अनिवार्य है। क्योंकि मैं इन क्षेत्रों में लगभग सात वर्ष से प्रचार कार्य करता ही रहता हूं। इनके रहन सहन को जब मैं देखता हूं तो मुझको बड़ा तरस आता है। यह बिचारे इतने सीधे और ईमानदार होते हैं कि चाहे जो कोई इन्हें बहका ले। बीहड़ जंगलों में अर्थात् पहाड़ की घाटियों में मैंने देखा मामूली लोग आकर कोई देवता के रूप में कोई भूत उतारने के रूप में ज्योतिषी बनकर और कोई बाबा बनकर इनको ठग ले जाते हैं। मैंने कई एक स्थानों में इन्हें सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को बांट पैसा में दिया और यह बतलाया तुम्हारे गांव में पढ़ा लिखा जो लोग हो उनसे बराबर पढ़वा कर सुना करो। यह ऐसी दवा है कि इससे ओझा गुनिया ज्योतिषी मदुआ बाबा ईसाई बाबा तथा भूत प्रेत वगैरह (बन बटी) सब भाग जायेंगे। किन्हों ने ऐसा ही किया। जब मैं दुबारा गया तो बड़े आदर के साथ मुझे निमन्त्रण देने लगे। मैंने एक बात उनको और बतला दिया था कि जो तुम आर्यों को इस पुस्तक से विपरीत बतलावे उसको समझ लीजिए हमको बहकाने के लिए आया है। मैं इनके यहां जब प्रचार करने के लिए जाता था वह प्रेम से सत्कार करते थे और बार बार यही अभिलाषा बनी रहती है कि हमारे यहाँ पंडित जी आवें क्योंकि इन लोगों से खाना पीना हमको कुछ था ही नहीं। पैदल चलकर प्रचार करता था। परन्तु कोई प्रचारक का गाड़ा निराधार कब तक चल सकती है। कुछ दिन मैंने आदिवासी सब लोगों से प्रचार किया। हमारे साथ में उस क्षेत्र के प्रचारक इन्स्पेक्टर इत्यादि रहे थे। जिस समय कोई धार्मिक विषयों का प्रचार करना आरम्भ कर देता था वहाँ लोगों का कान खड़े हो जाता था। और मुझको कहते थे कि यह आर्यसमाज का प्रचार करते हैं। परन्तु कुछ जब प्रचारक तथा इन्स्पेक्टर जो उधर आदिवासियों के क्षेत्र में रहते थे। वह चाहते थे कि वैदिक धर्म का अधिक से अधिक प्रचार हो, और इसी प्रकार से जनता आदिवासी जनता का कल्याण होगा। हमारा तथा इन्स्पेक्टर प्रचारक का साथ अधिक होने से विलक्षण प्रेम परस्पर हो गया था। इस क्षेत्र में जो अन्य पन्थी प्रचारक थे वह हमारा प्रचार नहीं चाहते थे क्योंकि वह लोग ग्राम वासियों का उल्टा सुल्टा पढ़ाकर अपना मतलब सिद्ध करते थे। इससे सिद्ध होता है कि प्रचार कार्य बल से न होकर आर्यसमाज ही प्रचार कर सकता है। जब मैंने उपरोक्त बतलाया कि हमारे प्रचार में लोग नाक-भौं सिकोड़ने लग जाते थे और कहते थे कि इनसे बड़े आफिसर प्रसन्न हैं जो। परन्तु याद रहे जो वैदिक धर्म का अनुयायी होगा वह सत्य बातों को कहने से कब चूक सकता है।

इस क्षेत्र में धर्म की व्यवस्था मनमानी ही रहती है। बालकों को जैसी शिक्षा दी जानी चाहिए वैसी नहीं होती है। कुछ ग्रामों में मैंने देखा कि अन्य पिकाएं ईसाई जमात की पढ़ाने के लिए आती थीं। इन लोगों को बचाने के लिए ग्रामों में सत्यार्थप्रकाश बांटा मैंने और वन अधिकारियों से मिलकर प्रचार कार्य कराया। परन्तु एक आर्यसमाजी की कहां तक कोई सुनता है। कई स्थानों पर व्यवस्थापिकाएं अपने मन का प्रोग्राम चलाने लग जाती थीं। कोई सनातनी बाबा (गुसांई) आकर कहने लग जाता था कि हवन करके सामग्री तथा घी का नुकसान करना है। हमारे साथी उन लोगों से ऐसी बात करते थे। उनको समुचित उत्तर पाकर चुप हो जाते थे। जब कभी सम्मेलनों में हमारा भजन उपदेश होने लगता था उस समय जब महर्षि दयानन्द का जय बोलता था तो उस समय कुछ गुसांई लोग जय पर ऐतराज कर बैठते थे। इन लोगों से कहीं कहीं वाद विवाद भी हो जाता था। हमारे कहने का आशय कि दूसरे लोग आर्यसमाज को अपनी स्वार्थपरता में आकर अच्छी निगाह से नहीं देखना चाहते। जहां आर्यसमाज के उपदेशक तथा प्रचारक प्रचार करने के लिए जाता है। उसको स्वयं अच्छा अपना क्षेत्र तैयार करना पड़ता है। तब वह प्रचार में सफल होता है।

दूसरी ओर आदिवासियों की यह दशा है कि भूख के कारण आदिवासी पते क्योंकि घर से सब मिल कमाते हैं। अर्थात् जंगलों की लकड़ी बेचकर ... सा मात्र ... के ... काम का ... बेगार ले ... भर ... पता ... यह बहुत ... । इस ... इन लोगों की ... से निकलकर ... पर ... तथा ... अपना हितैषी ... उससे बहुत प्रेम करते हैं। ... प्रेम से सुनते हैं। परन्तु इन लोगों के बीच में कोई उपदेशक प्रचारक जाना ही नहीं पसन्द करता। आजकल ... पहाड़ी ... राहों को कब ... पसन्द करते हैं। इन लोगों का ... की जनता चाहती ... सुनना ... ध्यान दे ... । पैदल चलना ... पहाड़ ... कि उन ... सारी ... । कहा कहां ... कि ... इन ... में ... कि ... के बीच क्या ... किया जाय? ... हमारी बातों को ... करेंगे? वहां ... बिल्कुल ... है। इस तरह ... देते रहते हैं। जैसी लोग ... ऐसी बात नहीं है। ... आपका जाना ... कैसे होगा वहां ... आप यह ... जनक ... पर्वतीय ... किसी ... रहते हैं। इन बातों का इस ... सोचने लगे ... तो ... हो सकते हैं? कभी नहीं।

जो सज्जन कुछ कार्य करने के योग्य हैं। उनको कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता। आजकल हमारे आर्यजगत् में उन्हीं की प्रतिष्ठा है जो भजनोपदेशक जोर से भजन तथा उपदेशक तड़कते हुए व्याख्यान सुना दें। चाहे वैदिक धर्म के सिद्धान्त में फिट पड़े या न पड़े। इसीलिए आर्यसमाज की गति जैसी होनी चाहिए वैसी नहीं चल रही है। हम अपने मंचों से दूसरों का दोष पीटते हैं चाहे वह सब या समाज आर्यसमाज का भूलकर नाम न लेता हो। इसका परिणाम क्या निकला? वह एक घण्टा व्याख्यान चार सहस्र के बीच में दिया तो समझ लीजिए कि चार सहस्र घण्टा आर्यसमाज के व्यर्थ से नष्ट गया यहीं तक नहीं जलसों का ... स्वयं ... लोग अपना स्वीकृति देकर नहीं पहुंचते हैं एक टेलीग्राम कर दिया कि मैं अस्वस्थ हूं नहीं आ सकता और दूसरी तरफ ... पाकर ... भजन करने जाते हैं। यह त्यागी बनने का लक्षण है। आर्य समाज के अधिकारियों की भी यही दशा है। उपरोक्त सज्जनों के बिना उत्सव फीका है। यदि गम्भीरता से सोचें ... में प्रचार कार्य करना चाहें ... से धन प्राप्त कर सकते हैं परिवार के लिए निर्वाह मात्र कुछ तो अवश्य ही चाहिए। इसलिए कि भोजन तथा पुस्तक तथा ... को ... अनिवार्य है। इसके साथ ही साथ जो त्यागी ... हैं वह घर छोड़ना नहीं चाहते ... शेष उपदेशक व प्रचारक की ऐसी स्थिति भी नहीं है। किस तरह से जनता तथा पर्वतीय जनता में प्रचार हो?

आर्य भाइयों के समक्ष मेरा यही सुझाव है कि उपर्युक्त बातों पर ध्यान देते हुए ... वरन् कुछ धन आदिवासी प्रचार ... में ... । ... कुछ ... के लिए ... सम्भव ... में ... होने हैं। उन ... पश्चात ... हो ... है। हर एक आर्यसमाज ... समझकर ... कर। ... था ... में ... समय भी ...

(शेष पृष्ठ १६ पर)

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए ६०

श्रावण १८, शक १८८१
(९ अगस्त १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : ४९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

ब्रह्मकुमारी संस्था ओम मण्डली का दूसरा रूप है उसकी प्रवृत्तियां समाज के लिए अहितकर है

आर्यसमाज विनयनगर की यह सभा ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय संस्था की गतिविधि की घोर निन्दा की दृष्टि से देखती है और इसको पुरानी सिन्ध की ओम् मण्डली का ही दूसरा रूप मानती है। इनकी गतिविधियों से समाज में नैतिक पतन को प्रोत्साहन मिलने का भय है। इसी के कारण लाड़ टी०एल० वास्वानी को इनके विरुद्ध आन्दोलन कर जेल जाने के लिए विवश होना पड़ा था तथा उस समय सिन्ध हैदराबाद की सरकार के दो हिन्दू मन्त्रियों को भी त्यागपत्र देना पड़ा। इस सभा की दृष्टि में ब्रह्मकुमारियों की इस प्रकार की गतिविधियों को राष्ट्र हित की दृष्टि से रोकना प्रत्येक व्यक्ति का नितान्त आवश्यक कर्त्तव्य है।

यह सभा आर्यसमाज दीवानहाल के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी द्वारा उठाये गये सम्बन्धित आन्दोलन से पूर्ण सहमति प्रकट करती है, और उन ब्रह्मकुमारियों तथा ब्रह्मकुमारों को जिन्होंने हमारे आदरणीय प्रधान जी के विरुद्ध धमकी भरे पत्र लिखे हैं तथा समाचार पत्रों में प्रधान जी के विरुद्ध अपशब्दों का प्रयोग किया है घृणा की दृष्टि से देखती हुई खुले शब्दों में आर्य हिन्दू मात्र का बतला देना अपना कर्त्तव्य समझती है कि दादा लेखराज द्वारा चलाया जा रहा ब्रह्मकुमारी आंदोलन वैवाहिक जीवन का विशृंखलित कर देने वाला तथा गीता की आड़ में दादा लेखराज को ईश्वर का अवतार बताकर धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को बहकाने का एक भारी पाखण्ड है। हमारे पास इस प्रकार के अनेक प्रमाण उपस्थित हैं कि इन्हीं ब्रह्मकुमारियों के आडम्बरपूर्ण प्रचार से प्रभावित होकर कई अच्छे घरों की देवियां अपने बाल बच्चों तथा पतियों को छोड़कर ब्रह्मकुमारियों में सम्मिलित हो गईं, अत इस प्रकार के पाखण्ड को उखाड़ देना वेदानुगामी आर्य हिन्दू का नैतिक कर्त्तव्य है।

—रोशनलाल मन्त्री
आर्यसमाज विनयनगर नई दिल्ली

बाबूराम शास्त्री द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, २ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

बांसवाडा (राजस्थान) में ईसाई प्रचार निरोध केन्द्र की स्थापना

सार्वदेशिक सभा के उप मन्त्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महा मन्त्री श्री प० भगवती प्रसाद जी, कार्य कर्त्ता प्रधान श्रीयुत डा० राजबहादुर जी तथा शुद्धि आन्दोलन के प्रसिद्ध कार्य कर्त्ता श्री प० देवप्रकाश जी आर्य बास वाड़ा में पधारे इस क्षेत्र में ईसाई मिशन की भयंकर गतिविधियों का नि[रीक्ष]ण किया तथा उसकी तत्काल रोक[था]म के लिये सार्वदेशिक सभा दिल्ली के निश्चय अनुसार आ०प्र०सभा राजस्थान की ओर से ईसाई प्रचार निरोध केन्द्र (दयानन्द सेवा आश्रम) की स्थापना कर दी है तथा इस केन्द्र के अन्तर्गत भील छात्रावास प्रचार मण्डल शुद्धि कार्य साहित्य एवं औषधि वितरण कार्य की व्यवस्था के लिये ८ हजार रुपया वार्षिक व्यय करने का निश्चय किया गया। बांसवाड़ा नगर में एक सार्वजनिक सभा में उपर्युक्त तीनों महानुभावों के ओजस्वी भाषण हुए जिससे जनता अत्यधिक प्रभावित हुई।

निर्वाचन—

आर्यसमाज आजूमई मैनपुरी
श्री हरवीरसिंह चौहान अध्यक्ष
श्री बाबूराम गुप्त उपाध्यक्ष
श्री रामप्रकाश शर्मा मन्त्री
श्री महेन्द्रप्रकाश कुलश्रेष्ठ कोषाध्यक्ष व पुस्तकाध्यक्ष
श्री ओ३म्प्रकाश गुप्त धर्म प्रचार मन्त्री

गुरुकुल अयोध्या

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या का नव शिक्षा सत्र प्रारम्भ हो गया है। छात्रों को प्रवेश कराने वाले सज्जन शीघ्रता करें।

गुरुकुल के प्रचारक श्री स्वामी केशवानन्द जी तथा श्री स्वामी विद्यानन्द जी धन संग्रहार्थ सम्प्रति कलकत्ता गये हुये हैं। वे अन्य स्थानों पर भी जायेंगे। देश के उदार धनी मानी व्यक्तियों को चाहिये कि अधिकाधिक दान देकर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

—मुख्याधिष्ठाता

हैदराबाद में आर्यसमाज की प्रगति

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद के तत्वावधान में सभा का पुरोहित दल जो लगभग एक मास से कोथागुडा जि० खम्मम (आन्ध्र प्रदेश) के समीपस्थ ग्रामों में प्रचार करता था। प्रचार से प्रभावित होकर दिनांक २७ अप्रैल ५९ को पचास कुटुम्ब जिसके डेढ़ सौ सदस्य हैं नेहरूनगर ता० पाल वंचा में शुद्ध हुए।

२—दि० १२.५.५९ को लीला भगवती महिला की शुद्धि कर एक महा राष्ट्रीय नवयुवक श्री जगन्नाथ मिश्र कर औरंगाबाद निवासी के साथ प० कालीचरण जी के पौरोहित्य में विवाह सम्पन्न कराया गया। शुद्धि पश्चात महिला का नाम सुशीला रखा गया।

३—इसी प्रकार प० भद्रदेव जी सभा के सहयोगी उपदेशक के प्रेरणा एवं प्रचार से चिन्नाकोडपुगल(पिटलम) जि० निज़ामाबाद में सैंतीस परिवार के दो सौ चार २०४) ईसाई जून ५९ के प्रथम सप्ताह में शुद्ध हुए। जिसमें ९७ पुरुष १०७ महिलाएँ सम्मिलित हैं।

अन्तर्जातीय एवं अन्तर्प्रान्तीय विवाह

दि० ७ जुलाई ५९ को सभा के तत्वावधान में श्री शशिकान्त पटवारी जालना निवासी का विवाह श्री मालती तिवारी बनारस निवासिनी के साथ प० कालीचरण जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। वर महोदय कुणबाव और कन्या ब्राह्मण कुल से सम्बन्ध रखती हैं।

शोक समाचार—

—जामनगर (सौराष्ट्र) में श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का ५ जुलाई को [शिष्य श्री आत्मानन्द जी मुमुक्षु] मूत्राशय के आपरेशन के पश्चात् आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आर्य समाज द्वारा उनकी श्मशान यात्रा का प्रबन्ध किया गया। दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये आर्यसमाज में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

—मथुरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री विश्वनाथ सिंहजी वर्मा की धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन पर आर्यजनों ने शोक प्रकट किया और मृतात्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की। श्री वर्मा जी ने मृतक भोज आदि की व्यवस्था आर्यसमाज के विचारानुसार नहीं की अतः सजातीय लोग उन्हें तंग कर रहे हैं जो अनुचित है।

संस्कार—

—सिमरिया (हरदोई) आर्यसमाज के उ०मन्त्री श्री रामजीत जी आर्य के पुत्रों श्री सुरेश व श्री रमेश का मुण्डन व अन्नप्राशन संस्कार क्रमशः सम्पन्न हुए समाज को दान दिया गया।

—मिलक (रामपुर) में श्री जग-मोहनलाल जी की पुत्री का नामकरण संस्कार श्री कन्हैयालाल जी 'मुमुक्षु' मि० आ०प्र०नि०सं० उ०प्र० ने सम्पन्न कराया। श्री बलवीरसिंह जी लेखक व श्री स्वामी अच्युतानन्द जी श्री वासिम सिंह जी आदि विद्वान् प्रचारक व आर्य जन उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री अमरनाथ जी, श्री राधेश्याम जी व सब इंचार्ज थाना मिलक की पुत्रियों के नामकरण संस्कार भी वैदिक रीति से सम्पन्न कराये गये।

—बस्ती आर्यसमाज के प्रधान श्री प० रामनारायण जी की सुपुत्री व श्री रंगीलाल जी के पुत्र श्री चन्द्रिकाप्रसाद सीतारामपुर के साथ २०.६ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—मेहदावल (बस्ती) में श्री प्रताप नारायणसिंह आर्य एम० ए० (ए०जी०) व श्री शैलकुमारी बी०ए० लखनऊ का शुभ विवाह २८.६ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—आर्यनगर (बदायूं) में श्री राम जीप्रसाद जी विधुर व श्री मायादेवी जी विधवा का पुनर्विवाह श्री नाथूराम जी प्रभाकर के सहयोग से आर्यसमाज में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। २१) समाज को दान में प्राप्त हुए।

[पृष्ठ १५ का शेष]

इसके साथ ही उपदेशक वही प्रतिष्ठा के योग्य समझे जाय जो वैदिक सिद्धान्त का अधिक से अधिक प्रचार करे चाहे छोटा उपदेशक हो या बड़ा। उपदेशक प्रचारक चरित्रवान हों उनके अन्दर दृढ़ धार्मिकता की भावनाएं हों उनको देखकर लोग प्रभावित हो जाय। मेरा अटल विश्वास है कि अवश्य आर्यसमाज का प्रचार होगा। जिस विटप को महर्षि दयानन्द ने आरोपण और अपने रुधिर से सींचकर तैयार किया। उस विटप की रक्षा करना हम आर्यों का परम कर्तव्य है। इसका व्यर्थ नहीं जायेगा। आर्यसमाज को इस क्रांतिकारी क्षेत्र में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।



वार्षिक मूल्य ८)]
एक प्रति का १० नये पैसे]

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

लखनऊ रविवार श्रावण २५, शक १८८१, श्रावण शु० १२, वि० २०१६, १६ अगस्त १९५९ ई०

[वार्षिक मूल्य विदेश में
[१६ शिलिंग

भारत राष्ट्र-गीत—

जनगणमन-अधिनायक

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्यविधाता
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जयगाथा
जनगण मंगलदायक जय हे भारत-भाग्यविधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे

अहरह तव आह्वान प्रचारित सुनि तव उदार वाणी
हिन्दु बौद्ध सिख जैन पारसिक मुसलमान खृष्टानी
पूरब पश्चिम आसे तव सिंहासन पाशे
प्रेमहार हय गाँथा
जनगण ऐक्यविधायक जय हे भारत-भाग्यविधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।

पतन-अभ्युदय-बंधुर पंथा युग युग धावित यात्री
हे चिरसारथि तव रथचक्रे मुखरित पथ दिनरात्रि
दारुण विप्लव माझे तव शंखध्वनि बाजे
संकटदुःखत्राता
जनगण पथपरिचायक जय हे भारत-भाग्यविधाता
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे

घोर तिमिरघन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्च्छित देशे
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेषे
दुःस्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके
स्नेहमयी तुमि माता
जनगण दुःखत्रायक जय हे भारत-भाग्यविधाता
जय हे, जय हे जय हे जय जय जय जय हे

रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व-उदयगिरिभाले
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नवजीवन रस ढाले
तव करुणारुण-रागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे नत माथा
जय जय जय हे, जय राजेश्वर भारत-भाग्यविधाता
जय हे जय हे, जय हे जय जय जय जय हे।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

वेद-प्रचार सप्ताह लेखमाला—

कोऽहं, कस्त्वं, कुत आयातः

हे मानव, तूभी स्वयं एक गूढ़ पहेली है (३)*

(ले०—आचार्य श्री नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ, ज्वालापुर)

★

संसार में दो ही विद्याएं हैं। एक अपरा अर्थात् इधर की विद्या और दूसरी परा अर्थात् परली विद्या। ऋग्, यजु, साम, अथर्वादि इधर का पार है और वह विद्या जिससे परब्रह्म का साक्षात्कार होता है वह परा है। इसीलिए वेदान्त का प्रथम सूत्र "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" में स्पष्ट कहा है कि अथातः अथ इसके अनन्तर, किसके अनन्तर ? वेदाध्ययन के अनन्तर। वेदाध्ययन के अनन्तर क्या ? ब्रह्मजिज्ञासा।

"अथ परायया तदक्षरमधिगम्यते"

पराविद्या वह जिससे वह अक्षर कभी नष्ट न होने वाला, प्रलयावस्था में भी स्वस्वरूप में यथापूर्व स्थित रहने वाला ब्रह्म जिस विद्या से जाना जा सके वही परा विद्या है।

बस वेदान्त का यह तात्पर्य है। वेद स्वयं कहता है कि—

शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः
हे अमृत पुत्र सुनो।

इससे स्पष्ट है कि हम अमृत पुत्र है। वह अमृत कौन है जिसके कि हम पुत्र हैं। वही परब्रह्म परमात्मा अमृत है, उसी के हम पुत्र हैं। यदि हम इसी तत्त्व का अनुभव करें तो फिर इस असार संसार में हमको दुःख क्यों हो। फिर हम क्यों दरिद्र की भाँति इधर-उधर मारे-मारे फिरें—

यद्यपि राजा और राजपुत्र दो पृथक् व्यक्ति प्रतीत होते हैं तथापि यदि राजपुत्र यह अनुभव कर लेवे कि जो शक्ति सम्पन्न है उसी का मैं पुत्र हूँ तो उसकी आत्मा में कितना बल संचार करेगा। यदि राजपुत्र होता हुआ भी यह अनुभव नहीं करेगा तो उस राजपुत्र का जीवन ही क्या है। इसीलिए वेदान्त ने आत्म साक्षात्कार पर बल दिया है। आत्म साक्षात्कार कराना ही वेदान्त का अभिप्राय है—वेद स्वयं कहता है कि—

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्
यस्मिन् देवा अधिविश्वे निषेदुः
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति ?

(ऋग्वेद)

जिसने केवल वेदादि का अध्ययन किया और स्वमहिमा में स्थित उस परमात्म तत्त्व को न जाना, उसका वेद क्या कर लेगा—

यः पितरं न वेद (ऋग्वेद)

जिसने उस परम पिता को न जाना उसने किया ही क्या ?

बस वेदों का अन्त अर्थात् सिद्धान्त यही है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही आत्म साक्षात्कार है, उसी के लिए यत्नवान् रहना चाहिए, अज्ञान के आवरण को हटाये बिना आत्म साक्षात्कार कदापि नहीं हो सकता। उसके लिए अन्तर्मुख होना आवश्यक है—

संसार में "मैं" ही एक बड़ी बला है। इसके बिना संसार चलता नहीं। इस 'मैं' को अहङ्कार को छोड़ दो तो फिर संसार रह ही क्या जाता है।

(प्र०) तो फिर 'मैं' क्या हूँ ?
यह देह ?

(उ०) नहीं।

(प्र०) मन बुद्धि चित्त अहङ्कार का झमेला ?

(उ०) यह भी नहीं। इसे भी छोड़ो।

(प्र०) फिर करें क्या ?

(उ०) एक-एक को छोड़ते जाओ, अन्तर्मुख होते जाओ, फिर जो शेष रहे वही तो असली मैं हूँ।

न विजानामि यदि वेदमस्मि,
निण्यः संनद्धो मनसा चरामि। यदा
मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद् वाचो
अश्नुवे भागमस्याः।

(ऋ० १-१६४-३७)

इस "मैं" के विषय में ऋग्वेद में क्या ही सुन्दर ऊहापोह है—

१—मैं नहीं जानता।

२—तू क्या नहीं जानता ?

३—मैं यह नहीं जानता कि मैं क्या हूँ, कौन हूँ, मैं मन-बुद्धि-चित्त अहङ्कार से युक्त हूँ कि इनसे मुक्त कोई और ही "मैं" हूँ कि मैं यह स्थूल देहमात्र हूँ।

४—तू यह क्यों सोच रहा है ?

५—इसलिए कि मैं मन से बंधा हुआ इधर-उधर के कर्मों में दौड़ता फिरता हूँ। मैं यह तभी जान सकूंगा जब कि मुझे पूर्ण ज्ञान होकर अज्ञान का आवरण हट जायगा। तभी मुझे अपने "मैं"—सच्चे "मैं" का साक्षात्कार होगा जब सच्चे ज्ञान का भाग मिलेगा।

ऋग्वेद ने तत्त्व को स्पष्ट कर दिया कि—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति, अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।

१—यह संसार रूपी वृक्ष है।

२—इस पर दो पक्षी बैठे हुए हैं।

३—एक कड़वे मीठे फल खाता रहता है, चाखता रहता है और फिर भी शोक में रहता है।

४—दूसरा साक्षी देखता रहता है और आनन्द में रहता है।

५—अब पहिला पक्षी दूसरे पक्षी को देखता है कि मैं ही क्यों दुःखी रहता हूँ, यह दूसरा क्यों आनन्द में रहता है ? बस यही वेदान्त की पहिली सीढ़ी है।

६—इस सीढ़ी से चढ़ते-चढ़ते वह अन्तर्मुख अवस्था में पहुँच जाता है, उसका अज्ञान का आवरण गिर पड़ता है। अन्त में आत्म साक्षात्कार हो जाता है। और शोक रहित हो जाता है।

७—जब यह अवस्था हो जाती है तो पहिला पक्षी जीवात्मा दूसरे पक्षी परमात्मा का साक्षात् करके मानो चिल्ला उठता है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्
अरे अब मैं उस परम पुरुष परमात्मदेव को जान गया—

बस यही वेदान्त की परिसमाप्ति है तब वह मानो चिल्ला उठता है,

आदित्य ज्योति स्तमसः परस्तात्
वह सूर्य की तरह ज्योतिष्मान् है। कहाँ है ? वह देखो तम के परे अज्ञानावरण के परे।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति
उसी को जानकर मृत्यु से तर जाता है, अमृत हो जाता है—
और कहता है—
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय
दुखों से छुटकारे का मोक्ष का अन्य कोई मार्ग नहीं है।

वह परम पुरुष जिसका साक्षात्कार करना है वह कहां है, कैसा है ?

अन्ति सन्तं न जहाति
है वह पास ही, वह उसको छोड़ नहीं सकता पर।

अन्ति सन्तं न पश्यति (अथर्ववेद)
वह इतना पास है तो भी उसको नहीं देखता।

पश्य 'देवस्य' काव्यं
उस परमात्म देव का काव्य देखो, कैसा है यह काव्य ? कैसा है यह ज्ञानमय भण्डार।

न ममार न जीर्यति (अथर्व)
जो न मरता है और न वह होता है और न पुराना पड़कर नष्ट हो जाता है।

वह क्या है वेद, वेदज्ञान, उसी ज्ञान का परला सिरा है वेदान्त।

वेद के शब्दों में वेदान्त

यस्मिन् 'वृक्षे' मध्वदः सुपर्णा,
निविशन्ते 'सुवते' चाधिविश्वे।
तस्येदाहुः 'पिप्पलं' स्वाद्वग्रे,
तन्नोन्नशद् 'यः' 'पितरं न वेद'॥

(ऋ० १-१६४-२२)

इस संसार रूपी विशाल वृक्ष पर जीवात्मा जैसे सुन्दर पंखों वाले पक्षी विचरते रहते हैं, अपने कर्मों के मधुर फलों का का आस्वाद लेते रहते हैं और अपनी परम्परा बढ़ाते जाते हैं। बुद्धिमान् पुरुष कहते हैं कि असली सबसे बड़ा मीठा फल (मोक्ष) इस वृक्ष की चोटी पर लगा हुआ है। वह जीवात्मा जो परम पिता परमात्मा को नहीं जानता वह उस अत्यन्त स्वादु फल के मिठास को क्या जाने।

उसी का साक्षात्कार करो,
तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां,
नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था,
विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः॥

(ऋ० १-१५४-५)

मैं उस सुन्दर मार्ग को पाऊँ जिस मार्ग को प्राप्त करने के लिए देव, विद्वान् सदा तत्पर रहते हैं। वही विष्णु सबका मित्र है, वही है मधु अर्थात् अमृत का स्रोत—

और जहाँ कि

यत्रानन्दाश्च, मोदाश्च,
मुदः प्रमुद आसते।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र,
माममृतं कृधि……… .. ….

(ऋ० ९-११३-११)

जहाँ आनन्द ही आनन्द है, रत्ति भर दुःख नहीं। जहाँ आमोद ही आमोद, प्रमोद ही प्रमोद है। जहाँ जाकर काम अर्थात् इच्छाओं की तृप्ति की पराकाष्ठा है, हे ईश्वर तू मुझे वहीं लेजा और अपनी तरह मुझे भी अमृत बना, अथवा अमृत कर दे।

---

* इस लेख माला को लिखने में हमको नागपुर के मराठी "जीवनविकास" से स्फूर्ति मिली है।



स्वाधीनता-अंक

श्रावण २५, शक १८८१, श्रावण शुक्ल १३, वि० २०१६, (१६ अगस्त १९५९) दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

वेदोपदेश--

सा मा सत्योक्ति परिपातु विश्वतो
द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्निविशते यदेजति,
विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्य ॥
—ऋ० १।८।१२।२

सम्पादकीय

पावन पर्व आया है

भारतीय संस्कृति का आधा वेद हमारे जीवन का अभिन्न अग है। प्राचीन काल से चातुर्मास्य में वैदिक वाङ्मय के स्वाध्याय का प्रचलन होता रहा है जिससे इस पवित्र थाती के साथ हमारा सम्पर्क बना रहे। इसी आदर्श भावना और वेदो के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए आर्यसमाज में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर वेद प्रचार-सप्ताह का आयोजन किया जाता है। महर्षि का जीवन वेदो के लिये समर्पित था और उन्होंने वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म बतलाकर हमें एक महान् दायित्व सौंपा था जिस की पूर्ति के लिये हम ८४ वर्ष से निरन्तर प्रयत्नशील हैं पर क्या यह यह सारा कार्य हमने सच्चे दिल से किया है इसमें सन्देह को स्थान प्राप्त है। वास्तव में हम वेदों का स्वत स्वाध्याय करें अपने घरों में वैदिक वाङ्मय का भण्डार भरें तभी हम दूसरों से इस दिशा में सहयोग पाने के अधिकारी बन सकते हैं। इस प्रकार फिर वेद प्रचार सप्ताह हमें अपना दायित्व बताने और प्रेरित करने आया है। आदरणीय पूर्वज ऋषियों के साहित्य मन्थन पर्व के साथ साथ भारत के एक महान् योगी नेता श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव भी इस सप्ताह के साथ सलग्न है। हमें उनके कर्मठ नीतिज्ञ और लोकोपकारी जीवन की शिक्षायें भी इस अवसर पर ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिये। गोरक्षा का प्रश्न कृष्ण जी के जीवन से प्रेरणा और सम्बल प्राप्त करता है। इस ज्वलन्त प्रश्न के लिये हमें उनका काल्पनिक नहीं व्यवहारिक आदर्श अपनाना होगा यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। राखी की पवित्र भावना का भी भारतीय जीवन में भी जो महत्त्व है उसकी ओर हमें ध्यान देना होगा। आज हम इस पर्व को बड़ी साज सज्जा सजावट और आकर्षक ढग से मनाते हैं पर क्या वास्तव में हम अपनी बहनों को अभयदान प्रदान कर सकें हैं। आज भी हमारी बहनें अपने सतीत्व की रक्षा के लिए उसी प्रकार अपने भाइयो की ओर निहार रही है जैसा कभी द्रोपदी ने कृष्ण की ओर निहारा था आज तो नवीनता के नाम पर नारी को सुरक्षित बनाने की अपेक्षा सौन्दर्य प्रदर्शन और विलासिता की सामग्री के रूप मे प्रोत्साहित किया जा रहा है। भाई बहन के घरेलू प्रेम और स्नेह की अतिम परिणति तो विश्व बन्धुत्व के रूप में ही होनी चाहिये।

इस प्रकार वेद प्रचार सप्ताह अध्यात्म चिन्तन, लोक नेतृत्व चिन्तन और नारी रक्षा के पवित्र भावों और दायित्वों की स्मृति लेकर आया है। पावन पर्व सफल हो यही प्रभु से प्रार्थना है।

हिन्दी बनाम अङ्गरेजी

ससद में अगरेजी को सविधान की भाषा सूची मे स्थान दिलाने का श्री एन्थोनी का प्रस्ताव पर्याप्त वाद विवाद और विरोध के पश्चात् वापस हो गया है। इस अवसर पर प्रधान मन्त्री नेहरू का वक्तव्य सराहनीय है जिसमें उन्होंने जनता की भाषा का समर्थन किया है और अग्रेजी न जान सकने वाले भारतीयों को हेय समझने वालो की निन्दा की है। हम हिन्दी के समर्थन में दिये गये सभी वक्ताओ को धन्यवाद देते हैं।

छुट्टी की सूचना

स्वतन्त्रता दिवस व श्रावणी के उपलक्ष्य मे प्रस की ४ दिन की छुट्टी है। अत आर्यमित्र का २३ अगस्त का अङ्क बन्द रहेगा। अगला अक अब ३० अगस्त का पाठकों की सेवा में पहुंचेगा। पाठक तथा एजेन्ट नोट कर लें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी०
अधिष्ठाता आर्यमित्र व
आर्य भास्कर प्रेस

पंजाब भाषा सद्भावना समिति का प्रतिवेदन

चिरप्रतीक्षित पजाब भाषा सद्भावना समिति की रिपोर्ट के सम्बन्ध में जो सूचनायें प्राप्त हो सकी हैं उनसे आर्यसमाज की मागा का कोइ सन्तोष जनक समाधान नहीं हो सकेगा, यद्यपि हम समिति की सदभावना में कोई सन्देह नहीं करते हैं फिर भी हम अपनी मूल आपत्ति को ज्यो का त्यो पाते हैं।

१—क्या पजाब में मातृभाषा का निर्णय सरकार करगी ?

२—क्या ४५ प्रतिशत के कृत्रिम अल्पमत पर ५५ प्रतिशत के कृत्रिम बहुमत की भाषा लादना पजाब निवासियों के मौलिक अधिकारों का अपहरण नहीं है।

३—शिक्षा में बलात् का सिद्धान्त क्यों लागू रहेगा।

४—सबसे मुख्यबात पजाब का दो कृत्रिम क्षेत्रो में विभाजन भाषा शास्त्र के आधार पर नहीं राजनैतिक स्वार्थो की दृष्टि से है तब भाषायी क्षेत्र क्यों स्वीकार किये जाय।

अन्य भी बहुत सी आपत्तिया हैं जिन पर विचार नहीं हुआ जा कि होना चाहिये था फिर भी हम सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति को परामर्श देगे वह सारी रिपोर्ट पर गम्भीरतापूर्वक निर्णय करे सबसे प्रथम हमे समिति के निश्चया के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिये समिति के निर्णयो से मतभेद रखने वाले स्थलो के सम्बन्ध में अपना लिखित विरोध साहित्य तय्यार करना होगा। साहित्य सेवियो, जन नेताओ और शिक्षा सस्थाओ में अपने पक्ष मे प्रबल जनमत तय्यार करना होगा तब हम यदि सघर्ष का निर्णय करें तो सफलता हमारा अवश्य वरण करगी परन्तु पहले कठोर तपस्या में से हम सबको गुजरना होगा। आशा है आगामी बैठक में समिति इसी दृष्टिकोण से परिस्थिति पर विचार करेगी। प्रत्येक दशा में अधीरता एव अनियोजित कदम

(शेष पृष्ठ ४ पर)

दयानन्द दीक्षा शताब्दी आर्यमित्र जयन्ती आदि समारोह विज्ञप्ति

मथुरा के सभी समारोहों की सफलता के लिये आर्य जनता में अपार उत्साह

आगरा के आर्य बन्धु ५०००) पांच हजार धन-संग्रह भेंट करेंगे

गत सप्ताह समारोह समिति के मन्त्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० ने आगरा के आर्य बन्धुओं के साथ धन-संग्रह सम्बन्धी विचार विमर्श किया। आगरा के कर्मठ और उत्साही आर्य नेता श्री मोहनलाल जी आर्य उनके साथ थे।

मालवीय कुञ्ज आर्यसमाज के श्री गुरुदासमल जी, श्री रतनलाल जी, नामनेर आर्यसमाज के श्री आत्मानन्द जी, श्री रोशनलाल जी, शहजादी मण्डी के श्री शेरी साहब, नाईमण्डी के श्री डा० कृष्णगोपाल जी, आगरा नगर समाज के श्री स्नातक ओम्प्रकाश जी वैद्य राजामण्डी आर्यसमाज के श्री सत्येन्द्रनाथ जी वैद्य व श्री ठा० मंगलसिंह जी आदि सभी आर्य बन्धुओं ने समारोह की सफलता के लिये पूर्ण प्रयत्न और उद्योग करने का आश्वासन दिया। आर्यबन्धुओं में बहुत उत्साह था।

देहली के आर्य बन्धु दीक्षा शताब्दी में अपना महत्वपूर्ण सहयोग देंगे

२ अगस्त को दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यनेता श्री डा० रामगोपाल जी ने समारोह मन्त्री को आश्वासन दिया कि दिल्ली इस समारोह को महत्वपूर्ण समझता है और पूर्ण सहयोग प्रदान किया जायगा।

मैनपुरी में श्री ठा० फूलनसिंह व श्री दयाराम जी का उद्योग जारी

मथुरा समारोहों के लिये ठा० साहब के आग्रह पर श्री डा० महादेवप्रसाद गौड़ ने १०००) के मित्र के शेयर तथा स्वयं ठा० साहब ने अपने मित्र क० के १०००) के शेयर सभा को प्रदान कर दिये हैं।

मैनपुरी जिले में २०००) से अधिक के नोट वितरित हो चुके हैं और धन-संग्रह हो रहा है।

विशेषांक और अभिनन्दन ग्रन्थ अन्तिम रूप में तैयार

समारोह अवसर पर प्रकाशित होने वाला साहित्य अब अन्तिम स्वरूप धारण कर चुका है और छपाई का कार्य आरम्भ है। जो सज्जन अपनी रचनायें न भेज सके हों शीघ्र भेज दें।

कार्यक्रम का अन्तिम निर्णय

समारोह समिति की कार्यसमिति की आवश्यक बैठक आगामी २६ अगस्त को मथुरा में सम्पन्न होने जा रही है। समारोह के चारों कार्यक्रमों के उद्घाटन, सभापतित्व तथा अन्य सम्मेलनों परिषदों, प्रदर्शनियों आदि के सम्बन्ध में तथा समारोह स्थली सम्बन्धी आवश्यक निश्चय होंगे। जिन भाइयों को कोई सुझाव भेजने हों मथुरा कार्यालय को भेज दें।

धन-संग्रह के लिये कार्यकर्ता प्रयत्नशील हों

समिति की ओर से प्रकाशित नोटों की कापियाँ वितरित की जा चुकी हैं जिन लोगों ने कापियाँ ली हैं वे धन-संग्रह में जुट जाय और जिन्होंने नहीं मंगाई हैं मंगा लें और अपना सहयोग प्रदान करें। आर्यमित्र के स्थायी ग्राहक बनाकर भी सहयोग प्रदान करें।

शाहजहांपुर के आर्यवीर निकल पड़े

सर्वत्र जयन्ती व शताब्दी की धूम

सभा के अन्तरङ्ग सदस्य श्री चोखेलाल जी सत्यपाल व श्री गदाधर वर्मा गन्नु श्री डा० शालिग्राम जिले के आर्यबन्धुओं के साथ घूमने निकल पड़े हैं १२ अगस्त से १२ सितम्बर तक उनके दौरे का प्रोग्राम है। वे जलालाबाद, खुदागंज, कटरा, तिलहर, खुटार, पुवांया, गोलाराजपुर, निगोहीपुर गढ़ीपुर, शाहजहांपुर, होते हुए बीसलपुर, पीलीभीत, फरीदपुर कस्बों में अपना दौरा समाप्त करेंगे।

दूसरे जिलों के आर्यबन्धु इस उत्साह से शिक्षा लेते हुए अपने क्षेत्रों में भी टोलियां निकालकर धन-संग्रह कार्यारम्भ कर दें।

(पृष्ठ ३ का शेष)

संगठन को खतरे में डाल सकते हैं और हमारा ध्येय तो धूमिल हो ही जायगा। इस अवसर पर मित्र की प्रभु से यही प्रार्थना है "धियो यो नः प्रचोदयात्"

नेहरू जी के प्रति अवतार भावना

एक समाचार में बताया गया है कि गुजरात के भावुक बन्धुओं ने प्रधान मन्त्री श्री नेहरू को अवतार के रूप में स्वीकार करने की घोषणा की है। यद्यपि हमारे सम्मानित प्रधानमन्त्री जी ने इस कार्य की निन्दा की और उसे मूर्खता बताया है तथापि इस घटना से भारतीय मस्तिष्क की एक झाँकी मिलती है। गांधी जी के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार एक बार कुछ लोगों ने निश्चय किया था पर उन्होंने भी उक्त कार्य को हतोत्साहित कर दिया था। वास्तव में व्यक्तिपूजा और भगवान में सब कार्यों के करने की शक्ति का आरोप कर हम लोग निठल्ले बने रहना ठीक समझते हैं। रामभरोसे सब हो जायगा के स्थान पर नेहरू के भरोसे सब कल्याण हो जायगा ऐसी भावना ही इस घटना के लिए उत्तरदायी है। व्यक्ति का सदैव महत्त्व रहेगा पर उसके कार्य ही महत्त्व को कायम रखते हैं, केवल नाम पूजा धार्मिक क्षेत्र में अन्धविश्वास और राजनैतिक क्षेत्र में अधिनायकवाद को जन्म देती है।

नैरोबी के आर्य बन्धुओं का आदर्श निश्चय

नैरोबी में आर्यसमाज के एक महाविद्यालय ने वर्णभेद और जातिभेद की नीति के विरुद्ध निर्णय करते हुए अपने यहां प्रत्येक नैरोबी निवासी को प्रवेश देने का निश्चय किया है। इस शुभ निश्चय और उचित आदर्श के लिये नैरोबी के आर्य बन्धु बधाई के पात्र हैं। उनके इस निश्चय से आर्यसमाज भारत और प्रजातन्त्र सभी का गौरव बढ़ा है। आशा है अन्य प्रवासी भाई भी अपने क्षेत्रों में संकुचित भावनाओं का विरोध करने में नेतृत्व प्रदान करेंगे। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में यह एक रचनात्मक और सही कदम है। अफ्रीका के लोगों तक अपना सन्देश पहुंचाने में हमें इस निश्चय से सहायता मिलेगी और वे भी हमें अपने मानव परिवार का अङ्ग अनुभव करेंगे। और हम शिक्षा मन्दिरों व धर्ममन्दिरों द्वारा यत्र विश्वं भवत्येक नीडं की भावना को विकसित कर सकेंगे।

आपका कर्त्तव्य

आर्य जनता का स्वप्न साकार होगा

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि मथुरा में भारत के दो ऋषियों की स्मृति में आयोजित समारोह (३०, ३१ अक्टूबर १, २ नवम्बर) दोनों महापुरुषों के गौरवानुरूप सम्पन्न होगा।

समिति की ओर से राष्ट्र के गण्यमान्य विद्वानों और नेताओं को इस अवसर पर निमन्त्रित कर आर्यसमाज का सन्देश जन-जन तक पहुँचाने का उद्योग किया जायगा।

आप महर्षि के अनुयायी और भक्त हैं तो इस समारोह के आयोजकों के साथ सहयोग कीजिए। एक दिन का समय और एक दिन की आय देकर आप इस पवित्र और महान् आयोजन को सफल बना सकते हैं।

समारोह समिति आर्य जनता को सादर निमन्त्रण देती है। पहुँचकर ऋषियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कीजिये और भावी जीवन के लिए प्रेरणा प्राप्त कीजिये।

मन्त्री

दयानन्द दीक्षा शताब्दी विरजानन्द स्मारक शिलान्यास, आर्यमित्र हीरक जयन्ती, विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ समारोह समिति

आर्य शिक्षा संस्थायें समारोह अवसर पर छुट्टियों में वृद्धि की व्यवस्था करें

समारोह दीपावली के अवसर पर हो रहे हैं छुट्टियों की सुविधा रहेगी ही परन्तु फिर भी लौटने की कठिनाई को ध्यान में रखते हुए शिक्षा संस्थाओं के अधिकारियों को २ दिन पहले और २ दिन बाद तक की छुट्टी की व्यवस्था अभी से करने का निश्चय करना चाहिए आशा है ध्यान दिया जायगा।

—मन्त्री समारोह समिति

सिद्धान्त-विमर्श

ज्ञान और कर्म

(श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी, एडवोकेट प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली)

वेद-प्रचार सप्ताह के सुअवसर पर वेद का क्रियात्मक सन्देश जीवन में ज्ञान और कर्म का समन्वय हो यही सर्वोत्तम सन्देश हो सकता है। आर्यजगत् के माननीय विद्वान् और नेता श्री बाबूजी ने संक्षेप मे बड़ी सुन्दरता से इस रहस्य को समझाने का प्रयत्न किया है। वास्तव में आज राष्ट्र, विश्व, समाज, धर्म, जाति सभी समुदायों में इस समन्वय की अत्यधिक आवश्यकता है। आशा है पाठक विचारों से लाभ उठावेंगे। —सम्पादक

आर्य जगत् के लिये वेद-प्रचार सप्ताह का एक विशेष महत्त्व है इसका प्रारम्भ श्रावणी दिवस से होता है और जन्माष्टमी पर समाप्ति। वेद ज्ञान के आदि स्रोत हैं और ईश्वर ज्ञान का आदि मूल, वेद ईश्वरीय ज्ञान के आधार हैं। वेद को जानना मानना प्रत्येक आर्य के लिए इसलिए आवश्यक है कि बिना वैदिक आदेश और उपदेश को पालन किये आर्यत्व नहीं आ सकता और इसीलिये ऋषि दयानन्द ने वेदों के पढ़ने पढ़ाने सुनने सुनाने को आर्यों का परम धर्म बताया है।

परम धर्म के पालन करने की आवश्यकता मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए है।

मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना आर्यसमाज के नियम में बताया गया है। संसार के उपकार की विधि व्यक्तिगत उन्नति पर आश्रित बतायी गई। व्यक्तिगत उन्नति का स्वरूप विश्लेषण करके बताया गया, शारीरिक सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना। इसका अभिप्राय यह हुआ कि व्यक्ति उन्नत बने, सर्वाङ्ग रूप से उन्नत बने और उनके उन्नत बनने से सामूहिक रूप में संसार की दशा उन्नत होगी और इसी उन्नत दशा का नाम उपकार है।

आर्यसमाज के नियमों में तीन मुख्य अङ्ग हैं ईश्वर ज्ञान का आदिमूल है ईश्वर से वेदों का प्रादुर्भाव हुआ, वेदों का पढ़ना पढ़ाना परम धर्म, धर्म पालन करके जीवन को उन्नत और विकसित बनाना और इस प्रकार सारे संसार का उपकार करना ये सभी भाव नियमों में स्पष्ट हैं। वेद का भी मुख्य उद्देश्य ईश्वर की सत्ता का बोध कराना और उसके गुण, कर्म, स्वभाव को समझना है। वेद स्वयं ही प्रतिपादित करते हैं—

न तद्वेद किमृचा करिष्यति

इससे यह स्पष्ट है कि यदि वेद पढ़कर ईश्वर की सत्ता में विश्वास पैदा नहीं होता और ईश्वर के गुण, कर्म हमारे समझ में नहीं आते तो वेद पढ़ना भी निष्प्रयोजन है।

वेदान्त दर्शन के प्रथम सूत्र में भी इस बात पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। वेदान्त का अर्थ है ज्ञान का वास्तविक और अन्तिम उद्देश्य। पहले सूत्र के "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' शब्दों का अभिप्राय यह हुआ कि ब्रह्म की जिज्ञासा करना उस ज्ञान की प्राप्ति करना वेदान्त है अर्थात् वेदान्त का अन्तिम उद्देश्य है। वेद, दर्शन और उपनिषद् सब ईश्वर के स्वरूप को समझाने के लिए ही है और ईश्वर का जानना न केवल ज्ञान की परिपक्व बनाने के लिए आवश्यक है परन्तु वास्तविक ज्ञान के प्रकाश में कर्म को भी मर्यादित बनाने के लिए आवश्यक है। केवल ज्ञान के परिपक्व होने से मनुष्य को कोई लाभ नहीं है जिस प्रकार वेद को पढ़कर ईश्वर को न जानना निष्प्रयोजन है इसी प्रकार ज्ञान प्राप्त करके ठीक कर्म न करना व्यर्थ है। कर्म को सार्थक बनाने के लिए ईश्वर की सत्ता में विश्वास अनिवार्य है। रचित जगत् कर्म का क्षेत्र है। इस कर्म के क्षेत्र में अन्य प्राणियों के सम्पर्क मे आना कर्म का स्वरूप है। रचित पदार्थों को प्रयोग में लाना भोग का रूप है।

दूसरे शब्दों में यह जानना कि संसार का रचयिता कौन है रचित पदार्थ किसके निमित्त से बनते हैं। अन्य प्राणियों से हमारा क्या सम्बन्ध है जीवन को सफल बनाने का मुख्य अंग है। रचित पदार्थों को देखकर रचयिता का ध्यान कर लेने से रचित पदार्थों के दुरुपयोग के अपराध से कर्म कर्त्ता बच जायगा। इसीलिये सन्ध्या में रचना के आरम्भिक स्वरूप को रचयिता के वास्तविक स्वरूप से मिला कर चिन्तन करने के लिये अघमर्षण दिया गया है अर्थात् पाप की भावनाओं को समाप्त करना। अघमर्षण शब्द ही सारी पाप भावनाओं को नष्ट करने का आधार है। बाह्य दृष्टि में इस भावना का कि ईश्वर ने जगत् रचा पाप और पुण्य से कोई सम्बन्ध नहीं दीखता। पाप और पुण्य जीव को करना है जगत् को ईश्वर ने रचा दोनों में बाह्य दृष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं दीखता परन्तु इनमें एक श्रृंखला छिपी हुई है पाप और पुण्य जगत् के सम्बन्ध में होता है रचित पदार्थों के सम्बन्ध में अन्य प्राणियों के सम्पर्क में होता है। यदि कर्म करते समय पदार्थों को प्रयोग मे लाते समय, अन्य प्राणियों से व्यवहार करते समय यह बात ध्यान में रहे कि ईश्वर रचयिता है न्यायकारी है उसके न्याय की व्यवस्था के आधार पर रचित पदार्थ कर्म करने वाले प्राणियों को कम या अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं और इसका परिणाम होगा कि कर्म करने वाला ईश्वर की न्याय व्यवस्था और परिणाम को लक्ष्य मे रखकर शक्ति के दुरुपयोग के पाप से बचा रहेगा। और इस प्रकार न केवल पाप कर्म से ही बचेगा अपितु पाप वासना का अङ्कुर भी उसमें जन्म न ले सकेगा। यदि पाप से बचे रहना और ज्ञान और कर्म को मर्यादित करना है तो श्रावणी के उपलक्ष में वेदों का स्वाध्याय करके वेदों का अभिप्राय समझकर ईश्वर के स्वरूप को सम्मुख रक्खें ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के प्रकाश में अपने कर्म को पवित्र मानते रहें। जन्माष्टमी श्रीकृष्ण का जन्म दिवस है श्रीकृष्ण की विशेषता मर्यादा और कर्मयोग में है। इस प्रकार यह सप्ताह हमें जीवन के लिए आदर्श सन्देश दे रहा है प्रश्न है कि क्या हम इस सन्देश को जीवन में लाने का प्रयत्न करेंगे? यदि करेंगे तो हम अपना और दूसरों का भी भला करेंगे नहीं तो संसार जैसा चल रहा है हम भी उसमें विलीन हो जायेंगे। ★

वेदों के गायक

आर्यों प्राचीन भूमि भारत

[ले० श्री ओम्प्रकाश जी भक्ति शाहजहापुर]

आर्य कहा के निवासी थे। इस प्रश्न पर नाना विद्वानों ने अपनी रायें प्रकट की है। सभी ने न जाने कितने तर्क दिये है। कुछ ने आर्यों को उत्तरी ध्रुव का निवासी बताया है और कुछ विद्वान् उन्हें सप्त सिन्धव का निवासी बतलाते हैं। मध्य ऐशिया भी इन्हीं स्थानों के अन्तर्गत आ जाता है। कुछ विद्वानो का कहना है कि पहले हिन्द महासागर की जगह पर भूमि थी और आर्य वहीं पर निवास करते थे। अभी हाल ही में कुछ अन्वेषकों ने दक्षिणी ध्रुव के पास एक महाद्वीप का अन्वेषण किया है। अब यह आशा की जा सकती है कुछ विद्वान् उस स्थान को आर्यों का आदि देश बतला सकते हैं।

आधुनिक युग के सभी विद्वान् इस बात मे अखण्डनीय विश्वास करते है कि संसार की सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद है।

प्रत्येक चीज घर से ही आगे बढ़ती है। यह बात सभी मानते हैं कि ऋग्वेद का प्रचार भारत में ही सर्व प्रथम हुआ। जब से भारत का पारिस्परिक सम्बन्ध दूसरे देशों से बढ़ा सभी से दूसरे देशो के विद्वान् इधर उन्मुख हुये। वेद के सन्देश का प्रचार दूसरे देशो में हुआ। परन्तु आज भी जितना प्रचार भारतवर्ष मे है उतना किसी अन्य देशो में नहीं। भारतवर्ष उत्तरी भाग में जितना प्रचार है उतना दक्षिणी भाग में नहीं। क्योंकि अपने घर की चीज पहले अपने घर में फैलती है। इसलिये हम कह सकते है कि ऋग्वेद की ऋचाओं का गान उत्तर भारत में हुआ।

यह पर एक प्रश्न उठ सकता है कि हो सकता है कि आर्य अपने साथ ही वेद ज्ञान लाये हो। यह प्रश्न है तो महत्त्वपूर्ण परन्तु यह तर्क की कसौटी पर ठीक नहीं उतरता। क्योंकि यदि आर्यों ने ऋग्वेद का गान उत्तरी ध्रुव मध्य एशिया में आरम्भ किया होता तो इस सन्देश का प्रचार योरोप या मध्य एशिया में भी होता परन्तु ऐसा नहीं है। यदि ऋग्वेद की गान भारत से बाहर की ओर पूर्व की भूमि पर होता तो इसका प्रचार आस्ट्रेलिया या दक्षिणी अफ्रीका या लङ्का में होना चाहिए था। परन्तु ऐसा भी नहीं है। इसलिये मालूम पड़ता है कि ऋग्वेद का प्रथम संगीत सप्त सिन्धव क्षेत्र में ही हुई।

सप्तसिन्धव का वातावरण भी इस योग्य था। उपर्युक्त सभी बातों से हम कह सकते है कि आर्यों की सभ्यता का उद्गम सप्तसिन्धव भारत से ही हुआ और आर्य यहीं के निवासी थे वे कहीं बाहर से नहीं आये थे। ★

यह एक विद्रोही क्रान्तिकारी की कहानी है—रासबिहारी बोस, जिसने ४६ वर्ष पहले दिल्ली में वाइसराय लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। बाद में वह विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता का झंडा ऊँचा किये रहा और दूसरे महायुद्ध में उसने भारत को प्रायः स्वतंत्र कर ही लिया था।

अभी पिछले महीने जब भारत के कुछ पुराने क्रान्तिकारी दिल्ली में इकट्ठे हुए थे तो रासबिहारी बोस का नाम फिर सुनाई पड़ा था।

× × ×

१ अगस्त १९४२ की बात है थाईदेश की राजधानी बैंकाक में बड़ा सुहावना सवेरा था। रासबिहारी बोस जो उस समय पूर्वी एशिया में भारतीय स्वतंत्रता संघ के अध्यक्ष थे अपनी जगह पर बैठे हुए रेडियो से दिल्ली की खबरें सुन रहे थे। उस समय केवल रेडियो द्वारा ही भारत के हाल-चाल आने जा सकते थे। रेडियो ने उसी समय बताया कि गांधी जी ने अंग्रेजों को "भारत छोड़ो" नोटिस दे दिया है और अपने देशवासियों को "करो या मरो" का सन्देश दिया है। रासबिहारी बोस इसी अवसर की प्रतीक्षा में थे और उन्होंने तुरन्त घोषणा की कि अब हम गांधी जी के आशीर्वाद से आगे बढ़ेंगे।

उस समय रासबिहारी बोस जापानी प्रजा थे और बहुत से लोग उन्हें जापान की सैनिक गतिविधियों का प्रमुख नेता समझते थे। परन्तु लोगों को यह पता नहीं है कि कितनी देर तक दुविधा में पड़े रहने के बाद उन्होंने पूर्वी एशिया में भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन को बढ़ाने के लिये जापान की सहायता लेने का निश्चय किया था। जब से दक्षिण पूर्वी एशिया में जापान ने विजय प्राप्त की थी तभी से वे बड़ी दुविधा में थे। वे जानते थे कि उनकी सहायता से भारत को स्वतंत्र करने का अन्तिम अवसर है। पर साथ ही वे कोई ऐसा काम नहीं करना चाहते थे जिसका भारत में रहने वाले राष्ट्रवादी लोग समर्थन न करें।

युद्धकाल में एकबार रासबिहारी बोस पहले भी बैंकाक आये थे। पर उस समय ब्रिटिश दूतावास के दबाव के कारण वहां की सरकार ने उन्हें देश से बाहर जाने की आज्ञा दे दी थी, परन्तु जापानियों की विजय के बाद वे स्वतंत्रता के साथ बैंकाक फिर आये और दक्षिण पूर्वी एशिया में अपने आन्दोलन का संगठन करने लगे।

× × ×

एक विद्रोही की कहानी—

जिसने अपनी तरुणाई का बलिदान कर भारत को जगाया

स्व० रासबिहारी बोस

[ले०—श्री एम० शिवाराम मद्रास]

८ दिसम्बर, १९४१को जब प्रशान्त महासागर में युद्ध छिड़ा तो रासबिहारी बोस ने हजारो भारतीयों को जेल जाने से बचाया। वहाँ रहने वाले हजारों भारतीय ब्रिटिश नागरिक होने के कारण जापान के शत्रु समझे जाते थे। यद्यपि जहाँ तक जापानियों का प्रश्न था भारतीयों की उनसे कोई शत्रुता नहीं थी। रासबिहारी बोस ने जापान को समझाया कि वह भारतीयों को ब्रिटिश नागरिक न समझें। इस तरह हजारों भारतीय जेल जाने से बचे।

रासबिहारी बोस बड़े मीठे स्वभाव के सरल चित्त व्यक्ति थे। वे केवल काम करना ही नहीं जानते थे। उनमें दूसरों से काम लेने की भी शक्ति थी—पूरी तरह से वह विश्वास करते थे कि अंग्रेजों को हिंसा द्वारा ही भारत से निकाला जा सकता है। उन्होंने कालेज में शिक्षा प्राप्त करना स्वीकार नहीं किया। उनके बहुत से मित्रों ने बताया कि अपने आन्दोलन को चलाने के लिए उन्हें सरकारी नौकरी कर लेनी चाहिये, जिससे कि वे खाली समय में बम बनाते रहें और उन पर कोई संदेह भी न करे। वे जंगल विभाग में नौकर हो गये और कुछ समय तक देहरादून में रहे। उनके साथी लाहौर, दिल्ली, पटना, कलकत्ता आदि उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में फैल गये। उसके बाद उन्होंने वाइसराय पर बम फेंकने के साहसपूर्ण कार्य की योजना बनाई।

जीवन-ज्योति

हुक्म और आदेश देकर नहीं, बल्कि प्रेम और नम्रता के साथ। रासबिहारी बोस अपने सम्बन्ध में बातचीत नहीं करते थे। कई बार हम लोगों ने यह प्रयत्न किया कि वाइसराय पर बम फेंकने के उनके वीरतापूर्ण कार्य की कहानी सुनें। परन्तु वे कभी उसे पूरी तरह से नहीं सुनाते थे। वे गांधी जी की तथा नेहरू जी की बातें करते थे और कहते थे कि इन्होंने ही हमें सच्चा मार्ग दिखाया है। उस समय उनकी बातों को सुनकर यह विश्वास नहीं होता था कि वे कभी घोर क्रांतिकारी थे और बम फैंकने में विश्वास रखते थे।

× × ×

७५ वर्ष हुए रासबिहारी बोस का जन्म चन्द्रनगर (बंगाल) में हुआ था। वे छोटी आयु में ही बंगाल के क्रांतिकारियों में शामिल हो गये। मैट्रिक पास करने से पहले ही उन्होंने देशी बम बनाना सीख लिया। वे इस काम को बोस ने स्वयं अपने हाथों में लिया। उनका निशाना जरा चूक गया और लार्ड हार्डिंग बाल-बाल बच गये। इसके बाद २ वर्ष तक बोस इधर-उधर भटकते रहे और अन्त में वे बड़ी चतुराई से जापान पहुँच गये। एकबार उन्होंने हमें बताया कि जापान आना बहुत कठिन सिद्ध नहीं हुआ। वे कलकत्ते में पुलिस कमिश्नर के पास गये और कहा कि मैं गुरुदेव टागोर का एक सचिव हूँ। वे टोकियो आने वाले हैं और उनके लिये जरूरी इन्तजाम करने के लिये मुझे पहले से वहाँ जाना है। बस, इतने से ही मुझे पासपोर्ट मिल गया।

जापान में भी उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पहले विश्व युद्ध में जापान ब्रिटेन का मित्र था और ब्रिटिश सरकार ने जापान की सरकार को रासबिहारी को भारत भेजने के लिये बाध्य किया। उस समय जापान की एक देश भक्त संस्था (ब्लैक ड्रैगन सोसायटी) ने उनकी रक्षा की। यह संस्था वहाँ बड़ी जोरदार थी और सरकारों को बनाने और उखाड़ने में भी उसका हाथ रहता था। इस संस्था ने रासबिहारी की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। एक दिन वे एकाएक गायब हो गये और जापान की सरकार ने अंग्रेजों को सूचना दी कि वह उन्हें ढूंढने में असमर्थ रही है कई वर्ष तक वे छिपे रहे और इस बीच में वे जापान के नागरिक बन गये।

दोनों महायुद्धों के बीच में २४ वर्ष तक रासबिहारी बोस अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। जब दक्षिण पूर्वी एशिया में जापान ने तेजी से विजय प्राप्त की तो रासबिहारी बोस भारतीय स्वतंत्रता संघ के अध्यक्ष बन गये। उन्होंने बड़ी लगन के साथ और बड़ी मेहनत से इस आंदोलन का नेतृत्व किया। वे कहा करते थे कि यह मेरा अन्तिम युद्ध है। यदि मैं विजयी हुआ तो अपने अन्तिम दिन हिमालय की किसी गुफा में साधु की तरह बिताऊंगा।

दो वर्ष तक बड़ी कठिनाइयों के बीच रासबिहारी बोस भारतीय स्वतंत्रता के आन्दोलन का नेतृत्व करते र इस बीच में भारत और जापान के आपसी सम्बन्धों में कई बार संकट के अवसर पैदा हुए। आजाद हिन्द सेना में भी कई बार संकट उपस्थित हुए। परन्तु रासबिहारी बोस ने अपने प्रेम नम्रता के द्वारा सभी दलों को समझा बुझाकर एकसूत्र में बांधे रखा।

उनके जीवन की एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना उस समय हुई जब १९४३ के मध्य में उन्होंने अपने आन्दोलन की बागडोर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को सौंप दी। इतिहास में किसी नेता ने अपने अधिकारों को इतनी नम्रता और इतनी सद्भावना के साथ दूसरे के हाथों में कभी नहीं सौंपा। अपने साथियों के बीच में उन्होंने खड़े होकर कहा कि शायद आप मुझसे पूछेंगे कि मैं आपके लिये क्या भेंट लाया हूँ। ये हैं सुभाषचन्द्र बोस जो अब हमें रास्ता दिखलावेंगे और हमारे पवित्र आन्दोलन के नेता रहेंगे। उस समय रासबिहारी बोस की आँखों में हर्ष और

[शेष पृष्ठ ११ पर]

भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के नाम—

जनता के कवि का पत्र

★

चार सौ दस लाख जन सकुल वतन के।
एक अदना से अपरिचित प्रजा जन के।
नेह को सम्मान लो, शुभ कामना लो।
और दिल की हलचलाई भावना लो।
मैं अपरिचित हूँ जवाहरलाल तुम से।
किन्तु लोली है कि एक सवाल तुम से।
अकिञ्चन यह पत्र लिखकर पूछता हूँ—।
क्योंकि हक है—यह सियासी जागरण है।
देश स्वर्गादपिगरीयसि हो—कि प्रश्न है।

यदि लगे तुमको कि यह फरियाद मेरी।
यदि लगे तुमको कि यह आवाज मेरी।
यदि लगे तुमको कि यह खत है हिमाकत।
यदि लगे तुमको भरी खत में शरारत।
तो मुझे ठण्डे हृदय से माफ करना।
प्रार्थना है थाम दिल इन्साफ करना।
जी रहे गद्दार द्रोही हैं बराबर।
बोलिये तो, क्या किया इनका जवाहर?
ये करोड़ों देश के मासूम बेटे।
खेत की खलिहान की माटी लपेटे।

खेलते हैं मुस्कराते प्रीत पागे।
व्यास, कालीदास, तुलसी ये अभागे।
दान्ते, गालिब, कबीरा, सूर, थारो।
देश के मासूम ये बेटे करोड़ो।
आज भी नगे बदन मैले-कुचैले।
जल रहे हैं लोग अपना नाम करने।
भुखमरी है—बेबसी है—बेघरी है।
सांस बहुतों में कि जैसे आखिरी है।

जिन्दगी चौबीस घण्टे है दुखों की
है कहानी रक्त गीले आसुओं की
पौ फूटे, जैसे कि आखें मौत खोले
साझ हो मरघट कि क्यों जीवन टटोले
रात की गम्भीरता मे सिसकियाँ हैं
अश्रु हैं, बेचैनियाँ हैं, हिचकियाँ हैं
यह पिघलती धूप दिल की आग लेकर—
बन रही है लू अनेक सुहाग लेकर—

आपके घर हैं मगर सिसके हुए हैं।
फूल नन्हे हैं मगर मसले हुए हैं।
ओठ हैं—मुस्कान पर दब सी गई है।
टीस अपना दर्द शिव सा पी गई है।
किन्तु पाई दर्द ने राहत कहीं क्या?
खेत का हलधर वहीं है—कल जहाँ था।
यह नये संक्रान्ति का सघर्ष पथ है।
देश की निर्माण गति दुर्धर्ष रथ है।
और तुम हो एक जो निर्भय अकेले।
जा रहे हो आंधियों में नाव खेते।

पुटमी पथ के सजग प्रहरी-मुसाफिर।
कुछ थमो—सहमो—विचारो तो जवाहर?

बस तुम्हारा नाम सजीवन मिला है।
देश में हलचल मचा जादू चला है।
घूमता फिरता तिलस्मी काफिला है।
और चिड़ियाघर करिश्मों का पला है।
उफ हृदय को यह फरेब कि सालता है।
व्यर्थ का विश्वास और मुगालता है।
जब फिरगी की हकूमत हिल रही थी।
देश की किस्मत कली जब खिल रही थी।

याद है? तुमने बुलन्दी से गरज कर
देश को चेतावनी दी थी जवाहर
देश के जन द्रोहियो गद्दार समझो
देश के सामन्त पूजीदार समझो
स्वार्थ के पथ भ्रष्ट आदमजात जागो
आ रहा देखो कि रक्त प्रभात जागो
देश के प्रति जुर्म! कैसे माफ होगा?
शूलियों पर द्रोह का इन्साफ होगा।"
वे कहाँ है बोल? आज कहानियाँ हैं।
आज सारे देश में हैरानियाँ हैं।

आज पूजीदार ही नेता बने हैं
सामने गद्दार हितचेता बने हैं
मन्त्रिपद व्यापार का है अन्सकाला
देश-सेवा स्वार्थ का नक्शा निराला

काव्य-कानन

और तुम लाचार से हो? क्यो जवाहर?
बेबसी का नाम क्या तुम हो जवाहर?
क्या तुम्हारी तौल हो व्याधारियो पर?
क्या बने इतिहास भ्रष्टाचारियो पर?
यह नहीं होगा न हरगिज हो सकेगा।
देश का आकाश नेहरू को तकेगा।

तुम बढ़ो आगे वतन को जगमगा दो
तुम भगीरथ बन कि युग गगा बहा दो
तुम वतन को प्रेरणा दो प्राण रस से
आरती हो देश की मगल कलश से
विश्व जय होली, जरा अब देश देखो
मूक वाणी में छिपा आवेश देखो
और देखो बेबसी की सुकपुकाहट
जिन्दगी की मैन्डेयस का फैसला है
पेश जनता की अदालत फैसला है

आ रहा देने गवाही पूर्व का राही
दे रहा चेतावनी तुमको सजग कवि।
तुम जरा कस कर जरा कर दो इशारा।
देश होवे साथ—मैं हो लू तुम्हारा॥

—रामेश्वरप्रसाद गुरु (जबलपुर)

हमारा भारतवर्ष महान

मेरु, द्रोण हिम गिरि, विन्ध्याचल,
गगा, यमुना, कच्छ मरुस्थल
सागर, सरिता, स्रोत समगल,
करते विरद बखान,
हमारा भारतवर्ष महान।

वन, उपवन, फल, फूल, मनोहर
ललित लता, लिपटी तरुवर पर,
सरसिज सहित समोद सरोवर,
करें सदा सुखदान,
हमारा भारतवर्ष महान।

कोकिल, मोर, मराल, कबूतर,
भालु, हरिण, कपि, केहरि, कुजर,
गाय, भैंस, बकरी, तुरङ्ग, खर,
चुगते कर जलपान,
हमारा भारतवर्ष महान्।

ऋषि, मुनि, वीर, व्रती, ब्रह्मचारी,
साधु, सती, सम्राट, सुखारी,
शिल्पी, सुकवि, गुणी, नर नारी,
सबका जन्म स्थान,
हमारा भारतवर्ष महान्।

राम, कृष्ण ने वीर बनाकर,
शेर शिवाजी ने अपनाकर,
प्रिय प्रताप ने प्राण चढ़ाकर,
जीवन किया प्रदान,
हमारा भारतवर्ष महान।

जननी की जय उच्चारगे
जीतेजी जीवन वारेंगे,
मरने पर भी गु जारेंगे,
मरघट कबरिस्तान,
हमारा भारतवर्ष महान्।

बहे सदुन्नति की ध्रुवधारा,
चमके फिर सौभाग्य सितारा,
धर्म्म कर्म्म दोनो के द्वारा
हो सुर लोक समान,
हमारा भारतवर्ष महान।

—हरिशङ्कर शर्म्मा

★

संस्कृत भारत का गौरव

राष्ट्र की आत्मा सस्कृत में है।

—मौ० आजाद

× × ×

सस्कृत भूत वर्तमान तथा भविष्यत में भारत की आत्मा थी और रहेगी।

—प० गोविन्दवल्लभ पन्त

× × ×

सस्कृत ससार में उसी प्रकार अद्वितीय है जिस प्रकार उसका वाङ्मय।

—श्री हनुमन्तैय्या

× × ×

सस्कृत एक मृत तथा गई गुजरी भाषा नहीं है।

—क० मा० मा० ला० मुन्शी

—सुदेश फगवाड़ा

विज्ञान वार्ता

पाताल में सूराख करने की योजना

आज वैज्ञानिकगण राकेटों की सहायता से वाह्य अन्तरिक्ष में अधिकाधिक दूरी तक प्रवेश कर अन्तरिक्ष और सौर-मण्डल के अज्ञात और विस्मयजनक रहस्यों का उद्घाटन करने के लिए ही प्रयत्नशील नहीं हैं, बल्कि वे यह जानने के लिए भी अधिकाधिक व्यग्र हैं कि जिस ग्रह (पृथ्वी) पर वे निवास करते हैं, उसके गर्भ में कौन से रहस्य छुपे हैं और सृष्टि के निर्माण और विकास से उन रहस्यों का क्या सम्बन्ध है ? इस कार्य के लिए वैज्ञानिक गण पृथ्वी के गर्भ में बहुत गहरा छिद्र करने की योजना बना रहे हैं। उनका विचार है कि पाताल-भेदी छिद्र के निर्माण से पृथ्वी की भीतरी सतह के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होगी और यह जानकारी पृथ्वी तथा सौर-मण्डल की आयु निर्धारित करने में उनकी महत्वपूर्ण सहायता करेगी।

इस छिद्र को तैयार करने के लिए उन्हीं विधियों का उपयोग किया जायेगा, जो सामान्यतया तेल-कूप का निर्माण करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं, परन्तु तेल कूप और इस छिद्र में किसी प्रकार की समानता नहीं होगी। अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान एकाडमी के डा० विलर्ड वैरम के अनुसार इस छिद्र को तैयार करने का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि पृथ्वी का भीतरी भाग किन पदार्थों से निर्मित है ?

निरन्तर अनुसन्धान द्वारा वैज्ञानिकों ने यह मालूम कर लिया है कि पृथ्वी में उसी प्रकार की परतें विद्यमान हैं, जैसी प्याज में रहती हैं। सबसे परत पपड़ी कहलाती है और इसकी तुलना मानव-शरीर की चमड़ी से की जा सकती है। दूसरी परत "मैण्टल" कहलाती है। तीसरी परत अनेक प्रकार की धातुओं से मिल कर बनी है।

"मोहो" योजना

वैज्ञानिकों का कथन है कि पृथ्वी की ऊपरी सतह १ मील तक मोटी है। समुद्र में यह सतह कम मोटी, परन्तु बाहर अधिक मोटी है। ऊपरी सतह के बाद दूसरी सतह "मैण्टल" की मोटाई १८०० मील तक है। पृथ्वी की ऊपरी सतह और "मैण्टल" के मध्य एक ऐसी परत भी है जिसे "मोहोल" कहते हैं। वैज्ञानिकों का विचार है कि ऊपर से ऐसा सूराख किया जाए, जो ऊपरी पपड़ी और "मोहोल" को पार करता हुआ "मैण्टल" तक पहुँचे। वैज्ञानिकों ने समस्त योजना का नाम ही "मोहो प्रोजेक्ट" रख दिया है।

सूराख करने की आवश्यकता क्यों?

प्रश्न यह उठता है कि यदि पृथ्वी के अन्दरूनी भाग के सम्बन्ध में हमें इतनी अधिक जानकारी है तो इतना गहरा सूराख करने के लिए धन, समय और शक्ति का इतना अप व्यय क्यों ? यदि समुद्रतल से छिद्र करना शुरू किया जाए, तो भी कम से कम यह सूराख तीन मील गहरा तो होगा ही। योजना के अनुसार समुद्र की सतह से लगभग ३ मील नीचे से यह कार्य शुरू किया जाएगा और यद्यपि यह कार्य अत्यधिक दुष्कर और व्यय-साध्य होगा, फिर भी वैज्ञानिकों को यह विश्वास है कि इस योजना के फलस्वरूप छिद्र करने की अधिक तीव्रगामी और उत्तम विधियों का विकास होगा और इस प्रकार योजना पर होने वाले व्यय की अप्रत्यक्ष रूप से भरपाई हो जाएगी। यही नहीं, इस खुदाई के फलस्वरूप पृथ्वी की ऊपरी सतह में पाई जाने वाली सभी प्रकार की चट्टानों के नमूने वैज्ञानिकों को प्राप्त हो जायेंगे और इन नमूनों का अध्ययन कर वैज्ञानिकगण पृथ्वी की आयु का अधिक सही अन्दाजा लगा सकेंगे। इस सन्दर्भ में एक उल्लेखनीय बात यह है कि समुद्र-गर्भ से निकलने वाले नमूने अपेक्षाकृत अधिक सही जानकारी प्रदान करेंगे, क्योंकि उन पर मौसमी परिवर्तनों इत्यादि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह लगभग अपनी असली हालत में प्राप्त किये जा सकते हैं। इसके विपरीत खुली जमीन की चट्टानें मौसमों से प्रभावित होती रहती हैं और इनके कारण उनमें अनेक परिवर्तन हो जाते हैं। समुद्र-गर्भ के अन्दर से पृथ्वी की ऊपरी सतह को छेदने पर हमें पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकती है। बहुधा यह होता है कि जब चुम्बकी धातु जम बैठते हैं, तो उनका सिलसिला पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति के अनुकूल ही रहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे कुतुबनुमा की सुई। इस प्रकार जब समुद्र के गर्भ के अन्दर से नमूने एकत्र किये जाएंगे, तो यह पता चल सकेगा कि इस दीर्घ अवधि में पृथ्वी के "चुम्बकीय ध्रुवों" में क्या परिवर्तन हुए हैं। वैज्ञानिक यह जानते हैं कि पृथ्वी के चुम्बकीय ध्रुवों में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं और यदि उन्हें पृथ्वी के इतिहास के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त हो जाए, तो इस परिवर्तन के सम्बन्ध में सही तथ्य मालूम करने में उन्हें और अधिक सहायता मिल सकती है।

लेकिन इसके अलावा भी वैज्ञानिकों को और कई महत्वपूर्ण बातों का पता चलेगा। यह भी सम्भव है कि इस अध्ययन से मौसमों और जलवायु में होने वाले परिवर्तनों पर भी कुछ प्रकाश पड़े। पानी के तापमान के अनुसार उसमें घुलने वाली कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा में भी कमी बेशी होती रहती है। अतएव कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा को मापकर यह पता लगाया जा सकता है कि अमुक समय में जल का तापमान क्या रहा होगा। यही नहीं, इन परतों में पाये जाने वाले जीव-जन्तुओं की अस्थियों में मौजूद आक्सीजन को माप कर भी प्राचीन के तापमान का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

वैज्ञानिकों को यह भी आशा है कि छिद्र करने की क्रिया में उन्हें चट्टानों की परतों में दबे अति प्राचीन जीव-जन्तुओं के अस्थि-पंजर और वनस्पति के नमूने भी मिलेंगे। भूमि पर इतने प्राचीन अस्थि-पंजर नहीं मिल सकते, लेकिन एक छिद्र करने से ही यह समस्त जानकारी हासिल नहीं होगी। वस्तुतः कई स्थानों पर इसी प्रकार के छिद्र करने पड़ेंगे। ये छिद्र उन्हीं स्थानों पर किये जाएंगे जहां पर पृथ्वी की ऊपरी परत सबसे कम मोटी प्रतीत होगी। डा० बेसम के अनुसार प्यूर्टोरिको से १०० मील उत्तर की ओर स्थित स्थान इस कार्य के लिए उपयुक्त होगा। इसके अतिरिक्त सेनडियागो के दक्षिण की ओर प्रशान्त महासागर के विषवत रेखा क्षेत्र में भी इस प्रकार का छिद्र करने के लिए उपयुक्त स्थान मिल सकता है। जीव-जन्तुओं के अस्थि-पंजरों का अध्ययन करने के लिए अन्य कई छिद्र किए जा सकते हैं। मोहो-योजना में इसकी पूरी व्यवस्था की गई है।

यदि यह योजना पूरी तरह क्रियान्वित की जा सके, तो निश्चय ही यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। इससे पृथ्वी के उद्भव और विकास, भूकम्पों के कारणों और ज्योतिष-विज्ञान इत्यादि के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

अमेरिकी के राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान ने इस योजना के प्रारम्भिक चरण के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था कर दी। इसके पूर्व भी कई बार समुद्र तल में छिद्र करने का कार्य किया जा चुका है। कई तेल-उत्पादक कम्पनियों ने तो समुद्रतल के नीचे मौजूद तेल को निकालने के लिए छिछले समुद्रों में सफलतापूर्वक तैल-कूपों का निर्माण किया है। परन्तु अभी तक अधिक गहरे जल में ऐसा प्रयत्न नहीं किया गया है। समुद्र गर्भ में छिद्र करने का कार्य चार अमेरिकी कम्पनियां मिलकर कर रही हैं।

समुद्र तल में छिद्र किस प्रकार किया जायगा ?

पहले जिस स्थान पर सूराख करने की योजना होती है, उसके पास ही विशेष उपकरणों से सुसज्जित जहाज लंगर डालकर खड़ा हो जाता है। लगभग ६ लंगरों का उपयोग किया जाता है। जहाज से पिंजड़े की तरह का एक यन्त्र जल में उतारा जाता है, जिसे 'लैंडिंग बेस' कहते हैं। इसमें एक प्रकार का लम्बा पाइप रहता है। इस पिंजड़ेनुमा बक्से की सहायता से छेद करने वाली मशीन को समुद्र तल पर उतारा जाता है। जब ड्रिल (छेद करने वाली मशीन) कई सौ फुट गहरा सूराख कर लेती है, तो छेद करने वाली मशीन को कुछ ऊपर खींच लिया जाता है, लेकिन इस बात का ध्यान रखा जाता है कि छेद करने वाली रेती का कुछ भाग सूराख के अन्दर अवश्य रहे। इसके बाद पिंजड़ेनुमा लैंडिंग बक्स को सूराख के सिरे पर अच्छी तरह जमा दिया जाता है। इसके बाद मोटे-मोटे तारों की सहायता से और अधिक पाइप समुद्रगर्भ में उतारे जाते हैं। इस पाइप के साथ खाली टंकियां सम्बद्ध होती हैं, ताकि पाइप पानी पर तैरता रहे। पाइप का सिरा एक लचीले ट्यूब द्वारा जहाज सम्बद्ध कर दिया जाता है। इसके बाद छिद्र करने का कार्य आसानी से होने लगता है। इसी पाइप के भीतर छेद करने वाली रेती अपना कार्य शुरू कर देती है। यह विधि छिछले पानी में तो काफी कारगर सिद्ध हुई है, परन्तु १२ हजार फुट से अधिक गहराई पर छिद्र करने के लिए इसमें संशोधन करने की

[शेष पृष्ठ ९ पर]

भारत को धर्मग्लानि की स्थिति से उबार कर ही स्वतन्त्रता की रक्षा हो सकती है

[ले०—श्री चिन्तामणि देशमुख भूतपूर्व केन्द्रीय वित्तमन्त्री]

[अभी राष्ट्र में राजनीति के धर्म से दूर होने के कारण एक नये राजनैतिक दल का आरम्भ इन शब्दों में किया गया कि वर्तमान सत्तारूढ़ दल ने भारत के धर्मनिष्ठा के मौलिक तत्वों को आघात पहुँचाया है। लेखक ने भी वर्तमान प्रशासनिक एवं अनैतिक स्वरूप की चर्चा की है। वास्तव में भौतिक प्रगति नहीं नैतिक प्रगति ही स्वतन्त्रता का आधार है। राष्ट्र उस ओर कितना बढ़ रहा है स्वतन्त्रता की सफलता और सुरक्षा का यही मूल्याङ्कन होना चाहिये। —सम्पादक]

आज सबसे मुख्य प्रश्न यह है कि क्या गत १२ वर्षों में भारत के नागरिकों ने अपने व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि वह एक महान् राष्ट्र के नागरिक हैं ?

इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिये राष्ट्र-जीवन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण कर उसकी प्रगति-परागति का विवेक युक्त मूल्याङ्कन करना होगा। स्थिति का विश्लेषण करने पर हम एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि राष्ट्र का प्रशासकीय एवं नैतिक दोनो दृष्टियों से चिन्ताजनक पतन हुआ है।

राष्ट्र के प्रशासकीय पहलू से अधिक महत्त्व का है उसका नैतिक पहलू। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि जानबूझ कर की गई गलती का पता लगाना बहुत ही कठिन होता है। जनता का यह दृढ़ विश्वास है कि सत्ताधिष्ठित लोगों में वे चाहे जिस दल के हों, भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्थिता के प्रति पर्याप्त असहिष्णुता एवं आवश्यक कट्टर घृणा नहीं है आजकल राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा अपनी प्रतिष्ठा को बचाने के लिये बुराई के [illegible] शीघ्र समझौता करने की प्रवृत्ति [illegible] दिन बढ़ रही है।

नैतिक बन्धनों का यह अनजाना और उन्मुक्तस्खलन बहुत शीघ्र और व्यापक मात्रा में हमारे राष्ट्र को हानि पहुँचा रहा है। इतनी भारी हानि शायद भूमि की सतह के कटाव को [illegible] के उपायों के अभाव में भी राष्ट्र को न होगी।

सर्व साधारण जीवन व्यापार एवं राजनीति में आचरण के अनेक मानदण्डों का अस्तित्व ही वर्तमान परिस्थिति का सबसे खतरनाक पहलू है। यदि हम सूक्ष्म निरीक्षण करें तो पता चलेगा कि नैतिक सिद्धान्तों के परित्याग के पीछे समाज के हितों के पोषण की आकांक्षा नहीं तो व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति का बहाना करता है। यद्यपि इसके समर्थन बहुधा कानून के अन्तर्गत न्यायोचित अधिकारों की प्राप्ति का दावा किया जाता है। "संक्षेप में आज सबसे बड़ा अभाव है ऐसे नैतिक नेतृत्व का, जो बुराई एवं नैतिक पतन के प्रति घोर असहिष्णु हो।"

समाज का कल्याण केवल एक ही प्रकार के ट्रस्टीशिप द्वारा हो सकता है और वह है शिक्षा एवं संस्कारों द्वारा परिपक्व प्रतिभा तथा धन को अपने समाज बन्धुओं (जो चाहे जितना अशिक्षित एवं अज्ञानी हों, किन्तु सेवा के पीछे छिपे हुए दूरस्थ स्वार्थों को पहचानने, सन्देह करने एवं असन्तुष्ट होने लायक सतर्क बुद्धि रखते हैं) की सेवा में निष्कामभाव से अर्पित कर देना।

क्या वर्तमान परिस्थिति का कोई हल नहीं है ? क्या भारत पार्किन्स के चक्र का नया उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहा है। हम समझते हैं भारत इस समय धर्म ग्लानि की स्थिति में से गुजर रहा है। शायद यह इसलिये हो कि स्थिति में सुधार आने के पूर्व एकबार उसका अत्यधिक बिगड़ जाना आवश्यक हो। गीता ने शायद आज जैसी स्थिति का ही "धर्मग्लानि" की स्थिति में व्यक्त किया है।

हमें यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिये कि हम अपनी श्रेष्ठ आध्यात्मिक विरासत के सहारे धर्म के राष्ट्र के नैतिकता के पतन को रोक सकेंगे। किन्तु इस महान् प्रयास का नेतृत्व सच्ची शिक्षा प्राप्त एवं प्रकाश युक्त लोगों को करना चाहिये। समाज के विवेकयुक्त तत्वों को परस्पर कन्धे से कन्धा मिलाकर भावी पीढ़ियों एवं समस्त विश्व के समक्ष यह प्रमाणित करना चाहिये कि भारत की राजनैतिक आजादी भ्रष्ट शिक्षा प्राप्त एवं स्वार्थी लोगों के द्वारा नहीं की गयी थी अपितु समर्पित संस्कारित एवं बुद्धिमान लोगों के द्वारा की गयी थी।

★

स्वतन्त्रता का महापर्व

कण कण नाचे तृण-तृण गाये नाचे अम्बर सारा।
स्वतन्त्रता के महापर्व का, आज दिवस है प्यारा॥

आज शहीदों की गाथायें गूंज रही घर-घर में।
स्वतन्त्रता की अमर पताका फहर रही अम्बर में।
प्रकृति सोलहों साज सजाये डोले डगर डगर में—
युगों-युगों से श्रेष्ठ, पूज्य है, भारत देश हमारा।
स्वतन्त्रता के महापर्व का, आज दिवस है प्यारा॥

अट्ठारह सौ सत्तावन की गाथा नहीं पुरानी।
न जाने कितने वीरों ने दे दी अपनी कुर्बानी।
बच्चा-बच्चा बोल उठा था जय झाँसी की रानी—
स्वतन्त्रता है जन्मसिद्ध अधिकार यही था नारा।
स्वतन्त्रता के महापर्व का, आज दिवस है प्यारा॥

फाँसी के तख्तों पर झूले हँसी-खुशी दीवाने।
गोली की बौछारों में भी डटे रहे मरदाने।
बिना गुलामी की जंजीरों को तोड़ वे न माने—
ऐसे वीरों के आगे तो महाकाल भी हारा।
स्वतन्त्रता के महापर्व का, आज दिवस है प्यारा॥

अत्याचारों से न डरे जो विपदाओं से खेले।
चिर निद्रा में मौन पड़े हैं कठिन यातना झेले।
उन्हीं शहीदों की समाधि पर आज लगे हैं मेले—
शत्-शत् कोटि प्रणाम, देशहित जिसने जीवन वारा।
स्वतन्त्रता के महापर्व का, आज दिवस है प्यारा॥

—हरिश्चन्द्र मिश्र पंकज

प्रणव गीत

जिस तरफ भी देखता हूँ, दीखता मम ओ३म् है।
पूर्व पश्चिम दक्षिणोत्तर, सब दिशायें ओ३म् है॥
ओ३म् ऊपर ओ३म् नीचे ओ३म् मम सर्वत्र है।
रोम-रोम भरा सनातन, शान्तिदायक ओ३म् है॥
ओ३म् मम सर्वस्व है, प्रेम मय आनन्द मय।
सर्व सङ्कट का निवारक, सोम मेरा ओ३म् है॥
काले-काले घोर बादल, जब उमड़ते व्योम में।
छिन्न-भिन्न करे उन्हें यह, सूर्य सम मम ओ३म् है।
जब पवन वन में चले शीतल करे रव सायं सायं।
हृदय तन्त्री को बजाता, स्पर्श से मम ओ३म् है॥
ओ३म् पर्वत के शिखर पर, गिरिगुहा में ओ३म् है।
ओ३म् सरिता में कुसुम में तरुलता में ओ३म् है।
ओ३म् रवि में ओ३म् शशि में, ओ३म् तारों में छिपा।
ओ३म् सागर में गगन में सब जगह मम ओ३म् है॥
ओ३म् कोकिल के सुरों में, ओ३म् महिला रूप में।
सरल शिशु की मुस्कराहट, मा के प्रेम में ओ३म् है॥
है यही दृष्टि, ओ३म् दीखे सब जगह।
शान्ति से आनन्द से भरपूर करता ओ३म् है॥
सब दिशाओं दश दिशाओं में सुमङ्गल ओ३म् है
एक रस आनन्द दाता भक्त वत्सल ओ३म् है।

—धर्मदेव विद्यामार्तण्ड

[पृष्ठ ७ का शेष]

आवश्यकता पड़ेगी। यही नहीं, और भी कई समस्याओं को सुलझाना आवश्यक हो जाएगा। इसके साथ ही गहरे समुद्र में जहाज को सुरक्षित ढंग से खड़ा करना भी एक समस्या है। इस प्रकार के सुराख करने के लिए विशेष प्रकार के उपकरणों की भी आवश्यकता पड़ेगी। फिर भी, वैज्ञानिकों को इस बात का पूरा विश्वास है कि व योजना अनुसार सुराख करने में अवश्य सफलता प्राप्त कर लेंगे। यह हो सकता है कि इसमें समय लगे। उनका यह स्वप्न पूरा होकर रहेगा, क्योंकि आज तक मनुष्य ने प्रकृति की किसी कठिनाई और बाधा से पराजय स्वीकार नहीं की है और उसे यह विश्वास है कि इस बार भी विजय उसकी ही होगी।

सा. द. संन्यासी वानप्रस्थ मंडल का वार्षिकोत्सव

सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल, ज्वालापुर (हरिद्वार) का वार्षिक सम्मेलन गुरुकुल घरौंडा (जि० करनाल) में १९, २० जुलाई का श्री स्वामी रामेश्वरानन्द की स्वागताध्यक्षता तथा श्री स्वामी अभेदानन्द जी की प्रधानता में हुआ।

वेद प्रचार में प्रगति लाना, आर्य समाजों तथा सभाओ में जहाँ वहाँ उलझनो को सुलझाने से प्राणों तक की आहुति देने को उद्यत होना, आर्य समाजो और सभाओ के चुनावों में पार्टीबाजी और धन ऐश्वर्य के आधुनिक मापदण्ड को नष्ट भ्रष्ट करके सदाचार, स्वाध्याय और वर्णाश्रम धर्म पालन करने वाले अधिकारी चुने जाने पर बल देना, इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए सत्याग्रह और सन्यासदण्ड के उपप्रयोग से भी न चूकना, निस्स्वार्थता निर्लोलुपता, उपयोगिता और व्यवहार कुशलता द्वारा गृहस्थों समाजों सभाओं और उनके कर्मचारियो के हृदय में सन्यासियो व उपदेशको के प्रति सत्कार भाव एव श्रद्धाभाव बढ़ाना, हिन्दी भाषा को पजाब में उचित स्थान दिलाने का बीड़ा उठाना और सत्याग्रह के लिए तैयार रहना, पदयात्रा अथवा जीप यात्रा द्वारा ग्राम ग्राम में (छोटी छोटी टुकड़िया बनाकर) देश के चहो दिश वेद और भारतीय संस्कृति के प्रचार में जुट जाने के प्रोग्राम को व्यापक रूप देना आदि विषयो पर उत्कृष्ट कोटि के सन्यासियो, वानप्रस्थो और गिने चुने अवैतनिक गृहस्थ प्रचारको और नेताओ में १२ घण्टे गम्भीरतापूर्वक विचार विनिमय हुआ जो प्रस्तावो वक्तव्यों के रूप में पुस्तकाकार छापकर समाजो, सभाओ और संस्थाओ को भेजा जाएगा।

सन्यासियो द्वारा अपने अपने आध्यात्मिक अनुभव बतलाने का ६ घण्टे का प्रोग्राम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। उसमे प्राणायाम, आत्म समर्पण, ज्ञान, ध्यान समाधि, राजयोग क्रिया योग सम्बन्धी निजानुभवों का वर्णन बहुत हितकारी सिद्ध हुआ। मण्डल के आतिथ्य का सब खर्च गुरुकुल घरौंडा ने किया।

चुनाव इस प्रकार हुआ—प्रधान श्री स्वामी अभेदानन्द, उपप्रधान श्री स्वामी विज्ञानन्द और श्री महात्मा हरप्रकाश वानप्रस्थी, मन्त्री—कविराज हरनामदास, उपमन्त्री—श्री स्वामी अभयानन्द, पुस्तकाध्यक्ष—डा० श्री स्वामी आनन्द देव, कोषाध्यक्ष—श्री नूतनदास चावला। अन्तरङ्ग सदस्य श्री महात्मा आनन्द भिक्षु महाशय कृष्ण, श्रीमती प्रेम सुलभा, श्री स्वामी देवानन्द।

ओम मण्डली के कारनामे किसी से छिपे नहीं

दादा लेखराज अपनी स्थिति स्पष्ट करें

सिन्ध के दादा लेखराज की ओम् मण्डली के नवीन नाम रूपात्मक ब्रह्म कुमारी सस्था के सम्बन्ध में मेरी स्पष्ट वादिता पर अनेक ब्रह्मकुमार तथा ब्रह्म कुमारियों के धमकी भरे पत्र आ रहे हैं। मुझसे पूछा जा रहा है—उनके साथ क्या हुआ था? मेरा निवेदन है कि दादा श्री लेखराज, जिन्हें आम लोग जगत के परमप्रिय निराकार ज्ञान-स्वरूप गीता के भगवान् त्रिमूर्ति-परमात्मा शिव "स्वय पिता श्री ब्रह्मा' इन नामों से पुकारते हैं, वे आज भी आबू पर्वत के पोकरान हाउस में आनन्द पूर्वक निवास कर रहे हैं, आप लोग दादा जी से ही क्यों नहीं पूछ लेते कि सन् १९३८ ३९ में सिन्ध में क्या हुआ था, कहा क्या विरोध हुआ था और दादा लेखराज खूबचन्द कृपलानी की प्रमुख शिष्या ओम् राधे ने क्या बयान दिया था। यदि कुछ समय तक स्वय ब्रह्म त्रिमूर्ति गीता के भगवान् ने बोल और चुप्पी साधकर ५००० वर्ष वाली बनावटी प्रलय करने के चिन्तनरूपी मुरली की मुद्रा में निमग्न रहे तो अनेक प्रकार के २० २५ वर्ष पुराने एव आजकल ब्रह्मकुमारियो द्वारा रचे जा रहे नये मुक्ति-व्यूह एव ईश्वर को निराकार मानते हुए भी शरीरधारी दादा लेखराज को साक्षात् ईश्वर बनाकर अनेक प्रकार के शब्दाडम्बर द्वारा फैलाये जा रहे निराधार वेद विरुद्ध पाखण्ड को खण्ड-खण्ड कर जनता को सावधान करने के लिये हमे तो अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ेगा। भोले बन्धुओं! यदि दादा जी ही अपने श्रीमुख से तथ्य वार्ता सुना दें तो आप लोगो को जल्दी निश्चय हो जायेगा। बड़ी नम्रता से मेरा निवेदन है कि यदि आप लोगों का आग्रह जारी रहा तो ब्रह्मकुमारी सस्था के कतिपय आन्तरिक गतिविधियों तथा गुप्त तथ्यों को शीघ्र ही जनता के सम्मुख रखने का प्रयत्न करूंगा। जिज्ञासुजन प्रतीक्षा करें।

रामगोपाल
भू०पू० मन्त्री सार्वदेशिक सभा देहली

अध्यात्म चिन्तन—

आनन्द की खोज में भटकता मानव

(ले०—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए एल. टी , डी. बी कालेज, गोरखपुर)

★

वेदान्त की मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे की उच्च भावना इस प्रकृति में पारस्परिक सौहार्द्र और दिव्य आनन्द प्रभु की प्राप्ति की सोपान है। मानव भौतिक मृग तृष्णा में भटक पारस्परिक विनाश के मार्ग में फंस गया है। आनन्द के लिये आन्तरिक सुख के रहस्य को समझने का शास्त्र का उपदेश ही वास्तविक मार्ग है। —सम्पादक

★

ईश्वर एक है, सच्चिदानन्द स्वरूप है और उसके आनन्दस्वरूप की कामना ही मानव जीवन का उद्देश्य है। हम इस विश्व में देखते हैं कि प्रत्येक प्राणी प्रत्येक जीवधारी, मनुष्य और पशु सब सुख की खोज में घूम रहे हैं। आनन्द की प्राप्ति के लिए मानव कभी प्रकृति की ओर झुकता है, भौतिक ऐश्वर्यों की वृद्धि का प्रयत्न करता है, रेडियो टेली-विजन, अणु-संचालित नाना शस्त्र और अस्त्र यह सब आनन्द या सुख की कामना से किये जाने वाले कार्य हैं परन्तु हम देखते हैं कि उसे आनन्द मिलता नहीं। वह अधिक अशान्त, अधिक दुःखी और अधिक बेचैन होकर पृथ्वी पर भ्रमण करता है। ऐसा क्यों होता है? कभी सोचा है आपने? वास्तव में इसका कारण है कि जहां हम आनन्द के लिए जाते हैं वहाँ आनन्द नहीं। यदि आपको कपड़ा लेना है तो कपड़े की दुकान पर जाना होगा, चीनी के लिए चीनी की दुकान पर और आटे के लिए आटे की दुकान पर ठीक वैसे ही आनन्द की प्राप्ति के लिये आनन्द निधान प्रभु के स्वरूप को समझना होगा और उसके पास पहुँच कर हमें आनन्द लेना होगा, यही मार्ग है जीवन को सुखी बनाने का।

परमात्मा के दर्शन कब हो सकते हैं? परमात्मा के विषय में कठोपनिषद् में कहा गया है कि वह :—

आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः।
कस्तं मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातु मर्हति॥

अर्थात् वह ब्रह्म बैठा हुआ ही दूर पहुँचता है, सोता हुआ सब ओर जाता है, उस आनन्द रूप देव को मुझसे भिन्न कौन जानने को समर्थ है।

इसी प्रसंग पर आगे लिखा है—

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति

साकार पदार्थों में निराकार, चलायमान पदार्थों में अचल, अनन्य व्यापक, परमात्मा को जानकर धीर पुरुष शोक नहीं करता। क्यों? शोक नहीं करता? क्योंकि शोक तो वहाँ होता है जहाँ अविद्या, अभाव और अज्ञान होता है। परमेश्वर तो :—

विश्वतश्चक्षु रुत विश्वतोमुखो, विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः॥ ऋ०१०।८१।३

जिसके आंख सर्वत्र हैं और जिसके सर्वत्र मुख हैं, जिसके बाहु सर्वत्र कार्य कर रहे हैं और सर्वत्र जिसके पांव हैं वह पुण्य पाप रूप बाहु के द्वारा उत्पन्न (पत त्रैः) प्रारब्धीय फलों से जीवों को गति देता है। वही एक दिव्यगुण युक्त प्रभु द्युलोक और पृथ्वी लोक को उत्पन्न करता है।

कठोपनिषद् में लिखा है कि ऐसे परमात्मा को मनुष्य बहुत शिक्षा से नहीं प्राप्त कर सकता है, बुद्धि से भी प्राप्त नहीं कर सकता है और न बहुत सुनने से प्राप्त कर सकता है, न बहुत उपदेश से ही यह ब्रह्म प्राप्त होता है। परन्तु यह ब्रह्म जिसको ही स्वीकार करता है उस स्वीकार करने या छूट लेने से प्राप्त होता है। वह ब्रह्म, उसके लिये अपने शरीर को प्रकाशित कर देता है। (नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा वृणुते तनूं स्वाम्)।

यह हम उस सृष्टिकर्ता परमात्मा की विवेचना नहीं करते जिसके विषय में लोगों की ऐसी धारणा है कि वह हमारी प्रार्थनाओं, हमारी याचनाओं को पूर्ण करने से शक्तिहीन हो जाता है। वास्तव में परमात्मा का स्वभाव है कि वह प्रदान करे और हमारी हार्दिक अभिलाषाओं को परिपूर्ण करे। गुलाब का फूल सूर्य के पास प्रकाश मांगने नहीं जाता। सूर्य का स्वभाव ही ऐसा है कि वह अपना प्रकाश खुले तौर से उसे तथा अन्य सबको देता है। इसी प्रकार परमेश्वर प्रवचन, मेधा अथवा बहुश्रुत होने से नहीं प्राप्त होता। वह परमेश्वर स्वयं जिसे चाहता है उसे वह मिलता है तो प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि क्या वह अन्धाधुन्ध किसी को प्राप्त हो जाता है अथवा प्राप्त होने की कोई मर्यादा या नियम है। ऋग्वेद में एक जगह आया है "न ऋते श्रान्तस्य सख्याय" ऋ० ४-३३-११। अर्थात् यत्न करके थके बिना कोई ईश्वर की मित्रता प्राप्ति के लिये समर्थ नहीं होता। कहने का भाव यह है कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिये अधिकारी बनना पड़ता है। और वह अधिकारी कैसे हो सकता है। इस विषय में इसी उपनिषद में लिखा है .—

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो ना समाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्॥

अर्थात् दुश्चरित्र से अस्थिर मन वाले, चंचल चित्त वाले, संशयात्मा, तृष्णा में फंसे हुए मन वाले भी इसे नहीं प्राप्त कर सकते। वास्तव में इन बुराइयों से मन मलिन हो जाता है। मलिनता से सात्विक भाव मन से नष्ट हो जाते हैं और मनुष्य तमोगुण के अन्धकार तथा रजोगुण के दलदल में फंसा रहता है। यह अवस्था ब्रह्म से दूर करने का कारण है सचमुच, जब हम अनन्य से एकता करने लगते हैं, अपनी आत्मा को संस्कृत करने लगते हैं, जब हम अप्रमाणिकता, स्वार्थ और अपवित्रता को कूड़े करकट की तरह अपने हृदय से निकाल कर फेंक देते हैं तब हमें इन दोषों से रहित शुद्ध परमात्मा के दर्शन होते हैं और हमें प्रभु की महत्ता एवं श्रेष्ठता का भान होने लगता है। हम उसकी श्रेष्ठता को समझकर पवित्रता के उपासक हो जाते हैं।

वही मनुष्य ईश्वर को प्राप्त कर सकता है जिसका अन्तःकरण शुद्ध, निर्मल और पवित्र है।

अपने भाइयों और बहनों से स्वार्थ पूर्ण कुत्सित लाभ उठाने का विचार जब हमारी आत्मा से निकल जाएगा तब हम ईश्वर के निकट पहुँच जायेंगे कि विश्व की सम्पूर्ण अच्छी चीजें हमारी ओर बहने लगेंगी, पर कठिनाई इस बात की है कि हम अपने कुकृत्यों और कुविचारों से उस दैवी प्रवाह के मार्ग में बाधा डाल रहे हैं जो हमारी आत्मा की ओर आ रहा है। अपनी आंखों के सामने आने वाला कोई भी दुष्ट कार्य काले-स्याह परदे के समान है अथवा यों कहिये कि वह हमारी आंखों का जाला है जिससे हम ईश्वर को नहीं देख सकते, उसकी श्रेष्ठता के दर्शन नहीं कर सकते। दुष्ट कार्य ईश्वर से दूर हमें अलग रखता है।

जब हम अपनी दृष्टि को व्यापक बना लेंगे, जब हम संकीर्णता का विचार छोड़ देंगे, जब हम अपने संकीर्ण विचारों से अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना बन्द कर देंगे तब हमें मालूम होगा कि वह वस्तु जिसकी हम खोज कर रहे थे, खुद हमारी खोज कर रही है और वह हमें स्वयं मिल जायगी।

"मिलने न मिलने का तो,
वह मुख्तार आप हैं।
पर तुमको चाहिये,
कि लगी दो लगी रहे॥

स्व० रासबिहारी बोस

(पृष्ठ ६ का शेष)

गर्व के आंसू भरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था कि कोई पिता अपने पुत्र को अधिकार प्रदान कर रहा है। उस दिन सिंगापुर में रासबिहारी बोस के लिए जितने जोर से जयघोष सुनाई पड़ा उतना पहले कभी किसी के लिये नहीं सुना गया था।

इसके बाद के महीने घटनाओं से भरे पड़े हैं। आन्दोलन बढ़ता गया और मजबूत होता गया। आजाद-हिन्द फौज बर्मा की सीमा पर कारवाई करने लगी। कोहिमा और इम्फाल की ऐतिहासिक लड़ाइयां हुईं और फिर घटनाक्रम एकदम पलट गया।

जब बर्मा की सीमा पर लड़ाई पूरे जोरों पर थी तो रासबिहारी बोस टोकियों में अपने घर में बीमार पड़े थे। अन्तिम समय वे बराबर मृत्यु से संघर्ष करते हुए प्रतिक्षण घटनाक्रम का विवरण रेडियो द्वारा सुनते रहते थे। टोकियों पर हमले शुरू हो गये। अमरीकी बम वर्षक नगर पर दिन-रात धुंआधार मचाये रहते थे। चारों तरफ बम गिर रहे थे। रासबिहारी बोस को अन्त समय तक यही चिंता थी कि क्या आजाद हिन्द फौज भारत में पहुंच सकेगी। परन्तु उन्हें इसका उत्तर केवल पास में फटते हुए बमों के धड़ाके से मिलता था। और फिर एक दिन कड़ाके के जाड़ों में सुबह ही एकाएक उन्होंने हमेशा के लिए आंखें बन्द कर लीं। दो चार दिन बाद वह छोटा सा मकान जो रासबिहारी बोस ने टोकियो में बनाया था बमों से ध्वस्त होकर रह गया।

★

आर्यसमाज तथा प्रजातंत्र

[ले०—श्री लक्ष्मीकान्त गुप्त बी० ए० कोटा]

आर्यसमाज एक विशाल संस्था है। देश में फैली हुई स्थानीय समाजें विशाल वृक्ष की जड़ों के समान है। साधारण सभा के सदस्य अपनी समाज के प्रतिनिधि चुनते हैं; इस प्रकार बनी हुई अन्तरङ्ग सभा, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए अपना नुमाइन्दा नियुक्त करती है। पुनः प्रान्तीय सभा विभिन्न समाजों से आये हुए प्रतिनिधियों से निर्वाचन करा पदाधिकारियों का चुनाव करती है·· · ···यही हैं प्रजातांत्रिक प्रणाली। प्रजातन्त्र के समर्थक महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठ समुल्लास में लिखते है, 'एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये किन्तु राजा जो सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा और सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे। यदि ऐसा न करोगे तो प्रजा से स्वतन्त्र राजवर्ग, राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करेगा।'

मूल सिद्धान्त

प्रजातांत्रिक समाज का मूल सिद्धांत है। यह है कि प्रत्येक मनुष्य जीवन की प्रत्येक दशा में अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए समान अवसर पावे एवं समाज की उन्नति में सहायक हो। आर्यसमाज का ९ वा नियम भी यही कहता है, 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।' मगर इस नियम के सर्वत्र विपरीत हो रहा ह। स्वार्थपरता जीवन के अङ्ग २ में रम चुकी है इसके बगैर जीवन ही दूभर हो उठा है। पतन के मार्ग पर अग्रसर मानव बहुत आगे जा चुका है; अब वह ऐसे अमानवीय दोष के विपरीत सोचने को उद्यत नहीं है।

चारित्र्य विकास

प्रश्न उठता है जिस पतन-मार्ग पर मनुष्य अग्रसर हुआ, वापिस कैसे हो? समाज का ८ वा नियम इसका उपचार देता है, 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि' प्रजातन्त्र की सफलता भी इसी में निहिति है, 'अशिक्षित प्रजातन्त्र सबसे बुरी व्यवस्था है। अत· इसकी सफलता के लिए 'शिक्षा का अधिकांश प्रचार आवश्यक है।'

शिक्षा मनुष्य को सामाजिक बनाती है, चरित्र-निर्माण में सहायक होती है। मस्तिष्क विकास तथा हृदय शुद्धता की कुंजी है। आशिक्षित व्यक्ति नये विचार ग्रहण कर ही नहीं सकता।

शिक्षित समुदाय

आज समाज से शिक्षित समुदाय उदासीन हो उठा है नव-रक्त संचलित नहीं हो रहा है। वस्तु एवं योग्य व्यक्ति समाज में प्रविष्ट नहीं हो रहे हैं। प्रौढ़, वृद्ध, अवकाश प्राप्त तथा अशिक्षित पद-लोलुप एवं चालक व्यक्ति समाज में अपना गढ़ बना रहे है। चालाकी से निर्वाचन में सफलता पा लेते है पुन. अपनी स्थिति सुदृढ करने हेतु अवांछित तत्त्वों की प्रविष्ट करा नाकेबन्दी करते हैं। योग्य व्यक्ति निर्वाचनो के झगड़ो में नहीं पड़ते; यही है प्रजातान्त्रिक प्रणाली का दोष। इन्हीं तत्त्वों को समाज के उच्चासन पर पहुँचने ही समाज का १० वा नियम खण्ड २ हो उठता है—'सब मनुष्यों को सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये इस नियम की अवहेलना समाज के लिए अभिशाप बन गई है यही नियम प्रजातन्त्र की कसौटी है।

मगर हमें यह न भूलना होगा कि आर्यसमाज की नींव गहरी है, पवित्र शिला पर रखी हुई है, दृढ एवं अडिग है। आज जो अवाछित तत्त्वों से ऊपर की चुनाई हो रही है वह मिथित एवं धोखा हे वर्त्तमान युग की आंधी में वह बच नहीं सकनी तथा हमें पुनः समाज के मौलिक सिद्धान्तो की शरण जाना है।

आर्यसमाज के १० नियम स्वतः परिपूर्ण है, क्रमबद्ध है, मानव एवं नैतिकता की कड़ी है। जीवन में समृद्धि का राज्य हो, विद्या का प्रसार हो तथा मनुष्य सदाचारी बनकर सौ वर्ष जिये यही आर्यसमाज चाहता है। यही प्रजातन्त्री राज्य है तथा इसी में प्रजातंत्र की सफलता निहित है।

आर्यसमाज को अपनी इसी मिशन की सफलता हेतु स्वहृदय टटोलना होगा सब समायें, आर्य-पत्र एवं उपदेशक सभी इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करें।

★

१५ "अगस्त"

निर्भय होकर पञ्छी गाते आई,
नये पर्व की मनहर बेला।

यह राष्ट्र ध्वजा फहरायेगा
जन-जन का मन हर्षायेगा
बीत गया सा गाकर कवि
सूना मन महकायेगा

दुखी वर्तिका आज जलाने
आई नये पर्व की मनहर बेला।

जन-जन का धुँधलापन दूर हुआ
कोकिल को पथ का आधार मिला
उच्छ्वास छा गया उर तन्त्री में
स्वागत में गीतों का पुष्प खिला

स्वर्ण रश्मियाँ भूपर बिखराने
आई नये पर्व की मनहर बेला।

हर मन का कलुष मिटाने
प्रकृति नया सन्देशा देती
मधुर यामिनी गा-गाकर

उरतन्त्री के तार बजाने
आई नये पर्व की मनहर बेला।

—पारस नाथ "नीलम"

सभा की सूचनाएं

इस वर्ष दीपावली पर ३० ३१ अक्टूबर व १, २ नवम्बर को सभा की ओर से मथुरा में आर्यमित्र की हीरक जयन्ती, गुरुवर विरजानन्द जी की कुटिया का शिलान्यास दयानन्द दीक्षा शताब्दि एवं अभिनन्दन समारोह आदि महोत्सव मनाए जावेंगे। इस अवसर पर अपने प्रान्त ही नहीं सारे भारतवर्ष के आर्य पुरुष इस महोत्सव में पधारेंगे इसलिए दीपावली के अवसर पर इस वर्ष कोई भी आर्यसमाज अपने उत्सव न रखें। जिन समाजों के उत्सव दीपावली पर होते हैं, वह आगे पीछे तारीखों में करने की कृपा करें जिससे सब आर्य भाई अपने इस आयोजन को देख सकें।

आर्यमित्र की फाइलें

मथुरा में होने वाले महोत्सव में एक प्रदर्शिनी भी करने का विचार है, इसके लिए आर्यमित्र की पिछली फाइलों की जरूरत है। प्रारम्भ में आर्यमित्र उर्दू में निकला था। जिन सज्जनों के पास शुरू से अब तक की फाइलें हों या कुछ अङ्क उर्दू वाले हों तो कृपया वे सभा को सूचित करने की कृपा करें।

प्रेमचन्द्र शर्मा, प्रधान मन्त्री सभा

—आर्यसमाज बेहट (सहारनपुर) में नवीन निर्वाचन २९-७-५१ को निम्न प्रकार हुआ।

प्रधान—श्री रामजीलाल जी हिंदी प्रेमी, उप प्रधान—श्री कबूलसिंह जी, मन्त्री—श्री इन्दुसिंहजी आर्य, उपमन्त्री—श्री कबीराम जी, कोषाध्यक्ष—श्री आसाराम जी।

आवश्यकता

एक आर्य परिवार की १८ वर्षीया वैश्य सुन्दर स्वस्थ कन्या के लिये २५ से २८ वर्ष तक के योग्य स्वस्थ सुन्दर पढ़े लिखे वैश्य वर की आवश्यकता है जिसकी स्थायी आय १५०) से २००) मासिक तक हो। कन्या ८ वीं कक्षा में पढ़ रही है, तथा गृह-कार्य में दक्ष है। वैश्य के अतिरिक्त योग्य व्यक्तियों के पत्रों पर भी विचार किया जायगा।

विश्वनाथ त्यागी बी०ए०एल-एल०बी०
प्रधान
आर्यसमाज बांस मण्डी, मुरादाबाद

१५ अगस्त

जन-जन में नवजीवन और नवोत्साह भरने वाली

भारत के इतिहास की चिर स्मरणीय तिथि।

सदियों की दासता का अन्त

अभूतपूर्व राष्ट्रीय एकता का जन्म

और विकास की सम्भावनाओं का प्रादुर्भाव

इस स्वर्ण दिवस के साथ ओतप्रोत है।

आइये! इस दिन हम देश के प्रति

दृढ़ निष्ठा का व्रत लें और

राष्ट्र निर्माण में द्विगुणित उत्साह से हाथ बटायें।

याद रखिये! आर्थिक स्वतन्त्रता के बिना

राजनीतिक स्वतन्त्रता अधूरी रहेगी

हमें अपने देश को सशक्त संपन्न और समुन्नत बनाना है

व्यक्ति और समाज दोनों के स्तर को

हर क्षेत्र में उच्चतर करना है।

गरीबी, बेकारी, अज्ञान को मिटाना है।

इसके लिए कटिबद्ध होकर संकल्प करें और

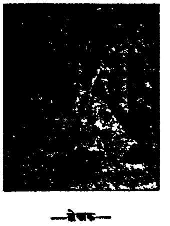
देश एवं प्रदेश के विकास की योजनाओं को सफल बनायें।

संख्या ३—

आनन्द कहां है ?

[श्री वेदपथिक धर्मवीर आर्य, देहली]

सृष्टि के आदिकाल से लेकर अब तक के इतिहास की खोज करने से यह ज्ञात होता है कि एक चक्रवर्ती सम्राट से लेकर और एक भीख मांगने वाला निर्धन सभी आनन्द प्राप्ति के लिये रात दिन अथक प्रयास करते आये हैं और



—लेखक—

रहे हैं तथा महाप्रलयकाल तक करते रहेंगे। प्रश्न यह है कि आनन्द क्या है और कहाँ है और उसकी प्राप्ति का साधन क्या है और कहा है और उसकी प्राप्ति का साधन क्या है।

संसार में कुछ लोगों का विचार है कि करोड़ों रुपयों का स्वामी बन जाने पर तथा रत्न जटित महलों में निवास करना ही आनन्द का चरम लक्ष्य है।

कुछ राष्ट्रनायकों का कहना है कि परमाणु बमों का आविष्कार करके उससे विश्व के मानव समाज का संहार करके चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित कर लेने में ही आनन्द मिलेगा।

कुछ लोगों का कथन है कि अफ़ीम खाने और भांग, चरस सुलफा, तम्बाकू बीड़ी, सिगरेट खाने और पीने में ही आनन्द का ओर छोर है। कुछ लोगों का कथन है कि जिस दिन हम सिनेमा देख लेते हैं उस दिन खाया हुआ अन्न नहीं पचता है और आनन्द नहीं मिलता है।

कुछ लोगों का कथन है कि काशी, मथुरा, मक्का जाने में और देव दर्शन करने में मुक्ति है। कुछ भाई बहनों का विचार है कि दिन रात जितना पाप करो झूठ बोलो छल कपट करो दूसरों को धोखा दो सारे पाप करो और गंगा यमुना में चलकर स्नान करो इसी में ही मुक्ति मिल जायगी। सुख मिलेगा और इससे बढ़कर आनन्द नहीं है।

कुछ लोगों का कहना है कि लूटो, मारो खूब खाओ, पीओ, मौज करो, यही आनन्द है, स्वर्ग-नरक कुछ नहीं है।

एक दिन जीवन पथ में आगे बढ़ते हुए एक पथिक से मैंने पूछा कि बतलाइये महाराज जीवन का आनन्द कहां है।

सृष्टि की आदिकाल से वेदों का ज्ञान प्रकाश मानव जीवन को परिपूर्ण बनाने के लिए ही हुआ था।

वेदों के परम ज्ञाता आत्मज्ञानी महात्मा बोले कि वेदों के शुद्ध ज्ञान को प्राप्त कर लेने पर मनुष्य जीवन मरण के बन्धनों से मुक्त होकर अमर हो जाता है। मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। जो मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है उसे प्राप्त करने में ही परम आनन्द प्राप्त होता है।

परमानन्द पारब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर लेने में ही मनुष्य अपार अकल्पनीय आनन्द सुख को अनुभव करने लग जाता है।

जीवन मरण के बन्धनों से जो जन मुक्त हो जाते हैं उन्हें ही सच्चा आनन्द प्राप्त होता है।

वैदिक धर्म की महानता यह है कि विश्व बन्धुत्व की भव्य भावना में लीन होकर विश्व के प्राणिमात्र के दुखों को दूर करो इससे बढ़कर सुख और आनन्द कहाँ है।

एक वेदों के ज्ञाता महर्षि हैं उनके पास धन वैभव नहीं है पर उनके पास अनन्त जन्मों की तपस्या से संचित वेद ज्ञान का दिव्य प्रकाश है। जिसको प्राप्त कर लेने पर कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता है। ऐसे परम तपस्वी महात्माओं के दर्शन भी आज इस धरा पर अत्यन्त दुर्लभ हो गये हैं।

परन्तु भारत वसुन्धरा आदिकाल से अपनी गोद में महर्षियों को जन्म देती आई है। महर्षियों की जन्मभूमि भारतवर्ष देश है। महर्षियों को जन्म देने का परम सौभाग्य भारत माता को ही प्राप्त है। वैदिक धर्म की मान्यताओं शिक्षाओं और वेद मन्त्रों के अपनाने में तथा विश्व कल्याण के लिये तन, मन, धन निछावर करने में एक धर्मवीर को जो आनन्द प्राप्त होता है। उस आनन्द के पारावार का चित्रण कर उल्लेख कर सकना लेखनी की शक्ति में नहीं है।

एक योगी और महात्मा तथा महर्षि के जीवन में जीवन शक्ति का जो आनन्द का समुद्र उमड़ता हुआ देखने में आता है उस आनन्द का अणुमात्र भी करपति राष्ट्रनायकों को नहीं मिलता है।

ऐ विश्व के नरनारियो संसार में सुख और आनन्द चाहते हो तो अपनी झोली को रत्न-कोष से भरना चाहते हो तो अपने विचारों को पवित्र बनाकर अपने जीवन के आनन्द की लहरों से भरपूर बनाओ।

आलस्य और कायरता को त्याग कर आशावादी बनकर शुभ कर्मों को करते हुए जीवन पथ में प्रतिदिन आगे बढ़ो। यज्ञमय जीवन बना कर इस संसार में अपने जीवन के एक एक क्षण को लोक कल्याण के कार्यों में लगाना इसी क्षण से प्रारम्भ कर दो।

लोक सेवा, लोक उपकार, दीन और दुखियों की सेवा में तथा सहायता में अपना सर्वस्व लगाकर जो आनन्द प्राप्त होता है। उस आनन्द की तुलना मोक्ष सुख से भी बढ़कर है।

भारतीय संस्कृति त्याग और तप के जीवन का दान देती है। त्याग तप और बलिदान का आनन्द ही जीवन के आनन्द की अन्तिम सीमा है।

पवित्र और निष्कलंक जीवन की सुगन्ध में जो आनन्द है वह रत्नजटित महलों में रहने वालों को कहां नसीब है।

आओ अपने जीवन को सादा और पवित्र बनाकर भगवान की प्रजा की सेवा में लग जावें। इसी में जीवन का कल्याण और आनन्द निहित है।

आत्म ज्ञान प्राप्त कर लेने पर जीवन मरण सुख दुख सम्पत्ति हर्ष-शोक आदि सभी घटनाओं में एक योगी पूर्ण आनन्द का अनुभव करने लग जाता है।

संतोष और संयम में अपार आनन्द का अनुभव वेद पथिक को जीवन में मिलता है।

संतोष के बिना शान्ति कोसों दूर है। शान्ति के बिना आनन्द का दिव्य दर्शन कैसे प्राप्त होगा। अतः आओ परमात्मा की गोद में बैठने का हम अपने आपको अधिकारी बनावें और जीवन की बागडोर परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दें।

जीवन का आनन्द चाहते हो तो नित्य प्रति सत्य और असत्य का विचार करके कर्मों को करो और परमात्मा की उपासना में मन वचन कर्म से लग जाओ। वेद ज्ञान की दिव्य ज्योति को प्राप्त करना यही जीवन के आनन्द का रहस्य है। मनुष्य अपने विचारों को यदि पवित्र बनाले तो इससे बढ़कर आनन्द और कहीं नहीं है।

करोड़ों रुपयों से भी बहुमूल्य मनुष्य के पास विचाररूपी धन होना चाहिये। आनन्द अपने हृदय की पवित्रता में ही मिलता है, परमात्मा के दर्शन भी मन मन्दिर में ही मिलते हैं। यह जीवन के आनन्द की अनुपम झांकी है। इसका दर्शन करके आनन्द से अपने जीवन को भरपूर बना लो। नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। ★

यू० पी० सभा घासीराम प्रकाशन विभाग की ओर आर्यसमाजें तत्क्षण ध्यान देवें

[आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों और अन्तरंग सभा में यह सूचना पढ़ देवें]

लेखक—आचार्य विश्वश्रवा अधिष्ठाता घासीराम प्रकाशन विभाग आर्यप्रतिनिधि सभा उ० प्र० लखनऊ

सभा कार्यालय में चार दिन रहकर घासीराम प्रकाशन विभाग का निरीक्षण किया यह विभाग जिन निधियों से चलता था उसमें से एक सौ रुपया वार्षिक की आय सम्पत्ति शेष है। वर्ष में एक सौ रुपये से कोई ग्रन्थ नहीं छप सकता। सभा के प्रकाशन विभाग में पर्याप्त उपयोगी ग्रन्थ विद्यमान हैं जिन की बिक्री नहीं हो रही है। उन समस्त पुस्तकों की समालोचना सहित विस्तृत वर्णन आर्यमित्र में प्रकाशित किया गया है जिससे आर्यसमाजें यह समझ सकें कि सभा के पास जो ग्रन्थ विद्यमान हैं वे उनके लिये कितने उपयोगी हैं। केवल अगला प्रकाशन के लिये धन न होने के कारण हम अपने सब ग्रन्थों को सस्ते भाव पर समाजों को दे देना चाहते हैं। लक्ष्य केवल इतना है कि बिक्री से जो धन प्राप्त हो उससे नये और ग्रन्थ छप जावें। इस अवसर से समाजों को थोड़े व्यय में पिछले ग्रन्थ मिल जावेंगे। अतः यू० पी० की समाजें अपनी अन्तरङ्ग सभा और साप्ताहिक अधिवेशन के द्वारा यह निश्चय करके भेजें कि एक सेट ५१) का उनकी समाज को वी० पी० द्वारा भेज दिया जावे सभा के प्रकाशन विभाग में ऐसे ग्रन्थ हैं जो वेद प्रचार सप्ताह पर वितरण करने के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं।

इसके अतिरिक्त जो महानुभाव अपनी स्मृति में अपने व्यय से कोई ग्रंथ छपवाना चाहें वे हमें सूचना दें। प्राचीन ऋषियों के अनेक ग्रन्थ बिना छपे पड़े हैं एक एक व्यक्ति एक एक ग्रंथ प्राचीन ऋषियों का छपवा दें तो आर्य साहित्य का उद्धार हो जाय। वैदिक वाङ्मय के स्वाध्याय के कारण वे सभी ग्रन्थ मेरी निगाह में हैं। कुछ छपे हैं कुछ पड़े हैं। अभी गाजियाबाद में एक महानुभाव मुझे मिले जो २००) से एक ग्रन्थ छपवाना चाहते हैं। कई वर्षों से उनकी प्रतीक्षा है कि कौन क्या हमें लिखता है। आशा है वैदिक साहित्य प्रेमी अपने अमूल्य सहयोग से ग्रन्थों के प्रकाशन में सभा की सहायता करेंगे।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
श्रावण १८, शक १८८१
(९ अगस्त १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : [illegible] तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

जनगणना के मोर्चे पर—

'प्रजातन्त्र में ईसाई मिश्नरियां'

[श्री भगवतीप्रसाद जी, आर्यसमाज, बलिया]

[आज देश में धर्म निरपेक्ष नीति का दुरुपयोग सुविदित है। विदेशी ईसाई मिशन इस नीति का स्वार्थ पूर्ति के लिए उपयोग कर रहे हैं जैसे कम्युनिस्ट पार्टी अपने प्रभुत्व के लिये संविधान की ओट लेने लगी है। भविष्य में शीघ्र ही भारत में जन गणना का कार्य होने वाला है। ईसाई मिशन इस बात के लिए सक्रिय है कि जैसे भी सम्भव हो छल-कपट, लोभ-लालच द्वारा अशिक्षित एवं निर्धन भारतीयों को ईसाई बना लिया जाय। धर्म परिवर्तन के स्वेच्छा सिद्धान्त पर किसी को कोई आपत्ति नहीं है पर उद्देश्य और साधन दोनों ही जब अपवित्र हों तब उसको कैसे सहा जा सकता है। अत भारत की जन-गणना के मोर्चे पर हम सबको अभी से सावधान और सतर्क रहना चाहिये। लेखक ने इस सम्बन्ध में भावी संकट की ओर पाठकों एवं सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का ध्यान आकृष्ट किया है। —सम्पादक]

हमारे देश को स्वतन्त्र हुए लगभग १२ साल व्यतीत हो गये हैं। इसी बीच हमारा संविधान बना और हमारा राज्य "धर्म निरपेक्ष" घोषित हो गया। फलतः जो ईसाई मिशन पहिले यहाँ से वापिस चले भी गये होंगे वे भी फिर यहाँ वापिस आकर हमसे हमारे लालों को पहिले से भी बड़ी संख्या में हमसे छीनने लगे हैं। यदि यह कहा जाय कि हमारे हाथ पैर काटे जा रहे हैं तो अत्युक्ति न होगी।

हमारा यह प्यारा भारत देश अशिक्षा के घोर अंधकार में गर्त है। और ऐसे समय में ही इन मिश्नरियों को जो धन, जन, बल तथा आधुनिकतम उपायों से सज्जित है यहाँ प्रचार करने की आज्ञा देना हमारे लिये बड़ा घातक सिद्ध हो रहा है। यदि यही स्थिति जारी रही तो आज से २० वर्ष बाद देश की स्थिति दूसरा ही रूप धारण कर लेगी।

अगर संविधान की इस "धर्म निरपेक्ष" धारा को २५ साल बाद यहाँ लागू किया जाता तो कोई बुरा नहीं होता। क्योंकि तब तक हमारे अशिक्षित भोले भाले भाई शिक्षित हो जाते। और फिर उन्हें अपने भले बुरे का ज्ञान हो जाता अगर हिन्दी को राष्ट्र भाषा के पद पर लाने वाली संविधान की धारा को १५ वर्ष के पश्चात् तक के लिए भी बढ़ाया जाना सोचा जा सकता है तो फिर क्या उसी प्रकार देश के भले के लिये ईसाई मिश्नरियों को जब तक हमारी जनसंख्या ९५ प्रतिशत शिक्षित न हो जाये अनुमति न देना सम्भव नहीं है।

पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा देश का चतुर्दिक विकास हो रहा है। शीघ्र ही पिछड़े अति काफी योग्य हो जावेंगे। पर अगर इस विकास के नाम पर ईसाई मिश्नरियों को भारत में प्रवेश इसी प्रकार करने दिया गया तो यह देश भारत न होकर पता नहीं क्या हो जावेगा। क्योंकि जब विदेशी लोगों ने व्यापारी के बहाने यहाँ आकर हमारा राज्य तक हमसे छीन लिया। तो मिश्नरियों के बहाने आकर हमें एक उस गड्ढे में धकेल देंगे जिसमें से निकलना बड़ा दुश्वार होगा। वे हमारी कमजोरियों से पहिले से ही परिचित हैं। तथा अब वे पहिले से अधिक शक्ति वाले हैं हमको छिन्न-भिन्न करने की क्षमता रखते हैं।

अगर यह मिश्नरियाँ इसी प्रकार अबाधगति से यहाँ अशिक्षित व भोले-भाले [illegible] को अस्[illegible], स्कूल व सेवा के नाम पर हम[illegible] छीनती रहीं तो क्या स्थिति होगी देश की पाठकगण जरा सोचें।

मालूम पड़ता है स्वतन्त्रता लेकर हम आलसी हो गये हैं और थोड़ी सी चमक दमक के पीछे अपने को व अपने पूर्वजों को भूले जा रहे हैं। वरना कोई कारण नहीं है कि हम इन थोड़े से विदेशी मिश्नरियों का मुकाबला न कर सकें।

हम ईसाई मिश्नरियों के द्वारा हमारे देश को, हमारी राष्ट्रभाषा व संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट होते देखना हम कैसे सहन कर रहे हैं। हमारे देशवासियों को क्या हो गया है भगवन! आप ही फिर इनकी रक्षा करें। और स्वामी दयानन्द जैसे मेधावी वीर फिर इस देश को दें।

१—धीरे-धीरे ईसाइयों की काफी संख्या हो जावेगी। और फिर वह अपनी मातृ भाषा इंग्लिश बतलावेंगे और इस भाषा को भी संविधान में मान्यता दिलाकर हमारी संस्कृति पर कड़ा प्रहार करेंगे।

२—एक समय होगा कि वह इसी संख्या के आधार पर अपना अलग प्रान्त बनायेंगे। क्योंकि वोट का जमाना है कोई न कोई पार्टी इनका साथ दे देगी। और इस प्रकार भारत के खण्ड-खण्ड हो जावेंगे।

३—जिस प्रकार पाकिस्तान में सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास को जब्त किया जा रहा है उसी प्रकार ये लोग अपने संख्या बहुल प्रदेश में केवल १३ वें समुल्लास को ही नहीं दूसरी धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने पर भी रोक लगा देंगे।

४—अब तो यह पिछड़े भाई हमारे ही हैं। पर फिर यह विदेशीनामों से विभूषित हो जावेंगे। और अपना स्वयं विदेश को ही समझेंगे। साथ ही भारत के नदी, पहाड़ आदि का नाम भी बदलने की कोशिश करेंगे।

५—अब तो बच्चों को भी पाठ्य पुस्तकों में यह धड़ल्ले के साथ पढ़ाया जा रहा है कि आर्य लोग मध्य एशिया से आये हैं। सो यह ईसाई बने लोग ही कहने लगेंगे कि यह देश हमारा अपना है। बाकी लोग सब भागो और इनकी पीठ पर इनकी मदद करने को बड़े बड़े परमाणु बम व हाइड्रोजन बम होंगे तो फिर जिस प्रकार यहूदियों को जर्मनी से भागना पड़ा उस प्रकार हिन्दू (आर्य) लोग कहाँ जावेंगे यह भी सोच लें। क्या इस जाति का अब फिर कोई ठिकाना रह सकेगा।

भाइयो औरंगजेब का वह नृशंस अत्याचार भी इनको हमारे इन आदिवासी व हरिजन भाइयों को न छीन सका। चाहे इन्हें जजिया सरीखे कर देने पड़े। पर इन आदिवासियों के सिर पर अभी तक लम्बे बालों जैसी लम्बी-लम्बी चोटियाँ [illegible] होती रही हैं। पर वह अब पूर्ण रूप से हमारे असावधान होने के कारण विदेशी होते जा रहे हैं। यह क्या हो रहा है? यह [illegible] जा रही है। जो हमारे ऋषि मुनियों की यहाँ रखने की [illegible] भाइयों लेंगे।

भाइयो इस कुम्भ कर्णी निद्रा से अब तो उठो। समय आ गया है। विदेशियों द्वारा हमारे भाइयों का छीनना सत्य और अहिंसा की नीति के द्वारा रोको। स्वतन्त्रता की रक्षा करो स्वामी दयानन्द व बापू जी की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अपने तन, मन, धन को बलिदान करदो।

समय आ गया है रणक्षेत्र में कूदने का, इन छद्म वेशधारियों से लोहा लेने का (शास्त्रार्थ करने का)। अगर अब भी न चेते तो फिर बड़ी बड़ी समस्यायें रास्ते में खड़ी हो जावेंगी। और फिर अपने भाइयों को वापिस लाना कठिन होगा। अत अब भी समय है चेतो फिर वह दिन दूर नहीं जब हमको इस असावधानता के कारण बुरे परिणाम देखने पड़ेंगे। और अगर बाद में चेते तो क्या होगा क्योंकि "का वर्षा जब कृषि सुखाने।" ★

बाबूराम आर्य द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



वर्ष ८३] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [वार्षिक मूल्य विदेश में
अंक ३० नए पैसे] लखनऊ, रविवार भाद्र ८, शक १८८१, भाद्र कृ० ११, वि० २०१६, ३० अगस्त, १९५९ ई० [१६शिलिंग

समारोह की सफलता के लिए आर्य बन्धुओं में उत्साह

२३ अगस्त की बैठक में प्रमुख कार्यकर्ताओं और अधिकारियों ने भाग लिया

प्रांतों-जिलों और नगरों की आर्यसमाजें ८ सितम्बर से १२ सितम्बर तक दयानन्द दीक्षा शताब्दि सप्ताह मनावें

२३ अगस्त की मथुरा बैठक में समारोह की सफलता के लिये आवश्यक प्रबन्ध निश्चयों के अतिरिक्त यह निश्चय किया गया है कि आर्यजगत् से बाहर की जनता तक शताब्दि समारोह का सन्देश पहुँचाने के लिये एक सप्ताह मनाया जाय। आर्यबन्धु इस सप्ताह में अपने नगर व क्षेत्र में समारोह कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देने के लिये टोलियाँ बना-बनाकर जन-सम्पर्क स्थापित करें। भारत राष्ट्र निर्माता महर्षि दयानन्द का सन्देश और उनके गुरु विरजानन्द के आदर्श पथ-प्रदर्शन की चर्चा करें और नागरिकों तक शताब्दि समारोह का सन्देश पहुँचाकर समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें। साथ ही समारोह की सफलता और 'श्री विरजानन्द दण्डी गुरुधाम" के निर्माण कार्य में सहयोगार्थ धन-संग्रह करने का प्रयत्न करें। सप्ताह के दिनों में दैनिक क्या प्रगति हुई इसका भी सिंहावलोकन करते रहें।

समारोह समिति का कार्यालय मथुरा में स्थापित

समारोह की सफलता के लिये कार्यकर्ताओं का पहुँचना शीघ्र ही आरम्भ होने वाला है। स्थान स्थान से कार्यकर्ताओं के पत्र पहुँच रहे हैं अत २१ अगस्त से समिति ने अपना मुख्य कार्यालय आर्यसमाज तिलक द्वार मथुरा में स्थापित कर दिया है।

समारोह समिति के मन्त्री श्री उमेशचन्द्र स्नातक समारोह सम्पन्नता के लिये स्थायी रूप से वहाँ पहुँच गये हैं अन्य कार्यकर्ता भी शीघ्र पहुँच रहे हैं।

स्वागत व प्रबन्ध व्यवस्था के लिये श्री रमेशचन्द्र जी वकील (मथुरा) स्वागत मन्त्री निर्वाचित किये गये हैं और उन्होंने कार्य आरम्भ कर दिया। प्रबन्ध कारिणी के कार्यकर्ता अध्यक्ष श्री कर्णसिंह जी (उपमन्त्री आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश) समारोह प्रगति के लिये प्रयत्नशील हैं।

६ सितम्बर को प्रान्त के प्रमुख क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं की बैठके होगी

समिति ने उत्तर प्रदेश के आर्य बन्धुओं को प्रेरणा दी है कि क्षेत्रों में शताब्दि समारोह प्रचार की अब तक क्या प्रगति हो सकी है और आगे किस प्रकार कार्य आगे बढ़ाया इस सम्बन्ध में ६ सितम्बर को कार्यकर्ता अपनी बैठकें करें। और समारोह में क्षेत्र के सहयोग और पहुँचने वाले व्यक्तियों आदि का निश्चय करें।

बम्बई, कलकत्ता, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि स्थानों में डेपूटेशन भेजने का आयोजन किया जा रहा है।

मथुरा चलो, मथुरा चलो, यही आपके लिये समिति का निमन्त्रण है।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

पंजाब की भाषा-सम्बन्धी उलझन

—लेखक—श्री सन्तराम जी—

मनुष्य प्राणी बड़ा स्वार्थी है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए वह उचित और अनुचित, तर्क और कुतर्क, किसी भी बात का उपयोग करने में संकोच नहीं करता। जिस चीज को वह एक समय बुरा कहते नहीं थकता, स्वार्थ-सिद्धि के लिए दूसरे समय उसी को काम में लाते उसे तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं होता। हम बड़े-बड़े राजनीति नेताओं को जात-पांत की निन्दा करते देखते हैं। परन्तु जब संसद या विधान सभा के चुनाव आते हैं। तब वही लोग अपने लिए वोट लेने के उद्देश्य से मतदाताओं से जात के नाम पर अपील करते पाये जाते हैं। सभी समझदार लोग जात-पांत के समान ही प्रान्तीयता की भी निन्दा करते हैं। वे उसे भारत की अखण्डता के लिये हितकर कहते हैं। इतना ही क्यों, हमारे प्रधान मन्त्री तो एक विश्व राज्य की भी सिफारिश करते हैं। वास्तव में संसार में सुख-शान्ति बनाए रखने का एकमात्र उपाय एक विश्वराज्य की स्थापना ही है। आज संकुचित राष्ट्रीयता मानव-जाति के लिए एक अभिशाप बन गई है। सब यही कह रहे हैं—गलत हो सही, बस मेरा ही राष्ट्र बढ़े फूले। यही कुत्सित भावना संसार की अशान्ति का एक बड़ा कारण है।

पंजाब में आज हिंदी और गुरुमुखी (पंजाबी) का विवाद भयंकर रूप धारण कर रहा है। हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिये पंजाब की सत्तर प्रतिशत जनता को पिछले वर्ष सत्याग्रह करना पड़ा था। उस धर्म युद्ध में सुमेर सिंह जैसे कई नवयुवकों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी थी। सरकार की ओर से आश्वासन देने पर कि हिन्दी प्रेमियों के साथ न्याय किया जायगा और भाषा समस्या का कोई उचित समाधान ढूंढ लिया गया है, यह सत्याग्रह आन्दोलन कुछ काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। परन्तु खेद है कि पंजाब के हिन्दी-प्रेमियों के पक्ष का युक्तियुक्त समाधान करने के बजाय अब पंजाबियों में प्रान्तीयता के क्षुद्र भाव को उत्तेजित करके इस आन्दोलन को दुबारा उठने से रोकने का यत्न किया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पंजाबियों को खुश होना चाहिये वरन् अपना सौभाग्य समझना चाहिये कि बंगला, तामिल अथवा मराठी के समान ही उनकी मातृभाषा पंजाबी को भी संविधान ने भारत की चौदह मुख्य भाषाओं में एक मान लिया है। अपनी न्यायोचित मांग को ठोकर देने के लिये पंजाबियों को भड़काते हुए इसे "पंजाब के स्वाभिमान को एक चुनौती कह दिया गया है। मानो पंजाब में सब भोन्दू और अदूरदर्शी लोग बसते हैं जो अपने हिताहित और मानापमान को नहीं समझते और ये पंजाब से बाहर बसने वाले सरकारी आदमी पंजाब का हित अधिक समझते हैं।

हमारे ये परामर्शदाता और हितैषी नहीं समझते कि यह प्रान्तीयता का गर्व और प्रान्तीय बोलियों का यह झूठा मोह राष्ट्र को टुकड़े करके रसातल में पहुँचा देगा। यदि बंगाली और तामिल लोग प्रान्तीयता के घातक रोग से ग्रसित हैं तो उनको उस रोग से छुड़ाने की आवश्यकता है न कि शिकार बना देने की। जब कोई बंगाली बंगाल को अपनी मातृभाषा कहता है। तो उसका अर्थ ऐसा होता है कि बंगाल उसकी मां है। उसी प्रकार जब कोई मराठा मराठी को अपनी मातृ भाषा कहकर उससे अनुचित मोह करता है। तो उसका स्वभाविक अर्थ होता है कि वह महाराष्ट्र को अपनी मां समझता है। ऐसी दशा में प्रश्न होगा कि फिर भारत किसकी मां है? क्या इसे झूठ ही चालिस कोटि सन्तानों की जननी कहा जाता है। ब्रिटिश शासन काल में जो भारत एक अखण्ड राष्ट्र देख पड़ता था वह हमारे इन प्रांतीयतावादी कथित देश हितैषियों की कृपा से फिर खण्ड-खण्ड होता जा रहा है। भाषा जनता को एकता के सूत्र में बांधती है। किसी देश में एक भाषा को बोलने और समझने वाले लोगों की जितनी अधिक संख्या होगी राष्ट्र की एकता और सुदृढ़ता के लिए उतना ही अच्छा है। खेद है कि इस सुवृत्ति को बढ़ाने के बजाय लोगों में झूठा प्रान्तीयता का भाव उत्तेजित करने की कुचेष्टा की जा रही है। भाषा की बलिवेदी पर चढ़ाना ठीक नहीं।

कहा जा रहा है कि भाषा-संबंधी समस्या का हल आन्दोलन या संघर्ष से नहीं हो सकता। तो प्रश्न होगा कि फिर इसका समाधान किस मार्ग से सम्भव है? जब सत्ताधारी दल न्याय करने को तैयार न हो और एक साम्प्रदायिक तत्त्व से भयभीत होकर इस छोटे से राज्य को दो क्षेत्रों में विभक्त करने को तो उद्यत हो जाय परन्तु ७० प्रतिशत लोगों की न्यायसंगत बात भी सुनने को तैयार न हो तो जनता क्या करे। सत्ताधारी दल की इस पक्षपात वृत्ति को देखकर पंजाब का हिन्दू अनुभव करने लगा है कि न्याय अब कोई चीज नहीं रही, अब तो जिसकी लाठी उसी की भैंस वाली कहावत चरितार्थ होरही है।

पंजाब के हिन्दी-समर्थकों को डराया जा रहा है कि हिन्दी के पक्ष में आन्दोलन करने से मद्रास और बंगाल में लोग हिन्दी का विरोध करने लगेंगे। ऐसे लोगों को पता ही नहीं कि पंजाब के हिन्दू-हिन्दी को राष्ट्र-भाषा ही नहीं, वरन् अपनी क्षेत्रीय एवं धार्मिक भाषा भी मानते हैं, वह अपनी बोली को हिन्दी की वैसी ही एक बोली मानते हैं। जैसे कि ब्रज की बोली, अवधी या भोजपुरी आदि हैं। इसका पंजाबी नाम भी बहुत आधुनिक है। अठारहवीं शताब्दी तक मुसलमान भी इसे 'हिन्दी' ही कहते थे। इसका वास्तविक नाम "लँहदी हिन्दी" है।

यह ठीक है कि बच्चे की शिक्षा उसकी मातृभाषा में होनी चाहिए। परन्तु मातृभाषा केवल वह बोली नहीं जो उसकी मां बोलती ही है। वरन् 'जिसे वह बोलती या समझती है।' यदि ऐसा नहीं होगा तो बोली तो बारह-बारह कोस पर बदलती है पंजाब के एक एक जिले में ही तीन-तीन चार-चार बोलियां बोली जाती हैं। इन सब बोलियों में पाठ्य पुस्तकें तैयार कराकर बच्चों को पढ़ाना सम्भव है? बोली समझने की बात की जाय तो गुरुमांव जिले की बोली अमृतसर में और फिरोजपुर की हिसार में भली भाँति समझी जाती है इन प्रदेशों के अधिवासी जब आपस में मिलते हैं तो अंगरेजी में नहीं बोलते। इस प्रकार मद्रास में हिन्दी का विरोध होने का डरावा देना है तो केवल पंजाब के हिन्दुओं को ही क्यों, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान वालों से भी कहिए कि अपने यहाँ हिन्दी का पक्ष न लो, नहीं तो बंगाली हिन्दी का विरोध करने लगेंगे। यह एक विचित्र धमकी है। बंगाली और तामिल वाले भी चुप होकर देख लें। पार्थक्य में उनका सर्वनाश अवश्यम्भावी है। यदि भारत को एक सुदृढ़ और सुखी राष्ट्र होकर रहना है तो इसकी जन-जनता के बाल बढ़ाने वाले क्षेत्रों को राष्ट्र के सामूहिक हित के लिए प्रान्त और बोली का झूठा मोह छोड़ना पड़ेगा। अन्यथा सबसे पहले पंजाब तो सबसे पहले पाकिस्तान का शिकार बन जायेंगे। मुगल शासन-काल में पंजाबी फारसी पढ़ते रहे हैं। अब उन्हें हिन्दी पढ़ते क्यों अपमान का अनुभव होता है? निजाम हैदराबाद ने तैलगू, तामिल और कन्नड़ भाषा भाषियों को उर्दू पढ़ने पर विवश किया था। महाराष्ट्र के पैशवाओं की चौकियों में फारसी भरी पड़ी है। उस समय किसी ने उसका विरोध करने का साहस न किया। अंग्रेजी भी मातृ दूध की तरह स्वीकार कर ली। अब उस सारी मानसिक दासता की कसर हिन्दी विरोध के रूप में निकालना आत्महत्या नहीं तो और क्या है? पंजाब में हिन्दी प्रेमी यह नहीं कहते कि सबको हिन्दी पढ़ने पर विवश किया जाय। वे तो कहते हैं कि हमें हिन्दी पढ़ने और न्यायालय में काम में लाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। परन्तु सरकार बलात उनके गले में (पंजाब) ठूंस रही है। इसी अन्याय और अत्याचार को दूर करने के लिए आन्दोलन करना पड़ता है।

एक ओर तो यह कहा जा रहा है कि भारत की सभी भाषाएं एक ही लिपि में लिखी जायं तो सब प्रान्तों को एक दूसरे के निकट आने में बड़ी सहायता मिलेगी, दूसरी ओर यह कहा जा रहा है कि जैसे बंगला की लिपि अलग है वैसे पंजाब की बोली की लिपि भी अलग गुरुमुखी होनी चाहिए और उसमें यदि कुछ दोष हैं तो उन्हें दूर कर लेना चाहिए। यह बात भी एक विशेष साम्प्रदायिक तत्त्व की अनुचित सन्तुष्टि के लिए ही डर कर कही जाती है। यह प्रान्तीयता का झूठा गर्व बढ़ाने वाली विनाशकारी है। जब गुरुमुखी से सैकड़ों गुणा अधिक अच्छी लिपि देवनागरी वर्तमान है। और साम्प्रदायिक तत्त्व तथा सरकारी विरोध के रहते भी नागरी का प्रचार पंजाब में गुरुमुखी से सात आठ गुणा अधिक है। जैसे कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या से स्पष्ट है। तो फिर एक बढ़िया चीज को छोड़कर एक घटिया चीज को ग्रहण करने को कहना बुद्धि का दीवाला नहीं तो और क्या है? मद्रास में यदि संस्कृत भाषा और अब हिन्दी का विरोध है तो इसके लिए पंजाब को दोषी ठहराना सरकार की नासमझी है। इसका कारण महना है। उस कारण को न तो राष्ट्रवादी हिन्दू सुनने को तैयार हैं और न हिंदी-प्रेमी हिन्दू। यह एक ऐसी समस्या है जिसका छोड़ना और पकड़ना दोनों दुर्लभ हैं। मेरे पूछने पर मेरे एक हिन्दी विरोधी तामिल मित्र ने कहा था कि

[शेष पृष्ठ १६ पर]

वैदिक राष्ट्र-गीत

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु । बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम् । अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम् ॥

(गीतिका छन्द)

हे मातृभू ! कान्तार तेरे, सौख्यकारी सब बने ।
गिरि गुहा पर्वत प्रदेशों में सभी चरि हम हनें ।
ध्रुव विश्वरूपा जो रही कृषि पोषिणी माता मही ।
हम वीर बन कर हों न हत, जोमें अजित अक्षत वही ॥

Let they hills and snowy mountains let thy forest land O earth, be pleasant, upon the brown black, red all formed fixed earth the earth guanded by Indra I unharassed unsmitten unwounded have stood upon the earth

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०



लखनऊ—३० अगस्त १९५१ दयानन्दाब्द १२६ सृष्टि संवत् १९७२९४९०५०

धार्मिक शिक्षा समिति

भारत के नैतिक पक्ष की उन्नति चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार ने सुप्रसिद्ध विद्वान् बम्बई के राज्यपाल डा० श्री प्रकाश जी की अध्यक्षता में भारत में धार्मिक शिक्षा की क्या व्यवस्था और नीति हो इस सम्बन्ध में विचारार्थ एक समिति का निर्माण किया है।

देर आयद दुरुस्त आयद के अनुसार हम इस समिति निर्माण का स्वागत करते हैं। वास्तव में देश के वर्तमान पतन का मूल कारण यही है कि शिक्षा में धार्मिक दृष्टिकोण समाप्त हो चुका है। शिक्षा का केवल अर्थकरी दृष्टि से ही व्यवहार हो रहा है। भौतिक विकास ही हमारी योजनाओं का लक्ष्य है। पर यही हमारी भूल है। वास्तव में यह कहावत आज साकार रूप धारण किये हुए है यदि धन नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट नहीं हुआ यदि स्वास्थ्य नष्ट हो गया तो कुछ नष्ट होगया समझो, और यदि चरित्र नष्ट होगया तो सब कुछ नष्ट होगया समझो आज देश का चारित्रिक पतन तीव्रो गति से हो रहा है। आशा है समिति धार्मिक विचारों का शिक्षा नीति में समावेश करके राष्ट्र के अभ्युत्थान में सहायता प्रदान करेगी। आज जो सांस्कृतिक विकृति के बीज इस शिक्षा-जगत् में और विद्यार्थियों और नैतिक वातावरण को दोषपूर्ण किए जा रहे हैं उनकी भी अतिशीघ्र रक्षा होगी।

आर्यसमाज व्यक्ति निर्माण के पहलू पर सदैव बल देता रहा है। राष्ट्र के वास्तविक अभ्युत्थान के लिए चरित्र का विकास ही एकमात्र आधार स्वीकार किया जाना चाहिए। धर्म निरपेक्षता के नाम पर वास्तविक धार्मिक प्रशिक्षण से राष्ट्र को वंचित रखना और विदेशियों को धर्म प्रचार की सुविधा प्रदान कर साम्प्रदायिकता को हवा देना दोनों ही कार्य राष्ट्र के लिये घातक हैं आशा है समिति सभी स्थितियों परिस्थितियों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर पथ-प्रदर्शन दे सकेगी। मित्र परिवार बारह वर्ष की स्वाधीनता के पश्चात् किये गये इस कार्य को आत्मिक महत्वपूर्ण समझता और रचनात्मक चिन्तन मानता है।

दयानन्द पार्क का नाम परिवर्तन

भारत ने विश्व विभूत जिन महा विभूतियों को जन्म दिया है महर्षि दयानन्द उनमें से प्रमुखतम हैं। अन्य सभी विभूतियों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है उनकी सेवायें किसी एक दिशा में थीं पर महर्षि की बहुमुखी प्रतिभा ने भारत के ही नहीं विश्व के अज्ञान अन्धकार को नष्ट कर ज्ञान सूर्य का वह प्रकाश मानव जाति को दिया जिससे वास्तविक सुख-शान्ति का मार्ग सुस्पष्ट हो उठा और विश्व उस ओर अग्रसर हो रहा है। सामाजिक, धार्मिक आध्यात्मिक लौकिक पारलौकिक सभी सभी क्षेत्रों में उनका मार्ग दर्शन हमें मिल रहा है। ऐसे मार्ग द्रष्टा की स्मृति में कानपुर के ऋषि भक्तों ने अपने नागरिक पार्क का नामकरण अंग्रेजी युग में दयानन्द पार्क के रूप में किया था। एक भारतीय व्यक्ति के साथ सम्बन्धित होने के कारण नागरिकों को राष्ट्रीय और सांस्कृतिक प्रेरणा प्राप्त होती रही परन्तु हमारी मानसिक दासता कितनी कठोर बन्धनों में जकड़ी हुई है इसका एक प्रमाण नवीनतम समाचारों में हमें देखने को मिल रहा है। कानपुर औद्योगिक नगर है। साम्यवादी दल का वहां श्रमिकों में प्रभाव होगा और उन्होंने न जाने किन तरीकों से दयानन्द पार्क का नाम लेनिन पार्क में परिवर्तित कराने में सफलता प्राप्त कर ली है। जहाँ तक हमें ज्ञात हुआ है कानपुर में नगरपालिका भंग है और वहां सरकारी प्रशासक प्रबन्ध करता है तब यह निर्णय एक और पहेली बन जाता है। प्रजातन्त्र के नियमों से सचालित नगरपालिका ने इस पार्क का नाम दयानन्द पार्क रक्खा था और डिक्टेटर रूप में उसे कांग्रेस सरकार के अधिकारी ने बदल दिया और साम्यवादी दल की ओर से बताया गया है कि रूस के सांस्कृतिक विभाग की ओर से भेट की जाने वाली लेनिन की प्रतिमा उस पार्क में स्थापित की जायगी भारत के महापुरुष के स्थान पर लेनिन का सम्मान अराष्ट्रीयता और आत्म गौरव हनन का कार्य है। लेनिन के व्यक्तित्व का हम आदर करते हैं पर अपने राष्ट्रीय महापुरुष के सम्मुख उनका महत्व हमें स्वीकार नहीं हो सकता। जब देश से दासता को प्रतीक अंग्रेजों की यह विचित्र घटना हमें आश्चर्य में डाल रही है। सरकार को इस सम्बन्ध में स्थिति का स्पष्टीकरण करना चाहिए तथा जन भावना का आदर करते हुए दयानन्द पार्क का नाम परिवर्तन शीघ्र ही घोषित करना चाहिए।

अनुशासन मे आस्था।

मानव जीवन में अनुशासन का जो महत्व है सामाजिक सार्वजनिक जीवन में उसका उससे भी अधिक महत्व होता है। इस दृष्टि से आर्य समाज के वर्तमान संघटन में आज जो शैथिल्य हमें दृष्टिगोचर होता है उसका कारण अनुशासन में आस्था की कमी ही है। पिछले दिनों मित्र द्वारा हमने आर्यानुशासन के प्रति विशेष बल दिया था सार्वदेशिक सभा की ओर से भी आर्यजनों से मांग की गई थी कि वे अनुशासन प्रिय बनें। हमें यह समाचार देते हुए हर्ष होता है कि पंजाब के आर्य भाइयों ने अपने एक झगड़े को आर्यसमाज के सम्मानित नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त के पंच न्याय पर छोड़ने की घोषणा कर दी है और न्यायालय से सारा मामला वापस लिया जा रहा है। हम इस कदम का स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि यह घटना अन्यों को प्रेरित करेगा कि अपने विवाद संघटन की प्रतिष्ठा का सदैव ध्यान रक्खा जाय और सब मामले घर में ही सुलझा लिये जाया करें। इस विवाद के उचित समाधान के लिये शुभ कामना व्यक्त करते हुए सभी सम्बन्धित व्यक्तियों और प्रधान कर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने आर्यत्व के प्रति श्रद्धा और अनुशासन की महत्ता के लिये मार्गदर्शन कर उचित कार्य किया है। आशा है सभी आर्यजन इसी मार्ग का अवलम्बन करेंगे।

आर्योदय स्वागतम्

आर्यसमाज के प्रचार सन्देश के लिए वाणी के साथ लेखनी का भी महत्व है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से १६ अगस्त से आर्योदय साप्ताहिक पत्र राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। पंजाब में हिन्दी रक्षा हिन्दी विकास तथा राष्ट्रभाषा के अभ्युत्थानार्थ जिस प्रकार के आदर्श और गम्भीर पत्र की आवश्यकता है आशा है यह पत्र आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करता हुआ हिन्दी के सम्मान की अभिवृद्धि में सहायक होगा। राष्ट्र के उदय का आधार सर्वोदय तो है ही वास्तविक आधार आर्योदय मानना चाहिये। आज सर्वोदय की आपाधापी में सर्वत्र अनार्योदय हो रहा है आशा है नव निर्माण की इस बेला में नवीन सहयोगी आदर्श पथ प्रदर्शन दे सकेगा और अपने नामानुसार वास्तविक आर्योदय कर सकेगा। हम सहयोगी की सफलता के लिये शुभ कामना करते हैं

श्री रामबहादुर जी (पूरनपुर) की माताजी का स्वर्गवास

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कर्मठ कार्यकर्त्ता अन्तरंग सभासद पीलीभीत जिले के सम्मानित आर्य नेता पूरनपुर आर्यसमाज के प्राण श्री रामबहादुर जी मुख्तार की माता जी के स्वर्गवास का समाचार पाकर हम सभी आर्य बन्धु अत्यन्त दुखी हैं। मुख्तार साहब को मातृ वियोग का जो आघात सहन करना पड़ा है हम सब की उनसे सहानुभूति है। सभा और मित्र परिवार की ओर से इस अवसर पर हम परिवार के प्रति समवेदना और दिवंगतात्मा की सद्गति के लिये

(शेष अगले पृष्ठ पर)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

प्रार्थना करते हैं। प्रभु मुख्तार साहब को धैर्य धारण करने की शक्ति और कर्तव्यशील बने रहने का साहस प्रदान करें।

संस्कृत की उन्नति

संस्कृत भाषा विश्व में सर्वश्रेष्ठ भाषा है और हमारा सौभाग्य है कि हम भारतीयों को उसकी अतुल सम्पत्ति उत्तराधिकार में प्राप्त हुई है। परन्तु दुर्भाग्य की कहानी बड़ी लम्बी और पुरानी है। अन्धकार युग में और बाद में मुस्लिम व ब्रिटिश दासता के युग में संस्कृत के साथ अन्याय होता रहा और हम संस्कृत रत्न भण्डार के परिचय से शनैः शनैः पृथक होते गये। महर्षि दयानन्द और उनके गुरु ने संस्कृतोद्धार की नयी प्रेरणा दी राष्ट्र सचेत हुआ आर्यसमाज के प्रयत्नों के साथ अन्य हिन्दू भाइयों ने भी सहयोग किया शासन को भी ध्यान देना पड़ा। पर आज हम स्वतन्त्र हुए तब समस्या फिर विकट रूप धारण कर रही है। भारत सरकार ने संस्कृत आयोग का निर्माण किया जिसने लिखा है कि संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य विषय के रूप में होनी चाहिये। सरकार प्रतिवेदन के इस विचार से सहमत नहीं हो सकी है और एच्छिक विषय ही रखना चाहती है। फिर भी उसने एक संस्कृत बोर्ड का निर्माण किया है जिसमें आर्य समाज के विद्वान श्री प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति भी सदस्य हैं। श्री पतञ्जलि शास्त्री उस बोर्ड के अध्यक्ष हैं। यह बोर्ड संस्कृत की प्रगति पर ध्यान देगा। जहां तक वर्तमान स्थिति का प्रश्न है वह सन्तोषजनक नहीं है बनारस और पंजाब, बंगाल, बिहार व दक्षिण में संस्कृत छात्रों की संख्या स्वतन्त्रता के पश्चात् निरन्तर घटती रही है। बनारस और कुरुक्षेत्र में संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना की गयी है परन्तु कुरुक्षेत्र में तो स्वयं विश्वविद्यालय अधिकारी इस बात के इच्छुक हैं कि उसे संस्कृत के प्रतिबन्ध से मुक्तकर एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय बना दिया जाय। आर्यसमाजों से शिरोमणि सभा की ओर से प्रार्थना की गई है कि वे संस्कृत आयोग के निश्चयों की पुष्टि तथा वर्तमान परिस्थिति के प्रति असंतोष प्रकट करते हुए प्रस्ताव पारित करें। इस दिशा में सभी आर्यसमाजों संस्कृत प्रेमी सम्मेलनों शिक्षा संस्थाओं का कर्तव्य है कि आन्दोलन करें। स्वयं राष्ट्रपति संस्कृत की वर्तमान दशा के सम्बन्ध में चिन्तित हैं। उनका सहयोग प्राप्त कर हमें संस्कृत सम्मान और उत्थान के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये।

आर्य-जगत

बम्बई प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन

बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सन् १९५९—६० सर्व सम्मति से ता० १ ८ ५९ के रोज हुआ।

प्रधान

श्री एल० के० नन्दवाणा जी, आर्कीटेक्ट चार्टर्ड इन्जीनीयर अहमदाबाद।

उपप्रधान

श्री ईश्वरभाई आशाभाई पटेल, व्यापारी चीरपोदरा आणंद श्री चुनीभाई गलबदास आर्य सावली बड़ोदा, श्री० सेठ हरगोविंद धमर्सी काचवाला काच के व्यापारी बम्बई, श्री गोवर्द्धन दास त्रिभुवनदास शाह व्यापारी बम्बई, श्री श्यामलाल जी अग्रवाल आर्य वर्तन के थोक व्यापारी मान्डुप बम्बई।

मन्त्री

श्री वेणीभाई पुरुषोत्तम आर्य बड़ौदा

उप मन्त्री

श्री बलदेवभाई मोतीभाई आर्य सागरखा आणंद, बम्बई श्री मथुरालाल सनजी पटेल बम्बई।

कोषाध्यक्ष

श्री छोटुभाई लल्लूभाई देसाई कहगेली सूरत।

पुस्तकाध्यक्ष

श्री श्रीकान्त रणछोर भगत जी सूरत।

आडीटर

दिनुभाई भट्ट एन्ड कम्पनी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट बम्बई।

सभा २४ अन्तरङ्ग सदस्य चुने गये।

शोक-समाचार—

—गोरखपुर (आर्य महिला-समाज) ने अपनी अध्यक्षता श्रीमती एन० देव आहलुवालिया की सुपुत्री कुमारी रमा असामयिक मृत्यु पर शोक सभा की। परिवार से समवेदना व आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की गई।

—हरदोई आर्यसमाज तथा जिलोपसभा के सदस्यों ने गेरिया आर्यसमाज के प्रधान श्री रणवीरसिंह जी के पुत्र श्री नरेन्द्रसिंह के असामयिक निधन पर शोक समवेदना प्रकट की व आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना की।

निर्वाचन—

—साहिबगंज (सथाल परगना) आर्यसमाज के प्रधान श्री बसन्तलाल जी मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त।

—किरावली (आगरा) आर्यसमाज
प्रधान श्री मूलचन्द्र जी
मन्त्री श्री महेन्द्रनाथ शर्मा

—गोहाना (रोहतक) आर्यसमाज
प्रधान श्री डा० नन्दलाल जी
मन्त्री श्री रामप्रकाश जी

—हाथरस (आर्यकुमार सभा नयागंज)।
प्रधान श्री हरिओम प्रकाश जी
मन्त्री श्री योगेन्द्र कुमार जी श्रोत्रिय

—पीरो (शाहाबाद) आर्यसमाज
प्रधान श्री मुद्रिकाप्रसाद जी
मन्त्री श्री रामइकबाल शर्मा जी पुरोहित

—कलोदा (बुलन्दशहर)
प्रधान श्री रामसिंह जी
मन्त्री श्री सरनीतसिंह जी

—रेवतीपुर (गाजीपुर)
प्रधान श्री रामधरराज जी
मन्त्री श्री राजधारी शर्मा जी

—मानपुर (गया)
प्रधान श्री उदयप्रकाश जी
मन्त्री श्री चुन्नीलाल

—अम्बाला शहर की आर्यसमाज
प्रधाना श्री प्रसन्नीदेवी जी
मन्त्राणी श्री मेलादेवी जी

—बदायूं (छात्र सभा गुरुकुल)
प्रधान श्री नरेन्द्रदेव जी शर्मा
मन्त्री श्री बलदेवसिंह जी

—मिर्जापुर
प्रधान श्री विश्वनाथ प्रसाद जी द्विवेदी
मंत्री श्री घनश्यामदास जी बी० ए०

—श्यामपुर जट (मेरठ)
प्रधान श्री सागरसिंह जी
मन्त्री श्री सदनसिंह जी

—दोताई (मेरठ)
प्रधान श्री लजानसिंह जी
मन्त्री श्री करणसिंह

—कोंकेरा (जैत मथुरा)
प्रधान श्री गोकुलचन्द्र जी आर्य
मन्त्री श्री अमरसिंह जी

—वैरमनिया (मुजफ्फरपुर) गुरुकुल
प्रधान श्री आनन्दविहराम जी
प्रधान मन्त्री श्री गोपालप्रसाद जी
मन्त्री श्री बालेश्वरसिंह जी आर्यवीर
मुख्य अधिष्ठाता श्री स्वामी भवितव्यानंद सरस्वती

सभा की सूचनाएँ

सभा के प्रधान मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० का हीरक जयन्ती सम्बन्धी धन संग्रहार्थ प्रोग्राम निम्न प्रकार है दि० २६-८-५९ को लखनऊ से दोपहर की गाड़ी से चलकर ४ बजे सीतापुर पहुँचेंगे वहाँ के समाज के सभासदों से मिलेंगे, रात में व्याख्यान देंगे। दि० ३०-८-५९ को सीतापुर से प्रातः पहली बस से चलकर लगभग ९ बजे लखीमपुर पहुचेंगे वहाँ २-२॥ घण्टे में सभासदों से मिलेंगे और दोपहर की गाड़ी से गोला के लिये प्रस्थान करेंगे वहाँ रात में व्याख्यान देंगे सभासदों से मिलेंगे और रात की गाड़ी से लखनऊ वापस आ जायेंगे। समस्त स्थानों के समाज के अधिकारियों से प्रार्थना है कि वह मन्त्री महोदयों के, प्रोग्राम अनुसार रेलवे स्टेशन या बस स्टेशन पर स्वागत करें तथा धन-संग्रह करके एक अच्छी धनराशि समर्पित करें।

—बाबूराम
कार्यालयाध्यक्ष

शुद्धि संस्कार से बगदाद निवासी आर्यबन्धु प्रभावित

हल्द्वानी आर्यसमाज में २९ जुलाई को ईसाई कुमारी सुलोचनासिंह का उनकी प्रार्थना पर शुद्धि-संस्कार सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर बगदाद आर्यसमाज के सदस्य श्री दीनानाथ जी भी आकस्मात उपस्थित थे उन्होंने शुद्धि कार्य से प्रभावित हो अपने हृदयोद्गार प्रकट किये और कहा कि मैं बगदाद तक आपके इस आदर्श प्रयत्न की सूचना भेजूंगा। साथ ही इस संस्कार के उपलक्ष में ५) आर्यसमाज को दान दिये। आर्य बन्धुओं ने प्रवासी बन्धु की शुभ कामनाओं के लिये उन्हें धन्यवाद दिया।

—रक्षा बन्धन का पावन पर्व, स्थानीय आर्यवीर दल की ओर से बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। श्री जगदेव जी एम० ए० और बाल दिवाकर जी 'हंस' की उपस्थिति विशेष सराहनीय थी। इस आयोजन में लगभग नगर के सभी प्रतिष्ठित आर्य पुरुष उपस्थित थे।

पैरालीलाल
मंत्री आर्य वीर दल
गाजियाबाद

—वैरमनिया मुजफ्फरपुर आ०स०
प्रधान श्री रामकुमार जी
मंत्री श्री बालेश्वरसिंह जी

हिन्दी रक्षा आन्दोलन यज्ञ की सर्वोत्तम आहुति—

अमर शहीद सुमेरसिंह

[ले०—श्री पं० सत्यप्रिय सि० शिरोमणि गुरुकुल घटकेश्वर हैदराबाद (आन्ध्र)]

अमरशहीद सुमेरसिंह आर्यसमाज,राष्ट्रभाषा और सत्याग्रह समर के यशस्वी नायक बन गये। राष्ट्रभाषा हिन्दी के गौरव की रक्षा और अभिवृद्धि के महान् दायित्व को पूर्ण करने में हमें उनसे सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। उनका छोड़ा काम अभी अधूरा है हम उसे पूर्ण कर सकें यही आज हमारा धर्म है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। —सम्पादक

वह सन् १९५७ के अगस्त मास की २४ तारीख थी। मध्याह्नोत्तर लगभग तीन बजे का समय होगा, जबकि सैन्ट्रल कैम्प जेल फिरोजपुर के शहीद सदन में राष्ट्रभाषा मुक्ति आन्दोलन के अमर हुतात्मा श्री सुमेरसिंह जी और मैं ईशोपनिषद् का अध्ययन कर रहे थे। इस उपनिषद् के 'विद्यान्चाविद्यान्च' इस मन्त्र के आशय को वे मुझसे समझ रहे थे। पद सुनने के पश्चात् उन्होंने अचानक ऊपर शिर उठा कर मेरी ओर देखते हुए कहा कि "वास्तव में आज मुझे वैराग्य की भावना प्रभावित कर रही है" इसके अनन्तर वे अपने किसी सम्बन्धी को पत्र लिखने बैठे, मानो अपने इस जीवन में अपने स्नेहियों को अन्तिम सन्देश देने के लिये बैठे थे। अभी वे एक दो पंक्ति ही लिख पाये थे कि वहाँ एक कोने से कुछ शोर सुनाई दिया, फिर देखा तो दैत्याकार मानवता के शत्रु सिख कैदी हाथों में अनेक साधन लिये सत्याग्रहियों को पीट रहे हैं। सत्याग्रही इधर उधर भागते हुए "लाठी चार्ज २" चिल्ला रहे हैं। वह भी कितना भयकर समय था, जबकि एक ओर मानवता के घोर शत्रु अत्याचार तथा हिंसा के मूर्तरूप तथा जो कैरों शाही के द्वारा अपने राज्य के स्थैर्य के लिए स्तम्भ समझे जाकर सींचे जाते थे उनके द्वारा शान्ति एव अहिंसा की प्रतिमायें एव राष्ट्रभाषा की रक्षार्थ अपने सर्वस्व को होमने वाले तथा जेल की कठोर यातनाओं को भी मुस्कराकर सहने वाले सत्याग्रही होते हुए लाठी चार्ज नहीं नहीं कत्लेआम को भी उस शान्त वातावरण की नीरवता को अपने "हिन्दी भाषा अमर रहे" एव "लाठी गोली खायेंगे हिन्दी को अपनायेंगे" इत्यादि पावन जय घोषों से भग करते हुए सह रहे थे। चारों ओर ही पिशाच गण अपना नग्न ताण्डव कर रहा था। लगभग आध घण्टे के पश्चात् जब वह राक्षसी कर्म समाप्त हुआ तो मानो निद्रा भंग हुई हो तब बाबलों को बैरकों से बाहर लाने लगे उस समय जबकरी सहायता मिली, जब हम उस वीर शहीद के पास बैठे हुये थे तथा जेल के कर्मचारी उसको अस्पताल ले जाने लगे तो जाते जाते उस शहीद ने आजम ने यह कहा था कि "भाइयो ! पता नहीं कि मैं बचूगा या नहीं, परन्तु आप लोग मेरी चिन्ता न करें, धैर्य के साथ अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहें" जब हमने उनके इन हृदय वेधक परन्तु अवश्यम्भावी वाक्यों को सुना, उसी समय पिछली सारी घटनाएँ चलचित्र की भांति प्रत्यक्ष होने लगी। जोरदार सत्याग्रह करने पर १० जुलाई को उनकी गिरफ्तारी हुई थी फिर साथ २ सैन्ट्रल जेल अम्बाला में रहे। वहां सायकाल के समय बैठकर बातें करते समय उस वीर ने कहा था कि "मैंने केवल वैदिक धर्म की सेवा के लिए ही अविवाहित रहने का प्रण किया तथा इच्छा यही है कि मैं अधिक से अधिक ऋषि मिशन के प्रचार में सहयोग दे सकू," इसी प्रकार पुन एक बार बातचीत के प्रसग में उसके ये हृदयोद्गार थे कि "चाहे मुझे कितना ही मूल्य चुकाना पड़े परन्तु हार्दिक कामना यही है कि सत्याग्रह का प्रयोजन पूर्ण हो" फिर फिरोजपुर जेल में भेज दिये गये वहां भी एक दिन सभा में बोलते हुये वीरात्मा ने कहा था कि—"जरा सामने तो आवो कैरो" इत्यादि।

परन्तु क्रूर कैरों ने तो उसके सामने आने की हिम्मत न कर अपने मानव तनधारी, रक्त पिपासु दैत्यों को भेजा जिन्होंने कि उस हसते बोलते वीर को लोहे के पाइपों से मार मार कर केवल निर्जीव एक मांस के लोथड़े में परिवर्तित कर दिया। तभी जब उस वीर

(शेष अगले पृष्ठ पर)

राष्ट्रपति का सन्देश आगे बढ़े

एक बार अपना लक्ष्य निश्चित कर लेने के बाद हम उसकी प्राप्ति के लिये आगे बढ़े हैं। इतने बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए और विशेष कर भारत जैसे महान देश में, हमारा काम बहुत कठिन हो जाता है और इसके लिये राष्ट्र के समस्त साधनों और देशवासियों के सहर्ष सहयोग की जरूरत है। कभी-कभी देश के कुछ लोगों को कुछ कठिनाइयां भी उठानी पड़ सकती हैं और न चाहते हुए भी कई बार हम पथ से कुछ विचलित भी हो सकते हैं। कई बार हमें ऐसी बाधाओं और कठिनाइयों से सामना हो सकता है, जिनके बारे में पहले न सोचा गया हो और जिनमें से कुछ ऐसी भी हो सकती हैं जो अपनी लक्ष्यपूर्ति को जल्दी में हम से ही हो गयी हों। किन्तु यह याद रखना चाहिये कि हमारे जैसे असाधारण कार्य में ये आती ही हैं। हमें अपने काम से बहुत कुछ सीखना चाहिये, यदि हम बुद्धिमत्ता और उदारता से अपनी गलतियों से सबक सीख सकें, तो हमें गलतियों की परवाह नहीं करनी चाहिये। स्वाधीनता दिवस का यही रचनात्मक सन्देश है।

सिंहावलोकन

छोटा नागपुर के आदिवासियों की दशा

गेहूं के प्रलोभन में ७५ आदिवासी ईसाई बन गये

(ले०—श्री प० शिवचरप्रसाद आर्य रांची (बिहार)

[ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों को प्रतिबन्धित करने कराने के लिये हमें कितना सतर्क रहने की आवश्यकता है पाठक इस विवरण से इस बात को अच्छी प्रकार समझ सकते हैं। निर्धन भोले ग्रामीणों को बहकाने के बाद अब मिशनरी उनके धार्मिक स्थानो को भी अपने अधीन करने का षड्यन्त्र करने लगे हैं। सरकार को किसी भी मूल्य पर धार्मिक मान्यता वाली भूमियो को दूसरे धर्मावलम्बियों को हस्तान्तरित नहीं करना चाहिये। आशा है सम्बन्धित सरकार इस दिशा में जनभावना को दृष्टि में रक्खेगी। केन्द्रीय आर्य नेताओं को इस सबध में जनता का नेतृत्व करना चाहिये। —सम्पादक

मैं लगभग तीन महीनों से छोटा नागपुर के रांची जिले में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के तरफ से आर्य समाज का प्रचार कार्य कर रहा हूँ। अभी तक रांची जिले के देहातों में जगलों के बीच भ्रमण करते हुए हांका जान, लोधमा, पदमपुर, वनकु‍‍ पीपर टोली, बन्दगाव, गोविन्दपुर, उड़ाडीह, मारगदा, एटीनगरी, खू्ंटी केसारो, तिलमी, बामनडीह, सिल्ली, लगाम, सुम्डील, मारदु टुटकी, मुरी आदि लगभग २५ ३० ग्रामो में आदिवासियों की हालत को जानकारी प्राप्त कर जो अनुभव किया, जिसका विवरण इस प्रकार है। वे आदिवासी जगलो के बीच में रहते हैं दस दस पन्द्रह पन्द्रह मील केवल जंगल ही जगल मालूम पड़ता है, जगलों के बीच गांवों में जाना एक समस्या हो जाता है। वर्षा के कारण तो और रास्ता खराब हो जाता है। ऐसे स्थानों में ईसाई धर्म प्रचारक भोले भाले आदिवासियों के बीच में आकर दो दो तीन तीन महीनों तक रह अड्डा जमा कर ईसाई धर्म का प्रचार करते हैं। पहले तो वे ईसाई प्रचारक गाँव में पहुँचकर किसी एक के मकान में सभी को बुलवाकर मीटिंग करते हैं। इसी तरह प्रतिदिन उन आदिवासियों के बीच उन लोगों की गरीबी और रहन सहन को अच्छी तरह से वर्णन करके दिल दिमाग को बदल एक समस्या खड़ा करा देते हैं जिसके कारण वे लोग घबड़ा जाते हैं। हरिजन, सवर्ण, आदिवासी का अन्तर भेदभाव बतलाकर सवर्णों के प्रति घृणा उत्पन्न कराकर आपस में फूट की भावना भर देते हैं। और सवर्ण उच्च जाति हैं तुम लोगो से घृणा करते हैं नीच समझते हैं। इसलिए तुम लोगों का हिन्दू रहना न रहना दोनो बराबर है। ऐसा पाठ पढ़ाते हैं।

आदिवासियों और हरिजनो मे अन्धविश्वास का तो पारावार नहीं है, भूत, प्रेत चुड़ैल, डाइन के ऊपर खूब विश्वास रखते हैं। ओझा भगत भी आपस में झगड़ा लगाकर शराब, मास और रुपया ठगते हैं सा‍ अपना विश्वास जमा देते हैं। अगर किसी के घर में कोई बीमार पड़ा या मरा तो ओझा भगत उसके घर के माता पिता का नाम चुड़ैल, डाइन, विषैल बतला उसी को बदनाम करा देते हैं। जिसके कारण आपस में झगड़ने लगते हैं। यहाँ तक कि अपने माता पिता को चुड़ैल, डाइन विषैल समझ जान तक मार डालते हैं। इस तरह की घटनाए सदा होती रहती है इस प्रकार के अन्धविश्वासों के कारण ईसाई लोग खूब नाजायज फायदा उठा रहे हैं। ईसाई प्रचारक उनके घर में पहुँच कर ऐसी दलीलें पेश करते हैं कि जब तक हिन्दू रहोगे तब तक तुम लोगो को भूत, प्रेत, तंग करेंगे। अगर तुम बचना चाहो तो ईसाई बन जाओ तुम लोगों

(शेष पृष्ठ ९ पर)

स्वास्थ्य-सुधा

आज के आश्चर्यकारी औषधि-विज्ञान को गैब्रियल ऐन्ड्रल की अमूल्य देन

[लेखक—श्री ई० पी० मेनन, बम्बई]

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में पेरिस के चिकित्सकों द्वारा रक्तरोग के उन्मूलन के लिये जोंकों (रक्त-चूसक कीटों) से रक्त चुसवा लेने की चिकित्सा पद्धति के प्रयोग की भरमार हो चली थी अतः अधिक से अधिक मात्रा में जोंकों का संग्रह स्वाभाविक ही था। व्याध कैसी भी होता पर लोग सिर अथवा पेट में जैसा चिकित्सक कहते जोंक लगा देते और जिससे बहुधा लोग रोग मुक्त भी होते। परन्तु इस दर्दनाक पद्धति के फलस्वरूप चारों ओर रक्त स्नान के भयंकर दृश्य से शरीर विच्छेद सम्बन्धी रोगनिदान के नये आन्दोलन के नेता गैब्रियल ऐन्ड्रल सहसा विचलित हो उठे और इस दिशा में चिन्तन आरम्भ कर दिया

धीरे धीरे परिणाम यह हुआ कि एक प्राचीन पद्धति के प्रचलन के साथ ही नूतन वैज्ञानिक औषधि प्रयोग भी अस्तित्व में आये। इस साहस का श्रेय एन्ड्रल के इस चिन्तन को था कि कलुषित रक्त को व्यर्थ बहा देने की अपेक्षा उससे तो बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

गैब्रियल एन्ड्रल उस समय के प्रख्यात चिकित्सकों की दिशा से बिल्कुल विरुद्ध दिशा में अपना लोकप्रिय अभ्यास लेकर बढ़े। उन चिकित्सकों को उस समय समाधि अपवादक कहा जाना उचित ही था, क्योंकि उनका अध्ययन ह्रासपूर्ण प्रकृति के बाहर आने में अक्षम था फिर नयी दिशा कैसे अपनाते? परीक्षण के लिये उपयुक्त पद्धति न होने के कारण एफ० जे० वी० ब्रूसेस जैसे उस समय के बड़े अधिकारियों को भी कोई भी पद्धति उचित न जची। सैकड़ों जोंकों का प्रतिदिन प्रयोग करने वाले ब्रूसेस ये मानते थे कि चिकित्सकों को प्रकृति का सहायक नहीं किन्तु उसका शासक होना चाहिये। बाद में उन्हें तथा उनके अनुयायियों को भी लगा कि विशिष्ट रोगों के लिये किसी आदर्श पद्धति की स्थापना परमावश्यक है।

परन्तु पेरिस की प्रबल सत्ता के नेता ऐन्ड्रल अपनी ही धुन में मस्त थे, जिसका परिणाम यह हुआ कि १८३० में उनके द्वारा किया गया एक बेजोड़ सफल प्रयोग लोगों के सामने आया।

ऐन्ड्रल और उनके अनुयायियों के दृष्टि से चिकित्सकों का कर्तव्य है 'रोग निदान के लिये रोगों के बदलते रूप के विशिष्ट तत्वों पर ध्यान देना और उन्हें प्रकाशित करना। उनका यह दृष्टिकोण १८२५ से लेकर १८३१ तक इस विषय पर एक लेख-माला के रूप में क्लीनिक मेडिकल पत्रिका में प्रकाशित होता रहा मूल सिद्धान्त निर्देशन ही जिसका लक्ष्य रहा। ऐन्ड्रल की निर्भ्रान्त विश्लेषणात्मक प्रणाली का मन्तव्य नवीन औषधि प्रणाली के विकास के प्रति थी गयी उनकी बहुमूल्य देन में पूर्ण रूप से अभिव्यक्त मिलता है।

आपके साथी हृदय और छाती के रोगों पर सफलता पाने में जिसमें रोग निदान बहुत पीछे रह गया था अग्रसर थे जब कि आपको केवल रक्त पर अनुसन्धान बढ़ाने ही की धुन थी। इनके अनुसन्धानों के विशिष्ट सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिये, १८४३ में इनका लिखा लेख शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण था।

ऐन्ड्रल की मृत्यु के पहले ही उनकी इस अमूल्य देन का, पेरिस के ही नहीं सारे संसार वैज्ञानिक-वृन्द ने हृदय से स्वागत किया था। आज का औषधि-विज्ञान जिसका ऋणी है उसके प्रति हृदय से कृतज्ञता का अनुभव करना ही उसका सच्चा सम्मान है। आज के नये युग की अनुसन्धान शालाओं में जो जादू जैसी आश्चर्य चकित कर देने वाली विभिन्न वैज्ञानिक औषधियाँ खोजी गयीं हैं, खोजी जा रही हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप संसार प्रसिद्ध टेरामायसिन एवं आइनर मैसिन जैसी जीवनदान देनेवाली ऐन्टिबायटिक औषधियाँ संसार को मिली हैं, उनका सूत्र श्रेय ऐन्ड्रल के ही, रक्त पर किये गये मौलिक अनुसन्धान को है, जो १०० वर्ष पहले किया गया था। सच तो यह है कि उसी प्रणाली के आधार पर उपयोग में लायी जाने पर ही इन ऐन्टिबायटिक औषधियों का पूर्ण प्रभाव सफल हो जाता है।

भारत माता ग्राम वासिनी—प्रधान मन्त्री नेहरू

दो चीजें हैं जिनके बिना कोई मुल्क आगे नहीं बढ़ सकता। दिन रात की मेहनत और एकता। हिन्दुस्तान की तरक्की नापने का एक ही नाप है कि किस तरह से यहां के चालीस करोड़ लोग बढ़ते हैं। दिल्ली शहर हिन्दुस्तान नहीं है। हिन्दुस्तान तो लाखों गांवों का है और जब तक ये लाखों गांव नहीं उठते, नहीं जागते, नहीं आगे बढ़ते तो दिल्ली बम्बई कलकत्ता, मद्रास, हिन्दुस्तान को आगे नहीं ले जाएंगे। स्वतन्त्रता दिवस का यह हमारे लिए आदर्श सन्देश है।

(पृष्ठ २ का शेष)

को हम भूत, प्रेत चुड़ैल डाइन से बिल्कुल बचा देंगे। इस तरह भोले भाले आदिवासी उन लोगों के चंगुल में पड़ ईसाई बन जाते हैं।

हिन्दू समाज के साथ-साथ सरकार के विरुद्ध भी बहुत प्रचार करते हैं। अपढ़ आदिवासियों से वे भी कहा करते हैं कि तुम्हारी हिन्दू सरकार भी कुछ नहीं करती है, तुम लोग भूख से मरते हो और सरकार अपने ऐश आराम से पड़ी रहती है। इसलिए अगर तुम ईसाई बन जाते हो तो कोई तकलीफ नहीं होगी। भोजन कपड़ा बीज रुपया सब कुछ मिलेगा।

इस वर्ष छोटा नागपुर के खूटी सब डिवीजन में भारी अकाल की स्थिति बनी हुई है। कुछ धान हुआ भी था तो कीड़ों ने आक्रमण करके फसल नष्ट करके कर दी। कहीं कहीं गबड़ा इलाके में कुछ धान हुआ भी तो किसानों को सरकारी लगान चुकाने और महाजनों को सूद देने में ही धान समाप्त हो गया। फिर वे किसान आदिवासी कंगाल के कंगाल बने रह गये। इस प्रकार इनके भूखे रहने से ईसाइयों का काम बना।

अभी पिछले मई महीने खूटी सब डिवीजन के करो थाना में खूटा, केसारो, बनकुली, धीपर टोली गांव के लगभग ७२ आदमी आदिवासी गेहूं और रुपया के प्रलोभन में ईसाई बन गये। पटना के दैनिक पत्र आर्यावर्त और दिल्ली के दैनिक पत्र वीर अर्जुन में तथा मित्र में इस प्रकार के समाचार छप चुके हैं। लेकिन अभी तक सरकार का ध्यान इस ओर नहीं गया है। अगर इसी तरह जनता और सरकार कानों में तेल डाले सोई रही तो छोटा नागपुर की स्थिति बिल्कुल बिगड़ जायगी बाद में कुछ व्यक्तियों को सरकारी धान बीज दिया गया है।

ईसाइयों के प्रति सरकार की उदारता

इसी प्रकार सिल्ली थाने में भी अब ईसाइयों का दौर दौरा प्रारम्भ हो गया है। मुरी जंक्शन के पास एक गैर मजरूआ खास जमीन है, जो सरकार के अधीन है। यह स्थान हिंदुओं का पवित्र धार्मिक स्थान माना जाता है। इस इलाके भर के हिन्दू जनता यहां आती हैं। कीर्तन करते, देव पूजा करते, विवाह के बाद मौड़ भसाते इस प्रकार बहुत तरह से धर्म का काम किया करते हैं। कुछ महीने से उस जमीन को खरीदने के लिए पादरियों

(पिछले पृष्ठ का शेष)

को लूं पर पर डालकर ले जाते समय और उनके अन्तिम नमस्ते की तब हमारी यह समाधि मानो भंग हुई। वहां जाकर रात्रि के डेढ़ बजे वह वीर इस अत्याचारी शासन की बेहयाई पर रो आंसू बहाता हुआ सबको बिलखता छोड़ कर सदा के लिये पृथक हो गया। फिरोजपुर जेल की दीवारों पर उस शहीद के निर्दोष रक्त के धब्बे आज भी कैरोंशाही की क्रूरता पैशाचिकता एवं आततायीपन के साक्षी हैं। भारत की भावी सन्तति भी जब यह पढ़ेगी कि राष्ट्रभाषा की रक्षा के लिये एक युवक की उठती जवानी को कैरों ने अपने पैरों से कुचल दिया तो वह भी एक ठण्डी आह भर कर दुखित होगी। क्या संसार के इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण है कि एक नागरिक जो सत्य की रक्षार्थ कटिबद्ध है तथा किसी माता पिता के ममता युक्त जिगर का टुकड़ा है उसको जेल में बन्द कर निर्दयतापूर्वक मार डाला गया हो तथा उसके माता पिता के प्रति कम से कम राज्याधिकारियों की ओर से सहानुभूति के दो शब्द भी न कहे गये हों। फिरोजपुर जेल की दीवारों से खून के दाग तो समय पाकर मिट भी जायेंगे लेकिन ३६ करोड़ राष्ट्रभाषा प्रेमी भारतीयों के हृदय पर लगे घाव तो सदियों तक न मिट सकेंगे। उस वीर के बलिदान की स्मृति मनाने का यही सर्वोत्तम उपाय है कि उस हुतात्मा की जीवन ज्योति से हम भी अपने जीवन प्रदीपों को प्रकाशित करते चलें। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्रभाषा देवनागरी को क्रियात्मिक स्थान देकर उस वीर हुतात्मा की पवित्र हार्दिक भावनाओं को मूर्तरूप देते हुये वास्तविक आदर और श्रद्धा का कर्तव्य पालन करें। ★

कालेज बनाने के बहाने धर्मप्रचार का अड्डा बनाने के लिए खरीदने की फिक्र में हैं। सरकार भी उनके लालच में आकर बेचने को तैयार हो गई है इस समाचार से इस इलाके की सभी हिन्दू जनता बहुत क्षुब्ध है। यहां तक कि सरकार एवं सरकारी अफसरों के पास कई बार तारों और पत्रों के द्वारा उनके धर्म स्थान के संबन्ध सूचना दी जा चुकी है लेकिन अभी तक कोई आवश्यक कार्यवाही नहीं हुई है। अगर सरकार जमीन को बेच देगी तो [illegible]

सामयिक समस्याएँ

आर्यसमाज के विद्यालय

[ले० श्री पं० अवधविहारीलाल, एम ए. एल-एल बी सम्पादक आर्यसमाज कलकत्ता]

[आर्यसमाज की प्रगति प्रवाह को जहां संस्थावाद के आधार से अभिवृद्धि और पोषण प्राप्त हुआ वहीं आज संस्थावाद आर्यसमाज के लिये नागपाश बन गया है। संस्थावाद की संकीर्णता ने हमारी दूर दृष्टि समाप्त कर दी और प्रत्येक कार्यकर्ता संस्था के आर्थिक संकट में उलझ गया। फिर भी इस कताई बुनाई का अभीष्ट परिणाम नहीं और शक्ति का निरन्तर अपव्यय हो रहा है। समय आ गया है जब आर्यसमाज संस्थाओं के जाल से मुक्त हो राष्ट्र और विश्व में वैचारिक क्रान्ति का नेतृत्व अपने हाथ में ले। यदि उस ओर लगाई शक्ति का संकोच या संग्रह कर हम प्रचार को महत्ता दें तो हमें अधिक सफलता मिल सकती है। —सम्पादक]

करिये सुख को होत दुख,
यह कहु कौन सयान।
सोने को करिये,
जासों टूटे कान॥

आर्यसमाज का आठवां नियम कहता है "विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करना चाहिये।" आर्यसमाज ने जब अपने विद्यालय खोले तो शायद यह दृष्टिकोण भी रहा हो। परन्तु प्रमुख ध्येय यही था कि और लोगों के चलाये विद्यालयों में या सरकारी स्कूलों में छात्रों के धार्मिक और चारित्रिक विकास की ओर संचालकों का ध्यान नहीं रहता है। आर्यसमाज के स्कूलों में विद्यार्थी ईश्वर भक्ति धर्म और संस्कृति से अनुराग रखने बनाये जा सकेंगे। उपदेशकों और भजनीकों के द्वारा जलसों में व्याख्यान और भजन कराके हम दो तीन दिनों में या दो चार घण्टों में जनता को वैदिक सिद्धांतों से परिचित नहीं करा सकेंगे। जनता के ऊपर हम अपनी छाप, अपने वैदिक संस्कार नहीं डाल सकेंगे। स्कूलों में बच्चे हमारे साथ वर्षों रहेंगे, चौबीस घण्टों में पांच छः घण्टे प्रतिदिन उनसे हमारा सम्पर्क रहेगा। बचपन की उनकी कोमल मति को हम अनुकूल दिशा में मोड़ सकेंगे। हमने सोचा था कुछ, हुआ कुछ और ही। कारबार में लाभ होते न देख कर, घाटा ही घाटा देखकर, कुछ समय के अनुभव के बाद चतुर कारबारी अपना कारबार समेट लेता है। कुछ और तरीका सोचता है, रोजगार का। आर्यसमाज ने ऐसा नहीं किया। आर्यसमाज के प्रचार के ठप्प पड़ जाने का एक बहुत बड़ा कारण आज हमारा यह संस्था प्रेम ही बन रहा है। 'संस्था' शब्द का एक अर्थ गति होना भी है गतिरोध या ठप्प पड़ जाना दूसरा अर्थ होता है 'मृत्यु' जितने समाजों की जो मृत्यु हुई है या हो रही है विद्यालयों के कारण वह हम में से बहुतों से छिपा नहीं है।

आर्यसमाज के सभासद् समाज मन्दिर बनाते हैं बड़ी कठिनाई से, चार चार आने मांगकर, एक एक ईंट मांग कर, सारे प्रचार कार्यों से अपनी ... मोड़कर। साप्ताहिक सत्संग बन्द ... जाता है कारण मन्त्री और प्रधान चन्दे में फंसे रहते हैं रविवार को। विशेष प्रचार का तो फिर प्रश्न नहीं उठता। वार्षिकोत्सव नहीं होता है समाज का। कारण उसके लिए रुपये कौन देगा। जितने रुपये वार्षिकोत्सव के लिये लगाये जा सकते थे उससे बड़ी रकम मांग बाईं गई है जब ... आपकी विद्यालय के भवन निर्माण के लिये या स्थायी कोष के लिए जो विद्यालय की सरकारी मंजूरी के लिये आवश्यक है।

विद्यालय बन जाता है। चन्दा देने वाले, बालकों क अभिभावक, निकटवर्ती अंचल के शिक्षा प्रेमी व्यक्ति, डाक्टर, अध्यापक इनके प्रतिनिधि विद्यालय की प्रबन्ध समिति में रहने चाहिये। अन्यथा विद्यालय को सरकारी मान्यता न मिलेगी। यों भी विद्यालय को सर्व जनप्रिय बनाने के लिए सबों को विद्यालय का सदस्य बनाना ही है। आर्यसमाज के कोष से विद्यालय के लिए बहुत रुपया दिया ही नहीं गया आर्यसमाजी बहुत अधिक देते ही नहीं रुपया अधिकांश गैर आर्यसमाजियों से आये हैं। लड़के भी गैर आर्यसमाजियों के ही प्रायः सर्वांश में है। तो विद्यालय कमेटी में बारह सदस्यों में एक या दो आर्यसमाजी ही रह सकें तो बड़ी कृपा समझिये परमात्मा की।

अध्यापक आर्यसमाजी मिलना कठिन ही नहीं दस में नौ विद्यालयों के लिए असम्भव सा ही है। एकाध विद्यालय में एक गरीब आर्यसमाजी अध्यापक बहुत खोज के बाद प्राप्त किया जा सकता है परन्तु गैर आर्य समाजी अध्यापकों के बहुमत में "वह हंसों के बीच बगुला" ही हो जाता है। प्रधानाध्यापक आर्यसमाजी नहीं है तो एक आर्यसमाजी अध्यापक सिरी, सनकी दकियानूसी ही समझा जाता है। उससे छात्रों की दृष्टि में आर्यसमाज का गौरव बढ़ता नहीं बल्कि उस अध्यापक के साथ आर्यसमाज भी मखौल की वस्तु बन जाता है। प्रधानाध्यापक आर्यसमाजी यदि सौ विद्यालयों में से एक में मिले भी तो वह लेशमात्र ही कुछ कर सकता है। आर्य सिद्धान्तों के शिक्षण में, आर्य समाज के अधिवेशनों में छात्रों को लाने में, आर्य पर्वों और उत्सवों के मनाने में वह अपने को शक्तिहीन अनुभव करेगा। विद्यालय कमेटी का सहयोग उसे नहीं मिलेगा, अध्यापकों का प्रत्यक्ष विरोध नहीं भी तो उनकी तटस्थता या उदासीनता तो मिलेगी ही। उस परिस्थिति में छात्रों को इस अनावश्यक झंझट से बचने में हर्ष ही होगा।

स्थिति इतने ही में आकर ठहर जाय तो परमात्मा को धन्यवाद दीजिए। पर बात यहीं समाप्त नहीं होती। आर्यसमाज मन्दिर में विद्यालय है। विद्यालय पर छात्रों और उनके अभिभावकों का भी स्वत्व है। उस पर आप ओम् का झण्डा लगाते हैं। दूसरा झण्डा भी क्यों नहीं लगेगा? सभी लड़के आर्यसमाजी तो हैं नहीं। एक विद्यालय में कुछ मुसलमान लड़के पढ़ते थे। समाज मन्दिर के ऊपर इस्लामी झण्डा भी गाड़ दिया गया। यह घटना आज से प्राय तीस वर्ष पूर्व की है। एक और समाज मन्दिर में 'ओम्' के बगल में 'आमीन' भी लिखा हुआ देखा गया, स्वस्तिक का चिह्न भी बना हुआ। आर्यों की ईंटों से आर्य सदस्यों और प्रचारकों द्वारा ढोकर लाई गई ईंटों से बने एक दूसरे विद्यालय में दीवाल पर रंगे स्वामी दयानन्द के चित्र को उतरवा दिया गया। उसके स्थान में दूसरा चित्र लगाया गया। आर्यसमाज का नाम तक लेने वाला या जानने वाला वहाँ एक भी अध्यापक नहीं है। आर्यसमाजियों के बालकों के लिये विद्यालय उतना ही उच्च हो गया जितना कुछ एशिया (एशिया माइनर) यहूदियों के लिये। एक विद्यालय के 'आर्य विद्यालय' नाम रखे जाने पर अध्यापकों ने गैर आर्यसमाजी जनता को प्रेरित कर बोर्ड में दरख्वास्त दिलाई उस नाम के विरोध में। एक आर्य समाज मन्दिर बहुत भव्य बना था उड़ीसा में। उसमें विद्यालय बना। विद्यालय आर्यसमाज के हाथ में नहीं रहा। समाज मन्दिर भी आर्यसमाज का नहीं रहा। जैसे काशी क पुराने विश्वनाथ के मन्दिर (आज की मस्जिद) में कोई शैव (हिन्दू) शिवलिंग पर अब नहीं चढ़ा सकता उसी प्रकार उड़ीसा के उस भावन आर्य मन्दिर (आज के विद्यालय) में कोई आर्यसमाजी हवन नहीं कर सकता है। हमारी प्रतिनिधि सभा के एक अधिकारी उस दिन बोल रहे थे एक आर्य विद्यालय उन्होंने ऐसा देखा जिसका चेयरमैन मीटिंग में बैठा धुंआधार सिगरेट फूंक रहा था। वहां का प्रधानाध्यापक विद्यालय में ही मांस मगाकर दिन दहाड़े खाता रहता है। विद्यालय बनाने में एड़ी से चोटी तक एक करने वाले आर्यसमाज के मंत्री और उनके सहयोगी अपने को उसी अवस्था में पा रहे हैं जिसका वर्णन तुलसीदास ने किया .—

समुझि मनहि मन रहिये,
माधव कहि न जाय का कहिये।

विद्यालय को सरकारी मान्यता प्राप्त है। हेडमास्टर को मांस खाने के अपराध में निकाला नहीं जा सकता है। आप निकालेंगे तो सरकार आपके विद्यालय को तोड़ देगी। या क्षतिपूर्ति के रूप में आपको एक बड़ी रकम देनी पड़ेगी उस हेडमास्टर को।

आर्य विद्यालयों में आर्य सिद्धान्तों की भद तो उड़ती ही रहती है हर घड़ी न केवल शब्दों में बल्कि क्रियात्मक रूप से। सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द की यह शिक्षा है कि (१) बालिकाओं के विद्यालय से बालकों के विद्यालय दूर रहें और (२) बालकों के विद्यालय में पुरुष अध्यापक बालिकाओं के विद्यालय में स्त्रियां अध्यापिकायें रहें और यह भी कि (३) बालकों के विद्यालय में पांच वर्ष की कन्या भी न जावे और न बालिकाओं के विद्यालय में पांच वर्ष तक का बालक। परन्तु आज कलकत्ते और आंचलिक क्षेत्रों के करीब करीब सारे विद्यालयों में ऊंची कक्षाओं तक लड़के लड़कियों की सह शिक्षा है। महर्षि ने गाना, नाचना, बजाना या इतना देखना यह अर्थ 'तौर्यत्रिक' का किया है और उनका निषेध किया है संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण में। सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समुल्लास के राजधर्म प्रकरण में भी। काम से उत्पन्न "दश दुर्गुण" स्वामी जी ने कहे हैं जिनमें ये तीन हैं। संस्कार विधि के उसी प्रकरण में मनुस्मृति में आये 'वेश' शब्द का अर्थ

(शेष पृष्ठ १२ पर)

विदेश-वार्ता

हालैण्ड की पुष्प नगरी "आसलमीर"

[लेखक— कुमारी रीता चौधरी, बी॰ए॰ कलकत्ता]

फूलों के कारण आनन्द वृद्धि होती है। यह यदि सत्य है तो निःसन्देह हालैण्ड एक आनन्द देश है। क्या इस प्रकार सारे वर्ष भर सुन्दर फूल संसार में और कहीं भी प्राप्त होते हैं? यहां के लोगों को फूल बहुत पसन्द आते हैं। इस देश में फूलों की विभिन्न चीजें बनाई जाती हैं। अतएव यह एक "कट-फ्लावर' उद्योग का महत्त्वपूर्ण केन्द्र है।

आमतौर पर फूल सभी को पसन्द आते हैं क्योंकि वे हमारी प्रसन्नता को बढ़ाते हैं। यहां के लोग व्यापार की दृष्टि से भी इसमें अधिक दिलचस्पी लेते हैं। व्यापारिक दिलचस्पी और आनन्द के साधन के कारण यहां एक सुन्दर परम्परा का आरम्भ हुआ है। इस परम्परा का पालन नेदरलैंड के असंख्य नगर और गांवों में किया जाता है। फूलों के सुन्दर दृश्य आदि का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। इनमें से कई फूलों द्वारा बनाये गये दृश्यों को हालैंड में "कोरसेस" कहते हैं। प्राय. इनमें मौलिकता देखने में आती है। प्रतिवर्ष नये पुष्प दृश्य देखने में आते हैं। इस प्रकार निम्नभूमि पर स्थित हालैण्ड की सीमा और समुद्र के पार इन सुन्दर फूलों के दृश्यों के कारण प्रसिद्ध है।

प्रतिवर्ष इन बड़ा पुष्प दृश्यों का आयोजन अप्रैल महीने के प्रथम शनिवार को किया जाता है। यह बसन्त ऋतु का नयन मनोहर दृश्य लसैबहेम-लिसे और लिसे से हीलेगोम वहां से फिर लम्डन और हरलेम के मध्य में स्थित पुष्पों से लदे हुए हालैंड के किले तक यह सुन्दर और रंगीन दृश्य देखने में आता है। इसका बारहवां आयोजन इस बसन्त ऋतु में हुआ। हकन्थिस ट्युलिप और डेफोडिल्स फूलों का प्राधान्य इन पुष्प दृश्यों में देखा गया।

अगस्त के पहले शनिवार को इन सुन्दर पुष्प दृश्यों की समाप्ति के उपलक्ष्य में एक बड़ा पुष्प दृश्यों का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन के साथ बसन्त ऋतु के सुन्दर फूलों की बहार की समाप्ति हो जाती है ऐसा माना जाता है। १९५४ से इस समाप्ति समारोह का आरम्भ किया गया था। बसन्त ऋतु में विविध रंगों के फूलों के कारण विश्वविद्यालयों की नगरी लेडन और पुष्प ग्राम रीजनूलवर्ग के बीच मानो एक रङ्ग की धारी बनी दी गई हो ऐसा रम्य दृश्य देखने में आता है।

फूलों की विपुलता के कारण उससे अनेक वस्तुएं बनाई जाती हैं। कार-नेशिया, गुलदावली, डेलिया, ग्लाडि-योली, लिलीज, गुलाब और अन्य वसंत ऋतु में उपलब्ध होने वाले फूलों से कारें आदि सजाई जाती हैं। इन पुष्प दृश्यों की मुख्य नवीनता उनकी वापसी यात्रा में देखने में आती है। संध्या के समय इनको बिजली के बल्बों से सुशोभित किया जाता है। यह दृश्य अपूर्व होता है।

रोटरडम में भी इस प्रकार के फूलों के दृश्यों का आयोजन किया जाता है। प्राय. यह आयोजन अगस्त के दूसरे शनिवार को किया जाता है। हालैण्ड की चहल पहल से युक्त बन्दरगाह को गर्व है कि इस प्रकार के दृश्यों का यहाँ सर्वप्रथम आयोजन किया जाता है। इस वर्ष ३१ वीं बार रोटरडम के गलियों से फूलों से सजाई हुई कारें जनसमुदाय के मध्य से गुजरेंगी।

सितम्बर के महीने में दोबारा प्रथम शनिवार को आसलमीर में "ब्लोएमेन कोरसो" मनाया जाता है। आसलमीर संसार की पुष्प नगरी है। यहां फूलों का नीलाम होता है। पुष्प-दृश्य यहाँ के मनोरम होते हैं। इसका मुख्य कारण फूलों की विपुलता है। इन सुन्दर फूलों से तरह-तरह की आकृतियां बनाई जाती हैं। वे सब फूलों की आकृतियां जैसे घोड़े, हवाई जहाज इत्यादि को ट्रक पर व्यवस्थित रूप से रखकर जलूस के रूप में विभिन्न स्थानों पर ले जाया जाता है। यह जलूस वोवेनकर, ऐमसल्स्टेवीन और एमस्टर-डम से वापिस आसलमीर आता है। इसका एक अत्यन्त दिलचस्प पहलू यह है कि अप्रैल से सितम्बर तक इस जलूस के मार्ग पर एक स्थान पर आसलमीर के इस पुष्प दृश्य को जैसे का वैसे रखते हैं। वास्तविक आकार के दसवें हिस्से के बराबर इस कृति को बनाया जाता है। एक लकड़ी के प्लेटफार्म पर इनको रखा जाता है। यह स्थान ऊँचा रखा जाता है जिससे लोग सरलता पूर्वक देख सकें। इनमें विशेष रूप से बनाये गये फूलों द्वारा आकृतियाँ बनाई जाती हैं एमस्टरडम के 'आलिम्पीक स्टेडियम' में इसका आयोजन किया जाता है। नगर के विभिन्न भागों से वे कृतियां बनाकर यहाँ दोपहर के समय एकत्रित होते हैं। जिसे देखकर लोग बहुत खुश होते हैं। १६७८ से यह कार्यक्रम हर वर्ष आसलमीर में होता है।

पुष्प नगरी होने के कारण यहां सभी आयोजनों में फूलों का प्राधान्य रहता है। फूलों के नाम पर ही उत्सव मनाये जाते हैं। उसमें "कोरसेस" ब्लो-एमेन कोरसो" आदि पुष्पोत्सव हैं। सितम्बर के प्रथम रविवार को इस पुष्पोत्सव के समाप्ति के उपलक्ष में एक समारम्भ किया जाता है जिसे "जुनडरट कोरसो" कहते हैं। पिछले १८ वर्ष से यही परिपाटी का अनुसरण किया जाता है। इसे "जुनडरट कोरसो" इसलिए कहा जाता है कि इसका आयोजन "जुनडरट" नामक एक छोटा सा स्थान ब्रेडा के समीप है इसकी सीमा बेल-जियम सीमा के साथ मिली हुई है। अन्य स्थानों पर इन पुष्प दृश्यों का आयोजन व्यापारिक दृष्टि से किया जाता है पर जुंनडरट में इसका उद्देश्य केवल मनोरञ्जन ही है।

इस देश के अन्य नगरों में फूलों के उत्सव के समय जो आकृतियां बनाई जाती हैं उसमें बहुत से व्यक्ति भाग लेते हैं। इनकी सजावट खुले आम की जाती है पर जुनडरट में इसके विपरीत है। ये आकृतियां खुलेआम नहीं बनाई जाती और काफी बहुत से व्यक्ति इस को सजाने में भाग लेते हैं। वे इसको बहुत गुप्त रखते हैं। एक बड़े कनवास के पीछे इन आकृतियों की सजावट आदि की जाती है। दूसरा अन्तर यह है कि यहाँ केवल फूलों का उपयोग किया जाता है। उसके हरे रंग के पत्ते, टहनियां आदि को प्रयोग में लाया नहीं जाता। अन्य नगरों के पुष्प दृश्यों में इसका प्रयोग प्रायः किया जाता है।

फूलों में भी केवल डेलिया का ही उपयोग किया जाता है ऐसा कहें तो अनुचित नहीं होगा। इस पुष्पोत्सव के लिए यहां के निवासी डेलिया को विशेष रूप से बगीचे में लगाते हैं। इस प्रकार अन्य नगरों के पुष्प दृश्यों में और यहां के दृश्यों में बहुत अन्तर देखने में आता है। बाकी के नगरों में इन पुष्प कृतियों को लोडरों पर रखकर जलूस के रूप में ले जाया जाता है। जुंनडरट में मशीन की जगह मानव शक्ति को ही काम में लाया जाता है। यह काम इतना कठिन नहीं है जितना उसको बनाने में है। एक एक कृति में २०,००० से अधिक फूलों का प्रयोग किया जाता है। इसके पीछे जो एक प्रथम ढांचा बनाया जाता है वह पांच से छः हजार फुट लोहे के तार का बनाया जाता है। इसको ढकने के लिये १,००० फुट अन्य सामग्री का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त १०० वर्ग गज चटाईनुमा चीज का उपयोग किया जाता है। आप चाहे तो इन सब चीजों को देख सकते हैं। उत्सव के एक दिन पहले आप देख सकते हैं। लेकिन कहना खतरे से खाली नहीं क्योंकि यहां के लोग अपनी कृति को अत्यन्त गुप्त रखना चाहते। केवल उसी निश्चित दिन आप देख सकते हैं। यदि इससे पूर्व आप देखने की कोशिश करेंगे तो आपकी मरम्मत होगी इसलिए इसे उत्सव के पूर्व एक दिन के बजाय उसे उत्सव के दिन ही देखना अच्छा रहेगा।

हालैण्ड पुष्प निर्यात केन्द्र

हालैण्ड प्रति वर्ष ४००,००० कि० फूल बाहर के देशों में भेजता है। यह प्रायः के०ल० एम से इतने फूल परदेश में भेजे जाते हैं। इस "कटफ्लावर" की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यदि ग्राहक चाहे तो सफेद रंग के कारनेशिया को लाल रंग में भी परि-वर्तित कर सकता है।

कई वर्ष के सूक्ष्म परीक्षण के बाद यह ज्ञात हुआ कि "कट फ्लावर्स" को इच्छानुसार रंग कर सकते हैं। यह प्रयोग नेदरलैण्ड में सर्व प्रथम किया गया। सर्वप्रथम सफेद लिली पर प्रयोग किया गया। पानी में रंग घोला जाता है और उसे उन फूलों पर लगाया जाता है। इसके पश्चात् उन फूलों का रंग नारंगी के समान हो जाता है और रासायनिक रंग का हानिप्रद प्रभाव दूर हो जाता है। इस प्रक्रिया के पश्चात् फूल चार सप्ताह तक ताजा रह सकते हैं।

इसमें इतनी प्रगति हुई है कि अब फूलों को नीला, लाल और पीला रंग दिया जाता है। आगे अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अन्य नव रंगों में भी फूल रंग दिए जाएं। लिली पर सर्व प्रथम यह रंगों का प्रयोग किया गया इसमें सफलता मिली। इस सफलता के पश्चात् अन्य फूलों पर भी यह प्रयोग किया गया। इस प्रक्रिया के बाद ज्ञात हुआ कि लिली के अतिरिक्त डेलिया और कारनेशिया पर सुगमता से रंग चढ़ाये जा सकते हैं। इससे आप अपने कमरे के रंग के अनुसार फूलों का रंग रख सकते हैं।

*

जीवन-ज्योति

भगवान कृष्ण के सम्बन्ध में देश की भूल और उसके दुष्परिणाम

[ले०—श्री प० शिवबन्धु जी वेदालङ्कार एम०ए० आगरा]

[आर्यसमाज महाभारत और गीता के कृष्ण को भारत का गौरव मानता है। कृष्ण चरित्र की निष्कलुषता ही भारतीय गौरव का आधार हो सकती है। उस महान् पुरुष के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने का आर्यसमाज को गर्व है। हमें इस कार्य को व्यापक बना उस महान् पुरुष के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि व्यक्त करनी चाहिये।
सम्पादक]

यह निर्विवाद सत्य है कि यदि भारतीय संस्कृति में से राम और कृष्ण को निकाल दिया जाय तो भारतीय संस्कृति लड़खड़ा कर गिर पड़ेगी। क्यों कि इन्हीं दोनों महापुरुषों का सम्बल पाकर भारतीय संस्कृति फली और फूली है। भारतीय संस्कृति का ऐसा कौन सा क्षेत्र है जो इन महापुरुषों से प्रभावित न हुआ हो। क्या साहित्य, क्या नाटक, क्या संगीत, क्या काव्य, क्या चित्रकला, क्या मूर्तिकला, क्या भवन-निर्माण कला सभी पर इन महापुरुषों का व्यापक प्रभाव पड़ा है। यही तो कारण है कि आधुनिक युग के महान् क्रान्तिकारी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द की लेखनी जब चली तो उसके नीचे संसार के बड़े बड़े महापुरुष दब गये। पर भगवान् कृष्ण ही ऐसे महापुरुष है जिन का गुणगान ऋषि दयानन्द को भी करना पड़ा है और उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि इतना बड़ा महापुरुष भारत में दूसरा पैदा नहीं हुआ जो एक ही साथ महान् राज शास्त्री, धर्म शास्त्री, समाज शास्त्री तथा योग शास्त्री था। पर दुर्भाग्य से देश के लोगों ने मूर्खतावश इस महापुरुष के चरित्र को इतना कलंकित किया है जो इतिहास की एक महान् दुर्घटना है। ऐसा कौन सा लाञ्छन है जो इस महापुरुष पर न लगाया हो ऐसा कौन सा पाप है जो इसके सर न मढ़ा गया हो। यहाँ तक कि पुराणों तक ने इस महापुरुष को चोर जार शिखामणि की उपाधि से विभूषित किया है। जबकि ये ही घटनाएं वास्तव में राजनीति शास्त्र समाज शास्त्र और विज्ञान का निचोड़ थीं।

उदाहरण के लिये गोवर्धन के इतिहास को लीजिए। आज भी देश के लाखों भूले भटके लोग इस पहाड़ की प्रतिवर्ष परिक्रमा करते हैं। इनकी मान्यता है कि भगवान कृष्ण ने इन्द्र के प्रकोप से ब्रज निवासियों की रक्षार्थ गोवर्धन पहाड़ को उठाया था। पर आज सातवीं दूसरी कक्षा का विद्यार्थी भी जिसे भूगोल का थोड़ा सा भी ज्ञान है इस बात को भली प्रकार जानता है कि पहाड़ पृथ्वी से जितना ऊँचा होता है उससे दुगना पृथ्वी के नीचे होता है। यह कोई गोंद से चिपका हुआ तो था नहीं जो उसे ऊपर से ही उखाड़ लिया है। यदि दुर्जनतोष न्याय से यह मान भी लिया जाय कि पहाड़ उठा भी लिया तो वहाँ तो एक बड़ा भारी गढ़ा हो जायगा जिसमें रक्षा के स्थान में डूब कर मरेंगे। परन्तु गोवर्धन की वास्तविकता तो गोवर्धन शब्द से ही प्रकट हो रही है। गोवर्धन में दो शब्द हैं गोवर्धन अर्थात् गायों का बढ़ाना। उस समय भगवान कृष्ण के सामने यह समस्या थी कि कंस जैसे अत्याचारी राजा को परास्त कैसे किया जाय। वे समस्या के समाधान के लिये इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक अपने पक्ष वालों को शारीरिक दृष्टि से मजबूत नहीं बनाया जाता तब तक कंस का मुकाबला करना सरल नहीं है, इसलिए उन्होंने राजा का लड़का होते हुए भी स्वयं गायें चराकर और उनका वर्णन करके अपने साथियों को खूब गायें पालने और घी दूध खाने को प्रेरित किया, ताकि अत्याचारी कंस का दृढ़ता पूर्वक मुकाबला किया जा सके। यह है गोवर्धन का रहस्य जिसको देशवासी मूर्खतावश अब भी नहीं समझ पा रहे हैं और गायें पालने तथा उनका घी दूध खाकर शरीर मजबूत बनाने के स्थान पर प्रतिवर्ष मथुरा जाकर तथा कथित गोवर्धन पहाड़ से टक्कर मार रहे हैं।

इसी प्रकार वह घटना जिसके आधार पर भगवान कृष्ण को माखन चोर बताया जाता है आधुनिक राजनीति शास्त्र को एक महान् देन है। जिस समय कृष्ण ने सोचा कि अपने दल को सबल और शत्रु दल को निर्बल बनाकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है तो उन्होंने मथुरा के आसपास के अपने गावों वृन्दावन, बरसाना, नन्दगाव आदि में यह घोषणा कर दी कि हमारे इन गाँवों से मथुरा में दूध, दही मक्खन नहीं जायगा और जो इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसके दही मक्खन को लूट लिया जायगा। जिन लोगों ने इस आदेश का पालन नहीं किया उनके दही मक्खन को लूटा गया। यह था राजनीति शास्त्र का महान् अस्त्र असहयोग जिसका प्रयोग महात्मा गांधी ने इस युग में किया। पर आज भी बहुतेरे अविवेकी लोग इस राजनैतिक सिद्धान्त को न समझ भगवान् कृष्ण को माखन-चोर बता रहे हैं।

चीर हरण जिसके आधार पर कृष्ण को बताया गया है वह भी समाज शास्त्र की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। आज भी कोई सभ्य नागरिक इस बात को सहन नहीं कर सकता कि स्त्रियाँ नगर के पास ही जलाशय में नग्न स्नान करके नगर के लोगों की भावनाओं को दूषित बनायें। महान् समाज शास्त्री भगवान् कृष्ण ने जब देखा कि गाँव के पास ही एक जलाशय में कुछ स्त्रियें नग्न स्नान कर रही है तो उन्होंने उन को शिक्षा देने की दृष्टि से उनके कपड़े उठवा लिये और उनको चेतावनी दी कि भविष्य में कभी भी जलाशय में नग्न स्नान नहीं करना चाहिए। यह था चीरहरण की घटना का रहस्य जिस में समाज शास्त्र का रहस्य समाया हुआ परदेश के लोग तो आज भी इसकी वास्तविकता को न समझ उसी प्रकार का दिग्दर्शन कर रहे हैं तथा अपने घरों में उन नग्न चित्रों को लगाकर अपने परिवार तथा समाज के वातावरण को दूषित बना रहे हैं। (यद्यपि यह घटना सदिग्ध है फिर भी समाज हित की दृष्टि से यदि ऐसा हुआ हो तो और बात है। —स०)

यदि देश की ये मूर्खतापूर्ण बातें अपने परिवार तथा समाज तक ही सीमित रहती तब भी कोई बात नहीं थी पर इसके बड़े दूरगामी परिणाम हुए हैं। देश की इस अज्ञानता का विदेशियों ने पूरा पूरा लाभ उठाया है। अभी अभी मैंने गोरखपुर के बाजार के एक मुख्य चौराहे पर देखा कि हजारों की भीड़ में कुछ ईसाई मिश्नरी मैजिक लैन्टर्न से अपना प्रचार कर रहे थे और वे भगवान् कृष्ण की इन्हीं माखन चोरी तथा चीरहरण की घटनाओं को बताकर कह रहे थे कि जिस जाति का भगवान इतना चोर और निर्लज्ज हो उस जाति का क्या धर्म हो सकता है। इसी के साथ-साथ ईसामसीह के उन चित्रों को जिनमें उसे बीमारों की सेवा करते हुए बताया गया था दिखाकर कहते थे कि यह हैं सच्चा भगवान का पुत्र जो संसार भर के पाप और दुखों को अपने सर पर लेकर सूली पर चढ़ गया है। इसलिये जब तक इस पर ईमान न लाओगे तुम्हारा उद्धार होना कठिन है। सच जानिये जनता पर इसका बड़ा असर पड़ता था। यही तो कारण है कि देश की इस अज्ञानता का लाभ उठाकर ईसाई मिश्नरियों ने गोरखपुर के आस पास के गाव के गाव ईसाई बना डाले हैं।

भगवान कृष्ण के व्यक्तित्व की महानता और आकर्षण तो उनके कृष्ण शब्द से ही दृष्टिगोचर हो रहा है। कृष्=आकर्षणे से कृष्ण शब्द बना है। अर्थात् जिसके व्यक्तित्व में महान् आकर्षण हो उसे कृष्ण कहा जायगा। एक-बार स्वामी रामतीर्थ अमरीका में भगवान कृष्ण के आकर्षक व्यक्तित्व की व्याख्या करके लोगों को बता रहे थे कि कृष्ण पर जो विलासिता का आरोप लगाया जाता है कि स्त्री पुरुष सदैव उन्हें घेर रहते थे यह वासनात्मक प्रेम नहीं था उनके व्यक्तित्व में ही इतना आकर्षण था। व्याख्यान के बीच में ही किसी ने शंका कर दी कि यह केवल कल्पना मात्र है कि एक व्यक्ति का व्यक्तित्व इतना आकर्षक हो सकता है जैसा आप बता रहे हैं। कहते हैं स्वामी रामतीर्थ व्याख्यान को एक ऊँचे स्तर पर ले जाकर बीच ही में भाग खड़े हुए। सभा के स्त्री पुरुष भी कौतूहल वश उनके पीछे पीछे हो लिये। स्वामी जी कुछ दूर जाकर रुके और पुन अपना व्याख्यान प्रारम्भ करते हुए बताया कि यदि अमरीका के आप जैसे शिक्षित स्त्री पुरुष मेरे जैसे एक सामान्य व्यक्ति के पीछे भाग सकते हैं तो क्या कारण है कि भगवान कृष्ण जैसे महान् आकर्षक व्यक्ति को स्त्री पुरुष न घेर रहते हों।

जयद्रथ वध की उस वैज्ञानिक घटना को तो पाठक भूले न होंगे कि किस प्रकार दिन में ही कृत्रिम बादलों से ढककर रात्रि बनाई गई, फिर पुन सूर्य चमका जयद्रथ को मरवाकर अर्जुन की प्रतिज्ञा पूर्ण की गई। गीता तो दार्शनिक चिन्तन का निचोड़ है भगवान कृष्ण की योग विद्या का दर्पण है वह परखा महापुरुष था जिसने कंस शिशुपाल, बाणासुर, जरासन्ध आदि राजाओं को परास्त करके खण्डित भारत को महाभारत का रूप दिया था।

★

साहित्य-समीक्षण

अमेरिकन 'रामायण' में भारतीय भावनाओं पर आघात

[लेखक—श्रीमती मंजिलाकुमारी, हल्द्वानी]

भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में—

"हमारे देश की हरेक पीढ़ी के अगणित लोगों की जिन्दगी का ताना बाना रामायण और महाभारत ने बुना है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि अगर हम रामायण, महाभारत और बुद्ध को भूल जायें तो हमारे पास क्या रह जाय। तब हमारी जड़ें कट जायेंगी और हम अपने चरित्र की उन मूल विशेषताओं को खो देंगे जो युगों से हम में चली आ रही हैं और जिनके कारण हम बने हैं। तब भारत भारत न रह जायगा।"

उपर्युक्त पंक्तियां इस उद्देश्य से उद्धृत की गई हैं कि आधुनिक युग की प्रगतिशीलता के समर्थक श्री नेहरू भी जिस रामायण महाभारत आदि पर श्रद्धा रखते हैं उनके सम्बन्ध में आज विश्व में एक नया विवाद हो रहा है। यहां हम रामायण के सम्बन्ध में कुछ विचार विमर्श करेंगे।

आज जब एक ओर इङ्गलिश और रशियन भाषाओं में वाल्मीकि और तुलसी दास की रामायणों का अनुवाद कर विदेशी जन विश्व साहित्य के अनुपम रत्नों के सौंदर्य से अलंकृत होने के लिए प्रयत्नशील हैं वहां एक समुदाय इस फिराक में भी है कि रामायण और उसके पात्रों को दोष युक्त सिद्ध कर उसके महत्व को कम किया जाय। जिससे प्रधान मन्त्री के शब्दों में भारतीयों के चरित्र की मूल विशेषतायें समाप्त होने और भारत भारत न रहने की उनकी आशंका साकार बन जाय।

यदि किसी और देश के किसी व्यक्ति द्वारा रामायण की उपर्युक्त दृष्टिकोण से समीक्षा की जाती तो हम कोई परवाह भी न करते परन्तु जब इस प्रकार का कार्य भारत के परम हितचिन्तक और विश्व में भी समुद्घोषक अमेरिकन नागरिक द्वारा किया गया हो तो हमें अमेरिकन राष्ट्र के प्रति सन्देह की भावना से देखना होगा।

हम जिस अमेरिकन नागरिक और कृति की आलोचना कर रहे हैं उसके लेखक हैं अमेरिका के प्रसिद्ध हास्य लेखक "आब्रे मेनन" उनके द्वारा लिखित तथा स्कीबिन्सं एण्ड सन्स द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी "रामायण" भारतीय जन भावना को कितना आघात पहुँचाने वाली है इसकी जानकी उनके द्वारा निर्णीत और कल्पित निश्चयों से आपको मिल सकती। यहा संक्षिप्त परिचय ही दिया जा रहा है हमारी प्रेरणा है कि पाठक पुस्तक प्राप्त कर स्वयं देखने का प्रयत्न अवश्य करें।

आब्रे मेनन के उर्वर मस्तिष्क की कपोल कल्पनाओं का संक्षिप्त परिचय —

१—जहां आज अयोध्या बसी है वहां किसी समय अनार्यों का अधिकार था और आर्यों ने उन पर विजय प्राप्त की थी।

२—राजा दशरथ को उनकी प्रजा चाहती थी पर स्वयं दशरथ स्त्रियों के लिये आतुर थे।

३—पटरानी के अतिरिक्त दशरथ अनेक रखेलें रखते थे।

४—दशरथ में शारीरिक सौन्दर्य न था, शक्ल सूरत से वे बदशक्ल थे।

५—राज्य पर अधिकार करने के लिये राम ने दशरथ के प्राण लेने के लिए षडयन्त्र किया पर वे स्वयं फस गये।

६—राम द्वारा दशरथ को एक ऐसा तोता भेंट किया गया जिसकी चोंच जहर की थी।

७—तोते की परीक्षा लेने के लिए दशरथ ने राम से तोते को मिठाई खिलाने के लिये कहा जिससे तोता उन्हीं को काट लें और राम मर जाय।

८—सीता ने रसोइये को भोजन में विष मिलाने का संकेत किया।

९—श्रवणकुमार का ब्राह्मण पिता राम को १४ वर्ष का वनवास दिलाने के लिए अयोध्या में उपस्थित हुआ।

१०—राम वन गये अवश्य पर यह बहाना करके कि शिकार खेलने जा रहे हैं।

११—राम जावालि पेटू संघ के संस्थापक थे इस संघ के सदस्यों का विश्वास था कि भगवान पेट में वास करते हैं।

१२—सीता ने किसी दिन लक्ष्मण को पान खिलाते हुए कहा था—यह रावण है एक उसने मुझे जंगल में देखा था फिर मैं उससे मिली, वह मुझ से प्रेम करता है।

१३—एक दिन रावण सेना लेकर आश्रम पर चढ़ आया और राम के देखते-देखते सीता राम के पास जाकर खड़ी हो गई और रावण उसे घोड़े पर चढ़ाकर चलता बना।

१४—रावण के मारे जाने पर सीता को बहुत दुख हुआ।

१५—एक दिन सीता ने एकान्त में लक्ष्मण को बतलाया कि दूसरों के प्रति रावण कितना भी कठोर क्यों न रहा हो स्त्रियों के प्रति उसका हृदय बड़ा कोमल था।

१६—लंका जाते समय लोगों ने सीता पर बोली कसी 'कुलटा आ रही है।'

१७—अयोध्या प्रवेश से पूर्व अग्नि प्रवेश का ढोंग रचा गया चिता इस प्रकार बनाई गई कि इतना धुआं हो कि जिसमें कुछ दीख न पड़े और सीता चुपके से खिसक कर दूसरी तरफ से आ जाय।

भारत का दुर्भाग्य है कि भारत के प्रधान मन्त्री जिन आधारभूत विशेषताओं को भारत का गौरव मानते हैं भारत के राजनीतिज्ञ राजदूत मोटी-मोटी तनखाहें लेकर भी उनके बारे में न जानते हैं न जानना चाहते हैं। यदि यह बात नहीं है तो अमेरिका का भारतीय दूतावास आज तक अभी तक भारतीय भावनाओं पर आघात करने वाली कपोल कल्पित रचना के विरोध में एक शब्द भी क्यों नहीं कह सका या कहता।

भारत सरकार को सांस्कृतिक एकता के सम्वर्धन और भारत अमेरिकी जनता के सौहार्द भाव की वृद्धि के लिये भारतीय जनता का विरोध अमेरिकी सरकार तक पहुँचाने का कर्तव्य पालन करना चाहिये। आर्थिक सहायता देकर अमेरिका भारत की आत्मा पर आघात पहुँचाने का अधिकार नहीं पा सकता।

विचार स्वातन्त्र्य का सदैव सम्मान किया जाना चाहिये पर विचार स्वातन्त्र्य के नाम पर कपोल कल्पनाओं, निराधार भ्रान्तियों के प्रसार का व्यवहार मानव एकता के विश्व व्यापी आन्दोलन पर प्रबल आघात है। आशा है विश्वबन्धुत्व की भावना की समर्थक अमेरिकन सरकार भारतीय भावनाओं की रक्षा के हेतु अपने कर्तव्य पालन का परिचय देगी। भारत सरकार की सजगता इस दिशा में अपेक्षित है अन्यथा दोनों देशों के सांस्कृतिक सम्बन्धों में कटुता की वृद्धि की सम्भावनाएं सदैव विद्यमान रहेंगी।

आर्यसमाज संगठन और आर्य विद्वानों भारतीय संस्कृति प्रेमियों का कर्तव्य है कि वे इस सम्बन्ध में प्रबल विरोध प्रदर्शन करें जिससे सरकार कर्तव्य पालन के लिए बाध्य हो सके।

जयन्ती महोत्सव निकट आ रहा है !

गुरु श्री विरजानन्द स्मारक, महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दि, आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं अभिनन्दन समारोह के निमित्त धन संग्रहार्थ निम्न सज्जनों को ४-२-५१ से १२ ८ ५१ तक रसीदें नोट्स विक्रयार्थ भेजे गये हैं। कृपया धन संग्रह करके भेजने का कष्ट करें।

२—२७ १०-५८ से ७ २-५१ तक भिन्न-भिन्न महानुभावों को रसीदें नोट्स जिनका नाम आर्यमित्र में प्रकाशित कराया जा चुका है वह भी कृपाकर धन संग्रह करके भेजने का कष्ट करें।

श्री सरदारसिंह मन्त्री उप सभा मैनपुरी	७५०)
,, अमरसिंह मन्त्री आ० स० मुरादनगर (मुरादाबाद)	५०)
,, अच्युत शास्त्री महोपदेशक सभा	५००)
,, कृष्णकुमार जी मन्त्री आ० स० ठठिया फर्रुखाबाद	५०)
,, हरप्रसाद जी आर्य अमोरा (रामपुर)	२७५)+४५०)
,, चिमनचन्द्र जी आर्य मन्त्री आ० स० कोसीकलां (मथुरा)	२२०)
,, मन्त्री जी आ० स० शाहाबाद (हरदोई)	५०)
,, तोताराम कुमराव उपदेशक सभा	२५०)
,, अकबरसिंह प्रचारक सभा	६००)
,, चमन्नीलाल आर्य मलपुरा (आगरा)	५०)
,, बलदेवप्रसाद मन्त्री आ० स० उतरौला (गोंडा)	६२॥)
,, शान्तानन्द सरस्वती नदरौली (बदायूं)	८७॥)
,, धर्मदेव उपदेशक सभा	२००)
,, नवीनचन्द्र मन्त्री उपसभा फर्रुखाबाद	२२५)
,, रमावतीदेवी जी आर्यसमाज बदायूं	२१५)
,, सरलादेवी शास्त्री ब्राह्मणपुरी अलीगढ़	५७५)
,, सुशीला मलिक जी आ० स० मथुरा	६००)
,, भूपालसिंह वकील सीपरी बाजार झांसी	४५०)
,, इन्द्रवर्मा जी आर्यसमाज रामनगर (नैनीताल)	२००)
,, शकुन्तलादेवी गोयल खैरनगर मेरठ	६००)
,, मोहनलाल जी आर्य आगरा	६००)

टि०—श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा का पत्र अभी जयन्ती समिति को प्राप्त हुआ है। उन्होंने २०००) रु० आगरा से संग्रह करके भेंट करने का वचन दिया है। इसी प्रकार सभास्थ अन्तरंग सदस्य एवं अधिकारी गण प्रयत्न करने का कष्ट करें।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
सभा मन्त्री

सभा की सूचना

सभा द्वारा नियुक्त मुख्य निरीक्षक महानुभावों का निम्न प्रकार कार्य विभाजन किया जाता है। कृपा कर अपने-अपने क्षेत्र के जिलास्थ निरीक्षक महानुभावों को आदेश करें कि अपने अपने जिले के समाजों का निरीक्षण करें और समाज जो शिथिल हो गये हैं उन्हें जागृत करें। सभा प्राप्तव्य धन प्राप्त करने की कृपा करें।

मुख्य निरीक्षक महानुभावों से यह भी प्रार्थना है कि अपने-अपने क्षेत्र में जयन्ती आदि समारोहों के लिए धन संग्रहार्थ भ्रमण करने का कष्ट करें।

नाम मुख्य निरीक्षक	नाम कमिश्नरी व जिला
१—श्री रघुनन्दन स्वरूप जी एडवोकेट मेरठ	मेरठ कमिश्नरी के ५ जिले
२—श्री रामचन्द्र जी रि० पो० मा० बदायूं	रुहेलखण्ड कमिश्नरी तथा नैनीताल अल्मोड़ा, बिजनौर जिला को छोड़कर
३—श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा	आगरा, मथुरा, एटा, झांसी, जालौन
४—श्री रामप्रसाद जी आर्य मैनपुरी	अलीगढ़, मैनपुरी, इटावा
५—श्री विश्वम्भरनाथ जी तिवारी कानपुर	कानपुर, बांदा, हमीरपुर, लखनऊ कमिश्नरी
६—श्री रामकिशोरसिंह जी प्रधान	फैजाबाद कमिश्नरी
७—श्री माता प्रसाद जी कटरा प्रयाग	प्रयाग, मिर्जापुर, फतेहपुर, जौनपुर
८—श्री [illegible]सिंह जी [illegible]	बनारस, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर देवरिया, बस्ती, आजमगढ़
९—श्री देव [illegible] जी [illegible]	गढ़वाल, टेहरी, बिजनौर

टि०—सभा के [illegible] अन्तरंग में रहेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा

आगरा की डायरी

आर्यसमाज आगरा नगर के साप्ताहिक अधिवेशन दि० ३ ५ ५१ को पं० सूर्यदेव जी शास्त्री, १० ५ ५१ को श्री स्वामी मुक्तानन्द जी १७ ५ ५१ को हरीराम जी वानप्रस्थी, २४-५ ५१ पं० श्यामबिहारी जी अवस्थी, ३१-५ ५१ श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट, ७-६ ५१ पं० श्यामबिहारी अवस्थी, १४ ६ ५१ पं० ओ३म्प्रकाश शास्त्री, २१ ६ ५१ पं० रामशरणजी, २८ ६ ५१ प्रो० तोताराम जी शर्मा, ५ ७ ५१ पं० सूर्यदेव जी शास्त्री १२ ७-५१ पं० श्यामबिहारी अवस्थी १९ ७ ५१ श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट २६ ७ ५१ पं० ओ३म्प्रकाश शास्त्री और २ ८ ५१ को श्री रामेश्वरदयाल आर्य के भिन्न भिन्न विषयो पर प्रभावशाली भाषण हुए।

म० रामस्वरूप जी आर्य वानप्रस्थी ने इस समाज के सदस्यों के गृह पर जा जाकर सन्ध्या यज्ञ और वैदिक धर्म का प्रचार ८ ४ ५१ से ३१ ७ ५१ तक समारोह पूर्वक किया आपके प्रचार से आर्य प्रचारो में जागृति आ गई है।

—मोहनलाल आर्य
प्रधान

सभा की सूचना

उत्तर प्रदेश के सर्व आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री हेमचन्द्र शर्मा जी सभा के वैतनिक प्रचारक नहीं हैं। सभा की ओर से उनको धन संग्रह के लिए कोई आदेश पत्र नहीं दिया गया है। अत सभा सम्बन्धी धन किसी प्रकार का नहीं देना चाहिए।

और यदि जिस किसी सज्जन को दिया जाय तो सभा की छपी रसीद पर धन दिया जाय बिना रसीद पर नहीं। साथ ही धन देते समय सभा का प्रमाण-पत्र भी देख लेना चाहिये।

—सभा मन्त्री

निरीक्षण सूचना

झांसी कमिश्नरी एवं जिला आगरा जिले के समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि श्री माता जगधात्री देवी जी आर्योपदेशिका एटा निवासिनी को भी आर्यसमाजों के निरीक्षण एवं उपदेश के लिए नियत की गई हैं। उनके पहुँचने पर निरीक्षण के साथ साथ व्याख्यान का भी प्रबन्ध करने की कृपा करें। और जिन स्थानों में भी समाज स्थापित नहीं हैं वहाँ स्थापित कराने में पूर्ण सहयोग दें।

—सभा मन्त्री

आर्यसमाज जरार

आर्यसमाज जरार जिला आगरा गत कई वर्षों से बन्द पड़ा था श्री मोहनलाल जी आर्य अन्तरंग सदस्य आ० प्र० सभा के उद्योग से इस समाज का नवीन संगठन दिनांक १७-७ ५१ को हो गया। महाशय जी का एक प्रभावशाली भाषण हुआ। तत्पश्चात् निम्न प्रकार निर्वाचन हुआ।

निर्वाचन

प्रधान—पं० हरविलास जी
उपप्रधान—श्री अनन्तराम जी
मन्त्री—श्री रामरतन जी
उपमंत्री—श्री दाताराम जी
कोषाध्यक्ष—श्री रामकिशन जी
पुस्तकाध्यक्ष—श्री भगवानदास जी
निरीक्षक—श्री बाबूराम जी

श्री वेदव्रत जी वानप्रस्थी (शेरकोट) द्वारा सन्यास दीक्षा

श्रीमान् पं० वेदव्रत महोपदेशक शेरकोट जि० बिजनौर निवासी ने सन्यास दीक्षा ले ली है। उनका नाम 'वेदमुनि परिव्राजक रखा गया है और उनका स्थायी पता वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर हो गया है।

गुरुकुल घासीपुरा के आचार्य पद मुक्त

श्री आचार्य वेदव्रत जी एम० ए० गु० कु० घासीपुरा (मुजफ्फरनगर) मे आचार्य पद पर कार्य कर रहे थे। गुरुकुल सभा ने उन्हें जिस आशा और उद्देश्य से उन्हें आचार्य पद दिया था उसमें वे सफल न हो सके। सभा के सम्मान और संस्था के हित की दृष्टि से उनका व्यवहार विचारणीय रहा।

संस्था से निरन्तर काफी समय तक बाहर रहने और अपने कर्तव्य पालन में उदासीन रहने के कारण सभा ने उन्हें गु० कु० की सेवाओं से मुक्त कर दिया है।

इस सूचना द्वारा उन्हें सूचित किया जाता है कि वे गुरुकुल की रसीद अन्य आवश्यक कागजात वस्तुएं और संस्था के नाम से प्राप्त धन शीघ्र ही गुरुकुल कार्यालय में जमा करा देने की कृपा करें। भविष्य में गुरुकुल के लिये धन लेने का उनका अधिकार समाप्त है अत गुरुकुल प्रेमी कोई धन उन्हें न देकर गु० कु० कार्यालय को भेजे यदि किसी सज्जन से २२ फरवरी के पश्चात् उन्होंने रसीद द्वारा या बिना रसीद रसीद गु० कु० के लिये उन्होंने धन प्राप्त किया हो वे गु० कु० कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें।

—प्रतापसिंह मन्त्री
गुरुकुल घासीपुरा

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का त्रैवार्षिक चुनाव

आर्यसमाज में सर्वत्र चुनाव की धाधली देखकर ही आर्यमित्र सपादक ने इस विषय में आर्यमित्र के पिछले किसी अङ्क में बहुत ही अच्छा अग्रलेख लिखकर अच्छे उपयोगी सुझाव दिये थे। आर्यसमाजें उन सुझावों का ध्यान रखें तो आर्यजगत् के अनेक क्लेश मिट सकते हैं। मुझे वह अग्रलेख बहुत पसन्द आया था।

वैसे तो महाविद्यालय सभा का वार्षिक चुनाव नियमानुसार सुवर्ण जयन्ती के अवसर पर ही होना चाहिए था क्योंकि नियमों में स्पष्ट उल्लेख है कि त्रैवार्षिक चुनाव महोत्सव के साथ महोत्सव के दिनों में ही हो। किन्तु पिछले चुनावों की दशा को देखकर महाविद्यालय की अन्तरग सभा ने सर्व सम्मति से निर्णय किया था कि चुनाव सुवर्ण जयन्ती के पश्चात् जून २८ को हों जिससे सुवर्ण जयन्ती में किसी प्रकार की बाधा न पड़े। यह दूरदर्शिता प्रशसनीय रही।

उस निर्णय के अनुसार चुनाव सानन्द सम्पन्न हुआ और १० १५ मिनटों में ही सम्पन्न हुआ और प्राय सर्व सम्मति से ही हुआ।

चुनाव से पूर्व मेरा एक सामयिक मुद्रित वक्तव्य सदस्यों में बाँटा गया जिसमें मैंने सदस्यों को प्रेरणा की थी वे चुनाव सर्व सम्मति से करें। सदस्यों ने मेरे अनुरोध का ध्यान रखा और चुनाव ऐसी शान्ति ऐसा हँसी खुशी से हुआ कि पिछले १५ २० वर्षों में ऐसा सुन्दर चुनाव नहीं हुआ।

यह स्वाभाविक ही था कि उपस्थित सदस्यों में स्नातकों की ही सख्या अधिक रहती और उन्हीं में मतभेद की आशङ्का थी जो कि निर्मूल सिद्ध हुई। यद्यपि मैं चुनाव में सम्मिलित न हो सका था (क्योंकि स्वास्थ्य लाभार्थ मैं राजपुर की पहाड़ियों पर गया था) तो भी वहीं बैठ-बैठ मेरा समस्त ध्यान ता० २८ जून के दिन पर था। जब ता० २९ जून को खबर मिली कि चुनाव सर्व सम्मति तथा सानन्द सपन्न हुआ तभी चित्त शान्त हुआ। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मेरा नाम भी कुलपति रूप में आया है। मैंने सदस्यों से प्रार्थना की थी कि मेरा नाम किसी पद पर न रखें। क्योंकि मेरी अवस्था शक्ति रुचि आदि का ध्यान न रखकर मुझे सर्वथा मुक्त रखा जाय पर सदस्यों ने इस विषय में मेरे अनुरोध को नहीं माना और मेरा नाम आ ही गया। मैं समझता हूँ कि महाविद्यालय की शोभामात्र बनाये रखने के लिए ही ऐसा किया गया है। अस्तु जैसा भी हो। मैं महासभा के सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ कि उनकी उदारता से चुनाव सानन्द सम्पन्न हुआ। २७ अन्तरङ्ग सदस्यों में आधे स्नातक हैं और उन्हीं में से अधिकारी हैं इससे स्पष्ट है कि स्नातक अब जुटकर काम करेंगे। शुभ भूयात्—

प्रधान—आयुर्वेद भास्कर पंडित हरिशंकर शर्मा (मेरठ)

उप प्रधान—[१] बा० बालकृष्ण (देहली) [२] श्री देवदत्त शर्मा मौद्गल्य (मुरार ग्वालेर) [३] डा० नरेन्द्रदेव शास्त्री एम० ए० (आगरा)

मन्त्री—आचार्य गौरीशंकर शास्त्री (सरदार शहर बिकानेर)

उपमन्त्री—विद्याभास्कर कविराज पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री (विनय नगर न्यू दिल्ली)

कोषाध्यक्ष—श्रीमती विद्यावती (रुड़की)

कुलपति—आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ।

मुख्याधिष्ठाता—श्री नन्दकिशोर शास्त्री वेदान्ताचार्य एम० ए०।

अन्तरङ्ग सदस्य

१—डा० हरिदत्त शास्त्री एम०ए० (कानपुर)

२—डा० सूर्यकान्त शास्त्री एम०ए० (हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी)

३—श्री क्षेमचन्द्र सुमन (शाहदरा देहली)

४—श्री इन्द्रराजसिंह जी (ज्वालापुर)

५—श्री तिलकराम जी (खतौली)

६—श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० (नई दिल्ली)

७—श्री वाचस्पति शास्त्री (आगरा)

८—श्री वेणीभाई आर्य (बम्बई)

९—श्री वैद्यराज वासुदेव वैद्यशास्त्री (खुर्जा)

१०—श्री बा० केशवचन्द्र जी डिप्टी कलक्टर (कानपुर)

११—श्री स्वा० आनन्द प्रकाश तीर्थ जी (महाविद्यालय)

१२—श्री वैद्य विष्णुदत्त जी (कनखल)

१३—सुश्री सुशीलादेवी साहनी (बम्बई)

१४—श्री द्वारकाधीश (बहजोई मुरादाबाद)

१५—श्री रमेशचन्द्र शास्त्री (देहली)

१६—[आचार्य अभी निर्वाचन शेष है तब तक मुख्याधिष्ठाता ही आचार्य का काम देखेंगे। आगामी ?? रङ्ग में आचार्य चुने जायेंगे]

१७—श्री दुलासवर्मा, वानप्रस्थी (देहरादून)

१८—श्री श्रीदबाहु एम० ए० (गुरुकुल कांगड़ी)

इसके अतिरिक्त १० सदस्यों की एक विद्या सभा बनी जिसमें एकाध सदस्य को छोड़कर सभी विद्वान् स्नातक हैं।

कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) के लिए 'मित्र' की अपील पर आदर्श दान

कन्या गुरुकुल में गत वर्ष मलकर की इमारत नष्ट हो जाने के कारण हमें पर्याप्त कठिनाई थी। मित्र में हमने आर्य बन्धुओं से निवेदन किया था हमें प्रसन्नता है कि उदार दानी महानुभावों ने हमारी अपील पर हमें इस प्रकार सहायता प्रदान की है।

१०००) एक हजार रुपया श्री सेठ अम्बाप्रसाद मुकुटलालजी
ग्राम—मन्सूरपुर डा० मीरपुर, खुर्जा (उ० प्र०)

८००) आठ सौ रुपया श्री स्वामी रामानन्द जी महाराज
द्वारा श्री लक्ष्मीनारायण धर्मशाला फर्रुखाबाद (उ०प्र०)

उपर्युक्त दानी महानुभावों का कुल परिवार की ओर से इस सात्त्विक दान के लिए हार्दिक धन्यवाद है आशा है कुल के प्रति उनका स्नेह इसी प्रकार बना रहेगा।

—लक्ष्मी देवी मुख्याधिष्ठात्री

(पृष्ठ ७ का शेष)

स्वामी जी ने किया 'वेश अर्थात् वेश्या भड़ुआ भांड दूसरे की नकल (करने वाले)' इनको निन्दनीय बताया। हमारी सरकार नाचने गाने को नकल (नाटक) आदि को संस्कृति का अभिन्न अग मानती है। सारे विद्यालयों में नाच नाटक का बोलबाला है। हमारे विद्यालय के प्रबन्धक अध्यापक, छात्र दूसरों से पीछे क्यों रहेंगे? हमारे आर्य विद्यालय भी नाट्यशालाओं में परिवर्तित हो रहे हैं। लड़कियां नाचती हैं, लड़के नाचते हैं, लड़के लड़किया बनते हैं लड़कियां पुरुष बनती हैं।

और देखिये एक विद्यालय में एक संस्कृताध्यापक थे। उनसे एक छात्र ने पूछा स्वामी दयानन्द संस्कृत ही में क्यों भाषण देते थे? पंडित जी ने कहा— स्वामी जी अपनी संस्कृतज्ञता की धाक जमाने के लिए ऐसा करते थे। उसी विद्यालय में एक वादानुवाद का विषय रखा गया क्या आर्य बाहर से आये? एक आर्यसमाजी अध्यापक ने सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि आर्य भारत में विदेशी नहीं हैं। स्वामी जी के कथन का भी उल्लेख किया अपने पक्ष की पुष्टि में। प्रधानाध्यापक ने उस अध्यापक की काफी भर्त्सना की और कहा कि आर्यसमाजी सभी बातों में टाग अड़ाते हैं। आर्य मध्य एशिया से आये ऐसा युरोपीय इतिहासकार स्पष्ट कह रहे हैं। स्वामी जी धार्मिक सुधारक थे। उनकी बातों का इतिहास में क्या प्रमाण है इत्यादि। एक प्रधानाध्यापक ने कहा यज्ञोपवीत अब पहनने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह तो रूढ़िवादिता है। एक दूसरे विद्यालय के एक अध्यापक ने एक आर्य उपदेशक के बालक-बालिकाओं की सहशिक्षा के विरोध में बोलने पर उसे यह कहकर फटकारा कि आज जमाना बहुत आगे बढ़ गया है। लड़के-लड़किया साथ साथ न पढ़ें यह कहना अब दकियानूसीपने का परिचय देना है।

> आये थे हरि भजन को,
> ओटन लगे कपास।

ऐसे विद्यालयों से निकले छात्र कभी-कभी आर्यसमाज के लिए औरों की अपेक्षा अधिक घातक सिद्ध होते हैं। इन विद्यालयों में आर्यसमाज की शिक्षा तो इनको अध्यापक ही देंगे। समाज का मन्त्री गरीब क्या करेगा? वह कुछ करना कराना चाहे तो प्रधानाध्यापक उसको बोर्ड का या इन्सपेक्टर का भय दिखाता है स्कूल कोड दिखाता है। मन्त्री बिचारा कहाँ शिक्षा विशेषज्ञ है? ऐसी परिस्थिति में आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी कार्यक्रम में यदि छात्रों को सम्मिलित होने को बाध्य किया जाता है तो उनके ऊपर एक प्रतिक्रिया सी होती है। आर्यसमाज के विरुद्ध में बहुत सारी चर्चा वे सुनते ही रहे होते हैं। सारा घाटा ही घाटा रहा यह हम नहीं कहना चाहते। कभी-कभी कुछ आया भी है। परन्तु—

> अपत्यं है तो बहुहानिमिच्छन्।
> विचार मूढ प्रतिभासि मेत्वम्॥

हम कालिदास के शब्दों में 'विचार मूढ' क्या नहीं समझे जायेंगे? लोकों देखी कानों सुनी परिस्थिति का पर्यवेक्षण यहां रखा गया है। आर्यजगत् के विचारकों को इस पर गम्भीरता से विचारने की आवश्यकता है। आर्य जनता को अपना कर्तव्य निर्धारण करने का समय आ गया है।

★

कानपुर के आर्यों द्वारा ब्रह्म-कुमारियों से सावधान रहने की अपील

आर्यसमाज गोविन्द नगर कानपुर के तत्वावधान में हुई सभा में भाषण करते हुए आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री देवीदास आर्य ने रहस्योद्घाटन कि सिंध में अनेक विवाहित व अविवाहित लड़कियों को घरों से निकाल कर ओम मण्डली में शामिल करने वाले दादा लेखराज ने आजकल आबू पर्वत पर अपना प्रधान कार्यालय खोल रखा है।

श्री आर्य ने बताया कि अविवाहित लड़कियों को पथ भ्रष्ट करने के अपराध में सिन्ध में दादा लेखराज पर मुकदमा चला और अपराधी सिद्ध होने पर उन को जेल की सजा काटनी पड़ी। पाकिस्तान बनने के अनन्तर जेल से मुक्त होकर वे भारत आये और आबू पर्वत पर ब्रह्मकुमारियों के नाम पर नया मत चलाया। देश के भिन्न भिन्न नगरों में इन ब्रह्मकुमारियों ने अपने अलग भवन बना लिये है, जहाँ भोली भाली देवियों को ईश्वर प्राप्ति और ब्रह्म साक्षात्कार जैसी दैवी शिक्षा का पालन करके साकार ब्रह्म दादा लेखराज के दर्शनों के लिये आबू पर्वत पर भेजा जाता है। धर्म और ईश्वर के नाम पर यह बड़ा भयकर ढोंग रचा जारहा है। कई सज्जन तथा देवियां जो किसी प्रकार इनके जाल से निकल कर आई हैं, उनका कहना है कि आबू पर्वत पर दादा लेखराज स्वय कृष्ण बनकर और ब्रह्मकुमारियों को गोपियां बनाकर ओम मण्डली वाले कार्यक्रम को पुन चालू कर रहे हैं।

सभा में एक प्रस्ताव पारित देश वासियों से अपील की गई है कि वह इस घोर पापाचार का पूरे बल के साथ दबाने का प्रयत्न करें। सभा में सर्व श्री मोहनलाल, जातिभूषण, तिलकराज कुमार आदि के भाषण हुए।

वक्ताओं ने ब्रह्मकुमारियों के इस ढोंग के खिलाफ प्रबल आन्दोलन करने की घोषणा की। श्री रामगोपाल जी ए० म० सा० सभा ने इस आन्दोलन का नेतृत्व आरम्भ किया है। सब लोगों को उनकी तथा सभी कार्यकर्ताओ की सहायता करनी चाहिये।

शुद्धि सभा, आगरा का प्रशंसनीय उद्योग

बदायूं में २०० शुद्धियां सम्पन्न

शुद्धि सभा आगरा द्वारा मास जून व जुलाई सन् १९२१ में २०० शुद्धियाँ जिला बदायू में की गई यह शुद्धियां श्री ठा० अमरावसिंह जी द्वारा सम्पन्न कराई गई है। और यह शुद्ध होने वाले हरिजन (बाल्मीकि) है जो ईसाई पादरियों द्वारा, डरा धमकाकर व प्रलोभन आदि देकर ईसाई बना लिए गये थे अब यह अपनी मर्जी से पुन अपने प्राचीन धर्म में वापिस आगये है।

२५ शुद्धियाँ ग्राम बनी
७२ ,, ,, मुगात खेरा
२६ ,, ,, अहमद पुर
७७ ,, ,, खिजुआ

२०० शुद्धिया कुल सम्पन्न की गई हैं जो शुद्धि सभा द्वारा बडे कठिन परिश्रम से 'सम्पन्न हुई है। कार्य अभी जारी हैं' भविष्य में और शुद्धियाँ होने की आशा है।

—सुन्दरलाल मन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज भोलेपुर समाज के उत्साही कर्मठ सभासद् श्री रामलालजी आर्य (होशियारपुर पजाब निवासी) की धर्मपत्नी की असामयिक मृत्यु पर महान् शोक प्रकट करता है। प्रभू दिवगत आत्मा को शान्ति, व शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

भोलेपुर आर्यसमाज ने अपने समाज के सम्मानित सदस्य श्री रामलाल जी आर्य की धर्मपत्नी के असामयिक निधन पर शोक प्रकट किया तथा दिवगतात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

जमुनी बुआ

[लेखक—श्री मन्मथप्रसाद विद्यार्थी]

जमुनी—नहीं जमुनी बुआ को आज लेकर बीस-बाईस वर्ष पुरानी घटनाएं एक के बाद एक आंखों के सामने से गुजरने लगी हैं। उस समय की जमुनी और आज की जमुनी बुआ। कितना अन्तर हो गया है? एक सफेद किनारीदार धोती पहने थीं, शरीर की हड्डियाँ झलकने लगी हैं जैसे कह रही हों कि समय ने शरीर के मांस को गला दिया, पर हड्डियाँ और दृढ़ हो गयी हैं, आखें धस चुकी हैं, पर पुतलियों की तरलता में, बीत गये ऐसे दिनों का, अनुभव तैरता है, आवाज मोटी पड़ गई, जैसे आत्म-विश्वास के कारण भारी हो गई हो, माथे की रेखाएं स्पष्ट हो गई हैं। उन्हें देख जमुनी बुआ कह सम्बोधित नहीं कर पाता। मुझे याद है मेरे बचपन में गाव भर के लोग उन्हें जमुनी कहकर पुकारते थे। गाव की लड़की थीं। फिर वर्ष बीते और जाने कब वह जमुनी से जमुनी बुआ कहकर पुकारी जाने लगी और अब वह केवल बुआ रह गई हैं।

जमुनी बुआ बड़े जीवट की हैं, एक बार निश्चय कर लिया तो जीवन भर चलती रहीं और हार न मानी। हमारे गांव के उत्तर में पन्द्रह बीस घरों की बस्ती थी—गाव में होकर भी वह गाव से अलग थी, उसे चमरौटी कहकर सब पुकारते थे, इसलिए कि उसमें चमारों के घर थे। उनमें दो चार घर 'किसानी' करते थे, शेष गाव में मजदूरी कर अपना और अपने परिवार का पेट पालते थे। किसानी का यह अर्थ नहीं कि उनमें किसी के पास खेती-बारी थी, उनकी किसानी थी गाव वालों के यहाँ "परजौटी"—घर की लिपाई पुताई, ब्याह शादी के अवसर पर घर के काम काज, बच्चा होने पर सौर कमाना आदि यही सब काम "परजौटी" में करने पड़ते थे जिसके बदले में साल के अन्त में हर घर से ज्योरा मिल जाता एक पसेरी अनाज, एक खेत का सीला और खलिहान की "खाक" में से एक बोझ।

बुआ बापकी कोई किसानी न थी, मेहनत—मजदूरी करनी पड़ती, बुआ जो काम करतीं बड़े मन से करतीं, सो जहाँ कहीं कटाई बुनाई होती वहाँ हर आदमी जमुनी बुआ को मजूरी में अवश्य रख लेता। जो बुआ कभी घर नहीं बैठीं। लिखा को समझ कि उनकी जवानी की आंखों में ही हाथ पीले हो रहे हैं। जब बुआ ससुराल चली गयीं तो उनके बाप का कहीं नाम था—जो लगा कि उनका एक हाथ टूट गया। और उन्हें अब धीरे धीरे कोई हाथ न लगा पाएगा, जो काम में ऐसे दिनों की मिलती बहुत कमी अब सारे परिवार को पेट दबाकर भूखे सो जाना पड़ता।

जमुनी बुआ के दो लड़के हुए थे एक तीन और दूसरा पांच वर्ष का था। तभी बुआ के पति गुजर गये। ससुराल के गांव में नाते पट्टीदार थे पर अपना कहने को कोई न था, ना कोई जमीन-जायदाद थी, और किसानी ही। बुआ को उस गांव से विरक्ति हो गयी। अपने दोनों बच्चों को लेकर पिता के पास आ गईं। परिस्थितियों ने उम्र में दस वर्ष और जोड़ दिए थे, बैठकी के प्रस्ताव आने पर बुआ ने इन्कार कर दिया दो पूत हैं, हाथ पैर चलता है तो एक जून आधा पेट खाकर जी लूंगी और जब यह उठरी कुछ न कर पायेगी तो दोनों आधी-आधी रोटी भी देंगे तो जिन्दगी कट जायेगी' बुआ कहती तो उनकी आंखें दृढ़ निश्चय से चमक उठतीं।

गाव में स्कूल खुला तो बुआ ने अपने बड़े लड़के परछन को स्कूल में बैठा दिया। पास पड़ोस के घर बुआ की बुद्धि पर हंसे—इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई, किसी के घर बैठ गई होती तो निश्चिन्त हो रहती, पर भला वह किसी की बात कब मानने लगी, और अब देखो कि बेटे को स्कूल भेज दिया है पढ़ा लिखाकर कुर्सी पर बैठाने की चाह है। बुआ सुनती पर चुप रहतीं "पढ़ना लिखना भी बुरा है क्या, जो सबकी आंखों में खटक रहा है।"

परछन की पढ़ाई चल रही थी बुआ दिन भर मेहनत मजूरी करती जो मिल जाता उसमें तीनों के पेट पलते। दूसरा लड़का रामदास भी स्कूल जाने लगा। बुआ की आलोचना धीरे-धीरे मन्द पड़ चुकी थी। यही नहीं बुआ ने जो काम वर्षों पहले शुरू किया था, उसका प्रभाव चमरौटी पर गहरा होता गया और एक के बाद दूसरे लड़के स्कूल जाने लगे। बुआ अनुभव कर रही थी कि जैसे चमरौटी का वातावरण नये रूप धर रहा हो—चमरौटी ही क्यों सारा का सारा गांव ही। जैसे बसंत आने पर धरती का रूप बदलने लगता है। जबतक कैसे कोई अदृश्य शक्ति अपना हाथ फेर रही हो और गहरी नींद के बाद गांव की यह जर्जर काया कसमसा कर उठ रही हो, उसका अन्तर बदल रहा था उसका बराबर नये रूप धर रहा था। टेढ़े-मेढ़े रास्ते सीधे समतल सड़कों का रूप धर रहे थे, सूखे उपहार के खेतों के बीच-बीच नये कुओं के खम्भे खड़े हो गये थे जैसे गांव की समृद्धि के प्रहरी हों। बुआ अपने छप्पर के तले खड़ी-खड़ी नित सवेरे देखतीं मातादीन के दरवाजे रोगियों की भीड़ लगी रहती। बुआ को अचरज होता लोग मौत से कितने डरने लगे हैं जो जरा सा जी अलील हुआ कि दवा के लिए दौड़े। माना कि दवा के लिए कुछ देना नहीं है तो, क्या जरा जरा-सी बात के लिए शीशी बोतल पीओ।

परछन गांव का स्कूल पास कर चुका था, गाव से तीन मील दूर अंग्रेजी स्कूल में जाने लगा था। बुआ को उसकी फीस किताब का कुछ नहीं देना पड़ता था, जाने कहाँ से उसे सब मिल जाता था। बुआ कभी-कभी उससे पूछती—यह फीस किताब के पैसे तुझे कौन देता है?

परछन मा की बात पर हंस देता—कहता—सरकार देती है मा, और कौन देगा?

बुआ को बेटे की बात पर विश्वास न होता—भला सरकार क्यों देगी? किसी के पास कोई फालतू पैसा तो होता नहीं। कहीं वह परछन बुरों की सगत में तो नहीं पड़ गया पर फिर सोचती उसका बेटा उससे झूठ नहीं बोलेगा और कहती—देख, परछन, कोई भी तुझे देता हो पर किसी से कह नहीं।

परछन मां की बात पर हंस देता। उसकी मां भी कितनी भोली है और फिर रामदास भी अंगरेजी पढ़ने लगा। परछन की भांति वह भी मां से कहता यह सब सरकार देती है। और वह तो हर महीने पांच रुपये भी लाकर मां के हाथ पर धर देता। कहता—सरकार मुझे वजीफा देती है।

बुआ की समझ में कुछ न आता शुरू से उनकी एक आदत रही है जब कोई बात उनकी समझ से बाहर हो जाती है तो बाया हाथ माथे पर धर दाहिने हाथ की उंगली का नाखून दांत से कुतरने लगती और फिर थोड़ी देर बाद सारी समस्या जैसे पिघल कर बह गई हो। अधिक देर बैठ कुछ सोचने का समय भी तो उनके पास नहीं था।

अपने जीवन में बुआ दो-तीन वर्षों से एक परिवर्तन का अनुभव करने लगी थीं। गांव की नयी पौध उन्हें जमुनी बुआ कहने लगी थी और यह सम्बोधन उन्हें बड़ा प्रिय लगता। कोई जब उन्हें जमुनी बुआ कह कर पुकारता तो उन्हें लगता कि अपने अन्तर का सारा स्नेह उस पर उंडेल उसे भिगो दें।

फिर, एक दिन चमरौटी सिमट कर बुआ के द्वार आ गई। भीतर से बुआ के रोने की आवाज आ रही थी। पता लगा सरकार ने परछन को शहर में बुला लिया है उसे काम सिखायेगी बुआ बहुत रोई। मन में आया रामदास का स्कूल जाना बन्द कर दें पर रामदास ने मा को समझा बुझा कर शांत कर दिया, सरकार हमारे लाभ के लिए ही तो यह कर रही है—दादा काम सीख लेंगे तो हमारे भी दिन फिर जायेंगे। साल दो साल में मैं भी तो पढ़ने के लिए शहर चला जाऊंगा तब तक दादा काम से लग जायेंगे।

पर बुआ के मन में एक सन्देह बना रहा—सरकार हम अछूतों के लिए इतना क्यों कर रही है। कभी कभी यह सन्देह क्वार के बादल की भांति उनके मन के शून्य में मन्डराता और फिर विलीन हो जाता।

कई वर्ष बाद एक बार गांव गया था—गांव का रहना हमारा अब बहुत कम हो गया। जमुनी बुआ के बारे में पूछा तो पता चला परछन कहीं शहर में काम करने लगा सो मा और छोटे छोटे भाई को अपने साथ ले गया। एक बार जी में आया पता करूं शहर में वे लोग कहाँ हैं पर बात आयी गई रह गई।

दिन बीतते गये बुआ के बारे में एक दम भूल सा गया था। उस दिन अपने एक मित्र के घर से लौट रहा था विचारों की डोर सुलझ न पा रही थी शहर की बड़ी सड़क की पटरियां अब दुकानें बन गई हैं सो राह चलना मुश्किल हो गया है। चला आ रहा था कि एक युवक ने राह रोक कर नमस्कार किया जैसे तेज भाग रही मोटर के सामने से कोई राहगीर सड़क

[शेष पृष्ठ १६ पर]

वनिता विवेक

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. एल. ए.
वर्ष ८, अंक १
(२० अगस्त १९६१)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष : [illegible] तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

संस्था-परिचय

दिल्ली का ब्राडकास्टिंग हाउस

नयी दिल्ली पार्लमेंट स्ट्रीट में आकाशवाणी का ब्राडकास्टिंग हाउस स्थित है। आज और इसकी पीली इस भारत में आकाशवाणी का मुख्यालय है। प्रतिवर्ष बहुत से लोग इसे देखने आते हैं। ब्राडकास्टिंग हाउस देखे बिना यात्री अपनी दिल्ली-यात्रा को अपूर्ण समझता है।

१९५८-५९ में, ४४००० व्यक्ति ब्राडकास्टिंग हाउस देखने आये। इसके अलावा कितने ही विदेशी प्रतिनिधि मण्डलों के सदस्यों ने भी इसे देखा। यहां पर दर्शकों को स्टूडियो आदि दिखाने के लिए विशेष कर्मचारी नियुक्त हैं।

सप्ताह में सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को १० से १२ बजे के बीच दर्शकों को स्टूडियो दिखाया जाता है। इसके लिए उन्हें पहले से आज्ञा लेनी पड़ती है।

ब्राडकास्टिंग हाउस में घुसते ही भवन के सामने मैदान में तानपूरा हाथ में लिये एक संगमरमर की प्रतिमा दिखायी पड़ती है। यह प्रतिमा संगीत में तन्मय किसी देवी की है। अन्दर जाने पर एक गोल कक्ष है। इसकी दीवारों पर लाल पत्थर की तानसेन और त्यागराज की प्रतिमाएं हैं। तानसेन हिन्दुस्तानी और त्यागराज कर्नाटक संगीत के प्रसिद्ध आचार्य थे। बीच में ऊपर जाने की सीढ़ी के बीच चिन्दम्बरम् शैली के नटराज की एक कांसे की मूर्ति रखी है।

इस कक्ष के बायीं ओर स्टूडियों को जाने का रास्ता है। अन्दर घुसते ही दर्शक की निगाह गांधी जी के इन प्रसिद्ध शब्दों पर पड़ती है—मैं ऐसे स्थान पर रहना चाहता हूं जो बिलकुल खुला हो और वहां विभिन्न संस्कृतियों का मुक्त रूप से आदान-प्रदान होता हो। ऐसे स्थान पर भी मैं अपनी संस्कृति में अडिग बना रहना चाहूंगा। मेरा धर्म निर्बन्ध है। इसमें सृष्टि की सूक्ष्म वस्तु के लिए भी स्थान है, किंतु इसमें जाति, धर्म और रङ्ग के मिथ्या-भिमान के लिए कोई जगह नहीं है। इन शब्दों को आकाशवाणी ने अपने आदर्श के रूप में स्वीकार किये हैं।

इस भवन में कई स्टूडियो हैं। हवा स्टूडियो सबसे बड़ा है। यहीं से हर शनिवार को रात में राष्ट्रीय संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है, यहां संगीत-वादक वाद्य-वृन्दों पर नयी-नयी धुनों का अभ्यास किया करते हैं। यहां दर्शक को सरस्वती, वीणा, गीत-वाद्य, काष्ठ-तरंग, इसराज आदि वाद्य-यन्त्र रखे मिलेंगे।

आठवां स्टूडियो वह है, जहां से राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री राष्ट्र के नाम अपने सन्देश देते हैं। इस स्टूडियो से देश और विदेश के प्रसिद्ध व्यक्ति भी भाषण देते हैं।

विविध कार्यक्रम

नाटक, वादविवाद, समाचार संगीत आदि के कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए अलग-अलग स्टूडियो हैं। रिकार्ड तैयार करने की मशीनों आदि का कक्ष अलग है। इनमें सबसे ज्यादा आकर्षक स्टूडियो वह है, जहां ध्वनि-प्रभाव दिया जाता है। यहां वह सब तरकीबें देखने को मिलती हैं, जिनसे विभिन्न तरह की ध्वनियां निकाली जाती हैं। उदाहरण के लिए यदि आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले किसी नाटक में चिड़ियों के चहचहाने की या बिजली कड़कने की ध्वनि सुनाना है तो वहां विभिन्न तरकीबों से असली जैसी ध्वनि निकालकर सुनाते हैं।

नियंत्रण-कक्ष ब्राडकास्टिंग हाउस की कुंजी है। विभिन्न स्टूडियो में क्या कार्यक्रम चल रहा है, इसकी जानकारी यही कक्ष रखता है। इसके अतिरिक्त इसी कक्ष से विभिन्न कार्यक्रमों के प्रसारण आदि नियंत्रण रखा जाता है।

सारे स्टूडियो तथा उनमें आने-जाने के गलियारे ऐसे हैं, जिनमें न तो बाहर की आवाज अन्दर पहुँच सकती है और न अन्दर की आवाज बाहर पहुँच सकती है।

भारत दर्शन टोलियाँ

हर साल विद्यार्थियों तथा अन्य यात्रियों की टोलियां दिल्ली आती रहती हैं। इनके अलावा भारत-दर्शन यात्रा के लिए निकले किसानों के दल भी आते हैं और ब्राडकास्टिंग हाउस देखने आते हैं। कुछ दर्शक काफी पढ़े-लिखे होते हैं और कुछ गांव के सीधे सादे लोग। पढ़े-लिखे दर्शक रिकार्ड बनाने तथा प्रसारण आदि के बारे में जानकारी मांगते हैं। परन्तु गांव के लोग तो इस वातानुकूलित भवन तथा यहां की सारी व्यवस्था देखकर ही दंग रह जाते हैं।

[पृष्ठ १२ का शेष]

पार करने लगे और भरपूर ब्रेक लगाने से पहिये सड़क से रगड़ खा फिर कर आवाज करते रुक जाने से ही मेरी विचारधारा रुक गयी और मैं नमस्कार का उत्तर दिये बिना उसे एक टक निहारने लगा। दुहरे बदन के एक युवक, कमीज पैंट पहने सामने खड़ा था। अधरों पर मुस्कान लिये—'बड़े, (मुझे गांव में सब बड़े कहते थे) आपने शायद मुझे पहचाना नहीं, मैं हूं रामदास।' और फिर क्षण भर रुक जैसे हकलाते से धीमे स्वर में कहा—अमुनी—

मुझे अपने ऊपर बड़ी लज्जा आई, कहा—भाई क्षमा करना, मैं कुछ सोच रहा था सो नहीं पहचान सका और फिर तुम्हें देखे वर्षों हो गये। देखो न तब से तुम कितने बड़े हो गये।

वह मुस्कराता रहा जैसे वह मेरे मन की बात समझ रहा हो, किनारे खड़े हो हम बात करने लगे, उसने बताया परकुन सरकार द्वारा चलाये गये एक उत्पादन केन्द्र में सिखाने का काम करता है। रामदास बी० ए० में पढ़ रहा है मां उनके साथ ही रहती है। परकुन का ब्याह हो गया है उसके एक लड़की है।

रामदास के साथ बात कर अमुनी बुआ को देखने के लिये जी उतावला हो उठा। बातें करते हम चल पड़े। अमुनी बुआ मुझे देख जैसे निहाल हो गईं बड़ी देर तक बातें करता रहा चलने लगा तो कहा—बुआ किसी दिन आकर मैं तुम्हें अपने घर लिवा ले चलूंगा।

बुआ कंठ भर आया, सारा शरीर जैसे कांप उठा हो इतने सम्मान का भार उठाने की जैसे उनकी सामर्थ्य न हो। वे अपलक शून्य में निहार रही थीं। मुझे लगा शायद वे अपने पुराने दिनों के चित्र समझने का प्रयास कर रही हैं जब उन्हें कोई अपने बराबर बैठने भी न देता था। आज वह अनुभव कर रही थीं कि जैसे दो कालों के बीच की दीवार गिर गई हो और समाज उसके दूर की दूषमता दूर जाये बढ़ रहा हो।

[पृष्ठ २ का शेष]

भाषाओं ने पहले संस्कृत का प्रचार कर के हमें शूद्र बनाया था अब वही काम वे हिन्दी के द्वारा करना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी में है ही कौन सा साहित्य? उनकी कृति-पुस्तक तुलसी का "रामचरित मानस" ही है न। उसमें जानते हो क्या शिक्षा दी गई है? तुलसीदास कहते हैं—

पूजिय विप्र शील गुण हीना।
शूद्र न गुण-गण ज्ञान-प्रवीना॥

अंग्रेजों ने हमें स्वाधीनता की भावना दी है। अंग्रेजी का साहित्य लोकतंत्र और स्वतंत्रता का प्रचार करता है। इसलिए वे हिन्दी के विरोधी हैं।

मेरे मित्र की धारणा ठीक है या गलत। परन्तु अधिकांश दलित भाषियों की भावना यही है। पंजाब में हिन्दी और गुरुमुखी एक साथ बच्चों को पढ़ाने में एक बड़ी बुराई यह है कि दोनों लिपियों के बहुत से अक्षर ऐसे हैं जिनका रूप दोनों में बिलकुल एक है, परन्तु ध्वनि दोनों में अलग-अलग है। इससे बच्चे क्या बूढ़े को भी पढ़ने और लिखने में बड़ी गड़बड़ और बाधा होती है। म को स और प को घ समझ लिया जाता है। ऐसी कोई गड़बड़ हिन्दी, उर्दू, और अंगरेजी लिपियों में होने की आशंका नहीं। अकालक साहिब जिसने हिन्दू और सिख को अलग करने का यत्न किया था, स्वयं इस गुरुमुखी और हिन्दी लिपियों की आपसी गड़बड़ को स्वीकार करते हैं। पंजाब और बम्बई की स्थिति में अन्तर है। बम्बई राज्य के पूना नगर का अधिवासी राजकोट के गुजराती भाषी की बात नहीं समझ सकता और न अहमदाबाद का रहने वाला नासिक में जाकर गुजराती में भाषण कर सकता है। परन्तु पंजाब में ऐसी कोई बात नहीं। वहाँ भिन्न-भिन्न बोलियाँ होते हुए भी हरियाना और जालन्धर डिवीजन के सभी जिलों के लोग एक दूसरे की बात समझते हैं। वहाँ सब कहीं हिन्दी में कथा-वार्ता आदि होते हैं।

पंजाब में अन्याय तथा साम्प्रदायिक दल के प्रबल दबाव का एक [illegible] यह भी है कि पटियाला डिवीजन के पंजाब में विलय हो जाने पर भी वहाँ बच्चों को हिन्दी पढ़ने की सरकारी कोठरी भी दूर नहीं दिखती कि पंजाब में है।

आजकल में पंजाब में भाषा समस्या [illegible] की [illegible] के दूसरी [illegible] पर [illegible] की [illegible]। [illegible] की केन्द्रीय सरकार [illegible] ही [illegible] और [illegible]।

अमृतलाल नागली द्वारा [illegible] प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित



[वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [वार्षिक मूल्य विदेश में
[प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ रविवार भाद्र १५ शक १८८१ भाद्र शु० ४ वि० २०१६ ६ सितम्बर १९५९ ई० [१६शिलिंग

मथुरा में समारोह की प्रबन्ध व्यवस्था आरम्भ

स्वागत समिति के सदस्यों की भर्ती आरम्भ

१ सितम्बर को मथुरा में आये बन्धुओं और मथुरा के ऋषि भक्त व्यक्तियों की विशेष बैठक।

समारोह स्थली का निर्णय

पण्डाल, कैम्प, आतिथ्य, जल, बाजार आदि कार्यों के लिये प्रबन्धोपसमितियों का निर्माण, कैम्प और निवास की प्रान्तवार व्यवस्था करने का निश्चय।

समारोह स्वयसेवकों की ट्रेनिङ्ग व्यवस्था शीघ्र ही आरम्भ करने का निश्चय।

श्री रमेशचन्द्र जी वकील स्वागत मन्त्री श्री कर्णसिंह जी का० क० प्रधान श्री शेरसिंह जी प्रधान आर्य समाज मथुरा, श्री माताप्रसाद जी मन्त्री आर्य सभा मथुरा श्री ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम श्री प्रि० नागीशशरण जी श्रीमती सुशीला जी मलिक तथा अन्य सभी सहयोगियों ने समारोह की प्रबन्ध व्यवस्था का कार्य अपने हाथों मे ले लिया है और बड़ी दक्षता और मनोयोग कार्य आरम्भ हो गया है।

आर्यबन्धु ८ से १५ सितम्बर तक महर्षि दयानन्द दीक्षा-शताब्दि सन्देश सप्ताह मनावें।

६ सितम्बर को कार्यकर्ता अपने जिला केन्द्रों में अपनी बैठकें कर कार्य की प्रगति का सिंहावलोकन कर।

सभाधिकारियों द्वारा फीरोजाबाद फर्रुखाबाद लखनऊ सीतापुर, लखीमपुर आदि में प्रचार यात्राय आरम्भ।

उस सप्ताह के लिये सहयोगी मण्डल दिल्ली बम्बई कलकत्ता हैदराबाद आदि जाने के लिये तय्यार

भारत के सभी प्रान्तों के आर्यों में दीक्षा शताब्दि समारोह के प्रति आकर्षण और उत्साह

प्रत्येक आर्य बन्धु समारोह में पहुँचने का निश्चय करें गुरुभक्ति के प्रति श्रद्धा व्यक्ति की वेला आई है। इस अवसर से लाभ उठाना न भूलिये।

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अध्यात्म चर्चा—

कोई आत्मज्ञ ही ब्रह्म को जानता है

[सुरेशचन्द्र वेदालङ्कार एम० ए० एल० टी०, डी० वी० कालेज, गोरखपुर]

यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनम्। मृत्युर्यस्योप सेचनम् क इत्था वेद यत्रस ॥

(यस्य) जिस (ब्रह्म) के ब्राह्मण (ज्ञानवान्) च और (क्षत्र) क्षत्रिय (ओदनम्) भक्ष्य होते हैं (यस्य) जिसका (उपसेचनम्) उपसेचन (जल) (मृत्यु) मौत है (स) वह ब्रह्म (यत्र) यहाँ और (इत्था) ऐसा है (क) कौन (वेद) जान सकता है।

वह महान् ईश्वर जो ब्रह्माण्ड को प्रलयावस्था में पहुँचाकर सब अपने भीतर जज्ब कर लेता है और मृत्यु को भी तेज रहित कर देता है अर्थात् मृत्यु भी जिसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। किसका सामर्थ्य है कि उसे इन आँखों से देखकर बतला सके कि वह ऐसा है और यहाँ है। वास्तव में परमात्मा को जानने के लिए मनुष्य को आत्मशक्ति सपन्न बनना पड़ेगा। यजुर्वेद २२।११ में लिखा है 'आत्मनाऽऽत्मानमभि सविवेश" आत्मा के द्वारा ही ब्रह्म में प्रवेश किया जा सकता है। विद्वान् लोग उसे हृदय रूपी गुहा के अन्दर देखते हैं। वेनस्तत् पश्यन्ति हित गुहाया।' विद्वान् उसे हृदय रूपी गुहा में देखते है। परन्तु आत्मा का ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाय? आत्मा में शांति की स्थापना किस प्रकार हो तो। ऋग्वेद के ९।७३।९ मन्त्र को मनन करने से हमें पता लगेगा कि आत्मज्ञ वही हो सकता है जिसमें धैर्य हो। मन्त्र यह है—

ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ, जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया। धीराश्चित्तत्समिनक्षन्त आशताऽत्रा कर्तमव पदात्यप्रभु।

अन्तर्यामी भगवान् की ज्ञानक्रिया शक्ति से वाणी को पवित्र करने वाले, सामने जगत् में सत्य का, ऋत का विस्तारक सब तरह फैला हुआ है उसे अच्छी प्रकार देखते हुए धीर व्यक्ति ही प्राप्त करते हैं और इसमें असमर्थ क्रिया को नीचे गिरा देता है।

ऋत का तन्तु, सृष्टि का अटूट नियम सर्वत्र विस्तृत है। ऋत का तन्तु जब सब जगह फैला है तो दिखाई क्यों नहीं देता? दीखता तो है परन्तु वास्तव में वह सबको नहीं दिखाई देता। वह उन्हें दिखाई देता है जो धीर होते हैं, अपने लक्ष्य से डिगते नहीं। कठोपनिषद् में एक स्थान पर इसी भाव को इस प्रकार प्रगट किया गया है कि विधाता हमारी इन्द्रियों को बहिर्मुख बनाया अत आत्मा इनके द्वारा बाहर ही जाता है, आत्मा के अन्दर नहीं। मनुष्य जब अपने में धैर्य, आत्मविश्वास और स्थिरता को ले आता है उस समय वह अपनी आत्मा को देखता है। इन्द्रियाँ प्रकृति से बनी हैं, अत वे प्रकृत पदार्थों का ही ज्ञान करा सकती हैं। आग से बनी आँख रूप का दर्शन कर सकती है परन्तु निराकार परमात्मा को वह कैसे दिखावे? इसलिए हमें प्रयत्न यह करना है कि हम हृदय की आग को खोज सकें। मनुष्य का मुख्य कर्तव्य आत्म दर्शन है जिसने इसे नहीं किया उसने कुछ नहीं किया। धीरता और सयम ही वह गुण हैं जिनके द्वारा हम आत्मदर्शन कर सकते हैं। आत्म दर्शन का अभ्यास करने के लिए हमें अपने पड़ोसी को प्यार करना सीखना चाहिए। आप पड़ोसी को तभी प्यार करेंगे जब आपकी आत्मा में पवित्रता की भावना आएगी, आपका स्वार्थ परार्थ की ओर अग्रसर हो रहा होगा, और जब यह स्वार्थ 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' के अनुसार विश्व बन्धुत्व की भावना में परिणत हो जायगा तभी आत्मज्ञान प्राप्त होगा।

परन्तु इस आत्मज्ञान के लिए धैर्यशाली एव तपस्वी बनना होगा। इस महा तपस्या का पथ दिखायेगा कौन? बुद्धदेव सदा ही कहा करते थे कि दूसरो पर अवलम्बित मत हो, खुद अपने आपको दीपक बनाओ। "आत्म दीपो भव"। उपनिषदें भी यही बात कहती हैं। मनुष्य तो विज्ञानमय है फिर चिन्ता किस बात की है (बृहदारण्यक २-१ १६) मानव ही तो स्वय ज्योति है (बृहदा० ४।३।६)।

तुम्हारे भीतर जो विज्ञानमय परम ज्योति विद्यमान है उसे आह्वान करके उद्बोधित करो। मानव के भीतर जो चिन्मय वेद है एकमात्र उसी के द्वारा परिपूर्ण सत्य की उपलब्धि हो सकती है। विश्व चराचर में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उस अन्तर वेद के लिए अगम्य हो) एक जगह कहा गया है ऋग् मन्त्र अगर तुमने जाना है तो अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि तुमने देवताओं का रहस्य जान लिया है, यजुर्वेद अगर तुमने जाना है तो यज्ञों का रहस्य ही समझा है, साम मन्त्र की जानकारी प्राप्त की तो माना कि और भी कुछ जान गए हो परन्तु मानव की अन्तरात्मा में अन्तर वेद है, उसे तुमने जाना है तभी ब्रह्म को जाना है—

ऋचोह वेद स वेद देवान्
यजूंषि यो वेद स वेद यज्ञम्।
सामानि यो वेद स वेद सर्वम्।
यो मानस वेद स वेद ब्रह्म।

साधना के द्वारा अपने अन्तर स्थित चिन्मय ज्योति को उद्भासित करके परम सत्य को जानो, जाग्रत होओ। जाग्रत न होने से ब्रह्म को नहीं जाना जा सकता और न उसकी प्राप्ति ही संभव है। उद्यमी और जागृत लोग ही धन्य हैं, निद्रालु और अवसाद ग्रस्त नहीं। अतएव, उत्साहशील लोग ही आनन्द लोक के अधिकारी हैं। क्योंकि ऐतरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि देवता उसी के साथ-साथ चलते हैं जो अग्रसर होकर चल पड़ा है—

इन्द्र इच्चरत सखा (७।१५।१)

पाप पुण्य की समस्याओं को लेकर ही उपदेशकों के दल व्यस्त रहते हैं। ऐसे अवसरों के लिए ऐतरेय ब्राह्मण का सन्देश है कि बढ़े चलो, तुम्हारा पाप तुम्हारे चलने के मार्ग में स्वयमेव हतवीर्य होकर सो रहेगा—

शेरेऽस्य सर्वे पाप्मानः श्रमेण प्रपथे हताः।

हम कह सकते हैं कि हम दुर्भाग्य ग्रस्त हैं, हम क्या इस भय की उपेक्षा कर सकते हैं? ऐतरेय ने इस आपत्ति का दृढ़ कंठ से प्रतिवाद किया है। भाग्य है क्या वस्तु? जो बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठा रहता है, जो उठ खड़ा होता है उसका भाग्य भी उठ खड़ा होता है, जो सोया पड़ा रहता है उसका भाग्य भी सोया पड़ा रहता है। जो अग्रसर होता है उसका भाग्य भी अग्रसर होता है। इसीलिए आगे बढ़ो आगे बढ़ो—

आस्ते भग आसीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठत शेते, निपद्यमानस्य चराति चरतो भग। चरैवेति चरैवेति।

इस प्रकार परिश्रम द्वारा मनुष्य आत्मतत्व के निकट पहुँचता है। जीवनी शक्ति को प्राप्त होता है। और वह आत्मज्ञ ही उस ब्रह्म को जान सकता है। अत हमें आत्मज्ञान के लिए परिश्रम करना चाहिए। आइए हम भी ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें।

दयानन्द साधना आश्रम

ऋषि उद्यान, आना सागर तट, पुष्कर मार्ग, अजमेर

साधु सन्यासी महात्माओ, वानप्रस्थियों, आर्य विद्वानो और ब्रह्मचारियो के लिए निवास, साधना, स्वाध्याय और प्रवचन करने की सुविधा

यह साधना आश्रम उस उद्यान में स्थित है कि जिसमें महर्षि के देहावसान के उपरान्त अवशेष विसर्जित किया गया था और जिसे ऋषि भक्त राजाधिराज श्री नाहरसिंह जी वर्मा शाहपुराधीश ने महर्षि की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी सभा को भेंट किया था।

विक्रम सवत् १९९० की दीपावलि पर महर्षि के निर्वाण के ५० वर्ष व्यतीत होने के उपलक्ष में जो महान् आयोजन किया गया था तब इसी उद्यान में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ किया गया। उस समय की यज्ञाग्नि * को निरन्तर प्रज्वलित रखने का प्रयत्न जारी है। इस विशाल यज्ञशाला पर समय-समय पर अनेकों वेद पारायण बृहद यज्ञ होते रहते हैं और साधारणतया प्रात और साय अग्निहोत्र होता रहता है। भव्य दयानन्द सरस्वती भवन में सार्वजनिक समारोहों और प्रवचनों की सुविधा है। निवास के लिये भी पर्याप्त कक्ष उपलब्ध है।

दयानन्द साधना आश्रम के प्रबन्ध के लिये स्थानिक आर्य सज्जनों में से प्रबन्धकर्तृ समिति का निर्माण हो गया है।

आर्य साधु सन्यासी महात्माओं, विद्वानों वानप्रस्थियों और ब्रह्मचारियों से सादर निवेदन है कि वे इस सुविधा का सद्-उपयोग कर महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज के ऋण से उऋण होने के प्रयत्न में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करें। आश्रम की ओर से उपलब्ध साधनों के अनुसार जो महानुभाव चाहेंगे उनके लिये भोजन, वस्त्र की सुविधा का भी प्रबन्ध किया जावेगा।

आर्य जगत् में प्रख्यात महोपदेशक श्री प० रामसहाय जी शर्मा ने निरन्तर ४० वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से सम्पर्क बनाये रख वेद प्रचार करके अब वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर अपना नाम श्री आत्मभक्त वानप्रस्थी धारण कर दयानन्द साधना आश्रम के सचालन का भार लिया है।

दयानन्द साधना आश्रम के सचालन के लिये सहायता देने की समस्त आर्य जगत और आर्य सस्कृति के प्रेमियों से प्रार्थना है।

पत्र व्यवहार श्री ओम भक्त जी वानप्रस्थी दयानन्द साधना आश्रम आना सागर तट पुष्कर मार्ग अजमेर से किया जावे।

* इसी अग्नि का उपयोग दयानन्द दीक्षा शताब्दि समारोह के यज्ञ में किया जायगा। —सम्पादक

भगवान [illegible]

[illegible]

वैदिक राष्ट्र-गीत

यत्ते मध्यं पृथिवि यच्च नभ्यं यास्त ऊर्जस्तन्वः संबभूवुः। तासु नो धेह्यभि नः पवस्व माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः पर्जन्यः पिता स उ नः पिपर्तु ॥१२॥

(गीतिका छन्द)

हे मातृभू ! तव मध्य में, जलकोष में या को रहे।
मानव समूह पवित्र हो सुख हेतु सब संकट सहे ॥
भूमि माता है हमारी, पुत्र हम उसके सभी।
पर्जन्य पालक है पिता, जो अन्न दे आनन्द भी ॥१२॥

What is thy middle, earth, and what thy novel, what refreshment arose out of the body in them do thou set us, be purifying towards us, the earth is my mother, I am earth's son Paryanya is the father let him save us

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०

सूचना

प्रान्त की समस्त समाजों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि हीरक जयन्ती सम्बन्धी धन संग्रहार्थ श्री नेत्रपालसिंह भूतपूर्व एम०एल०ए० एवं मन्त्री सभा शीघ्र ही आपके यहाँ पधारने वाले हैं उनके आने की तिथि की सूचना पृथक पत्र द्वारा दी जायगी। अतः उनको उक्त समारोह के लिये पूर्ण सहयोग देते हुए अधिक से अधिक धन देने की कृपा करें।

प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल०सी०
सभा मन्त्री



लखनऊ—६ सितम्बर १९५९ दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि सवत् १९७२९४९०६०

भाषा विवाद पर सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का प्रस्ताव

विचारों के संघर्ष में साम्य-सामञ्जस्य और पवित्रता के नैतिक स्तर को कायम रखना बहुत बड़ी विशेषता होती है। आर्यसमाज शान्ति और सहिष्णुता का उपासक है। आर्यसमाज अन्याय को सहन नहीं कर सकता पर उसके निवारण के लिये हिंसा और कलह को प्रोत्साहन नहीं दे सकता महर्षि दयानन्द की भांति हमें विचार परिवर्तन के महान् कार्य की सिद्धि करनी है, पर इसमें समय अधिक लग सकता है। पर भविष्य में हमारे विचार सत्य सिद्ध होंगे और लोग उनका आदर करेंगे।

पंजाब में हिन्दी भाषा के स्थान के सम्बन्ध में आर्यसमाज सरकार की नीति से असहमत है, और एक आन्दोलन हो चुका। सरकार ने विधान-निर्माताओं द्वारा समस्या के समाधान का आश्वासन दिया और अब समय को लम्बा खींच रही है। भाषा सद्भावना समिति की रिपोर्ट आने में अपेक्षित विलम्ब और अब उसके प्रकाशन में विलम्ब द्वारा सरकार अपनी पक्षपातपूर्ण नीति का परिचय दे रही है। आर्यसमाज ने अतीव धैर्य से सरकार के विचार का अवसर दिया है और अतीव इस बात की कोशिश की है कि हमारे कुछ [illegible] के उत्साह [illegible] [illegible] [illegible]

हिन्दी प्रेमियों का जोश रोके नहीं रुकता तब भी २१ अगस्त को आर्य समाज की ओर से रिपोर्ट की प्रतीक्षा और आलोचना जानने के बाद ही कोई निश्चय करने का निर्णय किया गया है।

इस अवसर पर हम हिन्दी रक्षा के लिए उत्सुक उत्साही बन्धुओं से संगठन, अनुशासन और समस्या के शान्तिपूर्ण उपायों से हल होने की आकांक्षा के नाम पर अपील करते हैं कि वे कोई भी ऐसा कदम न उठायें या वक्तव्य प्रकाशित करें करावें जिसमें विघटन और विरोध की गन्ध आती हो। विशाल संगठन के हिताहित को उसके आदर्शों के साथ ही देखना चाहिये। व्यक्तियों से मिल कर समाज बनता है पर एक या कुछ व्यक्ति समाज का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते आर्यजगत् का शीर्ष नेतृत्व ही इस दिशा में पथ निर्देशन का अधिकारी है। आशा है इस दृष्टिकोण को ध्यान में रक्खा जायगा। पंजाब सरकार और भारत सरकार के ऊपर विशेष उत्तर दायित्व है कि वे समस्या के समाधान में रुचि लें यदि वे अब भी उपेक्षा नीति पर चलीं तो भविष्य में पंजाब में जो विस्फोट होगा उसका दायित्व सरकार पर होगा—केवल सरकार पर। आशा है इस कलंक से बचने का प्रयत्न किया जायगा।

मथुरा समारोह के सहयोगियों से

मथुरा में समारोह समिति का कार्यालय आरम्भ हो जाने के बाद से कार्यालय में इस प्रकार के पत्र आने लगे हैं कि हम समारोह कार्य में सेवा करना चाहते हैं, उन सब साथियों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए हम निवेदन करना चाहते हैं, कि जयन्ती समारोह की प्रबन्ध व्यवस्था स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने सम्हाल ली है। स्थान का निर्णय हो चुका है स्वागत समिति बन चुकी है और सभी आवश्यक कार्य विभाजन हो चुके हैं। ऐसी अवस्था में सहयोगी कार्य कर्त्ताओं की उपयोगिता समारोह सम्बन्धी जन सम्पर्क करने और जन-जन तक दयानन्द दीक्षा शताब्दि सन्देश पहुँचाने की है। अतः हम उन सभी भाइयों से निवेदन करेंगे कि वे ८ से १२ सितम्बर तक अपने अपने क्षेत्रों में समारोह सन्देश समाचार प्रचारित करने की कृपा करें। वैसे कार्यालय की ओर से सभी साथियों के उपयोग का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा। सभी सहयोगियों के सहयोग से कार्य आगे बढ़ रहा है और हमें पूर्ण विश्वास है कि हम अपने कार्य में आशानुरूप सफलता प्राप्त करेंगे। जिन आर्यबन्धुओं ने अपनी कार्य व्यस्तता या अन्य कठिनाइयों के कारण अभी तक अपने क्षेत्र में सन्देश पहुँचाने का कार्य आरम्भ न किया हो, उन सभी ऋषि दयानन्द और उनके गुरुवर स्वामी विरजानन्द सरस्वती के भक्तो आर्यमित्र के स्नेहियो और विद्वानों के प्रति श्रद्धा भक्ति रखने वाले साथियो से विनम्र अपील है कि वे इस अवसर पर अपने कर्त्तव्य को समझें और उसे पूर्ण कर अपनत्व और आर्यत्व का व्यावहारिक परिचय दें। आशा है आर्यबन्धु समारोह की प्रगति में उत्साह पूर्ण भाग लेकर उसे सफल बना अपनी कर्त्तव्यपरायणता का परिचय देंगे।

अमृतसर मे सिक्खों द्वारा कृष्ण कीर्तन में बाधा

कृष्ण जन्माष्टमी पर अमृतसर में कृष्णोपासक हिंदुओं की बैठक में सिक्खों ने जिस अशिष्टता और असहनशीलता का परिचय दिया है वह पंजाब में सिक्खों की मनोवृत्ति का वास्तविक उदाहरण है। एक देवालय से शिरोमणि गुरुद्वारों के मैनेजर ने पीपल का पेड़ कटवाकर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई। कृष्ण कीर्तन में सिर नंगे होने पर आपत्ति की। कृष्ण कीर्तन से शोर होने की आपत्ति की। तालाब में पैर लटकाकर बैठने पर आपत्ति की और अन्त में उपद्रव करने का अभद्र व्यवहार किया। पुलिस के हस्तक्षेप से परिस्थिति अधिक विषम होने से बच सकी। हम कृष्ण कीर्तन या पीपल के सम्बन्ध में धार्मिक भावनाओं की सैद्धान्तिक आलोचना करते हैं। पर जिनकी वे धार्मिक भावनायें हैं उनको हिंसात्मक तरीकों से मानसिक आघात पहुँचाने का समर्थन नहीं किया जा सकता। सिक्खों में इस प्रकार का व्यवहार करने का साहस कांग्रेस की पुष्टीकरण नीति के कारण ही हुआ है। पंजाबी सूबे की जिस मांग के मास्टर तारासिंह बराबर दोहराते हैं उसमें यही और इससे भी भयंकर साम्प्रदायिक विद्वेष के कार्य होंगे। महापुरुष कृष्ण के सम्बन्ध में सिक्खों के गुरुओं ने भी श्रद्धा व्यक्त की है परन्तु अपने गुरुओं के आदर्श के विरुद्ध सिक्ख धार्मिक पृथकता और असहिष्णुता की ओर बढ़ रहे हैं। कांग्रेस द्वारा अकालियों के साथ गठबन्धन के कार्य से पंजाब में इस प्रकार की साम्प्रदायिकता को बल मिला है। सरकार और सत्ता पार्टी का इस दिशा में गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

विवाद का निर्णय

हमने मित्र के गतांक में ही आर्य समाज के आपसी मतभेद निवारण कार्य के लिये पंजाब के आर्य बन्धुओं द्वारा उठाये गये प्रयत्न की प्रशंसा की थी। उस प्रयत्न के फलस्वरूप जो निर्णय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने दिया है आशा है उसे न्याय सद्भावना, सहयोग और संगठन की दृष्टि से सम्बन्धित आर्य जन स्वीकार करेंगे। निर्णायक के महान् उस भार को वहन करने के लिए आदरणीय गुप्त जी समस्त आर्य जगत् के धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। हमें हर्ष है संकट के समय उनका व्यक्तित्व आर्यसमाज के उपयोग आसका।

★

पंजाब भाषा सद्भावना समिति की रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित की जाय, सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की मांग

आज सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय दयानन्द भवन (रामलीला मैदान) नई दिल्ली में श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक हुई जिसमें हिन्दी रक्षा समिति पजाब के सदस्यों तथा भारत के विविध प्रान्तों के प्रमुख प्रमुख आर्य नेताओं ने भी भाग लिया। बैठक २ बजे मध्याह्नोत्तर से साढ़े सात बजे सायंकाल तक चलती रही। पर्याप्त विचार और विवाद के पश्चात निम्न लिखित प्रस्ताव पारित हुआ—

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने सद्भावना समिति का प्रतिवेदन पंजाब सरकार के समक्ष प्रस्तुत होने से उत्पन्न परिस्थिति पर विचार किया। सद्भावना समिति की क्या सिफारिशें है यह अभी निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। अत यह समिति सरकार से आग्रह करती है कि सद्भावना समिति का प्रतिवेदन प्रकाशित करने में अनुचित विलम्ब न किया जाय। यह समिति पजाब की निम्न संस्थाओं से अनुरोध करती है कि सद्भावना समिति का प्रतिवेदन प्रकाशित होने पर अपनी सम्मति सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के पास भेजें ताकि उस पर समिति को विचार करने एव भावी कार्यक्रम निर्धारित करने में सुविधा हो।

१ पजाब हिन्दी रक्षा समिति
२ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब
३ आर्य प्रादेशिक सभा पजाब
४ डी ए वी कालिज मैनेजिंग सोसायटी
५ सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पजाब
६ भारतीय जनसघ पजाब
७ हिन्दू महासभा पजाब
८ आर्य विद्या परिषद् पजाब
९ जैन सभा पजाब
१० देव समाज पजाब

(सर्व सम्मति से स्वीकृत)

बैठक में लगभग ५० महानुभावों ने भाग लिया जिसमें से सर्व श्री बाबू पूर्णचन्द्र प्रधान सार्वदेशिक सभा रघुवीर सिंह शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा तथा स्वातन्त्र्य समिति आचार्य रामदेवजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री दुर्गादास उप मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी प्रधान हिन्दी रक्षा समिति पजाब, प्रिंसिपल भगवानदास जी एन० डी० ग्रोवर, एस० कृष्ण प्रो० शेरसिंह जी, कैप्टेन देवचन्द्र जी, प्रो० रामसिंह जी, प्रिंसिपल बलभद्र जी दीक्षित, स्वामी विद्यानन्द जी, आचार्य कमलादेव जी, श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सभा के प्रधान मन्त्री का भ्रमण वृत्तान्त

दिनांक २६-३० अगस्त को सभा मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० ने सीतापुर, लखीमपुर, गोला की आर्यसमाजों में हीरक जयन्ती महोत्सव के लिए धन संग्रहार्थ भ्रमण किया। सभी स्थानों में उत्साह पूर्वक स्वागत किया गया, तथा वहाँ के आर्य बन्धुओं ने तन, मन, धन से सहायता देने का वचन दिया। दिनांक २६ को आर्य समाज सीतापुर में सार्वजनिक भाषण हुआ। मन्त्री आर्यसमाज ने १०१) समाज की ओर से हीरक जयन्ती निधि में, भेंट स्वरूप प्रदान किया। भविष्य में अधिक से अधिक धन प्रदान करने का वचन दिया। श्री आर्यसमाज लखीमपुर की ओर से श्रीमती सुशीला देवी जौहरी एम० ए० प्रधानाचार्या, आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालिज ने श्रद्धा पूर्वं हीरक जयन्ती निधि के लिए १००) प्रदान किया। आर्यसमाज गोला की ओर से स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया। वहाँ की जनता ने मन्त्री महोदय को फूलमालाओं से लाद दिया। स्टेशन से कार द्वारा मन्त्री जी को ठहरने के स्थान पर ले जाया गया। जहाँ आर्यसमाज के सदस्यों से वार्तालाप होता रहा। सायंकाल ५ बजे श्री बा० कुन्दनलाल जी साहनी सदस्य नगरपालिका की ओर से म्युनिस्पिल हाल में एक टी पार्टी का आयोजन किया गया, जिसमें नगर पालिका के अध्यक्ष श्री सेठ चुन्नीलाल के अतिरिक्त अन्य सदस्य तथा नगर के गण्यमान्य सज्जन भी उपस्थित थे। श्री मन्त्री जी ने वहाँ एक छोटा तथा सार गर्भित व्याख्यान दिया, जिसका लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। रात में समाज मन्दिर में एक सार्वजनिक भाषण हुआ जिसके अन्त में वहाँ के प्रधान डाक्टर गिरिधारलाल जी ने समाज की ओर से १२१) हीरक जयन्ती निधि के लिये भेंट करने की घोषणा की और भविष्य में और भी सहायता देने का वचन दिया। श्री निर्मलचन्द्र जी राठी मन्त्री आर्यसमाज ने सभा मन्त्री को १२१) भेंट स्वरूप प्रदान किए। गोला के स्वागत में यह विशेषता थी कि वहाँ के मुसलमान भाइयों ने भी मन्त्री जी का फूलमालाओं से स्वागत किया।

—राजबहादुर, प्रचार मन्त्री

[illegible] विश्व विद्यालय द्वारा साम्यवाद का पोषण

मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के सम्बन्ध में पिछले दिनों समाचार पत्रों में अनेक सदिग्ध समाचार प्रकाशित हुए थे जिनके निराकरण के लिए उप कुलपति श्री जैदी साहब ने पत्रकार सम्मेलन भी बुलाया किन्तु उसमें अंकित आरोपों पर विशेष प्रकाश नहीं डाला गया अब पुनः कुछ ऐसे समाचार प्रकाशित हुये हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि यह विश्वविद्यालय साम्यवाद का पोषण कर रहा है और यहां प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी न किसी रूप में साम्यवाद का प्रचार होता रहता है।

इस विश्वविद्यालय की इस्लामिक स्टडी के एक सुविख्यात महोदय पिछले दिनों केरल की साम्यवादी सरकार के पक्ष में घर-घर जाकर हस्ताक्षर कराते रहे और सुना है कि कुछ लोगों के आपत्ति करने पर भी इस ओर कोई प्रबन्ध नहीं लगाया गया।

इसी विश्वविद्यालय की डीन आफ फैकेल्टी के जो अध्यक्ष हैं वे इस्लामिक स्टडी के भी अध्यक्ष हैं जो कि स्थानीय साम्यवादी दल के सरपंचों में से एक हैं इस्लामिक स्टडी द्वारा मुसलमानों के धर्म इस्लाम को पूर्ण और विस्तृत अध्ययन और अध्यापन आदि की [illegible] है। समझ में नहीं आता कि [illegible] में विश्वास न रखने वाले, [illegible] साम्यवादी सज्जन [illegible] हैं?

इस विश्वविद्यालय की ओर से नगर के कुछ भागों में शिक्षा [illegible] के केन्द्र खुले हुये हैं। इनमें से अधिकांश केन्द्रों के अध्यक्ष भी साम्यवादी हैं।

पिछले कुछ वर्षों से रूस के दो पुरुष एक महिला जो कि रूसी साम्यवादी दल के सक्रिय कार्यकर्ता हैं, यहाँ की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं किन्तु वे भी साम्यवाद का प्रचार करते [illegible]। वे अपने वार्तालाप में रूस, रूसी नेताओं की प्रशंसा करते हुए भारत- भारतीय शासन और भारतीय नेताओं को [illegible] हैं। —अरुण कुमार दीक्षित

वर की आवश्यकता

एक प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार में उत्पन्न बी० ए० तक पढ़ी सुन्दर, स्वस्थ, सुयोग्य कन्या के लिये सुयोग्य वर की आवश्यकता है। विवाह बिरादरी बंधन तोड़कर भी हो सकेगा। १ ३४ १७

— प्रकाश'

द्वारा आर्यमित्र, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ

विदेश-वार्त्ता

जर्मनी में भारत मैत्री आन्दोलन

[श्री प्रेमनारायण अग्रवाल, एम० ए०]

आजकल जर्मनी और भारत के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध बढ़ रहे हैं। जर्मन जनता में भारत के प्रति आकर्षण है और भारत में भी जर्मनी के प्रति सद्भावना रही है। राजनैतिक कारण मैत्री सम्बन्धों के विकास में बाधक रहे पर आज वे समाप्त हो चुके हैं। भारतीय वाङ्मय और संस्कृति पर शोध करने वाले जर्मन हमारे मित्र हैं इस भावना का विकास विश्व मैत्री की ओर एक आदर्श कदम होगा। —सम्पादक

अपनी द्वितीय योरप यात्रा में कुछ समय पूर्व ही भारत वापस लौटा हूँ। इस यात्रा में ८ सप्ताह जर्मनी में व्यतीत किये थे। जर्मनी में भारत के प्रति गहरी दिलचस्पी व मैत्री भाव देखकर हमें अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

सदियों से जर्मन जनता भारत की प्रशंसक रही और उसकी संस्कृति व विचारधारा से प्रभावित रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में उनकी दिलचस्पी प्रेम और सहानुभूति बढ़ती ही गई। भारतीयों को उनके भारत प्रेम का पता रहा है और उनके हृदय में भी जर्मन लोगों के प्रति सद्भावना बराबर रही है परन्तु दोनों ओर की यह सद्भावनाएं भी उन्हें विगत वर्षों में एक दूसरे को अधिक निकट न ला सकीं क्योंकि भारत की राजनैतिक स्थिति ऐसी ही थी। जिसमें जर्मनी और भारत आपस में अधिक घनिष्ठ और गहरा सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते थे।

भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने से और जर्मनी के अपने पुराने वैभव पर आने से इन दोनों के नये घनिष्ठतर सम्बन्ध का मार्ग खुल गया है। अपने जर्मनी प्रवास में हमने वहाँ भारत के प्रति सद्भावनाओं का जो रंग-ढंग देखा उसे देखकर हमें जबरदस्त आश्चर्य हुआ। सरकारी व गैरसरकारी तौर पर वहाँ पर भारत से मैत्री स्थापित करने व उसकी समस्याओं को समझकर अधिकाधिक नजदीकी का सम्बन्ध स्थापित करने के लिये जो प्रयत्न हो रहे हैं वे वास्तव में बड़े प्रभावशाली हैं।

वहां का एक आम निवासी भी भारत को जानता है और प्रत्येक भारतीय के प्रति असाधारण मित्रता और प्रेम का व्यवहार करने से नहीं चूकता। भारतीय विद्यार्थियों या अन्य भारतीय मित्रों या उन संस्थाओं या भारत में दिलचस्पी रखने वाले व्यक्तियों द्वारा आयोजित भारत सम्बन्धी कार्यक्रमों में वे बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं उनमें वे अच्छी संख्या में उपस्थित होते हैं। स्टुटगार्ट में भारतीय विद्यार्थियों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपने यात्रा काल में १५ अगस्त के महत्त्वपूर्ण अवसर पर हम उनका उत्साहजनक सहयोग देखकर दंग रह गये। वे इतनी बड़ी संख्या में आये कि वहां के हाल व गैलरी में बैठने की जगह नहीं रही। अनेकों स्त्री-पुरुषों ने उस भीड़ भाड़ में कई घण्टों तक खड़े रहकर बड़े प्रेम से भारतीय विद्यार्थियों के सांस्कृतिक आयोजन को देखा-सुना। यह स्थिति केवल स्टुटगार्ट की हो सो बात नहीं है। सारा देश है इसी प्रकार का जोश व उत्साह है भारत के प्रति समस्त देश में [illegible] भारतीय विद्यार्थियों से, जिनकी संख्या एक हजार से ऊपर है हमें अपने अपने देशों में जर्मनों के भारत प्रेम की प्रशंसा सुनने को मिली उन्होंने यह भी बताया कि वे उनके साथ कितना अच्छा व्यवहार करते हैं। प्रत्येक जर्मन चाहे वह किसी भी श्रेणी का क्यों न हो उनके साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव करता है। चाहे वह उनका कालिज में सहपाठी हो या फैक्टरी में सहकारी कार्यकर्ता मालिक अध्यापक मकान मालिक दुकानदार सरकारी कर्मचारी हो सभी का वर्ताव उनके साथ बहुत प्रेम और सहानुभूति का होता है। इससे उनका भारत प्रेम स्पष्ट प्रतीत होता है।

हमने प्रायः समस्त देश का भ्रमण किया और प्रत्येक जगह भारत के साथ मैत्री भाव का आन्दोलन पाया। कितने ही शहरों में जिनमें बर्लिन हैमबर्ग ब्रेमन फ्रैंकफर्ट म्यूनिक स्टुटगार्ट डुसलडोर्फ आदि प्रमुख हैं हमने जर्मन भारतीय संस्थाओं का [illegible] पाया जो [illegible] में भारत प्रेमी स्त्री पुरुषों [illegible] बराबर [illegible] में व्यस्त हैं [illegible] रहने वाले भारतीय विद्यार्थियों की देखभाल करती हैं उन्हें उचित निवास स्थान प्राप्त कराने, फैक्टरियों में काम दिलाने और उनकी निजी व्यक्तिगत मामलों में सलाह मशविरा देकर उनकी चिन्ता दूर करती हैं।

आज वहां उन जर्मनों के सहयोग से जो भारत में सरकारी व गैरसरकारी तौर पर काम कर चुके हैं तथा जो भारत की सांस्कृतिक साहित्यिक और धार्मिक प्रगति से प्रभावित हैं ऐसे जर्मनों द्वारा एक जोरदार आन्दोलन चलाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य वहां एक ऐसी मजबूत और व्यापक जर्मन भारतीय संस्था स्थापित करना है, जिसकी शाखाओं का जाल देश भर में फैला हो। अगले कुछ मास में वे इस कार्य में सफल हो जायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है क्योंकि जनता व कार्यकर्ताओं में काफी जोश है और सरकार का रुख भी अनुकूल है। फ्रैंकफर्ट में जो जर्मनी का एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र नगर है वहां इसका प्रधान कार्यालय खोलने जो एक विशाल भारत भवन में स्थापित होगा। उसमें भारत से आने वाले [illegible] के लिये सस्ती कीमत का सुन्दर ठहरने का [illegible] जिससे वहां आने जाने वाले भारतीय आराम व सुविधा अनुभव करें।

जर्मनी के एक प्रमुख सांस्कृतिक शहर म्यूनिक में भारत [illegible] ट्रस्ट नामक संस्था है जो सन् १९२८ में स्वर्गीय डाक्टर तारकनाथ दास ने अपने जर्मन मित्रों के सहयोग से कायम की थी बराबर भारत जर्मन मैत्री के भावों का प्रचार करने में संलग्न हैं। यहां हिन्दी शिक्षा देने के लिये नियमित रूप से प्रबन्ध किया गया है जर्मनी के कई अन्य भागों में भी हिन्दी पढ़ने का प्रबन्ध है और काफी जर्मन इस प्रकार के शिक्षण से लाभ उठाते हैं। [illegible] कार्यक्रम [illegible] चलाते हैं।

[illegible]

[illegible] हेलगन विश्वविद्यालय में हमें संस्कृत के प्रोफेसर हाफमन जो अथर्व वेद के विशेष पण्डित हैं और उनकी सहायक अध्यापिका मिस अगलतन जो ऋग्वेद पर विशेष अध्ययन कर रही हैं से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। प्रसंगवश उन्होंने हमें बताया कि अन्य विश्वविद्यालयों में भी ऐसी ही परिस्थिति है।

जर्मनी में एक दूसरी महत्त्वपूर्ण व प्रभावशाली संस्था है स्टुटगार्ट की जर्मन सोसाइटी जो कुछ वर्षों से अत्यधिक उपयोगी काम कर रही है और [illegible] जर्मन भारतीय विद्यार्थी संघ [illegible] से प्रतिष्ठित है। [illegible] जर्मन सद्स्य [illegible] यह [illegible] देश भर में [illegible] प्रयत्न करते रहते हैं [illegible] से जर्मन भारतीय [illegible] करके [illegible] की गतिविधि [illegible]

[illegible] भी निकालनी प्रारम्भ की है जिससे भारत की विभिन्न [illegible] रहता है। इसके सैक्रेटरी डा० राइबर प्रत्येक देश प्रेम से भारत से अच्छे सम्बन्ध कायम करने के लिए प्रयत्नशील हैं।

जर्मन लोगों में भारत के लिए जो जोश है उसका एक नमूना यही है कि इन दोनों संस्थाओं में अधिकाधिक उपयोगी काम करने की होड़ सी लगी हुई है [illegible] था [illegible] भारत के [illegible] से [illegible] प्राप्त करना।

सरकारी स्तर पर दूतावास की सरकारों में भी अधिकाधिक सहयोग बढ़ाने के समाचार आ रहे हैं। भारत में एक जर्मन [illegible] भारत के [illegible] के शुभ काम में सहयोग दे रहे हैं और जर्मन सरकार अधिकाधिक ऋण भारत सरकार को पंचवर्षीय योजना सफल बनाने के लिए देती जा रही है।

३५ योरोपीय व पश्चिमी एशिया के देशों के लगातार १२ महीने से [illegible]

[illegible]

[illegible] पर भारतीय जन इससे [illegible] परिचित [illegible] और उतना उत्साह प्रदर्शित कर रही है वास्तव में अब समय आ गया है हम भी जर्मनी को समझें क्योंकि उससे वे अनेक बातें सीख सकते जिससे वे चरित्रवान और कार्यदक्ष हैं। भारतवर्ष में भी ऐसी संस्थाओं का निर्माण अभी तक हो जाना चाहिए था। इस कमी को जितना शीघ्र किया जा सके उतना ही अच्छा होगा।

★

शंका-समाधान

सस्वर वेदपाठ

[श्री वीरसेन जी वेदश्रमी, इन्दौर]

शंका :—स्वर सहित वेदपाठ से क्या लाभ ? अर्थ ज्ञान से लाभ होता है। अतः स्वर सहित वेदपाठ व्यर्थ है तथा अर्थ ज्ञान का ही प्रयत्न करना चाहिये। वेद में भी "स्थाणुरयंभारहारः किल०" मन्त्र द्वारा अर्थहीन वेदपाठ की निन्दा की गई है और अर्थज्ञान की महिमा बताई है। इसी प्रकार भाष्यकारों ने भी "यथाखरश्चन्दन भारवाही०" इत्यादि श्लोकों द्वारा अर्थहीन वेदशाखादि रटन्त की निन्दा की है। अर्थ स्वर सहित मन्त्रपाठ करना भी त्याज्य ही मानना चाहिए।

उत्तर :—(१) स्वर सहित मन्त्रपाठ करने का आदेश करने वाले ग्रन्थों ने अर्थ की यथावत् प्रतीति के लिये ही स्वर को मान्यता दी है। तथा उन्होंने यह कहीं भी नहीं लिखा कि केवल सस्वरपाठ ही जानना चाहिये और अर्थ नहीं जानना चाहिये। उन ग्रन्थों में तो स्पष्ट लिखा है :—ज्ञातव्यश्च तथैवार्थो वेदानाङ्कर्मसिद्धये। (याज्ञवल्क्य शिक्षा) अर्थात् जिस प्रकार सस्वरपाठ जानना आवश्यक है उसी प्रकार उसके साथ कर्मसिद्ध के लिये अर्थ भी जानना आवश्यक है।

(२) महर्षि दयानंद जी ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं :—

"परन्तु कुछ भी न पढ़ने वाले से तो पाठमात्र जानने वाला ही श्रेष्ठ है। जो वेदों को अर्थ सहित यथावत् पढ़ के शुभ गुणों को ग्रहण और उत्तम कर्मों को करता है, वही सबसे उत्तम होता है।"

महर्षि के इस लेख में तीन बातें हैं।

(अ) वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ जानना। (आ) वेदमन्त्रों का अर्थ जानना। (इ) मन्त्रों के अर्थों के अनुकूल शुभगुणों का ग्रहण और उसके अनुसार आचरण करना। उक्त तीनों ...र्म उत्तरोत्तर उत्तम हैं तथा तीनों ही ...मपूर्वक अभ्यसनीय और ग्रहण करने ...ग्य है। तीनो मे से किसी की उपेक्षा ...ही करनी चाहिये। कुछ लोग अर्थ की ...ादेयता को ही श्रेष्ठ मानकर ज्ञान एवं ...नुकूल आचरण की उपेक्षा कर देते ...। कुछ लोग, कर्म को ही प्रधानता ...र्थ एवं पाठ ज्ञान की उपेक्षा कर देते ...। कुछ लोग केवल पाठ की ही प्रधा...ता मानकर अर्थ और कर्म की उपेक्षा ... देते हैं। परन्तु ऐसा नहीं करना ...हिए। प्रथम शुद्ध पाठ का ज्ञान ...श्चात् अर्थ का ज्ञान और तदनुकूल ... का अभ्यास करना चाहिये। किसी ...की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। शुद्ध ... के ज्ञान के अभाव से शुद्ध यथार्थ ... की भी प्राप्ति नहीं हो सकती और ...क यथार्थ अर्थ की प्राप्ति नहीं होगी ...थ...ं शुभ गुण एवं कर्मों का उदय भी कैसे होगा ? अतः शुद्ध एवं सस्वरपाठ की नितान्त उपयोगिता एवं आवश्यकता है ही।

(३) महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा शाबर में स्वरोच्चारण अर्थ प्रकट करने के लिये आवश्यक है इस निमित्त—यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोपराधात् उदाहरण प्रमाण रूप में उपस्थित किया है। इसी उदाहरण को महाभाष्यकार तथा अन्य शिक्षा ग्रन्थकर्त्ता भी उपस्थित करते हैं।

असुरों को इच्छा इन्द्र के नाश की थी। परन्तु उच्चारण करते समय स्वर का दोष अर्थात् स्वर के विपरीत हो जाने से विपरीत ही प्रभाव हुआ, अर्थज्ञान होते हुए भी स्वरज्ञान न होने से अथवा स्वर ज्ञान होने पर भी विपरीत स्वर उच्चारित हो जाने से यह विपरीत कर्म विपरीत ही फलदायक होगया।

'इन्द्रशत्रुवर्धस्व' इस वाक्य के उच्चारण में स्वर दोष होगया। असुर ने इसका उच्चारण इस आशय से किया कि इन्द्र के शत्रु अर्थात् असुरगण वृद्धि को प्राप्त हों, विजयी होवें। परन्तु स्वरदोष के कारण वाणी अभिलषित अर्थ को प्रकट न कर सकी। परिणाम विपरीत हुआ। इस वाक्य के दो अर्थ होते हैं। एक तो यह कि इन्द्र का शत्रु असुर या मेघ विजयी होवे और दूसरा यह कि इन्द्र ही जो शत्रुरूपेण है वह वृद्धि या विजय को प्राप्त हो। पहले अर्थ में 'इन्द्रशत्रुअन्तोदात्त है और दूसरे अर्थ में आद्युदात्त है उसके अनुसार इस प्रकार स्वर हैं—'इन्द्रशत्रुः'। इस प्रकार स्वर का अर्थ पर महान् प्रभाव पड़ता है। तथा जब तक स्वरो के उच्चारण का ज्ञान न होगा तब तक उसको प्रयोग में भी कैसे लाया जायगा ?

अतः जो केवल अर्थ की प्रधानता और सस्वर उच्चारण की उपेक्षा करते हैं क्या वे मूक होकर वेदमन्त्रों का मन से ही उच्चारण करेंगे। यदि मन से ही उच्चारण करेंगे तो जप में भी यज्ञक,यज्ञकर्मण्यजपन्यूङ्खसामसु सूत्र से स्वर सहित पाठ की विधि का उल्लंघन होगा।

सौवर ग्रन्थ में एक और विशेष उदाहरण महर्षि ने स्वर के महत्व के बारे में सकर्त्ता यह दिया है। इसके दो अर्थ होते हैं। एक यह है कि वह अगले दिन करेगा। इस दशा में सकर्त्ता में इस प्रकार स्वर रहेंगे। इसका दूसरा अर्थ वह करने वाला पुरुष है। इस दशा में सकर्त्ता ये स्वर होंगे। जो स्वर सहित उच्चारण करना जानते नहीं और इसकी उपेक्षा करते हैं उनको महर्षि के इस प्रतिपादन से सस्वर वेदपाठ की प्रवृत्ति करनी ही होगी।

स्वर पाठ की उपेक्षा से स्वर ज्ञान की भी उपेक्षा होने लगी और वह इस अवस्था तक पहुँच गई कि अर्थ का अनर्थ होने लगा। एक वेदार्थ करने में अत्यन्त कुशल परन्तु स्वर को न जानने वाले ख्याति प्राप्त आर्य विद्वान् ने देहली की एक बड़ी समाज में "नतस्य प्रतिमाऽअस्ति" मन्त्र का अर्थ करते हुए 'नतस्य' को एक पद मानकर ही खूब व्याख्या की। श्रोतागण भी प्रसन्न हो गये तथा उन विद्वान ने समझ लिया कि मैंने ठीक अर्थ जाना है और अपने पाण्डित्य पर गर्व अनुभव किया। इस घटना को जब उन्होंने मुझे सुनाया तो मैंने कहा कि आपने स्वर ज्ञान के अभाव से एवं पदपाठ के न जानने से वेद का अनर्थ ही किया है। आजकल ऐसे ही वेद के अनर्थ करने वाले अनेक व्यक्ति स्वरज्ञान के अभाव में वेद व्याख्यायें करते हैं और अभिमानवश महर्षि के भाष्य की अवहेलना करते हैं। उनको तो अपनी वेद व्याख्या महर्षि से भी अधिक सुन्दर और ठीक मालूम पड़ती है। परन्तु आर्य जनता का वेद के विषय में इतना स्तर गिर गया है कि या तो वह वेद सुनना ही नहीं चाहती, या तो सुनाना चाहती है वह स्वाध्याय की कमी से यह भी नहीं जान पाती कि वक्ता वेद का अर्थ ही कर रहा है या वेद का अनर्थ कर रहा है ?

स्वर के ज्ञान से पदों का ज्ञान होता है अथवा वेदादि का स्वर पाठ जानने तथा पदादि पाठों को जानने से भी पदों का ठीक-ठीक ज्ञान होता है। पदों के ठीक-ठीक ज्ञान के अभाव वेदमन्त्रो का अनर्थ हो जाता है। उस अनर्थ द्वारा व्याख्या चाहे कितनी ही सुन्दर और मनोहारी और आकर्षक क्यो न हो जावे वह अग्राह्य ही मानी जावेगी। उदाहरण के लिये यजुर्वेद के नवम अध्याय का सातवां मंत्र यहाँ उपस्थित करते है जो निम्न प्रकार प्रारंभ होता है :—

(शेष पृष्ठ १२ पर)

हिन्दी के समर्थन में श्री पं० नेहरू के पत्र

प्रधान मन्त्री श्री पं० नेहरू के स्वयं के ३१ वर्ष पूर्व पुत्री इन्दिरा जी के नाम लिखे पत्र नीचे उद्धृत किये जा रहे हैं जिनमें उन्होंने हिन्दी की उपेक्षा को राष्ट्रीय अपमान और स्वयं हिन्दी के व्यवहार में शिथिल होने के दोष की बात स्वीकार की है। पाठकों की जानकारी के लिये प्रस्तुत हैं।

ये ही पत्र हैं जिन्हें पढ़कर पिछले दिनों लोक सभा में नेहरु जी ने फ्रैंक एन्थनी के प्रस्ताव के विपक्ष में हिन्दी का समर्थन किया कार्य व्यस्त प्रधान मन्त्री शायद अपने भावों को विस्मृत कर चुके थे और राजनैतिक आधार पर हिन्दी के समर्थन में आगे नहीं आ सके थे पर आर्य जगत् और हिन्दी भाषा प्रेमियों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० ने पण्डित जी को जब इन पत्रों का स्मरण कराया तब वे भावुक हो उठे और स्वयं के भावों के प्रति श्रद्धा और विश्वास प्रकट करते हुए उन्होने हिन्दी के पक्ष में जोशीला भाषण दिया और हिन्दी को भारतीय जनता की भाषा के रूप में घोषित कर जनता की भावनाओं की रक्षा की। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि नेहरू जी अपनी भावनाओं को साकार और राष्ट्र व्यापी रूप देने में कोई कसर न उठा रक्खेंगे।

अंग्रेजी में लिखना—हंसी की बात

किसी कौम के विकास और उसके बच्चों की शिक्षा का एकमात्र साधन उसकी अपनी भाषा ही है। हिन्दुस्तान में आज हरेक चीज में गड़बड़ी की हालत में है और हम आपस में भी अंग्रेजी का ही बहुत ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। "मेरा तुम्हें अंग्रेजी में खत लिखना भी एक हंसी की बात है"—फिर भी मैं वही कर रहा हूँ। लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम लोग जल्दी ही इस आदत से छुटकारा पा जायेंगे। (पृ० ४१)

× × ×

हिन्दी का सम्मान

इसलिए यह मुनासिब है कि हम इसके (राष्ट्रभाषा) इस्तेमाल के लिए जोर दें और विदेशी भाषा के इस्तेमाल को किसी तरह के गरूर की बात न समझें। तुम कहोगी कि मैं भी कितना धोखेबाज आदमी हूँ। मैं खुद वही बात करता हूँ जिसके खिलाफ तुम्हें उपदेश देता हूँ। मैं ये खत अंग्रेजी में क्यों लिखता हूँ ? इसलिए कि मेरी अपनी शिक्षा दूषित रही है। मैं चाहता हूँ कि मैं हिन्दी आसानी से लिख सकूँ। लेकिन अब भविष्य में अधिक कर्तव्य परायण होने की कोशिश करूंगा। (पृ० ११६)

हिन्दी के राष्ट्रीय स्वरूप के समर्थन में इन पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व समझा जाना चाहिए।

★

श्री दलाईलामा से भेंट

[श्री पं० रघुवीरसिंह जी शास्त्री मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, नई देहली]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री दलाईलामा को जून मास में पत्र लिखा गया था कि आर्यसमाज का एक शिष्ट मण्डल आपको आर्यसमाज तथा वैदिक-धर्म के विषय में बताने एवं तत्सम्बन्धी साहित्य भेंट करने के लिये आपसे मिलना चाहता है। ७ जुलाई के सायंकाल सहसा मुझे उनके निजी सचिव का पत्र मिला जिस में लिखा था कि आपकी मुलाकात का समय ९ जुलाई को प्रातः १० बजे नियत किया गया है। मैंने तुरन्त आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड को मंसूरी पहुँचने के लिये तार दिया। भेंट करने वाले शिष्ट मण्डल में मेरे अतिरिक्त ६ विद्वान् थे। श्री पं० धर्मदेव जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, डा० स्वामी आनंददेव जी तथा कविराज हरनामदास जी बी० ए०।

श्री दलाईलामा अंग्रेजी भी अधिक नहीं जानते, एक सिक्कमवासी नवयुवक बीच में दुभाषिता का काम कर रहा था। हम उसे अङ्गरेजी में कहते और वह तिब्बती भाषा में दलाईलामा को कहता था।

हमने प्रारम्भ में ही कहा कि हम आर्यसमाजियों का विश्वास है कि मानव-सृष्टि का मूल स्थान तिब्बत है और वहीं से आर्य लोग सारे संसार में फैले हैं अतः तिब्बत का एक ऐतिहासिक विशेष महत्त्व है।

इसके पश्चात् हमने कहा कि 'आर्य' शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, सदाचारी व्यक्ति। महात्मा बुद्ध ने इसी कारण इस शब्द को अपनाते हुए 'आर्य सत्य' 'आर्य अष्टांगिक मार्ग' आदि शब्दों का प्रयोग किया। हमारा विचार है कि वे एक आर्य सुधारक थे जिन्होंने प्राचीन आर्य धर्म के ऊपर अज्ञानवश आये आवरण को दूर करके विशुद्ध वैदिक सदाचार की स्थापना का कार्य किया, विशेष रूप से जाति भेद तथा यज्ञों में पशुबलि आदि की जो अवैदिक प्रथाएं प्रचलित हो गईं थीं, उनका उन्होंने प्रबल विरोध किया। वैदिक धर्म की शिक्षा प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखने की है अतः आर्यसमाज जातिभेद तथा अस्पृश्यता आदि का कट्टर विरोधी है। दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, शिक्षा प्रसार तथा स्वतन्त्रता की भावना आदि आन्दोलनों का प्रारम्भ आर्यसमाज ने ही किया जिनको पीछे अन्य नेताओं तथा संस्थाओं ने अपना लिया। संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इस देश में आर्यसमाज तथा उसकी बहुविध संस्थाओं का जाल बिछा है। विदेशों में भी आर्यसमाज की अनेक शाखाएं तथा संस्थाएं हैं।

मन्तव्यों का परिचय देते हुए उन्हें बताया गया कि आर्यसमाज एक ईश्वर का उपासक है, जो सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् तथा सर्वव्यापक है। ईश्वर की सत्ता सम्बन्धी यही विश्वास मनुष्य को निष्पाप बनाता है। संसार में शान्ति तथा बन्धुता की स्थापना में भी यही विश्वास विशेष रूप से सहायक हो सकता है। हम सब एक परमेश्वर के पुत्र हैं और परस्पर भ्रातृवत् प्रेममय व्यवहार हमें करना चाहिये। वेद के विषय में उन्हें बताया गया कि जिस प्रकार माता पिता बच्चों के कल्याण के लिए उन्हें अच्छी शिक्षाएं देते हैं ठीक उसी प्रकार मंगलमय भगवान ने सृष्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा उपदेश दिया जो कि सार्वभौम है मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है कि वेद मानव पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रन्थ हैं और उनके महत्त्व को भी अब पाश्चात्य विद्वान् धीरे-धीरे स्वीकार करने लगे हैं। वेदों की शिक्षायें युक्ति युक्त और सार्वभौम हैं।

बुद्ध मत तथा मांस भक्षण

अन्त में हमारी ओर से प्रश्न किया गया कि महात्मा बुद्ध ने अहिंसा को परम धर्म बताया है और उनका सारा मत अहिंसा पर ही खड़ा है तो फिर उनके अनुयायी मांस भक्षण करें, यह कहां तक संगत एवं उचित है?

उन्होंने कहा कि सिद्धान्त रूपेण यह बात ठीक है और तिब्बत में भी पशुरक्षा सम्बन्धी कानून बने हैं और जङ्गलों तक में पशुओं का मरना वर्जित है। इसी अहिंसा सिद्धान्त को मानकर बहुत से लोग मांस नहीं खाते। उन्होंने यह भी कहा कि इस विषय में हीनयान तथा महायान सम्प्रदायों में मतभेद है। महायान वाले मांस खाना बुरा नहीं मानते। इस पर उन्हें महायान के प्रामाणिक ग्रन्थ 'लङ्कावतार सूत्र' के मांस भोजन परीवर्त नामक प्रकरण से संस्कृत के अनेक उद्धरण अंगरेजी अनुवाद सहित पढ़कर सुनाये गये जिनमें मांसाहार का प्रबल विरोध किया गया है। इस संवाद में जो उद्धरण दिये जाते थे उनमें से दो श्लोकों के अत्यधिक महत्वपूर्ण और स्पष्ट होने के कारण हम यहां उनका उल्लेख कर देते हैं जिनको सुनकर श्री दलाईलामा अत्यधिक गम्भीर हो गये ऐसा हमने अनुभव किया।

योऽतिक्रम्य मुनेर्वाक्यं, मांसं भक्षति दुर्मतिः। लोकद्वयविनाशार्थं, दीक्षित शाक्यशासने ॥१॥ लाभार्थं हन्यते प्राणी, मांसार्थं दीयतेधनम्। उभौ तौ पापकर्माणौ, पच्येते रौरवादिषु ॥२॥

लङ्कावतार सूत्र अ० ८।

इन श्लोकों पर स्पष्ट कहा गया है कि जो दुर्बुद्धि बुद्ध की आज्ञा का उलंघन करके मांस खाता है वह इस तथा परलोक दोनों का नाश करता है। प्राणियों की हत्या लाभ के लिये की जाती है क्योंकि मांस के लिए धन दिया जाता है इसलिए पशुहिंसा करने और उसके मांस का भक्षण करने वाले दोनों नरक की अग्नि में पकाये जाते हैं उन्हों ने एक युक्ति यह दी कि हम स्वयं मार के नहीं खाते अतः हिंसा के पाप से बच जाते हैं। इस पर भी उन्हें इसी ग्रन्थ के अन्य उद्धरण दिखाये गये जिन में स्पष्ट लिखा है कि न केवल पशुओं की हिंसा करना ही पाप है, अपितु उनका मांस खाना भी पाप है क्योंकि हिंसा मांस खाने वालों के लिए ही की जाती है।

उन्होंने कहा कि लोग प्रेम से भेंट करते हैं तो हम खा लेते हैं। इस पर हमारी ओर से कहा गया कि जब लोगों को यह पता होगा कि भगवान् बुद्ध की आज्ञारूप अहिंसा धर्म के विरुद्ध होने के कारण आप मांस नहीं खाते तो लोग इस प्रकार की भेंट न देंगे। मांस खाना तो हिंसा को प्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहित करता है।

उन्हें यह भी कहा गया कि आपके सम्बन्ध में यह विचार फैलाया जाता है कि बुद्ध का आत्मा आपमें निवास करता है और आप उसके प्रतिनिधि हैं। बताइये कि यदि आपके स्थान पर स्वयं भगवान् बुद्ध होते तो क्या वे मांस खाते? आप उनके आसन पर विराजमान हैं तो आपको भी वही आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिये। न स्वयं आपको मांस खाना चाहिये और यदि आपके अनुयायियों में से कोई खावे तो उसको उपदेश देकर रोकना चाहिये। उन्हें बताया गया कि भारत के लोगों के लिये तो यह बात आश्चर्यजनक है कि बौद्ध मत के प्रमुख मांस खाते हैं।

अन्त में उन्होंने इन सब बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया और हमने उन्हें 'सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका महात्मा बुद्ध एक आर्य रिफामर Mahatma Buddha An-Arya Reformer आदि संस्कृत, हिन्दी एवं अङ्गरेजी के अनेक ग्रन्थ भेंट किये।

यह चर्चा लगभग सवा घंटे तक बहुत ही मधुर वातावरण में चली जो विशुद्ध धार्मिक थी। श्री दलाईलामा बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे और उनका व्यवहार अतीव शिष्ट था। कहा जा सकता है कि उन पर शिष्ट मण्डल की बातों की विशेष छाप पड़ी।

शिष्ट मण्डल के प्रमुख वक्ताओं में श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड प्रमुख थे और उन्होंने ही विशेष रूप से सिद्धान्त पक्ष प्रस्तुत किया। सभा की ओर से इस सहयोग के लिये उनका हार्दिक धन्यवाद है और मैं अपनी ओर से आभारी प्रकट करता हूं।

स्वर्णलता द्वारा दो पूर्व जन्मों का सत्य विवरण प्रस्तुत

पूर्वजन्म के सिद्धान्त की प्रत्यक्ष पुष्टि

पूर्वजन्म न मानने वालों के लिए अद्भुत चुनौती

[द्वारा—श्री किशोरसिंह जी करेली (मध्य प्रदेश)]

दस वर्षीया ब्राह्मण लड़की स्वर्णलता ने बीसवीं शताब्दी के इस वैज्ञानिक युग में उन व्यक्तियों को खुली चुनौती दी है जो पुनर्जन्म में और आत्मा की अनश्वरता में विश्वास नहीं रखते और उसे एक कपोलकल्पित और अन्धविश्वास की बात मानकर चलते हों। छतरपुर स्थित मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग के एक कर्मचारी की इस पुत्री ने न केवल अपने पिछले एक जन्म की अपितु दो जन्म की आश्चर्यजनक कथाओं को सुनाकर मनोविज्ञान शास्त्रियों, नृशास्त्र के विशेषज्ञों और चिकित्सकों को स्वतः के ऊपर प्रयोग और परीक्षण करने के लिए आमंत्रित किया है।

पूर्व जन्मों का हाल बतलाने का दावा करने वाली उक्त दस वर्षीया बालिका का आगमन हाल में जबलपुर में हुआ जहां पर वह अपने ननिहाल में लगभग दो सप्ताह रुकी। जबलपुर के मालदारपुरा में रहने वाले पंडित राधिकाप्रसाद पाठक की वह पौत्री है और श्री रंगनाथ पाठक उसके मामा हैं। पिछले दिनों जबलपुर में उसको देखने के लिए पन्द्रह दिनों तक बराबर जिज्ञासुओं की भीड़ लगी रही, स्वर्णलता ने न केवल जिज्ञासुओं द्वारा कौतुहलपूर्वक पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए, अपितु हाव-भाव के द्वारा नृत्य के साथ वे गाने भी गाए, जो बंगला-मिश्रित असमी भाषा से मिलते-जुलते हैं। जबकि इस बालिका को अभी तक इस जन्म में किसी भी प्रकार के नृत्य-ज्ञान की शिक्षा नहीं दी गई और न उसने मध्यप्रदेश के बाहर पैर रखा है।

कटनी में जन्म

स्वर्णलता ने प्रश्नोत्तर के दौरान में कहा कि मेरा एक जन्म कटनी में झर्राटेकुरिया मुहल्ले के एक नागरिक श्री हरिप्रसाद पाठक के घर में हुआ था। उस समय मेरे चार भाई थे और दो बहनें थीं। सबसे बड़ी मैं ही थी और उस समय मेरा नाम "बिया" था तथा अपने "अग्रज" को "बाबू" कहकर सम्बोधित करती थी। ३९-४० साल की अवस्था में मेरी मृत्यु हो गई। इसके पूर्व मेरे गले में दर्द था और उसकी चिकित्सा के लिए मुझे कटनी से जबलपुर लाया गया जहां पर डाक्टर [illegible]ाट ने मेरा इलाज किया पर पूरी तौर पर मैं अच्छी नहीं हो पाई। उस समय मेरे सामने ही मेरी एक बहिन की मृत्यु हो गई थी।

स्वर्णलता ने बताया कि उस जन्म में मेरी शादी मैहर में चिंतामणि पांडे के साथ हुई थी जिनकी अवस्था उस समय लगभग बाईस वर्ष की थी। उनके घर में क्या व्यवसाय होता था, इसका मुझे स्मरण नहीं है पर इतना अवश्य ज्ञान है कि मेरे तत्कालीन पतिदेव का रंग सांवला था। मेरे उस वक्त दो लड़के और एक लड़की थी।

स्वर्णलता ने अपना कथन जारी रखते हुए बतलाया कि उसका एक जन्म सिलहट में भी हुआ था। उस समय उसका नाम कमलेश था। पिता का नाम रमेश एवं माता का नाम 'शशिमाता' था और एक सहेली का नाम मधु था। उसके घर में मोटरकार भी थी जिसमें बैठकर वह स्कूल पढ़ने जाया करती थी। इसी प्रकार जब वह मोटरकार में बैठकर स्कूल आया करती थी तो मोटर के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से उसकी मृत्यु हो गई थी। उसे इतना याद है कि मृत्यु घटनास्थल पर नहीं अपितु अस्पताल में हुई थी। स्वर्णलता के कथनानुसार उस समय उसकी अवस्था ९-१० वर्ष के लगभग थी।

श्री मनोहरलाल मिश्र, जो स्वर्णलता के वर्तमान पिता हैं, इन दिनों छतरपुर स्थित जिला शाला निरीक्षक के कार्यालय से सम्बन्धित हैं। उसके पूर्व वह रींवा में राजस्व विभाग के अधीक्षक कार्यालय से, पन्ना में उपजिला शाला निरीक्षक के कार्यालय से और नौगांव-छावनी में प्रशासकीय पोलीटेकनीक के अधीक्षक के कार्यालय से सम्बन्धित रहे हैं।

स्मृतियां जाग उठीं

अपनी विचित्र 'पुत्री' के विषय में जानकारी देते हुए श्री मिश्र ने कहा कि लगभग सात वर्ष पूर्व जब मैं जबलपुर से पन्ना सपरिवार एक मोटर ट्रक में लौट रहा था, तो कटनी के निकट स्वर्णलता ने, जिसकी उम्र तीन-साढ़े तीन साल की रही होगी, ड्राइवर से ट्रक को बाईं ओर मोड़ने और अपने घर ले चलने को कहा और साथ ही मुझसे कहा कि "आप मोटर स्टैंड पर गंदी चाय मत तैयार करवाइए, मेरे घर चलिएगा पास ही में है, वहीं बढ़िया दूध की चाय पिलाऊंगी।" उस वक्त हम लोगों ने उसकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया और समझा कि वैसे ही वह बाल-सुलभतावश बहकी हुई बातें कर रही है। कुछ दिनों उपरांत जब लड़की की मां गेहूं साफकर रही थी तो स्वर्णलता ने कहा—"मां, गाना सुनोगी, चलो आज मैं तुम्हें गाना सुनाऊं।' उसकी मा ने स्वाभाविक रूप से कहा—'हां, सुनाओ जरूर सुनेंगे।' तब स्वर्णलता ने एक नहीं अनेक गाने सुनाए, पर उनकी भाषा विचित्र थी अतः समझ में कुछ नहीं आया। किन्तु जब उसने गाना गाना बन्द नहीं किया और लगातार गाने पर गाना गाती रही तो उसकी मा को ऐसा लगा कि लड़की को हवा-बयार लग गई है और उसके निदान स्वरूप उन्होंने अपने पति की गैरजानकारी में तांत्रिकों की सहायता ली। कार्यालय से लौटने पर मिश्र जी ने निकटवर्ती और परिचित डाक्टर डी० एन० मुकर्जी को बुलाया। लड़की के गानों को सुनकर उन्होंने बतलाया कि लड़की जो भाषा बोल रही है वह बंगला-मिश्रित असमी है और कहा कि लड़की के मस्तिष्क में किसी प्रकार की विकृति नहीं है। इसी दरम्यान सागर के श्री गौरीशंकर श्रीवास्तव, अवकाश प्राप्त शिक्षा सदस्य, परामर्शदात्री समिति राजगढ़ राज्य का आगमन भी नौगांव हुआ। चूंकि श्री श्रीवास्तव का अधिकार बंगला भाषा पर है, अतः उन्होंने देखकर राय दी कि यदि स्वर्णलता उनके सान्निध्य में दो-तीन माह रहे तो अच्छी तरह से बंगला बोल सकती है।

इसी बीच श्री हेमेन्द्र बनर्जी, अवैतनिक संचालक, सेठ सोहनलाल इंस्टीट्यूट, परासाइकालाजी, श्री गंगानगर, राजस्थान का छतरपुर आगमन हुआ। श्री बनर्जी को उक्त लड़की के विषय की जानकारी किसी तरह पहले से मिल चुकी थी। स्वर्णलता से उन्होंने काफी देर तक नाना प्रकार की वार्ता की और उसकी पूर्व जन्म सम्बन्धी स्मृतियां तथा गीतों को टेप रिकार्डिंग किया और उसकी आगे जांच करने की बात कही। श्री बनर्जी ने लड़की के पिता को बतलाया कि यदि सरकार की सहायता से स्वर्णलता को परीक्षण हेतु विदेश भेजा जाए, तो पुनर्जन्म सम्बन्धी घटनाओं पर काफी प्रकाश पड़ सकता है। लड़की के बयानों को टेपरिकार्डिंग करने के अतिरिक्त श्री बनर्जी ने अन्य कई व्यक्तियों के कथनों को भी लिपिबद्ध किया और निजी सूत्रों से गुप्त तौर पर पता लगाया कि पिता-पुत्री किसी प्रकार का जाल तो सर्वसाधारण को ठगने के लिए नहीं रच रहे हैं। पर वहां उनको सभी ने एक प्रकार से लड़की के और उसके अभिभावकों के कथन की पुष्टि की।

श्री बनर्जी की खोज

स्वर्णलता ने कटनी सम्बन्धी जो 'कहानी' श्री बनर्जी को सुनाई थी, उसकी वास्तविकता का पता लगाने श्री बनर्जी कटनी आए और श्री हरिप्रसाद पाठक परिवार से मिले जहां उन्होंने पाया कि अनेक घटनाएं और तथ्य स्वर्णलता के कथन से सामंजस्य रखते हैं। श्री बनर्जी के परीक्षण के पूर्व दतिया म्युनिसिपल बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री एच० पी० पस्तोरे 'सोहम' ने भी स्वर्णलता की जानकारी प्राप्त की थी। अपने एक प्रतिवेदन में श्री पस्तोरे ने निष्कर्ष निकाला कि यह स्पष्ट है कि स्वर्णलता को अपने पिछले जन्मों की स्मृति है। उक्त लड़की अब धीरे-धीरे पुरानी स्मृतियों को भूलती जाती है और ऐसी आशंका है कि कदाचित अगले एक या दो वर्षों में वह पूर्व जन्मों की स्मृतियों को पूर्णतः भूल जाएगी। विशेष मानसिक अवस्था में लड़की अपने पूर्व जन्मों का खुलासा अधिक स्पष्ट तौर पर कर सकती है और ज्यादा विस्तार से अपनी आत्म कथाओं को सुना सकती है।

जब श्री बनर्जी के द्वारा स्वर्णलता की जानकारी श्री हरिप्रसाद पाठक को मिली तो उनको भी उसको देखने की स्वाभाविक रूप से जिज्ञासा उत्पन्न हुई और वह अपने कुछ मित्रों को लेकर छतरपुर गये और पिछली १२ अप्रैल को कुमारी स्वर्णलता से प्रथम बार भेंट की। श्री पाठक और उनके साथी बिना किसी पूर्व सूचना के छतरपुर आये थे और जब वे मिश्र जी के घर पहुँचे तब स्वर्णलता बाहर गई थी। जब वह देवपूजन के पश्चात् घर लौटी तो श्री पाठक ने उससे कटनी सम्बन्धी पूर्व जन्म की स्मृतियों के बारे में पूछा और यह भी जानना चाहा कि उनका मकान कैसा है, कहाँ है और उसके आस पास क्या है। लड़की ने जो भी उत्तर दिया उससे उनको संतोष हुआ। परन्तु वह पाठक जी का सही नाम नहीं बतला सकी। हरिप्रसाद जी की जगह उसने हीरालाल का उच्चारण किया। संतुष्ट

(शेष पृष्ठ १० पर)

अश्लील फिल्में नैतिक पतन के लिए उत्तरदायी हैं

श्री विनोबा भावे

सिनेमा के द्वारा होने वाले राष्ट्र व्यापी नैतिक पतन की ओर भारत की ओर भारत की समस्याओं को समझने में सर्वागुखी संत विनोबा भावे आदि नेताओं का भी ध्यान आकृष्ट हुआ है। उन्होने इस सम्बन्ध में अपने भाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं—

"यदि हम अपने नौजवानों को सही रास्ते पर बढ़ने देना और उन्हें स्वस्थ नैतिक चरित्र से पूर्ण वीर पुरुष बनाना चाहते हैं तो हमे ऐसे साधनों को खोजना पड़ेगा जो उन्हें मनोरंजन के साथ समुचित शिक्षा भी प्रदान करें। स्वराज्य प्राप्ति के बाद आज यदि हम सिनेमा आदि द्वारा अपने चरित्र में शिथिलता आने देंगे तो उसे कमाये हुए स्वराज्य को खोने की क्रिया का आरम्भ ही समझना होगा।'

श्री राजगोपालाचार्य

"आजकल के अश्लील सिनेमा चित्र आपके दिमाग को सड़ा डालते हैं। इनके कारण आप इस प्रकार की बातें सोचने लगते हैं जो आपको नहीं सोचनी चाहिए। इससे केवल भारतीय नागरिकों का आत्मिक पतन ही नहीं हो रहा प्रत्युत बौद्धिक अवनति भी अवश्यम्भावी है।"

श्री कन्हैयालाल मुंशी

'अनेक फिल्में अपराध और हिंसा को आकर्षक बना देती हैं। सिनेमा द्वारा लाखो व्यक्तियों को अपराध हत्या कमीनेपन और गन्दे जीवन के बारीक से बारीक तरीको और साधनों की शिक्षा दी जा रही है। ऐसी स्थिति में सारे देश में हिंसा और अपराधो की बीमारी फैल रही है तो इसमे आश्चर्य की बात नहीं है।"

श्री ठा० हरगोविन्दसिंह (उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री

"एक शिक्षा मन्त्री के नाते विभिन्न स्थानो से प्राप्त विद्यार्थियों की कृतियो के समय-समय पर मिलने वाले समाचारो को सुनकर मैं मारे शर्म के गड़ जाता हूँ। इलाहाबाद स्टेशन पर कामिनोकौशल के नाम के नारे लगाकर विद्यार्थियो ने जिस शिक्षा और नैतिक स्तर का परिचय दिया था क्या यही आजकल की शिक्षा का उद्देश्य है? यदि हाँ, तो मैं समस्त विश्वविद्यालयो और कालिजों का सदैव के लिए बन्द किया जाना ही श्रेयस्कर समझूंगा।"

[ये उक्तियाँ स्वय में स्पष्ट हैं और सिनेमा द्वारा उत्पन्न नैतिक पतन की निन्दा कर रही हैं। —सम्पादक]

बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा का स्पष्टीकरण

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार छोटा नागपुर क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों के प्रचार प्रसार को सदैव चिन्ता की दृष्टि से देखती रही है और अपनी शक्ति से अधिक उपायों द्वारा उसके निराकरण के लिये सतर्क सचेष्ट और प्रयत्नशील है। आर्यजगत् की आर्यसमाजो,समाओ मिशनो, सार्वदेशिक सभा आदि द्वारा इस सभा को जो सहयोग मिलता रहा है उस सब के लिये बिहार क्षेत्र की ओर से सभा उन सब सहायकों के प्रति आभारी है और रहेगी।

इस स्थिति के होते हुए भी प्रान्त में प्रचार व्यवस्था का अन्तिम उत्तरदायित्व इस सभा पर ही है। ऐसी अवस्था में सभा के अनुशासन का पालन ही आर्योचित मर्यादा है। पिछले दिनो श्री भूपनारायणसिंह जी के विषय को लेकर बिहार सभा और सार्वदेशिक सभा के सम्बन्ध में मिथ्या प्रचार कर भ्रान्ति उत्पन्न की गई है।

श्री भूपनारायणसिंह जी बिहार सभा के प्रचारक थे परन्तु उनकी अनुशासनहीनता एव स्वेच्छाचारिता के कारण उन्हें सभा ने मुक्त कर दिया बिहार सभा की सम्पुष्टि की सम्भावना पर सार्वदेशिक सभा ने उनकी सामयिक नियुक्ति कर दी बिहार सभा ने विरोध प्रदर्शन किया और सभा के सम्मुख तथ्य और घटनायें प्रस्तुत कीं ऐसी दशा में भविष्य के प्रति सावधानी और बिहार सभा के साथ सहयोग की दृष्टि से सार्वदेशिक सभा ने उन्हें सेवाओं से मुक्त कर दिया है। सार्वदेशिक सभा के इस निश्चय को कुछ क्षेत्रों में आलोचना की गई है परन्तु बिहार सभा जिसके ऊपर छोटा नागपुर क्षेत्र के प्रचार का अन्तिम उत्तरदायित्व है वह सन्तुष्ट है और अनुभव करती है कि प्रचार कार्य में इससे कोई क्षति न होगी सदैव स्मरण रखना चाहिये कि किसी भी सेना को बिना अनुशासन के कभी सफलता नहीं मिल सकती सगठन गौरव और अनुशासन मर्यादा की दृष्टि से अनुशासनहीन व्यक्तियो को कभी प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिये आशा है आर्य बन्धु बिहार सभा और सार्वदेशिक सभा की स्थिति को समझेंगे और अनुशासनहीन तत्वों को प्रोत्साहन न देंगे।

रामनारायण शास्त्री मन्त्री
आर्य प्रतिनिधिबिहार सभा, पटना

आर्यसमाज, लडडू घाटी, पहाड़गंज नई दिल्ली द्वारा ब्रह्माकुमारी संस्था का विरोध

आर्यसमाज लड्डू घाटी पहाड़गंज नई दिल्ली की यह सभा ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय संस्था की गतिविधि की ओर निन्दा की दृष्टि से देखती है। और इसको पुरानी सिन्ध की ओम मण्डली का ही दूसरा रूप मानती है। इनकी गतिविधियों से समाज में नैतिक पतन को प्रोत्साहन मिलने का भय है, इसी के कारण साधू टी० एल० वास्वानी को इनके विरुद्ध आन्दोलन कर जेल जाने के लिये विवश होना पड़ा था, तथा उस समय सिंधु हैदराबाद की सरकार के दो हिंदू मन्त्रियों को भी त्याग-पत्र देना पड़ा इस सभा की दृष्टि मे ब्रह्मकुमरियों की इस प्रकार की गतिविधियो को राष्ट्रहित की दृष्टि से रोकना प्रत्येक व्यक्ति का नितान्त आवश्यक कर्त्तव्य है। यह सभा आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री डा० रामगोपाल जी द्वारा उठाये गये सम्बन्धित आन्दोलन से पूर्ण सहमति प्रकट करती है और उन ब्रह्मकुमारियों तथा ब्रह्मकुमारों को, जिन्होंने हमारे आदरणीय प्रधान जी के विरुद्ध अप शब्दो का प्रयोग किया है, घृणा की दृष्टि से देखती हुई खुले शब्दों में आर्य हिन्दू मात्र को बतला देना अपना कर्त्तव्य समझती है कि दादा लेखराज द्वारा चलाया जा रहा ब्रह्मकुमारी आन्दोलन वैवाहिक जीवन को विश्रृंखलित कर देने वाला तथा गीता की आड़ में दादा लेखराज को ईश्वर का अवतार बताकर धर्म के नाम पर भोली भाली जनता को बहकाने का एक भारी षड्यन्त्र है। हमारे पास इस प्रकार के अनेक प्रमाण उपस्थित हैं कि इन्हीं ब्रह्मकुमारियो के आडम्बर पूर्ण प्रचार से प्रभावित होकर अच्छे घरों की देवियां अपने बाल बच्चों तथा पतियो को छोड़कर ब्रह्मकुमारियो मे सम्मिलित हो गई, अत इस प्रकार के पाखण्ड को उखाड़ देना प्रत्येक वेदानुगामी आर्य हिन्दू का नैतिक कर्तव्य है।

सिद्धान्त-विमर्श

ब्रह्माकुमारी संस्था के सिद्धान्त

[श्री शान्तिप्रकाश जी, जालन्धर]

पिछले दिनों ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्बन्ध में पर्याप्त आलोचना सार्वजनिक रूप से की गयी है। इस संस्था के सिद्धान्त और कार्य कलाप कितने असामाजिक, अधार्मिक, अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक है इसका दिग्दर्शन सम्प्रदाय की पुस्तक के शब्दों में और सम्प्रदाय केन्द्र की गतिविधियों द्वारा प्रस्तुत लेख में किया गया है। आशा है पाठक इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। —सम्पादक

ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्बन्ध में पिछले दिनों समाचार पत्रों में पर्याप्त आलोचना देखने को मिली है। वास्तव में इसके प्रवर्तक पुराने सुविदित दादा लेखराज हैं कुछ समय तक उनकी ओम मण्डली की कारगुजारियाँ छिपी रहीं पर अब आर्यसमाज ने उनका भण्डा फोड़ कर ही दिया है। इस सम्प्रदाय की साम्प्रदायिक मान्यतायें बड़ी विचित्र है और हिन्दू अवतारवादियों से भी एक कदम आगे बढ़ कर दादा लेखराज स्वयं ब्रह्मा बन बैठे हैं।

इस सम्प्रदाय की प्रकाशित पुस्तक के आरम्भ में लिखा है —

सर्वशक्तिमान त्रिमूर्ति परम पिता परमात्मा शिव द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारियों की संस्था, पोकरान हाऊस माऊण्ट आबू।'

इस पुस्तक के संक्षिप्त उद्धरण पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं —

मुझ अव्यक्त परमात्मा का ब्रह्मलोक से आकर कल्प लोक में एक ही बार ब्रह्मा के साधारण वृद्ध शरीर में प्रवेश करना ही मेरा अवतरण अथवा दिव्य जन्म है। श्री कृष्ण और श्री राम तो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी देवता (दिव्य गुणधारी मनुष्य) हुए हैं उन्हें मेरा अवतार नहीं कहा जा सकता।

मैं हर युग में नहीं बल्कि कलियुग के अन्त में और सत युग के आदि के संगम समय में ही ब्रह्मा द्वारा सत्य युग स्थापन करने के लिये अवतरित होता हूँ। मेरा अवतरण एक साधारण वृद्ध मनुष्य तन में होता है न कि सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण अथवा चौदह कला सम्पूर्ण श्रीराम के देवताई और रमणीय तन में। यही कारण है कि अनेक मूढ़मति वाले लोग मुझे न जानने के कारण तुच्छ समझते हैं।

'सत्ययुग और त्रेता में तो मेरे अवतरण की आवश्यकता ही नहीं क्योंकि धर्म की ग्लानि उन युगों में नहीं बल्कि कलियुग के अन्त में अपनी पूर्ण सीमा को प्राप्त होती है। मैं द्वापर युग में भी अवतरित नहीं होता क्योंकि न तो उस समय धर्मग्लानि अपनी पूर्ण सीमा को पहुँची होती है और न ही मुझे उस समय सत्ययुगीय सृष्टि की पुनः स्थापना अथवा कलियुगीय सृष्टि का विनाश करना होता है। अतः मैं संगम समय ब्रह्मा रूप में न कि कच्छ मच्छ रूप में अवतरित होता हूँ।"

(धारा ६)

"मनुष्यात्माएं स्वतः ही मेरा पार नहीं पा सकतीं। ऋषि मुनि भी मुझे नहीं जान सके क्योंकि मैं अपना सत्य और पूर्ण परिचय स्वयं आप ही संगम समय अवतरित होकर देता हूँ। अतः मेरे गोप गोपिकाओं द्वारा अथवा ब्रह्मा रूप द्वारा ज्ञान सुनने वाले संगमयुगीय ब्राह्मण ही मुझे जान सकते हैं। अतः संगम समय से पूर्व हुए ऋषि मुनियों द्वारा दिया गया मेरा परिचय स्वयं मेरे द्वारा दिये गए ज्ञान से भिन्न होता है। तभी तो मुझे स्वयं अवतरित होना पड़ता है।'

मैं अव्यक्त हूँ। मुझ ज्योति स्वरूप का रूप है, परन्तु उसे दिव्य चक्षु से ही देखा जा सकता है। मुझ कल्याणकारी का नाम शिव अव्यक्त रूप ज्योतिर्लिङ्ग है। शिवलिङ्ग मेरे ही अव्यक्त रूप की प्रतिमा है। मैं परब्रह्म परमेश्वर ब्रह्म लोक का निवासी हूँ जो लोक कि परम धाम, परलोक, निर्वाणधाम अथवा शिवपुरी भी कहाता है और इस जगत् के सूर्य चाँद के पार अव्यक्त है। उसे मुझ से दिव्य चक्षु प्राप्त करके ही देखा जा सकता है।

मुझ ज्योतिर्लिंग को निराकार कहने का यह कारण नहीं कि मेरा कोई रूप नहीं बल्कि मनुष्यात्माओं (जो भी शरीर के रूप की भेंट में निराकार कही जाती हैं) के सदृश रूप (शालिग्राम) के समान है।'

(धारा १०)

इस असम्बद्ध आलाप में कितना अज्ञान, दूसरों के प्रति निन्दा और स्वयं का अहंकार भरा पड़ा है साथ ही कपोल कल्पना एवं असंगत साम्प्रदायिक सिद्धान्त की व्याख्या करने का प्रयत्न किया गया है।

इस संस्था का व्यावहारिक रूप यह है कि गृहस्थी ब्रह्मकुमार, ब्रह्मकुमारियाँ गृहस्थ कर्म न करें। सन्तान इनके इच्छा मात्र से बिना संभोग के होगी। इस अप्राकृतिक अवैज्ञानिक घोषणा के पीछे क्या रहस्य है उसे पाठक सहज ही समझ सकते हैं। इस संस्था को आर्यसमाज का चैलेञ्ज है कि एक भी उदाहरण इच्छा मात्र से सन्तानोत्पत्ति का दिखा दें तो हम मान लेंगे नहीं दुकान बन्द करवाकर छोड़ेंगे।

इस सम्प्रदाय की दीक्षा प्रणाली अत्यन्त आपत्तिजनक है जो भारतीय सभ्यता और नागरिक जीवन के समुत्कर्ष की दृष्टि से चिन्तनीय है। इस सम्प्रदाय में दीक्षित स्त्रियाँ ब्रह्माकुमारी बन गोपियाँ कहलाती हैं पुरुष गोप, बाबा कृष्ण का रूप बनते हैं और तब वही सब कुछ होना सम्भव है जिसका ऋषि दयानन्द ने वाम मार्ग सम्प्रदाय के खण्डन में वर्णन किया है।

प्रभु इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक समर्थक और अनुयायियों को सद्बुद्धि दें और वे प्रभु से भय खावें और अपना तथा संसार का लोक-परलोक बिगाड़ने का ठेका न लें। ★

(पृष्ठ ८ का शेष)

होकर श्री पाठक कटनी वापस लौटे और उन्होंने मैहर स्थित स्वर्णलता के तत्कालीन ससुरालवालों को घटनाक्रम से सूचित किया। फलतः मैहर से भी कुमारी स्वर्णलता अर्थात् तत्कालीन 'बिया' के प्रति श्री चिन्तामणि पाण्डेय और पुत्र मुरली छतरपुर पहुँचे। वहाँ तत्कालीन पति पुत्र को स्वर्णलता ने न केवल पहचान लिया अपितु श्री चिन्तामणि पाण्डे को एक 'ग्रुप फोटो' में भी पहचान लिया जबकि उनकी अवस्था लगभग २३ वर्ष की थी। यद्यपि मुरली ने स्वर्णलता को अपना परिचय रामप्रसाद कहकर भ्रमित करना चाहा, तथापि उसकी चाल निष्फल रही। स्वर्णलता ने बराबर कहा कि वह उसका उस जन्म का पुत्र है और उसका नाम मुरली है, न कि रामप्रसाद जैसा कि वह कहता है मैहर सम्बन्धी अन्य बातों का भी खुलासा उसने किया।

श्री हरिप्रसाद पाठक का आमन्त्रण पाकर सपरिवार गत १३ जुलाई को मिश्र जी कटनी पहुँचे। साथ में स्वर्णलता थी। उसके आने के पूर्व ही श्री पाठक ने एक कमरे में अनेक वृद्ध-वृद्धाओं के चित्रों को लगा दिया था और गाँव के लोगों को एकत्रित कर रखा था। जैसे ही स्वर्णलता अपने पूर्वजन्म के पैतृक घर में पहुँची, उसने उस नीम के वृक्ष के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जो जो उसके उस जन्म में घर के दरवाजे पर था किन्तु हाल की एक आँधी में गिर गया था। इसके अतिरिक्त उसने उस घर के पुराने चरवाहे को भी पहचान लिया जो भीड़ में एक ओर दुबका बैठा था। साथ ही श्री हरिप्रसाद पाठक के एक घनिष्ठ मित्र श्री भैरोनाथ चतुर्वेदी की भावज को भी पहचाना जबकि वह उनकी बहू के सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी नहीं दे सकी। इसी प्रकार चतुर्वेदी जी से कहा कि आप चश्मा उतार लीजिये। जिस समय मैं थी, उस वक्त आप चश्मा नहीं लगाया करते थे। जब लड़की को चित्रों से सज्जित कमरे में ले जाया गया तो स्वर्णलता ने पाठक जी के माता पिता को पहचान लिया जो पूर्वजन्म में उसके माता पिता भी थे। इस प्रकार की अन्य दूसरी कठिनतम परीक्षाएं भी उस लड़की की ली गई जिसमें उसका दावा सही निकला। यहाँ भी उसने पाठक परिवार के साथ चार दिन अपने वर्तमान माता पिता और भाई बहन के साथ व्यतीत किये। कटनी में रहकर भी वह अपने सिलहट सम्बन्धी जन्म की बातों को बतलाती रही।

स्वर्णलता ने एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि उसको पूर्व जन्म की स्मृतियाँ या तो जिज्ञासुओं द्वारा प्रश्न करने के सन्दर्भ में अथवा किसी प्रकार की डाटडपट किये जाने पर आती है जिस वक्त वह पूर्व जन्म की बातों में बतलाती है वर्तमान अवस्था को भूल जाती है। अभी तक न तो वह किसी गम्भीर बीमारी से पीड़ित हुई और उसको स्वप्न आदि ही आते हैं। पूर्व जन्म की घटनाओं का वर्णन करते हुए उसकी मुखाकृति और क्रियाओं में गम्भीरता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। एक प्रश्न के उत्तर में उसने बतलाया कि वह केवल अपने से सम्बन्धित घटनाओं और संस्मरणों का उल्लेख कर सकती है, किन्तु पूर्व जन्मों में उसके गाँव, शहर या देश में कौन से और किस प्रकार के परिवर्तन हुए, उसका उसे ख्याल नहीं है। कुमारी स्वर्णलता हर प्रकार के लालच और प्रलोभन से दूर है और वह यही इच्छा रखती है कि जिस प्रकार कटनी में पाठक परिवार में सबसे बड़ी होने पर उसका शासन चलता था, ठीक उसी प्रकार उसके आदेश का पालन दूसरे इस जन्म में भी करें। साथ ही उसका आकर्षण कटनी और छतरपुर दोनों के प्रति समान है और वह दोनों स्थानों पर रहना चाहती है। ★

विज्ञान वार्ता

पेट्रोलियम उद्योग विकास की शताब्दी

[ले०—श्री रमेशचन्द्रसिंह एम० काम० कलकत्ता]

आज से १०० वर्ष २७ अगस्त को एडविन एल० ड्रेक नामक एक धुन के पक्के व्यक्ति ने पृथ्वी में एक सुराख किया था। मनुष्य के साहस और सूझ-के इतिहास में यह साहसपूर्ण प्रयोग सदैव स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेगा। अपने निश्चय के पक्के इस साहसी व्यक्ति के अटल विश्वास, निश्चय और कठोर परिश्रम के फल-स्वरूप ही संसार में एक ऐसे उद्योग का विकास हुआ, जिस पर आज की विकासोन्मुख और प्रगतिशील मानव सभ्यता आधारित है। यह उद्योग आज कल पेट्रोलियम उद्योग के नाम से विख्यात है। अपने जन्म के कुछ दिनों के अन्दर ही इसने मानव सभ्यता को नई शक्ति, स्फूर्ति और चेतना प्रदान की और इसके फलस्वरूप विकास की गति सहसा अधिक बलवती हो उठी। संक्षेप में, इसने कुछ ही दिनों में इस युग और पृथ्वी का नक्शा ही बदल दिया। पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त इस तरल खनिज द्रव से आज वे सभी मशीनें, परिवहन साधन और यन्त्र चल रहे हैं, जिन्होंने मानव सभ्यता को उत्कर्ष और समृद्धि के पथ पर आरूढ़ किया है। और अब तो न केवल संचालन-शक्ति प्राप्त करने के लिए बल्कि अनेकानेक प्रकार की वस्तुएं तैयार करने के लिये भी बड़े पैमाने पर ोग हो रहा है। इससे बनी वस्तुएं आज पैट्रोलियम-जनित वस्तुओं के नाम से विश्व विख्यात हैं और संसार के प्रत्येक कोने में उनका बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है।

प्राचीन इतिहास

प्रारम्भ में इसे पैट्रोलियम न कह कर चट्टान से निकलने वाला तेल कहा जाता था और कई सदियों से लोग उसके अस्तित्व से भली प्रकार परिचित थे। बाइबिल में इस प्रकार के 'तेल' का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। प्राचीन समय में मिस्र में इसका उपयोग ममियों (मृत शरीर) पर मले जाने वाले लेप और रोगन तैयार करने, जल-निरोधक वस्तुएं तैयार करने और चिकनाई पैदा करने वाले पदार्थ तैयार करने के लिये किया जाता था। कई सदियों पूर्व चीनवासी प्राकृतिक गैस का उपयोग ताप पैदा करने के लिए करते थे। जिन स्थानों पर तेल रिसता था, वहां से पोले बांसों के नलों ... से वे प्राकृतिक गैस को इच्छित स्थान पर ले जाते थे और आवश्यकतानुसार उसका प्रयोग करते थे।

प्राचीन काल में मिस्र और चीन में इसका बड़े ही सीमित पैमाने पर उपयोग होता था और इसे विशाल परिमाण में प्राप्त करने की विधियों से उस समय के लोग परिचित नहीं थे। पहली बार २७ अगस्त, १८५९ को टिटूसविल (पेन्सेल्वेनिया) में पृथ्वी में छिद्र कर बड़े पैमाने पर उक्त तेल प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया।

यह कार्य करने वाला व्यक्ति एड-विन एल० ड्रेक था। 'सेनेका आयल कम्पनी' के जनरल एजेण्ट के रूप में उसने टिटूसविल (पैन्सेल्वेनिया) में जाकर बड़ी तादाद में तेल प्राप्त करने के उपायों की खोज करने का गुरुतर कार्य सम्पन्न किया।

पेन्सेल्वेनिया में पहुँचने के बाद कुछ माह तक ड्रेक तेल प्राप्त करने के अनेक उपायों पर विचार करता रहा वह इन उपायों द्वारा प्रतिदिन १० गैलन से अधिक तेल प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सका। उसने एक नई सूझ से काम लिया और अपने कुछ मजदूरों को एक कुआं खोदने के कार्य में लगा दिया, परन्तु उसका यह प्रयत्न भी असफल रहा। ड्रेक हार मानने वाला व्यक्ति न था। अनेक परीक्षणों में असफल होने पर भी, उसने अपने साहस और दृढ़ निश्चय में रत्ती भर भी कमी न आने दी और नई स्फूर्ति से पुनः अपने कार्य में जुट गया। अब उसने पृथ्वी में छेद करने की उस विधि का उपयोग करने का निर्णय किया, जिसका उपयोग निकट ही नमक निका लने के कार्य में संलग्न खनिक कर रहे थे।

सूराख करने वाले कुशल कारीगर के अभाव में १८५९ की वसन्त तक काम रुका रहा। अन्त में विलियम ए० स्मिथ (अंकल बेली) नामक एक लोहार यह कार्य करने के लिए सहमत हो गया। योजना पर पूरे जोर शोर से कार्य शुरू हुआ। प्रतिदिन लगभग तीन फुट गहरी खुदाई होती थी। इस समय तक ड्रेक की कम्पनी योजना पर लगभग २५०० डालर खर्च कर चुकी थी और आगे और अधिक खर्च करनेके लिए प्रस्तुत न थी। (शेष अगले पृष्ठ पर)

बाल-विनोद

अनमोल रत्न

१—मनुष्य का मन ही उसे अमीर और गरीब बनाता है। —शेक्सपीयर

२—प्रेम मनुष्य का दूसरा नाम है। —म० गांधी

३—प्रेम वह हथियार है जो शत्रु को मित्र बना देता है। —म० गांधी

४—स्वतन्त्रता का अभाव शांति को खतरे में डाल देता है। —नेहरू

५—तरीके के साथ दिमाग भी बदलने चाहिये। —नेहरू

६—धैर्य रखना कठिन है पर उसका फल मीठा होता है। —रूसो

—सुदेश, फगवाड़ा

रत्नकण

१—परमात्मा पूजा का नहीं प्रेम का भूखा है। —दयानन्द सरस्वती

२—अगर गुलामी पाप नहीं तो पाप कुछ नहीं। —अब्राहमलिंकन

३—दण्ड देने का अधिकार उसी को है जो प्रेम करता है। —रवीन्द्रनाथ

४—श्रम करने में ही मानव की महत्ता है। —विनोबा

५—मनुष्य स्वयं ही अपने भाग्य का विधाता है। —स्वामी रामतीर्थ

६—हिंसा की तेजी उसके पतन का चिह्न है। —नेहरू

—कृष्णकुमार विनोद, लखनऊ

भूलें सदा याद रक्खें

१—अपना भेद किसी दूसरे को बताकर उससे प्रार्थना करना कि वह और किसी को न बतावे। भूल है।

२—अपनी आय से अधिक खर्च करना भूल है।

३—अपने माता पिता की सेवा न करना और अपनी सन्तान से सेवा की आशा करना भूल है।

४—दूसरों के कष्ट दूर करने में हिस्सा न लेना और दूसरों से आशा रखना कि वह आपके कष्ट दूर करने में सहायता देगा भूल है।

५—दूसरों की बुराई करना और स्वयं सुखपूर्वक रहने की आशा करना भूल है। —मंजुलता, कलकत्ता

स्वास्थ्य रक्षा

चाट, मिर्च, और तेल खटाई,
कभी न खाना मेरे भाई।
खाकर तुम बीमार रहोगे,
दुखिया और लाचार रहोगे।
दूध - दही-घी - मक्खन खाओ,
अपनी शक्ति खूब बढ़ाओ।
जो बच्चा प्रतिदिन फल खाता,
खून बदन में है बढ़ जाता।
मेरी बात कभी मत भूलो,
फल खाओ और फलो फूलो।

—प्रेमकुमार देहली

मा मारेगी

अगर हाथ देंगे नाली में, मा मारेगी।
अगर साथ देंगे जाली में, मा मारेगी।
कपड़े मैले नहीं करेंगे, मा मारेगी।
मिट्टी सिर में नहीं भरेंगे मा मारेगी।
लेंगे नहीं उधार किसी से, मा मारेगी।
करें नहीं तकरार किसी से, मा मारेगी।
अगर तोड़ते रहें काठ तो, मा मारेगी।
अगर खेलते रहें काठ तो, मा मारेगी।
बेबी को यदि तंग किया तो, मा मारेगी।
जेबों में यदि रंग भरा तो मा मारेगी।
नहीं किया यदि पाठ याद तो, मा मारेगी।
ली मटरे की अगर चाट तो, मा मारेगी।

—ज्योतिप्रभा, नरसिंहपुर

आर्यमित्र बाल-परिषद्

मैं आर्यमित्र बाल-परिषद् का सदस्य बनना चाहता हूं। मैं परिषद् के नियमों, उपदेशों व शिक्षाओं का पालन किया करूंगा।

नाम ....

आयु .... वर्ष ....

पूरा पता ....

....

आपकी विशेष प्रवृत्तियां ....

(पिछले पृष्ठ का शेष)

परन्तु ड्रेक ने और ५०० डालरें की सहायता से खुदाई का कार्य जारी रखा। अब तक छेद करने वाला पाइप ६६॥ फुट की गहराई तक पहुँच गया था। दूसरे दिन जब 'अंकिल बेली' ने पम्प की जांच की तो उसे पाइप के अन्दर तेल की मोजूदगी का पता चला यह देखकर उसके विस्मय का ठिकाना न रहा और वह हर्षोन्मत्त होकर चिल्ला उठा—हमने तेल पा लिया। वह रविवार का दिन था। उसके गले से निकला वह स्वर टिट्सविल कस्बे में बिजली की तेजी से फैल गया और आबाल, वृद्ध, वनिताओं की भीड़ घटनास्थल पर एकत्र हो गई। उस दिन कस्बे में लोगों ने धूमधाम से ड्रेक की सफलता और एक नये उद्योग के उदय की खुशी में शानदार समारोह मनाया।

खोज का प्रभाव

विशाल परिमाण में मिट्टी का तेल प्राप्त करने के उक्त तरीके की खोज होने के फलस्वरूप संसार ने कुछ ही समय में विज्ञान और आर्थिक विकास के क्षेत्र में जो अद्वितीय प्रगति की उसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। यह पता चलते ही मिट्टी का तेल बड़े परिमाण में प्राप्त करने का तरीका खोज निकाला गया है, व्यवसाइयों की बाढ़ आनी शुरू हो गई और अल्पकाल में ही टिट्सविल तेल क्षेत्र का एक प्रमुख नगर बन गया। यहीं पर तेल उद्योग की आधारभूत विधियों में और अधिक सुधार किये गए।

१०० वर्षों की प्रगति

१०० वर्ष की इस अवधि में तेल उद्योग का इतना अधिक विस्तार हुआ है कि संसार का कोई कोना ऐसा नहीं [illegible] पहुंच न [illegible] अमेरिका में [illegible] कुल तेल उत्पादन [illegible] की जाती है। तेल उत्पादन का [illegible] में संसार में अमेरिका का [illegible] नम्बर आता है। वेनेजुएला के अलावा कोलम्बिया, अर्जेन्टाइना [illegible] इनमें भी तेल निकाला [illegible] है। संसार के तेल भण्डार का ८ प्रतिशत भाग दक्षिणी अमेरिका में है तथा संसार के कुल तेल उत्पादन का लगभग का लगभग १६ प्रतिशत भाग यह क्षेत्र सप्लाई करता है। कनाडा और मेक्सिको में भी तेल के भण्डार विद्यमान हैं।

संसार के [illegible] तेल भण्डार का ६० प्रतिशत [illegible] एशिया में है। आज कल संसार में जितना तेल प्रति वर्ष निकाला जाता है, उसका २० प्रतिशत इस क्षेत्र से प्राप्त होता है। एशिया के तेल भण्डार का ६५ प्रतिशत तथा कुल तेल उत्पादन का १० प्रतिशत भाग कुछ थोड़े से अरब देशों—बेहारीन, ईरान, इराक कुवायत, कतार और सऊदी अरब तक ही सीमित है।

यूरोप में संसार के कुल तेल भंडार का केवल ७ प्रतिशत भाग है।

अभी हाल में उत्तरी अफ्रीका में तेल विशाल भण्डारों का पता चला है। न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, और प्रशान्त महासागर के क्षेत्र में बहुत कम तेल पाया जाता है, परन्तु सम्भव है कि खोज के फलस्वरूप इन क्षेत्रों में भी और तेल भण्डारों की उपस्थिति का पता चले।

पेट्रोलियम की सहायता से आज हजारों प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इनमें कृत्रिम रबड़, प्लास्टिक, रेशे, रंग-रोगन, औषधियां, रासायनिक खाद, कीटमार दवाएं इत्यादि शामिल हैं।

तेल-उद्योग के शताब्दी समारोह के अवसर पर अमेरिका में कई विशेष समारोहों का आयोजन किया गया है। २३ अगस्त से २९ अगस्त तक टिट्सविल धूमधाम और आकर्षण का केन्द्र रहा। इस अवसर पर परेडों, नृत्यों और पेट्रोलियम उद्योग प्रदर्शनियों की विशेष रूप से व्यवस्था की गई। यही नहीं अमेरिकी पेट्रोलियम उद्योग के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में ४ सेंट का डाक-टिकट भी जारी किया गया है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

'वातो वा मनो वा गन्धर्वं'। कोई भी स्वेच्छाचारी कह सकता है कि यहां पर 'वातो वामन' इस प्रकार से दो ही पद हैं और वायु का विशेषण 'वामन' है। वायु का वामन [illegible] का घनीभूत होना, किसी [illegible] पदार्थ में दबाव द्वारा भर दिया जाने से हो जाता है। ऐसी वामन वायु अनेक भार सहने और शक्ति उत्पादन के काम आती है और इस आधार पर वायु भार [illegible] तथा अग्नि के द्वारा उसके विस्तार एवं व्यापक होने के बारे में उत्तम रोचक व्याख्यान दिया जा सकता है परन्तु यह सब वेदार्थ या मन्त्रार्थ नहीं अपितु मन्त्र का अनर्थ ही है। यहां पर 'वातो वा मन' इस प्रकार तीन पद हैं। मन्त्र में यदि 'वातो वामन' इस प्रकार दो पद ही होते तो वातोवामन इस प्रकार स्वर होते। परन्तु वेदमन्त्रों के स्वर वातोवामनः इस प्रकार हैं। अतः 'वामन' पद नहीं अपितु 'वामन' ये दोनों अलग-अलग ही हैं। यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। ★

अत्यन्तावश्यक-पत्र

श्रीमन्महोदय, नमस्ते!

मथुरा के समारोह की सफलता के लिये आशा है कि आप प्रयत्नशील होंगे [illegible] इस कार्य को आप अपने क्षेत्र में विशेष प्रगति दे सकें और प्रगति का सिंहावलोकन कर सकें। इस दृष्टि से समिति की दिनांक २१-८-५९ की बैठक में निश्चय किया गया है कि प्रदेश के जिलों में कार्यकर्त्ताओं की बैठक आगामी ६ सितम्बर ५९ रविवार को बुलायी जाय। प्रत्येक स्थान पर सभाधिकारियों का पहुँचना सम्भव नहीं है। अतः यह उचित समझा गया है कि प्रत्येक जिले के सभासद अन्तरङ्ग सदस्य तथा जिले के प्रमुख कार्यकर्त्ता और जिले की प्रमुख आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्री आपस में एक बैठक अवश्य करलें। इस बैठक में निम्न विचार-विनिमय होना चाहिए।

१—मथुरा समारोह के सम्बन्ध में स्थानीय विज्ञप्तियाँ आदि छपाने और बटवाने की व्यवस्था करना।

२—समारोह व स्मारक के निमित्त धन संग्रह (निश्चित कोटे) की स्थिति पर विचार और धन संग्रह करके भेजना।

३—८ से १५ सितम्बर तक 'दयानन्द दीक्षा शताब्दि सन्देश' सप्ताह मनाने की व्यवस्था करना।

४—जिले से समारोह में पहुँचने वाले व्यक्तियों के सम्बन्ध में सम्भावित अनुमान से सूचित करना।

५—जिले के व्यक्तियों के लिए आवश्यक प्रबन्ध आदि की सूचना तैयार करना।

६—जिले का प्रमुख व्यक्ति निश्चित करना जो समारोह के अवसर पर समिति के प्रबन्ध विभाग से सम्पर्क रख सके और जिले के व्यक्तियों की सुविधाओं के लिए प्रयत्नशील हो।

७—जिले की संस्थाओं में विशेष रूप से धन संग्रह करना और समारोह में उनके पहुँचने के विषय में जानकारी।

टि० १—जो भी निश्चय हो उनकी सूचना अविलम्ब कार्यालय को दें।

टि० २—धन संग्रह कार्य उपरोक्त सप्ताह में ही समाप्त हो जाना चाहिए, इसके लिये आप एक डेपूटेशन बनाकर जिले की समस्त समाजों में भ्रमण करने के लिए इस सप्ताह अपना पूरा समय देने की कृपा करें ताकि धनाभाव के कारण कार्य की प्रगति न रुके। समय बहुत थोड़ा रह गया है और कार्य बहुत है।

निवेदक—

उमेशचन्द्र स्नातक, एम. ए.	प्रेमचन्द्र शर्मा, एम एस सी
मन्त्री	मन्त्री
दयानन्द दीक्षा शताब्दी, गुरु विरजानन्द दीक्षा-शताब्दी, जयन्ती, अभिनन्दन समारोह समिति	आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

दयानन्द दीक्षा शताब्दि सन्देश

उत्तर प्रदेशीय समस्त जिलास्थ आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं की ... बैठक बुलाने के लिए निम्न महानुभाव नियुक्त किये गये हैं—

नाम जिला	नाम संयोजक

१—देहरादून—श्री आचार्य बृहस्पति शास्त्री देहरादून

२—सहारनपुर—श्री तेजसिंह जी प्रधान उपसभा संयोजक, श्री चन्द्रमणि जी वैद्य सहायक संयोजक

३—मुजफ्फर नगर—श्री शेरसिंह जी कश्यप मुजफ्फर नगर

४—मेरठ—श्री रघुवीर स्वरूप जी मेरठ सदर

५—बुलन्दशहर—श्री शिवलाल जी संयोजक, श्री मोहनलाल जी वर्मा स० संयो०

६—आगरा—श्री मोहनलाल जी आर्य आगरा

७—अलीगढ़—श्री रामप्रसादजी आर्य संयोजक, श्री म०सरदारसिंहजी स० संयो०

८—मैनपुरी—श्री सरदारसिंह जी मंत्री उप सभा शिकोहाबाद

९—एटा—श्री मथुराप्रसाद जी एटा

१०—मथुरा—श्री माताप्रसाद जी मथुरा

११—झाँसी, उरई—श्री ऋषिपालसिंह जी वकील झाँसी

१२—बाँदा, हमीरपुर, महाराजपुर—श्री रामचन्द्र जी शर्मा बाँदा

१३—नैनीताल—श्री इन्द्रवर्मा जी रामनगर नैनीताल

१४—अल्मोड़ा—श्री ईश्वरलाल अग्रवाल जी

१५—गढ़वाल, टेहरी—श्री मुरलीधर जी पाण्डेय सहा० संयोजक, श्री शांतिप्रकाश जी प्रेम संयोजक

१६—बरेली—श्री चन्द्रनारायण जी एडवोकेट बरेली

१७—बदायूं—श्री रामचन्द्र जी रि० पो० मा० संयोजक, श्री वा० विशुद्धानन्द शास्त्री जी सहा० संयोजक

१८—मुरादाबाद—श्री जगन्नाथसिंहजी संयोजक, श्री विश्वनाथजी त्यागी स० संयो०

१९—रामपुर—श्री हरिप्रसाद जी धमोरा

२०—बिजनौर—श्री ईश्वर दयालु जी आर्य बिजनौर

२१—शाहजहाँपुर—श्री चोखेलाल सत्यपाल जी आर्य बिजनौर

२२—पीलीभीत—श्री रामबहादुर जी मुख्तार पूरनपुर

२३—कानपुर—श्री विद्याधर जी कानपुर संयोजक, श्री डा० शिवदत्त जी सहा० संयोजक

२४—इलाहाबाद—श्री रामकिशोरसिंहजी संयोजक, श्री विश्वप्रकाशजी सहा०संयो०

२५—फतेहपुर—श्री अवध बिहारीलाल जी फतेहपुर

२६—इटावा—श्री सुधाकर जी पाण्डेय संयोजक, श्री विश्वप्रकाश जी स० संयोजक

२७—फर्रुखाबाद—श्री नवीनचन्द्र जी आर्य फर्रुखाबाद

२८—फैजाबाद—श्री जगदीश्वरीप्रसाद जी फैजाबाद

२९—बाराबंकी—श्री राम सजीवनलाल जी बाराबंकी

३०—सुल्तानपुर—श्री मंत्री जी आ० स० सुल्तानपुर

३१—प्रतापगढ़—श्री जगन्नाथप्रसाद जी प्रतापगढ़

३२—बहराइच—श्री देवीप्रसाद जी संयोजक, श्री भोलानाथ जी स० संयोजक

३३—गोंडा—श्री सुन्दरलाल जी अग्निहोत्री बलरामपुर

३४—लखनऊ—श्री विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा संयोजक, श्री विक्रमादित्य जी वसंत सहा० संयोजक

३५—हरदोई—श्री रामस्वरूप जी शुक्ल हरदोई

३६—उन्नाव—श्री मुन्नालाल जी उन्नाव

३७—रायबरेली—श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी रायबरेली

३८—सीतापुर—श्री मथुराप्रसाद जी आर्य सीतापुर

३९—लखीमपुर खेरी—श्री शिवनारायण जी शुक्ल लखीमपुर

४०—गोरखपुर—श्री होतीलाल जी गोरखपुर

४१—बस्ती—श्री निरंकारप्रसाद जी बस्ती

४२—आजमगढ़—श्री अवधेश्वरनाथ जी आजमगढ़

४३—देवरिया—श्री प्रधान जी आ० स० देवरिया

४४—वाराणसी—श्री रावितसिंह जी संयोजक, श्री प्रि० कृष्णानन्द जी स०संयो०

४५—जौनपुर—श्री रामावतार जी जौनपुर

४६—मिर्जापुर—श्री आशाराम जी पाण्डेय मिर्जापुर

४७—गाजीपुर—श्री मंत्री जी आर्यसमाज गाजीपुर

४८—बलिया—श्री सुरेन्द्रदेव जी शास्त्री बलिया

प्रेमचन्द्र शर्मा, एम. एस. सी.
सभा-मंत्री

आर्यसमाज आगरा नगर

आर्यसमाज आगरा नगर महर्षि दयानन्द मार्ग आगरा के साप्ताहिक अधिवेशन में दि० १-८-६९ को श्री पं० जयकृष्ण जी विद्यालंकार का ओजस्वी भाषण हुआ।

१८-८-६९ को श्रावणी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। कई विद्वानों के भाषण हुए। इस पर्व का महत्व बतलाया गया।

१९-८-६९ से २५-८-६९ तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रात नित्य यज्ञ हुआ और रात्रि को ८ बजे से ९॥ बजे तक म० बलवन्तसिंह जी के भजन और श्री पं० जयकृष्ण जी विद्यालङ्कार एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत) एल० टी० शेरकोट जिला बिजनौर की वेदों की कथा होती रही। जिससे आर्य जनता पर अति उत्तम प्रभाव पड़ा। २६-८-६९ को सायंकाल के ६ बजे से ९ बजे तक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव अत्यन्त समारोह से मनाया गया। म०बलवन्तसिंहजी प्रचारक और आर्य कन्या पाठशाला माईथान की कन्याओं के भजन हुए। श्री प० विश्वबन्धु जी विद्यालङ्कार एम० ए० ठा० रामप्रसाद जी, पं० हरिशङ्कर जी शर्मा प्रधान आ० प्र० सभा म० चमनलाल जी, पं० सत्येन्द्रनाथ जी वैद्य, प्रो भूदेव जी शास्त्री म विश्वम्भर नाथ आर्य, क ओजस्वी, प्रभावशाली भाषण हुए। समाज का नवीन भवन खचाखच भरा हुआ था। २४-८-६९ चौधरी सुमेरसिंह बलिदान दिवस मनाया गया। म०विश्वम्भर नाथ आर्य का जोशीला भाषण हुआ।

—मोहनलाल आर्य
प्रधान

(२)

आर्यसमाज आगरा नगर महर्षि दयानन्द मार्ग में दिनांक १८-८-६९ को नगर की जनता की एक विशाल सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ।

"इस सभा की सम्मति है कि भारत की राष्ट्रीय एकता, सदाचार, संस्कृति तथा ज्ञान विज्ञान की सुरक्षा के लिए संस्कृत भाषा का अधिकतम प्रचार एवं प्रसार होना चाहिए। अतः यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि संस्कृत आयोग ने अपने प्रतिवेदन में जो सिफारिशें की हैं, उन्हें स्वीकार करने एव क्रियान्वित करने के लिए आवश्यक पग उठाये जावें। यह विषय भारतीय संसद के समक्ष प्रस्तुत है, अत. यह सभा सभी संसद सदस्यों से भी प्रार्थना करती है कि वे अपने बहुमूल्य मत का इस प्रतिवेदन को स्वीकार कराने के लिए उपयोग करें"

—विश्वम्भर नाथ मन्त्री

सभा की सूचनाएँ

गढ़वाल, जिले के समस्त आर्य समाजों एवं कार्यकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि 'गढ़वाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा" को उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा दि० १८ जुलाई १९६९ के निश्चयानुसार सर्व सम्मति से सभा में प्रविष्ट कर लिया गया है। अत. गढ़वाल जिले के समस्त समाज एवं आर्यभाइयों से निवेदन है कि जिले में वैदिक धर्म प्रचार की व्यवस्था करने की कृपा करें।

गढ़वाल प्रचार के लिये सभा की ओर से श्री तोताराम जी जुगराण नियुक्त हैं। उनको सूचित किया जा रहा है कि गढ़वाल उप प्रतिनिधि सभा के आदेश से कार्य करें शिथिल समाजों को जागृत करवाने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये।

जयन्ती समारोह की सूचना

सभा कार्यालय में ॥) व १), ५) वाले नोट(रसीद) समाप्त हो गये थे, अब वह पुन छप कर तैयार हो गये हैं जहां२ से उनकी मॉग आई सब स्थानो में वह भेज दिए गये हैं, और कार्यालय से भेजे जा रहे हैं। जिन समाजो ने नोट्स अभी तक नहीं मंगाये हैं, उन्हें चाहिये कि सभा कार्यालय से तुरन्त पत्र भेजकर मंगालें। अन्यथा पछताना पड़ेगा। जयन्ती अभिनन्दन आगामी मास में मथुरा नगरी में बड़े समारोह के साथ मनाये जाने की तैयारियां प्रारम्भ हो रही है। जनता से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में मथुरा पहुँचने की तैयारी करें।

शोक-समाचार

आर्य जनता को बड़े दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि इस सभा के पूर्व उपदेशक बरेली निवासी श्री प० राजेन्द्रदेव जी आर्य मुसाफिर का दि० २६ अगस्त १९६९ को प्रात काल ३ बजे स्वर्गवास हो गया। सभा को तथा सभा के कर्मचारियो को यह ज्ञात कर दु ख हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करे और दुखित परिवार के साथ समवेदना प्रगट करते हुए प्रभू उन्हें सान्त्वना प्रदान करें।

—सभा मन्त्री

सार सूचना

आर्यसमाज सहारनपुर में वेद प्रचार सप्ताह १८ अगस्त से २५ अगस्त २१ तक मनाया गया इस अवसर पर प्रातः यज्ञ उपदेश तथा रात्रि को सार्वजनिक सभा का आयोजन रहा। सभी दिन प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ के सुन्दर उपदेश हुए जिससे जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। —मन्त्री

प्रचारिका चाहिए ?

आर्यसमाज के मन्तव्यों तथा उद्देश्यों का प्रचार करने के लिए यदि आपको एक महिला कार्यकर्ता की सेवाओं की आवश्यकता है तो लिखकर समय निश्चित कर लें। ईसाई-मत विरोध प्रचार का विशेष अनुभव है तथा की आर्यसमाजों की स्थापना और सचालन का भी अनुभव प्राप्त है। आवश्यकता होने पर मन्त्री आर्यसमाज देहरादून से सम्पर्क स्थापित करें। २ ए १४ ३५

दयानन्द वि० महानगर लखनऊ

डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी कानपुर ने १६ अगस्त से लखनऊ के महानगर उपनिवेश में दयानन्द विद्यालय की स्थापना की है। यह विद्यालय पूर्व प्राथमिक कक्षाओं की शिक्षा देगा। यद्यपि डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी कानपुर अपने प्रदेश में लगभग १५ उच्च शिक्षा-सस्थाओं का सचालन कर रही है। छोटे छोटे बच्चों की यह प्रथम शिक्षा सस्था है, जिसका कि सचालन डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी ने अपने हाथ में लिया है। डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी को इस कार्य के लिये लखनऊ नगरपालिका ने ३॥ एकड़ भूमि महानगर में दी है। अभी इस विद्यालय का प्रारम्भ एक किराये के भवन में किया गया है।

मदनगोपाल शुक्ल

आयर्वेद एवं तिब का विकास

[ले०—श्री श्रीगोपाल]

आयुर्वेद और तिब हमारी प्राचीन चिकित्सा प्रणालियां हैं। एलोपैथिक आदि आधुनिक पद्धतियों के आविर्भाव के पूर्व इन्हीं के द्वारा रोग ग्रसित जनता का कल्याण हुआ करता था। प्राचीनकाल में ही ये विकास की दिशा में बहुत आगे बढ़ चुकी थीं। यह हमारा दुर्भाग्य था कि परिस्थितियों वश ये नष्टप्राय हो गयी थीं और हम इनके महत्व को भूलने से लगे थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की हमारी लोकप्रिय सरकार ने इन प्राचीन पद्धतियों का पुनरुद्धार करने का निश्चय किया क्योंकि प्राचीन और आधुनिक पद्धतियों के तुलनात्मक अध्ययन और उपयोग से ही हम रोग उन्मूलन की दिशा में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। प्रथम और द्वितीय आयोजनों के अन्तर्गत प्रदेश में आयुर्वेद और तिब का समुचित विकास और प्रसार किया गया है।

चिकित्सालयों की स्थापना

कुछ वर्ष पूर्व हमारे प्रदेश में अच्छे चिकित्सालयों की बहुत कमी थी। इस कमी को दूर करने की दृष्टि से सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सालय खोलने की एक व्यापक योजना कार्यान्वित की इसके अन्तर्गत खुलने वाले चिकित्सालयों की संख्या अब ९१० तक पहुंच चुकी है। प्रदेश में लगभग इतने ही आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सालय और हैं जो जिला परिषदों और नगरपालिकाओं द्वारा संचालित हैं। श्रम विभाग एव हरिजन कल्याण विभाग द्वारा भी कुछ चिकित्सालय चलाये जा रहे हैं। सहकारी गन्ना समितियों ने भी कुछ चिकित्सालयों की स्थापना की है। इन सभी के द्वारा प्रति वर्ष प्रदेश में लगभग दो करोड़ रोगियों का इलाज होता है।

संस्थाओं को अनुदान

निजी वैद्यों, हकीमों और चिकित्सालयों को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से सरकार प्रतिवर्ष लगभग २ करोड़ रुपए का अनुदान देती है। इसी प्रकार निजी संस्थाओं और विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित आयुर्वेदिक एवं यूनानी महाविद्यालयों को भी प्रोत्साहन के रूप में सरकार प्रति वर्ष लगभग ५ लाख रु० प्रदान करती है।

राजकीय औषधि निर्माणशाला

हमारी ये प्राचीन चिकित्सा पद्धतियां तभी लोकप्रिय हो सकती हैं जब जनता को विशुद्ध और प्रामाणिक औषधियां मिलें। सरकार ने सन् १९४१ में लखनऊ में राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधि निर्माणशाला की स्थापना कर इस दिशा में ठोस कदम उठाया यह संस्था अपने दायित्व को भलीभांति निर्वाह कर रही है।

राजकीय आयुर्वेदिक कालेज

इस कालेज की स्थापना सरकार से सन् १९५४ में लखनऊ में की। इसका पर्याप्त विकास हो चुका है तथा अब इससे एक अस्पताल भी सम्बद्ध है। अस्पताल में १००शय्याओं की व्यवस्था है। सरकार इस संस्था के विकासार्थ प्रयत्नशील है और आशा है कि निकट भविष्य मे ही यह एक आदर्श संस्था बन जायगी। इसके विकास के साथ, प्रदेश से प्रशिक्षित चिकित्सको का अभाव भी दूर हो जायगा। कालेज के लिये नये भवनो का निर्माण हो चुका है। कुशल अध्यापको की नियुक्ति की जा चुकी है। साज सज्जा की भी व्यवस्था हो चुकी है।

आयुर्वेदिक एवं तिब्बी अकादमी

इस अकादमी की स्थापना हमारे प्रदेश में सन् १९५० में की गयी। यह अकादमी आयुर्वेदिक एव तिब्बती साहित्य को समृद्धि करने के लिए प्रयत्नशील है।

फारमाकोपिया समिति

इस समिति की कभी स्थापना सन् १९५० में की गयी तथा ३१ मार्च सन् १९५६ तक यह कार्य करती रही। इस समिति ने १००० आयुर्वेदिक एव यूनानी औषधियोंगों तथा कतिपय एकौषधि आलेखों का सम्पादन किया है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि भारी संख्या में चिकित्सालयों और शिक्षण संस्थाओं की स्थापना के फलस्वरूप प्रदेश में हमारी इन प्राचीन चिकित्सा पद्धतियो का इस अल्प अवधि में ही पर्याप्त विकास हो चुका है। प्रथम आयोजना काल में औषधि निर्माणशाला का विकास किया गया तथा ५३ नवीन राजकीय आयुर्वेदिक एव यूनानी चिकित्सालय खोले गये, द्वितीय आयोजना के अन्तर्गत भी नवीन चिकित्सालयों की स्थापना और औषधि निर्माणशाला का विकास, राजकीय आयुर्वेदिक कालेज का प्रसार, साजसज्जा की व्यवस्था, चिकित्सकों की नियुक्ति तथा अनुदान योजना का कार्य सुचारुरूप से चलता रहा। शीघ्र ही हमारी ये प्राचीन चिकित्सा पद्धतियां अपने पूर्व गौरव को प्राप्त कर, प्रगति के पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ती हुई अधिकाधिक व्यक्तियो का कल्याण करने लगेगें। हर्ष का विषय है कि पश्चिम के देशों ने भी अब इनका महत्व समझ लिया है, जैसा कि अमेरिका के डा० अलेक्जेन्डर मार्को के इस कथन से स्पष्ट है, जैसे जहा भी जाता हूँ आयुर्वेद का गुणगान करता हूं।' रूस के डाइरेक्टर आफ आर्गनाइजेशन श्री ए० एन० सेमेस्को ने भी एक भारतीय समाचार पत्र के सम्पादक को यह सूचना दी थी कि रूस में भी आयुर्वेद शास्त्र विषयक प्राचीन ऐतिहासिक सामग्री के चयन का कार्य तथा इस पद्धति का उपयोग आरम्भ कर दिया गया है। आयुर्वेद का भविष्य उज्ज्वल है तथा इससे यह आशा की जाती है कि यह अपना अक्षय कोष विश्व क कल्याण के लिए खोल देगा।

★

सार्वदेशिक सभा द्वारा सत्यार्थप्रकाश के प्रामाणिक सम्पादन का कार्य प्रारम्भ

(आर्य विद्वान अपनी-अपनी सामग्री और विचार सभा को भेजें राजाधिराज शाहपुराधीश श्री सुदर्शनदेव जी महाराज की ऋषि के ग्रन्थों के सम्बन्ध में उत्कट इच्छा)

[ले०—श्री आचार्य विश्वश्रवा प्रधान मन्त्री सार्वदेशिक धर्मार्य सभा देहली]

राजाधिराज शाहपुराधीश श्री सुदर्शन देव जी की यह उत्कट अभिलाषा प्रकट की है कि ऋषि के मुद्रित अमुद्रित समस्त ग्रन्थों को अच्छे रूप में देखना चाहते हैं। तदनुरूप सार्वदेशिक सभा ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रामाणिक सस्करण निकालने का निश्चय किया ह सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय सस्करण ऋषि क जीवन काल में छपा और प्रेस कापी तैयार हुई तब से अब तक अनेक सस्करण सत्यार्थ प्रकाश क निकल चुके है। पर दु ख के साथ कहना पड़ता ह कि सत्यार्थ प्रकाश में अनेक परिवर्तन प्रकाशको ने स्वेच्छा से कर दिये ह। वे प्रकाशक समझते स्वय नहीं थे और शुद्ध करते चले गये। यह स्थिति ऋषि के सब ग्रन्थो के सम्बन्ध में छापने वालो ने की ह। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थो की रजिस्ट्री कराई थी कि कोई इनको न छापे केवल परोपकारिणी सभा छापे। पर यह राजकीय रजिस्ट्री निश्चित समय तक ही चलती ह समय बीत जाने पर प्रकाशको ने नाजायज फायदा उठाया और ऋषि क ग्रन्थो को सब छापने लग गये है। यदि आर्यो क हृदय म ऋषि की रजिस्ट्री की भावना होती तो समय बीतने पर भी ऋषि क ग्रन्थ परोपकारिणी सभा द्वारा ही छपने देते तो अधिक परिवर्तन न होता।

सार्वदेशिक सभा ने भी आज तक सत्यार्थ प्रकाश आदि किसी ग्रन्थ को नहीं छापा परोपकारिणी सभा को ही विशेषता दी है। कुछ लोग दिल्ली के सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड प्रेस के छपे सत्यार्थ प्रकाश आदि को सार्वदेशिक सभा का प्रकाशन समझ बैठते हैं यह एक भ्रान्ति है उनका प्रकाशन सार्वदेशिक सभा का प्रकाशन नहीं है अपितु एक कम्पनी का प्रकाशन ह। हमारी सभा ने आज तक कोई ऋषि का ग्रन्थ नहा छापा है।

सार्वदेशिक सभा अब पहली बार सत्यार्थ प्रकाश का सम्पादन प्रारम्भ करा रही है और यह कार्य परोपकारिणी सभा क सहयोग से होगा। और वह एक प्रकार का सम्मिलित प्रकाशन होगा। जो प्रेस कापी बनकर तैयार होगी वह ही उ ना स्थानो पर छपेगा। ऐसी मुझे दृढ़ आशा है।

(आर्य विद्वान् अपना कर्तव्य अब पालन करें)।

सत्यार्थ प्रकाश क पाठो के सम्बन्ध में सब आर्य विद्वान् कुछ न कुछ सामग्री अपने पास रखते हैं। एक एक की सामग्री कुछ न कर सकेगी और उनके विचार उनके साथ चले जावेंगे सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी विचारो का पूर्ण सम्पादन नहीं हो सकेगा। सबके बिखरे विचार इधर-उधर पड़े रह जावेंगे। अत सब आर्य विद्वान अपना अपना परिश्रम अब सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में सभा को भेजें उसकी प्रेस कापी तैयार करके आर्य विद्वानो की सब बातों पर सब मिलकर विचार करें इस प्रकार एक आदर्श सस्करण सत्यार्थ प्रकाश का तैयार हो जावेगा उन समस्त विद्वानो की सूची धन्यवाद के रूप में प्रकाशित की जावेगी और जो अपना विचार अपनी ही तिजोरी में रखना चाहे उन को फिर कहने सुनने का अवसर न होगा जब सभा सबको सादर निमन्त्रित करती ह तो ऋषि के अनुयायियो को देवताओ के समान सम्मिलित पुरुषार्थ करना चाहिये। यही ऋषि तर्पण है सार्वदेशिक सभा द्वारा इस प्रार्थना पर समस्त आर्य विद्वान अपना कर्तव्य सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में प्रारम्भ कर देंगे ऐसी दृढ़ आशा है।

सत्यार्थ प्रकाश क पाठो के सम्बन्ध मे सत्यार्थ प्रकाश के प्रमाणो के सम्बन्ध में जो जिसको वक्तव्य हो जो अशुद्धि सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय सस्करण दिखाई देती हो उनका निर्देश सत्यार्थ प्रकाश का पाठक सभा को करा सकता है उस पर अवश्य दिया जावेगा।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

भाद्र १५, शक १८८१ भाद्र शुक्ला ४
(ता० १० सितम्बर १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

उत्तर प्रदेश में पशुधन विकास

[ले०—श्री श्रीगोपाल]

पशुधन हमारे लिए सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है। कृषि प्रधान देश में इसकी रक्षा और विकास के लिये सुसंगठित प्रयत्न अपेक्षित हैं क्योंकि इसका जन जीवन से सीधा सम्बन्ध है। इसके ह्रास में हमारे स्वास्थ्य और सम्पन्नता का ह्रास तथा इसके विकास में हमारी आर्थिक और सामाजिक उन्नति निहित है। हमारी लोकप्रिय सरकार ने इस तथ्य को ध्यान में रखकर अपने दोनों पंचवर्षीय आयोजनों में पशुधन की उन्नति सम्बन्धी कार्यक्रम को विशेष स्थान दिया है। विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत जोरदार प्रयत्न हुये हैं जिनके फलस्वरूप आज हमारा प्रदेश इस दिशा में बहुत कुछ अंशो में समृद्धिशाली हो चुका है।

नस्ल सुधार कार्य पर द्वितीय आयोजन के अन्तर्गत ४३७.८६ लाख रुपये खर्च करने का प्रस्ताव है। आयोजन के प्रथम दो वर्षों में इस पर ६८.०२६ लाख रुपये खर्च किये गये हैं। सन् १९५६ ५७ में ६ मुख्य ग्राम केन्द्रों का प्रसार हुआ, ग्रामीण क्षेत्रों में कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों सहित २ नवीन मुख्य ग्राम खण्डों की स्थापना हुई २५० बछड़ों के पालन पोषण के लिए वित्तीय सहायता दी गयी तथा २ पशु प्रजनन केन्द्रों की स्थापना हुई। अलीगढ़ बिजनौर, इटावा, गोरखपुर और बाराबंकी स्थित पशु चिकित्सालयों का प्रदेशीकरण किया गया। इसके अतिरिक्त अस्पतालों के लिये भवन निर्माण कार्य भी चलता रहा। द्वितीय आयोजन क दूसरे वर्ष (१९५७ ५८) ७०१४० कृत्रिम गर्भाधान किये गये तथा ३११७४ बेकार सांडों को बधिया किया गया। ६६ ७२ लाख पशुओं को संक्रामक रोगों से मुक्त रखने के लिये टीके लगाये गये। बादशाह बाग (लखनऊ) स्थित बायलाजिकल प्राडक्ट्स सेक्शन में लगभग ३११३१३२१० जैविक औषधियों की मात्राओं का उत्पादन हुआ। इसके अतिरिक्त पशुपालन के उन्नत ढंगों को प्रदर्शित करने के लिये ४०० एक दिवसीय प्रदर्शन, ५० जिला प्रदर्शन तथा प्रादेशिक प्रदर्शन, आयोजित किया पशुधन सुपरवाइजरों, स्टाकमैनों डरों तथा चिकित्सकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलता रहा।

...जन के तीसरे वर्ष(१९५८ एक कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र तीन पशु प्रजनन केन्द्रों की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया था जो लगभग पूरा हो चुका है। प्रदेश के चुने हुये क्षेत्रों में तीन राजकीय तथा एक गैर सरकारी गो सदन खोले गये हैं। इस वर्ष पराश्रमोगी रोगों से ग्रसित पशुधन की सामूहिक चिकित्सा के लिये ५ केन्द्रो की स्थापना की गई तथा खीरी, बादा, गोरखपुर और गोंडा में पौंकनी निरोध योजना का प्रसार किया गया। बायलाजिकल प्राडक्टस डिवीजन बादशाह बाग (लखनऊ के विस्तार का कार्य भी इस वर्ष पूरा हुआ है। यह भी प्रस्ताव है कि शीघ्र ही प्रदेश में पशुपालन सर्किलों की संख्या ६ से बढ़ाकर १० कर दी जाय जिससे कि पशुपालन कार्यक्रम को उचित महत्त्व, पथ प्रदर्शन तथा टेक्निकल सुविधाए प्राप्त हो सकें।

पशुधन की उन्नति का हमने जो स्वप्न देखा था उसे साकार करने के लिए सुनियोजित प्रयत्न प्रथम पंचवर्षीय आयोजनाकाल से आरम्भ किये गये थे। अतएव उक्त काल की उपलब्धियों पर भी एक दृष्टि डालना अनुचित न होगा।

प्रथम आयोजना के अन्तर्गत शीघ्र सफलता प्राप्त करने की दृष्टि से सन् १९५१ ५२ में केन्द्र ग्राम योजना कार्यान्वित की गई। आयोजना काल में प्रदेश में ४२ कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों तथा १५२ केन्द्र ग्रामों की स्थापना की गयी। इन केन्द्रों में कुल १६४८००० रुपया खर्च किये गये। इन चुने स्थलो में १८५०४ गायों और भैंसों का गर्भाधान कराया गया तथा ५५३८३ पशुओं को बधिया किया गया। गरजियासोटं (नैनीताल) और मलगवा (इटावा) में दो गौ सदनों की स्थापना की गयी जिन पर कुल २३०००० रु० खर्च हुए। इन गौ सदनों में ३०४६ पशु रखे गये। आयोजनाकाल में पशु चिकित्सालयों की संख्या २२७ से बढ़कर २७१ हो गई। प्रदेश में पशुओं की चिकित्सा की पर्याप्त व्यवस्था की गयी। बादशाहबाग (लखनऊ)स्थित बायलाजिकल प्राडक्ट्स सेक्शन में १२४ लाख मात्रा दवाओं का निर्माण किया गया। साथ ही पशुओं को भारी संख्या में टीके लगाये गये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय आयोजनों के अन्तर्गत प्रदेश में पशु विकास की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। शीघ्र ही हमारा वह सपना पूरा होगा जिसे साकार करने के लिए हम बरसों से प्रयत्नशील हैं।

एक आदर्श आर्य सेवक का वियोग

स्व० श्री हरप्रसाद जी बरेली

आर्यसमाज के पुराने कर्मचारियों में से एक और कर्मचारी दिवंगत हो गये। वे हैं श्री प० हरप्रसाद जी आर्य, पंडित जी जिला बिजनौर के निवासी थे आपके यहां मस्करात का काम होता था। कुछ दिनों आप पुलीस में हेड-कांस्टेबिल भी रहे किन्तु यह कार्य आपके स्वभाव के प्रतिकूल था अत आपने त्याग-पत्र देकर महात्मा मुंशीराम की शरण ली और गुरुकुल कांगड़ी की सेवा में लग गये। महात्मा जी पंडित जी के साहस परिश्रम पुरुषार्थ और चरित्र से बहुत प्रभावित हुये।

१९१८ में पंडित जी आर्यसमाज अनाथालय बरेली में महोपदेशक के रूप में सेवा करने आये अंतिम समय तक उसकी सेवा करते रहे। बरेली मुरादाबाद बिजनौर आदि जिलों से धन, अन्न, वस्त्र आदि एकत्रित करके आपके अनाथालय के लिये लाते थे। मन दो मन अन्न कन्धे पर रखकर ८ १० मील पैदल चले आना आपके लिए साधारण सी बात थी। आपका जीवन सादा पवित्र और आदर्श गृहस्थी का था।

आतिथ्य सत्कार आपको विशेष प्रिय था। आपने तथा आपकी पत्नी स्व० बालसुन्दरी देवी ने सन् १९५० में अपने पुत्र देवदत्त और पुत्री राममूर्ति की स्मृति में आर्यसमाज बिहारीपुर की हीरक जयन्ती के अवसर पर एक कमरा ११०० रुपये की लागत से बनवाया, पत्नी के स्वर्गवास हो जाने पर आपने अपनी विधवा पुत्र वधू को अपने पास बुला लिया। उसने पुत्रवत् पंडित जी की सेवा की सारा समय उन्हीं की सेवा निरत रहती कई वर्ष हुये एक विवाह संस्कार कराने गये थे वहाँ हाथी ने उठाकर फेंक दिया तब से आपका स्वास्थ्य कुछ खराब हो गया था किन्तु अनाथालय और आर्यसमाज के काम में सदा तत्पर रहते थे।

एक मास से हाई ब्लडप्रेशर से पीड़ित थे किन्तु उपचार से ठीक हो गये। अकस्मात २४ जुलाई १९५९ को प्रात २॥ बजे छत से गिर पड़ने से आपके सिर में गहरी चोट लगी अस्पताल पहुँचते ही इस असार संसार को छोड़कर परमलोक को सिधार गये।

आपकी आयु ८४ वर्ष की थी। गम्भीर, साहसी, पुरुषार्थी, परिश्रमी और सदाचारी व्यक्ति थे। परमात्मा आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—चन्द्रनारायण वकील
प्रधान आर्यसमाज बिहारीपुर बरेली

आर्य प्रतिनिधि सभा का नव निर्वाचन

१६ अगस्त को पटना में बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सभा के प्रधान डा० दु खन राम वाइसचान्सलर बिहार विश्व विद्यालय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सभा में प्रान्त की समस्त आर्यसमाज शाखाओं से लगभग दो सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें निम्न लिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री डा० दु खनराम जी उपप्रधान—आचार्य प० रामानन्द जी शास्त्री, श्री इन्द्रदेव नारायणसिंह जी, श्री प० यज्ञीनारायण जी शर्मा, प० रामनारायण जी शास्त्री। प्रधान मन्त्री श्री प० वासुदेव शर्मा जी, उपमन्त्री—श्री प्रो० निरंजानन्द जी, काशीनाथ जी आर्य, श्री पन्नालाल गुप्तार्य, श्री [illegible] गोविन्द वर्मा। कोषाध्यक्ष—डा० आर० पी० लाल। आय व्यय निरीक्षक—श्री प्रो० गुरुप्रसाद जी [illegible] पुस्तकालयाध्यक्ष—रामशरणसिंह, [illegible] [illegible]—पं० गंगाधर [illegible] [illegible] ११ [illegible] निर्वाचित हुये।

बाबूराम शास्त्री द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)]
एक प्रति का १० नए पैसे]

आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र
लखनऊ, रविवार भाद्र २२, शक १८८१, भाद्र शु० ११, वि० २०१६, १३ सितम्बर, १९५९ ई०

[वार्षिक मूल्य विदेश में
[१६शिलिंग

उत्तर प्रदेश के आर्य कार्यकर्ताओं की ६ सितम्बर को बैठक

प्रत्येक जिले में शताब्दि समारोह के प्रति उत्साह की लहर

प्रत्येक जिले से अधिकाधिक धन-संग्रह होने, स्वयंसेवकों और दर्शक पहुँचने के निश्चयों की सूचना

अलीगढ़, बरेली, बस्ती, सहारनपुर, आगरा, मथुरा, बुलन्दशहर, मेरठ आदि जिलों की जिलोपसभाओं ने प्रचार और दौरे के कार्यक्रम बनाये

सभा मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी का प्रान्तीय दौरा आरम्भ, सीतापुर, लखीमपुर, गोला में स्वागत, प्रधान जी का शिष्ट मण्डल शीघ्र ही भारत के विविध स्थानों में जायगा

मथुरा के कार्यकर्ताओं में उत्साह

७२ व्यक्तियों के सहयोग से १६ उप समितियो का निर्माण आदर्श पण्डाल, यज्ञशाला, प्रदर्शनी, शिविर, नगर के चित्र तैयार, निर्माण व्यवस्था शीघ्र ही आरम्भ हो रही है।

८ से १२ सितम्बर तक दयानन्द दीक्षा शताब्दि, सप्ताह मनाया जा रहा है।

आर्य जनता आर्य नेताओं, सन्यासियो, महात्माओं और राष्ट्र के नेताओं की उपस्थिति में दीक्षा शताब्दि, गुरुधाम स्मारक समारोह इतिहास की अभूतपूर्व घटना होगी। इस सुअवसर पर अपनी श्रद्धा और भावनाभिव्यक्ति प्रदर्शन और नवीन प्रेरणा प्राप्ति के लिये मथुरा पहुँचने का निश्चय कीजिये। एक शताब्दि के पश्चात् हम उन गुरु और शिष्यों के प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित करने जा रहे हैं जिन्होंने राष्ट्र ही नहीं विश्व को ज्ञान ज्योति प्रदान की हम उनके मानसिक पुत्र हैं श्रद्धा के साथ पहुँचकर अपने जीवन के लिये हम महर्षि की भांति दीक्षा लें यही आज की आवश्यकता है। मथुरा हमारे लिये भौतिक गुरुद्वारा नहीं कर्तव्य की प्रेरणा का अजस्र स्रोत है इस अवसर पर संघटन, राष्ट्र, धर्म, संस्कृति सभी क्षेत्रों में प्रकाश, विकास और परिवर्तन की आवश्यकता है। राष्ट्र दयानन्द के शिष्यों से महान् आशा रखता है।

मथुरा पहुँचकर नव सन्देश, नव ज्योति प्राप्त कीजिये

वर्ष ६१

अवैतनिक सम्पादक–
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अङ्क ३५

संस्कृत आयोग प्रतिवेदन का समर्थन कीजिए

[ले०—श्री रघुवीरसिंह शास्त्री मन्त्री सा० दे० आ० प्र० नि० सभा]

भारत सरकार ने वर्तमान विश्व विद्यालयों एवं अन्य शिक्षणालयों में संस्कृत की स्थिति के विषय में सर्वेक्षण करने एवं उनमें संस्कृत प्रसार सम्बन्धी अपने सुझाव देने के लिये एक अक्तूबर १९५६ को एक संस्कृत आयोग नियुक्त किया था। (आयोग के सदस्य थे— डा० सुनीति कुमार चटर्जी, चेयरमैन वैस्ट बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल, २ श्री जे एच दवे-डायरेक्टर विद्या भवन, ३ प्रो एस के डि, संस्कृत कालिज कलकत्ता, ४ प्रो टी आर वी मूर्ति, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी, ५ प्रो० वि राघवन, मद्रास युनिवर्सिटी, ६ पण्डितराज वि एस रामचन्द्र शास्त्री, शंकरमठ बंगलौर, ७ प्रो० विश्वबन्धु शास्त्री, होशियारपुर, ८ आर एन दण्डेकर पूना, ९ श्री के सुन्दरराम शर्मा, नई देहली।

२—संस्कृत आयोग ने इस विषय में एक प्रश्नावली बनाकर अनेक विद्वानों को भेजी थी। यह हर्ष का विषय है कि १२०० उत्तरों में से ४७० उत्तर संस्कृत भाषा में थे। आयोग ने भारत के प्राय सभी विद्वानों, विचारकों जननायकों आदि की साक्षी ली और प्राय सभी स्थानों का भ्रमण करके गम्भीर विचार के पश्चात् ३० नवम्बर १९५७ को अपना सर्व सम्मत विस्तृत प्रतिवेदन शिक्षा मन्त्रालय को दिया। आयोग ने प्रतिवेदन में संस्कृत प्रसार के लिये केन्द्रिय सरकार से अनेक सिफारिशें की हैं। कहीं-कहीं इस विषय में मतभेद भी हो सकता है, तथापि सिफारिशें ऐसी हैं, जिनके विषय में प्रत्येक संस्कृत प्रेमी यह चाहेगा कि वे तुरन्त स्वीकार की जानी चाहियें। आयोग ने स्वय लिखा है, संस्कृत प्रसार के लिये हमने ये ऐसे सुझाव दिये हैं जो वर्तमान परिस्थिति में न्यूनतम होने के साथ साथ व्यवहार्य हैं और इन्हें क्रियात्मक रूप दिया ही जाना चाहिये।"

३—आयोग की मुख्य मुख्य सिफारिशें निम्न प्रकार हैं—

(१) माध्यमिक स्कूलों में न्यून से न्यून ५ वर्ष तक संस्कृत अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाने की व्यवस्था हो। इस विषय में अर्थ की कमी आदि की बात न उठाई जावे। इस निमित्त शिक्षा के त्रिभाषा फार्मूले में आवश्यक परिवर्तन किया जावे।

(२) माध्यमिक स्कूलों में सामाजिक ज्ञान के पाठ्य विषय में संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विचारधारा तथा संस्कृति आदि का अवश्य समावेश होना चाहिये।

(३) परम्परागत ढंग की संस्कृत पाठशालाओं को उसी रूप में संरक्षण दिया जावे और उन्हें एक स्वीकृत शिक्षा प्रणाली के रूप में उसी भांति मान्यता दी जाए जिस प्रकार अन्य स्कूल कालिजों की शिक्षा को दी जा रही है।

(४) इन संस्कृत पाठशालाओं में एवं महाविद्यालयों में संस्कृत के साथ-साथ कुछ आधुनिक विषय भी पढ़ाये जावें, किन्तु मुख्य जोर संस्कृत पर ही हो। ऐसी पाठशालाओं एवं महाविद्यालय के छात्रों को सरकारी नौकरी तथा उच्च शिक्षण आदि के लिये अन्य हाई स्कूलों एवं कालिजों के छात्रों के समान ही अधिकार एवं सुविधायें मिलनी चाहियें।

सिंहावलोकन

(५) भारत सरकार को एक संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिये।

(६) संस्कृत पण्डितों एवं अन्य विषयों के अध्यापकों के वेतन आदि समान होने चाहियें। विश्व विद्यालयों की समितियों में संस्कृत पण्डितों को अन्य अध्यापकों के समान अवसर मिलना चाहिए।

(७) जिन विश्व विद्यालयों में संस्कृत के विभाग न हों, वहा तुरन्त खोले जावें।

(८) भारतीय भाषाओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर डिग्रियों के पाठ्य क्रम में न्यून से न्यून एक पूरा प्रश्नपत्र संस्कृत का होना चाहिए।

(९) शिक्षा-क्रम में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि प्रत्येक विश्व विद्यालय में प्रत्येक स्नातक को संस्कृत निहित संस्कृति, साहित्य, विचारधारा, धर्म, दर्शन, कला आदि का क्रमिक ज्ञान हो सके।

(१०) संस्कृत में अनुसंधान कार्य के लिए छात्रवृत्तियां दी जायें।

(११) निर्धन किन्तु विद्वान् संस्कृत पण्डितों को आर्थिक सहायता दी जावे। संस्कृत पण्डितों का राज्य की ओर से मान हो।

(१२) संस्कृत के सांस्कृतिक महत्त्व एवं उसके अखिल भारतीय स्वरूप को दृष्टि में रखते हुए तथा भाषा भेद जन्य संकीर्णता एवं वैमनस्य—जो कि भारतीय अखण्डता को चुनौती दे रहा हो—को रोकने के लिए संस्कृत जो कि भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं में से एक है—को अतिरिक्त राजकीय भाषा (Additional Official Language) के रूप में घोषित किया जावे।

(१३) वैज्ञानिक विषयों के लिए यथा सम्भव संस्कृत साहित्य से ही शब्दावली ली जावे। संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक शब्दावली खोज निकालने के लिए आवश्यक समितियां नियुक्त की जावें।

(१४) उच्च सरकारी पदों एवं विदेशों में काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों को विशेष व्याख्यानमालाओं द्वारा संस्कृत विचार-धारा एवं संस्कृति का बोध कराया जावे, जिससे कि वे भारत का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सकें।

(१५) वेदों को कण्ठस्थ कराये जाने के लिए उचित प्रोत्साहन दिया जावे। उनके सस्वर उच्चारण का बोध कराने के लिये रेडियो आदि का उपयोग किया जावे।

(१६) राजकीय स्वास्थ्य प्रबन्ध में आयुर्वेद को प्रोत्साहन दिया जावे। इसके शुद्ध स्वरूप को यथासम्भव सुरक्षित रखा जावे। इसका अध्ययन संस्कृत में ही हो।

(१७) जमींदारी प्रथा का अन्त होने से जहां जहां संस्कृत प्रचार में क्षति पहुँची है, सरकार उसकी पूर्ति करे।

यह अधिक अच्छा होगा कि आप इस विषय में अधिक विवरण जानने के लिए संस्कृत कमीशन की ५६-५७ की रिपोर्ट लेकर पढ़ें जो किसी भी सरकारी पुस्तक विक्रेता से सवा पांच रुपये में मिल सकती है। यह मैनेजर आफ पब्लिकेशन्स, सिविल लाइन्स, देहली से डाक द्वारा भी मंगाई जा सकती है।

४—संस्कृत आयोग की रिपोर्ट पर लोक सभा में ५, ६, तथा ७ मई को बहस हुई थी। अनेक सदस्यों ने सिफारिशों को स्वीकार किये जाने पर बल दिया, किन्तु कुछ सदस्यों ने संस्कृत के अनिवार्य रूप से पढ़ाये जाने के विरुद्ध भी भाषण दिये। इसी बीच लोक सभा की बैठक स्थगित हो गयी। अब इस विषय में अगस्त मास में पुनः विचार होने की सम्भावना है।

आयोग की सिफारिशों को स्वीकार कराये जाने के लिए यह आवश्यक है कि सतत गहन प्रचार द्वारा ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जावे जिससे कि संसद में उक्त सिफारिशें स्वीकार की जा सकें।

५—उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिये आप निम्न कार्यक्रम अपनायें —

(१) भारत भर में 'संस्कृत दिवस' मनाया जाए।

(२) अपने अपने क्षेत्र में विशाल सार्वजनिक सभायें करें। उनकी सूचना पहले ही समाचार पत्रों को दे दें।

(३) सभाओं में यथा संभव सभी संस्कृत प्रेमी संस्थाओं एवं नेताओं का सहयोग लिया जावे।

(४) सभा में भारत सरकार द्वारा आयोग की सिफारिशें स्वीकार कराये जाने सम्बन्धी प्रस्ताव किए जावें।

(५) प्रस्तावों की प्रतियां निम्न स्थानों पर भेजी जावें :—

क—समाचार पत्र।
ख—भारत सरकार का शिक्षामन्त्रालय
ग—अध्यक्ष लोक सभा।
घ—अध्यक्ष राज्य सभा।
ङ—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा।
च—अपने क्षेत्र से निर्वाचित लोक सभा तथा राज्य सभा के सदस्यों को।

(६) संस्कृत दिवस से पूर्व नगर के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में सभायें आयोजित की जावें।

(७) अपने नगर के प्रमुख-प्रमुख व्यक्तियों को लेकर शिष्टमण्डल के रूप में अपने अपने क्षेत्र के पार्लियामेण्ट सदस्यों से मिलें और उनसे आयोग की उक्त सिफारिशों के पक्ष में मत देने का अनुरोध करें।

(८) आशा है कि इस विषय की गम्भीरता एवं महत्ता को अनुभव किया जायगा। यह अवसर है जब कि संस्कृत के लिए कुछ किया जा सकता है। अतः सभी संस्कृत प्रेमियों को अपना कर्तव्य पहचान कर इस दिशा में पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये।

वेदोपदेश

तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि । आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि

वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि । अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ॥३३॥

य० ३ । १७ ॥

हे सर्वरक्षकेश्वराग्ने ! तू हमारे शरीर का रक्षक है । सो शरीर को कृपा से पालन कर । हे महावैद्य ! आप आयु (उमर) बढ़ाने वाले हो । मुझको सुखरूप उत्तमायु दीजिये । हे अनन्त विद्यातेजयुक्त ! आप "वर्च" विद्यादि तेज अर्थात् यथार्थ विज्ञान देने वाले हो मुझको सर्वोत्कृष्ट विद्यादि तेज देओ । पूर्वोक्त शरीरादि की रक्षा से हमको सदा आनन्द में रक्खो और जो जो कुछ भी शरीरादि में "ऊनम्" न्यून हो, उस-उसको कृपादृष्टि से सुख और ऐश्वर्य के साथ सब प्रकार से आप पूर्ण करो । किसी आनन्द वा श्रेष्ठ पदार्थ की न्यूनता हमको न रहे । आपके पुत्र हम लोग जब पूर्णानन्द में रहेंगे, तभी आप पिता की शोभा है, क्योंकि लड़के लोग छोटी वा बड़ी चीज अथवा सुख, पिता माता को छोड़ किससे मांगें ? सो आप सर्वशक्तिमान् हमारे पिता सब ऐश्वर्य तथा सुख देने वालों में पूर्ण हो ।



लखनऊ—१३ सितम्बर १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

भाषायी समिति का प्रतिवेदन संसद में

चिर प्रतीक्षित भाषायी समिति का प्रतिवेदन संसद में प्रस्तुत हो चुका है । अब तक के सरकारी और गैर-सरकारी वक्ताओं ने एक स्वर से हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार और प्रचलित किये जाने का समर्थन किया है । परन्तु इस शब्द के द्वारा ही हिन्दी के सम्मान और प्रगति को अवरुद्ध करने का अभिनय किया जा रहा है । समझ में नहीं आता कि अंग्रेजी को प्रचलित रखने का दुराग्रह क्यों किया जा रहा है । पिछली पीढ़ी के वे लोग जिनकी शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी वातावरण में हुई अंग्रेजी के अभिशाप से मुक्त नहीं हो सके हैं और राष्ट्रीय गौरव में भाषा का क्या महत्त्वपूर्ण स्थान होता है समझने का प्रयत्न नहीं करते । बारह वर्षों की आजादी के बाद केन्द्र में हिन्दी के साथ मक्खी हमदर्दी उत्पन्न हो सकी है, प्रान्तों में जहां हिन्दी राजभाषा स्वीकृत है अभी तक अंग्रेजी का बोलबाला है, और हिन्दी शासन से उपेक्षित है ऐसी अवस्था में अंग्रेजी के लिये प्रोत्साहन और आश्वासन देना कितना खतरनाक होगा यह सुस्पष्ट है । हमारे प्रधान मन्त्री को एक भ्रम सदैव चिन्तित किये रहता है, कि हिन्दी वाले हिन्दी को दूसरों पर जबरदस्ती लादना चाहते हैं और वे इस प्रगति को रोक रहे हैं, पर हम अपने प्रधान मंत्री जी से निवेदन करेंगे कि हिन्दी के सम्बन्ध में उनका यह भ्रम है हिन्दी की सुगमता सरलता और वैज्ञानिकता ही हिन्दी की सर्वप्रियता और विकास का कारण है । किसी की जबरदस्ती से ऐसा नहीं हो सकता, परन्तु अंग्रेजी जो भारत के १ प्रतिशत की भी भाषा नहीं है उसे वे प्रमुखता दिये रखना चाहते हैं, क्या उनकी यह जबरदस्ती नहीं, क्यों ? वे उसको शासन के साथ साथ चिपटाये रखना चाहते हैं । उनके ये शब्द कि "किसी ऐसे व्यक्ति को भारतीय सेवाओं से वंचित नहीं रक्खा जायगा जो चाहे हिन्दी का एक अक्षर भी न जानता हो पर और दृष्टियों से योग्य हो । हम पूछना चाहते कि जब एक अंग्रेज आई० सी० एस० होकर आता था, तब उसे हिन्दी हिन्दुस्तानी का ज्ञान आवश्यक रूप से कराकर भेजा जाता था, तब स्वतन्त्र भारत में जनता के राज्य में जन भाषा शून्य अधिकारी क्या जनता की सेवा कर सकेंगे, अंग्रेजी के बड़प्पन में वे सदैव जनता से दूर रहेंगे । और योजनाएँ बनती रहेंगी, अफसरों की बाढ़ आती रहेगी पर जनता और योजना में समन्वय न हो सकेगा, अत हम नेहरू जी के सामने यह स्पष्ट करना उचित समझते हैं, कि जनता में राष्ट्रीय चेतना, योजना समर्थन और राष्ट्रोन्नति की दृष्टि से भारत में हिन्दी का वही स्थान है, और होना चाहिये जो इङ्गलैंड में अंग्रेजी का, जर्मन में जर्मनी का, जापान में जापानी का, रूस में रूसी का, आशा है इस दिशा में वे अपनी भ्रम ग्रन्थि को वे सुलझाकर हिन्दी के उन्मुक्त विकास में सहयोग देंगे ।

*

दयानन्द पार्क के सम्बन्ध में प्रयत्न

कानपुर के लोक प्रसिद्ध दयानन्द पार्क का नाम लेनिन पार्क रक्खे जाने के सम्बन्ध में आर्यजगत् की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल०सी० सम्बन्धित मन्त्रियों और उच्चाधिकारियों के साथ पत्र व्यवहार कर रहे हैं । इस सम्बन्ध में केवल विरोध मत प्रकट कर देना ही पर्याप्त नहीं स्थानीय जनता में चेतना और समर्थन भी आवश्यक है, खेद है ! कि हम इतने शिथिल और उदासीन हो चुके हैं कि इस घटना की सूचना भी काफी लम्बे समय के बाद प्रकाशन में आ सकी, कानपुर में तो बहुत बड़े बड़े आर्य कार्यकर्त्ता हैं । कई आर्यसमाजें और शिक्षा संस्थाओं पर किसी को भी इस घटना का पता न लग सका यह हमारी सजगता पर कितना कठोर व्यंग्य है । अब भी जो सूचनायें और समाचार आये हैं उनको वैधानिक मानना कठिन है फिर भी कार्यवाही की ही जा रही है हमें आशा है, कि कानपुर के आर्य बन्धु इस सम्बन्ध में अपने वैधानिक प्रयत्नों का परिचय देंगे । जिससे सभा को इस दिशा में सफलता प्राप्ति में सुगमता हो सकेगी और नगरपालिका पर भी जनमत का दबाव डाला जा सकेगा ।

जनजाति संरक्षण बिल

संसद के इसी अधिवेशन में एक बिल श्री प्रकाशवीर शास्त्री की ओर से प्रस्तुत किया गया है । जिसमें सरकार से मांग की गयी है कि वह जनजातियों के मौलिक एवं सांस्कृतिक धार्मिक संरक्षण की व्यवस्था करे । यदि कोई व्यक्ति धार्मिक आधार पर धर्म परिवर्तन करना है तो करे, परन्तु आर्थिक अभाव या सामाजिक कारणों से धर्म परिवर्तन को प्रोत्साहन देने पर रोक लगाई जाय । आर्यसमाज ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियों के विरुद्ध सदैव से यह आक्षेप लगाता रहा है कि जनजातियों में वे धर्मपरिवर्तन का कार्य लोभ प्रलोभन आदि द्वारा करते हैं जो अनुचित है । सरकार की "नियोगी रिपोर्ट" तथा अन्य आंकड़ों से इस आक्षेप की सत्यता सुस्पष्ट है । ऐसी स्थिति में संसद में प्रस्तुत यह बिल हमारी इस मांग के समर्थन में बहुत सहायक सिद्ध होगा । इस बिल का मित्र परिवार और आर्यजगत् की ओर से हार्दिक समर्थन करते हुए हम आशा करते हैं, सरकार को भी इस बिल से पर्याप्त शक्ति मिलेगी और मिशनरियों की अवैधानिक प्रवृत्तियों को रोकने में सफलता प्राप्त होगी ।

भारतीय सीमान्त संकट

तिब्बत के दलाईलामा को शरण देने के कारण भारत-चीन के साथ अपनी मैत्री को संकट में डाल चुका है और चीन की ओर से थोड़े थोड़े समय बाद छेड़खानी होती रहती है । यात्रियों की परेशानियां उत्तर पश्चिमी सीमान्त चौकियों के लिए झगड़ा और अब आसाम सीमान्त चौकियों की समस्या । मानचित्रों में भारतीय स्थानों को चीनी प्रदेश में मानना और समझौते की भावना का परित्याग, ऐसी घटनायें हैं जिनसे घनिष्ठतम और प्राचीनतम मैत्री सम्बन्ध भी संकट में पड़ गये हैं । पूर्वी सीमान्त पर तो छुटपुट गोलाबारी की घटनायें भी हुई हैं जिसे रक्षा मन्त्री और प्रधान मन्त्री संसद और राष्ट्र को आश्वासन दिया है कि भारत की सेना पूर्णतया समर्थ और सतर्क है । फिर भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सीमान्त की दुर्घटनायें राष्ट्र के साहस और प्रगति को आघात पहुंचाती हैं । हम समझते हैं इस संकट काल में प्रत्येक भारतीय को सरकार को सहयोग देने का प्रयत्न करना चाहिये । श्री जयप्रकाश जी का वक्तव्य बहुत सामयिक है और उसका स्वागत और पालन किया जाना चाहिये । राष्ट्रीय एकता के प्रदर्शन का यही समय होता है । आशा है सभी जन राष्ट्र में विश्वास और साहस को बढ़ाकर सरकार को सहयोग का आश्वासन देंगे ।

आर्यमित्र की पुरानी फाइलें

आर्यमित्र हीरक जयन्ती के अवसर पर प्रदर्शनी में आर्यमित्र की पुरानी फाइलों का प्रदर्शन भी किया जायगा । रायचूर (दक्षिण) गुरुकुल वृन्दावन रामपुर आदि स्थानों से आर्य बन्धुओं ने आर्यमित्र की फाइल भेजी हैं उनके सहयोग के लिये हम उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं, साथ ही अन्य मित्र प्रेमियों से प्रार्थना करते हैं, कि वे अपनी प्राचीनतम फाइलों के सम्बन्ध में सूचना दें, जिससे प्रदर्शनी के अवसर पर उनका उपयोग हो सके । सन् १९१२ से पुरानी और प्रारम्भिक फाइलों की अत्यधिक आवश्यकता है । जो बन्धु सहयोग करेंगे मित्र-परिवार उनके सहयोग के लिए उनका सदैव आभारी रहेगा ।

*

दयानन्द दीक्षा-शताब्दी विरजानन्द स्मारक शिलान्यास विद्वदभिनन्दन आर्यमित्र हीरक जयन्ती समारोह समिति

२३ अगस्त की बैठक में समिति का विस्तार, सभी आर्य विद्वानों नेताओं, संगठन कर्त्ताओं, शिक्षा-संस्थाओं तथा ऋषि भक्तों के सहयोग से निर्मित समिति

श्री स्वा आत्मानन्द सरस्वती यमुनानगर
" " अभेदानन्द सरस्वती पटना
" " ध्रुवानन्द जी
" " आनन्द स्वामी जी महाराज
" " ब्रह्ममुनि जी
" " व्रतानन्द जी चित्तौड़गढ़
" " ..ानन्द भिक्षु जी देहली
" " अमृतानन्द जी सरस्वती नारायणाश्रम रामगढ़
" " ब्रह्मानन्द जी दण्डी एटा
" ' रामेश्वरानन्द जी सरस्वती
" " त्यागानन्द जी सरस्वती अयोध्या
" " दिव्यानन्द सरस्वती नागपुर
" " विशुद्धानन्द जी उन्नानी
श्री माता प्रेमसुखभायती ज्वालापुर

श्री प० गङ्गाप्रसादजी रि ची जज जयपुर
" " गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय प्रयाग
श्री मेहरचन्द्र जी महाजन रि चीफ जस्टिस सुप्रीम कोर्ट देहली
श्री ..शी टेकचन्दजी वार एट-ला देहली
श्री डा० गोकुलचन्द जी नारंग देहली
श्री इन्द्र जी विद्यावाचस्पति देहली
" राजा ..र.ज सुदर्शनदेवजी शाहपुरा
" ५०३ गुरुदत्त जी शर्मा अमृतधारा देहली
" ' विनायकराव विद्यालङ्कार हेदराबाद
" घनश्यामसिंह जी गुप्त दुर्ग
" प० नरेन्द्र जी हदराबाद
" डा०कालकाप्रसाद जी भटनागर उप कुल .. विद्यालय आगरा
श्री चा चरणसिंह जी .. मन्त्री उत्तरप्रदेश (मेरठ)
श्री अलगूरायजी शास्त्री आजमगढ़
" बलदेवसिंह जी आर्य लखनऊ
" दीनदयालु जी शास्त्री लखनऊ
" राजकुमार रणञ्जयसिंह जी अमेठी
" प्रि० दीवानचन्द्र जी कानपुर
" प्रि० दुनीचन्द जी होशियारपुर
" प० आनन्दप्रिय जी बड़ौदा
"बनारसीदासजी चतुर्वेदी एम पी देहली
" आचार्य नरदेव जी शास्त्री ज्वालापुर
" डा०वासुदेवशरण जी अग्रवाल बनारस
" प० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु बनारस
" डा०मङ्गलदेव जी शास्त्री बनारस
" प० अयोध्याप्रसादजी वैदिक मिश्नरी कलकत्ता
" डा०वंशीधर जी विद्यालङ्कार हेदराबाद
" " आ..न्दजी अध्यक्ष संस्कृत विभाग उस्मानिया वि०वि० हैदराबाद
" डा० रघुवीर शास्त्री एम०पी० देहली
" प० रामचन्द्र जी देहलवी हापुड़
" डा०सत्याचरण जी शास्त्री गोरखपुर
" डा० बाबूराम जी सक्सेना प्रयाग
' धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री मेरठ
" " ..जी वर्मा प्रयाग
" " सत्यप्रकाश जी प्रयाग
" " मुन्शीराम जी शर्मा सोम कानपुर
" विश्वबन्धु जी शास्त्री होश्यारपुर
" डा० हरदत्त जी शास्त्री कानपुर
" " सूर्यकान्त जी शास्त्री बनारस
' ०..गादास ..शा.. जयपुर

श्री जुगलकिशोर जी बिड़ला
" नानजी भाई कालीदास बम्बई
" सेठ शूरजी प्रताप बम्बई
" नारायणलाल जी पित्ती बम्बई
" दीपचन्द्र जी पोद्दार "
" सेठ धरमशी खटाऊ अहमदाबाद
" डा० हंसराज जी गुप्त देहली
" वेणीभाई जी आर्य बम्बई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली
प्रधान श्री पूर्णचन्द्र जी
मन्त्री ,, रघुवीरसिंह जी शास्त्री

श्रीमती परोपकारिणी सभा—
प्रधान श्री प० कृष्ण जी
मन्त्री ,, मानकरण शारदा अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब—
प्रधान श्री आचार्य रामदेव जी जालंधर
मन्त्री ,, जगदेव जी सिद्धान्ती देहली

आर्य प्रतिनिधि सभा विहार—
प्रधान श्री डा० डी० रामजी पटना
मन्त्री ,, वासुदेव ..पटना

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल—
प्रधान श्री ..रचन्द्रजी धीमान् कलकत्ता
मन्त्री ,, बटुकृष्ण वर्मन कलकत्ता

आर्य ..निधि सभा राजस्थान—
प्रधान—
मन्त्री श्री भ..प्रसाद जी जयपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई—
प्रधान श्री एन०के०..वाला अहमदाबाद
मन्त्री—

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत—
प्रधान श्री देवदत्त मौद्गल्य
मन्त्री , भारतभूषण जी त्यागी

आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद—
प्रधान—
मन्त्री श्रीमती सुशीलादेवी जी विद्यालङ्कृता हेदराबाद

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश—
प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त दुर्ग
मन्त्री ,, कृष्णप्रसाद जी गुप्त नागपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध—
प्रधान श्री ताराचन्द्र जी डीगाजरा
मन्त्री ,, सभा

प्रतिनिधि ईस्ट अफ्रीका प्रतिनिधि सभा तथा अन्य फीजी, बैंकोक, मारिशस, सिंगापुर, ट्रानीडाड, आदि प्रवासी क्षेत्र —
श्री डा० डी० पुरी देहली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब—
प्रधान श्री डा० इन्द्रसेन जी कार्यकर्ता प्रधान जालन्धर
मन्त्री श्री दुर्गादास जी जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश—
प्रधान श्री पं० हरिशंकर शर्मा आगरा
मन्त्री ,, प्रेमचन्द्र शर्मा हाथरस
श्री कालीचरण जी आर्य मेरठ

श्री रामसिंह जी देहली
,, नरदेव जी स्नातक वृन्दावन
,, ओमप्रकाश जी देहली
,, आ० विश्वश्रवा. जी बरेली
,, जगन्नन्दनलाल जी प्रयाग
, रतनसिंह जी गाजियाबाद
,, रामनाथ जी भल्ला देहली
,, लक्ष्मीदत्त जी देहली
,, भगवान स्वरूप जी अजमेर
,, रामनारायणजी शास्त्री पटना
,, महावीरसिंह जी लश्कर (ग्वालियर)
,, विश्वम्भर प्रसाद जी नागपुर
,, महेन्द्रप्रताप शास्त्री जी वकील
,, नौतनदास जी चावला देहली
,, वीरेन्द्र जी देहली
,, लोकनाथ जी लुधियाना
,, कमलसिंह जी रोहतक
,, लाल दिवा..र जी हस गुड़गावा
,, हरफूलसिंह जी रोहतक
,, शेरसिंह जी एम० एल० ए० रोहतक
,, मूलचन्द्र जी एम० एल० ए० रोहतक
,, रघुबीरसिंह जी रोहतक
,, आ० भगवानदेव जी भज्जर
,, योगेन्द्रदेव जी रैवाड़ी
,, नौबतसिंह जी महेन्द्रगढ़
,, शेरसिंह जी मलिक रोहतक
,, नारायणदत्त जी कपूर
,, ज्ञानचन्द्र जी रोहतक
,, प्रह्लाददत्त जी देहली
,, वेदीराम जी देहली
,, रामगोपाल जी शालवाले देहली
,, महामुनि जी रोहतक
,, राजसिंह जी देहली
,, वेदव्रत जी भज्जर
,, निहालचन्द्र जी रामामण्डी
,, देशराज जी कादिया
,, भीमसेन जी विद्यालंकार अम्बाला
,, लालचन्द्र जी अम्बाला
,, चन्द्रमोहन जी देहली
,, भरतसिंह जी रोहतक
,, विश्वनाथ जी अमृतसर
,, ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी देहली
,, महेन्द्रनाथ जी शास्त्री देहली
,, वेदव्रती जी फगवाड़ा देहली
,, शिवचन्द्र जी आर्य देहली
,, कविराज हरनामदास जी देहली
,, शालिग्राम जी देहली
,, बालमुकुन्द आहूजा
,, चतुरसेन जी देहली
,, राजेन्द्र जी आचार्य देहली
,, शिवकुमार जी शास्त्री देहली
,, शिवचरणदास जी देहली
,, मेलाराम जी देहली

श्री मदनविहारी लाल जी कलकत्ता
,, हंसराज जी हाडा कलकत्ता
,, देवीप्रसाद जी मस्करा कलकत्ता
,, सीताराम जी कलकत्ता
,, अंबीलाल जी कलकत्ता
,, रामेश्वरप्रसाद जी कलकत्ता
,, रामावतार जी कलकत्ता
,, बाबूलाल जी गुप्त लश्कर
,, शिवशंकर जी गौड़ लश्कर
,, उग्रसेन जी नागपुर
,, इन्द्रदेवसिंह जी जबलपुर
श्रीमती दयावती शास्त्री नरसिंहपुर
श्री विद्यासागर जी सागर
,, विनयमोहन जी शर्मा रायगढ़
,, वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर
श्रीमती कमला कुमारी जी शास्त्री इटारसी
श्री रामविलास जी इन्दौर
,, मोतीलाल जी गुना
,, राधाचरण जी गुना
,, दुर्गादास जी मखरिया बिड़ला मिल्स ग्वालियर
,, सीताराम जी खेमका बिड़ला मिल्स ग्वालियर
,, रामकुमार जी बिड़ला, बिड़ला मिल्स ग्वालियर
,, ..राम जी हीराभाई पटेल बम्बई
,, ..हराम जी बम्बई
,, ..देव भाई जी आनन्द बम्बई
,, कान्तिलाल जी शर्मा बम्बई
, हरगोविन्द धर्म श्री बम्बई
,, श्यामलाल जी गोयल बम्बई
,, वैद्यनाथ जी शास्त्री नासिक
,, शंकरदेव जी विद्यालंकार पोरबन्दर
श्रीमती रामप्यारी देवी जी जयपुर
श्री भग्रसेन जी अजमेर
,, छोटूसिंह जी अलवर
,, डा० सूर्यदेव जी शर्मा अजमेर
,, जीयालाल जी अजमेर
,, ब्रह्मानन्द जी स्नातक अजमेर
,, प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न अजमेर
,, ललित कुमारसिंह जी पटना
,, महादेव शरण जी वैद्यनाथधाम
,, रामानन्द जी शास्त्री पटना
,, महादेव नारायण जी पटना
,, कुंवरसिंह जी मुजफ्फरपुर
,, इन्द्रदेव नारायण जी आरा
,, रामराजसिंह जी आरा
,, सुन्दरलाल जी मुंगेर
,, मनोहरलाल जी हैदराबाद
,, कोतूर सुतैया जी ,,
,, मदन मोहन जी विद्यासागर हैदराबाद
,, जगन्नाथ जी मद्रास
श्रीमती शकुन्तलादेवी जी गोयल, मेरठ
श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, चन्दौसी
" ईश्वरदयालुजी आर्य, बिजनौर
" उमेशचन्द्र जी स्नातक, हल्द्वानी
" चन्द्रनारायण जी, बरेली
" कर्णसिंह जी ओंकर कैम्पियरगंज
" विश्वेश्वरनाथ जी वर्मा, लखनऊ
,, फूलनसिंह जी आर्य, शिकोहाबाद

(शेष पृष्ठ १४ पर)

·भारत भाग्य विधाताओं से

श्रेय प्रेय का करो समन्वय हे जन गन के अधिनायक गण।
झोंकों की झंकार सुनों पर भैरव हाहाकार न भूलो,
विविध वेश रचना देखो पर प्रश्न भीत परिवार न भूलो,
नभ गिरि से टकराकर लौट न आए वह करुणामय क्रन्दन।
हे जन मन के अधिनायक गण।

लगते समारोह ये ऐसे विष रस भरा कनक घट' जैसे,
सुन्दर शब्द कहा से लाऊ मधुर गीत गाऊ मैं कैसे?
तन की रूप योजना इतनी, मन्त का न तनिक अवलोकन।
हे जन मन के अधिनायकगण।

सीमा पर के आतंकित जन, देते हैं निशि दिवस दुहाई,
हिंसा, उत्पीडन, मर्दन की जाती विजय-ध्वजा लहराई,
केवल अभिनन्दन, आयुध का ध्येय रहे कैसा यह शासन?
हे जन मन के अधिनायकगण।

क्या निर्माण योजनाओ मे रूप नृत्य का ही निखरेगा?
सबसे तरल तरंग भरेंगे रण का नाद न कभी बजेगा?
दानव दल के दलन हेतु क्या सफल रहेगा स्वर का साधन?
हे जन मन के अधिनायक गण।

पाएगी सम्मान न अब संस्कृति की मूलाधार धेनु यहाँ,
भूलेंगे गोपाल हाथ मे मात्र रहेगी सरस वेणु यहाँ,
अष्ट सिद्धि नव निधि को कैसे दे पायेंगे हम आमन्त्रण?
हे जन मन के अधिनायक गण।

क्या नर का निर्माण अपेक्षित नहीं हमारे प्रजातन्त्र में?
फूके क्यो न नया स्वर नारी देश समृद्धि मधुर मन्त्र में?
नारी कर्तव्य मान न क्यो समझा जाए केवल नर्त्तन?
हे जन मन के अधिनायकगण।

जीवन नाटक के दो दृश्य दुख सुख दोनो को न भुलाएं,
फूलो की मुस्कान निहारें साथ ओस के अश्रु बहाए,
नहीं बहारो में ही भूलें पतझड़ को भी दें आश्वासन,
हे जन मन के अधिनायकगण।

चन्द्रलोक की बात छोड़िये धरा माँगती आज सहारा,
भौतिकता आध्यात्मिकता का मध्यमार्ग हो ध्येय हमारा,
स्वराज्य हो तभी सुराज्य नूतन सुखकर यह परिवर्तन।
हे जन मन के अधिनायकगण।

अपनी भाषा, भाव, संस्कृति, सफल तभी अपना विधान हो,
सर्वांगीण विकास देश का, सर्वोदय हो, नव विहान हो,
जन जन का हो अभ्युत्थान, रहे कोई न नगण्य अकिंचन,
हे जन मन के अधिनायकगण।

—कु० सुशीला आर्य एम० ए०, नखाना

शहीद सुमेरु के प्रति

गूंज उठे यह आर्यजगत फिर, ऐसी नई बहार दे॥
आर्य भाषा के ही रक्षार्थ, चले ले ओ३म् पताका साथ।
हृदय में रखकर ईश्वर नाम, प्राण को लेकर अपने हाथ॥
वह चले वीर तुम्हीं पंजाब, जहां था हिन्दी पर प्रतिबन्ध।
तथा कैरो, वहां का आमात्य, निरकुश दुष्ट और मतिमन्द॥
हिन्दी वीणा के आकर तू मधुर तार झंकार दे॥१॥
उसी खल ने लेकर के पक्ष, चलाई हिन्दी पर तलवार।
शीश पर तुमने ली वह रोक, आर्य सिद्धान्तों के अनुसार॥
नागरी माँ के हेतु सुमेरु! हो गये आकर तुम बलिदान।
जगत को दे सुन्दर उपदेश, जाति को देकर यह नव ज्ञान॥
उसी राह पर चलने का तू, नाद वहीं उचार दे॥२॥

—सतीशकुमार भारतीय, खुर्जा

महासते महतो महिमा। वेद

तुझ महान की महिमा महान है।
महिमा तेरी महान है॥

[कश्मीर में प्राकृतिक सौन्दर्य में ईश्वर लीला के दर्शन करते समय रचा गया]

गायें सुनायें क्या प्रभु महिमा तेरी महान है।
तेरा अनूप रूप तूने रचा जहान है॥

पर्वत ढके हैं बर्फ से सूर्य मे तेरा तेज है॥
मेघा को दी है गर्जना झरनो मे तेरा गान है॥

पापों का दण्ड देता तू आनन्द घन है तू प्रभु।
तूने बनाये बन घने लहरों में तेरी तान है॥

वेदो की ज्योति तूने दी जीवों का तू सखा पिता।
विश्वपति है एक तू तेरी निराली शान है॥

कण कण में है रमा हुआ प्रतिम है प्राणाधार है।
सच्चिदानन्द ईश तू सारे जहा की जान है॥

सोतों की दिव्य धार में तेरा है जागता नियम।
प्रकृति में सजीव हो तेरा रमा विधान है॥

गायें सुनायें क्या प्रभु महिमा तेरी महान है।

—राजेन्द्र "जिज्ञासु"

सम्मेलन परीक्षाओं की नई मान्यतायें

(१) इन्टरमीडिएट बोर्ड, उत्तर प्रदेश ने यह निश्चित किया है कि जो परीक्षार्थी सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण होगा वह, जूनियर कैम्ब्रिज के समान, हाई स्कूल की अगली परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है। यह निर्णय प्रान्तीय सरकार की स्वीकृत के पश्चात् तुरन्त लागू हो जायेगा। इस उपधारा का अर्थ यह होगा कि जो परीक्षार्थी दिसम्बर १९५८ की प्रथमा परीक्षा में बैठकर उत्तीर्ण हो गये हैं वे सितम्बर १९५९ में हाई स्कूल परीक्षा का आवेदन पत्र भरकर मार्च १९६० की परीक्षा में बैठ सकते।

(२) इन्टरमीडिएट बोर्ड, उत्तर प्रदेश ने २८ मार्च १९५९ के गजट द्वारा अपना यह निश्चय प्रकाशित किया है कि जो परीक्षार्थी हाई स्कूल परीक्षा तथा सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण होंगे वे इन्टरमीडिएट परीक्षा में केवल अंग्रेजी विषय में सम्मिलित हो सकते हैं।

इस मान्यता से उन परीक्षार्थियो को लाभ होगा जो आगरा, अलीगढ़ आदि विश्वविद्यालयो में बी० ए० परीक्षा में व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप मे सम्मिलित होने के अधिकारी है।

(३) केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा निर्मित समिति ने हमारी परीक्षाओ को निम्नाकित रूप मे स्वीकृत करने के लिए केन्द्रीय सरकार को सुझाव दिया है।

(१) प्रथमा परीक्षा को मैट्रिक (हाईस्कूल) के समकक्ष।
(२) मध्यमा परीक्षा को बी० ए० परीक्षा के समकक्ष
(३) उत्तमा परीक्षा को बी० ए० आनर्स के समकक्ष

रजिस्ट्रार, हिन्दी विश्वविद्यालय प्रयाग

सूचना

आर्य-जगत् के सुपरिचित, अंग्रेजी संस्कृत एवं अर्बी भाषा के उच्चकोटि के विद्वान्, आर्य-जगत् आर्यावर्त, आर्यसंदेश एवं आर्य पत्रों के भूतपूर्व सम्पादक एवं पंजाब, बम्बई तथा मध्य भारत की सभाओं के भू० पू० महोपदेशक श्री पं० शिवराजसिंह ने अपना निवास आजकल अरनिया जिला बुलन्दशहर में रखा हुआ है। पं० जी के भाषण बड़े ओजस्वी, जोशपूर्ण एवं उच्चकोटि के होते हैं। आर्येतर सम्प्रदायों से उच्चकोटि के शास्त्रार्थ आप करते है। जो समाजें पं० जी की सेवाओं से लाभ उठाना चाहें वे—

"ग्राम व पोस्ट अरनिया, जिला बुलन्दशहर के पते पर पत्र-व्यवहार करें।"

—सुखलाल आर्य मुसाफिर

सामयिक समस्याएँ

छोटा नागपुर में अपने कर्तव्य का पालन कीजिये
कुम्भकर्ण की निद्रा सोने वाले भारतीय धनिको जागो
विदेशी ईसाई तुम्हारा कौमी धन लूट रहे हैं

[ले० श्री देवीचन्द्र जी अध्यक्ष दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर]

शुद्धि और सरक्षण ये दो महत्त्वपूर्ण कार्य आज के हमारे प्रोग्राम के अभिन्न अङ्ग है। हमें सतर्कता दृढता और सहयोग पूर्वक इस सम्बन्ध में अपने उत्तर दायित्व का पालन करना चाहिये बढती हुई ईसाइयत भारत की राष्ट्रीयता को एक भारी खतरा है। देश को नष्ट होने से बचाना चाहते हो तो सजग हो कर्तव्य पालन करो। —सम्पादक

हमारे सामने इस समय छोटा नागपुर अधिक भयानक रूप धारण किये हुए हैं। इस प्रात में राची पलाम तथा हजारीबाग में उनके भारी केन्द्र मौजूद थे। इन जिलो में उनकी सस्थाओं का जाल बिछा हुआ था, और अनेक विदेशी पादरी इस प्रदश में अधिक में आदि वासियों को प्रलोभन देकर तथा आचार हीन तरीको से डरा धमकाकर अपने चगुल में लिये हुए मगर अभी पत्रो द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अमरीका से सैकड़ों नये ईसाई पादरी छोटा नागपुर में आकर प्रचार करने लग गये हैं। इस समाचार को पाते ही दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर ने अपने प्रमुख कार्यकर्ता प० दवराज जी वैदिक मिशनरी को वहा कार्य आरम्भ करने के लिए भेज दिया था। गत तीन सप्ताह से वह उस प्रात का दौरा कर रहे हैं। पलामू के जिला मे डलटनगज गढवा, तथा चन्दवा के स्थानों पर उनके भाषण भी हुए हैं। आजकल वह राची, तथा हजारीबाग में कार्य रहे हैं। मिशन की ओर से वहा श्री हरीचन्द्र जी विद्यार्थी बी० ए० बी० टी० तथा श्री भूपनारायण सिह जी भी वहा कार्य कर रहे हैं। मिशन शीघ्र ही ईसाईयों की रोकथाम के लिये अन्य उपदशक भेज रहा है। राची के प्रसिद्ध समाज सुधारक सेठ गगाप्रसाद जी बुधिया ने अपने हिन्दू धर्म रक्षक सघ की ओर से मिशन को पूर्ण सहयोग दने का विश्वास दिलाया है अन्य धनी पुरुषों और स्थानीय आर्य समाजो ने भी हर प्रकार की सहायता का वचन दिया है।

हजारीबाग में आर्यसमाज की ओर से सत्य और अहिंसा के पुजारी ईसाई पादरियों के विरुद्ध केस चल रहे हैं। जिनमें कि बलात्कार आदिवासियो की भूमि पर कब्जा करना और पिस्तौल दिखाकर गुन्डा और शराब आतियों क लोगा को ईसाई बनने क लिए मत्र दूर करना वर्णित हैं बड़ी हैरानी है कि किसी धर्म के प्रचारक इस प्रकार कोई घृणित तथा असभ्य कार्य कर कैसे सकते हैं ईसाई लोग अनेक प्रकार के धनादि प्रलोभन देकर और अपने स्कूलों के आदिवासी बच्चों की चोटिया काटकर भी उनको ईसाई बना रहे हैं। जिस पर वे अनेक बार अदालत से सजायाब भी हुए हैं। आदिवासियों की निर्धनता तथा भोलपन का ईसाई पादरी खूब लाभ उठा रहे हैं। आदिवासी क दिन गिरजाघरों में कुर्ले-क कुछ परिवार सहित ल जाय जाते हैं। अमरीका से आये हुये दूध पाउडर तथा घी क डिब्बे उनको मुफ्त दिये जाते हैं। राची के जिले में पाच लाख तथा हजारीबाग में तीन लाख के लगभग हिन्दू ईसाई बनाये जा चुके हैं। छोटा नागपुर के पाचों जिलों पलामू, राची, हजारी बाग सिंह भूमि तथा मानभूमि में कोई स्थान उनके प्रचार से खाली नहीं है। यदि इन ईसाई पादरियों की प्रगति को रोका न गया तो कुछ वर्षों में कोई आदिवासी हिंदू वहा नजर नहीं आवेगा पादरी जयपालसिह वहा झारखड के नाम से अपनी पोलीटीकल पार्टी बनाये हुए है जिसका प्रयोजन यह है कि वह आसाम में नागा लैंड के प्रकार का बिहार में भी झारखड के नाम से पृथक् स्टेट बनाना चाहते हैं। भारत को इन विदशी ईसाई पादरियों की नीति से अवश्य सचेत रहने की आवश्यकता है वह न केवल हमारी आर्य सभ्यता तथा सस्कृति को नष्ट करने पर उद्यत हैं परन्तु वे हमारी स्वतन्त्रता के भी शत्रु हैं। और इसके विरुद्ध वह प्रचार भी करते हैं जैसा कि नियोगी कमीशन की रिपोर्ट से स्पष्ट प्रतीत होता है। इन सब हालात को देखकर हम कब तक चुप रहेंगे, जहां अपने धर्म की रक्षा करनी है, वहां अपनी सभ्यता और संस्कृति को भी बचाना है। जिसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम भारत की हिन्दू जनता को उनके हथकडों से बचावें यह कार्य महान् है। इसके लिये करोड़ों रुपयों और हजारों प्रचारक चाहिये जो इन लोगों का डटकर मुकाबला करें और इन आदिवासियों को ईसाइयत का शिकार होने से बचावें छोटा नागपुर के घोर भयानक जगलों में ईसाई मिशनरियों के बड़े-बड़े केन्द्र विद्यमान हैं। उनके पास आने जाने के सब साधन मोटर कारें, साईकल, जीपें मौजूद हैं। योरूप के सब देशों से उन्हें आर्थिक सहायता मिल रही है। हमारी सरकार की ओर से भी उनके अस्पतालों शिक्षा सस्थाओं को काफी सहायता मिल रही है। उनके पास २० हजार देशी तथा विदेशी प्रचारक हैं, जो दिन रात अति प्रयत्न से अपने धर्म के प्रचार में लगे हुए हैं। इन सब बातों क होते हुए भी हमें विश्वास रखना चाहिए कि यदि भारत का हिन्दू जाग पड़े और इन ईसाई पादरियों के हथकडो से भारत को बचाने के लिए उद्यत होजावे तो हम न केवल ईसाई बने हुए आदि-वासियों को उनसे मुक्ति दिलाने में सफल होगे परन्तु सब विदेशी ईसाई पादरियो की अपवित्र भावनाओ को असफल बनाकर भारत छोड़ने पर बाधित कर देंगे। आवश्यकता इस समय सबसे अधिक इस बात की है कि भारत निवासी हरएक हिन्दू भाई बहन में देश तथा जाति रक्षा की भावना उत्पन्न हो और वह तन मन धन स सहायता का हाथ बढ़ाए। २०० प्रचारकों क दल द्वारा वहा शीघ्र ही कार्य आरम्भ होने जा रहा है।

भारत सरकार को मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि यदि विदेशी ईसाईयों की सरगर्मी को रोका न गया और भारत में ईसाईयों की सख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गई तो भारत की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ जावेगी।

ईसाई मिशनरी भारत को ईसास्थान बनाने के लिये २६ करोड़ रुपया वार्षिक खर्च कर रहे हैं। देश विभाजन के पश्चात् गत १२ वर्ष में १० लाख हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा चुका है। ब्रिटिश राज्यकाल में यहा १७००विदेशी ईसाई प्रचारक थे परन्तु अब उनकी सख्या ६हजार तक हो गई है। आसाम में नागा जाति के ईसाई बने लोग अब भारत सरकार से स्वतन्त्र ईसाई राज्य के लिये विद्रोह कर रहे हैं। बिहार, उड़ीसा में झारखड के ईसाई भी पृथक शासन का शोर मचा रहे हैं। ट्रावनकोर कोचीन, (केरल) प्रात में लाखों हिन्दू ईसाई बन चुके हैं। परन्तु भारत के हिन्दू धनी लोग कुम्भकर्ण की नींद सो रहे हैं। कौम के इस भारी खजाने की लूट और ह्रास से उनके कानों पर जू तक नहीं रेंगती। आज आर्यावर्त देश में वेद व उपनिषदों की शिक्षा व सस्कृति पर भारी सकट आ रहा है।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त नियोगी आयोग की रिपोर्ट ने सिद्ध कर दिया था कि ईसाई मिशनरियों की कुचेष्टा एव गतिविधियां भारत की राज-नैतिक स्वतन्त्रता के लिये भी अत्यन्त हानिकारक हैं। ईसाई बने लोग भारतीय न रह कर पश्चिमी देशों के धार्मिक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार के दास बन जाते हैं। परन्तु हमारी सरकार ईसाई धर्म प्रचार के इस आक्रमण से सर्वथा उदासीन और लापरवाह है। भील, कोल, सथाल, ओराओं आदि परिगणित कबील के बच्चे चद रुपये देकर खरीद लिये जाते हैं और उन्हें ईसाई आश्रमों में शिक्षा दीक्षा देकर उन्हें पैतृक धर्म से पतित करके ईसाई बनाया जा रहा है। भोले भाले सरल प्रकृति लोगो को अन्य प्रकार के प्रलो-भन दिये जा रहे हैं। उनके यहाँ अनेकों अनाथालय वनिता आश्रम तथा स्कूल, अस्पताल और घी दूध के डिब्बे अन्न वस्त्रो के वितरण भडार, हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति क लूटे जाने के गढ और आक्रमण शिविर सिद्ध हो रहे हैं।

१२६१ में सर्व प्रथम जोन डी मांटी कर पहिला विदेशी ईसाई पादरी भारत में आया था। वह १३ मास के भीतर १०० हिन्दुओं को धर्मभ्रष्ट करने में सफल हुआ। ईसाई सेंट जेवियर ने ५० हजार दक्षिणी भारतियों को ईसाई बनाया। अकालग्रस्त जनता के २६ हजार बच्चों को रामा बाई नाम की ईसाई प्रचारिका उठा ले गई। वह अनेक तिलक भगवा वस्त्र आदि हिन्दू चिह्न धारण करके धोखा देते रहे।

चीन की सरकार ने इन ईसाई प्रचारकों को सरकारी आदेश से देश निकाला दे दिया परन्तु हमारी सैक्युलर सरकार धर्म प्रचार की वैधानिक स्वतन्त्रता के छलावे में अपने देश में राष्ट्र द्रोहियों की सख्या बढ़ाने में सहयोग दे रही है। और उनकी चेष्टा पर कोई प्रतिबन्ध लगाना नहीं चाहती। करोड़ों रुपयों के खर्च करने वाले २५ हजार ईसाई प्रचारकों के विराट आन्दो-लन का मुकाबला करना कोई साधारण काम नहीं। धनाभाव से काम रुका पड़ा है। भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों के अतिरिक्त नैपाल में भी ईसाई खतरा बढ़ रहा है। २ हजार कार्यकर्ताओं की सेना के बिना मुकाबला असम्भव है। हम एक करोड़ लोगों को शीघ्र वापिस लाना चाहते हैं। इसके लिये धनी हिन्दू अपने दान की शुद्धि यज्ञ करने के लिये अर्पण करने का नया सकल्प धारण करें।

श्रद्धां प्रातर्हवामहे......!

[ले०—श्री प० विश्वबन्धु जी, वेदालङ्कार एम० ए० आगरा]

[सच्चे आर्य का जीवन श्रद्धा से ओतप्रोत होना चाहिये आज हमारे सघटन में जो त्रुटियाँ आ रही हैं उनका मूल अश्रद्धा का अभाव ही है। आशा है पाठक इस परिस्थिति पर विचार करेंगे। —सम्पादक]

वैदिक धर्म की जो सबसे बड़ी विशेषता है और जो इसे दूसरे धर्मों से अलग करती है, वह है श्रद्धा और आशा। वैदिक धर्म में अश्रद्धा तथा निराशा के लिए कोई स्थान नहीं है। समस्त वेदों में यही श्रद्धा और आशा माला में मनको की भांति पिरोई हुई है। वास्तव में अश्रद्धा और निराशा मय जीवन उस फूल की भांति है जो देखने मे सुन्दर पर गन्ध रहित है। जिसका कोई उपयोग नहीं है। इसीलिए तो अमेरिका के प्रसिद्ध महापुरुष इमर्सन ने कहा है 'Faith can move mountains' अर्थात् श्रद्धा पहाड़ों को भी चलायमान कर देती है। वे पहाड़ जो बड़े बड़े तूफानों में भी चलायमान नहीं होते वे श्रद्धा के बल पर कैसे हिल जायगे, इस बात को मानने में सामान्य बुद्धि सिर हिलाती है। पर यदि हम इसके भावार्थ पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि श्रद्धा के सहारे मनुष्य जीवन की कठिनाइयों रूपी पहाड़ चलायमान ही नहीं भस्मीभूत हो जाते हैं।

श्रद्धा के ही तो सहारे एक कारखाने में काम करने वाले मामूली मजदूर न्यूटन ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का पुनः पता लगाया। श्रद्धा ही के सहारे तो विज्ञानाचार्य जगदीशचन्द्र बसु और सर सी० वी० रमन जैसे वैज्ञानिकों ने विज्ञान को एक नई गति प्रदान की है। यह श्रद्धा ही तो थी जिसने बालक मूलशंकर को जगद्गुरु महर्षि दयानन्द के पद पर बैठाया। सामान्यतया कहा जाता है कि आर्यसमाज मे तर्क की मात्रा इसलिए अधिक है कि स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द तर्क के ही बल पर आगे बढ़े थे। पर वास्तविकता ऐसी नहीं है। हम देखते हैं कि तर्क करने से पूर्व उन्होंने श्रद्धा का ही आश्रय लिया था। जब उनके पिता ने उनको शिवरात्रि का व्रत रखने को कहा तो मूलशंकर इसके लिए तैयार नहीं हुए। पर जब शिवमहात्म्य और रात्रि जागरण का प्रलोभन दिखाया गया तो वही मूलशंकर मन्दिर के समस्त भक्तों के सो जाने पर भी इसी श्रद्धा के सहारे आंखों पर पानी के छींटे डाल डालकर सारी रात जागता रहा और इसीलिये वह इतना महान तर्क कर सका जो पीछे लाखों की आंखें खोलने वाला हुआ। हमें उनके तर्क का तो पता लग जाता है, पर उस श्रद्धा पर हमारी दृष्टि नहीं जाती जिसने संसार में एक नई क्रांति को जन्म दिया है। ऐसे महान गुरु के शिष्य और श्रद्धामय वैदिक धर्म के अनुयायी होते हुए भी आजकल हम पर यह लांछन लगाया जाता है कि आर्यसमाजी सामान्यतया अश्रद्धालु होते हैं। यह हमारे लिये लज्जा की बात है।

अभी मैं आगरे से बनारस जा रहा था तो जिस डब्बे में चढ़ा उसमें इतनी भीड़ थी कि खड़ा रहना भी कठिन हो रहा था। एक सज्जन जो अपने परिवार के साथ एक पूरी सीट को रुकाकर बैठे थे न जाने मुझे क्या समझ कर अपने बिछौने पर बैठा लिया। बात चीत होती रही। कुछ खाने पीने को भी मुझे दिया गया। पर लगभग एक घंटे के बाद वे मुझ से पूछ ही बैठे कि आप किस सम्प्रदाय के हैं। मैंने निःसकोच उत्तर दिया कि मैं तो आर्यसमाजी हूँ। इतना सुनना था कि उनका मुंह लटक गया और लगभग एक घण्टे तक मुझ से नहीं बोले। मैं समझ तो गया कि बात क्या है फिर भी मैंने पूछा कि श्रीमान् जी यदि मेरे यहाँ बैठने से आपको कष्ट हो रहा हो तो मैं उठ सकता हूँ। नहीं साहब आप प्रसन्नता पूर्वक बैठे रहें मैंने बातचीत यों बन्द कर दी है कि आर्यसमाजी श्रद्धाहीन होते हैं और इसीलिए उनका जीवन बड़ा शुष्क सा हो जाता है। उन सज्जन के इन शब्दों पर मैं कई घण्टे सोचता रहा और आज भी जब कभी वह घटना याद आ जाती है तो मैं इसी परिणाम पर पहुँचता हूँ कि उसकी बात में पर्याप्त सत्यांश है। सचमुच यह अश्रद्धा और अविश्वास आर्यसमाज में इतना बढ़ता चला जा रहा है कि इसका हमारे व्यक्तिगत जीवन तथा सामाजिक सघटन पर भी बड़ा विषैला प्रभाव पड़ने लगा है।

आज से कुछ ही समय पहले यह देखा जाता था एक आर्यसमाजी को देख दूसरे आर्यसमाजी का हृदय खुशी से उछल पड़ता था। पर अब ऐसा नहीं देखा जाता। अब तो सामान्य आर्यसमाजी की तो बात ही जाने दीजिए आर्यसमाज के मिशनरी उपदेशकों तथा कार्यकर्ताओं के प्रति भी अश्रद्धा का भाव होता जा रहा है। अभी पिछले दिनों एक नगर की एक समाज में एक नवयुवक मिशनरी उपदेशक बुखार हो जाने से आकर रुके। समाज के प्रधान ने बजाय इसके कि उनके कुछ खाने पीने का प्रबन्ध करते, उनको समाज में ठहरने भी नहीं दिया क्योंकि समाज के किसी प्रधान का उनके पास प्रमाण पत्र नहीं था। इस प्रकार की अनेकों घटनायें हो रही हैं। इसी अश्रद्धा के कारण आर्यसमाज में नवीन प्रचारक नहीं आ रहे हैं क्योंकि यहाँ आकर भूखा कौन मरे। आज से कुछ समय पहले तक हमें ऐसे बहुत से नवयुवक मिला करते थे जो आर्यसमाज के प्रचार हेतु अपना घर बार छोड़ आते थे पर आजकल ऐसा नहीं देखा जाता। जो थे वे भी किनारा कर रहे हैं। क्योंकि जब किसी के रहने और खाने की भी व्यवस्था नहीं तो अपना जीवन कौन लगाये।

अब पुराने आर्य समाजियों की श्रद्धा देखिए। प्रसिद्ध विद्वान् प० जिज्ञासु जी ने हमें बताया कि जब मैं अपने चार साथियों के साथ बनारस में पढ़ने गया तो उस समय बनारसी पंडित आर्य समाजियों को पढ़ाते न थे। यह समस्या तो किसी तरह हल हो गई पर अब भोजन का प्रश्न सामने आया। हमें सदावर्त में तो खाना मिल नहीं सकता था। तब चार पांच आर्य समाजियों से मिले और अपनी भोजन प्रबन्ध के लिये कहा तो बड़ी खुशी से उन्होंने हमारे भोजन की समस्या हल कर दी। पंडित जी बताते हैं कि हम चार विद्यार्थियों ने चार आर्य समाजियों के यहाँ लगभग दस वर्ष तक भोजन किया था। यह थी श्रद्धा जिसके कारण आर्यसमाज में बड़े-बड़े विद्वान् आसानी से तयार हो जाते थे। पर आज हम देख रहे हैं कि किसी विद्वान्, सन्यासी, ब्रह्मचारी को एक दिन भी भोजन कराने को तैयार नहीं हैं। फिर कहते यह हैं कि हमारे भी बच्चे आर्यसमाजी नहीं बनते। बनें कैसे उनको कभी आर्य समाज में लाते नहीं और विद्वानों को घर पर कभी बुलाते नहीं, फिर कैसे आर्य बनें।

अभी राजस्थान की एक समाज के उत्सव में हमारे साथ एक बड़ी दिलचस्प घटना घटी। एक दिन हमारे भोजन का प्रबन्ध मन्त्री महोदय के घर पर था। हम तीन-चार पंडित थे। जब हम भोजन करने पहुँचे तो पड़ौस की एक स्त्री ने मन्त्री की स्त्री से अपनी राजस्थानी भाषा में पूछा—ये पावणा कुण आया छे। मन्त्री की स्त्री ने कहा कुण जाने कुण छे बाप खाया। हम सबने यह सुन लिया। हमें हंसी भी आई और दुख भी हुआ कि आज आर्य समाजियों की दशा कैसी होती जा रही है। पंडितों से नहीं रहा गया। वे मन्त्री को कह ही बैठे कि क्या हमें यहां गाली खाने को बुलाया है। मन्त्री बड़ा सज्जन था नम्रतापूर्वक बोला। महाराज क्षमा करें, मेरी स्त्री आर्य समाज को जानती ही नहीं है। पर क्या हम सोचते हैं कि ऐसा क्यों है। स्पष्ट है न तो हम उन्हें समाज लाते हैं न विद्वानों को कभी घर पर बुलाते हैं। लायें कैसे श्रद्धा हो नहीं है। यदि हम निश्चय कर लें कि प्रयत्नपूर्वक अच्छे विद्वान्, सन्यासियों आदि को घर पर बुलाकर उनका सत्कार करेंगे और घर वालों को उनके सामने बैठे कुछ उपदेश श्रवण करेंगे तो समस्त परिवार को आर्य बनने में देर न लगे। परिवारों में श्रद्धा की भी नदियां बह निकलें क्योंकि श्रद्धा तो माता बहनों में स्वाभाविक है। आर्यसमाज का यह दुर्भाग्य है कि घर की देवियां बहुत कम आर्य विचारों की हैं। इसीलिये आर्यसमाज की जड़ें हमारे परिवारों में नहीं जम पाई हैं।

आर्यसमाज का प्रारम्भिक युग श्रद्धा युग था। एक दूसरे के प्रेम और विश्वास के बल पर ही आदमी अपना तन, मन, धन अर्पण कर देता था। इसी श्रद्धा युग ने आर्यसमाज को बड़े-बड़े नेता, विद्वान, त्यागी, ब्रह्मचारी आर्यसमाज को दिये थे। पर अब हमारी अश्रद्धा और अविश्वास से जो हैं वे भी किनारा कर रहे हैं। मुझे डर है कि वर्तमान पीढ़ी के बाद इनका स्थान कौन लेगा।

अत मेरा सबसे यह नम्र निवेदन है कि सब अपनी अपनी आर्य समाजों में यह नियम बनाये कि आर्यसमाज में जो कोई भी उपदेशक, विद्वान्, सन्यासी, वानप्रस्थी और ब्रह्मचारी पधारें हम उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे और घरों में ही भोजन की व्यवस्था करेंगे। कुछ समाजों में हमने ऐसा देखा भी है। यह एक बड़ी स्वस्थ परम्परा है। इससे आपातत श्रद्धा का सागर उमड़ पड़ता है। काश! कि सब समाजों में यह शानदार परम्परा प्रचलित हो जाय। ईश्वर करे आर्यसमाज में पुनः श्रद्धा और विश्वास का वातावरण बढ़े और हम खुले हृदय से वेद की यह प्रार्थना कर सकें—

श्रद्धां प्रातर्हवामहे, श्रद्धां मध्य दिन परि। श्रद्धां निम्लुचि यत्श्रद्धे, श्रद्धे श्रद्धापयोहम ॥

अर्थात् हे

प्रात काल

मध्याह्न में

रात्रि

ह

सुझाव सम्मतियां

आर्य समाज की निर्वाचन प्रणाली का आधार

सदाचार और स्वाध्याय हो

[ले०—श्री म० ज्ञानेश्वरानन्द वानप्रस्थी, दीवानहाल, देहली]

वर्तमान काल में आर्यसमाज में प्रत्येक व्यक्ति एक फार्म भर कर आर्यसमाज का मेम्बर बन सकता है और उसे सभासद बनने के लिये फिर एक वर्ष का मासिक शुल्क देकर सदाचारपूर्वक रहना होता है, इस सदाचार शब्द की इस समय तक कोई विशेष व्याख्या नहीं हुई, इसलिए जिस व्यक्ति ने पैसे दे दिये वह सभासद् बन गया, हां कहीं कहीं समाज के साप्ताहिक सत्संगो में उपस्थित होने की बात भी गिनी जाती है जो वर्ष भर में तेरह बार उपस्थित होकर उपस्थिति पत्रिका में हस्ताक्षर कर दे उसे सभासद निश्चित कर दिया जाता है और ऐसे सभी व्यक्तियो को निर्वाचन में भाग लेने का अधिकार प्राप्त हो जाता है अत जो भी अधिकारी बनने की इच्छा रखता हो उसे अपनी सफलता के लिए थोडा साधन और उद्योग करना होगा।

आर्यसमाज और उसके सभासदो के हितार्थ मेरा यह प्रस्ताव है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाज के उपनियमो में थोडी सी वृद्धि करे और सदाचार शब्द की व्याख्या में यह संयुक्त कर दे कि प्रत्येक आर्य सभासद को सभा की दो परीक्षायें देनी हुआ करेगी (१) प्रथम सभासद् परीक्षा (२) अधिकारी परीक्षा प्रथम सभासद बनने के लिए वैदिक संध्या, दैनिक यज्ञ अर्थात् पंच महायज्ञ विधि आर्योद्देश्य रत्नमाला, आर्याभिविनय और व्यवहार भानु इन चारों पुस्तको को अर्थों सहित पढ़ कर कर्मकाण्ड का ज्ञान प्राप्त करके तब परीक्षा में सफल होकर एक वर्ष पर्यन्त सदाचारी रहकर समाज की यज्ञ वेदी पर बैठ अपने सदाचारी होने का प्रमाण पत्र प्राप्त करके भविष्य में सदाचारी रहने का व्रत लेने पर ही सभासद् घोषित किया जाये, तब उस सभासद् को दूसरी अधिकारी परीक्षा की तैयारी करने का अधिकार प्राप्त होगा। इस परीक्षा में संस्कार विधि, सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके सफल होने वाले को आर्यसमाज में अधिकारी बनने का अधिकार प्राप्त होगा, सफल व्यक्तियों में से प्रथम तीन को लिया जायेगा और वह एक वर्ष तक किसी निश्चित अधिकारी से प्रति दिन दो घण्टे शिक्षा प्राप्त करे, समाज के समस्त सदस्यों के स्थानो की जानकारी प्राप्त करके सप्ताह में न्यून से न्यून एक बार सबके गृहो पर पहुँचकर मिलाप करके उनके परिवारो का कुशल मंगल समाचार प्राप्त करे। इस प्रकार तीनों में से अधिक सेवाव्रत पालन करने वाले को आगामी वर्ष उप सहायक पुस्तकाध्यक्ष और उप सहायक पुस्तकाध्यक्ष को सहायक पुस्तकाध्यक्ष, सहायक पुस्तकाध्यक्ष को पुस्तकाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष उप सहायक मन्त्री, उप सहायक मन्त्री को उप मन्त्री, उपमन्त्री को मन्त्री, मन्त्री को उप सहायक प्रधान, उप सहायक प्रधान को उप प्रधान उप प्रधान को प्रधान, प्रधान को कोषाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष को समाज के प्रतिष्ठित सदस्य, प्रतिष्ठित सदस्य को प्रांत की प्रतिनिधि सभा के लिये प्रतिनिधि बना कर भेजा जाये। समाजो द्वारा भेजे हुए प्रतिनिधि सभा के सदस्यगण सभा में यदि अधिकार प्राप्त करना चाहे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती कृतयजुर्वेद भाष्य को पढ़कर सभा की वेदी परीक्षा मे सफल होकर समाज के अधिकारियो की भांति ही अधिकारो का पूरा कर जब प्रान्त की सभा में प्रतिष्ठित हो जाय तो प्रांत की सभा के सदस्य के रूप मे फिर उन्हे सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्य बना कर भेजा जाये वहा अधिकारी बनने को सामवेद भाष्य की द्विवेदी परीक्षा उत्तीर्ण हो तो सार्वदेशिक में पूर्ववत ही अधिकारों का परिवर्तन करते हुए प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करें तो उनके शुभ नाम के साथ सर्वोपरि प्रतिष्ठित आर्य द्विवेदी शोभित होता रहे।

परीक्षोत्तीर्ण व्यक्ति को समाज सेवा के लिए एक दो वर्ष के लिए ही नहीं लगभग २० वर्ष तक क्रमशः अधिकारों की प्राप्ति होती रहेगी और वह भी अयोग्य होकर नहीं उन्नत होते हुए इन अधिकारों में कभी मन्त्री को उप मन्त्री नहीं और प्रधान को उप प्रधान बनना पड़ेगा।

केवल मेरा ही ऐसा विचार नहीं है आर्य जनता में लाखों ही व्यक्तियों का ऐसा ही विचार है, कि इस प्रकार आर्यसमाज सचमुच फिल्टर हो जावेगी, सब कूड़ा और मल छन जावेगा और नित्यप्रति के झगड़े जाते रहेंगे, फिर किसी को किसी पर कीचड़ उछालने की आवश्यकता न पड़ेगी।

...की सेवा में रखा है, हो सकता है कोई अन्य विद्वान् ...धिक सुन्दर सुझाव दे सकें। परन्तु मैं समझता हूँ कि ...द्धति को हटाकर यदि हम येह परिवर्तन का क्रम ...गान लाभ जो होगा वह यह कि आर्यों में ...द में श्रद्धा और अपने ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त ...रता जाती रहेगी, इसके साथ ही प्रत्येक

धन्य है स्वतन्त्र भारत के वे कानून जो 'काले बालों' और 'गोरे गालों' की तानों को रोकने में असमर्थ हैं

[ले०—श्री प्रदीपकुमार]

[आज देश के नैतिक एवं चारित्रिक पतन की सारी जिम्मेवारी अश्लीलता और विलासिता का वातावरण उत्पन्न करने वाली सरकार पर है। सरकार सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत नृत्य वाद्य संगीत के कलात्मक पहलू को नहीं उसके मनोरंजक और उत्तेजक आस्वाद को महत्व देती है। लेखक के शब्द विचारणीय हैं कि जब सरकार अश्लील गीतों को रोकती नहीं और समाज उसका खुलेआम दुरुपयोग करने में हिचकिचाता नहीं तब देश का भविष्य कैसे उन्नत हो सकता है। अन्धकारमय भविष्य से प्रकाश की ओर ले जाने के लिए ही हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं "तमसो मा ज्योतिर्गमय" आशा है अन्धकार नष्ट होकर रहेगा।

—सम्पादक

अच्छी से अच्छी शिक्षा-योजना, अच्छी से अच्छी शिक्षा पद्धति तब तक वांछित परिणाम नहीं प्राप्त कर सकती जब तक कि शिक्षा के प्रतिकूल परिस्थितियों को समूल नष्ट करके एक अनुकूल वातावरण का निर्माण नहीं किया जाता। आज शिक्षक का सारा प्रयास इसीलिये असफल होता दिखाई दे रहा है कि समाज के कर्णधारो ने इन प्रतिकूल परिस्थितियो पर काबू पाने का ठोस प्रयत्न नहीं किया। यहाँ शिक्षा के निर्माण में बाधक प्रतिकूल परिस्थितियो में अश्लील संगीत और सिनेमा के अभिशाप की ओर संकेत करेंगे।

बालक का चरित्र निर्माण कैसे हो जब कि घर में रेडियो पर बाजार की सड़कों पर भरी दुकानो पर, मुहल्लों में विवाह आदि अवसरों पर लाउडस्पीकरों के द्वारा और सिनेमा का विज्ञापन, बीड़ी, सिगरेट का विज्ञापन और इसीप्रकार के अन्य विज्ञापन करने वाले तांगे-रिक्शों पर घासलेटी फिल्मों की आवाजें उसे सुनाई पड़ती हैं। एक तीन साल की उम्र का बच्चा अब जाने में 'गालों' और 'बालो' के राग अलापता है। धन्य है सरकार के उन कानूनों को जो सड़को और गलियों को, स्कूलों के ठीक पास 'काले बालो' और गोरे गालो की तानों से चौबीसो घण्टे गुजाते रहने को रोक नहीं सकते और भारत के भावी नेता' बालक को प्रथम सीख सिखाते हैं। साथ ही धन्यवाद उन मा-बाप, भाई भाभियों को भी है जो विवाह की खुशियो में सस्ते और अश्लील इश्किया गीतों को बजाकर मनाते हैं। प्रश्न है—क्या, 'सेंसरबोर्ड' सरकार और बालक के संरक्षक इस प्रकार चरित्र भ्रष्टता की नींव नहीं रखते? फिर नेताओं और शिक्षाधिकारियो को क्या अधिकार है कि वे 'शिक्षा' के मामले को लेकर शिक्षकों को उपदेश की हिमाकत करें।

वाह रे 'सेंसरबोर्ड' जो गन्दे अश्लील गीतों और संवादों से भरे अर्द्ध नग्न चित्रों को प्रमाणित करता है और वाह री सरकार जो १८ साल तक की आयु वाले बालक बालिकाओ पर ऐसे चित्र देखने की कानूनी रोक लगाने की व्यवस्था को लागू नहीं कर सकती।

मैं कहता हूँ कि ऐसे फिल्मों और गीतों के प्रचलन को फौरन कानूनन अपराध करार दो प्रेम मोहब्बत के दरबों वाले चित्रो में १८ वर्ष तक की आयु वाले छात्र-छात्राओं के लिए प्रवेश निषेध सख्ती से लागू करो, नहीं तो इस देश का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य कभी अच्छा न होगा।

वरकी आवश्यकता

उत्तरप्रदेश में कुटीरोद्योग के विकास की योजनाएं

[श्री सच्चिदानन्द]

उत्तर-प्रदेश सरकार ने सभी बड़े लघु तथा कुटीर उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करने क उद्देश्य से अल्प ब्याज दर पर रुपया उधार देने की व्यवस्था की है। राज्य का उद्योग विभाग विभिन्न उद्योगो का कोयला तथा अन्य नियमित वस्तुए जसे लोहा, इस्पात सीमेंट इत्यादि वितरित करता है, यातायात एव विद्युत सबधी सुविधाए सुलभ कराने में सहायता करता है, औद्योगिक इकाइयो की स्थापना क लिए प्राविधिक परामर्श देना है। राज्य की विभिन्न राजकीय एव सहायता प्राप्त प्राविधिक एव व्यावसायिक संस्थाओ में नि शुल्क शिक्षा दी जानी ह। प्र विधिक शिक्षा के लिए छात्रवृत्तिया और ऋण भी दिये जा ते है।

कहना न होगा कि उपर्युक्त विवरण से राज्य सरकार की जिस औद्योगिक नीति का निदर्शन होता ह वह पराधीनता के युग में प्रचलित नीति स सर्वथा भिन्न है। आज राज्य में उद्योगो की स्थापना के लिए जैसा स्वस्थ वातावरण विद्यमान हे वैसा कभी नहीं था। इसका परिणाम सन्तोषजनक हुआ। अनेक बड़े उद्योगो की स्थापना हुई और साथ ही त्रिवसाथ बक कुटीर एव लघु उद्योगों को भी पनपने का अवसर मिला। बड़े उद्योगों में चुर्क स्थित सीमेन्ट उद्योग, लखनऊ स्थित सूक्ष्म यन्त्र कारखाना, जे० के० रेयन मिल और उसके सहायक कारखानो वाराणसी स्थित सोडा ऐश फैक्ट्री बाजपुर स्थित सहकारी चीनी मिल और लखनऊ की टार्च फैक्टरी, का उल्लेख किया जा सकता है।

लघु उद्योगों की विकास क लिए कानपुर में लघु उद्योग आयोग की स्थापना इस वर्ष की एक महत्वपूर्ण घटना है। यह आयोग लघु उद्योग संस्थाओं अल्पकाल तथा प्राविधिक सहायता देने के अतिरिक्त उनमें बनी वस्तुओं की बिक्री की भी व्यवस्था करेगा, ज्ञातव्य है कि इस वर्ष उत्तर प्रदश में औद्योगिक विकास के लिए ७ करोड़ ७३ लाख रुपयों की व्यवस्था की गयी है इनमे से ३ करोड़ २८ लाख रुपये कुटीर एव लघु-उद्योगो की उन्नति के लिए खर्च किये जायगे। इस सम्बन्ध में जो कार्यक्रम बनाये गये हे उनके अनुसार १०,२०० व्यक्तियों को विभिन्न लघु एव कुटीर उद्योगोंकी शिक्षा भी प्रदान की जायगी।

इस समय कुटीर उद्योगों के विकास के निमित्त ९९ परियोजनाए चालू हैं। सन् १९५८-५९ में ६ नयी परियोजनाए और चालू की जायगी। इन नयी परियोजनाओं में वाराणसी में जरी उद्योग का विकास, कालीन में अब कालपूस की लकड़ी क उद्योग का विकास हस्तशिल्प सहकारी समितियों को ऋण प्रमौली सारनाथ और मसूरी में हैन्डीक्रैफ्ट शो रूम की स्थापना शब्दचिन्हाकन योजना का प्रसार तथा देहरादून क कलाकेन्द्र को वित्तीय सहायता देना सम्मिलित है।

इस सम्बन्ध में कुछ और प्रस्तावो का उल्लेख करना भी उपयुक्त होगा। इनमें से एक खुर्जा में इन्सुलेटरा की परीक्षा प्रयोगशाला क लिए विदशों में से आवश्यक यन्त्र मगाने पर १ लाख ७८ हजार रुपये व्यय करने का प्रस्ताव है। दूसरा प्रस्ताव अखिल भारतीय खादी एव ग्रामोद्योग आयोग की सहायता से राज्य में औद्योगिक सहकारी समितियों के अधिकाधिक प्रसार और १४ प्रकार के ग्रामीण उद्योगो का और अधिक विकास करने का है। फल उपयोग योजनाओ के लिये २१ लाख ५० हजार रुपयो का प्रबन्ध किया गया है।

यह सर्व विदित ह कि आगरा और कानपुर में । औद्योगिक आस्थान खोले जा चुके है। इन आस्थानो में छोटे छाटे उद्योगपतियो को विभिन्न प्रकार के लघु उद्योग चलाने क लिए अनेक सुविधाए प्रदान का जाती हैं। पहाड़ी जिलो द पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकास के निमित्त वहाँ पर तीन उद्योग संस्थाओ की स्थापना का निश्चय किया है

इस वर्ष ५२९ नयी औद्योगी सहकारी संस्थाओ की भी स्थापना की गयी इस प्रकार अब इन संस्थाओं की संख्या बढ़कर २ ४५० हो गयी है। सम्बन्धित उद्योगों को २९ लाख रुपया दिया गया औद्योगिक सहकारी समितियो ने उत्पादक शक्तियो का समुचित उपयोग समाप्त कर दिया है और कुशल श्रमिकों को पूरा काम देकर कशलश्रम की बर्बादी रोक दी है। ज्ञातव्य है कि प्रदेश में पूजी की कमी है किन्तु मानव शक्ति भरपूर है। ऐसी स्थिति मे छोटे उद्योगों की उन्नति के लिए यह आवश्यक ह कि उनके सचालन का भार औद्योगिक सहकारी समितियो को सोप दिया जाय। द्वितीय पचवर्षीय आयोजन क अन्त तक इस तरह की समितियो की संख्या २ ५०० से ऊपर हो जाने की आशा है। सभी औद्योगिक सहकारी समितियो की वित्तीय व्यवस्था क लिए सन् १९५५ में उ० प्र० औद्योगिक सहकारी बैंक की स्थापना हुई थी किन्तु बैंक ने वास्तविक कार्य सन् १९५६ के अन्त में प्रारम्भ किया सन् १९५८ तक बैंक की चुकती हिस्से की पूजी लगभग ७ लाख रुपया और कारोबारी पूजी लगभग ३४ लाख रु० थी। आशा है इन सब सुविधाओं के फलस्वरूप लघु एव कुटीर उद्योगों को पूर्ण विकास का अवसर मिलेगा।

कार्यकारिणी समिति की नियुक्ति

गुरु विरजानन्द शिलान्यास, दयानन्द दीक्षा शताब्दि, आर्यमित्र जयन्ती तथा अभिनन्दन समारोह समिति की बैठक २३ अगस्त ५९ को मथुरा आर्यसमाज मन्दिर में हुई। उसमें निर्णय हुआ कि स्वागत कारिणी समिति के अतिरिक्त एक वर्किङ्ग कमेटी का निर्माण किया जाय। जो समय-समय पर अपना कार्य करती रहे। तदनुसार निम्न सज्जन नियुक्त किये गये हैं—

१—श्री पं० हरिशंकर शर्मा जी सभा प्रधान आगरा
२—,, प्रेमचन्द्र जी शर्मा सभा मन्त्री, लखनऊ
३—,, उमेशचन्द्र जी स्नातक मन्त्री जयन्ती समिति
४—,, कर्णसिंह छोकर जी, कार्यकर्त्ता प्रधान वर्किङ्ग कमेटी
५—,, रमेशचन्द्र जी अग्रवाल वकील, स्वागत मन्त्री
६—,, रामप्रसाद जी आर्य मैन्दू (अलीगढ़)
७—,, मोहनलाल जी आर्य आगरा
८—,, नेत्रपालसिंह जी पूर्व सभा मन्त्री अलीगढ़
९—,, शेरसिंह जी प्रधान आर्यसमाज मथुरा
१०—,, माताप्रसाद जी वैद्य, मन्त्री आर्यसमाज मथुरा
११—,, गोपीराम जी पथिक, प्रधान जिलोपसभा
१२—,, ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम, मथुरा
१३—,, ईश्वर दयालु जी आर्य, उपमन्त्री सभा बिजनौर
१४—,, फूलनसिंह जी, सहायक कोषाध्यक्ष सभा
१५—,, विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी, प्रचार मंत्री जयन्ती
१६—चेयरमैन नगरपालिका मथुरा

उपर्युक्त समिति को सहयुक्त करने का पूर्ण अधिकार दिया गया है।

प्रेमचन्द्र शर्मा, एम. एल सी.
सभा-मंत्री

मथुरा में दयानन्द दीक्षा शताब्दि समारोह की तैयारियां जोरों में, स्वागत समिति का निर्माण और प्रबन्ध समिति का कार्य आरम्भ

१ सितम्बर को आर्यसमाज तिलक द्वार मथुरा में दीपावली के अवसर पर होने वाले दयानन्द दीक्षा शताब्दी समारोह प्रबन्ध समिति की विशेष बैठक माता द्रौपदी देवी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

समारोह स्वागत समिति के मन्त्री श्री बाबू रमेशचन्द्र वकील व समारोह समिति के प्रधान मन्त्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र ने उपस्थित सहयोगी बन्धुओं के समक्ष समारोह की प्रबन्ध व्यवस्था सम्बन्धी योजनायें प्रस्तुत कीं। सभी बन्धुओं ने उत्साह पूर्वक समारोह को सफल बनाने में सहयोग और मथुरा के गौरवानुरूप प्रबन्ध व्यवस्था करने का आश्वासन दिया है विविध प्रबन्धों के लिए १६ उपसमितियों का निर्माण किया है, उपसमितियों के संयोजक निम्न सज्जन नियुक्त किये गए हैं।

१—समारोह स्थान प्राप्ति प्रबन्ध समिति
संयोजक—श्री पं० आत्माराम जी ओवरसियर ३ सदस्य
२—प्रकाश तथा लाउडस्पीकर समिति
संयोजक—श्री ठा० शेरसिंह जी प्रधान आर्यसमाज मथुरा, ५ सदस्य
३—सफाई तथा जल प्रबन्ध समिति
संयोजक—श्री रामप्रसाद जी कमल, वकील, ११ सदस्य
४—स्वयं सेवक समिति
संयोजक—श्रीमानसिंह जी विद्यार्थी, ६ सदस्य
५—पंडाल निर्माण समिति
संयोजक—श्री गणेशीलाल जी अठासिया, ७ सदस्य
६—यज्ञशाला समिति
संयोजक—श्री शिविशंकर जी चौहरे, ५ सदस्य
७—प्रदर्शनी समिति
संयोजक—श्री ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम, १२ सदस्य
८—चिकित्सा प्रबन्ध समिति
संयोजक—श्री डा० राधाकृष्ण जी गर्ग, ६ सदस्य
९—निवास व्यवस्था समिति
संयोजक—श्री लाडली प्रसाद जी, ११ सदस्य
१०—रूप सज्जा समिति
संयोजक—श्री नन्दलाल जी शर्मा, ५ सदस्य
११—प्रेस तथा विज्ञप्ति समिति
संयोजक—श्री शिवचरणलाल जी शर्मा, ३ सदस्य
१२—नगर कीर्तन प्रबन्ध समिति
संयोजक—श्री देवीचरण जी, ७ सदस्य
१३—खाद्य प्रबन्ध तथा मूल्यांकन समिति
संयोजक—श्री श्यामलाल जी अग्रवाल, ८ सदस्य
१४—स्टाल समिति
संयोजक—श्री नृपेन्द्रनाथ जी गुप्त वकील
१५—महिला समिति
संयोजिका—श्रीमती सुशीला मलिक
१६—अर्थ संग्रह समिति
संयोजक—श्री कर्णसिंह जी छोंकर

रमेशचन्द्र अग्रवाल, वकील
मन्त्री, स्वागत समिति
दयानन्द दीक्षा शताब्दि, विरजानन्द स्मारक, आर्यमित्र हीरक जयन्ती,
विद्वदभिनन्दन समारोह, मथुरा

मथुरा चलो

दयानन्द दीक्षा शताब्दी आदि समारोह ३० ३१ अक्तूबर व १-२ नवम्बर को धूम धाम से समारोहपूर्वक मथुरा में मनाया जा रहा है। समस्त प्रान्तों से लोग आयेंगे। बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, बदायूं, रामपुर के आर्य यात्रियों की सुविधा के लिए रिजर्व डिब्बे लगवाने का प्रबन्ध किया जा रहा है जो आर्य भाई रिजर्व डिब्बे में सीट चाहें वे शीघ्र ही मुझ से पत्र-व्यवहार करें।

चन्द्रनारायण वकील
प्रधान—आर्यसमाज बिहारीपुर, बरेली

सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, देहली का त्रैवार्षिक निर्वाचन

२३ अगस्त १९५९ को दयानन्द भवन नई देहली में सभा की वार्षिक बैठक में आगामी ३ वर्षों के लिए सभा के अधिकारियों का निर्वाचन निम्नप्रकार से हुआ—पदेन प्रधान—श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट तथा कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कपड़े वाले, कार्यकर्त्ता प्रधान—श्री भीमसेन विद्यालङ्कार अम्बाला (पंजाब)

मन्त्री—आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम०ए० रायबरेली (उ०प्र०)
सहायक मन्त्री—श्री धर्मवीर जी वेदालङ्कार देहली

इनके अतिरिक्त १० सदस्य कार्यकारिणी के लिए निम्ननिखित निर्वाचित हुए—

१—श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी
२—" " बृहस्पति जी वेद शिरोमणि गुरुकुल वृन्दावन
३—" " विश्वश्रवाः जी देहली
४—" " व्रतानन्द जी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़
५—" धर्मपाल विद्यालङ्कार सहा० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
६—" नरदेव स्नातक, संसद सदस्य, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वृन्दावन
७—" भारतभूषण जी मन्त्री आ० प्र० सभा मध्यभारत, लश्कर
८—" आचार्य भगवानदेव जी, गुरुकुल झज्झर
९—" देवराज चड्ढा एम० ए०, देहली
१०—" क्षितीशकुमार जी, वेदालङ्कार देहली

निम्नलिखित ५ सदस्य साधारण सभा के लिए मनोनीत किये गये :—

१—श्री डा मंगलदेव शास्त्री एम०ए० डी०,फिल० वाराणसी
२—" डा० रघुवीर संसद सदस्य देहली
३—" ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, वाराणसी
४—" प्रिंसिपल भगवानदास जी, डी० ए० वी० कालेज, अलीगढ़
५—" सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार देहली

परीक्षाएं—निश्चय किया गया कि महर्षि दयानन्द पाठविधि तथा आर्य सिद्धान्त सम्बन्धी परीक्षाएं दिसम्बर मास में की जावें।

वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० मन्त्री
सार्वदेशिक विद्यार्य सभा, देहली (कार्यालय रायबरेली उ० प्र०)

भारत सरकार की हिन्दी विरोधी नीति

[ले०—श्री शंकरदेव जी संसद सदस्य]

अपने देश में अपनी भाषा पर अत्याचार और वह भी अपने देशवासियों द्वारा कब तक इसी प्रकार चलता रहेगा यह चिन्तनीय और गम्भीर प्रश्न है। भारत का संविधान हिन्दी को राष्ट्र भाषा का जो महत्त्व प्रदान कर चुका है उसको मानना उसकी पूर्ति में सक्षम रहना और उस पर श्रद्धा प्रत्येक भारतीय का नैतिक और राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। हिन्दी सप्ताह के अवसर पर पाठक इस लेख से परिस्थिति का अध्ययन करें और सरकार की हिन्दी उपेक्षा के प्रति लोक भावना की अभिव्यक्ति करें। —सम्पादक

सन् १९५० में संविधान द्वारा हिन्दी को केन्द्र की सरकारी भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गयी थी तो यह आशा की गयी थी कि केन्द्रीय सरकार कोई योजना बनाकर संविधान द्वारा नियत १५ वर्ष की अवधि में क्रमिक रूप से सरकारी कामकाज में हिन्दी को स्थान देना शुरू कर देगी। आज से ६ वर्ष बीत जाने पर भी जब केन्द्रीय सरकार के मन्त्रालयों और विभागों में हिन्दी की स्थिति वही पाते हैं जो सन् ५० से पहले थी तो मानना पड़ता है कि हिन्दी को सरकारी काम काज के लिये प्रयुक्त न होने देने के लिए कोई पूर्वायोजित योजना कार्य कर रही है। यदि कोई सरकारी आयोग अथवा संसद द्वारा नियुक्त जाच समिति केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक विभाग में हिन्दी की प्रगति के सम्बन्ध में जाच पड़ताल करे तो उसे यह देखकर भयकर निराशा होगी कि सरकारी दफ्तरों में हिन्दी के साथ उससे भी बदतर व्यवहार किया जाता है, जो कि अंग्रेजों के जमाने में हिन्दुस्तानियों के साथ होता था।

यदि हम संसद की कार्यवाहियों को ध्यान से पढ़ते रहें तो हिन्दी के प्रति इस तिरस्कार और उपेक्षा भावना का कारण सम्भवत मिल जायेगा। लोकसभा के बजट अधिवेशन में सूचना और प्रसार मन्त्रालय की मांगो पर आलोचना करते समय कुछ सदस्यों ने इस विभाग के मन्त्री महोदय पर आरोप लगाया कि वह मन्त्रालय हिंदी के प्रति उपेक्षा भाव बरतते हैं। इसका उत्तर मन्त्री महोदय ने अपने १० मार्च के भाषण में देते हुए कहा— 'हिन्दी का प्रचार इस मन्त्रालय का उत्तर दायित्व नहीं है।' वस्तुत यह उत्तर केवल सूचना और प्रसार मन्त्री का नहीं है, अपितु सारी भारत सरकार का है। भारत सरकार का कोई मन्त्रालय, कोई विभाग, कोई दफ्तर हिन्दी का प्रचार अथवा उसे अपने यहाँ लागू करना अपना उत्तरदायित्व नहीं मानता। इसलिए परिणाम यह है कि हिन्दी को संवैधानिक मान्यता प्राप्त होने पर भी सरकारी तौर पर वह भारत सरकार के प्रत्येक मन्त्रालय और विभाग से अस्वीकृत और बहिष्कृत भाषा है। उसकी संवैधानिक मान्यता को लेकर कोई झगड़ा न कर बैठे इस लिये प्रत्येक मन्त्रालय और विभाग हिन्दी के प्रति मौखिक सहानुभूति प्रकट करता है। परन्तु उसके साथ व्यवहार अछूतों से भी गया बीता करता है।

> अंग्रेजियत और ईसाइयत के प्रचारक मिशनरियों और पादरियों ने कभी यह दावा नहीं किया कि हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार की जिम्मेदारी उनकी है पर फिर भी उन्होंने आज से २ शताब्दी पहले भारत में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए भारतीय भाषाओं को ही अपनाया। क्यों? प्रचारक का हथियार है भाषा और अच्छा प्रचारक सदा अच्छे से अच्छा और कारगर हथियार चुनता है। परन्तु भारत सरकार के प्रमुख प्रचारक सूचना तथा प्रसार मन्त्री डा० केसकर का कथन है कि हिन्दी का प्रचार नहीं मन्त्रालय का काम नहीं। हमारा कहना है कि हिन्दी का प्रचार नहीं हिन्दी से प्रचार आपका कर्तव्य है। यदि अपनी सरकार की बात आपको देश के करोड़ों देशवासियों को समझानी है तो ईसाई पादरियों से सबक सीखना पड़ेगा। अंग्रेजी का मोह छोड़ना पड़ेगा।

हिन्दी 'का' नहीं हिन्दी 'से' प्रचार

ऊपर प्रसगवश सूचना और प्रसार मन्त्रालय का नाम आया है यह मन्त्रालय देश की जनता के साथ सम्पर्क कायम रखने के लिए है और सरकारी नीतियों योजनाओं कार्यक्रमों को जन-साधारण तक पहुंचाने का काम इसके पास है। इस प्रयोजन के लिए इस मन्त्रालय का रेडियो पर एकाधिपत्य है, समाचारपत्रों को सरकारी सामग्री मुहैय्या करने का एक विशाल विभाग है, यह मन्त्रालय स्वयं अनेक पत्र पत्रिकाएं पुस्तक पत्रिकाएं प्रकाशित करता है वृत्तचित्र और समाचार चित्र निर्माण करता है। यह सब किया जाता है देश की सर्वसाधारण जनता के लिए, और वह सर्वसाधारण जनता अंग्रेजी नहीं जानती। लगभग १ प्रतिशत लोग अंग्रेजी जानने वाले हमारे देश में बताये जाते हैं इस अंग्रेजी जानने वाले वर्ग में विशाल बहुमत उन लोगों का है जो कि मैट्रिक पास हैं और जो अंग्रेजी का साधारण सा समाचार पत्र पढ़ने की भी क्षमता नहीं रखते। शेष अंग्रेजी जानने वालों का अनुपात बड़ी कठिनाई से ०१ प्रतिशत अर्थात् हजार में एक है। फिर भी यदि मन्त्रालय के कार्य पर दृष्टि डालें तो सन् १९५८ के सम्पूर्ण वर्ष में इसने २१२ पुस्तक-पुस्तिकाएं प्रकाशित की जिनमें से ७८ अंग्रेजी की थीं २० हिन्दी की थीं और शेष अन्य ११ भारतीय भाषाओं की थीं। यदि औसत निकाली जाय तो प्रत्येक भारतीय भाषा में ११ पुस्तकाएं प्रकाशित की गयीं जबकि उनकी तुलना में अंग्रेजी में ७८ पुस्तक पुस्तिकाएं प्रकाशित की गयीं। इसी प्रकार इस मन्त्रालय से इस समय १०पत्र पत्रिकाएं अंग्रेजी में प्रकाशित होती हैं और हिंदी और उर्दू में मिलाकर १० पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।

व्यापारी में समय की गति का समझने की सबसे अधिक शक्ति रहती है और सरकारी शासन मे इसकी उपेक्षा करने की। भारत के सरकारी और निजी फिल्म उद्योग इस कथन का जीता जागता उदाहरण है। बम्बई मद्रास या कलकत्ता सब जगह के सब फिल्म निर्माता देश भाषाओं में फिल्म बनाते हैं। यदि देश में मांग होती तो क्या वे अंग्रेजी की फिल्म नहीं बना सकते। पर सरकार की उलटवासी देखिये कि फिल्म डिवीजन सभी चित्र अंग्रेजी में बनाता है। इन अंग्रेजी में बनी फिल्मों में से समाचार चित्रों को छोड़कर बहुत थोड़ी ऐसी फिल्में होती हैं जिनके भारतीय भाषाओं के संस्करण तयार किये जाते हैं। इस सारी समीक्षा से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये वृत्तचित्र समाचार चित्र जो कि भारतीय करदाताओं पर असह्य कर लगाकर तैयार किए जाते हैं या तो ०१ प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले भारतीयों के लिये होते हैं अथवा विदेशों में प्रदर्शन के लिये या सग्रहालय में सुरक्षित रखने के लिए।

> **सार्वदेशिक सभा का आदेश**
>
> सूचना सभा को तुरन्त दें
>
> उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्यसमाजों के कार्यकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के जो सदस्य अपने पारस्परिक झगड़ों को आपस में वा आर्यसमाज की न्याय सभाओं से निपटाने के स्थान मे राजकीय न्यायालयों में ले जाते है या ले गये हैं उनकी सूचना सभा कार्यालय को भेजने की कृपा करें। जिससे सभा उन पर विचार कर उचित निर्णय कर सके।
>
> प्रेमचन्द्र शर्मा
> सभा मन्त्री

भारत सरकार की हिन्दी नीति के नमूने के रूप में हमने इस मन्त्रालय को चुना है इसका भारतीय भाषाओं और हिन्दी के प्रति क्या रुख है इस लोकसभा में १०.३.५६ को मन्त्री महोदय के इस वक्तव्य से स्पष्ट यह हो जाता है जिसमें उन्होंने संसद को सूचित किया कि इस मन्त्रालय का प्रकाशन विभाग आधुनिक भारत के निर्माता शीर्षक से एक पुस्तकमाला प्रकाशित करने जा रहा है जिनमें प्रथम दो पुस्तकें दादा भाई नौरोजी और राममोहन राय होंगी।

एक सदस्य— ये किस भाषा में होंगी?

मन्त्री महोदय—निस्सन्देह अंग्रेजी में। बाद में इन्हे हम दूसरी भाषाओं में भी प्रकाशित करेंगे।

यह मन्त्रालय भारतीय जनता तक पहुंचने के लिए अपने कुल व्यय का ५ प्रतिशत भी भारत की अपनी भाषाओं पर खर्च नहीं करता। इस स्थिति का पूर्णरूप से हृदयगम करने के लिए इस मन्त्रालय के अंग्रेजी विभाग के कर्मचारियों और हिन्दी विभाग के कर्मचारियों और उनके वेतनों की तुलना करना अभीष्ट होगा। ये आंकड़े लोकसभा में माननीय सदस्य श्री जगदीश अवस्थी (समाजवादी) द्वारा प्रस्तुत किये गये थे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

(पृष्ठ ११ का शेष)

आकाशवाणी का समाचार विभाग

	अंग्रेजी	हिन्दी	वेतन क्रम
मुख्य समाचार सम्पादक	१	—	
समाचार सम्पादक	११	१	७२० से १००० रु०
सहायक समाचार सपादक	३१	३	४०० से ६२० रु०
उप-सम्पादक	४	५ अंग्रेजी उप सपादक(३०० ५००रु०) गजटिड अधिकारी होता है हिन्दी उप सम्पादक (२५० ४००रु०) गजटिड अधिकारी नहीं होता।	
सवाददाता	६	१	
स्टेनो	४०	३	२५० से ४०० रु०
अनुवादक	—	७ कुल वेतन	२५० से ३०० रु०
कुल	६६	२०	

प्रकाशन विभाग

सम्पादक	१३	२	७२० से १००० रु०
सहायक सम्पादक	१४	६	३५० से ६२० रु०
उप सम्पादक	—	७	
कुल	२७	१५	

पत्र सूचना विभाग (प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो)

डिप्टी प्रिंसिपल इन्फार्मेशन-आफिसर	१२	—	१००० से १३०० रु० (अन्य भत्तो के अलावा दिल्ली में २००रु० मासिक और भत्ता)
इन्फार्मेशन आफिसर	२५	१	७२० से १००० रु०
स० इन्फार्मेशन आफिसर	१५	५	३५० से ६२० रु०
इन्फार्मेशन असिस्टेंट	—	१	३०० से ५०० रु०
स० अनलिस्ट	१७	११	१६० से ३०० रु०

वेतन में आकाश पाताल का अंतर

पत्र सूचना विभाग का काम है समाचार पत्रो को सरकारी सूचनाए सवाद विज्ञप्तियां देना। परन्तु रोचक बात यह है कि अंग्रेजी के समाचार पत्र इस विभाग की विज्ञप्तियों को जितना कम स्थान देते हैं इस विभाग में अंग्रेजी के लिये उतना ही अधिक खर्च किया जाता है। यदि आप इस विभाग से यह पता करना चाहे कि यह विभाग अंग्रेजी पर कितना खर्च करता है और दूसरी भारतीय भाषाओं तथा हिन्दी पर कितना, तो यह विभाग इसकी सूचना आपको नहीं देगा। यों चाहे यहां से आप जितनी चाहें उतनी सरकारी विज्ञप्तियां प्राप्त कर सकते हैं। यदि अंग्रेजी में काम करने वाले सभी कर्मचारियों और हिन्दी में काम करने वाले कर्मचारियों का कुल अनुपात निकाला जाय तो वह १० और १ का बैठता है और खर्च का १०० और ५ का।

हिन्दी में काम करने वाले कर्मचारियों की स्थिति इन विभागों में क्या होती है और उनके साथ कितना भेद भाव बरता जाता है इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि पत्र सूचना विभाग के देश भर में जितने कार्यालय हैं उनमें अंग्रेजी कार्यालय तो एक डिप्टी प्रिंसिपल इन्फार्मेशन आफिसर (वेतन क्रम १००० से १३००) के अधीन रहते हैं पर हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के असिस्टेंट इन्फार्मेशन आफिसर (वेतन ग्रेड ३५० से ६२०) के अधीन। लखनऊ में जब अंग्रेजी का प्रादेशिक कार्यालय था तब उसका दर्जा ऊंचा था और वह डिप्टी प्रिंसिपल इन्फार्मेशन आफिसर के अधीन था किन्तु जब वहाँ हिन्दी का कार्यालय खोला गया तो उसे सहायक इन्फार्मेशन आफिसर के अधीन कर दिया गया। आकाशवाणी के समाचार विभाग के सभी भाषाओ के उप सम्पादक नान गजेटेड होते हैं और अंग्रेजी के गजेटिड। अब जो केन्द्रीय सूचना सेवा तैयार की जा रही है उसमें भी भारतीय भाषाओं के उप-सम्पादको को ग्रेड चार में रखा गया है जबकि अंग्रेजी के उप-सम्पादकों को ग्रेड तीन में।

अभी कुछ वर्ष पूर्व तक पत्र सूचना विभाग (प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो) में अंग्रेजी वालों के लिये ३०० रु० से कम का कोई पद ही नहीं होता था, और उनका काम भी केवल अंग्रेजी समाचार पत्रों की कतरनें काटना होता था जब कि हिन्दी एव अन्य भाषाओं के पत्रकार १६० रुपये से नौकरी शुरू करते हैं। इन दिनों अंग्रेजी में आकाशवाणी से ससद समीक्षा करने वाला १००० रु० मासिक पाता है, जबकि अंग्रेजी से तुलनात्मक दृष्टि से कहीं श्रेष्ठ ससद समीक्षा करने वाला हिन्दी का व्यक्ति ५०० रुपया मासिक पाता है। आकाशवाणी का अंग्रेजी सवाददाता हजार रुपया के आसपास पाता है जबकि हिन्दी का सवाददाता ४५० रुपये। आकाशवाणी के समाचार विभाग के अंग्रेजी सम्पादक और सवाददाता नियमित सरकारी कर्मचारी हैं जबकि भारतीय भाषाओ के सम्पादक और सवाददाता अस्थायी और कन्टैक्ट पर हैं।

इसमें भी सबसे अधिक ध्यान खींचने वाली बात यह है कि अंग्रेजी में काम करने वाले कर्मचारियों को केवलमात्र अंग्रेजी जानना होता है जबकि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ में काम करने वालों को एक भारतीय भाषा के साथ अंग्रेजी जानना भी अनिवार्य होता है। पर दो भाषाए जानने का उसे पुरस्कार यह मिलता है कि वह वेतन कम पाता है उसकी तरक्की नहीं होती वह जहा से शुरू करता है उसी पद पर उसे लगभग सारा जीवन काट देना होता है जबकि अंग्रेजी का जानकार छोटे से पद से आरम्भ करके अपने जीवन के अन्तिम दिनों में भारत सरकार के उच्चतम पद पर पहुँचा हुआ होता है। यदि हम १० वर्ष की अवधि में हिन्दी और अंग्रेजी के दो कर्मचारियों की तरक्की की तुलना करें तो यह देखने में आयेगा कि हिन्दी वाला १६० रु० से शुरू करके मुश्किल से ३०० ४०० रु० के ग्रेड में पहुँचता है और अंग्रेजी वाला ३५० से शुरू करके १००० रु० के ग्रेड में पहुँच जाता है। इस मन्त्रालय में इसके अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। यह है अंग्रेजी भाषा का चमत्कार। मानो ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जमाने की तरह अंग्रेजी आज भी मनचाही तरक्की का चैक है।

(क्रमश)

आर्यसमाज सोरों

प्रधान—श्री राजाराम जी
उपप्रधान—श्री दशरथ जी वैद्य
मन्त्री—श्री द्वारिका प्रसाद
उपमन्त्री—श्री रघुवरदयाल जी भा० द्वा०
कोषाध्यक्ष—श्री हरीकृष्ण जी मुनीम

१८ अगस्त को श्रावणी पर्व मनाया प्रात काल यज्ञ हुआ। प० ज्ञानेन्द्रदेव जी का व्याख्यान हुआ। वेद प्रचार सप्ताह भी मनाया गया। नौ दिन तक सदस्यों के घरों पर यज्ञ प्रचार हुआ। और रात्रि को ६ बजे से ११ बजे तक सात दिन श्री रघुवर भा० द्वा० जी ने कठोपनिषद् की कथा भी सुनाई। इसके बाद २७ ८ ६९ को जन्माष्टमी का पर्व मनाया। प्रात ७ बजे यज्ञ हुआ प० ज्ञानदेव जी वानप्रस्थी की तथा भा द्वा जी का भाषण हुआ। शान्तीदेवी और लक्ष्मीदेवी ने पर्व पद्धती में से गीत सुनाया। सायकाल को ८ बजे से कवि सम्मेलन हुआ। —द्वारिकाप्रसाद मन्त्री

सभा के उप मन्त्रियों का कार्य विभाजन

★

१–श्री ईश्वरदयालु जी आर्य सभा उपमन्त्री, बिजनौर

१—आर्यसमाज रक्षा निधि विभाग
२—अनाथ रक्षा विभाग
३—शुद्धि विभाग
४—दलितोद्धार विभाग
५—धन सग्रह का कार्य करना
६—आर्यवीर दल विभाग
७—समाज कल्याण विभाग
८—समाज एव सस्था निरीक्षण कार्य

२–श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक सभा उपमन्त्री, हल्द्वानी

१—आर्यमित्र
२—म० आर्य भास्कर प्रेस
३—सभा की प्रगति के सम्बन्ध में प्रचार कार्य करना
४—दयानन्द दीक्षा शताब्दि गुरु विरजानन्द आर्यमित्र जयन्ती तथा अन्य समारोह
५—नायक जाति सुधार विभाग
६—मुवाली शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी पुस्तकालय
७—नारायणाश्रम रामगढ़
८—समाज एव सस्था निरीक्षण कार्य

३–श्री चन्द्रनारायण जी सभा उपमन्त्री, बरली

१—भू सम्पत्ति विभाग
२—विधि विभाग
३—सभा भवन निर्माण आदि
४—धन सग्रह कार्य करना
५—अवैतनिक उपदेशक सघ
६—समाज एव सस्था निरीक्षण कार्य

४–श्री कर्णसिंह जी छोकर सभा उपमन्त्री, मथुरा

१—गुरु श्री विरजानन्द दण्डी धाम स्मारक मथुरा
२—समाज एव सस्था निरीक्षण कार्य करना
३—धन सग्रह कार्य करना
४—उपदेश विभाग
५—जयन्ती सम्बन्धी कार्य

टिप्पणी—मेरी अनुपस्थिति में कोई भी उपस्थित उपमन्त्री मेरे सभी कार्यों को सचालन करेंगे।

—प्रेमचन्द्र शर्मा
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश।

समाज कल्याण की प्रगति

[श्री शिशिरकान्त एम०ए०]

(अ) समाज-कल्याण के लिए विचारक दल
(आ) पिछड़े वर्ग के लोगों के रहने के लिए मकान
(ई) पिछड़े वर्ग के लिए घरेलू उद्योग

विचारक दल

भारत सरकार ने तीसरी योजना के लिए समाज कल्याण कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार करने के लिये एक विचारक दल नियुक्त किया है। इस दल की अध्यक्ष, केन्द्रीय समाज कल्याण मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख हैं। इसमें सम्बद्ध मंत्रालयों तथा आयोजन आयोग के सरकारी प्रतिनिधि तथा समाज कल्याण के विभिन्न पक्षों में काम करने वाले नागरिक इसके सदस्य होंगे। ये सदस्य गैर-सरकारी होंगे। इसकी पहली बैठक ८ अप्रैल को नयी दिल्ली में हुई थी।

समाज कल्याण मंडल की स्थापना १९५३ में हुई थी। तब से अब तक के उसके कार्यों में उसे देश की विभिन्न समाज सेवी संस्थाओं और स्त्री-कार्यकर्ताओं की सहायता मिलती रही है। देश में समाज कल्याण की समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करने में मंडल को सफलता मिली है। इसका कार्यकारी दल अपना काम बढ़ा रहा है। समाज के भलाई के कामों में स्थानीय संस्थाओं के सहयोग का बहुत महत्व है। इसके लिये राज्य सरकार, स्थानीय संस्थाएं और केन्द्रीय मण्डल के बीच समन्वय आवश्यक है। मण्डल के कामों में कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया जाता है क्योंकि योजना को कार्यान्वित करने का दायित्व इन्हीं पर होता है।

कार्यकारी दल ने सात उपसमितियां बनाई हैं जिन्हें स्त्रियों, बच्चों, अपंगों, बूढ़ों, किशोरों, युवकों, आदि की भलाई के और गंदी बस्तियों की सफाई, मद्यबन्दी, कार्यकर्ता उपलब्ध करने और उन्हें काम सिखाने, जांच-पड़ताल अनुसंधान और सुचारु रूप से काम-काज चलाने के काम सौंपे गये हैं। कार्यकारी दल की नयी दिल्ली में हुई २० मई की बैठक में इन उप-समितियों की रिपोर्टों पर विचार किया गया।

काम की सुविधा की दृष्टि से देश के चार हिस्से किये गये हैं, उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी और पश्चिमी। कार्यकारी दल ने समितियों की रिपोर्ट पर विचार करने से पहले मद्रास, बम्बई, लखनऊ और दिल्ली में बैठकें कीं और अब अंतिम रूप से तैयार रिपोर्ट नवम्बर के आरम्भ में योजना आयोग को पेश की जायगी।

पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए मकान

दूसरी योजना की अवधि में मकान निर्माण पर ८ करोड़ २३ लाख रुपये के खर्च की व्यवस्था है। आशा है इस अवधि में १,२६,४२५ मकान २० बस्तियां, १० सार्वजनिक मकान और ५ सामुदायिक इमारतें बनाई जाएंगी और मकान बनानेवाली १६२ संस्थाओं को सहायता दी जायगी। विभिन्न राज्यों को सहायता वहां की स्थानीय स्थिति के अनुसार अधिक या ज्यादा दी जायेगी। किन्तु केन्द्र द्वारा चलाये गये कार्यक्रम के अनुसार प्राय. हर परिवार को ७५० रु० आर्थिक सहायता के रूप में दिए जाते हैं। सहायता पाने वाला परिवार २५० रु० मजदूरी के रूप में अदा करेगा।

अनुसूचित और अनुसूचित आदिम जाति के लोग यह रकम या तो नगदी में दे सकते हैं या स्वयं अपना मकान बनवाने में सहायता पहुंचाकर दे सकते हैं। यह अनुमान है कि एक साधारण सा पक्का मकान १ हजार रु० की लागत में बन सकता है।

राज्य सरकारों पर यह और जोर डाला गया है कि बस्तियों का नक्शा वे ही तैयार करें जिससे वहाँ पानी, नालियां और अन्य नागरिक सुविधाओं की उचित व्यवस्था की जा सके। कुछ अनुसूचित आदिम जाति के लोगों को बहुउद्देशीय खण्ड के क्षेत्रों का मकान बनाने की सुविधा दी गयी हैं। इन लोगों को ४ प्रतिशत सूद पर ऋण दिया गया है और यह रकम १० सालों में लौटायी जायेगी। अन्य स्थानों में बिना किसी सूद के ऋण दिया गया है। जो २५ साल के अंदर लौटाया जायेगा। एक ही राज्य में आर्थिक सहायता की अलग अलग दरें वाली आवास की विभिन्न योजनाएं हैं।

पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए घरेलू उद्योग

दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में ४ सौ से अधिक प्रशिक्षण केन्द्र कई घरेलू उद्योग तथा सहकारी समितियां चलाने के लिए लगभग ५॥ करोड़ रु० खर्च किया जायेगा। इससे लगभग ४०,००० लोगों को लाभ पहुंचेगा।

पिछड़े वर्ग के लिए घरेलू उद्योग चलाने के राज्य सरकारों के कार्यक्रम तथा केन्द्र द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों के अन्तर्गत विभिन्न प्रशिक्षण केन्द्रों में युवक, युवतियों को विभिन्न दस्तकारियां जैसे बढ़ईगारी, लुहारी, दर्जीगिरी, डलिया और रस्सी बनाना, कपड़ा बुनना, चटाई बुनना, चमड़े का काम आदि सिखाया जायेगा। जो लोग इन केन्द्रों में काम सीखेंगे उन्हें १५ रु० से लेकर ३० रु० तक की मासिक वृत्ति दी जायेगी। कुछ मामलों में तो थोड़ा काम सीख लेने के बाद उन्हें उपयुक्त वेतन भी दिया जाता है।

कुछ योजनाओं के अन्तर्गत काम सीखे हुए कारीगार बिना किसी के ५०० रुपया तक ऋण ले सकते हैं। कुछ राज्यों में ऐसे लोगों के लिए भी योजनाएं हैं जो अपना धन्धा चला रहे हैं। इन लोगों को अपने औजार आदि खरीदने के लिए ऋण या आर्थिक सहायता दी जाती है।

लघु उद्योग संगठन घरेलू उद्योगों के लिए शिल्पिक सहायता देने की ओर ही अधिक ध्यान देता है।

लघु उद्योग संगठन घरेलू उद्योगों के लिए शिल्पिक पहुंचाने की व्यवस्था आदि ही करता है। यह विभिन्न राज्यों की लघु उद्योग विकास योजनाओं के लिए अनुदान देता है। पहली योजना में संगठन ने ८० लाख ११ हजार रु० का अनुदान तथा ऋण दिया था।

राष्ट्रीय उद्योग निगम सहकारी समितियों और छोटे उद्योगपतियों को, किश्त पर मशीन, छोटे औजार अन्य उपकरण देता है।

राज्य सरकारों ने छोटे उद्योगों को ऋण देने की शर्तों में बहुत रियायत कर दी है और छोटे उद्योगपति तथा गांवों के कारीगर सुविधाजनक शर्तों पर उधार ले सकते हैं।

मथुरा को अभियान करो!

दयानन्द के ज्ञान-धाम का आमंत्रण स्वीकार करो!
आर्य जनो, निद्रा अब त्यागो, मथुरा को अभियान करो!!

दीपावलि पर एकत्रित हो लेना है संकल्प महान्।
हमें गुंजाना भू मण्डल में, फिर से वैदिक गौरव गान॥
अपना पथ प्रशस्त करना है, करना फिर से विजय प्रयाण।
धरती भर को आर्य बनाना, सम्मुख है यह लक्ष्य ललाम॥
अतः वीर अवसर मत चूको, निज कर्त्तव्य विचार करो!
दयानन्द के ज्ञान धाम का आमन्त्रण स्वीकार करो!!
मत भूलो तुमको अपने गुरु की शान बढ़ानी है।
यह मत भूलो तुम को अपनी नूतन राह बनानी है॥
सत्य, धर्म, मिटती मानवता, तुमको आज बचानी है।
वेद धर्म की पुण्य पताका हर मन पर लहरानी है॥
यदि है तुमको प्यार वेद से हार न अंगीकार करो।
दयानन्द के ज्ञान धाम का आमन्त्रण स्वीकार करो॥
भौतिकवादी दानव बढ़कर तुमको है ललकार रहा।
मतवादों का विषधर देखो, खड़ा खड़ा फुंकार रहा॥
अज्ञान अविद्या का दल बल पूरे बल से गुजार रहा।
त्रस्त, नष्ट, भय-ग्रस्त मनुज है तुमको आज पुकार रहा॥
हे वीर चुनौती तुमसे यह, मत रुको, बढ़ो स्वीकार करो।
दयानन्द के ज्ञान धाम का आमंत्रण स्वीकार करो॥
ओ दयानन्द के अनुयायी, तुम भूलो अपने भेदभाव।
प्रिय त्यागो नींद निराशा की, अब विजय वरण का करो चाव॥
यह दीक्षा शताब्दी का उत्सव हो ऐक्य भाव का अमर नाद।
मंगल मय प्रभु की वाणी को गुंजित करने का व्रत महान्॥
जय घोष अमर होकर गूंजे, मन वीणा में झंकार करो।
दयानन्द के ज्ञान धाम का आमन्त्रण स्वीकार करो॥

—राकेश रानी

(पृष्ठ ४ का शेष)

श्री कृष्णलालजी कुसुमाकर, फिरोजाबाद
" भगवतशरण जी, लखनऊ
" मुन्नीलाल जी, उन्नाव
" रामस्वरूप जी, हरदोई
" शिवनारायण जी शुक्ल, लखीमपुर
मदनमोहनजी वर्मा एम० एल० ए० फैजाबाद
दवीप्रसाद जी, बहराइच
सुन्दरलाल जी, बलरामपुर (गोंडा)
डा० वीरेन्द्र जी शास्त्री, रायबरेली
होतीलाल जी, इन्जीनियर, गोरखपुर
" नरकुमार जी स्नातक, आजमगढ़
निरंकारप्रसाद जी, बस्ती
प्रि० कृष्णानन्द जी वाराणसी
" सुरेन्द्रदेव जी शास्त्री, बलिया
" आशाराम जी, मिरजापुर
" ऋषिराजसिंह सीपरीबाजार, झांसी
" चन्द्रवर्मा जी एम ए रामनगर नैनीताल
" सरलादेवी जी शास्त्री, अलीगढ़
" रामप्रसाद जी आर्य, मैनेजर अलीगढ़
बनवारीलाल जी, मुरादनगर,(मेरठ)
" रघुनन्दनस्वरूप जी, सदर मेरठ
नेमसिंह जी, सहारनपुर
" लचन्द्र जी, सहारनपुर
श्रीमती रमावती जी, बदायूं
अनोखेलाल अग्रवाल जी, शाहजहांपुर
" रामबहादुर जी, पूरनपुर (पीलीभीत)
" कुन्दनलालजी आर्य, नगीना(बिजनौर)
" विश्वनाथ जी त्यागी, मुरादाबाद
शेरसिंह जी काश्यप, मुजफ्फरनगर
रावलाल जी वर्मा, बुलन्दशहर
हरप्रसाद जी आर्य, धमारा, रामपुर
" मोहनलाल जी आर्य, आगरा
" गोपालसहाय जी, डैम्पियरनगर, मथुरा
दयाराम जी गौड़, शिकोहाबाद
मथुराप्रसाद जी आर्य, एटा
प्रेमनारायण जी वार्ष्णेय प्रयाग
उमाशंकर जी, फतेहपुर
डा० शिवदत्त जी, ओमानऊ, कानपुर
नवीनचन्द्र आर्य, फर्रुखाबाद
प्रेमनाथ जी आर्य, भजनीक, (इटावा)
गतिकृष्ण जी प्रेम, सावली आदि पचपुरी (गढ़वाल)
" मुरलीधरजी पांडेय, देवरामपुर(गढ़वाल)
" धर्मपाल विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी
" डा० बृहस्पति जी शास्त्री, देहरादून
श्रीमती सावित्रीदेवीजी मेरठ
श्री ईश्वरीप्रसाद जी प्रेम, चौक, मथुरा
श्रीमती प्रियम्वदा देवी जी, हरदोई
" लक्ष्मीदेवी जी, कन्या गुरुकुल सासनी
" डा० सुशीला मलिक जी मथुरा
श्री श्यामलाल जी आर्य, मेरठ
श्रीमती दुर्गादेवी जी आर्य, अलीगढ़
" बिहारीलाल जी शास्त्री, बरेली
" विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी मेरठ
" कु० सुखलालसिंह जी आर्य मुसाफिर अरनिया
" ठा० अमरसिंह जी, शास्त्रार्थ महारथी अरनिया
" द्विजेन्द्रनाथ जी शास्त्री, मेरठ

श्री मूलचन्द्र जी शास्त्री, मेरठ
" विश्वप्रकाश जी, प्रयाग
" श्रीप्रकाश जी, प्रयाग
" श्री रविप्रकाश जी प्रयाग
श्रीमती कलादेवी जी, प्रयाग
" सुदर्शनादेवी जी, प्रयाग
श्री प्रेमबहादुर जी, प्रयाग
" प्रीतमलाल जी, अलीगढ़
" शालिग्राम जी वकील, आगरा
" विश्वम्भर दयालु जी, मुजफ्फरनगर
" नेत्रपालसिंह जी, अलीगढ़
" शिवदयालु जी मेरठ
" विद्याधर जी, कानपुर
" विशुद्धानन्द जी शास्त्री, बदायूं
" रामचन्द्र जी, रि०पो०मा०, बदायूं
" जगन्नाथ जी सिंहल, मुरादाबाद
" विद्यारत्न जी वकील, हल्द्वानी
" सत्यव्रत विद्यालंकार, देहरादून
" बालचन्द्र जी, नैनीताल
श्रीमनीचन्द्रावती जी लखनपाल, देहरादून
श्रीमती अक्षयकुमारीदेवी जी, बड़ौत
" प्रि०सुशीलादेवी जी जौहरी, लखीमपुर
" शकुन्तलादेवी जी आर्य, मेरठ सदर
" विद्यादेवी विदुषी, कानपुर
" हेमलतादेवी जी, अलीगढ़
" सत्यभामा जी, बरेली
श्री रामनिरंसिंह जी, वाराणसी
" रामकिशोरसिंह जी, इलाहाबाद
" कृष्णगोपाल जी आगरा
" सेठ रामनारायण जी, आगरा
" सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार, गोरखपुर
" राजेन्द्र जी, अतरौली
" ठा० शेरसिंह जी, मथुरा
" रमेशचन्द्र जी अग्रवाल वकील, मथुरा
" मानाप्रसाद जी वैद्य, मथुरा
" गोपीराम जी पथिक, मथुरा
" मुंशीराम जी, कोसी
" ब्रह्मदत्त जी स्नातक, गोरखपुर
" हरप्रसाद जी वानप्रस्थी, रायबरेली
" कृष्णबलदेव जी, लखनऊ
" चन्द्रदत्त जी तिवारी, लखनऊ
" बसन्त बिहारी जी निगम, लखनऊ
" रामेश्वरसहाय जी, लखनऊ
" वाचस्पति जी शास्त्री, आगरा
" जोरावरसिंह जी, बरसाना
श्रीमती प्रभावती जी स्नातिका, बरसाना
श्री नरेन्द्र जी शास्त्री एम० ए०, लखनऊ
" ओंकार जी 'प्रणव', फिरोजाबाद
" भूदेव जी शास्त्री, आगरा
" रोशनलाल जी, आगरा कैन्ट
" सेठ ध्यानसिंह जी, बिजनौर
" शिवराजसिंह जी, हल्दौर
" कुन्दनसिंह जी, बिजनौर
" स्ना०विश्वबन्धुजी वेदालंकार, आगरा
" विश्वम्भरनाथ जी तिवारी, कानपुर
" हृदयराम जी, फतेहपुर
" विश्वनाथ प्रसाद जी, वाराणसी
" आ०देवदत्तजी धर्मोपाध्याय, वाराणसी
" कालीचरण जी शर्मा अजमेर
" चन्द्रमणि जी विद्यालंकार देहरादून
" अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री देहरादून
" देशबन्धु जी अधिकारी

श्री डा० प्रकाशवती जी लखनऊ
" राजरानीदेवी एम० ए० मुजफ्फरनगर
" मोहनलाल जी शर्मा बुलन्दशहर
" मथुराप्रसाद जी आगरा
" किशोरीलाल जी एम० ए० अलीगढ़
" तोताराम जी एम० ए० हाथरस
" सुधाकर जी पाण्डेय इटावा
" रत्नाकर जी शास्त्री इटावा
" सेठ देवेन्द्र जी आर्य सरायतरीन
" वेदमित्र जिज्ञासु हरद्वार
" सुरेन्द्र कुमार जी वर्मा अलीगढ़
" ज्योति स्वरूप जी इटावा
" हरशरणदास जी गाजियाबाद
" दयास्वरूप जी इलाहाबाद
" सेठ राधेलाल जी मण्डी धनौरा
" सरदारसिंह जी अलीगढ़
" बाबूलाल जी दीक्षित अलीगढ़
" अक्षयवरनाथ जी आजमगढ़
" बनारसीलाल जी नजीबाबाद
" रामावतार जी जौनपुर

संस्थाओं की ओर से प्रति०

गु. कु. वि. वि. वृन्दावन

१ श्री आचार्य विश्वेश्वर जी
२ श्री विद्याभूषण जी वैद्य आ० शि०
३ श्री डा० विजयेन्द्र स्नातक
४ श्री रामेश्वर जी
५ श्री मा० जोधासिंह जी
६ श्री शोभाराम जी

गु. वि. वि. कांगड़ी

१ श्री आचार्य प्रियव्रत जी
२ श्री प० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड
३ श्री वागीश्वर जी विद्यालंकार

गु. कु म. वि ज्वालापुर

१ श्री उदयवीर जी शास्त्री
२ श्री डा० नरेन्द्रदेव जी
३ श्री डा० कपिलदेव जी शास्त्री
४ श्री नन्दकिशोर जी

क. गु. कु सासनी

श्री प० भीमसेन जी शास्त्री एम० ए०
२ श्री माता सुखदादेवी जी
३ श्रीमती मजिता कुमारी जी
४ श्रीमती सरलादेवी जी एम० ए०

क. गु. कु. देहरादून

१ श्री प० यशपाल जी सिद्धान्तालंकार
२ श्रीमती दमयन्तीदेवी जी
३ श्रीमती माता दुर्गादेवी जी

क. गु. कु. बड़ौदा

१ श्री आचार्या जी

क. गु. कु. पोरबन्दर

१ श्री आचार्या जी

डी. ए. वी. कालेज कानपुर

१ श्री वीरेन्द्रस्वरूप जी एम०एल०सी०

हंसराज कालेज

१ श्री प्रि० जे० एल० दत्ता

अन्य गुरुकुलों की ओर से

१ प्रतिनिधि

अन्य आर्य कन्या पाठशालाओं से

१ प्रतिनिधि

अन्य डी. ए. वी. या अन्य आर्य शिक्षा संस्थाओं से

१ प्रतिनिधि

अन्य सामाजिक आर्य संस्थाओं से

१ प्रतिनिधि

इन सदस्यों के अतिरिक्त अन्य ऋषि भक्त आर्य प्रेमी सज्जन भी समिति के सदस्य बन सकते हैं। सदस्यों को सयुक्त करने का अधिकार प्रधान सभा को प्राप्त है।

इन्हीं सदस्यों में से कार्यकारिणी और कार्य समिति का निर्माण किया गया है। इन समितियों में भी विस्तार सहयोग की दृष्टि से किया जा सकेगा।

मथुरा समारोह की स्वागत प्रबन्ध व्यवस्था के लिए १६ सदस्यों की एक उपसमिति का निर्माण किया गया। श्री बाबू रमेशचन्द्र जी वकील सर्व सम्मति से स्वागत मन्त्री चुने गये।

प्रेमचन्द्र स्नातक
मन्त्री
आर्यसमाज तिलक द्वार मथुरा, कैम्प कार्यालय समारोह समिति

सम्पादक के पत्र

पतन की ओर

गुलामों की तरह नकल करने में भारतवासी प्रवीण हैं। जिनको दूध मिल सकता है वे भी दूध न पीकर चाय पीते हैं, चूंकि चाय पीना फैशन है। गाय न पालकर कुत्ते पालते हैं, चूंकि सभी अंग्रेज कुत्ते पालते थे। यूरोप में जवान लड़कियों को आम तौर पर जवान लड़कों के साथ नचाने का रवाज है लिहाजा लड़कियों को नचाने की शिक्षा यहाँ भी प्राय सभी स्कूलों में दी जाने लगी है। इस नाच को बड़े बड़े आदमियों का समर्थन प्राप्त है। हमारे उपराष्ट्रपति भारतीय लड़कियों से अमरीका में इस बात पर नाराज हो गये कि वे वहाँ नाची नहीं। एक समाचार पत्र के सम्पादक जब इङ्गलैंड जाने लगे तब उनकी विदाई में लड़कियों का नाच कराया गया। रसिक साहित्यकारों व कवियों ने जिनका शिक्षा बोर्ड में बहुमत है, नाचने को शिक्षा क्रम में शामिल कर दिया है। जब विदेशी मेहमान आते हैं या कोई उत्सव होता है तब प्राय सभी सरकारें नाच कराती हैं। बड़े बड़े अफसर तो सभी अपनी लड़कियों को नाच सिखवाते हैं।

जवान लड़कियों के आमतौर पर पब्लिक में नाचने की बुराई को यह कहकर छुपाया जाता है कि नाचना कला है। यह हमारे यहाँ पहिले भी थी। कला वह है जिससे आदमी का कल्याण होता है। वह कला नहीं जिससे पतन हो सकता है। यह कोई दलील नहीं कि नाच हमारे यहाँ पहिले से होता आया है। पहिले से बड़े लोग भी शराब पीते रहे हैं तो क्या उसका पीना अब भी उचित है।

क्या हमारे भाइयों ने कभी यह भी सोचा कि जवान लड़कियों के जवान लड़कों के साथ नाचने से विषय वासनाओं को उत्तेजना मिलती है और चरित्रहीनता फैलती है। जिसके कारण शादी होने के बाद भी लड़के लड़कियाँ एक दूसरे के साथ पूर्णरूप से वफादार नहीं हो सकते हैं और गृहस्थ जीवन सुखी नहीं हो सकता है। यही कारण है कि यूरोप के लोगों का गृहस्थ जीवन इतना सुखी नहीं है जितना कि हमारे यहाँ है।

हम शिक्षालयों के संचालकों से और अध्यापिकाओं से अपील करते हैं कि वे अपने शिक्षालयों से नाच का सिखवाना बन्द करके अपनी लड़कियों के चरित्र की रक्षा करें जिससे गृहस्थ जीवन सुखी हो। कम से कम लड़कियों को नृत्य जवान लड़कों द्वारा न सिखवाया जावे और न उन्हें पुरुषों के सामने नचाया जावे।

मैं अपने आर्यसमाज भाइयों से पूछता हूँ कि वह उत्साह उनका कहाँ गया जब उन्होंने अथक परिश्रम करके सारे देश से रंडियों का नाच बन्द कराया था। अब वे क्यों खामोश हैं क्या वे जवान लड़कियों का पुरुषों के सामने जलसों व उत्सवों में नचाया जाना उचित समझते हैं।

—लक्ष्मण प्रसाद गुप्त
ऐडवोकेट मथुरा

संन्यासियों एवं वानप्रस्थों से अपील

यह सर्व विदित तथ्य है कि विदेशों से प्राप्त करोड़ों की धन राशि के बल पर विदेशी ईसाई मिशनरी पर्वतीय तथा हरिजन भाइयों की निरक्षता एव निर्धनता का लाभ उठाकर उन्हें बलात् ईसाई बना रहे हैं। यदि उनका यह क्रम कुछ वर्ष तक निर्विरोध चलता रहा तो भारत के करोड़ों व्यक्ति ईसाई बनकर पाकिस्तान जैसे स्वतन्त्र देश अथवा ईसाई प्रान्तों की माग उपस्थित कर देंगे और इस प्रकार देश की राष्ट्रीयता तथा सुरक्षा को सकट में डाल देंगे।

सौभाग्य से आर्यसमाज की शिरोमणि सा० आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस अराष्ट्रीय कार्य को रोकने तथा अपने अपढ़, निर्धन तथा पिछड़े भाईयों की रक्षा तथा उनके उत्थान के निमित्त 'ईसाई निरोध समिति' का निर्माण किया है। इस समिति का निर्माण सार्वदेशिक सभा श्रद्धानन्द ट्रस्ट भा० भा० शुद्धि सभा तथा आर्य (हिन्दू) धर्म सघ ने मिलकर किया है। यह समिति सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत कार्य करगी। समिति की ओर से छोटा नागपुर तथा बासवाड़ा मे प्रारम्भ कर दिया गया है।

विशाल ईसाई मिशन के विशाल साधनों तथा धन राशि को देखते हुए समिति को प्रत्येक दृष्टि से सशक्त बनाना प्रत्येक भारतीय देश भक्त नर नारी का कर्तव्य है। इन साधनों के पश्चात् प्रचारकों का स्थान है। यदि भारत के सन्यासी एव वानप्रस्थ वर्ग अपनी परम्परानुसार प्रचार क्षेत्र में उतर पड़े तो इस सकट का देखते देखते समाधान हो जाय। अत देश के इन दोनों प्रतिष्ठित प्रचारक वर्गों से प्रार्थना है कि वे इस समय धर्म की रक्षार्थ अपना समय देने की कृपा करें और अपना नाम इस कार्य के निमित्त मन्त्री ईसाई प्रचार निरोध समिति दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर देने का कष्ट करें। —मन्त्री

ईसाई प्रचार निरोध समिति

बांसवाड़ा (राजस्थान) मे भयङ्कर ईसाई षड्यन्त्र
३ लाख हिन्दुओं की रक्षार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का अभियान

भारत को पुन विदेशी दासता के चगुल में फसाने तथा ईसाई स्थान बनाने के लिए ईसाई मिशन की ओर से लगभग ८० हजार मिशनरी (प्रचारक) भारत के प्रत्येक प्रान्त में कार्य कर रहे हैं जो कि साधु, अध्यापक, डाक्टर, नर्स आदि के रूप में शिक्षा, चिकित्सा, सेवा आदि के नाम पर करोड़ों व्यक्तियों को ईसाई बना चुके हैं।

इसी प्रकार राजस्थान मे (कोटा, अजमेर, नसीराबाद आदि) विशेषत बासवाड़ा में ईसाई मिशन का विशाल केन्द्र हैं, जो कि सम्पूर्ण जिले के ३ लाख व्यक्तियों को ईसाई बनाने का भयकर जाल बिछाये हुए है, जिसके द्वारा लगभग ६ हजार भील ईसाई बनाये जा चुके हैं।

आर्य जगत् की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने ईसाई प्रचार को रोकने का दृढ़ निश्चय कर लिया है और छोटा नागपुर व बासवाड़ा में तो ईसाई प्रचार निरोध के केन्द्र खोलने का कार्य भी प्रारम्भ कर दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से बासवाड़ा में यह कार्य इस वर्ष के प्रारम्भ से ही हो रहा है अनेक शुद्धियां भी हो चुकी हैं और जुलाई १९५९ से एक प्रचार केन्द्र व छात्रावास भी खोल दिया गया है किन्तु इस पर्वतीय प्रदेश मे इस कार्य की सफलता के लिए अनेक छात्रावास, प्रचार मडल स्कूल साहित्य चिकित्सा आदि साधनों के लिए विपुल धन राशि की शीघ्र ही आवश्यकता है। केवल बासवाड़ा केन्द्र के ही लिये उपर्युक्त कार्यों के लिए इसी वर्ष कम से कम १० हजार रुपया व्यय करने का निश्चय किया गया है।

कन्या गुरुकुल को आदर्श दान

७५०) स्नानागार के निमित्त श्रीमान् सेठ मुकुन्दलाल जी मीरपुर (बुलन्दशहर) निवासी ने दान दिया है। गुरुकुल की ओर से उनको हार्दिक धन्यवाद है। उनको इस सहायता से कुछ कन्याओं की स्नान सुविधा की समस्या हल हो गयी है।

लक्ष्मी देवी मुख्याधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल सासनी

निर्वाचन—

आर्यसमाज समस्तीपुर (दरभगा)
प्रधान—श्री यमनाप्रसाद साह
प्रधान मन्त्री—श्रीरामप्रसाद शाह

आर्यसमाज रवाना आर्यसमाज
प्रधान—म० मुरारीसिंह त्यागी
मन्त्री—डा० रमेशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री
उपमन्त्री—मा० रतनचन्द्जी बी ए बी टी

आर्यसमाज रक्सौल
प्रधान—श्री रामनारायण जी चोखिया
उपप्रधान—गौरीशकर प्रसाद
मन्त्री—रामज्ञा ठाकुर

शोक समाचार—

आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरदोई ने अपनी सभा के अथक ता० ७ स ६ पू० प्रधान एव कर्मठ कार्यकर्ता श्री १० रणजीतसिंहजा त्याय, प्रधान आर्यसमाज गोरिया के नवजवान सुपुत्र की असामयिक एव हृदय विदारक मृत्यु पर हार्दिक शोक सहानुभूति प्रकट की।

आर्य समाज सीतामऊ के कर्मठ सदस्य श्री रघुनन्दनप्रसाद जी के हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज के मन्दिर में शोक सभा की गयी। उन्होंने आर्यसमाज की बहुत सेवायें की थी आप धन सदाचार पुरुषार्थ परिश्रमी और समाज की सेवा हर प्रकार से करते थे।

गढ़वाल आर्यसमाज दिल्ली में सत्सग के पश्चात् श्री नन्दलाल जी आर्य के पुत्र श्री ब्रह्मप्रकाश जी की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पारित हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं दुखी परिजनों को धैर्य प्रदान करे।

समस्तीपुर की अन्तरङ्ग सभा ने ९७० पं० श्रीकृष्ण शर्मा जी आर्य महार दुल सुंगढ़ (उपदेशक) ता० २१ के निधन पर शोक प्रकट किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके शोक सतप्त परिवार को धैर्य धारण की शक्ति दें।

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

भाद्र २२ शक १८८१ भाद्र शुक्ला ११
ता० १३ सितम्बर १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

गांवों में पोस्टल सर्टिफिकेट्स भुनाने की नयी सुविधा

[श्री श्रीगोपाल]

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटस तथा अन्य पोस्टल सर्टिफिकेट्स भुनाने के समय उठने वाली अपढ़ व्यक्तियों की पहिचान सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने तथा उन्हें अधिक सुविधाएं प्रदान करने की दृष्टि से सरकार के डाक तार विभाग ने एक नयी सुविधा प्रदान की है, जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्ति अपने सर्टिफिकेट्स अब पोस्टमैन के माध्यम से भुना सकते हैं।

प्रत्येक ग्राम पोस्टमैन को एक भुगतान के लिए दिये गये पोस्टल सर्टिफिकेटस सम्बन्धी रसीदों की पुस्तक दी जायेगी। इस पुस्तक में ३० क्रमांकित रसीदें होंगी। ग्रामों में रहने वाला कोई भी व्यक्ति अपने २००) मूल्य तक के नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटस तथा अन्य पोस्टल सर्टिफिकटस पोस्टमैन के माध्यम से भुनाने के लिए प्रार्थना पत्र दे सकता है। उसे एक फार्म ग्राम पोस्टमैन के माध्यम से सर्टिफिकेट्स के भुगतान का प्रार्थना पत्र भरने के लिये दिया जायगा। यदि वह अपढ़ है तो उसका फार्म गांव का कोई दूसरा पढ़ा लिखा व्यक्ति या पोस्टमैन स्वयं भर देगा। सर्टिफिकेट्स के मालिक का हस्ताक्षर या अंगूठे का निशान ग्राम अधिकारी तथा उसके पुष्टिकर्ता प्रमाणित करेंगे। इस कार्य के लिए मुखिया या गांव का कोई दूसरा जिम्मेदार व्यक्ति जैसे गांव पंचायत का सदस्य पटेल या लम्बरदार भी जिसके हस्ताक्षर का नमूना ब्रांच पोस्ट आफिस रिकार्ड में ग्राम पोस्टमैन की पुस्तक के जांच करने के समय उसमें मौजूद है पुष्टि कर्त्ता के रूप में स्वीकार कर लिया जायगा। सर्टिफिकेट्स का मालिक पोस्टमैन को उतनी धनराशि भी देगा जो उस सर्टिफिकेटस की रकम पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में देनी पड़ती। यह धनराशि टिकटों के रूप में देनी होगी जो फार्म में निर्देशित स्थान पर लगा दिये जायेंगे। टिकट लगे फार्म के सर्टिफिकेट्स पोस्टमैन को दिया जायेगा जो प्रार्थी को अपनी रसीदों की पुस्तक में से हस्ताक्षर करके एक रसीद देगा। पोस्टमैन रसीद और उसका काउन्टर फाइल विधिवत भरेगा तथा प्रार्थना पत्र लेते समय यह देख लेगा कि प्रार्थी पुष्टि कर्त्ता तथा ग्राम अधिकारी के हस्ताक्षर या अंगूठे के निशान ठीक हैं या नहीं। रसीद के काउन्टर फाइल पर भी पोस्टमैन प्रार्थी पुष्टिकर्त्ता और ग्राम अधिकारी के हस्ताक्षर करा लेगा। पोस्टमैन इस प्रकार मिले प्रार्थना पत्र और सर्टिफिकेट्स डाकखाने में ब्रांच पोस्ट मास्टर, सब पोस्टमास्टर या सब एकाउन्ट्स क्लर्क के पास जमा कर देगा तथा रसीद के काउन्टर फाइल के पीछे उनसे हस्ताक्षर कर लेगा। ये लोग फार्म की जांच तथा हस्ताक्षरों का मिलान करने के बाद उसे सर्टिफिकेट्स के साथ एकाउन्ट्स आफिस (यदि फार्म ब्रांच आफिस में जमा हुआ है) भेज देंगे। यदि सर्टिफिकेटस और प्रार्थना पत्र सब पोस्ट आफिसों या हेड आफिस में जमा किया गया है तो सब एकाउन्टस क्लर्क उन्हें सब पोस्ट मास्टर या सेविंग्स बैंक शाखा के प्रभावक अधिकारी के पास भेज देगा। यदि नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेटस सब आफिस या उससे सम्बन्ध किसी ब्रांच आफिस से खरीदे गये हैं तो प्रार्थी और पुष्टिकर्त्ता के हस्ताक्षर उनके रिकार्ड में दर्ज हस्ताक्षरों से मिलाये जायेंगे। यह जांच कर लेने पर कि प्रार्थी ही सर्टिफिकेट्स का मालिक है सब पोस्ट मास्टर भुगतान की रकम निर्धारित करवा कर उसे भुगतान प्रार्थना पत्र (वारण्ट आफ पेमेंट) के पीछे दर्ज कर देगा तथा उस पर अपने हस्ताक्षर भी करेगा। यह कार्रवाई पूरी होने पर वह उसे अन्य कागजों के साथ उस ब्रांच आफिस को भेज देगा जहां वह जमा किया गया था। यदि प्रार्थना पत्र ग्राम पोस्टमैन लाया है तो उसी के द्वारा वह भुगतान के लिए भेजा जायगा। सब पोस्ट मास्टर इन कागजों के साथ भुगतान की धनराशि भी भेजेगा किन्तु यह ध्यान रखा जायगा कि मनीआर्डर कमीशन के बराबर की रकम इसमें से काट ली जाय तथा उतने ही मूल्य के टिकट उन पर लगा दिये जायें।

सम्बन्धित ग्राम में पहुँचकर पोस्टमैन भुगतान की रकम मालिक को देकर उससे सर्टिफिकेट्स के पीछे प्राप्ति की रसीद लेगा तथा उसे उन पुष्टिकर्त्ता और ग्राम अधिकारी से प्रमाणित करा देगा जिन्होंने कि सर्टिफिकेट्स भेजते समय उन्हें प्रमाणित किया था। यदि इनमें से कोई उपलब्ध नहीं है तो पोस्टमैन प्राप्ति कर्त्ता की पहिचान के लिए दिये गये मनीआर्डर के नियम के अनुसार किसी अन्य व्यक्ति से करा लेगा किन्तु यह आवश्यक है कि पुष्टिकर्ता ऐसा ही व्यक्ति हो जिसके हस्ताक्षर पोस्ट आफिस के रिकार्ड में उपलब्ध हों। सर्टिफिकेट्स की पीछे मालिक से जो रसीद ली जायगी वह भुगतान की पूरी रकम के लिए होगी। मालिक को वह रसीद भी इस समय लौटानी होगी जो उसे पोस्टमैन ने अपनी किताब में से उसका प्रार्थना पत्र लेते समय दी थी। इस रसीद के पीछे भी उसे लिखना होगा कि उसे भुगतान का पूरा रुपया मिल गया। सर्टिफिकेटस के पीछे पोस्टमैन को भी भुगतान की तारीख दर्ज कर हस्ताक्षर करने होगी। डाकखाने लौटकर पोस्टमैन उक्त सर्टिफिकेटस को ब्रांच पोस्ट मास्टर या सब एकाउन्ट क्लर्क के सुपुर्द कर देगा तथा उनसे अपने रजिस्टर में तत्सम्बन्धी प्रविष्टि के पास प्राप्ति की रसीद ले लेगा।

यदि सर्टिफिकेट्स का मालिक अपने घर पर नहीं मिलता तो पोस्टमैन कागज पत्र वापस लौटाकर ब्रांच पोस्ट मास्टर या सब एकाउन्ट क्लर्क को दे देगा और उनसे अपने रजिस्टर में रसीद ले लेगा। ऐसा होने पर पोस्टमैन सम्बन्धित व्यक्ति के घर पर इस आशय का एक नोटिस छोड़ आयेगा कि वह डाकखाने आकर रुपया या सर्टिफिकेट ले जाय।

यह सुविधा केवल उन्हीं ग्रामों में दी जायेगी जो सर्टिफिकेट्स का रजिस्ट्रेशन करने वाले डाकखानों के क्षेत्र में आते हैं।

महर्षि दयानन्द महालय (टंकारा) में श्रावणी महोत्सव का "भव्य समारोह"

ब्राह्म मुहूर्त की वेला में बिगुल के तुमुल घोष से एकत्रित हुए नगर के सर्व आर्य बन्धुओं ने तथा महालय के कर्मचारियों तथा दयानन्द ब्रह्मचर्याश्रम के ब्रह्मचारियों ने भजन कीर्तन करते हुये एक प्रभात फेरी निकाली। तत्पश्चात् महर्षि महालय के बृहद् प्रांगण में महासभा प्रधान डूंगरसह जी के करकमलों से ध्वजारोहण के पश्चात् श्री दयाल जी भाई ने ध्वज गान किया तत्पश्चात् निरुक्ताचार्य प० श्री धर्मदेव जी ध्वजा की महत्ता प्रगट करते कहा कि ध्वजा प्रत्येक जाति राष्ट्र किंवा उसकी संस्कृति की परिचायिका है आपने कहा कि "ओ३म्' से अंकित ध्वजा की यह विशेषता कि वह विश्व भ्रातृत्व प्रेम तथा शान्ति की सूचक है तत्पश्चात् प० श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक के आचार्यत्व में श्री टॉक के द्वारा सुसज्जित यज्ञ मंडप में एक बृहद् यज्ञ हुआ जिसमें यज्ञोपवीत परिवर्तन किये गये। यज्ञ समाप्ति के पश्चात् श्री मीमांसक जी ने श्रावणी पर्व एवं विगत हैदराबाद सत्याग्रह दिवस का महत्व बतलाते हुये श्रावणी पर्व का वेदों के साथ क्या सम्बन्ध है इसको अपने सारगर्भित प्रवचन में भली भांति दर्शाया तत्पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द जी ब्रह्मचारी तथा श्री ब्रह्मदत्त जी ने व्रत महिमा बताई। पुनः श्री जीवन लाल जी राठौर ने दान की महिमा बताते हुये 'वेद प्रचार के फंड (कोष) के लिये एक प्रस्ताव रखा जो तत्काल ही स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव के स्वीकृत होने के साथ ही आर्य बन्धुओं ने अत्युत्साह के साथ अनुमानत ७०) सत्तर रुपये की सम्मिलित धनराशि वेद प्रचार फण्ड को दान दी तत्पश्चात् शान्ति पाठ तथा प्रसाद वितरण के अनन्तर उपाकर्म कार्यक्रम समाप्त हुआ।

व्यवस्थापक
—लल्लूभाई वानप्रस्थी

हिन्दू महिला मुसलमान के कब्जे से बरामद

आर्यसमाज गोविन्दनगर (कानपुर) के भूतपूर्व प्रधान श्री दवीदास आर्य ने थाना जूही कानपुर में रिपार्ट की थी कि उनकी सूचना मिली है कि फतेहपुर से अब्दुल लतीफ नामक एक तांगे वाला एक २२ वर्ष सन्धी पुरुषार्थी महिला श्रीमती भगवानी बाई को धोखा देकर थाना जूही कानपुर क्षेत्र में नन्हें मुसलमान तांगे वाले के घर में रखी है। पुलिस की सहायता से श्री आर्य ने नन्हें के घर पर छापा मारा परन्तु मुसलमान किसी तरह महिला को भगाकर दबौलपुरवा क्षेत्र में ले गये। श्री आर्य जी ने अपने साथियों की सहायता से जब वहां भी पीछा किया तो महिला को मुसलमान वहाँ से फतेहपुर वापस ले गये। अन्तत पीछा करते अब्दुल लतीफ को फतेहपुर में महिला सहित पकड़ लिया गया पुलिस ने अभियुक्त को जेल भेज दिया और महिला को वापस कर दिया गया। उसे जब बाहर निकाला जाता था तो बुरका पहिना दिया जाता था।

बाबूराम शास्त्री द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

ओ३म् ओ३म्

आर्य्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [वार्षिक मूल्य विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे] लखनऊ, रविवार आश्विन १९, शक १८८१, आश्विन शु० १०, वि० २०१६, ११अक्टूबर, १९५९ ई० [१६शिलिंग

पढ़ रामचरित्र पवित्र मित्र उर धारो।

विजयादशमी का वैभव!

विजयादशमी का महोत्सव सारे भारतवर्ष में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, और मनाया जाना चाहिए। यह शरद् ऋतु के प्रारम्भ का समारोह है। अर्थात् बरसात की किचकिच दूर होकर जब 'शरद्' का सुन्दर-सुहावना समय आता था, तब इसकी सोत्साह सम्पन्नता होती थी। राजा लोग अपनी सेना सुसज्जित करते थे। सैनिकों की 'पैरेड' होती थी। हाथी-घोड़े, रथ आदि सवारियाँ सजायी जाती थीं। महाकवि तुलसीदास जी ने भी—

वर्षा विगत शरद ऋतु आई, लक्ष्मण देखहु परम सुहाई।

यह पंक्तियां भगवान् राम के मुख से कहला कर शरद् ऋतु की महिमा का विशद वर्णन किया है। और भी अनेक कवि-महाकवियों ने इस पर्व की सुन्दर-सरस विवेचना की है। वस्तुत शरद् ऋतु का यह महोत्सव है ही ऐसा सुन्दर, सुहावन और पावन।

'विजयादशमी के सम्बन्ध में एक भ्रम भी फैल गया है, अर्थात् प्राय यह कहा जाता है कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र महाराज ने रावण का वध किया था। परन्तु यह ऐतिहासिक तथ्य या तत्व नहीं है। वाल्मीकीय रामायण में विजयादशमी को रावण-वध का उल्लेख कहीं नहीं पाया जाता। सम्भवत यह परम्परा 'रामलीला' से प्रचलित हुई है। 'रामलीला' की समाप्ति विजयादशमी को रावण-वध के पश्चात् ही की जाती है। परन्तु इस परम्परा का ऐतिहासिक आधार कुछ नहीं है। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि देश के कुछ साहित्यकार और पत्रकार भी 'विजयादशमी' को ही रावण-वध का समर्थन करते हैं, जब कि उनके पास इसकी पुष्टि के लिए कोई प्रमाण नहीं है।

रामचरित के सम्बन्ध में एक मिथ्या विश्वास और है, वह है वानर जाति विषयक। रामायण में महावीर हनुमान और अन्य वानर वीरों का वर्णन है। परन्तु उन्हें भ्रमवश 'बन्दर' समझ लिया गया है। वानर का अर्थ है वन की विभूति पर जीवन-यापन करने वाला। वृक्षों या कुछ कन्दरों पर उछलने वाला बन्दर नहीं। जिन लोगों ने वाल्मीकीय रामायण आदि में गम्भीरता पूर्वक इस विषय का अध्ययन और चिन्तन किया है, वे भली भांति जानते हैं कि वानर जाति में उत्पन्न व्यक्ति मनुष्य ही थे। वे सुबोध, सुशिक्षित, सुनागरिक और सुसभ्य थे। विशुद्ध वाणी (देववाणी) बोलते, सुन्दर गृह बनाकर रहते और अपने जीवन वैदिक भावनाओं के साथ बिताते थे। ऐसे सुसंस्कृत नर-नारियों को वानर-वानरियां यानी बन्दर-बंदरियां समझ लेना हमारे अबोध एवम् अज्ञान का प्रदर्शन है।

भगवान् राम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, उनका परम पावन चरित्र हमारे लिये आदर्श रूप है। रामचरित्र का हम जितना ही अध्ययन और अवगाहन करेंगे, उतनी ही उसमें हम विशेषताएं पाएंगे। रामचरित्र अनेक कल्याण कारिणी शिक्षाओं का आकर और मंगलमयी भावनाओं का सागर है। उसका जितना प्रचार हो उतना ही अच्छा है—उतना ही मंगल मूल और कल्याणकारी है।

वर्ष ६१ अवैतनिक सम्पादक— अङ्क ३८
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

चलो मथुरा चलें, क्यों ?

मथुरा की पाप विनाशक विभूतियों के संस्मरण

[ले०—महात्मा श्री ज्ञानेश्वरानन्द जी वानप्रस्थी १, दीवानहाल, दिल्ली ६]

कहते हैं, "मथुरा तीन लोक से न्यारी" हमें यह ज्ञात नहीं कि यह क्यों कहावत प्रचलित हुई, परन्तु यह मैं-अवश्य जानता हूँ कि मथुरा में क्या निरालता या न्यारापन है, मथुरा वास्तव में ही भारत की एक बड़ी सौभाग्य-शालिनि नगरी है, उसमें यह न्यारापन है कि एक समय में इस नगरी में इसके शासक राजा कंस ने अपनी मान्य भगिनि परम साध्वी देवकी देवी तथा उसके देवता स्वरूप पतिदेव श्री वसुदेव जी दोनों को बलात् ही बन्दी बनाकर मथुरा के बन्दीगृह में बन्दी बनाकर रखा था।

बन्दीगृही में पड़ी देवी देवकी गर्भावस्था में थी, तब उसने भाद्रपद की अष्टमी के दिन उसी बन्दीगृह में एक बालक को जन्म दिया, वह बालक आने वाले समय में एक तेजस्वी, ओजस्वी और यशस्वी के रूप में संसार सागर में प्रगट हुआ, इस बालक का जन्म ही अपने माता पिता को बन्दीगृह से मुक्त होने का साधन सिद्ध हुआ, बालक श्रीकृष्ण जब कुछ बड़े हुये तो वह सर्व प्रथम कंस के लिये ही काल बने, उन्होंने कंस जैसे महापापी और पिशाची विचार रखने वाले व्यक्ति का नाश कर दिया, जिससे इस पवित्र नगरी को महान संताप की अग्नि से शान्ति प्राप्त हुई, और जनता ने सुख का श्वास लिया, हाहाकार मिटी।

कृष्ण ने अपने बाल्यकाल से ही उत्तम और उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त करनी आरम्भ की थी, उसके साथ ही क्षात्र धर्म शस्त्रास्त्र की विद्या का भी सम्पूर्ण ज्ञान हृदयंगम किया, जिससे आगे चलकर एक महान् आत्मा के रूप में आप संसार के समक्ष प्रगट हुवे, आप किसी पाप को अथवा पापी को किसी दुष्टता को तो कदाचित सहन ही न करते थे अर्थात् आप तो पापों का यहाँ से सफाया करना अपना परम कर्तव्य मानते थे, आपने उस काल में एक महान् नायक की भाँति पाण्डवों और कौरवों के सम्बन्धों के सुधारने के अनेकों उपाय किये, परन्तु दुर्योधन को जब वह कोई भी उपाय स्वीकृत न हुआ, तो फिर कुरुक्षेत्र में एक महान् युद्ध आरम्भ हो गया उस समर भूमि में पहुँच कर जब शस्त्र ध्वनि होने लगी, तब अर्जुन को भीरुता ने घेर लिया, उसे युद्ध के लिये अपने सामने खड़े लोग मामा चाचा, ताऊ और भाई दिखाई देने लगे, तब श्रीकृष्णचन्द्र ने जो कुछ वहां कथन किया, उसमें आत्मा परमात्मा, मानवता, क्षात्र धर्म और इस जीवन का लक्ष्य आदि इस प्रकार से वर्णन कर दिया कि जिसने उस उत्साहहीन अर्जुन में एक नवरक्त का संचार करके भीरु को वीर बना कर युद्ध के लिये आरूढ़ कर दिया, तब उसने पाप और पापियों को इस धरती तल से उठाकर दूर बहुत दूर फेंक दिया, और धरातल के बोझ को हलका कर दिया।

पांच सहस्र वर्ष गुजर चुके थे, पापों ने इस धरातल को उस समय से भी कहीं अधिक ही घेर लिया था, यहाँ के निवासियों में कहीं राम और कृष्ण के विचार और संस्कार तो अपना प्रभाव न जमा सके, अपितु कंस, शिशुपाल और शकुनी आदि के पिशाची विचारों का बड़ा प्रचार होता चला आ रहा था, लोग दम्भी, अत्याचारी, व्यभिचारी और वैदिक संस्कृति के विरोधी, धर्म कर्म से सर्वथा दूर, पाप कर्मों में रत होते जाते थे, वैदिक यज्ञों का पवित्र रूप परिवर्तन हो चुका था, और भगवान् का स्थान मूर्तियों ने प्राप्त कर लिया था, साधु सन्तों और विद्वानों में राग द्वेष की मात्रा बढ़ चुकी थी, धर्म-कर्म से विमुख हो चुके थे, खान-पान, रहन-सहन की मर्यादा का नाश हो चुका था, विदेशी शासकों के द्वारा हमारा प्राचीन वैदिक धर्म तो लोगों से छीना जा रहा था, ज्ञानी-अज्ञानी बनते जा रहे थे, तब कोई-कोई ही शुद्ध विचार व्यक्ति योगीराज श्रीकृष्ण के कहे हुये गीता वचनों को स्मरण करके कहता था कि—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्

जब-जब यहाँ लोग धर्म से ग्लानि करते और पाप की वृद्धि होती है, तब-तब ही धर्म के उत्थान और कल्याणार्थ किसी न किसी महान् आत्मा का यहां आना होता है, यह बात सत्य है तो इस समय तो घोर तिमर छा चुका है, चारो ओर पाप ही पाप फैल रहा है भगवन ! ऐसी आत्मा का सृजन कब होगा, पापों से रक्षा करने वाली आत्मा कब प्रादुर्भूत होगी, लोगों को मनु महाराज का यह वाक्य भी सामने आ रहा था, 'धर्म एव हतोहन्ती धर्मो रक्षति रक्षित' अर्थात् धर्म का हनन करने पर धर्म उस हनन करने वाले ही को नाश कर देता है, और रक्षा किया हुआ रक्षा करने वाले की धर्म सदा रक्षा करता है।

मथुरा ही तो अकेले नहीं समूचा भारतवर्ष ही इस वेदना से पीड़ित हो रहा था, परन्तु जैसे दुर्गन्ध में रहने वाले प्राणी उस दुर्गन्ध को अनुभव ही नहीं कर पाते वैसे ही पापों में फसे हुये लोग उसे पाप न जानकर और न ही मान कर उसे पुण्य ही मानने लग जाते हैं। ऐसे समय में ही भगवान के न्याय नियमो के अनुसार ही धरती पर से अविद्या-अन्धकार को मिटाने के लिए ही पंजाब की पवित्र भूमि में करतारपुर जालन्धर नगर के निकट बहने वाली वई नाम की नदी पर बसे हुवे गंगापुर ग्राम में श्री प० नारायणदत्त जी शारद शाखा ब्राह्मण के शुभ गृह में एक बालक जन्म हुआ, बालक अभी चार-पांच वर्ष का ही हुआ था कि उसे एक भयंकर रोग ने घेर लिया, और उस रोग में ही भगवान ने उस बालक के चक्षु छीन लिये। तब वह नेत्रहीन बालक सूरदास के नाम से पुकारा जाने लगा, प० श्रीनारायणदत्त जी को इस बात का बड़ा कष्ट होता था, परन्तु वह बालक की तीव्र बुद्धि को देखकर उतने ही प्रसन्न भी हो जाया करते थे, अब पिता ने अपने सूरदास पुत्र को संस्कृत विद्या का पठन पाठन आरम्भ कराया, बालक एक बार जो पाठ सुन लेता उसे पुनः सुनने की आवश्यकता न होती, इस बालक ने अल्पकाल में ही संस्कृत के अनेक बड़े बड़े ग्रन्थों को सुना और उन्हें कण्ठस्थ कर लिया, तब भगवान ने नेत्रों की तरह ही १४ वर्ष की बाल्यावस्था में ही माता पिता दोनों को भी छीन लिया, अब सूरदास जी के बड़े भाई के आश्रय पर रहना पड़ा, परन्तु सूरदास जी की भावज को उनका घर में रहना तनिक भी न भाता था, फलत सूरदास जी को घर से चुपचाप चले जाने में ही भलाई प्रतीत हुई, अतः वह घर से एक दिन चल पड़े, और वह ऋषिकेष, हरद्वार, कनखल, काशी, गया, सोरों, अलवर, भरतपुर आदि स्थानो में विचरते, तपस्या करते और पठन-पाठन करते हुवे कई वर्षों तक भ्रमण करते रहे, अब वह ब्रह्मचारी सूरदास से बदलकर ब्रह्मचारी श्री दण्डी विरजानन्द सन्यासी स्वामी बन चुके थे, तो दण्डी विरजानन्द जी इसी प्रकार विचरते हुवे एक दिन मथुरा नगरी में (उस मथुरा नगरी में जहाँ एक दिन योगीराज श्री कृष्ण ने पाप और पापियों का नाश करने के लिये ही जन्म लिया था) प्रवेश किया।

मथुरा में दण्डी विरजानन्द जी की अपार विद्या की चर्चा चारों ओर घर-घर में बहुत शीघ्र फैल गई, विरजानन्द स्वामी जी के विद्यालय में प्रविष्ठ हुए विद्यार्थी मथुरा के बड़े-बड़े दिग्गज व धुरेन्द्र विद्वानों को व्याकरण विषय पर चुनौती दे देते थे, इस प्रकार करते-करते उनका एक शास्त्रार्थ भी निश्चित हो गया, परन्तु उस शास्त्रार्थ के मध्यस्थ सेठ श्री राधाकृष्ण जी यह जानते थे कि वहा स्वामी विरजानन्द जी का सामने खड़ा होने में कोई भी प० समर्थ नहीं, इसलिए जैसे भी हो यह शास्त्रार्थ न हो उन्होने इसके लिए मार्ग निकाल लिया, शास्त्रार्थ के समय से पूर्व ही यह घोषणा कर दी कि समय हो चुका है और विरजानन्द शास्त्रार्थ के लिये नहीं आये, इसलिये पारितोषक को मैं इन लोगों में बांट देता हूँ, धन बांटकर सभा विसर्जन कर दी, सेठ जी की इस धृष्टता से दण्डी जी का जो अपमान हुआ, वह उन्हें असह्य हुआ, तब विरजानन्द जी ने अपने पक्ष पर विद्वानों का मत संग्रह करना आरम्भ किया, विद्वान् लोगों ने विरजानन्द जी के पक्ष को पूर्ण सत्य स्वीकार किया, परन्तु स्वीकृती पत्र पर हस्ताक्षर करने में असमर्थता प्रकट कर दी, कारण उस धनवान सेठ से कौन बिगाड़ पैदा करे, इससे विरजानन्द जी को ज्ञात हुआ कि भारतवर्ष में इस समय कोई वाचस्पति और सत्यवादी ब्राह्मण नहीं रहा, सब पण्डित लोग माया के जाल में जकड़े पड़े हैं, वह अपनी जिह्वा को सत्य पक्ष के लिये माया के चक्र के कारण खोल नहीं सकते अब प्रज्ञाचक्षु महापुरुष को एक नया आघात लगा और अब वह ऐसी ज्योति की खोज में लगे कि जिससे पूर्णतया प्रकाश हो सके, इसी बीच में आपको एक योग्य विद्वान दक्षिणी ब्राह्मण के श्री मुखारविन्द से कुछ सूत्रों का पाठ श्रवण करने का अवसर प्राप्त हुआ, तो आप सुनकर गद्‌गद् हो उठे, तब आपने क्रमश उस पाठ का पूरा पुस्तक रूप में ही श्रवण किया, स्मरण किया, तो आपका रोम-रोम चमक उठा, आपने देखा, सारा का तिमर मिट गया है, विरजानन्द की आत्मा उस दीक्षा प्रकार से प्रकाश हो उठी, तब वह ध्यानावस्थित होकर उन सूत्रों का मनन करने लगे, श्री विरजा-

(शेष पृष्ठ १५ पर)

❀ वैदिक राष्ट्र-गीत ❀

ता न प्रजा सन्दुहतां समग्रा, वाचो मधु पृथिवि धेहि मह्यम् ॥ (अथर्ववेद)

(गीतिका छन्द)

हे मातृ भूमे! आपके हम पुत्र प्यार हैं सभी।
वरदान दे माता हमें हम हो न कटु भाषी कभी।
प्रिय सत्य से संयुक्त वाणी में सुधा बहना रहे।
दे शक्ति माता पुत्र नित मधु इष्ट ही कहता रहे ॥१६॥

Let all creatures without exception together do favour to us the honey of sweet sheech O Land do thou assign unto me

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट



लखनऊ—११ अक्तूबर १९५९ दयानन्दाब्द १३५ सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

समय का घोष

अंग्रेजी की एक कहावत है कि समय के सिर पर आगे लम्बे लम्बे बाल होते हैं और पीछे से वह गंजा होता है वह बराबर दौड़ता रहता है इसलिए जो समय को पकड़ कर उसे अपने अनुकूल बनाना चाहता है, उसे चाहिए कि वह बहुत सावधान होकर उसे देखता रहे और उसके निकट आते ही आगे से ही उसे पकड़ ले, यदि इसमें थोड़ी भी असावधानी हो गई तो उसके आगे निकल जाने पर आप उसे फिर न पकड़ पायेंगे क्योंकि वह पीछे से गंजा है आप सिर टटोलते ही रह जायेंगे पर हाथ कुछ न आयेगा। अब आपके पास सिवाय इसके कोई रास्ता नहीं कि आप उसके पीछे भागते रहें पर वह इतना तेज दौड़ता है कि एक बार थोड़ा भी आगे निकल जाने पर फिर किसी के हाथ नहीं आता।

यह बात वास्तव में संसार में विभिन्न देशों में तथा जातियों के इतिहासों को देखने पर बहुत ही तथ्यपूर्ण जान पड़ती है भले ही समय को एक व्यक्ति या आकार के रूप में वर्णन करना काव्य की ही वस्तु प्रतीत होती है, पर इन थोड़े से शब्दों में समय की महत्ता को जिस प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया गया है उससे कोई इनकार नहीं कर सकता।

इसके साथ ही एक बात यह भी है कि कोई यह न समझ बैठे कि न जाने वह समय कहां से और किस समय निकल जावे—कैसे हम उसे देख पायेंगे—पर यह बात नहीं—वह तो हर एक के सामने से बराबर बजा बजाकर निकला करता है, किसी को छोड़ता नहीं और चुपचाप भी नहीं जाता—डिंडिमनाद करता हुआ अपने निर्घोष से दिशाओं को गुंजाता हुआ आगे बढ़ता है जिससे किसी को यह शिकायत न रहे कि समय कब निकल गया हमने तो देखा नहीं इतना होने पर भी उस समय को हम नहीं पकड़ पाते यही आश्चर्य है इसका कारण केवल मात्र आलस्य या कायरता ही है कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो समय के घोष को सुनकर ही घबड़ा जाते हैं और साहस करके उसे पकड़ना तो एक ओर, अपितु उसके घोष का स्वर दूर से ही कानों में पड़ने पर कहीं स्वयं छिपने का प्रयत्न करते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो कि समय की तीव्र गति को देखकर हिम्मत छोड़ बैठते हैं कि या प्रमादवश उसके साथ पैर मिलाकर चलने में स्वयं को असमर्थ देख उसे आगे निकल जाने देते हैं और बाद में किस्से कहानियों की तरह उस स्मृति को दूसरों को सुना सुना कर अपना बोझ हल्का करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को समय भी सदा अपने साथ घसीटता रहता है इसीलिए तो कहा है—कालस्य सर्वं वशे।

आज यह समय फिर धूमधाम से आ रहा है अपना घोष करता हुआ आ रहा है—उसका स्वर भी हमे स्पष्ट सुनाई पड़ रहा है—यह बहुत निकट है आर्यजनों को हम सावधान कर देना चाहते हैं कि वे कहीं ऊपर निर्दिष्ट दो प्रकार की कोटियों में न आ जावें जिससे कि हमारे आलस्य या कायरता हमें समय को अपने अनुकूल न बनाने दें और फिर न जाने कब तक के लिए हमें अपनी उस त्रुटि का रोना, रोना पड़े।

यह समय का घोष है—'मथुरा में होने वाले समारोह को सफल बनाने का आह्वान। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यह समारोह आए दिन होने वाले साधारण समारोहों की कोटि का नहीं है और इसीलिए इसमें की गई अपनी त्रुटियों या कमियों को पूरा करने या दूर करने के लिए कोई ऐसा दूसरा अवसर हमें मिल सकेगा इसकी कोई सम्भावना इधर तो नहीं है। इसके साथ-साथ इन समारोहों की सफलता इस बात की भी द्योतक होगी कि हमारा संगठन कितने पानी में है या हमारे आर्यजनों में कितना पानी है। स्मरण रहे हमारी थोड़ी भी असावधानी हमें बहुत पीछे धकेल सकती है और उन शक्तियों का साहस बढ़ सकता है जिनका उठना समाज कल्याण के लिए कभी भी वाञ्छित नहीं कहा जा सकता।

इसलिए मथुरा नगरी में होने वाले ये समारोह न केवल हमारी संगठन शक्ति के ही परिचायक हैं अपितु हमारे भविष्य के कार्यक्रम का निर्धारण करने में भी बहुत अधिक सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे महान् समारोह किसी भी जाति के लिए प्रेरणा स्रोत का काम करते हैं। जिस ज्वाला को आर्य जनों ने समाज का मार्ग प्रदर्शन करने तथा उसे अधर में भटकने से बचाये रखने के लिए बड़ी लगन तथा साहस के साथ जलाये रक्खा है, उसी की ज्योति को और प्रखर करने की आवश्यकता आज आ पड़ी है। समाज विरोधी तत्वों की चकाचौंध इसे तिरोहित न कर दे स्वार्थ के झंझावात इसे कम्पित न कर सकें इसलिए भी इसकी ज्वाला में और अधिक तीव्रता की आवश्यकता है और उसी तीव्रता के लिए स्नेह संचय का आयोजन हो रहा है मथुरा नगरी में। एक बार फिर नई बाती और नया तेल लेकर यह युग युगों से जलने वाला सच्चाई का दीपक आर्य जनों के अध्यवसाय से फिर ऐसा प्रकाश पा जाय। जिससे कि वह सत् का सत् और असत् को असत् सिद्ध कर सके। इस अवसर पर उस ऐतिहासिक नगरी से सच्चाई वह निर्घोष हो कि जो बहरे से बहरे कानों को गुंजा दे क्योंकि सच्चाई में वह शक्ति है—

ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द—(वेद) क्या आर्य जन समय के इस घोष को सुनकर अपने कर्तव्य को पहिचानेंगे और मथुरा में होने वाले समारोह से दीक्षित होकर ऐसी शक्ति का प्रसार करने में समर्थ होंगे जिससे कि एक बार फिर आचार्य दण्डी विरजानन्द से दीक्षित होकर ज्ञान का आलोक फैलाने वाले जगद्गुरु दयानन्द के बताये मार्ग पर सफलता तथा दृढ़ता के साथ बढ़ते हुए हम देश तथा जाति की गौरववृद्धि में सहायक हो सकें।

यह ठीक है कि समारोह महत्त्व तथा उसकी विशालता को देखते हुए समय अल्प ही है परन्तु कुछ करने का निश्चय लेकर बढ़ने वाले अब भी बहुत कुछ कर सकते हैं न करने वालों के लिए तो पूरा युग भी जड़ता या प्रमाद में बीत सकता है। इधर आर्य जगत् से प्राप्त होने वाले समाचार भी उत्साहवर्धक हैं जिससे प्रतीत होता है कि आर्य जनता अपनी मर्यादा तथा कर्तव्य के प्रति सदा की भांति जागरूक है। हमारा पुरुषार्थ तथा आत्म विश्वास हमें वह शक्ति दे जिससे कि हम उस ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धा के पुष्प समर्पित करने की योग्यता प्राप्त कर सकें।

कृत में दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहित पुरुषार्थ और सफलता का अभिन्न सम्बन्ध है।

नगर-निगमों के निर्वाचन

उत्तर प्रदेश के पांच प्रमुख नगरों का चिर प्रतीक्षित निर्वाचन आ ही गया यह निर्वाचन निगम (Corporation) बनने के बाद पहला निर्वाचन है। इन पांचो नगरों (लखनऊ कानपुर आगरा इलाहाबाद तथा बनारस) में नगरपालिकायें बहुत समय पूर्व ही समाप्त करदी गई हैं—उसका कारण कुछ तो प्रबन्ध की अव्यवस्था तथा साथ ही नगर निगम योजना के अन्तर्गत होने वाले निर्वाचनों के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना भी था। जनता की ओर से निरन्तर यह मांग होती रही कि ये निर्वाचन शीघ्र ही कराये जायें जिससे कि प्रजातन्त्रात्मक पद्धति को अपनाने वाले देशों में अग्रणी भारत के एक प्रमुख प्रदेश के प्रमुख नगरों में जनतन्त्रात्मक पद्धति का अभाव हमारे कथनी और करनी के अन्तर को अधिक समय तक न प्रदर्शित करता रहे।

सरकार एक या दूसरे कारण से इन निर्वाचनों को बराबर टालती आ रही थी सरकार इसे उचित व्यवस्था तथा वातावरण प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक समझती थी तो दूसरी ओर विरोधी दल इसे सरकार की दुर्बलता समझकर समय को टालने का एक बहाना मात्र कहते। जो कुछ भी रहा हो पर वह समय अब दूर नहीं कि सभी दलों को अपनी शक्ति परीक्षा का अवसर मिलेगा।

इन नगर निगमों के निर्वाचन के लिए जनता में विशेष उत्साह सा प्रतीत हो रहा है। लखनऊ में ही लगभग २५० व्यक्तियों ने निर्धारित शुल्क देकर अपने नाम निर्वाचन सूची में अंकित कराये। साथ ही इससे भी इस उत्साह

(शेष पृष्ठ ४ पर)

(पृष्ठ १ का शेष)

का पता लगता है कि एक-एक सीट के लिए १० या १२ व्यक्ति तक अपना नाम प्रस्तुत कर चुके हैं। लखनऊ में ९३ स्थानों के लिए ४११, कानपुर में ७२ स्थानों के लिए ११२३ तथा इलाहाबाद में ५४ स्थानों के लिए २७३ व्यक्तियों द्वारा अपने नाम प्रस्तुत किए गये हैं। बनारस आगरा की सख्या भी इससे कम नहीं।

विचारणीय यह है कि क्या ये सब व्यक्ति देश या समाज की सेवा की भावना से प्रेरित होकर ही सामने आये हैं या इसके पीछे कोई और भावना तो नहीं है जिसके कारण कि इतने असीम साधनों का व्यय करने पर भी देश उस वांछित स्थिति को नहीं प्राप्त कर सका है जिस स्थिति को चीन जैसे विशाल देश ने हम से भी कम साधनो द्वारा प्राप्त कर लिया।

निःसन्देह एक व्यक्ति का पूर्ण प्रभुत्व युक्त शासन प्रजातन्त्रात्मक पद्धति वाले देश में एक बहुत बड़ी कमी मानी जायगी और उसमें उसकी स्वेच्छाचारिता से हानि होने की सम्भावना निश्चित रूप से बना ही रहती है, पर साथ ही ५० भी विचारणीय है कि कहीं एक के स्थान पर ५० एक—उसी भावना को लेकर तो नहीं आ रहे जिस भावना के कारण हम उस एक से पीड़ित थे—यदि एमा ही होना है तो १० लुटेरो से एक फिर भी अच्छा है।

हां! यदि इन सबके पीछे अपने-अपने नगरों का सुधार करने की भावना तथा जन कल्याण की भावना निहित है तो मार्ग अवश्य मंगलमय हो सकता है। हमारे नगर निगमो के ये प्रथम निर्वाचन हमारे लिए शुभ हों, मंगलकारी हो—यही प्रभु से प्रार्थना है।

दयानन्द पार्क के नाम परिवर्तन की निन्दा

कानपुर की आर्य जनता ने जिस स्थान का नाम महर्षि दयानन्द के नाम पर रखकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया था आज उनके प्रयत्न को नष्ट कर उस स्थान को रूस के लेनिन के नाम पर रखने का निर्णय किया जा रहा है। कानपुर की आर्यसमाजों और अन्य नागरिको का एक शिष्ट मण्डल इस कार्यवाही के विरुद्ध कानपुर के एडमिनिस्ट्रेटर महोदय को एक ज्ञापन भी दे चुका है। देश की समाजों ने इस अन्याय के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये हैं और चेतावनी दी है कि यदि इस अन्याय का प्रतिकार नहीं किया गया तो आर्यजन सघर्ष और बलिदान से इस समस्या का निपटारा करेंगे। हम आर्य बन्धुओं के उत्साह की प्रशंसा करते हैं और धैर्य धारण का परामर्श देते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इस सम्बन्ध में उच्चस्तर पर कार्यवाही की जा रही है। आशा है सरकार अपने स्वायत्त शासन विभाग को इस सम्बन्ध में उचित कदम उठाने का आदेश निर्देश देकर आर्यों की भावनाओं और भारत के महान् पुरुष के गौरव की रक्षा करेगी।

आर्यमित्र की सहायता का सुगम उपाय

हमने पिछले दिनों जुलाई के किसी अंक में आर्यमित्र की उन्नति के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत किये थे, हमें प्रसन्नता है उस पर आर्य बन्धुओं ने विचार किया है। एक आर्य बन्धु ने हमें लिखा है कि—

आर्यमित्र का सफल और सशक्त बनाना प्रत्येक आर्य का सामयिक कर्त्तव्य होना चाहिए। वाणी के तो हमारे बहुत से प्रचारक हैं पर लेखनी का प्रचारक आर्यमित्र अपने जैसा एक ही है। इसलिये प्रत्येक आर्य, आर्य संस्था और आर्यसमाज को इसे मगाना चाहिए।

मित्र की प्रशंसा और उपयोगिता स्वीकार करने वाले भाई ने हमारे आर्थिक प्रश्न की भी चर्चा की है और लिखा है, आर्य जनता मित्र की सेवाओं को भूल नहीं सकती और अपने कर्त्तव्य का पालन अवश्य करेगी। मित्र के पिछले अंको में आर्य प्रकाशन लिमिटेड के सचित धन को आर्यमित्र की उन्नति के लिए प्रदान करने की जो प्रेरणा की गयी थी उसके अनुसार मैं अपने १००० के शेयर्स का अधिकार पत्र आर्यमित्र के लिये समर्पित करता हूँ।"

इसी भांति श्री ठा० फूलनसिंह जी व श्री डा० महादेव प्रसाद जी ने भी अपने १०००), १०००) शेयर्स के अधिकार पत्र सभा को समर्पित कर दिये हैं फीरोजाबाद के श्री चिरंजीलाल जी ने भी अपना अधिकार पत्र सभा के नाम समर्पित कर दिया है। हम इन सभी उदार दानी महानुभावो को मित्र परिवार और सभा की ओर से धन्यवाद देते हैं। और आशा करते हैं कि यदि इस प्रकार सभी सहयोगी साथी उस सग्रहीत धन को आर्यमित्र या सभा की अन्य योजनाओं के लिये समर्पित कर देंगे। उनके इस सहयोग से कार्य को विशेष प्रगति और बल मिलने की पूर्ण आशा है। आशा है सम्बन्धित आर्य जन इस प्रश्न पर व्यावहारिक उपयोगिता की दृष्टि से विचार करेंगे और मित्र की उन्नति में सहायक बनेंगे।

संसदीय साहित्य परिषद् और नृत्य

संसद के साहित्यिक सदस्यों की एक बैठक १२ सितम्बर को संसद समाप्ति के अवसर पर आयोजित की गयी जिसमें जलपान और भाषणादि के पश्चात् एक बालिका के नृत्य का कार्यक्रम रक्खा गया था। संसद सदस्य सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री राजा महेन्द्र प्रताप भी उस बैठक में उपस्थित थे। नृत्य का आरम्भ होते ही राजा साहब यह कहकर उस सभा से उठ आये कि 'पुराने जमाने के राजा अपनी महफिलों में वेश्यायें नचाया करते थे और आज के राष्ट्रीय कर्णधार लड़कियो को नचाते हैं' राजा महेन्द्रप्रताप के इस कदम और उपयुक्त आलोचना का हम समर्थन करते हैं। वास्तव में जब राष्ट्र एक बाह्य आक्रमण की सम्भावनाओं में से गुजर रहा हो तब राष्ट्र के कर्णधार नाच रंग के कार्यक्रमों में व्यस्त हो यह ऐसा ही है जैसा रोम में आग लगने पर भी नीरो के वंशी बजाने का व्यवहार था। राष्ट्रीय सकट का प्रश्न न भी हो तो राष्ट्र कर्णधारों को विलासिता के वातावरण से अपने को पृथक् रख राष्ट्र के सम्मुख आदर्श उपस्थित करना चाहिये। विलासिता का जीवन राष्ट्र को बलवान और वीर मनोवृत्ति का नहीं बना सकता, मुस्लिम दासता काल में हिन्दू राजा केवल नाच रंग की विलासिता में सने रहे और देश पतन की ओर गिरता चला गया तभी हिन्दी का रीतिकाल विलासी और चाटुकारी जीवन का इतिहास बनकर हमारे सामने आया। क्या नवप्राप्त स्वाधीनता इस विलासी मनोवृत्ति से मुक्ति पा सकेगी। यदि इस दिशा में हमारे संसद सदस्य अधिक गम्भीर बन सकें तो यह राष्ट्र की महान् सेवा होगी। कला की उन्नति और उसका उपयोग आवश्यक है हम कला के विकास के प्रत्येक उचित प्रयत्न का समर्थन करते हैं परन्तु वह प्रयत्न सीमित होने चाहिये। सार्वजनिक मनोरंजन का साधन बनाने पर कला की पवित्रता नष्ट हो जाती है और फिर विलासिता को प्रोत्साहन मिलता है। आशा है इस प्रश्न पर राष्ट्र का प्रबुद्ध मस्तिष्क गम्भीरतापूर्वक विचार करेगा।

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम का वार्षिकोत्सव ता० ७ से ९ नवम्बर सन् १९६९ ई० को मनाया जायगा, धर्मप्रेमी इष्ट मित्रों सहित सपरिवार पधार कर उपदेशामृत से लाभ उठावें।

—सरदारसिंह मन्त्री

सूचनाएँ

सभा के पूर्व उपदेशक श्री पं० ब्रह्मदत्त जी शास्त्री अमराना (अलीगढ़) निवासी महर्षि दयानन्द दीक्षा-शताब्दि जयन्ती आदि समारोह के लिए धन-सग्रहार्थ और प्रचारार्थ अलीगढ़ एटा जिलों में कार्य पर नियुक्त कर लिये गये हैं। उनके पहुंचने पर समाज, उपसभा, सयोजक जी महोदयों से प्रार्थना है कि प्रचार कराया जावे और धन-सग्रह कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

(२) सभा के पूर्व उपदेशक श्री प० श्रीकृष्णशास्त्री जी कानपुर, महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी के आदि के लिए प्रचार व धन सग्रह कार्य करना स्वीकार कर लिया है। उक्त उपदेशक जी के पहुँचने पर समाजें उप सभा, तथा सयोजक महोदय सहयोग प्रदान करें।

आर्यसमाज नारायण स्वामी भवन लखनऊ को जयन्ती आदि के निमित्त २) वाले स० १७२६ से १७५० तथा १) वाले ८१२१ से ८२०० तक अर्थात् १००) रु० के नोट्स जिलोपसभा द्वारा बिक्रयार्थ दिये गये थे। यह (नोट्स) रसीदें मिल नहीं रही हैं। जिनके पास यह रसीदें हों, तो उन्हे चोरी की समझनी चाहिये। और यदि किन्हीं के द्वारा उक्त नम्बर की रसीद (नोट्स) विक्रय कर लिये गये हों तो वे कृपाकर सभा कार्यालय को तुरन्त सूचित करें।

श्री मन्त्रीजी का भ्रमण प्रोग्राम

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला सहारनपुर द्वारा आयोजित जिला के समस्त आर्यसमाजों को १४ केन्द्रों में विभक्त कर दिया गया है। यह केन्द्र ७ दिन में धन सग्रहार्थ समाप्त करने की योजना बनाई गई है। अतः सभा के माननीय मन्त्री श्री प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम० एल० सी० हाथरस निवासी १६ अक्टूबर को भ्रमणार्थ पहुंच रहे हैं। समाजों को चाहिये कि श्री मन्त्री जी के पहुँचने पर भव्य स्वागत और महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी तथा जयन्ती आदि के लिए पुष्कल धन भेंट करने की कृपा करें।

—मन्त्री जयन्ती समिति

सभा कोषा० का तूफानी दौरा

सभा के माननीय कोषाध्यक्ष श्री विश्वेश्वर नाथ जी वर्मा रिटायर्ड अन्डरसेक्रेटरी एवं सभा के प्रचार मन्त्री श्री राजबहादुर जी विशारद ने गोंडा, बलरामपुर, नानपारा और बहराइच का दौरा किया। इस दौरे में निम्न धनराशि जयन्ती के लिये प्राप्त हुई।

२२१) श्री किशनलाल जी भदेसिया नानपारा
२५) आर्यसमाज नानपारा
१२०) आर्यसमाज बलरामपुर
२१) आर्यसमाज गोंडा
१५) आर्यसमाज बहराइच
४०२) कुल योग

—सभामन्त्री

योग-चर्चा—

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः

(श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती नारायण आश्रम रामगढ़ नैनीताल)

चित्त की वृत्तियों का रोकना योग है। सूत्र में चित्त शब्द से निर्मल सत्त्व प्रधान मन, चित्त, बुद्धि तथा अहंकार इन चारों शब्दों से कहे जाने वाले अन्तःकरण सामान्य का ग्रहण किया गया है। उस चित्त सत्त्व की जो अङ्गाङ्गीभाव से परिणाम-वृत्तियाँ हैं, उनका निरोध अर्थात् जो बाहर को चित्त वृत्तियाँ जाती हैं, उन बहिर्मुख वृत्तियों को सांसारिक विषयों से हटाकर उलटा अर्थात् अन्तर्मुख करके अपने कारण चित्त में लीन कर देना योग है।

वृत्ति

सारी सृष्टि सत्त्व, रजस् तथा तमस् इन तीनों गुणों का ही परिणाम रूप है। एक धर्म आकार अथवा रूप को छोड़कर धर्मान्तर के ग्रहण अर्थात् दूसरे धर्म आकार अथवा रूप के धारण करने को परिणाम कहते हैं। चित्त इन गुणों का सबसे प्रथम सत्त्व प्रधान परिणाम है। इसलिये इसका 'चित्त-सत्त्व' भी कहते हैं। यह इसका अपना व्यापक स्वरूप है। यह सारा स्थूल जगत् जिसमें हमारा व्यवहार चल रहा है रज तथा तम प्रधान गुणों का परिणाम है। जिस प्रकार वायु आदि के वेग से जलरूपी तरंगें उठती रहती हैं, इसी प्रकार चित्त इन्द्रियों द्वारा बाह्य विषयों से आकर्षित होकर उन जैसे आकारों में परिणत होता रहता है। यह सब चित्त की वृत्तियाँ कहलाती हैं।

योग शब्दार्थ

योग शब्द दो पाणिनीय धातुओं से बन सकता है (१) युजिर् योगे (२) युज समाधौ, पहली धातु का अर्थ योग=संयोग जोड़ना है, और दूसरी का अर्थ समाधि=ध्यान एकाग्र होना है। योग के टीकाकारों ने अधिकतर दूसरी धातु से ही योग शब्द को सिद्ध किया है। यहाँ तक कि योग दर्शन के सबसे उच्च तथा प्राचीन टीकाकार ऋषि व्यास ने भी युज समाधौ इसी धातु से योग शब्द सिद्ध किया है। जैसा कि "व्यास भाष्य से प्रतीत होता है। "योग समाधिः स च सार्वभौमश्चित्तस्य धर्मः।" योग व्यास० समाधि पा० १।२२ भाष्य का अर्थ यह है=योग समाधि का नाम है और वह चित्त का धर्म है। इस प्रकार व्यास जी ने योग शब्द को समाधि का पर्याय मानकर युज समाधौ धातु से ही बनाना स्वीकार किया है। योग की क्रिया की दृष्टि से यह अर्थ ठीक ही है। परन्तु उद्देश्य की दृष्टि से तनिक विचारें तो युजिर योगे धातु से ही योग शब्द को सिद्ध करना ठीक प्रतीत होता है। क्योंकि इसका अर्थ जोड़ या संयोग है। योग वह क्रिया या वह साधन है जिसके द्वारा हमारा अदृश्य शक्ति अर्थात् आत्मा से जुड़ना या संयोग होता है। महाभारत में भी आया है—

"परेण ब्रह्मणा सार्धमेकत्वं यन्नृपात्मनः स एव योगो विख्यातः किमन्यद् योगलक्षणम्। अर्थात् हे राजन् परमब्रह्म के साथ आत्मा का एक होना अर्थात् जुड़ना ही योग है। योग एक विलक्षण प्रणाली है जिसके द्वारा मनुष्य का अदृष्ट जगत् से संयोग होता है। अथवा योग एक जोड़ने वाला पुल है जो दृश्यमान् जगत् और अदृष्ट यथार्थ जगत् को परस्पर जोड़ता है। इस प्रकार योग के सिवाय अन्य कोई मार्ग नहीं है जिससे मनुष्य अदृष्ट जगत् में प्रवेश कर सकता हो। इस कथन की पुष्टि महापुरुषों के के वचन से होती है—

"नास्ति सांख्य समं ज्ञानं, नास्ति योग समं बलम्।

अर्थात् सांख्य के समान ज्ञानदाता और योग के समान अदृष्ट शक्ति से मिलाने वाला दूसरा और कोई किसी साधन का बल नहीं हैं। कठोपनिषद् अ० २ वल्ली ६ में १० व और ११ वे मन्त्रों द्वारा भी योग की बलवती शक्ति का दर्शन कराया है। 'यदा पञ्चावतिष्ठन्ते०।' मन्त्रों को न लिखकर उनका अर्थ मात्र लिख देते हैं? जब पाँचो ज्ञानेन्द्रियां मन के साथ स्थिर हो जाती है और बुद्धि भी चेष्टा रहित हो जाती है, उसको सबसे ऊँची अवस्था कहते हैं। उसी को योग मानते हैं जो इन्द्रियों की निश्चल धारणा है। उस समय वह योगी अपने आपको जो भूला हुआ था उससे रहित होता है। क्योंकि योग प्रभव और अप्यय अर्थात् उत्पत्ति तथा लय अर्थात् निरोध के संस्कारों का आविर्भाव और व्युत्थान के संस्कारों के प्रादुर्भाव का उस समय योगी आश्रय होता है। 'तपस्विभ्यो० इत्यादि श्लोकों से गीता के अध्याय ६ में भी योगी की विशेषता दिखलाई है।

योग की प्राचीनता

संस्कृत साहित्य के पुराने से पुराने ग्रन्थों में योग का सिद्धान्त पाया जाता है। यहाँ तक कि योग का बीज सबसे प्रथम हमें वेदों में ही मिलता है। 'युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्ते रोचनादिवि।'

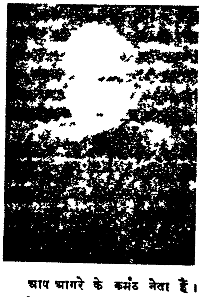
ऋषि दयानन्द ने बतलाया है कि इस मन्त्र में युञ्जन्ति पद योग का सूचक है। इसी प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थो में तथा ब्राह्मणों के अन्तिम भाग उपनिषद् ग्रन्थों में विस्तार पूर्वक योग का वर्णन है। सारी श्रुति, स्मृति योग की महिमा का गान कर रही हैं। योग सांख्य का ही क्रियात्मक रूप है। योग सारे सम्प्रदायों और मतमतान्तरों के पक्षपात और वाद विवाद से रहित सार्वभौमिक प्राचीनतम धर्म है जो तत्त्व का ज्ञान स्वयं अनुभव प्राप्त कराना सिखाता है। गीता का तो प्रत्येक अध्याय ही योग के नाम से प्रचलित है। महाभारत मे इसकी प्राचीनता की भूरि भूरि महिमा गान की है। यह कहना—कठिन है कि योग का प्रारम्भ किसी एक विशेष ऋषि या सम्प्रदाय ने अमुक समय में किया था। योगी भारत में सदा से चले आते हैं।

योग संक्षेप

चित्त की अवस्था विशेष का नाम योग है। वह दो प्रकार है—सम्प्रज्ञात नाम का और असम्प्रज्ञात नाम का। अभ्यास वैराग्यादि साधनो के अनुष्ठान द्वारा जिस अवस्था में तम का मल रूप आवरण और रजोगुण की विक्षेप रूप चञ्चलता निवृत्त होकर सत्त्व के प्रकाश में ध्येय मात्र एकाग्र वृत्ति रहे उसे सम्प्रज्ञात योग कहते हैं। सम्प्रज्ञात योग में ध्येय विषयक सात्त्विक वृत्ति बनी रहती है। अन्य रजस, तामस, वृत्तियो का निरोध हो जाता है। इस लिए इसमें भी चित्त की वृत्तियो का निरोध रूप लक्षण 'योगश्चित्त०' इसमें बतलाया हुआ संगत हो जाता है। दूसरा योग असम्प्रज्ञात है। पर वैराग्य तथा अभ्यास की पटुता के द्वारा जब सात्त्विक वृत्ति का भी निरोध कर दिया जाता है, जब वासना से रहित चित्त भूने हुए चने के समान कार्य करने में असमर्थ होकर अपने कारण प्रकृति में संस्कार रूप से लीन हो जाता है, तब उस चित्त की अवस्था विशेष को असम्प्रज्ञात योग कहते हैं।

सर्व प्रकार की वृत्तियो के निरोध हो जाने से इस योग मे 'योगश्चित्त वृत्ति निरोध' इस सूत्र द्वारा बतलाया हुआ सर्व वृत्ति निरोध रूप लक्षण सब प्रकार से संगत हो जाता है। इस लेख मे चित्त की दो अवस्थाओं का ही चर्चा की गई है। अन्य तीन अवस्थाओं की चर्चा फिर करेंगे।

श्री ला. सोहनलालजी आर्य



आप आगरे के कर्मठ नेता हैं। आपने आर्यमित्र के लगभग ६० नवीन ग्राहक बनाए हैं, और बराबर बना रहे हैं। आप जयन्ती के लिए धनसंग्रह में तल्लीन हैं। आपने आगरा से २०००) रुपयेदेने का वचन दिया है।

उपदेशक अपना पता दें

सभा के महोपदेशक श्री प० [illegible] जी शास्त्री तथा श्री [illegible]देव जी का पत्र अधिक समय से सभा [illegible] [illegible]। [illegible] द्वारा [illegible] किया जाता है कि वे [illegible], अपने पते से सभा कार्यालय को शीघ्र सूचित करें। अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

सम्मिलित प्रार्थना

[ले०—साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री एम. ए. काव्यतीर्थ]

करुणेश ! निज करुणा कृपा से विश्व पालन कर रहे।
धान्यादि ऋद्धि समृद्धि से भण्डार जग का भर रहे ॥१॥

करते तुम्हीं हो न्याय से पोषण जगत का सर्वथा।
सन्तत तुम्हीं को ध्यान में योगीन्द्र मुनिजन धर रहे ॥२॥

तुम अप्रमेय अनादि अनुपम विश्व प्राणाधार हो।
संकट विकट तापादि भय सम्पूर्ण जग के हर रहे ॥३॥

प्रभुवर ! तुम्हारे ज्ञान से सन्मार्ग मिलता है हमें।
भगवन् ! तुम्हारी ही दया-सरिता हृदय में नित बहे ॥४॥

हे ईश ! जड़ जंगम सभी गुण हैं तुम्हारे गा रहे।
पा आपको फिर कौन नर जिसको यहां कुछ डर रहे ॥५॥

सानन्द सब गुणगान निशि-दिन आपका करते रहें।
प्रभु प्राप्ति हित हम विश्व में संकट सदा ही हैं सहे ॥६॥

शुभ शान्ति का सन्देश कल्याणमय जगत् को दीजिये।
फिर प्रेम-सौरभ युक्त निर्मल वायु जगती में बहे ॥७॥

करुणा निधान सदैव हम पर चिर कृपा करते रहें।
यह विश्व फिर सुख-शान्ति हित तव वेद पथ ही को गहे ॥८॥

कल्याण प्रद प्रभु-भक्ति को हम नित्य ही धारण करें।
तुम ही जगत् की आपदायें निज कृपा से हर रहे ॥९॥

हे विश्व भावन ! विश्व सृज ! विश्वात्मदेव ! नमोस्तु ते।
सर्वेश ! तुम ही प्रेम-निर्झर विश्व में हो झर रहे ॥१०॥

ओ३म् एधोऽस्येधिषी महि समिदसि तेजोऽसि तेजोमयि धेहि। समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः। समु विश्वमिदं जगत्। वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभून् कामान् व्यश्नवैभूः स्वाहा ॥ – यजुर्वेद अध्याय २० मन्त्र २३

मन्त्र का गद्यमय भावानुवाद—

भगवन् ! आपके द्वारा ही सब की वृद्धि होती है, हम भी आपकी शक्ति से ही सर्वदा वृद्धि करें। समिधाओं के समान आप ही दीप्त तथा तेज स्वरूप हो। आप ही हमें तेज को धारण करायें। संसार की समस्त वस्तुओं में आप व्याप्त हो—यह वस्तुयें पुनः-पुनः उत्पन्न तथा विनष्ट होती हैं, आप मुझे वैश्वानर ज्योति की प्राप्ति कराइये। उसी ज्योति से मैं सम्पूर्ण पदार्थों को प्राप्त करूं। आपकी सत्ता के लिए ही मै सत्यवाणी तथा सत्यक्रिया से याचना करता हूँ ॥

मन्त्र का पद्यमय भावार्थ—

सत्य क्रिया वाणी के द्वारा तेज तुम्हारा मिल जावे।
जीवन में अभिवृद्धि ज्योति से प्रभुवर निशि दिन हो जावे ॥१॥

अमित तेज पा प्रभो तुम्हारा शक्ति और बल मिलता है।
पाप, कलुष, अज्ञान, मोह, मद जीवन का सब मिट जावे ॥२॥

व्याप्त तुम्हीं कण-कण में भगवन् तुम्हीं चराचर के स्वामी।
आवागमन-चक्र का बन्धन पूर्ण ज्योति से कट जावे ॥३॥

वैश्वानर परिपूर्ण ज्योति में जीव-ज्योति यह मिल जावे।
अखिल विश्व की निखिल सम्पदा तभी हमें प्रभु मिल जावे ॥४॥

हे जगदीश्वर ! आप विश्व की प्रतिपल रक्षा करते हैं।
दर्शन पा प्रभु दिव्य ज्योति का जीवन निर्मल हो जावे ॥५॥

★

गुरुदक्षिणा

★

गुरुदेव तुम्हें अभिनन्दन है,
चरणों पर कुंकुम-चन्दन है।
गुरुवर की रीति नई न्यारी,
गा-गा कर प्रीति भरूं सारी ॥१॥

आंखों में अनुशासन देखा,
मधुराधर पे ममता-रेखा।
वात्सल्य मयी उर को लेखा,
चरणों में शरणागत पेखा ॥२॥

जब कोकिल मदमाती कूकी,
कुछ भर में पंचम स्वर फूंकी।
तब ब्रह्म तत्त्व का मीठा फल,
देते थे आप्त सफल ॥३॥

हे ईश्वर ! मेरे हृदयेश्वर !!
प्राणेश्वर ! गुरुकुल प्राणेश्वर !!
शतमुख से विनती करता हूँ।
सौ कर के वन्दन धरता हूँ ॥४॥

ऐसा कुछ भवदाशीष रहे।
प्रभु के चरणों में शीश रहे।
उस चिद्विलास में मग्न रहूँ।
नित मन्द-हास संलग्न रहूँ ॥५॥

इस पुण्य कुटी में आ करके,
यम नियमों का पालन करके।
मति को गति शील बना पाया,
जीवन में द्युति को ला पाया ॥६॥

तप भोग मेल कुछ कर पाया,
तोयज सा जन्म बना पाया।
गौ की रक्षा कुछ कर पाया,
पर देव ढोंग ही ला पाया ॥७॥

सब प्रेय श्रेयमय कर पाया,
यौवन की सार्थकता पाया।
गोविन्द स्वयं मैं बन पाया,
पर देव ढोंग ही ला पाया ॥८॥

गुरु प्रसन्न मना कहने लगे,
'किस प्रकार कहो वसुधा जगे।
यवन-मर्म यहाँ पर है भरा,
अब यहाँ तव धर्म कहाँ धरा ॥९॥

प्रण करो पकड़ो पतवार को,
तुरत पोत करो उस पार को।'
'उचित है गुरुदेव प्रणाम है,
अब लिया हमने यह काम है ॥१०॥

ऋषि चले तब वेद-प्रचार को,
कह दिया सब पोप कतार को।'
बस करो इस घोर कुकर्म को,
वश करो मन को धर धर्म को ॥११॥

वेदों को ही प्रचलित किये—
सत्य विद्यावलम्बी।
पी के हाला-हल कह दिये—
एक ले सांस लम्बी।
तेरी इच्छा प्रभुवर पिता—
पूर्ण होवे सदा ही।
आज्ञा दीजै शुभ गमन की—
ले चलूं मैं विदा ही ॥१२॥

—रामचन्द्रा रेड्डि: शास्त्री बी. ए.
हैदराबाद

आर्यसमाज हरदोई का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, हरदोई का ७५ वां वार्षिकोत्सव सदा की भांति आश्विन शुक्ल अष्टमी, नवमी तथा दशमी सम्वत् २०१६ विक्रमीय तदनुसार तारीख ९, १० तथा ११ अक्तूबर सन् १९५९ ई० दिन शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार को आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज भवन में समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। उत्सव में—श्री स्वामी अमृतानन्द जी सरस्वती, श्री आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री, वेद शिरोमणि, एम० ए०, श्री प्रो० सत्याचरण जी शास्त्री, एम० ए०, श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री, काव्य-तीर्थ, श्री पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री पन्नालाल जी 'पीयूष' संगीत-रत्न, सिद्धान्त शास्त्री आदि विद्वान पधार रहे हैं।

इस अवसर पर राष्ट्र भाषा सम्मेलन, मद्य-निषेध सम्मेलन, युवक सम्मेलन, आर्य वीर दल वार्षिकोत्सव, जिला आर्य सम्मेलन तथा सांस्कृतिक प्रदर्शिनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

—मन्त्री

सूचना

स्वामी करपात्री जी महाराज से "वेद स्वरूप" विषयक विचार विनिमय हो रहा है। उसके लिये स्व० तुलसीराम जी स्वामी द्वारा प्रकाशित 'वेद प्रकाश' के ४६वें से ७०वें अङ्क तक सं० १९४९की प्रतियों की आवश्यकता है, यदि किसी महानुभाव या आर्यसमाज के पास हो तो कृपया सूचित करने की कृपा करें।

—विद्याधर स० मन्त्री,
आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर

आवश्यकता

दो सनाढ्य ब्राह्मण कुलोत्पन्न कन्याओं के लिए जो क्रमशः १६ तथा १५ वर्ष सुन्दर, स्वस्थ एवं गृह कार्य में दक्ष हैं। और जिन्होंने मध्यमा तक शिक्षा प्राप्त की है। दो सनाढ्य कुलोत्पन्न ब्राह्मण कुमारों की आवश्यकता है। वर कम से कम मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त हों तथा किसी व्यवसाय में लगे हों; आयु २० से २५ वर्ष तक हो। आर्य समाजी विचारों के व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जावेगी। विवाह वैदिक रीत्यनुसार होगा।

पता—[illegible] आर्य
अध्यापक, चचौड़ा गुना (मध्य प्रदेश)

उत्तर प्रदेश के आर्य अपने गौरव की रक्षा करें—

दीक्षा समारोह हमारी परीक्षा बनकर आया है

(ले०—पं० विश्वबन्धु जी वेदालंकार एम० ए० आगरा)

दयानन्द दीक्षा समारोह जैसे शानदार आयोजन किसी भी व्यक्ति तथा समाज के जीवन जागृति के परम प्रमाण होते हैं। पर ऐसे समारोह उस पहाड़ी ऊंचाई के सदृश होते हैं जहाँ पहुँचकर व्यक्ति तथा समाज का जीवन गौरवान्वित होता है, पर यदि प्रमाद अथवा असावधानी से पैर फिसल जाय तो चकनाचूर भी हो सकता है। परीक्षा होती ही इसलिये है कि व्यक्ति तथा समाज के पिछले कार्य कलाप को आंका जा सके कि हमने क्या किया है। फिर यह दीक्षा समारोह तो हम आर्यों को चेतावनी देता है क्योंकि यह समारोह उस मथुरा नगरी में होने जा रहा है जहां आज से लगभग ३४ वर्ष पूर्व दयानन्द शताब्दी ने वहां पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। जिसके विषय में लोग आज तक कहते सुने जाते हैं कि मथुरा शताब्दी आर्यों के जोश उल्लास निष्ठा तथा संगठन शक्ति का दर्पण थी—जहां पर आकर लाखों आर्य नर नारियों ने मथुरा जैसी छोटी सी नगरी को उत्तर प्रदेश का सर्वाधिक जन संख्या वाला नगर बना दिया था।

यों तो यह भव्य समारोह समस्त भारत के आर्यों का ही नहीं वरन् विश्व भर के आर्यों का है, पर उत्तर प्रदेश के आर्यों की विशेष ज़िम्मेदारी है। उत्तर प्रदेश आर्यसमाज का हृदय है जहां से विश्व भर के आर्यों में समय समय पर नवीन प्रेरणा रूपी रक्त संचार होता रहा है। उसी प्रकार का यह भव्य अवसर हमारे लिए फिर आया है जब हम अपनी निष्ठा तथा संगठन शक्ति का पुनः सम्मिलित परिचय देंगे।

आज उस कुटी का स्मारक बनने जा रहा है जहां पर आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व गुरु विरजानन्द रूपी विद्या प्रकाश के सूर्य से प्रकाश प्राप्त करके जगद्गुरु महर्षि दयानन्द ने केवल भारत को ही नहीं परन्तु समस्त विश्व को प्रकाशित किया था। उसी कुटी से महर्षि ने वह प्रेरणा प्राप्त की थी जिस प्रेरणा को पाकर समस्त विश्व प्राणवान् हो उठा था। यह वही तो कुटी है जहां पर एक साथ दो युग पुरुषों ने सम्मिलित बैठकर संसार की उत्थान पतन की समस्याओं पर विचार किया था और उसके निराकरण का उपाय बताया था। उस कुटी का आज उद्धार होने जा रहा है। यह वह अवसर है जब आर्यों की श्रद्धा, भक्ति तथा दानशीलता को परखा जायगा कि हम अपने गुरु के प्रति क्या कुछ कर सकते हैं।

संसार के सभी लोगों ने अपने-अपने गुरुओं के भव्य स्मारक बनाकर उनको भौतिक दृष्टि से अमरता प्रदान की है। इसी प्रकार हम यह तो नहीं चाहते कि वहां इतनी शानदार इमारत बने जो सभी से बढ़ चढ़ कर हो पर यह तो हम भी अवश्य चाहते हैं कि उस स्थान पर इतना बड़ा शोध संस्थान तथा ऐसा विद्यालय बने जिसके ज्ञान प्रकाश की किरणों से समस्त विश्व आलोकित हो उठे। वहां से इतना उत्कृष्ट साहित्य प्रकाशित हो जो समस्त संसार की अविद्या अन्धकार को धो डाले तथा उस विद्यालय से निकले हुए विद्यार्थी अपने गुरु की भक्ति इस प्रतिज्ञा को लेकर निकलें कि—आयेंगे और रसातल में काफिल डारन में विहरेंगे। एक दिन न तु एक दिना सही जगती को दिन फेर फिरेंगे।

पर यह विशाल कार्य कोरी बातों से तो होने वाला है नहीं। प्रतिनिधि सभा के प्रधान और मन्त्री के पास कोई अलादीन का चिराग तो है नहीं जिसे रगड़ कर मनमाना धन उपजा लेंगे। इसके लिए तो हम सबको गम्भीरता पूर्वक सोचना है। हममें से प्रत्येक को इस कार्य के लिए यथाशक्ति धन अवश्यमेव देना है। प्रत्येक आर्य आवश्यक रूप से यदि पांच पांच रुपया भी दे तो लाखों की राशि एकत्र हो जायगी। यह न सोचा जाय कि जब कोई मांगने आयगा तभी देंगे। स्वयं अपने अपने समाज के मन्त्री या प्रधान को अधिक से अधिक धन जाकर दें। इस मद में इतना धन इकट्ठा होना चाहिए कि प्रबन्धकर्ता यह सोचने पर विवश हो जाय कि इतने अधिक धन का अब क्या किया जाय। यह स्थिति होगी तब समझा जायगा कि हमने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है।

इसी अवसर पर आर्यमित्र का हीरक जयन्ती जैसा महत्त्वपूर्ण कार्य भी होने जा रहा है। आज के इस युग में समाचार पत्रों की उपयोगिता को बताने की जरूरत नहीं है। फिर आर्यमित्र जैसा शानदार और व्यापक पत्र तो आर्यसमाज में दूसरा है नहीं। आर्यमित्र न हो तो आर्यसमाज एक दृष्टि से बेजबान हो जायगा। क्योंकि यही तो वह पत्र है जिसने विरोधियों से जमकर मोर्चा लिया है तथा समय-समय पर आर्यसमाज को कठिनाइयों से उबारा है। अकेले इस पत्र ने आर्यसमाज का इतना काम किया है जितना सैकड़ों उपदेशक मिलकर भी नहीं कर सकते। इसीलिए तो अनेकों लोग इसे अपने कलेजे से लगाये फिरते हैं। फिर यह क्या कम गौरव की बात है कि हिन्दी का राष्ट्रभाषा का प्रथम उद्घोष करने वाले ऋषि दयानन्द फिर इसका व्यापक प्रचार करने वाला आर्यसमाज, उसी आर्यसमाज का हिन्दी का सबसे पुराना यह आर्यमित्र जिसकी ६०वीं जयन्ती मनाई जा रही है।

पर उत्तर प्रदेश के आर्यो ! हमारी शान तो तब है जब जयन्ती पर हम यह घोषणा सुनें कि आर्यमित्र ६०वें वर्ष में ६० हजार छप रहा है। आप कहेंगे कि इतनी संख्या कैसे बढ़ सकती है? लो इसका भी सरल उपाय बताया जाता है। उत्तर प्रदेश की सभी आर्य समाजों के जितने भी अन्तरङ्ग सदस्य हैं, उनको आवश्यक रूप से आर्यमित्र का वार्षिक ग्राहक बनाया जाय। प्रत्येक अन्तरङ्ग सदस्य का यह नैतिक कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह आर्यमित्र का वार्षिक ग्राहक बने। इस परम्परा को आर्यसमाजों में प्रचलित किया जाय। हम अन्तरङ्ग सदस्यों को कुछ विशेषता समझकर ही चुनते हैं। वे इतने निर्धन तो होते नहीं कि वर्ष में केवल आठ रुपये भी व्यय न कर सकें। फिर आर्थिक दृष्टि से आठ रुपये भी कहां व्यय आता है। यदि वर्ष भर के अंकों को सावधानी से रखा जाय तो दो तीन रुपये की तो रद्दी ही बिक जाती है। क्या यह कम सौभाग्य की बात है कि केवल पांच ही रुपयों में वर्ष भर तक आर्यमित्र जैसा शानदार पथ प्रदर्शक पत्र हमारे घरों में आये। हम अकसर कहते रहते हैं कि घर की स्त्रियों तथा बच्चों पर आर्यसमाज का असर नहीं हो रहा है। हां असर हम रखें कैसे? जब किया के हाथों में तो हम निकम्मे तड़क-भड़क वाले पत्र पकड़ाते हैं फिर वे कैसे आर्यसमाज की बात जानें। यदि हमारे घरों में आर्यमित्र जैसा पत्र आता हो तो ... सदस्य उसे अवश्य पढ़ने लगें फिर आज कल तो आर्यमित्र का सम्पादन भी बड़ी अच्छी तरह से हो रहा है जिसमें अच्छे लेख, कविता उपदेश विशेष वार्ता जैसी उपयोगी चीजें निरन्तर छपती रहती हैं।

अन्तरङ्ग सदस्यों के आर्यमित्र के वार्षिक ग्राहक बनने के साथ साथ आर्यसमाजें भी एक से अधिक पत्र मंगवायें तथा उनको साधारण सदस्यों को भी आधी कीमत पर वितरित किया जाय। ऐसा कई स्थानों पर हमने स्वयं देखा भी है। यह भी अच्छी परम्परा है। केवल यह दो ही बातें हम स्वीकार करलें तो आर्यमित्र की संख्या हजारों में पहुँच जायगी। फिर इसके प्रकाशन का क्या कहना। यह तो अकेला ही आर्यसमाज में हलचल मचा ... तो ... और दूसरा ... कहे हम ... बढ़ने वाला नहीं है। ... दीक्षा समारोह जैसे पवित्र अवसर पर आर्यसमाजों में उपर्युक्त ... परम्परा प्रचलित की जाय। तभी ... गर्व पूर्वक ... कर सकेंगे कि आर्यमित्र पांच हजार नहीं पचास हजार छप रहा है।

इसी शुभ अवसर पर आर्यसमाज के शिरोमणि साहित्यकार पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय तथा पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज का जो अभिनन्दन होने जा रहा है वह तो इस समारोह में सोने में सुगन्ध का काम करेगा। आर्य समाज इन विद्वानों को गौरवान्वित करके मानों स्वयं गौरवान्वित होगा। आर्यसमाज में अब तक साहित्यकारों की उपेक्षा ही रही है केवल वाक्शूरों का ही सम्मान होता रहा है। यह प्रथम अवसर है जब सार्वजनिक रूप में हम अपने विद्वानों का अभिनन्दन करके उस परम्परा को प्रचलित करेंगे जो भविष्य में दूसरों को भी उत्कृष्ट तथा स्थायी साहित्य सृजन करने की प्रेरणा दे सकेगी। इन दोनों विद्वानों की सेवायें किसी से छिपी नहीं हैं। यदि वे आर्य साहित्य की अभिवृद्धि न कर अपनी शक्ति का प्रयोग किसी अन्य क्षेत्र में करते तो निश्चय ही हिन्दी के अन्य लेखकों की भांति ये भी ... सम्मान ... प्रचुर ... भी करते। पर ... आर्यसमाज ... दृष्टिकोण का पुष्पित और पल्लवित किया है वह आर्यसमाज ... में ... तथा ... प्रेरित करता रहेगा।

अतएव उत्तर प्रदेश के आर्यो ! इस शानदार ... समारोह को तन मन धन से सफल बनाकर इसके गौरव का सेहरा अपने सर पर बांधिये। हम यथाशक्ति अधिक से अधिक धन दें तथा एकत्र करें। अन्तरंग सदस्य आवश्यक रूप से आर्यमित्र के ग्राहक बनाये जायं। हम सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर इस दीक्षा समारोह रूपी कुम्भ में प्रेरणा प्राप्त करें। देश का कुम्भ तो प्रति बारह वर्ष पश्चात् आ जाता है—पर आर्यो तुम्हारा यह दीक्षा समारोह रूपी कुम्भ का मेला निकट भविष्य में आने वाला नहीं है जहां हम आकर अपने तन, मन, धन का सदुपयोग कर सकेंगे। ईश्वर हमें प्रेरणा दे कि हम इसे सफल बनाने में जुट जायं। ★

नेतृत्व की कामना

(लेखक—श्रीकृष्णस्वरूप विद्यालङ्कार गीता मर्मज्ञ इस्लामनगर जि० बदायूं)

मनुष्य मात्र समुदाय में रहने के आदी हैं। जहाँ कुछ मनुष्य इकट्ठे रहते हैं, वह अपने रहन सहन, आचार-विचार व्यापारादि के लिये कुछ नियम बना लेते हैं और उनके पालन के लिये कुछ नियामक, नियन्त्रक रक्षक आदि चुन लेते हैं। मनुष्य का यह भी स्वभाव है, कि वह आगे बढ़ना चाहता है। यह उसकी रुचि का प्रश्न है कि वह किस में आगे बढ़े। धन से, ज्ञान में, तप में, प्रबन्ध में, रक्षा में, व्यापार में आदि २ भिन्न भिन्न विभागों में मनुष्य आगे बढ़ना चाहता है। आगे बढ़ना और अन्यों को अपने पीछे चलाने की इच्छा ही 'नेतृत्व की कामना करना है।

जो अत्यन्त स्वार्थी होते हैं, या निर्बल होते हैं, उनका सिद्धान्त यह होता कि न गणस्याग्रतो गच्छेत्सिद्धे कार्ये सम फलम्। यदि तत्र विपत्तिः स्यात्मुखरस्तत्र निहन्यते ॥'

अर्थात् समूह के आगे कभी न चल क्योंकि यदि कार्य सिद्ध हो गया तो फल सबको बराबर मिलेगा और यदि विपत्ति आई तो अगुआ पहिले मरेगा। अधिकतर मनुष्य ऐसे ही हैं। ऐसे समुदायों में भी जब जनता आग्रह करती है या [illegible] किसी का नेता बनना ही पड़ता है। इस मनुष्यों में ही नेता बनने का आनन्द भी मिलता है जहाँ जनता सोई हुई है। परन्तु जहां जनता के कुछ व्यक्ति जागरूक हैं अपने अधिकारों को पहिचानते हैं वहां संघर्ष भी होता है। कालचक्र के प्रभाव से रजोगुण तमोगुण प्रबल हैं, इनके प्रभाव से मनुष्यों में ईर्ष्या, द्वेष क्रोध घर किये हुए हैं। इसलिये नेतागिरी के लिए संघर्ष होना भी स्वाभाविक है और इतना संघर्ष होता है कि अपना मकान मढ़ इया बेचकर, कर्ज लेकर भी दाव पर लगा दिया जाता है। असफल होने पर कुर्सी से गिराने के लिये जायज, नाजायज उपायों का प्रयोग किया जाता है और यह तक कि चोरी, डकैती इत्यादि कराई जाती हैं।

इन भयङ्कर उत्पातों से बचने के लिये सुखपूर्वक महत्वाकांक्षी की प्राप्ति के लिये नेतृत्व कला का जानना भी परम उपयोगी होगा।

नेता वही है कि जो ग्राम शहर, देश जाति, धर्म को आगे ले जाता है, लक्ष्य को प्राप्त कराता है। अतः नेता बनने की इच्छा वाले के लिये बड़ी गम्भीरता से अपनी आत्मा में यह जांच करनी चाहिये कि मैं इस योग्य हूं या नहीं, कि सैकड़ों हजारों, लाखों, करोड़ों मनुष्यों की व प्राणियों की जिम्मेवारी आगे बढ़ाने की उठा सकूं। यदि इसकी योग्यता नहीं है, या समय नहीं है तो केवल कुर्सी पर बैठने के लिए या कुछ दिन की वाहवाही लूटने के लिए कभी इसकी इच्छा न करे। अयोग्य नेताओं के लिए ही कहा गया है कि तप करके राज्य मिलता है, और राज्य पाकर नरक। यह महा घोर पाप है, और जनता से नहीं जनार्दन से विश्वासघात है कि मैं जिसके अयोग्य हूं, उस पद को छलबल से हासिल करूं और फिर उसके उत्तरदायित्व को न निभाऊं।

यदि व्यक्ति बुद्धिमान है, जनता की सेवा भावना है, शरीर, मन से स्वस्थ है, समय भी दे सकता है। तो उसे अपनी इस इच्छा की पूर्ति किस प्रकार करनी चाहिये इसी के लिए यहां कुछ निर्देश हैं। प्रायः ऐसे व्यक्ति धन सम्पन्न नहीं होते, मध्यमश्रेणी के होते हैं और अतएव धनवानों के, गुण्डागर्दी व लट्ठबाजों के मुकाबिले हार जाते हैं। मैं अपने ६२ वर्ष के निरन्तर अनुभवों के आधार पर लिख रहा हूँ। केवल कल्पना पर नहीं।

आयु—(१) ऐसे नवयुवकों को मैदान में कभी जल्दी नहीं उतरना चाहिये। समय की प्रतीक्षा करनी चाहिये। साधारणतया ४० वर्ष की आयु के बाद जनता की बागडोर अपने हाथ में लेनी चाहिये। यह ४० वर्ष की आयु उनके लिए है कि जिन्हें प्रबन्ध का भार लेना पड़ता है। इससे पहिली आयु में भिन्न-भिन्न संस्थाओं और विभागों में सेवा करके अनुभव बढ़ाना चाहिये। वैश्य अपने बालकों से पहिले)।,)॥ का सौदा बिकवाता है, शनैः २ हजारों का कारोबार सौंप देता है। यही स्थिति सेवा की है। प्रारम्भ में छोटी-छोटी सेवाओं का असिस्टेन्ट (सहायक) बनकर अभ्यास करे।

(२) निस्वार्थ सेवा—नवयुवकों को यह सेवा निस्वार्थ भाव से करनी चाहिये। इन सेवा के अवसरों पर उसे यह स्वभाव बनाने का अभ्यास करना चाहिये कि अपने सांसारिक कार्यों को गौण समझे और सेवा के कार्यों को मुख्यता दे, जो जनसेवक अपने कार्यों को मुख्यता देगा, वह कभी भी अपने उत्तरदायित्व को समय पर पूरा नहीं निभा सकेगा और इसलिए अपमानित भी होगा।

मिलन सारिता—नेता या सेवक बिना इस गुण के बनना कठिन है, असम्भव नहीं। जन सम्पर्क में रहने से और जनता के छोटे मोटे कार्यों में आने रहने से जनता आकर्षित रहती है। नेता जब नम्रता के साथ हाथ जोड़कर मुस्कराकर जनता पर एक नजर घुमाता है तब सब यही समझते हैं कि यह हम से मुस्करा कर मिले। यह बड़ी कला है जिसे आप महापुरुषों के जीवन में प्रत्यक्ष पावेंगे। व्यक्तिगत मामलों में भी हाल चाल के दो शब्द पूछ लना दुख में आश्वासन देना उनके सुख में प्रसन्नता प्रकट करना बड़ा प्रभावशाली होता है।

दूरदर्शिता—यह आवश्यक है कि जन-सेवक या नेता भविष्य दर्शी हो। उसमें अवस्थाओं को देखकर कालान्तर में होने वाले परिवर्तन व उसके परिणामों व प्रभावों को जानने की क्षमता हो। और वह उसके अनुकूल अपने को ढाल लें।

प्रतिभा—उनके अनुसार योजना बनाने, बदलने, कार्यान्वित करने की बुद्धि हो। यदि उसमें स्वयं न हो तो उसके पास ऐसे २ मस्तिष्क हों जो उसे सहायता दें।

चरित्र—नेता बनने के सब गुण हों और चरित्र न हो तो वह नेता नहीं रह सकेगा। यह चरित्र, सभ्यता उन्नति का पाठ स्थानीय है, जिस पर सभ्यता खड़ी होती है। वेद में कहा है "चरित्रं ते शुन्धामि" मैं तेरे चरित्र को शुद्ध करता हूँ। चरित्र का अर्थ ही यह है कि 'चरन्त जायते इति चरित्रम्' जिस आचरण से मनुष्य की रक्षा हो। चरित्र हीन को जनता कभी भी नेता नहीं बना सकती। यहाँ चरित्र को बड़े व्यापक अर्थों में लेना चाहिये। भारत में जिन के नाम अमर हैं उनके जीवन चरित्रों पर दृष्टि डाल जाइये, वह चरित्र के बल से ही नेता थे।

बलिदान की भावना—जब जनता घबड़ाई हुई, मुंह उठाए इधर उधर भाग रही हो, किंकर्तव्य विमूढ़ हो, उस समय परिस्थिति का मुकाबला साहस

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कानपुर में आर्य नेताओं का स्वागत

वैदिक नारों से स्टेशन गूंज उठा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अधिकारियों का एक डेपुटेशन हीरक जयन्ती के लिये धन-संग्रहार्थ कलकत्ते गया है। इस डेपुटेशन में सभा के माननीय प्रधान श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा कविरत्न, उपप्रधान, श्रीमती शकुन्तला जी गोयल उपप्रधान श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री नरदेव जी स्नातक एम० पी० और आर्यमित्र सम्पादक श्रीयुत उमेशचन्द्र जी स्नातक एम० ए० हैं। इन आर्य नेताओं की तूफान ट्रेन २५ सितम्बर को रात को ८ बजे कानपुर जकशन पर पहुँची। कानपुर के आर्य-भाइयों को अपने प्यारे नेताओं के स्टेशन से गुजरने का समाचार पहले ही मिल चुका था। अतः आर्यसमाज मेस्टन रोड, सीसामऊ, गोविन्दनगर, रेल बाजार, बाबूपुरवा के आर्य भाई और बहिनें गाड़ी आने से पूर्व ही फूल मालाओं सहित स्टेशन पर उपस्थित थे। ज्यों ही गाड़ी प्लेटफार्म पर आई, वैदिक नारों से स्टेशन गूंज उठा। अपार उत्साह था। उपस्थित सज्जनों में श्री पं० विद्याधर जी शर्मा, श्री प० हरिदत्त जी शास्त्री नवतीर्थ, श्री डा० शिवदत्त जी प्रधान केन्द्रीय सभा, श्री बा० बंशीलाल जी, श्री प० विश्वम्भर नाथ जी तिवारी, श्री विजयपाल जी शास्त्री, श्री प० रवीन्द्रकुमार जी पाण्डेय, श्री प० शिवनाथ जी तिवारी, श्री प० पुरुषोत्तम लालजी, श्री ब्रजमोहनकुमार जी शास्त्री, श्री प० श्रीकृष्णजी अवस्थी, श्री प० रामनिरंजन जी पाण्डेय, श्री प० हरिदत्त जी गौतम, श्री प्रतापसिंह जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। देवियों में श्रीमती विद्यादेवी, श्रीमती सरस्वती देवी जी श्रीमती ब्रजदुलारी जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सबसे पूर्व गाड़ी से श्री प्रधान सभा मुस्कराते हुए निकले। आपको फूल-मालाओं से लाद दिया गया। इसके बाद श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री, श्रीमती शकुन्तला जी गोयल, श्री नरदेव जी स्नातक और श्री उमेशचन्द्र जी निकले। सब नेताओं के गले मालाओं से भर दिये गये। इस भारी भीड़, में कानपुर की आर्य देवियां पीछे पड़ गईं, अतः श्रीमती शकुन्तला जी भीड़ को चीरती हुई, अपनी बहिनों से जाकर मिलीं, और उन्हें जयन्ती का सन्देश सुनाया। सब नेताओं ने दो दो तीन तीन मिनट में आर्य बन्धुओं को स्वागत के लिए धन्यवाद दिया, और जयन्ती में आने का निमन्त्रण दिया। कानपुर के आर्य भाइयों ने अपने नेताओं से प्रार्थना की कि वे एक दिन का समय कानपुर के लिए अवश्य दें, और कहा कि कानपुर जयन्ती फंड में किसी के पीछे नहीं रहेगा। आर्य भाइयों ने अपने नेताओं को एक ओ३म् का झंडा भी भेंट किया। इतने में गाड़ी छूटी, और आर्य भाई वैदिक धर्म की जय बोलते रहे।

दयानन्द दीक्षा शताब्दी

(श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी)

मथुरा में अक्तूबर के अन्तिम सप्ताह में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं सार्वदेशिक सभा क आयोजनो के अनुसार दयानन्द दीक्षा शताब्दी, गुरु विरजानन्द धाम स्मारक शिलान्यास आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं आर्यसमाज के प्रतिष्ठित दो विद्वानो श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा श्री गगाप्रसाद रिटायर्ड चीफ जज के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। इन सभी आयोजनो के लिये इस समय उत्तर प्रदेश की सभी आर्यसमाजों को अपना सहयोग प्रदान करना है। इस सम्बन्ध में यह बात उल्लेखनीय है कि सभा के अधिकाश पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य इस समय धन सग्रह कार्य में सलग्न हैं। बहुत-सी आर्यसमाजों ने आर्थिक रूप में सहायता प्रदान की है और अनेक समाजें धन सग्रह के कार्य में व्यस्त हे।

धन संग्रह

धन सग्रह के सम्बन्ध में यह बात स्पष्ट है कि ऐसे महत्त्व पूर्ण कायो की सफलता के लिये काफी धन की आवश्यकता है। आयोजनो की तिथिया अत्यन्त निकट आ गई हैं। उपरोक्त सभी कार्यो के लिए सभा को व्यय करना होगा। व्यय की पूर्ति के लिये ही सभा के प्रधान श्री प० हरिशकर शर्मा, श्रीमती शकुन्तला गोयल उपप्रधाना, श्री प्रकाशवीर संसद सदस्य, श्री नरदेव स्नातक संसद सदस्य एव श्री उमेशचन्द्र स्नातक मन्त्री दीक्षा समारोह गत सप्ताह कलकत्ता गये हैं। ये महानुभाव अन्य स्थानों में भी धन संग्रह के लिए जाने का विचार रखते हैं। अब समय इतना निकट आ गया है कि धनसग्रह करने वाले महानुभावो को शीघ्रातिशीघ्र सग्रहीत धन सभा को भेज देना चाहिए जिससे यह अनुमान किया जा सके कि आर्थिक स्थिति क्या है।

अभिनन्दन ग्रन्थ

दो विद्वानो के अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्बन्ध में मुझे यह निवेदन करना है कि इसके प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। आर्य जगत् के अनेकों विद्वानो ने अपने विवेचना पूर्ण लेख भेज दिये हैं, और देश के अनेक गण्यमान्य नेताओं और विद्वानो ने अपने संदेश भी भेजे हैं।

कुछ विद्वानों के लेख अभी और प्राप्त किये जा रहे हैं, जिससे ग्रन्थ का महत्त्व बढ़ जाय। सम्पादक मण्डल इस बात का यत्न कर रहा है कि ग्रन्थ में सैद्धान्तिक एवं सामयिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाली सामग्री को ही विशेष स्थान दिया जाय। ग्रन्थ में कुछ महत्त्वपूर्ण चित्र भी रहेंगे। आर्यसमाजो के लिये यह ग्रन्थ एक महत्त्वपूर्ण संग्रह होगा।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती

जहा तक आर्यमित्र की हीरक जयन्ती का प्रश्न है, आर्यमित्र ने गत साठ वर्षों में आर्य जनता को अनेक विचार दिये हैं। आर्यसमाजो की प्रत्येक गतिविधि को प्रकाश में लाने का जो महत्त्वपूर्ण कार्य आर्यमित्र ने किया है, वह स्मरणीय हे। आर्यमित्र ने मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश की आर्यसमाजो मे चेतना लाने का जो सतत प्रयत्न किया है, वह भी उल्लेखनीय है। आर्यमित्र देखा जाय तो किसी समय इसने पत्रकारिता में एक उच्च स्थान भी प्राप्त किया था। इन सब बातो को सामने रखकर हमें आर्यमित्र की हीरक जयन्ती को विशेष उत्साह के साथ मनाना है। पत्रकार जगत् म सम्मान हो।

दयानन्द दीक्षा शताब्दी

अब मैं मुख्यरूप से दयानद दीक्षाशताब्दी की चर्चा कर रहा हूँ। मथुरा में स्वामी दयानन्द महाराज ने गुरु विरजानन्द से ज्ञान प्राप्त किया। स्वामी जी वर्षों उत्तराखड के वन पर्वतों में सच्चे गुरु की खोज में भटकते रहे। उन्होने अनेक कष्ट और यातनायें सहीं परन्तु अन्त में मथुरा में गुरु विरजानद का कुटी में पहुचकर वेदिक ज्ञान प्राप्त किया। इसके उपरान्त महर्षि दयानन्द ने गुरु को आज्ञा से समस्त भारत मे वैदिक धर्म का प्रचार किया।

मथुरा क समारोहो मे दयानन्द दीक्षा शताब्दि का इस प्रकार एक विशेष महत्त्व हो जाता है। स्वामी दयानन्द क महत्त्वपूर्ण कार्यों का प्रान

सिंहावलोकन

जयन्ती के कार्यक्रम में दो बातें मुख्य रूप से सम्मिलित है। प्रथम तो, आर्यमित्र का एक सुन्दर विशेषांक प्रकाशित करना जिसमे विद्वानो के लेख हो। पत्रकारिता के महत्त्व और आर्यमित्र के महत्त्वपूर्ण कार्यों की भी उस अक मे चर्चा का जाय। हमारा कार्य एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन करना है। जिसमे जहा आर्यमित्र के कार्यों का विवेचन किया जाय, वहा यह भी सोचा जाय कि आर्यमित्र को अधिक से अधिक लोकप्रिय केसे बनाया जाय, साथ ही इस बात पर भी विचार हो कि पत्रकार आर्यसमाज के महत्त्वपूर्ण कार्यों को किस प्रकार प्रकाश में ला सकते हैं।

आर्यमित्र के सम्बन्ध में कुछ विद्वानो ने उसकी ग्राहक सख्या बढ़ाने की ओर भी ध्यान आकर्षित किया है। मेरा भी अपना विचार यही है कि आर्य समाजो को आर्यमित्र की ग्राहक सख्या बढ़ाने में विशेष रुचि लेनी चाहिये और इस पत्र को ऐसा बना देना चाहिए कि जिसमें किसी प्रकार का घाटा न हो और जिसक सम्पादन का

हमें स्मरण करना है और साथ ही यह भी विचारना है कि भविष्य मे आर्यसमाज किस प्रकार से अपने कार्यक्रमों को प्रगति दे। मेरे विचार से स्वामी दयानन्द दीक्षा शताब्दी का मुख्य प्रयोजन भी यही ह कि हम जहा महर्षि के कार्यो का स्मरण करें, वहाँ यह भी सोचे कि हमें किस प्रकार आर्यसमाज के कार्य को सगठित करना है। अब यह भी देखना है कि आर्यसमाज जनता मे किस प्रकार से लोक प्रियता प्राप्त कर सकता ह।

गुरुधाम स्मारक शिलान्यास

अन्तिम बात गुरुधाम स्मारक शिलान्यास की हे। मेरे कुछ मित्रो ने मुझसे कई बार कहा था कि इस प्रकार का शिलान्यास मूर्तिपूजा के शिवालय जैसा स्थान ग्रहण न कर ले। मैं उनके इस विचार का समाधान करता हुआ यह बताना चाहता हूँ कि गुरु विरजानन्द के स्मारक के लिये जो भूमि सरकार की सहायता से प्राप्त की गई है, उसमें यह शर्त है कि नीचे सार्वजनिक वाचनालय बनाया जाय और ऊपरी भाग में वैदिक



पुस्तकालय रहे। इन दोनों कार्यों में कहीं भी शिवालय का विचार नही आता। इन दोनों महत्त्वपूर्ण कार्यों से जनता का लाभ होगा और गुरु विरजानन्द के नाम का भी स्मरण होता रहेगा। किन्तु महापुरुषों की स्मृति में ऐसे उपयोगी कार्य सम्पन्न करना किसी दशा मे भी व्यक्ति विशेष की पूजा नहीं कही जा सकती। आर्यसमाज के एक ऐतिहासिक महापुरुष की स्मृति म वाचनालय तथा पुस्तकालय का निर्माण करना, मेरे विचार से एक अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य है।

अन्त में मै आशा करता हूँ कि आर्य सभाओं के अन्तर्गत कार्य करने वाले सभी कार्यकर्त्ता इन आयोजनो की सफलता मे सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे।

फतेहपुर में स्वागत

ता० २५ सितम्बर को १० बजे रात वाच तूफान मेल से शिष्ट मण्डल जिसमे श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा, श्री प्रकाशवीर जो शास्त्री, श्री उमेशचन्द्र जी व श्रीमती शकुन्तला देवी जी गायल थी, फतेहपुर पधारा। स्टेशन पर नगर के समस्त आर्य जनो ने जिनकी सख्या लगभग ५० क थी, फूलमाला, दूध, आदि से स्वागत किया। ५१) आर्यसमाज फतेहपुर व २१) आर्यसमाज खागा का ओर से भेंट किये गये। स्वागत मे पधारने वाल जनो मे प्रमुख थे श्री उमाशङ्कर जी हृदयराम जी श्री केशवशरण जी श्री नानिकप्रसाद जी व समाज के समस्त अधिकारी व सभासद।

—वैद्य रामनाथ मन्त्री

श्री स्वामी इष्टानन्द जी का पता

श्री स्वामी इष्टानन्द जी अब गुरुकुल अयोध्या (फैजाबाद) में रहने लगे हैं। आपसे पत्र व्यवहार उपर्युक्त पते से ही करना चाहिये।

—२८ सितम्बर हयातपुर मे श्री राजेन्द्र वर्मा की पुत्री का नामकरण सस्कार श्री प० सूर्यप्रकाश जी आर्य ने करवाया। पुत्री का नाम सरला कुमारी रक्खा गया।

विज्ञान वार्ता

भूगर्भ और सागर के अन्तराल की खोज

—श्री वाल्टर सुलीवान—

अन्तर्राष्ट्रीय भू भौतिक वर्ष का एक अन्य उन शक्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना था, जो दिसम्बर १९५७ में मंगोलिया में आये भूचाल जसी विनाशकारी घटनाओं को जन्म देती हैं।

भू भौतिक वर्ष के दौरान ५५ राष्ट्रों द्वारा ३३४ भूचाल-अनुसन्धान केन्द्र संचालित किये गये थे। इनके अतिरिक्त १३७ ऐसे केन्द्र भी थे, जहा सूक्ष्म भूकम्पों को अंकित किया गया था। ये अत्यन्त साधारण किस्म के भूकम्प तूफानों द्वारा उत्पन्न होते हैं। भूकम्प अनुसन्धान केन्द्रों ने इन भूकम्पों की सहायता से दूर समुद्र में आने वाले तूफानों क स्थान का ठीक-ठीक पता लगाया।

भूचाल सम्बन्धी अध्ययनों के अन्तर्गत जिन प्रमुख समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न किया गया, उनमें से एक कोलोराडो और अफ्रीकी पठारों के सम्बन्ध में थी। ऐसा प्रतीत होता था कि इन पठारों पर सम स्थिरता (आइसोस्टेसी) का सिद्धान्त लागू नहीं होता। इस सिद्धान्त के अनुसार, पृथ्वी क धरातल पर बडी-बडी भू शिलाएं नीचे क प्लास्टिक क पदार्थों पर तैरती रहती हैं। जिस प्रकार कोई हिमखण्ड जितना ही अधिक बडा होता है, उतनी ही अधिक गहराई तक वह समुद्र क नीचे डूबा होता है, उसी प्रकार कोई भूशिला जितनी ही अधिक ऊँची होगी, उसका मूलाधार पृथ्वी की पपडी के अन्दर उतनी ही कम दूरी तक प्रविष्ट होगा।

कृत्रिम और प्राकृतिक भूकम्पों के अध्ययन से पता चला कि यह बात पृथ्वी की पपडी के महासागरीय और अधिकाश महाद्वीपीय भाग पर लागू होती ह। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के अधिक सही निरीक्षणों से भी इस बात की पुष्टि हुई।

अस्तु, महासागरों क नीचे पृथ्वी की पपडी केवल ३ मील मोटी ह, जब कि महाद्वीपों क नीचे यह सामान्यत लगभग २० मील मोटी ह। ऊँचे ऊँचे पठारों क नीचे तो यह और भी अधिक मोटी लगभग ३० मील होगी।

ऊटा विश्वविद्यालय में साल्ट लेक सिटी के निकट बड बडे झंझावातों से उत्पन्न भू प्रकम्पनों का अध्ययन करने से पहले के इस सन्देह की पुष्टि होती प्रतीत हुई कि वहाँ पर पृथ्वी की पपडी समुद्रतटीय मैदान के नीचे वाली पपडी से अधिक मोटी नहीं, हालाकि गुरुत्वाकर्षण सम्बन्धी आकडों से यह निर्दिष्ट था कि वह पपडी कहीं अधिक मोटी है।

भू-भौतिक वर्ष के दौरान अनुसन्धानकर्ताओं की अनेक टोलियों ने इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया। वाशिंगटन क कार्नेगी इन्स्टिट्यूट ने इस अवसर का लाभ उठाया कि पेरू और चिली की बडी बडी खुली खन्दकों वाली ताबे की खानों में लगभग रोज ही ४० से ८० टन तक के डाइनामाइटों का विस्फोट होता है। इसके कारण प्रकम्पन-लहरियों का अध्ययन उस अवस्था में करना सम्भव हो गया, जब वे समुद्र की सतह से १४,००० फुट ऊँचे ऐण्डियन पठार को पार करतीं और पुन टकरा कर वापस लौटती थीं।

इस बीच समुद्री खाइयों की जाच पडताल तथा महासागरीय अनुसधान सम्बन्धी कार्यों का सिलसिला जारी रहा।

पश्चिमी प्रशान्त महासागर की उमडती हुई लहरों के लगभग ७ मील नीचे, मेरियाना द्वीप समूह के पूर्व में, पृथ्वी के धरातल का सबसे अन्धकारमय, काला और प्राणिमात्र के निवास की दृष्टि से सबसे निकृष्ट स्थान स्थित है। भू-भौतिक वर्ष के दौरान महासागरों के तलों में निमित्त जिन २३ खाइयों की विस्तृत जाच पडताल की गयी, उनमें से यह भी एक थी। इस खोज के फलस्वरूप पता चला कि यह सबसे गहरी खाई थी। इसक लम्बे और सकरे पेंदे मे किसी प्राणधारी जीवजन्तु का अस्तित्व नहीं मिला।

किन्तु अन्य सभी समुद्री खाइयों मे अतीव दबाव और निरन्तर अन्धकार क बावजूद जीव जन्तुओं का अस्तित्व मिला। आश्चर्य की बात यह थी कि विकासवादी सिद्धान्त की दृष्टि से भी वहां पाये प्राणधारी 'आधुनिक' श्रेणी के मिले।

कहा जाता है कि हमें अपनी ओर पडने वाले चन्द्रमा की सतह के विषय में जितनी जानकारी है उससे कहीं कम जानकारी पृथ्वी के धरातल की है। इस का कारण मुख्यत यह है कि पृथ्वी के धरातल का दो तिहाई भाग पानी क नीचे छिपा हुआ है। इस कमी को पूरा करने के लिए और समुद्र के नीचे दबे धरातल के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिये भू-भौतिक वर्ष में एक विशाल अभियान प्रारम्भ हुआ, जिसमें २१ राष्ट्रों के ८० जहाजों ने भाग लिया।

इसमें से कुछ जहाजों ने कई मील गहरे समुद्र जल में लंगर डालकर जल धाराओं की नाप करने और समुद्र के पेंदे में छिपी स्थिति का पता लगाने का प्रयत्न किया। एक ब्रिटिश-अमेरिकी अनुसन्धानकर्ता दल ने उत्तरी ध्रुव से लेकर सीधे दक्षिणी ध्रुव तक अतलान्तक महासागर के प्रत्येक गहरे भाग का सर्वेक्षण किया और उसके तले तक के तापमान, खारेपन और ऑक्सीजन-तत्वों के आकडे एकत्र किये।

किन्तु इस दिशा में सबसे व्यापक प्रयास अमेरिका और रूस द्वारा किये गये। सोवियत दल की दिलचस्पी विशेष रूप से सागर तल की खाइयों में थी और सचमुच पृथ्वी के महासागरों में सबसे गहरे स्थान की खोज का श्रेय उन्हीं को ह।

उन्होंने महासागरीय अनुसन्धान के लिए जिस जहाजी बेडे का उपयोग किया उसमें ३० जलयान शामिल थ जिनमें से १२ महासागरों की यात्रा में प्रयुक्त होने वाले बडे जहाज थे। उनका अगुवाहक पोत 'वित्याज' था जिसका वजन ६ हजार टन था। उसमें ७० अनुसन्धानकर्ताओं की टोली थी। इसने भू भौतिक वर्ष की अपनी पहली सागर यात्रा के दौरान ही समुद्र क सबसे गहरे स्थान का पता लगा लिया था।

यह सच है कि सागर तल की इस सबसे गहरी खाई के अस्तित्व की जानकारी पहले थी। इसे मानचित्रों मे 'नारो सागर' या 'मेरियाना खाई' के नाम से अंकित किया जाता था। १९५७ के अगस्त मे सोवियत जहाज ने इस खाई के तले की खोज करने के लिए उसमें जाल फेंकने का प्रयत्न किया। उसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि वहा कौन से जीव जन्तु निवास करते हैं। जाच से पता चला कि इसकी अधिकतम गहराई ३६०२६ फुट थी। आश्चर्य की बात यह थी कि खाई का पेंदा समतल था और कहीं कहीं एक मील से कम चौडा था।

विपरीत दिशाओं से उठने वाले झंझावातों के कारण जलयान को एक जगह खडा कर पाना कठिन था। नतीजा यह हुआ कि गहराई नापने के लिए पहली बार जो जाल डाला गया, वह पेंदे में गिरने के बजाय खाई के किनारे पर पडा। उसमें फसकर जो कुछ ऊपर आ सका, वह सीमेंट जैसी मिट्टी की एक पट्टी थी, जिसमें किसी भी जीव धारी का अस्तित्व नहीं था। दूसरी बार के प्रयत्न में भी कुछ फल न निकला, क्योंकि जाल खाई के पेंदे तक नहीं पहुँच सका था।

तीसरी बार फिर जाल डाला गया। इस बार वह ६८ मील की गहराई तक गया। इस जाल को पेंदे तक पहुँचाने और ऊपर खींच कर लाने में १२ घटे से अधिक समय लगा। जब यह समुद्र की सतह के ऊपर खींचकर ला दिया गया, तो रूसियों ने देखा कि जाल क थैले में बहुत कुछ पडा हुआ है। किन्तु दुर्भाग्यवश, उसी समय एक लहर आ जाने से थैले की सारी कीचड बह गयी। जो कुछ बच गया था, उसमें चिकना मिट्टी के बधे हुए पिंड थे।

अत इस बार भी यह निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता था कि इस खाई क तले में किसी प्रकार के क प्राणधारी का अस्तित्व नही। कर्माडेक सागरतल में सोवियत अनुसन्धान कर्त्ताओं को १५ किस्म क प्राणधारी पदार्थ मिले, जिनमें से कितने ही सर्वथा नवीन थे। पश्चिम प्रशान्त की इसी प्रकार की अनेक खाइयों का सर्वेक्षण करने के बाद, उनकी यह धारणा हो गयी कि प्राय सभी समुद्री खाइयों में जीव-जन्तुओं का अस्तित्व ह, हालाकि उनमें जीवधारियों की सख्या बहुत ही कम है।

उदाहरण क लिए महासागरीय अनुसन्धान करने वाले लव अलेक्जेण्ड्रोविच जेन्केविच नामक सोवियत प्राणिशास्त्री ने यह अनुमान लगाया कि जहा तटों क निकट महासागरीय तल के प्रत्येक वर्ग गज क्षेत्र में पाये जाने वाले जलचरों की मात्रा कई पौंड ह, वहीं कुल महासागरीय तल क ८० प्रतिशत क्षेत्र में उनकी मात्रा एक औंस के १० हजारवें अंश से भी कम है।

अमेरिका और रूस, दोनों देशों के महासागरीय अनुसन्धान कर्त्ताओं ने यह देखा कि समुद्री खाइयों में जीवन का अस्तित्व विकास की अर्वाचीन अवस्थाओं तक ही सीमित है। इस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए एक तर्क यह दिया गया है कि समुद्री खाइया बहुत पुरानी नहीं हैं। उनका उद्भव अभी थोडे ही समय की बात है। वे उन दरारयुक्त सन्धि-रेखाओं पर बन गयी हैं, जहा पृथ्वी की पपडी का महासागरों के नीचे पडने वाला भाग परिवर्तनशील महाद्वीपीय भू-खंडों से मिलता है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

ब्रह्मकुमारियों से प्रश्न

(१) आप कहते हैं कि सृष्टि को उत्पन्न हुए ५ हजार वर्ष हुए हैं, जब कि कोई शास्त्र और किसी प्रकार का इतिहास इस बात का समर्थन नहीं करता सूर्य सिद्धान्त, जो कि ज्योतिष का सब से पुराना एवं सर्वसम्मत ग्रन्थ है, जिसे भारत तथा यूरोप के सभी बड़े-बड़े विद्वान् प्रामाणिक स्वीकार करते हैं, के अनुसार इस सृष्टि को उत्पन्न हुए १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ६२ वर्ष हो चुके हैं। इस बाकायदा गणना को निरर्थक नहीं कहा जा सकता कहने का सामर्थ्य आज तक किसी को नहीं हुआ। प्रसिद्ध इतिहास के अनुसार रामायण कालीन समय लगभग ८ लाख वर्ष सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं। महाभारत काल को ५ हजार वर्ष हो चुके। ऐसी अवस्था म ब्रह्मकुमारियों का यह कहना कि सृष्टि को ५ हजार वर्ष हुए कोरी कल्पना है। जैसे न्याय दर्शन के अनुसार 'लक्षण प्रमाणाभ्या' वस्तुसिद्धि न तु प्रतिज्ञामात्रेण। अत किसी गणित शास्त्र का कोई प्रमाण हो तो उपस्थित, करो कोरी प्रतिज्ञा करने मात्र से किसी वस्तु की सिद्धि नहीं होती। अतः ५ हजार वर्ष वाली बात कोरी गप्प है।

हमारी उपर्युक्त सृष्टि सवत् की काल गणना को आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है।

(२) सृष्टि का उत्पन्न करने वाला परमात्मा है, यह आप भी स्वीकार करते हैं। कृपया बताने का कष्ट करें कि सृष्टि उत्पन्न होने से पूर्व अपनी कारणावस्था में किस प्रकार की स्थिति में थी? कृपया यह भी बताइये कि सृष्टि क उत्पन्न होने का क्रम क्या है।

(३) यदि ईश्वर सर्व व्यापक नही तो सृष्टि उत्पत्ति किस प्रकार हुई? बनाने वाला बनने वाली वस्तु क साथ रहा करता है या अलग होकर बनाता है? सृष्टि किससे बनाता है? कैसे बनाता है? पच महाद् भूतों के सूक्ष्म तत्व परमाणु रूप में आकाश की तरह व्यापक रहते हैं, अथवा एक देशी? यदि आकाशवत् परमाणु सर्वत्र फैले रहते हैं तो एक देशी परमात्मा जो कि व्यापक नहीं है, उन फैले हुए तत्वों को किस प्रकार गति दे सकता है उन तत्वों की आकाश में किस प्रकार स्थिति होती है? जड़ होने के कारण उनमें स्वयं बनने की सामर्थ्य तो होती नहीं, सर्व व्यापक न होने से परमात्मा किस प्रकार उनकी रचना करने में समर्थ हो सकता है।

(४) आकाश नाश रहित ह या नाशवान्? आकाश की परिभाषा कहिए आप आकाश किसे कहते है? एक देशी है या व्यापक?

(५) जीवात्मा और परमात्मा में क्या भेद है? दोनो का लक्षण बताकर स्पष्ट कीजिये।

(६) क्या कोई एकदेशी पदार्थ सर्वज्ञ हो सकता है? यदि नहीं, तो किसी शरीरधारी एक देशी अल्पज्ञ जीवात्मा को ईश्वर मानना क्या जनता को धोखा देना नहीं?

(७) आपके मन्तव्यानुसार यदि दादा लेखराज स्वयं ईश्वर हैं तो दर्शन के इस सूत्र क अनुसार—

क्लेश कर्म विपाक आशयैरपरामृष्टः पुरुष विशेष ईश्वर। अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश पच क्लेशा॥

क्या इन पाँचों क्लेशों से शरीरधारी होने के कारण वे मुक्त हैं? जबकि संसार में अब तक किसी शरीरधारी का ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिला।

(८) हमारी सूचना अनुसार दादा लेखराज ब्रह्मकुमारियों को अपनी गोदी मे लिटाते हैं। क्या मनु के कहे हुए मैथुनो के अन्तर्गत आने से यह मर्यादा का अतिक्रमण नहीं है?

—रामगोपाल शालवाले
मोतीबाजार दिल्ली

(पृष्ठ ७ का शेष)

धैर्य से आगे आकर करें। यही एक गुण नेता बनाने के लिये पर्याप्त है, और यदि यह नहीं है तो कुछ नहीं है।

—क्षमा का अर्थ सहन शक्ति है (क्षमूष-सहने) जो अपमान को सहन नहीं करता, जो हानि लाभ, जय पराजय मान अपमान, सर्दी गर्मी आदि जितने भी द्वन्द्व हैं उन्हें सहन नहीं कर सकता वह सफल नेता नहीं बन सकता नेता फूलों के हार पहिरते हैं, जूतों के हार भी उन्हीं के गले में पड़ सकते हैं। नेता को दोनो स्थितियो में सम रहना चाहिये। विरोधी के अपराधो को भी क्षमा करके प्रेम व्यवहार से उसे अपना बनावें।

क्षमा शक्ति करे यस्य दुर्जनस्तस्य किं करिष्यति'।

जिसके हाथ में क्षमा की शक्ति है उसका दुर्जन क्या बिगाड़ सकते हैं।

कोषाध्यक्ष—कलियुग ने धर्मराज से पूछा कि मैं कहाँ रहूँ? धर्मराज ने कहा कि लक्ष्मी में निवास करो। यह सर्वथा सत्य है। अत नेतृत्व की इच्छा वाले को जनता के रुपयों को अपने पास कभी नहीं रखना चाहिए। जिसका नाम बदनाम हुआ वह नेता नहीं बन सकता।

विज्ञापन—नेतृत्व की कामना वाले को अपने कुछ सहायक ऐसे चाहिये कि जो उसका विज्ञापन करते रहें। आप देखेंगे कि प्राचीन राजाओं के यहा भाट कवि दरबार में रहते थे। वर्तमान में जितने भी नेता हैं उनके अपने समाचार पत्र हैं जो इनके विचारो का प्रचार करते हैं, और उनके व्यक्तित्व को बढाते रहते हैं। बिना ऐसे प्रशसको के कीर्ति लाभ नहीं मिलता, बिना कीर्ति के नेतृत्व स्थायी नहीं रहता।

राजनीति—नेता को राजनीति व व्यवहार नीति में कुशल होना चाहिए मनोविज्ञान का पंडित होना चाहिये (१) साम (२) दाम (३) दंड (४) भेद यह चार प्रकार की नीतियां सर्व विदित हैं। इनके साथ साथ (१) सधि (२) विग्रह (३) यान (४) आसन (५) द्वैधीभाव (६) संयम यह छै नीतियां और हैं। इनको व्यवहार मे प्रयोग कर सकने वाला कैसे भी कठिन समय में दुस्तर सकट सागर से बड़ी आसानी से पार उतर जावेगा। इन नीतियो का जानने वाला यदि अन्य गुण रहित भी है तो कार्य को पूरा करेगा। चाणक्य मुनि ने कहा कि—

'एका केवलमर्थसाधन,
विधौ बुद्धिरस्तु मागान्मम।'

मेरी सारी सेना मुझसे विमुख हो जावे, लक्ष्मी चली जावे परन्तु केवल मेरी एक बुद्धि मुझसे दूर न हो मैं शत्रु को जड़ मूल से नष्ट कर दूंगा और उस ने ऐसा ही किया भी।

इस छोटे से लेख का तात्पर्य केवल इतना ही है कि जिससे नेता या महत्वाकांक्षा की इच्छा वाले पुरुष अपनी इस इच्छा को आसानी से पूर्ण कर सकें और जनता की सही अर्थों मे सेवा कर सकें। ★

आवश्यकता

गुरुकुल रुद्रपुर तिलहर जिला शाहजहांपुर के लिए एक सुयोग्य अनुभवी आर्य विद्वान की आवश्यकता है। जो प्रथमा मध्यमा श्रेणियों को व्याकरण सस्कृत सुचारु रूप से तथा अन्य परीक्षा सम्बन्धी विषय सामान्य रूप से पढ़ा सकें। गुरुकुल के स्नातकों को प्राथमिकता दी जायगी। आवेदन पत्र योग्यता व अनुभव के साथ न्यूनाति न्यून वेतन जो ग्राह्य हो शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें। —मन्त्री

मथुरा में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष्य में कथा

मथुरा की जनता में धार्मिक भावनाओं को प्रबुद्ध करने और महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी का सन्देश सुनाने की भावना से १९से२२सितम्बर तक आर्यसमाज तिलक द्वार मथुरा मे श्री रुद्रमित्र जी शास्त्री विद्याभास्कर महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश की कथा होती रही, श्री भद्रपाल जी उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने भी सगीत द्वारा प्रचार में सहयोग दिया। २३ सितम्बर को श्री शास्त्री जी का भारत की वर्तमान परिस्थिति पर भाषण भी हुआ। जनता काफी सख्या में भाग लेती रही, अच्छा प्रभाव पड़ा और शताब्दी की चर्चा फैल रही है।

(पृष्ठ १० का शेष)

अनुमान है कि पुरानी समुद्री खाइयां तले की कीचड़ से पट गयी हैं। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के लेमोंट भूगर्भ प्रयोगशाला के जहाज 'वेमा' ने सागर तल की विस्फोटक प्रतिध्वनियों का अध्ययन करके इस प्रकार की पटी हुई एक खाई का पता दक्षिण अतलान्तक में लगाया था। यह खाई "माउथ सैण्डविच" खाई का ही एक अश थी, जोकि ५॥ मील गहरी थी।

अमेरिका ने भूगर्भ एवं सागर-तल के अनुसन्धान के लिए जो कार्यक्रम तैयार किया, उसे वहाँ की महासागरीय सर्वेक्षण करने वाली अनेक संस्थाओं ने कार्यान्वित किया। वुडस होल, मैसाचुसेट्स, की सस्था ने ब्रिटेन के 'नेशनल इस्टिट्यूट ऑव् ओशनोग्रैफी' के सहयोग से अटलान्तक के आरपार दस सर्वेक्षण यात्राओं का आयोजन किया था।

इस सिलसिले में न डूबने वाले पीपे के ऐसे लगरों का प्रयोग किया गया जो कि एक खास गहराई तक जा कर रुके रहें। उनकी सहायता से 'गल्फ स्ट्रीम' नामक समुद्री धारा के नीचे विपरीत दिशा में प्रवाहित धारा के अस्तित्व की पुष्टि की जा सकी। इन पीपे के लगरो को विपरीत दिशाओं में डाल दिया गया था। उन्हे जहाज से समुद्र में फेंका गया, और फिर शब्द-सकेतो द्वारा बहाव के समय उनका पीछा किया गया।

प्रशान्त महासागर की समुद्री धाराओं की गतिविधियों का अध्ययन करते समय कई मील की गहराई में लगर डालने के सिलसिले में एक अन्य विधि का प्रयोग किया गया। इसका प्रयोग लाजोला, कैलिफोर्निया, में 'स्क्रिप्स इन्स्टिट्यूशन ऑव ओशनोग्रैफी' ने पेसिफिक ओशन फिशरीज इन्वेस्टिगेशन (प्रशान्त महासागरीय मत्स्य अनुसधान सस्थान) की ओर से प्रदान किये गये एक जलपोत की सहायता से किया।

इन अनुसधानों के फलस्वरूप महासागरों के तल के विषय मे विस्तृत जानकारी प्राप्त की गयी। यह पता लगाया गया कि अल्यूशियन द्वीप से हवाई के दक्षिणी भाग तक फैली हुई एक पर्वत-शृखला प्रशात महासागर को उसी प्रकार दो भागों में विभाजित करती है। जिस प्रकार मध्य अतलातक पर्वत-शृखला अतलातक को विभाजित करती है।

सोवियत अनुसंधान-कर्ताओं के दल ने दक्षिणी ध्रुवसागर के मिर्नी और अडेलाई लैंड और दक्षिण अफ्रीका के बीच सागर तट के निकट होती हुई एक ४,९०० फुट गहरी समुद्री खाई के अस्तित्व का पता लगाया, जो कि ज्वालामुखी पर्वतों और अन्य पहाडी भूखण्डों के कारण कहीं-कहीं विभाजित हो गयी है। ★

दयानन्द दीक्षा शताब्दी के शिष्टमण्डल का उत्तर-प्रदेश, बिहार और बंगाल में भव्य स्वागत

स्थान स्थान पर पुष्प मालायें, थैलियाँ भेंट अतिथि स्वागत सत्कार द्वारा आर्यत्व का प्रेम प्रदर्शन

२९ सितम्बर को शताब्दी शिष्टमण्डल देहली से रवाना हुआ श्री माताप्रसाद जी, श्री ईश्वरीप्रसाद जी और गुरुकुल वृन्दावन के ब्रह्मचारियों ने मथुरा जंक्शन पर पहुँच कर मण्डल के सदस्य सर्वश्री प० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० श्री नरदेव स्नातक एम०पी० श्रीमती माता शकुन्तला गोयल का भव्य स्वागत किया।

आगरा में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान और दीक्षा शताब्दी समारोह के प्रणेता श्री प० हरिशङ्कर शर्मा और उमेशचन्द्र स्नातक सम्मिलित हुए।

श्री प्रि० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री उपप्रधान सभा श्री फूलनसिंह जी पूर्व मन्त्री सभा श्री मोहनलाल जी आर्य प्रधान नगर आर्यसमाज आगरा श्री कर्यासिंह जी उपमन्त्री सभा तथा अन्य आर्य बन्धुओं ने शुभ कामनाओं के साथ शिष्टमण्डल को विदाई दी।

टूण्डला में श्री धर्मवीर जी फीरोजाबाद में श्री कुसुमाकर जी श्री चिरंजीलाल जी श्री प्रणव जी आदि ने स्वागत सत्कार किया और थैलिया भेंट की।

शिकोहाबाद में श्री प० दयाराम जी व अन्य सहयोगियो ने स्वागत सत्कार किया संग्रहीत धनराशि भेंट की और १०००) १०००) के दो शेयर्स अधिकार पत्र सभा के नाम श्री ठा० फूलनसिंह जी व श्री डा० महादेवप्रसाद जी की ओर से भेंट किये।

इटावा में श्री मुख्तार साहब भरथना बिधूना ओरय्या के आर्य बन्धुओं सहित उपस्थित थे आर्य बन्धुओं ने शिष्टमण्डल का आदर सत्कार किया वातावरण वैदिक धर्म की जय के नारों से गूंज उठा।

कानपुर में नेताओं का भव्य स्वागत

कानपुर स्टेशन पर गाड़ी के पहुचते ही आर्यवीरो के गगनभेदी नारों से प्लैटफार्म गूंज उठा श्री भाई बलभद्रदेव जी श्री प० विद्याधर जी श्री डा० शिवदत्त जी श्री प० हरदत्त जी शास्त्री आदि ने नेताओं को मालायें पहनायी और भोजन सत्कार किया। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री व श्री प० हरिशंकर शर्मा जी ने आर्य बन्धुओं का सम्बोधित करते हुए शताब्दी का सन्देश और निमन्त्रण दिया।

फतहपुर में श्री बाबू उमाशंकर जी पूर्व मन्त्री सभा अपने साथियो सहित स्वागत के लिये उपस्थित थे। उनके स्नेहपूर्ण स्वागत से विदा लेकर जसे ही शिष्ट मण्डल इलाहाबाद पहुंचा श्री तिलकलाल जी आदि स्वागतार्थ रात्रि के १२॥ बजे स्टेशन पर उपस्थित मिले और शताब्दी के प्रति इलाहाबाद के प्रेम का परिचय दिया।

विहार शताब्दी समारोह का स्वागत करता है

प्रात गाड़ी जैसे ही आरा पहुची आर्यवीर दल के सैनिको ने शिष्ट मण्डल का स्वागत किया दानापुर में स्वागत के साथ-साथ श्री गौरी बाबू (जिन्होंने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे) के दर्शन हुए। पटना में श्री वासुदेव जी मन्त्री बिहार सभा श्री रामानन्द जी आदि ने स्वागत किया और श्री स्वामी अभेदानन्द जी ने शिष्टमण्डल को आशीर्वाद दिया मुकामा में भी आर्यजन स्वागतार्थ पहुँचे।

बंगाल के आर्य बन्धुओं का स्मरणीय प्रेम प्रदर्शन

आसनसोल में आर्यबन्धु भोजन लेकर शिष्टमण्डल के स्वागत के लिए उपस्थित थे उनका प्रेम प्रशंसनीय था।

हावड़ा में आर्य नेताओं का स्वागत

श्री मेहरचन्द जी धीमान् श्री सेठ किशनलाल जी पोद्दार, श्री बटुकृष्ण अर्णव आदि ने आर्य जन समूह के साथ नेताओं का हावड़ा में भव्य स्वागत किया और शिष्ट मण्डल को ठहरने के स्थान पर पहुचाया।

इस स्नेह और आदर के लिये शिष्टमण्डल आर्य बन्धुओं का आभारी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

भापड़ौदा (डाक से) रोहतक जिले के भापड़ौदा ग्राम में पंजाब प्रान्त की आर्यसमाजों के ६०० प्रतिनिधियों ने अपूर्व उत्साह आशा और संगठन के वातावरण में अपना वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न किया।

प्रान्त के प्रत्येक भाग से पधारे प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों ने एक स्वर से घोषणा किया कि हम प्रान्त के प्रत्येक क्षेत्र में पवित्र वैदिक ज्योति प्रसारित करने का प्रण लेते हैं।

पंजाब में हिन्दी के गौरव की रक्षा के लिए सर्वसम्मति से घोषित करते हुए प्रतिनिधियों ने घोषित किया कि यह प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का आदेश मिलने पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार रहेगी।

सभा ने सर्व सम्मति से आगामी वर्ष के लिए मन्त्रणा अन्तरङ्ग सभा निर्वाचित घोषित किया। साथ ही सभा ने श्री वैद्य सत्यव्रत जी को सभा व आर्यसमाज के हित व गौरव को हानि पहुंचाने की चेष्टाएं करने के कारण आर्यसमाज की प्रारम्भिक सदस्यता से ३ वर्ष के लिए पृथक् कर दिया।

सभा के इतिहास में यह प्रथम अवसर था जबकि उसका अधिवेशन एक ग्राम में किया गया। कार्यक्रम श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त द्वारा प्रचलित निर्देशक महात्मा आनन्द भिक्षु जी के निरीक्षण में सद्भावना प्रेम और एकता के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

रामनाथ भल्ला

उप मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक निर्वाचन

१—प्रधान—श्री आचार्य रामदेव जी जालन्धर
२—उपप्रधान—आचार्य भगवान देव जी गु० क० झज्जर
३—श्री प० मनोहर जी विद्यालङ्कार दिल्ली
४—श्री प० समरसिंह जी वेदालङ्कार सील (रोहतक)
५—मन्त्री—जगदेवसिंह सिद्धान्ती दिल्ली
६—उपमन्त्री—श्री रामनाथ जी भल्ला दिल्ली
७—श्री डा० हरिप्रकाश जी आयुर्वेदालङ्कार अम्बाला छावनी
८—कोषाध्यक्ष—श्री दिलीपसिंह जी पानीपत
९—श्री आचार्य महामुनि जी शास्त्री गु० क० भैंसवाल

अन्तरङ्ग सदस्य

१०—श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति दिल्ली
११—श्री प० ठाकुरदत्त जी अमृतधारा दिल्ली
१२—श्री कैप्टन केशवचन्द्र जी अमृतसर
१३—श्री डा० हंसराज जी गुप्त नई दिल्ली
१४—श्री प्रो० शेरसिंह जी एम० एल० ए० रोहतक
१५—श्री प्रो० रामसिंह जी प्रधान हिन्दू महा सभा दिल्ली
१६—श्री नारायणदास जी कपूर नई दिल्ली
१७—श्री प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित पानीपत
१८—श्री प्रि० नन्दलाल जी नवाशहर
१९—श्री प्रि० दलीपचन्द जी लुधियाना
२०—श्री प० भीमसेन जी विद्यालंकार अम्बाला छावनी
२१—श्री प० रघुवीरसिंह जी शास्त्री दिल्ली
२२—श्री डा० दशरथ जी चौधरी दिल्ली
२३—श्री सेठ कुलदीप चन्द जी पठान कोट
२४—श्री डा० निहालचन्द जी चौधरी रामामण्डी
२५—श्री मास्टर पोहकरमल जी देहली
२६—श्री आचार्य सुरेन्द्र जी कवाली (रोहतक)
२७—श्री प० भरतसिंह जी शास्त्री (जाहरू)
२८—श्री ठाकुर हरफूलसिंह जी बराही (रोहतक)
२९—श्री प्रतापसिंह जी शास्त्री (जीन्द)
३०—श्री ज्ञानचन्द जी भापड़ौदा
३१—श्री महाशय भरतसिंह जी रोहतक
३२—श्री प० बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड दिल्ली
३३—श्री चौ० शेरसिंह जी मलिक (रोहतक)
३४—श्री चौ० जयलाल जी रोहद (रोहतक)
३५—श्री देवदत्त जी आर्य करोलबाग दिल्ली

मध्यभारत क्षेत्र में श्री पं० भोजदत्त जी (आगरा) का दयानन्द दीक्षा शताब्दी सम्बन्धी प्रचार

आगरा निवासी श्री प० भोजदत्त जी सम्प्रति दयानन्द दीक्षा-शताब्दी समारोह समिति की ओर से मध्यभारत और समीपस्थ क्षेत्रों मे प्रचार यात्रा कर रहे हैं। श्री डा० महावीरसिंह जी, श्री बाबूलाल जी, श्री सत्यभूषण जी त्यागी, श्री देवदत्त मौदूगल्य आदि सभी आर्य बन्धु उनके इस कार्य में सहयोग दे रहे हैं। उस क्षेत्र में जहा भी श्री प० जी पहुँचे उनसे प्रचार में सहयोग लिया जाय और दयानन्द दीक्षा शताब्दी व विरजानन्द स्मारक के लिए यथोचित आर्थिक सहायता प्रदान की जाय।

उमेशचन्द्र स्नातक
मन्त्री, दयानन्द दीक्षा शताब्दी समिति

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी छोटा नागपुर में ईसाई प्रचार-निरोध के कार्य को संगठित कर सुव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने के निमित्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पहुँच गये हैं। उन्होंने रांची, हजारीबाग, गढ़वा आदि के क्षेत्रों का निरीक्षण किया। सर्वत्र ईसाई पादरी हिन्दुओ को ईसाई बनाने के कार्य में संलग्न हैं। आर्य-समाज हजारीबाग यथा-शक्ति निरोध का कार्य कर रहा है। सार्वदेशिक सभा की ओर से वहा एक उपकार्यालय खोला जा रहा है। जिससे कार्य व्यवस्थित रूप से हो सके। यह कार्यालय क्षेत्रीय ईसाई प्रचार निरोध समिति के कार्यालय का भी कार्य करेगा जिसका निर्माण किया जा रहा है।

आर्यसमाज के प्रचार से ईसाई पादरियों में निराशा व्याप्त हो गई है। अत. वे ओछे हथियारों पर उतर आए हैं। उनके रोष और अवैधानिक कार्यवाहियों का लक्ष्य आर्य प्रचारक तथा वह ईसाई होते हैं जो अपने हिन्दू धर्म में पुन धड़ाधड़ वापस आ रहे हैं। विदित हुआ है कि इन कार्यवाहियो के फलस्वरूप उत्पाती पादरियो के विरुद्ध अनेक अभियोग चल रहे हैं और लगभग ३ पादरी जेलो में बन्द हैं।

रघुवीरसिंह शास्त्री मन्त्री
अराष्ट्रीय ईसाइ प्रचार निरोध समिति
दयानन्द भवन, नई दिल्ली १

आर्यसमाज कायमगंज

(१) श्री चिम्मन लाल पितौरा निवासी के पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ, भोज किया गया १) आर्यसमाज को दान मे प्राप्त हुआ।

(२) श्री रामसेवक आर्य की पुत्री का नामकरण संस्कार श्री पं० रामेश्वर दयाल जी की अध्यक्षता में वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ।

(३) श्री गिर्जाशङ्कर आर्य के पुत्र का नामकरण संस्कार श्री पण्डे रामेश्वर दयाल जी की अध्यक्षता में वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ तथा श्री महेशचन्द्र जी भजनोपदेशक के प्रभाव शाली भजन हुए, १) समाज को दान में प्राप्त हुआ।

(४) ता० २३-९-५९ को मुहल्ला मऊदरवाजा कायमगज में श्री महेशचंद्र जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य भजनोपदेशक के बड़े प्रभाव शाली भजन हुए, प्रभाव अच्छा पड़ा।

—रामचन्द्र आर्य सिद्धात रत्न
कोषाध्यक्ष

भूल सुधार

४ अक्टूबर ५९ के आर्यमित्र में पृष्ठ ४ पर जो दानियो की सूची छपी है उसमें निम्न धन राशि आर्यसमाज चौक प्रयाग के द्वारा प्राप्त हुई है।

२०१) श्री ताराचन्द विद्यासागर
२५१) श्री कालीप्रसाद
३०१) श्री दुर्गाप्रसाद छुन्नू लाल
२५१) आर्यसमाज चौक
१११) आर्य कन्या इन्टर कालेज, चौक

११६५) राजबहादुर प्रचार मंत्री

गोंडा में वेद प्रचार सप्ताह

श्री प० विद्यानन्द जी शास्त्रार्थ महारथी काशी का आर्यसमाज गोंडा की ओर से ५ दिन स्टेशन पर और ५ दिन आर्यसमाज मन्दिर में वेद की कथा हुई। उपस्थिति बहुत अच्छी थी।

—मानक प्रसाद एम० ए०

(पृष्ठ २ का शेष)

श्री फिर बोले अरे ! अष्टकार में बड़े-बड़े अनमोल रत्न भी पड़े हैं। महर्षि पाणिनि मुनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों की रचना करके ऋषियों की कीर्ति को भी उज्ज्वल किया है मैं उसका क्या बखान कर सकता हूँ। वह तो बड़ी अद्भुत ग्रन्थ है, जो वेद विद्या, संस्कृत विद्या और आर्यों की संस्कृति का मूलाधार है, और वैदिक खजाने की चाबी भी है।

श्री विरजानन्द की एक अभिलाषा पूरी हो जाने पर अब एक और नई समस्या सामने उपस्थित हुई है, और वह यह कि इस मूलाधार की शिक्षा को प्राप्त करके भारत के इस बिगड़े हुये मार्गों का सुधार कौन करेगा। मेरे वर्तमान शिष्यों में तो इतना योग्य और शक्तिशाली एक भी विद्यार्थी दिखाई नहीं देता, श्री कृष्ण के उपदेशों को अमृतपान रूप में पान कर अर्जुन ने जिस प्रकार गीता के ज्ञान को सार्थक कर दिखाया था, वैसी ही किसी ज्योति की विरजानन्द जी को भी आवश्यक अनुभव होने लगी, युद्ध भूमि में यदि अर्जुन अपने गाण्डिव को रख हतोत्साहित रूप में कृष्ण के समक्ष उपस्थित न होता तो गीता के ज्ञानामृत की वर्षा क्यों की जाती, श्रीकृष्ण जी की महानता के लिए अर्जुन की मोह ममता भरे विचार ही तो गीता का विस्तार करने का एकमात्र कारण सिद्ध हुये। या यूं भी कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण जी को अपने हृदय के उद्गारों को प्रकट करने के विचारों ने ही अर्जुन में मोह-ममता का आविष्कार कर दिया।

ठीक इसी प्रकार से ही श्री मूलजी को ब्रह्मचारी शुद्धचेतन और शुद्ध चेतन ब्रह्मचारी को स्वामी दयानन्द सरस्वती बनने का समय आया—तनिक सी बात ने ही दयानन्द बना दिया मूलशंकर को वह सच्चे कैलाशपति शिवशंकर की ही की खोज और मृत्यु पर विजय पाने के लिए घर को त्यागकर चल दिया था, सहस्रों यातनायें सहन करके भी प्रसन्न रहने पर दयानन्द ने मथुरा पहुंच कर दण्डी विरजानन्दजी की अट्टालिका के द्वार को खटखटाया, अन्दर से प्रश्न हुआ, कौन है ?

दयानन्द—दयानन्द ने उत्तर दिया, यही जानने का अभिलाषी कि मैं कौन हूँ ?

विरजानन्द—यह वाक्य सुनकर विरजानन्द सोचने लगे, अरे मैं जिसे वीर जैसे शिष्य की प्रतीक्षा में था, ठीक वैसा ही लगता है यह तो—देखूं, देखूं, जल्दी से द्वार के खोलते, क्या मेरी आशा सत्य हो रही है, द्वार खोल कर, तुम कौन हो बेटा, बोलो, बोलो, बेटा !

दयानन्द—(विरजानन्दजी के नेत्रों की ओर देख) चरणों को छूकर, गुरु शिष्य मैं हूँ दयानन्द।

विरजानन्द—क्या चाहते दयानन्द, बोलो वत्स, बोलो, तुम यहाँ कहा से और कैसे आये हो, तुम्हारी क्या इच्छा है, दयानन्द !

दयानन्द—गुरु महाराज "मैं आपसे विद्या ग्रहण करने के लिए आया हूँ—गुरुवर !

विरजानन्द—दयानन्द ! तुमने कुछ पढ़ा है, व्याकरण के किसी ग्रन्थ को तुमने देखा है, क्या ?

दयानन्द—गुरुवर ! मैंने सारस्वत, मनोरमा आदि ग्रंथ पढ़े हैं।

विरजानन्द—तो सुनो, दयानन्द ! आज तक की पढ़ी हुई सब विद्या को भुलाकर और तुम्हारे पास जो व्याकरण की ऐसी पुस्तकें हो उन्हें यमुना में बहाना होगा होगा। तब यहा पर पढ़ना पढ़ाना होगा। यदि तुम्हें यह स्वीकार हो तो पुस्तकें बहाकर आओ और पाठ में लगो।

दयानन्द ने गुरु आज्ञा को गीता के ज्ञान की भांति ही श्रवण किया, उस आज्ञा को पालन करके गुरु से सत्य ज्ञान को ढाई वर्ष तक पान किया फिर भारत की भूमि में ज्ञान और तर्क के गाण्डीव को लेकर उतर पड़े, गुरुधाम में जो ज्ञान दयानन्द ने प्राप्त किया था उससे समस्त भारत में पाप और पाखण्ड के जाल को तोड़ गिराया जैसे श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता के उपदेशामृत से विभूषित किया था और कौरव के पापों का उसके द्वारा विध्वंस हुआ था ठीक वैसे ही श्री विरजानन्द जी ने श्री दयानन्द जी को वेद विद्या से विभूषित कर सत्यज्ञान रूपी व्याकरण अष्टाध्यायी निरुक्त, निघण्टु का गाण्डीव प्रदान कर पाप और पाखण्ड को समाप्त कराया, और भगवान के दिये वेद ज्ञान का प्रचार कराया, अन्धकार मिटाया।

"मथुरा तीन लोक से न्यारी है इसी बात को ऊपर की दोनों घटनाएं सिद्ध करती हैं, मथुरा की वह दोनों ही महान् विभूतियां हैं दोनों का ही लक्ष्य था पाप का विनाश, दोनों की स्मृति मथुरा में रहे यह आर्य सन्तान के लिए बड़े ही गौरव और गर्व की बात है, भगवान आर्यों को पापों के विध्वंस करने की प्रेरणा-शक्ति और सद्बुद्धि प्रदान करते रहें।

योगीराज श्री कृष्ण की स्मृति में तो मथुरा में मन्दिरों की एक झड़ी सी लग रही है, और अब उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दिया है। उसे वह पालन करने के लिए अग्रसर हो रही हैं। इस लिए सभा आर्यों के धन्यवाद की पात्र है। अब श्री विरजानन्द जी का भी वहां पर स्मरण स्थापित हो जायेगा। इस लिए सब बोलो, पापों के विनाशक— योगीराज श्री कृष्ण भगवान की जय ! जगतगुरु श्री दण्डी विरजानन्द स्वामी की जय !

हैदराबाद के आर्यों के पारस्परिक विवाद का संतोषजनक समाधान हो गया

आर्य जगत् में यह समाचार बड़ी प्रसन्नता के साथ सुना जायगा कि हैदराबाद (दक्षिण) में आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यसमाज सुलतान बाजार के मध्य जो वैधानिक विवाद अरसे से चल रहा था और जिसके कारण आर्यसमाज के कार्य और प्रतिष्ठा को क्षति पहुँच रही थी उसका सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हस्तक्षेप से सन्तोषजनक समाधान हो गया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्रीयुत ला० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट तथा मन्त्री श्री रघुवीर सिंह जी शास्त्री लगभग दो सप्ताह इस कार्य के लिए हैदराबाद में रहे। जो अभियोग अदालतों में चल रहे थे वे इनकी प्रेरणा पर वापस ले लिये गये और दोनों पक्षों ने निर्णय का अधिकार लिखित रूप में सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को दे दिया था।

हैदराबाद में जहाँ आर्यसमाज एक महान् शक्ति रहा है और है वहां पारस्परिक मनमुटाव और कार्य की प्रगति का रुक जाना व मन्द पड़ जाना बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण था। अब वहां स्थिति ठीक हो गई है। सब आर्य बन्धु मिलकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने में संलग्न हो गये हैं।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक
कार्यालयाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

उत्सव—

आर्यसमाज दर्शनपुरवा कानपुर का वार्षिकोत्सव १ नवम्बर से ८ नवम्बर ६९ तक मनाया जावेगा। १ नवम्बर से ४ नवम्बर तक आर्यसमाज मन्दिर दर्शनपुरवा में कथा होगी तथा ५ से ८ नवम्बर तक स्थानीय हनुमान पार्क कौशलपुरी में भाषण तथा भजनोपदेश होंगे। इस अवसर पर पूज्यनीय स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती प्रज्ञाचक्षु प० वाचस्पति जी शास्त्री (आगरा) आर्य भजनोपदेशक प० नन्दलाल जी गाजीपुर तथा प० देवीप्रसाद जी आदि पधार रहे हैं। —ओंकारनाथ मन्त्री

आर्यसमाज सीसामऊ तथा केन्द्रीय आर्यसभा कानपुर वार्षिकोत्सव १६ से २२ नवम्बर तक अपूर्व समारोह से कमला नेहरू पार्क, जवाहर नगर में मनाया जायगा। उत्सव से पूर्व १२ से १८ नवम्बर ६९ तक कथा का विशेष आयोजन आर्यसमाज मन्दिर सीसामऊ कानपुर में किया गया है। १९ नवम्बर को आर्य नर नारियों का वृहत् नगर कीर्तन मध्याह्न २ बजे से आर्यसमाज सीसामऊ से प्रारम्भ होगा।

इस अवसर पर आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी, नेता व भजनोपदेशक पधारेंगे। इसका विशेष आयोजन किया जा रहा है। धर्म प्रेमी सज्जन तिथियों को अंकित करलें तथा उपदेशों से अवश्य लाभ उठावें।

—लक्ष्मण कुमार शास्त्री
संयोजक

आदर्श संस्कार

बैरगनिया (मुजफ्फरपुर) १५ सितम्बर ग्राम बुलाकीपुर टोले बुधुआपुर थाना सीतामढ़ी के निवासी श्री रामेश्वर प्रताप नारायण सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवी के स्वर्ग वास होने पर पौराणिक ढंग से श्राद्ध न करके [illegible] आर्यसमाज मन्दिर में एक वृहद् हवन यज्ञ का समारोह किया गया। इस यज्ञ में श्री रामेश्वर प्रताप नारायण सिंह ने [illegible] नारायणसिंह जी ने यजमान का आसन ग्रहण किया।

गुरुकुल बैरगनिया (आर्यसमाज) मन्दिर के अधिष्ठाता [illegible] श्री प० रामावतार शर्मा विद्यावाचस्पति ने पुरोहित का काम किया। सर्व प्रथम वेद मन्त्रों द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् स्वस्तिवाचन एवं शान्ति प्रकरण के मन्त्रों द्वारा मृतात्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गयी। सुगन्धित सकल्य से सबको आहुतियाँ दी गयी। शान्तिपाठ एवं आरती के बाद श्री प० रामावतार शर्मा विद्यावाचस्पति का समयानुकूल सुन्दर प्रवचन हुआ जिसमें आपने प्रचलित पौराणिक श्राद्ध का अनेक उदाहरण देकर निराकरण किया। सबसे अन्त में श्री स्वामी मनीषानन्द सरस्वती का पारिवारिक धर्म विषयक एक सुन्दर उपदेश हुआ। इस अवसर पर यजमान ने डाइन छपरा (मेनगंज) में आर्य समाज मन्दिर बनवाने के लिये [illegible] जमीन दान देने की घोषणा की एवं गुरुकुल बैरगनिया में एक कमरा बनवाने का वचन दिया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के भोजन के लिये एवं उनको मिठाई [illegible] द्वारा कुछ रकम दान देने के बाद यज्ञ का कार्यवाही समाप्त हो गयी।

—[illegible]

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

आश्विन,११ शक १८८१ आश्विन शु०१०
(ता० ११ अक्तूबर १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ४९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

बेरोजगारी कम करने का प्रयास

—श्री विजयानन्द वर्मा—

द्वितीय पंचवर्षीय आयोजन का एक प्रमुख ध्येय रोजगार की सम्भावनाओं में वृद्धि करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उत्तरप्रदेश में अनेक कार्यक्रम चलाये गये और इस समय भी चलाये जा रहे हैं। उदाहरण के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया गया, कुछ बड़े उद्योगों की भी स्थापना की गई, सड़कों और पुलों के निर्माण में तेजी लायी गई तथा इच्छुक लोगों को विभिन्न प्रकार के धन्धों में प्रशिक्षित किया गया। कुटीर एवं लघु उद्योगों के विकास और विस्तार के लिए सन् १९५९ के प्रारम्भ में ४९ योजनाएं चालू थीं। वर्ष समाप्त होने तक ६ नई परियोजनाएं और प्रारम्भ कर दी जायंगी। इन नई योजनाओं में वाराणसी में जरी उद्योग का विकास और नगीने में आबनूस की लकड़ी के उद्योग का विकास करने, हस्तशिल्प सहकारी समितियों को ऋण तथा देहरादून के कलाकेन्द्र को वित्तीय सहायता देने, अमौसी, सारनाथ, मंसूरी में हैन्डीक्राफ्ट शो रूम खोलने, और गुड़-चित्रकन योजना का प्रसार करने की योजनाएं शामिल हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से इस वर्ष लगभग १०५०० व्यक्तियो को विभिन्न लघु और कुटीर उद्योगों का ज्ञान कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रशिक्षित हो जाने क बाद ये लोग स्वावलम्बी बन सकेंगे और इस प्रकार बेरोजगारी या आंशिक बेरोजगारी कम हो सकेगी।

शिक्षा प्रसार कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर भी उत्तरप्रदेश सरकार ने बेरोजगारी कम करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। प्रथम पंचवर्षीय आयोजन के अन्तर्गत शिक्षा प्रसार के उद्देश्य से एक विशेष कार्यक्रम चलाया गया था जिसके अनुसार गांवों में २२००० प्राथमिक पाठशालाएं खोली जाती किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण १२,२७६ पाठशालाओं की स्थापना के बाद इस दिशा में कार्य बन्द कर देना पड़ा। आंशिक रूप से कार्यान्वित होने के अनन्तर से भी इस कार्यक्रम के फलस्वरूप लगभग ९३००० शिक्षकों को बेरोजगारी की विभीषिका से मुक्ति मिली।

शिक्षकों की बेरोजगारी के सवाल का हल ढूंढ निकालने के लिए सचेष्ट उत्तर-प्रदेश सरकार ने आगामी जुलाई से एक और योजना कार्यान्वित करने का निश्चय किया है। इस योजना पर ६१ लाख ८ हजार रु० खर्च आने का अनुमान है और इसका प्रमुख उद्देश्य द्वितीय आयोजन की अवधि के अन्त तक दो शिक्षकों वाले ३३२८ नये स्कूलों की स्थापना कर देना है। अनुमान है कि इसके फलस्वरूप लगभग ६७०० व्यक्तियों को रोजगार मिल जायगा। वर्तमान कार्यक्रम के अनुसार आगामी शिक्षा सत्र में लगभग १४२८ प्राइमरी स्कूल खोल दिये जायेंगे।

वस्तुत यह योजना केन्द्रीय सरकार की उस विशाल योजना का अंग है जिसक अन्तर्गत द्वितीय आयोजनावधि की समाप्ति तक सम्पूर्ण देश में ६०,००० से अधिक शिक्षित व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है। विभिन्न राज्यो में इस योजना के अनुसार कितने शिक्षक नियुक्त किये जायेंगे। इसका निश्चय उन राज्यों में ६ वर्ष से ११ वर्ष तक की अवस्था के स्कूल न आने वाले बालकों की संख्या को देखकर किया गया है। इस निश्चय के अनुसार उत्तर प्रदेश सन् १९५९-६० और १९६०-६१ में क्रमश २८५० और ३८०० शिक्षक नियुक्त किये जायेंगे। इन शिक्षकों के अतिरिक्त इस अवधि में १३३ सब-डिप्टी इन्सपेक्टर आफ्स स्कूल भी नियुक्त किये जायेंगे।

इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण निश्चय यह किया गया है कि सभी स्कूल प्रदेश के ग्रामों में ही खोले जाँय। यह निश्चय सभी दृष्टियों से उपयुक्त प्रतीत होता है। स्कूलों में टेबल कुर्सी तथा अन्य प्रकार की साज-सज्जा की व्यवस्था के लिए प्रादेशिक सरकार आर्थिक सहायता भी प्रदान करेगी। अब तक ४०० स्कूलों में इस तरह के प्रबन्ध के लिए अन्तरम जिला परिषदों को दो लाख रुपये दिये भी जा चुके हैं और आयोजन के शेष वर्षों में १४लाख ६२ हजार रुपयों की धनराशि और व्यय की जायगी। शिक्षिकों को प्रशिक्षित करने के लिये भी एक कार्यक्रम चलाया जायगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए १० रु० प्रतिमास प्रति प्रशि-प्रशिक्षार्थी के हिसाब से वित्तीय सहायता से स्वीकृत की जा चुकी है।

साराश यह कि नये स्कूल खोलने की इस योजना से दोहरे लाभ होगे, एक तरफ तो प्रदेश में शिक्षित बेरोजगारी कम करने में सहायता मिलेगी और इस प्रकार लोगों की क्रय-शक्ति बढ़ेगी और दूसरी तरफ शिक्षा प्रसार का उद्देश्य भी पूरा किया जा सकेगा क्योकि इन स्कूलो को ऐसे स्थानो पर खोलने का निश्चय किया गया है जिससे कि प्रत्येक गांव से एक मील की परिध में कम से कम एक स्कूल का प्रबन्ध किया जा सके।

★

सूचना उपदेश विभाग

(मास अक्तूबर के प्रोग्राम)

श्री भद्रपाल जी—१२ से १५ आर्य समाज कोसीकलां (मथुरा), २२ से २६ आर्यसमाज अतरौली।

श्री रामचन्द्र शर्मा—८ से १० रानीगंज (बर्दमान),१३ से १६ आ०स० जसपुर (नैनीताल), १७ से २० तक आर्यसमाज गंज मुरादाबाद।

श्री धर्मदत्त आनन्द—६ से १२ आर्यसमाज सिकन्दरपुर (बलिया), १३ से १६ तक आर्य समाज शाहाबाद (हरदोई), २२ से २५ तक आ० स० काशीपुर (नैनीताल)

श्री धर्मराजसिंह जी—२ से ७ तक करनाल, १६ से १८ आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ

श्री गजराजसिंह—६ से ११ तक आर्यसमाज शमशाबाद (आगरा)

श्री महेशचन्द्र जी—२ से १२ तक रामलीला कमेटी फैजाबाद द्वारा प्रचार

श्री प्रकाशवीर जी—१६ से १८ आर्यसमाज शाहजहापुर

श्री प्रतापसिंह जी—११ से १६ मेलाप्रचार दातागंज (बदायू)

श्री प० ओमप्रकाशजी—५ से १ आर्यसमाज अलीगढ़ १३ से १६ आ समाज जसपुर, १७ से १९ आर्यसमा शाहजहापुर।

श्री पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री—१२ से १ आर्यसमाज कोसीकलां, १७ से २१ त आर्यसमाज अमरोहा।

श्री सत्यमित्र जी—८ से १० विवाह संस्कार झासी, १४ से १६ आर्य समाज शाहाबाद

श्री सच्चिदानन्द जी—६ से १२ आर्यसमाज सिकन्दरपुर (बलिया)

—अधिष्ठाता, उपदेश विभाग

बाबूराम भारती द्वारा अग्रवालदीप आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८) । आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र । वार्षिक मूल्य विदेश में
एक प्रति का २० नए पैसे । लखनऊ रविवार आश्विन शक १८८१ कार्तिक कृ० वि० २०१६ १८ अक्टूबर १९५९ ई० । १६ शिलिंग

10.59

पवित्रता की खोज

संसार में फैले पापाचार से विरक्त हो एक व्यक्ति पवित्रता की खोज में किसी जंगल में पहुंचा। वहां एक पोखर के घाट पर उसने स्नान करना चाहा। जब वह जल में पहुंचा तो छोटी मछलियों को बड़ी मछलियां निगलती नजर पड़ीं। वह कांप उठा। ऐसी सृष्टि में जीवित रहकर क्या लाभ?

एक दिन वह चिता रचकर उसमें प्रवेश करने को आ रहा था कि एक अन्य व्यक्ति ने उसे रोका। सारी बात सुनकर उसने कहा— तुम्हारा यह गन्दा शरीर जब जलेगा तो कितनी दुर्गन्ध फैलेगी? पास पड़ोस वाले उसे कैसे सह सकेंगे? पवित्रता की खोज में निकला व्यक्ति सोचकर घर वापिस आ गया— इस संसार में न जीने की सुविधा है न मरने की।

—विनोबा

श्रम-बिन्दु

खेत में नये नन्हे नन्हे अंकुरों की पांति जमी थी। किसान का हृदय बांसों उछल रहा था। सन्ध्या हुई। चांदनी के रजत रथ में बैठ स्वर्ग के नन्दन भू विचरण को उतरे। आनन्द-तरंगित धरती को अपने अत्यन्त निकट पा स्वर्ग ने प्रश्न किया— देखो आनन्द की समस्त नदियाँ लेकर मैं मनुष्य के इस आवास में आया हूँ किन्तु मेरा कहीं कुछ स्वागत नहीं—किसी के अधर पर मुसकान तक नहीं और इस खेत में ये अंकुर क्या उग आये किसान फूला नहीं समा रहा है। धरती बोली बन्धु, ये अंकुर मात्र नहीं हैं, ये हैं मनुष्य प्रयत्न के श्रम बिन्दु जो दीर्घ प्रतीक्षा के बाद फले हैं। मनुष्य की सर्जन चेतना के स्वयं के नन्हें उगते हैं तो उस आनन्द के सामने स्वर्ग भी तुच्छ लगता है। और इन अंकुरों की प्रतिज्ञा भी सुनी आपने? कहते हैं। मुक्ता रूठ गये तो क्या हुआ मनुष्य के अन्तरानल को शान्त करने के लिए उसके श्रम बिन्दु तो उसके साथ हैं।

—रवीन्द्र

समय की पाबन्दी

रेगिस्तान का सफर है और पानी है आधी मशक। इसलिए बात का ख्याल तो रखना ही पड़ेगा कि पानी छलक-छलक कर बालुका राशि में विलीन न हो जाए। यही हाल है हमारे जीवन का। समय की पाबन्दी के पीछे समय बरबाद करना केवल उन्हें ही शोभा देता है जिनके पास उसका प्राचुर्य है। देवताओं के पास अनन्त समय है तो सूरज भी समय से उगता डूबता है और चांद भी। लेकिन मनुष्य के पास इतना समय है कहां कि उसकी पाबन्दी के पीछे वह परेशान होता फिरे।

अमरावती का यदि कोई हमसे पूछ बैठेगा कि संसार में आकर तुमने क्या क्या किया तो क्या हम यह जवाब देंगे कि मात्र घड़ी के कांटों पर नजर रखने के कारण उस ओर दृष्टि डालने का हमें अवसर ही नहीं मिला?

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सज्जन

एक शृगाल कुएं में गिर पड़ा। बहुत प्रयत्न किये बाहर नहीं निकल सका। थोड़ी देर बाद एक बकरी आयी। शृगाल ने कहा— बहन बड़ा शीतल जल है। आओ पिओ।

बकरी कुएं में उतर आयी। शृगाल उसकी पीठ पर चढ़कर बाहर निकल आया और बोला— अरे इतनी जल्दी किसी पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। बकरी ने उत्तर दिया— मूर्ख तू नहीं जानता। सज्जन अपना स्वभाव नहीं छोड़ते। विपत्ति झेलकर भी परोपकार करते हैं। फिर भगवान ने हमारी जाति के थनों में दूध भी भरा है। हां तू यहां रह जाता तो यहां मर जाता किन्तु मेरी यह दुर्गति न होगी। कोई आयेगा और मुझे निकाल ले जायेगा। हम स्वयं देते हैं। हम जहां जाते हैं आत्मीयता ही पाते हैं।

—इसवोध से

वर्ष ६१ । अवैतनिक सम्पादक— उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए. । अङ्क ४०

आर्यमित्र

जीवन का सौन्दर्य

[श्री लालचन्द्र जी मेरठ]

★

जीवन का सौंदर्य है सौजन्य में, स्वार्थ रहित सौहार्द में, निष्कपट प्रेम व्यवहार में, आपस के मनोरम विहार में, अभिमान रहित शुद्ध आचार-व्यवहार में और स्वस्थ मन के व्यापार में।

यह स्थिति कैसे प्राप्त हो, यह विचार करना है। प्राय मनुष्य में स्वयं दिव्य गुण धारण करने की उतनी चेष्टा नहीं होती जितनी कि उसमें पराये दोष दर्शन की वासना होती है। वह अपने दोष-दर्शन से तो घबराता है पर पराये दोष दर्शन में रुचि रखता है। यह स्वभाव उसे सामाजिक जीवन के योग्य नहीं रहने देता और चूंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और सहयोग के बिना उनका जीवन निर्वाह तक असंभव हो जाता है इसलिए वह निराश और उदास सा रहकर दुख अनुभव करता है, उसे सहयोग प्राप्त नहीं होता। निराश रहने से उसमें कार्यक्षमता नहीं रहती और उसमें उत्साह और साहस मन्द पड़ जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के दोष तो देखता है पर अपने आपको अन्तर्मुख होकर नहीं देखता।

जीवन का स्रोत, ज्ञान का स्रोत, प्रेम और आनन्द का स्रोत मनुष्य के अन्दर है। यह स्रोत सब में है पर इस की अनुभूति बहुत कम लोगों को है। सब मनुष्यों में आत्मा है जो अमरसत्ता है और आत्मा में परमात्मा है, आत्म ज्योति में परमात्मा की परम ज्योति है पर वृथा के जल्प और विवाद के कारण मनुष्य में मनन करने की शक्ति मन्द हो जाने से वह अपनी मनुष्यता ही खो बैठता है और अपने अन्दर विराजमान परमदेव को भूलकर घोर अनर्थ करता रहता अपने आपको चतुर समझा करता है। यह चातुर्य उसमें मतिमान और अहंकार को उत्पन्न करके उसके नैतिक पतन का कारण बनता है। इस अवस्था में उसका दिव्य जीवन में अरुचि होना स्वाभाविक है और उसकी स्थिति डांवाडोल होकर उसकी अवस्था जल में मीन प्यासी वाली हो जाती है और वह घबराया सा और उतावला-सा रहता हुआ कर्तव्यच्युत हो जाता है। कर्तव्यच्युत व्यक्ति कभी प्रसन्न नहीं रहता और अपनी उज्ज्वलता खो देता है, तेजहीन निष्प्रभ सा दिन काटता है। यह अवस्था दयनीय है। सौन्दर्य तो जाता ही रहता है। मनुष्य सत्वात्मा हो जाता है और शक्ति का ह्रास हो रहा है यह तो अनुभव करता है पर अपने आपको उभार नहीं सकता, उसमें विश्वास का स्थान सन्देह रहता है और वह गिरता चला जाता है। दोष दर्शन तो अपना ही करना चाहिये और वह भी इस प्रकार की आत्मग्लानि न हो, शक्ति का ह्रास न हो, अपने नेत्रों, हृदय और मन के जो छिद्र हैं, जो कमियें हैं उन्हें आत्मविश्वास जगाकर अपनी आत्मशक्ति की सहायता से और सज्जनों की सहायता से उन्हें दूर करने के भाव से ही देखना चाहिये। अपनी दुर्बलताओं को इसी प्रकार देखना चाहिये। यदि दुर्बलताओं को देखते हुए उन्हें दूर करने की अपने में शक्ति नहीं रही ऐसा माना जावे और उन्हें दूर करने का प्रयासहीन किया जाय तो मनुष्य का मन इतना दुर्बल हो जाता है कि वह अस्वस्थ मन अपनी दृढ़ता और कार्यक्षमता खो देता है और मनुष्य विक्षिप्त किंकर्तव्य विमूढ़ और अयोग्य हो जाता है। दुर्बलताएं सब में होती हैं, कमियें सब में होती हैं, पर वे दूर होनी चाहिये अपने प्रयत्न से, सज्जनों की सहायता से। सशक्त प्राण, स्वस्थ मन और व्रत के आचरण में रुचि बनी रहने के लिए ऋतम्भरा श्रद्धामयी बुद्धि

सिद्धान्त-विमर्श

की अपेक्षा है, जिसके बिना मनुष्य अनृत में ही सुख समझता हुआ वास्तव में दुखी ही रहता है। अनृत ही तो पाप की जड़ है जिसकी अहंकार, अभिमान आदि सन्तान हैं। अनृत से निकल कर सत्य को ग्रहण करना और सत्य को धारण करना सुगम नहीं। सदाचार बिना सत्य में रुचि ही नहीं होती। सदाचार है नैतिकतापूर्ण व्यवहार। जिस काम को करके मनुष्य पछताता है उसे पुन करने से मन अस्वस्थ हो जाता है, और दुर्बल मन किसी काम का नहीं वह प्रलोभन और पाप मे दब जाता है।

आत्म विश्वासी मनुष्य शक्तिशाली होता है। आत्म विश्वासी दृढ़ प्रतिज्ञ होता है, उसकी बुद्धि में श्रद्धा का बल होता है और वह प्रलोभनों पर विजय पाता है उसे भगवान की सहायता मिलती है। अवसाद में पड़े हुए दुखी रहना कायरता है। मनुष्य मननशील है उसमें मनोबल है। मन में दिव्यशक्ति है, उस शक्ति को वासना पूर्ति में लगाना घोर पाप है। अपने आपको धोखा दे रहा है वह व्यक्ति, जो समझता है कि अनृत में, अनैतिकता में, रहते हुए दंभ करते हुए, कपट करते हुए, वह स्थायी उन्नति कर रहा है। लोलुप मनुष्य सदा अशान्त रहता है वह उन्नत नहीं होता। उन्नति होती है, उन्नति करने की तीव्र इच्छा पूर्ति के लिये सम्यक पुरुषार्थ करते रहने से। आलस्य और प्रमाद में रहना और समझना कि हमें तो भगवान पर विश्वास है, भगवान सब कार्य सफल करेंगे, अपने आपको धोखा देना है। पुरुषार्थ रहित प्रार्थना, प्रयत्नरहित कामना, कभी पूरी नहीं हुई। सशक्त प्राण, स्वस्थमन और श्रद्धामयी बुद्धि से कर्तव्य में संलग्न रहने से ही कार्य संपन्न होता है और मनुष्य आनन्द अनुभव करता है। जीवन में उल्लास होता है, चाव रहता है। मनुष्य को प्रयत्नशील रहना ही चाहिये। निष्प्रभ रहना भी कोई जीवन है ?

मनुष्य आत्म ज्योति है, मनुष्य स्वयं-प्रकाश है, उसे अवसाद में अपने आपको गिराना नहीं चाहिये। जो मनुष्य मननशील है, प्रगतिशील है, विजयशील है उसके जीवन में सौंदर्य दीखना ही चाहिये। उसमें दिव्य गुणों के प्रति आकर्षण होता है, वह अवश्य दिव्य गुण धारण करता है और दिव्य हो जाता है। जिस संगति में रहते हुए मनुष्य में जीवन के विकास और सौंदर्य में रुचि नहीं होती वह कुसंगति है। उदार, ज्ञानी और प्रेमी जनों की संगति ही हितकर है उनका जीवन सुन्दर होता है, उनकी जीवनचर्या यज्ञमयी होती है, वे सावधान रहते हैं, जागरूक रहते हैं, उनमें विवेक जागता है। विवेकतम दिव्य गुण है जो हमारा अन्धकार विलीन करता है। विवेक एक दिव्य ज्योति है यह जगा रहे तो मनुष्य दोष, दर्शन आदि अनुचित व्यवहार से बच जाता है।

विवेकशील मनुष्य में सौजन्य होता है। श्रद्धा से स्वयं कार्य करता हुआ वह सभी कर्मठ सज्जनों का सहयोग प्राप्त करता है। उसका आत्मविश्वास अन्य विश्वासी जनों को अपनी ओर आकर्षित करता है और सब मिलकर



श्री लालचन्द

यज्ञमय भावना से कार्य करते हुए सफल होते हैं। आत्म विश्वासी ही भगवान में भी विश्वास करता है और उसका निरंतर साथ अनुभव करता है। श्रद्धा और लग्न, ये दो गुण सफलता के लिये अनिवार्य हैं। सफल मनुष्य प्रसन्न रहता है और प्रसन्नता में जीवन का सौंदर्य निहित है। जो व्यक्ति प्रसन्नता नहीं अनुभव कर रहा है उसकी जीवनचर्या में अवश्य दोष है, वह कलुष में निमग्न अपने आपको धोखा द रहा है, ऐसा व्यक्ति आनन्दमय भगवान का उपासक कैसे अपने आपको कह सकता है ? आनन्दमय शान्तिमय भगवान का उपासक अपने आपको कहे पर हो वह दुखी और अशान्त, कामी और क्रोधी, लोलुप और स्वार्थी, तो वह भगवान का उपासक नहीं। वह अपने आपको धोखा दे सकता है, प्रतिष्ठा भी पा सकता है, पर चूंकि उसके जीवन में सौन्दर्य नहीं, व्रत नहीं, सत्य नहीं, ऐसा व्यक्ति न तो स्वय उन्नत होता है और न उसका जनता पर कुछ प्रभाव ही होता है। जीवन के सौंदर्य में आकर्षण है, वह प्रभावशाली है। लोग ऊपर के शिष्टाचार में मग्न से रहते हैं, ऐसी नम्रता अपना काम निकालने के लिये वे दिखाया करते हैं, अपने गृहस्थ जीवन में, परिवार में, वे प्रायः कटुभाषी, क्रूर होते हैं और कठोर वर्ताव करते हुए देखे गए हैं।

पुष्प में सुगन्धि है वह उसका बखान नहीं करता जो व्यक्ति सूंघ सकता है, उसे सुगन्धित पा ही जाती है। कठोर सत्यवादी को सत्यवक्ता होने का अहंकार भी गिरा देता है। सत्य के साथ प्रेम, सत्य के साथ सबसे अगाध स्नेह भी होना चाहिए और वाणी में माधुर्य होना चाहिये। अभिमानी कटु सत्य भाषी प्रायः अन्य जनों का तिरस्कार करते हैं, उनका अभिमान उनके सत्य तक का प्रभाव नहीं होने देता। ऐसे लोग मानवता का मान नहीं करते, केवल अपनी योग्यता का प्रदर्शन

[शेष पृष्ठ १२ पर]

❀ वैदिक राष्ट्र-गीत ❀

विश्वस्वं मातरमोषधीनां ध्रुवां भूमिं पृथिवीं धर्मणा धृताम्।
शिवां स्योनामनुचरेम विश्वहा ॥ (अथर्व वेद)

(गीतिका छन्द)

सर्व औषधि आदि की जननी अटल निश्चल मही।
धर्म से धारित हुई वसुधा सुविस्तृत है वही॥
कल्याण कर सुखदा सदा हम मातृ भू सेवा करें।
उसके लिए जीवें तथा उसके लिए ही हम मरें॥१७॥

The all producing mother of herbs, the unmoved earth, maintained by Law (Dharma) the auspicious and pleasant, may we go about over it aways

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट्



लखनऊ—१८ अक्तूबर १९५९, दयानन्दाब्द १३५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०६०

हिन्दी-रक्षा आन्दोलन और अनुशासन

पंजाब में हिन्दी के अधिकारों की रक्षा और उसे उचित स्थान दिलाने के लिए जो आन्दोलन चला, चल रहा और चलेगा उसके साथ आर्यसमाज का अभिन्न सम्बन्ध सर्व विदित और सुस्पष्ट है। आन्दोलन का चलाना, स्थगन, समझौता वार्ता, वक्तव्य प्रकाशन और भावी नीति निर्धारण आदि सभी बातों का उत्तरदायित्व आन्दोलन संचालनार्थ सार्वदेशिक सभा की ओर से निर्मित सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति पर रहा है। २७ दिसम्बर ५७ में सत्याग्रह के स्थगन की घोषणा के पश्चात् से समिति की ओर से समस्या समाधान के लिए निरन्तर प्रयत्न जारी रहा है। सरकार ने भी सद्भावना या लोकाचार की दृष्टि से कुछ न कुछ कदम उठाने का अभिनय अवश्य किया है अभी सरकार के निर्णय सुस्पष्ट नहीं हो सके हैं और जबकि समस्या को राजनैतिक महत्व दे दिया गया है तब हमें भी उसे राजनैतिक फलितार्थों के साथ सम्बद्ध देखना और मानना होगा। इसीलिये भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने २३ अगस्त की बैठक में सद्भावना समिति के प्रतिवेदन की प्रतीक्षा करने और उसके प्रकाशन पर लोकमत जानकर निर्णय करने का प्रस्ताव स्वीकार किया था और जहाँ तक हमारी जानकारी है उसके बाद समिति की नीति में अभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

परन्तु सर्वोच्च समिति के निश्चय की अवहेलना करते हुए २० सितम्बर को अम्बाला में हिन्दी रक्षा समिति पंजाब और उसके पश्चात् २६ सितम्बर को पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह आन्दोलन २७ दिसम्बर ५९ से प्रारम्भ करने का प्रस्ताव स्वीकार किये जाने के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

हम नहीं समझते सत्याग्रह शास्त्र में दुराग्रह और हठ की हिंसक भावनायें क्या स्थान रखती है हमारी सम्मति में सत्याग्रह के साथ पवित्रता, स्नेह और आत्म त्याग द्वारा हृदय परिवर्तन की उच्चतम भावनायें संलग्न होती हैं और इस नैतिकता के आधार पर ही सत्याग्रही सफल होता है। हमने आत्म त्याग का एक निर्णय किया है कि हम अपनी शिक्षा संस्थाओं में गुरुमुखी के अध्यापन को प्रति बन्धित करेंगे, चाहे इस निश्चय की पूर्ति में संस्थाओं को आर्थिक हानि व सरकारी दमन का शिकार बनना पड़े हम उसे सहन करेंगे। पंजाब हिन्दी रक्षा समिति के इस निर्णय के क्रियान्वयन की उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है क्योंकि इससे हमारी आन्तरिक एकता और दृढ़ शक्ति का परिचय मिल सकेगा। नहीं कहा जा सकता कि इस दिशा में क्या कदम उठाये जा सके हैं, उठाये जा रहे हैं या उठाये जावेंगे। हाँ इस आन्तरिक तैयारी के विपरीत हमारे कुछ लोकैषणा पीड़ित नेतागण २७ दिसम्बर से सत्याग्रह की घोषणा का डिमडिमनाद बजाने में अधिक उत्साह दिखा रहे हैं। हम इस उत्साह की निन्दा नहीं कर सकते क्योंकि लक्ष्य सर्वसम्मत और आदर्श है पर संग्राम नीति के आधार पर हम यह कहने के लिये विवश हैं कि हमारे लिए वेद का आदेश 'संगच्छध्वं' है हम अपने साथियों सहयोगियों को संघटित और एकत्र कर आगे बढ़ेंगे तभी सफलता की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

सार्वदेशिक सभा भाषा स्वातन्त्र्य समिति के परामर्श पर २४ अगस्त ५८ में यह घोषित कर चुकी है कि इस बार सत्याग्रह आरम्भ होने से पूर्व आर्य महासम्मेलन बुलाकर सभी प्रान्तों के आर्य बन्धुओं की स्वीकृति प्राप्त की जायगी तभी सत्याग्रह आर्यसमाज की ओर से घोषित और संचालित किया जायगा।

इस निश्चय का समर्थन २३ मई ५९ की बैठक में भी समिति और सार्वदेशिक अन्तरंग ने किया था फिर समझ में नहीं आता कि पंजाब के तथाकथित नेता संघटन की आवाज के विपरीत इस प्रकार की घोषणायें करने का साहस कैसे कर रहे हैं और उससे भी अधिक आश्चर्य पंजाब सभा के वार्षिक अधिवेशन में इस मांग के समर्थन पर है। हम मानते हैं समस्या पंजाब की है, पंजाब के आर्य बन्धुओं के साहस और उत्साह की प्रशंसा की जानी चाहिए परन्तु नियम और अनुशासन की मर्यादाओं की उपेक्षा चिन्तनीय है। साथ ही हम सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अधिकारियों व सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों की उदासीनता को भी नहीं समझ पा रहे हैं जिन्होंने २७ दिसम्बर वाली घोषणाओं का कोई भी खण्डन अभी तक प्रकाशित नहीं किया है। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से इस सम्बन्ध में जानकारी के लिये पत्र जा रहे हैं परन्तु कोई भी सन्तोषजनक उत्तर देना कठिन हो रहा है। अतः हमारी यह मांग है कि सार्वदेशिक सभा स्पष्ट शब्दों में घोषणा करे कि २७ दिसम्बर वाले सत्याग्रह की चर्चा को वह किस रूप में देखती और मानती है। और यदि उसकी सम्मति में यह घोषणा उसकी नीति के विरुद्ध है तो अविलम्ब घोषणा की जानी चाहिये कि २७ दि० के सत्याग्रह की घोषणा के लिये आर्यसमाज पर कोई दायित्व न होगा। और यदि सभा इस तिथि पर सत्याग्रह करने के पक्ष में है तो उसे अभी से आर्य जनता को तय्यार रहने की सूचना दे देनी चाहिये।

सफल नेतृत्व वही है जो किसी की प्रसन्नता, अप्रसन्नता को ध्यान में न रखते हुए संस्था उद्देश्य और अनुशासन की दृष्टि से स्पष्टवादिता का आश्रय लें। हमें आशा है कि हमारी इस मांग पर आर्यसमाज के अनुशासन की रक्षार्थ उचित निर्णय किया जायगा जिससे अस्पष्ट स्थिति समाप्त हो सकेगी।

प्रेमचन्द्र स्मारक

भारत के साहित्य सम्राट स्वर्गीय प्रेमचन्द्र जी के ग्राम लमही में राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी ने प्रेमचन्द्र स्मारक का शिलान्यास ८ अक्टूबर को किया है। भारत के सर्वश्रेष्ठ पुरुष द्वारा भारत ही नहीं विश्व के श्रेष्ठतम साहित्यकार की स्मृति में श्रद्धांजलि समर्पण एक उत्तम कार्य हुआ है। भारत में साहित्यकारों का सदैव सम्मान हुआ है क्योंकि हमारी धारणा रही है 'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते'' हमने कलम को तलवार से अधिक शक्तिशाली माना है। प्रेमचन्द्र जी का जीवन आज के साहित्यकारों के लिये प्रेरणा का स्रोत रहेगा और वे भी राज्य से नियन्त्रित न होकर राज्य के मार्ग दर्शक बनने के गौरव की रक्षा कर सकेंगे। इस अवसर पर मित्र परिवार की ओर से प्रेमचन्द्र जी के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

ब्रिटेन के निर्वाचन

इस मास के आरम्भ में इंगलैण्ड के नवीन निर्वाचन परिणाम घोषित हुए हैं जिनमें वहां के सत्तारूढ़ दल को ही विजय मिली है और इस प्रकार मैकमिलन सरकार [अनुदार दल] ही आगामी ५ वर्षों के लिये ब्रिटेन का शासन करेगी। इस निर्वाचन के फलितार्थों के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि ब्रिटेन की मौजूदा सरकार आन्तरिक सुव्यवस्था और सुप्रशासन के लिये वर्तमान प्रगतिशील युग में सर्वाग्रणी है। रूस और अमेरिका के जीवनस्तर से समता करने में इंगलैण्ड ने काफी दृढ़ता और क्षमता का परिचय दिया है ऐसी स्थिति में वैदेशिक स्थितियों की अपेक्षा वहां की जनता अपनी आन्तरिक स्थितियों से अधिक प्रभावित रही है। क्या हमारी वर्तमान सरकार इस निर्णय से कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकेगी या अब वैदेशिक सम्मान की आदर्शवादी नीति के पीछे राष्ट्र की आन्तरिक सुव्यवस्था उपेक्षित बनी रहेगी। बुद्धिमान दूसरों के उदाहरण से शिक्षा ग्रहण किया करते हैं।

[शेष अगले पृष्ठ पर]

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कलकत्ता मे दयानन्द दीक्षा शताब्दी के शिष्टमण्डल का स्वागत

शिष्टमण्डल २६ सितम्बर को कलकत्ता पहुचा था हावड़ा स्टेशन पर आर्य बन्धुओ ने नेताओं का हार्दिक स्वागत किया। २७ सितम्बर को आर्यसमाज कार्नवालिस स्ट्रीट के सत्संग में श्री अमरसिंह जी महोपदेशक द्वारा शिष्ट मण्डल का परिचय कराये जाने के पश्चात् आर्यसमाज के प्रधान श्री रघुनन्दन जी ने पुष्पमालायें पहनाईं शिष्टमण्डल के नेता व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री पं० हरिशङ्कर शर्म्मा जी ने स्वागत का प्रत्युत्तर देते हुए आर्य बन्धुओ के प्रति आभार प्रदर्शन किया और आर्यसमाज की वर्तमान विश्व मे आवश्यकता विषय पर विचार प्रकट करते हुए भ्रष्टाचार, अनैतिकता निवारण के लिए ऋषि दयानन्द के सन्देश का स्मरण कराया और दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा समारोह का निमन्त्रण दिया। श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी० उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने भी अपने गम्भीर एव ओजस्वी भाषण में आर्य बन्धुओ से त्याग तपस्या और दृढ़ता के साथ समाज सेवा के पथ पर आगे बढ़ने की अपील की। बाद में शिष्ट मण्डल ने प्रान्तीय आर्य वीर दल के सहभोज मे भाग लिया। ४ अक्तूबर को शिष्ट मण्डल की सदस्या श्रीमती शकुन्तला गोयल उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का गम्भीर भाषण हुआ। श्री ओम्प्रकाश जी पुरुषार्थी प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने भी शिष्टमण्डल की ओर से ओजस्वी भाषण दिया और महर्षि के सन्देश की पूर्ति में जीवन समर्पण की प्रेरणा दी।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल आसाम द्वारा अभिनन्दन

४ अक्तूबर को सायंकाल शिष्टमण्डल को विदाई अवसर पर बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया। श्री ठा० अमरसिंह जी महोपदेशक की अध्यक्षता मे प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल श्री मेहरचन्द्र जी धीमान ने श्री प० हरिशङ्कर जी शर्मा और अन्य सदस्यों को पुष्पमालायें पहनाईं।

गुरुकुल काऊर घड़ी की ओर से श्री बटुकृष्ण वसन मन्त्री बंगाल सभा अभिनन्दन किया, श्री प्रो० रामनारायण सिंह जी जागृति सम्पादक, श्री हिमकर जी व श्री आचार्य रामावतार जी (भू० पू० आचार्य गु०कु० वि० वि० वृन्दावन) ने श्रद्धेय पं० हरिशङ्कर जी की हिन्दी सेवा और आर्यसमाज के प्रति समर्पण की चर्चा की।

आर्यसमाज कलकत्ता, बड़ा बाजार, काशीपुर, जोड़ा बागान, मलिक बाजार बेलियाघाटा, हावड़ा, खिदिरपुर, टीटागढ़, बजबज आदि के प्रतिनिधियो ने भी स्वागत पुष्प भेंट किये। स्वागत के प्रत्युत्तर में श्री शर्मा जी ने आर्यसमाज की हिन्दी सेवा और नागरिक के नेतृत्व की चर्चा की और स्वागत के लिये आभार प्रदर्शन किया। श्री नरदेव स्नातक जी एम० ए० उप मन्त्री सार्वदेशिक सभा ने आर्य बन्धुओ के स्नेह सौहार्द के लिये लिए धन्यवाद दिया। उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० सम्पादक आर्यमित्र ने आर्य युवको से स्वाध्याय शील बनने की अपील करते हुए अपने में भावी उत्तरदायित्व सम्हालने की क्षमता उत्पन्न करने की अपील की और मित्र की ओर से स्वागत के लिये आभार प्रदर्शन किया। श्री ठा० अमरसिंह जी ने घोषणा की कि आर्यमित्र हीरक जयन्ती के उपलक्ष मे मै कलकत्ता से १०८ ग्राहकों की माला भेंट करूगा। श्री दिनेशचन्द्र जी शास्त्री विद्याभास्कर, श्री म० रघुनन्दन जी, श्री धीमान जी आदि ने शिष्ट मण्डल को जो हार्दिक सहयोग दिया वह स्मरणीय रहेगा। श्री सेठकिशन लाल जी पोद्दार ने तो जिस आत्मीयता के साथ शिष्ट मण्डल के आतिथ्य, स्वागत सम्मान का भार वहन किया वह प्रशंसनीय, अनुकरणीय और स्मरणीय बन गया है। उनके इस सहयोग के लिए शिष्ट मण्डल उनका विशेष आभारी रहेगा। ४ अक्तूबर को सायंकाल हावड़ा स्टेशन पर शिष्ट-मण्डल की विदाई के लिये उपस्थित होकर भी जिन आर्य बन्धुओं ने स्नेह का परिचय दिया उन सभी के प्रति शिष्ट मण्डल सदैव आभारी रहेगा। ★

आर्यजन सावधान—

पर्चेबाज आर्य समाज के मित्र नहीं शत्रु हैं

पर्चे बाजी का रोग घातक है।

[श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल का वक्तव्य]

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान कार्यालय लखनऊ मे आज ८ अक्तूबर को कुछ लाल पर्चे मुझे पढ़ने को मिले। सभा के विरुद्ध निकाले गये इन पर्चों की भाषा एव भाव अति ही घृणित तथा अनार्यत्व पूर्ण है, और इनमें वर्णित दोषारोपणों से प्रतीत होता है कि कुछ अदूरदर्शी, अनार्य तथा स्वार्थान्ध व्यक्ति अपने व्यक्तिगत द्वेष को लेकर ऐसा कर रहे हैं।

पर्चों पर लेखक का गलत नाम और प्रेस का नाम न होना ही सिद्ध करता है कि उनका सत्य से कोई संबंध नहीं है। जिन पर्चों में नाम हैं उनमें कुछ अबोध बच्चों को आगे कर दिया गया है जिनका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

अपने विरोधी किसी व्यक्ति अथवा संस्था के किसी व्यक्ति अथवा संस्था के विरुद्ध इस प्रकार का आचरण अति ही घातक है। इस प्रकार किसी भी भले व्यक्ति को जनता की दृष्टि में गिराया जा सकता है, और परिणाम स्वरूप भले व्यक्तियों का किसी भी संस्था में रहना असम्भव हो जायगा और संस्था का छिछोरे लोगो के हाथ में हाथ में चले जाने का भय है दुर्भाग्यवश आर्यसमाज के अन्दर पर्चेबाजी का यह रोग सर्वत्र घर करता चला जा रहा है जो आर्यसमाज के अस्तित्व, प्रचार, प्रसार व प्रतिष्ठा के लिए अति ही घातक है। अब तक की पर्चेबाजी ने आर्यसमाज को अन्य लोगों की दृष्टि में जितना गिरा दिया है उसकी कल्पना भी करना कठिन है। इसलिये इस बीमारी को तुरन्त समाप्त कर देना नितान्त आवश्यक है अन्यथा यह एक दिन संक्रामक रोग बनकर आर्यसमाज को अस्तित्व को ही संकट में डाल देगा।

पर्चेबाजी का विरोध करने से मेरा यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि पाप, अन्याय, अत्याचार एवं असत्य को मूक पशुओं की भांति सहन किया जाय। मेरी दृष्टि में पाप करने वाले की अपेक्षा पाप के सहन करने वाला अधिक पापी होता है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में अन्यायी चाहे बलिष्ठ से बलिष्ठ राजा ही क्यों न हो उसका भी विरोध होना चाहिए और निर्बल से निर्बल धर्मात्मा का भी आदर करना चाहिए। परन्तु पाप का विरोध करने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि विरोध करते समय बुद्धि, मानवता एवं आर्यत्व को ताक पर रख दिया जाय और जिस उद्देश्य के लिये विरोध किया जाय उस का भी उपेक्षा कर दी जाय। तथा इस तरह के हलके साधन इस्तेमाल किये जाय।

अपने को आर्य कहने और समझने वालों के विरोध करने का एक अपना ढग होता है। उसमें निर्भयता, दूरदर्शिता, समझदारी, सत्यता और वैधानिकता होती है। परन्तु इन बिना नाम के पर्चों के लेखकों मे इनमें से एक भी गुण प्रतीत नहीं होता। उन्होंने आर्य समाज के हित का नाम लेकर केवल अपना उल्लू सीधा करना चाहा है और आर्यसमाज को जनता की दृष्टि में गिराया है। ऐसे लोग आर्यसमाज के मित्र नही शत्रु हैं। इनके साथ जितनी भी कड़ी कार्यवाही की जाय वह थोड़ी है।

अंत में आर्य जनता से अनुरोध करता हूँ कि वह इस घातक बीमारी के जन्म दाता इन कटशत्रुओ से सतर्क रहें और उनका प्रत्येक प्रकार से विरोध करें और इन्हें आर्यसमाज के संगठन में किसी भी उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर किसी भी अवस्था में न आने दें।

—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

प्रधान संचालक व सेनापति

सार्वदेशिक आर्यवीर दल देहली

तृतीय आयोजना जनता की जिम्मेदारी

[श्री मथुराप्रसाद जी वर्मा]

आज जब हमारी द्वितीय आयोजना अपने लक्ष्य तक पहुँचने वाली है, राज्य में तृतीय आयोजना की तैयारी भी जोरशोर से आरम्भ कर दी गयी है। तृतीय आयोजना के अन्तर्गत प्रदेश के विकास का उत्तरदायित्व जनता को सौंपा जाना है। प्रदेश के विकास आयुक्त ने नियोजन तथा समस्त विभागो के अधिकारियों के नाम अभी हाल में एक परिपत्र जारी किया है जिसमें तृतीय आयोजना की विभिन्न योजनाओ के वर्गीकरण के साथ उनके कार्यान्वयन और धन व्यवस्था के विषय में समुचित प्रकाश डाला गया है।

इस परिपत्र के अनुसार योजनाओं को चार भागों में विभाजित किया जायगा। प्रथम वर्ग में ऐसी योजनाएं रखी जायेंगी जो गाव या विकास खंडीय स्तर पर लगभग पूर्णरूप से स्थानीय श्रम एव साधनों द्वारा खंड के अधिकारियो की टेकनिकल देखरेख में पूरी होंगी। ये योजनाएं श्रमदान तथा पंचायतो द्वारा एकत्र किये गये धन से कार्यान्वित होंगी।

उदाहरण स्वरूप टैंक, बंधिया, पानी की नालियां, छोटे बांध, भूमि तथा जल की सुरक्षा, ईंधन के लिए वन रोपण आदि योजनाएं इसी स्तर पर पूरी की जायेंगी।

द्वितीय वर्ग में ग्राम तथा विकास खंडीय स्तर पर पूरी की जाने वाली कुछ ऐसी योजनाएं रखी गयी हैं जिनके लिए जिला या विकास खंड की ओर से न केवल टेकनिकल वरन आर्थिक सहायता भी प्रदान की जायगी। कुओं, पुलियों, छोटे पुलों, प्राथमिक पाठशालाओं, मनुष्यों तथा पशुओं के अस्पतालों

[शेष पृष्ठ १४ पर]

समीक्षा की समीक्षा

[लेखक—श्री पं० बिहारीलाल शास्त्री, बरेली]

"आर्यसमाज समीक्षा" नाम का एक ट्रैक्ट पिछले दिनों प्रकाशित और वितरित हुआ है, उसकी ओर सम्पादक आर्यमित्र व अन्य आर्य बन्धुओं ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया है। इस ट्रैक्ट में आर्यसमाज के संघटन या कार्य की समीक्षा न करके आर्यसमाज के धार्मिक सिद्धान्तों का खंडन किया गया है। लेखक हैं इसके "श्री स्वामी सत्यभक्त जी"। आपकी राय में सभी धर्म 'अविकसित' और 'विकृत' हैं सब का ही खंडन आपने किया है तो आर्यसमाज को क्यों बख्शते। 'येन-केन प्रकारेण कुर्यात् सर्वस्व खंडनम्'। सब पै ही नश्तर चलना चाहिये, सदा भंग हो या भला। मर्ज रहे न मरीज़।

१—आपका तर्क है "हमारे पुरखों को बहुत-सी बातों का बिलकुल ज्ञान न था और बहुत सी बातों का गलत ज्ञान था। इन सब बातों को देखते हुए किसी प्राचीन ग्रन्थ को पूर्ण सत्य मानना सारा सत्य उसके भीतर मानना अपने अज्ञान मोह और अहंकार का परिचय देना है।" आपका पक्ष है कि वेद-ज्ञान पूर्ण सत्य नहीं। हेतु देते हैं कि हमारे पुरखों का ज्ञान अधूरा और गलत था, अतः उनके ग्रन्थ भी गलत हैं।

आपका यह कथन ज्ञान के चालू भौतिक ज्ञान के रूप में तो ठीक हो सकता है, सिद्धान्त सम्बन्धी ज्ञान में नहीं। भौतिक पदार्थ बदलते रहते हैं पर सिद्धान्त तो नहीं बदला करते। देशों की स्थिति भौगोलिक स्थिति के परिवर्तनों के कारण पुराना भूगोल आजकल काम नहीं दे सकता पर भूगोल के मूल सिद्धान्त तो सदा एक से ही रहेंगे। आग जलायेगी, पानी बहायेगा, वायु उड़ायेगा ही।

वेद को आप परम पुरुष का ज्ञान माने न माने पर उसमें सब प्रकार के मौलिक ज्ञान तो प्रत्यक्ष पाये जा रहे हैं, जो अटल हैं। गणित के सिद्धान्त, आयुर्वेद के सिद्धान्त, रोग के कीटाणुओं के सिद्धान्त, मानवता के व्यावहारिक सदाचार वेदों में जो वर्णित हैं, वे जैसे पहले थे वैसे आज भी हैं। आप आज के भौतिक आविष्कारों को देखकर चकित हो गये हैं और मत बना बैठे हैं कि पहले कोई भी इस विषय का ज्ञान न रखता होगा। याद रहे वेद हमारे पुरखाओं का ज्ञान नहीं परम पुरुष का ज्ञान है। श्री सत्यव्रत जी सामश्रमी ने अनेक प्रमाणों से यह सिद्ध किया है कि वेदों में अनेक विद्याओं के मौलिक सिद्धान्त हैं। देखो ऐतरेयालोचन। मद्य को और अनेक ग्रहों की कक्षाओं को सत्यभक्त जी के पुरखाओं ने जाना जो आज भी ध्रुव सत्य हैं, क्या यह "गलत ज्ञान" था? सत्यभक्त जी आर्य जाति को आत्म हीनता की ओर लिये जा रहे हैं जबकि ऋषि दयानन्द ने अपने साहित्य के प्रति आर्यों में निष्ठा उत्पन्न करी। आदिसृष्टि में मनुष्य को अक्षरात्मक-भाषा का ज्ञान मुखादि अवयव रहित परमात्मा ने कैसे कराया इस को श्री स्वामी जी ने इस प्रकार समझाया है कि जैसे आजकल भी मनुष्य चुपचाप बैठकर जब विचार करता है तो मुखादि की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार सर्वव्यापी भगवान् ने अपने व्यापकत्व से मनुष्य के मन में अर्थ सहित शब्दों का आविष्कार किया और उन आदिम मनुष्यों ने अन्य मनुष्यों को बोलकर शब्द ज्ञान कराया। भाषा वैज्ञानिकों की इस समस्या को कि आदि सृष्टि में शब्दमयी भाषा मनुष्य ने कैसे सीखी होगी क्योंकि बिना दूसरों से सुने हुए मनुष्य कोई अक्षरात्मक शब्द नहीं बोल सकता, श्री स्वामी जी ने इस समस्या को हल किया है।

पर सत्यभक्त जी इस सूक्ष्म विचार को हँसी में उड़ाते हुए आक्षेप करते हैं कि "आजकल भी हम मन में जो शब्दमयी भाषा में विचारते हैं वह भी ईश्वर प्रेरित ही शब्द हैं, फिर सब ही ईश्वरदत्त ज्ञान है केवल वेद ही क्यों? चुपचाप कान बन्द करके जो शब्द सुने जायेंगे वे सब ही ईश्वर ज्ञान होने चाहिये।"

यह है तर्क बुद्धि सत्यभक्त जी की। उदाहरण को ही लक्षण समझ रहे हैं। स्वामी जी ने यह कहाँ कहा है कि कान बन्द करके चुपचाप जो शब्द सुनने में आवें वे ईश्वरीय ज्ञान हैं। स्वामी जी तो यह बता रहे हैं कि बिना मुखावयव के भी शब्द धारा चलती है जैसे कान बन्द कर चुपचाप बैठे शब्द भीतर में ही सुने जाते हैं ये शब्द अपने हैं। वेद के शब्द अपनी व्यापकत्व शक्ति से भगवान् प्रेरित करते हैं। ऐसी ही अपूर्व मान्यताओं से आपकी समीक्षा भरी पड़ी है। आप लिखते हैं—"वेद हिंसा कांडों से भरे पड़े हैं" "स्वामी दयानन्द जी ने इतिहास को उसमें (वेद में) से खत्म करा दिया है" "अनिश्चितार्थक और विपरीतार्थक वेद प्रमाण नहीं माना जा सकता।"

हिंसा क्या है और अहिंसा क्या है अभी तक तो अन्तिम रूप से यही निर्णय नहीं हो पाया। जैनों की अहिंसा की सीमा बहुत बड़ी है, महात्मा गांधी की अहिंसा का क्षेत्र बहुत छोटा, बौद्धों की अहिंसा का रूप अन्य और ईसाइयों की अहिंसा कुछ और। ये सब अहिंसावादी अपनी-अपनी कल्पना लड़ा रहे हैं। वेद में कैसी हिंसा आप मानते हैं?

यदि यज्ञों में पशुवध से प्रयोजन है तो वेद इससे दूर हैं। सूत्र ग्रन्थ कारों की कल्पना का वेद जिम्मेदार नहीं। वेदों के अर्थों में विवाद पर आपका आक्षेप संस्कृत भाषा पर है—

"संस्कृत भाषा का यह भयंकर दोष है कि उसमें से मनचाहा अर्थ सरलता से निकल सकता है।"

स्वामी सत्यभक्त जी ने अन्य भाषाओं का साहित्य भी देखा ही होगा। यह दोष तो सभी उन्नत भाषाओं में उन्हें मिलेगा। श्लेषालंकार से दो अर्थ अधिक, अर्थ सभी काव्यों में हो सकते हैं और होते हैं। कवि लोग इसे गुण मानते हैं और सत्यभक्त जी दोष।

काकु ध्वनि से तो एकार्थी शब्द के भी भाव बदल जाते हैं। पर सही अर्थ और खींचातानी के अर्थ परखने की कसौटी है, पुस्तक का प्रयोजन और प्रकरण। वेद का प्रयोजन है अध्यात्म और सार्वभौम आत्मिकता और उन मंत्रों के प्रकरण हैं ज्ञान; और सर्वहित तो फिर पशुवध वेद विरुद्ध रहा या नहीं।

काव्यों में लक्ष्यार्थ और व्यापार्थ भी आपके विचार में तो दोष ही रहा। निर्दोष भाषा तो आपकी राय में शायद कोई जंगली भाषा ही ठहरेगी? किसी भी ग्रन्थ का सही भाव जानने के लिये श्रम की जरूरत है उसे आप पसंद नहीं करते। अर्थों में विवाद तो बहुत कम है, विवाद है भावों में। यह विवाद तो कानून की पुस्तकों तक में है तो क्या वे सब छोड़ दी जायेंगी। आपकी राय में वेद "अच्छा विकसित ग्रन्थ भी नहीं मालूम होता" "उस आरण्यक युग (जंगली युग) में भी ऐसा संग्रह किया जा सका यह काफी प्रशंसनीय है।" सत्यभक्त जी! नासदीय सूक्त के दार्शनिक विचार, वेदों की ज्योतिष सम्बन्धी गहरी बातें, आयुर्वेद के वर्णन, सामगान क्या यह सब अविकसित और जंगली युग की चीज हैं? अन्य मत के लोग और जिन पाश्चात्य लोगों से आप प्रभावित हैं वे भी वैदिक युग की संस्कृति और सभ्यता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं पर आप उसे जंगली युग कहते हैं। अथर्व वेद में, यजुर्वेद में, तारागण, नक्षत्र, ग्रह और उनकी गतियों का वर्णन सब ही भाष्यकार मानते हैं केवल स्वामी दयानन्द ही नहीं।

ब्राह्मण ग्रन्थों का एक भाग आरण्यक है उसी पर आपने यह चुटकी ली है। पर यह न विचारा कि आरण्यक वे ग्रन्थ हैं जिनमें जंगलों में बैठकर ऋषियों ने जो एकान्तचिन्तन किया है वह विचार ग्रन्थित हैं। गंभीर चिन्तन का आपकी समझ में कोई मूल्य ही नहीं।

आपका बहुत बड़ा आक्षेप यज्ञ पर है। "यदि घी का परिमाण इसका चतुर्थांश भी समझा जाय तो करीब एक अरब सेर घी होम करने के लिये चाहिये। जबकि करोड़ों आदमियों को घी सूंघने के लिये भी नही मिलता।"

सत्यभक्त जी! इसीलिये तो होम रक्खा गया है कि करोड़ों मनुष्यों को घी सूंघने को मिले।

आप हवन में आहुत पदार्थों को 'बर्बादी' मानते हैं, जब कि आपकी नाक प्रत्यक्ष ही सुगन्ध लेकर उन पदार्थों के रूप परिवर्तन की सूचना देती है। जैसे शरीर के रोगी होने पर उसमें कुछ औषधियों का प्रविष्ट करना आवश्यक है। वैसे ही प्रकृति के रुग्ण होने पर उसमें रोगनाशक औषधें फैलानी चाहिये। औषधि चूर्णरूप में गोली रूप में ठोस हों या काढ़ा अर्क आदि के रूप में द्रवित हों। अथवा वाष्परूप में हों प्राकृत मंडल अशुद्ध विकृत होता रहता है यदि उसे शुद्ध भी किया जाता रहे तो रोग ही न हों। हजामत में क्रीम, पौडर श्रृंगार में लिपिस्टिक, साबुन आदि सैकड़ों व्यय विलासिता के हैं यह सब बर्बादी आपको सह्य है पर यज्ञ जो प्रत्यक्ष वायु शोधक है आपको अखरता है आपकी इस बुद्धि पर क्या कहा जाय।

मृतक संस्कार में भी घी का प्रयोग रुग्ण सड़े गले शरीर के दुर्गंध जन्य रोग प्रसारक कीटाणुओं को विनष्ट करने के लिये ही है। घी की कमी होते हुए भी यह सब काम चल ही रहे हैं फिर आपको चिन्ता क्यों है? कमी को गो रक्षा द्वारा पूरा किया जा सकता है। आजकल खाद्य पदार्थ कितने प्रकार के

[शेष पृष्ठ ६ पर]

कल्मषमोक्षा की समीक्षा

[पृष्ठ ९ का शेष]

गये हैं कभी हिसाब लगाया आपने? न सबमें घी बर्बाद नहीं होता केवल यज्ञ में जो कि मानवमात्र की नीरोगिता के लिए किया जाता है बर्बादी है—

यज्ञीय पदार्थों में घी को ही आपने ले लिया और पदार्थों पर ध्यान नहीं दिया वायु शोधन के लिये वे पदार्थ कितने उपयोगी हैं।

सडास, गटर, घूरे आदि हैं वहाँ तो यज्ञ का पुण्य पहुँचने भी न पायेगा।"

क्यों? क्या वहा सडास आदि पर लेखक ने पूर्णाधिकार कर रक्खा है? वायु तो सर्वत्र ही विचरता है। आप सडास आदि स्थानो पर जाते रहें तब भी वायु पहुँच ही जायगा।

"पर यह बात तो स्पष्ट है कि इस देश को जीतने वाले और गुलाम बनाने वाले यूनानी, शक, हूण, यवन, अंग्रेज, फ्रांसीसी, डच पोर्तगीज आदि यज्ञ होम नहीं करते थे और स्वच्छता, स्वास्थ्य उम्र, वैभव यहा तक कि ईमान दारी [illegible] से कई गुणे विकसित। इंग्लैण्ड, स्वीन्जरलैण्ड, जर्मनी, रूस चीन जापान आदि देशों में यज्ञ होम नहीं [illegible]। ब्लैक फीवर आदि के कारण नरक के समान बने हुए युगण्डा आदि अफ्रीकन प्रदेश बिना यज्ञ होम के आधुनिक तरीकों से जिन में एक तोला भी खाद्य सामग्री बरबाद नहीं हुई स्वच्छ स्वास्थ्य कर प्रदेश बना लिये गये।'

यह है आक्षेप आपका यज्ञ पर गोपाल के दांत में दर्द था बगैर सुर्मा के केवल मनन से चला गया। मोहन के कपड़े मैले थे बिना इत्र के साबुन से ही सफेद हो गये। राम की कमर का दर्द बिना घी मक्खन खाये ही अच्छा हो गया। अब विचारिये क्या इन उदाहरणों से अंजन, इत्र और घी मक्खन व्यर्थ हो गये। डी० डी० टी० मच्छर को मारता, पर तुलसी का प्रयोग भी मलेरिया नाशक है। अन्य उपायों से जिन प्रदेशों को स्वास्थ्य कर बना लिया गया है यदि उनमें नित्य यज्ञ भी हो तो वे पुष्ट और सुगन्धित वायु वाले प्रदेश भी बन जायेंगे।

कुछ रोगों के दूर करने के अन्य उपाय हैं और कुछ के हवन यज्ञ भी, केवल यज्ञ ही सब रोगों की दवा है ऐसा तो स्वामी जी ने नहीं लिखा।

जिन देशों की आपने प्रशंसा की है और भारत को उनसे सब बात में नीचा ठहराया हो उन देशों ने क्या यज्ञ करने वाले भारत को जीता था?

यज्ञ करने वाले भारत ने तो विदेशियों से सदा पाव ही पुजवाये (पढ़ो रघु की विजय, राम की विजय, पण्डितों के पराक्रम की कथाएं) जब भारत यज्ञ छोड़कर आपकी मान्य मूर्ति पूजा करने लगा तब ही विदेशियों से रौंदा गया। सत्य भक्त जी को आत्म-हीनता की बीमारी है। आप भारत को सब ही बात में अन्य देशों से नीचा मानते हैं।

क्या इग्लैंड आदि देशो में बड़े आदमियो के भवनों में धूप बत्तिया नहीं जलायी जातीं? यूनान आदि देशो ने भारत को जीता इस पर आपको गर्व है और उन देशो को आप भारत से ऊँचा मानते हैं, पर डाकू किसी सदाचारी को लूट लें तो क्या सदाचार व्यर्थ हो जायगा?

हार-जीत भौतिक बल और दाव पेंच पर निर्भर है। और मानवता अहिंसादि शुभ गुणों पर टिकी है। हवन यज्ञ एक वह विधि है जो मनसा वाचा कर्मणा दान, सहयोग, परहित, स्वार्थ त्याग की शिक्षा देता है इसीलिए सविधि मन्त्रात्मक यज्ञ किया जाता है। घी आदि पदार्थ कुछ भी न हो तो यज्ञ हो सकता है। 'सत्येन श्रद्धाया जुहुयाम' (शतपथ) सत्य रूपी घृत की आहुति श्रद्धा रूपी अग्नि में लगायी जा सकती है। पर शरीर पोषण में यदि अरबों सेर घी व्यय किया जा सकता है तो प्रकृति के विविध द्रव्यो को पुष्ट करने के लिए घृतादि सामग्री व्यय करना बरबादी नहीं हो सकती।

४—धाय तो आज भी रक्खी जा रही हैं। धाय या गाय निर्बल स्त्रियों के बच्चो के लिए आवश्यक हैं फिर आपका आक्षेप इस विषय में बेजान है। धाय रखना आपत्नियम है देखो सत्यार्थ प्र० चौ० समु०—

'जो दूध पीना चाहे तो उसकी माता पिलावे जो उसकी माता के दूध न हो तो किसी स्त्री की परीक्षा करके उसका दूध पिलावे।'

५—सत्यार्थ प्रकाश में जगह-जगह ऐसी मिथ्योक्तियां भरी पड़ी हैं जिनसे आर्य वंश का और आर्य क्षेत्र का झूठा मद प्रकट होता है। कैसी अत्यन्त कूप मण्डूकता है यह। इससे इतिहास और भूगोल का घोर अपमान भी प्रकट होता है। धर्म की विजय के लिये, सुख शांति के लिये आज तो सारी पृथ्वी को एक राष्ट्र मानकर चलना है और क्षेत्र के आधार पर या वंश परम्परा के आधार पर ऊँच नीच आदि का भेदभाव दूर करना है। इस दिशा में आर्यसमाज से सच्ची और अच्छी प्रेरणा नहीं मिलती। बल्कि झूठी और बुरी ही प्रेरणा मिलती है। जबकि सत्य समाज गुण दुर्गुण विवेक रखते हुए भी मनुष्य मात्र को एक जाति, एक कुटुम्ब, एक राष्ट्र का समझता है।'

सन् ५७ की क्रांति के पश्चात् जब भारत में अङ्गरेजों के शासन सभ्यता और भाषा का वर्चस्व बढ़ रहा था और सत्य भक्त जी जैसे निर्बल हृदय के भारतवासी इन बातों से प्रभावित होकर आत्म-विश्वास खोते जा रहे थे तब ऋषि दयानन्द ने जीवन पाञ्चजन्य फूका और बेदिल हुई आर्य जाति को बताया कि तुम्हारी संस्कृति और सभ्यता संसार में कभी सर्वोपरि थी। आर्य साम्राज्य की छत्र छाया में कभी सर्व भूमण्डल के मानव सुख शान्ति का अनुभव करते रहे हैं। घबराओ मत दुर्गुणों को दूर करो और प्राचीन पुरुखाओं के गुण धारण करो तो पराधीनता पाश से मुक्त होकर पुराने वैभव को धारण करोगे, इस जीवन दायिनी रसायन को सत्य भक्त जी मिथ्योक्तियां और अत्यन्त कूप मण्डूकता समझते हैं इसे बुद्धि का रोग समझा जाय या सत्यभक्ति। भारत के प्राचीन वैभव और आर्य संस्कृति के महत्व के विदेशी "जैकालियट," मैगास्थनीज" जैसे लोग तो गुण गाते हैं और भारत के भोजन से पले सत्य भक्त जी इसे "अत्यन्त कूप मण्डूकता' बता रहे हैं। शोक है ऐसी समझ पर।

सत्य समाज मनुष्य मात्र को एक कुटुम्ब और एक राष्ट्र मानता रहे पर उसके मानने से अन्य देशों के मनुष्य उसे अपने साथ लेने को तैयार हो जायेंगे क्या? हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा लगाने से क्या चीन ने भारत की भूमि नहीं दबा ली? ऐसी ही वसुधैव कुटुम्बकम के घोष करने वाले बौद्धों ने मकरान और सिंध अरबों के हाथ में सौंप दिये थे, और फिर अपना धर्म त्याग बलात् मुसलमान भी बने।

अपनी जन्म भूमि और अपने राष्ट्र पर जिसे गर्व नहीं वह खानाबदोश जिप्सी मारा मारा ही फिरा करता है ऋषि दयानन्द झूठी कल्पनाओं में आर्य जाति को उड़ाना नहीं चाहते थे।

६—जिन उत्तम पदार्थों के खाने पीने से ब्राह्मण और ब्राह्मणी के शरीर में दुर्गन्धादि दोषरहित रजवीर्य उत्पन्न होता है वैसा चाण्डाल और चाण्डाली के शरीर में नहीं, इसलिये ब्राह्मणादि उत्तम वर्णों के हाथ का खाना और चाण्डालादि नीच भंगी, चमार आदि का न खाना (सत्यार्थ प्र०) इस पर भी सत्यभक्त जी फर्माते हैं—

"स्वामी जी मूल बने विष्ठा खाने वाली गाय से किसी भी जाति के मनुष्य का शरीर अधिक अपवित्र नहीं हो सकता जिसका हम दूध पीते हैं .... गांधी जी के कारण इस विषय में वातावरण इतना बदल गया है कि जाति-पांति, छुआछूत का समर्थन अब लज्जा जनक हो गया है शुद्धि आंदोलन चला कर भी मुसलमानो की शुद्धि में आर्यसमाज क्यों निष्फल गया?" सत्यभक्त जी! भूल है आपकी स्थूल बुद्धि की। विष्ठा खाने वाली गाय का गोबर जिस प्रकार ग्राह्य है क्या उसी प्रकार गाय से जिन मनुष्यो को आप उत्तम मानते हैं उनके मल को काम में लाइयेगा?

विष्ठा खाने वाली गाय और खल बिनौला खाने वाली गाय का दूध क्या एक समान प्रभाव रखता है?

लहसुन खाने वाले मनुष्यो में जैसी दुर्गन्ध आती है क्या वैसी दुर्गन्ध सात्विक भोजन वालों में आ सकती है? मनुष्य के नेत्र, मुख और अंगुलियों से एक ऐसी विद्युत् निकलती रहती है जो उसके भीतरी प्रभाव को बाहर लाती है अतः आचार भ्रष्ट व्यक्ति के हाथ का खान पान बुद्धि को मलिन करता है। अनेक रोग लगाता है। आप इसे लज्जा-जनक मानें चाहे कुछ मानें पर आचार व्यवहार का प्रभाव पड़ना तो ध्रुव सत्य है। अपनी पत्नी, बहिन यदि रजस्वला हों तो उनके हाथ का भी खान पान मना है। यह जाति-पांति का समर्थन है या आचार व्यवहार? हिन्दुओं और आर्यसमाज तथा आप जैसे गांधी भक्तों में यह भेद है ध्यान दीजिये —

१—आचार बदलने पर भी नीच जाति नीच ही रहेगा (हिन्दू)

२—सब एक से हैं आचार-विचार की कोई विशेषता नहीं (गांधीवादी)

३—उच्चता नीचता आचार व्यवहार के आधार पर है (आर्यसमाज)

जब भंगी, चमार आदि का खान-पान आचार व्यवहार बदला और द्विजों के योग्य हुआ। बिना आचार व्यवहार बदले ही सबका खान-पान विवाह शादी एक करना यदि उदारता है तो बुद्धिमान और बुद्धू सभी छात्रों को एक नम्बर देने वाला स्कूल चौपट चौपाल ही कहा जायेगा। मुसलमानों की हड्डियों को खाने वाले गांधीवादी आप की दृष्टि में महत्व रखते हों पर खिलाने वाले मुसलमान तक उनको अच्छी दृष्टि से नहीं देखते और मजाक उड़ाते हैं। उनमें भी खान पान के हराम हलाल के कुछ नियम हैं। गधे और सत्य-मनुष्य को जब आप एक-सा ही मानते हैं और

[शेष पृष्ठ ११ पर]

किससे कैसा व्यवहार

[लेखक—श्री प्रोफेसर रत्नसिंह एम० ए०, गाजियाबाद]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से स्वतन्त्र उसका अस्तित्व एक कल्पना मात्र है। अपने भौतिक अस्तित्व तथा नैतिक, धार्मिक व राजनैतिक विचारों के लिये उसे समाज पर ही आश्रित रहना पड़ता है। समाज में रहते हुए उसे चार प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में आने की सम्भावना बनी रहती है। व्यक्तियों के वे चार प्रकार हैं—सुखी, दुःखी, पुन्यात्मा व पापी। इन चारों से समान व्यवहार नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा किया गया तो इसका आवश्यक परिणाम होगा मानसिक अशान्ति। वस्त्र विहीन ठंठ के कारण दांत कटकट करते हुए क्षुधा से पीड़ित एक दरिद्र व्यक्ति को आप दया से द्रवीभूत होकर दो चार आने दे देवें तो आपके इस कार्य की प्रशंसा करेंगे, वह दरिद्र व्यक्ति भी अपने अन्तःस्तल से आशीर्वाद देगा, परन्तु एक लखपती सेठ के साथ भी यदि वैसा ही व्यवहार किया गया तो इसे वह अपना अपमान समझेगा और हो सकता है, कुछ पारस्परिक तू-तू मैं-मैं की स्थिति उत्पन्न हो जाय। ऐसा क्यों हुआ? केवल इसलिये कि असमान व्यक्तियों से समान व्यवहार किया गया। अतः मानसिक शान्ति के इच्छुक को यह अवश्य जानना चाहिए कि किस व्यक्ति से कैसा व्यवहार किया जाय।

यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति सुख की कामना करता है, पर यह परम आश्चर्य की बात है कि वह सुखी को देखकर सुखी नहीं हो पाता। सामान्यतः सुखी को देखकर हम उससे ईर्ष्या करने लगते हैं। दूसरे को उन्नति देखकर और अपने को वैसा न पाकर उसके विनाश के भाव का उत्पन्न होना ईर्ष्या है। ईर्ष्या एक ऐसी भयंकर अग्नि है जो ईर्ष्यालु को पूर्णतया भस्म कर डालती है। ईर्ष्यालु का मन निर्जीव भूमि के सदृश बन जाता है। जिस प्रकार भूमि के ऊपर कूड़ा-करकट, मल मूत्र सभी फेंका जाता है और वह सबको वह अपने ऊपर बिना किसी आपत्ति के धारण कर लेती है उसी प्रकार ईर्ष्यालु के मन में अभद्र से अभद्र विचार स्थान ग्रहण कर लेते हैं। वह सदैव दूसरों को हानि पहुँचाने की योजना बनाता रहता है। परन्तु वह यह भूल जाता है कि दूसरे पर कीचड़ डालने के लिए व्यक्ति को प्रथम अपने हाथ कीचड़ में डालने पड़ते हैं। उसकी फैंकी कीचड़ दूसरे पर पड़ ही जाय, यह पूर्णतः असंदिग्ध नहीं है, परन्तु यह सर्वथा निश्चित है कि ऐसा करने में उसके हाथ और वस्त्र अवश्य गंदे हो जायगे। इसी प्रकार दूसरे को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करने वाला दूसरे की हानि न कर स्वयं को हानि पहुँचा लेता है। इस हानि से बचने के लिये एकमात्र उपाय यह है कि सुखी व्यक्ति को देकर उससे ईर्ष्या के स्थान पर मैत्री की जाय। मैत्री होने पर अपने मित्र के साथ हमारा प्रेम बढ़ता जायगा, उसमें हमें सद्गुण ही दृष्टिगोचर होंगे और उसके सुख को देखकर उसके साथ आत्मीयता होने के कारण उससे हमें भी सुख प्राप्त होगा। इस अभ्यास से हममें ईर्ष्या की अग्नि कभी उत्पन्न न हो सकेगी और जो कुछ पहले से वर्तमान है वह स्वयं समाप्त हो जायगी।

दूसरी श्रेणी में दुःखी आते हैं। कुछ लोग दुखियों को देखकर उनसे घृणा करने लगते हैं। हमारे समाज में यह रोग बहुत व्यापक है। धनी व कुलीन कहे जाने वाले लोग निम्न श्रेणी के (भंगी, चमार आदि) से क्या व्यवहार करते हैं, यह सर्व विदित है। इस घृणा का कारण वस्तुतः अहंकार है। दुःखी को देखकर सुखी व सम्पन्न व्यक्ति सोचने लगता है—अरे, मैं इस व्यक्ति से कितना अच्छा हूँ। यह कैसा गंदा, भद्दा है, कैसे छोटे छोटे टूटे फूटे मकान में रहता है, और मैं? मैं इन विशाल गगनचुम्बी अट्टालिकाओं का स्वामी? कहां यह और कहां मैं? छि, छी छी यह भी कोई आदमी है। परन्तु ऐसा अभिमानी व्यक्ति तनिक बुद्धि का प्रयोग करे तो वस्तु स्थिति का ज्ञान हो जाय। ऐ अभिमानी व्यक्ति तू आँख उठाकर देख। तेरा अस्तित्व है ही क्या, तू किस बात पर घमंड करता है। क्या तुझे पूर्ण विश्वास है कि तू और तेरा यह समस्त वैभव अनन्तकाल तक इसी प्रकार तेरे पास सुरक्षित रहेगा। क्या तुझे विश्वास है कि तू और तेरा यह समस्त वैभव कल तक भी रह पायगा। और क्या तू नहीं देखता कि तुझ समान,

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्मिलित प्रार्थना

[ले०—साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथ जी शास्त्री, एम ए काव्यतीर्थ]

भगवान तुम्हारी करुणा से वसुधा के संकट कट जायें।
दारिद्रय, कष्ट, सन्ताप, ताप रागादि दोष सब हट जायें ॥१॥

विद्वेष, दम्भ, मद, मत्सर में फंस कर हम कष्ट उठाते हैं।
कुछ कृपा करो ऐसी जग के दुःख के बादल सब फट जायें ॥२॥

निज स्वार्थ साधना में रत हो हमने प्रभु तुम्हें भुलाया है।
तव दया दृष्टि से विश्व प्रेम की मधुर भावना हम पायें ॥३।

प्रभु-भक्ति प्राप्त कर जीवन में समता का भाव करें धारण।
हृदयों में सबके शुभ विचार संकल्प सत्य निशिदिन आयें ॥४॥

तुम सत्य, सनातन, पूर्ण ब्रह्म, जगदीश्वर जग के रक्षक हो।
हम भक्ति भाव नित श्रद्धा से गुण गान तुम्हारा ही गायें ॥५॥

अखिलेश्वर! तुमने ही हमको जग के वैभव हैं दान किये।
आभार-प्रदर्शन करने को सबके सिर तुम पर झुक जायें ॥६॥

हम अल्प बुद्धि कैसे भगवन् महिमा अनन्त तव जान सकें।
है विनय यही निज करुण हस्त हम पर अपना नित ही छायें॥७॥

प्रभु! शुद्ध, पवित्र विचारों का उदयन हो जीवन में जग के।
इस भांति परस्पर करुणा से भव तार स्वयं भी तर जायें ॥८॥

हम मानव होकर भी भगवन्! कुछ दानव बनते जाते हैं।
अतुल विषय की ज्वाला से जीवन जग के जलते जायें ॥९॥

वैराग्य, राग का जीवन में सन्तुलन सदा ही रहता हो।
शुभ आर्य ज्योति को धारण कर निज नाम जगत में कर जायें॥१०॥

ओ३म् अभ्यादधामि समिधमग्ने व्रतपते त्वयि। व्रतं च श्रद्धां चोपैमीन्धे त्वा दीक्षितोऽअहम्॥ यजुर्वेद अध्याय २० मन्त्र २४

मन्त्र का गद्यमय भावार्थ—

भगवन्! सत्य भाषण, पवित्र जीवन आदि शुभ गुणों को धारण कर हम सर्वदा आपके व्रत में दीक्षित हों। हमारा जीवन समिधाओं के समान देदीप्यमान बने—मुझ में आपके द्वारा ही शक्ति, सामर्थ्य तथा तेज का उदय हो। श्रद्धा तथा व्रतों के द्वारा ही मैं अपने जीवन को महान बना सकूँ। दयालु परमेश्वर! मुझे शक्ति दो जिससे कि मैं अपने ज्योतिर्मय जीवन द्वारा तुम्हारे दिव्य स्वरूप को विश्व में प्रकाशित कर सकूँ॥

मन्त्र का पद्यमय भावार्थ—

श्रद्धा भक्ति सत्य कर्मों में दीक्षित जीवन हो जावे।
पूर्ण आपका तेज प्राप्त कर जीवन ज्योतित हो जावे ॥१॥

प्रभो आपका तेज विश्व को सदा प्रकाशित करता हो।
प्रभु द्वारा निर्दिष्ट नियम से जीवन संयत हो जावे ॥२॥

ज्ञान-ज्योति से प्रभो आपकी हृदय-कलुष सब दूर हटे।
जग-कालुष्य, पाप तापादिक दिव्य शक्ति से मिट जावे ॥३॥

सत्य, भक्ति, तप, दान, व्रतों में व्रती विश्व के मानव हों।
सतत आपकी भक्ति दयामय विश्व हृदय में फिर आवे ॥४॥

दिव्य गुणों को धारण करके सबका हम कल्याण करें।
पावन-प्रभा प्राप्त कर प्रभुवर! मानव निर्मल बन जावे ॥५॥

आध्यात्मिक चिन्तन

पुनर्जन्म

[ले०—श्री वशिष्ठ जी, पाण्डुचेरी]

पुनर्जन्म के न मानने वाले सैमेटिक धर्मों (ईसाई, इसलाम) के अनुयायी पुनर्जन्म मानने वालों के साथ आये दिन इस विषय पर तर्क वितर्क किया करते है। पुनर्जन्म के पक्ष वालों का कहना है कि अन्तरात्मा बार-बार शरीर त्याग कर पुनर्जन्म द्वारा जन्म लेने वाले दूसरे शरीरों में जाकर जन्म लेता है और इसे पुनर्जन्म कहते हैं। जब कि प्रतिपक्षी ईसाई, मुसलमान कहते हैं कि 'रूह' पुनर्जन्म में नहीं आती।

'रूह' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'हवा'। हमारे संस्कृत वाङ्मय में इसे 'प्राण' कहा है। वेद उपनिषद, पुराणादि में प्राण' जीवन शक्ति को कहते हैं जिसे अंगरेजी में वाइटल फोर्स (Vital Force) कहा है। इसी जीवन शक्ति 'प्राण' से 'प्राणी' शब्द बना है जो प्रत्येक शरीर धारी जीव के लिये प्रयुक्त होता है जिसमें मनुष्य की भी गणना हो जाती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, ईर्ष्या इत्यादि इसी 'प्राण' के निम्न आवेश व आवेग हैं जबकि उत्साह, भक्ति, हर्ष, श्रद्धा, उदारता, शौर्य, उत्सर्ग आदि उच्च प्रवृत्तियां तथा समस्त कामना, वासना ममत्व व लालसाएं आदि निम्न प्रवृत्तियां। इसी जीवन-शक्ति 'प्राण' की प्रेरणा मनुष्य को कर्मठ बनाती है।

आयुर्वेद में वात (वायु) के पांच प्रकार बताये है जो क्रमश प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान कहलाते है, इनमे केवल प्रथम को 'प्राण' कहते हैं अर्थात् वह वायु जो हम श्वास द्वारा अन्दर खींचते हैं 'प्राण' कहलाता है। इसी प्राण के खींचने व निकालने के सतत अभ्यास को 'प्राणायाम' कहते हैं किन्तु यह 'प्राण' वायु मात्र है जो त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) में वात का एक भाग है जो पंच भूतों (आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी) में मध्यवर्ती है तथा त्रिगुणो (सत, रज, तम) में रजोगुणी है जबकि आकाश व अग्नि सतोगुणी तथा जल व पृथ्वी तमोगुणी हैं।

पंच भूतों में वात (वायु) अपने पंच रूपों (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान) द्वारा हमारे शरीर को जीवित रखने वाले जीवन शक्ति 'प्राण' (Vital Force) का पंचभौतिक साधन है जिसे हम स्थूल प्राण भी कह सकते हैं जो रजोगुणी है और जो शरीर में आकाश, अग्नि, तत्त्व (पित्त) को तथा जल व पृथ्वी तत्त्व (कफ) को सक्रिय करता है। किन्तु जीवन शक्ति 'प्राण' श्वास नहीं है यद्यपि श्वास इसके व्यापार का भौतिक अनिवार्य साधन है। वस्तुत 'प्राण' एक चेतना है जो जीवन शक्ति (Life energy) है और इसी प्राण चेतना के शरीर को त्याग देने पर श्वास बन्द हो जाता है तो हम कहते हैं 'प्राण निकल गये' क्योंकि इस प्राण चेतना के शरीर को छोड़ देने पर प्राण-अपान (श्वास) का खिंचना व निकलना बन्द हो जाता है। इतना ही नहीं, शरीर मे अन्दर काम करने वाले शेष तीन वायु (व्यान, उदान, समान) भी अपना व्यापार बन्द कर देते है क्योंकि शरीर के वे भाग, जहाँ ये पांचो वायु कार्य करते हैं, प्राण-चेतना के निकल जाने पर निर्जीव, निष्प्राण, मुर्दा हो जाते हैं। यदि केवल वायु जिन्दा रख सके तो आजकल कृत्रिम पम्प करके शरीर के तमाम अंगों में हवा भर कर शरीर को जिन्दा रखा जा सकता है किन्तु जीवन शक्ति 'प्राण चेतना' ही है जो जिन्दा रखती है केवल वायु नही। प्राणायाम में सिद्धि प्राप्त हठयोगी बिना श्वास के जीवित रहते हैं यहाँ तक कि वायु के शेष चारो भागों (अपान, व्यान, उदान, समान) की भी वे गति बन्द कर देते हैं परन्तु मृत्यु नहा होती क्योंकि जीवन धारण करने वाली प्राण चेतना उनके स्थूल व सूक्ष्म शरीर में सर्वत्र प्रतिष्ठित रहती है। केवल अत्यन्त स्थूल साधनों, ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ही जीवन को देख, समझने वाले हम श्वास के व्यापार को ही 'जिन्दा रहना' समझते हैं क्योंकि चर्म चक्षु द्वारा हम वैसा देख सकते हैं और हमारी इस स्थूल ऐन्द्रिक कसौटी के कारण अंगरेजी में टू ब्रीद (To breathe) तथा हिन्दी में 'प्राण फूकना' या 'रूह फूकना' जिन्दा करने के भाव में बोला जाता है। अत 'प्राण' ही है जिसे सैमेटिक धर्म (ईसाई, इसलाम) 'रूह' कहते हैं। वस्तुत इस 'प्राण' का पुनर्जन्म नहीं होता, ईसाई, इसलाम मतों का कहना सत्य है रूह (प्राण) का पुनर्जन्म नहीं होता। हिन्दुओं का कहना भी सत्य है 'अन्तरात्मा' का पुनर्जन्म होता है।

'मानस' (Mind) चेतना को धारण करने वाले प्राणी को 'मनुष्य' कहते हैं। यद्यपि हम सब 'मनुष्य' हैं किन्तु हममें जन साधारण अपनी 'प्राण-चेतना' में ही रहता है, विचार, विवेक, चिन्तन के समय उसे अपनी 'मानस' चेतना का सहारा लेना पड़ता है किन्तु ज्यों ही प्राण की कोई प्रवृत्ति, आवेश, आवेग आ पड़ता है वह विवेकशील 'मनुष्य' तुरन्त ही फिसल कर अपनी प्राण चेतना में आ जाता है और आवेश के प्रवाह में बह जाता है।

जन साधारण का आपसी सम्बन्ध भी प्राणमय ही होता है मनोमय बहुत कम। स्त्री अपने पति को 'प्राणनाथ', पुरुष पत्नी को 'प्राणप्रिया' कहता है क्योंकि विरले मनीषियों को छोड़कर शेष सब सम्पत्तियों का परस्पर सम्बन्ध प्राणिक व दैहिक ही होता है, तभी तो कोई कहता है, "मेरे प्राण मेरे पुत्र में पड़े हैं।"

अत मृत्यु के बाद मनुष्य की रूह [प्राण] विश्व प्राण लोक में जाती है पुनर्जन्म में नहीं।

'अन्तरात्मा' हमारे शरीर-देश या शरीर शहर में राजा की तरह रहता है, अपने राज्य या राजधानी से भागा नहीं फिरता। यह काम 'प्राण चेतना' का है जो हर व्यापार में सक्रिय रहती है। यदि हम हिन्दी व संस्कृत के कवियों की प्राणमय चेष्टाओं का वर्णन करने वाली कविताओं की तुलना उर्दू व फारसी के शायरों की रूह के वलवलों का बखान करने वाली नज़्मों के साथ करें तो दोनों का वर्णन मेल खा जायगा।

केवल 'रूह' [प्राण] ही नहीं किन्तु 'मानस' [Mind] भी पुनर्जन्म में नहीं आता। उदाहरणार्थ यदि हम एक बालिका का जो आयु में एक वर्ष से कम है गम्भीरतम अध्ययन करें तो हमें उपर्युक्त सचाई स्पष्ट गोचर हो जायगी। उक्त बालिका का अन्तरात्मा गत जीवन में कहीं तो नारी शरीर में विद्यमान था ही। यदि वह गत जीवन में ६० वर्ष की बुढ़िया थी तब भी वह अपने पुत्र पौत्रों तक के सामने नंगी न होती थी और अब वह छोटे बड़ों सबके सामने नंगी पड़ी किलकारी मार रही है। गत जीवन यदि रोगशय्या पर मलमूत्र निकल जाता तो लज्जित, दुःखी होती व इस घटना को नरक कह कर मृत्यु कामना करती, किन्तु अब मल मूत्र में पड़ी खेल रही होगी यदि ग्रीष्म ऋतु में मलमूत्र का गीलापन उसे ठण्डक पहुँचाता हो। इस बालिका की कोई इच्छा, कामना नहीं केवल है क्षुधा और शारीरिक सुविधा असुविधा का सुख दुःख। क्योंकि नया प्राण है, अल्लाह ने नई रूह (प्राण-हवा) फूकी है और नई है 'मानस चेतना', दोनों ही नये व्यक्ति रूप लेकर आई हैं, नवजात हैं शरीर की तरह, स्वच्छ, शुभ्र हैं संस्कार-शिक्षा के रंग बिना, सब कुछ से अनभिज्ञ हैं, शिशु हैं।

मनुष्य बहुत-सी बातें तो जीवन काल में ही भूल जाता है, अनेक बातें तो शाम तक विस्मृत हो जाती हैं। बचपन की विशेषता शैशव की प्रायः सब घटनायें जवानी तक विस्मृत हो जाती हैं। बुढ़ापे में भूलना तो साधारण सी बात है। जीवन की घटनाओं को भुगतने व याद रखने वाले मन, प्राण अगले जीवन में आते नहीं। अन्तरात्मा जीवन के सार बटोरता है, विस्तार नहीं उस पर भी अन्तरात्मा अपना भेद बताता कहां है और बताये भी किसे? कौन पूछता है? और कौन जाता है पूछने अन्तस्तल में? क्या बताये वह भेद इच्छा, कामना, वासनाओं के क्रीड़ा कन्दुक इस 'रूह' (प्राण) को जो अहंकार के गले में बांह डाले चौराहे पर भंडा-फोड़ दे, अपनी प्रचण्ड इष्ट पूर्ति के लिए यत्र-तत्र संक्षोभ व तुमुल खड़ा कर दे?

यही कारण है कि शिशु के नव-जात (नव व्यक्तित्व प्रदत्त) स्वच्छ, शुभ्र मन मनीषा व प्राण को यथारुचि मान्य ताओं व धारणाओं में रंगना अच्छे या बुरे व्यसनों में अभ्यस्त करना सहज सम्भव होता है। संस्कारों व व्यसनों में रंगे 'बूढ़े तोते' कहा बदलते हैं। किन्तु जिनके अन्तरात्मा गणनातीत पुनर्जन्मों को पार करके हो चुके हैं। प्राय पूर्ण प्रबुद्ध व सामर्थ्यवान वे संसार संसर्ग की कटुताओं के भयंकर झोंकों द्वारा प्रताड़ित व विकृत निज प्राण प्रकृति को भी धोकर, शोधन करके परिपूत व दिव्य बना लेते हैं।

हां, यह 'रूह' (प्राण) और यह 'मानस' (Mind) अन्तरात्मपरायण होकर उसके सानिध्य में रहकर बहुत कुछ जान सकते हैं, बदल सकते हैं जैसे गारे की कच्ची ईंट भट्टी की अग्नि के आलिंगन में रह कर। और ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि 'रूह' (प्राण Vital) व मानस (Mind) अन्तरात्मा के सहचर बन जाय। पुनर्जन्म में साथ आते को यदि वे कटिबद्ध होकर प्रयत्नशील हों।

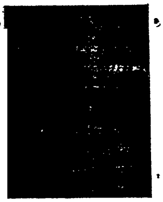
अन्तरात्मा का प्रयोजन है एक लम्बा रहस्यमय विवर्तन अपना और अपने उपकरण, साधन मनोमय, प्राण-मय व अन्नमय चेतना का जिससे वह निज उपकरणों को विकसित करता

[शेष पृष्ठ १० पर]

युद्ध मन्त्री के कर्त्तव्य

[ले०—श्री पं० दामोदर सातवलेकर, स्वाध्यायमण्डल, पारडी, जि० सूरत]

सम्पूर्ण विश्व एक भारी 'महाराज्य' है और इस महाराज्य के कार्यकर्ता अग्नि, इन्द्र, मरुत् अश्विनौ, वायु, सूर्य, चन्द्र, भूमि, पर्वत आदि हैं। ये इस विश्वराज्य के मन्त्री' ही हैं। अग्नि शिक्षा मन्त्री है, इन्द्र युद्ध मंत्री है, मरुत् उसके सैनिक हैं, अश्विनौ आरोग्य मन्त्री हैं, इस तरह अन्यान्य देवता अन्य कार्यों के मंत्री हैं। विश्व के प्रारम्भ से ये विश्वराज्य के मन्त्री



अपना कार्य योग्य समय पर करते आये हैं, कदापि आलस्य नहीं करते, किसी प्रकार रिश्वत खोरी नहीं करते। योग्य प्रकार से अपना कार्य करते रहते हैं। किसी तरह अपने कार्य में त्रुटी कभी होने नहीं देते। इसलिए हम उनको 'आदर्श मन्त्री' कह सकते हैं।

वेद मन्त्रों में इन विश्वराज्य के आदर्श मन्त्रियों का वर्णन है। उस वैदिक मन्त्रियों के वर्णन को देखना, पढ़ना, सुनना और तदनुसार स्वयं आचरण करना यह मनुष्य का परम श्रेष्ठ धर्म है। इसलिए ऋषि दयानन्द जी महाराज ने अपने दस नियमों में लिखा है कि 'वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है।' यहां 'परमधर्म' पद विशेष महत्व के हैं। परमधर्म जो होता है उसका पालन अवश्यमेव प्रत्येक आर्य को करना चाहिए इसलिए करना चाहिए कि वैसा आचरण हमारा हो और वैदिक मन्त्रियों के अनुसार हमारे मन्त्री कार्य करें और उससे हमारा राज्य शासन निर्दोष बने।'

इस लेख में हम इस विश्वराज्य के 'युद्ध मन्त्री के कर्त्तव्य थोड़े से देखना चाहते हैं। इसका उद्देश्य यह है कि इस युद्ध मन्त्री के गुण देखकर उनकी तुलना अपने युद्ध मन्त्री के गुणों के साथ पाठक करें और अपने युद्ध मन्त्री में कुछ गुणदोषों की न्यूनाधिकता हो तो उसको जानें और जो आवश्यक सुधार करना हो तो करें।

युद्धमंत्री राष्ट्र के आन्तरिक और बाह्य ऐसे दोनों शत्रुओं को दूर करता है और राष्ट्र में शान्तता रखता है इसलिए इसका स्थान ऊंचा रहता है। अब वेद मंत्रों में इस मंत्री के जो गुण वर्णन किये हैं उनको देखिये।

तुरिः वीरो नर्यो विचेत,
श्रोता हवं गृणत ऊर्वी ऊतिः।
वसुः शंसो नरां कारुधाया
वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम्॥

ऋग्वेद ६।२४।२

(१) तुरिः त्वरासे कार्य करने वाला, आलस्य न करने वाला, जो सुस्त नहीं है। जो कर्त्तव्य है उसको जो सत्वर करता है।

(२) वीरः—(वीरयति अमित्रान्) जो शत्रुओं को दूर करता है।

(३) नर्यः—राष्ट्र के सब मानवो का हित करने वाला।

(४) विचेताः—विशेष विचार करने वाला, चतुर, बुद्धिमान, विशेष मननशील।

(५) गृणतः हवं श्रोता—बोलने वाले की प्रार्थना सुनता है।

(६) ऊर्वी-ऊतिः—सुरक्षा का उत्तम से उत्तम, महान् से महान् प्रबन्ध करने वाला, राष्ट्र को सुरक्षित रखने के साधन जिसके पास विपुल साधन है।

(७) वसुः—प्रजा का उत्तम निवास करने वाला।

(८) शंस.—प्रशंसनीय रक्षा के कार्य करने वाला।

(९) नरां कारु-धाया—मानवों में जो कारीगार, कला में कुशल है उनका धारण पोषण जो करता है। कारीगरों को उत्तेजना देनेवाला।

(१०) वाजी—जो स्वयं बलवान है, और सेना के बल से युक्त है।

(११) स्तुतः—(उक्त गुणों के कारण) जो प्रशंसा के योग्य हुआ है, जिसकी प्रशंसा सब करते हैं।

(१२) विदथे वाजं दाति—युद्ध में जो बल देता है, जो अन्न देता है।

तथा देखिये—

बल विज्ञायः स्थविरः प्रवीर,
सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजाः
जैत्रं रथं आतिष्ठ गोवित्॥

ऋग्वेद १०।१०३।५

(१३) बलविज्ञाय—बल के कार्य करने के कारण जिसकी प्रसिद्धी होती है।

(१४) स्थविरः—जो बड़ा है, जो स्थिर है, जो चंचल नहीं है।

(१५) प्रवीरः—जो विशेष वीरता दिखाता है।

(१६) सहस्वान्—शत्रु का पराभव करने का सामर्थ्य जिसमें है।

(१७) वाजी—बलवान्, अन्न जिस के पास भरपूर है। (युद्ध मन्त्री के पास भरपूर अन्न का संग्रह चाहिये।)

(१८) सहमान-शत्रु के आघातों को सहन करके अपने स्थान पर निडर होकर रहने वाला।

(१९) उग्र—जो उग्रवीर है।

(२०) अभिवीरः—जो सब प्रकार से वीर है।

(२१) अभिसत्वा—जो सब प्रकार से बलवान है।

(२२) सह-ओजः—जो सामर्थ्य के साथ रहता है।

(२३) गो-विद्—गौवें और भूमि शत्रु को पराजित करके जो प्राप्त करता है।

(२४) जैत्रं रथं आतिष्ठ—विजयी रथ पर चढ़ कर उस पर बैठ। विजयी रथ पर बैठने वाला शूरवीर युद्ध मन्त्री हो। तथा और देखिये—

स आत्मभर्ता श्रद्धधान ओज पुरो,
विभिन्दन् अचरत् विदासीः।
विद्वान् वज्रिन् दस्यवे हेतिमस्य,
आर्यं सहवर्धय द्युम्नं इन्द्र॥

ऋग्वेद १।१०३।३

(२५) स आत्मभर्ता—वह सबका भरण पोषण करने वाला है।

(२६) ओजः श्रद्धधान.—शारीरिक बल पर विश्वास रखने वाला। सामर्थ्य पर जिसकी श्रद्धा है।

(२७) दासीः पुरः विभिन्दन् विअचरत्—शत्रु के नगरों को तोड़कर जो विशेष पराक्रम करता है।

(२८) विद्वान्—जो ज्ञानी है।

(२९) हे वज्रिन् इन्द्र—हे वज्रधारी इन्द्र! हे शस्त्रधारी युद्ध के मंत्री।

(३०) दस्यवे हेति अस्य—शत्रु पर शस्त्र फेंक।

(३१) आर्यं द्युम्नं सहः वर्धय—आर्यों का तेजस्वी बल बढ़ाओ।

और देखिये—

इन्द्र सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः
सुमृलीकः भवतु विश्ववेदः। बाधतां
द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः
स्याम॥ ऋ० ६।४७।१२

(३२) इन्द्रः सुत्रामा—हमारा युद्ध मंत्री [इन्द्र] हमारा उत्तम रक्षण करता है।

(३३) अवोभिः स्ववान्—सब संरक्षक साधनों के साथ सदा रहने के कारण वह अपने सामर्थ्य से सदा युक्त है।

(३४) सुमृलीकः भवतु—वह उत्तम सुख देने वाला हो।

(३५) विश्व-वेदाः—राष्ट्र के संरक्षण का सब ज्ञान उसके पास सदा रहता

[शेष पृष्ठ १२ पर]

अजमेर में ऋषि मेला

अजमेर नगर में जहां महर्षि दयानन्द ने अन्तिम श्वास लिया था और जहां पर महर्षि द्वारा निर्मित उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का कार्यालय है, ऋषि मेला कार्तिक शुक्ला ६, ७ व ८ तदनुसार ६, ७, ८ नवम्बर १९५९ को करने का आयोजन हो रहा है। यज्ञ का प्रारम्भ कार्तिक अमावस्य ता० ३१ अक्तूबर १९५९ से होगा।

यह मेला उसी बाग में होगा जिसमें महर्षि के अवशेष आदेशानुसार डाले गये थे। यह स्थान आनासागर के सुरम्य तट पर स्थित मनोरम उद्यान है। यहीं पर वह यज्ञशाला स्थित है जिसमें ऋषि निर्वाण अर्द्ध शताब्दी पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ था और तब से आज तक अनेक पारायण यज्ञ हुए तथा उस समय (सन् १९३३ में) अरणी मन्थन द्वारा यह प्रज्ज्वलित अग्नि अब तक प्रज्ज्वलित है।

श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज ता० ३ नवम्बर १९५९ को पधारेंगे और नित्य अपने उपदेशामृत की वर्षा करेंगे। ता० ६, ७, ८ को जो मेला के आयोजन के दिन है। श्री स्वामी ब्रह्ममुनि जी, श्री स्वामी नारायणानन्द जी, श्री स्वामी धर्मेदानन्द जी, एवं सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र जी, सुप्रसिद्ध वाग्मी श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यामार्तण्ड, श्री पं० धर्मदेव आदि अनेक विद्वानो के पधारने की आशा है।

इनके अतिरिक्त श्री महाशय कृष्ण जी प्रधान परोपकारिणी सभा, श्री पं० आनन्दप्रिय जी, मन्त्री महर्षि स्मारक ट्रस्ट टंकारा तथा सदस्य परोपकारिणी सभा श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु काशी आदि महानुभावो के पधारने की पूर्ण आशा है।

आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से प्रांतीय आर्य सम्मेलन की योजना है तथा उसी समय ऋषि उद्यान में दयानन्द साधना आश्रम का विधिवत् उद्घाटन होगा।

मेला में ऋषि की वस्तु प्रदर्शिनी की भी व्यवस्था की गई है जिसमें महर्षि के हस्तलेख, खड़ाऊं वस्त्र आदि होंगे। खेल-कूद, व्यायाम का भी प्रदर्शन होगा।

सब आर्य नर-नारियो से निवेदन है कि भारी संख्या में पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

निवेदक—
श्रीकरण शारदा संयोजक मेला
संयुक्त मन्त्री, परोपकारिणी सभा

संन्यासियों की दीक्षा

[श्री पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०, प्रयाग]

इस विषय पर आर्यसमाज के वयोवृद्ध अनुभवी पितामह श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज टेहरी ने पिछले दिनों आर्यमित्र के १४ जून ५६ के अङ्क में एक बहुत उपयोगी लेख दिया है। संन्यासी समाज का सिर या मस्तिष्क है, मस्तिष्क के साधु-असाधु होने पर समाज का साधुत्व या असाधुत्व निर्भर है। अतः संन्यास व्यवस्था ठीक होनी चाहिये। मस्तिष्क शरीर का संचालक है। इसकी महत्ता काया की विशालता पर नहीं अपितु सूक्ष्मता पर निर्भर है। विशालकाय शरीर में मस्तिष्क भी विशालकाय हो यह सम्भव नहीं। अतः सन्यासी थोड़े भी हों तो समाज अच्छा चल सकता है और यदि पौराणिक इन्द्र देव के समान समस्त शरीर पर आंख ही आँख हो जावे तो कार्य न चल सकेगा आंख की पुतली छोटी है। परन्तु दूर तकऔर ठीक-ठीक देखने वाली हो। संन्यासी नृचक्षु हो अर्थात् विश्व भर उसकी दृष्टि के अन्तर्गत हो। आजकल सन्यास की कोई व्यवस्था नहीं, यह बात न केवल बौद्धों या हिन्दुओं में ही है अपितु आर्यसमाज में भी सर्वथा व्यवस्था का अभाव है। हमने नाम रक्खा है 'आश्रम व्यवस्था' परन्तु व्यवस्था कुछ नहीं। या तो अव्यवस्था है या कुव्यवस्था जो कोई चाहे संन्यास की दीक्षा ले सकता है और जो कोई चाहे दे सकता है। आर्यसमाज में केवल इतना भेद है कि यह बच्चों को संन्यास नहीं देते। परन्तु बूढ़ों से कुछ पूछते नहीं। जिसके बाल सफेद देखे उसको सन्यास दे दिया। उसके मस्तिष्क का क्या हाल यह कोई देखता नहीं, दीक्षा के लिए योग्यता की परीक्षा नहीं होती। दीक्षित होकर शिक्षा नहीं दी जाती। ऐसा समझ लिया गया है कि काषाय वस्त्र वह पारस पत्थर है कि काषाय वस्त्र पहनते ही मनुष्य में सर्वगुण सम्पन्नता आ जाती है। वह वेदज्ञ, कृतज्ञ तथा वैश्वानर बन जाता है।

भारत सरकार इस साधु-बाहुल्य के साधुत्व रहित बीभत्स परिणाम का अनुभव करके इसमें सुधार करने की योजना बना रही है। यह अच्छा ही है और आर्यसमाज को भी इसमें भरसक सहयोग देना चाहिये। परन्तु है, यह उल्टी गंगा। मैंने एक बार एक उर्दू पद्य लिखा था :—

उल्टी गंगा बहते-बहते गोमती में आपकी
रफ्ता-रफ्ता घट गया रुतबा इलाहाबाद का

गोमती में न सही। यमुना में सही। दिल्ली में संन्यासियों का केन्द्र बनेगा। और केन्द्रालय भी। अमात्यगण निश्चय करेंगे कि संन्यासी कौन हो और कैसा हो। और संन्यास मण्डल के क्या-क्या नियम हों।

अफसराधीनं जगत्सर्वं,
आफिसाधीनारचाफसराः।
ते आफिसाः क्लार्काधीनः,
तस्मात् क्लारकदेवेतम् ॥

सरकार से अलग होकर भी आर्य समाज को स्वतन्त्र रूप से इस गंभीर समस्या पर विचार करना है। यदि कुछ करना है तो व्यवस्था बनाओ। कुव्यवस्था अव्यवस्था से अधिक हानिकारक है, सच्चा संन्यासी तो वही है जो लोकेषणा से अलग है। शक्ति-प्रियता निर्वाचन, पदलोलुपता, संस्थाओं को मुट्ठी के भीतर रखने की आकांक्षा। इन निम्नश्रेणी के कार्यों को दूसरों के लिए छोड़ दो। यह जो मैंने कहा है वह वानप्रस्थ पर भी लागू होता है। व्यवस्था की तो सर्वत्र आवश्यकता है।

न लिंगं धर्म-कारणं,
न लिंगं कर्म-साधनम्।
लिंग-मुग्धा जनाः प्रायः,
भवन्ति प्रति वंचकाः ॥

००

[पृष्ठ २ का शेष]

नहीं-नहीं तुमसे भी अधिक वैभवशाली व्यक्ति इस संसार में कितने हैं और कितने हो गये हैं। फिर अभिमान किस बात का? हममें अभिमान उत्पन्न न हो सके, इसके लिए हमें चाहिए कि हम दुखियों के साथ करुणा का व्यवहार करें।

सुख-दुख का एक आधार भौतिक सम्पत्ति है। जिसके पास उसका भाव है, वह सुखी और जहां अभाव वह दुखी। कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जिनके पास भौतिक सम्पत्ति का तो अभाव है परन्तु उनके शुभाचरण के कारण उनकी सुकीर्ति सर्वत्र व्याप्त है। इन्हें पुण्यात्मा कहते हैं। इनका सारा समय लोकोपकारी शुभ कार्य में ही व्यतीत होता है। ये लोग सदैव प्राणिमात्र का हित करने में रत रहते हैं। किसी का अहित ये बेचारे स्वप्न में भी नहीं कर सकते। परन्तु फिर भी इनका विरोध होता है। लोग इन्हें अपना शत्रु समझते हैं। गांधी ने किसका क्या बिगाड़ा था? फिर भी गोली का शिकार होना पड़ा। महर्षि दयानन्द ने परहित के लिये क्या नहीं किया? पर वाह रे मानव! तूने भी पुरस्कार रूप में दयानन्द को १७ बार विष के प्याले पिलाये। मानव की इस कुप्रवृत्ति से सामाजिक सगठन, विघटित होने लगता है, अतएव इस हानिप्रद प्रवृत्ति की निवृत्ति के लिये आवश्यक है कि हम पुण्यात्मा, धर्मात्मा सदाचारी, व्यक्ति को देखकर प्रसन्न होने का अभ्यास डालें। हमें ऐसा विचार करना चाहिए कि अहा कैसी अच्छी बात है कि अमुक व्यक्ति अपना समस्त समय व शक्ति शुभ कर्मों के सम्पादन में ही व्यतीत करता है।

प्रत्येक समाज में आपको कुछ पापी भी मिलेंगे इनके साथ मैत्री व घनिष्ठता रखने में स्वआत्महित की सम्भावना बनी रहती है। कोयले की खान में जाने से कालिमा किसे नहीं लगती? पापी या अपुण्यात्मा से हमें उपेक्षा रखनी चाहिए। उपेक्षा से लाभ यह होगा कि उसके सम्पर्क में रहने से उत्पन्न हो सकने वाली बुराइयों से हम बच जायेंगे।

अतः चित्त की प्रसन्नता के लिये मनुष्य को चार प्रकार के व्यक्तियों से चार ही प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। ये चार प्रकार में सुखी, दुखी, पुण्यात्मा व अपुण्यात्मा जिनसे क्रमशः मैत्री, करुणा, प्रसन्नता व उपेक्षा का व्यवहार करना चाहिए। इसी बात को योगदर्शन में इस प्रकार कहा गया है—

मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणाम् सुख दुख पुण्यापुण्य विषयाणाम् भावनातश्चित्त प्रसादनम्।

★

[पृष्ठ ६ का शेष]

हुआ निरन्तर पुनर्जन्मों द्वारा उत्तरोत्तर विकसित संवर्धित हो और निरन्तर उच्चतर एवं सार्वत्रिक पारंगति व प्रभुत्व प्राप्त करे। अतः अन्तरात्मा आगामी जीवन में गत जीवन के मन व प्राण से प्रखरतर मन-मनीषा व प्रबलतर या भिन्नतर प्राण (रूह) लेकर आता है जो शिक्षा व जीवन-कर्म अनुभूति द्वारा विकसित होते हैं और इन उपकरणों के कर्म-व्यापार के सार बटोरता है। अन्तरात्मा ताकि आगामी जीवन में फिर लाये कहीं प्रखरतर मन-मनीषा व प्रबलतर प्राण [रूह]। यदि मन-मनीषा व प्राण अन्तरात्म-परायण होकर करलें धारण 'परात्पर' भूमिका अर्थात् देश काल में यथा-आवश्यक उपलब्ध को त्याग देने व अनुपलब्ध को ग्रहण करने की क्षिप्र रुचि, पूर्ण क्षमता तो अन्तरात्मा को इन प्रतिरूपक (Typal) बने कट्टरपंथी मन-मनीषा व प्राण को हर आगामी जीवन में त्यागने की जरूरत ही न पड़े। पर अहंकार द्वारा अभ्यासित मन-प्राण राग द्वेष में किसी से भागते हैं तो किसी से चिमटते हैं। जिससे भागते हैं उससे छुटकारा मिलता नहीं, भाग कर जाने की जगह भी तो वह विद्यमान है। और जिससे वे चिमटते हैं वह देश काल में विकृत व परोक्ष हो जाता है। इसलिए बारम्बार अन्तरात्मा को पिष्ट-पेषण करना पड़ता है 'परात्पर' भूमिका में अक्षम और अनुपत, गो पर्याप्त विकसित किन्तु फिर भी कट्टर प्रतिरूपक मन, प्राण को विसर्जित करके। जबकि जीवन भर ये मन, प्राण विभिन्न मान्यताओं व व्यसनों में आबद्ध भोगी और भगोड़े बने रहते हैं और जीवन यात्रा के हर मोड़ पर विफलता व कठिनाई से ऊब कर पलायन को ही निस्तार समझते हैं। किन्तु आत्मा, अन्तरात्मा, निरन्तर विलम्ब होता रहने पर भी, लगा रहता है अपने लक्ष्य की सिद्धि में—

"इस हेतु आया वह आत्मा इस गम्भीर गर्त में, व्यस्त किया निज शक्ति से 'अज्ञ' का अनजान आवेग, 'निद्रा' के मग्न सत्र में 'धर्म' की ज्योति जोड़, 'यमराज' के लोक में फिर बसाने अमरपुरी।"

[पृष्ठ ११ का शेष]

है। सब शत्रुओं के सब कार्य वह उत्तम प्रकार से जानता है और उनसे किस तरह अपने राष्ट्र का संरक्षण करना चाहिये, उस विषय का सब सत्य ज्ञान उसके पास सदा रहता है।

(२६) द्वेष बाधतां—द्वेष करने वाले शत्रुओं को वह बाधा पहुँचावे।

(२७) अभयं कृणोतु—हमारे लिये वह निर्भयता स्थापन करे। हमें किसी भी शत्रु से भय उत्पन्न न हो ऐसा बंदोबस्त हमारा युद्ध मन्त्री करे। हम चारों ओर से निर्भय होकर अपने राष्ट्र में सुख से रहें।

(२८) सुवीर्यस्य पतयः स्याम—हम उत्तम वीर्य के, सामर्थ्य के, बल के स्वामी होकर यहां रहें।

वेद में युद्ध मन्त्री के वर्णन के मंत्र साढ़े तीन हजार हैं। उनमें युद्ध मंत्री के सब गुण बताये हैं। वे गुण पाठकों के लिये भी मनन करने योग्य हैं। हमारा भाई चीन देश हमारे राष्ट्र पर हमला कर रहा है। हमारा दूसरा भाई पाकिस्तान रात-दिन हमले करता है। अन्य शत्रु भी कम नहीं हैं। इसलिये हमें इस समय अपने युद्ध मन्त्री को वेदोक्त गुणों से युक्त करना चाहिये। जिससे हम निर्भय होकर यहाँ रह सकें।

इस विषय का विचार पाठक करें और जो योग्य है वह बोध ग्रहण करें।

★

[पृष्ठ ६ का शेष]

समीक्षा की समीक्षा

सफाई और अपवित्रता के विवेक को "अनुदारता" बताते हैं तो कोई शुद्धि क्यों करवायेगा। शुद्धि में रुकावट आप जैसे सब खान पान वाइस पसेरी करने वाले लोगों से ही हुई है, गांधीवादियों के व्यवहार के कारण अछूतों के आचार को बदल रहे थे, अब ज्यों के त्यों रह गये। आचार को महत्व देना आप अनुदारता समझते हैं।

शुद्धि आन्दोलन निष्फल हुआ या सफल यह तो उन लाखों शुद्ध हुओं को देखकर जाना सकता है जो आज या अलीहुसैन के नारों को छोड़कर ब्रज में श्री कृष्णचन्द्र का जय-जयकार कर रहे हैं। आज अनेक जन्मजात मुसलमान पौरोहित्य कार्य कर रहे हैं। केवल आर्य समाजियों में ही नहीं सनातनियो तक में।

जन्मजात शुद्ध हुए मुसलमानों के सम्बन्ध वैश्य और ब्राह्मणो में हुए हैं छिपाकर नहीं, प्रकट रूप में। श्री सत्यभक्त जो बरेली में आकर आँखों पे देख सकते हैं। पर खान पान, आचार व्यवहार बिना बदले सबका खान पान एक कर दिया जाये यह सरभंगपना सत्य समाज को ही मुबारिक रहे। आर्यसमाज विवेकशील संस्था है उसे ऐसो कूड़ापंथी पसन्द नहीं।

जिसने वंशानुक्रम विज्ञान पढ़ा है वह समझ सकता है कि आचार व्यवहार और वंशों की पवित्रता का क्या प्रभाव पड़ता है। सत्यभक्त जी गुड़गोबर एक करे पर विवेकशील व्यक्ति इस कार्य को कभी पसंद न करेगा।

७ नंबर में सत्यभक्त जी ने मूर्तिपूजा का समर्थन किया है। करना ही था वर्धा में उनके धर्मालय में भी मूर्तियों की पलटन खड़ी है, बुद्ध भगवान, महावीर भगवान्, क्राइस्ट भगवान् आदि देखें भगवान विद्यमान हैं। पर श्री सत्यभक्त जी को भी यह स्वीकार है:—

"एक आदमी मूर्तिपूजा करके अपना समय बरबाद कर सकता है पर इससे वह पापी नहीं कहला सकता।" क्यों सत्यभक्त जी, क्या समय की बरबादी, अनेक वस्तु, फूल, चन्दन, कपड़ा आदि की बर्बादी क्या पाप नहीं है? तब तो ताश, शतरंज, शराब, भंग कुछ भी पाप नहीं। महाराज? सूक्ष्मता से सोचिये ईश्वर प्रदत्त समय को बरबाद करना तो सबसे बड़ा पाप है, भ्रम का फैलाना महापाप है, आप स्वयं स्वीकार कर रहे हैं 'हाँ' मूर्ति में चमत्कार आदि बताकर जो लोग जनता के ठगते हैं वे जरूर पाप करते हैं।"

तो क्या मूर्ति पूजा बिना चमत्कार और गपोड़ों के चलती है? कौन से मूर्तिपूजक हैं जो चमत्कार न मानते हों?

एक और महामिथ्या गल्प लिखते हुए श्री सत्यभक्त जी को लज्जा का अनुभव नहीं हुआ आप लिखते हैं:—

"हैदराबाद में सनातनी और आर्य समाजी के बीच शास्त्रार्थ हुआ। सनातनी ने चुनौती दी कि यदि तुम मूर्तिपूजक नहीं हो दयानन्द के चित्र को जूता मारो। आर्यसमाजी पंडित रो पड़ा लेकिन अपने पक्ष की जीत के लिये उसने दयानन्द जी के चित्र को जूता मारा और फिर रोया।"

यह है सत्यभक्त जी की सत्यभक्ति! चित्र को जूता मारने वाले पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार अभी जीवित हैं और उन्हें आज भी इस मिथ्याभ्रमभंजन पर गर्व है। आप वारधा के अपने धर्मालय में स्वामी जी की मूर्ति रखवाइये और किसी भी आर्यसमाजी को आज्ञा दीजिये तोड़ने की वह सहर्ष उस मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े कर देगा। वैसे आर्यसमाज न मूर्ति पूजक और न मूर्तिभंजक। पर भ्रमभंजन के लिये वह मूर्ति और चित्रों को तोड़ भी सकता है। आपने मूर्तिपूजकों की मान्यता के यह विरुद्ध लिखा है कि वे मूर्ति को एकमात्र लिपि के समान सहारा मात्र मानते हैं। जरा मूर्तिपूजकों की प्राण प्रतिष्ठा विधि को तो पढ़िये कि वे मूर्ति को देवता का अधिष्ठान मानते है, सजीव शरीर के समान ही। ऋषि दयानन्द ने इन्हीं मिथ्या विश्वासों का खण्डन किया है।

८—सृष्टि रचना विषय पर भी आपका आक्षेप है कि बिना मा बाप के जवान स्त्री पुरुष का जोड़ा पृथ्वीपर कैसे आ गया?

इसे आप हंसी के योग्य, अवैज्ञानिक, अप्राकृतिक बताते हैं।

पर आप स्वयं क्या मानते है। गोल हैं। सृष्टि का यदि आदि है तो सब ही जीव बिना मा बाप के ही आदिसृष्टि में उत्पन्न हो सकते हैं, यह तर्कयुक्त और सर्व आस्तिकों का सम्मत सिद्धान्त है। और जैनो के अनुसार यदि सृष्टि इसी प्रकार चली आ रही है तो आज यह मान्यता उपहासास्पद और अवैज्ञानिक है। भूगोल विशारद वैज्ञानिक पृथ्वी को रचा हुआ सिद्ध कर रहे हैं। कोई भी सावयव पदार्थ अनादि अनन्त नहीं होता यह न्याय का अटल सिद्धान्त है। आप कहते हैं आज बिना मा बाप के सृष्टि क्यों रोक दी?

श्री सत्यभक्त जी! सांचा तैयार हो जाने के बाद फिर प्रत्येक बार सांचा बनाने वाला तो महामूर्ख ही कहलायेगा न? यह मेरी बात आप नहीं सोच सकते।

आप स्वामी जी के इस कथन की हंसी उड़ाते हैं कि "सूर्य, चन्द्र, तारों में मनुष्यादि सृष्टि हैं।" श्रीमान् जी जरा आदि शब्द पर तो ध्यान देते? क्या आग्नेकाय जीव इन लोकों में नहीं रह सकते? क्या हिमकाय जीव चन्द्र में नहीं रह सकते अभी तो आपके वैज्ञानिक अनुमान ही लगा रहे हैं और मंगल में मनुष्यादि के अस्तित्व के दावे भी करने लगे हैं। चन्द्रलोक तक राकेट की सफल उड़ान और उसके बाद मानव की चन्द्रलोक सम्बन्धी सम्भावित यात्रा महर्षि के वैज्ञानिक विचारों की ओर मानवीय कदम है। आगे आगे देखिए होता है क्या? "गौ" शब्द के अनेक अर्थों पर आप हंसी उड़ाते हैं ठीक है आपकी बुद्धि से ऊंची बात हंसी के योग्य ही हैं। संस्कृत भाषा आपकी समझ में दूषित है ही। जिस भाषा के साहित्य पर विदेशी विद्वान् तक मुग्ध हैं तो उसको दोषमय समझने वाला भला भाषा के रहस्य को क्या समझ सकता है। श्रीमान् जी, अर्थ यूं ही अलल टप्पू नहीं कर दिये जाते हैं उनका एक नियम है निरुक्त का निश्चित किया हुआ।

"प्रकरणार्थोहिमन्त्रा निर्वक्तव्या:"

मन्त्रार्थ प्रकरणानुसार हुआ करते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी की रामायण तक पर यह नियम चलते हैं। सभी काव्यो में ये नियम व्याप्त है। बहुर्थक काव्य प्रशस्त होता है। साहित्य के रस से शायद आपको रुचि नहीं।

९—खंडनाध [क]—श्री स्वामी जी को आपने खण्डनाध कहा है पर बिना गहराई में उतरे आपने आर्यसमाज की मान्यताओं पर चोंच चलाकर स्वयं अपने को खंडनाध उपाधि से युक्त कर लिया है।

स्वामी जी खंडनाध होते तो क्या इतना सूक्ष्म विश्लेषण करते कि श्री शंकराचार्य ने यदि अद्वैत मत जैनों के खंडन के लिए स्वीकार किया तो कुछ अच्छा है। यहां स्वामी जी के कुछ" शब्द पर ध्यान दीजिए इसमें "जैन द्वेष" कहां झलक रहा है? पूरे अनीश्वरवादी से किसी भी प्रकार ईश्वरवादी होना अच्छा ही है। स्यादवाद से अद्वैत वाद कुछ अच्छा तो है ही इसमें जैन द्वेष है या दार्शनिक विश्लेषण शायद यहां आपका पुराना जैन मत फड़क उठा है?

[ख] जैनियों का संग करना या उनको देखना भी बुरा है" सत्यार्थप्रकाश की यह एक पंक्ति लेकर स्वामी जी पर जैन द्वेष का लांछन लगाया है पर खंडनाधता के कारण आपको ये पंक्ति दिखाई नहीं दी —

"हाँ, जो जैनियों में उत्तम जन हैं उनसे सत्संगादि करने में दोष नहीं।

ऊपर की पहली पंक्ति उन जैनों के विषय में लिखी है जो "हठी" और "दुराग्रही" हैं जो श्रीकृष्ण की निन्दा करते हैं और उन्हे नरकगामी बताते है।

राष्ट्र की विभूति भगवान् कृष्ण के निन्दकों की संगति आप करें। आपकी इच्छा, राष्ट्रभक्त दयानन्द तो ऐसे लोगों की संगति को बुरा ही समझेगा।

[ग] कुरान की वकालत में भी आप बोले हैं:—

'जिधर मुंह करो उधर मुह है अल्लाह का'

कुरान के इस वाक्य पर ऋषि का ऐतराज है —

"जो यह बात सच्ची है तो मुसलमान किबले की ओर मुह क्यो करते है?

कहिये इसका उत्तर कुछ है आप पर?

फिर स्वामी जी ने कहा है कि "जो खुदा के मुह है तो सब ओर हो ही नहीं सकता।"

दिशा के पक्षपात को दूर करने वाली आपकी तुक तो किबले की ओर मुंह करने के पक्षपात ने काट दी। और अल्लाह अर्श पर बैठे रहने के कारण यदि साकार है तो सब ओर मुह नहीं हो सकता और निराकार है तो मक्के की ओर मुह व्यर्थ। कहिये है कुछ गुंजाइश आपको वकालत की? पर गपोड़ो की निन्दा करनी ही चाहिये।

[घ] "क्या तुम्हारी इच्छा से एक मक्खी की टांग भी बन सकती है जो कहते हो खुदा की इच्छा से यह जगत् बन गया।

सत्यार्थप्रकाश की इस पंक्ति पर भी सत्यभक्त जी का आक्षेप है—

"पर खुद स्वामी जी मानते है ईश्वर ने जगत बना दिया और बिना माँ बाप के एकदम जवान पुरुष को पैदा कर दिये।"

[शेष पृष्ठ १२ पर]

समीक्षा की समीक्षा

[पृष्ठ ११ का शेष]

सत्यभक्तजी ! आपकी यह चालाकी उन लोगों को तो भ्रम में डाल सकती है कि जिन्होंने सत्यार्थप्रकाश पूरा नहीं पढ़ा पर जिन्होंने पूरा प्रकरण देखा है वे आपकी खंडनाधता पर क्या कहेंगे यहां आगे पूरा प्रकरण तो देखिये श्री स्वामी जी क्या कहते हैं :—

"जगत् का कारण प्रकृति और उनके गुण कर्म स्वभाव अनादि हैं" "इसलिए यह कुरान की बात सर्वथा असम्भव है।" बिना प्रकृति अर्थात् उपादान कारण के केवल इच्छामात्र से निमित्त कारण कुछ नहीं बना सकता इसी प्रकार बीच-बीच में से पंक्तियां लेकर प्रकरण को गड़बड़ी में डालकर अपने मनगढ़न्त आशय निकाल कर सत्य भक्त जी ने सत्यार्थप्रकाश पर धूल उछाल कर अपनी सर्व खण्डन की रस्म को पूरा किया है। सर्वप्रिय कहलाने, निष्पक्षता दिखाने की धुन में आपने अनेक निष्प्रमाण बातें इस ट्रैक्ट में लिखा है यथा :—

"ऋषि महर्षि भी मांस भक्षी थे"

"आर्यों ने अनार्यों के ऊपर ही केवल अत्याचार किये हैं" आपके यह दावे जो सत्य की सनक में किये गये हैं प्रमाणहीन और पक्षपातपूर्ण एवं घोर भ्रान्त हैं। ऋषि धान्य तो शास्त्रों में प्रसिद्ध हैं जौ, चावल, तिल। ऋषि आश्रमों में हिंसा वर्जित थी और सिंह हिरणादि भी स्वाभाविक हिंसा को आश्रम भूमि में त्याग देते थे।

[पढ़ो पुराण इतिहास काव्य नाटकादि]

फिर "तदङ्कशय्याच्युत नाभिनालाः' मृग जहां निर्भय विचरते थे वहाँ माँस भोजन कैसा ?

मांस तो मनुजी के अनुसार राक्षसों का भक्ष्य रहा है।

"यक्ष रक्ष पिशाचान्नं मद्य मांसं सुरासवं"

स्मरण रखिए आर्य अनार्य शब्द गुण वाचक हैं जातिपरक नहीं।

आपकी यह पुस्तिका द्वेषपूर्ण है और खंडनांध होकर लिखी गयी है। आपके सृष्टि विषयक आक्षेपों से यह ध्वनि निकलती है कि आप सृष्टिकर्ता ईश्वर से विमुख हैं। गीता में—

"जगदाहुरनीश्वरम्" जगत् को अनीश्वरीय मानने वालों को आसुरी संपद् वालों में गिना गया है।

आपको ईश्वर सद्बुद्धि दे ताकि आप भ्रान्तियों से बचकर, आत्महीनता से उठकर सत्य की सही खोज कर सकें।

★

नगर आर्यसमाज आगरा की डायरी

(१) ६ सितम्बर को नगर आर्य-समाज आगरा में श्री कालिकाप्रसाद जी भटनागर उप कुलपति आगरा विश्व-विद्यालय का ओजस्वी सारगर्भित भाषण हुआ। उपस्थिति पर्याप्त थी, इस भाषण का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा।

(२) दिनांक १३-९-५९ को साप्ताहिक अधिवेशन में श्री पं० जयकिशन जी विद्यालंकार का प्रभावशाली भाषण हुआ।

(३) दि० १६-९-५९ को महाशय आनन्दचन्द्र जी शर्मा जीवनी मंडी के गृह पर पूर्णमासी का पाक्षिक मंगल हुआ। प० रामशरण जी शर्मा का ओजस्वी भाषण हुआ उपस्थित सज्जनों का मिष्ठान से स्वागत किया गया।

(४) दि० २०-९-५९ को डा० रामप्रसाद जी आर्य का मृतक श्राद्ध अवैदिक है विषय पर अत्यन्त प्रभावशाली भाषण हुआ।

(५) दि० २४-९-५९ को कुमारी सरोजनीय जोयल ईसाई महिला की शुद्धि हुई और उसका नाम सरोज रक्खा गया, स्त्री और पुरुष २५० की संख्या में उपस्थित थे, शुद्धि शुदा के हाथ से बरफी वितरण कराई गई और पं० हरप्रसाद मिश्रा बी० ए० के साथ में विवाह कराया गया।

( ) दि० २८-९-५९ की रात्रि को ८ बजे से १०॥ बजे तक नगर के विद्वानों का आपस में वाद विवाद इस विषय पर हुआ कि गीता अवैदिक है वैदिक।

(७) दि० २-१०-५९ को आर्यसमाज की ओर से म० रामलाल जी आर्य के गृह कटरा हाजीहसन में अमावस्या का पाक्षिक मंगल हुआ। हवन, सन्ध्या के पश्चात् श्री ठा० यशवन्तसिंह जी प्रचारक के ओजस्वी खण्डनात्मिक भजन और विश्वम्भरनाथ आर्य का जोरदार खण्डनात्मिक भाषण हुआ। उपस्थिति लगभग २०० के थी, पेठे की मिठाई से सत्कार किया गया।

—मोहनलाल आर्य
प्रधान

आर्यसमाज शक्तिनगर का प्रथम वार्षिकोत्सव

आ० स० शक्तिनगर, दिल्ली का प्रथम वार्षिक उत्सव दिनांक १८ अक्टूबर से २५ अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस धार्मिक अवसर पर सभा महोपदेशक श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री की १९ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक रात्रि के समय मनोहर वेद कथा होगी। २४, २५ अक्टूबर को उत्सव में वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री प० शांतिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी सभा मन्त्री श्री प० जगदेवसिंह जी शास्त्री सिद्धान्ती, श्रद्धेय आचार्य भगवान्देव जी सभा उपप्रधान, पूज्य महात्मा श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी, प० बुद्धदेव जी मीरपुरी तथा अन्य अनेक आर्य नेताओ और उदभट् विद्वानों क मनोहर प्रवचन होगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा क प्रधान श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे एक ईसाइ निरोध सम्मेलन का भी आयोजन किया जाएगा।

—आर्यसमाज गोंडा (उ० प्र०) का वार्षिकोत्सव जो ३ से ६ नवम्बर १९५९ को होने वाला था, दीक्षा शताब्दी न निकट होने क कारण १९ से २१ मार्च १९६० क लिए स्थगित कर दिया गया। कृपया सम्बन्धित सज्जन नोट कर लें और नवम्बर मे न आकर मार्च १९६० में पधारने की कृपा करे।

नानकप्रसाद एम०ए०

सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अनेको स्नातक (वेदालंकार, विद्यालंकार, आयुर्वेदालंकार तथा वाचस्पति) बन्धुओ के पूर्ण पते कार्यालय में उपलब्ध नही हैं। कृपया सभी स्नातक महानुभाव अपने वर्तमान पते शीघ्र से शीघ्र गुरुकुल में भेजने का कष्ट करे।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

[पृष्ठ ४ का शेष]

आदि का निर्माण कार्य इस कार्य क्रम में सम्मिलित किया गया है।

तृतीय वर्ग में वह जटिल योजनाए रखी गयी है जिन्हें सरकारी विभाग स्वय कार्यान्वित और पूर्ण करेंगे। किंतु ऐसे मामलों में भी स्थानीय जन प्रतिनिधियो के परामर्श पर उचित ध्यान दिया जायगा। ऐसी योजनाओं के अधीन अस्पतालों, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों, नल, कूपों, पुलों और सड़कों आदि को निर्माण किया जायगा। चतुर्थ वर्ग में अत्यधिक जटिल एवं प्रचुर धन साध्य योजनाएं, जैसे सिंचन योजनायें अथवा विद्युत एवं औद्योगिक परियोजनायें रखी गयी हैं। ये योजनाएं राज्य स्तर पर पूर्णतया राजकीय साधनों या निजी उद्योगपतियों द्वारा सम्पन्न की जायंगी।

प्रदेश की जनशक्ति का पूर्ण उपयोग करने की दृष्टि में जिला तथा विकास खंडीय स्तर से ही नियोजन आरम्भ करने पर विशेष बल दिया गया है क्योंकि यही वे क्षेत्र हैं जिनका जनता से सीधा सम्पर्क होता है। अभी गांवों में जन शक्ति का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। अत पंचायतों और ग्राम सहकारी समितियों पर इस शक्ति के समुचित उपयोग का भार डाला जायगा। गांवों के स्कूल भी इन संस्थाओं से सम्बद्ध कर दिये जायेंगे जिससे हमारे बच्चे इन वर्तमान और भावी कार्यों के महत्व को समझें तथा इसका भार उठाने योग्य बन सकें। सरकारी विभाग इन संस्थाओ को और शक्तिशाली बनाने के लिए सहायता प्रदान करेंगे। पंचायतें और सहकारी समितिया अपनी योजनाएं बनाने और उनके कार्यान्वयन में पूर्ण स्वातन्त्र्य का उपयोग करेंगी।

ग्राम स्तरीय कार्यक्रम के कृषि उत्पादन को प्रमुखता दी जावेगी। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्तमान साधनो का पूरा उपयोग करने के साथ अन्य उपयोगी वैज्ञानिक साधनो का विकास किया जायगा। पंचायतों को वर्तमान तथा नयी सिंचाई नालियों के रख रखाव का काम भी सौंपा जायगा।

अधिकाधिक कम्पोस्ट तथा हरी खाद तैयार कराने तथा जापानी ढग से धान की खेती का क्षेत्र विस्तार कराने का कार्य विकास खण्डीय अधिकारियो को दिया जायगा। वे उत्तर प्रदेशीय ढग से धान की खेती, लाइनों में बोआई चार एकड़ तक के छोटे खेतों में गेहूँ की डिबलिंग द्वारा बोआई आदि को भी अधिकाधिक प्रोत्साहन देने का काम देखेंगे।

साधन सहकारी समितियों के संगठन में इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जायगा कि यथा सम्भव प्रत्येक परिवार को प्रतिनिधित्व प्राप्त हो। सामुदायिक विकास कार्यक्रम में युवक मंगल दलों तथा महिला एवं युवति मंगल दलों का बहुत महत्व पूर्ण स्थान है। इन दलों को संगठित करने का कार्य पंचायतों को सौंपा जायेगा। जो विकास अधिकारियों की सहायता से पूरा करेंगे।

जीवन का सौंदर्य

[पृष्ठ २ का शेष]

करते हैं। वादविवाद का स्वभाव अच्छा नहीं। इससे केवल कटुता बढ़ती है अन्य जनों का हृदय परिवर्तन नहीं होता। विवाद के स्थान सम्वाद चाहिए, सम्वाद में प्रीति और स्नेह की भावना होती है। आपस में एकता होती है सौहार्द पनपता है। प्रेम का विकास होता है, जीवन सुन्दर होता है। जीवन का सौन्दर्य अपने में वह आकर्षण लिए रहता है, जो दुर्जन मनुष्य तक को सज्जन बना देता है। लोगों को अन्य जनों के सुधार की तो धुन है, पर वे अन्तर्मुख होकर आत्म निरीक्षण प्रायः नहीं करते और न ही स्व सशोधन करते हैं, उनमें जीवन का सौन्दर्य न होने से वे साधनहीन अनकृत कार्य नहीं होते। जिन महात्माओं ने अपने जीवन में साधना की है, जीवन का विकास किया है, उनके जीवन की झाकी देखकर उनकी मृत्यु के पश्चात भी लोगों पर उनका प्रभाव पड़ा है क्योंकि उनके जीवन सुन्दर रहे है। उनकी जीवनचर्या मे सत्य देखा गया है, उनके व्यवहार मे सत्य प्रेम का समन्वय दीखा है। उनके आचार की पवित्रता, उनके विचारों की शुद्धता के अनुकूल रही है। उनमें आत्म सम्मान तो देखा गया है, पर वे मधुर भाषी और सदा स्वस्थ रहता है, वे आत्मस्थ जन अपने जैसा ही सबको जानते हैं और गिरे हुए अधम पामर व्यक्ति तक उनके सम्पर्क में आकर सुधरे हैं, उनमें जीवन का सौन्दर्य होता है जो दूसरे मनुष्य में हलचल सी उत्पन्न कर देना है और वह सत्संगति प्राप्त करके अपने दोषों, अपनी कमियों को स्वयं दूर करने में समर्थ हो जाता है।

उन्नत होते मनुष्य में यदि अपनी श्रेष्ठता का अभिमान तथा दूसरों को अधम समझने का बुरा भाव उत्पन्न हो जाता है तो वह ही उसके पतन का कारण बनता है। जो आज अधम कहा जाता है, सम्भव है उन्नति करने वाले की भी पहले वैसी ही अवस्था हो और आज वह उन्नति करने के मद में चूर है तो समझना चाहिए कि उसने कुछ उन्नति तो अवश्य की है पर हृदय परिवर्तन तो हुआ ही नहीं। हृदय में भाव अभी मैले ही हैं वे पवित्र नहीं हुए। ऐसा मनुष्य दूसरो का तिरस्कार करता है और अपना मान खो देता है उसका कोई आदर नहीं करता उन्नति करते हुए सावधानता इसीलिए अत्यन्त आवश्यक है। जो व्यक्ति उन्नति की स्थिति में सावधान नहीं वह अभिमान में अपनी चेतनता खो देता है और उससे इसलिये अनर्थ होते हैं क्योंकि वह समझता है कि जनता में उसके पांडित्य तथा योग्यता की प्रतिष्ठा तो हो ही चुकी है और जबकि उसका सामाजिक जीवन ऊंचा है तो वह चाहे कुछ भी करे उसकी प्रतिष्ठा बनी ही रहेगी। ऐसा व्यक्ति अपने निजी जीवन को कलुषित करता हुआ लजाता नहीं और धीरे-धीरे अपना प्रभाव तक खो देता है। उन्नति के पथ पर चलने वाले पथिक को, धर्मपथ के पथिक को, अपने सुपथ पर चलते हुए सावधान रहना चाहिए कि कहीं वह सतपथ से भटक तो नहीं रहा, पगडंडियों में तो नहीं उलझ गया। सुपथ पर चलते हुए व्यक्ति का जीवन स्थिर और दृढ़ रहना चाहिए उसकी नीति सरल सच्ची ध्रुव रहनी चाहिये तभी वह दिव्य ऐक्य में पा सकेगा, अभय रह सकेगा और अपने शुद्ध प्रेममय आपस के व्यवहार से अपना जीवन सुन्दर और प्रभावशाली बना सकेगा। जो उदार जन नैतिक नहीं होते, जिनमें आपस में ऋत चरितार्थ नहीं होता वे गिर जाते हैं। उदारता के साथ पवित्रता होनी अनिवार्य है। यही नैतिकता है। जिनमें नैतिकता है व्यवहार में और विहार में, वही विश्वास पात्र होते है। उनमें जनता की श्रद्धा स्वयमेव उभरती है। लोग प्रभाव चाहते हैं पर नैतिकता अपने जीवन में लाने से कतराते रहते हैं। हमारा पारिवारिक निजी जीवन हमारे वचनो के अनुकूल रहे तभी समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी। विहार में नैतिकता बहुत कम देखने मे आ रही है अनैतिकता, अश्लीलता न हो तो मनोरंजन ही नही समझा जाता। हमारा मनोरंजन कैसा है? यह जीवन की परख है। यदि मनोरजनयुक्त है, वह शुद्ध है, तो हम अवश्य उन्नत हैं, सुसंस्कृत हैं। आजकल का सभ्य व्यक्ति प्राय. सुसंस्कृत नहीं होता, उसमें बाहरी शोभा अवश्य देखी जाती है पर व्यवहार शोभाहीन ही होता है। हमारा मनोरंजन सुन्दर हो चित्त प्रसन्न करने वाला हो हम स्वयं आनन्द अनुभव करें तथा अन्य जन भी आनन्द अनुभव करें और वे मनोरंजन के क्षण हमारी आत्मोन्नति में हमारे जीवन के विकास में बाधक न हो तो अवश्य हमारा जीवन उत्तम है सुन्दर है। जिसका जीवन सुन्दर में उसमें अवसाद और विषाद नहीं होता। वह खिले फूल के समान सुगन्धिमय होता है। वह अपने जीवन के सौन्दर्य से सौरभ फैलाता है तथा जीवनज्योति का प्रकाश फैलाता है।

*

आर्यसमाज, लड्डूघाटी, पहाड़गंज, नई दिल्ली का प्रस्ताव

आर्यसमाज लड्डूघाटी पहाड़गंज नई दिल्ली का यह अधिवेशन कानपुर कार्पोरेशन के एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा किये जा रहे उन प्रयत्नों की घोर निन्दा करता है। जो कि वे आर्यसमाज कानपुर के सामने स्थित चिरकाल से सुप्रसिद्ध "दयानन्द पार्क" का नाम हटाकर एक विदेशी नेता लेनिन के नाम पर "लेनिन-पार्क" रखने का प्रयास कर रहे हैं। यह समाज उक्त अधिकारी महोदय के इन दुष्प्रयत्नों की सर्वथा अनावश्यक अन्यायपूर्ण, भावोत्तेजक तथा राष्ट्रविरोधी मानता है। महर्षि दयानन्द विश्व की एक महान विभूति थे। वे इस देश को राष्ट्रीयता तथा नव जागरण का सन्देश सुनाने वालों में अग्रणी थे। उन्हीं के देश में कानपुर के उक्त अधिकारी द्वारा उनके पवित्र नगर की उपेक्षा किया जाना भारतीय संस्कृति के प्रति उपेक्षा समझी जावेगी जो कि उनके असंख्य उपकारों के प्रति कृतघ्नता तथा अभद्रता का परिचायक है।

इस समाज को पूर्ण विश्वास है कि कानपुर की आर्य जनता तथा वहा के अन्य राष्ट्र-प्रेमी नागरिक इस कलंकमयी दुर्घटना को कदापि घटित न होने देंगे। दिल्ली की समस्त आर्यजनता उनके इस दिशा मे किये गए सत्प्रयत्नों को सफल देखने को इच्छुक हैं तथा आवश्यकता पड़ने पर तन, मन, और धन से पूर्ण सहयोग दने को तैयार हैं।

यह समाज उक्त अधिकारी महोदय से भी निवेदन करता हुआ आशा प्रकट करता कि वे अपने सद्विवेक से काम लेकर राष्ट्रीय भावना विरोधी अपने प्रयत्नों को तिलाजलि दे देंगे। अन्यथा उनका यह दुराग्रह तथा दुष्प्रयत्न आर्य जाति के एक एक बच्चे के लिए चुनौती समझी जाएगी और इस अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने को वाधित करेंगे।

आर्यसमाज तीमारपुर का प्रस्ताव

आर्यसमाज तीमारपुर देहली का यह अधिवेशन कानपुर कार्पोरेशन के एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा किए गये उन प्रयत्नो की घोर निन्दा करती है जो कि वे आर्यसमाज कानपुर के सामने स्थित चिरकाल से सुप्रसिद्ध 'दयानन्द पार्क' का नाम हटाकर एक विदेशी नेता 'लेनिन' के नाम पर लेनिन पार्क' रखने का प्रयास कर रहे हैं।

यह समाज उक्त अधिकारी महोदय के इन दुष्प्रयत्नों को सर्वथा अनावश्यक अन्यायपूर्ण, भावोत्तेजक तथा राष्ट्र विरोधी मानता है। महर्षि दयानन्द विश्व की एक महान् विभूति थे। वे इस देश को राष्ट्रीयता तथा नव जागरण का सन्देश सुनानेवालो मे अग्रणी थे। उन्हीं के देश में कानपुर के उक्त अधिकारी द्वारा उनके पवित्र नाम को उपेक्षा किया जाना भारतीय संस्कृति के प्रति उपेक्षा समझी जावेगी जो कि उनके असंख्य उपकारों के प्रति कृतघ्नता तथा अभद्रता की परिचायक होगी।

इस समाज को पूर्ण विश्वास है कि कानपुर की आर्य जनता तथा वहा के अन्य राष्ट्र प्रेमी नागरिक इस कलंकमयी दुर्घटना को कदापि घटित न होने देंगे। देहली की समस्त आर्य जनता उनके इस दिशा में किये गये सत्प्रयत्नों को सफल देखने की इच्छुक है तथा आवश्यकता पड़ने पर तन, मन और धन से पूर्ण सहयोग देने को तैयार है।

यह समाज उक्त अधिकारी महोदय से भी निवेदन करता हुआ आशा प्रकट करता है कि वे अपने सद्विवेक से काम लेकर राष्ट्रीय भावना विरोधी अपने प्रयत्नों को तिलाजली दे देंगे। अन्यथा उनका यह दुराग्रह तथा दुष्प्रयत्न आर्य जाति के एक एक बच्चे के लिए चुनौती समझे जावेंगे और इस अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष करने को वाधित करेंगे।

—मानकचन्द आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज तीमारपुर, देहली

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०

आश्विन,२६ शक १८८१ कार्तिक कृ० २
(ता० १८ अक्तूबर १९५९)

आर्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ४९९३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

अल्प-बचत क्यों और कैसे?

(विजय कुमार)

स्वतन्त्रता मिलने के बाद से इस देश की चतुर्मुखी प्रगति के लिए केन्द्रीय एवं राज्य सरकारें सुनियोजित प्रयास कर रही है। खाद्योत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई की नवीन सुविधायें प्रदान करने के लिए कच्ची-पक्की सड़कों की लम्बाई बढ़ाने के लिए बाध और जलाशयों के निर्माण द्वारा घर-घर बिजली पहुँचाने के लिए, ऐसे महत्वपूर्ण उद्योगों की स्थापना के लिए जिनसे अन्य उद्योगों की स्थापना को आप से आप बढ़ावा मिले और अधिक से अधिक लोगों को शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से नए-नए स्कूल और अस्पताल खोलने के लिए योजना के अनुसार प्रयत्न हो रहे हैं। इतने बड़े-बड़े काम शीघ्र ही पूरे किये जा सकें, इसके लिए रुपयों की बड़ी जरूरत है। और इस जरूरत को हमें ही पूरा करना होगा।

अल्प-बचत योजना हमें देश की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए धन एकत्र करने का सुनहला सुअवसर प्रदान करती है। योजना की विभिन्न मदों में रुपया सरलता से लगाया जा सकता है। अल्प-बचत दान, चन्दा अथवा उपहार नहीं है। यह बैंक में जमा किए गये धन की ही तरह है तथा उस पर ब्याज भी मिलता है। निम्नांकित मदें अल्प-बचत की मदें कही जाती हैं। (१) १२ वर्षीय नेशनल प्लान सेविंग सर्टिफिकेट। ये सर्टिफिकेट १ जून,१९५७ से जारी किये गये हैं। इसके अतिरिक्त १ जून, १९५७ से पहले जारी किये गये तथा उस तिथि से बन्द कर दिये गये १२ वर्षीय तथा ७ वर्षीय नेशनल सेविंग सर्टीफिकेट और १० वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफिकेट भी इसी मद में आते थे। (२) १ जून, १९५७ से जारी किये गये १० वर्षीय ट्रेजरी सेविंग डिपाजिट सर्टिफिकेट। इनमें उस तिथि से पूर्व खरीदे गये १२ और ७ वर्षीय नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट और १० वर्षीय नेशनल प्लान सर्टिफिकेट भी शामिल हैं। (३) १५ वर्षीय एन्यूइटी सर्टिफिकेट (४) पोस्ट आफिस सेविंग बैंक डिपाजिट (५) क्यूमलेटिव टाइम डिपाजिट स्कीम।

यह आवश्यक नहीं कि किसी भी मद में रुपया लगाने का आरम्भ बड़ी धन-राशि से किया जाय। सच तो यह है कि अल्प-बचत की मदें उन लोगों के लिए ही हैं जो एक बार में थोड़ी रकम ही बचा सकते हैं। पोस्ट आफिस सेविंग बैंक का खाता मात्र २ रु० से खोला जा सकता है। इसी प्रकार ५ रु० का भी सेविंग सर्टिफिकेट खरीदा जा सकता है। उन लोगों की सुविधा के लिये जो एक साथ ५ रु० का सर्टिफिकेट भी नहीं खरीद सकते सेविंग स्टाम्पों का प्रबन्ध है पोस्ट आफिसों में २५ और और ५० नये पैसे तथा १ रु० के सेविंग स्टाम्पों की बिक्री की जा रही है। ये स्टाम्प (टिकट) पोस्ट आफिसों से निःशुल्क मिलने वाले सेविंग कार्ड पर चिपका दिये जाते हैं। इस प्रकार चिपकाये गये सेविंग स्टाम्पों का मूल्य जहां ५ रु० या १० रु० हो जाता है, कार्ड के बदले में १२ वर्षीय नेशनल प्लान सेविंग सर्टिफिकेट जारी कर दिये जा सकते हैं।

सम्भवतः यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि धन बचाने की इच्छा विद्यमान हो तो कोई भी व्यक्ति थोड़ी-थोड़ी बचत कर सकता है। उदाहरण के लिए यदि किसी परिवार में कोई व्यक्ति बीड़ी सिगरेट पीने का आदी हो तो परिवार के अन्य सदस्य उस व्यक्ति से पहले की अपेक्षा कम बीड़ियां या सिगरेट पीने का आग्रह कर सकते हैं। यदि प्रतिदिन पी जाने वाली सिगरेटों की संख्या में दो की कमी भी कर दिया जाय तो माह के अन्त में कुछ न कुछ रुपये अल्प-बचत की किसी मद में लगाने के लिए बचाया जा सकेगा। इसीप्रकार किसी समारोह अथवा उत्सव के अवसर पर मिठाइयों में या अन्य किसी पदार्थ में थोड़ी सी कमी कर कुछ रुपया आसानी से बचाया जा सकता है। बच्चों में आरम्भ से ही कुछ न कुछ बचाने की आदत डालना प्रत्येक दृष्टिकोण से लाभ दायक सिद्ध होगा। माता-पिता अपने बच्चों से कह सकते हैं कि जेब खर्च या त्यौहारी आदि के रूप में उन्हें जो पैसा मिलता है उसमें से थोड़ा-थोड़ा बचाकर वे एक सर्टिफिकेट खरीद लें। अभी हाल में बुन्देलखण्ड के बच्चों ने इस दिशा में बड़ा सुन्दर उदाहरण रखा है। विशेषज्ञों के मतानुसार यदि इस प्रदेश का प्रत्येक नागरिक चार आना भी नियमित रूप से बचा सके तो निर्माण और विकास की अधिकांश योजनाएं सरलता से पूरी की जा सकेंगी।

अल्प-बचत की मदों में धन लगाने वाले लोगों को अनेक लाभ मिलते हैं। प्रथम अल्प-बचत के अन्तर्गत ब्याज की दर आकर्षक है। दूसरे, अल्प-बचत की मदों में लगाया गया रुपया सुरक्षित रहता है। तीसरे, इस योजना के अन्तर्गत कर-दाताओं को निम्नलिखित सुविधाएं प्राप्त हैं। (क) नेशनल प्लान सेविंग सर्टिफिकेट ट्रेजरी सेविंग डिपाजिट सर्टिफिकेट और पोस्ट आफिस सेविंग बैंक में मिलने वाला ब्याज तथा एन्यूइटी सर्टिफिकेट पर प्रति माह दी जाने वाली रकमें भारतीय आयकर से मुक्त कर दी गई हैं और इन मदों में रुपया लगाने वालों की आय में इनसे प्राप्त होने वाली आय का समावेश नहीं किया जाता। (ख) सम्पत्ति कर की वसूली के लिए सम्पत्ति की जो परिभाषा दी गयी है उसमें दस वर्षीय ट्रेजरी सेविंग डिपाजिट सर्टिफिकेट, १५ वर्षीय एन्यूइटी सर्टिफिकेट, पोस्ट आफिस सेविंग बैंक डिपाजिट, पोस्ट आफिस कैश सर्टिफिकेट तथा नेशनल प्लान सेविंग सर्टिफिकेट नहीं आते। (ग) नेशनल प्लान सेविंग सर्टिफिकेटों और ट्रेजरी सेविंग डिपाजिट सर्टिफिकेटो पर सम्पत्तिकर तभी लगाया जा सकता है जब सर्टिफिकेट होल्डर की मृत्यु के समय उसकी आयदाद उक्त कर की वसूली के लिए उपयुक्त समझी जाय। इसी प्रकार यदि धन लगाने वाले की मृत्यु के समय अन्य राशियों से उसकी आयदाद पर सम्पत्ति कर लगाया जा सकता है तो एन्यूटी सर्टिफिकेटों की बची हुई अवधि में उन पर प्रतिमाह मिलने वाले ब्याज के औसत पर ही उक्त कर लगाया जा सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सम्पत्तिकर एन्यूइटी सर्टिफिकेटों के पूरे मूल्य पर नहीं प्रत्युत बचे हुए मूल्य पर ही लगाया जा सकता है। आशा है, इन सुविधाओं एवं लाभ को देखते हुए प्रदेश के निवासी अल्प बचत योजना को सफल बनाने में हर संभव सहयोग प्रदान करेंगे। ★

बाबूराम भारती द्वारा अपायवर्दीय आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाईमार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

रजिस्टर्ड नं० १८१८

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

ओ३म् ओ३म्

आर्यमित्र

वार्षिक मूल्य ८)] आर्य्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र [वार्षिक मूल्य विदेश में

एक प्रति का २० नये पैसे] लखनऊ, रविवार कार्तिक १०, शक १८८१, कार्तिक शुक्ल १, वि० २०१६, १ नवम्बर, १९५९ ई० [१६ शिलिंग

दयानन्द दीक्षा शताब्दी

उठो, आर्यगण उठो, करो मूल्यांकन उनका,
सौ वर्षों से बढ़ता जाता ऋण है जिनका।

सौ वर्षों के दीर्घकाल की सरिता बहती
युग के संघर्षों के तूफानों को सहती,
दीक्षा-तट का सम्बल पाकर लहराती है
कीर्ति-सिन्धु की ओर आज बढ़ती जाती है।

इस नभ ने दीक्षान्त अनेकों सुने सुनाए
गुरु-शिष्यों के अमर भाव भू पर फैलाए,
लेकिन दीक्षा का कैसा यह ढंग निराला
जहाँ शिष्य ने अपने को आहुत कर डाला॥

गिरि-गह्वर सर सरित नगर औ डगर डगर में,
दीक्षा का तप-तेज आज व्यापक घर घर में,
उठो, आर्यगण उठो करो मूल्यांकन उनका,
सौ वर्षों से बढ़ता जाता ऋण है जिनका।

सत्कर्मों के धनी, गुणों के पावन माता,
उपाशय के मन्त्र अर्थ के ज्ञाता ज्ञानी,
असि-धारा-व्रत-स्नातक बन चलते रहना,
दयानन्द वर वत्स, सभी संकट सह लेना

लाख ग्रन्थ इस भू मण्डल को अर्पित किए हैं,
मानव एक जनता को वेद अर्पित किए हैं,
वैदिक नद पर पाखण्डों की काई छाई,
धर्म ध्वजा नभ से नीचे गड्ढे में आई,

देखो, भारत वेद-वेद प्रतिक्षण कहता है
वेद विरोधी कर्मों में पर रत रहता है
यह विषम व्याधि व रोग माँ को खाता है
आर्ष अमर सन्देश लुप्त होता जाता है।

काश्मीर से हिन्द सिन्धु तक धरती तेरी,
जीर्ण-शीर्ण जर्जरित हुई है माता मेरी
अन्तिम क्षण में पुत्र मौत की घड़ियाँ गिनती
कलपाई सी पूछ रहा है हमें बिलखती।

अपना भौतिक स्वत्व लटाकर उसे बचाओ
माँ संरक्षण हेतु प्राण अर्पित कर आओ
इस दीक्षा के हित, वार सर्वस्व दिया है
उठो, आर्यों उठो आज तम हो दुनिया है

उठो नमस्ते वालो, एकमेव हो जाओ
मुख्य धर्म है वेद, अमर सन्देश सुनाओ,
परम पिता के पुत्र आज ही सत्वर बोलो
क्या करना है ज्ञान-तुला पर इसको तोलो।

अमित रक्त स्नेह बिन्दु तक लुटा लुटा कर
तन-मन-धन मानवता के हित मिटा मिटा कर
मथुरा के आचार्य-शिष्य बन सभी सहेंगे
दीक्षा की है शपथ संगठन बद्ध रहेंगे॥

—भारत भूषण त्यागी, एम ए ग्वालियर

वर्ष ६१

अवैतनिक सम्पादक—
उमेशचन्द्र स्नातक, शिरोमणि, एम. ए.

अङ्क ४२

दीपावली का दार्शनिक रहस्य

[लेखक : डाक्टर विश्वनाथप्रसाद वर्मा, एम.ए (पटना), एम.ए. (शिकागो), पी-एच डी (शिकागो) प्रोफेसर, राजनीति, पटना विश्वविद्यालय]

प्रायः जब मैं दीपावली पर विचार करने लगता हूँ तो हृदय दुःख से भर आता है। मालूम पड़ता है कि यह बड़ा ही क्रूर दिवस है। आज ही के दिन सन् १८८३ में ऋषिवर स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्राणान्त हुआ था। आज ही के दिन सन् १९०६ में टिहरी में स्वामी रामतीर्थ का गंगा में डूबने से निधन हुआ था। मरने के समय दयानन्द की अवस्था ५९ वर्ष की थी अतः उनके मरण से उतना दुःख नहीं होता जितना ३३ वर्ष की अवस्था में रामतीर्थ की मृत्यु से। फिर भी वज्र के समान शक्ति रखने वाले दयानन्द और वेदान्त केशरी रामतीर्थ के निधन का दिन होने से दीपावली का दिन मुझे शोकाग्रस्त कर देता है।

जब मैं बाल्यावस्था में था तब दीपावली के दिन की प्रतीक्षा करता था। उस रात्रि को दीपों को जलाने में और बुझे दीपों को इकट्ठा करने में बड़ा निर्दोष आनन्द मिलता था। आज अपनी बच्चों को दीपों को इकट्ठा करने में निमग्न देखकर अपना खोया बचपन याद आ जाता है और समय की दीर्घ राशि का अतिक्रमण कर उन पुराने दिनों को पुनरपि स्वायत्त करने की मधुर कल्पना का अनायास उदय होता है। जब मैं स्कूल और कालेज में पढ़ता था तब पटाका और फुलझड़ी से खेलने में बड़ा आनन्द आता था। किन्तु जब से दयानन्द और रामतीर्थ के जीवन चरित्र को मैंने पढ़ा उस समय से सरल अकृत्रिम उल्लास का स्थान आंशिक निर्वेद और वैराग्य ने ले लिया।

कभी-कभी दीपावली के प्रकाश की भर्त्सना करने की इच्छा होती है। इस कृत्रिम चमक-दमक से क्या होना है? क्या इस प्रकाश के माध्यम में भीषण सामाजिक श्रृंखलाओं का चित्रण हम नहीं देख सकते? कभी सन्देह होने लगता है कि दीपावली की रात्रि की यह आभा ऋषि दयानन्द के दिव्य चितानल के प्रकाश की विकृति तो नहीं है? हृदय से एक वेदना निकलती है—अरी दीपों की अवलियों! तुम्हें लज्जा नहीं मालूम होती, संसार में जब इतना उत्पीड़न, हाहाकार, शोषण, दमन वर्त्तमान है, तब यह बड़े-बड़े नगरों में इतना प्रदर्शन कैसा? इतिहास की यह कैसी विडम्बना है?

किन्तु मर्माज शालीय विश्लेषण से ऊपर हटकर जब दीपावली के दार्शनिक रहस्य पर मैं वि--- करता हूँ तब वही प्रेरणा है। दीपावली का यह दार्शनिक तत्त्व है कि शरीरस्थ आत्मा को परमात्मदर्शी बनने के लिए मांस-पिण्ड का अग्निदान करना होगा। जीते जी जो पुरुष इस काया को विराट् शक्ति का यन्त्र बनाकर आत्मसंयमयोगाग्नि के द्वारा ब्रह्माग्नि में इसका हवन करेगा वह शरीर त्यागने के बाद एक ऐसी अमर दीपमालिका का प्रकाश प्रदीप्त करेगा जिसमें चिरन्तन ज्योति का विस्तार होगा।

ज्ञानाग्नि संचार द्वारा भास्वर सत्य दीप का दर्शन ही भारतीय संस्कृति का महान् संदेश है और जहाँ-जहाँ मानवोन्नयकारी निर्मल आदर्शों का क्रियान्वयन हुआ है वहाँ यही आदर्श कार्य कर रहा था। छः वर्षों की अनवरत साधना और कठिन व्रतानुसरण के बाद ही अन्ततः बोधिवृक्ष के नीचे भगवान् शाक्यसिंह को उस सत्यदीप की प्राप्ति हुई जिसके ज्वलंत आलोक से एशिया में एक युगान्तर का आरम्भ हुआ। प्रातः स्मरणीय बाल ब्रह्मचारी आचार्य शंकर को इसी सत्यदीप का दर्शन करने से विलक्षण मेधोन्मेष की शक्ति प्राप्त हुई है। प्रोटेस्टैण्ट सुधारक बिशप ह्यूगो लैटिमर ने अपने शहादत के समय कैण्टरबरी के आर्कबिशप टामस क्रैनमर से कहा था—सत्य धर्म की अग्नि दीपमालिका को प्रज्ज्वलित करने के लिये आज मैं इस नश्वर शरीर का हवन करूंगा। गुरु तेगबहादुर और वीर वैरागी बन्दा, इसी ज्ञानालोक के लिये त्याग का व्रतधारण किये हुए थे।

महातेजस्वी दयानन्द के प्राण आततायियों के द्वारा हरे गये। साधनाग्नि से वासनाओं को भस्मसात करने वाला यह ऋषि राजस्थान के एक रजवाड़े में ब्रह्मचर्य का प्रचार करने के कारण भोगलिप्त नरनारियों के षडयंत्र से अपने दिव्य शरीर से हाथ धो बैठा। ऋषि का आत्मा आज दीपावली को सन्देश दे रहा है—वह चाहता है कि परमात्मा की सन्तान अपने अमूल्य समय को सत्य ज्ञाना लोक के अनुसंधान में लगावे। आर्यावर्त देश की पापराशि समूल दग्ध तभी हो सकती है जब ब्रह्मकर्म समाधि की सच्ची दीपमालिका का प्रकाश बहुतर रूपेण प्रज्ज्वलित होगा। कृत्रिम भौतिक चकाचौंध से कुछ नहीं हो सकेगा। हमें उस दिव्य तेज की आवश्यकता है जो भारतवर्ष के महात्माओं के जीवन में व्यक्त हुआ था। अन्यथा दीपावली का प्रकाश उधार मांगा हुआ प्रकाश ही रहेगा। हमें 'भगवद्धर्म' की आवश्यकता है जैसा रामतीर्थ कहते थे। कृत प्रयत्न होकर ज्ञान के अनुसंधान में आज हमें यात्रा प्रारम्भ कर देनी है। ज्ञान की शलाका ही हमारे कर्तृत्व को फलप्रद बना सकती है। दिव्य सतत चिचिन्तना जनित आत्मज्ञान के आलोक से, जो मरणधर्मा देशकाल कारणावादावसंबद्ध मानव समस्त वासनाओं, एषणाओं और पाशों को छिन्न और दग्ध कर सके वही दयानन्द और रामतीर्थ के जीवन के रहस्य को जानता है और वही दीपावली के नैतिक और आध्यात्मिक रहस्य को समझता है। ★

महर्षि दयानन्द की अन्तिम घड़ियां—

वह दीपावली का दिन !

[लेखक : श्री कृष्णदत्त जी, एम०ए०, बी०एड०, हैदराबाद]

कार्तिक अमावस्या सं० १९४० वि० मंगलवार का वह भीषण दिवस मंगलकारी भगवान्-भास्कर ने प्रातः ज्यों ही अपना नेत्र खोला, ऐसा लगा मानो किसी आन्तरिक वेदना ने उन्हें रात भर संतप्त कर रखा था और अविरल रक्तपूर्ण अश्रु प्रवाह के कारण उनके सतेज नेत्र से धवल प्रखर किरणों के स्थान पर रक्तिम और शिथिल रश्मियां प्रकट हो रही हैं।

अजमेर नगरी में एक कोठी जिसके एक कमरे में कुछ भक्तों से घिरे हुए महर्षि दयानन्द का शरीर पलंग पर पड़ा हुआ है। योगाभ्यास, ब्रह्मचर्य पालन तथा व्यायामादि से परिपुष्ट काया अब अतिकृश होकर अस्थिपंजर मात्र रह गई है। पास में खड़े सभी श्रद्धालु-भक्तों के म्लान मुख से वेदना-मिश्रित दुश्चिन्ता प्रकट हो रही है। उदयपुर नरेश के द्वारा भेजे गये एक भक्त, पाण्ड्या मोहनलाल जी के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है। डा० लक्ष्मणदास डबडबाई और फूली हुई आंखों से चपलता के साथ, औषधोपचार में तन्मय, दौड़-धूप कर रहे हैं। लाहौर के जीवनदास निर्जीव-निश्चेष्ट से हो पलंग के पायताने की ओर भूमि पर बैठे निर्निमेष भावी अमंगल की कल्पना कर-करके शिथिल पड़ते जा रहे हैं। उन्हीं के साथी, विज्ञान के प्रकाण्ड-विद्वान् पं० गुरुदत्त दीवार से चिपके जिज्ञासु बालक की भांति संज्ञाहीन हो खड़े-खड़े देख रहे हैं। वहां का सम्पूर्ण दृश्य उनके भौतिक विज्ञान क्षेत्र से परे की वस्तु है। उनकी कौतूहल मिश्रित कातर-दृष्टि महर्षि की वेदना पीड़ित देह पर जमी हुई है। वीतरागी गोपाल गिरि महाराज श्रद्धापूर्ण स्नेह-बन्धन में आबद्ध अपने हार्दिक संताप को द्रवीभूत कर नेत्रों के द्वार से प्रवाहित करते चले जा रहे हैं। शिष्यवर्य आत्माराम और भीमसेन चेतनाशून्य हो सेवा-सुश्रूषा में यन्त्रवत् लगे फिर रहे हैं। नेत्र द्वार से निकल कर गिरने से पूर्व ही सूखते हुए उनके अश्रु बढ़े हुए हार्दिक-ताप तथा आन्तरिक वियोगाग्नि के परिचायक हैं।

सहसा डा० न्यूटन का वहां प्रवेश हुआ। उस विदेशी चिकित्सक के जीवन में मानो वह सबसे गम्भीर तथा हृदयविदारक दृश्य था। देखते ही वह सिहर उठा। जब उसे यह ज्ञात हुआ कि वे ही स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं तो किंचित् नत मस्तक होकर उसने एक ठण्डा नि:श्वास छोड़ा।

धौंकनी के समान श्वास चल रहा था। शरीर पर नाभि तक छाले उभर आये थे। श्वास-प्रश्वास के तीव्र वेग से शरीर की एक-एक नाड़ी और एक-एक तन्तु हिल जाता था। सम्पूर्ण देह में दाह सी लगी हुई थी। देखने वाले सहसा अनुभव कर रहे थे कि शरीर प्राणान्तकारी पीड़ा से पीड़ित है। किन्तु रोग-ग्रस्त महाराजा की अवस्था सबसे भिन्न थी। शरीर की सीमातीत पीड़ा को प्रकट करके भी मुख कान्तिहीन नहीं हुआ था। मुख मण्डल पर अनुपम शान्ति छाई हुई थी। बीच-बीच में जब वेदनावेग तीव्र हो जाता था, तो स्वामी जी आँख मूंदकर मौन धारण कर लेते थे। मुंह से न 'आह' निकलती और न कराहना कर्णगोचर होता था। यूनानी हकीम मौलवीपीर जी पधारे। स्वामी जी महाराज के सहन-सामर्थ्य को देख स्तम्भित हो गए। सहसा बोल उठे, "ऐसा धैर्यवान इस धरती-तल पर न होगा।"

दोपहर में—

महाराज के मुख से कुछ शब्द मुखरित हुए। भक्तजनों के मुख-मण्डल पर प्रसन्नता की प्रदीप्ति झलक उठी। सबके हृदयाकाश पर छाये हुये दुःख के घनीभूत बादलों के पीछे से आशा की पतली सी रेखा दीख पड़ी। किन्तु वह घनघोर अन्धड़ से पूर्व की शान्ति थी, निर्वाण से पूर्व के दीपक की आभा थी, सूर्यास्त से पहले का प्रकाश था।

महर्षि ने, शौच से निवृत्त हो भोजन की इच्छा प्रकट की; किन्तु खा नहीं सके। भक्त समझ रहे थे कि शरीर रोग-मुक्त होता जा रहा है, वस्तुतः रोग अन्दर ही अन्दर अन्तड़ियों को खा रहा था। वेदना बढ़ी हुई थी।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

❀ वैदिक राष्ट्र-गीत ❀

अग्निर्भूम्या मोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु ।
अग्निरन्त पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नय ॥ (अथर्व वेद)

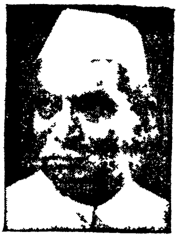
(गीतिका)

अग्नि है इस भूमि में जल में तथा पाषाण में ।
अग्नि व्यापक औषधी में मनुज अन्त प्राण मे ॥
अश्व में, गो आदि पशुओं में हमें मिलती सदा ।
अग्नि को धारण करें हों तेजयुत हम भी तदा ॥ ११ ॥

Agm (Fire) is in the Earth, in the herbs, waters hear Agni, it is in the stores, in man, in kine, iu horse and in all

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० डी० लिट्

शिलान्यास राष्ट्रपति महोदय करेंगे !



अत्यन्त हर्ष की बात है कि मथुरा में २५ दिसम्बर, सन् १९५९ को भारत के राष्ट्रपति महोदय महामान्य डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी ने वैदिक अनुसन्धान भवन का शिलान्यास करना तथा वृन्दावन गुरुकुल में दीक्षान्त भाषण देना स्वीकार कर लिया है। राष्ट्रपति महोदय परम तपस्वी, कर्मनिष्ठ, विद्वान, भारतीय जन-जीवन क प्राण और देश के हृदय सम्राट हैं। अत ये दोनो ही पुण्य कार्य उन्हीं के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हो इससे अधिक समीचीन और गौरवशाली कोई दूसरी बात नहीं हो सकती। दोनों ही पुण्य कार्य शिक्षा और संस्कृति की दृष्टि से राष्ट्रीय महत्त्व क हैं। इनमें देश के विद्वानों और अध्यवसायी विद्यार्थियो को समान रूप से राष्ट्रपति महोदय के द्वारा अभूतपूर्व प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलेगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। इस पुण्य अवसर पर देश के अधिकाधिक नर-नारी मथुरा, वृन्दावन की पवित्र व्रज-भूमि पर एकत्रित होकर राष्ट्रपति महोदय के दर्शन और सम्पर्क से लाभान्वित हो, तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनक आदर्श गुरु प्रज्ञानन्द जी क उस अमर-स्मारक से कर्मक्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए नव-चेतना और नव स्फूर्ति प्राप्त करें जो केवल भारत ही के लिए नहीं, अपितु अखिल विश्व क लिए सदियों तक प्रकाश-स्तम्भ का काम करेगा, यही हमारी मंगलकामना और सानुरोध प्रार्थना है।

सम्पादकीय

लखनऊ—रविवार १ नवम्बर १९५९

निर्वाण-दिवस

आज दीपावली है। आज ही के दिन भारत की दो विभूतियों क जीवन-दीप का निर्वाण हुआ था—एक महर्षि दयानन्द सरस्वती और दूसरे वेदान्त-दर्शन-मार्तण्ड स्वामी रामतीर्थ जी महाराज ! दोनो ही आदर्श कर्मनिष्ठ सन्यासी, विश्व की तेजोमय विभूति और सिद्ध पुरुष थे। दोनों ही महापुरुषों ने अपनी अखण्ड साधना, ऊँचे चरित्र और उज्ज्वल कृतियों से भारत के दिव्य धरा धाम को धन्य किया है ! अतः दोनों ही प्रात स्मरणीय और विश्व-वंद्य हैं।

दीपावली प्रति वर्ष आती है और हमारे हृदय में बाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति हरी करके चली जाती है। प्रश्न यह है कि इतने वर्ष बीत जाने पर भी, क्या महर्षि के जीवन का वह पवित्र उद्देश्य पूरा हो गया जिसक लिए वह जिये और मर मिटे ? क्या भारतीय समाज के संस्कार का, तथा विश्व को आर्य बनाने का वह महत् उद्देश्य सफल हो गया जिसकी साधना में अहर्निशि निरत रहकर महर्षि का बलिदान हुआ ? आइए, दीपावली के प्रकाश में, महर्षि क निर्वाण-दिवस पर, हम और आप जो अपने आपको आर्य कहते हैं तथा अपने को उनके चरणों के निकट बैठने का अधिकारी समझते हैं, इस प्रश्न पर गंभीरता के साथ, आँखें खोलकर, विचार करें।

१२ वर्ष से हमारा देश स्वतंत्र है। इस बीच में हमने सामाजिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी यात्रा की काफी दूरी पार की है। यद्यपि हमारा कथन, समूचे भारतीय समाज के संस्कार और उत्थान का, तथा विश्व को आर्य बनाने का पावन उद्देश्य, जिसकी दिशा महर्षि ने निर्दिष्ट और इंगित कर दी थी, [illegible] होता है [illegible] कि, हमारी [illegible] और मन्द है, मार्ग में आगे बढ़ते हुए पैर लड़खड़ा उठे हैं। किन्तु फिर भी निराशा का कोई कारण नहीं है इसलिए कि, अपने निर्वाण की अन्तिम बेला में, महर्षि हमारे लिए पवित्र थाती के रूप में एक अमर सन्देश, ईश्वर-विश्वास का एक दिव्य प्रकाश छोड़ गये हैं—हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो।

परम पिता परमात्मा का स्मरण करते हुए, इहलीला संवरण करते समय, महर्षि क तेजोमय मुख पर किसी प्रकार की विपदा, विषाद, वेदना और मृत्यु का क्लेश या विकृति की कोई छाया तक न थी। इसकी अपेक्षा, वेद-मन्त्रों और गायत्री मन्त्र का उच्चस्वर से उच्चारण करते समय उनके मुख पर अटल शान्ति और दिव्य प्रकाश था—वह दिव्य प्रकाश जो साधारण व्यक्तियों की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े साधकों और मुनियो के लिए भी प्राप्त करना दुर्लभ है ! वही प्रकाश शास्त्रों में वर्णित जीव का परम पुरुषार्थ है जो आन्तरिक होता है, बाह्य नहीं। उसी प्रकाश के सहारे आर्य जाति बाह्य और आन्तरिक दृष्टि से अपना सम्पूर्ण संस्कार कर, सारे विकार और कलुषता दूर करके, अपने ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचने का शेष यात्रा पूरी कर सकती ह।

महर्षि ने भारतीय समाज को सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से जीवन की प्रत्येक दिशा में अग्रसर होने की प्रेरणा दी। किन्तु अपनी अकर्मण्यता और प्रमाद वश हम उतना आगे बढ़ नहीं पाये जितना बढ़ना चाहिए था। आज भी भारतीय समाज और देश के समूचे जीवन पर दृष्टिपात करते समय हम उसकी उन्नति का प्रवाह अवरुद्ध पाते हैं। व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सदाचार का नितान्त अभाव, झूठ, प्रपंच, दम्भ, अनाचार, पाखण्ड, जुआखोरी और चोर बाजारी का सर्वत्र बोलबाला है। घोर दारिद्र्य, अकाल, दुष्काल, बेकारी, अन्न, वस्त्र, दूध, घी आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं की महगी तथा नितान्त अभाव के कारण देश के करोड़ों प्राणी त्राहि-त्राहि कर रहे हैं ! शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में हमारी प्रगति का यह हाल है कि भारतीय संविधान में देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित कर दिये जाने पर भी हम लोक सभा मे अंगरेजी के गीत गाते नहीं अघाते बल्कि शासन के क्षेत्रों में अंगरेजी भाषा का प्रभुत्व और वर्चस्व कायम रखने के लिए सारी शक्ति लगाकर अपनी दूषित दासता की मनोवृत्ति का ढिंढोरा पीट रहे हैं। स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी का प्रभुत्व कायम रखने के षड्यंत्र में हमारे बड़े से बड़े दिमागदार आदमी शामिल हैं। इससे बढ़कर हमारे लिए लज्जा और परिताप की बात और क्या हो सकती है ? संसार के अन्य किसी स्वतन्त्र देश मे चिराग लेकर ढूंढने पर भी यह दुखद दृश्य नहीं दिखाई देगा। वास्तव में बात यह है कि हमारे आज के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में एक कोढ़, बल्कि कोढ़ में खाज, एक ऐसा विषाक्त फोड़ा, हो गया है जिस का आपरेशन होना नितान्त वाञ्छनीय है। यदि भारतीय समाज के शरीर से इस फोड़े का उचित आपरेशन नहीं होगा, तो, हमारे समाज का अंग प्रत्यंग विगलित होने लगेगा जिसकी दुर्गन्ध और सड़ाध दुनिया के कोने कोने तक फैले बिना न रहेगी ! यदि दुर्भाग्य से ऐसा हुआ तो क्या दयानन्द और गाँधी के अमर उत्सर्ग व्यर्थ नहीं होंगे ?

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि स्वार्थ, विलासिता, अनाचार, कसक और विविध प्रकार के कलुष और विकार की मलिन भावनाओं से भरे समाज राष्ट्र के विषाक्त फोड़े का आपरेशन दयानन्द और गाँधी ऐसा कोई महान् साधक तथा सिद्ध पुरुष ही निर्ममता से कर सकता है जिसने अपन जीवन का ऊँचा लक्ष्य सत्य की, हा केवल सत्य ही की, उपासना और आराधना, करने का बनाया हो—फिर चाहे उसका मूल्य अपने प्राण देकर ही क्यो न चुकाना पड़े।

महर्षि का निर्वाण दिवस हमे अभिनव और अमर सन्देश प्रदान करता है ऐसा सन्देश जो बतलाता है कि आज ही के दिन दयानन्द के रूप मे ऐसी महान् विभूति विश्व क रंगमंच से तिरोहित हुई थी जो गीता-गायक भगवान् कृष्ण द्वारा वर्णित कर्मयोग की सजीव प्रतिमा थी ! अपूर्व ईश्वर निष्ठा आत्मविश्वास, अखण्ड ब्रह्मचर्य, अनुपम आत्मत्याग, स्वदेशानुराग और दिव्य चरित्र की जगमगाती हुई ज्वलन्त ज्योति थी जिसका प्रकाश युगानुयुग तक अक्षुण्ण रहता है, कभी क्षीण नहीं होता। ईश्वर करे, इसी दिव्य ज्योति के प्रकाश में हम अपनी दुर्बलताओं को देख समझ कर वैदिक ज्ञानाग्नि में अपने व्यक्तिगत राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण विकार और कलुषताओं को भस्म कर दें और अपने देश भारत को भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हर प्रकार समुन्नत और बलशाली राष्ट्र बनाकर स्वयं 'आर्य' नाम सार्थक करें तथा विश्व को आर्य बनाने के संकल्प को पूरा कर दिखावें, तभी, हा, केवल तभी, हम समझेंगे कि हमने महर्षि द्वारा निर्दिष्ट और इंगित दिशा में अग्रसर होकर अपने उच्चतम लक्ष्य तक पहुँचने की यात्रा पूरी करली। ★

मथुरा समारोहों को सफल कीजिये

(श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, मेरठ)

समारोहों का स्थगन–

मथुरा में दीपावली के अवसर पर दयानन्द दीक्षा-शताब्दी, गुरुधाम शिलान्यास, आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं अभिनन्दन ग्रन्थ भेट समारोह होने वाले थे। इनके लिये ३०, ३१ अक्तूबर व १, २ नवम्बर १९५९ की तिथियां निश्चित की गई थीं। इन सभी कार्यों की सफलता के लिये प्रयत्न भी किये जा रहे थे। मथुरा के कुछ उत्साही कार्यकर्ताओं ने स्थान प्राप्त करने, बिजली का कनक्शन लेने आदि की व्यवस्था भी पूर्ण करली थी। धन-संग्रह का कार्य भी चल रहा था। अभिनन्दन-ग्रन्थ का प्रकाशन कार्य भी प्रारम्भ हो चुका था। उसके कुछ पृष्ठ छप चुके थे परन्तु अनेक स्थानो के आर्य भाइयों ने इच्छा प्रगट की थी कि रबी की बुआई चल रही है जो दीपावली तक पूरी न हो पायेगी अतः तारीखों को कुछ आगे बढ़ा दिया जाय। मथुरा के व्यापारियो की सुविधा की ओर भी आर्य प्रतिनिधि सभा ने ध्यान दिया। परिणाम यह हुआ कि आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा ने सर्व सम्मति से तिथियों बदलने का निश्चय कर दिया। अब तिथियां २५, २६, २७, व २८ दिसम्बर १९५९ की निश्चित की गई है।

तिथियों के परिवर्तन का सभी को स्वागत करना चाहिये। यह मैं इसलिये निवेदन कर रहा हूँ कि दिसम्बर में उपरोक्त सभी समारोह अधिक व्यापक रूप से सम्पन्न हो सकेंगे। ग्रामीण जनता अपनी फस्ल की बुआई से भली प्रकार निवृत्त हो जायगी और शहरी व्यापारी जनता को भी समारोहों में भाग लेने के लिये अधिक समय मिल सकेगा।

निराशा की बात नहीं–

मुझे आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ ने लिखा है–समारोह स्थगित होने से भी अच्छा ही परिणाम निकलेगा। अधिक उपस्थिति हो सकगी। और काम करने वालों को कुछ समय और मिल जायगा। इसी के साथ उन्होने लिखा है 'परन्तु अब काम में जुट जाना चाहिये। शिथिलता न रहनी चाहिये।' मैं उनकी बात का पूर्णरूपेण समर्थन करता हूँ मेरा विचार भी कुछ ऐसा ही है कि जनता की असुविधाओं को ध्यान में रखकर यदि समारोह दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह के लिये स्थगित किये गये हैं तो उनमें पहिले से भी अधिक उत्तमता लाने का यत्न करना चाहिये। अभी से प्रत्येक विभाग को सक्रिय हो जाना चाहिये। दो मास का समय काफी होता है परंतु उसी समय जब निरन्तर कार्य को गति देने की ओर ध्यान दिया जाय।

समारोहो का स्थगन कई बार होने से कुछ निराशा भी आई परन्तु कोई कारण नहीं कि वह निराशा शीघ्र समाप्त न हो जाय परन्तु उसके दूर करने के लिये कार्यकर्ताओं को काफी उत्साह दिखाना होगा।

इस समय की गतिविधियां–

मेरा अपना विचार ऐसा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, उप-प्रधान, मंत्री एवं अन्य प्रमुख जन अब अपने ही प्रान्त में धन-संग्रह की ओर अधिक ध्यान दें। अपने प्रान्त की आर्य समाजों में जकर धन-संग्रह के दो लाभ होगे। एक ओर आर्थिक सहायता मिलेगी और दूसरी ओर जिलों के कार्यकर्त्ताओ में उत्साह आयेगा। जिले के कार्यकर्ताओ को भी अब यह समझ लेना चाहिए कि उनको प्रत्येक दशा में मथुरा में दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में उत्साहपूर्वक समारोह मनाने है।

दयानन्द दीक्षा शताब्दी–

मैं यहां समारोह के प्रत्येक कार्य का पुनः एक बार सिंहावलोकन कर देना आवश्यक समझता हूँ। कहां तक दयानन्द दीक्षा-शताब्दी का प्रश्न है कुछ मित्रो ने पहले यह कहा था कि ऋषि के निर्वाण दिवस पर दीक्षा शताब्दी का क्या महत्त्व? बात अब समाप्त हो गई ऋषि के निर्वाण दिवस के उपरान्त अब काफी दिन पश्चात् दीक्षा-शताब्दी मनाई जायगी। परन्तु आलोचना के लिए केवल त्रुटि निकालने के लिये यह कहना कि २५ दिसम्बर को दयानन्द महाराज ने गुरु विरजानन्द जी से कोई दीक्षा-नहीं ली थी, उचित नहीं। स्वा० जी की संवत् १९१६ वि० के अन्त में मथुरा में विद्याध्ययन के लिए आ चुके थे। अतः २०१६ में दयानन्द दीक्षा-शताब्दी मनाना कोई असंगत बात नहीं महापुरुषों की स्मृति मे घटना के आसपास की तिथि निश्चत करके समारोह मनाना पूर्णतया युक्ति संगत समझना चाहिये। इस अवसर पर आर्यसमाज को अपने कार्यों का सिंहावलोकन करते हुए आगामी कार्यक्रम बनाने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

गुरुधाम स्मारक–

जहां तक गुरुधाम स्मारक का प्रश्न है, यह सभी स्वीकार करते हैं। गुरु विरजानन्द की टूटी फूटी कुटी के स्थान को आर्य प्रतिनिधि सभा से उत्तरप्रदेश ने हस्तगत कर लिया है। उसमें एक सुन्दर सा भवन बन जाना चाहिये जिसमें नीचे के भाग में वाचनालय रहे और ऊपर के भाग में वैदिक पुस्तकालय कहा जाता है कि गुरु विरजानन्द के नाम पर वैदिक अनुसंधान केन्द्र स्थापित करने की भी योजना है। इसके लिए अलग से समुचित भूमि प्राप्त करने और उस पर भवन निर्माण करने की आवश्यकता है।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती–

आर्यमित्र आर्य प्रतिनिधि सभा का एकमात्र साप्ताहिक पत्र है जिसने साठ वर्षों में से केवल आर्यजगत् में किन्तु शिक्षा एवं हिन्दी के क्षेत्र में भी महान् कार्य किया है। पत्रकारिता में उसका एक विशिष्ट स्थान रहा है प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं० हरिशङ्कर जी शर्मा के सम्पादन काल में साहित्यिक क्षेत्र में आर्यमित्र ने अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

उसकी हीरक जयन्ती से आर्यमित्र को गति मिलेगी। उसके पुराने इतिहास पर दृष्टि डालने से उसके द्वारा की गई समाज सेवा का परिचय प्राप्त होगा। उसके हीरक जयन्ती विशेषांक से भी नई प्रेरणा प्राप्त होगी।

आर्यमित्र को अधिक लोकप्रिय बनाने पर भी इस अवसर पर विचार किया जा सकेगा। आर्यसमाजों को इसकी ग्राहक संख्या वृद्धि की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

अभिनन्दन ग्रन्थ–

आर्य जगत् के दो विद्वानों पं० गङ्गाप्रसाद उपध्याय एवं श्री गङ्गाप्रसाद रिटायर्ड चीफ जज के सम्मान में दिये जाने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन दिल्ली में प्रारम्भ करा दिया गया है। उसके कुछ पृष्ठ छप चुके हैं। कुछ अधिक समय मिल जाने से सम्पादक मण्डल कुछ और महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त कर सकेगा ग्रन्थ में अधिक से अधिक सैद्धान्तिक लेखों को स्थान दिया जा रहा है।

इन सब कार्यों को दृष्टि में रखते हुए अब प्रान्त के आर्यों का भी कर्तव्य है कि वे इन समारोहों की सफलता में अपना पूर्ण सहयोग एवं सक्रिय सहायता प्रदान करें।

अवकाश—सूचना

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली अवकाश के कारण प्रेस व मित्र कार्यालय ४ दिन के लिए बन्द रहेगा। अतः ८ नवम्बर का अङ्क प्रकाशित न होकर १५ नवम्बर का अङ्क प्रकाशित होगा। कृपया पाठक व एजेन्ट नोट कर लें।

प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एस०सी०
अधिष्ठाता—आर्यभास्कर प्रेस व मित्र

भगवान का सच्चा भक्त—

पाप विनाशक दयानन्द

[ले०—श्री महात्मा ज्ञानेश्वरानन्द, दीवानहाल दिल्ली]

समय की विचित्रता का तो ध्यान कीजिये पुत्र अपने ही मान्य पिता से मुनकिर हो रहा है, भगवान ने इस विश्व की रचना करके सर्वप्रथम जड़ जगत का उत्पादन किया, और उसके पश्चात् पशु पक्षी आदि को जन्म दिया गया उन दोनों से किस प्रकार कार्य चलाया जावे, इसके लिये मानव की रचना हुई, अब मानव को इस संसार में कैसे भ्रमण करना है उसके क्या-क्या कर्तव्य हैं, उसके लिए भगवान ने मनुष्य को ज्ञान चक्षु दी और साथ ही ज्ञान के भंडार वेद भी प्रदान कर दिये, उस ज्ञान के आश्रय पर ही मानव ने संसार के अणु अणु की पड़ताल की उसमें सफलता प्राप्त की, जिसने प्रयत्न किया, वह सफल हुआ।

समस्त ज्ञान विज्ञान कला कौशल आदि का मूल तत्व वेदों में उपस्थित तो था ही, इसलिये युग-युगान्तरो में उसे पाने के इच्छुक लोग उसका अन्वेषण करते और उसे प्राप्त भी करते रहे, परन्तु प्राचीन भारत के विद्वान प्राय प्रकृति के साधनो पर अधिक ध्यान न देकर विश्वकर्मा विश्वनायक के दर्शनो की ओर ही विशेष रुचि रखते थे, क्योंकि वह यह जानते थे, कि इस जड़ता की ओर आने से मानव के लिये कल्याण और उत्थान नहीं, अपितु पतन द्वेष, ईर्षा, विद्रोह, दमन, व्याकुलता, लालसा तथा भयकर अमानुषी कृत्यों का समूह आदि के अतिरिक्त अन्य कुछ भी प्राप्त नहीं होता, इसी कारण भारत के प्राचीन विद्वान ज्ञानी पुरुष तथा ऋषि मुनि प्रकृतिवाद की ओर न जाकर अध्यात्मवाद में अधिकतया अग्रसर होते रहे। और जब जब भी यहा पर कभी प्रकृतिवादी लोगो का प्रभुत्व बढ़ा तब तब ही यहा विनाश की सामग्री प्रस्तुत हो जाती रही।

रामायण और महाभारत के दो समय तो यहा बड़े ही विख्यात हैं जब यहा पर लंकापति रावण और दुर्योधन ने भौतिकवाद को अपनाया था परिणाम में इतिहास के पन्ने रगे पड़े हैं, आज पश्चिम भी तो उसी भौतिकवाद की गोदी में रगरेलियां मना रहा है, अध्यात्मिकता की तो कहीं आज गति ही दिखाई नहीं देती, जिसका परिणाम हमारे सामने है कि जिधर दृष्टि करें उधर पतन ही पतन सामने खड़ा है तब ज्ञात हुआ कि ऐसे समय में जब मानव की सारी शक्तियां भौतिकता के ही अर्पण हो जाती हैं, तब वह फिर अपने जन्मदाता तक से इन्कार कर देता है वह यह समझने लगता है कि यह जगत् तो स्वतः ही एक मशीन की भांति चलता रहता है, इसे किसी चलाने वाले की आवश्यकता ही नहीं होती, प्रकृति के अन्दर स्वयं अपनी हरकत है, और उसी हरकत की बरकत से वह अनेक रूपों में परिवर्तन होती रहती हैं, वह सारा जगत् उस परिवर्तन शील प्रकृति से ही नवीन २ रूपों का समूह करता और पेश करता रहता है, उसका कोई सचालक नहीं, कोई जन्मदाता नहीं, क्योंकि इसे किसी जन्म देने वाले की आवश्यकता नहीं, किसी पालक किसी रक्षक की और न ही सहार करनेवाले की आवश्यकता है।

यह सब क्या है? भगवान के राष्ट्र में भगवान से अराजकता, विरोध, प्रभु की सत्ता से ही इन्कार का यह षडयन्त्र ही तो है, जिसे आरम्भ करके लोगों ने उस परमपिता विश्व व्यापक को अपनी अपनी कल्पना के आधार पर ही एक मनुष्य मानकर उसके इस प्रकार अनेक रूपो की रचना कर डाली मनुष्य ने अपनी तुच्छ विचारधारा के आधार पर ही उसकी मूर्तियो का भी निर्माण कर लिया, और प्रजापति को ऐसे भयकर रूपो में प्रगट किया कि जिनसे मानव इतने चक्करों में फस गया कि जिन हृदयों में भगवान के प्रति श्रद्धा, आस्ता एव विश्वास भरा पड़ा था वह सब इन कृत्यों को देख डावा डोल हो गये, परिणाम यह कि आज जगत् में सर्वत्र ही अनिश्वरवादिता फैल गई है, यज्ञो जैसे महान् पवित्र और श्रेष्ठ कर्मों को यहाँ के लोगों ने पशु हिंसा नर हिंसा बलि चढ़ाने का विधान बताना आरम्भ कर दिया और यज्ञो के पवित्र स्वरूप को महान भ्रष्ट करके रख दिया, साराश यह कि कोई भी श्रेष्ठ और शुभ कर्म शेष न रहा जिसकी पवित्रता को स्थिर रहने दिया हो, स्वय भगवान से ही इस प्रकार का विरोध करने वाले भला दूसरो से दया कभी करेगे। इस कारण चारो ओर नाचता और भ्रष्टता फैलती ही चली गई।

ऐसे ही समय में जबकि भारत मा दुःखों से पीड़ित होकर महान् कष्टो में तड़प रही थी, उसकी स्वाधीनता पराधीनता मे बदल चुकी थी, समस्त भारतीयो का खान पान भ्रष्ट हो चुका था। रहन-सहन में आर्यत्व का कोई चिह्न दिखाई न देता था, यज्ञों का नाश, संस्कृति और धर्म ग्रन्थो को जलाया जा चुका था दासता में जकड़े हुए लोग यहा परस्पर वैर विरोध में एक दूसरे का हनन करते और अनेक कुचक्रों में फंसकर उस परमपिता परमेश्वर से ही विमुख हो चुके थे, तब दयानन्द सरस्वती का, उस बाल ब्रह्मचारी दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उसने ऊपर वाली समस्त परिस्थिति का जब भली प्रकार अवलोकन करके यह दृढ़ सकल्प किया कि विश्व के रचयिता के विरुद्ध फैली हुई इस अराजकता को मैं विध्वस करूगा, और पूर्णतया विध्वस करूगा।

अपने इस सकल्प की पूर्ति के लिए मूलशकर ने माता-पिता, बन्धु बान्धवो के प्रेम पाश को तोड़ डाला, घर की समस्त सुख सामग्री और वैभव को लातमार कर अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए इस बात की खोज में लगे रहे कि वह विश्व के सचालक कैलाशपति कहा हैं? मृत्यु क्या है इसे किस प्रकार विजय करके मृत्युन्जय बनाया जा सकता है, उस मार्ग को खोजते खोजते जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि ऐसी एक महान ज्योति मथुरा में निवास करती है जिसके दृष्टि चक्षु तो भगवान ने छीन लिये हैं परन्तु ज्ञान के दिव्य चक्षुओं से वह ज्योतिर्मय श्री विरजानन्द जी दण्डी स्वामी के शुभ नाम से विभूषित हैं, दयानन्द यह जान कर मथुरा में उनकी अट्टालिका में आ पहुँचे और ढाई वर्ष तक निरन्तर गुरु चरणों में बैठ पवित्र सत्यज्ञान, भगवान के दिए वेद के दिव्य ज्ञान के पूर्ण सत्य सार को जब जान लिया और जगत् के मिथ्याचरणो को भी जाना और मनुष्य की स्वार्थी और पिशाची वृत्तियो की वास्तविकता को जानकर तब श्री दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवन के शेष काल में संसार को उस अपार ज्योति की प्राप्ति का शुद्ध और पवित्र मार्ग दर्शाया, उस मार्ग पर राक्षसों और पिशाचो ने जो काटे फैला रख थे उन्हे ऋषि ने अपने तर्क व डण्डे से दूर हटाया, फिर साफ और स्वच्छ मार्ग पर चलने का सकेत किया, जिससे मार्ग में फिर किसी प्रकार का अन्धकार कष्ट न दे सके।

श्री दयानन्दजी ने तो अपने गुरुजी के आदेश तथा अपने लक्ष्य की पूर्ति के सब साधन अपने जीवन की अन्तिम घड़ी तक उसी में लगा दिये और अमावस्या की उस घनघोर काली अन्धकारी रात्रि को चमचमाते प्रकाशमय बनाते हुए जब श्री पं० गुरुदत्त जी एम०ए० की अर्द्ध नास्तिक आत्मा को पूर्ण आस्तिक के रूप में बदलते हुए महर्षि दयानन्द जी (अजमेर में अनासागर के निकट वाले भवन में भयंकर विष के प्रभाव से दारुण दुःखी अवस्था में पड़े-पड़े भी वहा कोई पीड़ा अनुभव नहीं करते, वेदना नहीं और हसमुख दयानन्द) वेद मन्त्रों का उच्च स्वर से ध्वनि कर रहे हैं, देखने वाले तो चकित हो रहे है। डाक्टर सोचते हैं यह कोई विलक्षण शक्ति है प० गुरुदत्त देखते हैं दयानन्द किसी से उच्च प्रेम से बात कर रहे हैं और वह किसी से कह रहे है— भगवान तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तेरी इच्छा पूर्ण हो, वह लो, महर्षि ने नेत्र बन्द कर लिए और जाते जाते जगत को दीपावली की ज्योति से ज्योतिमय बनाकर चल गये।

हमारे प्रवर्त्तक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आज से ७६ वर्ष पूर्व अपना कार्यभार आर्यों को सौंप दिया था और जो ज्योति उन्होने उस समय प्रदान की थी वह इतनी महान थी कि यदि उस प्रकाश से आर्य लोग निरन्तर कार्य लेते तो आज हमें भारत में ही विश्व भर के कोने में आर्यत्व ही आर्यत्व, प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता परन्तु मैं देखता हूँ, यहा हमारे घर में भी अन्धेरा होता जा रहा है। हम सब लोग सदा अपने को ही धोखा देते रहते हैं छल और कपट से काम लेते रहते है, ऋषि ने तो आर्यसमाज के नियमों में ही हमें यह महान उपदेश दिया था, कि प्रत्येक आर्य को सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने के लिये सर्वदा उद्यत रहना होगा, परन्तु आज हमारी दशा यह है कि हमारे वही लोग अग्रगण्य बन जाते हैं जो असत्य को सत्य बताने में महान चतुर हों, वही हमारे पथ प्रदर्शक बन जाते हैं और हमने भी उन्हें ही अपने समाज की शोभा समझ रखा है, कहा हमारे आचार्य का इतिहास हमे यह बताता है कि वह इतने निर्भय इतने सत्यवादी थे कि उन्हे एक समय अपने कार्य में सफलता दिखाई न दी तो विचारा कि मेरे अन्दर कोई न्यूनता इसका कारण है, उसे दूर करने के लिए मुझे तप करना चाहिये उसके लिए व० कुछ काल तक तप करते रहे और जब वह पुन तपस्या के पश्चात् कुन्दन बनकर कार्य में उतरे, तो फिर सफलता उनके चरण चूमने लगी, उनका एक-एक वाक्य फिर मर्मभेदी बाण का कार्य करता था। जहा वह उपदेश देते थे, वहा फिर कोई व्यक्ति ऐसा न मिलता था जिसपर दयानन्द की छाप न लगी हो, प्रत्येक व्यक्ति का शिर दयानन्द के चरणो में झुका जाता था, परन्तु आज हम अपनी दशा का अन्वेषण करें तो हम सर्वथा विपरीत मार्ग पर चलते दिखाई देते हैं।

आप दूर न जायें तनिक हिन्दी आन्दोलन के इतिहास को देख लें, कुछ लोगो ने निज हितो मे समाज के हितो का विनाश कर डाला, ऐसे सार्वजनिक कार्य के लिये भी वह अपनी मनमानी चलाते रहे, वह अब भी वैसी ही शेखी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

उत्तर प्रदेश मे शिशु एवं प्राथमिक शिक्षा का विकास

[ले०—श्री मनोहर प्रसाद]

शिक्षा का उद्देश्य है जीवन की रचना, एक ऐसे चरित्र का निर्माण जो समाज की आवश्यकताओ की पूर्ति कर सक तथा राष्ट्र के विकास का आधार बने। हमारी विभिन्न शिक्षा योजनायें इस तथ्य को ही ध्यान में रखकर बनाई गयी हैं। चरित्र का निर्माण बचपन से ही आरम्भ हो जाता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे युवक और युवतिया सुनागरिक बन तथा देश की जिम्मेदारिया उठावें तो हमें बचपन से ही उन्ह इसक योग्य बनान के लिए प्रयत्न करना हागा। हमे उस नींव को मजबूत करना हागा जिस पर हम भविष्य का महल खडा करना चाहते है। अतएव शिशु एव प्राथमिक शिक्षा का स्थान बहुत महत्वपूण हे। यही कारण है कि प्रथम तथा द्वितीय आयोजना के अन्तर्गत शिक्षा क क्षेत्र में सरकार ने प्रारम्भिक शिक्षा का प्राथमिकता प्रदान की तथा पूर्व प्रा.र मक अथवा शिशु शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का अनिवार्य अग मान लिया गया। शिशु शिक्षा क विकास क लिए कन्या दीक्षा विद्यालयो से सलग्न माडल स्कूलो के साथ शिशु कक्षाए सम्बद्ध की गयीं। साथ ही गैर सरकारी शिशु शिक्षा सस्थाओ की दशा सुधारने की दृष्टि से उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की गयी। पाच और शिशु विद्यालयों को अनुदान प्राप्त करने वाले विद्यालयो की सूची में सम्मिलित किया गया तथा ३६ अन्य विद्यालयो को दस दस हजार रुपये अनावर्तक अनुदान क रूप मे प्रदान किये गये।

इस समय प्रदेश में ३५,००० प्राथमिक विद्यालय हे जिनमे ३२ लाख से आधक बच्चो की शिक्षा का प्रबन्ध है। इस प्रकार ६ से ११ वर्ष की आयु वाल बच्चा की कुल सख्या के लगभग ३९ २६प्रतिशत क प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा चुकी है। यह भी उल्लेखनीय ह कि पहली स छठा कक्षा तक के बच्चो क लिए अनिवार्य एव नि शुल्क शिक्षा का सुविधा प्रदान की गयी हैं। प्राथमिक शिक्षा को कितना महत्व दिया गया है वह इसी से स्पष्ट ह कि इस मद में जो व्यय १९४६ ४७ मे एक करोड इक्कीस लाख रुपये था, वह आज पाच करोड ६६ लाख रुपये हो चुका है।

आज प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में भा पर्याप्त सुधार हा चुका ह। पहले स्कूलो क वातावरण का समुदाय के जीवन से कोई समन्वय नहीं था। लेकिन अब, परम्परागत शिक्षा के स्थान पर बेसिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। शिल्प, कला, शारीरिक शिक्षा, सामाजिक ज्ञान, आदि के समावेश से प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के पाठ्यक्रम में सजीवता आ गयी है। अध्ययन को पद्धति में काफी परिवर्तन हो चुका है। इन विद्यालयो को साधन सम्पन्न बनाने के लिए निरन्तर प्रयत्न किये जा रहे हैं। इस उद्देश्य से कि इन विद्यालयो में शिल्प एव कला की समुचित सामग्री उपलब्ध रहे सरकार ने उन्हें १०० रु० प्रति विद्यालय की दर से अनुदान दिया हे। भवन निर्माण के लिए एक हजार रुपये प्रति विद्यालय की दर से ग्रामीण क्षेत्रों के १३३८ विद्यालयों को वित्तीय सहायता दी गयी।

प्राथमिक शिक्षा का प्रबन्ध एव प्रशासन शहरी क्षेत्रो में नगरपालिकाओ के हाथ म हे। इस समय बालकों की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा योजना ३५ नगर पालिकाओ के पूर्ण क्षेत्रो और बालिकाओ की ८ नगर पालिकाओ के पूर्ण क्षेत्रों में तथा दो नगरपालिकाओं के आंशिक क्षेत्रों में सचालित है। नगरपालिकाओं और जिला परिषदो द्वारा नि शुल्क शिक्षा को व्यवस्था करने से जो आर्थिक क्षति पहुँची है उसे सरकार विशेष अनुदान प्रदान कर पूरा कर रही है।

प्राथमिक शिक्षा का वैज्ञानिक ढग से प्रसार करने क लिए प्रदेश का सर्वेक्षण करना आवश्यक था। अत प्रत्येक जिल में शैक्षणिक पर्यवेक्षण किया गया है और आशा है कि इसके परिणामो से शिक्षा प्रसार की दिशा मे बहुत उपयोगी सहायता मिलेगी।

प्राथमिक शिक्षा क क्षेत्रो में प्रदेश में अब तक सम्पन्न हुए इन कार्यों क सिंहावलोकन से स्पष्ट हे कि सरकार भावी नागरिको क निर्माण की दिशा में मजबूत नींव डालने में सफल हुई है। हमारे ये आज के बच्चे कल योग्य युवक और युवतियों क रूप में विकसित होकर राष्ट्र का भार वहन करेंगे, ऐसा विश्वास है।

★

श्री श्री देव वानप्रस्थी द्वारा प्राप्त धन की सूची

श्री श्रीदेव वानप्रस्थी जी पूर्व [श्री देवीप्रसाद जी जौहरी] उपप्रधान वानप्रस्थ सन्यास आर्य आश्रम, ज्वालापुर एव मुख्य निरीक्षक ने सभा की प्रार्थना पर, लगभग तीन सप्ताह अर्थात् १९ अगस्त से ७ सितम्बर १९५९ ई० तक तथा १७, २० व २५ सितम्बर १९५९ ई० सभा को प्रदान करने, १६ आर्यसमाजों तथा १० आर्य शिक्षण सस्थाओ का निरीक्षण किया। अपने ओजस्वी भाषणो द्वारा तथा आर्य बन्धुओ क सत्सग में परामर्श द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार के निमित्त कार्य करने और मथुरा में होने वाले महोत्सव के निमित्त धन-सग्रह करने एव अधिकाधिक सख्या में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण सस्थाओं से सभा के लिए ३०५) [तीन सौ पांच रुपया] प्राप्त किए जिसका ब्योरा निम्न प्रकार प्रकाशित किया जाता है —

१—आर्यसमाज सिविल लाइन्स [नरही] लखनऊ		७)
२—	,, हरदोई	१२)
३—	,, शाहजहापुर	१२)
४—श्री आर्यसमाज शाहजहापुर		२)
५—आर्यसमाज [रजिस्टर्ड] शाहजहापुर		१२)
६—	,, सुभाषनगर बरेली	१२)
७—	,, भूड बरली	२)
८—	, बिहारीपुर बरेली	२)
९—	,, रामपुर	३२)
१०—	,, सम्भल [मुरादाबाद]	३२)
११—	, चदौसी [मुरादाबाद]	१२)
१२—	,, गज [मुरादाबाद]	१२)
१३—	,, नजीबाबाद जिला बिजनौर	५)
१४—	,, ज्वालापुर [सहारनपुर]	१०)
१५—	,, कनखल [सहारनपुर]	७)
१६—आर्य कन्या माध्यमिक उच्चतर विद्यालय [इन्टर कालेज] हरदोई		१४)
१७—आर्य महिला विद्यालय [हाई स्कूल] कटियाटोला शाहजहाँपुर		७)
१८—आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय [इन्टर कालेज] शाहजहापुर		१२)
१९—आर्य पुत्री माध्यमिक विद्यालय [हाईस्कूल] सुभाषनगर, बरेली		१४)
२०—आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय [इन्टर कालेज] भूड, बरेली		२६)
२१—हिन्दी सस्कृत विद्यालय भूड, बरेली		७)
२२—बृजरत्न सुन्दर आर्य कन्या विद्यालय, [हाई स्कूल] सम्भल मुरादाबाद		२६)
२३—रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला चदौसी जिला मुरादाबाद		२)
२४—आर्य कन्या विद्यालय गज, मुरादाबाद		१०)
२५—आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नजीबाबाद, जिला बिजनौर		१४)
	योग	३१२)

नोट—ऊपर लिखित धनराशि में, वार्षिक शुल्क के अतिरिक्त निरीक्षण शुल्क २) प्रत्येक आर्य शिक्षण सस्था से प्राप्त सम्मिलित है।

जिन जिन आर्यसमाजो तथा शिक्षण सस्थाओं ने सभा को दान प्रदान किया तथा सभा की ओर नियुक्त वयोवृद्ध एव अनुभवी सुविख्यात कार्यकर्ता श्री श्रीदेव जी वानप्रस्थी, मुख्य निरीक्षक का यथोचित स्वागत अथवा आदर सत्कार किया उनका सभा आभार मानती हे तथा प्रशसित मुख्य निरीक्षक जी क प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है।

—मन्त्री सभा



महर्षि दयानन्द सरस्वती

साधक-अगतिक-सिद्ध दयानन्द

[श्री आचार्य नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ, कुलपति ज्वालापुर]



लखक

परमार्थ क मार्ग पर चलने वाले साधक क जीवन की तीन अवस्थाएं होती हैं।

१—साधक (प्रारम्भिक) अवस्था

२—अगतिक अवस्था।

३—सिद्धावस्था।

ये तीन अवस्थाए परमार्थ साधक की ही होती है सो यह बात नहीं। लौकिक उद्देश्य को लेकर किसी कार्य में प्रवृत्त होने वाले पुरुष को भी ये तीन अवस्थाए होती हैं—

साधक दशा

यह प्रारम्भ की दशा है। जब वह मन से किसी बात का दृढ़ निश्चय करके आगे बढ़ता है वह दशा। वह ससार से मुख मोड़कर ईप्सित परमार्थ की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने लगता है, जुट जाता है।

अगतिक अवस्था

प्रयत्न करते करते जब देर होजाती है और उसको उद्देश्य प्राप्ति नही होती। जितना आगे बढ़ता है उतने ही अधिक विघ्न आते हैं। उसको आगे का मार्ग नहीं दीखता। वह अगतिक हो जाता है। अगतिक होकर निराश हो जाता है और सोचता है कि मैं क्या करू। मैं न इधर का रहा न उधर की।

सिद्धावस्था

जब विघ्नो की परवाह न करते हुए आगे ही आगे बढ़ता जाता है तब उस की दृष्टि सहसा अपने उद्दिष्ट स्थल पर पड़ती है और वह उसको प्राप्त कर लेता है और प्रसन्न होता है और कहता है कि "जित मया" बस मैंने जीत लिया। वस्तुत. बीच में जो अगतिक दशा आ जाती है वह तो उसका परीक्षाकाल होता है। इस परीक्षाकाल में जो घबरा गया सो अधमरा हो गया समझो। जो संभल जाता है वह पार हो जाता है। वह जो पार हो जाता है। वह भी ईश्वर की कृपा समझिए।

• किसी कार्य की सिद्धि में पाँच कारण होते।

१—अधिष्ठान २—कर्ता ३—विविध साधन ४—विविध प्रयत्न —५ दैव इनमें से जो शिथिल पड़ जाय सिद्धि में उतनी ही न्यूनता जानो। यह तत्व गीता में भली भाति कहा गया है।

दयानन्द घर से निकले

किसलिए? सच्चे महादेव की खोज में। पार्थिव महादेव स उनको सन्तोष न मिला। भाग गये। पकड़े गये। घर लाये गये। यह प्रथम विघ्न था जो घर से ही प्रारम्भ हुआ। दो तीन बार पकड़े गये, फिर भाग गये कि फिर किसी के हाथ न आये।

न जाने कहा कहा पहुँचे

जगलो जगल होते हुए इधर उधर नदियों के किनारे होते हुए सुदीर्घ यात्रा के पश्चात् अमरकण्टक पहुँच गये नर्मदा के उदगम स्थानों में। वहा अनेक साधु सन्तो से कुछ हठयोग सीखा। किसी से कुछ पढ़ा किसी से कुछ सीखा। कहीं राजयोग भी सीखा।

सन्तोष न हुआ

पर कहीं भी इनको सन्तोष न मिला—कुछ निराश से हो चले थे। भटकते-भटकते मथुरा पहुँचे।

वहा का सिद्ध गुरू मिला

, स्वामी विरजानन्द। फिर क्या था स्वामी दयानन्द रूपी लो०। विरजानन्द पारस से छू गया और बन गया एक दम सुवर्ण—

इस सुवर्ण की परीक्षा

तब हुई जब वे कार्य क्षेत्र मे उतरे। गुरु विरजानन्द ने यह गुरु दक्षिणा मागी कि "दयानन्द ससार में यह जो अखण्ड खण्ड पाखण्ड फैला हे उसका।

खण्ड खण्ड कर डालो

और सचमुच अब दयानन्द सिद्ध दयानन्द बनकर कार्य क्षेत्र में उतर पड़। भौतिक साधन कुछ नहीं था। साथी सगाती एक भी नहीं था। ईश्वर विश्वास, श्रद्धा, त्याग, आत्मिक बल के आश्रय से उसने संसार का मुख फिरा दिया। इस प्रकार साधक दयानन्द, अगतिक दयानन्द, सिद्ध दयानन्द की अमर कहानी है।

ओ हो मैं तो एक बात लिखना भूल ही गया

स्वा० विरजानन्द जी से दीक्षा लेकर वहाँ से चलने के पश्चात् दयानन्द उत्तराखण्ड के हिमालय प्रदेश में योग-साधन के लिए गये। वहाँ उस कार्य में भी वे एक दो बार अगतिक हुए। निराश होकर एक दिन वे पहाड़ के ऊँचे शिखर से नीचे कूदना ही चाहते थे कि—

एक शब्द हुआ

"दयानन्द यह क्या कर रहे हो" इधर-उधर दयानन्द ने देखा पर जान न सके कि किसका शब्द हुआ—

"दयानन्द गुरू जी की बात को भूल गये क्या।"

फिर दयानन्द आश्चर्य में पड गये, और उन्होने ध्यान से जाना कि यह बाहर का शब्द नहीं है यह तो अन्तर्ध्वनि है और दयानन्द की अगतिक गति दूर हुई। उनकी निराशा जाती रही। इस प्रकार विद्यासिद्ध और योगसिद्ध दयानद कार्यक्षत्र में उतर पडे।

उन्होंने देखा

भारत हीन, दीन, पराधीन है। इसमें बल सचार करना परम आवश्यक है। यह धर्म-कर्म से हीन हो गया है। इसकी सस्कृति नष्ट होती जाती है। ससार का गुरु भारतवर्ष पराधीन हो गया है। इसलिए इसको सबसे पूर्व स्वधर्म का ज्ञान कराना अत्यन्त आवश्यक हे। स्वधर्म क बिना स्वसस्कृति न जागेगी। बस उन्होने अपना समस्त बल लगाकर—

वैदिक शङ्ख बजाया

भारतीय जनता ने इस शङ्खध्वनि को सुना और चौंक गये। यह कौन आया, यह शङ्ख क्यो बजा रहा ह। यह क्या चाहता है।

स्वामी दयानन्द ने बड़े जोर से कहा

दयानन्द—ठहरो, कहाँ जा रहे हो।

भारतीय जनता रुकी और कहने लगी—

जनता—क्या कह रहे हो।

दयानन्द—पीछे हटो।

जनता—यह लो और पीछे हटें।

दयानन्द—और हटो पीछे।

जनता—इस तरह कहाँ तक पीछे हटें।

दयानन्द—वेदो तक पीछे हटो।

जनता—वहाँ वेदों में क्या है।

दयानन्द—सब कुछ, तुम जो कुछ चाहते हो सब कुछ है। तुम्हारा धर्म, तुम्हारी सस्कृति सब कुछ उसी में है।

जनता—हमको तो पाश्चात्यो की सभ्यता सस्कृति अच्छी लग रही है। कैसा अच्छा प्रकाश है बिजली का।

दयानन्द—यह रोशनी तुम्हें अधा कर देगी।

जनता—अच्छा? हम आपके कथनानुसार चलेंगे।

इस प्रकार दयानन्द अपने उद्देश्यों में कृतकार्य हुए। इस प्रकार दयानन्द ने भारतीयो क हृदयो में भारतीयों की अपनी महत्ता को जागृत किया। अपने पीछे वैदिक धर्म क प्रचार के लिए आर्यसमाज की स्थापना कर गये—

उनके पीछे

आर्यसमाज ने अपना शानदार प्रचार युग का आरम्भ किया और ससार चकित हो गया कि ये कौन देवता भूतल पर उतर हैं। केवल प्रचार युग से काम नहीं चलता था इस लिए हमारा शिक्षा युग चला। इसकी भी ससार पर खूब धाक जमी पर इस अपने स्वराज्यकाल में हमारे शिक्षणालय ढील पड़ गये। हमारा विश्वास ढीला पड़ गया। हमारी श्रद्धा विलुप्त हो चली। हम फिर उसी पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा प्रणाली पर चल पड़। अनेक गुरुकुल बन्द हो गये। अनेक गुरुकुल हायर सेकन्डरी स्कूल, अथवा इटर कालज क। रूप धारण कर गय। गुरुकुलो की सत्ता तथा महत्ता सशय मे पड गयी ह—इसलिए प्रश्न उठ रहा है कि स्वा० दयानन्द प्रदर्शित शिक्षा-पद्धति को पुनरुज्जीवित करने क लिए प्रस्थापित गुरुकुलो का भविष्य क्या ह। ब्रिटिश शासनकाल मे जिन गुरुकुलो ने श्रद्धा तप से काम किया और ब्रिटिश शिक्षा दीक्षा से असहयोग रखकर आर्य समाज नाम का उज्ज्वल कि वे ही गुरुकुल अब अपने स्वरूप को भूलकर फिर वर्तमान शिक्षा दीक्षा के प्रवाह में बहे जा रहे हैं। यह अत्यन्त शोचनीय दशा है। आर्यसमाज के धुरीणों को। शिक्षा शास्त्रियो की ऐसी हीन दशा कभी नहीं देखी।

इस ऋषि निर्वाण दिवस पर हम को इस दशा पर ध्यान रखकर

(शेष पृष्ठ ११ पर)

ब्रह्म तेन पुनातु मा

(वेद)

यह ऊँचा करें जीवन

दयामय देव हम जीवन विमल अपना बना लेवें।
प्रभो सन्ताप धरती के सभी मिल कर मिटा देवें॥
जलाओ ज्ञान की ज्योति प्रभो मन में अंधेरा है।
पिता दिन रात पापों का यहां रहता बसेरा है॥

यह मन भगवान् हम बलवान भक्ति से बना लेवें।
बनें निर्भीक वैदिक धर्म के हम सब देव दीवाने॥
करें सब का भला भगवन् कोई जाने या न माने।
आडम्बर भाव जड़ पूजा का हम जड़ से हिला देवें॥

सुनावें वेद की घर घर अमर प्रीतम मधुर वाणी।
हमें प्राणों से है प्यारी अमर वाणी यह कल्याणी॥
यही रास्ता है जन कल्याण का सब को बता देवें।

प्रभु आये शरण तेरी भगाओ भय सभी भगवन्।
बनें बलवान हम भगवन् यह ऊंचा करे जीवन॥
धरा पर आज प्रीतम प्रेम की गंगा बहा देवें।
दयामय देव हम जीवन विमल अपना बना लेवें॥

राजेन्द्र 'जिज्ञासु एम०ए०, दयानन्द कालेज हिसार

दीपमाला

हे स्वागत सदा दीपमाला तुम्हारा,
बताओ खुशी आज कैसे मनाएं।
प्रबल हो रहा है ये महगी का दानव,
उदर पूर्ति कैसे करे अपनी मानव,
नहीं अन्न है पेट भरने को मिलता,
मनुज किस तरह से क्षुधा को मिटाए।
कहीं सूखा पड़ता है, होती अनावृष्टि,
कहीं बाढ़ आई, हुई है जो अतिवृष्टि,
हुए हैं निराश्रित हजारों उजड़ कर,
तो घृत दीप कैसे, कहां से जलाएं।
हो धन धान्य पूरित, सुखी देश सारा,
बने आत्म निर्भर, ये भारत हमारा,
यहाँ फिर से नदियाँ, बहे दूध घी की,
खुशी से सभी दीपमाला सजाएं।
क्या साकार होंगे, हमारे ये सपने,
जो खुशहाल हों सब, बहिन, भाई अपने,
हो समृद्धिशाली, सुखी देशवासी,
मुदित गीत गाकर के उत्सव मनाएं।

—पुष्पलता श्रीवास्तव, लखनऊ

दीपावली के शुभावसर पर

दीपावली शुभ पर्व पावन,
सजग हो जा रे मनुज तू!
दीपमालिका के स्वागत हित,
हृदय कुटी को स्वच्छ कर तू।
निर्वासित कर दे स्वार्थ द्वेष,
निस्वार्थ प्रेम का दीप जला।
स्वाभाविक सहज स्नेह सिक्त,
ये मिट्टी के लघु दीप जला।
छल छदम पूर्ण रे नराधमो!
इस दीपक से कुछ शिक्षा लो।
ओ रामराज्य के ठेकदारो,
सद्ज्ञान त्याग की भिक्षा लो
कुछ आगे बढ़कर तो देखो,
बलिदान दीप कैसे करता।
धीरे धीरे सर्वस्व लुटा,
घनघोर तिमिर जगका हरता।

—सत्यप्रकाश शर्मा

काव्य-कानन

आए उपकारी ऋषि नारी हितकारी बन

[१]

यदि दुर्भाग्य से सौभाग्य छिन जाता कभी,
फिर तो सौभाग्य का सौभाग्य नहीं पाती थी।
लग नहीं पाती रेखा माग में सिन्दूर की,
काल के कराल कर से जो मिट जाती थी।
खो देती आधार चाहे धर्म धराशायी होता,
हिन्दू जाति क्रूर दया भाव न दिखाती थी।
पिसी जाती दानवों के दयनीय दबाव तले,
प्राण भी गँवाती, जाति जाति की लुटाती थी॥

[२]

रूप, रंग, रस, गन्ध मोहक विकास हीन,
कभी कंज कलिका सी खिल भी न पाती थी।
निर्मम क्रूर कर घात से अकाल में ही,
पाप के पिपासुओं से तोड़ डाली जाती थी।
मुरझाती पल में कुचली पद तल में,
सौरभ न भूतल में बिखराने पाती थी।
आयु, बल, बुद्धि, विद्याहीन सन्तान द्वारा,
देश वाटिका में दुर्गन्ध ही फैलाती थी॥

[३]

ढोल, पशु, शूद्र व गँवार सम कहे एक,
दूसरे ने 'द्वार नारी नरक का' बताया था।
वेद पढ़ने के अधिकार का विचार कहाँ?
अक्षर-ज्ञान करना भी पाप बतलाया था।
बाहर उठाये चीख, भीतर हो खायें चूहे,
दीप हमें आटे का समाज ने बनाया था।
दया के निधान ने दिखाई तब दिव्य दया,
दया-दान देने दयानन्द को पठाया था॥

[४]

तोड़ डाली शृंखलाएँ सदियों की जंग खाई,
खुले वायु मण्डल में नारी ने भी श्वास लिया।
'यथया वाच कल्याणी' मधु मन्त्र सुना,
वेद पढ़ने का अधिकार सविश्वास दिया।
अविद्या के घने अन्धतम में टटोलती थी,
सच्च सन्यासी ने ज्ञान 'सत्यार्थप्रकाश' दिया।
पैर की बनी थी जूती सिर की बनाई पाग,
मातृ शक्ति मात्र में था देवी का आभास दिया॥

[५]

आया था दयालु यथा नाम तथा गुणधारी,
डंके पर चोट मार सत्य का प्रचार किया।
खण्डन की खड्ग उठाये जिस ओर गया,
पाखण्ड के नभचुम्बी किलों पै प्रहार किया।
पोपों के पापों के पट खूब खोल-खोल धरे,
खाई ईंटें विष पिया, घातक से प्यार किया।
आए उपकारी ऋषि नारी हितकारी बन,
डूबी जाती नैया बीच भँवरों से पार किया॥

—कुमारी सुशीला आर्या, प्रभाकर एम० ए०, नरवाना

करो देव स्वीकार वन्दन हमारा

जगाई जगत् में ज्ञान की ज्योति तूने,
भगाई तमिस्रा अमा देव तूने।
छिपे अज्ञता के भयानक असुर की,
उठा आवरण पोल खोली थी तूने।
भगे दम्भ पाखण्ड ले प्राण अपने,
निर्द्वन्द्व निर्मम किया लोक तूने,
सद्धर्म-मग में मतपंथ-कंटक,
बिछे थे किए दूर हे देव तूने।
कुहर छा गया सत्य के मार्ग में था,
मार्तण्ड बन कर हटाया था तूने।
लिए वेद के ज्ञान की ज्योति कर में,
जगाया अलख नाद घर-घर में तूने।
बताई हमें एक ईश्वर की पूजा,
पढ़ाया हमें प्रेम का पाठ तूने।
कुपथ-पथगामी बना देश था जब,
दिखाया हमें दिव्य सन्मार्ग तूने।
दयानन्द आनन्ददाता महर्षि,
दिया विश्व को सत्य आलोक तूने।
किया विश्व कल्याण हे ब्रह्मवादिन्,
चलें हम उसी पथ दिखाया जो तूने।
कैसे प्रभो हम उऋण हो सकेंगे?
किए हैं महाऽनन्त उपकार तूने
करो देव स्वीकार वन्दन हमारा,
सदा ही किए हैं जिस भांति तूने।

—विद्यावाचस्पति गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'
आगर-मालवा (मध्य भारत)

दीपावली के शुभावसर पर

महर्षि श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी के
चरण कमलों में श्रद्धाञ्जलि सादर समर्पित

देख जगत की दशा बिगड़ती
वेद दीप का हुआ प्रकाश।
ऋषि ने लेकर ज्वलित दीप यह
किया जगत में धर्म विकास॥१॥

जन्म मरण के बन्धन में यह
पड़ा हुआ था तड़प रहा।
अज्ञानी इस मानव के हित
मुक्ति मार्ग वह बता चला॥२॥

मधुर वेद वीणा फिर से
बजने लगी जगत भर में।
देख 'उषा' का उदय पूर्व में
भगा अन्धेरा क्षण भर में॥३॥

देकर हमको अमर दीप वह
चला कभी फिर आने की।
हमें जलाये रखना है यह
जग को आर्य बनाने की॥४॥

—उषाकुमारी, सिद्धान्तवाचस्पति, मेरठ

★

दयानन्द दीप-निर्वाण

कैसा भव-आशा पर अनल वज्रपात हुआ ?
देख-देख उन्मना विरक्ति अनुरक्ति भरे—
अम्बर ने लाल मोतियों का ठिलराना छोड़-
शशि ने छिपाया मुख—रजनी ने फटिक
शिला सी श्वेत-साड़ी फाड़—
असित-अमा सा पट अङ्ग पर चढ़ाया है।
देखो नभ ओर !
कोई तारा टूटता है मानो—
अथवा वियोगिनी का
उर टूटता है तब।
जर्जर जीवन का हो रहा है पतन है
कुसुम अमोल सा विलान कहीं मन है।
द्रु ति-द्रु म-अंक से लताएँ धरणी गिरी।
अगल नक्षत्र से अमगल है झाँकता।
करुणा का क्रोड़ छोड़ पक्षी नीड़ से डग
देखो हिमगिरि भी हृदय को थाम बैठा है
हिम का न खंड कोई शैल से सरकता
मानो भव-नश्वर का वैभव निरखता
वन का विहग वनचारी भी कुरंग कहीं
दशनों से तृण का न कोई ग्रास लेता है
जीवन प्रपात अविराम जार ह है कहीं—
मृदु लहरी मे शान्ति लिए अवगाहते
लोचन बखेरते अजस्र अश्रुओं की माल
जीवन प्रदायिनी प्रकृति बनी मौन है।
देखो शुभ्र शैया पर अमन्द—
भावना लिए। क्रान्ति कान्ति—
शान्ति-युक्त देव पड़ा कौन है ?
चिन्ता की न अंकित ललाट कोई
रेखा है ! प्रभु क विचित्र विश्व की भी अवरेखा है।
"उत्कट लालसा हृदय से प्रिय के लगू"
भक्त जन घेरे हैं अपलक मुख देखते
पावन-पयोधि से, प्रशान्त देव दयानन्द !
पूर्ववत् आशा से—
मधुर उपदेशों से—
प्यारी आर्य जाति की—
सुरक्षा का महान् मन्त्र—
आर्य पुरुषो क हृदयों में यही भरते—
"विश्व नाशवान् है।
'शरीर' नाशवान है।
स्वाभाविक धर्म सुख दुख भोगना है सदा।
"आत्मा अमर है', उसी का मृदु गान है
निष्काम भावना से कर्म करते चलो
मिथ्या ममता को त्याग मोद भरते चलो
कुत्सित कामना क कीट हरते चलो।
दम्भ छल द्वेष से सदैव डरते चलो
विश्व-बन्धुत्व का पुनीत उपदेश लिए
मंजुल मनुष्यता की जाह्नवी बहादो फिर।
लीलाधाम राम-कृष्ण जन्म लेंगे बार बार—
बदली निराशा की सदा को हट जाएगी।"
इन उपदेशों से हृदय का ताप हरते।
सब सभी शान्त थे, हृदय मे एक शूल था
वेद का प्रचार हो अविद्या आसुरी हटे।
भावना से करते प्रणव का पुनीत जाप
भव बन्धनों से मुक्त होते कट जाते पाप।
प्रभु के मिलन की प्रतीक्षा थी महान् एक।
शैया-शायी साधु दयानन्द कहते हैं भक्त
आज कृष्ण-पक्ष है अमा का तमतोम है
जाने आज मुख को छिपाता कैसे सोम है
अब, गृह-गृह में प्रसन्नता का पारावार।
उमड़ चला है ध्वस कर दुख क कगार
लोक में आलोक भी विचित्र दिखलाना है
अथवा,
दीपावलि कंपित हो शीश धुनती है खड़ी
अब के जलाती है वियोगियो के चित्त को
दीप-शिखा उन्नत स्व शीश को उठा के आज—
लुठित हुई है मेदनी के पृष्ठ भाग पर।
लज्जित रमा है।
तम तोम से अमा है।
शून्य-शक्ति से क्षमा है।
नभ देखिए थमा है।
यह 'कमला' प्रकाश में बताओ क्यों न आती है ?
क्योंकि क्रूर दृष्टि से कलंकित पुनीत भाल।
राष्ट्र निर्मायक को।
विश्व के विधायक को।
न्याय-नीति-नायक को।
दिव्य गान गायक को।
करक हरण ले गई है उस लोक को—
"जहा पर जाक फिर आना नहीं होता है
किन्तु प्रभु देख क प्रकृति का नवीन रग।
अमर विचार उठे।
प्रेमी बलिहार उठे।
नश्वर स्वरूप का विचित्र चित्र सामने
स्मित हास्य में मधुर अधरो क पट—
खुल न सके।
कह न सके।
प्रीतम के गान थके—
करवट ली अक मे प्रसन्नता से बैठने
अर्णव आनन्द क प्रणव मे लवलीन थे
"इच्छा प्रभु पूर्ण हो"
प्रतिध्वनि हृदय से उठी।
रह गये अवाक अवनी के
नर नारी सब।
भक्त गुरुदत्त भी चकित चित्त मौन थे
'गूंगे गुड़' जैसा वे मधुर-मधु चखते।
धन्य धन्य देव ज्ञान दीपक जगा के चले
'श्रुति, वसुयाम, अष्ट सिद्धियां दिनेश' पथ
ले चली, चला के रथ घोर विश्व में हुई
खोल दिए सुन्दर कपाट स्वर्ग वासियों ने
स्वागत को आगए
दधीच शिवि-हरिश्चन्द्र।
हर्ष की हिलोर मे सुमन बरसाते हुए।
शून्य नभ लोक ने निराला गुरू पालिया
धन्य धन्य भाग्य है।
विजेता मिला नेता है
स्वर्ग की सभा का अधिराज है।
प्रणेता है।
चारो ओर छा गई प्रतिध्वनि यही पुनीत
तेरा युग युग मे अमर वर गावे गीत।
शोक ! आर्य जाति तूने विष को पिलाया जिसे
अमृत पिला के 'निर्वाण नींद' को चला।
लज्जित भी लज्जा है अनूठा सत्कृत्य देख।
घातक को—
पातक को—
राष्ट्र के विघातक को—
जिसने म्रियमाण किया
उसका परित्राण किया
ऋषि था, महर्षि था, व्रती था, देव दिव्य था।
फलवान आम्र सा उदार सौम्य सन्त था।
विश्व की महानता का मोहक महन्त था।
भारतीय-वाटिका का जीवन वसन्त था।

—श्री कविवर 'कुसुमाकर' फीरोजाबाद

दीक्षा-शताब्दी की कामना

श्री स्वामी दयानन्द जी की दीक्षा शताब्दी पर,
जगें आर्यवीर उन्हें शक्ति प्रभुवर दे
वे ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त ऋषि मुनियों के,
वैदिक सद्विचारों को फैला घर घर दें
धर्म कर्म वृद्धि से, नास्तिकता निर्मूल कर,
भूरि भगवद्भक्ति का भद्रभाव भर दे
करके 'रणञ्जय' सर्वोदय यों वास्तविक,
विश्व से पाखण्ड भ्रष्टाचार दूर कर दें ॥१

द्वैताद्वैत

गगा की महिमा में सहस्रों रचनाएं मिलें,
गगाप्रसाद द्वय में गुण नहीं कम हैं
दोनो महापुरुषो के नाम तथा काम एक,
तब भिन्नता क्या जब मन एक सम हैं
आर्यजाति गौरव हैं, वन्दनीय विद्वज्जन,
सयमी, उपकारी, कर्मवीर निभ्रम हैं
ईश्वर ! शतक्रतु हो, वयोवृद्ध कर्णधार,
सेवाएं जिनकी 'रणजय' रोचनम हैं ॥२

'आर्यमित्र' हीरक-जयन्ती

कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का सुन्दर सिद्धान्त लिये,
वसुधा कुटुम्ब के पढ़ाये प्रेम पाठ हैं
सार्वजनिक सेवा में सदैव तल्लीन रह
येन केन भाति से विताये वर्ष साठ हैं
सच्चा समाज का सुधारक साप्ताहिक पत्र,
मूल्य में भी वार्षिक केवल मुद्रा आठ हैं
देखना 'रणंजय' है हीरक जयन्ती पर,
आर्यजन 'मित्र' के बढ़ाते क्या क्या ठाठ हैं ॥

—रणंजयसिंह एम० एल० सी
अमेठी, जिला सुलतानपुर

तिमिर में चेतन

बिखर गयी पूजा चरणों पर गूजा करुणा स्वर क्यों

भाव प्रवणता के प्लावन में
मग्न हुई प्रस्तर-निष्ठुरता
मूक साधना की प्रतिमा को
हिला गयी उद्वेग-प्रचुरता

शांत हुआ क्षण भर मे चेतन करुणा के कुश आस्तरणों

दुन्तो की वीभत्स छांह मे
रोता सूनापन उपवन का
पन्थ देखता रहा रात भर
मङ्गल उज्ज्वल प्रात चयन का

ठिठुर गयी उस शेष प्रात की नवजाता कलिका पर्णों

शूलों का भी सजल कर गया
एक नाद अन्तर पीड़ा का
विस्मृति में भी लौटा न आया
गह्वर से कन्दुक क्रीडा का

अन्धकार के महामृत्यु ने कर फैलाये आभरणों

—परमेश्वर द्विरेफ, प्रतिनिधि मरुस्थल राजस्थान
राज्य साहित्य अकादमी, पिलानी, राजस्थान

भगवान दयानन्द और दिवाली

[लेखक—श्री शिवप्रेमचन्द्र "चतुर्थ वर्ष" गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन (मथुरा)

ऋषि दयानन्द ? नहीं नहीं क्योंकि वह केवल मन्त्रद्रष्टा नहीं ! फिर महर्षि दयानन्द ? नहीं नहीं ? महर्षि तो केवल परलोक और मुक्ति का ध्यान रखते हैं ध्यान ही नहीं देते अपितु भगीरथ प्रयत्न करते हैं जैसा कि इतिहास से स्पष्ट है। फिर ऐसी कौन सी संज्ञा है जिसे हम अपने आराध्य को समर्पित कर सकें ? मेरी अपनी समझ में अगर वह कोई संज्ञा शब्दकोष में है तो भगवान दयानन्द ही है। उन्होंने लोक को जितना चाहा उतना ही परलोक को भी। वह पूर्ण पुरुष थे इसमें शंकास्थल हो ही नहीं सकता। और पूर्ण पुरुष भगवान पद के अधिकारी होते हैं। इसलिए भगवान दयानन्द !

जिन भगवान दयानन्द की पाखण्ड खण्डिनी ने अन्धकार की जड़ें हिलादी, जिनके बलिदान से युग को नई चेतना और जीवन प्राप्त हुआ। जिनकी स्मृति आज भी प्रेरणा का अजस्र स्रोत है। लोग कहते हैं दयानन्द क्या थे ? मैं पूछता हूँ दयानन्द क्या नहीं थे ? महात्मा बुद्ध सा त्याग, शंकर सा अगाध ज्ञान, प्रताप व शिवा सी देश शक्ति, कर्ण सी दान शक्ति, मीरा सी भावभक्ति और योगियों सी आत्मशक्ति ही नहीं पूज्य बापू से अत्यधिक सत्याशक्ति, और फिर ईसा, और मुहम्मद की तुलना ही व्यर्थ है। इसके बाद लोग कहते हैं उन्होंने क्या किया ? मै पूछता हूँ उन्हो। ने क्या नहीं किया ? उन्होने ने अन्धकार क महान् गर्त से निकाला; अज्ञान तिमिर का शासन देखकर वेद सूर्य की पुनः प्रतिष्ठा की, सोते हुओ को जगाया, गिरते हुओ को उठाया, लुटते हुओ को बचाया, भटकते हुओं को रास्ता बताया अनाथ और विधवाओ का करुणा क्रंदन हटाया, हमारे पूर्व गौरव का जिसे हम भूल चुके थे हमें स्मरण कराया ? ईश्वर की सच्ची भक्ति और स्वरूप को दिखलाया, राष्ट्रीयता और प्रचलन किया, जन्मतः अहिन्दी भाषी होते हुए भी देववाणी एवं देवनागरी का प्रचार एवं प्रसार किया, गो जैसी अमूल्य निधि की रक्षा का स्मरण कराया, कहा तक गिनाए ? यह सब उन्होंने उस समय किया जब समाज की व्यवस्था का नक्शा बिल्कुल बिगड़ चुका था मनुष्य अपना संस्कार हीन कर पाता था। ब्राह्मण सब पाप करते हुए भी ब्राह्मण ही हैं और पूजनीय है दूसरी ओर भगवान की प्रतिमूर्ति शूद्र उत्तम कर्म करते हुए विगर्हणीय है निन्दनीय है। इस प्रकार छुआछूत और जन्म-मूलक जाति-पाँत की मिथ्या एवं विनाशकारी मान्यता जिसने मनुष्य मनुष्य के बीच भेद की दीवार खड़ी कर रखी थी। इस मिथ्या और भयानक समाज व्यवस्था का गुण कर्म की व्यवस्था को सामने रखकर अन्त करने का सफल प्रयास किया भगवान दयानन्द ने। धर्म के नाम पर दुधमुही बच्चियों को विधवा कर देने वाला समाज, यज्ञ, जैसे शुभ कर्मों में पशुबलि को करने वाला समाज, धर्म के नाम पर स्वर्ग का लाइसेन्स देने वाला समाज महापुरुषों (जैसे भगवान राम और कृष्ण) के स्वरूप को विकृत करने वाला समाज, एक ईश्वर को छोड़कर मनगढन्त अनेक देवी देवताओं की अवैदिक एवं आसुरी पूजा को करने वाला समाज, वेद पथ छोड़कर नाना मत-मतान्तरों की पगडण्डियो में भटकने वाला समाज अपना नाम-धाम-काम एवं अपने गौरव भय-स्वरूप को भुला बैठा था। इस सबको याद दिलाने वाला कुमार्ग से सुमार्ग पर लाने वाला, कौन था ? एकमात्र उत्तर है भगवान दयानन्द।

अनेक मन्दिरों में माताओं के विभिन्न स्वरूप की चर्चा एवं पूजा होती थी कहीं पर "स्त्री शूद्रौनाधीयताम्" और कहीं पर किमेक नरकस्य द्वार ? का उत्तर होता था 'नारी नरकस्य द्वारं' कोई कहता था "सहज अपावन नारि" इतना ही नहीं कविकुल शिरोमणि और भगवती सीता माता के पुजारी ही नहीं अनन्य भक्त गोस्वामी तुलसीदास ने तो

ढोल गवार शूद्र पशु नारी,
ये सब ताड़न के अधिकारी।

कहकर कमाल ही कर दिया है। इस प्रकार मानव निर्माण की प्रथम श्रेणी माताओं को सब अधिकारों से वंचित कर रखा था ऐसे समय में "यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता" कह कर मातृशक्ति की आराधना की भगवान दयानन्द ने ! यह सब किया उन्होने उस प्रेम के वशीभूत होकर जिस प्रेम की टीस के कारण ? स्त्री पुरुष पर और पुरुष स्त्री पर माता पुत्र पर; सेवक स्वामी पर, और भक्त भगवान पर निछावर हो जाता है ! जिन्वा वही प्रेम की टीस उत्साह के रूप में परिणित होकर युद्धवीर को अपनी जान पर खेल जाने के लिए प्रेरित करती है, दानवीर को अपना सर्वस्व दे डालने के लिए उद्यत करती है वा दानवीर से शरीर उत्सर्ग करा देती है। उसी देश प्रेम ने वशीभूत होकर धर्मवीर दयानन्द को शरीरोत्सर्ग के लिए उद्यत कर दिया।

और जब गहन निशा की भी गोद में करोड़ों टिमटिमाते हुए दीपक अपने क्षीणालोक से तमजाल को हटाने का प्रयत्न कर रहे थे। दीप जल रहे थे ! और दीपों को जलाने वाले भी समय-समय पर वसुन्धरा पर उत्पन्न होते रहे। उन्हीं में से थे एक भगवान दयानन्द !

समय ने एक और मोड़ देखना था। उभरते सत्य को देख असत्य अपने सबल और दम्भी सेना को लेकर आगे आया जब १६ बार उसका वार असफल हुआ तो छल का सहारा लिया। और धोखे में दूध में विष मिलाकर सत्य प्रसारक करुणासिन्धु भगवान दयानन्द के भौतिक शरीर को भस्मसात करने की तैयारी की गई, फिर अर्जुन को तो शिखण्डी के तीर से ही मरना था इसी दीपमालिका के दिन सत्य का प्रसारक, शानदार, उद्धारक "प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो" कहकर अपनी अमिट स्मृतियां छोड़कर हंसता हुआ चला गया। ऐतिहासिक दृष्टि से दीप मालिका अन्याय पर न्याय की विजय के आधार पर मनाई जाती है क्योंकि राम ने रावण पर विजय पाई इसी हर्ष में सभी ने दीप जलाए। परन्तु यहां उल्टा ही हुआ। राम के प्रदीप्त घृत दीपक बुझ चुके हैं और रावण के "डालडा" दीपक टिमटिमा रहे हैं उनकी विदावेला को देखकर हमको यही आभास होता है।

परन्तु उनका कार्यक्रम हमारे सामने है उसको पूरा करने के लिए आगे बढ़ चलो क्योंकि उपनिषद् भी हमको "चरैवेति चरैवेति" का उपदेश दे रही है। और क्योंकि सोने वाला कलियुग है, जगानेवाला द्वापर, उठ खड़े होने वाला त्रेता, और चलते रहनेवाला सतयुग है। इसलिए शुभ विचार और उत्साह लेकर आगे बढ़ो। ★

(पृष्ठ ५ का शेष)

बचारते हैं, वह उस समय तो आर्य जनता को अपनी साढ़े सात माँगें स्वीकृत हुई बतलाते थे परन्तु अब श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी को दिल्ली की सौ समाजों के प्रतिनिधि रूप में सत्याग्रह के तैयार खड़ी करने में तनिक नहीं झिझकते, ऐसे ही लोग शुद्धि आंदोलन और ईसाई प्रचार निरोध के लिये संस्थाएं स्थापित करते, परन्तु शुद्ध हुवे व्यक्तियों को तनिक सी सहायता करने के बदले उन्हें अमीयतल उलमा के पास जाने का संकेत करते सुने जाते हैं, और जब ऐसे ही व्यक्तियों के लिए समाज में प्रमुख स्थान हो तो समाज के कल्याण और उत्थान में क्या देर है। आज तो हमारे सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरोने की आवश्यकता है, विश्व में विश्वपति के विरुद्ध फैली हुई अराजकता को मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द के सच्चे आराधकों की आवश्यकता है, हिन्दी आंदोलन को पुनः चलाने की जो चेष्टा हो रही है, वह होनी भी चाहिए, क्योंकि पिछली असफलता को सफल बनाने के लिए यह करना ही होगा परन्तु वह कैसे सफल हो सके, उसके लिए सर्वप्रथम भारत भर में समाज को एकमत बनाने की आवश्यकता है, एक सूत्र में समाज को पिरोकर योग्य और किसी दृढ़ नेता के नेतृत्व में शेष सब लोग सैनिक और सहायक के रूप में उस नेता के आदेश को पालन करने वाले हों, कल के नवयुवक नौ सैनिकों को नेता न बनाओ, उसके लिए अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन बुलाओ, बैठकर सबकी सुनो फिर एक मती वाले होकर कोई ठीक कार्य का मार्ग निश्चित करो, शीघ्रता करने की कोई बात नहीं तप करके, और कुन्दन बनकर, चार छः मास चाहे और गुजर जावें, परन्तु कार्य करो तो पीछे हटने वाला नहीं सफलता प्राप्त करने वाला करो, और यदि इस बार भी पूर्ववत् ही स्वार्थ चक्कर चला तो स्मरण रखो मुख के बल गिर पड़ोगे।

ऋषि दयानन्द के प्यारों! तुम उस धीर वीर, गम्भीर आचार्य के शिष्य हो कि जिसका मार्ग सत्य था, जिसका कार्य सत्य था, जिसका लक्ष्य सत्य था, जो पूर्णतया अराजकता का विध्वंसक था जो तपस्वी था, और जिसे अपनी न्यूनता को दूर करने में तनिक भी संकोच न था। हमें भी अपनी एक नहीं अनेक बुराईयों को अनेक न्यूनताओं को दूर करना है, हमें अपनी कमजोरियों को मिटाकर ही इस क्षेत्र में उतरना चाहिये।

बोलो पाप विनाशक अराजकता के विध्वंसक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती की जय।

उपदेश विभाग की सूचना

(मास नवम्बर के प्रोग्राम)

श्री भद्रपाल जी ६ से ९ नवम्बर देहरादून, १२ से १५ तक आ० स० बहराइच १६ से २२ तक सीसामऊ (कानपुर)

श्री रामचन्द्र शर्मा ८ व ९ नवम्बर रानीगंज (वर्दवान)।

श्री धर्मदत्त जी आनन्द १५ से १७ तक आ० स० जलालपुर।

श्री धर्मराजसिंह जी ५ से ७ तक आ० स० बाराबंकी, ८ से ११ तक आ० स० विहारीपुर बरेली १४ से १७ तक आ० स० सुल्तानपुर २३ से २६ तक जयन्ती आ० स० शिवहारा।

श्री जयपालसिंह ५ से ८ तक आ० स० बाराबंकी।

श्री महेशचन्द्र जी ७ से ९ तक साधुआश्रम।

श्री प्रकाशवीर जी २७ से ३० तक आ० स० चाँदपुर।

श्री ओम्प्रकाश जी ३ से ६ आ० स० मिर्जापुर, ८ से १० आर्यसमाज नवाबगंज (कानपुर) १२ से १५ तक आ० स० टाडा, १६ व १७ आर्यसमाज जलालपुर, २५ से २६ आर्यसमाज शिवहारा।

श्री रुद्रदत्त जी ६ से ८ आ० स० बाराबंकी, १४ से १७ सुल्तानपुर २७ से ३० गाजीपुर।

श्री सत्यपाल जी २३ से २६ निगमागम आश्रम दारानगरगंज, २७ से ३० आ० स० चांदपुर।

—अधिष्ठाता उपदेश विभाग

(पृष्ठ ७ का शेष)

आत्म-निरीक्षण करना चाहिये। श्रद्धा, तप, द्वारा अपने खोये हुए विश्वास को, संचित करना है—यदि दयानन्द के बताए हुए मार्ग पर चलने की शक्ति नहीं है तो केवल दयानन्द का नाम लेकर कब तक जीवित रह सकोगे। संसार ने दयानन्द को जगद्गुरु मान लिया पर आर्यसमाज में आकर्षण नहीं रहा। आध्यात्मिकता के बिना यह आकर्षण नहीं आ सकता। हमारा समाज रजोगुण समाज होता जा रहा है। हमारा समाज जमानेसाज समाज होता जा रहा है। हमारा समाज भौतिकवादी, धनोपासक समाज होता जा रहा है। यदि अब भी न संभलोगे तो आर्यसमाज वैसे तो नाम से जीवित चला जायगा। पर यह कर्मनष्ट समाज संसार की दृष्टि में सर्वथा गिर जायगा। जागो, संभलो, उठो, खड़े हो और बलपूर्वक अपने मार्ग पर चलने लगो। इसी में कल्याण है। हमें करना था क्या, क्या चले करने हमें यही समझा है।

आर्य-जगत

प्रचार-समाचार—

—दानापुर आर्यवीर दल की ओर से ८ अक्तूबर १९५१ को श्री माननीय दुलनराम जी की अध्यक्षता में आर्य वीर एव आर्य वीरागना दल ने विजय दशमी का पर्व बडी धूमधाम से मनाया जिसमें, श्री सभापति जी तथा आचार्य रामानन्द जी के भाषण के अनन्तर श्री रामबली जी आर्य ने दल की ओर से सबका आभार प्रकट किया।

—नई देहली हनुमान रोड आर्य समाज में २७ सितम्बर ५१ में एक सभा की गई जिसमें कानपुर कोर्पोरेशन के एडमिनिस्ट्रेटर के उन प्रयत्नो का घोर विरोध किया जिनके आधार पर वे दयानन्द पार्क का लेनिन पार्क कर देने के स्वप्न देख रहे थे।

—गाजियाबाद आर्य वीर दल की ओर से विजयदशमी के अवसर पर आर्य वीर दल सहायता दिवस तथा प्रतिज्ञा दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया। जिसके सभापति श्री ओ३म् प्रकाश जी त्यागी थ श्री सतोषकुमारजी सचालक पश्चिमी उत्तरप्रदेश दल ने एक महत्त्वपूर्ण भाषण आर्य वीरो को दिया।

—सूरत आर्यसमाज के आर्य वीर दल के सचालक श्री भगवानदेव जी शर्मा ने दि० १७ अक्तूबर को सूरत का भ्रमण किया। एक सप्ताह तक वहा के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रो का भ्रमण करके लिखा है कि यहा शहर की अपेक्षा ग्राम के क्षेत्रों में अधिक जन और धन की क्षति हुई है। सरकार ने जो इस विषय में अपने आकडे दिये हैं उनसे कहीं अधिक क्षति हुई है। सरकार को चाहिये कि सही आकडे तैयार करके प्रकाशित करे।

—वैरगनिया गुरुकुल की ओर से २ अक्तूबर १९५१ को गाधी जयन्ती समारोह बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमें वर्षा यज्ञ तथा अखण्ड गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। और सायंकाल सभा में अनेक वक्ताओं ने गाधीजी के चरित्र पर प्रकाश डाला।

—नागपुर दयानन्द भवन आर्य समाज की ओर से श्री श्रीपाद् दामोदरजी सातवलेकर जी को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। तथा उनके सम्मान में श्रद्धापूर्ण भाषण हुए। जिसमे बताया गया कि श्री सातवलेकर जी ने वेदो की बडी सेवा की है और जनता में वेदप्रचार का जो महत्त्व और श्रेय आपको है और किसी को इस समय में सम्भवत कम है।

—जरार (आगरा) आर्यसमाज में १०-१०-५१ से लगातार ३ दिन श्री गजराजसिंह जी तथा राजाराम जी व मायाराम जी ने प्रचार किया। तथा ५१) रु० वेदप्रचार में मिले।

—उस्काबाजार (बस्ती) आर्यसमाज की ओर से विजयादशमी के उपलक्ष में प्रचार किया गया। जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

—जहागीराबाद (बुलन्दशहर) आर्यसमाज में श्री हरप्रसाद जी वान प्रस्थीजी ने बडा ही सुन्दर प्रचार अपने मनोहर भजनो द्वारा किया। तथा अन्य आसपास के ग्रामो मे भी प्रचार किया। २ यज्ञोपवीत सस्कार भी कराये।

—बस्ती आर्यसमाज की ओर से श्री शिवनारायण जी वेदपाठी ने सितम्बर मास म बस्ती जिले क कमा रुधौली पथराबाजार, वरगाधा, मानपुर कल्याण गज, दुबौलिया बाजार, आदि स्थानो पर प्रचार किया।

—सिरसिया (देवरिया) ग्राम में दि० ६ ९-५१ को देवरिया समाज की ओर से २१ मुसलमानों की शुद्धि करके आर्य धर्म मे मिलाया। तथा २५ से २८ सितम्बर तक श्री श्यामजी पाराशर की मनोहर रामायण की कथा हुई।

—कराकत आर्य वीर दल की ओर से विजयादशमी का पर्व बडी धूम धाम से मनाया गया जिसमें आर्य वीरों के शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन और श्री रामनाथ जी भूतपूर्व आ० प्रतिनिधि आ०स० तथा श्री वैजनाथ जी 'अमर' के सुन्दर व्याख्यान हुए।

—खरकर महिला आर्यसमाज मे श्री माता जगधात्री देवी जी का १० १० ५१ को आध्यात्मिक विषय पर प्रचार हुआ। और जनता पर सुन्दर प्रभाव रहा।

—मिन्टोरोड देहली आर्यसमाज में ४ १०-५१ को एक अधिवेशन हुआ जिसमें कानपुर कार्पोरेशन के एडमिनिस्टेटर के उस विचार का विरोध किया जिसमें उन्होने दयानन्द पार्क का नाम बदल कर लेनिन पार्क रखने की इच्छा की थी।

—होशियारपुर द० साल्वेशन मिशन की ओर से ५७५ ईसाई और मुसलमानो को आर्य धर्म में मिलाया गया।

—बगहा (मिर्जापुर) आ० स० द्वारा विजयदशमी का पर्व बडी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें ४ दिन तक खेलकूद तथा भाषण आदि होते रहे।

—आगरा जि० की आर्यसमाजों मे श्री ठा० गजराजसिंह जी प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा दि० ५-१०-५१ से बडे उत्साह और लगन से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं इनके प्रचार का बडा भारी प्रभाव जनता पर पड रहा है जहा जहा भेजा जा रहा इनकी भूरि २ प्रशसा की जा रही है इनके प्रचार से समाजो में जीवन आ रहा है निम्न स्थानो पर अब तक प्रचार हो चुका है।

५, ६, ७, ८	आर्यसमाज	जरार
९, ०, ११	,, ,,	शमशाबाद
१२	,, ,,	कुन्डौल
१३ १४	,, ,,	धिमश्री
१५ १६	, ,,	ककूला
१७, १८	,, ,,	बाह
१९	,, ,	रानाखेडा

अब तक २२५) वेद प्रचारादि के लिये प्राप्त हो गया है।

—मोहनलाल आर्य
अन्तरग सदस्य

—मथुरा आर्यसमाज की ओर से श्री रामस्वरूप जी वानप्रस्थी भू० पू० प्रधान आर्यसमाज बादाकुई, तथा भू०पू० उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जनता में दैनिक यज्ञ, सध्या आदि का नि स्वार्थ और अवैतनिक रूप से प्रचार कर रहे हैं। अब उनका विचार जिले म भ्रमण करने का है।

निर्वाचन—

—बहरिया (शाहजहाँपुर) आर्य समाज का निर्वाचन२७ ९ ५१को हुआ। जिसमें प्रधान श्री छोटेसिंह जी और मन्त्री श्री रामचन्द्रलाल जी आर्य निर्वाचित किये गये।

—कानपुर आर्यवीर दल का चुनाव विजयादशमी पर शिक्षण शिविर के समय सम्पन्न हुआ। जिसमे बौद्धिक नायक श्री रामरजन जी पाण्डे, मडल पति श्री नवलकिशोर जी नगर नायक बक्शीलाल जी शिक्षा नायक श्री पुरषो त्तमलाल जी आदि आदि पदाधिकारी चुने गये।

—कानपुर आर्यसमाज का वार्षिक निर्वाचन निम्नलिखित हुआ, प्रधान श्री ज्वालाप्रसाद जी, मन्त्री श्री लक्ष्मणसिंह जी चुने गये।

—नेपाल १०० मक्खन टोला (काठ माडू) समाज का वार्षिक निर्वाचन ७ १० ५१ को हुआ। जिसमें प्रधान राजालाल जी आर्य, मन्त्री हरीहरप्रसाद जी चुने गये।

—ता० १६ १० ५१को आर्यसमाज भभुआ के सभापति श्री रामगोविन्द प्रसाद जी अग्रवाल के सभापतित्व मे आर्यवीर दल का सगठन किया गया। [१] सभापति श्री विश्वनाथसिंह वर्मा [२] उप सभापति श्री रामाप्रसाद जी अग्रवाल, [३] प्रधान मन्त्री श्री बद्री-प्रसाद जी आर्य, [४] उपमन्त्री श्री बावन प्रसाद जी अग्रवाल, [५] सहायक मन्त्री बेचनप्रसाद आर्य [६] शिक्षा-नायक श्री लक्ष्मीनिधि गुसाईं [७] कोषाध्यक्ष श्री चन्द्रशेखरप्रसादजी आर्य।

संस्कार-समाचार—

—चतरा (बिहार) आर्यसमाज की ओर से स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री श्री महावीरप्रसाद जी के आचार्यत्व में श्री तेजासाहू आर्य के पुत्र का मुण्डन सस्कार हुआ।

—किना (कायमगज) की ओर से श्री नत्थूलाल जी मन्त्री आर्यसमाज के पुत्र का नामकरण सस्कार सम्पन्न हुआ। श्री गिर्जाशकर जी और श्री प्रेमनन्दन जी के पुत्रो का नामकरण भी श्री रामेश्वर दयाल जी ने कराया।

बांदामें हीरक जयन्ती समिति

बादा जिले में आर्यमित्र हीरक जयन्ती समिति का निर्माण हुआ जिसमें निम्न सज्जन चुने गए।

श्री डा० सुखवासीलाल जी प्रधान
, आनन्द देव जी
,, रामचन्द्र जी शर्मा
,, राममोहन जी
,, बृजमोहनलाल जी गुप्ता

सूचना

श्री लक्ष्मणदेव जी वेद शिरोमणि उपदेशक सभा द्वारा२००)हीरक जयन्ती सम्बन्धी नोटों की बिक्री की गई है उसमें श्री प० हरिश्चन्द्र जी पुरोहित कासगज, गंजडुडवारा, आर्यसमाज अलीगज तथा जिला फर्रुखाबाद की समाजों का सहयोग प्रशंसनीय है जिन उपदेशकों या प्रचारकों ने तथा अन्य सज्जनों ने जो नोट अब तक बेचे हों वह भी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

—राजबहादुर विद्यारत्न
प्रचार मन्त्री

उत्सव समाचार—

—उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल सम्मेलन दि० २४ नवम्बर से २७ नवम्बर तक गाजीपुर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री ओमप्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में होने जा रहा है। गाजीपुर में स्थानीय आर्यवीर दल की ओर से तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं।

—दि० ९,१०,११ अक्टूबर को आर्य समाज हरदोई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। प्रो० सत्याचरण भूतपूर्व राजपूत, पं० बिहारीलाल शास्त्री, श्री सच्चिदानंद शास्त्री, स्वामी अमृतानन्द तथा श्री पन्नालाल पीयूष 'संगीतरत्न' के व्याख्यान एव भजनोपदेश हुए।

जिला आर्य सम्मेलन

—दि० ११-१०-६१ को आर्य कन्या पाठशाला भवन में जिला आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें जिले में आर्यसमाजो के सगठन तथा मथुरा में होने वाले समारोहो के सम्बन्ध में विचार किया गया।

युवक सम्मेलन

दि० १०-१०-६१ को श्री देवीप्रसाद एम० ए० संचालक उ० प्र० आर्य वीर दल की अध्यक्षता में युवक सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

—दि० १४, १५, १६ अक्टूबर को आर्यसमाज शाहाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसमें श्री सत्यमित्र शास्त्री महोपदेशक, श्री आदित्यकिशोर बी ए मन्त्री उ० प्र० आर्यवीर दल तथा श्री कुलेन्द्रपाल भजनोपदेशक के व्याख्यान एवं भजनोपदेश हुए।

—दि० १६ अक्टूबर को युवक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमे अनेक छात्रों एव अध्यापको ने भाग लिया। श्री आदित्यकिशोर ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे युवक संगठन पर बल दिया तथा साम्यवादियों की अराष्ट्रीय गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए युवकों को उनसे दूर रहने का परामर्श दिया।

शोक-समाचार

—उत्कूर जि० (महबूब नगर) आ० स० श्री गुरुकुल घटकेश्वर हेदराबाद क स्नातक श्री अनन्तय्या जी का निधन६-१०-६१को सायंकाल सात बजे हो गया। आर्यसमाज परिवार इसक लिये अत्यन्त शोकाकुल होकर प्रभु से उनकी सद्गति तथा उनके परिवार के जनों की आत्मिक शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है।

—शेखपुरा (मुंगेर) आर्यसमाज की ओर से श्री दयाशकर प्रसाद जी के निधन पर शोक प्रकट किया गया और उनकी सद्गति तथा पारिवारिक जनो की आत्मिक शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

—आर्यसमाज पीलीभीत के सस्थापक तथा वयोवृद्ध और पुराने कार्यकर्ता श्री जगदम्बा प्रसाद जी एडवोकेट का दि० १६-१०-६१ को स्वर्गवास हो गया आप २५ वर्ष तक आर्यसमाज पीलीभीत के प्रधान रहे थे। आप आर्य समाज पूरनपुर के मन्दिर के मुकद्दमे को कई वर्ष तक बिना पारिश्रमिक लिये ही करते रहे थे और आर्य प्रतिनिधि सभा के आप वर्षों सदस्य रहे आपके निधन से समाज की बड़ी हानि हुई। आर्य समाज पूरनपुर उनके निधन पर शोक प्रगट करते हुए उनके परिवार से सहानुभूति प्रगट की और दिवगत आत्मा के लिए भगवान से सद्गति की प्रार्थना की।

—रामबहादुर सक्सेना
मन्त्री, आर्यसमाज पूरनपुर

—आर्यसमाज दतियाना मु०नगर के आर्य सदस्य श्री रूपराम जी का दिनाक ८-१०-६१ को स्वर्गवास हो गया आपने हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन मे भी भाग लिया था तथा आप उक्त समाज के कई वर्षों तक प्रधान रहे। वहाँ का समाज उनके निधन से दुखी है।

—रिसालसिंह, मन्त्री

—आर्यसमाज सुपौल जि० मुजफ्फरपुर ने श्री प० श्रीकृष्ण शर्मा महोपदेशक के स्वर्गवास होने पर शोक प्रस्ताव पास किया और दिवंगत आत्मा के लिये भगवान से सद्गति की प्रार्थना की।

—मन्त्री समाज

—आर्यसमाज कायमगंज,फर्रुखाबाद ने श्री पं० देवीदयाल जी ग्राम भटास निवासी आर्य सदस्य के निधन पर शोक प्रगट किया और दिवंगत आत्मा के लिये परमात्मा से सद्गति की प्रार्थना की।

—मन्त्री

आ०स० बाराबंकी का उत्सव

आर्यसमाज बाराबंकी का २१ वां वार्षिकोत्सव इस वर्ष ५, ६, ७ व ८ नवम्बर दिन गुरुवार, शनिवार एवं रविवार को समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। —रामसंजीवनलाल मंत्री

वनिता  विवेक

महर्षि के कार्य का महत्व

ले० सुशीला कुमारी जी कन्या गु० सासनी

महर्षि दयानन्द ने महाभारत से बिगड़े हुए समाज के ढांचे को सुधारों के लिए एक आदर्श समाज 'आर्यसमाज' की स्थापना की, जिसकी पवित्र वेदी पर आकर सब लोग बिना भेदभाव के समान रूप से अपनी शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति कर सकें प्रत्येक आर्य को वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना परम धर्म ठहराया" और बतलाया कि प्रत्येक आर्य को "सत्य के ग्रहण करने में असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये" और विचारपूर्वक कार्य करते हुए समाज के हित को व्यक्ति के हित की अपेक्षा अधिक ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार संसार में सुख शान्ति का वातावरण उत्पन्न होकर मनुष्य सुख एवं शान्ति प्राप्त कर सकता है यह है अमृतमय वचन जिन्होंने विश्व को सन्मार्ग पर ला लाकर खड़ा किया।

नारी की दुर्दशा का प्रश्न भी "यथेमां वाचं कल्याणी आदि कहकर सब को वेद पढ़ने का समान अधिकार दिया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का नारा लगाकर सारे विश्व को आर्यत्व के सूत्र में बांधा, न जाने कितने युगों व शताब्दियों से परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़ा हुआ भारत ऋषिराज की कृपा से स्वतन्त्र हुआ। स्वराज्य का आदेश भी सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही किया। इसके अतिरिक्त आर्ष अनार्ष ग्रन्थों का प्रश्न भी महर्षि ने ही उठाया था। आर्ष ग्रन्थ के परम भक्त श्री स्वामी विरजानन्द जी दण्डी से आर्ष ग्रन्थ अष्टाध्यायी महाभाष्यादि पढ़कर ही तो ऋषिवर दयानन्द बने। स्वामी विरजानन्द आजन्म ब्रह्मचारी रहे और ऋषिवर दयानन्द को उन्होंने भिक्षा रूप में संसार का अन्धकार मिटाने की शिक्षा दी। "आचार्यो ब्रह्मचारी" इस वेद वाक्य को चरितार्थ किया, ऋषि दयानन्द ने दो बातों का प्रचार किया।

१—वेद वाणी, २—ईश्वरीय ज्ञान वेद। ईश्वर के स्थान में पाषाणादि की पूजा की जाने लगी थी, वेद के स्थान पर कुरान, पुराण बाइबिल ग्रन्थ ईश्वरीय ज्ञान मान बैठे थे। वेद और ईश्वर को जानने के लिए ऋषि ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का उपदेश दिया, क्योंकि इसके बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बन सकता और उसे वास्तविक शान्ति नहीं मिल सकती। शान्ति के लिए हमें वेद का आश्रय लेना पड़ेगा। कोई कितनी सुन्दर है वेदवाणी—तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्य स्विद्धनम्" कभी किसी का धन लेने की लिप्सा न करे। प्रभु ने जो दिया है उसी का सब भोग करें। रोम का एक बादशाह रसनेन्द्रिय का इतना दास था कि दिन में विविध व्यंजनों का स्वाद चखने की वासना से खाये हुए भोजन का ओषधी द्वारा वमन कर, दूसरे प्रकार का भोजन किया करता था, उसका सारा जीवन ऐसे ही व्यतीत हो गया! अन्त में उसने महान् पश्चात् किया। दूसरी ओर त्याग तपस्या की मूर्ति महर्षि दयानन्द को देखिए "तेरी इच्छा हो पूर्ण हे प्यारे प्रभु" कहकर प्रसन्नता से विदा ली। वास्तव में वह महान् आत्मा धन्य है, जिसने विश्व को सोते से जगा दिया। एक ओर ऋषि दयानन्द—दूसरी ओर सारी दुनिया—हजार संकटों का सामना किया किन्तु ऋषिराज नहीं घबड़ाये।

धर्म की व्याख्या ऋषि दयानन्द ने "यतो अभ्युदय निश्रेयस स सिद्धि स धर्मः" इस प्रकार की है।

अपनी जीवन यात्रा को सफल करते हुए महर्षि दयानन्द सं० १९११ में उत्तर में आबू पर्वत पर गए पुनः पहाड़ों पर यात्रा की, सं० १९३० तक इन्होंने सभी जगह संस्कृत में व्याख्यान दिये किन्तु जब संस्कृत भाषा न बना सके, तब भारत की मातृभाषा हिन्दी बना दी, पश्चात् सभी स्थानों में हिन्दी के व्याख्यान किये। अतः हम पूर्णतः कह सकते हैं कि देश की उन्नति के सभी कार्यों का सूत्रपात ऋषि ने ही किया है।

उन्होंने शूद्रों को भी वेदाध्ययन श्रवण का अधिकार दिया। नि ना । मे न्यवहार को पा न ना। 'यत नार्यस्तु पू ते रमन्ते त्र देवता' का पाठ पढ़ाया छ का भगाया। भूत प्रेत — मि ना विश्वासों को मिटाया। ने नत ते, कला-कौशल की उन्नति न हो ति असम्भव है। — न होनहार भारतीय युवकों की न ी में यह शिक्षा दिलाने का प्रयत्न कर र । ये देशी नरेश व सारे भारत सभो को सुधार कर स्वातन्त्र्य के मार्ग प्रश न कर रह थ। इन स्वातन्त्र्य भावना उनके वेद भाष्य, आर्याभिविनय सत्यार्थप्रकाश, आदि सर्व ग्रन्थों में ओतप्रोत है। —शो- न्नति का कोई ऐसा क्षेत्र न मक सूत्रपात उन्होंने किया हो।

महिलाओं में दीक्षा शताब्दी के लिये उत्साह

१४ ता० को चंदौसी में आर्य स्त्री समाज की ओर से एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें मैंने समाज के प्रचार के अतिरिक्त मथुरा में होने वाले समारोहों के सम्बन्ध में प्रकाश डाला और आर्थिक सहायता देने तथा उत्सव में पधारने के लिए प्रेरित किया फल स्वरूप २१) समारोह के लिए तुरन्त एकत्रित हो गये और भविष्य में और भी देने का विश्वास दिलाया हैं। आर्य स्त्री समाज चंदौसी का निरीक्षण भी किया। १५) वेद प्रचार के लिए भी प्राप्त हुए।

१५, १६ को बहजोई में आर्य स्त्री समाज के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होकर कई सभाओं से प्रचार किया जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा। समारोहों के लिये भविष्य में धन देने का आश्वासन वहां की कार्यकर्त्री बहिनों ने दिया, उस समय वार्षिक उत्सव के कारण धन की व्यवस्था न हो सकी।

१७, १८ ता० को आर्य स्त्री समाज बास मंडी व आर्य महिला समाज (संचालिका श्री गोपी देवी) चौमुखा पुल मुरादाबाद में सभाओं में समारोह सम्बन्धी भाषण दिये और बहिनों को उत्सव में सम्मिलित होने व धन देने के लिये उत्साहित किया, आर्य स्त्री समाज बास मंडी का निरीक्षण भी किया। दोनों स्त्री समाजों से २१) २१) समारोह की सहायतार्थ प्राप्त हुए।

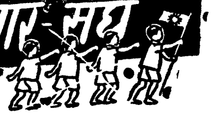
१५) आर्य स्त्री समाज नानपारा जिला बहराइच से भी समारोह की सहायतार्थ प्राप्त हुए।

—सावित्री रस्तोगी

मेरठ संयोजिका महिला विभाग

आ० प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश

आर्य्य-कुमार-संघ



भारत का पुण्य पर्व दीपावली

दीपावली का पर्व एक महान् पर्व है और इस महान् पर्व का महान् महत्व हैं। इसका उत्सव प्रत्येक हिन्दू परिवार में भारत के उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक बड़े ही आनन्द के साथ मनाया जाता है।

भारतीय पर्वों में दीपावली का सर्वाधिक आदि भी है, क्योंकि यह पर्व लक्ष्मी पूजन से सम्बन्धित है और आज लक्ष्मी के प्रति स्वाभाविक रूप से सभी व्यक्तियों में आकर्षण है। इसीलिए इस पर्व को गरीब लोग अमीर, सभी वर्गों द्वारा विशेष उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

दीपावली का त्यौहार इतिहास रचना से भी पूर्व का है। वेदों में इस विषय में कुछ भी लिखा नहीं मिलता है।

सम्पूर्ण संवत्सर [वर्ष] में शारदीय [आश्विन] पूर्णिमा की चांदनी अन्य पूर्णिमाओं की चांदनी से सर्वोत्कृष्ट होती है। एवमेव कार्तिक अमावस्या की रात्रि का अन्धकार अन्य समस्त अमावस्याओं की रात्रियों के अन्धकार से अधिक गहन होता है।

आज के ही दिन भारत का अमिट आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम चौदह वर्ष के बनवास के बाद अयोध्या वापिस आये थे और उनके साथ ही आज के दिन युग युग की लक्ष्मी भगवती सीता ने भी अयोध्या में पुनरागमन किया था। प्रजा ने हर्ष विभोर होकर राम और सीता का स्वागत किया था और दीप जलाकर राम के दर्शन किये थे।

दीपावली की रात्रि को ही संसार को सत्य का प्रकाश देने वाले, आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का अजमेर नगर में देहावसान हुआ था।

दीपावली की रात्रि को ही स्वामी रामतीर्थ ने जल समाधि लेकर नश्वर शरीर को त्याग कर शाश्वत जीवन प्राप्त किया था।

दीपावली प्राचीनकाल से ही आर्थिक वर्ष का अन्त और प्रारम्भ है। ग लक्ष्मी [अर्थ] के पूजन का भी पर्व है। तप और श्रम से ही लक्ष्मी का उपार्जन होता है। भारत की लक्ष्मी का पूजन तप की र ही और श्रम के न्द्र म होगा। जो नहा है न वहीं का प का आश्रय लेकर श्रम कर तो निस्सन्देह भारत बहुत शीघ्र लक्ष्मीयुक्त और जो सम्पन्न हो जायेगा।

दीपावली के शुभ दिन मकानों की पुताई इत्यादि करके बिजली के रंग बिरंगे लट्टू लगाये जाते हैं। व दीपकों की कतार से सारा भारतवर्ष जगमगा जाता है।

दीपावली के दूसरे दिन भैया दूज का पवित्र पर्व आता है। यह त्योहार बहनों का ही होता है। बहन अपने भाई को उज्ज्वल माथे पर मंगल टीका लगाती है। तथा मिठाई भी खिलाती है।

इस प्रकार से दीपावली का यह पावन पर्व अनेक कारणों से अधिक महत्वपूर्ण है। भारत के आबालवृद्ध नरनारी इस पर्व को शुद्ध हृदय से मनाते हैं।

—श्री विश्व विभूति 'विद्यावाचस्पति'

अजमेर

आर्यमित्र साप्ताहिक, लखनऊ
पंजीकरण सं. ए. ६०
कार्तिक ३, शक १८८१ कार्तिक शुक्ल १
(ता० १ नवम्बर १९५९)

आर्य्यमित्र

उत्तर प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पता—'आर्यमित्र'
दूरभाष्य : ५११३ तार : 'आर्यमित्र'
५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ

महर्षि दयानन्द

[लेखक : श्री सच्चिदानन्द आर्य, बिहार शरीफ, पटना]

ऊर्ध्वरेत ब्रह्मचारी दयानन्द ने हिंदू जनता के उद्धार, परिष्कार एवं सुधार के निमित्त वेद-मार्ग का आलम्बन लिया वेद-मार्ग के माध्यम से हिन्दूत्व अथवा आर्यत्व का संरक्षण किया। इसमें मूर्ति-पूजा, जो अन्ध-विश्वास के चलते जैनियों के समय चली थीं नहीं है तथा तीर्थ-व्रत, अवतारवाद, नरक-स्वर्ग आदि की मिथ्या कल्पना किंचितमात्र भी नहीं है। तात्पर्य यह कि जिसमें स्वतः सत्य का ही अक्षय-कोष है, हिन्दू-संस्कृति अथवा आर्य-संस्कृति का ही सत्याभास है, उसी की सभ्यता का जगमग आलोक है, उसी वेद-निधि को ही आर्य-धर्म अथवा हिन्दू-धर्म के बीच वेद-वाक्य (सत्य) प्रतिष्ठित किया। सुतरां, सुस्पष्ट है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती हिंदू-धर्म के अकबक उद्धारक थे।

कर्मवीर-शिरोमणि दयानन्द जी ने न केवल प्रभु-भक्ति में तर्क का ही सहारा लिया, वरन् अपने त्याग, तप, दान और बलिदान का भी सुन्दर परिचय प्रदान किया। यहां पर कोई-कोई आक्षेप कर सकते हैं कि भक्ति में तर्क का कतई भी स्थान नहीं होता। किन्तु, यह केवल उनकी थोथी दलील है अथवा भ्रांतिमूलक धारणा। हम दैनिक जीवन में सधारणाति-साधारण वस्तुओं पर भी क्यों, कैसे आदि शब्दो से तर्क-वितर्क करते देखे जाते हैं। फिर, भला ईश्वर जैसे गहन, गम्भीर, गूढ़ विषयो पर तर्क-वितर्क क्यो न हो? इसी तर्क-शक्ति के अभाव के कारण आर्य-जाति अथवा हिन्दू जाति कूपमंडूक हो गई थी। उसमें अन्धश्रद्धा, अन्धभक्ति तथा धर्मान्धता श्रीगणेश टी० बी० के कीड़े की भांति होने लग गई थी। अतः उन्होने भक्ति में तर्क का स्थान दिया। उनका तर्क विशुद्ध, सत्य एवं सार्थक होता था। उन्होंने अपने 'सत्यार्थ-प्रकाश' की भूमिका में इस बात का प्रतिपादन किया है कि तर्क का प्रयोग सत्य-धर्म के लिए होता है, न कि असत्य-मत के लिए। उन्हीं के शब्दों में —

"जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय।"

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक दयानन्द जो उद्भट विद्वान्, सहनशील संन्यासी और समग्र सन्त थे। संतों की नम्रता उनमें विद्यमान थी। इसका परिचय स्वामी दयानन्द जी के जीवन-चरित्र में यत्र-तत्र सर्वत्र मिलता है। एकाध उदाहरण ही पर्याप्त होंगे—

अमृतसर में एक बार स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे। कुछ दुराचारी नासमझ लोग पत्थरों की दनादन वर्षा करने लगे। किन्तु, स्वामी जी बिल्कुल निश्चल थे—अत्यन्त प्रसन्न और अतीव विनम्र अथवा सहनशील! उनके उत्तर में बड़ी विनम्रता और स्नेह-स्निग्धता थी—"मेरे आक्षेपों के उत्तर में प्रतिवादियों के पास यही पत्थर हैं, मेरे पर यह पुष्पों की वर्षा है।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व बहुत ही विशाल था। महाराज का शरीर अत्यन्त सुन्दर, सुगठित, विशाल एवं ब्रह्मचर्य की अनुपम कान्ति से देदीप्यमान था।

किन्तु, दुःख एवं परिताप का विषय है कि आर्य-संस्कृति अथवा हिंदू-धर्म के उद्धारक, बीसवीं शताब्दी का आजन्म ब्रह्मचारी दयानन्द, आर्त्त भारत के भाग्य का भानु भगवान् दयानन्द, इसी कातिक अमावस्या को संवत् १९४० विक्रमी, मंगलवार को सायं ६ बजे श्वास को अवरुद्ध कर एकदम बाहर निकाल दिया। महाराज के शब्द इस स्थिति में भी बड़े सुन्दर थे, मानो उनके शब्द पुष्पो की संवर्षा कर रहे थे—हे दयामय, हे सर्व शक्तिमान् ईश्वर? तेरी इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, आहा?? तैने अच्छी लीला की। महाराज का जीवन-कौतुक समाप्त हो गया और उनकी आत्मा मरणधर्मा शरीर का परित्याग कर विश्व-विभु की स्नेहमयी गोद में आ विराजी। आज महर्षि दयानन्द हमारे बीच नहीं, किंतु उनकी कीर्ति, यश और गौरव-गुण सदा सर्वदा चिरस्मरणीय, चिरंतन एवं शाश्वत रहेगा। उनका आदर्श सदैव हमारा पाथेय बनकर होगा। हम बढ़े चलें—बढ़े चलें। यही हमारा उद्देश्य है—यही हमारा नारा है—

वैदिक धर्म की जय!

बाबूराम भारती द्वारा भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५ मीराबाईमार्ग लखनऊ से मुद्रित तथा प्रकाशित

(पृष्ठ २ का शेष)

सन्ध्या के चार बजे—

भगवान ने नाई को बुलवाया। सिर के बालों और फुन्सियों के फूटकर रक्त प्रवाहित होने के भय के कारण भक्तों ने प्रेमपूर्वक मध्यी में रोकने का यत्न किया। किन्तु नहीं। ऋषिवर्य ने क्षौर करवाया। गीले तौलिये से सिर पुछवाया और पलंग के सहारे बैठ गये। आत्मानन्द को पास बुलवाया और अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण भाव से उनके सिर पर हाथ रखते हुए अपने दुःख विह्वल शिष्य को इन शब्दों में सान्त्वना दी, "वत्स! इस नाशवान शरीर को कितने दिन स्वस्थ रहना है? किसी न किसी दिन यह जरा-जर्जरित होकर छूटने ही वाला है। तुम मेरे इस शरीर का दुःख न मनाओ। अपने कर्तव्य-पालन में लगे रहो।" आत्मानन्द को सान्त्वना क्या मिलनी थी, वे फूट-फूट कर रोने लगे। उनका करुण-क्रन्दन देख सुनकर खड़े हुए सभी भक्तों के नेत्रों से अश्रुओं की झड़ी लग गई। वातावरण सिसकियों से भर गया। किन्तु महर्षि शान्त थे। जब भक्त जनों की व्याकुलता बढ़ती गयी तो चारों ओर खड़े लोगों पर महाराज ने अपनी तेजोमयी दृष्टि डाली। उस दृष्टि में अपार तेज और प्रचण्ड प्रखरता थी, और थी अनिर्वचनीय स्नेह-भावना।

दृष्टि घुमाते हुए उनके नेत्र पं० गुरुदत्त के मुख पर थम गये। उधर नास्तिक गुरुदत्त भी महाराज की प्रत्येक हलचल को ध्यानपूर्वक देख रहे थे। इससे पूर्व भी गुरुदत्त जी स्वामी जी महाराज से ईश्वर के अस्तित्व पर वार्तालाप कर चुके थे। प्रायः वे निरुत्तर होकर कह उठते, "महाराज! आपके अकाट्य तर्क का उत्तर नहीं बन पड़ता, किन्तु ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास भी नहीं हो रहा है।" महाराज ने उत्तर दिया "मेरा काम सन्देह-निवारण का प्रयत्न करना है। सन्देह निवारण तो ईश कृपा से समय आने पर ही होगा।"

आज ईश कृपा का समय आ चुका था। महर्षि के नेत्रों से उसके नेत्र मिले। ऐसा लगा जैसे नास्तिक के हृदय में ज्योति का प्रवेश होने लगा हो; अथवा बुझा हुआ दीपक प्रज्वलित होने की प्रतीक्षा में हो।

सन्ध्या के साढ़े पांच बजे—

महर्षि ने कमरे के सभी कपाट खुलवा दिये। सभी को पीठ पीछे आने को कहा। आज्ञा का पालन हुआ। फिर गम्भीर ध्वनि से वेद मन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ किया। शरीर की दुर्बलता और रोग की तीव्रता को देखकर तो चिकित्सा-शास्त्र की दृष्टि में महाराज का भौतिक शरीर मर चुका था, किन्तु इस भौतिक शरीर से बढ़कर भी तो एक वस्तु है। वेद मन्त्रों का पाठ नित्य की भांति शुद्ध, स्पष्ट स्वर में हो रहा था। उसमें किंचित भी निर्बलता, कंपन अथवा सिहरन का अंश नहीं था। वेद-पाठ के अनन्तर, परम प्रीति एवं भक्ति के साथ संस्कृत में ईश्वर स्तुति प्रारम्भ हुई। उस समय उनके रोग-पीड़ित शरीर का एक-एक अंग पुलकित हो रहा था, जैसे दो प्रेमी जनों के संयोग में होता है। भक्त भगवान से मिलने जा रहा था। कुछ शान्त रहकर परम-पावन गायत्री मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया और सहसा मौन हो गये। भक्त मण्डली सांस को रोके यह चमत्कार पूर्ण लीला देख रही थी। करुण, क्रन्दन का स्थान कौतूहल ने ले लिया था, दुःख-विह्वलता की जगह विस्मय ने ले लिया थी। सभी "पलक निहार रहे थे, और कलेजा थामे पल-पल की प्रतीक्षा कर रहे थे।

कुछ समय तक स्वामी जी निश्चल समाधिस्थ हो बैठे रहे। सहसा पलक-कपाट खुल गये। चारों ओर पुनः दिव्य ज्योति विकीर्ण हो गई। गम्भीर ध्वनि में ये शब्द सभी के कर्णगोचर होने लगे।

"हे दयामय! हे सर्व शक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है। परमात्म देव! तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! मेरे परमेश्वर तैने अच्छी लीला की।"

अन्तिम शब्द के साथ ही श्वास को अन्दर ही अवरुद्ध कर लिया और कुछ क्षणो के उपरान्त प्रणवनाद के साथ सांस को इस प्रकार बाहर निकाला कि उसको स्वर्ग सोपान पर आरूढ़ कर दिया। भौतिक काया में आबद्ध आत्मा मुक्त हो गयी। शरीर से ज्योति निकल गयी। उधर भुवन भास्कर ने अपनी अंशुमाला को सहसा संकुचित कर लिया, इधर धरती धरा पर अंधकार ने अधिकार जमाने का यत्न किया, किन्तु अमावस्या के उस अन्धकार में भारत-भू पर एक ऐसी ज्योति प्रकट हुई कि शत-शत बुझे हुए दीपक जल उठे। अन्धकार भाग खड़ा हुआ। अमावस्या के अन्धकार में भी अलौकिक प्रकाश फैला। एक दिव्य अलौकिक ज्योति ने अमर हो मुक्त होकर लहक-लहक बुझे हुए दीपों को जला दिया। उसी दिन ही तो भारत भूमि में दीपावली का शुभागमन हुआ था।